Fatawa Rizvia

With citations and translation of Arabic passages

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified)

13

Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia

Inside Lohari Gate, Lahore-8 Pakistan (54000)

फतावा रज़विया

अरबी इबारतों के तख़रीज और तर्जुमे के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दसा सिर्रहु)

१३

रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया

अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर-८ पाकिस्तान (५४०००)

فتاویٰ رضویہ

مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ

۱۳

رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

13 Fatawa Ridawiyya Volume Thirteen

Contents

Preface 4
Thirteenth Volume 5
Summary Table of Contents 7
Detailed Table of Contents ..... 9 If an oath of divorce was taken, the way for the marriage to remain intact is for the condition not to occur, or if an oath for one or two revocable divorces was taken, then to return after the condition occurs. ..... 9 List of Subsidiary Issues 65
Chapter of Conditional Divorce 101
(Description of Conditional Divorce) 101
Treatise 155
Akkad-ut-Tahqeeq bi Bab-it-Ta'leeq 1322 AH 155
(Exquisite research regarding the chapter of conditions) 155
Chapter of Ila 257
(Description of Ila) 257
Chapter of Khula (Description of Khula) 263
Chapter of Zihar (Description of Zihar) 267
Chapter of 'Iddah .....
291 (Description of 'Iddah) .....
291 Chapter of Hidad (Description of Mourning) .....
327 Chapter of the Wife of a Missing Person (Ruling regarding the wife of a missing person) .....
335 Chapter of
Nasab 349
(Description of Nasab) 349
Chapter of Hadanah .....
383

१३ फ़तावा रज़विया तेरहवीं जिल्द

विषय सूची (Contents)

प्रस्तावना .....
4 तेरहवीं
जिल्द 5
संक्षिप्त सूची .....
7 विस्तृत
सूची ..... 9 यदि
तलाक की कसम खाई है तो निकाह कायम रहने की सूरत यह है कि शर्त पूरी न हो, या यदि एक या दो राजई तलाक की कसम खाई है तो शर्त पूरी होने के बाद रुजू (वापसी) कर
ले। 9
गौण मसलों की सूची .....
65 बाब ता'लीक-उल-तलाक (तलाक को किसी शर्त से जोड़ने का अध्याय) 101
(ता'लीक-ए-तलाक का विवरण) .....
101
रिसाला .....
155 आकदुत तहक़ीक़ बि-बाब-इत ता'लीक १३२२ हिजरी .....
155 (बाब-ए-ता'लीक के सम्बन्ध में उत्कृष्ट शोध) .....
155 बाब-उल-
ईला 257
(ईला का विवरण) .....
257 बाब-उल-खुलअ (खुलअ का
विवरण) ..... 263 बाब-उज़-ज़िहार (ज़िहार
का विवरण) ..... 267 बाब-उल-इद्दत (इद्दत
का अध्याय - प्रतीक्षा अवधि) ..... 291 (इद्दत का
विवरण) 291
बाब-उल-हिदाद (शोक का विवरण) .....

327 बाब ज़ौजतुल मफक़ूद (लापता व्यक्ति की पत्नी का हुक्म) .....
335 बाब-उल-नसब (वंश/नसब का
अध्याय) ..... 349 (नसब का
विवरण) 349
बाब-उल-हज़ानत (बच्चों की परवरिश का अध्याय) 383

۱۳ فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم

Contents پیش

لفظ .....

4 تیرہویں

جلد 5

اجمالی

فہرست 7

مفصل

فہرست 9

طلاق کی قسم کھائی تو اب نکاح قائم رہنے کی صورت یہ ہے کہ شرط واقع نہ ہو یا اگر ایک یا دو

طلاق رجعی کی قسم کھائی ہے تو بعد وقوع شرط رجوع کرے۔ 9

فہرست ضمنی

مسائل ..... 65 باب

تعلیق الطلاق .....

101 (تعلیق طلاق کا

بیان) 101

رسالہ .....

155 آکدالتحقیق بباب التعلیق ۱۳۲۲ھ .....

155 (باب تعلیق کے متعلق تحقیق

انیق) ..... 155 باب

الایلاء .....

257 (ایلاء کا

بیان) 257

باب الخلع (خلع کا بیان) .....

263 باب الظہار (ظہار کا

بیان) ..... 267 باب

العدۃ .....

291 (عدت کا

بیان) 291

باب الحداد (سوگ کا

بیان) ..... 327 باب زوجۃ

المفقود (مفقود الخبر کی زوجہ کا حکم) ..... 335 باب

النسب .....

349 (نسب کا

بیان) 349

باب

الحضانۃ .....

383

Volume 13 (13) Fatawa Razvia (Statement on Upbringing/ Maintenance) ..... 383 Chapter on Maintenance (Bab-ul-Nafaqah) ..... 415 (Statement on Maintenance) ..... 415 Book of Oaths (Kitab-ul-Aiman) ..... 495 Treatise (Risala) ..... 511 Al-Jawhar al-Thameen fi 'Ilal Nazilat al-Yamin 1330 AH ... 511 (A precious gem concerning the problem of an oath) ..... 511 Chapter on Vows (Bab-un-Nazr) ..... 581 (Statement on Vows) ..... 581 Chapter on Expiation (Bab-ul-Kaffarah) ..... 609 (Statement on Expiation) ..... 609 Book of Prescribed and Discretionary Punishments (Kitab-ul-Hudud-wat-Ta'zir) ..... 613 (Statement on Hudud and Ta'zir) ..... 613 Sources and References ..... 657 Appendix (Zameema) ..... 681 Sources and References 681

जिल्द तेरहवीं (13) फ़तावा रज़विया (परवरिश का बयान) ..... 383 बाब-उल-नफ़क़ा (खर्च का अध्याय) ..... 415 (नफ़क़ा का बयान) ..... 415 किताब-उल-ऐमान (कसमों की किताब) ..... 495 रिसाला (पुस्तिका) ..... 511 अल-जौहर-उल-समीन फ़ी इलल नाज़िलत-उल-यमीन 1330 हिजरी ... 511 (क़सम की मुसीबत से मुताल्लिक़ क़ीमती जौहर) ..... 511 बाब-उन-नज़्र (मन्नत का अध्याय) ..... 581 (नज़्र का बयान) ..... 581 बाब-उल-कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित का अध्याय) ..... 609 (कफ़्फ़ारे का बयान) ..... 609 किताब-उल-हुदूद वत-तज़ीर (दंड विधि की किताब) ..... 613 (हुदूद और तज़ीर का बयान) ..... 613 माख़ज़ व मराजे (स्रोत और संदर्भ) ..... 657 ज़मीमा (परिशिष्ट) ..... 681 माख़ज़ व मराजे (स्रोत और संदर्भ) 681

جلد سیز دہم ۱۳ فتاویٰ رضویہ (پرورش کا بیان) ..... 383 باب
النفقة ..... 415 (نفقہ کا بیان) 415
كتاب الايمان ..... 495 رساله .....
511 الجوهر الثمين في علل نازلة اليمين ۱۳۳۰ھ ... 511 (قسم کی مصیبت سے متعلق قیمتی
جوہر) ..... 511 باب النذر ..... 581 (نذر کا
بیان) ..... 581 باب الكفارة 609
(کفارے کا بیان) ..... 609 كتاب الحدود والتعزير .....
613 (حدود اور تعزیر کا بیان) ..... 613 مآخذ و
مراجع ..... 657 ضميمه 681
مآخذ و مراجع 681

Fatawa Rizvia Volume Thirteen 13

Fatawa Rizvia With references and translation of Arabic passages

Imam Ahmad Raza Barelvi (May Allah sanctify his secret) Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia Inside Lohari Gate, Lahore Number 8 Pakistan (54000)

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami Page 1 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

फ़तावा रज़विया अरबी इबारतों की तख़रीज और तर्जुमा के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (क़ुद्दिस सिर्रहु) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000)

www.dawateislami.net आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 1 / 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

فتاویٰ رضویہ مع تخریج وترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiyya

"Whoever Allah intends good for, He grants him the understanding of the religion." (Hadith) AL-ATAYA AL-NABAWIA FIL-FATAWA AL-RAZAWIA With verification and translation of Arabic phrases

Volume Thirteen 13

A magnificent Jurisprudential Encyclopedia of the 14th century containing rare research works.

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified) 1272 AH — 1340 AH 1856 AD — 1921 AD

Raza Foundation, Jamia Nizamia Razvia Inside Lohari Gate, Lahore (8), Pakistan (54000) Phone: 7657312

जिल्द तेरहवीं १३ फ़तावा रज़विया

"जिसके साथ अल्लाह भलाई का इरादा करता है, उसे दीन (धर्म) की समझ प्रदान कर देता है।" (हदीस) अल-अताया अल-नबविया फ़िल-फ़तावा अर-रज़विया अरबी इबारतों की तख़रीज (हवाला) और अनुवाद के साथ

जिल्द तेरहवीं १३

दुर्लभ शोधों पर आधारित चौदहवीं शताब्दी का एक भव्य फ़िक़्ही (न्यायशास्त्र) विश्वकोश।

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उनकी पवित्रता बनाए रखे) १२७२ हिजरी — १३४० हिजरी १८५६ ईस्वी — १९२१ ईस्वी

रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर (८), पाकिस्तान (५४०००) फ़ोन: ७६५७३१२

جلد سیزدہم ۱۳ فتاویٰ رضویہ

مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُفَقِّھْہُ فِي الدِّینِ (الحدیث) اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

جلد سیزدہم ۱۳

تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ — ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء — ۱۹۲۱ء

رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ، لاہور (۸)، پاکستان (۵۴۰۰۰) فون: ۷۶۵۷۳۱۲

Volume Thirteen 13 Fatawa Ridawiyya (All rights reserved by the publisher) Book: ___ Fatawa Ridawiyya Volume Thirteen Author: ___ **Sheikh-ul-Islam Imam Ahmad Raza Qadri Barelvi (Mercy of Allah be upon him) Translation of Arabic passages: _** ***Hazrat Allama Mufti Muhammad Khan Qadri, Lahore Preface: __ Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia Ridawiyya, Lahore Table of Contents: __*** Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia Ridawiyya, Lahore Reference verification & Correction: ___ Maulana Nazir Ahmad Saeedi, Maulana Muhammad Akramullah Butt Under Management & Supervision: __ Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi, Secretary-General Tanzeem-ul-Madaris Ahl-e-Sunnat, Pakistan Calligraphy: ___ **Muhammad Sharif Gul, Katrial Kalan (Gujranwala) Pasting: ___** ***Maulana Muhammad Mushtaq Tabish Qasuri, Teacher Department of Persian, Jamia Nizamia Lahore Pages: __ 688 Publication: __ Dhu al-Qi'dah 1418 AH / March 1998 AD Press: ___ Publisher: ___*** **Raza Foundation, Jamia Nizamia Ridawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore Price: _____**

Available at: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Ridawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore 0300/9415300, 7665772 * Maktaba Ahl-e-Sunnat Jamia Nizamia Ridawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore * Shabbir Brothers, 40-B Urdu Bazaar, Lahore

जिल्द तेरहवीं १३ फ़तावा रज़विया (सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं) किताब: ___ फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं लेखक: ___ **शैख-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैह) अरबी वाक्यांशों का अनुवाद: _ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद ख़ान क़ादरी, लाहौर प्रस्तावना: __ हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर विषय सूची व्यवस्था:** __ हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर संदर्भ सत्यापन और सुधार: ___ मौलाना नज़ीर अहमद सईदी, मौलाना मुहम्मद अकरमुल्लाह बट प्रबंधन और पर्यवेक्षण: __ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम हज़ारवी, महासचिव तंज़ीम-उल-मदारिस अहले सुन्नत, पाकिस्तान कैलिग्राफी: ___ **मुहम्मद शरीफ़ गुल, कट्रियल कलां (गुजरानवाला) पेस्टिंग: __ मौलाना मुहम्मद मुश्ताक़ ताबिश क़सूरी, शिक्षक फ़ारसी विभाग जामिया निज़ामिया लाहौर पृष्ठ:** __ ६८८ **प्रकाशन:** __ ज़िलक़ादा १४१८ हिजरी / मार्च १९९८ ईस्वी **प्रेस:** ___ **प्रकाशक:** ___ रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरूनी लोहारी दरवाज़ा, लाहौर **मूल्य:** _____

मिलने के पते: * रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरूनी लोहारी दरवाज़ा, लाहौर ०३००/९४१५३०० ७६६५७७२ * मकतबा अहले सुन्नत जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरूनी लोहारी दरवाज़ा, लाहौर * ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशंस, गंज बख़्श रोड, लाहौर * शब्बीर ब्रदर्स, ४०-बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर

جلد سیز دہم ۱۳ فتاویٰ رضویہ (جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں) کتاب ___ فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم تصنیف ____ **شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ترجمہ عربی عبارات _ حضرت علامہ مفتی محمد خان قادری، لاہور پیش لفظ __ حافظ عبد الستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور ترتیب فہرست** __ حافظ عبد الستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور تخریج و تصحیح ____ مولانا نذیر احمد سعیدی، مولانا محمد اکرم اللہ بٹ باہتمام و سرپرستی __ مولانا مفتی محمد عبد القیوم ہزاروی ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس اہلسنت، پاکستان کتابت ____ **محمد شریف گل، کٹریال کلاں (گوجرانوالہ) پیسٹنگ ___ مولانا محمد مشتاق تابش قصوری معلم شعبہ فارسی جامعہ نظامیہ لاہور صفحات __ ۶۸۸ اشاعت __ ذیقعد ۱۴۱۸ھ/ مارچ ۱۹۹۸ء مطبع ___ ناشر ___ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور قیمت _____**

ملنے کے پتے * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور ۰۳۰۰/۹۴۱۵۳۰۰ ۷۶۶۵۷۷۲ * مکتبہ اہلسنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور * شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور

Fatawa Razwiya, Volume Thirteen

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Preface

Praise be to Allah. The institution established in March 1988 under the name of 'Foundation' at Darul Uloom Jamia Nizamia Lahore to bring the scholarly treasures and jurisprudential reserves of Ala Hazrat, Imam of Muslims, Maulana Shah Ahmad Raza Khan Fazil Barelvi (mercy of Allah be upon him), to the public in a modern style in accordance with contemporary requirements, is progressing towards its goal by completing the evolutionary stages of the proposed plan with extreme success and lightning speed. So far, the institution has published several works of Imam Ahmad Raza (may mercy be upon him), but the greatest feat of this institution is the publication of 'Al-Ataya al-Nabawiyya fil-Fatawa al-Radawiyya', famously known as 'Fatawa Razwiya', in an excellent and beautiful manner with translation and verification. The publication of the said Fatawa began in Shaban-ul-Muazzam 1410 AH / March 1990 AD, and by the grace of Allah Almighty (glory be to Him) and the kindness of His Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him), within a short span of about eight years, thirteen (13) volumes containing Kitab-at-Taharah (Book of Purification), Kitab-as-Salah (Book of Prayer), Kitab-al-Jana'iz (Book of Funerals), Kitab-az-Zakat (Book of Almsgiving), Kitab-as-Sawm (Book of Fasting), Kitab-an-Nikah (Book of Marriage), Kitab-at-Talaq (Book of Divorce), Kitab-al-Iman (Book of Faith), and Kitab-al-Hudood wal-Ta'zir (Book of Punishments and Penalties) have been published. Their details in terms of years, contents, and total pages are as follows:

फ़तावा रज़विया, खंड तेरह (13)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

प्रस्तावना

अल्लाह की प्रशंसा हो। मुसलमानों के इमाम, मौलाना शाह अहमद रज़ा खान फ़ाज़िल बरेलवी (अल्लाह की उन पर रहमत हो) के ज्ञान के खज़ानों और फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय) भंडारों को समकालीन आवश्यकताओं के अनुसार आधुनिक शैली में प्रकाश में लाने के लिए मार्च 1988 में दारुल उलूम जामिया निज़ामिया लाहौर में 'फाउंडेशन' के नाम से जो संस्थान स्थापित किया गया था, वह अत्यंत सफलता और तीव्र गति से प्रस्तावित योजना के विकासात्मक चरणों को पूरा करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। अब तक संस्थान इमाम अहमद रज़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) की कई रचनाएँ प्रकाशित कर चुका है, लेकिन इस संस्थान का सबसे बड़ा कार्य 'अल-अतया अल-नबविया फिल-फ़तावा अल-रदविया' जिसे 'फ़तावा रज़विया' के नाम से जाना जाता है, का अनुवाद और संदर्भ के साथ उत्कृष्ट और सुंदर तरीके से प्रकाशन है। उक्त फ़तावा का प्रकाशन शाबान-उल-मुअज़्ज़म 1410 हिजरी / मार्च 1990 ईस्वी में शुरू हुआ था, और अल्लाह ताला के अनुग्रह और उसके महान रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की कृपा से लगभग आठ वर्षों की संक्षिप्त अवधि में किताब-अत-तहारत, किताब-अस-सलात, किताब-अल-जनाइज़, किताब-अज़-ज़कात, किताब-अस-सौम, किताब-अन-निकाह, किताब-अत-तलाक, किताब-अल-ईमान और किताब-अल-हुदूद वत-ताज़ीर पर आधारित तेरह (13) खंड प्रकाशित हो चुके हैं, जिनका विवरण वर्ष, सामग्री और कुल पृष्ठों के आधार पर निम्नानुसार है:

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیش لفظ

الحمد للہ اعلیٰ حضرت امام المسلمین مولانا شاہ احمد رضا خاں فاضل بریلوی رحمۃ اللہ علیہ کے خزائن علمیہ اور ذخائر فقہیہ کو جدید انداز میں عصر حاضر کے تقاضوں کے عین مطابق منظر عام پر لانے کے لئے دارالعلوم جامعہ نظامیہ لاہور میں فاؤنڈیشن کے نام سے جو ادارہ مارچ ۱۹۸۸ء میں قائم ہوا تھا وہ انتہائی کامیابی اور برق رفتاری سے مجوزہ منصوبہ کے ارتقائی مراحل کو طے کرتے ہوئے اپنے ہدف کی طرف بڑھ رہا ہے۔ اب تک ادارہ امام احمد رضا علیہ الرحمۃ کی متعدد تصنیف شائع کر چکا ہے، مگر اس ادارے کا عظیم ترین کارنامہ العطایا النبویہ فی الفتاوی الرضویہ المعروف بہ فتاویٰ رضویہ کی ترجمہ و تخریج کے ساتھ عمدہ و خوبصورت انداز میں اشاعت ہے۔ فتاویٰ مذکورہ کی اشاعت کا آغاز شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء میں ہوا تھا اور بفضلہٖ تعالیٰ جل مجدہ و بعنایتہ رسولہ الکریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اب تک تقریباً آٹھ سال کے مختصر عرصہ میں کتاب الطہارۃ، کتاب الصلوۃ، کتاب الجنائز، کتاب الزکوۃ، کتاب الصوم، کتاب النکاح، کتاب الطلاق، کتاب الایمان اور کتاب الحدود والتعزیر پر مشتمل تیرہ ۱۳ جلدیں شائع ہو چکی ہیں، جن کی تفصیل سنین، مشمولات اور مجموعی صفحات کے اعتبار سے حسب ذیل ہے:

Fatawa Razawiya

Thirteenth Volume

Volume	Title	Answers to Questions	Number of Treatises	Publication Year	Pages
First Volume	Book of Purification	22	11	Sha'ban 1410 AH / March 1990 AD	838
Second Volume	Book of Purification	33	7	Rabi' al-Thani 1412 AH / November 1991 AD	710
Third Volume	Book of Purification	59	6	Sha'ban 1412 AH / February 1992 AD	756
Fourth Volume	Book of Purification	132	5	Rajab 1413 AH / January 1993 AD	760
Fifth Volume	Book of Prayer	140	6	Rabi' al-Awwal 1414 AH / September 1993 AD	692
Sixth Volume	Book of Prayer	454	4	Rabi' al-Awwal 1415 AH / August 1994 AD	736
Seventh Volume	Book of Prayer	269	7	Rajab 1415 AH / December 1994 AD	720
Eighth Volume	Book of Prayer	337	6	Muharram 1416 AH / June 1995 AD	664
Ninth Volume	Book of Funerals	273	13	Dhu al-Qi'dah 1416 AH / April 1996 AD	936
Tenth Volume	Book of Zakat, Fasting, Hajj	316	16	Rabi' al-Awwal 1417 AH / August 1996 AD	832
	Book of Marriage	459	6		736

Volume	Title	Answers to Questions	Number of Treatises	Publication Year	Pages
Eleventh Volume				Muharram 1418 AH / May 1997 AD	
Twelfth Volume	Book of Marriage, Divorce	328	3	Rajab 1418 AH / November 1997 AD	688
Thirteenth Volume	Book of Divorce, Oaths and Prescribed Punishments	293	2	Dhu al-Qi'dah 1418 AH / March 1998 AD	688

Thirteenth Volume This volume consists of answers to 293 questions from the chapter on 'Conditional Divorce' (Ta'liq al-Talaq) of Fatawa Razawiya Volume 5 to the end of Volume 5. The translation of the Arabic and Persian passages of this volume has been done by the humble author (may Allah forgive him) by the grace and favor of Allah Almighty. Furthermore, a complete and detailed list of the issues and treatises of this volume, as well as a list of subsidiary issues, has been prepared by the author for the benefit of the readers. In addition to numerous subsidiary issues and benefits, the following fourteen (14) topics are discussed in this volume: (1) Chapter on Conditional Divorce (2) Chapter on Ila' (Swearing off sexual relations) (3) Chapter on Khul' (Divorce initiated by the wife) (4) Chapter on Zihar (Likening wife to a forbidden relative) (5) Chapter on 'Iddah (Waiting period) (6) Chapter on Hidad (Mourning)

फ़तावा रज़विया

तेरहवां खंड

खंड	शीर्षक	प्रश्नों के उत्तर	शोध प्रबंधों की संख्या	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठ
पहला खंड	पवित्रता की पुस्तक (किताबुत तहारत)	22	11	शाबान 1410 हिजरी / मार्च 1990 ईस्वी	838
दूसरा खंड	पवित्रता की पुस्तक	33	7	रबीउल थानी 1412 हिजरी / नवंबर 1991 ईस्वी	710
तीसरा खंड	पवित्रता की पुस्तक	59	6	शाबान 1412 हिजरी / फरवरी 1992 ईस्वी	756
चौथा खंड	पवित्रता की पुस्तक	132	5	रजब 1413 हिजरी / जनवरी 1993 ईस्वी	760
पांचवां खंड	प्रार्थना की पुस्तक (किताबुस सलात)	140	6	रबीउल अव्वल 1414 हिजरी / सितंबर 1993 ईस्वी	692
छठा खंड	प्रार्थना की पुस्तक	454	4	रबीउल अव्वल 1415 हिजरी / अगस्त 1994 ईस्वी	736
सातवां खंड	प्रार्थना की पुस्तक	269	7	रजब 1415 हिजरी / दिसंबर 1994 ईस्वी	720
आठवां खंड	प्रार्थना की पुस्तक	337	6	मुहर्रम 1416 हिजरी / जून 1995 ईस्वी	664
नौवां खंड	अंत्येष्टि की पुस्तक (किताबुल जनाइज़)	273	13	ज़िल्कादा 1416 हिजरी / अप्रैल 1996 ईस्वी	936
दसवां खंड	ज़कात, रोज़ा, हज की पुस्तक	316	16	रबीउल अव्वल 1417 हिजरी / अगस्त 1996 ईस्वी	832
		459	6		736

खंड	शीर्षक	प्रश्नों के उत्तर	शोध प्रबंधों की संख्या	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठ
ग्यारहवां खंड	विवाह की पुस्तक (किताबुन निकाह)			मुहर्रम 1418 हिजरी / मई 1997 ईस्वी	
बारहवां खंड	विवाह, तलाक की पुस्तक	328	3	रजब 1418 हिजरी / नवंबर 1997 ईस्वी	688
तेरहवां खंड	तलाक, शपथ और दंड की पुस्तक	293	2	ज़िल्कादा 1418 हिजरी / मार्च 1998 ईस्वी	688

तेरहवां खंड यह खंड फ़तावा रज़विया खंड पांच के'बाबे तअ्लीकुल तलाक़' से खंड पांच के अंत तक 293 सवालों के जवाबों पर आधारित है। इस खंड के अरबी और फारसी लेखों का अनुवाद अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ और फ़ज़ल से इस गुनहगार लेखक (अफ़िअल्लाहु अन्हु) ने किया है। इसके अलावा इस खंड के मसलों और शोध पत्रों (रसाइल) की पूरी और विस्तृत सूची तथा सहायक मसलों की सूची भी लेखक ने पाठकों के फायदे के लिए तैयार कर दी है। कई सहायक मसलों और फायदों के अलावा इस खंड में निम्नलिखित चौदह (14) शीर्षकों पर चर्चा की गई है: (1) बाबे तअ्लीकुल तलाक़ (2) बाबे ईला (3) बाबे खुलअ (4) बाबे ज़िहार (5) बाबे इद्दत (6) बाबे हिदाद (शोक)

فتاویٰ رضویہ

تیرہویں جلد

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
پہلی جلد	کتاب الطہارۃ	۲۲	۱۱	شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء	۸۳۸
دوسری جلد	کتاب الطہارۃ	۳۳	۷	ربیع الثانی ۱۴۱۲ھ / نومبر ۱۹۹۱ء	۷۱۰
تیسری جلد	کتاب الطہارۃ	۵۹	۶	شعبان المعظم ۱۴۱۲ھ / فروری ۱۹۹۲ء	۷۵۶
چوتھی جلد	کتاب الطہارۃ	۱۳۲	۵	رجب المرجب ۱۴۱۳ھ / جنوری ۱۹۹۳ء	۷۶۰
پانچویں جلد	کتاب الصلوٰۃ	۱۴۰	۶	ربیع الاول ۱۴۱۴ھ / ستمبر ۱۹۹۳ء	۶۹۲
چھٹی جلد	کتاب الصلوٰۃ	۴۵۴	۴	ربیع الاول ۱۴۱۵ھ / اگست ۱۹۹۴ء	۷۳۶
ساتویں جلد	کتاب الصلوٰۃ	۲۶۹	۷	رجب المرجب ۱۴۱۵ھ / دسمبر ۱۹۹۴ء	۷۲۰

جلد	عنوان	جوابات اسئلہ	تعداد رسائل	سنین اشاعت	صفحات
آٹھویں جلد	کتاب الصلوٰۃ	۳۳۷	۶	محرم الحرام ۱۴۱۶ھ / جون ۱۹۹۵ء	۶۶۴
نویں جلد	کتاب الجنائز	۲۷۳	۱۳	ذیقعدہ ۱۴۱۶ھ / اپریل ۱۹۹۶ء	۹۳۶
دسویں جلد	کتاب زکوٰۃ، صوم، حج	۳۱۶	۱۶	ربیع الاول ۱۴۱۷ھ / اگست ۱۹۹۶ء	۸۳۲
گیارہویں جلد	کتاب النکاح	۴۵۹	۶	محرم الحرام ۱۴۱۸ھ / مئی ۱۹۹۷ء	۷۳۶
بارہویں جلد	کتاب نکاح، طلاق	۳۲۸	۳	رجب المرجب ۱۴۱۸ھ / نومبر ۱۹۹۷ء	۶۸۸
تیرہویں جلد	کتاب طلاق، ایمان اور حدود و تعزیر	۲۹۳	۲	ذیقعدہ ۱۴۱۸ھ / مارچ ۱۹۹۸ء	۶۸۸

تیرہویں جلد یہ جلد فتاویٰ رضویہ جلد پنجم کے باب تعلیق الطلاق سے جلد پنجم کے آخر تک ۲۹۳ سوالوں کے جوابات پر مشتمل ہے۔ اس جلد کی عربی و فارسی عبارات کا ترجمہ بتوفیق اللہ تعالیٰ وبفضلہ راقم پر تقصیر عفی اللہ عنہ نے کیا ہے۔ علاوہ ازیں اس جلد کے مسائل و رسائل کی مکمل و مفصل فہرست نیز مسائل ضمنیہ کی فہرست راقم نے افادہ قارئین کے لئے تیار کردی ہے۔ متعدد ضمنی مسائل و فوائد کے علاوہ اس جلد میں مندرجہ ذیل چودہ ۱۴ عنوانات زیر بحث لائے گئے

ہیں: (۱) باب تعلیق الطلاق (۲) باب الایلاء (۳) باب الخلع (۴) باب الظہار (۵) باب العدۃ (۶) باب الحداد (سوگ)

(7) Wife of the missing person (Zauja-e-Mafqud-ul-Khabar) (8) Chapter on Lineage (Babun Nasab) (9) Chapter on Custody (Birth) (Bab-ul-Hazanat) (10) Chapter on Maintenance (Bab-un-Nafaqa) (11) Book of Faith (Kitab-ul-Iman) (12) Chapter on Vows (Bab-un-Nazr) (13) Chapter on Atonement (Bab-ul-Kaffara) (14) Book of Prescribed Punishments and Discretionary Punishments (Kitab-ul-Hudood wat-Ta'zeer)

In addition to the above headings, the following two treatises containing extremely precise and rare research and investigations are also included in this volume:

(1) Akad al-Tahqiq bi-Bab al-Ta'liq (1322 AH): A powerful rebuttal to a Deobandi Mufti regarding the issue of suspension (Ta'liq). (2) Al-Jawhar al-Thamin fi 'Ilal Nazilat al-Yamin (1330 AH): An ijtihadi analysis and detailed discussion regarding a specific type of oath.

The query from Mr. Maulana Abdul Majeed Shanwiuri sent on 16 Muharram al-Haram 1321 AH from Noakhali district, Begumganj post office, Bengal, which was mentioned on page 590 of the old fifth volume of Fatawa Razawiya, as that same query became the cause for writing the treatise Akad al-Tahqiq bi-Bab al-Ta'liq, therefore, by changing the previous arrangement, this query and its answer have been placed before the aforementioned treatise in this volume so that both may be linked together. Another amendment made is that Kitab al-Mafqud (Book of the Missing Person), which was included in the sixth volume of the old Fatawa Razawiya and according to the order of jurisprudential chapters should have been there, but the few fatwas mentioned under it all happened to relate to the wife of a missing person. Therefore, for the convenience of the Mufti, it was deemed appropriate to remove Kitab al-Mafqud from there and include it in this volume under the title "Chapter: Wife of the Missing Person". Furthermore, a detailed fatwa by Ala Hazrat (mercy be upon him) which was not included in the old Fatawa Razawiya (in which a fatwa based on ignorance by Maulvi Ashraf Ali Thanwi was thoroughly refuted for multiple reasons and dozens of prominent scholars confirmed and endorsed it by affixing their seals) has been included in this volume, which you can see on page 711. Also, problem number 249 of this volume is actually problem number 60 of Fatawa Africa, which has been included in this volume due to its relevance to the Chapter of Vows.

○

Dhu al-Qi'dah 1418 AH Hafiz Muhammad Abdus Sattar Saeedi March 1998 AD
Director of Education, Jamia Nizamia Razvia, Lahore

(७) लापता व्यक्ति की पत्नी (ज़ौजा मफ़कूद अल-ख़बर) (८) वंश का अध्याय (बाब अन-नसब) (९) संरक्षण का अध्याय (जन्म) (बाब अल-हज़ानाह) (१०) भरण-पोषण का अध्याय (बाब अन-नफ़क़ह) (११) विश्वास की पुस्तक (किताब अल-ईमान) (१२) मन्नत का अध्याय (बाब अन-नज़्र) (१३) प्रायश्चित का अध्याय (बाब अल-कफ़्फ़ारा) (१४) दंड और विवेकाधीन दंड की पुस्तक (किताब अल-हुदूद वत-ताज़ीर)

उपरोक्त शीर्षकों के अतिरिक्त, अत्यंत सूक्ष्म और दुर्लभ शोधों और अन्वेषणों से युक्त निम्नलिखित दो शोध पत्र (रिसाले) भी इस खंड में शामिल हैं:

(१) अकदुत तहक़ीक़ बि-बाब अत्तअलीक़ (१३२२ हिजरी): तालीक़ के मसले में एक देवबंदी मुफ़्ती का जोरदार खंडन। (२) अल-जौहर अल-समीन फ़ी इलल नाज़िलत अल-यमीन (१३३० हिजरी): एक प्रकार की शपथ के बारे में इज्तिहादी विश्लेषण और उस पर विस्तृत चर्चा।

बंगाल के जिला नोआखली, डाकखाना बेगमगंज से १६ मुहर्रम अल-हराम १३२१ हिजरी को भेजे गए जनाब मौलाना अब्दुल मजीद शनव्यूरी के इस्तफ़्ता (प्रश्न), जिसका उल्लेख फ़तावा रज़विया पुराने पांचवें खंड के पृष्ठ ५९० पर था, क्योंकि वही इस्तफ़्ता रिसाला 'अकदुत तहक़ीक़ बि-बाब अत्तअलीक़' लिखने का कारण बना, इसलिए पिछली व्यवस्था में बदलाव करते हुए, इस खंड में इस इस्तफ़्ता और उसके उत्तर को उक्त रिसाले से पहले रखा गया है ताकि दोनों एक-दूसरे से जुड़ सकें। एक और संशोधन यह किया गया है कि 'किताब अल-मफ़कूद' (लापता व्यक्ति की पुस्तक), जो पुराने फ़तावा रज़विया के छठे खंड में दर्ज थी और फ़िक़्ही अध्यायों के क्रम के अनुसार वहीं होनी चाहिए थी, लेकिन उसके तहत जो कुछ फ़तवे दिए गए हैं, वे संयोग से सभी लापता व्यक्ति की पत्नी से संबंधित हैं। इसलिए, मुफ़्ती की सुविधा को देखते हुए यह उचित समझा गया कि किताब अल-मफ़कूद को वहां से हटाकर इस खंड में 'बाब ज़ौजा मफ़कूद अल-ख़बर' (अध्याय: लापता व्यक्ति की पत्नी) के शीर्षक के तहत शामिल कर दिया जाए। इसके अलावा, आला हज़रत (रहमतुल्लाह अलैह) का एक विस्तृत फ़तवा जो पुराने फ़तावा रज़विया में शामिल नहीं था (जिसमें कई कारणों से मौलवी अशरफ अली थानवी के अज्ञानता पर आधारित एक फ़तवे का ज़ोरदार खंडन किया गया है और दर्जनों प्रतिष्ठित विद्वानों ने इसकी पुष्टि और समर्थन करते हुए इस पर अपनी मुहरें लगाई हैं) इस खंड में शामिल कर लिया गया है जिसे आप पृष्ठ ७११ पर देख सकते हैं। साथ ही, इस खंड का मसला नंबर

२४९ वास्तव में फ़तावा अफ़्रीका का मसला नंबर ६० है जिसे बाब अन-नज़्र (मन्नत के अध्याय) के साथ प्रासंगिकता के कारण इस खंड में शामिल किया गया है।

○

ज़ीक़ादा १४१८ हिजरी हाफ़िज़ मोहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी मार्च १९९८ ईस्वी शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर

पृष्ठ ६८८ का ६

(۷) زوجۃ مفقود الخبر (۸) باب النَّسب (۹) باب الحضانۃ (پیدائش) (۱۰) باب النفقۃ (۱۱) کتاب الایمان (۱۲) باب النذر (۱۳) باب الکفارۃ (۱۴) کتاب الحدود والتعزیر

مندرجہ بالا عنوانات کے علاوہ انتہائی دقیق اور نادر تحقیقات و تدقیقات پر مشتمل مندرجہ ذیل دو ۲ رسائل بھی اس جلد میں شامل ہیں:

(۱) اکد التحقیق بباب التعلیق (۱۳۲۲ھ) مسئلہ تعلیق میں ایک دیوبندی مفتی کا ردِ بلیغ (۲) الجوھر الثمین فی علل نازلۃ الیمین (۱۳۳۰ھ) ایک نوع کی قسم کے بارے میں اجتہادی تجزیہ اور اس پر تفصیلی بحث

بنگالہ ضلع نواکھالی ڈاکخانہ بیگم گنج سے ۱۶ محرم الحرام ۱۳۲۱ھ کو ارسال کردہ جناب مولانا عبدالمجید شنویوری کا استفتاء جو فتاویٰ رضویہ جلد پنجم قدیم کے صفحہ ۵۹۰ پر مذکور تھا، چونکہ وہی رسالہ اکد التحقیق بباب التعلیق کے معرضِ تحریر میں آنے کا موجب بنا لہٰذا ترتیب سابق میں تبدیلی کر کے جلد ہذا میں اس استفتاء و جواب استفتاء کو رسالہ مذکورہ سے پہلے کر دیا گیا تاکہ دونوں آپس میں مربوط ہو جائیں۔ ایک اور ترمیم یہ کی گئی ہے کہ کتاب المفقود جو کہ فتاویٰ رضویہ قدیم میں جلد سادس میں مندرج تھی اور ابواب فقہیہ کی ترتیب کے اعتبار سے اس کو وہاں پر ہی ہونا چاہئے تھا مگر اس کے تحت جو چند فتوے مذکور ہیں اتفاق سے وہ سب ہی زوجہ مفقود الخبر سے متعلق ہیں لہٰذا مفتی کی سہولت کے پیش نظر مناسب سمجھا گیا کہ کتاب المفقود کو وہاں سے نکال کر باب زوجہ مفقود الخبر کے عنوان سے جلد ہذا میں شامل کر دیا جائے، علاوہ ازیں اعلیٰحضرت علیہ الرحمہ کا ایک مفصل فتویٰ جو فتاویٰ رضویہ قدیم میں شامل

نہ تھا (جس میں متعدد وجوہ سے مولوی اشرف علی تھانوی کے جہالت پر مبنی ایک فتوے کا ردِ بلیغ کیا گیا اور بیسیوں جید علما کرام نے اس کی تصدیق و تائید فرماتے ہوئے اس پر مہریں ثبت فرمائی ہیں) جلد ہذا میں شامل کر لیا گیا ہے جس کو آپ صفحہ ۷۱۱ پر ملاحظہ فرما سکتے ہیں نیز جلد ہذا کا مسئلہ نمبر ۲۴۹ در اصل فتاویٰ افریقہ کا مسئلہ نمبر ۶۰ ہے جس کو باب النذر کی مناسبت سے اس جلد میں شامل کیا گیا ہے۔

○

ذیقعدہ ۱۴۱۸ھ حافظ محمد عبدالستار سعیدی مارچ ۱۹۹۸ء ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ ، لاہور

Fatawa Ridawiyya 13th Volume

Summary Index

5 Foreword 101 Chapter on Conditional Divorce (Taliq al-Talaq) 257 Chapter on Ila (Oath of Abstinence) 263 Chapter on Khula (Divorce initiated by wife) 267 Chapter on Zihar (Likening wife to a forbidden female relative) 291 Chapter on Iddat (Waiting Period) 327 Chapter on Hidad (Mourning) 335 Chapter on Wife of a Missing Person 349 Chapter on Lineage (An-Nasab) 383 Chapter on Custody (Al-Hidanah) (Upbringing) 415 Chapter on Maintenance (An-Nafaqah) 495 Book of Oaths (Kitab al-Ayman) 581 Chapter on Vows (An-Nadhr) 609 Chapter on Expiation (Al-Kaffarah) 613 Book of Prescribed Punishments and Discretionary Punishments (Kitab al-Hudud wa al-Ta'zir)

List of Treatises 155 Akad al-Tahqiq 511 Al-Jawhar al-Thamin

फ़तावा रज़विया १३ तेरहवीं जिल्द

संक्षिप्त अनुक्रमणिका

५ प्रस्तावना १०१ बाब ता'लीक़-ए-तलाक़ (तलाक की शर्त का अध्याय) २५७ बाब अल-ईला (पत्नी से अलग रहने की शपथ का अध्याय) २६३ बाब अल-खुल (पत्नी की ओर से तलाक का अध्याय) २६७ बाब अज़-ज़िहार (पत्नी की तुलना किसी महरम महिला से करना) २९१ बाब अल-इद्दत (प्रतीक्षा अवधि का अध्याय) ३२७ बाब अल-हिदाद (शोक का अध्याय) ३३५ बाब ज़ौजा-ए-मफ़क़ूदुल ख़बर (लापता व्यक्ति की पत्नी का अध्याय) ३४९ बाब अन-नसब (वंश/वंशावली का अध्याय) ३८३ बाब अल-हिज़ानत (पालन-पोषण/संरक्षण का अध्याय) ४१५ बाब अन-नफ़क़ा (खर्च और रखरखाव का अध्याय) ४९५ किताबुल ईमान (शपथ की पुस्तक) ५८१ बाब अन-नज़्र (मन्नत/मन्नत मानने का अध्याय) ६०९ बाब अल-कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित का अध्याय) ६१३ किताबुल हुदूद वत-ता'ज़ीर (दंड और विवेकाधीन सजा की पुस्तक)

शोध प्रबंधों की सूची १५५ अकदुल तहक़ीक़ ५११ अल-जौहरुल समीन

पृष्ठ ६८८ का ७

فتاوی رضویہ ۱۳ جلد سیزدہم

اجمالی فہرست

۵ پیش لفظ ۱۰۱ باب تعلیق الطلاق ۲۵۷ باب الایلاء ۲۶۳ باب الخلع ۲۶۷ باب الظہار ۲۹۱ باب العدۃ ۳۲۷ باب الحداد (سوگ) ۳۳۵ باب زوجہ مفقود الخبر ۳۴۹ باب النسب ۳۸۳ باب الحضانۃ (پرورش) ۴۱۵ باب النفقۃ ۴۹۵ کتاب الایمان ۵۸۱ باب النذر ۶۰۹ باب الکفارہ ۶۱۳ کتاب الحدود والتعزیر

فہرست رسائل ۱۵۵ ہا اکد التحقیق ۵۱۱ ہا الجوہر الثمین

صفحہ ۷ از ۶۸۸

Fatawa Rizwia | Volume 13 | Page 13

Detailed Contents

Chapter: Suspension of Divorce (Bab Ta'liq al-Talaq)

Page	Topic	Page	Topic
101	A mere oath of divorce does not cause divorce to occur; rather, it occurs after the fulfillment of the condition.	102	-
101	"If I take up the work of landlordship from Khalid, then my wife is divorced;" divorce became conditional/ suspended.	102	If an oath of divorce is taken, then the way for the marriage to remain intact is that either the condition does not occur, or if an oath of one or two revocable divorces was taken, then one should revoke it after the occurrence of the condition.
101	There is a consensus among the Imams of religion that when divorce is made conditional on a requirement, it will occur upon the occurrence of that requirement.	103	If said before marriage: "If I marry a second time without the permission of my wife Hindah, then the second wife is given three divorces," this suspension/ condition is valid.
102	The noble verse 'Divorce is twice' (Al-Talaqu Marratan) includes both types of divorce, i.e., immediate (munjaz) and suspended/conditional (mu'allaq).	104	In the above-mentioned case, if he marries someone else before marrying Hindah, this condition will not affect it.
102	In Sharia terminology, conditional divorce (ta'liq) is called an oath (yameen) and a vow (halaf).	104	If he marries someone after the death of Hindah, this condition will not affect that either.
102		104	

Page	Topic
	Declaring something lawful as forbidden is an oath.
102	There is no expiation (kaffara) for taking an oath of divorce; rather, expiation is for taking an oath by Allah, the Almighty.

Page	Topic
	A deceased person is not capable of giving permission.
106	According to the Two Sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad), for an oath to remain valid, the possibility [of fulfillment] is a requirement, just as it is a requirement for the oath to be initially established.

फ़तावा रज़विया | खण्ड 13 | पृष्ठ 13

विस्तृत विषय-सूची

अध्याय: तालाक़ को शर्त पर लटकाना (बाब तालीक़ अल-तालाक़)

पृष्ठ	विषय
101	केवल तालाक़ की कसम खाने से तालाक़ नहीं होता, बल्कि शर्त पूरी होने के बाद होता है।
101	"अगर मैं खालिद से ज़मींदारी का काम कराऊं तो मेरी पत्नी को तालाक़;" तालाक़ मुअल्लक़ (निलंबित) हो गया।
101	धर्म गुरुओं (अइमा ए दीन) की इस बात पर सहमति है कि जब तालाक़ किसी शर्त पर टिकी हो, तो उस शर्त के होने पर तालाक़ हो जाएगा।
102	आयते करीमा 'तालाक़ दो बार है' (अत-तालाकु मर्रतान) में दोनों प्रकार के तालाक़ शामिल हैं, यानी तुरंत होने वाला (मुन्जज़) और शर्त पर टिका (मुअल्लक़)।
102	शरई शब्दावली में तालीक़ (शर्त लगाने) को यमीन और हलफ़ (कसम) कहा गया है।
102	हलाल को हराम करना यमीन (कसम) है।
102	-
102	तालाक़ की कसम खाई तो अब निकाह कायम रहने की सूरत यह है कि शर्त पूरी न हो, या अगर एक या दो रजाई तालाक़ की कसम खाई है तो शर्त पूरी होने के बाद रुजू (वापसी) कर ले।
103	निकाह से पहले कहा "अगर पत्नी हिन्द की इजाज़त के बिना दूसरा निकाह करूँ तो दूसरी पत्नी को तीन तालाक़", तो यह तालीक़ (शर्त) सही होगी।
104	ऊपर बताई गई सूरत में अगर हिन्द से निकाह करने से पहले किसी और से निकाह करे, तो उस पर यह शर्त असर नहीं करेगी।
104	हिन्द की मृत्यु के बाद किसी से निकाह करे तो यह शर्त उस पर भी असर नहीं करेगी।
104	मृत व्यक्ति अनुमति देने के योग्य नहीं है।
106	तरफैन (इमाम अबू हनीफा और इमाम मुहम्मद) के निकट यमीन के बने रहने के लिए

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
	तालाक़ की कसम खाने पर कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं है, बल्कि कफ़्फ़ारा अल्लाह अज़्जवजल की कसम खाने में है।		
पृष्ठ 9/688			[शर्त का] मुमकिन होना ज़रूरी है, जैसा कि यमीन के बंधने के लिए शर्त है।

مفصل فہرست

باب تعلیق الطلاق

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
۱۰۱	محض طلاق کی قسم سے طلاق واقع نہیں ہوتی بلکہ وقوع شرط کے بعد واقع ہوتی ہے۔	۱۰۲	-
۱۰۱	خالد سے زمینداری کا کام کراؤں تو میری عورت کو طلاق، طلاق معلق ہو گئی۔	۱۰۲	طلاق کی قسم کھائی تو اب نکاح قائم رہنے کی صورت یہ ہے کہ شرط واقع نہ ہو یا اگر ایک یا دو طلاق رجعی کی قسم کھائی ہے تو بعد وقوع شرط رجوع کرے۔
۱۰۱	ائمہ دین کا اجماع ہے کہ جب طلاق کسی شرط پر مشروط کی جائے تو اس شرط کے وقوع سے واقع ہو جائے گی۔	۱۰۳	نکاح سے قبل کہا "اگر زوجہ ہندہ کی اجازت کے بغیر نکاح ثانی کروں تو زوجہ ثانی کو تین طلاق" تعلیق صحیح ہو گئی۔
۱۰۲	آیہ کریمہ الطلاق مرتن میں طلاق دونوں قسموں یعنی منجز و معلق کو شامل ہے۔	۱۰۴	صورت مذکورہ بالا میں اگر ہندہ سے نکاح سے قبل کوئی اور عقد کرے اس پر یہ شرط اثر انداز نہ ہو گی۔

صفحہ	مضمون
۱۰۲	تعلیق کو اصطلاحات شرع میں یمین اور حلف کہا گیا ہے۔
۱۰۲	تحریم حلال یمین ہے۔
	طلاق کی قسم کھانے پر کفارہ نہیں
۱۰۲	بلکہ کفارہ اللہ عزوجل کی قسم میں ہے۔
۱۰۴	ہندہ کی موت کے بعد کسی سے عقد کرے یہ شرط اس پر بھی اثر انداز نہ ہو گی۔
۱۰۴	میت صالح اذن نہیں۔
	طرفین کے نزدیک بقائے یمین کے لئے امکان
۱۰۶	بر شرط ہے جیسا کہ انعقاد یمین کے لئے شرط ہے۔

Fatawa Razawiya Volume 13

- Page 104: If a person takes an oath not to give anything without someone's permission, and gives it after that person's death, he will not break the oath.
- Page 110: If a man tells his wife that "if I marry another woman during your lifetime, divorce is mandatory upon me," and then marries another woman, divorce will occur for one of them. The husband has the choice to direct it towards whichever he prefers.
- Page 104: If Hindah was divorced and then remarried without her permission, the divorce will take effect.
- Page 111: In speech, as long as implementation is possible, neglect should be avoided.
- Page 106: In conditional divorce (taliq), if there is no generalization, the condition becomes void after one instance.
- Page 112: In a marriage where the proposal was from the woman and the man accepted with a condition that "if I do not pay half the dowry upon demand, then three divorces," and it was not paid upon the wife's demand after marriage, then divorce occurred.
- Page 106: A condition made with a woman at the time of marriage: "if I marry a second time without your permission, you are thrice divorced." Before marriage, this condition is void. After marriage, it is a valid conditional divorce. However, if before the second marriage the woman was given one or two divorces and her waiting period (iddat) ended, then divorce will not occur from the second marriage and the condition will cease. More details on this case.
- Page 113: Our Imams agree that 'Yameen Mudaf' (attributed oath) is established; the narration of its non-occurrence is weak.
- Page 106: Explicit divorce (Sarih) during the waiting period also applies to explicit (Sarih) and irrevocable (Bain) divorce.
- Page 113: Zahidi is not a reliable narrator.
- Page 106: Explicit divorce (Sarih) is that which does not require intention, whether it is irrevocable (Bain) or revocable (Raj'i).
- Page 113: It is not permissible to give fatwa based on rare (shadh) and discarded narrations.
- Page 107: A husband said to his wife: "If you enter this house, you are thrice divorced," then said "You are given three divorces." Now the woman married

another man and entered the house, then after 'Halala' she came back to his marriage and entered the house; divorce will not occur.

- Page 114: In 'Yameen Mudaf', if different conditions were hung (mullaq), remarriage can occur without Halala.
- Page 110: "If I marry a second time without the first wife's permission, my marriage is void." In this case, if the condition is valid, divorce will occur for the second wife.
- Page 114: A way for divorce not to occur in 'Yameen Mudaf'.
- Page 114: Words of condition and their ruling.

फतावी रज़विया जिल्द 13

- पृष्ठ 104: यदि किसी व्यक्ति ने शपथ ली कि वह किसी व्यक्ति की अनुमति के बिना कुछ नहीं देगा, और उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद देता है, तो उसकी शपथ नहीं टूटेगी।
- पृष्ठ 110: यदि पत्नी से कहा गया कि "यदि मैं तुम्हारे जीवनकाल में किसी अन्य से विवाह करूँ तो मुझ पर तलाक अनिवार्य है," और फिर दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया, तो दोनों में से एक को तलाक हो जाएगा। पति को अधिकार है कि वह जिसे चाहे तलाक दे दे।
- पृष्ठ 104: हिंदा को तलाक देकर उसकी अनुमति के बिना दूसरा विवाह किया, तो तलाक प्रभावी हो जाएगा।
- पृष्ठ 111: बातचीत में, जब तक क्रियान्वयन संभव हो, उपेक्षा से बचना चाहिए।
- पृष्ठ 106: सशर्त तलाक (ता'लीक़) में यदि सामान्यीकरण न हो, तो एक बार के बाद शर्त समाप्त हो जाती है।
- पृष्ठ 112: विवाह में प्रस्ताव स्त्री की ओर से था और पुरुष ने स्वीकार करते समय यह शर्त रखी कि "यदि माँगने पर आधा मेहर न चुकाऊँ तो तीन तलाक," और विवाह के बाद पत्नी की माँग पर भुगतान नहीं किया गया, तो तलाक हो गया।
- पृष्ठ 106: विवाह के समय स्त्री से यह शर्त रखी गई: "यदि मैं तुम्हारी अनुमति के बिना दूसरा विवाह करूँतो तुम्हें तीन तलाक।" विवाह से पहले यह शर्त व्यर्थ है। विवाह के बाद यह वैध सशर्त तलाक है। लेकिन यदि दूसरे विवाह से पहले स्त्री को एक या दो तलाक दिए गए और उसकी इद्दत समाप्त हो गई, तो अब दूसरे विवाह से तलाक नहीं होगा और शर्त समाप्त हो जाएगी। इस मामले का और विवरण।
- पृष्ठ 113: हमारे इमामों का मत है कि 'यमीन मुदाफ' (आरोपित शपथ) स्थापित है; इसके न होने का वर्णन कमजोर है।
- पृष्ठ 106: इद्दत के दौरान स्पष्ट तलाक (सरीह) स्पष्ट और स्थायी (बाइन) तलाक दोनों पर लागू होता है।
- पृष्ठ 113: जाहिदी एक विश्वसनीय कथावाचक नहीं है।
- पृष्ठ 106: स्पष्ट तलाक (सरीह) वह है जिसमें नीयत की आवश्यकता नहीं होती, चाहे वह स्थायी (बाइन) हो या प्रतिसंहरणीय (रजई)।
- पृष्ठ 113: दुर्लभ (शाज़) और त्यागी गई कथाओं पर फतवा देना जायज़ नहीं है।

- पृष्ठ 107: एक पति ने अपनी पत्नी से कहा: "यदि तुम इस घर में घुसीं, तो तुम्हें तीन तलाक," फिर कहा "तुम्हें तीन तलाक हैं।" अब उस स्त्री ने दूसरे पुरुष से विवाह किया और घर में घुसी, फिर 'हलाला' के बाद पुनः उसके निकाह में आई और घर में घुसी; तो तलाक नहीं होगा।
- पृष्ठ 114: 'यमीन मुदाफ' में, यदि विभिन्न शर्तें रखी गई हैं, तो हलाला के बिना पुनः विवाह हो सकता है।
- पृष्ठ 110: "यदि मैं पहली पत्नी की अनुमति के बिना दूसरा विवाह करूँ तो मेरा निकाह अमान्य है।" इस मामले में, यदि शर्त सही है, तो दूसरी पत्नी को तलाक हो जाएगा।
- पृष्ठ 114: 'यमीन मुदाफ' में तलाक न होने का एक तरीका।
- पृष्ठ 114: शर्त के शब्द और उनके नियम।

पृष्ठ 688 का 10

۱۰۴ ۔ کسی شخص نے قسم کھائی کہ فلاں کے اذن کے بغیر کچھ نہ دے گا تو فلاں کے مرنے کے بعد اگر دے گا تو حانث نہ ہوگا۔ ۱۱۰ ۔ اگر بیوی سے کہا کہ زندگی میں تجھ پر غیر سے نکاح کروں تو مجھ پر طلاق واجب، پھر دوسری عورت سے نکاح کر لیا تو دونوں میں سے ایک کو طلاق ہوگئی۔ شوہر کو اختیار ہے جس کی طرف چاہے پھیر دے۔ ۱۰۴ ۔ ہندہ کو طلاق دے کر دوسرا نکاح اس کی اجازت کے بغیر کیا، طلاق واقع ہو جائے گی۔ ۱۱۱ ۔ کلام میں جب تک اعمال ممکن ہوا ہمال سے احتراز چاہئے۔ ۱۰۶ ۔ تعلیق میں تعمیم نہ ہو تو ایک بار کے بعد شرط کالعدم ہو جاتی ہے۔ ۱۱۲ ۔ نکاح میں ایجاب عورت کی طرف سے تھا قبول میں مرد نے یہ شرط لگائی، اگر عند الطلب نصف مہر نہ ادا کردوں تو تین طلاق، بعد نکاح زوجہ کے طلب پر ادا نہ کیا تو طلاق واقع ہوگئی۔ ۱۰۶ ۔ بوقت نکاح عورت سے یہ شرط کی، اگر بے تیری اجازت سے دوسرا نکاح کروں تو تجھ کو تین طلاق، نکاح سے قبل یہ شرط لغو ہے اور نکاح کے بعد یہ شرط ہو تو تعلیق صحیح ہے لیکن اگر نکاح ثانی سے قبل عورت کو ایک یا دو طلاق دی اور عدت ختم ہو گئی تو اب دوسرے نکاح سے طلاق نہ پڑے گی اور تعلیق ختم ہو جائے گی، اس صورت کی مزید تفصیل۔ ۱۱۳ ۔ ہمارے ائمہ کا اتفاق ہے کہ یمین مضاف منعقد ہے عدم وقوع کی روایت ضعیف ہے۔ ۱۰۶ ۔ طلاق صریح عدت کے اندر صریح کو بھی لاحق ہو جاتی ہے اور بائن کو۔ ۱۱۳ ۔ زاہدی قابلِ اعتماد راوی نہیں۔ ۱۰۶ ۔ طلاق صریح یہ ہے کہ محتاجِ نیت نہ ہو چاہے بائن ہو یا رجعی۔ ۱۱۳ ۔ روایاتِ شاذہ ساقطہ پر فتویٰ دینا جائز نہیں۔ ۱۰۷ ۔ شوہر نے بیوی کو کہا اگر تو اس گھر میں داخل ہوئی تو تجھے تین طلاق، پھر کہا تجھے تین طلاقیں ہیں، اب عورت نے دوسرے سے نکاح کیا اور گھر میں داخل ہوئی، پھر حلالہ کے بعد دوبارہ اس کے نکاح میں آئی اور گھر میں داخل ہوئی تو

طلاق نہ ہو گی۔ ۱۱۴ ۔ یمین مضاف میں اگر متفرق معلق کیا ہے تو بے حلالہ دوبارہ شادی ہوسکے گی۔ ۱۱۰ ۔ اگر بے اجازت زوجہ اولیٰ نکاح ثانی کروں تو میرا نکاح باطل، اس صورت میں صحتِ تعلیق کی صورت میں دوسری کو طلاق واقع ہوگی۔ ۱۱۴ ۔ یمین مضاف میں طلاق واقع نہ ہونے کی ایک سبیل۔ ۱۱۴ ۔ الفاظِ شرط اور ان کا حکم۔

Fatawa Razawiyya Volume 13, 13

116 | If one says "If I eat my thing, it is divorce" and didn't intend for the wife, divorce won't occur by the husband eating the thing. | 122 | Description of the first ignorance among the ignorances of the Deobandi Mufti. 116 | Precautionary measure in the aforementioned issue. | 123 | In the discussion of divorce, in all cases, divorce occurs judicially except for those words that have the capacity for rejection and response. 117 | A powerful and reasoned strong refutation of a fatwa by a Deobandi Mufti based on error and explicit ignorance. | 123 | Description of the second ignorance. 117 | The word of the denier is considered valid, while witnesses are the responsibility of the claimant. | 123 | In the case of lack of attribution (idafat), if the husband denies intent under oath, divorce does not occur even with the word "divorce". 118 | The phrase "I will separate [her] from marriage" is merely a promise, and divorce does not occur from a promise. | 123 | Description of the third ignorance. 118 | Saying "Talaq mi kunam" (I am divorcing) causes divorce, unlike "Talaq kunam" (I will divorce). | 123 | Telling a woman to act as a judge in her own matter, in the sense that her ruling is enforceable like that of a Shariah ruler, is explicit ignorance. 118 | Description of the meanings of the word "Jawab" (Answer) and its being a metaphorical (kinayah) divorce. | 123 | Description of the fourth ignorance. 119 | A word that is suitable for rejection always requires intent, even in a state of anger or during a discussion of divorce. | 123 | Holding the defendant responsible for presenting evidence is a clear example of ignorance. 119 | There are three states: pleasure, anger, and discussion of divorce. | 124 | Description of the fifth ignorance. 119 | Metaphors (kinayat) are of three types. | 124 | In the pure Shariah, the punishment for a slanderer before the Sultan of Islam is eighty lashes. 119 | If the husband takes an oath of lack of intent for divorce in a "metaphorical" (kinayah) term, his word will be accepted. Neither the judge can rule for divorce in this case, nor can the woman consider herself divorced. | 124 | Slander against the pure Shariah is slander against Allah Almighty, which only a faithless person can do. 119 | In the case of a metaphor, the woman can also take an oath of lack of intent for divorce from the husband at home. | 124 | Description of the sixth ignorance. 120 | Lack of attribution (idafat) always prevents the ruling of divorce when the husband denies intent under oath. | 124 | Those who do not judge by what Allah has sent down are wrongdoers; those who do not judge by what Allah has sent down are transgressors; those who do not judge by what Allah has sent down are disbelievers. 120 | A few examples of divorce not occurring due to lack of attribution. | |

फ़तावा रज़विया खंड 13, १३

116 | "तो मेरी चीज़ खाए तो तलाक़ है" और पत्नी की नीयत न की हो तो पति की चीज़ खाने से तलाक़ वाक़े नहीं होगा। | 122 | देवबंदी मुफ्ती की अज्ञानताओं में से पहली अज्ञानता का वर्णन। 116 | उपरोक्त मसले में एहतियाती तदबीर। | 123 | मुज़ाकरा-ए-तलाक़ (तलाक़ की बातचीत) में सभी सूरतों में क़ज़ा-ए-तलाक़ वाक़े हो जाती है सिवाय उन अल्फ़ाज़ के जो रद्द-ओ-जवाब की सलाहियत रखते हों। 117 | एक देवबंदी मुफ्ती के ग़लत और स्पष्ट अज्ञानता पर आधारित फ़तवे का ज़ोरदार और दलीलपूर्ण खंडन। | 123 | दूसरी अज्ञानता का वर्णन। 117 | इंकार करने वाले का कथन विश्वसनीय होता है जबकि गवाह दावेदार की ज़िम्मेदारी होते हैं। | 123 | 'अदम इज़ाफ़त' (संबोधन न होने) की स्थिति में यदि पति नीयत का इंकार करे तो शब्द 'तलाक़' से भी वाक़े नहीं होती। 118 | यह शब्द कि "निकाह से अलग कर दूँगा" यह महज़ वादा है और वादे से तलाक़ वाक़े नहीं होती। | 123 | तीसरी अज्ञानता का वर्णन। 118 | "तलाक़ मी कुनम" कहने से तलाक़ हो जाती है, "तलाक़ कुनम" के विपरीत। | 123 | औरत को खुद अपने मामले में इस अर्थ में क़ाज़ी बताना कि उसका हुक्म हाकिम-ए-शरअ की तरह नाफ़िज़ है, स्पष्ट अज्ञानता है। 118 | शब्द "जवाब" के अर्थ और उसके किनाया-ए-तलाक़ होने का वर्णन। | 123 | चौथी अज्ञानता का वर्णन। 119 | जो शब्द रद्द के योग्य हो, वह हर हाल में नीयत का मोहताज है, चाहे क्रोध की स्थिति हो या तलाक़ की चर्चा की स्थिति हो। | 123 | प्रतिवादी (मुद्दआ अलैह) को गवाही पेश करने के लिए ज़िम्मेदार ठहराना अज्ञानता का स्पष्ट नमूना है। 119 | तीन स्थितियाँ हैं: रज़ा, क्रोध और तलाक़ की चर्चा। | 124 | पाँचवीं अज्ञानता का वर्णन। 119 | किनायात (इशारे) तीन प्रकार के होते हैं। | 124 | शरअ-ए-मुतह्हरा में तोहमत लगाने वाले (मुफ़्तरी) की सज़ा सुल्तान-ए-इस्लाम के यहाँ अस्सी कोड़े हैं। 119 | शब्द "किनाया" में यदि पति तलाक़ की नीयत न होने की क़सम खाए तो उसकी बात मान ली जाएगी, न क़ाज़ी इस स्थिति में तलाक़ का हुक्म दे सकता है और न ही औरत अपने आप को तलाक़शुदा समझ सकती है। | 124 | शरीअत-ए-मुतह्हरा पर इफ़्तरा (झूठा आरोप) अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल पर इफ़्तरा है जो बेईमान ही कर सकता है। 119 | किनाया की स्थिति में तलाक़ की नीयत न होने की क़सम औरत पति से घर में भी ले सकती है। | 124 | छठी अज्ञानता का वर्णन। 120 | 'अदम इज़ाफ़त' हमेशा तलाक़ के हुक्म में बाधक है जबकि पति हलफ़िया (शपथपूर्वक) नीयत का इंकार करे। | 124 | जो अल्लाह तआला के उतारे हुए पर फ़ैसला न करें वे ज़ालिम हैं, जो अल्लाह तआला

के उतारे हुए पर फ़ैसला न करें वे फ़ासिक़ हैं, जो अल्लाह तआला के उतारे हुए पर फ़ैसला न करें वे काफ़िर हैं। 120 | 'अदम इज़ाफ़त' के कारण तलाक़ वाक़े न होने के कुछ उदाहरण। | |

पृष्ठ 11 का 688

۱۱۶ | تو میری چیز کھائے تو طلاق ہے اور زوجہ کی نیت نہ کی ہو تو شوہر کی چیز کھانے سے طلاق واقع نہ ہوگی۔ | ۱۲۲ | دیوبند مفتی کی جہالتوں میں سے پہلی جہالت کا بیان۔ ۱۱۶ | مسئلہ مذکورہ میں احتیاطی تدبیر۔ | ۱۲۳ | مذاکرہ طلاق میں تمام صورتوں میں قضاء طلاق واقع ہو جاتی ہے سوائے ان الفاظ کے جو رد وجواب کی صلاحیت رکھتے ہوں۔ ۱۱۷ | ایک دیوبند مفتی کے غلط اور جہالت صریحہ پر مشتمل فتویٰ کا زور دار اور مدلل ردِ بلیغ۔ | ۱۲۳ | دوسری جہالت کا بیان۔ ۱۱۷ | قولِ منکر کا معتبر ہوتا ہے جبکہ گواہ مدعی کے ذمہ ہوتے ہیں۔ | ۱۲۳ | عدم اضافت کی صورت میں شوہر انکار نیت کرے تو لفظِ طلاق سے بھی واقع نہیں ہوتی۔ ۱۱۸ | یہ لفظ کہ "نکاح سے علیحدہ کردوں گا" یہ نرا وعدہ ہے اور وعدہ سے طلاق واقع نہیں ہوتی۔ | ۱۲۳ | تیسری جہالت کا بیان۔ ۱۱۸ | "طلاق می کنم" کہنے سے طلاق ہو جاتی ہے برخلاف طلاق کنم کے۔ | ۱۲۳ | عورت کو خود اپنے معاملے میں بائیں معنی قاضی بتانا کہ اس کا حکم مثلِ حاکم شرع نافذ ہے صریح جہالت ہے۔ ۱۱۸ | لفظ "جواب" کے معانی اور اس کے کنایہ طلاق ہونے کا بیان۔ | ۱۲۳ | چوتھی جہالت کا بیان۔ ۱۱۹ | جو کلمہ صالحِ رد ہو وہ مطلقاً ہر حال میں محتاج نیت ہے اگر چہ حالتِ غضب ہوا اگر چہ حالتِ مذاکرہ طلاق ہو۔ | ۱۲۳ | مدعا علیہ کو شہادت پیش کرنے کا ذمہ دار ٹھہرانا جہالت کا واضح نمونہ ہے۔ ۱۱۹ | حالات تین ہیں: رضا، غضب اور مذاکرہ طلاق۔ | ۱۲۴ | پانچویں جہالت کا بیان۔ ۱۱۹ | کنایات تین طرح کے ہیں۔ | ۱۲۴ | شرع مطہر میں مفتری کی سزا سلطانِ اسلام کے یہاں اسی کوڑے ہیں۔ ۱۱۹ | لفظ "کنایہ" میں شوھر عدم نیتِ طلاق کی قسم کھائے تو اس کی بات مان لی جائے گی، نہ قاضی اس صورت میں حکم طلاق دے سکتا ہے اور نہ ہی عورت اپنے آپ کو مطلقہ سمجھ سکتی ہے۔ | ۱۲۴ |

شریعت مطہرہ پر افتراء اللہ عزوجل پر افتراء ہے جو بے ایمان ہی کرسکتا ہے۔ ۱۱۹ | کنایہ کی صورت میں عدم نیت طلاق کی قسم شوہر سے عورت گھر میں بھی لے سکتی ہے۔ | ۱۲۴ | چھٹی جہالت کا بیان۔ ۱۲۰ | ترکِ اضافت ہمیشہ مانع حکم طلاق ہے جبکہ شوہر بحلف انکار نیت کرے۔ | ۱۲۴ | جو اللہ تعالیٰ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ ظالم ہیں، جو اللہ تعالیٰ کے اتارے پر حکم نہ کریں ہو فاسق ہیں، جو اللہ تعالیٰ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ کافر ہیں۔ ۱۲۰ | عدم اضافت کے سبب طلاق واقع نہ ہونے کی چند مثالیں۔ | |

Fatawa Razawiyya Volume 13 | Page 13

Topic	Page	Topic	Page
Those who gave fatwas without knowledge, they themselves went astray and led others astray as well.	124	Attestations of the Scholars of Bombay.	134
On one who gives a fatwa without knowledge, the angels of the earth and the heavens send curses.	125	Attestations of the Scholars of Pilibhit.	135
Mention of the seventh ignorance.	125	A ruling on 'taliq' (conditional divorce), an adjudication between the statements of the scholars.	137
Turning a wife away from her husband is the work of devils.	125	Conditional linking (taliq) is the connection of the content of a sentence with a later content, not a confusion of content with a later connection.	137
The exalted command of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is that whoever turns a wife away from her husband is not from our group.	125	Even if one intends an irrevocable divorce (ba'in) from an explicit (sarih) divorce, it will still result in a revocable (raj'i) divorce.	137
Attestations and endorsements of the venerable scholars and grand muftis.	126	A human being has no power to change the Shariah ruling.	137
Attestations of the Scholars of Badaun.	127	According to our scholars, the descent of the consequence occurs at the time of the fulfillment of the condition, as if the pronouncement of the consequence took place as an effective (munjaz) occurrence at that time.	138
	128		138

Topic	Page
Attestations of the Scholars of Shahjahanpur.	
Attestations of the Scholars of Delhi.	128
Attestations of the Scholars of Meerut.	129
Attestations of the Scholars of Ahmedabad.	129
An incident of a conversation between a person and the devil regarding the scholars of evil.	130
Attestations of the Scholars of Jabalpur.	131
Attestations of the Scholars of Moradabad.	132
The word 'jawab' is not a subject for divorce; it is a Hindi word used in several meanings, so understanding the meaning of irrevocable divorce specifically from it is a proof of lack of understanding.	133
Attestations of the Scholars of Lahore.	134
Explanation of a text from Durr al-Mukhtar.	
If I marry any woman other than you, then you will have such a divorce that you become the mistress of your own self, resulting in one irrevocable divorce (ba'in).	139
Irrevocable divorce (ba'in) does not occur from conditional linking (taliq) in an absolute sense.	141
If something is non-existent, its opposite exists.	143
If a husband said to his wife, "Divorce be upon you if I do not divorce you," then the divorce will occur at the time of death.	143
A marvelous point.	144
According to the Hanafis, the utility of words is not based on the literal meaning of an oath, but rather based on customary (urfi) meanings.	144
To the extent that goals and purposes exceed the benefit of the word, i.e., generality and absolute application do not include them, they are not taken into account.	144

फतावा रज़विया खंड 13 | पृष्ठ 13

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
जिन्होंने बिना ज्ञान के फतवा दिया, वे स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया।	124	बम्बई के विद्वानों के प्रमाणन।	134
जो बिना ज्ञान के फतवा देता है, उस पर धरती और आकाश के फरिश्ते लानत भेजते हैं।	125	पीलीभीत के विद्वानों के प्रमाणन।	135
सातवीं अज्ञानता का उल्लेख।	125	तालीक (शर्तिया तलाक) के एक मसले में विद्वानों के कथनों के बीच न्यायनिर्णय।	137
पत्नी को उसके पति से विमुख करना शैतानों का काम है।	125	तालीक, वाक्य की विषय-वस्तु का बाद की विषय-वस्तु से जुड़ाव है, न कि बाद के जुड़ाव के साथ विषय-वस्तु का भ्रम।	137
हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान है कि जो किसी पुरुष से उसकी पत्नी को विमुख करे, वह हमारे समूह से नहीं है।	125	स्पष्ट तलाक से यदि 'बाइन' की नीयत की जाए, तब भी रजई (परिवर्तनीय) ही होगा।	137
विद्वानों और मुफ्तीयों के प्रमाणन और समर्थन।	126	बंदा (मनुष्य) शरीयत के हुक्म को बदलने की शक्ति नहीं रखता।	137
बदायूँ के विद्वानों के प्रमाणन।	127	हमारे विद्वानों के अनुसार, शर्त पूरी होने के समय परिणाम का अवतरण इस प्रकार होता है मानो उस समय परिणाम का कथन प्रभावी रूप से हुआ हो।	138
शाहजहाँपुर के विद्वानों के प्रमाणन।	128	दुर्रे मुख्तार के एक उद्धरण का स्पष्टीकरण।	138
दिल्ली के विद्वानों के प्रमाणन।	128	यदि मैं तुम्हारे सिवा किसी और महिला से विवाह करूँतो तुम्हें ऐसा तलाक होगा कि तुम स्वयं की मालिक हो	139

विषय	पृष्ठ
मेरठ के विद्वानों के प्रमाणन।	129
अहमदाबाद के विद्वानों के प्रमाणन।	129
'उलमा-ए-सू' (बुरे विद्वानों) के बारे में एक व्यक्ति और शैतान के बीच बातचीत की घटना।	130
जबलपुर के विद्वानों के प्रमाणन।	131
मुरादाबाद के विद्वानों के प्रमाणन।	132
'जवाब' शब्द तलाक के लिए विषय नहीं है; यह एक हिंदी शब्द है जो कई अर्थों में प्रयुक्त होता है, अतः इससे विशेष रूप से तलाक-ए-बाइन का अर्थ समझना समझ की कमी का प्रमाण है।	133
लाहौर के विद्वानों के प्रमाणन।	134
जाओगी, इससे एक तलाक-ए-बाइन होगा।	
सामान्य रूप से तालीक (शर्त) से तलाक-ए-बाइन नहीं होता।	141
यदि कोई चीज़ अस्तित्वहीन है, तो उसका विपरीत अस्तित्व में होता है।	143
यदि पति ने पत्नी से कहा "तुझे तलाक यदि मैं तुझे तलाक न दूँ", तो मृत्यु के समय तलाक प्रभावी होगा।	143
एक अद्भुत नुक्ता।	144
हनफियों के अनुसार, शब्दों का लाभ शपथ के शाब्दिक अर्थ पर नहीं, बल्कि प्रथागत अर्थों पर आधारित होता है।	144
जहाँ तक लक्ष्य और उद्देश्य शब्द के लाभ से अधिक हों, यानी व्यापकता और निरपेक्षता भी उन्हें शामिल न करे, वे ध्यान में नहीं रखे जाते।	144

مضمون	صفحہ
جنہوں نے بے علم فتویٰ دیا وہ خود بھی گمراہ ہوئے اور دوسروں کو بھی گمراہ کیا۔	۱۲۴
جو بغیر علم کے فتویٰ دے اس پر زمین و آسمان کے فرشتے لعنت بھیجتے ہیں۔	۱۲۵
ساتویں جہالت کا بیان۔	۱۲۵
زوجہ کو شوہر سے برگشتہ بنانا شیاطین کا کام ہے۔	۱۲۵
حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمانِ عالی ہے کہ جو کسی مرد سے اس کی زوجہ کو برگشتہ کرے وہ ہمارے گروہ سے نہیں۔	۱۲۵
تصدیقات و تائیداتِ علماء کرام و مفتیانِ عظام	۱۲۶
تصدیقاتِ علماء بدایوں۔	۱۲۷
تصدیقاتِ علماء بمبئی۔	۱۳۴
تصدیقاتِ علماء پیلی بھیت۔	۱۳۵
ایک مسئلہ تعلیق میں اقوالِ علماء کے درمیان محاکمہ۔	۱۳۷
تعلیق ربط مضمون جملہ بمضمون آخر ہے نہ کہ خبط مضمون بربط آخر۔	۱۳۷
طلاق صریح سے بائن کی نیت کرے تب بھی رجعی ہی واقع ہوگی۔	۱۳۷
بندہ تغیر حکمِ شرع کی قدرت نہیں رکھتا۔	۱۳۷
ہمارے علماء کے نزدیک وقتِ حلولِ شرط سے نزولِ جزایوں ہوتا ہے کہ	۱۳۸

مضمون	صفحہ
تصدیقاتِ علماء شاہجہاں پور۔	۱۲۸
تصدیقاتِ علماء دہلی۔	۱۲۸
تصدیقاتِ علماء میرٹھ۔	۱۲۹
تصدیقاتِ علماء احمد آباد۔	۱۲۹
علماء سوء کے بارے میں ایک شخص اور شیطان کے درمیان گفتگو کا واقعہ۔	۱۳۰
تصدیقاتِ علماء جبلپور۔	۱۳۱
تصدیقاتِ علماء مراد آباد۔	۱۳۲
در مختار کی ایک عبارت کی توضیح۔	۱۳۸
اگر میں تیرے سوا کسی اور عورت سے شادی کروں تو تجھ کو ایسی طلاق کہ تو اپنے نفس کی مالک ہو اس سے ایک طلاق بائن پڑے گی۔	۱۳۹
مطلقاً تعلیق سے طلاق بائن واقع نہیں ہوتی۔	۱۴۱
اگر کوئی شے معدوم ہو تو اس کی نقیض موجود ہوتی ہے۔	۱۴۳
اگر شوہر نے بیوی کو کہا تجھے طلاق اگر میں تجھے طلاق نہ دوں، تو بوقت موت طلاق واقع ہوگی۔	۱۴۳
ایک نکتہ بدیعیہ۔	۱۴۴
احناف کے نزدیک الفاظ کا مفاد لغوی مبنائے یمین نہیں بلکہ معانیِ عرفیہ پر بنائے کار ہے۔	۱۴۴

مضمون	صفحہ
لفظ جواب طلاق کے واسطے موضوع نہیں یہ ایک ہندی کلمہ ہے جو چند معنوں میں استعمال ہوتا ہے لہٰذا اس سے خاص کر طلاق بائن کا مفہوم سمجھنا دلیل نا فہمی ہے۔	۱۳۳
تصدیقاتِ علماء لاہور۔	۱۳۴
اغراض و مقاصد جس قدر مفاد لفظ سے زائد ہوں یعنی عموم و اطلاق بھی انہیں متناول نہ ہو ملحوظ نہیں ہوتے۔	۱۴۴

- (144) An extraneous, alien, or additional matter conventionally intended by the speaker through the conventional application of a word will not be considered unless there are specific objectives for specialization.
- (149) Zaid said to Amr, "Come eat with me." Amr said, "If I eat, my wife is divorced." The next day, he ate with Zaid; divorce will not occur.
- (144) The general indication of a word will be restricted based on a specific purpose; this is not a departure from the word's meaning, but rather a limitation to some of its meanings.
- (149) A man called his wife for intercourse; she refused. The husband said, "If you don't come to me in this room, you are divorced." She came, but by then the husband's desire had subsided; divorce occurred.
- (145) While bargaining, a buyer swore he wouldn't buy for ten. Later, he bought for eleven; he will be considered an oath-breaker (hanith).
- (149) The word 'in' (if) is for delay unless a context for immediacy is found.
- (145) A seller swore he wouldn't sell for ten. Later, he sold for eleven; he will not be an oath-breaker.
- (149) He swore to a ruler, "If a scoundrel comes to town and I don't inform you, my wife is divorced." A scoundrel came, and he didn't inform the ruler at the time when that ruler had been dismissed; divorce occurred.
- (145) Sale 'bi-al-ashara' (with ten) is of two types: one is simple sale with ten, and the other is sale with ten joined/conjoined.
- (150) A creditor took an oath from a debtor: "I will not go out without your permission." This oath remains as long as the debt exists; after payment or debt remission, permission is not needed.
- (146) Specification and restriction of a general term through custom ('urf) is permissible.
- (151) He swore that the wife would not go out without his permission. This is limited to the duration of the marriage.
- (147) Sometimes the speaker's intent from his speech is the literal or metaphorical meaning, and sometimes it's something outside the literal wording.
- (151) He swore he would not sell for ten, and he sold for eleven; he did not become an oath-breaker.
- (147) Specification (takhsis) is among the accidental properties of words.

- (151) Oaths are based on custom ('urf).
- (148) The inference of 'Yameen-e-Fawr' (immediate oath) was formulated by Imam Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him).
- (151) Non-existence without a previous existence is not fully realized.
- (148) All jurists are dependents of Abu Hanifa.
- (152) An indefinite noun in a negative statement becomes general.
- (148) Issues related to 'Yameen-e-Fawr' (immediate oath).
- (152) General negation does not remain true due to a partial affirmation.
- (148) A woman was about to go out; her husband said, "If you go out, you are divorced." She sat down and went out at another time; divorce will not occur.
- (152) A person told his wife after Maghrib prayer, "If you do not pray, you are twice divorced." After that, she did not pray Isha; as soon as the true dawn broke, two divorces fell upon her.

- (144) किसी शब्द के पारंपरिक उपयोग से यदि कोई बाहरी या अतिरिक्त बात पारंपरिक रूप से अभीष्ट हो, तो वह तब तक स्वीकार्य नहीं होगी जब तक कि विशेष उद्देश्य उसे विशिष्ट न बना दें।
- (149) ज़ैद ने अम्र से कहा, "आओ मेरे साथ खाना खा लो।" अम्र ने कहा, "अगर मैं खाऊं तो मेरी पत्नी को तलाक है।" अगले दिन उसने ज़ैद के साथ खाना खाया; तलाक नहीं होगा।
- (144) शब्द का सामान्य अर्थ किसी विशेष उद्देश्य के आधार पर सीमित हो जाएगा; यह शब्द के अर्थ से बाहर जाना नहीं है, बल्कि उसके कुछ अर्थों तक सीमित होना है।
- (149) पति ने पत्नी को संभोग के लिए बुलाया; उसने मना कर दिया। पति ने कहा, "अगर तुम इस कमरे में मेरे पास नहीं आईं तो तुम्हें तलाक है।" वह आई, लेकिन तब तक पति की इच्छा शांत हो चुकी थी; तलाक हो गया।
- (145) मोलभाव करते समय खरीदार ने कसम खाई कि वह दस में नहीं खरीदेगा। बाद में उसने ग्यारह में खरीदा; वह शपथ भंग करने वाला (हानिस) माना जाएगा।
- (149) 'इन' (अगर) शब्द देरी के लिए है जब तक कि तत्काल होने का कोई संकेत न मिले।
- (145) विक्रेता ने कसम खाई कि वह दस में नहीं बेचेगा। बाद में उसने ग्यारह में बेचा; वह शपथ भंग करने वाला नहीं होगा।
- (149) उसने एक शासक से शपथ ली, "अगर शहर में कोई बदमाश आए और मैं तुम्हें सूचित न करूंतो मेरी पत्नी को तलाक है।" एक बदमाश आया और उसने शासक को उस समय सूचित नहीं किया जब वह शासक पदमुक्त हो चुका था; तलाक हो गया।
- (145) 'बय बिल-अशरा' (दस के साथ बिक्री) दो प्रकार की होती है: एक सरल और दूसरी संयुक्त।
- (150) लेनदार ने देनदार से शपथ ली: "मैं तुम्हारी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाऊंगा।" यह शपथ ऋण रहने तक बनी रहेगी; ऋण चुकाने या माफ होने के बाद अनुमति की आवश्यकता नहीं है।
- (146) प्रथा ('उर्फ़) के माध्यम से सामान्य शब्द का विशिष्टीकरण और प्रतिबंध जायज है।
- (151) उसने कसम खाई कि पत्नी उसकी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाएगी। यह वैवाहिक संबंध रहने तक ही सीमित है।

- (147) कभी-कभी वक्ता का अपनी बात से उद्देश्य शाब्दिक या लाक्षणिक अर्थ होता है, और कभी-कभी शब्द से बाहर की कोई चीज़।
- (151) उसने कसम खाई कि वह दस को नहीं बेचेगा और ग्यारह को बेचा तो शपथ भंग नहीं हुई।
- (147) विशिष्टीकरण (तखसीस) शब्दों के आकस्मिक गुणों में से है।
- (151) शपथ की बुनियाद प्रथा ('उर्फ़) पर है।
- (148) 'यमीन-ए-फौर' (तत्काल शपथ) का निष्कर्ष इमाम आज़म अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने निकाला।
- (151) पूर्व अस्तित्व के बिना पूर्ण अभाव सिद्ध नहीं होता।
- (148) सभी फकीह अबू हनीफा के अनुयायी (आश्रित) हैं।
- (152) नकारात्मक वाक्य में अनिश्चित संज्ञा सामान्य हो जाती है।
- (148) 'यमीन-ए-फौर' से संबंधित मामले।
- (152) आंशिक सकारात्मकता के कारण पूर्ण नकारात्मकता सत्य नहीं रहती।
- (148) एक महिला बाहर जाने वाली थी; उसके पति ने कहा, "अगर तुम बाहर जाओगी तो तुम्हें तलाक है।" वह बैठ गई और किसी दूसरे समय बाहर गई; तलाक नहीं होगा।
- (152) एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से मग़रिब की नमाज़ के बाद कहा, "अगर तू नमाज़ न पढ़ेगी तो तुझे दो तलाक।" उसके बाद पत्नी ने ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी; सुबह सादिक होते ही उस पर दो तलाक हो गए।

- لفظ کی تناول عرفی سے اجنبی خارج و بیگانہ وزائد بات اگرچہ عرفاً مقصود وحالف ہو منظور نہ ہوگی مگر اغراض مخصص ضرور ہو سکتی ہیں۔ (۱۴۴)
- زید نے عمرو سے کہا آؤ میرے ساتھ کھانا کھالو، عمرو نے کہا میں کھاؤں تو میری عورت مطلقہ ہو، کل زید کے ساتھ کھانا کھایا طلاق نہ ہوگی۔ (۱۴۹)
- دلالت لفظ کہ عموم پر تھی بنظر غرض خاص پر مقصور ہو جائے گی یہ مدلول لفظ سے خروج نہیں بلکہ بعض مدلولات پر قصر ہے۔ (۱۴۴)
- عورت کو جماع کے لئے بلایا اس نے انکار کیا، شوہر نے کہا اگر میرے پاس اس کوٹھڑی میں نہ آئے تو تجھ پر طلاق، عورت آئی مگر اس وقت شوہر کی شہوت ساکن ہو چکی تھی تو طلاق ہو گئی۔ (۱۴۹)
- کسی شے کا بھاؤ چکاتے وقت مشتری نے قسم کھائی کہ دس میں نہیں خریدے گا، پھر گیارہ میں خریدا تو حانث ہو جائے گا۔ (۱۴۵)
- کلمہ ان تراخی کے لئے ہے جب تک قرینہ فور نہ پایا جائے۔ (۱۴۹)
- بائع نے قسم کھائی کہ دس میں نہیں فروخت کریگا پھر گیارہ میں فروخت کیا تو حانث نہیں ہوگا۔ (۱۴۵)
- حاکم سے حلف کیا کہ اگر شہر میں کوئی بدمعاش آئے اور میں خبر نہ دوں تو میری عورت کو طلاق ہے، بدمعاش آیا اور اس نے حاکم کو خبر نہ دی اس وقت کہا جب وہ حاکم معزول ہو گیا تھا طلاق ہو گئی۔ (۱۴۹)
- بیع بالعشرۃ دو نوع پر ہے ایک بیع بعشرۃ مفردۃ اور دوسری بیع بعشرۃ مقرونہ۔ (۱۴۵)

- دائن نے مدیون سے حلف لیا کہ تیرے بے اذن باہر نہ جاؤں گا، یہ حلف بقاء دین تک رہے گا، بعد ادا یا ابراء اذن کی حاجت نہیں۔ (۱۵۰)
- عام کی تخصیص و تقیید عرف سے جائز ہے۔ (۱۴۶)
- قسم کھائی کہ عورت بے میرے اذن کے باہر نہ جائیگی یہ قیام زوجیت تک محدود ہے۔ (۱۵۱)
- غرض متکلم اپنی کلام سے کبھی تو کلام کا حقیقی یا مجازی معنی ہوتی ہے اور کبھی لفظ سے خارج کوئی شئی۔ (۱۴۷)
- قسم کھائی کہ دس کو نہ بیچوں گا اور گیارہ کو بیچا تو حانث نہ ہوا۔ (۱۵۱)
- تخصیص عوارض الفاظ میں سے ہے۔ (۱۴۷)
- یمین کی بناء عرف پر ہے۔ (۱۵۱)
- یمین فور کا استنباط امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا۔ (۱۴۸)
- عدم بے سلف کلی متحقق نہیں ہوتا۔ (۱۵۱)
- الفقہاء کلہم عیال لابی حنیفہ۔ (۱۴۸)
- نکرہ چیز نفی میں عام ہو جاتا ہے۔ (۱۵۲)
- یمین فور سے متعلقہ مسائل۔ (۱۴۸)
- عموم سلب بوجہ ایجاب جزئی صادق نہیں رہتا۔ (۱۵۲)
- عورت باہر جانے کو ہوئی شوہر نے کہا باہر جائے تو تجھ پر طلاق، عورت بیٹھ گئی اور دوسرے وقت باہر گئی طلاق نہ ہو گی۔ (۱۴۸)
- ایک شخص نے اپنی بیوی کو بعد نماز مغرب کہا کہ اگر تو نماز نہ پڑھے گی تو تجھے دو طلاق، بعدہ بیوی نے عشاء کی نماز نہیں پڑھی تو صبح صادق طلوع ہوتے ہی اس پر دو طلاقیں پڑ گئیں۔ (۱۵۲)

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Page	Sr. No.	Content	Content	Sr. No.	Page
169	152	If a man says to his wife 'if you skip a prayer you are divorced', and the woman intentionally misses one prayer, she is divorced, even if she performs that missed prayer later.	A forceful refutation of the fatwa of Deobandi Maulvi Wajihullah with twenty-five reasons.	152	169
170	153	The intent of the person making the oath will be considered, even if it contradicts the current circumstances.	The first error in the Deobandi fatwa.	153	170
170	153	A triple divorce (Mughallazah) does not make the woman permanently forbidden; however, she remains unable to remarry the first husband without Halala.	Changing the nature of a question after knowing the Sharia ruling is deceit and fraud.	153	170
171	155	Treatise: 'Akd al-Tahqiq bi-Bab al-Taliq' (A forceful rebuttal of a Deobandi cleric's fatwa on the issue of conditional divorce).	Second error.	155	171
171	156	Copy of the fatwa of Maulvi Wajihullah Deobandi, resident of Bengal.	Difference between 'Insha of Taliq' and 'Taliq of Insha'.	156	171
171	166	Response from the author (Ala Hazrat Imam Ahmad Raza Fazil Barelvi, may Allah have mercy on him).	Every retribution (Jaza) must follow (be in the future).	166	171
171	166	Once the third divorce is given, the wife becomes definitively forbidden; she cannot become lawful even through a new	Divorce is an attribute of the man in terms of issuance and of the woman in terms of occurrence.	166	171

Page	Sr. No.	Content	Content	Sr. No.	Page
		marriage contract until Halala is performed.			
172	167	A husband said to his wife: 'If you don't pray, you are twice divorced.' Later he says: 'I intended generality, meaning if you never pray at any point in your entire life, then you are twice divorced.' This stratagem is a lie and a purely corrupt excuse.	Third error.	167	172
172	167	When no divorce occurred, what's the question of reconciliation (ruju) and with whom?	A husband said to his wife: 'If you don't love me, you are divorced.' The wife replied: 'I love you.' Thus, no divorce occurred.	167	172
172	167	To say that the previous divorces become void by reconciliation are words of misguidance upon which only 'La hawla wa la quwwata illa billah...' can be recited.	A husband said to his wife: 'If I don't come back in three months and don't bring ten dinars, you are divorced.' He came back but didn't bring the dinars; she will be divorced.	167	172
172	169	The most wretched among people is the one who ruins his hereafter for the sake of others' worldly life.	A husband said to his wife: 'If you commit adultery, you are thrice divorced.' Then he gave her a divorce bā'in (irrevocable) and had intercourse with her during the waiting period (iddah). The oath was fulfilled and the triple divorce occurred.	169	172

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

पेज	क्रम सं.	विषय	विषय	क्रम सं.	पेज
169	152	पुरुष ने पत्नी से कहा 'तू नमाज़ छोड़ेगी तो तुझे तलाक', औरत ने एक नमाज़ जानबूझकर क़ज़ा की तो तलाक हो जाएगी, चाहे वह उस क़ज़ा को अदा भी कर ले।	देवबंदी मौलवी वजीहुल्लाह के फ़तवे का पच्चीस कारणों से ज़बरदस्त खंडन।	152	169
170	153	क़सम खाने वाले (हालिफ़) की नियत का ही एतबार होगा, चाहे वह वर्तमान परिस्थिति के विरुद्ध हो।	देवबंदी फ़तवे की पहली गलती।	153	170
170	153	तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा से औरत हराम-ए-अबदी नहीं होती, अलबत्ता बिना हलाला पहले पति के निकाह में आने योग्य नहीं रहती।	शरई हुक्म मालूम होने पर सवाल की सूरत बदलना मक्र और फ़रेब है।	153	170
171	155	रिसाला: 'अक़द-उत-तहक़ीक़ बि-बाब-इत-तअ़लीक़' (तअ़लीक़ के मसले में एक देवबंदी मौलवी के फ़तवे का ज़बरदस्त खंडन)।	दूसरी गलती।	155	171
171	156	मौलवी वजीहुल्लाह देवबंदी निवासी बंगाल के फ़तवे की नकल।	'इनशा-ए-तअ़लीक़' और 'तअ़लीक़-ए-इनशा' में फ़र्क।	156	171
171	166	लेखक (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि) की ओर से उत्तर।	हर जज़ा (बदले) का भविष्य (इस्तिक़बाल) में होना अनिवार्य है।	166	171
171	166	तीसरी तलाक दे दी तो अब औरत क़तई हराम हो गई, नए निकाह से भी तब तक		166	171

पेज	क्रम सं.	विषय	विषय	क्रम सं.	पेज
		हलाल नहीं हो सकती जब तक हलाला न हो जाए।	तलाक जारी होने के संदर्भ में पुरुष का और घटित होने के संदर्भ में औरत का गुण है।		
172	167	पति ने पत्नी से कहा: 'अगर तूने नमाज़ न पढ़ी तो तुझे दो तलाक।' बाद में कहता है कि मेरा उद्देश्य पूर्णता से था, यानी पूरी उम्र में कभी भी कोई नमाज़ न पढ़े तो तुझे दो तलाक। तो यह चाल झूठ और शुद्ध रूप से गलत बहाना है।	तीसरी गलती।	167	172
172	167	जब तलाक हुई ही नहीं, तो रुजूअ कैसा और किससे रुजूअ?	पति ने पत्नी से कहा: 'अगर तू मुझे नहीं चाहती तो तुझे तलाक।' औरत ने कहा: 'मैं चाहती हूँ', तो तलाक नहीं होगा।	167	172
172	167	यह कहना कि रुजूअ कर लेने से पिछली तलाकें बातिल हो जाती हैं, गुमराह करने वाले शब्द हैं जिन पर 'ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह...' ही पढ़ा जा सकता है।	पति ने अपनी पत्नी से कहा: 'अगर मैं तीन महीने में न आऊं और दस दीनार न लाऊं तो तुझे तलाक।' वह आ तो गया पर दीनार नहीं लाया, तो तलाक हो जाएगी।	167	172
172	169	लोगों में सबसे बदकिस्मत वह व्यक्ति है जो दूसरों की दुनिया के लिए अपनी आख़िरत बर्बाद कर दे।	पति ने पत्नी से कहा: 'अगर तू हरामकारी करे तो तुझे तीन तलाक।' फिर उसे तलाक़-ए-बाइना देकर इद्दत में उससे सहवास किया, तो क़सम पूरी हो गई और तीन तलाकें हो गईं।	169	172

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم

صفحہ نمبر	شمار نمبر	مضمون
۱۶۹	۱۵۲	مرد نے بیوی سے کہا تو نماز ترک کرے تو تجھے طلاق، عورت نے ایک نماز قصداً قضاء کی طلاق ہو جائے گی اگرچہ اس قضاء کو ادا بھی کرے۔
۱۷۰	۱۵۳	نیت حالف اگرچہ دلالت حال کے خلاف ہو اعتبار اس کا ہوگا۔
۱۷۰	۱۵۳	طلاق مغلظہ سے عورت حرامِ ابدی نہیں ہوتی البتہ بے حلالہ شوہر اول کے نکاح میں آنے کے قابل نہیں رہتی۔
۱۷۱	۱۵۵	رسالہ اکد التحقیق بباب التعلیق (مسئلہ تعلیق میں ایک دیوبندی مولوی کے فتویٰ کا ردِ بلیغ)
۱۷۱	۱۵۶	نقل فتویٰ مولوی وجیہ اللہ دیوبندی باشندہ بنگالہ۔
۱۷۱	۱۶۶	
نمبر صفحہ	نمبر شمار	مضمون
۱۷۱	۱۶۹	دیوبندی مولوی وجیہ اللہ کے فتویٰ کا پچیس وجوہ سے ردِ بلیغ۔
۱۷۱	۱۷۰	دیوبندی فتویٰ کی پہلی خطاء۔
۱۷۱	۱۷۰	حکم شرعی کے معلوم ہونے پر سوال کی صورت کو تبدیل کرنا مکر و فریب ہے۔
۱۷۱	۱۷۱	دوسری خطاء
۱۷۱	۱۷۱	انشائے تعلیق اور تعلیق انشاء میں فرق۔
۱۷۱	۱۷۱	ہر جزاء کو استقبال لازم ہے۔

نمبر صفحہ	نمبر شمار	مضمون
		جواب منجانب مصنف (اعلیٰحضرت امام احمد رضا فاضل بریلوی علیہ الرحمۃ)
		تیسری طلاق دے دی تو اب بیوی حرام
۱۷۱	۱۶۶	قطعی ہوگئی تجدید نکاح سے بھی حلال نہیں ہوسکتی تاوقتیکہ حلالہ نہ ہو جائے۔
		خاوند نے بیوی کو کہا اگر تو نے نماز نہ پڑھی تو تجھے دو طلاقیں بعدہ کہتا ہے کہ میں نے اس سے عموم کا ارادہ کیا ہے
۱۷۲	۱۶۷	یعنی تمام عمر کبھی کہیں کوئی نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاقیں، تو یہ حیلہ جھوٹ اور خالص فاسد بہانہ ہے۔
۱۷۲	۱۶۷	جب طلاق نہ ہوئی تو رجوع کیسا اور کس سے رجوع۔
		یہ کہنا کہ رجوع کر لینے سے پہلی
۱۷۲	۱۶۷	طلاقیں باطل ہو جاتی ہیں گمراہ کلمات

نمبر صفحہ	نمبر شمار	مضمون
		طلاق باعتبار صدورِ مرد کی
۱۷۱	۱۶۶	اور باعتبارِ وقوع عورت کی صفت ہے۔
۱۷۲	۱۶۷	تیسری خطاء۔
		خاوند نے بیوی کو کہا اگر تو مجھے نہیں چاہتی تو تجھے طلاق بیوی نے کہا میں چاہتی ہوں تو طلاق نہ ہو گی۔
		شوہر نے اپنی بیوی کو کہا
۱۷۲	۱۶۷	اگر میں تین ماہ میں نہ آؤں اور دس دینار نہ لاؤں تو

صفحہ نمبر	مضمون	صفحہ نمبر	مضمون
	ہیں جن پر "لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم" ہی پڑھا جاسکتا ہے۔		تجھے طلاق پس وہ آیا اور دینار نہ لایا تو طلاق ہو جائے گی۔
	لوگوں میں بد بخت ترین وہ شخص ہے		خاوند نے بیوی کو کہا اگر تو حرام کاری کرے تو تجھے تین طلاق، پھر اس کو طلاق
۱۶۹ ۱۷۲	جو دوسروں کی دنیا کے لئے اپنی آخرت برباد کردے۔	۱۶۹ ۱۷۲	بائنہ دے کر عدت میں اس سے وطی کی تو قسم ٹوٹ گئی اور تین طلاقیں ہو جائیں گی۔

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

Right Column: 172 - Fourth error. 173 - Fifth error. 173 - It is ignorance for the Deobandi Maulvi Wajihullah to believe that the absolute is divided into three types and then one of them into two; it's the ignorance of the Deobandi Mufti that he could not understand the text of Sharh Wiqayah. 173 - Sixth error. 174 - Seventh error. 174 - Eighth error. 174 - Ninth error. 174 - Restricting 'Yameen al-Faur' (oath of the moment) to anger and imbalance of temperament is a Deobandi innovation; otherwise, there is no trace of it in the books of the school of thought. 174 - A ruler swore an oath that if a rogue comes to the city and I don't punish you, then my wife is divorced; this is 'Yameen Faur'. Although there is no anger or provocation here. 175 - Tenth error. 175 - The verb is in the position of an indefinite noun, and an indefinite noun in the context of negation becomes general. 175 - General negation (Umum Salb) does not remain true due to partial affirmation (Ijab Juz'i). 176 - Eleventh error. 176 - Researchers have rejected some famous subtle investigations of Umdat-ul-Mudaqqiqeen Allama Syed Mir Zahid on many grounds. 176 - The subject of a natural proposition (qadiya tabiiya) is the locus of universality (kulliyat).

Left Column: 172 - Universality (Kulliyat) is among the secondary intelligibles (Ma'qulat-e-Thania). 176 - A natural proposition (Tabiiya) is mental, not external. 176 - The extracted (Muntaza') is subordinate to extraction (Intiza'), therefore it is not found without extraction even if the source of extraction (Muntaza' Minhu) is present. 177 - Twelfth error. 177 - Thirteenth error. 177 - In the level of 'Al-Shay al-Mutlaq' (The Absolute Thing), generality, universality, and absoluteness are considered. 177 - Fourteenth error. 177 - Achieving what is already achieved is futile (Tehsil-e-Hasil is batil). 177 - Fifteenth error. 178 - The corruption of the foundation (Mabni) leads to the corruption of the superstructure (Bana). 178 - Sixteenth error. 179 - Seventeenth error. 179 - A husband intended to have intercourse with his wife and said to her, "If you do not enter the room with me, you are divorced." Afterwards, the wife entered the room when the husband's desire had subsided; divorce will occur. If she entered before the desire subsided, divorce will not occur. 179 - 'Absolute entry' is the subject of a natural proposition, and it is not negated until all instances of entry are negated. 180 - Eighteenth error. 180 - The negation of a thing occurs when all its individual instances are negated.

Page 15 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

दाहिना स्तंभ: 172 - चौथी ग़लती। 173 - पांचवीं ग़लती। 173 - देवबंदी मौलवी वजीहउल्लाह का 'मुतलक' को तीन किस्मों पर और फिर एक को दो किस्मों पर विभाजित मानना अज्ञानता है। यह देवबंदी मुफ्ती की अज्ञानता है कि वह 'शरह वक़ाया' के इबारत को नहीं समझ सका। 173 - छठी ग़लती। 174 - सातवीं ग़लती। 174 - आठवीं ग़लती। 174 - नवीं ग़लती। 174 - 'यमीनुल फ़ौर' (तात्कालिक शपथ) को केवल क्रोध और स्वभाव की असंतुलन तक सीमित करना देवबंदी ईजाद है, अन्यथा मज़हब की किताबों में इसका कोई निशान नहीं है। 174 - एक शासक ने शपथ ली कि यदि शहर में कोई बदमाश आए और मैं तुझे सज़ा न दूँ तो पत्नी को तलाक़ है, यह 'यमीन फ़ौर' है। हालाँकि यहाँ क्रोध और उत्तेजना नहीं है। 175 - दसवीं ग़लती। 175 - क्रिया अनिश्चित संज्ञा (नकरा) के स्थान पर है, और निषेध के संदर्भ में अनिश्चित संज्ञा व्यापक हो जाती है। 175 - सामान्य निषेध (उमूम सल्ब) आंशिक सकारात्मकता (ईजाब जुज़ई) के कारण सही नहीं रहता। 176 - ग्यारहवीं ग़लती। 176 - शोधकर्ताओं ने उम्दतुल मुदक्क़िक़ीन अल्लामा सैयद मीर ज़ाहिद की कुछ प्रसिद्ध सूक्ष्मताओं को कई कारणों से खारिज कर दिया है। 176 - प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति (कज़िया तबीइया) का विषय समग्रता (कुल्लियत) का आधार होता है।

बायां स्तंभ: 172 - समग्रता (कुल्लियत) द्वितीयक बोधगम्यताओं (मक़ूलाते थानिया) में से है। 176 - प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति (तबीइया) मानसिक होती है, बाहरी नहीं। 176 - निष्कर्षित (मुन्तज़ा) निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया (इन्तिज़ा) के अधीन होता है, इसलिए यह निष्कर्ष के बिना नहीं पाया जाता, भले ही निष्कर्ष का स्रोत (मुन्तज़ा मिन्हु) मौजूद हो। 177 - बारहवीं ग़लती। 177 - तेरहवीं ग़लती। 177 - 'अल्-शयुल मुतलक' (निरपेक्ष वस्तु) के स्तर पर व्यापकता, समग्रता और निरपेक्षता पर विचार किया जाता है। 177 - चौदहवीं ग़लती। 177 - जो प्राप्त है उसे पुनः प्राप्त करना व्यर्थ है (तहसील-ए-हासिल बातिल है)। 177 - पंद्रहवीं ग़लती। 178 - आधार (मबनी) के बिगड़ने से उस पर खड़ी संरचना (बना) भी बिगड़ जाती है। 178 - सोलहवीं ग़लती। 179 - सत्रहवीं ग़लती। 179 - पति ने पत्नी के साथ समागम का इरादा किया और पत्नी से कहा कि अगर तुम मेरे साथ कमरे में दाखिल नहीं हुई तो तुम्हें तलाक है, इसके बाद पत्नी उस समय कमरे में दाखिल हुई जब पति की कामेच्छा समाप्त हो चुकी थी, तो तलाक हो जाएगा। अगर इच्छा समाप्त होने से पहले दाखिल हुई होती तो तलाक नहीं होता। 179 - 'पूर्ण प्रवेश' प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति का विषय है, और वह तब तक समाप्त नहीं होता जब तक प्रवेश के

सभी रूप समाप्त न हो जाएँ। 180 - अठारहवीं ग़लती। 180 - किसी चीज़ का अभाव उसके सभी व्यक्तिगत रूपों के अभाव से होता है।

पृष्ठ 15 of 688

دایاں کالم: ۱۷۲ - چوتھی خطاء۔ ۱۷۳ - پانچویں خطاء۔ ۱۷۳ - دیوبندی مولوی وجیہ اللہ کا مطلق کو تین قسموں پر اور پھر ایک کو دو قسموں پر منقسم ماننا جہالت ہے دیوبندی مفتی کی جہالت کہ شرح وقایہ کی عبارت کو نہ سمجھ سکا۔ ۱۷۳ - چھٹی خطاء۔ ۱۷۴ - ساتویں خطاء۔ ۱۷۴ - آٹھویں خطاء۔ ۱۷۴ - نویں خطاء۔ ۱۷۴ - یمین الفور کی تخصیص غصہ اور بے اعتدالی طبع سے کرنا دیوبندی اجتہاد ہے ورنہ کتب مذہب میں اس کا کوئی نشان نہیں۔ ۱۷۴ - حاکم نے قسم کھائی کہ اگر شہر میں کوئی بدمعاش آئے اور تجھے سزا نہ دوں تو بیوی کو طلاق، یہ یمین فور ہے۔ حالانکہ یہاں غصہ اور اشتعال طبع نہیں۔ ۱۷۵ - دسویں خطاء۔ ۱۷۵ - فعل حکم نکرہ میں ہے اور نکرہ حیز نفی میں عام ہو جاتا ہے۔ ۱۷۵ - عموم سلب اور بوجہ ایجاب جزئی صادق نہیں رہتا۔ ۱۷۶ - گیارہویں خطاء۔ ۱۷۶ - محققین نے عمدۃ المدققین علامہ سید میر زاہد کی بعض مشہور تدقیقات کا کثیر وجوہ سے رد کیا ہے۔ ۱۷۶ - قضیہ طبعیہ کا موضوع کلیت کا معروض ہوتا ہے۔

بایاں کالم: ۱۷۲ - کلیت معقولات ثانیہ میں سے ہے۔ ۱۷۶ - طبعیہ قضیہ ذہنیہ ہوتا ہے نہ کہ خارجیہ۔ ۱۷۶ - منتزع، انتزاع کے تابع ہوتا ہے لہذا بلا انتزاع نہیں پایا جاتا اگر چہ منتزع منہ موجود ہو۔ ۱۷۷ - بارھویں خطاء۔ ۱۷۷ - تیرہویں خطاء۔ ۱۷۷ - الشئ المطلق کے مرتبہ میں عموم کلیت اور اطلاق ملحوظ ہوتا ہے۔ ۱۷۷ - چودھویں خطاء۔ ۱۷۷ - تحصیل حاصل باطل ہے۔ ۱۷۷ - پندرہویں خطاء۔ ۱۷۸ - مبنی کے فساد سے بناء کا فساد ہوتا ہے۔ ۱۷۸ - سولہویں خطاء۔ ۱۷۹ - سترھویں خطاء۔ ۱۷۹ - خاوند نے بیوی سے مجامعت کا ارادہ کیا اور بیوی کو کہا کہ اگر تو میرے ساتھ کمرے میں داخل نہ ہوئی تو تجھے طلاق ہے، اس کے بعد بیوی اس وقت کمرے میں داخل ہوئی جب خاوند کی شہوت ختم ہو چکی تھی تو طلاق واقع ہو جائے گی اگر زوال شہوت سے پہلے

داخل ہوئی تو طلاق نہ ہوگی۔ ۱۷۹ - دخول مطلق قضیہ طبعیہ کا موضوع ہے اور وہ اس وقت تک منتفی نہیں ہوتا جب تک جمیع افراد دخول منتفی نہ ہو جائیں۔ ۱۸۰ - اٹھارھویں خطاء۔ ۱۸۰ - کسی چیز کا انتفاء اس کے تمام افراد کے منتفی ہونے سے ہوتا ہے۔

Fatawa Ridawiyya | Volume 13 | 13

Ref	Subject / Point	Ref	Description	Page
181	Nineteenth error.	181	The divorce after which revocation is permissible is twice; it is not more than that.	186
181	There is no cure for stubbornness.	181	After three divorces, the husband used to have the right to revoke, which was abrogated by the noble verse "Divorce is twice."	188
182	Twentieth error.	182	Deobandis are trampling the purpose of Sharia and reviving the oppression and tyranny of the age of ignorance.	189
182	A wife was ready to go out or beat a slave; at that time the husband told her, "If you go out or if you beat (him), then you are divorced." These are both 'Yamin-e-Fawr' (immediate oaths).	182	Twenty-second error.	190
183	Imam-e-Azam Abu Hanifa is unique in deducing the completion of types of oaths.	183	This subsidiary point (juz'iyah) is that divorce does not become null and void after revocation.	190
183	An intoxicated person beat his wife and she went out. The intoxicated person said, "If you do not return to me, you are divorced." This happened at Asr time, and the woman returned to him at Isha time. Divorce will occur because this is 'Yamin-e-Fawr'. If he denies the intention of 'Yamin-e-Fawr', the judge will not confirm it.	183	Upon the instruction of the Prophet (peace and blessings be upon him), Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) revoked the divorce given during menstruation, but despite that, it was counted as a divorce.	190
183		183		192

Ref	Subject / Point	Ref	Description	Page
	When the wife started to go out, the husband said, "If you go out, you are divorced." At this, the wife sat back down and went out after a while. The oath was not broken, and divorce did not occur.		Opposition of Deobandi teaching to Hadith.	
184	Twenty-first error.	184	Twenty-third error.	192
184	The fervor of Deobandi misguidance.	184	After the third divorce, a woman cannot become lawful for the husband without Halala, whether revocation was done after the first divorce or not.	192
184	Deobandi teaching cast aside the Quran, Hadith, and the consensus (Ijma) of ancient and modern Imams.	184	Books of Jurisprudence (Fiqh), without disagreement, positively state three divorces lead to absolute severe prohibition (hurmat-e-ghaliza).	192
185	The occasion of revelation of the noble verse "Divorce is twice" and various sayings of commentators regarding it.	185	Thousands of statements are witnesses to the falsehood of the Deobandi Mufti's misguidance.	192
185	After three divorces, the man has no right of revocation and the woman is independent.	185	A husband told his wife, "Whenever you give birth to a child, you are divorced." After this, the wife gave birth to three children from a new pregnancy. The second and third children will be considered a revocation from the first and second divorces, while upon the birth of the third child, three divorces will be completed, and severe prohibition will be established, and the lineage of all three children will be proven from the husband.	192

संदर्भ	विषय / बिंदु	संदर्भ	विवरण	पृष्ठ
181	उन्नीसवीं गलती।	181	वह तलाक जिसके बाद रुजू (वापसी) करना जायज़ है, वह दो बार तलाक है, उससे अधिक नहीं।	186
181	हठधर्मी का कोई इलाज नहीं।	181	तीन तलाक के बाद पति को रुजू का अधिकार होता था जो आयत-ए-करीमा "तलाक दो बार है" से निरस्त हो गया।	188
182	बीसवीं गलती।	182	देवबंदी शरीयत के उद्देश्य को कुचल रहे हैं और जाहिलियत के ज़ुल्म-ओ-सितम को दोबारा ज़िंदा कर रहे हैं।	189
182	पत्नी बाहर जाने या गुलाम को मारने के लिए तैयार थी, पति ने उस समय पत्नी से कहा, "अगर तू बाहर निकली या तूने मारा तो तुझे तलाक है," तो ये दोनों यमीन-ए-फ़ौर (तत्काल शपथ) हैं।	182	बाईसवीं गलती।	190
183	इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा शपथों के प्रकारों के पूर्णता के निष्कर्ष निकालने में अद्वितीय हैं।	183	यह जुज़इया (उप-बिंदु) कि रुजू के बाद तलाक बेअसर नहीं होती।	190
183	नशे में धुत व्यक्ति ने पत्नी को मारा-पीटा तो वह बाहर चली गई, इस पर नशेड़ी ने कहा, "अगर तू वापस न लौटी मेरे पास तो तुझे तलाक।" यह अस्र के समय हुआ और वह औरत इशा के समय उसके पास लौट आई, तो तलाक हो जाएगी क्योंकि यह यमीन-ए-फ़ौर है। अगर वह	183	हुज़ूर अलैहिस सलातो वसलाम के निर्देश पर हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मासिक धर्म में दी गई तलाक से रुजू कर लिया, मगर इसके बावजूद वह तलाक गिनी गई।	190

संदर्भ	विषय / बिंदु	संदर्भ	विवरण	पृष्ठ
	यमीन-ए-फ़ौर की नीयत से इनकार करे तो काज़ी उसकी पुष्टि नहीं करेगा।			
183	पत्नी बाहर निकलने लगी तो पति ने कह दिया, "अगर तू निकली तो तुझे तलाक है।" इस पर पत्नी वापस बैठ गई और कुछ देर के बाद निकली तो कसम नहीं टूटी और तलाक वाके नहीं हुई।	183	देवबंदी शिक्षा का हदीस से विरोध।	192
184	इक्कीसवीं गलती।	184	तेईसवीं गलती।	192
184	देवबंदी गुमराहियत का जोश।	184	तीसरी तलाक के बाद औरत पति के लिए बिना हलाला के हलाल नहीं हो सकती, चाहे पहली तलाक के बाद रुजू किया हो या न किया हो।	192
184	देवबंदी शिक्षा ने क़ुरआन-ओ-हदीस और प्राचीन एवं आधुनिक इमामों के इज्मा (आम सहमति) को पीछे डाल दिया।	184	फ़िक्ह (न्यायशास्त्र) की किताबें बिना किसी मतभेद के तीन तलाकों को मुतलकन हुरमत-ए-गलीज़ा (गंभीर निषेध) के लिए सकारात्मक रूप से वर्णित करती हैं।	192
185	आयत-ए-करीमा "तलाक दो बार है" के नाज़िल होने का अवसर और इसमें मुफ़स्सिरों (टीकाकारों) के विभिन्न कथन।	185	हज़ारों इबारतें देवबंदी मुफ़्ती की गुमराही के खोखलेपन पर गवाह हैं।	192
185	तीन तलाकों के बाद मर्द को रुजू का अधिकार नहीं और औरत स्वतंत्र है।	185	पति ने पत्नी से कहा, "जब भी तू बच्चा जने तो तुझे तलाक है।" इसके बाद पत्नी ने नई गर्भावस्था से तीन बच्चे जने, तो दूसरा और तीसरा बच्चा पहली और दूसरी तलाक से रुजू माना जाएगा, जबकि तीसरे बच्चे के जन्म पर तीन	192

संदर्भ विषय / बिंदु	संदर्भ विवरण	पृष्ठ
	तलाकें हो जाएंगी और हुरमत-ए-गलीज़ा साबित हो जाएगी, और तीनों बच्चों का नसब (वंश) पति से साबित होगा।	

पेज 16 of 688

حوالہ	مضمون / عنوان حوالہ	تفصیل صفحہ
۱۸۱	انیسویں خطاء۔ ۱۸۱	وہ طلاق جس کے بعد رجوع کرنا جائز ہے وہ دو بار طلاق ہے اس سے زائد نہیں۔ ۱۸۶
۱۸۱	مکابرہ کا کوئی علاج نہیں۔ ۱۸۱	تین طلاقوں کے بعد مرد کو رجوع کا اختیار ہوتا تھا جو آیت کریمہ "الطلاق مرتان" سے منسوخ ہو گیا۔ ۱۸۸
۱۸۲	بیسویں خطاء۔ ۱۸۲	دیوبندی مقصد شریعت کو پامال اور جاہلیت کے ظلم وستم کو دوبارہ زندہ کر رہے ہیں۔ ۱۸۹
۱۸۲	بیوی باہر جانے یا غلام کو مارنے کے لئے تیار تھی خاوند نے اس وقت بیوی کو کہا اگر تو باہر نکلی یا تو نے مارا تو تجھے طلاق تو یہ دونوں یمین فور ہیں۔ ۱۸۲	بائیسویں خطاء۔ ۱۹۰
۱۸۳	امام اعظم ابو حنیفہ اقسام یمین کے اتمام کے استنباط میں منفرد ہیں۔ ۱۸۳	یہ جزئیہ کہ رجوع کے بعد طلاق کالعدم نہیں ہوتی۔ ۱۹۰

حوالہ	مضمون / عنوان حوالہ	تفصیل صفحہ
	نشہ والے شخص نے بیوی کو مارا پیٹا تو وہ باہر نکل گئی، اس پر نشئی نے کہا اگر تو واپس نہ لوٹی میرے پاس تو تجھے طلاق، یہ واقع عصر کے وقت	حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے ارشاد پر حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ
۱۸۳	ہوا اور وہ عورت عشاء کے وقت اس ۱۸۳ کے پاس لوٹ کر آئی تو طلاق ہو جائے گی کیونکہ یہ یمین فور ہے۔ اگر یمین فور کی نیت کا انکار کرے تو قاضی اس کی تصدیق نہیں کرے گا۔ بیوی باہر نکلنے لگی تو خاوند نے کہہ دیا اگر تو نکلی تو تجھے طلاق ہے۔ اس	تعالیٰ عنہما نے حیض میں دی ہوئی طلاق سے رجوع کر لیا مگر اس کے باوجود وہ طلاق شمار ہوئی۔ ۱۹۰
۱۸۳	پر بیوی واپس بیٹھ گئی اور کچھ دیر ۱۸۳ کے بعد نکلی تو قسم نہ ٹوٹی اور طلاق واقع نہ ہوئی۔	دیوبندی تعلیم کی حدیث سے مخالفت۔ ۱۹۲
۱۸۴	اکیسویں خطاء۔ ۱۸۴	تئیسویں خطاء۔ ۱۹۲
۱۸۴	دیوبندی گمراہی کا جوش۔ ۱۸۴	تیسری طلاق کے بعد عورت خاوند کے لئے بلا حلالہ حلال نہیں ہو سکتی چاہے پہلی طلاق کے بعد رجوع کیا ہو یا نہ کیا ہو۔ ۱۹۲

حوالہ	مضمون / عنوان حوالہ	تفصیل صفحہ
۱۸۴	دیوبندی تعلیم نے قرآن و حدیث اور ائمہ قدیم وجدید کا اجماع پس پشت ڈال دیا۔	۱۸۴
۱۸۵	آیہ کریمہ "الطلاق مرتان" کا شان نزول اور اس میں مختلف اقوال مفسرین۔	۱۸۵
۱۸۵	تین طلاقوں کے بعد مرد کو رجوع اختیار نہیں اور عورت خود مختار ہے۔	۱۸۵
۱۸۴	کتب فقہ بلا اختلاف تین طلاقوں کو مطلقا حرمت غلیظہ کے لئے مثبت بیان کرتی ہیں۔	۱۹۲
۱۸۵	ہزار ہا عبارات دیوبندی مفتی کی گمراہی کے بطلان پر شاہد ہیں۔	۱۹۲
۱۸۵	خاوند نے بیوی کو کہا جب بھی تو بچہ جنے تو تجھے طلاق ہے اس کے بعد بیوی نے نئے حمل کے ساتھ تین بچے جنے تو دوسرا اور تیسرا بچہ پہلی اور دوسری طلاق سے رجوع متصور ہو گا جبکہ تیسرے بچے کی پیدائش پر تین طلاقیں ہو جائیں گی اور حرمت غلیظہ ثابت ہو جائے گی اور تینوں بچوں کا نسب خاوند سے ثابت ہو گا۔	۱۹۲

Volume 13 - Fatawa Razawiyya - Page 13

Index No.	Subject	Page No.	Subject	Page No.
195	Deobandi education is contrary to the Imams of the Ummah.	195	Whoever takes an oath on something and then sees that going against that oath is better, then they should do the better deed and give expiation for the oath.	199
195	Twenty-fourth error.	195	Preaching for corrupt purposes is misguidance and the practice of Jews and Christians.	199
195	Extreme stupidity and deviance of a Deobandi Mufti.	195	Condemnation of preaching by unqualified persons from noble Hadiths.	199
196	Misunderstanding and lack of wisdom in Najdism.	196	For which preacher is it not allowed to preach.	200
196	Twenty-fifth error.	196	A strategy to avoid divorce after taking an oath of triple divorce.	200
196	Difference between the invalidity of divorce and the invalidity of an action.	196	An oath ends completely after the fulfillment of the condition.	201
197	New innovation in religion and Sharia by Deobandi Mujtahids.	197	If divorce is suspended on preaching, it is possible to give the wife one divorce, let her complete the waiting period ('iddah), then preach, and then remarry the woman.	201
197	Calling a strictly forbidden thing (Haram Qat'i) permissible (Halal) is definitive disbelief according to Islamic jurisprudence.	197	The husband said, "If you waive the dower (Mahr), I will divorce you." The woman said, "If you divorce, I have waived the dower." The husband divorced;	202

Index No.	Subject	Page No.	Subject	Page No.
			the divorce occurred, but the dower was not waived.	
197	The wives of Muftis who declare a woman permissible for her husband after triple divorce (without Halala) become forbidden for them. It is mandatory for them to renew their Islam and their marriage.	197	Marriage with Hind on the condition that if half of the dower is not paid upon request, then three divorces occur; rulings on various forms of this issue.	202
198	Taking an oath of divorce is religiously undesirable.	198	Suspension (Ta'liq) in gifting (Hiba) is invalid.	202
198	Taking an oath of divorce is not a believer's act but a hypocritical one.	198	Suspension in transfer of ownership (Tamlikat), i.e., buying and selling etc., is invalid.	202
198	Whoever preaches in this town, his wife is divorced. If "whoever" meant himself, then if he preaches, a revocable divorce (Raj'i) will occur.	198	In "Whenever you enter the house, you are divorced," will the oath be dissolved after entering the house three times, or will it be dissolved when the three divorces are exhausted?	203
198	The word "man" (whoever) is for generalization.	198	The word "kullama" (whenever) requires a generalization of actions, while the word "kull" (every/all) is for a generalization of names.	204
199	How a preacher should preach.	199	If you come into my house, you are divorced. If the woman was in someone else's house, then divorce occurs as soon as she enters the husband's house. And if she was already in the husband's house, divorce will	206

not occur as long as she stays there.

जिल्द तेरहवीं - फ़तावा रज़विया - पेज १३

सूची संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
१९५	देवबंदी शिक्षा उम्मत के इमामों के खिलाफ है।	१९५
१९५	चौबीसवीं गलती।	१९५
१९५	देवबंदी मुफ्ती की घोर मूर्खता और गुमराह होना।	१९५
१९६	नज्दियत की नासमझी और टेढ़ी समझ।	१९६
१९६	पच्चीसवीं गलती।	१९६
१९६	तलाक के बातिल (अमान्य) होने और अमल के बातिल होने में अंतर है।	१९६
१९७	देवबंदी मुजतहिदों की दीन और शरीयत में नई बिदअत (नवाचार)।	१९७
१९७		१९७

विषय	पृष्ठ संख्या
जो किसी बात पर कसम खा ले फिर देखे कि उस कसम के खिलाफ करना बेहतर है तो वही बेहतर काम करे और कसम का कफ़्फ़ारा दे दे।	१९९
भ्रष्ट उद्देश्यों के लिए उपदेश देना गुमराह होना और यहूदियों और ईसाइयों की सुन्नत (तरीका) है।	१९९
अयोग्य व्यक्ति के उपदेश देने की निंदा महान हदीसों से।	१९९
किस उपदेशक को उपदेश देने की अनुमति नहीं है।	२००
तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा (तिहरा तलाक) की कसम खाने पर तलाक से बचने का एक तरीका।	२००
शर्त पूरी होने के बाद यमीन (कसम) पूरी तरह खत्म हो जाती है।	२०१
यदि तलाक को उपदेश देने पर लटकाया गया हो, तो यह संभव है कि औरत को एक तलाक दे, वह इद्दत से निकल जाए, फिर उपदेश दे और फिर औरत से दोबारा निकाह कर ले।	२०१
	२०२

सूची संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
	हराम-ए-क़तई को हलाल कहना फ़िक़्ही हुक्म के मुताबिक़ क़तई कुफ़्र है।	
१९७	तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा के बाद औरत को पति के लिए हलाल करार देने वाले मुफ्ती की पत्नियाँ उन पर हराम हो गईं, उन पर तज्दीद-ए-इस्लाम और तज्दीद-ए-निकाह लाज़िम है।	१९७
१९८	तलाक की कसम खाना शरीयत में नापसंद है।	१९८
१९८	तलाक की कसम खाना ईमान वालों का काम नहीं बल्कि मुनाफिकों जैसा काम है।	१९८
१९८	जो कोई इस बस्ती में उपदेश करे उसकी पत्नी को तलाक, और 'जो कोई' से मुराद उसकी अपनी ज़ात थी, तो अगर वह उपदेश देगा तो तलाक-ए-रजई हो जाएगी।	१९८
१९८	शब्द 'मन' (जो कोई) आम करने (सामान्यीकरण) के लिए है।	१९८
१९९	उपदेश कैसे उपदेशक को करना चाहिए।	१९९
	पति ने कहा अगर तुम महर छोड़ दो तो तलाक दूँगा। औरत बोली अगर तुम तलाक दे तो मैंने महर छोड़ दिया, पति ने तलाक दी, तलाक हो गई लेकिन महर खत्म नहीं हुआ।	
	हिंदा से इस शर्त पर निकाह कि अगर माँगने पर आधा महर अदा न करूँ तो तीन तलाक, इस मसले की विभिन्न स्थितियों के अहकाम।	२०२
	हिबा (उपहार) में तअलीक़ (शर्त लगाना) बातिल है।	२०२
	तमलीकात यानी खरीद-ओ-फरोख्त आदि में तअलीक़ बातिल है।	२०२
	"कुल्लमा दखलत-उद-दार फअन्ति तालिक़" (जब भी तुम घर में दाखिल होगी तुम्हें तलाक है) में तीन बार घर में प्रवेश के बाद कसम खत्म होगी या तीन तलाक से हल होने पर कसम खत्म होगी।	२०३
	शब्द 'कुल्लमा' कार्यों की व्यापकता का तकाज़ा करता है जबकि शब्द 'कुल्ल' नामों की व्यापकता का।	२०४
	अगर तुम मेरे घर में आई तो तुम्हें तलाक, और औरत दूसरे के घर में	२०६

सूची संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
	थी तो पति के घर आते ही तलाक, और अगर पति के घर में ही थी तो जब तक वहां रहेगी तलाक नहीं होगी।	
	पेज १७ ऑफ़ ६८८	

نمبر شمار	مضمون	صفحہ نمبر
۱۹۵	دیوبندی تعلیم ائمہ امت کے مخالف ہے۔	۱۹۵
۱۹۵	چوبیسویں خطاء۔	۱۹۵
۱۹۵	دیوبندی مفتی کی انتہائی غباوت اور گمراہی۔	۱۹۵
۱۹۶	نجدیت کی بد عقلی اور کج فہمی۔	۱۹۶
۱۹۶	پچیسویں خطاء۔	۱۹۶
۱۹۶	بطلان طلاق اور بطلان عمل میں فرق ہے۔	۱۹۶
۱۹۷	دیوبندی مجتہدین کی دین اور شریعت میں نئی بدعت۔	۱۹۷
۱۹۹	جو کسی بات پر قسم کھالے پھر دیکھے کہ اس قسم کا خلاف بہتر ہے تو وہی بہتر کام کرے اور قسم کا کفارہ دے لے۔	۱۹۵
۱۹۹	اغراضِ فاسدہ کے لئے وعظ ضلالت اور یہود و نصاریٰ کی سنت ہے۔	۱۹۵
۱۹۹	نااہل کے وعظ کہنے کی مذمت احادیث کریمہ سے۔	۱۹۵
۲۰۰	کیسے واعظ کو وعظ کہنے کی اجازت نہیں۔	۱۹۶
۲۰۰	طلاق مغلظہ کی قسم کھائی تو طلاق سے بچنے کا ایک حیلہ۔	۱۹۶
۲۰۱	یمین وجودِ شرط کے بعد مطلقاً ختم ہو جاتی ہے۔	۱۹۶
۲۰۱	طلاق کو وعظ کہنے پر معلق کیا تو یہ سبیل ممکن ہے کہ عورت کو ایک طلاق	۱۹۷

نمبر شمار	مضمون	صفحہ نمبر
۱۹۷	حرام قطعی کو حلال کہنا فقہی حکم کے مطابق قطعی کفر ہے۔	۱۹۷
۱۹۷	طلاق مغلظہ کے بعد عورت کو شوہر کے لئے حلال قرار دینے والے مفتیوں کی بیویاں ان پر حرام ہوگئیں ان پر تجدید اسلام اور تجدید نکاح لازم ہے۔	۱۹۷
۱۹۸	طلاق کی قسم کھانا شرعاً ناپسندیدہ ہے۔	۱۹۸
۱۹۸	طلاق کی قسم کھانا مومنانہ نہیں منافقانہ فعل ہے۔	۱۹۸
۱۹۸	جو کوئی اس بستی میں وعظ کرے اس کی عورت پر طلاق،	۱۹۸
۲۰۲	دے وہ عدت سے نکل چکے تو وعظ کہے پھر عورت سے دوبارہ نکاح کرلے۔	۲۰۲
۲۰۲	شوہر نے کہا تو مہر بخشے تو طلاق دوں گا۔ عورت بولی اگر تو طلاق دے تو میں نے مہر بخش دیا، شوہر نے طلاق دی، طلاق واقع ہوئی مہر ساقط نہ ہوا۔	۱۹۷
۲۰۲	ہندہ سے اس شرط پر نکاح کہ نصف مہر عندالطلب ادا نہ کروں تو تین طلاق، اس مسئلہ کی مختلف صورتوں کے احکام۔	۱۹۷
۲۰۲	ہبہ میں تعلیق باطل ہے۔	۱۹۸
۲۰۲	تملیکات یعنی بیع و شراء وغیرہ میں تعلیق باطل ہے۔	۱۹۸
۲۰۳	"کلما دخلت الدار فانتِ طالق" میں تین بار دخول دار کے بعد یمین منحل ہوگی یا تین	۱۹۸

نمبر شمار	مضمون	صفحہ نمبر
	اور جو کوئی سے مراد اس کی اپنی ذات تھی، تو اگر وعظ کہے گا طلاق رجعی واقع ہوگی۔	
۱۹۸	کلمہ من تعمیم کے لئے ہے۔	۱۹۸
۱۹۹	وعظ کیسے واعظ کو کرنا چاہئے۔	۱۹۹
	طلاق سے زوال حل ہوئے تب یمین منحل ہوگی۔	
	لفظ کلما عموم افعال کا تقاضا کرتا ہے جبکہ لفظ کل عموم اسماء کا۔	۲۰۴
	اگر تو میرے گھر میں آئی تو تجھے طلاق، اور عورت دوسرے کے گھر میں تھی تو شوہر کے گھر آتے ہی طلاق، اور شوہر کے گھر میں ہی تھی تو جب تک وہاں رہے گی طلاق واقع نہ ہوگی۔	۲۰۶

Fatawa Razawiyya | Volume 13 | Page 13

Serial No.	Description	Page No.
206	There is a consensus among all four Imams of the four schools of thought that three divorces pronounced at one place, at one time, in a single utterance, become effective.	214
206	The speech of every contractant or oath-taker will be interpreted according to their custom if it is ambiguous.	214
207	The misguided and irreligious Wahhabis disagree on the issue of 'triple divorce' and declare the forbidden (Haram) as permissible (Halal).	214
207	Ruling on getting an agreement signed by the husband with several incorrect conditions.	214
207	The husband made triple divorce conditional upon missing a single prayer without a valid Sharia excuse. If even one prayer is missed without excuse, triple divorce will take effect.	215
207	Any condition that goes against Sharia is void.	215
207	It is also forbidden to suggest any ruse that involves deliberately committing a major sin.	215
207	Allah Almighty's command is truth, and Allah Almighty's condition is emphasized.	215
207	A Mufti should not say 'he is believed religiously', but rather, out of etiquette, should say 'he is not believed in court'.	215
207	"The wife will now stay at her father's house and will be the owner of current and future children, and will receive maintenance while staying at her father's home." All such conditions are contrary to Sharia and rejected.	215
208	Husband said: "If you go to such-and-such place, you will no longer be my wife." If the intention was divorce, it becomes a conditional divorce.	216
208	A man writing "If I act against the condition, then this writing of mine shall be considered as triple divorce" is void.	216
209		216

Serial No.	Description	Page No.
	The husband's statement regarding the intention of divorce will be accepted with an oath.	
209	Regarding custody (hazanat), a boy remains with the mother until age seven and a girl until age nine, then the father takes them.	216
209	"If I marry without your permission, it will be a severe (mughallazah) divorce." Detailed rulings on various scenarios of marriage with this condition.	216
209	If the husband wants to call her to him, the woman has no right to stay at her father's house.	216
211	An answer includes a repetition of the subject of the question.	216
211	If a woman refuses to come to her husband, she will not be entitled to maintenance (nafqah).	216
212	In common custom, 'Talaq-e-Mughallazah' refers only to triple divorce.	217
212	If the dower (mahr) is neither prompt (mu'ajjal) nor deferred (mu'ajjal), the woman has no right to demand it until death or divorce occurs.	217
213	A man said to his wife: "Divorce upon you based on all three conditions." What is the Sharia ruling?	217
213	An unlearned person should only inquire about the Sharia ruling from scholars, not examine pages and lines.	217
213	Making divorce conditional upon an unknown condition will result in no divorce occurring at all.	217
213	Sharia ruling on a declaration of conditional divorce due to non-fulfillment of the wife's rights.	217

फ़तावा रज़विया | जिल्द 13 | पृष्ठ 13

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
206	चारों संप्रदायों के चारों इमामों का इस बात पर आम सहमति है कि एक ही स्थान पर, एक ही समय में, एक ही शब्द में दी गई तीन तलाक प्रभावी हो जाती हैं।	214
206	प्रत्येक अनुबंधकर्ता और शपथ लेने वाले के वचन को उसकी प्रथा के अनुसार अर्थ दिया जाएगा यदि वह अस्पष्ट हो।	214
207	गुमराह और अधर्मी वहाबी तीन तलाक के मुद्दे पर विरोध करते हैं और हराम को हलाल घोषित करते हैं।	214
207	पति से कई गलत शर्तों वाले इकरारनामे पर हस्ताक्षर कराने का हुक्म।	214
207	पति ने बिना किसी वैध शरीयत कारण के एक वक्त की नमाज न पढ़ने पर तीन तलाक मुअल्लक़ (निलंबित) कर दीं। यदि बिना कारण एक वक्त की नमाज भी छूट जाए तो तीन तलाक हो जाएंगी।	215
207	जो शर्त शरीयत के खिलाफ हो वह बातिल (अमान्य) है।	215
207	कोई ऐसा हीला (बहाना) बताना भी हराम है जिसमें जानबूझकर बड़े पाप (कबीरा गुनाह) का होना शामिल हो।	215
207	अल्लाह तआला का हुक्म हक है और अल्लाह तआला की शर्त अनिवार्य है।	215
207	मुफ्ती को 'धार्मिक रूप से उसकी बात मानी जाएगी' नहीं कहना चाहिए, बल्कि शिष्टाचार यह है कि कहे 'अदालत में उसकी बात नहीं मानी जाएगी'।	215
207	"पत्नी अब पिता के घर ही रहेगी और वर्तमान तथा भविष्य की संतान की वह मालिक होगी, और पिता के घर बैठे ही गुजारा भत्ता (नफ़क़ा) पाएगी।" ये सभी शर्तें शरीयत के विरुद्ध और खारिज हैं।	215
208	पति ने कहा: "अगर तू फलां जगह गई तो तू मेरी औरत नहीं रहेगी।" अगर नीयत तलाक की है तो यह तलाक मुअल्लक़ (निलंबित) हो गई।	216
208	पुरुष का यह लिखना कि "अगर मैं शर्त के खिलाफ करूँ तो मेरा यह लिखना तीन तलाक माना जाए", बातिल है।	216

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
209	तलाक की नीयत के बारे में पति का बयान कसम के साथ स्वीकार कर लिया जाएगा।	216
209	पालन-पोषण (हज़ानत) के अधिकार के अनुसार, लड़का सात साल और लड़की नौ साल की उम्र तक माँ के पास रहेंगे, फिर पिता ले जाएगा।	216
209	"अगर तेरी अनुमति के बिना निकाह करूँ तो तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा होगी।" इस शर्त पर निकाह की विभिन्न स्थितियों के हुक्म का विवरण।	216
209	यदि पति अपने पास बुलाना चाहे तो औरत को पिता के घर रहने का कोई अधिकार नहीं है।	216
211	प्रश्न की विषय-वस्तु का दोहराव उत्तर में निहित होता है।	216
211	यदि औरत पति के पास आने से इनकार करे तो वह गुजारा भत्ता (नफ़क़ा) की हकदार नहीं होगी।	216
212	आम बोलचाल में 'तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा' केवल तीन तलाक को ही कहते हैं।	217
212	यदि मेहर न तो मुअज्जल (नकद) हो और न ही मुअज्जल (उधार), तो मृत्यु या तलाक होने तक औरत को इसकी मांग करने का अधिकार नहीं है।	217
213	पुरुष ने पत्नी से कहा: "तुझ पर तीनों शर्तों से तलाक।" तो क्या शरीयत का हुक्म है?	217
213	अज्ञानी को उलेमा से केवल शरीयत का हुक्म पूछना चाहिए, न कि पन्ने और पंक्तियाँ जाँचनी चाहिए।	217
213	किसी अज्ञात शर्त पर तलाक को मुअल्लक़ (निलंबित) करने से तलाक बिलकुल भी प्रभावी नहीं होगी।	217
213	पत्नी के अधिकारों को पूरा न करने की स्थिति में तलाक को मुअल्लक़ करने वाले इकरारनामे का शरीयत हुक्म।	217

نمبر شمار	تفصیل	صفحہ نمبر
۲۰۶	چاروں مذاہب کے چاروں اماموں کا اجماع ہے کہ تین طلاقیں ایک جگہ ایک وقت ایک ہی دفعہ ایک لفظ میں واقع ہو جاتی ہیں۔	۲۱۴
۲۰۶	ہر عاقد و حالف کے کلام کو اس کے عرف پر مجہول کیا جائے گا۔	۲۱۴
۲۰۷	وہابی گمراہ بے دین مسئلہ طلاق ثلاثہ میں خلاف کرتے اور حرام کو حلال ٹھہراتے ہیں۔	۲۱۴
۲۰۷	شوہر سے چند غلط شرائط کا اقرار نامہ لکھوانے کا حکم۔	۲۱۴
۲۰۷	شوہر نے ایک وقت کی نماز بے عذر شرعی نہ پڑھنے پر تین طلاقیں معلق کیں۔ بے عذر ایک وقت کی نماز بھی چھوڑ دے گی تین طلاقیں ہو جائیں گی۔	۲۱۵
۲۰۷	جو شرط شریعت کے خلاف ہو وہ باطل ہے۔	۲۱۵
۲۰۷	جو حیلہ ارتکاب کبیرہ بالعمد پر مشتمل ہو اس کا بتانا بھی حرام ہے۔	۲۱۵
۲۰۷	اللہ تعالیٰ کا حکم حق اور اللہ تعالیٰ کی شرط مؤکد ہے۔	۲۱۵
۲۰۷	مفتی کو یصدق دیانۃ نہیں کہنا چاہئے بلکہ ادب یہ ہے کہ لایصدق قضاء کہے۔	۲۱۵
۲۰۷	بیوی اب باپ ہی کے یہاں رہے گی اور موجودہ و آئندہ اولاد کی وہ مالک ہو گی، اور باپ کے گھر بیٹھے نفقہ پائے گی۔ یہ سب شرطیں خلاف شرع و مردود ہیں۔	۲۱۵
۲۰۸		۲۱۶

نمبر شمار	تفصیل	صفحہ نمبر
	شوہر نے کہا اگر تو فلاں مکاں میں گئی میری عورت نہ رہے گی، اگر نیت طلاق ہے طلاق معلق ہو گئی۔	
۲۰۸	مرد کا یہ لکھنا کہ اگر میں شرط کے خلاف کروں تو میری یہ تحریر تین طلاق سمجھی جائے گی، باطل ہے۔	۲۱۶
۲۰۹	نیت طلاق کے بارے میں شوہر کا قول قسم کے ساتھ مان لیا جائے گا۔	۲۱۶
۲۰۹	بحق حضانت لڑکا سات سال اور لڑکی نو سال کی عمر تک ماں کے پاس رہیں گے پھر باپ لے گا۔	۲۱۶
۲۰۹	اگر تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں تو طلاق مغلظ ہوگی۔ اس شرط پر نکاح کی مختلف صورتوں کے احکام کی تفصیل۔	۲۱۶
۲۰۹	شوہر اگر اپنے پاس بلانا چاہے تو عورت کو باپ کے گھر رہنے کا کوئی اختیار نہیں۔	۲۱۶
۲۱۱	جواب مضمون سوال کے اعادہ کو متضمن ہوتا ہے۔	۲۱۶
۲۱۱	عورت شوہر کے پاس آنے سے انکار کرے تو نفقہ کی مستحق نہیں ہوگی۔	۲۱۶
۲۱۲	عرف میں طلاق مغلظہ تین طلاقوں کو ہی کہتے ہیں۔	۲۱۷
۲۱۲	مہر اگر نہ معجل ہو نہ مؤجل تو جب تک موت یا طلاق نہ ہو عورت کو اس کے مطالبہ کا اختیار نہیں۔	۲۱۷
۲۱۳	مرد نے بیوی سے کہا تجھ پر تینوں شرطوں سے طلاق، تو کیا حکم شرعی ہے۔	۲۱۷

نمبر شمار	تفصیل	صفحہ نمبر
۲۱۳	بے علم کو علماء سے صرف حکم شریعت دریافت کرنا چاہئے نہ یہ کہ صفحہ و سطر جانچے۔	۲۱۷
۲۱۳	شرط مجہول پر طلاق معلق کرنے سے طلاق اصلا واقع نہ ہوگی۔	۲۱۷
۲۱۳	تعلیق طلاق بہ عدم ادائے حقوق زوجہ کے ایک اقرار نامہ کا شرعی حکم۔	۲۱۷

Fatawa Razawiyya Volume 13

- Emphasizing a beneficial condition and its consequence is not a separation. (219)
- If one says to his wife "You are divorced, if Allah wills", in which cases is the exception valid and in which is it invalid? (219)
- Regarding the non-receipt of bread and maintenance, the woman does not need witnesses; rather, her sworn statement is sufficient. (220)
- Evidence on the negation of conditions is audible. (221)
- If the husband and wife differ on the existence of a condition, the husband's statement under oath will be considered credible. (221)
- The husband wrote an agreement that if he marries another woman during the lifetime of his wife, the second one will be divorced thrice. In this case, if an unauthorized person (fuzuli) performed his marriage with another woman and he confirmed it by action instead of words, the second woman will not be divorced according to the terms of the agreement. (223)
- An unauthorized person (fuzuli) performed someone's marriage, and the husband sent the fixed dower to the woman, then the marriage became effective. (223)
- After the marriage by an unauthorized person, the husband wrote on paper that I have ratified this marriage, so it became effective. (223)
- After an unauthorized marriage, someone or the same unauthorized person congratulated the husband, and the husband remained silent, so the marriage became effective. (224)
- The ruling on giving three divorces to a non-consummated wife in one word and in separate words, and a detailed ruling on the different forms of conditional divorce (ta'liq). (226)
- A non-consummated wife is subject to three divorces at once. (226)
- If three divorces are given to a non-consummated wife as a condition, what is the ruling regarding the condition being before or after the consequence? (226)
- Details of the issue of triple divorce with respect to conjunctions, and with respect to conditionality and immediacy, and with respect to the precedence and delay of the condition, and with respect to a consummated or non-consummated wife. (226)

- Sharia ruling on different forms of an agreement giving the woman the authority of divorce. (231)
- If the document of condition was written before and it does not have a reference to the marriage, then that condition is purely futile and void. (231)
- In the delegation of divorce (tafwiz), reference in the speech of either the husband or the wife is sufficient. (231)
- A delegation of divorce that is conditional upon a condition remains limited to the same session (majlis) after the occurrence of the condition in which the woman was informed of the occurrence of the condition; she does not have the authority to take divorce after changing the session. (232)
- Making divorce conditional on the woman's intention, pleasure, and desire is "possession with condition" (tamlik ma'al ta'liq), and this possession will remain limited to the session. (232)
- Divorce was made conditional on the woman not coming to the husband's house within a month; the woman did not come; he himself reached the woman within a month; divorce occurred. (233)
- Zaid said to his wife "I will complete all three divorces"; this is merely a promise, and divorce does not occur by a promise. (233)

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

- ताकीद मुफीद शर्त व जज़ा के दरमियान फ़ासिल नहीं होती। २१९
- बीवी को कहा "अन्त तालिक़ इनशा अल्लाह" तो किन सूरतों में इस्तिसना सहीह और किन में ग़ैर सहीह होगा। २१९
- नान व नफ़क़ा न मिलने के बारे में औरत मोहताज-ए-गवाहान नहीं बल्कि उसका बयान-ए-हल्फी काफ़ी है। २२०
- शरूआत में नफ़ी पर बय्यिना मसमूअ हैं। २२१
- अगर मियां-बीवी वजूद-ए-शर्त में इख़्तिलाफ़ करें तो شوہر का क़ौल क़सम के बाद मोतबर होगा। २२१
- शौहर ने इक़रार नामा लिखा कि अपनी औरत की हयात में किसी दूसरी औरत से शादी करूँ तो उस दूसरी पर तीन तलाक़, इस सूरत में अगर किसी फ़ुज़ूली ने उसका निकाह किसी दूसरी औरत से कर दिया और उसने ज़बान के बजाए किसी अमल से उसकी तौसीक़ कर दी तो दूसरी औरत को हस्बे शराइत इक़रार नामा तलाक़ न होगी। २२३
- फ़ुज़ूली ने किसी का निकाह कर दिया, शौहर ने महर-ए-मुक़र्ररह औरत को भेज दिया तो निकाह नाफ़िज़ हो गया। २२३
- शौहर ने फ़ुज़ूली के निकाह के बाद काग़ज़ पर लिखा कि "मैंने इस निकाह को नाफ़िज़ किया" तो नाफ़िज़ हो गया। २२३
- निकाह-ए-फ़ुज़ूली के बाद किसी ने या ख़ुद उसी फ़ुज़ूली ने शौहर को मुबारकबादी दी, शौहर ने इस पर सुकूत इख़्तियार किया, तो निकाह नाफ़िज़ हो गया। २२४
- ग़ैर मदख़ूला को एक लफ़्ज़ से तीन तलाक़ देने और मुतफ़र्रिक़ अल्फ़ाज़ में तीन तलाक़ देने का हुक्म और तालीक़ की मुख़्तलिफ़ सूरतों का तफ़सीली हुक्म। २२६
- ज़न-ए-ग़ैर मदख़ूला एक बारगी तीन तलाक़ की महल है। २२६
- ग़ैर मदख़ूला को तीन तलाक़ बतोर-ए-तालीक़ दें तो शर्त के जज़ा पर मुक़द्दम व मुअख़्ख़र होने में क्या हुक्म है। २२६

- मसला-ए-तलाक़-ए-सलासा की तफ़ासील बा-एतबार-ए-हर्फ़ए-अतफ़ और बा-एतबार-ए-तालीक़ व तन्जीज़ और बा-एतबार-ए-तक़द्दुम व ताख़्ख़ुर-ए-शर्त और बा-एतबार-ए-ज़न-ए-मदख़ूला व ग़ैर मदख़ूला। २२६
- औरत को तलाक़ का इख़्तियार देने के एक इक़रार नामा की मुख़्तलिफ़ सूरतों का शरई हुक्म। २३१
- शर्त का बैन नामा क़ब्ल तहरीर हुआ और उसमें निकाह की तरफ़ इज़ाफ़त न हो तो वह शर्त महज़ फ़ुज़ूल व बातिल है। २३१
- तफ़वीज़-ए-तलाक़ में ज़न व शौहर दोनों में से एक के कलाम में इज़ाफ़त काफ़ी है। २३१
- जो तफ़वीज़-ए-तलाक़ मुअल्लक बिल-शर्त हो, बा'द-ए-वक़ूए-शर्त उसी मजलिस पर महदूद रहती है जिसमें औरत को वक़ूए-शर्त का हुक्म हुआ, मजलिस बदलने के बाद उसे तलाक़ लेने का इख़्तियार नहीं रहता। २३२
- औरत के इरादे, रज़ा और ख़्वाहिश पर तलाक़ को मुअल्लक करना तमीलीक मअत-तालीक़ है और यही तमीलीक मजलिस तक महदूद रहेगी। २३२
- एक महीने के अन्दर औरत के शौहर के मकान पर न आने पर तलाक़ को मुअल्लक किया, औरत न आई, यह ख़ुद एक महीने के अन्दर औरत के पास पहुँचा, तलाक़ वाक़े हो गई। २३३
- ज़ैद ने अपनी बीवी को कहा कि "तीनों तलाक़ पूरी कर दूँगा", यह महज़ वादा है और वादे से तलाक़ नहीं होती। २३३

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

- تا کید مفید شرط وجزاء کے درمیان فاصل نہیں ہوتی۔ ۲۱۹
- بیوی کو کہا انت طالق ان شاء اللہ تو کن صورتوں میں استثناء صحیح اور کن میں غیر صحیح ہوگا۔ ۲۱۹
- نان و نفقة نہ ملنے کے بارے میں عورت محتاج گواہاں نہیں بلکہ اس کا بیان حلفی کافی ہے۔ ۲۲۰
- شروط میں نفی پر بینہ مسموع ہیں۔ ۲۲۱
- اگر میاں بیوی وجود شرط میں اختلاف کریں تو شوہر کا قول قسم کے بعد معتبر ہوگا۔ ۲۲۱
- شوہر نے اقرار نامہ لکھا کہ اپنی عورت کی حیات میں کسی دوسری عورت سے شادی کروں تو اس دوسری پر تین طلاق، اس صورت میں اگر کسی فضولی نے اس کا نکاح کسی دوسری عورت سے کر دیا اور اس نے زبان کے بجائے کسی عمل سے اس کی توثیق کر دی تو دوسری عورت کو حسب شرائط اقرار نامہ طلاق نہ ہوگی۔ ۲۲۳
- فضولی نے کسی کا نکاح کر دیا شوہر نے مہر مقررہ عورت کو بھیج دیا تو نکاح نافذ ہو گیا۔ ۲۲۳
- شوہر نے فضولی کے نکاح کے بعد کاغذ پر لکھا کہ میں نے اس نکاح کو نافذ کیا تو نافذ ہو گیا۔ ۲۲۳
- نکاح فضولی کے بعد کسی نے یا خود اسی فضولی نے شوہر کو مبارکبادی دی شوہر نے اس پر سکوت اختیار کیا، تو نکاح نافذ ہو گیا۔ ۲۲۴

- غیر مدخولہ کو ایک لفظ سے تین طلاق دینے اور متفرق الفاظ میں تین طلاق دینے کا حکم اور تعلیق کی مختلف صورتوں کا تفصیلی حکم۔ ۲۲۶
- زن غیر مدخولہ ایک بارگی تین طلاق کی محل ہے۔ ۲۲۶
- غیر مدخولہ کو تین طلاق بطور تعلیق دیں تو شرط کے جزا پر مقدم ومؤخر ہونے میں کیا حکم ہے۔ ۲۲۶
- مسئلہ طلاق ثلثہ کی تفاصیل باعتبار حرف عطف اور باعتبار تعلیق وتنجیز اور باعتبار تقدم وتاخر شرط اور باعتبار زن مدخولہ و غیر مدخولہ۔ ۲۲۶
- عورت کو طلاق کا اختیار دینے کے ایک اقرار نامہ کی مختلف صورتوں کا شرعی حکم۔ ۲۳۱
- شرط کا بین نامہ قبل تحریر ہوا اور اس میں نکاح کی طرف اضافت نہ ہو تو وہ شرط محض فضول و باطل ہے۔ ۲۳۱
- تفویض طلاق میں زن و شوہر دونوں میں سے ایک کے کلام میں اضافت کافی ہے۔ ۲۳۱
- جو تفویض طلاق معلق بالشرط ہو بعد وقوع شرط اسی مجلس پر محدود رہتی ہے جس میں عورت کو وقوع شرط کا حکم ہوا مجلس بدلنے کے بعد اسے طلاق لینے کا اختیار نہیں رہتا۔ ۲۳۲
- عورت کے ارادہ، رضا اور خواہش پر طلاق کو معلق کرنا تملیک مع التعلیق ہے اور یہی تملیک مجلس تک محدود رہے گی۔ ۲۳۲
- ایک مہینہ کے اندر عورت کے شوہر کے مکان پر نہ آنے پر طلاق کو معلق کیا، عورت نہ آئی، یہ خود ایک مہینہ کے اندر عورت کے پاس پہنچا، طلاق واقع ہو گئی۔ ۲۳۳
- زید نے اپنی بیوی کو کہا کہ تینوں طلاق پوری کردوں گا، یہ محض وعدہ ہے اور وعدہ سے طلاق نہیں ہوتی۔ ۲۳۳

Page	Subject / Ruling
233	A drunkard will not enter Paradise.
233	The words 'annulment of marriage' and 'freedom' are among the metaphors for divorce.
233	If one intends divorce while giving permission for a second marriage, divorce will occur, and the husband's statement regarding his intention will be credible upon oath.
235	A man said to his wife, "If I take you out of Jhalod, you are divorced." If he takes her anywhere else from the village named Jhalod, divorce will occur.
235	Three divorces occur; according to the Quran, she cannot return to the first husband's marriage without Halala.
235	If a husband gives an irrevocable divorce (Mughallazah) and then denies it, and the woman is certain of the divorce, she should flee from him however possible. If she is unable, the burden of sin lies on the husband.
235	
237	Revoking a divorce before its occurrence is futile.
238	The transformation of a revocable divorce (Raji) into an irrevocable one (Ba'in) due to a condition is absolutely invalid.
240	Writing an agreement stating, "If I marry any woman other than you, she is divorced once, twice, or thrice." Then marrying another woman with the first wife's permission, a single irrevocable divorce (Ba'in) occurs upon the second woman.
241	A master said about his slaves, "This one is free, or this one, and this one." Then the third became free, while one of the first two is free; the choice of designating which one lies with the master.
241	The word "or" (Aw) is for choice (Takhyir), and "and" (Wa) is for association (Shirkah).
242	There is a difference between 'conveying proof of something' and 'something reaching the level of proof' in the Urdu language.
243	

Page	Subject / Ruling
	An agreement stated: "If I marry a second wife without paying the dower (Mahr) and without obtaining your permission via registered document, she is divorced." If he paid the dower and obtained permission but did not get it registered; then married again, divorce would not occur.
237	The phrase "it shall be considered a divorce" does not cause divorce to occur.
237	Considering "lack of maintenance" as divorce; if maintenance is not provided, divorce will not occur.
237	Nothing can have an effect upon what is void (Batil).

Page	Subject / Ruling
	If divorce is made conditional on two requirements, it will not occur until both conditions are met.
243	Allowing a wife to sing and dance is absolutely prohibited (Haram), and a husband who does so is a 'Dayyuth' (cuckold).
245	If a 'Dayyuth' does not repent, Paradise is forbidden for him, and Allah's curse is upon him.
245	According to the Hadith, three types of people will not enter Paradise: one who causes unjust suffering to parents, a 'Dayyuth', and a woman who adopts a masculine appearance.
247	After marriage, the husband wrote an agreement: "If I marry again without Mahr-un-Nisa's consent and willingness, the second one is divorced." Proof of lack of consent will be from the wife's admission; without it, divorce will not occur.

फ़तावा रज़विया | खंड 13 | पृष्ठ 13

पृष्ठ	विषय / आदेश
233	शराबी जन्नत में नहीं जाएगा।
233	'निकाह विच्छेद' और 'आज़ादी' शब्द तलाक के रूपकों (कनायात) में से हैं।
233	यदि दूसरे निकाह की अनुमति देते समय तलाक की नियत की गई, तो तलाक हो जाएगा, और नियत के बारे में पति का बयान शपथ के साथ विश्वसनीय होगा।
235	एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर मैं तुम्हें झालोद से बाहर ले जाऊँ तो तुम्हें तलाक है।" यदि वह उसे झालोद नामक गाँव से कहीं और ले जाएगा, तो तलाक प्रभावी हो जाएगा।
235	तीन तलाक प्रभावी हो जाते हैं; कुरान के अनुसार, हलाला के बिना वह पहले पति के निकाह में वापस नहीं आ सकती।
235	यदि पति 'तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा' (अत्यधिक कठोर तलाक) देकर मुकर जाए और पत्नी को
237	तलाक होने से पहले तलाक से मुकर जाना व्यर्थ है।
238	किसी शर्त के कारण 'तलाक़-ए-रजी' (प्रतिसंहरणीय तलाक) का 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) हो जाना पूरी तरह से अमान्य है।
240	यह इकरारनामा लिखना कि "तुम्हारे अलावा किसी दूसरी औरत से शादी करूँ तो उसे एक, दो या तीन तलाक है।" पहली पत्नी की अनुमति से दूसरी औरत से शादी करने पर, दूसरी औरत पर एक 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) प्रभावी हो गया।
241	एक मालिक ने अपने गुलामों के बारे में कहा, "यह आज़ाद है या यह और यह।" तो तीसरा आज़ाद हो गया, जबकि पहले दो में से एक आज़ाद है; किसे आज़ाद करना है, इसका चयन करने का अधिकार मालिक के पास है।
241	शब्द "या" (अव) चुनाव (तखीर) के लिए है और "और" (व) जुड़ाव (शिरकत) के लिए है।
242	

पृष्ठ	विषय / आदेश
	तलाक का यकीन हो, तो उसे जैसे भी हो सके उससे दूर भागना चाहिए। यदि वह इसमें सक्षम नहीं है, तो पाप का बोझ पति पर है।
235	इकरारनामा था: "मेहर चुकाए बिना और तुम्हारी रजिस्ट्री के माध्यम से अनुमति प्राप्त किए बिना अगर मैं दूसरी औरत से शादी करूँ तो उसे तलाक है।" यदि उसने मेहर चुका दिया और अनुमति भी प्राप्त कर ली लेकिन उसकी रजिस्ट्री नहीं कराई; फिर दूसरा निकाह किया तो तलाक प्रभावी नहीं होगा।
237	"तलाक समझी जाए" कहने से तलाक प्रभावी नहीं होगा।
237	"देखभाल न करने को तलाक समझना"; यदि देखभाल नहीं की गई तो तलाक प्रभावी नहीं होगा।
237	अमान्य (बातिल) चीज़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।
	उर्दू भाषा में 'किसी चीज़ का सबूत पहुँचाना' और 'किसी चीज़ का सबूत तक पहुँचना', इन दोनों में अंतर है।
243	यदि तलाक को दो शर्तों पर निर्भर किया गया है, तो जब तक दोनों शर्तें पूरी नहीं हो जातीं, तलाक प्रभावी नहीं होगा।
243	पत्नी को नाच-गाने की अनुमति देना पूर्णतः हराम है और ऐसा करने वाला पति 'दय्यूथ' है।
245	यदि 'दय्यूथ' तौबा न करे तो उसके लिए जन्नत हराम है और उस पर अल्लाह की लानत होती है।
245	हदीस के अनुसार, तीन प्रकार के लोग जन्नत में नहीं जाएंगे: माता-पिता को अनुचित कष्ट देने वाला, 'दय्यूथ', और पुरुषों जैसा रूप धारण करने वाली स्त्री।
247	पति ने निकाह के बाद इकरारनामा लिखा, "अगर मेहरुन्निसा की मर्जी और खुशी के बिना दूसरी शादी करूँ तो दूसरी को तलाक।" सहमति न होने का प्रमाण पत्नी की स्वीकृति से होगा; इसके बिना तलाक प्रभावी नहीं होगा।

पृष्ठ 688 का 20

صفحہ	موضوع / حکم
۲۳۳	شرابی جنت میں نہیں جائے گا۔
۲۳۳	فسخ نکاح اور آزادی کا لفظ کنایات طلاق سے ہے۔
۲۳۳	دوسرے نکاح کی اجازت سے طلاق کی نیت کی تو طلاق واقع ہو گی اور نیت کے بارے میں شوہر کا قول قسم سے معتبر ہوگا۔
۲۳۵	مرد نے عورت سے کہا اگر میں تجھے جھالود سے باہر لے جاؤں تو تجھے طلاق پھر جھالود نامی گاؤں سے اس کو کہیں اور لے کر جائے گا تو طلاق واقع ہو جائے گی۔
۲۳۵	
۲۳۷	وقوع طلاق سے پہلے رجوع عن الطلاق لغو ہے۔
۲۳۸	طلاق رجعی کا تعلیق کے سبب بائن ہو جانا باطل قطعی ہے۔
۲۴۰	اقرار نامہ لکھنا کہ تمہارے سوا کسی دوسری عورت سے شادی کروں تو ایک دو تین طلاق ہے۔ دوسری عورت سے شادی اپنی بیوی سے اجازت لے کر کی شادی کرتے ہوئے دوسری عورت پر ایک طلاق بائن پڑ گئی۔
۲۴۱	مالک نے اپنے غلاموں کے بارے میں کہا ھذا حر او ھذا و ھذا تو تیسرا آزاد ہو گیا جبکہ پہلے دونوں میں سے ایک آزاد ہے اس کے تعین کا اختیار مالک کو ہے۔
۲۴۱	

صفحہ	موضوع / حکم
	تین طلاقیں واقع ہو جائیں از روئے قرآن
	بے حلالہ شوہر اول کے نکاح میں نہیں
	آسکتی۔
	شوہر طلاق مغلظہ دے کر منکر ہو گیا
	عورت کو طلاق کا یقین ہے تو جیسے ہو
۲۳۵	سکے اس سے دور بھاگے اور اگر اس پر
	قادر نہیں تو وبال شوہر پر ہے۔
	مہر ادا کئے بغیر اور تمہاری اجازت
	بصیغہ رجسٹری حاصل کئے بغیر اگر
	دوسری عورت سے شادی کردوں تو اس کو
۲۳۵	طلاق، مہر ادا کر دیا، اجازت بھی حاصل
	کی لیکن اس کی رجسٹری نہیں کرائی اور
	دوسرا نکاح کیا تو طلاق واقع نہ ہو گی۔
	"طلاق سمجھی جائے" سے طلاق واقع نہ
۲۳۷	ہو گی۔
	"عدم خبرگیری کو طلاق سمجھنا" خبر
۲۳۷	گیری نہ کی تو طلاق واقع نہ ہو گی۔

صفحہ	موضوع / حکم
	کلمہ "او" "تخییر اور "و" "شرکت کے
	لئے ہے۔
	اردو زبان میں کسی شیئ کا ثبوت
۲۴۲	پہنچانا اور کوئی شیئ ثبوت کو پہنچانا،
	ان دونوں میں فرق ہے۔
	طلاق کو دو شرطوں پر معلق کیا تو
۲۴۳	جب تک دونوں شرطیں نہ پائی جائیں
	طلاق واقع نہ ہو گی۔
	عورت کو ناچ گانے کی اجازت دینا
۲۴۳	حرام قطعی ہے اور ایسا کرنے والا
	شوہر دیوث ہے۔
	دیوث اگر توبہ نہ کرے تو اس پر جنت
۲۴۵	حرام اور اللہ تعالیٰ کی اس پر لعنت ہوتی
	ہے۔

صفحہ	موضوع / حکم	صفحہ	موضوع / حکم
۲۳۷	باطل پر کچھ اثر مرتب نہیں ہو سکتا۔	۲۴۵	حدیث کی رو سے تین اشخاص جنت میں نہیں جائیں گے ،ماں باپ کو ناحق اذیت دینے والا اور دیوث اور مردوں جیسی وضع بنانے والی عورت۔
		۲۴۷	شوہر نے بعد نکاح اقرار نامہ لکھا، اگر مہر النساء کی رضا ور غبت کے بغیر دوسری شادی کروں تو دوسری کو طلاق، تو عدم رضا کا ثبوت اقرار زوجہ سے ہو گا بے اس کے طلاق واقع نہ ہو گی۔

247 | Fulfillment of condition necessitates fulfillment of consequence. | 247 | The common habit of women is that they do not like their husband's second marriage. | 250 248 | Mere statement of one woman is Sharia evidence, especially regarding a co-wife which is a place of suspicion. | 251 248 | An unconsummated wife is a place for three sudden divorces. | 251 248 | There is a big difference between lack of consent and leaving the pursuit of pleasure. | 251 248 | "To whichever woman I marry without your permission, she is divorced." Afterward, he divorced that woman, then married another woman without her permission; divorce will occur. | 251 248 | Knowledge is not required in making divorce conditional upon consent. | 251 248 | Knowledge of permission will be from speech, not from love or hate. | 251 248 | Husband said to wife, "If you go out without my consent, you are divorced." Then husband quietly said "Go," but the wife didn't hear. She went. Divorce will not occur. | 252 248 | Difference between permission (idhn) and consent (rida). | 252 248 | Permission cannot be without audible and understandable speech. | 248 | In a condition known only through the woman's report, her word is reliable. | 253 248 | A man swore "I will not drink without my wife's permission." The wife held the cup in her hand and made him drink but did not give permission verbally, yet the husband heard (something); he will break his oath. | 253 248 | He said, "If you get menstruation, you and so-and-so are divorced." Woman said, "I got menstruation." Divorce happened for her, but not for the other. | 253 249 | Lack of permission in the place of a condition can be proven by witnesses. | 254 249 | "If so-and-so is a believer, you are divorced." Divorce will not occur upon the woman. | 254 249 | Proof of lack of consent and desire cannot be through testimony. | 254 249 | "If I don't fulfill your need, my wife is divorced." The addressee said, "My need is that you divorce your wife." If the husband considers him a liar in stating his need, divorce will not occur. | 254 249 | The heart does not stay in one state because 'The heart fluctuates'. | 257 249 | **Chapter of Ila (Vow of Continence)** | 257 249 | Previous or subsequent lack of consent cannot be proof of concurrent lack. | 257 249 | What is Ila, what is its rule, and does it cause a severe divorce (Mughallazah) or not? | 257 249 | Reasons for anger are thousands, so relying on just one reason is not correct. |

247 | शर्त का पूरा होना नतीजे के पूरा होने को लाज़िम करता है। | 247 | औरतों की आम आदत यह है कि वे अपने पति की दूसरी शादी पसंद नहीं करतीं। | 250 248 | महज़ एक औरत का बयान शरीअत में हुज्जत है, खुसूसन सौतन के बारे में जो कि तोहमत (संदेह) की जगह है। | 251 248 | जिस औरत के साथ ख़ल्वत-ए-सहीहा न हुई हो वह एक साथ तीन तलाक की जगह है। | 251 248 | रजामंदी न होने और रजामंदी हासिल न करने में बहुत फर्क है। | 251 248 | "जिस औरत से तेरी इजाज़त के बिना शादी करूँ उसे तलाक," बाद में उस औरत को तलाक दे दी, फिर दूसरी औरत से उसकी इजाज़त के बिना शादी की, तलाक वाक़े हो जाएगी। | 251 248 | रज़ा (सहमति) पर शर्त रखने में इल्म (ज्ञान) की ज़रूरत नहीं। | 251 248 | इज़्न (अनुमति) का पता बातचीत से होगा, मोहब्बत और नफ़रत से नहीं। | 251 248 | पति ने पत्नी से कहा "बिना मेरी रज़ा के बाहर गई तो तलाक," फिर पति ने धीरे से कहा "जा," पत्नी ने नहीं सुना। वह चली गई। तो तलाक वाक़े नहीं होगी। | 252 248 | इज़्न और रज़ा का फर्क। | 252 248 | इज़्न सुने जाने वाले और समझे जाने वाले बोल के बिना नहीं हो सकता। | 248 | जिस शर्त का पता सिर्फ औरत के बताने से हो, उसमें उसी की बात का एतबार है। | 253 248 | मर्द ने कसम खाई कि पत्नी की इजाज़त के बिना नहीं पियूँगा, पत्नी ने अपने हाथ में प्याला पकड़ कर उसे पिलाया मगर ज़बान से इजाज़त नहीं दी, मगर पति ने सुना, तो कसम टूट जाएगी। | 253 248 | यह कहा कि "अगर तुझे हैज़ आए तो तू और फलां को तलाक," औरत ने कहा मुझे हैज़ आया तो उसे तलाक हो गई, फलां को नहीं। | 253 249 | शर्त की जगह में इजाज़त न होने को गवाहों से साबित किया जा सकता है। | 254 249 | "अगर फलां मोमिन है तो तुझे तलाक," औरत पर तलाक वाक़े नहीं होगी। | 254 249 | रजामंदी और चाहत के न होने का सबूत गवाही से नहीं हो सकता। | 254 249 | "अगर मैं तेरी ज़रूरत पूरी न करूँ तो मेरी औरत को तलाक," सामने वाले ने कहा "मेरी ज़रूरत यही है कि तू अपनी औरत को तलाक दे दे," पति अगर उसे ज़रूरत बताने में झूठा समझे तो उसकी औरत को तलाक वाक़े नहीं होगी। | 254 249 | दिल हर वक्त एक हाल पर नहीं रहता क्योंकि दिल बदलता रहता है (अल-कल्बु यन्कलिब)। | 257 249 | **बाब-अल-ईला (ईला का अध्याय)** | 257 249 | पहले या बाद की रजामंदी न होना साथ की रजामंदी न होने की दलील नहीं हो सकता। | 257 249 | ईला किसे कहते हैं, इसका हुक्म क्या है और इससे तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा पड़ती है या नहीं। | 257 249 | गुस्से के हज़ारों कारण हैं इसलिए किसी एक कारण पर भरोसा करना सही नहीं। |

۲۴۷ | تحقق شرط تحقق جزاء کو مستلزم ہے۔ | ۲۴۷ | عورتوں کی غالب عادت یہ ہے کہ وہ اپنے شوہر کا نکاح ثانی پسند نہیں کرتیں۔ | ۲۵۰ ۲۴۸ | محض ایک عورت کا بیان حجت شرعیہ خصوصاً سوکن کے بارے کہ محل تہمت ہے۔ | ۲۵۱ ۲۴۸ | زن نامد خولہ تین طلاق دفعی کی محل ہے۔ | ۲۵۱ ۲۴۸ | عدم رضا اور ترک استرضاء میں بہت فرق ہے۔ | ۲۵۱ ۲۴۸ | جس عورت سے تیری اجازت کے بغیر شادی کروں اس کو طلاق، بعدہ اس عورت کو طلاق دے دی، پھر دوسری عورت سے اس کی اجازت کے بغیر شادی کی، طلاق واقع ہو جائے گی۔ | ۲۵۱ ۲۴۸ | تعلیق بالرضاء میں علم درکار نہیں۔ | ۲۵۱ ۲۴۸ | اذن کا علم قول سے ہوگا اور محبت وبغض کا نہیں۔ | ۲۵۱ ۲۴۸ | شوہر نے عورت سے کہا بے میری رضا کے باہر گئی تو طلاق، پھر شوہر نے آہستہ سے کہا جا عورت نے سنا نہیں۔ چلی گئی۔ تو طلاق واقع نہ ہوگی۔ | ۲۵۲ ۲۴۸ | اذن ورضا کا فرق | ۲۵۲ ۲۴۸ | اذن بغیر قول مسموع و مفہوم کے نہیں ہو سکتا۔ | ۲۴۸ | جس شرط کا علم عورت کے ہی بتانے سے ہو اس میں اسی کے قول کا اعتبار ہے۔ | ۲۵۳ ۲۴۸ | مرد نے قسم کھائی کہ بیوی کے اذن کے بغیر نہیں پیوں گا، بیوی نے اپنے ہاتھ میں پیالہ پکڑ کے اس کو پلایا مگر زبان سے اذن نہیں دیا یا مگر شوہر نے سنا تو حانث ہو جائے گا۔ | ۲۵۳ ۲۴۸ | یہ کہا اگر تجھے حیض آئے تو تو اور فلانہ کو طلاق، عورت نے کہا مجھے حیض آیا تو اس کو طلاق ہوگئی فلانہ کو نہیں۔ | ۲۵۳ ۲۴۹ | عدم اذن محلِ شرط میں گواہوں سے ثابت کیا جا سکتا ہے۔ | ۲۵۴ ۲۴۹ | اگر فلاں مومن ہے تو تجھے طلاق، عورت پر طلاق واقع نہ ہو گی۔ | ۲۵۴ ۲۴۹ | عدم رضا اور رغبت کا ثبوت شہادت سے نہیں ہو سکتا۔ | ۲۵۴ ۲۴۹ | اگر میں تیری حاجت پوری نہ کروں تو میری عورت کو طلاق، مخاطب نے کہا میری حاجت یہی ہے کہ تو اپنی

عورت کو طلاق دے دے، شوہر اگر اس کو بیانِ حاجت میں جھوٹا سمجھے تو اس کی عورت کو طلاق واقع نہ ہوگی۔ | ۲۵۴ ۲۴۹ | دل ہر وقت ایک حال پر نہیں رہتا کیونکہ القلب ینقلب۔ | ۲۵۷ ۲۴۹ | باب الایلاء | ۲۵۷ ۲۴۹ | عدم رضائے سابق ولا حق دلیل عدم مقارن نہیں ہو سکتی۔ | ۲۵۷ ۲۴۹ | ایلاء کسے کہتے ہیں، اس کا حکم کیا ہے اور اس سے طلاق مغلظہ پڑتی ہے یا نہیں۔ | ۲۵۷ ۲۴۹ | اسباب غضب ہزاروں ہیں لہٰذا کسی ایک سبب پر انحصار درست نہیں۔ |

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

257: Eila (oath of abstinence) is based on five things; as long as those five do not coincide, Eila will not be valid. 257: Wudu (ablution), Ghusl (ritual bath), recitation of the Quran, prostration for recitation, and following a funeral procession do not become obligatory through a vow. 258: No intimacy occurred for four months during Eila; an irrevocable divorce (Talaq Ba'in) took place for the woman. 259: Eila is not a major irrevocable divorce, hence Halala is not required. 259: If an irrevocable divorce occurred during Eila, the husband and wife can remarry whenever they wish, either during or after the waiting period (Iddah). 259: In the case of perpetual Eila, if four months pass without reconciliation, one irrevocable divorce occurs. If he remarries and another four months pass, a second occurs. If he remarries and another four months pass in the same way, a third occurs; now he cannot bring her back into marriage without Halala. 263: Refutation of a fabricated issue attributed to the Hanafi school.

Chapter of Khul' (Divorce initiated by the wife) 263: If divorce is given in exchange for the dower (Mahr), an irrevocable divorce occurs. 264: A girl who is observant of prayer and fasting is weary of an ill-mannered and non-praying husband and wants to seek Khul'. Can she do this according to Sharia?

257: Definition of Khul'. 257: Khul' cannot happen for the wife alone. 258: A marriage contracted by a father or grandfather cannot be annulled by the woman even after she reaches maturity. 259: A marriage for a minor girl contracted by someone other than her father or grandfather can be rejected by her upon reaching maturity. 259: One who mocks prayer and fasting exits the fold of Islam, and his wife's marriage is terminated. 259: If the husband of a woman with whom the marriage was not consummated exits Islam, she can marry another without a waiting period; the waiting period is not mandatory.

260: Chapter of Zihar (Equating wife to mother/sister) 263: The statement "I will divorce you" is merely unreliable and a promise; nothing occurs because of it. 263: "If I speak to you, I will speak to my mother/sister"; this sentence is nonsensical in the context of divorce. 264: "I consider you like a mother instead"; if its meaning was "I consider you forbidden", then this is a phrase of Zihar. 264: For one who has committed Zihar, it is forbidden to have intercourse with the wife, to kiss with desire, to touch the body with desire, or to look at the private parts with desire.

फ़तावा रज़विया, जिल्द १३, पृष्ठ १३

२५७: ईला (परहेज की शपथ) पाँच बातों पर आधारित है; जब तक वे पाँचों जमा न हों, ईला मान्य नहीं होगा। २५७: वुज़ू, ग़ुस्ल, तिलावत-ए-क़ुरआन, सजदा-ए-तिलावत और जनाज़े के पीछे चलना मन्नत से अनिवार्य नहीं होते। २५८: ईला में चार महीने तक शारीरिक निकटता नहीं की गई, तो स्त्री पर एक तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) प्रभावी हो गई। २५९: ईला तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (कठोर अटल तलाक़) नहीं है, इसलिए हलाला की आवश्यकता नहीं है। २५९: यदि ईला के दौरान तलाक़-ए-बाइना हो गई, तो पति और पत्नी इद्दत के दौरान या इद्दत के बाद जब चाहें आपस में निकाह कर सकते हैं। २५९: ईला-ए-मुअब्बद (शाश्वत ईला) की स्थिति में, बिना वापसी के चार महीने बीतने पर एक तलाक़-ए-बाइन होती है। फिर उससे पुनः निकाह किया, फिर चार महीने बीत गए तो दूसरी तलाक़ हो जाएगी। फिर निकाह किया और इसी तरह चार महीने बीत गए, तो तीसरी तलाक़ हो जाएगी; अब वह बिना हलाला के उसे वापस निकाह में नहीं ला पाएगा। २६३: हनफ़ी मज़हब से जुड़े एक मनगढ़ंत मसले का खंडन।

बाब अल-ख़ुलअ (पत्नी द्वारा तलाक़ का अध्याय) २६३: मेहर के बदले तलाक़ दी गई, तो तलाक़-ए-बाइन प्रभावी हो गई। २६४: रोज़ा-नमाज़ की पाबंद लड़की एक दुराचारी और बे-नमाज़ी शौहर से तंग आकर खुला करना चाहती है; क्या वह शरीअत के अनुसार ऐसा कर सकती है?

२५७: खुला की परिभाषा। २५७: अकेले पत्नी के लिए खुला नहीं हो सकता। २५८: पिता या दादा द्वारा किया गया निकाह एक महिला वयस्क होने के बाद भी रद्द नहीं कर सकती। २५९: पिता या दादा के अलावा किसी अन्य द्वारा किया गया नाबालिग लड़की का निकाह वयस्क होते ही वह उसे अस्वीकार कर सकती है। २५९: नमाज़ और रोज़े का मज़ाक उड़ाने वाला इस्लाम के दायरे से बाहर हो जाता है और उसकी पत्नी निकाह से बाहर हो जाती है। २५९: जिस महिला के साथ सोहबत (यौन संबंध) स्थापित नहीं हुई हो, उसका पति यदि इस्लाम त्याग दे, तो वह बिना इद्दत के दूसरे से निकाह कर सकती है; इद्दत अनिवार्य नहीं है।

२६०: बाब अज़-ज़िहार (पत्नी को माँ-बहन जैसा कहना) २६३: यह कहना कि "मैं तुम्हें तलाक़ दे दूँगा" केवल अविश्वसनीय है और एक वादा है; इससे कुछ भी घटित नहीं होता। २६३: "यदि मैं तुमसे बात करूँ तो मैं अपनी माँ या बहन से बात करूँ; तलाक़ के अध्याय में यह वाक्य निरर्थक है। २६४: "तुम्हें माँ की जगह समझता हूँ"; यदि इसका अर्थ यह था कि "तुम्हें अपने लिए वर्जित समझता हूँ", तो

यह ज़िहार का शब्द है। २६४: मुज़ाहिर (ज़िहार करने वाले) के लिए पत्नी के साथ सोहबत करना, कामुकता के साथ चुंबन लेना, कामुकता के साथ शरीर को छूना या कामुकता के साथ निजी अंगों को देखना वर्जित (हराम) है।

पृष्ठ २२, ६८८ में से

۲۵۷: ایلاء کا مدار پانچ باتوں پر ہے جب تک وہ پانچ جمع نہ ہوں ایلاء درست نہ ہو گا۔ ۲۵۷: وضو، غسل، تلاوت قرآن، سجدہ تلاوت اور اتباع جنازہ نذر سے لازم نہیں ہوتے۔ ۲۵۸: ایلاء میں چار مہینہ تک قربت نہ کی ، عورت پر ایک طلاق بائن واقع ہو گئی۔ ۲۵۹: ایلاء طلاق مغلظہ نہیں لہذا حلالہ کی ضرورت نہیں۔ ۲۵۹: اگر ایلاء میں طلاق بائنہ ہو گئی تو شوہر و عورت عدت میں یا بعد عدت جب چاہیں باہم نکاح کر سکتے ہیں۔ ۲۵۹: ایلاء مؤبد کی صورت میں چار ماہ بلا رجوع گزرنے سے ایک طلاق بائن پڑی ، پھر اس سے نکاح کر لیا پھر چار ماہ خالی گزر گئے تو دوسری طلاق پڑ جائے گی، پھر نکاح کیا اور چار ماہ اس طرح گزر گئے، تو تیسری پڑ جائے گی ، اب بلا حلالہ اس کو نکاح میں نہیں لا سکے گا۔ ۲۶۳: حنفی مذہب سے منسوب ایک من گھڑت مسئلے کا رد۔

باب الخلع ۲۶۳: مہر کے بدلے میں طلاق دی تو طلاق بائن واقع ہو گئی۔ ۲۶۴: صوم و صلوٰۃ کی پابند لڑکی کی بد خصلت اور بے نماز شوہر سے بیزار ہو کر خلع کرنا چاہتی ہے کیا شرعاً ایسا کر سکتی ہے۔

۲۵۷: خلع کی تعریف۔ ۲۵۷: تنہا زوجہ کے لئے خلع نہیں ہو سکتا۔ ۲۵۸: باپ دادا کا کیا ہوا نکاح عورت بالغ ہو کر بھی فسخ نہیں کر سکتی۔ ۲۵۹: باپ دادا کے غیر کا کیا ہوا نا بالغہ کا نکاح وہ بالغ ہوتے ہی رد کر سکتی ہے۔ ۲۵۹: نماز روزہ سے مضحکہ کرنے والا اسلام سے خارج ہو جاتا ہے اور اس کی بیوی نکاح سے نکل جاتی ہے۔ ۲۵۹: غیر مدخولہ کا شوہر اسلام سے خارج ہو جائے تو وہ بلا عدت دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے عدت لازم نہیں۔

۲۶۰: باب الظہار ۲۶۳: یہ لفظ کہ میں تجھ کو طلاق دے دوں گا محض نامعتبر اور وعدہ ہے اس سے کچھ واقع نہیں ہوتا۔ ۲۶۳: میں تجھ سے کلام کروں تو اپنی ماں بہن سے کلام کروں ، یہ جملہ باب طلاق میں لغو ہے۔ ۲۶۴: تجھے ماں کے بجائے سمجھتا ہوں، اگر اس کا مطلب یہ تھا کہ حرام سمجھتا ہوں تو یہ کلمہ ظہار ہے۔ ۲۶۴: مظاہر پر عورت کے ساتھ صحبت ، بشہوت بوسہ لینا، بشہوت بدن کو ہاتھ لگانا، بشہوت شرمگاہ کو دیکھنا حرام ہے۔

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Topic No.	Subject Matter	Page No.
269	Statement regarding the expiation (kaffarah) for Zihar and the weight if grain is given as expiation.	280
	Calling a wife "mother" or "sister" is an offensive statement, but this statement is futile; neither divorce nor Zihar occurs from it.	280
270	One who calls his wife "mother" or "sister" is a sinner and a liar.	280
	Calling a wife "mother" with the intention of divorce does not result in divorce.	280
270	According to the Holy Quran, one's mother is only the one who gave birth to them.	281
	If he said to his wife with the intention of divorce, "You are like or as or instead of my mother/sister," then one irrevocable divorce (Talaq Ba'in) will occur.	281
271	An irrevocable divorce (Talaq Ba'in) does not attach to another irrevocable divorce.	281
	If he said to his wife, "You are like or as or instead of my mother/sister for me," and the intention is Zihar or prohibition (tahrim), then it becomes Zihar.	281
272	If the intention is divorce by calling the woman "mother" or "sister" instead, then it is divorce; if sanctity (prohibition) is intended, it is Zihar; and if nothing is intended, then religiously (diyanatan) it is nothing.	281
	What things are forbidden for the one who commits Zihar (muzhahir).	281
273	After paying the expiation for Zihar, the woman becomes lawful for the husband. In expiation, a slave free from defects should be given; for fasting, continuity for two months is necessary; if giving grain, then two seers and three chhatanks (approx. 2kg) of wheat or feeding until full twice should be done.	281
	Details of Zihar expiation.	281
275	As far as possible, the speech of a sane adult should not be left as meaningless.	281
		281

Topic No.	Subject Matter	Page No.
	If he said to his wife without any intention, "You are like my mother to me," then this word will be futile and meaningless; divorce or expiation etc. will not be mandatory.	
276	If he called his wife mother/sister instead and says there was no intention of any kind, then the judge (Qazi) will interpret it as Zihar.	282
	Divorce does not occur by calling the wife mother, sister, or daughter, even if said with the intention of divorce.	282
277	The judge (Qazi) will compel the muzhahir (one who did Zihar) to either pay expiation or give a divorce.	282
	If he made it famous by calling his wife mother with the intention of divorce, then judicially (qaza'an) divorce will be accepted; yes, if it is clear from his statement that this admission of divorce was based on this misunderstanding, then definitely divorce will not occur.	282
279	The muzhahir did not truly intend anything by the word, but the judge declared it Zihar. If the woman demands expiation for fulfilling her rights, then since he truly did not intend Zihar, he can repent from this offensive statement and tell the woman that I have paid the expiation.	282
	A patient of pleurisy (barsam) divorced his wife, then after recovering said that I divorced my wife, and afterwards says that I thought divorce occurs in the state of pleurisy, then what is the ruling.	282

फतवा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

विषय संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
269	ज़िहार के कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) का बयान और यदि कफ़्फ़ारे में अनाज दिया जाए तो उसका वजन।	280
	पत्नी को माँ या बहन कहना एक बुरा कथन है, लेकिन यह कथन व्यर्थ है; इससे न तो तलाक होता है और न ही ज़िहार।	280
270	पत्नी को माँ या बहन कहने वाला पापी और झूठा है।	280
	तलाक की नीयत से पत्नी को माँ कहने से तलाक नहीं होता।	280
270	कुरान मजीद के अनुसार, किसी की माँ वही है जिसने उसे जन्म दिया है।	281
	यदि उसने तलाक की नीयत से पत्नी से कहा कि "तू मेरी माँ या बहन की तरह या उसके स्थान पर है", तो एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो जाएगा।	281
271	एक तलाक-ए-बाइन दूसरे तलाक-ए-बाइन पर लागू नहीं होता।	281
	यदि उसने पत्नी से कहा कि "तू मेरे लिए मेरी माँ या बहन की तरह या उसके स्थान पर है" और नीयत ज़िहार या हराम करने की है, तो वह ज़िहार हो गया।	281
272	यदि स्त्री को माँ या बहन कहने से तलाक की नीयत हो तो तलाक है, और यदि हुरमत (प्रतिबंध) का इरादा हो तो ज़िहार है, और यदि कुछ भी इरादा न हो तो धार्मिक रूप से कुछ भी नहीं है।	281
	मुज़ाहिर (ज़िहार करने वाले) के लिए क्या-क्या चीजें हराम हैं।	281
273	ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा करने के बाद पत्नी पति के लिए हलाल हो जाती है। कफ़्फ़ारे में दोषरहित गुलाम को मुक्त करना चाहिए; रोज़े में दो महीने तक निरंतरता आवश्यक है; यदि अनाज दिया जाए तो दो सेर तीन छटांक गेहूँ या दो समय भरपेट भोजन कराना चाहिए।	281
	ज़िहार के कफ़्फ़ारे का विवरण।	281
275	जहाँ तक संभव हो, एक समझदार वयस्क की बात को व्यर्थ नहीं छोड़ना चाहिए।	281

विषय संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
	यदि किसी नीयत के बिना पत्नी से कहा कि "तू मुझ पर मेरी माँ की तरह है", तो यह शब्द व्यर्थ और अर्थहीन होगा; तलाक या कफ़्फ़ारा आदि कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा।	281
276	पत्नी को माँ या बहन के बजाय कहा और कहता है कि किसी प्रकार की कोई नीयत नहीं थी, तो काज़ी (न्यायाधीश) उसे ज़िहार पर आधारित मानेगा।	282
	पत्नी को माँ, बहन या बेटी कहने से तलाक नहीं होता, भले ही तलाक की नीयत से कहा जाए।	282
277	काज़ी मुज़ाहिर को मजबूर करेगा कि वह या तो कफ़्फ़ारा अदा करे या तलाक दे।	282
	यदि उसने तलाक की नीयत से पत्नी को माँ कहकर प्रसिद्ध किया, तो अदालती तौर पर (कज़ाअन्) तलाक मान लिया जाएगा; हाँ, यदि उसके कथन से यह स्पष्ट हो कि तलाक का यह इकरार उसी गलतफहमी के आधार पर था, तो निश्चित रूप से तलाक नहीं होगा।	282
279	मुज़ाहिर ने शब्द से वास्तव में कुछ भी इरादा नहीं किया था, लेकिन काज़ी ने इसे ज़िहार करार दिया। यदि पत्नी अधिकार की पूर्ति के लिए कफ़्फ़ारे की मांग करती है, तो चूंकि उसने वास्तव में ज़िहार का इरादा नहीं किया था, इसलिए वह उस घृणित कथन से तौबा करके पत्नी से कह सकता है कि मैंने कफ़्फ़ारा अदा कर दिया है।	282
	सरसाम (दिमागी बुखार) के रोगी ने पत्नी को तलाक दिया, फिर ठीक होने के बाद कहा कि मैंने अपनी पत्नी को तलाक दिया, बाद में कहता है कि मैंने यह समझा था कि सरसाम की स्थिति में तलाक हो जाता है, तो क्या हुक्म है।	282

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

نمبر شمار	مضمون	صفحہ نمبر
۲۶۹	کفارہ ظہار کا بیان اور غلہ کفارہ میں دے تو اس کا وزن۔	۲۸۰
۲۸۰	عورت کو ماں بہن کہنا قول شنیع ہے لیکن یہ قول لغو ہے، نہ اس سے طلاق واقع ہو نہ ظہار۔	
۲۷۰	بیوی کو ماں بہن کہنے والا گنہگار اور دروغ گو ہے۔	۲۸۰
۲۸۰	عورت کو طلاق کی نیت سے ماں کہنے سے طلاق نہیں ہوتی۔	
۲۷۰	ازروئے قرآن مجید کسی کی ماں وہی ہے جس نے اسے جنا ہے۔	۲۸۱
۲۸۱	بیوی کو بنیت طلاق کہا کہ تو مثل یا مانند یا بجائے ماں بہن ہے تو ایک طلاق بائن ہو جائے گی۔	
۲۷۱	طلاق بائن طلاق بائن کو لاحق نہیں ہوتی۔	۲۸۱
۲۸۱	بیوی کو کہا تو میرے لئے مثل یا مانند یا بجائے ماں بہن ہے اور نیت ظہار یا تحریم کی ہے تو ظہار ہو گیا۔	
۲۷۲	عورت کو بجائے ماں بہن کہنے سے نیت طلاق ہو تو طلاق، اور حرمت مراد ہو تو ظہار ہے، اور کچھ بھی مراد نہ ہو تو دیانۃً کچھ نہیں۔	۲۸۱
۲۷۳	مظاہر کے لئے کیا کیا چیزیں حرام ہیں۔	۲۸۱

نمبر شمار	مضمون	صفحہ نمبر
	کفارہ ظہار ادا کرنے کے بعد عورت شوہر پر حلال ہو جاتی ہے اور کفارہ میں غلام عیب سے پاک ادا کرنا چاہئے، روزہ میں دو ماہ تک تسلسل ضروری ہے، غلہ دے تو دو سیر تین چھٹانک اٹھنی بھر گیہوں یا دو وقت شکم سیر کھانا کھلائے۔	
	کفارہ ظہار کی تفصیل۔	۲۸۱
۲۷۵	حتی الامکان عاقل بالغ کے کلام کو مہمل نہ چھوڑا جائے۔	۲۸۱
	بیوی کو بلا کسی نیت کے کہا کہ تو مجھ پر مثل میری ماں کے ہے تو یہ لفظ لغو و مہمل ہوگا طلاق یا کفارہ وغیرہ کچھ لازم نہ آئے گا۔	۲۸۱
۲۷۶	بیوی کو بجائے ماں بہن کہا اور کہتا ہے کہ نیت کسی قسم کی نہ تھی تو قاضی ظہار پر محمول کرے گا۔	۲۸۲
	بیوی کو ماں، بہن یا بیٹی کہنے سے طلاق نہیں ہوتی اگرچہ بنیت طلاق کہے۔	۲۸۲
۲۷۷	مظاہر کو قاضی مجبور کرے گا کہ کفارہ ادا کرے یا طلاق دے۔	۲۸۲
	عورت کو طلاق کی نیت سے ماں کہہ کر مشہور کیا تو یہ قضاءً طلاق مانی جائے گی، ہاں اگر اس کے قول سے یہ واضح ہو کہ یہ اقرار طلاق اسی غلط فہمی کی بناء پر تھا تو قطعاً طلاق نہ ہوگی۔	۲۸۲
۲۷۹	مظاہر نے لفظ سے حقیقۃً کچھ مراد نہ لیا لیکن قاضی نے ظہار قرار دیا۔ عورت ادائے حق کے لئے کفارہ کا مطالبہ کرے تو چونکہ حقیقۃً اس نے ارادہ ظہار نہیں	۲۸۲

نمبر شمار	مضمون	صفحہ نمبر
	کیا تھا اس لئے اس قول شنیع سے توبہ کر کے عورت سے کہہ سکتا ہے کہ میں نے کفارہ ادا کر دیا۔	
۲۸۲	برسام کے مریض نے بیوی کو طلاق دی پھر ٹھیک ہونے کے بعد کہا کہ میں نے اپنی بیوی کو طلاق دی بعدہ کہتا ہے کہ میں نے یہ سمجھا تھا کہ حالت برسام میں طلاق واقع ہو جاتی ہے تو کیا حکم ہے۔	

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Page 13

Page	Ruling Description	Ref	Ruling Description
288	Told mother-in-law: "I consider your daughter as my own sister like you for life." If said with the intention of Zihar, it will be Zihar, but it is temporary. It will end automatically after the mother-in-law's death. If said with the intention of divorce, one irrevocable (Bain) divorce occurs, and since divorce isn't temporary, the word "for life" is void. If there was no such intention, or it was for honor and respect or affection, these words are void.	283	For a man to drink his wife's milk is prohibited (Haram), but it does not invalidate the marriage.
288	If the one who performed Zihar does not pay expiation (Kaffarah), the woman can claim that he either pays Kaffarah and has intercourse or divorces her.	283	Prohibition is not established by drinking milk after the age of two and a half years.
288	If the husband has intercourse before paying the expiation for Zihar, he should seek forgiveness and only give the expiation for Zihar.	284	Comparing a woman to her father or grandfather results in nothing.
289	If Zihar is restricted to a certain time, it will lapse after that time passes.	284	"If I have intercourse with you, I would be committing adultery with my mother," only repentance and seeking forgiveness are mandatory from this statement, nothing else.
289	The word "consider" is for affirmation in the chapter of Zihar and for non-occurrence in the chapter of divorce.	285	Calling a woman mother or sister is neither divorce nor Zihar.
290	If one compares those parts of his wife's body that represent the whole body or a prevalent	286	"Make your place elsewhere," if the

Page	Ruling Description
	part to forbidden women (Maharim), it is Zihar; comparing other parts is not. A woman comparing herself to anyone means nothing.
291	Comparing the wife's habits to the habits of forbidden women does not cause prohibition or require expiation.
291	If a woman compares her husband's limbs to the limbs of her forbidden male relatives (Maharim), the husband does not become forbidden to her.
291	Expiation is not mandatory until the cause of expiation is found.
291	Husband and wife calling each other mother and son is void and such talk is a cause of sin.
	Taking the woman's breast in the mouth is nothing.

Ref	Ruling Description
	intention is divorce, it is metaphorical (Kinayah); an irrevocable divorce will occur.
287	**Chapter of Iddah (Waiting Period)**
287	If a minor girl is divorced by her husband without seclusion (Khalwat), there is no Iddah.
287	If a minor girl is divorced after seclusion, make her wait for four months and ten days; if pregnancy is apparent, the Iddah is until childbirth, otherwise, the Iddah ends at three months.
288	Details of the Iddah for a minor.
288	

फ़तावा रज़विया, खंड 13

पृष्ठ 13

पृष्ठ	हुक्म का विवरण	सन्दर्भ	हुक्म का विवरण
288	सास से कहा कि "तेरी लड़की को जीवन भर तेरे जैसी अपनी बहन समझता हूँ"। अगर ज़िहार की नीयत से कहा तो ज़िहार होगा लेकिन यह ज़िहार अस्थायी (मोक़त्त) है। सास की मृत्यु के बाद यह स्वतः समाप्त हो जाएगा। और अगर तलाक की नीयत से कहा तो एक बाइन तलाक होगी और चूँकि तलाक अस्थायी नहीं होता, इसलिए "जीवन भर" शब्द निरर्थक होगा। और अगर नीयत नहीं थी या सम्मान या प्रेम की नीयत थी तो ये शब्द निरर्थक हैं।	283	पुरुष के लिए अपनी पत्नी का दूध पीना हराम है लेकिन इससे निकाह में खलल नहीं पड़ता।
288	यदि ज़िहार करने वाला कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) न दे तो औरत उस पर दावा कर सकती है कि या तो कफ़्फ़ारा देकर सम्भोग करे या तलाक दे।	283	ढाई वर्ष की आयु के बाद दूध पीने से हुरमत (निषेध) साबित नहीं होती।
288	अगर ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले पति ने सम्भोग किया तो तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और केवल ज़िहार का कफ़्फ़ारा दे।	284	औरत को अपने बाप-दादा से उपमा (तशबीह) देने से कुछ नहीं होता।
289	यदि ज़िहार को किसी समय के साथ बांधा गया है, तो वह समय बीतने पर समाप्त हो जाएगा।	284	"तुमसे सम्भोग करूँ तो अपनी माँ से व्यभिचार करूँ, इस कथन से केवल तौबा और इस्तिग़फ़ार अनिवार्य होता है, और कुछ नहीं।
289	"समझता हूँ" शब्द ज़िहार के अध्याय में जाँच के लिए है और तलाक के अध्याय में घटित न होने के लिए।	285	औरत को माँ या बहन कहना न तलाक है और न ज़िहार।

पृष्ठ	हुक्म का विवरण
290	अपनी पत्नी के उन अंगों को जिनसे पूरे शरीर का बोध हो या प्रचलित अंग हों, महरमों से उपमा दे तो ज़िहार है; अन्य अंगों की उपमा देना ज़िहार नहीं। और औरत अपने आप को किसी से उपमा दे तो कुछ नहीं।
291	पत्नी की आदतों की तुलना महरमों की आदतों से करना हुरमत और कफ़्फ़ारे का कारण नहीं है।
291	औरत अगर पति के अंगों को अपने महरमों के अंगों से उपमा दे, तो पति उस पर हराम नहीं होता।
291	जब तक कफ़्फ़ारे का कारण न पाया जाए, कफ़्फ़ारा अनिवार्य नहीं होता।
291	पति-पत्नी का आपस में एक-दूसरे को माँ-बेटा कहना निरर्थक है और यह बात पाप का कारण है।
	औरत के स्तन को मुँह में ले लेना कुछ नहीं है।

सन्दर्भ	हुक्म का विवरण
286	"अपना ठिकाना दूसरी जगह कर ले", यदि नीयत तलाक है तो यह किनाया (संकेत) है, तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो जाएगी।
287	**इद्दत का अध्याय**
287	अगर शौहर ने नाबालिग लड़की को बिना ख़लवत (एकांत) तलाक दी, तो इद्दत नहीं है।
287	नाबालिग को ख़लवत के बाद तलाक दी तो चार महीने दस दिन इंतज़ार कराएं यदि गर्भ प्रकट हो तो इद्दत प्रसव (बच्चे का जन्म) तक है, अन्यथा तीन महीने पर इद्दत समाप्त होगी।
288	नाबालिग की इद्दत का विवरण।
288	

فتاویٰ رضویہ ، جلد سیزدہم

صفحہ ۱۳

صفحہ	حکم کی تفصیل	حوالہ	حکم کی تفصیل
۲۸۸	خوشدامن سے کہا کہ تیری لڑکی کو تاحیات تیرے مثل اپنی بہن سمجھتا ہوں، اگر نیتِ ظہار سے کہا ظہار ہوگا لیکن یہ ظہار موقت ہے۔ خوشدامن کی موت کے بعد خود رفع ہو جائے گا اور اگر نیتِ طلاق سے کہا تو ایک بائن اور چونکہ طلاق موقت نہیں اس لئے تاحیات کا لفظ لغو ہوگا۔ اور اگر نیت نہ تھی یا اعزاز واکرام خواہ الفت ومحبت کی نیت تھی تو یہ الفاظ لغو ہیں۔	۲۸۳	مرد کو بیوی کا دودھ پینا حرام مگر نکاح میں خلل نہیں آتا۔
۲۸۸	مظاہر کفارہ نہ دے تو عورت اس پر دعویٰ کر سکتی ہے کہ یا تو کفارہ دے کر جماع کرے یا طلاق دے۔	۲۸۳	اڑھائی برس کی عمر کے بعد دودھ پینے سے حرمت ثابت نہیں ہوتی۔
۲۸۸	اگر کفارہ ظہار کی ادائیگی سے قبل شوہر نے وطی کی تو استغفار کرے اور فقط ظہار کا کفارہ دے۔	۲۸۴	عورت کو اپنے باپ دادا سے تشبیہ دینے سے کچھ نہیں ہوتا۔
۲۸۹	ظہار کو اگر کسی وقت سے مقید کیا ہے تو اس وقت کے گزرنے سے ساقط ہو جائے گا۔	۲۸۴	تم سے صحبت کروں تو ماں سے زنا کروں، اس

صفحہ	حکم کی تفصیل	حوالہ	حکم کی تفصیل
			قول سے توبہ واستغفار لازم آتا ہے اور بس۔
۲۸۹	"سمجھتا ہوں" کا لفظ باب ظہار میں تحقیق کے لئے ہے اور باب طلاق میں عدمِ تحقق کے لئے۔	۲۸۵	عورت کو ماں بہن کہنا طلاق ہے نہ ظہار۔
۲۹۰	اپنی عورت کے ان اعضاء کو جن سے پورے جسم کی تعبیر کی جاتی ہو یا جزوِ شائع کو محرمات سے تشبیہ دے تو ظہار ہے اور دیگر اعضاء کو تشبیہ دے تو نہیں اور عورت اپنے کو کسی سے تشبیہ دے کچھ نہیں۔	۲۸۶	اپنا ٹھکانا دوسری جگہ کرلے، نیت طلاق ہے تو کنایہ ہے، طلاق بائن واقع ہوگی۔
۲۹۱	تشبیہ عاداتِ زوجہ بعاداتِ محارم موجبِ حرمت و کفارہ نہیں۔	۲۸۷	**باب العدة**
۲۹۱	عورت اگر اعضاء شوہر کو اپنے محارم کے اعضاء سے تشبیہ دے تو شوہر اس پر حرام نہیں ہوتا۔	۲۸۷	نابالغہ کو اگر شوہر نے بے خلوت طلاق دی عدت نہیں۔
۲۹۱	جب تک سببِ کفارہ نہ پایا جائے کفارہ لازم نہیں ہوتا۔	۲۸۷	نابالغہ کو خلوت کے بعد طلاق دی تو چار مہینہ دس یوم انتظار کرائیں، حمل ظاہر ہو تو عدت وضع حمل ورنہ تین مہینے پر عدت ختم ہوگی۔

صفحہ	حکم کی تفصیل	حوالہ	حکم کی تفصیل
۲۹۱	میاں بیوی کا آپس میں ایک دوسرے کو ماں بیٹا کہہ لینا لغو ہے اور یہ کلام باعثِ گنہگاری ہے۔	۲۸۸	نابالغہ کی عدت کی تفصیل۔
	عورت کا پستان منہ میں لے لینا کچھ نہیں۔	۲۸۸	

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

No.	Left Column Text	Right Column Text	No.
293	The waiting period (iddat) after death for a non-pregnant woman is absolutely four months and ten days, whether she is minor or adult, consummated or unconsummated.	A husband divorced; the woman became pregnant by Amr. Amr married her after three months and ten days. Now it's known the woman was pregnant. In this case, if childbirth occurs within two years of the divorce, the child's lineage is established (with the first husband), otherwise not. In the first case, the iddat is until childbirth, and in the second case, the marriage (to Amr) was valid.	295
293	There is essentially no iddat for divorce for an unconsummated wife, even if she is an adult.	If a pregnant widow was married, wait; if a child is born within two years, the iddat is until childbirth and the said marriage is invalid; if the child is born after two years, the said marriage is valid.	296
293	If privacy (khalwat) with the wife occurred or intercourse took place in an invalid (fasid) marriage, then iddat is mandatory.	Those who are aware of the situation and participate in the marriage of a woman observing iddat (mu'tadda) are severe sinners.	296
293	For a divorced menstruating woman, the iddat is three menstrual cycles; for a non-menstruating woman (minor or post-menopausal), it is three months.	Marriage with a pregnant widow is completely null; remarriage is mandatory after childbirth.	296
293	In an invalid marriage, iddat is not mandatory just by privacy until intercourse has occurred.	The iddat for death is four months and ten days.	297
294	The limit for childhood for a woman is 9 years; youth never occurs below this age.	During iddat, marriage or even talk of marriage with a widow is forbidden.	297

No.	Left Column Text	Right Column Text	No.
294	What are the signs of puberty for a woman?	Many divine commands are for worship (ta'abbudi), and those which are rational, their wisdom is not understood by everyone.	297
294	If signs of puberty are found, she's an adult, otherwise, she'll be decreed youth at the age of full fifteen years.	In divine commands, opening the door of 'hows and whys' and nonsensical questions is closing the door of knowledge and blessings.	297
294	The word "leaving" (chhorna) is clear divorce. The iddat will be counted immediately after saying it.	The wisdom of iddat after death is not just to know the womb's vacancy but also mourning for the deceased husband.	298
294	It is forbidden for a woman to live with or marry another man before the iddat ends.	Privacy (khalwat) or lack thereof has no bearing on the iddat of death.	298
294	Details of iddat for a divorced woman and a widow.	Except for the husband, it is not permissible for a woman to mourn for anyone more than three days.	298
295	Iddat is mandatory for a girl capable of intercourse after valid privacy (khalwat-e-sahiha).		

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

नं.	बायाँ कॉलम टेक्स्ट	दायाँ कॉलम टेक्स्ट	नं.
293	गैर-गर्भवती महिला के लिए मृत्यु की इद्दत पूर्ण रूप से चार महीने दस दिन है, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, मिलन हुआ हो या न हुआ हो।	पति ने तलाक दिया, महिला को अम्र से गर्भ ठहर गया। अम्र ने तीन महीने दस दिन बाद निकाह कर लिया, अब पता चला कि महिला गर्भवती है। इस मामले में, यदि प्रसव तलाक के दो साल के भीतर हो, तो बच्चा जायज़ वंश (पहले पति का) है, अन्यथा नहीं। पहली स्थिति में इद्दत प्रसव तक है और दूसरी स्थिति में निकाह सही हुआ।	295
293	गैर-मिलन वाली महिला के लिए तलाक की इद्दत वास्तव में नहीं है, भले ही वह बड़ी हो।	यदि गर्भवती विधवा से निकाह हुआ, तो प्रतीक्षा की जाए; यदि दो वर्ष के भीतर बच्चा हुआ तो इद्दत प्रसव तक है और उक्त निकाह फासिद है, और दो वर्ष के बाद बच्चा पैदा हो तो उक्त निकाह सही है।	296
293	पत्नी के साथ एकांत (खलवत) हुआ हो या निकाह-ए-फासिद में संभोग हुआ हो, तो इद्दत अनिवार्य है।	मुअत्तदा (इद्दत वाली महिला) के निकाह में जो लोग स्थिति जानते हुए शामिल होते हैं, वे बड़े गुनहगार हैं।	296
293	तलाकशुदा मासिक धर्म वाली महिला के लिए इद्दत तीन मासिक धर्म है और गैर-मासिक धर्म वाली (नाबालिग या रजोनिवृत्त) महिला के लिए तीन महीने है।	गर्भवती विधवा से निकाह पूर्णतः बातिल (अमान्य) है, प्रसव के बाद पुनः निकाह अनिवार्य है।	296
293	निकाह-ए-फासिद में केवल एकांत से इद्दत अनिवार्य नहीं	मृत्यु की इद्दत चार महीने दस दिन है।	297

नं.	बायाँ कॉलम टेक्स्ट	दायाँ कॉलम टेक्स्ट	नं.
	होती जब तक संभोग न किया गया हो।		
294	महिला के लिए बचपन की सीमा 9 वर्ष है; इस आयु से कम में यौवन कभी नहीं आता।	इद्दत के दौरान विधवा से निकाह, यहाँ तक कि निकाह की बातचीत भी हराम है।	297
294	महिला के लिए यौवन के लक्षण क्या हैं?	बहुत से ईश्वरीय आदेश इबादत (तअ़ब्बुदी) के लिए हैं, और जो तर्कसंगत हैं, उनकी बुद्धिमत्ता हर किसी की समझ में नहीं आती।	297
294	यदि यौवन के लक्षण मिलें तो वह वयस्क है, अन्यथा पूर्ण पंद्रह वर्ष की आयु पर यौवन का आदेश दे दिया जाएगा।	ईश्वरीय आदेशों में 'कैसे और क्यों' और फालतू सवालों का दरवाजा खोलना ज्ञान और बरकत का दरवाजा बंद करना है।	297
294	"छोड़ना" शब्द स्पष्ट तलाक है। इसे कहने के तुरंत बाद से इद्दत गिनी जाएगी।	मृत्यु की इद्दत का रहस्य केवल गर्भ की शुद्धि जानना ही नहीं है, बल्कि मृत पति का शोक मनाना भी है।	298
294	इद्दत समाप्त होने से पहले महिला का दूसरे पुरुष के साथ रहना या उसके साथ निकाह करना हराम है।	मृत्यु की इद्दत में एकांत होने या न होने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।	298
294	तलाकशुदा और विधवा की इद्दतों का विवरण।	पति के अलावा, किसी महिला के लिए तीन दिन से अधिक शोक मनाना जायज़ नहीं है।	298
295	संभोग के योग्य लड़की पर सही एकांत (खलवत-ए-सहीहा) के बाद इद्दत है।		

نمبر	بائیں کالم کی عبارت	نمبر	دائیں کالم کی عبارت
۲۹۳	وفات کی عدت غیر حاملہ عورت کے لئے مطلقاً چار ماہ دس دن ہے چاہے صغیرہ ہو یا کبیرہ، مدخولہ ہو یا غیر مدخولہ۔	۲۹۵	شوہر نے طلاق دی، عورت کو عمرو سے حمل قرار پا گیا۔ عمرو نے تین مہینہ دس یوم کے بعد نکاح کر لیا، اب معلوم ہوا کہ عورت حاملہ ہے اس صورت میں وضع حمل اگر طلاق کے بعد دو سال کے اندر اندر ہو تو بچہ ثابت النسب ہے ورنہ نہیں۔ اور پہلی صورت میں عدت وضع حمل ہے اور دوسری صورت میں نکاح صحیح ہوا۔
۲۹۳	طلاق کی عدت غیر مدخولہ پر اصلاً نہیں اگر چہ کبیرہ ہو۔	۲۹۶	حاملہ بیوہ سے نکاح ہوا تو انتظار کیا جائے دو برس کے اندر بچہ ہوا تو عدت وضع حمل ہے اور نکاح مذکور فاسد، اور دو برس کے بعد بچہ پیدا ہو تو نکاح مذکور صحیح۔
۲۹۳	بیوی سے خلوت واقع ہو چکی یا نکاح فاسد میں وطی کر لی تو عدت لازم ہے۔	۲۹۶	معتدہ کے نکاح میں جو لوگ واقفِ حال شریک ہوں سخت گنہگار ہیں۔
۲۹۳	مطلقہ حائضہ کے لئے عدت تین حیض ہے اور غیر	۲۹۶	بیوہ حاملہ سے نکاح باطل محض ہے وضع حمل کے بعد دوبارہ نکاح لازم ہے۔

نمبر	بائیں کالم کی عبارت	دائیں کالم کی عبارت	نمبر
۲۹۳	حائضہ یعنی صغیرہ اور آئسہ کے لئے تین ماہ ہے۔ نکاح فاسد میں محض خلوت سے عدت لازم نہیں ہوتی جب تک وطی نہ کر لی ہو۔	عدت موت چار مہینہ دس دن ہے۔	۲۹۷
۲۹۴	عورت کے لئے حد صغر ۹ سال ہے اس سے کم عمر میں جوانی ہر گز نہیں ہوتی۔	دوران عدت بیوہ سے نکاح بلکہ نکاح کی گفتگو بھی حرام ہے۔	۲۹۷
۲۹۴	عورت کے لئے آثارِ بلوغ کیا ہیں۔ آثارِ بلوغ پائے تو بالغہ ورنہ پندرہ سال کامل کی عمر پر جوانی کا حکم کر دیں گے۔	بہت سے احکام الہی تعبدی ہیں اور جو معقول المعنی ہیں ان کی حکمتیں بھی من و تو کی سمجھ میں نہیں آتیں۔ احکام الہیہ میں چون و چرا اور بیہودہ سوالوں کا دروازہ کھولنا علوم و برکات کا دروازہ بند کرنا ہے۔	۲۹۷
۲۹۴	"چھوڑنے" کا لفظ صریح طلاق ہے۔ اس کے کہنے کے فورا بعد سے عدت شمار ہوگی۔	عدت وفات کی حکمت تعرف برائت رحم ہی نہیں بلکہ فوت شدہ شوہر کا سوگ بھی ہے۔	۲۹۸
۲۹۴	عدت ختم ہونے سے پہلے عورت کا دوسرے مرد کے	عدت وفات میں خلوت ہونے نہ ہونے کا کچھ دخل نہیں ہے۔	۲۹۸

نمبر	بائیں کالم کی عبارت	دائیں کالم کی عبارت نمبر
	ساتھ رہنا یا اس کے ساتھ نکاح کرنا حرام ہے۔	
۲۹۴	مطلقہ اور بیوہ کی عدتوں کی تفصیل۔	سوائے شوہر کے عورت کو کسی کے لئے تین دن سے زائد سوگ جائز نہیں۔ ۲۹۸
۲۹۵	قابل جماع لڑکی پر خلوتِ صحیحہ کے بعد عدت ہے۔	

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Page	Ruling Description	Ref
301	If a woman and her suckling husband (25 years old) are alone in a house, valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha) is not established.	In an irregular marriage (Nikah Fasid), separation is necessary, which either husband or wife can initiate.
302	Details regarding the waiting period ('Iddat) of a divorced woman.	If marriage is contracted knowingly during 'Iddat, the marriage is void (Batil) and intercourse is adultery (Zina). If done unknowingly, the marriage is irregular (Fasid); if no intercourse occurred, 'Iddat after separation is not necessary, otherwise, 'Iddat is also obligatory from the time of separation.
303	Three menstrual cycles can occur within two months or also within two years.	A married woman married another out of anger with her husband. After some time, she wants to return to her first husband; the old marriage contract with the first husband remains intact, a new contract is not required.
303	If a man and woman live in a house like husband and wife and share mutual intimacy, they will be legally declared husband and wife.	There is no 'Iddat for adultery (Zina).
303	To assume no marriage took place just because it wasn't in one's presence is extreme foolishness.	If a married woman was taken in marriage assuming she was free and lawful, it is an absolute obligation to leave her. If intercourse has occurred, she must observe 'Iddat for three menstrual cycles from the time of separation. After that, she can return to the first husband without a new marriage contract.
304	Absence of knowledge is not knowledge of absence.	If fetal limbs are fully formed, 'Iddat is completed upon miscarriage.
305		

Page	Ruling Description	Ref
	Pure Shariah declares ill-thinking (Bad-gumani) strictly forbidden (Haram).	In marriage, 'Iddat becomes obligatory due to valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha).
305	Marriage to another before the completion of 'Iddat is forbidden and unlawful, and according to some scholars, no marital rulings apply to such a contract at all.	Explanation of two passages from Fatawa Alamgiri.
306	Intentionally marrying a woman who is in 'Iddat is purely void (Batil).	Meaning of the Quranic verse: "O you who have believed, when you marry believing women and then divorce them before you have touched them, then there is not for you any waiting period to count concerning them."
307	In Shariah, there is no sanctity to the fluid of adultery, nor is there any 'Iddat for it.	A minor's marriage performed by an uncle will be dependent on the father's permission.
307	A woman pregnant through adultery can be married to someone other than the adulterer despite the pregnancy, but intercourse is not permissible until delivery.	If the guardian (Wali) rejected an unauthorized (Fuzuli) marriage and then gave permission, it will not be valid.
	Marriage to a brother-in-law while the sister is alive is strictly forbidden.	

फतावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

पृष्ठ	नियम विवरण	संदर्भ
301	यदि एक महिला और उसका दूध पीने वाला पति (25 वर्ष) एक घर में अकेले हों, तो वैध एकांत (खलवत-ए-सहीहा) स्थापित नहीं होता है।	निकाह-ए-फासिद (अनियमित विवाह) में अलगाव अनिवार्य है, जो पति या पत्नी में से कोई भी कर सकता है।
302	तलाकशुदा महिला की 'इद्दत' (प्रतीक्षा अवधि) के बारे में विवरण।	यदि इद्दत के दौरान जानबूझकर विवाह किया जाता है, तो निकाह शून्य (बातिल) है और संभोग व्यभिचार (ज़िना) है। यदि अनजाने में किया गया है, तो निकाह अनियमित (फ़ासिद) है; यदि संभोग नहीं हुआ, तो अलगाव के बाद इद्दत आवश्यक नहीं है, अन्यथा अलगाव के समय से भी इद्दत अनिवार्य है।
303	तीन मासिक धर्म दो महीने में भी हो सकते हैं और दो साल में भी।	एक विवाहित महिला ने अपने पति से नाराज़ होकर दूसरे से निकाह कर लिया। कुछ समय बाद वह फिर से पहले पति से निकाह करना चाहती है; पहले पति के साथ पुराना अनुबंध बरकरार है, नए अनुबंध की आवश्यकता नहीं है।
303	यदि एक पुरुष और महिला पति-पत्नी की तरह एक घर में रहते हैं और आपसी घनिष्ठता रखते हैं, तो उन्हें शरीयत के अनुसार पति-पत्नी ही माना जाएगा।	व्यभिचार (ज़िना) की कोई इद्दत नहीं है।
303	अपनी उपस्थिति में निकाह न होने को निकाह का न होना समझ लेना घोर मूर्खता है।	यदि किसी विवाहित महिला को स्वतंत्र और वैध समझकर निकाह में लाया गया, तो उसे छोड़ना अनिवार्य है। यदि संभोग हो चुका है, तो महिला को छोड़ने के समय से तीन मासिक धर्म तक इद्दत मनानी चाहिए। उसके बाद, वह

पृष्ठ	नियम विवरण	संदर्भ
		बिना निकाह के नवीनीकरण के पहले पति के साथ रह सकती है।
304	ज्ञान का अभाव, अभाव का ज्ञान नहीं है।	यदि भ्रूण के अंग पूर्ण रूप से बन चुके हों, तो गर्भपात से इद्दत पूरी हो जाती है।
305	शुद्ध शरीयत बदगुमानी (बुरी धारणा) को सख्त हराम (वर्जित) घोषित करती है।	निकाह में 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) से इद्दत अनिवार्य हो जाती है।
305	इद्दत पूरी होने से पहले दूसरे से निकाह करना हराम और नाजायज है, और कुछ विद्वानों के अनुसार इस अनुबंध पर निकाह का कोई नियम लागू नहीं होता।	आलमगीरी के दो उद्धरणों का स्पष्टीकरण।
306	जानबूझकर इद्दत वाली महिला से निकाह करना पूरी तरह से शून्य (बातिल) है।	कुरान की आयत का अर्थ: "ऐ ईमान वालों! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो, तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत नहीं है जिसे तुम गिनो।"
307	शरीयत में व्यभिचार के वीर्य की कोई पवित्रता नहीं है और न ही इसके लिए कोई इद्दत है।	चाचा द्वारा किया गया नाबालिग का निकाह पिता की अनुमति पर निर्भर होगा।
307	व्यभिचार से गर्भवती महिला से व्यभिचारी के अलावा कोई और निकाह कर सकता है, लेकिन प्रसव तक संभोग की अनुमति नहीं है।	यदि वली (अभिभावक) ने फुज़ूली (अनधिकृत) निकाह को अस्वीकार कर दिया और फिर अनुमति दी, तो वह मान्य नहीं होगा।
	बहन की मौजूदगी में बहनोई से निकाह सख्त हराम है।	

صفحہ	مسئلہ کی تفصیل	نمبر شمار
۳۰۱	عورت اپنے شیر خوار شوہر پچیس سالہ ایک تنہا مکان میں یکجائی ہو تو خلوت صحیح نہ ہوئی۔	نکاح فاسد میں متارکہ ضروری جو میاں بیوی دونوں میں سے کوئی بھی کرسکتا ہے۔
۳۰۲	مطلقہ کی عدت کے بارے میں تفصیل۔	عدت میں جانتے ہوئے نکاح کیا تو نکاح باطل اور جماع زنا ہے اور لاعلمی میں کیا تو نکاح فاسد، اگر وطی نہ کی تو متارکہ کے بعد عدت ضروری نہیں، ورنہ متارکہ کے وقت سے بھی عدت واجب ہے۔
۳۰۳	تین حیض دو ماہ بھی ہو سکتے ہیں اور دو سال میں بھی۔	منکوحہ نے اپنے شوہر سے ناراض ہو کر غیر سے نکاح کر لیا، کچھ عرصہ بعد دوبارہ شوہر اول سے نکاح کرنا چاہتی ہے تو اب شوہر اول سے عقد قدیم قائم ہے عقد جدید کی ضرورت نہیں۔
۳۰۳	مرد و عورت یک مکان میں مثل زن و شوہر رہتے ہوں اور باہم انبساط زوج و زوجہ رکھتے ہوں تو شرعاً زوج وزوجہ ہی قرار دئے جائیں گے۔	زنا کی عدت نہیں۔

صفحہ	مسئلہ کی تفصیل	نمبر شمار
		منکوحہ عورت کو خالی وحلال سمجھ کر نکاح میں لایا
۳۰۳	اپنے سامنے نکاح نہ ہونے کو نکاح نہ ہونا سمجھ لینا سخت سفاہت ہے۔	تو اس پر فرض قطعی ہے کہ عورت کو ترک کرے اگر مجامعت کر چکا ہے تو عورت وقت ترک سے تین حیض عدت کرے۔ اس کے بعد شوہر اول کے لئے بے تجدید نکاح رہ سکتی ہے۔
۳۰۴	عدم علم، علم عدم نہیں۔	حمل کے اعضاء مکمل ہو چکے ہوں تو اسقاط سے عدت تام ہو جاتی ہے۔
۳۰۵	شرع مطہر بد گمانی کو سخت حرام فرماتی ہے۔	نکاح میں خلوت صحیحہ سے عدت واجب ہو جاتی ہے۔
۳۰۵	بے انقضائے عدت دوسرے سے نکاح حرام و ناجائز ہے اور بعض علماء کے نزدیک اس عقد پر کوئی حکم نکاح اصلاً مرتب نہیں ہوتا۔	عالمگیری کی دو عبارتوں کی توضیح۔
۳۰۶	معتدہ غیر سے دانستہ نکاح کرنا باطل محض ہے۔	آیت کریمہ "اذا نکحتم المومنت ثم طلقتمو ھن من قبل ان تمسو ھن فمالکم علیھن من عدۃ" کا مطلب۔
۳۰۷	زنا کے پانی کو شرع میں کوئی حرمت نہیں نہ اس کے لئے کوئی عدت۔	چچا کا کیا ہوا نابالغ کا نکاح باپ کی اجازت پر موقوف ہوگا۔
۳۰۷		

صفحہ	مسئلہ کی تفصیل	نمبر شمار
Page 26 of 688	جس عورت کو زنا کا حمل ہو غیر زانی کو بھی با وجود حمل اس سے نکاح جائز ہے مگر تا وضع حمل جماع جائز نہیں۔ بہن کی موجودگی میں بہنوئی سے نکاح سخت حرام ہے۔	ولی نے نکاح فضولی کو رد کر دیا پھر اجازت دی تو جائز نہ ہوگا۔

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

- Page 307: Permission does not follow the annulled (marriage).
- Page 307: If marriage is not agreed upon, there is neither divorce nor 'Iddah (waiting period).
- Page 307: A minor boy is not capable of giving divorce, hence divorce will not occur if given by him.
- Page 307: A minor's guardian cannot give divorce on their behalf.
- Page 307: Getting a divorce before a son reaches puberty due to opposition is purely void.
- Page 307: 'Iddah becomes obligatory after valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha), and full dower (Mahr) also becomes due.
- Page 308: No matter how long the separation from the husband has been, 'Iddah is necessary after divorce.
- Page 308: If the husband died while the wife was at her parental home, she must spend the 'Iddah period at her husband's home; violating this without a valid reason is forbidden.
- Page 309: It is unlawful and forbidden to marry the sister of the consummated wife before her 'Iddah is over.
- Page 309: Description of 'Iddah for consummated and non-consummated wives.
- Page 311: Maintenance and housing during the entire 'Iddah period are the husband's responsibility.
- Page 311: Other rulings of 'Iddah.
- Page 311: A divorce that occurs as Khula is irrevocable (Ba'ina).
- Page 311: After an irrevocable divorce (Talaq Ba'in), it is mandatory for the man to provide the woman with a place in his own house until the 'Iddah is completed, and he must observe Hijab (segregation) from her due to the dissolution of the marriage.
- Page 311: If the house is rented, the husband is responsible for paying the rent during the 'Iddah period.
- Page 312: The 'Iddah for a pregnant woman is childbirth (delivery).
- Page 312: Maintenance and housing for a woman in 'Iddah are obligatory on both husbands.
- Page 312: The 'Iddah for a divorced pregnant woman is also childbirth.

- Page 313: A husband divorced his wife and died within the 'Iddah period. If divorce was given in health or terminal illness without the wife's consent, then 'Iddah is three menstrual cycles. If given in terminal illness without wife's consent, the 'Iddah is whichever is longer between the 'Iddah of death and 'Iddah of divorce.
- Page 314: Marriage of a Rafidi (Shia) with a Sunni is not valid, therefore there is no need for divorce nor 'Iddah.
- Page 314: Whether valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha) occurred or not with the deceased husband, 'Iddah of death is necessary.
- Page 315: The common Rafidis of this age are infidels and apostates.
- Page 315: An apostate (male or female) cannot be married to someone of any religion or faith, neither to believers nor to infidels.
- Page 316: If someone kept a woman in their house without divorce and they started living like husband and wife, then if the (former) husband dies, they will not be husband and wife until they perform a new marriage; if he gives divorce in this situation, it will not occur.
- Page 316: When can a woman marry someone not of equal status (Ghayer-Kufu).
- Page 316: One who keeps another's wedded wife without divorce is a manifest sinner (Fasiq-e-Mo'allin).
- Page 316: A manifest sinner is not fit for religious offices like being a Muezzin.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

- पृष्ठ 307: निरस्त (निकाह) के बाद अनुमति का कोई महत्व नहीं है।
- पृष्ठ 307: यदि निकाह प्रमाणित न हो, तो न तलाक है और न ही इद्दत।
- पृष्ठ 307: एक नाबालिग लड़का तलाक देने का पात्र नहीं है, इसलिए उसके द्वारा दिया गया तलाक प्रभावी नहीं होगा।
- पृष्ठ 307: नाबालिग की ओर से उसका अभिभावक (वली) तलाक नहीं दे सकता।
- पृष्ठ 307: पुत्र के बालिग होने से पहले विरोध के कारण तलाक दिलाना पूर्णतः शून्य (बातिल) है।
- पृष्ठ 307: खलवत-ए-सहीहा (वैध एकांतवास) से इद्दत अनिवार्य हो जाती है और पूरा मेहर भी देय होता है।
- पृष्ठ 308: पति से अलगाव चाहे कितनी ही लंबी अवधि का क्यों न हो, तलाक के बाद इद्दत आवश्यक है।
- पृष्ठ 308: यदि पत्नी अपने मायके में थी और पति का देहांत हो गया, तो उसे इद्दत पति के घर में बितानी चाहिए; बिना किसी ठोस कारण के इसका उल्लंघन करना हराम (निषिद्ध) है।
- पृष्ठ 309: पत्नी की इद्दत पूरी होने से पहले उसकी बहन से निकाह करना नाजायज और हराम है।
- पृष्ठ 309: मदखूला (जिसके साथ सहवास हुआ हो) और गैर-मदखूला (जिसके साथ सहवास न हुआ हो) की इद्दत का विवरण।
- पृष्ठ 311: पूरी इद्दत की अवधि तक भरण-पोषण और आवास पति की जिम्मेदारी है।
- पृष्ठ 311: इद्दत के अन्य नियम।
- पृष्ठ 311: जो तलाक खुला के रूप में होता है, वह बाइन (अपरिवर्तनीय) होता है।
- पृष्ठ 311: तलाक-ए-बाइन के बाद पुरुष के लिए यह अनिवार्य है कि वह महिला को इद्दत पूरी होने तक अपने ही घर में रहने की जगह दे और निकाह समाप्त होने के कारण उससे पर्दा करे।
- पृष्ठ 311: यदि मकान किराए का हो, तो इद्दत के दौरान उसका किराया देना पति पर अनिवार्य है।
- पृष्ठ 312: गर्भवती महिला की इद्दत बच्चे का जन्म (प्रसव) है।

- पृष्ठ 312: मोतदह (इद्दत बिताने वाली) का भरण-पोषण और आवास दोनों पतियों पर अनिवार्य हैं।
- पृष्ठ 312: तलाकशुदा गर्भवती की इद्दत भी बच्चे का जन्म ही है।
- पृष्ठ 313: पति ने पत्नी को तलाक दिया और इद्दत के भीतर उसकी मृत्यु हो गई। यदि तलाक स्वस्थ अवस्था में दिया गया था या मृत्यु-रोग (मरज़ुल मौत) में पत्नी की सहमति के बिना दिया गया था, तो इद्दत तीन मासिक चक्र है। यदि मृत्यु-रोग में पत्नी की सहमति के बिना दिया गया था, तो मृत्यु की इद्दत और तलाक की इद्दत में से जो अधिक लंबी हो, उसे पूरा किया जाए।
- पृष्ठ 314: राफ़ज़ी (शिया) का निकाह सुन्नी से नहीं होता, इसलिए न तलाक की आवश्यकता है और न ही इद्दत की।
- पृष्ठ 314: मृत पति के साथ खलवत-ए-सहीहा हुई हो या न हुई हो, मृत्यु की इद्दत आवश्यक है।
- पृष्ठ 315: वर्तमान समय के आम राफ़ज़ी काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं।
- पृष्ठ 315: मुर्तद (पुरुष या महिला) का निकाह किसी भी पंथ या धर्म वाले से नहीं हो सकता, न ही मोमिनों (मुसलमानों) से और न ही काफ़िरों से।
- पृष्ठ 316: बिना तलाक के किसी की पत्नी को अपने घर में रख लिया और पति-पत्नी की तरह रहने लगे, उसके बाद (पूर्व) पति मर गया, तो जब तक वे नया निकाह न कर लें, वे पति-पत्नी नहीं होंगे; इस स्थिति में यदि वह तलाक देगा तो वह प्रभावी नहीं होगा।
- पृष्ठ 316: एक महिला गैर-कुफ़ू(असमान दर्जे वाले) से कब निकाह कर सकती है।
- पृष्ठ 316: किसी दूसरे की विवाहिता को बिना तलाक अपने पास रखने वाला फासिक-ए-मोलिन (खुल्लम-खुल्ला पाप करने वाला) है।
- पृष्ठ 316: फासिक-ए-मोलिन मोअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) जैसे धार्मिक पदों के योग्य नहीं है।

- الاجازۃ لاتلحق المفسوخ۔ (۳۰۷)
- نکاح متفق نہ ہو تو نہ طلاق ہے نہ عدت۔ (۳۰۷)
- نابالغ لڑکا اہل طلاق نہیں لہذا اس کے دئے سے طلاق نہ ہوگی۔ (۳۰۷)
- نابالغ کی طرف سے اس کا ولی طلاق نہیں دے سکتا۔ (۳۰۷)
- بلوغ پسر سے پہلے بوجہ مخالفت طلاق دلوانا محض باطل ہے۔ (۳۰۷)
- خلوت صحیحہ سے عدت لازم آجاتی ہے مہر بھی پورا واجب ہوتا ہے۔ (۳۰۷)
- شوہر سے جدائی کتنی ہی طویل مدت سے ہو طلاق کے بعد عدت ضروری ہے۔ (۳۰۸)
- عورت میکے میں تھی شوہر کا انتقال ہوا عدت شوہر کے گھر گزارے، بغیر عذر صحیح اس کا خلاف حرام ہے۔ (۳۰۸)
- موطوءہ بیوی کی عدت گزرنے سے قبل اس کی بہن سے نکاح ناجائز و حرام ہے۔ (۳۰۹)
- مدخولہ اور غیر مدخولہ کی عدت کا بیان۔ (۳۰۹)
- تمام عدت تک نفقہ سکنیٰ شوہر کے ذمہ ہے۔ (۳۱۱)
- عدت کے دیگر احکام۔ (۳۱۱)
- جو طلاق بطور خلع واقع ہو بائنہ ہوتی ہے۔ (۳۱۱)
- طلاق بائنہ کے بعد مرد پر لازم ہے کہ عورت کو عدت پوری ہونے تک اپنے ہی مکان میں جگہ دے اور بوجہ زوال نکاح اس سے پردہ کرے۔ (۳۱۱)
- مکان کرایہ کا ہو تو دوران عدت اس میں رہنے کا کرایہ خاوند پر لازم ہے۔ (۳۱۱)
- حاملہ کی عدت وضع حمل ہے۔ (۳۱۲)

- معتدہ کا نفقہ اور سکنیٰ دونوں شوہروں پر واجب ہیں۔ (۳۱۲)
- مطلقہ حاملہ کی عدت بھی وضع حمل ہے۔ (۳۱۲)
- شوہر نے عورت کو طلاق دی اور عدت کے اندر مر گیا۔ اگر طلاق صحت میں دی یا مرض الموت میں، بے رضائے زوجہ دی تو عدت تین حیض، اور مرض الموت میں بے رضائے زوجہ دی تو عدت وفات اور عدت طلاق میں سے جو دراز تر ہو وہ پوری کی جائے۔ (۳۱۳)
- رافضی کا نکاح سنیہ سے نہیں ہوتا اس لئے نہ طلاق کی ضرورت ہے نہ عدت کی۔ (۳۱۴)
- متوفی عنہا زوجہا کی خلوت صحیح ہو یا نہ ہو عدت وفات ضروری ہے۔ (۳۱۴)
- عام روافض زمانہ کافر و مرتد ہیں۔ (۳۱۵)
- مرتد و مرتدہ کا نکاح کسی ملت و مذہب والے سے نہیں ہو سکتا، نہ مومنین سے نہ کفار سے۔ (۳۱۵)
- بے طلاق کسی کی عورت گھر میں رکھ لی اور میاں بیوی کی طرح رہنے لگے اس کے بعد شوہر مر گیا تو جب تک نکاح جدید نہ کرلیں میاں بیوی نہ ہوں گے، اس صورت میں یہ طلاق دے گا تو واقع نہ ہوگی۔ (۳۱۶)
- غیر کفو سے عورت کب نکاح کرسکتی ہے۔ (۳۱۶)
- منکوحہ غیر کو بے طلاق اپنے پاس رکھنے والا فاسق معلن ہے۔ (۳۱۶)
- فاسق معلن موذن جیسے دینی عہدے کے لائق نہیں۔ (۳۱۶)

Fatawa Razawiyya Volume 13 - 13

316: One who admits that a pregnancy is from their adultery deserves punishment. 316: Giving money to someone to make them divorce their wife so one can marry her oneself is bribery. 319 (Ref)

316: For establishing Hudud (legal punishments), an Islamic government and an Imam are required. 316: Nikah (marriage) during the 'iddah period is absolutely forbidden (haram). 319 (Ref)

316: If a child is born within two years after the husband's death and the woman has not declared the end of her 'iddah, the boy's lineage will be correct. If she has declared it, the lineage will be unknown. 317: Pregnancy during the husband's lifetime will be considered legally the husband's. 319 (Ref)

317: If one unknowingly marries a woman in 'iddah and has intercourse, the intercourse is haram but not a sin (due to ignorance). 317: After the husband's death, a pregnant woman remains in 'iddah until she gives birth. 319 (Ref)

317: A widow in her 'iddah can only go out during the day if necessary. 317: If a consummated marriage ends in divorce, 'iddah is obligatory, and marriage during 'iddah is haram. 320 (Ref)

317: Nikah during 'iddah is haram; divorce is not needed for its termination, separation (mutarkah) is sufficient. If intercourse occurred, 'iddah periods will run together; otherwise, only one. 317: If a woman with menses marries one month after divorce, the marriage occurred during 'iddah. Such a woman will have the right of inheritance from the marriage, and she will receive the lesser of Mahr-e-Mithl and specified Mahr. 320 (Ref)

318: A second marriage during 'iddah is haram and intercourse is adultery. If the marriage was known (to be invalid), the person is a transgressor (fasiq) and making them an Imam is a sin, and those who knowingly participated in the marriage are severe sinners. 318: Inheritance does not apply in invalid (fasid) or void (batil) marriages; rather, the right to inheritance comes from a valid marriage. 321 (Ref)

318: If a second marriage occurred during the 'iddah of death and the woman left, if no intercourse occurred, she can remarry after 4 months and 10 days. If intercourse occurred, another 'iddah is obligatory, and both running together. Marriage is

permissible after the one that ends later. 318: If a woman claims the end of 'iddah, her word under oath will be credible. 321 (Ref)

319: Until the 'iddah period passes, not just marriage, but even proposing marriage is absolutely forbidden (haram). 319: If the husband knew the woman was consummated and only four days had passed since divorce, marriage in this case is pure adultery. After the 'iddah period ends, anyone can marry this woman. 322 (Ref)

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह - १३

३१६: जिसने गर्भ के लिए स्वीकार किया कि वह मेरे व्यभिचार (ज़िना) से है, वह दंड का पात्र है। ३१६: किसी को पैसे देकर उसकी पत्नी को तलाक दिलवाना ताकि खुद उससे शादी कर सके, यह रिश्वत है। ३१९ (संदर्भ)

३१६: हुदूद (कानूनी सजा) लागू करने के लिए इस्लामी सरकार और इमाम की आवश्यकता होती है। ३१६: इद्दत के दौरान निकाह (विवाह) पूरी तरह हराम (वर्जित) है। ३१९ (संदर्भ)

३१६: पति की मृत्यु के बाद दो साल के भीतर बच्चा पैदा हुआ और महिला ने इद्दत समाप्त होने की घोषणा नहीं की है, तो लड़के का वंश सही माना जाएगा। यदि उसने घोषणा कर दी है, तो वंश अज्ञात माना जाएगा। ३१७: पति के जीवनकाल में गर्भ को कानूनी रूप से पति का ही माना जाएगा। ३१९ (संदर्भ)

३१७: यदि कोई अज्ञानता में इद्दत वाली महिला से निकाह कर संभोग करता है, तो संभोग हराम है लेकिन पाप नहीं होगा (अज्ञानता के कारण)। ३१७: पति की मृत्यु के बाद, गर्भवती महिला तब तक इद्दत में रहती है जब तक कि वह प्रसव न कर दे। ३१९ (संदर्भ)

३१७: विधवा अपनी इद्दत के दौरान केवल आवश्यकता पड़ने पर दिन में ही बाहर जा सकती है। ३१७: यदि संभोग किए गए विवाह में तलाक होता है, तो इद्दत अनिवार्य है, और इद्दत के दौरान निकाह हराम है। ३२० (संदर्भ)

३१७: इद्दत के दौरान निकाह हराम है; इसे समाप्त करने के लिए तलाक की आवश्यकता नहीं है, अलगाव (मुतारका) पर्याप्त है। यदि संभोग हुआ हो, तो इद्दत की अवधियाँ साथ चलेंगी; अन्यथा केवल एक। ३१७: यदि मासिक धर्म वाली महिला तलाक के एक महीने बाद निकाह करती है, तो निकाह इद्दत के दौरान हुआ। ऐसी महिला को निकाह से विरासत का अधिकार मिलेगा, और उसे महर-ए-मिस्ल और निर्दिष्ट महर में से जो कम हो, वह मिलेगा। ३२० (संदर्भ)

३१८: इद्दत के दौरान दूसरा निकाह हराम है और संभोग ज़िना है। यदि निकाह की अवैधता का ज्ञान था, तो वह व्यक्ति फासिक (गुनहगार) हुआ और उसे इमाम बनाना पाप है, और जानते हुए निकाह में शामिल होने वाले भी बड़े पापी हुए। ३१८: अवैध (फासिद) या शून्य (बातिल) विवाहों में विरासत लागू नहीं होती है; बल्कि विरासत का अधिकार वैध निकाह से प्राप्त होता है। ३२१ (संदर्भ)

३१८: यदि मृत्यु की इद्दत के दौरान दूसरा निकाह हुआ और महिला वहां से चली आई, यदि संभोग नहीं हुआ है, तो वह ४ महीने और १० दिनों के बाद दोबारा निकाह कर सकती है। यदि संभोग हुआ है, तो एक और इद्दत अनिवार्य है, और दोनों साथ चलेंगी। जो बाद में समाप्त हो, उसके बाद निकाह जायज़ होगा। ३१८: यदि महिला इद्दत समाप्त होने का दावा करती है, तो शपथ के साथ उसका कथन विश्वसनीय होगा। ३२१ (संदर्भ)

३१९: जब तक इद्दत की अवधि न गुजर जाए, निकाह तो निकाह, निकाह का संदेश (प्रस्ताव) देना भी निश्चित रूप से हराम है। ३१९: यदि पति को पता था कि महिला का संभोग हो चुका है और तलाक को केवल चार दिन हुए हैं, तो ऐसी स्थिति में निकाह शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) है। इद्दत की अवधि समाप्त होने के बाद, कोई भी उस महिला से निकाह कर सकता है। ३२२ (संदर्भ)

पृष्ठ २८/६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

۳۱۶: جس نے حمل کے لئے اقرار کیا کہ میرے زنا سے ہے وہ مستحق سزا ہے۔ ۳۱۶: کسی کو پیسے دے کر اس کی بیوی کو طلاق دلوانا تاکہ خود اس سے شادی کرے یہ رشوت ہے۔ ۳۱۹

۳۱۶: قیام حدود کے لئے اسلامی حکومت اور امام درکار ہے۔ ۳۱۶: عدت کے اندر نکاح قطعی حرام ہے۔ ۳۱۹

۳۱۶: شوہر کے مرنے کے بعد دو سال کے اندر بچہ پیدا ہوا اور عورت عدت ختم ہونے کا اقرار نہ کر چکی ہو تو لڑکا صحیح النسب ہوگا اور اقرار کر چکی ہو تو مجمول النسب ہوگا۔ ۳۱۷: شوہر کی زندگی میں حمل شرعاً شوہر ہی کا سمجھا جائے گا۔ ۳۱۹

۳۱۷: معتدہ غیر سے لاعلمی میں نکاح کرکے صحبت کی تو صحبت حرام ہے لیکن گناہ نہ ہوگا۔ ۳۱۷: وفات شوہر کے بعد حاملہ عورت کا جب تک حمل وضع نہ ہو وہ عدت ہی میں ہے۔ ۳۱۹

۳۱۷: متوفی عنہا زوجہا عدت میں بضرورت صرف دن میں باہر جاسکتی ہے۔ ۳۱۷: مدخولہ کو طلاق دی عدت واجب ہے اور عدت کے اندر نکاح حرام ہے۔ ۳۲۰

۳۱۷: عدت کے اندر نکاح حرام ہے اس کے لئے طلاق کی ضرورت نہیں متارکہ کافی ہے، صحبت ہو چکی تو عدتیں ایک ساتھ چلیں گی ورنہ ایک ہی۔ ۳۱۷: حیض والی عورت طلاق کے ایک مہینہ بعد نکاح کرے تو نکاح عدت کے اندر ہوا اور ایسی عورت کو نکاح سے وراثت کا حق پہنچے گا، اور مہر مثل اور مسمّٰی سے جو کم ہو وہ پائے گی۔ ۳۲۰

۳۱۸: عدت کے اندر دوسرا نکاح حرام اور قربت زنا ہے اگر نکاح کو علم تھا تو وہ فاسق ہوا اور اس کو امام بنانا گناہ ہے اور دانستہ نکاح میں شریک ہونے والے سخت گنہگار ہوئے۔ ۳۱۸: نکاح فاسد و باطل میں توارث جاری نہیں ہوتا بلکہ استحقاق ارث نکاح صحیح سے ہوتا ہے۔ ۳۲۱

۳۱۸: عدت وفات کے اندر دوسرا نکاح ہوا عورت وہاں سے چلی آئی اگر قربت نہ ہوئی ہو تو چار مہینہ دس یوم کے بعد دوسرا نکاح ہو سکتا ہے اور صحبت ہو چکی ہو تو ایک اور عدت واجب اور دونوں ساتھ ہی ساتھ چلیں گی جو بعد میں ختم ہو اس کے بعد نکاح جائز ہوگا۔ ۳۱۸: عورت انقضائے عدت کی دعویدار ہے تو اس کا قول بقسم معتبر ہوگا۔ ۳۲۱

۳۱۹: جب تک عدت نہ گزرے نکاح تو نکاح، نکاح کا پیغام دینا حرام قطعی ہے۔ ۳۱۹: نکاح کو علم تھا کہ عورت مدخولہ ہے اور طلاق کو چار روز ہوئے ہیں ایسی صورت میں نکاح زنا خالص ہے۔ عدت کی مدت ختم ہونے کے بعد کوئی بھی اس عورت سے نکاح کر سکتا ہے۔ ۳۲۲

Description	Page	Description	Page
There is no Shariah prohibition for the fluid of adultery, nor is there any iddah for it.	322	Chapter on Mourning (Hidad)	327
Calling one's wife 'mother' is a sin, but divorce does not occur because of it.	322	During the iddah of death, a woman cannot leave her husband's house; however, a woman who is forced to earn a livelihood may go out during the day and spend the night in that house.	327
No matter how many days a woman remains separate from her husband, if privacy (khalwat) has occurred, iddah is obligatory.	323	If it becomes impossible to stay in the husband's house for some reason, she can move to a house closest to it.	327
Marriage before the completion of iddah is absolutely invalid and forbidden.	323	If permissibility is due to necessity, then when the necessity ceases, the permissibility also ends.	328
The iddah for a widow is four months and ten days; privacy (khalwat) is not a condition for this.	323	Due to what constraints is a woman allowed to leave the house during the iddah of death?	328
If a woman is knowingly married within her iddah, it is purely void; it cannot even be called a marriage.	324	Can a woman in iddah of death go to court out of necessity to obtain any of her rights?	328
If the father and grandfather are not present, the biological brother is the legal guardian for marriage. While he is there, the mother has no authority.	324	During the iddah of death, a woman can go out during the day to obtain maintenance or for its firm establishment.	329
The iddah of a pregnant woman is childbirth, even if only two	324	Maintenance for iddah of death is not obligatory upon anyone. The woman should eat from what she has; if she	330

Description	Page	Description	Page
minutes have passed since divorce or death.		doesn't have anything, she can go out during the day for labor.	
Three menstrual cycles cannot pass in nineteen days.	324	One should not make excuses or use ruses in fulfilling Allah's obligations.	330
If a woman in iddah of divorce becomes pregnant, her iddah will now be completed upon childbirth.	324	Regarding the widow's house during iddah: even if there is a real fear for life, property, or honor, she should still spend her iddah in that house as much as possible.	330
If a woman in iddah of death becomes pregnant during the iddah, her iddah will still be four months and ten days.	324	Even a woman who goes out should spend her iddah sitting in her husband's house if maintenance is provided.	330

Page 29 of 688

विवरण	पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ
ज़िना के पानी की शरीयत में कोई हुरमत नहीं और न उसके लिए इद्दत है।	३२२	बाब अल-हिदाद (शोक)	३२७
पत्नी को माँ कहना गुनाह है मगर इससे तलाक़ वाक़े नहीं होती।	३२२	इद्दत-ए-वफ़ात में औरत शौहर के मकान से बाहर नहीं जा सकती, हाँ जो औरत रोज़ी कमाने के लिए मजबूर हो वो दिन में बाहर जाए और रात उस घर में गुज़ारे।	३२७
औरत कितने ही दिन शौहर से अलग रहे अगर ख़ल्वत (एकांत) हो चुकी हो तो इद्दत वाजिब है।	३२३	अगर शौहर के मकान में रहना किसी वजह से नामुमकिन हो तो उसके क़रीब तरीन किसी मकान में मुंतक़िल हो सकती है।	३२७
इद्दत पूरी होने से पहले निकाह कतई ना-जायज़ और हराम है।	३२३	अगर इबाहत (अनुमति) ज़रूरत की वजह से हो तो जब ज़रूरत न रहे इबाहत भी नहीं रहती।	३२८
बेवा (जिसका शौहर मर गया हो) की इद्दत चार महीने दस दिन है, इसके लिए ख़ल्वत की शर्त नहीं।	३२३	किन मजबूरियों के सबब औरत को इद्दत-ए-वफ़ात में घर से निकलने की इजाज़त है।	३२८
जान-बूझकर इद्दत के दौरान औरत का निकाह किया जाए तो वो सरासर बातिल (अवैध) है, उसे निकाह ही नहीं कह सकते।	३२४	क्या इद्दत-ए-वफ़ात गुज़ारने वाली औरत अपना कोई हक़ हासिल करने के लिए मजबूरी में अदालत जा सकती है?	३२८
बाप-दादा न हों तो जवान सगा भाई निकाह का वली (संरक्षक) है। उसके होते हुए माँ को अख्तियार नहीं।	३२४	औरत इद्दत-ए-वफ़ात में ख़र्चा (नफ़क़ा) हासिल करने के लिए या उसे पुख़्ता करने के लिए दिन ही दिन में बाहर जा सकती है।	३२९
	३२४		३३०

विवरण	पृष्ठ
गर्भवती की इद्दत बच्चा पैदा होना है, चाहे तलाक़ या मौत को दो मिनट ही गुज़रे हों।	
उन्नीस दिन में तीन माहवारी (हैज़) नहीं गुज़र सकते।	३२४
तलाक़ की इद्दत वाली औरत अगर इद्दत के दौरान गर्भवती हो गई तो अब उसकी इद्दत बच्चा पैदा होने से पूरी होगी।	
इद्दत-ए-वफ़ात वाली औरत अगर इद्दत के दौरान गर्भवती हो जाए तब भी उसकी इद्दत चार माह दस दिन ही होगी।	३२४
पृष्ठ २९/६८८	

विवरण	पृष्ठ
मौत की इद्दत का ख़र्चा किसी पर वाजिब नहीं होता। औरत खुद अपने पास से खाए, पास न हो तो दिन को मज़दूरी के लिए बाहर जा सकती है।	
अल्लाह तआला के फ़र्ज़ की अदायगी में हीले-बहाने न किए जाएँ।	३३०
बेवा का इद्दत वाला मकान, अगर जान-माल या इज़्ज़त का वाक़ई ख़ौफ़ हो तब भी जहाँ तक मुमकिन हो इद्दत उसी मकान में गुज़ारे।	३३०
बाहर निकलने वाली औरत भी अगर ख़र्चा मयस्सर हो तो इद्दत शौहर के घर में बैठकर गुज़ारे।	३३०

تفصیل صفحہ

زنا کے پانی کی شرع میں کوئی حرمت نہیں اور نہ اس کے لئے عدت ہے۔ ۳۲۲

زوجہ کو ماں کہنا گناہ ہے مگر اس سے طلاق واقع نہیں ہوتی۔ ۳۲۲

عورت کتنے ہی دن شوہر سے الگ رہے اگر خلوت ہو چکی ہو تو عدت واجب ہے۔ ۳۲۳

پیش از انقضائے عدت نکاح قطعاً ناجائز و حرام ہے۔ ۳۲۳

متوفی عنہا زوجہ کی عدت چار مہینہ دس دن ہے اس کے لئے خلوت کی شرط نہیں۔ ۳۲۳

۳۲۴

تفصیل صفحہ

باب الحداد (سوگ) ۳۲۷

عدت وفات میں عورت شوہر کے مکان سے باہر نہیں جا سکتی ہاں جو عورت کسب معاش کے لئے مجبور ہو وہ دن میں باہر جائے اور رات اس گھر میں گزارے۔ ۳۲۷

اگر شوہر کے مکان میں رہنا کسی وجہ سے ناممکن ہو تو اس کے قریب تر کسی مکان میں منتقل ہو سکتی ہے۔ ۳۲۷

اگر اباحت بوجہ ضرورت ہو تو جب ضرورت نہ رہے اباحت بھی نہیں رہتی۔ ۳۲۸

کن مجبوریوں کے سبب عورت کو عدت وفات میں گھر سے نکلنے کی اجازت ہے۔ ۳۲۸

۳۲۸

تفصیل	صفحہ
دیدہ دانستہ عدت کے اندر عورت کا نکاح کیا جائے تو وہ محض باطل ہے، اس کو نکاح ہی نہیں کہہ سکتے۔	۳۲۴
باپ دادا نہ ہوں تو جوان بھائی حقیقی ولی نکاح ہے۔ اس کے ہوتے ہوئے ماں کو اختیار نہیں۔	۳۲۴
حاملہ کی عدت وضع حمل ہے چاہے طلاق یا وفات کو دو منٹ ہی گزرے ہوں۔	۳۲۴
انیس دن میں تین حیض نہیں گزر سکتے۔	۳۲۴
طلاق کی معتدہ عدت کے اندر حاملہ ہوئی تو اب اس کی عدت وضع حمل سے پوری ہوگی۔	۳۲۴
معتدہ وفات اگر دوران عدت حاملہ ہو جائے تب بھی اس کی عدت چار ماہ دس دن ہوگی۔	۳۲۴
کیا معتدہ وفات اپنے کسی حق کو حاصل کرنے کے لئے بامر مجبوری کچہری میں جا سکتی ہے۔	
عورت عدت وفات میں نفقہ کے حصول کے لئے یا اس کے استحکام کے لئے دن ہی دن میں باہر جا سکتی ہے۔	۳۲۹
عدت موت کا نفقہ کسی پر نہیں ہوتا۔ عورت خود اپنے پاس سے کھائے، پاس نہ ہو تو دن کو مزدوری کے لئے باہر جا سکتی ہے۔	۳۳۰
اللہ تعالیٰ کے فرض کی ادائیگی میں حیلے بہانے نہ کئے جائیں۔	۳۳۰
متوفی عنہا زوجہ کا مکان عدت میں جان و مال عزت کا واقعی خوف ہو تب بھی حتی الامکان عدت اسی مکان میں گزارے۔	۳۳۰
باہر نکلنے والی عورت بھی اگر نفقہ ہو تو عدت شوہر کے گھر میں بیٹھ کر گزارے۔	۳۳۰

Fatawa Rizvia | Volume 13 | 13

Page	Subject
336	No proof from noble Hadith for the four-year estimation.
336	The view of Maula Ali and Abdullah bin Masood (may Allah be pleased with them) regarding the wife of a missing person is in accordance with the Hanafi school.
336	It is proven that Hazrat Umar Farooq al-Azam (may Allah be pleased with him) retracted his position on this issue.
337	Imam Shafi'i's (may Allah have mercy on him) new and preferred view is also in accordance with the majority.
337	According to the Shafi'i imams, if a judge acts upon the four-year issue, his judgment should be overturned.
338	Issuing a fatwa based on a weak opinion is ignorance and opposition to consensus (Ijma).
338	Strict caution is observed in Sharia regarding marital matters.
338	The general rule for things is permissibility, but the general rule for marital matters (furooj) is prohibition.
338	In India, widows are not remarried, which shows that there is no dire necessity or compulsion regarding the wife of a missing person.
339	
331	Things forbidden for women during the 'Iddah of death.
332	Proposing marriage during 'Iddah is forbidden.
332	If a woman is traveling at the time of her husband's death, further travel is forbidden; she should complete her 'Iddah there.
332	It is forbidden for a woman to stay with a stranger.
333	Travel is forbidden for a woman during 'Iddah. 'Iddah does not end by traveling; it is necessary to come and stay in the same house.
333	A minor cannot waive her dower (Mahr).
333	The marriage of a woman in 'Iddah is purely void.
333	The authority for the marriage of a minor widow after 'Iddah lies with her father, not her father-in-law.
333	Where should a woman complete her 'Iddah if she is traveling during 'Iddah.
333	

Page	Subject
	Whoever relies on Allah, Allah makes him independent of the creation.
339	Sharia remedy for celibacy.
340	Wrong following of Imam Malik's (may Allah have mercy on him) school.
340	In Imam Malik's school, if twenty years have passed before the case is presented to a judge, they are not considered.
340	Guidance and advice for the wife of a missing person and her Mahrams (unmarriageable kin).
342	It is a Sharia command for a person sentenced to permanent imprisonment to divorce his wife.
Page 30 of 688	

Page	Subject
	In what circumstances is a widow in 'Iddah allowed to move from the place of 'Iddah.
	Chapter: The Wife of a Missing Person (Mafqud-ul-Khabar)
335	A four-year respite for the wife of a missing person is the school of Imam Malik (may Allah have mercy on him); the majority of imams are against it.
335	There is no evidence for the four-year estimation except for the Taqleed (following) of Commander of the Faithful Umar Farooq (may Allah be pleased with him).
336	Maliki imams believe in the four-year estimation regarding wealth.

पृष्ठ	विषय
३३६	चार साल की समय-सीमा का हदीस शरीफ़ से कोई सबूत नहीं है।
३३६	लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में मौला अली और अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का मत हनफ़ी पंथ के अनुकूल है।
३३६	यह प्रमाणित है कि हज़रत उमर फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इस मसले पर अपना रुख बदल लिया था।
३३७	इमाम शाफ़ई (रहमहुल्लाह) का नया और प्रमुख मत भी बहुमत (जम्हूर) के अनुकूल है।
३३७	शाफ़ई इमामों के अनुसार, यदि कोई काजी चार साल वाले मसले पर अमल करे, तो उसका फ़ैसला रद्द कर दिया जाना चाहिए।
३३८	कमज़ोर राय पर फ़तवा देना अज्ञानता और सर्वसम्मति (इज्मा) का विरोध है।
३३८	शरीयत में वैवाहिक मामलों (फ़ुरुज) में सख़्त सावधानी बरती जाती है।
३३८	मूल रूप से वस्तुओं में अनुमति है, लेकिन वैवाहिक मामलों (फ़ुरुज) में मूल नियम निषेध है।
३३८	भारत में विधवाओं का पुनर्विवाह नहीं किया जाता, जिससे पता चलता है कि लापता व्यक्ति
३३१	इद्दत-ए-वफ़ात (मृत्यु के बाद की प्रतीक्षा अवधि) में औरतों के लिए क्या चीज़ें वर्जित हैं।
३३२	इद्दत के दौरान निकाह का पैगाम भेजना हराम है।
३३२	पति की मृत्यु के समय यदि स्त्री यात्रा पर हो, तो आगे की यात्रा हराम है; वह इद्दत वहीं बिताए।
३३२	किसी गैर व्यक्ति के पास स्त्री का ठहरना हराम है।
३३३	इद्दत के दौरान स्त्री के लिए यात्रा हराम है। यात्रा करने से इद्दत समाप्त नहीं होती; उसी घर में आकर रहना ज़रूरी है।
३३३	नाबालिग द्वारा माफ़ करने से महर (स्त्रीधन) माफ़ नहीं हो सकता।
३३३	इद्दत के दौरान स्त्री का निकाह पूरी तरह से शून्य (बातिल) है।
३३३	नाबालिग विधवा के निकाह का अधिकार इद्दत के बाद उसके पिता को है, न कि ससुर को।
३३३	यदि इद्दत के दौरान स्त्री यात्रा में हो, तो वह इद्दत कहाँ बिताए।

पृष्ठ	विषय
	की पत्नी के मामले में कोई अनिवार्य आवश्यकता या मजबूरी नहीं है।
३३९	जो अल्लाह पर भरोसा करता है, अल्लाह उसे सृष्टि से बेपरवाह कर देता है।
३३९	अविवाहित रहने का शरीयत आधारित समाधान।
३४०	इमाम मालिक (रहमहुल्लाह) के पंथ का ग़लत अनुसरण।
३४०	इमाम मालिक के पंथ में, यदि मामला काजी के पास पहुँचने से पहले बीस साल बीत चुके हों, तो वे मान्य नहीं हैं।
३४०	लापता व्यक्ति की पत्नी और उसके महरम को मार्गदर्शन और सलाह।
३४२	स्थायी कारावास की सज़ा पाए व्यक्ति के लिए शरीयत का आदेश है कि वह अपनी पत्नी को तलाक़ दे दे।
३३३	किन परिस्थितियों में विधवा को इद्दत के स्थान से स्थानांतरित होने की अनुमति है।
	अध्याय: लापता व्यक्ति की पत्नी (मफ़क़ूद-उल-ख़बर)
३३५	लापता व्यक्ति की पत्नी के लिए चार वर्ष की मोहलत इमाम मालिक (रहमहुल्लाह) का पंथ है; अन्य अधिकांश इमाम इसके विरुद्ध हैं।
३३५	चार वर्ष की सीमा पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुकरण (तक़लीद) के अलावा कोई प्रमाण नहीं है।
३३६	मालिकी इमाम धन (संपत्ति) के मामले में चार साल वाली सीमा को मानते हैं।

صفحہ	مضمون
۳۳۶	چار سال کی تقدیر کا حدیث شریف سے ثبوت نہیں۔
۳۳۶	زوجہ مفقود کے بارے میں مولا علی اور عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا مذہب احناف کے موافق ہے۔
۳۳۶	حضرت عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس مسئلہ میں رجوع ثابت ہے۔
۳۳۷	امام شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کا قول جدید و راجح بھی جمہور کے موافق ہے۔
۳۳۷	ائمہ شوافع کے نزدیک قاضی چار سال والے مسئلہ پر عمل کرے تو اس کی قضا توڑ دی جائے۔
۳۳۸	قول ضعیف پر فتوی دینا جہل و مخالفت اجماع ہے۔
۳۳۸	

صفحہ	مضمون
۳۳۱	عدت وفات میں عورتوں کو کیا چیزیں منع ہیں۔
۳۳۲	عدت کے اندر نکاح کا پیغام حرام ہے۔
۳۳۲	شوہر کے انتقال کے وقت عورت سفر میں ہو تو اس کو مزید سفر حرام، عدت وہیں گزارے۔
۳۳۲	عورت کو غیر شخص کے پاس ٹھہرنا حرام ہے۔
۳۳۳	عدت کے اندر عورت کو سفر حرام ہے۔ سفر کرنے سے عدت ختم نہیں ہوتی اسی گھر میں آکر رہنا ضروری ہے۔
۳۳۳	نابالغہ کے معاف کرنے سے مہر معاف نہیں ہوسکتا۔
۳۳۳	

مضمون

صفحہ	مضمون
	شریعت کو فروج میں سخت احتیاط ملحوظ ہے۔
۳۳۸	اصل اشیا میں اباحت ہے لیکن فروج میں اصل حرمت ہے۔
۳۳۸	ہندوستان میں بیوہ کا نکاح نہیں کرتے جس سے معلوم ہوا کہ زوجہ مفقود کے بارے میں ضرورت و مجبوری نہیں ہے۔
۳۳۹	جو اللہ پر بھروسا کرے اللہ اس کو مخلوق سے بے پروا کرتا ہے۔
۳۳۹	عذوبت کا شرعی علاج۔
۳۴۰	امام مالک علیہ الرحمہ کے مسلک کی غلط پیروی۔
۳۴۰	

صفحہ	مضمون
	معتدہ کا نکاح دوران عدت باطل محض ہے۔
۳۳۳	معتدہ وفات نابالغہ کے نکاح کا اختیار بعد از عدت اس کے باپ کو ہے نہ کہ سسر کو۔
۳۳۳	عدت کی حالت میں عورت سفر میں ہو تو عدت کہاں گزارے۔
۳۳۳	معتدہ وفات کو کن حالات میں موضع عدت سے منتقل ہونے کی اجازت ہے۔
	باب زوجہ مفقود الخبر
۳۳۵	زوجہ مفقود الخبر کے لئے چار برس کی مہلت امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب ہے جمہور ائمہ اس کے خلاف ہیں۔
۳۳۵	چار برس کی تقدیر پر امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تقلید کے علاوہ کوئی دلیل نہیں۔
۳۳۶	

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	امام مالک کے مذہب میں قاضی کے وہاں معاملہ پیش ہونے سے پہلے بیس سال گزر چکے ہوں ان کا اعتبار نہیں۔		ائمہ مالکیہ مال کے بارے میں چار سال والی تقدیر کے قائل ہیں۔
۳۴۰	زوجہ مفقود اور اس کے محارم کو ہدایت و نصیحت۔		
۳۴۲	محبوس دائمی کو شرعا یہ حکم ہے کہ اپنی عورت کو طلاق دے دے۔		

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

- Delegating divorce is also sufficient. | 342 | Ruling regarding the wife of an impotent man. | 348
- The wife of a missing person remarried, after which the first husband returned. The woman shall be returned to him. | 342 | Chapter on Lineage (Bab al-Nasab) | 349
- In the case of sexual intercourse, the proper dower (Mahr al-Mithl) is also obligatory upon the second husband. | 343 | If a child is born five months after marriage, in which case will the lineage be valid and in which case not? | 349
- Marrying off the wife of a missing person on her own after four years is not the school of any Imam. | 344 | A pregnancy of less than six months and more than two years will not have a valid lineage. | 349
- According to the Hanafis, it is obligatory for the woman to wait until the husband's age reaches seventy years. | 344 | Evidence for negation is not acceptable. | 350
- Scarcity of sustenance is a weak excuse for the wife of a missing person, as sustenance is from Allah. | 344 | If a woman claims regarding a boy that he is from the husband's sperm but cannot provide a Shari'a-based explanation, then the pregnancy will be of unknown lineage. | 350
- A question related to the wife of a missing person and its answer according to the Hanafi school. | 345 | If the pregnancy is of unknown lineage, then marriage with such a woman will be voidable. | 351
- The mother performed the marriage. If it was with an equal (kufw) and the girl did not reject it upon reaching puberty, the marriage became binding. | 346 | In a voidable marriage, if the husband had valid sexual intercourse, then it is obligatory to pay the lesser of the proper dower and the specified dower. | 351
- The woman of a missing person should wait until the husband's age reaches seventy years. | 346 | If an unmarried woman claims to have become pregnant through intercourse in a dream, her statement will be considered detestable and will never be accepted. | 352
- After the second marriage of a missing person's wife, if the first husband returns, he will take his woman back from the second husband. | 346 | Relating to a single fluid is among the unique characteristics of Prophet Jesus (peace be upon him). | 352

- Another question regarding the wife of a missing person. | 347 | If marriage is claimed with those mentioned, the claim will be false and lineage will not be established, and in the mentioned case, the boy will be illegitimate or of unknown lineage. Both reports exist. | 352
- Statement of the Hanafi school regarding the wife of a missing person. | 348 | A woman ran away from her husband's home and stayed here and there, giving birth to children; as long as the husband does not disown these children through Li'an, the lineage is established from the husband. | 356
- Clarification of the school of Imam Malik (may Allah have mercy on him). | 348 |

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

- तलाक़ का अधिकार सौंपना भी पर्याप्त है। | 342 | नपुंसक व्यक्ति की पत्नी का हुक्म। | 348
- लापता व्यक्ति की पत्नी ने दूसरी शादी कर ली, उसके बाद पहला पति लौट आया। महिला उसे वापस कर दी जाएगी। | 342 | वंश का अध्याय (बाब अन-नसब) | 349
- संभोग की स्थिति में दूसरे पति पर भी महर-ए-मिस्ल अनिवार्य है। | 343 | विवाह के पाँच महीने बाद बच्चा पैदा हो, तो किस स्थिति में उसका वंश सही माना जाएगा और किसमें नहीं? | 349
- चार साल के बाद लापता व्यक्ति की पत्नी का स्वयं विवाह कर लेना किसी भी इमाम का मज़हब नहीं है। | 344 | छह महीने से कम और दो साल से अधिक का गर्भ सही वंश वाला नहीं माना जाएगा। | 349
- हनफ़ियों के अनुसार, महिला पर तब तक प्रतीक्षा करना अनिवार्य है जब तक कि पति की आयु सत्तर वर्ष न हो जाए। | 344 | निषेध पर साक्ष्य स्वीकार्य नहीं है। | 350
- लापता व्यक्ति की पत्नी के लिए जीविका की तंगी एक कमज़ोर बहाना है, क्योंकि जीविका अल्लाह के ज़िम्मे है। | 344 | जिस लड़के के बारे में महिला दावा करे कि वह पति के वीर्य से है, लेकिन उसका शरई कारण न दे सके तो गर्भ अज्ञात वंश वाला होगा। | 350
- लापता व्यक्ति की पत्नी से संबंधित एक प्रश्न और हनफ़ी मज़हब के अनुसार उसका उत्तर। | 345 | यदि गर्भ अज्ञात वंश का हो, तो ऐसी महिला से विवाह फ़ासिद (अमान्य) होगा। | 351
- माँ ने विवाह किया। यदि वह बराबरी (कुफ़ू) के साथ किया गया और लड़की ने बालिग होते ही उससे इनकार नहीं किया, तो विवाह अनिवार्य हो गया। | 346 | फ़ासिद विवाह में यदि पति ने संभोग किया है, तो महर-ए-मिस्ल और तयशुदा महर में से जो कम हो, उसे देना अनिवार्य होगा। | 351
- लापता व्यक्ति की पत्नी पति की आयु सत्तर वर्ष होने तक प्रतीक्षा करे। | 346 | यदि अविवाहित महिला स्वप्न में संभोग से गर्भवती होने का दावा करे, तो उसके इस कथन को अप्रिय (मकरूह) माना जाएगा और उसे कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा। | 352
- लापता व्यक्ति की पत्नी के दूसरे विवाह के बाद यदि पहला पति आ जाए, तो वह अपनी पत्नी को दूसरे पति से वापस ले लेगा। | 346 | केवल वीर्य के जल से संबंध हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विशेषताओं में से है। | 352

- लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में एक और प्रश्न। | 347 | जिनसे विवाह का दावा करे तो दावा ग़लत होगा और वंश सिद्ध नहीं होगा, और उपरोक्त स्थिति में लड़का अवैध होगा या अज्ञात वंश वाला। दोनों रिवायतें हैं। | 352
- लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में हनफ़ी मज़हब का विवरण। | 348 | महिला पति के घर से भागकर यहाँ-वहाँ रही, बच्चे पैदा किए; जब तक पति उन बच्चों से 'लिआन' के ज़रिए इनकार न करे, वंश पति से ही सिद्ध होगा। | 356
- इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैह) के मज़हब का स्पष्टीकरण। | 348 |

تفویض طلاق کرنا بھی کافی ہے۔ | ۳۴۲ | زن عنین کا حکم۔ | ۳۴۸ زوجہ مفقود نے دوسری شادی کی اس کے بعد پہلا شوہر لوٹ آیا۔ عورت اس کو دلا دی جائے گی۔ | ۳۴۲ | باب النسب | ۳۴۹ صورت جماع میں دوسرے شوہر پر بھی مہر مثل واجب ہے۔ | ۳۴۳ | نکاح کے پانچ مہینہ کے بعد بچہ پیدا ہو تو کس صورت میں صحیح النسب ہوگا اور کس صورت میں نہیں۔ | ۳۴۹ چار برس کے بعد بطور خود زوجہ مفقود کا نکاح کرنا کسی امام کا مذہب نہیں ہے۔ | ۳۴۴ | حمل چھ مہینے سے کم اور دو سال سے زائد کا صحیح النسب نہ ہو گا۔ | ۳۴۹ حنفیہ کے نزدیک عورت پر اس وقت تک انتظار فرض ہے کہ شوہر کی عمر ستر برس گزر جائیں۔ | ۳۴۴ | شہادت علی النفی مقبول نہیں۔ | ۳۵۰ زوجہ مفقود کے لئے تنگی رزق عذر لنگ ہے کہ رزق اللہ پر ہے۔ | ۳۴۴ | جس لڑکے کے بارے میں عورت دعوی کرے کہ یہ شوہر کے نطفہ سے ہے مگر اس کی شرعی توجیہ نہ کر سکے تو حمل مجہول النسب ہوگا۔ | ۳۵۰ زوجہ مفقود سے متعلق ایک سوال اور اس کا حنفی مسلک پر جواب۔ | ۳۴۵ | حمل مجہول النسب ہو تو ایسی عورت سے نکاح فاسد ہوگا۔ | ۳۵۱ ماں نے نکاح کیا۔ اگر کفو کے ساتھ کیا اور لڑکی نے بالغ ہوتے ہی اس سے انکار نہ کیا۔ نکاح لازم ہو گیا۔ | ۳۴۶ | نکاح فاسد میں اگر شوہر نے وطی صحیح کر لی تو مہر مثل اور مہر مسمّٰی میں سے جو کم ہے وہ دینا لازم ہوگا۔ | ۳۵۱ مفقود کی عورت شوہر کی عمر کے ستر برس ہونے تک انتظار کرے۔ | ۳۴۶ | ناکتخدا عورت خواب میں ہمبستری سے حمل ہونے کا دعوی کرے تو اس کا یہ قول مکروہ قرار دیا جائے گا اور ہر گز تسلیم نہ کیا جائے گا۔ | ۳۵۲ زوجہ مفقود کے نکاح ثانی کے بعد اگر زوج اول آیا اپنی عورت کو دوسرے شوہر سے لے لے گا۔ | ۳۴۶ | ماء واحد سے تعلق حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے خصائص میں سے ہے۔ | ۳۵۲ زوجہ

مفقود کے بارے میں ایک اور سوال۔ | ۳۴۷ | جن سے نکاح کا دعوی کرے تو دعویٰ غلط ہوگا اور نسب ثابت نہ ہوگا اور صورت مذکورہ میں لڑکا ولد الزنا ہو گا یا مجہول النسب۔ دونوں روایتیں ہیں۔ | ۳۵۲ زوجہ مفقود کے بارے میں مذہب احناف کا بیان۔ | ۳۴۸ | عورت خاوند کے یہاں سے بھاگ کر ادھر اُدھر رہی، بچے پیدا کئے جب تک شوہر ان بچوں سے لعان کے ذریعے انکار نہ کرے نسب شوہر سے ثابت ہے۔ | ۳۵۶ مذہب امام مالک (رحمۃ اللہ علیہ) کی توضیح۔ | ۳۴۸ |

| 461 | 256 | If in a marriage, one witness describes seeing it and another describes an acknowledgement, then this discrepancy is legally a cause for the rejection of the testimony. | Zaid's grandfather was Pathan, and his grandmother and mother were Syedani. In this case, is Zaid a Syed or a Pathan? | 461 | | 461 | 357 | If a woman is pregnant, she will observe 'iddah until childbirth after the husband's death; otherwise, she will observe it for four months and ten [days] of 'iddah. | In the pure Shari'ah, lineage is taken from the father's side. Only Imam Hasan and Hussain (Allah be pleased with them) are exceptions to this general rule. | 461 | | 461 | 358 | Marriage during the 'iddah period is absolutely impermissible. | Whoever attributes himself to someone other than his father, upon him is the curse of Allah, all angels, and all humans. Allah Almighty will neither accept his obligatory (fard) nor voluntary (nafl) worship on the Day of Judgment. | 461 | | 461 | 359 | The meaning of 'khalwat' (seclusion) is that a man and a woman are alone in a house for a while where there is no hindrance to intercourse, even if intercourse does not occur. | The offspring of the two noble grandsons (Hasan and Husain) are Syeds, not the offspring of the daughters of Fatima (Allah be pleased with her), as they will be attributed to their parents (fathers). | 461 | | 462 | 359 | If the man divorced before seclusion, then 'iddah did not become obligatory on the woman at all. | When a person has committed adultery with a woman, then that woman's daughter becomes forbidden (haram) for that person forever. | 462 | | 462 | 359 | All those who, being aware of it, participated in or facilitated the marriage of a woman in 'iddah, are involved in a great sin. | The ancestors and descendants of a woman with whom a man has committed adultery or touched with desire are forbidden (haram) for him. | 462 | | 462 | 359 | Marriage with a woman in 'iddah happened, the children are not illegitimate (haram). Rather, if the second husband knew about the 'iddah, the child belongs to the first husband, and if he didn't know, it will be established as the second husband's. | Any woman whose internal part of the vagina was seen by a man with desire, her ancestors and descendants become forbidden (haram) for that man. | 462 | | 462 | 359 | If the second marriage was unaware that the woman was in 'iddah, then whatever child is born will belong to the second marriage, otherwise to the first. | He kept committing adultery with someone else's woman, children were born; whose will they be declared? Description of various scenarios. | 462 | | 463 | 360 | Made the woman a vagrant and expelled her from the house. There was no difference in the marriage, the children will be his. | There is no upper limit set for

purity (tuhr). Therefore, it is possible for three menstrual periods to occur in thirty years. | 463 | | 463 | 361 | A husband will be a sinner for expelling his wife from the house without a Sharia-compliant reason. | In a revocable divorce (talaq-e-raj'i), it is not forbidden for the man to have intercourse with the divorced wife during the 'iddah; rather, it constitutes taking her back (raj'at). | 463 |

फ़तावा रज़विया | जिल्द तेरहवीं | १३

| ४६१ | २५६ | निकाह में एक गवाह मुआयना और एक इकरार बयान करे तो यह इख़्तिलाफ़ शरई तौर पर गवाही के रद्द होने का सबब है। | ज़ैद का दादा पठान था और दादी और वालिदा सैयदानी, इस सूरत में ज़ैद सैयद है या पठान। | ४६१ | | ४६१ | ३५७ | औरत अगर हामिला हो तो शौहर की वफ़ात के बाद वज़-ए-हम्ल (बच्चा पैदा होने) तक वर्ना चार माह दस इद्दत गुज़ारेगी। | शरह मुतह्हरा में नसब बाप की तरफ़ से लिया जाता है सिर्फ़ इमाम हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा इस हुक्म-ए-आम से मुस्तस्ना (अपवाद) हैं। | ४६१ | | ४६१ | ३५८ | इद्दत के अन्दर निकाह मुतलक़न (बिल्कुल) ना-जायज़ है। | जो अपने बाप के सिवा दूसरे की तरफ़ अपने आप को मंसूब करे उस पर खुदा और सब फ़रिश्तों और सब आदमियों की लानत है। अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसका न फ़र्ज़ क़ुबूल फ़रमाएगा न नफ़्ल। | ४६१ | | ४६१ | ३५९ | खलवत के मानी ये हैं कि मर्द व औरत तन्हा एक मकान में थोड़ी देर के लिये इकट्ठे हों जहाँ मुबाशरत से कोई मानि-अ (रुकावट) न हो अगरचे मुबाशरत वाकेअ न हो। | सिब्तैन करीमैन की औलाद सैयद है न कि बनात-ए-फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद कि वो अपने वालिदैन (पिता) की तरफ़ निस्बत की जाएगी। | ४६१ | | ४६२ | ३५९ | क़ब्ल अज़ खलवत (एकांत से पहले) मर्द ने तलाक़ दे दी तो औरत पर असल में इद्दत लाज़िम न हुई। | जब कोई शख़्स किसी औरत से ज़िना कर चुका तो उस औरत की बेटी उस शख़्स पर हमेशा के लिये हराम हो गई। | ४६२ | | ४६२ | ३५९ | मोअतद्दह (इद्दत वाली औरत) के निकाह में जितने लोग उससे वाक़िफ़ होकर शरीक व सा'ई हुए सब हराम-ए-अज़ीम (बड़े गुनाह) में मुब्तला हुए। | मर्द पर उसकी मुज़निया (जिससे ज़िना किया) और ममसूसह बह शहवत (जिसे शहवत से छुआ) के उसूल व फ़रुआ (पूर्वज और वंशज) हराम हैं। | ४६२ | | ४६२ | ३५९ | मोअतद्दह से निकाह हुआ औलाद हराम नहीं बल्कि अगर शौहर-ए-सानी (दूसरे शौहर) को इद्दत का इल्म था तो औलाद शौहर-ए-अव्वल की और अगर इल्म न था तो शौहर-ए-सानी की क़रार पाएगी। | जिस औरत के फ़र्ज के दाख़िल को मर्द ने शहवत के साथ देखा उसके उसूल व फ़रुआ उस मर्द पर हराम हो गए। | ४६२ | | ४६२ | ३५९ | निकाह-ए-सानी को मालूम न था कि औरत मोअतद्दह है तो जो बच्चा पैदा हो दूसरे निकाह का होगा वर्ना पहले का। | दूसरे की औरत से ज़िना करता रहा औलाद हुई तो किसकी क़रार दी जाएगी? मुख़्तलिफ़ सूरतों का बयान। | ४६२ | | ४६३ | ३६० | औरत को आवारा करके घर से निकाल दिया। निकाह में फ़र्क़ न आया, औलाद उसी की होगी। | तुहर (पाकी) के लिये ज़्यादती की जानिब कोई हद मुक़र्रर नहीं। लिहाज़ा मुमकिन है तीन हैज़ तीस

बरस में आएँ। | ४६३ | | ४६३ | ३६१ | औरत को बिला-वजह शरई घर से निकालने पर शौहर गुनहगार होगा। | तलाक़-ए-रजई में मर्द का इद्दत के अन्दर मुतल्लक़ा से वती (संभोग) करना हराम नहीं बल्कि रुजूअ (वापसी) हो जाती है। | ४६३ |

पृष्ठ ६८८ में से ३२

| ۴۶۱ | ۲۵۶ | نکاح میں ایک گواہ معائنہ اور ایک اقرار بیان کرے تو یہ اختلاف شرعاً موجب ردِ شہادت ہے۔ | زید کا دادا پٹھان تھا اور دادی اور والدہ سیدانی، اس صورت میں زید سید ہے یا پٹھان۔ | ۴۶۱ | | ۴۶۱ | ۳۵۷ | عورت اگر حاملہ ہو تو بعد وفات شوہر وضع حمل تک ورنہ چار ماہ دس عدت گزارے گی۔ | شرع مطہر میں نسب باپ کی طرف سے لیا جاتا ہے صرف امام حسن و حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما اس حکم عام سے مستثنیٰ ہیں۔ | ۴۶۱ | | ۴۶۱ | ۳۵۸ | عدت کے اندر نکاح مطلقاً نا جائز ہے۔ | جو اپنے باپ کے سوا دوسرے کی طرف اپنے آپ کو منسوب کرے اس پر خدا اور سب فرشتوں اور سب آدمیوں کی لعنت ہے۔ اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کا نہ فرض قبول فرمائے گا نہ نفل۔ | ۴۶۱ | | ۴۶۱ | ۳۵۹ | خلوت کے معنی یہ ہیں کہ مرد و عورت تنہا ایک مکان میں تھوڑی دیر کے لئے اکٹھے ہوں جہاں مباشرت سے کوئی مانع نہ ہواگرچہ مباشرت واقع نہ ہو۔ | سبطین کریمین کی اولاد سید ہے نہ کہ بنات فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی اولاد کہ وہ اپنے والدین کی طرف نسبت کی جائے گی۔ | ۴۶۱ | | ۴۶۲ | ۳۵۹ | قبل از خلوت مرد نے طلاق دے دی تو عورت پر اصلاً عدت لازم نہ ہوئی۔ | جب کوئی شخص کسی عورت سے زنا کر چکا تو اس عورت کی بیٹی اس شخص پر ہمیشہ کے لئے حرام ہو گئی۔ | ۴۶۲ | | ۴۶۲ | ۳۵۹ | معتدہ کے نکاح میں جتنے لوگ اس سے واقف ہو کر شریک و ساعی ہوئے سب حرامِ عظیم میں مبتلا ہوئے۔ | مرد پر اس کی مزنیہ اور ممسوسہ بہ شہوت کے اصول و فروع حرام ہیں۔ | ۴۶۲ | | ۴۶۲ | ۳۵۹ | معتدہ سے نکاح ہوا اولاد حرام نہیں بلکہ اگر شوہر ثانی کو عدت کا علم تھا تو اولاد شوہر اول کی اور اگر علم نہ تھا تو شوہر ثانی کی قرار پائے گی۔ | جس عورت کے فرج کے داخل کو مرد نے شہوت کے ساتھ دیکھا اس کے اصول و فروع اس مرد پر

حرام ہو گئے۔ | ۴۶۲ | | ۴۶۲ | ۳۵۹ | نکاح ثانی کو معلوم نہ تھا کہ عورت معتدہ ہے تو جو بچہ پیدا ہو دوسرے نکاح کا ہوگا ورنہ پہلے کا۔ | دوسرے کی عورت سے زنا کرتا رہا اولاد ہوئی تو کس کی قرار دی جائے گی۔ مختلف صورتوں کا بیان۔ | ۴۶۲ | | ۴۶۳ | ۳۶۰ | عورت کو آوارہ کر کے گھر سے نکال دیا۔ نکاح میں فرق نہ آیا، اولاد اسی کی ہوگی۔ | طہر کے لئے زیادت کی جانب کوئی حد مقرر نہیں۔ لہذا ممکن ہے تین حیض تیس برس میں آئیں۔ | ۴۶۳ | | ۴۶۳ | ۳۶۱ | عورت کو بلاوجہ شرعی گھر سے نکالنے پر شوہر گنہگار ہوگا۔ | طلاق رجعی میں مرد کا عدت کے اندر مطلقہ سے وطی کرنا حرام نہیں بلکہ رجعت ہو جاتی ہے۔ | ۴۶۳ |

- There is no meaning to the continuation of the waiting period (Iddah) after childbirth. (363) | Imam Dhahhak is a commentator and Hadith scholar. (370)
- It is forbidden for a man to have intimacy with a woman in her waiting period of an irrevocable divorce (Iddah-e-Ba'in) without a new marriage contract. (363) | Imam Muhaddith Abdul Aziz Majishuni remained in the womb for four years. (370)
- Looking at the book 'Bahishti Zewar' is forbidden. It contains many incorrect issues and many matters of misguidance. (366) | It is a famous habit of the women of Bani Majishun that a child stays in their womb for four years. (370)
- The scholars of the Two Holy Harams have declared the author of 'Bahishti Zewar' an unbeliever (takfir) by name. (366) | "I have no connection with her/it" is a metaphorical expression; intention is a condition for it to count as divorce. (370)
- A woman married after completing a widow's waiting period of four months and ten days. A child was born six months later; the child will be attributed to this husband even if born ten months and ten days after the first husband's death. (366) | Metaphorical words that have the potential for abuse or insult. (370)
- Reciting a prayer after placing a hand on the forehead after Salat is mentioned in the Hadith. (367) | If a man denied a child and divorced the woman, the child's lineage was established from that same man in such a way that there is no way to refute it. (374)
- Hind's husband did not have intimacy with her for two and three-quarter years, yet a child was born; the child belongs to the husband. (368) | For Li'an (oath of imprecation), the subsistence of the marriage is a condition. (374)
- An incident of childbirth during the reign of Amir al-Mu'minin 'Umar Faruq al-A'zam (RA) where the front four teeth had already emerged in the mother's womb. (368) | After becoming obligatory, Li'an is also dropped due to an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). (374)
- In jurisprudence, rulings are based on general habit. The habit is that pregnancy does not last more than two years in the mother's womb. Rarely, it happens otherwise. (368) | After Li'an, the Islamic ruler will sever the child's lineage from the father and join it with the mother. (374)

- A narration from Imam Malik (RA) about a child staying in the mother's womb for more than two years. (369) | Marriage of a woman with her foster maternal uncle is a vile marriage that shall never be maintained; it is a great duty on the man and woman to separate immediately. If the man does not agree, the woman should separate herself. (375)
- Mention of the birth of Imam Dhahhak and the explanation for his name. (370) | If a foster maternal uncle and niece have married and do not separate, the ruler shall forcefully separate them. (375)

फतावा रज़विया | खंड १३ | पृष्ठ १३

- प्रसव के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) जारी रहने का कोई अर्थ नहीं है। (३६३) | इमाम ज़ह्हाक मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) और मुहद्दिस (हदीस विद्वान) हैं। (३७०)
- बिना नए निकाह के इद्दत-ए-बाइन (अंतिम तलाक की प्रतीक्षा अवधि) में पुरुष के लिए निकटता हराम है। (३६३) | इमाम मुहद्दिस अब्दुल अज़ीज़ माजिशुनी चार साल तक गर्भ में रहे। (३७०)
- 'बहिश्ती ज़ेवर' पुस्तक देखना हराम है। इसमें कई मसले गलत हैं और कई बातें गुमराही की हैं। (३६६) | बनी माजिशुन की महिलाओं की यह आदत मशहूर है कि बच्चा उनके पेट में चार साल तक रहता है। (३७०)
- हरमैन शरीफ़ैन के विद्वानों ने 'बहिश्ती ज़ेवर' के लेखक का नाम लेकर तकफ़िर (काफ़िर घोषित) किया है। (३६६) | "मेरा इससे कोई संबंध नहीं" एक किनाया (संकेत) है, इसके लिए तलाक की नीयत (इरादा) शर्त है। (३७०)
- एक महिला ने चार महीने दस दिन की इद्दत-ए-वफ़ात (विधवा की प्रतीक्षा अवधि) गुज़ार कर निकाह किया। छह महीने बाद बच्चा पैदा हुआ, उसे इसी पति का माना जाएगा भले ही वह पहले पति की मृत्यु के दस महीने दस दिन बाद पैदा हुआ हो। (३६६) | किनाया के वे शब्द जिनमें गाली-गलौज की संभावना हो। (३७०)
- नमाज़ के बाद माथे पर हाथ रखकर दुआ पढ़ना हदीस में आया है। (३६७) | बच्चे से इनकार किया और औरत को तलाक दे दी, तो बच्चे का वंश उसी व्यक्ति से ऐसा साबित हो गया कि उसे रद्द करने का कोई रास्ता नहीं। (३७४)
- हिंदा के पति ने पौने तीन साल से उसके साथ निकटता नहीं की, बच्चा पैदा हुआ, बच्चा पति का ही है। (३६८) | लिआन (शपथ) के लिए निकाह का कायम होना शर्त है। (३७४)
- अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म (रज़ि.) के शासनकाल में बच्चे के जन्म की घटना जिसके सामने के चारों दांत माँ के पेट में ही निकल चुके थे। (३६८) | वाजिब होने के बाद भी तलाक-ए-बाइन के कारण लिआन साक़ित (खत्म) हो जाता है। (३७४)
- फ़िक़्ह (इस्लामी कानून) में सामान्य आदत पर हुक्म दिया जाता है। आदत यही है कि गर्भ माँ के पेट में दो साल से अधिक नहीं रहता। दुर्लभ रूप से इसके विपरीत भी होता है। (३६८) | लिआन के बाद इस्लामी शासक बच्चे का वंश पिता से काट देगा और माँ से जोड़ देगा। (३७४)

- इमाम मालिक (रह.) से दो साल से अधिक समय तक गर्भ में बच्चे के रहने की रिवायत (कथन)। (३६९) | रज़ाई मामू (दूध का रिश्ता) से महिला का निकाह, निकाह-ए-ख़बीस (भ्रष्ट निकाह) है जिसे कभी कायम नहीं रखा जाएगा, स्त्री और पुरुष पर यह महान कर्तव्य है कि तुरंत अलग हो जाएं यदि पुरुष न माने तो स्त्री स्वयं अलग हो जाए। (३७५)
- इमाम ज़ह्हाक के जन्म का उल्लेख और उनके नाम का औचित्य। (३७०) | रज़ाई मामू और भांजी ने निकाह कर लिया और अलग नहीं होते तो शासक ज़बरदस्ती उन्हें अलग कर दे। (३७५)

पृष्ठ ३३/६८८

- وضع حمل کے بعد بقائے عدت کے کوئی معنی نہیں۔ (۳۶۳) | امام ضحاک مفسر و محدث ہیں۔ (۳۷۰)
- بے نکاح جدید مرد کے لئے عدت بائن میں قربت حرام ہے۔ (۳۶۳) | امام محدث عبدالعزیز ماجشونی چار برس حمل میں رہے۔ (۳۷۰)
- کتاب بہشتی زیور کا دیکھنا حرام ہے۔ اس میں بہت مسائل غلط اور بہت باتیں گمراہی کی ہیں۔ (۳۶۶) | بنی ماجشون کی عورتوں کی یہ عادت مشہور ہے کہ بچہ ان کے پیٹ میں چار برس رہتا ہے۔ (۳۷۰)
- مصنف بہشتی زیور کی علماء حرمین شریفین نے نام لے کر تکفیر کی ہے۔ (۳۶۶) | "میرا اس سے کوئی تعلق نہیں" کنایہ ہے اس سے طلاق کے لئے نیت شرط ہے۔ (۳۷۰)
- عورت نے عدت وفات چار مہینے دس یوم گزار کر نکاح کیا۔ چھ مہینے بعد بچہ پیدا ہوا، اسی شوہر کا قرار دیا جائے گا اگرچہ پہلے شوہر کی موت کے دس مہینہ دس دن بعد ہی پیدا ہوا ہو۔ (۳۶۶) | کنایہ کے وہ الفاظ جو سب و شتم کا احتمال رکھتے ہوں۔ (۳۷۰)
- نماز کے بعد پیشانی پر ہاتھ رکھ کر دعا پڑھنا حدیث میں آیا ہے۔ (۳۶۷) | بچہ سے انکار کیا اور عورت کو طلاق دے دی تو بچہ کا نسب اسی شخص سے ایسا ثابت ہو گیا کہ اس کے رد کی کوئی صورت نہیں۔ (۳۷۴)
- ہندہ سے اس کے شوہر نے پونے تین سال سے قربت نہیں کی، بچہ پیدا ہوا، بچہ شوہر کا ہی ہے۔ (۳۶۸) | لعان کے لئے قیام زوجیت شرط ہے۔ (۳۷۴)

- امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے عہد مبارک میں ایک بچے کی ولادت کا واقعہ جس کے اگلے چاروں دانت ماں کے پیٹ میں ہی نکل چکے تھے۔ (۳۶۸) | بعد از وجوب بھی لعان طلاق بائن کے سبب ساقط ہو جاتا ہے۔ (۳۷۴)
- فقہ میں عام عادت پر حکم دیا جاتا ہے۔ عادت یہی ہے کہ دو سال سے زائد حمل شکم مادر میں نہیں رہتا۔ نادراً اس کے خلاف بھی ہوتا ہے۔ (۳۶۸) | بعد از لعان حاکم اسلام بچے کا نسب باپ سے منقطع کر کے ماں کے ساتھ ملحق کر دے گا۔ (۳۷۴)
- امام مالک رحمتہ اللہ علیہ سے دو سال سے زائد بچہ شکم مادر میں رہنے کی روایت۔ (۳۶۹) | رضاعی ماموں سے عورت کا نکاح، نکاح خبیث ہے جو ہر گز قائم نہ رکھا جائے گا، مرد وزن پر فرض عظیم ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں، مرد نہ مانے تو عورت خود جدا ہو جائے۔ (۳۷۵)
- امام ضحاک کی ولادت کا ذکر اور ان کے نام کی توجیہ۔ (۳۷۰) | رضاعی ماموں بھانجی نے نکاح کر لیا اور جدا نہیں ہوتے تو حاکم بالجبر انہیں جدا کر دے۔ (۳۷۵)

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13.

Zaid married his foster niece. After some time separation occurred. The full 'Mahr-e-Misl' (customary dowry) will be mandatory, not 'Mahr-e-Musamma' (specified dowry). [Page 375] | Zaid married the granddaughter of his consanguine sister. If separation occurs after six years, the 'Iddah' (waiting period) is definitely mandatory for the woman. [Page 378]

A boy will stay with the mother until age seven and a girl until age nine, then the father will take them. [Page 375] | If separation occurs after marriage with mahrams (prohibited degrees of relations), full 'Mahr-e-Misl' is mandatory for the man; 'Mahr-e-Musamma' will not be considered. [Page 378]

Married one's mahrams; no legal punishment (Hadd) was established. 'Mahr-e-Misl' will be mandatory, and if a child is born, lineage will be established through the marriage. [Page 375] | In an invalid (fasid) marriage, the child's lineage is established from the marriage. [Page 378]

A child was born after the husband's death. To whom will the lineage be attributed? [Page 376] | Zaid died, and 7 months later his wife remarried. At the time of marriage, she was 5 months pregnant. If the child is born two years after the first husband's death, the marriage is valid and lineage is from the second husband, otherwise, the marriage is void and the boy belongs to the first husband. [Page 379]

A widow gave birth to a child three years after her husband's death and five months after her second marriage; the child is of unknown lineage (Majhool-un-Nasab). [Page 376] | Statement on the minimum and maximum duration of pregnancy. [Page 379]

One who elopes with another's wife is an adulterer. Muslims should break ties with him, and children born during this time have their lineage established from the original husband. [Page 377] | Zaid and Hindah lived in the same house after marriage; apparently no contact occurred. If a child is born, legally the child belongs to Zaid. If Zaid divorces, full Mahr is mandatory. [Page 380]

Committed adultery with mother-in-law, a girl was born. Marriage with that girl is prohibited, and a child born from this prohibited marriage is 'Walad-ul-Haram' (child of sin). [Page 377] | An Eastern woman and a Western man never met, yet a child was born; Shariat declared it the husband's. [Page 381]

Marriage with the granddaughter of a consanguine sister is strictly prohibited. The person performing the marriage, the lawyer, and the witnesses are guilty of a very severe major sin (Gunah-e-Kabira). [Page 378] | Without definitive Sharia proof, it is not correct to declare someone an adulterer. [Page 381]

A person committing a major sin out of ignorance is not exempt from it being a major sin; rather, ignorance itself is another major sin. [Page 378] | Despite a valid marital bed (Firash-e-Sahih), it is impermissible to declare a child 'Walad-ul-Haram'. [Page 381]

A scholar's sin is one sin, and an ignorant person's sin is double. [Page 378]

फतावा रज़विया, तेरहवां खंड, पृष्ठ १३।

ज़ैद ने अपनी रज़ाई भांजी (दूध-रिश्ते की भांजी) से निकाह किया, कुछ समय बाद अलगाव हो गया। पूरा 'महर-ए-मिसल' (प्रथागत मेहर) अनिवार्य होगा, न कि 'महर-ए-मुसम्मा' (तयशुदा मेहर)। [पृष्ठ ३७५] | ज़ैद ने अपनी सौतेली बहन की पोती से निकाह किया, छह साल बाद अलगाव हुआ तो औरत पर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है। [पृष्ठ ३७८]

लड़का सात साल और लड़की नौ साल की उम्र तक माँ के पास रहेंगे, फिर पिता उन्हें ले लेगा। [पृष्ठ ३७५] | महरम (प्रतिबंधित रिश्तों) से निकाह के बाद अलगाव हो तो मर्द पर पूरा 'महर-ए-मिसल' वाजिब होगा; 'महर-ए-मुसम्मा' का लिहाज़ नहीं होगा। [पृष्ठ ३७८]

अपने महरमों से निकाह किया, कोई 'हद' (कानूनी सज़ा) कायम नहीं हुई। 'महर-ए-मिसल' वाजिब होगा और बच्चा पैदा हुआ तो नसब (वंश) निकाह से साबित होगा। [पृष्ठ ३७५] | फासिद (अमान्य) निकाह में बच्चे का नसब निकाह से साबित होता है। [पृष्ठ ३७८]

पति की मृत्यु के बाद बच्चा पैदा हुआ। उसका नसब किससे साबित होगा? [पृष्ठ ३७६] | ज़ैद की मृत्यु के ७ महीने बाद औरत ने निकाह किया, निकाह के समय ५ महीने का गर्भ था। यदि पहले पति की मृत्यु के दो साल बाद बच्चा पैदा हो, तो निकाह सही है और नसब दूसरे पति से साबित है, अन्यथा निकाह बातिल (शून्य) है और लड़का पहले पति का है। [पृष्ठ ३७९]

विधवा औरत के पति की मृत्यु के तीन साल बाद और दूसरे निकाह के पांच महीने बाद बच्चा पैदा हुआ, बच्चा 'मजहूल-उन-नसब' (अज्ञात वंश) है। [पृष्ठ ३७६] | गर्भ की न्यूनतम और अधिकतम अवधि का विवरण। [पृष्ठ ३७९]

दूसरे की औरत को भगा ले जाने वाला ज़ानी (व्यभिचारी) है। मुसलमान उससे नाता तोड़ लें, और इस दौरान जो बच्चे पैदा हुए उनका नसब असल पति से साबित है। [पृष्ठ ३७७] | ज़ैद और हिंदा निकाह के बाद एक ही घर में रहते थे, ज़ाहिर तौर पर कोई संपर्क नहीं हुआ। बच्चा पैदा हुआ तो शरई तौर पर बच्चा ज़ैद का है। यदि ज़ैद ने तलाक दिया तो पूरा महर वाजिब होगा। [पृष्ठ ३८०]

सास से व्यभिचार किया, उससे लड़की पैदा हुई। उस लड़की से शादी हराम है और इस हराम निकाह से जो बच्चा पैदा हुआ वह 'वलद-उल-हराम' है। [पृष्ठ ३७७] | पूर्वी औरत और पश्चिमी पुरुष कभी नहीं मिले और बच्चा पैदा हुआ, तो शरीयत ने उसे पति का ही करार दिया। [पृष्ठ ३८१]

सौतेली बहन की पोती से निकाह कतई हराम है। निकाह पढ़ाने वाला, वकील और गवाह बहुत सख्त गुनाह-ए-कबीरा (बड़े पाप) में फंसे हुए हैं। [पृष्ठ ३७८] | बिना किसी ठोस शरई सबूत के किसी को ज़ानी करार देना सही नहीं है। [पृष्ठ ३८१]

बड़े पाप करने वाले की अज्ञानता उसे बड़े पाप से बाहर नहीं करेगी, बल्कि अज्ञानता स्वयं दूसरा बड़ा पाप है। [पृष्ठ ३७८] | 'फिराश-ए-सहीह' (वैध दांपत्य शय्या) के बावजूद बच्चे को 'वलद-उल-हराम' करार देना नाजायज़ है। [पृष्ठ ३८१]

आलिम (विद्वान) का गुनाह एक गुनाह है और जाहिल (अज्ञानी) का गुनाह दोहरा है। [पृष्ठ ३७८]

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳۔

زید نے رضاعی بھانجی سے نکاح کیا کچھ عرصہ بعد تفریق ہوگئی تو پورا مہر مثل لازم ہو گا نہ کہ مہر مسمیٰ۔ | ۳۷۵ | زید نے علاتی بہن کی نواسی سے نکاح کیا، چھ برس بعد تفریق ہوئی تو عورت پر عدت ضرور لازم ہے۔ | ۳۷۸

لڑکا سات برس اور لڑکی نو برس کی عمر تک ماں کے پاس رہے پھر باپ لے گا۔ | ۳۷۵ | محارم سے نکاح کے بعد تفریق ہو تو مرد پر پورا مہر مثل واجب ہو گا مہر مسمیٰ کا لحاظ نہ ہو گا۔ | ۳۷۸

اپنے محارم سے نکاح کیا کوئی حد نہ قائم ہو گئی۔ اور مہر مثل واجب ہو گا اور بچہ پیدا ہوا تو نسب نکاح سے ثابت ہو گا۔ | ۳۷۵ | نکاح فاسد میں بچہ کا نسب نکاح سے ثابت ہوتا ہے۔ | ۳۷۸

شوہر کے انتقال کے بعد بچہ پیدا ہوا۔ اس کا نسب کس سے ثابت ہو گا۔ | ۳۷۶ | زید کے فوت ہونے کے ۷ ماہ بعد عورت نے شادی کی، بر وقت نکاح ۵ ماہ کا حمل تھا، اگر موت شوہر اول سے دو سال بعد بچہ پیدا ہو تو نکاح صحیح اور نسب شوہر ثانی سے ثابت ہے ورنہ نکاح باطل اور لڑکا شوہر اول کا ہے۔ | ۳۷۹

بیوہ عورت کو وفات شوہر کے تین برس بعد اور نکاح ثانی کے پانچ ماہ بعد بچہ پیدا ہوا بچہ مجہول النسب ہے۔ | ۳۷۶ | حمل کی کم سے کم مدت اور زائد سے زائد مدت کا بیان۔ | ۳۷۹

دوسرے کی عورت بھگا لے جانے والا زانی ہے۔ مسلمان اس سے قطع تعلق کریں اور اس دوران جو بچے پیدا ہوئے ان کا نسب اصل شوہر سے ثابت ہے۔ | ۳۷۷ | زید و ہندہ نکاح کے بعد ایک

ہی مکان میں رہتے تھے باہم مواصلت بظاہر نہیں ہوئی بچہ پیدا ہوا شرعاً بچہ زید کا ہے اگر زید نے طلاق دی پورا مہر واجب ہو گا۔ | ۳۸۰

ساس سے زنا کیا اس سے بچی پیدا ہوئی، اس لڑکی سے شادی حرام اور اس نکاح حرام سے جو بچہ پیدا ہوا ولد الحرام ہے۔ | ۳۷۷ | زن مشرقی اور مرد مغربی میں کبھی ملاقات نہ ہوئی اور بچہ پیدا ہوا تو شریعت نے شوہر کا ہی قرار دیا۔ | ۳۸۱

علاتی بہن کی نواسی سے نکاح حرام قطعی، نکاح خواں، وکیل اور گواہ سخت تر گناہ کبیرہ میں گرفتار ہیں | ۳۷۸ | بے ثبوت قطعی شرعی کسی کو زانی قرار دینا درست نہیں۔ | ۳۸۱

مرتکب کبیرہ کا جہل اس کے گناہ کبیرہ ہونے سے خارج نہیں کرے گا بلکہ خود دوسرا گناہ کبیرہ ہے۔ | ۳۷۸ | با وجود فراش صحیح بچہ کو ولد الحرام قرار دینا نا جائز ہے۔ | ۳۸۱

عالم کا گناہ ایک گناہ ہے اور جاہل کا گناہ دوہرا ہے۔ | ۳۷۸ |

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 35 of 688

Chapter of Custody (Nurturing)

Serial No.	Description	Serial No.	Subject/Heading
383	Marriage of agnates is not among the factors that forfeit the right of custody.	390	Custody (Nurturing)
383	If the father of minor children dies, and among the guardians are the maternal grandmother, paternal grandfather's cousin, and maternal uncle, the right of nurture belongs to the maternal grandmother. If maternal uncles are present, then to them.	390	In the right of custody, the maternal uncle is at the fifth level after the maternal grandfather.
383	Statement regarding the time and age of custody.	391	If father and grandfather are not present, the right of guardianship for marriage of minors belongs to the paternal uncle.
385	The right of guardianship for marriage of the aforementioned boys belongs to the grandfather's paternal cousin, and the right of guardianship for property belongs to the executor of the father/grandfather or the judge.	391	If the mother marries a stranger, she no longer has the right of nurturing. If an adult sister is present, she should nurture.
385	If the child's mother marries a stranger, her right of nurturing ends.	392	If minor orphans do not have property, their maintenance is upon those heirs who have surplus after their own family expenses. If the mother does not have her own property,

Serial No.	Description	Serial No.	Subject/Heading
			maintenance is not obligatory upon her.
375	If grandmother, maternal grandmother, or sister are not present, then the maternal aunt should nurture. Details of those entitled to custody.	393	Maintenance is mandatory upon heirs according to the share of inheritance.
386	Guardianship over a minor's property belongs to the father, grandfather, or their executor or judge.	394	If the mother dies, the right to nurture the child belongs to the maternal grandmother, and guardianship over his property belongs to the father.
387	If the mother marries a stranger and the maternal grandmother is not present, the boy should be kept with the paternal grandmother.	395	Dowry is the property of the woman, and after her death, it will be distributed according to the laws of inheritance.
387	One scenario of custody.	395	If the child is wealthy, nurturing should be from his wealth; otherwise, maintenance is upon the father.
388	Detailed statement of custody and the order of those entitled.	396	If a woman marries a stranger, she loses the right to nurture the child; if the child's real paternal grandmother is present, she has the right.
390	In the right of custody, the maternal grandfather is at the forty-first level.	397	If a woman marries a non-mahram of her minor child, her right of custody is forfeited.
390	The fear of harm to the lives of children due to a second marriage at the father's house is a baseless assumption.	398	A deceased woman left a child; among those entitled to custody, only the mother's paternal aunt is present, so the child will be given into her care.

Serial No.	Description	Serial No.	Subject/Heading
			If she wants a fee, it will be paid by the father.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 35/688

अध्याय: बाबू-अल-हज़ानत (पालन-पोषण/परवरिश)

क्र.सं.	विवरण	क्र.सं.	विषय/शीर्षक
383	असबात (अग्नेट्स) का विवाह हज़ानत (कस्टडी) के अधिकार को समाप्त करने वाले कारकों में से नहीं है।	390	हज़ानत (परवरिश)
383	यदि नाबालिग बच्चों के पिता की मृत्यु हो जाए और अभिभावकों में नानी, दादा का चचेरा भाई और मामा हों, तो परवरिश का अधिकार नानी को है। और यदि मामा मौजूद हों तो उन्हें।	390	हज़ानत के अधिकार में मामा, नाना से भी पांचवें स्तर पर हैं।
383	हज़ानत के समय और आयु का विवरण।	391	यदि पिता और दादा न हों, तो नाबालिगों के विवाह के संरक्षण का अधिकार चाचा को है।
385	उपरोक्त लड़कों के विवाह संरक्षण का अधिकार दादा के चचेरे भाई को है और संपत्ति के संरक्षण का अधिकार पिता/दादा के वसी (निष्पादक) या न्यायाधीश को है।	391	यदि माँ ने किसी अजनबी से विवाह कर लिया, तो उसे परवरिश का अधिकार नहीं रहा। यदि बालिग बहन है तो वह परवरिश करे।
385	यदि बच्चे की माँ ने किसी अजनबी से विवाह कर लिया, तो उसका परवरिश का अधिकार समाप्त हो गया।	392	यदि नाबालिग अनाथों के पास संपत्ति न हो, तो उनका भरण-पोषण उन वारिसों पर है जिनके पास अपने परिवार के खर्चों के बाद बचत होती हो। यदि माँ के पास अपनी संपत्ति न हो, तो उस पर भरण-पोषण अनिवार्य नहीं है।
375		393	भरण-पोषण वारिसों पर विरासत के हिस्से के अनुसार अनिवार्य होता है।

क्र.सं.	विवरण
	यदि दादी, नानी, बहन न हों, तो खाला (मौसी) परवरिश करे। हज़ानत के हकदारों का विवरण।
386	नाबालिग की संपत्ति का संरक्षण पिता, दादा या उनके वसी या न्यायाधीश को प्राप्त है।
387	माँ ने किसी अजनबी से शादी कर ली, नानी मौजूद नहीं है। लड़का दादी के पास रखा जाए।
387	हज़ानत का एक मामला।
388	हज़ानत का विस्तृत विवरण और हकदारों का क्रम।
390	हज़ानत के अधिकार में नाना इकतालीसवें स्तर पर हैं।
390	दूसरी शादी के कारण पिता के पास बच्चों की जान को खतरा होने का डर एक गलत धारणा है।

क्र.सं.	विषय/शीर्षक
394	यदि माँ की मृत्यु हो जाए, तो बच्चे की परवरिश का अधिकार नानी को है और उसकी संपत्ति का संरक्षण पिता को प्राप्त है।
395	दहेज महिला की संपत्ति होती है और उसकी मृत्यु के बाद यह विरासत के नियमों के अनुसार विभाजित होगा।
395	यदि बच्चा धनी हो तो परवरिश उसकी संपत्ति से होगी, अन्यथा भरण-पोषण पिता पर है।
396	यदि महिला ने किसी अजनबी से शादी कर ली, तो बच्चे की परवरिश का अधिकार उसे नहीं रहा; यदि बच्चे की सगी दादी मौजूद है तो उसे अधिकार प्राप्त है।
397	यदि कोई महिला अपने नाबालिग बच्चे के गैर-महरम से निकाह कर ले, तो उसका हज़ानत का अधिकार समाप्त हो जाता है।
398	मृतका ने बच्चा छोड़ा, हज़ानत वालों में केवल माँ की फूँफी (बुआ) मौजूद है, तो बच्चा उसकी परवरिश में देंगे। यदि वह पारिश्रमिक लेना चाहे तो पिता से दिला देंगे।

جلد سیزدہم، فتویٰ رضویہ، صفحہ ۳۵ از ۶۸۸

باب الحضانۃ (پرورش)

تزوج عصبات کے حق حضانت کے
۳۸۳ **مسقطات میں سے نہیں۔**

نابالغ بچوں کے باپ مر گئے، اولیاء
میں نانی، دادا کا چچا زاد بھائی اور
۳۸۳ ماموں ہے۔ حق پرورش نانی کو ہے۔
اور ماموں موجود ہوں تو اس کو۔

۳۸۳ حضانت کے وقت و عمر کا بیان۔

مذکورہ بالا لڑکوں کی ولایت نکاح کا
حق دادا کے چچا زاد بھائی کو اور
۳۸۵ مال کی ولایت کا حق باپ دادا کے
وصی یا حاکم کو ہے۔

بچہ کی ماں نے اجنبی سے نکاح کر
۳۸۵ لیا تو اس کا حق پرورش ختم ہو گیا۔

۳۹۰ باب الحضانۃ (پرورش)

حق حضانت میں ماموں نانا سے بھی پانچویں
۳۹۰ درجہ میں ہے۔

باپ دادا نہ ہوں تو نابالغوں کی ولایت نکاح کا
۳۹۱ حق چچا کو ہے۔

ماں نے اجنبی سے نکاح کر لیا تو اس کو
۳۹۱ پرورش کا حق نہ رہا۔ بالغ بہن ہے تو وہ
پرورش کرے۔

نابالغ یتیموں کے پاس مال نہ ہو تو ان کا نفقہ
ایسے وارثوں پر ہے جن کے پاس اپنے بال
۳۹۲ بچوں کے مصارف کے بعد پس انداز ہوتا ہو۔

تزوج عصبات کے حق حضانت کے
۳۸۳ **مسقطات میں سے نہیں۔**

۳۷۵ دادی، نانی، بہن نہ ہو تو خالہ پرورش کرے۔ مستحقین حضانت کی تفصیل۔

۳۸۶ نابالغ کے مال کی ولایت باپ، دادا یا ان کے وصی یا حاکم کو حاصل ہے۔

۳۸۷ ماں نے کسی اجنبی سے شادی کر لی، نانی موجود نہیں۔ لڑکا دادی کے پاس رکھا جائے۔

۳۸۷ حضانت کی ایک صورت۔

۳۸۸ حضانت کا تفصیلی بیان اور مستحقین کی ترتیب۔

۳۹۰ حق حضانت میں نانا اکتالیسویں درجہ میں ہے۔

۳۹۰ باب الحضانۃ (پرورش)

ماں کے پاس اپنا مال نہ ہو تو اس پر نفقہ واجب نہیں۔

۳۹۳ نفقہ وارثوں پر بقدر ارث لازم ہوتا ہے۔

۳۹۴ ماں مر گئی بچہ کا حق پرورش نانی کو ہے اور اس کے مال کی ولایت باپ کو حاصل ہے۔

۳۹۵ جہیز عورت کی ملک ہوتا ہے اور بعد اس کی مرگ کے فرائض اللہ پر تقسیم پائے گا۔

۳۹۵ بچہ غنی ہو تو پرورش اس کے مال سے ہو ورنہ نفقہ والد پر ہے۔

۳۹۶ عورت نے اجنبی سے شادی کر لی تو بچہ کی پرورش کا حق اس کو نہیں رہا بچہ کی حقیقی دادی اگر موجود ہے تو اس کو حق حاصل ہے۔

۳۹۷ عورت اپنے نابالغ بچے کے غیر محرم سے نکاح کر لے تو اس کا حق حضانت ساقط ہو جاتا ہے۔

تزوج عصبات کے حق حضانت کے
مسقطات میں سے نہیں۔ ۳۸۳

نکاح ثانی کے سبب باپ کے پاس
مضرت جان اطفال کا اندیشہ گمان فاسد ہے۔ ۳۹۰

۳۹۰ باب الحضانۃ (پرورش) ۳۹۸

متوفیہ نے بچہ چھوڑا، اہل حضانت میں صرف ماں کی پھوپھی موجود ہے تو بچہ اس کی پرورش میں دیں گے۔ اجرت لینی چاہے تو باپ سے دلا دیں گے۔

499 | If there is no guardian for minor boys and girls other than the father's cousin, then the guardianship of marriage is also held by him. For upbringing, a pious religious woman should be sought, and for the care of property, if there is an executor (wasi) of the father or grandfather, he should do it; otherwise, the judge (Qazi) should select a pious Muslim for this purpose as well. | If there is no woman entitled to custody (hazanat) left, and among the agnates (asabaat) there is a grandfather, then he is the one entitled to the upbringing. | 407 401 | A detailed fatwa regarding the custody, guardianship, and protection of orphans. | The authority for the marriage of minors lies with the uncle among the agnates (asabaat), if he is present. | 408 402 | If there is no woman meeting the comprehensive conditions of custody, it will transfer to agnates (asabaat) and then to maternal relatives (dhawi al-arham) in order. If they are also not available, the pious Muslim people of the city should appoint such a woman for the care of the children. | If the mother has married a stranger, the minor should not stay with her. If she has a widowed sister, let the minor be with her; otherwise, with the maternal aunt, then the paternal aunt. | 408 403 | In a city where there is a pious scholar, his opinion will be reliable in Muslim affairs. If there are several scholars, the most learned scholar of the city has the right. | A minor girl cannot be separated from her mother until the age of nine, as long as there is no defect that would disqualify her from custody. | 410 403 | Even if a non-Muslim government restricts the religious affairs of Muslims to some extent, action is still mandatory within the limits of the available freedom. | If a woman marries someone who is a non-mahram to the boy, the boy will be removed from the mother's care, but it is forbidden to prevent them from meeting the mother. | 411 406 | Honorable mention of Hadrat Maulana Muhammad Wasi Ahmad Muhaddith Surti. | Allah's curse is upon the one who causes separation between a mother and her child. | 411 406 | The mother has the right of custody for a boy until seven years of age, provided she does not marry a stranger to the boy. | The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever harms a Muslim unjustly has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah, the Mighty and Sublime." | 411 407 | If the boy is wealthy, his maintenance is obligatory from his own property. If he is not wealthy, it is the father's responsibility, and if the father is not there, it is the grandfather's responsibility. | After the father's death, the right to the girl's marriage and the care of her property belongs to the grandfather, and the right to her upbringing until the age of nine belongs to the

mother. | 412 407 | If a female relative of the girl wants to raise her for free, the mother will be told: either you raise her for free or give her to the other woman. | If a girl is gifted to someone, she does not legally belong to them, nor can she stay with them, nor do they have the guardianship of her marriage. Whatever was spent on her was a voluntary donation. | 412

४९९ | यदि नाबालिग लड़कों और लड़कियों का पिता के चचेरे भाई के अलावा कोई संरक्षक नहीं है, तो निकाह का अधिकार भी उसी के पास है। परवरिश के लिए किसी नेक धार्मिक महिला की तलाश की जानी चाहिए, और संपत्ति की देखभाल के लिए यदि पिता या दादा का कोई वसीयतदार (वसी) है, तो वह करेगा; अन्यथा क़ाज़ी इसके लिए भी किसी धार्मिक मुसलमान का चयन करे। | यदि परवरिश (हज़ानत) की हकदार कोई महिला न रहे और अक़रबा (असाबात) में दादा हो, तो वही परवरिश का हकदार है। | ४०७ ४०१ | अनाथों की परवरिश, संरक्षण और सुरक्षा से संबंधित एक विस्तृत फतवा। | नाबालिगों के निकाह का अधिकार अक़रबा (असाबात) में चाचा को है, यदि वह मौजूद है। | ४०८ ४०२ | यदि परवरिश की व्यापक शर्तों को पूरा करने वाली कोई महिला न हो, तो यह क्रमानुसार अक़रबा और फिर ज़वी अल-अरहाम (मातृ पक्ष के रिश्तेदार) को हस्तांतरित होगी। यदि वे भी न हों, तो शहर के धार्मिक मुसलमान बच्चों की देखभाल के लिए ऐसी महिला को नियुक्त करें। | यदि माँ ने किसी अजनबी से शादी कर ली है, तो नाबालिग को उसके पास न रखे। यदि उसकी विधवा बहन है, तो उसके पास रखे; अन्यथा मौसी, फिर फूफी के पास रखा जाए। | ४०८ ४०३ | जिस शहर में कोई धार्मिक विद्वान हों, मुसलमानों के मामलों में उनकी राय विश्वसनीय होगी। यदि कई विद्वान हों, तो शहर के सबसे बड़े विद्वान को अधिकार है। | नाबालिग लड़की को नौ साल की उम्र तक माँ से अलग नहीं किया जा सकता, बशर्ते माँ में परवरिश के अधिकार को समाप्त करने वाला कोई दोष न हो। | ४१० ४०३ | यदि कोई गैर-मुस्लिम सरकार मुसलमानों के धार्मिक मामलों में स्वतंत्रता को कुछ हद तक सीमित कर दे, तब भी जहाँ तक स्वतंत्रता है, उस पर कार्रवाई करना अनिवार्य है। | यदि महिला लड़के के गैर-मह़रम से शादी करती है, तो लड़के को माँ की परवरिश से हटा दिया जाएगा, लेकिन माँ से मिलने-जुलने से रोकना हराम है। | ४११ ४०६ | हज़रत मौलाना मुहम्मद वसी अहमद मुहद्दिस सूरती का सम्मानजनक उल्लेख। | अल्लाह की लानत है उस पर जो माँ और उसके बच्चे के बीच जुदाई पैदा करे। | ४११ ४०६ | लड़के की परवरिश का अधिकार सात साल तक माँ को है, बशर्ते वह लड़के के लिए किसी अजनबी से शादी न करे। | अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिसने किसी मुसलमान को नाहक तकलीफ दी उसने मुझे तकलीफ दी, और जिसने मुझे तकलीफ दी उसने अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल को तकलीफ दी।" | ४११ ४०७ | यदि लड़का धनी है, तो उसका खर्च उसकी अपनी संपत्ति से अनिवार्य है। यदि वह धनी नहीं है, तो पिता की ज़िम्मेदारी है, और यदि वह न हो, तो दादा की ज़िम्मेदारी है। | पिता की मृत्यु के बाद लड़की के

निकाह और उसकी संपत्ति की देखभाल का अधिकार दादा को है, और नौ साल की उम्र तक परवरिश का अधिकार माँ को है। | ४१२ ४०७ | यदि लड़की की कोई महिला रिश्तेदार उसकी मुफ्त परवरिश करना चाहती है, तो माँ से कहा जाएगा: या तो तुम मुफ्त में पालो या उसे उस दूसरी महिला को दे दो। | यदि लड़की किसी को दान (हिबा) कर दी गई, तो वह शरई तौर पर उसकी नहीं हुई, न वह उसके पास रह सकती है, न ही उसे उसके निकाह का अधिकार है। उस पर जो कुछ खर्च किया गया, वह स्वैच्छिक दान माना जाएगा। | ४१२

पृष्ठ ३६ का ६८८

۴۹۹ | نا بالغ لڑکوں اور لڑکیوں کا نگران باپ کے چچا زاد بھائی کے علاوہ نہیں تو ولایت نکاح بھی اسی کو حاصل ہے اور پرورش کے لئے کسی صالح دیندار عورت کو تلاش کیا جائے اور مال کی نگہداشت باپ دادا کا وصی ہو تو وہ کرے ورنہ قاضی اس کے لئے بھی کسی دیندار مسلمان کا انتخاب کرے۔ | حضانت کی مستحق عورت نہ رہ جائے اور عصبات میں دادا ہو تو وہی مستحق پرورش ہے۔ | ۴۰۷ ۴۰۱ | ایتام کی حضانت ولایت و حفاظت سے تعلق ایک مفصل فتوی۔ | نا بالغوں کے نکاح کا اختیار عصبات میں چچا کو ہے اگر وہ موجود ہے۔ | ۴۰۸ ۴۰۲ | شرائط حضانت کی جامع کوئی عورت نہ ہو تو بالترتیب عصبات پھر ذوی الارحام کو منتقل ہوگی وہ بھی نہ ہوں تو اہل شہر دیندار مسلمان بچوں کی نگہداشت اور ایسی عورت کو بچوں کی نگہداشت کے لئے مقرر کریں۔ | ماں اجنبی سے شادی کر چکی تو نابالغ اپنی بیوہ بہن کے پاس وہ نہ رکھے تو خالہ، پھر پھوپھی کے پاس رکھے جائیں۔ | ۴۰۸ ۴۰۳ | جس شہر میں کوئی عالم دیندار ہوں امور مسلمین میں اسی کی رائے معتبر ہوگی اور چند علماء ہوں تو اعلم علماء بلد کو حق ہے۔ | نابالغ لڑکی کو ماں کے پاس سے نو سال کی عمر تک جدا نہیں کیا جاسکتا جبکہ اس میں مسقط حضانت کوئی عیب نہ ہو۔ | ۴۱۰ ۴۰۳ | اگر غیر مسلم حکومت مسلمانوں کے مذہبی معاملات میں آزادی کسی حد تک محدود کر دے تب بھی جہاں تک آزادی ہے اس پر کارروائی لازم ہے۔ | عورت لڑکے کے نامحرم سے شادی کرے تو اس لڑکے کو ماں کی پرورش سے نکال لیا جائے گا لیکن ماں سے ملنے جلنے کو روکنا حرام ہے۔ | ۴۱۱ ۴۰۶ | حضرت مولانا محمد وصی احمد محدث سورتی کا ذکر خیر۔ | اللہ کی لعنت ہے اس پر جو ماں اور اس کے بچے میں جدائی ڈالے۔ | ۴۱۱ ۴۰۶ | لڑکے کے حق حضانت سات سال تک ماں کو حاصل ہے جبکہ لڑکے کے اجنبی سے

شادی نہ کرے۔ | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ جس نے کسی مسلمان کو ناحق ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔ | ۴۰۷ ۴۱۱ | لڑکا غنی ہو تو نفقہ اسی کے مال میں واجب ہے، اور غنی نہ ہو تو باپ کے ذمہ، اور وہ نہ ہو تو دادا کے ذمہ واجب ہے۔ | باپ کے انتقال کے بعد لڑکی کے نکاح اور مال کی نگہداشت کا حق دادا کو ہے اور نو برس تک پرورش کا حق ماں کو ہے۔ | ۴۰۷ ۴۱۲ | اگر لڑکی کی کوئی عزیزہ اس کی مفت پرورش کرنا چاہتی ہو تو ماں سے کہا جائے گا تو ہی مفت پال یا اس دوسری کو دے دے۔ | لڑکی کسی کو ہبہ کردی شرعاً اس کی نہ ہوئی نہ اس کے پاس رہ سکتی ہے نہ اس کے نکاح کی ولایت اس کو حاصل ہے، اس پر جو خرچ کیا تبرع ہوا۔ | ۴۱۲

Volume Thirteen (13) | Fatawa Rizvia

Chapter on Maintenance (Alimony)

[Left Column Content:] - 415 | If a divorced woman is pregnant, the waiting period (Iddat) ends with childbirth; otherwise, it ends after three menstrual cycles. - 415 | Maintenance for a divorced woman is not obligatory for the husband without the waiting period. - 415 | Maintenance is subordinate to the waiting period. - 417 | The husband has the Sharia-granted right to keep the wife with him; he cannot invalidate this right through any agreement. - 417 | The husband gains the right to restrain the wife after the payment of the prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal). - 417 | Every sexual act is part of the marriage contract. - 417 | Acceptance of a part does not necessitate acceptance of the rest. - 418 | If the prompt dower is not paid, the woman can prevent the husband from benefit and departure, and in this case, she will not be considered disobedient (Nashizah). - 418 | For a waiver (Isqat), proof is required first; something that is not yet established cannot be waived.

[Right Column Content:] - 418 | A waiver for which an oath cannot be taken, its suspension is not valid. - 419 | A woman can go to her parents' house on the eighth day even without the husband's permission. - 420 | A woman can go to visit relatives other than parents (Mahram) once a year, whether the husband permits or not. - 420 | A woman has the right to demand a change of residence to escape the oppression of a cruel husband. - 421 | If maintenance for the waiting period days was not paid by the husband and the period passed, it is forfeited. - 422 | Causing distress to a wife without reason is a sin, and treating her worse than another wife is another severe sin, whose prohibition is explicitly stated in the Quran and Hadith. - 422 | If a woman took a loan for her maintenance without mutual consent or a judge's decree, she herself is responsible for it. However, after mutual consent or a judge's order, if she spends from her own wealth, she can recover it from the husband. - 422 | Where there is no mention of promptness or delay in the dower, the ruling will be according to custom and tradition. - 422 | In our lands, general dowers are settled such that no promptness or delay is stipulated. Thus, according to widespread custom, women here do not have the right to demand dower until separation occurs through death or divorce, nor does the judge have the power to force payment of dower before separation in such a case. - 424 | A woman is entitled to maintenance as long as she is not disobedient.

जिल्द तेरहवीं (१३) | फतावा रज़विया

बाब उन-नफ़क़ा (भरण-पोषण/नफ़क़ा का अध्याय)

[बायाँ कॉलम:] - ४१५ | यदि तलाक़शुदा महिला गर्भवती है, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) प्रसव के साथ समाप्त हो जाती है; अन्यथा, यह तीन मासिक चक्रों के बाद समाप्त हो जाती है। - ४१५ | तलाक़शुदा महिला के लिए इद्दत के बिना पति पर नफ़क़ा (भरण-पोषण) वाजिब नहीं है। - ४१५ | नफ़क़ा इद्दत के अधीन है। - ४१७ | पति को अपनी पत्नी को अपने पास रखने का अधिकार शरिया द्वारा प्राप्त है; वह स्वयं भी किसी समझौते के माध्यम से इस अधिकार को रद्द नहीं कर सकता। - ४१७ | पति को पत्नी को रोकने का अधिकार मेहर-ए-मुअज्जल (त्वरित मेहर) के भुगतान के बाद प्राप्त होता है। - ४१७ | प्रत्येक संभोग विवाह अनुबंध का हिस्सा है। - ४१७ | कुछ का स्वीकार होना शेष के स्वीकार होने का कारण नहीं बनता। - ४१८ | यदि मेहर-ए-मुअज्जल का भुगतान नहीं किया जाता है, तो महिला पति को लाभ उठाने और विदाई से रोक सकती है, और इस स्थिति में उसे 'नाशिज़ाह' (अज्ञाकारी) नहीं माना जाएगा। - ४१८ | माफ़ करने (इसक़ात) के लिए पहले प्रमाण की आवश्यकता होती है; जो चीज़ अभी साबित ही नहीं हुई, उसे माफ़ कैसे किया जा सकता है।

[दायाँ कॉलम:] - ४१८ | जिस माफ़ी (इसक़ात) की कसम नहीं खाई जा सकती, उसका निलंबन सही नहीं है। - ४१९ | महिला आठवें दिन पति की अनुमति के बिना भी अपने माता-पिता के घर जा सकती है। - ४२० | माता-पिता के अलावा अन्य महरम रिश्तेदारों से मिलने के लिए महिला साल में एक बार जा सकती है, चाहे पति अनुमति दे या न दे। - ४२० | ज़ालिम पति के ज़ुल्म से बचने के लिए महिला को निवास बदलने की माँग करने का अधिकार है। - ४२१ | यदि इद्दत के दिनों का नफ़क़ा पति ने अदा नहीं किया और इद्दत बीत गई, तो वह समाप्त हो गया। - ४२२ | पत्नी को बिना कारण कष्ट देना एक पाप है, और दूसरी पत्नी से कमतर दर्जा देना दूसरा गंभीर पाप है, जिसकी मनाही कुरान और हदीस में स्पष्ट रूप से दी गई है। - ४२२ | यदि किसी महिला ने आपसी सहमति या काज़ी के आदेश के बिना अपने भरण-पोषण के लिए ऋण लिया, तो वह स्वयं इसके लिए उत्तरदायी है। आपसी सहमति या काज़ी के फ़ैसले के बाद, यदि वह अपने स्वयं के धन से खर्च करती है, तो वह इसे पति से वसूल कर सकती है। - ४२२ | जहाँ मेहर में त्वरित या विलंबित भुगतान का कोई उल्लेख नहीं है, वहाँ फ़ैसला रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार होगा। - ४२२ | हमारे क्षेत्रों में, सामान्य मेहर इस तरह तय किए जाते हैं कि उनमें त्वरित या विलंबित भुगतान की कोई शर्त नहीं होती है। इस प्रकार प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार, यहाँ की महिलाएँ मृत्यु या तलाक़ के माध्यम से अलगाव होने तक

मेहर की माँग का अधिकार नहीं रखती हैं, और न ही काज़ी के पास ऐसी स्थिति में अलगाव से पहले मेहर के भुगतान के लिए मजबूर करने की शक्ति है। - ४२४ | महिला तब तक नफ़क़ा (भरण-पोषण) की हकदार है जब तक वह अज्ञाकारी (नाशिज़ाह) नहीं हो जाती।

باب النفقة

[بایاں کالم:] - ۴۱۵ | مطلقہ حاملہ ہو تو عدت وضع حمل ورنہ تین حیضوں کا آکر ختم ہو جانا ہے۔ - ۴۱۵ | مطلقہ کا نفقہ عدت کے بغیر شوہر پر واجب نہیں۔ - ۴۱۵ | نفقہ عدت کے تابع ہے۔ - ۴۱۷ | شوہر کو عورت کے اپنے پاس رکھنے کا حق شرعاً حاصل ہے، اس حق کو خود شوہر بھی کسی اقرار نامہ کے ذریعہ باطل نہیں کرسکتا۔ - ۴۱۷ | شوہر کو حق حبس زوجہ، مہر معجّل کی ادائیگی کے بعد حاصل ہوتا ہے۔ - ۴۱۷ | ہر وطی معقود علیہ ہے۔ - ۴۱۷ | تسلیم بعض موجب تسلیم باقی نہیں۔ - ۴۱۸ | مہر معجّل نہ ادا ہو تو عورت شوہر کو انتفاع اور رخصتی سے روک سکتی ہے اور اس صورت میں ناشزہ نہ ہوگی۔ - ۴۱۸ | اسقاط کے لئے پہلے ثبوت درکار ہے جو شیئاً ہنوز ثابت ہی نہیں ساقط کیا ہوگی۔

[دایاں کالم:] - ۴۱۸ | جس اسقاط کی قسم نہیں کھائی جاسکتی اس کی تعلیق صحیح نہیں۔ - ۴۱۹ | عورت آٹھویں دن اپنے والدین کے یہاں بے اذن زوج بھی جاسکتی ہے۔ - ۴۲۰ | والدین کے علاوہ دیگر محارم کی زیارت کو عورت سال میں ایک مرتبہ جاسکتی ہے چاہے شوہر اجازت دے یا نہ دے۔ - ۴۲۰ | ظالم شوہر کے ظلم سے بچنے کے لئے عورت کو انتقالِ سکونت کے مطالبہ کا حق ہے۔ - ۴۲۱ | ایامِ عدت کا نفقہ شوہر نے ادا نہ کیا اور عدت گزر گئی تو وہ ساقط ہوگیا۔ - ۴۲۲ | زوجہ کو بلاوجہ تکلیف دینا ایک گناہ ہے اور دوسری زوجہ سے کم رکھنا دوسرا گناہ شدید جس کی تحریم پر قرآن وحدیث ناطق ہے۔ - ۴۲۲ | عورت نے اپنے نفقہ کے لئے باہمی تراضی یا قضاءِ قاضی کے بغیر جو قرض لیا اس کی ذمہ دار وہ خود ہے اور تراضی یا تقریرِ قاضی کے بعد اگر اپنے مال سے بھی خرچ کرے تو اس کو شوہر سے وصول کرسکتی ہے۔ - ۴۲۲ | جہاں مہر

میں تعجیل یا تا جیل کچھ مذکور نہ ہو تو وہاں حکم عرف ورواج کے مطابق ہوگا۔ - ۴۲۲ | ہمارے بلاد میں عامہ مہریوں بندھتے ہیں کہ ان میں تعجیل و تا جیل کچھ مشروط نہیں ہوتی تو بحکم عرف شائع وذائع یہاں کی عورتیں جب تک مرگ یا طلاق سے افتراق نہ واقع ہو ہرگز مطالبہ مہر کا استحقاق نہیں رکھتیں نہ قاضی کو اختیار کہ ایسی صورت میں پیش از افتراق ادائے مہر پر جبر کرے۔ - ۴۲۴ | عورت جب تک ناشزہ نہ ہو مستحق نفقہ ہے۔

Fatawa Rizvia Volume 13 | Page 13

[Summary Table of Islamic Rulings]

(Right Side Column) 445: If maintenance (nafqah) has been fixed by court order or mutual consent, the woman can also demand for the days that have passed since the agreement without maintenance. She can also demand for future payments based on the decided intervals; for example, if it's monthly, she can ask at the start of each month, and if yearly, at the start of each year. 446: If the husband does not agree to fix maintenance, the woman can file a lawsuit in court to have it fixed. 446: In fixing maintenance, the status of both husband and wife shall be considered. 448: If a woman flees from her husband, she is considered disobedient (nashizah) and will not receive maintenance for that period. 448: Maintenance for the wife of a young, healthy (non-disabled) son is not mandatory for the father. 449: The expenses for raising a minor child are the responsibility of the father, and the mother has the right of custody until the age of seven, provided she is not immoral. 450: A husband who does not provide food and maintenance without a legitimate religious reason is an oppressor and sinner, and is liable for the woman's rights. 450: If a woman goes somewhere by her husband's order, she is not disobedient and shall receive maintenance. Even a disobedient woman will receive maintenance once she returns to her husband. 451: If maintenance is not fixed by a judge's decree or mutual consent, the maintenance for the time that has already passed is forfeited. 451: If a woman gets maintenance fixed by court order and the husband refuses to pay, she can forcefully recover it through a lawsuit. 452: The father is not responsible for the maintenance of an adult son who is capable of earning a living.

(Left Side Column) 443: Maintenance for the wife and minor children is mandatory for the husband, provided the minors do not have sufficient personal wealth. 443: If the husband kicks the woman out of the house and she is ready to stay but he doesn't call her back, maintenance is still mandatory. 444: Due to an accusation (of infidelity), even if the accusation is true, the woman's marriage is not annulled. 444: It is not mandatory for a husband to divorce an immoral woman. 445: The common notion among ignorant people that if a woman acts immorally (God forbid), the marriage is terminated, is completely false. 445: It is obligatory for the husband to look after his wife's food and maintenance or grant her a divorce. 445: A husband who keeps his wife in limbo (suspended state) is a sinner and a clear violator of Quranic commands. 445: Leaving without the husband's permission forfeits maintenance, but the marriage remains intact. 445: Maintenance for the wife is the compensation for her

confinement (staying at home). 445: There is no compulsion on a promise. 445: If the wife does not come to the husband's house upon his call, the maintenance is forfeited.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | पृष्ठ 13

[इस्लामी निर्णयों की सारांश तालिका]

(दायीं ओर का कॉलम) 445: यदि गुजारा (नफ़का) अदालती आदेश या आपसी सहमति से तय किया गया है, तो महिला उस अवधि के लिए भी दावा कर सकती है जो समझौते के बाद बिना गुजारा के बीत गई है। वह भविष्य के लिए भी तय अंतराल पर गुजारा मांग सकती है; उदाहरण के लिए, यदि मासिक तय हुआ है, तो वह हर महीने की शुरुआत में, और यदि वार्षिक तय हुआ है, तो हर साल की शुरुआत में गुजारा मांग सकती है। 446: यदि पति गुजारा तय करने के लिए सहमत नहीं होता है, तो महिला अदालत में मामला दायर करके इसे तय करवा सकती है। 446: गुजारा तय करते समय पति और पत्नी दोनों की सामाजिक स्थिति का ध्यान रखा जाएगा। 448: यदि पत्नी पति के पास से भाग जाती है, तो वह अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) मानी जाती है और उसे उस अवधि का गुजारा नहीं मिलेगा। 448: जवान और स्वस्थ बेटे की पत्नी का गुजारा पिता पर अनिवार्य नहीं है। 449: नाबालिग बच्चे के पालन-पोषण का खर्च पिता पर है, और माँ को सात साल की उम्र तक पालन-पोषण का अधिकार है, बशर्ते वह चरित्रहीन न हो। 450: बिना किसी वैध धार्मिक कारण के रोटी और गुजारा न देने वाला पति अत्याचारी और पापी है और पत्नी के अधिकारों का अपराधी है। 450: यदि महिला पति के आदेश से कहीं जाती है, तो वह अवज्ञाकारी नहीं है और उसे गुजारा मिलेगा। एक अवज्ञाकारी महिला भी जब पति के पास लौट आती है, तो उसे गुजारा मिलने लगता है। 451: यदि गुजारा काज़ी के आदेश या आपसी सहमति से तय नहीं हुआ है, तो बीते हुए समय का गुजारा समाप्त हो जाता है। 451: यदि महिला अदालती आदेश से गुजारा तय करवा लेती है और पति भुगतान नहीं करता है, तो वह कानूनी कार्यवाही के माध्यम से इसे जबरन वसूल कर सकती है। 452: बालिग बेटा जब कमाने में सक्षम हो, तो उसका गुजारा पिता की ज़िम्मेदारी नहीं है।

(बायीं ओर का कॉलम) 443: पत्नी और नाबालिग बच्चों का गुजारा पति पर अनिवार्य है, बशर्ते नाबालिगों के पास पर्याप्त निजी संपत्ति न हो। 443: यदि पति ने पत्नी को घर से निकाल दिया और वह रहने के लिए तैयार है लेकिन पति उसे नहीं बुलाता, तो गुजारा अनिवार्य है। 444: तोहमत (आरोप) के कारण, भले ही वह आरोप वास्तव में सच हो, महिला का निकाह खत्म नहीं होता। 444: एक दुराचारी महिला को तलाक देना पति पर अनिवार्य नहीं है। 445: अज्ञानी लोगों में यह बात प्रसिद्ध है कि यदि कोई महिला (ईश्वर न करे) बुरा आचरण करती है, तो निकाह खत्म हो जाता है, यह पूरी तरह गलत है। 445: पति पर अनिवार्य है कि वह पत्नी के रोटी-कपड़े और गुजारे का ध्यान रखे या उसे तलाक दे

दे। 445: पत्नी को अधर में लटकाने वाला पति पापी है और कुरान के स्पष्ट आदेश का उल्लंघन करने वाला है। 445: पति की अनुमति के बिना जाने से गुजारा खत्म हो जाता है लेकिन निकाह बना रहता है। 445: पत्नी का गुजारा उसके(घर में) रहने का प्रतिफल है। 445: वादे पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है। 445: पति के बुलाने पर यदि पत्नी उसके घर नहीं आती, तो गुजारा खत्म हो जाता है।

पृष्ठ 38 / 688

[خلاصہ مسائل]

(دائیں جانب کا کالم) ۴۴۵: اگر نفقہ قضاء یا رضاء سے مقرر ہو لیا ہے تو جتنے دن بعد قرار داد بے نفقہ گزر گئے ہیں عورت ان کا مطالبہ بھی کر سکتی ہے اور آئندہ کے لئے بھی جو میعاد تکرار نفقہ کے لئے قرار پائی ہے اس کے شروع کے بعد اسی قدر کا مطالبہ کر سکتی ہے مثلاً نفقہ ماہ بماہ دینا قرار پایا ہے تو ہر مہینے کے شروع میں اس مہینے کا اور اگر سال بسال مقرر ہوا تو ہر سال کے آغاز پر اس سال کا نفقہ مانگ سکتی ہے۔ ۴۴۶: شوہر نفقہ مقرر کرنے پر راضی نہ ہو تو عورت قاضی کے وہاں دعوٰی کر کے نفقہ مقرر کرا سکتی ہے۔ ۴۴۶: نفقہ کے تقرر میں مردوزن دونوں کی حیثیت کا لحاظ ہوگا۔ ۴۴۸: عورت شوہر کے پاس سے فرار ہو گئی تو ناشزہ ہے اتنی مدت کا نفقہ نہ پائے گی۔ ۴۴۸: جوان غیر اپاہج بیٹے کی عورت کا نفقہ باپ پر لازم نہیں۔ ۴۴۹: نابالغ بچہ کی پرورش کا خرچ اس کے باپ پر ، اور پرورش کا حق سات سال کی عمر تک ماں کو ہے اگر آوارہ اور بدکار نہ ہو۔ ۴۵۰: عورت کو بلا وجہ شرعی نان و نفقہ نہ دینے والا شوہر ظالم و گنہگار اور عورت کے حق میں گرفتار ہے۔ ۴۵۰: عورت شوہر کے حکم سے کہیں گئی تو ناشزہ نہیں نفقہ پائے گی اور ناشزہ بھی جب شوہر کے پاس آجائے تو نفقہ پائے گی۔ ۴۵۱: نفقہ اگر قضاء قاضی یا تراضی طرفین سے مقرر نہ ہو تو جو وقت گزر گیا اس کا نفقہ ساقط ہے۔ ۴۵۱: عورت اگر دعوٰی کر کے بحکم قاضی نفقہ کرالے اور شوہر نہ دے تو جبراً بذریعہ نالش وصول کر سکتی ہے۔ ۴۵۲: بالغ لڑکا جب کسب پر قادر ہو اس کا نفقہ باپ کے ذمہ نہیں۔

(بائیں جانب کا کالم) ۴۴۳: عورت اور نابالغ اولاد کا نفقہ شوہر پر لازم ہے جبکہ نابالغوں کے پاس ذاتی مال بقدر کفایت نہ ہو۔ ۴۴۳: شوہر نے عورت کو گھر سے نکال دیا۔ عورت جانے کو تیار

مگر یہ بلاتا نہیں نفقہ واجب ہے۔ ۴۴۴: تہمت کی وجہ سے اگرچہ وہ تہمت واقع میں صحیح ہی ہو عورت کا نکاح زائل نہیں ہوتا۔ ۴۴۴: فاجرہ عورت کو طلاق دینا شوہر پر واجب نہیں۔ ۴۴۵: جاہلوں میں جو یہ بات مشہور ہے کہ اگر عورت معاذ اللہ بد وصفی کرے تو نکاح جاتا رہتا ہے محض غلط ہے۔ ۴۴۵: شوہر پر فرض ہے کہ بیوی کے نان و نفقہ کی خبر گیری کرے یا طلاق دے دے۔ ۴۴۵: بیوی کو معلق رکھنے والا شوہر گنہگار اور صریح حکم قرآن کا خلاف کرنے والا ہے۔ ۴۴۵: شوہر کی اجازت کے بغیر جانے سے نفقہ ساقط ہو جاتا ہے لیکن نکاح باقی رہتا ہے۔ ۴۴۵: نفقہ زوجہ جزاء احتباس ہے۔ ۴۴۵: وعدہ پر جبر نہیں۔ ۴۴۵: شوہر کے بلانے پر بیوی شوہر کے گھر نہ آئی تو نفقہ ساقط ہو گیا۔

Fatawa Razawiyya Volume 13 13

436 - Past maintenance and expenses for medicine and treatment or funeral and burial cannot be demanded from the husband. 439 - Reference is the transfer of debt. 437 - Dowry (Jahez) and dower (Mahr) are part of the woman's estate (inheritance). 440 - Where the debt is non-existent, a transfer of debt (Hawala) cannot be established. 437 - A woman died leaving behind a husband and parents; her estate will be divided into six shares: three shares to the husband, two shares to the father, and one share to the mother. 440 - In case of ignorance about the property/ money, the transfer of debt (Hawala) is not valid. 437 - It is the husband's Shariah right to bring his wife home after marriage and keep her with him. Maintenance (Nafqah) is in exchange for this; even the husband cannot waive this right of his. 441 - If a woman waives her dower (Mahr) without any Shariah compulsion, it is removed from the husband's responsibility. 437 - For a father to stop his daughter from going to her husband's house without a valid Shariah reason is oppression. 442 - Discharge of dower (Mahr) cannot be proven before a judge (Qazi) without the woman's admission or just witnesses. 437 - A woman's maintenance is the reward for her confinement (staying with the husband); therefore, when there is no confinement, maintenance will not be obligatory. 442 - If a woman forgave the Mahr in private and then, out of godlessness, denied it and filed a claim against the husband before a judge (Qazi), the judge will declare the Mahr proven upon the husband. The internal matter is entrusted to the True Judge, the Knower of the Unseen and the Seen. 437 - Allah Almighty's condition is the Truth/Right. 442 - The Qazi (judge) will decide based on outward evidence. 437 - A condition against the Book of Allah is not valid, even if stipulated a hundred times. 442 - Adultery by women does not lead to the annulment of marriage. 438 - If the father of the woman took responsibility for her maintenance, the obligation of maintenance will not be removed from the husband's responsibility. 442 - The knot of marriage is in the hands of the man. 439 - Waiving a debt before it becomes obligatory is meaningless. 442 - If a woman commits adultery with her husband's father or son, the marriage is not annulled, although she becomes forever forbidden to the husband and immediate separation becomes obligatory. 439 - A wife's maintenance becomes obligatory on the husband daily, little by little. 442 - Marriage is not terminated by 'Hurmat-e-Musahara' (prohibited affinity) until separation (Mutarka); marriage of that woman to another person before the completion of the waiting period ('Iddah) will be unlawful. 439 - Waiving something before it becomes obligatory is not permissible. 443 - After Hurmat-e-Musahara, if

the husband has intercourse with the woman, will it be considered adultery (Zina) or not? 439 - Suretyship (Kafala) on the condition of the discharge of the principal debtor is a transfer of debt (Hawala).

फतावा रज़विया जिल्द 13 (तेरहवीं) १३

४३६ - पिछला भरण-पोषण और दवा-इलाज या कफ़न-दफ़न के खर्चों की मांग पति से नहीं की जा सकती। ४३९ - हवाला ऋण का हस्तांतरण है। ४३७ - दहेज और मेहर औरत की विरासत है। ४४० - जहाँ ऋण अस्तित्वहीन हो, वहाँ ऋण हस्तांतरण (हवाला) प्रमाणित नहीं हो सकता। ४३७ - एक महिला अपने पति और माता-पिता को छोड़कर मर गई; उसकी विरासत छह हिस्सों में बाँटी जाएगी: तीन हिस्से पति को, दो हिस्से पिता को और एक हिस्सा माँ को मिलेगा। ४४० - संपत्ति के बारे में अनभिज्ञता की स्थिति में, ऋण हस्तांतरण (हवाला) सही नहीं होता है। ४३७ - पत्नी को विदा कराकर अपने पास रखना पति का शरई अधिकार है। भरण-पोषण (नफ़क़ा) इसी के बदले में है; पति भी अपना यह अधिकार समाप्त नहीं कर सकता। ४४१ - अगर कोई महिला बिना किसी शरई मजबूरी के मेहर माफ कर दे, तो वह पति की जिम्मेदारी से हट जाता है। ४३७ - एक पिता का अपनी बेटी को बिना किसी शरई कारण के पति के घर जाने से रोकना ज़ुल्म है। ४४२ - महिला की स्वीकारोक्ति या न्यायपूर्ण गवाहों के बिना मेहर की माफी काज़ी के पास साबित नहीं की जा सकती। ४३७ - महिला का भरण-पोषण उसके साथ रहने (एहतेबास) का प्रतिफल है; इसलिए, जब साथ रहना नहीं होगा, तो भरण-पोषण भी अनिवार्य नहीं होगा। ४४२ - यदि किसी महिला ने एकांत (ख़लवत) में मेहर माफ कर दी और फिर खुदा-नतरसी करते हुए मुकर गई और काज़ी के पास पति के खिलाफ दावा कर दिया, तो काज़ी पति पर मेहर की जिम्मेदारी साबित करेगा। आंतरिक मामला वास्तविक काज़ी (ईश्वर), जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है, के सुपुर्द है। ४३७ - अल्लाह तआला की शर्त हक़ है। ४४२ - काज़ी ज़ाहिर (प्रकट साक्ष्यों) पर फ़ैसला करेगा। ४३७ - किताबुल्लाह (अल्लाह की किताब) के खिलाफ शर्त मान्य नहीं है, चाहे सौ बार शर्त रखी जाए। ४४२ - महिलाओं का व्यभिचार (ज़िना) निकाह के बातिल होने का कारण नहीं है। ४३८ - यदि महिला के पिता ने उसके भरण-पोषण की जिम्मेदारी ले ली, तो पति की जिम्मेदारी से भरण-पोषण का दायित्व समाप्त नहीं होगा। ४४२ - निकाह की गिरह (गांठ) मर्द के हाथ में है। ४३९ - ऋण के अनिवार्य होने से पहले उसे त्यागना अर्थहीन है। ४४२ - यदि कोई महिला पति के पिता या पुत्र के साथ व्यभिचार करती है, तो निकाह बातिल (अमान्य) नहीं होता, हालांकि वह पति पर हमेशा के लिए हराम हो जाती है और तत्काल अलगाव (मतारका) फ़र्ज़ हो जाता है। ४३९ - पत्नी का भरण-पोषण पति पर प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके वाजिब होता है। ४४२ - हुरमत-ए-मुसाहरत (ससुराली रिश्तों के कारण हराम होना) से निकाह खत्म नहीं होता, यहाँ तक कि अलगाव और इद्दत की समाप्ति से पहले उस महिला का निकाह किसी दूसरे व्यक्ति से करना नाजायज़ होगा।

४३९ - किसी चीज़ के अनिवार्य होने से पहले उसे त्यागना जायज़ नहीं है। ४४३ - हुरमत-ए-मुसाहरत के बाद यदि पति महिला से संभोग (वति) करता है, तो उसे ज़िना (व्यभिचार) माना जाएगा या नहीं? ४३९ - मूल ऋणी की मुक्ति की शर्त पर ज़मानत (कफ़ाला) वास्तव में ऋण का हस्तांतरण (हवाला) है।

۴۳۶ - گزشتہ نفقہ اور اخراجات دوا و علاج یا تجہیز و تکفین کا مطالبہ شوہر سے نہیں کیا جاسکتا۔ ۴۳۹ - حوالہ نقل دین ہے۔ ۴۳۷ - جہیز اور مہر عورت کا ترکہ ہے۔ ۴۴۰ - جہاں دین معدوم ہو وہاں حوالہ متحقق نہیں ہو سکتا۔ ۴۳۷ - عورت شوہر اور والدین چھوڑ کر فوت ہوئی اس کا ترکہ چھ سہام ہو کر تین سہم شوہر دو سہم پدر اور ایک مادر کو ملے گا۔ ۴۴۰ - جہالت مال کی صورت میں حوالہ صحیح نہیں ہوتا۔ ۴۳۷ - عورت کو رخصت کرا کر اپنے پاس رکھنا شوہر کا شرعی حق ہے۔ نفقہ اسی کے بدلہ میں ہے، اپنے اس حق کو شوہر بھی ساقط نہیں کرسکتا۔ ۴۴۱ - عورت اگر بلا اکراہ شرعی مہر معاف کر دے تو شوہر کے ذمہ سے ساقط ہو جاتا ہے۔ ۴۳۷ - باپ کا اپنی بیٹی کو بلا وجہ شرعی شوہر کے گھر جانے سے روکنا ظلم ہے۔ ۴۴۲ - ابراء مہر بلا اقرار زن یا بینہ عادلہ قاضی کے پاس ثابت نہیں ہو سکتا۔ ۴۳۷ - عورت کا نفقہ جزاء احتباس ہے لہذا جب احتباس نہ ہوگا تو نفقہ بھی لازم نہ ہوگا۔ ۴۴۲ - خلوت میں عورت نے مہر معاف کیا پھر انکاری ہو کر خداناترسی کرتے ہوئے قاضی کے پاس شوہر پر دعوٰی کر دیا تو قاضی ذمہ شوہر پر مہر کو ثابت قرار دے گا۔ معاملہ باطنی قاضی حقیقی عالم الغیب والشہادہ کے سپرد ہے۔ ۴۳۷ - اللہ تعالٰی کی شرط حق ہے۔ ۴۴۲ - قاضی ظاہر پر فیصلہ کرے گا۔ ۴۳۷ - کتاب اللہ کے خلاف شرط معتبر نہیں اگرچہ سو بار شرط کرے۔ ۴۴۲ - زنائے زناں موجب بطلان نکاح نہیں۔ ۴۳۸ - نان نفقہ کی ذمہ داری عورت کے باپ نے لی تو اس کے شوہر کے ذمہ سے نفقہ ساقط نہ ہوگا۔ ۴۴۲ - نکاح کی گرہ مرد کے ہاتھ میں ہے۔ ۴۳۹ - اسقاط دین پیش از وجوب معنی ندارد۔ ۴۴۲ - اگر عورت شوہر کے باپ یا بیٹے سے بدکاری کرے تو نکاح باطل نہیں ہوتا اگرچہ وہ شوہر پر ہمیشہ کے لئے حرام ہو جاتی ہے اور متارکہ فی الفور فرض ہو جاتا ہے۔ ۴۳۹ - نفقہ زوجہ شوہر پر روزانہ شیافشیاً

واجب ہوتا ہے۔ ۴۴۲ - حرمت مصاہرہ سے نکاح مرتفع نہیں ہوتا حتی کہ متارکہ اور انقضاء عدت سے قبل اس عورت کا نکاح کسی دوسرے شخص سے ناجائز ہوگا۔ ۴۳۹ - اسقاط شیئی قبل از وجوب جائز نہیں۔ ۴۴۳ - حرمت مصاہرہ کے بعد شوہر اگر عورت سے وطی کرے تو اس کو زنا قرار دیا جائے گا یا نہیں۔ ۴۳۹ - کفالہ بشرط براءت اصیل حوالہ ہے۔

Fatawa Razawiya, Volume 13, 13

(Table Right Column) 443 - Discretionary punishment (ta'zeer) is applicable to any sin for which there is no fixed punishment (hadd). 443 - In the event of non-payment of maintenance, the judge shall not use compulsion; research by the author on the reason for the difference. 444 - Non-payment of maintenance is not a reason for separation according to any except the Hanafis. 445 - The order of separation by a Shafi'i judge due to inability to pay maintenance shall not be enforceable according to the Hanafis either. 445 - Maintenance for young sisters is the responsibility of the brother when they have no personal property and the brother is capable of supporting them. 445 - The maintenance of a helpless person is obligatory on a single person only when he is the sole heir, otherwise on all heirs according to their inheritance shares. 446 - If a son can serve a needy father and does not, he is considered disobedient. 446 - One who, despite having the means, does not help a weak and needy father is not fit to lead prayers (imamat). 446 - It is a grave sin not to provide maintenance for those whose upkeep is one's responsibility. 446 - Even if someone else bears the burden of a wife's maintenance, she cannot go anywhere without her husband's permission, except in specified cases. 448 - A woman may visit her parents every eighth day and other mahram relatives once a year for a day, even without her husband's permission, provided she returns to her husband at night.

(Table Left Column) 448 - A woman who commits an immoral act shall be subject to a fixed (hadd) or discretionary (ta'zeer) punishment according to her crime; if the husband does not approve of her action and fulfills her due rights, no blame lies upon him. 449 - A father-in-law cannot take the responsibility of maintenance upon himself as a debt before it becomes obligatory; it is valid as a guarantee (kafalat), but maintenance responsibility remains with the husband. 449 - A question regarding a woman's maintenance. 450 - Maintenance for young and disobedient sons is not the father's responsibility, and maintenance for a disobedient (nashiza) wife is not the husband's responsibility. 452 - The maintenance of a person detained for the benefit of another lies with that other person. 452 - Can a woman whose marriage is suspended (mu'allaqa) seek divorce by petitioning the court? 452 - Quranic verses related to women's rights. 452 - Providing housing for a wife is obligatory for the husband; leaving her suspended like a 'mu'allaqa' is forbidden, and having intercourse with her occasionally is also obligatory. 454 - Abstaining from intercourse for four months without a valid legal excuse and without the wife's permission and consent is impermissible. 454 - Having intercourse once after marriage is the wife's

right; if the husband fails to fulfill this, the woman may file for separation in court. 454 - If a husband neither has intercourse nor grants a divorce, the judge will compel him to do one of the two; if he refuses, he will be imprisoned, and if he persists, he will be given corporal punishment.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, 13

(तालिका दायां स्तंभ) 443 - जिस पाप में कोई निर्धारित दंड (हद्द) नहीं है, उसमें विवेकाधीन दंड (ताज़ीर) होता है। 443 - भरण-पोषण का भुगतान न करने की स्थिति में, न्यायाधीश मजबूर नहीं करेगा; अंतर के कारण पर लेखक का शोध। 444 - हनफियों के अलावा अन्य के अनुसार भरण-पोषण न देना अलगाव का कारण नहीं है। 445 - भरण-पोषण करने में असमर्थता के कारण शाफ़ई न्यायाधीश द्वारा अलगाव का आदेश हनफियों के अनुसार भी लागू नहीं होगा। 445 - युवा बहनों का भरण-पोषण भाई की जिम्मेदारी है जब उनकी कोई निजी संपत्ति न हो और भाई उनकी सहायता करने में सक्षम हो। 445 - एक लाचार व्यक्ति का भरण-पोषण अकेले एक व्यक्ति पर तभी अनिवार्य है जब वह अकेला वारिस हो, अन्यथा विरासत के हिस्से के अनुसार सभी वारिसों पर। 446 - यदि एक बेटा एक जरूरतमंद पिता की सेवा कर सकता है और नहीं करता है, तो वह अवज्ञाकारी माना जाता है। 446 - वह जो सामर्थ्य होने के बावजूद एक कमजोर और जरूरतमंद पिता की मदद नहीं करता, इमामत (प्रार्थना का नेतृत्व) के योग्य नहीं है। 446 - जिनका भरण-पोषण जिम्मेदारी हो, उन्हें न देना एक गंभीर पाप है। 446 - भले ही कोई और पत्नी के भरण-पोषण का बोझ उठाता हो, अपवादों के अलावा, पत्नी अपने पति की अनुमति के बिना कहीं नहीं जा सकती। 448 - एक महिला हर आठवें दिन अपने माता-पिता के पास और अन्य महरम रिश्तेदारों के पास साल में एक बार एक दिन के लिए पति की अनुमति के बिना भी जा सकती है, बशर्ते वह रात को अपने पति के पास वापस आ जाए।

(तालिका बायां स्तंभ) 448 - अनैतिक कार्य करने वाली महिला अपने अपराध के अनुसार निर्धारित दंड (हद्द) या विवेकाधीन दंड (ताज़ीर) की पात्र होगी; यदि पति उसके कार्य से सहमत नहीं है और उसके उचित अधिकारों को पूरा करता है, तो उस पर कोई दोष नहीं है। 449 - ससुर भरण-पोषण के अनिवार्य होने से पहले इसे ऋण के रूप में अपने ऊपर नहीं ले सकता; हाँ, ज़मानत (कफ़ालत) के रूप में यह मान्य है, लेकिन भरण-पोषण की जिम्मेदारी पति से नहीं हटेगी। 449 - महिला के भरण-पोषण से संबंधित एक प्रश्न। 450 - युवा और अवज्ञाकारी बेटों का भरण-पोषण पिता पर नहीं है, और अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) पत्नी का भरण-पोषण पति पर नहीं है। 452 - जो व्यक्ति दूसरे के लाभ के लिए बंदी हो, उसका भरण-पोषण उसी दूसरे व्यक्ति पर है। 452 - क्या निलंबित विवाह (मुअल्लाका) वाली महिला अदालत में याचिका दायर करके तलाक ले सकती है या नहीं? 452 - महिलाओं के अधिकारों से संबंधित कुरानी आयतें। 452 - पत्नी के लिए आवास प्रदान करना पति पर अनिवार्य है; उसे

'मुअल्लाका' की तरह छोड़ देना हराम है और समय-समय पर उसके साथ सहवास करना भी अनिवार्य है। 454 - वैध कानूनी बहाने के बिना और पत्नी की अनुमति और सहमति के बिना चार महीने तक सहवास से परहेज करना शरीयत के अनुसार नाजायज है। 454 - निकाह के बाद एक बार सहवास करना पत्नी का अधिकार है; यदि पति इस अधिकार को पूरा नहीं करता है, तो महिला न्यायाधीश के पास अलगाव का दावा कर सकती है। 454 - यदि पति न सहवास करे और न तलाक दे, तो न्यायाधीश पति को इन दो बातों में से एक के लिए मजबूर करेगा; यदि वह नहीं मानता तो उसे कैद करेगा, और फिर भी नहीं मानता तो शारीरिक दंड देगा।

पृष्ठ 40/688

فتاویٰ رضویہ، جلد سیز دہم، ۱۳

(جدول کا دایاں کالم) ۴۴۳ - جس معصیت میں حد نہیں اس میں تعزیر ہے۔ ۴۴۳ - عدم ادائے نفقہ کی صورت میں قاضی جبر نہ کریگا وجہ فرق میں مصنف کی تحقیق۔ ۴۴۴ - نفقہ سے بجز احناف کے نزدیک سبب تفریق نہیں۔ ۴۴۵ - شافعی قاضی کا بسبب بجز نفقہ تفریق کا حکم احناف کے نزدیک بھی نافذ نہ ہوگا۔ ۴۴۵ - جوان بہنوں کا نفقہ بھائی پر اس وقت ہے جبکہ ان کا کوئی ذاتی مال نہ ہو اور بھائی ان کی اعانت پر قادر ہو۔ ۴۴۵ - مجبور کا نفقہ تنہا ایک آدمی پر اس وقت واجب ہے جبکہ یہ اکیلا ہی وارث ہو ورنہ تمام ورثاء پر حصہ میراث کے حساب سے۔ ۴۴۶ - ضرورت مند باپ کی خدمت کر سکتا ہے اور نہیں کرتا ہے تو لڑکا عاق ہے۔ ۴۴۶ - قدرت کے باوجود ضعیف و محتاج باپ کی مدد نہ کرنے والا قابل امامت نہیں۔ ۴۴۶ - جن کے نفقہ ذمہ میں ہوں ادانہ کرنا سخت گناہ ہے۔ ۴۴۶ - عورت کے نفقہ کا بوجھ دوسرا اٹھاتا ہو تب بھی مستثنیات کے علاوہ بیوی شوہر کی اجازت کے بغیر کہیں نہیں جا سکتی۔ ۴۴۸ - عورت والدین کی زیارت کو آٹھویں دن اور دیگر محارم کے یہاں سال بعد ایک دن بلا اذن شوہر بھی جا سکتی ہے بشرطیکہ رات شوہر کے پاس واپس آجائے۔

(جدول کا بایاں کالم) ۴۴۸ - بدفعلی کرنے والی عورت اپنے جرم کے مطابق مستحق حد یا تعزیر ہوگی شوہر اگر اس کے فعل پر راضی نہ ہو اور اس کے حقوق واجبہ میں کوتاہی نہ کرے تو اس پر کوئی وبال نہیں۔ ۴۴۹ - پدر زن وجوب نفقہ سے پہلے اس کو اپنے ذمہ بطور حوالہ بھی نہیں لے سکتا ، ہاں بطور کفالہ ہو تو صحیح ہے لیکن نفقہ ذمہ شوہر سے ساقط نہ ہوگا۔ ۴۴۹ - عورت کے نفقہ سے متعلق ایک سوال ۴۵۰ - جوان اور نافرمان لڑکوں کا نفقہ باپ پر نہیں اور ناشزہ عورت کا نفقہ شوہر پر نہیں۔ ۴۵۲ - جو شخص منفعت غیر کے لئے محبوس ہو اس کا نفقہ اسی

غیر پر ہے۔ ۴۵۲ - معلقہ عورت حاکم عدالت سے فریاد کرکے طلاق لے سکتی ہے یا نہیں۔ ۴۵۲ - عورتوں کے حقوق سے متعلق آیات قرآنیہ۔ ۴۵۲ - عورت کا سکنی شوہر پر واجب ہے اس کو معلقہ کی طرح چھوڑ دینا حرام ہے اور گاہ گاہ اس سے صحبت کرنا بھی واجب ہے۔ ۴۵۴ - عورت کے اذن و رضا کے بغیر چار مہینے تک ترک جماع بلا عذر صحیح شرعی ناجائز ہے۔ ۴۵۴ - نکاح کے بعد ایک دفعہ صحبت کرنا حق زن ہے۔ اگر شوہر حق ادا نہ کرے تو عورت قاضی کے یہاں دعوی تفریق کر سکتی ہے۔ ۴۵۴ - شوہر جماع نہ کرے۔ نہ طلاق دے تو قاضی شوہر کو ان دو باتوں میں سے ایک پر مجبور کرے گا اگر نہ مانے قید کرے گا پھر نہ مانے تو مار کی سزا دے گا۔

Header: 13 Fatawa Razawiyya Volume 13

(455) It is obligatory for a woman to obey her husband's prohibition from going anywhere. (455) After payment of the prompt dower (mahr-e-muajjal), the wife is absolutely bound to her husband; there is no condition or specification for the payment of maintenance or provision of necessities. (455) It is customary in our lands for the father to be responsible for the maintenance of his son and his son's wife. (455) Even if the husband is inclined towards rebellion and does not pay maintenance, the woman should still stay in the husband's house. (455) If there is a real fear of mischief by the woman, the husband can request to keep her with him in prison. (456) "Maintenance is in exchange for obedience" - a doubt regarding this and its clarification. (457) As soon as one confesses to committing adultery with the mother of one's wife, the marriage becomes invalid, even if he says he made a false confession. (457) In case of marriage with prohibited relatives (muharramat), separation (mutarakah) is mandatory. (457) In case of separation (mutarakah), the waiting period (iddat) is mandatory for the woman from the day of separation. (457) If the separation is from the husband's side, then maintenance during the waiting period (iddat) is absolutely mandatory for the husband to pay for the woman. (458) A woman in a state of sin/disobedience will not receive maintenance for the waiting period (iddat), but she will receive housing (sukna).

(458) In a prohibited marriage (nikah with mahram), it is obligatory to pay the lesser of the 'mahr-ul-mithl' (customary dower) or the 'musamma' (stipulated dower). (458) Full dower will be obligatory upon divorcing a wife with whom marriage has been consummated. (458) If maintenance was fixed but not paid and then a divorce occurred, the woman is entitled to the maintenance owed prior to the divorce. (460) If the dower is not prompt (muajjal) and no time limit has been set for its payment, the woman cannot demand it before death or divorce. (460) If a woman goes to her parents' house out of anger, her maintenance is not upon the husband. (460) It is not mandatory for a husband to divorce a disobedient (nashiza) wife. (460) Maintenance for a disobedient (nashiza) woman is neither upon the husband nor upon the guarantor (kafeel). (460) If a woman stops being disobedient (nushuz), she can then demand from the guarantor, provided the guarantee was not for a fixed temporary period. (461) Zaid gave notice to Zubaida's guardians saying "become her guardians now if you will; if you want to become so later, then Zubaida's expenses will be recovered from you" - this notice has no Shariah validity. (461) A woman is entitled to

maintenance from her husband only when she stays with him; if she stays at her parents' house without reason, there is no maintenance.

शीर्षक: 13 फ़तावा रज़विया जिल्द 13

(455) पति की ओर से पत्नी के कहीं भी जाने पर लगाई गई रोक का पालन करना अनिवार्य है। (455) त्वरित महर (महर-ए-मुअज्जल) की अदायगी के बाद, पत्नी पूरी तरह से पति के प्रति बाध्य है; इसमें भरण-पोषण (नफ़क़ा) की अदायगी या ज़रूरतों को पूरा करने की कोई शर्त या विशिष्टता नहीं है। (455) हमारे देशों में पिता का अपने बेटे और उसकी पत्नी के भरण-पोषण का ज़िम्मेदार होना सामान्य चलन है। (455) यदि पति विद्रोह पर उतारू हो और भरण-पोषण न दे, तब भी स्त्री को पति के घर ही रहना चाहिए। (455) यदि स्त्री द्वारा फ़साद (उपद्रव) की वास्तविक आशंका हो, तो पति उसे जेल में अपने पास रखने की दरख्वास्त कर सकता है। (456) "भरण-पोषण पाबंदी के बदले में है" - इस पर एक संदेह और उसका निवारण। (457) पत्नी की माँ के साथ व्यभिचार (ज़िना) स्वीकार करते ही निकाह फ़ासिद (अमान्य) हो जाता है, भले ही वह कहे कि मैंने झूठा स्वीकारोक्ति की थी। (457) निषिद्ध रिश्तों (मुहर्रमात) से निकाह की स्थिति में अलगाव (मुतारका) अनिवार्य है। (457) अलगाव (मुतारका) की स्थिति में, स्त्री पर अलगाव के दिन से इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है। (457) यदि अलगाव पति की ओर से हो, तो इद्दत का भरण-पोषण पति पर स्त्री के लिए पूर्णतः अनिवार्य है। (458) अवज्ञा की स्थिति में स्त्री को इद्दत का भरण-पोषण नहीं मिलेगा, अलबत्ता आवास (सुकना) मिलेगा।

(458) वर्जित विवाहों (महरम से निकाह) में 'महर-ए-मिस्ल' और 'मुसम्मा' (तयशुदा महर) में से जो भी कम हो, वह अनिवार्य है। (458) संभोग की गई पत्नी को तलाक़ देने पर पूरा महर वाजिब होगा। (458) यदि भरण-पोषण तय किया गया था पर भुगतान नहीं किया गया और फिर तलाक़ हो गया, तो महिला तलाक़ से पहले के बकाया भरण-पोषण की हक़दार है। (460) यदि महर त्वरित (मुअज्जल) न हो और न ही उसकी कोई अवधि तय की गई हो, तो स्त्री मृत्यु या तलाक़ से पहले उसकी मांग नहीं कर सकती। (460) यदि स्त्री नाराज़ होकर मायके चली जाए, तो उसका भरण-पोषण पति पर नहीं है। (460) अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) पत्नी को तलाक़ देना पति पर अनिवार्य नहीं है। (460) अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) स्त्री का भरण-पोषण न तो मूल पति पर है और न ही ज़मानतदार (कफ़ील) पर। (460) यदि स्त्री अवज्ञा (नुशूज़) छोड़ दे, तो वह अब ज़मानतदार से मांग कर सकती है बशर्ते कि ज़मानत अस्थाई न हो। (461) ज़ैद ने ज़ुबैदा के अभिभावकों को नोटिस दिया कि "अब उसके वली (अभिभावक) बनो तो बनो, बाद में बनना चाहोगे तो ज़ुबैदा के ख़र्च तुम से वसूले जाएँगे" - शरीयत में

इस नोटिस की कोई मान्यता नहीं है। (461) स्त्री का भरण-पोषण पति पर उसी समय तक है जब वह पति के पास रहे, बिना वजह मायके रहे तो कोई भरण-पोषण नहीं है।

سرورق: ۱۳ فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم

۴۵۵ | عورت کے لئے شوہر کی طرف سے کہیں جانے کی ممانعت واجب العمل ہے۔ ۴۵۵ | بعد ادائے مہر معجل عورت مطلقاً پابند شوہر ہے اس میں کوئی قید و تخصیص ادائے نفقہ تکفل حوائج کی نہیں۔ ۴۵۵ | والد کا متکفل نفقہ پسر وزن پسر ہونا ہمارے بلاد میں معمول ہے۔ ۴۵۵ | شوہر سرکشی پر آمادہ ہو اور نفقہ نہ ادا کرے تب بھی عورت شوہر کے گھر ہی رہے۔ ۴۵۵ | عورت پر واقعی اندیشہ فساد ہو تو شوہر قید خانے میں اپنے پاس رکھنے کی درخواست کر سکتا ہے۔ ۴۵۶ | "نفقہ پابندی کے بدلہ میں ہے" اس پر ایک شبہ اور اس کا ازالہ۔ ۴۵۷ | منکوحہ کی ماں سے زنا کا اقرار کرتے ہی نکاح فاسد ہو جاتا ہے اگر چہ کہے میں نے جھوٹا اقرار کیا۔ ۴۵۷ | محرمات سے نکاح کی صورت میں متارکہ لازم ہے۔ ۴۵۷ | بصورت متارکہ عورت پر روز متارکہ سے عدت لازم ہے۔ ۴۵۷ | تفریق اگر شوہر کی جانب سے ہو تو نفقہ عدت عورت کے لئے شوہر پر مطلقاً لازم ہے۔ ۴۵۸ | معصیت نفقہ عدت نہ پائے گی البتہ سکنی پائے گی۔

۴۵۸ | نکاح محرمات میں ناک پر مہر مثل اور مسمیٰ میں سے جو کم ہو وہ واجب ہے۔ ۴۵۸ | موطوئہ بیوی کو طلاق دینے سے مہر تمام و کمال واجب ہوگا۔ ۴۵۸ | نفقہ مقرر کر کے ادا نہ کیا پھر طلاق دے دی، عورت طلاق سے قبل والے نفقہ کی مستحق ہے۔ ۴۶۰ | جو مہر نہ معجل بندھا ہو نہ اس کی کوئی میعاد مقرر کی گئی ہو عورت قبل موت یا طلاق اس کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔ ۴۶۰ | عورت ناراض ہو کر میکے چلی گئی اس کا نفقہ شوہر پر نہیں۔ ۴۶۰ | ناشزہ عورت کو طلاق دینا شوہر پر لازم نہیں۔ ۴۶۰ | ناشزہ عورت کا نفقہ نہ اصل شوہر پر ہے نہ کفیل پر۔ ۴۶۰ | عورت نشوز چھوڑ دے تو اب کفیل سے مطالبہ کر سکتی ہے جبکہ کفالت موقت نہ ہو۔ ۴۶۱ | زید نے زبیدہ کے اولیاء کو نوٹس دیا کہ اب اس کے ولی بنو تو بنو بعد میں بننا چاہو گے تو زبیدہ

کے اخراجات تم سے وصول کئے جائینگے اس نوٹس کا شرعاً کوئی اعتبار نہیں۔ ۴۶۱ | عورت کا نفقہ شوہر پر اس وقت ہے کہ وہ شوہر کے پاس رہے، بلاوجہ میکے رہے تو کوئی نفقہ نہیں۔

461 | Maintenance is mandatory for the father if the children are needy; if they are wealthy, it is not. It makes no difference whether the children reside with the father or not. | 474 || 461 | Asking permission for adultery (zina) from Allah and His Messenger is disbelief (kufr). | 474 462 | Maintenance that is not determined by mutual consent or by a judge's ruling lapses after time passes. This ruling applies to a wife's maintenance. Maintenance for children lapses absolutely after time passes. Yes, if the ruler ordered to spend on the child by taking a loan, then its demand remains upon the father. | 474 || 462 | As long as a woman's husband is alive and no divorce has been given, a second marriage for that woman is haram, haram, haram, adultery, adultery, adultery. | 474 463 | If the first wife is mentally unstable, permission for a second marriage is granted, but justice between both is necessary. | 474 || 463 | Whoever is patient for the sake of Allah Almighty, Allah Almighty eases their difficulty. | 474 464 | If one wife is wealthy and another is poor, and the husband is wealthy, then the wealthy wife will receive maintenance of the wealthy and the poor one of the middle class; and for a poor-wealthy wife, maintenance of the middle class, and for the poor, maintenance of the poor will be given. | 474 || 464 | Provision (rizq) is from Allah; the husband is not the provider. | 474 465 | Details and ruling on all matters considered in the determination of maintenance. | 474 || 465 | Fasts should be kept to overcome overwhelming desire. | 474 466 | A ruling of constriction in maintenance cannot be given due to debt. | 474 || 466 | Whoever fears Allah, Allah will make a way for them and provide for them from where they cannot even imagine. | 474 468 | In maintenance, the condition of both husband and wife will be considered. | 475 || 468 | Whoever trusts in Allah, then Allah is sufficient for them. | 475 469 | Scholars have not set any specific limit for constriction or wealth in a wife's maintenance; it depends on custom (Urf). However, for maintenance of relatives, it is set according to Niṣāb. | 475 || 469 | Whoever fears Allah, Allah will make their task easy. | 475 471 | There are two types of maintainers in maintenance of relatives: capable and unable. In maintenance of the wife, there are three types: wealthy, poor, middle-class. | 475 || 471 | Allah is truthful and His promises are true; Satan is a liar and his threats are lies. | 475 472 | Description of the foods for wealthy, poor, and middle-class categories. | 475 || 472 | After divorce, a woman has no right other than dowry (mahr) and maintenance during the waiting period ('iddah), | 475 474 | It is the command of the pure Shari'ah

of Allah Almighty and the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. | 475 | | | |

४६१ | संतान मोहताज हो तो पिता पर नफ़क़ा (खर्च) है और यदि वे धनी हों तो नहीं, संतान के पिता के पास रहने या न रहने से कोई अंतर नहीं पड़ता। | ४७४ || ४६१ | अल्लाह और रसूल से ज़िना (व्यभिचार) की अनुमति मांगना कुफ़्र है। | ४७४ ४६२ | जो नफ़क़ा आपसी सहमति या क़ाज़ी के आदेश से निर्धारित न हो, वह समय बीत जाने के बाद समाप्त हो जाता है। यह नियम पत्नी के नफ़क़ा का है। बच्चों का नफ़क़ा समय बीतने के बाद पूरी तरह समाप्त हो जाता है। हाँ, यदि शासक ने कर्ज लेकर बच्चे पर खर्च करने का आदेश दिया हो, तो उसकी मांग पिता पर बनी रहती है। | ४७४ || ४६२ | जब तक किसी स्त्री का पति जीवित हो और तलाक़ भी न दिया गया हो, उस स्त्री का दूसरा निकाह हराम हराम हराम, ज़िना ज़िना ज़िना है। | ४७४ ४६३ | यदि पहली पत्नी मानसिक रूप से विक्षिप्त हो तो दूसरी शादी की अनुमति है, लेकिन दोनों के बीच न्याय आवश्यक है। | ४७४ || ४६३ | जो अल्लाह तआला के लिए धैर्य रखता है, अल्लाह तआला उसकी मुश्किल आसान कर देता है। | ४७४ ४६४ | यदि एक पत्नी धनी हो और दूसरी गरीब, और पति धनी हो, तो धनी पत्नी को धनियों वाला और गरीब को मध्यम श्रेणी का नफ़क़ा मिलेगा; और गरीब-धनी पत्नी को मध्यम और गरीब को गरीबों वाला नफ़क़ा मिलेगा। | ४७४ || ४६४ | रिज़्क़ (रोजी) अल्लाह के हाथ में है, पति पालनहार नहीं है। | ४७४ ४६५ | नफ़क़ा के निर्धारण से संबंधित सभी मामलों का विवरण और उसका नियम। | ४७४ || ४६५ | तीव्र इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए रोज़े रखे जाने चाहिए। | ४७४ ४६६ | कर्ज के कारण नफ़क़ा में तंगी का आदेश नहीं दिया जा सकता। | ४७४ || ४६६ | जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए रास्ता निकाल देगा और उसे वहां से रिज़्क़ पहुँचाएगा जहाँ से उसे गुमान भी न होगा। | ४७४ ४६८ | नफ़क़ा में पति-पत्नी दोनों की स्थिति का ध्यान रखा जाएगा। | ४७५ || ४६८ | जो अल्लाह पर भरोसा करे, अल्लाह उसके लिए पर्याप्त है। | ४७५ ४६९ | विद्वानों ने पत्नी के नफ़क़ा में तंगी या अमीरी की कोई विशेष सीमा निर्धारित नहीं की है; यह प्रथा (उर्फ़) पर निर्भर है। हालाँकि, रिश्तेदारों के नफ़क़ा में यह निसाब के अनुसार निर्धारित है। | ४७५ || ४६९ | जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके काम को आसान कर देगा। | ४७५ ४७१ | रिश्तेदारों के नफ़क़ा में खर्च करने वाले दो प्रकार के होते हैं: समर्थ और असमर्थ। और पत्नी के नफ़क़ा में तीन श्रेणियाँ हैं: धनी, गरीब, मध्यम। | ४७५ || ४७१ | अल्लाह सच्चा है और उसके वादे सच्चे हैं, शैतान झूठा है और उसके डरावे झूठे हैं। | ४७५ ४७२ | धनी, गरीब और मध्यम श्रेणी के आहार का वर्णन। | ४७५ || ४७२ | तलाक़ के बाद मेहर और नफ़क़ा-ए-इद्दत के अलावा औरत का कोई अधिकार नहीं है, | ४७५ ४७४ | यह

अल्लाह तआला की शुद्ध शरीयत और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आदेश है। | ४७५ | | | |

पृष्ठ ४२ / ६८८

۴۶۱ | اولاد محتاج ہو تو باپ پر نفقہ ہے اور غنی ہو تو نہیں، اولاد کے باپ کے پاس رہنے نہ رہنے سے کچھ فرق نہیں پڑتا۔ | ۴۷۴ || ۴۶۱ | اللہ و رسول سے زنا کی اجازت مانگنی کفر ہے۔ | ۴۷۴ ۴۶۲ | جو نفقہ تراضی یا قضائے قاضی سے مقرر نہ ہو وقت گزر جانے کے بعد ساقط ہو جاتا ہے۔ یہ حکم عورت کے نفقہ کا ہے۔ اولاد کا نفقہ انقضاء وقت کے بعد مطلقاً ساقط ہو جاتا ہے۔ ہاں حاکم نے قرض لے کر بچہ پر صرف کرنے کا حکم دیا ہو تو اس کا مطالبہ باپ پر ہے۔ | ۴۷۴ || ۴۶۲ | جب تک کسی عورت کا شوہر زندہ ہو اور طلاق بھی نہ دی ہو اس عورت کا دوسرا نکاح حرام حرام زنازنا زنا ہے۔ | ۴۷۴ ۴۶۳ | پہلی عورت مخبوط الحواس ہو تو دوسری شادی کی اجازت ہے، لیکن دونوں میں عدل ضروری ہے۔ | ۴۷۴ || ۴۶۳ | جو اللہ تعالیٰ کے لئے صبر کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کی مشکل کھول دیتا ہے۔ | ۴۷۴ ۴۶۴ | ایک عورت مالدار اور ایک غریب ہو تو شوہر مالدار ہو تو مالدار عورت کو مالداروں کا اور غریب کو متوسط ، اور غریب مالدار عورت کو متوسط اور غریب کو غریبوں کا نفقہ ملے گا۔ | ۴۷۴ || ۴۶۴ | رزق اللہ پر ہے شوہر رازق نہیں۔ | ۴۷۴ ۴۶۵ | تقررِ نفقہ سے متعلق تمام امور ملحوظ کی تفصیل اور اس کا حکم۔ | ۴۷۴ || ۴۶۵ | غلبہ خواہش پر قابو پانے کے لئے روزے رکھے جائیں۔ | ۴۷۴ ۴۶۶ | قرضہ کی وجہ سے نفقہ میں تنگی کا حکم نہیں دے سکتے۔ | ۴۷۴ || ۴۶۶ | جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اسی کے لئے راہ نکال دے گا اور اسے وہاں سے رزق پہنچائے گا جہاں سے اسے گمان بھی نہ ہوگا۔ | ۴۷۴ ۴۶۸ | نفقہ میں میاں بیوی دونوں کے حال کا لحاظ کیا جائے گا۔ | ۴۷۵ || ۴۶۸ | جو اللہ پر بھروسہ کرے تو اللہ اسے کافی ہے۔ | ۴۷۵ ۴۶۹ | نفقہ زن میں تنگی و مالداری کی کوئی خاص حد علماء نے مقرر نہ کی عرف پر اس کا مدار رکھا البتہ

نفقہ اقارب میں ایسا مقرر بہ نصاب ہے۔ | ۴۷۵ || ۴۶۹ | جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کا کام آسان کردے گا۔ | ۴۷۵ ۴۷۱ | نفقہ اقارب میں منفق کی دو قسمیں ہیں: قادر و عاجز، اور نفقہ زن میں تین قسمیں ہیں: غنی، فقیر، متوسط | ۴۷۵ || ۴۷۱ | اللہ سچا ہے اور اس کے وعدے سچے ہیں، شیطان جھوٹا ہے اور اس کے ڈراوے جھوٹے ہیں۔ | ۴۷۵ ۴۷۲ | غنی، فقیر، متوسط کی اغذیہ کا بیان۔ | ۴۷۵ || ۴۷۲ | طلاق کے بعد مہر و نفقہ عدت کے علاوہ عورت کا کوئی حق نہیں، | ۴۷۵ ۴۷۴ | شرع مطہر اللہ تعالیٰ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا حکم ہے۔ | | | | ۴۷۵

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13

[475] An agreement for lifelong maintenance after divorce is a promise that should be fulfilled, but it is not obligatory. | [478] A woman cannot be sent to non-mahrams even with the husband's permission. If the husband permits it, he will be a sinner. [476] A woman who intended to become an apostate became an apostate at that very moment. | [479] If the woman is in the husband's house, she is entitled to maintenance whether he has intercourse or not. [476] During the husband's lifetime, there is no way for a woman to marry another person without a divorce. | [480] Zaid is a vagabond and of bad character; furthermore, he cannot even provide for his wife's food and maintenance. Does the wife have the right to withhold herself from him or not? [476] A Hanafi Qazi cannot rule against his own school of thought; if he does, it will not be enforceable. | [480] If the husband is unable to provide food and maintenance, does the Qazi have the right to separate the couple? [477] Dower (Mahr) is not compensation for any service; it is the consideration for marital intimacy in a marriage. | [480] If the husband does not pay maintenance, the Qazi will compel him, or order him to provide maintenance or grant a divorce. [477] A woman being of unsound mind does not cause her dower to lapse, and as long as she does not refuse to come to her husband's house, maintenance shall be provided. | [481] Divorce is dependent on the husband's words; when he says "I have given a divorce," the divorce occurs; even if it hadn't occurred before, it occurs now. [477] In determining maintenance, the status of both the man and the woman shall be taken into consideration. | [481] Providing a house for residence is not the same as transferring ownership, unless the authority of transfer is established; however, it is necessary to vacate it of one's belongings etc., and hand over possession to her. [477] For a mother-in-law to demand half of the husband's income is an act of injustice, especially if this amount exceeds the wife's maintenance. | [481] A legal claim cannot be initiated solely based on a promise. [478] No one is required to pay for past maintenance. | [481] There is no compulsion in the fulfillment of a promise. [478] Once maintenance is fixed, if the girl goes to her parents' house and the husband does not call her back, and she remains waiting to be called, then the husband is responsible for the maintenance for those days spent at her parents' house. | [481] When does a woman's fixed maintenance lapse? [478] A woman can visit her parents for an entire day every eight days even without her husband's permission. She can visit other mahram relatives after a year, and with permission for even more days;

she shall not be declared a disobedient wife (nashiza). | [483] If a woman is disobedient to her husband, she is a severe sinner.

फ़तावा रज़विया, जिल्द १३, पृष्ठ १३

[४७५] तलाक के बाद जीवन भर के रखरखाव (नफ़क़ा) का इकरारनामा एक वादा है जिसे पूरा किया जाना चाहिए लेकिन यह वाजिब (अनिवार्य) नहीं है। | [४७८] गैर-मह़रम के यहाँ औरत शौहर की इजाज़त से भी नहीं भेजी जा सकती। शौहर अगर इजाज़त देगा तो गुनहगार होगा। [४७६] जिस औरत ने मुर्तदा (धर्म त्यागी) होने का इरादा किया वह उसी वक्त मुर्तदा हो गई। | [४७९] औरत शौहर के मकान में है तो नफ़क़ा (रखरखाव) पाए, वह संभोग करे या न करे। [४७१] शौहर की ज़िंदगी में बिना तलाक औरत के दूसरे व्यक्ति से निकाह की कोई सूरत नहीं। | [४८०] ज़ैद आवारा बदचलन है, इसके अलावा पत्नी के खाने-पीने और रखरखाव का ज़िम्मेदार भी नहीं हो सकता, तो क्या पत्नी को खुद को (शौहर से) रोकने का अधिकार है या नहीं? [४७६] हनफ़ी काज़ी अपने मसलक के खिलाफ हुक्म नहीं दे सकता; यदि वह ऐसा करता है, तो वह प्रभावी नहीं होगा। | [४८०] यदि पति रखरखाव देने में असमर्थ है, तो क्या काज़ी को पति-पत्नी के बीच अलगाव का अधिकार है? [४७७] मेहर किसी सेवा का मुआवज़ा नहीं है, यह निकाह में सहवास का मुआवज़ा है। | [४८०] यदि पति रखरखाव का भुगतान नहीं करता है, तो काज़ी उसे मजबूर करेगा या कहेगा कि रखरखाव दे या तलाक दे। [४७७] औरत के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने से मेहर समाप्त नहीं होगा और जब तक वह पति के घर आने से इनकार नहीं करती, उसे रखरखाव दिलाया जाएगा। | [४८१] तलाक पति की ज़ुबान पर है; जब वह कहता है कि "मैंने तलाक दे दी," तो तलाक हो गया; यदि पहले नहीं दिया था, तो अब हो गया। [४७७] रखरखाव तय करने में पुरुष और स्त्री दोनों की स्थिति का ध्यान रखा जाएगा। | [४८१] रहने के लिए मकान देना मालिक बना देना नहीं है जब तक कि मालिकाना हक साबित न हो, और इसके साथ ही अपने सामान आदि से उसे खाली करके कब्ज़ा दिलाना आवश्यक है। [४७७] सास का दामाद से आधी आमदनी मांगना ज़ुल्म है जबकि यह राशि पत्नी के रखरखाव से अधिक हो। | [४८१] वादे के आधार पर दावा नहीं किया जा सकता। [४७८] बीते हुए रखरखाव का भुगतान करना किसी के लिए अनिवार्य नहीं है। | [४८१] वादा निभाने पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है। [४७८] रखरखाव तय हो गया, लड़की मायके आई, पति ने उसे घर नहीं बुलाया। और वह इस इंतज़ार में रही कि बुलाए तो जाऊँ तो मायके के उन दिनों का रखरखाव भी पति के ज़िम्मे है। | [४८१] स्त्री का तयशुदा रखरखाव कब समाप्त हो जाता है? [४७८] स्त्री आठवें दिन पूरे दिन के लिए अपने माता-पिता से मिलने बिना पति की आज्ञा के भी जा सकती है। और अन्य रिश्तेदारों (मह़रम) के

यहाँ एक साल के बाद, और आज्ञा से अतिरिक्त दिनों के लिए भी, उसे आज्ञा न मानने वाली (नाशिज़ाह) नहीं माना जाएगा। | [४८३] यदि स्त्री पति की अवज्ञा करती है, तो वह गंभीर गुनहगार है।

पृष्ठ ४३ का ६८८

۴۷۵: بعد طلاق زندگی بھر کے نفقہ کا اقرار نامہ وعدہ ہے جس کو پورا کرنا چاہئے لیکن یہ واجب نہیں۔ | ۴۷۸: غیر محارم کے یہاں عورت شوہر کی اجازت سے بھی نہیں بھیجی جا سکتی۔ شوہر اگر اجازت دے گا تو گنہگار ہوگا۔ ۴۷۶: جس عورت نے مرتدہ ہونے کا ارادہ کیا وہ اسی وقت مرتدہ ہو گئی۔ | ۴۷۹: عورت شوہر کے مکان میں ہے تو نفقہ پائے وہ جماع کرے یا نہ کرے۔ ۴۷۶: شوہر کی زندگی میں بلا طلاق عورت کے دوسرے شخص سے نکاح کی کوئی صورت نہیں۔ | ۴۸۰: زید آوارہ بد چلن ہے ، علاوہ ازیں بیوی کے نان و نفقہ کا کفیل بھی نہیں ہو سکتا تو بیوی کو اپنے نفس کے روکنے کا اختیار ہے یا نہیں۔ ۴۷۶: قاضی حنفی اپنے مسلک کے خلاف حکم نہیں کر سکتا اگر کرے تو نافذ نہ ہوگا۔ | ۴۸۰: شوہر نان و نفقہ سے عاجز ہو تو کیا قاضی کو زوجین میں تفریق کا حق ہے۔ ۴۷۷: مہر کسی خدمت کا معاوضہ نہیں وہ نکاح میں بضع کا عوض ہے۔ | ۴۸۰: شوہر نفقہ نہ ادا کرے تو قاضی اس کو مجبور کریگا یا نفقہ دے یا طلاق دے۔ ۴۷۷: عورت کے فاتر العقل ہونے سے مہر ساقط نہ ہوگا اور جب تک وہ شوہر کے گھر آنے سے انکار نہ کرے نفقہ دلایا جائے گا۔ | ۴۸۱: طلاق شوہر کی زبان پر ہے جب وہ کہتا ہے کہ میں نے طلاق دے دی، طلاق ہو گئی نہ دی تھی تو اب ہو گئی۔ ۴۷۷: نفقہ میں مرد و زن دونوں کے حال کا لحاظ رکھا جائے گا۔ | ۴۸۱: رہنے کو مکان دینا مالک کر دینا نہیں جب تک ولایت تملیک ثابت نہ ہو اور اس کے ساتھ اپنے اسباب وغیرہ اسے خالی کر کے قبضہ دلا دینا ضرور ہے۔ ۴۷۷: مادر زن کا شوہر سے نصف آمدنی مانگنا ظلم ہے جبکہ یہ مقدار نفقہ زن سے زائد ہو۔ | ۴۸۱: وعدہ کی بناء پر دعوی نہیں ہو سکتا۔ ۴۷۸: گزرے ہوئے نفقہ کا ادا کرنا کسی پر ضروری نہیں۔ | ۴۸۱: وفاء وعدہ پر جبر نہیں۔ ۴۷۸: نفقہ مقرر ہو گیا، لڑکی میکہ آئی ، شوہر نے اپنے گھر بلایا نہیں۔

اور یہ اس انتظار میں رہی کہ بلائے تو جاؤں، تو ان ایام میکہ کا نفقہ بھی شوہر کے ذمہ ہے۔ | ۴۸۱: عورت کا نفقہ مقررہ کب ساقط ہو جاتا ہے۔ ۴۷۸: عورت آٹھویں دن دن بھر کے لئے اپنے والدین کی ملاقات کے لئے بے اذن شوہر بھی جا سکتی ہے۔ اور محارم کے یہاں سال بھر کے بعد، اور باجازت مزید ایام بھی ، ناشزہ قرار نہ دی جائے گی۔ | ۴۸۳: عورت شوہر کی نافرمانی کرے تو سخت گنہگار ہے۔

- A woman asking her husband for divorce is not Khula. (483) | Sorting through images of sacred places and throwing them into filth, if based on Wahhabi beliefs that all this is innovation (bid’ah), then it is ignorance and misguidance; and if the intent is to desecrate those places, it is disbelief (kufr). (486)
- If the husband hires servants for work because of his wife’s disobedience, the expense is not upon the woman. (483) | If images of deities are put up for decoration, it is a major sin; and if honoring the idols of disbelievers is intended, it is disbelief (kufr). (487)
- A disobedient wife (nashiza) will not receive maintenance for as long as she does not stay with her husband. (483) | Preventing a woman from prayer and fasting, and forcing her to drink alcohol; if done just like that, it is a severe major sin; and if it is done as a denial of the obligation of prayer or the prohibition of wine, it is disbelief (kufr). (487)
- The silence of someone along with displeasure will not be considered permission. (483) | Mocking the Sharia is disbelief (kufr). (487)
- Whatever money a woman spent on her relatives' weddings etc. without her husband's permission, the husband can recover it. (483) | The mosque is the best of places. (487)
- As long as a woman stays at her mother's place or any other place without her husband's permission, she is not entitled to maintenance. (484) | What is the ruling regarding someone who, in response to being called toward the mosque, says that he is going to a pub to drink alcohol? (487)
- Until divorce or death occurs, a non-timed dower (mahr) is not due to be paid. (484) | A decree of disbelief (kufr) should not be passed against anyone even if there is a remote possibility of Islam. (488)
- Maintenance for a mentally incapacitated wife is not waived. If two marriages were contracted, one of which is with a mentally incapacitated woman, justice and equality are necessary. (484) | Unless disbelief (kufr) is proven from any word or deed of the husband, a decree for the woman to leave the marriage cannot be given. (488)
- Despite adultery being established by a woman, it is not obligatory for the man to divorce her. (485) | The ruling for a person who says, "I neither come to the mosque nor do I give a single dirham for its construction, what business do I have in the mosque?" (488)

- As long as an adulteress is with her husband, maintenance for residence (nafaqa-e-sukna) is obligatory; however, after the waiting period (iddah), the maintenance is upon the woman herself or her heirs, not the husband. (485) | If a husband is present and capable of providing maintenance but does not provide it, there is no ruling for separation (tafriq) according to either the Hanafis or the Shafi'is. (488)
- Drinking alcohol is a major sin and considering it lawful is disbelief (kufr). (486)

- औरत का शौहर से तलाक़ माँगना 'खुला' नहीं है। (483) | मुक़द्दस मुक़ामात (पवित्र स्थानों) की तस्वीरों को छाँटकर गंदगी में डालना, यदि वहाबी अक़ाइद (मान्यताओं) के आधार पर हो कि यह सब बिदअत (नवाचार) है, तो यह अज्ञानता और पथभ्रष्टता है; और यदि उन स्थानों का अपमान करना उद्देश्य हो, तो यह कुफ़्र (अविश्वास) है। (486)
- औरत की नाफ़रमानी के कारण शौहर ने काम के लिए नौकर रखे, उसका तावान (हर्जाना) औरत पर नहीं है। (483) | देवताओं के चित्र सजावट के लिए लगाए जाएँ तो गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) है; और यदि काफ़िरों के उपास्यों का सम्मान करना उद्देश्य हो, तो यह कुफ़्र है। (487)
- नाशिज़ा (अवज्ञाकारी पत्नी) जितने दिन शौहर के पास न रहे, उसे नफ़क़ा (गुजारा भत्ता) नहीं मिलेगा। (483) | औरत को नमाज़-रोज़े से रोकना और शराब पीने के लिए मजबूर करना; यदि यूँ ही हो तो शदीद (गंभीर) गुनाह-ए-कबीरा है; और यदि नमाज़ की फ़र्ज़ियत या शराब की हुरमत (मनाही) के इनकार के रूप में हो, तो यह कुफ़्र है। (487)
- नागवारी (अनिच्छा) के साथ किसी के मौन रहने को अनुमति नहीं माना जाएगा। (483) | शरीयत का उपहास करना कुफ़्र है। (487)
- औरत ने शौहर की अनुमति के बिना अपने रिश्तेदारों की शादी आदि में जो खर्च किया, शौहर उसे वसूल कर सकता है। (483) | मस्जिद स्थानों में सबसे उत्तम है। (487)
- औरत जब तक शौहर की अनुमति के बिना अपनी माँ के यहाँ या किसी अन्य स्थान पर रहे, वह नफ़क़ा की पात्र नहीं है। (484) | मस्जिद की ओर बुलाए जाने के उत्तर में जो कहता है कि मैं शराबखाने में शराब पीने जा रहा हूँ, तो क्या हुक्म है? (487)
- जब तक तलाक़ या मृत्यु न हो जाए, ग़ैर-मियादी मेहर (अनिश्चितकालीन दहेज) देय नहीं होता। (484) | इस्लाम की दूर की संभावना होने पर भी किसी पर कुफ़्र का हुक्म नहीं लगाना चाहिए। (488)
- फ़ातिर-उल-अक़्ल (मानसिक रूप से विक्षिप्त) औरत का नफ़क़ा निरस्त नहीं होता। दो विवाह किए जिनमें एक फ़ातिर-उल-अक़्ल है, न्याय और समानता आवश्यक है। (484) | पति के किसी कथन या कार्य से जब तक कुफ़्र सिद्ध न हो जाए, पत्नी को विवाह से निकलने का आदेश नहीं दिया जा सकता। (488)

- औरत द्वारा व्यभिचार (ज़िना) सिद्ध होने के बावजूद, पुरुष पर उसे तलाक़ देना अनिवार्य नहीं है। (485) | उस व्यक्ति के लिए हुक्म जो कहता है, "न मैं मस्जिद में आता हूँ और न इसके निर्माण में एक भी दिरहम देता हूँ, मेरा मस्जिद में क्या काम है?" (488)
- व्यभिचारिणी (ज़ानिया) जब तक शौहर के पास है, आवास का नफ़क़ा अनिवार्य है; हालाँकि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद का नफ़क़ा स्वयं उस स्त्री पर या उसके उत्तराधिकारियों पर है, शौहर पर नहीं। (485) | यदि पति उपस्थित हो और नफ़क़ा देने में सक्षम हो, फिर भी नफ़क़ा न दे, तो न हनफ़ियों के अनुसार और न ही शाफ़इयों के अनुसार अलगाव (तफ़रीक़) का हुक्म है। (488)
- शराब पीना गुनाह-ए-कबीरा है और इसे हलाल समझना कुफ़्र है। (486)

पेज 44/688

- عورت کا شوہر سے طلاق مانگنا خلع نہیں ہے۔ ۴۸۳ | مقامات مقدسہ کی تصویر چھانٹ کر گندگی میں ڈالنا اگر وہابی عقائد کی بنیاد پر ہو کہ یہ سب بدعت ہے تو جہل و گمراہی ہے اور ان مقامات کی تحقیر مقصود ہو تو کفر ہے۔ ۴۸۶
- عورت کی نافرمانی کی وجہ سے شوہر نے کام کے لئے نوکر رکھے اس کا تاوان عورت پر نہیں ہے۔ ۴۸۳ | دیوتاؤں کی تصویریں تنزیہہ کے لئے لگائے تو گناہ کبیرہ اور تعظیم معبودان کفار مقصود ہو تو کفر ہے۔ ۴۸۷
- ناشزہ جتنے دن شوہر کے پاس نہ رہے نفقہ نہ پائے گی۔ ۴۸۳ | عورت کو نماز روزہ سے روکنا اور شراب پینے پر مجبور کرنا یونہی ہو تو گناہ کبیرہ شدیدہ اور فرضیت صلوٰۃ یا حرمت خمر کے انکار کے طور پر ہو تو کفر ہے۔ ۴۸۷
- ناگواری کے ساتھ کسی کے خاموش رہنے کو اجازت نہیں سمجھا جائے گا۔ ۴۸۳ | استخفاف شرع کفر ہے۔ ۴۸۷
- عورت نے شوہر کی اجازت کے بغیر اپنے اعزہ کی شادی وغیرہ میں جو خرچ کیا وہ شوہر وصول کر سکتا ہے۔ ۴۸۳ | مسجد خیر الاماکن ہے۔ ۴۸۷
- عورت جب تک شوہر کی اجازت کے بغیر اپنی ماں کے یہاں یا کسی دوسری جگہ رہے نفقہ کی مستحق نہیں۔ ۴۸۴ | مسجد کی طرف بلائے جانے کے جواب میں کہتا ہے کہ میں شراب خانے شراب پینے جا رہا ہوں تو کیا حکم ہے۔ ۴۸۷
- جب تک طلاق یا موت واقع نہ ہو غیر میعادی مہر واجب الادا نہیں ہوتا۔ ۴۸۴ | اسلام کا احتمال بعید ہوتے ہوئے بھی کسی پر کفر کا حکم نہیں لگانا چاہئے۔ ۴۸۸

- فاتر العقل عورت کا نفقہ ساقط نہیں۔ دو شادیاں کیں جن میں ایک فاتر العقل ہے، عدل و مساوات ضروری ہے۔ ۴۸۴ | شوہر کے کسی قول یا فعل سے جب تک کفر ثابت نہ ہو جائے عورت کے نکاح سے نکلنے کا حکم نہیں دیا جا سکتا۔ ۴۸۸
- عورت سے زنا متحقق ہونے کے باوجود مرد پر واجب نہیں اسے طلاق دے۔ ۴۸۵ | اس شخص کا حکم جو یہ کہے کہ نہ میں مسجد میں آتا ہوں نہ اس کی تعمیر میں کوئی درہم دیتا ہوں میرا مسجد میں کیا کام ہے۔ ۴۸۸
- زانیہ جب تک شوہر کے پاس ہے نفقہ سکنیٰ واجب ہے البتہ بعد عدت کا نفقہ خود اس عورت پر یا اس کے وارثوں پر ہے شوہر پر نہیں۔ ۴۸۵ | شوہر موجود ہو نفقہ پر قادر ہو اور نفقہ نہ دے تو تفریق کا حکم نہ حنفیہ کے نزدیک نہ شافعیہ کے۔ ۴۸۸
- شراب پینا گناہ کبیرہ اور اس کو حلال جاننا کفر ہے۔ ۴۸۶ |

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen, 13

Page	Topic / Ruling
486	The Sharia method of handling issues that cannot be resolved according to the Hanafi school.
492	A vague question about non-payment of maintenance and its answer.
493	The Great Quran has declared a married woman absolutely forbidden (for others).
493	Following the whims of the soul for women and attributing it to an Imam is not religion.
493	What should a woman do if her husband cannot fulfill her rights properly and does not divorce her due to ignorance?
	Book of Oaths (Kitab al-Aiman)
495	Zaid swore that if he talked to Bakr, his wife would be divorced. He greeted him at his grave after death. Divorce will not occur.
496	The basis of an oath is on custom. Therefore, if one swore not to eat
496	I swore I would not talk to a certain person. Giving him a cue (luqma) in prayer will not break the oath.
497	Hundreds of issues are based on custom (urf) regarding the rulings of faith.
497	Zaid told Amr on oath to do this work, and he didn't. So, because of the refusal of that work, is an oath imposed on Amr or not?
498	An oath is not mandatory by someone else making you swear. Nor does doing that work become mandatory. Yes, if there is no hardship, it is recommended to accept it.
498	Swearing by the Holy Quran is a Sharia oath.
498	If an oath is regarding a future matter that is within one's power to do, then breaking it is a sin and the expiation (kaffara) removes that sin.
498	Details of a concluded oath and its expiation.
498	If one swore to commit a sin, e.g., to drink alcohol or not to pray,

Page	Topic / Ruling
	meat, eating fish will not break the oath. Similarly, if one swore not to talk, reading the Quran will not break the oath.
496	He swore not to talk to Zaid, and Zaid was standing next to him in congregational prayer. While turning for Salam, if he faced him and said "Assalamu Alaikum wa Rahmatullah," the oath will not be broken.
496	It is an absolute command for the person praying to intend for those present while turning for Salam.

Page	Topic / Ruling
	then breaking it and giving expiation is mandatory.
499	If one swore not to talk to parents, it is mandatory to break the oath and give expiation.
499	If one swore to kill someone, breaking the oath and giving expiation is mandatory.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, 13

पृष्ठ	विषय / नियम
486	उन मसलों को हल करने का शरीअत का तरीका जो हनफ़ी मसलक के अनुसार हल नहीं हो सकते।
492	गुज़ारा भत्ता न देने का एक अस्पष्ट प्रश्न और उसका उत्तर।
493	कुरान अज़ीम ने शादीशुदा औरत को (दूसरों के लिए) निश्चित रूप से हराम करार दिया है।
493	औरतों का अपनी इच्छाओं का पालन करना और उसे किसी इमाम के सिर मढ़ना कोई धर्म नहीं है।
493	एक औरत क्या करे जिसका पति उसके अधिकार पूरी तरह अदा नहीं कर सकता और अज्ञानता के कारण तलाक भी नहीं देता?
	किताबुल ईमान (कसमों की किताब)
495	

पृष्ठ	विषय / नियम
496	कसम खाई कि फलां व्यक्ति से बात नहीं करूँगा। नमाज़ में उसे लुक़्मा (इशारा) देने से कसम नहीं टूटेगी।
497	सैंकड़ों मसले ऐसे हैं जिनका आधार ईमान के अहकाम पर प्रथा (उर्फ़) है।
497	ज़ैद ने अम्र से कसम खाकर कहा कि यह काम करो, और उसने नहीं किया। तो क्या उस काम से इनकार की वजह से अम्र पर कसम लागू होती है या नहीं?
498	किसी के कसम दिलाने से कसम वाजिब नहीं होती। न ही वह काम करना वाजिब हो जाता है। हाँ, अगर कोई परेशानी न हो तो मान लेना मुस्तहब (पसंदीदा) है।
498	कुरान मजीद की कसम शरीअत की कसम है।
498	अगर कसम भविष्य की किसी ऐसी बात पर है जो इंसान के बस में है, तो उसे तोड़ना पाप है और कफ़्फ़ारा उस पाप को मिटाने वाला है।
498	मुनअक़िदा (स्थापित) यमीन (कसम) और उसके कफ़्फ़ारे का विवरण।

पृष्ठ	विषय / नियम
496	ज़ैद ने कसम खाई कि अगर मैं बक्र से बात करूँ तो मेरी बीवी को तलाक, मरने के बाद उसकी कब्र पर सलाम किया। तलाक नहीं होगी।
496	कसम का आधार प्रथा (उर्फ़) पर है। इसलिए अगर कसम खाई कि मांस नहीं खाएगा, तो मछली खाने से कसम नहीं टूटेगी। इसी तरह कसम खाई कि बात नहीं करूँगा, तो कुरान शरीफ पढ़ने से कसम नहीं टूटेगी।
496	कसम खाई कि ज़ैद से बात नहीं करूँगा और ज़ैद जमात की नमाज़ में उसके पास खड़ा था, सलाम फेरते समय उसकी तरफ मुँह करके"अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहा, तो कसम नहीं टूटेगी।
496	नमाज़ी को सलाम फेरते समय उपस्थित लोगों की नीयत करने का कतई हुक्म है।
498	अगर किसी पाप पर कसम खाई, जैसे शराब पिएगा या नमाज़ नहीं पढ़ेगा, तो उसे तोड़ना और फिर कफ़्फ़ारा देना वाजिब है।
499	माता-पिता से बात न करने की कसम खाई तो कसम तोड़ना और उसका कफ़्फ़ारा देना वाजिब है।
499	किसी की हत्या करने की कसम खाई तो कसम तोड़ना और कफ़्फ़ारा देना वाजिब है।

صفحہ	مضمون / حکم
۴۸۶	جن مسائل کا تصفیہ حنفی مسلک پر نہ ہو سکے ان کی کار برآری کی شرعی صورت۔
۴۹۲	عدم ادائے نفقہ کا ایک گول مول سوال اور اس کا جواب۔
۴۹۳	قرآن عظیم نے شوہر دار عورت کو حرام قطعی فرمایا ہے۔
۴۹۳	عورتوں کو ہوائے نفس کا اتباع کرنا اور اسے کسی امام کے سر رکھنا کوئی دین نہیں۔
۴۹۳	ایک عورت کا شوہر پوری طرح بیوی کا حق ادا نہیں کر سکتا اور بوجہ جہالت طلاق بھی نہیں دیتا تو وہ عورت کیا کرے۔
۴۹۶	قسم کھائی فلاں شخص سے کلام نہ کروں گا۔ نماز میں اس کو لقمہ دینے سے حانث نہ ہوگا۔
۴۹۷	صدہا مسائل ایسے ہیں جن کا ماخذ عرف پر احکام ایمان کی بنا ہے۔
۴۹۷	زید نے عمرو سے قسمیہ کہا یہ کام کر، اور اس نے نہ کیا۔ تو بہ سبب انکار اس کام کے عمرو پر قسم عائد ہوتی ہے یا نہیں۔
۴۹۸	کسی کے قسم دلانے سے قسم واجب نہیں ہوتی۔ نہ اس کام کو کرنا واجب ہو جاتا ہے۔ ہاں اگر حرج نہ ہو تو مان لینا مستحب ہے۔
۴۹۸	قرآن مجید کی قسم شرعی ہے۔

صفحہ	مضمون / حکم
	کتاب الایمان
۴۹۵	زید نے قسم کھائی کہ بکر سے کلام کروں تو میری بیوی کو طلاق، مرنے کے بعد قبر پر سلام کیا۔ طلاق واقع نہ ہوگی۔
۴۹۶	یمین کی بناء عرف پر ہے۔ اس لئے اگر قسم کھائی کہ گوشت نہ کھائے گا، تو مچھلی کے کھانے سے حانث نہ ہوگا۔ یونہی قسم کھائی کلام نہ کروں گا تو قرآن شریف پڑھنے سے حانث نہ ہوگا۔
۴۹۶	قسم کھائی کہ زید سے کلام نہ کروں گا اور زید نماز جماعت میں اس کے برابر کھڑا تھا سلام پھیرتے وقت اس کی طرف منہ کرکے السلام علیکم ورحمۃ اللہ کہا تو حانث نہ ہوگا۔
۴۹۶	نمازی کو سلام پھیرتے وقت نیت حاضرین کا قطعاً حکم ہے۔
۴۹۸	یمین منعقدہ اور اس کے کفارہ کی تفصیل۔
۴۹۸	کسی معصیت پر قسم کھائی مثلاً شراب پیے گا یا نماز نہ پڑھے گا تو اس کا جھوٹا کرنا پھر کفارہ دینا واجب ہے۔
۴۹۹	والدین سے کلام نہ کرنے کی قسم کھائی تو قسم توڑنا اور اس کا کفارہ دینا واجب ہے۔
۴۹۹	کسی کو قتل کرنے کی قسم کھائی تو حنث و تکفیر واجب ہے۔
	قسم اگر امر مستقبل پر ہے جس کا کرنا اس کے قبضہ اقتدار میں ہے تو اس کے جھوٹا کرنے میں گناہ ہے اور کفارہ اس گناہ کا رافع۔

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Page 13

Ref	Right Column Content	Ref	Left Column Content	Ref
505	Explanation of a phrase of oath.	499	The cloth given in expiation should be such that it can last for more than three months and cover the entire body.	499
505	Punishment along with a fine, where some of the offender's property is taken in exchange for a mistake. It is abrogated.	499	Intentionally taking a false oath is a sin.	499
505	It is not permissible to act upon what is abrogated.	499	Those who make oaths a shield are condemned in the Great Quran.	499
505	It is obligatory to break an oath that requires acting upon something impermissible.	499	Expiation was prescribed so that if a violation occurs by chance, it can rectify it, not so that one relies on expiation and takes a false oath.	499
506	The members of an association took a mutual oath that whoever does not pray will be fined a certain amount, and whoever does not pay the fine will be expelled from the association. This is not a Sharia-mandated punishment, nor is there any harm in it.	500	He took an oath to pray Zuhr in congregation. He joined for two rak'ahs; he has violated the oath because one who only joins for up to three rak'ahs is not considered to have performed the prayer in congregation. However, the reward for the congregation will be attained by the act of joining itself, or even by leaving home with the intention of joining the congregation.	500
506	An independent sentence without a conjunction is not related to what precedes it.	500	If an absolute oath was taken to leave a place of residence, then acting upon it immediately is necessary. Any delay in leaving the residence without a valid excuse will result in an immediate violation of the oath.	500

Ref	Right Column Content	Ref	Left Column Content	Ref
506	An alien interruption invalidates the act of the oath.	500	He took an oath not to live in Bareilly. He was busy with preparations when someone imprisoned him and did not let him leave. As long as this compulsion exists, the oath will not be violated even if a lifetime passes.	500
506	If someone said, "By Allah and the Messenger, I will surely do such and such," this sentence will not be considered an oath.	501	He took an oath not to live in Bareilly, but he has no other place to stay except Bareilly. It is not possible to live elsewhere through his personal wealth, craft, or trade; therefore, he will be considered under compulsion as long as this situation persists.	501
506	If someone said, "By Allah, I will not drink, I will not stand," only the drinking will be included under the oath, not the standing. However, if he said, "By Allah, I will not drink nor will I stand," in this case both drinking and standing will be included under the oath.	503	An oath does not become binding just by being asked to take one, nor does performing that action become necessary.	503
506		504	"If I stay in this garden, I may commit adultery with my mother and daughter" – these words do not constitute an oath.	504

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

पेज १३

संदर्भ	दायां कॉलम सामग्री	संदर्भ	बायां कॉलम सामग्री	संदर्भ
505	शपथ (हलफ़) के एक वाक्यांश की व्याख्या।	499	कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) में दिया जाने वाला कपड़ा ऐसा होना चाहिए जो तीन महीने से अधिक चले और पूरे शरीर को ढँक ले।	499
505	जुर्माने के साथ सज़ा कि अपराधी की कुछ संपत्ति गलती के बदले ले ली जाए। यह निरस्त (मनसूख) है।	499	जानबूझकर झूठी कसम खाना पाप है।	499
505	जो निरस्त (मनसूख) हो चुका है, उस पर अमल करना जायज़ नहीं है।	499	कसमों को ढाल बनाने वालों की महान कुरान में निंदा की गई है।	499
505	जिस शपथ से किसी नाजायज़ बात पर अमल करना अनिवार्य होता हो, उसे तोड़ना वाजिब है।	499	कफ़्फ़ारा इसलिए निर्धारित किया गया था कि यदि संयोगवश शपथ का उल्लंघन (हन्स) हो जाए, तो यह उसे सुधार सके, न कि इसलिए कि कोई कफ़्फ़ारे पर भरोसा करके झूठी कसम खाए।	499
506	एक संस्था के सदस्यों ने आपस में शपथ ली कि जो नमाज़ नहीं पढ़ेगा उस पर इतना जुर्माना होगा, और जो जुर्माना नहीं देगा उसे संस्था से निकाल दिया जाएगा। यह शरीयत द्वारा निर्धारित सज़ा (ताज़ीर) नहीं है और न ही इसमें कोई हर्ज है।	500	उसने कसम खाई कि वह ज़ुहर की नमाज़ जमात के साथ पढ़ेगा। उसे दो रकात मिलीं; उसने कसम का उल्लंघन कर दिया क्योंकि तीन रकात तक पाने वाला जमात वाला नहीं माना जाता। हाँ, जमात का सवाब तो शामिल होने मात्र से, बल्कि	500

संदर्भ दायां कॉलम सामग्री		संदर्भ बायां कॉलम सामग्री	संदर्भ
		जमात के इरादे से घर से निकलने से ही मिल जाएगा।	
506	बिना संयोजक (conjunction) के एक स्वतंत्र वाक्य अपने से पहले वाले वाक्य से संबंधित नहीं होता।	500	यदि निवास छोड़ने की पूर्ण शपथ ली गई है, तो तुरंत उस पर अमल करना आवश्यक है। वैध कारण के बिना निवास छोड़ने में ज़रा सी भी ढील देने पर तुरंत शपथ का उल्लंघन (हन्स) होगा।	500
506	बीच में किसी बाहरी काम का आ जाना शपथ के अमल को बातिल (अमान्य) कर देता है।	500	उसने कसम खाई कि वह बरेली में नहीं रहेगा। वह तैयारी और बंदोबस्त में व्यस्त था कि किसी ने उसे कैद कर लिया और निकलने नहीं दिया। तो जब तक यह मजबूरी रहेगी, शपथ का उल्लंघन नहीं होगा, चाहे पूरी उम्र बीत जाए।	500
506	यदि किसी ने कहा "अल्लाह और रसूल की कसम, मैं ऐसा ज़रूर करूँगा", तो यह वाक्य शपथ (यमीन) नहीं माना जाएगा।	501	बरेली में न रहने की कसम खाई लेकिन बरेली के अलावा कहीं उसके रहने का ठिकाना नहीं है। न ही अपनी व्यक्तिगत संपत्ति, कौशल या व्यापार के माध्यम से दूसरी जगह गुजर-बसर संभव है, तो उसे तब तक मजबूर माना जाएगा जब तक ऐसी स्थिति बनी रहती है।	501
506	यदि किसी ने कहा "अल्लाह की कसम, मैं नहीं पियूँगा, मैं नहीं खड़ा होऊँगा", तो शपथ के तहत केवल पीना शामिल होगा, खड़ा होना नहीं। हाँ, अगर उसने इस	503	कसम दिलाने से वह अनिवार्य नहीं हो जाती और न ही वह काम करना ज़रूरी होता है।	503

संदर्भ दायां कॉलम सामग्री		संदर्भ बायां कॉलम सामग्री	संदर्भ
तरह कहा "अल्लाह की कसम, मैं न पियूँगा और न खड़ा होऊँगा", तो इस स्थिति में पीना और खड़ा होना दोनों शपथ के तहत शामिल होंगे।			
506		504 "अगर मैं इस बाग में रहूँ तो अपनी माँ-बेटी से व्यभिचार (ज़िना) करूँ- ये शब्द शपथ के नहीं हैं।	504

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم

صفحہ ۱۳

| ۵۰۵ | حلف کی ایک عبارت کی توضیح۔ | ۴۹۹ | کفارہ میں دیا جانے والا کپڑا ایسا ہونا چاہئے جو تین ماہ سے زیادہ چل سکے اور تمام بدن ڈھک لے۔ | ۴۹۹ | | ۵۰۵ | جرمانہ کے ساتھ تعزیر کہ مجرم کا کچھ مال خطاء کے عوض لے لیا جائے۔ منسوخ ہے۔ | ۴۹۹ | قصداً جھوٹی قسم کھانا گناہ ہے۔ | ۴۹۹ | | ۵۰۵ | منسوخ پر عمل جائز نہیں۔ | ۴۹۹ | قسموں کو ڈھال بنانے والوں کی قرآنِ عظیم میں مذمت آئی ہے۔ | ۴۹۹ | | ۵۰۵ | ناجائز بات پر عمل کرنا جس حلف سے لازم آتا ہو اس کا توڑنا واجب ہے۔ | ۴۹۹ | کفارہ اس لئے مقرر ہوا کہ اگر احیاناً حنث واقع ہو تو یہ اس کا مصلح ہو سکے نہ کہ یہ کفارہ پر تکیہ کر کے جھوٹی قسم کھائے۔ | ۴۹۹ | | ۵۰۶ | انجمن والوں نے باہم حلف اٹھایا جو نماز نہ پڑھے اس پر اتنا جرمانہ، جو جرمانہ نہ دے اس کو انجمن سے نکال دیا جائے گا۔ یہ تعزیر شرعی نہیں نہ اس میں حرج ہے۔ | ۵۰۰ | قسم کھائی ظہر جماعت سے پڑھے گا۔ دور کعت ملی حانث ہو گیا کہ تین رکعت تک پانے والا جماعت والا نہیں۔ ہاں جماعت کا ثواب تو نفسِ شرکت بلکہ باارادہِ جماعت گھر سے نکلنے میں ملے گا۔ | ۵۰۰ | | ۵۰۶ | جملہ مستقلہ بغیر حرفِ عطف کے ما قبل سے متعلق نہیں ہوتا۔ | ۵۰۰ | ترکِ سکونت کی مطلق قسم کھائی تو فوراً اس پر عمل ضروری ہے۔ عذرِ صحیح کے بغیر ترکِ سکونت میں کچھ بھی ڈھیل دی فوراً حانث ہوگا۔ | ۵۰۰ | | ۵۰۶ | فصلِ اجنبی عملِ حلف کو باطل کر دیتا ہے۔ | ۵۰۰ | قسم کھائی کہ بریلی میں نہ رہے گا۔ تیاری و تہیہ میں مشغول تھا کہ کسی نے قید کر لیا اور نکلنے نہ دیا۔ تو جب تک یہ مجبوری رہے گی حانث نہ ہو گا اگرچہ عمر گزر جائے۔ | ۵۰۰ | | ۵۰۶ | کسی نے کہا "واللہ والرسول لافعلن کذا" یہ جملہ یمین نہ ہوگا۔ |

۵۰۱ | بریلی میں نہ رہنے کی قسم کھائی مگر بریلی کے سوا کہیں اس کے رہنے کا ٹھکانا نہیں۔ نہ اپنے ذاتی مال یا حرفت یا تجارت کے ذریعے دوسری جگہ بسر ممکن ہے تو مجبور سمجھا جائے گا جب تک ایسی حالت باقی رہے گی۔ | ۵۰۱ | | ۵۰۶ | اگر کسی نے کہا "واللہ لاشربن لا قومن" تو حلف کے تحت فقط شرب داخل ہو گا نہ کہ قیام ہاں اگر یوں کہا "واللہ لاشربن ولا قومن" تو اس صورت میں شرب و قیام دونوں حلف کے تحت داخل ہوں گے۔ | ۵۰۳ | قسم دلانے سے واجب نہیں ہوتی نہ اس کام کا کرنا ضروری ہوتا ہے۔ | ۵۰۳ | | ۵۰۶ | | ۵۰۴ | "اگر اس باغ میں رہوں تو اپنی ماں بیٹی سے زنا کروں" یہ الفاظ قسم کے نہیں۔ | ۵۰۴ |

Page	Subject	Description	Page
507	Breaking an oath without a Shariah-compliant reason is prohibited; however, if doing the opposite is better, one should break the oath and pay expiation (Kaffara).	Treatise *Al-Jawhar al-Thamin fi 'Ilal Nazilat al-Yamin* (A detailed discussion on a specific type of oath).	511
507	A wealthy person gave land to his servant as a reward for service, but later in anger swore to seize the land. If he breaks this oath, will expiation be mandatory or not?	Zaid, being angry with his son, told his wife, "If you let this son of mine stay in the house, you are divorced three times." Later, Zaid reconciled and the son began living in the house. Zaid's wife said neither yes nor no. In this situation, did Zaid's wife get divorced or not?	511
507	Description of expiation for an oath.	"Leaving in the house" means abandonment, which can be negated in two ways: either by physical prevention or verbal prohibition.	512
508	"If I take my parents' earnings, may I not be granted the vision of God or the intercession of Muhammad (peace be upon him)." This sentence is not an oath; he can receive inheritance etc.	A person rented his house for a year, then said to the tenant, "By God, I will not let you stay in my house." Then he told the tenant to leave the house. His oath was fulfilled and he did not become a breaker of the oath (hanith).	513
508	Swore, "If I don't go for Hajj, I become a disbeliever." He was wealthy but returned from Mumbai. What is the ruling? This was not an oath. The funds were a gift; returning them is not	Someone swore, "I will not allow so-and-so to enter my owned house," then verbally prohibited him from passing through. The oath was fulfilled and divorce did not occur.	513

Page	Subject	Description	Page
	necessary, and if he returned from Mumbai due to some disability, he is excused.		
509	Showing a false intention for Hajj through deception and taking money from people is a severe crime.	Someone said to his son, "If I let you work with so-and-so, my wife is divorced." In this case, if the son is an adult and independent, verbal prohibition is enough to fulfill the oath and divorce will not occur. If the son is a minor, prevention by both word and deed is necessary, otherwise divorce will occur.	513
509	Suspicion against any Muslim is not permissible.		

पृष्ठ 47/688

जिल्द तेरहवीं | फ़तावा रज़विया

पृष्ठ	विषय	विवरण	पृष्ठ
507	बिना शरीयती कारण के कसम तोड़ना हराम है, हाँ यदि विपरीत कार्य में भलाई हो तो कसम तोड़कर कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दे।	रिसाला अल-जौहर-अत-थमीन फी इलल-उन-नाज़िलत-उल-यमीन (एक प्रकार की कसम के बारे में इज्तिहादी और विस्तृत चर्चा)।	511
507	एक अमीर व्यक्ति ने अपने नौकर को सेवा के बदले ज़मीन दी, फिर गुस्से में कसम खाई कि मैं तुम्हारी ज़मीन जब्त करूँगा। अब यदि वह कसम तोड़ता है, तो क्या कफ़्फ़ारा अनिवार्य होगा या नहीं?	ज़ैद ने अपने बेटे से नाराज़ होकर अपनी पत्नी से कहा, "अगर तूने मेरे इस बेटे को घर में छोड़ा तो तुझे तीन तलाक हैं।" बाद में ज़ैद के राज़ी होने पर बेटा घर में रहने लगा। ज़ैद की पत्नी ने उसे न तो हाँ कहा और न ही ना। क्या इस स्थिति में ज़ैद की पत्नी को तलाक हो गया?	511
507	कसम के कफ़्फ़ारे का बयान।	घर में छोड़ने का अर्थ है त्याग करना, जिसे दो तरह से नकारा जा सकता है: या तो शारीरिक रूप से रोकना या बोलकर मना करना।	512
508	"अगर मैं माता-पिता की कमाई लूँ तो मुझे खुदा का दीदार और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत नसीब न हो।" यह वाक्य कसम नहीं है; वह विरासत आदि प्राप्त कर सकता है।	एक व्यक्ति ने अपना घर एक वर्ष के लिए किराए पर दिया, फिर किराएदार से कहा, "खुदा की कसम मैं तुझे अपने घर में नहीं छोड़ूँगा।" फिर किराएदार से कहा कि मेरे घर से निकल जाओ। उसकी कसम पूरी हो गई और वह कसम तोड़ने वाला नहीं हुआ।	513
508	कसम खाई कि "अगर हज पर न जाऊँ तो काफिर हो जाऊँ।" वह संपन्न था, पर मुंबई से लौट आया। उसका क्या हुक्म है? यह कसम नहीं हुई। दान उपहार था;	किसी ने कसम खाई कि "मैं फलां को अपने इस स्वामित्व वाले घर में प्रवेश नहीं करने दूँगा," फिर उसे मौखिक रूप से गुजरने से रोका। कसम पूरी हो गई और तलाक नहीं हुआ।	513

पृष्ठ	विषय	विवरण	पृष्ठ
	उसे लौटाना ज़रूरी नहीं है, और यदि वह किसी मजबूरी के कारण मुंबई से लौटा है, तो वह विवश है।		
509	धोखे से हज का झूठा इरादा दिखाकर लोगों से पैसे लेना एक गंभीर अपराध है।	किसी ने अपने बेटे से कहा, "अगर मैं तुझे फलां के साथ काम करने के लिए छोड़ूँ तो मेरी पत्नी को तलाक।" इस मामले में, यदि बेटा वयस्क और स्वतंत्र है, तो केवल मौखिक मनाही से कसम पूरी हो जाएगी और तलाक नहीं होगा। यदि बेटा नाबालिग है, तो वाणी और कर्म दोनों से रोकना आवश्यक है, अन्यथा तलाक हो जाएगा।	513
509	किसी भी मुसलमान पर बुरा संदेह करना जायज़ नहीं है।		

صفحہ 47 از 688

جلد تیرہ دہم | فتاوٰی رضویہ

صفحہ	مضمون	تفصیل صفحہ
۵۰۷	بلاوجہ شرعی قسم توڑنا حرام ہے، ہاں خلاف میں خیر ہو تو قسم توڑ کر کفارہ دے۔	رسالہ الجوہر الثمین فی علل نازلۃ الیمین (ایک نوع کی قسم کے بارے میں اجتہادی جزئیہ اور اس پر تفصیلی بحث) ۵۱۱
۵۰۷	ایک امیر شخص نے اپنے ملازم کو خدمت کے صلہ میں زمین دی پھر کسی بات پر خفا ہو کر حالتِ غصہ میں قسم کھائی کہ میں تیری زمین ضبط کروں گا، اب اگر حلف شکنی کرے تو کفارہ لازم آئے گا یا نہیں۔	زید نے اپنے بیٹے سے ناراض ہو کر بیوی کو کہا اگر تو نے میرے اس بیٹے کو گھر میں چھوڑا تو مجھ پر تین طلاق ہے بعد ازاں زید کے راضی ہونے پر بیٹا گھر میں رہنے لگا۔ زید کی بیوی نے اسے نہ تو ہاں کہا اور نہ ہی نہ کہا، تو کیا اس صورت میں زید کی بیوی کو طلاق ہو گئی یا نہیں۔ ۵۱۱
۵۰۷	کفارہ قسم کا بیان۔	گھر میں چھوڑنے کا معنیٰ ترک و تخلیہ ہے جو دو وجہ سے منتفی ہو سکتا ہے یا منع بالفعل یا نہی بالقول۔ ۵۱۲
۵۰۸	"والدین کی کمائی لوں تو خدا کا دیدار اور محمد (صلی اللہ تعالٰی	ایک شخص نے اپنا گھر سال کے لئے کرایہ پر دیا، پھر اس نے کرایہ دار کو کہا کہ خدا کی قسم ۵۱۳

صفحہ	مضمون	تفصیل صفحہ
	علیہ وسلم) کی شفاعت نصیب ہو" یہ جملہ قسم نہیں میراث وغیرہ وصول کر سکتا ہے۔	میں تجھے اپنے گھر میں نہ چھوڑوں گا۔ پھر کرایہ دار کو کہا کہ تو میرے گھر سے نکل جا تو اس کی قسم پوری ہو گئی اور وہ حانث نہ ہوا۔
۵۰۸	قسم کھائی "حج کو نہ جاؤں تو کافر ہو جاؤں" وہ صاحبِ نصاب تھا، بمبئی سے لوٹ آیا۔ اس کا کیا حکم ہے۔ یہ قسم نہ ہوئی۔ چندہ ہبہ تھا اس کا لوٹانا ضروری نہیں اور بمبئی سے کسی معذوری سے لوٹ آیا تو معذور ہے۔	کسی نے قسم کھائی کہ فلاں کو میں اپنے اس مملوکہ گھر میں داخل نہ ہونے دوں گا پھر اس کو زبانی طور پر گزرنے سے روکا تو قسم ہو گئی اور طلاق واقع نہ ہوئی۔ ۵۱۳
۵۰۹	دھوکہ دے کر حج کا جھوٹا ارادہ ظاہر کیا اور اس ذریعہ سے لوگوں سے روپیہ لیا تو سخت مجرم ہے۔	کسی شخص نے اپنے بیٹے کو کہا اگر میں تجھے فلاں کے ساتھ کام کرنے کے لئے چھوڑوں تو میری بیوی کو طلاق، تو اس صورت میں اگر بیٹا بالغ و خودمختار ہے تو صرف زبانی منع کرنے سے قسم پوری ہو جائے گی اور طلاق واقع نہ ہو گی اور اگر بیٹا نابالغ ہے تو زبان و عمل دونوں سے روکنا ضروری ہے ورنہ طلاق واقع ہو جائے گی۔ ۵۱۳

صفحہ	مضمون	تفصیل صفحہ
	کسی مسلمان پر بد گمانی جائز نہیں۔	

Fatawa Razawiyya Volume 13

Page (L)	Topic / Ruling	Page (R)	Principle / Sub-topic
518	A person said, "If I let so-and-so enter my house, my wife is divorced." If that person enters without his knowledge, he is not an oath-breaker. If he knows and doesn't stop him, he is an oath-breaker.	514	Negation of negation is affirmation.
518	Someone swore, "I will not let so-and-so do this work, go, or enter." To fulfill the oath, just saying "don't do/go/enter" is enough, regardless of whether they comply.	514	Second matter.
518	Someone swore an oath of divorce not to let his adult sister live with her brothers-in-law in a house. If the house isn't his and he verbally forbids her, he isn't an oath-breaker.	514	Third matter.
519	Someone swore to evict a person today. If that person is dominant and hard to evict, just verbally asking him to leave fulfills the oath.	514	Fourth matter.
519	Swore not to let someone enter a house under penalty of divorce. If he owns the house, he must stop them by word and deed to avoid breaking the oath.	515	Removal of some doubts.
520	Warning on several matters through research and clarification by the author (may Allah have mercy on him).	515	First doubt.
520	First matter.	515	Second doubt.
521	Reconciliation by the author (r.a) between various texts of Imams; full authority in one's own home is most probable.	515	An action is not realized without choice.
521	Jurisprudential rulings are based on predominant matters.	517	A non-existent thing can be realized even without choice.
521	Fitna (mischief) is worse than killing.	517	Third doubt.

Page (L)	Topic / Ruling	Page (R)	Principle / Sub-topic
522	To not "allow/leave", at least verbal prohibition is necessary.	517	Mentioning a description in presence is redundant.
-	-	517	Swore not to speak to this child; speaking after he grows up breaks the oath.
522	The word 'Kalima' (speech) in an oath implies permanence.	518	Oaths are based on literal words, not underlying motives.

फ़तावा रज़विया जिल्द १३

पृष्ठ (बाएं)	विषय / निर्णय	पृष्ठ (दाएं)	सिद्धांत / उप-विषय
५१८	एक व्यक्ति ने कहा, "अगर मैं फ़लाँ व्यक्ति को अपने घर में आने दूँ तो मेरी पत्नी को तलाक़ है।" यदि वह व्यक्ति अनजाने में घर में आता है, तो वह शपथ नहीं तोड़ता। यदि जानते हुए नहीं रोकता, तो शपथ टूट जाती है।	५१४	निषेध का निषेध पुष्टि है।
५१८	किसी ने शपथ ली, "मैं फ़लाँ को यह काम करते हुए, जाते हुए या प्रवेश करते हुए नहीं छोड़ूँगा।" शपथ पूरी करने के लिए सिर्फ ज़बान से "यह काम मत करो/मत जाओ/मत आओ" कहना काफ़ी है, चाहे वह माने या न माने।	५१४	दूसरा मामला।
५१८	किसी ने तलाक़ की शपथ ली कि वह अपनी वयस्क बहन को उसके देवरों के साथ रहने नहीं देगा। यदि घर शपथ लेने वाले का नहीं है और वह मौखिक रूप से मना करता है, तो शपथ नहीं टूटती।	५१४	तीसरा मामला।
५१९	किसी ने शपथ ली कि वह आज घर में रहने वाले फ़लाँ को निकाल देगा। यदि वह व्यक्ति शक्तिशाली है और निकालना मुश्किल है, तो केवल मौखिक रूप से जाने के लिए कहना ही पर्याप्त है।	५१४	चौथा मामला।
५१९	शपथ ली कि अगर फ़लाँ को घर में आने दिया तो तलाक़। यदि घर स्वयं का है, तो ज़बान और क्रिया दोनों से रोकना ज़रूरी है, अन्यथा शपथ टूट जाएगी।	५१५	कुछ संदेहों का निवारण।
५२०	लेखक (रहमतुल्लाह अलैहि) द्वारा शोध और स्पष्टीकरण के रूप में कुछ मामलों पर चेतावनी।	५१५	पहला संदेह।

पृष्ठ (बाएं)	विषय / निर्णय	पृष्ठ (दाएं)	सिद्धांत / उप-विषय
५२०	पहला मामला।	५१५	दूसरा संदेह।
५२१	लेख़क द्वारा इमामों के विभिन्न कथनों के बीच समन्वय; अपने निजी घर में पूर्ण अधिकार होना सबसे संभावित है।	५१५	बिना इच्छा के कोई कार्य सिद्ध नहीं होता।
५२१	न्यायशास्त्रीय आदेशों का आधार प्रबल मामलों पर होता है।	५१७	अभाव (नकारात्मक) चीज़ इच्छा के बिना भी सिद्ध हो जाती है।
५२१	फ़ितना (अशांति) हत्या से भी बदतर है।	५१७	तीसरा संदेह।
५२२	"नहीं छोड़ने" के लिए कम से कम मौखिक रूप से रोकना आवश्यक है।	५१७	उपस्थिति में किसी विशेषण का उल्लेख करना व्यर्थ है।
-	-	५१७	शपथ ली कि इस बच्चे से बात नहीं करूँगा; उसके बड़े होने पर बात करने से शपथ टूट जाएगी।
५२२	शपथ में 'कलमा' शब्द का अर्थ स्थायी होता है।	५१८	शपथ शब्दों पर आधारित होती है, उद्देश्यों पर नहीं।

صفحہ	عنوان صفحہ		عنوان
		ایک شخص نے کہا کہ اگر میں فلاں شخص کو اپنے گھر داخل ہوتا چھوڑوں تو میری بیوی کو طلاق، پھر وہ	
۵۱۸	شخص اس کی لاعلمی میں گھر میں داخل ہوگیا تو حالف	۵۱۴	نفی پر نفی اثبات ہوتی ہے۔
		حانث نہ ہوگا اور اگر علم ہونے کے باوجود اس کو منع نہ کیا تو حانث ہو جائے گا۔	
		کسی نے قسم کھائی کہ میں فلاں کو یہ کام کرتے ہوئے یا جاتے یا داخل ہوتے نہ چھوڑوں گا، تو قسم پورا	
۵۱۸	کرنے کے لئے صرف زبان سے کہہ دینا کافی ہے کہ	۵۱۴	امر ثانی۔
		یہ کام مت کر یا مت جا یا مت داخل ہو، چاہے وہ مانے یا نہ مانے۔	
		ایک شخص نے طلاق کی قسم کھائی کہ وہ اپنی بالغ بہن کو گھر میں اپنے دیوروں کے ساتھ رہتا ہوا نہیں	
۵۱۸	چھوڑے گا اگر وہ گھر حالف کا نہ ہو اور وہ زبانی	۵۱۴	امر ثالث۔
		طور پر بہن کو منع کردے تو حانث نہ ہوگا۔	
		کسی شخص نے قسم کھائی میں اپنے گھر میں رہنے	
۵۱۹	والے فلاں شخص کو آج نکال باہر کروں گا حالانکہ وہ	۵۱۴	امر رابع۔
		فلاں ظالم و غالب ہے جس کو نکالنا اس کے لئے مشکل	

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
	ہے تو فقط زبانی طور پر اسے نکلنے کا کہہ دینے سے حانث نہ ہوگا۔		
۵۱۹	قسم کھائی کہ اگر فلاں شخص کو اس گھر میں داخل ہوتا چھوڑوں تو میری بیوی کو طلاق، اگر یہ گھر حالف کی ملکیت ہے تو زبان و عمل دونوں سے روکنا لازم ہے ورنہ حانث ہو جائے گا۔	۵۱۵	چند شبہات کا ازالہ۔
۵۲۰	مصنف رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی طرف سے بطور تحقیق و تنقیح چند امور پر تنبیہ۔	۵۱۵	شبہ اولیٰ۔
۵۲۰	امر اول۔	۵۱۵	شبہ ثانی۔
۵۲۱	مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے ائمہ کی مختلف عبارات میں تطبیق، اپنے ذاتی گھر میں کلی اختیار کا حاصل ہونا اغلب ہے۔	۵۱۵	فعل اختیار کے بغیر متحقق نہیں ہوتا۔
۵۲۱	فقہی احکام کا مدار غالب امور پر ہوتا ہے۔	۵۱۷	عدمی چیز اختیار کے بغیر بھی متحقق ہو جاتی ہے۔
۵۲۱	فتنہ قتل سے برا ہے۔	۵۱۷	شبہ ثالث۔
۵۲۲	نہ چھوڑنے کے لئے کم از کم زبان سے روکنا ضروری ہے۔	۵۱۷	حاضر میں وصف کا ذکر لغو ہوتا ہے۔
-	-	۵۱۷	

عنوان	صفحہ	عنوان	صفحہ
قسم کھائی کہ اس بچے کے ساتھ کلام نہ کریگا پھر اس کے جوان ہونے کے بعد اس سے بات کی تو حانث ہوگا۔			
قسمیں الفاظ پر مبنی ہوتی ہیں اغراض پر مبنی نہیں ہوتی۔	۵۲۲	قسم میں کلمہ کا لفظ ہمیشگی کے لئے ہوتا ہے۔	۵۱۸

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Page	Topic (Column 1)	Topic (Column 2)	Page
522	A form of situational specification.	The Sultan made a prisoner swear: "You shall not leave my country without my permission." This oath will be restricted to the duration of his rule. After the Sultan is deposed, the prisoner leaving the country without his permission will not break the oath.	527
523	In religious matters, both the motivating attribute and its opposite are the same; therefore, the intention for specification is necessary.	A master swore to a slave, a king to his subjects, or a husband to his wife (or took an oath himself): "You shall not go out without my permission," then this oath will be restricted to the continuation of ownership, sovereignty, or marriage.	528
523	Without mentioning the attribute, the intention is not valid even religiously, let alone legally.	A man said to his wife: "If I marry another woman without your permission, she is divorced." If he then divorces his wife and marries another without her permission, the second wife will still be divorced.	528
523	Someone said: "If I go out, my slave is free," and by "going out" he intended "traveling." Religiously, his claim will be accepted. However, if he intended going out to a specific place like Baghdad, it is not correct.	Someone said to his wife: "If you go out without my permission, you are divorced three times." Then the husband gave his wife one irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). Now, if she goes out without her husband's permission, the oath will not be broken.	529

Page	Topic (Column 1)	Topic (Column 2)	Page
523	Fourth doubt.	When a husband gives his wife an irrevocable divorce, the authority to prohibit (her from leaving) is removed.	529
525	A person took an oath: "If I talk to Zaid, my wife is thrice divorced." Now he wants to talk to him without the finality of the divorce. He should give his wife one irrevocable divorce; after the waiting period (iddat) has passed, he can talk to him and then remarry his wife without 'halala'.	Enemy combatants made a prisoner swear: "You shall not leave without your ruler's permission." Then the ruler was deposed and reinstated. If the prisoner now leaves without his permission, the oath will not be broken.	530
526	The incident of the oath-taking of Prophet Ayub (peace be upon him).	A master said to his slave: "If you leave without my permission, you are free." He then sold the slave and bought him back. If the slave now leaves without permission, he will be free.	530
526	An oath remains valid even if the reason or motivation for it ends; its disappearance does not void the oath.		

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

पृष्ठ	विषय (स्तंभ 1)	विषय (स्तंभ 2)	पृष्ठ
५२२	स्थिति के विनिर्देशन का एक रूप।	सुल्तान ने एक कैदी को कसम खिलाई कि मेरी अनुमति के बिना मेरे देश से बाहर नहीं जाओगे। यह कसम उसके शासन की अवधि तक सीमित रहेगी। सुल्तान के पदमुक्त होने के बाद, उसकी अनुमति के बिना देश से बाहर जाने पर कैदी की कसम नहीं टूटेगी।	५२७
५२३	धार्मिक मामलों में, प्रेरक गुण और उसके विपरीत दोनों समान हैं, इसलिए विनिर्देशन का इरादा आवश्यक है।	एक मालिक ने गुलाम को, राजा ने प्रजा को, या पति ने पत्नी को कसम खिलाई (या स्वयं कसम खाई) कि तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाओगे, तो यह कसम स्वामित्व, संप्रभुता या विवाह के बने रहने तक सीमित होगी।	५२८
५२३	गुण का उल्लेख किए बिना, इरादा धार्मिक रूप से भी मान्य नहीं है, कानूनी रूप से तो दूर की बात है।	एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर मैं तुम्हारी अनुमति के बिना दूसरी महिला से निकाह करूँ तो उसे तलाक है।" फिर पत्नी को निकाह से अलग करके उसकी अनुमति के बिना दूसरी से निकाह करे, तब भी दूसरी को तलाक हो जाएगा।	५२८
५२३	किसी व्यक्ति ने कहा, "अगर मैं बाहर जाऊँ तो मेरा गुलाम आज़ाद है," और बाहर जाने से उसका इरादा "यात्रा" का था। धार्मिक रूप से इसकी पुष्टि की जाएगी। लेकिन अगर उसने	किसी ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर निकलीं तो तुम्हें तीन तलाक हैं।" फिर पति ने पत्नी को एक 'तलाक-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) दे दिया। अब	५२९

पृष्ठ	विषय (स्तंभ 1)	विषय (स्तंभ 2)	पृष्ठ
	किसी विशेष स्थान जैसे बगदाद जाने का इरादा किया हो, तो यह सही नहीं है।	अगर वह पति की अनुमति के बिना बाहर निकल जाती है, तो कसम नहीं टूटेगी।	
५२३	चौथा संदेह।	जब पति अपनी पत्नी को 'तलाक-ए-बाइन' दे देता है, तो रोकने का अधिकार समाप्त हो जाता है।	५२९
५२५	एक व्यक्ति ने कसम खाई, "अगर मैं ज़ैद से बात करूँ तो मेरी पत्नी को तीन तलाक हैं।" अब वह उससे बात करना चाहता है और चाहता है कि पत्नी को अंतिम तलाक न हो। उसे पत्नी को एक 'तलाक-ए-बाइना' देना चाहिए; 'इद्दत' (प्रतीक्षा अवधि) बीतने के बाद वह उससे बात कर सकता है और फिर बिना 'हलाला' के दोबारा निकाह कर सकता है।	युद्धरत पक्ष ने एक कैदी को कसम खिलाई कि तुम अपने शासक की अनुमति के बिना बाहर नहीं जाओगे। फिर शासक पदमुक्त होकर पुनः बहाल हुआ। अब यदि वह कैदी उसकी अनुमति के बिना चला जाए, तो कसम नहीं टूटेगी।	५३०
५२६	पैगंबर अय्यूब (अलैहिस्सलाम) के कसम खाने की घटना।	एक मालिक ने अपने गुलाम से कहा, "अगर तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर निकले तो तुम आज़ाद हो।" फिर उसने उसे बेच दिया और दोबारा खरीद लिया। अब यदि वह गुलाम अनुमति के बिना निकलता है, तो वह आज़ाद हो जाएगा।	५३०
५२६	शपथ का कारण और प्रेरणा समाप्त होने के बावजूद शपथ बनी रहती है; उसके समाप्त होने से शपथ शून्य नहीं होती।		

صفحہ	عنوان (کالم ۱)	عنوان (کالم ۲) صفحہ
		سلطان نے قیدی کو قسم دی کہ میری اجازت کے بغیر میرے ملک سے تو باہر نہ جائے گا یہ قسم اس کی حکومت
۵۲۲	تخصیصِ حال کی ایک صورت۔	کی بقاء کے ساتھ مقید ہوگی سلطان کے ۵۲۷ معزول ہونے کے بعد اس کی اجازت کے بغیر ملک سے باہر جانے پر قیدی کی قسم نہ ٹوٹے گی۔
	دیانت میں صفتِ داعیہ وغیرہ داعیہ دونوں	آقا نے غلام، بادشاہ نے رعایا یا خاوند نے بیوی کو قسم دی یا خود قسم کھائی
۵۲۳	یکساں ہیں اس لئے نیت تخصیص ضروری ہے۔	کہ تو میری اجازت کے بغیر باہر نہ ۵۲۸ جائے تو یہ قسم بقاء ملک اور بقاء زوجیت کے ساتھ مقید ہوگی۔
	وصف کو ذکر کئے بغیر نیت تو دیانتاً بھی	ایک شخص نے بیوی کو کہا، اگر تیری اجازت کے بغیر دوسری عورت سے
۵۲۳	معتبر نہیں چہ جائیکہ قضاءً۔	نکاح کروں تو اسے طلاق، پھر بیوی کو ۵۲۸ نکاح سے خارج کرکے اس کی اجازت

صفحہ	عنوان (کالم ۱)	عنوان (کالم ۲)	صفحہ
		کے بغیر دوسری سے نکاح کرے تب بھی دوسری کو طلاق ہوجائے گی۔	
۵۲۳	کسی شخص نے کہا اگر میں باہر جاؤں تو میرا غلام آزاد ہے اور باہر جانے سے سفر کی نیت کی تو دیانتاً اس کی تصدیق کی جائے گی اور کسی خاص مکان مثلاً بغداد کی طرف خروج کی نیت کرے تو صحیح نہیں۔	کسی نے اپنی بیوی کو کہا اگر تو میری اجازت کے بغیر باہر نکلی تو تجھے تین طلاقیں، پھر خاوند نے بیوی کو ایک طلاقِ بائن دے دی، اب خاوند کی اجازت کے بغیر باہر نکل گئی تو حانث نہ ہوگا۔	۵۲۹
۵۲۳	چوتھا شبہ۔	خاوند جب بیوی کو طلاقِ بائن دے دے تو ولایت منع زائل ہو جاتی ہے۔	۵۲۹
۵۲۵	ایک شخص نے قسم کھائی اگر زید سے بات کروں تو میری بیوی کو تین طلاقیں۔ اب چاہتا ہے کہ اس سے بات کرے اور بیوی کو طلاقِ مغلظہ نہ ہو تو بیوی کو ایک طلاق بائنہ دے عدت گزر جانے کے بعد بات کر سکتا ہے اور بعدازاں بلا حلالہ دوبارہ نکاح کر سکتا ہے۔	اہل حرب نے قیدی کو قسم دی کہ تمہارے حاکم کی اجازت کے بغیر باہر نہیں جائے گا پھر حاکم معزول ہو کر دوبارہ بحال ہوا اب وہ قیدی اس کی اجازت کے بغیر باہر چلا جائے تو حانث نہ ہوگا۔	۵۳۰
۵۲۶	سیدنا حضرت ایوب علیہ السلام کے قسم کھانے کا واقعہ۔	مالک نے غلام کو کہا کہ اگر تو میری اجازت کے بغیر باہر نکلا تو آزاد ہے،	۵۳۰

صفحہ	عنوان (کالم ۱)	عنوان (کالم ۲) صفحہ
		پھر اس کو فروخت کر کے دوبارہ خرید لیا اب وہ غلام اس کی اجازت کے بغیر نکلا تو آزاد ہوگا۔
۵۲۶	قسم کا سبب اور داعی ختم ہو جانے کے باوجود قسم باقی رہتی ہے اس کے زوال سے قسم باطل نہیں ہوتی۔	

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

530: A husband swore an oath that his wife would not leave the house; this oath will not be restricted by the continuation of marriage because permission is not mentioned in it. 534: For a person, ascending to the sky or changing stone into gold is intellectually possible but habitually impossible. 531: A person said to his wife, 'Whichever woman I marry without your permission, she shall be divorced.' After this, he gave his wife a final or severe divorce. Then he married another woman without the permission of that divorcee; divorce will occur. 535: The fifth doubt. 531: Someone swore an oath that 'if I talk to so-and-so without his permission or arrival, then such-and-such will happen.' If that person dies, the oath will end. 535: Tafful 'ala al-Shami (Refinement/Interference on Shami). 531: When an oath is conditional, it is necessary for both parties to conceive of that condition. 539: An oath becomes a substitute for witnesses; therefore, when the original (witness) is present, there is no need for a substitute. 532: The life received after death is different from worldly life. 539: If the claimant's witnesses are present in the judge's assembly, then by consensus, an oath will not be taken from the defendant. 532: Life is a condition such that it is impossible to bring it back exactly as it was. 541: If someone swears, 'I will certainly drink the water in this jug,' and then that water is poured out, he will become a breaker of the oath (hanith). 532: Soul and life are distinct from each other. 541: A city ruler made someone swear that he would inform him of every rioter entering the city. If that ruler is dismissed, the oath given to him will also end. 532: The basis of oaths is common usage (urf). 543: Clarification and explanation of a passage from Radd al-Muhtar. 532: Permission is only conceivable from a sane person. 545: A creditor made the debtor swear, 'You shall not hide your face from me.' What does this mean? 533: Three gentlemen made a person swear that he would not leave Bukhara without their permission. Then one of them became insane, and he left with the permission of the remaining two; he will become a breaker of the oath. However, if one of them dies and he leaves with the permission of the remaining two, he will not be a breaker of the oath. 547: Being God-fearing (muttaqi) in intent and not intending it are two different things. 548: The non-existence of a goal and not making it a goal are two different things, and there is a major difference between them.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

530: पति ने कसम खाई कि मेरी पत्नी घर से बाहर नहीं निकलेगी; यह कसम वैवाहिक स्थिति के बने रहने तक सीमित नहीं होगी क्योंकि इसमें अनुमति का उल्लेख नहीं है। 534: किसी व्यक्ति के लिए आकाश में चढ़ना या पत्थर को सोने में बदलना मानसिक रूप से संभव है, लेकिन आदतन असंभव है। 531: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, 'मैं जिस भी महिला से तुम्हारी अनुमति के बिना निकाह करूँउसे तलाक होगा।' इसके बाद, उसने अपनी पत्नी को तलाक-ए-बाइन या मुग़ल्लज़ा (अंतिम तलाक) दे दिया। फिर उसने उस तलाकशुदा महिला की अनुमति के बिना किसी अन्य महिला से निकाह किया; तलाक हो जाएगा। 535: पांचवां संदेह। 531: किसी ने कसम खाई कि 'यदि मैं फलां व्यक्ति से उसकी अनुमति या आगमन के बिना बात करूँतो ऐसा हो जाए।' फिर वह फलां व्यक्ति मर गया, तो कसम समाप्त हो जाएगी। 535: ततफ्फुल अलाल शामी (शामी पर टिप्पणी)। 531: जब कसम किसी शर्त के साथ जुड़ी हो, तो दोनों पक्षों के लिए उस शर्त की संभावना का होना आवश्यक है। 539: कसम गवाहों का विकल्प बनती है, इसलिए जब मूल उपस्थित हो तो विकल्प की आवश्यकता नहीं रहती। 532: मृत्यु के बाद प्राप्त जीवन सांसारिक जीवन से भिन्न होता है। 539: यदि वादी के गवाह न्यायाधीश की सभा में उपस्थित हैं, तो सर्वसम्मति से प्रतिवादी से कसम नहीं ली जाएगी। 532: जीवन एक ऐसी स्थिति है जिसे ठीक वैसा ही वापस लाना संभव नहीं है। 541: यदि कोई व्यक्ति कसम खाता है, 'मैं इस जग का पानी निश्चित रूप से पीऊँगा,' और फिर वह पानी फेंक दिया जाता है, तो वह कसम तोड़ने वाला (हानिस) हो जाएगा। 532: आत्मा और जीवन एक-दूसरे से भिन्न हैं। 541: शहर के हाकिम ने किसी व्यक्ति से कसम ली कि वह शहर में आने वाले हर उपद्रवी के बारे में उसे सूचित करेगा। यदि वह हाकिम बर्खास्त कर दिया जाता है, तो उसे दी गई कसम भी समाप्त हो जाएगी। 532: कसमों का आधार लोक-प्रचलन (उर्फ़) पर होता है। 543: रद अल-मुहतार के एक अंश का स्पष्टीकरण और व्याख्या। 532: अनुमति की कल्पना केवल एक बुद्धिमान व्यक्ति से ही की जा सकती है। 545: एक लेनदार ने ऋणी से कसम ली, 'तुम मुझसे अपना चेहरा नहीं छुपाओगे।' इसका क्या अर्थ है? 533: तीन सज्जनों ने एक व्यक्ति से कसम ली कि वह उनकी अनुमति के बिना बुखारा नहीं छोड़ेगा। फिर उनमें से एक पागल हो गया, और वह शेष दो की अनुमति से बाहर चला गया; वह कसम तोड़ने वाला बन जाएगा। हालाँकि, यदि उनमें से एक की मृत्यु हो जाती है और वह शेष दो की अनुमति से बाहर जाता है, तो वह कसम तोड़ने वाला नहीं होगा। 547: उद्देश्य में परहेज़गार (मुत्तक़ी) होना और उसका इरादा न करना दो अलग-अलग चीज़ें हैं।

548: उद्देश्य का शेष न रहना और उसे उद्देश्य न बनाना दो अलग-अलग चीज़ें हैं, और उनके बीच एक बड़ा अंतर है।

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

۵۳۰: خاوند نے قسم کھائی کہ میری بیوی گھر سے باہر نہ نکلے گی تو یہ قسم بقاء زوجیت کے ساتھ مقید نہ ہو گی کیونکہ اس میں اجازت کا ذکر نہیں۔ ۵۳۴: کسی شخص کے لئے آسمان پر چڑھنا یا پتھر کو سونے سے بدلنا عقلاً ممکن ہے لیکن عادۃً محال ہے۔ ۵۳۱: کسی شخص نے اپنی بیوی کو کہا میں جس عورت سے تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں اس کو طلاق ہوگی۔ اس کے بعد بیوی کو طلاق بائنہ یا مغلظہ دے دی پھر کسی عورت سے اس مطلقہ کی اجازت کے بغیر نکاح کیا تو طلاق ہو جائے گی۔ ۵۳۵: پانچواں شبہ۔ ۵۳۱: قسم کھائی کہ اگر فلاں سے اس کی اجازت یا اس کی آمد کے بغیر بات کروں تو یہ ہو جائے، پھر وہ فلاں فوت ہو گیا تو قسم ختم ہو جائے گی۔ ۵۳۵: تطفل علی الشامی۔ ۵۳۱: جب قسم کسی شرط کے ساتھ مشروط ہو تو طرفین کے نزدیک اس شرط کا متصور ہونا ضروری ہے۔ ۵۳۹: قسم گواہوں کا خلیفہ بنتی ہے تو جب اصل ہو جائے تو خلیفہ کی ضرورت نہیں رہتی۔ ۵۳۲: مرنے کے بعد جو حیات ملتی ہے وہ دنیوی حیات کا غیر ہے۔ ۵۳۹: اگر مدعی کے گواہ قاضی کی مجلس میں حاضر ہوں تو بالاتفاق مدعی علیہ سے قسم نہیں لی جائے گی۔ ۵۳۲: حیات کا ایک ایسا عارضہ ہے جس کو بعینہا واپس لانا ممکن نہیں۔ ۵۴۱: کوئی شخص قسم کھائے کہ میں اس کوزے کے پانی کو ضرور پیوں گا، پھر وہ پانی گرا دیا گیا تو وہ حانث ہو جائے گا۔ ۵۳۲: روح اور حیات ایک دوسرے کے مغایر ہیں۔ ۵۴۱: حاکم شہر نے کسی کو قسم دی کہ تو شہر میں داخل ہونے والے ہر فسادی کی اطلاع مجھے دے گا۔ پھر وہ حاکم معزول ہو گیا تو اس کی دی ہوئی قسم بھی ختم ہو جائے گی۔ ۵۳۲: قسموں کی بنیاد عرف پر ہوتی ہے۔ ۵۴۳: ردالمحتار کی ایک عبارت کی توضیح و تشریح۔ ۵۳۲: اجازت صرف عاقل سے متصور ہوتی ہے۔ ۵۴۵: قرضخواہ نے مقروض کو قسم دی کہ تو مجھ سے منہ نہ چھپائے گا اس کا کیا مطلب ہے۔

۵۳۳: تین حضرات نے ایک شخص کو قسم دی کہ وہ ان کی اجازت کے بغیر بخارا سے باہر نہ جائے گا، پھر ان میں سے ایک مجنون ہو گیا اور باقی دو کی اجازت سے وہ باہر گیا تو حانث ہو جائے گا لیکن اگر ان میں سے ایک فوت ہو جائے اور باقی دو کی اجازت سے وہ باہر چلا جائے تو حانث نہ ہوگا۔ ۵۴۷: مقصود کا متقی ہونا اور اس کا قصد نہ کرنا دو مختلف چیزیں ہیں۔ ۵۴۸: مقصود کا باقی نہ رہنا اور اسے مقصود نہ بنانا دو مختلف چیزیں ہیں اور ان میں بڑا فرق ہے۔

Volume 13 - Fatawa Razawiyya

Index	Content
544	Evidence from multiple Hadiths that breaking an oath taken in anger still requires expiation (Hanath) even after the anger has subsided.
544	The Prophet (PBUH) said: When you take an oath and then see something better than it, break your oath and offer expiation.
544	The Prophet (PBUH) said: By Allah, for any of you to cause harm to his family because of his oath is more sinful in the sight of Allah than paying the expiation which Allah has made obligatory.
544	An oath is a voluntary act.
556	No voluntary act is possible without intent and will.
556	The notion that an oath becomes invalid universally and generally due to the non-fulfillment of the purpose is incorrect.
557	If a person takes an unconditional oath like "I will hit so-and-so," "I will present them before a ruler," "I will feed them such-and-such," or "I will clothe them,"
548	According to the Maturidiyyah, it is rationally impossible for God to punish an obedient person.
548	According to the Mu'tazilah, it is mandatory upon Allah to accept repentance.
549	Accepting repentance is purely the grace of Allah Almighty.
550	A person, while taking an oath, told his wife: "If I do not complain to your brother attributing every evil and foulness in the world to you, you are divorced." What should such a person do to be free from the oath?
550	Divorce is detestable and sin is cursed.
550	Peace and reconciliation are beloved and Sharia-wise desirable.
550	Reconciliation does not terminate an oath.

	then these oaths are customarily for a lifetime. If these tasks are not done and the person dies, the oath-taker will be in violation (Hanith) and expiation will be mandatory. If these oaths were related to divorce or manumission, they would occur.		
557	Sixth doubt.	551	Zaid swore an oath that he would hit Amr. If Amr is proven innocent, the oath will not terminate; rather, it will be mandatory for Zaid to break the oath and pay expiation.
557	Grace upon Allama Sanhani.	551	Zaid swore an oath that he would hit Amr. If Amr is proven innocent, the oath will not terminate; rather, it will be mandatory for Zaid to break the oath and pay expiation.
557	Proving the claim in a new way.	553	Seventh doubt.
557	As long as the crime remains, the right to retribution remains.	553	First answer to the seventh doubt.
554	According to the Ahl us-Sunnah, accepting repentance is not an essential obligation, because nothing is obligatory upon Allah Almighty.	554	Zaid stops his wife from going to Amr's house. The wife does not comply, and Zaid takes an oath: "If you enter Amr's house, you are divorced three times." Now, whenever the wife enters Amr's house, divorce will occur, whether Zaid becomes pleased with Amr or remains angry.

सूचकांक	सामग्री
५४४	कई हदीसों से इस बात का प्रमाण कि गुस्से में ली गई कसम पर गुस्से के जाने के बाद भी हनत (कसम टूटना) लागू होता है।
५४४	हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब तू कसम खाए और फिर उसके ख़िलाफ़ को बेहतर देखे तो कसम तोड़कर उसका कफ़्फ़ारा दे दे।
५४४	नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि ख़ुदा की कसम तुम में से किसी का अपनी कसम की वजह से अपने घर वालों को ज़रूर तकलीफ़ पहुँचाना अल्लाह के नज़दीक उस कफ़्फ़ारे से ज़्यादा बड़ा गुनाह है जिसे अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ फ़रमाया है।
५४४	कसम एक स्वैच्छिक कार्य है।
५५६	कोई भी स्वैच्छिक कार्य बिना इरादे और संकल्प के संभव नहीं है।
५४८	मातुरिदिया के अनुसार आज्ञाकारी को दंड देना अकल के ख़िलाफ़ (असम्भव) है।
५४८	मुअतज़िला के अनुसार तौबा (प्रायश्चित) स्वीकार करना अल्लाह तआला पर वाजिब है।
५४९	तौबा स्वीकार करना केवल अल्लाह तआला का फ़ज़्ल (अनुग्रह) है।
५५०	एक व्यक्ति ने कसम खाते हुए अपनी पत्नी से कहा कि अगर मैं दुनिया की हर बुराई और गंदगी को तुम्हारी ओर जोड़कर तुम्हारे भाई से शिकायत न करूँ तो तुम्हें तलाक है। ऐसा व्यक्ति कसम से बरी होने के लिए क्या करे।
५५०	तलाक नापसंदीदा है और गुनाह घृणित है।

सूचकांक	सामग्री
५५६	उद्देश्य के पूरा न होने से पूर्ण रूप से और सामान्य रूप से कसम का बातिल (अमान्य) होना गलत है।
५५७	अगर कोई व्यक्ति बिना किसी शर्त के कसम खाए कि मैं फलां को मारूँगा या हाकिम के सामने पेश करूँगा या फलां चीज़ खिलाऊँगा या कपड़ा पहनाऊँगा, तो ये कसमें परंपरा के अनुसार जीवन भर के लिए हैं। अगर ये काम न किए और फलां मर गया तो वह हानीथ होगा और कसम का कफ़्फ़ारा देना अनिवार्य होगा और अगर ये कसमें तलाक या दासों की आज़ादी से संबंधित थीं तो तलाक या आज़ादी हो जाएगी।
५५७	छठा संशय।
५५७	अल्लामा सन्हानी पर अनुग्रह।
५५७	दावे को नए अंदाज़ से साबित करना।
५५७	
५५०	सुलह और शांति प्रिय है और शरीअत में वांछित है।
५५०	सुलह कसम को खत्म नहीं करती।
५५१	जैद ने कसम खाई कि वह अम्र को मारेगा, तो अम्र के बेगुनाह साबित होने से कसम खत्म नहीं होगी, बल्कि जैद पर अनिवार्य होगा कि वह कसम तोड़े और कफ़्फ़ारा दे।
५५१	जैद ने कसम खाई कि वह अम्र को मारेगा, तो अम्र के बेगुनाह साबित होने से कसम खत्म नहीं होगी, बल्कि जैद पर अनिवार्य होगा कि वह कसम तोड़े और कफ़्फ़ारा दे।
५५३	सातवाँ संशय।
५५३	सातवें संशय का पहला उत्तर।

सूचकांक	सामग्री	सूचकांक	सामग्री
	जब तक अपराध बना हुआ है, प्रतिशोध का अधिकार बना रहता है।		
५५४	अहले सुन्नत के अनुसार तौबा स्वीकार करना वाजिब-ए-असली नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला पर कुछ भी वाजिब नहीं होता।	५५४	जैद अपनी पत्नी को अम्र के घर जाने से रोकता है, पत्नी नहीं मानती और जैद कसम खाता है कि अगर तू अम्र के घर में दाखिल हुई तो तुझे तीन तलाक। अब जब भी पत्नी अम्र के घर दाखिल होगी, तलाक हो जाएगी चाहे जैद अम्र से राजी हो जाए या नाराज रहे।

| ۵۴۴ | متعدد احادیث سے اس بات کا ثبوت غصہ میں کھائی پر غصہ کے زوال کے بعد بھی حنث لازم آتا ہے۔ | ۵۴۸ | ماتریدیہ کے نزدیک مطیع کو سزا دینا محال عقلی ہے۔ | | ۵۴۴ | حضور علیہ الصلوۃ نے فرمایا کہ جب تو قسم کھائے پھر اس کے خلاف کو بہتر دیکھے تو قسم توڑ کر اس کا کفارہ دے دے۔ | ۵۴۸ | معتزلہ کے نزدیک توبہ کو قبول کرنا اللہ تعالیٰ پر واجب ہے۔ | | ۵۴۴ | نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا فرمان ہے کہ بخدا تم میں کسی کا اپنی قسم کی وجہ سے اپنے اہل کو ضرور ایذا پہنچانا عند اللہ زیادہ گناہ ہے اس سے کہ اس کے بدلے وہ کفارہ دے دے جو اللہ تعالیٰ نے فرض فرمایا ہے۔ | ۵۴۹ | توبہ کو قبول کرنا محض اللہ تعالیٰ کا فضل ہے۔ | | ۵۴۴ | قسم اختیاری فعل ہے۔ | ۵۵۰ | ایک شخص نے قسم کھاتے ہوئے اپنی بیوی کو کہا کہ اگر میں دنیا کی ہر بدی اور قباحت کو تیری طرف منسوب کر کے تیرے بھائی سے شکایت نہ کروں تو تجھے طلاق ہے۔ ایسا شخص قسم سے بری ہونے کے لئے کیا کرے۔ | | ۵۵۶ | کوئی اختیاری فعل قصد و ارادہ کے بغیر ممکن نہیں۔ | ۵۵۰ | طلاق مبغوض اور گناہ مغضوب ہے۔ | | ۵۵۶ | مقصود کے انتفاء سے علی الاطلاق اور علی العموم قسم کا باطل ہونا غلط ہے۔ | ۵۵۰ | صلح و آشتی محبوب اور شرعاً مطلوب ہے۔ | | ۵۵۷ | اگر کوئی شخص غیر مقید طور پر قسم کھائے کہ میں فلاں کو ماروں گا یا حاکم کے سامنے پیش کروں گا یا فلاں چیز کھلاؤں گا یا جوڑا پہناؤں گا، تو یہ قسمیں عرفاً زندگی بھر کے لئے ہیں اگر یہ کام نہ کئے اور فلاں مر گیا تو حانث ہوگا اور قسم کا کفارہ دینا لازم ہوگا اور اگر یہ قسمیں طلاق یا عتاق سے متعلق تھیں تو طلاق یا عتاق واقع ہو جائے گا۔ | ۵۵۰ | صلح قسم کو ختم نہیں کرتی۔ | | ۵۵۷ | چھٹا شبہ۔ | ۵۵۱ | زید نے قسم کھائی کہ وہ عمرو کو مارے گا تو عمرو کے بے گناہ ثابت ہونے سے قسم ختم نہ ہوگی

بلکہ زید پر لازم ہوگا کہ وہ قسم توڑے اور کفارہ دے۔ | | ۵۵۷ | علامہ سانحانی پر تفضل۔ | ۵۵۱ | زید نے قسم کھائی کہ وہ عمرو کو مارے گا تو عمرو کے بے گناہ ثابت ہونے سے قسم ختم نہ ہوگی بلکہ زید پر لازم ہوگا کہ وہ قسم توڑے اور کفارہ دے۔ | | ۵۵۷ | اثبات مدعیٰ نئے انداز سے۔ | ۵۵۳ | ساتواں شبہ۔ | | ۵۵۷ | جب تک جرم باقی ہواستحقاقِ انتقام باقی رہتا ہے۔ | ۵۵۳ | ساتویں شبہ کا جواب اول۔ | | ۵۵۴ | اہلسنت کے نزدیک توبہ کو قبول کرنا واجب اصلی نہیں کیونکہ اللہ تعالیٰ پر کچھ واجب نہیں ہوتا۔ | ۵۵۴ | زید اپنی بیوی کو عمرو کے گھر جانے سے روکے بیوی باز نہ آئے اور زید قسم کھائے کہ اگر تو عمرو کے گھر میں داخل ہوئی تو تجھے تین طلاق، اب جب بھی بیوی عمرو کے گھر داخل ہوگی طلاق ہو جائیگی چاہے زید عمرو سے راضی ہو جائے یا ناراض رہے۔ |

Fatawa Razawiyya (Right Header), **Volume Thirteen** (Left Header)

Page	Content
558	A stratagem to avoid triple divorce (Mughallazah) if it was made conditional on something.
558	Second answer.
558	Third answer.
559	Fourth answer.
559	Doubt cannot dispel certainty.
559	A wife said to her husband that you have made another woman my co-wife, so the husband replied that whichever woman is my wife, she is divorced; thus this wife will be divorced.
560	If there is generality and absolute nature in the words of an oath, then generality is certain; the intention of specification will not be considered judicially (Qada'an).
560	The implication of the situation (dalalat-al-hal) cannot cause specification in generality.
561	A few examples of this point that the implication of the situation is not considered in case of mere possibility.
562	The wisdom in Shari'ah making intercourse mandatory in Halala instead of just marriage.
563	Third example.
563	Often women are sad after separation even upon the second marriage of their former husband.
563	The husband said to the wife while taking an oath that you will not go out without my permission, so this is restricted to the state of marriage.
563	Fourth example.
564	Imam Najm al-Din Umar al-Nasafi (may Allah have mercy on him) is the Mufti of Jinn and Men.
564	Someone, seeing his wife talking freely to a stranger, said, "Now if you talk to any stranger, you are divorced." This oath will be general and include every non-mahram, whether they are house servants or relatives of the husband or wife.
564	Eighth doubt.
565	An intention of a specific unmentioned quality is not considered in an oath.

Page	Content
561	First example.
561	Second example.
562	The story of a person who asked the Holy Prophet (blessings and peace of Allah be upon him) if a person finds another man with his wife, should he kill him?
562	Why giving three divorces at once was declared a sin.
565	A person is standing, and someone takes an oath regarding him that he will not talk to him, then he says my intention was that I would not talk to him while he is standing, then this intention will not be considered.
565	The quality of standing is not the motive for ceasing speech.
565	An attribute in a present person is redundant.
565	If someone takes an oath that he will not marry a woman and intends a Hashimi, Arab, Turk, or someone of a specific lineage, then this intention will be considered religiously (Diyanatan) but not judicially (Qada'an).

फ़तावा रज़विया (दायें), **जिल्द तेरहवीं** (बायें)

पृष्ठ	विषय-सूची
५५८	तलाक़-ए-मुग़ल्लाज़ा (तीन तलाक़) को किसी शर्त पर मुअल्लक़ (निर्भर) किया तो मुग़ल्लाज़ा से बचने का तरीक़ा (हीला)।
५५८	दूसरा जवाब।
५५८	तीसरा जवाब।
५५९	चौथा जवाब।
५५९	शक यक़ीन को ख़त्म नहीं कर सकता।
५५९	बीवी ने शौहर से कहा कि तूने मुझ पर कोई दूसरी बीवी बना रखी है, तो शौहर ने जवाब में कहा कि जो भी औरत मेरी बीवी है उसको तलाक़ है, तो इस बीवी को तलाक़ हो जाएगी।
५६०	अल्फ़ाज़-ए-क़सम में उमूम (सामान्यता) और इत्लाक़ (निरपेक्षता) हो तो उमूम ही यक़ीनी है, नीयत-ए-तख़्सीस (विशिष्ट करने की नीयत) क़ज़ा-अन् (अदालती तौर पर) मोतबर (मान्य) न होगी।
५६०	

पृष्ठ	विषय-सूची
५६२	हलाला में सिर्फ निकाह पर इक्तिफ़ा (संतुष्ट) न करने और सोहबत (यौन संबंध) को शरई तौर पर लाज़िम क़रार देने की हिकमत।
५६३	तीसरी मिसाल।
५६३	अक्सर औरतें जुदाई के बाद भी अपने साबिक (पूर्व) शौहर की दूसरी शादी से ग़मगीन होती हैं।
५६३	शौहर ने क़सम खाते हुए बीवी से कहा कि तू मेरी इजाज़त के बिना बाहर नहीं जाएगी, तो यह क़सम निकाह की हालत तक सीमित होगी।
५६३	चौथी मिसाल।
५६४	इमाम नजमुद्दीन उमर नसफ़ी (रहमतुल्लाह अलैहि) जिन्नों और इंसानों के मुफ़्ती हैं।
५६४	किसी शख़्स ने अपनी बीवी को अजनबी शख़्स से बे-तकल्लुफ़ (बेझिझक) गुफ़्तगू करते देख कर कहा, "अब अगर तूने किसी बेगाने शख़्स से बात की तो तुझे तलाक़ है"। यह क़सम आम होगी और हर ग़ैर-महरम को शामिल होगी चाहे वो घर के मुलाज़िम हों या शौहर व बीवी के रिश्तेदार।
५६४	आठवां शुब्हा (संदेह)।

पृष्ठ	विषय-सूची
	दलालत-ए-हाल (हालात का संकेत) उमूम में तख़्सीस नहीं कर सकती।
५६१	इसी बात की चंद मिसालें कि महज़ एहतेमाल (संभावना) की सूरत में दलालत-ए-हाल मोतबर नहीं।
५६१	पहली मिसाल।
५६१	दूसरी मिसाल।
५६२	एक शख्स का क़िस्सा जिसने हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से ये सवाल किया कि अगर एक शख्स अपनी बीवी के साथ ग़ैर शख्स को पाए तो क्या उसे क़त्ल कर दे?
५६२	एक वक़्त में तीन तलाक़ें देना क्यों गुनाह क़रार दिया गया।
५६५	क़सम में किसी खास वस्फ़ (गुण) जो ज़िक्र न किया गया हो, उसकी नीयत मोतबर नहीं।
५६५	एक शख्स खड़ा हो तो कोई शख्स उसके बारे में यह क़सम खाए कि वो उससे बात नहीं करेगा, फिर कहे कि मेरी नीयत ये थी कि खड़े होने के वक़्त उससे बात न करूंगा, तो ये नीयत मोतबर न होगी।
५६५	सिफ़त-ए-क़याम (खड़े होने का गुण) तर्कए-कلام (बातचीत छोड़ने) की दाई (प्रेरक) नहीं।
५६५	हाज़िर में वस्फ़ (गुण) लग़्व (व्यर्थ) है।
५६५	अगर कोई शख्स क़सम खाए कि वो औरत (निकाह) नहीं करेगा और नीयत करे हाशमी, अरबी या तुर्की या किसी खास नसब (वंश) वाली की, तो ये नीयत दियानत-अन् (धार्मिक रूप से) मोतबर होगी क़ज़ा-अन् नहीं।

فہرست مضامین **صفحہ**

طلاقِ مغلظہ کو کسی شرط پر معلق کیا تو مغلظہ سے بچنے کا حیلہ۔ ۵۵۸

جوابِ ثانی۔ ۵۵۸

جوابِ ثالث۔ ۵۵۸

جوابِ رابع۔ ۵۵۹

شک یقین کو زائل نہیں کر سکتا۔ ۵۵۹

بیوی نے خاوند سے کہا کہ تو نے مجھ پر کوئی دوسری بیوی بنا رکھی ہے تو خاوند نے جواب میں کہا کہ جو بھی عورت میری بیوی ہے اس کو طلاق ہے، تو اس بیوی کو طلاق ہو جائے گی۔ ۵۵۹

حلالہ میں صرف نکاح پر اکتفانہ کرنے اور مجامعت کو شرعاً لازم قرار دینے کی حکمت۔ ۵۶۲

تیسری مثال۔ ۵۶۳

بسا اوقات عورتیں فرقت کے بعد بھی اپنے سابق خاوند کی دوسری شادی سے غمگین ہوتی ہیں۔ ۵۶۳

شوہر نے قسم کھاتے ہوئے بیوی کو کہا کہ تو میری اجازت کے بغیر باہر نہیں جائے گی، تو قسم حالتِ نکاح سے مقید ہو گی۔ ۵۶۳

چوتھی مثال۔ ۵۶۳

امام نجم الدین عمر نسفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ جن و انس کے مفتی ہیں۔ ۵۶۴

۵۶۰ الفاظِ قسم میں عموم و اطلاق ہو تو عموم ہی یقینی ہے نیت تخصیص قضاءً معتبر نہ ہو گی۔

۵۶۰ دلالتِ حال عموم میں تخصیص نہیں کر سکتی۔

۵۶۱ اسی بات کی چند مثالیں کہ محض احتمال کی صورت میں دلالتِ حال معتبر نہیں۔

۵۶۱ پہلی مثال۔

۵۶۱ دوسری مثال۔

۵۶۲ ایک شخص کا قصہ جس نے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ

۵۶۴ کسی شخص نے اپنی بیوی کو اجنبی شخص سے بے تکلف گفتگو کرتے دیکھ کر کہا اب اگر تو نے کسی بیگانے شخص سے بات کی تو تجھے طلاق ہے۔ یہ قسم عام ہو گی اور ہر غیر محرم کو شامل ہو گی چاہے وہ اس گھر کے ملازم یا خاوند و بیوی کے رشتہ دار ہوں۔

۵۶۴ آٹھواں شبہ۔

۵۶۵ قسم میں کسی خاص وصف غیر مذکور کی نیت معتبر نہیں۔

۵۶۵ ایک شخص کھڑا ہو تو کوئی شخص اس کے بارے میں یہ قسم کھائے کہ وہ اس سے بات نہیں کرے گا، پھر کہے کہ میری نیت یہ تھی کہ بوقتِ قیام اس سے بات نہ کروں گا، تو یہ نیت معتبر نہ ہو گی۔

۵۶۵ صفتِ قیام ترکِ کلام کی داعی نہیں۔

۵۶۵ حاضر میں وصف لغو ہے۔

وسلم سے یہ سوال کیا کہ اگر ایک
شخص اپنی بیوی کے ساتھ غیر
شخص کو پائے تو قتل کر دے؟
اگر کوئی شخص قسم کھائے کہ وہ عورت نہیں
بیک وقت تین طلاقیں دینا کیوں گناہ ۵۶۲ کرے گا اور نیت کرے ہاشمی، عربی یا ترکی ۵۶۵
قرار دیا گیا۔ یا کوئی خاص نسب والی کی تو یہ نیت دیانۃً
معتبر ہو گی قضاءً نہیں۔

Fatawa Rizvia Volume 13, 13

566 | He swore not to live in someone's house and then said his intention was not to live there on rent, so the intention is not correct. Therefore, if he stays in that house even without rent, the oath will be broken. | 568 566 | The husband put some money in a bag and said to his wife, "If you leave any of this until morning, you are divorced." Now if the wife didn't spend anything from it or spent some and left some, the divorce will take place. | 568 566 | If he swore not to live in that house of so-and-so which he bought, and then says his intention was what he bought for his own self, then this intention will be accepted. | 568 566 | The 'persistence' (baqa) which is an attribute of humans is the absence of an act, not an act itself. | 568 566 | Zaid sold something to Amr through an invalid sale (bai' fasid) which made the judge angry and he said "If I let this invalid sale persist, then [this will happen]". The sun set and the judge did not annul the sale, so he would have broken his oath (hanith). | 568 Ninth Doubt. 567 | Persistence (baqa) which is an act of the Ever-Living, All-Sustaining (Hayy and Qayyum) is 'existential' (wujudi) according to researchers. | 568 567 | Removal of this doubt that human persistence is sometimes achieved through an act, like bringing Zaid into a house and binding him with chains; this is keeping Zaid in the house, even though binding is an act. | 568 567 | According to the school of Imam al-Haramayn, Imam Razi, and Qazi Abu Bakr Baqillani, persistence is the essence of existence, not an additional matter upon existence. Therefore, persistence will mean 'origination' (ijad). | 568 567 | Binding someone is not persistence itself but necessitates persistence. | 568 567 | According to the school of the masters of unveiling and witnessing (Kashf and Shuhud), persistence is the name for the renewal of similarities (tajaddud-e-amthal) for everything including substances. Therefore, in this school, persistence is the name for the origination of similarities at every moment. | 569 567 | Tenth Doubt. | 570 567 | Like 'Creator' (Khaliq) and 'Maker' (Bari), applying the attribute 'Qayyum' (Sustainer) to other than Allah is also not permissible; rather, scholars have declared takfir (excommunication) on it. | 570 567 | Not commanding to leave and commanding not to leave are two things that are not contradictory to each other. | 570 567 | Attributing something to Allah Almighty that is not worthy of His glory, or attributing ignorance, deficiency, and inability to Him, or applying attributes specific to Allah to other than Allah is disbelief (kufr). | 570 567 | An existential thing cannot become a type of non-existential thing. | 570 568 | The persistence that is from a human being is the name for 'leaving off

removal' (not of origination). | 570 568 | No thing becomes varied and divided with accompanying factors. | 571 | Important Note. | 571

फ़तावा रिज़विया जिल्द १३, १३

५६६ | उसने कसम खाई कि वह फलां के घर में नहीं रहेगा और फिर कहता है कि मेरी मुराद यह थी कि मैं फलां के घर किराए पर नहीं रहूँगा, तो नीयत सही नहीं है। इसलिए, अगर वह उस घर में बिना किराए के भी रहा तो कसम टूट जाएगी। | ५६८ ५६६ | पति ने एक थैली में कुछ पैसे रखे और अपनी पत्नी से कहा कि अगर तुमने सुबह तक इसमें से कुछ भी बाकी रखा तो तुम्हें तलाक है। अब अगर पत्नी ने इसमें से कुछ भी खर्च नहीं किया या कुछ खर्च किया और कुछ बाकी रखा तो तलाक हो जाएगा। | ५६८ ५६६ | अगर उसने कसम खाई कि मैं फलां के उस घर में नहीं रहूँगा जो उसने खरीदा है और कहता है कि मेरी मुराद वह थी जो उसने अपनी जात (स्वयं) के लिए खरीदा है तो यह नीयत मान ली जाएगी। | ५६८ ५६६ | वह 'बका' (निरंतरता) जो मनुष्य का गुण है, वह कर्म का अभाव है, न कि स्वयं एक कर्म। | ५६८ ५६६ | ज़ैद ने कोई चीज़ बैअ-ए-फासिद (अमान्य बिक्री) के साथ अम्र को बेची जिस पर काजी को गुस्सा आया और उसने कहा कि अगर मैं इस बैअ-ए-फासिद को बाकी रखूँ तो [यह होगा]। सूरज डूब गया और काजी ने बिक्री रद्द नहीं की तो वह हानिस (शपथ तोड़ने वाला) होगा। | ५६८ नवाँ संदेह। ५६७ | 'बका' (निरंतरता) जो कि हय्य और कय्यूम (अल्लाह) का कर्म है, शोधकर्ताओं के अनुसार 'वजूदी' (अस्तित्वगत) है। | ५६८ ५६७ | इसी संदेह का निवारण कि कभी-कभी मानवीय निरंतरता भी कर्म से प्राप्त हो जाती है जैसे ज़ैद को घर में लाकर जंजीर से बांधना, तो यह ज़ैद को घर में बाकी रखना है जबकि बांधना एक कर्म है। | ५६८ ५६७ | इमामुल हरमैन, इमाम राजी और काजी अबू बक्र बाक़िलानी के मज़हब पर बका वजूद ही है, न कि वजूद पर कोई अतिरिक्त चीज़। इसलिए बका का अर्थ 'ईजाद' (सृजन) होगा। | ५६८ ५६७ | किसी को बांधना स्वयं बका नहीं है बल्कि बका के लिए आवश्यक है। | ५६८ ५६७ | कश्फ़ और शुहूद (रहस्योद्घाटन और दर्शन) के उस्तादों के मज़हब पर बका हर चीज़ के अमिसाल (प्रतिरूपों) के तजद्दुद (नवीनीकरण) का नाम है, इसलिए इस मज़हब पर बका हर पल अमिसाल के ईजाद का नाम है। | ५६९ ५६७ | दसवां संदेह। | ५७० ५६७ | खालिक और बारी की तरह कय्यूम गुण का प्रयोग भी गैर-अल्लाह पर जायज़ नहीं है, बल्कि इस पर विद्वानों ने तकफ़ीर की है। | ५७० ५६७ | निकलने का हुक्म न देना और न निकलने का हुक्म देना, ये दोनों चीज़ें आपस में विरोधाभासी नहीं हैं। | ५७० ५६७ | अल्लाह तआला की ओर ऐसी चीज़ को निस्बत करना जो उसकी शान के लायक न हो, या उसकी ओर अज्ञानता, कमी और लाचारी की निस्बत करना, या अल्लाह के विशिष्ट गुणों का प्रयोग गैर-अल्लाह पर करना कुफ्र (अधर्म) है। | ५७० ५६७ | वजूदी चीज़ अदमी चीज़ की किस्म

नहीं बन सकती। | ५७० ५६८ | जो बका मनुष्य की ओर से हो, वह 'तुर्कए-अज़ाला' (निवारण का त्याग) का नाम है (न कि ईजाद का)। | ५७० ५६८ | कोई चीज़ अपने सहयोगियों के साथ विविध और विभाजित नहीं होती। | ५७१ | ज़रूरी नोट। | ५७१

पृष्ठ ५३ / ६८८

۵۶۶ | قسم کھائی کہ فلاں کے گھر نہ رہوں گا اور کہتا ہے کہ میری مراد یہ تھی کہ فلاں کے گھر کرایہ پر نہیں رہوں گا، تو نیت صحیح نہیں۔ لہٰذا اس کے گھر بلا کرایہ بھی رہائش پذیر ہوا تو قسم ٹوٹ جائے گی۔ | ۵۶۸ ۵۶۶ | خاوند نے تھیلی میں کچھ رقم رکھی اور بیوی کو کہا کہ اگر تو نے صبح تک اس میں سے کچھ باقی رکھا تو تجھے طلاق ہے۔ اب اگر بیوی نے اس میں سے کچھ بھی خرچ نہ کیا یا کچھ خرچ کیا اور کچھ باقی رکھا تو طلاق ہو جائے گی۔ | ۵۶۸ ۵۶۶ | اگر قسم کھائی کہ فلاں کے اس گھر میں نہیں رہوں گا جو اس نے خریدا ہے اور کہتا ہے کہ میری مراد یہ تھی کہ جو اس نے اپنی ذات کے لئے خریدا ہے تو یہ نیت مان لی جائے گی۔ | ۵۶۸ ۵۶۶ | جو ابقاء بشر کی صفت ہے وہ عدم فعل ہے نہ کہ فعل۔ | ۵۶۸ ۵۶۶ | زید نے کوئی چیز بیع فاسد کے ساتھ عمرو پر فروخت کی جس پر قاضی کو غصہ آیا اور کہا اگر میں یہ بیع فاسد باقی رکھوں تو یہ ہو جائے سورج غروب ہو گیا اور قاضی نے بیع فسخ نہ کی تو حانث ہوگا۔ | ۵۶۸ نواں شبہ۔ ۵۶۷ | ابقاء جو کہ حی و قیوم کا فعل ہے محققین کے نزدیک وجودی ہے۔ | ۵۶۸ ۵۶۷ | اسی شبہ کا ازالہ کہ کبھی انسانی ابقاء فعل سے بھی حاصل ہو جاتا ہے جیسے زید کو گھر میں لاکر زنجیر سے باندھنا، تو یہ زید کو گھر میں باقی رکھنا ہے حالانکہ باندھنا فعل ہے۔ | ۵۶۸ ۵۶۷ | امام الحرمین، امام رازی اور قاضی ابو بکر باقلانی کے مذہب پر بقاء عین وجود ہے نہ کہ وجود پر کوئی امر زائد، لہٰذا ابقاء بمعنی ایجاد ہوگا۔ | ۵۶۸ ۵۶۷ | کسی کو باندھنا خود ابقاء نہیں بلکہ مستلزم ابقاء ہے۔ | ۵۶۸ ۵۶۷ | ائمہ کشف و شہود کے مذہب پر بقاء جواہر سمیت ہر چیز کے امثال کے تجدد کا نام ہے لہٰذا اس مذہب پر ابقاء ہر لمحہ امثال کے ایجاد کا نام ہے۔ | ۵۶۹ ۵۶۷ | دسواں شبہ۔ | ۵۷۰ ۵۶۷ | خالق و باری کی طرح صفت قیوم کا اطلاق بھی غیر اللہ پر جائز نہیں

بلکہ اس پر علماء نے تکفیر کی ہے۔ | ۵۶۷ ۵۷۰ | نکلنے کا حکم نہ دینا اور نہ نکلنے کا حکم دینا یہ دونوں چیزیں آپس میں منافی نہیں۔ | ۵۶۷ ۵۷۰ | ایسی چیز کی نسبت اللہ تعالیٰ کی طرف کرنا جو اس کے شایان شان نہ ہو یا جہالت، نقص اور عجز کی نسبت اس کی طرف کرنا یا صفات مختصہ باللہ کا اطلاق غیر اللہ پر کرنا کفر ہے۔ | ۵۶۷ ۵۷۰ | وجودی چیز عدمی چیز کی قسم نہیں بن سکتی۔ | ۵۶۸ ۵۷۰ | جو ابقاء بشر کی طرف سے ہو وہ ترکِ ازالہ کا نام ہے (نہ کہ ایجاد کا)۔ | ۵۶۸ ۵۷۰ | کوئی شیئی مقارنات کے ساتھ متنوع و منقسم نہیں ہوتی۔ | ۵۷۱ | ضروری نوٹ۔ | ۵۷۱

صفحہ 53 / 688

Fatawa Razawiyya Volume 13 | 13

Page 571: The Deobandi gentlemen are such prisoners of ignorance that they give their independent legal opinion without even understanding the question. Page 572: The honorable letter from Maulana Ghulam Gilani Shams Abadi to the author (mercy of Allah be upon him), upon whose request the treatise 'Al-Jauhar al-Thameen' was written. Page 573: The same question on which Ala Hazrat (mercy of Allah be upon him) wrote a detailed and reasoned answer in the form of 'Al-Jauhar al-Thameen', the Mufti of Deoband gave an incomplete, citation-less, and incorrect answer. Page 573: Ala Hazrat's commentary on the Deobandi Mufti's answer. Page 573: The Deobandi Mufti's ignorance in not being able to distinguish between 'keeping' and 'leaving'. Page 574: Swearing or taking an oath on the Holy Quran for a lie is a very severe major sin. Page 574: If it is a true matter, an oath can be taken and the Quran can also be held. Page 574: The Word of Allah is His attribute, therefore an oath by it is a Shar'i oath. Page 574: Divine attributes are identical to the Essence, not distinct from it. Page 575: If something is said while holding the Mushaf (Quran), it will not be a Shar'i oath. Page 575: If a person says, "I place my hand on the Holy Quran and say I will do this," and then does not do it, atonement (Kaffarah) will be mandatory.

Page 576: One took an oath "I will not eat so-and-so's food", then imagined eating their food; the oath was not broken. Page 576: An amazing decision by Hazrat Ali (may Allah honor his face). Page 577: Explanation of a passage from 'Usul al-Shashi' and 'Fusul'. Page 577: A transitive verb cannot be realized without an object (Maf'ul Bihi). Page 577: A few people said inside a mosque that whoever takes money for a daughter or eats at a debtor's place shall be turned away from the Kalima and the Holy Quran. A document was also written, but later it was torn up and they started doing the same things. What is the ruling for them? Page 578: Taking money for a daughter or eating at a debtor's place, if it's due to the pressure of the debt, is impermissible. Page 578: Swore an oath that whoever does this shall be turned away from Kalima and Prayer, then broke the oath. If he believed this actually turns one away from Kalima and Prayer, he became a disbeliever, otherwise, he became a sinner and atonement (Kaffarah) is obligatory upon him. Page 578: Swore an oath not to let women go to weddings with wrong customs, then allowed them to go where wrong customs took place. Thus, two sins occurred: one for breaking the oath and second for sending them to a place of sin. Page 579: Those who break promises after taking an oath should neither be made arbiters nor should their testimony be

heard. Page 579: There is a danger of a breach in the Islam of those who taunt people who remain firm on their covenants.

Page 54 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | 13

पृष्ठ 571: देवबंदी हज़रात जहालत के ऐसे कैदी हैं कि सवाल समझे बिना ही अपना इज्तिहादी जवाब दे देते हैं। पृष्ठ 572: हज़रत मौलाना गुलाम गिलानी। शम्स आबादी का सम्माननीय पत्र लेखक (रहमतुल्लाहि अलैहि) के नाम, जिनके अनुरोध पर 'अल-जौहर अल-थमीन' शोध पत्र लिखा गया। पृष्ठ 573: जिस सवाल पर आला हज़रत (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने 'अल-जौहर अल-थमीन' के रूप में विस्तृत और सप्रमाण उत्तर लिखा, उसी सवाल पर देवबंदी मुफ्ती का अधूरा और बिना संदर्भ का गलत जवाब। पृष्ठ 573: देवबंदी मुफ्ती के जवाब पर आला हज़रत की टिप्पणी। पृष्ठ 573: देवबंदी मुफ्ती की अज्ञानता कि वह 'रखने' और 'छोड़ने' में अंतर नहीं समझ सका। पृष्ठ 574: झूठी बात पर कुरआन मजीद की कसम खाना या उठाना बहुत बड़ा गुनाह-ए-कबीरा है। पृष्ठ 574: अगर बात सच्ची हो तो कसम भी खा सकते हैं और कुरआन भी उठा सकते हैं। पृष्ठ 574: कलाम अल्लाह तआला की सिफत (गुण) है, इसलिए इसकी कसम शरीयत के अनुसार है। पृष्ठ 574: ईश्वरीय गुण स्वयं ईश्वर का अस्तित्व हैं, उससे अलग नहीं। पृष्ठ 575: मुसहफ़ शरीफ (कुरआन) हाथ में लेकर कोई बात कही तो वह शरीअत के अनुसार कसम नहीं होगी। पृष्ठ 575: अगर कोई कहे कि मैं कुरआन मजीद पर हाथ रखकर कहता हूँ कि ऐसा करूँगा और फिर न किया तो कफ़्फ़ारा वाजिब होगा।

पृष्ठ 576: कसम खाई कि फलां का खाना नहीं खाऊंगा, फिर उसके खाने की कल्पना की; कसम नहीं टूटी। पृष्ठ 576: हज़रत अली (करम अल्लाह वजहुल करीम) का एक अद्भुत फैसला। पृष्ठ 577: 'उसूल अल-शाशी' और 'फुसूल' की एक इबारत (अंश) की व्याख्या। पृष्ठ 577: सकर्मक क्रिया (फेल मुतअद्दी) कर्म (मफ़ऊल बिही) के बिना सिद्ध नहीं होती। पृष्ठ 577: कुछ लोगों ने मस्जिद के अंदर कहा कि जो व्यक्ति बेटी पर पैसा ले या कर्जदार के यहाँ खाना खाए वह कलमा शरीफ और कुरआन शरीफ से फिर जाए। इसका कागज भी लिखा गया, बाद में कागज फाड़ दिया और वही काम करने लगे। उनके लिए क्या हुक्म है? पृष्ठ 578: बेटी पर पैसा लेना और कर्जदार के यहाँ खाना खाना, यदि कर्ज के दबाव के कारण है, तो नाजायज है। पृष्ठ 578: कसम खाई कि जो ऐसा करे वह कलमा और नमाज़ से फिर जाए, फिर कसम तोड़ दी। यदि वह इसे वास्तव में कलमा और नमाज़ से फिरना समझता था तो काफिर हो गया, अन्यथा गुनहगार हुआ और उस पर कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) वाजिब है। पृष्ठ 578: कसम खाई कि औरतों को गलत रस्मों वाली शादी में नहीं जाने देंगे, फिर ऐसी शादी में जाने दिया जहाँ गलत रस्में हुईं। तो दोहरा गुनाह हुआ, एक कसम तोड़ने का और दूसरा गुनाह की जगह भेजने का। पृष्ठ 579: कसम खाकर वादा खिलाफी करने वालों को न तो पंच (हकम) बनाया

जाए और न ही उनकी गवाही सुनी जाए। पृष्ठ 579: अपने वादे पर कायम रहने वालों पर ताना मारने वालों के इस्लाम में फर्क आने का खतरा है।

पेज 54/688

۵۷۱ دیوبندی حضرات دیو جہالت کے ایسے اسیر ہیں کہ سوال سمجھے بغیر اپنا اجتہادی جواب دے دیتے ہیں۔ ۵۷۲ حضرت مولانا غلام گیلانی شمس آبادی جن کے استفتاء پر رسالہ الجوہر الثمین معرض تحریر میں آیا کا مکتوب گرامی بنام مصنف رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہما۔ ۵۷۳ جس سوال پر اعلیٰحضرت رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ نے رسالہ الجوہر الثمین کی صورت میں مفصل و مدلل جواب تحریر فرمایا اسی سوال پر مفتی دیوبند کا نامکمل اور بلا حوالہ جواب ناصواب۔ ۵۷۳ مفتی دیوبند کے جواب پر اعلیٰحضرت علیہ الرحمتہ کا تبصرہ۔ ۵۷۳ دیوبند مفتی کی جہالت کہ رکھنے اور چھوڑنے میں فرق نہ سمجھ سکا۔ ۵۷۴ جھوٹی بات پر قرآن مجید کی قسم کھانا یا اٹھانا سخت عظیم گناہ کبیرہ ہے۔ ۵۷۴ سچی بات ہو تو قسم بھی کھا سکتے ہیں اور قرآن بھی اٹھا سکتے ہیں۔ ۵۷۴ کلام اللہ تعالیٰ کی صفت ہے اس لئے اس کی قسم شرعی ہے۔ ۵۷۴ صفات الٰہیہ عین ذات ہیں نہ غیر ذات۔ ۵۷۵ مصحف شریف ہاتھ میں لے کر کوئی بات کہی تو قسم شرعی نہ ہوگی۔ ۵۷۵ کوئی شخص کہے کہ میں قرآن مجید پر ہاتھ رکھ کر کہتا ہوں کہ ایسا کروں گا اور پھر نہ کیا تو کفارہ لازم آئے گا۔

۵۷۶ قسم کھائی کہ فلاں کا کھانا نہ کھاؤں گا پھر اس کے کھانے کا تصور کیا، حانث نہ ہوا۔ ۵۷۶ حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم کا عجیب فیصلہ۔ ۵۷۷ اصول الشاشی اور فصول کی ایک عبارت کی تشریح۔ ۵۷۷ فعل متعدی بغیر مفعول بہ کے متحقق نہیں ہوتا۔ ۵۷۷ چند شخصوں نے مسجد کے اندر کہا کہ جو شخص بیٹی پر روپیہ لے یا قرضدار کے یہاں کھانا کھائے تو کلمہ شریف اور قرآن شریف سے پھرے، اس کا کاغذ بھی لکھا گیا بعد ازاں کاغذ پھاڑ ڈالا اور وہی کام کرنے لگے۔ ان کا کیا حکم ہے۔ ۵۷۸ بیٹی پر روپیہ لینا اور قرضدار کے یہاں کھانا اگر قرض کے دباؤ

سے ہے تو نا جائز ہے۔ ۵۷۸ قسم کھائی جو ایسا کرے کلمہ اور نماز سے پھرے، پھر قسم توڑ دی تو جو اس سے واقعہ کلمہ اور نماز سے پھرنا سمجھتا تھا کافر ہو گیا ورنہ گنہگار ہوا اور اس پر کفارہ واجب ہے۔ ۵۷۸ قسم کھائی کہ عورتوں کو غلط رسوم والی شادی میں نہ جانے دیں گے پھر ایسی شادی میں جانے دیا جہاں غلط رسمیں ہوئیں تو دوہرا گناہ ہوا، ایک گناہ قسم توڑنے کا دوسرا گناہ کی جگہ بھیجنے کا۔ ۵۷۹ قسم کھا کر وعدہ خلافی کرنے والوں کو نہ حکم بنایا جائے اور نہ ہی ان کی گواہی سنی جائے۔ ۵۷۹ عہد پر قائم رہنے والوں پر طعنہ کرنے والوں کے اسلام میں فرق آنے کا خطرہ ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 13

Ref No.	Content	Page No.
579	If a person says to someone in anger, "Eating or drinking at your house is forbidden for me," or "The water in your pitcher is forbidden for me," then Shari'a considers this an oath. If he eats or drinks at that house or from that pitcher, he must pay the expiation (kaffarah) for the oath.	583
579	If someone says, "If I talk to you, or come to your house, or eat these things, it is forbidden for me," then by way of *istihsan* (juristic preference), this situation is considered an oath.	583
579	The oath of making something lawful forbidden is itself an oath.	583
581	**Chapter of Vow (Bab al-Nazr)**	583
	To compare Makkah Mukarramah and Madinah Munawwarah to a ghost house or Kali's house is insolence, insult, and a word of disbelief (*kufr*).	583
581	Saying "I will make a vow to Allah" does not constitute a legal Shari'a vow; similarly, saying "I will give it to so-and-so" is merely a promise and will not even be a gift (*hiba*).	583
581	One should never turn back on a promise made; the Holy Quran has given a severe warning regarding this.	583
579	If a vow is made for the expenses of the Two Holy Sanctuaries (*Haramayn Sharifayn*) or for the scholars and the poor there, then it is best to spend it there, but it can also be spent elsewhere for the same purpose.	583
579	Fulfilling a Shari'a vow is obligatory.	583
579	Specifying a location in a vow is not legally binding.	583
581	A person who prevents someone from fulfilling a vow is a preventer of good (*mana' lil-khayr*).	583
581	If a request is made at the court of the Almighty Lord: "If I am granted a child, or illness is removed, or debt is paid, I will give this much charity in the path of Allah for the souls of the Holy Prophet (peace be upon him) or Ghaus al-Azam Pir Dastagir or any friend of Allah," then undoubtedly this vow is permissible and fulfilling it is obligatory.	583
581		584

Ref No.	Content	Page No.
	If someone said to make a vow of a thing and also to gift it, the method is to give those things to a poor person, then buy it back from them and give it to the one they said to gift it to.	
581	*Chahal Tan* refers to forty martyrs.	584
581	Making a vow in the name of Allah does not make animal sacrifice mandatory. For that, it is necessary to name the sacrifice (*qurbani*).	584
581	If a person dies after making a vow, the vow shall be fulfilled from his inheritance.	584
582	If someone specifies a portion of their business, for example, the sixteenth part, for Ghaus-e-Pak (may Allah be pleased with him) for sending rewards (*isale-thawab*), they can spend that amount on any religious work.	584
582	The Shari'a form of the vow of *Chahal Tan* and a powerful refutation of useless play and amusement.	584
582	Populating a desolate mosque is a very important task, and spending on it takes precedence.	584
582	A vow to feed friends for Milad-un-Nabi and Giyarwin, or to take sweets to mosques or feed the congregants, is not a jurisprudential (Fiqhi) vow; therefore, both rich and poor can eat from it.	584

फ़तावा रज़विया खंड १३

सं. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
५७९	यदि कोई व्यक्ति गुस्से में आकर किसी से कहे कि "तेरे घर का खाना-पीना मुझ पर हराम है" या "तेरे मटके का पानी मुझ पर हराम है", तो शरीयत में यह एक कसम (शपथ) है। यदि वह उस घर में खाएगा-पिएगा या उस मटके का पानी पिएगा, तो उसे कसम का कफ़्फ़ारा देना होगा।	५८३
५७९	कोई कहे कि "अगर मैं तुमसे बोलूँ या तुम्हारे घर आऊँ या ये चीज़ें खाऊँ तो मेरे हक़ में हराम है", तो 'इस्तिहसानन' यह स्थिति शपथ की है।	५८३
५७९	हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेना ही कसम है।	५८३
५८।	**नज़र का अध्याय (बाब-उन-नज़र)**	५८३
	मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा की तुलना भूत खाने या काली के घर से करना गुस्ताखी, अपमान और कुफ़्र (अविश्वास) का शब्द है।	५८३
५८।	"अल्लाह की नज़र करेंगे" कहने से शरीई नज़र नहीं होती, इसी तरह "फलाँ को दे देंगे" सिर्फ एक वादा है, यह हिबा (दान) भी नहीं होगा।	५८३
५८।	जो वादा किया है उससे कभी पीछे नहीं हटना चाहिए, कुरान शरीफ़ में इस पर सख्त चेतावनी दी गई है।	५८३
५७१	हरमैन शरीफैन के खर्चों के लिए या वहाँ के विद्वानों और गरीबों के लिए नज़र मानी, तो बेहतर यही है कि वहीं खर्च करे, पर दूसरी जगह भी उसी मद में खर्च कर सकता है।	५८३
५७१	शरीई नज़र को पूरा करना वाजिब (अनिवार्य) है।	५८३
५७१	नज़र में स्थान तय करना अमान्य (नामअतबर) है।	५८३
५८।	जो व्यक्ति नज़र पूरी करने से रोकता है, वह भलाई से रोकने वाला (मनाअ लिल-खैर) है।	५८३
५८।	यदि अल्लाह की बारगाह में यह विनती की जाए कि "अगर मुझे बेटा मिले या बीमारी दूर हो या कर्ज अदा हो जाए, तो मैं अल्लाह की राह में नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) या पीर दस्तगीर या किसी वलीउल्लाह की रूह के सवाब के लिए इतना दान करूँगा", तो निस्संदेह यह नज़र जायज़ है और इसे पूरा करना वाजिब है।	५८३

सं. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
५८।	एक चीज़ की नज़र मानने को कहा और हिबा (दान) करने को भी, तो तरीका यह है कि वह चीज़ किसी फ़क़ीर को दे दे, फिर उससे खरीद कर उस व्यक्ति को दे दे जिसे दान करने को कहा था।	५८४
५८।	'चहल तन' से तात्पर्य चालीस शहीद हैं।	५८४
५८।	अल्लाह के नाम पर नज़र करने से कुर्बानी ज़रुरी नहीं हो जाती। उसके लिए कुर्बानी का नाम लेना ज़रूरी है।	५८४
५८।	नज़र मानने के बाद यदि नज़र (व्यक्ति) मर जाए, तो उसकी विरासत से नज़र पूरी की जाएगी।	५८४
५८४	यदि अपने व्यापार में ग़ौस-ए-पाक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए एक हिस्सा तय किया, जैसे सोलहवाँ हिस्सा ईसाले-सवाब के लिए, तो उस रकम को किसी भी धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं।	५८४
५८४	'चहल तन' की मन्नत का शरीई स्वरूप और फ़ालतू खेल-तमाशे का ज़ोरदार खंडन।	५८४
५८४	वीरान मस्जिद को आबाद करना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है और इसमें खर्च करना प्राथमिकता है।	५८४
५८४	मिलाद-ए-पाक और ग्यारहवीं पर दोस्तों को खाना खिलाने, मस्जिदों में मिठाई ले जाने या नमाज़ियों को खिलाने की मन्नत शरीई (फ़िक़्ही) नज़र नहीं है, इसलिए अमीर और गरीब सभी इसे खा सकते हैं।	५८४

۵۷۹ | ایک شخص نے کسی سے غصہ میں آکر کہا کہ تیرے مکان کا کھانا پینا مجھ پر حرام ہے۔ یا کہا کہ تیرے مٹکے کا پانی مجھ پر حرام ہے، تو شرعاً یہ قسم ہے اگر اس کے گھر کھائے پئے گا اس کے مٹکے کا پانی پئے گا تو قسم کا کفارہ دینا آئے گا۔ | ۵۸۳ ۵۷۹ | کوئی شخص کہے اگر میں تم سے بولوں یا تمہارے مکان جاؤں یا یہ چیزیں کھاؤں تو میرے حق میں حرام ہے، تو استحساناً یہ صورت حلف کی ہے۔ | ۵۸۳ ۵۷۹ | یمین تحریم حلال ہی ہے۔ | ۵۸۳ ۵۸۱ | باب النذر | ۵۸۳ | مکہ معظمہ اور مدینہ منورہ کو بھوت خانہ کالی گھر کی مثل کہنا گستاخی و توہین و کلمہ کفر ہے۔ | ۵۸۳ ۵۸۱ | "اللہ کو نذر کریں گے" کہنے سے نذر شرعی نہ ہوئی، یونہی فلاں کو دیں گے صرف وعدہ ہے یہ ہبہ بھی نہ ہوگا۔ | ۵۸۳ ۵۸۱ | جو وعدہ کیا اس سے پھرنا ہر گز نہیں چاہئے، قرآن شریف میں اس پر سخت وعید فرمائی گئی ہے۔ | ۵۸۳ ۵۷۹ | حرمین شریفین کے مصارف کے لئے یا وہاں کے علماء و فقراء کے لئے نذر مانی تو انسب یہی ہے کہ وہیں خرچ کرے، دوسری جگہ بھی اسی مصرف میں خرچ کرسکتا ہے۔ | ۵۸۳ ۵۷۹ | نذر شرعی کی ادا واجب ہے۔ | ۵۸۳ ۵۷۹ | تعیین مکان نذر میں نامعتبر ہے۔ | ۵۸۳ ۵۸۱ | نذر پوری کرنے سے جو شخص روکے وہ مناع للخیر ہے۔ | ۵۸۳ ۵۸۱ | اگر بدرگاہ خداوند کریم سوال کیا جائے کہ مجھ کو فرزند عطا ہو یا بیماری دفع ہو یا قرض ادا ہو تو اس قدر خیرات فی سبیل اللہ بارواح رسول کریم علیہ الصلوۃ والسلام یا حضرت پیر دستگیر یا ولی اللہ کردوں گا، تو بلا شبہ یہ نذر جائز ہے اور اس کا پورا کرنا واجب ہے۔ | ۵۸۳ ۵۸۱ | ایک چیز کو نذر کرنے کو کہا اور ہبہ کرنے کو بھی، طریقہ یہ ہے کہ کسی فقیر کو وہ چیزیں دے دے پھر اس سے خرید کر جس کو ہبہ کرنے کے لئے کہا ہے اس کو دے دے۔ | ۵۸۴ ۵۸۱ | چہل تن چالیس شہداء ہیں۔ | ۵۸۴ ۵۸۱ | اللہ کے نام

نذر کرنے سے قربانی ضروری نہیں۔ اس کے لئے قربانی کا نام لینا ضروری ہے۔ | ۵۸۴ ۵۸۱ |
نذر ماننے کے بعد نذر فوت ہوجائے تو اس کے ترکہ سے نذر ادا کی جائے گی۔ | ۵۸۴ ۵۸۲ |
اپنے کاروبار میں غوث پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے متعین حصہ مثلاً سولہواں حصہ برائے
ایصال ثواب مقرر کیا تو اس رقم کو ہر دینی کام میں صرف کر سکتے ہیں۔ | ۵۸۴ ۵۸۲ | چہل
تنوں کی منت کی شرعی صورت اور فاضل لہو ولعب کا رد بلیغ۔ | ۵۸۴ ۵۸۲ | مسجد ویران کی
آبادی نہایت اہم کام ہے اور اس میں صرف کرنا مقدم ہے۔ | ۵۸۴ ۵۸۲ | میلاد مبارک اور
گیارھویں احباب کو کھانا کھلانے، مساجد میں شرینی لے جانے یا نمازیوں کو کھلانے کی نذر فقہی
نہیں لہٰذا امیر غریب سب کھا سکتے ہیں۔ | ۵۸۴

Fatawa Razawiya Volume 13 | Page 13

585 | If a specific animal is vowed for a religious offering (Nazr), changing it is not permissible. | 591 585 | Unless words of vowing (Nazr) are spoken, merely having an intention does not make anything obligatory. | 591 586 | Vowing to build a solid tomb (Mazar) is not a religious vow (Nazr-e-Shari'i), nor is its fulfillment Shariah-obligatory. | 591 586 | A complete clarification of non-religious and religious vows. | 591 586 | Vows for elders (pious predecessors) are in reality for Allah Almighty, so there is no harm in it. | 591 586 | Having bad suspicions about a Muslim is not permissible. | 591 586 | If one vows to give grain worth five rupees, one can give clothing of the same value to a needy person; the sewing cost will not be included in the vow. | 591 586 | If one vows to give the first month's salary, conventionally it would mean the salary for a full month. | 591 587 | Proof of fulfilling vows from Quranic verses. | 591 587 | The speech of every contractor, swearer, vower, and donor will be interpreted according to its customary meaning. | 591 587 | If the vower's intention is that vowing will change fate or the written destiny, then this belief is corrupt, and the Messenger of Allah (PBUH) forbade such vows. | 592 587 | Vow money cannot be given to one's ascendants, descendants, spouse, or a Sayyid. | 592 589 | If one vows a head (animal), meat of its value can also be given. | 592 589 | If one vows a month's salary and gives the money to a poor relative, the reward will be double. | 592 589 | Vowed that if my task is done, I'll offer an animal; if words used establish a Shariah obligation, then the animal is specified. | 592 589 | A person said he'd give 1/16th of his profit to Allah. He profited one rupee over cost, but two annas were spent on misc. expenses like employee salary. Does he give 1/16th of a rupee or 14 annas? | 592 589 | If the specifically vowed object is destroyed, the vow is voided. | 592 589 | A vow is not formed just by intention in the heart; it must be spoken verbally. | 592 590 | If the purpose of vowing to fill an arch (ritual) is just filling the arch, then this intention is futile. | 595 590 | Vowed 1/16th of business profit for Allah Almighty; what will be its expenditures? | 595 590 | How is it to vow for Milad Sharif? | 595 590 | Spoke words of vow to spend 1/16th of trade profits on good deeds for Allah; through this, one can support Milad, Giyarween, Iftar, parents, Sayyids, and scholars. | 595 590 | Holding a Milad gathering according to the practice of the two Holy Cities (Makkah/Madinah) is among the highest recommended acts. | 595

Page 56 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 13 | पेज 13

585 | यदि किसी विशेष पशु की धार्मिक मन्नत (नज़्र-ए-शरई) मानी गई है, तो उसे बदलना जायज़ नहीं है। | 591 585 | जब तक मन्नत के शब्द जुबान से न कहे जाएं केवल नीयत (इरादे) से कुछ भी अनिवार्य नहीं होता। | 591 586 | पक्का मज़ार बनवाने की मन्नत शरई मन्नत नहीं है, और न ही इसे पूरा करना शरीयत के अनुसार अनिवार्य है। | 591 586 | गैर-शरई और शरई मन्नत की पूर्ण व्याख्या। | 591 586 | बुजुर्गों के लिए मन्नत वास्तव में अल्लाह अज़्वजल के लिए होती है, इसलिए इसमें कोई हर्ज नहीं है। | 591 586 | किसी मुसलमान के प्रति कुधारणा (बदगुमानी) रखना जायज़ नहीं है। | 591 586 | यदि पांच रुपये का अनाज देने की मन्नत मानी है, तो ज़रूरतमंद को उतने का कपड़ा दिया जा सकता है; सिलाई का पैसा मन्नत में नहीं गिना जाएगा। | 591 586 | यदि पहले महीने के वेतन की मन्नत मानी है, तो सामान्यतः इसका अर्थ पूरे एक महीने का वेतन होगा। | 591 587 | कुरान की आयतों से मन्नत पूरी करने का प्रमाण। | 591 587 | प्रत्येक अनुबंधकर्ता, शपथ लेने वाले, मन्नत मानने वाले और वक्फ़ करने वाले की बात को उसी अर्थ में लिया जाएगा जो प्रचलित है। | 591 587 | यदि मन्नत मानने वाले की नीयत यह है कि मन्नत मानने से भाग्य या लिखा हुआ मुकद्दर बदल जाएगा, तो यह विश्वास भ्रष्ट है और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऐसी मन्नत से मना फरमाया है। | 592 587 | मन्नत का पैसा अपने माता-पिता, पूर्वजों, संतानों, पति-पत्नी या सैयद को नहीं दिया जा सकता। | 592 589 | यदि सिर (जानवर) की मन्नत मानी है, तो उसके मूल्य का मांस भी दिया जा सकता है। | 592 589 | एक महीने के वेतन की मन्नत मानी और वह पैसा किसी गरीब रिश्तेदार को दे दिया, तो दोगुना सवाब (पुण्य) होगा। | 592 589 | मन्नत मानी कि यदि मेरा काम हो जाए तो मैं जानवर भेंट करूँगा; यदि शब्द ऐसे हैं जिनसे शरई अनिवार्यता सिद्ध होती है, तो जानवर निश्चित हो गया। | 592 589 | एक व्यक्ति ने कहा कि मुझे जो लाभ होगा उसका सोलहवां हिस्सा अल्लाह के लिए निकालूँगा। लागत से अधिक एक रुपया लाभ हुआ, लेकिन अन्य खर्चों जैसे कर्मचारियों के वेतन आदि में दो आने खर्च हो गए। अब वह एक रुपये का सोलहवां हिस्सा निकाले या चौदह आने का? | 592 589 | यदि मन्नत की गई विशिष्ट वस्तु स्वयं नष्ट हो जाए, तो मन्नत समाप्त हो जाती है। | 592 589 | केवल दिल में इरादा कर लेने से मन्नत नहीं होती, इसके लिए जुबान से कहना होगा। | 592 590 | यदि 'ताक' भरने की मन्नत का उद्देश्य केवल ताक भरना ही है, तो यह नीयत व्यर्थ है। | 595 590 | अपने व्यापार के लाभ का सोलहवां हिस्सा अल्लाह तबारक व ताला के लिए मन्नत किया; इसके खर्च के मद क्या होंगे? | 595 590 | मिलाद शरीफ की

मन्नत मानना कैसा है? | 595 590 | जुबान से मन्नत के शब्द कहे कि अपने व्यापारिक लाभ का सोलहवां हिस्सा अल्लाह के लिए नेक कामों में खर्च करूँगा; इससे मिलाद, ग्यारहवीं शरीफ, रमज़ान इफ़्तारी और अपने माता-पिता, सादात और विद्वानों की सेवा सब कुछ कर सकता है। | 595 590 | मिलाद शरीफ की सभा, यदि हरम शरीफ के प्रचलित तरीके पर हो, तो सर्वश्रेष्ठ मुस्तहबात (पसंदीदा कार्यों) में से है। | 595

۵۸۵ | خاص معین جانور کی نذر شرعی مانی تو اس کا بدلنا جائز نہیں۔ | ۵۹۱ ۵۸۵ | جب تک زبان سے الفاظ نذر نہ کہے صرف نیت سے کچھ لازم نہیں آتا۔ | ۵۹۱ ۵۸۶ | مزار پختہ بنوانے کی نذر شرعی نہیں، نہ اس کا پورا کرنا شرعاً واجب ہے۔ | ۵۹۱ ۵۸۶ | نذر غیر شرعی و نذر شرعی کی تنقیح تام۔ | ۵۹۱ ۵۸۶ | بزرگوں کی منت حقیقتۂ اللہ عزوجل کے لئے ہوتی ہے اس لئے اس میں حرج نہیں۔ | ۵۹۱ ۵۸۶ | مسلمان پر بدگمانی جائز نہیں۔ | ۵۹۱ ۵۸۶ | پانچ روپیہ کا غلہ دینے کی منت مانی تو فقیر کو اتنے کا کپڑا دے سکتا ہے سلائی کا پیسہ نذر میں محسوب نہ ہوگا۔ | ۵۹۱ ۵۸۶ | پہلے مہینے کی تنخواہ کی منت مانی تو عرفاً پورے ایک مہینہ کی تنخواہ مراد ہوگی۔ | ۵۹۱ ۵۸۷ | نذر پورا کرنے کا ثبوت آیات قرآنی سے۔ | ۵۹۱ ۵۸۷ | ہر عاقد، حالف، ناذر اور واقف کے کلام کو اسی معنی پر محمول کیا جائے گا جو متعارف ہے۔ | ۵۹۱ ۵۸۷ | نذر والے کی نیت اگر یہ ہو کہ منت ماننے سے مقدر بدل جائے گا اور تقدیر کا نوشتہ پلٹ جائے گا تو یہ اعتقاد فاسد ہے اور ایسی نذر سے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے منع فرمایا ہے۔ | ۵۹۲ ۵۸۷ | نذر کے روپے اپنے اصول، فروع، زوج، زوجہ اور سید کو نہیں دے سکتے۔ | ۵۹۲ ۵۸۹ | سرکی منت مانی تو اس کی قیمت کا گوشت بھی دے سکتے ہیں۔ | ۵۹۲ ۵۸۹ | ایک ماہ کی تنخواہ دینے کی منت مانی اور روپے غریب عزیز کو دے دئے تو دُگنا ثواب ہوگا۔ | ۵۹۲ ۵۸۹ | منت مانی کہ میرا یہ کام ہو جائے تو جانور نذر کروں گا، اگر الفاظ ایسے ہوں جن سے وجوب شرعی ثابت ہو تو جانور متعین ہو گیا۔ | ۵۹۲ ۵۸۹ | ایک شخص نے کہا کہ مجھے جو نفع ہو گا اس میں سے سولہواں حصہ واسطے اللہ کے نکالوں گا اب اس کو لاگت سے زائد ایک روپیہ نفع ہوا لیکن متفرق خرچ یعنی تنخواہ ملازمین وغیرہ میں دو آنے صرف ہو گئے باقی چودہ آئے رہے،

اب وہ روپے کا سولہواں حصہ نکالے یا چودہ آنے کا۔ | ۵۹۲ ۵۸۹ | منذور بعینہ ہلاک ہو جائے تو نذر ساقط ہے۔ | ۵۹۲ ۵۸۹ | صرف دل میں ارادہ کر لینے سے منت نہیں ہوتی اس کے لئے زبان سے کہنا ہوگا۔ | ۵۹۲ ۵۹۰ | طاق بھرنے کی منت سے اگر طاق بھرنا ہی مقصود ہو تو یہ نیت لغو ہے۔ | ۵۹۵ ۵۹۰ | اپنی تجارت میں سولہواں حصہ اللہ تبارک و تعالیٰ کے لئے نذر کیا اس کے مصارف کیا ہوں گے۔ | ۵۹۵ ۵۹۰ | میلاد شریف کی منت ماننا کیسا ہے۔ | ۵۹۵ ۵۹۰ | بے الفاظ نذر زبان سے کہا کہ اپنے منافع تجارت سے سولہواں نیک کاموں میں اللہ تعالیٰ کے لئے صرف کیا کروں گا، اس سے محض میلاد، گیارہویں شریف، افطاری رمضان اور اپنے والدین و سادات و علماء کی خدمت سب کچھ کر سکتا ہے۔ | ۵۹۵ ۵۹۰ | مجلس میلاد شریف کہ طریقہ رائجہ حرمین شریفین پر ہو اعلیٰ مستحبات سے ہے۔ | ۵۹۵

Fatawa Razawiyya - Volume 13

Page	Topic / Ruling
595	Hiring (Ajara) for an act of obedience is void.
595	Later scholars have declared wages for leading prayers (Imamat), calling the prayer (Azan), and teaching the Quran as permissible.
595	If a portion of trade profits was set aside for Allah's sake without using specific words of vow (Nazr), with the intention of giving to the poor in God's name, then that amount can be used for Milad Sharif, Giyarween Sharif, Ramadan Iftar, etc. However, it should now only be fed to the needy; it can also be given to Sayyids, scholars, and parents if they are in need, because this is not a mandatory charity (Sadaqa Wajiba).
596	What is fed to one's family and children is referred to as 'Sadaqa' in the Hadiths.
596	If specific words of vow (Nazr) were uttered verbally, then it cannot be given to parents, Sayyids, or the wealthy. It can be given to other needy people even if they are one's paternal aunt, maternal aunt, paternal uncle, maternal uncle, or siblings.
597	The meat of a Sharia vow (Mannat) cannot be eaten by oneself, nor by one's ascendants or descendants, nor can it be fed to any Hashmi or wealthy person.
597	The avenues for expenditure of Zakat are the same as those for Nazr (vows).
598	Vows (Nazr) for other than God are prohibited in Islamic jurisprudence (Fiqh).
598	The vows made for saints during their apparent or hidden life are not 'Nazr Fiqhi' (jurisprudential vows).
599	Support from the writings of Shah Rafi-ud-Din, brother of Shah Abdul Aziz Muhaddith Dehlavi.

Page	Topic / Ruling
596	If a gathering of Giyarween Sharif or Milad Sharif is organized and the 'Nazr' property is given into the ownership of a poor person, it is correct.
596	Gathering for the remembrance of the Prophet (peace be upon him) or any saint to convey rewards is not contradictory to 'Nazr' and 'Sadaqa'.
596	The ruling for Zakat property and specific Nazr is the same.
596	Zakat and Nazr property can also be given to needy students, whether by making clothes for them or giving them grain or food and making them owners of it. However, Zakat and Nazr will not be fulfilled by feeding them while they stay in one's house.
596	Nazr or Zakat cannot be adjusted against the salary of a Muadhin (caller to prayer). Yes, if he calls the Azan without a salary and is needy, it can be given.
599	Reasoning based on the writings of Allama Syed Abdul Ghani Nablusi, may Allah have mercy on him.
599	A vow for past saints is metaphorically an expression of charity for the servants at their shrines.
599	If Zakat is given to a poor person and named a 'loan', it will be valid.
599	The importance is in the meaning, not the word.
599	The great Imam Abul Hasan Noor al-Millah wa al-Din Ali bin Yusuf bin Jarir Shattanufi is an incomparable Imam.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 13

पृष्ठ	विषय / नियम
595	आज्ञापालन (इबादत) पर अनुबंध (इजा़रा) शून्य है।
595	बाद के विद्वानों ने इमामत, अज़ान और कुरान पढ़ाने के लिए पारिश्रमिक को वैध घोषित किया है।
595	यदि 'नज़्र' शब्द का उपयोग किए बिना व्यापार लाभ का एक हिस्सा अल्लाह के लिए निर्धारित किया गया था और नीयत अल्लाह के नाम पर गरीबों को देने की थी, तो उस राशि का उपयोग मिलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़ और रमज़ान इफ्तार आदि के लिए किया जा सकता है। लेकिन अब इसे केवल ज़रूरतमंदों को ही खिलाया जाना चाहिए; ज़रूरत पड़ने पर सैयदों, विद्वानों और माता-पिता को भी दिया जा सकता है क्योंकि यह अनिवार्य दान (सदक़ा वाजिबा) नहीं है।
596	परिवार और बच्चों को जो कुछ खिलाया जाता है, उसे हदीसों में 'सदक़ा' कहा गया है।
596	

पृष्ठ	विषय / नियम
597	शरीयत के अनुसार मानी गई मन्नत (मन्नत-ए-शरई) का मांस न तो व्यक्ति स्वयं खा सकता है, न ही अपने पूर्वजों या वंशजों को खिला सकता है, और न ही किसी हाशमी या धनी व्यक्ति को खिलाया जा सकता है।
597	ज़कात के खर्च के जो मद (मसरफ़) हैं, वही नज़्र (मन्नत) के भी हैं।
598	अल्लाह के अलावा किसी और के लिए फ़िक़ही 'नज़्र' (मन्नत) करना मना है।
598	संतों (औलिया-ए-कराम) के लिए उनके प्रकट या गुप्त जीवन के दौरान जो मन्नतें मानी जाती हैं, वे 'फ़िक़ही नज़्र' नहीं हैं।
599	

पृष्ठ	विषय / नियम
	यदि 'नज़्र' के विशिष्ट शब्द मौखिक रूप से कहे गए हों, तो अब इसे माता-पिता, सैयदों या अमीरों को नहीं दिया जा सकता। अन्य ज़रूरतमंदों को दिया जा सकता है, भले ही वे बुआ, मौसी, चाचा, मामा या भाई-बहन हों।
596	यदि ग्यारहवीं शरीफ़ या मिलाद शरीफ़ की सभा आयोजित की जाए और नज़्र की संपत्ति किसी गरीब के स्वामित्व में दे दी जाए, तो यह सही है।
596	नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) या किसी संत की याद में सवाब पहुँचाने के लिए एकत्रित होना नज़्र और सदक़ा के विरुद्ध नहीं है।
596	ज़कात की संपत्ति और विशिष्ट नज़्र का नियम एक ही है।
596	ज़कात और नज़्र की संपत्ति ज़रूरतमंद छात्रों को भी दी जा सकती है, चाहे उन्हें कपड़े बनवा दिए जाएँ या अनाज या भोजन देकर उन्हें मालिक बना दिया जाए। हाँ, अपने घर में बैठाकर खिलाने से ज़कात और नज़्र अदा नहीं होगी।
596	मुअज़्ज़िन के वेतन में नज़्र या ज़कात का हिसाब नहीं लगाया जा सकता। हाँ, यदि वह बिना वेतन के अज़ान देता है और ज़रूरतमंद है, तो उसे दिया जा सकता है।
	शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी के भाई शाह रफ़ी-उद-दीन साहब के लेखन से समर्थन।
599	अल्लामा सैय्यद अब्दुल ग़नी नाबलुसी (अलैहिर्रहमा) के लेखन से तर्क।
599	बीते हुए औलिया के लिए मन्नत लाक्षणिक रूप से उनके मज़ार के खादिमों (सेवकों) पर दान करना है।
599	यदि गरीब को ज़कात दी जाए और उसे 'ऋण' कहा जाए, तो यह वैध होगा।
599	महत्व अर्थ (तात्पर्य) का है, न कि शब्द का।
599	महान इमाम अबुल हसन नूरुल मिल्लत वद-दीन अली बिन यूसुफ़ बिन जरीर शतनूफ़ी एक अद्वितीय इमाम हैं।

صفحہ	مضمون / حکم
۵۹۵	طاعت پر اجارہ باطل ہے۔
۵۹۵	متاخرین نے امامت، اذان اور تعلیم قرآن پر اجرت کو جائز قرار دیا ہے۔
۵۹۵	الفاظِ نذر کے بغیر آمدنی کا کچھ حصہ منافع تجارت کا اللہ تعالیٰ کا مقرر کیا اور نیت خاص مساکین کو خدا کے نام پر دینے کی تھی تو اس رقم سے میلاد شریف، گیارھویں شریف اور افطاری رمضان وغیرہ کرا سکتا ہے مگر اب صرف محتاجوں کو کھلائے، سادات و علماء اور والدین کو بھی بحالتِ حاجتمندی دے سکتا ہے کیونکہ یہ صدقہ واجبہ نہیں ہے۔
۵۹۶	اہل و عیال اور اولاد کو جو کچھ کھلایا جاتا ہے احادیث میں اس پر صدقہ کا اطلاق آیا ہے۔

صفحہ	مضمون / حکم
۵۹۷	منت شرعی کا گوشت نہ تو خود کھا سکتا ہے نہ اپنی اصل اور فرع کو کھلا سکتا ہے اور نہ ہی کسی ہاشمی یا غنی کو کھلا سکتا ہے۔
۵۹۷	جو مصرف زکوۃ ہے وہی مصرف نذر ہے۔
۵۹۸	غیر خدا کے لئے نذر فقہی کی ممانعت ہے۔
۵۹۸	اولیائے کرام کے لئے ان کی حیات ظاہری خواہ

صفحہ	مضمون / حکم
۵۹۶	اگر خاص الفاظِ نذر زبان سے ادا کئے تو اب والدین، سادات اور اغنیاء کو نہیں دے سکتا، دیگر محتاجوں کو دے سکتا ہے اگرچہ اس کی پھوپھی، خالہ، چچا، ماموں اور بہن بھائی ہوں۔
۵۹۶	اگر مجلس گیارھویں شریف یا میلاد شریف منعقد کر کے مال نذر فقیر کی ملک کر دیا تو درست ہے۔
۵۹۶	ذکرِ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یا کسی ولی کو ایصالِ ثواب کے لئے اجتماعِ نذر و صدقہ کے منافی نہیں۔
۵۹۶	مالِ زکوۃ اور خاص نذر کا حکم ایک ہی ہے۔
۵۹۶	مالِ زکوۃ اور مالِ نذر محتاج طالبِ علموں کو بھی دے سکتے ہیں خواہ کپڑے بنا دے خواہ اناج یا کھانا انہیں دے کر مالک کر دے، ہاں گھر میں بٹھا کر کھلانے سے زکوۃ و نذر ادا نہ ہو گی۔
۵۹۹	شاہ رفیع الدین صاحب برادرِ شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی کی عبارت سے تائید۔
۵۹۹	علامہ سید عبدالغنی نابلسی علیہ الرحمۃ کی عبارت سے استدلال۔
۵۹۹	اولیاءِ گزشتہ کے لئے منتِ مجازاً ان کے خادمانِ قبور پر تصدق سے عبارت ہے۔
۵۹۹	فقیر کو زکوۃ دے اور قرض کا نام لے تو صحیح ہو جائے گی۔
۵۹۹	اعتبار معنی کا ہے نہ کہ لفظ کا۔
۵۹۹	باطنی میں جو نذریں کہی جاتی ہیں یہ نذرِ فقہی نہیں۔

صفحہ	مضمون / حکم
	مؤذن کی تنخواہ میں نذر یا زکوۃ محسوب نہیں ہو سکتی
۵۹۶	ہاں اگر بلا تنخواہ اذان دیتا ہے اور محتاج ہے تو دے سکتے ہیں۔

صفحہ	مضمون / حکم
۵۹۹	امام اجل ابوالحسن نور الملة والدین علی بن یوسف بن جریر شطنوفی بے نظیر امام ہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

- Shams al-Din al-Dhahabi is the leader in the field of Rijal (narrators). 599
- Eleven narrations regarding vows to the saints from the blessed book Bahjat al-Asrar. 599
- The first narration. 599
- The miracle of the sandals of our master Ghaus al-Azam (may Allah be pleased with him). 600
- Salvation is found through the remembrance of Ghaus al-Azam. 600
- The second narration. 600
- Our master Ghaus-e-Pak (may Allah be pleased with him) would accept offerings and consume them himself. 600
- The third narration. 601
- An incident of the generosity and benevolence of Ghaus al-Azam. 601
- The fourth narration. 601
- The virtues of Shaykh Baqa' bin Battu (may Allah have mercy on him). 601
- The fifth narration. 601
- The greatness of Shaykh Mansur al-Bata'i (may mercy be upon him). 601
- The sixth narration. 602
- The status of Shaykh Ali bin Haiti (may mercy be upon him). 602
- The seventh narration. 602
- Abu Sa'id al-Qaylawi (may Allah have mercy on him) is among the senior saints of Iraq. 602
- The eighth narration. 602
- Saints' knowledge of the state of the fetus in the mother's womb. 602
- The unseen knowledge (Ghayb) of the saints. 603
- The ninth narration. 603
- The saints of Allah understand the speech of animals. 603
- A unique incident involving a villager. 603
- The tenth narration. 604
- The saints of Allah rule over lions. 604
- The interventions and unseen knowledge of the saints of Allah. 604
- Falling at the feet of saints and kissing their feet. 604
- Allah Almighty does not hide anything from the saints. 605
- A saint's watch over another saint's peril. 605
- The eleventh narration. 605

• The command of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) to make an offering to Sayyida Tahira Nafisa for the fulfillment of needs. 605
• Evidence from the text of Shah Waliullah Dehlawi (may mercy be upon him). 605
• Inference from the text of Shah Abdul Aziz Dehlawi (may mercy be upon him). 607
• Fourteen great and myth-shattering benefits from the texts of Shah Waliullah and Shah Abdul Aziz (may Allah have mercy on them). 607
• The verses in the collection of sermons composed by Mawlawi Abdullah, mentioned in the query, are not in accordance with the Ahl al-Sunnah. 608
• The text of Barakat al-Imdad mentioned in the query pertains to seeking help (istimdad). 608

फतावा रज़विया तेरहवाँ भाग 13

- शम्सुद्दीन ज़हबी रिजा़ल (वर्णनकर्ताओं) के विज्ञान में अग्रणी हैं। 599
- पवित्र पुस्तक बहजतुल असरार के हवाले से संतों (औलिया) के लिए मन्नत के बारे में ग्यारह वर्णन। 599
- पहला वर्णन। 599
- हमारे स्वामी गौसुल आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की खड़ाऊँ का चमत्कार। 600
- गौसुल आज़म के स्मरण से मोक्ष मिलता है। 600
- दूसरा वर्णन। 600
- हुज़ूर गौसे पाक (रज़ियल्लाहु अन्हु) मन्नतें स्वीकार करते थे और स्वयं भी ग्रहण करते थे। 600
- तीसरा वर्णन। 601
- गौसुल आज़म की उदारता और दयालुता की एक घटना। 601
- चौथा वर्णन। 601
- शेख़ बका़ बिन बत्तू (रहमतुल्लाहि अलैहि) के गुण। 601
- पाँचवाँ वर्णन। 601
- शेख़ मंसूर बताइही (अलैहिर्रहमा) की महानता। 601
- छठा वर्णन। 602
- शेख़ अली बिन हैती (अलैहिर्रहमा) का पद। 602
- सातवाँ वर्णन। 602
- अबू सईद क़ैलवी (रहमतुल्लाहि अलैहि) इराक़ के बड़े संतों में से हैं। 602
- आठवाँ वर्णन। 602
- संतों का माता के गर्भ में पल रहे बच्चे की स्थिति को जानना। 602
- संतों का परोक्ष ज्ञान (ग़ैब)। 603
- नौवाँ वर्णन। 603
- अल्लाह के संत जानवरों की बातचीत समझते हैं। 603
- एक ग्रामीण की एक अनोखी घटना। 603
- दसवाँ वर्णन। 604
- अल्लाह के संत शेरों पर शासन करते हैं। 604

• अल्लाह के संतों के हस्तक्षेप और परोक्ष ज्ञान। 604
• संतों के चरणों में गिरना और चरण स्पर्श करना। 604
• अल्लाह तआला संतों से कुछ भी गुप्त नहीं रखता। 605
• एक संत की दूसरे संत के खतरे पर नज़र। 605
• ग्यारहवाँ वर्णन। 605
• हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आदेश कि ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सैयदा ताहिरा नफीसा की मन्नत मानो। 605
• शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी (अलैहिर्रहमा) के पाठ से साक्ष्य। 605
• शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी (अलैहिर्रहमा) के पाठ से निष्कर्ष। 607
• शाह वलीउल्लाह और शाह अब्दुल अज़ीज़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) के पाठों से चौदह महान और भ्रम तोड़ने वाले लाभ। 607
• मौलवी अब्दुल्ला द्वारा रचित प्रवचनों के संग्रह के वे छंद जो पूछताछ में उल्लिखित हैं, अहलुस सुन्नत के अनुसार नहीं हैं। 608
• पूछताछ में उल्लिखित बरकातुल इमदाद का पाठ सहायता मांगने (इस्तिम्दाद) से संबंधित है। 608

- شمس الدین ذہبی فن رجال کے امام ہیں۔ ۵۹۹
- نذور اولیاء کرام سے متعلق کتاب مستطاب بہجۃ الاسرار کے حوالہ سے گیارہ روایات۔ ۵۹۹
- پہلی روایت۔ ۵۹۹
- سید ناغوث الاعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کھڑاؤں کا کمال۔ ۶۰۰
- سرکار غوث اعظم کی یاد سے نجات ملتی ہے۔ ۶۰۰
- دوسری روایت۔ ۶۰۰
- حضور غوث پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ نذریں قبول فرماتے اور خود بھی تناول فرماتے تھے۔ ۶۰۰
- تیسری روایت۔ ۶۰۱
- غوث اعظم کی فیاضی اور غریب نوازی کا ایک واقعہ۔ ۶۰۱
- چوتھی روایت۔ ۶۰۱
- شیخ بقاء بن بطو رحمہ اللہ علیہ کے فضائل۔ ۶۰۱
- پانچویں روایت۔ ۶۰۱
- شیخ منصور بطائحی علیہ الرحمہ کی عظمت۔ ۶۰۱
- چھٹی روایت۔ ۶۰۲
- شیخ علی بن ہیتی علیہ الرحمہ کا مقام۔ ۶۰۲
- ساتویں روایت۔ ۶۰۲
- ابوسعید قیلوی رحمتہ اللہ علیہ اکابر اولیاء عراق سے ہیں۔ ۶۰۲

- آٹھویں روایت۔ ۶۰۲
- اولیاء کرام کا مادہ کے پیٹ کے حال کو جاننا۔ ۶۰۲
- اولیاء کے علوم غیبیہ۔ ۶۰۳
- نویں روایت۔ ۶۰۳
- اولیاء اللہ جانوروں کی گفتگو سمجھتے ہیں۔ ۶۰۳
- ایک دہقانی کا انوکھا واقعہ۔ ۶۰۳
- دسویں روایت۔ ۶۰۴
- اولیاء اللہ شیروں پر حکومت کرتے ہیں۔ ۶۰۴
- اولیاء اللہ کے تصرفات و علوم غیبیہ۔ ۶۰۴
- ولیوں کے قدموں پر گرنا اور قدمبوسی کرنا۔ ۶۰۴
- اللہ تعالیٰ اولیاء سے کوئی چیز مخفی نہیں رکھتا۔ ۶۰۵
- ولی خطرہ پر ولی کی نظر۔ ۶۰۵
- گیارہویں روایت۔ ۶۰۵
- حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا حکم فرمانا کہ حاجت برآری کے لئے سیدہ طاہرہ نفیسہ کی نذر مانو۔ ۶۰۵
- شاہ ولی اللہ محدث دہلوی علیہ الرحمتہ کی عبارت سے استشہاد۔ ۶۰۵
- شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی علیہ الرحمتہ کی عبارت سے استدلال۔ ۶۰۷
- شاہ ولی اللہ اور شاہ عبدالعزیز رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہا کی عبارتوں کے چودہ عظیم و باہیت کش فوائد۔ ۶۰۷

- مجموعہ خطب مؤلفہ مولوی عبدالہ کے وہ اشعار جو استفتاء میں مذکور ہیں موافق اہلسنت نہیں ہے۔ ۶۰۸
- استفتاء میں مذکور برکات الامداد کی عبارت متعلق بہ استمداد ہے۔ ۶۰۸

Fatawa Razawiya Volume 13 Page 13

Chapter of Expiation (Bab al-Kaffarah)

609: In the Pure Sharia, expiation (kaffarah) applies to a sin that has not exceeded the limits of severity; for a sin that has crossed the limits of ugliness and atrocity, expiation cannot be a cause for forgiveness; rather, sincere repentance (taubah sadiqah) is mandatory for it. 614: Accusing a Muslim without seeing, saying they committed adultery with their daughter, is strictly forbidden and a major sin. One who makes such an accusation deserves severe divine punishment. 609: The testimony of an infidel (kafir) is not acceptable. 614: Dishonoring someone is not exclusive to adultery; it is also used for physical abuse. 609: The statement of the claimant is not admissible. 614: A person who falsely accuses someone of adultery is punished with eighty lashes and their testimony is rejected. 610: If someone likens their wife to their sister or mother (Zihar), expiation will be mandatory. However, if (Allah forbid) they consider their sister or mother as their wife, there is no expiation. This crime can never be forgiven without sincere repentance. 615: Where the "Hadd" punishment for slander (Qazf) cannot be applied due to the absence of Islamic law, Muslims should demand public repentance from the accuser; if they refuse, boycott them. 610: Taking an oath on the Quran and then breaking it is an insult to the Holy Quran. One should immediately perform sincere repentance for this, otherwise, a painful and great punishment, and the fire of hell, awaits. 615: The Holy Quran has forbidden sitting with the unjust. 610: The expiation for breaking an oath is to free a slave, feed ten poor people, or clothe them. If one is unable to do so, they must fast for three consecutive days. 615: What kind of witnesses are required to prove adultery. 611: Description of the afterlife punishment for a drunkard. 615: Description of the words used for witnessing adultery. 611: Expiation is for an "effective" oath (Yamin Muna'qidah), not for a false oath regarding the past (Yamin Ghamus). 615: To slander someone, to unlawfully dishonor someone, or to use deceit and fraud against someone is a sin, but Sharia has not fixed a specific "Hadd" punishment for it. An Islamic judge can apply discretionary punishment (Ta'zir) at their discretion. In Ta'zir, striking more than 39 lashes is prohibited, provided it is not a slander of adultery, otherwise the "Hadd" of Qazf is mandatory.

Book of Legal Punishments and Discretionary Punishments (Kitab al-Hudood wa al-Tazir)

614: The proof of adultery depends on four eye-witnesses, otherwise eighty lashes of "Hadd-e-Qazf" will be applied to the accuser. 614: If a woman accuses a man of adultery, the "Hadd" of slander (Qazf) becomes applicable to her, but if Islamic law is not implemented there and the punishment cannot be established, then the Sharia command is that Muslims should demand public repentance from her.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 पृष्ठ 13

कफ़्फ़ारे का अध्याय (बाब अल-कफ़्फ़ारह)

609: शरीयत-ए-मुतह्हरा में कफ़्फ़ारा उस गुनाह पर आता है जो बुराई में हद से न गुज़रा हो; बुराई और क़बाहत में हद से गुज़रे हुए गुनाह के लिए कफ़्फ़ारा माफ़ी का कारण नहीं हो सकता, बल्कि उसके लिए तौबा-ए-सादिक़ा (सच्ची तौबा) लाज़िम है। 614: बिना देखे किसी मुसलमान पर तोहमत लगाना कि उसने अपनी बेटी के साथ ज़िना किया, सख़्त हराम क़तई और गुनाह-ए-कबीरा है। ऐसी तोहमत लगाने वाला सख़्त अज़ाब-ए-इलाही का हक़दार होता है। 609: काफ़िर की गवाही स्वीकार नहीं। 614: आबरू उतारना केवल ज़िना के लिए विशेष नहीं है, बल्कि मारपीट के लिए भी बोला जाता है। 609: मुद्दई (दावा करने वाले) की बात काबिले समाअत नहीं। 614: ज़िना की झूठी तोहमत लगाने वाले पर अस्सी कोड़ों की सज़ा है और वह मरदूद-उश-शहादत (जिसकी गवाही स्वीकार न हो) है। 610: अगर अपनी बीवी को अपनी बहन या माँ से उपमा दी (ज़िहार किया) तो कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा, लेकिन अगर (मआज़-अल्लाह) अपनी बहन या माँ को अपनी बीवी बना लिया तो कोई कफ़्फ़ारा नहीं। सच्ची तौबा के बिना यह जुर्म हरगिज़ माफ़ नहीं हो सकता। 615: जहाँ इस्लामी क़ानून न होने के कारण हद-ए-क़ज़्फ़ (अपमानजनक झूठे आरोप की सज़ा) न लगाई जा सके वहाँ मुसलमान तोहमत लगाने वाले से एलानिया तौबा कराएं यदि वह न करे तो उसका बहिष्कार (सोशल बायकॉट) करें। 610: क़ुरान शरीफ़ उठाकर अहद करना और फिर उसे तोड़ देना क़ुरान शरीफ़ की तौहीन है, जिस पर बहुत जल्द सच्ची तौबा करे वरना अज़ाब-ए-अज़ीम, आलीम और नार-ए-जहीम (दर्दनाक और महान अज़ाब और जहन्नम की आग) का इंतज़ार करे। 615: ज़ालिम के पास बैठने से क़ुरान मजीद ने मना फ़रमाया। 610: क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा गुलाम आज़ाद करना, दस मिस्कीनों को खाना खिलाना या कपड़े पहनाना है, और यदि इस पर क़ादिर न हो तो तीन दिन लगातार रोज़े रखना है। 615: ज़िना को साबित करने के लिए कैसे गवाहों की ज़रूरत है। 611: शराबी की आख़िरत की सज़ा का बयान। 615: ज़िना की गवाही के शब्दों का बयान। 611: कफ़्फ़ारा यमीन-ए-मुनअक़िदा (होने वाली बात पर खाई गई क़सम) पर है, यमीन-ए-ग़मूस (अतीत के बारे में झूठी क़सम) का कफ़्फ़ारा नहीं। 615: किसी पर बहतान बाँधना, नाजायज़ तौर पर आबरू लेना, दगा और फ़रेब किसी के भी साथ करना गुनाह है, शरीयत में इस पर कोई "हद" (निश्चित सज़ा) मुक़र्रर नहीं। हाकिम-ए-शरअ अपनी सूझबूझ से ताज़ीर (विवेकाधीन दंड) दे सकता है और ताज़ीर में 39 कोड़ों से ज़्यादा मारना मना है, बशर्ते कि बहतान ज़िना का न हो, वरना हद-ए-क़ज़्फ़ लाज़िम है।

हुदूद और ताज़ीर की किताब (किताब अल-हुदूद वल-ताज़ीर)

614: ज़िना का सबूत चार चश्मदीद गवाहों पर निर्भर है, वरना इल्ज़ाम लगाने वाले पर हद-ए-क़ज़फ़ के अस्सी कोड़े लगेंगे। 614: यदि किसी औरत ने किसी मर्द पर ज़िना की तोहमत लगाई तो उस पर हद-ए-क़ज़फ़ लाज़िम आई, मगर वहाँ इस्लामी क़ानून लागू नहीं है और हद क़ायम नहीं हो सकती, तो अब शरीयत का हुक्म यह है कि मुसलमान उससे एलानिया तौबा कराएं।

नीचे: पृष्ठ 688 का 59

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

باب الکفارۃ

۶۰۹ شرع مطہر میں کفارہ اس گناہ پر آتا ہے جو شناعت میں حد سے نہ گزرا ہو، شناعت و قباحت میں حد سے گزرے ہوئے گناہ کے لئے کفارہ موجبِ معافی نہیں ہو سکتا بلکہ اس کے لئے توبہِ صادقہ لازم ہے۔ ۶۱۴ بغیر دیکھے کسی مسلمان پر تہمت لگانا کہ اس نے اپنی بیٹی کے ساتھ زنا کیا سخت حرام قطعی اور گناہِ کبیرہ ہے۔ ایسی تہمت لگانے والا سخت عذاب الٰہی کا مستحق ہوتا ہے۔ ۶۰۹ کافر کی گواہی قبول نہیں۔ ۶۱۴ آبرو اتارنا زنا کے لئے خاص نہیں مار پیٹ کے لئے بھی بولا جاتا ہے۔ ۶۰۹ مدعی کا قول مسموع نہیں۔ ۶۱۴ زنا کی جھوٹی تہمت لگانے والے پر اسی کوڑے کی سزا ہے اور وہ مردود الشہادت ہے۔ ۶۱۰ اگر اپنی بیوی کو اپنی بہن یا ماں سے تشبیہ دی تو کفارہ لازم ہوگا لیکن اگر (معاذ اللہ) اپنی بہن یا ماں کو اپنی بیوی بنالیا تو کوئی کفارہ نہیں۔ بغیر توبہ صادقہ یہ جرم ہرگز معاف نہیں ہو سکتا۔ ۶۱۵ جہاں اسلامی قانون نہ ہونے کی وجہ سے حد قذف نہ لگائی جاسکے وہاں مسلمان تہمت لگانے والے سے اعلانیہ توبہ کرائیں نہ کرے تو اس سے مقاطعہ کریں۔ ۶۱۰ قرآن شریف اٹھا کر عہد کرنا اور پھر توڑ دینا قرآن شریف کی توہین ہے جس پر بہت جلد توبہ صادقہ کرے ورنہ عذاب عظیم والیم اور نارِ جہیم کا منتظر رہے۔ ۶۱۵ ظالم کے پاس بیٹھنے سے قرآن مجید نے منع فرمایا۔ ۶۱۰ قسم توڑنے کا کفارہ غلام آزاد کرنا، دس مسکین کو کھانا دینا یا کپڑا پہنانا ہے اور اس پر قادر نہ ہو تو تین دن پے در پے روزے رکھنا ہے۔ ۶۱۵ اثبات زنا کے لئے کیسے گواہ درکار ہیں۔ ۶۱۱ شرابی کی اخروی سزا کا بیان۔ ۶۱۵ زنا کی شہادت کے الفاظ کا بیان۔ ۶۱۱ کفارہ یمین منعقد پر ہے یمین غموس کا کفارہ نہیں۔ ۶۱۵ کسی پر بہتان باندھنا، ناجائز طور پر آبرو لینا، دغا و فریب کسی کے ساتھ ہو، گناہ ہے، شریعت میں اس پر

حد مقرر نہیں۔ حاکمِ شرع اپنی صوابدید سے تعزیر کرسکتا ہے اور تعزیر میں ۳۹ کوڑے سے زیادہ مارنا منع ہے بشرطیکہ بہتان زنا کا نہ ہو ورنہ حد قذف لازم ہے۔

کتاب الحدود والتعزیر

۶۱۴ زنا کا ثبوت چار عینی شاہدوں پر ہوتا ہے ورنہ الزام لگانے والے پر اسی کوڑے حد قذف کے لگیں گے۔ ۶۱۴ عورت نے کسی مرد پر زنا کی تہمت لگائی اس پر حد قذف لازم آئی مگر وہاں اسلامی قانون نافذ نہیں اور حد قائم نہیں ہو سکتی۔ تو اب حکم شرعی یہ ہے کہ مسلمان اس سے اعلانیہ توبہ کرائیں۔

Fatawa Razawiya Volume 13 13

Proof of adultery is not established by bazaar talks.	618	Adultery does not affect the marriage of the adulterer except when it establishes Musaharat (prohibited degrees of relationship by marriage), such as committing adultery with the mother or daughter of one's wife.	618
For the proof of adultery, sufficient Shari'ah testimony or sufficient confession by the adulterer and the adulteress is necessary.	618	There is no harm in socializing with the adulterer and the adulteress after repentance.	619
Even if it is proven that a woman is an adulteress, it does not affect the marriage.	618	Deobandi-minded people are apostates, socializing with them is forbidden.	619
If a woman allows adultery with her husband's father or son, the prohibition of Musaharat will be established and the marriage will become void.	618	If the husband is not satisfied with the wife's adultery, there is no blame on him.	619
It is not mandatory for a husband to divorce an adulteress.	618	People who strive for adultery or support the adulterer and adulteress without repentance after adultery are also deserving of Shariah punishment.	619
Just as divorce occurs by tongue, it also occurs by pen when written without Shariah compulsion.	618	Someone committed adultery with a woman and the husband did not seek punishment out of leniency; this act is commendable.	620
Writing is like speech.	618	If a man confesses to adultery and the woman denies it, the statement of both will be considered correct regarding themselves.	620
	618		621

If the divorce deed mentions revocable divorce (Talaq-e-Raji) but the husband confesses to irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in), it becomes irrevocable.		If a woman denies adultery and the man confesses to it with her, then anyone who accuses the woman of adultery solely on the basis of the man's confession will be a great sinner and liable to the same 80 lashes punishment.	
If an adulteress is divorced, it is mandatory for her to spend the waiting period (Iddah) in the same house, and the husband is liable for dower and maintenance during Iddah.	618	A man who confesses to adultery will be declared an adulterer and the prescribed punishment (Hadd) will be carried out. If there is no Islamic state, Muslims should excommunicate him from the community and stop socializing with him until he repents publicly.	621
The punishment is only that which is according to Shariah; seeking anything contrary to it is unlawful.	618	Adultery cannot be proven until the Day of Judgment by nonsensical, meaningless, and groundless witnesses.	622
Those who decide against what Allah has revealed are oppressors.	618		

व्यभिचार का प्रमाण बाज़ार की बातों से नहीं मिलता।	६१८	व्यभिचारी के निकाह पर व्यभिचार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, सिवाय इसके कि उससे मुसाहारत (विवाह के माध्यम से प्रतिबंधित रिश्ते) स्थापित हो जाए, जैसे कि अपनी पत्नी की माँ या बेटी के साथ व्यभिचार करना।	६१८
व्यभिचार के प्रमाण के लिए पर्याप्त शरीयत गवाही या व्यभिचारी और व्यभिचारिणी का पर्याप्त स्वीकारोक्ति आवश्यक है।	६१८	पश्चात्ताप के बाद व्यभिचारी और व्यभिचारिणी के साथ मेल-जोल में कोई हर्ज नहीं है।	६१९
यदि किसी स्त्री का व्यभिचारिणी होना सिद्ध भी हो जाए, तब भी निकाह में कोई अंतर नहीं आता।	६१८	देवबंदी विचारधारा वाले लोग धर्मत्यागी हैं, उनसे मेल-जोल वर्जित है।	६१९
यदि कोई स्त्री अपने पति के पिता या पुत्र के साथ व्यभिचार करती है, तो मुसाहारत की हुरमत (निषेध) स्थापित हो जाएगी और निकाह शून्य हो जाएगा।	६१८	यदि पत्नी के व्यभिचार पर पति राजी न हो, तो उस पर कोई आरोप नहीं है।	६१९
व्यभिचारिणी को तलाक देना पति पर अनिवार्य नहीं है।	६१८	जो लोग व्यभिचार के लिए प्रयास करते हैं या व्यभिचार के बाद बिना पश्चात्ताप के व्यभिचारी और व्यभिचारिणी का समर्थन करते हैं, वे भी शरीयत की सजा के पात्र हैं।	६१९
जिस प्रकार तलाक जुबान से होता है, उसी प्रकार कलम से भी होता है जब बिना किसी शरई मजबूरी के लिखा गया हो।	६१८	किसी ने स्त्री के साथ व्यभिचार किया और पति ने चश्मपोशी (उपेक्षा) करते हुए सजा नहीं दिलवाई, तो यह कार्य प्रशंसनीय है।	६२०

लेखन भाषण के समान है।	६१८	पुरुष व्यभिचार स्वीकार करता है और स्त्री इंकार करती है, तो अपने-अपने बारे में दोनों का कथन सही माना जाएगा।	६२०
यदि तलाकनामे में तलाक-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) हो लेकिन पति तलाक-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक) का इकरार करे, तो वह बाइन हो जाएगा।	६१८	स्त्री व्यभिचार से इंकार करती है और पुरुष उसके साथ व्यभिचार का इकरार करता है, तो जो व्यक्ति केवल पुरुष के इकरार के आधार पर स्त्री पर व्यभिचार का आरोप लगाएगा, वह गंभीर पापी होगा और उसे भी ८० कोड़ों की सजा मिलेगी।	६२१
यदि व्यभिचारिणी को तलाक दिया गया, तो स्त्री के लिए उसी घर में इद्दत गुज़ारना अनिवार्य है, और पति पर महर और इद्दत का खर्च अनिवार्य है।	६१८	व्यभिचार स्वीकार करने वाले पुरुष को व्यभिचारी करार देकर हद (सजा) जारी की जाएगी। यदि इस्लामी राज्य न हो, तो मुसलमान उसे बिरादरी से बाहर कर दें और उससे मेल-जोल छोड़ दें जब तक कि वह सार्वजनिक रूप से पश्चात्ताप न कर ले।	६२१
सजा वही है जो शरीयत के अनुसार है, इसके विपरीत मांग करना नाजायज़ है।	६१८	बेतुके, अर्थहीन और आधारहीन गवाहों से कयामत तक व्यभिचार सिद्ध नहीं हो सकता।	६२२
अल्लाह के उतारे हुए के खिलाफ फैसला करने वाले ज़ालिम हैं।	६१८		

زانی کے نکاح پر زنا سے کوئی اثر نہیں پڑتا مگر

زنا کا ثبوت بازاری باتوں سے نہیں ۶۱۸ یہ کہ اس سے مصاہرت ثابت ہو جیسے اپنی زوجہ ۶۱۸

ہوتا۔ کی ماں یا بیٹی سے زنا کرے۔

ثبوت زنا کے لئے کافی شہادت

توبہ کے بعد زانی و زانیہ سے میل جول میں حرج

شرعیہ یا کافی اقرار زانی و زانیہ ۶۱۸ ۶۱۹

نہیں۔

لازم ہے۔

عورت کا زانیہ ہونا ثابت ہو جائے

دیوبندی عقیدہ والے مرتدین ہیں ان سے میل جول

تب بھی نکاح میں کچھ فرق نہیں ۶۱۸ ۶۱۹

منع ہے۔

آتا۔

عورت اگر شوہر کے باپ یا بیٹے

سے زنا کرائے تو حرمت مصاہرت عورت کے زنا پر شوہر راضی نہ ہو تو اس پر

۶۱۸ ۶۱۹

ثابت ہو جائے گی اور نکاح فاسد ہو کچھ الزام نہیں۔

جائے گا۔

جو لوگ زنا میں ساعی ہوں یا بعد زنا بلاوجہ توبہ

زانیہ کو طلاق دینا شوہر پر واجب

۶۱۸ زانی و زانیہ کے حامی ہوں وہ بھی مستحقِ سزائے ۶۱۹

نہیں۔

شرع ہیں۔

۶۱۸ ۶۲۰

طلاق جس طرح زبان سے ہوتی ہے اسی طرح قلم سے جبکہ بلا مجبوری شرعی لکھا ہو۔		کسی عورت کے ساتھ کسی نے زنا کیا شوہر نے ازراہِ چشم پوشی سزا نہ دلوائی، یہ فعل محمود ہے۔	
الکتاب کالخطاب۔	۶۱۸	مرد زنا کا اقرار کرتا ہے اور عورت انکار کرتی ہے اپنے اپنے بارے میں دونوں کا قول صحیح مانا جائے گا۔	۶۲۰
طلاق نامہ میں طلاقِ رجعی ہو مگر شوہر طلاقِ بائن کا اقرار کرے تو بائن ہو گئی۔	۶۱۸	عورت منکرِ زنا ہے اور مرد اس سے زنا کا مقر، تو جو شخص فقط اقرارِ مرد کی بناء پر عورت پر تہمت زنا لگائے گا سخت گنہگار اور اسی ۸۰ کوڑوں کا سزاوار ہوگا۔	۶۲۱
زانیہ کو طلاق دی تو عورت کو عدت اسی مکان میں گزارنا لازم ہے اور شوہر پر مہر اور نفقہ عدت لازم ہے۔	۶۱۸	مردِ مقرِ زنا کو زانی قرار دے کر حد جاری کی جائیگی اگر اسلامی سلطنت نہ ہو تو مسلمان اس کو برادری سے خارج کریں اور اس سے میل جول چھوڑ دیں جب تک وہ اعلانیہ توبہ نہ کرے۔	۶۲۱
سزا وہی ہے جو مطابق شرع ہے اس کے خلاف کی خواستگاری ناجائز ہے۔	۶۱۸	بیہودہ بے معنی اور بے اصل گواہوں سے زنا قیامت تک ثابت نہیں ہو سکتا۔	۶۲۲
منزل من اللہ کے خلاف فیصلہ کرنے والے ظالم ہیں۔	۶۱۸		

Fatawa-e-Razviyya Volume 13

- Statement on the conditions for proving adultery through testimony. (623)
- Sins are of three types: minor ones that do not reach the limit of 'hadd' (statutory punishment), those exceeding 'hadd' such that even 'hadd' cannot be their expiation, and moderate ones that are purified by 'hadd'. (625)
- If the conditions for testimony of adultery are not met, the witnesses themselves will be subject to the punishment for 'qazf' (false accusation of adultery). (623)
- There is 'hadd' for drinking wine; why not for drinking urine? (625)
- One witness gave eyewitness testimony of adultery, saying he saw the act itself. The second only saw them lying naked. Neither adultery will be proven nor will 'hadd' be implemented. (623)
- There is 'hadd' for adultery with an unrelated woman; why not for marriage with prohibited kin? (625)
- If there is a discrepancy in the timing of the testimony for adultery, the testimony will be rejected. (623)
- Hind's first cousin (son of her paternal uncle) grabbed her arm from behind and twisted it; Hind accuses him of ill intent, although she herself is of bad character. In this case, there is no blame on the cousin. If there was thick clothing in between, there is no fault, otherwise, he should not have grabbed the shoulder. (626)
- Women cannot be witnesses regarding adultery. (623)
- Accusing a Muslim of a false charge is among heinous acts. (626)
- Hearsay testimony is not acceptable even for property worth two coins, let alone for an important matter like adultery. (623)
- Joking and physical horseplay with a sister-in-law (brother's wife) is forbidden. (626)
- Testimony for adultery based on hearing it from outside will be unacceptable. (623)
- A husband who intentionally turns a blind eye [to his wife's infidelity] is a "Dayyuth" (cuckold). (626)
- Paradise is forbidden for a "Dayyuth". (626)
- If a husband admits that his father performed acts like kissing and cuddling with his wife, she becomes forbidden for him. (623)

- Adultery is forbidden with everyone, whether a Muslim or a non-Muslim woman; to declare adultery with a non-Muslim woman as lawful is 'kufr' (disbelief). (624)
- If someone's relatives do not prevent them from obscenity and indecency, they are partners in the sin and deserving of punishment. (626)
- Repentance is obligatory for adulterers. (624)
- If a minor has intercourse with an animal, they should be warned. If an adult does such an act, they should be punished and the animal should be slaughtered and burnt. (627)
- If a male and female adulterer do not desist from their deeds, they should be boycotted. (624)
- It is necessary for every person to stop evil deeds according to their capacity; they should not fall short in this. If the concerned person does not desist, no blame lies on them, and if they are consenting, they are themselves criminals; one can also sever ties with them. (628)
- There is no 'hadd' (fixed punishment) for marriage with permanently prohibited relatives. (625)

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 13

- शहादत से ज़िना (व्यभिचार) के सुबूत के लिए शराइत (शर्तों) का बयान। (623)
- गुनाह तीन किस्म के हैं: हल्के जो हद की हद तक न हों, हद से बढ़े हुए, कि हद भी उसका कफ़्फ़ारा न हो सके और मुतवस्सित, कि हद से पाक हो जाएँ। (625)
- अगर शहादत-ए-ज़िना की शराइत पूरी न हों तो खुद गवाही देने वालों पर हद-ए-कज़्फ़ (झूठी तोहमत की सज़ा) जारी होगी। (623)
- शराब नोशी पर हद है, पेशाब नोशी पर क्यों नहीं। (625)
- एक गवाह ने ज़िना की ऐनी शहादत दी कि कामिल फ़िल-मिहलह (यानी संभोग करते हुए) देखा। दूसरे ने नंगे लेटे हुए होने की, न ज़िना साबित होगा न हद जारी होगी। (623)
- अजनबी औरत से ज़िना पर हद है, महा़रम (जिनसे निक़ाह हराम हो) से निक़ाह पर क्यों नहीं। (625)
- ज़िना की शहादत में वक्त का इख्तिलाफ़ (अंतर) हुआ शहादत मरदूद (अस्वीकृत) होगी। (623)
- हिंदा के चचेरे भाई ने उसका बाज़ू पीछे की तरफ से पकड़ कर फेरा, हिंदा उस पर बदनीयती का इल्ज़ाम लगाती है हालांकि वह खुद बदचलन है, इस सूरत में चचेरे भाई पर इल्ज़ाम नहीं। अगर मोटा कपड़ा दरमियान में ह़ायल (बाधक) था तो कोई कुसूर नहीं वरना उसको मोंढा (कंधा) पकड़ना नहीं चाहिए था। (626)
- औरतें ज़िना के बारे में गवाह नहीं हो सकती हैं। (623)
- मुसलमान पर तोहमत रखना अफ़आ़ल-ए-शनीआ (बुरे कामों) में से है। (626)
- सुनी-सुनाई गवाही तो दो कौड़ी के माल में भी मकबूल नहीं, चे जायका (तो फिर) ज़िना जैसा अहम मामला हो। (623)
- भावाज (भाभी) से मज़ाक और हाथापाई हराम है। (626)
- बाहर से सुन कर ज़िना की गवाही देनी ना-मक़बूल होगी। (623)
- शौहर जान बूझ कर चश्मपोशी (अनदेखा) करता है तो "दयूष" है। (626)
- दयूष पर जन्नत हराम है। (626)
- शौहर इकरार करे कि उसके बाप ने उसकी बीवी से अफ़आ़ल-ए-मिस्ल-ए-बोस-ओ-किनार (चुंबन और आलिंगन जैसे कार्य) किए, औरत उस पर हराम हो गई। (623)

- ज़िना मुस्लिमा और काफ़िरा सब के साथ हराम है, ज़िना-ए-काफ़िरा को जो हलाल करार दे तो कुफ़्र है। (624)
- किसी के अज़ीज़-ओ-अकारिब (रिश्तेदार) उसको फ़हाशी (अश्लीलता) व बे-हयाई से मना नहीं करते तो शरीक-ए-गुनाह और मुस्तहिक़-ए-अज़ाब (सज़ा के हकदार) हैं। (626)
- ज़िनाकारों पर तौबा फ़र्ज़ है। (624)
- जानवर से ना-बालिग ने मुजामअत (मैथुन) की तो तंबीह (चेतावनी) की जाए, और बालिग ने ऐसी हरकत की तो सज़ा दी जाए और जानवर को ज़बह कर के जला दिया जाए। (627)
- ज़ानी और ज़ानिया अपने करतूत से बाज़ न आएँ तो उनका बाइकाट किया जाए। (624)
- हर शख्स पर उसकी वुसअ़त (क्षमता) के मुताबिक बुरे काम से रोकना ज़रूरी है, इसमें कोताही न करे। और मुतअल्लका (संबंधित व्यक्ति) बाज़ न आए तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं और राज़ी हो तो खुद मुजरिम, उससे भी कतअ़-ए-ताल्लुक़ (संबंध विच्छेद) किया जा सकता है। (628)
- मुहर्रमात-ए-अबदिया (जिनसे हमेशा के लिए निकाह हराम हो) से निकाह में हद नहीं। (625)

पृष्ठ 61 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم

- شہادت سے زنا کے ثبوت کے لئے شرائط کا بیان۔ (۶۲۳)
- گناہ تین قسم کے ہیں: ہلکے جو حد کی حد تک نہ ہوں، حد سے بڑھے ہوئے، کہ حد بھی اس کا کفارہ نہ ہوسکے، اور متوسط، کہ حد سے پاک ہو جائیں۔ (۶۲۵)
- اگر شہادتِ زنا کی شرائط پوری نہ ہوں تو خود گواہی دینے والوں پر حدِ قذف جاری ہوگی۔ (۶۲۳)
- شراب نوشی پر حد ہے، پیشاب نوشی پر کیوں نہیں۔ (۶۲۵)
- ایک گواہ نے زنا کی عینی شہادت دی کہ کامیل فی المکحلۃ دیکھا۔ دوسرے نے ننگے لیٹے ہوئے ہونے کی، نہ زنا ثابت ہو گا نہ حد جاری ہوگی۔ (۶۲۳)
- اجنبیہ سے زنا پر حد ہے محارم سے نکاح پر کیوں نہیں۔ (۶۲۵)
- زنا کی شہادت میں وقت کا اختلاف ہوا شہادت مردود ہوگی۔ (۶۲۳)
- ہندہ کے چچازاد بھائی نے اس کا بازو پشت کی طرف سے پکڑ کر پھیرا، ہندہ اس پر بدنیتی کا الزام لگاتی ہے حالانکہ خود بد چلن ہے، اس صورت میں چچازاد بھائی پر الزام نہیں۔ اگر موٹا کپڑا درمیان میں حائل تھا تو کوئی قصور نہیں ورنہ اس کو مونڈھا پکڑنا نہیں چاہئے تھا۔ (۶۲۶)
- عورتیں زنا کے بارے میں گواہ نہیں ہو سکتی ہیں۔ (۶۲۳)
- مسلمان پر تہمت رکھنا افعالِ شنیعہ سے ہے۔ (۶۲۶)
- سنی سنائی گواہی تو دو کوڑی کے مال میں بھی مقبول نہیں چہ جائیکہ زنا جیسا اہم معاملہ ہو۔ (۶۲۳)

- بھاوج سے مذاق اور ہاتھا پائی حرام ہے۔ (۶۲۶)
- باہر سے سن کر زنا کی گواہی دینی نامقبول ہوگی۔ (۶۲۳)
- شوہر جان بوجھ کر چشم پوشی کرتا ہے تو "دیوث" ہے۔ (۶۲۶)
- دیوث پر جنت حرام ہے۔ (۶۲۶)
- شوہر اقرار کرے کہ اس کے باپ نے اس کی بیوی سے افعالِ مثل بوس و کنار وغیرہ کئے، عورت اس پر حرام ہوگئی۔ (۶۲۳)
- زنا مسلمہ اور کافرہ سب کے ساتھ حرام ہے، زنا کافرہ کو جو حلال قرار دے تو کفر ہے۔ (۶۲۴)
- کسی کے عزیز و اقارب اس کو فحاشی و بے حیائی سے منع نہیں کرتے تو شریکِ گناہ اور مستحقِ عذاب ہیں۔ (۶۲۶)
- زناکاروں پر توبہ فرض ہے۔ (۶۲۴)
- جانور سے نابالغ نے مجامعت کی تو تنبیہ کی جائے، اور بالغ نے ایسی حرکت کی تو سزا دی جائے اور جانور کو ذبح کر کے جلا دیا جائے۔ (۶۲۷)
- زانی اور زانیہ اپنے کرتوت سے باز نہ آئیں تو ان کا بائیکاٹ کیا جائے۔ (۶۲۴)
- ہر شخص پر اس کی وسعت کے مطابق بُرے کام سے روکنا ضروری ہے اس میں کوتاہی نہ کرے۔ اور متعلقہ باز نہ آئے تو اس پر کوئی الزام نہیں اور راضی ہو تو خود مجرم، اس سے بھی قطع تعلق کیا جا سکتا ہے۔ (۶۲۸)
- محرماتِ ابدیہ سے نکاح میں حد نہیں۔ (۶۲۵)

Fatawa Ridawiyya | Volume 13 | Page 13

[629] What is the ruling if an adulterer and adulteress are found in the act of adultery, and what is the ruling if they are seen meeting and interacting frequently? [641] Politically motivated execution is not permissible for anyone other than the Imam, and even for the Imam, execution is only permissible for those major sins that cause transmissible/widespread harm (muta'addi al-darar). Execution for minor sins or major sins that do not cause widespread harm is not permissible.

[629] The right of political governance/punishment belongs to the Sultan. [642] Zahidi is a Mu'tazilite and is well-known for gathering all sorts of reports (wet and dry indiscriminately), untrustworthy and unreliable.

[629] Unjustly killing a Muslim is a severe major sin, and retaliation (qisas) is mandatory upon the killer. [644] Calling any Muslim or scholar rejected (mardood), an owl, etc., without a valid Shari'ah reason and causing them unjust harm is prohibited (Haram).

[629] The ruling to kill an adulterer and adulteress is not absolute; rather, it is obligatory to first reprimand, beat, and overpower them. If they separate, then it is prohibited for the common public to kill them. Yes, if four testimonies are provided, or four confessions are made in four separate sessions in accordance with Shari'ah, then the Sultan shall stone (rajam) whoever among them is married (muhsan). [644] Whoever harms a Muslim without a valid Shari'ah reason has harmed the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him.

[629] In which scenario is a non-Sultan permitted to kill an adulterer and adulteress? [645] The status of the scholars of religion is most high and exalted.

[630] Anxiety/confusion regarding the issue of "killing an adulterer in the act of adultery" and the author's reconciliation between them. [645] One who disrespects the status of scholars is a hypocrite and deserves discretionary punishment (ta'zir).

[633] If the removal of an evil can be achieved without killing, then killing is not permitted. [645] Inherently, every Muslim is a believer. In the custom of some regions, calling weavers (bunkars) 'Momin' might be due to their peaceful nature, and using this word as a taunt/insult is a double sin.

[633] Prevention of adultery falls under the removal of evil, and the removal of evil is for the sake of Allah Almighty; therefore, mahram and non-mahram (stranger)

women are equal in this regard. [645] A believer is one from whose harms his neighbors are safe.

[640] If one of two commanded actions is missed, the other does not become nullified. [646] Despising any Muslim because of their profession is bad.

[640] Committing one of two sins does not make the other sin permissible. [646] If someone was beaten for not performing prayer and their watch broke, the price/ compensation for it must be paid.

फ़तावा रिज़विया | जिल्द 13 | पृष्ठ 13

[629] यदि व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को व्यभिचार की स्थिति में पाया जाए तो क्या हुक्म है, और उन्हें आते-जाते, मिलते-जुलते देखा जाए तो क्या हुक्म है? [641] शासनादेश (सियसत) के तहत हत्या इमाम के अलावा किसी के लिए जायज़ नहीं है, और इमाम के लिए भी केवल उन बड़े गुनाहों (कबायर) में हत्या जायज़ है जो दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाले (मुतअद्दी अज़-ज़रर) हों, छोटे गुनाहों या दूसरों को नुकसान न पहुँचाने वाले बड़े गुनाहों में हत्या जायज़ नहीं है।

[629] सियसत (शासन/दंड) का अधिकार सुल्तान को है। [642] ज़ाहिदी मुअतज़िली है और हर तरह की (सही-गलत) बातें जमा करने के लिए जाना जाता है, अविश्वसनीय और अविश्वस्त है।

[629] किसी मुस्लिम की नाहक (अन्यायपूर्ण) हत्या करना बहुत बड़ा गुनाह है और कातिल पर किसास (बदला) लाज़िम है। [644] बिना किसी शरीअत के कारण के किसी मुसलमान या आलिम को मरदूद (तिरस्कृत), उल्लू आदि कहना और नाहक तकलीफ देना हराम है।

[629] व्यभिचारी और व्यभिचारिणी की हत्या का हुक्म मुतलक (पूर्ण) नहीं है, बल्कि वाजिब है कि पहले उन्हें डराया-धमकाया, मारा और काबू किया जाए, यदि वे अलग हो जाएं तो अब आम जनता के लिए उनकी हत्या हराम है। हाँ, यदि चार गवाहियाँ गुज़रें या शरई तरीके से चार मजालिस में चार इकरार (स्वीकारोक्ति) हों, तो उनमें से जो मुश्सन (विवाहित) हो, सुल्तान उसे रज्म (पत्थरों से मारना) करेगा। [644] बिना किसी शरई कारण के जिसने किसी मुसलमान को तकलीफ दी, उसने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तकलीफ दी।

[629] व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को कत्ल करने की इजाज़त गैर-सुल्तान (आम व्यक्ति) को किस सूरत में है? [645] उलेमा-ए-दीन (धर्म के विद्वानों) की शान बहुत ऊँची और आला है।

[630] "व्यभिचार की स्थिति में व्यभिचारी की हत्या" के मसले में उलझन और उसके बीच मुसन्निफ़ (लेखक) का सामंजस्य। [645] उलेमा की शान में गुस्ताखी करने वाला मुनाफिक (पाखंडी) है और ताज़ीर (दंड) के लायक है।

[633] यदि बुराई का खात्मा बिना हत्या के हासिल हो सकता है, तो हत्या की इजाज़त नहीं है। [645] असल में हर मुसलमान मोमिन (आस्थावान) है, कुछ क्षेत्रों के उरफ़ (चलन) में बुनकरों को मोमिन

कहना उनके सीधे स्वभाव के कारण होगा और इस शब्द को ताने के तौर पर इस्तेमाल करना दोहरा गुनाह है।

[633] व्यभिचार को रोकना बुराई का खात्मा (इज़ाला-ए-मुनकर) है और बुराई का खात्मा अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए होता है, इसलिए इसमें महरम और अजनबी औरतें बराबर हैं। [645] मोमिन वह है जिसके पड़ोसी उसकी तकलीफों से सुरक्षित रहें।

[640] दो आदेशित चीज़ों में से यदि एक छूट जाए, तो दूसरी साकिद (समाप्त) नहीं होती। [646] किसी मुसलमान को उसके पेशे के कारण तुच्छ समझना बुरा है।

[640] दो गुनाहों में से एक का इर्तिकाब (करना) दूसरे गुनाह को मुबाह (जायज़) नहीं करता। [646] नमाज़ न पढ़ने पर किसी की पिटाई की, और उसकी घड़ी टूट गई, तो उसकी कीमत देनी होगी।

فتاویٰ رضویہ | جلد سیز دہم | صفحہ ۱۳

۶۲۹ | زانی اور زانیہ کو حالت زنا میں پایا تو کیا حکم ہے، اور آتے جاتے ملتے ملاتے دیکھا تو کیا حکم ہے۔ ۶۴۱ | سیاستاً قتل غیر امام کے لئے جائز نہیں، اور امام کو بھی صرف ان کبائر میں قتل جائز ہے جو متعدی الضرر ہوں، صغائر یا کبائر غیر متعدی الضرر میں قتل جائز نہیں۔

۶۲۹ | سیاست کا حق سلطان کو ہے۔ ۶۴۲ | زاہدی معتزلی ہے اور ہر رطب و یابس کو جمع کرنے میں معروف، غیر ثقہ و غیر معتمد ہے۔

۶۲۹ | ناحق قتل مسلم سخت کبیرہ گناہ اور قاتل پر قصاص لازم ہے۔ ۶۴۴ | بلاوجہ شرعی کسی مسلمان کو یا عالم کو مردود، الو وغیرہ کہنا ناحق ایذاء دینا حرام ہے۔

۶۲۹ | زانیہ و زانی کے قتل کا حکم مطلق نہیں بلکہ واجب ہے کہ پہلے زجر وضرب و قہر کریں اگر جدا ہو جائیں تو اب عوام کو ان کا قتل حرام ہے۔ ہاں شہادت اربعہ گزریں یا بروجہ شرعی چار مجلسوں میں چار اقرار تو ان میں سے جو محصن ہو سلطان اسے رجم کرے گا۔ ۶۴۴ | بلاوجہ شرعی جس نے کسی مسلمان کو ایذا دی اس نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ایذا دی۔

۶۲۹ | زانی اور زانیہ کو قتل کرنے کی اجازت غیر سلطان کو کس صورت میں ہے۔ ۶۴۵ | علماء دین کی شان ارفع و اعلیٰ ہے۔

۶۳۰ | "قتل زانی بحالت زنا" کے مسئلہ میں اضطراب اور اس کے درمیان مصنف کی توفیق۔

۶۴۵ | شانِ علماء میں گستاخی کرنے والا منافق ہے اور لائق تعزیر ہے۔

۶۳۳ | ازالہ منکر اگر بغیر قتل کے حاصل ہوسکتا ہے تو قتل کی اجازت نہیں۔ ۶۴۵ | اصلاً ہر مسلمان مومن ہے، بعض اطراف کے عرف میں بنکروں کو مومن کہنا ان کی سلیم الطبعی کی وجہ سے ہوگا اور اس لفظ کو بطور طعن استعمال کرنا دوہرا گناہ ہے۔

۶۳۳ | زنا کا سد باب ازالہ منکر ہے اور ازالہ منکر اللہ عزوجل کے لئے ہوتا ہے لہذا اس میں محارم واجنبی عورتیں برابر ہیں۔ ۶۴۵ | مومن وہ ہے جس کے ہمسائے اس کی ایذاؤں سے امان میں ہوں۔

۶۴۰ | مامور بشیئین سے اگر ایک فوت ہوجائے تو دوسری ساقط نہیں ہوتی۔ ۶۴۶ | کسی مسلمان کو اس کے پیشہ کے سبب سے حقیر جاننا برا ہے۔

۶۴۰ | احد المعصیتین کا ارتکاب دوسری معصیت کو مباح نہیں کرتا۔ ۶۴۶ | نماز نہ پڑھنے پر کسی کو مار پیٹ کی، اس کی گھڑی ٹوٹ گئی تو قیمت دینی ہوگی۔

Fatawa Razawiyya | Volume 13

Page	Topic	Topic	Page
646	It is forbidden to damage a Muslim's property or dishonor them without a legal reason.	Negating something from Divine Knowledge is negating it from His Knowledge because its occurrence must be within [His] Knowledge.	649
646	Warning and guidance are necessary for performing prayer; it is not the time for physical punishment.	Being foul-mouthed and ungrateful towards the husband is a sin for which a woman must repent.	649
647	Calling dogs and pigs the offspring of Prophet Adam (peace be upon him) is a severe and heinous statement; one should repent and renew their faith in Islam.	"The Sheikh among his people is like the Prophet among his nation" are words of Hadith.	650
647	The lineage of disbelievers from Prophet Adam (peace be upon him) is severed.	There is a vast difference between "like" (misl) and "similar" (manind).	650
647	There is no blame on someone who calls disbelievers dogs and pigs because disbelievers are worse than dogs and pigs.	Sayyiduna Imam-e-Azam (may Allah's mercy be upon him) said: "My faith is the faith of Jibreel." Why did he not say: "My faith is like the faith of Jibreel"?	650
648	Negating being a brother; if someone has behaved in such a way, it can be negated, otherwise one commits three sins.	It is forbidden to speak harshly or abusively to any Muslim without cause.	650
648	Outright lies, severing ties, and hurting a Muslim are major sins.	Speaking harshly to a Sayyid, a scholar, or even the child of a spiritual guide is even more severe.	650
648	Rulings on the statement "It was good that so-and-so was robbed."	Anyone who belittles three types of people is a hypocrite: 1) One who	650

Page	Topic	Topic	Page
		has grown old in Islam, 2) a scholar, 3) a just Muslim ruler.	
648	Deeming something strictly forbidden as good is disbelief (Kufr).	The Islam and marriage of one who commits a major sin are not invalidated.	651
648	Envy is forbidden.	One who combines two sisters in marriage is a perpetrator of haram; he should be boycotted.	651
648	Rejoicing at someone's loss due to enmity follows the nature of that enmity; if the enmity is reprehensible, so is the joy, and if the enmity is commendable, such as towards the enemies of Allah, there is no harm.	Calling Muslims "rejected" or "Satan" without a religious justification is strictly forbidden.	652
649	Remorse and dissociation from sin are necessary for repentance.	Condemnation of causing pain to a Muslim according to the Quran and Hadith.	652
649	A woman said, "God knows why you are infatuated with that house." The man replied, "God knows." To this, the woman said, "God knows nothing about it." This statement is not disbelief.	Severe warning against calling a Muslim a disbeliever.	652
		A person who calls others "rejected" or "disbeliever" without a legal reason must repent from this act and seek forgiveness from the person concerned; otherwise, they are an open transgressor.	652

फ़तावा रज़विया | जिल्द 13

पृष्ठ	विषय	विषय	पृष्ठ
646	बिना किसी कानूनी कारण के किसी मुसलमान की संपत्ति को नुकसान पहुँचाना और उसे अपमानित करना वर्जित है।	ईश्वरीय ज्ञान से किसी चीज़ का निषेध उसके ज्ञान से निषेध है क्योंकि उसकी घटना ज्ञान में होनी ही चाहिए।	649
646	नमाज़ पढ़ने के लिए चेतावनी और समझ की आवश्यकता होती है; यह मारपीट का समय नहीं है।	पति के प्रति अपशब्द कहना और कृतघ्नता करना पाप है जिसके लिए स्त्री को पश्चाताप करना चाहिए।	649
647	कुत्तों और सूअरों को हज़रत आदम (अ.स.) की संतान कहना एक गंभीर और जघन्य बयान है; तौबा करनी चाहिए और इस्लाम का नवीनीकरण करना चाहिए।	"शेख अपनी कौम में वैसा ही है जैसा नबी अपनी उम्मत में" हदीस के शब्द हैं।	650
647	हज़रत आदम (अ.स.) से काफिरों का वंश विच्छेद हो गया है।	'मिसल' (समान) और 'मानिंद' (जैसा) में बहुत बड़ा अंतर है।	650
647	काफिरों को कुत्ता और सूअर कहने वाले पर कोई दोष नहीं है क्योंकि काफिर तो कुत्तों और सूअरों से भी बदतर हैं।	सैय्यदुना इमाम-ए-आज़म (रह.) ने फरमाया: "मेरा ईमान जिब्रील का ईमान है।" उन्होंने ऐसा क्यों नहीं कहा: "मेरा ईमान जिब्रील के ईमान जैसा है"?	650
648	भाई होने का खंडन करना; यदि किसी ने ऐसा व्यवहार किया है तो वह खंडन कर सकता है, अन्यथा वह तीन पापों का दोषी है।	बिना किसी कारण के किसी मुसलमान को बुरा-भला कहना हराम है।	650
648	स्पष्ट झूठ, संबंध विच्छेद और मुसलमान को कष्ट देना बड़े पाप हैं।	सैय्यद, आलिम या मुर्शिद के बेटे को बुरा-भला कहना और भी गंभीर है।	650
648	"अच्छा हुआ फलां की चोरी हो गई" वाक्य पर निर्णय।	तीन लोगों को कमतर समझने वाला मुनाफ़िक है: 1) वह जो इस्लाम में बूढ़ा	650

पृष्ठ	विषय	विषय	पृष्ठ
		हुआ हो, 2) आलिम, 3) न्यायप्रिय मुस्लिम राजा।	
648	कतई हराम चीज़ को अच्छा समझना कुफ्र है।	कबीरा गुनाह (बड़ा पाप) करने वाले के इस्लाम और निकाह में कोई बाधा नहीं आती।	651
648	ईर्ष्या (हसद) हराम है।	दो बहनों से एक साथ निकाह करने वाला हराम काम करने वाला है; उसका बहिष्कार किया जाना चाहिए।	651
648	दुश्मनी के कारण किसी के नुकसान पर खुश होना उस दुश्मनी की प्रकृति पर निर्भर करता है; यदि दुश्मनी निंदनीय है, तो यह खुशी भी निंदनीय है, और यदि दुश्मनी सराहनीय है, जैसे अल्लाह के दुश्मनों से दुश्मनी, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है।	मुसलमानों को बिना किसी शरई कारण के'मरदूद' (तिरस्कृत) या 'इबलीस' (शैतान) कहना सख्त हराम है।	652
649	तौबा के लिए पश्चाताप और गुनाह से अलग होना आवश्यक है।	कुरान और हदीस के अनुसार मुसलमान को पीड़ा देने की निंदा।	652
649	एक औरत ने कहा, "खुदा जाने तुम्हें उस घर से इतना लगाव क्यों है।" आदमी ने कहा, "खुदा जाने।" इस पर औरत ने कहा, "खुदा कुछ भी नहीं जानता।" यह वाक्य कुफ्र नहीं है।	मुसलमान को काफ़िर कहने पर सख्त चेतावनी।	652
		जो व्यक्ति बिना शरई कारण के दूसरों को 'मरदूद' या 'काफ़िर' कहे, उसे इस कृत्य से तौबा करनी चाहिए और संबंधित व्यक्ति से माफी मांगनी चाहिए, अन्यथा वह 'फासिक-ए-मुअलन' (खुला उल्लंघन करने वाला) है।	652

صفحہ	عنوان
۶۴۶	مسلمان کے مال کا نقصان اور اس کی ہتک عزت بلاوجہ شرعی حرام ہے۔
۶۴۶	نماز پڑھنے کے لئے تنبیہ و تفہیم چاہئے مار پیٹ کا وقت نہیں ہے۔
۶۴۷	کتوں اور سوروں کو حضرت آدم علیہ السلام کی اولاد کہنا سخت و شنیع جملہ ہے توبہ اور تجدید اسلام کرے۔
۶۴۷	کافروں کا نسب حضرت آدم علیہ الصلوۃ والسلام سے منقطع ہے۔
۶۴۷	کفار کو کتے اور سور کہنے والے پر کوئی الزام نہیں کیونکہ کافر تو کتوں اور سوروں سے بھی بدتر ہیں۔
۶۴۸	
۶۴۹	علم الٰہی سے کسی شئی کی نفی اس کے علم سے نفی ہے کہ واقع ہونا تو ضرور علم میں ہوتا ہے۔
۶۴۹	شوہر سے بدزبانی ناشکری ہے جس پر عورت کو توبہ چاہئے۔
۶۵۰	"الشیخ فی قومہ کالنبی فی امتہ" حدیث کے الفاظ ہیں۔
۶۵۰	مثل اور مانند میں بہت فرق ہے۔
۶۵۰	سیدنا امام اعظم رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا: ایمانی کا ایمان جبرائیل، یوں کیوں نہیں فرمایا ایمانی مثل ایمان جبرائیل۔
۶۵۰	بلاوجہ کسی مسلمان کو سخت و سست کہنا حرام ہے۔

صفحہ	عنوان
	بھائی ہونے کی نفی کی، اگر کوئی سلوک ایسا بھی کیا ہو تو نفی کر سکتا ہے ورنہ تین گناہوں کا مرتکب ہے۔
۶۴۸	کذب صریح، قطع اور ایذائے مسلم کبیرہ گناہ ہیں۔
۶۴۸	جملہ "اچھا ہوا فلاں کی چوری ہوگئی" کے احکام۔
۶۴۸	حرام قطعی کا استحسان کفر ہے۔
۶۴۸	حسد حرام ہے۔
۶۴۸	کسی کے نقصان پر عداوت کے سبب سے خوش ہونا عداوت کے تابع ہے، اگر عداوت مذموم ہے تو یہ بھی فتیح و مذموم، اور اگر عداوت محمود ہے جیسے اعداء اللہ سے دشمنی، تو اس میں حرج نہیں۔
۶۴۹	

صفحہ	عنوان
۶۵۰	سید، عالم بلکہ مرشد زادہ کو سخت و سست کہنا تو اور شدید ہے۔
۶۵۰	تین شخصوں کو ہلکا جاننے والا منافق ہے ایک وہ جسے اسلام میں بڑھایا گیا ، دوسرا عالم، تیسرا بادشاہ اسلام عادل۔
۶۵۱	مرتکب کبیرہ کے اسلام اور نکاح میں خلل نہیں آتا۔
۶۵۱	جمع بین الاختین کرنے والا حرام کار ہے اس کا مقاطعہ کرنا چاہئے۔
۶۵۲	مسلمانوں کو بلاوجہ شرعی مردود، ابلیس کہنا سخت حرام ہے۔
۶۵۲	

صفحہ	عنوان	عنوان صفحہ
	توبہ کے لئے ندامت اور گناہ سے تبری ضروری ہے۔	مسلمان کو ایذا دینے کی مذمت قرآن و حدیث سے۔
۶۴۹	عورت نے کہا خدا جانے آپ کو فلاں گھر سے کیوں عشق ہے، مرد نے کہا "خدا جانے " اس پر عورت نے کہا "کچھ بھی خدا جانے نہیں " یہ جملہ کفر نہیں۔	مسلمان کو کافر کہنے پر سخت وعید۔ ۶۵۲
		بلاوجہ شرعی جو شخص دوسروں کو مردود، کافر کہے تو اس کو اس
		فعل سے توبہ اور شخص متعلقہ سے ۶۵۲
		معافی مانگنی ضروری ہے ورنہ
		فاسق معلن ہے۔

Fatawa Rizvia Volume 13 13

652 | Making an open sinner (fasiq mu'lin) an Imam is a sin, and praying behind him is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked). Why did Imam Muhammad not refer to Imam Abu Yusuf by his Kunya (patronymic name) in the books like Jami' al-Saghir, etc., which he narrated from Imam Abu Hanifa, Imam al-Azam? | 655

653 | A person is liable to punishment (Ta'zir) for being disrespectful towards a scholar ('Alim). All the noble attributes of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) are his specific characteristics in the sense that no one is comparable to him or a partner in any attribute. | 655

654 | Saying that God will even forgive a polytheist (sharik), or saying "Verses and Hadiths are nothing" is explicit disbelief (Kufr). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) bestowed a reflection of some of his noble attributes upon his seekers, servants, and slaves, such as 'Alim (Knowing), Halim (Forbearing), Bashir (Giver of glad tidings), and Nadhir (Warner). There is no harm in applying these attributes to those in whom their manifestation is established. | 656

654 | The application of the ruling of disbelief (Kufr) on those who abandon prayer is mentioned in Hadith; this is a theological (Kalami) issue, not a jurisprudential (Fiqhi) one. A misguided, irreligious, and mischievous person can be called a 'devil' (Shaitan). | 656

655 | Mentioning the name of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) simply, while using grand titles for one's spiritual guide (Pir), is a sign of disrespect; and if the greatness of the Pir is considered more than the Prophet's, it is disbelief (Kufr). Calling a righteous believer a 'devil' is the work of the devil. | 656

655 | In the Arab world, using a Kunya (patronymic name) is a form of honor. Sources and References. | 657

655 | Imam Abu Yusuf is the teacher of Imam Muhammad and the student of Imam al-Azam, may Allah be pleased with them.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 13 13

652 | खुले तौर पर पाप करने वाले (फ़ासिक़ मुअलन) को इमाम बनाना पाप है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी है। इमाम मोहम्मद ने जामे सगीर आदि किताबों में, जो उन्होंने इमाम अबू हनीफ़ा हज़रत इमाम आज़म से रिवायत की हैं, इमाम अबू यूसुफ़ को कुनियत से क्यों याद नहीं किया? | 655

653 | आलिम के प्रति अनादर दिखाने पर व्यक्ति सज़ा (ताज़ीर) का पात्र होता है। हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के तमाम महान गुण इस अर्थ में उनकी अपनी विशिष्टताएँ हैं कि कोई भी हुज़ूर के समान या किसी भी गुण में उनका भागीदार नहीं है। | 655

654 | यह कहना कि ईश्वर मुशरिक (साझीदार) को भी क्षमा कर देगा, या यह कहना कि "आयतें और हदीसें" कुछ भी नहीं हैं, स्पष्ट कुफ़्र (अविश्वास) है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने कुछ महान गुणों की झलक अपने लाभार्थियों, सेवकों और दासों पर डाली है, जैसे अलीम (जानने वाला), हलीम (सहनशील), बशीर (सुखद संदेश देने वाला) और नज़ीर (चेतावनी देने वाला) आदि। उन गुणों का प्रकाश जिसमें सिद्ध हो, उस पर इन गुणों के अनुप्रयोग में कोई हर्ज नहीं है। | 656

654 | नमाज़ छोड़ने वाले पर कुफ़्र का हुक्म हदीस शरीफ में है; यह एक कलामी (धर्मशास्त्रीय) विषय है, न कि फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय)। गुमराह, अधर्मी और फ़साद फैलाने वाले को 'शैतान' कहा जा सकता है। | 656

655 | हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम सादगी से लेना और अपने पीर (अध्यात्मिक गुरु) का नाम अदब और उपाधियों के साथ लेना बदतमीज़ी है; और यदि पीर की महानता को हुज़ूर से अधिक समझा जाए तो यह कुफ़्र है। एक नेक मोमिन (आस्तिक) को शैतान कहना शैतान का ही काम है। | 656

655 | अरब संस्कृति में कुनियत (उपनाम) सम्मान का प्रतीक है। स्रोत और संदर्भ। | 657

655 | इमाम अबू यूसुफ़, इमाम मोहम्मद के शिक्षक और इमाम आज़म के शिष्य हैं, रज़ियल्लाहु अन्हुम।

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

۶۵۲ | فاسق معلن کو امام بنانا گناہ اور اس کے پیچھے نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہے۔ امام محمد نے جامع صغیر وغیرہ کتب جو بروایت امام ابو حنیفہ حضرت امام اعظم سے روایت کیں، ان امام ابویوسف کو کنیت سے کیوں یاد نہیں کیا۔ | ۶۵۵

۶۵۳ | عالم کے ساتھ سوء ادبی سے آدمی مستحق تعزیر ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی تمام صفات کریمہ بایں معنی خصائص حضور ہیں کہ کوئی صفت میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے مماثل وشریک نہیں۔ | ۶۵۵

۶۵۴ | یہ کہنا کہ خدا شریک کو بھی بخش دے گا یا یہ کہنا "آیات و احادیث" کچھ نہیں "صریح کفر ہے۔ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے اپنی بعض صفات کریمہ کا اپنے مستفیضوں اور خادموں اور غلاموں پر پر تو ڈال دیا جیسے علیم، حلیم اور بشیر ونذیر وغیرہ، ان صفات کی تجلی جس میں متحقق ہو اس پر ان صفات کے اطلاق میں حرج نہیں۔ | ۶۵۶

۶۵۴ | حکم کفر کا اطلاق تارک صلوۃ پر حدیث شریف میں ہے یہ مسئلہ فقہیہ نہیں کلامی ہے۔ گمراہ وبد دین فتنہ پر ور کو شیطان کہہ سکتے ہیں۔ | ۶۵۶

۶۵۵ | حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا نام سادہ اور پیر کا آداب والقاب کے ساتھ سوء ادبی ہے، اور پیر کی عظمت حضور سے زیادہ ہو تو کفر ہے۔ مومن صالح کو شیطان کہنا شیطان کا کام ہے۔ | ۶۵۶

۶۵۵ | عرب میں کنیت تعظیم ہے۔ ماخذ و مراجع۔ | ۶۵۷

۶۵۵ | امام ابو یوسف امام محمد کے استاذ اور امام اعظم کے شاگرد ہیں، رضی اللہ تعالٰی عنہم۔

Fatawa Razawiyya Volume 13

List of Subsidiary Issues

| Exegesis (Tafsir) | Menstruation (Haidh) | | :--- | :--- | :--- | :--- | | The noble verse "Divorce is twice" includes both types of divorce, namely, immediate and conditional. | 102 | Three periods of menstruation can occur within two months and also within two years. | 299 | | The reason for revelation of the verse "Divorce is twice" and various opinions of the commentators therein. | 185 | Three periods of menstruation cannot pass in nineteen days. | 324 | | After three divorces, the husband used to have the right to revoke, which was abrogated by the verse "Divorce is twice". | 188 | There is no upper limit set for the period of purity (tuhur), so it is possible for three menses to occur over thirty years. | 363 | | Meaning of the noble verse "When you marry believing women and then divorce them before you have touched them, you have no right to any iddah period against them." | 306 | Call to Prayer (Adhan) | | | Hadith Benefits | | A public sinner is not fit for a religious post like being a Muezzin. | 312 | | "An elder among his people is like a Prophet among his nation" are the words of the Hadith. | 650 | Prayer (Salah) | | | | While turning for Salaam, it is a definitive command for the person praying to intend for those present. | 496 |

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

सहायक मसलों की सूचि

| तफ़्सीर (क़ुरआन की व्याख्या) | हैज़ (मासिक धर्म) | | :--- | :--- | :--- | :--- | | आयत-ए-करीमा "अल-तलाकु मर्रतान" में तलाक़ की दोनों क़िस्में यानी मुनज्ज़ (तत्काल प्रभावी) और मुअल्लक़ (शर्तिया) शामिल हैं। | 102 | तीन हैज़ दो महीने में भी हो सकते हैं और दो साल में भी। | 299 | | आयत-ए-करीमा "अल-तलाकु मर्रतान" के उतरने का कारण और इसमें मुफ़स्सिरिन (व्याख्याताओं) के विभिन्न विचार। | 185 | उन्नीस दिन में तीन हैज़ नहीं गुज़र सकते। | 324 | | तीन तलाक़ों के बाद मर्द को रुजूअ (वापसी) का अधिकार होता था जो आयत-ए-करीमा "अल-तलाकु मर्रतान" से मंसूख़ (निरस्त) हो गया। | 188 | पाकी (तुहर) की अवधि की कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं है, इसलिए मुमकिन है कि तीन हैज़ तीस वर्षों में आयें। | 363 | | आयत-ए-करीमा "इज़ा नकाह्तुमुल मोमिनाते..." (यदि तुम मोमिन औरतों से निकाह करो...) का अर्थ। | 306 | अज़ान | | | हदीस के फ़ायदे | | खुल्लम-खुल्ला गुनाह करने वाला (फ़ासिक़-ए-मुअलिन) मोअज़्ज़िन जैसे धार्मिक पद के योग्य नहीं है। | 312 | | "क़ौम का बुज़ुर्ग अपनी क़ौम में वैसा ही है जैसे पैग़ंबर अपनी उम्मत में" हदीस के शब्द हैं। | 650 | नमाज़ | | | | नमाज़ी को सलाम फेरते समय वहाँ मौजूद लोगों की नियत करने का निश्चित हुक्म है। | 496 |

पृष्ठ 65 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم

فہرست ضمنی مسائل

| تفسیر | حیض | | :--- | :--- | :--- | :--- | | آیہ کریمہ "الطلاق مرتان" میں طلاق دونوں قسموں یعنی منجز و معلق کو شامل ہے۔ | ۱۰۲ | تین حیض دو ماہ میں بھی ہو سکتے ہیں اور دو سال میں بھی۔ | ۲۹۹ | | آیہ کریمہ "الطلاق مرتان" کا شانِ نزول اور اس میں مختلف اقوال مفسرین۔ | ۱۸۵ | انیس دن میں تین حیض نہیں گزر سکتے۔ | ۳۲۴ | | تین طلاقوں کے بعد مرد کو رجوع کا اختیار ہوتا تھا جو آیہ کریمہ "الطلاق مرتان" سے منسوخ ہوگیا۔ | ۱۸۸ | طہر کے لئے زیادت کی جانب کوئی حد مقرر نہیں، لہذا ممکن ہے تین حیض تیس برس میں آئیں۔ | ۳۶۳ | | آیہ کریمہ "اذا نکحتم المؤمنات ثم طلقتموھن من قبل ان تمسوھن فمالکم علیھن من عدۃ" کا مطلب۔ | ۳۰۶ | اذان | | | فوائد حدیثیہ | | فاسق معلن موذن جیسے دینی عہدے کے لائق نہیں۔ | ۳۱۲ | | "الشیخ فی قومہ کالنبی فی امتہ" حدیث کے الفاظ ہیں۔ | ۶۵۰ | نماز | | | | | نمازی کو سلام پھیرتے وقت نیتِ حاضرین کا قطعاً حکم ہے۔ | ۴۹۶ |

صفحہ 65 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 13

- Page 500: If someone took an oath to pray Zuhr with the congregation but joined for only two Rak'ats, his oath is broken because joining for less than three Rak'ats is not considered praying with the congregation. However, the reward of the congregation will be granted for the act of participation, or even for the intention of leaving home to join the congregation.
- Page 209: Detailed rulings on various scenarios of marriage under the condition: "If I marry without your permission, it will result in Tilaq-e-Mughallazah (irrevocable divorce)."

Imamat (Leadership in Prayer) - Page 223: If an unauthorized person (Fuzuli) conducted a marriage and the husband subsequently sent the fixed dower to the woman, the marriage is ratified. - Page 318: Remarriage during the waiting period ('Iddah') is forbidden and intimacy is considered adultery. If the person was aware of the prohibition of the marriage, he becomes a 'Fasiq' (open sinner), and appointing him as an Imam is a sin. Those who knowingly participated in such a marriage are severe sinners. - Page 223: If, after an unauthorized marriage, the husband writes on paper, "I have ratified this marriage," it becomes effective. - Page 454: A person who does not support his weak and needy father despite having the means is not fit for Imamat. - Page 262: A woman cannot annul a marriage performed by her father or grandfather even after attaining adulthood. - Page 652: Appointing a known sinner (Fasiq Mu'lin) as an Imam is a sin, and praying behind him is 'Makruh Tahrimi' (strongly disliked). - Page 262: A minor girl can reject a marriage performed by anyone other than her father or grandfather as soon as she becomes an adult.

Mosques - Page 296: If one marries a pregnant widow, they must wait. If a child is born within two years, the 'Iddah' ends upon delivery and the marriage is 'Fasid' (invalid). If a child is born after two years, the marriage is valid. - Page 582: Restoring a deserted mosque is a very important task, and spending towards it should be a priority. - Page 296: Those who are aware of the situation and participate in the marriage of a woman in her 'Iddah' period are severe sinners.

Zakat - Page 296: Marriage with a pregnant widow is absolutely void; remarriage is mandatory after childbirth. - Page 599: Giving Zakat to a poor person while calling it a 'loan' makes the Zakat valid. - Page 299: If a man and woman live together in the same house like husband and wife and maintain the affection of husband and wife, they will be considered legally husband and wife according to Shari'ah.

फतावा रज़विया जिल्द 13

- पृष्ठ 500: उसने ज़ुहर की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने की कसम खाई। वह दो रकात में शामिल हुआ तो उसकी कसम टूट गई क्योंकि तीन रकात तक पाने वाला जमाअत वाला नहीं माना जाता। हाँ, जमाअत का सवाब तो केवल भागीदारी, बल्कि जमाअत के इरादे से घर से निकलने पर ही मिल जाएगा।
- पृष्ठ 209: "अगर मैं तुम्हारी इजाज़त के बिना निकाह करूँ तो तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा होगी", इस शर्त पर निकाह की विभिन्न स्थितियों के अहकाम (नियमों) का विवरण।

इमामत (प्रार्थना का नेतृत्व) - पृष्ठ 223: किसी अनाधिकृत व्यक्ति (फ़ुज़ुली) ने निकाह करवा दिया; शौहर ने मुकर्रर किया हुआ मेहर औरत को भेज दिया तो निकाह लागू हो गया। - पृष्ठ 318: इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान दूसरा निकाह हराम है और शारीरिक निकटता ज़िना (व्यभिचार) है। अगर उसे निकाह के हराम होने का पता था, तो वह फासिक हो गया और उसे इमाम बनाना गुनाह है। जानबूझकर ऐसे निकाह में शामिल होने वाले सख्त गुनाहगार हैं। - पृष्ठ 223: शौहर ने फ़ुज़ुली के निकाह के बाद काग़ज़ पर लिखा कि "मैंने इस निकाह को लागू किया" तो वह प्रभावी हो गया। - पृष्ठ 454: सामर्थ्य होने के बावजूद कमज़ोर और ज़रूरतमंद पिता की मदद न करने वाला इमामत के लायक़ नहीं है। - पृष्ठ 262: बाप या दादा द्वारा कराया गया निकाह औरत बालिग़ होकर भी रद्द नहीं कर सकती। - पृष्ठ 652: खुले तौर पर गुनाह करने वाले (फासिक-ए-मुअलिन) को इमाम बनाना गुनाह है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूहे तहरीमी (अत्यधिक नापसंद) है। - पृष्ठ 262: बाप-दादा के अलावा किसी और के द्वारा कराए गए नाबालिग लड़की के निकाह को वह बालिग़ होते ही रद्द कर सकती है।

मसाजिद (मस्जिदें) - पृष्ठ 296: यदि गर्भवती विधवा से निकाह हुआ तो इंतज़ार किया जाए। यदि दो साल के भीतर बच्चा पैदा होता है, तो इद्दत प्रसव तक है और उक्त निकाह 'फ़ासिद' (अमान्य) है। यदि दो साल के बाद बच्चा पैदा होता है, तो उक्त निकाह वैध है। - पृष्ठ 582: वीरान मस्जिद को फिर से आबाद करना बहुत महत्वपूर्ण कार्य है और इस पर खर्च करना प्राथमिकता होनी चाहिए। - पृष्ठ 296: जो लोग स्थिति से अवगत होते हुए इद्दत वाली महिला के निकाह में शरीक होते हैं, वे सख्त गुनाहगार हैं।

ज़कात - पृष्ठ 296: गर्भवती विधवा से निकाह पूर्णतः बातिल (शून्य) है; प्रसव के बाद दोबारा निकाह करना अनिवार्य है। - पृष्ठ 599: किसी गरीब व्यक्ति को ज़कात देना और उसे 'ऋण' कहना ज़कात को वैध बना देता है। - पृष्ठ 299: यदि एक पुरुष और स्त्री एक ही घर में पति-पत्नी की तरह रहते हैं और उनके बीच पति-पत्नी जैसा स्नेह है, तो शरीयत के अनुसार उन्हें कानूनी रूप से पति-पत्नी माना जाएगा।

निकाह (विवाह)

पृष्ठ 666 का 68

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم

- ۵۰۰: قسم کھائی ظہر جماعت سے پڑھے گا۔ دور کعت ملی حانث ہوگیا کہ تین رکعت تک پانے والا جماعت والا نہیں۔ ہاں جماعت کا ثواب تو نفس شرکت بلکہ بالارادہ جماعت گھر سے نکلنے میں ملے گا۔
- ۲۰۹: اگر تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں تو طلاق مغلظہ ہوگی، اس شرط پر نکاح کی مختلف صورتوں کے احکام کی تفصیل۔

امامت - ۲۲۳: فضولی نے کسی کا نکاح کردیا شوہر نے مہر مقررہ عورت کو بھیج دیا تو نکاح نافذ ہوگیا۔ - ۳۱۸: عدت کے اندر دوسرا نکاح حرام اور قربت زنا ہے اگر نکاح کو علم تھا تو وہ فاسق ہوا اور اس کو امام بنانا گناہ ہے اور دانستہ نکاح میں شریک ہونے والے سخت گنہگار ہوئے۔ - ۲۲۳: شوہر نے فضولی کے نکاح کے بعد کاغذ پر لکھا کہ میں نے اس نکاح کو نافذ کیا تو نافذ ہوگیا۔ - ۴۵۴: قدرت کے باوجود ضعیف ومحتاج باپ کی مدد نہ کرنے والا قابل امامت نہیں۔ - ۲۶۲: باپ دادا کا کیا ہوا نکاح عورت بالغ ہو کر بھی فسخ نہیں کرسکتی۔ - ۶۵۲: فاسق معلن کو امام بنانا گناہ اور اس کے پیچھے نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہے۔ - ۲۶۲: باپ دادا کے غیر کا کیا ہوا نابالغہ کا نکاح وہ بالغ ہوتے ہی رد کرسکتی ہے۔

مساجد - ۲۹۶: حاملہ بیوہ سے نکاح ہوا تو انتظار کیا جائے، دو برس کے اندر بچہ ہو تو عدت وضع حمل ہے اور نکاح مذکور فاسد، اور دو برس کے بعد بچہ پیدا ہو تو نکاح مذکور صحیح۔ - ۵۸۲: مسجد ویران کی آبادی نہایت اہم کام ہے اور اس میں صرف کرنا مقدم ہے۔ - ۲۹۶: معتدہ کے نکاح میں جو لوگ واقف حال شریک ہوں سخت گنہگار ہیں۔

زکوۃ - ۲۹۶: بیوہ حاملہ سے نکاح باطل محض ہے وضع حمل کے بعد دوبارہ نکاح لازم ہے۔ - ۵۹۹: فقیر کو زکوۃ دے اور قرض کا نام لے تو صحیح ہوجائے گی۔ - ۲۹۹: مرد و عورت ایک مکان میں مثل زن و شوہر رہتے ہوں اور باہم انبساط زوج وزوجہ رکھتے ہوں تو شرعاً زوج وزوجہ ہی قرار دئے جائیں گے۔

نکاح

Fatawa Razawiyya, Volume 13

- It is extreme folly to believe that if a marriage did not take place in one's presence, it did not happen. 300 | Marriage within the waiting period ('iddah) is absolutely forbidden. 319
- Marriage to another before the completion of 'iddah is forbidden and unlawful, and according to some scholars, no legal status of marriage is established by such a contract at all. 300 | If a woman is married within 'iddah intentionally, it is purely void (baatil); it cannot even be called a marriage. 322
- Intentionally marrying a woman who is in the 'iddah of another is purely void. 300 | Marriage within 'iddah is absolutely prohibited. 358
- It is permissible for someone who is not the adulterer to marry a woman pregnant from adultery, despite the pregnancy, but intercourse is not allowed until delivery. 300 | As long as a woman's husband is alive and has not divorced her, her second marriage is forbidden, forbidden, forbidden, and is adultery upon adultery. 474
- Marrying one's brother-in-law while the sister is still alive is strictly forbidden. 300 | During the husband's lifetime, without a divorce, there is no way for a woman to marry another person. 476
- In an invalid (fasid) marriage, separation (mutarikah) is necessary, which either husband or wife can initiate. 301 | Even if a woman is proven to be an adulteress, it makes no difference to the validity of the marriage. 618
- If marriage was contracted knowingly within 'iddah, it is void (baatil) and intercourse is adultery; if done unknowingly, it is an invalid (fasid) marriage. 302 | One who performs 'jam' bain al-ukhtayn' (marrying two sisters at once) is a sinner and should be boycotted.
- If a married woman, angry with her husband, marries another and later wishes to return to her first husband, the original contract with the first husband remains valid; there is no need for a new marriage contract. 303 | **Prohibitions (Muharramat)**
- If a man marries a married woman thinking she is single and lawful, it is an absolute duty to leave her. If intercourse has occurred, she must observe an 'iddah of three menstrual cycles after leaving him, after which she can remain with her first husband without a new marriage contract. 303 | When a person commits adultery with a woman, that woman's daughter becomes permanently forbidden (haraam) for that person. 362

- A marriage between a Rafidhi (Shiite) and a Sunni woman is not valid, therefore neither divorce nor 'iddah is required. 312 | The ancestors and descendants of a woman with whom a man has committed adultery or touched with lust are forbidden for him. 362
- If someone keeps another person's wife in their home without her being divorced and they live like husband and wife, and the husband dies, they will not be considered husband and wife until they perform a new marriage. 312 | If a man looks at the internal part of a woman's vagina with lust, her ancestors and descendants become forbidden for that man. 362

- अपने सामने निकाह न होने को निकाह न होना समझ लेना सख़्त सफ़ाहत (मूर्खता) है। ३०० | इद्दत के अंदर निकाह क़तई हराम है। ३१९
- बे-इनक़िज़ा-ए इद्दत (इद्दत ख़त्म होने से पहले) दूसरे से निकाह हराम व नाजायज़ और बाज़ उलमा के नज़दीक इस अक़्द (अनुबंध) पर कोई हुक्म-ए-निकाह अस्लन मुरत्तब नहीं होता। ३०० | दीदा दानिस्ता (जानबूझकर) इद्दत के अंदर औरत का निकाह किया जाए तो वह महज़ बातिल (अमान्य) है, उसको निकाह ही नहीं कह सकते। ३२२
- मोतद्द-ए-ग़ैर (दूसरे की इद्दत वाली) से दानिस्ता निकाह करना बातिल महज़ है। ३०० | इद्दत के अंदर निकाह मुतलक़न (बिल्कुल) नाजायज़ है। ३५८
- जिस औरत को ज़िना का हम्ल (गर्भ) हो ग़ैर-ज़ानी को भी बावजूद-ए-हम्ल उससे निकाह जायज़ है मगर ता-वज़-ए-हम्ल (प्रसव तक) जिमा (संभोग) जायज़ नहीं। ३०० | जब तक किसी औरत का शौहर ज़िन्दा हो और तलाक़ भी न दी हो उस औरत का दूसरा निकाह हराम हराम हराम ज़िना-दर-ज़िना है। ४७४
- बहन की मौजूदगी में बहनोई से निकाह सख़्त हराम है। ३०० | शौहर की ज़िन्दगी में बिला तलाक़ औरत के दूसरे शख़्स से निकाह की कोई सूरत नहीं। ४७६
- निकाह-ए-फासिद में मुतारका (अलगाव) ज़रूरी जो मियां-बीवी दोनों में से कोई भी कर सकता है। ३०१ | औरत का ज़ानिया (व्यभिचारिणी) होना साबित हो जाए तब भी निकाह में कुछ फ़र्क़ नहीं आता। ६१८
- इद्दत में जानते हुए निकाह किया तो निकाह बातिल और जिमा ज़िना है और ला-इल्मी में किया तो निकाह फासिद है। ३०२ | जम्अ बैन-अल-उख़्तैन (दो बहनों को एक साथ निकाह में रखना) करने वाला हरामकार है उसका मुक़ातआ (बहिष्कार) करना चाहिए।
- मनकूहा (विवाहिता) ने अपने शौहर से नाराज़ होकर ग़ैर से निकाह कर लिया कुछ अर्सा बाद दोबारा शौहर-ए-अव्वल से निकाह करना चाहती है तो अब शौहर-ए-अव्वल से अक़्द-ए-क़दीम (पुराना अनुबंध) क़ायम है अक़्द-ए-जदीद (नए अनुबंध) की ज़रूरत नहीं। ३०३ | **मुहर्रमात (वर्जित सम्बन्धी)**
- मनकूहा औरत को ख़ाली व हलाल समझकर निकाह में लाया तो उस पर फ़र्ज़-ए-क़तई है कि औरत को तर्क(छोड़) करे। अगर मुजामअत कर चुका है तो औरत तर्क से तीन हैज़ इद्दत करे,

उसके बाद शौहर-ए-अव्वल के लिए बे-तजदीद-ए-निकाह रह सकती है ३०३ | जब कोई शख़्स किसी औरत से ज़िना कर चुका तो उस औरत की बेटी उस शख़्स पर हमेशा के लिए हराम हो गई। ३६२

- राफ़ज़ी (शिया) का निकाह सुन्निया से नहीं होता इसलिए न तलाक़ की ज़रूरत है न इद्दत की। ३१२ | मर्द पर उसकी मज़निया (व्यभिचार की गई) और ममसूस-ए-बह-शहवत (कामुकता से छुई गई) के उसूल व फ़ुरू (पूर्वज और वंशज) हराम हैं। ३६२
- बे-तलाक़ किसी की औरत घर में रख ली और मियां-बीवी की तरह रहने लगे इसके बाद शौहर मर गया तो जब तक निकाह-ए-जदीद न कर लें मियां-बीवी न होंगे। ३१२ | जिस औरत के फ़र्ज के दाख़िल को मर्द ने शहवत के साथ देखा उसके उसूल व फ़ुरू उसी मर्द पर हराम हो गए। ३६२

पेज 67/688

- اپنے سامنے نکاح نہ ہونے کو نکاح نہ ہونا سمجھ لینا سخت سفاہت ہے۔ ۳۰۰ | عدت کے اندر نکاح قطعی حرام ہے۔ ۳۱۹
- بے انقضائے عدت کے دوسرے سے نکاح حرام و ناجائز اور بعض علماء کے نزدیک اس عقد پر کوئی حکم نکاح اصلا مرتب نہیں ہوتا۔ ۳۰۰ | دیدہ دانستہ عدت کے اندر عورت کا نکاح کیا جائے تو وہ محض باطل ہے، اس کو نکاح ہی نہیں کہہ سکتے۔ ۳۲۲
- معتدہ غیر سے دانستہ نکاح کرنا باطل محض ہے۔ ۳۰۰ | عدت کے اندر نکاح مطلقاً ناجائز ہے۔ ۳۵۸
- جس عورت کو زنا کا حمل ہو غیر زانی کو بھی باوجو د حمل اس سے نکاح جائز ہے مگر تاوضع حمل جماع جائز نہیں۔ ۳۰۰ | جب تک کسی عورت کا شوہر زندہ ہو اور طلاق بھی نہ دی ہو اس عورت کا دوسرا نکاح حرام حرام حرام زنا در زنا ہے۔ ۴۷۴
- بہن کی موجودگی میں بہنوئی سے نکاح سخت حرام ہے۔ ۳۰۰ | شوہر کی زندگی میں بلا طلاق عورت کے دوسرے شخص سے نکاح کی کوئی صورت نہیں۔ ۴۷۶
- نکاح فاسد میں متارکہ ضروری جو میاں بیوی دونوں میں سے کوئی بھی کر سکتا ہے۔ ۳۰۱ | عورت کا زانیہ ہونا ثابت ہو جائے تب بھی نکاح میں کچھ فرق نہیں آتا۔ ۶۱۸
- عدت میں جانتے ہوئے نکاح کیا تو نکاح باطل اور جماع زنا ہے اور لا علمی میں کیا تو نکاح فاسد ہے۔ ۳۰۲ | جمع بین الاختین کرنے والا حرامکار ہے اس کا مقاطعہ کرنا چاہئے۔

- منکوحہ نے اپنے شوہر سے ناراض ہو کر غیر سے نکاح کر لیا کچھ عرصہ بعد دوبارہ شوہر اول سے نکاح کرنا چاہتی ہے تو اب شوہر اول سے عقد قدیم قائم ہے عقد جدید کی ضرورت نہیں۔ ۳۰۳ | **محرمات**
- منکوحہ عورت کو خالی و حلال سمجھ کر نکاح میں لایا تو اس پر فرض قطعی ہے کہ عورت کو ترک کرے۔ اگر مجامعت کر چکا ہے تو عورت ترک سے تین حیض عدت کرے، اس کے بعد شوہر اول کے لئے بے تجدید نکاح رہ سکتی ہے ۳۰۳ | جب کوئی شخص کسی عورت سے زنا کر چکا تو اس عورت کی بیٹی اس شخص پر ہمیشہ کے لئے حرام ہو گئی۔ ۳۶۲
- رافضی کا نکاح سنیہ سے نہیں ہوتا اس لئے نہ طلاق کی ضرورت ہے نہ عدت کی۔ ۳۱۲ | مرد پر اس کی مزنیہ ار ممسوسہ بہ شہوت کے اصول و فروع حرام ہیں۔ ۳۶۲
- بے طلاق کسی کی عورت گھر میں رکھ لی اور میاں بیوی کی طرح رہنے لگے اس کے بعد شوہر مر گیا تو جب تک نکاح جدید نہ کر لیں میاں بیوی نہ ہوں گے۔ ۳۱۲ | جس عورت کے فرج کے داخل کو مرد نے شہوت کے ساتھ دیکھا اس کے اصول و فروع اسی مرد پر حرام ہو گئے۔ ۳۶۲

- Marriage with a foster maternal uncle is an abominable marriage that shall never be maintained; it is a great obligation on both the man and woman to separate immediately; if the man does not agree, the woman should separate herself. [375] | If the husband confesses that his father has performed acts like kissing and embracing with his wife, the woman becomes forbidden (haram) for him. [623]
- If a foster maternal uncle and niece have married and do not separate, the ruler should forcibly separate them. [375] | **Kafa'at (Compatibility in Marriage)**
- If one committed adultery with their mother-in-law and a girl was born from it, marriage with that girl is forbidden, and the child born from such a forbidden marriage is illegitimate (Walad-al-Haram). [377] | When can a woman marry someone who is not her 'kufu' (equal/compatible)? [316]
- Marriage with the granddaughter of a consanguine (same father) sister is absolutely forbidden; the groom, the marriage officiant, the representative, and the witnesses are all guilty of a major sin. [378] | **Wilayah (Guardianship)**
- Zaid married the granddaughter of his consanguine sister; if they separate after six years, the waiting period ('iddah) is mandatory for the woman. [378] | The marriage of a minor performed by a paternal uncle will be dependent on the father's permission. [307]
- If a woman commits adultery with her husband's father or son, the marriage does not become void, although she becomes forbidden for the husband forever, and immediate separation becomes mandatory. [442] | If the guardian rejected an unauthorized marriage (Nikah Fuzuli) and then gave permission, it will not be valid. [307]
- Marriage is not terminated by 'Hurmat-e-Musaharah' until separation occurs; and before the completion of 'iddah', her marriage with another person will be unlawful. [442] | A guardian cannot give divorce on behalf of a minor. [307]
- After 'Hurmat-e-Musaharah', if the husband has intercourse with the woman, will it be considered adultery or not? [443] | If the father and grandfather are not present, the elder real brother is the true guardian for marriage; while he is present, the mother does not have the authority. [322]
- The Holy Quran has declared married women absolutely forbidden. [493] | After the waiting period, the authority for the marriage of a minor widow lies with her father, not her father-in-law. [333]

- If a woman allows her husband's father or son to commit adultery with her, 'Hurmat-e-Musaharah' will be established and the marriage will become invalid (fasid). [618]

फ़तावा रज़विया | खंड 13 | पृष्ठ 13

- रज़ाई मामा (दूध के रिश्ते वाला मामा) से निकाह एक घृणित निकाह है जिसे कभी बरकरार नहीं रखा जाएगा; पुरुष और स्त्री पर यह बहुत बड़ा फ़र्ज़ है कि वे तुरंत अलग हो जाएं यदि पुरुष नहीं मानता, तो स्त्री को स्वयं अलग हो जाना चाहिए। [375] | यदि पति स्वीकार करता है कि उसके पिता ने उसकी पत्नी के साथ चूमने और गले लगाने जैसे कृत्य किए हैं, तो वह स्त्री उस पर हराम हो गई। [623]
- यदि रज़ाई मामा और भांजी ने निकाह कर लिया है और वे अलग नहीं होते हैं, तो हाकिम (शासक) को उन्हें जबरन अलग कर देना चाहिए। [375] | **कफ़ाअत (विवाह में अनुकूलता)**
- सास के साथ व्यभिचार किया और उससे एक लड़की पैदा हुई, तो उस लड़की से शादी हराम है और इस हराम निकाह से पैदा होने वाला बच्चा वलद-उल-हराम (अवैध) है। [377] | एक महिला गैर-कुफ़ू (असमान) से कब निकाह कर सकती है? [316]
- सौतेली (बाप शरीक) बहन की नवासी (दोहित्री) से निकाह कतई हराम है; निकाह करने वाला, निकाह पढ़ाने वाला, वकील और गवाह सभी बड़े पाप (गुनाह-ए-कबीरा) में फंसे हुए हैं। [378] | **विलायत (अभिभावकत्व)**
- ज़ैद ने अपनी सौतेली बहन की नवासी से निकाह किया; अगर छह साल बाद अलगाव होता है, तो महिला पर इद्दत अनिवार्य है। [378] | चाचा द्वारा किया गया नाबालिग का निकाह पिता की अनुमति पर निर्भर होगा। [307]
- यदि स्त्री अपने पति के पिता या पुत्र के साथ व्यभिचार करती है, तो निकाह बातिल (अमान्य) नहीं होता, हालांकि वह पति पर हमेशा के लिए हराम हो जाती है और तुरंत अलग होना (मुतारका) अनिवार्य हो जाता है। [442] | यदि अभिभावक ने एक अनधिकृत निकाह (निकाह-ए-फ़ुज़ूली) को अस्वीकार कर दिया और फिर अनुमति दी, तो यह जायज़ नहीं होगा। [307]
- हुरमत-ए-मुसाहरत (ससुराली रिश्तों के कारण होने वाली हरामियत) से निकाह खत्म नहीं होता जब तक कि अलगाव न हो जाए और इद्दत पूरी होने से पहले उस महिला का किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह नाजायज़ होगा। [442] | नाबालिग की ओर से उसका वली (अभिभावक) तलाक नहीं दे सकता। [307]

- हुरमत-ए-मुसाहरत के बाद यदि पति महिला के साथ संभोग करता है, तो उसे व्यभिचार (ज़िना) माना जाएगा या नहीं? [443] | यदि पिता और दादा न हों, तो जवान सगा भाई विवाह के लिए वास्तविक वली है; उसके होते हुए माँ को अधिकार नहीं है। [322]
- कुरान-ए-अज़ीम ने शादीशुदा महिलाओं को कतई हराम करार दिया है। [493] | नाबालिग विधवा के निकाह का अधिकार इद्दत के बाद उसके पिता को है, न कि ससुर को। [333]
- यदि स्त्री अपने पति के पिता या पुत्र के साथ व्यभिचार करने देती है, तो हुरमत-ए-मुसाहरत स्थापित हो जाएगी और निकाह फ़ासिद (त्रुटिपूर्ण) हो जाएगा। [618]

- رضاعی ماموں سے عورت کا نکاح، نکاح خبیث ہے جو ہر گز قائم نہ رکھا جائے گا، مرد وزن پر فرض عظیم ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں، مرد نہ مانے تو عورت خود جدا ہو جائے۔ | ۳۷۵ | شوہر اگر اقرار کرے کہ اس کے باپ نے اس کی بیوی سے افعالِ مثل بوس و کنار وغیرہ کئے، عورت اس پر حرام ہو گئی۔ | ۶۲۳
- رضاعی ماموں بھانجی نے نکاح کر لیا اور جدا نہیں ہوتے تو حاکم بالجبر انہیں جدا کر دے۔ | ۳۷۵ | **کفاءت**
- ساس سے زنا کیا اس سے بچی پیدا ہوئی، اس لڑکی سے شادی حرام اور اس نکاح حرام سے جو بچہ پیدا ہوا ولد الحرام ہے۔ | ۳۷۷ | غیر کفو سے عورت کب نکاح کر سکتی ہے۔ | ۳۱۶
- علاتی بہن کی نواسی سے نکاح حرام قطعی، ناکح، نکاح خواں، وکیل اور گواہ سخت گناہ کبیرہ میں گرفتار ہیں۔ | ۳۷۸ | **ولایت**
- زید نے علاتی بہن کی نواسی سے نکاح کیا، چھ برس بعد تفریق ہوئی تو عورت پر عدت ضرور لازم ہے۔ | ۳۷۸ | چچا کا کیا ہوا نا بالغ کا نکاح باپ کی اجازت پر موقوف ہوگا۔ | ۳۰۷
- اگر عورت شوہر کے باپ یا بیٹے سے بد کاری کرے تو نکاح باطل نہیں ہوتا اگر چہ وہ شوہر پر ہمیشہ کے لیے حرام ہو جاتی ہے اور متارکہ فی الفور فرض ہو جاتا ہے۔ | ۴۴۲ | ولی نے نکاح فضولی کو رد کر دیا پھر اجازت دے تو جائز نہ ہوگا۔ | ۳۰۷

- حرمت مصاہرہ سے نکاح مرتفع نہیں ہوتا حتی کہ متارکہ اور انقضائے عدت سے قبل اس عورت کا نکاح کسی دوسرے شخص سے ناجائز ہوگا۔ | ۴۴۲ | نابالغ کی طرف سے اس کا ولی طلاق نہیں دے سکتا۔ | ۳۰۷
- حرمت مصاہرہ کے بعد شوہر اگر عورت سے وطی کرے تو اس کو زنا قرار دیا جائے گا یا نہیں۔ | ۴۴۳ | باپ دادا نہ ہوں تو جوان بھائی حقیقی ولی نکاح ہے، اس کے ہوتے ہوئے ماں کو اختیار نہیں۔ | ۳۲۲
- قرآن عظیم نے شوہر دار عورتوں کو حرام قطعی فرمایا ہے۔ | ۴۹۳ | معتدہ وفات نابالغہ کے نکاح کا اختیار بعد ازاں عدت اس کے باپ کو ہے نہ کہ سسر کو۔ | ۳۳۳
- عورت اگر شوہر کے باپ یا بیٹے سے زنا کرائے تو حرمت مصاہرت ثابت ہو جائے گی اور نکاح فاسد ہو جائے گا۔ | ۶۱۸ |

Ref.	Legal Ruling (Left Column)	Ref.	Legal Ruling (Right Column)
346	If the mother performed the marriage with an equal (Kufu) and the girl did not refuse upon reaching puberty, the marriage became binding.	333	Dower (Mahr) cannot be forgiven if forgiven by a minor.
391	If father and grandfather are not present, the right of guardianship for marriage (Wilayat-e-Nikah) of minors belongs to the uncle.	343	In the case of intercourse, Mahr-e-Mithl (fair dower) is also obligatory upon the second husband.
392	If the mother dies, the right of upbringing of the child belongs to the maternal grandmother, and the guardianship of the mother belongs to the father.	351	In an invalid marriage (Nikah-e-Fasid), if the husband has had proper intercourse, then it is obligatory to pay whichever is less between Mahr-e-Mithl and Mahr-e-Musamma (stipulated dower).
399	If there is no guardian for minor boys and girls other than the father's paternal cousin, then he also has the right of marriage guardianship, and for upbringing, a pious religious woman will be sought. For the custody of wealth, the executor (Wasi) of the father or grandfather will manage it, otherwise, the Qazi (judge) will select a pious Muslim for it.	465	Zaid married his foster-niece; after some time they separated, then full Mahr-e-Mithl will be obligatory, not Mahr-e-Musamma.
408	In the case of marriage of minors, the uncle among the agnates has the authority if he is present.	478	If separation occurs after marriage with Mahram (prohibited relatives), the man must pay the full Mahr-e-Mithl; Mahr-e-Musamma will not be considered.
412	After the father's death, the right of marriage and property management of the girl belongs to the grandfather,	480	Zaid and Hind lived in the same house after marriage; apparently no physical contact occurred, a child

Ref.	Legal Ruling (Left Column)
	and the right of upbringing up to nine years belongs to the mother.
	MAHR (DOWER)
202	The husband said, "If you forgive the dower, I will give a divorce." The woman said, "If you give a divorce, I have forgiven the dower." The husband gave two divorces; the divorce occurred, but the dower was not waived.
217	If the dower is neither prompt (mu'ajjal) nor deferred (mu'ajjal), the woman has no right to demand it until death or divorce.
307	'Khalwat-e-Sahiha' (valid privacy) makes the 'iddat' (waiting period) mandatory and the full dower also becomes obligatory.

Ref.	Legal Ruling (Right Column)
	was born; legally the child belongs to Zaid. If Zaid gave a divorce, the full dower will be obligatory.
417	The husband gains the right of restraint (habs) of the wife after the payment of prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal).
418	If prompt dower is not paid, the woman can stop the husband from benefit (intifa') and departure (rukhsati), and in this case, she will not be considered disobedient (nashiza).
424	Where promptness or deferment in dower is not mentioned, the ruling will be according to custom and tradition ('urf-o-riwaj).
424	In our lands, general dowers are usually set without any condition of promptness or deferment, so by the widespread and known custom, the women here do not have the right to demand dower until separation occurs by death or divorce, nor does the judge (Qazi) have the authority to compel payment of dower before separation in such a case.

सं.	कानूनी निर्णय (बायाँ कॉलम)	सं.	कानूनी निर्णय (दायाँ कॉलम)
३४६	माँ ने निकाह किया, अगर कुफ़ू (बराबर) के साथ किया और लड़की ने बालिग होते ही उससे इनकार नहीं किया, तो निकाह अनिवार्य हो गया।	३३३	नाबालिग द्वारा माफ़ करने से महर माफ़ नहीं हो सकता।
३९१	यदि पिता और दादा न हों तो नाबालिगों के निकाह के विलायत (संरक्षण) का अधिकार चाचा को है।	३४३	संभोग की स्थिति में दूसरे पति पर भी महर-ए-मिसल (उचित महर) अनिवार्य है।
३९२	यदि माँ मर जाए तो बच्चे के पालन-पोषण का अधिकार नानी को है और माँ की विलायत पिता को प्राप्त है।	३५१	निकाह-ए-फासिद (अवैध निकाह) में यदि पति ने सही संभोग कर लिया तो महर-ए-मिसल और महर-ए-मुसम्मा में से जो कम है, वह देना अनिवार्य होगा।
३९९	नाबालिग लड़कों और लड़कियों का संरक्षक पिता के चचेरे भाई के अलावा और कोई न हो तो निकाह की विलायत भी उसे ही प्राप्त है और पालन-पोषण के लिए किसी नेक धार्मिक महिला की तलाश की जाएगी और धन की देखरेख यदि पिता या दादा का वसी हो तो वह करे, अन्यथा काज़ी इसके लिए भी किसी धार्मिक मुसलमान का चुनाव करे।	४१७	ज़ैद ने अपनी रज़ाई (दूध शरीक) भांजी से निकाह किया, कुछ समय बाद अलगाव हो गया, तो पूरा महर-ए-मिसल अनिवार्य होगा न कि महर-ए-मुसम्मा।
४०८	नाबालिगों के निकाह का अधिकार असबात (रक्त संबंधी) में चाचा को है यदि वह मौजूद है।	४७८	महरम (प्रतिबंधित रिश्तेदारों) से निकाह के बाद अलगाव हो तो पुरुष पर पूरा महर-ए-मिसल अनिवार्य होगा, महर-ए-मुसम्मा का ध्यान नहीं रखा जाएगा।

सं.	कानूनी निर्णय (बायाँ कॉलम)	सं.	कानूनी निर्णय (दायाँ कॉलम)
४१२	पिता की मृत्यु के बाद लड़की के निकाह और संपत्ति की देखरेख का अधिकार दादा को है और नौ वर्ष तक पालन-पोषण का अधिकार माँ को है।	४८०	ज़ैद और हिंदा निकाह के बाद एक ही घर में रहते थे, ज़ाहिर तौर पर कोई शारीरिक संबंध नहीं हुआ, बच्चा पैदा हुआ; शरीयत के अनुसार बच्चा ज़ैद का है। यदि ज़ैद ने तलाक़ दिया तो पूरा महर अनिवार्य होगा।
	महर (Dower)	४१७	पति को पत्नी को रोकने (हब्स) का अधिकार महर-ए-मुअज्जल (तत्काल देय महर) की अदायगी के बाद प्राप्त होता है।
२०२	पति ने कहा, "अगर तुम महर माफ़ कर दो तो मैं तलाक़ दूँगा।" औरत बोली, "अगर तुम तलाक़ दे दो तो मैंने महर माफ़ कर दिया।" पति ने दो तलाक़ दिए; तलाक़ हो गया लेकिन महर माफ़ नहीं हुआ।	४१८	यदि महर-ए-मुअज्जल अदा न हो तो औरत पति को फ़ायदा उठाने और रुख़सती से रोक सकती है, और इस स्थिति में वह नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) नहीं होगी।
२१७	यदि महर न तो मुअज्जल हो और न ही मुअज्जल, तो जब तक मृत्यु या तलाक़ न हो, औरत को उसकी माँग का अधिकार नहीं है।	४२४	जहाँ महर में तत्काल या विलंब का कोई उल्लेख न हो, वहाँ फैसला रीति-रिवाज़ ('उर्फ़ओ-रिवाज) के अनुसार होगा।
३०७	'ख़लवत-ए-सहीहा' (एकांत) से इद्दत अनिवार्य हो जाती है और महर भी पूरा अनिवार्य हो जाता है।	४२४	हमारे शहरों में सामान्यतः महर इस तरह तय होते हैं कि उनमें तत्काल या विलंब की कोई शर्त नहीं होती, तो प्रचलित रीति-रिवाज़ के अनुसार यहाँ की औरतें तब तक महर की माँग का अधिकार नहीं रखतीं जब तक कि मृत्यु या तलाक़ से अलगाव न हो जाए, न ही काज़ी को अधिकार है कि ऐसी स्थिति में अलगाव से पहले महर की अदायगी पर मजबूर करे।

| ۳۴۶ | ماں نے نکاح کیا، اگر کفو کے ساتھ کیا اور لڑکی نے بالغ ہوتے ہی اس سے انکار نہ کیا، نکاح لازم ہو گیا۔ | ۳۳۳ | نابالغہ کے معاف کئے سے مہر معاف نہیں ہو سکتا۔ | | ۳۹۱ | باپ دادا نہ ہوں تو نابالغوں کی ولایتِ نکاح کا حق چچا کو ہے۔ | ۳۴۳ | صورتِ جماع میں دوسرے شوہر پر بھی مہرِ مثل واجب ہے۔ | | ۳۹۲ | ماں مر گئی بچہ کا حق پرورش نانی کو ہے اور اس کے ماں کی ولایت باپ کو حاصل ہے۔ | ۳۵۱ | نکاحِ فاسد میں اگر شوہر نے وطی صحیح کر لی تو مہرِ مثل اور مہرِ مسمّیٰ میں سے جو کم ہے وہ دینا لازم ہو گا۔ | | ۳۹۹ | نابالغ لڑکوں اور لڑکیوں کا نگران باپ کے چچا زاد بھائی کے علاوہ نہیں تو ولایت نکاح بھی اسی کو حاصل ہے اور پرورش کے لئے کسی صالح دیندار عورت کو تلاش کیا جائے گا اور مال کی نگہداشت باپ دادا کا وصی ہو تو وہ کرے ورنہ قاضی اس کے لئے بھی کسی دیندار مسلمان کا انتخاب کرے۔ | ۴۶۵ | زید نے رضاعی بھانجی سے نکاح کیا کچھ عرصہ بعد تفریق ہو گئی تو پورا مہر مثل لازم ہو گا نہ کہ مہرِ مسمّیٰ۔ | | ۴۰۸ | نابالغوں کے نکاح کا اختیار عصبات میں چچا کو ہے اگر وہ موجود ہے۔ | ۴۷۸ | محارم سے نکاح کے بعد تفریق ہو تو مرد پر پورا مہر مثل واجب ہو گا مہر مسمّیٰ کا لحاظ نہ ہو گا۔ | | ۴۱۲ | باپ کے انتقال کے بعد لڑکی کے نکاح اور مال کی نگہداشت کا حق دادا کو ہے اور نو برس تک پرورش کا حق ماں کو ہے۔ | ۴۸۰ | زید و ہندہ نکاح کے بعد ایک ہی مکان میں رہتے تھے باہم مواصلت بظاہر نہیں ہوئی، بچہ پیدا ہوا شرعاً بچہ زید کا ہے، اگر زید نے طلاق دی پورا مہر واجب ہو گا۔ | | | **مہر** | ۴۱۷ | شوہر کو حقِ حبسِ زوجہ، مہرِ معجّل کی ادائیگی کے بعد حاصل ہوتا ہے۔ | | ۲۰۲ | شوہر نے کہا تو مہر بخشے تو طلاق دوں گا۔ عورت بولی اگر تو طلاق دے تو میں نے مہر بخش دیا، شوہر نے دو

طلاق دی، طلاق واقع ہوئی مہر ساقط نہ ہوا۔ | ۴۱۸ | مہر معجّل نہ ادا ہو تو عورت شوہر کو انتفاع اور رخصتی سے روک سکتی ہے، اور اس صورت میں ناشزہ نہ ہو گی۔ | | ۲۱۷ | مہر اگر نہ معجّل ہو نہ مؤجّل تو جب تک موت یا طلاق نہ ہو عورت کو اس کے مطالبہ کا اختیار نہیں۔ | ۴۲۴ | جہاں مہر میں تعجیل یا تاجییل کچھ مذکور نہ ہو تو وہاں حکمِ عرف و رواج کے مطابق ہو گا۔ | | ۳۰۷ | خلوت صحیحہ سے عدت لازم آجاتی ہے مہر بھی پورا واجب ہوتا ہے۔ | ۴۲۴ | ہمارے بلاد میں عامہ مہروں یوں بندھتے ہیں کہ ان میں تعجیل و تاجییل کچھ مشروط نہیں ہوتی تو بحکمِ عرفِ شائع و ذائع یہاں کی عورتیں جب تک مرگ یا طلاق سے افتراق نہ واقع ہو ہرگز مطالبہ مہر کا استحقاق نہیں رکھتیں، نہ قاضی کو اختیار ہے کہ ایسی صورت میں پیش از افتراق ادائے مہر پر جبر کرے۔ |

Fatawa-e-Razwiya - Volume 13

Page No.	Serial No.	Dower (Mahr) related rulings	Fosterage (Raza'at) / Divorce (Talaq) related rulings
	441	If a woman waives her dower without religious compulsion, it is dropped from the husband's responsibility.	**Fosterage**
288	442	The discharge of dower without the woman's admission or just evidence cannot be proven before a judge.	Prohibition due to fosterage is not established by nursing after the age of two and a half years.
	458	In marriages with prohibited degrees (mahrams), the dower that is mandatory is the lesser of the 'proper dower' (mahr-e-misl) and the 'specified dower' (mahr-e-musamma).	**Divorce**
118	458	After consummation, a full and complete dower becomes mandatory upon divorcing the wife.	The phrase "I will separate from the marriage" is just a promise, and divorce does not occur by a promise.
118	460	A dower that was not fixed as prompt (mu'ajjal) nor had any period fixed for it, the woman cannot demand it before death or divorce.	By saying "Talaq mi kunam" (I am divorcing), divorce occurs, unlike saying "Talaq kunam" (I will divorce).
120	774	Dower is not compensation for any service; it is the exchange for the consummation in marriage.	A few examples of divorce not occurring due to lack of attribution.
123	774	The dower will not be dropped if the woman is of unsound mind.	In the mentioned divorces, in all cases, divorce occurs legally (qada'an), except for those words that have the capacity for retort and response.
124	482	As long as divorce or death does not occur, a non-periodical dower does not become payable.	In the case of non-attribution, if the husband denies the intention, divorce does not

Page No.	Serial No.	Dower (Mahr) related rulings	Fosterage (Raza'at) / Divorce (Talaq) related rulings
			occur even with the word 'talaq'.
137	618	If a woman who committed adultery is divorced, she must observe the waiting period ('iddah) in the same house, and the husband is liable for her dower and maintenance during 'iddah.	Even if one intends an irrevocable divorce (ba'in) with explicit words (sarih), only a revocable divorce (raj'i) will occur.
139		**Dowry (Jahez)**	If I marry any woman other than you, then you are given such a divorce that you become the owner of your self, by which one irrevocable divorce (ba'in) will occur.
	395	Dowry is the property of the woman, and after her death, it will be divided according to the inheritance laws of Allah.	

फ़तावा-ए-रज़विया - जिल्द १३

पृष्ठ संख्या	क्रमांक	मेहर से संबंधित निर्देश	रज़ाअत (स्तनपान) / तलाक़ से संबंधित निर्देश
	441	यदि कोई महिला बिना किसी धार्मिक दबाव के अपना मेहर माफ़ कर दे, तो वह पति की जिम्मेदारी से हट जाता है।	**रज़ाअत**
288	442	महिला की स्वीकारोक्ति या न्यायपूर्ण साक्ष्य के बिना काजी के समक्ष मेहर की माफी साबित नहीं की जा सकती।	ढाई वर्ष की आयु के बाद दूध पीने से रज़ाअत की हुरमत (प्रतिबंध) स्थापित नहीं होती।
	458	महरमों (निषिद्ध रिश्तों) के साथ निकाह में मेहर-ए-मिस्ल और मेहर-ए-मुसम्मा में से जो कम हो, वही वाजिब होता है।	**तलाक़**
118	458	संभोग के बाद पत्नी को तलाक़ देने पर पूरा और संपूर्ण मेहर वाजिब होगा।	यह शब्द कि "निकाह से अलग कर दूँगा" केवल एक वादा है, और वादे से तलाक़ प्रभावी नहीं होता।
118	460	वह मेहर जो न तो तत्काल (मुअज्जल) तय किया गया हो और न ही उसकी कोई अवधि निश्चित की गई हो, महिला मृत्यु या तलाक़ से पहले उसकी मांग नहीं कर सकती।	"तलाक़ मी कुनम" (मैं तलाक़ देता हूँ) कहने से तलाक़ हो जाता है, "तलाक़ कुनम" (मैं तलाक़ दूँगा) के विपरीत।
120	774	मेहर किसी सेवा का मुआवजा नहीं है, यह निकाह में संभोग का प्रतिफल है।	संबंध के अभाव के कारण तलाक़ न होने के कुछ उदाहरण।
123	774	महिला के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने से मेहर समाप्त नहीं होगा।	उल्लिखित तलाक़ों में सभी स्थितियों में कानूनी तौर पर तलाक़ प्रभावी हो जाता है, उन शब्दों को छोड़कर जिनमें उत्तर-प्रत्युत्तर की क्षमता हो।

पृष्ठ संख्या	क्रमांक	मेहर से संबंधित निर्देश	रज़ाअत (स्तनपान) / तलाक़ से संबंधित निर्देश
124	482	जब तक तलाक़ या मृत्यु न हो जाए, तब तक गैर-सावधि मेहर देय नहीं होता।	संबंध न होने की स्थिति में यदि पति नीयत से इनकार कर दे, तो 'तलाक़' शब्द से भी तलाक़ नहीं होता।
137	618	यदि व्यभिचारिणी महिला को तलाक़ दिया जाए, तो उसे उसी घर में इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बितानी होगी, और पति पर मेहर और इद्दत का भरण-पोषण अनिवार्य है।	स्पष्ट शब्दों (सराह) से यदि कोई बाइन (अटल) तलाक़ की नीयत भी करे, तब भी वह रजई (प्रतिसंहरणीय) ही होगा।
139		**जहेज़**	यदि मैं तुम्हारे सिवा किसी और महिला से निकाह करूँ तो तुम्हें ऐसी तलाक़ कि तुम स्वयं की मालिक बन जाओ, इससे एक तलाक़-ए-बाइन पड़ेगी।
	395	जहेज़ महिला की संपत्ति है और उसकी मृत्यु के बाद इसे अल्लाह के नियमों (विरासत) के अनुसार विभाजित किया जाएगा।	

صفحہ	نمبر شمار	مہر کے احکام	رضاعت / طلاق کے احکام
	۴۴۱	عورت اگر بلا اکراہ شرعی مہر معاف کردے تو شوہر کے ذمہ سے ساقط ہو جاتا ہے۔	**رضاعت**
۲۸۸	۴۴۲	ابراء مہر بلا اقرارِ زن یا بینہ عادلہ قاضی کے پاس ثابت نہیں ہو سکتا۔	اڑھائی برس کی عمر کے بعد دودھ پینے سے حرمت رضاعت ثابت نہیں ہوتی۔
	۴۵۸	نکاح محرمات میں نکاح پر مہر مثل اور مسمیٰ میں سے جو کم ہو وہ واجب ہے۔	**طلاق**
۱۱۸	۴۵۸	موطوہ بیوی کو طلاق دینے سے مہر تمام و کمال واجب ہوگا۔	یہ لفظ کہ "نکاح سے علیحدہ کردوں گا" یہ نرا وعدہ ہے اور وعدہ سے طلاق واقع نہیں ہوتی۔
۱۱۸	۴۶۰	جو مہر نہ معجّل باندھا ہو نہ اس کی کوئی میعاد مقرر کی گئی ہو عورت قبل موت یا طلاق اس کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔	"طلاق می کنم" کہنے سے طلاق ہو جاتی ہے بخلاف "طلاق کنم" کے۔

صفحہ	نمبر شمار	مہر کے احکام	رضاعت / طلاق کے احکام
۱۲۰	۷۷۴	مہر کسی خدمت کا معاوضہ نہیں وہ نکاح میں بضع کا عوض ہے۔	عدم اضافت کے سبب طلاق واقع نہ ہونے کی چند مثالیں۔
۱۲۳	۷۷۴	عورت کے فاتر العقل ہونے سے مہر ساقط نہ ہوگا۔	متذکرہ طلاق میں تمام صورتوں میں قضاءً طلاق واقع ہو جاتی ہے سوائے ان الفاظ کے جو رد و جواب کی صلاحیت رکھتے ہوں۔
۱۲۴	۴۸۲	جب تک طلاق یا موت واقع نہ ہو غیر میعادی مہر واجب الادا نہیں ہوتا۔	عدم اضافت کی صورت میں شوہر انکار نیت کرے تو لفظ طلاق سے بھی طلاق واقع نہیں ہوتی۔
۱۳۷	۶۱۸	زانیہ کو طلاق دی تو عورت کو عدت اسی مکان میں گزارنا لازم ہے اور شوہر پر مہر اور نفقہ عدت لازم ہے۔	طلاق صریح سے بائن کی نیت کرے تب بھی رجعی ہی واقع ہو گی۔
۱۳۹		**جہیز**	اگر میں تیرے سوا کسی اور عورت سے شادی کروں تو تجھ کو ایسی طلاق کہ تو اپنے نفس کی مالک ہو اس سے ایک طلاق بائن پڑے گی،
	۳۹۵	جہیز عورت کی ملک ہوتا ہے اور بعد اس کی مرگ کے فرائض اللہ پر تقسیم پائے گا۔	

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

Index	Ref	Content Description	Ref	Content Description
243	166	If the third divorce is given, the wife becomes absolutely forbidden; she cannot become lawful even through remarriage until *halala* is performed.	166	Divorce will not occur by saying "it should be considered a divorce."
245	192	After the third divorce, a woman cannot become lawful for her husband without *halala*, regardless of whether there was a revocation (ruju') after the first divorce or not.	192	"To consider lack of maintenance as divorce" - if maintenance is not provided, divorce will not occur.
267	192	Books of Jurisprudence (Fiqh) unanimously state that three divorces lead to absolute prohibition (hurmat-e-ghaliza).	192	The phrase "I will give you a divorce" is merely unreliable and a promise; nothing occurs because of it.
267	206	There is a consensus among the four Imams of the four schools of thought that three divorces pronounced in one place, at one time, in a single instance, and with a single word, do occur.	206	The sentence "If I speak to you, I will speak to my mother or sister" is absurd/irrelevant in the context of divorce.
272	213	What is the Sharia ruling if a man says to his wife, "Three divorces upon you on condition"?	213	If calling a woman mother or sister instead of wife is done with the intention of divorce, then it is divorce; if it means prohibition, then it is *Zihar*; and if no intention exists, then religiously (diyanatan) it is nothing.
280	226	The ruling on giving three divorces to an	226	Divorce does not occur by calling a woman "mother" with the intention of divorce.

Index	Ref	Content Description	Ref	Content Description
		unconsummated wife with one word or with separate words.		
281	226	An unconsummated wife is subject to three divorces at once.	226	If one says to the wife with the intention of divorce, "You are like or as or in place of my mother or sister," then one *Talaq-e-Bain* (irrevocable divorce) will occur.
281	226	Details of the issue of three divorces regarding the conjunction, conditional or immediate pronouncement, and before or after the condition, and regarding a consummated or unconsummated woman.	226	If one says to the wife without any intention, "You are to me like my mother," then this word will be absurd and futile; divorce or expiation (*kaffara*) etc. will not be necessary.
281	233	Zaid said to his wife, "I will complete the three divorces"; this is merely a promise, and divorce does not occur by a promise.	233	Divorce does not occur by calling the wife mother, sister, or daughter, even if said with the intention of divorce.
282	238	The words "annulment of marriage" and "freedom" are among the metaphorical expressions (kinayat) of divorce.	238	If a woman was publicized as "mother" with the intention of divorce, it will be considered divorce legally (qaza'an). However, if his statement makes it clear that this admission of divorce was based on this misunderstanding, then even legally, divorce will not occur.
	240	If permission for a second marriage was given with the intention of divorce, then divorce will occur, and the husband's statement regarding intention will be credible upon oath.		

फतावी रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

इंडेक्स संदर्भ		विवरण	संदर्भ	विवरण
243	166	तीसरी तलाक़ दे दी तो अब बीवी हराम-ए-क़तई हो गई, निकाह के नवीनीकरण से भी हलाल नहीं हो सकती जब तक कि हलाला न हो जाए।	166	"तलाक़ समझी जाए" कहने से तलाक़ वाक़े(प्रभावी) नहीं होगी।
245	192	तीसरी तलाक़ के बाद औरत पति के लिए बिना हलाला हलाल नहीं हो सकती, चाहे पहली तलाक़ के बाद रुजू (वापसी) किया हो या नहीं।	192	"देखभाल न करने को तलाक़ समझना" - अगर देखभाल न की गई तो तलाक़ वाक़े नहीं होगी।
267	192	फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की पुस्तकें निर्विवाद रूप से तीन तलाक़ों को स्थायी निषेध (हुरमत-ए-ग़लीज़ा) के लिए पुष्ट करती हैं।	192	यह शब्द कि "मैं तुझे तलाक़ दे दूँगा" महज़ अविश्वसनीय और एक वादा है, इससे कुछ भी वाक़े नहीं होता।
267	206	चारों मज़ाहिब (विचारधाराओं) के चारों इमामों का इस पर इज्मा (सहमति) है कि तीन तलाक़ें एक स्थान, एक समय, एक ही बार और एक ही शब्द में प्रभावी हो जाती हैं।	206	"अगर मैं तुझसे बात करूँ तो अपनी माँ-बहन से बात करूँ- यह वाक्य तलाक़ के संदर्भ में निरर्थक है।
272	213	पति ने पत्नी से कहा "तुझ पर शर्त के साथ तीन तलाक़", तो इसका शरिया हुक्म क्या है?	213	औरत को बीवी के बजाय माँ-बहन कहने से अगर तलाक़ की नियत (इच्छा) हो तो तलाक़, और अगर निषेध मुराद (इरादा) हो तो 'ज़िहार' है, और अगर कुछ भी मुराद न हो तो धार्मिक दृष्टि (दियानतन) से कुछ नहीं।

इंडेक्स	संदर्भ	विवरण	संदर्भ	विवरण
280	226	ग़ैर-मदख़ूला (जिससे सहवास न हुआ हो) पत्नी को एक शब्द में तीन तलाक़ देने और अलग-अलग शब्दों में तीन तलाक़ देने का हुक्म।	226	तलाक़ की नियत से औरत को माँ कहने से तलाक़ नहीं होती।
281	226	ग़ैर-मदख़ूला पत्नी एक ही बार में तीन तलाक़ का पात्र है।	226	बीवी को तलाक़ की नियत से कहा कि "तू मेरी माँ-बहन की तरह या समान या उसके स्थान पर है", तो एक 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक़) हो जाएगी।
281	226	तीन तलाक़ के मसले का विवरण संयोजक अक्षर (हर्फ़ए-अतफ़), शर्त के साथ जोड़ना (ता'लीक़), तत्काल प्रभावी करना (तंजीज़), शर्त के पहले या बाद में होने के आधार पर, और मदख़ूला व ग़ैर-मदख़ूला पत्नी के आधार पर।	226	बीवी को बिना किसी नियत के कहा कि "तू मुझ पर मेरी माँ की तरह है", तो यह शब्द निरर्थक और व्यर्थ होगा, तलाक़ या कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) आदि कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा।
281	233	ज़ैद ने अपनी बीवी से कहा कि "तीनों तलाक़ पूरी कर दूँगा", यह महज़ एक वादा है और वादे से तलाक़ नहीं होती।	233	बीवी को माँ, बहन या बेटी कहने से तलाक़ नहीं होती चाहे तलाक़ की नियत से ही क्यों न कहा हो।
282	238	निकाह का विच्छेद (फ़स्ख़) और 'आज़ादी' शब्द तलाक़ के प्रतीकात्मक (किनायत) शब्दों में से हैं।	238	अगर औरत को तलाक़ की नियत से माँ कहकर प्रसिद्ध किया गया तो यह क़ानूनी तौर पर (क़ज़ाअन) तलाक़ मानी जाएगी। हाँ, अगर उसके बयान से यह स्पष्ट हो कि तलाक़ का यह इक़रार (स्वीकृति) इसी गलतफ़हमी की वजह से था, तो क़ानूनी तौर पर भी तलाक़ नहीं होगी।

दूसरे निकाह की अनुमति से अगर तलाक़ की नियत की गई तो तलाक़ 240 वाक़े हो जाएगी और नियत के बारे में पति का बयान शपथ के साथ विश्वसनीय होगा।

انڈیکس حوالہ	تفصیل مضمون	حوالہ	تفصیل مضمون
	تیسری طلاق دے دی تو اب بیوی		
۲۴۳ ۱۶۶	حرام قطعی ہوگئی تجدید نکاح سے بھی حلال نہیں ہو سکتی تاوقتیکہ حلالہ نہ ہو جائے۔	۱۶۶	"طلاق سمجھی جائے" سے طلاق واقع نہ ہوگی۔
	تیسری طلاق کے بعد عورت		
۲۴۵ ۱۹۲	خاوند کے لئے بلا حلالہ حلال نہیں ہو سکتی چاہے پہلی طلاق کے بعد رجوع کیا ہو یا نہ کیا ہو۔	۱۹۲	"عدم خبر گیری کو طلاق سمجھنا" خبر گیری نہ کی تو طلاق واقع نہ ہوگی۔
	کتب فقہ بالاختلاف تین طلاقوں		
۲۶۷ ۱۹۲	کو مطلقاً حرمت غلیظہ کے لئے مثبت بیان کرتی ہیں۔	۱۹۲	یہ لفظ کہ "میں تجھ کو طلاق دے دوں گا" محض نا معتبر، اور وعدہ ہے، اس سے کچھ واقع نہیں ہوتا۔
	چاروں مذاہب کے چاروں اماموں		
۲۷۲ ۲۱۳ ۲۶۷ ۲۰۶	کا اجماع ہے کہ تین طلاقیں ایک جگہ ایک وقت ایک ہی دفعہ ایک ہی لفظ میں واقع ہو جاتی ہیں۔	۲۰۶	"میں تجھ سے کلام کروں تو اپنی ماں بہن سے کلام کروں" یہ جملہ باب طلاق میں لغو ہے۔
		۲۱۳	

انڈیکس حوالہ		تفصیل مضمون حوالہ		تفصیل مضمون
				مرد نے بیوی سے کہا تجھ پر تینوں شرط سے طلاق، تو کیا حکم شرعی ہے۔
۲۸۰	۲۲۶	۲۲۶	غیر مدخولہ کو ایک لفظ سے تین طلاق دینے اور متفرق الفاظ میں تین طلاق دینے کا حکم۔	عورت کو طلاق کی نیت سے ماں کہنے سے طلاق نہیں ہوتی۔
۲۸۱	۲۲۶	۲۲۶	زن غیر مدخولہ یکبارگی تین طلاق کی محل ہے۔	بیوی کو بنیت طلاق کہا کہ تو مثل یا مانند یا بجائے ماں بہن ہے تو ایک طلاق بائن ہو جائے گی۔
۲۸۱	۲۲۶	۲۲۶	مسئلہ طلاقِ ثلثہ کی تفصیل باعتبار حرف عطف اور باعتبار تعلیق و تنجیز اور باعتبار تقدم و تاخر شرط اور باعتبار زن مدخولہ و غیر مدخولہ۔	بیوی کو بلا کسی نیت کے کہا کہ تو مجھ پر مثل میری ماں کے ہے، تو یہ لفظ لغو و مہمل ہو گا طلاق یا کفارہ وغیرہ کچھ لازم نہ آئے گا۔
۲۸۱	۲۳۳	۲۳۳	زید نے اپنی بیوی کو کہا کہ تینوں طلاق پوری کردوں گا، یہ محض وعدہ ہے اور وعدہ سے طلاق نہیں ہوتی۔	بیوی کو ماں، بہن یا بیٹی کہنے سے طلاق نہیں ہوتی اگر چہ بنیت طلاق کہے۔

انڈیکس حوالہ	تفصیل مضمون حوالہ	تفصیل مضمون
۲۸۲ ۲۳۸	فسخِ نکاح اور آزادی کا لفظ کنایات طلاق سے ہے۔	عورت کو طلاق کی نیت سے ماں کہہ کر مشہور کیا تو یہ قضاءً طلاق مانی جائے ۲۳۸ گی، ہاں اگر اس کے قول سے یہ واضح ہو کہ یہ اقرار طلاق اسی غلط فہمی کی بناء پر تھا تو قضاء بھی طلاق نہ ہوگی۔
۲۴۰	دوسرے نکاح کی اجازت سے طلاق کی نیت کی تو طلاق واقع ہو گی اور نیت کے بارے میں شوہر کا قول قسم سے معتبر ہوگا۔	

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

Page	Serial	Ruling Description	Detailed Answer / Related Issue
481	282	A patient suffering from pleurisy (Sarsam) divorced his wife. After recovering, he stated, 'I have divorced my wife.' Later he said, 'I believed that in the state of pleurisy, divorce occurs automatically.' What is the ruling?	Divorce is tied to the husband's tongue. When he says 'I have given divorce,' then divorce has occurred. If he hadn't given it before, it has taken effect now.
529	289	Calling a wife 'mother' or 'sister' is neither divorce nor Zihar (a specific form of separation).	When a husband gives his wife a 'Bayin' (irrevocable) divorce, the authority to prevent remarriage is removed.
531	290	Saying 'make your abode elsewhere' with the intention of divorce is a metaphorical expression (Kinayah); an irrevocable divorce will occur.	If someone said to his wife, 'Any woman I marry without your permission will be divorced,' then gave his wife an irrevocable or severe divorce, and subsequently married another woman without the former wife's permission, divorce will take effect on the new wife.
618	292	The word 'Chhorne' (leaving) is an explicit form of divorce; the Iddah (waiting period) starts immediately after it is uttered.	It is not mandatory for a husband to divorce an adulterous woman.
618	307	A minor boy is not capable of giving divorce, therefore, any divorce given by him is invalid.	Just as divorce occurs through spoken words, it also occurs through writing if written according to Shariah without compulsion.
618	307	Obtaining a divorce before a son reaches puberty due to opposition is absolutely void.	If a divorce deed specifies a revocable divorce, but the husband admits it was meant to be irrevocable, then it becomes irrevocable.
	322		

Page	Serial	Ruling Description	Detailed Answer / Related Issue
		Calling a wife 'mother' is a sin, but divorce does not occur because of it.	Kinayah (Metaphorical expressions of divorce).
118	432	A marriage is not annulled due to an accusation, even if the accusation is factually true.	Explanation of the meaning of the word 'Jawab' (answer) and how it can be a metaphor for divorce.
119	434	It is not mandatory for a husband to divorce a profligate woman.	A phrase that can be rejected (Salih-e-Radd) always requires intention, whether uttered in anger or during a discussion about divorce.
119	435	The popular belief among the ignorant that if a woman, God forbid, is of bad character, the marriage is automatically annulled, is completely false.	There are three types of Kinayaat (metaphorical expressions).
370	442	Adultery by women does not lead to the annulment of marriage.	'I have no relation with her' is a metaphor; intention is a necessary condition for it to count as divorce.
	442	The knot of marriage is in the hands of the man.	

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

पृष्ठ	क्रमांक	हुक्म का विवरण	विस्तृत उत्तर / संबंधित विषय
481	282	सरसाम (प्लीयुरीसी) के मरीज़ ने बीवी को तलाक़ दी, फिर ठीक होने के बाद कहा 'मैंने अपनी बीवी को तलाक़ दी', बाद में कहता है कि मैंने यह समझा था कि हालत-ए-सरसाम में तलाक़ वाक़े हो जाती है, तो क्या हुक्म है।	तलाक़ शौहर की ज़बान पर है; जब वो कहता है कि 'मैंने तलाक़ दे दी' तो तलाक़ हो गई। अगर उसने पहले नहीं दी थी, तो अब हो गई।
529	289	औरत को माँ-बहन कहना तलाक़ है न ज़िहार।	खाविंद जब बीवी को तलाक़-ए-बाइन (अकाट्य तलाक़) दे दे तो विलायत-ए-मना (रोकने का अधिकार) ज़ाइल हो जाता है।
531	290	'अपना ठिकाना दूसरी जगह कर ले' कहना, यदि तलाक़ की नियत हो तो यह किनाया (अप्रत्यक्ष शब्द) है, तलाक़-ए-बाइन वाक़े होगी।	यदि किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, 'मैं जिस औरत से तुम्हारी अनुमति के बिना निकाह करूँगा उसे तलाक़ होगी', फिर उसने अपनी पत्नी को तलाक़-ए-बाइन या मुग़ल्लज़ह दे दी और बाद में उस तलाक़शुदा की अनुमति के बिना किसी अन्य महिला से निकाह किया, तो तलाक़ हो जाएगी।
618	292	'छोड़ने' का शब्द सरीह (स्पष्ट) तलाक़ है; इसके कहने के फ़ौरन बाद से इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गिनी जाएगी।	ज़ानिया (व्यभिचारिणी) को तलाक़ देना शौहर पर वाजिब (अनिवार्य) नहीं है।
618	307	नाबालिग लड़का तलाक़ देने का पात्र नहीं है, अतः उसके द्वारा दी गई तलाक़ मान्य नहीं होगी।	तलाक़ जिस प्रकार ज़बान से होती है, उसी प्रकार लेखनी (कलम) से भी होती है यदि वह

पृष्ठ	क्रमांक	हुक्म का विवरण	विस्तृत उत्तर / संबंधित विषय
			बिना किसी मजबूरी के शरीयत के अनुसार लिखा गया हो।
618	307	पुत्र के वयस्क होने से पहले विरोध के कारण तलाक़ दिलवाना पूर्णतः अमान्य है।	तलाक़नामे में तलाक़-ए-रजी (प्रतिसंहरणीय) हो, लेकिन शौहर तलाक़-ए-बाइन का स्वीकार करे, तो वह बाइन हो जाती है।
	322	पत्नी को माँ कहना गुनाह है, लेकिन इससे तलाक़ वाक़े नहीं होती।	किनाया (तलाक़ के अप्रत्यक्ष शब्द)
118	432	आरोप के कारण, चाहे वह आरोप वास्तव में सही ही क्यों न हो, महिला का निकाह समाप्त नहीं होता।	शब्द 'जवाब' के अर्थ और इसके तलाक़ का किनाया होने का विवरण।
119	434	दुराचारी महिला को तलाक़ देना शौहर पर वाजिब नहीं है।	जो शब्द अस्वीकार करने योग्य (सालेह-ए-रद) हो, वह हर हाल में नियत (इरादे) पर निर्भर है, चाहे वह क्रोध की स्थिति में हो या तलाक़ की चर्चा के दौरान।
119	435	अज्ञानियों के बीच यह बात प्रसिद्ध है कि यदि महिला, ईश्वर न करे, दुराचारिणी हो जाए तो निकाह समाप्त हो जाता है, यह पूरी तरह से ग़लत है।	किनायात (अप्रत्यक्ष शब्द) तीन प्रकार के होते हैं।
370	442	महिलाओं द्वारा व्यभिचार निकाह के रद्दीकरण का कारण नहीं है।	'मेरा उससे कोई संबंध नहीं' किनाया है; इससे तलाक़ के लिए नियत एक शर्त है।
	442	निकाह की गाँठ पुरुष के हाथ में है।	

فتاویٰ رضویہ ، جلد سیزدہم ، صفحہ ۱۳

نمبر شمار	صفحہ	حکم کا خلاصہ	جواب یا متعلقہ مسئلہ
۴۸۱	۲۸۲	برسام کے مریض نے بیوی کو طلاق دی پھر ٹھیک ہونے کے بعد کہا میں نے اپنی بیوی کو طلاق دی ، بعدہ کہتا ہے کہ میں نے یہ سمجھا تھا کہ حالت برسام میں طلاق واقع ہو جاتی ہے تو کیا حکم ہے۔	طلاق شوہر کی زبان پر ہے جب وہ کہتا ہے کہ میں نے طلاق دے دی طلاق ہو گئی ، نہ دی تھی تو اب ہو گئی۔
۵۲۹	۲۸۹	عورت کو ماں بہن کہنا طلاق ہے نہ ظہار،	خاوند جب بیوی کو طلاق بائن دے دے تو ولایت منع زائل ہو جاتی ہے۔
۵۳۱	۲۹۰	اپنا ٹھکانا دوسری جگہ کرلے، نیت طلاق ہے تو کنایہ ہے، طلاق بائن واقع ہوگی۔	کسی شخص نے اپنی بیوی کو کہا میں جس عورت سے تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں اس کو طلاق ہوگی، اس کے بعد بیوی کو طلاق بائن یا مغلظہ دے دی پھر کسی عورت سے اس مطلقہ کی اجازت کے بغیر نکاح کیا تو طلاق ہو جائے گی،
۶۱۸	۲۹۲		زانیہ کو طلاق دینا شوہر پر واجب نہیں۔

صفحہ	نمبر شمار	حکم کا خلاصہ	جواب یا متعلقہ مسئلہ
		"چھوڑنے" کا لفظ صریح طلاق ہے، اس کے کہنے کے فوراً بعد سے عدت شمار ہوگی۔	
۶۱۸	۳۰۷	نابالغ لڑکا اہل طلاق نہیں لہٰذا اس کے دیئے سے طلاق نہ ہوگی۔	طلاق جس طرح زبان سے ہوتی ہے اسی طرح قلم سے جبکہ بلا مجبوری شرع لکھا ہو۔
۶۱۸	۳۰۷	بلوغ پسر سے پہلے بوجہ مخالفت طلاق دلوانا محض باطل ہے۔	طلاق نامہ میں طلاق رجعی ہو مگر شوہر طلاق بائن کا اقرار کرے تو بائن ہو گئی۔
	۳۲۲	زوجہ کو ماں کہنا گناہ ہے مگر اس سے طلاق واقع نہیں ہوتی۔	کنایہ
۱۱۸	۴۳۲	تہمت کی وجہ سے اگرچہ وہ تہمت واقع میں صحیح ہی ہو عورت کا نکاح زائل نہیں ہوتا۔	لفظ "جواب" کے معنی اور اس کے کنایہ طلاق ہونے کا بیان۔
۱۱۹	۴۳۴	فاجرہ عورت کو طلاق دینا شوہر پر واجب نہیں۔	جو کلمہ صالح رد ہو وہ مطلقاً ہر حال میں محتاج نیت ہے اگر چہ حالت غضب ہو اگرچہ حالت مذاکرہ طلاق ہو۔
۱۱۹	۴۳۵		کنایات تین طرح کے ہیں۔

صفحہ	نمبر شمار	حکم کا خلاصہ	جواب یا متعلقہ مسئلہ
		جاہلوں میں جو یہ بات مشہور ہے کہ اگر عورت معاذ اللہ بد وضعی کرے تو نکاح جاتا رہتا ہے، محض غلط ہے۔	
۳۷۰	۴۴۲	زنائے زناں موجب بطلانِ نکاح نہیں۔	"میرا اس سے کوئی تعلق نہیں" کنایہ ہے اس سے طلاق کے لئے نیت شرط ہے۔
	۴۴۲	نکاح کی گرہ مرد کے ہاتھ میں ہے۔	

Fatawa-e-Razviya Volume 13

Allusive words (Kinayah) that carry the possibility of abuse/insult. | 370 | After Lian, the Islamic ruler will sever the child's lineage from the father and join it with the mother. | 374

Raj'at (Resumption of Marriage) | | **Innin (Impotence)** After three divorces, the man has no right to resume, and the woman is independent. | 185 | Ruling on the wife of an impotent man. | 348

The divorce after which resumption is permissible is twice, not more than that. | 186 | **Mutarka (Separation)**

Resumption from divorce before the occurrence of divorce is futile. | 233 | Separation is necessary in case of marriage with prohibited degrees (Mahramat). | 457

In a revocable divorce (Raj'i), intercourse with the divorcee within the waiting period (Iddah) is not forbidden; rather, it constitutes resumption. | 363 | In case of separation (Mutarka), Iddah is mandatory for the woman from the day of separation. | 457

Tafweez (Delegation of Divorce) | | **Halala** Sharia ruling on various forms of an agreement giving the woman the right to divorce. | 231 | If three divorces occur, according to the Quran, she cannot marry the first husband without Halala. | 241

In the delegation of divorce, attribution to the speech of either husband or wife is sufficient. | 231 | **Mu'asharat (Social/Marital Conduct)**

A delegation of divorce conditional on a state stays limited to the same session where the woman learns of the condition's fulfillment. After changing the session, she no longer has the right to take the divorce. | 232 | Causing unnecessary distress to a wife is one sin, and keeping her less favored than another wife is a second severe sin, whose prohibition is clearly stated in the Quran and Hadith. | 422

Lian (Mutual Imprecation) | | If the first wife is mentally unstable, permission for a second marriage is granted, but justice between both is necessary. | 462

Persistence of the marital bond is a condition for Lian. | 374 | If one wife is wealthy and another is poor, and the husband is wealthy, the wealthy wife shall receive the maintenance of the wealthy, and the poor wife shall receive maintenance as a person

of middle-income status; or a wealthy woman shall receive middle-income maintenance and a poor one shall receive the maintenance of the poor. | 462

Lian is nullified even after it becomes obligatory due to an irrevocable divorce (Bain). | 374 |

Page 73 of 688

फतवा-ए-रजविया खंड 13

वे सांकेतिक शब्द (किनाया) जिनमें अपशब्दों की संभावना हो। | ३७० | लिआन के बाद, इस्लामी शासक बच्चे का वंश पिता से अलग कर माँ के साथ जोड़ देगा। | ३७४

रज्अत (वैवाहिक संबंध की बहाली) | | **उन्नीन (नपुंसकता)** तीन तलाक के बाद पुरुष को बहाली का कोई अधिकार नहीं है और महिला स्वयं मुख्तार है। | १८५ | नपुंसक व्यक्ति की पत्नी के संबंध में हुक्म। | ३४८

वह तलाक जिसके बाद बहाली जायज है, वह दो बार तलाक है, इससे अधिक नहीं। | १८६ |

मुतारक (अलगाव)

तलाक होने से पहले तलाक से रुजू (वापसी) करना निरर्थक है। | २३३ | महरमात (प्रतिबंधित श्रेणी) से विवाह की स्थिति में अलगाव (मुतारक) अनिवार्य है। | ४५७

तलाक-ए-रजई में इद्दत के भीतर तलाकशुदा पत्नी से संभोग हराम नहीं है, बल्कि इससे रज्अत (बहाली) हो जाती है। | ३६३ | मुतारक की स्थिति में महिला पर अलगाव के दिन से इद्दत अनिवार्य है। | ४५७

तफवीज़ (तलाक का अधिकार सौंपना) | | **हलाला** महिला को तलाक का अधिकार देने के एक इकरारनामे की विभिन्न स्थितियों का शरई हुक्म। | २३१ | यदि तीन तलाक हो जाएं तो कुरान के अनुसार वह हलाला के बिना पहले पति के निकाह में नहीं आ सकती। | २४१

तलाक की तफवीज़ में पति-पत्नी दोनों में से किसी एक के कथन में इज़ाफ़त काफी है। | २३१ |

मुआशरत (सामाजिक/वैवाहिक आचरण)

जो तफवीज़-ए-तलाक किसी शर्त पर आधारित हो, वह शर्त पूरी होने का पता चलने वाली उसी महफिल (मजलिस) तक सीमित रहती है। मजलिस बदलने के बाद उसे तलाक लेने का अधिकार नहीं रहता। | २३२ | पत्नी को बेवजह तकलीफ देना एक गुनाह है और दूसरी पत्नी से कमतर रखना दूसरा गंभीर गुनाह है, जिसकी मनाही कुरान और हदीस में स्पष्ट है। | ४२२

लिआन (पारस्परिक अभिशाप) | | यदि पहली पत्नी मानसिक रूप से अस्वस्थ हो तो दूसरी शादी की अनुमति है, लेकिन दोनों के बीच न्याय (अदल) जरूरी है। | ४६२

लिआन के लिए वैवाहिक बंधन का कायम रहना शर्त है। | ३७४ | यदि एक पत्नी अमीर और दूसरी गरीब हो, और पति अमीर हो, तो अमीर पत्नी को अमीरों वाला और गरीब को मध्यम दर्जे का खर्च मिलेगा; या अमीर महिला को मध्यम और गरीब को गरीबों वाला भरण-पोषण (नफ़क़ा) मिलेगा। | ४६२

वाजिब होने के बाद भी लिआन तलाक-ए-बाइन के कारण समाप्त हो जाता है। | ३७४ |

पृष्ठ 73 का 688

کنایہ کے وہ الفاظ جو سب و شتم کا احتمال رکھتے ہیں۔ | ۳۷۰ | بعد از لعان حاکم اسلام بچے کا نسب باپ سے منقطع کر کے ماں کے ساتھ ملحق کردے گا۔ | ۳۷۴

رجعت | | **عنین** تین طلاقوں کے بعد مرد کو رجوع کا اختیار نہیں اور عورت خود مختار ہے۔ | ۱۸۵ | زن عنین کا حکم۔ | ۳۴۸

وہ طلاق جس کے بعد رجوع کرنا جائز ہے وہ دو بار طلاق ہے اس سے زائد نہیں۔ | ۱۸۶ |

متارکہ

وقوع طلاق سے پہلے رجوع عن الطلاق لغو ہے۔ | ۲۳۳ | محرمات سے نکاح کی صورت میں متارکہ لازم ہے۔ | ۴۵۷

طلاق رجعی میں مرد کا عدت کے اندر مطلقہ سے وطی کرنا حرام نہیں بلکہ رجعت ہو جاتی ہے۔ | ۳۶۳ | بصورت متارکہ عورت پر روز متارکہ سے عدت لازم ہے۔ | ۴۵۷

تفویض | | **حلالہ** عورت کو طلاق کا اختیار دینے کے ایک اقرار نامہ کی مختلف صورتوں کا شرعی حکم۔ | ۲۳۱ | تین طلاقیں واقع ہو جائیں تو از روئے قرآن بے حلالہ شوہر اول کے نکاح میں نہیں آسکتی۔ | ۲۴۱

تفویض طلاق میں زن و شوہر دونوں میں سے ایک کے کلام میں اضافت کافی ہے۔ | ۲۳۱ |

معاشرت

جو تفویض طلاق معلق بالشرط ہو بعد وقوع شرط اسی مجلس پر محدود رہتی ہے جس میں عورت کو وقوع شرط کا علم ہوا مجلس بدلنے کے بعد اسے طلاق لینے کا اختیار نہیں رہتا۔ | ۲۳۲ | زوجہ کو بلا وجہ تکلیف دینا ایک گناہ اور دوسری زوجہ سے کم رکھنا دوسرا گناہ شدید جس کی تحریم پر قرآن و حدیث ناطق ہیں۔ | ۴۲۲

لعان | | پہلی عورت مخبوط الحواس ہو تو دوسری شادی کی اجازت ہے، لیکن دونوں میں عدل ضروری ہے۔ | ۴۶۲

لعان کے لئے قیام زوجیت شرط ہے۔ | ۳۷۴ | ایک عورت مالدار اور ایک غریب ہو تو شوہر مالدار ہو تو مالدار عورت کو مالداروں کا اور غریب کو متوسط اور غریب مالدار عورت کو متوسط اور غریب کو غریبوں کا نفقہ ملے گا۔ | ۴۶۲

بعد از وجوب بھی لعان طلاق بائن کے سبب ساقط ہو جاتا ہے۔ | ۳۷۴ |

Fatawa Razawiyya Volume 13 13

482 | The maintenance of an intellectually disabled woman is not waived; if two marriages are performed where one woman is intellectually disabled, justice and equality are necessary. | 201 | If divorce was made conditional on delivering a sermon, a possible way is for the man to give one divorce, once she finishes her waiting period (iddah), he delivers the sermon, and then remarries her.

--- | Manumission | 207 | It is also forbidden to suggest a legal loophole (hilah) that involves intentional commission of a major sin (kabirah).

235 | A master said about his slaves "This one is free and this or this", then the third one became free while one of the first two is free; the master has the choice to specify which one. | 489 | The Sharia way of handling matters that cannot be settled according to the Hanafi school of thought.

--- | Hilah (Legal Trick) | 525 | A person took an oath that "If I talk to Zaid, my wife will have three divorces". Now he wants to talk to him without his wife receiving an irrevocable divorce (mughallazah). The way is to give his wife one irrevocable divorce (bayinah); after the waiting period ends, he can talk to him, and then remarry her without the need for 'halala'.

102 | If an oath of divorce was taken, the way for the marriage to remain intact is that the condition should not occur, or if an oath for one or two revocable divorces was taken, then perform a revocation (ruju) after the condition occurs. | 552 | A person, while taking an oath, said to his wife: "If I do not complain to your brother by attributing every evil and foulness in the world to you, you are divorced". What should such a person do to be free from this oath?

114 | A way to prevent divorce from occurring in a conditional oath (yamin mudhaf). | 558 | A loophole to avoid irrevocable divorce (mughallazah) if it was made conditional on something.

167 | A husband said to his wife, "If you don't pray, you have two divorces". Afterwards, he claims he intended it generally, meaning if she never prays at any point in her life, she gets two divorces. This 'hilah' is a lie and a purely invalid excuse. | 581 | Someone was told to vow something and also to gift it. The method is to give the item to a poor person, then buy it back from them and give it to the one intended for the gift.

200 | A loophole to avoid divorce if an oath for irrevocable divorce (mughallazah) was taken.

Page 74 of 688

फतावा रज़विया जिल्द १३ १३

४८२ | एक मंदबुद्धि महिला का भरण-पोषण समाप्त नहीं होता; यदि दो विवाह किए गए जिनमें से एक मंदबुद्धि है, तो न्याय और समानता आवश्यक है। | २०१ | यदि तलाक को उपदेश (वअज़) देने पर निर्भर किया गया है, तो एक संभावित तरीका यह है कि पुरुष एक तलाक दे, जब महिला अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी कर ले, तो वह उपदेश दे और फिर महिला से पुनः विवाह कर ले।

--- | एताक (दासमुक्ति) | २०७ | वह कानूनी उपाय (हीला) बताना भी हराम है जिसमें जानबूझकर बड़े पाप (कबीरा) का समावेश हो।

२३५ | एक मालिक ने अपने गुलामों के बारे में कहा "यह आज़ाद है और यह या यह", तो तीसरा आज़ाद हो गया जबकि पहले दो में से एक आज़ाद है; मालिक के पास यह तय करने का अधिकार है कि कौन सा। | ४८९ | उन मसलों को हल करने का शरीयत का तरीका जिनका समाधान हनफी मज़हब के आधार पर नहीं हो सकता।

--- | हीला (कानूनी उपाय) | ५२५ | एक व्यक्ति ने कसम खाई कि "अगर मैं ज़ैद से बात करूँ तो मेरी पत्नी को तीन तलाक", अब वह उससे बात करना चाहता है और चाहता है कि पत्नी को मुग़ल्लज़ाह (अपरिवर्तनीय) तलाक न हो। तरीका यह है कि वह अपनी पत्नी को एक तलाक बाइनह (अपरिवर्तनीय) दे दे; इद्दत गुजर जाने के बाद वह उससे बात कर सकता है और उसके बाद बिना हलाला के दोबारा निकाह कर सकता है।

१०२ | यदि तलाक की कसम खाई गई है, तो निकाह कायम रहने की स्थिति यह है कि शर्त पूरी न हो, या यदि एक या दो रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक की कसम खाई गई है, तो शर्त पूरी होने के बाद रुजू (निकाह की बहाली) करे। | ५५२ | एक व्यक्ति ने कसम खाते हुए अपनी पत्नी से कहा: "अगर मैं दुनिया की हर बुराई और गंदगी को तुम्हारी ओर मँढ़कर तुम्हारे भाई से शिकायत न करूँ तो तुम्हें तलाक है", ऐसा व्यक्ति कसम से बरी होने के लिए क्या करे।

११४ | यमीन मुज़ाफ़ (शर्तिया कसम) में तलाक न होने का एक तरीका। | ५५८ | यदि तलाक मुग़ल्लज़ाह को किसी शर्त पर निर्भर किया गया हो, तो मुग़ल्लज़ाह से बचने का हीला।

१६७ | पति ने पत्नी से कहा "अगर तुमने नमाज़ न पढ़ी तो तुम्हें दो तलाक", बाद में वह कहता है कि मेरा इरादा सामान्य था, यानी अगर वह पूरी उम्र कभी कोई नमाज़ न पढ़े तो उसे दो तलाक होंगे। यह

हीला झूठ और बिल्कुल गलत बहाना है। | ५८१ | किसी चीज़ को नज़र (मन्नत) करने के लिए कहा गया और हिबा (उपहार) करने के लिए भी। तरीका यह है कि किसी गरीब (फकीर) को वह चीज़ दे दे, फिर उससे खरीद कर उसे दे दे जिसे हिबा करने के लिए कहा गया है।

२०० | यदि तलाक मुग़ल्लज़ाह की कसम खाई गई है, तो तलाक से बचने का एक हीला।

पृष्ठ ७४/६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیز د ہم ۱۳

۴۸۲ | فاترا العقل عورت کا نفقہ ساقط نہیں دو شادیاں کیں جن میں سے ایک فاترا العقل ہے، عدل و مساوات ضروری ہے۔ | ۲۰۱ | طلاق کو وعظ کہنے پر معلق کیا تو یہ سبیل ممکن ہے کہ عورت کو ایک طلاق دے وہ عدت سے نکل چکے تو وہ وعظ کہے پھر عورت سے دوبارہ نکاح کرلے۔ --- | عتاق | ۲۰۷ | جو حیلہ ارتکابِ کبیرہ بالعمد پر مشتمل ہو اس کا بتانا بھی حرام ہے۔ ۲۳۵ | مالک نے اپنے غلاموں کے بارے میں کہا ھذا حرا و ھذا او ھذا تو تیسرا آزاد ہو گیا جبکہ پہلے دونوں میں سے ایک آزاد ہے اس کے تعین کا اختیار مالک کو ہے۔ | ۴۸۹ | جن مسائل کا تصفیہ حنفی مسلک پر نہ ہو سکے ان کی کار براری کی شرعی صورت --- | حیلہ | ۵۲۵ | ایک شخص نے قسم کھائی کہ اگر زید سے بات کروں تو میری بیوی کو تین طلاقیں، اب چاہتا ہے کہ اس سے بات کرے اور بیوی کو طلاق مغلظہ نہ ہو تو بیوی کو ایک طلاق بائنہ دے عدت گزر جانے کے بعد بات کر سکتا ہے اور بعد ازاں بلا حلالہ دوبارہ نکاح کر سکتا ہے۔ ۱۰۲ | طلاق کی قسم کھائی تو اب نکاح قائم رہنے کی صورت یہ ہے کہ شرط واقع نہ ہو یا اگر ایک یا دو طلاقیں رجعی کی قسم کھائی ہے تو بعد وقوع شرط رجوع کرے۔ | ۵۵۲ | ایک شخص نے قسم کھاتے ہوئے اپنی بیوی کو کہا کہ اگر میں دنیا کی ہر بدی اور قباحت کو تیری طرف منسوب کر کے تیرے بھائی سے شکایت نہ کروں تو تجھے طلاق ہے، ایسا شخص قسم سے بری ہونے کے لئے کیا کرے۔ ۱۱۴ | یمین مضاف میں طلاق واقع نہ ہونے کی ایک سبیل | ۵۵۸ | طلاق مغلظہ کو کسی شرط پر معلق کیا تو مغلظہ سے بچنے کا حیلہ۔ ۱۶۷ | خاوند نے بیوی کو کہا اگر تو نے نماز نہ پڑھی تو تجھے دو طلاقیں، بعدہ کہتا ہے کہ میں نے اس سے عموم کا ارادہ کیا ہے یعنی تمام عمر کبھی کہیں کوئی نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاقیں، تو یہ حیلہ جھوٹ اور خالص فاسد بہانہ ہے۔ |

۵۸۱ | ایک چیز کو نذر کرنے کو کہا اور ہبہ کرنے کو بھی، طریقہ یہ ہے کسی فقیر کو وہ چیز دے دے پھر اس سے خرید کر جس کو ہبہ کرنے کے لئے کہا ہے اس کو دے دے۔ ۲۰۰ | طلاق مغلظہ کی قسم کھائی تو طلاق سے بچنے کا ایک حیلہ۔ | ---

Fatawa Razawiyya Volume 13 | 13

If a gathering for Giyarwin Sharif or Milad Sharif is held and the offered wealth is given to the possession of a poor person, it is correct. | 596 | A foreign, alien, or additional matter excluded from the customary literal scope, even if it is customarily the intent of the oath, will not be accepted; however, pure objectives can certainly be included. | 144 Fundamental Benefits | | The indication of a word that was general will become focused on a specific purpose; this is not a departure from the meaning of the word but rather a limitation to some of its meanings. | 144 A righteous deceased person does not give permission. | 104 | Specification and restriction of general terms by custom is permissible. | 146 According to both parties (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad), for the persistence of an oath, the possibility of fulfillment is a condition, just as it is a condition for the taking of an oath. | 104 | The speaker's intent from their speech is sometimes its literal or metaphorical meaning, and sometimes something outside the word itself. | 147 If there is no generalization in a suspension (of an oath on a condition), then after occurring once, the condition becomes void. | 106 | Specification is one of the incidents of words. | 147 As long as acting upon speech is possible, one should avoid neglecting it. | 111 | The word 'in' (if) implies delay unless an immediate contextual clue is found. | 149 Our Imams agree that an oath added (to a future condition) is established; the narration of its non-occurrence is weak. | 113 | The basis of an oath is upon custom. | 151 Conditional words and their ruling. | 114 | An indefinite noun in a negative sentence becomes general. | 152 The statement of the denier is considered valid while the witnesses are the responsibility of the claimant. | 117 | Even if the intent of the oath is contrary to the circumstances, it is the intent that will be considered. | 153 Suspension is the linking of the content of one sentence to the content of another, not the confusion of content with the link to the other. | 137 | Futurity is necessary for every consequence (of a condition). | 171 According to our scholars, at the time the condition is fulfilled, the consequence follows in such a way as if at that moment the speaker had issued the consequence definitively. | 138 | The verb has the status of an indefinite noun, and an indefinite noun in a negative sentence becomes general. | 175 According to the Hanafis, the literal benefit of words is not the basis of an oath, but rather the customary meanings are the basis of the matter. | 144 | The extracted depends on the extraction, therefore it is not found without extraction, even if the source from which it is extracted exists. | 176 Objectives and purposes, to the extent that they exceed the literal benefit of the word (i.e., even generality and

absolute application do not encompass them), are not considered. | 144 | Generality, universality, and absolute application are considered in the level of 'The Absolute Thing' (Al-Shay' al-Mutlaq). | 177

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | १३

यदि ग्यारहवीं शरीफ या मीलाद शरीफ की सभा आयोजित करके नज़र किया हुआ धन किसी गरीब के स्वामित्व में दे दिया जाए, तो यह सही है। | ५९६ | शब्द के प्रथागत अर्थ से बाहर की विदेशी या अतिरिक्त बात, भले ही वह प्रथागत रूप से शपथ का उद्देश्य हो, स्वीकार नहीं की जाएगी; हालाँकि, शुद्ध उद्देश्यों को अवश्य शामिल किया जा सकता है। | १४४ मौलिक लाभ | | शब्द का संकेत जो सामान्य था, एक विशेष उद्देश्य की दृष्टि से विशिष्ट हो जाएगा; यह शब्द के अर्थ से बाहर निकलना नहीं है बल्कि इसके कुछ अर्थों तक सीमित होना है। | १४४ धर्मी मृतक अनुमति नहीं देता। | १०४ | प्रथा के अनुसार सामान्य शब्दों का विनिर्देश और प्रतिबंध अनुमेय है। | १४६ दोनों पक्षों (इमाम अबू हनीफा और इमाम मुहम्मद) के अनुसार, शपथ के बने रहने के लिए शर्त पूरा होने की संभावना एक शर्त है, जैसे शपथ लेने के लिए शर्त होती है। | १०४ | वक्ता का अपने कथन से अभिप्राय कभी शब्द का वास्तविक या लाक्षणिक अर्थ होता है, और कभी शब्द से बाहर की कोई चीज़। | १४७ यदि निलंबन (शर्त पर शपथ) में सामान्यीकरण नहीं है, तो एक बार होने के बाद शर्त शून्य हो जाती है। | १०६ | विनिर्देश शब्दों की घटनाओं में से एक है। | १४७ कथन में जब तक कार्य करना संभव हो, उसकी उपेक्षा करने से बचना चाहिए। | १११ | शब्द 'इन' (यदि) देरी के लिए आता है जब तक कि तत्काल कोई संदर्भ न मिल जाए। | १४९ हमारे इमामों की सहमति है कि भविष्य की शर्त पर आधारित शपथ स्थापित हो जाती है; इसके न होने का वर्णन कमजोर है। | ११३ | शपथ का आधार प्रथा पर है। | १५१ शर्त के शब्द और उनका नियम। | ११४ | नकारात्मक वाक्य में अनिश्चित संज्ञा सामान्य हो जाती है। | १५२ अस्वीकार करने वाले का कथन विश्वसनीय माना जाता है जबकि गवाहों की जिम्मेदारी दावेदार की होती है। | ११७ | भले ही शपथ का इरादा परिस्थितियों के विपरीत हो, विचार उसी इरादे का होगा। | १५३ निलंबन एक वाक्य की सामग्री को दूसरे की सामग्री से जोड़ना है, न कि सामग्री का दूसरे के साथ जोड़ने में भ्रम। | १३७ | प्रत्येक परिणाम (शर्त के) के लिए भविष्य काल आवश्यक है। | १७१ हमारे विद्वानों के अनुसार, शर्त पूरी होने के समय परिणाम इस प्रकार आता है जैसे उस समय वक्ता ने परिणाम को निश्चित रूप से जारी किया हो। | १३८ | क्रिया अनिश्चित संज्ञा के पद में है, और नकारात्मक वाक्य में अनिश्चित संज्ञा सामान्य हो जाती है। | १७५ हनफियों के अनुसार, शब्दों का शाब्दिक लाभ शपथ का आधार नहीं है, बल्कि प्रथागत अर्थ ही कार्य का आधार हैं। | १४४ | निष्कासित निष्कासन के अधीन है, इसलिए निष्कासन के बिना नहीं पाया जाता, भले ही वह स्रोत मौजूद हो जिससे निष्कासित किया गया है। | १७६ उद्देश्य और लक्ष्य, जिस हद तक वे शब्द

के शाब्दिक लाभ से अधिक हों (अर्थात सामान्यता और पूर्णता भी उन्हें शामिल नहीं करती), वे विचारणीय नहीं होते। | १४४ | 'निरपेक्ष वस्तु' (अल-शय अल-मुतलक) के स्तर पर सामान्यता, सार्वभौमिकता और पूर्णता पर विचार किया जाता है। | १७७

पृष्ठ 75/688

اگر مجلس گیارہویں شریف یا میلاد شریف منعقد کرکے مال نذر فقیر کی ملک کر دیا تو درست ہے۔ | ۵۹۶ | لفظ کی تناول عرفی سے اجنبی خارج و بیگانہ و زائد بات اگرچہ عرفاً مقصودِ حلف ہو منظور نہ ہوگی مگر اغراض محضہ ضرور ہو سکتی ہے۔ | ۱۴۴ فوائد اصولیہ | | دلالتِ لفظ کہ عموم پر تھی بنظرِ غرضِ خاص پر مقصود ہو جائے گی یہ مدلولِ لفظ سے خروج نہیں بلکہ بعض مدلولات پر قصر ہے۔ | ۱۴۴ میت صالح اذن نہیں۔ | ۱۰۴ | عام کی تخصیص و تقیید عرف سے جائز ہے۔ | ۱۴۶ طرفین کے نزدیک بقاء یمین کے لئے امکانِ بر شرط ہے جیسا کہ انعقادِ یمین کے لئے شرط ہے۔ | ۱۰۴ | غرضِ متکلم اپنی کلام سے کبھی تو کلام کا حقیقی یا مجازی معنی ہوتی ہے اور کبھی لفظ سے خارج کوئی شئی۔ | ۱۴۷ تعلیق میں تعمیم نہ ہو تو ایک بار کے بعد شرط کالعدم ہو جاتی ہے۔ | ۱۰۶ | تخصیص عوارضِ الفاظ میں سے ہے۔ | ۱۴۷ کلام میں جب تک اعمال ممکن ہوا ہمال سے احتراز چاہئے۔ | ۱۱۱ | کلمہ ان تراخی کے لئے آتا ہے جب تک قرینہ فور نہ پایا جائے۔ | ۱۴۹ ہمارے ائمہ کا اتفاق ہے کہ یمینِ مضاف منعقد ہے عدم وقوع کی روایت ضعیف ہے۔ | ۱۱۳ | یمین کی بناء عرف پر ہے۔ | ۱۵۱ الفاظِ شرط اور ان کا حکم۔ | ۱۱۴ | نکرہ چیز نفی میں عام ہو جاتا ہے۔ | ۱۵۲ قولِ منکر کا معتبر ہوتا ہے جبکہ گواہ مدعی کے ذمہ ہوتے ہیں۔ | ۱۱۷ | نیتِ حلف اگرچہ دلالتِ حال کے خلاف ہو اعتبار اسی کا ہوگا۔ | ۱۵۳ تعلیق ربطِ مضمون جملہ بمضمون آخر ہے نہ کہ خبط مضمون بربط آخر۔ | ۱۳۷ | ہر جزاء کو استقبال لازم ہے۔ | ۱۷۱ ہمارے علماء کے نزدیک وقت حلول شرط سے نزولِ جزا یوں ہوتا ہے کہ گویا اس وقت متکلم بالجزاء منجز واقع ہوا۔ | ۱۳۸ | فعل حکم نکرہ میں ہے اور نکرہ چیز نفی میں عام ہو جاتا ہے۔ | ۱۷۵ احناف کے نزدیک الفاظ کا مفاد لغوی بنائے یمین نہیں بلکہ معانی

عرفیہ پر بنائے کار ہے۔ | ۱۴۴ | منتزع، انتزاع کے تابع ہوتا ہے لہذا بلا انتزاع نہیں پایا جاتا اگر چہ منتزع منہ موجود ہو۔ | ۱۷۶ اغراض و مقاصد جس قدر مفاد لفظ سے زائد ہوں یعنی عموم و اطلاق بھی انہیں متناول نہ ہو ملحوظ نہیں ہوتے۔ | ۱۴۴ | الشیئ المطلق کے مرتبہ میں عموم، کلیت اور اطلاق ملحوظ ہوتا ہے۔ | ۱۷۷

- Obtaining what is already obtained is void. | 177
- Absence of prior or subsequent consent does not equate to absence of concurrent consent. | 249
- Corruption of the foundation leads to corruption of the structure. | 178
- As long as the cause for expiation is not found, expiation is not obligatory. | 287
- The negation of something occurs when all its individual instances are negated. | 180
- Absence of knowledge is not knowledge of absence. | 300
- The word 'min' (from) is for generalization. | 198
- [Arabic] Approval does not attach to that which has been annulled. | 307
- An oath is absolutely terminated after the fulfillment of its condition. | 201
- If marriage is not established, there is neither divorce nor a waiting period (iddah). | 307
- Conditional transfers of ownership, i.e., buying and selling etc., are void. | 202
- If permissibility is due to necessity, then when the necessity ceases, the permissibility ceases. | 328
- The word 'kullama' demands generalization of actions, while the word 'kull' demands generalization of nouns. | 204
- The original state of things is permissibility, but in sexual relations, it is prohibition. | 338
- The answer includes a repetition of the content of the question. | 211
- Every sexual intercourse is subject to a contract. | 417
- Ruling on making the husband sign an agreement with several incorrect conditions. | 214
- Acceptance of a part does not necessitate acceptance of the remainder. | 417
- Any condition that is contrary to Sharia is void. | 215
- It is not yet established, so how could it be waived? | 418
- Allah Almighty's command is truth and Allah Almighty's condition is emphasized. | 215
- That waiver for which an oath cannot be taken, its conditionalization is not valid. | 418
- An emphasis that provides a condition does not act as a separator between the condition and the consequence. | 219
- A woman's maintenance is the compensation for her confinement. | 447

- Any conditionality in which ownership or attribution to ownership is not found is void. | 231
- Allah Almighty's condition is truth. | 447
- A revocable divorce becoming irrevocable due to a condition is absolutely void. | 233
- A condition contrary to the Book of Allah is not valid, even if stated a hundred times. | 447
- The words "aw" (or) is for choice and "wa" (and) is for partnership/conjunction. | 235
- Waiving something before it becomes obligatory is not permissible. | 439
- No effect can be produced based on falsehood/voidance. | 235
- In every sin for which there is no fixed 'hadd' punishment, there is 'ta'zeer' (discretionary punishment). | 448
- The fulfillment of a condition necessitates the consequence. | 237
- The pure Sharia is the command of Allah Almighty and the Messenger (peace be upon him). | 474
- In making something conditional on consent, knowledge of that consent is not required. | 238
- Hundreds of issues are such whose basis is custom, forming the foundation of religious rulings on oaths. | 497
- Permission cannot be given without an audible word. | 238
- An independent sentence is not related to what precedes it without a coordinating conjunction. | 506
- An extraneous interruption invalidates the act of taking an oath. | 506

पृष्ठ 13 खंड तेरह | फतावा रज़विया

- जो पहले से प्राप्त है उसे प्राप्त करना व्यर्थ है। | 177
- पूर्व या पश्चात की असहमति का अर्थ समवर्ती असहमति का अभाव नहीं हो सकता। | 249
- आधार के बिगड़ने से संरचना बिगड़ जाती है। | 178
- जब तक प्रायश्चित (कफ्फारा) का कारण न मिले, प्रायश्चित अनिवार्य नहीं होता। | 287
- किसी वस्तु का अभाव उसके सभी व्यक्तिगत उदाहरणों के अभाव से होता है। | 180
- ज्ञान का अभाव, अभाव का ज्ञान नहीं है। | 300
- शब्द 'मिन' (से) सामान्यीकरण के लिए है। | 198
- [अरबी] रद्द की गई वस्तु पर स्वीकृति लागू नहीं होती। | 307
- शर्त पूरी होने के बाद शपथ पूरी तरह समाप्त हो जाती है। | 201
- यदि निकाह (विवाह) स्थापित नहीं है, तो न तलाक है न इद्दत। | 307
- स्वामित्व का सशर्त हस्तांतरण जैसे खरीद-बिक्री आदि व्यर्थ है। | 202
- यदि अनुमति आवश्यकता के कारण है, तो आवश्यकता समाप्त होने पर अनुमति भी समाप्त हो जाती है। | 328
- शब्द 'कुलमा' (जब भी) कार्यों के सामान्यीकरण की मांग करता है जबकि शब्द 'कुल' (सब) संज्ञाओं के सामान्यीकरण की। | 204
- वस्तुओं की मूल अवस्था अनुमति है, लेकिन यौन संबंधों में मूल अवस्था निषेध है। | 338
- उत्तर में प्रश्न की सामग्री की पुनरावृत्ति शामिल होती है। | 211
- प्रत्येक संभोग अनुबंध (निकाह) के अधीन है। | 417
- पति से कई गलत शर्तों वाला समझौता पत्र लिखवाने का आदेश। | 214
- किसी अंश का स्वीकार शेष के स्वीकार को अनिवार्य नहीं करता। | 417
- जो शर्त शरीयत के विरुद्ध हो वह व्यर्थ है। | 215
- अभी स्थापित ही नहीं हुआ, तो समाप्त कैसे होगा? | 418
- अल्लाह तआला का आदेश सत्य है और अल्लाह तआला की शर्त पर जोर दिया गया है। | 215
- जिस त्याग की शपथ नहीं ली जा सकती, उसका सशर्त होना सही नहीं है। | 418
- शर्त प्रदान करने वाला जोर शर्त और परिणाम के बीच अंतर नहीं डालता। | 219

• स्त्री का गुजारा भत्ता (नफ़क़ा) उसके एकांत में रहने का प्रतिफल है। | 447
• कोई भी शर्त जिसमें स्वामित्व या स्वामित्व से जुड़ाव न हो, व्यर्थ है। | 231
• अल्लाह तआला की शर्त सत्य है। | 447
• शर्त के कारण रजाई तलाक का बाइन (अटल) हो जाना पूरी तरह व्यर्थ है। | 233
• अल्लाह की पुस्तक के विरुद्ध शर्त मान्य नहीं है, चाहे वह सौ बार हो। | 447
• शब्द "अओ" (या) चुनाव के लिए है और "व" (और) जुड़ाव/साझेदारी के लिए है। | 235
• अनिवार्य होने से पहले किसी वस्तु का त्याग अनुमेय नहीं है। | 439
• व्यर्थ/अमान्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। | 235
• जिस पाप में 'हद' (निश्चित दंड) नहीं है, उसमें 'ताज़ीर' (विवेकाधीन दंड) है। | 448
• शर्त का पूरा होना परिणाम को अनिवार्य बनाता है। | 237
• पवित्र शरीयत अल्लाह तआला और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का आदेश है। | 474
• सहमति पर आधारित शर्त में सहमति का ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। | 238
• सैकड़ों मुद्दे ऐसे हैं जिनका आधार रीति-रिवाज (उर्फ़) है, जो शपथों के आदेशों की नींव है। | 497
• सुनाई देने वाले शब्द के बिना अनुमति नहीं दी जा सकती। | 238
• एक स्वतंत्र वाक्य बिना किसी संयोजक के अपने पूर्ववर्ती से संबंधित नहीं होता। | 506
• किसी बाहरी हस्तक्षेप से शपथ की क्रिया व्यर्थ हो जाती है। | 506

- تحصیل حاصل باطل ہے۔ | ۱۷۷
- عدم رضائے سابق ولاحق وبیل عدم مقارن نہیں ہو سکتی۔ | ۲۴۹
- مبنی کے فساد سے بناء کا فساد ہوتا ہے۔ | ۱۷۸
- جب تک سبب کفارہ نہ پایا جائے کفارہ لازم نہیں ہوتا۔ | ۲۸۷
- کسی چیز کا انتفاء اس کے تمام افراد منتفی ہونے سے ہو جاتا ہے۔ | ۱۸۰
- عدم علم، علم عدم نہیں۔ | ۳۰۰
- کلمہ من تعمیم کے لئے ہے۔ | ۱۹۸
- الاجازۃ لا تلحق المفسوخ۔ | ۳۰۷
- یمین وجود شرط کے بعد مطلقاً ختم ہو جاتی ہے۔ | ۲۰۱
- نکاح متحقق نہ ہو تو نہ طلاق ہے نہ عدت۔ | ۳۰۷
- تملیکات یعنی بیع و شراء وغیرہ میں تعلیق باطل ہے۔ | ۲۰۲
- اگر اباحت بوجہ ضرورت ہو تو جب ضرورت نہ رہے اباحت نہیں رہتی۔ | ۳۲۸
- لفظ کلما عموم افعال کا تقاضا کرتا ہے جبکہ لفظ کل عموم اسماء کا۔ | ۲۰۴
- اصل اشیاء میں اباحت ہے لیکن فروج میں اصل حرمت ہے۔ | ۳۳۸
- جواب مضمون سوال کے اعادہ کو متضمن ہوتا ہے۔ | ۲۱۱
- ہر وطی معقود علیہ ہے۔ | ۴۱۷
- شوہر سے چند غلط شرائط کا اقرار نامہ لکھوانے کا حکم۔ | ۲۱۴
- تسلیم بعض موجب تسلیم باقی نہیں۔ | ۴۱۷

- جو شرط شریعت کے خلاف ہو وہ باطل ہے۔ | ۲۱۵
- ہنوز ثابت ہی نہیں ساقط کیا ہو گی۔ | ۴۱۸
- اللہ تعالیٰ کا حکم حق اور اللہ تعالیٰ کی شرط موکد ہے۔ | ۲۱۵
- جس اسقاط کی قسم نہیں کھائی جا سکتی اس کی تعلیق صحیح نہیں۔ | ۴۱۸
- تاکید مفید شرط جزاء کے درمیان فاصل نہیں ہوتی۔ | ۲۱۹
- عورت کا نفقہ جزاء احتباس ہے۔ | ۴۴۷
- جس تعلیق میں ملک یا اضافت الی الملک نہ پائی جائے وہ باطل ہے۔ | ۲۳۱
- اللہ تعالیٰ کی شرط حق ہے۔ | ۴۴۷
- طلاق رجعی کا تعلیق کے سبب بائن ہو جانا باطل قطعی ہے۔ | ۲۳۳
- کتاب اللہ کے خلاف شرط معتبر نہیں اگرچہ سو بار ہو۔ | ۴۴۷
- کلمہ "او" "تخییر" اور "و" "شرکت" کے لئے ہے۔ | ۲۳۵
- اسقاط شئی قبل از وجوب جائز نہیں۔ | ۴۳۹
- باطل پر کچھ اثر مرتب نہیں ہو سکتا۔ | ۲۳۵
- جس معصیت میں حد نہیں اس میں تعزیر ہے۔ | ۴۴۸
- تحقق شرط جزاء کو مستلزم ہے۔ | ۲۳۷
- شرع مطہر اللہ تعالیٰ اور رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا حکم ہے۔ | ۴۷۴
- تعلیق بالرضاء میں علم برضا در کار نہیں۔ | ۲۳۸
- صد ہا مسائل ایسے ہیں جن کا ماخذ عرف پر ہے احکام ایمان کی بناء ہے۔ | ۴۹۷
- اذن بغیر قول مسموع کے نہیں ہو سکتا۔ | ۲۳۸
- جملہ مستقلہ بغیر حرف عطف کے ما قبل سے متعلق نہیں ہوتا۔ | ۵۰۶
- فصل اجنبی عمل حلف کو باطل کر دیتا ہے۔ | ۵۰۶

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Page	Subject	No.	Subject
559	In an oath, the word 'kullama' (whenever/always) is for perpetuity.	518	Doubt cannot eliminate certainty.
560	A negation upon a negation results in an affirmation.	518	If the words of an oath are general and absolute, then generality is certain; an intention for specificity will not be valid in court.
560	An intentional act does not manifest without volition.	521	The context of the situation cannot specify a general rule.
561	A non-existent thing can manifest even without volition.	521	A few examples showing that contextual evidence is not valid in cases of mere possibility.
565	Mentioning an attribute for someone present is redundant.	522	In an oath, the intention for a specific unmentioned attribute is not valid.
565	Oaths are based on words, not on motives.	522	The attribute of standing is not an invitation to cease speech.
565	An oath remains valid even if its cause and motive have ended; its validity is not nullified by their cessation.	526	Describing someone present is redundant.
570	When an oath is conditional, according to both sides, it is necessary for that condition to be the objective.	531	Nothing becomes diverse or divided based on accompanying factors.
583	An oath acts as a substitute for witnesses; when the original (witnesses) is present, the substitute is no longer needed.	539	Specifying a location for a vow (nazr) is invalid.
596	If the claimant's witnesses are present in the judge's council, by consensus, an oath will not be taken from the defendant.	539	Gathering for the remembrance of the Prophet (PBUH) or a saint to convey rewards (Isal-e-Thawab) is not contrary to vows and charity.

Page	Subject
618	The non-existence of an objective and the lack of intention for it are two different things.
630	No voluntary action is possible without intent and will.
630	It is incorrect to say that an oath is absolutely and generally nullified by the negation of its objective.
	As long as the crime remains, the right to retribution remains.
102	A settlement (sulh) does not terminate an oath.

No.	Subject
547	Writing is like speaking (Al-Kitab kal-khitab).
550	If one of two commanded states is missed, the other is not waived.
550	Committing one of two sins does not make the other sin permissible.
553	Legal Benefits (Fawaid-e-Fiqhiyya).
557	In Sharia terminology, 'taliq' (conditional statement) is called 'yamin' and 'half' (oath).

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं (13), पेज 13

पेज	विषय
559	क़सम में 'कुल्लमा' शब्द हमेशा के लिए होता है।
560	नकारात्मक पर नकारात्मक बात सकारात्मक (पुष्टि) होती है।
560	कोई ऐच्छिक कार्य इच्छा के बिना सिद्ध नहीं होता।
561	एक न होने वाली चीज़ बिना इच्छा के भी सिद्ध हो सकती है।
565	उपस्थित व्यक्ति के लिए गुण का वर्णन करना व्यर्थ है।
565	क़समें शब्दों पर आधारित होती हैं, उद्देश्यों पर नहीं।
565	क़सम का कारण और प्रेरणा समाप्त होने के बावजूद क़सम बनी रहती है; उसके समाप्त होने से क़सम बातिल (अमान्य) नहीं होती।
570	जब क़सम किसी शर्त के साथ जुड़ी हो, तो दोनों पक्षों के अनुसार उस शर्त का उद्देश्य होना ज़रूरी है।
583	क़सम गवाहों का विकल्प बनती है, इसलिए जब मूल (गवाह) मौजूद हों, तो विकल्प की ज़रूरत नहीं रहती।
596	

सं.	विषय
518	शक यकीन (निश्चितता) को खत्म नहीं कर सकता।
518	यदि क़सम के शब्द सामान्य और पूर्ण हों, तो सामान्यता ही निश्चित है; विशिष्टता की नियत अदालत में मान्य नहीं होगी।
521	परिस्थिति का संकेत सामान्य नियम में विशिष्टता पैदा नहीं कर सकता।
521	इस बात के कुछ उदाहरण कि केवल संभावना की स्थिति में परिस्थिति का संकेत मान्य नहीं है।
522	क़सम में किसी विशेष अघोषित गुण की नियत मान्य नहीं है।
522	खड़े होने का गुण बातचीत बंद करने का कारण नहीं है।
526	उपस्थित व्यक्ति के लिए गुण का वर्णन व्यर्थ है।
531	कोई भी वस्तु साथ वाली चीज़ों के कारण विविध या विभाजित नहीं होती।
539	मन्नत (नज़र) के लिए स्थान का निर्धारण अमान्य है।
539	

पेज	विषय
	यदि दावेदार के गवाह जज की सभा में मौजूद हों, तो सर्वसम्मति से प्रतिवादी से क़सम नहीं ली जाएगी।
618	उद्देश्य का न होना और उसकी नियत न करना दो अलग-अलग चीज़ें हैं।
630	कोई भी स्वैच्छिक कार्य बिना इरादे और इच्छा के संभव नहीं है।
630	उद्देश्य की अनुपस्थिति से पूर्ण और सामान्य रूप से क़सम का अमान्य होना गलत है।
	जब तक अपराध बना रहे, बदला लेने का अधिकार बना रहता है।
102	समझौता (सुलह) क़सम को खत्म नहीं करता।

सं.	विषय
	नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) या किसी वली की याद में सवाब पहुँचाने के लिए सभा करना, मन्नत और दान के खिलाफ नहीं है।
547	लेखन भाषण के समान है (अल-किताब कल-खिताब)।
550	यदि आदेशित दो स्थितियों में से एक छूट जाए, तो दूसरी खत्म नहीं होती।
550	दो गुनाहों में से एक को करना दूसरे गुनाह को जायज़ नहीं बनाता।
553	फ़िक़्ही फ़ायदे (क़ानूनी लाभ)।
557	शरीयत की शब्दावली में 'तालिक' (शर्त लगाना) को 'यमीन' और 'हलफ' (क़सम) कहा गया है।

صفحہ	مضمون	نمبر	مضمون
۵۵۹	قسم میں کلما کا لفظ ہمیشگی کے لئے ہوتا ہے۔	۵۱۸	شک یقین کو زائل نہیں کر سکتا۔
۵۶۰	نفی پر نفی مفید اثبات ہوتی ہے۔	۵۱۸	الفاظ قسم میں عموم و اطلاق ہو تو عموم ہی یقینی ہے نیت تخصیص قضاء معتبر نہ ہوگی۔
۵۶۰	فعل اختیار کے بغیر متحقق نہیں رہتا۔	۵۲۱	دلالت حال عموم میں تخصیص نہیں کر سکتی۔
۵۶۱	عدمی چیز اختیار کے بغیر بھی متحقق ہو جاتی ہے۔	۵۲۱	اس بات کی چند مثالیں کہ محض احتمال کی صورت میں دلالت حال معتبر نہیں۔
۵۶۵	حاضر میں وصف کا ذکر لغو ہوتا ہے۔	۵۲۲	قسم میں کسی خاص وصف غیر مذکور کی نیت معتبر نہیں۔
۵۶۵	قسمیں الفاظ پر مبنی ہوتی ہیں اغراض پر مبنی نہیں ہوتیں۔	۵۲۲	صفت قیام ترک کلام کی داعی نہیں۔
۵۶۵	قسم کا سبب اور داعی ختم ہو جانے کے باوجود قسم باقی رہتی ہے اس کے زوال سے قسم باطل نہیں ہوتی۔	۵۲۶	حاضر میں وصف لغو ہے۔

صفحہ	مضمون	نمبر	مضمون
۵۷۰	جب قسم کسی شرط کے ساتھ مشروط ہو تو طرفین کے نزدیک اس شرط کا مقصود ہونا ضروری ہے۔	۵۳۱	کوئی شئی مقارنات کے ساتھ متنوع و منقسم نہیں ہوتی۔
۵۸۳	قسم گواہوں کا خلیفہ بنتی ہے تو جب اصل ہو جائے تو خلیفہ کی ضرورت نہیں رہتی۔	۵۳۹	تعیین مکان نذر میں نامعتبر ہے۔
۵۹۶	اگر مدعی کے گواہ قاضی کی مجلس میں حاضر ہوں تو بالاتفاق مدعی علیہ سے قسم نہیں لی جائے گی۔	۵۳۹	ذکر نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم یا کسی ولی کو ایصال ثواب کے لئے اجتماع، نذر و صدقہ کے منافی نہیں۔
۶۱۸	مقصود کا منتفی ہونا اور اس کا قصد نہ کرنا دو مختلف چیزیں ہیں۔	۵۴۷	الکتاب کالخطاب۔
۶۳۰	کوئی اختیاری فعل قصد وارادہ کے بغیر ممکن نہیں۔	۵۵۰	مامور بٹیئتین سے اگر ایک فوت ہو جائے تو دوسری ساقط نہیں ہوتی۔
۶۳۰	مقصود کے انتقاء سے علی الاطلاق اور علی العموم قسم کا باطل ہونا غلط ہے۔	۵۵۰	احد المعصیتین کا ارتکاب دوسری معصیت کو مباح نہیں کرتا۔
۱۰۲	جب تک جرم باقی ہو استحقاق انتقام باقی رہتا ہے۔	۵۵۳	فوائد فقہیہ
۱۰۲	صلح قسم کو ختم نہیں کرتی۔	۵۵۷	

صفحہ مضمون **نمبر مضمون**

تعلیق کو اصطلاحات شرع میں یمین اور

حلف کہا گیا ہے۔

[Right Column] Page 102: Declaring something lawful as forbidden constitutes an oath (Yamin). Page 106: Explicit divorce (Talaq Sarih) during the waiting period (Iddah) applies to both explicit and irrevocable (ba'in) divorces. Page 106: Explicit divorce is that which does not require intention, whether it is irrevocable or revocable. Page 114: In a conditional oath (Yamin Muzaf), if divorces are suspended separately, remarriage is possible without Halala. Page 119: There are three states: pleasure, anger, and discussion of divorce. Page 119: Regarding 'kinaya' (allusive) terms, if the husband swears that he did not intend divorce, his word will be accepted. In this case, neither the judge can rule it as divorce, nor can the woman consider herself a divorcee. Page 119: In the case of allusive terms, the wife can also take an oath from the husband at home regarding the lack of intention for divorce. Page 120: Omitting the attribution (idafat) always prevents the ruling of divorce when the husband denies intention under oath. Page 141: Divorce does not occur absolutely through a conditional (ta'liq) irrevocable (ba'in) divorce. Page 138: Issues related to 'Yamin-e-Fawr' (immediate oath). Page 150: A debtor swore to a creditor: 'I will not go out without your permission.' This oath remains valid as long as the debt exists; after payment or clearance, permission is no longer required. Page 153: Triple divorce (Talaq Mughallaza) does not make a woman permanently forbidden, though she cannot remarry the first husband without Halala. Page 167: When divorce has not occurred, how can there be a return (ruju'), and to whom?

[Left Column] Page 168: To say that previous divorces become void upon returning (ruju') are words of misguidance, for which only 'La hawla wa la quwwata illa billah...' should be recited. Page 171: The difference between 'Insha-e-Ta'liq' and 'Ta'liq-e-Insha'. Page 171: Divorce, in terms of its issuance, is an attribute of the man, and in terms of its occurrence, an attribute of the woman. Page 174: To specify 'Yamin-e-Fawr' due to anger and emotional instability is a Deobandi innovation; there is no trace of this in the authentic books of the school of thought. Page 190: The specific ruling that after returning (ruju'), the divorce does not become null and void. Page 196: There is a difference between the invalidity of a divorce and the invalidity of an action. Page 212: In common usage, 'Talaq Mughallaza' refers only to three divorces. Page 213: If divorce is suspended on an unknown condition, it will not occur at all. Page 214: The words of every contractor or swearer shall be interpreted according to their common usage. Page 219: Telling the wife 'You are divorced, if God wills': in which cases is the exception valid, and in which cases is it invalid? Page 231: If a

document of conditions was written before marriage and it lacks attribution to the marriage, that condition is merely useless and void. Page 232: Suspending divorce on a woman's will, consent, and desire is 'Tamlik ma'at Ta'liq' (entrustment with condition), and this entrustment remains limited to that specific session.

फ़तावा रज़विया जिल्द १३ | पृष्ठ ७८/६८८

[दायां स्तंभ] पृष्ठ १०२: हलाल चीज़ को हराम करना 'यमीन' (शपथ) है। पृष्ठ १०६: तलाक़-ए-सरीह इद्दत के अंदर सरीह को भी लागू होती है और बाइन को भी। पृष्ठ १०६: तलाक़-ए-सरीह वह है जिसमें नीयत की ज़रूरत न हो, चाहे वह बाइन हो या रजई। पृष्ठ ११४: यमीन-ए-मुज़ाफ़ में तलाक़ अगर अलग-अलग मुअल्लक़ (निलंबित) की गई है, तो बिना हलाला के दोबारा शादी हो सकेगी। पृष्ठ ११९: तीन स्थितियाँ हैं: रज़ा (प्रसन्नता), ग़ुस्सा और तलाक़ का ज़िक्र। पृष्ठ ११९: शब्द 'किनाया' (अप्रत्यक्ष) में यदि पति तलाक़ की नीयत न होने की शपथ ले, तो उसकी बात मान ली जाएगी। न काज़ी इस स्थिति में तलाक़ का हुक्म दे सकता है और न ही महिला स्वयं को तलाक़शुदा मान सकती है। पृष्ठ ११९: किनाया की स्थिति में तलाक़ की नीयत न होने की शपथ पत्नी पति से घर पर भी ले सकती है। पृष्ठ १२०: निस्बत (इज़ाफ़त) को छोड़ना हमेशा तलाक़ के हुक्म को रोकता है, बशर्ते कि पति शपथ के साथ नीयत से इनकार करे। पृष्ठ १४१: मुतलक़न तालीक़ (शर्त लगाने) से तलाक़-ए-बाइन वाक़े नहीं होती। पृष्ठ १३८: यमीन-ए-फ़ौर से संबंधित मसले। पृष्ठ १५०: क़र्ज़दार ने साहूकार से शपथ ली कि 'तुम्हारी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाऊंगा'। यह शपथ क़र्ज़ रहने तक प्रभावी रहेगी; भुगतान या माफ़ी के बाद अनुमति की आवश्यकता नहीं है। पृष्ठ १५३: तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (तिहरा तलाक़) से महिला हमेशा के लिए हराम नहीं होती, हालाँकि वह हलाला के बिना पहले पति के निकाह में आने के योग्य नहीं रहती। पृष्ठ १६७: जब तलाक़ ही नहीं हुई, तो रुजू कैसा और किससे रुजू?

[बायां स्तंभ] पृष्ठ १६८: यह कहना कि रुजू (वापसी) कर लेने से पहली तलाक़ें बातिल (रद्द) हो जाती हैं, गुमराह करने वाले शब्द हैं, जिन पर केवल 'ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह...' ही पढ़ा जा सकता है। पृष्ठ १७१: 'इंशा-ए-तालीक़' और 'तालीक़-ए-इंशा' में अंतर। पृष्ठ १७१: जारी होने के लिहाज़ से तलाक़ मर्द की विशेषता है और घटित होने के लिहाज़ से औरत की। पृष्ठ १७४: ग़ुस्से और स्वभाव की अनिश्चितता के कारण 'यमीन-ए-फ़ौर' को विशिष्ट करना देवबंदी इजतिहाद है, अन्यथा मज़हब की किताबों में इसका कोई निशान नहीं है। पृष्ठ १९०: यह जुज़िया (नियम) कि रुजू के बाद तलाक़ कालातीत (शून्य) नहीं होती। पृष्ठ १९६: तलाक़ के बातिल होने और अमल के बातिल होने में अंतर है। पृष्ठ २१२: सामान्य भाषा में 'तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा' केवल तीन तलाक़ों को ही कहा जाता है। पृष्ठ २१३: अज्ञात शर्त पर तलाक़ को मुअल्लक़ करने से तलाक़ मूल रूप से घटित नहीं होगी। पृष्ठ २१४: प्रत्येक अनुबंध करने वाले और शपथ लेने वाले के शब्दों को उसके सामान्य अर्थ (उर्फ़) पर आधारित माना जाएगा। पृष्ठ २१९: पत्नी से कहना 'तुझे तलाक़ है, इंशा अल्लाह (यदि अल्लाह ने चाहा)': किन स्थितियों

में यह अपवाद (इस्तिसना) सही होगा और किन में नहीं। पृष्ठ २३१: यदि निकाह से पहले शर्तों का दस्तावेज़ लिखा गया और उसमें निकाह की ओर कोई संबंध (इज़ाफ़त) न हो, तो वह शर्त केवल व्यर्थ और बातिल है। पृष्ठ २३२: औरत की इच्छा, सहमति और चाहत पर तलाक़ को मुअल्लक़ करना 'तम्लीक मा अत-तालीक़' है और यह अधिकार उसी बैठक (मजलिस) तक सीमित रहेगा।

[دایاں کالم] ۱۰۲ | تحریم حلال یمین ہے۔ ۱۰۶ | طلاق صریح عدت کے اندر صریح کو بھی لاحق ہو جاتی ہے۔ اور بائن کو بھی۔ ۱۰۶ | طلاق صریح یہ ہے کہ محتاج نیت نہ ہو۔ چاہے بائن ہو یا رجعی۔ ۱۱۴ | یمین مضاف میں طلاق اگر متفرق معلق کیا ہے تو بے حلالہ دوبارہ شادی ہوسکے گی۔ ۱۱۹ | حالات تین ہیں رضا، غضب اور مذاکرہ طلاق۔ ۱۱۹ | لفظ "کنایہ" میں شوہر عدم نیت طلاق کی قسم کھائے تو اس کی بات مان لی جائے گی نہ قاضی اس صورت میں حکم طلاق دے سکتا ہے اور نہ ہی عورت اپنے آپ کو مطلقہ سمجھ سکتی ہے۔ ۱۱۹ | کنایہ کی صورت میں عدم نیت طلاق کی قسم شوہر سے عورت گھر میں بھی لے سکتی ہے۔ ۱۲۰ | ترک اضافت ہمیشہ مانع حکم طلاق ہے جبکہ شوہر بحلف انکار نیت کرے۔ ۱۴۱ | مطلقاً تعلیق سے طلاق بائن واقع نہیں ہوتی۔ ۱۳۸ | یمین فور سے متعلقہ مسائل۔ ۱۵۰ | دائن سے مدیون نے حلف لیا کہ تیرے بے اذن باہر نہ جاؤں گا ۔ یہ حلف بقاء دین تک رہے گا بعد ادا یا ابراء اذن کی حاجت نہیں۔ ۱۵۳ | طلاق مغلظہ سے عورت حرام ابدی نہیں ہوتی البتہ بے حلالہ شوہر اول کے نکاح میں آنے کے قابل نہیں رہتی۔ ۱۶۷ | جب طلاق نہ ہوئی تو رجوع کیسا اور کس سے رجوع۔

[بایاں کالم] ۱۶۸ | یہ کہنا کہ رجوع کر لینے سے پہلی طلاقیں باطل ہو جاتی ہے گمراہ کلمات ہیں جن پر "لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم" ہی پڑھا جاسکتا ہے۔ ۱۷۱ | انشاء تعلیق اور تعلیق انشاء میں فرق۔ ۱۷۱ | طلاق باعتبار صدور مرد کی اور باعتبار وقوع عورت کی صفت ہے۔ ۱۷۴ | یمین الفور کی تخصیص غصہ اور بے اعتدالی طبع سے کرنا دیوبندی اجتہاد ہے ورنہ کتب مذہب میں اس کا کوئی نشان نہیں۔ ۱۹۰ | یہ جزئیہ کہ رجوع کے بعد طلاق کالعدم نہیں ہوتی۔ ۱۹۶ | بطلان طلاق اور بطلان عمل میں فرق ہے۔ ۲۱۲ | عرف میں طلاق مغلظہ تین طلاقوں کو ہی

کہتے ہیں۔ ۲۱۳ | شرط مجہول پر طلاق معلق کرنے سے طلاق اصلا واقع نہ ہوگی۔ ۲۱۴ | ہر عاقد وحالف کے کلام کو اس کے عرف پر محمول کیا جائے گا۔ ۲۱۹ | بیوی کو کہنا انت طالق ان شاء اللہ تو کن صورتوں میں استثناء صحیح اور کن میں غیر صحیح ہوگا۔ ۲۳۱ | شرط کا بین نامہ قبل از نکاح تحریر ہوا اور اس میں نکاح کی طرف اضافت نہ ہو تو وہ شرط محض فضول و باطل ہے۔ ۲۳۲ | عورت کے ارادہ، رضا اور خواہش پر طلاق کو معلق کرنا تملیک مع التعلیق ہے اور یہ تملیک مجلس تک محدود رہے گی۔

Fatawa-e-Razvia, Volume 13

Page	Index	Subject Heading	Ruling / Explanation
562	133	Why was giving three divorces at once declared a sin?	The word 'jawab' (answer) is not subject to divorce; it is a Hindi word used in several meanings, so understanding the specific meaning of 'Talaq-e-Bain' from it is a sign of misunderstanding.
562	170	The wisdom behind not sufficing with only marriage in 'halala' and making intercourse Sharia-compliant.	Changing the form of the question after knowing the Sharia ruling is deception and trickery.
574	207	Speech (Kalam) is an attribute of Allah Almighty, therefore swearing by it is Sharia-compliant.	A Mufti should not say 'yusaddaqu diyanatan' (believed religiously), but rather out of etiquette, he should say 'la yusaddaqu qada'an' (not believed legally).
579	285	An oath of prohibition is permissible.	As much as possible, the speech of a sane adult should not be left as meaningless.
591	338	Complete clarification of non-Sharia vows and Sharia vows.	Giving a fatwa based on a weak opinion is ignorance and contrary to consensus.
596	338	The ruling for Zakat wealth and specific vows is the same.	Sharia observes strict caution in matters of private parts (marriage/intercourse).
598	344	Legal (Fiqhi) prohibition of vows for other than God.	Marrying the wife of a missing person by herself after four years is not according to the school of thought of any Imam.
598	505	Vows made for saints during their outward or inward life are not legal (Fiqhi) vows.	Punishment by fine, where some of the criminal's property is taken as compensation for an error, is abrogated.
625	505	There is a fixed punishment (Hadd) for	Acting upon what is abrogated is not permissible.

Page	Index	Subject Heading	Ruling / Explanation
		drinking wine. Why not for drinking urine?	
625	517	There is a fixed punishment (Hadd) for adultery with a stranger. Why not for marriage with prohibited kin (Mahram)?	Juristic rulings depend on the most common affairs.

Ifta and the Custom of the Mufti

- | 523 | - | In religious integrity (diyanat), both inviting and non-inviting attributes are equal, therefore specification of intention is necessary. 113 | 523 | It is not permissible to give a fatwa based on discarded or rare narrations. | Without mentioning the description, intention is not valid even religiously, let alone legally. 124 | 523 | Those who gave fatwas without knowledge went astray themselves and led others astray. | If someone said 'if I go out, my slave is free', and intended travel by 'going out', he will be believed religiously. But if he intends exiting towards a specific place like Baghdad, it is not correct. 125 | - | Angels of the earth and heavens curse those who give fatwas without knowledge. | -

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 13

पृष्ठ	सूचकांक	विषय शीर्षक	निर्णय / स्पष्टीकरण
562	133	एक साथ तीन तलाक देने को गुनाह क्यों करार दिया गया?	शब्द 'जवाब' तलाक के लिए विषय नहीं है, यह एक हिंदी शब्द है जो कई अर्थों में उपयोग होता है, इसलिए इससे विशेष रूप से 'तलाक-ए-बाइन' का अर्थ समझना नासमझी की दलील है।
562	170	हलाला में केवल निकाह पर संतोष न करने और संभोग को शरीयत के अनुसार अनिवार्य बनाने का रहस्य।	शरीयत का हुक्म जानने के बाद सवाल की सूरत बदलना छल-कपट है।
574	207	कलाम (वाणी) अल्लाह तआला का गुण है, इसलिए इसकी कसम शरीयत के अनुसार है।	मुफ़्ती को 'युसद्दकु दियानतन' (धार्मिक रूप से सच माना जाए) नहीं कहना चाहिए, बल्कि अदब यह है कि 'ला युसद्दकु कज़ाअन' (कानूनी रूप से सच न माना जाए) कहे।
579	285	हलाल को हराम करने की कसम हलाल ही है।	जहाँ तक संभव हो, समझदार वयस्क की बात को व्यर्थ नहीं छोड़ा जाना चाहिए।
591	338	गैर-शरिया मन्नत और शरिया मन्नत का पूर्ण स्पष्टीकरण।	कमजोर राय पर फतवा देना अज्ञानता और सर्वसम्मति के विरुद्ध है।
596	338	ज़कात की संपत्ति और विशेष मन्नत का हुक्म एक ही है।	शरीयत गुप्त अंगों (निकाह/संभोग) के मामलों में सख्त एहतियात बरतती है।
598	344	अल्लाह के सिवा किसी और के लिए मन्नत की फिक़ही मनाही है।	चार साल के बाद लापता व्यक्ति की पत्नी का स्वयं निकाह कर लेना किसी भी इमाम का मज़हब नहीं है।
598	505	औलिया-ए-किराम के लिए उनके बाहरी या आंतरिक जीवन में जो	जुर्माने के साथ ताज़ीर (सजा), जिसमें अपराधी की कुछ संपत्ति गलती के बदले ले ली जाए, निरस्त (मनसूख) है।

पृष्ठ	सूचकांक	विषय शीर्षक	निर्णय / स्पष्टीकरण
		मन्नतें मांगी जाती हैं, वे फिक़ही मन्नतें नहीं हैं।	
625	505	शराब पीने पर हद (निश्चित सजा) है। पेशाब पीने पर क्यों नहीं?	निरस्त (मनसूख) पर अमल करना जायज़ नहीं है।
625	517	अजनबी स्त्री के साथ व्यभिचार पर हद है, महरमों (निकट संबंधियों) से निकाह पर क्यों नहीं?	फिक़ही आदेशों का आधार सामान्य मामलों पर होता है।

इफ्ता और मुफ़्ती की रस्म (परंपरा)

- | 523 | - | दयानत (धार्मिक ईमानदारी) में आमंत्रित और गैर-आमंत्रित दोनों गुण समान हैं, इसलिए नीयत (इरादे) की पहचान ज़रूरी है। 113 | 523 | दुर्लभ (शाज़) रिवायतों पर फतवा देना जायज़ नहीं है। | बिना विवरण के नीयत तो धार्मिक रूप से भी मान्य नहीं है, कानूनी (कज़ा) तो दूर की बात है। 124 | 523 | जिन्होंने बिना ज्ञान के फतवा दिया, वे स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया। | यदि किसी व्यक्ति ने कहा 'अगर मैं बाहर जाऊं तो मेरा गुलाम आज़ाद है', और बाहर जाने से उसका इरादा सफर (यात्रा) का था, तो धार्मिक रूप से उसकी पुष्टि की जाएगी। लेकिन अगर वह किसी विशेष स्थान जैसे बग़दाद की ओर जाने की नीयत करे, तो यह सही नहीं है। 125 | - | जो बिना ज्ञान के फतवा देता है, उस पर धरती और आकाश के फरिश्ते लानत भेजते हैं। | -

فتاویٰ رضویہ، جلد سیز دہم

صفحہ	نمبر شمار	موضوع	حکم/تفصیل
۵۶۲	۱۳۳	بیک وقت تین طلاقیں دینا کیوں گناہ قرار دیا گیا۔	لفظ جواب طلاق کے واسطے موضوع نہیں یہ ایک ہندی کلمہ ہے جو چند معنوں میں استعمال ہوتا ہے لہذا اس سے خاص کر طلاق بائن کا مفہوم سمجھنا دلیل نافہمی ہے۔
۵۶۲	۱۷۰	حلالہ میں صرف نکاح پر اکتفاء نہ کرنے اور مجامعت کو شرعاً لازم قرار دینے کی حکمت۔	حکم شرعی کے معلوم ہونے پر سوال کی صورت کو تبدیل کرنا مکر و فریب ہے۔
۵۷۴	۲۰۷	کلام۔ اللہ تعالیٰ کی صفت ہے اس لئے اس کی قسم شرعی ہے۔	مفتی کو یصدق دیانہ نہیں کہنا چاہئے بلکہ ادب یہ ہے کہ لایصدق قضاء کہے۔
۵۷۹	۲۸۵	یمین تحریم حلال ہی ہے۔	حتی الامکان عاقل بالغ کے کلام کو مہمل نہ چھوڑا جائے۔
۵۹۱	۳۳۸	نذر غیر شرعی و نذر شرعی کی تنقیح تام۔	قول ضعیف پر فتویٰ دینا جہل و مخالف اجماع ہے۔
۵۹۶	۳۳۸	مال زکوۃ اور خاص نذر کا حکم ایک ہی ہے۔	شریعت کو فروج میں سخت احتیاط ملحوظ ہے۔

نمبر صفحہ	شمار	موضوع	حکم/تفصیل
۵۹۸	۳۴۴	غیر خدا کے لئے نذر فقہی کی ممانعت ہے۔	چار برس کے بعد بطور خود زوجہ مفقود کا نکاح کرنا کسی امام کا مذہب نہیں ہے۔
۵۹۸	۵۰۵	اولیائے کرام کے لئے ان کی حیات ظاہری خواہ باطنی میں جو نذریں کہی جاتی ہے یہ نذر فقہی نہیں۔	جرمانہ کے ساتھ تعزیر کہ مجرم کا کچھ مال خطاء کے عوض لے لیا جائے منسوخ ہے۔
۶۲۵	۵۰۵	شراب نوشی پر حد ہے۔ پیشاب نوشی پر کیوں نہیں۔	منسوخ پر عمل جائز نہیں۔
۶۲۵	۵۱۷	اجنبیہ سے زنا پر حد ہے محارم سے نکاح پر کیوں نہیں۔	فقہی احکام کا دار ومدار غالب امور پر ہوتا ہے۔

افتاء ورسم المفتی

- | ۵۲۳ | - | دیانت میں صفت داعیہ و غیر داعیہ دونوں یکساں ہیں اس لئے نیت تشخیص ضروری ہے۔ ۱۱۳ | ۵۲۳ | روایات شاذہ ساقط پر فتویٰ دینا جائز نہیں۔ | وصف کو ذکر کئے بغیر نیت تو دیانتاً بھی معتبر نہیں چہ جائیکہ قضاء۔ ۱۲۴ | ۵۲۳ | جنھوں نے بے علم فتویٰ دیا وہ خود بھی گمراہ ہوئے اور دوسروں کو بھی گمراہ کیا۔ | کسی شخص نے کہا اگر میں باہر جاؤں تو میرا غلام آزاد ہے، اور باہر جانے سے سفر کی نیت کی تو دیانتاً اسکی تصدیق کی جائے گی اور کسی خاص مکان مثلاً بغداد کی طرف خروج کی نیت کرے تو

صحیح نہیں۔ ۱۲۵ | - | جو بغیر علم کے فتویٰ دے اس پر زمین و آسمان کے فرشتے لعنت بھیجتے ہیں۔ | -

Fatawa-e-Razvia Volume 13 13

If a person swears that he will not marry a woman and intends a Hashimi Arab or Turkish or someone of a specific lineage, then this intention will be religiously (diyanatan) valid, but not legally (qadaan). (Page: 565)

The scholars of the Two Holy Sanctuaries (Haramayn Sharifayn) have explicitly performed Takfir (excommunication) of the author of "Behishti Zewar". (Page: 366)

The speech of every contractor, swearer, vower, and endower shall be understood in the meaning that is commonly recognized. (Page: 591)

An incident during the blessed era of the Commander of the Faithful, Umar Farooq the Great (Allah be pleased with him), regarding the birth of a child whose front four teeth had already emerged while still in the mother's womb. (Page: 368)

Names of Men (Biographies)

Zahidi is not a reliable narrator. (Page: 113)

Mention of the birth of Imam Dhahhak and the explanation of his name. (Page: 370)

The Hadith scholar Imam Abdul Aziz Majishun remained in the womb for four years. (Page: 370)

Zahidi is a Mu'tazilite and is well-known for gathering everything, reliable or unreliable; he is untrustworthy and unreliable. (Page: 622)

It is a well-known habit of the women of Bani Majishun that children remain in their wombs for four years. (Page: 370)

History and Biographies

Imam-e-Azam Abu Hanifa (Allah be pleased with him) deduced the ruling of "Yameen-e-Fawr" (immediate oath). (Page: 138)

The incident of Sayyiduna Ayyub (peace be upon him) taking an oath. (Page: 526)

The story of a person who asked the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) whether a person should kill a stranger if he finds him with his wife. (Page: 562)

Researchers have refuted some famous meticulous points of the master of meticulous researchers, Allama Sayyid Mir Zahid, on many grounds. (Page: 176)

A strange decision of Hazrat Ali al-Murtaza (may Allah honor his face). (Page: 576)

Following the instruction of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Hazrat Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with them both) revoked a divorce given during menstruation, yet it was still counted as a divorce. (Page: 190)

The Holy Ghaus-e-Pak (may Allah be pleased with him) used to accept offerings and would also partake in them himself. (Page: 600)

An incident of the generosity and kindness towards the poor of Ghaus-e-Azam. (Page: 601)

फ़तावा रज़विया खंड 13 13

यदि कोई व्यक्ति शपथ ले कि वह किसी महिला से विवाह नहीं करेगा और उसकी नीयत हाशिमी अरब या तुर्क या किसी विशेष वंश की महिला से हो, तो यह नीयत धार्मिक रूप से (दियानतन) मान्य होगी, कानूनी रूप से (क़ज़ान) नहीं। (पृष्ठ: 565)

हरमैन शरीफ़ैन के विद्वानों ने "बेहिश्ती ज़ेवर" के लेखक का नाम लेकर तकफ़ीर (धर्म से निष्कासित) की है। (पृष्ठ: 366)

प्रत्येक अनुबंध करने वाले, शपथ लेने वाले, मन्नत मानने वाले और वक्फ करने वाले के कथन को उसी अर्थ में लिया जाएगा जो प्रचलित है। (पृष्ठ: 591)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के धन्य काल में एक बच्चे के जन्म की घटना, जिसके अगले चारों दाँत माँ के गर्भ में ही निकल आए थे। (पृष्ठ: 368)

अस्माउर रिजाल (पुरुषों की जीवनी)

ज़ाहिदी एक विश्वसनीय वर्णनकर्ता (रावी) नहीं हैं। (पृष्ठ: 113)

इमाम ज़हहाक के जन्म का उल्लेख और उनके नाम की व्याख्या। (पृष्ठ: 370)

इमाम मुहद्दिस अब्दुल अज़ीज़ माजिशून चार साल तक गर्भ में रहे। (पृष्ठ: 370)

ज़ाहिदी एक मोतज़िली है और वह हर अच्छी-बुरी चीज़ एकत्र करने के लिए प्रसिद्ध है, वह अविश्वसनीय और अविश्वस्त है। (पृष्ठ: 622)

बनी माजिशून की महिलाओं की यह आदत प्रसिद्ध है कि बच्चा उनके गर्भ में चार साल तक रहता है। (पृष्ठ: 370)

इतिहास और संस्मरण

इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने "यमीन-ए-फ़ौर" (तत्काल शपथ) का नियम निकाला। (पृष्ठ: 138)

सैय्यदना हज़रत अय्यूब (अलैहिस्सलाम) की शपथ की घटना। (पृष्ठ: 526)

एक व्यक्ति की कहानी जिसने हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ किसी अजनबी को पाए तो क्या उसे मार दे? (पृष्ठ: 562)

शोधकर्ताओं ने महान शोधकर्ता अल्लामा सैय्यद मीर ज़ाहिद की कुछ प्रसिद्ध बारीकियों को कई कारणों से खारिज कर दिया है। (पृष्ठ: 176)

हज़रत अली मुर्तज़ा (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) का एक अद्भुत फ़ैसला। (पृष्ठ: 576)

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के निर्देश पर हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने मासिक धर्म के दौरान दिए गए तलाक से रुजू (वापसी) कर ली, लेकिन इसके बावजूद वह तलाक ही माना गया। (पृष्ठ: 190)

हुज़ूर गौस-ए-पाक (रज़ियल्लाहु अन्हु) चढ़ावा स्वीकार करते थे और स्वयं भी ग्रहण करते थे। (पृष्ठ: 600)

ग़ौस-ए-आज़म की उदारता और ग़रीब नवाज़ी की एक घटना। (पृष्ठ: 601)

पृष्ठ 81 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

اگر کوئی شخص قسم کھائے کہ وہ عورت نہیں کرے گا اور نیت کرے ہاشمی عربی یا ترکی یا کوئی خاص نسب والی کی تو یہ نیت دیانۃً معتبر ہوگی قضاءً نہیں۔ (صفحہ ۵۶۵)

مصنف "بہشتی زیور" کی علماء حرمین شریفین نے نام لے کر تکفیر کی ہے۔ (صفحہ ۳۶۶)

ہر عاقد، حالف، ناذر اور واقف کے کلام کو اسی معنی پر محمول کیا جائے گا جو متعارف ہے۔ (صفحہ ۵۹۱)

امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے عہدِ مبارک میں ایک بچے کی ولادت کا واقعہ جس کے اگلے چاروں دانت ماں کے پیٹ میں ہی نکل چکے تھے۔ (صفحہ ۳۶۸)

اسماء الرجال

زاہدی قابلِ اعتماد راوی نہیں۔ (صفحہ ۱۱۳)

امام ضحاک کی ولادت کا ذکر اور ان کے نام کی توجیہ۔ (صفحہ ۳۷۰)

امام محدث عبد العزیز ماجشون چار برس حمل میں رہے۔ (صفحہ ۳۷۰)

زاہدی معتزلی ہے اور ہر رطب و یابس کو جمع کرنے میں معروف غیر ثقہ و غیر معتمد ہے۔ (صفحہ ۶۲۲)

بنی ماجشون کی عورتوں کی یہ عادت مشہور ہے کہ بچہ ان کے پیٹ میں چار برس رہتا ہے۔ (صفحہ ۳۷۰)

تاریخ و تذکرہ

یمین فور کا استنباط امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا۔ (صفحہ ۱۳۸)

سیدنا حضرت ایوب علیہ السلام کے قسم کھانے کا واقعہ۔ (صفحہ ۵۲۶)

ایک شخص کا قصہ جس نے حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے یہ سوال کیا کہ اگر ایک شخص اپنی بیوی کے ساتھ غیر شخص کو پائے تو قتل کردے؟ (صفحہ ۵۶۲)

محققین نے عمدۃ المدققین علامہ سید میر زاہد کی بعض مشہور تدقیقات کا کثیر وجوہ سے رد کیا ہے۔ (صفحہ ۱۷۶)

حضرت علی المرتضیٰ کرم اللہ وجہہ الکریم کا عجیب فیصلہ۔ (صفحہ ۵۷۶)

حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے ارشاد پر حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے حیض میں دی ہوئی طلاق سے رجوع کر لیا مگر اس کے باوجود وہ طلاق شمار ہوئی۔ (صفحہ ۱۹۰)

حضور غوثِ پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ نذریں قبول فرماتے اور خود بھی تناول فرماتے۔ (صفحہ ۶۰۰)

غوثِ اعظم کی فیاضی اور غریب نوازی کا ایک واقعہ۔ (صفحہ ۶۰۱)

Fatawa Razawiya | Volume 13 | 13

Topic (Right)	Page	Topic (Left)	Page
The excellence of the wooden sandals of our Master Ghous-e-Azam (may Allah be pleased with him)	603	A unique incident of a villager	600
Salvation is found through the remembrance of the Master Ghous-e-Azam	655	In Arab culture, the kunya (agnomen) is for respect	600
The virtues of Sheikh Baqa bin Battu (may Allah have mercy on him)	655	Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad are the teachers and students of Imam Azam (may Allah be pleased with them)	601
Virtues and Merits			
Sheikh Mansur Bataihi (may Allah have mercy on him)'s greatness			601
All jurists are dependents of Abu Hanifa (Al-Fuqaha kulluhum 'ayal Abi Hanifa)	138	The status of Sheikh Ali bin Heeti (may Allah have mercy on him)	602
Abu Sa'id Qailawi (may Allah have mercy on him) is from the great saints of Iraq	183	Imam Azam Abu Hanifa is unique in deducing the completion of various types of oaths	602
The saints of Allah rule over lions	352	Creation from a single water (maa'-e-wahid) is among the specific characteristics of Prophet Jesus (peace be upon him)	604
The grandeur of religious scholars is high and lofty	361	In the pure Sharia, lineage is taken from the father; only Imam Hasan and Husayn (may Allah be pleased with them both) are excluded from this general rule	645
	370		645

Topic (Right)	Page	Topic (Left)	Page
He who is disrespectful towards the status of scholars is a hypocrite and deserves punishment		Imam Dhahak is an exegete and a scholar of Hadith	
All the noble attributes of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) are his specific characteristics in the sense that no one is equal to or shares in his attributes	406	Praiseworthy mention of Hazrat Maulana Muhammad Wasi Ahmed Muhaddith Surti	655
Sales (Bayu')	**474**	For the one who is patient for the sake of Allah, Allah resolves his difficulty.	
Sale with ten (Bay' bi'l-asharah) is of two types: simple sale with ten and conjoined sale with ten	487	The mosque is the best of places	145
Hiring (Ijarah)	**562**	Imam Najmuddin Umar Nasafi (may Allah have mercy on him) is the Mufti for Jinn and Men.	
If the house is rented, the husband is responsible for the rent during the 'Iddah period	599	The exalted Imam Abul Hasan Nur al-Millah wa al-Din Ali bin Yusuf bin Jarir Shattanufi is a matchless Imam	311
A woman who passed away left a child. If only the mother's paternal aunt is present among those eligible for custody, the child will be given into her care. If she wants payment, it will be provided from the father	599	Shams al-Din al-Dhahabi is the Imam of the science of Hadith narrators (Asma al-Rijal)	398

विषय (दायां)	पृष्ठ	विषय (बायां)	पृष्ठ
सैय्यदना गौस-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की खड़ाऊं का कमाल	६०३	एक देहकान (ग्रामीण) की अनोखी घटना	६००
सरकार-ए-गौस-ए-आज़म की याद से निजात मिलती है	६५५	अरब में कुनियत (उपनाम) ताज़ीम (सम्मान) के लिए है	६००
शेख बक़ा बिन बत्तू रहमतुल्लाह अलैहि के फ़ज़ाइल	६७७	इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद, इमाम आज़म के उस्ताद और शागिर्द हैं रज़ियल्लाहु अन्हुम	६०१
फ़ज़ाइल-ओ-मनाक़िब (सद्गुण और महिमा)			
शेख मंसूर बताइही अलैहिर्रहमा की अज़मत			६०१
अल-फुक़हा कुल्लुहुम अयाल अबी हनीफा (तमाम फकीह अबू हनीफा के आश्रित हैं)	१३८	शेख अली बिन हीती अलैहिर्रहमा का मकाम	६०२
अबू सईद कैलवी रहमतुल्लाह अलैहि इराक़ के महान औलिया में से हैं	१८३	इमाम आज़म अबू हनीफा कसमों के प्रकारों के समापन के निष्कर्ष निकालने में अद्वितीय हैं	६०२
अल्लाह के वली शेरों पर शासन करते हैं	३५२	एक ही पानी (मा-ए-वाहिद) से पैदा होना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की विशेषताओं में से है	६०४
दीनी उलमा की शान बहुत ऊंची और बुलंद है	३६१	शरा-ए-मुतह्ह में नसब (वंश) पिता की ओर से लिया जाता है, केवल इमाम हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा इस सामान्य नियम से बाहर हैं	६१७
उलमा की शान में गुस्ताखी करने वाला मुनाफिक है और सज़ा का हकदार है	३७०	इमाम ज़हाक मुफ़स्सिर और मुहद्दिस हैं	६१७

विषय (दायां)	पृष्ठ
हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम सिफ़ात-ए-करीमा हुज़ूर की विशिष्ट विशेषताएं हैं, इस अर्थ में कि कोई हुज़ूर के समान या शरीक नहीं है	४०६
बयूअ (क्रय-विक्रय)	**४७४**
बय-बिल-अशरा दो प्रकार के हैं: बय-ए-बशरह मुफ़रदा और बय-ए-बशरह मक़रूना	४८७
इजारा (किराया)	**५६२**
यदि घर किराए का हो, तो इद्दत के दौरान उसमें रहने का किराया पति पर अनिवार्य है	५९९
मृत महिला ने बच्चा छोड़ा। यदि केवल माँ की बुआ मौजूद है, तो बच्चा उसे दिया जाएगा। यदि वह पारिश्रमिक चाहे तो पिता से दिलाया जाएगा	५९९

विषय (बायां)	पृष्ठ
हज़रत मौलाना मुहम्मद वसी अहमद मुहद्दिस सूरती का ज़िक्र-ए-खैर	६७७
जो अल्लाह तआला के लिए सब्र करता है, अल्लाह तआला उसकी मुश्किल आसान कर देता है।	
मस्जिद बेहतरीन स्थान है	१४५
इमाम नजमुद्दीन उमर नसफी रहमतुल्लाह अलैहि जिन्न और इंसानों के मुफ्ती हैं।	
इमाम अजल अबुल हसन नूरुल मिल्लत वद्दीन अली बिन यूसुफ बिन जरीर शत्तनूफ़ी बेनज़ीर इमाम हैं	३११
शम्सुद्दीन ज़हबी फ़न-ए-रिजाल (हदीस के रावी) के इमाम हैं	३९८

पेज ८२ का ६८८

موضوع (دائیں جانب)	صفحہ
سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کھڑاؤں کا کمال	۶۰۳
سرکارِ غوث اعظم کی یاد سے نجات ملتی ہے	۶۵۵
شیخ بقاء بن بطو ر رحمہ اللہ تعالیٰ علیہ کے فضائل	۶۵۵
فضائل و مناقب	
شیخ منصور بطائحی علیہ الرحمہ کی عظمت	۶۰۱
الفقہاء کلھم عیال ابی حنیفہ	۱۳۸
ابوسعید قیلوی رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ اکابر اولیاء عراق سے ہیں	۱۸۳
اولیاء اللہ شیروں پر حکومت کرتے ہیں	۳۵۲
علماء دین کی شان ارفع و اعلیٰ ہے	۳۶۱

موضوع (بائیں جانب)	صفحہ
ایک دہقان کا انوکھا واقعہ	۶۰۰
عرب میں کنیت تعظیم ہے	۶۰۰
امام ابو یوسف امام محمد کے استاذ اور امام اعظم کے شاگرد ہیں رضی اللہ تعالیٰ عنہم	۶۰۱
شیخ علی بن ہیتی علیہ الرحمہ کا مقام	۶۰۲
امام اعظم ابو حنیفہ اقسام یمین کے اتمام کے استنباط میں متفرد ہیں	۶۰۲
ماء واحد سے تخلق حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے خصائص میں سے ہے	۶۰۴
شرع مطہر میں نسب باپ کی طرف سے لیا جاتا ہے صرف امام حسن و	۶۴۵

موضوع (دائیں جانب)	صفحہ	موضوع (بائیں جانب)	صفحہ
		حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہما اس حکمِ عام سے مستثنٰی ہیں	
شان علماء میں گستاخی کرنے والا منافق ہے اور لائقِ تعزیر ہے	۳۷۰	امام ضحاک مفسر و محدث ہیں	۶۴۵
حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی تمام صفاتِ کریمہ بایں معنیٰ خصائصِ حضور ہیں	۴۰۶	حضرت مولانا محمد وصی احمد محدث سورتی کا ذکر خیر	۶۵۵
کہ کوئی صفت میں حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے مماثل و شریک نہیں			
		جو اللہ تعالیٰ کے لئے صبر کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کی مشکل کھول دیتا ہے۔	
بیوع	**۴۷۴**		
بیع بالعشرہ دو نوع پر ہے، ایک بیع بعشرہ مفردہ اور دوسری بیع بعشرہ مقرونہ	۴۸۷	مسجد خیر الاماکن ہے	۱۴۵
اجارہ	**۵۶۲**	امام نجم الدین عمر نسفی رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ جن و انس کے مفتی ہیں۔	
مکان کرایہ کا ہو تو دورانِ عدت اس میں رہنے کا کرایہ خاوند پر لازم ہے	۵۹۹	امام اجل ابوالحسن نورالملتہ والدین علی بن یوسف بن جریر شطنوفی بے نظیر امام ہیں	۳۱۱

موضوع (دائیں جانب)	صفحہ	موضوع (بائیں جانب)	صفحہ
وفات پانے والی عورت نے بچہ چھوڑا، اہل حضانت میں صرف ماں کی پھوپھی موجود ہے تو بچہ اسی کی پرورش میں دیں گے۔ اجرت لینی چاہے تو باپ سے دلا دیں گے	۵۹۹	شمس الدین ذہبی فنِ رجال کے امام ہیں	۳۹۸

Fatawa Razawiya Volume 13

(Left Column) 595: Hiring for acts of obedience is void. 595: Later scholars have permitted wages for leading prayer (imamat), calling the adhan, and teaching the Quran. Kafalah (Suretyship) 439: Suretyship on the condition of the original debtor's discharge is considered Hawalah (transfer of debt). 443: A father-in-law cannot take the obligation of maintenance upon himself as Hawalah before it becomes due. However, it is valid as Kafalah. 455: In our lands, it is customary for a father to be the guarantor for the maintenance of his son and daughter-in-law. 460: If a woman ceases her rebelliousness (nushuz), she can now demand from the guarantor, provided the suretyship was not time-bound.

Hawalah (Transfer of Debt) 439: Hawalah is the transfer of debt. 440: Where debt is non-existent, Hawalah cannot take place. 440: Hawalah is not valid in case of ignorance regarding the asset/amount. Debt

(Right Column) 442: A woman who takes a loan for her maintenance without mutual consent or a judicial decree is personally responsible for it. However, if she spends from her own wealth after mutual consent or a judge's determination, she can recover it from her husband. 439: Remission of debt before it becomes due is meaningless. 462: If a judge orders taking a loan to spend on a child, the demand for it lies with the father.

Hiba (Gift) 202: Conditionality (suspension) in a gift is void. 412: If a girl is gifted to someone, Islamically she does not belong to him, nor can she reside with him, nor does he possess the right of guardianship for her marriage. Any expenditure on her is considered a voluntary donation (tabarru'). 481: Providing a house for residence does not constitute granting ownership unless the authority to transfer ownership is established. It is necessary to vacate it of one's belongings etc., and grant possession.

Dhaman (Guarantee/Liability) 483: If a husband hires a servant for chores due to his wife's disobedience, the liability/cost for this is not on the wife. 483: Whatever a woman spent on the weddings etc. of her relatives without the husband's permission, the husband can recover it. 646: If someone was beaten for not performing prayer and their watch broke, the price of it must be paid (as compensation).

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

(बायां कॉलम) 595: इबादत (आज्ञाकारिता) के कार्यों पर मज़दूरी तय करना बातिल (अमान्य) है। 595: बाद के विद्वानों ने इमामत, अज़ान और क़ुरआन की शिक्षा पर मज़दूरी को जायज़ क़रार दिया है। कफ़ाला (ज़मानत) 439: मूल देनदार की मुक्ति की शर्त पर कफ़ाला वास्तव में 'हवाला' (ऋण का हस्तांतरण) है। 443: ससुर, भरण-पोषण (नफ़क़ा) वाजिब होने से पहले उसे 'हवाला' के तौर पर अपने ऊपर नहीं ले सकता। हाँ, 'कफ़ाला' के रूप में यह सही है। 455: हमारे देशों में पिता का अपने बेटे और बहू के भरण-पोषण का ज़िम्मेदार होना सामान्य चलन है। 460: यदि कोई महिला हठधर्मिता (नुशूज़) छोड़ दे, तो वह अब कफ़ील (ज़मानतदार) से माँग कर सकती है, बशर्ते कफ़ालत (ज़मानत) सीमित समय के लिए न हो।

हवाला (ऋण हस्तांतरण) 439: हवाला ऋण का हस्तांतरण है। 440: जहाँ ऋण अस्तित्व में न हो, वहाँ हवाला नहीं हो सकता। 440: संपत्ति या राशि की अनिश्चितता की स्थिति में हवाला सही नहीं होता। क़र्ज़

(दायां कॉलम) 442: यदि किसी महिला ने आपसी सहमति या न्यायाधीश के आदेश के बिना अपने भरण-पोषण के लिए ऋण लिया है, तो वह स्वयं उसकी ज़िम्मेदार है। और आपसी सहमति या न्यायाधीश के निर्णय के बाद यदि वह अपनी संपत्ति से भी खर्च करती है, तो वह उसे अपने पति से वसूल कर सकती है। 439: ऋण का वाजिब होने से पहले माफ़ करना बेमानी है। 462: यदि न्यायाधीश ने ऋण लेकर बच्चे पर खर्च करने का आदेश दिया हो, तो उसकी माँग पिता पर होगी।

हिबा (उपहार) 202: हिबा में किसी शर्त को जोड़ना (ता'लीक़) बातिल है। 412: यदि किसी लड़की को किसी को 'हिबा' कर दिया गया, तो शरई तौर पर वह उसकी नहीं हुई, न वह उसके पास रह सकती है, न उसे उसके निकाह का अधिकार प्राप्त है। उस पर जो खर्च किया गया वह स्वैच्छिक दान (तबर्रुआ) हुआ। 481: रहने के लिए मकान देना मालिक बना देना नहीं है जब तक कि स्वामित्व हस्तांतरण का अधिकार साबित न हो जाए। इसके साथ ही उसे अपने सामान आदि से खाली करके कब्ज़ा दिलाना आवश्यक है।

ज़मान (दायित्व/गारंटी) 483: पत्नी की नाफ़रमानी के कारण यदि पति काम के लिए नौकर रखे, तो उसका हर्जाना पत्नी पर नहीं है। 483: पत्नी ने पति की अनुमति के बिना अपने रिश्तेदारों की शादी

आदि पर जो खर्च किया, पति उसे वसूल कर सकता है। 646: नमाज़ न पढ़ने पर किसी को मारा-पीटा, उसकी घड़ी टूट गई तो उसकी कीमत चुकानी होगी।

पृष्ठ 83 / 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم

(بایاں کالم) ۵۹۵: طاعت پر اجارہ باطل ہے۔ ۵۹۵: متاخرین نے امامت، اذان اور تعلیم القرآن پر اجرت کو جائز قرار دیا ہے۔ کفالہ ۴۳۹: کفالہ بشرط براءۃ اصیل حوالہ ہے۔ ۴۴۳: پدر زن وجوب نفقہ سے پہلے اس کو اپنے ذمہ بطور حوالہ نہیں لے سکتا۔ ہاں بطور کفالہ ہو تو صحیح ہے۔ ۴۵۵: والد کا متکفل نفقہ پسر و زنِ پسر ہونا ہمارے بلاد میں معمول ہے۔ ۴۶۰: عورت نشوز چھوڑ دے تو اب کفیل سے مطالبہ کرسکتی ہے جبکہ کفالت موقت نہ ہو۔

حوالہ ۴۳۹: حوالہ نقل دین ہے۔ ۴۴۰: جہاں دین معدوم ہو وہاں حوالہ تحقق نہیں ہوسکتا۔ ۴۴۰: جہالت مال کی صورت میں حوالہ صحیح نہیں ہوتا۔ قرض

(دایاں کالم) ۴۴۲: عورت نے اپنے نفقہ کے لئے باہمی تراضی یا قضاء قاضی کے بغیر جو قرضہ لیا اس کی ذمہ دار وہ خود ہے اور تراضی یا تقریر قاضی کے بعد اگر اپنے مال سے بھی خرچ کرے تو اس کو شوہر سے وصول کر سکتی ہے۔ ۴۳۹: اسقاط دین پیش از وجوب معنی ندارد۔ ۴۶۲: حاکم نے قرض لے کر بچہ پر صرف کرنے کا حکم دیا ہو تو اس کا مطالبہ باپ پر ہے۔

ہبہ ۲۰۲: ہبہ میں تعلیق باطل ہے۔ ۴۱۲: لڑکی کسی کو ہبہ کردی شرعاً اس کی نہ ہوئی نہ اس کے پاس رہ سکتی ہے نہ اس کے نکاح کی ولایت اس کو حاصل ہے اس پر جو خرچ کیا تبرع ہوا۔ ۴۸۱: رہنے کو مکان دینا مالک کردینا نہیں جب تک ولایت تملیک ثابت نہ ہوا اور اس کے ساتھ اپنے اسباب وغیرہ اسے خالی کرکے قبضہ دلا دینا ضرور ہے۔

ضمان ۴۸۳: عورت کی نافرمانی کی وجہ سے شوہر کام کے لئے نوکر رکھے اس کا تاوان عورت پر نہیں ہے۔ ۴۸۳: عورت نے شوہر کی اجازت کے بغیر اپنے اعزہ کی شادی وغیرہ پر جو خرچ

کیا وہ شوہر وصول کر سکتا ہے۔ ۶۴۶: نماز نہ پڑھنے پر کسی کو مار پیٹ کی، اس کی گھڑی ٹوٹ گئی تو قیمت دینی ہوگی۔

صفحہ 83 از 688

Fatawa Razawiya - Volume 13

Declaration (Iqrar)	Page	Claim (Da'wa)	Page
The husband wrote a declaration after marriage: "If I remarry without the consent and desire of Mehr-un-Nisa, the second wife is divorced." If the proof of lack of consent came only from the wife's statement, the divorce will not take place.	237	Regarding not receiving maintenance, a woman does not need witnesses; her sworn statement is sufficient.	220
In a condition that can only be known from the woman's own statement, her word is to be trusted.	253	If husband and wife disagree on the existence of a condition, the husband's statement under oath will be reliable.	221
He who confessed regarding pregnancy that it is from his adultery and is deserving of punishment.	316	If the one who performed Zihar does not give expiation, the woman can file a claim against him to either give expiation and have intercourse or give a divorce.	283
If a child is born within two years after the husband's death and the woman has not confessed to the end of her 'iddah' (waiting period), the boy's lineage will be sound. If she has already confessed, the lineage will be unknown.	316	If an unmarried woman claims to have become pregnant through intercourse in a dream, her statement will be declared reprehensible (Makruh) and will never be accepted.	352
If a woman claims the end of her 'iddah', her word under oath will be considered reliable.	321	If one claims marriage with those [prohibited persons], the claim will be false.	352
Marriage becomes invalid immediately upon confessing to adultery with the mother of the wedded wife, even if he says he made a false confession.	457	Whether a woman whose divorce is suspended can appeal to a court official for a divorce or not.	446
Legal Incapacity (Hajr)			446

Declaration (Iqrar)	Page	Claim (Da'wa)	Page
		Marriage after which intercourse is a woman's right; if the husband does not fulfill this right, the woman can file for separation before a Qazi.	
The lower age limit for a woman is 9 years; puberty never occurs at a younger age.	294	A claim cannot be made based on a promise.	481
Signs of puberty are evident for the woman.	294	The claimant's statement is not admissible.	614
If signs of puberty are found, she is an adult; otherwise, the ruling of puberty will be given at the completion of fifteen years of age.	294	**Testimony (Shahadat)**	
		Holding the defendant responsible for presenting testimony is a clear example of ignorance.	123

फ़तावा रज़विया - जिल्द 13

इक़रार (घोषणा)	पृष्ठ	दावा (मुक़दमा)	पृष्ठ
पति ने निकाह के बाद इक़रारनामा लिखा कि अगर मेहर-उन-निसा की रज़ामंदी और चाहत के बिना दूसरा विवाह किया तो दूसरी को तलाक़। यदि रज़ामंदी न होने का सबूत केवल पत्नी के बयान से मिला, तो तलाक़ नहीं होगी।	237	नान-नफ़क़ा (खर्च-पानी) न मिलने के बारे में स्त्री को गवाहों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसका हल्फी बयान (शपथ पत्र) पर्याप्त है।	220
जिस शर्त का ज्ञान केवल स्त्री के बताने से हो, उसमें उसी के कथन का एतबार (भरोसा) है।	253	यदि पति-पत्नी शर्त की मौजूदगी के बारे में मतभेद करें, तो पति का कथन शपथ के बाद विश्वसनीय होगा।	221
जिसने गर्भ के लिए इक़रार किया कि वह मेरे ज़िना (व्यभिचार) से है और सज़ा का पात्र है।	316	मुज़ाहिर (जिसने ज़िहार किया हो) कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) न दे तो स्त्री उस पर दावा कर सकती है कि या तो कफ़्फ़ारा देकर सहवास करे या तलाक़ दे।	283
पति की मृत्यु के बाद दो वर्ष के भीतर बच्चा पैदा हुआ और स्त्री ने इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त होने का इक़रार न किया हो, तो लड़का सही नसब (वंश) वाला होगा। और यदि इक़रार कर चुकी हो तो मजहूल नसब (अज्ञात वंश) वाला होगा।	316	अविवाहित स्त्री स्वप्न में सहवास से गर्भवती होने का दावा करे, तो उसके इस कथन को मकरूह (अनुचित) करार दिया जाएगा और कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा।	352
स्त्री इद्दत समाप्त होने की दावेदार है, तो उसका कथन शपथ के साथ विश्वसनीय होगा।	321	जिनसे निकाह का दावा करे, तो दावा गलत होगा।	352
विवाहिता की माँ के साथ ज़िना का इक़रार करते ही निकाह फ़ासिद (अमान्य) हो जाता है, चाहे वह बाद में कहे कि मैंने झूठा इक़रार किया था।	457	मुअल्लक़ा (जिसकी तलाक़ लंबित हो) स्त्री अदालत के हाकिम से फ़रियाद करके तलाक़ ले सकती है या नहीं।	446
हज्र (कानूनी अक्षमता)			446

इक़रार (घोषणा)	पृष्ठ
स्त्री के लिए कम से कम आयु सीमा 9 वर्ष है, इससे कम उम्र में यौवन कदापि नहीं होता।	294
स्त्री के लिए बालिग होने के लक्षण स्पष्ट हैं।	294
यदि बालिग होने के लक्षण पाए जाएँ तो बालिग, अन्यथा पन्द्रह वर्ष की आयु पूर्ण होने पर यौवन का आदेश दिया जाएगा।	294

दावा (मुक़दमा)	पृष्ठ
निकाह के बाद एक बार सहवास करना स्त्री का अधिकार है; यदि पति यह अधिकार पूरा न करे, तो स्त्री क़ाज़ी के यहाँ पृथक्करण (तफ़रीक़) का दावा कर सकती है।	
वादे के आधार पर दावा नहीं हो सकता।	481
वादी (दावा करने वाले) का कथन सुनने योग्य (ग्राह्य) नहीं है।	614
शहादत (गवाही)	
प्रतिवादी को गवाही पेश करने का ज़िम्मेदार ठहराना अज्ञानता का स्पष्ट नमूना है।	123

اقرار	صفحہ	دعویٰ	صفحہ
شوہر نے بعد نکاح اقرار نامہ لکھا، اگر مہر النساء کی رضا ورغبت کے بغیر دوسری شادی کروں تو دوسری کو طلاق، تو عدمِ رضا کا ثبوت اقرار زوجہ سے ہوا اب اس کے طلاق واقع نہ ہو گی۔	۲۳۷	نان و نفقہ نہ ملنے کے بارے میں عورت محتاج گواہان نہیں بلکہ اس کا بیان حلفی کافی ہے	۲۲۰
جس شرط کا علم عورت کے ہی بتانے سے ہو اُس میں اسی کے قول کا اعتبار ہے۔	۲۵۳	اگر میاں بیوی وجودِ شرط میں اختلاف کریں تو شوہر کا قول قسم کے بعد معتبر ہوگا۔	۲۲۱
جس نے حمل کے لئے اقرار کیا کہ میرے زنا سے ہے اور مستحق سزا ہے۔	۳۱۶	مظاہر کفارہ نہ دے تو عورت اس پر دعویٰ کر سکتی ہے کہ یا تو کفارہ دے کر جماع کرے یا طلاق دے۔	۲۸۳
شوہر کے مرنے کے بعد دو سال کے اندر بچہ پیدا ہوا اور عورت عدت ختم ہونے کا اقرار نہ کر چکی ہو تو لڑکا صحیح النسب ہو گا اور اقرار کر چکی ہو تو مجہول النسب ہوگا۔	۳۱۶	نا کتخدا عورت خواب میں ہمبستری سے حمل ہونے کا دعویٰ کرے تو اس کا یہ قول مکروہ قرار دیا جائے گا اور ہر گز تسلیم نہ کیا جائے گا۔	۳۵۲

اقرار صفحہ

عورت انقضائے عدت کی دعویدار ہے تو اُس کا قول بقسم معتبر ہوگا۔ ۳۲۱

منکوحہ کی ماں سے زنا کا اقرار کرتے ہی نکاح فاسد ہو جاتا ہے اگر چہ کہے کہ میں نے جھوٹا اقرار کیا۔ ۴۵۷

حجر

عورت کے لئے حدِ صغر ۹ سال ہے اس سے کم عمر میں جوانی ہر گز نہیں ہوتی۔ ۲۹۴

عورت کے لئے آثارِ بلوغ عیاں ہیں۔ ۲۹۴

آثارِ بلوغ پائے تو بالغہ ورنہ پندرہ سال کامل کی عمر پر جوانی کا حکم کر دیں گے۔ ۲۹۴

دعویٰ صفحہ

جن سے نکاح کا دعویٰ کرے تو دعویٰ غلط ہوگا۔ ۳۵۲

معلقہ عورت حاکم عدالت سے فریاد کر کے طلاق لے سکتی ہے یا نہیں۔ ۴۴۶

نکاح کے بعد ایک دفعہ صحبت کرنا حقِ زن ہے، اگر شوہر حق ادا نہ کرے تو عورت قاضی کے یہاں دعویٰ تفریق کر سکتی ہے۔ ۴۴۶

وعدہ کی بناء پر دعویٰ نہیں ہو سکتا۔ ۴۸۱

مدعی کا قول مسموع نہیں۔ ۶۱۴

شہادت

مدعا علیہ کو شہادت پیش کرنے کا ذمہ دار ٹھہرانا جہالت کا واضح نمونہ ہے۔ ۱۲۳

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

Topic	Page/ Entry No.	Topic	Page/ Entry No.
Evidence on negation in conditions is heard.	221	In the testimony of adultery, if there is a discrepancy in time, the testimony will be rejected.	623
Lack of permission at the place of condition can be proven by witnesses.	249	Women cannot be witnesses in matters of adultery.	623
Proof of lack of consent and willingness cannot be established by testimony.	249	Hearsay testimony is not acceptable even in property worth a penny, let alone in a matter as significant as adultery.	623
Testimony on negation is not acceptable.	350	Giving testimony of adultery after hearing about it from outside will be unacceptable.	623
In marriage, if one witness describes an observation and another an admission, this discrepancy is legally a ground for rejection of testimony.	356	**Judgement (Qaza)**	
Those who break promises after taking an oath should not be made judges, nor should their testimony be heard.	579	It is sheer ignorance for a woman to declare herself a judge in her own matter, in the sense that her decree is enforced like the ruler of Sharia.	123
The testimony of a disbeliever is not accepted.	614	Those who do not judge by what Allah has sent down are wrongdoers; those who do not judge by what Allah has sent down are defiantly disobedient; those who do not judge by what Allah has sent down are disbelievers.	124
	615		442

Topic	Page/ Entry No.	Topic	Page/ Entry No.
What kind of witnesses are required to prove adultery.		If a woman forgives the dower in privacy but then denies it and fearlessly sues the husband before a judge, the judge will declare the dower proven against the husband. The internal matter is entrusted to the True Judge, the Knower of the Unseen and the Seen.	
Statement regarding the words used in the testimony of adultery.	615	The judge will decide based on outward evidence.	442
Adultery cannot be proven until the Day of Judgment through absurd, meaningless, and baseless witnesses.	622	If a husband neither has sexual relations nor divorces, the judge will compel the husband to choose one of these two; if he refuses, he will be imprisoned; if he still refuses, he will be punished with beating.	448
Description of conditions for the proof of adultery through testimony.	623	In case of non-payment of maintenance, the judge will not use compulsion.	449
If the conditions for the testimony of adultery are not met, the legal punishment for false accusation (Hadd-e-Qazf) will be applied to the witnesses themselves.	623	According to the Hanafis, the Shafi'i judge's order of separation due to inability to provide maintenance will not be enforced.	450
One witness gave eyewitness testimony of adultery like 'a kohl stick in a kohl container', while the other testified to them lying naked; neither adultery will be proven nor the	623	A Hanafi judge cannot give a ruling against his school of thought; if he does, it will not be enforced.	476

Topic	Page/ Entry No.	Topic	Page/ Entry No.
legal punishment (Hadd) will be carried out.			

फतावा रज़विया जिल्द तेरह (13), पृष्ठ 13

विषय	पृष्ठ/प्रविष्टि संख्या
शर्तों में निषेध पर गवाही सुनी जा सकती है।	221
शर्त के स्थान पर अनुमति का अभाव गवाहों से साबित किया जा सकता है।	249
सहमति और इच्छा के अभाव का प्रमाण गवाही से नहीं हो सकता।	249
नकारात्मकता पर गवाही स्वीकार्य नहीं है।	350
निकाह में यदि एक गवाह अवलोकन और दूसरा स्वीकारोक्ति बयान करे, तो यह मतभेद शरिया के अनुसार गवाही को खारिज करने का कारण है।	356
कसम खाकर वादा खिलाफी करने वालों को न तो जज बनाया जाए और न ही उनकी गवाही सुनी जाए।	579
काफिर (अविश्वासी) की गवाही स्वीकार नहीं है।	614
व्यभिचार (ज़िना) की गवाही में समय का अंतर होने पर गवाही खारिज कर दी जाएगी।	623
महिलाएं व्यभिचार के मामलों में गवाह नहीं हो सकतीं।	623
सुनी-सुनाई गवाही तो मामूली संपत्ति के मामले में भी स्वीकार्य नहीं है, फिर व्यभिचार जैसा महत्वपूर्ण मामला तो बहुत दूर की बात है।	623
बाहर से सुनकर व्यभिचार की गवाही देना अस्वीकार्य होगा।	623
न्याय (कज़ा)	
किसी महिला के लिए अपने ही मामले में खुद को जज कहना इस अर्थ में कि उसका आदेश शरिया के शासक की तरह लागू होगा, घोर अज्ञानता है।	123
जो अल्लाह द्वारा उतारे गए के अनुसार निर्णय नहीं करते, वे अत्याचारी हैं; जो अल्लाह द्वारा	124

विषय	पृष्ठ/ प्रविष्टि संख्या
व्यभिचार सिद्ध करने के लिए किस प्रकार के गवाहों की आवश्यकता है।	615
व्यभिचार की गवाही के शब्दों का विवरण।	615
बेतुके, अर्थहीन और आधारहीन गवाहों से व्यभिचार कयामत तक साबित नहीं हो सकता।	622
गवाही से व्यभिचार के प्रमाण के लिए शर्तों का विवरण।	623
यदि व्यभिचार की गवाही की शर्तें पूरी न हों तो खुद गवाही देने वालों पर झूठे आरोप (हद्द-ए-क़ज़्फ़) की सज़ा लागू होगी।	623
एक गवाह ने व्यभिचार की चश्मदीद गवाही दी कि 'जैसे	623
उतारे गए के अनुसार निर्णय नहीं करते, वे अवज्ञाकारी हैं; जो अल्लाह द्वारा उतारे गए के अनुसार निर्णय नहीं करते, वे काफिर हैं।	
यदि किसी महिला ने एकांत में महर माफ कर दिया और फिर मुकर गई और खुदा का डर न रखते हुए काज़ी के पास पति पर दावा कर दिया, तो काज़ी पति पर महर साबित करार देगा। आंतरिक मामला वास्तविक काज़ी (अल्लाह) के सुपुर्द है जो दृश्य और अदृश्य का ज्ञाता है।	442
काज़ी बाहरी साक्ष्यों के आधार पर निर्णय लेगा।	442
यदि पति न तो संभोग करे और न ही तलाक दे, तो काज़ी पति को इन दो बातों में से एक के लिए मजबूर करेगा; यदि वह नहीं मानता तो कैद करेगा, फिर भी नहीं मानता तो मार की सजा देगा।	448
भरण-पोषण न देने की स्थिति में काज़ी जबरदस्ती नहीं करेगा।	449
हनफ़ियों के अनुसार, भरण-पोषण की अक्षमता के कारण अलगाव का शाफ़ई काज़ी का आदेश लागू नहीं होगा।	450
	476

विषय	पृष्ठ/ प्रविष्टि संख्या	विषय	पृष्ठ/ प्रविष्टि संख्या
सुरमेदानी में सलाई', जबकि दूसरे ने नग्न लेटे होने की गवाही दी; न व्यभिचार साबित होगा और न ही सज़ा (हद्द) दी जाएगी।		हनफ़ी काज़ी अपने मसलक (विचारधारा) के खिलाफ आदेश नहीं दे सकता; यदि वह ऐसा करेगा तो वह लागू नहीं होगा।	

موضوع	صفحہ/ نمبر
شروط میں نفی پر بینہ مسموع ہیں۔	۲۲۱
عدم اذن محل شرط میں گواہوں سے ثابت کیا جا سکتا ہے۔	۲۴۹
عدم رضاء ور غبت کا ثبوت شہادت سے نہیں ہو سکتا۔	۲۴۹
شہادت علی النفی مقبول نہیں۔	۳۵۰
نکاح میں ایک گواہ معائنہ اور ایک اقرار بیان کرے تو یہ اختلاف شرعاً موجب رد شہادت ہے۔	۳۵۶
	۵۷۹

موضوع	صفحہ/ نمبر
زنا کی شہادت میں وقت کا اختلاف ہوا شہادت مردود ہو گی۔	۶۲۳
عورتیں زنا کے بارے میں گواہ نہیں ہو سکتی ہیں۔	۶۲۳
سنی سنائی گواہی تو دور کوڑی کے مال میں بھی مقبول نہیں چہ جائیکہ زنا جیسا اہم معاملہ ہو۔	۶۲۳
باہر سے سُن کر زنا کی گواہی دینی نامقبول ہو گی۔	۶۲۳
قضاء	
	۱۲۳

موضوع	صفحہ/ نمبر
قسم کھا کر وعدہ خلافی کرنے والوں کو نہ حکم بنایا جائے اور نہ ہی اُن کی گواہی سُنی جائے۔	
کافر کی گواہی قبول نہیں۔	۶۱۴
اثبات زنا کے لئے کیسے گواہ درکار ہیں۔	۶۱۵
زنا کی شہادت کے الفاظ کا بیان۔	۶۱۵
بیہودہ بے معنی اور بے اصل گواہوں سے زنا قیامت تک ثابت نہیں ہو سکتا۔	۶۲۲
عورت کو خود اپنے معاملے میں بائیں معنی قاضی بتانا کہ اس کا حکم مثل حاکم شرع نافذ ہے صریح جہالت ہے۔	
جو اللہ تعالیٰ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ ظالم ہیں، جو اللہ تعالیٰ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ فاسق ہیں، جو اللہ تعالیٰ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ کافر ہیں۔	۱۲۴
خلوت میں عورت نے مہر معاف کیا پھر انکاری ہو کر خدا نا ترسی کرتے ہوئے قاضی کے پاس شوہر پر دعویٰ کر دیا تو قاضی ذمہ شوہر پر مہر کو ثابت قرار دے گا۔ معاملہ باطنی قاضی حقیقی عالم الغیب و الشہادۃ کے سپرد ہے۔	۴۴۲
قاضی ظاہر پر فیصلہ کرے گا۔	۴۴۲
شوہر جماع نہ کرے نہ طلاق دے تو قاضی شوہر کو ان دو باتوں میں سے ایک پر مجبور کرے گا اگر نہ مانے قید کرے گا پھر نہ مانے تو مار کی سزا کریگا۔	۴۴۸

موضوع	صفحہ/ نمبر
شہادت سے زنا کے ثبوت کے لئے شرائط کا بیان۔	۶۲۳
اگر شہادت زنا کی شرائط پوری نہ ہوں تو خود گواہی دینے والوں پر حد قذف جاری ہوگی۔	۶۲۳
ایک گواہ نے زنا کی عینی شہادت دی کہ کامليل فی المکحلۃ دیکھا ، دُوسرے نے ننگے لیٹے ہوئے ہونے کی، نہ زنا ثابت ہو گا نہ حد جاری ہو گی۔	۶۲۳
عدم ادائے نفقہ کی صورت میں قاضی جبر نہ کریگا۔	۴۴۹
شافعی قاضی کا بسبب عجز نفقہ تفریق کا حکم احناف کے نزدیک بھی نافذ نہ ہوگا۔	۴۵۰
قاضی حنفی اپنے مسلک کے خلاف حکم نہیں کر سکتا اگر کرے گا تو نافذ نہ ہوگا۔	۴۷۶

Fatawa Razawiyya Volume 13 - Page 13

Page	Index / Ruling
480	Does the Qazi have the right to separate a couple if the husband is unable to provide food and maintenance?
480	If the husband does not provide maintenance, the Qazi will compel him to either give maintenance or divorce.
618	Those who judge against what Allah has revealed are oppressors.
	Beliefs and Theology (Aqaid-o-Kalam)
73	A human being does not have the power to change the divine law.
197	Calling a definitively forbidden thing permissible is definitive disbelief according to jurisprudential rulings.
197	The wives of those Muftis who declare a woman permissible for her husband after a 'Talaq-e-Mughallazah' (triple divorce) become forbidden to them; they must renew their Islam and their marriage.
297	Many divine commands are devotional, and even those that have a rational basis, their wisdom may not be understood by everyone.
474	Whoever fears Allah, Allah will make a way out for him and provide for him from where he does not expect.
475	Whoever puts their trust in Allah, then He is sufficient for them.
475	Whoever fears Allah, Allah will make their task easy for them.
475	Allah is truthful and His promises are true; Satan is a liar and his threats are false.
486	Drinking alcohol is a major sin and considering it permissible is disbelief (kufr).
488	A ruling of disbelief should not be issued against anyone as long as there is even a remote possibility of them being Muslim.
488	No ruling can be given for a woman to leave her marriage based on a husband's statement or action until disbelief is proven.
488	The ruling regarding a person who says, "I neither come to the mosque nor give a single dirham for its construction, what business do I have in a mosque?"

Page	Index / Ruling
297	Questioning divine commands or asking absurd questions closes the door to knowledge and blessings.
315	General Rafidis of the current era are disbelievers and apostates.
339	Whoever puts their trust in Allah, Allah makes them independent of the creation.
474	Asking permission from Allah and His Messenger for adultery is disbelief.
474	Provision is from Allah; the husband is not the provider.
532	The life attained after death is different from worldly life.
532	Life is such an occurrence that it is impossible to bring it back exactly as it was.
532	Soul and life are distinct from each other.
552	According to the Ahl-as-Sunnah, accepting repentance is not an essential obligation because nothing is obligatory upon Allah.
554	According to the Maturidiyyah, it is intellectually impossible for the obedient to be punished.

फतावा रज़विया जिल्द 13 - पृष्ठ 13

पृष्ठ	विषय / व्यवस्था
480	क्या पति के भरण-पोषण में असमर्थ होने पर काजी को दंपत्ति को अलग करने का अधिकार है?
480	यदि पति भरण-पोषण नहीं देता है, तो काजी उसे भरण-पोषण देने या तलाक देने के लिए मजबूर करेगा।
618	अल्लाह के उतारे हुए के खिलाफ फैसला करने वाले जालिम हैं।
	अक़ायद और कलाम (आस्था और धर्मशास्त्र)
73	बंदा (इंसान) ईश्वरीय कानून को बदलने की शक्ति नहीं रखता।
197	स्पष्ट रूप से हराम को हलाल कहना फिक़्ही आदेश के अनुसार स्पष्ट कुफ्र है।
197	उन मुफ्तीयों की पत्नियाँ उन पर हराम हो गईं जो 'तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा' के बाद औरत को उसके पति के लिए हलाल करार देते हैं; उन्हें इस्लाम और निकाह का नवीनीकरण करना अनिवार्य है।
297	
474	जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए रास्ता निकाल देगा और उसे वहां से रिज्क (रोजी) पहुँचाएगा जहाँ से उसे गुमान भी न होगा।
475	जो अल्लाह पर भरोसा करे, तो अल्लाह उसके लिए काफी है।
475	जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसका काम आसान कर देगा।
475	अल्लाह सच्चा है और उसके वादे सच्चे हैं, शैतान झूठा है और उसकी धमकियाँ झूठी हैं।
486	शराब पीना गुनाह-ए-कबीरा है और इसे हलाल समझना कुफ्र (अविश्वास) है।
488	जब तक इस्लाम की थोड़ी सी भी संभावना हो, किसी पर कुफ्र का हुक्म नहीं लगाना चाहिए।
488	पति के किसी शब्द या कार्य से जब तक कुफ्र साबित न हो जाए, औरत के निकाह से बाहर निकलने का हुक्म नहीं दिया जा सकता।
488	उस व्यक्ति का हुक्म जो यह कहे कि "न मैं मस्जिद में आता हूँ न उसके

पृष्ठ	विषय / व्यवस्था
	अल्लाह के बहुत से हुक्म ता'बुदी (भक्तिपूर्ण) हैं, और जो तर्कसंगत हैं, उनकी हिकमतें भी हर किसी की समझ में नहीं आतीं।
297	ईश्वरीय आदेशों में 'क्यों और कैसे' और बेहूदा सवालों का दरवाजा खोलना ज्ञान और बरकत का दरवाजा बंद करना है।
315	वर्तमान समय के आम राफ़ज़ी काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं।
339	जो अल्लाह पर भरोसा करे, अल्लाह उसे सृष्टि से बेपरवाह कर देता है।
474	अल्लाह और उसके रसूल से व्यभिचार (ज़िना) की अनुमति माँगना कुफ्र है।
474	रिज्क अल्लाह के जिम्मे है, पति पालनकर्ता नहीं है।

पृष्ठ	विषय / व्यवस्था
	निर्माण में कोई दरहम देता हूँ, मेरा मस्जिद में क्या काम है।"
532	मरने के बाद जो जीवन मिलता है, वह सांसारिक जीवन से अलग है।
532	जीवन एक ऐसी घटना है जिसे ठीक वैसे ही वापस लाना संभव नहीं है।
532	रूह (आत्मा) और हयात (जीवन) एक दूसरे से अलग हैं।
552	अहले सुन्नत के अनुसार तौबा स्वीकार करना वाजिब-ए-असली नहीं है क्योंकि अल्लाह पर कुछ भी वाजिब नहीं होता।
554	मातुरिदिया के अनुसार आज्ञाकारी को सजा देना बौद्धिक रूप से असंभव है।

فہرست مضامین **صفحہ**

شوہر نان و نفقۃ سے عاجز ہو تو کیا قاضی کو زوجین میں تفریق کا حق ہے۔ ۴۸۰

شوہر نفقہ نہ ادا کرے تو قاضی اس کو مجبور کرے گا یا نفقہ دے یا طلاق دے۔ ۴۸۰

منزل من اللہ کے خلاف فیصلہ کرنے والے ظالم ہیں۔ ۶۱۸

عقائد و کلام

بندہ تغیر حکم شرع کی قدرت نہیں رکھتا۔ ۷۳

حرام قطعی کو حلال کہنا فقہی حکم کے مطابق قطعی کفر ہے۔ ۱۹۷

۱۹۷

فہرست مضامین **صفحہ**

جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کے لئے راہ نکال دے گا اور اسے وہاں سے رزق پہنچائے گا جہاں سے اسے گمان بھی نہ ہوگا۔ ۴۷۴

جو اللہ پر بھروسا کرے تو اللہ اسے کافی ہے۔ ۴۷۵

جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کا کام آسان کر دے گا۔ ۴۷۵

اللہ سچا ہے اور اس کے وعدے سچے ہیں، شیطان جھوٹا ہے اور اس کے ڈراوے جھوٹے ہیں۔ ۴۷۵

شراب پیتا گناہ کبیرہ اور اس کو حلال جاننا کفر ہے۔ ۴۸۶

اسلام کا احتمال بعید ہوتے ہوئے بھی کسی پر کفر کا حکم نہیں لگانا چاہئے۔ ۴۸۸

۴۸۸

طلاق مغلظہ کے بعد عورت کو شوہر کے لئے حلال قرار دینے والے مفتیوں کی بیویاں ان پر حرام ہو گئیں ان پر تجدید اسلام اور تجدید نکاح لازم ہے۔

۲۹۷ بہت سے احکام الہی تعبدی ہیں اور جو معقول المعنی ہیں انکی حکمتیں بھی من و تو کی سمجھ میں نہیں آتیں۔

۲۹۷ احکام الہیہ میں چون و چرا اور بیہودہ سوالوں کا دروازہ کھولنا علوم و برکات کا دروازہ بند کرنا ہے۔

۳۱۵ عام روافض زمانہ کافر و مرتد ہیں۔

۳۳۹ جو اللہ پر بھروسا کرے اللہ اس کو مخلوق سے بے پروا کرتا ہے۔

۴۷۴ اللہ و رسول سے زنا کی اجازت مانگنی کفر ہے۔

۴۷۴ رزق اللہ پر ہے شوہر رازق نہیں۔

۴۸۸ شوہر کے کسی قول یا فعل سے جب تک کفر ثابت نہ ہو جائے عورت کے نکاح سے نکلنے کا حکم نہیں دیا جاسکتا۔

۴۸۸ اس شخص کا حکم جو یہ کہے کہ نہ میں مسجد میں آتا ہوں نہ اس کی تعمیر میں کوئی درہم دیتا ہوں میرا مسجد میں کیا کام ہے۔

۵۳۲ مرنے کے بعد جو حیات ملتی ہے وہ دنیوی حیات کا غیر ہے۔

۵۳۲ حیات ایک ایسا عارضہ ہے جس کو بعینہا واپس لانا ممکن نہیں۔

۵۳۲ روح اور حیات ایک دوسرے کے مغایر ہیں۔

۵۵۲ اہل سنت کے نزدیک توبہ کو قبول کرنا واجب اصلی نہیں کیونکہ اللہ تعالیٰ پر کچھ واجب نہیں ہوتا۔

۵۵۴

ماتریدیہ کے نزدیک مطیع کو سزا دینا

محال عقلی ہے۔

(Right Side of Table) 554: According to the Mu'tazilites, accepting repentance is mandatory for Allah Almighty. 554: To accept repentance is purely the grace of Allah Almighty. 567: Abqa (sustenance/permanence), which is the action of 'The Living and Self-Sustaining' (Al-Hayy al-Qayyum), is an existential (wujudi) thing according to researchers. 567: According to the school of thought of Imam al-Haramayn, Imam Razi, and Qazi Abu Bakr Baqillani, 'baqa' (permanence) is the essence of existence (ayn-e-wujud) and not something added to it; therefore, 'abqa' would mean creation (ijad). 567: According to the school of thought of the masters of Kashf (spiritual unveiling) and Shuhud (witnessing), permanence (baqa) is the name of renewal (tajad-ud) of the likeness of everything including substances. 567: Applying the attribute of 'Qayyum' (Self-Sustaining) like that of the Creator and Maker to anyone other than Allah is not permissible; rather, scholars have declared it as blasphemy (Takfeer). 567: Attributing something to Allah that is not worthy of His majesty, or attributing ignorance, deficiency, and helplessness to Him, or applying attributes exclusive to Allah to anyone other than Allah is blasphemy (Kufr). 568: If 'abqa' is from a human, it is the name of 'leaving the removal' (tark-e-izalah) (not creation). 568: The 'abqa' which is an attribute of a human is a 'non-action' (adam-e-fel), not an action (fel). 568: Removal of the doubt that sometimes human 'abqa' is achieved through action, like bringing Zaid into a house and tying him with chains; this is keeping Zaid in the house. Whereas tying is an action. 568: Tying someone is not 'abqa' itself but entails 'abqa'. 574: Divine attributes are the essence itself, not other than the essence.

(Left Side of Table) 583: Comparing Makkah al-Mukarramah and Madinah al-Munawwarah to a ghost house or Kali house is insolence, disrespect, and a word of blasphemy (Kufr). 587: If a person's intention while making a vow (Nazr) is that the decree will change or what is written in destiny will be reversed by making the vow, then this belief is corrupt (fasid), and the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) forbade such vows. 603: Hidden knowledge (Uloom-e-Ghaybiyah) of the noble saints (Awliya Ikram). 603: Saints of Allah (Awliya Allah) understand the talk of animals. 604: The powers (tasarrufat) and hidden knowledge of the Saints of Allah. 604: Prostrating at the feet of saints and kissing their feet. 605: Allah Almighty does not keep anything hidden from the saints. 605: A saint's gaze on internal dangers/ thoughts (dili khatrah). 608: Those verses in the collection of sermons authored by Maulvi Ilahi mentioned in the fatwa inquiry are not in accordance with the Ahl al-

Sunnah. 622: Adultery (Zina) with both Muslim and non-Muslim (kafirah) women is forbidden. To declare adultery with a non-Muslim woman as lawful is blasphemy (Kufr). 637: Calling dogs and pigs the offspring of Adam (peace be upon him) is a severe and heinous statement. One should repent and renew their Islam. 647: The lineage of non-believers is severed from Prophet Adam (peace be upon him).

(तालिका का दायां भाग) 554: मुअतज़िला के अनुसार तौबा स्वीकार करना अल्लाह तआला पर वाजिब (अनिवार्य) है। 554: तौबा स्वीकार करना पूरी तरह से अल्लाह तआला की कृपा (फज़्ल) है। 567: इबक़ा (कायम रखना), जो कि 'अल-हय्युल क़य्यूम' का कार्य है, शोधकर्ताओं के अनुसार अस्तित्वगत (वुजूदी) है। 567: इमामुल हरमैन, इमाम राजी और काजी अबू बक्र बाक़िलानी के मत के अनुसार, 'बक़ा' (स्थायित्व) स्वयं अस्तित्व (ऐन-ए-वुजूद) है, न कि अस्तित्व पर कोई अतिरिक्त चीज़, इसलिए इबक़ा का अर्थ 'सृजन' (ईजाद) होगा। 567: कश्फ़ व शुहूद (आध्यात्मिक रहस्योद्घाटन) के इमामों के मत के अनुसार, 'बक़ा' पदार्थों सहित हर चीज़ के प्रतिरूप के नवीनीकरण (तजद्दुद) का नाम है। 567: सृष्टिकर्ता और कर्ता (खालिक व बारी) की तरह 'क़य्यूम' गुण का प्रयोग अल्लाह के अलावा किसी और पर करना जायज़ नहीं है, बल्कि विद्वानों ने इस पर तकफीर (कुफ्र का फतवा) की है। 567: अल्लाह की ओर ऐसी बात का श्रेय देना जो उसकी महिमा के योग्य न हो, या अज्ञानता, कमी और लाचारी का श्रेय उसकी ओर करना, या अल्लाह के लिए विशिष्ट गुणों का प्रयोग गैर-अल्लाह पर करना कुफ्र है। 568: यदि इबक़ा मनुष्य की ओर से हो, तो वह 'हटाने के त्याग' (तर्कए-इज़ाला) का नाम है (न कि सृजन का)। 568: वह इबक़ा जो मनुष्य का गुण है, वह 'अभाव-कार्य' (अदम-ए-फ़ेल) है, न कि कार्य (फ़ेल)। 568: इस संदेह का निवारण कि कभी मानवीय इबक़ा कार्य से भी प्राप्त हो जाता है, जैसे ज़ैद को घर में लाकर जंजीर से बांधना, तो यह ज़ैद को घर में बाकी रखना है। जबकि बांधना एक कार्य (फ़ेल) है। 568: किसी को बांधना स्वयं इबक़ा नहीं है बल्कि इबक़ा की आवश्यकता पैदा करता है। 574: ईश्वरीय गुण स्वयं अस्तित्व (ऐन-ए-ज़ात) हैं, न कि अस्तित्व से अलग।

(तालिका का बायां भाग) 583: मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा की तुलना किसी भूत खाने या काली घर से करना गुस्ताखी, अपमान और कुफ्र (ईश-निंदा) का शब्द है। 587: यदि मन्नत (नज़र) मानने वाले की नीयत यह हो कि मन्नत मानने से भाग्य बदल जाएगा और जो तकदीर में लिखा है वह पलट जाएगा, तो यह विश्वास भ्रष्ट (फ़ासिद) है, और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ऐसी मन्नत से मना फरमाया है। 603: औलिया इकराम (महान संतों) का इल्म-ए-ग़ैब (परोक्ष ज्ञान)। 603: अल्लाह के वली जानवरों की बातचीत समझते हैं। 604: अल्लाह के वलियों के तसर्रुफ़ात (अधिकार/प्रभाव) और इल्म-ए-ग़ैब। 604: वलियों के कदमों पर गिरना और कदमबोसी (पैर चूमना) करना। 605: अल्लाह तआला औलिया से कोई चीज़ छिपी नहीं रखता। 605: दिल के खतरों (विचारों)

पर वली की नज़र। 608: मौलवी इलाही द्वारा संकलित खुत्बों (उपदेशों) के वे शेर जिनका इस्तेफ़्ता (फतवा प्रश्न) में उल्लेख है, वे अहले सुन्नत के अनुकूल नहीं हैं। 622: मुस्लिम और काफिर (गैर-मुस्लिम) दोनों महिलाओं के साथ व्यभिचार (ज़िना) हराम है। काफिर महिला के साथ ज़िना को हलाल करार देना कुफ्र है। 637: कुत्तों और सुअरों को हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) की औलाद कहना एक सख्त और घिनौना वाक्य है। तौबा करनी चाहिए और इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) करना चाहिए। 647: काफिरों का वंश हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) से कटा हुआ है।

(جدول کا دایاں حصہ) ۵۵۴ | معتزلہ کے نزدیک توبہ کو قبول کرنا اللہ تعالیٰ پر واجب ہے۔ ۵۵۴ | توبہ کو قبول کرنا محض اللہ تعالیٰ کا فضل ہے۔ ۵۶۷ | ابقا جو کہ حی و قیوم کا فعل ہے محققین کے نزدیک وجودی ہے۔ ۵۶۷ | امام الحرمین، امام رازی اور قاضی ابوبکر باقلانی کے مذہب پر بقاء عین وجود ہے نہ کہ وجود پر امر زائد، لہذا ابقاء بمعنی ایجاد ہوگا۔ ۵۶۷ | ائمہ کشف و شہود کے مذہب پر بقاء جواہر سمیت ہر چیز کے امثال کے تجدد کا نام ہے۔ ۵۶۷ | خالق و باری کی طرح صفت قیوم کا اطلاق بھی غیر اللہ پر جائز نہیں بلکہ اس پر علماء نے تکفیر کی ہے۔ ۵۶۷ | ایسی چیز کی نسبت اللہ کی طرف کرنا جو اس کے شایان شان نہ ہو یا جہالت، نقص اور عجز کی نسبت اس کی طرف کرنا یا صفات مختصہ باللہ کا اطلاق غیر اللہ پر کرنا کفر ہے۔ ۵۶۸ | جوابقاء بشر کی طرف سے ہو وہ ترک ازالہ کا نام ہے (نہ کہ ایجاد کا) ۵۶۸ | جو ابقاء بشر کی صفت ہے وہ عدم فعل ہے، نہ کہ فعل۔ ۵۶۸ | اس شبہ کا ازالہ کہ کبھی انسانی ابقاء فعل سے بھی حاصل ہو جاتا ہے جیسے زید کو گھر میں لا کر زنجیر سے باندھنا، تو یہ زید کو گھر میں باقی رکھنا ہے۔ حالانکہ باندھنا فعل ہے۔ ۵۶۸ | کسی کو باندھنا خود ابقاء نہیں بلکہ مستلزم ابقاء ہے۔ ۵۷۴ | صفات الہیہ عین ذات ہیں نہ کہ غیر ذات۔

(جدول کا بایاں حصہ) ۵۸۳ | مکہ معظمہ اور مدینہ منورہ کو بھوت خانہ کالی گھر کی مثل کہنا گستاخی و توہین وکلمہ کفر ہے۔ ۵۸۷ | نذر والے کی نیت اگر یہ ہو کہ منت ماننے سے مقدر بدل جائے گا اور تقدیر کا نوشتہ پلٹ جائے گا، تو یہ اعتقاد فاسد ہے اور ایسی نذر سے رسول اللہ تعالیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے منع فرمایا ہے۔ ۶۰۳ | اولیا کرام کے علوم غیبیہ۔ ۶۰۳ | اولیاء اللہ جانوروں کی گفتگو سمجھتے ہیں۔ ۶۰۴ | اولیاء اللہ کے تصرفات و علوم غیبیہ۔ ۶۰۴ | ولیوں کے

قدموں پر گرنا اور قدمبوسی کرنا۔ ۶۰۵ | اللہ تعالیٰ اولیاء سے کوئی چیز مخفی نہیں رکھتا۔ ۶۰۵ | دلی خطرہ پر ولی کی نظر۔ ۶۰۸ | مجموعہ خطب مولفہ مولوی الٰہی کے وہ اشعار جو استفتاء میں مذکور ہیں موافق اہلسنت نہیں ہیں۔ ۶۲۲ | زنا مسلمہ اور کافرہ سب کے ساتھ حرام ہے، زنائے کافرہ کو جو حلال قرار دے تو کفر ہے۔ ۶۳۷ | کتوں اور سوروں کو حضرت آدم علیہ السلام کی اولاد کہنا سخت و شنیع جملہ ہے۔ توبہ اور تجدید اسلام کرے۔ ۶۴۷ | کافروں کا نسب حضرت آدم علیہ السلام سے منقطع ہے۔

Fatawa Razawiyyah, Volume 13 Page 88 of 688

Number	Content
656	The Prophet (Peace be upon him) reflected some of his noble attributes onto his beneficiaries, servants, and slaves, such as Aleem (knowing), Haleem (forbearing), Basheer (bringer of good news), and Nazeer (warner). There is no harm in applying these attributes to those in whom their manifestation is established.
	Sair (Travel / Life Story)
265	One who mocks prayer or fasting is excluded from Islam, and his wife is removed from his marriage (Nikah).
265	If the husband of a non-consummated wife leaves Islam, she can marry someone else without an iddah (waiting period); iddah is not mandatory.
315	The marriage of an apostate (male or female) cannot be performed with anyone of any nation or religion, neither with believers nor with infidels.

Number	Content
647	There is no blame on someone who calls infidels dogs and pigs because infidels are even worse than dogs and pigs.
648	Considering a clear forbidden (Haram) thing as good (Istihsan) is kufr (disbelief).
649	A woman said, "God knows why you are in love with that house," the man said, "God knows," then the woman said, "God doesn't know anything." This sentence is not kufr.
649	Denying God's knowledge of something is denying that if it were to happen, it would surely be in His knowledge.
650	To belittle three types of people is hypocrisy: one who grew old in Islam, a scholar, and a just Muslim ruler.

Number	Content
316	An Islamic government and an Imam are required for the establishment of punishments (Hudud).
403	In a city where there is a religious scholar, his opinion will be reliable in Muslim affairs; if there are several scholars, the most knowledgeable scholar of the city has the right.
403	If a non-Muslim government limits religious freedom of Muslims to some extent, action is still mandatory within whatever freedom remains.
466	A woman who intended to become an apostate became an apostate at that very moment.
486	Cutting out pictures of holy places and throwing them in filth, if done based on Wahhabi beliefs that these are all innovations (Bid'at), is ignorance and misguidance; if the intention is to belittle these places, it is kufr.
651	Committing major sins (Kabira) does not cause a flaw in Islam or marriage.
653	Showing disrespect to a scholar makes a person deserve punishment (Ta'zir).
652	Saying that God will even forgive polytheism (Shirk), or saying "Verses and Hadiths are nothing," is explicit kufr.
654	The application of the ruling of kufr on one who abandons prayer is in the Hadith; this is a theological (Kalami) issue, not a jurisprudential (Fiqhi) one.
655	Mentioning the name of the Prophet (Peace be upon him) simply while using grand titles for a Pir (spiritual guide) is disrespect; and if the Pir's greatness is considered more than the Prophet's, it is kufr.

फ़तावा रज़विया, खंड 13 पृष्ठ 688 का 88

नंबर	सामग्री
656	हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने कुछ महान गुणों का प्रतिबिंब अपने लाभार्थियों, सेवकों और गुलामों पर डाला है जैसे अलीम, हलीम और बशीर व नज़ीर आदि। जिन पर इन गुणों की अभिव्यक्ति सिद्ध हो, उन पर इन गुणों के प्रयोग में कोई हर्ज नहीं।

सैर (जीवन वृत्तांत / यात्रा)

नंबर	सामग्री
265	नमाज़ और रोज़े का मज़ाक उड़ाने वाला इस्लाम से बाहर हो जाता है और उसकी पत्नी उसके निकाह से निकल जाती है।
265	यदि बिना संसर्ग (गैर मदखुला) वाली पत्नी का पति इस्लाम छोड़ दे, तो वह बिना इद्दत के दूसरे से निकाह कर सकती है; इद्दत अनिवार्य नहीं है।
315	मुर्तद (धर्मत्यागी पुरुष या स्त्री) का निकाह किसी भी कौम या मज़हब वाले से नहीं हो सकता, न मोमिनों से और न काफिरों से।
316	सीमाओं (हुदूद) के कार्यान्वयन के लिए इस्लामी सरकार और इमाम की आवश्यकता होती है।

नंबर	सामग्री
647	काफिरों को कुत्ता और सुअर कहने वाले पर कोई दोष नहीं क्योंकि काफिर तो कुत्तों और सुअरों से भी बदतर हैं।
648	स्पष्ट हराम को अच्छा समझना कुफ्र है।
649	एक औरत ने कहा, "खुदा जाने तुम्हें उस घर से इतना लगाव क्यों है," मर्द ने कहा, "खुदा जाने," इस पर औरत ने कहा, "खुदा कुछ नहीं जानता।" यह वाक्य कुफ्र नहीं है।
649	ईश्वरीय ज्ञान से किसी वस्तु का इनकार इस ज्ञान से इनकार है कि यदि वह घटित होती तो निश्चित रूप से ज्ञान में होती।
650	तीन प्रकार के लोगों को हल्का समझने वाला मुनाफिक (पाखंडी) है: एक वह जो इस्लाम में बूढ़ा हुआ, दूसरा आलिम (विद्वान), तीसरा न्यायप्रिय मुस्लिम शासक।
651	कबीरा (बड़े) गुनाह करने से इस्लाम और निकाह में कोई खराबी नहीं आती।

नंबर	सामग्री
403	जिस शहर में कोई धार्मिक विद्वान हो, तो मुसलमानों के मामलों में उसी की राय मान्य होगी; और यदि कई विद्वान हों, तो शहर के सबसे ज्ञानी विद्वान को हक़ है।
403	यदि गैर-मुस्लिम सरकार मुसलमानों के धार्मिक मामलों में स्वतंत्रता को कुछ हद तक सीमित कर दे, तब भी जहाँ तक स्वतंत्रता है, उस पर कार्यवाही अनिवार्य है।
466	जिस औरत ने मुर्तद (धर्मत्यागी) होने का इरादा किया, वह उसी समय मुर्तद हो गई।
486	पवित्र स्थानों की तस्वीरें काटकर गंदगी में फेंकना, यदि वहाबी अकीदों के आधार पर हो कि यह सब बिदअत (नवाचार) है, तो यह अज्ञानता और गुमराह है; और यदि इन स्थानों का अनादर करना उद्देश्य हो तो कुफ्र है।

नंबर	सामग्री
653	आलिम (विद्वान) के साथ बदतमीजी करने वाला सज़ा (ताज़ीर) का हक़दार है।
652	यह कहना कि खुदा शिर्क(बहुदेववाद) को भी माफ कर देगा या यह कहना कि "आयतें और हदीसें कुछ नहीं हैं," स्पष्ट कुफ्र है।
654	नमाज़ छोड़ने वाले पर कुफ्र का हुक्म लागू होना हदीस में है; यह मसला फिक्ही (न्यायशास्त्र संबंधी) नहीं बल्कि कलामी (धार्मिक दर्शन संबंधी) है।
655	हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम सादगी से लिखना और पीर के नाम के साथ बड़े-बड़े आदाब व अलकाब जोड़ना बदतमीजी है; और यदि पीर की महानता हुज़ूर से अधिक समझी जाए तो कुफ्र है।

| ۶۵۶ | حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنی بعض صفات کریمہ کا اپنے مستفیضوں اور خادموں اور غلاموں پر پرتو ڈال دیا جیسے علیم، حلیم اور بشیر و نذیر وغیرہ۔ ان صفات کی تجلی جس میں متحقق ہو اس پر ان صفات کے اطلاق میں حرج نہیں۔ | ۶۴۷ | کفار کو کتے اور سؤر کہنے والے پر کوئی الزام نہیں کیونکہ کافر تو کتوں اور سؤروں سے بھی بدتر ہیں۔ | | | | ۶۴۸ | حرام قطعی کا استحسان کفر ہے۔ | | | **سیر** | | | | ۲۶۵ | نماز روزہ سے مضحکہ کرنے والا اسلام سے خارج ہو جاتا ہے اور اس کی بیوی نکاح سے نکل جاتی ہے۔ | ۶۴۹ | عورت نے کہا خدا جانے آپ کو فلاں گھر سے کیوں عشق ہے، مرد نے کہا "خدا جانے" اس پر عورت نے کہا "کچھ بھی خدا جانے نہیں" یہ جملہ کفر نہیں۔ | | ۲۶۵ | غیر مدخولہ کا شوہر اسلام سے خارج ہو جائے تو وہ بلا عدت دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے عدت لازم نہیں۔ | ۶۴۹ | علم الٰہی سے کسی شیئ کی نفی اس علم سے نفی ہے کہ واقع ہوتا تو ضرور علم میں ہوتا۔ | | ۳۱۵ | مرتد و مرتدہ کا نکاح کسی ملت و مذہب والے سے نہیں ہو سکتا، نہ مومنین سے نہ کفار سے۔ | ۶۵۰ | تین شخصوں کا ہلکا جاننے والا منافق ہے، ایک وہ جسے اسلام میں بڑھاپا آیا، دوسرا عالم، تیسرا بادشاہ اسلام عادل۔ | | ۳۱۶ | قیام حدود کے لئے اسلامی حکومت اور امام درکار ہے۔ | ۶۵۱ | مرتکب کبیرہ کے اسلام اور نکاح میں خلل نہیں آتا۔ | | ۴۰۳ | جس شہر میں کوئی عالم دیندار ہو تو امور مسلمین میں اسی کی رائے معتبر ہو گی اور چند علماء ہوں تو اعلم علمائے بلد کو حق ہے۔ | ۶۵۳ | عالم کے ساتھ سوء ادبی سے آدمی مستحق تعزیر ہے، | | ۴۰۳ | اگر غیر مسلم حکومت مسلمانوں کے مذہبی معاملات میں آزادی کسی حد تک محدود کر دے تب بھی جہاں تک آزادی ہے اس پر کارروائی لازم ہے۔ | ۶۵۲ | یہ کہنا کہ خدا شرک کو بھی بخش دے گا یا یہ کہنا

" آیات و احادیث کچھ نہیں " صریح کفر ہے۔ | | ۴۶۶ | جس عورت نے مرتد ہونے کا ارادہ کیا وہ اسی وقت مرتدہ ہو گئی۔ | ۶۵۴ | حکم کفر کا اطلاق تارک صلوۃ پر حدیث شریف میں ہے یہ مسئلہ فقہیہ نہیں کلامی ہے۔ | | ۴۸۶ | مقامات مقدسہ کی تصویر چھانٹ کر گندگی میں ڈالنا اگر وہابی عقائد کی بنیاد پر ہو کہ یہ سب بدعت ہے۔ تو جہل و گمراہی ہے اور ان مقامات کی تحقیر مقصود ہو تو کفر ہے۔ | ۶۵۵ | حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا نام سادہ اور پیر کا آداب والقاب کے ساتھ سوء ادبی ہے، اور پیر کی عظمت حضور سے زیادہ ہو تو کفر ہے۔ |

Fatawa Razawiyya, Volume 13

173 | Putting up pictures of deities for decoration is a major sin, and if the intention is to venerate idols, it is disbelief (Kufr). | 487 | Sixth Error. 174 | Preventing a woman from praying and fasting and forcing her to drink wine is likewise a severe major sin, and if it is by way of denying the obligation of prayer or the prohibition of wine, it is disbelief (Kufr). | 487 | Seventh Error. 174 | Mockery of Shariah is disbelief (Kufr). | 487 | Eighth Error. 174 | Refutation of False Sects | | Ninth Error. 175 | A forceful, reasoned, and eloquent refutation of a fatwa by a Deobandi Mufti containing errors and blatant ignorance. | 117 | Tenth Error. 176 | Mention of the first ignorance among the ignorances of the Deobandi Mufti. | 122 | Eleventh Error. 177 | Mention of the second ignorance. | 123 | Twelfth Error. 177 | Mention of the third ignorance. | 123 | Thirteenth Error. 177 | Mention of the fourth ignorance. | 123 | Fourteenth Error. 178 | Mention of the fifth ignorance. | 124 | Fifteenth Error. 178 | Mention of the sixth ignorance. | 124 | Sixteenth Error. 179 | Mention of the seventh ignorance. | 125 | Seventeenth Error. 180 | A forceful refutation of the fatwa of Deobandi Maulana Wajeehullah on twenty-five grounds. | 169 | Eighteenth Error. 181 | The first error of the Deobandi fatwa. | 170 | Nineteenth Error. 182 | Second error. | 171 | Twentieth Error. 184 | Third error. | 172 | Twenty-first Error. 184 | Fourth error. | 172 | The passion of Deobandi misguidance. 184 | Fifth error. | 173 | Deobandi teaching has cast aside the Quran, Hadith, and the consensus (ijma') of the ancient and modern Imams. 189 | The ignorance of the Deobandi Mufti in not being able to understand the text of Sharh Wiqayah. | 173 | Deobandis are trampling the objectives of Shariah and reviving the oppression and tyranny of the age of ignorance (Jahiliyyah).

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

173 | सजावट के लिए देवताओं के चित्र लगाना बड़ा गुनाह है और यदि देवताओं का सम्मान करना उद्देश्य हो तो यह कुफ्र (अधर्म) है। | 487 | छठी गलती। 174 | स्त्री को नमाज़ और रोज़ा से रोकना और शराब पीने पर मजबूर करना इसी तरह बड़ा गुनाह (गुनाहे कबीरा) है और यदि यह नमाज़ की अनिवार्यता या शराब की मनाही के इनकार के तौर पर हो तो कुफ्र है। | 487 | सातवीं गलती। 174 | शरीयत का अपमान कुफ्र है। | 487 | आठवीं गलती। 174 | गुमराहों (बद-मज़हबों) का खंडन | | नौवीं गलती। 175 | एक देवबंदी मुफ़्ती के ग़लत और स्पष्ट अज्ञानता पर आधारित फतवे का पुरज़ोर और दलीलों के साथ खंडन। | 117 | दसवीं गलती। 176 | देवबंदी मुफ़्ती की अज्ञानताओं में से पहली अज्ञानता का वर्णन। | 122 | ग्यारहवीं गलती। 177 | दूसरी अज्ञानता का वर्णन। | 123 | बारहवीं गलती। 177 | तीसरी अज्ञानता का वर्णन। | 123 | तेरहवीं गलती। 177 | चौथी अज्ञानता का वर्णन। | 123 | चौदहवीं गलती। 178 | पांचवीं अज्ञानता का वर्णन। | 124 | पंद्रहवीं गलती। 178 | छठी अज्ञानता का वर्णन। | 124 | सोलहवीं गलती। 179 | सातवीं अज्ञानता का वर्णन। | 125 | सत्रहवीं गलती। 180 | देवबंदी मौलवी वजीहुल्लाह के फतवे का पच्चीस कारणों से पुरज़ोर खंडन। | 169 | अठारहवीं गलती। 181 | देवबंदी फतवे की पहली गलती। | 170 | उन्नीसवीं गलती। 182 | दूसरी गलती। | 171 | बीसवीं गलती। 184 | तीसरी गलती। | 172 | इक्कीसवीं गलती। 184 | चौथी गलती। | 172 | देवबंदी गुमराही का जोश। 184 | पांचवीं गलती। | 173 | देवबंदी तालीम ने कुरान व हदीस और प्राचीन व आधुनिक इमामों के सर्वसम्मति (इज़मा) को पीछे छोड़ दिया। 189 | देवबंदी मुफ़्ती की अज्ञानता कि वह 'शरह विक़ाया' के इबारत को समझ नहीं सका। | 173 | देवबंदी शरीयत के उद्देश्यों को कुचल रहे हैं और जाहिलियत के ज़ुल्मों-सितम को फिर से जीवित कर रहे हैं।

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم

۱۷۳ | دیوتاؤں کی تصویریں تزئین کے لئے لگائے تو گناہِ کبیرہ اور تعظیمِ معبودان مقصود ہو تو کفر ہے۔ | ۴۸۷ | چھٹی خطا۔ ۱۷۴ | عورت کو نماز و روزہ سے روکنا اور شراب پینے پر مجبور کرنا یو نہی لؤ گناہِ کبیرہ شدید ہ اور فرضیتِ صلوٰۃ یا حرمتِ خمر کے انکار کے طور پر ہو تو کفر ہے۔ | ۴۸۷ | ساتویں خطا۔ ۱۷۴ | استخفافِ شرع کفر ہے۔ | ۴۸۷ | آٹھویں خطا۔ ۱۷۴ | رَدِّ بد مذہباں | | نویں خطا۔ ۱۷۵ | ایک دیوبندی مفتی کے غلط اور جہالات صریحہ پر مشتمل فتویٰ کا زور دار اور مدلل رد و بلیغ۔ | ۱۱۷ | دسویں خطا۔ ۱۷۶ | دیوبندی مفتی کی جہالتوں میں سے پہلی جہالت کا بیان۔ | ۱۲۲ | گیارہویں خطا۔ ۱۷۷ | دوسری جہالت کا بیان۔ | ۱۲۳ | بارہویں خطا۔ ۱۷۷ | تیسری جہالت کا بیان۔ | ۱۲۳ | تیرہویں خطا۔ ۱۷۷ | چوتھی جہالت کا بیان۔ | ۱۲۳ | چودھویں خطا۔ ۱۷۸ | پانچویں جہالت کا بیان۔ | ۱۲۴ | پندرہویں خطا۔ ۱۷۸ | چھٹی جہالت کا بیان۔ | ۱۲۴ | سولہویں خطا۔ ۱۷۹ | ساتویں جہالت کا بیان۔ | ۱۲۵ | سترھویں خطا۔ ۱۸۰ | دیوبندی مولوی وجیہ اللہ کے فتویٰ کا پچیس وجوہ سے رد و بلیغ۔ | ۱۶۹ | اٹھارہویں خطا۔ ۱۸۱ | دیوبندی فتویٰ کی پہلی خطا۔ | ۱۷۰ | انیسویں خطا۔ ۱۸۲ | دوسری خطا۔ | ۱۷۱ | بیسویں خطا۔ ۱۸۴ | تیسری خطا۔ | ۱۷۲ | اکیسویں خطا۔ ۱۸۴ | چوتھی خطا۔ | ۱۷۲ | دیوبندی گمراہی کا جوش۔ ۱۸۴ | پانچویں خطا۔ | ۱۷۳ | دیوبندی تعلیم نے قرآن و حدیث اور ائمہ قدیم و جدید کا اجماع پسِ پشت ڈال دیا۔ ۱۸۹ | دیوبندی مفتی کی جہالت کہ شرح وقایہ کی عبارت کو نہ سمجھ سکا۔ | ۱۷۳ | دیوبندی مقصدِ شریعت کو پامال اور جاہلیت کے ظلم و ستم کو دوبارہ زندہ کر رہے ہیں۔

Volume 13 Fatawa Razawiyya

Twenty-second error. | 190 | Deobandi-believing apostates, interaction with them is forbidden. | 619 Deobandi teaching's opposition to Hadith. | 192 | Logic Twenty-third error. | 192 | If a thing is non-existent, its opposite exists. | 143 Thousands of phrases are witnesses to the falsity of the Deobandi Mufti's misguidance. | 192 | Non-existence without a predecessor universal is not realized. | 151 Deobandi teaching is against the Imams of the Ummah. | 195 | Generality of negation does not remain true due to particular affirmation. | 152 Twenty-fourth error. | 195 | The subject of a natural proposition is presented with universality. | 176 Extreme stupidity and misguidance of the Deobandi Mufti. | 195 | Universality is among the secondary intelligibles. | 176 The foolishness and misunderstanding of Najdism. | 196 | A natural proposition is mental, not external. | 176 Twenty-fifth error. | 196 | Absolute entry is the subject of a natural proposition and it is not negated until all individuals of entry become negated. | 179 New innovation in religion and Sharia by Deobandi Mujtahids. | 197 | Not giving the order to leave and not giving the order not to leave, these two things are not mutually exclusive. | 570 The misguided and irreligious Wahhabis go against the issue of triple divorce and declare the forbidden as permissible. | 207 | An existential thing cannot become a non-existential thing. | 570 Deobandi gentlemen are such prisoners of ignorance that they give their independent answers without understanding the question. | 571 | Grammar Ala-Hazrat's (RA) commentary on the Deobandi Mufti's answer. | 573 | A transitive verb is not realized without a direct object. | 577 The ignorance of the Deobandi Mufti who could not understand the difference between keeping and leaving. | 573 | Supplication Fifteen great benefits revealing the reality of the statements of Shah Waliullah Muhaddith Dehlawi and Shah Abdul Aziz (may Allah have mercy on them). | 607 | Reciting a prayer while placing a hand on the forehead after prayer is mentioned in the Hadith. | 367

बाईसवीं गलती। | १९० | देवबंदी अकीदे वाले मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं, उनसे मेल-जोल मना है। | ६१९ देवबंदी शिक्षा की हदीस से मुखालफत (विरोध)। | १९२ | तर्कशास्त्र (मंतिक़) तेईसवीं गलती। | १९२ | अगर कोई चीज़ न हो, तो उसका विपरीत मौजूद होता है। | १४३ देवबंदी मुफ्ती के गुमराह होने की असत्यता पर हजारों इबारतें गवाह हैं। | १९२ | बिना पूर्वज के पूर्ण अभाव सिद्ध नहीं होता। | १५१ देवबंदी शिक्षा उम्मत के इमामों के खिलाफ है। | १९५ | आंशिक सकारात्मकता के कारण निषेध की व्यापकता सत्य नहीं रहती। | १५२ चौबीसवीं गलती। | १९५ | प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति (proposition) का विषय सार्वभौमिकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। | १७६ देवबंदी मुफ्ती की अत्यधिक मूर्खता और गुमराह होना। | १९५ | सार्वभौमिकता माध्यमिक बुद्धिगम्य वस्तुओं (secondary intelligibles) में से है। | १७६ नजदियत की कुबुद्धि और गलतफहमी। | १९६ | प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति मानसिक होती है, बाहरी नहीं। | १७६ पच्चीसवीं गलती। | १९६ | पूर्ण प्रवेश प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति का विषय है और वह तब तक समाप्त नहीं होता जब तक प्रवेश के सभी व्यक्ति समाप्त न हो जाएं। | १७९ देवबंदी मुजतहिदों द्वारा धर्म और शरीयत में नया बिदअत (नवाचार)। | १९७ | निकलने का हुक्म न देना और न निकलने का हुक्म न देना, ये दोनों बातें आपस में विरोधाभासी नहीं हैं। | ५७० गुमराह और बेदीन वहाबी तीन तलाक के मसले में मुखालफत करते हैं और हराम को हलाल ठहराते हैं। | २०७ | वजूद वाली चीज़ अदम वाली चीज़ की किस्म नहीं बन सकती। | ५७० देवबंदी हज़रत जहालत के ऐसे कैदी हैं कि बिना सवाल समझे ही अपना इज्तहादी जवाब दे देते हैं। | ५७१ | व्याकरण (नह्व) देवबंदी मुफ्ती के जवाब पर आलाहजरत (रह.) की टिप्पणी। | ५७३ | सकर्मक क्रिया कर्म (मफूल बिह) के बिना सिद्ध नहीं होती। | ५७७ देवबंदी मुफ्ती की जहालत कि वह रखने और छोड़ने के बीच का अंतर नहीं समझ सका। | ५७३ | दुआ शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी और शाह अब्दुल अजीज (रहमतुल्लाह अलैहिमा) की इबारतों के पंद्रह महान लाभ। | ६०७ | नमाज़ के बाद माथे पर हाथ रखकर दुआ पढ़ना हदीस में आया है। | ३६७

جلد تیرہ ہم فتاوی رضویہ

بائیسویں خطاء۔ | ۱۹۰ | دیوبندی عقیدہ والے مرتدین ہیں ان سے میل جول منع ہے۔ | ۶۱۹ دیوبندی تعلیم کی حدیث سے مخالفت۔ | ۱۹۲ | منطق تئیسویں خطاء۔ | ۱۹۲ | اگر کوئی شیئ معدوم ہو تو اس کی نقیض موجود ہوتی ہے۔ | ۱۴۳ ہزارہا عبارات دیوبندی مفتی کی گمراہی کے بطلان پر شاہد ہیں۔ | ۱۹۲ | عدم بے سلف کلی متحقق نہیں ہوتا۔ | ۱۵۱ دیوبندی تعلیم ائمہ امت کے مخالف ہے۔ | ۱۹۵ | عموم سلب بوجہ ایجاب جزئی صادق نہیں رہتا۔ | ۱۵۲ چوبیسویں خطاء۔ | ۱۹۵ | قضیہ طبعیہ کا موضوع کلیت کا معروض ہوتا ہے۔ | ۱۷۶ دیوبندی مفتی کی انتہائی غباوت اور گمراہی۔ | ۱۹۵ | کلیت معقولات ثانیہ میں سے ہے۔ | ۱۷۶ نجدیت کی بد عقلی اور کج فہمی۔ | ۱۹۶ | طبعی قضیہ ذہنیہ ہوتا ہے نہ کہ خارجیہ۔ | ۱۷۶ پچیسویں خطاء۔ | ۱۹۶ | دخول مطلق قضیہ طبعیہ کا موضوع ہے اور وہ اس وقت تک متنقی نہیں ہوتا جب تک جمیع افراد دخول متنفی نہ ہو جائیں۔ | ۱۷۹ دیوبندی مجتہدین کی دین اور شریعت میں نئی بدعت۔ | ۱۹۷ | نکلنے کا حکم نہ دینا اور نہ نکلنے کا حکم دینا یہ دونوں چیزیں آپس میں منافی نہیں۔ | ۵۷۰ وہابی گمراہ بے دین مسئلہ طلاق ثلاثہ میں خلاف کرتے اور حرام کو حلال ٹھہراتے ہیں۔ | ۲۰۷ | وجودی چیز عدمی چیز کی فتم نہیں بن سکتی۔ | ۵۷۰ دیوبندی حضرات دیو جہالت کے ایسے اسیر ہیں کہ سوال سمجھے بغیر اپنا اجتہادی جواب دے دیتے ہیں۔ | ۵۷۱ | نحو مفتی دیوبندی کے جواب پر اعلیٰحضرت علیہ الرحمہ کا تبصرہ۔ | ۵۷۳ | فعل متعدی بغیر مفعول بہ کے متحقق نہیں ہوتا۔ | ۵۷۷ دیوبندی مفتی کی جہالت کہ رکھنے اور چھوڑنے میں فرق نہ سمجھ سکا۔ | ۵۷۳ | دعا شاہ ولی اللہ محدث دہلوی اور شاہ عبدالعزیز رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہما کی عبارتوں کے پندرہ عظیم

ولبیت کش فوائد۔ | ۶۰۷ | نماز کے بعد پیشانی پر ہاتھ رکھ کر دعا پڑھنا حدیث میں آیا ہے۔ | ۳۶۷

13 Volume Thirteen Fatawa Razawiyya

Repentance and Seeking Forgiveness | 361 | One who attributes themselves to someone other than their father is cursed by Allah, all angels, and all people; Allah will not accept their obligatory or voluntary prayers on the Day of Judgment.

If I have sexual intercourse with you, let it be like adultery with my mother; only repentance and seeking forgiveness is required for this statement. | 289 | The ignorance of a perpetrator of a major sin does not exclude it from being a major sin, but is rather a second sin in itself. | 378

Remorse and distancing from sin are necessary for repentance. | 649 | The sin of a scholar is one sin, and the sin of an ignorant person is a double sin. | 378

Speaking rudely to a husband is ingratitude for which a woman should repent. | 649 | Allah's curse is upon the one who causes separation between a mother and her child. | 411

Encouragement and Admonition | | The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever harms a Muslim unjustly has harmed me, and whoever has harmed me has harmed Allah Almighty." | 411

In the pure Sharia, the punishment for a slanderer at the hands of the Sultan of Islam is eighty (80) lashes. | 124 | The condemnation of those who use oaths as a shield has appeared in the Great Quran. | 499

Slandering the pure Sharia is slandering Allah Almighty, which only a faithless person can do. | 124 | Divorce is detested and sin is provocative of wrath. | 556

The most wretched person among people is the one who ruins his afterlife for the sake of another's worldly life. | 169 | Reconciliation and peace are beloved and required by Sharia. | 556

If a cuckold does not repent, Paradise is forbidden to him and Allah's curse is upon him. | 237 | There is a risk of a difference occurring in the Islam of those who taunt people who remain steadfast in their commitment. | 579

According to the Hadith, three types of people will not enter Paradise: one who causes unjust pain to parents, a cuckold, and a woman who adopts a masculine appearance. | 237 | Making an oath by lifting the Holy Quran and then breaking it is an insult to the Holy Quran, for which one should perform sincere repentance very

soon, otherwise, remain waiting for a great and painful punishment and the fire of Hell. | 610

The drunkard will not enter Paradise. | 237 | Description of the afterlife punishment for a drunkard. | 611

Guidance and advice to the missing wife and her mahrams (unmarriageable kin). | 340 | Accusing a Muslim without seeing, that he committed adultery with his daughter, is strictly forbidden, definitive, and a major sin; such an accuser deserves severe divine punishment. | 612

तौबा और इस्तग़फ़ार | 361 | जो अपने पिता के अलावा किसी और की तरफ़ खुद को मन्सूब करे उस पर खुदा और सब फ़रिश्तों और सब आदमियों की लानत है, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसका न फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।

तुमसे सोहबत करूँ तो माँ से ज़िना करूँइस क़ौल से तौबा व इस्तग़फ़ार लाज़िम आता है और बस। | 289 | मुर्तकिब-ए-कबीरा (बड़ा गुनाह करने वाले) की अज्ञानता उसे गुनाह-ए-कबीरा होने से खारिज नहीं करेगी बल्कि वह खुद दूसरा गुनाह है। | 378

तौबा के लिए नदामत और गुनाह से तबर्री (दूरी) ज़रूरी है। | 649 | आलिम का गुनाह एक गुनाह है और जाहिल का गुनाह दोहरा गुनाह है। | 378

शौहर से बदज़ुबानी नाशुक्रगुज़ारी है जिस पर औरत को तौबा चाहिए। | 649 | अल्लाह की लानत है उस पर जो माँ और उसके बच्चे में जुदाई डाले। | 411

तरग़ीब व तरहीब (प्रोत्साहन और चेतावनी) | | रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जिसने किसी मुसलमान को नाहक़ ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी उसने अल्लाह अज़्ज़वजल को ईज़ा दी। | 411

शर-ए-मुतह्हरा में मुफ़्तरी (झूठा इल्ज़ाम लगाने वाला) की सज़ा सुल्तान-ए-इस्लाम के यहाँ अस्सी (80) कोड़े हैं। | 124 | क़समों को ढाल बनाने वालों की क़ुरआन-ए-अज़ीम में मज़म्मत आई है। | 499

शरीअत-ए-मुतह्हरा पर इफ़्तरा (झूठ बाँधना) अल्लाह अज़्ज़वजल पर इफ़्तरा है जो बे-ईमान ही कर सकता है। | 124 | तलाक़ मबग़ूज़ (नापसंद) और गुनाह मफ़ग़ूज़ (क्रोध दिलाने वाला) है। | 556

लोगों में बदबख़्त तरीन वह शख़्स है जो दूसरे की दुनिया के लिए अपनी आख़िरत बर्बाद कर दे। | 169 | सुलह व आश्ती महबूब और शरअन मतलूब (वांछनीय) है। | 556

दय्यूथ (वह व्यक्ति जो अपनी औरतों की बेहयाई पर खामोश रहे) अगर तौबा न करे तो उस पर जन्नत हराम और अल्लाह तआला की उस पर लानत होती है। | 237 | अहद पर क़ायम रहने वालों पर तअ्ना (ताना) करने वालों के इस्लाम में फ़र्क़ आने का ख़तरा है। | 579

हदीस की रू से तीन अश्ख़ास जन्नत में नहीं जाएँगे: माँ-बाप को नाहक़ अज़ीयत देने वाला और दय्यूथ और मर्दों वाली वज़अ (पहनावा) बनाने वाली औरत। | 237 | क़ुरआन शरीफ़ उठाकर अहद करना और फिर तोड़ देना क़ुरआन शरीफ़ की तौहीन है जिस पर बहुत जल्द तौबा-ए-साद़िक़ा करे वरना अज़ाब-ए-अज़ीम वलीम और नार-ए-जहीम (दोहज़ख़ की आग) का मुंतज़िर रहे। | 610

शराबी जन्नत में नहीं जाएगा। | 237 | शराबी की उख़रवी सज़ा का बयान। | 611

ज़ौजा-ए-मफ़क़ूद (लापता पत्नी) और उसके महरमों को हिदायत व नसीहत। | 340 | बग़ैर देखे किसी मुसलमान पर तोहमत लगाना कि उसने अपनी बेटी के साथ ज़िना किया सख़्त हराम क़तई और गुनाह-ए-कबीरा है, ऐसी तोहमत लगाने वाला सख़्त अज़ाब-ए-इलाही का मुस्तहिक़ होता है। | 612

توبہ واستغفار | ۳۶۱ | جو اپنے باپ کے سوا دوسرے کی طرف اپنے آپ کو منسوب کرے اس پر خدا اور سب فرشتوں اور سب آدمیوں کی لعنت ہے، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کا نہ فرض قبول فرمائے گا نہ نفل۔

تم سے صحبت کروں تو ماں سے زنا کروں، اس قول سے توبہ و استغفار لازم آتا ہے اور بس۔ | ۲۸۹ | مرتکب کبیرہ کا جہل اس کے گناہ کبیرہ ہونے سے خارج نہیں کرے گا بلکہ خود دوسرا گناہ ہے۔ | ۳۷۸

توبہ کے لئے ندامت اور گناہ سے تبری ضروری ہے۔ | ۶۴۹ | عالم کا گناہ ایک گناہ ہے اور جاہل کا گناہ دوہرا گناہ ہے۔ | ۳۷۸

شوہر سے بد زبانی ناشکری ہے جس پر عورت کو توبہ چاہئے۔ | ۶۴۹ | اللہ کی لعنت ہے اس پر جو ماں اور اس کے بچے میں جدائی ڈالے۔ | ۴۱۱

ترغیب و ترہیب | | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ جس نے کسی مسلمان کو ناحق ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔ | ۴۱۱

شرع مطہر میں مفتری کی سزا سلطانِ اسلام کے یہاں اسی ۸۰ کوڑے ہیں۔ | ۱۲۴ | قسموں کو ڈھال بنانے والوں کی قرآنِ عظیم میں مذمت آئی ہے۔ | ۴۹۹

شریعت مطہرہ پر افتراء اللہ عزوجل پر افتراء ہے جو بے ایمان ہی کر سکتا ہے۔ | ۱۲۴ | طلاق مبغوض اور گناہ مغضوب ہے۔ | ۵۵۶

لوگوں میں بد بخت ترین وہ شخص ہے جو دوسرے کی دنیا کے لئے اپنی آخرت برباد کر دے۔ | ۱۶۹ | صلح و آشتی محبوب اور شرعاً مطلوب ہے۔ | ۵۵۶

دیوث اگر توبہ نہ کرے تو اس پر جنت حرام اور اللہ تعالیٰ کی اس پر لعنت ہوتی ہے۔ | ۲۳۷ | عہد پر قائم رہنے والوں پر طعنہ کرنے والوں کے اسلام میں فرق آنے کا خطرہ ہے۔ | ۵۷۹

حدیث کی رُو سے تین اشخاص جنت میں نہیں جائیں گے: ماں باپ کو ناحق اذیت دینے والا اور دیوث اور مردوں والی وضع بنانے والی عورت۔ | ۲۳۷ | قرآن شریف اٹھا کر عہد کرنا اور پھر توڑ دینا قرآن شریف کی توہین ہے جس پر بہت جلد توبہ صادقہ کرے ورنہ عذاب عظیم والیم اور نارِ جحیم کا منتظر رہے۔ | ۶۱۰

شرابی جنت میں نہیں جائے گا۔ | ۲۳۷ | شرابی کی اُخروی سزا کا بیان۔ | ۶۱۱

زوجہ مفقود اور اس کے محارم کو ہدایت و نصیحت۔ | ۳۴۰ | بغیر دیکھے کسی مسلمان پر تہمت لگانا کہ اس نے اپنی بیٹی کے ساتھ زنا کیا سخت حرام قطعی اور گناہ کبیرہ ہے، ایسی تہمت لگانے والا سخت عذاب الہی کا مستحق ہوتا ہے۔ | ۶۱۲

Fatawa Rizvia Volume 13 Page: 13

Rulings / Fatwas	Index No.	Page No.
Paradise is forbidden for a cuckold (Dayyoos).	626	216
If the husband wishes to call his wife to himself, the woman has no authority to remain at her father's house.	627	216
Whoever harms a Muslim without a Sharia-compliant reason has harmed the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him).	634	216
If a woman refuses to come to her husband, she will not be entitled to maintenance (Nafqa).	634	216
Severe warning against calling a Muslim an infidel (Kafir).	652	217
An ignorant person should only inquire about Sharia rulings from scholars, rather than checking the middle of a page.	652	217
Prohibition and Permissibility		237
Giving permission to a woman for dancing and singing is absolutely forbidden, and the husband who does so is a cuckold (Dayyoos).		237
Turning a wife against her husband is the work of Satan.	125	242
If a husband gives a final divorce (Talaq-e-Mughallazah) and then denies it, if the woman is certain of the divorce, she should run away from him as far as possible; if she is unable, the burden of sin lies with the husband.	125	242
The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: Whoever turns a wife against her husband is not from us.	125	264
A girl who observes prayer and fasting wants to seek divorce (Khula) because of her husband's ill-manners and neglect of prayer; is she allowed to do so according to Sharia?	125	264
Taking an oath of divorce is disliked according to Sharia.	198	270
One who calls his wife 'mother' is a sinner and a liar.	198	284
Taking an oath of divorce is not a believer's act but a hypocritical one.	198	284
If a husband has intercourse before paying the expiation for Zihar, he should seek forgiveness and only pay the expiation for Zihar.	198	284
How a preacher should deliver a sermon.	199	288

Rulings / Fatwas	Index No.	Page No.
It is nonsensical for a husband and wife to call each other 'mother' and 'son', and such speech is a cause of sin.	199	288
Whoever takes an oath on something and then realizes that doing the opposite is better, they should do what is better and pay the expiation for the oath.	199	288
Taking a woman's breast into the mouth is of no legal consequence (does not invalidate marriage).	199	288
Preaching for corrupt motives is misguidance and a tradition of the Jews and Christians.	199	288
It is forbidden for a man to drink his wife's milk, but it does not invalidate the marriage (Nikah).	199	288
Condemnation of an unqualified person preaching, from the noble Hadiths.	199	292
It is forbidden for a woman to live with or marry another man before the completion of her waiting period (Iddah).	199	292
What kind of preacher is not permitted to deliver a sermon.	200	297
During the waiting period (Iddah) of a widow, even conversation regarding marriage is forbidden.	200	297
The conditions that the wife will remain at her father's house, she alone will be the owner of current and future children, and she will receive maintenance while staying at her father's house - all such conditions are against Sharia and rejected.	215	298
Except for the husband, it is not permissible for a woman to mourn for anyone for more than three days.	215	298

फ़तावा रिज़विया जिल्द तेरहवीं पेज: 13

फतवे का विवरण	इंडेक्स नंबर	पेज नंबर
दय्यूथ पर जन्नत हराम है।	626	216
शौहर अगर अपने पास बुलाना चाहे तो औरत को बाप के घर रहने का कोई अख्तियार नहीं।	627	216
बिना किसी शरीअती कारण के जिसने किसी मुसलमान को तकलीफ़ दी, उसने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तकलीफ़ दी।	634	216
अगर औरत शौहर के पास आने से इनकार करे तो वह भरण-पोषण (नफ़क़ा) की हकदार नहीं होगी।	634	216
मुसलमान को काफ़िर कहने पर सख़्त चेतावनी।	652	217
कम-इल्म को उलेमा से सिर्फ शरीअत का हुक्म पूछना चाहिए, न कि पेज की बीच की इबारत जांचनी चाहिए।	652	217
हज़र-ओ-इबाहत (निषेध और अनुमेयता)		237
औरत को नाच-गाने की इजाज़त देना कतई हराम है और ऐसा करने वाला शौहर दय्यूथ है।		237
बीवी को शौहर के खिलाफ भड़काना शैतान का काम है।	125	242
शौहर ने तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा देकर इनकार कर दिया, अगर औरत को तलाक़ का यकीन है तो जैसे हो सके उससे दूर भागे, और अगर वह ऐसा करने में सक्षम नहीं है तो इसका गुनाह शौहर पर है।	125	242
हुज़ूर अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान है कि जो किसी मर्द से उसकी बीवी को भड़काए, वह हमारे गिरोह से नहीं है।	125	264
नमाज़-रोज़े की पाबंद लड़की अपने बदमिज़ाज और बे-नमाज़ी शौहर से तंग आकर खुला चाहती है; क्या शरीअत में वह ऐसा कर सकती है?	125	264
तलाक़ की कसम खाना शरीअत में नापसंदीदा है।	198	270

फतवे का विवरण	इंडेक्स नंबर	पेज नंबर
अपनी बीवी को 'मां' कहने वाला गुनाहगार और झूठा है।	198	284
तलाक़ की कसम खाना मोमिनों का नहीं बल्कि मुनाफ़िकों का काम है।	198	284
अगर ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा करने से पहले शौहर ने हमबिस्तरी कर ली, तो वह तौबा करे और सिर्फ ज़िहार का कफ़्फ़ारा दे।	198	284
वाइज़ (उपदेशक) को वअज़ (उपदेश) कैसे करना चाहिए।	199	288
मियां-बीवी का आपस में एक-दूसरे को 'मां-बेटा' कह लेना फ़ुज़ूल है और यह बात गुनाह का कारण है।	199	288
जो किसी बात पर कसम खा ले और फिर देखे कि उस कसम के खिलाफ करना बेहतर है, तो वही बेहतर काम करे और कसम का कफ़्फ़ारा दे दे।	199	288
औरत का स्तन मुँह में ले लेना कुछ नहीं (निकाह पर कोई असर नहीं पड़ता)।	199	288
बुरे इरादों के लिए वअज़ करना गुमराही और यहूदियों व ईसाइयों का तरीका है।	199	288
मर्द के लिए अपनी बीवी का दूध पीना हराम है, लेकिन इससे निकाह पर कोई असर नहीं पड़ता।	199	288
नाअहल (अयोग्य) के वअज़ कहने की निंदा हदीसों की रोशनी में।	199	292
इद्दत खत्म होने से पहले औरत का किसी दूसरे मर्द के साथ रहना या उससे निकाह करना हराम है।	199	292
किस तरह के वाइज़ को वअज़ कहने की इजाज़त नहीं है।	200	297
बेवा (विधवा) की इद्दत के दौरान निकाह की बातचीत करना भी हराम है।	200	297
यह शर्तें कि बीवी अब बाप ही के यहाँ रहेगी, मौजूदा और भविष्य की औलाद की मालिक वही होगी, और वह बाप के घर रहकर नफ़क़ा पाएगी - ये सभी शर्तें शरीअत के खिलाफ और रद्द हैं।	215	298
शौहर के अलावा किसी और के लिए औरत को तीन दिन से ज़्यादा सोग (शोक) मनाना जायज़ नहीं है।	215	298

فتاوی کا بیان ۶۲۶ ۲۱۶

دیوث پر جنت حرام ہے۔ ۶۲۶ ۲۱۶

شوہر اگر اپنے پاس بلانا چاہے تو عورت کو باپ کے گھر رہنے کا کوئی اختیار نہیں۔ ۶۲۷ ۲۱۶

بلاوجہ شرعی جس نے کسی مسلمان کو ایذا دی اس نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو ایذا دی۔ ۶۳۴ ۲۱۶

عورت شوہر کے پاس آنے سے انکار کرے تو نفقہ کی مستحق نہیں ہوگی۔ ۶۳۴ ۲۱۶

مسلمان کو کافر کہنے پر سخت وعید۔ ۶۵۲ ۲۱۷

بے علم کو علماء سے صرف حکم شریعت دریافت کرنا چاہئے نہ یہ کہ صفحہ وسطہ جانچے۔ ۶۵۲ ۲۱۷

حظر واباحت ۲۳۷

عورت کو ناچ گانے کی اجازت دینا حرام قطعی ہے اور ایسا کرنے والا شوہر دیوث ہے۔ ۲۳۷

زوجہ کو شوہر سے برگشتہ بنانا شیطان کا کام ہے۔ ۱۲۵ ۲۴۲

شوہر طلاق مغلظہ دے کر منکر ہو گیا عورت کو طلاق کا یقین ہے تو جیسے ہو سکے اس سے دور بھاگے اور اس پر قادر نہیں تو وبال شوہر پر ہے۔ ۱۲۵ ۲۴۲

حضور اکرم علیہ الصلوۃ والسلام کا فرمانِ عالی ہے کہ جو کسی مرد سے اس کی زوجہ کو برگشتہ کرے وہ ہمارے گروہ سے نہیں۔ ۱۲۵ ۲۶۴

فتاوی کا بیان ۲۱۶ ۶۲۶

صوم و صلوۃ کی پابند لڑکی کی بد خصلت اور بے نماز شوہر سے بیزار ہو کر خلع کرنا چاہتی ہے، کیا شرعاً ایسا کر سکتی ہے۔ ۱۲۵ ۲۶۴

طلاق کی قسم شرعاً ناپسندیدہ ہے۔ ۱۹۸ ۲۷۰

بیوی کو ماں کہنے والا گنہگار اور دروغ گو ہے۔ ۱۹۸ ۲۸۴

طلاق کی قسم کھانا مومنانہ نہیں منافقانہ فعل ہے۔ ۱۹۸ ۲۸۴

اگر کفارہ ظہار کی ادائیگی سے قبل شوہر نے وطی کی تو استغفار کرے اور فقط ظہار کا کفارہ دے۔ ۱۹۸ ۲۸۴

وعظ کیسے واعظ کو کرنا چاہئے۔ ۱۹۹ ۲۸۸

میاں بیوی کا آپس میں ایک دوسرے کو ماں بیٹا کہہ لینا لغو ہے اور یہ کلام باعث گنہگاری ہے۔ ۱۹۹ ۲۸۸

جو کسی بات پر قسم کھا لے پھر دیکھے کہ اس قسم کا خلاف بہتر ہے تو وہی بہتر کام کرے اور قسم کا کفارہ دے لے۔ ۱۹۹ ۲۸۸

عورت کا پستان منہ میں لے لینا کچھ نہیں۔ ۱۹۹ ۲۸۸

اغراض فاسدہ کے لئے وعظ ضلالت اور یہود و نصاری کی سنت ہے۔ ۱۹۹ ۲۸۸

مرد کو بیوی کا دودھ پینا حرام مگر نکاح میں خلل نہیں آتا۔ ۱۹۹ ۲۸۸

نااہل کے وعظ کہنے کی مذمت احادیث کریمہ سے۔ ۱۹۹ ۲۹۲

عدت ختم ہونے سے پہلے عورت کو دوسرے مرد کے ساتھ رہنا یا اس کے ساتھ نکاح کرنا حرام ہے۔ ۱۹۹ ۲۹۲

کیسے واعظ کو وعظ کہنے کی اجازت نہیں۔ ۲۰۰ ۲۹۷

دوران عدت بیوہ نکاح کی گفتگو بھی حرام ہے۔ ۲۰۰ ۲۹۷

بیوی اب باپ ہی کے یہاں رہے گی اور موجودہ و آئندہ اولاد کی وہی مالک ہوگی اور باپ کے گھر بیٹھے نفقہ پائے گی، یہ سب شرطیں خلاف شرع و مردود ہیں۔ ۲۱۵ ۲۹۸

سوائے شوہر کے عورت کو کسی کے لئے تین دن سے زائد سوگ جائز نہیں۔ ۲۱۵ ۲۹۸

Fatawa Razawiyya Volume 13

300 - The pure Shariah considers suspicion strictly forbidden (Haram). 330 - Excuses and pretexts should not be made in fulfilling the obligations of Allah Almighty. 300 - In Shariah, there is no prohibition for water of adultery (the child born of it), nor is there any 'Iddah (waiting period) for it. 331 - What things are forbidden for women during the 'Iddah (waiting period) of death. 309 - Marrying the sister of a wife who has been cohabited with before her 'Iddah has passed is illegitimate and forbidden (Haram). 332 - Sending a marriage proposal during 'Iddah is forbidden (Haram). 316 - A person who keeps a woman married to someone else without a divorce is an open transgressor (Fasiq-e-Mu'lin). 332 - It is forbidden (Haram) for a woman to stay with a stranger. 317 - If someone marries a woman in 'Iddah out of ignorance and has intercourse, the intercourse is forbidden (Haram), but it will not be a sin (due to ignorance). 333 - In what circumstances is a widow in 'Iddah allowed to move from the place of 'Iddah. 317 - A woman whose husband has died can only go out during the day for a necessity during 'Iddah. 359 - All those who knowingly participated or facilitated the marriage of a woman in 'Iddah are involved in a great sin (Haram-e-Azim). 317 - Marriage during 'Iddah is forbidden (Haram). 361 - A husband will be a sinner for turning a woman out of the house without a Shariah-compliant reason. 319 - Until the 'Iddah has passed, not just marriage, but even giving a marriage proposal is absolutely forbidden (Haram-e-Qati'). 363 - Intimacy is forbidden (Haram) during the 'Iddah of a final divorce (Bain) for a man without a new marriage. 319 - Giving money to someone to make them divorce their wife so that one can marry her is bribery (Rishwat). 366 - It is forbidden (Haram) to read the book "Bahishti Zewar"; it contains many incorrect rulings and many things leading to misguidance. 323 - Marriage before the expiry of 'Iddah is absolutely illegitimate and forbidden (Haram), and separation is obligatory (Farz) for them. 377 - He who abducts another's woman is an adulterer (Zani); Muslims should sever ties with him, and children born during this time are legally attributed to the original husband. 327 - A woman during the 'Iddah of death cannot go out of her husband's house; however, a woman who is forced to earn a livelihood may go out during the day and spend the night in that house. 381 - It is not correct to declare someone an adulterer without absolute Shariah proof. 328 - Under what compulsions is a woman allowed to leave the house during the 'Iddah of death. 381 - Despite a valid marriage bed (Firash-e-Sahih), it is illegitimate to declare a child as illegitimate (Walad-ul-Haram). 411 - If a woman marries someone who is not a Mahram to her son, the son will be taken away from

the mother's upbringing, but it is forbidden (Haram) to stop him from meeting the mother.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

300 - पवित्र शरीयत दुर्भावना (बुदगुमानी) को सख्त हराम मानती है। 330 - अल्लाह तआला के फ़र्ज़ की अदायगी में हले-बहानें नहीं किए जाने चाहिए। 300 - ज़िना के पानी (उससे उत्पन्न संतान) के लिए शरीयत में कोई हुरमत (निषेध) नहीं है, और न ही इसके लिए कोई इद्दत है। 331 - वफ़ात (मृत्यु) की इद्दत में औरतों के लिए कौन सी चीजें वर्जित हैं। 309 - जिस पत्नी के साथ संभोग (वति) हो चुकी हो, उसकी इद्दत पूरी होने से पहले उसकी बहन से निकाह करना नाजायज़ और हराम है। 332 - इद्दत के दौरान निकाह का पैग़ाम (प्रस्ताव) देना हराम है। 316 - किसी दूसरे की विवाहिता स्त्री को बिना तलाक के अपने पास रखने वाला व्यक्ति खुला गुनहगार (फ़ासिक़-ए-मुअ्लिन) है। 332 - औरत का किसी ग़ैर (पराये) मर्द के पास ठहरना हराम है। 317 - यदि किसी ने अनजाने में इद्दत वाली औरत से निकाह करके संभोग कर लिया, तो संभोग हराम है लेकिन (अज्ञानता के कारण) गुनाह नहीं होगा। 333 - किन स्थितियों में वफ़ात की इद्दत वाली औरत को इद्दत के स्थान से स्थानांतरित होने की अनुमति है। 317 - जिस औरत के पति की मृत्यु हो गई हो, वह इद्दत के दौरान केवल दिन में ज़रूरत के समय बाहर जा सकती है। 359 - इद्दत वाली औरत के निकाह में जितने लोग जान-बूझकर शामिल हुए या कोशिश की, वे सब महा-पाप (हराम-ए-अज़ीम) में शामिल हैं। 317 - इद्दत के अंदर निकाह करना हराम है। 361 - औरत को बिना किसी शरीअती कारण के घर से निकालने पर पति गुनहगार होगा। 319 - जब तक इद्दत न गुजर जाए, निकाह तो निकाह, निकाह का पैग़ाम (प्रस्ताव) देना भी निश्चित रूप से हराम (हराम-ए-क़तई) है। 363 - बिना नए निकाह के तलाक़-ए-बाइन की इद्दत में मर्द के लिए औरत से नज़दीकी हराम है। 319 - किसी को पैसे देकर उसकी पत्नी को तलाक दिलवाना ताकि वह खुद उससे शादी कर सके यह रिश्वत है। 366 - किताब "बहिश्ती ज़ेवर" देखना हराम है, इसमें बहुत से मसले ग़लत हैं और बहुत सी बातें गुमराह करने वाली हैं। 323 - इद्दत समाप्त होने से पहले निकाह कतई तौर पर नाजायज़ और हराम है और उन पर अलग होना फ़र्ज़ है। 377 - दूसरे की औरत भगा ले जाने वाला ज़ानी (व्यभिचारी) है, मुसलमानों को उससे नाता तोड़ लेना चाहिए और इस दौरान जो बच्चे पैदा हुए उनका वंश (नसब) मूल पति से ही साबित है। 327 - वफ़ात की इद्दत में औरत पति के घर से बाहर नहीं जा सकती, हाँ जो औरत जीविकोपार्जन के लिए मजबूर हो वह दिन में जाए और रात उसी घर में गुज़ारे। 381 - बिना किसी पक्के शरीअती प्रमाण के किसी को ज़ानी (व्यभिचारी) करार देना सही नहीं है। 328 - किन मजबूरियों के कारण औरत को वफ़ात की इद्दत में घर से निकलने की इजाज़त है। 381 - वैध विवाह शय्या (फ़िराश-ए-

सहीह) होने के बावजूद बच्चे को 'वलद-उल-हराम' (हराम की औलाद) करार देना नाजायज़ है। 411 - यदि औरत अपने बेटे के गैर-मेहरम से निकाह कर ले, तो उस लड़के को माँ के पालन-पोषण से हटा लिया जाएगा, लेकिन माँ से मिलने-जुलने से रोकना हराम है।

पेज 93 of 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

۳۰۰ - شرع مطہر بدگمانی کو سخت حرام فرماتی ہے۔ ۳۳۰ - اللہ تعالیٰ کے فرض کی ادائیگی میں حیلے بہانے نہ کئے جائیں۔ ۳۰۰ - زنا کے پانی کی شرع میں کوئی حرمت نہیں ، نہ اس کے لئے کوئی عدت۔ ۳۳۱ - عدت وفات میں عورتوں کو کیا چیزیں منع ہیں۔ ۳۰۹ - موطوہ بیوی کی عدت گزرنے سے قبل اس کی بہن سے نکاح ناجائز و حرام ہے۔ ۳۳۲ - عدت کے اندر نکاح کا پیغام حرام ہے۔ ۳۱۶ - منکوحہ غیر کو بے طلاق اپنے پاس رکھنے والا فاسق معلن ہے۔ ۳۳۲ - عورت کا غیر شخص کے پاس ٹھہر نا حرام ہے۔ ۳۱۷ - معتدہ غیر سے لاعلمی میں نکاح کر کے صحبت کی تو صحبت حرام ہے لیکن گناہ نہ ہو گا۔ ۳۳۳ - معتدہ وفات کو کن حالات میں موضع عدت سے منتقل ہونے کی اجازت ہے۔ ۳۱۷ - متوفی عنہا زوجہا عدت میں بصورت صرف دن میں باہر جاسکتی ہے۔ ۳۵۹ - معتدہ کے نکاح میں جتنے لوگ اس سے واقف ہو کر شریک و ساعی ہوئے سب حرام عظیم میں مبتلا ہوئے۔ ۳۱۷ - عدت کے اندر نکاح حرام ہے۔ ۳۶۱ - عورت کو بلاوجہ شرعی گھر سے نکالنے پر شوہر گناہگار ہو گا۔ ۳۱۹ - جب تک عدت نہ گزرے نکاح تو نکاح ، نکاح کا پیغام دینا حرام قطعی ہے۔ ۳۶۳ - بے نکاح جدید مرد کے لئے عدت بائن میں قربت حرام ہے۔ ۳۱۹ - کسی کو پیسے دے کر اس کی بیوی کو طلاق دلوانا تا کہ خود اس سے شادی کرے یہ رشوت ہے۔ ۳۶۶ - کتاب "بہشتی زیور" کا دیکھنا حرام ہے اس میں بہت مسائل غلط اور بہت باتیں گمراہی کی ہیں۔ ۳۲۳ - پیش از انقضائے عدت نکاح قطعاً ناجائز و حرام ہے اور ان پر جدا ہونا فرض ہے۔ ۳۷۷ - دوسرے کی عورت بھگا لے جانے والا زانی ہے ، مسلمان اس سے قطع تعلق کریں اور اس دوران جو بچے پیدا ہوئے ان کا نسب اصل شوہر سے ثابت ہے۔ ۳۲۷ - عدت وفات میں عورت شوہر کے مکان سے باہر نہیں جاسکتی ، ہاں جو عورت کسب معاش کے لئے مجبور ہو

وہ دن میں جائے اور رات اس گھر میں گزارے۔ ۳۸۱ - بے ثبوت قطعی شرعی کسی کو زانی قرار دینا درست نہیں۔ ۳۲۸ - کن مجبوریوں کے سبب عورت کو عدت وفات میں گھر سے نکلنے کی اجازت ہے۔ ۳۸۱ - باوجود فراش صحیح بچہ کو ولد الحرام قرار دینا نا جائز ہے۔ ۴۱۱ - عورت لڑکے کے نامحرم سے شادی کرے تو اس لڑکے کو ماں کی پرورش سے نکال لیا جائیگا لیکن ماں سے ملنے جلنے کو روکنا حرام ہے۔

Fatawa Rizvia Volume 13 13

416 | A woman can go to her parents' house on the eighth day even without her husband's permission. | Fasting should be observed to control excessive desire. | 474 420 | Apart from parents, a woman can visit other Mahrams once a year, whether the husband grants permission or not. There is no compulsion on a promise. | It is oppression for a mother-in-law to demand half of the husband's income if this amount exceeds the wife's maintenance. | 477 435 | A woman can go to meet her parents on the eighth day for the whole day even without her husband's permission. | A woman can go to meet her parents on the eighth day for the whole day even without her husband's permission. | 478 443 | A woman who commits an immoral act will be subject to punishment (Hadd or Ta'zir) according to her crime. If the husband does not approve of her act and does not neglect her obligatory rights, then there is no blame on him. | A woman cannot visit non-Mahrams even with her husband's permission. If the husband gives permission, he will be a sinner. | 478 | | Zaid is vagrant and ill-mannered; besides, he cannot even provide maintenance for his wife. In this case, does the wife have the right to restrain herself (from him) or not? | 480 454 | Even if someone else bears the burden of a woman's maintenance, the wife cannot go anywhere without her husband's permission, except for exceptions. | Fulfilling a promise is not compulsory. | 481 454 | A woman can go to visit her parents on the eighth day and other Mahrams once a year for a day even without her husband's permission, provided she returns to her husband by night. | If a woman is disobedient to her husband, she is a grave sinner. | 483 455 | It is obligatory for a woman to follow her husband's prohibition from going anywhere. | Even if adultery is proven against a woman, it is not mandatory for the man to divorce her. | 485 455 | Even if the husband is rebellious and does not pay maintenance, the woman should remain in the husband's house. | In response to being called to the mosque, if he says he is going to a tavern to drink wine, what is the ruling? | 487 455 | If there is a genuine fear of mischief regarding the woman, the husband can request to keep her with him in prison. | For women to follow their carnal desires and blame it on some Imam is not religion. | 493 460 | It is not mandatory for a husband to divorce a disobedient (Nashizah) woman. | A woman's husband cannot fully fulfill the wife's rights and, due to ignorance, does not give a divorce; what should that woman do? | 493

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 13

416 | एक महिला आठवें दिन अपने पति की अनुमति के बिना भी अपने माता-पिता के घर जा सकती है। | अत्यधिक इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए उपवास रखना चाहिए। | 474 420 | माता-पिता के अलावा अन्य महरमों से मिलने के लिए एक महिला साल में एक बार जा सकती है, चाहे पति अनुमति दे या न दे। वादे पर कोई जबरदस्ती नहीं है। | सास द्वारा दामाद से आधी आय माँगना ज़ुल्म है यदि यह राशि पत्नी के भरण-पोषण से अधिक हो। | 477 435 | एक महिला आठवें दिन पूरे दिन के लिए अपने पति की अनुमति के बिना भी अपने माता-पिता से मिलने जा सकती है। | एक महिला आठवें दिन पूरे दिन के लिए अपने पति की अनुमति के बिना भी अपने माता-पिता से मिलने जा सकती है। | 478 443 | अनैतिक कार्य करने वाली महिला अपने अपराध के अनुसार सज़ा (हद या ताज़ीर) की पात्र होगी। यदि पति उसके इस कार्य से सहमत नहीं है और उसके अनिवार्य अधिकारों में कोताही नहीं करता है, तो उस पर कोई दोष नहीं है। | एक महिला पति की अनुमति से भी गैर-महरमों के यहाँ नहीं जा सकती। यदि पति अनुमति देगा तो वह गुनहगार होगा। | 478 | | ज़ैद आवारा और बदचलन है, इसके अलावा वह पत्नी के भरण-पोषण का खर्च भी नहीं उठा सकता, तो क्या पत्नी को अपने आप को (उससे) रोकने का अधिकार है या नहीं? | 480 454 | यदि कोई और महिला के भरण-पोषण का बोझ उठाता हो, तब भी अपवादों के अलावा पत्नी पति की अनुमति के बिना कहीं नहीं जा सकती। | वादे को पूरा करने पर कोई जबरदस्ती नहीं है। | 481 454 | एक महिला आठवें दिन माता-पिता से मिलने और साल में एक बार अन्य महरमों के यहाँ पति की अनुमति के बिना भी जा सकती है, बशर्ते कि वह रात को पति के पास वापस आ जाए। | यदि कोई महिला पति की अवज्ञा करती है, तो वह सख्त गुनहगार है। | 483 455 | महिला के लिए पति द्वारा कहीं जाने पर लगाई गई रोक का पालन करना अनिवार्य है। | महिला द्वारा व्यभिचार सिद्ध होने के बावजूद पुरुष पर उसे तलाक देना अनिवार्य नहीं है। | 485 455 | यदि पति विद्रोही हो जाए और भरण-पोषण न दे, तब भी महिला पति के घर में ही रहे। | मस्जिद की ओर बुलाए जाने के जवाब में वह कहता है कि मैं शराबखाने शराब पीने जा रहा हूँ, तो क्या हुक्म है? | 487 455 | यदि महिला के बारे में वास्तव में फसाद की आशंका हो, तो पति उसे कैदखाने में अपने पास रखने का अनुरोध कर सकता है। | महिलाओं का अपनी वासनाओं का पालन करना और इसे किसी इमाम के सिर मढ़ना कोई धर्म नहीं है। | 493 460 | एक अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) महिला को तलाक देना पति पर अनिवार्य

नहीं है। | एक महिला का पति पूरी तरह से पत्नी का हक अदा नहीं कर सकता और अज्ञानता के कारण तलाक भी नहीं देता, तो वह महिला क्या करे? | 493

पृष्ठ 94 का 688

۴۱۶ | عورت آٹھویں دن اپنے والدین یہاں بے اذن زوج بھی جاسکتی ہے۔ | غلبہ خواہش پر قابو پانے کے لئے روزے رکھے جائیں۔ | ۴۷۴ ۴۲۰ | والدین کے علاوہ دیگر محارم کی زیارت کو عورت سال میں ایک مرتبہ جاسکتی ہے چاہے شوہر اجازت دے یا نہ دے۔ وعدہ پر جبر نہیں۔ | مادر زن کا شوہر سے نصف آمدنی مانگنا ظلم ہے جبکہ یہ مقدار نفقہ زن سے زائد ہو۔ | ۴۷۷ ۴۳۵ | عورت آٹھویں دن دن بھر کے لئے اپنے والدین کی ملاقات کے لئے بے اذن شوہر بھی جاسکتی ہے۔ | عورت آٹھویں دن دن بھر کے لئے اپنے والدین کی ملاقات کے لئے بے اذن شوہر بھی جاسکتی ہے۔ | ۴۷۸ ۴۴۳ | بد فعلی کرنے والی عورت اپنے جرم کے مطابق مستحق حد یا تعزیر ہوگی شوہر اس کے اس فعل پر راضی نہ ہو اور اس کے حقوق واجبہ میں کوتاہی نہ کرے تو اس پر کوئی وبال نہیں۔ | غیر محارم کے یہاں عورت شوہر کی اجازت سے بھی نہیں جا سکتی۔ شوہر اگر اجازت دے گا تو گنہگار ہوگا۔ | ۴۷۸ | | زید آوارہ بد چلن ہے، علاوہ ازیں بیوی کے نان و نفقہ کا کفیل بھی نہیں ہو سکتا تو بیوی کو اپنے نفس کے روکنے کا اختیار ہے یا نہیں۔ | ۴۸۰ ۴۵۴ | عورت کے نفقہ کا بوجھ دوسرا اٹھاتا ہو تب بھی مستثنیات کے علاوہ بیوی شوہر کی اجازت کے بغیر کہیں نہیں جاسکتی۔ | وفاء وعدہ پر جبر نہیں۔ | ۴۸۱ ۴۵۴ | عورت والدین کی زیارت کو آٹھویں دن اور دیگر محارم کے یہاں سال بعد ایک دن بلا اذن شوہر بھی جاسکتی ہے بشرطیکہ رات شوہر کے پاس آجائے۔ | عورت شوہر کی نافرمانی کرے تو سخت گنہگار ہے۔ | ۴۸۳ ۴۵۵ | عورت کے لیے شوہر کی طرف سے کہیں جانے کی ممانعت واجب العمل ہے۔ | عورت سے زنا متحقق ہونے کے باوجود مرد پر واجب نہیں کہ اسے طلاق دے۔ | ۴۸۵ ۴۵۵ | شوہر سر کشی پر آمادہ ہو اور نفقہ نہ ادا کرے تب بھی عورت شوہر کے گھر ہی رہے۔ | مسجد

کی طرف بلانے جانے کے جواب میں کہتا ہے کہ میں شراب خانے شراب پینے جا رہا ہوں، تو کیا حکم ہے۔ | ۴۸۷ ۴۵۵ | عورت پر واقعی اندیشہ فساد ہو تو شوہر قید خانے میں اپنے پاس رکھنے کی درخواست کرسکتا ہے۔ | عورتوں کو ہوائے نفس کا اتباع کرنا اور اسے کسی امام کے سر رکھنا کوئی دین نہیں۔ | ۴۹۳ ۴۶۰ | ناشزہ عورت کو طلاق دینا شوہر پر لازم نہیں۔ | ایک عورت کا شوہر پوری طرح بیوی کا حق ادا نہیں کر سکتا اور بوجہ جہالت طلاق بھی نہیں دیتا تو وہ عورت کیا کرے۔ | ۴۹۳

13 Fatawa Razawiyya Volume Thirteen

581 The cloth given in expiation (Kaffarah) should be such that it can last for more than three months and cover the entire body. 499 One should never go back on a promise made; there is a severe warning regarding this in the Holy Quran. 582 To swear a false oath intentionally is a sin. 499 If a fixed portion of one's business, for example a sixteenth share, is set aside for Ghaus-e-Pak (may Allah be pleased with him) for Isal-e-Thawab (bestowing rewards), then that money can be spent on any religious work. 584 Members of an association swore an oath among themselves that whoever does not offer prayer will be fined a certain amount, and whoever does not pay the fine will be expelled from the association. This is not a Sharia-prescribed punishment (Ta'zir), nor is there any harm in it. 506 The Sharia position on the vow of 'Chehel Tan' (Forty People) and an eloquent refutation of excessive amusement and play. 586 It is forbidden (Haram) to break an oath without a Sharia-valid reason. However, if there is goodness in doing the opposite, then break the oath and pay the expiation (Kaffarah). 507 The vows (Nazr) of Milad Mubarak, Giyarween, feeding friends, taking sweets to mosques, or feeding worshippers are not juristic (fiqhi) vows; therefore, both rich and poor can eat from them. 589 If someone deceptively showed a false intention for Hajj and took money from people through this means, they are a severe criminal. 509 If a vow (Nazr) for the head was made, meat of that value can also be given. 590 Harboring ill-will or suspicion against any Muslim is not permissible. 509 How is it to make a vow (Nazr) for Milad Sharif? 590 Discord (Fitna) is worse than slaughter. 517 A gathering for Milad Sharif conducted according to the practice prevalent in the Two Holy Sanctuaries (Haramayn Sharifayn) is among the highest recommended acts (Mustahabbat). 591 Swearing an oath on the Holy Quran or holding it while telling a lie is a very great major sin (Kabira). 547 Suspicion against a Muslim is not permissible. 597 If it is a truthful matter, one can take an oath and also hold the Quran. 572 Regarding a Sharia-valid vow (Nazr), one cannot eat the meat themselves, nor feed their ancestors (Asl) or descendants (Far'), nor feed any Hashmi or wealthy person. 615 Some persons said inside the mosque that whoever takes money for a daughter or eats at a debtor's place should turn away from the Kalimah and the Holy Quran. A document was also written, but later it was torn up and they started doing the same thing. What is the ruling for them? 577 The Holy Quran has forbidden sitting with an oppressor. 618 Taking money for a daughter and eating at a debtor's place is impermissible if it is due to the pressure of the debt. 578

The punishment is only that which is according to Sharia; seeking anything contrary to it is impermissible.

581 कफ़ारे में दिया जाने वाला कपड़ा ऐसा होना चाहिए जो तीन महीने से ज़्यादा चल सके और पूरे शरीर को ढँक ले। 499 जो वादा किया उससे हरगिज़ मुकरनी नहीं चाहिए, क़ुरान शरीफ़ में इस पर सख़्त चेतावनी (वईद) दी गई है। 582 जानबूझकर झूठी क़सम खाना गुनाह है। 499 अपने कारोबार में ग़ौस-ए-पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिए एक तयशुदा हिस्सा, मसलन सोलहवां हिस्सा ईसाल-ए-सवाब के लिए मुक़र्रर किया, तो उस रक़म को हर दीनी काम में ख़र्च कर सकते हैं। 584 अंजुमन वालों ने आपस में हल्फ़ (क़सम) उठाया कि जो नमाज़ न पढ़े उस पर इतना जुर्माना, जो जुर्माना न दे उसे अंजुमन से निकाल दिया जाएगा, यह शरई ताज़ीर नहीं है, और न ही इसमें कोई हरज है। 506 चहेल तनों की मन्नत की शरई सूरत और फ़ाज़िल लहव-ओ-लअ़ब (बेकार खेल-तमाशे) का सख़्त रद्द। 586 बिला वजह-ए-शरई क़सम तोड़ना हराम है, हाँ अगर इसके ख़िलाफ़ करने में बेहतरी हो तो क़सम तोड़ कर कफ़्फ़ारा दे। 507 मीलाद मुबारक और ग्यारहवीं, दोस्तों को खाना खिलाने, मस्जिदों में शीरीनी ले जाने या नमाज़ियों को खिलाने की नज़्र (मन्नत) फ़िक्ही नहीं है, लिहाज़ा अमीर-फ़क़ीर सब खा सकते हैं। 589 धोखा देकर हज का झूठा इरादा ज़ाहिर किया और इस ज़रिये से लोगों से रुपया लिया तो वह सख़्त मुजरिम है। 509 सर की मन्नत मानी तो उसकी क़ीमत का गोश्त भी दे सकते हैं। 590 किसी मुसलमान पर बदगुमानी (बुरा गुमान) जायज़ नहीं। 509 मीलाद शरीफ़ की मन्नत मानना कैसा है। 590 फ़ितना (अफ़रा-तफ़री) क़त्ल से भी बुरा है। 517 मज्लिस-ए-मीलाद शरीफ़ जो हरमैन शरीफ़ैन के रायज तरीक़े पर हो, वह आला मुस्तहब्बात में से है। 591 झूठी बात पर क़ुरान मजीद की क़सम खाना या उठाना सख़्त अज़ीम गुनाह-ए-कबीरा है। 547 मुसलमान पर बदगुमानी जायज़ नहीं। 597 सच्ची बात हो तो क़सम भी खा सकते हैं और क़ुरान भी उठा सकते हैं। 572 मन्नत-ए-शरई का गोश्त न तो ख़ुद खा सकता है, न अपनी असल (बुज़ुर्गों) और फ़राअ (औलाद) को खिला सकता है और न ही किसी हाशमी या धनी को खिला सकता है। 615 चंद शख़्सों ने मस्जिद के अंदर कहा कि जो शख़्स बेटी पर रुपया ले या क़र्ज़दार के यहाँ खाना खाए तो कलमा शरीफ़ और क़ुरान शरीफ़ से फिर जाए, उसका काग़ज़ भी लिखा गया, बाद में काग़ज़ फाड़ दिया और वही काम करने लगे, उनके लिए क्या हुक्म है। 577 ज़ालिम के पास बैठने से क़ुरान मजीद ने मना फ़रमाया। 618 बेटी पर रुपया लेना और क़र्ज़दार के यहाँ खाना अगर क़र्ज़ के दबाव से है तो नाजायज़ है। 578 सज़ा वही है जो शरीअत के मुताबिक़ हो, इसके ख़िलाफ़ की मांग करना नाजायज़ है।

۵۸۱ کفارہ میں دیا جانے والا کپڑا ایسا ہونا چاہئے جو تین ماہ سے زیادہ چل سکے اور تمام بدن ڈھک لے۔ ۴۹۹ جو وعدہ کیا اس سے پھر نا ہر گز نہیں چاہئے، قرآن شریف میں اس پر سخت وعید فرمائی گئی ہے۔ ۵۸۲ قصداً جھوٹی قسم کھانا گناہ ہے۔ ۴۹۹ اپنے کاروبار میں غوث پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے متعین حصہ مثلاً سولہواں حصہ برائے ایصال ثواب مقرر کیا تو اس رقم کو ہر دینی کام میں صرف کر سکتے ہیں۔ ۵۸۴ انجمن والوں نے باہم حلف اٹھایا جو نماز نہ پڑھے اس پر اتنا جرمانہ، جو جرمانہ نہ دے اس کو انجمن سے نکال دیا جائے گا، یہ تعزیر شرعی نہیں، نہ اس میں حرج ہے۔ ۵۰۶ چہل تنوں کی منت کی شرعی صورت اور فاضل لہو ولعب کا رد بلیغ۔ ۵۸۶ بلاوجہ شرعی قسم توڑنا حرام ہے، ہاں خلاف میں خیر ہو تو قسم توڑ کر کفارہ دے۔ ۵۰۷ میلاد مبارک اور گیارھویں، احباب کو کھانا کھلانے، مساجد میں شیرینی لے جانے یا نمازیوں کو کھلانے کی نذر فقہی نہیں لہذا امیر فقیر سب کھا سکتے ہیں۔ ۵۸۹ دھوکا دے کر حج کا جھوٹا ارادہ ظاہر کیا اور اس ذریعہ سے لوگوں سے روپیہ لیا تو سخت مجرم ہے۔ ۵۰۹ سر کی منت مانی تو اس کی قیمت کا گوشت بھی دے سکتے ہیں۔ ۵۹۰ کسی مسلمان پر بد گمانی جائز نہیں۔ ۵۰۹ میلاد شریف کی منت ماننا کیسا ہے۔ ۵۹۰ فتنہ قتل سے برا ہے۔ ۵۱۷ مجلس میلاد شریف کہ طریقہ رائجۂ حرمین شریفین پر ہو اعلیٰ مستحبات سے ہے۔ ۵۹۱ جھوٹی بات پر قرآن مجید کی قسم کھانا یا اٹھانا سخت عظیم گناہ کبیرہ ہے۔ ۵۴۷ مسلمان پر بد گمانی جائز نہیں۔ ۵۹۷ سچی بات ہو تو قسم بھی کھا سکتے ہیں اور قرآن بھی اٹھا سکتے ہیں۔ ۵۷۲ منت شرعی کا گوشت نہ تو خود کھا سکتا ہے نہ اپنی اصل اور فرع کو کھلا سکتا ہے اور نہ ہی کسی ہاشمی یا غنی کو کھلا سکتا ہے۔ ۶۱۵ چند شخصوں نے مسجد کے اندر کہا کہ جو شخص بیٹی پر روپیہ لے یا قرضدار کے یہاں کھانا کھائے تو کلمہ شریف

اور قرآن شریف سے پھرے، اس کا کاغذ بھی لکھا گیا، بعد ازیں کاغذ پھاڑ ڈالا اور وہی کام کرنے لگے، ان کا کیا حکم ہے۔ ۵۷۷ ظالم کے پاس بیٹھنے سے قرآن مجید نے منع فرمایا۔ ۶۱۸ بیٹی پر روپیہ لینا اور قرضدار کے یہاں کھانا اگر قرض کے دباؤ سے ہے تو ناجائز ہے۔ ۵۷۸ سزا وہی ہے جو مطابق شرع ہے اس کے خلاف کی خواستگاری ناجائز ہے۔

Vol. 13 | 13 | Fatawa Rizvia

Adultery does not affect the marriage of an adulterer unless it establishes affinity (musaharat), such as committing adultery with the wife's mother or daughter. | 618 | It is mandatory for every person to prevent bad deeds according to their capacity; one should not be negligent in this. If the concerned person does not stop, there is no blame on him (the observer), but if he agrees with it, he himself becomes a criminal, and relations can be severed with him. | 628

There is no harm in socializing with an adulterer and adulteress after they have repented. | 619 | If the removal of an evil (izala-e-munkar) can be achieved without killing, then permission to kill is not granted. | 633

If the husband does not approve of the wife's adultery, there is no blame on him. | 619 | Preventing adultery is the removal of an evil (izala-e-munkar), and the removal of evil is for the sake of Allah Almighty; therefore, mahrams (close relatives) and non-mahram women are equal in this regard. | 633

Those who are striving for adultery or support the adulterer and adulteress after adultery without repentance are also deserving of legal punishment under Sharia. | 619 | It is forbidden (Haram) to unfairly hurt a Muslim or a scholar by calling them rejected (mardud), owl (ullu), etc., without a valid Sharia reason. | 642

If someone committed adultery with a woman and the husband, by way of turning a blind eye, did not have him punished, this act is praiseworthy (limited context). | 620 | A believer (Momin) is one whose neighbors are safe from his harms. | 645

Repentance is obligatory for adulterers. | 622 | It is bad to consider any Muslim inferior because of their profession. | 646

If an adulterer and adulteress do not desist from their actions, they should be boycotted. | 622 | Damaging a Muslim's property and insulting their honor without a valid Sharia reason is forbidden (Haram). | 646

Accusing a Muslim of something is among heinous acts. | 626 | For lead prayer (Salah), admonition and understanding are needed; it is not the time for beating. | 646

Joking and physical contact with a brother's wife (Bhabhi) is forbidden (Haram); if the husband knowingly turns a blind eye, he is a "Dayooth" (cuckold). | 626 | Denial of

being a brother; if such behavior is exhibited, one can deny it, otherwise, he is guilty of three sins. | 648

If someone's relatives and kin do not prevent him from obscenity and indecency, they are partners in the sin and deserve punishment. | 626 | Blatant lying, severing ties of kinship (qata'-e-rahm), and hurting a Muslim are major sins (kaba'ir). | 648

If a minor committed bestiality with an animal, he should be admonished; if an adult did such a thing, he should be punished, and the animal should be slaughtered and burnt. | 627 | Rulings on the sentence "It was good that such and such person was robbed." | 648

| | Jealousy (Hasad) is forbidden (Haram). | 648

जिल्द तेरह | १३ | फतावा रज़विया

ज़ानी (व्यभिचारी) के निकाह पर ज़िना (व्यभिचार) से कोई असर नहीं पड़ता, मगर यह कि उससे मसाहरत (निकटता का रिश्ता) साबित हो जाए, जैसे अपनी पत्नी की माँ या बेटी के साथ व्यभिचार करना। | ६१८ | हर व्यक्ति पर अपनी सामर्थ्य के अनुसार बुराई से रोकना अनिवार्य है, इसमें कोताही नहीं करनी चाहिए। यदि संबंधित व्यक्ति बाज़ न आए तो रोकने वाले पर कोई दोष नहीं है, और यदि वह इसमें राजी हो तो स्वयं अपराधी है, उससे संबंध विच्छेद भी किया जा सकता है। | ६२८

तौबा (पश्चाताप) के बाद व्यभिचारी और व्यभिचारिणी से मेल-जोल में कोई हर्ज नहीं है। | ६१९ | यदि बुराई का अंत (इज़ाला-ए-मुनकर) हत्या के बिना संभव हो, तो हत्या की अनुमति नहीं है। | ६३३

यदि पत्नी के व्यभिचार पर पति राजी न हो, तो उस पर कोई दोष नहीं है। | ६१९ | व्यभिचार को रोकना बुराई का अंत है, और बुराई का अंत अल्लाह के लिए होता है; इसलिए इसमें महरम और गैर-महरम महिलाएँ समान हैं। | ६३३

जो लोग व्यभिचार में प्रयासरत हों या व्यभिचार के बाद पश्चाताप के बिना व्यभिचारी और व्यभिचारिणी का समर्थन करें, वे भी शरई सजा के हकदार हैं। | ६१९ | बिना किसी शरई कारण के किसी मुसलमान या आलिम (विद्वान) को 'मरदूद' (तिरस्कृत), 'उल्लू' आदि कहना और उन्हें अनुचित रूप से कष्ट पहुँचाना हराम है। | ६४२

यदि किसी ने किसी महिला के साथ व्यभिचार किया और पति ने चश्मपोशी (अनदेखी) करते हुए सजा नहीं दिलवाई, तो यह कार्य प्रशंसनीय (एक विशेष संदर्भ में) है। | ६२० | मोमिन (आस्तिक) वह है जिसके पड़ोसी उसके कष्टों से सुरक्षित रहें। | ६४५

व्यभिचारियों पर पश्चाताप (तौबा) करना फर्ज (अनिवार्य) है। | ६२२ | किसी मुसलमान को उसके पेशे के कारण तुच्छ समझना बुरा है। | ६४६

यदि व्यभिचारी और व्यभिचारिणी अपनी हरकतों से बाज़ न आएँ तो उनका बहिष्कार किया जाए। | ६२२ | बिना किसी शरई कारण के किसी मुसलमान के धन का नुकसान करना और उसके सम्मान को ठेस पहुँचाना हराम है। | ६४६

किसी मुसलमान पर आरोप लगाना घिनौने कार्यों में से है। | ६२६ | नमाज़ पढ़ाने के लिए समझाना-बुझाना चाहिए, मार-पीट का समय नहीं है। | ६४६

भाभी से मजाक और हाथापाई हराम है; यदि पति जानते हुए भी अनदेखी करता है, तो वह "दयूस" है। | ६२६ | भाई होने का इनकार; यदि ऐसा व्यवहार किया गया हो तो इनकार किया जा सकता है, अन्यथा वह तीन पापों का अपराधी है। | ६४८

यदि किसी के सगे-संबंधी उसे अश्लीलता और निर्लज्जता से नहीं रोकते, तो वे पाप में सहभागी और सजा के पात्र हैं। | ६२६ | स्पष्ट झूठ, रिश्तेदारों से संबंध तोड़ना और किसी मुसलमान को कष्ट पहुँचाना कबीरा (बड़े) गुनाह हैं। | ६४८

यदि किसी नासमझ बच्चे ने पशु के साथ कुकर्म किया तो उसे चेतावनी दी जाए, और यदि किसी वयस्क ने ऐसा किया तो उसे सजा दी जाए और पशु को ज़बह करके जला दिया जाए। | ६२७ | "अच्छा हुआ फलां की चोरी हो गई" वाक्य के अहकाम (नियम)। | ६४८

| | ईर्ष्या (हसद) हराम है। | ६४८

جلد سیزدہم | ۱۳ | فتاوی رضویہ

زانی کے نکاح پر زنا سے کوئی اثر نہیں پڑتا مگر یہ کہ اس سے مصاہرت ثابت ہو جیسے اپنی زوجہ کی ماں یا بیٹی سے زنا کرئے۔ | ۶۱۸ | ہر شخص پر اس کی وسعت کے مطابق بُرے کام سے روکنا ضروری ہے اس میں کوتاہی نہ کرے۔ اور متعلقہ شخص باز نہ آئے تو اس پر کوئی الزام نہیں اور راضی ہو تو خود مجرم، اس سے بھی قطع تعلق کیا جاسکتا ہے۔ | ۶۲۸

توبہ بعد زانی وزانیہ سے میل جول میں حرج نہیں۔ | ۶۱۹ | ازالہ منکر اگر بغیر قتل کے حاصل ہوسکتا ہے تو قتل کی اجازت نہیں۔ | ۶۳۳

عورت کے زنا پر شوہر راضی نہ ہو تو اس پر کچھ الزام نہیں۔ | ۶۱۹ | زنا کا سد باب ازالہ منکر ہے اور ازالہ منکر اللہ عزوجل کے لئے ہوتا ہے لہذا اس میں محارم واجنبی عورتیں برابر ہیں۔ | ۶۳۳

جو لوگ زنا میں ساعی ہوں یا بعد زنا بلا توبہ زانی وزانیہ کے حامی ہوئے وہ بھی مستحق سزائے شرع ہیں۔ | ۶۱۹ | بلا وجہ شرعی کسی مسلمان کو یا عالم کو مردود، الو وغیرہ کہنا ناحق ایذا دینا حرام ہے۔ | ۶۴۲

کسی عورت کے ساتھ کسی نے زنا کیا شوہر نے از راہ چشم پوشی سزا نہ دلوائی، یہ فعل محمود ہے۔ | ۶۲۰ | مومن وہ ہے جس کے ہمسائے اس کی ایذاؤں سے امان میں ہوں۔ | ۶۴۵

زناکاروں پر توبہ فرض ہے۔ | ۶۲۲ | کسی مسلمان کو اس کے پیشہ کے سبب سے حقیر جاننا برا ہے۔ | ۶۴۶

زانی اور زانیہ اپنے کرتوت سے باز نہ آئیں تو ان کا بائیکاٹ کیا جائے۔ | ۶۲۲ | کسی مسلمان کے مال کا نقصان اور اس کی ہتک عزت بلا وجہ شرعی حرام ہے۔ | ۶۴۶

مسلمان پر تہمت رکھنا افعال شنیعہ سے ہے۔ | ۶۲۶ | نماز پڑھانے کے لئے تنبیہ و تفہیم چاہئے مار پیٹ کا وقت نہیں ہے۔ | ۶۴۶

بھاؤج سے مذاق اور ہاتھا پائی حرام ہے، شوہر جان بوجھ کر چشم پوشی کرتا ہے تو "دیوث" ہے۔ | ۶۲۶ | بھائی ہونے کی نفی کی، اگر کوئی سلوک ایسا بھی کیا ہو تو نفی کر سکتا ہے ورنہ تین گناہوں کا مرتکب ہے۔ | ۶۴۸

کسی کے عزیز واقارب اس کو فحاشی و بے حیائی سے منع نہیں کرتے تو شریک گناہ اور مستحق عذاب ہیں۔ | ۶۲۶ | کذب صریح، قطع رحم اور ایذائے مسلم کبیرہ گناہ ہیں۔ | ۶۴۸

جانور سے نابالغ نے مجامعت کی تو تنبیہ کی جائے اور بالغ نے ایسی حرکت کی تو سزا دی جائے اور جانور کو ذبح کر کے جلا دیا جائے۔ | ۶۲۷ | جملہ "اچھا ہوا فلاں کے چوری ہوگئی" کے احکام۔ | ۶۴۸

| | حسد حرام ہے۔ | ۶۴۸

| Being happy at someone's loss due to enmity follows the nature of the enmity; if the enmity is blameworthy, this happiness is also foul and blameworthy; if the enmity is praiseworthy, like enmity with enemies of Allah, then there is no harm in it. | 648 | **Qisas (Retaliation)** | |---|---|---|---| | Calling a Muslim harsh or bad names without reason is forbidden. | 650 | Unjust killing of a Muslim is a major sin and retaliation (Qisas) is mandatory for the killer. | 649 | | To call a Sayyid, a scholar, or even the son of a spiritual guide harsh names is even more severe. | 650 | **Siyast (Governance/ Punishment)** | | Calling Muslims 'rejected' (mardood) or 'Satan' (iblis) without a Shariah-compliant reason is strictly forbidden. | 652 | The right of administering political punishment belongs to the ruler (sultan). | 649 | | Condemnation of hurting a Muslim from Quran and Hadith. | 652 | In what situation is a non-ruler allowed to kill an adulterer or adulteress? | 649 | | He who calls others 'rejected' or 'disbeliever' without a Shariah reason must repent for this act and ask forgiveness from the person concerned; otherwise, he is a public transgressor. | 652 | Killing as a form of political punishment is not permissible for anyone other than the Imam (ruler), and even for the Imam, it is only permissible for those major sins that cause harm to others. Killing for minor sins or major sins that don't harm others is not permissible. | 641 | | A misguided, irreligious, and mischief-maker can be called Satan. | 656 | **Masarif (Expenditures)** | | Calling a righteous believer 'Satan' is the work of Satan. | 656 | Money from a vow (Nadr) cannot be given to one's own ancestors, descendants, husband, wife, or a Sayyid. | 594 | | **Nafsiyat (Psychology)** | | A person vowed a sixteenth part of their trade for Allah the Almighty; what will be its uses? | 595 | | The predominant habit of women is that they do not like their husband's second marriage. | 250 | Even without formal words of a vow, if one said with the tongue that they would spend a sixteenth part of their trade profits for Allah in good deeds, then from that, they can do everything like Milad gatherings, Giyarween Sharif, Ramadan Iftari, and serving parents and Sayyid scholars. | 595 | | Often, women become sad about their former husband's second marriage after separation. | 563 | | |

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं (13) १३

| किसी के नुकसान पर शत्रुता के कारण खुश होना शत्रुता के अधीन है, यदि शत्रुता निंदनीय है तो यह भी घृणित और निंदनीय है, यदि शत्रुता प्रशंसनीय है जैसे अल्लाह के शत्रुओं से शत्रुता, तो इसमें कोई हर्ज नहीं। | ६४८ | **किसास (बदला)** | |---|---|---|---| | बिना वजह किसी मुसलमान को बुरा-भला कहना हराम है। | ६५० | एक मुसलमान की अन्यायपूर्ण हत्या एक बड़ा पाप है और हत्यारे पर किसास (बदला) अनिवार्य है। | ६४९ | | सैय्यद, आलिम, यहाँ तक कि मुर्शिद-ज़ादा को बुरा-भला कहना तो और भी गंभीर है। | ६५० | **सियासत (दंडविधान)** | | मुसलमानों को बिना किसी शरई कारण के मरदूद या इबलीस (शैतान) कहना सख्त हराम है। | ६५२ | राजनीति (दंड देने) का अधिकार सुल्तान (शासक) को है। | ६४९ | | कुरान और हदीस के अनुसार मुसलमान को कष्ट देने की निंदा। | ६५२ | व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को मारने की अनुमति गैर-सुल्तान को किस स्थिति में है? | ६४९ | | बिना किसी शरई कारण के जो व्यक्ति दूसरों को मरदूद या काफिर कहता है, उसे इस कृत्य से तौबा करनी चाहिए और संबंधित व्यक्ति से माफी मांगनी चाहिए, अन्यथा वह खुल्लम-खुल्ला अवज्ञाकारी (फ़ासिक़ मुअल्लन) है। | ६५२ | राजनीतिक रूप से हत्या करना गैर-इमाम के लिए जायज़ नहीं है, और इमाम के लिए भी केवल उन बड़े पापों (कबायेर) में हत्या जायज़ है जो दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाले हों, छोटे पापों या ऐसे बड़े पापों में हत्या जायज़ नहीं जो दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ। | ६४१ | | गुमराह और धर्मद्रोही फ़ितना फैलाने वाले को शैतान कह सकते हैं। | ६५६ | **मसारिफ (व्यय/उपयोग)** | | एक नेक मोमिन को शैतान कहना शैतान का काम है। | ६५६ | मन्नत (नज़्र) के पैसे अपने पूर्वजों, वंशजों, पति, पत्नी और सैय्यद को नहीं दिए जा सकते। | ५९४ | | **नफ्सियात (मनोविज्ञान)** | | अपने व्यापार में सोलहवाँ हिस्सा अल्लाह तबारक व तआला के लिए मन्नत मांगी, इसके उपयोग क्या होंगे। | ५९५ | | महिलाओं की मुख्य आदत यह है कि वे अपने पति का दूसरा निकाह पसंद नहीं करतीं। | २५० | बिना औपचारिक शब्दों के केवल ज़बान से कहा कि अपने व्यापार के मुनाफे का सोलहवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए अच्छे कामों में खर्च करूँगा, तो उससे महफिल-ए-मिलाद, ग्यारहवीं शरीफ, रमजान की इफ्तारी और अपने माता-पिता और सैय्यद विद्वानों की सेवा, सब कुछ किया जा सकता है। | ५९५ | | अक्सर महिलाएं अलगाव के बाद अपने पूर्व पति की दूसरी शादी से दुखी होती हैं। | ५६३ | | |

पृष्ठ ९७/६८८

| کسی کے نقصان پر عداوت کے سبب سے خوش ہونا عداوت کے تابع ہے، اگر عداوت مذمومہ ہے تو یہ بھی فتیح و مذموم، اگر عداوت محمودہ ہے جیسے اعداء اللہ سے دشمنی، تو اس میں حرج نہیں۔ | ۶۴۸ | **قصاص** | |---|---|---|---| | بلاوجہ کسی مسلمان کو سخت وسست کہنا حرام ہے۔ | ۶۵۰ | ناحق قتل مسلم سخت کبیرہ گناہ اور قاتل پر قصاص لازم ہے۔ | ۶۴۹ | | سید، عالم بلکہ مرشد زادہ کو سخت وسست کہنا تو اور شدید ہے۔ | ۶۵۰ | **سیاست** | | مسلمانوں کو بلاوجہ شرعی مردود یا ابلیس کہنا سخت حرام ہے۔ | ۶۵۲ | سیاست کا حق سلطان کو ہے۔ | ۶۴۹ | | مسلمان کو ایذا دینے کی مذمت قرآن و حدیث سے۔ | ۶۵۲ | زانی اور زانیہ کو قتل کرنے کی اجازت غیر سلطان کو کس صورت میں ہے۔ | ۶۴۹ | | بلاوجہ شرعی جو شخص دوسروں کو مردود، کافر کہے تو اس کو اس فعل سے توبہ اور شخص متعلقہ سے معافی مانگنی ضروری ہے ورنہ وہ فاسق معلن ہے۔ | ۶۵۲ | سیاستاً قتل غیر امام کے لئے جائز نہیں، اور امام کو بھی صرف ان کبائر میں قتل جائز ہے جو متعدی الضرر ہوں، صغائر یا کبائر غیر متعدی الضرر میں قتل جائز نہیں۔ | ۶۴۱ | | گمراہ و بددین فتنہ پرور کو شیطان کہہ سکتے ہیں۔ | ۶۵۶ | **مصارف** | | مومن صالح کو شیطان کہنا شیطان کا کام ہے۔ | ۶۵۶ | نذر کے روپے اپنے اصول، فروع، زوج، زوجہ اور سید کو نہیں دے سکتے۔ | ۵۹۴ | | **نفسیات** | | اپنی تجارت میں سولھواں حصہ اللہ تبارک و تعالٰی کے لئے نذر کیا اس کے مصارف کیا ہوں گے۔ | ۵۹۵ | | عورتوں کی غالب عادت یہ ہے کہ وہ اپنے شوہر کا نکاح ثانی پسند نہیں کرتیں۔ | ۲۵۰ | بے الفاظ نذر زبان سے کہا کہ اپنے منافع تجارت سے سولھواں حصہ نیک کاموں میں اللہ تعالٰی کے لئے صرف کیا کروں گا تو اس سے محفل میلاد، گیارہویں شریف، افطاری رمضان اور اپنے والدین و

سادات علماء کی خدمت سب کچھ کر سکتا ہے۔ | ۵۹۵ | | بسا اوقات عورتیں فرقت کے بعد اپنے سابق خاوند کی دوسری شادی سے غمگین ہوتی ہیں۔ | ۵۶۳ | | |

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Page	Topic / Ruling (Column 1)	Page	Topic / Ruling (Column 2)	Ref.
596	If specific words of a vow (Nazr) are uttered, it cannot be given to parents, descendants of the Prophet (Sayyids), and the wealthy; it can be given to other needy people, even if they are one's paternal aunt, maternal aunt, paternal uncle, maternal uncle, or siblings.	596	A husband who keeps his wife in limbo (Ma'allaq) is a sinner and violates the explicit command of the Quran.	435
596	Zakat and Nazr funds can also be given to needy students, whether by making clothes or giving them grain or food and making them owners of it. However, Zakat and Nazr will not be fulfilled by feeding them within the home.	596	It is the husband's Sharia right to bring his wife home and keep her with him. Maintenance (Nafqah) is in exchange for this. Even the husband himself cannot waive this right.	437
596	Nazr or Zakat cannot be counted towards the Muezzin's salary. Yes, if he gives the call to prayer (Adhan) without a salary and is needy, it can be given to him.	596	For a father to prevent his daughter from going to her husband's home without a valid Sharia reason is oppression.	437
597	The heads for spending Zakat are the same as for Nazr.	597	Quranic verses regarding the rights of women.	446
	Rights of the People (Huquq-ul-Ibad)		Providing residence (Sukna) for the wife is obligatory on the husband. To leave her like a Ma'allaqah (woman in limbo) is forbidden (Haram), and occasional cohabitation is also obligatory.	446
332	Sharia's ruling for a life prisoner is that he should divorce his wife.	332	To abstain from intercourse for four months without the wife's	446

Page	Topic / Ruling (Column 1)	Page	Topic / Ruling (Column 2)	Ref.
			permission and consent, and without a valid Sharia excuse, is impermissible.	
417	The husband has the Sharia right to keep the wife with him. Even the husband himself cannot invalidate this right through any agreement.	417	A son can serve a needy father, and if he doesn't, the son is disobedient (Aaq).	452
420	A woman has the right to demand a change of residence to escape the oppression of a cruel husband.	420	After the payment of the prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal), the woman is absolutely bound to the husband; there is no condition or specification regarding the provision of maintenance or meeting of needs in this regard.	455
430	A husband who does not provide maintenance (food and clothing) to his wife without a Sharia reason is an oppressor and sinner, and is liable for the woman's rights.	430	After divorce, a woman has no right other than the dower and maintenance during the waiting period (Iddah). An agreement for lifelong maintenance after divorce is a promise that should be fulfilled, but it is not obligatory.	475
		435	It is obligatory for the husband to look after the maintenance of his wife or give her a divorce.	

फतवा रज़विया, खंड 13

पृष्ठ	विषय / व्यवस्था (कॉलम 1)	पृष्ठ	विषय / व्यवस्था (कॉलम 2)	संदर्भ
596	यदि विशिष्ट मन्नत (नज़र) के शब्द ज़ुबान से अदा किए गए हों, तो वह माता-पिता, सादात (सैयद) और अमीरों को नहीं दी जा सकती; अन्य ज़रूरत मंदों को दी जा सकती है, भले ही वे उसकी बुआ, खाला, चाचा, मामा या भाई-बहन हों।	596	पत्नी को अधर (मुअल्लक) में रखने वाला पति गुनहगार है और कुरान के स्पष्ट आदेश का उल्लंघन करने वाला है।	435
596	ज़कात और मन्नत (नज़र) का माल ज़रूरतमंद छात्रों को भी दिया जा सकता है, चाहे उन्हें कपड़े बनाकर दिए जाएं या अनाज या भोजन देकर उन्हें मालिक बना दिया जाए। हाँ, घर में बैठाकर खिलाने से ज़कात और मन्नत अदा नहीं होगी।	596	पत्नी को विदा कराकर अपने पास रखना पति का शरीय अधिकार है, भरण-पोषण (नफ़क़ा) इसके बदले में है, इस अधिकार को पति स्वयं भी समाप्त नहीं कर सकता।	437
596	मुअज़्ज़िन के वेतन में नज़र या ज़कात की गणना नहीं की जा सकती। हाँ, यदि वह बिना वेतन के अज़ान देता है और ज़रूरतमंद है, तो उसे दिया जा सकता है।	596	पिता का अपनी बेटी को बिना किसी शरीय कारण के पति के घर जाने से रोकना ज़ुल्म है।	437
597	जो ज़कात के उपभोग का स्थान (मसरफ़) है, वही मन्नत (नज़र) का है।	597	महिलाओं के अधिकारों से संबंधित कुरान की आयतें।	446
	हुकूक-उल-इबाद (बंदों के अधिकार)		पत्नी के लिए निवास (सुक़ना) पति पर अनिवार्य है, उसे मुअल्लक़ा (अधर में छोड़ी गई स्त्री) की तरह छोड़ देना हराम	446

पृष्ठ	विषय / व्यवस्था (कॉलम 1)	पृष्ठ	विषय / व्यवस्था (कॉलम 2)	संदर्भ
			है और समय-समय पर उससे सहवास करना भी अनिवार्य है।	
332	आजीवन कारावास वाले के लिए शरीयत का हुक्म है कि वह अपनी पत्नी को तलाक दे दे।	332	पत्नी की अनुमति और सहमति के बिना चार महीने तक बिना किसी उचित शरीय कारण के संभोग न करना नाजायज़ है।	446
417	पति को पत्नी को अपने पास रखने का अधिकार शरीयत से प्राप्त है, इस अधिकार को पति स्वयं भी किसी समझौते के माध्यम से रद्द नहीं कर सकता।	417	ज़रूरत मंद पिता की सेवा कर सकता है और यदि नहीं करता है तो बेटा 'आक़' (नाफ़रमान) है।	452
420	ज़ालिम पति के ज़ुल्म से बचने के लिए महिला को निवास स्थान बदलने की मांग करने का अधिकार है।	420	मेहर-ए-मुअज्जल (तत्काल देय मेहर) की अदायगी के बाद पत्नी पूरी तरह से पति की पाबंद है, इसमें भरण-पोषण की अदायगी या ज़रूरतों को पूरा करने की कोई शर्त या विशेषता नहीं है।	455
430	बिना किसी शरीय कारण के पत्नी को भरण-पोषण न देने वाला पति ज़ालिम और गुनहगार है और पत्नी के हक में गिरफ्तार है।	430	तलाक के बाद मेहर और इद्दत के भरण-पोषण के अलावा महिला का कोई अधिकार नहीं है, तलाक के बाद जीवन भर के भरण-पोषण का इकरारनामा एक वादा है जिसे पूरा किया जाना चाहिए, लेकिन यह अनिवार्य (वाजिब) नहीं है।	475
		435	पति पर अनिवार्य है कि वह पत्नी के भरण-पोषण की देखभाल करे या तलाक दे दे।	

صفحہ	مضمون / حکم (کالم ۱)	صفحہ	مضمون / حکم (کالم ۲) حوالہ
	اگر خاص الفاظ نذر زبان سے ادا کئے تو اب والدین، سادات اور اغنیاء کو نہیں		بیوی کو معلق رکھنے والا شوہر
۵۹۶	دے سکتا، دیگر محتاجوں کو دے سکتا ہے اگرچہ اس کی پھوپھی، خالہ، چچا، ماموں اور بہن بھائی ہوں۔	۵۹۶	گنہگار اور صریح حکم قرآن کا ۴۳۵ خلاف کرنے والا ہے۔
۵۹۶	مال زکوٰۃ اور مال نذر محتاج طالبلموں کو بھی دے سکتے ہیں خواہ کپڑے بنا دے خواہ اناج یا کھانا انھیں دے کر مالک کر دے، ہاں گھر میں بٹھا کر کھلانے سے زکوٰۃ ونذر ادانہ ہوگی۔	۵۹۶	عورت کو رخصت کرا کر اپنے پاس رکھنا شوہر کا شرعی حق ہے، نفقہ ۴۳۷ اس کے بدلہ میں ہے، اپنے اس حق کو شوہر خود بھی ساقط نہیں کرسکتا۔
۵۹۶	مؤذن کی تنخواہ میں نذر یا زکوٰۃ محسوب نہیں ہوسکتی ہاں اگر بلا تنخواہ اذان دیتا ہے اور محتاج ہے تو دے سکتے ہیں۔	۵۹۶	باپ کا اپنی بیٹی کو بلاوجہ شرعی شوھر کے گھر جانے سے روکنا ظلم ۴۳۷ ہے۔
۵۹۷	جو مصرف زکوٰۃ ہے وہی مصرف نذر ہے۔	۵۹۷	عورتوں کے حقوق سے متعلق آیات ۴۴۶ قرآنیہ۔

صفحہ	مضمون / حکم (کالم ۱)	صفحہ	مضمون / حکم (کالم ۲)	حوالہ
	حقوق العباد		عورت کا سکنیٰ شوہر پر واجب ہے اس کو معلقہ کی طرح چھوڑ دینا حرام ہے اور گاہ گاہ اس سے صحبت کرنا بھی واجب ہے۔	۴۴۶
۳۳۲	محبوس دائمی کو شرعاً یہ حکم ہے کہ اپنی عورت کو طلاق دے دے۔	۳۳۲	عورت کے اذن و رضا کے بغیر چار مہینے تک ترک جماع بلا عذر صحیح شرعی ناجائز ہے۔	۴۴۶
۴۱۷	شوہر کو عورت کے اپنے پاس رکھنے کا حق شرعاً حاصل ہے، اس حق کو خود شوہر بھی کسی اقرار نامہ کے ذریعہ باطل نہیں کر سکتا۔	۴۱۷	ضرورت مند باپ کی خدمت کر سکتا ہے اور نہیں کرتا تو لڑکا عاق ہے۔	۴۵۲
۴۲۰	ظالم شوہر کے ظلم سے بچنے کے لئے عورت کو انتقال سکونت کے مطالبہ کا حق ہے۔	۴۲۰	بعد ادائے مہر معجّل عورت مطلقاً پابند شوہر ہے اس میں کوئی قید و تخصیص ادائے نفقہ و تکفل حوائج کی نہیں۔	۴۵۵
۴۳۰	عورت کو بلاوجہ شرعی نان و نفقہ نہ دینے والا شوہر ظالم و گنہگار اور عورت کے حق میں گرفتار ہے۔	۴۳۰	طلاق کے بعد مہر و نفقہ عدت کے علاوہ عورت کا کوئی حق نہیں، بعد طلاق زندگی بھر کے نفقہ کا اقرار	۴۷۵

صفحہ	مضمون / حکم (کالم ۱) صفحہ	مضمون / حکم (کالم ۲) حوالہ
		نامہ وعدہ ہے جس کو پورا کرنا
		چاہئے، لیکن یہ واجب نہیں۔
		شوہر پر فرض ہے کہ بیوی کے نان
۴۳۵		و نفقہ کی خبر گیری کرے یا طلاق
		دے دے۔

Fatawa Razawiya Volume 13 (۱۳) Page 13

Section: Inheritance (Fara'iz) - Difference between permission and pleasure. [Page: 252] - If a menstruating woman marries one month after divorce, the marriage occurred within the 'Iddah' (waiting period), and such a woman will not have the right of inheritance from the marriage; she will receive whichever is less between 'Mahr al-Mithl' (customary dowry) and 'Mahr al-Musamma' (specified dowry). [Ruling: 320, Page: 260] - Refutation of a fabricated issue attributed to the Hanafi school of thought. [Page: 260] - Inheritance does not apply in irregular (fasid) or void (batil) marriages; rather, the right to inheritance arises from a valid (sahih) marriage. [Ruling: 321, Page: 270] - According to the Holy Quran, one's mother is the one who gave birth to them. [Page: 270] - Dowry (Jahez) and dower (Mahr) are part of a woman's estate. [Ruling: 737, Page: 305] - Clarification of two passages from Fatawa Alamgiri. [Page: 305] - A woman died leaving behind a husband and parents; her estate will be divided into six shares: three shares for the husband, two shares for the father, and one share for the mother. [Ruling: 737, Page: 330] - A strange experience regarding the one whose husband has passed away. [Page: 330]

Section: Miscellaneous (Mutafarriqat) - Zaid's grandfather was Pathan and his grandmother and mother were Syeda; in this case, is Zaid a Syed or a Pathan? [Page: 461] - Incident of a conversation between a person and Satan regarding evil scholars. [Ruling: 130, Page: 461] - The descendants of the two noble grandsons (Hasan and Hussain) are Syeds, not the descendants of the daughters of Hazrat Fatima (may Allah be pleased with them both), as they are attributed to their fathers. [Page: 461] - Arbitration between the sayings of scholars regarding a matter of suspension (ta'liq). [Ruling: 172, Page: 469] - The narration from Imam Malik (may Allah have mercy on him) about a child staying in the mother's womb for more than two years. [Page: 469] - Clarification of a passage from Durr al-Mukhtar. [Ruling: 138, Page: 505] - Clarification of a passage regarding oath (half). [Page: 505] - A marvelous point. [Ruling: 142, Page: 515] - Caution on several matters by the author by way of research and refinement. [Page: 515] - There is no cure for stubbornness (makabarah). [Ruling: 181, Page: 515] - Harmonization between different statements of the Imams by the author (may mercy be upon him). [Page: 515] - There is a difference between "bringing proof for something" and "something reaching proof" in the Urdu language. [Ruling: 235, Page: 535] - Dependency on Shami (at-Tafful 'ala al-Shami). [Page: 535] - There is a great difference between lack of pleasure and abandonment of seeking pleasure. [Ruling: 248, Page: 543] - Clarification and explanation of a

passage from Radd al-Muhtar. [Page: 543] - The heart does not remain in one state all the time because the heart fluctuates (al-qalb yanqalib). [Ruling: 249, Page: 551] - Dependency on Allama Sathani. [Page: 551] - Knowledge of permission will be through speech, and not through love or hatred. [Ruling: 251, Page: 577] - Explanation of a passage from Usul al-Shashi and Fusul. [Page: 577]

फ़तावा रज़विया खंड १३ (१३) पृष्ठ १३

अनुभाग: फराइज (उत्तराधिकार) - अनुमति (इज़्न) और प्रसन्नता (रज़ा) के बीच का अंतर। [पृष्ठ: २५२] - यदि रजस्वला महिला तलाक के एक महीने बाद शादी करती है, तो शादी 'इद्दत' (प्रतीक्षा अवधि) के भीतर हुई और ऐसी महिला को शादी से विरासत का अधिकार नहीं मिलेगा; उसे 'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) और 'महर-ए-मुसम्मा' (निर्धारित मेहर) में से जो भी कम हो, वह मिलेगा। [मसाला: ३२०, पृष्ठ: २६०] - हनफी पंथ से जुड़ी एक मनगढ़ंत समस्या का खंडन। [पृष्ठ: २६०] - अनियमित (फासिद) और शून्य (बातिल) विवाहों में विरासत लागू नहीं होती है, बल्कि विरासत का अधिकार वैध (सहीह) विवाह से उत्पन्न होता है। [मसाला: ३२१, पृष्ठ: २७०] - पवित्र कुरान के अनुसार, किसी की माँ वही है जिसने उसे जन्म दिया है। [पृष्ठ: २७०] - दहेज (जहेज़) और मेहर महिला की संपत्ति (तरका) का हिस्सा हैं। [मसाला: ७३७, पृष्ठ: ३०५] - 'आलमगीरी' के दो अनुच्छेदों का स्पष्टीकरण। [पृष्ठ: ३०५] - एक महिला का निधन पति और माता-पिता को छोड़ कर हुआ; उसकी संपत्ति को छह हिस्सों (सहाम) में विभाजित किया जाएगा: तीन हिस्से पति के लिए, दो हिस्से पिता के लिए और एक हिस्सा माँ के लिए। [मसाला: ७३७, पृष्ठ: ३३०] - जिसके पति का निधन हो गया हो, उसके बारे में एक अजीब अनुभव। [पृष्ठ: ३३०]

अनुभाग: मुतफर्रिकात (विविध) - ज़ैद के दादा पठान थे और दादी और माँ सैयदानी थीं, इस स्थिति में ज़ैद सैयद है या पठान? [पृष्ठ: ४६१] - बुरे विद्वानों (उलमा-ए-सू) के बारे में एक व्यक्ति और शैतान के बीच बातचीत की घटना। [मसाला: १३०, पृष्ठ: ४६१] - दोनों महान पौत्रों (हसन और हुसैन) के वंशज सैयद हैं, न कि हज़रत फातिमा (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) की बेटियों की संतानें, क्योंकि उन्हें उनके पिताओं के साथ जोड़ा जाता है। [पृष्ठ: ४६१] - 'ता'लीक़' (निलंबन) के एक मामले में विद्वानों के कथनों के बीच निर्णय (मुहाकमा)। [मसाला: १७२, पृष्ठ: ४६९] - इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैह) से माँ के गर्भ में बच्चे के दो साल से अधिक रहने का वर्णन। [पृष्ठ: ४६९] - 'दुर्र-ए-मुख्तार' के एक अनुच्छेद का स्पष्टीकरण। [मसाला: १३८, पृष्ठ: ५०५] - शपथ (हल्फ) के एक अनुच्छेद का स्पष्टीकरण। [पृष्ठ: ५०५] - एक अद्भुत बिंदु (नुकता-ए-बदीया)। [मसाला: १४२, पृष्ठ: ५१५] - शोध और शोधन (तहकीक और तनकीह) के तौर पर लेखक की ओर से कुछ बातों पर चेतावनी। [पृष्ठ: ५१५] - हठधर्मिता (मुकाबरा) का कोई इलाज नहीं है। [मसाला: १८१, पृष्ठ: ५१५] - लेखक (रहमतुल्लाह अलैह) द्वारा इमामों के विभिन्न बयानों के बीच सामंजस्य (ततबीक)। [पृष्ठ: ५१५] - उर्दू भाषा में "किसी चीज़ का प्रमाण पहुँचाना" और "किसी चीज़ का प्रमाण तक पहुँचना" में अंतर है। [मसाला: २३५, पृष्ठ:

५३५] - शामी पर निर्भरता (ततफ्फुल अलल शामी)। [पृष्ठ: ५३५] - प्रसन्नता की कमी और प्रसन्नता प्राप्त करने के प्रयास को छोड़ने में बहुत अंतर है। [मसाला: २४८, पृष्ठ: ५४३] - 'रद्द अल-मुह्तार' के एक अनुच्छेद का स्पष्टीकरण और व्याख्या। [पृष्ठ: ५४३] - दिल हर समय एक ही स्थिति में नहीं रहता क्योंकि दिल बदलता रहता है (अल-क़ल्ब यनक़ालिब)। [मसाला: २४९, पृष्ठ: ५५१] - अल्लामा सातहानी पर निर्भरता। [पृष्ठ: ५५१] - अनुमति का ज्ञान वाणी से होगा, प्रेम या घृणा से नहीं। [मसाला: २५१, पृष्ठ: ५७७] - 'उसूल अल-शाशी' और 'फुसूल' के एक अनुच्छेद की व्याख्या। [पृष्ठ: ५७७]

पृष्ठ ९९ का ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم (۱۳) صفحہ ۱۳

فرائض - اذن و رضاء کا فرق۔ (صفحہ: ۲۵۲) - حیض والی عورت طلاق کے ایک مہینہ بعد نکاح کرے تو نکاح عدت کے اندر ہوا اور ایسی عورت کا نکاح سے وراثت کا حق نہ پہنچے گا، اور مہر مثل اور مسمّیٰ سے جو کم ہو وہ پائے گی۔ (موضوع: ۳۲۰، صفحہ: ۲۶۰) - حنفی مذہب سے منسوب ایک من گھڑت مسئلے کا رد۔ (صفحہ: ۲۶۰) - نکاح فاسد و باطل میں توارث جاری نہیں ہوتا بلکہ استحقاق ارث نکاح صحیح سے ہوتا ہے۔ (موضوع: ۳۲۱، صفحہ: ۲۷۰) - از روئے قرآن مجید کسی کی ماں وہی ہے جس نے اسے جنا ہے۔ (صفحہ: ۲۷۰) - جہیز اور مہر عورت کا ترکہ ہے۔ (موضوع: ۷۳۷، صفحہ: ۳۰۵) - عالمگیری کی دو عبارتوں کی توضیح۔ (صفحہ: ۳۰۵) - عورت شوہر اور والدین چھوڑ کر فوت ہوئی اس کا ترکہ چھ ۶ سہام ہو کر تین سہم شوہر، دو سہم پدر اور ایک مادر کو ملے گا۔ (موضوع: ۷۳۷، صفحہ: ۳۳۰) - متوفیٰ عنہا زوجہا کے بارے میں ایک عجیب تجربہ۔ (صفحہ: ۳۳۰)

متفرقات - زید کا دادا پٹھان تھا اور دادی اور والدہ سیدانی، اس صورت میں زید سید ہے یا پٹھان۔ (صفحہ: ۴۶۱) - علماء سوء کے بارے میں ایک شخص اور شیطان کے درمیان گفتگو کا واقعہ۔ (موضوع: ۱۳۰، صفحہ: ۴۶۱) - سبطین کریمین کی اولاد سید ہے نہ کہ بنات فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی اولاد کہ وہ اپنے والدوں کی طرف نسبت کی جائیں گی۔ (صفحہ: ۴۶۱) - ایک مسئلہ تعلیق میں اقوالِ علماء کے درمیان محاکمہ۔ (موضوع: ۱۷۲، صفحہ: ۴۶۹) - امام مالک رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے دو سال سے زائد بچہ شکمِ مادر میں رہنے کی روایت۔ (صفحہ: ۴۶۹) - در مختار کی ایک عبارت کی توضیح۔ (موضوع: ۱۳۸، صفحہ: ۵۰۵) - حلف کی ایک عبارت کی توضیح۔ (صفحہ: ۵۰۵) - ایک نکتہ بدیعیہ۔ (موضوع: ۱۴۲، صفحہ: ۵۱۵) - مصنف رحمۃ اللہ علیہ

کی طرف سے بطور تحقیق و تنقیح چند امور پر تنبیہ۔ (صفحہ: ۵۱۵) - مکابرہ کا کوئی علاج نہیں۔ (موضوع: ۱۸۱، صفحہ: ۵۱۵) - مصنف علیہ الرحمہ کی طرف سے ائمہ کی مختلف عبارات میں تطبیق۔ (صفحہ: ۵۱۵) - اردو زبان میں کسی شیء کا ثبوت پہنچانا اور کوئی شیء ثبوت کو پہنچانا، ان دونوں میں فرق ہے۔ (موضوع: ۲۳۵، صفحہ: ۵۳۵) - تطفل علی الشامی۔ (صفحہ: ۵۳۵) - عدم رضا اور ترک استرضاء میں بہت فرق ہے۔ (موضوع: ۲۴۸، صفحہ: ۵۴۳) - ردالمحتار کی ایک عبارت کی توضیح و تشریح۔ (صفحہ: ۵۴۳) - دل ہر وقت ایک حال پر نہیں رہتا کیونکہ القلب ینقلب۔ (موضوع: ۲۴۹، صفحہ: ۵۵۱) - علامہ ساٹحانی پر تطفل۔ (صفحہ: ۵۵۱) - اذن کا علم قول سے ہو گا اور محبت و بغض کا نہیں۔ (موضوع: ۲۵۱، صفحہ: ۵۷۷) - اصول الشاشی اور فصول کی ایک عبارت کی تشریح۔ (صفحہ: ۵۷۷)

Fatawa Ridawiyya Volume 13

Chahal Tan are forty martyrs. **584**

Whatever is fed to one's family and children is referred to as charity (Sadaqah) in the Hadiths. 596

Dishonoring ('Aabroo utarna') is not specific to adultery; it is also used for physical abuse. 614

Sins are of three types: Light ones that do not reach the level of Hadd (prescribed punishment). Excessive ones, such that even Hadd cannot be their expiation. And intermediate ones, which are cleansed by Hadd. 625

Originally, every Muslim is a believer (Mumin). In some regions' common usage, calling weavers 'Mumin' might be due to their sound nature, and using this word as a taunt is a double sin. **645**

There is a big difference between 'Misl' (identical) and 'Manind' (similar). 650

Our master Imam-e-Azam (may Allah Almighty have mercy on him) said: "My faith is the faith of Gabriel." Why didn't he say "My faith is like (Misl) the faith of Gabriel"? 650

Why did Imam Muhammad not mention Imam Abu Yusuf by his kunya (agnomen) in Jami' al-Saghir and other books narrated from Imam-e-Azam through Imam Abu Yusuf? 655

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं

चहिल तन चालीस शहीद हैं। ५८४

बीवी-बच्चों को जो कुछ खिलाया जाता है, हदीसों में उस पर सदका का शब्द आया है। ५९६

'आबरू उतारना' सिर्फ़ ज़िना (व्यभिचार) के लिए खास नहीं है, यह मारपीट के लिए भी बोला जाता है। ६१४

गुनाह तीन तरह के हैं: हल्के जो हद्द की सीमा तक न हों। हद्द से बढ़े हुए, कि हद्द भी उसका कफ़्फ़ारा न हो सके। और मध्यम, जो हद्द से पाक हो जाएँ। ६२५

असल में हर मुसलमान मोमिन है, कुछ क्षेत्रों की लोकभाषा में बुनकरों को मोमिन कहना उनके नेक स्वभाव के कारण होगा और इस शब्द को ताने के रूप में इस्तेमाल करना दोहरा गुनाह है। ६४५

'मिस्ल' (समान) और 'मानिंद' (जैसा) में बहुत फ़र्क है। ६५०

सैयदना इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाह अलैहि ने फ़रमाया, "मेरा ईमान जिब्रील का ईमान है", यूँ क्यों नहीं फ़रमाया: "मेरा ईमान जिब्रील के ईमान के मिस्ल है"? ६५०

इमाम मुहम्मद ने जामि' सगीर आदि किताबों में, जो इमाम अबू यूसुफ़ के माध्यम से हज़रत इमाम-ए-आज़म से रिवायत की हैं, उन में इमाम अबू यूसुफ़ को कुनियत (उपाधि) से क्यों याद नहीं किया? ६५५

पृष्ठ १०० का ६८८

اصلاً ہر مسلمان مومن ہے، بعض اطراف کے

عرف میں بنکروں کو مومن کہنا ان کی سلیم

چہل تن چالیس شہدا ہیں۔ ۵۸۴ ۶۴۵ **الطبعی کی وجہ سے ہوگا اور اس لفظ کو**

بطور طعن استعمال کرنا دوہرا گناہ ہے۔

اہل وعیال اور اولاد کو جو کچھ کھلایا

جاتا ہے احادیث میں اس پر صدقہ کا ۵۹۶ مثل اور مانند میں بہت فرق ہے۔ ۶۵۰

اطلاق آیا ہے۔

سیدنا امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے

آبرو اتارنا زنا کے لئے خاص نہیں مار ۶۵۰ فرمایا ایمانی کا ایمان جبرائیل یوں کیوں نہیں

۶۱۴ پیٹ کے لئے بھی بولا جاتا ہے۔ فرمایا: ایمانی مثل ایمان جبرائیل۔

امام محمد نے جامع صغیر وغیرہ کتب جو

گناہ تین قسم کے ہیں: ہلکے جو حد کی بروایت امام ابو یوسف حضرت امام اعظم

حد تک نہ ہوں۔ حد سے بڑھے ہوئے، ۶۵۵

۶۲۵ سے روایت کیں ان امام ابو یوسف کو کنیت

کہ حد بھی اس کا کفارہ نہ ہو سکے۔ اور سے کیوں یاد نہیں کیا۔

متوسط، کہ حد سے پاک ہو جائیں۔

13 Volume Thirteen Fatawa Razawiyya

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Chapter on Conditional Divorce (Description of Conditional Divorce)

Problem 1: From Muzaffarpur district, Raipur post office, Sitamarhi sub-division, Gauri Darwaza Sarfaraz Ali Khan, sent by Ayub Ali Khan Sahib, 21 Dhu al-Hijjah 1318 AH. The husband, Zaid, in the presence of his wife Hinda and against Bakr, swore an oath that "We will not have our brother Khalid do the land management work. If we do, then his wife is divorced." After a few days, Zaid had the aforementioned brother perform the said work. In this situation, did the wife Hinda become divorced or not? And if so, what is the proof for her being divorced, as Allah (Exalted be He) has not mentioned this type of oath anywhere in His Glorious Quran? If Hinda became divorced immediately upon the fulfillment of the condition, what is the way for the marriage to remain intact, and is there any expiation for this oath or not? That is all.

The Answer: In the situation inquired about, one divorce has occurred upon the wife. The proof for this is the consensus of the Imams of religion that when divorce is made conditional upon a condition, it occurs upon the fulfillment of that condition.

| In Al-Hidayah: When it is attributed to a condition, it occurs following the condition, such as if he says to his wife: "If you enter the house, then you are divorced." | In Hidayah, it is stated that if divorce is attributed to a condition, it will occur after that condition is met. For example, by saying: "If you enter the house, you are divorced." |

Page 101 of 688

13 खंड तेरहवां फतावा रज़विया

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाण है।

तलाक को शर्त से जोड़ने का अध्याय (तलाक को शर्त से जोड़ने का विवरण)

मसाला 1: ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर, डाकखाना रायपुर, सब-डिवीजन सीतामढ़ी, मुकाम गौरी दरवाज़ा सरफ़राज़ अली खान से, प्रेषक अय्यूब अली खान साहब, 21 ज़िल हिज्ज 1318 हिजरी। पति ज़ैद ने अपनी पत्नी हिन्दा के सामने बक्र के विरुद्ध शपथ ली कि "हम अपने भाई खालिद से ज़मींदारी का काम नहीं कराएंगे, अगर कराएंगे तो उसकी पत्नी को तलाक है।" कुछ दिनों बाद ज़ैद ने उक्त भाई से वह काम कराया। इस स्थिति में, क्या पत्नी हिन्दा तलाकशुदा हो गई या नहीं? और यदि हो गई, तो तलाकशुदा होने का क्या प्रमाण है क्योंकि अल्लाह (महान और प्रतापी) ने अपने पवित्र कलाम (कुरान) में कहीं भी इस प्रकार की शपथ का उल्लेख नहीं किया है? यदि शर्त पूरी होने पर हिन्दा तलाकशुदा हो गई, तो निकाह के कायम रहने की कौन सी सूरत है, और क्या इस शपथ का कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है या नहीं? बस।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में पत्नी पर एक तलाक हो गया है। इसका प्रमाण धर्म के इमामों की सहमति (इज्मा) है कि जब तलाक को किसी शर्त पर निर्भर किया जाता है, तो उस शर्त के पूरा होने पर तलाक हो जाता है।

| अल-हिदाया में है: "जब (तलाक) को किसी शर्त से जोड़ा जाता है, तो वह शर्त के तुरंत बाद प्रभावी हो जाता है, जैसे कि वह अपनी पत्नी से कहे: 'अगर तुम घर में दाखिल हुई तो तुम्हें तलाक है'।" | हिदाया में है कि यदि तलाक को शर्त की ओर मनसूब (सम्बद्ध) किया गया हो, तो वह शर्त के पाए जाने के बाद वाके(घटित) होगा, उदाहरण के लिए इस तरह कहे: "अगर तू घर में दाखिल हुई तो तुझे तलाक है"। |

पृष्ठ 101/688

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

باب تعلیق الطلاق (تعلیق طلاق کا بیان)

مسئلہ ۱: از ضلع مظفر پور ڈاک خانہ رائے پور سب ڈویژن سیتامڑھی مقام گوری دروازہ سرفراز علیخاں مرسلہ ایوب علی خاں صاحب ۲۱ ذی الحجہ ۱۳۱۸ھ زوج زید نے عقب میں زوجہ ہندہ کے بمقابلہ بکر کے سوگند کھائی کہ ہم اپنے برادر خالد سے کارِ زمینداری نہ کرائیں گے اگر کرائیں تو اس کی زوجہ کو طلاق ہے، بعد چند روز کے زید نے برادر موصوف سے کام مذکور کرایا اس صورت میں زوجہ ہندہ مطلقہ ہو گئی یا نہیں؟ اور اگر ہوگی تو کون سی دلیل مطلقہ ہونے کی ہے کیونکہ اللہ جل جلالہ نے اپنے کلامِ مجید فرقانِ حمید میں کسی جگہ ذکر اس قسم کی سوگند کا نہیں کیا، اگر بمجرد سوگند ہندہ مطلقہ ہوئی تو کون سی صورت نکاح قائم رہنے کی ہے، اور اس سوگند میں کفارہ ہے یا نہیں؟ فقط

الجواب: صورت مستفسرہ میں زوجہ پر ایک طلاق پڑ گئی، اس کی دلیل اجماعِ ائمہ دین کہ جب طلاق کسی شرط پر مشروط کی جائے تو اس شرط کے واقع ہو جانے سے واقع ہو جائے گی،

| في الهداية اذا اضافه الى شرط وقع عقيب الشرط مثل ان يقول لامرأته ان دخلت الدار فانت طالق |

ہدایہ میں ہے کہ اگر طلاق کو شرط کی طرف منسوب کیا ہو تو وہ شرط کے پائے جانے کے بعد واقع ہو گی، مثلاً یوں کہے "اگر تو گھر میں داخل ہوئی تو تجھے طلاق ہے" |

Fatawa Rizvia, Volume 13

And this is by consensus.[1] This rule is agreed upon. (T)

Rather, it is established from the noble verse "Divorce is twice" (Al-Baqarah 2:229) etc.,

For the verses mentioned divorce absolutely, so it includes both the immediate and the contingent. Because in the verses, absolute divorce is mentioned which includes both conditional and unconditional divorce. (T)

Calling it a 'Yamin' (oath) is a scholarly convention whose source is found in the noble verse: "O Prophet! Why do you prohibit what Allah has made lawful for you... Allah has already ordained for you [O believers] the dissolution of your oaths" (Al-Tahrim 66:1-2)[2]. (O Prophet - peace and blessings be upon you! Why do you make prohibited what Allah has made lawful for you, until the statement of Allah: Verily Allah has made it obligatory for you to dissolve your oaths. - T). It is inferred from this that here also it is the prohibition of the lawful, and in the verse, the prohibition of the lawful itself is called 'Yamin'.

As explained by the absolute researcher in 'Al-Fath' shortly before the chapter on oaths regarding entry and residence. I say: and for this weak servant here is a speech which I mentioned in its margin. As Researcher Ibn al-Humam stated in Fath al-Qadir a little before the chapter on entry and residence. I say (I state), here this weak servant has an objection which I have mentioned in its footnotes. (T)

Moreover, the application of 'Half' (swearing) to contingent divorce is also found in Hadith. Ibn Asakir narrates from Hazrat Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said:

No believer swears by divorce, and none is made to swear by it except a hypocrite.[3] A believer does not take an oath by divorce, and no one makes someone take an oath by divorce except a hypocrite. (T)

But there is no expiation (kaffara) in this oath as there is in an oath by Allah Almighty, nor will divorce occur merely by the oath, rather it will occur after the fulfillment of the condition. The way for the marriage to remain is for the condition not to occur, or if it is an oath of one or two revocable (raj'i) divorces, then after the condition occurs, he should take her back (raj'at). And Allah Almighty knows best.

[1] Al-Hidayah, Bab al-Aiman fi al-Talaq, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 2/365 [2] Kanz al-Ummal, referencing Ibn Asakir from Anas, Hadith 36450, Kitab al-Yamin, Section of Sayings, Muassasah al-Risalah Beirut, 9/289 [3] Kanz al-Ummal, referencing Ibn Asakir from Anas, Hadith 36450, Kitab al-Yamin, Section of Sayings, Muassasah al-Risalah Beirut, 9/289

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13

और यह सर्वसम्मति से है।[1] यह नियम सर्वसम्मति से है। (त)

बल्कि यह महान आयत "तलाक दो बार है" आदि से सिद्ध है,

क्योंकि आयतों में तलाक का उल्लेख पूर्ण रूप से किया गया है, इसलिए इसमें तात्कालिक और आकस्मिक (शर्तिया) दोनों शामिल हैं।

क्योंकि आयतों में पूर्ण तलाक का उल्लेख है जो शर्तिया और बिना शर्त दोनों प्रकार के तलाक को शामिल करता है। (त)

इसे 'यमीन' (शपथ) कहना एक विद्वत्तापूर्ण शब्दावली है जिसका स्रोत महान आयत में मिलता है: "ऐ नबी! जिसे अल्लाह ने आपके लिए हलाल किया है उसे आप क्यों हराम करते हैं?... अल्लाह ने आप (मोमिनों) के लिए आपकी शपथों का समाधान पहले ही निर्धारित कर दिया है।"[2] (ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह ने आपके लिए जो हलाल किया है उसे आप क्यों हराम करते हैं, अल्लाह के इस कथन तक: वास्तव में अल्लाह ने आपके लिए अपनी शपथों को हलाल करना अनिवार्य कर दिया है। - त) इससे यह स्पष्ट होता है कि यहाँ भी हलाल को वर्जित करना है, और आयत में हलाल को वर्जित करने को ही 'यमीन' कहा गया है।

जैसा कि शोधकर्ता (अल-मुहक्किक) ने अल-फ़तह में प्रवेश और निवास के बारे में शपथ के अध्याय से कुछ समय पहले स्पष्ट किया है। मैं कहता हूँ: और इस कमज़ोर सेवक की यहाँ कुछ बातें हैं जिन्हें मैंने इसके हाशिये पर उल्लेख किया है।

जैसा कि शोधकर्ता इब्न अल-हुमाम ने फ़तह अल-क़दीर में प्रवेश और निवास के अध्याय से थोड़ा पहले बताया है। मैं कहता हूँ, यहाँ इस कमज़ोर सेवक को एक आपत्ति है जिसका उल्लेख मैंने इसके हाशिये (नोट्स) में किया है। (त)

बल्कि तलाक पर शपथ का प्रयोग हदीस में भी आया है, इब्न असीर हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णन करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

कोई मोमिन तलाक की शपथ नहीं लेता, और कोई किसी से इसकी शपथ नहीं दिलवाता सिवाय मुनाफ़िक (पाखंडी) के।[3]

मोमिन तलाक की कसम नहीं खाता और तलाक की कसम नहीं लेता सिवाय मुनाफ़िक के। (त)

लेकिन इस शपथ में वैसा कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं है जैसा अल्लाह सर्वशक्तिमान की शपथ में होता है, न ही केवल शपथ लेने से तलाक होगा, बल्कि शर्त पूरी होने के बाद तलाक होगा। निकाह कायम रहने का तरीका यह है कि शर्त पूरी न हो या यदि यह एक या दो रजी (प्रतिसंहरणीय) तलाक की शपथ है, तो शर्त पूरी होने के बाद रुजू (वापसी) कर ले। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[1] अल-हिदाया, बाब अल-ऐमान फ़ी अल-तलाक, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची, 2/365 [2] कंज़ अल-उम्माल, इब्न असाकिर के हवाले से हज़रत अनस से, हदीस 36450, किताब अल-यमीन, मुअस्सस अल-रिसाला बेरुत, 9/289 [3] कंज़ अल-उम्माल, इब्न असाकिर के हवाले से हज़रत अनस से, हदीस 36450, किताब अल-यमीन, मुअस्सस अल-रिसाला बेरुत, 9/289

وھذا بالاتفاق.[1] یہ ضابطہ متفق علیہ ہے۔ (ت)

بلکہ وہ آیہ کریمہ الطلاق مرتن وغیرہ سے ثابت ہے،

فان الآیات ذکرت الطلاق بالاطلاق فشمل المنجز المعلق. کیونکہ آیات میں مطلق طلاق کا ذکر ہے جو مشروط اور غیر مشروط دونوں طلاق کو شامل ہے۔ (ت)

اسے سوگند یمین کہنا ایک اصطلاح علمی ہے جس کا پتا آیہ کریمہ یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ۬ۚ۱ تَبْتَغِیْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ۬ؕ۱ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۔ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَیْمَانِكُمْ۲ سے ملتا ہے۔ (اے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیک وسلم! اللہ تعالیٰ نے آپ کے لئے جو حلال فرمایا اسے آپ کیونکہ حرام فرماتے ہیں تا اللہ تعالیٰ کے ارشاد: بیشک اللہ تعالیٰ نے تمہارے لئے قسموں کو حلال فرمانا فرض فرمایا ہے۔ت) سے مستفاد ہوتا ہے کہ یہاں بھی تحریم حلال ہے اور آیت میں تحریم حلال ہی کو یمین فرمایا:

علی کما بینہ المحقق علی الاطلاق فی الفتح قبیل باب الیمین فی الدخول والسکنی اقول وللعبد الضعیف ھھنا کلام ذکرتہ علی ھامشہ. جیسا کہ محقق ابن ہمام نے فتح القدیر میں دخول وسکنی کے باب سے تھوڑا پہلے بیان فرمایا، اقول (میں کہتا ہوں) یہاں اس عبد ضعیف کو اعتراض ہے جس کو میں نے اس کے حاشیہ پر ذکر کیا ہے۔ (ت)

بلکہ تعلیق طلاق پر حلف کا اطلاق حدیث میں بھی وارد ہے، ابن عساکر حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

ماحلف بالطلاق مؤمن ولا استحلف به الامنافق۔[3] مومن طلاق کی قسم نہیں کھاتا اور طلاق کی قسم نہیں لیتا مگر منافق۔ (ت)

مگر اس سوگند میں کفارہ نہیں اللہ عزوجل کی قسم میں ہے نہ بمجرد سوگند طلاق واقع ہوگی بلکہ بعد وقوع شرط واقع ہوگی۔ نکاح قائم رہنے کی صورت یہ ہے کہ شرط واقع نہ ہو یا اگر ایک یا دو طلاق رجعی کی سوگند ہے تو بعد وقوع شرط رجعت کرلے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

[1] الہدایہ باب الایمان فی الطلاق المکتبۃ العربیہ کراچی ۲/ ۳۶۵ [2] کنز العمال بحوالہ ابن عسا کر عن انس حدیث ۳۶۴۵۰ کتاب الیمین من قسم الاقوال موسسۃ الرسالۃ بیروت ۹/ ۲۸۹ [3] کنز العمال بحوالہ ابن عسا کر عن انس حدیث ۳۶۴۵۰ کتاب الیمین من قسم الاقوال موسسۃ الرسالۃ بیروت ۹/ ۲۸۹

Fatawa Ridawiyya Volume 13, Page 13

Problem 4 to 6: From the state of Assam, Jorhat district, Katinga Post Office, Sarai Murasala Syed Safa-ud-din, 9th Rabi al-Awwal 1312 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say regarding these matters: Question 1: Before his marriage to his first wife, Hindah, Zaid made a promise that if he enters into a second marriage without the permission of this wife named Hindah, then the second wife shall have three divorces. What is the ruling in this situation? Question 2: At the time of marriage to his wife Hindah, Zaid made it a condition that if he enters into a second marriage without her permission, then she (the first wife) shall have three divorces. Question 3: Before marriage, Zaid made it a condition that if he enters into a second marriage without the permission of this wedded woman (Hindah), then his marriage (the second one) is void. In this situation, which wife will receive the divorce? Please explain and be rewarded.

The Answer: Answer to Question 1: O Allah, guide to the truth and rightness. (May guidance be granted for truth and correctness). In the inquired situation, the conditional divorce (Ta'liq) has become valid, [Arabic citation]: 'Because of the existence of the attribution (idafah) to the cause of ownership, which is marriage. It is not harmful if the attribution occurred before the marriage of the first wife, because it was not her divorce that was made conditional, which would have required ownership of her or attribution to her or to her cause. Rather, it is the divorce of the second woman that is made conditional, which was attributed to her marriage.' Urdu Translation of the Arabic: Due to the presence of attribution towards the cause of ownership (marriage), and the attribution occurring before the first wife's marriage is not harmful, because it was not this wife's divorce that was made conditional, such that marriage or attribution towards marriage or ownership, i.e., attribution towards the cause of marriage, would be necessary for her. Rather, this is the making conditional of the second woman's divorce, which has been attributed towards her marriage. (T)

It is in Durr-e-Mukhtar: [Arabic citation]: 'Its condition is real ownership like a slave, or legal ownership like a wedded wife or one in her waiting period (iddah), or attribution to ownership, such as saying "If I become the owner of a slave" or "If I become your owner" or "If I marry you".' (Summarized). Urdu Translation of the Arabic: The condition for the establishment of Ta'liq is real ownership, such as a slave-girl, or legal ownership, such as a wedded wife or a wife observing the iddah

period, or attribution towards ownership, for example saying, "If I become the owner of a servant" or "If I become your owner" or "If I marry you". (Summarized). (T)

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Ta'liq, Mujtabai Press Delhi, 1/230. Page 103 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

मसला ४ से ६: असम राज्य के जोरहाट जिले, डाकखाना कटिंगा, सराय मुरसला सैयद सफाउद्दीन से, ९ रबी अल-अव्वल १३१२ हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इन मसलों में क्या फरमाते हैं: प्रश्न १: ज़ैद ने अपनी पहली पत्नी हिंदा से निकाह से पहले वादा किया था कि यदि मैं हिंदा नामक इस पत्नी की अनुमति के बिना दूसरा निकाह करूँतो दूसरी पत्नी को तीन तलाक होंगे। इस स्थिति में क्या हुक्म है? प्रश्न २: निकाह के समय ज़ैद ने अपनी पत्नी हिंदा से यह शर्त रखी कि यदि मैं तुम्हारी अनुमति के बिना दूसरा निकाह करूँतो तुम्हें तीन तलाक होंगे। प्रश्न ३: निकाह से पहले ज़ैद ने यह शर्त रखी कि यदि मैं इस विवाहित महिला की अनुमति के बिना दूसरा निकाह करूँतो मेरा निकाह बातिल (अमान्य) होगा। इस स्थिति में किस बीवी को तलाक होगा? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: प्रश्न १ का उत्तर: ऐ अल्लाह, सत्य और सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन फरमा। (सत्य और सही के लिए मार्गदर्शन माँगा गया है)। पूछी गई स्थिति में तलाक को शर्त पर लटकाना (ता'लीक़) सही हो गया है, [अरबी पाठ]: 'स्वामित्व के कारण यानी निकाह की ओर इसका संबंध (इज़ाफ़त) पाया गया है। और पहली पत्नी के निकाह से पहले इस संबंध का होना हानिकारक नहीं है क्योंकि उस (पहली) पत्नी के तलाक को शर्त पर नहीं लटकाया गया था जिसके लिए उसका स्वामित्व या उससे संबंधित होना या उसके कारण की आवश्यकता होती। बल्कि यह दूसरी महिला के तलाक की ता'लीक़ है जिसे उसके निकाह की ओर संदर्भित किया गया है।' अरबी का उर्दू अनुवाद: स्वामित्व के कारण (निकाह) की ओर इज़ाफ़त पाए जाने की वजह से और पहली बीवी के निकाह से पहले इज़ाफ़त का होना हानिकारक नहीं क्योंकि इस निकाह वाली की तलाक को शर्त पर नहीं लटकाया गया ताकि उसके लिए निकाह या निकाह की तरफ इज़ाफ़त या मल्कियत यानी निकाह के सबब की तरफ इज़ाफ़त ज़रूरी हो, बल्कि ये दूसरी औरत की तलाक की ता'लीक़ है जिसको उसके निकाह की तरफ मज़ाफ़ किया गया है। (त)

दुर-ए-मुख्तार में है: [अरबी पाठ]: 'इसकी शर्त वास्तविक स्वामित्व है जैसे दासी, या कानूनी स्वामित्व जैसे विवाहित पत्नी या इद्दत वाली पत्नी, या स्वामित्व की ओर संबंध होना, जैसे कोई कहे कि "यदि मैं किसी दास का स्वामी बन जाऊँ या "तुम्हारा स्वामी बन जाऊँ या "तुमसे निकाह करूँ।' (संक्षेप में)। अरबी का उर्दू अनुवाद: ता'लीक़ की पुष्टि के लिए शर्त वास्तविक स्वामित्व है जैसे दासी, या कानूनी स्वामित्व जैसे विवाहित पत्नी या इद्दत में व्यस्त पत्नी, या स्वामित्व की ओर इज़ाफ़त हो,

उदाहरण के लिए कहे कि 'अगर मैं किसी बंदे का मालिक बन जाऊँ या 'तुम्हारा मालिक बन जाऊँ या 'तुमसे निकाह करूँ (संक्षेप में) (त)

1. दुर-ए-मुख्तार, ता'लीक़ का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/२३० पृष्ठ ६८८ का १०३

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

مسئلہ ۴ تا ۶: از ملک آسام ضلع جورہاٹ ڈاک خانہ کٹنگا بمقام سرائے مرسلہ سید صفاء الدین ۹ ربیع الاول ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین ان مسائل میں: سوال اول: زید نے اپنی پہلی زوجہ ہندہ کے نکاح کے قبل وعدہ کیا تھا کہ اگر بلا اجازت اس زوجہ مسمی بہ ہندہ کے نکاح ثانی کروں تو زوجہ ثانی کو تین طلاق، اس صورت میں کیا حکم ہے؟ سوال دوم: زید نے وقت نکاح اپنی زوجہ ہندہ سے یہ شرط کی کہ اگر بلا اجازت تیرے نکاح ثانی کروں تو تجھ کو تین طلاق۔ سوال سوم: زید نے قبل نکاح کے یہ شرط کی کہ میں اگر بلا اجازت اس منکوحہ کے نکاح ثانی کروں تو میرا نکاح باطل، اس صورت میں کس بی بی کو طلاق ہوگی؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جواب سوال اول: اللھم ھدایۃ الحق والصواب (حق وصواب کے لئے رہنمائی فرما ت) صورت مستفسرہ میں تعلیق صحیح ہو گئی، لوجود الاضافۃ الی سبب الملك وھو النکاح ولا یضر کونہ قبل نکاح الاولی اذلیس المعلق طلاقھا حتی یحتاج الی ملکھا اوالاضافۃ الیہ او الی سببہ بل طلاق الاخری وقد اضافہ الی نکاحھا۔ ملکیت کے سبب (نکاح) کی طرف اضافت پائے جانے کی وجہ سے اور پہلی بیوی کے نکاح سے قبل اضافت کا ہونا مضر نہیں کیونکہ اس نکاح والی کی طلاق کو معلق نہیں کیا گیا تاکہ اس کے لئے نکاح یا نکاح کی طرف اضافت یا ملکیت یعنی نکاح کے سبب کی طرف اضافت ضروری ہو بلکہ یہ دوسری عورت کی طلاق کی تعلیق ہے جس کو اس کے نکاح کی طرف مضاف کیا گیا ہے۔ (ت)

درمختار میں ہے: شرطہ الملك حقیقۃ کقنہ اوحکما کمنکوحتہ او معتدتہ اوالاضافۃ الی الملك کان ملکت عبدا و ملکتك او نکحتك اھ ملخصاً۔ ثبوت تعلیق کی شرط حقیقی ملکیت جیسا کہ لونڈی، یا حکمی

ملکیت جیسا کہ منکوحہ بیوی یا عدت میں مصروف بیوی یا ملکیت کی طرف اضافت ہو، مثلاً یوں کہے اگر میں عبد کا مالک بن جاؤں یا تیرا مالک بن جاؤں یا تجھ سے نکاح کروں اھ ملخصاً (ت)

1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۰ Page 103 of 688

Fatawa Razawiyyah Volume 13 13

It is mentioned in Radd al-Muhtar:

[Box 1] Left (Arabic): Reference to it is by making it conditional without ownership as exemplified, and like his saying "if you become my wife," or due to the cause of ownership such as marriage, i.e., marrying, and like buying. — 1 Right (Urdu): Attributing to ownership, such as making it conditional with ownership as the example was given; and that "if you become my wife" or the attribution is towards the cause of ownership, i.e., reference to marriage, for example, if he says, "when I marry, or purchase". (T)

But before the marriage with Hindah, it has no effect because the condition is that marriage which is subsequent to the marriage with Hindah. So if he marries any woman without Hindah's permission before marrying Hindah, she will not be divorced. Nor will its effect remain after Hindah's death because the condition is Hindah's permission, and a deceased person is not capable of giving permission. Therefore, if he marries anyone after Hindah's death, no divorce will occur on her either; now that suspension (of divorce) no longer remains.

[Box 2] Left (Arabic): For the possibility of fulfillment is also a condition for the continuation of the oath according to the two Imams (Abu Hanifa and Muhammad), just as it is a condition for its inception according to them (may Allah be pleased with them both). Right (Urdu): Because the possibility of fulfilling an oath is a condition for the continuation of the oath according to Imam Azam and Imam Muhammad (may Allah be pleased with them), just as the possibility is a condition for the realization of the oath according to them. (T)

It is mentioned in Fath al-Qadir:

[Box 3] Left (Arabic): If he swears that he will not give it to him until so-and-so gives permission, then so-and-so dies, then he gives it, he does not violate his oath. — 2 The same is in Radd al-Muhtar from Al-Bahr. Right (Urdu): When someone takes an oath that "I will not give this thing to so-and-so until another person (so-and-so) gives permission," and gives it after the death of the other person, the oath will not be broken. The same is quoted in Radd al-Muhtar from Al-Bahr. (T)

Yes, the continuation of marriage with Hindah is not a condition here, to the extent that even if Hindah leaves his marriage, even if by a final (mughallazah) divorce, as

long as she is alive, if he marries a second wife without her permission, three divorces will occur on the second wife.

[Box 4] Left (Arabic): For indeed, the woman has no authority over her husband. Right (Urdu): No command of the woman is binding upon the husband, for the husband.

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Suspension, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/495
2. Fath al-Qadir

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

रद्द अल-मुह्तार में है:

[बॉक्स 1] बायाँ (अरबी): अल-इज़ाफ़ा इलैहि बय-अन् यकूँअ मुअल्लक़न् बिला मिल्किन् कमा मत्तल-अ व क़ौलिहि इन् सिर्तु ज़ौजतन ली औ बिसबबिल् मिल्कि कल्-निकाहि अयित्-तज़व्वुजि व कशीराइ। — १ दायाँ (उर्दू): मिल्कियत की तरफ़ इज़ाफ़त जैसे मिल्कियत के साथ मुअल्लक करना जैसा कि मिसाल बयान हुई और यह कि अगर तू मेरी बीवी हो जाए या मिल्कियत के सबब की तरफ़ इज़ाफ़त हो यानी निकाह की तरफ़ निस्बत हो, मसलन यूँ कहे "जब मैं निकाह करूँया ख़रीदूँ"। (त)

मगर हिंदा के निकाह से पहले इसके लिये कुछ असर नहीं कि शर्त वह निकाह है जो निकाह-ए-हिंदा से सानी (दूसरा) हो। पस अगर पेश-अज़ (पहले) निकाह-ए-हिंदा किसी औरत से बे-इजाज़त-ए-हिंदा निकाह करेगा उसे तलाक़ न होगी, न बाद मौत-ए-हिंदा इसका असर बाकी रहेगा कि शर्त इज़्न-ए-हिंदा (हिंदा की इजाज़त) है और मय्यत सालेह (सक्षम) इज़्न नहीं। तो बाद मौत-ए-हिंदा जिससे निकाह करेगा उस पर भी तलाक़ न होगी, अब वह तालीक़ ही न रही।

[बॉक्स 2] बायाँ (अरबी): फ़-इन्न इमकानल् बिर्रि शर्तु बक़ाइल यमीनि ऐज़न् इंदत् तरफ़ैनी कमा हु-व शर्तु इनइक़ादिहा इंदहुमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। दायाँ (उर्दू): क्योंकि क़सम के पूरा होने का इमकान (संभावना) क़सम के बाकी रहने के लिये भी इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद रज़ी अल्लाह अन्हुमा के नज़दीक इसी तरह शर्त है जिस तरह कि उनके यहाँ यह इमकान क़सम के तहक्कुक़ के लिये शर्त है। (त)

फ़तह अल-क़दीर में है:

[बॉक्स 3] बायाँ (अरबी): इज़ा हलफ़ ला युअतियहु हत्ता याज़-न फ़ुलानुन् फ़-मात फ़ुलानुन् थुम्म अअताहु लम यहनथ्। — २ मिस्लुहु फ़ी रद्दुल मुहतार अनिल बहर। दायाँ (उर्दू): जब किसी ने यह क़सम उठाई कि मैं फ़लाँ को यह चीज़ न दूँगा जब तक दूसरा फ़लाँ इजाज़त न दे, और दूसरे फ़लाँ के फ़ौत (मृत्यु) हो जाने के बाद दे तो क़सम न टूटेगी। इसी की मिस्ल (तरह) रद्द अल-मुह्तार में बहर से मन्क़ूल (उद्धृत) है। (त)

हाँ, बक़ा (निरंतरता) में निकाह-ए-हिंदा कुछ शर्त नहीं यहाँ तक कि अगर हिंदा उसके निकाह से ख़ारिज हो जाए, अगरचे तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (कठोर तलाक) से, ता-हम जब तक वह ज़िंदा है अगर बे

उसके इज़्न (इजाज़त) के निकाह-ए-सानी (दूसरा विवाह) करेगा ज़ौजा-ए-सानिया (दूसरी पत्नी) पर तीन तलाक़ें पड़ जाएँगी।

[बॉक्स 4] बायाँ (अरबी): फ़-इन्नल् मर-अत ला हुक्म लहा अला बाअलिन् दायाँ (उर्दू): औरत का कोई हुक्म खाविंद पर लाज़िम नहीं, खाविंद के लिये।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-तालीक़, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/४९५
2. फ़तह अल-क़दीर

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

ردالمحتار میں ہے :

[Box 1] الاضافة اليه بأن يكون معلقا بلاملك كما مثل وكقوله ان صرت زوجة لی او بسبب الملك كالنكاح ای التزوج وكالشراء اھ 1 ۔ ملکیت کی طرف اضافت جیسے ملکیت کے ساتھ معلق کرنا جیسا کہ مثال بیان ہوئی اور یہ کہ اگر تو میری بیوی ہو جائے یا ملکیت کے سبب کی طرف اضافت ہو یعنی نکاح کی طرف نسبت ہو، مثلاً یوں کہے "جب میں نکاح کروں، یا خریدوں " اھ (ت)

مگر قبل نکاح ہندہ اس کے لئے کچھ اثر نہیں کہ شرط وہ نکاح ہے جو نکاح ہندہ سے ثانی ہو پس اگر پیش از نکاح ہندہ کسی عورت سے بے اجازت ہندہ نکاح کرے گا اسے طلاق نہ ہو گی نہ بعد موت ہندہ اس کا اثر باقی رہے گا کہ شرط اذن ہندہ ہے اور میت صالح اذن نہیں تو بعد موت ہندہ جس سے نکاح کرے گا اس پر بھی طلاق نہ ہوگی اب وہ تعلیق ہی نہ رہی،

[Box 2] فان امكان البر شرط بقاء اليمين ايضا عند الطرفين كما هو شرط انعقادها عندهما رضی اللہ تعالٰی عنهما۔ کیونکہ قسم کے پورا ہونے کا امکان قسم کے باقی رہنے کیلئے بھی امام اعظم اور امام محمد رضی اللہ عنہما کے نزدیک اسطرح شرط ہے جس طرح کہ ان کے ہاں یہ امکان قسم کے تحقق کے لئے شرط ہے (ت)

فتح القدیر میں ہے :

[Box 3] اذا حلف لايعطيه حتی يا ذن فلان فمات فلان ثم اعطاه لم يحنث اھ 2 مثلہ فی ردالمحتار عن البحر۔ جب کسی نے یہ قسم اٹھائی کہ میں فلاں کو یہ چیز نہ دوں گا جب تک دوسرا فلاں

اجازت نہ دے، اور دوسرے فلاں کے فوت ہو جانے کے بعد دے تو قسم نہ ٹوٹے گی اھ اسی کی مثل رد المحتار میں بحر سے منقول ہے (ت)

ہاں بقاء میں نکاح ہندہ کچھ شرط نہیں یہاں تک کہ اگر ہندہ اس کے نکاح سے خارج ہوجائے اگرچہ طلاق مغلظہ سے ، تاہم جب تک وہ زندہ ہے اگر بے اس کے اذن کے نکاح ثانی کرے گا زوجہ ثانیہ پر تین طلاقیں پڑ جائیں گی،

[Box 4] فان المراۃ لاحکم لھا علی بعل عورت کا کوئی حکم خاوند پر لازم نہیں ، خاوند کے لئے

1 ردالمحتار باب التعلیق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۹۵ 2 فتح القدیر

Fatawa Razawiyya Volume 13

[Table Top Left - Arabic]: The state of marriage and its absence are equal. In contrast, for a wife, the husband's command is mandatory because she is Sharia-obligated to seek his permission for going out and other matters as long as the marriage bond remains. Thus, a husband's statement like "Do not go out without my permission" refers to that customary and Sharia-established restriction. However, she [the wife] does not require his permission except through conditional phrasing (ta'liq), and as he did not specify further, her permission remains a requirement as long as she is alive, even if the marriage ends.

[Table Top Right - Urdu]: The states of being married or not are both equal; conversely, the husband's command is binding upon the wife because, according to Sharia, she is dependent on the husband's permission for going out and other matters as long as the marriage lasts. When a husband tells his wife not to go out without his permission, it is a restriction based on custom and Sharia rules. However, the husband is not dependent on the wife's permission for anything except in cases of conditional oaths (ta'liq). Since the husband did not specify any details here, even after the marriage ends, as long as the wife is alive, if he marries another woman without her permission, the second wife will be divorced. (T)

In Radd al-Muhtar, Chapter of Oaths in Assault and Killing, it is stated:

[Table Middle Left - Arabic]: If he said to his wife, "Every woman I marry without your permission is divorced," and then he gave his wife a final (ba'in) or triple divorce and subsequently married without her permission, the [new] wife is divorced because his oath was not restricted to the continuation of the marriage. Such restriction or prohibition only applies through the marriage contract, as mentioned in Al-Fath. This is unlike the husband, who gains the authority of granting permission through the contract, much like a creditor, as stated in Al-Dhakhira.

[Table Middle Right - Urdu]: If a husband said to his wife, "Whichever woman I marry without your permission, she shall be divorced," and then the husband gave his wife a final divorce (talaq-e-ba'in) or three divorces, and after that he married another woman without the first wife's permission, then divorce will occur. This is because he did not restrict the requirement for permission to the duration of the marriage in his oath. This permission would have been restricted to the marriage only if the woman had gained the authority to grant or deny permission by virtue of her marriage contract, as stated in Al-Fath. That is, conversely, a husband automatically gains

authority of permission through marriage, just as a creditor automatically gains authority over the debtor (to demand payment whenever he wishes), as stated in Al-Dhakhira. (T)

The summary of the ruling is that if after marrying Hind, while Hind is alive, a divorce [is given] to Hind, and without Hind's permission [someone else is married]...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Oaths in Assault and Killing, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/362. Page 105 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 13

[तालिका ऊपर बाईं ओर - अरबी]: वैवाहिक स्थिति और उसकी अनुपस्थिति दोनों समान हैं। इसके विपरीत, पत्नी के लिए पति की आज्ञा अनिवार्य है क्योंकि पत्नी बाहर जाने और अन्य मामलों में शरीयत के अनुसार पति की अनुमति की मोहताज है जब तक वैवाहिक संबंध शेष है। अतः पति का यह कहना कि "मेरी अनुमति के बिना बाहर मत निकलो" उस प्रथागत और शरई नियम की ओर संकेत है। हालाँकि, उसे (पत्नी को) तालीक़ (शर्त) के अलावा उसकी अनुमति की आवश्यकता नहीं है, और चूँकि उसने कोई विस्तार नहीं बताया, इसलिए उसकी अनुमति तब तक आवश्यक रहेगी जब तक वह जीवित है, भले ही निकाह समाप्त हो जाए।

[तालिका ऊपर दाईं ओर - उर्दू]: वैवाहिक स्थिति और उसकी अनुपस्थिति दोनों हाल बराबर हैं। इसके विपरीत पत्नी के लिए पति का हुक्म लाज़िम है क्योंकि पत्नी बाहर निकलने और अन्य मामलों में शरीयत के अनुसार पति की अनुमति की मोहताज है जब तक वैवाहिक संबंध बाकी है। पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि "मेरी इजाज़त के बिना बाहर न निकलना" एक प्रथागत और शरई नियम की पाबंदी है। लेकिन पति तालीक़ के सिवा पत्नी की किसी इजाज़त का मोहताज नहीं है। और यहाँ पति ने कोई तफ़सील (विस्तार) बयान नहीं की, इसलिए निकाह खत्म होने के बाद भी पत्नी के जीवन भर उसकी इजाज़त के बिना दूसरी औरत से निकाह करने पर दूसरी औरत को तलाक हो जाएगा। (त)

रद अल-मुह्तार, प्रहार और हत्या में शपथ का अध्याय में है:

[तालिका मध्य बाईं ओर - अरबी]: यदि उसने अपनी पत्नी से कहा, "हर वह महिला जिससे मैं तुम्हारी अनुमति के बिना निकाह करूँउसे तलाक है," फिर उसने अपनी पत्नी को तलाक-ए-बाइन या तीन तलाक दे दिए और उसके बाद उसकी अनुमति के बिना निकाह किया, तो वह (नई पत्नी) तलाकशुदा हो जाएगी क्योंकि उसकी शपथ निकाह के बने रहने तक सीमित नहीं थी। ऐसी पाबंदी या मनाही केवल निकाह अनुबंध के माध्यम से लागू होती है, जैसा कि अल-फ़तह में उल्लेखित है। यह पति के विपरीत है, जिसे अनुबंध के माध्यम से अनुमति देने का अधिकार प्राप्त होता है, ठीक उसी तरह जैसे ऋणदाता को, जैसा कि अल-ज़खीरा में कहा गया है।

[तालिका मध्य दाईं ओर - उर्दू]: अगर शौहर ने बीवी से कहा कि मैं जिस औरत से भी तेरी इजाज़त के बिना निकाह करूँ तो उसे तलाक होगी, अब शौहर ने बीवी को तलाक-ए-बाइन या तीन तलाकें दे

दीं, इसके बाद उसने किसी औरत से पहली बीवी की इजाज़त के बिना निकाह किया तो तलाक वाक़े (प्रभावी) हो जाएगी क्योंकि उसने अपनी कसम में इजाज़त को बीवी के निकाह से मुक़ैयद (सीमित) न किया था। और यह इजाज़त निकाह के साथ तभी सीमित होती जब औरत अपने निकाह के कारण इजाज़त या मनाही की विलायत (अधिकार) हासिल करती, जैसा कि अल-फ़तह में है। यानी इसके बरअक्स (विपरीत) शौहर को निकाह की वजह से इजाज़त का अधिकार खुद-ब-खुद हासिल हो जाता है, और ऐसे ही कर्ज देने वाले को कर्ज लेने वाले पर अधिकार हासिल हो जाता है (कि जब चाहे मुतालबा/मांग करे) जैसा कि ज़खीरा में है। (त)

नतीजा यह है कि अगर हिंद से निकाह के बाद, हिंद की ज़िंदगी में, उसे तलाक देने के बाद, बिना हिंद की इजाज़त के किसी...

1. रद अल-मुह्तार, प्रहार और हत्या में शपथ का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/362। पेज 105 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد تیرہ دہم

فحال الزوجیۃ وعدمہا سواء بخلاف الرجل فانہا تحتاج شرعاً الی اذنہ فی خروجہا وغیرہ من امور کثیرۃ مادامت الوصلۃ باقیۃ فاذن الرجل فی مثل قولہ لاتخرج الاباذنی ینصرف الی ذلك المعہود والثابت بالشرع اماہی فلم تحتج الی اذنہا الا بالتعلیق ولم یفصل فیہ فینتظم اذنہا مادامت حیۃ وان زال النکاح۔

زوجیت اور عدم زوجیت دونوں حال برابر ہیں، اس کے برخلاف بیوی کے لئے خوند کا حکم لازم ہے کیونکہ بیوی باہر نکلنے اور دیگر امور میں خاوند کی اجازت کی شرعاً محتاج ہے جب تک زوجیت باقی ہے تو خوند کا بیوی کو یہ کہنا کہ تو میری اجازت کے بغیر باہر نہ نکل اسی عرف اور شرعی ضابطہ کی طرف سے پابندی ہے ، لیکن خاوند تعلیق کے ماسوا بیوی کی کسی اجازت کا محتاج نہیں ہے اور یہاں خوند نے کوئی تفصیل بیان نہیں کی ، لہٰذا بیوی سے نکاح ختم ہو جانے کے بعد بھی خاوند بیوی کی زندگی بھر میں اجازت کے بغیر دوسری عورت سے نکاح کرے گا تو دوسری کو طلاق ہو جائیگی۔ (ت)

رد المحتار باب الیمین فی الضرب والقتل میں ہے:

لو قال لامرأتہ کل امرأۃ اتزوجہا بغیر اذنك فطالق فطلق امرأتہ طلاقاً بائناً او ثلاثاً ثم تزوج بغیر اذنہا، طلقت لانہ لم یتقید یمینہ ببقاء النکاح لانہا انما تتقید والمنع بعقد النکاح اھ فتح ای بخلاف الزوج فانہ یستفید ولایۃ الاذن بالعقد وکذا رب الدین کما فی الذخیرۃ۔

اگر خاوند نے بیوی کو کہا میں جس عورت سے بھی تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں تو اس کو طلاق ہو گی ، اب خاوند نے بیوی کو طلاق بائنہ یا تین طلاقیں دے دیں اس کے بعد اس نے کسی

عورت سے پہلی بیوی کی اجازت کے بغیر نکاح کیا تو طلاق واقع ہو جائیگی کیونکہ اس نے قسم میں اجازت کو بیوی کے نکاح سے مقید نہ کیا تھا، اور یہ اجازت نکاح کے ساتھ مقید تب ہوتی جب عورت اپنے نکاح کی وجہ سے اذن یا منع کی ولایت حاصل کرتی اھ ، فتح میں ہے ، یعنی اس کے برخلاف خوند کو نکاح کی وجہ سے ولایت اذن خود بخود حاصل ہو جاتی ہے ، اور ایسے قرض دینے والے کو خود بخود قرض لینے والے پر ولایت حاصل ہو جاتی (کہ جب چاہے مطالبہ کرے) جیسا کہ ذخیرہ میں ہے۔ (ت)

پس حاصل حکم یہ کہ اگر بعد نکاح ہندہ بحالت حیات ہندہ طلاق ہندہ بے اذن ہندہ کسی

1 ردالمحتار باب الیمین فی الضرب والقتل دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۳۶۲ Page 105 of 688

When he marries the woman, immediately upon marriage, that second wife will be divorced with three divorces. However, its effect will be exhausted once. That is, if after that he marries again without the permission of Hinda, even if it is with the same second wife after Halala, then no divorce will occur. This is because there was no generalization in the conditional statement (Ta'liq) such that divorce would occur in every marriage performed without permission. Therefore, it will conclude after the first instance and will have no future effect.

[Box 1] (Arabic): In Al-Tanwir, the oath is dissolved when the condition is met once, except in 'kullama' (whenever). And Allah Almighty knows best. (Urdu): It is stated in Tanwir that an oath is terminated upon the fulfillment of the condition once, unless the word "kullama" (whenever/every time) was used in the oath, in which case the oath would not end. And Allah Almighty knows best.

Answer to the second question: If this condition was made before the 'Ijab and Qabul' (proposal and acceptance), even if the 'Ijab and Qabul' occurred immediately after it without any interval, then it is purely void and ineffective due to the absence of both ownership and attribution (to the woman) at that time. (Note: Because there was no ownership and no attribution towards her). Thus, if he marries a hundred times without Hinda's permission, Hinda will not be divorced. And if it (the condition) occurred after 'Ijab and Qabul', even if immediately, then it is certainly valid because it occurred within ownership. (Note: Due to its occurrence in ownership). Now, as long as Hinda is in his marriage or in the waiting period ('iddat) of a non-irrevocable (ghair-mughallazah) divorce, if he marries a second time without her permission, three divorces will occur on Hinda.

[Box 2] (Arabic): In Al-Durr al-Mukhtar: Explicit divorce follows explicit and irrevocable divorce, on the condition of the waiting period: Explicit is that which does not require intention, irrevocable like what occurs through it and 'fath' (annulment), thus triple divorce belongs to them. Ends summarized. (Urdu): It is stated in Durr-e-Mukhtar: Explicit (Sarih) divorce can follow both explicit and irrevocable (Ba'inah) divorce, provided it occurs within the waiting period of the first irrevocable divorce. Explicit is that which does not require intention, whether it results in a revocable (Raj'i) or irrevocable divorce. 'Fath' (annulment/breaking) belongs to this category, such as triple (Mughallazah) divorce. So, it can follow both revocable and irrevocable divorces. Summarized. (Note)

Yes, if before this second marriage, he gave Hinda one or two divorces and the waiting period passed, and in that state when she is out of his marriage, he performed a second marriage without her permission, then no divorce will occur on Hinda. In this state, she is not a subject (Mahall) for divorce. And with this second marriage, that condition (Ta'liq) will end. To the extent that if he remarries Hinda later, and after that performs any number of marriages without Hinda's permission, she will not be divorced. Similarly...

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Ta'liq, Matba' Mujtabai Delhi, 1/231
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Kinayat, Matba' Mujtabai Delhi, 1/225

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | पृष्ठ 13

वह औरत से निकाह करेगा तो निकाह करते ही फ़ौरन वह दूसरी पत्नी तीन तलाक़ों से तलाक़शुदा हो जाएगी, मगर इसका प्रभाव एक बार में ख़त्म हो जाएगा। यानी इसके बाद अगर फिर और निकाह बिना हिन्दा की अनुमति के करेगा, चाहे हलाला के बाद उसी दूसरी पत्नी से ही क्यों न हो, तो अब तलाक़ नहीं होगी क्योंकि उस शर्त (तअलीक़) में व्यापकता नहीं थी कि जितने भी निकाह बिना अनुमति के करे उन सबमें तलाक़ हो जाए। इसलिए सिर्फ़ एक बार पर समाप्त होकर भविष्य में कोई प्रभाव नहीं डालेगी।

[बॉक्स 1] (अरबी): फ़ित-तन्वीर यनहल्लुल यमीनु इज़ा वोजिदश-शर्तो मर्रतन इल्ला फ़ी 'कुल्लमा'। वल्लाहु तआला आलम। (उर्दू): तन्वीर में है कि शर्त के एक बार पाए जाने से क़सम ख़त्म हो जाती है, सिवाय इसके कि उसने क़सम में 'कुल्लमा' (जब भी) शब्द का प्रयोग किया हो, तो क़सम ख़त्म नहीं होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

दूसरे सवाल का जवाब: अगर यह शर्त ईजाब व क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) से पहले की है, चाहे उसके तुरंत बाद ही ईजाब व क़बूल क्यों न हुआ हो, तो यह पूरी तरह से बातिल और निष्प्रभावी है क्योंकि उस समय न तो मिल्कियत (स्वामित्व) थी और न ही उसकी ओर निस्बत (सम्बन्ध)। (नोट: मिल्कियत और उसकी तरफ़ निस्बत दोनों न होने की वजह से)। अतः अगर वह बिना हिन्दा की अनुमति के सौ निकाह भी कर ले, तो हिन्दा पर तलाक़ नहीं होगी। और अगर ईजाब व क़बूल के बाद की शर्त है, चाहे फ़ौरन ही क्यों न हो, तो यक़ीनन सही है क्योंकि यह मिल्कियत के दौरान हुई। (नोट: मिल्कियत में वुक़ू की वजह से)। अब जब तक हिन्दा उसके निकाह में है या ग़ैर-मुग़ल्लज़ा (हल्की) तलाक़ की इद्दत में है, अगर वह बिना हिन्दा की अनुमति के दूसरा निकाह करेगा, तो हिन्दा पर तीन तलाक़ें हो जाएँगी।

[बॉक्स 2] (अरबी): फ़िद-दुर्रिल मुख़्तार: अस्सरीहो यलहकुस्स-सरीह वल-बाइन बिशर्तिल इद्दह: अस्सरीहो मा ला यहताजु इला निय्यतिन, बाइनकनिल व़ाक़ेअ बिही अव जअ़बन फ़त्हुन फ़मिन्हुत्तलाकुस्सलासु फ़यलहकुहुमा अह् मुलख़्ख़सन। (उर्दू): दुर्रे मुख़्तार में है: स्पष्ट (सरीह) तलाक़, स्पष्ट और बाइनह (अंतिम) तलाक़ के बाद हो सकती है बशर्ते वह पहली बाइनह की इद्दत के दौरान हो। स्पष्ट वह है जिसमें नीयत की ज़रूरत न हो, चाहे उससे रजई (वापसी योग्य) तलाक़ हो या

बाइनह। 'फ़त्ह' (तोड़ना/निरस्त करना) इसी श्रेणी से है जैसे मुग़ल्लज़ा (सख़्त) तलाक़ है, तो यह रजई और बाइनह दोनों के बाद हो सकती है। संक्षेप में। (नोट)

हाँ, अगर इस दूसरे निकाह से पहले हिन्दा को एक या दो तलाक़ें दे दीं और इद्दत गुज़र गई, और इस हालत में जब वह उसके निकाह से बाहर है, उसने बिना उसकी अनुमति के दूसरा निकाह किया, तो हिन्दा पर तलाक़ नहीं होगी क्योंकि उस हालत में वह तलाक़ का पात्र (महल) ही नहीं है। और इस दूसरे निकाह से वह शर्त (तअलीक़) ख़त्म हो जाएगी, यहाँ तक कि अब अगर हिन्दा से फिर निकाह करे और उसके बाद कितने ही निकाह बिना हिन्दा की अनुमति के करे, तो हिन्दा पर तलाक़ नहीं होगी, इसी प्रकार...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब-उल-तअलीक़, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/231
2. दुर्रे मुख़्तार, बाब-उल-किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/225

पृष्ठ 106 का 688

عورت سے نکاح کرے گا تو نکاح کرتے ہی فوراً وہ زوجہ ثانی تین طلاقوں سے مطلقہ ہو جائے گی مگر اس کا اثر ایک بار پر ختم ہو جائے گا یعنی اس کے بعد اگر پھر اور نکاح بے اذن ہندہ کرے گا اگر چہ بعد حلالہ اسی زوجہ ثانیہ سے، تو اب طلاق نہ ہوگی کہ تعلیق میں تعمیم نہ تھی کہ جتنے نکاح بے اذن کرے سب میں طلاق پڑے، لہذا صرف ایک بار پر انتہا ہو کر آئندہ کچھ اثر نہ ڈالے گی،

[باکس 1] فی التنویر ینحل الیمین اذاوجد الشرط مرۃ الافی کلماً ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ تنویر میں ہے کہ قسم ایک دفعہ شرط کے پائے جانے سے ختم ہو جاتی ہے الایۃ کہ اس نے قسم میں "کلما" (جب بھی) کا لفظ استعمال کیا ہو تو قسم ختم نہ ہو گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

جواب سوال دوم: اگر یہ شرط ایجاب و قبول سے پہلے کی اگرچہ اس کے متصل بلا فصل ہی ایجاب و قبول واقع ہوئے جب تو محض باطل وبے اثر ہے لعدم الملك والاضافة جمیعاً (ملکیت اور اس کی طرف اضافت بھی نہ ہونے کی وجہ سے۔ ت) پس اگر سو نکاح بے اجازت ہندہ کرے گا ہندہ پر طلاق نہ ہو گی اور اگر بعد ایجاب و قبول کی اگرچہ فوراً بلا تاخیر تو یقیناً صحیح ہو گئی لوقوعہ فی الملك (ملکیت میں وقوع کی وجہ سے۔ ت) اب جب تک ہندہ اس کے نکاح یا عدت طلاق غیر مغلظ میں بے اجازت ہندہ نکاح ثانی کرے گا ہندہ پر تین طلاقیں ہو جائیں گی۔

[باکس 2] فی الدرالمختار الصریح یلحق الصریح والبائن بشرط العدۃ : الصریح مالایحتاج الی نیۃ، بائنکان الواقع بہ اور جعباً فتح فمنه الطلاق الثلاث فیلحقهما اه ملخصاً ۔ در مختار میں ہے : صریح طلاق، صریح اور بائنہ کو لاحق ہو سکتی ہے بشرطیکہ وہ پہلی بائن کی عدت میں واقع ہو۔ صریح

وہ ہوتی ہے جس میں نیت کی ضرورت نہ ہو خواہ اس سے رجعی طلاق پڑے یا بائنہ پڑے، فتح، تو اسی قبیل سے مغلظہ طلاق ہے تو یہ رجعی اور بائنہ دونوں کو لاحق ہو سکتی ہے، اھ، ملخصاً (ت)

ہاں اگر اس نکاح ثانی سے پہلے ہندہ کو طلاقیں ایک یا دو دیں اور عدت گزر گئی اور اسی حالت میں کہ وہ اس کے نکاح سے باہر ہے بے اس کی اجازت کے نکاح ثانی کیا تو ہندہ پر طلاق نہ ہو گی کہ اس حالت میں وہ طلاق کی محل ہی نہیں اور اس نکاح ثانی سے وہ تعلیق ختم ہو جائے گی یہاں تک کہ اب اگر ہندہ سے پھر نکاح کرے اور اس کے بعد کتنے ہی نکاح بے اجازت ہندہ کرے تو ہندہ پر طلاق نہ ہو گی، یو نہی

---

1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ 2 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۵

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

If Hind is given three divorces before the second marriage, then in any case, the second marriage without Hind's consent will not result in divorce on Hind, even if he performs this marriage when Hind has come back into his marriage after Halala. This is because the suspension (of divorce) ends with the effectuation of the three (divorces). (t) It is stated in Al-Hidayah:

[Table Header: Left Column - Arabic Text | Right Column - Urdu Translation]

Loss of ownership after an oath does not invalidate it because its subject remains. Thus the oath remains. Then if the condition is met during ownership, the oath is dissolved and divorce occurs. If met outside ownership, the oath is dissolved due to the presence of the condition but nothing (no divorce) occurs due to the lack of subject. [Summary from Al-Hidayah] (t) | The termination of ownership after suspension and an oath does not invalidate the oath because the subject of the oath still exists. Then, if the condition is met during ownership, the oath and vow are fulfilled and the divorce occurs. If the condition is met without ownership, the vow will end due to the condition while the divorce will not occur because the subject of divorce, i.e., marriage, has ended. [Summary] (t)

It is in Fath (al-Qadir):

If he divorced her and her 'iddah ended after suspending divorce on her entering the house, then he remarried her and she entered, she is divorced. It is necessary to restrict the non-invalidation of the oath by loss of ownership to what is less than three divorces. However, if he divorced her three times, and she married someone else, then returned and entered, she is not divorced, as will follow. [Summary]. I say, the following is the statement of Al-Hidayah: "If he said to her, 'If you enter the house, you are divorced three times,' then he said to her, 'You are divorced three times,' then she married another and consummated it, then returned to the first and entered the house, nothing (no divorce) occurs." | If a husband, after suspending divorce on entry, divorced his wife and the 'iddah passed, and then he remarried her and she entered the house, the divorce will occur due to the fulfillment of the condition. It is necessary to restrict the non-invalidation of the oath and vow from loss of ownership to fewer than three divorces. This is because if he gave three divorces and remarried her after Halala, then if she entered the house, no divorce would occur, as will be mentioned shortly [Summary]. I say, the upcoming text is

from Al-Hidayah, which says: If a husband said to his wife, "If you enter the house, you are divorced three times,"

1. Al-Hidayah, Chapter on Oaths in Divorce, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 2/366.
2. Fath al-Qadir, Chapter on Oaths in Divorce, Nooria Razawiyya, Sukkur, 3/450.
3. Al-Hidayah, Chapter on Oaths in Divorce, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 2/369.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

अगर हिंद को निकाह-ए-सानी (दूसरे निकाह) से पहले तीन तलाक़ें दे दीं तो अब किसी सूरत में निकाह-ए-सानी हिंद की इजाज़त के बग़ैर हिंद पर तलाक़ नहीं पड़ेगी चाहे ये निकाह उस वक़्त करे जबकि हिंद हलाला के बाद उसके निकाह में आ चुकी हो। क्यूँकि तीन मुस्तक़िल (बिना शर्त) तलाक़ों के कारण ता'लीक़ (निलंबन) ख़त्म हो जाने की वजह से। (त) हिदाया में है:

[तालिका शीर्षक: बायां कॉलम - अरबी पाठ | दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]

यमीन (शपथ) के बाद मल्कियत का ज़वाल उसे बातिल नहीं करता क्योंकि उसका महल (विषय) बाक़ी है। इसलिए यमीन बाक़ी रही। फिर अगर मल्कियत के दौरान शर्त पाई जाए तो यमीन ख़त्म हो गई और तलाक़ वाक़े हो गई। और अगर मल्कियत के बिना (शर्त) पाई गई तो शर्त की मौजूदगी के कारण यमीन ख़त्म हो गई लेकिन महल (विषय) की अनुपस्थिति के कारण कुछ भी (तलाक़) वाक़े नहीं हुआ। [सारांश] (त) | ता'लीक़ और यमीन के बाद मल्कियत का ख़त्म होना यमीन को बातिल नहीं करता क्योंकि यमीन का महल अभी बाक़ी है, फिर अगर शर्त मल्कियत के दौरान पाई जाए तो यमीन व क़सम ख़त्म हो जाती है और तलाक़ वाक़े हो जाती है और अगर मल्कियत के बिना शर्त पाई जाए तो शर्त की वजह से क़सम ख़त्म हो जाएगी जबकि तलाक़ न होगी क्योंकि तलाक़ का महल यानी निकाह ख़त्म हो चुका है। [सारांश] (त)

फ़तह (अल-क़दीर) में है:

अगर शौहर ने बीवी को घर में दाख़िल होने पर तलाक़ मुअल्लक़ करने के बाद तलाक़ दे दी और इद्दत ख़त्म हो गई, फिर उससे (दोबारा) निकाह किया और वह (घर में) दाख़िल हुई तो उसे तलाक़ हो जाएगी। और मल्कियत ख़त्म होने से यमीन के बातिल न होने को तीन से कम तलाक़ों से मुक़य्यद (सीमित) करना ज़रूरी है। लेकिन अगर उसने उसे तीन तलाक़ें दीं, फिर उसने दूसरे से निकाह किया, फिर (पहले शौहर के पास) लौटी और दाख़िल हुई तो तलाक़ नहीं होगी, जैसा कि आगे आएगा। [संक्षेप में]। मैं कहता हूँ कि आने वाला हिदाया का क़ौल है: अगर उसने उससे कहा, 'अगर तू घर में दाख़िल हुई तो तुझे तीन तलाक़', फिर उसने उसे (मुस्तक़िल तौर पर) तीन तलाक़ दे दीं, फिर उसने दूसरे से निकाह किया और सोहबत हुई, फिर पहले के पास लौटी और घर में दाख़िल हुई तो कुछ भी (तलाक़) वाक़े नहीं हुआ। | अगर शौहर ने दाख़िल होने से तलाक़ के मुअल्लक़ करने के बाद बीवी को तलाक़ दे दी और इद्दत भी गुज़र गई, और उसके बाद दोबारा से निकाह किया और

अब वह घर में दाख़िल हुई तो अब शर्त पाए जाने की वजह से तलाक़ वाक़े होगी, और ज़वाल-ए-मल्कियत से क़सम व यमीन के अदम-ए-बुतलान (अमान्य न होने) को तीन से कम तलाक़ों से मुक़य्यद करना ज़रूरी है इसलिए कि अगर तीन तलाक़ें दीं और हलाला के बाद दोबारा निकाह किया तो अब घर में दाख़िल हुई तो तलाक़ न होगी, जैसा कि अनक़रीब आएगा। [संक्षेप में]। मैं कहता हूँ अनक़रीब आने वाली इबारत हिदाया की है जो यह है कि अगर शौहर ने बीवी को कहा 'अगर तू घर में दाख़िल हुई तो तुझे तीन तलाक़',

1. अल-हिदाया, बाब अल-ऐमान फ़िल तलाक़, अल-मकतबतुल अरबीय्या, कराची, 2/366.
2. फ़तहुल क़दीर, बाब अल-ऐमान फ़िल तलाक़, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/450.
3. अल-हिदाया, बाब अल-ऐमान फ़िल तलाक़, अल-मकतबतुल अरबीय्या, कराची, 2/369.

اگر ہندہ کو قبل از نکاح ثانی تین طلاقیں دے دیں تو اب کسی صورت میں نکاح ثانی بے اجازت ہندہ سے ہندہ پر طلاق نہ پڑے گی اگر چہ یہ نکاح اس وقت کرے جبکہ ہندہ بعد حلالہ اس کے نکاح میں آچکی ہو لانتحاء التعلیق بتنجیز الثلاث (تین غیر معلق طلاقوں کے باعث تعلیق ختم ہونے کی وجہ سے۔ت) ہدایہ میں ہے:

زوال الملك بعد اليمين لايبطلها لبقاء محله فبقى اليمين ثم ان وجد الشرط فى ملكه انحلت اليمين ووقع الطلاق وان وجد فى غير الملك انحلت اليمين لوجود الشرط ولم يقع شيئى لانعدام المحلية اھ ملخصا۔

تعلیق اور یمین کے بعد ملکیت کا ختم ہونا یمین کو باطل نہیں کرتا کیونکہ یمین کا محل ابھی باقی ہے، پھر اگر شرط ملکیت کے دوران پائی جائے تو یمین و قسم ختم ہو جاتی ہے اور طلاق واقع ہو جاتی ہے اور اگر ملکیت کے بغیر شرط پائی جائے تو شرط کی وجہ سے قسم ختم ہو جائیگی جبکہ طلاق نہ ہوگی کیونکہ طلاق کا محل یعنی نکاح ختم ہو چکا ہے اھ ملخصا(ت)

فتح میں ہے:

لوطلقها فأنقضت عدتها بعد التعليق بدخول الدار ثم تزوجها فدخلت طلقت ولابد من تقييد عدم البطلان بما زال الملك بمادون الثلاث اما

اگر خاوند نے دخول سے طلاق کے معلق کرنے کے بعد بیوی کو طلاق دے دی اور عدت بھی گزر گئی، اور اس کے بعد دوبارہ سے نکاح کیا اور اب وہ گھر میں داخل ہوئی تو اب شرط پائے جانے کی وجہ سے طلاق واقع ہوگی، اور زوالِ ملکیت سے قسم و یمین کے عدم بطلان کو تین سے کم طلاقوں سے مقید کرنا ضروری ہے اس

اذا طلقها ثلاثا فتزوجت بغيره ثم عادت فدخلت لاتطلق على ماسيأتى اهـ

مختصرا قلت والآتى هو قول الهداية ان قال لها ان دخلت الدار فانت طالق ثلاثا ثم قال لها انت طالق ثلاثا فتزوجت غيره ودخل بها ثم رجعت الى الاول فدخلت الدار لم يقع شيئى۔

لئے کہ اگر تین طلاقیں دیں اور حلالہ کے بعد دوبارہ نکاح کیا تو اب گھر میں داخل ہوئی تو طلاق نہ ہوگی، جیسا کہ عنقریب آئے گا اھ مختصراً، میں کہتا ہوں عنقریب آنے والی عبارتِ ہدایہ کی ہے جو یہ ہے کہ اگر خاوند نے بیوی کو کہا اگر تو گھر میں داخل ہوئی تو تجھے تین طلاق،

1 الهداية باب الايمان فى الطلاق المكتبة العربية كراچى ۳۶۶/۲ 2 فتح القدير باب الايمان فى الطلاق نوريہ رضويہ سكهر ۴۵۰/۳ 3 الهداية باب الايمان فى الطلاق المكتبة العربية كراچى ۳۶۹/۲

After this, the husband gave the wife three divorces without any conditional attachment and said, "Three divorces to you." After that, the divorced woman, following a Sharia-compliant 'halala', remarried the first husband. Now, if she enters the house, no divorce will occur. (T) And if Zaid made this condition during the actual proposal and acceptance (ijab-o-qubool), then there are two scenarios: If Zaid first said, "I have taken you into my marriage on the condition that if I marry a second time without your permission, then you are given three divorces," and Hindah said, "I accept," then the ruling is like the first case, meaning the condition is purely void and ineffective because until Hindah accepted, she was not his wife. Therefore, he had no authority for its conditional attachment (taliq) without acquiring legal ownership (milkiyat) or adding to ownership. And if Hindah first said, "I have given myself into your marriage," and Zaid said, "I accept on the condition that if without your permission... etc.," then the condition became valid. The rulings for the occurrence of divorce will be the same as mentioned above, because when the first statement was from Hindah's side, this conditional attachment was realized after the realization of proposal and acceptance and the establishment of marriage. At that time, he had full authority. It is mentioned in Khaniyah, Bazzaziyah, Imadiyah, Bahr, Nahr, etc.:

Arabic Text	**Urdu Translation/Explanation**
And the words are of the great Imam, the jurist of the soul: A man married a woman on the condition that she is divorced or that the matter of divorce is in her hands. Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) mentioned in Al-Jami' that the marriage is valid and the divorce is void, and the matter will not be in her hands. Faqih Abu al-Layth (may Allah Almighty have mercy on him) said: This is when the husband initiates and says, "I marry you on the condition that you are divorced." But if the woman initiates and says, "I marry myself to you on the condition that I	The words of the Imam Faqih-ul-Nafs are that a person said to a woman, "I marry you on the condition that 'you are divorced'," or on the condition that the power of divorce is in your hands." Regarding this, Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) stated in 'Al-Jami' that this marriage is valid and the condition of divorce is void, and the wife will not have the power of divorce either. On this, Faqih Abu al-Layth (may Allah Almighty have mercy on him) said that if the husband initiates by saying, "I marry you on the condition that you have divorce," then the mentioned ruling applies, i.e., marriage is valid and divorce is void. However, if the woman initiates by saying, "I

Arabic Text

am divorced," and he says, "I accept," then the marriage is valid and the divorce occurs. This is because if the initiation is from the husband, the divorce and delegation occur before the marriage, so they are not valid.

Page 108 of 688

Urdu Translation/Explanation

have given myself in marriage to you on the condition that I be divorced," and the husband says in response, "I accept," then the marriage will be valid and divorce will occur, because in initiating from the husband's side, the divorce and delegation happen before the marriage.

इसके बाद शौहर ने बीवी को बिना किसी तालीक़ (शर्त) के तीन तलाक़ें दे दीं और कहा "तुझे तीन तलाक़"। इसके बाद मुतल्का (तलाक़शुदा) ने शरई हलाला के बाद दोबारा पहले शौहर से निकाह किया और अब घर में दाख़िल हुई तो कोई तलाक़ न होगी। (त) और अगर ज़ैद ने यह शर्त नफ़्स-ए-ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) में की तो इसकी दो सूरतें हैं: अगर पहले ज़ैद ने कहा कि मैं तुझे अपने निकाह में लाया इस शर्त के साथ कि अगर तेरी बे-इजाज़त के निकाह-ए-सानी (दूसरा निकाह) करूँ तो तुझ पर तीन तलाक़, हिंदा ने कहा मैंने क़बूल किया, तो इसका हुक्म मिस्ल-ए-सूरत-ए-अ्व्वला है यानी शर्त महज़ बातिल व बे-असर है कि जब तक हिंदा ने क़बूल न किया था वह उसकी ज़ौजा (पत्नी) न हुई थी तो इसकी तालीक़ पर बे-हुसूल-ए-मिल्क (स्वामित्व प्राप्ति के बिना) या इज़ाफ़ा-ब-मिल्क उसे कुछ इख्तियार न था। और अगर पहले हिंदा ने कहा कि मैंने अपने नफ़्स को तेरे निकाह में दिया, ज़ैद ने कहा मैंने क़बूल किया इस शर्त पर कि अगर बे-तेरी इजाज़त अ़िला-आख़िरिहि (इत्यादि) तो शर्त सही हो गई, और वुक़ूए-तलाक़ (तलाक़ होने) के वही अहकाम होंगे जो ऊपर गुज़रे कि जब कलाम-ए-अव्वल जानिब-ए-हिंदा से था तो यह तालीक़ बाअ़द-ए-तहक़्क़ुक़-ए-ईजाब-ओ-क़ुबूल व सुबूत-ए-ज़ौज़ियत मुतह्क़्क़िक़ हुई और उस वक़्त उसे इख्तियार-ए-कामिल था, खानिया व बज़ाज़िया व इमादिया व बह्र व नह्र वग़ैरहुमा में है:

अरबी इबारत

(अरबी मूल पाठ का हिंदी अर्थ): और यह शब्द इमाम-ए-अजल फ़क़ीह-उन-नफ़्स के हैं: एक आदमी ने एक औरत से इस शर्त पर निकाह किया कि वह तलाक़शुदा है या तलाक़ का मामला उसके हाथ में है। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने जामिअ़ में ज़िक्र किया कि निकाह जाइज़ है और तलाक़ बातिल है, और मामला उसके हाथ में नहीं होगा। फ़क़ीह अबुल लैस (रहमतुल्लाह अलैहि) ने कहा: यह तब है जब शौहर शुरुआत करे और कहे कि मैंने तुमसे निकाह किया इस शर्त पर कि तुम्हें

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

अल्फ़ाज़ इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स के हैं कि एक शख़्स ने एक औरत को कहा "मैं तुझसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि 'तू तलाक़ वाली है'", या इस शर्त पर कि तलाक़ का इख्तियार तेरे हाथ में है।" इसके मुतअ़ल्लिक़ इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह तआला अलैहि) ने जामिअ़ में ज़िक्र फ़रमाया कि यह निकाह सही है और तलाक़ की शर्त बातिल है और बीवी को तलाक़ का इख्तियार भी न होगा। इस पर फ़क़ीह अबुल लैस (रहमतुल्लाह तआला अलैहि) ने फ़रमाया कि अगर शौहर ने इब्तिदा (शुरुआत) करते हुए कहा "मैं तुझसे इस शर्त पर निकाह करता

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
तलाक़ है। और अगर औरत शुरुआत करे और कहे कि मैंने अपने नफ़्स का निकाह तुमसे किया इस शर्त पर कि मुझे तलाक़ हो, और शौहर कहे कि मैंने क़बूल किया, तो निकाह जाइज़ है और तलाक़ हो जाएगी क्योंकि अगर शुरुआत शौहर की तरफ़ से हो तो तलाक़ और तफ़वीज़ निकाह से पहले होगी जो सही नहीं है।	हूँ कि तुझे तलाक़ है" तो फिर मज़कूरा हुक्म यानी निकाह सही और तलाक़ बातिल है, और अगर औरत इब्तिदा करते हुए कहे मैंने अपने आप को तुझ से निकाह दिया इस शर्त पर कि मुझे तलाक़ हो तो शौहर ने जवाब में कहा मैंने क़बूल किया, तो निकाह सही होकर तलाक़ हो जाएगी क्योंकि शौहर की तरफ़ से इब्तिदा करने में तलाक़ और तफ़वीज़, निकाह से क़ब्ल (पहले) होती है।

اس کے بعد خاوند نے بیوی کو بغیر تعلیق تین طلاقیں دے دیں اور کہا تجھے تین طلاق۔ اس کے بعد مطلقہ نے حلالہ شرعیہ کے بعد دوبارہ پہلے سے نکاح کیا اور اب گھر میں داخل ہوئی تو کوئی طلاق نہ ہوگی۔ (ت) اور اگر زید نے یہ شرط نفس ایجاب و قبول میں کی تو اس کی دو صورتیں ہیں: اگر پہلے زید نے کہا کہ میں تجھے اپنے نکاح میں لایا اس شرط کہ اگر تیری بے اجازت کے نکاح ثانی کروں تو تجھ پر تین طلاق، ہندہ نے کہا میں نے قبول کیا، تو اس کا حکم مثل صورت اولٰی ہے یعنی شرط محض باطل و بے اثر ہے کہ جب تک ہندہ نے قبول نہ کیا تھا وہ اس کی زوجہ نہ ہوئی تھی تو اس کی تعلیق پر بے حصول ملک یا اضافہ بہ ملک اسے کچھ اختیار نہ تھا۔ اور اگر پہلے ہندہ نے کہا کہ میں نے اپنے نفس کو تیرے نکاح میں دیا، زید نے کہا میں نے قبول کیا اس شرط پر کہ اگر بے تیری اجازت الی آخرہ تو شرط صحیح ہو گئی، اور وقوع طلاق کے وہی احکام ہوں گے جو اوپر گزرے کہ جب کلام اول جانب ہندہ سے تھا تو یہ تعلیق بعد تحقق ایجاب و قبول و ثبوت زوجیت متحقق ہوئی اور اس وقت اسے اختیار کامل تھا، خانیہ و بزازیہ و عمادیہ و بحر و نہر و غیر ہا میں ہے:

عربی عبارت	**اردو ترجمہ و تشریح**
واللفظ للامام الاجل فقیہ النفس رجل تزوج امرأۃ علی انھا طالق او علی ان امرھا فی الطلاق بیدھا ذکر محمد رحمہ اللہ تعالی فی الجامع انہ یجوز	الفاظ امام فقیہ النفس کے ہیں کہ ایک شخص نے ایک عورت کو کہا میں تجھ سے اس شرط پر نکاح کرتا ہوں کہ "تو طلاق والی ہے"، یا اس شرط پر کہ طلاق کا اختیار تیرے ہاتھ میں ہے۔" اس کے متعلق امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے جامع میں النکاح والطلاق باطل ولا یکون الامر ذکر فرمایا کہ یہ نکاح صحیح ہے اور طلاق کی شرط باطل

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
بیدھا۔ قال الفقیه ابو اللیث رحمه الله تعالی هذا اذا بدأ الزوج فقال تزوجتك علی انك طالق وان ابتدأت المرأة فقالت زوجت نفسی منك علی انی طالق فقال قبلت جاز النکاح ویقع الطلاق لان البداية اذا کانت من الزوج کان الطلاق والتفویض قبل النکاح فلا یصح	ہے اور بیوی کو طلاق کا اختیار بھی نہ ہوگا۔ اس پر فقیہ ابواللیث رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ اگر خاوند نے ابتداء کرتے ہوئے کہا "میں تجھ سے اس شرط پر نکاح کرتا ہوں کہ تجھے طلاق ہے" تو پھر مذکورہ حکم یعنی نکاح صحیح اور طلاق باطل ہے، اور اگر عورت ابتداء کرتے ہوئے کہے میں نے اپنے آپ کو تجھ سے نکاح دیا اس شرط پر کہ مجھے طلاق ہو تو خاوند نے جواب میں کہا میں نے قبول کیا، تو نکاح صحیح ہو کر طلاق ہو جائے گی کیونکہ خاوند کی طرف سے ابتداء کرنے میں طلاق اور تفویض، نکاح سے قبل

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiyyah

[Top Table] Arabic Text: However, if the initiation is from the woman's side, the delegation (of divorce) occurs after the marriage. This is because when the husband says "I accept" after the woman's statement, and since the response involves repeating what was in the question, it is as if he said, "I accept on the condition that you are divorced" or "on the condition that the matter [of divorce] is in your hand." Thus, it becomes delegated after the marriage... Briefly. I say: You know that the woman's speech is not considered in the husband's acceptance because the question is repeated in the answer. So if it is established in reality, it is more deserving of validity, as guided by the statement of [Imam Abu Layth] (may Allah Almighty have mercy on him), "He said: I accepted on the condition that you are divorced, etc." And what was stated in al-Khaniyah clarifies the difference between the two initiations, as we explained in our annotations on Radd al-Muhtar, even if this difference remained hidden from Allamah al-Shami (may Allah Almighty have mercy on him). (T)

Urdu Translation: If [the proposal] originated from the woman, the condition of divorce was not valid, but since the initiation was from the woman's side, the delegation of divorce occurred after the marriage. This is because when the husband said "I accepted" in response after the woman's statement, since repeating the question in the answer is credible, it is as if the husband said, "I accepted the marriage on the condition that you are divorced or the matter of divorce is in your choice." Thus, the marriage occurred first and the delegation of divorce followed, briefly. I say: You know that in the matter of divorce, the woman's word is not considered, but this divorce was determined from the husband's side upon his acceptance of the marriage, because repeating the question in the husband's answer is credible. So when the question is credible, divorce was consequent upon the validity of the marriage, therefore the divorce will be valid. As the statement of Abu Layth (may Allah Almighty have mercy on him) that the husband's saying "It is accepted" on the condition that "you are divorced, etc." is guiding you. And this statement of Khaniyah is clarifying the difference between both initiations as we have clarified it in the margins of Radd al-Muhtar, although this difference remained hidden from Allamah Shami (may Allah Almighty have mercy on him). (T)

[Middle Table] It is stated in Radd al-Muhtar: Arabic: If he said to her, "I have married you on the condition that your matter [of divorce] is in your hand," and she accepted, the marriage is valid and the condition is void, because the matter [of divorce] only becomes valid... Urdu: If a man says to a woman, "I have married you on the

condition that the matter of divorce is in your hand," and the woman accepts, in this case, the marriage is valid and the condition will be void because the divorce...

[Footnote] 1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Marriage upon Condition, Naval Kishore, Lucknow 1/152. Page 109 of 688

जिल्द तेरह 13 फ़तावा रजविया

[ऊपरी तालिका] अरबी पाठ: हालाँकि, जब शुरुआत औरत की तरफ से हो, तो तलाक की शर्त (तफ़वीज़) निकाह के बाद होती है। क्योंकि जब पति ने औरत के बोलने के बाद जवाब में कहा 'मैंने कबूल किया', और चूंकि जवाब में सवाल का दोहराना शामिल होता है, तो मानों उसने कहा, 'मैंने निकाह कबूल किया इस शर्त पर कि तुम्हें तलाक हो या तलाक का मामला तुम्हारे हाथ में हो।' इस प्रकार, यह निकाह के बाद तफ़वीज़ हो जाता है... संक्षेप में। मैं कहता हूँ: आप जानते हैं कि पति की स्वीकृति में औरत की बात का कोई विचार नहीं किया जाता क्योंकि जवाब में सवाल दोहराया जाता है। इसलिए यदि यह हकीकत में होता है, तो यह वैधता के अधिक योग्य है, जैसा कि [इमाम अबू लैथ] (अल्लाह उन पर रहम करे) के कथन से निर्देशित है, 'उन्होंने कहा: मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि तुम्हें तलाक है आदि।' और जो खानिया में कहा गया है वह दोनों शुरुआतों के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है, जैसा कि हमने रद-उल-मुहतार पर अपनी टिप्पणियों में स्पष्ट किया है, भले ही यह अंतर अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर रहम करे) से छिपा रहा। (त)

उर्दू अनुवाद: यदि [प्रस्ताव] औरत की ओर से हुआ, तो तलाक की शर्त सही नहीं हुई, लेकिन चूंकि औरत की तरफ से शुरुआत हुई थी, इसलिए तलाक की तफ़वीज़ निकाह के बाद हुई। क्योंकि जब पति ने औरत की बात के बाद जवाब में 'मैंने कबूल किया' कहा, तो चूंकि जवाब में सवाल को दोहराना विश्वसनीय होता है, तो मानों पति ने कहा कि 'मैंने निकाह कबूल किया इस शर्त पर कि तुझे तलाक हो या तलाक का मामला तेरे अधिकार में हो।' तो इस तरह निकाह पहले हो गया और तलाक की तफ़वीज़ बाद में हुई, संक्षेप में। मैं (लेखक) कहता हूँ: आपको मालूम है कि तलाक के मामले में औरत की बात का एतबार नहीं होता, लेकिन यह तलाक पति की ओर से निकाह स्वीकार करने पर पति की ओर से ही मुक़द्दर हुआ क्योंकि पति के जवाब में सवाल का दोहराना विश्वसनीय है। तो जब सवाल विश्वसनीय है, तो निकाह की सत्यता पर तलाक लागू हुआ, इसलिए तलाक सही होगा। जैसा कि अबू लैथ (रहमतुल्लाह अलैह) का कहना है कि पति का 'कबूल है' कहना इस शर्त पर कि 'तुझे तलाक है आदि', आपका मार्गदर्शन कर रहा है। और खानिया का यह बयान दोनों शुरुआतों के बीच के अंतर को स्पष्ट कर रहा है जैसा कि हमने इसे रद-उल-मुहतार के हाशिये में स्पष्ट किया है, हालांकि यह अंतर अल्लामा शामी (रहमतुल्लाह अलैह) पर ओझल रहा। (त)

[मध्य तालिका] रद-उल-मुहतार में है: अरबी: यदि उसने उससे कहा, 'मैंने तुमसे इस शर्त पर निकाह किया कि तुम्हारा मामला [तलाक का] तुम्हारे हाथ में है,' और उसने स्वीकार कर लिया, तो निकाह

जायज़ है और शर्त बातिल है, क्योंकि मामला [तलाक का] तभी सही होता है... उर्दू: अगर कोई पुरुष किसी औरत से कहे कि 'मैंने तुमसे इस शर्त पर निकाह किया कि तलाक का मामला तेरे हाथ में है', और औरत ने स्वीकार कर लिया, तो इस स्थिति में निकाह सही होगा और शर्त बेकार (लघ्व) होगी क्योंकि तलाक का...

[पाद लेख] 1. फ़तावा काज़ी ख़ान, निकाह की शर्तों पर अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ 1/152. पृष्ठ 109 / 688

[پہلا جدول] عربی متن: اما اذا کانت البدایة من قبل المرأة یصیر التفویض بعد النکاح لان الزوج لما قال بعد کلام المرأة قبلت والجواب یتضمن اعادة مافي السؤال صار کأنه قال قبلت علی انك طالق او علی ان یکون الامر بیدك فیصیر مفوضاً بعد النکاح اھ باختصار اقول: انت تعلم ان کلام المرأة لا عبرة به في قبول الزوج لاجل ان السؤال معاد في الجواب فاذا وقع فیه تحقیقاً کان اولی بالصحة کما یرشدك الیه قوله رحمه اللہ تعالی "قال قبلت علی انك طالق الخ" وبما افاد في الخانیة ظهر الفرق بین البدایتین کما اوضحناه فیما علقناه علی رد المحتار وان کان خفی علی العلامة الشامي رحمه اللہ تعالی۔

اردو ترجمہ: ہوئی تو طلاق کی شرط صحیح نہ ہوئی، لیکن عورت کی طرف سے ابتداء ہوئی تو پھر طلاق کی تفویض نکاح کے بعد ہوئی کیونکہ جب زوج نے عورت کی کلام کے بعد جواب میں "میں نے قبول کیا" کہا، تو چونکہ جواب میں سوال کا اعادہ معتبر ہوتا ہے تو گویا خاوند نے یوں کہا کہ "میں نے نکاح قبول کیا اس شرط پر کہ تجھے طلاق ہو یا طلاق کا معاملہ تیرے اختیار میں ہو" تو یوں نکاح پہلے ہو گیا اور تفویضِ طلاق بعد ہوئی اھ، اختصاراً۔ اقول: (میں کہتا ہوں) آپ کو معلوم ہے کہ طلاق کے معاملہ میں عورت کی بات کا اعتبار نہیں ہوتا لیکن یہ طلاق خاوند کے نکاح کو قبول کرنے پر خاوند کی طرف سے مقدر ہوئی کیونکہ خاوند کے جواب میں سوال کا اعادہ معتبر ہے، تو جب سوال معتبر ہے تو صحتِ نکاح پر طلاق مرتب ہوئی لہذا طلاق صحیح ہوگی، جیسا کہ ابو لیث رحمہ اللہ تعالیٰ کا قول کہ خاوند کا "قبول ہے" کہہ کر کہنا اس شرط پر کہ تجھے طلاق ہے الخ، تیری رہنمائی کر رہا ہے، اور خانیہ کا یہ بیان دونوں ابتداؤں میں فرق کو واضح کر رہا ہے جیسا کہ ہم نے اس کو رد المحتار کے حاشیے میں واضح کیا ہے، اگرچہ یہ فرق علامہ شامی رحمہ اللہ تعالیٰ پر مخفی رہا۔(ت)

[دوسرا جدول] رد المحتار میں ہے: عربی: لو قال لها تزوجتك على ان امرك بيدك فقبلت جاز النكاح ولغا الشرط لان الامر انما يصح اردو: اگر مرد کسی عورت کو کہے کہ میں نے تجھ سے اس شرط پر نکاح کیا کہ طلاق کا معاملہ تیرے ہاتھ میں ہے، تو عورت نے قبول کر لیا، اس صورت میں نکاح صحیح اور شرط لغو ہوگی کیونکہ طلاق کا

[حاشیہ] 1 فتاویٰ قاضی خاں فصل فی النکاح علی الشرط نولکشور لکھنو ۱/۱۵۲ Page 109 of 688

Fatawa Rizvia Volume 13 (XIII)

[Arabic Section]: In ownership or attributed to it, and neither of them was found, contrary to what has passed, for the matter became in her hand coinciding with her becoming married. End (Nahr). In short, the condition is valid if the woman initiates it, but not if the man initiates it, though the difference is subtle... And Allah Almighty knows best. [Urdu Translation/Explanation]: Giving the choice during the marriage contract or attributing it to the marriage can be correct when neither of these two things is present here. On the contrary, when the woman starts, then the choice of divorce is given to her upon becoming a wife. End (Nahr). The gist is that if the woman starts, the condition will be valid, and if the man starts, the condition will not be valid, but the difference remains hidden... And Allah Almighty knows best. (T)

Answer to the third question: To the second [wife], but with the same conditions as mentioned in the first answer. That is, the first marriage performed after the marriage with Hindah, while Hindah is alive, even after separation from Hindah, with any woman without Hindah's permission, that woman will be divorced. The point is that the phrase "then my marriage is void" was ambiguous and had multiple possibilities because it didn't specify which marriage was void. If he had said these words after the marriage with Hindah, or before the marriage had said: "If I marry Hindah and after that, I perform a second marriage with any woman without her permission, then my marriage is void," then he would have had the choice to apply the divorce to either the first wife or the second, as both were suitable for this conditional divorce. [Arabic Section]: The first because ownership is established, and in the other, it is like the other in both cases due to the presence of marriage attribution. [Urdu Translation/Explanation]: The first because she is within the ownership of marriage, and for the second because it follows the first, and the attribution of marriage exists. (T)

Fath al-Qadir, then in Hindiyyah it is stated: [Arabic Section]: If he said to a woman: "If I marry over you as long as you live, then divorce is incumbent upon me," then he marries over her, one divorce falls upon one of them, which he may assign to whichever of them he wishes. End, summarized. [Urdu Translation/Explanation]: If he said to a woman, "As long as you are alive, if I marry upon you, then divorce is mandatory for me." Afterwards, the husband entered into another marriage over

her. In this case, one divorce will fall upon one of these wives; he can direct the divorce toward whichever of the two he wishes. End, summarized. (T)

1. Rad al-Muhtar, Chapter on Returning (Rajah), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/540.
2. Fatawa Hindiyyah, Third Section on Conditional Divorce, etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/426; Fatawa Qazikhan, Chapter on Conditions, Naval Kishore, Lucknow, 1/23.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 13 (XIII)

[अरबी खंड]: स्वामित्व में या उससे संबंधित होने में, और उनमें से कोई भी नहीं पाया गया, जैसा कि बीत चुका है उसके विपरीत, क्योंकि मामला उसके निकाह में होने के साथ ही उसके हाथ में आ गया। समाप्त (नहर)। संक्षेप में, शर्त तब मान्य है जब महिला शुरुआत करे, न कि जब पुरुष शुरुआत करे, लेकिन अंतर सूक्ष्म है... और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: निकाह के दौरान अधिकार देना या इसे निकाह की ओर संदर्भित करना सही हो सकता है जबकि यहाँ इन दोनों में से कोई भी मौजूद नहीं है। इसके विपरीत, जब महिला शुरुआत करती है, तो पत्नी बनने के साथ ही उसे तलाक़ का अधिकार मिल जाता है। समाप्त (नहर)। सारांश यह है कि यदि महिला शुरुआत करती है, तो शर्त मान्य होगी और यदि पुरुष शुरुआत करता है, तो शर्त मान्य नहीं होगी, लेकिन अंतर गुप्त रहा... और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

तीसरे सवाल का जवाब: दूसरी को, लेकिन उन्हीं शर्तों के साथ जो पहले जवाब में गुज़रीं। यानी, वह पहला निकाह जो हिन्दा के निकाह के बाद, हिन्दा की हयात (जीवन) में, चाहे हिन्दा से अलगाव के बाद ही क्यों न हो, किसी भी महिला से हिन्दा की अनुमति के बिना करेगा, तो उस महिला को तलाक़ हो जाएगी। मूल बात यह है कि ये शब्द "तो मेरा निकाह बातिल (अमान्य) है" अस्पष्ट और संभावनाओं वाले थे क्योंकि इसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया था कि कौन सा निकाह अमान्य है। यदि उसने हिन्दा के साथ निकाह के बाद ये शब्द कहे होते या निकाह से पहले ऐसा कहा होता कि "अगर मैं हिन्दा से निकाह करूँ और उसके बाद किसी भी महिला से उसकी अनुमति के बिना दूसरा निकाह करूँतो मेरा निकाह बातिल है", तो उसे यह अधिकार होता कि वह पहली पत्नी या दूसरी पत्नी, जिसकी तरफ चाहे तलाक़ फेर दे, क्योंकि दोनों इस तलाक़ की शर्त के लिए योग्य थीं। [अरबी खंड]: पहली इसलिए क्योंकि स्वामित्व स्थापित है, और दूसरी में, दोनों में निकाह के जुड़ाव के कारण दूसरी की तरह है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: पहली को इसलिए क्योंकि वह निकाह के स्वामित्व में है, और दूसरी के लिए इसलिए क्योंकि यह पहली के बाद दूसरी है और निकाह का संदर्भ मौजूद है। (त)

फ़तह अल-क़दीर, फिर हिन्दिया में है: [अरबी खंड]: यदि उसने एक महिला से कहा: "अगर मैं तुम्हारे जीवित रहते हुए तुमसे ऊपर (दूसरा) निकाह करूँतो मुझ पर तलाक़ वाजिब है," फिर उसने उस पर दूसरा निकाह कर लिया, तो उनमें से एक पर एक तलाक़ पड़ जाएगी, जिसे वह उनमें से जिसकी तरफ चाहे भेज सकता है। समाप्त, संक्षिप्त। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: अगर किसी महिला से कहा "जब तक तू ज़िंदा है, तुझ पर निकाह करूँ तो मुझ पर तलाक़ वाजिब है।" इसके बाद शौहर ने

उस पर दूसरा निकाह कर लिया, तो यह तलाक़ इन बीवियों में से एक पर पड़ जाएगी, दोनों में से जिसकी तरफ चाहे तलाक़ को फेर दे। समाप्त, संक्षिप्त। (त)

1. रद अल-मुह्तार, बाब-उर-रजा'त, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/540।
2. फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल-ए-सालिस फ़ी ता'लीक़-उत-तलाक़ आदि, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/426; फ़तावा क़ाज़ीख़ाँ, बाब-उत-ता'लीक़, नवल किशोर, लखनऊ, 1/23।

पृष्ठ 110 का 688

في الملك او مضافا اليه ولم يوجد واحد منهما بخلاف مامر فان الامر صار بيدها مقارنا لصيرورتها منكوحة اه نهر، والحاصل ان الشرط صحيح اذا ابتدأت المرأة لا اذا ابتدأ الرجل ولكن الفرق خفی الخ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ اختیار دینا نکاح میں یا نکاح کی طرف منسوب کرنے میں درست ہو سکتا ہے جب کہ یہاں دونوں باتوں میں کوئی بھی موجود نہیں ہے، اس کے برخلاف جب عورت ابتداء کرے تو پھر اختیار طلاق عورت کو بیوی بننے سمیت ہوا، اھ، نہر۔ حاصل یہ ہے کہ اگر عورت ابتداء کرے تو شرط صحیح ہو گی اور اگر مرد ابتداء کرے تو شرط صحیح نہ ہو گی، لیکن فرق مخفی رہا، الخ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

جواب سوال سوم: دوسری کو مگر انہیں شرائط سے جو جواب اول میں گزریں کہ پہلا وہ نکاح جو بعد نکاح ہندہ بحیات ہندہ اگرچہ بعد افتراق ہندہ بے اجازت ہندہ کسی عورت سے کرے گا اس عورت کو طلاق ہو گی، اصل یہ ہے کہ یہ لفظ کہ "تو میرا نکاح باطل" مجمل و محتمل تھا کہ اس میں بیان نہ کیا کہ کون نکاح باطل، اگر بعد نکاح ہندہ یہ الفاظ کہتا یا قبل نکاح یوں کہا ہوتا کہ اگر ہندہ سے نکاح کروں اور اس کے بعد کسی عورت سے بے اس کی اجازت کے نکاح ثانی کروں تو میرا نکاح باطل، تو اسے اختیار تھا کہ زوجہ اولٰی یا ثانیہ جس کی طرف چاہے پھیر دے کہ دونوں اس تعلیقِ تطلیق کی صالح تھیں، الاولی لتحقق الملك وفی الاخری کا لاخری فیهما لحصول الاضافة۔ پہلی کو اس لئے کہ وہ ملکیت نکاح میں ہے اور دوسری کے لئے اسلئے کہ یہ پہلی کے بعد دوسری ہے اور اضافتِ نکاح موجود ہے (ت)

فتح القدیر پھر ہندیہ میں ہے: لو قال لامرأة ان تزوجت عليك ماعشت فالطلاق على واجب ثم تزوج عليها تقع تطليقة على واحدة منهما يصرفها الى ايتهما شاء اه ملخصا۔ اگر کسی عورت کو کہا "جب

تک تو زندہ ہے تجھ پر نکاح کروں تو مجھ پر طلاق واجب ہے" اس کے بعد خاوند نے اس پر دوسرا نکاح کر لیا تو یہ طلاق ان بیویوں میں سے ایک پر پڑ جائے گی، دونوں میں سے جس کی طرف چاہے طلاق کو پھیر دے اھ ملخصاً (ت)

1 ردالمحتار باب الرجعۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۵۴۰ 2 فتاوٰی ہندیہ فصل الثالث فی تعلیق الطلاق الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۲۶، فتاوٰی قاضیخاں باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۳

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Here, before the marriage of Hindah, these words were spoken, and in them, there is no such attribution towards Hindah's marriage that would be effective here—namely, the explicit words of a condition, which are necessary for a specified woman; the mere meaning of a condition is not sufficient.

[As stated in Al-Fath and others: "It is said in Al-Durr that the meaning of the condition is sufficient except in the case of a woman specified by name, lineage, or pointing, etc."[1]] | [As in Al-Fath etc., in Al-Durr it is said that the meaning of the condition is sufficient except for a woman specified by name, lineage, or pointing. (T)]

In short, by merely attributing it to the second marriage and claiming the validity of the suspension (ta'liq), ownership or attribution to ownership is necessitated. Thus, Hindah is fundamentally not a locus for this suspension. Necessarily, the second wife became specified. In summary, Hindah is a pure stranger (ajnabiyyah) in this suspension, unlike the second wife; so there is no way to direct it towards a stranger.

["Because rendering speech idle (useless) is to be avoided as far as its implementation is possible."] | [Because this necessitates making the speech meaningless, whereas it must be avoided as much as possible. (T)]

This is similar to a man combining his own wife and a stranger woman and saying, "I have divorced one of you two." Willy-nilly, the divorce will fall upon his wife only. He will not be given the choice to direct it towards the stranger woman because divorcing her was not within his power.

[In Al-Hindiyyah: "If he combined a stranger woman with his wife and said: 'One of you is divorced', or said: 'this is divorced' or 'this is [not] divorced', his wife is not divorced except with intention because the stranger woman is a locus for that as a report [khabar] even if she is not a locus for it as an initiation [insha']. And this formula by its reality is a report. And if he said in this case: 'I divorced one of you', his wife is divorced without intention. This was mentioned in 'Talaq al-Asl'[2]."] | [It is stated in Al-Hindiyyah: If a husband, joining a stranger woman with his wife, says "Divorce to one of you two", or says "Divorce is for this one or that one", his wife will not be divorced without his intention. This is because although a stranger woman is not a locus for initiating (insha) divorce, she is a locus for the report and narration (khabar) of divorce, while the husband's speech is effectively a report. However, if he

says, "I have given divorce to one of you two", then the wife will be divorced without needing intention. This is mentioned in the section on divorce in Al-Mabsut.]

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Suspension (At-Taleeq), Mujtabai Press, Delhi, 1/230. [2] Fatawa Hindiyyah, First Chapter on Explicit Divorce, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/363.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

यहाँ कि हिन्दा के निकाह से पहले ये शब्द कहे गए और इसमें हिन्दा के निकाह की तरफ वह निस्बत (सम्बन्ध) भी नहीं जो यहाँ काम दे, यानी शर्त के स्पष्ट शब्द, जिनकी एक निश्चित महिला के मामले में आवश्यकता होती है; शर्त का केवल अर्थ पर्याप्त नहीं है।

[जैसा कि अल-फ़तह और अन्य में है: "अल-दुर्र में कहा गया है कि शर्त का अर्थ पर्याप्त है सिवाय उस महिला के जिसे नाम, वंश या संकेत आदि द्वारा निर्दिष्ट किया गया हो।"[1]] | [जिस तरह फ़तह आदि में है, दुर्र में कहा गया है कि शर्त का अर्थ पर्याप्त है सिवाय नाम या वंश या संकेत के साथ निश्चित की गई महिला के। (त)]

संक्षेप में, केवल दूसरे निकाह की ओर निस्बत करने और निलंबन (ता'लीक़) की वैधता कहने से स्वामित्व का अस्तित्व या स्वामित्व से निस्बत आवश्यक हो जाती है, तो हिन्दा मूल रूप से इस निलंबन का पात्र नहीं है। अनिवार्य रूप से, दूसरी पत्नी निश्चित हो गई। कुल मिलाकर, हिन्दा इस निलंबन में पूरी तरह से एक अजनबी (अजनबीया) है, दूसरी पत्नी के विपरीत; तो अजनबी की ओर मोड़ने का कोई रास्ता नहीं है।

["क्योंकि बातचीत को व्यर्थ (मह़मल) बनाना टालने योग्य है जहाँ तक उसका क्रियान्वयन संभव हो।"] | [क्योंकि इसमें बातचीत को निरर्थक बनाना आवश्यक हो जाता है जबकि इससे यथासंभव बचना होता है। (त)]

यह तो वैसा ही हुआ जैसे अपनी पत्नी और एक अजनबी महिला को मिलाकर कहा "मैंने तुम दोनों में से एक को तलाक़ दी", तो चाहे-अनचाहे तलाक़ उसकी पत्नी पर ही पड़ेगी। उसे अजनबी महिला की ओर मोड़ने का अधिकार नहीं दिया जाएगा क्योंकि उसे तलाक़ देना उसके वश में नहीं था।

[अल-हिंदिया में: "यदि उसने अपनी पत्नी के साथ एक अजनबी महिला को मिलाया और कहा: 'तुम में से एक को तलाक़ है', या कहा: 'इसे तलाक़ है' या 'इसे', तो उसकी पत्नी को तलाक़ नहीं होगी जब तक कि उसकी नीयत न हो, क्योंकि अजनबी महिला इसके लिए समाचार (ख़बर) के रूप में एक स्थान है, भले ही वह इसके लिए शुरुआत (इंशा) के रूप में स्थान न हो। और यह सूत्र अपनी वास्तविकता में समाचार है। और यदि उसने इस स्थिति में कहा: 'मैंने तुम में से एक को तलाक़ दी', तो उसकी पत्नी को बिना नीयत के तलाक़ हो जाएगी। इसका उल्लेख 'तलाक़ अल-असल'[2] में किया गया है।"] | [हिंदिया में है: यदि पति ने अपनी पत्नी के साथ अजनबी औरत को मिलाकर कहा "तुम

दोनों में से एक को तलाक़", या यूँ कहा "इसे या उसे तलाक़ है", तो उसकी पत्नी को बिना नीयत किए तलाक़ न होगी, क्योंकि अजनबी औरत हालांकि तलाक़ की शुरुआत (इंशा) का स्थान नहीं है, लेकिन तलाक़ की ख़बर और वृत्तांत (हिकायत) का स्थान है जबकि पति का कलाम हक़ीक़तन ख़बर है। हाँ, अगर यूँ कहे "मैंने तुम दोनों में से एक को तलाक़ दी", तो पत्नी को नीयत के बिना तलाक़ हो जाएगी। इसका ज़िक्र मबसूत के तलाक़ (अध्याय) में है।]

[1] दुर्रे मुख़्तार, बाब-उत-ता'लीक़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/230। [2] फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल-उल-अव्वल फ़ी-त-तलाक़-इस-सरीह, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/363।

یہاں کہ قبل نکاح ہندہ یہ لفظ کہا اور اس میں نکاح ہندہ کی طرف وہ اضافت بھی نہیں جو یہاں کام دے یعنی صریح الفاظ شرط کہ زنِ معینہ میں اسی کی حاجت ہے معنی شرط کافی نہیں،

| کما في الفتح وغیرہ قال في الدر یکفي معنی الشرط الا في المعینة باسم او نسب او اشارة الخ۱۔ |
جس طرح فتح وغیرہ میں ہے، در میں کہا کہ شرط کا معنی کافی ہے ماسوائے نام یا نسب یا اشارہ کے ساتھ معین کردہ عورت کے۔(ت) |

غرضیکہ صرف نکاح ثانیہ کی طرف اضافت اور صحت تعلیق کہنے سے وجود ملک یا اضافت بملک لازم تو ہندہ اس تعلیق کی اصلاً محل نہیں، لاجرم زوجہ ثانیہ متعین ہوگئی، بالجملہ ہندہ اس تعلیق میں اجنبیہ محض ہے، بخلاف ثانیہ، تو اجنبیہ کی طرف پھیرنے کی کوئی راہ نہیں،

| لما فیه من اهمال الکلام هو محترز عنه مهما امکن اعمالہ۔ | کیونکہ اس میں کلام کو مہمل بنانا لازم آتا ہے جبکہ اس سے حتی الامکان بچنا ہوتا ہے (ت) |

یہ تو ایسا ہوا جیسے اپنی عورت اور ایک اجنبیہ کو ملا کر کہا میں نے تم دونوں میں سے ایک کو طلاق دی خواہ ہی نخواہی اس کی عورت ہی پر طلاق پڑے گی اجنبیہ کی طرف پھیرنے کا اختیار نہ دیا جائے گا کہ اسے طلاق دینا اس کے قابو میں نہ تھا،

| في الهندیة لوضم الی امرأته امرأة اجنبیة وقال احد کما طالق او قال هذه طالق او هذه لا تطلق امرأته الا بالنیة لان الاجنبیة محل لذلك خبر او ان لم تکن محلاً له انشاءً وهذه الصیغة بحقیقتها اخبار ولو قال في هذه الصورة طلقت احد کما طلقت امرأته من غیر نیة ذکره فی طلاق الاصل۲ اھ | ہندیہ میں ہے: اگر خاوند نے اپنی بیوی کے ساتھ اجنبی عورت کو ملا کر کہا تم دونوں میں سے ایک کو طلاق، یا

یوں کہا اس کو یا اس کو طلاق ہے، تو اس کی بیوی کو بغیر نیت کئے طلاق نہ ہوگی، کیونکہ اجنبی عورت اگرچہ انشاء طلاق کے محل نہیں لیکن طلاق کی خبر و حکایت کا محل ہے جبکہ خاوند کا کلام حقیقتہً خبر ہے، ہاں اگر یوں کہے میں نے تم دونوں میں سے ایک کو طلاق دی، تو بیوی کو نیت کے بغیر طلاق ہو جائے گی، اس کو مبسوط کے طلاق میں ذکر |

۱ درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۰ ۲ فتاویٰ ہندیہ الفصل الاول فی الطلاق الصریح نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۶۳

Fatawa-e-Razvia Volume Thirteen 13

[Arabic Box Text]: And you know that suspension (attaching a condition) is the creation of a condition, and the first (woman) is not a suitable place for it due to the lack of attribution, so it became necessary to turn to the [proper] place to sustain the action, and all this is very clear. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation of Box]: ...is what is said, you know that to make something conditional is to initiate a condition, whereas an unrelated woman (ajnabiyah) is not the proper subject for it because she is neither in marriage nor is there any attribution towards marriage with her. Therefore, it is necessary to turn towards the proper subject so that the speech can be meaningful, and all this is very clear. And Allah Almighty knows best. (T)

[Repeated Urdu Text]: ...is what is said, you know that to make something conditional is to initiate a condition, whereas an unrelated woman (ajnabiyah) is not the proper subject for it because she is neither in marriage nor is there any attribution towards marriage with her. Therefore, it is necessary to turn towards the proper subject so that the speech can be meaningful, and all this is very clear. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 5: What do the scholars of religion say regarding this matter that Zaid married Hindah for a consideration of one thousand rupees and before the marriage, during the marriage proposal, he made a condition that if I do not pay half of the mahr (dower), i.e., five hundred rupees, upon the demand of the wife, then Hindah is thrice-divorced. Subsequently, after the marriage, the said Hindah demanded the money, Zaid did not pay the said money at that time, and the said condition was part of the offer (Ijab), and the offer was from the woman's side and the acceptance (Qabul) from the man's side. Now, in this case, will divorce occur upon Hindah or not?

Answer: In the case questioned, three divorces have occurred upon Hindah; it is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

[Arabic Text]: Marriage on the condition that she is divorced; Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) mentioned that the marriage is valid and the divorce is void. Faqih Abu al-Layth (may Allah Almighty have mercy on him) said this is when the husband begins and says 'I marry you on the condition that you are divorced', but if the woman begins and says 'I marry myself to you on the condition that I am

divorced' and he says 'I accept', the marriage is valid and the divorce occurs etc. 1 And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation]: The man said, "I marry you on the condition that you are divorced," Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) said then the marriage will be valid and the divorce will be void. Faqih Abu al-Layth (may Allah Almighty have mercy on him) said this is when the husband says this first. If the woman, by initiating, said, "I have given myself into marriage to you on the condition that I am divorced," then upon the husband's acceptance, the marriage will become valid and divorce will occur etc. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 6: From Madras, Mohalla Jhakandi Masjid Makkah, sent by Maulvi Abdul Razzaq Sahib, 7 Muharram 1312 AH. What do the scholars of religion say in this matter that if a Hanafi person has made an attributed oath in this way...

1. Fatawa Qazi Khan, Section on Marriage upon Condition, Naval Kishore Lucknow, 1/152.

फ़तावा-ए-रज़विया खंड तेरह 13

[अरबी बॉक्स पाठ]: और आप जानते हैं कि किसी चीज़ को शर्त से जोड़ना (तअलीक़) एक शर्त का निर्माण है, और पहली (महिला) इसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं है क्योंकि श्रेय (एट्रिब्यूशन) की कमी है, इसलिए कार्य को बनाए रखने के लिए उपयुक्त स्थान की ओर मुड़ना आवश्यक हो गया, और यह सब बहुत स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[बॉक्स का उर्दू अनुवाद]: ...कहा गया है, आप जानते हैं कि किसी चीज़ को शर्त के साथ जोड़ना शर्त की शुरुआत है, जबकि एक अजनबी महिला (अजनबियाह) इसके लिए उचित विषय नहीं है क्योंकि वह न तो निकाह में है और न ही उसके साथ निकाह का कोई श्रेय है। इसलिए, उचित विषय की ओर मुड़ना आवश्यक है ताकि कथन सार्थक हो सके, और यह सब बहुत स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[दोहराया गया उर्दू पाठ]: ...कहा गया है, आप जानते हैं कि किसी चीज़ को शर्त के साथ जोड़ना शर्त की शुरुआत है, जबकि एक अजनबी महिला (अजनबियाह) इसके लिए उचित विषय नहीं है क्योंकि वह न तो निकाह में है और न ही उसके साथ निकाह का कोई श्रेय है। इसलिए, उचित विषय की ओर मुड़ना आवश्यक है ताकि कथन सार्थक हो सके, और यह सब बहुत स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 5: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने एक हज़ार रुपये के बदले हिंदा से निकाह किया और निकाह से पहले, निकाह के प्रस्ताव के दौरान उसने यह शर्त रखी कि यदि मैं पत्नी की मांग पर आधा महर (दहेज), यानी पाँच सौ रुपये, अदा नहीं करता, तो हिंदा को तीन तलाक हैं। इसके बाद, निकाह के बाद, उक्त हिंदा ने रुपयों की मांग की, ज़ैद ने उस समय उक्त रुपये अदा नहीं किए, और उक्त शर्त ईजाब (प्रस्ताव) का हिस्सा थी, और प्रस्ताव महिला की ओर से था और स्वीकृति (क़बूल) पुरुष की ओर से थी। अब, इस मामले में, हिंदा पर तलाक होगा या नहीं?

उत्तर: पूछे गए मामले में, हिंदा पर तीन तलाक हो गए हैं; फ़तावा इमाम काज़ी ख़ां में कहा गया है:

[अरबी पाठ]: इस शर्त पर निकाह कि वह तलाकशुदा है; मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने उल्लेख किया कि निकाह वैध है और तलाक अमान्य है। फकीह अबू अल-लैथ (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने कहा कि यह तब होता है जब पति शुरू करता है और कहता है 'मैं तुमसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि तुम तलाकशुदा हो', लेकिन अगर महिला शुरू करती है और

कहती है 'मैं इस शर्त पर तुमसे निकाह करती हूँ कि मुझे तलाक हो' और वह कहता है 'मुझे स्वीकार है', तो निकाह वैध है और तलाक हो जाता है आदि। 1 और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: पुरुष ने कहा, "मैं तुमसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि तुम्हें तलाक है," इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने कहा तो निकाह वैध होगा और तलाक अमान्य होगा। फकीह अबू अल-लैथ (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने कहा कि यह तब है जब पति पहले यह कहता है। यदि महिला ने, पहल करते हुए, कहा, "मैंने खुद को इस शर्त पर तुम्हारे निकाह में दिया है कि मुझे तलाक हो," तो पति की स्वीकृति पर, निकाह वैध हो जाएगा और तलाक हो जाएगा आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 6: मद्रास, मोहल्ला झकंडी मस्जिद मक्का से, मौलवी अब्दुल रज्जाक साहब द्वारा भेजा गया, 7 मुहर्रम 1312 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि यदि किसी हनफी व्यक्ति ने इस तरह से एक संबद्ध शपथ ली है...

1. फ़तावा काज़ी ख़ां, शर्त पर निकाह का खंड, नवल किशोर लखनऊ, 1/152।

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

وانت تعلم ان التعلیق انشاء التعلیق وان الاولی لیست محلالہ لترك الاضافة فوجب الصرف الی المحل لابقاء العمل وھذا کلہ واضح جدا، واللہ تعالٰی اعلم۔

کیا ہے اھ، آپ کو معلوم ہے کہ معلق کرنا، تعلیق کا انشاء ہے، جبکہ اجنبیہ اسکا محل نہیں کیونکہ وہ نہ نکاح میں ہے اور نہ اس سے نکاح کی طرف نسبت ہے اس لئے محل کی طرف پھیرنا ضروری ہے تاکہ کلام بامقصد بن سکے، اور یہ تمام خوب واضح ہے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

کیا ہے اھ، آپ کو معلوم ہے کہ معلق کرنا، تعلیق کا انشاء ہے، جبکہ اجنبیہ اسکا محل نہیں کیونکہ وہ نہ نکاح میں ہے اور نہ اس سے نکاح کی طرف نسبت ہے اس لئے محل کی طرف پھیرنا ضروری ہے تاکہ کلام بامقصد بن سکے، اور یہ تمام خوب واضح ہے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۵: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے بعوض ہزار روپیہ کے نکاح کیا اور قبل نکاح درمیان نکاح کے یہ شرط کی کہ نصف مہر یعنی پانسو روپیہ اگر عند الطلب زوجہ ادا نہ کروں تو ہندہ پر تین طلاقیں ہیں، پس نکاح کے بعد ہندہ مذکور نے روپیہ طلب کیا زید نے روپیہ مذکور اس وقت ادا نہ کیا اور شرط مذکور ایجاب میں ہوا تھا اور ایجاب جانب عورت سے اور قبول جانب مرد سے، اب اس صورت میں ہندہ پر طلاق واقع ہوگی یا نہیں؟

الجواب: صورت مستفسرہ میں ہندہ پر تین طلاقیں ہو گئیں، فتاوٰی امام قاضی خاں میں ہے:

تزوج علی انھا طالق ذکر محمد رحمہ اللہ تعالٰی انہ یجوز النکاح والطلاق باطل قال الفقیہ ابو اللیث رحمہ اللہ تعالٰی ھذا اذا بدأ الزوج فقال تزوجتك علی انك طالق وان ابتدأت المرأة فقالت زوجت نفسی منك علی انی طالق فقال قبلت جاز النکاح ویقع الطلاق الخ ۱ واللہ تعالٰی اعلم۔

مرد نے کہا میں تجھ سے اس شرط پر نکاح کرتا ہوں کہ تجھے طلاق ہے، امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا تو نکاح صحیح اور طلاق باطل ہوگی، فقیہ ابولیث رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا یہ جب ہے کہ یہ بات خاوند پہلے کہے، اگر عورت نے ابتداء کرتے ہوئے یوں کہا "میں نے اپنے آپ کو تیرے نکاح میں اس شرط پر دیا کہ مجھے طلاق ہو، تو خاوند کے قبول کرنے پر نکاح صحیح ہو کر طلاق ہو جائے گی الخ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۶: از مدراس محلہ جھکنڈی مسیت مکہ مرسلہ مولوی عبدالرزاق صاحب ۷ محرم ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی شخص حنفی نے یمین مضاف کی ہو اس طرح پر

۱ فتاویٰ قاضی خاں فصل فی النکاح علی الشرط نولکشور لکھنو ۱ / ۱۵۲

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 113

Question: If I say to you, "If I marry you, you are divorced and you are divorced," is it permissible for him to follow the Shafi'i school of thought so that cohabitation with this woman becomes permissible without hesitation? Because according to Shafi'i, divorce does not occur in a conditional oath (yamin mudhaf). As stated in *al-Durr al-Mukhtar* from *al-Mujtaba* on the authority of Muhammad regarding the conditional [oath of divorce]: "It does not occur, and the imams of Khwarizm issued fatwas based on it, end, and it is the view of ash-Shafi'i."[1] As it is in *Durr al-Mukhtar* that it is narrated from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) in *al-Mujtaba* that if any condition is attached to the marriage of a woman, divorce will not occur; the fatwa of the Imams of Khwarizm is based on this, end. Is this the view of Imam Shafi'i (may Allah Almighty have mercy on him) or not? (T)

Answer: There is consensus among our noble Imams (may Allah be pleased with them) that a conditional oath (yamin mudhaf) is binding, and in such a case, an irrevocable divorce (talaq ba'in) will occur immediately upon marriage. That weak narration mentioned in *al-Mujtaba* from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) - setting aside that al-Zahidi is not very reliable in transmission - even he himself admits its weakness. It is not permissible to issue a fatwa on such rare and rejected narrations. Therefore, scholars explicitly state that neither a Mufti has the authority to issue a fatwa based on this narration, nor is it permissible for anyone to act upon it. In *Durr al-Mukhtar*, following the text quoted by the questioner, it says: "This is known but not to be acted upon by fatwa."[2] (This may be known but a fatwa should not be given on it. T). In *Radd al-Muhtar*, it is written: "In *al-Bazzaziyya* and from al-Sadr, I say: It is not permissible for anyone to do that. And al-Halwani said: Let it be known, but no fatwa should be given based on it, lest the ignorant find a way to dismantle the school [of law]. End [quote] from *al-Bahr*."[3] In *al-Bazzaziyya*, and narrated from al-Sadr: "I say that this action is not permissible for anyone," and al-Halwani said: "It should be known but no fatwa should be given on it, so that ignorant people do not become engaged in acting against the school of thought." End [quote] from *al-Bahr*. (T) In the same book, it says: "It is not for the Mufti to issue a fatwa based on a weak narration, even if many Imams of Khwarizm issued fatwas based on it." The Mufti should not adopt a weak narration, and the fact that many Imams of Khwarizm issued fatwas on it [doesn't compensate for] its weakness...

[1] *Durr al-Mukhtar*, Chapter on al-Ta'liq, Mujtabai Press, Delhi, 1/231. [2] *Durr al-Mukhtar*, Chapter on al-Ta'liq, Mujtabai Press, Delhi, 1/231. [3] *Radd al-Muhtar*, Chapter on al-Ta'liq, al-Tiba'at al-Misriyya, Egypt, 2/496.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 113

प्रश्न: यदि मैं तुमसे कहूँ, "अगर मैं तुमसे निकाह करूँ तो तुम्हें तलाक़ है, तलाक़ है," तो क्या उसे शाफ़ई मज़हब की तक़लीद करना जायज़ है ताकि उस औरत के साथ बिना किसी हिचकिचाहट के सोहबत मुमकिन हो सके? क्योंकि शाफ़ई मज़हब के नज़दीक 'यमीन मुज़ाफ़' (शर्त के साथ तलाक़) में तलाक़ वाक़े नहीं होती। जैसा कि 'दुर्रुल मुख्तार' में 'मुजतबा' के हवाले से इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से मन्क़ूला है: "तलाक़ वाक़े नहीं होगी और इसी पर खुवारज़्म के इमामों ने फ़तवा दिया है, समाप्त, और यही शाफ़ई का क़ौल है।"[1] जैसा कि 'दुर्रुल मुख्तार' में है कि 'मुजतबा' में इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से मरवी है कि जिस औरत के निकाह से कोई शर्त मन्सूब की जाए तो तलाक़ न होगी, इसी पर अइम्मा-ए-खुवारज़्म का फ़तवा है, अंत। यही इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) का क़ौल है या नहीं? (त)

उत्तर: हमारे अइम्मा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का इज्मा है कि 'यमीन मुज़ाफ़' मुनअक़िद (लागू) है और ऐसी सूरत में निकाह करते ही फ़ौरन तलाक़-ए-बाइन हो जाएगी। वह ज़ईफ़ (कमज़ोर) रिवायत जो 'मुजतबा' में इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से बयान की गई है - इस बात को छोड़कर कि ज़ाहिदी नक़्ल में ज़्यादा मोतबर नहीं हैं - वह खुद भी इसके ज़ईफ़ होने का एतराफ़ (स्वीकार) करते हैं। ऐसी शाज़ और साक़ित रिवायतों पर फ़तवा देना जायज़ नहीं है। इसीलिये उलमा सराहत (स्पष्ट रूप से) फरमाते हैं कि न तो मुफ़्ती को इस रिवायत पर इफ़्ता (फ़तवा देने) का हक़ है, और न ही किसी के लिये इस पर अमल करना हलाल है। 'दुर्रुल मुख्तार' में साइल (सवाल करने वाले) द्वारा उद्धृत इबारत के बाद लिखा है: "हज़ा युअलमु वला युफ़्ता बिही"[2] (इसे जान तो लिया जाए लेकिन इस पर फ़तवा न दिया जाए। त)। 'रद्दुल मुहतार' में है: "फ़िल बज़ाज़िया व अनिल सद्र अक़ूलु ला यहिल्लु ले-अहद अन यफ़अ़ला ज़ालिका व क़ालल हलवानी युअ़लमु वला युफ़्ता बिही ले-अल्ला यततर्रक़ल जुह्हालु इला हदमिल मज़हब अहा बहर"[3] 'बज़ाज़िया' में है और सद्र से मरवी है: "मैं कहता हूँ कि किसी को यह काम हलाल नहीं है," और हलवानी ने फरमाया कि "मालूम कर लिया जाए लेकिन इस पर फ़तवा न दिया जाए ताकि जाहिल लोग मज़हब के ख़िलाफ़ न मसरूफ़ हो जाएँ।" अंत बहर। (त) उसी में है: "फ़लैसा लिल-मुफ़्ती अल-इफ़्ताओ बिर-रिवायतिज़ ज़ईफ़ा व कौन्हा अफ़्ता बिहा कसीरुम मिन अइम्मति खुवारज़्म" मुफ़्ती को ज़ईफ़ रिवायत इख्तियार नहीं करनी चाहिए, और अइम्मा-ए-खुवारज़्म का इस पर फ़तवा देना इसके ज़ईफ़ होने को [खत्म नहीं करता]...

[1] दुर्रुल मुख्तार, बाब-अत-तअ़लीक़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/231 [2] दुर्रुल मुख्तार, बाब-अत-तअ़लीक़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/231 [3] रद्दुल मुहतार, बाब-अत-तअ़लीक़, अल-तिबा'त अल-मिस्रिया, मिस्र, 2/496

पृष्ठ 688 का 113

کہ اگر میں تجھ سے نکاح کروں تو طلاق ہے وطلاق ہے، آیا اس کو تقلید مذہب شافعی کی جائز ہے تاکہ وطی اس عورت کی بلاتردد ہوجائے کیونکہ عند الشافعی یمین مضاف میں طلاق نہیں واقع ہوتی، کما فی الدر المختار فی المجتبی عن محمد فی المضافۃ لایقع وبہ افتی ائمۃ خوارزم انتھی وھو قول الشافعی ۱ جیسا کہ در مختار میں ہے کہ مجتبٰی میں امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے مروی ہے کہ جس عورت کے نکاح سے کوئی شرط منسوب کی جائے تو طلاق نہ ہوگی، اسی پر ائمہ خوارزم کا فتوٰی ہے اھ، یہی امام شافعی رحمہ اللہ تعالٰی کا قول ہے یا نہیں۔ (ت)

الجواب: ہمارے ائمہ کرام رضی اللہ عنہم کا اجماع ہے کہ یمین مضاف منعقد ہے اور ایسی صورت میں نکاح کرتے ہی فوراً طلاق بائن ہوجائے گی، وہ روایت ضعیفہ کہ مجتبٰی میں امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی علیہ سے جس کا پانا بیان کیا قطع نظر اس سے کہ زاہدی چنداں موثوق فی النقل نہیں وہ خود بھی اس کے ضعف کا معترف ایسی روایات شاذہ ساقطہ پر فتوٰی دینا جائز نہیں، ولہٰذا علماء تصریح فرماتے ہیں کہ نہ مفتی کو اس روایت پر افتا کی مجال ، نہ کسی کو اس پر عمل حلال۔ در مختار میں عبارت منقولہ سائل کے بعد ہے : ہذا یعلم ولا یفتی بہ ۲ (اس کو معلوم کر لیا جائے لیکن اس پر فتوٰی نہ دیا جائے۔ ت) ردالمحتار میں ہے : فی البزازیۃ و عن الصدر اقول لایحل لاحد ان یفعل ذلک وقال الحلوانی یعلم ولایفتی بہ لئلا یتطرق الجھال الی ھدم المذھب اھ بحر ۳ ۔ بزازیہ میں ہے اور صدر سے مروی ہے میں کہتا ہوں کہ کسی کو یہ کام حلال نہیں، اور حلوانی نے فرمایا معلوم کر لیا جائے لیکن اس پر فتوٰی نہ دیا جائے تاکہ جاہل لوگ مذہب کے خلاف نہ مصروف ہو جائیں اھ بحر ۔ (ت) اُسی میں ہے : فلیس للمفتی الافتاء بالروایۃ الضعیفۃ و کونھا افتی بھا کثیر من

ائمة خوارزم مفتی کو ضعیف روایت اختیار نہیں کرنی چاہئے، اور ائمہ خوارزم کا اس پر فتویٰ اس کے ضعف کو

۱ درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ ۲ درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ ۳ رد المحتار باب التعلیق الطباعة المصرية بمصر ۴۹۶/۲

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

Arabic Text	English Translation of Arabic
لا ينفى ضعفها ولذا تقدم عن الصدر انه لا يحل لاحد ان يفعل ذلك وكذا ما تقدم عن الحلواني من انه يعلم ولا يفتٰى به فلو تثبت هذه الرواية عن محمد وكانت صحيحة لبنوا الحكم عليها ولم يحتاجوا الى بنائه على مذهب الشافعي فهذا يدل على انها رواية شاذة كما يشير اليه كلام المجتبى المار[1]۔	Its weakness cannot be negated, which is why it was quoted from al-Sadr that it is not permissible for anyone to do that. Similarly, it was quoted from al-Halwani that it may be known but not used for issuing a fatwa. If this narration from Imam Muhammad [ash-Shaybani] were established and correct, they would have based the ruling on it and would not have needed to base it on the Shafi'i school. This indicates that it is an anomalous (shadh) narration, as indicated by the previously mentioned text of al-Mujtaba.[1]

Urdu Translation of the above: It cannot be ended; therefore, it has been narrated from Sadr that this act is not lawful for anyone. Similarly, it is narrated from Allama Halwani that it should be known but a fatwa should not be given based on it. If this matter were proven correct from Imam Muhammad (may Allah Ta'ala have mercy on him), then it would have been necessary to make the saying of Imam Muhammad (may Allah Ta'ala have mercy on him) the basis for the ruling, and they would not have been in need of Imam Shafi'i's saying. From this, it is known that this narration is anomalous, as the previously mentioned text of Mujtaba points towards it. (T)

Furthermore, if the one seeking a way out (mukhlis) wishes, there is no need for the imitation (taqlid) of Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him); a solution exists within his own school. For example, in the inquired case, if he marries this woman, the divorce will occur immediately upon marriage. Since the woman is unconsummated and he mentioned three divorces separately—saying "it is a divorce, and a divorce, and a divorce"—therefore, only one divorce will occur.

Arabic Text	English Translation of Arabic
فى الدر المختار وان فرق بوصف او خبر او جمل بعطف او غيره بانت بالاولٰى لا الٰى عدة و لذا لم تقع الثانية بخلاف الموطوءة حيث يقع الكل۔[2]	In al-Durr al-Mukhtar: "If he separates [the divorces] by description, news, or sentences, with or without a conjunction, she becomes irrevocably divorced (ba'ina) by the first one, not needing a waiting period ('idda). Therefore, the second one does not occur, unlike a consummated wife where all divorces occur."[2]

Urdu Translation of the above: It is in Durr-e-Mukhtar: If divorce is made separate with a separate description, news, or ruling, whether through a conjunction or without a conjunction, the woman will become irrevocably divorced by the first divorce itself and there will be no 'idda. For this reason, the second divorce will not occur. On the contrary, if such was said to a consummated wife, then all divorces would occur. (T)

Then, at that very moment, let him remarry her; now divorce will not occur because the oath has been fulfilled once.

Arabic Text	English Translation of Arabic
فی التنویر الفاظ الشرط ان واذا واذ ما وکل وکلما ومتی ومتی ما	In al-Tanwir: The words of condition are: in, idha, idh ma, kull, kullama, mata, mata ma.

Urdu Translation of the above: It is in Tanwir: These are the words of Arabic condition: In, Idha, Idh ma, Kull, Kullama, Mata, Mata ma.

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Suspension, Egyptian Edition, Egypt, 2/497. [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Divorce of an Unconsummated Wife, Mujtabai Press, Delhi, 1/223.

अरबी पाठ	**अरबी का हिंदी अनुवाद**
لا ينفى ضعفها ولذا تقدم عن الصدر انه لا يحل لاحد ان يفعل ذلك وكذا ما تقدم عن الحلواني من انه يعلم ولا يفتٰى به فلو تثبت هذه الرواية عن محمد وكانت الحكم عليها ولم يحتاجوا الى بنائه على مذهب الشافعي فهذا يدل على انها رواية شاذة كما يشير اليه كلام المجتبى المار[1].	[इसकी कमजोरी] को नकारा नहीं जा सकता, इसीलिए अल-सद्र से उद्धृत किया गया है कि किसी के लिए ऐसा करना जायज़ नहीं है। इसी तरह अल-हलवानी से उद्धृत किया गया है कि इसे जाना तो जा सकता है लेकिन इस पर फतवा नहीं दिया जा सकता। अगर इमाम मुहम्मद [अश-शायबानी] से यह रिवायत स्थापित और सही होती, तो वे इस पर हुक्म की बुनियाद रखते और उन्हें शाफई मज़हब पर इसकी बुनियाद रखने की ज़रूरत नहीं होती। यह दर्शाता है कि यह एक शाज़ (दुर्लभ/असंगत) रिवायत है, जैसा कि अल-मुजतबा के पहले उल्लेखित शब्दों से संकेत मिलता है।[1]

उपरोक्त का उर्दू अनुवाद (हिंदी लिपि में): इसे खत्म नहीं किया जा सकता, इसीलिए सद्र से वर्णित है कि किसी के लिए यह काम हलाल नहीं है। और इसी तरह अल्लामा हलवानी से वर्णित है कि इसे जान लिया जाए लेकिन फतवा न दिया जाए। तो अगर यह बात इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से सही साबित होती, तो फिर चाहिए था कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के कौल को हुक्म की बुनियाद बनाते और इमाम शाफई के कौल के मोहताज न होते। इससे मालूम हुआ कि यह रिवायत शाज़ है जैसा कि मुजतबा का पिछला कलाम इस ओर इशारा कर रहा है। (त)

फिर अगर मखलिस (रास्ता चाहने वाला) चाहे तो इमाम शाफई (रज़ियल्लाहु अन्हु) की तक़लीद की ज़रूरत नहीं है, खुद अपने मज़हब में हल मौजूद है। मसलन, पूछी गई सूरत में वह इस औरत से निकाह कर ले, निकाह करते ही तलाक पड़ जाएगी। और चूंकि औरत गैर-मदखूला (जिससे सोहबत न हुई हो) है और उसने तीन तलाकें अलग-अलग ज़िक्र की हैं - 'तलाक है, और तलाक है, और तलाक है' - लिहाज़ा एक ही वाक़े होगी।

अरबी पाठ	**अरबी का हिंदी अनुवाद**
فى الدر المختار وان فرق بوصف او خبر او جمل بعطف	अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: "अगर वह [तलाक को] वस्फ, ख़बर या जुमलों के ज़रिए अलग करता है, चाहे अतफ़ (conjunction)

अरबी पाठ	अरबी का हिंदी अनुवाद
او غيره بانت بالاولٰى لا الٰى عدة و لذا لم تقع الثانية بخلاف الموطوءة حيث يقع الكل۔[2]	के साथ हो या बिना, तो वह पहली से ही बईना (पूर्ण रूप से अलग) हो जाती है, न कि इद्दत की तरफ। इसलिए दूसरी वाक़े नहीं होती, इसके विपरीत मदखूला (सहवास की गई बीवी) के मामले में सभी वाक़े हो जाती हैं।"[2]

उपरोक्त का उर्दू अनुवाद (हिंदी लिपि में): दुर्रे मुख्तार में है: अगर तलाक को मुतफ़र्रिक वस्फ या ख़बर या हुक्म के साथ अलग करे, चाहे अतफ़ के ज़रिए या बिना अतफ़ के, तो औरत पहली तलाक से ही बईना हो जाएगी और इद्दत नहीं होगी। इसी वजह से दूसरी तलाक वाक़े नहीं होगी। इसके बरअक्स अगर सोहबत की हुई बीवी को ऐसा कहा तो सब तलाकें वाक़े होंगी। (त)

फिर उसी समय उससे निकाह कर ले, अब तलाक नहीं पड़ेगी क्योंकि यमीन (शपथ) एक बार से खुल गई।

अरबी पाठ	अरबी का हिंदी अनुवाद
فى التنوير الفاظ الشرط ان واذا واذ ما وكل وكلما ومتى ومتى ما	अत-तन्वीर में है: शर्त के शब्द हैं: इन, इज़ा, इज़ मा, कुल्ल, कुल्लमा, मता, मता मा।

उपरोक्त का उर्दू अनुवाद (हिंदी लिपि में): तन्वीर में है: अरबी शर्त के शब्द ये हैं: इन, इज़ा, इज़ मा, कुल्ल, कुल्लमा, मता, मता मा।

---

[1] रद अल-मुहतार, बाबूत्तअलीक, मिस्री मुद्रण, मिस्र २/ ४९७ [2] दुर्रे मुख्तार, बाबू तलाकुल गैरल मदखूला बिहा, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/ २२३

عربی متن	**عربی متن کا اردو ترجمہ**
لا ینفی ضعفها ولذا تقدم عن الصدر انه	ختم نہیں کرسکتا، اسی لئے صدر سے منقول گزرا کہ کسی
لا یحل لاحد ان یفعل ذلك وكذا ما تقدم	کو یہ کام حلال نہیں، اور یوں ہی علامہ حلوانی سے منقول
عن الحلواني من انه یعلم ولا یفتٰی به فلو	گزرا کہ اس کو جان لیا جائے مگر فتویٰ نہ دیا جائے، تو
تثبت هذه الروایة عن محمد وكانت	اگر یہ بات امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے صحیح ثابت ہو
صحیحة لبنوا الحكم علیها ولم یحتاجوا	تو پھر چاہئے تھا کہ اس قول محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کو مبنی
الی بنائه علی مذهب الشافعي فهذا یدل	حکم بناتے اور امام شافعی کے قول کے محتاج نہ ہوتے،
علی انها روایة شاذة كما یشیر الیه كلام	اس سے معلوم ہوا کہ یہ روایت شاذ ہے جیسا کہ اس پر
المجتبی المار[1]۔	گزشتہ مجتبیٰ کا کلام اشارہ کر رہا ہے۔ (ت)

پھر اگر مخلص چاہے تو کچھ تقلید امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حاجت نہیں، خود اپنے مذہب میں مخلص موجود ہے مثلاً صورت مستفسرہ میں اس عورت سے نکاح کرلے، نکاح کرتے ہی طلاق پڑجائے گی، اور ازانجا کہ عورت غیر مدخولہ ہے اور اس نے تین طلاقیں بتفریق ذکر کی ہیں کہ طلاق ہے و طلاق ہے و طلاق ہے لہٰذا ایک ہی واقع ہوگی،

عربی متن	**عربی متن کا اردو ترجمہ**
فی الدر المختار وان فرق بوصف در مختار میں ہے : اگر طلاق کو متفرق وصف یا خبر یا حکم	
او خبر او جمل بعطف او غیره	کے ساتھ متفرق کرے خواہ عطف کے ذریعہ یا بغیر عطف تو
بانت بالاولٰی لا الٰی عدة و لذا لم	عورت پہلی طلاق سے ہی بائنہ ہو جائے گی اور عدت نہ ہوگی،

عربی متن	عربی متن کا اردو ترجمہ
تقع الثانية بخلاف الموطوءة حيث يقع الكل۔[2]	اسی وجہ سے دوسری طلاق واقع نہ ہوگی، اس کے برخلاف اگر وطی شدہ بیوی کو ایسے کہا تو سب طلاقیں واقع ہوں گی۔ (ت)

پس اسی وقت پھر اس سے نکاح کرلے اب طلاق نہ پڑے گی کہ یمین ایک بار سے کھل گئی،

عربی متن	عربی متن کا اردو ترجمہ
فی التنویر الفاظ الشرط ان واذا واذ ما وکل وکلما ومتی ومتی ما	تنویر میں ہے : عربی شرط کے الفاظ یہ ہیں: ان، اذا، اذ ما، کل، کلما، متٰی، متٰی ما،

---

[1] رد المحتار باب التعلیق الطباعة المصرية بمصر ۲/ ۴۹۷ [2] در مختار باب طلاق غیر المدخول بها مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۳

Fatawa Rizvia, Volume 13

[Box 1] (Arabic): The oath is dissolved once the condition is met, except in the case of the word 'Kullama' (whenever), for it is dissolved after three [divorces]. (Urdu Translation): When the condition for all these words is fulfilled, the oath will end except for the word "Kullama", because in it, the condition will end after three divorces. (T)

However, it will be such that the husband will only retain the right of two divorces over the woman because one marriage (after divorce) has already occurred in the past. Now, if he ever gives two divorces, it will become an irrevocable (mughallazah) divorce. The second way is to mention before a scholar (Dhi-Ilm) that 'I have taken such an oath and I am in need of an unauthorized person (Fuzuli) for marriage,' or 'How good it would be if someone, without my authorization (Tawkil), performed my marriage with her on their own.' Then that aforementioned scholar himself, or by instructing someone else, should perform the marriage of the woman with him. When the news of this marriage reaches that person, he should not say anything with his tongue, but should perform some action that signifies permission for this suspended marriage; for example, send the dower (Mehr) to the woman or accept people's congratulations. In this case, the marriage will be established and no divorce will occur at all.

[Box 2] (Arabic): In Durr-al-Mukhtar from Al-Bahr from Al-Bazzaziyah: It is appropriate to go to a scholar and tell him what he swore and his need for an unauthorized marriage (Nikah-e-Fuzuli). Then the scholar marries him to a woman and he authorizes it through action, so he will not break his oath. Similarly, if he says to a group of people: 'I have a need for an unauthorized marriage,' and one of them performs the marriage. However, if he says to a man: 'Contract an unauthorized marriage for me,' it becomes a delegation of authority (Tawkil). 2 AH. (Urdu Translation): It is quoted in Radd-al-Muhtar from Bahr and there from Bazzaziyah that it is appropriate to go to a scholar and explain the oath he took and describe the need for an unauthorized person (Fuzuli) (who knows his wife), then that scholar should perform his marriage with a woman, and he should validate this action of the scholar with some deed of his own. Then he will not break his oath. Similarly, if he presents his need for an unauthorized marriage before a group, and someone from that group performs the marriage himself. However, he should not specifically ask a particular person to become a 'Fuzuli', because telling someone, 'Become a Fuzuli

and perform my marriage,' is not being a 'Fuzuli', but rather making him an agent (Wakil). (T)

Issue 7: From Sitapur, 6 Ramadan-ul-Mubarak 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A verbal dispute occurred between husband and wife, upon which the husband said, "If you eat my thing, it is divorce." The husband's intention was absolutely not the termination of the marriage; it was in anger...

Footnotes: 1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Suspension, Mujtabai Press, Delhi, 1/231 2 Radd-al-Muhtar, Chapter on Suspension, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/597

फतवा रिज़विया, खंड 13

[बॉक्स 1] (अरबी): शपथ तब समाप्त हो जाती है जब शर्त एक बार पूरी हो जाती है, सिवाय 'कुल्लमा' (जब कभी) शब्द के, क्योंकि यह तीन [तलाक] के बाद समाप्त होती है। (उर्दू अनुवाद): इन सभी शब्दों की शर्त जब पाई जाएगी तो कसम खत्म हो जाएगी सिवाय शब्द "कुल्लमा" के, क्योंकि इसमें शर्त तीन तलाकों के बाद खत्म होगी। (त)

मगर इतना होगा कि पति औरत पर सिर्फ दो तलाकों का मालिक रहेगा क्योंकि एक निकाह (तलाक के बाद) पहले ही पड़ चुका है। अब अगर कभी वह दो तलाकें देगा तो वह मुग़ल्लज़ह (अत्यंत कठोर) तलाक हो जाएगी। दूसरी सूरत यह है कि किसी विद्वान (ज़ी-इल्म) के सामने ज़िक्र करे कि 'मैंने इस तरह की शपथ ली है और मुझे निकाह-ए-फ़ज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति द्वारा निकाह) की ज़रूरत है,' या 'कितना अच्छा होता कि कोई व्यक्ति मेरी वकालत के बिना स्वयं मेरा निकाह उससे कर दे।' फिर वह उल्लेखित विद्वान स्वयं या किसी और से कहकर औरत का निकाह उससे कर दे। जब उस व्यक्ति को निकाह की खबर पहुँचे, तो वह ज़बान से कुछ न कहे, बल्कि कोई ऐसा कार्य करे जिससे इस निलंबित (मौक़ूफ़) निकाह की अनुमति हो जाए; उदाहरण के लिए, औरत को मेहर भेज दे या लोगों की बधाई स्वीकार करे। इस स्थिति में निकाह हो जाएगा और तलाक बिल्कुल भी नहीं होगी।

[बॉक्स 2] (अरबी): दुर्र-अल-मुख्तार में 'बहर' से और वहाँ 'बज़ाज़िया' से उद्धृत है: उचित है कि किसी आलिम के पास जाए और उसे बताए कि उसने क्या शपथ ली है और उसे निकाह-ए-फ़ज़ूली की क्या आवश्यकता है। फिर आलिम उसका निकाह एक महिला से कर दे और वह इसे कार्य द्वारा प्रमाणित कर दे, तो वह अपनी शपथ नहीं तोड़ेगा। इसी तरह यदि वह लोगों के समूह से कहे: 'मुझे एक अनधिकृत निकाह की आवश्यकता है,' और उनमें से एक निकाह कर दे। लेकिन अगर वह किसी व्यक्ति से कहे: 'मेरे लिए निकाह-ए-फ़ज़ूली का अनुबंध करें,' तो यह वकालत (तौकील) बन जाता है। २ हिजरी। (उर्दू अनुवाद): रद-अल-मुह्तार में 'बहर' से और वहाँ 'बज़ाज़िया' से उद्धृत है कि उचित है कि किसी आलिम के पास आकर अपनी ली हुई शपथ को बयान करे और किसी ऐसे फ़ज़ूली व्यक्ति (जो उसकी पत्नी को जानता हो) की ज़रूरत को बयान करे, फिर वह आलिम उसका किसी औरत से निकाह कर दे, और वह इस आलिम की कार्रवाई को अपने किसी कार्य से मान्य कर दे, तो शपथ नहीं टूटेगी। और इसी तरह अगर किसी समूह के सामने अपने लिए फ़ज़ूली के निकाह की ज़रूरत पेश करे, तो उस समूह में से कोई व्यक्ति स्वयं उसका निकाह कर दे। अलबत्ता वह

विशेष रूप से किसी व्यक्ति को फ़ज़ूली बनने के लिए न कहे, क्योंकि किसी से कहना कि 'तू फ़ज़ूली बन मेरा निकाह कर दे,' तो यह फ़ज़ूली नहीं होगा, बल्कि यह तो उसे वकील बनाना हुआ। (त)

मसला 7: सीतापुर से, 6 रमज़ान-उल-मुबारक 1312 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: पति-पत्नी के बीच ज़बानी विवाद हुआ, जिस पर पति ने कहा, "तू मेरी चीज़ खाए तो तलाक है," पति का इरादा इससे निकाह खत्म करने का हरगिज़ नहीं था, गुस्से में...

पाद-लेख: 1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-अल-ता'लीक़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/231 2 रद-अल-मुह्तार, बाब-अल-ता'लीक़, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/597

فتاوی رضویہ جلد سیزدھم ۱۳

[Box 1] تنحل الیمین اذا وجد الشرط مرۃ الا فی کلما فانہ ینحل بعد الثلاث_1 ان تمام الفاظ کی شرط جب پائی جائے تو قسم ختم ہو جائے گی ماسوائے لفظ "کلما" کیونکہ اس میں شرط تین طلاقوں کے بعد ختم ہوگی۔ (ت)

مگر اتنا ہوگا کہ عورت پر صرف دو طلاقوں کا مالک رہے گا کہ ایک تو نکاح پیش میں پڑ چکی اب اگر کبھی دو طلاقیں دے گا مغلظہ ہو جائے گی۔ دوسری صورت یہ ہے کہ کسی ذی علم کے سامنے تذکرہ کہے کہ میں نے یوں حلف کر لیا ہے کہ مجھے نکاح فضولی کی حاجت ہے یا کیا اچھا ہوتا کہ کوئی شخص بے میری توکیل کے بطور خود میرا نکاح اس سے کر دے تادی علم مذکور خود یا کسی اور اسے کہہ کر عورت کا نکاح اس سے کر دے جب اس شخص کو نکاح کی خبر پہنچے یہ زبان سے کچھ نہ کہے بلکہ کوئی فعل ایسا کرے جس سے اس نکاح موقوف کی اجازت ہو جائے، مثلاً عورت کو مہر بھیج دے یا لوگوں کی مبارکباد قبول کرے کہ اس صورت میں نکاح ہو جائے گا اور طلاق اصلاً واقع نہ ہو گی،

[Box 2] فی درالمحتار عن البحر عن البزازیۃ ینبغی ان یجیئ الی عالم ویقول لہ ماحلف واحتیاجہ الی نکاح الفضولی فیزوجہ العالم امرأۃ ویجیز بالفعل فلا یحنث وکذا اذا قال لجماعۃ لی حاجۃ الی نکاح الفضولی فزوجہ واحد منھم، اما اذا قال لرجل اعقد لی عقد فضولی یکون توکیلا_2 اھ ردالمحتار میں بحر سے منقول اور وہاں بزازیہ سے منقول ہے کہ مناسب ہے کہ کسی عالم کے پاس آکر جو اس نے قسم اٹھائی ہے اس کو بیان کرے اور کسی ایسے فضولی شخص (جو اس کی بیوی کو پہچانتا ہو) کی ضرورت کو بیان کرے تو وہ عالم اس کا کسی عورت سے نکاح کر دے اور یہ اس عالم کی کارروائی کو کسی اپنے عمل سے جائز کر دے تو حانث نہ ہوگا اور یونہی کسی ایسی جماعت کے

سامنے اپنے لئے فضولی کے نکاح کی ضرورت کو پیش کرے تو اس جماعت میں کوئی شخص خود اس کا نکاح کر دے البتہ خاص کسی شخص کو فضولی بننے کے لئے نہ کہے کیونکہ کسی کو کہنا کہ تو فضولی بن میرا نکاح کر دے، تو یہ فضولی نہ ہوگا، بلکہ یہ تو اس کو وکیل بنانا ہوا، اھ (ت)

مسئلہ ۷: از سیتا پور ۶ رمضان المبارک ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس امر میں کہ زن وشو میں باہم نزاع لفظی واقع ہوا اس پر شوہر نے کہا تو میری چیز کھائے تو طلاق ہے، شوہر کی مراد اس سے نقصان نکاح کی ہرگز ہرگز نہیں ہے غصہ میں

1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ 2 ردالمحتار باب التعلیق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۹۷

Fatawa Ridawiyya Volume 13

A senseless word escaped from the mouth [of the husband], now the wife does not take anything given by the husband, nor eats, nor wears, nor comes near him, and says that I fear if I eat then some Sharia-related loss (harm) will befall me. The husband absolutely denies this; his statement is that it came out of my mouth in anger, this was never my intention, he says under Sharia oath, from the day of the marriage contract he has never uttered such an evil word from his mouth. Please state the ruling, you will be rewarded.

The Answer: If the words were only as mentioned, in which there is no mention of what kind of divorce or upon whom it is, and in such a state the husband’s statement under oath is that I did not intend the divorce of my wife by these words, then in the aforementioned situation, according to numerous narrations in Fatawa Qadi Khan, Fatawa Khulasah, Fatawa Bazzaziyyah, Fatawa Hindiyyah, Fatawa Dhakhirah, Muheet of Imam Burhan-ud-Din, Qunyah, Bahr-ur-Ra'iq, Dur-e-Mukhtar, etc., there is no effect on the marriage from these words now, nor will any occur in the future from eating anything. For precise caution, if the words were like "if you eat my thing etc.", then the husband should gift that thing to the wife before she eats it, so that the statement "eating my thing" no longer remains true. And if the words were those mentioned in the honorable letter that "now if you eat what I have brought etc.", then the solution is that he should not bring the thing himself; rather, it should be ordered through a servant, a relative, or anyone else. This caution is only regarding eating; other than that, wearing, speaking, coming near, etc., no action will have any harmful effect. If it happens once, whether by mistake or intentionally, that eating contrary to the condition takes place, then even with precise caution, only one revocable divorce (Talaq-e-Raj'i) will occur. In that case, during the waiting period (Iddah), just saying "I have taken you back into my marriage" will suffice. After that, that condition will become void, and the wife can eat whatever she wants and as many times as she wants from things brought by her husband, divorce will never occur. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया खंड तेरहवाँ

एक निरर्थक शब्द मुँह से निकल गया, अब पत्नी पति की दी हुई कोई चीज़ नहीं लेती, न खाती है, न पहनती है, न पास आती है, और कहती है कि मुझे यह डर है कि अगर मैं खाऊँ तो मुझ पर शरीयत का नुकसान हो जाएगा। पति इस बात से पूरी तरह इनकार करता है; उसका कहना है कि गुस्से में मेरे मुँह से निकल गया, मेरी यह मुराद हरगिज़ न थी, वह शरिया की कसम खाकर कहता है कि निकाह के दिन से कभी उसने अपने मुँह से ऐसा बुरा शब्द नहीं निकाला है। समाधान बताएँ, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: यदि शब्द केवल उतने ही थे जितने ऊपर बताए गए हैं, जिनमें इसका कोई उल्लेख नहीं है कि तलाक कौन सी है या किस पर है, और ऐसी स्थिति में पति का शपथ पूर्वक यह बयान है कि इन शब्दों से मेरा इरादा अपनी पत्नी को तलाक देना नहीं था, तो बताई गई स्थिति में फ़तावा काज़ी ख़ाँ, फ़तावा खुलासा, फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदीया, फ़तावा ज़खीरा, मुहीत इमाम बुरहानुद्दीन, कुनिया, बहरुर रैक़, दुर्र-ए-मुख़्तार आदि की अनेक रिवायतों के अनुसार, इन शब्दों से निकाह पर न तो अभी कोई प्रभाव पड़ेगा और न ही भविष्य में किसी चीज़ के खाने से। सूक्ष्म सावधानी की दृष्टि से यह है कि यदि शब्द यह थे कि "मेरी चीज़ खाए" आदि, तो पति खाने की चीज़ को खाने से पहले पत्नी को उपहार (हिबा) कर दे ताकि "मेरी चीज़ खाना" सही साबित न हो। और यदि शब्द वे हैं जो सम्मानजनक पत्र में उल्लेखित हैं कि "अब अगर मेरी लाई हुई [चीज़] खाए" आदि, तो उपाय यह है कि वह चीज़ खुद न लाए; बल्कि नौकर या किसी रिश्तेदार या किसी और से मँगाकर दी जाए। यह सावधानी केवल खाने के संबंध में है, इसके अलावा पहनने, बोलने, पास आने-जाने आदि किसी भी कार्य से कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ेगा। और यदि एक बार अनजाने में या जानबूझकर ऐसा हो जाए कि शर्त के विरुद्ध भोजन करना हो जाए, तो उक्त शब्दों से सावधानी की दृष्टि से भी केवल एक तलाक़-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) का हुक्म होगा कि इद्दत के अंदर केवल ज़बान से इतना कह देना कि "मैंने तुझे अपने निकाह में वापस ले लिया" पर्याप्त होगा। उसके बाद वह शर्त समाप्त हो जाएगी और पत्नी चाहे जो और जितनी बार चाहे पति की लाई हुई चीज़ खाए, तलाक हरगिज़ नहीं होगा। और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

ایک مہمل لفظ زبان سے نکل گیا، اب زوجہ شوہر کی دی ہوئی کوئی چیز نہ لیتی ہے، نہ کھاتی ہے، نہ پہنتی ہے، نہ قریب آتی ہے، اور کہتی ہے کہ مجھ کو یہ خوف ہے کہ اگر میں کھاؤں تو مجھ پر شرعی نقصان پڑ جائے گا، شوہر اس امر سے قطعی انکار کرتا ہے اس کا بیان ہے کہ غصہ میں میرے منہ سے نکل گیا ہے ہرگز میری یہ مراد نہ تھی، بقسم شرعی کہتا ہے، یوم عقد سے گاہے اس نے ایسا لفظ بد منہ سے نہیں نکالا ہے بینوا توجروا۔

الجواب: اگر الفاظ اسی قدر تھے جو مذکور ہوئے جن میں کچھ ذکر نہیں کہ کون طلاق ہے کس پر طلاق ہے، اور ایسی حالت میں شوہر کا بقسم بیان کہ ان الفاظ سے میں نے طلاق زوجہ کی نیت نہ کی تو صورت مذکورہ میں بموجب روایات کثیرہ فتاویٰ قاضی خاں وفتاویٰ خلاصہ وفتاویٰ بزازیہ وفتاویٰ ہندیہ وفتاویٰ ذخیرہ و محیط امام برہان الدین وقنیہ وبحر الرائق و در مختار وغیرہا ان الفاظ سے نکاح پر کوئی اثر نہ اب ہے نہ آئندہ کسی چیز کے کھانے سے پیدا ہو، اور بنظر دقیق احتیاط یہ ہے کہ اگر الفاظ یہی تھے کہ میری چیز کھائے الخ جب تو جو چیز کھانے سے پہلے زوجہ کو شوہر ہبہ کر دے کہ اب میری چیز کھانا صادق نہیں، اور اگر لفظ وہ ہیں جو کرامت نامہ میں ارشاد ہوئے کہ اب اگر میری لائی ہوئی کھائے الخ تو علاج یہ ہے کہ خود چیز نہ لائی جائے نوکر یا عزیز یا غیر اوروں سے منگوا کر دی جائے، یہ احتیاط صرف کھانے میں ہے اس کے سوا پہننا، بولنا، قریب آنا جانا وغیرہا کسی فعل سے کوئی اثر ضرر نہیں اور ایک بار سہواً خواہ قصداً ایسا واقع ہو جائے کہ خلاف شرط کھانا عمل میں آئے تو الفاظ مذکورہ سے بنظر احتیاط بھی صرف ایک طلاق رجعی کا حکم ہوگا کہ عدت کے اندر فقط زبان سے اتنا کہہ دینا کہ میں نے تجھے اپنے

نکاح میں پھیر لیا کفایت کرے گا، اس کے بعد وہ شرط باطل ہو جائے گی جو چاہے اور جتنی بار چاہے شوہر کی چیز اس کی لائی ہوئی کھائے ہرگز طلاق نہ ہوگی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 13 13

Note This is that detailed fatwa of Ala Hazrat (may mercy be upon him) which was mentioned in the preface. This fatwa was not included in the old Fatawa Razawiyya. Given the importance of this issue and its relevance to this chapter, it has been included here in this volume.

Issue 8: From Ambehta, District Saharanpur, sent by Fazl Karim Ansari. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person named Fazl Karim called for his wife, Musammat Hasina Bi. Her mother refused to send her. Fazl Karim went to her and tried to persuade her. When he saw that she was not agreeing, he said to her, "If you do not come to your house by Asr today, I will separate you from my marriage." While returning, upon meeting his father-in-law, Siddiq Ahmad, or his wife's paternal uncle, Fazl Karim also told them, "Explain to them and send her. I have told her that if she does not come to her house by Asr, I will separate her from my marriage." At this, the wife's family members detained her and reported these words: Fazl Karim had said, "If you do not come to your house by Asr, there is an answer from my side." And Fazl Karim uttered these words in a state of rage and anger. They also state that Fazl Karim said to his wife's paternal uncle outside his father-in-law's house, "I have the forgiveness letter for the dower (mahr) written with me, and I have told her that if you do not come to your house by Asr, there is an answer from my side." Fazl Karim denies these words and also states under a Sharia oath that "Even if these were the words or whatever words I said, I did not have the intention of divorcing the aforementioned wife." At this, some gentlemen [a] without arbitrating Fazl Karim...

[a]: Meaning Mr. Maulvi Ashraf Ali Sahib Thanvi, author of Hifz al-Iman, regarding whom the ruling of the noble scholars of the two holy sanctuaries (Haramain Sharifain) in Husam al-Haramain Sharif is well-known and famous. 12

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

नोट आला हज़रत अलैहिर्रहमा का यह वह विस्तृत फतवा है जिसका उल्लेख प्रस्तावना में आ चुका है, यह फतवा पुराने फ़तावा रज़विया में शामिल नहीं था। इस मसले के महत्व और इस अध्याय से संबंधित होने के कारण इसे इस जिल्द में यहाँ शामिल कर लिया गया है।

मसला ८: अम्बेहटा, जिला सहारनपुर से, प्रेषक फ़ज़ल करीम अंसारी। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: फ़ज़ल करीम नामक व्यक्ति ने अपनी पत्नी मुसम्मात हसीना बी को बुलाया, उसकी माँ ने भेजने से इनकार कर दिया। फ़ज़ल करीम उसके पास गया और उसे समझाया, जब उसने देखा कि वह राजी नहीं हो रही है, तो उसने उससे कहा, "अगर आप आज असर तक अपने घर नहीं आईं, तो मैं आपको अपने निकाह से अलग कर दूँगा।" वापसी के रास्ते में, अपने ससुर सिद्दीक अहमद या अपनी पत्नी के ताया (बड़े चाचा) से मिलने पर, फ़ज़ल करीम ने उनसे भी कहा, "उन्हें समझाकर भेज दें, मैं कह आया हूँ कि अगर वह असर तक अपने घर नहीं आईं, तो मैं उन्हें अपने निकाह से अलग कर दूँगा।" इस पर पत्नी के घर वालों ने उन्हें रोक लिया और ये शब्द बताए कि फ़ज़ल करीम ये कह गया था कि "अगर आप असर तक अपने घर नहीं आईं तो मेरी तरफ से जवाब है" और ये शब्द फ़ज़ल करीम ने क्रोध और गुस्से की स्थिति में कहे थे। वे यह भी बयान करते हैं कि फ़ज़ल करीम ने अपने ससुर के घर के बाहर अपनी पत्नी के ताया से कहा था कि "महर का माफ़ीनामा मेरे पास लिखा रखा है और मैं कह आया हूँ कि अगर असर तक आप अपने घर नहीं आईं तो मेरी तरफ से जवाब है।" फ़ज़ल करीम इन शब्दों से इंकार करता है और शरीयत की कसम खाकर कहता है कि "मान लीजिए कि ये ही शब्द हों या कुछ भी हों, जो कुछ मैंने कहा था उसमें उक्त पत्नी को तलाक देने की मेरी नियत नहीं थी।" इस पर कुछ साहबान [अ] ने फ़ज़ल करीम की मध्यस्थता के बिना...

[अ]: अर्थात जनाब मौलवी अशरफ़ अली साहब थानवी, लेखक हिफ़्ज़ुल ईमान, जिनके बारे में हुसामुल हरमैन शरीफ़ में हरमैन शरीफ़ैन के उलमा-ए-किराम का हुक्म मशहूर और मारूफ़ है। १२

نوٹ اعلیٰحضرت علیہ الرحمۃ کا یہ وہ مفصل فتویٰ ہے جس کا ذکر پیش لفظ میں گزر چکا ہے، یہ فتویٰ فتاویٰ رضویہ قدیم میں شامل نہ تھا، اس مسئلہ کی اہمیت اور اس باب سے متعلقہ ہونے کے پیش نظر اس مقام پر جلد ہذا میں شامل کر لیا گیا ہے۔

مسئلہ ۸: از انبہٹہ ضلع سہارن پور مرسلہ فضل کریم انصاری بسم اللہ الرحمن الرحیم ط نحمدہ ونصلی علیٰ رسولہ الکریم۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمیٰ فضل کریم نے اپنی زوجہ مسماۃ حسینہ بی کو بلایا، اس کی والدہ نے بھیجنے سے انکار کیا، فضل کریم اس کے پاس گیا اور سمجھایا، جب دیکھا کہ وہ راضی نہیں ہوتی تو اس سے کہا کہ "اگر آج آپ عصر تک اپنے گھر نہ آئیں تو میں آپ کو اپنے نکاح سے علیحدہ کردوں گا" اور اثنائے راستہ میں ہنگام واپسی مکان خسر خود صدیق احمد یا تایا زوجہ خود کے مل جانے پر اس سے بھی فضل کریم نے کہا کہ "ان کو سمجھا کر بھجوادو میں کہہ آیا ہوں کہ عصر تک اپنے گھر نہ آئیں تو میں اپنے نکاح سے علیحدہ کردوں گا" اس پر اہالی زوجہ نے اس کو روک رکھا اور لفظ یہ بتائے کہ فضل کریم یہ لفظ کہہ گیا تھا کہ "اگر آپ عصر تک اپنے گھر نہ آئیں تو میری طرف سے جواب ہے" اور یہ الفاظ فضل کریم نے بحالت غیظ وغضب کہے تھے نیز یہ بھی بیان کرتے ہیں کہ فضل کریم نے باہر از مکان خسر خود تایا زوجہ خود سے کہا تھا کہ "معافی نامہ مہر میرے پاس لکھا رکھا ہے اور میں کہہ آیا ہوں کہ اگر عصر تک آپ اپنے گھر نہ آئیں تو میری طرف سے جواب ہے" فضل کریم ان الفاظ سے منکر ہے نیز بحلف شرعی کہتا ہے کہ بالفرض لفظیوں ہوں یا کچھ ہوں جو کچھ ہوں میں نے کہا تھا اس سے زوجہ مذکور کو طلاق دینے کی نیت میری نہ تھی" اس پر بعض صاحبان عہ

نے بے تحکیم فضل کریم عـہ: یعنی جناب مولوی اشرفعلی صاحب تھانوی مصنف حفظ الایمان جن کی نسبت حسام الحرمین شریف میں علماء کرام حرمین شریفین کا حکم مشہور و معروف ہے ۱۲

(Due to the relationship of the uncle of Musammat Hasina Bi, upon the said uncle's calling) he claimed to have given a ruling by himself and wrote this decision: that one irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) has occurred upon the wife of Fazl Kareem, the said Musammat Hasina Bi. In this situation, since Fazl Kareem had used the words "it is an answer" (Jawab hai), there is no need for Fazl Kareem's intention, and the wife Hasina Bi is her own judge in her matter.

And it was also written that Fazl Kareem was unable to present evidence, whereas on behalf of Hasina Bi, her relatives who are trustworthy and just witnesses were presented. Although in the mentioned decision, the evidence presented is in an unlimited form, it was learned from one of Hasina Bi's relatives that the mentioned uncle, aunt, and uncle's wife, along with one of their non-veiled maternal aunts, supported the statement of Musammat Hasina Bi.

The matters worthy of seeking a fatwa (Istifta) are: Is making this decision and giving a ruling of divorce in the mentioned situation religiously (Shari'ah) valid or void? And what is the command for the woman to understand in this situation—can she be her own judge or not? And what is the ruling regarding those who gave such a decision? Between these two statements, is the word of the husband Fazl Kareem reliable, or that of the wife Hasina Bi and her mentioned relatives? And will any kind of divorce religiously apply in the above-mentioned situation from these two words? Please write with arguments, explain and you shall be rewarded. The humble Fazl Kareem Ansari, resident of Ambheta, District Saharanpur.

The Answer:

O Allah! Guide to truth and correctness.

In the asked situation, there is absolutely no ruling of divorce. Here, according to Shari'ah, the word of Fazl Kareem is reliable because Hasina is the claimant of divorce and Fazl Kareem is the denier of it. The rule of Shari'ah is: *"The word is for the denier and the evidence is upon the claimant"* (The statement of the denier is considered reliable and the burden of proof lies with the claimant. -T). If he had said these exact words: "I will separate [her] from the marriage," then it is obvious that this is a dispute over a promise, and divorce does not occur from a promise. It is mentioned in *Jawahir al-Akhlati*:

"I divorce, I divorce," contrary to his saying "I will do," because it purely refers to the future[1].	"I divorce" (present tense), because of it being current, it is a divorce. Contrary to that, if he said "I will divorce" (future tense), then divorce will not occur because it is purely for the future. (T)

And if, for the sake of argument, he had said the same words as the wife's family members state, then since he takes an oath on the absence of intention for divorce, the ruling of divorce is purely void and an error. Firstly, although the word "jawab" (answer) in Urdu also comes in the meaning of severing ties, which can be a metaphor (Kinaya) for divorce...

---

[1] *Jawahir al-Akhlati*, Chapter on Explicit Divorce, Manuscript, p. 69. Page 118 of 688

(मुसम्मात हसीना बी के ताया के साथ संबंधों के कारण, उक्त ताया के बुलाने पर) उन्होंने स्वयं निर्णय देने का दावा किया और यह फैसला लिख दिया कि फज़्ल करीम की पत्नी मुसम्मात हसीना बी पर एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो गया है। इस स्थिति में कि फज़्ल करीम ने शब्द "जवाब है" कहा था, फज़्ल करीम की नीयत की आवश्यकता नहीं है, और पत्नी हसीना बी अपने मामले में स्वयं काज़ी (न्यायाधीश) है।

और यह भी लिखा गया कि फज़्ल करीम गवाही पेश करने में असमर्थ रहा, जबकि हसीना बी की ओर से उसके रिश्तेदार गवाह, जो विश्वसनीय और न्यायप्रिय हैं, पेश हुए। हालाँकि उक्त फैसले में पेश की गई गवाही असीमित रूप में है, लेकिन हसीना बी के एक रिश्तेदार से ज्ञात हुआ कि उक्त ताया, चाची और ताई (चाचा की पत्नी) तथा उनकी एक बिना पर्दे वाली मामी ने मुसम्मात हसीना बी के बयान का समर्थन किया है।

फतवा मांगने योग्य (इस्तिफ्ता) मामले ये हैं कि: क्या यह फैसला करना और उक्त स्थिति में तलाक का हुक्म देना शरीयत के अनुसार सही है या गलत? और इस अवसर पर महिला को क्या समझने का आदेश है—क्या वह स्वयं काज़ी हो सकती है या नहीं? और जिन लोगों ने ऐसा फैसला दिया उनके बारे में क्या हुक्म है? और इन दोनों कथनों में पति फज़्ल करीम का कथन विश्वसनीय है या पत्नी हसीना बी और उसके उक्त रिश्तेदारों का? और क्या इन दोनों शब्दों से शरीयत के अनुसार उपरोक्त स्थिति में किसी प्रकार का तलाक प्रभावी होगा? कृपया दलीलों के साथ लिखें, बताएं और पुण्य प्राप्त करें। विनीत फज़्ल करीम अंसारी, निवासी अनबेटा, जिला सहारनपुर।

उत्तर:

हे अल्लाह! सत्य और सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर।

पूछी गई स्थिति में तलाक का कोई हुक्म कतई नहीं है। यहाँ शरीयत के अनुसार फज़्ल करीम का कथन विश्वसनीय है क्योंकि हसीना तलाक की दावेदार है और फज़्ल करीम इससे इनकार कर रहा है। शरीयत का नियम है: "अल-क़ौलु लिल-मुनकिरि वल-बय्यिनतु अलल-मुद्दई" (कथन इनकार करने वाले का मान्य है और गवाही दावेदार के ज़िम्मे है। -त)। यदि उसने यही शब्द कहे थे कि "निकाह से अलग कर दूँगा", तो स्पष्ट है कि यह एक वादे पर विवाद है, और वादे से तलाक नहीं होता। 'जवाहर अल-अख्लाती' में है:

"तलाक मय-कुनम, तलाक मय-कुनम" (मैं तलाक देता हूँ) उसके'कुनम' (करूँगा) कहने के विपरीत, क्योंकि यह पूरी तरह से भविष्य को दर्शाता है[1]।

"तलाक मय-कुनम" (मैं तलाक देता हूँ), वर्तमान होने के कारण तलाक है। इसके विपरीत, यदि कहा "तलाक कुनम" (तलाक करूँगा), तो तलाक नहीं होगा क्योंकि यह केवल भविष्य के लिए है। (त)

और यदि मान लिया जाए कि उसने वही शब्द कहे जो पत्नी के घरवाले बताते हैं, तो जब वह तलाक की नीयत न होने पर शपथ लेता है, तो तलाक का हुक्म पूरी तरह से शून्य और त्रुटिपूर्ण है। प्रथम, यद्यपि उर्दू में "जवाब" शब्द का अर्थ संबंध विच्छेद भी आता है, जिसके कारण यह तलाक का संकेत (किनाया) हो सकता है...

---

[1] जवाहर अल-अख्लाती, अध्याय: स्पष्ट तलाक, हस्तलिखित प्रति, पृष्ठ 69। पृष्ठ 118 का 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

(بوجہ مراسم تایا مسماۃ حسینہ بی تایا مذکور کے بلالانے پر) بطور خود حکم ہونے کا دعوی کیا اور یہ فیصلہ لکھ دیا کہ زوجہ فضل کریم مسماۃ حسینہ بی پر ایک طلاق بائن ہوگئی اور اس صورت میں کہ فضل کریم نے لفظ "جواب ہے" کہا تھا نیت فضل کریم کی حاجت نہیں، اور زوجہ حسینہ بی اپنے معاملہ میں قاضی ہے،

اور یہ بھی لکھا کہ فضل کریم شہادت پیش کرنے سے قاصر رہا حالانکہ منجانب حسینہ بی اس کے رشتہ دار گواہ جو ثقہ اور عادل ہیں پیش ہوئے، اگرچہ فیصلہ مذکور میں شہادت پیش شدہ غیر محدود صورت کے ساتھ ہے لیکن ایک اقربا حسینہ بی سے معلوم ہوا کہ تایا مذکور و چچی و تائی زوجہ مذکور نے اور ان کی ایک ماما غیر پردہ نشین نے بیان مسماۃ حسینہ بی کی تائید کی ہے۔

قابل استفتاء یہ امور ہیں کہ یہ فیصلہ کرنا اور صورت مذکورہ میں طلاق کا حکم دینا شرعاً حق ہے یا باطل، اور عورت کو اس موقع پر کیا سمجھنے کا حکم ہے وہ خود قاضی ہوسکتی ہے یا نہیں، اور جن لوگوں نے ایسا فیصلہ دیا ان کی نسبت کیا حکم ہے اور ان ہر دو اقوال میں فضل کریم شوہر کا قول معتبر ہے یا زوجہ حسینہ بی اور اس کے اقربا مذکورہ کا، اور ان ہر دو الفاظ سے شرعاً کسی قسم کی طلاق مذکورہ بالاصورت میں عائد ہوگی یا نہیں، مدلل مرقوم فرمائیں، بینوا توجروا۔ احقر فضل کریم انصاری ساکن انبہٹہ ضلع سہارنپور

الجواب:

اللھم ھدایۃ الحق والصواب

صورت مستفسرہ میں ہر گز حکم طلاق نہیں، یہاں شرعاً فضل کریم کا قول معتبر ہے کہ حسینہ طلاق کی مدعیہ ہے اور فضل کریم اس سے منکر اور قاعدہ شرع ہے کہ القول للمنکر والبینۃ علی المدعی (منکر کی بات معتبر ہے اور گواہی مدعی کے ذمہ ہے۔ت) اگر اس نے یہی لفظ کہے تھے کہ "نکاح سے علیحدہ کردوں گا" جب تو ظاہر ہے کہ یہ نزاع وعدہ ہے اور وعدے سے طلاق نہیں ہوتی۔ جواہر اخلاطی میں ہے:

طلاق میکنم طلاق بخلاف قولہ کنم لانہ یتمحض الاستقبال[1]۔

طلاق میکنم، حال ہونے کی وجہ سے طلاق ہے اس کے برخلاف طلاق کنم، کہا تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ یہ محض استقبال ہے۔ (ت)

اور اگر بالفرض اس نے وہی لفظ کہے ہوں جو اہالی زن بیان کرتے ہیں تو جبکہ وہ عدم نیت طلاق پر حلف کرتا ہے حکم طلاق محض باطل وخطا ہے، اولا لفظ جواب اگرچہ اردو میں بمعنے ترک تعلق بھی آتا ہے جس کے سبب طلاق سے کنایہ ہوسکتا ہے

---

[1] جواہر الاخلاطی فصل فی طلاق الصریح قلمی نسخہ ص ۶۹ Page 118 of 688

To have 'given an answer' to a servant means to have dismissed him. However, in refined Urdu, and even in Persian, it is commonly used and widespread in the sense of rejection, denial, and lack of acceptance. 'Gada ra jawab dad' (gave an answer to the beggar. - T) means his request was rejected, or he was refused. If Zeid was asked for a certain task and he 'gave an answer', it means he did not agree or did not accept. If a request was made to Amr and he said, 'there is an answer from my side', it means it is not acceptable to me. Mukhlis Kashi speaks truly:

In this age, a beggar can still make a living, Even if he receives a [refusal] answer from a miserly master. (In this era, if a beggar is expert in his ways, he can manage even if he gets a miserly refusal. - T)

Fasih-ul-Mulk: The messenger says, 'I am now bringing the beloved's answer.' I had already heard the answer of fate four days ago.

Such idioms are abundant in poetry and prose. So, the word is certainly a valid rejection, and any word that is a valid rejection absolutely requires intention in every situation, even if in a state of anger or during a discussion of divorce. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar:

[Table] Arabic: The conditions are three: satisfaction, anger, and discussion of divorce. Allusions (Kinayat) are of three types: those that contain the possibility of rejection, those suitable for verbal abuse, or neither. In the state of satisfaction, all three depend on intention due to the possibility. In the state of anger, the first two, and in the state of discussing divorce, only the first one [result in a valid rejection].

Urdu: The states are three: pleasure, anger, and discussion of divorce. And allusions are three: those that do not contain the possibility of rejection. Thus, in the case of pleasure, all three can have a possibility; whatever he intends will happen. In the case of anger, the first two, and in the case of discussing divorce, only the first possibility, i.e., rejection, can occur. (T) [End of Table]

And when he denies the intention under oath, his word will certainly be accepted; neither can a judge order a divorce nor can the woman consider herself divorced. It is in Al-Durr al-Mukhtar:

[Table] Arabic: His word with his oath regarding the lack of intention shall be accepted, and it is sufficient for her to make him swear in his house.

Urdu: The husband's word under oath will be reliable, and it is sufficient for the wife to take an oath from him at home. (T) [End of Table]

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Kinayat, Mujtabai Press, Delhi, 1/224.
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Kinayat, Mujtabai Press, Delhi, 1/224.

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | १३

नौकर को जवाब दे दिया यानी बर्खास्त कर दिया। लेकिन वह उर्दू-ए-मुअल्ला बल्कि फ़ारसी में भी रद्द, इनकार और अदम-ए-क़बूल (अस्वीकृति) के अर्थ में प्रचलित और प्रसारित है। 'गदा रा जवाब दाद' (फ़कीर को जवाब दिया - त) यानी उसका सवाल रद्द किया, देने से इनकार कर दिया। ज़ैद से किसी काम के लिए कहा गया, उसने जवाब दिया यानी नहीं माना, स्वीकार नहीं किया। अम्र से कोई अनुरोध किया गया, उसने कहा 'मेरी तरफ से जवाब है' यानी मुझे मंज़ूर नहीं। मुखलिस काशी सच कहते हैं:

दरीं ज़माना गदा रंग मी तवानद बस्त अगर ज़ ख्वाजा-ए-मुमसिक जवाब मीगीरद (इस ज़माने में गदा अगर अपने ढंग का पुख़्ता (सक्षम) है, भले ही कंजूस मालिक उसे इनकार ही क्यों न कर दे। - त)

फसीह-उल-मुल्क: नामाबर कहता है अब लाता हूँ दिलबर का जवाब सुन चुका मैं चार दिन पहले मुक़द्दर का जवाब

इस किस्म के मुहावरे नज़्म (कविता) और नस्र (गद्य) में बहुतायत में हैं। तो वह शब्द निश्चित रूप से वैध 'रद्द' (अस्वीकृति) है, और जो शब्द वैध 'रद्द' हो, वह हर हाल में नीयत (इरादे) का मोहताज है, चाहे वह क्रोध की स्थिति हो या तलाक़ की चर्चा की स्थिति हो। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[तालिका] अरबी: स्थितियाँ तीन हैं: संतोष, क्रोध और तलाक की चर्चा। और संकेत (किनायात) तीन हैं: जिनमें अस्वीकृति की संभावना हो, जो गाली देने के लिए उपयुक्त हों, या कोई भी नहीं। संतोष की स्थिति में, संभावना के कारण तीनों नीयत पर निर्भर करते हैं। क्रोध की स्थिति में पहले दो, और तलाक की चर्चा की स्थिति में केवल पहला।

उर्दू: स्थितियाँ तीन हैं: रज़ा (प्रसन्नता), ग़ुस्सा और मुज़ाकरा-ए-तलाक़ (तलाक़ की चर्चा), और कनाए (संकेत) तीन हैं: [जिनमें] रद्द का एहतमाल (अस्वीकृति की संभावना) न हो। तो रज़ा की सूरत में तीनों एहतमाल हो सकते हैं, जिसकी नीयत करेगा वही होगा। और ग़ुस्सा की सूरत में पहले दोनों और मुज़ाकरा की सूरत में सिर्फ पहला एहतमाल यानी रद्द हो सकता है। (त) [तालिका समाप्त]

और जब वह शपथ के साथ नीयत का इनकार करता है, तो निश्चित रूप से उसकी बात मानी जाएगी; न काज़ी तलाक़ का आदेश दे सकता है और न ही स्त्री स्वयं को तलाक़शुदा समझ सकती है। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[तालिका] अरबी: नीयत न होने के संबंध में उसकी शपथ के साथ उसकी बात मानी जाएगी, और उसके लिए घर पर उससे शपथ लेना पर्याप्त है।

उर्दू: क़सम के साथ खाविन्द (पति) की बात मोतबर (विश्वसनीय) होगी और बीवी का घर में उससे क़सम ले लेना काफ़ी है। (त) [तालिका समाप्त]

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/224
2. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/224

पृष्ठ 119/688

نوکر کو جواب دے دیا یعنی برخاست کر دیا مگر وہ اردوئے معلّٰی بلکہ فارسی میں بھی بمعنی رد و انکار و عدم قبول شائع و ذائع ہے گدا را جواب داد (فقیر کو جواب دیا۔ت) یعنی اس کا سوال رد کیا، دینے سے انکار کر دیا، زید سے فلاں کام کو کہا اس نے جواب دیا یعنی نہ مانا، قبول نہ کیا، عمرو سے کوئی درخواست کی اس نے کہا میری طرف سے جواب ہے یعنی مجھے منظور نہیں۔ مخلص کاشی راست۔

دریں زمانہ گدارنگ می تواند بست اگر ز خواجہ ممسک جواب میگیرد (اس زمانہ میں گدا اگر اپنے ڈھنگ کا پختہ ہے اگر چہ بخل والا جواب بھی دے دے۔ت)

فصیح الملک۔ نامہ بر کہتا ہے اب لاتا ہوں دلبر کا جواب سُن چکا میں چار دن پہلے مقدر کا جواب

اس قسم کے محاورات نظم ونثر میں بکثرت ہیں۔ تو کلمہ یقیناً صالح رد ہے، اور جو کلمہ صالح رد ہو مطلقاً ہر حال میں محتاج نیت ہے اگرچہ حالتِ غضب ہو اگرچہ حالتِ مذاکرہ طلاق ہو۔ در مختار میں ہے:

[جدول] عربی: الحالات ثلثة رضی وغضب ومذاکرة والکنایات ثلث ما یحتمل الرد وما یصلح للسب اولا ولا فی الرضی تتوقف الثلثة علی نیة للاحتمال وفی الغضب الاولان وفي مذاکرة الطلاق الاول فقط ۱۔

اردو: حالات تین ہیں: رضا، غصہ اور مذاکرہ طلاق، اور کنائے تین ہیں: رد کا احتمال نہ رکھتا ہو، تو رضا کی صورت میں تینوں احتمال ہو سکتے ہیں جس کی نیت کریگا وہی ہوگا، اور غصہ کی

صورت میں پہلے دونوں اور مذاکرہ کی صورت میں صرف پہلا احتمال یعنی رد ہو سکتا ہے۔(ت)

[جدول ختم]

اور جب وہ حلف کے ساتھ نیت کا انکار کرتا ہے تو یقیناً اس کا قول مانا جائے گا، نہ قاضی حکم طلاق دے سکتا ہے نہ عورت اپنے آپ کو مطلقہ سمجھ سکتی ہے۔ در مختار میں ہے:

[جدول] عربی: والقول له بیمینه فی عدم النیة ویکفی تحلیفها له فی منزله ۲۔

اردو: قسم کے ساتھ خاوند کی بات معتبر ہو گی اور بیوی کا گھر میں اس سے قسم لے لینا کافی ہے۔ (ت) [جدول ختم]

1 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۲۴ 2 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۲۴

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Box:] "His statement 'due to the possibility' refers to what we mentioned: each of these words can mean divorce or something else, and the context doesn't point to either. Therefore, his intention will be asked, and his statement will be accepted judicially (Qada'an). - Badai' 1." [Urdu Box:] The reason for the author's statement "due to possibility" which we mentioned is that each of the mentioned words holds the possibility of divorce and non-divorce, while the state of affairs does not indicate either. Therefore, his intention will be questioned, and his statement will be judicially affirmed. Badai'. (T)

Secondly, suppose the word "jawab" (answer) was not capable of meaning rejection or denial, but rather, let's assume it wasn't a metaphor (kinayah) at all but was explicitly clear (sarih). Even then, in the queried situation, after Fazl Kareem denied the intention under oath, the ruling of divorce would never be possible. This is because there is no attribution (idafat) towards the woman. He only said, "It is an answer from my side." He didn't say who it was an answer to. Omitting the attribution always prevents the ruling of divorce when the husband denies the intention under oath. In Fatawa Khaniyah, then Fatawa Khulasah, then Fatawa Alamgiri, it is stated:

[Arabic Box:] "The wording for the first case: A man said to his wife in anger, 'Agar tu zan-e-man seh 3 talaq' (If you are my wife, three divorces) omitting the 'to' (you). It is not a divorce because he did not attribute the divorce to her 2." [Urdu Box:] That is, if a man said to his wife in a state of anger, "Tu meri aurat hai to teen talaq" (You are my woman, then three divorces). And he did not say, "Tu meri aurat hai tujhe teen talaq" (You are my woman, to you three divorces). Divorce will not occur because since he did not use the word "tujhe" (to you), he did not attribute the divorce to the woman.

Also, in Fatawa Imam Qazi Khan it is stated:

[Arabic Box:] "A woman said to her husband, 'Divorce me three times.' The husband said, 'Ainak (now) a thousand divorces.' His wife is not divorced because the speech is ambiguous 3." [Urdu Box:] Meaning, the woman said to the husband, "Give me three divorces." He said, "In the current state (fi al-haal), a thousand divorces." Divorce will not occur because it is not clear that he is giving divorce to his wife.

In Fatawa Khulasah it is stated:

[Arabic Box:] "She said 'Divorce me,' so he struck her and said 'Ainak talaq' (here is divorce)." [Urdu Box:] Meaning, the woman said, "Give me divorce." Upon this...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Al-Kinayat, Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/465. 2 Fatawa Qazi Khan, Section on Metaphors and Allusions, Naval Kishore, Lucknow, 3/215. 3 Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore, Lucknow, 2/215.

रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी बॉक्स:] "उनका कथन 'संभावना के कारण' उस बात को संदर्भित करता है जो हमने उल्लेख की: इनमें से प्रत्येक शब्द तलाक या कुछ और का अर्थ रख सकता है, और स्थिति किसी एक की ओर संकेत नहीं करती। इसलिए, उसकी नियत के बारे में पूछा जाएगा, और न्यायिक रूप से (क़ज़ाअन) उसके बयान को स्वीकार किया जाएगा। - बदाइ' 1." [उर्दू बॉक्स:] मातन के कथन 'संभावना' का कारण जो हमने उल्लेख किया वह यह है कि उक्त शब्दों में से प्रत्येक तलाक और गैर-तलाक की संभावना रखता है जबकि स्थिति किसी एक पर संकेत नहीं देती, इसलिए उसकी नियत पूछी जाएगी और न्यायिक रूप से उसके बयान की पुष्टि की जाएगी, बदाइ'। (त)

दूसरा, मान लीजिए कि शब्द "जवाब" (उत्तर) खंडन या इनकार का अर्थ देने में सक्षम नहीं था, बल्कि मान लीजिए कि वह सिरे से कनाया (रूपक) ही नहीं था बल्कि स्पष्ट (सरीह) था, तब भी पूछी गई स्थिति में, फज़ल करीम द्वारा शपथपूर्वक इरादे से इनकार करने के बाद, तलाक का हुक्म कभी भी संभव नहीं था। क्योंकि यहाँ औरत की ओर निसबत (इज़ाफ़त) नहीं है। उसने केवल इतना कहा है कि "मेरी ओर से जवाब है"। यह नहीं कहा कि किसको जवाब है। निसबत का न होना हमेशा तलाक के हुक्म को रोकता है जबकि पति शपथ के साथ इरादे से इनकार करे। फतावा खानिया, फिर फतावा खुलासा और फिर फतावा आलमगीरी में है:

[अरबी बॉक्स:] "पहले के लिए शब्द: एक आदमी ने गुस्से में अपनी पत्नी से कहा 'अगर तू ज़न-ए-मन से ३ तलाक' और 'तु' को छोड़ दिया। तलाक नहीं होगा क्योंकि उसने तलाक को उसकी ओर निसबत नहीं किया 2।" [उर्दू बॉक्स:] यानी अगर किसी व्यक्ति ने अपनी औरत से गुस्से की हालत में कहा "तू मेरी औरत है तो तीन तलाक"। और इस तरह नहीं कहा कि "तू मेरी औरत है तुझे तीन तलाक"। तलाक नहीं होगी क्योंकि जब उसने "तुझे" शब्द नहीं कहा तो तलाक को औरत की ओर निसबत नहीं किया।

साथ ही फतावा इमाम क़ाज़ी खाँ में है:

[अरबी बॉक्स:] "एक महिला ने अपने पति से कहा 'मुझे तीन तलाक दे दो।' पति ने कहा 'ऐनक (अब) हज़ार तलाक।' उसकी पत्नी को तलाक नहीं हुआ क्योंकि यह बात अस्पष्ट है 3।" [उर्दू बॉक्स:] यानी

औरत ने पति से कहा "मुझे तीन तलाक दे दे"। उसने कहा "फिलहाल हज़ार तलाक"। तलाक नहीं होगी क्योंकि इसमें अपनी औरत को तलाक देना स्पष्ट नहीं है।

फतावा खुलासा में है:

[अरबी बॉक्स:] "उसने कहा 'मुझे तलाक दे दो', तो उसने उसे मारा और कहा 'ऐनक तलाक' (यहाँ तलाक है)।" [उर्दू बॉक्स:] यानी औरत ने कहा "मुझे तलाक दे दे"। इस पर...

---

1 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/465. 2 फतावा क़ाज़ी खाँ, फ़स्ल फ़िल किनायात वल मबदलुलात, नवल किशोर, लखनऊ, 3/215. 3 फतावा क़ाज़ी खाँ, किताब अत-तलाक, नवल किशोर, लखनऊ, 2/215.

ردالمحتار میں ہے:

[عربی باکس:] قولہ للا حتمال لما ذکرنا من ان کل واحد من الالفاظ یحتمل الطلاق وغیرہ والحال لاتدل علی احدھما فیسأل عن نیتہ و یصدق فی ذلک قضاءً بدائع ۱۔ [اردو باکس:] ماتن کے قول لاحتمال کی وجہ جو ہم نے ذکر کی کہ مذکور الفاظ میں سے ہر ایک طلاق و غیر طلاق کا احتمال رکھتا ہے جبکہ حال کی دلالت کسی ایک پر نہیں لہذا اس کی نیت پوچھی جائے گی اور قضاءً اس کے بیان کی تصدیق کی جائے گی، بدائع۔ (ت)

ثانیا بالفرض لفظ "جواب" معنی رد و انکار کا صالح نہ ہوتا بلکہ جانے دیجئے یوں فرض کیجئے کہ وہ سرے سے کنایہ ہی نہ ہوتا بلکہ خاص صریح ہوتا جب بھی صورت مستفسرہ میں بعد اس کے کہ فضل کریم نے حلفا انکار نیت کیا، حکم طلاق زنہار ممکن نہ تھا کہ یہاں عورت کی طرف اضافت نہیں، صرف اتنا کہا ہے کہ "میری طرف سے جواب ہے" یہ کچھ نہ کہا کہ کس کو جواب ہے، اور ترک اضافت ہمیشہ مانع حکم طلاق ہے جبکہ شوہر بحلف انکار نیت کرے۔ فتاوی خانیہ میں پھر فتاوی خلاصہ پھر فتاوی عالمگیری میں ہے:

[عربی باکس:] واللفظ للاولی رجل قال لامرأتہ فی الغضب اگر تو زن من سہ ۳ طلاق وحذف الیاء لاتطلق لانہ مااضاف الطلاق الیھا ۲۔ [اردو باکس:] یعنی اگر کسی شخص نے اپنی عورت سے حالت غضب میں کہا "تو میری عورت ہے تو تین طلاق"۔ اور یوں نہ کہا کہ "تو میری عورت ہے تجھے تین طلاق" طلاق نہ ہوگی کہ جب اس نے "تجھ" کا لفظ نہ کہا تو طلاق کو عورت کی طرف اضافت نہ کیا۔

نیز فتاوی امام قاضی خاں میں ہے:

[عربی باکس:] امرأة قالت لزوجها طلقنی ثلاثا فقال الزوج اینك ہزار طلاق لاتطلق امرأته لانه کلام محتمل۔ ۳ [اردو باکس:] یعنی عورت نے شوہر سے کہا "مجھے تین طلاق دے دے" اس نے کہا "فی الحال ہزار طلاق" طلاق نہ ہوگی کہ اس میں اپنی عورت کو طلاق دینا صاف نہیں۔

فتاوی خلاصہ میں ہے:

[عربی باکس:] قالت طلقنی فضربها وقال اینك طلاق [اردو باکس:] یعنی عورت نے کہا "مجھے طلاق دے دے" اس پر

---

1 ردالمحتار باب الکنایات احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۶۵ 2 فتاوی قاضی خاں فصل فی الکنایات والمبدلولات نولکشور لکھنؤ ۳/۲۱۵ 3 فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۲/۲۱۵

It does not occur even if he says 'Your divorce occurs'.[1] | A man hit her and said, "Divorce at present," the divorce will not occur. But if he said, "Divorce to you at present," the divorce will occur.

It is in Fatawa Qazi Khan: A man said, "We ate bread and drank Nabidh (date wine), three to our wives." Then, after he remained silent for a while, another man said to him, "With divorce?" The man then said, "With three divorces." His wife is not divorced because when he finished speaking and remained silent for a period, this became the beginning of a new speech in which there is no attribution (Idhafah) to anything.[2] | A person said, "We ate bread and drank Nabidh, three to our women." Then, when he remained silent, another said to him, "Three divorces?" In response, he said, "Three divorces." Divorce will not occur because after speaking the first part, he remained silent for a while, so this became the beginning of a speech and it has no attribution to any side.

In Muheet, then in Fatawa Hindiyya, it is stated: Sheikh-ul-Islam Al-Faqih Abu Nasr was asked about a drunken man who said to his wife, "Do you want me to divorce you?" She said, "Yes." He then said in Persian, "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces, stand up and get away from me." And he claims that he did not intend divorce by these words. The statement is his statement.[3] | Meaning, Imam Sheikh-ul-Islam Faqih Abu Nasr was asked that a person said to his woman while intoxicated, "Do you want me to divorce you?" She said, "Yes." The man said, "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces, get up and go away from me." And his statement is that he did not intend divorce with these words, so his statement is credible.

Imam-e-Ajal Qazi Khan said: "Because he did not attribute the divorce to her."[4] His statement became credible because he did not attribute the divorce to the woman in these words, i.e., he did not say, "If you are my woman, then one divorce, two divorces, three divorces to you." Fatawa Dhakhira.

Then in Fatawa Alamgiriyyah, it is stated: Najm al-Din was asked about a person whose wife said to him... | Imam Najm al-Din (may Allah Almighty have mercy on him) was asked a question about a person...

1. Khulasat-ul-Fatawa, Kitab-ut-Talaq, Maktaba Habibiya Quetta, 6/27
2. Fatawa Qazi Khan, Kitab-ut-Talaq, Nawal Kishore Lucknow, 215/2

3. Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/383
4. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Suspended Divorce, Nawal Kishore Lucknow, 219/2 Page 121 of 688

जिल्द तेरहवीं | फ़तावा रज़विया | १३

लायका' वलौ काला ऐनक तलाक यका'।[1] | मर्द ने उसे मारा और कहा "फिलहाल तलाक़" तलाक़ न होगी और अगर कहा "फिलहाल तुझे तलाक़" तलाक़ हो जाएगी।

फ़तावा क़ाज़ी खाँ में है: रजुलुन काला "नान खुर्दयम व नबीद खुर्दयम ज़नान-ए-मा बह सह" सुम्मा काला लहू रजुलुन बाद मा सकत "बह तलाक़" फ़काल-अ-रज्जुलु "बह सह तलाक़" ला ततुलकु इम्रअतुहू लि-अन्नहु लम्मा फ़रागा अनिल कलाम व सकत साअतन् काना हाज़ा इब्तिदाउ कलामिन लैसा फ़ीहि इज़ाफ़तुन इला शय।[2] | एक शख़्स ने कहा "हमने रोटी खाई और नबीद पी हमारी औरतों को तीन" फिर जब चुप रहा दूसरे ने उससे कहा "तीन तलाक़ें" तो जवाब में उसने कहा "तीन तलाक़ें" तलाक़ न होगी कि जब वह पहली बात कह कर कुछ देर चुप रहा तो अब यह इब्तिदाई कलाम हुआ और इसमें किसी तरफ़ इजाफ़त नहीं।

मुहीत फिर फ़तावा हिन्दिया में है: सुइला शेखुल इस्लाम अल-फ़क़ीह अबू नस्र अन सुकरान काला लि-इम्रअतिही अतुरिदूना अन उतिल्लककि कालत ना'अम फ़क़ाला बिल-फ़ारसिया अगर तू ज़न-ए-मनी यक तलाक़ दो तलाक़ सह तलाक़ कोमी व अखरुजी मिन इंदी वहुवा यज़अमु अन्नहू लम युरिद बिह-ित्तलाक़ फल-क़ौलु क़ौलुहु।[3] | यानी इमाम शेखुल इस्लाम फ़क़ीह अबू नस्र से सवाल हुआ कि एक शख़्स ने अपनी औरत से नशे में कहा "क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तलाक़ दे दूँ" उसने कहा "हाँ" मर्द ने कहा "अगर तू मेरी जोरू है एक तलाक़ दो तलाक़ तीन तलाक़, उठ मेरे पास से दूर हो" और उसका बयान है कि उसने इन लफ़्ज़ों से तलाक़ की नियत न की, तो उसका क़ौल मोतबर है।

इमाम अजल क़ाज़ी खाँ ने फ़रमाया: लि-अन्नहू लम युज़िफ-ित्तलाक़ा इलैहा[4] इसका क़ौल इसलिए मोतबर हुआ कि उसने इन लफ़्ज़ों में तलाक़ को औरत की तरफ़ निस्बत न किया था यानी यूँ न कहा था कि अगर तू मेरी औरत है तो तुझे एक तलाक़ दो तलाक़ तीन तलाक़। फ़तावा ज़ख़ीरा

फिर फ़तावा आलमगीरिया में है: सुइला नजमुद्दीन अम्मन कालत लहू इम्रअतुहू मरा | इमाम नजमुद्दीन रहमतुल्लाह तआला से सवाल हुआ एक शख़्स

1. खुलासतुल फ़तावा किताबुत्तलाक़ मक्तबा हबीबिया क्वेटा 6/27
2. फ़तावा क़ाज़ी खाँ किताबुत्तलाक़ नवल किशोर लखनऊ 215/2

3. फ़तावा हिन्दिया अल-फ़स्लस साबे' फ़ित-तलाक़ बिल-अल्फ़ाज़िल फ़ारसिया नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/383
4. फ़तावा क़ाज़ी खाँ बाबुत-ता'लीक़ नवल किशोर लखनऊ 219/2 पेज 121 का 688

لایقع ولو قال اینك طلاق یقع۔[1] | مرد نے اسے مارا اور کہا "فی الحال طلاق" طلاق نہ ہوگی اور اگر کہا "فی الحال تجھے طلاق" طلاق ہو جائیگی۔

فتاویٰ قاضی خاں میں ہے: رجل قال "نان خوردیم و نبید خوریم زنان ما بہ سہ" ثم قال لہ رجل بعد ماسکت "بہ طلاق" فقال الرجل "بسہ طلاق" لا تطلق امرأتہ لانہ لما فرغ عن الکلام وسکت ساعۃ کان ہذا ابتداء کلام لیس فیہ اضافۃ الی شيء۔[2] | ایک شخص نے کہا "ہم نے روٹی کھائی اور نبید پی ہماری عورتوں کو تین" پھر جب چپ رہا دوسرے نے اس سے کہا "تین طلاقیں" تو جواب میں اس نے کہا "تین طلاقیں" طلاق نہ ہوگی کہ جب وہ پہلی بات کہہ کر کچھ دیر چپ رہا تو اب یہ ابتدائی کلام ہوا اور اس میں کسی طرف اضافت نہیں۔

محیط پھر فتاویٰ ہندیہ میں ہے: سئل شیخ الاسلام الفقیہ ابونصر عن سکران قال لامرأتہ اتریدون ان اطلقك قالت نعم فقال بالفارسیۃ اگر تو زن منی یک طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی واخرجی من عندی وھو یزعم انہ لم یرد بہ الطلاق فالقول قولہ۔[3] | یعنی امام شیخ الاسلام فقیہ ابونصر سے سوال ہوا کہ ایک شخص نے اپنی عورت سے نشہ میں کہا "کیا تو چاہتی ہے کہ میں تجھے طلاق دے دوں" اس نے کہا "ہاں" مرد نے کہا "اگر تو میری جورو ہے ایک طلاق دو طلاق تین طلاق، اٹھ میرے پاس سے دور ہو" اور اس کا بیان ہے کہ اس نے ان لفظوں سے طلاق کی نیت نہ کی، تو اس کا قول معتبر ہے۔

امام اجل قاضی خاں نے فرمایا: لانه لم یضف الطلاق الیها[4] اس کا قول اس لئے معتبر ہوا کہ اس نے ان لفظوں میں طلاق کو عورت کی طرف نسبت نہ کیا تھا یعنی یوں نہ کہا تھا کہ اگر تو میری عورت ہے تو تجھے ایک طلاق دو طلاق تین طلاق۔ فتاویٰ ذخیرہ

پھر فتاویٰ عالمگیریہ میں ہے: سئل نجم الدین عمن قالت له امرأته مرا | امام نجم الدین رحمۃ اللہ تعالیٰ سے سوال ہوا ایک شخص

1 خلاصۃ الفتاویٰ کتاب الطلاق مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۶/۲۷ 2 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۲۱۵/۲ 3 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۸۳ 4 فتاویٰ قاضی خاں باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۲۱۹/۲ Page 121 of 688

[Arabic/Persian Text]: "It is not [meaningful] to stay with you, give me a divorce." The husband said: "The likes of you have been given a divorce." And he said: "I did not intend divorce." Will he be believed? He said: "Yes."[1] | [Urdu Translation]: His wife said to him, "There is no benefit in me staying with you, give me a divorce." The husband said, "Divorce has been given to someone like you," and later claimed, "My intention was not divorce." Will his word be accepted? [The Imam] said: "Yes."

In Fatawa Imam Qazi Khan and then in Fatawa Bazzaziya, it is stated:

[Arabic Text]: He said to her, "Do not go out except with my permission, for I have sworn by divorce." She went out; divorce does not occur because he did not mention his oath was regarding her divorce. It is possible the oath was regarding the divorce of someone else, so his word is accepted.[2] | [Urdu Translation]: Meaning, he said to the woman, "Do not go out without my permission because I have taken an oath of divorce." The woman left without permission. Divorce will not occur because he did not say, "I have taken an oath for your divorce." It is possible he swore an oath for someone else's divorce. Therefore, if he denies the intention to divorce this woman, his statement is credible.

In Durr-e-Mukhtar:

[Arabic Text]: It [divorce] did not occur because he omitted attributing it to her.[3] | [Urdu Translation]: In this case, divorce did not happen because the divorce was not attributed to the woman.

There are many proofs for this issue in reliable books, and the entire research is in our treatise 'Al-Ka's ad-Dihaq bi-Idafat al-Talaq' (1313 AH). It is clearer than the sun that the person who, acting as a judge himself, issued a verdict of divorce here and decided that Haseena is out of the marriage bond—his action was pure ignorance, oppression, and a false assumption. That ruling is ignorance, that decision is invalid, and setting himself up as a judge is slander and misguidance.

Firstly, out of his ignorance, he considered the phrase "jawab hai" (it is an answer/retort) as a potential insult on the grounds that these words were spoken by Fazal Kareem in a state of anger and rage, and he ruled that divorce occurred legally (qada'an). He did not realize that it is potentially a rejection, and any word that is potentially a rejection cannot result in divorce in any state without the intention of divorce, neither religiously (diyanatan) nor legally (qada'an). It is in Hidayah:

[Arabic Text]: In the state of anger, he is believed in all [such cases]. | [Urdu Translation]: In the state of anger, the speaker's verification is accepted in all the aforementioned cases.

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/315. [2] Fatawa Bazzaziya on the margins of Fatawa Hindiyya, Book of Oaths, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/704. [3] Durr-e-Mukhtar, Book of Divorce, Chapter on Explicit [Divorce], Mujtabai Press Delhi, 1/218.

[अरबी/फारसी पाठ]: उसकी पत्नी ने कहा, "तुम्हारे साथ रहने का कोई फ़ायदा नहीं, मुझे तलाक़ दे दो।" पति ने कहा, "तुम जैसी को तलाक़ दे दी गई है।" फिर उसने कहा, "मेरा इरादा तलाक़ का नहीं था।" क्या उसका कथन स्वीकार किया जाएगा? उसने कहा: "हाँ।"[1] | [उर्दू अनुवाद]: उसकी पत्नी ने उससे कहा, "तुम्हारे साथ रहने में मेरा कोई लाभ नहीं है, मुझे तलाक़ दे दो।" पति ने कहा, "तुम जैसी को तलाक़ दे दी गई है," और बाद में दावा किया कि "मेरा इरादा तलाक़ का नहीं था।" क्या उसकी बात मानी जाएगी? फ़रमाया: "हाँ।"

फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ां और फिर फ़तावा बज़ज़िया में है:

[अरबी पाठ]: उसने उससे कहा, "मेरी अनुमति के बिना बाहर मत जाना, क्योंकि मैंने तलाक़ की शपथ ली है।" वह बाहर चली गई; तलाक़ नहीं होता क्योंकि उसने यह उल्लेख नहीं किया कि उसकी शपथ उसके तलाक़ के बारे में थी। संभव है कि शपथ किसी और के तलाक़ के बारे में हो, इसलिए उसकी बात स्वीकार की जाती है।[2] | [उर्दू अनुवाद]: अर्थात औरत से कहा "मेरी अनुमति के बिना बाहर न जाना कि मैं तलाक़ की शपथ ले चुका हूँ"। औरत बिना अनुमति चली गई, तलाक़ नहीं होगी क्योंकि उसने यह नहीं कहा कि तुम्हारी तलाक़ की शपथ ले चुका हूँ। संभव है कि किसी और की तलाक़ की शपथ ली हो, तो जब वह उस औरत को तलाक़ देने की नीयत से इनकार करता है तो उसका कथन विश्वसनीय है।

दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी पाठ]: यह (तलाक़) घटित नहीं हुआ क्योंकि उसने इसे उसकी ओर नहीं जोड़ा।[3] | [उर्दू अनुवाद]: इस स्थिति में तलाक़ इसलिए नहीं हुई कि औरत की तरफ तलाक़ का संबंध (इज़ाफ़त) नहीं किया।

विश्वसनीय पुस्तकों में इस मसले में बहुत से प्रमाण हैं और संपूर्ण शोध हमारे शोध पत्र 'अल-कास अद-दिहाक़ बि-इज़ाफ़त अल-तलाक़' (1313 हिजरी) में है। यह सूरज से भी अधिक स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति ने स्वयं न्यायाधीश बनकर यहाँ तलाक़ का आदेश दिया और हसीना के निकाह से निकलने का फ़ैसला किया, वह उसकी शुद्ध अज्ञानता, अत्याचार और झूठी कल्पना थी। वह आदेश अज्ञानता है और वह फ़ैसला अमान्य है और न्यायाधीश बनकर बैठना मिथ्यारोप और पथभ्रष्टता है।

सर्वप्रथम उसने अपनी अज्ञानता से "जवाब है" शब्द को अपमानजनक मान लिया, इस आधार पर कि ये शब्द फ़ज़ल करीम ने क्रोध और आवेश की स्थिति में कहे थे, और तलाक़ होने का कानूनी (क़ज़ान) आदेश दे दिया। वह यह नहीं समझा कि यह इनकार की संभावना रखता है, और जो शब्द इनकार की संभावना रखता हो, उससे किसी भी स्थिति में तलाक़ की नीयत के बिना तलाक़ नहीं हो सकती, न धार्मिक रूप से (दियानतन) और न ही कानूनी रूप से (क़ज़ान)। हिदाया में है:

[अरबी पाठ]: क्रोध की स्थिति में, सभी (ऐसे मामलों) में उसे सच माना जाता है। | [उर्दू अनुवाद]: गुस्से की हालत में उपर्युक्त सभी स्थितियों में कहने वाले की पुष्टि की जाएगी।

[1] फ़तावा हिंदिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ पर सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/315। [2] फ़तावा बज़ज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिए पर, शपथ की पुस्तक, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 4/704। [3] दुर्रे मुख़्तार, तलाक़ की किताब, स्पष्ट (तलाक़) का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/218।

برگ با تو باشیدن نیست مر اطلاق دہ فقال الزوج چوں تو روی طلاق دادہ شد وقال لم انو الطلاق ھل یصدق قال نعم۔[1] | سے اس کی عورت نے کہا "تیرے ساتھ میرے رہنے کا فائدہ نہیں مجھے طلاق دے دے" شوہر نے کہا "تجھ جیسی کو طلاق دے دی گئی" اور کہا میری نیت طلاق کی نہ تھی، کیا اس کا قول مانا جائیگا۔ فرمایا ہاں۔

فتاوی امام قاضی خاں پھر فتاوی بزازیہ میں ہے:

قال لہا لا تخرجی الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لایقع لعدم ذکر حلفہ بطلاقھا ویحتمل الحلف بطلاق غیرھا فالقول لہ[2]۔ | یعنی عورت سے کہا "بے میری اجازت کے باہر نہ جانا کہ میں طلاق کا حلف کر چکا ہوں"۔ عورت بے اجازت چلی گئی، طلاق نہ ہوگی کہ اس نے یہ نہ کہا کہ تیری طلاق کا حلف کر چکا ہوں ممکن ہے کہ اور کسی کی طلاق کا حلف کیا ہو تو جب وہ اس عورت کو طلاق دینے کی نیت سے منکر ہے تو اس کا قول معتبر ہے۔

درمختار ہے:

لم یقع لترکہ اضافہ الیھا۔[3] | اس صورت میں طلاق اس لئے نہ ہوئی کہ عورت کی طرف طلاق کی اضافت نہ کی۔

کتب معتمدہ میں اس مسئلہ میں سندیں بہت بکثرت ہیں اور تمام تحقیق ہمارے رسالہ الکاس الدھاق باضافۃ الطلاق (۱۳۱۳ھ) میں ہے تو آفتاب سے زیادہ روشن ہے کہ جس شخص نے خود حکم بن کر یہاں حکم طلاق دیا اور حسینہ کے نکاح سے نکلنے کا فیصلہ کیا وہ اس کا محض جہل و ظلم وزعم باطل تھا۔ وہ حکم جہالت اور وہ فیصلہ بطالت اور وہ حکم بن بیٹھنا افتراء وضلالت۔

اولاً اس نے اپنی جہالت سے لفظ "جواب ہے" کو محتمل دشنام ٹھہرا کر اس بناء پر کہ یہ الفاظ فضل کریم نے بحالت غیظ و غضب میں کہے تھے قضاء وقوع طلاق کا حکم دیا اور نہ جانا کہ وہ محتمل رد ہے اور جو لفظ محتمل رد ہو اس سے کسی حالت میں بے نیت طلاق نہیں ہو سکتی نہ دیانۃً نہ قضاءً۔ ہدایہ میں ہے:

فی حالۃ الغضب یصدق فی جمیع | غصہ کی حالت میں مذکورہ تمام صورتوں میں قائل کی تصدیق

[1] فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۱۵ [2] فتاویٰ بزازیہ علی ہامش فتاویٰ ہندیہ کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۴ / ۷۰۴ [3] درمختار کتاب الطلاق باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۱۸

Fatawa-e-Razvia Volume 13

ذلك لاحتمال الردّ - This will be done because of the possibility of rejection. (T)
It is in Al-Kafi:

في مذاكرة الطلاق يقع الطلاق في سائر الاقسام قضاءً الا فيما يصلح جوابا وردا فانه لا يجعل طلاقا -	In the discussion of divorce, divorce occurs in all cases legally except in those which are suitable for response and rejection, for it is not made a divorce. In all cases of discussion regarding divorce, divorce will occur, but in cases where there is a possibility of a response or a rejection, divorce will not occur in those cases. (T)

Secondly, it did not occur to him that the word is devoid of attribution, so in the state of denial, the intention for the ruling of divorce is impossible, even if the word 'divorce' itself was used, as passed in the aforementioned issues, not the word 'response' which is a metaphor and that too potentially means rejection and denial. It is in Al-Muheet:

لا يقع في جنس الاضافة اذ لم ينو لعدم الاضافة اليها -	Meaning in the category of attribution, when divorce is not attributed to the woman, divorce will not occur until the husband intends it.

Thirdly, he designated the woman as a judge in her own matter. If this means that the woman herself is the ruler and her decree is like that of a Sharia judge, enforceable and definitive, then it is blatant ignorance. Yes, where men themselves set themselves up as judges, it's no wonder if women there become judges too. And if the meaning is that regarding the words of divorce, the woman should understand what common people and judges do—that Allah knows the state of the heart, while all these act upon the apparent—then we have already cited the clear texts of Durr al-Mukhtar, Radd al-Muhtar, Fatawa Qadi Khan, Fatawa Alamgiri, Fatawa Khulasah, Fatawa Zakhirah, Fatawa Bazzaziyah, Fatawa Muheet, Bahr al-Ra'iq, and Kafi Sharh Wafi and Hidayah, that in this case, when the husband denies the intention under oath, even a judge cannot decree a divorce, so what is a woman's standing?

Fourthly, a clear example of his ignorance is that Fazl Karim failed to produce witnesses. He does not even know that here Fazl Karim is the defendant and Haseena is the plaintiff; what need does the plaintiff have for witnesses whose...

1. Al-Hidayah, Chapter on Divorce Before Consummation, Maktabah al-Arabiyah, Karachi, 2/354.
2. Kafi.
3. Muheet.

फतावा रज़विया खंड 13

ذلك لاحتمال الردّ - ऐसा अस्वीकृति (रद्द) की संभावना के कारण है। (त)
काफी में है:

في مذاكرة الطلاق يقع الطلاق في سائر الاقسام قضاءً الا فيما يصلح جوابا وردا فانه لا يجعل طلاقا - तलाक की चर्चा में, कानूनी तौर पर सभी स्थितियों में तलाक हो जाएगा, सिवाय उन स्थितियों के जो जवाब और रद्द के योग्य हों, क्योंकि उसे तलाक नहीं माना जाता। तलाक की चर्चा की सभी स्थितियों में तलाक हो जाएगा, लेकिन जिन स्थितियों में जवाब और रद्द होने की संभावना हो, उन स्थितियों में तलाक नहीं होगा। (त)

दूसरे, उसे यह नहीं सूझा कि शब्द संबंध (इज़ाफ़त) से रहित है, तो इनकार की स्थिति में तलाक के हुक्म की नियत असंभव है, भले ही शब्द 'तलाक' ही क्यों न होता जैसा कि उपरोक्त मसलों में गुज़रा, न कि शब्द 'जवाब' जो कि किनया (संकेत) है और वह भी रद्द और इनकार की संभावना रखता है।
मुहीत में है:

لا يقع في جنس الاضافة اذ لم ينو لعدم الاضافة اليها - अर्थात संबंध की श्रेणी में जब तलाक का संबंध औरत की ओर न किया जाए, तो तलाक नहीं होगा जब तक कि शौहर नियत न करे।

तीसरे, उसने औरत को खुद अपने मामले में काज़ी बताया। अगर इसका मतलब यह है कि औरत खुद हाकिम है और उसका हुक्म शरीयत के काज़ी की तरह लागू और अंतिम है, तो यह स्पष्ट अज्ञानता है। हाँ, जहाँ मर्द खुद हाकिम बन बैठते हों, वहाँ की औरतें अगर खुद काज़ी बन बैठें तो क्या अचरज। और अगर यह मुराद है कि तलाक के शब्दों में औरत को वही समझना चाहिए जो आम लोगों और काज़ी को, कि दिल का हाल अल्लाह जानता है, ये सब ज़ाहिर (प्रकट) पर अमल करने वाले हैं, तो हम दुर्रे मुख़्तार, रदुल मुख़्तार, फतावा क़ाज़ी खान, फतावा आलमगीरी, फतावा खुलासा, फतावा ज़ख़ीरा, फतावा बज़ाज़िया, फतावा मुहीत, बहरुर रैक़ और काफी शर्ह वाफी व हिदाया के स्पष्ट नुसूस (ग्रंथों के अंश) सुना चुके हैं कि इस सूरत में जबकि शौहर हलफ़ (शपथ) के साथ नियत का मुनकिर (इनकारी) है, काज़ी भी तलाक नहीं ठहरा सकता तो औरत क्या चीज़ है।

चौथे, उसकी अज्ञानता का साफ़ स्पष्ट नमूना वह है कि फ़ज़ल करीम गवाही पेश करने में असमर्थ रहा। वह इतना भी नहीं जानता कि यहाँ फ़ज़ल करीम प्रतिवादी (मुदआ अलैहि) है और हसीना वादी (मुदइया) है। वादी को गवाही की क्या ज़रूरत जिसके..

---

1. अल-हिदाया, तलाक का अध्याय प्रवेश से पहले, मकतबा अल-अरबिया, कराची 2/354।
2. काफी।
3. मुहीत।

ذلك لاحتمال الردّ - کی جائے گی کیونکہ رد کا احتمال ہے۔ (ت)

کافی میں ہے:

في مذاكرة الطلاق يقع الطلاق في سائر الاقسام قضاءً الا فيما يصلح جوابا وردا فانه لا يجعل طلاقا - مذاکرہ طلاق میں تمام صورتوں میں طلاق واقع ہو جائیگی لیکن جن صورتوں میں جواب اور رد ہونے کا احتمال ہو ان صورتوں میں طلاق نہ ہوگی۔ (ت)

ثانیا اسے نہ سوجھا کہ لفظ اضافت سے خالی ہے تو بحال انکار نیت حکم طلاق ناممکن ہے اگرچہ خود لفظ 'طلاق' ہوتا جیسا کہ مسائل مذکورہ میں گزرا، نہ کہ لفظ 'جواب' کہ کنایہ ہے اور وہ بھی محتمل رد و انکار۔ محیط میں ہے:

لا يقع في جنس الاضافة اذ لم ينو لعدم الاضافة اليها - یعنی جنس اضافت میں جب طلاق کو عورت کی طرف اضافت نہ کرے طلاق نہ ہوگی جب تک شوہر نیت نہ کرے۔

ثالثا اس نے عورت کو خود اپنے معاملے میں قاضی بتایا اس کا گریہ مطلب کہ عورت خود حاکم ہے اور اس کا حکم مثل قاضی شرع نافذ و ناطق ہے جب تو صریح جہالت ہے، ہاں جہاں کہ مرد خود حکم بن بیٹھتے ہوں وہاں کی عورتیں اگر خود قاضی بن بیٹھیں تو کیا عجب۔ اور اگر یہ مراد کہ الفاظ طلاق میں عورت کو وہی سمجھنا چاہئے جو عام لوگوں اور قاضی کو کہ دل کا حال اللہ جانتا ہے، یہ سب ظاہر پر عمل کرنے والے ہیں تو ہم در مختار و ردالمحتار و فتاوی قاضی خاں و فتاوی عالمگیری و فتاوی خلاصہ و فتاوی ذخیرہ و فتاوی بزازیہ و فتاوی محیط و بحر الرائق و

کافی شرح وافی وہدایہ کے نصوص جلیلہ سنا چکے کہ اس صورت میں جبکہ شوہر بحلف منکر نیت ہے قاضی بھی طلاق نہیں ٹھہرا سکتا تو عورت کیا چیز ہے۔

رابعا اس کی جہالت کا صاف واضح نمونہ وہ ہے کہ فضل کریم شہادت پیش کرنے میں قاصر رہا وہ اتنا بھی نہیں جانتا کہ یہاں فضل کریم مدعی علیہ ہے اور حسینہ مدعیہ ہے مدعیہ کو شہادت کی کیا حاجت جس کے

---

1. الهداية فصل في الطلاق قبل الدخول مكتبة العربية كراچی ۲/ ۳۵۴

2. كافي

3. محيط

صفحہ 123 کا 688

Fatawa Razawiyya Volume 13 13

...be rendered unable to present it. Fifthly, if in becoming an arbitrator he assumed that Fazl-e-Karim appointed him as such, while in reality it was not so, then he has committed a slander (iftira) against a Muslim. In the Pure Shariah, the punishment for a slanderer in Islam is 80 lashes. "And the punishment of the Hereafter is greater"[1] (and surely the punishment of the afterlife is even more severe). And if it is held that although Fazl-e-Karim did not appoint me, the Shariah has made it permissible to become an arbitrator and give a verdict without consent and arbitration, and such a verdict is legally valid and enforceable, then he has slandered the Pure Shariah. Slandering the Pure Shariah is slandering Allah Almighty. And only those without faith slander Allah Almighty. Allah Almighty says: "It is only those who do not believe... who invent falsehood"[2] (Only those who are not Muslims fabricate false slanders). Sixthly, he knew that according to the Pure Shariah, a decree of divorce cannot be issued in this situation, and yet he knowingly gave a verdict against the Shariah. Then let him learn his ruling from these noble verses:

Arabic Text	**Urdu Translation provided in image**
And whoever does not judge by what Allah has revealed - then it is those who are the wrongdoers (45)	Those who do not judge by what Allah has sent down are the wrongdoers.
And whoever does not judge by what Allah has revealed - then it is those who are the defiantly disobedient (47)	Those who do not judge by what Allah has sent down are the sinners.
And whoever does not judge by what Allah has revealed - then it is those who are the disbelievers (44)[3]	Those who do not judge by what Allah has sent down are the disbelievers.

When these are the rulings for those who do not judge according to the Shariah, then how much more severe will they be for those who knowingly act against the Shariah and represent it as the ruling of Shariah? And if he did not know and gave a verdict without knowledge, then let him take his ruling from this Hadith: "They gave fatwa without knowledge, so they went astray and led others astray."[4] (Narrated by Imams Ahmad, Bukhari, Muslim, Tirmidhi, and Ibn Majah from Abdullah bin Amr, may Allah be pleased with them both).

[1] Al-Quran Al-Karim 39/26 [2] Al-Quran Al-Karim 16/105 [3] Al-Quran Al-Karim 5/44 to 47 [4] Sahih Muslim, Kitab al-Ilm, Chapter on the Removal of Knowledge, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/420. Page 124 of 688

...प्रस्तुत करने में असमर्थ कर दिया जाए। पांचवां, यदि मध्यस्थ बनने में उसने यह मान लिया कि फ़ज़्ल-ए-करीम ने उसे ऐसा नियुक्त किया है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था, तो उसने एक मुसलमान पर मिथ्या आरोप (इफ़्तिरा) लगाया है। शुद्ध शरीयत में, इस्लाम में मिथ्या आरोप लगाने वाले की सज़ा 80 कोड़े है। "और निश्चय ही परलोक की सज़ा कहीं अधिक बड़ी है"[1] (और वास्तव में आख़िरत का अज़ाब और भी सख्त है)। और यदि यह माना जाए कि भले ही फ़ज़्ल-ए-करीम ने मुझे नियुक्त नहीं किया, लेकिन शरीयत ने बिना सहमति और मध्यस्थता के स्वयं मध्यस्थ बनना और निर्णय देना जायज़ कर दिया है, और ऐसा निर्णय शरीयत के अनुसार सही और लागू होता है, तो उसने शुद्ध शरीयत पर मिथ्या आरोप लगाया है। शुद्ध शरीयत पर मिथ्या आरोप लगाना अल्लाह अज़्वजल पर मिथ्या आरोप लगाना है। और अल्लाह अज़्वजल पर मिथ्या आरोप केवल बेईमान ही लगाते हैं। अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है: "झूठ तो वही गढ़ते हैं जो ईमान नहीं रखते"[2] (झूठे आरोप वही लगाते हैं जो मुसलमान नहीं हैं)। छठा, वह जानता था कि शुद्ध शरीयत के अनुसार इस स्थिति में तलाक़ का हुक्म नहीं हो सकता, और फिर भी उसने जानबूझकर शरीयत के विरुद्ध हुक्म दिया। तो वह इन आयतों से अपना हुक्म जान ले:

अरबी पाठ	**अनुवाद**
और जो अल्लाह के उतारे हुए के अनुसार हुक्म न करें, तो वही लोग ज़ालिम हैं (45)	जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें वे ज़ालिम हैं।
और जो अल्लाह के उतारे हुए के अनुसार हुक्म न करें, तो वही लोग फ़ासिक़ (पापी) हैं (47)	जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें वे फ़ासिक़ हैं।
और जो अल्लाह के उतारे हुए के अनुसार हुक्म न करें, तो वही लोग काफ़िर हैं (44)[3]	जो अल्लाह के उतारे पर हुक्म न करें वे काफ़िर हैं।

जब शरीयत के अनुसार हुक्म न करने वालों के लिए ये अहकाम (नियम) हैं, तो जो जानबूझकर शरीयत के विरुद्ध कार्य करें और उसे शरीयत का हुक्म बताएं, उनके लिए अज़ाब किस हद तक सख़्त होगा? और यदि वह नहीं जानता था और बिना ज्ञान के फ़तवा दिया, तो अपना हुक्म इस हदीस से ले: "उन्होंने बिना ज्ञान के फ़तवा दिया, तो वे स्वयं भी गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह

किया।"[4] (इसे इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने अब्दुल्ला बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है)।

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 39/26 [2] अल-क़ुरआन अल-करीम 16/105 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम 5/44 से 47 [4] सहीह मुस्लिम, किताब अल-इल्म, ज्ञान के उठ जाने का अध्याय, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/420 पृष्ठ 124/688

پیش کرنے سے اسے قاصر کیا جائے۔ خامساً حکم بننے میں اگر اس نے یہ زعم کیا کہ فضل کریم نے اسے حکم کیا اور وہ واقع میں ایسا نہ تھا تو اس نے ایک مسلمان پر افتراء کیا اور شرع مطہر میں مفتری کی سزا اسلام کے یہاں اسی ۸۰ کوڑے ہیں۔ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ 1 (اور بیشک آخرت کا عذاب اور سخت تر) اور اگر یہ ٹھہرایا کہ گو فضل کریم نے مجھے حکم نہ کیا مگر شریعت نے بے رضا و تحکیم خود حکم بن بیٹھنا اور فیصلہ کر دینا جائز کیا ہے اور ایسا فیصلہ شرعاً صحیح و نافذ ہوتا ہے تو اس نے شریعت مطہرہ پر افترا کیا، اور شریعت مطہرہ پر افترا اللہ عزوجل پر افترا ہے اور اللہ عزوجل پر افترا بے ایمان ہی کرتا ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے: اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ 2 جھوٹے افتراء وہی باندھتے ہیں جو مسلمان نہیں۔ سادساً وہ جانتا تھا کہ شرع مطہر سے اس صورت میں حکم طلاق نہیں ہو سکتا اور پھر دانستہ خلاف شرع حکم کیا جب تو ان آیات کریمہ سے اپنا حکم معلوم کرے کہ:

عربی متن	اردو ترجمہ
وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (۴۵)	جو اللہ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ ظالم ہیں،
وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (۴۷)	جو اللہ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ فاسق ہیں،
وَ مَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ 3 (۴۴)	جو اللہ کے اتارے پر حکم نہ کریں وہ کافر ہیں،

جب حکم شرع پر حکم نہ کرنے والوں کے لئے یہ احکام ہیں تو جو دانستہ حکم شرع کے خلاف کریں اور اسے حکم شرع بتائیں ان پر کس درجہ سخت تر ہوں گے اور اگر نہ جانتا تھا اور بے علم فتوٰی دیا تو اپنا حکم اس حدیث سے لے: افتوا بغیر علم فضلوا واضلوا 4 رواہ الائمۃ احمد و | بے علم فتوٰی دیا تو آپ بھی گمراہ ہوئے اور اوروں کو بھی گمراہ البخاری ومسلم والترمذی وابن ماجۃ عن عبد | کیا (اسے امام احمد، بخاری، مسلم، ترمذی اور ابن ماجہ نے اللہ بن عمرو رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ | عبداللہ بن عمرو رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ ت)

---

1 القرآن الکریم ۳۹/۲۶ 2 القرآن الکریم ۱۶/۱۰۵ 3 القرآن الکریم ۵/۴۴ تا ۴۷ 4 صحیح مسلم کتاب العلم باب رفع العلم و قبضہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۲۰/۲ صفحہ ۱۲۴ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya Volume Thirteenth 13

And know from this Hadith:

Whoever gives a fatwa without knowledge, the angels of the heavens and the earth curse him. (Narrated by Ibn Asakir from the Commander of the Faithful Ali, may Allah be pleased with him. – T)

In fact, looking at the facts of the present case, both aspects are present. This person who has set himself up as a judge and gives rulings contrary to Sharia is also ignorant. His ignorance has been made clear by us from his ruling itself for various reasons. Moreover, he is also one who deliberately rules against what Allah has revealed. Just a few days ago, in the case of Haji Bunyad Ali Bijnori, he committed the same ignorance and was cautioned by the Darul Ifta; the correct ruling was explained. Then, when a detailed fatwa was sent again on the specific question of the petitioner for the purpose of removing doubts, the ruling—even if he did not know it before—was now known to him, and he still intentionally acted against it. May Allah protect us.

Previously, he did not commit this opposition to what Allah revealed in some private matter of his own, but rather unjustly and unlawfully declared a Muslim's wife to be outside of her marriage and turned her against her husband. And this is the work of devils. Allah Almighty says:

“...but the devils disbelieved, teaching people magic... (until His words) ...and they learn from them that by which they cause separation between a man and his wife.”

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

“He is not of us who turns a wife against her husband.” (Narrated by Abu Dawood and al-Hakim with an authentic chain – T)

1. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Asakir from Ali, Hadith, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 10/193
2. Al-Quran al-Karim, 2/102
3. Al-Quran al-Karim, 2/102
4. Sunan Abi Dawood, Book of Divorce, Chapter on one who turns a wife against her husband, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/296

फ़तावा रज़विय्या जिल्द तेरहवीं १३

और इस हदीस से मालूम करें:

जो बिना ज्ञान के फतवा देता है, उस पर आसमान और ज़मीन के फरिश्ते लानत भेजते हैं। (इसे इब्न असाकिर ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। - त)

बल्कि मौजूदा सूरत के तथ्यों को देखते हुए, दोनों पहलू मौजूद हैं। यह हुक्म देने वाला बनकर बैठने वाला, शरीयत के खिलाफ हुक्म देने वाला जाहिल भी है, उसकी जहालत हमने खुद उसके इस हुक्म से ही कई कारणों से स्पष्ट कर दी है। और जानबूझकर अल्लाह द्वारा उतारे गए के खिलाफ हुक्म देने वाला भी है कि अभी कुछ ही दिन हुए हाजी बुनियाद अली बिजनोरी के मामले में उसने यही जहालत की थी और दारुल इफ्ता से उसे चेतावनी दी गई थी, सही हुक्म बताया गया था। फिर जब संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से सवाल करने वाले के विशिष्ट प्रश्न पर दोबारा विस्तृत फतवा भेजा गया, तो वह हुक्म - भले ही वह पहले न जानता हो - अब उसे ज्ञात था, और फिर भी उसने जानबूझकर इसके खिलाफ काम किया। अल्लाह हमें सुरक्षित रखे।

पहले उसने अल्लाह द्वारा उतारे गए के खिलाफ यह विरोध अपनी किसी निजी बात में नहीं किया, बल्कि एक मुसलमान की पत्नी को अन्यायपूर्ण और अवैध रूप से उसके निकाह से बाहर ठहराया और उसे पति से विमुख कर दिया, और यह शैतानों का काम है। अल्लाह अज़्ज़वजल फरमाता है:

"...लेकिन शैतान काफ़िर हैं, वे लोगों को जादू सिखाते हैं... (अल्लाह के कौल तक) ...जिससे वे पुरुष और उसकी स्त्री के बीच अलगाव पैदा करते हैं।"

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"वह हममें से नहीं है जो किसी स्त्री को उसके पति के खिलाफ भड़काए।" (इसे अबू दाऊद और हाकिम ने सही सनद के साथ रिवायत किया। - त)

1. कंज़ुल उम्माल, इब्ने असाकिर के हवाले से, अली की हदीस, मुअस्ससतुल रिसाला, बेरूत, १०/१९३
2. अल-कुरानुल करीम, २/१०२
3. अल-कुरानुल करीम, २/१०२

4. सुनन अबू दाऊद, किताबुल तलाक़, बाब: जो अपनी पत्नी को उसके पति के खिलाफ भड़काए, आफ़ताबे आलम प्रेस, लाहौर, १/२९६

पृष्ठ १२५ / ६८८

اور اس حدیث سے معلوم کرے:

من افتی بغیر علم لعنته ملئکة السماء والارض ۱۔

جو بغیر علم کے فتوی دے اس پر آسمان و زمین کے فرشتے لعنت کرتے ہیں۔ (اسے ابن عساکر نے امیر المومنین حضرت علی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ ت)

رواہ ابن عساکر عن امیر المومنین علی رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

بلکہ نظر بواقع صورت حاضرہ میں دونوں شقیں موجود ہیں، یہ حکم بن بیٹھنے والا خلاف شرع حکم دینے والا جاہل بھی ہے، اس کا جہل خود اس کے اس حکم ہی سے ہم نے بوجوہ ظاہر کردیا، اور دیدہ و دانستہ خلاف ما انزل اللہ حکم کرنے والا بھی ہے کہ ابھی چند روز ہوئے بمقدمہ حاجی بنیاد علی بجنوری اس نے یہی جہالت کی تھی اور اس پر دارالافتاء سے تنبیہ کی گئی حکم صحیح بتایا گیا پھر سائل کے مقررہ سوال بغرض دفع اوہام جہاں پر دوبارہ مفصل فتوی مرسل ہوا تو حکم اگر جب نہ جانتا تھا اب معلوم تھا اور پھر قصداً اس کا خلاف کیا، والعیاذ باللہ تعالٰی۔ سابقا اس نے یہ ما انزل اللہ کا خلاف اپنی کسی خانگی بات میں نہ کیا بلکہ ایک مسلمان کی زوجہ کو ناحق ناروا اسکے نکاح سے خارج ٹھہرایا اور شوہر سے برگشتہ بنایا، اور یہ شیاطین کا کام ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے:

وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۲ الیٰ قولہ تعالیٰ (الیٰ قولہ تعالیٰ) **شیاطین کافر ہیں لوگوں کو جادو سکھاتے ہیں**

فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۳۔ جس سے مرد اور اس کی عورت میں جدائی ڈالتے ہیں۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیس منا من خبب امرأة علی زوجها ۴۔ رواہ ابوداؤد والحاکم بسند صحیح عن۔ **جو کسی مرد سے اس کی زوجہ کو برگشتہ کرے وہ ہمارے گروہ سے نہیں (اس کو ابوداؤد اور حاکم [نے روایت کیا]۔ ت)**

۱ کنز العمال بحوالہ ابن عساکر عن علی حدیث ، مؤسسة الرسالة بیروت ۱۰/۱۹۳ ۲ القرآن الکریم ۲/۱۰۲ ۳ القرآن الکریم ۲/۱۰۲ ۴ سنن ابو داؤد کتاب الطلاق باب من خبب امرأته علی زوجها آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۲۹۶

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Boxed Text] Arabic: Abu Huraira and Al-Tabarani in 'Al-Saghir' and 'Al-Awsat' narrated similarly from Ibn Umar, and Abu Ya'la with a sound chain, and Al-Tabarani in 'Al-Awsat' from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). Urdu Translation: Al-Tabarani narrated in 'Al-Saghir' and 'Al-Awsat' from Abu Huraira, and similarly from Ibn Umar; Abu Ya'la narrated with a sound chain, and Al-Tabarani in 'Al-Awsat' from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). (T)

The ignorance and oppression of the one who issued this ruling can be described from many aspects, and are these seven "after seven years" any less? And Allah Almighty knows best.

[Seals and Endorsements] - Written by the humble servant, Ahmad Raza al-Qadiri, may he be forgiven, for the sake of Muhammad the Chosen One, the unlettered Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. - This is the truth. [Seal]: Muhammad Mustafa Raza Khan al-Qadiri, may he be forgiven. - The answer is correct and Allah Almighty knows best what is right. [Seal]: Written by Muhiuddin Muhammad Ahmad Raza al-Qadiri al-Barelvi, may his Lord quench his thirst from the fountain of His recorded generosity. - It is so. [Seal]: The poor one, Muhammad Raza Khan al-Qadiri, may he be forgiven. - He has done exceptionally well in what he conveyed and has been pleasing in his response, and Allah Almighty knows best what is correct. - Amjad Ali Azmi Razwi. - The answer is correct. [Seal]: Obaid al-Nabi Turab Mirza Razwi, may he be forgiven. - The answer is correct and Allah Almighty knows best what is correct. [Seal]: The poor one, Muhammad Hashmat Ali, may he be forgiven.

Page 126 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[बॉक्स किया हुआ पाठ] अरबी: अबू हुरैरा और अल-तबरानी ने 'अल-सगीर' और 'अल-औसत' में इब्ने उमर से इसी तरह रिवायत की है, और अबू याला ने एक सही सनद (श्रृंखला) के साथ, और तबरानी ने 'अल-औसत' में इब्ने अब्बास (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है। उर्दू अनुवाद: तबरानी ने 'अस-सगीर' और 'अल-औसत' में अबू हुरैरा से, और इसी तरह इब्ने उमर से रिवायत की; अबू याला ने सही सनद के साथ, और तबरानी ने 'अल-औसत' में इब्ने अब्बास (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की। (त)

इस हुक्म को जारी करने वाले की अज्ञानता और अन्याय को कई पहलुओं से बयान किया जा सकता है, और क्या ये सात "सात साल के बाद" कम हैं? और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[मुहरें और पृष्ठांकन] - विनम्र सेवक अहमद रज़ा अल-क़ादरी द्वारा लिखा गया, अल्लाह उन्हें मुहम्मद मुस्तफ़ा, उम्मी नबी, उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो, के वास्ते माफ़ करे। - यही सत्य है। [मुहर]: मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा खान अल-क़ादरी, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। - जवाब सही है और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है कि क्या सही है। [मुहर]: मुहीउद्दीन मुहम्मद अहमद रज़ा अल-क़ादरी अल-बरेलवी द्वारा लिखित, उनके प्रभु उन्हें उनकी दर्ज उदारता के झरने से तृप्त करें। - ऐसा ही है। [मुहर]: गरीब मुहम्मद रज़ा खान अल-क़ादरी, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। - उन्होंने जो बताया उसमें बहुत अच्छा किया और अपने जवाब में सुखद रहे, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है कि क्या सही है। - अमजद अली आज़मी रज़वी। - जवाब सही है। [मुहर]: ओबैद अल-नबी तुराब मिर्ज़ा रज़वी, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। - जवाब सही है और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है कि क्या सही है। [मुहर]: गरीब मुहम्मद हशमत अली, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।

पृष्ठ 126 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[باکس شدہ متن] عربی: ابی هريرة والطبراني فی الصغير والاوسط بنحوه عن ابن عمر وابو يعلى بسند صحيح والطبراني فی الاوسط عن ابن عباس رضی الله تعالیٰ عنهم ۔ اردو ترجمہ: نے ابوہریرہ سے طبرانی نے صغیر اور اوسط میں اسی طرح ابن عمرو سے ابو یعلی نے بسندِ صحیح اور طبرانی نے اوسط میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کیا۔ت)

اس حکم بننے والے کا جہل و ظلم بہت وجوہ سے بیان ہو سکتا ہے، اور یہ سات "بعد سبع سنوات" کیا کم ہیں واللہ تعالیٰ اعلم

[مہریں اور تصدیقات] - کتبہ عبده المذنب احمد رضا القادری عفی عنہ بمحمد المصطفیٰ النبی الامی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم - هذا هو الحق۔ [مہر]: محمّد مصطفی رضا خان القادری عفی عنہ - صح الجواب واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔ [مہر]: کتبہ محی الدین محمد احمد رضا القادری البریلوی سقاہ ربہ من منهل کرمہ المروی ۔ - ذلك كذلك۔ [مہر]: الفقیر محمد رضا خان القادری عفی عنہ - لقد اجاد فیما افاد واطاب فی ما اجاب واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب ۔ امجد علی اعظمی رضوی - الجواب صحیح۔ [مہر]: عبیدالنبی تراب مرزا رضوی عفی عنہ - صح الجواب واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔ [مہر]: فقیر محمد حشمت علی عفی عنہ

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

Endorsements of the Scholars of Budaun

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Praise be to Allah, and blessings and peace upon the Prophet.

If the husband only said these words: "If you don't come by Asr, I will separate you from the marriage," then this is merely a promise and has no relation to divorce. And if he said the words: "There is an answer from my side," then this can be included in indirect (kinayah) divorce. However, when the husband says under oath that it was not his intention, then his statement is credible, as the insightful respondent has proven from the book Radd al-Muhtar and others. In any case, giving a ruling of irrevocable divorce (Talaq Ba'in) based solely on these words, despite the husband's oath of no intention for divorce, is a clear error according to the books of Hanafi jurisprudence, as detailed by the correct respondent. And Allah knows best, and His knowledge is most complete and most perfect. Written by Abdul Rasool Muhib Ahmad al-Qadri, may Allah forgive him.

The answer is correct and right - Muhammad Abdul Muqtadir al-Qadri, may he be forgiven, Madrassa Qadriya, Budaun.

This is the investigation and it is worthy of following - The answer is right and the respondent is excellent.

The answer is correct, and Allah knows best what is right - Abdun Nabi Muhammad Ibrahim al-Qadri, may he be forgiven.

[Stamps]

Endorsements of the Scholars of Shahjahanpur

What the learned respondent answered is correct upon investigation - The humble servant Muhammad Riyasat Ali, may he be forgiven.

This answer is correct and the respondent is successful - Muhammad Sulaiman, may he be forgiven.

According to the above-mentioned narrations, divorce has not occurred. Written by His humble servant Ghulam Muhiuddin, may he be forgiven.

The answer is correct - The servant Muhammad Farasatullah, may he be forgiven.

[Stamps]

फतावा रज़विया खंड तेरह 13

बदायूँ के विद्वानों का समर्थन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है। अल्लाह की स्तुति, और पैगंबर पर आशीर्वाद और शांति।

यदि पति ने केवल ये शब्द कहे थे: "यदि तुम अस्र (शाम की नमाज़) तक नहीं आईं, तो मैं तुम्हें विवाह से अलग कर दूँगा," तो यह केवल एक वादा है और इसका तलाक से कोई संबंध नहीं है। और यदि उसने ये शब्द कहे थे: "मेरी ओर से उत्तर है," तो इसे परोक्ष (किनाया) तलाक में शामिल किया जा सकता है। हालाँकि, जब पति शपथ लेकर कहता है कि उसकी ऐसी कोई मंशा नहीं थी, तो उसका कथन विश्वसनीय है, जैसा कि विद्वान उत्तरदाता ने 'रद्द अल-मुह्तार' आदि पुस्तकों से प्रमाणित किया है। किसी भी स्थिति में, केवल इन शब्दों के आधार पर, पति की तलाक की मंशा न होने की शपथ के बावजूद, 'तलाक-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) का फैसला देना हनफी न्यायशास्त्र की पुस्तकों के अनुसार एक स्पष्ट त्रुटि है, जैसा कि सही उत्तरदाता ने विस्तार से बताया है। और अल्लाह बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे उत्तम है। अब्दुल रसूल मुहिब अहमद अल-कादरी द्वारा लिखित, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

उत्तर सही और उचित है - मोहम्मद अब्दुल मुक्तदिर अल-कादरी, मदरसा कादरिया, बदायूँ।

यह शोध है और अनुसरण के योग्य है - उत्तर सही है और उत्तरदाता श्रेष्ठ है।

उत्तर सही है, और अल्लाह बेहतर जानता है कि क्या सही है - अब्दुन नबी मोहम्मद इब्राहिम अल-कादरी।

[मुहरें]

शाहजहाँपुर के विद्वानों का समर्थन

विद्वान उत्तरदाता ने जो उत्तर दिया है वह शोध के अनुसार सही है - विनम्र सेवक मोहम्मद रियासत अली।

यह उत्तर सही है और उत्तरदाता सफल है - मोहम्मद सुलेमान।

उपरोक्त उल्लेखों के अनुसार तलाक नहीं हुआ है। उनके विनम्र सेवक गुलाम मुहिउद्दीन द्वारा लिखित।

उत्तर सही है - सेवक मोहम्मद फरासतउल्लाह।

[मुहरें]

पृष्ठ 127 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

تصدیقات علمائے بدایوں

بسم اللہ الرحمن الرحیم حامداً و مصلیاً و مسلماً

اگر زوج نے فقط یہی لفظ کہے تھے کہ "اگر عصر تک نہ آئیں تو نکاح سے میں تم کو علیحدہ کردوں گا" تو یہ تو فقط وعدہ ہے طلاق سے تعلق ہی کیا۔ اور اگر یہ لفظ کہے تھے کہ "میری طرف سے جواب ہے" تو یہ کنایہ طلاق میں داخل ہو سکتا ہے مگر جب شوہر بحلف کہتا ہے کہ میری نیت نہ تھی تو اسی کا قول معتبر ہے جیسا کہ مجیب لبیب نے کتاب ردالمختار وغیرہ سے ثابت کیا ہے، بہر حال صرف انہیں کلمات کی بناء پر باوجود حلفِ شوہر کے عدم نیت طلاق پر حکم طلاق بائن دے دینا ازروئے کتب فقہ حنفی صریح غلطی ہے کما فصلہ المجیب المصیب، واللہ اعلم وعلمہ اتم واحکم۔ حررہ عبدالرسول محب احمد القادری عفا اللہ عنہ۔

الجواب صحیح وصواب - محمد عبدالمقتدر القادری عفی عنہ مدرسہ قادریہ بدایوں

ھذا ھو التحقیق وبالاتباع حقیق - الجواب صواب والمجیب شاب

صح الجواب واللہ اعلم بالصواب - عبدالبنی محمد ابراہیم القادری عفی عنہ

[مہریں]

تصدیقات علمائے شاہجہانپور

ما اجاب الفاضل المجیب فھو صحیح بالتحقیق - العبد الفقیر محمد ریاست علی عفی عنہ

ھذا الجواب صحیح والمجیب نجیح - محمد سلیمان عفی عنہ

موافق روایات مذکورہ بالا طلاق واقع نہیں ہوئی۔ کتبہ عبدہ المسکین غلام محی الدین عفی عنہ

الجواب صحیح - العبد محمد فراست اللہ عفی عنہ

[مہریں]

Volume 13 Fatawa Razawiyya

Attestations of the Scholars of Delhi

In the case under question, the fatwa stating that an irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) has occurred, despite the denial and oath of Fazal Karim, is certainly incorrect. The correct view is what the respondent (Mujeeb Sahib) has written. As for the matter that if the erring Mufti carried out this proceeding intentionally, then God forbid (Wal-'iyazu Billah), he is undoubtedly deserving of Divine punishment. However, if it happened inadvertently due to an oversight, and he is a learned person and from the people of fatwa-giving, then in such a case, he deserves forgiveness.

Saifur Rahman, First Teacher, Madrasah Fatehpuri, Delhi. The answer is correct. Muhammad Purdil, Teacher, Madrasah Nu'maniyah, Delhi. [Seal: Ar-Rahman Muhammad Saif] [Seal: Muhammad Purdil 1315]

The answer is correct. Muhammad Umar (may Allah forgive him), Teacher, Madrasah Nu'maniyah, Delhi. The answer is correct. Muhammad Naseem Ahmad (may he be forgiven), Teacher, Madrasah Husain Bakhsh Marhoom, Delhi. How excellent is the wise respondent! Muhammad Karamatullah (may Allah forgive him), Dehlawi. The answer is correct and the respondent is right. Habib-ul-Mursaleen (may he be forgiven), former Teacher, Madrasah Husain Bakhsh Marhoom, Delhi. The answer is correct. Muhammad Naseem Ahmad (may he be forgiven), Teacher, Madrasah Husain Bakhsh Marhoom, Delhi. The one who answered is correct. Muhammad Mian (may he be forgiven), Teacher, Madrasah Husain Bakhsh, Delhi. It is so. Abu Muhammad Muhammad Deedar Ali al-Razvi al-Hanafi (may Allah forgive him and his parents).

दिल्ली के उलेमा की तस्दीक़ात

पूछे गए मामले में तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) होने का फतवा, फ़ज़ल करीम के इनकार और हलफ़ (शपथ) के बावजूद निश्चित रूप से गलत है। सही वही है जो मुजीब साहब (उत्तर देने वाले) ने लिखा है। रही यह बात कि यदि गलती करने वाले मुफ्ती ने जानबूझकर यह कार्रवाई की है (अल्लाह की पनाह), तो निस्संदेह वह ईश्वरीय दंड का पात्र है। और यदि उनसे यह भूलवश गलती हुई है और वे विद्वान और फतवा देने वालों में से हैं, तो ऐसी स्थिति में वे क्षमा के पात्र हैं।

सैफुर रहमान, प्रथम शिक्षक, मदरसा फतेहपुरी, दिल्ली। उत्तर सही है। मोहम्मद पुरदिल, शिक्षक, मदरसा नुमानिया, दिल्ली। [मोहर: अर-रहमान मोहम्मद सैफ] [मोहर: मोहम्मद पुरदिल १३१५]

उत्तर सही है। मोहम्मद उमर (अल्लाह उन्हें क्षमा करे), शिक्षक, मदरसा नुमानिया, दिल्ली। उत्तर सही है। मोहम्मद नसीम अहमद (उन्हें क्षमा किया जाए), शिक्षक, मदरसा हुसैन बख्श मरहूम, दिल्ली। जवाब देने वाला बुद्धिमान क्या ही खूब है! मोहम्मद करामतउल्ला (अल्लाह उन्हें क्षमा करे), देहलवी। उत्तर सही है और जवाब देने वाला सही रास्ते पर है। हबीबुल मुरसलीन (उन्हें क्षमा किया जाए), पूर्व शिक्षक, मदरसा हुसैन बख्श मरहूम, दिल्ली। उत्तर सही है। मोहम्मद नसीम अहमद (उन्हें क्षमा किया जाए), शिक्षक, मदरसा हुसैन बख्श मरहूम, दिल्ली। उत्तर देने वाला सही है। मोहम्मद मियां (उन्हें क्षमा किया जाए), शिक्षक, मदरसा हुसैन बख्श, दिल्ली। यह इसी तरह है। अबू मोहम्मद मोहम्मद दीदार अली रज़वी हनफ़ी (अल्लाह उन्हें और उनके माता-पिता को क्षमा करे)।

تصدیقات علمائے دہلی

صورتِ مسئولہ میں طلاق بائن واقع ہونے کا فتویٰ باوجودِ انکار اور حلف فضلِ کریم کے بیشک غلط ہے، صحیح یہی ہے جو مجیب صاحب نے تحریر فرمائی، باقی رہی یہ بات کہ مفتیِ مخطی نے اگر عمداً یہ کارروائی کی والعیاذ باللہ، تو بلاریب مستحقِ عذابِ الٰہی ہے اور اگر سہواً ان سے غلط سرزد ہوگیا ہے اور وہ صاحبِ عالم ہیں اہلِ افتاء ہیں تو اس صورت میں عفو کے مستحق ہیں۔

سیف الرحمن مدرس اول مدرسہ فتحپوری دہلی الجواب صحیح محمد پردل مدرس مدرسہ نعمانیہ دہلی [مہر: الرحمن محمد سیف] [مہر: محمد پردل ۱۳۱۵]

الجواب صحیح محمد عمر عفا اللہ عنہ مدرس مدرسہ نعمانیہ دہلی الجواب صحیح محمد نسیم احمد عفی عنہ مدرس مدرسہ حسین بخش مرحوم دہلی للہ در المجیب اللبیب محمد کرامت اللہ عفا عنہ دہلوی الجواب صحیح و المجیب مصیب حبیب المرسلین عفی عنہ سابق مدرس مدرسہ حسین بخش مرحوم دہلی الجواب صحیح محمد نسیم احمد عفی عنہ مدرس مدرسہ حسین بخش مرحوم دہلی اصاب من اجاب محمد میاں عفی عنہ مدرس مدرسہ حسین بخش دہلی ذلک کذالک ابو محمد محمد دیدار علی الرضوی الحنفی عفا اللہ عنہ و عن والدیہ

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiyya

Endorsements of the Scholars of Meerut

The aforementioned answer is correct, and the passages quoted in the answer illuminate its correctness like the sun. The phrase "If you do not come to your house by Asr, then it is a response from my side" is worthy of consideration. The clear word "jawab" (response) is a homonym (lafz-e-mushtarak) in the Urdu language, and according to the Hanafis, a homonym is not actionable without explanation. If someone makes a will to give one-third of their wealth to their 'mawali', and there is someone who freed the testator and someone whom the testator freed, then according to the Hanafis, the will is void. They state the reason for invalidity as the word 'mawali' being a homonym. It is unknown why the mind of the judge remained deprived of perceiving this. Despite the denial and lack of addition, why was the necklace of 'talaq-e-baina' (irrevocable divorce) hung around the neck of Fazl-e-Karim? Bravo to his manly courage! Therefore, the judge's decision is based on ignorance and is outside the path of the Hanafis. I do not wish to prolong this by quoting passages from Hanafi jurists; the passages written in the answer are sufficient, indeed more than sufficient for the fair-minded. And Allah Almighty knows best.

Ahmad Ali (may he be forgiven), teacher at Madrasa Arabiya Meerut, Anderkot. [Seal: Ahmad Ali, may he be forgiven, 1313]

The answer is correct. Abdullah Khan, teacher at Madrasa Islamiya, Meerut city. [Seal: Abdullah Khan]

Endorsements of the Scholars of Ahmedabad In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble and Merciful Messenger.

Thereafter, this humble servant has read this fatwa from beginning to end. His Eminence, Maulana Maulvi, the defender of the firm religion, Mr. Ahmad Raza Khan (may his outward and inward grace be pervasive) has poured a river of research into it. Now, for one who possesses the essence of faith, there is no choice but to accept and obey his command. And as for those who rule against this fatwa, this humble one explains their condition to his friends: Satanic revelation descends upon them, news of which the Lord of the Worlds gives in His Holy Book:

जिल्द तेरहवीं 13 फ़तावा रज़विया

मेरठ के विद्वानों के समर्थन (तस्दीक़ात)

उपरोक्त उत्तर सही है और उत्तर में जो उद्धरण (इबारात) नक़्ल के रूप में लिखे गए हैं, वे उत्तर की सत्यता को सूर्य की तरह रोशन करते हैं। यह वाक्यांश कि "यदि आप असर तक अपने घर नहीं आए, तो मेरी ओर से जवाब है" विचारणीय है। स्पष्ट शब्द "जवाब" उर्दू भाषा में एक अनेकार्थी शब्द (लफ़्ज़-ए-मुश्तरक) है, और हनफ़ियों के अनुसार अनेकार्थी शब्द बिना व्याख्या के अमल के योग्य नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति वसीयत करे कि मेरी संपत्ति का एक तिहाई हिस्सा मेरे 'मवाली' को दिया जाए, और वसीयत करने वाले को आज़ाद करने वाला भी मौजूद हो और वह भी जिसे वसीयत करने वाले ने आज़ाद किया हो, तो हनफ़ियों के अनुसार वसीयत बातिल (अमान्य) है। वे इसके बातिल होने का कारण यह बताते हैं कि शब्द 'मौली' अनेकार्थी है। पता नहीं क्यों न्यायाधीश की बुद्धि इसे समझने से वंचित रही, और इनकार तथा जोड़ (इज़ाफ़त) की अनुपस्थिति के बावजूद, 'तलाक़-ए-बाइना' (अंतिम तलाक़) का हार फ़ज़्ल-ए-करीम की गर्दन में क्यों डाल दिया गया? उसकी मर्दाना हिम्मत को सलाम! अतः न्यायाधीश का निर्णय अज्ञानता पर आधारित है और हनफ़ियों के मार्ग से बाहर है। मैं हनफ़ी न्यायविदों के उद्धरण नक़्ल करके इसे लंबा नहीं करना चाहता; उत्तर में जो उद्धरण लिखे गए हैं वे पर्याप्त हैं, बल्कि न्याय करने वालों के लिए ज़रूरत से ज़्यादा हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

अहमद अली (अल्लाह उन्हें माफ़ करे), शिक्षक, मदरसा अरबिया मेरठ, अंदरकोट। [मुहर: अहमद अली, अल्लाह उन्हें माफ़ करे, 1313]

उत्तर सही है। अब्दुल्लाह ख़ान, शिक्षक, मदरसा इस्लामिया, मेरठ शहर। [मुहर: अब्दुल्लाह ख़ान]

अहमदाबाद के विद्वानों के समर्थन (तस्दीक़ात) अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपावान है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित और दयालु रसूल पर दुरूद भेजते हैं।

इसके बाद, इस तुच्छ सेवक ने इस फ़तवे को शुरू से अंत तक पढ़ा है। हज़रत मौलाना मौलवी, दीन-ए-मतीन के संरक्षक, जनाब अहमद रज़ा ख़ाँ साहब (जिनका ज़ाहिरी और बातिनी फ़ैज़ आम हो) ने इसमें शोध की नदियाँ बहा दी हैं। अब जिसमें ईमान का अंश है, उसके लिए इसे स्वीकार करने और इसके आदेश को मानने के अलावा कोई चारा नहीं है। और जो लोग इस फ़तवे के विरुद्ध आदेश देते

हैं, यह तुच्छ सेवक अपने मित्रों को उनकी स्थिति समझाता है कि उन पर शैतान की वही (रहस्योद्घाटन) उतरती है, जिसकी ख़बर रब्बुल आलमीन ने अपनी पवित्र किताब में दी है:

تصدیقات علمائے میرٹھ

جواب مذکور الصدر درست ہے اور جواب میں جو عبارات بطورِ نقل تحریر فرمائی ہیں وہ جواب کی صحت کو آفتاب کی طرح روشن کرتی ہیں، یہ عبارت کہ "اگر آپ عصر تک اپنے مکان پر نہ آئیں تو میری طرف سے جواب ہے" قابلِ غور ہے، واضح لفظ "جواب" اردو زبان میں لفظِ مشترک ہے اور لفظِ مشترک بدون بیانِ احناف کے نزدیک قابلِ عمل نہیں، اگر کسی آدمی نے وصیت کی کہ ثلثِ مال میرے موالی کو دینا اور وصیت کنندہ کا آزاد کرنے والا ہے اور وہ بھی ہے جس کو وصیت کنندہ نے آزاد کیا ہے تو احناف کے نزدیک وصیت باطل ہے اور وجہِ بطلان کی بیان کرتے ہیں کہ لفظِ مولی مشترک ہے معلوم نہیں کہ حکم کا ذہن اس کے ادراک سے کیوں بے نصیب رہا، اور باوجودِ انکار و عدمِ اضافت، جوابِ طلاقِ بائنہ کا ہار فضلِ کریم کی گردن میں کیوں چسپاں کردیا، آفریں باد بریں ہمتِ مردانہ او پس فیصلہ حکم کا جہالت پر مبنی ہے اور طریقِ احناف سے خارج ہے، میں فقہائے احناف کی عبارات نقل کرکے طول دینا نہیں چاہتا، جواب میں جو عبارات تحریر فرمائی ہیں وہ کافی ہیں بلکہ عند الانصاف کفایت سے زائد ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

احمد علی عفی عنہ مدرس مدرسہ عربیہ میرٹھ اندر کوٹ (مہر: احمد علی عفی عنہ ۱۳۱۳)

جواب صحیح ہے عبداللہ خان مدرس مدرسہ اسلامی شہر میرٹھ (مہر: عبد اللہ خان)

تصدیقات علمائے احمد آباد بسم اللہ الرحمن الرحیم ط نحمدہ و نصلی علی رسولہ الرؤف الرحیم

امّا بعد، بندہ نے اول سے آخر تک اس فتویٰ کو پڑھا، حضرت مولانا مولوی حامی دین متین جناب احمد رضا خاں صاحب عم فیضہ الصوری والمعنوی نے اس میں دریائے تحقیق بہا دیا ہے، اب جس

میں مادہ ایمان ہے اس کے واسطے سوائے تسلیم کے اور اس کے حکم کو سر پر چڑھانے کے چارہ نہیں، اور جو لوگ اس فتویٰ کے خلاف حکم کرتے ہیں ان کے حال کو خاکسار اپنے احباب کو سمجھاتا ہے ان پر وحی شیطان کی نازل ہوتی ہے اس کی خبر رب العالمین اپنے کلام مجید میں دیتا ہے:

Fatawa Rizvia - Volume 13 Page 13

[Box 1] Arabic: وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا 1 - Translation: And thus We have made for every prophet an enemy - devils from among mankind and jinn, inspiring to one another decorative speech in delusion. (T)

And Allah Almighty said:

[Box 2] Arabic: وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ ○ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۖ أُولٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۖ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ○ 2 Translation: And they think that they have something [to stand upon]. Unquestionably, it is they who are the liars. Satan has overcome them and made them forget the remembrance of Allah. Those are the party of Satan. Unquestionably, the party of Satan - they are the losers. (T)

[Box 3] Persian: A pious person saw the cursed Satan sitting idle, relaxed from the task of misguiding and diverting people from the truth. When he asked for the reason, the accursed Satan replied, "The evil scholars (ulama-e-soo) of this time are my great helpers in this task, and they have freed me from it. In truth, whatever laxity, compromise, and shortcoming is visible in the affairs of Sharia, and in the promotion of the faith and community, is all due to the ill-fortune and malicious intent of the evil scholars." 3. Translation: A pious person found the cursed Satan sitting idle and content, away from the work of misguiding and diverting from the truth. When he asked the reason, the accursed Satan said that the evil scholars of this time are my great helpers in this work, and they have freed me from it. The reality is that whatever laxity, compromise, and every shortcoming that is appearing in the affairs of religion and Sharia, and in the promotion of the faith and nation, is all due to the ill-fortune and bad intentions of these evil scholars. (T)

This passage has been transcribed by the author from 'Maktubat Imam Rabbani' by Hazrat Mujaddid Alf Sani (may Allah sanctify his noble secret), Volume 1, page 93, Letter 33. Now, those who wish to follow the inspiration of Satan will, through the misfortune of their own souls, become part of the 'Party of Satan'. Allah the Almighty has prepared Hell for their burning and punishment. And those who from Satan...

1. Al-Quran Al-Karim 6/112
2. Al-Quran Al-Karim 58/18, 19
3. Maktubat Imam Rabbani, Thirty-third Letter, Naval Kishore Lucknow 1/74

फतावी रिज़विया - खंड 13 पृष्ठ 13

[बॉक्स 1] अरबी: وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا। अनुवाद: और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन बनाए हैं, इंसानों और जिन्नों में से शैतान, जो एक-दूसरे के मन में धोखे के लिए चिकनी-चुपड़ी बातें डालते हैं। (त)

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

[बॉक्स 2] अरबी: وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى شَيْءٍ ۭ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ ○ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۭ أُولٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۭ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ○ 2 अनुवाद: और वे समझते हैं कि वे किसी आधार पर हैं। सुनो, निःसंदेह वे ही झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू पा लिया है और उन्हें अल्लाह की याद भुला दी है। वे शैतान के गिरोह हैं। सुनो, निःसंदेह शैतान का गिरोह ही घाटे में रहने वाला है। (त)

[बॉक्स 3] फारसी: एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति ने शापित शैतान को बेकार बैठे देखा, जो लोगों को गुमराह करने और सच्चाई से भटकाने के काम से निश्चिंत था। जब उसने इसका कारण पूछा, तो अभिशप्त शैतान ने उत्तर दिया, "इस समय के बुरे विद्वान (उलेमा-ए-सू) इस काम में मेरे बड़े मददगार हैं, और उन्होंने मुझे इस काम से मुक्त कर दिया है। वास्तव में, सत्य यह है कि धर्म और शरीयत के मामलों में, और विश्वास और समुदाय के प्रचार में जो भी ढिलाई, समझौता और कमी दिखाई दे रही है, वह सब बुरे विद्वानों के दुर्भाग्य और दुर्भावना के कारण है।" 3. अनुवाद: एक नेक इंसान ने शैतान को बेकार बैठा और गुमराह करने और हक से हटाने के काम से बेफिक्र पाया। जब उसने इसकी वजह पूछी, तो लानती शैतान ने कहा कि इस दौर के बुरे उलेमा इस काम में मेरे बड़े मददगार हैं और उन्होंने मुझे इस काम से फुर्सत दिला दी है। हकीकत यही है कि इस जमाने में दीन व शरीयत के मामलात में जो सुस्ती और कोताही दीन व मिल्लत की तरक्की में दिखाई दे रही है, वह इन सब बुरे उलेमा की मनहूसियत और बदनीयती की वजह से है। (त)

यह इबारत लेखक ने हज़रत मुजद्दिद अल्फ सानी (अल्लाह उनके पाक राज़ को मुकद्दस करे) की 'मकतूबत इमाम रब्बानी', खंड 1, पृष्ठ 93, पत्र 33 से उद्धृत की है। अब, जो लोग शैतान की वह्य (प्रेरणा) पर चलना चाहते हैं, वे अपने नफ्स की शामत से 'हिज़्बुश्शैतान' (शैतान का गिरोह) हो

जाएंगे। अल्लाह तआला ने उनके जलने और सज़ा के लिए जहन्नुम तैयार कर रखी है। और जो शैतान से...

1. अल-कुरान अल-करीम 6/112
2. अल-कुरान अल-करीम 58/18, 19
3. मकतूबत इमाम रब्बानी, तैंतीसवां मकतूब, नवल किशोर लखनऊ 1/74

पेज 130 ऑफ़ 688

فتاوٰی رضویہ - جلد سیزدہم صفحہ ۱۳

[باکس 1] عربی: وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا - 1 ترجمہ: اور اسی طرح ہم نے ہر نبی کے دشمن کئے ہیں آدمیوں اور جنوں میں کے شیطان کہ ان میں ایک دوسرے پر خفیہ ڈالتا ہے بناوٹ کی بات دھوکے کو۔ (ت)

وقال اللہ تعالٰی:

[باکس 2] عربی: وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَى شَيْءٍ ط أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُونَ ○ اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللهِ ط أُولٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ط أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُونَ ○ 2 ترجمہ: اور وہ یہ سمجھتے ہیں کہ انہوں نے کچھ کیا، سنتے ہو بیشک وہی جھوٹے ہیں، ان پر شیطان غالب آگیا تو انہیں اللہ کی یاد بھلا دی، وہ شیطان کے گروہ ہیں سنتا ہے بیشک شیطان ہی کا گروہ ہار میں ہے۔ (ت)

[باکس 3] فارسی: عزیزے شیطان لعین را دید کہ فارغ نشستہ ست و از تضلیل و اغوا خاطر جمع ساختہ آں عزیز سر آنرا پرسید لعین گفت کہ علمائے سوء ایں وقت دریں کار با من خود مدد عظیم کردند و مرا ازیں مہم فارغ ساختند و الحق دریں زمان ہر سستی و مداہنتی کہ در امور شرعیہ واقع شدہ است و ہر فتوے کہ در ترویج ملت و دین ظاہر گشتہ ست ہمہ از شومی علمائے سوء ست و فساد نیات ایشاں 3۔ ترجمہ: ایک عزیز نے شیطان کو فارغ بیٹھا اور گمراہ کرنے اور حق سے ہٹانے کے کام سے مطمئن پایا تو عزیز نے اس سے وجہ پوچھی تو شیطان لعین نے کہا اس وقت کے علمائے سوء اس کام میں میرے بڑے مددگار ہیں اور مجھے اس کام سے انہوں نے فارغ کر دیا اور حقیقت یہی ہے کہ اس زمانے میں دین و شریعت کے امور میں جو سستی اور مداہنت اور ہر

کوتاہی جو دین و ملت کی ترویج میں ظاہر ہو رہی ہے یہ تمام علمائے سوء کی نحوست اور بد نیتی کی وجہ سے ہے۔ (ت)

یہ عبارت راقم نے مکتوبات امام ربانی حضرت مجدد الف ثانی قدس اللہ سرہ العزیز کی جلد اول کے ص ۹۳ مکتوب ۳۳ سے نقل کی ہے، اب جو لوگ شیطان کی وحی پر چلنا چاہتے ہیں وہ اپنے نفس کی شامت سے حزب الشیطان ہو جائیں ان کے جلانے اور سزا دینے کے واسطے اللہ تعالیٰ نے جہنم تیار کر رکھی ہے اور جو شیطان سے

1 القرآن الکریم ۶ / ۱۱۲ 2 القرآن الکریم ۱۸، ۱۹ / ۵۸ 3 مکتوبات امام ربانی مکتوب سی و سوم نولکشور لکھنؤ ۱ / ۷۴

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

They commit disbelief (kufr) while claiming to believe in Allah Almighty. For their instruction, the godly scholars (Ulama-e-Rabbaniyyeen) have written the command of Shari'ah with evidence. "So what is there after truth except error?" (What else remains after the truth but deviation? - T). May the Lord of Honor, Blessed and Exalted, make this enlightening writing a means of guidance for His servants. Ameen, then Ameen. This is what I have (to say), and Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and most perfect.

[Right Stamp Area] The answer is correct. Muhammad Khalil-ur-Rahman Sunni Hanafi Qadri

[Left Stamp Area] Written by the one in need of his Powerful Lord, Abdul Rahim bin Pir Bakhsh Al-Sunni Al-Hanafi Al-Qadri Al-Naqshbandi Al-Ahmadabadi, First Teacher at Madrasa Qadriya. 1315 Hijri. [Seal: Abdul Rahim]

[Middle Seals Section] The answer is correct. O Allah, Kun-Kun Sher Muhammad [Seal]

Yes, the answer is good and the research is commendable. [Seal: Abdul Karim]

[Section: Attestations of the Scholars of Jabalpur]

(Right Side Text): Indeed, this is the truth, and the truth is most worthy of being followed. Written by the lowliest of the servants of Allah, the Possessor of Majesty and Honor, awaiting His grace, Muhammad Abdus Salam Al-Sunni Al-Hanafi Al-Qadri Al-Razavi Al-Jabalpuri, may he be forgiven.

(Left Side Text): What Maulana, the Imam of Researchers, answered is indeed the manifest truth. Written by the needy (al-faqir), Abdul Baqi Muhammad Burhan-ul-Haq Al-Razavi Al-Jabalpuri, may Allah be with him.

Page 131 of 688 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

वे कुफ्र (अविश्वास) करते हैं और अल्लाह तआला पर ईमान (विश्वास) लाने का दावा करते हैं। उनके समझाने के लिए ईश्वरीय विद्वानों (उलमा-ए-रब्बानीन) ने शरीयत के आदेश को प्रमाणों के साथ लिख दिया है। "तो सत्य के बाद सिवाय भटकाव के और क्या है?" (सत्य के बाद फिर भटकाव के अलावा और क्या रह जाता है? - टी)। इज़्ज़त का मालिक, बरकत और महानता वाला रब इस प्रकाशमयी लेखन को अपने बंदों के लिए मार्गदर्शन का साधन बनाए। आमीन, फिर आमीन। यह मेरे पास जो था वो है, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है।

[दाहिना मुहर क्षेत्र] उत्तर सही है। मुहम्मद खलील-उर-रहमान सुन्नी हनफी कादरी

[बायां मुहर क्षेत्र] अपने शक्तिशाली रब के मोहताज अब्दुर रहीम बिन पीर बख्श अल-सुन्नी अल-हनफी अल-कादरी अल-नक्शबंदी अल-अहमदाबादी, मदरसा कादरिया के प्रथम शिक्षक द्वारा लिखित। 1315 हिजरी। [मुहर: अब्दुर रहीम]

[मध्य मुहर अनुभाग] उत्तर सही है। या इलाही कुन-कुन शेर मुहम्मद [मुहर]

हाँ, उत्तर अच्छा है और शोध सराहनीय है। [मुहर: अब्दुल करीम]

[अनुभाग: जबलपुर के विद्वानों के प्रमाणीकरण]

(दाहिनी ओर का पाठ): निस्संदेह यही सत्य है, और सत्य अनुसरण किए जाने के अधिक योग्य है। अल्लाह के बंदों में सबसे अदना, जलाल और इकराम वाले रब के अनुग्रह का प्रतीक्षारत, मुहम्मद अब्दुस सलाम अल-सुन्नी अल-हनफी अल-कादरी अल-रज़वी अल-जबलपुरी द्वारा लिखित, अल्लाह उसे क्षमा करे।

(बाईं ओर का पाठ): मौलाना, शोधकर्ताओं के इमाम ने जो उत्तर दिया है, वही स्पष्ट सत्य है। जरूरतमंद (अल-फ़कीर), अब्दुल बाकी मुहम्मद बुरहान-उल-हक अल-रज़वी अल-जबलपुरी द्वारा लिखित, अल्लाह उनके साथ हो।

पृष्ठ 688 में से 131 आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

کفر کرتے ہیں اور خدائے تعالٰی پر ایمان لاتے ہیں ان کی فہمائش کے لئے علمائے ربانین نے حکم شریعت مدلل لکھ دیا ہے فماذا بعد الحق الا الضلال (پھر حق کے بعد کیا ہے مگر گمراہی۔ ت)

حضرت رب العزت تبارک و تعالٰی اس تحریر پر تنویر کو سبب ہدایت اپنے بندوں کا کرے آمین ثم آمین ہذا ما عندی واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

[دائیں طرف کی مہروں کی جگہ] صح الجواب محمد خلیل الرحمن سنی حنفی قادری

[بائیں طرف کی مہروں کی جگہ] حررہ المفتقر الی ربہ القدیر عبدالرحیم بن پیر بخش السنی الحنفی القادری النقشبندی الاحمد آبادی المدرس الاول فی المدرسۃ القادریۃ ۱۳۱۵ [مہر: عبدالرحیم]

[درمیانی مہریں] الجواب صحیح یا الٰہی کن کن شیر محمد [مہر]

نعم الجواب و حبذا التحقیق [مہر: عبدالکریم]

[حصہ: تصدیقات علمائے جبلپور]

(دائیں طرف کی عبارت): ان ھذا لھو الحق والحق لاتباع احق۔ کتبہ ادون عباد اللہ ذی الجلال والاکرام الراصد الی لطفہ محمد عبد السلام السنی الحنفی القادری الرضوی الجبلپوری غفر لہ۔

(بائیں طرف کی عبارت): ما اجاب مولانا امام المحققین لھو الحق المبین۔ کتبہ الفقیر عبد الباقی محمد برہان الحق الرضوی الجبلپوری کان اللہ تعالٰی لہ۔

صفحہ 131 از 688 آئی ٹی مجلس دعوتِ اسلامی

Fatawa Rizvia Volume 13

Confirmations by the Scholars of Moradabad We praise Him and send blessings upon His Noble Beloved. Undoubtedly, the statement of Fazl Karim is reliable in the state that he is taking an oath because he is the defendant, and his words are not those of divorce, as clarified by Allama Al-Habib (may his blessings last). Even if the words stated by the woman's family were proven, the ruling of divorce would be pure ignorance. The research conducted by the Mujaddid of the present century (may Allah benefit the Muslims with the blessings of his breaths) is completely true and correct. May Allah Almighty reward him with the best reward and may Allah Almighty's blessings be upon the best of His creation, our master Muhammad, and his family and all his companions. The answer is correct and right, the humble servant Muhammad Ibaduddin (may he be forgiven), Muhammad Naeemuddin (may he be forgiven). It should be clear that in the case questioned, what Fazl Karim said regarding his wife Hasina Bi: "If you do not come to your house today, I will separate you from my marriage" (End). This shows that it is a promise of pronouncing divorce; in it, divorce is promised, and in such a promise, divorce does not occur. Furthermore, even if the lady does not come to her house, divorce will still not occur because it is merely a promise of pronouncing divorce. And after her not coming, no words (statements) of pronouncing divorce occurred from Fazl Karim; rather, it remained in the form of a promise. Therefore, divorce is not legally established. Neither did the woman ask her husband Fazl Karim, nor did her relatives, that you should divorce her, so that it could be a case of discussion of divorce. And regarding the word "answer" which occurred in the second statement of Fazl Karim, i.e., "If you don't come to the house by Asr, then it is my answer," but this second statement was made after a delay. And Fazl Karim, the husband of the aforementioned lady, denies those words and also says under Sharia oath that whatever it may be, I did not intend to divorce the aforementioned wife through those words. Some relatives of the mentioned lady forcibly attached this word to poor Fazl Karim and, out of their own misunderstanding, considered it the meaning of irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) and gave a ruling of irrevocable divorce. And even assuming that if he said these words, even then irrevocable divorce did not occur. Firstly, because he said these words after a delay, so this statement is a new statement and the attribution in it...

मुरादाबाद के विद्वानों की तस्दीक़ात (पुष्टियाँ) हम उनकी प्रशंसा करते हैं और उनके महान प्रिय पर दरूद भेजते हैं। बेशक, फ़ज़ल करीम का कथन उस स्थिति में विश्वसनीय है जब वह शपथ ले रहा है क्योंकि वह प्रतिवादी (मुदा'अलैह) है, और उसके शब्द तलाक़ के नहीं हैं, जैसा कि अल्लामा अल-हबीब (उनकी बरकतें बनी रहें) ने स्पष्ट किया है। और यदि महिला के परिवार द्वारा बताए गए शब्द सिद्ध भी हो जाएं तो भी तलाक़ का फैसला पूर्ण अज्ञानता है। वर्तमान शताब्दी के मुजद्दिद (अल्लाह मुसलमानों को उनकी सांसों की बरकतों से लाभान्वित करे) ने जो शोध किया है वह पूरी तरह से सत्य और सही है। अल्लाह तआला उन्हें सबसे अच्छा प्रतिफल दे और अल्लाह तआला की रहमतें उनकी सबसे अच्छी रचना, हमारे आका मुहम्मद और उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर हों। उत्तर सही और दुरुस्त है, विनम्र सेवक मुहम्मद इबादुद्दीन (अल्लाह उन्हें क्षमा करे), मुहम्मद नईमुद्दीन (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। स्पष्ट हो कि पूछी गई स्थिति में फ़ज़ल करीम ने अपनी पत्नी हसीना बी के बारे में जो कहा कि: "यदि आप आज अपने घर नहीं आईं तो मैं आपको अपने निकाह से अलग कर दूंगा" (समाप्त)। इससे स्पष्ट है कि यह तलाक़ देने का वादा है; इसमें तलाक़ का वादा है और इसमें तलाक़ नहीं होता। फिर अगर वह महिला अपने घर न आए तो भी तलाक़ नहीं होगा क्योंकि इसमें केवल तलाक़ देने का वादा है। और उनके न आने के बाद फ़ज़ल करीम की ओर से तलाक़ देने का कोई शब्द (कलाम) सामने नहीं आया, बल्कि वह वादे के रूप में ही रहा। इसलिए तलाक़ कानूनी तौर पर साबित नहीं हुई। न ही उस महिला ने अपने पति फ़ज़ल करीम से सवाल किया और न ही उसके रिश्तेदारों ने कि तुम उसे तलाक़ दे दो, ताकि यह तलाक़ की चर्चा का मामला होता। और शब्द "जवाब" जो फ़ज़ल करीम के दूसरे कलाम में आया, यानी "यदि आप अस्र तक घर नहीं आईं तो मेरा जवाब है", लेकिन यह दूसरा कलाम उसने काफी देर बाद कहा था। और उक्त महिला के पति फ़ज़ल करीम ने उन शब्दों से इनकार किया है और शरीयत की कसम खाकर कहता है कि जो कुछ भी हो, मैंने उन शब्दों से उक्त पत्नी को तलाक़ देने की नीयत नहीं की थी। उक्त महिला के कुछ रिश्तेदारों ने बेचारे फ़ज़ल करीम के ज़िम्मे जबरदस्ती यह शब्द लगा दिया और अपनी नासमझी से इसे 'तलाक़-ए-बाइन' (अटल तलाक) का अर्थ समझकर 'तलाक़-ए-बाइन' का फैसला सुना दिया। और मान भी लिया जाए कि अगर उसने ये शब्द कहे हैं, तब भी 'तलाक़-ए-बाइन' नहीं हुई। पहली बात तो यह कि उसने ये शब्द काफी देर बाद कहे, इसलिए यह कलाम नया कलाम है और इसमें निस्बत (सम्बन्ध)...

تصدیقات علمائے مراد آباد نحمدہ ونصلی علی حبیبہ الکریم بے شک فضل کریم کا قول معتبر ہے جس حالت میں کہ وہ حلف کر رہا ہے کیونکہ وہ مدعاعلیہ ہے، اور اس کے الفاظ طلاق نہیں ہیں کما صرحہ العلامۃ الحبیب دامت بر کاتہما اور اگر اہالی زن کے بیان کردہ الفاظ بھی ثابت ہو جائیں تو بھی حکم طلاق جہل محض ہے، حضرت مجدد مائتہ حاضرہ متع اللہ المسلمین ببرکات انفاسہ نے جو تحقیق فرمائی ہے بالکل حق و صواب ہے۔ جزاہ اللہ تعالٰی احسن الجزاء وصلی اللہ تعالٰی علی خیر خلقہ سیدنا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین۔ الجواب صحیح وصواب، العبد المسکین محمد عبادالدین عفی عنہ ، محمد نعیم الدین عفی عنہ واضح ہو کہ صورت مسئولہ میں جو فضل کریم نے اپنی زوجہ حسینہ بی کے حق میں کہا کہ آپ آج اپنے گھر میں نہ آئیں تو میں آپ کو اپنے نکاح سے علیحدہ کردوں گا انتہیٰ۔ اس سے ظاہر ہے کہ یہ ایقاع طلاق کا وعدہ ہے اس میں طلاق کا وعدہ ہے اس میں طلاق واقع نہیں ہوتی۔ پھر اگر وہ مسماۃ اپنے گھر میں نہ آئیں جب بھی طلاق واقع نہ ہوگی کیونکہ اس میں محض ایقاع طلاق کا وعدہ ہے اور بعد نہ آنے اس کے فضل کریم سے ایقاع طلاق کے کوئی کلام (الفاظ) وقوع میں بھی نہ آئے بلکہ پیرایہ وعدہ ہی رہے لہذا طلاق شرعاً ثابت نہیں ہوئی اور نہ اس عورت نے اپنے زوج فضل کریم سے سوال کیا تھا نہ اس کے متعلقین نے کہ تو اس کو طلاق دے دے تاکہ یہ صورت مذاکرہ طلاق کی ہوتی، اور لفظ "جواب" کو "جو کلام دوسرے" فضل کریم میں واقع ہوا یعنی اگر آپ عصر تک مکان پر نہ آئیں تو میرا جواب ہے لیکن یہ کلام دوسرا بعد دیر کے اس نے کہا اور فضل کریم زوج مسماۃ مذکورہ کا ان الفاظ سے انکار ہے اور نیز حلف شرعی سے کہتا ہے یوں ہی ہو یا جو کچھ ہو میں نے اس سے زوجہ مذکور کو نیت طلاق کی نہیں کی تھی، بعض متعلقین مسماۃ مذکورہ نے بیچارے فضل کریم کے ذمہ زبردستی سے

اس لفظ کو چپکا دیا اور کسی ملانے نا فہمی اپنی سے مفہوم طلاق بائن کا سمجھ کر حکم طلاق بائن کا دیا۔ اور بر تقدیر فرض اگر اس نے یہ لفظ کہا ہے جب بھی طلاق بائن نہیں ہوئی، اولاً اس واسطے کہ یہ لفظ بعد دیر کے کہا پھر یہ کلام کلامِ جدید ہے اور اضافت اس میں...

Fatawa Ridawiyya Volume 13, Page 13

...to anything is non-existent.

[Arabic Box] Qadhi Khan stated in his Fatawa: A man said, "We ate bread and drank Nabidh (a beverage), our wives are three." Then, after he had remained silent for a while, a man said to him, "Three divorces." So the man said, "Three divorces." His wife is not divorced because when he finished speaking and remained silent for an hour (a while), this became the beginning of a new speech in which there is no attribution to anything. (1)

[Urdu Translation in Box] Qadhi Khan stated in his Fatawa: A person said, "We ate bread and drank Nabidh, our wives are three." Then, after some time, a person said to him, "Three divorces," so he replied, "Three divorces." His wife was not divorced because after becoming silent and speaking after some time, this is a new statement and in it, no attribution to anyone was found. (T)

Secondly, the word "jawab" (answer/response) is not specifically for divorce; rather, it is a Hindi word that is used sometimes in the sense of rejection or refusal. For instance, Zaid asked Amr for something, and he gave a "jawab," meaning he refused, gave nothing, and went away empty-handed. Secondly, for example, Khalid asked Bakr, "How many obligatory (fard) and mandatory (wajib) acts are there in prayer?" He gave the "jawab," meaning he accepted the question and provided the answer, i.e., he did not reject it but informed that there are this many fard and this many wajib acts. And sometimes, when one thing is prepared in comparison to another, it is called "jawab" in Hindi. For example, a person built a house and made four doors and four arches facing each other; in Urdu, they are said to be the "jawab" of each other. And another meaning of the word "jawab" could be: "If you do not come to your house, then our 'jawab' is also the same," meaning we also will not come to your house. And it could also mean: "If you live with us with good character and conduct, then we will also live by the same rule; if you show defiance towards us, we will also show defiance." And it could also be that previously, the addressed woman asked her husband Fazl-e-Karim for something, he remained silent in giving it, and she went to her [parental] home in grief. When he went to that lady and said, "Go to your home," and she did not agree, then her husband said, "Our 'jawab' is also the same." Thus, the word "jawab" is used in several meanings in Urdu; therefore, to understand specifically the concept of "Talaq-e-Bain" (irrevocable divorce) from the word "jawab" is evidence of misunderstanding.

[Closing Box] As established by the prominent, perfect researcher Maulana Ahmad Raza Khan Saheb (may his glory endure) after much deliberation...

Just as its research was conducted by the prominent, perfect researcher Maulana Ahmad Raza Khan Saheb (may his glory endure). In any case, he [conducted] research in this matter.

---

(1) Fatawa Qadhi Khan, Kitab al-Talaq, Naval Kishore Press, Lucknow, 2/215. Page 133 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द १३, पृष्ठ १३

...किसी चीज़ की ओर अनुपस्थित है।

[अरबी बॉक्स] काज़ी खान ने अपने फ़तावा में कहा: एक व्यक्ति ने कहा, "हमने रोटी खाई और नबीज़ पी, हमारी पत्नियाँ तीन [हैं]।" फिर, कुछ देर चुप रहने के बाद, एक व्यक्ति ने उससे कहा, "तीन तलाक़," तो उस व्यक्ति ने कहा, "तीन तलाक़।" उसकी पत्नी को तलाक़ नहीं हुई क्योंकि जब उसने बोलना समाप्त कर दिया और कुछ देर चुप रहा, तो यह एक नए भाषण की शुरुआत थी जिसमें किसी भी चीज़ का कोई संबंध नहीं है। (१)

[उर्दू अनुवाद बॉक्स में] काज़ी खान ने अपने फ़तावा में फ़रमाया: एक व्यक्ति ने कहा हमने रोटी खाई और नबीज़ पी हमारी औरतों को तीन, फिर कुछ देर बाद उसको एक व्यक्ति ने कहा "तीन तलाक़ें" तो उसने कहा "तीन तलाक़ें" तो उसकी बीवी को तलाक़ न हुई क्योंकि जब खामोश होकर कुछ देर के बाद कहा तो यह नया कलाम है और इसमें इज़ाफ़त (संबंध) किसी की तरफ़ न पाई गई। (त)

दूसरी बात यह है कि शब्द "जवाब" तलाक़ के लिए निर्धारित नहीं है बल्कि यह एक हिन्दी शब्द है जो कहीं "अस्वीकार" या "रद्द" करने के अर्थ में आता है, जैसे ज़ैद ने अम्र से कुछ माँगा और उसने "जवाब" दे दिया, यानी मना कर दिया, कुछ नहीं दिया और वह खाली हाथ चला गया। दूसरा यह कि खालिद ने मसलन बक्र से सवाल किया, "नमाज़ में कितने फ़र्ज़ और कितने वाजिब हैं?" उसने इसका "जवाब" दे दिया, यानी उसके सवाल को स्वीकार करके उसका उत्तर दिया, यानी उसे रद्द नहीं किया बल्कि बता दिया कि इतने फ़र्ज़ और इतने वाजिब हैं। और कभी एक चीज़ के मुक़ाबले में दूसरी चीज़ तैयार की जाए तो उसे हिन्दी में "जवाब" कहते हैं, मसलन एक व्यक्ति ने घर बनाया और उसमें चार दरवाज़े और चार मेहराब एक-दूसरे के आमने-सामने बनाए, तो उर्दू में उन्हें एक-दूसरे का "जवाब" कहा जाता है। और शब्द "जवाब" का यह अर्थ भी हो सकता है कि "यदि तुम अपने घर नहीं आओगी तो हमारा भी जवाब है," यानी हम भी तुम्हारे घर नहीं आएँगे। और यह भी अर्थ हो सकता है कि "यदि तुम हमारे साथ अच्छे व्यवहार और शिष्टता से रहोगी तो हम भी उसी नियम से रहेंगे; यदि तुम हमसे हठ करोगी तो हम भी हठ करेंगे।" और यह भी हो सकता है कि पहले उस महिला ने अपने पति फ़ज़्ल-ए-करीम से कोई चीज़ माँगी हो, उसने देने में चुप्पी साधी और वह दुखी होकर अपने मायके चली गई। जब उसने उस महिला से जाकर कहा कि तुम अपने घर चलो और उसने नहीं माना, तो उसके पति ने कहा कि "हमारा भी जवाब है।" इस प्रकार शब्द "जवाब" उर्दू में कई अर्थों में प्रयोग

होता है, तो फिर शब्द "जवाब" से विशेष रूप से 'तलाक़-ए-बाइन' का अर्थ समझना नासमझी का प्रमाण है।

[समापन बॉक्स] जैसा कि इसकी तहक़ीक़ (शोध) फ़ाज़िल मोहक़्क़िक़ कामिल जनाब मौलाना अहमद रज़ा खान साहब (उनकी महिमा बनी रहे) ने बहुत सोच-विचार के बाद की...

जैसा कि इसकी तहक़ीक़ फ़ाज़िल मोहक़्क़िक़ कामिल जनाब मौलाना अहमद रज़ा खान साहब दाम मज्दहु ने फ़रमाई, बहरहाल उन्होंने इस मामले में तहक़ीक़ में...

---

(१) फ़तावा काज़ी खान, किताबुत्तलाक़, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, २/२१५। पृष्ठ १३३ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

الی شییء ناپید ہے۔

[Arabic Box] قال قاضی خان فی فتاواہ رجل قال نان خوردیم و نبیز خوردیم زنان مابہ ۳ ثم قال لہ رجل بعد ماسکت بسہ طلاق فقال الرجل بسہ طلاق لا تطلق امرأتہ لانہ لما فرغ عن الکلام وسکت ساعۃ کان ھذا ابتداء کلام لیس فیہ اضافۃ الی شیء۔ ۱

[Urdu Translation in Box] قاضی خان نے اپنے فتاوی میں فرمایا ایک شخص نے کہا ہم نے روٹی کھائی اور نبیز پیا ہماری عورتوں کو تین، پھر کچھ دیر بعد اس کو ایک شخص نے کہا "تین طلاقیں" تو اس نے کہا "تین طلاقیں" تو اس کی بیوی کو طلاق نہ ہوئی کیونکہ جب خاموش ہو کر کچھ دیر کے بعد کہا تو یہ نیا کلام ہے اور اس میں اضافت کسی کی طرف نہ پائی گئی۔ (ت)

ثانیاً یہ کہ لفظ "جواب" موضوع واسطے طلاق کے نہیں ہے بلکہ یہ ایک ہندی کلمہ ہے کہیں بمعنی ترک و رد کے آتا ہے، چنانچہ زید نے عمرو سے کچھ مانگا اس نے جواب دیا یعنی رد کیا کچھ نہ دیا خالی ہاتھ چلا گیا، دوسرا یہ کہ خالد نے مثلاً بکر سے سوال کیا نماز میں کتنے فرض اور کتنے واجب ہیں؟ اس کا جواب دے دیا یعنی اس کے سوال کو تسلیم کر کے اس کا جواب دیا یعنی رد نہ کیا بتلا دیا اتنے فرض ہیں اتنے واجب ہیں۔ اور کبھی ایک شیء کے مقابلہ میں دوسری شیء تیار کی جائے اس کو ہندی میں جواب کہتے ہیں، مثلاً ایک شخص نے مکان بنایا اور اس میں چار در اور چار طاق محاذی ایک دوسرے کے بنائے اس کو اردو میں ایک دوسرے کا جواب کہتے ہیں۔ اور یہ بھی مفہوم لفظ جواب کا ہو سکتا ہے کہ اگر تم اپنے گھر نہ آئیں تو ہمارا بھی جواب ہے یعنی ہم بھی تمہارے گھر نہ آئیں گے۔ اور یہ بھی مفہوم ہو سکتا ہے کہ تم ہم سے اگر قرینہ نیک سے

اور حُسن معاشرت سے رہوگی تو ہم بھی اسی قاعدہ سے رہیں گے اگر تم ہم سے سرکشی رکھو گی ہم بھی سرکشی رکھیں گے۔ اور یہ بھی مفہوم ہو سکتا ہے کہ پہلے اس سے اس مخاطبہ نے اپنے زوج فضلِ کریم سے کوئی چیز مانگی ہو تو اس کے دینے میں سکوت کیا اور وہ رنجیدہ ہو کر اپنے گھر چلی گئی، جب اس نے اس مسماۃ سے جا کر کہا کہ تم اپنے گھر چلو اس نے نہ مانا تو اس کے زوج نے کہا کہ ہمارا بھی جواب ہے، تو اس طرح سے یہ لفظ جواب اردو میں چند معنی میں مستعمل ہوتا ہے تو پھر لفظ جواب سے خاص کر طلاق بائن کا مفہوم سمجھنا دلیلِ نافہمی کی ہے،

[Closing Box] کما حققہ الفاضل المحقق الکامل جناب مولنا احمد رضاخان صاحب دام مجدہم بعد التی والتیا ماترک

جیسا کہ اس کی تحقیق فاضل محقق کامل جناب مولانا احمد رضا خاں صاحب دام مجدہ نے فرمائی بہر صورت انہوں نے اس معاملہ میں تحقیق میں

---

۱ فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق مطبع نولکشور لکھنؤ ۲۱۵/۲ Page 133 of 688

[Table/Box Column 1: Arabic] The aforementioned researcher left nothing unturned in the investigation of this matter; perhaps Allah will bring about a further path after this. And Allah knows best, and His knowledge is most complete and perfect. (T)

[Table/Box Column 2: Urdu] No deficiency was left; it is possible that Allah Almighty may create some further way after this. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and perfect. (T)

Abdul Bari

[Table/Box Column 1: Arabic] The previous respondent strayed far in his understanding, and in refuting him, the aforementioned researcher has been correct in his authorship.

[Table/Box Column 2: Urdu] The previous respondent strayed far in his understanding, and in answering and refuting him, the aforementioned researcher spoke correctly. (T)

Written by the one who holds fast to the rope of the One God, Muhammad Abu al-Fadl, called Fadl Ahmad.

Endorsements from the Scholars of Lahore

- The truth is the truth, there is no doubt in it. Muhammad Abdul Aziz, may he be forgiven, teacher at Madrasa Naumania, Lahore.
- This answer is correct and the respondent is successful. Muhammad Yar, may he be forgiven, Imam of Masjid Talai, Lahore, by his own pen.
- This is the truth. The humble Muhammad Shafiq Bagwi Hanafi Naqshbandi, Khatib of Shahi Mosque, Lahore.
- This is the manifest truth. Hopeful towards the God of the worlds, the poor Allah Din, first teacher at Madrasa Naumania, Lahore.
- The answer is correct. Muhammad Zakir Bagwi, may he be forgiven, first teacher at Hamidiya.
- The believers do not overstep the truth. Its servant, Asghar Ali, of the Arabic Schools.
- The respondent is correct in what he answered; may Allah reward him for his effort and correctness. Written by the weak and poor servant Muhammad Ikram-ud-Din al-Bukhari, may the Creator forgive him, famous as Wa'iz-ul-Islam,

currently Khatib and Imam at the Mosque of Nawab Wazir Khan, may Allah the King, the All-Giving, have mercy on him, Lahore.

Endorsements from the Scholars of Mumbai

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Praising Him, sending blessings upon His Prophet, and submitting to Him. Whatever Aala Hazrat, the Great Blessing, the Imam of the Ahl al-Sunnah...

फ़तावा रिज़्विया | जिल्द तेरहवीं १३

[तालिका/बॉक्स कॉलम 1: अरबी] उक्त शोधकर्ता ने इस मामले की जाँच में कुछ भी नहीं छोड़ा; शायद अल्लाह इसके बाद कोई और राह पैदा कर दे। और अल्लाह बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और उत्तम है। (त)

[तालिका/बॉक्स कॉलम 2: उर्दू] कोई कमी नहीं छोड़ी, हो सकता है कि अल्लाह तआला इसके बाद कोई और रास्ता निकाल दे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और उत्तम है। (त)

अब्दुल बारी

[तालिका/बॉक्स कॉलम 1: अरबी] पिछला उत्तरदाता अपनी समझ में बहुत भटक गया था, और उसका खंडन करने में उक्त शोधकर्ता अपने लेखन में सही रहा है।

[तालिका/बॉक्स कॉलम 2: उर्दू] पहले उत्तर देने वाले अपनी समझ में बहुत भटक गए थे और उनके जवाब और खंडन में उक्त शोधकर्ता ने सही फ़रमाया। (त)

इसे अल्लाह की रस्सी थामने वाले मुहम्मद अबू अल-फ़ज़ल ने लिखा, जिन्हें फ़ज़ल अहमद कहा जाता है।

लाहौर के विद्वानों का समर्थन

- सत्य सत्य है, इसमें कोई संदेह नहीं है। मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ (अल्लाह उन्हें माफ़ करे), शिक्षक मदरसा नोमानिया, लाहौर।
- यह उत्तर सही है और उत्तरदाता सफल है। मुहम्मद यार (अल्लाह उन्हें माफ़ करे), इमाम मस्जिद तलाई, लाहौर, स्वयं के कलम से।
- यही सत्य है। फ़कीर मुहम्मद शफ़ीक़ बगवी हनफ़ी नक़्शबंदी, ख़तीब शाही मस्जिद, लाहौर।
- यही स्पष्ट सत्य है। आलमीन के रब से उम्मीद रखने वाला, मिस्कीन अल्लाह दीन, प्रथम शिक्षक मदरसा नोमानिया, लाहौर।
- उत्तर सही है। मुहम्मद जाकिर बगवी (अल्लाह उन्हें माफ़ करे), प्रथम शिक्षक हमीदिया।
- मोमिन सत्य से आगे नहीं बढ़ते। इसका बंदा असगर अली, अरबी स्कूल।

- उत्तर देने वाला अपने उत्तर में सही है, अल्लाह उसे उसकी कोशिश और सही नतीजे के लिए बदला दे। इसे कमज़ोर और मिस्कीन बंदे मुहम्मद इकराम-उद-दीन अल-बुखारी ने लिखा (अल्लाह उन्हें माफ़ करे), जो वाइज़-उल-इस्लाम के नाम से प्रसिद्ध हैं, वर्तमान ख़तीब और इमाम मस्जिद नवाब वज़ीर खान, अल्लाह उन पर रहम करे, लाहौर।

मुंबई के विद्वानों का समर्थन

अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है। उसकी प्रशंसा करते हुए, नबी पर दरूद भेजते हुए और सर झुकाते हुए। जो कुछ आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहले सुन्नत...

पृष्ठ 134 / 688

[باکس کالم 1: عربی] المحقق المذکور من التحقیق فی ھذا الامر شیئاً لعل اللہ یحدث بعد ذلک امرا۔ واللہ اعلم وعلمہ اکمل واتم۔ (ت)

[باکس کالم 2: اردو] کوئی کمی نہ چھوڑی، ہو سکتا ہے اللہ تعالٰی اس کے بعد کوئی مزید سبیل پیدا فرمادے، واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اکمل واتم۔ (ت)

عبدالباری

[باکس کالم 1: عربی] قد ضل المجیب السابق فی فھمہ ضلالاً بعیداً وقد صار فی ردہ المحقق المذکور مؤلفاً مصیباً۔

[باکس کالم 2: اردو] پہلے مجیب اپنے فہم میں زیادہ بھٹک گئے اور ان کے جواب اور رد میں محقق مذکور نے درست فرمایا۔ (ت)

کتبہ المعتصم بحبل اللہ الاحد محمد ابو الفضل المدعو بفضل احمد

تصدیقات علمائے لاہور

- الحق حق لا شک فیہ، محمد عبدالعزیز عفی عنہ مدرس مدرسہ نعمانیہ لاہور
- ھذا الجواب صحیح والمجیب نجیح، محمد یار عفی عنہ امام مسجد طلائی لاہور بقلمہ
- ھذا ھوالحق، فقیر محمد شفیق بگوی حنفی نقشبندی خطیب مسجد شاہی لاہور
- ھذا ھوالحق المبین، الراجی الی الہ العلمین، المسکین اللہ دین مدرس اول مدرسہ نعمانیہ لاہور
- الجواب صحیح، محمد ذاکر بگوی عفی عنہ مدرس اول حمیدیہ

- الحق لایتعداہ المومنون، عبیدہ اصغر علی المدارس العربیۃ
- المجیب مصیب فیما اجاب فللہ درہ فیما اجتہد واصاب، کتبہ العبد الضعیف المسکین محمد اکرام الدین البخاری عفی عنہ الباری مشہور بواعظ الاسلام حال خطیب و امام فی مسجد نواب وزیر خان رحمہ اللہ الملک المنان لاہور۔

تصدیقات علمائے بمبئی

بسم اللہ الرحمن الرحیم، حامداً و مصلیاً و مسلماً، جو کچھ اعلیٰ حضرت عظیم البرکت امام اہلسنت

His Eminence (may his shadow be extended) has decreed regarding the questioned case that the divorce did not occur. Regarding the oppressive judge's invalid verdict, he said: "It is clearer than the sun that the person who took it upon himself to act as a judge and issued a decree of divorce, deciding that Hasina is no longer in the bond of marriage, did so out of sheer ignorance, oppression, and false presumption. That judgment was one of ignorance, and that verdict was void. Assuming the position of a judge in such a manner is slander and misguidance." All of this is correct. It is mandatory for Muslims to stay away from such an ignorant and misguiding person and under no circumstances should they act upon his void verdict.

Written by the humble servant Muhammad Umar al-Din al-Sunni al-Hanafi al-Qadiri al-Hazrawi, may Allah Almighty forgive him.

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Whatever His Eminence, the Imam of Muslims, the desired of the believers, Maulana and our Master Ahmad Raza Khan Sahib (may his shadow be extended) has written regarding the non-occurrence of divorce is all correct, and the verdict of that ignorant judge is completely nonsensical and detestable.

Written by the most humble Muhammad Abdul Razzaq al-Sunni al-Hanafi al-Qadiri al-Muqtadari, may Allah Almighty forgive him.

Praising (Allah), praying (for the Prophet), and sending peace.

Thereafter, this humble person, hopeful for the Lord's mercy, has carefully examined this answer, 'Kashif al-Hijab Ajab al-Ujab', from beginning to end. Praise be to Allah, regarding the non-occurrence of divorce, the clarity of truth has brought joy. May Allah Almighty, glorified be His status, grant His Eminence, the possessor of great blessings, the one cognizant of reality, the reviver of Sharia, the renewer of Tariqa, the wise man of the Ummah, the scholar of the age, the uniquely wise Maulana, and the first among us in merit, Molvi Ahmad Raza Khan Sahib (may his shadow be extended), the best of rewards in both worlds, and grant the entire Ahl al-Sunnat wa-Jama'at the guidance to act upon it. Ameen, then Ameen!

Written by Hafiz Abdul Halim al-Sunni al-Hanafi al-Qadiri, Imam of Jamli Mohalla Mosque, Bombay.

What the wise respondent has answered, he is correct in it. Written by the servant of the Sharia, the Qazi.

Ismail al-Jalmai al-Shafi'i, may Allah Almighty forgive him, his parents, his teachers, and all believers. Ameen, O Lord of the worlds!

Attestations from the Scholars of Pilibhit

The Renewer of the current century, possessor of overwhelming proof, His Eminence Maulana and our Master Molvi Ahmad Raza Khan Sahib.

मद ज़िल्लहुमुल आली ने प्रश्नगत मामले में तलाक न होने के संबंध में आदेश दिया है और दमनकारी न्यायाधीश के बातिल (अमान्य) फैसले के बारे में फरमाया: "यह सूरज से भी ज्यादा स्पष्ट है कि जिस व्यक्ति ने खुद न्यायाधीश बनकर यहाँ तलाक का हुक्म दिया और हसीना के निकाह से निकलने का फैसला सुनाया, वह उसकी निरा अज्ञानता, जुल्म और गलतफहमी थी। वह हुक्म अज्ञानता का था और वह फैसला बातिल था। इस तरह न्यायाधीश बन बैठना आरोप और गुमराह करना है।" यह सब सही है। मुसलमानों पर लाज़िम है कि ऐसे गुमराह करने वाले जाहिल से दूर रहें और उसके ऐसे बातिल फैसले पर कतई अमल न करें।

इसे विनम्र सेवक मोहम्मद उमर अल-दीन अल-सुन्नी अल-हनाफी अल-कादिरी अल-हजारवी ने लिखा है, अल्लाह तआला उन्हें माफ करे।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

जो कुछ भी मुसलमानों के इमाम, मोमिनों के पसंदीदा मौलाना और हमारे आका अहमद रज़ा खान साहब मद ज़िल्लहुमुल आली ने तलाक न होने के बारे में लिखा है, वह सब सही है और उस जाहिल न्यायाधीश का फैसला पूरी तरह से बकवास और घिनौना है।

इसे अत्यंत विनम्र मोहम्मद अब्दुल रज्जाक अल-सुन्नी अल-हनाफी अल-कादिरी अल-मुक्तदरी ने लिखा है, अल्लाह तआला उन्हें माफ करे।

हम्द, दुरूद और सलाम के बाद।

इसके बाद, परवरदिगार की रहमत के इस तुच्छ उम्मीदवार ने इस उत्तर 'काशिफ अल-हिजाब अजब अल-उजाब' को शुरू से अंत तक गौर से देखा। अल्लाह का शुक्र है, तलाक न होने के बारे में सच्चाई की स्पष्टता ने खुशी दी। अल्लाह तआला, आला हज़रत अज़ीमुल बरकत, हकीकत से वाकिफ, शरीयत के प्रचारक, तरीकत के मुजद्दिद, हकीमुल उम्मत, ज़माने के विद्वान, अद्वितीय बुद्धिमान मौलाना और हम में सबसे श्रेष्ठ मौलवी अहमद रज़ा खान साहब मद ज़िल्लहुमुल आली को दोनों जहानों में बेहतरीन बदला अता फरमाए, और समस्त अहल-ए-सुन्नत व जमात को इस पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए। आमीन, सुम्मा आमीन!

इसे हाफिज़ अब्दुल हलीम अल-सुन्नी अल-हनाफी अल-कादिरी, इमाम मस्जिद जामली मोहल्ला, बॉम्बे ने लिखा है।

बुद्धिमान उत्तरदाता ने जो उत्तर दिया है, वह उसमें सही है। शरीयत के सेवक काज़ी द्वारा लिखित।

इस्माइल अल-जल्माई अल-शाफई, अल्लाह तआला उन्हें, उनके माता-पिता को, उनके शिक्षकों को और सभी मोमिनों को माफ करे। आमीन, या रब्बुल आलमीन!

पीलीभीत के उलेमाओं की तस्दीक (सत्यापन)

वर्तमान सदी के मुजद्दिद (नवीकरणकर्ता), जबरदस्त दलील वाले, आला हज़रत मौलाना और हमारे आका मौलवी अहमद रज़ा खान साहब।

पृष्ठ १३५ / ६८८

مد ظلہ العالی نے صورت مسئولہ طلاق کے عدم وقوع کی نسبت ارشاد فرمایا ہے اور جابر حکم کے فیصلہ باطلہ کی نسبت فرمایا: "تو آفتاب سے زیادہ روشن ہے کہ جس شخص نے خود حکم بن کر یہاں حکم طلاق دیا اور حسینہ کے نکاح سے نکلنے کا فیصلہ دیا وہ اس کا محض جہل و ظلم و زعم باطل تھا وہ حکم جہالت اور وہ فیصلہ بطالت، وہ حکم بن بیٹھنا افتراء و ضلالت"۔ یہ سب صحیح ہے مسلمانوں پر لازم ہے کہ ایسے جاہل مضل سے دور رہیں اور اس کے ایسے باطل فیصلہ پر ہر گز ہر گز عمل نہ کریں۔

حررہ العبد الفقیر محمد عمر الدین السنی الحنفی القادری الھزاروی عفا اللہ تعالیٰ عنہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

جو کچھ کہ اعلٰیحضرت امام المسلمین مراد المومنین مولانا و سیدنا احمد رضا خان صاحب مد ظلہ العالی نے عدم وقوع طلاق کے بارے میں تحریر فرمایا ہے وہ سب صحیح ہے اور اس حکم جاہل کا فیصلہ بالکل لغو و فتیح ہے۔

حررہ الاحقر محمد عبد الرزاق السنی الحنفی القادری المقتدری عفا اللہ تعالیٰ عنہ

حامدًا و مصلیًا و مسلّمًا

اما بعد خاکسار امیدوار رحمت پروردگار نے یہ جواب کاشف حجاب عجب العجاب من اولہ الی آخرہ بنظر غور دیکھا، الحمد للہ درباره عدم وقوع طلاق و ضوح حق نے سرور دیا حق تعالیٰ جل شانہ اعلٰیحضرت عظیم البرکۃ واقف حقیقت مروج شریعت مجدد طریقت حکیم الامت علامہ زمان و فہامہ

یگان مولانا و بالفضل اولنا مولوی احمد رضا خان صاحب مد ظلہ العالی کو دارین میں جزائے خیر عطا فرمائے اور جمیع اہلسنت و جماعت کو اس پر عمل کی توفیق بخشے، آمین ثم آمین!

حررہ حافظ عبد الحلیم السنی الحنفی القادری امام مسجد جاملی محلہ بمبئی

ما اجاب المجیب اللبیب فہو فیہ مصیب۔ حررہ خادم الشرع القاضی

اسمٰعیل الجلمائی الشافعی عفا اللہ تعالٰی عنہ وعن والدیہ وعن استاذیہ وعن المومنین، آمین یا رب العالمین!

تصدیقات علمائے پیلی بھیت

مجدد مائتہ حاضرہ صاحب حجت قاہرہ اعلٰیحضرت مولانا و سید نا مولوی احمد رضا خان صاحب

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

The answer of the Imam of Ahl-e-Sunnat, by the grace of the Lord of Lords, is perfectly correct. That is all.

The humble Qadri Wasi Ahmad Hanafi, servant of Hadith at Madrasa-tul-Hadith.

[Seal]

The answer of Hazrat Imam-ul-Muhaqqiqin wa Ras-ul-Mudaqqiqin Maulana wa bil-Fazl-ul-Awwalna al-Maulvi Muhammad Ahmad Raza Khan Sahib, may the sun of his favors continue to shine from the east and may his beneficial proximity remain, is perfectly correct.

The servant Abu Siraj Abdul Hayy (may he be forgiven), student of our master and by grace our superior, Maulana Muhammad Wasi Ahmad, Muhaddith of Surat, may the favor of the Most High be general upon him.

The answer is what is correct. Muhammad Fazl-ul-Haq (may he be forgiven), servant of Madrasa-e-Rahmania, Pilibhit.

[Seal]

Problem 9: From Bengal, district Noakhali, post office Begumganj, sent by Maulana Abdul Majeed Sahib Shanupuri, 16 Muharram-ul-Haram 1321 AH.

What do the scholars of the religion say about this issue: a person said to his wife after the Maghrib prayer, "If you do not offer prayer, then [there are] two divorces." After that, the wife did not offer the Isha prayer; she started offering prayers from Fajr onwards. That person also performed Ruju (reconciliation) after Fajr. Then after a few years, that person gave two more divorces without any condition. Now, is it permissible for this person to perform Ruju or not? Because the previous two divorces and these two divorces together make four divorces. Now, has it become three divorces and thus an eternal prohibition, or not? And when the previous two divorces were conditioned upon prayer and the prayer was not offered, i.e., Isha, did the divorces occur or not? Explain with evidence. Some scholars say...

Page 136 of 688 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

इमाम अहले सुन्नत का जवाब, रबुल अरबाब की तौफ़ीक़ से, बिल्कुल सही है। बस।

फ़क़ीर क़ादरी वसी अहमद हनफ़ी, ख़ादिम-उल-हदीस मदरसा-तुल-हदीस में।

[मुहर]

हज़रत इमामुल मोहक़्क़िक़ीन व रासुल मुदक्क़िक़ीन मौलाना व बिल-फ़ज़्ल अव्वलना अल-मौलवी मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ान साहब (अल्लाह उनकी फ़ैज़ की धूप को पूरब से चमकता रखे और उनके मुफ़ीद क़रीब रहने को बरक़रार रखे) का जवाब बिल्कुल सही है।

अब्द अबू सिराज अब्दुल हई (अल्लाह उसे माफ़ करे), शागिर्द मौलाना व बिल-फ़ज़्ल अव्वलना अल-मौलवी मुहम्मद वसी अहमद मुहद्दिस सूरती (अल्लाह का फ़ज़ल उन पर आम हो)।

जवाब वही है जो सही है। मुहम्मद फ़ज़्लुल हक़ (अल्लाह उसे माफ़ करे), ख़ादिम मदरसा रहमानिया पीलीभीत।

[मुहर]

मसला 9: बंगाल से, ज़िला नोआखली, डाकखाना बेगमगंज, भेजने वाले मौलाना अब्दुल मजीद साहब शनूपुरी, 16 मुहर्रम-उल-हराम 1321 हिजरी।

दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अपनी बीवी से मग़रिब की नमाज़ के बाद कहा कि 'अगर तू नमाज़ न पढ़ेगी तो दो तलाक़ है'। इसके बाद उस बीवी ने ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी, फ़ज्र से नमाज़ शुरू की। और उस शख़्स ने फ़ज्र के बाद रुजू (वापसी) भी कर लिया है। फिर चंद बरस के बाद उस शख़्स ने और दो तलाक़ बिना शर्त के दे दिए। अब इस शख़्स का रुजू करना जायज़ है या नहीं? क्योंकि दो तलाक़ साबिक़ (पिछले) और ये दो तलाक़ मिलकर कुल चार तलाक़ हुए। अब तीन तलाक़ होकर हराम-ए-अब्दी (हमेशा के लिए हराम) हुई या नहीं? और साबिक़ दो तलाक़ को जब नमाज़ पर शर्त किया और नमाज़ भी न पढ़ी यानी ईशा की, तो तलाक़ हो गई या नहीं? दलील के साथ बयान करें। बाज़ (कुछ) आलिम कहते हैं...

पृष्ठ 136 / 688 आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

امام اہلسنت کا جواب بتوفیق رب الارباب عین صواب ہے فقط

فقیر قادری وصی احمد حنفی خادم الحدیث در مدرسۃ الحدیث

[مہر]

حضرت امام المحققین و راس المدققین مولانا و بالفضل اولنا المولوی محمد احمد رضا خان صاحب دام شمس فیوضہ شرقہ و ما زال قرافا و اتہ مفیدا کا جواب عین صواب ہے ۔

العبد ابو سراج عبدالحی عفی عنہ تلمیذ مولانا وبالفضل اولنا المولوی محمد وصی احمد محدث سورتی عم فیضہ العلی

الجواب ھو الصواب محمد فضل حق عفی عنہ خادم مدرسہ رحمانیہ پیلی بھیت

[مہر]

مسئلہ ۹: از بنگالہ ضلع نو اکھالی ڈاک خانہ بیگم گنج مرسلہ مولوی عبدالمجید صاحب شنو پوری ۱۶ محرم الحرام ۱۳۲۱ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی بی بی کو بعد نماز مغرب کے کہا کہ اگر تو نماز نہ پڑھے گی تو دو طلاق ہے، بعدہ وہ بی بی عشاء کی نماز نہیں پڑھی، فجر سے لے کر نماز شروع کی، اور وہ شخص بعد فجر کے رجعت بھی کر لیا ہے، پھر چند برس کے بعد وہ شخص اور دو طلاق بلا شرط دیا اب اس شخص کا رجعت کرنا جائز ہے یا نہیں کیونکہ دو طلاق سابق اور یہ دو طلاق مجموعہ چار طلاق ہوئی، اب سہ طلاق ہو کر محرمہ ابدی ہوئی یا نہ،

اور سابق دو طلاق کو جب نماز پر شرط کیا اور نماز بھی نہ پڑھی یعنی عشاء کی، تو طلاق ہو گئی یا نہ، بینوامع الدلیل (دلیل کے ساتھ بیان کئے۔ت)۔ بعض عالم کہتے ہیں

Fatawa Razawiyya Volume 13

First, the divorce that was conditioned on prayer did not occur because the husband's statement 'If she does not pray' refers to the future, and the future lasts until the end of life. Second, the two divorces given unconditionally are valid. Some scholars say that revocation (Rujoo') is not permissible now because it has become Mughallazah (irrevocable triple divorce). This is because the first divorce was conditioned on prayer, and the intention was that the wife should never miss a prayer. The command of Shariah is emphasized that if she misses even one prayer, the condition will be met and an irrevocable (Ba'in) divorce will occur. Some scholars of Rampur say that after the two Ba'in divorces, a new marriage (Nikah) is required during the Iddat period. If a new marriage is not performed and the Iddat passes, then according to the correct opinion, only the first two divorces occurred and the last one does not fall under the husband's ownership.

The Answer: O Allah! All praise is for You. I ask You for guidance towards the truth and correctness. The humble servant has studied the statements and evidence of the three parties - the scholars of Bengal and some scholars of Rampur. As far as my limited vision reaches, 'the best of matters is the middle one'. Among them, the moderate and correct opinion is without error. The opinion of the third group is purely based on whim and is groundless. The 'Ta'leeq' (condition) is baseless, not a connected content. According to the principles of Shariah, one who says 'If you enter the house, you are divorced' has conditioned the divorce on the time of entering the house, and its effect will occur at that moment. It is definitely known that its effect is not 'Ba'in' (irrevocable) but 'Raj'i' (revocable) divorce. Even if he says 'you are divorced' with the intention of Ba'in, it will still be a Raj'i divorce because he has no power to change the command of Shariah. It is stated in Tanveer:

Explicit words like 'I divorced you', 'you are divorced', 'you are a divorcee' result in one revocable (Raj'i) divorce, even if he intended otherwise. (T)

It is in Hidayah.

---

1 Durr-e-Mukhtar Sharh Tanweer-ul-Absar, Bab al-Sareeh, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/218

पहला, वह तलाक जिसे नमाज़ पर शर्त किया गया था, वह घटित नहीं हुई क्योंकि पति का कहना 'अगर वह नमाज़ नहीं पढ़ेगी' भविष्य की ओर इशारा है और भविष्य जीवन के अंत तक रहता है। दूसरा, बिना शर्त दी गई दो तलाकें भी मान्य हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि अब रुजू (वापसी) जायज़ नहीं है क्योंकि यह मुग़ल्लज़ह (अपरिवर्तनीय तिहरी तलाक) हो गई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पहली तलाक नमाज़ पर शर्त थी, और इरादा यह था कि पत्नी कभी नमाज़ न छोड़े। शरीयत का हुक्म ताकीद के साथ है कि अगर वह एक भी नमाज़ छोड़ती है, तो शर्त पूरी हो जाएगी और बाइन (अपरिवर्तनीय) तलाक हो जाएगी। रामपुर के कुछ विद्वान कहते हैं कि दो बाइन तलाक के बाद इद्दत की अवधि में नया निकाह होना चाहिए। यदि इद्दत में नया निकाह नहीं हुआ और अवधि बीत गई, तो सही राय के अनुसार केवल पहली दो तलाकें हुईं और अंतिम वाली पति के अधिकार क्षेत्र में नहीं रही।

अल-जवाब: ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही सारी प्रशंसा है। मैं तुझसे हक़ और सही राह की रहनुमाई माँगता हूँ। फ़क़ीर (विनम्र सेवक) ने तीनों पक्षों - बंगाल के विद्वानों और रामपुर के कुछ विद्वानों - के बयानों और दलीलों का अध्ययन किया है। जहाँ तक मेरी सीमित दृष्टि पहुँचती है, 'मामलों में बीच का रास्ता सबसे अच्छा है'। उनमें मध्यम और सही राय बिना किसी त्रुटि के है। तीसरे समूह की राय निराधार और मनगढ़ंत है। 'ता'लीक़' (शर्त) बेबुनियाद है, न कि विषय की कड़ियों का हिस्सा। 'दखलत-उद-दार फ़ अंति तालिक' (यदि तू घर में घुसी तो तुझे तलाक) कहने वाले ने शरई सिद्धांतों के अनुसार तलाक को घर में प्रवेश के समय के साथ जोड़ा है, और इसका प्रभाव उसी समय होगा। और यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि इसका प्रभाव 'बाइन' नहीं बल्कि 'रजी' (प्रतिसंहरणीय) तलाक है। यहाँ तक कि अगर वह 'अंति तालिक' कहते समय 'बाइन' की नीयत भी करे, तब भी वह रजी ही होगी क्योंकि उसे शरई हुक्म को बदलने की शक्ति नहीं है। 'तनवीर' में है:

स्पष्ट शब्द जैसे 'मैंने तुझे तलाक दिया', 'तू तलाक वाली है', 'तू तलाकशुदा है', इन शब्दों से एक रजी तलाक होगी चाहे नीयत इसके विरुद्ध ही क्यों न हो। (त)

हिदाया में है।

---

1 दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाब-अस-सरीह, मतब' मुजतबाई, दिल्ली १/२१८

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

اول جو طلاق نماز پر شرط کیا تھا نہیں واقع ہو گی کیونکہ قول زوج کا 'اگر نماز نہ پڑھے گی' مستقبل کی طرف اشارہ ہے اور مستقبل تا حیات کے لئے ہوتا ہے، اور ثانی جو دو طلاق بلا شرط ابھی دیا ہے اس کے لئے رجعت جائز ہے اور دوسرے طرف کے علماء کہتے ہیں اب رجعت کرنا جائز نہیں ہے کیونکہ سہ طلاق ہو کر مغلظ ہو گئی ہے اس وجہ سے کہ اول جو دو طلاق شرط نماز پر کیا تھا تاحیات پر موقوف نہیں کیونکہ زوج کی مقصود اور نیت یہ ہے کہ زوجہ کبھی نماز نہ چھوڑے، اور تاکید حکم شرع پر کرتا ہے اگر ایک وقت نماز چھوڑے گی تو امر صادق آویگی، اور رامپور کے بعض علماء کہتے ہیں اول دو طلاق بائن واقع ہوگی کیونکہ جب شرط پر معلق کرتا ہے تو بائن ہو جاتا ہے اور بائن کے لئے در مدت نکاح جدید چاہئے جب نکاح جدید در مدت نہ کیا اور مدت گزر گیا اب بعد طلاق صحیح نہیں ہے فقط اول دونوں طلاق واقع ہوں گی اور بعد کے طلاق کی ملک نہیں ہے۔

الجواب: اللہم لك الحمد اسألك هداية الحق والصواب (اے اللہ! تیرے لئے حمد ہے، میں تجھ سے حق اور صواب کی رہنمائی طلب کرتا ہوں۔ ت) فقیر نے ہر سہ فریق علمائے بنگالہ وبعض علمائے رامپور کے اقوال مذکور اور دلائل مزبور مطالعہ کئے جہاں تک اپنی نظر قاصر کا مبلغ بحکم خیرالامور اوسطھا (درمیانی چیز بہتر ہے۔ ت) ان میں قول وسط و صواب وبے غلط ہے، فریق سوم کا زعم تو محض باطل وبے اصل ہے تعلیق ربط مضمون جملہ بمضمون آخر ہے نہ کہ خبط مضمون۔ بربط آخر ان دخلت الدار فانت طالق (اگر تو گھر میں داخل ہو تو تجھے طلاق۔ ت) کہنے والے نے انت طالق کے مفاد شرعی کو دخول دار پر معلق کیا تو ہنگام دخول اسی مفاد کا نزول ہوگا نہ کہ مفاد سے عدول، اور قطعاً معلوم کہ اس کا مفاد نہیں، مگر طلاق رجعی یہاں تک کہ اگر انت

طالق کہے تو طلاق بائن کی نیت کرے جب بھی رجعی ہو گی کہ وہ تغییر حکم شرع پر قدرت نہیں رکھتا، تنویر میں ہے:

صریحہ کطلقت وانت طالق ومطلقة یقع بها واحدة رجعیة وان نوی خلافها صریح طلاق یہ ہے 'میں نے تجھے طلاق دی، تو طلاق والی ہے، تو مطلقہ ہے' جیسے الفاظ ہیں، ان الفاظ سے ایک رجعی طلاق ہوگی اگر چہ نیت اس کے خلاف بھی کرے۔ (ت)

ہدایہ میں ہے۔

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۱۸

Arabic Text	Urdu Translation
'You are divorced' (anti taliqun), 'a divorced woman' (wa mutallaqatun), 'I have divorced you' (wa tallaqtuki). This results in a revocable (raj'i) divorce and does not require intention. Similarly, if he intends an irrevocable (ba'in) divorce, it will still be revocable because the Law (Sharia) has made the irrevocable nature of these words conditional upon the completion of the waiting period ('iddah), whereas the one giving the divorce intended for it to be immediate. Therefore, it will not be irrevocable. (Summary)	"I divorce you," "you are divorced," "I have given you divorce." These words result in a revocable divorce, and no intention is needed. Similarly, even if one intends an irrevocable (ba'in) divorce with these words, it will still be revocable because the Sharia has suspended irrevocable divorce through these words until the waiting period ends, while the person divorcing intended for it to take effect immediately. Hence, it won't be irrevocable. (Summary). (T)

According to our esteemed scholars, when a condition is met, the consequence takes place as if the statement of consequence was made at that very moment. It is clear that saying "you are divorced" is only effective for a revocable divorce. It states in Fath al-Qadir:

Arabic Text	Urdu Translation
It descends as a cause upon the condition, as if he enacted it immediately upon the condition.	Because the cause of divorce applies when the condition is met, as if he is speaking and enforcing the divorce upon the condition being met. (T)

Apparently, some scholars were misled by a phrase in Durr al-Mukhtar where it states in the latter parts of the chapter on Explicit Divorce:

Arabic Text	Urdu Translation
If he said, "You are divorced on the condition that I have no right of return (raj'ah) over you," he still has the right of return. It was also said "No" (he does not). This is in al-Jawharah. In al-Bahr, the second opinion was preferred, stating:	If he said, "You are divorced on the condition that I have no right of return over you," he will still have the right to return. Some said he does not have the right. — Jawhara. In Bahr, preferring the second view, it was stated that whoever gave a fatwa of return in conditional divorce made a mistake, and experienced

Arabic Text	Urdu Translation
"Whoever gave a fatwa for revocable divorce in conditional statements (ta'aliq) has erred. Reliable scholars say it will be a divorce where she owns herself."	people say that in the mentioned case, it will be such a divorce in which the wife has the choice whether she remarries or not, meaning it will be an irrevocable (ba'in) divorce. (T)

In this text, the phrase "and whoever gave a fatwa... erred, etc." was understood to mean that the author of al-Bahr (may Allah have mercy on him) considered it an error to accept revocable divorce in all conditional statements (ta'aliq). However, this arises purely from a misunderstanding or lack of deliberation; here...

---

1. Al-Hidayah, Chapter on Enacting Divorce, Arab Library Karachi, 1/339.
2. Fath al-Qadir, Chapter on Oaths in Divorce, Maktaba Nooria Razvia Sukkur, 3/245.
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit (Divorce), Mujtabai Press Delhi, 1/222.

अरबी पाठ

'अंत तालिक़', 'मुतल्लाक़ह', 'तल्लाक़्तुकी' (तुझे तलाक़, तू तलाक़शुदा है, मैंने तुझे तलाक़ दी)। इससे तलाक़-ए-रजई (परिवर्तनीय तलाक़) प्रभावी होती है और इसके लिए नियत (इरादे) की आवश्यकता नहीं है। इसी तरह यदि वह इन शब्दों से तलाक़-ए-बाइना (अपरिवर्तनीय तलाक़) की नियत करता है, तो भी वह रजई ही होगी, क्योंकि शरीयत ने इन शब्दों से होने वाली बाइना तलाक़ को इद्दत के अंत पर निलंबित रखा है, जबकि तलाक़ देने वाले ने इसे तत्काल प्रभावी करने का इरादा किया है। इसलिए, यह बाइना नहीं होगी। (संक्षेप)

उर्दू अनुवाद

"तुझे तलाक़," "तू तलाक़शुदा है," "मैंने तुझे तलाक़ दी।" इन शब्दों से रजई तलाक़ होगी और किसी नियत की ज़रूरत नहीं है। इसी तरह अगर इन शब्दों से बाइना तलाक़ की नियत करे तब भी रजई ही होगी क्योंकि शरीयत ने इन शब्दों से तलाक़-ए-बाइना को इद्दत खत्म होने तक मुअल्लाक़ (स्थगित) रखा है, जबकि तलाक़ देने वाले ने फ़िलहाल (तत्काल) नाफ़िज़ (लागू) होने की नियत की है, इसलिए बाइना नहीं होगी। (संक्षेप)। (त)

हमारे उलेमा-ए-किराम के नज़दीक शर्त पूरी होने के वक्त सज़ा (परिणाम) का उतरना ऐसा होता है मानो उस वक्त सज़ा का बयान तत्काल प्रभावी हुआ हो। और यह ज़ाहिर है कि "अंत तालिक़" कहना सिवाए तलाक़-ए-रजई के कभी फ़ायदेमंद नहीं होगा। फ़तहुल क़दीर में है:

अरबी पाठ

यह शर्त के वक्त सबब (कारण) के रूप में उतरता है मानो उसने शर्त पर तत्काल प्रभाव से इसे लागू किया हो।

उर्दू अनुवाद

क्योंकि तलाक़ का सबब, शर्त पाए जाने पर वारिद (लागू) होता है गोया कि शर्त पाए जाने पर वह तलाक़ बोलकर नाफ़िज़ कर रहा है। (त)

ज़ाहिर है कि कुछ विद्वानों को 'दुर्रे मुख्तार' की एक इबारत ने धोखा दिया कि 'अवाखिर बाब तलाक़ बिल सरीह' में फ़रमाया:

अरबी पाठ

यदि उसने कहा, "तुझे इस शर्त पर तलाक़ है कि मुझे तुझ पर रुजूअ (वापसी) का अधिकार नहीं है," तो भी उसे रुजूअ का अधिकार होगा।

उर्दू अनुवाद

अगर कहा "तुझे इस शर्त पर तलाक़ है कि मुझे रुजूअ का अख्तियार (अधिकार) नहीं," तो उसे रुजूअ का हक़ बाक़ी होगा। कुछ ने कहा उसे रुजूअ

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
और यह भी कहा गया है कि "नहीं" (अधिकार नहीं होगा)। यह 'जौहरा' में है। 'बहर' में दूसरे मत को वरीयता दी गई है, यह कहते हुए: "जिसने तालीक़ात (शर्तिया बयानों) में रजई तलाक़ का फ़तवा दिया, उसने गलती की है। विश्वसनीय विद्वानों का कहना है कि यह एक ऐसी तलाक़ होगी जिससे वह (पत्नी) स्वयं की स्वामी हो जाएगी (यानी बाइना)।"	का हक़ नहीं है। -जौहरा। 'बहर' में दूसरे कौल को तरजीह (प्राथमिकता) देकर कहा गया कि जिसने मुअल्लाक़ तलाक़ में रुजूअ का फ़तवा दिया उसने खता (गलती) की है, और पुख्ता कार (अनुभवी) लोग फ़रमाते हैं कि मज़कूरा (उल्लेखित) सूरत में ऐसी तलाक़ होगी जिसमें अख्तियार बीवी को होगा कि वह दोबारा निकाह करे या न करे, यानी बाइना तलाक़ होगी। (त)

इस इबारत में जुमला "वख़ता मन अफ़्ता अलख" का यह अर्थ समझ लिया कि अल्लामा बहर साहब रहमतुल्लाह अलैहि ने मुतलक़न तालीक़ात (पूर्णतः शर्तिया बयानों) में तलाक़-ए-रजई मानने को खता ठहराया, हालाँकि यह महज़ गलतफहमी या गौर-ओ-फ़िक्र की कमी से उपजा है यहाँ...

---

1. अल-हिदाया, बाब ईक़ाउत तलाक़, अल-मकतबातुल अरबिया कराची, 1/339।
2. फ़तहुल क़दीर, बाबुल ईमान फ़ित तलाक़, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 3/245।
3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल सरीह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/222।

عربی عبارت	اردو ترجمہ
انت طالق ومطلقة وطلقتك فهذا يقع به الطلاق الرجعي ولايفتقر الى النية وكذا اذا نوى الابانة لانه قصد التنجيز ماعلقه الشرع بانقضاء العدة فيرد عليه۸1 (ملخصاً)	تجھے طلاق، تو مطلقہ ہے، میں نے تجھے طلاق دی، ان الفاظ سے رجعی طلاق ہوگی اور کسی نیت کی ضرورت نہیں ہے، یونہی اگر ان الفاظ سے بائنہ طلاق کی نیت کرے تب بھی رجعی ہی ہوگی کیونکہ شریعت نے ان الفاظ سے طلاق بائنہ کو عدت ختم ہونے تک معلق رکھا ہے جبکہ طلاق دینے والے نے فی الحال نافذ ہونے کی نیت کی ہے اس لئے بائنہ نہ ہوگی (ملخصاً)۔ (ت)

ہمارے علماء کرام کے نزدیک وقت حلولِ شرط نزولِ جزا یوں ہوتا ہے کہ گویا اس وقت تکلم بالجزاء منجز واقع ہوا اور ظاہر ہے کہ انت طالق کا تکلم ہرگز مفید نہ ہوگا مگر طلاق رجعی کا۔ فتح القدیر میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
انه ينزل سبباً عند الشرط كانه عند الشرط اوقع تنجيزاً۸2-	کیونکہ طلاق کا سبب، شرط پائے جانے پر وارد ہوتا ہے گویا کہ شرط پائے جانے پر وہ طلاق بول کر نافذ کر رہا ہے۔ (ت)

ظاہراً ان بعض علماء کو ایک عبارتِ در مختار نے دھوکا دیا کہ اواخر باب طلاق بالصریح میں فرمایا :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لو قال انت طالق على ان لارجعة لي عليك، له الرجعة وقيل لا، جوهرة ورجح في البحر الثاني، خطأ من افتى بالرجعي في التعاليق وقول الموثقين تكون طالقا طلقة تملك بها نفسها[3][8]	اگر کہا "تجھے اس شرط پر طلاق ہے کہ مجھے رجوع کا اختیار نہیں، تو اس کو رجوع کا حق باقی ہوگا۔ بعض نے کہا اس کو رجوع کا حق نہیں ہے۔ جوہرہ۔ بحر میں دوسرے قول کو ترجیح دے کر کہا کہ جس نے معلق طلاق میں رجوع کا فتویٰ دیا اس نے خطا کی ہے، اور پختہ کار لوگ فرماتے ہیں کہ مذکورہ صورت میں ایسی طلاق ہوگی جس میں اختیار بیوی کو ہوگا کہ وہ نکاح دوبارہ کرے یا نہ کرے یعنی بائنہ طلاق ہوگی۔ (ت)

اس عبارت میں جملہ "وخطأ من افتى الخ" کے یہ معنی سمجھ لیے کہ علامہ بحر صاحب بحر رحمہ اللہ تعالیٰ نے مطلقاً تعلیقات میں طلاق رجعی ماننے کو خطا ٹھہرایا، حالانکہ یہ محض سوئے فہم یا قلتِ تدبر سے ناشی ہے یہاں

---

1 الهداية باب ايقاع الطلاق المكتبة العربية كراچی ۱/۳۳۹ 2 فتح القدير باب الايمان في الطلاق مكتبہ نوريہ رضويہ سكھر ۳/۲۴۵ 3 در مختار باب الصريح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۲

Volume Thirteen, 13, Fatawa Razawiyya

The specific case under discussion is when the condition of finality (baynunat) is mentioned in the suspended consequence, for example:

Arabic	Urdu Translation
If you enter the house, you are divorced with a divorce in which I have no right of return (raju) over you, or if you do such and such, you are divorced with a divorce through which you own yourself.	If you enter the house, then that divorce in which I have no right to return, or says if you do this work then you have that divorce in which the choice is in your hands. (T)

In the text of Durr, the phrase 'and the words of the trustworthy ones' with 'jar' (genitive case) is included under 'fi' on 'at-ta'aliq' (the suspension) (The statement 'the words of the trustworthy ones' with 'jar' is included under 'fi' on 'at-ta'aliq'. T) and 'at-ta'aliq' is an explanatory conjunction (atf tafsiri), according to Bahr. It is stated in Radd al-Muhtar:

Arabic	Urdu Translation
His words "and error" mean attributing it to error. And his words "and the statement of the trustworthy ones" with 'jar'. H. said it's an explanatory conjunction on 'ta'aliq'. I say: the original issue mentioned by the author of al-Bahr, who also wrote a treatise on it, is that a man said to his wife, "Whenever a woman other than you appears to me (as my wife), then you are divorced once, by which you own yourself." Then another woman appeared to him. He answered that it is 'ba'in' (irrevocable) and rejected whoever gave a fatwa of it being 'raj'i' (revocable).[1] (Summarized)	His saying "khata" (error) means attributed it towards error, and his saying "qawl al-muwathiqeen" with 'jar' i.e., kasrah, so now it will be an explanatory conjunction on 'ta'aliq'. I say: the original issue is the one mentioned by the author of Bahr and he has also written a treatise on it that a person said to his wife that if any other wife of mine is known besides you, then you have one divorce in which you will have your own choice, after this that person's second wife became known, so the one from Bahr replied that this divorce will be 'ba'in' (irrevocable), and they also rejected that person who gave the fatwa of it being 'raj'i' (revocable). (Summarized) (T)

Listen to the words of Allama Bahr himself, which is clearer than pearls; he says in Bahr:

Arabic	Urdu Translation
In al-Jawhara it is said: "You are divorced on the condition that I have no right of return over you." It (the condition) is void, and he possesses the right of return. It is also said that one 'ba'ina' (irrevocable) divorce occurs. And what is apparent in al-Hidayah is that the second opinion is the madhhab, for he said...	In Jawhara it is mentioned that if a person said to his wife "you are divorced on the condition that I shall not have the choice of return," then in such a case the condition of no return is void, and the husband's right of return over this divorce will remain, and some have said that this will be one 'ba'ina' (irrevocable) divorce.

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Express (Sarih), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/250.

खंड तेरह, १३, फ़तावा रज़विया

विचाराधीन विशिष्ट मामला वह है जब निलंबित परिणाम में पृथकता (बैनूनत) का वर्णन हो, उदाहरण के लिए:

अरबी

इन दखलतत-दारा फ़ा अंता तालिक़ुन तालक़न ला रजअत ली अलयका फ़ीहि या इन तफ़अ़ल कज़ा तुकना तालिक़न तल्क़तन तमलिका बिहा नफ़्सहा।

उर्दू अनुवाद

यदि तुम घर में दाखिल हुई तो वह तलाक जिसमें मुझे वापसी (रुजूअ) का अधिकार न हो, या यूं कहे कि यदि तुम यह काम करो तो तुम्हें वह तलाक है जिसमें अधिकार तुम्हारे हाथ में हो। (त)

दुर्र के पाठ में वाक्यांश 'वक़ौलुल मुवत्सिक़ीन' जर (विभक्ति) के साथ 'फी' के अंतर्गत 'अत-ताअलीक़' पर दाखिल है (कथन 'क़ौलुल मुवत्सिक़ीन' जर के साथ 'अत-ताअलीक़' पर 'फी' के तहत दाखिल है। त) और 'अत-ताअलीक़' अतफ़-ए-तफ़सीरी (व्याख्यात्मक संयोजन) है, बहर। रद-अल-मुहतार में है:

अरबी

क़ौलुहु वख़ताअुन अई नसबहु इलल-ख़ताअि, वक़ौलुहु वक़ौलुल मुवत्सिक़ीन बिल-जर्रि क़ाला हा अतफ़ु तफ़सीरिन अ़लत-ताअलीक़ि, क़ुल्तु व अस्लुल मसअलतिल्लती ज़करहा साहिबुल बहरि, वक़द अल्लफ़ा फ़ीहा रिसालतन अयज़न, हिया अन्ना र्जुलन क़ाला लि ज़ौ-जतिही मता ज़हरा ली इमरातुन ग़ैरुकि फ़ अंति तालिक़ुन वाहिदतुन तमलिकीना बिहा नफ़्सकि, सुम्मा ज़हरा लहु इमरातुन ग़ैरुहा फ़-अजाबा फ़ीहा बि-अन्नहू बाइनुन व रद्दा मन अफ़्ता र्जअी़1 (मुलख़ख़सन)।

उर्दू अनुवाद

उसका यह कहना कि "ख़ता" यानी इसे ख़ता की ओर सम्बोधित किया, और उसका कहना "क़ौलुल मुवत्सिक़ीन" जर यानी ज़ेर के साथ, तो अब यह ताअलीक़ पर अतफ़-ए-तफ़सीरी होगा। मैं कहता हूँ (क़ुल्तु) मूल मसला वह है जिसका उल्लेख बहर के लेखक ने किया है और इस पर एक रिसाला (पुस्तिका) भी लिखा है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा कि अगर तुम्हारे अलावा मेरी कोई और पत्नी पता चले तो तुम्हें एक तलाक़ है जिसमें तुम्हें अपना अधिकार होगा, इसके बाद उस व्यक्ति की दूसरी पत्नी का पता चला, तो बहर वाले ने उत्तर दिया कि यह तलाक़ 'बाइन' (अटल) होगा, और उन्होंने उस व्यक्ति का खंडन भी किया जिसने इसके'रजी' (वापसी योग्य) होने का फ़तवा दिया था। (संक्षिप्त) (त)

स्वयं अल्लामा बहर के शब्द सुनें जो मोतियों से अधिक स्पष्ट हैं, बहर में फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
फ़िल जौहरति क़ाला अंता तालिक़ुन अ़ला अन्नहू ला र्जअ़त ली अ़लयका यलगु़ व यमलकुर-र्जअ़त, वक़ीला तक़अु वाहिदतुन बाइनतुन अह व ज़ाहिरु मा फ़िल हिदायति अन्नल मज़हब अस्सानी फ़-इन्नहू क़ाला	जौहरा में है कि अगर एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा कि तुम्हें तलाक़ है इस शर्त पर कि मुझे रुजूअ (वापसी) का अधिकार नहीं होगा, तो ऐसी स्थिति में रुजूअ न होने की शर्त निरर्थक है, और इस तलाक़ पर पति का रुजूअ का अधिकार बना रहेगा, और कुछ ने कहा है कि यह एक 'बाइना' तलाक़ होगा।

1 रद-अल-मुहतार, बाब-अस-सरीह, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, ४/२५०।

पृष्ठ १३९/६८८

خاص صورت یہ زیر بحث ہے کہ جزائے معلق میں وصف بینونت مذکور ہو ، مثلاً:

عربی متن	اردو ترجمہ
ان دخلت الدار فانت طالق طلاقاً لارجعة لی علیک فیه یا ان تفعل کذا تکن طالقاً طلقة تملك بها نفسها۔	اگر تو گھر میں داخل ہوئی تو وہ طلاق جس میں مجھے رجوع کا حق نہ ہو، یا یوں کہے اگر تو یہ کام کرے تو تجھے وہ طلاق ہے جس میں اختیار تیرے ہاتھ میں ہو۔ (ت)

عبارت در میں و قول الموثقین بالجر زیر فی داخل (قول الموثقین جر کے ساتھ التعالیق پر داخل "فی" کے تحت ہے۔ ت) اور التعالیق کا عطف تفسیری ہے، بحر۔ ردالمحتار میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
قوله وخطاء ای نسبه الی الخطاء ، وقوله وقول الموثقین بالجر قال ح عطف تفسیر علی التعالیق، قلت واصل المسئلة التی ذکرها صاحب البحر ، وقد الف فیها رسالة ایضا، هی ان رجلا قال لزوجته متی ظهر لی امرأة غیرك فانت طالق واحدة تملکین بها نفسك، ثم ظهرله امرأة غیرها فاجاب فیها بانه	اس کا قول کہ "خطاء" یعنی اس کو خطاء کی طرف منسوب کیا، اور اس کا قول "قول الموثقین" جر یعنی زیر کے ساتھ، تو اب اس کا تعالیق پر عطف تفسیری ہوگا۔ قلت اصل مسئلہ وہ ہے جس کو صاحبِ بحر نے ذکر کیا اور اس پر رسالہ بھی لکھا ہے کہ ایک شخص نے بیوی کو کہا کہ اگر تیرے سوا کوئی میری بیوی معلوم ہو جائے تو تجھے ایک طلاق ہے جس میں تجھے اپنا اختیار ہوگا، اس کے بعد اس شخص کی دوسری بیوی معلوم ہوئی تو بحر والے نے جواب دیا کہ یہ طلاق بائن ہوگی ، اور انہوں نے اس شخص کا رد بھی

عربی متن	اردو ترجمہ
بائن و رد من افتی رجعی 1 (ملخصاً)	کیا جس نے اس کے رجعی ہونے کا فتویٰ دیا (ملخصاً) (ت)

خود علامہ بحر کی عبارت سنئے کہ در سے روشن تر ہے، بحر میں فرماتے ہیں :

عربی متن	اردو ترجمہ
فی الجوھرۃ قال انت طالق علی انہ لارجعۃ لی علیك یلغو ویملك الرجعۃ، وقیل تقع واحدۃ بائنۃ اھ وظاھر ما فی الھدایۃ ان المذھب الثانی فانہ قال	جوہرہ میں ہے کہ اگر ایک شخص نے بیوی کو کہا تجھے طلاق ہے اس شرط پر کہ مجھے رجوع اختیار نہ ہوگا، تو ایسی میں رجوع نہ ہونے کی شرط لغو، اور اس طلاق پر خاوند کو رجوع کا اختیار باقی رہے گا، اور بعض نے کہا ہے کہ یہ ایک بائنہ طلاق ہوگی اھ

1 ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۴/۲۵۰

When a divorce is described with a kind of intensity and excess, it becomes irrevocable (Ba'in). Al-Shafi'i said: It occurs as revocable (Raj'i) if it was after consummation, because he described it as irrevocable (Baynunah), which is contrary to what is prescribed, so it is nullified, just as if he said, 'You are divorced on the condition that I have no right of return over you.' For us, he described it with something it can bear, and the issue of the right of return being prohibited is cited. It is said in Al-'Inayah: That is, we do not concede that it does not occur as irrevocable; rather, one irrevocable divorce occurs. And likewise in Fath al-Qadir, Ghayat al-Bayan, and Al-Tabyin. So you have known that the school's position is the occurrence of an irrevocable divorce. Some who have no experience or knowledge of the school have relied on the statement of the experts (al-muwatthiqin) in 'Al-Ta'aliq' that it will be a divorce by which she owns herself, which does not necessitate irrevocability, arguing that if he said, 'You are divorced on the condition that there is no right of return,' it would be revocable. This is an error, and I have expanded on it in a treatise, summarized.

While the text of Al-Hidayah suggests that the second view is more correct, as they stated that when a divorce is described with a quality indicating intensity and excess, it becomes a 'Ba'in' (irrevocable) divorce. Imam Shafi'i stated that this would be a 'Raj'i' (revocable) divorce, provided that consummation with the wife has occurred, because he described a clear (Sarih) single divorce with the quality of 'Ba'in', which is contrary to Islamic law. Therefore, this description will be void, just as if someone says, 'I divorce you on the condition that I will not have the right of return,' the right of return will remain and it will be a revocable divorce. In response to this statement of Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), our argument is that the husband described the aforementioned divorce with a quality that is possible for it. As for the issue on which you made an analogy, i.e., the condition of not returning, for us it is not like that; rather, it is a Ba'in divorce. In 'Al-Inayah', supporting the Hanafi school, it is stated that we do not accept the non-occurrence of Ba'in divorce in the mentioned case; rather, it will be one Ba'in divorce. Besides 'Al-Inayah', it is similarly stated in 'Fath al-Qadir', 'Ghayat al-Bayan', and 'Tabyin'. And you have come to know that in the Hanafi school, it will be a Ba'in divorce. Those who have no knowledge or understanding of the school have argued here that the phrase 'Qawl al-Muwatthiqin fi al-Ta'aliq' means that if a husband says to his wife, 'I give you one revocable divorce in which you have authority over yourself,' then it will not be a Ba'in divorce. Their

reasoning for this was that if someone says to his wife, 'I give you one divorce on the condition that I shall have no right of return,' this would also be a revocable divorce. However, this statement and reasoning of theirs is an error, and I have written about this in detail in a treatise. (Summarized)

---

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter: Anta Taliq, HM Saeed Company, Karachi, 3/291 Page 140 of 688

जब तलाक को किसी प्रकार की तीव्रता और अधिकता के साथ वर्णित किया जाए, तो वह 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) हो जाती है। इमाम शाफ़ई ने कहा कि यदि यह संभोग के बाद हो, तो यह 'रजई' (परिवर्तनीय) होगी, क्योंकि उन्होंने इसे बाइन के रूप में वर्णित किया है जो शरीयत के विपरीत है, इसलिए यह निरस्त हो जाएगा, जैसे कि उसने कहा हो: 'तुझे तलाक है इस शर्त पर कि मुझे तुझ पर वापसी का कोई अधिकार नहीं होगा।' हमारे लिए दलील यह है कि उसने तलाक को ऐसे गुण से वर्णित किया है जिसे वह सहन कर सकता है, और वापसी का मसला वर्जित है। 'इनाया' में कहा गया है कि हम यह स्वीकार नहीं करते कि यह बाइन नहीं होगी, बल्कि एक तलाक-ए-बाइन होगी। इसी तरह 'फ़तह अल-क़दीर', 'ग़ायत अल-बयान' और 'तब्ईन' में भी है। अतः आपको पता चल गया है कि हनफ़ी मत में तलाक-ए-बाइन ही होगी। जिन लोगों को मत की जानकारी और समझ नहीं है, उन्होंने 'कौल अल-मुवात्तिक़ीन फ़ी अल-तालीक़' से यह दलील दी है कि 'तुझे ऐसी तलाक जिसमें तू अपना अधिकार रखती है' से तलाक-ए-बाइन नहीं होगी। उन्होंने तर्क दिया कि अगर कोई कहे 'तुझे एक तलाक है इस शर्त पर कि मुझे वापसी का अधिकार नहीं होगा', तो यह भी रजई तलाक होगी। जबकि उनका यह बयान और तर्क गलत है, और मैंने इस बात को विस्तार से एक रिसाले (पत्र/निबंध) में लिखा है। संक्षेप में।

जबकि हिदाया की इबारत से ज़ाहिर यूँ है कि दूसरा कौल (कथन) राजेह (वरीयता प्राप्त) है, क्योंकि उन्होंने यूँ फ़रमाया कि जब तलाक को ऐसे वस्फ़ (गुण) से मौसूफ़ (वर्णित) किया जाए जो शिद्दत और ज़ियादती पर दलालत करे तो वह तलाक बाइनह होती है। और इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया कि यह तलाक रजई होगी बशर्ते कि बीवी से दुख़ूल (संभोग) कर चुका हो क्योंकि उसने सरीह (स्पष्ट) एक तलाक को बाइन के वस्फ़ से मौसूफ़ किया है जो कि ख़िलाफ़-ए-मशरूअ (शरीयत के विपरीत) है, लिहाज़ा यह वस्फ़ लग़्व (व्यर्थ) होगा, जैसा कि कोई यूँ कहे कि तुझे तलाक है इस शर्त पर कि मुझे रुजूअ (वापसी) का इख़्तियार न होगा तो रुजूअ का हक़ बाक़ी रहेगा और तलाक रजई होगी। और इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह तआला के इस कौल के मुक़ाबले में हमारी दलील यह है कि ख़ाविंद ने तलाक-ए-मज़कूरा को ऐसे वस्फ़ से मौसूफ़ किया जिसका उसमें एहतेमाल (संभावना) बन सकता है। और जिस मसअले पर आपने क़यास किया यानी रुजूअ न करने की शर्त, तो हमारे लिए वह ऐसे नहीं है बल्कि वह तलाक बाइनह है। 'इनाया' में हनफ़ी मसलक की ताईद में फ़रमाया कि मज़कूरा सूरत में बाइनह तलाक न होना तस्लीम नहीं करते बल्कि एक तलाक बाइनह होगी। 'इनाया' के इलावा

'फ़तह अल-क़दीर', 'ग़ायत अल-बयान' और 'तब्ईन' में ऐसे ही है, और आपको मालूम हो चुका है कि हनफ़ी मज़हब में तलाक बाइनह होगी। जिन लोगों को मज़हब की ख़बर और समझ नहीं उन्होंने यहाँ इस्तदलाल (तर्क) किया है कि "कौल अल-मुवात्तिक़ीन फ़ी अल-तालीक़" से मुराद यह है कि अगर ख़ाविंद बीवी को कहे कि "तुझे एक रजई तलाक जिसमें तुझे अपना इख़्तियार हासिल है" तो उसमें तलाक बाइनह न होगी, इस पर उन्होंने दलील यह दी कि अगर कोई बीवी को कहे कि तुझे एक तलाक है इस शर्त पर कि मुझे रुजूअ का इख़्तियार न होगा, तो यह भी रजई तलाक होगी, हालाँकि इन लोगों का यह बयान व इस्तदलाल ख़ता है, और मैंने इस बात को तफ़्सील से रिसाले में लिखा है। (संक्षेप में)

---

[1] अल-बहर अर-राइक़, फ़स्ल: अन्त तालिक़, एच एम सईद कंपनी, कराची, ३/२९१ पृष्ठ १४० / ६८८

واذا وصف الطلاق بضرب من الشدة والزیادة کان بائنا وقال الشافعی یقع رجعیا اذا کان بعد الدخول، لانه وصفه بالبینونة خلاف المشروع فیلغو کما اذا قال انت طالق علی ان لارجعة لی علیك ولنا انه وصفه بما یحتمله ومسئلة الرجعة ممنوعة اھ قال فی العنایة ای لانسلم انه لا یقع بائنا بل تقع واحدة بائنة اھ وھکذا فی فتح القدیر وغایة البیان والتبیین فقد علمت ان المذھب وقوع البائن، وقد تمسك به بعض من لاخبرة له ولادرایة بالمذھب علی ان قول الموثقین فی التعالیق تکون طالقا طلقة تملك بها نفسها لایوجب البینونة مستدلا بانه لوقال انت طالق علی ان لارجعة کان رجعیا، وھو خطأ وقد اوسعت الکلام فیھا فی رسالة اھ ملخصا۔

جبکہ ہدایہ کی عبارت سے ظاہر یوں ہے کہ دوسرا قول راجح ہے، کیونکہ انہوں نے یوں فرمایا کہ جب طلاق کو ایسے وصف سے موصوف کیا جائے جو شدت اور زیادتی پر دلالت کرے تو وہ طلاق بائنہ ہوتی ہے اور امام شافعی نے فرمایا کہ یہ طلاق رجعی ہوگی بشرطیکہ بیوی سے دخول کر چکا ہو کیونکہ اس نے صریح ایک طلاق کو بائن کے وصف سے موصوف کیا ہے جو کہ خلافِ مشروع ہے لہٰذا یہ وصف لغو ہوگا، جیسا کہ کوئی یوں کہے کہ تجھے طلاق ہے اس شرط پر کہ مجھے رجوع کا اختیار نہ ہوگا تو رجوع کا حق باقی رہے گا اور طلاق رجعی ہوگی، اور امام شافعی رحمہ اللہ تعالٰی کے اس قول کے مقابلہ میں ہماری دلیل یہ ہے کہ خاوند نے طلاقِ مذکورہ کو ایسے وصف سے موصوف کیا جس کا اس میں احتمال بن سکتا ہے اور جس مسئلہ پر آپ نے قیاس کیا یعنی رجوع نہ کرنے کی شرط، تو ہمارے لئے وہ ایسے نہیں ہے بلکہ وہ طلاق بائنہ ہے اھ عنایہ میں حنفی مسلک کی تائید میں فرمایا کہ مذکورہ صورت میں بائنہ طلاق نہ ہونا تسلیم نہیں کرتے بلکہ ایک طلاق بائنہ ہوگی اھ عنایہ کے علاوہ فتح القدیر، غایۃ البیان اور تبیین

میں ایسے ہی ہے، اور آپ کو معلوم ہو چکا ہے کہ حنفی مذہب میں طلاق بائنہ ہوگی، جن لوگوں کو مذہب کی خبر اور سمجھ نہیں انہوں نے یہاں استدلال کیا ہے کہ "قول الموثقین فی التعالیق" سے مراد یہ ہے کہ اگر خاوند بیوی کو کہے کہ "تجھے ایک رجعی طلاق جس میں تجھے اپنا اختیار حاصل ہے" تو اس میں طلاق بائنہ نہ ہوگی، اس پر انہوں نے دلیل یہ دی کہ اگر کوئی بیوی کو کہے کہ تجھے ایک طلاق ہے اس شرط پر کہ مجھے رجوع کا اختیار نہ ہوگا، تو یہ بھی رجعی طلاق ہوگی، حالانکہ ان لوگوں کا یہ بیان واستدلال خطا ہے، اور میں نے اس بات کو تفصیل سے رسالہ میں لکھا ہے اھ ملخصا (ت)

---

[1] بحر الرائق فصل انت طالق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۲۹۱ Page 140 of 688

Furthermore, in the treatise of Allama Bahr, whose reference appeared in Radd al-Muhtar and in Bahr al-Raiq itself, the cause for the occurrence of 'Ba'in' (irrevocable divorce) is stated as the addition of the phrase 'tamlik bi-ha nafsu-ha' (she becomes the owner of herself), not that the suspension (ta'liq) itself necessitates 'baynunah' (irrevocability). In the mentioned treatise, after explaining the situation, he states:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
Divorce occurs with that which signifies an addition, and it is his saying 'she owns herself through it,' so it becomes irrevocable even if it was explicit. In Al-Bada'i: Irrevocable is that which is through words of separation or words of divorce but qualified by a description that signifies irrevocability. There is no doubt that his saying 'she owns herself' occurs with irrevocable divorce, not with revocable. In Fath al-Qadir: She does not own herself except through irrevocable divorce. Briefly summarized.	Here, the occurrence of divorce will be with additional words, i.e., 'she will be the owner of herself,' therefore this divorce will be 'Ba'in' (irrevocable), even if explicit divorce is mentioned. It is stated in Al-Bada'i that if any word of separation or the word 'talaq' is qualified by a word meaning separation, then it will be 'Ba'in' divorce. And there is no doubt that a woman gains control over herself through 'Ba'in' divorce, not 'Raji' (revocable). It is in Fath al-Qadir that in 'Raji' divorce, the woman does not gain control over herself, and in Al-Bada'i, it says a woman becomes the owner of herself only through 'Ba'in' divorce. Briefly summarized. (T)

The occurrence of 'Ba'in' purely from suspension (ta'liq), besides these clear arguments presented at the beginning of the discourse, is void according to hundreds of explicitly stated secondary rulings in the school of jurisprudence. In the same Durr al-Mukhtar, it says:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
If he suspended triple divorce upon intercourse, he breaches [his oath] by the meeting of the two circumcised parts (initial contact). Mahr al-Mithl (fair dower) is not necessary for staying after penetration, and he does not become one who has	If the husband suspended triple divorce upon intercourse, then in the initial stage of intercourse, as soon as the private parts meet, divorce will occur. After penetration, even if there is a stay, 'uqr' (compensation/ dower) will not be necessary for the wife, nor will it be considered a 'ruju' (return) in

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
returned (to the wife) in a revocable divorce unless he withdraws and then re-enters; then he becomes one who has returned.	revocable divorce. However, if after penetration and separation of private parts, he penetrates again, then it will be considered 'ruju'. (T)

1. Al-Risalah al-Sabi'ah fi al-Talaq al-Mu'allaq 'ala al-Ibra: Is it Raj'i or Ba'in? with Al-Ashbah wa al-Nazair - Idara al-Quran Karachi 26/2
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Suspension, Mujtabai Press Delhi 1/232 and 233

इसके अलावा अल्लामा बहर के उस रिसाले (लेख) में, जिसका सन्दर्भ रद्दुल् मुहतार और स्वयं बहरुर राईक में आ चुका है, यहाँ तलाक़-ए-बाइन के होने का कारण 'तमल्लुक बिहा नफ़्सुहा' (वह अपने नफ़्स की मालिक हो जाएगी) के शब्दों की ज़्यादती को बताया गया है, न कि यह कि महज़ 'ता'लीक़' (निलंबन) बैनूनत (अपरिवर्तनीयता) का कारण है। उक्त रिसाले में वाक़िये की सूरत बयान करने के बाद फ़रमाते हैं:

अरबी पाठ

तलाक़ का होना उस चीज़ के साथ होगा जो ज़्यादती की सूचना दे, और वह उसका यह कहना है कि 'वह इसके ज़रिये अपने नफ़्स की मालिक हो गई', तो यह बाइन हो जाएगी चाहे वह स्पष्ट (सर्रीह) ही क्यों न हो। बदाई में है: बाइन वह है जो अलगाव के शब्दों के साथ हो या तलाक़ के शब्दों के साथ हो लेकिन ऐसी सिफ़त (गुण) के साथ हो जो बैनूनत (अलगाव) की सूचना दे। इसमें कोई शक नहीं कि उसका यह कहना कि 'वह अपने नफ़्स की मालिक है' बाइन के साथ होता है न कि रजी (प्रतिसंहरणीय) के साथ। फ़तहुल क़दीर में है: वह अपने नफ़्स की मालिक नहीं होती सिवाय बाइन के। संक्षेप में।

उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण

यहाँ तलाक़ का वाक़े होना ज़ायद अलफ़ाज़ यानी 'वह अपने नफ़्स की मालिक होगी' के साथ होगा, लिहाज़ा यह तलाक़-ए-बाइन होगी, अगरचे सर्रीह (स्पष्ट) तलाक़ मज़कूर है। बदाई में है कि किसी जुदाई वाले लफ़्ज़ या लफ़्ज़-ए-तलाक़ को जुदाई वाले किसी लफ़्ज़ से मौसूफ़ (विशेषित) कर दिया जाए, तो यह बाइन तलाक़ होगी। और इसमें शक नहीं कि औरत को अपने नफ़्स का इख़्तियार बाइन तलाक़ से हासिल होता है रजी से नहीं होता। फ़तहुल क़दीर में है कि रजी तलाक़ में औरत को अपने नफ़्स का इख़्तियार हासिल नहीं होता, और बदाई में है कि औरत अपने नफ़्स की मालिक सिर्फ़ बाइन तलाक़ से बनती है। संक्षेप में। (त)

महज़ ता'लीक़ (निलंबन) से बाइन का वाक़े होना, उन स्पष्ट दलीलों के अलावा जो कलाम की शुरुआत में पेश की गई हैं, मज़हब (विचारधारा) में सैंकड़ों स्पष्ट उप-नियमों (फ़ुरआत) के अनुसार बातिल (अमान्य) है। इसी दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी पाठ

अगर उसने तीन तलाक़ों को संभोग (वत्ई) से मुअल्लक़ (निलंबित) किया, तो दोनों अंगों के मिलन (इब्तिदाई सम्पर्क) पर ही शपथ भंग हो जाएगी (तलाक़ हो जाएगी)। दाखिले के बाद रुकने पर औरत के लिए मह्र-ए-मिसल (उक्र) वाजिब नहीं होगा, और न ही इसे तलाक़-ए-रजी में रुजूअ (वापसी) माना जाएगा, सिवाय इसके कि वह अलग होकर दोबारा दाखिला करे, तब वह रुजूअ करने वाला माना जाएगा।

उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण

खाविंद ने अगर तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा को वत्ई से मुअल्लक़ किया तो वत्ई के इब्तिदाई मरहले में दोनों शर्मगाहों के मिलने पर ही तलाक़ हो जाएगी और दुख़ूल (प्रवेश) के बाद वक़्फ़े पर बीवी के लिए जोड़ा (उक्र/मुआवज़ा) लाज़िम न होगा और न ही इसको तलाक़-ए-रजी में रुजूअ क़रार दिया जाएगा। हाँ अगर दुख़ूल के बाद शर्मगाहों के जुदा होने के बाद दोबारा दुख़ूल किया तो रुजूअ क़रार पाएगा। (त)

1. अल-रिसालह अल-साबिअह फ़ी अल-तलाक़ अल-मुअल्लक़ अला अल-इब्रा: क्या यह रजी है या बाइन? अल-अशबाह व अन-नज़ाइर के साथ - इदारा अल-कुरान कराची 26/2
2. दुर्रे मुख़्तार, ता'लीक़ का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली 1/232 और 233

نیز علامہ بحر کے اس رسالہ میں جس کا حوالہ ردالمحتار اور خود بحر الرائق میں گزرا یہاں وقوع بائن کی علت زیادۃ لفظ تملک بھا نفسہا بیان فرمائی نہ یہ کہ نفس تعلیق موجب بینونت ہے رسالہ مذکورہ میں بعد بیان صورت واقعہ فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
وقع الطلاق ما ینبئ علی الزیادۃ وھو قولہ تملك بھا نفسھا فیکون بائنا وان کان صریحا، في البدائع، البائن ان یکون بحروف الابانۃ او بحروف الطلاق لکن موصوفا بصفۃ تنبئ عن البینونۃ اھ ولا شك ان قولہ تملك بھا نفسھا یکون بالبائن لابالرجعی، في فتح القدیر لا تملك نفسھا الا بالبائن اھ مختصرا	یہاں طلاق کا وقوع زائد الفاظ یعنی "وہ اپنے نفس کی مالک ہوگی" کے ساتھ ہوگا، لہذا یہ طلاق بائن ہوگی، اگر چہ صریح طلاق مذکور ہے، بدائع میں ہے کہ کسی جدائی والے لفظ یا لفظ طلاق کو جدائی والے کسی لفظ سے موصوف کر دیا جائے، تو یہ بائن طلاق ہوگی اھ، اور اس میں شک نہیں کہ عورت کو اپنے نفس کا اختیار بائن طلاق سے حاصل ہوتا ہے رجعی سے نہیں ہوتا۔ فتح القدیر میں ہے کہ رجعی طلاق میں عورت کو اپنے نفس کا اختیار حاصل نہیں ہوتا، اور بدائع میں ہے کہ عورت اپنے نفس کی مالک صرف بائن طلاق سے بنتی ہے اھ مختصرا (ت)

مطلقاً تعلیق سے بائن کا وقوع علاوہ ان دلائل واضحہ کے کہ صدر کلام میں معروض ہوئے صد ہا فروع منصوصہ فی المذہب سے باطل ہے۔ اسی در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
علق الثلث بالوطء حنث بالتقاء الختانين ولم يجب العقر باللبث بعد الايلاج ولم يصر به مراجعا فی الطلاق الرجعي الا اذا اخرج ثم اولج فيصير مراجعا	خاوند نے اگر طلاق مغلظہ کو وطی سے معلق کیا تو وطی کے ابتدائی مرحلہ میں دونوں شرمگاہوں کے ملنے پر ہی طلاق ہو جائے گی اور دخول کے بعد وقفہ پر بیوی کے لئے جوڑا (عقر) لازم نہ ہوگا اور نہ ہی اس کو طلاق رجعی میں رجوع قرار دیا جائے گا، ہاں اگر دخول کے بعد شرمگاہوں کے جدا ہونے کے بعد دوبارہ دخول کیا تو رجوع قرار پائے گا۔ (ت)

1. الرسالة السابعة فی الطلاق المعلق علی الابراء هل هو رجعی او بائن مع الاشباه والنظائر-ادارة القرآن کراچی ۲/۲۶
2. درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۲ و ۲۳۳

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

In Radd al-Muhtar it is stated:

[Arabic] “His statement regarding revocable divorce, i.e., in the case where the divorce contingent upon intercourse is a revocable one.” [Urdu] The author's statement "in revocable divorce" refers to the case in which a revocable divorce has been made contingent upon sexual intercourse. (T)

Similarly, it is mentioned in Bahr al-Ra'iq, al-Hidayah, Fath al-Qadir, and the general books of the school of jurisprudence. In the aforementioned treatise by Allama Zain, after describing a scenario where the husband said:

[Arabic] “Whenever you absolve me of your dower (mahr), you are divorced etc.” [Urdu] “If you release me from the dower, you are divorced etc.” (T)

And he explained the establishment of irrevocability (bain) due to the addition of the aforementioned attribute:

[Arabic] “If you say: Why did you not make it an irrevocable divorce (bain) because of the condition of absolution from the dower? For divorce occurring in exchange for absolution is irrevocable. He reasoned in al-Tajnis that it occurs for a compensation, and it is not so here. I say: In our case, the divorce was made contingent upon absolution as a condition, not as a compensation. Therefore, we did not make it irrevocable unless there is a textual transmission (naql) that indicates so. Summarized.”

[Urdu] If you object: Why did you not make the divorce, conditioned upon being freed from the dower, an irrevocable (baina) one? Because divorce in exchange for absolution is irrevocable, not due to a condition. In Al-Tajnis, the reason given is that in this case, the divorce is in exchange for a compensation that is not in the husband's favor. I say: In this matter, the divorce has been made contingent upon absolution (ibra), where absolution is made a condition, not a compensation. Therefore, we did not make it irrevocable unless some evidence is found that indicates it. (T) Summarized.

Also in Fath al-Qadir, under the upcoming issue: “You are divorced if I do not divorce you” (If I do not give you a divorce, then you are divorced. T) he stated:

[Arabic] “Divorce is confirmed as hopeless by her death, and when we rule its occurrence before her death…” [Urdu] That despair of divorce can only occur with the woman's death, and when we rule the occurrence of divorce before the wife's death…

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Attachment, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/508.
2. The Seventh Treatise on Contingent Divorce, etc., with al-Ashbah wa'l-Naza'ir, Idara al-Quran, Karachi, 2/839.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

रद अल-मुह्तार में है:

[अरबी] "रजई तलाक़ (संशोधनीय तलाक़) के बारे में उनका कथन, यानी उस स्थिति में जहाँ संभोग पर निर्भर तलाक़ रजई हो।" [उर्दू] मूल लेखक का यह कहना कि "रजई तलाक़ में" - यह वह स्थिति है जिसमें रजई तलाक़ को संभोग के साथ जोड़ा गया हो। (त)

इसी प्रकार बहर अल-रैक, हिदाया, फ़तह अल-क़दीर और संप्रदाय की सामान्य पुस्तकों में है। अल्लामा ज़ैन के उक्त शोध पत्र में, उस स्थिति के विवरण के बाद जिसमें पति ने कहा था:

[अरबी] "जब भी तुम मुझे अपने मेहर से मुक्त कर दोगी, तो तुम्हें तलाक़ है आदि।" [उर्दू] "यदि तुम मुझे मेहर से मुक्त कर दो, तो तुम्हें तलाक़ है आदि।" (त)

और उन्होंने पूर्वोक्त विशेषता की वृद्धि के कारण अपरिवर्तनीयता (बाइन) की स्थापना को स्पष्ट किया:

[अरबी] "यदि तुम कहो: तुमने मेहर से मुक्ति की शर्त के कारण इसे बाइन क्यों नहीं बनाया? क्योंकि मुक्ति के बदले में होने वाला तलाक़ बाइन होता है। उन्होंने 'अल-तजनीस' में इसका कारण बताया कि यह मुआवज़े के लिए होता है, और यहाँ ऐसा नहीं है। मैं कहता हूँ: हमारे मसले में तलाक़ को मुक्ति की शर्त पर निर्भर किया गया है, मुआवज़े के रूप में नहीं। इसलिए, हमने इसे बाइन नहीं बनाया जब तक कि कोई ऐसा प्रमाण न मिल जाए जो इसका संकेत दे। संक्षेपित।"

[उर्दू] यदि आप आपत्ति करें कि: आपने मेहर से मुक्ति की शर्त पर होने वाले तलाक़ को बाइन क्यों नहीं बनाया? क्योंकि मुक्ति के बदले में तलाक़ बाइन होता है, शर्त के कारण नहीं। तजनीस में इसकी वजह यह बताई गई है कि इस सूरत में यह तलाक़ ऐसे मुआवज़े के बदले में है जो पति के हक में नहीं है। मैं कहता हूँ कि इस मसले में तलाक़ को मुक्ति (इबरा) से जोड़ा गया है जिसमें मुक्ति को शर्त बनाया गया है, मुआवज़ा नहीं। इसीलिए हमने इसे बाइन नहीं बनाया जब तक कि इस पर कोई नक़ल (प्रमाण) न मिल जाए जो इस पर दलालत करे। (त) संक्षेपित।

इसके अलावा फ़तह अल-क़दीर में आगामी मसले के तहत: "तुम तलाक़शुदा हो यदि मैं तुम्हें तलाक़ न दूँ" (यदि मैं तुम्हें तलाक़ न दूँ, तो तुम्हें तलाक़ है। त) उन्होंने फ़रमाया:

[अरबी] "तलाक़ की निराशा उसकी मृत्यु से सुनिश्चित होती है, और जब हम उसकी मृत्यु से पूर्व इसके होने का आदेश देते हैं..." [उर्दू] कि तलाक़ से निराशा केवल स्त्री की मृत्यु से हो सकती है और जब हम पत्नी की मृत्यु से पहले तलाक़ होने का आदेश...

---

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-तअलीक, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/508।
2. अल-रिसाला अल-सबीआ फ़िल-तलाक़ अल-मुअल्लक आदि, अल-अशबाह वल-नज़ायर के साथ, इदारा अल-क़ुरान, कराची, 2/839।

فتاوی رضویہ جلد سیز د ہم، صفحہ ۱۳

ردالمحتار میں ہے:

قوله في الطلاق الرجعي ای فیما اذ کان المعلق علی الوطئ طلاقاً رجعیاً- ماتن کا قول کہ "رجعی طلاق میں" یہ وہ صورت ہے جس میں رجعی طلاق کو وطی کے ساتھ معلق کیا ہو۔ (ت)

اسی طرح بحر الرائق وہدایہ وفتح القدیر وعامہ کتب مذہب میں ہے۔ خود رسالہ مذکورہ علامہ زین میں بعد بیان صورت واقعہ کہ زوج نے کہا تھا:

متی ابرأیتنی من مهرك فانت طالق الخ تو مجھے مہر سے بری کر دے تو تجھے طلاق ہے الخ (ت)

اور اثبات بینونت بوجہ زیادت صفت متقدمہ بیان فرمایا:

فان قلت لولم تجعله بائناً بسبب اشتراط الابراء من المهر فان الطلاق الموقع فی مقابلة الابراء یکون بائناً، وعلله فی التجنیس بانه یقع بعوض وهو لاله اه قلت فی مسئلتنا جعل الطلاق معلقا بالابراء شرطاً له لاعوضاً، فلذا لم تجعله بائناً الان یوجد نقل یدل علی ذلك اهـ[2] ملتقطاً-

اگر تو اعتراض کرے کہ مہر سے بری کرنے کی شرط پر طلاق کو تم نے بائنہ کیوں نہ بنایا، کیونکہ ابراء کے مقابلہ میں طلاق بائنہ ہوتی ہے نہ کہ شرط سے، تجنیس میں اس کی وجہ یہ بتائی کہ اس صورت میں یہ طلاق ایسے عوض کے مقابلہ میں ہے جو خاوند کے حق میں نہیں اھ میں کہتا ہوں کہ اس مسئلہ میں طلاق کو ابراء سے معلق کیا گیا ہے جس میں ابراء کو شرط بنایا ہے عوض نہیں بنایا، اسی لئے تو ہم نے اس کو بائن نہیں بنایا الا یہ کہ کوئی نقل اس پر مل جائے جو اس پر دلالت کرے اھ ملتقطاً۔ (ت)

نیز فتح القدیر میں زیر مسئلہ آتیہ قریباً انت طالق ان لم اطلقک (اگر تجھے طلاق نہ دوں تو تجھے طلاق ہے۔ ت) ارشاد فرمایا:

الطلاق یتحقق منه الیأس بموتها واذا حکمکا بوقوعه قبل موتها کہ طلاق سے مایوسی عورت کی موت سے ہی ہوسکتی اور جب ہم بیوی کی موت سے قبل وقوع طلاق کا حکم

1- ردالمحتار باب التعلیق دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۵۰۸ 2- الرسالة السابعة فی الطلاق المعلق الخ مع الاشباہ والنظائر ادارة القرآن کراچی ۲/۸۳۹

Fatawa Razawiyya | Volume 13 | Page 13

[Table Header] Arabic Text: The husband does not inherit from her because she became irrevocably divorced (Ba'in) before death, so no marital bond remained between them at the time of death. We have ruled it to be an irrevocable divorce, even if the condition was explicit, due to the absence of the waiting period ('Iddah), similar to a woman before the consummation of marriage. This is because the assumption is that the occurrence [of divorce] was in the final indivisible part [of life], so death did not reach it, and with this, it becomes clear. (Ref 1)

Urdu Text: [If such words are said], the husband will not be the heir to this wife because divorce becomes irrevocable (Ba'in) upon death, so at the time of death, the marital relationship of both would have ended. And indeed, we have declared this divorce to be irrevocable, even if the words are an explicit divorce, because there is no waiting period ('Iddah) for it, as is the case in divorce before consummation. This is because it is assumed that divorce occurred in an infinitesimal part just before death, in which nothing but death could occur, and through that, she became irrevocably divorced. (T)

[Main Body Text] In short, the matter is clear and so extremely evident that it needs no further clarification. As for the words uttered by the first party from the husband's tongue, i.e., "If you do not pray, it is two divorces," if their literal meaning is considered, the reality is exactly as that party understood. This is because here, the condition is based on the absence [of praying], and the absence will not be realized except at the last part of the woman's life. If she never offers any prayer from today for the rest of her life, then the said absence would be true, and divorce would descend at the woman's last breath. If she prayed the morning prayer, then the absence is non-existent and its opposite is present, so these two divorces should not have occurred at all. It is stated in Al-Hidayah, chapter on adding divorce to time:

[Table Header] Arabic Text: Non-existence is only realized by despairing of life, and that is the condition, as in his saying, "If I do not come to Basra." (Ref 2)

Urdu Text: The realization of the absence of divorce can only occur upon losing hope of life when not giving divorce is the condition, as when someone says, "If I do not come to Basra," then not coming to Basra remains expected throughout life; this expectation ends only with death. (T)

[Section: In Fath-ul-Qadir it is stated:] Arabic Text: And if he said, "You are divorced if I do not divorce you," she is not divorced until he dies, by consensus of the jurists, because the condition is that he does not divorce her.

Urdu Text: In the case where the husband says, "If I do not give you a divorce, then you are divorced," the divorce will not occur without death. All jurists agree on this because the divorce...

[Footnotes] 1. Fath-ul-Qadir, Chapter on adding divorce to time, Maktaba Nooria Razawiya, Sukkur, 3/373 2. Al-Hidayah, Chapter on adding divorce to time, Al-Maktaba al-Arabia, Karachi, 1/345

[तालिका शीर्षक] अरबी पाठ: पति उससे विरासत नहीं पाता क्योंकि वह मृत्यु से पहले ही तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो गई थी, इसलिए मृत्यु के समय उनके बीच कोई वैवाहिक संबंध नहीं बचा। हमने इसे अटल तलाक माना है, भले ही शर्त स्पष्ट थी, क्योंकि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की अनुपस्थिति है, जैसे संभोग से पहले की तलाकशुदा स्त्री के मामले में होता है। इसका कारण यह है कि तलाक जीवन के अंतिम अविभाज्य क्षण में हुआ माना जाता है, इसलिए मृत्यु उसे नहीं छू पाई, और इससे यह स्पष्ट हो जाता है। (संदर्भ 1)

उर्दू पाठ: [अगर ऐसे शब्द कहे जाएं तो] पति इस पत्नी का वारिस नहीं होगा, क्योंकि मृत्यु से तलाक अटल (बाइन) हो जाती है, इसलिए मृत्यु के समय दोनों का वैवाहिक संबंध समाप्त हो चुका होगा। और वास्तव में हमने इस तलाक को अटल घोषित किया है, भले ही शब्दों में यह स्पष्ट तलाक हो, क्योंकि इसके लिए कोई इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) नहीं होती, जैसा कि संभोग से पहले तलाक की स्थिति में होता है। इसका कारण यह है कि यह माना जाता है कि तलाक मृत्यु से ठीक पहले एक अत्यंत सूक्ष्म क्षण में हुआ, जिसमें मृत्यु के अलावा और कुछ नहीं हो सकता था, और उसके माध्यम से वह अटल रूप से तलाकशुदा हो गई। (त)

[मुख्य पाठ] संक्षेप में, मामला स्पष्ट है और इतना अधिक प्रत्यक्ष है कि इसे और अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। जहाँ तक पहले पक्ष के पति की जुबान से निकले शब्दों का सवाल है, यानी "अगर तू नमाज़ नहीं पढ़ेगी तो दो तलाक हैं," यदि उनका शाब्दिक अर्थ देखा जाए, तो वास्तविकता वही है जो उस पक्ष ने समझी। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ शर्त 'न होने' (नमाज़ न पढ़ने) पर आधारित है, और यह 'न होना' स्त्री के जीवन के अंतिम भाग तक सिद्ध नहीं होगा। यदि वह आज से जीवन भर कभी नमाज़ नहीं पढ़ती, तो उक्त 'न होना' सच हो जाता और स्त्री की अंतिम सांस पर तलाक हो जाती। यदि उसने सुबह की नमाज़ पढ़ ली, तो 'न होना' समाप्त हो गया और उसका विपरीत (नमाज़ पढ़ना) मौजूद हो गया, तो ये दो तलाक बिल्कुल नहीं होने चाहिए थे। हिदाया, समय के साथ तलाक जोड़ने के अध्याय में लिखा है:

[तालिका शीर्षक] अरबी पाठ: अनुपस्थिति केवल जीवन से निराश होने पर ही सिद्ध होती है, और यही शर्त है, जैसे उनके इस कथन में, "यदि मैं बसरा न आऊं।" (संदर्भ 2)

उर्दू पाठ: तलाक की अनुपस्थिति की सिद्धि केवल जीवन की आशा समाप्त होने पर ही हो सकती है जब तलाक न देना शर्त हो, जैसे कोई कहे "अगर मैं बसरा न आऊं, तो बसरा न आना जीवन भर अपेक्षित रहता है; यह अपेक्षा केवल मृत्यु के साथ समाप्त होती है। (त)

[अनुभाग: फतह-उल-क़दीर में लिखा है:] अरबी पाठ: और यदि उसने कहा, "यदि मैं तुझे तलाक न दूँ तो तुझे तलाक है", तो वह तब तक तलाकशुदा नहीं होगी जब तक वह मर न जाए, धर्मशास्त्रियों की सहमति के अनुसार, क्योंकि शर्त यह है कि वह उसे तलाक न दे।

उर्दू पाठ: उस स्थिति में जहाँ पति कहता है, "अगर मैं तुझे तलाक न दूँ, तो तुझे तलाक है," मृत्यु के बिना तलाक नहीं होगा। इस पर सभी धर्मशास्त्री सहमत हैं, क्योंकि तलाक...

[पाद लेख] 1. फतह-उल-क़दीर, समय के साथ तलाक जोड़ने का अध्याय, मकतबा नूरया रज़विया, सुक्कुर, 3/373 2. अल-हिदाया, समय के साथ तलाक जोड़ने का अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/345

لا یرث منھا الزوج لانھا بانت قبل الموت فلم یبق بینھما زوجیۃ حال الموت وانما حکمنا بالبینونۃ وان کان المعلق صریحاً لانتفاء العدۃ کغیر المدخول بھا لان الفرض ان الوقوع فی اخر جزء لا یتجزأ فلم ینلہ الموت وبہ تبین اھ[1] دیں تو خاوند اس بیوی کا وارث نہ ہوگا، کیونکہ موت سے طلاق بائنہ ہوتی ہے تو موت کے وقت زوجیت دونوں کی ختم ہو چکی ہوگی، اور بیشک ہم نے اس طلاق کو بائنہ قرار دیا ہے اگر چہ لفظوں میں یہ صریح طلاق ہے، کیونکہ اس پر عدت نہیں ہوتی جیسا کہ قبل دخول طلاق کی صورت میں ہوتا ہے اس لئے کہ فرض یہ کیا ہوا ہے کہ موت سے قبل ایک ادنیٰ جز جس میں موت کے سوا اور کچھ نہیں ہو سکتا تھا اس میں طلاق واقع ہوئی اس سے وہ بائنہ بن گئی۔ (ت)

بالجملہ امر واضح اور بشدت وضوح ایضاح سے مستغنی ہے۔ رہا فریق اول الفاظ کہ زبان زوج سے نکلے یعنی اگر تو نماز نہ پڑھے گی تو دو طلاق ہے، اگر لغۃً ان کا مفاد دیکھا جائے تو واقعہ اسی قدر ہے جو اس فریق نے سمجھا اس لئے کہ یہاں معلق بہ عدم یعنی نماز نہ پڑھنا ہے اور عدم متحقق نہ ہوگا مگر عورت کے آخر جزء حیات میں اگر آج سے عمر بھر کبھی کوئی نماز نہ پڑھتی تو عدم مذکور صادق آتا اور عورت کی پچھلی سانس پر طلاق نازل ہوتی یہاں تک کہ اس نے صبح کی نماز پڑھی تو عدم معدوم اور اس کا نقیض موجود ہوا تو چاہئے تھا کہ یہ دو طلاقیں اصلاً نہ پڑتیں۔ ہدایہ فصل اضافۃ الطلاق الی الزمان میں ہے :

العدم لا یتحقق الا بالیأس عن الحیوۃ وھو الشرط کما فی قولہ ان لم ات البصرۃ[2]۔ عدم طلاق کا تحقق صرف زندگی سے مایوس ہو جانے پر ہو سکتا ہے جبکہ طلاق نہ دینا شرط ہے، جیسا کہ کوئی

یوں کہے "اگر میں بصرہ نہ آؤں" تو بصرہ میں نہ آنا زندگی بھر میں متوقع رہتا ہے صرف موت سے ہی یہ توقع ختم ہوتی ہے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: ولو قال انت طالق ان لم اطلقك لم تطلق حتی یموت باتفاق الفقهاء لان الشرط ان لا یطلقها اگر خاوند نے کہا "اگر تجھے طلاق نہ دوں تو تجھے طلاق ہے" کی صورت میں موت کے بغیر طلاق نہ ہوگی، اس پر تمام فقہاء کا اتفاق ہے، اس لئے کہ طلاق

[1] فتح القدیر فصل فی اضافة الطلاق الی الزمان مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳ / ۳۷۳ [2] الهدایة فصل فی اضافة الطلاق الی الزمان المکتبة العربیة کراچی ۱ / ۳٤٥

Fatawa Razawiyya Volume 13

"And that is not realized except with despair of life, because whenever he divorces her during his lifetime, it is not true that he did not divorce her, rather its opposite is true, which is that he did divorce her; and despair is in the last portion of the portions of his life." [1] The condition is of not giving (divorce), and this condition will not be fulfilled throughout life, but only upon despair of life. Because during life, if he gives divorce, then 'not giving divorce' will not be true, rather its opposite will be true, which is that he has given divorce. Therefore, not giving divorce can only be known in the last minute part of life, and that is the time of despair from life. (T)

But there is a subtle point here, negligence of which caused error for this party. According to our Imams, the literal meaning of words is not the basis of an oath, rather current customary (Urfi) meanings are the basis of the matter. It is stated in Durr-e-Mukhtar: "The principle is that according to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), oaths are based on literal linguistic reality; according to Imam Malik (may Allah have mercy on him), on Qur'anic usage; according to Imam Ahmad (may Allah have mercy on him), on intention; and according to us (Hanafis), on custom, as long as one does not intend what the word can potentially bear." [2] According to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), the literal linguistic meaning is considered in an oath. According to Imam Malik (may Allah have mercy on him), the words and meanings used in the Holy Qur'an are considered. According to Imam Ahmad (may Allah have mercy on him), intention is considered. And for us Hanafis, customary meanings are taken into account in an oath, provided the person making the oath did not intend any other possible meaning. (T)

And the aims and purposes that exceed the benefit of the word—meaning even if the general and absolute terms do not cover them—are not taken into consideration. "Oaths are clarified based on words, not on purposes" [3] (In oaths, words are considered, not purposes. T). This statement, found in 'Tanwir' and other general books of the school (Madhhab), means that something alien, foreign, and extra to the customary coverage of the word will not be considered, even if it was customarily intended by the person swearing the oath. However, 'purposes' can certainly act as specifiers (mukhassis); if the word's indication was general, it becomes specific based on a particular purpose. This is not a departure from the meaning of the word but rather a restriction to some of its meanings. This is a refined investigation through which there is reconciliation between the words of the Imams of the school, and its validation comes from the continuous testimony of the many branches of the

school's jurisprudence. This was elegantly and clearly explained by Allamah Shami (may Allah have mercy on him) in 'Radd al-Muhtar', and he dedicated an independent treatise to its explanation titled 'Raf' al-Intiqad wa Daf' al-I'tirad'.

[1] Fath al-Qadir, Chapter on attributing divorce to time, Maktaba Nooriya Razawiyya Sukkur, 3/73-74. [2] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Oaths regarding entering, leaving, and dwelling, etc., Matba' Mujtabai Delhi, 1/296. [3] Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Oaths regarding entering, leaving, and dwelling, etc., Matba' Mujtabai Delhi, 1/296.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं

"और यह केवल जीवन से निराशा के साथ ही संभव है, क्योंकि जब भी वह अपने जीवनकाल में उसे तलाक देगा, तो यह सच नहीं होगा कि उसने उसे तलाक नहीं दिया, बल्कि इसका विपरीत सच होगा, कि उसने उसे तलाक दिया; और निराशा जीवन के अंतिम हिस्से में होती है।" [1] शर्त तलाक न देने की है, और यह शर्त जीवन भर पूरी नहीं होगी, बल्कि केवल जीवन से निराशा होने पर ही पूरी होगी। क्योंकि जीवन के दौरान यदि वह तलाक देता है, तो 'तलाक न देना' सत्य नहीं होगा, बल्कि इसका विपरीत सत्य होगा, कि उसने तलाक दे दिया है। इसलिए, तलाक न देना जीवन के अंतिम सूक्ष्म हिस्से में ही ज्ञात हो सकेगा, और वही जीवन से निराशा का समय है। (त)

लेकिन यहाँ एक सूक्ष्म बिंदु (नुक्ता) है, जिससे अज्ञानता इस पक्ष के लिए गलती का कारण बनी। हमारे इमामों के निकट, शब्दों का शाब्दिक अर्थ शपथ का आधार नहीं है, बल्कि प्रथागत (उर्फ़ी) अर्थ ही कार्य का आधार है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "सिद्धांत यह है कि इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर दया करे) के निकट शपथ भाषाई वास्तविकता पर आधारित होती है; इमाम मालिक (अल्लाह उन पर दया करे) के निकट कुरआनी उपयोग पर; इमाम अहमद (अल्लाह उन पर दया करे) के निकट इरादे (नियत) पर; और हमारे (हनफ़ियों) निकट प्रथा (उर्फ़) पर, जब तक कि वह उस अर्थ का इरादा न करे जिसे शब्द वहन कर सकता है।" [2] इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर दया करे) के यहाँ शपथ में वास्तविक भाषाई अर्थ का ध्यान रखा जाता है। इमाम मालिक (अल्लाह उन पर दया करे) के यहाँ शपथ में पवित्र कुरआन में प्रयुक्त शब्दों और अर्थों का ध्यान रखा जाता है। इमाम अहमद (अल्लाह उन पर दया करे) के यहाँ नियत का ध्यान रखा जाता है। और हमारे हनफ़ियों के यहाँ शपथ में प्रथागत (उर्फ़ी) अर्थों का महत्व होता है, बशर्ते शपथ लेने वाले ने किसी अन्य संभावित अर्थ की नियत न की हो। (त)

और लक्ष्य और उद्देश्य जो शब्द के अर्थ से अधिक हों—अर्थात व्यापकता और निरपेक्षता भी उन्हें शामिल न करे—उन पर विचार नहीं किया जाता। "शपथ शब्दों पर स्पष्ट होती है, उद्देश्यों पर नहीं" [3] (शपथों में शब्दों का ध्यान रखा जाता है, उद्देश्यों का नहीं। त)। 'तनवीर' और मज़हब की अन्य सामान्य पुस्तकों में यही कहा गया है, जिसका अर्थ यह है कि शब्द के प्रथागत दायरे से बाहर की कोई अजनबी और अतिरिक्त बात, भले ही वह शपथ लेने वाले द्वारा प्रथागत रूप से अभिप्रेत हो, स्वीकार्य नहीं होगी। लेकिन 'उद्देश्य' निश्चित रूप से विशिष्टकर्ता (मुख़स्सिस) हो सकते हैं; शब्द का संकेत जो व्यापक था, विशेष उद्देश्य के कारण विशिष्ट हो जाएगा। यह शब्द के अर्थ से बाहर जाना

नहीं है बल्कि इसके कुछ अर्थों तक सीमित होना है। यह एक परिष्कृत शोध है जिससे मज़हब के इमामों के शब्दों में सामंजस्य स्थापित होता है, और मज़हब की अनेक शाखाओं के निरंतर साक्ष्य से इसकी पुष्टि होती है। इसे अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर दया करे) ने 'रद्द अल-मुह्तार' में अत्यंत सुंदर और स्पष्ट रूप से बयान किया है, और इसके विवरण में 'रफ़ अल-इंतिक़ाद व दफ़ अल-इतिराज़' नामक एक स्वतंत्र लेख लिखा है।

[1] फ़तह अल-क़दीर, तलाक को समय से जोड़ने का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 3/73-74। [2] दुर्रे मुख्तार, प्रवेश, निकास और निवास आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/296। [3] दुर्रे मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, प्रवेश, निकास और निवास आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/296।

पृष्ठ 144 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم

وذلك لایتحقق الاباالیأس عن الحیاۃ لانه متی طلقها فی عمره لم یصدق انه لم یطلقها بل صدق نقیضه وهو انه طلقها والیأس یکون فی آخر جزء من اجزاء حیاته ۱۔ نہ دینے کی شرط ہے، اور یہ شرط تاحیات متحقق نہ ہوگی صرف زندگی سے مایوسی پر ہی متحقق ہوگی، کیونکہ زندگی میں جب طلاق دے گا تو طلاق نہ دینا صادق نہ آئے گا بلکہ اس کی نقیض صادق آئے گی، اور وہ یہ کہ اس نے طلاق دی ہے، اس لئے طلاق نہ دینا عمر کے آخری ادنٰی جزء میں معلوم ہوسکے گا اور وہی زندگی سے مایوسی کا وقت ہے۔ (ت)

مگر یہاں ایک نکتہ بدیعیہ ہے جس سے غفلت اس فریق کے لئے باعث غلط ہوئی۔ الفاظ کا مفاد لغو ہمارے ائمہ کے نزدیک بنائے یمین نہیں بلکہ معانی عرفیہ پر بنائے کار ہے۔ در مختار میں ہے:

الاصول ان الایمان مبنیة عند الشافعي رحمه الله تعالی علی الحقیقة اللغویة وعند مالك رحمه الله تعالی علی الاستعمال القرآنی وعند احمد رحمه الله تعالی علی النیة وعندنا علی العرف مالم ینو ما یتحمله اللفظ ۲ امام شافعی رحمۃ اللہ تعالٰی کے ہاں قسم میں حقیقی لغوی معنی کا لحاظ کیا جاتا ہے اور امام مالک رحمۃ اللہ کے ہاں قسم میں قرآن پاک میں استعمال شدہ الفاظ و معانی کا لحاظ کیا جاتا ہے جبکہ امام احمد رحمۃ اللہ تعالٰی عنہ کے ہاں نیت کا لحاظ ہوتا ہے اور ہمارے احناف کے ہاں قسم میں عرفی معانی کا اعتبار ہوتا ہے بشرطیکہ قسم والے نے کسی احتمالی معنی کی نیت نہ کی ہو۔ (ت)

اور اغراض و مقاصد جس قدر مفاد لفظ سے زائد ہوں یعنی عموم واطلاق بھی انہیں متناول نہ ہو ملحوظ نہیں ہوتے۔ الایمان مبینة علی الالفاظ لاعلی الاغراض ۳ (قسموں میں الفاظ کا لحاظ ہوتا ہے اغراض کا لحاظ نہیں ہوتا۔ ت) کہ تنویر وغیرہ عامہ کتب مذہب میں ارشاد ہے اس سے یہی مراد

ہے کہ لفظ کی تناول عرفی سے اجنبی خارج و بیگانہ و زائد بات اگرچہ عرفاً مقصود حالف ہو منظور نہ ہوگی مگر اغراض مخصص ضرور ہوسکتی ہیں، دلالت لفظ کہ عموم پر تھی بنظر غرض خاص پر مقصود ہوجائے گی، یہ مدلول لفظ سے خروج نہیں بلکہ بعض مدلولات پر قصر ہے، یہ وہ تحقیق انیق ہے جس سے کلمات ائمہ مذہب میں توفیق ہے اور فروع متکثرہ مذہب کی شہادت متواترہ سے اس کی توثیق ہے جس کا نفیس و روشن بیان علامہ شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ نے ردالمحتار میں افادہ فرمایا اور اس کے بیان میں ایک مستقل رسالہ رفع الانتقاض ودفع الاعتراض

۱ فتح القدیر فصل فی اضافہ الطلاق الی الزمان مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/۷۳-۷۴ ۲ درمختار باب الیمین فی الدخول والخروج والسکنی الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۹۶ ۳ در مختار شرح تنویر الابصار باب الیمین فی الدخول والخروج والسکنی الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۹۶

Regarding their statement: "Oaths are based on words, not on objectives," composed by... In *Talkhis al-Jami' al-Kabir* by Imam Abi Abdullah Sadr al-Din Muhammad ibn Abbad, it is stated:

Arabic Text	Urdu Translation
"And by custom (urf) it is specified and not added to, so that 'head' is specified to that which is roasted. And ownership was not intended in suspending the divorce of a stranger woman upon entry."[1]	Specification will be possible through custom, and there will be no addition beyond the word's concept. Thus, 'head' will be specific to a head meant for roasting, and in suspending the divorce of a stranger woman upon entering a house, ownership cannot be the intended meaning. (T)

Allama Alauddin Abu al-Hasan Ali ibn Balban ibn Abdullah al-Farisi says in his commentary *Tuhfat al-Haris fi Sharh al-Talkhis*:

Arabic Text	Urdu Translation
"Two men were bargaining for a garment. The buyer swore he would not buy it for ten. Then he bought it for eleven; he broke his oath. If the one swearing was the seller, that he would not sell it for ten, and then he sold it for eleven, he would not have broken his oath. This is because selling for ten is of two types: selling for ten alone, and selling for ten coupled with an addition. In the buyer's case, it is absolute; there is no indication to specify one of the two types, so his intention was 'ten' in its absolute sense. As for the seller, his intention was selling for ten alone as indicated by the context, since his purpose is for the buyer to increase beyond ten. The condition for breaking his oath was not met, which is..."	Two gentlemen were bargaining for a piece of cloth. During the conversation, the buyer swore an oath, "I will not buy it for ten (10)." After that, if he bought it for eleven, his oath would be broken. However, if the seller swore an oath, "I will not sell it for ten (10)," and then he sold it for eleven, the seller's oath would not be broken. This is because selling for ten has two meanings: one is selling for ten only, and the second meaning is that there is some unit along with this ten (i.e., 11, 12, etc.). In the buyer's oath, 'ten' is absolute, with no clue to determine one of the two types. Therefore, absolute 'ten' will be meant here, meaning either just ten or ten plus some additional units; either meaning applies. But in the oath of the seller, only...

[1] *Raf' al-Intiqad* etc., Risala Majmu'a Rasail Ibn Abidin, referring to *Talkhis al-Jami' al-Kabir*, Suhail Academy Lahore, 1/293.

उनके इस कथन पर कि: "शपथ शब्दों पर आधारित होती है, उद्देश्यों पर नहीं", संकलित। इमाम अबी अब्दुल्ला सदरुद्दीन मुहम्मद बिन अब्बाद की 'तलख़ीस अल-जामी अल-कबीर' में है:

अरबी मूल पाठ

"और प्रथा (उर्फ़) द्वारा विशिष्टता की जाती है और बढ़ाया नहीं जाता, ताकि 'सिर' उस चीज़ के लिए विशिष्ट हो जो भुना जाता है। और किसी अजनबी महिला के प्रवेश पर तलाक को निलंबित करने में स्वामित्व का इरादा नहीं था।"[1]

उर्दू अनुवाद

प्रथा से विशिष्टता (specification) हो सकेगी और शब्द के अर्थ पर अधिकता न हो सकेगी। चुनाँचे 'सिर' भुने जाने वाले सिर से विशिष्ट होगा, और अजनबी महिला के तलाक को घर में प्रवेश करने के साथ जोड़ने में स्वामित्व का अर्थ नहीं हो सकता। (त)

अल्लामा अलाउद्दीन अबुल हसन अली बिन बलवान बिन अब्दुल्ला फ़ारसी अपनी व्याख्या 'तुहफ़तुल हरीस फ़ी शरह अत-तलख़ीस' में फ़रमाते हैं:

अरबी मूल पाठ

"दो व्यक्ति एक कपड़े का सौदा कर रहे थे। खरीदार ने कसम खाई कि वह इसे दस में नहीं खरीदेगा। फिर उसने इसे ग्यारह में खरीदा; उसने अपनी कसम तोड़ दी। यदि कसम खाने वाला विक्रेता होता, कि वह इसे दस में नहीं बेचेगा, और फिर उसने इसे ग्यारह में बेच दिया, तो उसकी कसम नहीं टूटती। ऐसा इसलिए है क्योंकि दस में बेचना दो प्रकार का होता है: अकेले दस में बेचना, और दस के साथ कुछ अधिक जोड़कर बेचना। खरीदार के मामले में, यह निरपेक्ष (absolute) है; दोनों प्रकारों में से किसी एक को निर्धारित करने का कोई संकेत नहीं है, इसलिए उसका इरादा निरपेक्ष 'दस' था। जहाँ तक विक्रेता का सवाल है,

उर्दू अनुवाद

दो व्यक्तियों ने कपड़े का सौदा करते हुए, बातचीत में खरीदार ने कसम खाई कि "मैं इसे दस (10) में नहीं खरीदूँगा", इसके बाद उसने ग्यारह का खरीद लिया तो उसकी कसम टूट जाएगी। और अगर बेचने वाला कसम खाए कि "मैं इसे दस (10) में नहीं बेचूँगा", इसके बाद उसने ग्यारह का बेच दिया तो विक्रेता की कसम न टूटेगी। यह इसलिए कि दस से बेचने के दो अर्थ हैं: एक यह कि सिर्फ दस से बेचना और दूसरा अर्थ यह कि इस दहाई के साथ कोई इकाई भी हो (जैसे 11, 12 आदि)। तो खरीदार की कसम में निरपेक्ष (absolute) दस है जिसमें दोनों किस्मों में से किसी एक को निश्चित करने

अरबी मूल पाठ	उर्दू अनुवाद
उसका इरादा अकेले दस में बेचने का था जैसा कि संदर्भ से संकेत मिलता है, क्योंकि उसका लक्ष्य खरीदार से दस से अधिक प्राप्त करना है। उसकी कसम टूटने की शर्त पूरी नहीं हुई, जो कि..."	पर कोई सुराग नहीं है। इसलिए यहाँ निरपेक्ष दस मुराद होंगे यानी सिर्फ दस या दस से कुछ इकाई के साथ अधिक, दोनों अर्थों में से कोई भी हो। लेकिन बेचने वाले की कसम में सिर्फ़..

[1] रफ़उल इन्तिक़ाज़ आदि, रिसाला मजमुआ रसाइल इब्ने आबिदीन, बहवाला तलख़ीस अल-जामी अल-कबीर, सुहैल अकादमी लाहौर, 1/ 293।

علی قولھم الایمان مبینۃ علی الالفاظ لاعلی الاغراض تالیف کیا۔ تلخیص الجامع الکبیر للامام ابی عبد اللہ صدر الدین محمد بن عباد میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وبالعرف یخص ولا یزاد حتی خص الرأس بما یکبس ولم یرد الملك في تعلیق طلاق الاجنبیۃ بالدخول 1 -	عرف سے تخصیص ہوسکے گی اور لفظ کے مفہوم پر زیادتی نہ ہوسکے گی چنانچہ سر بھونے جانے والی سری سے مختص ہوگا اور اجنبی عورت کی طلاق کو گھر میں داخل ہونے کی تعلیق میں ملکیت مراد نہیں ہوسکتی۔(ت)

علامہ علاء الدین ابوالحسن علی بن بلبان بن عبداللہ فارسی اس کی شرح تحفتہ الحریص فی شرح التلخیص میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
رجلان تساوما ثوبا فحلف المشتری انہ لا یشتریہ بعشرۃ فاشتراہ بأحد عشر حنث في یمینہ، ولو کان الحالف البائع لا یبیعہ بعشرۃ فباعہ بأحد عشر لم یحنث ، وھذا لان البیع بالعشرۃ نوعان بیع بعشرۃ مفردۃ و بیع بعشرۃ مقرونۃ بالزیادۃ ففي	دو حضرات نے کپڑے کا ایک سودا کرتے ہوئے، گفتگو میں خریدار نے قسم اٹھائی کہ میں اسے دس ۱۰ میں نہ خریدوں گا، اس کے بعد اس نے گیارہ کا خرید لیا تو اس کی قسم ٹوٹ جائے گی، اور اگر فروخت کرنے والا قسم اٹھائے کہ میں اسے دس ۱۰ میں فروخت نہ کروں گا، اسکے بعد اس نے گیارہ کا فروخت کردیا تو بائع کی قسم نہ ٹوٹے گی، یہ اسلئے کہ دس سے فروخت کرنے کے دو معنے ہیں، ایک یہ کہ

عربی عبارت	اردو ترجمہ
المشترى مطلق لا دلالة فيه على تعيين احد النوعين فكان مراده العشرة المطلقة، أما البائع فمراده البيع بعشرة مفردة بدلالة الحال اذ غرضه ان يزيده المشتري على العشرة و لم يوجد شرط حنثه و هو	صرف دس سے فروخت کرنا اور دوسرا معنی یہ کہ اس دہائی کے ساتھ کوئی اکائی بھی ہو، تو مشتری کے حلف میں مطلق دس ہے جس میں دونوں قسموں میں سے کسی ایک کے معین کرنے پر کوئی قرینہ نہیں ہے، لہذا یہاں دس مطلق مراد ہوں گے یعنی صرف دس یا دس سے کچھ اکائی کے ساتھ زائد، دونوں معنی میں سے کوئی بھی ہو لیکن فروخت کرنے والے کی قسم میں صرف

1 رفع الانتقاض الخ رسالہ مجموعہ رسائل ابن عابدین بحوالہ تلخیص الجامع الکبیر سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۲۹۳

Fatawa Rizvia Volume 13 / 14

[Table Header - Right Column (Urdu Explanation)] Ten without a unit is intended, as the current state indicates that the seller's intent is for the buyer to give him more. Thus, if sold for eleven, the condition (i.e., selling for only ten) was not met, so the oath was not broken. This is common among people; therefore, the oath will be interpreted based on people's custom ('urf). And the statement in the text that "specification happens through custom, not addition" is an answer to a question. The presumed question is that if the seller, in the mentioned case, sells for nine, then breaking the oath would be necessary because when he doesn't relinquish his ownership for ten, then by higher priority, he shouldn't relinquish it for nine, as is the custom. The answer to this is that this is merely an intent, whereas a ruling is not established by intent alone; instead, the word spoken is also considered. The word used by the seller is "ten," whereas its name does not hold the possibility of "nine" to be determined by intent. To take the name "ten" to mean "nine" is a literal addition that cannot be proven by custom, because custom only specifies, it cannot add. In contrast, when a buyer buys the cloth for nine instead of ten, custom will be useful here because in the buyer's oath, both aforementioned types of "ten" are possible: exactly ten or ten with a unit. So here, when the word "ten" is general, custom can specify or restrict one of its types. (End Summary - T)

[Table Header - Left Column (Arabic Text)] Selling for exactly ten, so the oath is not broken. This is what is customary among people, so the oath is interpreted according to what they are familiar with. And the statement in the text, "Specification is made by custom and not addition," is an answer to a presumed question, which is: if the seller sells for nine exactly, the oath must be broken, because prohibiting the removal of his property for ten is customarily a prohibition of its removal for nine. The answer is that a ruling is not established merely by intent; rather, it is established by the literal word, and the word the seller uttered is "ten." The name "ten" does not contain "nine" so that it could be specified by his intent, and adding to the literal wording via custom is not permissible. This is unlike buying for nine, because "ten" from the buyer's perspective can mean exactly ten or ten along with a unit. Thus, one of them is specified by his intent since a general term can be specified or restricted by custom. (End Summary)

It is in Raf' al-Intiqas: 1. Raf' al-Intiqas etc., a treatise from the collection of treatises of Ibn Abidin, with reference to Sharh Talkhis al-Jami' al-Kabir, Suhail Academy Lahore, 1/293-94. 2. Raf' al-Intiqas etc., a treatise from the collection of treatises of

Ibn Abidin, with reference to Sharh Talkhis al-Jami' al-Kabir, Suhail Academy Lahore, 1/297-98.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 13 / 14

[तालिका हेडर - दायाँ कॉलम (उर्दू व्याख्या)] बिना इकाई के दस का अर्थ है, जैसा कि वर्तमान स्थिति इंगित करती है कि विक्रेता का उद्देश्य यह है कि खरीदार उसे अधिक दे। इस प्रकार, यदि ग्यारह में बेचा गया, तो शर्त (यानी केवल दस में बेचना) पूरी नहीं हुई, इसलिए शपथ नहीं टूटी। यह लोगों के बीच आम है; इसलिए, शपथ की व्याख्या लोगों के प्रचलन (उर्फ़) के आधार पर की जाएगी। और पाठ में यह कथन कि "विशिष्टता प्रचलन के माध्यम से होती है, वृद्धि नहीं" एक प्रश्न का उत्तर है। अनुमानित प्रश्न यह है कि यदि विक्रेता, वर्णित मामले में, नौ में बेचता है, तो शपथ तोड़ना आवश्यक होगा क्योंकि जब वह दस के लिए अपना स्वामित्व नहीं छोड़ता है, तो उच्च प्राथमिकता के साथ, उसे नौ के लिए नहीं छोड़ना चाहिए, जैसा कि प्रचलन है। इसका उत्तर यह है कि यह केवल एक मंशा है, जबकि केवल मंशा से निर्णय स्थापित नहीं होता है; इसके बजाय, बोले गए शब्द पर भी विचार किया जाता है। विक्रेता द्वारा उपयोग किया गया शब्द "दस" है, जबकि इसके नाम में मंशा द्वारा निर्धारित किए जाने के लिए "नौ" की संभावना नहीं है। "दस" नाम का अर्थ "नौ" लेना एक शाब्दिक वृद्धि है जिसे प्रचलन द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता है, क्योंकि प्रचलन केवल विशिष्ट करता है, वह वृद्धि नहीं कर सकता। इसके विपरीत, जब कोई खरीदार दस के बजाय नौ में कपड़ा खरीदता है, तो यहाँ प्रचलन उपयोगी होगा क्योंकि खरीदार की शपथ में "दस" के दोनों उपर्युक्त प्रकार संभव हैं: ठीक दस या इकाई के साथ दस। तो यहाँ, जब "दस" शब्द सामान्य है, तो प्रचलन इसके प्रकारों में से एक को विशिष्ट या प्रतिबंधित कर सकता है। (समाप्त सारांश - त)

[तालिका हेडर - बायाँ कॉलम (अरबी पाठ)] ठीक दस में बेचना, तो शपथ नहीं टूटती। लोगों में यही प्रचलित है, इसलिए शपथ को उसी पर आधारित किया जाएगा जिससे वे परिचित हैं। और मूल पाठ में यह कथन कि "प्रचलन (उर्फ़) से विशिष्टता आती है, वृद्धि नहीं," एक अनुमानित प्रश्न का उत्तर है। प्रश्न यह है कि यदि विक्रेता ठीक नौ में बेचता है, तो शपथ टूटनी चाहिए, क्योंकि दस में संपत्ति के स्वामित्व को हटाने का निषेध प्रचलन के अनुसार नौ में उसे हटाने का निषेध है। उत्तर यह है कि कोई निर्णय केवल मंशा से स्थापित नहीं होता; बल्कि, यह बोले गए शब्द से स्थापित होता है, और विक्रेता ने जो शब्द बोला वह "दस" है। "दस" नाम में "नौ" शामिल नहीं है कि उसे उसकी मंशा से विशिष्ट किया जा सके और प्रचलन के माध्यम से मूल शब्दों में वृद्धि करना अनुमेय नहीं है। यह नौ में खरीदने के विपरीत है, क्योंकि खरीदार के दृष्टिकोण से "दस" का अर्थ ठीक दस या इकाई के साथ

दस हो सकता है। इस प्रकार, उनमें से एक को उसकी मंशा से विशिष्ट किया जाता है क्योंकि एक सामान्य शब्द को प्रचलन द्वारा विशिष्ट या प्रतिबंधित किया जा सकता है। (समाप्त सारांश)

यह 'रफ़ अल-इंतिक़ास' में है: 1. रफ़ अल-इंतिक़ास आदि, इब्न आबिदीन के मजमुआ रसाइल से एक ग्रंथ, शर्ह तल्ख़ीस अल-जामी अल-कबीर के संदर्भ में, सुहैल अकादमी लाहौर, 1/293-94। 2. रफ़ अल-इंतिक़ास आदि, इब्न आबिदीन के मजमुआ रसाइल से एक ग्रंथ, शर्ह तल्ख़ीस अल-जामी अल-कबीर के संदर्भ में, सुहैल अकादमी लाहौर, 1/297-98।

पृष्ठ 146 का 688

[جدول کا دایاں حصہ - اردو وضاحت] دس بغیر اکائی مراد ہیں جیسا کہ اس پر حال کی دلالت ہے کہ بائع کی غرض یہ کہ مشتری اسے زائد دے تو گیارہ میں فروخت کرنے پر شرط (یعنی صرف دس میں فروختگی) نہ پائی گئی لہٰذا قسم نہ ٹوٹی، لوگوں میں یہی متعارف ہے لہٰذا قسم کو لوگوں کے عرف پر محمول کیا جائیگا۔ اور متن میں یہ قول کہ "عرف سے تخصیص ہوتی ہے زیادتی نہیں ہوتی" یہ ایک سوال کا جواب ہے، سوال یہ مقدر ہے کہ بائع اگر مذکورہ صورت میں نو سے فروخت کر دے تو قسم کا ٹوٹنا ضروری ہوگا کیونکہ جبکہ دس سے اپنی ملکیت نہیں چھوڑتا تو نو سے بطریقہ اولیٰ نہ چھوڑنا ہو گا جیسا کہ عرف میں ہے۔ اس کا جواب یہ ہے کہ یہ محض غرض ہے جبکہ حکم محض غرض سے ثابت نہیں ہوتا بلکہ اس کے ساتھ اس لفظ کا بھی اعتبار ہوتا ہے جس سے تلفظ کیا ہے اور بائع نے جو لفظ بولا ہے وہ دس ہے، جبکہ اس کا اسم، نو کا احتمال نہیں رکھتا جس کو غرض کے طور پر متعین کیا جاسکے۔ دس کا نام، نو پر مراد لینا یہ لفظی زیادتی ہے جو کہ عرف سے ثابت نہیں ہو سکتی کیونکہ عرف صرف تخصیص کرتا ہے زیادتی نہیں کر سکتا، اس کے برخلاف جب مشتری کپڑے کو دس کی بجائے نو سے خرید لے تو عرف یہاں کارآمد ہوگا کیونکہ مشتری کی قسم میں دس کی مذکورہ دونوں قسموں کا احتمال ہے صرف دس یا بمع اکائی مراد ہو ، تو یہاں جب دس کا لفظ عام ہے تو عرف اس کی ایک قسم کی تخصیص یا تقیید کر سکتا ہے اھ ملتقطاً۔ (ت)

[جدول کا بایاں حصہ - عربی متن] البیع بعشرة مفردة فلا یحنث، وھذا ھو المتعارف بین الناس فیحمل الیمین علی ماتعارفوہ[1]، وقولہ في المتن وبالعرف یخص ولا یزاد جواب عن سؤال مقدر وھو ان یقال البائع بتسعة مفردة وجب ان یحنث لان المنع عن ازالة ملکه بعشرة منع عن ازالته بتسعة عرفاً،

والجواب ان الحكم لا يثبت بمجرد الغرض وانما يثبت باللفظ والذى تلفظ به البائع، هو العشرة واسم العشرة لا يحتمل التسعة ليتعين بغرضه والزيادة على اللفظ بالعرف لا تجوز بخلاف الشراء بتسعة لان العشرة في جانب المشترى تحتمل عشرة مفردة وعشرة مقرونة فتعين احدهما بغرضه اذ العام يجوز تخصيصه و تقييده بالعرف اهـ[2] ملتقطاً۔

رفع الانتقاص میں ہے: ۱۔ رفع الانتقاص الخ رسالہ من مجموعہ رسائل ابن عابدین بحوالہ شرح تلخیص الجامع الکبیر سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۲۹۳-۹۴ ۲۔ رفع الانتقاص الخ رسالہ من مجموعہ رسائل ابن عابدین بحوالہ شرح تلخیص الجامع الکبیر سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۲۹۷-۹۸

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

[Arabic Column] Know that the purpose which the speaker intends by his speech may be the literal meaning of the word spoken, or metaphorical, or it may be something external to the word. The first case is like his saying, "I will not buy it for ten." The buyer's purpose is to prevent himself from committing to ten as the price of that sold item, whether it be exactly ten or ten combined with more. Custom (Urf) also implies this. Thus, purpose and custom are combined in the oath-taker's words. If he buys it for eleven, he breaks his oath because he intended the absolute ten, and that is present in eleven. The second case is like his saying, "I will not sell it for ten." If he sells it for nine, he does not break his oath because the seller's purposes are to sell it for more than ten. He does not want to sell it for nine, but nine was not mentioned in his speech because 'ten' was not coined for 'nine' either linguistically or customarily. Thus, his purpose, which is his intent from this speech, is external to the word. In oaths, consideration is given to the words, not to the mere purposes, because purposes are suitable as specifiers (takhsis) but not as augmenters. Specification is a characteristic of words. So if the word is general and the purpose is specific, what was intended is considered...

[Urdu Column] It should be known that when a speaker makes a statement, his intent is the literal meaning of that statement, sometimes it's the metaphorical meaning, and sometimes some meaning external to the words becomes the intent. An example of the first: like a buyer saying "I will not buy for ten," here the buyer's intent is to refrain from giving ten dirhams; whether it is exactly ten or with an additional unit, he will not give it in exchange for the item. Custom (Urf) is also the same. So here in the oath, both intent and custom are united in the literal meaning. Therefore, here if the buyer purchased for eleven, the oath will be broken because he intended absolute ten (10) while this ten is also present in eleven. An example of the second: like a seller saying "I will also not sell for ten dirhams," here if he sold for nine, the oath will not be broken, because from this speech the seller's intent is that he will sell in exchange for more than ten (10) i.e., ten with an additional unit. Nine is not in his intent because it is not mentioned in his speech, as the name 'ten' (10) is not established for 'nine' (9) in language and custom. So by saying ten and intending nine (9) is intending some meaning external to the words. While in an oath, mere intent is not considered, but consideration of the words is necessary, because mere intent can become a specification (takhsis) but cannot create an addition, whereas specification is an attribute of the word. Therefore, consideration of the word is

necessary, mere intent is not sufficient. So when the word is general and the intent is specific, then...

फ़तावा रज़विया तेरहवीं जिल्द, १३

[अरबी पाठ स्तंभ का अनुवाद] यह जान लें कि वक्ता अपने भाषण से जिस उद्देश्य का इरादा रखता है, वह बोले गए शब्द का शाब्दिक अर्थ हो सकता है, या लाक्षणिक हो सकता है, या यह शब्द से बाहरी कोई चीज़ हो सकती है। पहला मामला उसके यह कहने जैसा है, "मैं इसे दस में नहीं खरीदूंगा।" खरीदार का उद्देश्य उस बेची गई वस्तु की कीमत के रूप में दस स्वीकार करने से खुद को रोकना है, चाहे वह बिल्कुल दस हो या अधिक के साथ जुड़ा हुआ दस हो। प्रथा (उर्फ़) का भी यही तात्पर्य है। इस प्रकार, शपथ लेने वाले के शब्दों में उद्देश्य और प्रथा दोनों सम्मिलित हैं। यदि वह ग्यारह में खरीदता है, तो वह अपनी शपथ तोड़ता है क्योंकि उसने निरपेक्ष दस का इरादा किया था, और वह ग्यारह में मौजूद है। दूसरा मामला उसके यह कहने जैसा है, "मैं इसे दस में नहीं बेचूंगा।" यदि वह इसे नौ में बेचता है, तो वह अपनी शपथ नहीं तोड़ता क्योंकि विक्रेता का उद्देश्य इसे दस से अधिक में बेचना है। वह इसे नौ में बेचना नहीं चाहता, लेकिन उसके भाषण में नौ का उल्लेख नहीं किया गया था क्योंकि 'दस' शब्द को भाषा या प्रथा के अनुसार 'नौ' के लिए नहीं बनाया गया था। इस प्रकार, उसका उद्देश्य, जो इस भाषण से उसका इरादा है, शब्द से बाहर है। शपथ में शब्दों पर विचार किया जाता है, न कि केवल उद्देश्यों पर, क्योंकि उद्देश्य विनिर्दिष्टता (तख़सीस) के रूप में उपयुक्त होते हैं, लेकिन संवर्धक के रूप में नहीं। विनिर्दिष्टता शब्दों की एक विशेषता है। इसलिए यदि शब्द सामान्य है और उद्देश्य विशिष्ट है, तो जिसका इरादा किया गया था उसका विचार किया जाता है...

[उर्दू पाठ स्तंभ का अनुवाद] यह जानना चाहिए कि जब वक्ता कोई बात कहता है, तो उसकी मंशा उस बात का वास्तविक अर्थ होती है, कभी वह लाक्षणिक अर्थ होता है, और कभी शब्द से बाहर कोई अन्य अर्थ मंशा बन जाता है। पहले का उदाहरण: जैसे खरीदार का कहना कि "मैं दस में नहीं खरीदूँगा," यहाँ खरीदार की मंशा यह है कि दस दिरहम देने से बचना है; चाहे वे केवल दस हों या एक इकाई के साथ हों, वह वस्तु के बदले में नहीं देगा। लोक-व्यवहार (उर्फ़) भी यही है। तो यहाँ शपथ में मंशा और लोक-व्यवहार दोनों वास्तविक अर्थ में समाहित हैं। इसलिए यहाँ यदि खरीदार ने ग्यारह में खरीदा, तो शपथ टूट जाएगी क्योंकि उसने निरपेक्ष दस (१०) का इरादा किया था, जबकि यह दस ग्यारह में भी मौजूद है। दूसरे का उदाहरण: जैसे विक्रेता कहे कि "मैं भी दस दिरहम में नहीं बेचूँगा," यहाँ यदि उसने नौ में बेचा, तो शपथ नहीं टूटेगी, क्योंकि इस कथन से विक्रेता की मंशा यह है कि वह दस (१०) से अधिक यानी दस और एक इकाई के बदले बेचेगा। नौ उसकी मंशा में नहीं है

क्योंकि उसके शब्दों में इसका उल्लेख नहीं है, क्योंकि भाषा और लोक-व्यवहार में 'दस' (१०) नाम 'नौ' (९) के लिए नहीं रखा गया है। तो दस बोलकर नौ (९) का अर्थ लेना शब्द से बाहर किसी अन्य अर्थ का इरादा करना है। जबकि शपथ में केवल मंशा का विचार नहीं किया जाता, बल्कि शब्द का विचार आवश्यक है, क्योंकि केवल मंशा विनिर्दिष्टता (तख़सीस) तो बन सकती है लेकिन वृद्धि पैदा नहीं कर सकती, जबकि विनिर्दिष्टता शब्द की विशेषता है। इसलिए शब्द का विचार आवश्यक है, केवल मंशा पर्याप्त नहीं है। तो जब शब्द सामान्य हो और मंशा विशिष्ट हो, तो...

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[Arabic Column] اعلم ان الغرض الذی یقصدہ المتکلم بکلامہ قد یکون معنی اللفظ الذی تکلم بہ حقیقۃ او مجازا او قد یکون امرا خارجا عن اللفظ فالاول کقولہ لا اشتریہ بعشرۃ فغرض المشتری منع نفسہ من التزام العشرۃ فی ثمن ذلک المبیع سواء کانت عشرۃ مفردۃ او مقرونۃ بزیادۃ والعرف ارادۃ ذلک ایضا، فہنا اجتمع الغرض والعرف فی لفظ الحالف فاذا اشتری باحد عشر حنث لان اراد العشرۃ المطلقۃ و ہی موجودۃ فی الاحد عشر۔ والثانی کقولہ لا ابیعہ بعشرۃ فباعہ بتسعۃ لا یحنث لان اغراض البائع ان یبیعہ باکثر من عشرۃ۔ ولا یرید بیعہ بتسعۃ لکن التسعۃ لم تذکر فی کلامہ لان العشرۃ لم توضع للتسعۃ لا لغۃ ولا عرفا۔ فغرضہ الذی ہو قصدہ من ہذا الکلام خارج عن اللفظ والعبرۃ فی الایمان للالفاظ لالمجرد الاغراض لان الاغراض یصلح مخصصا لا مزیدا، والتخصیص من عوارض الالفاظ فاذا کان اللفظ عاما والغرض الخصوص اعتبر ما قصدہ...

[Urdu Column] جاننا چاہئے کہ متکلم جب کوئی کلام کرتا ہے تو اس کی غرض اس کلام کا حقیقی معنی ہوتا ہے اور کبھی مجازی معنی ہوتا ہے اور کبھی لفظ سے خارج کوئی اور معنی غرض بنتا ہے۔ اوّل کی مثال، جیسے مشتری کا کہنا کہ میں دس سے نہ خریدوں گا تو یہاں مشتری کی غرض یہ ہے کہ دس درہم دینے سے باز رہنا ہے یہ محض دس ہوں یا بمع اکائی ہوں مبیع کے عوض نہ دے گا، اور عرف بھی یہی ہے تو یہاں حلف میں غرض اور عرف دونوں حقیقی معنی میں مجتمع ہیں، لہذا یہاں اگر مشتری نے گیارہ میں خریدا تو قسم ٹوٹ جائے گی کیونکہ اس نے مطلق دس ۱۰ مراد لئے تھے جبکہ یہ دس ، گیارہ میں بھی موجود ہے۔ دوسرے کی مثال، جیسے بائع کہے کہ میں بھی دس درہم سے نہ فروخت کروں گا یہاں اگر اس نے نو میں فروخت کیا تو قسم نہ ٹوٹے گی، کیونکہ اس کلام سے بائع کی غرض یہ ہے کہ دس ۱۰ سے زائد یعنی دس مع اکائی

کے بدلے فروخت کرے گا، نو اسکی مراد میں نہیں ہے کیونکہ اس کی کلام میں یہ مذکور نہیں ہے کہ دس ۱۰ کا اسم لغت اور عرف میں نو ۹ کیلئے وضع نہیں ہے تو دس بول کر نو ۹ مراد لینا لفظ سے خارج کسی اور معنی کو مراد لینا ہے جبکہ حلف میں محض غرض کا اعتبار نہیں ہوتا بلکہ لفظ کا اعتبار ضروری ہے، کیونکہ غرض محض تخصیص تو بن سکتی ہے لیکن زیادتی پیدا نہیں کر سکتی جبکہ تخصیص لفظ کی صفت ہے لہذا لفظ کا اعتبار ضروری ہے محض غرض کافی نہیں ہے تو جب لفظ عام ہو اور غرض خاص ہو تو پھر...

[Arabic Box Left]: As in the case of 'I will not eat a head.' Its wording is general, but the purpose behind it is specific, as previously mentioned. Considering this specific purpose does not invalidate the general wording because it constitutes a part of what the word was originally established for. Summary.

[Urdu Box Right]: Specific intent is taken into account. For example, if someone says, 'I will not eat a head,' the word 'head' is general, encompassing both edible and non-edible parts. However, the intent is specific, referring only to the edible part, as stated before. Thus, this specific intent does not contradict the literal meaning of the word because it represents a particular aspect of the word's meaning. Summary (T).

Details are provided therein regarding 'Yamin al-Faur' (The Immediate Oath), which was derived by the one with sublime thought, the Master of Leaders, the Guide of the eras, the Remover of sorrow, the Lamp of the Ummah, our master Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). Other eminent Imams followed him based on the principle that 'All jurists are dependents of Abu Hanifa.' The legal issues of this school are based on this noble principle of 'specification by purpose.' Hundreds of subsidiary rulings in the primary texts, commentaries, and fatwas of the school are based on this. For example: (1) A woman was about to leave the house. The husband said, 'If you go out, you are divorced.' The woman stayed back but went out at a later time. Divorce will not occur. In Tanwir and Durr, it is stated:

[Table Header]: [Arabic Column]: A condition for the breach of oath in his saying, for instance, 'If you go out, you are divorced,' or 'If you beat your slave, then my slave is free,' addressed to one intending to leave or beat, is its immediate performance. This is because his purpose is to prevent that specific act according to convention (Urf), and the basis of oaths is convention. This is called 'Yamin al-Faur.' Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) was unique in clarifying this, and no one disagreed with him. (2)

[Urdu Column]: When a wife is prepared to go out or someone is about to beat a slave, if the husband says at that moment, 'If you beat him or if you go out, you are divorced,' then by 'beating' and 'going out,' only that specific instance for which she is currently ready is meant. Divorce would only occur upon that specific act of beating or going out because the husband's intent is to prevent that immediate action. This is the convention (Urf), and the basis of an oath is this convention. This is termed

'Yamin al-Faur,' in the exposition of which Imam Abu Hanifa stands alone, and no one has opposed him. (T)

[Bottom Table Header]: In Fath al-Qadir, Ghunyat Dhawi al-Ahkam, and Radd al-Muhtar it is mentioned: [Arabic Column]: She prepared to go out, so he swore an oath, 'Do not go out,' then if... [Urdu Column]: The wife was ready to go out when the husband swore an oath...

---

1. Raf' al-Intiqad etc., a treatise from the collection of treatises of Ibn Abidin, Suhail Academy Lahore 1/300-01.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Oaths in Entering, Exiting, and Dwelling, Mujtabai Press Delhi 1/298.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | सफ़्हा 13

[अरबी बॉक्स बाएँ]: जैसा कि 'मैं सिर नहीं खाऊंगा' के मामले में है। इसके शब्द सामान्य हैं, लेकिन इसके पीछे का उद्देश्य विशिष्ट है, जैसा कि पहले बताया गया है। इस विशिष्ट उद्देश्य पर विचार करना सामान्य शब्दों को अमान्य नहीं करता है क्योंकि यह उस चीज़ का एक हिस्सा है जिसके लिए शब्द मूल रूप से स्थापित किया गया था। सारांश।

[उर्दू बॉक्स दाएँ]: विशिष्ट उद्देश्य का विचार किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कहे, 'मैं सिर नहीं खाऊंगा', तो शब्द 'सिर' सामान्य है, जिसमें खाने योग्य और न खाने योग्य दोनों भाग शामिल हैं। हालाँकि, उद्देश्य विशिष्ट है, जो केवल खाने योग्य भाग की ओर इशारा करता है, जैसा कि पहले बताया गया है। इस प्रकार, यह विशिष्ट उद्देश्य शब्द के शाब्दिक अर्थ के विपरीत नहीं है क्योंकि यह शब्द के अर्थ के एक विशेष पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। सारांश (T)।

इसका विवरण वहां 'यमीन-ए-फ़ौर' (तत्काल शपथ) के संबंध में दिया गया है, जिसे बुलंद विचार वाले, इमामों के सरदार, ज़माने के रहनुमा, गमों को दूर करने वाले, उम्मत के चिराग, हमारे आका इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने निकाला। अन्य प्रतिष्ठित इमामों ने इस सिद्धांत के आधार पर उनका अनुसरण किया कि 'तमाम फ़कीह अबू हनीफ़ा के आश्रित हैं।' इस मज़हब के कानूनी मुद्दे इसी महान सिद्धांत 'मकसद के आधार पर विशेषता' पर आधारित हैं। मज़हब के ग्रंथों, व्याख्याओं और फ़तवों में सैकड़ों उप-मसले इसी पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए: (1) एक महिला घर से बाहर जाने वाली थी। पति ने कहा, 'अगर तू बाहर गई, तो तुझे तलाक है।' महिला रुक गई लेकिन बाद में किसी और समय बाहर गई। तलाक नहीं होगा। तनवीर और दुर्र में उल्लेख है:

[तालिका हेडर]: [अरबी कॉलम]: उसकी इस बात में शपथ टूटने की शर्त, उदाहरण के लिए, 'अगर तू बाहर गई तो तुझे तलाक है', या 'अगर तूने अपने गुलाम को पीटा, तो मेरा गुलाम आज़ाद है', जो बाहर निकलने या पीटने का इरादा रखने वाले को संबोधित है, उसका तत्काल निष्पादन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका उद्देश्य परंपरा (उर्फ़) के अनुसार उस विशिष्ट कार्य को रोकना है, और शपथ का आधार परंपरा है। इसे 'यमीन-ए-फ़ौर' कहा जाता है। अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि अलैहि) इसे स्पष्ट करने में अद्वितीय थे, और किसी ने उनसे असहमति नहीं जताई। (2)

[उर्दू कॉलम]: जब बीवी बाहर जाने के लिए तैयार हो या कोई गुलाम को पीटने वाला हो, अगर पति उस समय कहता है, 'अगर तूने उसे पीटा या अगर तू बाहर गई, तो तुझे तलाक है', तो 'पीटने' और

'बाहर जाने' से केवल वही विशिष्ट घटना अभिप्रेत है जिसके लिए वह वर्तमान में तैयार है। तलाक केवल उसी विशिष्ट पिटाई या बाहर निकलने पर होगा क्योंकि पति का इरादा उस तत्काल कार्रवाई को रोकना है। यही 'उर्फ़ (परंपरा) है, और शपथ का आधार यही परंपरा है। इसे 'यमीन-ए-फ़ौर' कहा जाता है, जिसके वर्णन में इमाम अबू हनीफ़ा अकेले खड़े हैं, और किसी ने उनका विरोध नहीं किया है। (T)

[नीचे की तालिका]: फ़त्हुल क़दीर, ग़ुनियत ज़वी अल-अहकाम और रद अल-मुह्तार में उल्लेख है: [अरबी कॉलम]: वह बाहर जाने के लिए तैयार हुई, इसलिए उसने शपथ ली, 'बाहर मत जाओ', फिर यदि... [उर्दू कॉलम]: पत्नी बाहर जाने के लिए तैयार थी जब पति ने शपथ ली...

---

1. रफ़-उल-इन्तिक़ाद आदि, इब्न आबिदीन के लेखों के संग्रह से, सुहैल एकेडमी लाहौर 1/300-01.
2. दुर्रे मुख्तार, प्रवेश, निकास और निवास में शपथ का अध्याय, मतब-ए-मुजतबाई दिल्ली 1/298.

فتاوی رضویہ جلد سیز د ہم | صفحہ ۱۳

[Arabic Box Left]: كالراس في لاأكل رأسا۔ فان لفظه عام والغرض منه خاص كما مر واعتبار هذا الغرض لا يبطل اللفظ لانه بعض ما وضع له اللفظ اھ۔ مختصرا

[Urdu Box Right]: خاص مقصد کا اعتبار ہوتا ہے جیسے کوئی کہے میں سر نہ کھاؤں گا، تو اس میں لفظ سر عام ہے جو ماکول اور غیر ماکول دونوں کو شامل ہے جبکہ غرض خاص یعنی ماکول ہے جیسے گزرا تو یہ خاص غرض لفظ کے مدلول کے خلاف نہیں ہے، کیونکہ یہ لفظ کے معنی کا ایک خاص حصہ ہے، اہ۔ مختصراً۔ (ت)

و تمامه فیہ، یمین الفور جسے خاص فکر بلند ثریا پیوند امام الائمہ مالک الازمہ کاشف الغمہ سراج الامہ سیدنا امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے استنباط فرمایا اور دیگر ائمہ کرام قدست اسرار ہم نے بحکم الفقهاء كلهم عيال لابی حنیفہ (تمام فقہاء ابوحنیفہ کی عیال ہیں، کے حکم سے۔ ت) اس جناب کا اتباع کیا اس کے مسائل اسی اصل جلیل تخصیص بالغرض پر مبنی ہیں متون و شروح و فتاوائے مذہب میں صد ہا فروع اس پر مبنی ہیں مثلاً: (۱) عورت باہر جانے کو ہوئی، شوہر نے کہا باہر جائے تو تجھ پر طلاق، عورت بیٹھ گئی اور دوسرے وقت باہر گئی، طلاق نہ ہوگی۔ تنویر و در میں ہے:

[جدول]: [Arabic Column]: شرط للحنث في قوله ان خرجت مثلا فأنت طالق او ان ضربت عبدك فعبدي حر لمريد الخروج والضرب، فعله فورالان قصده المنع عن ذلك الفعل عرفاً، ومدار الايمان عليه وهذه تسمى يمين الفور تفرد ابوحنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ باظہارها ولم يخالفه احد۔2

[Urdu Column]: جب بیوی باہر نکلنے یا غلام کو مارنے کے لئے تیار ہو اس وقت خاوند اگر کہے کہ تو نے مارا یا باہر نکلی تو تجھے طلاق ہے، تو مارنے اور باہر نکلنے سے وہی مراد ہے جس کے لئے وہ تیار کھڑی ہے صرف اسی مارنے پر یا اسی نکلنے پر طلاق ہوگی کیونکہ خاوند کا اس عمل سے روکنا مقصود ہے یہی عرف ہے جبکہ حلف کا مدار یہی عرف ہے، اس کا نام یمین فور ہے جس کے اظہار اور بیان میں امام ابو حنیفہ متفرد ہیں اور کسی نے ان کی مخالفت نہ کی۔ (ت)

[Bottom Table Header]: فتح القدیر وغنیہ ذوی الاحکام ورد المحتار میں ہے: [Arabic Column]: تهيأت للخروج فحلف لا تخرج فاذا [Urdu Column]: بیوی باہر نکلنے کو تیار تھی کہ خاوند نے حلف اٹھایا

1۔ رفع الانتقاض الخ رسالہ من مجموعہ رسائل ابن عابدین سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۳۰۰-۰۱ 2۔ در مختار باب الیمین فی الدخول والخروج والسکني مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۹۸

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

- She sat for a while then went out; he does not break his oath, because his intention was to prevent her from the exit she had prepared for. It is as if he said, 'If you go out now.' This applies if he had no specific intention; if he had an intention, it would be acted upon. (1)
- Explanation: If you go out, you are divorced. Then the wife sat down and went out after some time, divorce will not occur because the husband's intention was the exit for which she was ready, and to prevent that specific exit was the goal. So, it is as if the husband said, 'If you leave now, you are divorced.' This ruling applies when the husband had no specific intention. If he had an intention, it will be acted upon. (T)

(2) Zaid said to 'Amr, 'Eat with me.' 'Amr replied, 'If I eat, my wife is divorced.' The next day he ate with Zaid, divorce will not occur. *Tanwir and Durr*.

- Similarly, in his oath 'If I have lunch...', thus after the inviter says 'Come have lunch with me', the condition for breaking the oath is having that lunch, to which he was invited, with him. (2)
- Explanation: Similarly, if in response to someone inviting to a meal, one says, 'If I eat, my wife is divorced,' then here too, for divorce to occur, it is conditional upon eating the same meal to which he was invited with the inviter. (T)

(3) He called his wife for intercourse, she refused. The husband said, 'If you do not come to me in this room, you are divorced.' The woman came, but by then the man's desire had subsided. Divorce occurred. *Ashbah and Durr*.

- 'In' is for delay except with an indication of immediacy. Among such is seeking her for intercourse, she refuses, so he says 'If you do not enter the house with me, you are divorced.' She entered after his desire subsided, the oath is broken. (3)
- Explanation: The word 'In' (if) is used for delay, but where an indication of immediacy is found, delay will not be intended. An example of an indication for immediacy is that the husband asked the wife for intercourse; upon her refusal, the husband said, 'If you do not enter my room, you are divorced.' She did not enter immediately, but entered after the husband's desire and wish ended, then divorce will occur. (T)

(4) A ruler swore an oath that 'If miscreants enter the city and I do not inform, my wife is divorced.' Miscreants entered and he did not inform the ruler; at that time it was said he had been deposed, divorce occurred. *Tanwir*.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Oaths in Entering and Exiting etc., Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 3/84. 2. Durr Mukhtar, Chapter of Oaths in Entering and Exiting etc., Matba' Mujtabai, Delhi, 1/298. 3. Durr Mukhtar, Chapter of Oaths in Entering and Exiting etc., Matba' Mujtabai, Delhi, 1/299.

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

- वह कुछ देर बैठी फिर बाहर निकली; उसकी शपथ नहीं टूटती, क्योंकि उसका उद्देश्य उसे उस निकास से रोकना था जिसके लिए वह तैयार थी। यह ऐसा है जैसे उसने कहा हो, 'यदि तुम अभी बाहर निकलो।' यह तब है जब उसकी कोई विशेष नियत न हो; यदि उसने कोई नियत की हो, तो उसी पर अमल होगा। (1)
- व्याख्या: कि अगर तुम बाहर निकलो तो तुम्हें तलाक़ है, तो बीवी बैठ गई और कुछ देर बाद निकली तो तलाक़ न होगी क्योंकि शौहर का मक़सद वह निकलना है जिसके लिए वह तैयार थी और उस निकलने से रोकना मक़सूद था, पस गोया शौहर ने यूँ कहा कि तू अब निकले तो तुझे तलाक़ है, यह हुक्म तब होगा जब शौहर ने कोई नियत न की हो, और अगर उसने कोई नियत की हो तो उस पर अमल होगा। (त)

(२) ज़ैद ने अम्र से कहा 'मेरे साथ खाना खा लो'। अम्र: 'मैं खाऊँ तो औरत मुतल्लिक़ा (तलाक़शुदा) हो'। कल ज़ैद के साथ खाना खाया तलाक़ न होगी। तनवीर व दुर्र:

- इसी प्रकार उसकी शपथ में 'यदि मैं दोपहर का भोजन करूँ.', तो बुलाने वाले के यह कहने के बाद कि 'आओ मेरे साथ दोपहर का भोजन करो', शपथ टूटने की शर्त उसी भोजन को, जिसके लिए उसे बुलाया गया था, उसके साथ खाना है। (२)
- व्याख्या: यूँ ही अगर खाने पर दावत देने वाले के जवाब में कोई कहे 'अगर मैं खाना खाऊँ तो बीवी को तलाक़ है' तो यहाँ भी तलाक़ होने के लिए जिस खाने पर दावत दी गई उसी को दावत देने वाले के साथ खाना शर्त है। (त)

(३) औरत को जिमा (सम्भोग) के लिए बुलाया उसने इनकार किया, शौहर ने कहा 'अगर मेरे पास इस कोठरी में न आई तो तुझ पर तलाक़'। औरत आई मगर उस वक़्त मर्द की शहवत (इच्छा) शांत हो चुकी थी, तो तलाक़ हो गई, अश्बाह व दुर्र:

- 'इन' (यदि) देरी के लिए है सिवाय इसके जहाँ फ़ौर (तत्काल) का संकेत हो, और इसी में से है उसका अपनी पत्नी को जिमा के लिए माँगना और उसका इनकार करना, फिर उसका यह कहना कि 'यदि तुम मेरे साथ घर में दाखिल न हुई तो तुम्हें तलाक़ है'। वह उसकी शहवत शांत होने के बाद दाखिल हुई, शपथ टूट गई। (३)

- व्याख्या: लफ़्ज़ 'इन' तराख़ी (देरी) के लिए इस्तेमाल है मगर जहाँ फ़ौर (तत्काल) का क़रीना (संकेत) पाया जाए तो तराख़ी मुराद न होगी, इसी फ़ौर पर क़रीना की मिसाल यह है कि शौहर ने बीवी को जिमा के लिए तलब किया तो बीवी के इनकार पर शौहर ने कहा तू मेरे कमरे में दाखिल न हुई तो तलाक़ है। तो फ़ौरन दाखिल न हुई बल्कि शौहर की शहवत व ख़्वाहिश ख़त्म होने के बाद दाखिल हुई तो तलाक़ हो जाएगी। (त)

(४) हाकिम ने शपथ ली कि 'अगर शहर में बदमाश आएं और मैं ख़बर न दूँ तो औरत तलाक़ है', बदमाश आया और उसने हाकिम को ख़बर न दी, उस वक़्त कहा गया वह पदमुक्त हो गया था, तलाक़ हो गई। तनवीर:

फुटनोट: 1. रद-उल-मुहतार बाबुल यमीन फ़िद-दुख़ूल वल-ख़ुरूज अलख़ दार एहया-उत-तुरास अल-अरबी बैरुत 3/84 2. दुर्रे मुख्तार बाबुल यमीन फ़िद-दुख़ूल वल-ख़ुरूज अलख़ मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/298 3. दुर्रे मुख्तार बाबुल यमीन फ़िद-दुख़ूल वल-ख़ुरूज अलख़ मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/299

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

- جلست ساعة ثم خرجت لا یحنث، لان قصده منعها من الخروج الذی تهیأت له، فکانه قال ان خرجت الساعة، وهذا اذالم یکن له نیة فان نوی شیئاً عمل به ۱-
- کہ اگر تو باہر نکلے تو تجھے طلاق ہے، تو بیوی بیٹھ گئی اور کچھ دیر بعد نکلی تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ خاوند کا مقصد وہ نکلنا ہے جس کے لئے وہ تیار تھی اور اس نکلنے سے منع کرنا مقصود تھا، پس گویا خاوند نے یوں کہا کہ تو اب نکلے تو تجھے طلاق ہے، یہ حکم تب ہو گا جب خاوند نے کوئی نیت نہ کی ہو، اور اگر اس نے کوئی نیت کی ہو تو اس پر عمل ہوگا۔ (ت)

(۲) زید نے عمرو سے کہا 'میرے ساتھ کھانا کھالو'۔ عمرو: 'میں کھاؤں تو عورت مطلقہ ہو'۔ کل زید کے ساتھ کھانا کھایا طلاق نہ ہوگی۔ تنویر ودر:

- وکذا فی حلفه ان تغدیت فکذا بعد قول الطالب تعال تغد معي شرط الحنث تغدیه معه ذلك الطعام المدعو الیه- ۲
- یوں ہی اگر کھانے پر دعوت دینے والے کے جواب میں کوئی کہے 'اگر میں کھانا کھاؤں تو بیوی کو طلاق ہے' تو یہاں بھی طلاق ہونے کے لئے جس کھانے پر دعوت دی گئی اسی کو دعوت دینے والے کے ساتھ کھانا شرط ہے۔ (ت)

(۳) عورت کو جماع کے لئے بلایا اس نے انکار کیا، شوہر نے کہا 'اگر میرے پاس اس کوٹھری میں نہ آئی تو تجھ پر طلاق' عورت آئی مگر اس وقت مرد کی شہوت ساکن ہو چکی تھی، تو طلاق ہو گئی، اشباہ ودر:

- ان للتراخي الابقرينة الفور، ومنه طلب جماعها فابت فقال ان لم تدخلي معي البيت فانت طالق فدخلت بعد سكون شهوته حنث ۳-
- لفظ 'ان' تراخی کے لئے استعمال ہے مگر جہاں فور کا قرینہ پایا جائے تو تراخی مراد نہ ہوگی، اسی فور پر قرینہ کی مثال یہ ہے کہ خاوند نے بیوی کو جماع کیلئے طلب کیا تو بیوی کے انکار پر خاوند نے کہا تو میرے کمرے میں داخل نہ ہوئی تو طلاق ہے۔ تو فوراً داخل نہ ہوئی بلکہ خاوند کی شہوت و خواہش ختم ہونے کے بعد داخل ہوئی تو طلاق ہو جائے گی۔ (ت)

(۴) حاکم نے حلف کیا کہ اگر شہر میں بد معاش آئے اور میں خبر نہ دوں تو عورت طلاق ہے، بد معاش آیا اور اس نے حاکم کو خبر نہ دی اس وقت کہاوہ معزول ہو گیا تھا طلاق ہو گئی۔ تنویر:

حواشی: 1. ردالمحتار باب اليمين في الدخول والخروج الخ دار احياء التراث العربی بیروت ۸۴/۳ 2. درمختار باب اليمين في الدخول والخروج الخ مطبع مجتبائی دہلی ۲۹۸/۱ 3. درمختار باب اليمين في الدخول والخروج الخ مطبع مجتبائی دہلی ۲۹۹/۱

Fatawa Razawiya Volume 13

Arabic: If a ruler makes someone swear an oath that he will inform him of every miscreant who enters the city, it is restricted to the duration of his rule. 1 Urdu: The ruler of the city took an oath from an employee that he would inform him about every rogue entering the city. So, this oath is restricted to the duration of that ruler's authority. (T)

In Durr al-Mukhtar it is stated: Arabic: It is an explanation that an absolute oath becomes restricted by the context of the situation, and it is appropriate to restrict his oath to immediate notification upon his knowledge. 2 Urdu: Explaining this, it is an example of an absolute oath being restricted due to the context of the situation. In this, there will also be a restriction that the employee will report immediately upon becoming aware. (T)

In Tabyin al-Haqa'iq it is stated: Arabic: Furthermore, if the person who swore the oath becomes aware of a miscreant and does not inform him, he does not break the oath unless he himself dies, or the one who took the oath dies, or is dismissed. 3 Urdu: If the person who swore the oath learns about a rogue and does not inform the ruler, the oath will only be broken upon the death of either the oath-taker or the oath-giver, or upon the ruler's dismissal. (T)

In Fath al-Qadir it is stated: Arabic: If it were ruled that this [oath] takes effect immediately, it would not be far-fetched considering the intent, which is prompt action to deter him and repel his evil. 4 Urdu: If this oath were ordered to be immediate, it would not be unlikely because the ruler's purpose is to promptly punish the rogue and defend against his mischief. (T)

(5) A creditor took an oath from a debtor saying, "I will not go out without your permission." This oath will remain in effect until the debt is settled. After payment or exoneration, permission is no longer required. In Tanwir and Durr:

Arabic: If the creditor takes an oath from his debtor, or from a guarantor acting on behalf of the debtor, that he shall not leave the city except with his permission, it is restricted to leaving while the debt is outstanding. Urdu: A creditor took an oath from a debtor or a guarantor appointed by the debtor that you will not go outside the city without my permission. So this oath is for the existence of the debt and guarantee.

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Oaths regarding Hitting and Killing, etc., Mujtabai Press, Delhi, 1/313.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Oaths regarding Hitting and Killing, etc., Mujtabai Press, Delhi, 1/313.
3. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Oaths regarding Hitting and Killing, etc., Matba' Kubra Amiriya, Bulaq, Egypt, 3/161.
4. Fath al-Qadir, Book of Oaths, Miscellaneous issues, Maktaba Nooriya Razawiya, Sukkur, 4/468.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

अरबी: यदि किसी शासक ने किसी व्यक्ति को शपथ दिलाई कि वह उसे शहर में प्रवेश करने वाले हर दुष्ट व्यक्ति के बारे में सूचित करेगा, तो यह उसकी सत्ता की अवधि तक ही सीमित है। 1 उर्दू: शहर के शासक ने एक कर्मचारी से शपथ ली कि वह शहर में दाखिल होने वाले हर बदमाश की उसे सूचना देगा। तो, यह शपथ उस शासक के पद पर रहने तक सीमित है। (त)

दुर्र-ए-मुख्तार में है: अरबी: यह स्पष्टीकरण है कि एक पूर्ण शपथ परिस्थिति के संदर्भ से सीमित हो जाती है, और उसकी शपथ को उसके ज्ञान प्राप्त होने पर तत्काल सूचित करने तक सीमित करना उचित है। 2 उर्दू: इसकी व्याख्या करते हुए कि यह पूर्ण शपथ को परिस्थिति के प्रमाण के कारण सीमित होने का उदाहरण है। इसमें यह भी शर्त होगी कि वह कर्मचारी जानकारी होने पर तुरंत सूचित करेगा। (त)

तबीनुल हकाइक में है: अरबी: इसके अलावा, यदि शपथ लेने वाले को किसी दुष्ट का पता चल जाता है और वह उसे सूचित नहीं करता है, तो वह शपथ नहीं तोड़ता जब तक कि वह स्वयं मर न जाए, या शपथ दिलाने वाला मर न जाए, या उसे पद से हटा न दिया जाए। 3 उर्दू: यदि शपथ लेने वाले को किसी बदमाश का पता चल जाए और वह शासक को सूचित न करे, तो कसम केवल शपथ देने वाले या शपथ लेने वाले की मृत्यु होने पर, या शासक के बर्खास्त होने पर टूटेगी। (त)

फ़तहुल कदीर में है: अरबी: यदि यह निर्णय दिया जाए कि यह (शपथ) तत्काल प्रभावी होती है, तो यह उद्देश्य को देखते हुए अनुचित नहीं होगा, जो कि उसे रोकने और उसकी बुराई को दूर करने के लिए तत्काल कार्रवाई करना है। 4 उर्दू: यदि इस शपथ को तत्काल होने का आदेश दिया जाए तो यह अस्वाभाविक नहीं होगा क्योंकि शासक का उद्देश्य बदमाश को तुरंत सजा देना और उसके नुकसान से बचाव करना है। (त)

(5) एक लेनदार ने देनदार से शपथ ली कि "मैं तुम्हारी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाऊंगा", यह शपथ ऋण बने रहने तक रहेगी। ऋण चुकाने या माफी के बाद अनुमति की आवश्यकता नहीं है। तनवीर व दुर्र में है:

अरबी: यदि ऋणदाता अपने देनदार से, या देनदार की ओर से नियुक्त किसी ज़मानतदार (गारंटर) से शपथ लेता है कि वह उसकी अनुमति के बिना शहर नहीं छोड़ेगा, तो यह ऋण के बकाया रहने के दौरान बाहर जाने तक सीमित है। उर्दू: ऋणदाता ने देनदार या देनदार द्वारा बनाए गए ज़मानतदार से

शपथ ली कि तुम मेरी अनुमति के बिना शहर से बाहर नहीं जाओगे, तो यह शपथ ऋण और ज़मानत की मौजदूगी तक है।

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, चोट और हत्या आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/313।
2. दुर्र-ए-मुख्तार, चोट और हत्या आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/313।
3. तबीनुल हकाइक, चोट और हत्या आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मतबा कुबरा अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 3/161।
4. फ़तहुल कदीर, शपथ की किताब, विविध मामले, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 4/468।

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

حلفہ وال لیعلمنہ بکل داعر دخل البلد، تقید بقیام ولایتہ 1۔ | شہر کے حاکم نے ایک ملازم سے حلف لیا کہ شہر میں داخل ہونے والے ہر بدقماش کی مجھے اطلاع دے گا، تو یہ حلف اس حاکم کی ولایت کے قائم رہنے تک مقید ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: بیان لکون الیمین المطلقۃ تصیر مقیدۃ بدلالۃ الحال وینبغی تقیید یمینہ بفور علمہ 2۔ | اس کی وضاحت کرتے ہوئے کہ یہ مطلق حلف کو حال کی دلالت کی وجہ سے مقید ہونے کی مثال ہے اس میں یہ بھی قید ہوگی کہ وہ ملازم معلوم ہونے پر فوراً اطلاع دے گا۔ (ت)

تبیین الحقائق میں ہے: ثم ان الحالف لو علم الداعر ولم یعلمہ لم یحنث الا اذامات ھو او المستحلف او عزل 3۔ | اگر حلف اٹھانے والے کو بد معاش کا علم ہو جائے اور وہ حاکم کو مطلع نہ کرے تو قسم صرف حلف دینے یا حلف لینے والے کی موت یا حاکم کے معزول ہو جانے پر ٹوٹے گی۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: ولو حکم بأنعقاد ھذہ للفور لم یکن بعیداً نظراً الی المقصود وھو المبادرۃ لزجرہ ودفع شرہ 4۔ | اگر اس حلف کو فوری ہونے کا حکم دیا جائے تو بعید نہ ہوگا کیونکہ حاکم کا مقصد بدقماش کو فوری سزا دینا اور اس کے شرکا دفاع کرنا ہے۔ (ت)

(۵) دائن نے مدیون سے حلف لیا کہ تیرے بے اذن باہر نہ جاؤں گا، یہ حلف بقائے دین تک رہے گا بعد ادا یا ابراء اذن کی حاجت نہیں، تنویر ودر میں ہے :

لو حلف رب الدین غریمہ او الکفیل بأمر المکفول عنہ ان لایخرج من البلد الا باذنہ تقید بالخروج حال قیام الدین | قرض خواہ نے مقروض یا مقروض کے بنائے ہوئے ضامن سے حلف لیا کہ تو میری اجازت کے بغیر شہر سے باہر نہ جائے گا، تو یہ حلف قرض اور ضمانت کی موجودگی تک ہے۔

1 در مختار باب اليمين في الضرب والقتل وغير ذلک مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۱۳ 2 در مختار باب اليمين في الضرب والقتل وغير ذلک مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۱۳ 3 تبيين الحقائق باب اليمين في الضرب والقتل وغير ذلک مطبع کبری اميريہ بولاق مصر ۳ /۱۶۱ 4 فتح القدير کتاب الايمان مسائل متفرقه مکتبه نوريہ رضويہ سکھر ۴ / ۴۶۸

Fatawa Razawiyya Volume 13 / Page 13

...with bailment[1] - it will remain restricted as long as the bailment lasts; once the debt or guarantee ends, the swearer (the one who took the oath) will no longer require permission. (T)

(6) If a husband swears, 'My wife shall not go out without my permission,' this is limited to the duration of the marriage. It is stated in Tanwir and Durr: 'If he swears that his wife shall not leave except with his permission, it is restricted to the state of existence of the marriage.[2]' - The husband took an oath that his wife would not go out without permission, so this oath will also be limited to the duration of the marriage. (T)

(7) The same issue applies to the statement: 'I will not sell it for ten,' and then he sells it for eleven; he has not broken his oath, even though ten is included within eleven. This is because the intention was a specific 'ten,' meaning exactly ten without any addition. All such restrictions and specifications of general terms are based on customary usage, as the basis of an oath is custom. Therefore, Imam Humam bin al-Humam, in his commentary on the aforementioned text of Hidaya (where it was stated that non-existence is not established without total deprivation), said:

[Arabic Text]: Just as his statement 'If I do not come to Basra' is giving an example. What is meant is that every condition with 'in' (if) has its ruling negative likewise; that is, divorce or manumission does not occur when suspended by it until death, for the reasons we mentioned. He added an excellent restriction in 'al-Mubtaghi' (with the letter 'Ghain'): He said if a man says to his wife, 'If you do not inform me of such-and-such, you are thrice divorced,' then it is for perpetuity if there is no indication of immediacy. End. Hence, they said if he wanted to have intercourse with his wife and she did not comply, and he said 'If you do not come in with me, you are divorced,' and she came in after his desire had subsided, she is divorced, because his purpose for her coming in was the fulfillment of desire, which has passed[3].

[Urdu Translation]: His statement, for example, 'If I do not come to Basra,' is an example. The meaning is that any condition mentioned with the word 'in' (if) will have its ruling as negative in the same way. That is, if divorce or manumission is suspended upon it, the oath will not be broken until death if the condition is not met, as we have mentioned. Then an excellent restriction was added in 'al-Mubtaghi' (spelled with Ghain) where it says: If a husband says to his wife, 'If you do not tell me such-and-such news, you are thrice divorced,' then if there is no context indicating

immediacy, this oath will be perpetual. From this same principle, it is said that if a husband called his wife for intercourse and she did not obey, and he said, 'If you do not come into the room to me, you are divorced,' and if the wife did not come immediately, but came after the husband's desire had passed...

---

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Oaths regarding Striking and Killing, etc., Matba' Mujtabai, Delhi, 1/313 [2] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Oaths regarding Striking and Killing, etc., Matba' Mujtabai, Delhi, 1/313 [3] Fath-ul-Qadeer, Chapter on Attaching Divorce to Time, Maktaba Nooria Razawiyya, Sukkur, 3/473

फतावा रज़विया खंड 13 / पृष्ठ 13

...ज़मानत के साथ[1] - यह तब तक सीमित रहेगा जब तक ज़मानत बनी रहेगी; ऋण या गारंटी समाप्त होने के बाद, शपथ लेने वाले को अब अनुमति की आवश्यकता नहीं रहेगी। (त)

(6) यदि पति शपथ लेता है, 'मेरी पत्नी मेरी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाएगी,' तो यह विवाह की अवधि तक सीमित है। तनवीर और दुर्र में कहा गया है: 'यदि वह शपथ लेता है कि उसकी पत्नी उसकी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाएगी, तो यह विवाह के अस्तित्व की स्थिति तक सीमित है।[2]' - पति ने शपथ ली कि पत्नी बिना अनुमति के बाहर नहीं जाएगी, इसलिए यह शपथ भी विवाह की अवधि तक सीमित होगी। (त)

(7) यही मुद्दा इस कथन पर भी लागू होता है: 'मैं इसे दस में नहीं बेचूँगा,' और फिर वह इसे ग्यारह में बेच देता है; उसने अपनी शपथ नहीं तोड़ी है, भले ही ग्यारह में दस शामिल हों। ऐसा इसलिए है क्योंकि इरादा एक विशिष्ट 'दस' का था, यानी बिना किसी जोड़ के ठीक दस। सामान्य शब्दों के ऐसे सभी प्रतिबंध और विशिष्टताएँ प्रथागत उपयोग पर आधारित हैं, क्योंकि शपथ का आधार प्रथा है। इसलिए, इमाम हुमाम बिन अल-हुमाम ने हिदाया के उपरोक्त पाठ की अपनी टिप्पणी में (जहाँ यह कहा गया था कि पूर्ण अभाव के बिना 'अस्तित्वहीनता' स्थापित नहीं होती है), कहा:

[अरबी पाठ]: जैसा कि उनका कथन 'यदि मैं बसरा नहीं आता' एक उदाहरण दे रहा है। इसका अर्थ यह है कि 'इन' (यदि) के साथ प्रत्येक शर्त का नियम इसी तरह नकारात्मक है; अर्थात, तलाक या दास-मुक्ति तब तक नहीं होती जब तक कि मृत्यु न हो जाए, जैसा कि हमने उल्लेख किया है। उन्होंने 'अल-मुब्तगी' (अक्षर 'गैन' के साथ) में एक उत्कृष्ट प्रतिबंध जोड़ा: उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से कहता है, 'यदि तुम मुझे ऐसा-वैसा नहीं बताती हो, तो तुम्हें तीन बार तलाक है,' तो यह अनंत काल के लिए है यदि तत्काल होने का कोई संकेत नहीं है। समाप्त। इसलिए, उन्होंने कहा कि यदि वह अपनी पत्नी के साथ संभोग करना चाहता था और उसने पालन नहीं किया, और उसने कहा 'यदि तुम मेरे साथ अंदर नहीं आती हो, तो तुम्हें तलाक है,' और वह उसकी इच्छा शांत होने के बाद अंदर आई, तो उसे तलाक हो गया, क्योंकि उसके अंदर आने का उसका उद्देश्य इच्छा की पूर्ति थी, जो बीत चुकी है[3]।

[उर्दू अनुवाद]: उनका कथन, उदाहरण के लिए, 'यदि मैं बसरा नहीं आता,' एक उदाहरण है। इसका अर्थ यह है कि 'इन' (यदि) शब्द के साथ उल्लिखित किसी भी शर्त का नियम उसी तरह नकारात्मक

होगा। अर्थात, यदि तलाक या दास-मुक्ति इस पर निलंबित है, तो शर्त पूरी न होने पर मृत्यु तक शपथ नहीं टूटेगी, जैसा कि हमने उल्लेख किया है। फिर 'अल-मुब्तगी' (गैन के साथ लिखा गया) में एक उत्कृष्ट प्रतिबंध जोड़ा गया जहाँ कहा गया है: यदि पति अपनी पत्नी से कहता है, 'यदि तुम मुझे ऐसी-ऐसी खबर नहीं बताती हो, तो तुम्हें तीन तलाक हैं,' तो यदि तत्काल होने का संकेत देने वाला कोई संदर्भ नहीं है, तो यह शपथ शाश्वत होगी। इसी सिद्धांत से, यह कहा गया है कि यदि पति ने अपनी पत्नी को संभोग के लिए बुलाया और उसने आज्ञा नहीं मानी, और उसने कहा, 'यदि तुम मेरे पास कमरे में नहीं आती हो, तो तुम्हें तलाक है,' और यदि पत्नी तुरंत नहीं आई, बल्कि पति की इच्छा समाप्त होने के बाद आई...

---

[1] दुर्र-उल-मुख्तार, प्रहार और हत्या आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/313 [2] दुर्र-उल-मुख्तार, प्रहार और हत्या आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/313 [3] फतह-उल-क़दीर, समय के साथ तलाक जोड़ने का अध्याय, मकतबा नूरिय्या रज़विया, सुक्कुर, 3/473

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم / صفحہ ۱۳

بالکفالۃ[1] - بقاء تک مقید قرار پائے گا، قرض یا ضمانت ختم ہو جانے کے بعد حالف کو اجازت کی ضرورت نہ رہے گی (ت)

(۶) قسم کھائی عورت بے میرے اذن کے باہر نہ جائے گی، یہ قیام زوجیت تک محدود ہے۔ تنویر و در میں ہے: لو حلف لا تخرج امرأته الا باذنه تقید بحال قیام الزوجیۃ[2] - خاوند نے قسم اٹھائی کہ بیوی اجازت کے بغیر باہر نہ جائیگی، تو یہ حلف بھی زوجیت کے قیام تک محدود ہو گا۔ (ت)

(۷) وہی مسئلہ کہ دس کو نہ بیچوں گا اور گیارہ کو بیچا حنث نہ ہوا اگر چہ گیارہ میں دس موجود ہیں کہ مراد خاص قسم کے دس یعنی تنہا بلادیادت تھے۔ یہ سب تقییدیں اور عام کی تخصیص صرف بنظر اغراض متعارفہ ہوئی ہیں کہ یمین کی بنا ہی عرف پر ہے و لہذا امام ہمام بن الہمام نے عبارت مذکورہ ہدایہ کی شرح میں (جہاں ارشاد ہوا تھا کہ عدم بے سلب کلی متحقق نہ ہوگا) فرمایا:

[عربی عبارت]: کما قوله في ان لم أت البصرة اعطاء نظير والمرا دان كل شرط بأن منفي حكمه كذلك، وهو ان لا يقع الطلاق او العتاق اذا علق به الابالموت لما ذكرنا، وزاد قيد احسن في المبتغى بالغين المعجمة قال اذا قال لامرأته ان لم تخبريني بكذا فانت طالق ثلاثا فهو على الابد اذ لم يكن ثم مايدل على الفور انتهى، ومن ثمه قالو لو اراد ان يجامع امرأته فلم تطاوعه فقال ان لم تدخلي معي فانت طالق فدخلت بعد ماسكنت شهوته طلقت، لان مقصوده من الدخول كان قضاء الشهوة وقد فات[3]۔

[اردو ترجمہ]: اس کا قول، جیسا کہ، اگر میں بصرہ میں نہ آؤں تو، یہ نظیر ہے، جس سے مراد یہ ہے جو شرط بھی لفظ ان کے ساتھ ذکر کی جائے تو اس کا حکم یونہی منفی رہے گا یعنی اس کے ساتھ طلاق یا عتاق کو معلق کیا گیا ہو تو شرط کے منفی ہونے پر موت سے پہلے قسم نہ ٹوٹے گی،

جیسا کہ ہم نے ذکر کیا ہے اور پھر اس پر ایک اچھی قید بڑھائی کہ مبتغی (غین کے ساتھ) میں کہا کہ خاوند نے بیوی سے کہا کہ تو اگر مجھے فلاں خبر نہ دے تو تجھے تین طلاقیں ہوں گی، تو اگر فوراً پر کوئی قرینہ نہ ہو تو یہ قسم ابدی ہوگی اھ، اور اسی قبیل سے یہ ہے کہ خاوند نے بیوی کو جماع کے لئے طلب کیا تو بیوی نے اطاعت نہ کی تو کہا اگر تو میرے پاس کمرے میں نہ آئی تو تجھے طلاق، اگر بیوی فوراً نہ آئے بلکہ خاوند کی شہوت اور

---

[1] درمختار باب اليمين في الضرب والقتل الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۱۳ [2] درمختار باب اليمين في الضرب والقتل الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۱۳ [3] فتح القدير فصل في اضافة الطلاق الى الزمان مكتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۴۷۳

Fatawa Razawiyya Volume 13, 13

Divorce will occur even if she came after the desire had ended, because the objective of the request was to satisfy his desire, which has now ended. (T) And there is no doubt that in our current case, the husband's intention with this oath is not that the woman should perform two prostrations (sajdahs) in any way at some point in her life and be absolved. Rather, based on the context of the situation, the objective is the regular performance of prayer. Just as when a woman's going out was absolute and there was no restriction in the husband's words as to when it should happen, but based on the context, leaving at that specific time was considered valid. Similarly, in Amr's speech, eating was absolute (whether today or tomorrow, this food or another), but according to specific custom, eating that food with Zaid at that time was considered. Just as a woman's coming to her husband in the room was general (whether while this current desire lasts or at any point in her life), and non-fulfillment would only be established at the last moment of the life of the husband or wife. But when she came to her husband in the room, even if it was after the desire had faded, then non-fulfillment (of the condition) was not established, and based on the literal meaning of the words, it would follow that divorce does not occur. However, based on the specific context of the situation, that coming was intended which was required for the fulfillment of that desire, and upon its absence, the condition was met and divorce was considered to have occurred. Apply the same principle here. Similarly, here too, although like the individual ten prayers performed together, prayer is of two types: one is committed (multazim), which is performed regularly; the other is its opposite. Or it is of two types: one that absolves responsibility (mubri-e-zimma), in which the demand for obligatory prayer no longer remains on the person; the other is its opposite. And the act itself is like the aforementioned "In lam tadkhuli" (If you do not come to me. T), which follows the rule of an indefinite noun (nakirah) in a negative context, which becomes general. And the generality of negation due to a partial affirmation (that she prayed the morning prayer) did not remain true. However, based on the context, it is necessary that the first type, i.e., the committed absolving prayer, be intended, and its absence is established by intentionally leaving one time's obligatory prayer without a legal (Shari'i) excuse. Therefore, it became necessary that when the woman did not pray the Isha prayer after this oath, two divorces occurred as soon as dawn broke, just as there she became a divorcee as soon as the desire subsided. In fact, if the husband had said these words when there was still time for Maghrib and the woman was capable of performing it, then as soon

as the twilight set, two divorces occurred. Our scholars have explicitly stated that if it is said to a woman, "If you abandon prayer, then you are divorced," and the woman intentionally misses one prayer making it 'qaza', divorce will occur, even if she later performs that missed prayer. It is stated in Durr al-Mukhtar:

He said: 'If you leave the prayer, you are divorced.' Then she prayed it as qaza (late). She is divorced according to the more apparent opinion. Al-Zahiriyya.[1]	If he said to his wife, "If you abandon prayer, you are divorced." Now, if the woman made a prayer 'qaza', the most clear statement is that divorce will take place. Al-Zahiriyya. (T)

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Oaths in Buying and Selling, etc., Mujtabai Press, Delhi, 1/310. Page 152 of 688

इच्छा समाप्त होने के बाद आई तो तलाक़ हो जाएगी क्योंकि मक़सद अपनी शहवत को पूरा करना था जो अब समाप्त हो चुकी है। (त) और इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे इस मसले में भी इस शपथ से पति का उद्देश्य यह नहीं है कि स्त्री अपने पूरे जीवन काल में किसी भी समय किसी भी तरह दो सजदे कर ले और मुक्त हो जाए, बल्कि निश्चित रूप से स्थिति के संदर्भ (दलालत-ए-हाल) के अनुसार इसका उद्देश्य नमाज़ की पाबंदी है। जिस प्रकार स्त्री का बाहर जाना सामान्य था और पति के शब्दों में कोई शर्त नहीं थी कि वह इस समय हो या कब हो, लेकिन स्थिति के संदर्भ के अनुसार उस विशेष समय का निकलना ही मान्य हुआ। जिस प्रकार अम्र की बातचीत में खाना सामान्य था कि आज हो या कल, यह खाना हो या कोई और, लेकिन विशेष परंपरा (उर्फ़ए-ख़ास) के अनुसार उस समय ज़ैद के साथ खाना खाना ही ध्यान में रखा गया। जिस प्रकार स्त्री का कमरे में पति के पास आना सामान्य था कि वह इस मौजूद शहवत के रहते हो या जीवन में कभी भी किसी भी स्थिति में हो, और इसका पूर्ण न होना पति या पत्नी के जीवन के अंतिम क्षण तक सिद्ध नहीं होगा। लेकिन जब वह कमरे में पति के पास आई, भले ही शहवत के समाप्त होने के बाद, तो शर्त का उल्लंघन (अदम) सत्य नहीं हुआ और शाब्दिक अर्थ के अनुसार यह अनिवार्य था कि तलाक़ न हो। लेकिन स्थिति के विशेष संदर्भ के अनुसार वह आना ही उद्देश्य था जो उस शहवत की पूर्ति के लिए आवश्यक था, और उसकी अनुपस्थिति पर शर्त पूरी हुई और तलाक़ होना स्वीकार किया गया। इसी पर अन्य स्थितियों को भी परखें। इसी प्रकार यहाँ भी, यद्यपि एक साथ पढ़ी जाने वाली दस नमाज़ों की तरह नमाज़ भी दो प्रकार की है: एक 'मुल्तज़िम' कि पाबंदी के साथ हो, दूसरी इसके विपरीत। या दो प्रकार की है: एक ज़िम्मेदारी से मुक्त करने वाली (मुब्री-ए-ज़िम्मा) जिसमें अनिवार्य नमाज़ की माँग ज़िम्मे पर न रहे, दूसरी इसके विपरीत। और स्वयं वह कार्य "इन लम तदख़ुली" (यदि तू मेरे पास न आई। त) की तरह है जो अनिश्चित संज्ञा (नकिराह) के नियम में है, और निषेध के संदर्भ में नकिराह सामान्य हो जाता है। और एक आंशिक नमाज़ (जैसे सुबह की नमाज़) पढ़ लेने से निषेध की व्यापकता (उमूम-ए-सल़ब) समाप्त नहीं हुई। परंतु स्थिति के संदर्भ के अनुसार यह आवश्यक है कि पहले प्रकार की नमाज़, अर्थात पाबंदी वाली मुक्तिदायक नमाज़ मुराद हो, और उसका अभाव एक समय की अनिवार्य नमाज़ को जानबूझकर बिना किसी शरीअत के बहाने के छोड़ने से सिद्ध हो जाता है। तो यह अनिवार्य हुआ कि जब स्त्री ने इस शपथ के बाद ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी, तो सुबह होते ही उस पर दो तलाक़ें हो गईं, जैसे वहाँ शहवत के शांत होते ही स्त्री तलाक़शुदा हो गई थी। बल्कि यदि पति ने ये शब्द उस

समय कहे थे जब अभी मग़रिब का समय शेष था और स्त्री नमाज़ पढ़ने में सक्षम थी, तो शफ़क़ (सांध्य लाली) के डूबते ही दो तलाक़ें हो गईं। हमारे विद्वानों ने स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि यदि स्त्री से कहा गया कि "यदि तू नमाज़ छोड़े तो तुझे तलाक़ है", और स्त्री ने एक नमाज़ जानबूझकर क़ज़ा कर दी (समय निकल जाने के बाद पढ़ी), तो तलाक़ हो जाएगी, भले ही वह उस क़ज़ा नमाज़ को बाद में पढ़ ले। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

"उसने कहा: 'यदि तूने नमाज़ छोड़ी तो तलाक़ है', फिर उसने उसे क़ज़ा करके पढ़ा। अधिक स्पष्ट राय के अनुसार तलाक़ हो गई। ज़हीरिया।" [1]

पत्नी से कहा "यदि तूने नमाज़ छोड़ी तो तुझे तलाक़ है।" अब यदि स्त्री ने नमाज़ क़ज़ा कर दी, तो सबसे स्पष्ट कथन यही है कि तलाक़ हो जाएगी। ज़हीरिया। (त)

[1] दुर्रे मुख़्तार, बाबुल यमीन फ़िल बैइ वश्शिरा' आदि, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, १/३१० पृष्ठ १५२/६८८

خواہش ختم ہونے کے بعد آئی طلاق ہو جائے گی کیونکہ طلب مقصد اپنی شہوت کو پورا کرنا تھا جو اب ختم ہو گئی ہے (ت) اور شک نہیں کہ ہمارے مسئلہ دائرہ میں بھی اس حلف سے شوہر کی یہ غرض نہیں کہ عورت اپنی مدۃ العمر میں کبھی کسی وقت کسی طرح دو سجدے کرلے اور بری ہو جائے بلکہ یقیناً بحکم دلالت حال اس سے پابندی نماز مقصود ہے تو جس طرح عورت کا باہر جانا مطلق تھا لفظ شوہر میں کوئی قید نہ تھی کہ اس وقت ہو یا کب ہو مگر بدلالتہ حال خاص اس وقت کا خروج معتبر ہوا جس طرح کلام عمرو میں کھانا مطلق تھا کہ آج ہو یا کل یہ کھانا ہو یا اور، مگر بحکم عرف خاص اس وقت یہ کھانا زید کے ساتھ کھانا ملحوظ رہا، جس طرح عورت کا کوٹھری میں شوہر کے پاس آنا عام تھا کہ اس شہوت موجودہ کی بقا میں ہو یا عمر میں کبھی کسی حالت میں ہو اور عدم متحقق نہ ہو گا مگر اخیر جزء حیات شوہر یا زن میں اور جبکہ کوٹھری میں شوہر کے پاس آئی اگر چہ زوال شہوت کے بعد تو عدم صادق نہ آیا اور بنظر مفاد لغوی لفظ لازم تھا کہ طلاق واقع نہ ہو لیکن بدلالت حال خاص وہ آنا مقصود رہا جو اس شہوت کی قضا کے لئے مطلوب تھا اور اسی کی انتفا پر شرط متحقق اور طلاق واقع مانی گئی، وقس علی ہذا، اسی طرح یہاں بھی اگر چہ عشرہ مفردہ مقرونہ کی مانند نماز پڑھنا بھی دو قسم ہے، ایک ملتزم کہ پابندی کے ساتھ ہو دوسرا اس کا غیر یا دو قسم ہے، ایک مبرئ ذمہ جس میں فرض نماز کا مطالبہ ذمے پر نہ رہے، دوسرا اس کے خلاف اور فعل بعینہ ان لم تدخلی (اگر تو میرے پاس نہ آئی۔ت) مذکور کی طرح حکم نکرہ میں ہے اور نکرہ حیز نفی میں عام ہو جاتا ہے اور عموم سلب بوجہ ایجاب جزئی کہ صبح کی نماز پڑھی صادق نہ رہا مگر بحالت دلالت حال واجب ہے کہ قسم اول یعنی صلاۃ ملتزمہ مبرئیہ مراد ہو اور اس کا انتفا ایک وقت کی نماز فرض عمداً بلا عذر شرعی چھوڑنے سے

صادق آجاتا ہے تو لازم ہوا کہ جب عورت نے اس حلف کے بعد نماز عشاء نہ پڑھی صبح صادق طالع ہوتے ہی اس پر دو طلاقیں پڑ گئیں جیسے وہاں سکون شہوت ہوتے ہی عورت مطلقہ ہو گئی تھی بلکہ اگر شوہر نے یہ لفظ اس وقت کہے تھے کہ ہنوز وقت مغرب باقی تھا اور عورت ادا پر قادر تھی تو شفق ڈوبتے ہی دو طلاقیں ہو گئیں، ہمارے علماء نے تصریح فرمائی ہے کہ اگر عورت سے کہا تو نماز ترک کرے تو تجھے طلاق، عورت نے ایک نماز قصداً قضا کی طلاق ہو جائے گی اگر چہ اس قضا کو ادا بھی کرلے، در مختار میں ہے:

قال ان ترکت الصلوۃ فطالق فصلتھا قضا طلقت علی الاظہر، ظہیریہ [1]۔

بیوی کو کہا اگر تو نے نماز ترک کی تو تجھے طلاق ہے، اب اگر عورت نے نماز قضا کی تو زیادہ واضح قول یہی ہے کہ طلاق ہو جائیگی، ظہیریہ ۔ (ت)

[1] در مختار باب الیمین فی البیع والشراء الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۱۰ Page 152 of 688

This ruling pertains to the word where 'as-Salah' is defined with the definite article 'al' (as-Salat), in which the discussion would be about whom the common usage refers to as a person who abandons prayer. Our problem revolves around the investigated ruling: 'If you leave prayer' (if you abandon prayer - T), which is like it being without the definite article, meaning if you leave even one prayer, then divorce occurs. Here, what doubt can there be in the occurrence of divorce upon missing a prayer? It is clearly stated that his intention was that specific obligatory prayer. A clear proof for this is his performing the 'Rujoo' (taking back the wife) in the morning. If the meanings assumed by the first party were intended, then what was the meaning of Rujoo before the occurrence? In such instances, the husband's intention is considered authoritative even if it contradicts the circumstantial evidence. The statement of Imam Muhaqqiq al-al-Itlaq and other scholars has passed: "This is when he had no intention, but if he intended something, it shall be acted upon." This is when he did not make an intention; if he had any intention, it will be acted upon. (T)

So, where both circumstantial evidence and intention are in agreement, not to accept this evidence, nor to listen to the husband, and instead to carve out a meaning from one's own side and act upon it—how far is this from jurisprudence (Fiqh), rather, how far from being worthy of attention! And it has been clarified above that both these divorces were 'Raj'i' (revocable). Inevitably, after the 'Rujoo', the woman remained under the husband's marriage ownership as before and remained a subject for future divorce. Now that the husband gave two more divorces after a few years, one became void as it exceeded the Shariah limit, and one, combined with those first two, became three 'Mughallazah' (irrevocable) divorces, by which the woman cannot become permanently forbidden, but yes, without 'Halala' she is no longer capable of entering into marriage with this person. This is what has become apparent to me, and the knowledge of the truth is with my Lord. (This is what is known to me; the truth is with my Lord. T) And Allah Almighty knows best.

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Oaths regarding Entry and Exit etc., Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 2/84.

फ़तावा रज़विया तेरहवीं जिल्द

यह हुक्म उस शब्द में है जहाँ 'अस-सलात' लाम (अलिफ़-लाम) के साथ मारफ़ा (परिभाषित) है, जिसमें यह चर्चा होगी कि सामान्य तौर पर 'तारिक-उस-सलात' (नमाज़ छोड़ने वाला) किसे कहते हैं। और हमारा मसला तहक़ीक़ शुदा हुक्म 'इन तरकत सलात' (अगर तू नमाज़ छोड़े - त) के अनुसार बिना लाम के शब्द की तरह है, यानी अगर तू एक नमाज़ छोड़े तो तलाक़ है। यहाँ क़ज़ा करने से तलाक़ के वाक़े होने में क्या संदेह हो सकता है? साफ़ बता दिया कि उसकी मुराद वही मख़सूस लाज़मी नमाज़ थी। इस पर स्पष्ट प्रमाण उसका सुबह के समय 'रुजू' करना है। अगर वे अर्थ मुराद होते जो पहले पक्ष ने समझे थे, तो वुक़ूअ (तलाक़ होने) से पहले रुजू करने के क्या मायने थे? और ऐसे मामलों में पति की नीयत ही विश्वसनीय रहती है, चाहे वह परिस्थिति के साक्ष्य के विपरीत ही क्यों न हो। इमाम मुहक़्क़िक़ अल-अल-इतलाक़ और अन्य विद्वानों का कथन गुज़रा कि: "यह तब है जब उसकी कोई नीयत न हो, और अगर उसने कुछ नीयत की हो तो उसी पर अमल होगा।" यह तब है जब उसने कोई नीयत न की हो; अगर उसने कोई नीयत की हो तो उसी पर अमल होगा। (त)

तो जहाँ परिस्थिति का साक्ष्य और नीयत दोनों एकमत हैं, वहाँ न तो इस दलालत (साक्ष्य) को मानना, न पति की सुनना और अपनी तरफ़ से एक अर्थ गढ़कर उस पर अमल करना, फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) से कितना दूर है, बल्कि ध्यान देने के योग्य भी नहीं है। और ऊपर स्पष्ट हो चुका है कि ये दोनों तलाक़ 'रजई' (वापसी योग्य) थे। लाज़मी तौर पर रुजू के बाद औरत पहले की तरह निकाह के अधिकार में रही और भविष्य में तलाक़ का विषय बनी रही। अब जबकि पति ने कुछ सालों बाद दो और तलाक़ दिए, तो एक तो निरस्त हो गया क्योंकि वह शरीयत की सीमा से बाहर था, और एक उन पहली दो के साथ मिलकर तीन 'मुग़ल्लज़ह' (अटल) तलाक़ हो गए, जिनसे औरत हमेशा के लिए हराम (वर्जित) तो नहीं हो सकती, हाँ, बिना 'हलाला' के अब वह इस व्यक्ति के निकाह में आने के योग्य नहीं रही। यह वह है जो मुझ पर प्रकट हुआ और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास है। (यह वह है जो मुझे मालूम हुआ, हक़ तो मेरे रब के यहाँ है। त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[1] रद्दुल मुहतार, बाबुल यमीन फ़िद-दुख़ूल वल-ख़ुरूज आदि, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/84.

पृष्ठ 153 का 688

یہ حکم اس لفظ میں ہے جہاں الصلوٰۃ معرف باللام ہے جس میں کلام ہوگا کہ عرفاً تارک الصلوٰۃ کسے کہتے ہیں اور ہمارا مسئلہ دائرہ تو بحکم تحقیق مذکور ان ترکت صلوٰۃ (اگر تو نماز چھوڑے۔ ت) بلالام کے مثل ہے یعنی اگر تو ایک نماز چھوڑے تو طلاق ہے، یہاں قضا کرنے سے وقوع طلاق میں کیا شک ہو سکتا ہے صاف بتادیا کہ اس کی مراد وہی صلاۃ خاصہ ملتزمہ تھی اس پر دلیل واضح اس کا وقت صبح رجعت کرنا ہے، اگر وہ معنی مراد ہوتے جو فریق اول نے زعم کئے تو پیش از وقوع رجعت کے کیا معنی تھے اور امثال مقام میں نیت شوہر اگر چہ دلالت حال کے خلاف بھی ہو وہی معتبر رہتی ہے۔ امام محقق علی الاطلاق وغیرہ علماء کا ارشاد گزرا کہ : ھذا اذا لم یکن لہ نیۃ فأن نوی شیئاً عمل بہ - یہ جب ہے کہ اس نے نیت نہ کی ہواگر اس نے کوئی نیت کی ہو تو اس پر عمل ہوگا۔ (ت)

تو جہاں دلالت حال و نیت دونوں متوافق ہیں نہ اس دلالت کو مانئے نہ شوہر کی سنئے اور اپنی طرف سے ایک معنی تراش کر اس پر عمل کیجئے کس قدر فقہ سے بعید بلکہ قابلیت التفات سے دور ہے، اور اوپر واضح ہو چکا کہ یہ دونوں طلاقیں رجعی تھیں، لاجرم عورت بعد رجعت بدستور ملک نکاح میں باقی اور آئندہ طلاق کی محل رہی، اب کہ شوہر نے چند سال بعد دو طلاقیں اور دیں ایک تو لغو ہوگئی کہ حد شرع سے متجاوز تھی اور ایک ان پہلی دو کے ساتھ مل کر تین طلاقیں مغلظہ ہوگئیں جن سے عورت حرام ابدی تو نہیں ہوسکتی ہاں بے حلالہ اب اس شخص کے نکاح میں آنے کے قابل نہ رہی، ہذا ماظہر لی والعلم بالحق عند ربی (یہ وہ ہے جو مجھے معلوم ہوا، حق تو میرے رب کے ہاں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

[1] ردالمحتار باب الیمین فی الدخول والخروج الخ داراحیاء التراث العربی بیروت ۸۴/۲

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiyya

Treatise Akdal Tahqiq bi Bab al-Taliq (An Elegant Investigation Regarding the Chapter of Conditional Statements) 1322 AH

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Problem 10: From Bengal, village Noakhali, post office Begumganj, sent by Abdul Majeed Sahib from Rampur, 6 Muharram al-Haram 1322 AH. To the respected presence, abode of grace, collection of virtues, source of benefits, discoverer of Sharia intricacies, well-versed in rational and traditional truths, reviver of the Prophetic Sunnah, promoter of the Prophetic Hadiths, author of elegant investigations, the essence of superior happiness, namely Maulana Al-Maulvi Shah Ahmad Raza Khan Sahib, may his blessings endure. After offering profound salutations and limitless respects, the matter presented is: The fatwa regarding divorce conditioned upon prayer that your Excellency wrote and sent, this humble servant sent it throughout the country. All scholars, both supporters and opponents, saw it and expressed great joy. In fact, all scholars agreed and, based on the aforementioned fatwa, separated the husband Ahmed from his thrice-divorced (Mughallazah) wife. A long time passed. However, Maulvi Wajihullah, who recently returned home after completing studies in Deoband, said to the husband Ahmed: "Your wife has not become a thrice-divorced woman. If you follow our opinion, we will reject the fatwa of India." Consequently, Ahmed Ali, for his own benefit and due to [his] instruction, denied his previous statement, meaning that which was previously general...

Page 155 of 688

जिल्द तेरहवीं 13 फ़तावा रज़विया

रिसाला आकदुल तहक़ीक़ बि बाबुल तालीक़ (बाब-ए-तालीक़ के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़-ए-अनीक़) 1322 हिजरी

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मसाला 10: बंगाल के मौज़ा नोआखाली, डाकखाना बेगमगंज से मुर्सला (प्रेषित) अब्दुल मजीद साहब अज़ रामपुर, 6 मुहर्रमुल हराम 1322 हिजरी। बगिरामी ख़िदमत, फ़ैज़-दरजात, मज्म-उल-फ़ज़ाइल, मंबा-उल-फ़वाज़िल, काशिफ़-ए-दक़ाइक़-ए-शरईया, वाक़िफ़-ए-हक़ाइक़-ए-अक़लीया-नक़लीया, मुही-उस-सुन्नत-ए-नबविया, मुराव्विज-उल-अहादीस-अल-मुस्तफ़विया, साहब-उल-तहक़ीक़ात-अर-राइक़ा, ज़ुब्दतुल सआदत-अल-फ़ाइक़ा, यानी मौलाना अल-मौलवी शाह अहमद रज़ा खाँ साहब, दाम-अफ़ज़ालुहुम। अदब और सलाम के बाद अर्ज़ है कि: हुज़ूर ने जो नमाज़ से जुड़ी तलाक़ (तलाक़-ए-मुअल्लक) के बारे में फ़तवा लिखकर भेजा था, इस ख़ादिम ने उसे पूरे मुल्क में भेज दिया। इसे देखकर सभी सहमत और असहमत उलमा ने बहुत खुशी ज़ाहिर की। बल्कि सभी आलिम इस बात पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हो गए और उस फ़तवे के आधार पर शौहर अहमद को उसकी मुग़लज़ा (तीन तलाक़ शुदा) बीवी से अलग कर दिया गया। इस बात को बहुत दिन गुज़र गए। लेकिन मौलवी वजीहुल्लाह, जो हाल ही में देवबंद से तालीम मुकम्मल करके घर आए हैं, उन्होंने शौहर अहमद से कहा कि तुम्हारी बीवी मुग़लज़ा मुतल्लक़ा (तीन तलाक़ वाली) नहीं हुई है। अगर तुम हमारी राय पर चलो, तो हम हिंदुस्तान के फ़तवे को रद्द कर देंगे। लिहाज़ा, अहमद अली ने भी अपने फ़ायदे और [अपनी] तालीम की वजह से अपनी पिछली बात से इंकार कर दिया, यानी जो पहले आम बात थी...

पृष्ठ 155 ऑफ़ 688

جلد سیزدہم ۱۳ فتاویٰ رضویہ

رسالہ آکدالتحقیق بباب التعلیق (باب تعلیق کے متعلق تحقیق انیق) ۱۳۲۲ھ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۱۰: از بنگالہ موضع نواکھالی ڈاک خانہ بیگم گنج مرسلہ عبد المجید صاحب از رامپور ۶ محرم الحرام ۱۳۲۲ھ بگرامی خدمت، فیضدر جت، مجمع الفضائل، منبع الفواضل، کاشف دقائق شرعیہ، واقف حقائق عقلیہ نقلیہ، محی السنۃ النبویہ، مروج الاحادیث المصطفویہ، صاحب التحقیقات الرائقہ، زبدۃ السعادت الفائقہ، اعنی مولانا المولوی شاہ احمد رضا خاں صاحب دام افضالہم۔ بعد ادائے تسلیمات فرواداں و کورنشات بیکراں معرض آں خدمت یہ ہے جناب حضور نے جو فتوائے طلاق معلق بالصلوٰۃ کی تحریر فرما کر ارسال فرمائے تھے بندہ گم گشتہ نے ملک کو بھیج دیا اور سب علمائے موافقین و مخالفین نے دیکھ کر بہت خرسندیاں حاصل کیں بلکہ سب علماء متفق ہو کر بسبب فرمان فتوائے موصوف کے زوج احمد سے زوجہ مغلظہ کو علیحدہ کیا تھا اور اس پر بہت دن گزر گئے مگر مولوی وجیہ اللہ جو دیوبند سے عنقریب تحصیل کرکے گھر کو گئے اس نے زوج احمد کو کہا کہ تمہاری زوجہ مطلقہ مغلظہ نہیں ہوئی تم ہماری رائے پر چلو تو ہم فتوائے ہند کو مردود کر دیں گے، چنانچہ احمد علی بھی بوجہ نفع اپنے کے اور بوجہ تعلیم اپنے قول سے منکر ہو گئے یعنی جو پہلے تعمیم

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

...and those who deny it and refer to specialization, now after so long, they manifest their intention that our intention is for eternity. Maulvi Wajeeh Allah had also written a fatwa at that time according to that intention; I am sending the same fatwa to your high presence. After writing the fatwa, making Ahmad Ali the plaintiff, they filed a case in court. Subsequently, both the fatwa and your honored writing were presented in court. The judge summoned Maulvi Wajeeh Allah and the scholars of this side and explained the meaning of both fatwas to the judge. However, Maulvi Wajeeh Allah made inappropriate statements about your fatwa and religion's arguments, but they held no weight with the judge. The judge himself said, "I know Maulana Shah Ahmed Raza Khan Sahib very well, and I am well aware of his situation. I also know the religion-less scholars of Deoband as I am a traveler of India." Maulvi Wajeeh Allah said, "Sir, giving a divorce for the purpose of scolding, reprimanding, or advising does not result in a divorce, and the circumstantial evidence and immediate clarification have no legal weight. Even if it is accepted that severe divorces occurred, due to 'raj'at' (revocation), the initial divorce became void. After the existence of a divorce given without condition, 'raj'at' is permissible." He also stated reasons, which created doubt in the judge's mind. The judge told the scholars of this side, "You people should get a rebuttal to Maulvi Wajeeh Allah from the aforementioned Maulana within twenty days, otherwise, how can this doubt be removed?" And the judge postponed the case for twenty days. Now, with folded hands, I request you out of kindness and compassion to please write an answer within fifteen or sixteen days and free us from the ocean of sorrows; otherwise, it will be a matter of disgrace for all scholars and indeed for the country of India. What more can I say? Requester, servant Abdul Majeed (may Allah forgive him).

Copy of the fatwa of Maulvi Wajeeh Allah Deobandi, resident of Bengal:

Question (in Persian): What do the scholars of religion and keepers of the firm law say about this? In a gathering in the presence of scholars and others, Ahmad Ali admitted with his own tongue that I always urged and disciplined my wife for performing prayers and also taught her some rules of prayer. But after a few days at the time of Maghrib, I told my wife to pray, the said woman...

Question (Urdu translation): What do the scholars of religion and keepers of the firm law say regarding the fact that in the presence of a gathering of scholars and others, Ahmad Ali admitted with his own tongue that I have always been urging and

reprimanding my wife and teaching her the method of praying? But a few days later, at Maghrib time, when I told my wife to pray, she refused, saying that she didn't have the time.

फ़तावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

...और उसके मुनकिर और तख़्सीस के राज़े, अब इतने समय बाद अपनी नीयत ज़ाहिर करते हैं कि हमारी नीयत हमेशा के लिए है। मौलवी वजीह अल्लाह ने उस वक़्त नीयत के मुताबिक़ एक फ़तवा भी लिखा था; वही फ़तवा आपकी महान सेवा में भेज रहा हूँ। फ़तवा लिखकर अहमद अली को वादी बनाकर अदालत में मुक़दमा दायर किया गया। इसके बाद, वह फ़तवा और आपकी सम्मानित तहरीर दोनों अदालत में पेश की गईं। न्यायाधीश ने मौलवी वजीह अल्लाह और इस पक्ष के विद्वानों को बुलाया और न्यायाधीश को दोनों फ़तवों का अर्थ समझाया गया। लेकिन मौलवी वजीह अल्लाह ने आपके फ़तवे और धर्म के तर्कवितर्क पर अनुचित बयान दिए, लेकिन न्यायाधीश के नज़दीक उनका कोई महत्व नहीं रहा। न्यायाधीश ने स्वयं कहा, "मैं मौलाना शाह अहमद रज़ा खान साहब को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ और उनकी स्थिति से भली-भांति परिचित हूँ। मैं देवबंद के धर्मविहीन विद्वानों को भी जानता हूँ क्योंकि मैं भारत का भ्रमण करने वाला हूँ।" मौलवी वजीह अल्लाह ने कहा, "श्रीमान, डाँटने-फटकारने या सलाह देने के उद्देश्य से तलाक़ देने से तलाक़ नहीं होता है, और परिस्थितिगत साक्ष्य और तत्काल स्पष्टीकरण का शरीयत में कोई महत्व नहीं है। यदि यह मान भी लिया जाए कि गंभीर तलाक़ हुए, तो 'रजअत' (वापसी) के कारण प्रारंभिक तलाक़ शून्य हो गया। बिना शर्त दिए गए तलाक़ के अस्तित्व के बाद, 'रजअत' जायज़ है।" उन्होंने इसके लिए तर्क भी दिए, जिससे न्यायाधीश के मन में शंका उत्पन्न हुई। न्यायाधीश ने इस पक्ष के विद्वानों से कहा, "आप लोग बीस दिनों के भीतर उक्त मौलाना से मौलवी वजीह अल्लाह का प्रतिवाद मँगवाएँ अन्यथा यह शंका कैसे दूर हो सकती है?" और न्यायाधीश ने मुक़दमे को बीस दिनों के लिए स्थगित कर दिया। अब, हाथ जोड़कर आपसे प्रार्थना है कि कृपया दया और करुणा भाव से पंद्रह या सोलह दिनों के भीतर उत्तर लिखकर हमें दुखों के सागर से मुक्त करें; अन्यथा यह सभी विद्वानों के लिए और वास्तव में भारत देश के लिए भी अपमान की बात होगी। इससे अधिक क्या कहूँ? प्रार्थी, सेवक अब्दुल मजीद (अल्लाह उसे क्षमा करे)।

मौलवी वजीह अल्लाह देवबंदी, निवासी बंगाल के फ़तवे की प्रति:

प्रश्न (फ़ारसी): दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के राज़दार इस बारे में क्या कहते हैं कि विद्वानों और अन्य लोगों की उपस्थिति में अहमद अली ने अपनी ज़बान से स्वीकार किया कि मैं हमेशा अपनी पत्नी को नमाज़ पढ़ने के लिए ज़ोर देता और डाँटता रहा और नमाज़ के कुछ नियम भी सिखाए।

लेकिन कुछ दिनों बाद मग़रिब के समय मैंने अपनी पत्नी से कहा कि नमाज़ पढ़ो, तो उक्त महिला ने...

प्रश्न (उर्दू अनुवाद): दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के राज़दार क्या कहते हैं कि विद्वानों और अन्य लोगों की सभा की उपस्थिति में अहमद अली ने अपनी ज़बान से इक़रार किया कि मैं हमेशा अपनी पत्नी को ताकीद और तंबीह (सचेत) करता रहा हूँ और नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा सिखाता रहा हूँ? लेकिन कुछ दिनों बाद मग़रिब के वक़्त जब मैंने पत्नी से कहा कि नमाज़ पढ़ो, तो पत्नी ने इनकार करते हुए कहा कि मुझे फ़ुर्सत नहीं है,

کے منکر اور تخصیص کے راجع، اب بعد چندیں مدت اپنی نیت ظاہر کرتے ہیں کہ نیت ہمارا علی الابد کے لئے ہے اور مولوی وجیہ اللہ نے اس وقت کے نیت کے مطابق ایک فتویٰ بھی لکھا وہی فتویٰ آپ کی خدمت عالی میں ارسال کرتا ہوں اور فتویٰ تحریر کر کے احمد علی کو مدعی بنا کر کچہری میں مقدمہ دائر کئے ہیں بعدہ اس کے فتویٰ اور آنحضور کی تحریر مبارک دونوں کچہری میں پیش ہوا اور مولوی وجیہ اللہ کو اور اس طرف کے علماؤں کو حاکم نے طلب کیا اور دونوں فتویٰ کے مطلب حاکم کو سمجھا دئے مگر مولوی وجیہ اللہ نے حضور کے فتویٰ پر اور مذہب کے قیل و قال ناشائستہ بیان کیا مگر حاکم کے نزدیک کچھ اعتبار نہیں ہوا اور حاکم نے خود کہا کہ جناب مولینا شاہ احمد رضا خاں صاحب کو میں خوب جانتا ہوں اور ان کی حالت مجھے خوب معلوم ہے اور دیوبند کے علمائے لامذہب کو بھی معلوم ہے کہ میں ہند کی سیر کرنے والا ہوں، مولوی وجیہ اللہ نے کہا کہ صاحب زجرا و تنبیہا بغرض نصیحت طلاق دینے سے طلاق نہیں ہوتی، اور دلالت حال و یبین الفور کا شرعاً کچھ اعتبار نہیں ہے، اگر تسلیم بھی کیا جائے کہ طلاقیں مغلظ واقع ہو گئیں تاہم بوجہ رجعت کے اولین طلاق باطل بعد وجود جو طلاق بلا شرط دیا ہے اس کے لئے رجعت جائز ہے، اور دلیل بھی بیان کیا اس وجہ سے حاکم کے دل میں خدشہ پیدا ہوا حاکم نے اس طرف کے علماؤں کو فرمایا کہ آپ لوگ مولونا موصوف کے بیس دن کے اندر مولوی وجیہ اللہ کا رد جواب منگوائیے ورنہ یہ شبہ کس طرح دور ہو سکتا ہے، اور حاکم نے بیس روز مقدمہ کا حکم مؤخر کر دئے، اکنوں دست بستہ ہو کر عرض کرتا ہوں کہ آپ از روئے مہربانی و شفقت گزاری کے پندرہ یا سولہ روز کے اندر جواب تحریر فرما دیجئے اور ہم لوگوں کو بحر غموم سے

خلاص کر لیجئے ورنہ جمیع علماء کی بلکہ ملک ہند کی بھی بدنامی کی بات ہے، زیادہ کیا عرض کروں۔ عرض گزار خادم عبد المجید عفا اللہ عنہ

نقل فتویٰ مولوی وجیہ اللہ دیوبندی باشندہ بنگالہ

سوال: چہ می فرمایند علمائے دین وراز دارانِ شرع متین کہ در حاضر ان مجلس بحضور علماء وغیرہم کہ احمد علی بزبان خود اقرار نمود کہ من دائماً زوجہ ام برائے نماز خوانی تاکید وز جرمی کردہ بودم وبرائے نماز خوانی چند قواعد نماز تعلیم ہم کردم لیکن بعد روزے چند بوقت مغرب مرزوجہ ام را گفتم کہ تو نماز بخواں زن مذکورہ

سوال: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ورازداران شرع متین کہ حاضرین مجلس علماء و غیرہم کی موجودگی میں احمد علی نے اپنی زبان سے اقرار کیا کہ میں ہمیشہ اپنی بیوی کو تاکید اور تنبیہ کرتا رہا ہوں اور نماز پڑھنے کا طریقہ سکھاتا رہا ہوں لیکن چند روز بعد مغرب کے وقت میں نے بیوی سے کہا کہ نماز پڑھو تو بیوی نے انکار کرتے ہوئے کہا کہ مجھے فرصت نہیں ہے،

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 157

(Right Column - Urdu Translation of the Case): At this, I told her, "If you do not pray, I give you two conditional divorces." This was said in the Bengali language as (dilam), which means (I gave) in Urdu. After this, the wife did not perform the Isha prayer, nor did she make it up (qaza), and then she performed the Fajr prayer. After Fajr, he (the husband) performed ruju' (reconciliation). A year later, the husband gave two more unconditional divorces to this wife. The aforementioned Ahmad Ali, while giving a statement in the assembly of scholars, denied any intention of generalization (tamim) or specification (takhsis) regarding making the divorce conditional on not praying, although the context for specification seemed more likely. However, six months later, after being persuaded by opponents and considering his own benefit, he said that his intention was for permanent and eternal abandonment of prayer (meaning, not a specific prayer but the act of not praying throughout life). Is this confession of his correct now or what is it? Now some say he said this as a warning and rebuke to make his wife habitual of prayer, and this is not a divorce but a promise of divorce, whereas a promise of divorce does not result in divorce. Others say the husband's command to the wife to "Pray" is in the imperative form, the implication of which is clear, but this is not proven as an immediate oath (yameen-e-faur), as immediacy is not considered. And even if it were accepted...

(Left Column - Original Persian/Arabic Text): He denied and said: I had no opportunity, therefore I said if you do not pray, I gave you two conditional divorces. In Bengali (dilam) and in Urdu (diya main) is used. Thereafter, the mentioned woman did not pray Isha nor perform its qaza and prayed Fajr. After Fajr, he performed ruju'. After a year, he gave two more unconditional divorces to that wife. Ahmad Ali, in the mentioned assembly of scholars etc., denied both generalization and specification intentions at the time of the statement, without a context for the likely specification. But after six months, due to coaching by opponents and for his own benefit, he says: My intention was for permanent and eternal abandonment. Now, from the perspective of the noble Shariah, is his confession correct or what? And he says: As a rebuke and warning for habituating her to prayer, divorce does not occur, rather its meaning is a promise of divorce, and a promise of divorce is not divorce. He says: The husband's statement "Pray" (imperative form) has a clear indication of the situation, but immediacy is not established, as immediacy has no weight. On the assumption that the first two divorces were voided by ruju' as is well known. Now in any case ruju' is correct for the husband Ahmad Ali. Is the ruling in reality this, or did Ahmad Ali's

wife become irrevocably divorced with three divorces (mughallazah)? Explain in detail. In this case, where the husband Ahmad Ali confesses with his own tongue that one day after performing Maghrib prayer, to his wife because of her abandoning prayer...

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 157

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद): इस पर मैंने उसे कहा 'अगर तू नमाज़ न पढ़े तो तुझ पर दो तलाक़ें मुअल्लक (शर्त के साथ) तौर पर देता हूँ।' यह बात बंगाली ज़बान में 'दिलाम' जिसका उर्दू में अर्थ 'मैंने दिया' है, कहा। इसके बाद पत्नी ने इशा की नमाज़ अदा नहीं की और न ही क़ज़ा की, और फिर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी। फ़ज्र के बाद उसने रुजू (सुलह) कर लिया। और उसके एक साल बाद पति ने उस पत्नी को बिना किसी शर्त के फिर से दो तलाक़ दे दिए। उक्त अहमद अली ने विद्वानों की सभा में बयान देते हुए पत्नी के नमाज़ न पढ़ने पर तलाक़ को मुअल्लक करने में सामान्यीकरण (तामीम) या विशिष्टीकरण (तख़्सीस) की नीयत से इनकार किया, बल्कि विशिष्टीकरण का संकेत प्रबल लग रहा था। लेकिन छह महीने बाद हमारे विरोधियों के समझाने पर और अपने फ़ायदे को ध्यान में रखते हुए उसने कहा कि मैंने तो स्थायी और शाश्वत रूप से कोई नमाज़ न पढ़ने की नीयत से कहा था (यानी कोई विशेष नमाज़ नहीं बल्कि जीवन भर नमाज़ न पढ़ने की नीयत से तलाक़ देने की बात की थी)। क्या अब उसका यह इक़रार (स्वीकृति) सही है या क्या है? अब कोई कहता है कि उसने पत्नी को नमाज़ का आदी बनाने के लिए यह बात चेतावनी और डांट के रूप में कही थी और यह तलाक़ नहीं है बल्कि तलाक़ का वादा था, जबकि तलाक़ का वादा तलाक़ नहीं होता। और कोई कहता है कि पति का पत्नी से 'नमाज़ पढ़' कहना आज्ञासूचक (अम्र) है जिसकी स्थिति स्पष्ट है, लेकिन यह 'यमीन-ए-फ़ौर' (तत्काल शपथ) साबित नहीं है बल्कि तत्काल का कोई महत्व नहीं है, और अगर मान भी लिया जाए...

(बायां कॉलम - मूल फारसी/अरबी पाठ): उसने इनकार किया और कहा: मुझे अवसर नहीं मिला, इसलिए मैंने कहा कि यदि तुम नमाज़ नहीं पढ़ोगी, तो मैंने तुम्हें दो मुअल्लक तलाक़ दिए। बंगाली में (दिलाम) और उर्दू में (दिया मैंने) प्रयोग किया जाता है। इसके बाद उक्त स्त्री ने न इशा पढ़ी और न उसकी क़ज़ा की और फ़ज्र पढ़ी। फ़ज्र के बाद उसने रुजू किया। एक साल बाद उसने उसी पत्नी को दो और बिना शर्त तलाक़ दिए। अहमद अली ने विद्वानों की सभा आदि में बयान के समय सामान्यीकरण और विशिष्टीकरण दोनों नीयतों से इनकार किया, हालाँकि बिना किसी संदर्भ के विशिष्टीकरण ही प्रबल लग रहा था। लेकिन छह महीने बाद विरोधियों की सीख और अपने लाभ के लिए वह कहता है: मेरी नीयत स्थायी और शाश्वत त्याग के लिए थी। अब शरीयत के अनुसार क्या उसका इक़रार सही है? और वह कहता है: नमाज़ की आदत डालने के लिए डांट-फटकार के तौर पर तलाक़ नहीं होता, बल्कि उसका अर्थ तलाक़ का वादा होता है, और तलाक़ का वादा तलाक़ नहीं

है। वह कहता है: पति का कथन 'नमाज़ पढ़' (आज्ञासूचक) स्थिति का स्पष्ट संकेत है, लेकिन तात्कालिकता सिद्ध नहीं है। इस धारणा पर कि पहले दो तलाक़ रुजू के कारण निरस्त हो गए जैसा कि विदित है। अब किसी भी स्थिति में अहमद अली के लिए रुजू सही है। क्या वास्तव में यही आदेश है, या अहमद अली की पत्नी तीन तलाक़ों (मुग़ल्लज़ा) के साथ तलाक़शुदा हो गई है? विस्तार से बताएं। इस मामले में, जहाँ पति अहमद अली अपनी ज़बान से इक़रार करता है कि एक दिन मग़रिब की नमाज़ के बाद, अपनी पत्नी को नमाज़ छोड़ने के कारण...

(دایاں کالم): اس پر میں نے اسے کہا "اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھ پر دو طلاقیں معلق طور پر دیتا ہوں" یہ بات بنگالی زبان میں (دیلام) جس کا اردو میں معنی (میں نے دیا) ہے، کہا، اس کے بعد بیوی نے عشاء کی نماز ادا نہ کی اور نہ قضا کی اور پھر فجر کی نماز پڑھی فجر کے بعد اس نے رجوع کرلیا، اور اس کے ایک سال بعد خاوند نے اس بیوی کو دو طلاقیں بغیر شرط پھر دے دیں، احمد علی مذکور نے علماء کی مجلس مذکورہ میں بیان دیتے ہوئے بیوی کو نہ نماز پڑھنے پر طلاق کو معلق کرنے میں تعمیم و تخصیص کی نیت کا انکار کیا بلکہ تخصیص کا قرینہ راجح معلوم تھا، لیکن اس کے چھ ماہ بعد ہمارے مخالفوں کے سمجھانے سے اور اپنے فائدے کو ملحوظ رکھتے ہوئے اس نے کہا کہ میں نے تو دائمی وابدی کوئی نماز نہ پڑھنے کی نیت سے کہا تھا (یعنی کوئی خاص نماز نہیں بلکہ زندگی میں نماز نہ پڑھنے کی نیت سے طلاق دینے کی بات تھی) کیا اب اس کا یہ اقرار درست ہے یا کیا ہے، اب کوئی کہتا ہے کہ اس نے بیوی کو نماز کا عادی بنانے کے لئے یہ بات بطور تنبیہ اور ڈانٹ کی تھی اور یہ طلاق نہیں ہے بلکہ طلاق کا وعدہ تھا جبکہ طلاق کا وعدہ طلاق نہیں ہوتی، اور کوئی کہتا ہے کہ خاوند کا بیوی کو کہنا کہ "نماز پڑھ" صیغہ امر ہے جس کی حالت پر دلالت واضح ہے لیکن یہ یمین فور ثابت نہیں ہے بلکہ فور کا کوئی اعتبار نہیں ہے، اور اگر تسلیم کر بھی لیا جائے

(بایاں کالم): ابا وانکار کرد و گفت کہ مرا فرصتے نیست ازیں وجہ گفتم کہ اگر تو نماز نگزاری بر تو دو طلاق معلق دادم کہ بزبان بنگالہ (دیلام) و در لغت اردو (دیامیں) استعمال کنند بعدہ زن مذکورہ نماز عشا نخواند وقضا ہم نہ گزارد و نماز فجر بخواند بعد فجر رجعت ہم کرد و بعد سالے بلاشرط دو طلاق آں زوجہ مذکورہ را ایضاً ہم داد و احمد علی بمحفل مذکور علماء وغیرہ ہم نیت

بوقت بیان تعمیم و تخصیص ہر دو منکر بود بلا قرینہ برائے تخصیص راجح اما بعد شش ماہ بجہت تعلیم مخالفین وبوجہ نفع خود بگوید کہ نیتم برائے دائم وعلی الابد ست اکنوں از روئے شرع شریف اقرار ش صحیح بود یا چہ و بگوید کہ زجراً و تبیباً برائے تعود للصلوۃ طلاق واقع نمی شود بلکہ معنی آں وعدہ طلاق شود و وعدہ طلاق طلاق واقع نمی شود بگوید کہ قول زوج بخوان صیغہ امر بر دلالت حال راجح لیکن فور ثابت نمی شود بلکہ فور را ہیچ اعتبار نیست بر تقدیر تسلیم کہ طلاقین اولین بوجہ رجعت باطل ست کما ہو المعروف اکنوں بہر حال برائے زوج احمد علی رجعت صحیح است آیا حکمش فی الواقع ہمیں ست یا زوجہ احمد علی بہ سہ طلاق شدہ مغلظہ شد بینو بالبنتفصیل، اندریں صورت کہ زوج احمد علی بزبان خود اقرار می کند کہ روزے بعد ادائے نماز مغرب مرزوجہ خود را بسبب تارک الصلوۃ

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

(Left Column - Persian/Urdu mixed query): Scolding and reprimanding her, in a balanced temperament and firm mood, by way of warning and admonition, he said, "You must pray; if you do not pray, you have two divorces." And that woman did not know the intention for prayer and the Surah well. In short, the woman did not pray Isha. At the time of Fajr, she performed ablution to perform the Fajr prayer. Her husband taught her the intention and Surah, and she prayed. After two or three days, he called the neighborhood mediator/cleric and performed recourse (rajoo). In such a case, does his wife remain lawful for him or what? And after a few months, he gave two unconditional divorces to that same mentioned wife. If it is accepted that the first two divorces occurred, then based on that, did they become null and void due to the first recourse, or what? And now that he has performed recourse from the mentioned wife, is seeking enjoyment (marital relations) permissible or not? Tell us.

Answer: Of course, his wife remains lawful for him because in this case, absolutely no divorce occurred. There is no need for renewal of marriage nor for recourse. And as a matter of caution, another statement is...

(Right Column - Urdu translation and elaboration of the query): ...that the first two divorces were revocable (raj'i), so after he took her back (rajoo), both those divorces ended and became void as is commonly known. Therefore, is it correct for the husband, Ahmed Ali, to take her back again after a second instance of two divorces? Are these statements correct, or does Ahmed Ali's wife now face three divorces (Talaq-e-Mughallaza) after the first two and then these two? Please explain in detail. The summary of the question is that Ahmed Ali himself admitted that one day after performing Maghrib prayer, he scolded and reprimanded his wife for neglecting prayers. Then, in a firm but balanced manner, he said as a warning, "If you do not pray, you are divorced twice." At that time, the wife did not know the intention for prayer or any Surah well. In short, the wife did not pray Isha either. For the Fajr prayer, she performed ablution (wudu) to pray. When she stood for prayer, the husband taught her the intention and a Surah, and she prayed. Two or three days later, Ahmed Ali called a local cleric and made a recourse (rajoo) to his wife. In this situation, did the wife become lawful for Ahmed Ali upon recourse or not? Then, a few months later, he gave her two more unconditional divorces. If it is accepted that the first two divorces occurred, then upon recourse from them, would those first divorces become null and void or not? And after the second set of divorces, is his recourse to his wife and having marital relations permissible or not? Please explain.

Answer: Certainly, Ahmed Ali's wife remained lawful for him because, in this scenario, absolutely no divorce occurred at all. There is no need for a renewal of the marriage contract (tajdid-e-nikah) nor for a formal recourse (rajoo). However, if one wishes to exercise caution, that is another matter. Ahmed Ali's...

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

(बायां कॉलम - फ़ारसी/उर्दू मिश्रित प्रश्न): डांटते और फटकारते हुए, संतुलित स्वभाव और दृढ़ता के साथ, चेतावनी और उपदेश के तौर पर उसने कहा कि "तू नमाज़ पढ़; अगर तू नमाज़ नहीं पढ़ेगी तो तुझे दो तलाक़ हैं।" और वह महिला नमाज़ की नियत और सूरह अच्छी तरह नहीं जानती थी। संक्षेप में, महिला ने ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी। फ़ज्र के समय, उसने फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के लिए वज़ू किया। उसके पति ने उसे नियत और सूरह सिखाई और उसने नमाज़ पढ़ी। दो-तीन दिन बाद, उसने मोहल्ले के मध्यस्थ/मौलवी को बुलाया और रुजू (वापसी) किया। ऐसे मामले में, क्या उसकी पत्नी उसके लिए हलाल रहती है या क्या? और कुछ महीनों बाद, उसने उसी उल्लेखित पत्नी को दो बिना शर्त तलाक़ दिए। यदि यह स्वीकार किया जाता है कि पहली दो तलाक़ें हुई थीं, तो उस आधार पर, क्या वे पहले रुजू के कारण शून्य और बातिल हो गईं, या क्या? और अब जब उसने उल्लेखित पत्नी से रुजू कर लिया है, तो वैवाहिक आनंद लेना (सहवास) जायज़ है या नहीं? हमें बताएं।

उत्तर: बेशक, उसकी पत्नी उसके लिए हलाल रहती है क्योंकि इस मामले में बिल्कुल भी कोई तलाक़ नहीं हुई। न तो निकाह के नवीनीकरण की आवश्यकता है और न ही रुजू की। और एहतियात के तौर पर एक और कथन है...

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद और प्रश्न का विस्तार): ...कि पहली दो तलाक़ें रजई (प्रतिसंहरणीय) थीं, इसलिए उसके रुजू कर लेने के बाद वे दोनों तलाक़ें खत्म और बातिल (अमान्य) हो गईं जैसा कि प्रसिद्ध है। अतः क्या अब दूसरी बार दो तलाक़ों के बाद अहमद अली पति का दोबारा रुजू करना सही है? क्या ये बातें सही हैं या पहली दोनों तलाक़ों के बाद दो और तलाक़ों से अहमद अली की पत्नी को तीन तलाक़ यानी मुग़ल्लज़ा तलाक़ हो गई है? विस्तार से समझाएं। इस सवाल का सारांश यह है कि अहमद अली पति ने स्वयं स्वीकार किया कि एक दिन मग़रिब की नमाज़ पढ़ने के बाद उसने अपनी पत्नी को नमाज़ छोड़ने पर डांटा और सख्ती से समझाया। फिर संतुलित और दृढ़ स्वभाव से डांट के तौर पर कहा, "नमाज़ अगर तू न पढ़े तो तुझे दो तलाक़ हैं।" जबकि वह पत्नी नमाज़ की नियत और कोई सूरत अच्छी तरह नहीं जानती थी। संक्षेप में, पत्नी ने ईशा की नमाज़ भी नहीं पढ़ी। फ़ज्र की नमाज़ के लिए उसने वज़ू किया ताकि नमाज़ पढ़े। नमाज़ के लिए खड़ी हुई तो पति ने उसे नमाज़ की नियत और सूरह सिखाई और उसने नमाज़ पढ़ी। इसके दो-तीन दिन बाद मोहल्ले के मौलवी साहब को बुलाकर अहमद अली ने पत्नी से रुजू किया। तो इस स्थिति में रुजू करने पर अहमद अली के लिए उसकी पत्नी हलाल हुई या नहीं? फिर उसके कुछ महीनों बाद उसने उसे दो

और बिना शर्त तलाक़ दिए। क्या यह स्वीकार करने पर कि पहली दो तलाक़ें हो गई थीं, उनसे रुजू करने पर क्या वे पहली तलाक़ें निष्प्रभावी और शून्य हो जाएंगी या नहीं? और दूसरी तलाक़ों के बाद उसका पत्नी से रुजू करना और सहवास करना जायज़ है या नहीं, स्पष्ट करें।

उत्तर: निश्चित रूप से, अहमद अली की पत्नी उस पर हलाल रही क्योंकि इस स्थिति में बिल्कुल भी कोई तलाक़ नहीं हुई और न ही निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) और न ही रुजू की कोई ज़रूरत है। हाँ, एहतियात बरतें तो वह अलग बात है। अहमद अली का...

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

(بایاں کالم): زجر وتوبیخ کر دو کشاں کشاں آنکہ باعتدال طبع واستقلال مزاج بطریق زجر وتنبیہ گفت کہ تو نماز بخوان اگر نماز نخوانی ترا دو طلاق وآں زن نیت نماز وسورہ بخوبی ندانستی غرض آنکہ زن عشاء نخواند بوقت فجر وضو کردہ برائے گزاردن نماز فجر استاد شویش نیت وسورۃ تعلیم کردو وے نماز خواند بعد دو سہ روز میانجی محلہ راطلبیدہ رجعت نمود و در صورت کذائیہ زوجہ اش برائے وے حلال ماند یا چہ و بعد چند ماہ دو طلاق بلا شرط ایضا برآں زوجہ مذکورہ اش دادہ است ، آیا کہ اگر تسلیم کردہ شود کہ اول طلاقین واقع شدند ، بر تقدیرش بوجہ رجعت اول طلاقین بن باطل شد یاچہ ، واکنوں رجعت کردہ از زوجہ مذکورہ استمتاع گرفتن رواست یانہ ؟ بینوا ۔

الجواب: البتہ زوجہ اش برائے وے حلال ماند چہ دریں صورت مطلق طلاق واقع نشد نہ حاجت تجدید نکاح نہ رجعت ھم واحتیاطا امرے دیگر قولہ

(دایاں کالم): کہ پہلی دو طلاقیں رجعی تھیں تو اس کے رجوع کر لینے کے بعد وہ دونوں طلاقیں ختم ، اور باطل ہو گئیں جیسا کہ مشہور ہے لہذا اب دوسری بار دو طلاقوں کے بعد اب احمد علی خاوند کا دوبارہ رجوع کرنا صحیح ہے۔ کیا یہ باتیں درست ہیں یا پہلی دونوں طلاقوں کے بعد دو طلاقوں سے احمد علی کی بیوی کو تین طلاقیں یعنی مغلظہ طلاق ہوگئی ہے، تفصیل سے بیان کیجئے ۔ خلاصہ اس سوال کا یہ ہے کہ احمد علی خاوند نے خود اقرار کیا کہ ایک روز نماز مغرب ادا کرنے کے بعد اس نے اپنی بیوی کو نماز کی تارک ہونے پر ڈانٹ اور سختی سے سمجھایا اور پھر معتدل مزاجی اور مستقل مزاجی سے ڈانٹ کے طور پر کہا نماز اگر تو نہ پڑھے تو تجھے دو

طلاق ہیں، جبکہ وہ بیوی نماز کی نیت اور کوئی سورت اچھی طرح نہیں جانتی غرضیکہ بیوی نے عشاء کی نماز بھی نہ پڑھی فجر کی نماز کے لئے اس نے وضو کیا تاکہ نماز پڑھے، نماز کے لئے کھڑی ہوئی تو خاوند نے اس کو نماز کی نیت اور سورۃ سکھائی اور اس نے نماز پڑھی ، اس سے دو تین روز بعد محلہ کے مولوی صاحب کو طلب کر کے احمد علی نے بیوی سے رجوع کیا ، تو اس صورت میں رجوع کرنے پر احمد علی کے لئے اس کی بیوی حلال ہوئی یا نہیں ، پھر اس کے چند ماہ بعد مزید دو طلاقیں بلا شرط اس کو دیں کیا یہ تسلیم کر لینے پر پہلی دو طلاقیں واقع ہوگئی تھیں تو ان سے رجوع کر لینے پر کیا وہ پہلی طلاقیں کالعدم اور باطل ہوجائیں گی یا نہیں، اور دوسری طلاقوں کے بعد اس کا بیوی سے رجوع کرنا اور ہمبستری کرنا جائز ہے یا نہیں ، بیان کیجئے ۔

الجواب : یقیناً احمد علی کی بیوی اس پر حلال رہی کیونکہ اس صورت میں مطلقاً کوئی طلاق نہ ہوئی اور نہ ہی تجدید نکاح اور نہ ہی رجعت کی کوئی ضرورت ہے، ہاں احتیاط کریں تو اور بات ہے، احمد علی کا

Fatawa Razawiyyah Volume 13, Page 13

Regarding the statement "If you do not pray, you are given two divorces" - I say regarding this: Firstly, this is not a conditional divorce (taliq-e-talaq) but rather a promise to give a divorce because there is a difference between "thou divorce" (tu talaq), "thou art divorced" (tu talaq-wali), and "divorce to thee" (tujh ko talaq). The first is an attribute of the woman and is applied to her. In the second, it is the husband's act of divorcing; therefore, the husband's act of divorcing is necessarily implicit in it when it is not linked to a condition, meaning its sense is "I have divorced you." And if it is linked to a condition, for example, "if you do this, you have divorce," then its meaning is a promise of divorce, that "I will give you a divorce," because in a conditional statement, both the condition and the consequence (jaza) are present, and the consequence is always in the future, even if implicitly so. In this context, the meaning is: "If you do not pray, I will give you two divorces," because "will give" would be the implicit verb here. Thus, it became clear that saying it like this: "If you do not pray, I will give you two divorces," then this became a promise to give divorce, not conditional divorce, whereas divorce does not occur by a promise of divorce. I did not derive this meaning myself; rather, Ahmad Ali himself says that I did not say this with the intention of giving a divorce but rather for the purpose of scolding and rebuking so that the wife becomes accustomed to prayer, and the thought of giving a divorce never even entered my heart. So it was revealed that this was only a promise to give divorce; this is exactly what is derived from Ahmad Ali's statement, and it is in accordance with the speaker's purpose, and the contextual evidence also indicates this. Secondly, I say that Ahmad Ali's statement to his wife...

Page 159 of 688

फ़तवा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

कहना "अगर तू नमाज़ न पढ़े तो तुझे दो तलाक़" - इसके बारे में मैं कहता हूँ: प्रथमतः, यह तलाक़ की शर्त (ता'लीक़) नहीं है बल्कि तलाक़ देने का वादा है क्योंकि "तू तलाक़", "तू तलाक़ वाली" और "तुझ को तलाक़", इन तीनों में फ़र्क है। पहला औरत की सिफ़त है और उसी पर लागू होता है। दूसरे में पति का तलाक़ देना है, इसलिए इसमें पति का तलाक़ देना अवश्य ही अंतर्निहित (महाज़ूफ़) है जब वह किसी शर्त से जुड़ा न हो, यानी इसका अर्थ यह है कि "मैंने तुझे तलाक़ दी है"। और अगर शर्त से जुड़ा हो, जैसे "अगर तू यह काम करे तो तुझे तलाक़ है", तो इसका अर्थ तलाक़ का वादा है कि "तुझे तलाक़ दूँगा", क्योंकि सर्तिया वाक्य में शर्त और परिणाम (जज़ा) दोनों होते हैं और परिणाम हमेशा भविष्य में होता है, चाहे वह अर्थ के तौर पर ही क्यों न हो। इस स्थान पर अर्थ यह है कि "अगर तू नमाज़ न पढ़े तो मैं तुझे दो तलाक़ दूँगा", क्योंकि "दूँगा" यहाँ अंतर्निहित क्रिया होगी। तो यह स्पष्ट हुआ कि इस तरह कहना कि "अगर तू नमाज़ न पढ़े तो तुझे दो तलाक़ दूँगा", तो यह तलाक़ देने का वादा हुआ न कि ता'लीक़-ए-तलाक़, जबकि तलाक़ के वादे से तलाक़ नहीं होती। यह अर्थ मैंने स्वयं नहीं निकाला है, बल्कि अहमद अली स्वयं कहता है कि मैंने यह बात तलाक़ देने के इरादे से नहीं कही थी बल्कि डाँट और फटकार (ज़ज्र) के लिए कही थी ताकि पत्नी नमाज़ की आदी बन जाए और तलाक़ देने का विचार मेरे दिल में आया भी नहीं था। तो स्पष्ट हुआ कि यह केवल तलाक़ देने का वादा था; यही बात अहमद अली के कथन से प्राप्त होती है, और मुतकल्लिम (बोलने वाले) के उद्देश्य के अनुरूप भी यही है, और संदर्भ भी यही संकेत देता है। द्वितीयत; मैं कहता हूँ कि अहमद अली का अपनी पत्नी को यह...

पेज 159 ऑफ़ 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

اگر نماز نخوانی ترادو طلاق اولاً گویم کہ ایں قول تعلیق طلاق نیست بلکہ وعدہ طلاق دادن ست زیرا کہ میان تو طلاق و طلاق و تر اطلاق فرق ست در اول و صف زن ست و محمول بر دے ودر ثانی طلاق ایقاع زوج ست پس دریں قول فعل ایقاع زوج ضرور محذوف است در تنجیز معنی تر اطلاق دادم ست و در صورت تعلیق یعنی اگر ایں کار کنی تر اطلاق معنی آں تر اطلاق خواہم داد ہست چہ در تعلیق شرط و جزا ہر دو خود نند و جزا ہمیشہ مستقبل مے شود ولو معنی پس دریں مقام مطلب اگر نماز نخوانی ترادو طلاق خواہم داد ہست و خواہم در فعل ایقاع محذوف است و پیدا است اگر نماز نخوانی ترادو طلاق خواہم داد وعدہ طلاق دادن ست نہ تعلیق طلاق و از وعدہ طلاق، طلاق واقع نشود و ایں مطلب از خود نگر فتم بلکہ احمد علی خود میگوید کہ من بہ نیت طلاق دادن گفتم بلکہ بطریق زجر و تہدید تنبیہاً بغرض تعود للصلوۃ گفتم و طلاق دادن در دلم مطلقاً محظور نشد و ظاہر ست کہ وعدہ طلاق مفید ایں مدعا ست و با غراض متکلم خوب چسپاں و مقتضائے قرینہ ہم ہمنچنیں ست۔ ثانیاً گویم قولہ تو نماز بنخواں اگر

کہنا "اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاق " اس کے متعلق میں کہتا ہوں: اولاً یہ تعلیق طلاق نہیں بلکہ وعدہ طلاق ہے کیونکہ تو طلاق، تو طلاق والی، اور تجھ کو طلاق، ان تینوں میں فرق ہے۔ پہلی عورت کی صفت اور اسی پر محمول ہے۔ دوسری میں خاوند کا طلاق دینا ہے، لہذا اس میں خاوند کا طلاق دینا ضرور محذوف ہے جب شرط سے معلق نہ ہو یعنی اس کا معنی یہ ہے کہ تجھ کو میں نے طلاق دی ہے، اور اگر شرط سے معلق ہو مثلاً یہ کہ اگر تو یہ کام کرے تو تجھے طلاق ہے تو اس کا معنی طلاق کا وعدہ ہے کہ تجھے طلاق دوں گا کیونکہ تعلیق میں شرط و جزا دونوں ہوتے ہیں اور جزا ہمیشہ مستقبل میں ہوتی ہے خواہ معناً ہو اس مقام میں مطلب یہ ہے کہ اگر

تو نماز نہ پڑھے تو تجھے میں دو طلاق دوں گا کیونکہ "دوں گا" یہاں فعل محذوف ہوگا، تو ظاہر ہوا کہ یوں کہنا "اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاق دوں گا" تو یہ طلاق دینے کا وعدہ ہوا نہ کہ تعلیق طلاق ہوا، جبکہ طلاق کے وعدہ سے طلاق نہیں ہوتی، یہ مطلب میں نے خود نہیں نکالا، بلکہ احمد علی خود کہتا ہے کہ میں نے یہ بات طلاق دینے کے ارادے سے نہیں کہی بلکہ ڈانٹ اور زجر کے لیے کہی ہے تاکہ بیوی نماز کی عادی بن جائے اور طلاق دینے کا میرے دل میں خیال تک نہ تھا، تو ظاہر ہوا کہ یہ صرف طلاق دینے کا وعدہ تھا، یہی بات احمد علی کے قول سے حاصل ہوئی، اور متکلم کی غرض کے یہی مطابق ہے اور قرینہ بھی یہی بتاتا ہے۔ ثانیاً میں کہتا ہوں کہ احمد علی کا بیوی کو یہ

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

(Left Column) If you do not offer prayer, for you are two divorces. This is a case of conditional divorce (ta'liq-i-talaq), even if it seems miles away from the speaker's actual intent. The meaning is indeed two divorces. It must be understood that in the context of ta'liq, divorce can be contingent on three types of conditions, and each has two aspects: existence (wujud) and non-existence (adam), totaling six categories: the act of the spouses in existence or non-existence, and the act of a third party in existence or non-existence, as is clear from Sharh al-Wiqaya. In this instance, it is contingent on the wife's non-action, meaning her not praying. The meaning of conditionality (ta'liq) is to link the realization of the content of one sentence, i.e., the consequence (jaza), with the realization of the content of another sentence, i.e., the condition (shart). Thus, when the condition is fulfilled, the consequence follows, and likewise, when the condition is absent, the consequence does not occur. This principle applies to all six forms without distinction. Therefore, once this statement is accepted as a conditional divorce—while noting that the statement is absolute and not restricted to one time over another, and the speaker's intent is for the wife to become permanently habituated to prayer—where then does the specification for Isha or Fajr prayers come from? Any indication of an 'oath of immediate action' (yameen-al-fawr) is also absent and carries no weight, as the speaker spoke with a balanced temperament and mental stability, without anger, in the manner of giving advice.

(Right Column) To say, "Perform your prayer. If you do not perform prayer, you are twice divorced," should be designated as a conditional divorce (ta'liq). Although this possibility is miles away from the speaker's objective, nonetheless, two divorces will be valid. However, it should be known that making divorce contingent upon a condition occurs in three ways, and each has two scenarios: the existence of the condition and the non-existence of the condition, resulting in a total of six scenarios. The condition may be the husband's action or the wife's action, in existence or non-existence; similarly, if that condition is the act of someone else, it will be in existence or non-existence, as explained in Sharh al-Wiqaya. In the case under discussion, the condition is the wife's non-action, meaning her not performing prayer. The meaning of ta'liq is to link the content of one sentence to the content of another—specifically, linking the sentence of the consequence (jaza) to the sentence of the condition (shart). So, when the condition is met, the consequence will be realized, and when the condition is not met, the consequence will not be realized. This principle includes

all scenarios without any difference. Therefore, when we accept Ahmad Ali's statement as a conditional divorce, even though this statement is absolute and not restricted to any specific time, and the speaker's only purpose is to make his wife habitual in prayer, there will be no specification for any Isha or Fajr prayer as there is no reason for it. Nor does this constitute an oath of immediate action because Ahmad Ali spoke with a balanced temperament, without anger, and with determination.

फतावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

(बायां कॉलम) नमाज़ न पढ़ना तुम्हारे लिए दो तलाक़ है। यह तालीक़-ए-तलाक़ (शर्तिया तलाक़) है, भले ही यह बोलने वाले के वास्तविक उद्देश्य से कोसों दूर हो। इसका अर्थ वास्तव में दो तलाक़ है। यह समझना चाहिए कि तालीक़ के संदर्भ में, तलाक़ को तीन प्रकार की शर्तों पर निर्भर किया जा सकता है, और प्रत्येक के दो पहलू होते हैं: उपस्थिति (वजूद) और अनुपस्थिति (अदम), कुल मिलाकर छह श्रेणियां बनती हैं: पति-पत्नी का कार्य उपस्थिति या अनुपस्थिति में, और किसी अन्य व्यक्ति का कार्य उपस्थिति या अनुपस्थिति में, जैसा कि शरह अल-विक़ाया से स्पष्ट है। इस मामले में, यह पत्नी के कार्य न करने, यानी नमाज़ न पढ़ने पर निर्भर है। तालीक़ का अर्थ एक वाक्य की सामग्री की प्राप्ति, यानी जज़ा (परिणाम), को दूसरे वाक्य की सामग्री, यानी शर्त, की प्राप्ति से जोड़ना है। इस प्रकार, जब शर्त पूरी होती है, तो परिणाम निकलता है, और इसी तरह, जब शर्त अनुपस्थित होती है, तो परिणाम नहीं होता है। यह सिद्धांत बिना किसी अंतर के सभी छह रूपों पर लागू होता है। इसलिए, एक बार जब इस कथन को तालीक़ के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है—यह देखते हुए कि कथन पूर्ण है और किसी एक समय तक सीमित नहीं है, और बोलने वाले का उद्देश्य पत्नी का स्थायी रूप से नमाज़ का आदी होना है—तो फिर ईशा या फज्र की नमाज़ के लिए विशिष्टता कहाँ से आई? 'यमीन-ए-फ़ौर' (तत्काल शपथ) का कोई संकेत भी अनुपस्थित है और इसका कोई महत्व नहीं है, क्योंकि बोलने वाले ने बिना किसी क्रोध के, संतुलित स्वभाव और मानसिक स्थिरता के साथ सलाह देने के अंदाज़ में बात कही थी।

(दायां कॉलम) यह कहना कि "तुम नमाज़ पढ़ो। यदि तुम नमाज़ नहीं पढ़ोगी तो तुम्हें दो तलाक़," इसे तालीक़ माना जाना चाहिए। हालांकि यह संभावना बोलने वाले के उद्देश्य से कोसों दूर है, फिर भी दो तलाक़ मान्य होंगे। हालांकि, यह ज्ञात होना चाहिए कि तलाक़ को किसी शर्त पर निर्भर करना तीन तरह से होता है, और प्रत्येक की दो स्थितियाँ होती हैं: शर्त का होना और शर्त का न होना, जिसके परिणामस्वरूप कुल छह स्थितियाँ बनती हैं। शर्त पति का कार्य या पत्नी का कार्य हो सकती है, होने या न होने की स्थिति में; इसी तरह, यदि वह शर्त किसी और का कार्य है, तो वह होने या न होने की स्थिति में होगी, जैसा कि शरह अल-विक़ाया में बताया गया है। चर्चा के अधीन मामले में, शर्त पत्नी का कार्य न करना है, जिसका अर्थ है उसका नमाज़ न पढ़ना। तालीक़ का अर्थ एक वाक्य की सामग्री को दूसरे वाक्य की सामग्री से जोड़ना है—विशेष रूप से, परिणाम (जज़ा) के वाक्य को शर्त के वाक्य से जोड़ना। इसलिए, जब शर्त पूरी हो जाती है, तो परिणाम महसूस किया जाएगा, और जब शर्त पूरी नहीं

होगी, तो परिणाम महसूस नहीं किया जाएगा। यह सिद्धांत बिना किसी अंतर के सभी स्थितियों को शामिल करता है। इसलिए, जब हम अहमद अली के बयान को तालीक़ के रूप में स्वीकार करते हैं, भले ही यह बयान पूर्ण हो और किसी विशिष्ट समय तक सीमित न हो, और बोलने वाले का एकमात्र उद्देश्य अपनी पत्नी को नमाज़ का आदी बनाना है, तो किसी भी ईशा या फज्र की नमाज़ के लिए कोई विशिष्टता नहीं होगी क्योंकि इसका कोई कारण नहीं है। न ही यह तत्काल शपथ का गठन करता है क्योंकि अहमद अली ने संतुलित स्वभाव के साथ, बिना क्रोध के और दृढ़ संकल्प के साथ बात की थी।

पृष्ठ 160 का 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

(بایاں کالم) نماز نخوانی تراد و طلاق، تعلیق طلاق است اگرچہ از مطلب متکلم فرسنگھا دورست معنی آں تراد و طلاق ہست ، باید دانست کہ در تعلیق طلاق معلق بر سہ گونہ است و ہر یک دوگانہ است جانب وجود جانب عدم مجموعہ شش قسمت ست فعل الزوجین وجوداً او عدماً وفعل الغیر وجوداً او عدماً کما لا یخفی من شرح الوقایۃ دریں جا معلق بہ فعل عدمی زوجہ است یعنی نماز نخواند و معنی التعلیق ربط حصول مضمون جملۃ ای جزا بحصول مضمون جملۃ أخری ای الشرط فاذا وجد الشرط وجد المشروط وکذا اذا فات الشرط فات المشروط وھذا یعم الصورۃ الستۃ کلھا من غیر فرق پس ہرگاہ ایں قول تعلیق طلاق مسلم نشست حالانکہ ایں قول مطلق ست مقید بوقت دون وقت نیست و غرض متکلم نیز معتاد للصلوۃ شدن زوجہ است دائما پس تخصیص نماز عشاء نہ فجر وغیرہ از کجا آمد و قرینہ یمین الفور ہم مفقود بل اعتبار نیست چہ قائل باعتدال مزاج و استقلال طبع بغیر غضب بطریق نصیحت می گفت۔

(دایاں کالم) کہنا کہ "تو نماز پڑھ اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاق"، اس کو تعلیق قرار دیا جائے، اگرچہ یہ احتمال متکلم کے مقصد سے کوسوں دور ہے، تاہم دو طلاق درست ہوں گی، لیکن معلوم ہونا چاہئے کہ طلاق کو کسی شرط سے معلق کرنا تین طرح ہوتا ہے، پھر ہر ایک کی دو دو صورتیں ہوتی ہیں، شرط کا وجود، دوسری شرط کا عدم ہے تو مجموعی چھ صورتیں بنیں، وہ شرط خاوند کا فعل یا بیوی کا فعل وجوداً یا عدماً، اسی طرح اگر وہ شرط کسی غیر کا فعل ہو تو وجوداً یا عدماً ہوگا، جیسا کہ شرح وقایہ میں واضح ہے۔ یہاں زیر بحث صورت میں شرط بیوی کا فعل عدماً ہے یعنی اس کا نماز نہ پڑھنا اور تعلیق کا معنی یہ ہے کہ ایک جملہ کے مضمون کو دوسرے جملے کے مضمون یعنی جزاء کے جملے کو شرط کے مضمون جملہ سے معلق کرنا ہے،

تو جب شرط پائی جائے گی جزاء بھی پائی جائے گی، اور جب شرط نہ پائی جائے تو جزاء بھی نہ پائی جائے گی۔ یہ بات سب صورتوں کو شامل ہے جن میں کوئی فرق نہیں لہٰذا جب احمد علی کے قول کو تعلیق تسلیم کرلیں، حالانکہ یہ قول مطلق ہے اور کسی وقت کے ساتھ مقید نہیں ہے، اور متکلم کی غرض صرف بیوی کو نماز کا عادی بنانا ہے، تو یہاں کسی نماز عشاء یا فجر کی کوئی تخصیص نہ ہوگی کہ اس کی کوئی وجہ نہیں اور نہ ہی یہ یمین فور بنتی ہے کیونکہ احمد علی نے معتدل مزاجی غصہ کے بغیر مستقل مزاجی سے یہ بات کہی ہے

Fatawa Razawiyya Volume 13, page 13

Where did the 'immediate oath' (Yamin-al-Fawr) originate from that this statement should be specifically attributed to the prayer time nearest to Ahmad Ali's utterance? Rather, this is a suspension of divorce (Taliq-e-Talaq). Therefore, it remains an absolute divorce, as the principle of jurisprudence states: 'The absolute is applied according to its absoluteness, and the restricted is applied according to its restriction.' The existence of 'absolute prayer' is proven by the existence of any prayer, meaning even one instance of prayer in the form of a single occurrence. Conversely, the non-existence of 'absolute prayer' is proven by the absence of all instances of prayer throughout a lifetime. The existence of absolute prayer is established by the fulfillment of a single instance, and it is negated by the absence of all instances. This is the difference between 'the absolute thing' and 'absolute thing.' This is precisely the difference between the subject of an indeterminate ancient proposition (Mahmala-e-Qudama'iyah) and a natural proposition (Qadhiyah-e-Tabi'iyah). 'Absolute thing,' i.e., absolute prayer, is the subject of the indeterminate ancient proposition, while 'the absolute thing,' i.e., the absolute prayer, is the subject of the natural proposition. Thus, here the condition is suspended upon the non-existence of absolute prayer, which would require the absence of all prayers from the time of the speaker's utterance until just before death for it to be fulfilled. However, the non-existence of absolute prayer was not found here because Ahmad Ali's wife only missed prayer on that specific day; after that, she offered the Fajr prayer and other prayers and became regular in offering prayers. It is evident that the negation of the non-existence of absolute prayer is the existence of absolute prayer. Thus, the existence of absolute prayer was realized, and the non-existence of absolute prayer became void and lost. Even though the divorce was suspended on the non-existence of absolute prayer, which is now negated; and when the condition is negated...

And it was said as advice, so how can this be an 'immediate oath' so as to specify it to the prayer closest to that statement of Ahmad Ali? Therefore, it will be called a suspension of divorce, and that too is absolute. The rule is that the absolute should be kept on its absoluteness and the restricted should be bound by its restriction. Therefore, the existence of absolute prayer can be from any prayer, meaning if an instance of prayer is found, the realization of absolute prayer will occur. Similarly, the non-existence of absolute prayer will be realized upon the absence of all prayers throughout life. The existence and negation of absolute prayer occur with the existence and negation of a single instance. This is the same difference that logicians

explain regarding the subject of 'Mahmala-e-Qudama’iyah' and 'Qadhiyah-e-Tabi’iyah.' That is, 'absolute thing' is the subject of 'Mahmala-e-Qudama’iyah' and 'the absolute thing' is the subject of 'Qadhiyah-e-Tabi’iyah.' So here, in the condition, there is the non-existence of absolute prayer, for the negation and absence of which it is necessary for all prayers to be non-existent from the time of the speaker's suspension until shortly before death. Whereas here, the non-existence of absolute prayer was not found because Ahmad Ali's wife missed only one prayer, after which she prayed the Fajr prayer and other prayers and became regular in prayer. Thus it became clear that the non-occurrence of the absence of absolute prayer is the existence of absolute prayer. In this way, the realization of absolute prayer occurred and the absence of absolute prayer became non-existent, even though divorce was suspended on the non-existence of absolute prayer, which is negated. And when the condition is negated...

'तत्काल शपथ' (यमीन-अल-फ़ौर) कहाँ से आई कि इस कथन को अहमद अली के कथन के निकटतम नमाज़ के समय के लिए विशेष माना जाए? बल्कि, यह तलाक का निलंबन (तलीक़-ए-तलाक) है। इसलिए, यह एक निरपेक्ष तलाक बना रहता है, क्योंकि न्यायशास्त्र का नियम है: 'निरपेक्ष को उसकी निरपेक्षता पर लागू किया जाता है और प्रतिबंधित को उसके प्रतिबंध पर।' 'निरपेक्ष नमाज़' का अस्तित्व किसी भी एक नमाज़ के अस्तित्व से सिद्ध होता है, अर्थात एक व्यक्ति के रूप में नमाज़ का एक उदाहरण पाया जाना। इसके विपरीत, 'निरपेक्ष नमाज़' का अभाव जीवन भर सभी नमाज़ों के न होने से सिद्ध होता है। निरपेक्ष नमाज़ का अस्तित्व एक उदाहरण के पूरा होने से होता है, और इसका अभाव सभी उदाहरणों के न होने से होता है। यही 'निरपेक्ष वस्तु' और 'एक निरपेक्ष वस्तु' के बीच का अंतर है। यही अंतर तर्कशास्त्रियों द्वारा एक अनिश्चित प्राचीन प्रस्ताव (महमाला-ए-कुदामईया) और एक प्राकृतिक प्रस्ताव (क़ज़िया-ए-तबईया) के विषय के बारे में बताया गया है। 'निरपेक्ष वस्तु', अर्थात निरपेक्ष नमाज़, अनिश्चित प्राचीन प्रस्ताव का विषय है, जबकि 'एक निरपेक्ष वस्तु', अर्थात निरपेक्ष नमाज़, प्राकृतिक प्रस्ताव का विषय है। अत; यहाँ शर्त निरपेक्ष नमाज़ के अभाव पर टिकी है, जिसके लिए वक्ता के कथन के समय से मृत्यु से ठीक पहले तक सभी नमाज़ों का न होना आवश्यक है। हालाँकि, यहाँ निरपेक्ष नमाज़ का अभाव नहीं पाया गया क्योंकि अहमद अली की पत्नी ने केवल उस दिन नमाज़ छोड़ी थी; उसके बाद उसने फ़ज्र की नमाज़ और अन्य नमाज़ें पढ़ीं और नमाज़ की अभ्यस्त हो गई। यह स्पष्ट है कि निरपेक्ष नमाज़ के अभाव का न होना ही निरपेक्ष नमाज़ का अस्तित्व है। इस प्रकार, निरपेक्ष नमाज़ का अस्तित्व साकार हुआ और निरपेक्ष नमाज़ का अभाव शून्य हो गया। भले ही तलाक निरपेक्ष नमाज़ के अभाव पर टिका था, जो अब नकारा जा चुका है; और जब शर्त ही नकारी जाए...

और यह सलाह के तौर पर कहा गया है, तो यह 'तत्काल शपथ' कैसे हो सकती है ताकि अहमद अली के इस कथन के निकटतम समय की नमाज़ से विशिष्ट किया जाए? इसलिए इसे तलाक का निलंबन ही कहा जाएगा और वह भी निरपेक्ष है। नियम यह है कि निरपेक्ष को उसकी निरपेक्षता पर रहने दिया जाए और प्रतिबंधित को प्रतिबंध से बांधा जाए। अतः किसी भी नमाज़ से निरपेक्ष नमाज़ का अस्तित्व हो सकता है, अर्थात नमाज़ का एक उदाहरण पाया जाए तो निरपेक्ष नमाज़ सिद्ध हो जाएगी। इसी तरह, निरपेक्ष नमाज़ का अभाव जीवन भर सभी नमाज़ों के न पाए जाने पर सिद्ध होगा। निरपेक्ष नमाज़ का अस्तित्व और अभाव एक ही उदाहरण के होने या न होने से होता है। यही वह अंतर है जो

तर्कशास्त्री 'महमाला-ए-कुदामईया' और 'क़ज़िया-ए-तबईया' के विषय में स्पष्ट करते हैं। यानी, 'निरपेक्ष वस्तु' महमाला-ए-कुदामईया का विषय है और 'एक निरपेक्ष वस्तु' क़ज़िया-ए-तबईया का विषय है। तो यहाँ शर्त में निरपेक्ष नमाज़ का अभाव है, जिसके निषेध और अभाव के लिए वक्ता के निलंबन के समय से मृत्यु से कुछ पहले तक सभी नमाज़ों का लुप्त होना आवश्यक है। जबकि यहाँ निरपेक्ष नमाज़ का अभाव नहीं पाया गया क्योंकि अहमद अली की पत्नी ने केवल एक नमाज़ नहीं पढ़ी थी, उसके बाद उसने फ़ज्र की नमाज़ और बाकी नमाज़ें पढ़ीं और नमाज़ की आदि हो गई। तो स्पष्ट हुआ कि निरपेक्ष नमाज़ के अभाव का न होना ही निरपेक्ष नमाज़ का अस्तित्व है। इस तरह निरपेक्ष नमाज़ सिद्ध हुई और निरपेक्ष नमाज़ का अभाव लुप्त हो गया, जबकि तलाक निरपेक्ष नमाज़ के अभाव पर आधारित था, जो अब अस्तित्व में नहीं है। और जब शर्त ही समाप्त हो जाए...

पृष्ठ 161 का 688

یمین الفور از کجا برخاست تا ایں قول را مخصوص باقرب الاوقات للصلوۃ گرداند بلکہ ایں تعلیق طلاق ست پس مطلق طلاق ماند چہ قاعدہ اصول ست المطلق یجری علی اطلاقہ والمقید یجری علی تقییدہ ووجود صلاۃ مطلق صادق آید بسبب وجود صلاۃ ما یعنی یک صلاۃ بطریق فرد منتشر وعدم صلوۃ مطلق صادق آید بسبب عدم جمیع افراد صلاۃ در مدت العمر، وجود مطلق الصلوۃ متحقق شود بسبب تحقق وجود فرد ما ویتقی بانتقاء فرد ما ھذا ھو الفرق بین مطلق الشئ والشئ المطلق و ہمیں ست فرق میان موضوع مہملہ قد مائیہ و موضوع قضیہ طبعیہ و مطلق الشئ یعنی مطلق الصلاۃ موضوع مہملہ قد ماست والشئ المطلق یعنی الصلاۃ المطلقۃ موضوع قضیہ طبعیہ است پس درینجا معلق بعدم الصلاۃ المطلقۃ ست و آں بسبب عدم جمیع افراد نماز از زبان متکلم با تعلیق تا قبیل موت متحقق شود و عدم صلاۃ مطلق منتقی زیرا کہ زوجہ احمد علی صرف دراں روز نماز نخواند و نماز فجر خواند متعود بالصلوہ گشت و ہویدا ست کہ انتفائے عدم صلاۃ مطلق عدم عدم صلاۃ مطلق ست و عدم عدم صلاۃ مطلق وجود صلاۃ مطلق ست پس وجود صلاۃ مطلق متحقق وعدم صلاۃ مطلق معدوم وفائت حالانکہ آں شرط و معلق بہ بود و فوت شد فاذا فات الشرط

اور نصیحت کے طور پر کہی ہے، تو یہ یمینِ فور کیسے ہو سکتی ہے تاکہ احمد علی کے اس قول کے قریب ترین وقت کی نماز سے مخصوص کیا جائے، اس لئے اس کو تعلیق طلاق ہی کہا جائے گا اور وہ بھی مطلق ہے اور قاعدہ ہے کہ مطلق کو اپنے اطلاق پر باقی رکھا جائے اور مقید کو قید سے پابند کیا جائے، لہٰذا کسی نماز سے بھی مطلق نماز کا وجود ہو سکتا ہے یعنی نماز کا فرد پایا جائے تو مطلق نماز کا تحقق ہو جائے گا، یونہی مطلق نماز کا عدم عمر بھر تمام نمازوں کے نہ پائے جانے پر متحقق ہو جائیگا، مطلق الصلوۃ کا وجود اور انتفاء ایک فرد کے وجود اور نفی سے

ہوتا ہے یہی وہ فرق ہے جو منطقی حضرات، مہملہ قدمائیہ اور قضیہ طبعیہ کے موضوع کے بارے میں بیان کرتے ہیں یعنی مطلق الشئ قضیہ مہملہ قدمائیہ کا موضوع اور الشئ المطلق قضیہ طبعیہ کا موضوع ہے، پس یہاں شرط میں نمازِ مطلقہ کا عدم ہے جس کی نفی اور عدم کے لئے متکلم کے تعلیق کے وقت سے لے کر موت سے تھوڑا قبل تک تمام نمازوں کے معدوم ہونا ضروری ہے جبکہ یہاں نمازِ مطلقہ کا عدم نہیں پایا گیا کیونکہ احمد علی کی بیوی نے صرف ایک نماز نہیں پڑھی اس کے بعد اس نے فجر کی نماز اور باقی نمازیں پڑھیں اور نماز کی عادی ہو گئی، تو واضح ہوا کہ نمازِ مطلقہ کے عدم کا نہ ہونا نمازِ مطلق کا وجود ہے تو اس طرح نمازِ مطلق کا تحقق ہوا اور نمازِ مطلقہ کا عدم معدوم ہوا حالانکہ طلاق، عدمِ نمازِ مطلقہ سے معلق ہے جو منتفی ہے، اور جب شرط منتفی ہو جائے

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, 13

[Left Column]

The condition has ceased to exist, which is the claim. Therefore, the divorce did not take place. What was written in the text was merely a discussion regarding the nature of the statement of acknowledgement. Now, the desired point is being proven with jurisprudential (Fiqhi) evidence. In 'Alamgiri' Volume 2, page 599, it is stated: 'The principle is that when an oath is taken upon the non-performance of an action in two possible scenarios, look at both scenarios for the fulfillment of the oath. Upon the loss of the possibility of fulfilling the oath, breaking the oath (hanth) becomes certain.'[1] (In the source, the condition for fulfillment of oath was not lost, so breaking the oath is not established. Also, it is written there: 'If a man says to his wife, "If you do not give me this cloth and you enter the house, then you are divorced," divorce will not occur until two conditions are met: entering the house and not giving the cloth. The non-giving of the cloth is only realized upon the death of either party or the destruction of the cloth.'[2] Similarly, the absence of the specific prayer before the death of the said woman will only be realized just before her death, not before that. Furthermore, on page 651, it says: 'A man said to his wife, "If you do not pray two rakats today, you are divorced," then she menstruated before starting the prayer or after praying one rakat...')

[Right Column]

Then the conditional thing will also be negated; this is what is desired. Thus, divorce did not occur. Whatever was written was only a discussion regarding Ahmad Ali's acknowledgement. Now we prove our point with jurisprudential arguments. In 'Alamgiri', volume two, page 599, it is written that the rule is: when an oath is made regarding the non-performance of an action which can occur in two places/scenarios, then whichever place has the condition for fulfilling the oath, that will be considered. And when the chance to fulfill the condition is lost, then the breaking of the oath becomes certain. According to this rule, in our discussion, the possibility of fulfilling the oath exists and has not been lost. Therefore, 'hanth' (breaking of oath) will not occur. Also, it states: if a husband said to his wife, "If you do not give me this cloth and you enter the house in that state, then you are divorced," then in this case, divorce will not occur until both not giving the cloth and entering the house are found. That is, divorce will happen only if both things occur, otherwise not. While the 'not giving the cloth' part remains possible until the death of the husband or wife, or

the destruction of the cloth, the oath will not be broken. Similarly, here too, the absence of the absolute prayer will remain until shortly before the woman's death, and the oath will not break. Rather, one moment before the woman dies, when the possibility of the non-existence of this absolute prayer ends...

---

1 Fatawa Hindiyya, Chapter Three, regarding suspending divorce with the words 'in', 'idha', etc., Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/429. 2 Fatawa Hindiyya, Chapter Three, regarding suspending divorce with the words 'in', 'idha', etc., Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/429.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, 13

[बायाँ कॉलम]

शर्त समाप्त हो गई है जो कि दावा है, इसलिए तलाक नहीं हुआ। जो कुछ तहरीर में लिखा गया था वह केवल स्वीकारोक्ति के शब्दों की प्रकृति पर चर्चा थी। अब वांछित बिंदु को विधिशास्त्रीय (फ़िक़्ही) साक्ष्यों से प्रमाणित किया जा रहा है। 'आलमगीरी' जिल्द 2, पृष्ठ 599 में लिखा है: 'सिद्धांत यह है कि जब कोई शपथ दो संभावित स्थितियों में किसी कार्य के न करने पर ली जाती है, तो शपथ पूरी होने की शर्त के लिए दोनों स्थितियों को देखा जाएगा। शपथ पूरी होने की संभावना समाप्त होने पर, शपथ का टूटना (हंथ) निश्चित हो जाता है।'[1] (स्रोत में, शपथ पूरी होने की शर्त नष्ट नहीं हुई थी, इसलिए शपथ का टूटना सिद्ध नहीं होता। साथ ही, वहाँ लिखा है: 'यदि किसी पुरुष ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तू मुझे यह कपड़ा न दे और घर में प्रवेश करे, तो तुझे तलाक है," तो तलाक तब तक नहीं होगा जब तक कि दो बातें एक साथ न पाई जाएँ घर में प्रवेश करना और कपड़ा न देना। कपड़ा न देना केवल दोनों में से किसी एक की मृत्यु या कपड़े के नष्ट होने पर ही सिद्ध होता है।'[2] इसी प्रकार, उक्त महिला की मृत्यु से ठीक पहले तक नमाज़ का न होना सिद्ध होगा, उससे पहले नहीं। इसके अलावा, पृष्ठ 651 पर है: 'एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तू आज दो रकात नमाज़ न पढ़े तो तुझे तलाक है," फिर नमाज़ शुरू करने से पहले या एक रकात पढ़ने के बाद उसे मासिक धर्म आ गया...')

[दायाँ कॉलम]

तो सशर्त चीज़ भी नकार दी जाएगी; यही वांछित है। इस प्रकार, तलाक नहीं हुआ। जो कुछ लिखा गया था वह केवल अहमद अली की स्वीकारोक्ति के संबंध में चर्चा थी। अब हम अपने बिंदु को विधिशास्त्रीय तर्कों से सिद्ध करते हैं। 'आलमगीरी' की दूसरी जिल्द, पृष्ठ 599 में लिखा है कि नियम यह है: जब किसी कार्य के न करने पर शपथ ली जाती है जो दो स्थानों/स्थितियों में हो सकती है, तो जिस स्थान में शपथ पूरी होने की शर्त पाई जाए, उसे ध्यान में रखा जाएगा। और जब शर्त पूरी होने का अवसर समाप्त हो जाए, तो शपथ का टूटना निश्चित हो जाएगा। इस नियम के अनुसार, हमारी चर्चा में शपथ पूरी होने की संभावना मौजूद है और वह समाप्त नहीं हुई है। इसलिए 'हंथ' यानी शपथ नहीं टूटेगी। साथ ही, इसमें है: यदि पति ने पत्नी से कहा, 'यदि तू मुझे यह कपड़ा न दे और तू घर में वैसे ही प्रवेश कर जाए तो तुझे तलाक है', तो इस स्थिति में तलाक तब तक नहीं होगा जब तक कि कपड़ा न देना और घर में प्रवेश करना न पाया जाए। यानी दोनों बातें पाई जाएँगी तो तलाक होगा

अन्यथा नहीं। जबकि कपड़ा न देने वाली बात पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु या उस कपड़े के नष्ट होने तक बनी रहेगी और शपथ नहीं टूटेगी। इसी तरह, यहाँ भी पूर्ण नमाज़ का अभाव, महिला की मृत्यु से थोड़ा पहले तक बना रहेगा और शपथ नहीं टूटेगी। बल्कि महिला की मृत्यु से एक घड़ी पहले जब इस पूर्ण नमाज़ के अभाव की संभावना समाप्त हो जाएगी...

---

1 फ़तावा हिंदिया, अध्याय तीन, 'इन' और 'इज़ा' आदि शब्दों के साथ तलाक को निलंबित करने के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/429। 2 फ़तावा हिंदिया, अध्याय तीन, 'इन' और 'इज़ा' आदि शब्दों के साथ तलाक को निलंबित करने के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/429।

[بایاں کالم] فَاتَ المشروط وھو المدعا، پس طلاق واقع نشد آنکہ در سلک تحریر کشیدہ شد صرف گفتگو در نفس عبارت اقرار بود حالا اثبات مطلوب بادلہ فقیہ میگویند در عالمگیر یہ جلد دوم ص ۵۹۹ آورد الاصل ان الیمین متی عقدت علی عدم الفعل فی محلین ینظر فیھما الی شرط البر وعند فوات شرط البر یتعین الحنث[1] (در مأخذ شرط البر فانت نشد پس حنث متحقق نشود وایضاً ھناک مسطور ولو قال ان لم تعطین ھذا الثوب ودخلت الدار لم یقع الطلاق حتی یجتمع امران دخول الدار وعدم الاعطاء وعدم الاعطاء انما یتحقق بموت احدھما او بھلاك الثوب [2] و ہمچنیں عدم الصلاۃ المطلقۃ قبیل موت زن مذکورہ متحقق تواں شد قبل آں نے وایضاً فیہ ص ۶۵۱ رجل قال لامرأتہ ان لم تصلی الیوم رکعتین فانت طالق فحاضت قبل ان تشرع فی الصلاۃ او بعد ما صلت رکعۃ،

[دایاں کالم] تو مشروط بھی منتفی ہوگا، یہی مطلوب ہے، پس طلاق نہ ہوئی۔ یہ جو کچھ تحریر ہوا صرف احمد علی کے اقرار میں گفتگو تھی، اور اب ہم مطلوب کو فقہی دلائل سے ثابت کرتے ہیں۔ عالمگیر یہ کی جلد دوم صفحہ ۵۹۹ میں ہے کہ قاعدہ یہ ہے کہ جب کسی فعل کے عدم پر جو دو محل میں ہو تو دونوں میں سے جس محل میں قسم پورا ہونے کی شرط پائی جائے اس کو پیش نظر رکھا جائے گا اور جب شرط فوت ہو تو پھر قسم کا ٹوٹنا متعین ہوگا، اس قاعدہ کی رو سے ہماری بحث میں قسم پورا ہونے والی موجود ہے وہ فوت نہیں اس لئے حنث یعنی قسم نہ ٹوٹے گی، نیز اسی میں ہے اگر خاوند نے بیوی کو کہا "اگر تو مجھے یہ کپڑا نہ دے اور تو گھر میں ویسے ہی داخل ہو جائے تو تجھے طلاق ہے" تو اس صورت میں اس وقت تک طلاق نہ ہوگی جب تک کپڑا نہ دینا اور گھر میں داخل ہونا نہ پایا جائے یعنی دونوں باتیں پائی جائیں تو طلاق ہوگی ورنہ نہیں، جبکہ کپڑا نہ دینے والی بات خاوند یا بیوی میں سے کسی ایک کے مرنے یا اس کپڑے کے ختم ہو

جانے تک باقی رہے گی اور قسم نہ ٹوٹے گی، اسی طرح یہاں بھی نماز مطلقہ کا عدم، عورت کے مرنے سے تھوڑا پہلے تک باقی رہے گا اور قسم نہ ٹوٹے گی بلکہ عورت کے مرنے سے ایک گھڑی پہلے جب یہ نماز مطلقہ کے عدم کا احتمال ختم ہو جائے گا

---

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمۃ ان واذا وغیرہما نورانی کتب خانہ پشاور ۴۲۹/۱

2 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمۃ ان واذا وغیرہما نورانی کتب خانہ پشاور ۴۲۹/۱

(Right Column): Then the oath will be broken. Furthermore, on page 651 of the same, it is stated that a man said to his wife, "If you do not pray two rak'ahs of prayer today, you are divorced." If the woman begins menstruating before starting the prayer or after having prayed one rak'ah, it is narrated from Sheikh Shams al-A'imma al-Halwani that if there was enough time between the husband's oath and the onset of menstruation for her to have performed two rak'ahs of prayer, then by consensus, this oath would be valid and the woman would be divorced. Since this specific case includes the conditions of "today" and "two rak'ahs", it differs from the case under discussion, and thus their rulings will also differ; hence, there is no room for objection. Additionally, on page 621 of the same, it says: A man struck another man, and the victim said, "If I do not punish him, my wife is divorced so-and-so." Despite some time passing, he did not punish him (meaning "punishment" here does not refer to Sharia-mandated penalties like retaliation (qisas) or discretionary compensation (ta'zir), but rather to causing any kind of distress). Thus, if the person took an oath with the intention of immediate punishment, then punishment at the time of the strike is meant; if no specific intention was made, it refers to absolute punishment, meaning punishment at any time, as mentioned in Fatawa Qadi Khan. This case is consistent with the one under our discussion.

(Left Column - Arabic citations and Urdu commentary): It is narrated that Sheikh al-Imam Shams al-A'imma al-Halwani used to say: If the duration from the time of the oath until the onset of menstruation was equivalent to what would allow her to pray two rak'ahs, the oath is binding according to all, and divorce occurs. [Footnote 1: In this statement, the conditions of 'the day' and 'two rak'ahs' are present; therefore, the ruling is different from our current subject. Thus, they are distinct, so do not doubt.] Also, in it on page 621: A man struck another man a painful blow, and the one struck said, "If I do not punish him, then his wife is such-and-such (divorced)." Time passed and he did not penalize him. They (the jurists) said: This does not apply to legal punishments like retaliation (qisas), blood money (arsh), or discretionary punishment (ta'zir), etc. Rather, it applies to any form of harm. If he intended immediacy, then it is immediate; if he did not intend so, it is absolute. Similarly in Fatawa Qadi Khan. [Footnote 2: This matches our case; the verbal difference is 'punishment'...]

Footnotes: 1. Fatawa Hindiyya, Chapter Three regarding suspension with the words 'In' and 'Idha' etc., Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/436. 2. Fatawa Hindiyya,

Chapter Three regarding suspension with the words 'In' and 'Idha' etc., Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/446. Page 163 of 688

(दायां हिस्सा): तब शपथ टूट जाएगी। इसके अलावा, इसी (पुस्तक) के पृष्ठ 651 पर उल्लेख है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तुम आज नमाज़ की दो रकातें न पढ़ो, तो तुम्हें तलाक है।" अब, यदि उस महिला को नमाज़ शुरू करने से पहले मासिक धर्म आ जाए या एक रकात पढ़ने के बाद मासिक धर्म आ जाए, तो शेख शम्स अल-अइम्मा हलवानी से वर्णित है कि यदि पति की शपथ और मासिक धर्म आने के बीच इतना समय था कि वह नमाज़ की दो रकातें पढ़ सकती थी, तो सर्वसम्मति से यह शपथ प्रभावी होगी और महिला को तलाक हो जाएगा। चूंकि इस मसले में "आज के दिन" और "दो रकातों" की शर्त है, इसलिए यह मसला और हमारे विचाराधीन मसला अलग-अलग हो गए, जिनका निर्णय भी अलग होगा; इसलिए किसी आपत्ति की गुंजाइश नहीं है। इसके अलावा, इसी में पृष्ठ 621 पर है: एक व्यक्ति ने दूसरे को मारा, तो पीड़ित ने कहा, "अगर मैं उसे सजा न दूँ, तो मेरी पत्नी को फलां तलाक।" कुछ समय बीत जाने के बावजूद उसने सजा नहीं दी (यहाँ सजा से अभिप्राय शरीयत के दंड जैसे क़िसास या ताज़ीर (मुआवज़ा) नहीं है, बल्कि किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाना है)। यदि शपथ लेने वाले ने तत्काल सजा का इरादा किया था, तो उस प्रहार के समय ही सजा अभिप्रेत होगी; और यदि कोई विशेष इरादा नहीं था, तो यह पूर्ण सजा होगी, अर्थात किसी भी समय सजा देना अभिप्रेत होगा, जैसा कि फतावा काज़ी खान में वर्णित है। यह मसला हमारे विचाराधीन मसले के अनुकूल है।

(बायां हिस्सा - अरबी उद्धरण और उर्दू टिप्पणी): यह उल्लेख है कि शेख इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी कहा करते थे: यदि शपथ के समय से लेकर मासिक धर्म आने तक इतना समय था कि वह दो रकात नमाज़ पढ़ सकती थी, तो शपथ सबके अनुसार प्रभावी होगी और तलाक हो जाएगा। [पाद-टिप्पणी 1: इस कथन में 'दिन' और 'दो रकात' की शर्त मौजूद है, अतः इसका नियम हमारे विचाराधीन विषय से भिन्न है। इसलिए दोनों अलग हैं और इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।] इसी तरह, पृष्ठ 621 पर है: एक व्यक्ति ने दूसरे को दर्दनाक रूप से पीटा, पीड़ित ने कहा: 'अगर मैं उसे सजा न दूँ, तो मेरी पत्नी ऐसी-ऐसी है (तलाकशुदा है)।' समय बीत गया और उसने सजा नहीं दी। विद्वानों ने कहा: यह क़िसास, अर्श या ताज़ीर जैसे शरीयत के दंडों पर लागू नहीं होता, बल्कि किसी भी तरह से बुरा व्यवहार करने या कष्ट देने पर लागू होता है। यदि उसने तत्काल दंड का इरादा किया, तो वह तत्काल है, और यदि नियत नहीं की, तो वह पूर्ण है। ऐसा ही फतावा काज़ी खान में है।

[पाद-टिप्पणी 2: यह हमारे विचाराधीन मामले के अनुसार है; शाब्दिक अंतर यह है कि यहाँ शब्द 'सजा' प्रयुक्त है...]

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फतावा हिन्दिया, अध्याय तीन, 'इन' और 'इज़ा' आदि के साथ निलंबन के विषय में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/436। 2. फतावा हिन्दिया, अध्याय तीन, 'इन' और 'इज़ा' आदि के साथ निलंबन के विषय में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/446। पृष्ठ 163/688

(دایاں کالم): تب قسم ٹوٹے گی۔ نیز اسی کے صفحہ ۶۵۱ پر ہے کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا "اگر تو آج نماز دورکعتیں نہ پڑھے تو تجھے طلاق ہے" تو اس عورت کو نماز شروع کرنے سے قبل حیض آ جائے یا ایک رکعت پڑھنے کے بعد حیض آ جائے تو شیخ شمس الائمہ حلوانی سے منقول ہے کہ اگر خاوند کی قسم اور حیض آنے کے درمیان اتنا وقت تھا کہ وہ نماز دورکعتیں پڑھ سکتی تھی تو بالاتفاق یہ قسم صحیح ہوگی اور عورت کو طلاق ہو جائے گی، چونکہ اس مسئلہ میں "آج کے دن" اور "دو رکعتوں" کی قید ہے اس لئے یہ مسئلہ اور زیر بحث مسئلہ مختلف ہو گئے جن کا حکم بھی مختلف ہوگا، لہٰذا اعتراض کی گنجائش نہیں ہے۔ نیز اسی میں صفحہ ۶۲۱ پر ہے: ایک شخص نے دوسرے کو ضرب لگائی تو مضروب نے کہا اگر میں اس کو سزا نہ دوں تو بیوی کو فلاں طلاق، تو کچھ وقت گزر جانے کے باوجود اس نے سزا نہ دی (یعنی سزا سے مراد شرعی سزا قصاص یا تعزیر تاوان نہیں بلکہ کوئی تکلیف پہنچانا مراد ہے) تو اس قسم والے نے اگر یمین فور کی نیت کی تو فوراً اس ضرب کے وقت سزا مراد ہو گی اور اگر کوئی نیت نہ کی ہو تو پھر مطلق سزا ہو گی یعنی کسی وقت بھی سزا دینا مراد ہو گی جیسا کہ فتاویٰ قاضی خاں میں مذکور ہے یہ مسئلہ ہمارے زیر بحث مسئلہ کے موافق ہے

(بایاں کالم): حكي ان الشيخ الامام شمس الائمة الحلواني انه كان يقول ان كان وقت الحلف الى وقت الحيض مقدار ما يمكنها ان تصلي ركعتين تنعقد اليمين عند الكل وتطلق 1 دریں عبارت قید الیوم ور کعتین موجود ست و لہٰذا حکم مغایر حکم مانحن فیہ شد فافترقتا ولا تشکوا وایضاً فیہ ص ۶۲۱ رجل ضرب رجلا ضربا وجیعا فقال المضروب اگر من سزائے دے نکنم فامرأته كذا فمضى زمان ولم يجاز قالوا هذا لا يقع على المجازاة الشرعية من القصاص او الارش او التعزير او نحوه و انما يقع على

الاساءة بأي وجه يكون فان نوى الفور فهو على الفور وان لم ينو يكون مطلقا كذا فى فتاوى قاضى خاں

2 ایں مطابق صورت مانحن فیہ ست، فرق لفظی آنکہ سزائے

حواشی: 1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثالث فی التعلیق بکلمة ان واذا وغیرہما نورانی کتب خانہ پشاور ۱/

۴۳۶ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثالث فی التعلیق بکلمة ان واذا وغیرہما نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۴۶

Fatawa Razawiyya Volume 13

There is only a verbal difference. In this case, "I shall not punish" is conditional on the husband's non-action, while in our discussed issue, "not praying" is conditional on the wife's non-action. Therefore, the ruling for both is the same as previously mentioned. Thus, the same ruling will apply to the wife's non-performance of prayer: if the husband intended immediacy (Yameen-e-Faur), it is immediate. If he did not intend immediacy, it would be general and absolute, meaning not praying at any time would be meant. However, Ahmad did not intend immediacy, nor is there any such indication here, so this oath will be considered absolute and will remain valid afterwards. It is stated on page 28 of Sharh al-Wiqayah: If a husband says to his wife, "If I do not divorce you, you are divorced," then this oath is for a lifetime. If he does not divorce her throughout his life, the divorce occurs at the very end, near death, because only then is it confirmed that he did not divorce her throughout his life; otherwise, the possibility of divorce remained at every moment. Similarly, the occurrence of the "condition of not praying" will be at the end of life; otherwise, the possibility of praying exists throughout life. Quhistani (p. 279) says the most correct view is that the condition occurs at the end of life, an hour before the death of either spouse.

[Arabic/Persian Citations]: The case of "I shall not do it" is conditional on the husband's non-action in this instance. "If you do not pray" is conditional on the wife's non-action. The ruling is "If you do not pray, you are divorced." If he intended immediacy, it is immediate; if not, it is absolute. But Ahmad Ali did not intend immediacy, nor was an indication found, so the oath remains absolute. In Sharh al-Wiqayah, p. 138: "You are thus if I do not divorce you" occurs at the end of his life(1), because not divorcing is realized at the end of life, otherwise at every moment there is a possibility of divorce. Similarly, not praying is realized at the end of life, otherwise throughout life, prayer is possible. In al-Quhistani, p. 279: "It occurs, according to the more correct view, at the end of life, or shortly before his death or her death." In al-Nawadir, it does not occur upon her death in the statement "You are divorced if I do not divorce you"(2). Similarly, if the woman does not pray before death, two revocable divorces will occur on her. Our case is not so, rather...

1. Sharh al-Wiqayah, Biyan Lughawiya at-Taliq qabl at-Tazawuj, Matba Mujtabai Delhi, 2/77.

2. Jami' ar-Rumuz (Quhistani), Kitab at-Talaq, Maktaba Islamiya Gunbad Qamus Iran, 1/513.

सिर्फ़ शाब्दिक अंतर है कि यहाँ "सज़ा न दूँ", जो पति की क्रिया का अभाव है, के साथ जोड़ा गया है, और हमारे विचाराधीन मामले में "नमाज़ न पढ़ना", जो पत्नी की क्रिया का अभाव है, के साथ जोड़ा गया है। इसलिए दोनों का नियम एक ही है जैसा कि पहले बताया गया है। चुनाँचे, पत्नी के नमाज़ न पढ़ने पर भी यही नियम लागू होगा: यदि पति ने तात्कालिकता (यमीन-ए-फ़ौर) की नियत की, तो वह तात्कालिक होगा। यदि उसने तात्कालिकता का इरादा नहीं किया, तो वह सामान्य और पूर्ण होगा, जिसका अर्थ है कभी भी नमाज़ न पढ़ना। लेकिन अहमद ने तात्कालिकता का इरादा नहीं किया, न ही यहाँ ऐसा कोई संकेत है, इसलिए यह एक पूर्ण शपथ है जो बाद में भी बनी रहती है। शरह अल-विक़ाया के पृष्ठ २८ पर है: यदि कोई पति अपनी पत्नी से कहता है, "यदि मैं तुम्हें तलाक़ नहीं देता, तो तुम्हें तलाक़ है," तो यह जीवन भर की शपथ है। यदि वह पूरे जीवन में उसे तलाक़ नहीं देता है, तो तलाक़ अंत में, मृत्यु के समीप होता है, क्योंकि तभी पुष्टि होती है कि उसने जीवन भर उसे तलाक़ नहीं दिया; अन्यथा, हर क्षण तलाक़ की संभावना बनी रहती थी। इसी प्रकार, "नमाज़ न पढ़ने की शर्त" का होना जीवन के अंत में होगा, अन्यथा जीवन भर नमाज़ पढ़ने की संभावना मौजूद है। क़ुहिस्तानी (पृष्ठ २७९) में है कि सबसे सही विचार यह है कि जीवन के अंतिम हिस्से में पति या पत्नी की मृत्यु से एक घंटे पहले शर्त पूरी होती है।

1. शरह अल-विक़ाया, बयान लुग़विया अत-तलीक़ क़बल अत-तज़व्वुज, मतबा मुजतबाई दिल्ली, २/७७।
2. जामि' अर-रुमुज़ (क़ुहिस्तानी), किताब अत-तलाक़, मकतबा इस्लामिया गुम्बद क़ामूस ईरान, १/५१३।

पेज १६४ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

صرف لفظی فرق ہے کہ یہاں "سزا نہ دوں" جو کہ خاوند کے فعل کا عدم ہے، کے ساتھ معلق کیا گیا ہے اور ہمارے زیر بحث مسئلہ میں "نماز نہ پڑھنے" کو جو کہ بیوی کے فعل کا عدم ہے، کو معلق کیا گیا ہے۔ لہٰذا دونوں مسئلوں کا حکم ایک ہے جیسے گزرا چنانچہ یہی حکم، بیوی کے نماز نہ پڑھنے پر ہوگا کہ اگر خاوند نے یمینِ فور کی نیت کی، فوری مراد ہوگی۔ اور اگر یمینِ فور کی نیت نہ کی ہو تو عام اور مطلق یعنی نماز کسی بھی وقت نہ پڑھنا مراد ہوگا، لیکن احمد نے فوری یمین مراد نہیں لی اور نہ ہی یمینِ فور کا یہاں کوئی قرینہ ہے، لہٰذا یہ قسم مطلق مراد ہوگی اور بعد میں بھی باقی رہے گی۔ شرح وقایہ کے صفحہ ۲۸ پر ہے: خاوند نے بیوی کو کہا "اگر میں تجھے طلاق نہ دوں تو تجھے طلاق ہے" تو یہ قسم عمر بھر کے لئے ہے، اگر عمر بھر طلاق نہ دی تو موت کے قریب آخری گھڑی میں طلاق ہو گی کیونکہ اس وقت معلوم ہوگا اس نے عمر بھر طلاق نہ دی ورنہ زندگی میں ہر وقت طلاق کا احتمال تھا، تو اسی طرح "نماز نہ پڑھنے کی شرط" کا وقوع عمر کے آخر میں ہوگا ورنہ زندگی میں ہر وقت نماز پڑھنے کا احتمال موجود ہے۔ قہستانی ص ۲۷۹ میں ہے کہ اصح قول یہ ہے کہ عمر کے آخری حصہ میں خاوند یا بیوی کی موت سے ایک گھڑی قبل شرط کا وقوع

وے نکنم معلق بہ فعل عدمی زوج ست در مانحن فیہ اگر نخوانی معلق بہ فعل عدمی زوجہ است حکم اگر نماز نخوانی ترا د و طلاق ان نوی الفور فھو علی الفور وان لم ینو یکون مطلقا لیکن احمد علی نیت فور نکردہ نہ قرینہ فور یافتہ شود پس یمین مطلق باقی ماند فی شرح الوقایۃ ص ۱۳۸ انت کذا ان لم اطلقك يقع في اخر عمره 1 زیرا کہ طلاق ندادن در آخر عمر صادق آید ورنہ ہر وقت احتمال طلاق ہست، ہمچنین نماز خواندن در آخر عمر صادق آید ورنہ نماز خواندن ہر وقت در مدۃ

العمر محتمل است، وفي القهستاني ص ۲۷۹ ويقع في الاصح اخر العمر او قبيل موته او موتها و فی النوادر لا يقع بموتها فی قولہ انت طالق وان لم اطلقک 2 ، سمجھنیں آں اگر زن قبیل موت نماز نہ خواند بروئے دو طلاق رجعی واقع شود مانحن فیہ چناں نیست بلکہ

1 شرح الوقایہ بیان لغوية التطليق قبل التزوج مطبع مجتبائی دہلی ۷۷/۲ 2 جامع الرموز (قہستانی) کتاب الطلاق مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۵۱۳/۱

That woman has been habituated from that date until now. In Qazi Khan, page 341: "And if he said: When I divorce you, you are divorced, and if I do not divorce you, you are divorced. Then he did not divorce her until she died. She is divorced twice in the last part of her life." All this is proof of the claim. Also in it, page 229: "A man said to his wife: If I do not have intercourse with you on the tip of this spear, you are divorced. As long as they are both alive and the spear remains, he does not break his oath." And just before the death of one of them or after the loss of the spear, he breaks his oath. This is our case. And Allah Almighty knows best. Even if it is accepted that the first two divorces occurred, they became null and void due to revocation (ruju'). Just as after a 'Bain' (irrevocable) divorce, if he remarries and then divorces again, the first two divorces after remarrying are considered, not the ones before remarrying. Similarly, after the first revocation, the divorce is void as mentioned in...

...it will be known. And it is in Nawadir that if a husband says to his wife, "You are divorced even if I don't give you a divorce," then there will be no divorce upon the wife's death. Similarly, in this matter, if she does not offer prayer before dying, she will have two revocable divorces. Whereas in the case under discussion, the wife did not leave the prayer, but from that time until today, she has been a regular observer of prayer. In Qazi Khan page 341, it says: If a husband said, "When I divorce you, you are divorced, and when I don't give you a divorce, you are divorced," in this situation, she will be divorced upon the woman's death and in the last hour of her life, there will be two divorces. This entire discussion supports the claimant's proof. On page 229 of the same, it says: A person said to his wife, "If I do not have intercourse with you on the tip of this spear, you are divorced." In this case, as long as the husband and wife are alive and the spear exists, there will be no divorce. Yes, upon the death of one of them or the destruction of the spear, divorce will occur. The case under discussion is also like this. And Allah knows best. If it is accepted that Ahmad Ali's wife was given the first two divorces, then they became void upon revoking them, just as it is said: if they remarry after a 'Bain' divorce and then divorce after that...

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Suspension, Nawal Kishore Lucknow, 1/220.
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Suspension, Nawal Kishore Lucknow, 1/228.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 13

वह औरत उस तारीख से अब तक उसकी आदी रही है। काज़ी ख़ां, पृष्ठ 341 में है: "यदि उसने कहा: जब मैं तुम्हें तलाक दूँ तो तुम्हें तलाक है, और यदि मैं तुम्हें तलाक न दूँ तो तुम्हें तलाक है। फिर उसने उसे तब तक तलाक नहीं दिया जब तक वह मर नहीं गई। उसे उसके जीवन के अंतिम भाग में दो तलाकें हो गईं।" यह सब दावे का प्रमाण है। उसी में पृष्ठ 229 पर है: "एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा: यदि मैं इस भाले की नोक पर तुमसे सहवास न करूँ तो तुम्हें तलाक है। जब तक वे दोनों जीवित हैं और भाला मौजूद है, वह अपनी कसम नहीं तोड़ता।" और उनमें से एक की मृत्यु से पहले या भाले के नष्ट होने के बाद वह कसम तोड़ देता है। हमारा मामला भी ऐसा ही है। और अल्लाह बेहतर जानता है। यदि यह मान लिया जाए कि पहले दो तलाक हुए थे, तो भी वे रुजू (सुलह) के कारण शून्य हो गए। जिस तरह 'बैन' तलाक के बाद यदि वह पुनर्विवाह करता है और फिर तलाक देता है, तो पुनर्विवाह के बाद वाले दो तलाक गिने जाते हैं, पुनर्विवाह से पहले वाले नहीं। इसी तरह पहले रुजू के बाद तलाक शून्य है जैसा कि...

...मालूम होगा। और नवादिर में है कि यदि पति ने पत्नी से कहा, "तुझे तलाक चाहे मैं तलाक न दूँ," तो पत्नी की मृत्यु पर तलाक नहीं होगा। इसी तरह इस मसले में यदि वह मरने से पहले नमाज़ नहीं पढ़ेगी तो उसे दो रजई तलाक होंगे। जबकि विचाराधीन मामले में पत्नी ने नमाज़ नहीं छोड़ी, बल्कि उस समय से आज तक वह नमाज़ की आदी और पाबंद है। काज़ी ख़ां के पृष्ठ 341 में है कि यदि पति ने कहा, "जब मैं तुझे तलाक दूँ तो तुझे तलाक और जब तुझे न दूँ तो तुझे तलाक," इस स्थिति में औरत के मरने पर उसे तलाक होगा और उसके जीवन की आखिरी घड़ी में दो तलाकें होंगी। यह पूरी बहस वादी के प्रमाण के समर्थन में है। उसी में पृष्ठ 229 पर है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा कि "अगर मैंने इस भाले की नोक पर तुझसे संभोग न किया तो तुझे तलाक है।" इस स्थिति में जब तक पति और पत्नी जीवित हैं और भाला भी मौजूद है, तलाक नहीं होगा। हाँ, किसी की मृत्यु या भाले के खत्म होने पर तलाक होगा। तो विचाराधीन मामला भी ऐसा ही है, अल्लाह बेहतर जानता है। अगर यह स्वीकार कर लिया जाए कि अहमद अली की पत्नी को पहली दो तलाकें हो गई हैं, तो भी उनसे रुजू कर लेने पर वे निष्प्रभावी हो गईं, जैसा कि कहा गया: बैन तलाक के बाद अगर पुनर्विवाह कर लें और उसके बाद तलाक...

1. फ़तावा काज़ी ख़ां, बाब अल-ता'लीक़, नवल किशोर लखनऊ, 1/220.

2. फ़तावा काज़ी ख़ां, बाब अल-ता'लीक़, नवल किशोर लखनऊ, 1/228.

पृष्ठ 165 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

آں زن ازاں تاریخ تا ایں دم متعو دہ گشت، فی قاضی خاں ص ۳۴۱ ولو قال اذا طلقتک فانت طالق واذا لم اطلقک فانت طالق فلم یطلق حتی ماتت طلقت ثنتین في اخر جزء من اجزاء حیانہ ۱ ایں ہمہ ثبوت مدعا ست ایضا فیہ ص ۲۲۹ رجل قال لامرأتہ ان لم اجامعك علی راس ھذا الرمح فانت طالق فما داما حییین والرمح قائم لا یحنث ۲ و قبیل موت احد ہما یا بعد ضیاع رمح حانث شود کذا مانحن فیہ واللہ تعالٰی اعلم، اگر تسلیم کردہ شود کہ طلاقین اولین واقع شدند تا ہم بوجہ رجعت باطل چنانکہ بعد طلاق بائن اگر تجدید نکاح کند بعدہ ایضا طلاق دہد طلاقین اولین باطل شوند بعد تجدید نکاح اگر طلاق دہد آں در حساب کردہ آید نہ طلاق قبل تجدید نکاح ہمچنیں بعد رجعت اول طلاق باطل است کمافی

معلوم ہوگا، اور نوادر میں ہے کہ اگر خاوند نے بیوی کو کہا " تجھے طلاق اگر چہ میں طلاق نہ دوں " تو بیوی کے مرنے پر طلاق نہ ہوگی ، اسی طرح اس مسئلہ میں بیوی مرنے سے قبل نماز نہ پڑھے گی تو اس کو دو طلاقیں رجعی ہونگی جبکہ زیر بحث صورت میں بیوی نے نماز نہ چھوڑی بلکہ اس وقت سے لے کر آج تک وہ نماز کی عادی اور پابند ہے۔ قاضی خاں کے ص ۳۴۱ میں ہے کہ اگر خاوند نے کہا "جب میں تجھے طلاق دوں تو تجھے طلاق اور جب تجھے نہ دوں تو تجھے طلاق" اس صورت میں عورت کے مرنے پر اس کو طلاق ہوگی اور اس کی عمر کی آخری گھڑی میں دو طلاقیں ہو گی یہ تمام بحث مدعی کے ثبوت کے لئے تائید ہے۔ اسی میں ص ۲۲۹ پر ہے کہ ایک شخص نے بیوی کو کہا کہ "اگر میں نے اس نیزے کے سر پر تجھ سے جماع نہ کروں تو تجھے طلاق ہے" اس صورت میں جب تک خاوند اور بیوی زندہ ہیں اور نیزہ بھی موجود ہے طلاق نہ ہوگی ، ہاں کسی کے مرنے یا نیزے کے ختم ہو جانے پر طلاق ہوگی ، تو زیر

بحث مسئلہ بھی ایسا ہی ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ اگر تسلیم کر لیا جائے کہ احمد علی کی بیوی کو پہلی دو طلاقیں ہوگئی ہیں تو تب بھی ان سے رجوع کر لینے پر وہ کالعدم ہو گئیں جس طرح کہا بائنہ طلاق کے بعد اگر تجدید نکاح کرلیں اور اس کے بعد طلاق

1 فتاویٰ قاضی خاں باب التعلیق نولکشور لکھنو ۲۲۰/۱ 2 فتاویٰ قاضی خاں باب التعلیق نولکشور لکھنو ۲۲۸/۱

Volume 13, Page 166

Fatawa Razawiya

[First Section] Ad-Durr al-Mukhtar: "If he divorces her revocably (Raj'i) and then makes it irrevocable (Ba'in) or triple (Thalatha)..."[1] Radd al-Muhtar states regarding the author's words 'before taking back (Ruju')': "This is because after Ruju', the act of divorce becomes void, so it becomes impossible to make it irrevocable or triple." This is also stated in Al-Tahtawi.[2] From these passages, it is very clear that the first two divorces became void because of Ruju'. Now, a divorce given without conditions followed by Ruju' is correct. This is the claim. And Allah Almighty knows best. Extracted by Muhammad Wajeehullah.

[Urdu Explanation on the right]: If he gives [the divorce], it will be counted towards the subsequent count and not the first count because the first count has become null and void due to the renewal of the marriage. Similarly, after taking [the wife] back (Ruju'), the previously given divorces will become null and void, as stated in Durr al-Mukhtar: if a revocable divorce was given, it should be made irrevocable or three divorces should be given. On this, it is said in Radd al-Muhtar that the text's statement "before Ruju'" is because if it is after Ruju', the act of divorce becomes void, so it will not be possible to make it irrevocable or triple. In Al-Tahtawi, it is as follows: From this passage, it is well clarified that the first two divorces of Ahmed Ali's wife became null and void due to Ruju'. Now, it will be correct to refer back (Ruju') on a divorce given without any condition; this is what is desired. And Allah Almighty knows best. The one who presented the solution to the problem is Muhammad Wajeehullah.

[Second Section] Al-Jawab (The Answer): O Allah! Guide us to the truth and correctness. My Lord, I seek refuge in You from the promptings of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they should come near me. In the questioned case, Ahmed Ali's wife has left his marriage bond. It is not such that she can become his wife again merely by renewing the marriage contract; rather, Halala (marriage to another then divorce) is necessary. She will remain strictly forbidden without marriage to another person. Allah Almighty said: "And if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him..."[3] However...

[Urdu Explanation on the right]: Al-Jawab: O Allah! Guide us to truth and correctness. O Lord! I seek refuge in You from the arrogance of Satan, and O Lord! I seek refuge in

You from the presence of Satans. In the asked case, Ahmed Ali's wife has gone out of his marriage, and now she will not be lawful even by renewing the marriage contract; instead, Halala is necessary. She will remain strictly forbidden without marriage to another person. Allah Almighty said: If he gives the third divorce, then after that the wife will not be lawful until she [marries] another...

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Al-Kinayat, Matba Mujtabai Delhi, 1/225 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Al-Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/46 [3] Al-Quran al-Karim, 2/230

जिल्द 13, पृष्ठ 166

फ़तावा रज़विया

[पहला खंड] 'अद-दुर्र अल-मुख्तार' से: "यदि वह उसे प्रतिसंहरणीय (रजई) तलाक देता है और फिर उसे अपरिवर्तनीय (बाइन) या तिगुना (थलाथा) कर देता है..."[1] 'रद्द अल-मुह्तार' में लेखक के शब्दों 'वापस लेने (रुजू) से पहले' पर कहा गया है: "यह इसलिए है क्योंकि रुजू के बाद, तलाक का कार्य शून्य हो जाता है, इसलिए उसे बाइन या तिगुना बनाना असंभव हो जाता है।" अल-तहावी[2] में भी यही कहा गया है। इन अंशों से यह बहुत स्पष्ट हो गया है कि रुजू के कारण पहले दो तलाक शून्य हो गए। अब, बिना किसी शर्त के दिया गया तलाक और उसके बाद रुजू सही है। यही दावा है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मुहम्मद वजीहउल्लाह द्वारा निकाला गया।

[दाहिनी ओर उर्दू व्याख्या का अनुवाद]: यदि वह [तलाक] देता है, तो इसे अगली गिनती में गिना जाएगा न कि पहली गिनती में क्योंकि निकाह के नवीनीकरण के कारण पहली गिनती शून्य हो गई है। इसी तरह, रुजू करने के बाद पहले दी गई तलाकें शून्य हो जाएंगी, जैसा कि दुर्र अल-मुख्तार में है: यदि प्रतिसंहरणीय तलाक दिया गया था, तो उसे बाइन बना देना चाहिए या तीन तलाक दे देने चाहिए। इस पर रद्द अल-मुह्तार में कहा गया है कि पाठ का कथन "रुजू से पहले" इसलिए है क्योंकि यदि यह रुजू के बाद है, तो तलाक का कार्य शून्य हो जाता है, इसलिए इसे बाइन या तिगुना बनाना संभव नहीं होगा। अल-तहावी में यह इस प्रकार है: इस पाठ से अच्छी तरह स्पष्ट हो गया है कि अहमद अली की पत्नी के पहले दो तलाक रुजू के कारण शून्य हो गए। अब, बिना किसी शर्त के दिए गए तलाक पर रुजू करना सही होगा; यही वांछित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। समस्या का समाधान प्रस्तुत करने वाला मुहम्मद वजीहउल्लाह है।

[दूसरा खंड] अल-जवाब (उत्तर): ऐ अल्लाह! हमें सत्य और शुद्धता की ओर मार्गदर्शन कर। ऐ मेरे रब! मैं शैतानों के बहकावे से तेरी पनाह चाहता हूँ, और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वे मेरे पास आएं। पूछे गए मामले में, अहमद अली की पत्नी उसके निकाह के बंधन से बाहर हो गई है। ऐसा नहीं है कि वह केवल निकाह अनुबंध के नवीनीकरण से फिर से उसकी पत्नी बन सकती है; बल्कि हलाला (दूसरे से निकाह और फिर तलाक) आवश्यक है। वह दूसरे व्यक्ति से निकाह के बिना पूरी तरह से हराम रहेगी। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और यदि वह उसे [तीसरी बार] तलाक दे दे, तो

उसके बाद वह उसके लिए तब तक हलाल नहीं है जब तक कि वह उसके अलावा किसी और पति से [निकाह] न कर ले..."[3] हालाँकि...

[दाहिनी ओर उर्दू व्याख्या का अनुवाद]: अल-जवाब: ऐ अल्लाह! सत्य और शुद्धता का मार्गदर्शन कर, ऐ रब! मैं शैतान के अहंकार से तेरी पनाह चाहता हूँ, और ऐ रब! शैतानों की उपस्थिति से तेरी पनाह चाहता हूँ। पूछे गए मामले में अहमद अली की पत्नी उसके निकाह से बाहर हो गई है और अब निकाह के नवीनीकरण से भी हलाल नहीं होगी बल्कि हलाला जरूरी है। दूसरे व्यक्ति से निकाह के बिना वह पूरी तरह हराम रहेगी। अल्लाह तआला ने फरमाया है: यदि वह तीसरा तलाक दे देता है, तो उसके बाद पत्नी हलाल नहीं होगी जब तक कि वह दूसरे...

---

[1] दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/225 [2] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-किؤयात, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 4/46 [3] अल-कुरान अल-करीम, 2/230

جلد سیز دہم، صفحہ ۱۶۶

فتاویٰ رضویہ

[پہلا حصہ] الدر المختار لو طلقها رجعيا فجعله بائنا او ثلاثا[1] ورد المحتار قوله قبل الرجعة لانه بعدها يبطل عمل الطلاق فيتعذر جعلها بائنا او ثلاثا هكذا في الطحطاوی[2] ازیں عبارت خوب واضح شد طلاقین اولین بوجہ رجعت باطل ست اکنوں برائے طلاق بلا شرط رجعت صحیح است وھو المدعی واللہ تعالیٰ اعلم۔ المستخرج محمد وجیہ اللہ۔

دے دے تو بعد والی گنتی میں ہوگی اور پہلی گنتی میں نہ ہوگی کیونکہ پہلی تجدید نکاح سے کالعدم ہو گئی ہے۔ اسی طرح رجوع کر لینے کے بعد پہلی دی ہوئی طلاقیں کالعدم ہو جائیں گی، جیسا کہ در مختار میں ہے کہ اگر رجعی طلاق دی ہو تو اس کو بائنہ بنا دے یا تین طلاق دے دے۔ اس پر رد المحتار میں کہا کہ متن کا قول "رجعت سے پہلے" یہ اس لئے کہ اگر رجعت کے بعد ہو تو طلاق کا عمل باطل ہو جاتا ہے اس لئے اس کو بائن یا تین بنانا ممکن نہ رہے گا، طحطاوی میں یوں ہے: اس عبارت سے خوب واضح ہو گیا کہ احمد علی کی بیوی کی پہلی دونوں طلاقیں رجعت کی وجہ سے کالعدم ہو جائیں گی۔ اب اس کے بعد کسی شرط کے بغیر دی ہوئی طلاق پر رجوع کرنا صحیح ہوگا، یہی مطلوب ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ کا حل پیش کرنے والا محمد وجیہ اللہ۔

[دوسرا حصہ] الجواب: اللهم هداية الحق والصواب رب انی اعوذبک من همزات الشيطن واعوذبک رب ان يحضرون در صورت مستفسرہ زن احمد علی از حبالہ نکاحش بدر رفت ،ونہ آنچناں کہ بمجرد تجدید نکاح باز زن اوتواں شد بلکہ تحلیل لازم است وبے توسط شوہر دیگر حرمت جازم قال اللہ تعالیٰ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ[3] حالانکہ

الجواب: اے اللہ! حق اور درستگی کی رہنمائی فرما، اے رب! میں شیطان کے غرور سے تیری پناہ چاہتا ہوں، اور اے رب! شیطانوں کی موجودگی سے تیری پناہ چاہتا ہوں، مسئولہ صورت میں احمد علی کی بیوی اس کے نکاح سے خارج ہو گئی اور اب تجدید نکاح سے بھی حلال نہ ہوگی بلکہ حلالہ ضروری ہے اور دوسرے شخص سے نکاح کے بغیر قطعی حرام رہے گی، اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے: اگر تیسری طلاق دے دے تو اس کے بعد بیوی حلال نہ ہوگی تاوقتیکہ وہ دوسرے

---

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۵ 2 رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربي بیروت ۴/ ۴۶ 3 القرآن الکریم ۲/ ۲۳۰

Fatawa Razawiyya, Volume 13

[Urdu Column - Right] ...should not marry any person. Now, following someone's tutoring, Ahmad Ali fabricated an excuse and said that he intended generality, meaning if my wife never offers any prayer in her entire life, and doesn't offer a single prayer throughout her lifespan, then she will have two divorces. This excuse is a lie and a purely corrupt pretext which no sensible person, except children, would accept. Whereas the purpose was to advise and scold the wife to make her regular in prayer. In common parlance, it is understood that if she skips a prayer to make her regular, she will be divorced twice. It is not that "I like even a single prostration of yours, and when you are about to die and I see you departing from the world, and I see that you haven't performed a single prostration, and while leaving the world when the marriage is automatically ending, you will receive two divorces." These meanings are nothing but a joke, and such a thing is never the intention of those who speak like this, nor do native speakers or people of common usage understand it this way. Ahmad Ali, further clarifying the night's proceedings which were already clear, after the two revocable divorces triggered by the wife not performing the Isha prayer that night, made a revocation (ruju') in the morning. If his intention was what the tricksters taught him, then if she didn't offer the Isha prayer, no divorce would have occurred, so what was the point of revocation and towards whom was it made? Ignoring all these clear points and...

[Persian Column - Left] Ahmad Ali, at someone's teaching, claims an intention of generality, meaning if you never approach prayer in your entire life and do not perform a single prayer during your lifetime, you shall be divorced twice. This is a futile excuse and a very corrupt pretext that no sane person, besides children, would ever accept or consider intended. The aim was preaching and scolding so that she would become regular in prayer. This same meaning is understood in common usage, which is the basis of faith, not that "a single prostration throughout life is sufficient, and if I see you dying and leaving the world without having performed a single prostration, then at your last breath as you leave my marriage, you will be divorced twice." Such meanings are nothing but a joke; they are never the intent of the speaker, nor the understanding of the people of common usage and language. Ahmad Ali himself, on the morning of that night, through his practical actions, made even clearer what was already manifest: when the wife did not offer the Isha prayer, he made a revocation in the morning. If the intention was what the tricksters now present as a trap, then who was divorced and why did he perform a revocation? To

bypass and leave aside all these clear facts and to look towards deception and tricks for the sake of making a forbidden vulva lawful (tahlil) is not the work of a Muslim. From here, the trick regarding intention and promise falls apart; rather, any trick fabricated now contradicts the morning's action.

फ़तावा रज़विया, खंड 13

[उर्दू खंड - दायां] ...व्यक्ति से निकाह न करे। अब अहमद अली ने किसी के सिखाने पर जो हिला (बहाना) गढ़ा और कहा कि उमूम (व्यापकता) का इरादा किया है, यानी तमाम उम्र कभी कहीं कोई नमाज़ बीवी न पढ़े और तमाम उम्र एक नमाज़ भी न पढ़े तो तुझे दो तलाक़ें। यह हिला झूठ और शुद्ध रूप से फासिद (दूषित) बहाना है जिसे बच्चों के अलावा कोई अकलमंद स्वीकार नहीं करेगा, जबकि उद्देश्य यह है कि बीवी को नमाज़ का पाबंद बनाने के लिए नसीहत और डांट के तौर पर बात की गई है। लोगों के उर्फ़(सामान्य बोलचाल) में यही समझा जाता है कि बीवी को नमाज़ का पाबंद बनाने के लिए कोई नमाज़ छोड़ने पर उसे दो तलाक़ें होंगी, न कि यह कि "तेरा एक सजदा ही पसंद है और जब तू मरने लगे और दुनिया से विदा होते देखूँ कि तूने कोई एक सजदा न किया और दुनिया से जाते समय जबकि खुद-ब-खुद निकाह खत्म हो रहा हो, तब तुझे दो तलाक़ें होंगी।" यह अर्थ तो मज़ाक के सिवा कुछ नहीं है और न ही ऐसी बात करने वालों का कभी यह उद्देश्य होता है और न ही अहल-ए-ज़बान (भाषा के जानकार) और अहल-ए-उर्फ़ यह अर्थ समझते हैं। अहमद अली ने रात की कार्रवाई, जो पहले से ही स्पष्ट थी, उसे सुबह और अधिक स्पष्ट करते हुए, बीवी के ईशा की नमाज़ रात को न पढ़ने पर दो रजई तलाक़ों के बाद सुबह उसने रुजूअ (वापसी) किया। अगर उसका उद्देश्य वही था जो हिला साज़ों (बहानीबाज़ों) ने उसे सिखाया, तो ईशा की नमाज़ न पढ़ने से तलाक़ ही न हुई, तो रुजूअ कैसा और किससे रुजूअ किया? इस तमाम स्पष्ट चीज़ को नज़रअंदाज़ करना और...

[फ़ारसी खंड - बायां] अहमद अली किसी के सिखाने पर व्यापक इरादे (उमूम) का दावा करता है, यानी अगर तुम अपनी पूरी उम्र में कभी नमाज़ के करीब न जाओ और जीवन भर एक भी नमाज़ अदा न करो, तो तुम पर दो तलाक़ होंगे। यह एक व्यर्थ हिला और अत्यंत दूषित बहाना है जिसे बच्चों के अलावा कोई भी समझदार व्यक्ति कभी स्वीकार नहीं करेगा। उद्देश्य उपदेश और डांट-डपट था ताकि वह नमाज़ की पाबंद हो जाए। यही अर्थ सामान्य बोलचाल (उर्फ़) में समझा जाता है, जो ईमान का आधार है, न कि यह कि "पूरी उम्र में एक सजदा ही काफी है, और अगर मैं तुम्हें मरते हुए और दुनिया से विदा होते हुए देखूँ कि तुमने कभी एक सजदा नहीं किया, तब तुम्हारी आखिरी सांस के समय जब तुम मेरे निकाह से बाहर जा रही हो, तुम पर दो तलाक़ होंगे।" ऐसे अर्थ मज़ाक से बढ़कर कुछ नहीं हैं; यह न तो वक्ता का इरादा होता है और न ही सामान्य बोलचाल और भाषा के जानकारों की समझ। अहमद अली ने खुद उस रात की सुबह, अपने व्यावहारिक कार्यों के माध्यम से, जो पहले से ही ज़ाहिर था, उसे और अधिक स्पष्ट कर दिया: जब पत्नी ने ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी, तो उसने

सुबह रुजूअ किया। यदि इरादा वह था जो हिला साज़ अब एक जाल के रूप में पेश कर रहे हैं, तो तलाक़ किस पर हुई और उसने रुजूअ क्यों किया? इन सभी स्पष्ट तथ्यों को छोड़कर और एक हराम शर्मगाह को हलाल (तहलील) करने के लिए धोखे और हिला की ओर देखना मुसलमान का काम नहीं है। यहाँ से, इरादे और वादे के बारे में हिला बिखर जाता है; बल्कि, अब जो भी हिला गढ़ा गया है वह सुबह के अमल के खिलाफ है।

فتاوی رضویہ جلد تیرہ

[اردو کالم - دائیں جانب] شخص سے نکاح نہ کرے، اب احمد علی نے کسی کے سکھانے پر جو حیلہ گھڑا اور کہا کہ عموم کا ارادہ کیا ہے یعنی تمام عمر کبھی کہیں کوئی نماز بیوی نہ پڑھے اور تمام عمر ایک نماز بھی نہ پڑھے تو تجھے دو طلاقیں، یہ حیلہ جھوٹ اور خالص فاسد بہانہ ہے جس کو بغیر بچوں کے علاوہ کوئی عقلمند تسلیم نہیں کرے گا، جبکہ مقصد یہ ہے کہ بیوی کو نماز کا پابند بنانے کے لئے نصیحت اور ڈانٹ کے طور پر بات کی گئی ہے لوگوں کے عرف میں یہی سمجھا جاتا ہے کہ بیوی کو نماز کا پابند بنانے کے لئے کوئی نماز ترک کرنے پر اس کو دو طلاقیں ہوں گی، نہ یہ کہ تیرا ایک سجدہ ہی پسند ہے اور جب تو مرنے لگی اور دنیا سے رخصت ہوتی دیکھوں کہ تو نے کوئی ایک سجدہ نہ کیا اور دنیا سے واپس جاتے ہوئے جبکہ از خود نکاح ختم ہو رہا ہو تو تجھے دو طلاقیں ہوں گی، یہ معنی تو مذاق کے سوا کچھ بھی نہیں اور نہ ہی ایسی بات کرنے والوں کا ہر گز یہ مقصود ہوتا ہے اور نہ ہی اہل زبان اور اہل عرف یہ معنی سمجھتے ہیں۔ احمد علی نے رات کی کارروائی جو کہ پہلے واضح تھی اس کو صبح مزید واضح کرتے ہوئے بیوی کے عشاء کی نماز رات کو نہ پڑھنے پر دورجعی طلاقوں کے بعد صبح اس نے رجوع کیا، اگر اس کا مقصد وہی تھا جو حیلہ سازوں نے اس کو سکھایا تو عشاء کی نماز نہ پڑھنے سے طلاق نہ ہوئی تو رجوع کیسا اور کس سے رجوع کیا، اس تمام واضح چیز کو نظر انداز کرنا اور

[فارسی کالم - بائیں جانب] احمد علی بتعلیم کسے ادعائے ارادہ عموم میکند یعنی آنکہ اگر تو در ہمہ عمر خودت ہیچگاہ پیراموں نماز نگردی و در مدت حیات یک نماز ہم ادانہ کنی، بر تو دو طلاق باشد حیلہ ایست کا سدہ و بہانہ ایست بس فاسدہ کہ غیر طفلاں، بخبر بیچ عاقلے ببوئے نخرو مقصود وعظ زجراں می شد کہ پابند نماز شود ہمیں معنی در مستفاہم عرف کہ بنائے ایمان ست مفہوم شود نہ آنکہ

در مدت العمر یک سجده پسند ست اگر ترا ببینم کہ مردے واز دنیا رخت بردی پیچگاہ یک سجده الہ نگردی آنگاہ بدم واپسیں کہ خود از نکاح من بیرون می روی بر تو دو طلاق باشد ایں معنی کہ اضحو کہ بیش نیست زنہار نہ مراد قائلاں می باشد و نہ مفہوم اہل عرف وزبان، وخود احمد علی صباح آں شب بکار روائی عملی خود مرا خودش کہ آشکارا بود آشکاراتر نمود کہ چوں زن نماز عشاء نگذار د بامداد آں رجعت نمود اگر قصد آں بودے کہ حالا بآموزگاری دستاں سازاں دامے نماید طلاق بر کہ بود و رجعت از چہ فرمود ازیں ہمہ واضحات گزشتن و گزاشتن و بہر تحلیل فرج حرام نظر بر فریب وحیلہ گماشتن کار مسلمانی نیست وہم از اینجا حیلہ قصد وعدہ از ہم پاشد بل ہر حیلہ کہ فسو نسازی حالا تراشد عمل بامدادی

Fatawa Rizvia, Volume 13

(Right Column): It is not the way of Muslims to make a forbidden private part lawful through deception and false pretexts. Furthermore, the claim that Ahmad Ali intended a promise of divorce is automatically dismissed; rather, all the schemes taught to him by manipulators were invalidated by Ahmad Ali himself through his act of revocation (ruju') in the morning. What does this poor, ignorant person know? This humble servant (the author) explains in refutation of his teacher, and similarly, the statement taught by the teacher—that the initial divorces are invalidated by the revocation—which his tongue uttered under the influence of some misguider, will be refuted. Upon these misguided words, only "La hawla wa la quwwata illa billahil aliyyil azim" (There is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great) can be recited. The answer to the queried situation is complete with the aforementioned words; however, to eliminate doubts and erase whispers, some discourse in refutation of the Deobandi fatwa will be useful and beneficial, for which I seek guidance from Allah Almighty. This worthless fatwa, which is a collection of misguidance and errors, manifests Deobandism and ignorance in every line, and the capital of Deobandis can be observed in its every letter. This new spectacle of Deobandis, which is full of fabricated deception to make what Allah has forbidden lawful, is a wonder. The irony is that even the seasoned figures of Deoband contribute to this display.

(Left Column): Ahmad Ali is struggling, and what does this poor ignorant person know of his own words? This humble servant speaks in refutation of his teacher, and similarly invalidates the divorce through revocation, for this accursed word came from his tongue under the instruction of misguidance. There is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great. The ruling on the matter in the previous glorious fatwas has become entirely clear. Here, for the purpose of calming anxieties and dispelling whispers and conspiracies, we write a few useful and beneficial words in refutation of the Deobandi fatwa, and we hope for success from the Almighty Presence, the Mighty and Exalted. This strange fatwa, a collection of errors and slips, whose Deobandi influence is evident from every line, and the soul and world of Deobandis are infatuated with its every letter, has come under observation. The new generation of Deobandis, in making Allah's forbidden things lawful through deceptive self-delusion, what a cruel wonder they have employed, which even takes away the market splendor from the old Deobandi aspirants. Detailed explanation would lead to prolixity, therefore, for us, brief and sufficient

reasoning is enough. Heaven forbid that my words be directed towards such amateurs of the art; rather, the intent is to advise the common faithful, lest someone, under another's delusion, considers Allah's forbidden to be lawful, and treats words of error and misguidance—even the explicit denial of the word of the Lord of Majesty—with indifference. We seek refuge with Allah, the Mighty, the Merciful, and there is no power nor strength except with Allah.

(दायां कॉलम): धोखे और गलत बहानों से हराम अंगों को हलाल करना मुसलमानों का काम नहीं है। साथ ही, यहाँ यह बहाना करना कि अहमद अली ने तलाक के वादे का इरादा किया था, अपने आप ही समाप्त हो गया, बल्कि उन तमाम चालों को जो साजिशकर्ताओं ने उसे सिखाई थीं, खुद अहमद अली ने सुबह रुजू (तलाक वापस लेने) की कार्रवाई से अमान्य कर दिया। इस अजीब बेचारे अज्ञानी को क्या पता है, यह फकीर (लेखक) उसके उस्ताद के खंडन में बयान करता है और इसी तरह उस्ताद के सिखाए हुए इस कलाम में कि रुजू करने से पहली तलाकें बाटल (अमान्य) हो गई हैं, जो किसी गुमराह के बहकावे में उसकी जुबान ने इस्तेमाल की हैं, उसका खंडन किया जाएगा। इन गुमराह शब्दों पर केवल "ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्युल अज़ीम" ही पढ़ा जा सकता है। पूछी गई स्थिति का उत्तर उपरोक्त शब्दों के साथ पूरा हो गया है, फिर भी शंकाओं को दूर करने और वसवसों को मिटाने के लिए देवबंदी के फतवे के खंडन में कुछ बातें कहना उपयोगी और फायदेमंद होगा, जिसके लिए मैं अल्लाह तआला से तौफीक चाहता हूँ। यह रद्दी फतवा, जो गुमराहियों और गलतियों का समूह है, इसकी हर लाइन से देवबंदियत और अज्ञानता स्पष्ट हो रही है और इसके हर अक्षर से देवबंदियों की पूंजी देखी जा सकती है। देवबंदियों का यह नया तमाशा, जो अल्लाह द्वारा हराम की गई चीज़ को हलाल करने के लिए मनगढ़ंत धोखे से भरा है। इन अजूबों पर सितम यह कि देवबंद की पुरानी हस्तियां भी बाज़ार की रौनक बढ़ा रही हैं।

(बायां कॉलम): अहमद अली संघर्ष कर रहा है, और यह बेचारा अज्ञानी अपने ही शब्दों के बारे में क्या जानता है? यह फकीर उसके उस्ताद के खंडन में बात करता है, और इसी तरह रुजू के माध्यम से तलाक को अमान्य करता है, क्योंकि यह शापित शब्द उसकी जुबान से गुमराह शिक्षा के तहत निकला था। अल्लाह, जो सबसे ऊंचा और महान है, के अलावा न कोई शक्ति है और न ही कोई सामर्थ्य। पिछली शानदार फतवों में इस मामले का फैसला पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है। यहाँ, चिंताओं को शांत करने और फुसफुसाहटों और साजिशों को दूर करने के उद्देश्य से, हम देवबंदी फतवे के खंडन में कुछ उपयोगी और लाभप्रद शब्द लिखते हैं, और हम सर्वशक्तिमान की उपस्थिति, शक्तिशाली और महान से सफलता की आशा करते हैं। यह अजीब फतवा, त्रुटियों और चूकों का संग्रह, जिसका देवबंदी प्रभाव हर पंक्ति से स्पष्ट है, और देवबंदियों की आत्मा और दुनिया इसके हर अक्षर पर मोहित है, अवलोकन में आया है। देवबंदियों की नई पीढ़ी ने, अल्लाह की वर्जित चीज़ों को भ्रामक आत्म-मोह के माध्यम से हलाल करने में, क्या ही क्रूर अजूबा इस्तेमाल किया है, जिसने पुराने

देवबंदी उम्मीदवारों से भी बाज़ार की रौनक छीन ली है। विस्तृत व्याख्या से विस्तार होगा, इसलिए हमारे लिए संक्षिप्त और पर्याप्त तर्क ही काफी है। खुदा न करे कि मेरी बातें कला के ऐसे शौकीनों की ओर निर्देशित हों; बल्कि उद्देश्य आम वफादारों को सलाह देना है, ताकि कोई, किसी और के भ्रम में आकर, अल्लाह के हराम को हलाल न समझ ले, और त्रुटि और गुमराह करने वाले शब्दों—यहाँ तक कि महिमा के भगवान के शब्दों के स्पष्ट खंडन—को उदासीनता के साथ न ले। हम अल्लाह, शक्तिशाली, दयालु के पास शरण मांगते हैं, और अल्लाह के अलावा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है।

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم

(دایاں کالم): فریب اور غلط حیلہ سے حرام شرمگاہ کو حلال کرنا مسلمانوں کا کام نہیں ہے، نیز یہاں یہ حیلہ کرنا کہ احمد علی نے وعدہ طلاق کا قصد کیا ہے، خود بخود ختم ہوگیا بلکہ وہ تمام حیلے جو کار سازوں نے اسے سکھائے ہیں ان سب کو خود احمد علی نے صبح رجوع کی کاروائی سے باطل قرار دیا اور اس عجیب بیچارے بے علم کو کیا معلوم ہے، یہ فقیر اس کے استاذ کے رد میں بیان کرتا ہے اور یونہی استاذ کے سکھائے ہوئے اس کلام میں کہ رجوع کرنے سے پہلی طلاقیں باطل ہو گئی ہیں جو کسی گمراہ کے بہکانے پر اس کی زبان نے استعمال کی ہیں کا رد کیا جائے گا۔ ان گمراہ کلمات پر "لاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم" ہی پڑھی جاسکتی ہے، مسئولہ صورت کا جواب مذکور کلمات سے مکمل ہو گیا ہے تاہم شکوک کو ختم کرنے اور وسوسوں کو مٹانے کیلئے دیوبندی کے فتوی کے رد میں کچھ کلام کی جائے تو مفید اور سود مند ہو گی جس کے لئے میں اللہ تعالیٰ سے توفیق کا خواستگار ہوں۔ یہ ردی فتوی جو گمراہی اور غلطیوں کا مجموعہ ہے اس کی ہر سطر سے دیوبندیت اور جہالت نمایاں ہو رہی ہے اور اس کے ہر حرف سے دیوبندیوں کا سرمایہ ملاحظہ کیا جاسکتا ہے، دیوبندیوں کا یہ نیا تماشہ جو اللہ کی حرام کردہ کو حلال بنانے کے لئے من گھرت فریب سے پر ہے۔ ان عجوبوں پر ظلم یہ کہ دیوبند کی کہنہ مشق شخصیات بھی بازار کی رونق

(بایاں کالم): احمد علی ہمہ راجان خراشد و قولہ ایں بیچارہ بے علم چہ داند فقیر سخن ازاں در رد معلم اومی راند و ہمچناں ابطال طلاق بہ رجعت کہ این کلمہ ملعونہ از زبانش ہماں بتعلیم ضلال بر آمد ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم حکم مسئلہ در فتاوائے جلیلہ سابقہ ہر چہ تمامتر روشن شدہ است اینجا تسکیناً لھواجس و تو ھبنا للوساوس والدسائس حرفے چند نافع و سود مند در رد فتوائے

دیوبند بر نگاریم و امید توفیق از حضرت عزت عز و علا داریم، ایں طرفہ فتوی جامع الخطا والظعونی کہ اثر دیوبندیش از ہر سطراش ہویدا و جان و جہاں دیوبندیاں بر حرف حرفش شیدا بملاحظہ آمد، نو بادہ دیوبندیاں در تحلیل حرام خدا بہ تسویل نفس پر دغا، چہ ستم اعجوبہا بکار برد کہ کہن مشتاق دیوبند رانیز رونق بازار برد تفصیلش مفضی بتطویل، لہذا برما قل و کفی تعویل و حاشا روئے سخن بر ہمچو نا شناسیاں فن بلکہ مقصود نصح عوام مومناں ست، تا مبادا با غوائے کسے حرام خدا را حلال پندارد، و کلمات خطا و ضلال حتی کہ تکذیب صریح کلام ذی الجلال را سہل انگارند والعیاذ باللہ العزیز الرحیم، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

(Left Column - Persian/Arabic text): The High and Great. Friends, yes, be alert and there should be no haste. Let the lightning-striking steed of the pen come into motion. With the power of the Almighty, the field will now be cleared and the matter will become evident that this poor fellow, due to Deobandi influence, has denied the definitive text (nass-e-qati) of the Quran and violated the consensus (ijma) of the leaders of the believers, may Allah be pleased with them. Out of greed, hoping to make forbidden private parts permissible for another, he discarded shame openly. And the Messenger of Allah, peace and blessings be upon him, spoke the truth in what Abu Huraira (may Allah be pleased with him) narrated from him, recorded by Al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman: "Among the worst of people in status is the one who ruins his Hereafter for the sake of another's worldly life." We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds. We shall mention, one by one, in several useful admonitions, several errors of this newly-seen fatwa, so that the wise may understand, the heedless may be warned, and the erring, if granted success, may not continue blindly. And with Allah is success and the achievement of truth.

(Right Column - Urdu translation): ...proven. Talk exceeding the necessity will lead to lengthening, therefore it is appropriate for us to present what is brief and sufficient. There is absolutely no address to such ignorant people; rather, the intention is to advise the people of faith, so that they do not consider what Allah Almighty has forbidden as permissible due to someone's misguidance, and do not take lightly matters of error and deviation, which even involve denying the explicit word of Allah Almighty. We seek refuge with Allah, the Almighty, the Merciful, and there is no power or strength except through Allah, the High, the Great. Friends, be extremely alert; there should be no impatience. Let the swift steed of the pen come into motion. By the grace of Allah Almighty, the field will be cleared and the matter will be explained clearly how this strange fellow, due to Deobandi influence, has denied the definitive text of the Holy Quran and violated the consensus of the leaders of the believers, may Allah be pleased with them. And that too by daring to make forbidden private parts permissible for another out of greed, taking shame upon himself. Abu Huraira (may Allah be pleased with him) narrated the true saying of the Prophet (peace and blessings be upon him), which Al-Bayhaqi narrated in 'Shu'ab al-Iman', that the most wretched of people is the one who ruins his Hereafter for the sake of another's worldly life. We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds. Now we shall

mention several useful admonitions to provide awareness about some errors of this strange fatwa, so that the wise and the heedless...

Footnote: 1 Shu'ab al-Iman, Chapter on Sincerity in Deeds for Allah and Leaving Ostentation, Hadith, Dar al-Kutub al-Ilmiyya Beirut, 358/5.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

(बायाँ स्तंभ - फ़ारसी/अरबी पाठ): महान और उच्च। मित्रों, हाँ, सतर्क रहें और जल्दबाज़ी नहीं होनी चाहिए। कलम के बिजली जैसे तेज़ घुड़सवार को गति में आने दें। अल्लाह की शक्ति से अब मैदान साफ़ हो जाएगा और बात स्पष्ट हो जाएगी कि इस बेचारे ने देवबंदी प्रभाव के कारण कुरान के स्पष्ट प्रमाण (नस्से क़तई) को झुठलाया और मोमिनों के इमामों के सर्वसम्मति (इजमा) का उल्लंघन किया। लालच में आकर, दूसरे के लिए हराम निजी अंगों को हलाल करने की उम्मीद में, उसने सरेआम शर्मोहया छोड़ दी। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सच कहा जैसा कि अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उनसे रिवायत किया, जिसे बैहक़ी ने 'शुअ़बुल ईमान' में दर्ज किया है: "लोगों में दर्जे के लिहाज़ से सबसे बुरा वह है जो दूसरे की दुनिया के लिए अपनी आख़िरत बर्बाद करे।" हम अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह माँगते हैं। हम एक-एक करके कई उपयोगी चेतावनियों में इस नए देखे गए फ़तवे की कई ग़लतियों का ज़िक्र करेंगे, ताकि बुद्धिमान लोग समझ सकें, बेख़बर लोग जागरूक हो सकें, और ग़लती करने वाले, यदि उन्हें अल्लाह की ओर से तौफ़ीक़ मिले, तो वे अंधे की तरह न चलें। और सफलता अल्लाह की ओर से है और सत्य तक पहुँचना भी।

(दायाँ स्तंभ - उर्दू अनुवाद): ...सिद्ध हुए। ज़रूरत से ज़्यादा बात विस्तार का कारण बनेगी, इसलिए हमारे लिए संक्षिप्त और पर्याप्त बात पेश करना ही उचित है। इन जैसे नासमझ लोगों से बात करना हरगिज़ मक़सूद नहीं है, बल्कि अहले ईमान को नसीहत देना मक़सूद है ताकि वे किसी के बहकाने पर अल्लाह तआला की हराम की हुई चीज़ों को हलाल न समझ बैठें, और गुमराही की बातों को हल्के में न लें जो कि अल्लाह के स्पष्ट कलाम को झुठलाने के बराबर हैं। हम अल्लाह, अज़ीज़ और रहीम की पनाह माँगते हैं। अल्लाह के सिवा कोई ताकत नहीं। दोस्तों, बहुत सावधान रहें, अधीर न हों। कलम के तेज़ रफ़्तार घोड़े को चलने दें। अल्लाह के फ़ज़्ल से बात साफ़ हो जाएगी कि इस व्यक्ति ने देवबंदी असर में आकर कुरान और इमामों के इजमा की कैसे मुख़ालफ़त की। वह भी दूसरे के लिए हराम को हलाल करने के लालच में। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: लोगों में सबसे बदनसीब वह है जो दूसरे की दुनिया के लिए अपनी आख़िरत बिगाड़े। अब हम इस फ़तवे की ग़लतियों पर कुछ तनबीहात (चेतावनियाँ) पेश करेंगे ताकि अक्लमंद और गाफ़िल लोग...

पाद-लेख: 1 शुअ़बुल ईमान, अल्लाह के लिए कर्मों में ईमानदारी और दिखावे के त्याग का अध्याय, हदीस, दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरूत, 358/5.

पृष्ठ १६९ का ६८८

(بایاں کالم - فارسی متن): العلی العظیم عزیزان بلہ ہشیار ومے شتاب زدگی نباید شہسوار خامہ برق بار را بجالش آمدن دھید بحولہ تعالٰی حالا خالی شود و بیان بہ عیاں رسد کہ بیچارہ از اثر دیوبندی چسپاں تکذیب نص قطعی قرآن و خرق اجماع ائمہ مومناں علیہم الرضوان نمود ، و بطمع آنکہ مگر فرجے حرام را برائے دیگری حلال نماید حیا در ملا بر روئے خودش کشود و قد صدق رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فیما یرویہ عنہ ابوھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ عند البیھقي في شعب الایمان من اسوء الناس منزلۃ من اذھب آخرتہ بدنیا غیرہ - والعیاذ باللہ رب العلمین ہما چیدہ چیدہ در تنبیہات عدیدہ مفیدہ بر چند خطائے ایں فتوٰی نو چاویدہ آگاہی دہیم، تا عاقلاں پے برند و غافلاں خبر دار شوند و خاطیاں اگر توفیق یابند گرہ ہمچنان کور کورانہ نروند وباللہ التوفیق ووصول التحقیق۔

(دایاں کالم - اردو ترجمہ): ثابت ہوئے ضرورت سے زائد بات موجب تطویل ہوگی لہٰذا ہم پر قلیل اور کافی کو پیش کرنا مناسب ہے ان جیسے ناسمجھ لوگوں سے ہرگز روئے سخن نہیں ہے بلکہ اہل ایمان کو نصیحت مقصود ہے تاکہ کہیں کسی کے بہکانے پر اللہ تعالیٰ کے حرام کردہ کو حلال نہ سمجھ لیں، اور غلط و گمراہی کی باتیں حتیٰ کہ اللہ تعالیٰ کے صریح کلام کی تکذیب ہیں پر سہل انگاری سے کام نہ لیں العیاذ باللہ العزیز الرحیم ، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم - عزیزان نہایت ہوشیار بے صبری نہیں چاہئے، تیز رفتار شہسوار قلم کو حرکت میں آنے دو اللہ تعالیٰ کے فضل سے میدان صاف اور بیان واضح ہو جائے گا کہ اس عجیب بیچارے نے دیوبندی اثر کی بنا پر قرآن پاک کی نص قطعی کی تکذیب اور مومنوں کے ائمہ کرام رضوان اللہ علیہم کے اجماع کی خلاف ورزی کس طرح کی ہے اور وہ بھی حرام شرمگاہ کو غیر کے لئے حلال کرنے کے لالچ میں جرات کرکے شرمساری اپنے ذمے لے لی ہے۔ ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضور علیہ

الصلوٰۃ والسلام کا سچا ارشاد روایت فرمایا جس کو بیہقی نے شعب الایمان میں روایت کیا ہے کہ لوگوں میں سب سے بڑا بد بخت وہ شخص ہے جو غیر کی دنیا کے لئے اپنی آخرت خراب کرے والعیاذ باللہ رب العلمین ، اب ہم چند تنبیہات مفیدہ، اس عجیب فتویٰ کی چند غلطیوں پر آگاہی کے لئے ذکر کریں گے تا کہ بے پر عاقل اور غافل لو

حاشیہ: 1 شعب الایمان باب فی اخلاص العمل للہ وترک الریاء حدیث دار الکتب العلمیہ بیروت ۳۵۸/۵

Fatawa-e-Razvia Volume Thirteen Page 13

...be warned, and if the wrongdoers find guidance, let them not adopt the path of others; guidance and access to truth are attained only from Allah the Almighty. (T)

[Right Column] First: This, that he wanted to erase the sign of divorce by changing the form of the question. The question that came here, its words were that a person said to his wife after the Maghrib prayer, "If you do not offer prayer, then there are two divorces (talaq)." And following Deobandi teaching, the question was made like this: A person, with a balanced temperament and constant disposition, said to his wife by way of scolding and warning, "Offer prayer, if you do not offer prayer then to you are two divorces," thus he turned "then there are two divorces" into "to you are two divorces," so that in his false assumption he could remove it from being a conditional divorce and make it a promise of divorce, and with the teeth of greed, untie the knot of Ahmad Ali's action. And it is a clear matter that changing the form of a question after knowing a Sharia ruling can only be called deception and fraud. Then the person who sent this question to us again has lifted the veil from the story of these followers of carnal desires, that the specific word Ahmad Ali used on this occasion in the Bengali language is "Dilam," which is explicitly written to mean "I gave," and completely ended the fabricated form of a promise. (T)

[Left Column] First: That he sought to repair the breach of divorce by changing the form of the question. The question that came here, its wording was: "A person said to his wife after the Maghrib prayer that if you do not offer prayer, then there are two divorces." And the Deobandi teaching of the question made it such that with a balanced temperament and stability of disposition, he said by way of scolding and warning, "Read the prayer, if you do not read the prayer, there are two divorces for you" instead of "it is two divorces," he made it "two divorces for you" so that in his own false assumption he could bring it out of suspension and make it a promise of divorce, and with evil greed, open the knot of Ahmad Ali's work. And it is evident that changing the form after being informed about the Sharia ruling is nothing but by way of deception and trickery. Again, our questioner who sent this question, removed the veil from the face of the handiwork of these desire-followers, that the specific word of Ahmad Ali in the Bengali language is "Dilam" which is explicitly in the sense of "I gave," he wrote it and the board of fabrication of promise was folded up.

Page 170 of 688

फतावा-ए-रज़विया जिल्द तेरहवीं पृष्ठ 13

...सावधान हो जाएं और गलतियाँ करने वाले यदि तौफीक पाएं तो दूसरों के रास्ते को न अपनाएं तौफीक और सत्य तक पहुँच अल्लाह तआला से ही प्राप्त होती है। (त)

[दायाँ कॉलम] पहला: यह कि, तलाक के निशान को प्रश्न के रूप में परिवर्तन करके मिटाना चाहा, यहाँ जो प्रश्न आया उसके शब्द यह हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से मग़रिब की नमाज़ के बाद कहा "यदि तू नमाज़ नहीं पढ़ेगी तो दो तलाक है" और देवबंदी की शिक्षा से प्रश्न को इस प्रकार बना दिया: एक व्यक्ति ने स्वभाव के संतुलन और दृढ़ संकल्प के साथ डांट और चेतावनी के रूप में अपनी पत्नी से कहा कि तू नमाज़ पढ़, यदि तू नमाज़ न पढ़े तो तुझे दो तलाक, इस प्रकार उसने "दो तलाक है" के बजाय "तुझे दो तलाक" बना दिया, ताकि अपने झूठे विचार में वह इसे सशर्त तलाक (तअलीक) से निकालकर तलाक का वादा बना सके और लालच के दांतों से अहमद अली की कार्यवाही की गांठ को खोल सके, और यह स्पष्ट बात है कि किसी शरीयत के हुक्म के ज्ञात होने पर प्रश्न के रूप को बदलना केवल मक्कारी और फरेब ही कहला सकता है। फिर जिसने हमारे पास दोबारा यह प्रश्न भेजा है, उसने इन नफ़्सानी इच्छाओं के पुजारियों की दास्तान से पर्दा हटा दिया है कि अहमद अली ने जो शब्द विशेष रूप से इस अवसर पर बंगाली भाषा में इस्तेमाल किया है वह "दिलाम" है जो कि स्पष्ट रूप से "मैंने दी" के अर्थ में होना लिखा है और वादे की कल्पित सूरत को पूरी तरह समाप्त कर दिया। (त)

[बायाँ कॉलम] पहला: यह कि प्रश्न का रूप बदलकर तलाक के उल्लंघन को सुधारना चाहा। यहाँ जो प्रश्न आया था उसके शब्द थे: "एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से मग़रिब की नमाज़ के बाद कहा कि यदि तू नमाज़ न पढ़े तो दो तलाक हैं।" और प्रश्न की देवबंदी शिक्षा ने इसे ऐसा बना दिया कि संतुलित स्वभाव और स्थिर स्वभाव के साथ उसने डांट और चेतावनी के तौर पर कहा, "नमाज़ पढ़, यदि तू नमाज़ न पढ़े तो तेरे लिए दो तलाक है" बजाय "दो तलाक है" के, उसने "तेरे लिए दो तलाक" कर दिया ताकि अपने झूठे अनुमान में वह उसे निलंबन (तअलीक) से बाहर निकाल कर तलाक का वादा बना सके, और बुरी लालच के साथ अहमद अली के काम की गाँठ खोल दे। और यह ज़ाहिर है कि शरीयत के हुक्म की जानकारी के बाद सूरत बदलना सिवाय धोखे और फरेब के कुछ नहीं है। फिर हमारे जिस सवाल करने वाले ने दोबारा यह सवाल भेजा, उसने इन ख्वाहिशात परस्तों की चालाकी के चेहरे से नकाब हटा दिया कि बंगाली भाषा में अहमद अली का विशेष शब्द "दिलाम" है जो साफ़

तौर पर "मैंने दिया" के अर्थ में है, उसने यह लिखा और वादे की मनगढ़ंत बिसात पूरी तरह लपेट दी गई।

पृष्ठ 170 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم صفحہ ۱۳

خبردار ہوجائیں اور خطا کار اگر توفیق پائیں تو دوسروں کے نہ راستے کو نہ اپنائیں، توفیق اور حق تک رسائی اللہ تعالٰی سے ہی حاصل ہوتی ہے۔(ت)

[دایاں کالم] اول: یہ کہ ، طلاق کے نشان کو سوال کی صورت میں تبدیلی کر کے ، مٹانا چاہا ، یہاں جو سوال آیا اسکے الفاظ یہ ہیں کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو نمازِ مغرب کے بعد کہا "اگر تو نماز نہ پڑھے گی تو دو طلاق ہے" اور دیوبندی کی تعلیم سے سوال یوں بنادیا: ایک شخص نے اعتدال طبع اور مستقل مزاجی سے زجر اور تنبیہ کے طور بیوی کو کہا کہ تو نماز پڑھ، اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاق، یوں اس نے "تو دو طلاق" کی بجائے " تجھے دو طلاق" بنادیا، تاکہ اپنے باطل زعم میں وہ تعلیق طلاق سے نکال کر وعدہ طلاق بنا سکے اور لالچ کے دانتوں سے احمد علی کی کارروائی کی گرہ کو کھولے ، اور واضح بات ہے کسی شرعی حکم کے معلوم ہونے پر سوال کی صورت کو تبدیل کرنا صرف مکر و فریب ہی کہلا سکتا ہے پھر جس نے ہمارے پاس دوبارہ یہ سوال بھیجا ہے اس نے ان نفسانی خواہشات پرستوں کی داستان سے پردہ ہٹادیا ہے کہ احمد علی نے جو لفظ خاص اس موقعہ پر بنگالی زبان میں استعمال کیا ہے وہ "دیلام" ہے جو کہ صراحۃ "میں نے دی" کے معنی میں ہونا لکھا ہے اور وعدہ کی اختراعی صورت بالکل ختم کر دی۔ (ت)

[بایاں کالم] اول: آنکہ خرقِ طلاق را تبدیل صورت سوال رفو خواست سوال کہ ایں جا آمدہ بود لفظش آں بود کہ "ایک شخص نے اپنی بی بی کو بعد نماز مغرب کے کہا کہ اگر تو نماز نہ پڑھے گی تو دو طلاق ہے"۔ و تعلیم سوال دیوبندی آنچناں ساخت کہ باعتدال طبع واستقلال مزاج بطریق زجر وتنبیہ گفت کہ نماز بخواں اگر نماز نخوانی ترا دو طلاق بجائے تو دو طلاقہ ، ترا دو طلاق

نمود تا بزعمِ باطل خودش اورا از تعلیق برآورده وعده طلاق نماید وبد نداں طمع گرہ از کار احمد علی کشاید و پیداست کہ تبدیل صورت بعد اطلاع بر حکم شرعی نمی باشد مگر از راہ مکر وخدع باز سائل ماکہ دوبارہ ایں سوال فرستاد نقاب از روئے دستاں ایں ہواپرستاں کشادہ کہ لفظ خاص احمد علی بزبانِ بنگالی "دیلام " کہ صراحۃً بمعنی دادم ست نوشت وبساطِ اختراع وعدہ یکسر در نوشت۔

Fatawa Rizvia, Volume Thirteen

Page 13

[Left Column - Persian] Second: The distinction made between 'Tu Talaq' (You are divorced) and 'Tura Talaq' (Divorce is for you) from one's own side is a mere invention of the person. The poor fellow does not know the difference between the creation (Insha) of a condition (Ta'liq) and the conditioning of a creation. In common usage, the first, i.e., the creation of a condition, is intended and recognized, not the second. Furthermore, a sense of futurity (istiqbal) is inherently necessary for each part; for instance, in his statement 'If you do such-and-such, you are divorced,' the meaning is that you will become a divorcee, with this very creation, not with a new creation to which he gives a promise of fulfillment at that time. Similarly, in his statement 'If you do such-and-such, divorce is for you,' the meaning is the same: that divorce will occur for you through this very creation, not through a promised creation. Divorce, in terms of its issuance, is an attribute of the man, expressed through the active verbal noun (masdar mabni lil-fa'il), i.e., 'mutalliq' (with kasra on the 'l'). Similarly, in terms of occurrence, it is an attribute of the woman, shown through the passive verbal noun (masdar mabni lil-maf'ul), i.e., 'mutallaqa' (with fatha on the 'l'). Thus, the future sense will be 'will be,' not 'I will give.' If it were only considered that this attribute of the woman comes into being without the husband's action, it wouldn't make sense, and it wouldn't imply a new future act of the husband or a promise of divorce. Therefore, even in his saying 'If such happens, then divorce,' it is at the time of creation, because divorce, meaning removal (raf'), which is the act of the husband, is also indispensable. In fact, no word of divorce is free from this meaning. If, based on this observation, it were taken to mean a promise, then no conditional (ta'liq) form could exist. For example, in 'Tu Talaq' as well, one could say it means 'you will be divorced' and not that she is a divorcee unless a divorce is pronounced; thus it would mean 'a divorce will be pronounced upon you.' It is clear that this is not a promise of divorce. In short, this obsession and distinction is nothing more than ignorance.

[Right Column - Urdu] Second: The difference between 'Tu Talaq' (You are divorced) and 'Tujhe Talaq' (Divorce to you) was fabricated by himself. The poor fellow could not understand the difference between the 'Insha' of 'Ta'liq' and the 'Ta'liq' of 'Insha'. Whereas, in common usage, the first, i.e., the 'Insha' of 'Ta'liq', is intended and customary, not the second. Moreover, futurity is inherently necessary for every part; for example, saying 'If you do so, then it is divorce' means 'you will become a divorcee,' and the 'Insha' will also be this, not that there will be some new 'Insha'

later. In terms of issuing divorce, it is an attribute of the husband, which is expressed as 'one who gives divorce' (Taliq). And similarly, in terms of occurrence, it is an attribute of the wife, which is expressed as 'divorced one' (Mutallaqa). (That is, for the husband, divorce is an active verbal noun, and for the wife, the same divorce becomes a passive verbal noun). So here, the implication will be 'will become,' not 'I will give.' And if only this were considered—that this attribute of the wife was formed without the husband's action—then it would not make sense, and from this, a promise of a future new act of the husband and divorce could not be established. Thus, the husband's saying 'If this happens, then divorce' is also at the time of 'Insha' because divorce, whose meaning is to remove and open, is also the name of the husband's act, which is necessary. In fact, no word of divorce can be independent of the husband's act. So, if based on this, it were given the meaning of a promise, then no situation for 'Ta'liq' (conditional statement) could be formed. For example, if someone says 'Tu Talaq hai' (You are divorce), he could say its meaning is that you will be able to become a divorcee and right now...

फ़तावा रिज़विया, खंड तेरहवाँ

पृष्ठ १३

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी] दूसरा: 'तू तलाक़' और 'तरा तलाक़' (तुझे तलाक़) के बीच जो भेद अपनी ओर से निकाला गया है, वह कोरी मनगढ़ंत बात है। बेचारा शर्त (ता'लीक़) की रचना (इन्शा) और रचना की शर्त के बीच का अंतर नहीं जानता। लोक-व्यवहार में पहला, यानी शर्त की रचना ही अभीष्ट और प्रचलित है, दूसरा नहीं। और फिर, भविष्य का भाव (इस्तक़बाल) हर हिस्से के लिए अनिवार्य है; जैसे कि उसके कथन 'यदि तू ऐसा करे तो तू तलाक़ है' में अर्थ यह है कि तू तलाक़शुदा हो जाएगी, इसी रचना के साथ, न कि किसी नई रचना के साथ जिसका वह उस समय पूरा होने का वादा करता है। इसी तरह, उसके कथन 'यदि तू ऐसा करे तो तुझे तलाक़ है' में भी अर्थ वही है: कि इसी रचना के माध्यम से तुझे तलाक़ हो जाएगा, न कि किसी प्रतिज्ञाबद्ध रचना के माध्यम से। तलाक़, इसके जारी होने के संदर्भ में, पुरुष का एक गुण है, जिसे सकर्मक संज्ञा (मस्दर मबनी लिल-फ़ाएल) के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, यानी 'मुतल्लिक' (ल पर कसरा के साथ)। इसी तरह, घटित होने के संदर्भ में, यह स्त्री का एक गुण है, जिसे अकर्मक संज्ञा (मस्दर मबनी लिल-मफ़ऊल) के माध्यम से दिखाया गया है, यानी 'मुतल्लाक़ा' (ल पर फ़तहा के साथ)। इस प्रकार, भविष्य का भाव 'हो जाएगी' होगा, न कि 'मैं दूँगा'। यदि केवल यही माना जाता कि स्त्री का यह गुण पति के कार्य के बिना अस्तित्व में आता है, तो इसका कोई अर्थ नहीं होता, और इससे पति के किसी नए भविष्य के कार्य या तलाक़ के वादे का संकेत नहीं मिलता। इसलिए, उसके यह कहने में भी कि 'यदि ऐसा होता है, तो तलाक़,' यह रचना के समय ही है, क्योंकि तलाक़, जिसका अर्थ हटाना (रफ़') है, जो पति का कार्य है, वह भी अपरिहार्य है। वास्तव में, तलाक़ का कोई भी शब्द इस अर्थ से मुक्त नहीं है। यदि इस अवलोकन के आधार पर इसे एक वादा मान लिया जाए, तो कोई शर्त (ता'लीक़) रूप अस्तित्व में नहीं रह पाएगा। उदाहरण के लिए, 'तू तलाक़' में भी कोई कह सकता है कि इसका अर्थ है 'तू तलाक़शुदा हो जाएगी' और यह नहीं कि वह तब तक तलाक़शुदा है जब तक कि तलाक़ नहीं दिया जाता; इस प्रकार इसका अर्थ होगा 'तुझ पर तलाक़ दिया जाएगा'। यह स्पष्ट है कि यह तलाक़ का वादा नहीं है। संक्षेप में, यह भ्रम और भेद अज्ञानता के अलावा और कुछ नहीं है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू] दूसरा : 'تو طلاق ، اور تجھے طلاق' (तू तलाक़, और तुझे तलाक़) का अंतर खुद अपनी ओर से मनगढ़ंत बनाया, उस बेचारे को ता'लीक़ (शर्त) की इन्शा (रचना) और इन्शा की ता'लीक़ का फ़र्क़ मालूम न हो सका, जबकि उर्फ़(लोक-प्रचलन) में पहला यानी ता'लीक़ की इन्शा

मक़सूद और मुतआरफ़ (मान्य) है न कि दूसरा, और फिर हर जुज़ (भाग) को इस्तक़बाल (भविष्य) खुद लाज़िम है मसलन यह कहना कि 'तू अगर यूँ करे तो तलाक़ है' इसका मानी यह है कि 'तू मुतल्लाक़। (तलाक़शुदा) हो जाएगी' और इन्शा भी यही होगा न कि कोई बाद में जदीद (नया) इन्शा होगा, और तलाक़ सादिर होने के एतबार में ख़ावंद (पति) की सिफ़त (गुण) होती है जिसको तलाक़ देने वाला (तालिक), से ता'बीर करते हैं। और यूँही वह वुक़ूअ (घटित होने) के एतबार से बीवी की सिफ़त होती है जिसको मुतल्लाक़ा से ता'बीर करते हैं (यानी ख़ावंद के लिए तलाक़ मस्दर मबनी लिल-फ़ाएल और बीवी के लिए वही तलाक़ मस्दर मबनी लिल-मफ़ऊल बन जाता है) तो यहाँ 'हो जाएगी' की तक़दीर (अनुमानित अर्थ) बनेगी न कि 'मैं दूँगा' की तक़दीर बनेगी। और अगर सिर्फ़ यह लिहाज़ हो कि यह बीवी की सिफ़त ख़ावंद के फ़ेल (कार्य) के बग़ैर बन गई तो बात न बनेगी और इससे ख़ावंद के जदीद आइंदा फ़ेल और तलाक़ का वादा न बन सकेगा, पस ख़ावंद का यह कहना कि 'अगर यह हो जाए तो तलाक़' भी बर-वक़्त इन्शा है क्योंकि तलाक़ जिसका मानी हटाना और खोलना है भी ख़ावंद के फ़ेल का नाम है जो कि ज़रूरी है, बल्कि कोई लफ़्ज़-ए-तलाक़ भी ख़ावंद के फ़ेल से बे-नियाज़ (स्वतंत्र) नहीं हो सकता, पस अगर इस लिहाज़ से इसको वादे वाला मानी क़रार दिया जाए तो फिर ता'लीक़ के लिए कोई सूरत नहीं बन सकेगी मसलन कोई यूँ कहे 'तू तलाक़ है' तो वह कह सकता है कि इसका मानी यह है तू मुतल्लाक़ा हो सकेगी और अभी...

[بایاں کالم - فارسی] دوم : فرقے کہ در تو طلاق و ترا طلاق از پیش خویش برآورد محض ایجاد بندہ است بیچارہ در انشائے تعلیق و تعلیق انشا فرق نمی داند مقصود و مفہوم عرف اول ست نہ ثانی، و معنی استقبال خود لازم ہر جز است چنانچہ در قولش اگر چناں کنی تو طلاق معنی آنست کہ مطلقہ شوی ہم بایں انشانہ بانشائے جدید، کہ آں وقت وعدہ ابدالیش میدہد ، ہمچناں در قولش اگر چناں کنی ترا طلاق معنی ہمان ست کہ ترا طلاق شود ہمیں انشائے نہ بانشائے موعود ، و طلاق آنچناں کہ صدور و اوصف مرد ست کہ از و بمصدر مبنی للفاعل اے مطلقیت بالکسر تعبیر کنند ، ہمچناں وقوعاً صفت زن کہ از و بمصدر مبنی للمفعول اعنی مطلقیت بالفتح نشان دید پس مقدر خواھد شد بود نہ کہ خواہم داد اگر مجرد ملاحظہ آنکہ ایں صفت زن بے فعل شوے صورت نہ بندد مشعر فعل جدید موعود و مفید معنی وعدہ شود پس ایں خود در قول او ، اگر چناں شود تو طلاق نیز نقد وقت ست زیرا کہ از طلاق بمعنی رفع کہ فعل زوج ست اورا نیز ناگزیر ست بلکہ ہیچ لفظے ازیں معنی بے نیاز نبود پس اگر ایں ملاحظہ بموجب معنی وعدہ شدے ہمانا ہیچ تعلیق صورت نہ بستے مثلاً در تو طلاق نیز تواں گفت کہ معنی آنست کہ تو مطلقہ خواہی شد و مطلقہ نیست مگر آنکہ بروئے ایقاع طلاق نمودہ شود پس معنی آں شد کہ بر تو ایقاع طلاق کردہ خواھد شد و پیدا است کہ ایں وعدہ طلاق نیست بالجملہ ایں وسوسہ و تفرقہ جہالتی بیش نیست ۔

[دایاں کالم - اردو] دوم : "تو طلاق ، اور تجھے طلاق" کا فرق خود اپنی طرف سے من گھڑت بنایا ، اس بیچارے کو تعلیق کی انشاء اور انشاء کی تعلیق کا فرق معلوم نہ ہوسکا ، جبکہ عرف میں پہلا یعنی تعلیق کی انشاء مقصود و متعارف ہے نہ کہ دوسرا ، اور پھر ہر جز کو استقبال خود لازم ہے مثلاً یہ کہنا کہ "تو اگر یوں کرے تو طلاق ہے " اس کا معنی یہ ہے کہ "تو مطلقہ ہو جائے گی

" اور انشاء بھی یہی ہو گا نہ کہ کوئی بعد میں جدید انشاء ہوگا ، اور طلاق صادر ہونے کے اعتبار میں خاوند کی صفت ہوتی ہے جس کو طلاق دینے والا ، سے تعبیر کرتے ہیں ۔ اور یونہی وہ وقوع کے اعتبار سے بیوی کی صفت ہوتی ہے جس کو مطلقہ سے تعبیر کرتے ہیں (یعنی خاوند کے لئے طلاق مصدر مبنی للفاعل اور بیوی کے لئے وہی طلاق مصدر مبنی للمفعول بن جاتا ہے) تو یہاں "ہو جائے گی" کی تقدیر بنے گی نہ کہ "میں دوں گا" کی تقدیر بنے گی۔ اور اگر صرف یہ لحاظ ہو کہ یہ بیوی کی صفت خاوند کے فعل کے بغیر بن گئی تو بات نہ بنے گی اور اس سے خاوند کے جدید آئندہ فعل اور طلاق کا وعدہ نہ بن سکے گا ، پس خاوند کا یہ کہنا کہ "اگر یہ ہو جائے تو طلاق" بھی بر وقت انشاء ہے کیونکہ طلاق جس کا معنی ہٹانا اور کھولنا ہے بھی خاوند کے فعل کا نام ہے جو کہ ضروری ہے ، بلکہ کوئی لفظ طلاق بھی خاوند کے فعل سے بے نیاز نہیں ہو سکتا، پس اگر اس لحاظ سے اس کو وعدہ والا معنی قرار دیا جائے تو پھر تعلیق کے لئے کوئی صورت نہیں بن سکے گی مثلاً کوئی یوں کہے "تو طلاق ہے " تو وہ کہہ سکتا ہے کہ اس کا معنی یہ ہے تو مطلقہ ہو سکے گی اور ابھی

Volume 13, Page 13 Fatawa Razawiya

...not become divorced. And for a woman who is given several divorces, the meaning would be "I will give a divorce", even though he is effecting the divorce and not making a promise of divorce. In short, this obsession with distinction is ignorance; there is nothing more to it than that.

Third: On making this strange distinction, the 'Mujtahid of the Era' did not even see, nor did truth appear to his sight, that in all the books of the [Hanafi] school, everywhere "Tujhey talaq hai" (You are divorced) is explicitly declared as a conditional divorce (ta'liq) and not a promise of divorce. It is stated in Fatawa Khulasa and Fatawa Alamgiri: If a husband says to his wife, "If you do not want me, then you are divorced," and the wife replies, "I want you," then the divorce will not take place. This is because it is conditional upon the wife's will, and will is an internal matter that cannot be known [by others]; therefore, the decision will rest on the wife's choice. And in Fatawa Qazi Khan and Khizanat al-Muftin, etc., it is stated: If a husband says to his wife, "If I do not come for three months and do not bring ten dinars, then you are divorced." If he comes after three months and does not bring the ten dinars, the divorce will take place. In Fatawa Zahiriyya and Khizana Imam Sam'ani, it is stated: If he said to his wife, "If you make yourself forbidden [to me], then you are given three divorces." After that, he gave his wife a revocable divorce and then had intercourse with her during the waiting period ('iddah), the oath would be broken and three divorces would occur. Let the Deobandi Mujtahid open his eyes and see where in the above-mentioned passages there is a promise or "I will give a divorce."

Fourth: Ahmad Ali's own teacher says about this story, "I did not make up this meaning myself, rather Ahmad Ali says so," even though this is a complex matter, if the poor fellow...

1. Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce with Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/387.
2. Khizanat al-Muftin, Chapter on Conditional Divorce (Ta'liq), Manuscript 1/113.
3. Khizanat al-Muftin, Chapter on Conditional Divorce (Ta'liq), Manuscript 1/112.

खंड १३, पृष्ठ १३ फतावा रज़विया

...तलाकशुदा नहीं हुई। और जिस औरत को कई तलाक दे, तो इसका अर्थ यह हो जाएगा कि "तलाक दूँगा", जबकि वह तलाक दे रहा है और तलाक का वादा नहीं कर रहा है। संक्षेप में, भेद का यह वहम अज्ञानता है; इससे ज्यादा कुछ नहीं।

तीसरा: इस अजीब भेद को करने पर 'मुजतहिद-ए-अस्र' (युग के मुजतहिद) ने यह भी नहीं देखा और न ही सत्य उनकी नज़र में आया कि मज़हब (हनफी) की तमाम किताबों में जगह-जगह स्पष्ट रूप से "तुझे तलाक है" को 'तलीक़' (शर्त के साथ तलाक) माना गया है, न कि तलाक का वादा। फतावा खुलासा और फतावा आलमगीरी में है कि यदि पति ने पत्नी से कहा, "अगर तू मुझे नहीं चाहती तो तुझे तलाक है," और पत्नी ने जवाब में कहा, "मैं चाहती हूँ," तो तलाक नहीं होगी। क्योंकि यह पत्नी की इच्छा पर निर्भर है, और इच्छा एक आंतरिक बात है जिसे जाना नहीं जा सकता; इसलिए निर्णय पत्नी के अधिकार पर होगा। और फतावा काज़ी खान और ख़ज़ानत-उल-मुफ़्तीन आदि में फ़रमाया गया है कि पति ने पत्नी से कहा, "अगर मैं तीन महीने तक न आऊँ और दस दीनार न लाऊँ तो तुझे तलाक है।" तो तीन महीने के बाद आया और दस दीनार नहीं लाया, तो तलाक हो जाएगी। फतावा ज़हीरिया और ख़ज़ाना इमाम समआनी में फ़रमाया गया है कि यदि पत्नी से कहा, "अगर तू (अपने आप को मुझ पर) हराम करे तो तुझे तीन तलाक हैं।" इसके बाद उसने पत्नी को तलाक़-ए-बाइना देकर इद्दत में उसके साथ संभोग किया, तो कसम टूट जाएगी और तीन तलाकें हो जाएँगी। देवबंदी मुजतहिद आँख खोलकर देखें कि उपरोक्त इबारतों में वादा और "तलाक दूँगा" कहाँ है।

चौथा: अहमद अली की इस दास्तान के बारे में उनके अपने उस्ताद कहते हैं कि "यह मतलब मैंने खुद नहीं निकाला, बल्कि अहमद अली ऐसा कहता है," जबकि यह एक गहरा मामला है, अगर बेचारा...

1. फतावा हिंदिया, फारसी शब्दों के साथ तलाक पर सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/३८७।
2. ख़ज़ानत-उल-मुफ़्तीन, तलीक़ पर अध्याय, पांडुलिपि १/११३।
3. ख़ज़ानत-उल-मुफ़्तीन, तलीक़ पर अध्याय, पांडुलिपि १/११२।

पृष्ठ १७२ का ६८८

مطلقہ نہ ہوئی۔ اور جس عورت کو کئی طلاق دے تو معنی یہ ہو جائے گا کہ طلاق دوں گا حالانکہ وہ طلاق واقع کر رہا ہے اور طلاق کا وعدہ نہیں کر رہا، غرضیکہ یہ فرق کا وسوسہ جہالت ہے، اس سے زیادہ کچھ نہیں۔

سوم: جناب مجتہد العصر باجتہاد خود ایں فرق بدیع ابداع نمود و ندید یا دید از چشم حق پوشید کہ در کتب مذہب تصریحاً بجا بجا لفظ "ترا طلاق" تعلیق قرار دادہ اند نہ وعدہ، در فتاویٰ خلاصہ و فتاویٰ عالمگیریہ فرمود اگر مرا نخواہی ترا طلاق فقالت می خواہم لا تطلق ہذا تعلیق بالارادۃ وانہا امر باطن لایوقف علیہ فیتعلق بالاختیار ۱ ۔ سوم: یہ عجیب فرق کرنے پر مجتہد العصر نے یہ بھی نہ دیکھا دیکھا اور حق نظر نہ آیا کہ مذہب کی تمام کتب میں جابجا صراحۃً "تجھے طلاق ہے" کو تعلیق قرار دیا گیا ہے نہ کہ وعدہ طلاق قرار دیا گیا۔ فتاویٰ خلاصہ اور فتاویٰ عالمگیریہ میں ہے اگر خاوند نے بیوی کو کہا کہ "اگر تو مجھے نہیں چاہتی تو تجھے طلاق ہے" بیوی نے جواب میں کہا "میں چاہتی ہوں" تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ یہ بیوی کے ارادہ سے معلق ہے اور ارادہ باطنی چیز ہے اس پر واقفیت نہیں ہوسکتی لہذا بیوی کے اختیار پر فیصلہ ہو گا، اور فتاویٰ قاضی خان اور خزانۃ المفتین و غیر ہما میں فرمایا ہے کہ خاوند نے بیوی کو کہا "اگر میں تین ماہ کو نہ آؤں اور دس دینار نہ لاؤں تو تجھے طلاق"۔ تو تین ماہ کے بعد آیا اور دس دینار نہ لایا تو طلاق ہو جائے گی۔ فتاویٰ ظہیریہ اور خزانہ امام سمعانی میں فرمایا اگر بیوی کو کہا اگر تو حرام کرے تو تجھے تین طلاق۔ اس کے بعد اس نے بیوی کو طلاق بائنہ دے کر اس سے عدت میں جماع کیا تو قسم ٹوٹ جائے گی اور تین طلاقیں ہو جائیں گی دیوبندی مجتہد آنکھ کھول کر دیکھے کہ مذکورہ بالا عبارات میں وعدہ اور "طلاق دوں گا" کہاں ہے۔ در فتاویٰ قاضی خاں و خزانۃ المفتین و غیرہما فرمودند اگر

سہ ماہ رانیایم و دہ دینار نیارم ترا طلاق فجاء و لم یات بالدنانیر تطلق۲ در فتاویٰ ظہیریہ و خزانۃ امام سمعانی فرمودہ قال لہا اگر تو حرام کنی تراسہ طلاق فابانہا ثم جامعہا فی العدۃ یحنث وتطلق ثلاثا۳ حالانکہ مجتہد دیوبند از چشم کشادہ نظر فرماید کہ آں بالاخو اینہائے وعد و تقدیر خواہم داد کجا شد۔

چہارم: احمد علی رادریں دستاں استاذ خود می گوید کہ ایں مطلب از خود گرفتم بلکہ احمد علی میگوید حالانکہ معاملہ واژگونہ است بے چارہ ۔ چہارم: احمد علی کی اس داستان کا استاذ خود کہتا ہے کہ "یہ مطلب میں نے خود نہیں بنایا بلکہ احمد علی کہتا ہے" حالانکہ یہ گہرا معاملہ ہے اگر بے چارہ

۱ فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۷ ۲ خزانۃ المفتین فصل فی التعلیق قلمی نسخہ ۱ / ۱۱۳ ۳ خزانۃ المفتین فصل فی التعلیق قلمی نسخہ ۱ / ۱۱۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

Had Ahmed Ali been aware of this great trick, why would he have returned to the four seeds of return in the morning?

Fifthly: Again, avoiding the admission of truth, he became entangled in a futile and useless matter, saying, "Conditional is of three kinds," and mistaking a type for a division, he says, "The total is six kinds," whereas this division has no role in the issue under discussion, and there is no difference in the rulings between one kind and another here. He himself chants: "This covers all six forms without any difference." One should ask this wise man that when the ruling for all is the same, then for what reason was this division brought in, except so that the observer may know that the honorable Mujtahid's gaze has also fallen upon Sharh al-Wiqayah, even if he did not understand it.

Sixthly: Behold the glory of God, that within falsehood, the truth unintentionally escaped his lips, and then he fell back into the pit again. His purpose was to link this condition to the permanent abandonment of prayer so that by performing even a single prayer, the wife could be protected from divorce. On this basis, using his logic, he stretched the meaning to the point that if Ahmed Ali's wife offers even one prayer before death, there will be no divorce. However, here, unintentionally finding the path of truth, he says that the speaker's intent is also that his wife becomes habitually regular in prayer. Glory be to Allah! Look at this camel's gait; either the speaker's intent is to make the wife regular in permanent prayer, or is the intent that she performs one prostration in her whole life, even if she never faces the Qiblah for the rest of her life? Where is the difference between these two?

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

अहमद अली अगर इस महान छल से अवगत होता, तो सुबह चार बीजों के लिए क्यों लौटता?

पाँचवाँ: फिर सत्य को स्वीकार करने से बचते हुए एक व्यर्थ और बेकार मामले में उलझ गया कि "निलंबित (मुअल्लाक़) तीन प्रकार का है" और प्रकार को विभाजन समझकर कहता है कि "कुल छह प्रकार हैं," जबकि विचाराधीन मुद्दे में इस विभाजन का कोई स्थान नहीं है और यहाँ श्रेणियों में कोई अंतर नहीं है। वह स्वयं कहता है: "यह बिना किसी अंतर के सभी छह रूपों को समाहित करता है।" इस बुद्धिमान व्यक्ति से कोई पूछे कि जब सबका आदेश एक ही है, तो फिर इस विभाजन को किस कारण बीच में लाया गया, सिवाय इसके कि देखने वाले को पता चल जाए कि जनाब मुजतहिद साहब की नज़र 'शराह विक़ाया' पर भी पड़ी है, भले ही समझ न आई हो।

छठा: ईश्वर की महिमा देखिये कि असत्य के बीच में अनजाने में सत्य ज़ुबान से निकल गया और फिर से गड्ढे में गिर गया। उसका उद्देश्य यह था कि इस शर्त का संबंध नमाज़ के स्थायी त्याग से जोड़े ताकि एक नमाज़ भी पढ़ लेने पर पत्नी को तलाक़ से सुरक्षा मिल सके। इसी आधार पर अपनी तर्कशक्ति का उपयोग करते हुए अर्थ को खींच-तान कर उस मंज़िल पर ले आया कि यदि अहमद अली की पत्नी मरने से पहले एक नमाज़ भी पढ़ ले तो तलाक़ नहीं होगा। हालाँकि, यहाँ सत्य के मार्ग को अनजाने में पाते हुए कहता है कि वक्ता का उद्देश्य भी यही है कि उसकी पत्नी स्थायी रूप से नमाज़ की अभ्यस्त हो जाए। सुब्हान अल्लाह! इस ऊँट की चाल देखिये; या तो वक्ता का उद्देश्य पत्नी को स्थायी नमाज़ का पाबंद बनाना है या यह उद्देश्य है कि पूरी उम्र में एक सजदा कर ले, भले ही बाकी जीवन भर क़िबला की ओर मुँह न करे। इन दोनों में अंतर कहाँ रह गया?

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

احمد علی اگر ازیں کید عظیم آگہی داشتے صبحگاہ چار تخم رجعت کا ختے۔ پنجم: پھر حق کے اعتراف سے گریز کرتے ہوئے لغو اور بے سود معاملہ میں الجھ گیا کہ " معلق تین قسم پر ہے " اور قسم کو تقسیم سمجھ کر کہتا ہے " مجموعہ چھ قسم ہے " حالانکہ زیر بحث مسئلہ میں اس تقسیم کا کوئی دخل نہیں ہے اور یہاں اقسام میں کوئی فرق نہیں ہے اور خود کہتا ہے کہ یہ حکم تمام چھ اقسام کو شامل ہے، اس عقلمند سے کوئی پوچھے کہ جب سب کا حکم ایک ہے تو پھر اس تقسیم کو کس وجہ سے درمیان میں لایا گیا سوائے اس کے کہ دیکھنے والے کو معلوم ہو جائے کہ جناب مجتہد صاحب کی نظر شرح وقایہ پر بھی پڑی ہے اگرچہ سمجھ نہیں آئی۔

ششم: شان الہی نظارہ کردنی ست کہ خود در ضمن باطل نادانستہ لب بحق می کشاید و باز از خطب بہ جذب می گراید، مرادش آں بود کہ ایں تعلیق را دائم نماز چسپاں نماید تابو قوع صلوۃ ولو مرۃ زن را تحفظ از طلاق بدست آید از ہمیں رو منطق الطیر خود را خرچ نمود و مطلب را کشاں کشاں بر آں منزل آور کہ اگر از زن احمد علی یک نماز ہم پیش از مرگ واقع شد اور اطلاق نیست حالانکہ ایں جا خود می گوید حیث لایشعر راہ حق می پوبد، کہ غرض متکلم نیز معتاد للصلوۃ شدن زوجہ ست دائما سبحان اللہ ایں شتر گربگی بیں غرض متکلم آں بود کہ زوجہ دائما معتاد نماز شود یا آں شد کہ زن در مدۃ العمر یک سجدہ بجا آرد گو در سائر عمر خودش ہیچ روئے بقبلہ میار ہیں تفاوت رہ از کجاست

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

See where this discrepancy leads.

Seventh: When it is admitted that the speaker's purpose is to make the wife permanently observant of prayer, then where did the specification of the Isha or Fajr prayer come from? Your and our ijtihad (legal reasoning) also says the same: the purpose is to make her permanently accustomed to prayer, in which there is no specification of any particular prayer. Whichever prayer she skips without a Shari'a-valid excuse, divorce will occur, whether it be Isha or Fajr. When the time for the Isha prayer ends and the wife has not performed the prayer within the time, she is divorced.

Eighth: Despite the admission that the speaker's purpose is to make her permanently accustomed to prayer, how can it be correct to say that "the indication of an oath is also missing"? However, in the ijtihad of Deoband, this is possible because for those who hold this view, the meaning of making the wife always accustomed to prayer could be that in her entire life, she doesn't pray more than one prayer. (According to them, even this is possible). There is no might nor power except with Allah.

Ninth: Restricting 'Yamin al-Fawr' (immediate oath) to situations of anger and emotional imbalance is also an ijtihad of the Deobandis, whereas there is no sign of this specification in any book of the school of thought (madhhab). Some examples from the previously mentioned reliable books of noble fatwas have passed; look at them with clear eyes so that the dust of specification may be removed from the heart. In the fourth example, it was stated that if a ruler took an oath saying, "If any criminal enters the city and I do not punish you, then my wife is divorced," this is also an immediate oath, even though there is no anger or emotional provocation here...

Page 174 of 688

फ़तावा रिज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

देखिए यह मतभेद कहाँ से कहाँ पहुँच गया।

सातवाँ: जब स्वयं स्वीकार किया गया है कि बोलने वाले (मुतकल्लिम) का उद्देश्य पत्नी को नमाज़ का स्थायी पाबंद बनाना है, तो ईशा या फज्र की नमाज़ आदि की विशिष्टता कहाँ से आई? आपका और हमारा इज्तिहाद (कानूनी तर्क) भी यही कहता है कि उद्देश्य नमाज़ का स्थायी अभ्यस्त बनाना है, जिसमें किसी नमाज़ की कोई विशिष्टता नहीं है। जो भी नमाज़ वह बिना किसी शरीयत-मान्य बहाने के छोड़ेगी, तलाक हो जाएगा, चाहे वह ईशा हो या फज्र। जब ईशा की नमाज़ का समय समाप्त हो जाए और पत्नी ने समय के भीतर नमाज़ अदा न की हो, तो उसे तलाक हो गया।

आठवाँ: इस स्वीकारोक्ति के बावजूद कि मुतकल्लिम का उद्देश्य स्थायी रूप से नमाज़ का अभ्यस्त बनाना है, यह कहना कि "शपथ का संकेत भी गायब है" कैसे सही हो सकता है? लेकिन देवबंद के इज्तिहाद में यह संभव है क्योंकि पत्नी को हमेशा नमाज़ का अभ्यस्त बनाने का अर्थ उनके यहाँ यह हो सकता है कि वह पूरे जीवन में एक नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ न पढ़े (उनके यहाँ यह भी संभव है)। अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है।

नौवाँ: 'यमीन-उल-फ़ौर' (तत्काल शपथ) को क्रोध और स्वभाव की असंतुलन तक सीमित करना भी देवबंदियों का इज्तिहाद है, जबकि मज़हब की किसी भी किताब में इस विशिष्टता का कोई संकेत नहीं है। विश्वसनीय किताबों के पिछले कुछ महान फतवों के उदाहरण गुजर चुके हैं; उन्हें साफ आँखों से देखें ताकि उनके दिल से विशिष्टता की धूल निकल सके। चौथे उदाहरण में कहा गया है कि यदि किसी शासक ने शपथ ली कि "यदि कोई अपराधी शहर में प्रवेश करता है और मैं तुम्हें सजा न दूँ, तो पत्नी को तलाक है," तो यह भी यमीन-ए-फ़ौर है, हालाँकि यहाँ कोई क्रोध या उत्तेजना नहीं है...

पृष्ठ 174 of 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

یہ تفاوت دیکھئے کہاں سے کہاں پہنچ گیا۔

ہفتم: جب خود معترف ہے کہ متکلم کی غرض بیوی کو نماز کا دائمی پابند بنانا ہے، تو عشاء یا فجر کی نماز وغیرہ کی تخصیص کہاں سے آئی، تمہارا اور ہمارا اجتہاد بھی یہی کہتا ہے کہ غرض نماز کا دائمی عادی بنانا ہے جس میں کسی نماز کی تخصیص نہیں ہے جو نماز بھی شرعی عذر کے بغیر ترک کرے گی طلاق ہو جائے گی وہ نماز عشاء ہو یا فجر جب عشاء کی نماز کا وقت ختم ہو جائے اور بیوی نے نماز وقت میں ادا نہ کی تو اس کو طلاق ہو گئی۔

ہشتم: اس اعتراف کے باوجود کہ متکلم کی غرض دائمی نماز کا عادی بنانا ہے، یہ کہنا کہ "قرینہ یمین خود بھی مفقود ہے" کیسے درست ہو سکتا ہے_ لیکن دیو بند کے اجتہاد میں یہ ہو سکتا ہے کیونکہ بیوی کو ہمیشہ نماز کا عادی بنانے کا مطلب جن کے ہاں یہ ہو سکتا ہے کہ تمام عمر میں ایک نماز کے علاوہ کوئی نماز نہ پڑھے (ان کے ہاں یہ بھی ہو سکتا ہے) لا حول ولا قوۃ الا باللہ۔

نہم: یمین الفور کی تخصیص غصہ اور بے اعتدالی طبع سے کرنا بھی دیوبند کا اجتہاد ہے، جبکہ مذہب کی کسی کتاب میں اس تخصیص کا کوئی نشان نہیں ہے، گزشتہ چند معتمد علیہ کتب کے فتاوٰی جلیلہ کی کچھ مثالیں گزری ہیں ان کو آنکھیں صاف کر کے دیکھیں تاکہ ان کے دل سے تخصیص کی غبار نکل سکے، چوتھی مثال میں فرمایا گیا ہے کہ اگر حاکم نے قسم اٹھائی کہ "اگر کوئی بدمعاش شہر میں داخل ہوا تجھے سزا نہ دوں تو بیوی کو طلاق ہے" یہ بھی یمین فور ہے حالانکہ یہاں غصہ اور اشتعال طبع...

تا کجا۔ ہفتم: خود معترف شدہ کہ غرض متکلم دائماً خوگر بودن زن بہ نماز است، می گوید پس تخصیص نماز عشاء و فجر وغیرہ از کجا آمد، اجتہاد تا با مانیز ہمیں می گوئیم کہ غرض تعود دائم است تخصیص بیچ نماز نیست، ہر نماز یکہ عمداً بلا عذر شرعی ترک دہد طلاق شود عشاء باشد یا فجر چوں وقت عشاء گزشت وزن نماز گذاشت و ادا نکرد طلاقہ شدہ۔ ہشتم: با عتراف آنکہ غرض متکلم تعود دائم ست این چانہ زنی کہ قرینہ یمین ہم مفقود مگر از باب اجتہاد دیوبند خواھد بود یا ہمانا معنی معتاد صلوۃ شدن زوجہ دائماً آن باشد کہ در ہمہ عمر جز یکبار بیچ نماز ادانہ کند ولاحول ولاقوۃ الا باللہ۔ نہم: تخصیص یمین الفور بصورت غضب و بے اعتدالی طبع نیز از اجتہادات دیو بند یہ است کہ در کتب مذہب ازاں نشانی نیست در فتوائے جلیلہ سابقہ چند امثلہ اش از کتب معتمدہ مذکورہ است چشم مالیدہ آنجا بیند کہ غبار این تخصیص از دلش بنشیند در مثال چہارم فرمودہ اند حاکم حلف کرد اگر در شہر بد معاشی آید و تراز نہ دہم زن طلاقہ باشد این نیز از باب یمین الفور ست اینجا کدام غضب و اشتعال طبع بود مگر جناب اجتہاد مآب از وجوہ تسمیہ الفور یک وجہ

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

[Right Column] ...does not exist, but this Mujtahid sahib, having seen one of the reasons for the naming of 'Yamin-e-Fawr', assumed that the compared (mushabbah) and the thing compared to (mushabbah bihi) are the same thing, and that the relevance of naming is necessary for the reality of the thing; this too could be a result of the influence of Deobandi education. Tenthly: From here until his statement, "The matter under discussion with us is like this, and Allah knows best," which constitutes two-thirds of his writing, if he had looked at the previously mentioned glorious fatwa with the eyes of reason and understanding, all this nonsense of his would have ended. And the literal meaning of 'conditional divorce' (taliq-e-talaq), the implication of which apparently indicates that "If you do not pray" means the absence of continuity in prayer, i.e., failing to perform even one prayer. The words of the aforementioned glorious fatwa have described it comprehensively. Then the specification of obligatory prayer has become as clear as the sun shining without a cloud in an explicit manner. And that person himself unknowingly confessed that "the speaker's purpose is to make the wife bound to perpetual prayer." Thus, the truth became clear and the veil of Deobandi ignorance was lifted, and his two-thirds of unresearched writing went useless and wasted here, and there is no need to pay attention to it, as is not hidden from any wise person, let alone a learned one. The brief words of the past glorious fatwa, "that the verb is in the status of an indefinite noun (nakira) and an indefinite noun in negation becomes general, and the generality of negation due to..."

[Left Column] ...having observed, they might have thought that the compared and the compared-to are one and the same, and that the relevance of naming is necessary for the reality of the thing; and this itself is not far from the effect of Deobandi teaching. Tenthly: From this point to the saying "and so we are in it, and Allah Almighty knows best," which forms two-thirds of his writing, if he could have seen the previous glorious fatwa with the eye of reason, understanding, and sight, he would have been spared from all this nonsense. This meaning, which is the apparent literal benefit of the word 'conditional divorce' upon the absence of permanent prayer, was expressed in the glorious fatwa with concise yet grand words. Again, the specification by way of assumption shone towards clarification like the sun of truth shining without the veil of clouds. And he himself unknowingly believed that the speaker's intent is also the wife becoming habitual in prayer perpetually. Thus, the truth shone forth, and the veil of Deobandi ignorance fell away. In these two-thirds of

writing-less writing, whatever remained forever went void and wasted, such that no need for attention remains, as is not hidden from every sane person, let alone the virtuous. These brief words of the previous glorious fatwa, that "the verb is in the status of an indefinite noun (nakira), and an indefinite noun in negation becomes general, and the generality of negation due to a partial affirmation that 'he prayed the morning prayer' did not hold true," with a long explanation of distress, one must consider seriously. And again, for the investigation of the truth for the advisor, that except by the command of the circumstantial evidence it is obligatory that the special first type, i.e., 'obligatory prayer' (salat-e-multazima) freed [from ambiguity] is intended, and its negation...

Note: Here there is a blank space in the manuscript. 12. Page 175 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[दायाँ कॉलम] ...मौजूद नहीं है लेकिन इस मुजतहिद साहब ने 'यमीन-ए-फ़ौर' के नामकरण के कारणों में से एक कारण को देखकर मान लिया कि मुशब्बा (जिसकी तुलना की जाए) और मुशब्बा बिही (जिससे तुलना की जाए) एक ही चीज़ हैं और नामकरण की प्रासंगिकता वस्तु की वास्तविकता के लिए आवश्यक है; यह भी तो देवबंदी शिक्षा के प्रभाव का परिणाम हो सकता है। दसवीं बात: यहाँ से लेकर उनके इस कथन "हमारे विचाराधीन मसले में ऐसा ही है, वल्लाहु आलम" तक, जो उनके लेखन का दो-तिहाई हिस्सा है, के बारे में यदि उन्होंने पहले उल्लेखित महान फ़तवे को बुद्धि और समझ की आँख से देखा होता, तो उनकी यह सारी बकवास समाप्त हो जाती। और 'शर्तिया तलाक़' (تعلیقِ طلاق) का शाब्दिक अर्थ, जिसका निहितार्थ स्पष्ट रूप से संकेत दे रहा है कि "यदि तुम नमाज़ नहीं पढ़ोगी" का अर्थ नमाज़ की निरंतरता का अभाव है, यानी एक भी नमाज़ न पढ़ना। पूर्वोक्त महान फ़तवे के शब्दों ने इसे व्यापक रूप से वर्णित किया है। फिर अनिवार्य नमाज़ का विनिर्देश स्पष्ट रूप से बादलों के बिना चमकते सूरज की तरह स्पष्ट हो गया है। और उस व्यक्ति ने स्वयं अनजाने में स्वीकार कर लिया कि "वक्ता का उद्देश्य पत्नी को स्थायी नमाज़ का पाबंद बनाना है।" इस प्रकार, सत्य स्पष्ट हो गया और देवबंदी अज्ञानता का पर्दा उठ गया, और उनका दो-तिहाई बिना शोध का लेखन यहाँ व्यर्थ और बेकार हो गया, और उस पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं है, जैसा कि किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति से छिपा नहीं है, विद्वान की तो बात ही क्या। पिछले महान फ़तवे के संक्षिप्त शब्द कि "क्रिया नकिरा (अनिश्चित संज्ञा) के नियम में है और नकारात्मकता में नकिरा सामान्य हो जाता है, और आंशिक सकारात्मकता के कारण निषेध की व्यापकता..."

[बायाँ कॉलम] ...को देखकर मान लिया होगा कि मुशब्बा और मुशब्बा बिही एक ही हैं, और नामकरण की प्रासंगिकता वस्तु की वास्तविकता के लिए आवश्यक है; और यह स्वयं देवबंदी शिक्षा के प्रभाव से दूर नहीं है। दसवीं बात: इस स्थल से "और इस प्रकार हम इसमें हैं, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है" (وھکذا مانحن فیہ واللہ تعالی اعلم) कथन तक, जो उनके लेखन का दो-तिहाई हिस्सा है, यदि वह पिछले महान फ़तवे को बुद्धि, समझ और दृष्टि की आँख से देख सकते, तो उन्हें इन सभी बकवासों से माफ़ कर दिया जाता। यह अर्थ, जो स्थायी नमाज़ की अनुपस्थिति पर 'तलाक़ के निलंबन' शब्द का स्पष्ट शाब्दिक लाभ है, महान फ़तवे में संक्षिप्त शब्दों में व्यक्त किया गया था। फिर से स्पष्टीकरण की दिशा में यह मानकर चमक उठा कि सत्य का सूर्य बादलों के पर्दे के बिना चमक उठा। और उन्होंने स्वयं अनजाने में विश्वास किया कि वक्ता का इरादा

भी पत्नी का स्थायी रूप से नमाज़ का अभ्यस्त होना है। इस प्रकार सत्य स्पष्ट हो गया, और देवबंदी अज्ञानता का पर्दा गिर गया। इन दो-तिहाई लेखन-रहित लेखन में, जो कुछ भी हमेशा के लिए बचा था वह शून्य और व्यर्थ हो गया, जिससे ध्यान की कोई आवश्यकता नहीं रह गई, जैसा कि हर बुद्धिमान व्यक्ति से छिपा नहीं है, गुणी की तो बात ही क्या। पिछले महान फ़तवे के ये संक्षिप्त शब्द, कि "क्रिया नकिरा के नियम में है, और नकारात्मकता में नकिरा सामान्य हो जाता है, और आंशिक सकारात्मकता के कारण निषेध की व्यापकता कि 'उसने सुबह की नमाज़ पढ़ी' सच नहीं रही," संकट के लंबे विवरण के साथ, गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। और फिर से, सलाहकार के लिए सत्य की जाँच के लिए, कि परिस्थितिगत साक्ष्य के आदेश के बिना यह अनिवार्य है कि विशेष प्रकार का पहला प्रकार, अर्थात 'नमाज़-ए-मुल्तज़िमा' अभिप्रेत हो, और इसका अभाव...

नोट: यहाँ मसौदे में रिक्त स्थान है। 12। पृष्ठ 175 of 688

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، ۱۳

[دایاں کالم] موجود نہیں ہے مگر اس مجتہد صاحب نے یمین فور کی وجہ تسمیہ کے وجوہ میں سے ایک وجہ کو دیکھ کر گمان کرلیا کہ مشبہ اور مشبہ بہ ایک ہی چیز ہیں اور وجہ تسمیہ کی مناسبت شیئی کی حقیقت کو لازم ہوتی ہے، یہ بھی تو دیوبندی تعلیم کے اثر کا نتیجہ ہوسکتا ہے۔ دہم: یہاں سے لے کر اس کے اس قول "ہمارے زیر بحث مسئلہ میں ایسے ہی ہے واللہ اعلم" تک جو کہ اس کی تحریر کا دو تہائی حصہ ہے کے متعلق اگر پہلے مذکور فتویٰ جلیلہ کو عقل و فہم کی آنکھ سے دیکھ لے اس کی یہ تمام یاوہ گوئی ختم ہو جائے اور تعلیق طلاق کا لغوی معنی جس کا مفاد ظاہراً دلالت کر رہا ہے کہ "اگر تو نماز نہ پڑھے گی" کا مطلب دوام نماز کا عدم ہے یعنی کوئی ایک نماز نہ پڑھے، مذکورہ فتویٰ جلیلہ کے الفاظ نے بھر پور انداز میں اس کو بیان کر دیا ہے پھر نماز فرض کی تخصیص واضح انداز میں بادل سے بے حجاب سورج کی طرح روشن ہوگئی ہے، اور خود اس شخص نے نادانستہ طور پر اعتراف کرلیا کہ "متکلم کا مقصد بیوی کو دائمی نماز کا پابند بنانا ہے" پس حق واضح ہوگیا اور دیوبندی کی جہالت سے پردہ اٹھ گیا، اور اس کی دو ثلث تحریر بے تحقیق یہاں لغو اور ضائع ہوگئی اور اس کی طرف التفات کی ضرورت نہیں جیسا کہ کسی بھی عقلمند پر مخفی نہیں چہ جائیکہ کسی فاضل پر مخفی رہے، گزشتہ فتاویٰ جلیلہ کے مختصر الفاظ کو "کہ فعل حکم نکرہ میں ہے اور نکرہ جیز نفی میں عام ہو جاتا ہے اور عموم سلب بوجہ

[بایاں کالم] را لملاحظہ فرمودہ گمان بردہ باشند کہ مشبہ و مشبہ بہ یکی ست و مناسبت تسمیہ لازم حقیقت شیئی ست و این خود از اثر تعلیم دیوبندی دور نیست۔ دہم: ازیں جاتا قول وھکذا مانحن فیہ واللہ تعالی اعلم کہ دو ثلث تحریر او می شود اگر فتوائے جلیلہ سابقہ را بچشم عقل و فہم و دیدن

توانستے ازینمه یاوه سرائیہا معاف داشتے ایں معنی کہ ظاہر مفاد لغوی لفظ تعلیق طلاق بر عدم دائم نماز ست در فتوائے جلیلہ بالفاظ جزیلہ قلیلہ ادا شدہ بود باز تخصیص بالفرض بور جھے سمت ایضاح تافت کہ آفتاب حق بے حجاب سحاب تافت و خود بینکس نادانستہ ایمان آورد کہ غرض متکلم نیز معتاد للصلوۃ شدن زوجہ است دائما پس حق روشن شد و پردہ از جہالت دیوبندیہ بر افتاد ودریں دو ثلث تحریر بے تحریر ہر چہ جاوید ہمہ لغو و ضائع رفت کہ حاجت التفات نماند کما لا یخفی علی کل عاقل فضلاً عن فاضل ایں الفاظ مختصرہ فتوائے جلیلہ سابقہ را کہ فعل حکم نکرہ میں ہے اور نکرہ جیز نفی میں عام ہو جاتا ہے اور عموم سلب بوجہ ایجاب جزئی کہ صبح کی نماز پڑھی صادق نہ رہا با تقریر طویل پریشانی بینکس باید سنجید ہ و باز تحقیق حق ناصح را کہ مگر بحکم دلالت حال واجب ست کہ خاص قسم اول یعنی صلوۃ ملتزمہ مبرئہ مراد ہو اور اس کا انتقاء

عہ: یہاں مسودہ میں بیاض ہے ۱۲ Page 175 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 13

[Upper Section] If one intentionally misses even a single obligatory prayer without a valid Shari'i excuse, it makes the condition true. Consequently, it became necessary that when the woman did not offer Isha prayer after this oath, as soon as the true dawn (Subh Sadiq) rose, two divorces became effective upon her, based on the admission that the speaker's intent was for the wife to become regular in prayer permanently. One must see, by God, O you! Has any veil remained on the face of truth? Far from it, a thousand times far from it, provided that Deobandi education hasn't turned your intellect into a 'Deobandi'—meaning, a slave of Satan.

One should compare the partial proposition that "he did not offer the morning prayer, so it didn't hold true" against his own long, scattered speech. Then, see the "clear truth" that "based on the circumstances, it is necessary that the specific first type, i.e., the obligatory prayer that fulfills the responsibility, be intended, and its negation holds true by intentionally missing a single obligatory prayer without a Shari'i excuse. After this oath, she did not pray Isha; upon the rising of the true dawn, two divorces fell upon her." Let this person combine this with his own admission that "the speaker's purpose was also to make the wife habitually regular in prayer for eternity." By God, tell me, does any veil remain on the face of truth? Not at all, provided Deobandi education hasn't made his intellect Deobandi, i.e., a slave of Satan.

[Lower Section] Eleventh: This poor wretch must have occasionally heard the translation of Mir Zahid's words on Mulla Jalal at the Deoband madrasa. Due to the misfortune of logic, he imposed the burden of logic upon Deobandi jurisprudence and tried to prove through his irrational methods a point which had been excellently clarified in the previous glorious fatwa based on principles of explanation. Although researchers have rejected some famous refinements of the chief of researchers, the late Sayyid Mir Zahid, for numerous reasons, this poor man, due to his short-sightedness, remained deprived of the reasons stated by researchers and relied solely on the rigid imitation (taqlid jamid) of Sayyid Zahid. He doesn't know that the subject of a natural proposition (qadiya tab'iyya) is the object of universality (kulliyat), and universality is from the second intelligibles (ma'qulat thaniya) which only have mental existence. Therefore, this natural proposition is only a mental proposition (qadiya dhihniyya).

फ़तावा रज़विया, खंड 13

[ऊपरी भाग] एक समय की फ़र्ज़ नमाज़ जानबूझकर बिना किसी शरई बहाने के छोड़ देने से यह सच हो जाता है। अतः यह अनिवार्य हो गया कि जब उस महिला ने इस शपथ के बाद ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी, तो सुबह सादिक़ (सच्ची भोर) होते ही उस पर दो तलाक़ लागू हो गए, इस स्वीकारोक्ति के साथ कि वक्ता का उद्देश्य भी पत्नी को स्थायी रूप से नमाज़ का आदी बनाना था। खुदा की कसम, देखो! क्या सत्य के चेहरे पर कोई पर्दा बचा है? बिल्कुल नहीं, बशर्ते कि देवबंदी शिक्षा ने तुम्हारी बुद्धि को 'देवबंदी' यानी शैतान का गुलाम न बना दिया हो।

उस व्यक्ति को अपनी लंबी और बिखरी हुई तक़रीर के मुक़ाबले में इस आंशिक प्रतिज्ञा को देखना चाहिए कि "उसने सुबह की नमाज़ नहीं पढ़ी, तो वह सच्चा नहीं रहा", और फिर उसके बाद उस "स्पष्ट सत्य" को कि "परिस्थिति के प्रमाण के अनुसार यह अनिवार्य है कि विशेष प्रथम श्रेणी यानी वह नमाज़ जिससे ज़िम्मेदारी पूरी हो, मुराद ली जाए और उसका अभाव एक समय की फ़र्ज़ नमाज़ जानबूझकर बिना किसी शरई बहाने के छोड़ने से सच हो जाता है। इस शपथ के बाद उसने ईशा नहीं पढ़ी, सुबह सादिक़ होते ही उस पर दो तलाक़ पड़ गए।" यह व्यक्ति इसे अपनी इस स्वीकारोक्ति के साथ जोड़कर देखे कि "वक्ता का उद्देश्य पत्नी को स्थायी रूप से नमाज़ का आदी बनाना भी है।" खुदा की कसम बताओ, क्या सत्य के चेहरे पर कोई पर्दा बाकी रहता है? हरगिज़ नहीं रहता, बशर्ते देवबंदी शिक्षा ने उसकी अक्ल को देवबंदी यानी शैतान का गुलाम न बनाया हो।

[निचला भाग] ग्यारहवां: उस बेचारे मिस्कीन ने कभी देवबंद के मदरसे में 'मुल्ला जलाल' पर 'मीर ज़ाहिद' के शब्दों का अनुवाद सुना होगा, जिस पर दुर्भाग्य से तर्क की बात शुरू कर दी और उसे देवबंदी फ़क़ाहत बना दिया। जिस विषय को पिछली गौरवशाली फ़तवे में स्पष्टीकरण के सिद्धांतों के आधार पर बहुत अच्छी तरह स्पष्ट किया जा चुका था, उसे वह अपने अतार्किक तर्क से सिद्ध करने की कोशिश कर रहा है। यद्यपि शोधकर्ताओं ने श्रेष्ठ शोधकर्ता अल्लामा सैयद मीर ज़ाहिद मरहूम की कुछ प्रसिद्ध बारीकियों को कई कारणों से खारिज कर दिया है, यह बेचारा अपनी अल्पदृष्टि के कारण शोधकर्ताओं द्वारा बताए गए कारणों से वंचित रहकर सैयद ज़ाहिद की अंध-नकल (तक़लीद-ए-जामिद) पर ही निर्भर रहा। उसे नहीं पता कि 'क़ज़िया-ए-तबईया' (प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति) का विषय 'कुल्लियत' का विषय होता है, और कुल्लियत 'मक़ूलात-ए-सानिया' में से है जिसका अस्तित्व केवल मानसिक होता है। इसलिए, यह 'तबईया' केवल एक मानसिक प्रतिज्ञप्ति (क़ज़िया-ए-ज़ेहनीया) होती है।

[ایک کالم] ایک وقت کی نماز فرض عمداً بلا عذر شرعی چھوڑنے سے صادق آجاتا ہے تو لازم ہوا کہ جب عورت نے اس حلف کے بعد عشاء نہ پڑھی صبح صادق طالع ہوتے ہی اس پر دو طلاقیں پڑگئیں باعتراف ببنکس کہ غرض متکلم نیز معتاد للصلوۃ شدن زوجہ است دائماً باید دید تو بخدا اے تو پیچ پردہ ہر چہرہ حق ماندہ است حاشا ثم حاشا بشرط آنکہ تعلیم دیوبندی عقل ترا دیوبندی یعنی بندہ نہ کردہ باشد۔

[دوسرا کالم] ایجاب جزئی کہ صبح کی نماز نہ پڑھی، صادق نہ رہا" کو اپنی طویل پراگندہ تقریر کے مقابلہ میں اس شخص کو دیکھنا چاہئے، اور پھر اس کے بعد واضح حق کو" کہ مگر بحکم دلالت حال واجب ہے کہ خاص قسم اول یعنی صلوۃ ملتزمہ مبرئیہ مراد ہو اور اس کا انتقاء ایک وقت کی نماز فرض عمداً بلا عذر شرعی چھوڑنے سے صادق آجاتا ہے اس حلف کے بعد عشاء نہ پڑھی، صبح صادق طالع ہوتے اس پر دو طلاقیں پڑ گئیں" کو یہ شخص اپنے اس اعتراف کے ساتھ " کہ متکلم کی غرض بھی بیوی کو دائمی طور پر نماز کی عادی بنانا ہے " ملا کر دیکھے تو بخدا بتائے کہ حق کے چہرہ پر کوئی پردہ باقی رہتا ہے ؟ ہرگز ہرگز نہیں رہتا، بشرطیکہ دیوبندی تعلیم نے اس کی عقل کو دیوبندی یعنی شیطان کا غلام نہ بنایا ہو۔

یازدھم: مسکین بیچارہ کہ در مدرسہ دیوبند گاہے الفاظ میر زاہد بر ملا جلال را ترجمہ شنیدہ باشد بشامت بخت منطقہ منطق بر رخت فقاہت دیوبندی بست و مطلبے را کہ در فتوائے جلیلہ سابقہ باحسن طریقہ اصول ایضاح یافتہ بود با خس طرق معقول نا معقول خودش اثبات خواست و با آنکہ محققین این تدقیق ذائع عمدۃ المدققین سید زاہد مرحوم را بوجوہ کثیرہ رد فرمودہ اند بیچارہ دست نظر قاصر از انہا کوتاہ داشتہ بر تقلید جامد سید زاہد بسند نمود و پنداشت کہ موضوع قضیہ طبعیہ

معروض کلیت است و کلیت از معقولات ثانیہ پس قضیہ ذہنیہ باشد نہ خارجیہ وزن ہار ایں مرتبہ از وجود خارجی بوئے نشود نہ بوجود فردے واحد نہ بوجود جمیع افراد فی الخارج بلکہ وجود فردے فی الخارج مستلزم وجود انتزاعی ایں مرتبہ ہم نتواں شد

یازدھم: بیچارے مسکین نے کبھی دیوبند کے مدرسہ میں ملا جلال پر میر زاہد کے الفاظ کا ترجمہ سن لیا ہو گا، جس پر بد قسمتی سے منطق کی بات شروع کر دی اور دیوبندی فقاہت بنادی اور مذکورہ فتاویٰ جلیلہ کا مطلب جو وضاحت کے اصول پر بہت اچھی طرح واضح ہو چکا تھا اس کو اپنی نامعقول منطق سے ثابت کرنے کی کوشش کر رہا ہے اگرچہ محققین نے عمدۃ المدققین علامہ سید میر زاہد مرحوم کی بعض مشہور تدقیقات کا کثیر وجوہ سے رد کیا یہ بیچارہ اپنی کوتاہ نظری کی وجہ سے محققین کی بیان کردہ وجوہ سے محروم رہ کر سید زاہد کی تقلید جامد پر ہی انحصار کر سکا۔ اسے معلوم نہیں کہ قضیہ طبعیہ کا موضوع کلیت کا معروض ہوتا ہے اور کلیت معقولات ثانیہ سے ہے جس کو وجود صرف ذہنی ہوتا ہے، لہٰذا یہ طبعیہ صرف قضیہ ذہنیہ ہوتا ہے

Fatawa Razawiyya, Volume 13

“For the abstracted depends on the abstraction; so as long as it is not abstracted, it does not exist, even if there exists that from which abstraction is valid.” Do you not see that this stage cannot be formed without considering the essence along with absolute generality (i.e., in the title and not the subject)? Thus, without consideration, it cannot adopt a mental existence merely because an individual exists externally.

It does not exist externally, and it can never attain the level of external existence. It cannot be realized in the external world even through the external existence of one of its individuals or all individuals. Rather, its abstract existence at this level cannot occur just because an individual is found externally. This is because something abstracted is dependent on the act of abstraction; until abstraction takes place, it does not exist, even if the thing from which abstraction can be made was present. Do you not reflect that this level cannot be achieved without considering the essence with absolute generality? That is, the consideration of absolute generality should only be in the title and not in the subject. So, how can a mental existence be created simply by an individual's presence in the external world without being considered by an observer?

Twelfth: By the existence of nature as the subject of a natural proposition, is external existence meant or mental existence? The first is not suitable for it, and the second is not within the realm of existence such that it would cease to exist with the negation of individuals. Twelfth: For the subject of a proposition, the existence of nature refers to either external existence or mental existence. External existence is not suitable for the nature itself, and if mental existence is meant, it is not attained (because it is not related to individuals) such that it would vanish with the absence of individuals.

Thirteenth: “The Absolute Thing,” which is considered in terms of generality, universality, and absolute status, does not have the rulings of individuals permeate into it. Then why would it exist with the existence of an individual or cease to exist with the negation of individuals? Thirteenth: At the level of “The Absolute Thing,” generality, universality, and absolute status are considered. The rulings of individuals do not permeate into it. Therefore, regarding this level, how can it be correct to say that it exists by the existence of one individual or ceases to exist by the absence of one individual?

Fourteenth: If, by a false assumption, we call the natural proposition “external,” then the existence of nature through the existence of each of its successive individuals is

the same mode of existence that attaches to the existence of the first individual, or something else, even if only conceptually. The first is false because it would be a redundant acquisition (“tahseel al-حاصل”), and as for the second, as a mode of existence attaches to the existence of every individual, it would cease to exist with the absence of that individual. Therefore… Fourteenth: If, by a false assumption, we accept that the existence of a natural proposition is external, then the existence of nature would be through the existence of each of its successive individuals, which is either the existence of its first individual or some other existence, even if this difference is only conceptual. The first is false because it…

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

"क्योंकि अमूर्त वस्तु अमूर्तन (abstraction) की क्रिया पर निर्भर करती है; अतः जब तक उसे अमूर्त नहीं किया जाता, उसका अस्तित्व नहीं होता, भले ही वह वस्तु विद्यमान हो जिससे अमूर्तन वैध है।" क्या आप नहीं देखते कि यह स्तर पूर्ण व्यापकता के साथ सार (essence) पर विचार किए बिना रूप नहीं ले सकता (यानी शीर्षक में, न कि विषय में)? इसलिए, बिना विचार के, केवल बाहरी रूप से किसी व्यक्ति (individual) के अस्तित्व मात्र से यह मानसिक अस्तित्व ग्रहण नहीं कर सकता।

यह बाह्य नहीं होता, और यह कभी भी बाह्य अस्तित्व का स्तर प्राप्त नहीं कर सकता। यह अपने एक व्यक्ति या सभी व्यक्तियों के बाहरी अस्तित्व के माध्यम से भी बाहरी दुनिया में साकार नहीं हो सकता। बल्कि, किसी व्यक्ति के बाहर विद्यमान होने मात्र से इस स्तर का अमूर्त अस्तित्व भी नहीं हो सकता, क्योंकि जो चीज़ अमूर्त की गई है, वह अमूर्तन की क्रिया के अधीन होती है। जब तक अमूर्तन नहीं किया जाता, उसका अस्तित्व नहीं होता, भले ही वह चीज़ मौजूद हो जिससे अमूर्तन किया जा सकता था। क्या आप इस बात पर विचार नहीं करते कि यह स्तर पूर्ण व्यापकता के साथ सार पर विचार किए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता? अर्थात्, पूर्ण व्यापकता का विचार केवल शीर्षक में होना चाहिए, न कि विषय में। तो, किसी पर्यवेक्षक के विचार के बिना केवल बाहरी दुनिया में किसी व्यक्ति की उपस्थिति से मानसिक अस्तित्व कैसे उत्पन्न हो सकता है?

बारहवाँ: प्राकृतिक विषय की प्रकृति के अस्तित्व से तात्पर्य बाह्य अस्तित्व है या मानसिक अस्तित्व? पहला उसके लिए उपयुक्त नहीं है, और दूसरा अस्तित्व के दायरे में नहीं है कि व्यक्तियों के अभाव से वह समाप्त हो जाए। बारहवाँ: किसी प्रस्ताव (proposition) के विषय के लिए, प्रकृति के अस्तित्व का अर्थ बाह्य अस्तित्व या मानसिक अस्तित्व है। बाह्य अस्तित्व स्वयं प्रकृति के लिए उपयुक्त नहीं है, और यदि मानसिक अस्तित्व अभिप्रेत है, तो वह प्राप्त नहीं होता (क्योंकि यह व्यक्तियों से संबंधित नहीं है) इस तरह से कि वह व्यक्तियों की अनुपस्थिति से समाप्त हो जाए।

तेरहवाँ: "पूर्ण वस्तु" (The Absolute Thing), जिसे व्यापकता, सार्वभौमिकता और पूर्णता के संदर्भ में माना जाता है, उसमें व्यक्तियों के नियम प्रवाहित नहीं होते। फिर वह किसी व्यक्ति के अस्तित्व से क्यों अस्तित्व में आएगी या व्यक्तियों के अभाव से क्यों समाप्त हो जाएगी? तेरहवाँ: "पूर्ण वस्तु" के स्तर पर व्यापकता, सार्वभौमिकता और पूर्णता पर विचार किया जाता है। इसमें व्यक्तियों के नियम

व्याप्त नहीं होते। अत; इस स्तर के संबंध में यह कहना कैसे सही हो सकता है कि यह एक व्यक्ति के अस्तित्व से अस्तित्व में आता है या एक व्यक्ति के अभाव से समाप्त हो जाता है।

चौदहवाँ: यदि किसी गलत धारणा से हम प्राकृतिक प्रस्ताव को "बाह्य" कहें, तो इसके प्रत्येक क्रमिक व्यक्तियों के अस्तित्व के माध्यम से प्रकृति का अस्तित्व वही होगा जो पहले व्यक्ति के अस्तित्व से जुड़ता है, या कुछ और, भले ही केवल अवधारणात्मक रूप से। पहला गलत है क्योंकि यह पुनरावृत्ति (तहसील अल-हासिल) होगी। दूसरा, चूंकि अस्तित्व का एक तरीका प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व के साथ जुड़ता है, तो वह उस व्यक्ति की अनुपस्थिति के साथ समाप्त हो जाएगा। इसलिए... चौदहवाँ: यदि किसी गलत धारणा से हम मान लें कि प्राकृतिक प्रस्ताव का अस्तित्व बाह्य है, तो प्रकृति का अस्तित्व उसके प्रत्येक क्रमिक व्यक्तियों के अस्तित्व के माध्यम से होगा, जो या तो उसके पहले व्यक्ति का अस्तित्व है या कोई अन्य अस्तित्व है, भले ही यह अंतर केवल वैचारिक ही क्यों न हो। पहला गलत है क्योंकि यह...

पृष्ठ 177 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

فان المنتزع تابع للانتزاع فمالم ینتزع لم یوجد ولو وجد ما یصح الانتزاع منه آیا نه بینی کہ ایں مرتبہ بے لحاظ ماہیت مع الاطلاق ای فی العنوان دون المعنون صورت نہ بندد پس بے لحاظ ملاحظہ بمجرد وجود فرد فی الخارج چسپاں وجود ذہنی پزیرد۔

خارجہ نہیں ہوتا، اور یہ ہر گز وجود خارجی کا مرتبہ نہیں پاسکتا، یہ اپنے ایک فرد یا جمیع افراد کے خارجی وجود سے بھی خارج میں متحقق نہیں ہوسکتا بلکہ کسی فرد کے خارج میں پائے جانے سے اس مرتبہ کا وجود انتزاعی بھی نہیں ہوسکتا، کیونکہ انتزاع کی ہوئی چیز ، انتزاع کے تابع ہوتی ہے تو جب تک انتزاع نہ کیا جائے اس کا وجود نہیں ہوتا اگرچہ وہ چیز موجود تھی جس سے انتزاع کیا جاسکتا ہو، کیا غور نہیں کرتے کہ یہ مرتبہ ماہیت کے ساتھ اطلاق کو ملحوظ رکھے بغیر حاصل نہیں ہوسکتا یعنی اطلاق کا لحاظ صرف عنوان میں ہو معنون میں نہ ہو، تو کسی فرد کے محض خارج میں لحاظ کرنے والے کے لحاظ کے بغیر پائے جانے سے ذہنی وجود کس طرح پیدا ہوسکے گا۔

دوازدھم: مراد از وجود طبیعت موضوع طبعیہ وجود خارجی است یا وجود ذہنی اول را خود او شایاں نیست و دوم در گرد وجود فرود نبود کہ بانتفائے افراد منتفی شود۔ دوازدہم: قضیہ کے موضوع کے لئے طبیعت کے وجود سے مراد خارجی وجود یا ذہنی وجود ہے وجود خارجی تو خود طبیعت کے شایاں نہیں، اور ذہنی وجود مراد ہو تو وہ حاصل نہیں (کیونکہ یہ افراد سے متعلق نہیں) کہ وہ افراد کے انتفاء سے منتفی ہو جائے۔

سیزدھم: الشئ المطلق کہ ملحوظ بلحاظ عموم و کلیت و اطلاق است احکام افراد باد ساری نشود پس چرا بوجود فرد موجود یا بانتفائے افراد منتفی شود۔ سیزدہم: الشئ المطلق کے مرتبہ میں عموم، کلیت اور اطلاق ملحوظ ہوتا ہے، اس میں افراد کے احکام سرایت نہیں کرتے تو اس مرتبہ کے متعلق یہ کہنا کہ ایک فرد کے وجود سے موجود یا ایک فرد کے انتفاء سے منتفی ہو جانا کیونکر صحیح ہوسکتا ہے۔

چھاردھم: اگر بفرض باطل طبعیہ را خارجیہ گوئیم پس وجود طبیعت بوجود ہر یک از افراد متعاقبہ ہماں نحو وجود ست کہ بوجود فرد اول عارض شود یا غیر آں ولو بالاعتبار اول باطل ست کہ تحصیل حاصل ست و علی الثانی چوں بوجود ہر فرد نحوے از وجود عارض شود بانتفائے آں فرد ہما نحو وجود منتفی شود پس چہاردہم: اگر بفرض باطل ، ہم مان لیں کہ قضیہ طبعیہ کا وجود خارجی ہے تو طبعیہ کا وجود اس کے افراد متعاقبہ میں سے ہر فرد کے وجود سے ہوگا جو کہ اس کے فرد اول کا وجود ہے یا اس کا کوئی غیر وجود ہوگا اگرچہ یہ غیریت اعتباری ہی ہو، اول باطل ہے کیونکہ یہ

Fatawa Razawiyya - Volume 13 - Page 13

[Text in Right Column]: Extinction occurs with the extinction of every individual, and the distinction of this ruling between 'the absolute thing' and 'the thing in absolute sense' would be wasted. Fifteenth: Study the overwhelming objections to this clear distinction in the shining words of Malik al-Ulama Bahr al-Ulum (may his soul be sanctified). The purpose related to this context is that Ahmad Ali said to his wife, "If you do not pray, you are divorced twice." It is obvious that his intention was the prayer that is worthy of being read, performed, and fulfilled externally, not a prayer whose existence is merely mental and conceptual and has no capacity for external occurrence or performance at all. Thus, it is impossible for what was said—that 'absolute prayer' (the subject of a natural proposition) is meant here—to be correct. With its invalidation, all matters derived from it are also clearly invalidated, for the corruption of the foundation leads to the corruption of the structure. Sixteenth: At the time of the fulfillment of the condition regarding the absence of perjury (hanth), it was not so obscure as to require citation. However, the Deobandi Mujtahid wished to show off his skill, and citing the text of al-Alamgiriya—"Indeed, when an oath is contracted upon non-action in two locations, the condition of fulfillment (al-bara) will be looked into in both"—as a supporting document was irrelevant for this poor soul. If he couldn't see that clear point in its appropriate place, I wish he had also looked at the sentence here...

[Text in Left Column]: It is a repetition (tahsil-e-hasil), and on the second premise, when an existence of a kind is attributed to nature by the existence of every individual, then with the extinction of that individual, the existence attained for nature will be negated. Thus, it would necessitate that with the extinction of every individual, nature itself becomes extinct. Therefore, the distinction between 'absolute thing' and 'thing in absolute sense' in this ruling would be futile. Fifteenth: Study the strong objections to this distinction in the discourse of Malik al-Ulama Bahr al-Ulum. The gist concerning the discussed point is that Ahmad Ali told his wife, "If you do not pray, you are divorced twice." It is evident that he meant the prayer that can be prayed and performed externally, not that prayer whose existence is merely mental and conceptual and which is not capable of being prayed or performed externally. So, to say that 'absolute prayer' is meant here, which is the subject of a natural proposition, would be impossible. After its invalidation, all those matters that were derived from it become void. This is clear because the corruption of the building results from the corruption of the foundation. Sixteenth: The occurrence of perjury

(hanth) upon the non-performance of an action is clear, for which no citation was needed. However, the Deobandi Mujtahid wants to show his style with great poise. His presenting the quote from Alamgiri—"that the rule is: if an oath relates to such non-action which concerns two locations, then the condition of fulfilling the oath will be considered in both"—as a supporting document is irrelevant.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 13 - पृष्ठ 13

[दाएँ कॉलम का पाठ]: प्रत्येक व्यक्ति के अंत के साथ अंत होता है, और 'मुतलक़-उश-शौ' (पूर्ण वस्तु) और 'अश-शौ-उल-मुतलक़' (वस्तु पूर्णता) के बीच इस नियम का अंतर व्यर्थ हो जाता है। पंद्रहवां: मलिक-उल-उलेमा बहर-उल-उलूम (उनके रहस्य पवित्र हों) के शब्दों में इस स्पष्ट भेद पर भारी आपत्तियों का अध्ययन करें। इस संदर्भ से संबंधित उद्देश्य यह है कि अहमद अली ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तुम नमाज़ न पढ़ो तो तुम्हें दो तलाक।" यह स्पष्ट है कि उसका इरादा वह नमाज़ थी जो बाहरी रूप से पढ़ने, निभाने और पूरा करने के योग्य हो, न कि वह नमाज़ जिसका अस्तित्व केवल मानसिक और काल्पनिक हो और जिसमें बाहरी घटना या प्रदर्शन की कोई क्षमता न हो। अत; जो कहा गया था—कि यहाँ 'मुतलक़ नमाज़' (एक प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति का विषय) अभिप्रेत है—उसका सही होना असंभव है। इसके अमान्य होने के साथ, इससे निकली सभी बातें भी स्पष्ट रूप से अमान्य हो जाती हैं, क्योंकि आधार के भ्रष्ट होने से संरचना का पतन हो जाता है। सोलहवां: शपथ भंग (हन्थ) की अनुपस्थिति के संबंध में शर्त की पूर्ति के समय, यह इतना अस्पष्ट नहीं था कि इसके लिए किसी उद्धरण की आवश्यकता हो। हालाँकि, देवबंदी मुज्तहिद अपना कौशल दिखाना चाहते थे, और अल-आलमगीरिया के पाठ को उद्धृत करना—"वास्तव में, जब दो स्थानों पर अकर्मण्यता पर शपथ ली जाती है, तो दोनों में पूर्ति (अल-बरा) की शर्त पर गौर किया जाएगा"—इस बेचारे के लिए अप्रासंगिक था। यदि वह उस स्पष्ट बिंदु को उसके उचित स्थान पर नहीं देख सका, तो काश उसने यहाँ के वाक्य को भी देखा होता...

[बाएँ कॉलम का पाठ]: यह पुनरावृत्ति (तहसील-ए-हासिल) है, और दूसरे आधार पर, जब प्रत्येक व्यक्ति के अस्तित्व द्वारा प्रकृति को एक प्रकार का अस्तित्व प्राप्त होता है, तो उस व्यक्ति के अंत के साथ, प्रकृति के लिए प्राप्त अस्तित्व नकार दिया जाएगा। इस प्रकार, यह आवश्यक होगा कि प्रत्येक व्यक्ति के अंत के साथ, प्रकृति स्वयं समाप्त हो जाए। इसलिए, इस नियम में 'मुतलक़ वस्तु' और 'पूर्ण वस्तु' के बीच का अंतर निरर्थक होगा। पंद्रहवां: मलिक-उल-उलेमा बहर-उल-उलूम के विमर्श में इस भेद पर कड़े विरोधों का अध्ययन करें। चर्चा किए गए बिंदु के संबंध में सार यह है कि अहमद अली ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तुम नमाज़ न पढ़ो तो तुम्हें दो तलाक।" यह स्पष्ट है कि उसका मतलब उस नमाज़ से था जिसे बाहरी रूप से पढ़ा और निभाया जा सके, न कि वह नमाज़ जिसका अस्तित्व केवल मानसिक और काल्पनिक हो और जो बाहरी रूप से पढ़ने या निभाने के योग्य न हो। इसलिए, यह कहना कि यहाँ 'मुतलक़ नमाज़' अभिप्रेत है, जो एक प्राकृतिक प्रतिज्ञप्ति का विषय है, असंभव

होगा। इसके अमान्य होने के बाद, वे सभी मामले जो इससे निकले थे, शून्य हो जाते हैं। यह स्पष्ट है क्योंकि इमारत का भ्रष्टाचार नींव के भ्रष्टाचार से उत्पन्न होता है। सोलहवां: क्रिया न करने पर शपथ भंग (हन्थ) का होना स्पष्ट है, जिसके लिए किसी उद्धरण की आवश्यकता नहीं थी। हालाँकि, देवबंदी मुज्तहिद बड़े सलीके से अपना जलवा दिखाना चाहता है। आलमगीरी के उद्धरण को प्रस्तुत करना —"कि नियम यह है: यदि शपथ का संबंध ऐसे अकर्म से है जो दो स्थानों से संबंधित है, तो दोनों में शपथ पूरी करने की शर्त पर विचार किया जाएगा"—एक सहायक दस्तावेज़ के रूप में अप्रासंगिक है।

पृष्ठ 178 का 688

[دائیں کالم کی عبارت]: انتقاء بانتفائے ہر فرد رو نماید و تفرقہ ایں حکم میاں مطلق الشئ والشی المطلق ضائع بر آید۔ پانزدہم: ایرادات قاہرہ بریں تفرقہ باہرہ در کلمات زائرہ ملک العلماء بحر العلوم قدس سرہ مطالعہ کن غرض بالقدر لہ متعلق بالمقام ایں ست کہ احمد علی زن خود را گفت اگر نماز نخوانی ترا دو طلاق پس بالبداہتہ مقصود او نمازے ست کہ خواندن و گزاردن و ادا نمودن در خارج بروئے کار آوردن را شایاں بود نہ نمازے کہ وجودش محض ذہنی و اعتباری باشد و قابلیت ایقاع و ادا اصلا ندارد پس محال ست انچہ گفتہ کہ مراد در بنجا الصلوۃ مطلقہ یعنی موضوع قضیہ طبعیہ است و بہ بطلانش بطلان ہمہ انچہ بر و متفرع کردہ واضح فان فساد المبنٰی فساد البناء۔ شانزدہم: ہنگام تحقق شرط بر عدم حنث نہ خفائے داشت کہ محتاج بہ نقل بودے فاما مجتہد دیو بند کمال سلیقہ خود را در جلوہ دادن خواست و عبارت عالمگیری الاصل ان الیمین متی عقدت علی عدم الفعل فی محلین ینظر فیہما الی شرط البرا کہ ازیں محل بیعلاقہ بود بہ سند نمود مسکین اگر آں واضحہ را در محل لائق او نتوانستی دید کاش ہم از بنجا بر فقرہ

[بائیں کالم کی عبارت]: تحصیل حاصل ہے، اور دوسری شق پر جب ہر فرد کے وجود سے طبیعت کو ایک قسم کا وجود عارض ہوا تو اس فرد کے انتقاء سے طبیعت کو حاصل شدہ وجود منتفی ہوگا، تو لازم آئے گا کہ ہر فرد کے انتقاء سے طبیعت کا انتقاء ہو جائے تو اس حکم میں مطلق الشئ اور الشئ المطلق کا فرق فضول ہوگا۔ پانزدہم: اس فرق پر مضبوط اعتراضات کا مطالعہ ملک العلماء بحر العلوم کے کلام میں کرو۔ زیر بحث مقام سے متعلق غرض یہ ہے کہ احمد علی نے اپنی بیوی کو کہا کہ اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاقیں، پس بالبداہت معلوم ہے کہ اس کا مقصد وہ نماز ہے جو خارج میں پڑھی اور ادا کی جاسکے، نہ وہ نماز جس کا وجود محض ذہنی اور

اعتباری ہو اور خارج میں پڑھنے اور ادا کرنے کے قابل نہ ہو، تو یہ کہنا کہ یہاں صلوٰۃ مطلقہ مراد ہے جو قضیہ طبعیہ کا موضوع ہے، محال ہوگا، اس کے بطلان کے بعد وہ تمام باتیں باطل ہو گئیں جو اس پر متفرع کی گئی ہیں، یہ واضح بات ہے کیونکہ مبنی کے فساد سے بناء کا فساد ہوتا ہے۔ شانزدہم: عدم فعل کی شرط کے پائے جانے پر حنث کا پایا جانا واضح بات ہے جس پر کسی نقل کی ضرورت نہ تھی، لیکن دیوبندی مجتہد بڑے سلیقہ سے اپنا جلوہ دکھانا چاہتا ہے اور اس کا یہاں عالمگیری کی عبارت "کہ قاعدہ یہ ہے کہ اگر قسم کا تعلق ایسے عدم فعل سے ہو جس کا تعلق دو محل سے ہو تو دونوں میں قسم پورا ہونے کی شرط کو دیکھا جائے گا" کو بطور سند پیش کرنا بے علاقہ

Fatawa Razawiyya, Volume 13

And upon the failure of the condition of fulfillment (barr), perjury (hanth) becomes certain. By some forced interpretation, one could be content that it is according to or against the objective. Why suspend the oath on two places here?

The point is that this poor soul saw no suitable argument for this clear matter, so he should have sufficed here with the sentence: "upon the failure of the condition of fulfilling the oath, perjury becomes necessary and certain." This is because, as an inverse concept, it was in accordance with his purpose, so he would have taken the trouble of this inverse concept, whereas what was the occasion here for suspending the oath from two places?

Seventeenth: That he brought the issue from Alamgiriyya, "if you do not give me this cloth, then you are divorced," and then again the issue, "if I do not have intercourse with you with this headscarf." And the poor man, between these two issues, mentioned a case that Alamgiri itself brought from Al-Muhit from the Fatawa of Imam Faqih Abu al-Layth al-Samarqandi (may Allah Almighty have mercy on him). Either through lack of sight he didn't see it, or he saw it but through lack of insight didn't understand it, or he understood it but chose to cut and trim it to deceive the common people. See what is stated in these very lines of Alamgiri, that it is in the Fatawa of Abu al-Layth (may Allah Almighty have mercy on him) that a husband, while intending to have intercourse, told his wife, "If you do not enter the room with me, you are divorced." After this, the woman entered at a time when the husband's desire had subsided, so the divorce will take place on the wife, and if...

1. Fatawa Hindiyya, Chapter Three regarding the suspension of divorce with the words 'In' and 'Idha', Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/429.
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Three regarding the suspension of divorce with the words 'In' and 'Idha', Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/431.
3. Fatawa Hindiyya, Chapter Three regarding the suspension of divorce with the words 'In' and 'Idha', Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/430.

फतावा रज़विया, खंड 13

और शपथ पूरी होने की शर्त के विफल होने पर, शपथ का टूटना (हन्श) निश्चित हो जाता है। किसी कठिन व्याख्या के माध्यम से, कोई इस बात से संतुष्ट हो सकता है कि यह उद्देश्य के अनुसार है या उसके विपरीत। यहाँ शपथ को दो स्थानों पर निलंबित करने का क्या औचित्य है?

बात यह है कि उस बेचारे को इस स्पष्ट बात पर कोई उपयुक्त तर्क नज़र नहीं आया, तो उसे यहाँ इस वाक्य पर संतोष कर लेना चाहिए था कि "शपथ पूरी होने की शर्त के विफल हो जाने पर हन्श (शपथ का टूटना) अनिवार्य और निश्चित होगा"। क्योंकि यह विपरीत अवधारणा के रूप में उसके उद्देश्य के अनुकूल था, तो वह इस विपरीत अवधारणा का कष्ट उठा लेता, जबकि यहाँ शपथ को दो स्थानों से जोड़ने का क्या स्थान था।

सत्रहवाँ: यह कि आलमगीरिया का मसला, कि पत्नी को कहा अगर तू मुझे यह कपड़ा न दे तो तलाक़। और फिर दूसरा मसला, अगर मैं तुझसे इस ओढ़नी के साथ संभोग न करूँको उस पर्याप्त मसले के साथ उल्लेख किया और उस बेचारे ने इन दोनों उल्लेखित मसलों के बीच, आलमगीरी का 'मुहीत' से और उसका इमाम फ़क़ीह अबू अल-लैथ समरकंदी (रहमतुल्लाह अलैह) से उद्धृत मसले का ज़िक्र किया। या तो दृष्टि की कमी के कारण उसने इसे नहीं देखा, या देखा तो अंतर्दृष्टि की कमी के कारण समझा नहीं, या समझा तो आम लोगों को भ्रमित करने के लिए काट-छाँट कर दी। देखिए आलमगीरी की इन्हीं पंक्तियों में क्या बयान किया गया है कि फतावा अबू अल-लैथ (रहमतुल्लाह अलैह) में है कि पति ने पत्नी से संभोग का इरादा करते हुए पत्नी से कहा कि अगर तू मेरे साथ कमरे के अंदर दाखिल न हुई तो तुझे तलाक़ है, इसके बाद औरत उस समय दाखिल हुई जब पति की उत्तेजना खत्म हो गई थी तो पत्नी को तलाक़ हो जाएगी, और अगर...

1. फतावा हिंदिया, अध्याय 3 'इन' और 'इज़ा' शब्दों के साथ सशर्त तलाक़ पर, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/429।
2. फतावा हिंदिया, अध्याय 3 'इन' और 'इज़ा' शब्दों के साथ सशर्त तलाक़ पर, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/431।
3. फतावा हिंदिया, अध्याय 3 'इन' और 'इज़ा' शब्दों के साथ सशर्त तलाक़ पर, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/430।

पृष्ठ 179/688

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم

وعند فوات شرط البر یتعین الحنث کہ بہ تکلف متکلف بطور مفہوم مخالف بالمقصود او موافق می تواں شد قناعت کردے تعلیق یمین بہ دو محل را دریں محل چہ مقام و محل۔

بات ہے اس غریب کو اس واضح بات پر کوئی مناسب دلیل نظر نہ آئی تھی تو یہاں اس فقرہ پر کہ "اور قسم پورا ہونے کی شرط کے فوت ہو جانے پر حنث لازم اور متعین ہوگا" اکتفاء کرلیتا کیونکہ یہ بطور مفہوم مخالف اس کے مقصد کے موافق تھی، تو اس مفہوم مخالف کا تکلف کرلیتا، جبکہ قسم کو دو محلوں سے معلق کرنے کا یہاں کیا مقام تھا۔

ہفدہم: آنکہ از عالمگیریہ مسئلہ ان لم تعطینی ھذا الثوب باز مسئلہ ان لم اطأک مع ھذہ المقنعۃ آورد و مسکین در میان ایں دو مسئلہ مسئلہ کہ ہمیں عالمگیری از محیط از فتاوائے امام فقیہ ابواللیث سمر قندی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ آورد و از بے بصری نہ دید یا دید و از بے بصیرتی نہ فہمید یا فہمید و از راہ مغالطہ عوام قطع وبرید گزید، ہمیں کہ در ہمیں سطور عالمگیری چہ میں فرماید فی فتاوٰی ابی اللیث رحمہ اللہ تعالی اذا اراد الرجل ان یجامع امرأتہ فقال لہا ان لم تدخلی معی فی البیت فانت طالق فدخلت بعد ماسکنت شہوتہ وقع الطلاق علیہا وان دخلت قبل ذلک لاتطلق کذا فی المحیط اینجابچرانہ گوید کہ محلوف علیہ عدم دخول مطلق ست ودخول

ہفدہم: یہ کہ عالمگیریہ کا مسئلہ، کہ بیوی کو کہا اگر تو مجھے یہ کپڑا نہ دے تو طلاق۔ اور پھر دوسرا مسئلہ، اگر میں تجھ سے وطی نہ کروں اس اوڑھنی کے ساتھ، کو اس کفایت دینے والے مسئلہ کے ساتھ ذکر کیا اور اس غریب نے ان مذکورہ دونوں مسئلوں کے درمیان، عالمگیری کا محیط سے اور اس کا امام فقیہ ابواللیث سمر قندی سے منقولہ مسئلہ کو ذکر کیا اور بے بصری میں

دیکھا نہیں یا دیکھا ہے تو بصیرت نہ ہونے کی وجہ سے سمجھا نہیں یا سمجھا ہے تو عوام کے مغالطہ دینے کے لئے قطع وبرید کردی، دیکھئے عالمگیری کی انہی سطروں میں کیا بیان کیا ہے کہ فتاویٰ ابواللیث رحمہ اللہ تعالیٰ میں ہے کہ خاوند نے بیوی سے مجامعت کا ارادہ کرتے ہوئے بیوی کو کہا کہ اگر تو میرے ساتھ اندر کمرے میں داخل نہ ہوئی تو تجھے طلاق ہے، اس کے بعد عورت اس وقت داخل ہوئی جب خاوند کی شہوت ختم ہوگئی تو بیوی کو طلاق ہوگی، اور اگر

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمة ان واذا نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۲۹ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمة ان واذا نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۳۱ 3 فتاوٰی ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمة ان واذا نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۳۰

(Left Column - Original Persian/Arabic Text) The absolute subject of a natural proposition is not negated except by the negation of all instances of entry. This does not happen except by absolute non-entry until the death of one of the two parties. Thus, entry may be realized at any time, even if after ten years, absolute non-entry is negated, and the condition for breaking the oath does not occur.

Eighteenth: From al-Fatawa al-Alamgiriyya, the case: "If you do not pray two rak'ahs today, you are divorced." Then she menstruated before starting the prayer or after praying one rak'ah [1]. It stated that if there was enough time between the oath and the start of menstruation to accommodate two rak'ahs, she is divorced. Apparently, this problem was considered contradictory to the circular problem. Raising the stone of reconciliation (tatbiq) on the head of ijtihad, it was argued that because this text mentions the restrictions of "today" and "two rak'ahs," its ruling is different from the one under discussion. Thus they diverged, and there should be no doubt. It is not realized that in this respect, there is no divergence in the issues, nor a change in the ruling. The prayer of two rak'ahs in a day also has a universal nature. A thing is negated by the negation of all its instances. Since the day passed and no instance of two rak'ahs of prayer was realized in it, the condition was negated, the oath was broken, and the illusion that the husband said "today" while performing two rak'ahs in a lifetime...

(Right Column - Urdu Translation/Explanation) ...if she entered before the desire ended, divorce will not occur, as it is in Al-Muhit. Here, on this text, he did not give his aforementioned report that he swore on non-entry, and non-entry is absolute. Absolute entry is the subject of a natural proposition which will not be negated without all its instances being negated, but only when entry is never found. This can only be known upon the death of one of the spouses. So whenever entry is realized, even if after ten years, until then the non-entry of absolute entry will remain negated, and the situation of breaking the oath will not arise.

Eighteenth: Then the case from Alamgiriyya was mentioned: the husband said to his wife, "If you do not pray two rak'ahs of prayer today, you are divorced." Thereafter, before starting the prayer, the wife had menstruation, or it started after praying one rak'ah. It was told that if between the oath and the start of prayer there was enough time that she could have prayed two rak'ahs, the wife would be divorced. He pointed out this issue as apparently contradictory to the one under discussion. Raising the

stone of reconciliation and adjustment on the head of ijtihad (legal reasoning), he said that in the text of this issue, the restrictions of "today" and "two rak'ahs" are mentioned, therefore the ruling of this issue is different from our discussed ruling. Hence both issues are separate and your objection should not stand. He did not realize that because of this, there is no difference in the issues nor any change in the ruling. "Today's two rak'ah prayer" also has a universal nature, and for any thing...

[1] Al-Fatawa al-Hindiyya, Chapter Three regarding conditions with the words 'in' and 'idha' etc., Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/436.

(बायाँ कॉलम - मूल फारसी/अरबी पाठ) एक प्राकृतिक प्रस्ताव (قضیہ طبعیہ) का निरपेक्ष विषय तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि प्रवेश के सभी उदाहरण समाप्त न हो जाएं। यह केवल तब तक नहीं होता जब तक कि दोनों में से किसी एक की मृत्यु तक बिल्कुल प्रवेश न हुआ हो। इस प्रकार, प्रवेश किसी भी समय सिद्ध हो सकता है, भले ही दस साल बाद हो, तब तक निरपेक्ष गैर-प्रवेश समाप्त रहेगा, और शपथ टूटने की स्थिति नहीं बनेगी।

अठारहवाँ: अल-फ़तावा अल-आलमगीरिया से, मामला: "यदि तुम आज दो रकात नमाज़ नहीं पढ़ोगी, तो तुम्हें तलाक है।" फिर नमाज़ शुरू करने से पहले या एक रकात पढ़ने के बाद उसे मासिक धर्म शुरू हो गया [1]। इसमें कहा गया कि यदि शपथ और मासिक धर्म की शुरुआत के बीच दो रकात पढ़ने के लिए पर्याप्त समय था, तो उसे तलाक हो गया। प्रत्यक्षत; इस समस्या को विचाराधीन समस्या के विपरीत माना गया। समाधान (ततबीक़) का पत्थर इजतिहाद के सिर पर उठाते हुए यह तर्क दिया गया कि चूंकि इस पाठ में "आज" और "दो रकात" के प्रतिबंधों का उल्लेख है, इसलिए इसका निर्णय विचाराधीन निर्णय से भिन्न है। इस प्रकार वे अलग हो गए, और इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। यह महसूस नहीं किया गया कि इस संबंध में न तो समस्याओं में कोई भिन्नता है, न ही निर्णय में कोई बदलाव। एक दिन में दो रकात की नमाज़ भी एक सार्वभौमिक प्रकृति (طبیعت کلیہ) रखती है। कोई चीज़ उसके सभी उदाहरणों के अभाव से ही समाप्त होती है। चूंकि दिन बीत गया और उसमें दो रकात नमाज़ का कोई भी उदाहरण सिद्ध नहीं हुआ, इसलिए शर्त समाप्त हो गई, शपथ टूट गई, और यह भ्रम कि पति ने "आज" कहा था जबकि जीवन भर में दो रकात नमाज़...

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) ...यदि वह कामेच्छा समाप्त होने से पहले प्रविष्ट हुई तो तलाक नहीं होगा, जैसा कि 'अल-मुहीत' में है। यहाँ, इस पाठ पर, उसने अपनी पूर्वोक्त रिपोर्ट नहीं दी कि उसने प्रवेश न करने पर शपथ ली थी, और प्रवेश न करना निरपेक्ष (मुतलक़) है। निरपेक्ष प्रवेश एक प्राकृतिक प्रस्ताव का विषय है जो तब तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि इसके सभी उदाहरण समाप्त न हो जाएं लेकिन यह तभी होगा जब प्रवेश कभी भी न पाया जाए। और यह बात पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु पर ही पता चल सकेगी। तो जब भी प्रवेश सिद्ध हो, चाहे दस साल बाद ही क्यों न हो, तब तक निरपेक्ष प्रवेश का अभाव बना रहेगा, और शपथ टूटने की स्थिति नहीं आएगी।

अठारहवाँ: फिर आलमगीरिया का मसला ज़िक्र किया गया: पति ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर तू आज दो रकात नमाज़ न पढ़े तो तुझे तलाक है।" उसके बाद, नमाज़ शुरू करने से पहले पत्नी को मासिक धर्म आ गया, या एक रकात पढ़ने के बाद आ गया। बताया गया कि यदि शपथ और नमाज़ शुरू करने के बीच इतना समय था कि वह दो रकात नमाज़ पढ़ सकती थी, तो पत्नी को तलाक हो जाएगा। उसने इस मसले को ज़ाहिरी तौर पर विचाराधीन मसले के विपरीत बताया। समाधान और सामंजस्य का पत्थर इजतिहाद के सिर पर उठाकर उसने कहा कि इस मसले की इबारत में "आज" और "दो रकातों" की शर्त ज़िक्र की गई है, इसलिए इस मसले का हुक्म हमारे विचाराधीन हुक्म से अलग है। लिहाज़ा दोनों मसले अलग हैं और तुम्हारी आपत्ति नहीं होनी चाहिए। उसे यह महसूस नहीं हुआ कि इस वजह से न तो मसलों में कोई अंतर आया और न ही हुक्म बदला। "आज की दो रकात नमाज़" की भी एक संपूर्ण प्रकृति है, और किसी भी चीज़ के लिए...

[1] अल-फ़तावा अल-हंदिया, तीसरा अध्याय, 'इन' और 'इज़ा' आदि शब्दों के साथ शर्तों के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/436।

(بایاں کالم - اصل فارسی/عربی متن) مطلق موضوع قضیہ طبعیہ است واو منتفی نشود مگر بانتفائے جمیع افراد دخول وایں نبود مگر بعدم دخول اصلا تا حصول موت احد ہما پس دخول گاہے متحقق شود اگرچہ بعد دہ سال عدم دخول مطلق منتفی گردد و شرط حنث صورت نہ بندد۔

ہیجد ہم: بازار عالمگیریہ مسئلہ ان لم تصل الیوم رکعتین فانت طالق فحاضت قبل ان تشرع فی الصلوۃ او بعد ما صلت رکعتۃ ۱ آورد کہ اگر وقت یمین تا آغاز حیض زمانے بود کہ دو رکعت را گنجائش دارد مطلقہ شود وایں مسئلہ را بظاہر منافی مسئلہ دائرہ انگاشتہ سنگ تطبیق و توفیق بر سر اجتہاد برمی دارد کہ دریں عبارت قید الیوم و رکعتین موجودست لہٰذا حکمش مغائر مانحن فیہ شد فافترقا و لا تشکوا و نمی داند کہ دریں جہت اصلاً نہ در مسائل افتراق نہ در حکم تغیر صلوۃ رکعتین فی الیوم نیز طبیعت کلیہ دارد و انتفائے شیئ بانتفائے جمیع افراد شود چون روز گذشت و ہیچ فرد از افراد صلوۃ دو رکعت دراں متحقق نہ شد شرط بر منتفی گشت وحنث رو نمود و توہم آنکہ شوہر الیوم گفت و بجا آوری دورکعت در مدۃ العمر

(دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح) شہوت ختم ہونے سے قبل داخل ہوئی تو طلاق نہ ہوگی ، جیسا کہ محیط میں ہے، یہاں اس عبارت پر اس نے اپنی مذکور رپورٹ نہ کی کہ عدم دخول پر قسم کھائی ہے اور عدم دخول مطلق ہے اور دخول مطلق قضیہ طبعیہ کا موضوع ہے جو تمام افراد کے منتفی ہوئے بغیر منتفی نہیں ہوگا مگر اس وقت جب کبھی دخول نہ پایا جائے اور یہ بات خاوند بیوی دونوں میں سے ایک کے مرنے پر معلوم ہوسکے گی تو جب دخول متحقق ہو خواہ دس سال بعد ہو اس وقت تک دخول مطلق کا عدم منتفی رہے گا، اور قسم کے ٹوٹنے کے پائے جانے کی صورت نہ بنے گی۔

ہیجد ہم: پھر عالمگیری کا مسئلہ ذکر کیا کہ خاوند نے بیوی کو کہا اگر تو آج دو رکعتیں نماز نہ پڑھے تو تجھے طلاق ، اس کے بعد بیوی کو نماز شروع کرنے سے قبل حیض آگیا، یا ایک رکعت پڑھنے کے بعد حیض آگیا، تو بتایا کہ اگر قسم اور نماز شروع کرنے کے درمیان اتنا وقت تھا کہ دو رکعتیں نماز پڑھ سکے، تو بیوی کو طلاق ہو جائے گی، اس نے اس مسئلہ کو ظاہری طور پر زیر بحث کے منافی بتایا اور تطبیق و توفیق کا پتھر اجتہاد کے سر پر اٹھا کر کہا اس مسئلہ کی عبارت میں "آج" اور "دو رکعتوں" کی قید ذکر کی گئی ہے لہٰذا اس مسئلے کا حکم ہمارے زیر بحث کے حکم سے مغایر ہے۔ لہٰذا دونوں مسئلے جدا ہیں اور تمہارا اعتراض نہ ہو ، اس کو معلوم نہ ہوا کہ اس وجہ کہ اس بنا پر مسائل میں اختلاف اور نہ ہی حکم متغیر ہوا "آج دو رکعتیں نماز" کی بھی طبیعت کلیہ ہے اور کسی چیز کا

۱ فتاوی ہندیہ الفصل الثالث فی التعلیق بکلمۃ ان واذا وغیر ہما نورانی کتب خانہ پشاور ۴۳۶/۱

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen, Page 13

(Left Column - Persian/Urdu mix) In no day among the days of life is it documented here, and this is such that it cannot afflict any non-Deobandi, even if they are in the extreme of ignorance and enmity. The need to resolve it only occurred to the 'superior' intellects of Deobandis; then, considering 'rak'ahs' as the cause of separation is an additional crowning stroke. Nineteenth: Again, with great cleverness, he brought up the issue: "If I do not punish him, then his wife is such-and-so." If he intends immediacy (faur), it will be immediate, otherwise it is absolute. He himself said that this case matches the subject under discussion and admitted that similarly, the ruling for "if you do not pray, you are twice divorced" is that if immediacy was intended, it is immediate. Up to this point, he unintentionally returned to the truth. Then, for this unhealed wound, he sought a remedy in the same stubbornness and denial, saying: "But Ahmad Ali did not intend immediacy, nor was any sign of immediacy found." Subhan Allah! Ask your own words for the sign of immediacy, for what did your maternal aunt's nephew (yourself) say above, that "the speaker's intent is also to make the wife habitually perform prayer perpetually"? And understand Ahmad Ali's intention from his morning's action: when the wife did not pray Isha and he performed Raj'at (retraction/reconciliation) in the morning, if there was no intention of immediacy, how would Raj'at have occurred? Praise be to Allah, the truth is clear; but what is the cure for stubbornness?

(Right Column - Urdu) Negation is achieved by the negation of all its individuals. So, when no individual instance of prayer was found throughout the day, and the existence of two (2) rak'ahs was not found on that day, the condition of not performing two rak'ahs of prayer was met, the oath was broken, and divorce took place. His delusion that the husband used the word "today", otherwise "performing two rak'ahs" could have been any day of his life, is a delusion that cannot afflict anyone except a Deobandi, no matter how ignorant or dull-witted they may be. Therefore, only the Deobandi 'exalted intellects' felt the need to dispel this delusion. Then, as a crowning stroke, he cited the two (2) rak'ahs as the reason for the difference. Nineteenth: Then, showing his immense wisdom, he mentioned the issue: "If I do not punish him, then my wife is divorced," and said that if he intends immediacy, it will be immediate, otherwise absolute. He himself stated that this case matches our issue under discussion and admitted that if one says to a woman, "If you do not pray, you are twice divorced," its ruling will also be that if immediacy was intended, it will be immediate. By saying this, he inadvertently returned to the truth.

Then, seeking to treat this unhealed wound with stubbornness and denial, he said: "But Ahmad Ali did not intend immediacy, nor was any sign of immediacy found." Subhan Allah! Ask your own words for the sign of immediacy, for what did your aunt's nephew (you) say above? "That the speaker's intent is to always make the wife habitual in prayer." And then, to know Ahmad Ali's intention, ask Ahmad Ali why he retracted the divorces in the morning after his wife did not perform the Isha prayer at night? If there had been no intention of immediacy, then...

Footnote: 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter Three, on Suspending Divorce with the words 'In' and 'Idha', Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/446. Page 181 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

(बायां कॉलम - फ़ारसी/उर्दू मिश्रित) जीवन के दिनों में से किसी भी दिन में यहाँ यह प्रलेखित नहीं है, और यह ऐसा है जो देवबंदी के अलावा किसी को भी प्रभावित नहीं कर सकता, भले ही वह अज्ञानता और शत्रुता के चरम पर हो। इसे हल करने की आवश्यकता केवल देवबंदियों की 'श्रेष्ठ' बुद्धियों को हुई; फिर, 'रकअतों' को अलगाव का कारण मानना इसके ऊपर एक और तुर्रा है। उन्नीसवाँ: फिर से महान चतुराई के साथ, वह इस मुद्दे को लाया: "यदि मैं उसे दंड न दूँ तो उसकी पत्नी ऐसी-वैसी है।" यदि वह तत्परता (फ़ौर) का इरादा करता है, तो यह तत्पर होगा, अन्यथा यह पूर्ण है। उन्होंने स्वयं कहा कि यह मामला विचाराधीन विषय से मेल खाता है और स्वीकार किया कि इसी तरह, "यदि तुम नमाज़ नहीं पढ़ोगी तो तुम्हें दो तलाक़" के लिए नियम यह है कि यदि तत्परता का इरादा था, तो यह तत्पर है। इस बिंदु तक, उन्होंने अनजाने में सत्य की ओर वापसी की। फिर, इस न भरने वाले घाव के लिए, उन्होंने उसी हठ और इनकार में उपाय खोजा, यह कहते हुए: "लेकिन अहमद अली ने तत्परता का इरादा नहीं किया था, न ही तत्परता का कोई संकेत मिला था।" सुभान अल्लाह! तत्परता के संकेत के लिए अपने स्वयं के शब्दों से पूछें, क्योंकि आपकी मौसी के भतीजे (स्वयं आपने) ऊपर क्या कहा था, कि "वक्ता का इरादा पत्नी को हमेशा के लिए नमाज़ का आदी बनाना है"? और अहमद अली के सुबह के कार्य से अहमद अली के इरादे को समझें: जब पत्नी ने ईशा की नमाज़ नहीं पढ़ी और उन्होंने सुबह रुजू (तलाक की वापसी) कर लिया, यदि तत्परता का कोई इरादा नहीं होता, तो रुजू किस आधार पर होता? अल्लाह की स्तुति हो, सत्य स्पष्ट है; लेकिन हठ का क्या इलाज है?

(दायां कॉलम - उर्दू) नकार इसके सभी व्यक्तियों के नकार से प्राप्त होता है। इसलिए, जब दिन भर में नमाज़ का कोई व्यक्तिगत उदाहरण नहीं पाया गया, और उस दिन दो (२) रकअतों का अस्तित्व नहीं पाया गया, तो दो रकअत नमाज़ न पढ़ने की शर्त पूरी हो गई, शपथ टूट गई और तलाक हो गया। उनका यह भ्रम कि पति ने "आज" शब्द का इस्तेमाल किया था, अन्यथा "दो रकअतें पढ़ना" उनके जीवन का कोई भी दिन हो सकता था, एक ऐसा भ्रम है जो देवबंदी के अलावा किसी को भी प्रभावित नहीं कर सकता, चाहे वह कितना भी अज्ञानी या मंदबुद्धि क्यों न हो। इसलिए, केवल देवबंदी 'उच्च बुद्धियों' ने ही इस भ्रम को दूर करने की आवश्यकता महसूस की। फिर, एक अतिरिक्त विशेषता के रूप में, उन्होंने अंतर के कारण के रूप में दो (२) रकअतों का हवाला दिया। उन्नीसवाँ: फिर, अपनी अपार बुद्धिमत्ता दिखाते हुए, उन्होंने इस मुद्दे का उल्लेख किया: "यदि मैं उसे दंड न दूँ, तो मेरी पत्नी को तलाक है," और कहा कि यदि वह तत्परता का इरादा रखता है, तो यह तत्पर होगा, अन्यथा पूर्ण

होगा। उन्होंने स्वयं कहा कि यह मामला हमारे विचाराधीन मुद्दे से मेल खाता है और स्वीकार किया कि यदि कोई महिला से कहता है, "यदि तुम नमाज़ नहीं पढ़ोगी, तो तुम्हें दो तलाक हैं," तो उसका नियम भी यही होगा कि यदि तत्परता का इरादा था, तो यह तत्पर होगा। यह कहकर, उन्होंने अनजाने में सत्य की ओर वापसी की। फिर, हठ और इनकार के साथ इस न भरने वाले घाव का इलाज करने की कोशिश करते हुए, उन्होंने कहा: "लेकिन अहमद अली ने तत्परता का इरादा नहीं किया था, न ही तत्परता का कोई संकेत मिला था।" सुभान अल्लाह! तत्परता के संकेत के लिए अपने स्वयं के शब्दों से पूछें, क्योंकि आपकी मौसी के भतीजे (आपने) ऊपर क्या कहा था? "कि वक्ता का इरादा हमेशा पत्नी को नमाज़ का आदी बनाना है।" और फिर, अहमद अली का इरादा जानने के लिए, अहमद अली से पूछें कि उनकी पत्नी द्वारा रात में ईशा की नमाज़ न पढ़ने के बाद उन्होंने सुबह तलाकों को क्यों वापस ले लिया? यदि तत्परता का कोई इरादा नहीं होता, तो...

पाद-टिप्पणी: १. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय तीन, 'इन' और 'इज़ा' शब्दों के साथ तलाक़ को निलंबित करने पर, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, १/४४६। पृष्ठ १८१ का ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

(بائیں کالم - فارسی/اردو آمیز) بہیچ روزے از روز ہائے عمر اینجا بسند کند وہمینست کہ ہیچ غیر دیوبندی را عارض نتواں شد اگر چہ در غایت جہل و عناد باشد حاجت رفعش مگر بقیاس عقول علیہ دیوبندیہ افتاد باز رکعتیں را موجب تفرقہ دانستن طرہ براں۔ نوزدہم: باز بکمال ذیہوشی مسئلہ "اگر سزائے وے نکنم فامرأتہ کذا" ۱ آورداگر نیت فور کند بر فور باشد ورنہ مطلق و خودش گفت کہ این صورت مطابق ما نحن فیہ است و اعتراف کرد کہ ہمچنیں حکم اگر نماز نخوانی ترا دو طلاق ان نوی الفور فھو علی الفور تا اینجا نا دانستہ بحق رجوع آورد باز زخم نامندمل را چارہ کار بہماں مکابرہ وانکار جست لیکن احمد علی نیت فور نکردہ نہ قرینہ فور یافتہ شد سبحان اللہ قرینہ فور از کلام خودت پرس کہ خواہر زادہ خالہ تو بالاچہ گفتہ است کہ غرض متکلم نیز معتاد للصلوٰۃ شدن زوجہ است و دائماً ونیت احمد علی ہم بامداد کار بامداد احمد علی دریاب کہ چون زن نماز عشاء نگزارد و صباح رجعت نمود اگر نیت فور نبودے رجعت از کدام راہ رونمودے، الحمد للہ کہ حق واضح ست فاما مکابرہ راچہ علاج۔

(دائیں کالم - اردو) انتقاء اس کے تمام افراد کے انتقاء سے ہو جاتا ہے تو جب دن بھر میں کوئی فرد نماز کا نہ پایا گیا اور اس دن میں دو ۲ رکعتوں کا وجود نہ پایا گیا تو دو رکعت نماز نہ پڑھنے کی شرط پائے جانے کی وجہ سے قسم ٹوٹ گئی تو طلاق ہوگئی ہے، اور اس کا یہ وہم کرنا کہ خاوند نے "آج" کا لفظ کہا ورنہ "دو رکعتیں پڑھنے" کا عمر بھر میں سے کوئی دن بھی ہو سکتا تھا تو یہ وہم دیوبندی کے علاوہ کسی کو خواہ کتنا ہی جاہل اور غبی ہو کسی کو لاحق اور عارض نہیں ہو سکتا، لہٰذا صرف دیوبندی عقول عالیہ کو ہی اس وہم کو دفع کرنے کی حاجت محسوس ہوئی پھر اس پر طرہ یہ کہ اس نے دو ۲ رکعتوں کو بھی وجہ فرق بتایا۔ نوزدہم: پھر اپنی کمال عقلمندی

دکھاتے ہوئے، یہ مسئلہ کہ اگر اس کو سزا نہ دوں تو بیوی کو طلاق، ذکر کر کے کہا کہ نیت فور کی کرے تو فور ہوگا ورنہ مطلق ہوگا، اور خود کہا کہ یہ مسئلہ ہمارے زیر بحث مسئلہ کے مطابق ہے اور اعتراف کیا کہ یوں ہی عورت کو کہنا اگر تو نماز نہ پڑھے تو تجھے دو طلاقیں، اس کا حکم بھی وہی ہو گا کہ اگر فور کی نیت کی تو فور ہوگا، یہ کہہ کر اس نے حق کی طرف رجوع نادانستہ طور پر کر لیا اور پھر اس مندمل نہ ہونے والے زخم کا علاج اس مکابرہ اور انکار سے کرتے ہوئے کہا، لیکن احمد علی نے فور کی نیت نہیں کی اور نہ ہی فور کا قرینہ پایا گیا، سبحان اللہ! فور کا قرینہ خود اپنے کلام سے پوچھ کہ تیری خالہ کے بھانجے نے (تونے) اوپر کیا کہا ہے " کہ متکلم کی غرض بیوی کو ہمیشہ نماز کا عادی بنانا ہے " اور پھر احمد علی کی نیت معلوم کرنے کے لئے احمد علی سے پوچھ کہ اس کی بیوی کے رات کو عشاء کی نماز نہ پڑھنے پر طلاقوں سے صبح رجوع کرلیا، اگر فور کی نیت نہ ہوتی تو---

حاشیہ: ۱ فتاوی ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمة ان واذا نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۴۶ صفحہ ۱۸۱ از ۶۸۸

What was the justification for returning? Praise be to Allah, the truth is clear, but what is the cure for obstinacy? Twentieth: Then, citing from Qazi Khan, Quhistani, and Sharh-ul-Wiqayah, he mentions the issues: "You are divorced if I do not divorce you" and "If I do not have intercourse with you on the tip of this spear, you are divorced." He states that in these cases, the jurists have given a grace period until the end of life and as long as the spear lasts. He repeatedly mentions those established premises which the noble jurists have clarified excellently in their great fatwas, substantiated by texts from Al-Hidayah and Fath al-Qadir. He continues to clarify what is already clear and strives for what is already attained (redundancy). He consistently ignores the sublime point derived from references such as Talkhis al-Jami' al-Kabir, Sharh al-Talkhis by Allama al-Fasi, Intiqad al-I'tirad, Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, Fath al-Qadir, Shurunbulaliyyah, Radd al-Muhtar, Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Tabyin al-Haqa'iq, etc., and pursues falsehood. O Lord! What can be said? It is easy to show something unseen, but what remedy is there for one who keeps their eyes closed to something seen a hundred times and makes the seen unseen? Have you never seen this issue in Sharh-ul-Wiqayah, or even in Wiqayah itself, that the condition for breaking the oath in "If you go out" and "If you hit (then you are divorced)" for a woman intending to go out or hitting a servant is that their action must be immediate? And Quhistani says there is an indication in it to what Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) was unique in inferring.

---

1. Sharh al-Wiqayah, Bayan Lughawiyyat al-Ta'liq qabl al-Tazawwuj, Matba' Mujtabai Delhi, 2/77.
2. Fatawa Qazi Khan, Bab al-Ta'liq, Naval Kishore Lucknow, 1/228.
3. Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Fasl Half al-Fi'l, Noor Muhammad Kutub Khana Tijarat Karachi, p. 86.

फतावी रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

वापसी का क्या औचित्य था? अल्लाह का शुक्र है कि सच्चाई स्पष्ट है, लेकिन हठधर्मिता का क्या इलाज है? बीसवाँ: फिर क़ाज़ी ख़ान, कुहिस्तानी और शरह-उल-विक़ाया से उद्धृत करते हुए, उन्होंने इस मुद्दे का उल्लेख किया कि "यदि मैं तुम्हें तलाक़ न दूँ तो तुम्हें तलाक़ है" और "यदि मैं इस भाले की नोक पर तुम्हारे साथ संभोग न करूँ तो तुम्हें तलाक़ है।" उन्होंने कहा कि इन मामलों में न्यायविदों ने जीवन के अंत तक और भाले के बने रहने तक की मोहलत दी है। वह बार-बार उन स्थापित परिसरों का उल्लेख करते हैं जिन्हें महान न्यायविदों ने अपने महान फतवों में हिदाया और फतह अल-कादिर के ग्रंथों के प्रमाणों के साथ बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया है। वह स्पष्ट को बार-बार स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं और जो पहले से ही प्राप्त है उसे फिर से प्राप्त करने का व्यर्थ प्रयास करते हैं। वह तलखीस अल-जामी अल-कबीर, अल्लामा अल-फ़ासी द्वारा शरह अल-तलखीस, इंतिक़ाद अल-इतिराद, तनवीर अल-अबसार, दुर्र अल-मुख्तार, फतह अल-कादिर, शुरनबुलालियाह, रद अल-मुह्तार, अल-अशबाह वा अल-नज़ैर और तब्यीन अल-हक़ाएक़ आदि के संदर्भों से प्राप्त उच्च स्तर के बिंदु की लगातार अनदेखी कर रहे हैं और असत्य के पीछे पड़े हैं। हे प्रभु! क्या कहा जाए? अनदेखी चीज को दिखाना आसान है, लेकिन उस व्यक्ति के लिए क्या उपाय है जो सौ बार देखी गई चीज़ से अपनी आँखें बंद कर लेता है और देखी गई चीज़ को अनदेखी बना देता है? क्या आपने कभी शरह-उल-विक़ाया या स्वयं विक़ाया में इस मसले को नहीं देखा कि "यदि तुम बाहर जाओ" और "यदि तुम मारो (तो तुम्हें तलाक़ है)" में शपथ टूटने की शर्त यह है कि बाहर जाने या नौकर को मारने का इरादा रखने वाली महिला के लिए उनका कार्य तत्काल होना चाहिए? और कुहिस्तानी कहते हैं कि इसमें उस बात का संकेत है जिसे इमाम अबू हनीफा (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अनुमान लगाने में अद्वितीय बताया था।

---

1. शरह अल-विक़ाया, बयान लुग़विय्यत अल-ता'लीक़ क़बल अल-तज़व्वुज, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, २/७७।
2. फतावा क़ाज़ी ख़ान, बाब अल-ता'लीक़, नवल किशोर लखनऊ, १/२२८।
3. मुख़्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, फ़स्ल हलफ़ अल-फ़िल, नूर मोहम्मद कुतुब ख़ाना तिजारत कराची, पृष्ठ ८६।

पेज १८२ ऑफ़ ६८८

رجوع کرنے کا کیا جواز تھا، الحمدللہ حق تو واضح ہے مگر مکابرہ کا کیا علاج ہے۔ بستم: پھر قاضی خاں، قہستانی اور شرح وقایہ سے نقل کرتے ہوئے مسئلہ "تجھے طلاق ہے اگر تجھے طلاق نہ دوں" اور مسئلہ "اگر اس نیزے کے سر پر تجھ سے جماع نہ کروں تو طلاق ہے" کو ذکر کرکے کہا کہ ان مسئلوں میں فقہاء نے آخر عمر اور نیزے کی بقاء تک مہلت دی ہے اور تمام وہ مقدمات مسلمہ جن کو فقہائے کرام نے اپنے فتاوٰی جلیلہ میں بہت اچھے انداز سے واضح کرکے ہدایہ، فتح القدیر کی عبارات سے مستند کیا ہے ان کو بار بار یہ ذکر کرتا ہے اور واضح کو بے مقصد واضح اور تحصیل حاصل کرتا چلا جاتا ہے اور بلند پایہ نکتہ جس کو تلخیص الجامع الکبیر، شرح تلخیص علامہ فاسی، انتقاض الاعتراض، تنویر الابصار، در مختار، فتح القدیر، شرنبلالیہ، ردالمحتار، اشباہ ونظائر اور تبیین الحقائق وغیرہ کے حوالوں سے مستفاد کیا گیا ہے، کو مسلسل نظر انداز کر رہا ہے اور باطل کے درپے ہے، یارب! کیا کہا جائے، نہ دیکھی چیز کو دکھانا آسان ہے اور صد بار دیکھی چیز سے بند آنکھ اور دیدہ کو نادیدہ بنانے والے کے لئے کیا چارہ کیا جائے۔ کیا آپ نے شرح وقایہ بلکہ خود وقایہ میں یہ مسئلہ کبھی نہیں دیکھا کہ جب بیوی باہر

---

1 شرح الوقایہ بیان لغویۃ التعلیق قبل التزوج مطبع مجتبائی دہلی ۲/۷۷ 2 فتاوٰی قاضی خاں باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۱/۲۲۸ 3 مختصر الوقایہ فی مسائل الہدایۃ فصل حلف الفعل نور محمد کتب خانہ تجارت کراچی ص ۸۶

Fatawa Razawiyya Volume 13

[Left Column - Text primarily in Arabic] From the completion of the types of oaths, for the predecessors divided them into: perpetual in wording and meaning, and timed likewise, such as "I will not do so-and-so" and "I will not do it today". Then the Imam added a completion what he named "Oath of Immediacy" (Yameen-ul-Fawr) or "Oath of the Present State" (Yameen-ul-Haal) from what is perpetual in wording and timed in meaning, as previously mentioned (summarized). In [Fatawa] Qazi Khan: A drunkard beat his wife, and she went out of his house. He said, "If you do not return to me, you are divorced." This was at the time of 'Asr (afternoon prayer). She returned to him at the time of 'Isha (night prayer). They (the jurists) said he broke his oath, because his oath applies to immediacy. If he says, "I did not intend immediacy," it will not be accepted in court. And regarding the woman, when she stood up to leave, the husband said, "If you go out, you are divorced." She sat down, then went out an hour later. He does not break his oath.[2] But what can these poor people do? The Najdi teaching also works in the Quran and Hadith according to the principle: "Do you believe in some part of the Scripture and disbelieve in others?"[3] And there is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Supreme.

[Right Column - Urdu Translation and Explanation] [If one is] ready to leave or beat a slave, and at that moment says to her, "If you go out," or "If you beat [him], then you are divorced," then both these are Oaths of Immediacy. Imam Quhistani stated that in this issue there is an indication that Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) was unique in his deduction by completing the categories of oaths, because before him, the predecessors had only divided oaths into perpetual and timed, both in wording and meaning. For example, "I will not do this," and "I will not do this today." Then the Imam stated an additional type over perpetual and timed in wording and meaning, which is called Oath of Immediacy or Oath of the Present State. This type is perpetual in wording and timed in meaning, as mentioned before. It is in Qazi Khan that a drunkard beat his wife and she went out, so he said if you do not come back to me, you are divorced. This incident happened at the time of 'Asr, and the wife returned to him at the time of 'Isha. On this, the jurists said the oath is broken, because this oath of his was an Oath of Immediacy. If he says that he did not intend immediacy, the judge will not believe him. And in the matter that the wife started to go out and the husband said if you go out then you are divorced, on this the wife sat back down and went out a little later, then the oath will not break. What do these poor people know? They have the Najdi education of Quran and Hadith.

[1] Jami' al-Rumuz, Chapter: Oath of Action, Maktaba Islamia Gonbad Qamus Iran, 2/265. [2] Qazi Khan, Chapter: At-Ta'liq, Naval Kishore Lucknow, 5/235. [3] Al-Quran Al-Karim, 2/85.

फ़तावा रज़विया खंड १३

[बायां कॉलम - मुख्य रूप से अरबी में पाठ] शपथ के प्रकारों को पूरा करने के क्रम में, पूर्ववर्तियों ने उन्हें इसमें विभाजित किया: शब्दों और अर्थों में शाश्वत (मुअब्बदा), और समयबद्ध (मुअक्क़ता), जैसे "मैं ऐसा नहीं करूँगा" और "मैं इसे आज नहीं करूँगा"। फिर इमाम ने पूर्णता प्रदान करते हुए उसे जोड़ा जिसे उन्होंने "तत्काल शपथ" (यमीन-उल-फ़ौर) या "वर्तमान स्थिति की शपथ" (यमीन-उल-हाल) नाम दिया, जो शब्दों में शाश्वत है लेकिन अर्थ में समयबद्ध है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है (संक्षेप में)। [फ़तावा] क़ाज़ी खाँ में है: एक शराबी ने अपनी पत्नी को पीटा, और वह उसके घर से निकल गई। उसने कहा, "यदि तुम मेरे पास वापस नहीं आई, तो तुम्हें तलाक़ है।" यह घटना असर (दोपहर बाद की नमाज़) के समय हुई। वह ईशा (रात की नमाज़) के समय उसके पास लौटी। उन्होंने (फ़ुक़हा ने) कहा कि उसने अपनी शपथ तोड़ दी, क्योंकि उसकी शपथ तात्कालिकता पर लागू होती है। यदि वह कहता है, "मेरा इरादा तात्कालिकता का नहीं था," तो अदालत में उसकी बात नहीं मानी जाएगी। और उस महिला के मामले में, जब वह जाने के लिए खड़ी हुई, तो पति ने कहा, "यदि तुम बाहर निकलीं, तो तुम्हें तलाक़ है।" वह बैठ गई, फिर एक घंटे बाद बाहर निकली। उसने अपनी शपथ नहीं तोड़ी।[2] लेकिन ये बेचारे क्या करें? कुरान और हदीस में भी नजदी शिक्षा इस सिद्धांत के अनुसार काम करती है: "क्या तुम किताब के कुछ हिस्सों पर विश्वास करते हो और कुछ का इनकार करते हो?"[3] और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊँचा और महान है।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद और व्याख्या] [यदि कोई] जाने के लिए या गुलाम को मारने के लिए तैयार हो, तो उस समय उसे कहना कि "यदि तू बाहर निकली" या "तूने मारा तो तुझे तलाक़ है", तो ये दोनों 'यमीन-ए-फ़ौर' (तत्काल शपथ) हैं। इमाम कुहिस्तानी ने फ़रमाया कि इस मसले में संकेत है कि इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने शपथ के प्रकारों को पूरा करने में अपने निष्कर्ष (इस्तिनबात) में अद्वितीयता दिखाई है, क्योंकि आपसे पहले पूर्ववर्तियों ने शपथ को केवल शब्दों और अर्थों में शाश्वत (मुअब्बदा) और समयबद्ध (मुअक्क़ता) में विभाजित किया था। उदाहरण के लिए, "मैं यह नहीं करूँगा", और "मैं आज यह नहीं करूँगा"। फिर इमाम साहब ने शब्दों और अर्थों में शाश्वत और समयबद्ध पर एक अतिरिक्त प्रकार बताया जिसे 'यमीन-ए-फ़ौर' या 'यमीन-ए-हाल' कहा जाता है। यह प्रकार शब्दों में शाश्वत है और अर्थ में समयबद्ध है जैसा कि पहले गुज़रा। क़ाज़ीखाँ में है कि एक नशे वाले ने अपनी पत्नी को पीटा तो वह बाहर निकल गई, तो उसने कहा "अगर तू वापस मेरे पास न आई तो तुझे तलाक़ है"। यह घटना असर के समय हुई तो पत्नी उसके पास ईशा के समय

लौट आई, इस पर फ़ुक़हा ने फ़रमाया शपथ टूट गई, क्योंकि उसकी यह शपथ यमीन-ए-फ़ौर थी। अगर वह कहे कि मैंने फ़ौर (तत्काल) की नीयत नहीं की थी तो काज़ी उसकी पुष्टि नहीं करेगा। और इस मसले में कि पत्नी बाहर निकलने लगी तो शौहर ने कह दिया कि "अगर तू निकली तो तुझे तलाक़ है", इस पर पत्नी वापस बैठ गई और थोड़ी देर बाद निकली तो शपथ नहीं टूटेगी। ये बेचारे क्या जानें, इन्हें कुरान और हदीस की नजदियत वाली शिक्षा [दी गई है]।

---

१ जामिउर रूमूज़, अध्याय: हलफ़ुल फ़ेल, मकतबा इस्लामिया गुम्बद क़ामूस ईरान, २/२६५। २ क़ाज़ी ख़ाँ, अध्याय: अत-ता'लीक़, नवल किशोर लखनऊ, ५/२३५। ३ अल-कुरान अल-करीम, २/८५।

पृष्ठ १८३/६८८

فتاوی رضویہ جلد سیزدھم ۱۳

[بایاں کالم] من اتمام اقسام الیمین فان سلفہ قسموھا الی المؤبدۃ لفظاً ومعنی، والمؤقتۃ کذلك، مثل لاافعل کذا ولا افعلہ الیوم ثم زاد الامام اتماما ماسمّٰی بیمین الفور او یمین الحال مما ھی المؤبدۃ لفظاً و المؤقتۃ معنی کما مر (ملخصاً) ودر قاضی خاں، سکراں ضرب امرأتہ فخرجت من دارہ فقال ان لم تعودی الی فانت طالق وکان ذلك عند العصر فعادت الیہ عند العشاء قالوا یحنث فی یمینہ لان یمینہ تقع علی الفور وان قال لم انوالفور لایصدق قضاءً ، وفی المرأۃ اذا قامت لتخرج فقال الزوج ان خرجت فانت طالق وجلست ثم خرجت بعد ذلك بساعۃ لایحنث فی یمینہ ۲، مگر ایں بیچارہ گاں چہ کنند کہ تعلیم نجدیت در قرآن و حدیث نیز بمصداق اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْکِتٰبِ وَتَکْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۳ ج کار میکند ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

[دایاں کالم] جانے کو یا غلام کو مارنے کے لئے تیار ہو تو اس وقت اس کو کہنا کہ تو باہر نکلی یا تو نے مارا تو تجھے طلاق ہے، تو یہ دونوں یمین فور ہیں۔ امام قہستانی نے فرمایا کہ اس مسئلہ میں اشارہ ہے کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے قسموں کے اقسام مکمل فرمانے میں اپنے استنباط میں تفرد فرمایا ہے کیونکہ آپ سے قبل اسلاف نے یمین کو صرف لفظاً و معنیً مؤبدہ اور موقتہ پر تقسیم فرمایا تھا مثلاً میں یہ نہ کروں گا، اور میں آج یہ نہ کروں گا۔ پھر امام صاحب نے لفظاً ومعنیً مؤبدہ اور موقتہ پر ایک قسم زائد بیان کی جس کو یمین فور یا یمین حال کہا جاتا ہے یہ قسم لفظاً مؤبد ہے اور معنیً موقت ہے جیسا کہ پہلے گزرا، قاضیخاں میں ہے کہ ایک نشے والے نے اپنی بیوی کو پیٹا تو وہ باہر نکل گئی تو اس نے کہا اگر تو واپس میرے پاس نہ آئی تو تجھے طلاق ہے، یہ واقعہ عصر کے وقت ہوا تو بیوی اس کے پاس عشاء کے وقت لوٹ آئی، اس پر فقہاء نے فرمایا قسم ٹوٹ گئی، کیونکہ یہ اس کی قسم یمین فور تھی اگر وہ کہے کہ میں نے فور کی نیت

نہیں کی تھی تو قاضی اس کی تصدیق نہ کریگا، اور اس مسئلہ میں کہ بیوی باہر نکلنے لگی تو خاوند نے کہہ دیا کہ اگر تو نکلی تو تجھے طلاق ہے، اس پر بیوی واپس بیٹھ گئی اور تھوڑی دیر بعد نکلی تو قسم نہ ٹوٹے گی، یہ بیچارے کیا جانیں، ان کو قرآن وحدیث کی نجدی تعلیم

---

۱ جامع الرموز فصل حلف الفعل مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۲۶۵/۲ ۲ قاضی خان باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۲۳۵/۵ ۳ القرآن الکریم ۸۵/۲

...is, and then you act according to "you believe in some parts of the book and deny others". There is no power nor might except with Allah, the Most High, the Supreme.

Twenty-First: Up to here were Deobandi ignorances; now Deobandi misguidance flared up and uttered a word so bold and mindless that even all the rivers could not wash it clean. It was said that "even if it is accepted that the first two divorces occurred, they became void upon Ahmad Ali's retraction (rujoo)," and finally said that "now after an unconditional divorce, his retraction is correct." To Allah we belong, and to Him we shall return.

Verse: Men are lost, the land has taken up independent reasoning (ijtihad).

Deobandi education here [Note 1] has completely cast aside the Great Quran, the Noble Hadith, and the consensus of the ancient and modern Imams of Hadith. By the force of tongue and slander, and acting in accordance with the saying of the Leader of Leaders (peace be upon him and his progeny until the Day of Resurrection) that "they will make lawful the [forbidden] private parts of women," they made the forbidden lawful. Allah the Almighty said: "Divorce is twice. Then [after that], either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment." [Note 2] until the word of Allah the Almighty: "And if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him." That is, the one for whom...

Note 1: There is a blank space here in the manuscript. 12 Note 2: There is a blank space here in the manuscript. 12 1. The Holy Quran 2/228-229.

फतवा रज़विया | जिल्द 13 | पृष्ठ 184

...है, और "फिर तुम किताब के कुछ हिस्सों को मानते हो और कुछ का इंकार करते हो" के अनुसार काम करते हैं। ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम।

इक्कीसवाँ: यहाँ तक देवबंदी जाहिलियतें थीं, अब देवबंदी गुमराहियत ने जोश मारा और बिना सोचे-समझे निडर होकर ऐसा शब्द कह दिया जिसे सारे दरिया भी साफ़ नहीं कर सकते, और कहा कि अगर मान लिया जाए कि पहली दो तलाक़ें हो गई हैं, तब भी अहमद अली के रुजूअ (वापसी) कर लेने पर वे बातिल हो गईं, और अंत में कहा कि अब बिना शर्त तलाक़ के बाद उसका रुजूअ सही है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मिसरा: इंसान खत्म हो गए, अब फरिश्ता इज्तिहाद (स्वतंत्र शोध) शुरू कर रहा है।

देवबंदी तालीम ने यहाँ क़ुरआन अज़ीम, हदीस करीम और प्राचीन व नवीन इमामों के इज्मा (सहमति) सबको पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दिया है। ज़बान और बहतान के ज़ोर पर हुज़ूर सैयदुल अस्याद (उन पर और उनकी आल पर क़यामत तक दुरूड व सलाम हो) के इस इरशाद "वे औरतों की हराम शर्मगाहों को हलाल करेंगे" के अनुसार इसका इर्तिकाब (अपराध) किया। हालांकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तलाक़ दो बार है, फिर भलाई के साथ रोक लेना है या एहसान के साथ छोड़ देना है।" [हाशिया 2] यहाँ तक कि अल्लाह तआला का फ़रमान है: "फिर अगर उसने (तीसरी) तलाक़ दे दी, तो वह इसके बाद उसके लिए हलाल नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे शौहर से निकाह न कर ले।" यानी जिसके लिए...

हाशिया 1: यहाँ पांडुलिपि में रिक्त स्थान है। 12 हाशिया 2: यहाँ पांडुलिपि में रिक्त स्थान है। 12 1. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/228-229।

ہے، اور پھر بعض کتاب مانتے ہو اور بعض کا انکار کرتے ہو، کے مصداق عمل کرتے ہیں، لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

بست و یکم: یہاں تک دیوبندی جہالتیں تھیں اب دیوبندی گمراہی نے جوش مارا اور بے سوچے سمجھے بے دریغ ایسا کلمہ کہہ دیا کہ تمام دریا بھی اس کو صاف نہ کر سکیں، اور کہا کہ اگر تسلیم کر لیا جائے کہ پہلی دو طلاقیں واقع ہو گئی ہیں تب بھی احمد علی کے رجوع کر لینے پر وہ باطل ہو گئی ہیں، اور آخر میں کہا کہ اب بغیر مشروط طلاق کے بعد اس کا رجوع صحیح ہے انا للہ وانا الیہ راجعون۔

آدمی ختم ہو گئے اب فرشتہ اجتہاد شروع کر رہا ہے۔

دیوبندی تعلیم نے یہاں پر قرآن و حدیث اور ائمہ قدیم وجدید کا اجماع تمام کو یکسر نظر انداز کر دیا ہے اور زبان و بہتان کے زور پر حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے ارشاد "عورتوں کی حرام شرمگاہوں کو حلال کریں گے" کے مصداق اس کا ارتکاب کیا، حالانکہ اللہ تعالٰی نے فرمایا دو طلاقیں ہوں تو پھر خوبصورتی سے رجوع کر کے روک لو یا نیکی کے طور پر آزاد کر دو۔ اور اس کے بعد اللہ تعالٰی کے قول "پس اگر تیسری طلاق دے دی ہو تو بیوی اس کے لئے حلال نہیں تا وقتیکہ بیوی کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کر لے" تک۔ یعنی جس

بست و یکم: تائینجا جہالاتِ دیوبندیہ بود حالا ضلالاتِ دیوبندیہ جوش رد بیباک بے ادراک کلمہ گفت کہ بدر یا ہنتواں شست کہ "اگر تسلیم کردہ شود کہ طلاقین اولین واقع شدند تاہم بوجہ رجعت باطل الیٰ قولہ اکنواں برائے طلاق بلاشرط رجعت صحیح ست" انا للہ وانا الیہ راجعون۔

ع: آدمیاں گم شدند ملک گرفت اجتہاد

تعلیم دیوبندی دریں عہ۱ قرآن عظیم وحدیث کریم واجماع ائمہ حدیث و قدیم ہمہ را یکسر پسِ پشت انداخت و بزورِ زبان و زور بہتان بمصداق ارشاد حضور سید الاسیاد علیہ وعلی آلہ الصلوۃ والسلام الی یوم القیام کہ یستحلون الخ شرمگاہ زنان را حلال خواہند گرفت فرج حرام را حلال ساخت قال اللہ تعالٰی عزوجل الطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۗ الٰی قولہ تبارک وتعالیٰ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۱ ط یعنی طلاق کہ بعد وے اختیار رجعت ست ہمیں تا دو بارست کہ شوی را در ماندن زن بخوبی یا آزاد کردن بہ نیکوئی عہ۲ اختیار ست پس اگر بعد اینہا طلاق دگرد ہد

عہ۱: یہاں مسودہ میں بیاض ہے ۱۲ عہ۲: یہاں مسودہ میں بیاض ہے ۱۲ ۱ القرآن الکریم ۲/ ۲۲۸-۲۲۹

Fatawa Rizwia Volume 13, Page 13

[Right Column] Reconciliation (Ruju) is possible after divorce; that is the two-time divorce in which the husband has the choice to either retain the wife or release her with kindness. After that, if he divorces her, the wife will not be lawful for him until she marries another person. The masters of exegesis (Tafsir) and Hadith have explained the occasion of revelation (Shan-e-Nuzul) of this noble verse as follows: Before Islam, there was no fixed number or limit for divorce; instead, a husband could divorce and reconcile as many times as he wished. When he intended to distress the wife, he would divorce her and reconcile near the end of the waiting period (Iddah), then divorce again after reconciliation and reconcile again near the end of the Iddah. He would do this as many times as his heart desired, leaving the poor wife in a state of suspension, with no way for her to gain freedom or lead a settled life. In this distress, a woman presented herself in the court of Prophethood and appealed for help. Upon this, this noble verse was revealed, and the right to reconcile after three divorces ended, and the wife became independent. Imam Baghawi stated in the Tafsir 'Ma'alim ut-Tanzil' that the occasion of revelation for Allah the Almighty's command 'Divorce is twice...' is what Hazrat Urwah bin Zubair (may Allah be pleased with him) narrated: in the beginning, people gave countless and innumerable divorces, and any person would divorce his wife and reconcile near the end of the Iddah and then divorce again...

[Left Column] ...the woman was not lawful (for her previous husband) until she partnered with another husband. The masters of exegesis and Hadith have brought the cause of revelation of the noble verse such that before this, there was no specified number or fixed limit for divorce. Whatever number of times he desired, he gave divorces and made reconciliations. And he who intended to harm the woman would divorce her so that when her Iddah was about to finish, he would reconcile, then divorce again, and then reconcile near the completion of the Iddah. And he would continue to do so as long as his heart desired, keeping the poor woman suspended by this act, neither having a way to leave nor a face to stay. Because of this, the woman brought an appeal before the court of Prophethood. Then the noble verse was revealed, and after three divorces, the option of reconciliation no longer remained, and the woman's matter came into her own hands. Imam Baghawi in the Tafsir 'Ma'alim ut-Tanzil' said regarding the word of the Almighty 'Divorce is twice': It is narrated from Urwah bin Zubair (may Allah be pleased with them both) that he said: In the beginning, people used to divorce without restriction or number. A man

would divorce his wife, and when she was near the end of her Iddah, he would reconcile with her, then divorce her again in the same way, then reconcile, intending to harm her. So this verse was revealed: 'Divorce is twice', meaning the divorce after which one possesses the right of return is twice. If he divorces for the third time, she is not lawful for him until after marrying another husband. [Footnote 1] Imam Razi in Tafsir Kabir...

Footnote 1: Ma'alim ut-Tanzil on the margins of Tafsir al-Khazin, commentary on the verse 'Al-Talaqu Marratan' etc., Mustafa al-Babi, Egypt, 1/227. Page 185 of 688

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

[दायां कॉलम] तलाक के बाद रुजू (सुलह) हो सकता है, वह दो बार तलाक है जिसमें पति को अधिकार है कि वह पत्नी को रोक ले या भलाई के साथ आज़ाद करते हुए तलाक दे दे। इसके बाद यदि वह तलाक देगा, तो पत्नी उसके लिए तब तक वैध नहीं होगी जब तक कि वह किसी अन्य व्यक्ति से निकाह न कर ले। तफ़्सीर और हदीस के विद्वानों ने इस महान आयत का शान-ए-नुज़ूल (अवतरण का कारण) इस प्रकार बयान किया है कि इस्लाम से पहले तलाक की कोई संख्या या सीमा निश्चित नहीं थी, बल्कि पति जितनी बार चाहता तलाक देकर रुजू कर लेता। और जब पत्नी को तंग करना उद्देश्य होता, तो तलाक देकर इद्दत खत्म होने के करीब वह रुजू कर लेता और रुजू के बाद फिर तलाक देता और इद्दत की समाप्ति के करीब फिर रुजू कर लेता। वह जितनी बार चाहता ऐसा करता, और बेचारी पत्नी लटकी रह जाती, उसके लिए आज़ादी या आबाद होने का कोई रास्ता न रहता। इसी परेशानी में एक महिला पैगंबर के दरबार में हाज़िर हुई और फरियाद की, तो उस पर यह पवित्र आयत नाज़िल हुई, और तीन तलाकों के बाद रुजू का अधिकार समाप्त हो गया और पत्नी स्वतंत्र हो गई। इमाम बग़वी ने तफ़्सीर 'मआलिम अत-तन्ज़ील' में कहा है कि अल्लाह तआला का इरशाद 'तलाक दो बार है...' आयत का शान-ए-नुज़ूल वह है जिसे हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने बयान किया है: शुरुआत में लोग अनगिनत और बेशुमार तलाक देते थे, और कोई भी व्यक्ति पत्नी को तलाक देकर इद्दत खत्म होने के करीब रुजू कर लेता और फिर तलाक देता...

[बायां कॉलम] ...महिला (अपने पूर्व पति के लिए) तब तक वैध नहीं होती जब तक वह दूसरे पति के साथ न जुड़ जाए। तफ़्सीर और हदीस के विद्वानों ने महान आयत के नाज़िल होने का कारण इस प्रकार बताया है कि इससे पहले तलाक के लिए कोई निश्चित संख्या या सीमित सीमा नहीं थी। जितनी बार वह चाहता तलाक देता और रुजू करता। और जो महिला को नुकसान पहुँचाना चाहता था, वह उसे तलाक दे देता ताकि जब उसकी इद्दत बीतने वाली हो, तो वह रुजू कर ले, फिर तलाक दे दे, फिर इद्दत की समाप्ति के करीब रुजू करे। और वह तब तक ऐसा करता रहता जब तक उसका दिल चाहता, बेचारी महिला इस कार्य से अधर में (मुअल्लक़) रहती, न जाने का रास्ता रहता और न रहने का। इस कारण से, महिला ने पैगंबर के दरबार में फरियाद की। तब यह पवित्र आयत नाज़िल हुई और तीन तलाकों के बाद रुजू का विकल्प नहीं रहा और महिला का मामला उसके अपने हाथ में आ गया। इमाम बग़वी ने तफ़्सीर 'मआलिम अत-तन्ज़ील' में अल्लाह के इरशाद 'तलाक दो बार है' के बारे में कहा: उर्वा बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि उन्होंने कहा: शुरुआत में लोग

बिना किसी सीमा या संख्या के तलाक देते थे। एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक देता और जब वह अपनी इद्दत की समाप्ति के करीब होती, तो वह उससे रुजू कर लेता, फिर उसी तरह तलाक देता, फिर रुजू करता, उसका इरादा उसे नुकसान पहुँचाना होता। तब यह आयत नाज़िल हुई: 'तलाक दो बार है', यानी वह तलाक जिसके बाद वापस लौटने का अधिकार है वह दो बार है। फिर यदि वह तीसरी बार तलाक दे दे, तो वह उसके लिए वैध नहीं है जब तक कि वह दूसरे पति से निकाह न कर ले। [पाद टिप्पणी 1] इमाम राजी ने तफ़्सीर कबीर में...

पाद टिप्पणी 1: तफ़्सीर अल-खाज़िन के हाशिये पर मआलिम अत-तन्ज़ील, आयत 'अत-तलाक़ु मर्रतान' आदि की तफ़्सीर, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/227। पृष्ठ 688 में से 185

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[دایاں کالم] طلاق کے بعد رجوع ہو سکتا ہے وہ دو بار طلاق ہے کہ جس میں خاوند کو اختیار ہے کہ بیوی کو روک رکھے یا نیکی کے ساتھ آزاد کرتے ہوئے طلاق دے دے، اس کے بعد اگر طلاق دے گا تو بیوی اس کے لئے حلال نہ ہوگی تا وقتیکہ وہ بیوی کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرلے۔ ائمہ تفسیر وحدیث نے اس آیہ کریمہ کا شان نزول یوں بیان فرمایا کہ اسلام سے قبل طلاق کی کوئی تعداد یا حد مقرر نہ تھی بلکہ خاوند جتنی بار بھی طلاق دے کر رجوع کرنا چاہتا کر لیتا، اور جب بیوی کو تنگ کرنا مقصود ہوتا تو طلاق دے کر عدت ختم ہونے کے قریب وہ رجوع کر لیتا اور رجوع کے بعد پھر طلاق دیتا اور عدت کے خاتمہ کے قریب رجوع کر لیتا اور جتنی بار دل چاہتا کرتا بیوی بیچاری لٹک کر رہ جاتی اس کے لئے آزادی یا آبادی کا کوئی طریقہ نہ رہتا، اسی پریشانی میں ایک عورت دربار رسالت میں حاضر ہوئی اور فریاد کی، تو اس پر یہ آیہ کریمہ نازل ہوئی، اور تین طلاقوں کے بعد رجوع کا اختیار ختم ہو گیا اور بیوی خود مختار ہو گئی۔ امام بغوی نے تفسیر معالم التنزیل میں فرمایا کہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد " اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ الخ" الآیہ کا شان نزول یہ ہے جس کو حضرت عروہ بن زبیر رضی تعالیٰ عنہ نے بیان فرمایا کہ لوگ ابتداء میں بے شمار اور لاتعداد طلاقیں دیتے تھے، اور کوئی بھی شخص بیوی کو طلاق دے کر عدت ختم ہونے کے قریب رجوع کر لیتا اور پھر طلاق

[بایاں کالم] زن مرادر احلال نبود تا باشوئی دگر ہمنوا بہ نشود، ائمہ تفسیر و حدیث سبب نزول کریمہ چناں آوردہ اند کہ پیش ازیں طلاق را عددے معدود حدے محدود نبود ہر قدر بار شائے خواستی طلاقہا دادی و رجعت ہا کردی و آنکہ اضرار زن خواستی طلاقش دادی تاکہ آنکہ چوں عدتش بسرگزشتن آمدن رجعت کردی باز طلاق دادی باز در قرب انقضائے عدت رجعت نمودی،

وہمچناں کردی تا آنگاہ کہ دلش خواستی بیچارہ زن بایں کار معلقہ باندے نہ رائے رفتن نہ روئے ماندن، زن ازیں معنی بحضور بارگاہ رسالت فریاد آورد آنگاہ آیہ کریمہ نزول فرمود و بعد سہ طلاق اختیار رجعت نماند و کارزن بدست زن شد، امام بغوی در تفسیر معالم التنزیل فرمود قولہ تعالیٰ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ روی عن عروة بن الزبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال کان الناس فی الابتداء یطلقون من غیر حصر ولا عدد وکان الرجل یطلق امرأته فاذا قاربت انقضاء عدتها راجعها ثم طلقها کذلک ثم راجعها یقصد مضارتها فنزلت هذه الآیة اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ یعنی الطلاق الذی یملك الرجعة عقیبه مرتان فاذا طلق ثلاثا فلاتحل لہ الابعد نکاح زوج آخر۸1 امام رازی در تفسیر کبیر

حاشیہ ۱: معالم التنزیل علی حاشیة تفسیر الخازن تفسیر آیة الطلاق مرتن الخ مصطفی البابی مصر

(Left Column) It was said: The first issue is that a man in the time of ignorance (Jahiliyyah) would divorce his wife and then take her back before her waiting period (Iddah) ended. Even if he divorced her a thousand times, the power to take her back remained established for him. So a woman came to Aisha (may Allah be pleased with her) and complained that her husband divorces her and takes her back to harm her by that. Aisha (may Allah be pleased with her) mentioned that to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). Then the verse of Allah the Almighty was revealed: "Divorce is twice." (1). In 'Tafsiraat-e-Ahmadiyya', it is stated: Since the number of divorces in Jahiliyyah was not fixed on a single pattern, so much so that if he divorced her ten times, he could take her back, and he would take her back at the time of the expiration of the waiting period, then divorce her and take her back again, until a woman came to Aisha (may Allah be pleased with her) complaining of her husband's taking her back then divorcing her, then again and again. So she presented this to...

(Right Column) ...[divorce] and would keep doing so repeatedly, the purpose of which was to harass the wife. Thus, this noble verse was revealed, meaning the divorce after which a husband can take back (Rujoo) is twice. And when he completes three divorces, the wife will not be lawful for him unless she marries another person, after which she can become lawful. Imam Razi stated in 'Tafseer-e-Kabeer': The first issue is that in the era of ignorance, a man would divorce his wife and then take her back near the end of the waiting period. In this way, even if there were a thousand divorces, the husband still had the right to take her back. So a woman came to Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) and complained that her husband divorces her and then takes her back before the waiting period ends, just to harass her. Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) narrated this incident to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). On this, the noble verse was revealed: 'Divorce is twice', the verse. In 'Tafsiraat-e-Ahmadiyya', it says that since in Jahiliyyah he would divorce and then take back, and near the end of the waiting period he would take back and then divorce again, until a woman came to the Mother of the Believers, Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), and complained saying that he repeatedly divorces and takes back, so Hazrat...

Footnote: 1. Tafseer Kabeer, under the verse 'Al-Talaqu Marratan', etc., Al-Matba'ah al-Bahiyyah al-Misriyyah, Egypt, 102/2.

(बायां कॉलम) कहा गया: पहला मसला यह है कि जाहिलियत (इस्लाम से पहले का युग) में एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक देता था और फिर उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) खत्म होने से पहले उसे वापस ले लेता था। अगर उसने उसे हज़ार बार भी तलाक दिया होता, तब भी उसे वापस लेने का अधिकार बना रहता था। फिर एक महिला हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास आई और शिकायत की कि उसका पति उसे तलाक देता है और फिर उसे परेशान करने के लिए वापस ले लेता है। हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह बात बताई। तब अल्लाह तआला की यह आयत नाज़िल हुई: "तलाक़ दो बार है।" (1)। 'तफ़्सीरात-ए-अहमदिया' में उल्लेख है: चूंकि जाहिलियत में तलाक की संख्या एक तय तरीके पर नहीं थी, यहाँ तक कि अगर उसने उसे दस बार तलाक दिया होता तो वह उसे वापस ले सकता था, और वह इद्दत की समाप्ति के समय उसे वापस ले लेता, फिर उसे तलाक देता और फिर वापस ले लेता, यहाँ तक कि एक महिला हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास आई और शिकायत की कि उसका पति उसे वापस लेता है और फिर तलाक देता है, और यह बार-बार होता है। इसलिए उन्होंने इसे...

(दायां कॉलम) ...दे देता और इस तरह बार-बार करता रहता, जिसका उद्देश्य पत्नी को तंग करना था। तो यह आयते करीमा नाज़िल हुई, यानी वह तलाक़ जिसके बाद पति रुजू (वापसी) कर सकता है वह दो बार है। और जब वह तीन तलाकें पूरी कर ले, तो पत्नी उसके लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले, जिसके बाद वह हलाल हो सकेगी। इमाम राज़ी ने 'तफ़्सीर कबीर' में फरमाया: पहला मसला, यह कि जाहिलियत में मर्द बीवी को तलाक दे कर फिर इद्दत के खात्मे के करीब रुजू कर लेता और इस तरह हज़ार तलाक भी होतीं तब भी शौहर को रुजू का अख्तियार रहता। तो एक औरत हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की खिदमत में आई और उसने अपने शौहर की शिकायत की कि वह तलाक दे कर इद्दत खत्म होने से पहले रुजू कर लेता है और तंग कर रहा है। तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने यह वाकया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बयान किया, तो इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई 'अत-तलाक मर्रतान' आयत। 'तफ़्सीरात-ए-अहमदिया' में है कि चूंकि जाहिलियत में तलाक दे कर भी फिर रुजू कर लेता और इद्दत खत्म होने के करीब रुजू कर के फिर तलाक दे देता, यहाँ तक कि एक औरत ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास आकर अपने शौहर की शिकायत करते हुए कहा कि वह बार-बार तलाक देता और रुजू कर लेता है, तो हज़रत...

पाद-टिप्पणी: 1. तफ़्सीर कबीर, आयत 'अत-तलाक मर्रतान' आदि के तहत, अल-मतबअह अल-बहिय्याह अल-मिसरियाह, मिस्र, 102/2.

पृष्ठ 186/688

(بایاں کالم) فرمود المسئلة الاولى كان الرجل في الجاهلية يطلق امرأته ثم يراجعها قبل ان تنقضي عدتها ولو طلقها الف مرة كانت القدرة على المراجعة ثابتة له فجاءت امرأة الى عائشة رضي الله تعالى عنها فشكت ان زوجها يطلقها ويراجعها يضارها بذلك فذكرت عائشة رضي الله تعالى عنها ذلك لرسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فنزل قوله تعالى "الطَّلَاقُ مَرَّتَانِ" 1 وفي تفسيرات احمدية ست لما كان عدد الطلاق في الجاهلية غير مقرر على وتيرة واحدة حتى انه لو طلقها عشرة يمكنه رجعتها وكان يراجعها وقت انقضاء العدة ثم يطلقها ويراجعها حتى ان جاءت امرأة الى عائشة رضي الله تعالى عنها تشكو من مراجعة زوجها ثم تطليقها ثم و ثم هكذا فعرضت الى ...

(دایاں کالم) دے دیتا اور یوں بار بار کرتا رہتا جس کا مقصد بیوی کو تنگ کرنا تھا تو یہ آیت کریمہ نازل ہوئی، یعنی وہ طلاق جس کے بعد خاوند رجوع کر سکتا ہے وہ دو بار ہے، اور جب تین طلاقیں پوری کردے تو اس کے لئے بیوی حلال نہ ہوگی مگر بیوی دوسرے شخص سے نکاح کرے تو اس کے بعد حلال ہو سکے گی۔ امام رازی نے تفسیر کبیر میں فرمایا: مسئلہ اولیٰ، یہ کہ جاہلیت میں مرد بیوی کو طلاق دے کر پھر عدت کے خاتمہ کے قریب رجوع کر لیتا اور اس طرح ہزار طلاق بھی ہوتی تب بھی خاوند کو رجوع کا اختیار رہتا، تو ایک عورت حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی خدمت میں آئی اور اس نے اپنے خاوند کی شکایت کی کہ وہ طلاق دے کر عدت ختم ہونے سے قبل رجوع کر لیتا ہے اور تنگ کر رہا ہے تو حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے یہ واقعہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو بیان کیا تو اس پر یہ آیہ کریمہ نازل ہوئی الطلاق مرتان، الآیة۔ تفسیرات احمدیہ میں ہے کہ چونکہ جاہلیت میں طلاق دے کر بھی پھر رجوع کر لیتا اور عدت ختم ہونے کے قریب رجوع کر کے پھر طلاق دے دیتا، حتیٰ کہ ایک عورت نے

حضرت ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے پاس آ کر اپنے خاوند کی شکایت کرتے ہوئے کہا کہ وہ بار بار طلاق دیتا اور رجوع کر لیتا ہے، تو حضرت ...

حاشیہ: 1۔ تفسیر کبیر زیر آیۃ الطلاق مرتان الخ المطبعۃ البھیۃ المصریۃ بمصر 102/2

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

(Arabic Column) [...to the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him,] then the saying of Allah the Almighty was revealed: "Divorce is twice, then keeping with kindness or releasing with goodness." That is, the revocable divorce to which returning relates is twice, i.e., two times, not more. After that is her retention with kindness or her release likewise. And this is a command in the form of a report, as if it were said: "Divorce revocably twice." And this aforementioned orientation is found in Al-Husayni, Al-Zahidi, Al-Baydawi, and Al-Talwih, and it is in accordance with the schools of Al-Shafi'i and Abu Hanifa together. Tirmidhi, Ibn Mardawayh, and Al-Hakim (with authentication), and Al-Bayhaqi in the Sunan narrated from the Mother of the Believers Aisha al-Siddiqah, may Allah be pleased with her, she said: "People used to [be such that] a man would divorce his wife as much as he wished to divorce her, and she was his wife if he took her back while she was in the waiting period, even if he had divorced her a hundred times or more. Until a man said to his wife: 'By Allah, I will not divorce you so that you separate from me, nor will I shelter you forever.' She said: 'And how is that?' He said: 'I will divorce you, and whenever your waiting period is about to expire, I will take you back.' So the woman went until she entered upon Aisha and informed her, so Aisha, may Allah be pleased with her, remained silent, until..."

(Urdu Column) Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) presented this matter to the Prophet (peace and blessings be upon him), upon which this noble verse was revealed: Allah the Almighty said: "Divorce is twice..." (the verse). That is, the divorce after which it is permissible to take back the wife is only twice, not more than that. After that, she must be kept with kindness or released with goodness by giving the final divorce. And this explanation is consistent with the schools of both Imam Shafi'i and Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on them). Tirmidhi, Ibn Mardawayh, Al-Hakim (with verification), and Al-Bayhaqi in their Sunan narrated from the Mother of the Believers Aisha (may Allah be pleased with her), she said that people used to divorce their wives as many times as they wanted and she would still remain a wife as long as he took her back during the 'iddah (waiting period), even if he had given a hundred or more divorces. Until one man said to his wife, "By Allah, I will not divorce you such that you are separated from me, nor will I keep you; you will remain like this forever." The wife asked, "How is that?" He said, "I will divorce you and just before your waiting period is about to end, when the waiting period is nearing its completion, I will take you back." So that woman went and complained about this to

Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her). Hearing this, Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) remained silent until...

---

1. Tafsirat Ahmadiyya, under the verse 'Al-Talaqu Marratan' etc., Maktaba Karimi, Mumbai, p. 123.

फतवा रज़विया जिल्द तेरह 13

(अरबी कॉलम) [...रसूल अल्लाह, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने,] फिर अल्लाह तआला का फरमान नाज़िल हुआ: "तलाक दो बार है, फिर भलाई के साथ रोकना या एहसान के साथ छोड़ देना।" अर्थात, वह रजी तलाक जिससे रुजू संबंधित है वह दो बार है, यानी दो मर्तबा, उससे अधिक नहीं। उसके बाद उसे भलाई के साथ रोकना है या उसी तरह छोड़ देना है। यह खबर के रूप में एक आदेश है, मानो यह कहा गया हो: "दो बार रजी तलाक दो।" और यह उल्लेखित स्पष्टीकरण अल-हुसैनी, अल-ज़ाहिदी, अल-बैदावी और अल-तलवीह में मौजूद है, और यह इमाम शाफई और अबू हनीफा दोनों के मज़हब के अनुसार है। तिर्मिज़ी, इब्न मरदुया, और अल-हाकिम (पुष्टि के साथ), और अल-बैहक़ी ने सुनन में उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की है, उन्होंने कहा: "लोग [ऐसे थे कि] एक आदमी अपनी बीवी को जितनी बार चाहता तलाक देता था, और वह उसकी बीवी ही रहती थी यदि वह अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान उसे वापस ले लेता, भले ही उसने सौ बार या उससे अधिक बार तलाक दिया हो। यहाँ तक कि एक आदमी ने अपनी बीवी से कहा: 'खुदा की कसम, मैं तुझे तलाक नहीं दूंगा कि तू मुझसे अलग हो जाए, और न ही मैं तुझे अपने पास रखूँगा।' उसने पूछा: 'और वह कैसे?' उसने कहा: 'मैं तुझे तलाक दूँगा, और जब भी तेरी इद्दत खत्म होने वाली होगी, मैं तुझे वापस ले लूँगा।' तो वह औरत हज़रत आयशा के पास गई और उन्हें सूचित किया, तो आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) खामोश रहीं, जब तक कि..."

(उर्दू कॉलम) हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने यह बात हुज़ूर (अलैहिस्सलातु वसल्लम) से अर्ज़ की, तो उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई, अल्लाह तआला ने फरमाया: "तलाक दो बार है..." (पूरी आयत)। यानी वह तलाक जिसके बाद रुजू करना जायज़ है वह दो बार है, उससे ज़्यादा नहीं। उसके बाद भलाई से बीवी को पास रखना होगा या नेकी के साथ आज़ाद करते हुए आखिरी तलाक देना होगा। और वह तफ़्सीर बयान की जो इमाम शाफई और इमाम अबू हनीफा (रहमहुमुल्लाह) दोनों के मज़हब के मुवाफिक है। तिर्मिज़ी, इब्न मरदुया, हाकिम और बैहक़ी ने अपनी सुनन में हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की, उन्होंने फरमाया कि लोग अपनी बीवी को जितनी चाहते तलाकें देते इसके बावजूद वह बीवी रहती जबकि वह इद्दत के दौरान रुजू ले लेता, चाहे वह सौ मर्तबा या उससे भी ज़्यादा तलाकें दे चुका होता यहाँ तक कि एक शख्स ने अपनी बीवी से कहा कि खुदा की कसम मैं तुझे तलाक न दूँ कि तू जुदा हो जाए और न ही तुझे पास रखूँ तो हमेशा ऐसे ही रहेगी, बीवी ने पूछा वह कैसे? तो उसने कहा मैं तुझे तलाक देकर इद्दत खत्म होने से

पहले जब इद्दत खत्म होने वाली होगी तो रुजू कर लूँगा, तो उस औरत ने जाकर हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से यह शिकायत की, यह सुनकर हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) खामोश हो गईं यहाँ तक कि...

---

1. तफ़्सीरात अहमदिया, आयत 'अत-तलाकु मर्रतान' आदि के तहत, मकतबा करीमी, मुंबई, पृ. 123.

पेज 187/688

| رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فنزل قولہ تعالٰی اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ط یعنی ان الطلاق الرجعي الذي یتعلق بہ الرجعۃ مرتان ای اثنتان لازائد تان فبعد ذلك امساکھا بمعروف او تسریحھا کذلك وھذا امر بصیغۃ الخبر کأنہ قیل طلقوا الرجعي مرتین وھذا التوجیہ المذکور في الحسینی والزاھدی والبیضاوی والتلویح وھو الموافق لمذھب الشافعی وابي حنیفۃ جمیعاً-ترمذی وابن مردودیہ و حاکم بافادہ تصحیح و بیہقی در سنن از ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا روایت کنند قالت کان الناس والرجل یطلق امرأتہ ماشاء ان یطلقھا و ھی امرأتہ اذا ارتجعھا و ھی فی العدۃ و ان طلقھا مئۃ مرۃ او اکثر حتی قال رجل لامرأتہ واللہ لا اطلقك فتبینین منی ولا أویک ابدا قالت و کیف ذلك قال اطلقك فکلما ھمت عدتك ان تنقضی راجعتك، فذھبت المرأۃ حتی دخلت علی عائشۃ فاخبرتھا فسکتت عائشۃ رضی اللہ تعالٰی عنہا، حتی | عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا نے یہ بات حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے عرض کی ، تو اس پر یہ آیہ کریمہ نازل ہوئی، اللہ تعالٰی نے فرمایا: اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ الآیۃ ، یعنی وہ طلاق جس کے بعد رجوع کرنا جائز ہے وہ دو بار طلاق ہے اس سے زائد نہیں، اس کے بعد بھلائی سے بیوی کو پاس رکھنا ہو گا یا نیکی کے ساتھ آزاد کرتے ہوئے آخری طلاق دینا ہوگی ۔ اور تفسیر بیان کی جو امام شافعی اور امام ابوحنیفہ رحمہم اللہ تعالٰی دونوں کے مذہب کے موافق ہے۔ ترمذی، ابن مردویہ، حاکم بافادہ تصحیح اور بیہقی نے اپنی سنن میں حضرت ام المومنین عائشہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کیا ، انہوں نے فرمایا کہ لوگ اپنی بیوی کو جتنی چاہتے طلاقیں دیتے اس کے باوجود وہ بیوی رہتی جبکہ وہ عدت کے دوران رجوع لیتا، اگرچہ سو مرتبہ یا اس سے بھی زائد طلاقیں دے چکا ہوتا حتی کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا کہ خدا کی قسم میں تجھے طلاق نہ دوں کہ تو جدا ہو جائے اور نہ ہی تجھے پاس رکھوں تو

ہمیشہ ایسے ہی رہے گی ، بیوی نے پوچھا وہ کیسے ؟ تو اس نے کہا میں تجھے طلاق دے کر عدت ختم ہونے سے قبل جب عدت ختم ہونے والی ہوگی تو رجوع کرلوں گا، تو اس عورت نے جاکر حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے یہ شکایت کی، یہ سن کر حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا خاموش ہو گئیں حتی کہ |

---

[1]تفسیرات احمدیہ زیر آیت الطلاق مرتان الخ مکتبہ کریمی واقع بمبئی ص ۱۲۳ صفحہ 187 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 13 | Page 13

[Left Column - Source text in Arabic/Urdu] When the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) came, she informed him, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) remained silent until the Qur'an was revealed: "Divorce is twice. Then either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment." [1] Also, Ibn Marduwayh and al-Bayhaqi narrated from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) that she said: There was no fixed limit for divorcing a wife and then taking her back; any man would divorce his wife and then take her back before the end of the waiting period ('iddah). And if there was a domestic dispute between a man and his family, like what occurs between people, he would say, "By Allah, I will neither leave you as a single woman nor as a married woman." To achieve this, he would divorce his wife and then take her back just before the waiting period ended, repeating this many times. Upon this, Allah revealed concerning it: "Divorce is twice. Then either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment." So He timed divorce for them as three; he may take her back after the first and the second, but after the third, there is no return until she marries a husband other than him. Abu Dawud, an-Nasa'i, and al-Bayhaqi narrated from Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) that initially, if a man divorced his wife, he had the most right to take her back [even if he had divorced her thrice]. So that was abrogated, and He said: "Divorce is twice, then keep [her] in an acceptable manner..."

[Right Column - Urdu Explanation/Translation] The Prophet (peace and blessings be upon him) arrived, and they informed him (peace and blessings be upon him) of this matter, upon which he remained silent until this noble verse was revealed: "Divorce is twice..." etc. Furthermore, Ibn Marduwayh and al-Bayhaqi narrated from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) that she stated: There was no set regulation for divorcing a wife and then returning to her. Anyone would divorce his wife and return to her before the end of the waiting period ('iddah). And if there was a domestic dispute between a husband and wife, as commonly occurs, the husband would say, "By God, I will neither let you remain a married woman nor a single one." For this purpose, he would divorce his wife and then return to her before the waiting period ended, repeating this many times. Thereupon, Allah Almighty revealed this noble verse: "Divorce is twice," in which three divorces were decreed. After the first and the second, the right of return was given, but after the third, there would be no return until the wife married someone else. Abu Dawud, an-Nasa'i, and al-Bayhaqi

narrated from Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with him) that initially, if a man gave a divorce, Allah Almighty revoked that [unlimited practice] and said: "Divorce is twice..."

Footnotes: 1. Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Three Divorces, Rashidiyah Book Depot, Delhi, 1/143; Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter on what is narrated regarding the execution of divorce, Dar Sader, Beirut, 7/333. 2. Tafsir al-Durr al-Manthur, citing Ibn Marduwayh and al-Bayhaqi, under the verse 'Divorce is twice', Ayatollah al-Uzma Library, Qom, Iran, 1/772.

[बायाँ कॉलम - स्रोत पाठ अरबी/उर्दू में] जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आए तो उसने उन्हें सूचित किया, जिस पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खामोश रहे यहाँ तक कि कुरआन नाज़िल हुआ: 'तलाक़ दो बार है। फिर या तो भले तरीके से (पास) रखना है या नेक सुलूक के साथ रुख़सत करना है।' [1] इसके अलावा, इब्न मरदुवैह और बैहक़ी उम्मुल मोमिनीन से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: तलाक़ के लिए कोई निश्चित समय नहीं था, एक व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक़ देता फिर जब तक इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त नहीं होती, उसे वापस ले लेता। और एक आदमी और उसके परिवार के बीच कुछ ऐसा विवाद हुआ जैसा लोगों के बीच होता है, तो उसने कहा, 'खुदा की कसम, मैं तुझे न तो कुंवारी छोड़ूँगा और न ही सुहागन।' तो उसने उसे तलाक़ देना शुरू कर दिया यहाँ तक कि जब इद्दत समाप्त होने वाली होती, वह उसे वापस ले लेता। उसने ऐसा कई बार किया, तो अल्लाह ने इसके बारे में नाज़िल फ़रमाया: 'तलाक़ दो बार है। फिर या तो भले तरीके से रखना है या नेक सुलूक के साथ रुख़सत करना है।' तो उसने उनके लिए तीन तलाक़ मुकर्रर किए; वह पहली और दूसरी में उसे वापस ले सकता है, और तीसरी में तब तक कोई वापसी नहीं है जब तक कि वह उसके अलावा किसी और से निकाह न कर ले। अबू दाऊद, नसाई और बैहक़ी अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत करते हैं कि एक आदमी जब अपनी पत्नी को तलाक़ देता था, तो उसे वापस लेने का सबसे ज़्यादा हक होता था भले ही उसने उसे तीन बार तलाक़ दिया हो। तो इसे मनसूख़ (निरस्त) कर दिया गया और उसने कहा: 'तलाक़ दो बार है, फिर भले तरीके से रखना है...'"

[दायाँ कॉलम - उर्दू व्याख्या/अनुवाद] हज़ूर अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो उन्होंने हज़ूर अलैहिस्सलाम को इस बात से अवगत कराया जिस पर आपने खामोशी इख्तियार की यहाँ तक कि यह आयत-ए-करीमा नाज़िल हुई 'अत-तलाकु मर्रतान' आदि। साथ ही इब्न मरदुवैह और बैहक़ी ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की, आपने बयान किया कि पत्नी को तलाक़ देने और फिर रुजू (वापसी) करने का कोई नियम न था, कोई भी अपनी पत्नी को तलाक़ देकर इद्दत खत्म होने से पहले रुजू कर लेता। और अगर पति-पत्नी में कोई घरेलू झगड़ा होता जैसा कि आमतौर पर होता है, तो पति कहता 'खुदा की कसम मैं तुझे न तो पति वाली और न ही बे-पति वाली रहने दूँगा'। इसके लिए वह बीवी को तलाक़ देता और इद्दत खत्म होने से पहले रुजू कर लेता और बार-बार ऐसा करता। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत-ए-करीमा नाज़िल फ़रमाई 'अत-तलाकु मर्रतान', जिसमें तीन तलाक़ मुकर्रर कर दी गई हैं, जिनमें से एक और दो के बाद रुजू का हक दिया गया है

और तीसरी के बाद रुजू नहीं होगा जब तक कि बीवी किसी दूसरे शख्स से निकाह न कर ले। अबू दाऊद, नसाई और बैहक़ी ने अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है कि शुरुआत में मर्द तलाक़ दे देता तो उसे मनसूख़ करके अल्लाह तआला ने फ़रमाया 'अत-तलाकु मर्रतान'...

फुटनोट्स: १. जामिअत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल तलाक़-उल-सलास, रशीदिया बुक डिपो, दिल्ली, १/१४३; अल-सुनन अल-कुबरा बैहक़ी द्वारा, तलाक़ के निष्पादन के संबंध में अध्याय, दार सादर, बेरूत, ७/३३३। २. तफ़्सीर अल-दुर अल-मंसूर, इब्न मरदुवैह और बैहक़ी के हवाले से, आयत 'तलाक़ दो बार है' के तहत, अयातुल्लाह अल-उज़मा लाइब्रेरी, क़ोम, ईरान, १/७७२।

पृष्ठ १८८ / ६८८

[بایاں کالم] جاء النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فاخبر تہ فسکت النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم حتی نزل القران اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ ط 1. نیز ابن مردودیہ وبہقی از ام المومنین روایت آرند، قالت یکن للطلاق وقت یطلق امرأتہ ثم یراجعہا مالم تنقض العدۃ وکان بین رجل وبین اھلہ بعض ما یکون بین الناس فقال واللہ لا تترکك لا ایماً ولا ذات زوج فجعل یطلقہا حتی اذا کادت العدۃ ان تنقضی راجعہا ففعل ذلك مراراً فانزل اللہ فیہ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌ بِاِحْسَانٍ ط فوقت لھم الطلاق ثلاثاً یراجعہا فی الواحدۃ وفی الثنتین ولیس فی الثلاثۃ رجعۃ حتی تنکح زوجاً غیرہ، ابو داؤد و نسائی و بیہقی از عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما روایت دارند ان الرجل کان اذا طلق امرأتہ فھو احق برجعتہا وان طلقہا ثلاثاً فنسخ ذلك فقال اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ

[دایاں کالم] حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام تشریف لائے تو انہوں نے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کو اس بات پر مطلع کیا جس پر آپ نے سکوت فرمایا حتیٰ یہ آیہ کریمہ نازل ہوئی الطلاق مرتن الخ، نیز ابن مردودیہ اور بیہقی نے حضرت ام المومنین رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کی، آپ نے بیان کیا کہ بیوی کو طلاق دینے اور پھر رجوع کرنے کا کوئی ضابطہ نہ تھا، کوئی بھی بیوی کو طلاق دے کر عدت ختم ہونے سے قبل رجوع کر لیتا اور خاوند بیوی میں کوئی خانگی جھگڑا جیسا کہ عام طور پر ہوتا ہے ہوتا تو خاوند کہتا خدا کی قسم میں تجھے نہ خاوند والی اور نہ غیر خاوند والی بنا دوں گا، اس کے لئے وہ بیوی کو طلاق دے کر عدت ختم ہونے سے پہلے رجوع کر لیتا اور بار بار ایسے کرتا، اس پر اللہ تعالٰی نے یہ آیہ کریمہ نازل فرمائی اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ، جس میں تین طلاقیں مقرر کر دی گئی ہیں، جس میں سے ایک اور دو کے بعد رجوع کا حق دیا گیا ہے اور

تیسری کے بعد رجوع نہیں ہوگا تا وقتیکہ بیوی کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کر لے۔ ابوداؤد، نسائی اور بیہقی نے عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے کہ ابتداء میں مرد کو طلاق دے دیتا تو اس کو منسوخ کرکے اللہ تعالیٰ نے فرمایا اَلطَّلَاقُ

حواشی: 1 جامع الترمذی ابواب الطلاق الثلاث این کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/۱۴۳، السنن الکبری للبیهقی باب ماجاء في امضاء الطلاق دار صادر بیروت ۳۳۳/۷ 2 تفسیر درمنثور بحوالہ ابن مردودیہ والبیہقی تحت آیۃ الطلاق مرتان مکتبہ آیۃ اللہ العظمی قم، ایران ۱/۷۷۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13 Page 13

(Right Column) "...twice. Then, keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment." The eminent Imams - Malik, Shafi'i, Abd bin Humaid, Tirmidhi, Ibn Jarir, Ibn Abi Hatim, and Bayhaqi - narrated from Hazrat Urwah bin Zubair (may Allah be pleased with him) that initially, a man had the authority to reconcile (ruju') with his wife before the expiry of the 'iddah' (waiting period), even if he had given a thousand divorces. Then, a man divorced his wife and reconciled just as her waiting period was ending, and then divorced her again. He said, "By God, I will neither keep you nor shall you be lawful for another." Then Allah Almighty revealed this noble verse: "Divorce is twice. Then, either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment." (Quran 2:229). Now Muslims should reflect with justice on how the Deobandis are trampling upon the purpose of the Shariah and the command of the noble verse, and are reviving the oppression and tyranny of the pre-Islamic era (Jahiliyyah). If the previous divorces become void upon reconciliation and the husband regained the authority of three divorces anew, as this person claims, then inevitably the fire of Jahiliyyah would remain preserved. The oppression that Allah Almighty intended to abolish would become void and ineffective, and Jahiliyyah would return. For anyone who divorces a thousand times and keeps reconciling, the occurrence of the previous divorces would be rendered meaningless.

(Left Column) "...or release [her] with good treatment" [1]. The eminent Imams Malik, Shafi'i, Abd bin Humaid, Tirmidhi, Ibn Jarir, Ibn Abi Hatim, and Bayhaqi narrate from Urwah bin Zubair (may Allah be pleased with them both), who said: "A man used to divorce his wife, then if he wanted to take her back before her waiting period (iddah) expired, he could do so even if he divorced her a thousand times. Then a man turned to his wife and divorced her, and when her waiting period was about to end, he took her back, then divorced her again, and said, 'By Allah, I will neither give you refuge with me nor will you ever be lawful for another.' Then Allah revealed: 'Divorce is twice. Then, either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment.'" [2] O Muslims, do justice! Look how the Deobandi teachings subvert the intent of the Sharia and the command of the verse, and revive the oppression of Jahiliyyah anew. If a previous divorce is invalidated by reconciliation and the husband is left with the authority of three divorces anew, as this person has presumed, then inevitably the same fire of Jahiliyyah remains. The cessation of oppression that Allah intended would be—God forbid—void and ineffective. Anyone could divorce a

thousand times and reconcile every time, making the given divorces as if they were never given, and keeping infinite powers in hand.

(Footnotes) 1. Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter: One who counts three as one and what is reported in opposition to that, Dar Sader, Beirut, 7/33. 2. Muwatta Imam Malik, Chapter of Divorce, Mir Muhammad Kutub Khana, Markaz-e-Ilm Karachi, p. 529.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13 पृष्ठ 13

(दायाँ कॉलम) "...दो बार है, फिर या तो भलाई के साथ (पत्नी को) रोकना है या नेक तरीके से विदा करना है।" इमाम मालिक, इमाम शाफ़ई, अब्द बिन हमीद, तिर्मिज़ी, इब्न जरीर, इब्न अबी हातिम और बैहक़ी जैसे महान इमामों ने हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत की है कि शुरुआत में पुरुष को यह अधिकार था कि वह तलाक़ की इद्दत ख़त्म होने से पहले रुजू (सुलह) कर ले, चाहे उसने हज़ार तलाक़ें ही क्यों न दी हों। फिर एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक़ दी और इद्दत ख़त्म होने के करीब रुजू कर लिया, और फिर तलाक़ दे दी। फिर उसने कहा, "ख़ुदा की क़सम! मैं न तुझे (अपने पास) रखूँगा और न ही तू किसी दूसरे के लिए हलाल हो सकेगी।" तब अल्लाह तआला ने यह पवित्र आयत नाज़िल फ़रमाई: "तलाक़ दो बार है, फिर या तो भलाई के साथ रोकना है या नेक तरीके से विदा करना है।" अब मुसलमानों को इंसाफ़ से सोचना चाहिए कि देवबंदी किस तरह शरीयत के मक़सद और आयत-ए-करीमा के हुक्म को पैरों तले रौंद रहे हैं और जाहिलियत (अज्ञानता के दौर) के ज़ुल्म-ओ-सितम को दोबारा ज़िंदा कर रहे हैं। अगर पिछली तलाक़ें रुजू करने से रद्द हो जाएँ और पति को नए सिरे से दोबारा तीन तलाक़ों का अधिकार मिल जाए, जैसा कि यह व्यक्ति कह रहा है, तो निश्चित रूप से जाहिलियत की आग सुरक्षित रहेगी और अल्लाह तआला ने जिस ज़ुल्म को ख़त्म करना चाहा है, वह सब व्यर्थ और बेअसर हो जाएगा और जाहिलियत दोबारा लौट आएगी। जो व्यक्ति भी हज़ार बार तलाक़ देकर रुजू करता रहे, तो रुजू के बाद पिछली तलाक़ का होना या न होना बराबर हो जाएगा।

(बायाँ कॉलम) "...या नेक तरीके से विदा करना है" [1]। महान इमामों - मालिक, शाफ़ई, अब्द बिन हमीद, तिर्मिज़ी, इब्न जरीर, इब्न अबी हातिम और बैहक़ी ने उरवा बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत की है, उन्होंने कहा: "एक आदमी जब अपनी पत्नी को तलाक़ देता था और इद्दत पूरी होने से पहले वापस लेना चाहता था, तो उसे इसका अधिकार था, भले ही उसने उसे एक हज़ार बार तलाक़ दी हो। फिर एक व्यक्ति अपनी पत्नी की ओर बढ़ा और उसे तलाक़ दे दी, और जब उसकी इद्दत पूरी होने का समय आया, तो उसने उसे वापस ले लिया, फिर उसे तलाक़ दे दी, फिर कहा: 'वल्लाह! मैं न तो तुझे अपने पास पनाह दूँगा और न ही तू मेरे लिए कभी हलाल होगी।' तब अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया: 'तलाक़ दो बार है, फिर या तो भलाई के साथ रोकना है या नेक तरीके से विदा करना है।'" [2] हे मुसलमानों, इंसाफ़ करो! देखो देवबंदी शिक्षाएँ शरीयत के मक़सद और आयत के हुक्म को कैसे पलट रही हैं और जाहिलियत के ज़ुल्म को नए सिरे से ताज़ा कर रही

हैं। यदि पिछला तलाक़ रुजू (वापसी) से अमान्य हो जाता है और पति के पास फिर से तीन तलाक़ों का अधिकार रह जाता है, जैसा कि इस व्यक्ति ने दावा किया है, तो अनिवार्य रूप से वही जाहिलियत की आग मौजूद है। और जिस ज़ुल्म का अल्लाह ने अंत करना चाहा था, वह (अल्लाह न करे) व्यर्थ और बेअसर हो जाएगा। जो चाहेगा हज़ार बार तलाक़ देगा और हर बार रुजू करेगा, जिससे दी गई तलाक़ें न दी गई के बराबर हो जाएँगी और असीमित अधिकार हाथ में रहेंगे।

(फ़ुटनोट्स) 1. अल-सुनन अल-कुबरा लिल-बैहक़ी, बाब: मन ज'अल अल-सलासा वाहिदतन..., दार सादिर, बेरूत, 7/33 2. मुवत्ता इमाम मालिक, जामे-उत-तलाक़, मीर मोहम्मद कुतुब ख़ाना, मरकज़-ए-इल्म कराची, पृ. 529

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

(دایاں کالم) مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ، امام مالک، امام شافعی، عبد بن حمید، ترمذی، ابن جریر، ابن ابی حاتم بیہقی ان اجلہ ائمہ کرام نے حضرت عروہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ ابتداء میں مرد کو اختیار تھا کہ وہ طلاق کی عدت ختم ہونے سے قبل رجوع کرلے اگرچہ وہ ہزار طلاقیں بھی دے دے، تو ایک مرد نے بیوی کو طلاق دے کر عدت ختم ہونے کے قریب رجوع کرلیا اور پھر طلاق دے دی پھر کہا کہ خدا کی قسم میں تجھے نہ رکھوں گا نہ دوسرے کے لئے بھی حلال ہوسکے گی، تو اللہ تعالیٰ نے یہ آیہ کریمہ نازل فرمائی اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ط، اب مسلمانوں کو انصاف سے غور کرنا چاہئے کہ دیوبندی کس طرح شریعت کے مقصد اور آیہ کریمہ کے حکم کو پامال کرتے ہیں اور جاہلیت کے ظلم و ستم کو دوبارہ تازہ کر رہے ہیں، اگر پہلی طلاقیں رجوع کرنے سے باطل ہوجائیں اور خاوند کو نئے سرے سے دوبارہ تین طلاقوں کا اختیار مل جائے جیسا کہ یہ شخص کہہ رہا ہے تو لازمی طور پر جاہلیت کی آگ محفوظ رہے گی اور اللہ تعالیٰ نے جس ظلم کو ختم کرنا چاہا ہے وہ سب باطل اور بے اثر ہو کر رہ جائے گا اور جاہلیت دوبارہ عود کر آئے گی، اور جو شخص بھی ہزار بار طلاق دے کر رجوع کرتا رہے تو رجوع سے پہلی طلاق کا ہونا نہ ہونا برابر

(بایاں کالم) اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۱؎ اجلہ ائمہ مالک و شافعی و عبد بن حمید و ترمذی و ابن جریر و ابن ابی حاتم و بیہقی از عروہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہما آرند قال کان الرجل اذا طلق امرأته ثم اراد ان یرتجعها قبل ان تنقضی عدتها کان ذلك له وان طلقها الف مرة فعمد رجل الی امرأته فطلقها حتی اذ اما جاء وقت انقضاء عدتها ارتجعها ثم طلقها ثم قال واللہ لا اویك الی ولا تحلین لی ابدًا فانزل اللہ تعالیٰ اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۲؎ مسلمان دے انصاف دہید تعلیم دیوبندی

چہاں مقصود شریعت و حکم آیت را بر ہم میزنند و ظلم و ستم جاہلیت را از سر نو تازہ می کند اگر طلاق پیشین بر جعت باطل شود و بعد او شوئے را از سر اختیار سہ طلاق بدست ماند چنانکہ ایں کس زعم نمود پس لاجرم ہماں آتش جاہلیت بکاسہ اندرست و انسداد ظلمے کہ خدائے خواست معاذ اللہ باطل و بے اثر، ہر کہ خواهد ہزار بار طلاق دہد و ہر بار رجعت کند طلاق ہائے دادہ نادہ شود و اختیارات نامتناہیہ بدست

(حواشی) ۱ السنن الکبری للبیهقي باب من جعل الثلاث واحدة وما ورد فی خلاف ذلك دار صادر بیروت ۷ / ۳۳۳ ۲ مؤطا امام مالك جامع الطلاق میر محمد کتب خانہ مرکز علم کراچی ص ۵۲۹

Fatawa Razawiyya Volume 13 Page 13

[Left Column Text] ...husband will remain so, and there is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great. This is how the Deobandi teaching contradicts the Great Quran. Twenty-second: Regarding the specific detail that divorce does not become void after retraction but remains counted, it is explicitly stated in the two Sahihs of Bukhari and Muslim and general Islamic books. Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) divorced his wife during menstruation. The Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) commanded her retraction, and despite the retraction, he counted that divorce. In Sahih al-Bukhari, narrated by Anas bin Sirin, who said: I heard Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) saying that Ibn Umar divorced his wife while she was menstruating. Umar (may Allah be pleased with him) mentioned this to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), who said, "Tell him to take her back." I asked, "Will it be counted?" He replied, "What then [if not counted]?" And from Qatadah, from Yunus bin Jubayr, from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both), who said: [The Prophet] said, "Tell him to take her back." I asked, "Will it be counted?" He replied, "What do you think if he was helpless and foolish?" And from Sa'id bin Jubayr, from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both), who said, "It was counted against me as one divorce." And in Sahih Muslim...

[Right Column Text] ...will happen, and the husband will obtain unending authority. There is no power nor strength except with Allah, the Most High, the Most Great. This teaching of the Deobandi is contrary to the Quran. Twenty-second: This specific point that divorce does not become null and void after retraction is clearly stated in Bukhari, Muslim, and general Islamic books. Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) divorced his wife during menstruation. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) ordered retraction from this divorce, and despite the retraction, this divorce given during menstruation was counted. In Sahih Bukhari, it is narrated from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that he said: I heard Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) saying that Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them both) divorced his wife during menstruation. Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) gave this information to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "He should retract." I asked, "Will that divorce given during menstruation be counted?" Then Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) said, "Of course." It is narrated from Hazrat Qatadah (may Allah be

pleased with him) from Yunus bin Jubayr from Ibn Umar (may Allah be pleased with them both) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to tell Abdullah to retract. Then I asked, "Will the first divorce be counted?" Then the answer...

[Footnotes] 1. Sahih al-Bukhari, Book of Divorce, Chapter: If a menstruating woman is divorced, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/90. 2. Sahih al-Bukhari, Book of Divorce, Chapter: If a menstruating woman is divorced, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/90. 3. Sahih al-Bukhari, Book of Divorce, Chapter: If a menstruating woman is divorced, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/90.

फ़तावा रज़विया खंड 13 पृष्ठ 13

[बायां कॉलम] ...पति रहेगा, और अल्लाह के अलावा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊंचा और सबसे महान है। इस प्रकार देवबंदी शिक्षा महान कुरान के विरोधाभासी है। बाइसवाँ: विशेष विवरण कि रुजू (तलाक की वापसी) के बाद तलाक शून्य नहीं होती बल्कि गिनी जाती है, बुखारी और मुस्लिम और आम इस्लामी किताबों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है। अब्दुल्ला बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) ने मासिक धर्म की स्थिति में अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। सैय्यद-ए-आलम (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) ने रुजू करने का आदेश दिया, और रुजू के बावजूद उस तलाक को गिना। सहीह अल-बुखारी में अनस बिन सिरीन से रिवायत है, उन्होंने कहा: मैंने इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) को यह कहते हुए सुना कि इब्न उमर ने अपनी पत्नी को मासिक धर्म के दौरान तलाक दे दिया। उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने नबी (अल्लाह की उन पर शांति और कृपा हो) से इसका ज़िक्र किया, तो उन्होंने फरमाया, "उसे कहो कि वह उसे वापस ले ले।" मैंने पूछा, "क्या इसे गिना जाएगा?" उन्होंने उत्तर दिया, "फिर क्या [नहीं गिना जाएगा]?" और कतादा से, यूनुस बिन जुबैर के माध्यम से, इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया: [नबी ने] फरमाया, "उसे हुक्म दो कि वह उसे वापस ले ले।" मैंने पूछा, "क्या इसे गिना जाएगा?" उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हारा क्या ख्याल है अगर वह लाचार और मूर्ख हो?" और सईद बिन जुबैर से, इब्न उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया, "मुझ पर इसे एक तलाक गिना गया।" और सहीह मुस्लिम में...

[दायां कॉलम] ...हो जाएगा और शौहर को न ख़त्म होने वाला इख़्तियार हासिल हो जाएगा, ला हौल व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम। देवबंदी की यह तालीम क़ुरआन के मुख़ालिफ़ है। बाइसवाँ: ख़ास यह जुज़िया कि रुजू के बाद तलाक़ कालअदम (शून्य) नहीं होती, तो बुखारी व मुस्लिम और आम इस्लामी किताबों में तसरीह (स्पष्ट व्याख्या) है कि अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने अपनी बीवी को हैज़ (मासिक धर्म) की हालत में तलाक़ दी तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस तलाक़ से रुजू का हुक्म दिया और रुजू के बावजूद यह हैज़ में दी हुई तलाक़ शुमार हुई। सहीह बुख़ारी में हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से मरवी है, उन्होंने फ़रमाया कि मैंने हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को सुना, उन्होंने फ़रमाया कि अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने अपनी बीवी को हैज़ में तलाक़ दी तो उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने यह इत्तला हुज़ूर अलैहिस्सलाम को दी, तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रुजू करे। तो मैंने

अर्ज़ की कि क्या वह हैज़ में दी हुई तलाक़ शुमार होगी? तो उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने फ़रमाया और क्या। हज़रत क़तादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, उन्होंने यूनुस बिन जुबैर से, उन्होंने इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अब्दुल्ला से कहो कि वह रुजू करे। तो मैंने पूछा कि क्या पहली तलाक़ शुमार होगी? तो जवाब...

[पाद लेख] 1. सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तलाक, अध्याय: यदि मासिक धर्म वाली महिला को तलाक दिया जाता है, आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/90। 2. सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तलाक, अध्याय: यदि मासिक धर्म वाली महिला को तलाक दिया जाता है, आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/90। 3. सहीह अल-बुखारी, किताब अत-तलाक, अध्याय: यदि मासिक धर्म वाली महिला को तलाक दिया जाता है, आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/90।

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

[بائیں جانب کی عبارت] شوہربود ولاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم اینست مخالفت تعلیم دیوبندی با قرآن عظیم۔ بست و دوم: خاص جزئیہ مسئلہ کہ طلاق بعد رجعت باطل نہ شد و محسوب ماند در صحیحین بخاری و مسلم و عامہ کتب اسلام مصرح ست عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما زوجہ خود را بحالت حیض طلاق داد سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم امر مراجعت فرمودہ باوصف رجعت آں طلاق را محسوب داشت، فی صحیح البخاری عن انس بن سیرین قال سمعت ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما قال طلق ابن عمر امرأتہ و ہی حائض فذکر عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ للنبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقال لیر اجعہا قلت تحتسب قال فمہ[1]، و عن قتادۃ عن یونس بن جبیر عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما قال مرہ فلیراجعہا قلت تحتسب ، قال أرأیتہ ان عجز واستحمق[2]، وعن سعید بن جبیر عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما قال حسبت علی بتطلیقۃ[3] و فی صحیح مسلم

[دائیں جانب کی عبارت] ہوجائے گا اور خاوند کو نہ ختم ہونے والا اختیار حاصل ہوجائے گا، لاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم۔ دیوبندی کی یہ تعلیم قرآن کے مخالف ہے۔ بست و دوم: خاص یہ جزئیہ کہ رجوع کے بعد طلاق کالعدم نہیں ہوتی، تو بخاری و مسلم اور عام اسلامی کتب میں تصریح ہے کہ عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما نے اپنی بیوی کو حیض کی حالت میں طلاق دی تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اس طلاق سے رجوع کا حکم دیا اور رجوع کے باوجود یہ حیض میں دی ہوئی طلاق شمار ہوئی صحیح بخاری میں حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی ہے انہوں نے فرمایا کہ میں نے حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ کو سنا انہوں نے فرمایا کہ عبداللہ بن عمر (رضی اللہ تعالٰی عنہما) نے اپنی بیوی کو حیض میں طلاق دی تو عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے یہ اطلاع حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کو دی تو حضور علیہ الصلوٰۃ

والسلام نے فرمایا رجوع کرے، تو میں نے عرض کی کہ کیا وہ حیض میں دی ہوئی طلاق شمار ہوگی، تو عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا اور کیا۔ حضرت قتادہ رضی اللہ عنہ سے انہوں نے یونس بن جبیر سے انہوں نے ابن عمر رضی اللہ عنہما سے کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا کہ عبداللہ سے کہو کہ وہ رجوع کرے تو میں نے پوچھا کہ کیا پہلی طلاق شمار ہوگی، تو جواب

[حواشی] 1 صحیح البخاری کتاب الطلاق باب اذا طلقت الحائض الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۰/۲ 2 صحیح البخاری کتاب الطلاق باب اذا طلقت الحائض الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۰/۲ 3 صحیح البخاری کتاب الطلاق باب اذا طلقت الحائض الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۰/۲

[Left Column: Arabic Text with Urdu ending] From Ubaidullah, from Nafi, from Ibn Umar (may Allah be pleased with them), a similar narration. At its end, Ubaidullah said: I asked Nafi, "What was done with that divorce?" He replied: "It was counted as one." [1] And from Salim bin Abdullah, from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them), from his father, in which it is mentioned that Abdullah divorced her with one divorce, and it was counted from her divorces, and Abdullah took her back as the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) commanded him. [2] In another wording, it is said that Ibn Umar said: "I took her back and counted for her the divorce that I had given." [3] And from Ibn Sirin, from Yunus bin Jubair, from Ibn Umar (may Allah be pleased with them), that he (the Prophet) commanded him to take her back. I (Yunus) asked: "Was it counted against him?" He (Ibn Umar) said: "What else? Even if he was incapable and acted foolishly." [4] And from Anas bin Sirin, he said: I asked: "Did you count that divorce which was given while she was menstruating?" He (Ibn Umar) said: "Why should I not count it even if I were incapable and acted foolishly?" [5] Furthermore, Abdul Haqq al-Ishbili in al-Ahkam, and al-Bayhaqi in al-Sunan narrated from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "It is one." [6] This is the contradiction of the Deobandi teaching with the noble Hadith.

[Right Column: Urdu Translation] ...in said: "Tell me, if he becomes incapable without taking her back and acts foolishly, i.e., does not take her back, will the divorce not occur?" And Sa'id bin Jubair (may Allah be pleased with him) narrates from Abdullah bin Umar: "I counted it as one divorce." And in Sahih Muslim, Ubaidullah narrates from Nafi, and he from Ibn Umar (may Allah be pleased with them) a similar report, and at its end, it is mentioned that Ubaidullah said: I said to Nafi, "What did you think of that divorce?" He said, "I counted it as one." And Salim narrates from Abdullah, and he from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them), and he from his father, and in this report, it is mentioned that Abdullah gave his wife one divorce, so I counted it as a divorce, and he took her back as the Prophet (peace and blessings be upon him) had commanded him. In other words, he said that Hazrat Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them) said: "I took my wife back and the divorce I gave, I counted it as one divorce." And Ibn Sirin narrates from Yunus bin Jubair, who narrates from Ibn Umar (may Allah be pleased with them) that he (the Prophet) ordered to take her back. I asked, "Will this divorce be counted?" He replied, "What

else? If one becomes incapable of taking her back or acts foolishly and doesn't take her back, will the divorce not occur?"

[Footnotes] 1. Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Divorcing a Menstruating Woman, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/276 2. Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Divorcing a Menstruating Woman, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/276 3. Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Divorcing a Menstruating Woman, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/276 4. Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Divorcing a Menstruating Woman, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/277 5. Sahih Muslim, Chapter on the Prohibition of Divorcing a Menstruating Woman, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/277 6. Al-Sunan al-Kubra, Chapter on Sunnah and Bid'ah Divorce, Dar Sader Beirut, 7/322

फतावा रज़विया जिल्द 13 | पृष्ठ 13

[बायां कॉलम: अरबी पाठ उर्दू अंत के साथ] उबैदुल्लाह से, नाफे से, इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से, इसी तरह की रिवायत है। इसके अंत में उबैदुल्लाह ने कहा: मैंने नाफे से पूछा, "उस तलाक का क्या हुआ?" उन्होंने जवाब दिया: "इसे एक गिना गया।" [1] और सालेम बिन अब्दुल्लाह से, अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से, उनके पिता से, जिसमें उल्लेख है कि अब्दुल्लाह ने उन्हें एक तलाक दिया था, और इसे उनके तलाकों में गिना गया, और अब्दुल्लाह ने उन्हें वापस ले लिया जैसा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें आदेश दिया था। [2] एक अन्य शब्द में, यह कहा गया है कि इब्न उमर ने कहा: "मैंने उसे वापस ले लिया और उसके लिए उस तलाक की गणना की जो मैंने दी थी।" [3] और इब्न सिरीन से, यूनुस बिन जुबैर से, इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से, कि उन्होंने (नबी ने) उन्हें वापस लेने का आदेश दिया। मैंने (यूनुस) पूछा: "क्या यह उनके खिलाफ गिना गया?" उन्होंने (इब्न उमर) कहा: "और क्या? भले ही वह अक्षम होता और मूर्खतापूर्ण व्यवहार करता।" [4] और अनस बिन सिरीन से, उन्होंने कहा: मैंने पूछा: "क्या आपने उस तलाक की गणना की जो मासिक धर्म के दौरान दी गई थी?" उन्होंने (इब्न उमर) कहा: "मैं इसकी गणना क्यों न करूँ भले ही मैं अक्षम होता और मूर्खतापूर्ण व्यवहार करता?" [5] इसके अलावा, अब्दुल हक अल-इशबीली ने अल-अहकाम में, और अल-बैहकी ने अल-सुनन में अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "यह एक है।" [6] यह नेक हदीस के साथ देवबंदी शिक्षा का विरोध है।

[दायां कॉलम: उर्दू अनुवाद] ...में फरमाया: "तो बताओ, अगर वह रुजू (वापस लेना) किए बिना आजिज़ (अक्षम) हो जाए या हिमाकत (मूर्खता) करे, यानी रुजू न करे, तो क्या तलाक न होगी?" और सईद बिन जुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) अब्दुल्लाह बिन उमर से रावी हैं कि "मैंने इसे एक तलाक शुमार (गिनना) किया।" और सहीह मुस्लिम में उबैदुल्लाह नाफे से, और वह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से इसी की मिसाल रिवायत करते हैं, और इसके आखिर में है कि उबैदुल्लाह ने कहा कि मैंने नाफे से कहा कि "तुमने इस तलाक को क्या ख्याल किया?" उन्होंने कहा, "मैंने इसे एक शुमार किया।" और सालेम अब्दुल्लाह से, और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से, और उन्होंने अपने वालिद से रिवायत की है कि अब्दुल्लाह ने अपनी बीवी को एक तलाक दी तो मैंने उसको तलाक शुमार किया और उन्होंने रुजू कर लिया जैसा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें फरमाया था। और दूसरे अल्फाज़ में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने

फरमाया: "मैंने बीवी से रुजू कर लिया और मैंने जो तलाक दी उसको मैंने एक तलाक शुमार किया।" और इब्न सिरीन, यूनुस बिन जुबैर से वह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रावी कि उन्होंने रुजू करने का हुक्म फरमाया। मैंने पूछा, "क्या यह तलाक शुमार होगी?" तो फरमाया, "और क्या? रुजू करने से आजिज़ हो जाए या हिमाकत करते हुए रुजू न करे तो क्या तलाक न होगी?"

[पाद लेख] 1. सहीह मुस्लिम, मासिक धर्म वाली महिला को तलाक देने के निषेध पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/276 2. सहीह मुस्लिम, मासिक धर्म वाली महिला को तलाक देने के निषेध पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/276 3. सहीह मुस्लिम, मासिक धर्म वाली महिला को तलाक देने के निषेध पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/276 4. सहीह मुस्लिम, मासिक धर्म वाली महिला को तलाक देने के निषेध पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/277 5. सहीह मुस्लिम, मासिक धर्म वाली महिला को तलाक देने के निषेध पर अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/277 6. अल-सुनन अल-कुबरा, सुन्नत तलाक और बिदअत तलाक का अध्याय, दार सादिर बेरुत, 7/322

[بایاں کالم: عربی عبارت مع اردو اختتام] عن عبیداللہ عن نافع عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھما نحوہ وقال فی آخرہ قال عبیداللہ قلت لنافع ماصنعت التطلیقۃ قال واحدۃ اعتدبھا ۱، وعن سالم بن عبداللہ عن عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھم عن ابیہ وفیہ کان عبداللہ طلقھا تطلیقۃ فحسبت من طلاقھا وراجعھا عبداللہ کما امرہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ۲، وفی لفظ اخر قال قال ابن عمر فراجعتھا وحسبت لھا التطلیقۃ التی طلقتھا ۳، وعن ابن سیرین عن یونس بن جبیر عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھم انہ امران یراجعھا قال قلت افحسبت علیہ قال فمہ اوان عجز واستحمق ٤، وعن انس بن سیرین قال قلت فاعتددت بتلك التطلیقۃ التی طلقت وھی حائض، قال مالی لا اعتد بھا وان کنت عجزت ٥واستحمقت بلکہ عبدالحق اشبیلی دراحکام، و بیہقی در سنن از عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما روایت کردند ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال ھی واحدۃ ٦اینست مخالفت تعلیم دیوبندی باحدیث کریم۔

[دایاں کالم: اردو ترجمہ] میں فرمایا تو بتا اگر وہ رجوع کئے بغیر عاجز ہو جائے حماقت کرے یعنی رجوع نہ کرے تو کیا طلاق نہ ہوگی، اور سعید بن جبیر رضی اللہ تعالٰی عنہ عبد اللہ بن عمر سے راوی ہیں کہ میں نے اسے ایک طلاق شمار کیا۔ اور صحیح مسلم میں عبیداللہ نافع سے، اور وہ ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اسی کی مثل روایت کی اور اس کے آخر میں ہے کہ عبیداللہ نے کہا کہ میں نے نافع کو کہا کہ تو نے اس طلاق کو کیا خیال کیا، تو انہوں نے کہا میں نے اسے ایک شمار کیا۔ اور سالم عبداللہ سے انہوں نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہم سے، انہوں نے اپنے والد سے روایت کی ہے اور اس روایت میں ہے کہ عبداللہ نے بیوی کو ایک طلاق دی تو میں نے اس کو طلاق شمار کیا اور اس نے رجوع کرلیا جیسا کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے اسے

فرمایا۔ اور دوسرے الفاظ میں ہے کہ انہوں نے کہا کہ حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا کہ میں نے بیوی سے رجوع کر لیا اور میں نے جو طلاق دی اس کو میں نے ایک طلاق شمار کیا، اور ابن سیرین، یونس بن جبیر سے وہ ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے راوی کہ فرمایا کہ رجوع کرنے کا حکم فرمایا، میں نے پوچھا کہ یہ طلاق شمار ہوگی؟ تو فرمایا اور کیا۔ رجوع سے عاجز ہو جائے یا حماقت کرتے ہوئے رجوع نہ کرے تو کیا طلاق نہ ہوگی،

[حواشی] ١ صحیح مسلم باب تحریم طلاق الحائض قدیمی کتب خانہ کراچی ١ / ٢٧٦ ٢ صحیح مسلم باب تحریم طلاق الحائض قدیمی کتب خانہ کراچی ١ / ٢٧٦ ٣ صحیح مسلم باب تحریم طلاق الحائض قدیمی کتب خانہ کراچی ١ / ٢٧٦ ٤ صحیح مسلم باب تحریم طلاق الحائض قدیمی کتب خانہ کراچی ١ / ٢٧٧ ٥ صحیح مسلم باب تحریم طلاق الحائض قدیمی کتب خانہ کراچی ١ / ٢٧٧ ٦ السنن الکبری باب ماجاء فی طلاق السنة وطلاق البدعة دار صادر بیروت ٧ / ٣٢٢

Fatawa Razawiyya Volume 13

It is narrated from Anas bin Sirin that he said, "Did you count the divorce you gave during menstruation?" He replied, "What reason could there be not to count it? If I were to become helpless or act foolishly, would it not be counted?" While Abdul Haq Ashbili in 'Al-Ahkam' and Bayhaqi in 'As-Sunan' narrated from Abdullah bin Umar (may Allah be pleased with them) that the Prophet (peace and blessings be upon him) himself said, "This is one divorce." This is the opposition of Deobandi teaching to the Hadith.

Twenty-third: Allah Almighty said: "And if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him." (Quran 2:230). In Tafsir Jalalayn it is stated: "If the husband divorces after the two [divorces]." In [Tafsir] al-Jamal it is further added: "Meaning, whether he had taken her back or not." This ruling, that the absolute meaning of the verse is inclusive, is something no scholar from the Ummah has disagreed with. Books of Fiqh also, without disagreement, state that three divorces absolutely establish severe prohibition (hurmat-e-ghalizah), and never in any book is there even a scent of this filthy suspicion that after a return (ruju'), the first divorce is not counted and the husband becomes the owner of all three divorces anew. Thousands upon thousands of statements bear witness to the falsehood of this misguidance. To warn the heedless and teach the ignorant, the existence of this issue in all books is sufficient proof. In 'Kanz al-Daqaiq' and 'Bahr al-Raiq' they say: "The husband said, 'Whenever...'"

Twenty-third: Allah Almighty said: If the husband gives a third divorce, she will not be lawful for him until she marries someone else. Tafsir Jalalayn says if the husband gives a third divorce after two. And Tafsir Jamal adds whether he has returned to her or not. This means this ruling of the third divorce is absolute and covers every situation. No scholar of the Ummah has differed in this. Fiqh books also unanimously state three divorces as the absolute cause for severe prohibition, and in no book is there even a trace of this impure thought that after taking her back, the previous divorce becomes void and the husband owns three full divorces again. Thousands of texts testify to the invalidity of this error. For the warning of the negligent and the education of the ignorant, the circulation of this matter in all books is sufficient

authority. In 'Kanz al-Daqaiq' and 'Bahr al-Raiq' it is said that "the husband said 'whenever...'"

1. Quran 2/230
2. Tafsir Jalalayn, under 'At-Talaqu Marratan', Malik Sirajuddin & Sons, Kashmiri Bazaar, Lahore, p. 35
3. Tafsir al-Jamal (Al-Futuhat al-Ilahiyya), under 'At-Talaqu Marratan', Mustafa al-Babi, Egypt, 1/185

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह १३

अनस बिन सीरीन से रिवायत है कि उन्होंने कहा, "क्या आपने उस तलाक़ को गिना जो आपने हैज़ की हालत में दी थी?" तो उन्होंने मुझसे कहा, "न गिनने की क्या वजह हो सकती है, अगर मैं मजबूर हो जाऊँ या मूर्खता करूँ तो क्या वह नहीं होगी?" जबकि अब्दुल हक़ अश्बीली ने 'अल-अहकाम' में और बैहक़ी ने 'अस-सुनन' में अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने स्वयं फ़रमाया, "यह एक तलाक़ है।" यह देवबंदी शिक्षा का हदीस के विरुद्ध होना है।

तेईसवाँ: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "फिर अगर उसने उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दी, तो वह उसके बाद उसके लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि वह उसके अलावा किसी और पति से निकाह न कर ले।" (क़ुरआन २:२३०)। तफ़सीर जलालैन में है: "यदि पति दो तलाक़ों के बाद तीसरी तलाक़ दे दे।" तफ़सीर अल-जमल में और भी है: "यानी चाहे उसने रुजू (वापसी) कर लिया हो या नहीं।" यह हुक्म कि आयत का आम मफ़हूम हर सूरत को शामिल है, इसमें उम्मत के किसी भी आलिम ने मतभेद नहीं किया है। फ़िक़्ह की किताबें भी बिना किसी मतभेद के तीन तलाक़ों को मुतलक़न हुरमत-ए-ग़लीज़ा (सख़्त मनाही) के लिए साबित मानती हैं, और किसी भी किताब में इस गंदे वसवसे (शंका) की बू तक नहीं है कि रुजू के बाद पहली दी हुई तलाक़ ख़त्म हो जाती है और पति नए सिरे से पूरी तीन तलाक़ों का मालिक हो जाता है। हज़ारों इबारतें इस गुमराही के बातिल (झूठा) होने पर गवाह हैं। ग़ाफ़िल की चेतावनी और जाहिल की शिक्षा के लिए इस मसले का तमाम किताबों में होना काफ़ी सनद है। 'कन्ज़ुद्दक़ायक़' और 'बहरुर्रायक़' में फ़रमाते हैं कि "पति ने कहा जब भी..."

तेईसवाँ: अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर पति तीसरी तलाक़ दे दे, तो वह उसके लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि वह किसी और व्यक्ति से निकाह न कर ले। तफ़सीर जलालैन में है कि अगर पति दो तलाक़ों के बाद तीसरी तलाक़ दे। और तफ़सीर जमल में अधिक है कि चाहे उसने रुजू कर लिया हो या नहीं। मतलब यह कि तीसरी तलाक़ का यह हुक्म मुतलक़ है और हर स्थिति को शामिल करता है। उम्मत के किसी भी आलिम ने इसमें मतभेद नहीं किया है। फ़िक़्ह की किताबें भी बिना किसी मतभेद के तीन तलाक़ों को मुतलक़न हुरमत-ए-ग़लीज़ा के लिए सकारात्मक बयान करती हैं, और कभी किसी किताब में भी इस नापाक वसवसे की आहट नहीं है कि रुजू के बाद पहले दी गई तलाक़ निष्प्रभावी हो जाती है और पति नए सिरे से पूरी तीन तलाक़ों का मालिक हो जाता है, और

हज़ारों इबारतें इस गुमराही के रद्द होने पर गवाह हैं। लापरवाह की चेतावनी और अज्ञानी की शिक्षा के लिए इस मसले का सभी किताबों में मौजूद होना पर्याप्त प्रमाण है। 'कन्ज़ुद्दक़ायक़' और 'बहरुर्रायक़' में फ़रमाते हैं कि "पति ने कहा जब भी"

1. क़ुरआन २३०/२
2. तफ़सीर जलालैन, तहत 'अत-तलाक़ु मर्रतान', मलिक सिराजुद्दीन एंड संस कश्मीरी बाज़ार लाहौर, पृ. ३५
3. तफ़सीर जमल (अल-फ़ुतूहात अल-इलाहिया), तहत 'अत-तलाक़ु मर्रतान', मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१८५

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

انس بن سیرین سے مروی ہے انہوں نے کہا کیا آپ نے وہ طلاق شمار کی جو حالتِ حیض میں آپ نے دی ہے تو انہوں نے مجھے فرمایا شمار نہ کرنے کی وجہ کیا ہو سکتی، اگر میں عاجز ہو جاؤں یا حماقت کروں تو کیا نہ ہو گی، جبکہ عبدالحق اشبیلی نے احکام میں اور بیہقی نے سنن میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے خود فرمایا یہ ایک طلاق ہے، یہ ہے دیوبندی تعلیم کی حدیث کی مخالفت۔

بست و سوم: قال اللہ تعالیٰ: "فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِن بَعْدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ" (القرآن ۲:۲۳۰) در تفسیر جلالین ست "فان طلقها الزوج بعد الثنتين" در جمل فرمود "ای سواء کان قد راجعها ام لا" این حکم کہ اطلاق آیت مراد متناول ست ہیچکس از علمائے امت را در و خلاف نیست کتب فقہ بلا خلاف مطلقاً ثلاث را مثبت حرمتِ غلیظہ گویند و زنہار در ہیچ کتابے بوئے ازیں وسوسہ نجسہ نیست کہ بعد رجعت طلاق اول در حساب نمی ماند و شوہر از سر سہ طلاق را مالک می شود عبارات ہزار در ہزار بر بطلان این ضلالت شاہد ست تنبیہ غافل و تعلیم جاہل را ہمیں مسئلہ دوبارہ در کتب بسند ست کہ در کنز الدقائق و بحرالرائق فرمودند (کلما ولدت فانت طالق فولدت ثلثة في بطون

بست و سوم: اللہ تعالیٰ نے فرمایا اگر خاوند تیسری طلاق دے دے تو وہ اس کے لئے حلال نہ ہوگی تا وقتیکہ وہ کسی اور شخص سے نکاح نہ کرلے۔ تفسیر جلالین میں ہے اگر خاوند دو طلاق کے بعد تیسری طلاق دے۔ اور تفسیر جمل میں مزید ہے کہ رجوع کر چکا ہو یا نہ۔ مطلب یہ کہ تیسری طلاق کا یہ حکم مطلق ہے ہر صورت کو شامل ہے۔ اس میں علمائے امت میں سے کسی نے اختلاف نہیں کیا۔ کتب فقہ میں بھی بلا اختلاف تین طلاقوں کو مطلقاً حرمتِ غلیظہ کے لئے مثبت

بیان کرتی ہیں، اور ہرگز کسی کتاب میں بھی اس پلید وسوسہ کی بوتک نہیں ہے کہ رجوع کے بعد پہلے دی ہوئی طلاق کالعدم ہو جاتی ہے اور خاوند نئے سرے سے پوری تین طلاقوں کا مالک ہو جاتا ہے، اور ہزار ہا عبارات اس گمراہی کے بطلان پر شاہد ہیں۔ غافل کی تنبیہ اور جاہل کی تعلیم کے لئے اس مسئلہ کا تمام کتب میں دائر ہونا کافی سند ہے۔ کنز الدقائق اور بحر الرائق میں فرماتے ہیں کہ "خاوند نے کہا جب بھی

۱ القرآن ۲/۲۳۰ ۲ تفسیر جلالین تحت الطلاق مرتان ملک سراج الدین اینڈ سنز کشمیری بازار لاہور ص ۳۵ ۳ تفسیر جمل (الفتوحات الالھیہ) تحت الطلاق مرتن مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۸۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, page 13.

[Main Text Body] The three (divorces) occur. The second child constitutes a reconciliation (rujū‘) for the first divorce, and she is divorced again by it (the second birth), just like with the third child, for it is a reconciliation for the second, and she is divorced for the third time by it, acting upon the word "kullama" (whenever). In 'Ghurar' and 'Durar', it is stated: If he said to his wife, "Whenever you give birth, you are divorced," and she subsequently gave birth to three children in separate pregnancies, then three divorces will occur, and the second and third children will establish reconciliation. In 'Multaqa al-Abhur' and 'Majma‘ al-Anhur', they said: He told his wife, "Whenever you give birth, you are divorced," so she gave birth to three children in different pregnancies. The second and third children will establish reconciliation (raj'at), and the three divorces will be completed; after the third child, marriage to another person (halala) will be necessary. In 'Wiqayah' and its commentary ('Sharh'), it is stated: Upon saying "whenever you give birth," if three children are born from three different pregnancies, the wife will receive three divorces. The second child will be a reconciliation for the first divorce, just as the third child will be for the second divorce. In 'Ghayat al-Bayan' and 'Dhakhi'rat al-‘Uqba', it was stated: Keep in mind that in the aforementioned case, three divorces will occur, and the lineage (nasab) of all three children will be established from this husband. The waiting period (‘iddat) for the wife after the birth of the third child will be three menstrual cycles.

[Footnotes] 1. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Ruju‘, Mujtabai Press, Delhi, 1/239. 2. Ad-Durar al-Hukkam fi Sharh Ghurar al-Ahkam, Chapter on Ruju‘, Ahmed Kamil Press, Dar Sa‘adat, Beirut, 1/386. 3. Multaqa al-Abhur and Majma‘ al-Anhur, Chapter on Ruju‘, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/743. 4. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Ruju‘, Mujtabai Press, Delhi, 1/162. 5. Dhakhi'rat al-‘Uqba, Chapter on Ruju‘, Naval Kishore Press, Kanpur, 2/213.

फतावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३।

[मुख्य पाठ] तीनों (तलाक़) हो जाएँगी। दूसरा बच्चा पहली तलाक़ से रुजूअ (सुलह) माना जाएगा, और उसके द्वारा उसे दूसरी बार तलाक़ होगी, ठीक वैसे ही जैसे तीसरे बच्चे के साथ, क्योंकि वह दूसरी तलाक़ के लिए रुजूअ है, और 'कुल्लमा' (जब भी) शब्द पर अमल करते हुए उसे तीसरी बार तलाक़ हो जाएगी। 'ग़ुरर' और 'दुरर' में फ़रमाया गया है: यदि पति ने अपनी पत्नी से कहा, "जब भी तुम बच्चा जनोगी, तुम्हें तलाक़ है," और उसने हर बार नए गर्भ से तीन बच्चों को जन्म दिया, तो तीन तलाक़ हो जाएँगे। दूसरा और तीसरा बच्चा रुजूअ साबित करेगा। 'मुल्तक़ल अबहुर' और 'मज्मउल अनहुर' में फ़रमाया गया है: पत्नी से कहा गया, "जब भी तुम बच्चा जनोगी, तुम्हें तलाक़ है।" यदि उसने अलग-अलग प्रसवों में तीन बच्चों को जन्म दिया, तो दूसरा और तीसरा बच्चा रुजूअ (रजअत) साबित करेंगे और तीन तलाक़ें पूरी हो जाएँगी; तीसरे बच्चे के बाद किसी अन्य व्यक्ति से निकाह (हलाला) की आवश्यकता होगी। 'विक़ाया' और उसकी शरह (व्याख्या) में है: "जब भी बच्चा जनोगी" कहने पर, तीन अलग-अलग प्रसवों में तीन बच्चे जनने पर पत्नी को तीन तलाक़ें हो जाएँगी। दूसरा बच्चा पहली तलाक़ से रुजूअ होगा जैसा कि तीसरा दूसरी तलाक़ से रुजूअ साबित होगा। 'ग़ायतुल बयान' और 'ज़ख़ीरतुल उक़्बा' में फ़रमाया गया कि याद रखें, उक्त स्थिति में तीन तलाक़ें हो जाएँगी और तीनों बच्चों का नसब (वंश) इसी पति से साबित होगा। पत्नी पर तीसरे बच्चे के जन्म के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तीन माहवारी होगी।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब अर-रुजूअ, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/239 2. अद-दुररुल हुक्काम फ़ी शरह ग़ुररिल अहकाम, बाब अर-रुजूअ, मतबा अहमद कामिल, दार साअदत बेरुत, 1/386 3. मुल्तक़ल अबहुर व मज्मउल अनहुर, बाब अर-रुजूअ, दार इह्याउत तुरासिल अरबी बेरुत, 1/743 4. शरहुल विक़ाया, बाब अर-रुजूअ, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/162 5. ज़ख़ीरतुल उक़्बा, बाब अर-रुजूअ, मतबा नवल किशोर कानपुर, 2/213

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳۔

[بنیادی متن] تقع الثلاث والولد الثانی رجعة فی الطلاق الاول، وتطلق به ثانیا کالولد الثالث، فانه رجعة فی الثانی وتطلق به ثلثا عملا بکلما، ہو جائیں گی ، یوں کہ دوسرا بچہ پہلی طلاق سے اور تیسرا بچہ دوسری طلاق سے رجوع قرار پائے گا اور تین طلاقیں کلمہ کہنے کی وجہ سے ہو جائیں گی۔ در غرر و درر فرمود لوقال (کلما) ولدت فانت طالق فولدت ثلثة ببطون یقع طلقات (ثلاث و) الولد (الثانی والثالث رجعة 2 غرر اور درر میں فرمایا کہ جب بیوی کو کہا کہ تو جب بھی بچہ جنے تجھے طلاق ہے، تو اس نے ہر بار نئے حمل سے تین بچے جنے تو تین طلاقیں ہو جائیں گی ، اور دوسرا اور تیسرا بچہ رجوع ثابت کر دے گا ، ودر ملتقی الابحر و مجمع الانہر فرمودند (کلما) ولدت فانت طالق فولدت ثلثة فی بطون فالثاني والثالث رجعة وتتم الطلقات (الثلث بولادة الثالث) 3 ملتقی الابحر اور مجمع الانہر میں فرمایا، بیوی کو کہا، جب بھی تو بچہ جنے تو تجھے طلاق ہے تو اس نے مختلف حملوں میں تین بچے جنے تو دوسرا اور تیسرا بچہ رجعت ثابت کریں گے اور تین طلاقیں مکمل ہو جائیں گی، فتحتاج الی زوج آخر تیسرے بچے کے بعد دوسرے شخص سے نکاح کی ضرورت ہوگی۔ در "وقایہ " و شرح اش فرمودند فی کلما ولدت فولدت ثلثة ببطون تقع الثلث والولد الثانی رجعة کالثالث 4 "وقایہ" اور اس کی شرح میں ہے: جب بھی بچہ جنے کہنے پر، تین مختلف حملوں میں تین بچے جننے پر بیوی کو تین طلاقیں ہو جائیں گی اور دوسرا بچہ پہلی طلاق سے جیسا کہ تیسرا دوسری طلاق سے رجوع ثابت ہوگا۔ در "غایة البیان" و "ذخیرة العقبی" فرمودند اعلم انها تطلق ثلثا ویثبت نسب الاولاد من الزوج وعلیها العدة بثلث حیض بعد ولادة الولد الثالث 5 "غایۃ البیان" اور "ذخیرۃ العقبٰی" میں فرمایا کہ یاد رکھو مذکورہ صورت میں تین طلاقیں ہو جائیں گی

اور تینوں بچوں کے نسب اس خاوند سے ثابت ہوں گے اور بیوی پر تیسرے بچے کی ولادت کے بعد عدت تین حیض ہوگی۔ در "اصلاح" و "ایضاح"

[حواشی] 1 درمختار باب الرجعة مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۳۹ 2 الدرالحکام في شرح غررالاحکام باب الرجعة مطبعه احمد کامل الکائنة دار سعادت بیروت ۱ / ۳۸۶ 3 ملتقی الابحر و مجمع الانهر باب الرجعة دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۷۴۳ 4 شرح الوقایه باب الرجعة مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۶۲ 5 ذخیرة العقبی باب الرجعة مطبع نولکشور کانپور ۲ / ۲۱۳

Fatawa-e-Razvia, Volume 13, Page 13

[Right Column] It is stated in 'Islah wa Idah' that if one says, "Whenever you give birth to a child, you are divorced," and three children are born from three separate pregnancies one after another, then three divorces will take place. The second child will establish revocation (ruju'), just as the third child will establish revocation from the second divorce. The great Imam Sadr al-Shaheed, in his commentary on Imam Muhammad's (may Allah be pleased with him) 'Jami' al-Saghir', stated that in the aforementioned case, when the third child was born, like the second child, revocation would be established through intercourse after the divorce. With the birth of the third child, the final divorce will occur, after which revocation will no longer be possible because the three divorces are complete. In 'Khizanat al-Muftin', under the symbol for 'Ikhtiyar Sharh Mukhtar', it is stated that in the mentioned case, three divorces will occur, and the second child will establish revocation from the first divorce, just as the third child establishes revocation from the second. This is the opposition of Deobandi teaching to the leaders (Imams) of the Ummah. There is no power or might except with Allah, the Most High, the Magnificent.

Twenty-fourth: It is due to his extreme ignorance and deviation that he says: "Just as after a final divorce (talaq-e-bain), if one remarries and then divorces again, the first two divorces become void, and if a divorce is given after the new marriage, it will be counted, but the divorces given before the new marriage will not be counted; similarly, after the first revocation (ruju'), the first divorce becomes void." Bravo to him! What wonderful sounds coming from the orifices of his mouth, for the mouth is full of sound and the mind is empty of meaning.

[Left Column - Transcription of original Arabic/Persian/Urdu mix] فرمودند کلما ولدت فولدات ثلثة ببطون يقع ثلث والولد الثاني رجعة كالثالث امام اجل صدر شہید در شرح جامع صغیر امام محمد رضی اللہ تعالی عنہ فرمود لما ولدت الولد الثالث صار مراجعاً ایضاً بالوطی بعد الطلاق ووقع آخر بالولادة ولارجعة بعد ذلك لانه تم الثلاث در خزانة المفتين برمز اختيار شرح مختار فرمود يقع ثلاث والولد الثاني رجعة كالثالث اینست مخالفت تعلیم دیوبندی با ائمہ امت ولاحول ولاقوة الا باللہ العلی العظیم۔ بست و چہارم: از غایت غباوت و غوایت اوست قول او چنانکہ بعد طلاق بائن اگر تجدید نکاح کند بعدہ ایضا طلاق دهد طلاقين اولين باطل شوند و بعد تجدید نکاح اگر طلاق دهد آن در حساب کردہ آید نہ طلاق قبل تجدید نکاح ہمچنیں بعد رجعت اول طلاق باطل است آفریں باوچہ خوش اصوات خارجہ از سوراخ فم اوست کہ دهن از آواز پر و ذہن از معنی۔

[Footnotes] 1. Islah wa Idah 2. Footnote on al-Jami' al-Saghir, with reference to Sadr al-Shaheed, Chapter of Revocation, Maktaba al-Yousufi, Lucknow, p. 59 3. Khizanat al-Muftin, Chapter on Revocation, Manuscript 1/136

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[दायाँ कॉलम] 'इस्लाह व ईज़ाह' में फ़रमाया कि जब भी तू बच्चा जने तो तुझे तलाक़, कहने पर जब तीन बच्चे एक के बाद एक अलग गर्भ से पैदा हो जाएँ तो तीन तलाक़ें वाक़े हो जाएँगी और दूसरा बच्चा रुजूअ (तलाक़ की वापसी) साबित होगा जैसा कि तीसरा बच्चा दूसरी तलाक़ से रुजूअ साबित होगा। इमाम अजल सद्र शहीद ने इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की 'जामे सगीर' की शरह (व्याख्या) में फ़रमाया कि मज़कूर (उल्लिखित) सूरत में जब तीसरा बच्चा पैदा हुआ तो दूसरे बच्चे की तरह यह भी तलाक़ के बाद वती (सहवास) से रुजूअ साबित होगा, और तीसरे बच्चे की पैदाइश से आख़िरी तलाक़ हो जाएगी जिसके बाद रुजूअ नहीं हो सकेगा क्योंकि तीन तलाक़ें मुकम्मल हो गईं। 'ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन' में 'इख़्तियार शरह मुख़्तार' के प्रतीक के साथ बयान किया गया कि मज़कूर सूरत में तीन तलाक़ें हो जाएँगी और दूसरा बच्चा पहली तलाक़ से उसी तरह रुजूअ साबित होगा जैसे तीसरा दूसरी तलाक़ से। यह है देवबंदी तालीम, जो उम्मत के इमामों के ख़िलाफ़ है। 'व ला हौला व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम' (अल्लाह के सिवा कोई शक्ति नहीं)।

चौबीसवाँ: उसकी अत्यधिक मूर्खता और गुमराह करने वाली बात यह है कि "जिस तरह तलाक़-ए-बाइन (अंतिम तलाक़) के बाद दोबारा निकाह करने पर अगर फिर से तलाक़ दी जाए तो पहली दो तलाक़ें निष्प्रभावी हो जाती हैं और दोबारा निकाह के बाद दी गई तलाक़ ही गिनी जाएगी, पहले वाली नहीं; इसी तरह पहले रुजूअ के बाद पहली तलाक़ निष्प्रभावी हो जाती है।" धन्य है वह! उसके मुँह के छिद्रों से क्या ही आवाज़ें निकल रही हैं, मुँह आवाज़ से भरा है और दिमाग़ अर्थ से ख़ाली।

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. इस्साह व ईज़ाह 2. हाशिया अलल जामे-अस-सगीर, सद्र-अश-शहीद के हवाले से, बाब अर-रुजअ, मक्तबा अल-यूसुफ़ी, लखनऊ, पृ. 59 3. ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन, फ़स्ल फ़ी अर-रुजअ, हस्तलिपि 1/136

पृष्ठ 195/688

[دایاں کالم] اصلاح و ایضاح میں فرمایا کہ جب بھی تو بچہ جنے تو تجھے طلاق، کہنے پر جب تین بچے یکے بعد دیگرے حمل سے پیدا ہوجائیں تو تین طلاقیں واقع ہو جائیں گی اور دوسرا بچہ رجوع ثابت ہوگا جیسا کہ تیسرا بچہ دوسری طلاق سے رجوع ثابت ہوگا۔ امام اجل صدر شہید نے امام محمد کی جامع صغیر کی شرح میں فرمایا کہ مذکورہ صورت میں جب تیسرا بچہ جنا تو دوسرے بچے کی طرح یہ بھی طلاق سے وطی کے بعد رجوع ثابت ہوگا، اور تیسرے بچے کی ولادت سے آخری طلاق ہو جائیگی جس کے بعد رجوع نہ ہوسکے گا کیونکہ تین طلاقیں مکمل ہوگئیں۔ خزانۃ المفتین میں اختیار شرح مختار کی علامت سے بیان فرمایا کہ مذکورہ صورت میں تین طلاقیں ہوجائیں گی اور دوسرا بچہ پہلی طلاق سے جس طرح تیسرا دوسری طلاق سے رجعت ثابت ہوگا۔ یہ ہے دیوبندی تعلیم، ائمہ امت کے مخالف۔ ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ بست و چہارم: اس کی انتہائی غباوت اور گمراہی اس کا یہ کہنا ہے کہ "جس طرح طلاق بائن کے بعد دوبارہ نکاح کرے تو اس کے بعد بھی طلاق دے دے تو پہلی دو طلاقیں کالعدم ہوجاتی ہیں اور دوبارہ نکاح کے بعد اگر طلاق دے تو وہ حساب میں آئے گی اور دوبارہ نکاح سے پہلے دی ہوئی شمار نہ ہوگی اسی طرح رجوع کے بعد پہلی طلاق کالعدم ہو جاتی ہے "۔

[بایاں کالم] فرمودند کلما ولدت فولدات ثلثۃ ببطون یقع ثلث والولد الثاني رجعۃ کالثالث امام اجل صدر شہید در شرح جامع صغیر امام محمد رضی اللہ تعالی عنہ فرمود لما ولدت الولد الثالث صار مراجعاً ایضاً بالوطی بعد الطلاق ووقع آخر بالولادۃ ولارجعۃ بعد ذلك لانه تم الثلاث در خزانۃ المفتین برمز اختیار شرح مختار فرمود یقع ثلاث والولد الثاني رجعۃ کالثالث اینست مخالفت تعلیم دیوبندی با ائمہ امت ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ بست و چہارم: از غایت غباوت و غوایت اوست قول او

چنانکہ بعد طلاق بائن اگر تجدید نکاح کند بعدہ ایضا طلاق دھد طلاقین اولین باطل شوند و بعد تجدید نکاح اگر طلاق دھد آن در حساب کردہ آید نہ طلاق قبل تجدید نکاح ہمچنیں بعد رجعت اول طلاق باطل است آفریں باوچہ خوش اصوات خارجہ از سوراخ فم اوست کہ دھن از آواز پر و ذہن از معنی۔

[حواشی] ۱ اصلاح و ایضاح ۲ حاشیہ علی الجامع الصغیر بحوالہ صدر الشہید باب الرجعۃ مکتبۃ الیوسفی لکھنؤ ص ۵۹ ۳ خزانۃ المفتین فصل فی الرجعۃ قلمی نسخہ ۱/۱۳۶

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 196

Bravo to him for the sounds coming out of his mouth; his mouth is full of noise, but his mind is devoid of understanding. What can this poor soul do? He has not yet truly consummated his relationship with the "new bride" of Deobandism in terms of its purpose and meaning. Which two previous divorces are those that become void after a remarriage following a Ba'in (irretrievable) divorce? When, according to you, a divorce prior to remarriage is not even counted, how can its nullity depend on a Ba'in divorce after remarriage? And if someone has heard that a Ba'in divorce cannot follow another Ba'in divorce, this is not a universal rule. Then how did the first divorce become the reason for the nullity to apply? Furthermore, if its basis is on information/report, what connection does it have with taking back (ruju') after a Revocable (Raj'i) divorce? Moreover, even if it were so, only one should be nullified, not both. Regardless of all these reasons, what is the common factor between a Ba'in divorce after taking back a Revocable one and a Ba'in divorce after remarriage following a previous Ba'in divorce? It is nothing but the lack of intellect, misunderstanding, and Deobandi teaching characteristic of Najdism.

Twenty-fifth: Regarding his citation of the issue in 'Durr al-Mukhtar' about giving a revocable divorce and then making it Ba'in or triple, along with the text from 'Radd al-Muhtar' and 'Tahtawi' stating that after it, the 'action of divorce' becomes void—taking this as proof shows that for these intoxicated and senseless people, who cannot distinguish between the nullification of a divorce and the nullification of an action, what complaint can be made? This suits them. But every rational Muslim knows that through 'ruju' (taking back), the action of the divorce is removed, not that the divorce that was given becomes as if it were never given.

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Kina'at, Mujtabai Press Delhi, 1/225. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Kina'at, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/468.

Page 196 of 688

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 196

इस पर शाबाश कि मुँह के सुराख से क्या अच्छी आवाज़ निकाल रहा है, इसका मुँह आवाज़ से भरा हुआ है और ज़हन समझ से खाली है। यह बेचारा क्या करे कि अभी देवबन्दियत की नई-नवेली दुल्हन से मतलब और मायने में मेल-मिलाप नहीं हुआ है। वे कौन सी दो तलाकें पहले हैं जो तलाक-ए-बाइना के बाद दोबारा निकाह से निष्प्रभावी (काल्अदम) हो जाती हैं? जब आपके यहाँ दोबारा निकाह से पहले वाली तलाक गिनती में ही नहीं है, तो उसका निष्प्रभावी होना दोबारा निकाह से तलाक-ए-बाइना पर कैसे निर्भर होगा? और अगर किसी से यह सुन लिया है कि बाइना के बाद बाइना लागू नहीं हो सकती, तो यह कोई सामान्य नियम नहीं है। फिर पहली तलाक को शून्य होने का कारण कैसे माना गया? इसके अलावा, यदि इसका आधार जानकारी (अखबार) पर है, तो रजई तलाक के बाद रुजू (वापसी) से इसका क्या संबंध है? फिर अगर हो भी, तो एक का शून्य होना चाहिए न कि दोनों का। इन तमाम कारणों के बावजूद, रजई के बाद और बाइना तलाक के बाद दोबारा रुजू के बाद बाइना में कौन सी समान बात है? इसके सिवा कुछ नहीं कि यह नजदियत की कुबुद्धि, गलतफहमी और देवबंदी शिक्षा है।

पच्चीसवाँ: 'दुर्र-ए-मुख्तार' के मसले से उसका प्रमाण देना, कि रजई तलाक देकर उसे बाइना या तीन करना, और उसके साथ 'रद्द-उल-मुहतार' और 'तहतावी' की इबारत कि इसके बाद तलाक का 'अमल' (कार्य) शून्य हो जाता है—इसे दलील बनाना उन मदहोश और बेहोश लोगों का काम है जो तलाक के शून्य होने और अमल के शून्य होने में फर्क नहीं कर सकते। उनसे क्या शिकायत की जाए? यह उन्हीं को शोभा देता है। लेकिन हर बुद्धिमान मुसलमान जानता है कि रुजू से तलाक का अमल खत्म हो जाता है, न कि दी गई तलाक ऐसी हो जाती है जैसे कि कभी दी ही न गई हो।

फुटनोट: 1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/225। 2. रद्द-उल-मुहतार, बाब अल-किनायात, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/468।

تہی، وبیچارہ چہ کند کہ ہنوز ازیں نو عروساں منصہ دیوبندیت را | اس پر آفرین کہ منہ کے سوراخ سے کیا اچھی آواز نکال رہا با مطلب و معنی جفت نکردہ اند، کدام دو طلاق پیشین ست کہ | ہے، اس کا منہ آواز سے پر اور ذہن فہم سے خالی ہے، یہ بیچارہ بطلان بائن بعد تجدید نکاح باطل می شود و چوں طلاق قبل | کیا کرے کہ ابھی دیوبندیت کی نئی نویلی دلہن سے مطلب تجدید نکاح نزد تو خود در حساب نیست بطلانش بر طلاق بائن | و معنی میں جفتی نہیں ہے، کون سی دو طلاقیں پہلے ہیں بعد تجدید چہ موقوف باشد واگر از کسے شنیدہ است کہ بائن بہ | جو طلاق بائنہ کے بعد دوبارہ نکاح سے کالعدم ہو جاتی بائن لاحق نشود ایں خود عام نیست باز عدم لحوق بطلان اول را | ہیں۔ جب تیرے ہاں دوبارہ نکاح سے قبل والی طلاق کالعدم چرا موجب شود باز بنائش حمل بر اخبار ست در رجعی بعد | ہو جاتی ہے، تو اس کا کالعدم ہونا دوبارہ نکاح سے طلاق بائنہ پر رجعت اور اپہ کار است باز اگر باشد بطلان یکے باشند نہ ہر دو | کیونکر موقوف ہوگا اور اگر کسی سے یہ سن لیا ہے کہ بائنہ کے و بقطع نظر از جملہ وجوہ امر جامع میان رجعت بعد رجعی و طلاق | بعد بائنہ لاحق نہیں ہو سکتی تو یہ عام قاعدہ نہیں ہے تو پھر پہلی بائن بعد تجدید نکاح بعد بائن چیست مگر آنکہ بد عقلی و کج فہمی | طلاق کو بطلان کے لاحق ہونے کی وجہ کیسے ہوا، پھر اس کا مبنیٰ لائق نجدیت و تعلیم دیوبندی است۔ | اخبار ہونے پر ہے تو رجعی طلاق کے بعد رجوع سے کیا تعلق بیست و پنجم: از استنادش بمسئلہ در مختار طلقہا رجعیا فجعلہ | ہے، پھر اگر ہو بھی تو ایک کا بطلان ہونا چاہئے نہ کہ دو کا، اور ان بائنا او ثلاثا[1] مع عبارت ردالمحتار و طحطاوی لانہ | تمام وجوہ سے قطع نظر، رجعی کے بعد اور بائنہ طلاق کے بعد دوبارہ بعدھا یبطل عمل الطلاق[2] چہ جائے شکوے کہ بہچومدہو | رجوع کے بعد بائنہ میں کون سا جامع امر

ہے، اس کے سوا کچھ نہیں شاں و بیہوشاں در بطلان طلاق و بطلان عمل اگر فرق نکنند | کہ یہ نجدیت کی بد عقلی اور کج فہمی اور دیوبندی تعلیم ہے۔ سزاے ایشاں فاما ہر مسلم عاقل را مسلم و معقول ست کہ | بیست و پنجم: در مختار کے مسئلہ، کہ رجعی طلاق دے کر اس کو بائنہ برجعت عمل طلاق مرتفع می شود نہ آنکہ طلاق کردہ ناکردہ | یا تین کرنا، اس کے ساتھ ردالمحتار اور طحطاوی کی عبارت کہ اس گرددواز | لئے کہ اس کے بعد طلاق کا عمل باطل ہو جاتا ہے، کہ دلیل بنانا، ان | مدہوش اور بیہوش لوگوں کا جو بطلان طلاق اور بطلان عمل میں | فرق نہ کر سکیں، کیا شکوہ کیا جایئے، یہ انہی کو لائق ہے، لیکن ہر | عاقل مسلمان جانتا ہے کہ رجوع سے طلاق کا

حواشی: 1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۵/۱ 2 رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۴۶۸/۲

Page 13 Fatawa Razawiyya Volume 13

[Inside Box - Right side (Persian/Urdu mix)]: Page content concludes. We have explained the issue with ultimate clarity; there is no need for further lengthiness. In summary, the ruling is the same: Ahmed Ali's wife has been given three divorces, and without 'halala', she will not become lawful by the 'halala' of Deobandi mujtahids. Rather, those who introduced this devious innovation of nullifying previous divorces through a subsequent 'ruju' (revocation) into the religious explanation have, in truth, spoken to declare a definitively forbidden ('haram qati') thing as lawful. According to the jurisprudential ruling, this is absolute disbelief ('kufr-e-hatmi'). Ahmed Ali's wife did not become lawful by their decree, but let them fear that their own wives have become forbidden to them according to jurisprudence. People like them should not make things lawful for the sake of worldly gains. And with Allah is the guidance, and Allah Almighty knows best.

[Inside Box - Left side (Urdu)]: The action ends, not the divorce. The divorce does not end or become void. We have explained the issue in detail; there is no need for further lengthiness. In summary, the crux of the matter is that the ruling for the issue under discussion is that Ahmed Ali's wife has been given three divorces. Despite the Deobandi mujtahids declaring her lawful, she will not be lawful without halala. Rather, saying that previous divorces become void due to a later revocation is a new innovation in their religion and Sharia. The truth is that what they have called lawful is definitively forbidden ('haram qati'), which, according to the jurisprudential ruling, is definitive disbelief ('qati kufr'). Ahmed Ali's wife will not become lawful by their declaration. Instead, they should worry that according to the jurisprudential ruling, their own wives have become forbidden to them. They all should renew their Islam and renew their marriage (nikah), and they should not make lawful what Allah Almighty has forbidden for the sake of worldly fuel. And with Allah is the guidance, and Allah Almighty knows best. (t) (The treatise ends)

[Main Body Text]: Issue 11: From Jamjodhpur, Kathiawar region, Ahl-e-Sunnat-o-Jamaat, sent by Adam Ahmed Sahib, 11 Shaban 1321 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say regarding this issue: In a small settlement, a scholar had been delivering sermons (wa'z) for ten to fifteen years. A few people always used to backbite and complain about this scholar. Coincidentally, one day, a company of immoral performers (natak/drama troupe) came, and a few Muslims from that small settlement entered into that spectacle. Meanwhile, a sermon gathering was organized at the house of a Sayyid. A few performers from the

troupe also participated in this gathering. When the preacher's eyes fell upon these immoral people, he condemned them severely in his sermon. At dawn, the immoral and hypocritical ones made a commotion and talked about causing trouble and riots. One person, on their behalf, said to him: "Regarding the sermon you gave last night, certainly some men will riot against you. You should only preach about prayer and fasting, otherwise, there will always be riots. Strife will never cease from this work." Then the preacher got angry and, in a state of sheer rage, uttered these words: "Whoever preaches in this settlement, his wife is divorced. Whoever in this settlement..."

पृष्ठ १३ फ़तावा रज़विया जिल्द १३

[बॉक्स के अंदर - दायां हिस्सा (फारसी/उर्दू मिश्रण)]: पृष्ठ की सामग्री समाप्त होती है। हमने मामले को अत्यधिक स्पष्टता के साथ समझा दिया है; आगे विस्तार की आवश्यकता नहीं है। संक्षेप में, निर्णय वही है कि अहमद अली की पत्नी को तीन तलाक हो गए हैं, और देवबंदी मुजतहिदों के'हलाला' के बिना वह वैध (हलाल) नहीं होगी। बल्कि, जिन्होंने बाद के'रुजू' (पुनर्ग्रहण) के माध्यम से पिछले तलाकों को अमान्य करने के इस भ्रामक नवाचार (बिदअत) को धार्मिक व्याख्या में पेश किया है, उन्होंने वास्तव में एक निश्चित रूप से निषिद्ध ('हराम क़तई') चीज़ को वैध घोषित करने के लिए अपना मुंह खोला है। न्यायशास्त्रीय निर्णय के अनुसार, यह पूर्ण कुफ़्र (ईश्वर-निंदा) है। अहमद अली की पत्नी उनके फरमान से वैध नहीं हुई, बल्कि उन्हें डरना चाहिए कि उनकी अपनी पत्नियाँ न्यायशास्त्र के अनुसार उन पर हराम हो गई हैं। उनके जैसे लोगों को सांसारिक लाभ के लिए चीजों को वैध नहीं बनाना चाहिए। और अल्लाह ही मार्गदर्शन देने वाला है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[बॉक्स के अंदर - बायां हिस्सा (उर्दू)]: कार्य समाप्त होता है, तलाक नहीं। तलाक समाप्त या अमान्य नहीं होता है। हमने इस मुद्दे को विस्तार से स्पष्ट कर दिया है; इससे अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं है। संक्षेप में, बात का सार यह है कि चर्चा के तहत मुद्दे का निर्णय यह है कि अहमद अली की पत्नी को तीन तलाक हो चुके हैं। देवबंदी मुजतहिदों के वैध घोषित करने के बावजूद, वह बिना हलाला के वैध नहीं होगी। बल्कि, यह कहना कि बाद के पुनरुद्धार के कारण पिछले तलाक अमान्य हो जाते हैं, उनके धर्म और शरीयत में एक नया नवाचार है। सच तो यह है कि जिसे उन्होंने वैध कहा है वह निश्चित रूप से निषिद्ध ('हराम क़तई') है, जो न्यायशास्त्रीय निर्णय के अनुसार निश्चित कुफ़्र है। अहमद अली की पत्नी उनके घोषित करने से वैध नहीं होगी। इसके बजाय, उन्हें इस बात की चिंता करनी चाहिए कि न्यायशास्त्रीय निर्णय के अनुसार उनकी अपनी पत्नियाँ उन पर हराम हो चुकी हैं। उन सभी को अपने इस्लाम का नवीनीकरण करना चाहिए और अपने निकाह (विवाह) का नवीनीकरण करना चाहिए, और उन्हें दुनिया के ईंधन की खातिर अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा हराम की गई चीज़ों को वैध नहीं बनाना चाहिए। और अल्लाह ही मार्गदर्शन देने वाला है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त) (ग्रंथ समाप्त हुआ)

[मुख्य सामग्री]: मसला ११: जामजोधपुर, काठियावाड़ क्षेत्र से, अहले सुन्नत व जमात, आदम अहमद साहब द्वारा प्रेषित, ११ शाबान १३२१ हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या

फरमाते हैं: एक छोटी सी बस्ती में एक आलिम दस-पंद्रह साल से उपदेश (वाज़) दे रहे थे। कुछ लोग हमेशा उस आलिम की चुगली और शिकायत किया करते थे। इत्तेफाक से, एक दिन नाटक करने वालों की एक फासिक़ (अधर्मी) मंडली आई और उस छोटी बस्ती के कुछ मुसलमान उस तमाशे में शामिल हो गए। इसी बीच, एक सैयद के घर पर उपदेश की मजलिस आयोजित की गई। नाटक मंडली के कुछ लोग भी इस मजलिस में शामिल थे। जब उपदेशक की नज़र इन फासिक़ों पर पड़ी, तो उन्होंने अपने उपदेश में उनकी बहुत लानत-मलामत की। फज्र के समय, फासिक़ों और मुनाफिकों ने शोर मचाया और दंगा-फसाद करने की बातें कीं। एक व्यक्ति ने उनकी ओर से उनसे कहा कि आपने कल रात जो वाज़ किया, उससे निश्चित रूप से कुछ लोग आपसे दंगा करेंगे। आपको केवल नमाज़ और रोज़े का ही वाज़ करना चाहिए, अन्यथा हमेशा फसाद होता रहेगा। इस काम से कभी दंगा खत्म नहीं होगा। तब उपदेशक को गुस्सा आ गया और उन्होंने गुस्से की हालत में अपने मुँह से ये शब्द निकाले कि जो कोई इस बस्ती में वाज़ करे, उसकी बीवी पर तलाक है, जो कोई इस बस्ती में...

पृष्ठ १९७/६८८

[باکس کے اندر - دائیں طرف]: صفحہ واقع ارتفاع پذیرد۔ مسئلہ را بنہایت ایضاح افتضاح دادہ ایم بیش ازیں اطالت در کار نیست۔ بالجملہ حکم ہمان است کہ زن احمد علی سہ طلاقہ شد وبے تحلیل بہ تحلیل مجتہد ان دیوبندی حلال نشود بلکہ ایناں کہ بدعت زانغہ بطلان طلاقہائے پیشین بر جعت پسیں در شرح ودین نہا دند، الحق کہ بتحلیل حرام قطعی لب کشادند او بر حکم فقہی کفرے ست حتمی۔ زن احمد علی بتحلیل ایناں حلال نشود مگر ترسند کہ ہما زناں ایناں بحکم فقہ برایناں حرام شدند ہمچو کساں را باید کہ برائے حطام دنیا حلال نسازند و باللہ التوفیق، واللہ تعالیٰ اعلم۔

[باکس کے اندر - بائیں طرف]: عمل ختم ہو جاتا ہے نہ کہ طلاق ختم ہو جاتی ہے اور کالعدم ہو جاتی ہے۔ ہم نے مسئلہ کو مفصل طور پر واضح کر دیا ہے اس سے زائد طوالت کی ضرورت نہیں ہے۔ بالجملہ حاصل کلام یہ ہے کہ زیر بحث مسئلہ کا حکم یہ ہے کہ احمد علی کی بیوی کو تین طلاقیں ہو چکی ہیں، دیوبندی مجتہدین کے حلال کرنیکے باوجود بغیر حلالہ کے حلال نہ ہوگی، بلکہ یہ کہ ،بعد والی رجعت سے پہلی طلاقیں کالعدم ہو جاتی ہیں، یہ ان کی دین اور شریعت میں نئی بدعت ہے، حق یہ ہے کہ حرام قطعی کہ انہوں نے حلال کہہ دیا ہے جو کہ فقہی حکم کے مطابق قطعی کفر ہے، احمد علی کی بیوی ان کے حلال کرنے سے حلال نہ ہوگی مگر ان کو یہ فکر کرنی چاہئے کہ فقہی حکم کے مطابق ان کی بیویاں ان پر حرام ہو چکی ہیں، ان سب کو چاہئے کہ وہ خود تجدید اسلام اور اتجدید نکاح کریں، اور اللہ تعالیٰ کے حرام کردہ کو دنیاوی ایندھن کی خاطر حلال نہ کریں، وباللہ التوفیق، واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت) (رسالہ ختم ہوا)

[عبارتِ ذیل]: مسئلہ ۱۱: از جام جودھ ملک کا ٹھیاواڑ جماعت اہلسنت و جماعت مرسلہ آدم احمد صاحب ۱۱ شعبان ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلے میں کہ ایک

چھوٹی سی بستی میں ایک عالم مدت دس پندرہ سال سے وعظ بیان کرتا تھا ہمیشہ چند لوگ اس عالم کی گلہ و غیبت کیا کرتے تھے اتفاقاً ایک روز نٹک والے لوگوں کی فاسق کمپنی آئی اور چند مسلمان اس چھوٹی بستی کے اس تماشے میں داخل ہوئے اور اس اثناء میں ایک سید کے مکان پر وعظ کی محفل منعقد ہوئی چند لوگ نٹک کے تماشا گر بھی اس محفل میں شریک تھے، واعظ صاحب کی نظر جب ان فاسقوں پر پڑی تو وعظ میں بہت لعن طعن کئے، فجر کو فاسقوں منافقوں نے غل مچایا، فساد ودنگا کرنے کی باتیں کیں، ایک شخص نے ان لوگوں کی طرف سے ان کو کہا کہ تم نے رات کو جو وعظ کیا سو چند آدمی آپ سے البتہ فساد کریں گے اور آپ کو فقط نماز روزہ کا وعظ کرنا چاہئے ورنہ ہمیشہ فساد ہوا کرے گا، کبھی دنگا اس کام سے نہ مٹے گا، پس واعظ کو غصہ آیا تو یہ لفظ عین غضب میں منہ سے نکالا کہ جو کوئی اس بستی میں وعظ کرے اس کی جورو پر طلاق ہے جو کوئی اس بستی میں

Fatawa Razvia, Volume 13, Page 13

Question: [The preacher] intended to preach, but the words 'three' or 'two' did not come out of his mouth, nor did he intend three. All the Muslims gathered and humbly asked the preacher to preach. So, the preacher said, "If I preach, my wife is divorced; I will never preach." Now, do these words cause divorce or not? And what kind of divorce - irrevocable (Bain) or what? Should he preach or not? And when he preaches, what should he do if an irrevocable divorce occurs? And if types of divorces occur through the oath, write their summary as well. All Muslims of Ahl-e-Sunnat-o-Jama'at are waiting for your answer. If there was an intention of three in these words, would three take place or not? Peace.

Answer: A preacher should not swear by divorce, as it is religiously disliked, so much so that it is mentioned in the Hadith: "No believer swears by divorce, and no one is asked to take an oath by it except a hypocrite." - Narrated by Ibn Asakir from Anas (may Allah be pleased with him). (T)

Now that he has already spoken [the oath], one revocable (Raj'i) divorce will occur on the woman upon preaching there. By taking her back (Ruju') within the waiting period (Iddah), she will remain his wife as before. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar':

"A group was talking in a gathering, so one of them said, 'Whoever speaks after this, his wife is divorced.' Then the one who took the oath himself spoke, so his wife became divorced, because the word 'whoever' (man) is general, so it also includes the person who took the oath as he did not exclude himself, therefore his oath was broken." (T)

Yes, if there was an intention of three divorces in this statement, then three will occur, and the woman cannot return to the marriage without Halala. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar':

---

1. Kanz-ul-Ummal, with reference to Ibn Asakir from Anas, Hadith 46340, Kitab-ul-Yamin from the section of sayings, Mu'assasah ar-Risalah Beirut 16/289.
2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on divorce of an un-consummated marriage, Mujtabai Press Delhi 1/224.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

प्रश्न: [उपदेशक ने] उपदेश देने का इरादा किया था, लेकिन मुँह से 'तीन' या 'दो' शब्द नहीं निकले और न ही तीन का इरादा था। सभी मुसलमानों ने मिलकर उपदेशक से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि आप उपदेश दें। तो उपदेशक ने कहा, "अगर मैं उपदेश दूँ, तो मेरी पत्नी को तलाक़ है; मैं कभी उपदेश नहीं दूँगा।" अब, क्या इन शब्दों से तलाक़ होता है या नहीं? और कौन सा तलाक़—बैन (अपरिवर्तनीय) या क्या? क्या उसे उपदेश देना चाहिए या नहीं? और जब वह उपदेश देता है, तो बैन तलाक़ होने पर उसे क्या करना चाहिए? और यदि शपथ के कारण विभिन्न प्रकार के तलाक़ होते हैं, तो उनका सारांश भी लिखें। सुन्नत-ओ-जमाअत के सभी मुसलमान आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि इन शब्दों में तीन तलाक़ की नीयत थी, तो क्या तीन होंगे या नहीं? वस्सलाम।

उत्तर: एक उपदेशक को तलाक़ की शपथ नहीं लेनी चाहिए क्योंकि यह धार्मिक रूप से नापसंद है, यहाँ तक कि हदीस में आया है: "कोई मोमिन तलाक़ की शपथ नहीं लेता, और न ही मुनाफ़िक (पाखंडी) के अलावा किसी से इसकी शपथ ली जाती है।" इसे इब्न असाकिर ने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (त)

अब जबकि वह शपथ ले चुका है, वहाँ उपदेश देने पर उसकी पत्नी पर एक रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक़ हो जाएगा। इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के भीतर रुजू (वापसी) कर लेने से वह पहले की तरह उसकी पत्नी बनी रहेगी। 'दुर्र-उल-मुख़्तार' में है:

"एक समूह एक मजलिस में बातें कर रहा था, तो उनमें से एक ने कहा, 'इसके बाद जो भी बात करे उसकी पत्नी को तलाक़', फिर शपथ लेने वाले ने खुद ही बात कर ली, तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो गया, क्योंकि 'जो भी' (मन) शब्द आम (सामान्य) है, इसलिए इसमें शपथ लेने वाला भी शामिल है क्योंकि उसने खुद को बाहर नहीं किया था, इसलिए उसकी शपथ टूट गई।" (त)

हाँ, अगर इस कथन में तीन तलाक़ की नीयत थी, तो तीन होंगे और पत्नी हलाला के बिना निकाह में वापस नहीं आ सकेगी। 'दुर्र-उल-मुख़्तार' में है:

---

1. कंज़ुल उम्माल, इब्न असाकिर के हवाले से अनस से, हदीस 46340, किताबुल यमीन, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरुत 16/289।
2. दुर्र-उल-मुख़्तार, बिना संभोग वाली तलाक़ का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/224।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

وعظ کرنے سے خود کی نیت کی تھی لیکن تین یا دو کا لفظ منہ سے نہ نکلا اور تین کی نیت نہ تھی، اور وہ مسلمان لوگ سب مل کر واعظ کے پاس عاجزی سے کہتے ہیں کہ تم وعظ کرو، پس واعظ کہتا ہے کہ اگر میں وعظ کروں تو میری زوجہ مطلقہ ہوتی ہے میں ہر گز وعظ نہ کروں گا، پس ان الفاظ سے طلاق واقع ہوتی ہے یا نہیں، اور کون سی طلاق بائن یا کیا، اور وعظ وہ کرے یا نہیں، اور جب وعظ کرے تو بائن واقع ہونے سے کیا کرے، اور اگر قسم کی طلاقیں واقع ہوتی ہیں تو ان کا بھی خلاصہ لکھنا، کل مسلمان اہلسنت و جماعت آپ کے جواب کے منتظر ہیں، ان الفاظ میں اگر نیت ثلاثہ کی ہی ہو تو کیا ثلاثہ واقع ہوگی یا نہیں، والسلام۔

الجواب: واعظ کو نہ چاہئے کہ طلاق کی قسم کھاتا کہ شرعاً ناپسندیدہ ہے یہاں تک کہ حدیث میں آیا : ما حلف بالطلاق مومن وما استحلف بہ الا منافق- رواہ ابن عساکر عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ (مومن طلاق کی قسم نہیں کھاتا اور طلاق کی قسم نہیں لیتا مگر منافق۔ اس کو ابن عساکر نے انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا۔ (ت))

اب کہ کہہ چکا ضرور وہاں وعظ کہنے سے عورت پر ایک طلاق رجعی ہو گی کہ عدت کے اندر رجعت کر لینے سے بدستور وہ اس کی زوجہ رہے گی۔ در مختار میں ہے:

جماعة یتحدثون في مجلس فقال رجل منهم من تکلم بعد هذا فامرأته طالق ثم تکلم الحالف طلق امرأته لان کلمة من للتعمیم والحالف لا یخرج نفسه عن الیمین فیحنث- (ایک جماعت مجلس میں باتیں کر رہی تھی کہ ان میں سے ایک نے کہا اس کے بعد جو بھی بات کرے اس کی بیوی کو طلاق، پھر خود قسم کھانے والے نے بات کر لی، تو اس کی بیوی کو طلاق ہو گئی، کیونکہ "جو بھی" کا لفظ

عام ہے تو حلف اٹھانے والے کو بھی شامل ہے کیونکہ اس نے اپنے آپ کو خارج نہیں کیا اس لئے اس کی قسم ٹوٹ گئی۔ (ت))\n ہاں اگر اس قول میں تین طلاقوں کی نیت کی تھی تو تین پڑیں گی اور عورت بے حلالہ نکاح میں نہ آسکے گی۔ در مختار میں ہے:

---

1 کنز العمال بحوالہ ابن عساکر عن انس حدیث ۴۶۳۴۰ کتاب الیمین من قسم الاقوال موسسۃ الرسالہ بیروت ۲۸۹/۱۶ 2 درمختار باب طلاق غیر المدخول بھا مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۴/۱

Volume Thirteen 13, Fatawa Ridawiyya

(Arabic): In "You are divorce," one revocable divorce (talaq raj'i) occurs if nothing is intended, or if one or two are intended, because it is an explicit infinitive that does not admit number. If three are intended, then it is three because it becomes a legal individual[1]. Summary. (Urdu): With the words "You are divorce", one revocable divorce will occur. Even if there is an intention for one or two divorces, or no intention at all, the ruling remains the same because "divorce" (talaq) is an explicit infinitive in which there is no scope for number. And if the speaker intended three divorces with this word, then three will occur because in "divorce", three being the total of the genus makes it a legal individual. Summary. (T)

As for whether he should preach there now or not: if he preaches for the sake of Allah (the Almighty and Majestic) and the pursuit of wealth or personal fame and leadership is not the goal, and his preaching is in accordance with the Shariah, and he possesses sufficient and ample religious knowledge to be permitted to preach, then it is clear that for such a servant of God, a guide to the path of guidance, to preach is better for him and for all those Muslims. And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Arabic): Whoever takes an oath and then sees something else to be better than it, let him do what is better and expiate for his oath.[2] - Narrated by Imams Ahmad, Muslim, and al-Tirmidhi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). (Urdu): Whoever takes an oath on something and then sees that doing the opposite of that oath is better, he should do the better deed and pay the expiation for his oath. (Imams Ahmad, Muslim, and Tirmidhi have narrated this from Abu Hurairah, may Allah be pleased with him. T)

And if any of these conditions are lacking, for example, religious knowledge is not sufficient, or due to a corrupt purpose or corrupt belief he preaches contrary to the Shariah, then it is clear that his preaching is bad for him and for all Muslims. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

(Arabic): Whoever speaks about the Quran without knowledge, let him take his seat in the Fire.[3] - Narrated by al-Tirmidhi and he authenticated it, from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). (Urdu): Whoever explains the meaning of the Quran without knowledge should make his abode in Hell. Tirmidhi has narrated this from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) and declared it authentic. (T)

And if wealth or fame is intended, then even if his preaching is beneficial for the Muslims, it is severe for his own self...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter: Al-Sarih, Mujtabai Press, Delhi, 1/219 [2] Musnad Ahmad bin Hanbal, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/258 [3] Jami' al-Tirmidhi, Chapter on what has been related regarding one who interprets the Quran by his opinion, Amin Company Rashidiyya Library, Delhi, 2/119

जिल्द तेरह 13, फतावा रज़विया

(अरबी): 'तू तलाक है' कहने पर एक तलाक-ए-रजई होती है यदि कोई नीयत न हो, या एक या दो की नीयत हो, क्योंकि यह एक स्पष्ट मूल शब्द है जिसमें संख्या की गुंजाइश नहीं है। यदि तीन की नीयत हो, तो तीन होंगी क्योंकि यह एक 'हुक्मी फर्द' (कानूनी इकाई) बन जाता है [1]। संक्षिप्त। (उर्दू): "तू तलाक है" के शब्दों से एक तलाक-ए-रजई होगी। यदि एक या दो तलाक की नीयत हो, या कोई नीयत न हो, तब भी यही हुक्म है क्योंकि "तलाक" मसदर-ए-सरीह (स्पष्ट मूल शब्द) है जिसमें संख्या की गुंजाइश नहीं है। और अगर कहने वाले ने इस शब्द से तीन तलाकों की नीयत की हो तो तीन होंगी क्योंकि तलाक में तीन कुल जिन्स (वर्ग) होने की वजह से हुक्मी फर्द बन गया। संक्षिप्त (त)

रहा यह कि अब वहाँ वअज़ (प्रवचन) करे या नहीं: यदि वह वअज़ अल्लाह अज्ज़वजल के लिए करता है और धन की प्राप्ति या अपनी प्रसिद्धि व नेतृत्व उसका उद्देश्य नहीं है, और उसका वअज़ शरीअत के अनुसार है, और वह इतना धार्मिक ज्ञान पर्याप्त रूप से रखता है जिससे उसे वअज़ की अनुमति हो, तो स्पष्ट है कि ऐसे अल्लाह के बंदे, मार्गदर्शन के पथप्रदर्शक का वअज़ कहना ही उसके लिए और उन सभी मुसलमानों के हक में बेहतर है। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

(अरबी): जिसने किसी बात की शपथ ली और फिर उसके अलावा किसी दूसरी बात को उससे बेहतर पाया, तो उसे वही करना चाहिए जो बेहतर है और अपनी शपथ का प्रायश्चित करना चाहिए। [2] - इसे इमाम अहमद, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (उर्दू): जो किसी बात पर कसम खा ले फिर देखे कि उस कसम के विपरीत काम करना बेहतर है, तो वही बेहतर काम करे और अपनी कसम का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दे दे। (इसे इमाम अहमद, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। त)

और अगर इन बातों में से कोई बात कम है, जैसे कि धार्मिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है या किसी गलत उद्देश्य या गलत अकीदे के कारण शरीअत के विरुद्ध वअज़ कहे, तो स्पष्ट है कि उसका वअज़ उसके लिए और सभी मुसलमानों के हक में बुरा है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

(अरबी): जिसने बिना ज्ञान के कुरान के बारे में कुछ कहा, वह अपना ठिकाना आग (नरक) में बना ले। [3] - इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से इसे सही करार दिया।

(उर्दू): जिसने बिना इल्म (ज्ञान) के कुरान का मतलब बयान किया वह अपना ठिकाना जहन्नम (नरक) बनाए। इसे तिर्मिज़ी ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया और सही करार दिया। (त)

और अगर धन या प्रसिद्धि उद्देश्य है, तो भले ही मुसलमानों के लिए उसका वअज़ लाभदायक हो, स्वयं उसके हक में सख्त [बुरा] है...

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अस-सरीह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/219 [2] मुसनद अहमद बिन हंबल, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 2/258 [3] जामिअ तिर्मिज़ी, कुरान की व्याख्या अपनी राय से करने के संबंध में अध्याय, अमीन कंपनी कुतुबखाना रशीदिया दिल्ली, 2/119

في انت الطلاق يقع واحدة رجعية ان لم ينو شيئاً او نوى واحدة اثنين لانه صريح مصدر لا يحتمل العدد فان نوى ثلاثاً فثلث لانه فرد حكمي ۱ . ملخصاً۔ | ''تو طلاق ہے'' کے لفظ سے ایک طلاق رجعی ہوگی، ایک کی یادو طلاقوں کی، یا کوئی نیت نہ ہو تب بھی یہی حکم ہے کیونکہ طلاق مصدر صریح ہے اس میں عدد کی گنجائش نہیں، اور اگر کہنے والے نے اس لفظ سے تین طلاقوں کی نیت کی ہو تو تین ہوں گی کیونکہ طلاق میں تین کل جنس ہونے کی وجہ سے حکمی فرد بن گیا، ملخصاً (ت)

رہا یہ کہ اب وہاں وعظ کرے یا نہیں، اگر وہ وعظ اللہ عزوجل کے لئے کرتا ہے اور طلب مال یا اپنی شہرت و ریاست مقصود نہیں اور اس کا وعظ مطابق شرع ہے، اتنا علم دین کافی و وافی رکھتا ہے جس سے اسے وعظ کی اجازت ہو ، جب تو ظاہر ہے کہ ایسے بندہ خدا ہادی راہِ ہدیٰ کا وعظ کہنا ہی اس کے ، ان مسلمانوں کے سب کے حق میں بہتر ہے، اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من حلف على يمين فرأى غيرها خيرا منها فليأت الذي هو خير وليكفر عن يمينه ۲- رواه الائمة احمد ومسلم والترمذي عن ابي هريرة رضي الله تعالى عنه۔ | جو کسی بات پر قسم کھا لے پھر دیکھے کہ اس قسم کا خلاف بہتر ہے تو وہی بہتر کام کرے اور قسم کا کفارہ دے لے (اس کو امام احمد، مسلم اور ترمذی نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ت)

اور اگر ان باتوں سے کوئی بات کم ہے مثلاً علم دین کافی نہیں یا کسی غرضِ فاسد یا عقیدہ فاسدہ کے باعث وعظ خلافِ شرع کہے جب تو ظاہر کہ اس کا وعظ اس کے اور مسلمانوں سب کے حق میں برا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من قال في القرآن بغير علم فليتبوأ مقعده من النار ۳ - رواه الترمذي وصححه عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما۔ | جس نے بغیر علم قرآن کا مطلب بیان کیا وہ اپنا ٹھکانہ جہنم بنائے۔ اس کو ترمذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا اور صحیح قرار دیا۔(ت)

اور اگر مال یا شہرت مقصود ہے تو اگرچہ مسلمانوں کے لئے اس کا وعظ مفید ہو خود اس کے حق میں سخت

۱ درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۱۹ ۲ مسند احمد بن حنبل دار المعرفة بیروت ۲/۲۵۸ ۳ جامع ترمذی باب ما جاء في الذي يفسر القرآن برأيه امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۲/۱۱۹

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

It is harmful; scholars state that preaching for such motives is misguidance and is the practice of Jews and Christians. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
Admonishing from the pulpit for the sake of preaching and exhortation is the Sunnah of the Prophets and Messengers (peace be upon them). To preach for the sake of leadership, wealth, or public popularity is like the misguidance of Jews and Christians.[1]	Preaching and admonishing from the pulpit is the Sunnah of the Prophets and Messengers (peace be upon them). To preach for self-praise, wealth, or popularity is like the misguidance of the Jews and Christians. (T)

In the second scenario, he is not even allowed to preach, let alone in such a state where it causes a divorce for the woman, as divorce is severely disliked by Allah (Exalted and Majestic) without a valid religious reason. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic Text	Urdu Translation
"The most disliked of lawful things in the sight of Allah is divorce."[2] - Narrated by Abu Dawud, Ibn Majah, and Al-Hakim from Ibn Umar (may Allah be pleased with them). In another wording from Al-Hakim with a sound chain as a continuous report (mawsul), and in Abu Dawud from Muharib bin Dithar as a disconnected report (mursal): "Among the things Allah has made lawful, nothing is more disliked by Him than divorce."[3]	Among the permissible things, divorce is most disliked by Allah. Abu Dawud, Ibn Majah, and Al-Hakim narrated it from Ibn Umar (may Allah be pleased with him). In other words, Al-Hakim narrated it from Abdullah bin Umar with a sound chain as a continuous report. Abu Dawud narrated it as a disconnected report from Muharib bin Dithar (may Allah be pleased with him) as follows: Among the things made lawful by Allah, divorce is most disliked by Him. (T)

And if the situation is the first case, where preaching is better for him, then he should preach and then perform a revocation of divorce (ruju'). And if he had intended three divorces, then if he wishes, this legal stratagem is possible: he gives the woman one divorce, and when the waiting period (iddah) passes and the woman is out of the marriage contract, he preaches at that time, then marries the woman again and continues to preach; the divorce will not take effect,

Arabic Text	Urdu Translation
Because when he has separated from her and the waiting period has ended, she is no longer a subject for divorce. So if the oath is broken after that...	Because when the wife has been irrevocably separated and her waiting period has passed, she is no longer a subject for divorce. Now after this, if the oath is broken...

---

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Sale, Book of Prohibition and Permission, Mujtabai Press, Delhi, 253/2. [2] Sunan Abu Dawud, Chapter on the Disliking of Divorce, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/296. [3] Sunan Abu Dawud, Chapter on the Disliking of Divorce, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/296.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

यह हानिकारक है; विद्वान कहते हैं कि ऐसे उद्देश्यों के लिए उपदेश देना गुमराह करना है और यह यहूदियों और ईसाइयों की प्रथा है। 'दुर्रे मुख्तार' में उल्लेख है:

अरबी पाठ

उपदेश और नसीहत के लिए मिम्बर से संबोधन करना नबियों और रसूलों (उन पर शांति हो) की सुन्नत है। नेतृत्व, धन, या सार्वजनिक लोकप्रियता के लिए उपदेश देना यहूदियों और ईसाइयों की गुमराह करने वाली रीति के समान है।[1]

उर्दू अनुवाद

मिम्बर पर वाज़ (उपदेश) व नसीहत करना अंबिया और मुरसलीन अलैहिमुस सलातो वस्सलाम की सुन्नत है। अपनी बड़ाई, माल या अपनी मक़बूलियत (लोकप्रियता) के लिए वाज़ कहना यहूद व नसारा की गुमराह की तरह है। (त)

दूसरी स्थिति में, उसे उपदेश देने की अनुमति ही नहीं है, विशेषकर ऐसी स्थिति में जहाँ इसके कारण महिला को तलाक़ हो जाए, और बिना किसी वैध धार्मिक कारण के तलाक़ अल्लाह अज़-व-जल्ल को सख्त नापसंद है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी पाठ

"अल्लाह की नज़र में जायज़ चीज़ों में सबसे अधिक नापसंद तलाक़ है।"[2] - इसे अबू दाऊद, इब्न माजा और अल-हाकिम ने इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। अन्य शब्दों में, अल-हाकिम ने इसे अब्दुल्ला बिन उमर से एक सही सनद के साथ मौसूल (निरंतर) रिवायत के रूप में वर्णित किया है। अबू दाऊद ने मुहारिब बिन दितार से मुरसल (विच्छिन्न) रिवायत के रूप में इसे इस प्रकार वर्णित किया है: "अल्लाह द्वारा हलाल की गई चीज़ों में तलाक़ अल्लाह को सबसे अधिक नापसंद है।"[3]

उर्दू अनुवाद

अल्लाह तआला के यहाँ सब से ज़्यादा नापसंदीदा हलाल तलाक़ है। इस को अबू दाऊद और इब्न माजा और हाकिम ने इब्न उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से, और दूसरे अल्फ़ाज़ में अब्दुल्लाह बिन उमर ही से हाकिम ने सही सनद के साथ मौसूलन रिवायत किया, अबू दाऊद ने मुहारिब बिन दितार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुरसलन यूँ रिवायत की है: अल्लाह तआला की हलाल कर्दा चीज़ों में से तलाक़ अल्लाह तआला के यहाँ ज़्यादा नापसंद है। (त)

और यदि स्थिति पहली वाली है, जिसमें उपदेश देना उसके लिए बेहतर है, तो वह उपदेश दे और महिला से रुजू (वापसी) कर ले। और यदि उसने तीन तलाक़ की नीयत की थी, तो यदि वह चाहे तो यह युक्ति (हीला) संभव है: वह महिला को एक तलाक़ दे दे, और जब इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाए और महिला निकाह के बंधन से बाहर हो जाए, तो उस समय वह उपदेश दे, फिर महिला से पुनः निकाह कर ले और उपदेश देना जारी रखे; तलाक़ प्रभावी नहीं होगा,

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
क्योंकि जब उसने उसे अलग कर दिया और इद्दत बीत गई, तो वह अब तलाक़ का स्थान नहीं रही। अतः यदि उसके बाद कसम टूटती है...	क्योंकि जब बीवी को बाइना (इर्रिवोकेबल तलाक) कर दिया और इद्दत गुज़र गई तो अब वो तलाक़ का महल ना रही, अब इस के बाद क़सम टूटने...

---

[1] दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल बै' (विक्रय अध्याय), किताबुल हज़्र वल इबाह (निषेध और अनुमति की पुस्तक), मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 253/2। [2] सुनन अबू दाऊद, बाब फ़ी कराहीयतित तलाक़ (तलाक़ की नापसंदगी का अध्याय), आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 1/296। [3] सुनन अबू दाऊद, बाब फ़ी कराहीयतित तलाक़, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 1/296।

पृष्ठ 200/688

فتاوٰی رضویہ ، جلد سیز د ہم ، ۱۳

مضر ہے، علماء فرماتے ہیں ایسی اغراض کے لئے وعظ ضلالت اور یہود و نصاریٰ کی سنت ہے۔ در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
التذکیر علی المنبر للوعظ والاتعاظ سنة الانبیاء والمرسلین ولرئاسة ومال وقبول عامة من ضلالة الیهود والنصاری- 1	منبر پر وعظ و نصیحت کرنا انبیاء اور مرسلین علیہم الصلوۃ والسلام کی سنت ہے۔ اپنی بڑائی، مال یا اپنی مقبولیت کے لئے وعظ کہنا یہود و نصاریٰ کی گمراہی جیسے ہے۔ (ت)

صورت ثانیہ میں اسے وعظ کی اجازت ہی نہیں، نہ کہ ایسی حالت میں کہ اس کے سبب عورت پر طلاق ہو گی اور طلاق اللہ عز وجل کو بلا وجہ شرعی سخت ناپسند ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ
ابغض الحلال الی اللہ الطلاق 2-رواہ ابوداؤد وابن ماجة والحاکم عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنهما وفی لفظ للحاکم بسند صحیح عنه موصولا ولابی داؤد عن محارب بن دثار	اللہ تعالیٰ کے ہاں سب سے زیادہ ناپسندیدہ حلال طلاق ہے۔ اس کو ابوداؤد اور ابن ماجہ اور حاکم نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے، اور دوسرے الفاظ میں عبداللہ بن عمر ہی سے حاکم نے صحیح سند کے ساتھ موصولاً روایت کیا، ابوداؤد نے محارب بن دثار رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مرسلًا

عربی متن **اردو ترجمہ**

مرسلًا ما احل اللہ شیئاً ابغض الیہ من یوں روایت کی ہے: اللہ تعالیٰ کی حلال کردہ چیزوں میں سے

الطلاق 3- طلاق اللہ تعالیٰ کے ہاں زیادہ ناپسند ہے۔ (ت)

اور اگر صورت صورت اولیٰ ہے جس میں وعظ کہنا اس کے حق میں بہتر ہے تو وعظ کہے اور عورت کو رجعت کرلے، اور اگر تین طلاق کی نیت کی تھی تو اگر چاہے تو یہ حیلہ ممکن ہے کہ عورت کو ایک طلاق دے جب عدت گزر جائے اور عورت نکاح سے نکل جائے اس وقت وعظ کہے پھر عورت سے نکاح کرلے اور وعظ کہتا رہے طلاق نہ پڑے گی،

عربی متن **اردو ترجمہ**

لانہ لما ابانہا وانقضت العدۃ لم تبق کیونکہ جب بیوی کو بائنہ کر دیا اور عدت گزر گئی تو اب وہ

محلا للطلاق فاذا حنث بعدہ طلاق کا محل نہ رہی، اب اس کے بعد قسم ٹوٹنے

---

1 درمختار فصل فی البیع کتاب الحظر والاباحۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۵۳ 2 سنن ابوداؤد باب فی کراھیۃ الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۹۶ 3 سنن ابوداؤد باب فی کراھیۃ الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۹۶

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Box 1] Arabic: The conditional penalty descended and did not encounter its subject, so it passed in vain. The oath has ended due to the lack of anything indicating repetition. Therefore, if he marries her after the sermon, he will not break the oath. (T) Urdu: Because the conditional penalty will occur, and at that time, due to the absence of a subject (valid marriage), it will become useless and the oath will end because there is no element of repetition in it. Now, let him deliver the sermon and after that, if he remarries, there will be no violation of the oath. (T)

[Box 2] In Durr al-Mukhtar it is stated: Arabic: The oath is dissolved after the condition is met unconditionally, but if it is found during the ownership (of marriage), divorce occurs; otherwise, it does not. The legal stratagem for someone who conditioned three divorces on entering the house is to divorce her once, then after the 'iddah (waiting period) ends, she enters the house, thus the oath is dissolved, and then he remarries her. Urdu: In Durr al-Mukhtar it is mentioned: The oath is broken absolutely after the condition is met, but if that condition is found during the ownership of the marriage, divorce will occur, otherwise not. So, for the one who has linked three divorces with the condition of entering the house, the legal stratagem is to give his wife one divorce. When her 'iddah is over, then after the 'iddah, let the woman enter the house. Now the oath will be broken and finished; then he may remarry that woman. (T)

But this situation is not without risk; after the expiry of the 'iddah, the woman becomes independent, and if she does not remarry him, he has no power of coercion over her. Similarly, all these scenarios are based on the assumption that he has never before given this woman two divorces, whether combined or separate. Otherwise, as soon as the sermon is spoken or before the sermon, if he gives one divorce, three divorces will immediately take place, and now there will be no remedy except for Halala. And Allah Almighty knows best.

Problem 12: From Rampur State, Mohalla Bajori Tola, adjacent to the shrine of Hafiz Jamalullah Sahib, sent by Muhammad Zamir Khan Sahib, 5 Dhu al-Qi'dah 1325 AH.

What do the scholars of religion say in this matter: Amr's wife requested a divorce from him. Amr said, "If you waive the dower (Mahr), I will give three divorces." The woman said, "If you give me a divorce, I have waived the dower." The woman said three times, "If my husband gives me a divorce, I have waived the dower." Then Amr said twice, "I have divorced my wife." This incident happened about a week ago and

this event occurred while the husband and wife were in a state of anger. Did divorce occur or not? Explain and be rewarded.

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Ta'liq (Conditions), Mujtabai Press, Delhi, 1/231 Page 201 of 688

फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[बॉक्स 1] अरबी: सशर्त दंड उतर चुका है और उसे कोई स्थान (वैध विषय) नहीं मिला, इसलिए वह व्यर्थ चला गया। दोहराव का संकेत देने वाली किसी चीज़ की कमी के कारण शपथ समाप्त हो गई है। इसलिए, यदि वह उपदेश के बाद उससे विवाह करता है, तो वह शपथ का उल्लंघन नहीं करेगा। (त) उर्दू: इस वजह से, सशर्त परिणाम घटित होगा, और चूंकि उस समय कोई स्थान (वैध विवाह) नहीं था, इसलिए यह शून्य हो जाएगा और शपथ समाप्त हो जाएगी क्योंकि इसमें दोहराव का कोई तत्व नहीं है। अब, वह उपदेश कर ले और उसके बाद यदि वह दोबारा निकाह करता है, तो शपथ का उल्लंघन नहीं होगा। (त)

[बॉक्स 2] दुर्रे मुख्तार में है: अरबी: शर्त पूरी होने के बाद शपथ बिना शर्त समाप्त हो जाती है, लेकिन यदि वह स्वामित्व (निकाह) के भीतर पाई जाती है, तो तलाक हो जाता है; अन्यथा नहीं। जिस व्यक्ति ने घर में प्रवेश करने की शर्त पर तीन तलाक दिए हों, उसके लिए कानूनी उपाय यह है कि वह उसे एक तलाक दे दे, फिर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने के बाद, वह उसमें (घर में) प्रवेश करे। इस प्रकार, शपथ समाप्त हो जाती है, और फिर वह उससे दोबारा निकाह कर लेता है। उर्दू: दुर्रे मुख्तार में है: शर्त पूरी होने के बाद शपथ पूरी तरह से टूट जाती है, लेकिन अगर वह शर्त निकाह के स्वामित्व के दौरान पाई जाए तो तलाक हो जाएगा, वरना नहीं। तो, जिसने घर में प्रवेश करने की शर्त पर तीन तलाक को जोड़ा हो, उसके लिए उपाय यह है कि वह अपनी पत्नी को एक तलाक दे दे। जब उसकी इद्दत खत्म हो जाए, तो इद्दत के बाद औरत घर में प्रवेश करे। अब शपथ टूट कर खत्म हो जाएगी। फिर वह उस औरत से निकाह कर ले। (त)

लेकिन यह स्थिति जोखिम से खाली नहीं है; इद्दत बीत जाने के बाद औरत खुद मुख्तार (स्वतंत्र) हो जाएगी और अगर वह उससे निकाह न करे तो उस पर जबरदस्ती का कोई अधिकार नहीं है। इसी तरह, ये सभी स्थितियां इस धारणा पर आधारित हैं कि उसने पहले कभी इस औरत को दो तलाक, चाहे इकट्ठे हों या अलग-अलग, न दिए हों। वरना उपदेश कहते ही या उपदेश से पहले एक तलाक देते ही तुरंत तीन तलाक हो जाएंगे और अब हलाला के अलावा कोई उपाय नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 12: रामपुर रियासत, बाजोरी टोला मोहल्ला, हज़रत हाफ़िज़ जमालुल्लाह साहब की ज़ियारत के पास से, मोहम्मद ज़मीर ख़ान साहब द्वारा प्रेषित, 5 ज़िल-क़ाद 1325 हिजरी।

दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: अम्र से उसकी पत्नी ने तलाक माँगा। अम्र ने कहा, "अगर तुम मेहर माफ कर दो तो मैं तीन तलाक दूँगा।" औरत ने कहा, "अगर आप मुझे तलाक दें तो मैंने मेहर माफ कर दिया।" औरत ने तीन बार कहा, "अगर मेरा पति मुझे तलाक दे तो मैंने मेहर माफ कर दिया।" फिर अम्र ने दो बार कहा, "मैंने अपनी पत्नी को तलाक दिया।" इस घटना को करीब एक हफ्ता हो चुका है और यह घटना पति-पत्नी के गुस्से की हालत में हुई थी। क्या तलाक हुआ या नहीं? बयान करें और पुण्य पाएँ।

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबुल ता'लीक (शर्तों का अध्याय), मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/231 पृष्ठ 201 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[باکس ۱] نزل الجزاء المعلق ولم یصادف محلا فمضی هملا وقد انتهی الیمین لعدم ما یدل علی التکرار فاذا تزوجها بعد وعظ لم یحنث۔ کی وجہ سے معلق شدہ جزاء وارد ہوگی تو اس وقت محل نہ ہونے کی وجہ سے مہمل ہو جائے گی اور قسم ختم ہو جائے گی کیونکہ اس میں تکرار والی کوئی بات نہیں، اور اب وعظ کر لے اور اس کے بعد دوبارہ نکاح کرلے تو حنث نہ ہوگا۔ (ت)

[باکس ۲] درمختار میں ہے: تنحل الیمین بعد وجود الشرط مطلقا لکن ان وجد في الملك طلقت والا فاحیلة من علق الثلاث بدخول الدار ان یطلقها واحدة ثم بعد العدة تدخلها فتنحل الیمین فینکحهما[1]۔

درمختار میں ہے: مطلقاً شرط پائے جانے کے بعد قسم ٹوٹ جاتی ہے لیکن وہ شرط اگر ملکیت نکاح میں پائی جائے تو طلاق ہوجائے گی ورنہ نہیں، تو جس نے تین طلاقوں کو دخول دار کی شرط سے معلق کیا ہو اس کے لئے حیلہ یہ ہے کہ بیوی کو ایک طلاق دے دے جب اس کی عدت ختم ہوجائے تو عدت کے بعد عورت دخول دار کرلے اب قسم ٹوٹ کر ختم ہو جائے گی پھر وہ عورت سے نکاح کرلے۔ (ت)

مگر یہ صورت وقت سے خالی نہیں بعد انقضاء عدت عورت خودمختار ہوجائے گی اور اگر وہ اس سے نکاح نہ کرے تو اس پر جبر کا کوئی اختیار نہیں۔ یونہی یہ سب صورتیں اس تقدیر پر ہیں کہ اس سے پہلے کبھی اس عورت کو دو طلاقیں مجموع خواہ متفرق نہ دے چکا ہو ورنہ وعظ کہتے ہی یا قبل وعظ ایک طلاق دیتے ہی فوراً تین طلاقیں ہوجائیں گی اور اب سوا حلالہ کوئی علاج نہ ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲: از ریاست رامپور محلہ باجوری ٹولہ متصل زیارت حافظ جمال اللہ صاحب مرسلہ محمد ضمیر خاں صاحب ۵ ذی قعدہ ۱۳۲۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عمرو سے اس کی بیوی نے طلاق طلب کی۔ عمرو نے یہ کہا کہ تو مہر بخش دے تو تین طلاق دوں گا۔ عورت نے یہ کہا اگر تم مجھے طلاق دو تو میں نے مہر بخش دیا۔ عورت نے تین مرتبہ یہ کہا کہ اگر میرا شوہر مجھے طلاق دے تو میں نے مہر بخش دیا۔ پھر عمرو نے دو مرتبہ یہ کہا کہ میں نے اپنی بیوی کو طلاق دی۔ اس واقعہ کو قریب ایک ہفتہ کے ہوا اور یہ واقعہ درمیان شوہر اور بیوی کے غصہ کی حالت میں ہوا، آیا طلاق ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا

---

[1] درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۲۳۱/۱ صفحہ 201 از 688

Fatawa Rizvia - Volume 13

The Answer: If the woman has been consummated with and two divorces have occurred, then as long as the 'iddah (waiting period) has not expired, [the husband] can revoke it. For example, by saying with his tongue, "I have taken you back into my marriage," she will continue to be his wife as before, provided he has never given any divorce before this. And if the woman has not been consummated with, then one irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) occurs and the woman leaves the marriage, but he can remarry her with her consent during or after the 'iddah. As for the dower (Mahr), it is not waived in any situation and remains as before. It is stated in 'Bazazia', Book of Sales:

Arabic	Urdu Translation
Suspending a gift (Hiba) on a condition is void.	To make a gift contingent upon a condition is void.

In 'Ashbah' it is stated:

Arabic	Urdu Translation
Suspending ownership transfers on conditions is void, such as in buying and selling, gifts, and discharge of debt (summarized). And Allah knows best.	Transferring ownership in things like buying and selling, gifts, and discharging someone from receiving a right, contingent upon a condition, is void (summarized). And Allah knows best.

Problem 13: From the Rampur State Police Department, sent by Sayyid Ja'far Hussain, Clerk of the Department, 20 Muharram 1318 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married Hindah on the condition that if I do not pay half the mahr, i.e., 500 rupees, at the time Hindah requests it, then Hindah shall be under three divorces. Now, after marriage, Hindah requested half the mahr from Zaid. Zaid did not pay the said money at that time. In this situation, did three divorces occur on Hindah or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If in the marriage contract, the proposal (Ijab), i.e., the initial statement with the said condition, was from Zaid's side—for example, Zaid said to Hindah, "I have taken you into my marriage in exchange for a thousand rupees dower on the condition that if I do not pay half the mahr at the time of your request, then three divorces shall be upon you," and Hindah said, "I have accepted"—then in the inquired situation, if Zaid did not pay half the mahr at the time of the request, no divorce

occurred on Hindah at all. And if the beginning of the contract was from Hindah's side, whether the condition was mentioned in Hindah's speech—for example, Hindah said, "I have given myself into your marriage on the condition that if half mahr etc.," and Zaid said, "I have..."

1 Fatawa Bazaziya on the margin of Fatawa Hindia, Book of Sales, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/225. 2 Ashbah wan-Nazair, Discourses on Conditions and Suspensions, Idaratul Quran Karachi, 2/325, 626.

उत्तर: यदि स्त्री के साथ संभोग (वति) हो चुका है और दो तलाक़ें हो गई हैं, तो जब तक इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त न हो जाए, [पति] रुजूअ (वापस लेना) कर सकता है। उदाहरण के लिए, ज़ुबान से कह दे कि "मैंने तुझे अपने निकाह में वापस ले लिया," तो वह पहले की तरह उसकी पत्नी बनी रहेगी, बशर्ते कि उसने इससे पहले कभी कोई तलाक़ न दी हो। और यदि स्त्री के साथ संभोग नहीं हुआ है, तो एक तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) हो गई और स्त्री निकाह से बाहर निकल गई, लेकिन वह उसकी सहमति से इद्दत के दौरान या इद्दत के बाद उससे फिर से निकाह कर सकता है। जहाँ तक महर की बात है, वह किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं होता और पहले की तरह बना रहता है।
'बज़ाज़िया', किताबुल बुयूअ में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
उपहार (हिबा) को शर्त पर लटकाना बातिल (अमान्य) है।	उपहार को किसी शर्त से जोड़ना बातिल है।

'अशबाह' में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
शर्त के साथ स्वामित्व अंतरण को निलंबित करना बातिल है जैसे कि खरीद-बिक्री, उपहार और ऋण से मुक्ति (संक्षिप्त)। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।	खरीद-बिक्री, उपहार और अधिकार की वसूली से किसी को मुक्त करने जैसी चीज़ों के स्वामित्व को किसी शर्त से जोड़ना बातिल है (संक्षिप्त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 13: रियासत रामपुर, पुलिस विभाग से, प्रेषक सैयद जाफ़र हुसैन साहब, विभाग के मुहर्रिर, 20 मुहर्रम 1318 हिजरी। प्रश्न: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिंदा से इस शर्त पर निकाह किया कि यदि मैं हिंदा द्वारा मांगे जाने पर आधा महर यानी पाँच सौ (500) रुपये अदा न करूँ्तो हिंदा पर तीन तलाक़ें हैं। अब निकाह के बाद हिंदा ने ज़ैद से आधा महर माँगा। ज़ैद ने उस समय उक्त राशि अदा नहीं की। इस स्थिति में हिंदा पर तीन तलाक़ें हुईं या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: यदि निकाह के अनुबंध (अक़्द) में 'ईजाब' यानी प्रारंभिक कथन उक्त शर्त के साथ ज़ैद की ओर से था—उदाहरण के लिए, ज़ैद ने हिंदा से कहा, "मैं तुझे एक हज़ार रुपये महर के बदले अपने

निकाह में लाया हूँ इस शर्त पर कि यदि मैं तेरे मांगने के समय आधा महर अदा न करूँ तो तुझ पर तीन तलाक़," और हिंदा ने कहा "मैंने स्वीकार किया"—तो पूछे गए मामले में यदि ज़ैद ने मांग के समय आधा महर अदा नहीं किया, तो हिंदा पर बिलकुल भी तलाक़ नहीं हुई। और यदि अनुबंध का प्रारंभ हिंदा की ओर से था, चाहे शर्त हिंदा के कथन में उल्लिखित हो—उदाहरण के लिए, हिंदा ने कहा, "मैंने स्वयं को इस शर्त पर तुम्हारे निकाह में दिया कि आधा महर आदि," और ज़ैद ने कहा "मैंने..."

1 फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, किताबुल बुयूअ, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/225। 2 अशबाह वन-नज़ायर, शर्तों और निलंबन पर चर्चा, इदारतुल कुरान कराची, 2/325, 626।

पृष्ठ 202/688

الجواب: اگر عورت مدخولہ ہے دو طلاقیں ہو گئیں مگر جب تک عدت نہ گزرے رجعت کر سکتا ہے، مثلاً زبان سے کہہ دے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھیر لیا وہ بدستور اس کی زوجہ رہے گی اگر اس سے پہلے کبھی کوئی طلاق نہ دے چکا ہو۔ اور اگر عورت غیر مدخولہ ہے تو ایک طلاق بائن پڑی اور عورت نکاح سے نکل گئی، مگر اس کی رضا کے ساتھ عدت میں خواہ عدت کے بعد اس سے نکاح کر سکتا ہے رہا مہر وہ کسی حالت میں ساقط نہ ہوا بدستور باقی ہے بزازیہ کتاب البیوع میں ہے:

عربی **اردو ترجمہ**

تعلیق الہبۃ بکلمۃ ان باطل۔[1] ہبہ کو کسی شرط سے معلق کرنا باطل ہے(ت)

اشباہ میں ہے:

عربی **اردو ترجمہ**

تعلیق التملیکات بالشرط باطل کالبیع والشراء والھبۃ والابراء[2] (ملخصا) بیع و شراء، ہبہ اور حق کی وصولی سے کسی کو بری کرنا جیسی چیزوں کی تملیک کسی شرط سے معلق کرنا باطل ہے (ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم (ت)

واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳: از ریاست رامپور سر رشتہ پولیس مرسلہ سید جعفر حسین صاحب محرر سر رشتہ ۲۰ محرم ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے اس شرط پر نکاح کیا نصف مہر یعنی پانسو ۵۰۰ روپے اگر بوقت طلب زوجہ ہندہ ادا نہ کروں تو ہندہ پر سہ طلاق ہیں

اب بعد نکاح کے ہندہ نے زید سے نصف مہر طلب کیا زید نے اس وقت روپیہ مذکورہ ادا نہ کیا اس صورت میں ہندہ پر سہ طلاق ہوئیں یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر عقد نکاح میں ایجاب یعنی ابتدائے کلام بشرط مذکور جانب زید سے ہو مثلاً زید نے ہندہ سے کہا میں تجھے بعوض ہزار روپے مہر کے اپنے نکاح میں لایا اس شرط پر کہ اگر نصف مہر تیری طلب کے وقت ادا نہ کروں تو تجھ پر تین طلاق، ہندہ نے کہا میں نے قبول کیا، تو صورت مستفسرہ میں اگر زید نے ہنگام طلب نصف مہر ادا نہ کیا ہندہ پر اصلاً طلاق نہ ہوئی، اور اگر ابتدائے عقد جانب ہندہ سے تھی خواہ شرط کلام ہندہ میں مذکور ہو، مثلاً ہندہ نے کہا میں نے اپنے نفس کو اس شرط پر تیرے نکاح میں دیا تو نصف مہر الخ ، زید نے کہا میں نے...

[1] فتاوی بزازیۃ علی حاشیۃ فتاوی ہندیۃ کتاب البیوع نورانی کتب خانہ پشاور ۴/۲۲۵ [2] اشباہ والنظائر القول فی الشرط والتعلیق ادارۃ القرآن کراچی ۳۲۵/۲، ۶۲۶

Fatawa Rizvia Volume 13 | Page 13

...accepted, or it was in Zaid's speech, for example, Hindah said: I have given myself into your marriage, Zaid said: I accepted on the condition that if half of the dower etc. or the initial offer was from Zaid's side but the condition was mentioned by Hindah in acceptance and Zaid approved it, for example, Zaid said: I have taken you into my marriage, Hindah said: I accepted on the condition that if you (pay) half of the dower etc., Zaid said: I approve it. In these cases, when half of the dower was not paid upon demand, three divorces occurred on Hindah. This is an elegant distinction which we have explained in our Fatawa (and this fine distinction is good, we have explained it in our Fatawa. - T). This ruling is in Khania, Khulasa, Bazazia, Bahr al-Ra'iq, Hindia, Durr al-Mukhtar and other reliable books. And Allah knows best.

Masla 14: From Bengali District Pabna, Post Office Sirajganj, Village Qazipur, sent by Mr. Ummeed Ali, 12 Safar 1318 AH. What is your statement, may Allah have mercy on you, regarding this problem: (O noble scholars! May Allah have mercy on you, what is your instruction in this matter? - T) that a person said to his wedded wife, 'Whenever you enter the house, you are divorced.' After this, he gave her one divorce. After the waiting period, the woman married another man. Subsequently, the second husband also divorced her. After some days, she remarried the first husband, then she was found to have entered the house. Now, will divorce occur or not? Explain and be rewarded.

The Answer: If the oath was not dissolved by entering the house three times, or if the marriage bond (hal) was not terminated by three divorces—whether absolute, conditional, or mixed—then the oath surely remains. Divorce will occur upon the fulfillment of the condition. (Its detail requires lengthy explanation. - T). It is mentioned in Durr al-Mukhtar:

[Table/Box Section] Arabic Text: Know that the suspension (condition) of divorce is invalidated by the ending of the marriage bond (hal), not by the ending of ownership (milk). Thus, if one made three divorces or less conditional on entering the house, then issued three divorces immediately, and then remarried her after halala, the condition is invalidated. No divorce will occur upon her entry. But if he had issued less than three immediately, it is not invalidated, and the conditional divorce will occur in its entirety. And Muhammad (al-Shaybani) said the remainder of the first occurs, which is...

Urdu Translation: It should be known that this suspension of the oath will become void upon the ending of the marriage bond; it will not end merely by the ending of ownership. If a husband suspended three divorces, or one or two, on entering the house, and then after that he gave this wife three unconditional divorces, after which the said wife, following a Shari'a halala, remarried that first husband, then after this second marriage, no divorce will occur upon the wife entering the house, and the suspension is terminated.

फ़तावा रिज़विया खंड 13 | पृष्ठ 13

...क़बूल किया या कलाम ज़ैद में हो मसलन हिन्दह ने कहा मैंने अपनी जान तेरी ज़ौजीयत (विवाह) में दी, ज़ैद ने कहा मैंने क़बूल की इस शर्त पर कि अगर निस्फ़ मेहर (आधा मेहर) इत्यादि या इब्तदा-ए-ईजाब (प्रस्ताव की शुरुआत) तो ज़ानिब-ए-ज़ैद से थी मगर शर्त हिन्दह ने क़बूल में ज़िक्र की और ज़ैद ने मन्ज़ूर कर ली, मसलन ज़ैद ने कहा मैंने तुझे अपनी ज़ौजीयत में लिया, हिन्दह ने कहा मैंने क़बूल किया इस शर्त पर कि अगर तू निस्फ़ मेहर इत्यादि, ज़ैद ने कहा मुझे मन्ज़ूर है, तो इन सूरतों में जब निस्फ़ मेहर तलब करने पर अदा न किया गया तो हिन्दह पर तीन तलाक़ें वाक़े(प्रभावी) हो गईं। यह एक नफ़ीस (श्रेष्ठ) फ़र्क़ है जिसे हमने अपने फ़तावा में बयान किया है। (और यह फ़र्क़ नफ़ीस खूब है, इसको हमने अपने फ़तावा में बयान किया है। - त) यह मसला ख़ानिया, ख़ुलासा, बज़ाज़िया, बहरुल राइक़, हिन्दिया, दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह मोतमिद (विश्वसनीय) किताबों में है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 14: बंगाली ज़िला पाबना, डाकख़ाना सिराजगंज, मौज़ा क़ाज़ीपुर से, उमीद अली साहब द्वारा भेजा गया, 12 सफ़र 1318 हिजरी। माक़ौलुकुम रहमकमुल्लाहु तआला फ़ी हाज़िहिल मसायल (ऐ उलमा-ए-किराम! अल्लाह तआला आप पर रहमत फ़रमाए, आपका इस मसले में क्या इर्शाद है? - त) कि एक शख़्स ने अपनी मनकूहा (विवाहिता) से कहा 'जब भी तू घर में दाख़िल होगी तुझे तलाक़ है।' इसके बाद उसने एक तलाक़ दी। इद्दत के बाद औरत ने दूसरे से निकाह कर लिया, बाद में दूसरे ने भी तलाक़ दे दी। चंद रोज़ बाद पहले पति से फिर निकाह कर लिया, फिर घर में दाख़िल होना पाया गया। अब तलाक़ पड़ेगी या नहीं? बयान करें, पुण्य पाएँ।

अल-जवाब: अगर तीन बार दाख़िल-ए-दार (घर प्रवेश) से कसम नहीं टूटी थी, या तीन तलाक़ तन्जीज़ी (तत्काल) या तालीक़ी (सशर्त) या मिश्रित से निकाह की क़ानूनी क्षमता (हल) समाप्त नहीं हुई थी, तो कसम ज़रूर बाकी है। शर्त पूरी होने से तलाक़ वाक़े होगी। (इसकी तफ़्सील के लिए विस्तार की ज़रूरत है। - त)। दुर्रे मुख़्तार में है:

[तालिका/बॉक्स खंड] अरबी पाठ: जान लें कि (तलाक़ का) निलंबन निकाह की क़ानूनी क्षमता (हल) की समाप्ति से निरस्त होता है, न कि केवल स्वामित्व (मिल्क) की समाप्ति से। अतः यदि किसी ने तीन या उससे कम तलाक़ों को घर में प्रवेश पर निलंबित किया, फिर तुरंत तीन तलाक़ें दे दीं, फिर हलाला के बाद उससे निकाह किया, तो निलंबन निरस्त हो गया, अतः उसके प्रवेश पर कुछ भी वाक़े नहीं

होगा। और यदि उसने तीन से कम तुरंत दिए होते, तो वह निरस्त नहीं होता और निलंबित तलाक़ पूरी तरह वाक़े होती। और (इमाम) मुहम्मद ने कहा कि पहली का शेष वाक़े होता है, जो कि...

उर्दू अनुवाद: मालूम होना चाहिए कि यह तालीक़ (निलंबन) हलफ़ (शपथ) खत्म होने पर बातिल (अमान्य) होगी; महज़ मिल्कियत (स्वामित्व) खत्म होने पर तालीक़ खत्म न होगी। अगर शौहर ने तीन तलाक़ों या एक-दो को दाख़िल-ए-दार से मुअल्लक (निलंबित) किया हो और फिर उसके बाद उसने इस बीवी को ग़ैर-मशरुत (बिना शर्त) तौर पर तीन तलाक़ें दे दी हों, जिस पर ज़िक्र की गई बीवी ने शरी'अत के अनुसार हलाला के बाद दोबारा उस पहले शौहर से निकाह किया हो, तो इस दूसरे निकाह के बाद बीवी के घर में दाख़िल होने पर कोई तलाक़ न होगी और तालीक़ खत्म है।

पृष्ठ 688 में से 203

قبول کیا یا کلام زید میں ہو مثلاً ہندہ نے کہا میں نے اپنی جان تیری زوجیت میں دی، زید نے کہا میں نے قبول کی اس شرط پر کہ اگر نصف مہر الخ یا ابتدائے ایجاب تو جانب زید سے تھی مگر شرط ہندہ نے قبول میں ذکر کی اور زید نے منظور کر لی، مثلاً زید نے کہا میں نے تجھے اپنی زوجیت میں لیا، ہندہ نے کہا میں نے قبول کیا اس شرط پر کہ اگر تو نصف مہر الخ، زید نے کہا مجھے منظور ہے، تو ان صورتوں میں جب نصف مہر عندالطلب ادا نہ کیا ہندہ پر تین طلاقیں واقع ہو گئیں والفرق نفیس حسن بیناہ فی فتاونا (اور یہ فرق نفیس خوب ہے، اس کو ہم نے اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ت) یہ مسئلہ خانیہ و خلاصہ و بزازیہ و بحر الرائق و ہندیہ و درالمختار و غیر ہا معتمدات اسفار میں ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۴: از بنگالی ضلع پاپنا ڈاکخانہ سراج گنج موضع قاضی پور مرسلہ امید علی صاحب ۱۲ صفر ۱۳۱۸ھ ماقولکم رحکم اللہ تعالٰی فی ہذہ المسئلۃ (اے علماء کرام ! اللہ تعالٰی آپ پر رحمت فرمائے، آپ کا اس مسئلہ میں کیا ارشاد ہے۔ ت) کہ ایک شخص نے اپنی منکوحہ سے کہا کلما دخلت الدار فانت طالق (جب بھی تو گھر میں داخل ہو گی تجھے طلاق ہے۔ت) بعد اس کے اس نے ایک طلاق دی بعد عدت عورت نے دوسرے سے نکاح کر لیا، بعدہ دوسرے نے بھی طلاق دے دی، بعد چند روز اول سے نکاح کر لیا پھر دخول دار پایا گیا اب طلاق پڑے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر تین بار دخول دار سے انحلال یمین یا تین طلاق تنجیزی خواہ تعلیقی خواہ مختلط سے زوال حل نہ ہو لیا تھا تو یمین ضرور باقی ہے وقوع شرط سے طلاق واقع ہو گی والتفصیل یستدعی التطویل (اس کی تفصیل کے لئے تطویل کی ضرورت ہے۔ت) در مختار میں ہے:

Arabic Text [Box Section]: اعلم ان التعليق يبطل بزوال الحل لابزوال الملک فلو علق الثلث او مادونها بدخول الدار ثم نجز الثلث ثم نکحها بعد التحليل بطل التعليق فلا يقع بدخولها شيئ ولو کان نجز ما دونها لم يبطل فيقع المعلق کله و اوقع محمد بقية الاول وهی

Urdu Translation: معلوم ہونا چاہئے کہ یہ تعلیق حلف ختم ہونے پر باطل ہوگی محض ملکیت ختم ہونے پر تعلیق ختم نہ ہوگی، اگر خاوند نے تین طلاقوں یا ایک دو کو دخول دار سے معلق کیا ہو اور پھر اس کے بعد اس نے اس بیوی کو غیر مشروط طور پر تین طلاقیں دے دیں جس پر بیوی مذکورہ نے حلالہ شرعیہ کے بعد دوبارہ اس پہلے خاوند سے نکاح کیا تو اس دوسرے نکاح کے بعد بیوی کے گھر میں داخل ہونے پر کوئی طلاق نہ ہوگی اور تعلیق ختم ہے

The Issue of Hadam (Annulment) etc. And if in the mentioned case, the husband gave less than three divorces after attaching a condition (Ta'liq), then the condition will not end even after she marries another person. Therefore, upon remarriage and consummation with the first husband, all conditional divorces will occur. While Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) considers the remaining divorces from the first divorce to occur. This statement of his is based on his position regarding the controversial issue of the first divorces being dropped upon marrying a second husband and then returning to the first husband etc. (T)

In it, it is stated: (Arabic): The oath is invalidated by the invalidation of the condition if the condition is met once, except with 'kullama' (whenever), for it is dissolved after three due to its requirement for the generality of actions, just as 'kull' (all) requires the generality of nouns. So it does not occur if he marries her after another husband etc. (Urdu): The oath related to a condition will end upon the condition being invalidated once the condition is met. However, if a condition was made with the word 'kullama', then that oath will end after three divorces because 'kullama' demands the generality of actions, just as 'kull' indicates the generality of nouns. Therefore, in this case, if she marries the first husband after Halala following three divorces, then divorce will not occur upon entry (into the house) etc. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated: (Arabic): His statement 'so it does not occur' is a corollary to his statement 'for it is dissolved after three'. It does not occur because the oath was sworn upon the divorces of this current ownership, and they are finite as mentioned before. However, if the second husband was before the three, then the remaining occurs. (Urdu): The text's statement 'so it does not occur' is a corollary to its own statement that 'the oath will end after three divorces'. This is because the oath pertains to all the divorces of the existing ownership, and they are limited, so the oath will end upon three divorces as has passed. And if the marriage to another husband occurred before three divorces, then upon marrying the first [husband] again, the remaining divorces will occur when the condition is met. (T)

In the same [source], before the Chapter of Ta'liq, it is stated: 1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Ta'liq, Matba' Mujtabai Delhi, 1/231 2. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Ta'liq, Matba' Mujtabai Delhi, 1/231 3. Radd al-Muhtar, Chapter of Ta'liq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/500

मसला-ए-हदम (निरसन) इत्यादि। और अगर उक्त स्थिति में पति ने शर्त (तअ़लीक़) के बाद तीन से कम तलाक़ें दी हों, तो दूसरे व्यक्ति से निकाह करने के बाद भी वह शर्त समाप्त नहीं होगी। इसलिए, पहले पति से दोबारा निकाह करने पर यदि घर में प्रवेश (दख़ूल) हुआ, तो सभी शर्त वाली तलाक़ें हो जाएंगी। जबकि इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) पहली दी गई तलाक़ से शेष तलाक़ों को होने वाला मानते हैं। उनका यह कथन, दूसरे पति से निकाह के बाद पहले पति से निकाह करने पर पहली तलाक़ों के गिर जाने के विवादास्पद मुद्दे पर उनके रुख पर आधारित है, इत्यादि। (त)

इसी में है: (अरबी): शर्त के निष्प्रभावी होने पर शपथ अमान्य हो जाती है यदि शर्त एक बार पूरी हो गई हो, सिवाय 'कुल्लमा' के साथ, क्योंकि यह तीन के बाद समाप्त हो जाती है क्योंकि यह क्रियाओं की व्यापकता चाहती है जैसे 'कुल्ल' संज्ञाओं की व्यापकता चाहता है। तो यदि वह दूसरे पति के बाद उससे निकाह करे तो तलाक़ नहीं होगी इत्यादि। (उर्दू): शर्त से संबंधित शपथ, शर्त के निष्प्रभावी होने पर समाप्त हो जाएगी जब एक बार शर्त पूरी हो गई हो, मगर शब्द 'कुल्लमा' के साथ किसी शर्त से तअ़लीक़ की गई हो तो वह शपथ तीन तलाक़ों के बाद समाप्त होगी, क्योंकि 'कुल्लमा' क्रियाओं की व्यापकता चाहता है जैसा कि 'कुल्ल' संज्ञाओं की व्यापकता को दर्शाता है, लिहाज़ा इस सूरत में तीन तलाक़ों के बाद हलाला करने पर पहले पति से निकाह करे तो अब दख़ूल-दार से तलाक़ न होगी इत्यादि। (त)

रद-उल-मुहतार में है: (अरबी): उनका कथन 'तो नहीं होगी' उनके कथन 'क्योंकि यह तीन के बाद समाप्त हो जाती है' का परिणाम है। और यह इसलिए नहीं होती क्योंकि शपथ वर्तमान स्वामित्व की तलाक़ों पर थी और वे सीमित हैं जैसा कि पहले बताया गया। लेकिन यदि दूसरा पति तीन से पहले था, तो जो शेष है वह हो जाएगी। (उर्दू): मूल पाठ (मतन) का कथन 'फ़ला यक़अ' (नहीं होगी) उसके अपने कथन 'तीन तलाक़ों के बाद शपथ समाप्त हो जाएगी' का परिणाम है। यह इसलिए कि शपथ का संबंध वर्तमान स्वामित्व की पूरी तलाक़ों से होता है और वे सीमित हैं इसलिए तीन तलाक़ों पर शपथ समाप्त हो जाएगी, जैसा कि गुज़रा है। और अगर तीन तलाक़ों से कम पर दूसरे पति के बाद पहले से निकाह करे तो अब शर्त पाए जाने पर बाकी बची तलाक़ें हो जाएंगी। (त)

इसी में तअ़लीक़ के अध्याय से पहले है: 1. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-तअ़लीक़, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/231 2. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-तअ़लीक़, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/231 3. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-तअ़लीक़, दार इह़या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/500

पृष्ठ 204/688

مسألۃ الھدم الخ۔ اور اگر مذکورہ صورت میں خاوند نے تعلیق کے بعد تین سے کم طلاقیں دی ہوں تو اس کے بعد دوسرے شخص سے نکاح کر لینے کے بعد بھی تعلیق ختم نہ ہوگی لہٰذا دوبارہ پہلے خاوند سے نکاح کرنے پر دخول دار ہوا تو تمام معلق طلاقیں واقع ہو جائیں گی، جبکہ امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی پہلی دی ہوئی طلاق سے بقیہ طلاقوں کو واقع مانتے ہیں ان کا یہ قول، دوسرے خاوند سے نکاح کے بعد پہلے خاوند سے نکاح کرنے پر پہلی طلاقوں کے ساقط ہو جانے کے اختلافی مسئلہ پر ان کے موقف پر مبنی ہے الخ (ت)

اسی میں ہے: تبطل الیمین ببطلان التعلیق اذا وجد الشرط مرۃ الافی کلما فانہ ینحل بعد الثلاث لاقتضائہا عموم الافعال کاقتضاء کل عموم الاسماء فلایقع ان نکحہا بعد زوج اٰخر الخ۔ تعلیق سے متعلق یمین، تعلیق کے باطل ہو جانے پر ختم ہو جائے گی جب ایک دفعہ شرط پائی گئی ہو، مگر لفظ "کلما" کے ساتھ کسی شرط سے تعلیق کی گئی ہو تو وہ یمین تین طلاقوں کے بعد ختم ہوگی، کیونکہ "کلما" افعال کے عموم کو چاہتا ہے جیسا کہ "کل" عموم اسماء پر دلالت کرتا ہے، لہٰذا اس صورت میں تین طلاقوں کے بعد حلالہ کرنے پر پہلے خاوند سے نکاح کرے تو اب دخول دار سے طلاق نہ ہوگی الخ۔ (ت)

ردا لمحتار میں ہے: قولہ فلایقع تفریع علی قولہ فانہ ینحل بعد الثلاث وانما لم یقع لان المحلوف علیہ طلقات ھذہ الملک وھو متناہیۃ کمامر اما لو کان الزوج الآخر قبل الثلاث فانہ یقع مابقی۳۔ متن کا قول "فلایقع" اسکے اپنے قول "تین طلاقوں کے بعد یمین ختم ہو جائے گی" پر تفریع ہے، یہ اس لئے کہ حلف کا تعلق موجودہ ملکیت کی پوری طلاقوں سے ہوتا ہے اور وہ محدود ہیں اس لئے تین طلاقوں پر یمین ختم ہو جائے گی، جیسا کہ گزرا ہے، اور اگر تین طلاقوں سے کم پر دوسرے

خاوند کے بعد پہلے سے نکاح کرے تو اب شرط پائے جانے پر باقی ماندہ طلاقیں واقع ہوں گی۔

(ت)

اسی میں قبیل باب التعلیق ہے: 1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ 2 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ 3 ردالمحتار باب التعلیق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۰۰

[Arabic Text]: If he said, "Whenever you enter the house, you are divorced," and she entered it twice, and divorces occurred upon her, and her waiting period (iddah) expired, then she returned to him after another husband, then according to them (Abu Hanifa and Abu Yusuf), she is divorced whenever she enters the house until she is separated by three divorces, contrary to Muhammad, as mentioned by Al-Zayla'i etc. See what we have commented on his previous statement.

[Urdu Translation]: If in the conditional suspension (ta'liq), the condition is stated with "Whenever" (Kullama) saying, "Whenever you enter the house, you are divorced," then if entry into the house happened twice and two divorces occurred upon her, and after the completion of her waiting period she remarried the first husband, then according to Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them), with three entries, three divorces will occur. However, according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), now with only one entry into the house, only one remaining divorce will occur, as mentioned by Imam Al-Zayla'i, etc. Our footnote on the first statement of Rad al-Muhtar should be consulted. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated: [Arabic Text]: The oath is dissolved after the condition is met absolutely, but if it was found during ownership, divorce occurs, otherwise not. [Urdu Translation]: The oath ends absolutely upon the occurrence of the condition; if that condition is found during ownership, i.e., marriage, then divorce will occur, otherwise not. (T)

In Rad al-Muhtar, it is commented on this: [Arabic Text]: The researcher (Al-Muhaqqiq) in Al-Fath stated in the chapter of suspension (At-Ta'liq) that their saying: "the suspended divorces of this ownership are three" is restricted to as long as he is the owner of them. Thus, if his ownership of some of them ceases, the suspended (divorces) become three (remaining). See what I wrote on the margin of Al-Fath regarding this statement. When you gather all these, you will know, with the help of Allah Almighty, the details of the forms of the issue. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. [Urdu Translation]: In the chapter of Ta'liq in Fath al-Qadir, the researcher (muhaqqiq) stated that the current ownership consists of three divorces. Through this expression, he explained the restriction that as long as the current ownership remains, the oath and suspension remain. And if the ownership of some of the three divorces ends, the suspension remains for the rest until three. Look at my footnote on this statement of Fath al-Qadir. So, when all these expressions are taken into

account, the details of all scenarios of this issue will become known to you with the help of Allah. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (T)

Footnotes: 1. Rad al-Muhtar, Chapter on Al-Mashiyyah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/290. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on At-Ta'liq, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/231. 3. Rad al-Muhtar, Chapter on Al-Mashiyyah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/290.

[अरबी पाठ]: यदि उसने कहा, "जब भी तुम घर में प्रवेश करोगी, तुम्हें तलाक है," और वह उसमें दो बार प्रविष्ट हुई, और उस पर तलाक पड़ गए, और उसकी इद्दत बीत गई, फिर वह दूसरे पति के बाद उसके पास वापस आई, तो उन दोनों (अबू हनीफा और अबू यूसुफ) के अनुसार, वह जब भी घर में प्रवेश करेगी तलाकशुदा हो जाएगी जब तक कि तीन तलाकों द्वारा अलग न हो जाए, मुहम्मद के विपरीत, जैसा कि अल-ज़ैलाई आदि द्वारा उल्लेख किया गया है। देखें जो हमने उनके पिछले कथन पर टिप्पणी की है।

[उर्दू अनुवाद]: अगर तअ'लीक़ (निलंबन) में "कुल्लमा" (जब भी) के साथ शर्त बयान करते हुए कहा, "जब भी तू घर में दाखिल हो तुझे तलाक है," तो अगर दो मर्तबा घर में दाख़िला पाया गया और इस पर दो तलाक़ें होने और इद्दत गुज़रने के बाद पहले ख़ावंद से निकाह किया, तो इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ़ रहिमहुमल्लाह तआला के नज़दीक तीन मर्तबा दाख़िले के साथ तीन तलाक़ें हो जाएंगी, और इमाम मुहम्मद रहिमहुल्लाह तआला के नज़दीक अब सिर्फ एक मर्तबा घर में दाख़िले के साथ एक ही बाक़ीमांदा तलाक़ होगी, जैसा कि इसको इमाम ज़ैलाई ने ज़िक्र फ़रमाया अलख। रद-उल-मुह्तार के पहले क़ौल पर हमारा हाशिया मुलाहिज़ा किया जाए। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है: [अरबी पाठ]: शर्त पूरी होने के बाद क़सम मुतलक़न खत्म हो जाती है, लेकिन अगर वह मिल्कियत (स्वामित्व) में पाई जाए तो तलाक हो जाएगी, वरना नहीं। [उर्दू अनुवाद]: मुतलक़न शर्त पाए जाने पर यमीन (क़सम) ख़त्म हो जाती है; अगर वह शर्त मिल्कियत यानी निकाह के दौरान पाई जाए तो तलाक़ हो जाएगी वरना नहीं। (त)

इस पर रद-उल-मुह्तार में है: [अरबी पाठ]: फ़तह (अल-क़दीर) में मुहक़्क़िक़ (अन्वेषक) ने तअ'लीक़ के अध्याय में जानकारी दी कि उनका कहना: "इस मिल्कियत के मुअ़ल्लक़ तलाक़ तीन हैं" तब तक सीमित है जब तक वह उनका मालिक है। पस जब उनमें से कुछ की मिल्कियत ज़ायल (समाप्त) हो जाए तो मुअ़ल्लक़ तीन (बाक़ी) हो जाते हैं। देखें जो मैंने इस क़ौल पर फ़तह के हाशिये पर लिखा है। और जब इन सबको जमा करेंगे, तो अल्लाह तआला की मदद से आप मसले की तमाम सूरतों की तफ़सील जान लेंगे। वल्लाहु सुब्हानहु वतआला आअ़लम। [उर्दू अनुवाद]: फ़तह-उल-क़दीर के बाब-उत-तअ'लीक़ में मुहक़्क़िक़ साहब ने इफ़ादा फ़रमाया कि मौजूदा मिल्कियत तीन तलाक़ें होती हैं, इस इबारत से उन्होंने यह क़ैद बयान फ़रमाई कि मौजूदा मिल्कियत जब तक बाक़ी है यमीन व

तअ'लीक़ बाक़ी है और अगर तीन में से बाज़ तलाक़ों की मिल्कियत ख़त्म हो जाए तो तीन तक तअ'लीक़ रहेगी आह, फ़तह-उल-क़दीर के इस क़ौल पर मेरे हाशिये को देखो, तो जब ये तमाम इबारत मुलाहिज़ा में आएँ तो इस मसले की तमाम सूरतों की तफ़सील ब-औन-अल्लाह आपको मालूम हो गई। वल्लाहु सुब्हानहु वतआला आअ़लम (त)

पाद टिप्पणियाँ: 1. रद-उल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल मशियाह, दार इहया-उल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/290. 2. दुर्रे मुख़्तार, बाब-उत-तअ'लीक़, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/231. 3. रद-उल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल मशियाह, दार इहया-उल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/290.

اذا قال کلما دخلت الدار فانت طالق فدخلتها مرتین ووقع علیها الطلاق وانقضت عدتها ثم عادت الیه بعد زوج آخر فعند هما تطلق کلما دخلت الدار الی ان تبین بثلاث طلقات خلافا لمحمد کما ذکره الزیلعي الخ وانظر ما علقنا علی قوله السابق۔

اگر تعلیق میں "کلما" کے ساتھ شرط بیان کرتے ہوئے کہا جب بھی تو گھر میں داخل ہو تجھے طلاق ہے، تو اگر دو مرتبہ گھر میں دخول پایا گیا اور اس پر دو طلاقیں ہونے اور عدت گزرنے کے بعد پہلے خاوند سے نکاح کیا تو امام ابو حنیفہ اور امام ابویوسف رحمہما اللہ تعالٰی کے نزدیک تین مرتبہ داخلہ کے ساتھ تین طلاقیں ہو جائیں گی، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی کے نزدیک اب صرف ایک مرتبہ گھر میں داخلہ کے ساتھ ایک ہی باقیماندہ طلاق ہوگی، جیسا کہ اس کو امام زیلعی نے ذکر فرمایا الخ۔ ردالمحتار کے پہلے قول پر ہمارا حاشیہ ملاحظہ کیا جائے۔ (ت)

در مختار میں ہے: تنحل الیمین بعد وجود الشرط مطلقا لکن ان وجد في الملك طلقت والا لا۔ مطلقاً شرط پائے جانے پر یمین ختم ہو جاتی ہے اگر وہ شرط ملکیت یعنی نکاح کے دوران پائی جائے تو طلاق ہو جائے گی ورنہ نہیں۔ (ت)

اس پر ردالمحتار میں ہے: المحقق فی الفتح افاد فی باب التعلیق ان قولهم المعلق طلقات هذا الملك الثلاث مقید بما دام مالکا لها فاذا زال ملکه لبعضها صار المعلق ثلثاً اھ وانظر ما کتبت علی هامش الفتح من هذا القول واذا جمعت هذه کلها عرفت بعون اللہ تعالی تفاصیل صور المسئلة، واللہ سبحانه وتعالی اعلم۔ فتح القدیر کے باب التعلیق میں محقق صاحب نے افادہ فرمایا کہ موجودہ ملکیت تین طلاقیں ہوتی ہیں، اس عبارت سے انہوں نے یہ قید بیان فرمائی کہ موجودہ ملکیت جب تک باقی ہے یمین و

تعلیق باقی ہے اور اگر تین میں سے بعض طلاقوں کی ملکیت ختم ہو جائے تو تین تک تعلیق رہے گی اھ، فتح القدیر کے اس قول پر میرے حاشیہ کو دیکھو، تو جب یہ تمام عبارات ملاحظہ میں آئیں تو اس مسئلہ کی تمام صورتوں کی تفصیل بعون اللہ آپ کو معلوم ہو گئی۔ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم (ت)

۱ ردالمحتار فصل فی المشیۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۰ ۲ درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۳۱ ۳ ردالمحتار فصل فی المشیۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۰

Fatawa Razvia Volume 13, Page 13

Problem 15: From Haridwar, asked by Fazal Hussain. A person, in a state of anger, said to his wife: "If you come to my house, you are divorced (talaq), and if I talk to you (i.e., have intercourse), I make it haraam (forbidden)." Does divorce occur through these words or not? And is there any harm in marrying this woman to another person?

Answer: If at the time of saying this, the woman was at a place other than her husband's house, then when she comes to her husband's house, one revocable divorce (talaq raj'i) will occur. If she was already in her husband's house at that time, divorce will not occur as long as she stays there. Divorce will occur when she goes somewhere else and then returns to the husband's house from there. In any case, it will be a revocable divorce (talaq raj'i). Within the waiting period (iddah), if the husband simply says, "I have taken her back into my marriage," she will remain his wife as before, and she cannot marry another. Yes, if divorce occurs and the husband does not take her back into marriage until three menstrual cycles have started and ended after the divorce, then at that time the woman will be out of the marriage contract and marriage with another will be permissible. And Allah Almighty knows best.

Problem 16: From Kolkata, sent by Abul Qamar. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid said to his wedded wife under oath, "If you ever miss a prayer without a valid religious excuse, then three divorces will occur from my side." Will three divorces occur at one place, at one time, and with one word? Since this condition is lifelong, as long as the husband and wife are alive, they are in constant fear. People of this age are lazy and have become indifferent to religious matters. It is possible that at some point the woman might be negligent and the divorce would occur. Can any such measure be taken before the divorce occurs so that the divorce does not fall upon the woman?

Answer: There is a consensus among the four Imams and all four schools of thought that three divorces given at one place, at one time, and in one word, do occur.

[Table/Box Section] Arabic Text: Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) said: "Your wife has become separated from you, and you have disobeyed your Lord. If you do not fear Allah, He will not make for you (a way out)." Urdu Translation: Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) said: "Your wife has become

permanently divorced (Ba'ina), and you have disobeyed Allah Almighty; if you do not fear the punishment of Allah Almighty..."

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

मसला 15: हरिद्वार से, सायल फ़ज़ल हुसैन। एक व्यक्ति ने गुस्से की हालत में अपनी पत्नी से कहा कि अगर तू मेरे घर आई तो तुझे तलाक है और अगर मैं तेरे साथ कोई बात करूँ्यानी हमबिस्तरी करूँ्तो हराम करूँ्इन शब्दों से तलाक साबित होती है या नहीं और इस औरत का निकाह दूसरे व्यक्ति के साथ करने में कोई हर्ज तो नहीं है?

जवाब: यह कहने के वक्त अगर औरत पति के घर के अलावा किसी और जगह थी, तो जब वह पति के घर आएगी तो एक तलाक़-ए-रजई (वापसी योग्य तलाक) हो जाएगी। और अगर उस वक्त वह पति के ही घर में थी, तो जब तक यहाँ रहेगी तलाक नहीं होगी, जब कहीं और जाकर वहाँ से पति के यहाँ आएगी उस वक्त तलाक होगी। और बहरहाल तलाक़-ए-रजई होगी। इद्दत के अंदर अगर पति इतना कह दे कि मैंने उसे अपने निकाह में वापस ले लिया, तो वह पहले की तरह उसकी पत्नी बनी रहेगी और उसका निकाह दूसरे से नहीं हो सकेगा। हाँ, अगर तलाक हो जाए और पति उसे अपने निकाह में वापस न ले यहाँ तक कि तलाक होने के बाद से तीन मासिक धर्म शुरू होकर खत्म हो जाएं तो उस वक्त औरत निकाह से निकल जाएगी और दूसरे से निकाह जायज़ होगा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 16: कोलकाता से, मुरसला अबुल कमर। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने कसम के तौर पर अपनी निकाह शुदा औरत से कह दिया कि अगर बिना शरीय उज़्र (धार्मिक बहाना) के तुमने कभी नमाज़ न पढ़ी तो तुझे मेरी तरफ से तीन तलाकें होंगी। क्या एक ही जगह, एक ही समय और एक ही शब्द से तीन तलाकें प्रभावी होंगी? चूंकि इस तरह का सिलसिला लंबा है, जब तक पति और पत्नी जीवित हैं, वे हमेशा डर में हैं और इस समय के लोग सुस्त हैं, दीन (धर्म) के कामों में बेपरवाह हो गए हैं। मुमकिन है कि किसी समय औरत से लापरवाही हो जाए और उसे तलाक हो जाए। क्या कोई ऐसा तरीका हो सकता है कि तलाक होने से पहले कोई ऐसी युक्ति (हीला) की जाए कि औरत पर तलाक न पड़े?

जवाब: चारों इमामों और चारों मज़हबों का इस पर आम सहमति (इजमा) है कि तीन तलाकें एक जगह, एक वक्त और एक ही शब्द में प्रभावी हो जाती हैं।

[तालिका/बॉक्स अनुभाग] अरबी पाठ: इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने फ़रमाया: "तेरी बीवी तुझसे अलग हो गई है और तूने अपने रब की नाफ़रमानी की है। अगर तू अल्लाह से नहीं

डरता, तो वह तेरे लिए (निकलने का कोई रास्ता) नहीं बनाएगा।" उर्दू अनुवाद: हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) ने फ़रमाया: तेरी बीवी बाइनह (स्थायी) तलाक वाली हो गई है और तूने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की है, अगर तू अल्लाह तआला के अज़ाब से...

पृष्ठ 206 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم، صفحہ ۱۳

مسئلہ ۱۵: از ہر دوار مسئولہ فضل حسین ایک شخص نے بحالت غصہ اپنی عورت سے یہ کہا کہ اگر تو میرے گھر آئی تو تجھ کو طلاق ہے اور اگر میں تیرے ساتھ کوئی بات کروں (یعنی صحبت کروں) تو حرام کروں، ان الفاظ سے طلاق ثابت ہوتی ہے یا نہیں اور اس عورت کا نکاح دوسرے شخص کے ساتھ کرنے میں کوئی حرج تو نہیں ہے؟

الجواب: اس کہنے کے وقت اگر عورت شوہر کے گھر کے علاوہ اور جگہ تھی تو جب شوہر کے گھر آئے گی ایک طلاق رجعی پڑے گی اور اگر اس وقت شوہر ہی کے گھر میں تھی تو جب تک یہاں رہے گی طلاق نہ ہوگی جب کہیں اور جا کر وہاں سے شوہر کے یہاں آئے گی اس وقت طلاق پڑے گی، اور بہر حال طلاق رجعی ہوگی، عدت کے اندر اگر شوہر اتنا کہہ دے کہ میں نے اسے اپنے نکاح میں پھیر لیا تو وہ بدستور اس کی زوجہ رہے گی اور اس کا نکاح دوسرے سے نہ ہوسکے گا، ہاں اگر طلاق پڑے اور شوہر اسے اپنے نکاح میں واپس نہ لے یہاں تک کہ طلاق ہونے کے بعد سے تین حیض شروع ہو کر ختم ہو جائیں تو اس وقت عورت نکاح سے نکل جائے گی اور دوسرے سے نکاح جائز ہوگا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶: از کلکتہ مرسلہ ابوالقمر کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے قسمیہ اپنی منکوحہ عورت سے کہہ دیا کہ اگر بغیر عذر شرعی کے تم نے کبھی نماز نہ پڑھی تو تجھ کو میری طرف سے تین طلاقیں ہوں گی، کیا ایک جگہ ایک وقت ایک ہی دفعہ ایک لفظ سے تین طلاقیں واقع ہوں گی چونکہ اس قسم کا سلسلہ دراز ہے جب تک زوج اور زوجہ زندہ ہیں مدام اندیشہ میں ہیں اور اس زمانہ کے لوگ سُست ہیں دین کے کاموں میں بے پروا ہو گئے ہیں، ممکن ہے کہ کسی وقت عورت سے غفلت ہو جائے تو اس کو طلاق پڑ جائے گی۔ کیا کوئی ایسی صورت

ہو سکتی ہے کہ طلاق کے واقع ہونے سے قبل کوئی ایسا حیلہ کیا جائے کہ عورت پر طلاق نہ پڑے۔

الجواب: چار اماموں چاروں مذہب کا اجماع ہے کہ تین طلاقیں ایک جگہ ایک وقت ایک ہی لفظ میں واقع ہو جاتی ہیں۔

[جدول/باکس سیکشن] عربی عبارت: قال ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما بانت امرأتک وعصیت ربک ان لم تتق اللہ فلم یجعل لک اردو ترجمہ: حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے فرمایا تیری بیوی بائنہ طلاق والی ہو گئی ہے اور تو نے اللہ تعالیٰ کی نافرمانی کی ہے اگر تو اللہ تعالیٰ کے عذاب سے

Fatawa Ridawiyya Volume Thirteen

...a way out. (Note 1) - If he does not fear, then Allah Almighty will not make any way for you. (T)

The misguided and irreligious Wahhabis disagree with this and make the forbidden permissible. Since Zaid made the ruling of irreversible divorce conditional upon not praying even once, as is evident from the statement of the question, when the woman leaves even one prayer without a valid Sharia excuse, three divorces will immediately take place upon her, and she will not be able to return to his marriage without a halala. "For the consequence descends upon the occurrence of the condition as in Al-Hidayah etc." (The punishment is found when the condition is met, as in Al-Hidayah etc. - T). And suggesting a trick for it involves intentionally committing a major sin, and revealing it is also forbidden. This is based on the meaning upon which the question is based. If Zaid's intention is different, he should be inquired of himself.

Arabic: Indeed, for the speech there are two other interpretations which we do not mention so that it may not become 'teaching' [to find a loophole], and the Mufti is prohibited from it; rather, he should ask, for he [the questioner] knows his intention better. | Urdu: There are two interpretations of this speech which we do not mention so that it may not be considered 'teaching'. The Mufti is commanded to abstain from it; rather, he should only question, because the person involved knows his own intention better. (T)

At that time, its answer should be given. It is stated in Wajeez Karadari and Uqud ad-Durriyah:

Arabic: I prefer that the Mufti does not say 'he is believed religiously' because that is teaching, rather his etiquette is to say 'he is not believed'. And Allah Almighty knows best. | Urdu: It is among the etiquettes of a Mufti that he does not certify the religiosity (diyanat) of any matter because it constitutes teaching the one involved; rather, the etiquette of a Mufti is to say that certification cannot be given. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 71: From Pilibhit, Munir Khan locality, sent by Maulana Abdul Ahad Sahib, 12 Ramadan-ul-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid had said in a conversation to the father of his wife, Hinda, that "if my wife goes to such-and-such house, she will no longer be my wife." Then, a few days

later in another gathering, Zaid repeated the aforementioned words to Hinda's father: "if Hinda goes to such-and-such house, she will no longer remain my wife." After a short while, Hinda went to that house without her husband's consent, regarding which Zaid had already expressed his disapproval twice in two gatherings to Hinda's father. Now, for the past five months, Hinda has been residing in that house.

1. Sunan Abi Dawood, Book of Divorce, Chapter on abrogating the return after three divorces, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/299.
2. Uqud ad-Durriyah fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiyya, benefits relating to the etiquettes of a Mufti, Haji Abdul Ghaffar and Sons, book merchants, Arg Bazar, Kandahar, Afghanistan, 1/3.

फ़तावा रज़विया खंड तेरह

...एक रास्ता। (नोट 1) - यदि वह नहीं डरेगा, तो अल्लाह तआला तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं बनाएगा। (त)

गुमराह और बेदीन वहाबी इसके खिलाफ करते हैं और हराम को हलाल ठहराते हैं। चूंकि जैद ने एक वक्त की नमाज न पढ़ने पर तलाक-ए-मुगल्लज़ा (अपरिवर्तनीय तलाक) को शर्त के साथ जोड़ दिया था, जैसा कि सवाल के बयान से स्पष्ट है, तो जब औरत बिना किसी शरीयत के बहाने के एक वक्त की भी नमाज छोड़ेगी, तो तुरंत उस पर तीन तलाक हो जाएंगे और वह बिना हलाला के उसके निकाह में नहीं आ सकेगी। "निश्चित रूप से परिणाम शर्त के पूरा होने पर उतरता है जैसा कि अल-हिदाया आदि में है।" (शर्त पूरी होने पर सज़ा मिलती है जैसा कि हिदाया आदि में है। - त) और इसके लिए कोई हीला (जुगाड़) बताना जानबूझकर कबीरा गुनाह (बड़ा पाप) करने के समान है और इसे बताना भी हराम है। यह उस अर्थ पर आधारित है जिस पर सवाल खड़ा है, और अगर जैद की मुराद कुछ और है तो उसी से पूछताछ की जाए।

अरबी: कलाम (बात) के दो और पहलू हैं जिनका हम उल्लेख नहीं करते ताकि यह 'शिक्षा' न बन जाए, और मुफ्ती को इससे रोका गया है; बल्कि वह उससे पूछे क्योंकि मुब्तला (पीड़ित) अपनी मुराद को बेहतर जानता है। | उर्दू: इस कलाम के दो पहलू हैं जिनका हम ज़िक्र नहीं करते ताकि यह 'शिक्षा' (शिक्षा देना) न कहलाए। मुफ़्ती को इससे रुकने का हुक्म है बल्कि वह सिर्फ़ सवाल करे क्योंकि मुब्तला शख़्स अपनी मुराद को बेहतर जानता है। (त)

उस समय इसका उत्तर दिया जाना चाहिए। वजीज़ करदरी और उक़ूद अद-दुरिया में है:

अरबी: मुफ्ती के लिए यह पसंदीदा है कि वह यह न कहे कि 'दियानत' (धार्मिकता) के आधार पर उसकी तस्दीक की जाती है क्योंकि यह शिक्षा देना है, बल्कि उसका अदब यह है कि वह कहे कि उसकी तस्दीक नहीं की जा सकती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | उर्दू: मुफ्ती के आदाब में से है कि वह किसी बात पर 'दियानत' की तस्दीक न करे क्योंकि यह मुब्तला को शिक्षा देना माना जाता है, बल्कि मुफ्ती का अदब यह है कि वह कहे कि तस्दीक नहीं हो सकती। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 71: पीलीभीत, मोहल्ला मुनीर खां, प्रेषक मौलाना अब्दुल अहद साहब, 12 रमजान-उल-मुबारक 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: जैद ने अपनी पत्नी हिंदा के पिता

से किसी बातचीत में कहा था कि "अगर मेरी पत्नी फलां घर जाएगी तो वह मेरी पत्नी ही नहीं रहेगी।" फिर उसके कुछ दिनों बाद दूसरी सभा में जैद ने हिंदा के पिता से उपरोक्त शब्दों को दोबारा दोहराया कि "हिंदा अगर फलां घर जाएगी तो मेरी बीवी ही नहीं रहेगी।" थोड़े समय के बाद, हिंदा अपने पति की सहमति के बिना उस घर में चली गई, जिसके बारे में जैद ने दो बार दो सभाओं में हिंदा के पिता के सामने अपनी असहमति जताई थी। अब पांच महीने से हिंदा उसी घर में रह रही है।

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-तलाक़, तीन तलाकों के बाद वापसी को निरस्त करने का अध्याय, आफ़ताब आलम प्रेस, लाहौर, 1/299।
2. उक़ूद अद-दुरिया फ़ी तन्कीह अल-फ़तावा अल-हामिदिया, मुफ़्ती के शिष्टाचार से संबंधित लाभ, हाजी अब्दुल ग़फ़्फ़ार एंड संस, पुस्तक व्यापारी, अर्ग बाज़ार, कंधार, अफ़गानिस्तान, 1/3।

पृष्ठ 207 / 688

فتاوی رضویہ جلد تیرہ

مخرجاً 1۔ | خوف نہ کرے گا تو پھر تیرے لئے اللہ تعالٰی کوئی سبیل نہ فرمائے گا۔ (ت)

وہابی گمراہ بددین اس میں خلاف کرتے اور حرام کو حلال ٹھہراتے ہیں، زید نے جبکہ ایک وقت کی نماز نہ پڑھنے پر حکم طلاق مغلظ معلق کیا جیسا کہ تقریر سوال سے ظاہر تو عورت جب بے عذر شرعی ایک وقت کی نماز بھی چھوڑے گی فوراً اس پر تین طلاقیں ہو جائیں گی اور بے حلالہ اس کے نکاح میں نہ آسکے گی فان الجزاء ینزل عند نزول الشرط کما في الھدایۃ وغیرھا (شرط پائے جانے پر جزا پائی جاتی ہے جیسا کہ ہدایہ وغیرہ میں ہے۔ت) اور اس کا حیلہ ارتکاب کبیرہ بالعمد پر مشتمل ہے اور اس کا بتانا بھی حرام ہے یہ اس معنی پر ہے جس پر سوال مبنی اور اگر مراد زید اور ہے تو اس کا اسی سے استفسار ہو،

فان للکلام محملین اخرین لانذکر ھما کیلا یکون تعلیمًا والمفتی منھی عنہ بل یسأل فھو اعلم بمرادہ۔ | اس کلام کے دو محمل اور جن کو ہم ذکر نہیں کرتے تاکہ تعلیم نہ قرار پائے مفتی کو اس سے باز رہنے کا حکم ہے بلکہ وہ صرف سوال کرے کیونکہ مبتلا شخص اپنی مراد کو بہتر جانتا ہے۔ (ت)

اس وقت اس کا جواب دیا جائے ، وجیز کر دری و عقود الدریہ میں ہے ھ:

احب المفتی ان لا یقول یصدق دیانۃ لانہ تعلیم بل ادبہ ان یقول لا یصدق۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | مفتی کے آداب میں سے ہے کہ وہ کسی بات پر دیانت کی تصدیق نہ کرے کیونکہ یہ مبتلاء کو تعلیم قرار پاتی ہے بلکہ ادب مفتی یہ ہے کہ وہ کہے کہ تصدیق نہیں ہو سکتی واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۱: از پیلی بھیت محلہ منیر خاں مرسلہ مولانا عبدالاحد صاحب ۱۲ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ ہندہ کے پدر سے کسی

تذکرہ میں کہا تھا کہ اگر میری بیوی فلاں مکان میں جائے گی تو میری بیوی ہی نہ رہے گی پھر اس کے چند روز بعد دوسرے جلسے میں زید نے پدرِ ہندہ سے الفاظ مذکورہ دوبارہ پھر ادا کئے کہ ہندہ اگر فلاں مکان میں جائے گی تو میری بی بی ہی نہ رہیگی، بعد تھوڑے عرصہ کے ہندہ بلا رضا مندی اپنے شوہر کے اس مکان میں چلی گئی جس کی بابت زید دو مرتبہ دو جلسوں میں پدرِ ہندہ سے عدم رضامندی اپنی ظاہر کر چکا تھا اور اب عرصہ پانچ ماہ سے ہندہ اسی مکان میں مقیم ہے،

1 سنن ابی داؤد کتاب الطلاق باب نسخ المراجعة بعد التطليقات الثلاث آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۲۹۹

2 عقود الدرية في تنقيح الفتاوى الحامدية فوائد تتعلق بآداب المفتى حاجی عبدالغفار و پسران تاجران کتب ارگ بازار قندھار افغانستان ۱/۳

In this case, did the marriage with Zaid remain intact or not? And if, God forbid, the marriage of Hindah with Zaid did not remain intact, then what kind of divorce could fall upon Hindah? And what is the procedure for reconciliation (Ruju') according to the Noble Shariah? Answer: If Zaid had uttered those words, whether both times or once, with the intention of pronouncing divorce—meaning his intent was that if she went there, she would be divorced—then by her going there, one irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) occurred, and she exited the marriage contract. He cannot take her back (Ruju'). Yes, he can remarry her with her consent, whether during the waiting period (Iddah) or after it. In any case, there is no need for Halala (intermediate marriage) even if the said word was repeated three times. And if at any time there was no intention of divorce in the aforementioned sense, then nothing happened upon the woman going there, and she remains his wife as before. As for whether there was an intention or not, this depends on Zaid's statement. If he says under oath that he did not have that meaning in mind at any time with those words, then no divorce will be acknowledged at all. If Zaid takes a false oath, the sin will be upon him. It is stated in Durr-ul-Mukhtar: "The statement is his, with his oath, regarding the absence of intention, and it is sufficient for her to have him swear in her house. And Allah Almighty knows best." Regarding the absence of intention, the husband's word will be accepted with an oath, and it is sufficient for the wife to take the oath from him at home. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 18: From the land of Bengal, Noakhali district, place Hatia, from Maulvi Abbas Ali alias Maulvi Abdus Salam Sahib, 21 Dhu al-Hijjah 1315 AH. What do the scholars of the solid Shariah say about this matter? Zaid married Hindah by saying, "I will not enter into a second marriage without your permission; if I do, then it will be a triple divorce (Talaq-e-Mughallazah)." Now, in this case, if the condition is breached, will the divorce occur or not? And if it does, how many divorces will occur? Clarify, and you will be rewarded, along with the evidence. Answer: If Zaid uttered these words before the marriage contract, or he made this condition during the contract itself but the offer (Ijab)—meaning the initiation of the contract words—was from Zaid's side, for example, he said, "I have taken you into my marriage on the condition that I will not enter into a second marriage without your permission; if I do, then it will be a triple divorce," and Hindah said, "I have accepted," then in the event of the condition being met, the second wife will not be divorced. And if he said the aforementioned words after the marriage, or if the marriage contract itself occurred with this

condition and the acceptance was from Zaid's side—for example, Hindah said, "I have given myself to you in marriage," and Zaid said, "I have accepted on this condition, etc.," or Hindah said, "I have given myself to you in marriage on the condition that you will not enter into a second marriage without my permission; if you do, then it will be a triple divorce," and Zaid said, "I have accepted"—then in the event of the condition being met, one of the two women...

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

तो इस सूरत में जैद से निकाह कायम रहा या नहीं? और खुदा न करे अगर हन्दा का जैद से निकाह कायम नहीं रहा तो हन्दा पर कौन सी तलाक पड़ सकती है? और शरीअत-ए-मुतह्हरा की रू से रुजू (वापसी) की क्या सूरत हो सकती है? अल-जवाब: अगर जैद ने वो अल्फाज़ दोनों बार या एक बार तलाक देने की नीयत से कहे थे, यानी उसका मतलब ये था कि अगर वो वहां जाए तो उस पर तलाक है, तो वहां जाने से औरत पर एक तलाक-ए-बाइन हो गई और वो निकाह से निकल गई। रुजू नहीं कर सकता, हाँ औरत की रज़ा से दोबारा उससे निकाह कर सकता है, चाहे इद्दत में हो या इद्दत के बाद। बहरहाल, हलाला की ज़रूरत नहीं है, चाहे ज़िक्र किया गया लफ्ज़ तीन बार कहा गया हो। और अगर किसी बार इससे तलाक की नीयत मज़कूरह मा'नों में न थी, तो औरत का वहां जाने से कुछ न हुआ और वो बदस्तूर उसकी बीवी है। रहा ये कि नीयत थी या नहीं, ये बयान जैद पर मुन्हसिर है। अगर वो हल्फ़ (क़सम) के साथ कह दे कि मेरा वो मतलब उन लफ़्ज़ों से किसी बार में भी न था, तो तलाक असल में नहीं मानी जाएगी। अगर जैद झूठा हल्फ़ उठाएगा तो वबाल उसी पर होगा। दुर्रे मुख्तार में है: "नीयत न होने के बारे में शौहर की बात उसकी क़सम के साथ मानी जाएगी, और बीवी का अपने घर में ही उससे क़सम ले लेना काफी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।" नीयत न होने के मुतअल्लिक खाविन्द की बात हल्फ़ के साथ तस्लीम कर ली जाएगी और बीवी का घर में ही उससे क़सम ले लेना काफी है। वल्लाह तआला आलम (त)।

मसला १८: मुल्के बंगाल, ज़िला नोआखाली, मकाम हतिया, मर्सला मौलवी अब्बास अली उर्फ मौलवी अब्दुस्सलाम साहब, २१ ज़िल-हिज्जा १३१५ हिजरी। शरीअत-ए-मतीन के फुज़ला इस मसले में क्या फरमाते हैं कि जैद ने हन्दा से यूँ कह कर निकाह किया कि मैं तुम्हारी इजाज़त के बगैर दूसरा निकाह नहीं करूँगा, अगर करूँ तो तलाक-ए-मुग़ल्लज़ह होगी। अब इस सूरत में अगर शर्त फौत हो जाए तो तलाक वाक़े होगी या नहीं? और अगर हो तो कितनी तलाक होंगी? बयान फरमायें और अजर पायें, दलील के साथ। अल-जवाब: अगर जैद ने ये अल्फाज़ अक़्द-ए-निकाह से पहले कहे थे या खुद नफ्स-ए-अक़्द में ये शर्त की मगर ईजाब यानी इब्तदा-ए-अल्फाज़-ए-अक़्द जैद की जानिब से थी, मसलन उसने कहा कि मैंने तुझे अपने निकाह में लिया इस शर्त पर कि तेरी इजाज़त के बगैर निकाह-ए-सानी न करूँगा, अगर करूँ तो तलाक-ए-मुग़ल्लज़ह हो, हन्दा ने कहा मैंने कुबूल किया, तो शर्त वाक़े होने की सूरत में ज़ौजा-ए-सानिया पर तलाक न होगी। और अगर निकाह के बाद मज़कूरह अल्फाज़ कहे या नफ्स-ए-अक़्द इसी शर्त पर हुआ और जैद की जानिब से कुबूल था, मसलन हन्दा ने कहा मैंने

अपने नफ्स को तेरे निकाह में दिया, जैद ने कहा मैंने कुबूल किया इस शर्त पर वगेरह, या हन्दा ने कहा मैंने अपने नफ्स को तेरे निकाह में दिया इस शर्त पर कि तू मेरी इजाज़त के बगैर निकाह-ए-सानी न करे, अगर करे तो तलाक-ए-मुग़ल्लज़ह हो, जैद ने कहा मैंने कुबूल किया, तो शर्त वाक़े होने की सूरत में दोनों औरतों में से एक...

पेज २०८ ऑफ ६८८

پس اس صورت میں نکاح زید سے قائم رہا یا نہیں؟ اور مبادا اگر نکاح ہندہ زید سے نہیں قائم رہا تو کون سی طلاق ہندہ پر پڑ سکتی ہے؟ اور کیا صورت رجعت کی ازروئے شرع شریف ہوسکتی ہے؟ الجواب: اگر زید نے وہ الفاظ دونوں بار خواہ ایک بار بہ نیت ایقاع طلاق کے کہے تھے یعنی یہ مطلب تھا کہ اگر وہ وہاں جائے تو اس پر طلاق ہے تو وہاں جانے سے عورت پر ایک طلاق بائن ہوگئی نکاح سے نکل گئی رجعت نہیں کرسکتا، ہاں عورت کی رضا سے دوبارہ اس سے نکاح کرسکتا ہے عدت میں خواہ عدت کے بعد، بہر حال حلالہ کی حاجت نہیں اگر چہ لفظ مذکور تین بار کہا ہو اور اگر کسی بار اس سے نیت طلاق بمعنی مذکور نہ تھی تو عورت کا وہاں جانے سے کچھ نہ ہوا اور وہ بدستور اس کی زوجہ ہے، رہا یہ کہ نیت تھی یا نہ تھی یہ بیان زید پر ہے اگر وہ بحلف کہہ دے کہ میرا وہ مطلب ان لفظوں سے کسی بار میں بھی نہ تھا تو طلاق اصلا نہ مانیں گے اگر زید جھوٹا حلف کرلے گا وبال اس پر رہے گا، در مختار میں ہے: القول له بيمينه في عدم النية ويكفى تحليفها في منزله۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ نیت نہ ہونے کے متعلق خاوند کی بات حلف کے ساتھ تسلیم کرلی جائے گی اور بیوی کا گھر میں ہی اس سے قسم لے لینا کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۸: از ملک بنگال ضلع نواکھالی مقام ہتیار مسلہ مولوی عباس علی عرف مولوی عبدالسلام صاحب ۲۱ ذی الحجہ ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں فضلائے شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے یوں کہہ کر نکاح کیا کہ میں تمہاری بلا اجازت دوسرا نکاح نہیں کروں گا اگر کروں تو طلاق مغلظہ ہوگی، اب اس صورت میں شرط فوت ہوجائے تو طلاق واقع ہوگی یا نہیں؟ اور ہو تو کے طلاق ہوں گی؟ بینوا توجروا مع الدلیل۔ الجواب: اگر زید نے یہ الفاظ عقد نکاح سے پہلے کہے تھے یا خود نفس عقد میں یہ شرط کی مگر ایجاب یعنی ابتدائے الفاظ عقد جانب زید سے تھی، مثلاً اس

نے کہا میں نے تجھے اپنے نکاح میں لیا اس شرط پر کہ بے تیری اجازت کے نکاح ثانی نہ کروں گا اگر کروں تو طلاق مغلظہ ہو، ہندہ نے کہا میں نے قبول کیا جب تو بحال وقوع شرط زوجہ ثانیہ پر طلاق نہ ہوگی اور اگر بعد نکاح الفاظ مذکورہ کہے یا نفس عقد اس شرط پر ہوا اور زید کی جانب سے قبول تھا مثلاً ہندہ نے کہا میں نے اپنے نفس کو تیرے نکاح میں دیا زید نے کہا میں نے قبول کیا اس شرط پر الخ یا ہندہ نے کہا میں نے اپنے نفس کو تیرے نکاح میں دیا اس شرط پر کہ تو بے میری اجازت کے نکاح ثانی نہ کرے اگر کرے تو طلاق مغلظہ ہو، زید نے کہا میں نے قبول کیا، تو در صورت وقوع شرط دونوں عورتوں میں سے ایک

Fatawa Razawiyya Volume 13 (Page 13)

[The woman] will be divorced; Zaid will have the option to direct the divorce to whichever of them he wishes, whether towards Hindah or towards the second married wife.

[Arabic Column]

In Al-Hindiyya, narrated from Al-Fath: If a man said to his wife, "If I marry another woman against you as long as you live, then a divorce is obligatory upon me," and then he marries another woman while she is still his wife, a divorce occurs upon one of them. He may direct it towards whichever of them he wishes. [Summarized]. I say: In the second chapter, since the utterance of the condition occurred after the establishment of the marriage—because it is completed with two words [proposal and acceptance]—therefore Hindah was a subject for divorce due to the establishment of his ownership over her. Thus, his statement about a 'severe' divorce (mughallazah) could apply to either of them, so he can direct it towards whichever of them he prefers. However, in the first chapter, since the utterance occurred before the completion of the marriage—as it is not completed by a mere proposal—Hindah was not a subject for it due to the lack of ownership and attribution to Hindah's marriage. Thus, the other woman became the specific target in order to make the statement effective, just as if he had said to his wife and a

[Urdu Column]

In Al-Hindiyya, it is quoted from Al-Fath that if someone said to his wife: "If I marry another woman against you during your lifetime, then divorce is obligatory on me." After this, if he marries another woman over her, then one of the two wives, the first and the second, will be divorced. The husband can implement this divorce on whichever of them he wishes. (Summarized). (I say that in the second case, i.e., after the marriage or if these words were spoken in the proposal from the wife's side, then because the utterance of the conditional words occurred after the proof of marriage—since marriage is completed with two words of proposal and acceptance—therefore, in the mentioned case, Hindah became the subject of divorce because upon the completion of marriage, the ownership of marriage became complete. Since Zaid spoke of a 'severe' divorce occurring at this point, the possibility of a severe divorce exists for each of the two wives upon marrying the second one. Therefore, Zaid can implement this divorce on whichever of the two he wishes. But in the first case, i.e., when the utterance of the condition happened before the completion of marriage—because marriage is not completed by mere

[Arabic Column]	[Urdu Column]
stranger, "One of you is divorced," then his wife would be divorced without further intention.	proposal—for this reason, in this case, Hindah will not be able to be the subject of divorce because the marriage has not yet happened, nor can divorce [be directed] towards the marriage...

1 Fatawa Hindiyya, Third Chapter regarding linking divorce with the words 'in' (if), 'idha' (when), etc., Nurani Kutub Khana Peshawar 1/426.

तलाक़ हो जाएगी; ज़ैद को यह अधिकार होगा कि वह उनमें से जिसकी तरफ चाहे तलाक़ को फेर दे, चाहे वह हिन्दह की तरफ हो या दूसरी ब्याही हुई पत्नी की तरफ।

[अरबी स्तंभ]

अल-हिन्दिया में अल-फ़तह से उद्धृत है: यदि किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर मैं तुम्हारे जीवित रहते हुए किसी दूसरी औरत से निकाह करूँतो मुझ पर तलाक़ वाजिब है," और फिर उसने उस पर दूसरा निकाह कर लिया, तो उनमें से एक पर तलाक़ हो जाएगी। वह उसे उनमें से जिस पर चाहे लागू कर सकता है। (संक्षिप्त)। मैं कहता हूँ कि दूसरे अध्याय में, चूंकि शर्त का बोलना निकाह के साबित होने के बाद हुआ—क्योंकि यह दो शब्दों (ईजाब और क़ुबूल) से पूरा होता है—इसलिए हिन्दह तलाक़ के लिए पात्र थी क्योंकि उस पर उसका स्वामित्व साबित हो चुका था। अत; 'मुग़ल्लज़ा' (गंभीर) तलाक़ के बारे में उसका कथन दोनों पर लागू हो सकता है, इसलिए वह उसे उनमें से जिस पर चाहे लागू कर सकता है। लेकिन पहले अध्याय में, चूंकि निकाह पूरा होने से पहले बोलना हुआ —क्योंकि सिर्फ ईजाब से निकाह पूरा नहीं होता —इसलिए हिन्दह इसके लिए पात्र नहीं थी क्योंकि स्वामित्व की कमी थी और हिन्दह के निकाह के प्रति कोई संबंध नहीं था। अतः कथन को प्रभावी बनाने के लिए दूसरी महिला निश्चित हो गई, जैसे कि यदि उसने अपनी पत्नी और

[उर्दू स्तंभ]

हिन्दिया में फ़तह से उद्धृत है कि अगर किसी ने अपनी पत्नी से कहा: "अगर तुम्हारी ज़िंदगी में तुम पर किसी दूसरी औरत से निकाह करूँ तो मुझ पर तलाक़ वाजिब है।" इसके बाद उसने उस पत्नी पर दूसरा निकाह कर लिया तो पहली और दूसरी दोनों बीवियों में से एक को तलाक़ हो जाएगी, पति इस तलाक़ को जिस पर चाहे लागू कर दे। (संक्षिप्त)। (मैं कहता हूँ कि दूसरी सूरत में यानी निकाह के बाद या पत्नी की तरफ से ईजाब में ये शब्द कहे गए हों, तो चूंकि शर्त वाले शब्दों का बोलना निकाह के साबित होने के बाद हुआ क्योंकि निकाह ईजाब और क़ुबूल के दो लफ़्ज़ों से पूरा होता है इसलिए सवाल वाली सूरत में हिन्दह तलाक़ का पात्र बन गई क्योंकि निकाह के पूरा होने पर निकाह की मिल्कियत (स्वामित्व) मुकम्मल हो गई है। चूंकि ज़ैद ने इस मौक़े पर तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (गंभीर तलाक़) वाक़े होने की बात की है इसलिए दूसरा निकाह करने पर मुग़ल्लज़ा तलाक़ का एहतमाल (संभावना) दोनों बीवियों में से हर एक के लिए है इसलिए ज़ैद इस तलाक़ को दोनों में से जिस पर चाहे लागू कर दे। लेकिन पहली सूरत यानी जब निकाह पूरा होने से पहले शर्त का बोलना हुआ क्योंकि सिर्फ ईजाब से

[अरबी स्तंभ]

किसी अजनबी महिला से कहा हो, "तुम दोनों में से एक को तलाक़ है," तो बिना किसी और नीयत के उसकी पत्नी को तलाक़ हो जाएगी।

[उर्दू स्तंभ]

निकाह पूरा नहीं होता, इसलिए इस सूरत में हिन्दह तलाक़ का पात्र न बन सकेगी क्योंकि अभी निकाह न हुआ और न ही निकाह की तरफ तलाक़ को...

१ फ़तावा हिन्दिया, तीसरा अध्याय, 'इन', 'इज़ा' आदि शब्दों के साथ तलाक़ को जोड़ने के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १/४२६।

पेज 209 ऑफ़ 688

مطلقہ ہوگی زید کو اختیار ہوگا کہ ان میں سے جس کی طرف چاہے طلاق کو پھیر دے خواہ ہندہ کی طرف خواہ منکوحہ ثانیہ کی جانب،

| في الهندية عن الفتح، لوقال لامرأته ان تزوجت عليك ما عشت فالطلاق على واجب ثم تزوج عليها يقع تطليقة على واحدة منهما، يصرفها الى ايتهما شاء 'اه ملخصاً قلت ففي الفصل الثاني لما وقع التكلم بالشرط بعد ثبوت النكاح لانه يتم باللفظين فقد كانت هندة محلاً للتطليق لثبوت ملكه عليها ، فقوله يكن طلاق مغلظ يحتملهما فيصرفه الى ايتهما احب، اما فى فصل الاول لما كان التكلم به قبل حصول النكاح حيث لاتمام له بمجرد الايجاب لم تكن هندة محلاله لعدم الملك والاضافة الى نكاح هندة فتعينت الاخرى اعمالا للكلام كما لو قال لامرأته واجنبية طلقت احدكما تطلق امرأته من غير نية | ہندیہ میں فتح سے منقول ہے کہ اگر کسی نے اپنی بیوی سے کہا: ”اگر تیری زندگی میں تجھ پر کسی دوسری عورت سے نکاح کروں تو مجھ پر طلاق واجب ہے“ اس کے بعد اس نے اس بیوی پر دوسرا نکاح کرلیا تو پہلی اور دوسری دونوں بیویوں میں سے ایک کو طلاق ہو جائیگی خاوند اس طلاق کو جس پر چاہے نافذ کردے اھ (ملخصاً)۔ (میں کہتا ہوں کہ دوسری صورت یعنی نکاح کے بعد یا بیوی کی طرف سے ایجاب میں یہ الفاظ کہے ہوں، تو چونکہ شرط والے الفاظ کا تکلم ثبوت نکاح کے بعد ہوا کیونکہ نکاح ایجاب و قبول کے دو لفظوں سے تام ہوتا ہے لہذا مسئولہ صورت میں ہندہ طلاق کا محل بن گئی کیونکہ نکاح کے تام ہونے پر ملکیت نکاح مکمل ہوگئی ہے، چونکہ زید نے اس موقعہ پر طلاق مغلظ واقع ہونے کی بات کی ہے لہذا دوسرا نکاح کرنے پر مغلظ طلاق کا احتمال دونوں بیویوں میں سے ہر ایک کے لئے ہے لہذا زید اس طلاق کو دونوں میں سے جس پر چاہے نافذ کردے لیکن پہلی صورت یعنی جب نکاح تام ہونے سے قبل شرط کا تکلم ہوا کیونکہ صرف ایجاب

سے نکاح تام نہیں ہوتا، اس لئے اس صورت میں ہندہ طلاق کا محل نہ بن سکے گی کیونکہ ابھی نکاح نہ ہوا اور نہ ہی نکاح کی طرف طلاق کو |

1 فتاوی ہندیہ فصل الثالث في تعليق الطلاق بكلمة ان، اذا وغیر ہمانورانی کتب خانہ پشاور ۱/۴۲۶

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

...to specify it as an 'Insha' (origination of divorce) as mentioned in Al-Hindian quoting Al-Muheet quoting Al-Mabsut. Therefore, this divorce will necessarily fall on the second wife and she will be specified for the divorce so that Zaid's words do not become void. Just as if someone addresses his wife and a stranger woman and says, "I have divorced one of you two," then the divorce will fall on his wife only without need for intention, because she is the one specified as the place for the 'Insha' (origination) of divorce. This has been quoted in Al-Hindia from Al-Muheet through Al-Mabsut.

It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar', chapter of Raj'at (Returning/Revocation): If a wife fears that her husband might not give her a divorce, she should say at the time of marriage, "I marry myself to you on this condition that the power of my divorce shall be in my hand." This was explained by Imam Zaylai and the complete discussion is in 'Al-Imadiyya' (End quote).

In 'Radd-ul-Muhtar', it is stated: If the husband, while making the offer (Ijab), says, "I marry you on the condition that the power of divorce is in your hand," and the woman accepts, in this case, the marriage will be valid but the mention of the condition will be void. This is because the validity for 'Tafwid' (delegation of divorce) only arises when marriage already exists or when divorce is made conditional upon marriage, whereas in this case, neither of these two conditions was met. This is contrary to the previously mentioned issue where the husband accepted the condition in the offer (Ijab) from the woman's side; thus, both marriage and the condition of divorce were found together.

Al-Nahr mentions: In summary, the condition is valid if the woman starts (the offer), not if the man starts. However, the difference is subtle. End of Imam Shami's words in brief. I (the author) have written a note on this saying: "Rather, it is evident, and praise be to Allah. For if the husband starts and says..."

Footnotes: 1. Fatawa Hindia, Chapter 2 on Effecting Divorce, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/363. 2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Raj'at, Mujtabai Press Delhi, 1/241. 3. Radd-ul-Muhtar, Chapter of Raj'at, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/520.

फ़तवा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

...ताकि इसे 'इंशा' (तलाक की शुरुआत) के रूप में निर्दिष्ट किया जा सके, जैसा कि अल-हंदिया में अल-मुहीत के हवाले से अल-मब्सूत से उद्धृत है। इसलिए, यह तलाक अनिवार्य रूप से दूसरी पत्नी पर गिरेगा और उसे तलाक के लिए निर्दिष्ट माना जाएगा ताकि ज़ैद की बात व्यर्थ न हो। जैसे कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी और एक अजनबी महिला को संबोधित करते हुए कहे, "मैंने तुम दोनों में से एक को तलाक दिया है," तो उसकी पत्नी को ही बिना किसी नियत (इरादे) के तलाक हो जाएगा क्योंकि तलाक की 'इंशा' के स्थान के रूप में वही निर्दिष्ट है। इसे अल-हंदिया में अल-मुहीत के माध्यम से अल-मब्सूत से उद्धृत किया गया है।

'दुर्र-उल-मुख्तार' के रज्अत (वापसी) अध्याय में है: यदि पत्नी को डर हो कि पति उसे तलाक नहीं देगा, तो वह निकाह (विवाह) के समय कहे, "मैं तुमसे अपना निकाह इस शर्त पर करती हूँ कि मेरी तलाक का अधिकार मेरे हाथ में होगा।" इसे इमाम ज़ैलाई ने बयान किया है और यह पूरी चर्चा 'अल-इमादिया' में है।

'रद्द-उल-मुहतार' में है: यदि पति ने ईजाब (प्रस्ताव) करते हुए कहा, "मैं तुमसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि तलाक का अधिकार तुम्हारे हाथ में है," और महिला ने उसे स्वीकार कर लिया, तो इस स्थिति में निकाह जायज़ होगा और शर्त का ज़िक्र बेकार होगा। क्योंकि 'तफ़वीज़' (तलाक का अधिकार सौंपना) के लिए वैधता तब उत्पन्न होती है जब निकाह पहले से मौजूद हो या तलाक को निकाह के साथ जोड़ा गया हो, जबकि इस स्थिति में इन दोनों में से कोई भी बात नहीं पाई गई। यह पहले उल्लेखित मुद्दे के विपरीत है जहाँ पति ने महिला की ओर से ईजाब में शर्त स्वीकार की थी; इस प्रकार निकाह और तलाक की शर्त दोनों एक साथ पाए गए।

अल-नहर में है: संक्षेप में, शर्त तब मान्य है जब महिला शुरुआत करे, न कि तब जब पुरुष शुरुआत करे। हालाँकि, यह अंतर सूक्ष्म है। इमाम शामी के शब्दों का संक्षिप्त समापन। मैंने (लेखक ने) इस पर एक नोट लिखा है: "बल्कि, यह स्पष्ट है, और अल्लाह का शुक्र है। क्योंकि यदि पति शुरुआत करता है और कहता है..."

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फ़तवा हंदिया, तलाक देने पर दूसरा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/363। 2. दुर्र-उल-मुख्तार, रज्अत का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/241। 3. रद्द-उल-मुहतार, रज्अत का अध्याय, दार अह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/520।

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

لتعينها الانشاء كما في الهندية عن المحيط عن المبسوط (منسوب کیا گیا، لہذا یہ طلاق لازماً دوسری بیوی کو ہوگی اور وہی طلاق کے لئے متعین قرار پائیگی تاکہ زید کا کلام لغو نہ ہو ، جیسا کہ کوئی شخص اپنی بیوی اور اجنبی عورت کو خطاب کرکے کہے میں نے تم دونوں سے ایک کو طلاق دی ہے، تو اس کی بیوی کو ہی بغیر نیت طلاق ہوگی کیونکہ وہی انشاء طلاق کا محل ہونے کی وجہ سے متعین ہوگی، اس کو ہندیہ میں محیط کے حوالے سے مبسوط سے نقل کیا ہے۔) وفي الدرالمختار من باب الرجعة۔ لوخافت ان لا يطلقها تقول زوجتك نفسي على ان امری بيدی، (در مختار کے باب الرجعة میں ہے کہ اگر بیوی کو ڈر ہو کہ کہیں خاوند طلاق نہ دے دے تو نکاح کے وقت بیوی یوں کہے کہ میں تجھ سے اپنا نکاح اس شرط پر کرتی ہوں کہ میری طلاق کا اختیار میرے ہاتھ میں ہوگا) زيلعی وتمامه في العمادية اه (اس کو امام زیلعی نے بیان کیا یہ بحث عمادیہ میں ہے اھ)، في ردالمحتار حيث قال ولو قال لها تزوجتك على ان امرك فقبلت جاز النكاح ولغا الشرط لان الامر انما يصح في الملک او مضافاً اليه ولم يوجد واحد منهما بخلاف مأمر فان الامر صار بيدها مقارناً لصيرورتها منكوحة اه (ردالمحتار میں ہے کہ اگر خاوند نے ایجاب کرتے ہوئے یوں کہا میں تجھ سے اس شرط پر نکاح کرتا ہوں کہ طلاق کا اختیار تیرے ہاتھ میں ہے تو عورت نے قبول کیا ، اس صورت میں نکاح جائز ہوگا اور شرط کا ذکر لغو ہوگا ، کیونکہ تفویض طلاق کے لئے جواز تب پیدا ہوتا ہے جب نکاح موجود ہو یا طلاق کو نکاح کے ساتھ معلق کیا ہو ، جبکہ اس صورت میں دونوں باتوں میں سے کوئی بھی نہ پائی گئی۔ بخلاف پہلے مذکور مسئلہ کے کہ وہاں عورت کی طرف سے ایجاب میں شرط کو خاوند نے قبول کیا تو نکاح اور طلاق کی شرط دونوں اکٹھے پائے گئے) نهر، والحاصل ان الشرط صحيح اذا ابتدأت المرأة لااذا ابتدا الرجل ولكن الفرق خفی اه كلام

الشامي باختصار (نہر، اور حاصل کلام یہ کہ شرط تب صحیح ہے جب عورت نے ابتدا کی ہو نہ کہ مرد نے، لیکن فرق پوشیدہ ہے اھ کلام شامی اختصار کے ساتھ) ورأیتنی کتبت علیه مانصه اقول بل هو ظاهر والحمد لله فان الزوج اذا ابتدا فقال (اور میں نے اپنے آپ کو پایا کہ اس پر یہ عبارت لکھی کہ میں کہتا ہوں بلکہ یہ تو ظاہر ہے اور اللہ ہی کے لئے تمام تعریفیں ہیں، پس بے شک جب خاوند ابتدا کرے اور کہے...)

حواشی: 1. فتاوی ہندیہ الباب الثانی فی ایقاع الطلاق نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۶۳ 2. در مختار باب الرجعة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴۱ 3. رد المحتار باب الرجعة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۵۲۰

Fatawa Razawiyya Volume 13

[Left Column - Arabic with Urdu context] "I have married you on the condition that you are divorced." If she says, "I accept," the suspension (of divorce) occurred before the acquisition of ownership, as ownership is only established after the completion of the two pillars (proposal and acceptance). There is no suspension of the cause of ownership. In a specific case, the actual fulfillment of the condition is required, not just its meaning, as previously mentioned. Therefore, it is void, as cited from *Al-Nahr*. However, if she is the one who initiates, saying, "I marry myself to you on the condition that I am divorced," and he says, "I accept," the question is repeated in the answer. It is as if he said after her proposal, "I accept on the condition that you are divorced." Thus, it occurs after the completion of the two pillars. This was stated in *Al-Khaniyah*, where it says: "If the initiation is from the husband, the divorce is not valid. But if the initiation is from the woman, it becomes a delegation (of divorce) after marriage. Because when the husband says 'I accept' after the woman's statement, and the answer includes the repetition of what was in the question, it becomes as if he said, 'I accept on the condition that you are divorced' or 'on..."

[Right Column - Urdu] Therefore, the woman will have the authority of divorce, as mentioned in *Al-Nahr*. The gist is that the condition is valid if the woman initiates but invalid if the man initiates. However, this distinction remained obscure. In short, the discourse of Allama Shami ended. I remember writing a footnote on this statement of Allama Shami, which says: I say: (I say that) the difference is not obscure but clear, Alhamdulillah. Because if the husband initiates and says, "I marry you on the condition that you are divorced," and the woman accepts, this suspension occurs before both pillars of marriage ownership (proposal and acceptance). Hence, ownership was not acquired, and there is no suspension on the cause of ownership because for a specific woman, the actual existence of the condition is necessary; just the meaning of the condition is not sufficient, as mentioned before. So this suspension of divorce will be void, as they cited from *Al-Nahr*. But, if the woman initiates and says in the proposal, "I have given myself to you in marriage on the condition that I am divorced," and the husband, while accepting, says, "I accept," since the answer repeats the question, it is as if the husband said, "I have accepted on the condition that you are divorced." Then this suspension is found after the occurrence of both pillars of marriage (proposal and acceptance). *Al-Khaniyah* benefited from this, where they stated that when the husband initiates, both divorce and delegation are found before the marriage, so they will not be valid. But when the

woman initiates, the delegation is found after the marriage because when the husband said in response, "I have..."

फतावा रज़विया जिल्द 13

[बायां कॉलम - अरबी और उर्दू संदर्भ के साथ] "मैंने आपसे इस शर्त पर निकाह किया कि आपको तलाक है।" यदि उसने कहा, "मैंने स्वीकार किया," तो यह निलंबन (तलाक का) स्वामित्व प्राप्त करने से पहले हुआ, क्योंकि स्वामित्व दो स्तंभों (प्रस्ताव और स्वीकृति) के पूरा होने के बाद ही होता है। स्वामित्व के कारण पर कोई निलंबन नहीं होता है। एक निश्चित मामले में, शर्त की वास्तविक पूर्ति आवश्यक है, न कि केवल उसका अर्थ, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। इसलिए, यह शून्य है, जैसा कि अल-नहर से उद्धृत किया गया है। लेकिन, यदि वह पहल करने वाली है, यह कहते हुए कि "मैं इस शर्त पर अपना निकाह आपसे करती हूँ कि मुझे तलाक है," और वह कहता है, "मैंने स्वीकार किया," तो उत्तर में प्रश्न दोहराया जाता है। ऐसा लगता है जैसे उसने उसके प्रस्ताव के बाद कहा हो, "मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि आपको तलाक है।" इस प्रकार, यह दो स्तंभों के पूरा होने के बाद होता है। यह अल-खनिया में बताया गया था, जहाँ कहा गया है: "यदि पहल पति की ओर से है, तो तलाक मान्य नहीं है। लेकिन यदि पहल महिला की ओर से है, तो यह निकाह के बाद प्रत्यायोजन (तलाक का अधिकार सौंपना) बन जाता है। क्योंकि जब पति महिला के कथन के बाद 'मैंने स्वीकार किया' कहता है, और उत्तर में प्रश्न में जो था उसका दोहराव शामिल होता है, तो यह ऐसा हो जाता है जैसे उसने कहा हो, 'मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि आपको तलाक है' या 'इस आधार पर...'"

[दायां कॉलम - उर्दू] इसलिए, महिला को तलाक का अधिकार प्राप्त होगा, जैसा कि नहर में उल्लेख किया गया है। संक्षेप यह है कि यदि महिला पहल करती है तो शर्त सही होगी, यदि पुरुष पहल करता है तो यह सही नहीं होगी। लेकिन यह अंतर गुप्त रहा। संक्षेप में, अल्लामा शामी का प्रवचन समाप्त हुआ। मुझे याद है कि मैंने अल्लामा शामी के इस कथन पर एक हाशिये (footnote) लिखा था, जिसमें लिखा है: मैं कहता हूँ कि: (मैं कहता हूँ कि) अंतर गुप्त नहीं बल्कि स्पष्ट है, अल्हम्दुलिल्लाह। क्योंकि यदि पति पहल करता है और कहता है कि "मैं आपसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि आपको तलाक है," और महिला ने स्वीकार कर लिया, तो यह निलंबन निकाह के स्वामित्व के दोनों स्तंभों (प्रस्ताव और स्वीकृति) से पहले हुआ है। इसलिए, स्वामित्व प्राप्त नहीं हुआ था, और स्वामित्व के कारण पर भी कोई निलंबन नहीं है क्योंकि एक निश्चित महिला के लिए शर्त का वास्तविक रूप से पाया जाना आवश्यक है; केवल शर्त का अर्थ पर्याप्त नहीं है, जैसा कि पहले बीत चुका है। तो तलाक का यह निलंबन शून्य होगा, जैसा कि उन्होंने नहर से उद्धृत किया है। लेकिन, यदि महिला पहल करती है और प्रस्ताव में कहती है, "मैंने इस शर्त पर अपना निकाह आपसे किया कि मुझे तलाक है,"

और पति ने स्वीकार करते हुए कहा, "मैंने स्वीकार किया," चूंकि उत्तर में प्रश्न दोहराया जाता है, इसलिए मानो पति ने कहा, "मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि आपको तलाक है।" तो यह निलंबन निकाह के दोनों स्तंभों (प्रस्ताव और स्वीकृति) के पाए जाने के बाद पाया गया। खनिया ने इसका लाभ दिया जहाँ उन्होंने कहा कि जब पहल पति करे तो तलाक और प्रत्यायोजन दोनों निकाह से पहले पाए गए, इसलिए वे सही नहीं होंगे। लेकिन जब महिला पहल करे तो प्रत्यायोजन निकाह के बाद पाया गया क्योंकि जब पति ने जवाब में कहा "मैंने..."

पृष्ठ 211 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

تزوجتک علی انک طالق فقالت قبلت کان التعلیق قبل حصول الملک، اذلا ملک الا بعد تمام الرکنین، ولا تعلیق علی سبب الملک، فان المعینة یجب فیها حقیقة الشرط لا معناه کما تقدم فکان باطلا کما نقله عن النهر، اما اذا کانت هی المبتدأة انی زوجتک نفسی علی انی طالق فقال قبلت کان السؤال معادا فی الجواب، فکانہ قال بعد ایجابہا قبلت علی انک طالق، فوقع بعد تمام الرکنین، افادہ فی الخانیۃ حیث قال لان البدأة اذا کانت من الزوج کان الطلاق فلا یصح اما اذا کانت البدأة من قبل المرأة یصیر التفویض بعد النکاح لان الزوج لما قال بعد کلام المرأة قبلت والجواب یتضمن اعادة ما فی السؤال صار کأنہ قال قبلت علی انک طالق او علی اس لئے طلاق کا اختیار عورت کو حاصل ہوگا اھ نہر ، حاصل یہ کہ شرط عورت کے پہل کرنے پر صحیح ہوگی ، مرد کے پہل کرنے پر درست نہ ہوگی، لیکن یہ فرق مخفی رہا، اختصاراً، علامہ شامی کا کلام ختم ہوا۔ مجھے یاد ہے کہ میں نے علامہ شامی کے اس کلام پر حاشیہ لکھا جس کی عبارت یہ ہے اقول : (میں کہتا ہوں کہ) فرق مخفی نہیں بلکہ ظاہر ہے الحمد للہ، کیونکہ خاوند کے پہل کرنے اور یہ کہنے پر کہ میں تجھ سے نکاح اس شرط پر کرتا ہوں کہ تجھے طلاق ہے تو عورت نے قبول کر لیا تو یہ تعلیق ملکیت نکاح کے دونوں رکن (ایجاب وقبول) سے پہلے ہوئی ہے لہذا ملکیت حاصل نہ ہوئی اور ملکیت کے سبب پر بھی تعلیق نہیں کیونکہ معینہ عورت کے لئے حقیقۃً شرط کا پایا جانا ضروری ہے محض شرط کا معنی کافی نہیں، جیسا کہ پہلے گزرا ہے، تو یہ تعلیق بالطلاق باطل ہوگی جس طرح انہوں نے اس کو نہر سے نقل کیا ہے لیکن، اگر عورت پہل کر کے ایجاب میں کہے میں نے تجھے اپنا نفس نکاح کر کے دیا اس شرط پر کہ مجھے طلاق ہے تو خاوند نے قبول کرتے ہوئے کہا میں نے قبول کیا، چونکہ جواب میں سوال کا اعادہ ہوتا ہے اس لئے گویا خاوند نے یوں کہا" میں نے قبول کیا اس شرط پر کہ

تجھے طلاق ہے " تو یہ تعلیق نکاح کے دونوں رکن (ایجاب وقبول) پائے جانے کے بعد پائی گئی اس کا خانیہ نے افادہ فرمایا جہاں انہوں نے فرمایا کہ جب ابتداء زوج کرے تو طلاق اور تفویض دونوں نکاح سے قبل پائی گئیں لہذا صحیح نہ ہوں گی لیکن جب عورت ابتداء کرے تو تفویض نکاح کے بعد پائی گئی کیونکہ جب خاوند نے جواب میں کہا" میں نے

[Left column Arabic text]: That the matter be in your hand, so it becomes delegated after marriage (ah). I say: and by this the ruling is clear for when the woman begins without a condition and the husband accepts with a condition, where divorce and delegation are valid, because the woman’s words are not considered in this chapter. The validity in it was due to its occurrence in the husband's acceptance by estimation, because the answer contains what is in the question. So, if it occurs in it explicitly, it is even more worthy of validity (ah). This is what I wrote on it, and from it, everything we mentioned here appears to you.

[Right column Urdu text]: "I accepted" Since the answer is intended to repeat the question, it is as if he said, "I accepted on the condition that you are divorced," or in the case of delegation (tafwiz), he said, "I accepted on the condition that the power of divorce is in your hand," thus the delegation happened after marriage (ah). (I say) From this, the ruling of the situation becomes known in which a woman initiates the proposal (ijab) without a condition and the husband mentions a condition while accepting; in such a case, the divorce and delegation will be valid. This is because a woman's speech regarding divorce is meaningless; its validity depends on the husband's acceptance, which is implicitly mentioned in the acceptance because the husband's answer includes the woman's proposal (i.e., the question). So, when a condition is explicitly mentioned in the husband's acceptance, it will be valid by priority (ah). What I wrote here in the marginalia is finished; from this, you have become aware of the entire discussion here. (T)

[Middle Urdu paragraph]: In any case, the second wife, for instance Hindah in the aforementioned case, who receives the divorce, will have three divorces because in common usage, this is what is called 'Mughallazah' (severe) divorce.

[Lower section - Left column Arabic]: I say: Since the basis is upon it, it is not rejected if he said: 'You are divorced with the most severe divorce' as one irrevocable (ba'in) divorce unless he intended three, as in Tanwir. Then know that the occurrence with a description is at the mention of it, like when he said: 'You are absolutely (al-batta) divorced,' such that even if he said after it 'if Allah wills' (In Sha Allah) connectedly, it does not occur. Even if the occurrence were with the active participle (ism al-fa'il), it would occur, as in Radd al-Muhtar; so do not be confused.

[Lower section - Right column Urdu]: I say: (I am saying) When the conversation is based on common usage (urf), then no objection will arise from this statement of

Tanwir that "she is with the most severe divorce"; this will be one irrevocable (ba'in) divorce provided that he does not intend three. Then it should be known that the occurrence of divorce with a description will be when the mentioned description exists. For example, when the husband says "You are absolutely (qat'i) divorced," even if he says "In Sha Allah" (If Allah wills) connectedly with it, this divorce will not occur (because 'In Sha Allah' relates to the 'absolute' divorce, not just to 'absolute' alone). If in this...

[Footnotes]: 1. Jadd al-Mumtar Hashiya Radd al-Muhtar, Chapter of Raja (Returning), Annotation No. 107, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, India, 26/2-565. 2. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Sarih (Explicit), Matba' Mujtabai, Delhi, 222/1.

[बाएं कॉलम का अरबी पाठ]: कि मामला तुम्हारे हाथ में हो, तो यह निकाह के बाद प्रत्यायोजित हो जाता है (अह)। मैं कहता हूँ: और इससे वह नियम स्पष्ट हो जाता है जब स्त्री बिना किसी शर्त के शुरुआत करती है और पति शर्त के साथ स्वीकार करता है, जहाँ तलाक और प्रत्यायोजन (तफ़वीज़) मान्य हैं, क्योंकि इस अध्याय में स्त्री की बातों का कोई महत्व नहीं है। इसमें वैधता पति की स्वीकृति में इसके घटित होने के कारण थी, क्योंकि उत्तर में वह सब शामिल है जो प्रश्न में था। अत; यदि यह इसमें स्पष्ट रूप से घटित होता है, तो यह वैधता के और भी अधिक योग्य है (अह)। यह वही है जो मैंने इस पर लिखा था, और इससे वह सब कुछ आपके सामने स्पष्ट हो जाता है जो हमने यहाँ उल्लेख किया है।

[दाएं कॉलम का उर्दू पाठ]: "मैंने स्वीकार किया" चूंकि उत्तर में प्रश्न की पुनरावृत्ति अभिप्रेत है, तो यह वैसा ही है जैसे उसने कहा, "मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि तुम्हें तलाक है," या प्रत्यायोजन (तफ़वीज़) के मामले में उसने कहा, "मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि तलाक का अधिकार तुम्हारे हाथ में है," इस प्रकार प्रत्यायोजन निकाह के बाद हुआ (अह)। (मैं कहता हूँ) इससे उस स्थिति का नियम ज्ञात हो गया जिसमें स्त्री बिना किसी शर्त के निकाह का प्रस्ताव (ईजाब) करती है और पति स्वीकार करते समय शर्त का उल्लेख करता है; ऐसी स्थिति में तलाक और प्रत्यायोजन दोनों मान्य होंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि तलाक के संबंध में स्त्री का भाषण अर्थहीन है; इसकी वैधता पति की स्वीकृति पर निर्भर करती है, जो स्वीकृति में अंतर्निहित रूप से उल्लेखित है क्योंकि पति के उत्तर में स्त्री का प्रस्ताव (अर्थात प्रश्न) शामिल है। इसलिए, जब पति की स्वीकृति में स्पष्ट रूप से शर्त का उल्लेख हो, तो वह प्राथमिकता के आधार पर मान्य होगा (अह)। यहाँ हाशिए में मैंने जो लिखा वह समाप्त हुआ; इससे आप यहाँ की पूरी चर्चा से अवगत हो गए हैं। (त)

[मध्य उर्दू पैराग्राफ]: फिर किसी भी स्थिति में, दूसरी पत्नी, जैसे कि उपर्युक्त मामले में हिंदा, जिसे तलाक मिलता है, उसे तीन तलाक होंगे क्योंकि सामान्य बोलचाल (उर्फ़) में इसी को 'मुग़ल्लज़ाह' (सख्त) तलाक कहा जाता है।

[निचला भाग - बायां कॉलम अरबी]: मैं कहता हूँ: चूंकि आधार इसी पर है, इसलिए यह खारिज नहीं किया जाता है यदि उसने कहा: 'तुम्हें सबसे सख्त तलाक के साथ तलाक है' तो यह एक 'बायन' (अपरिवर्तनीय) तलाक होगा जब तक कि उसने तीन का इरादा न किया हो, जैसा कि 'तनवीर' में है।

फिर जान लें कि विशेषण के साथ घटित होना उसके उल्लेख पर होता है, जैसे जब उसने कहा: 'तुम्हें पूर्ण रूप से (अल-बत्ता) तलाक है,' यहाँ तक कि अगर उसने उसके बाद 'यदि अल्लाह चाहे' (इन शा अल्लाह) निरंतरता में कहा, तो यह घटित नहीं होता है। भले ही घटना कर्ता संज्ञा (इस्मे फाइल) के साथ हो, यह घटित होगा, जैसा कि 'रद-उल-मुह्तार' में है; इसलिए भ्रमित न हों।

[निचला भाग - दायां कॉलम उर्दू]: मैं कहता हूँ: (मैं कह रहा हूँ) जब बातचीत सामान्य बोलचाल (उर्फ़) पर आधारित है, तो 'तनवीर' के इस कथन से कोई आपत्ति उत्पन्न नहीं होगी कि "वह सबसे सख्त तलाक वाली है"; यह एक 'बायन' (अपरिवर्तनीय) तलाक होगा बशर्ते कि वह तीन का इरादा न करे। फिर यह ज्ञात होना चाहिए कि विशेषण के साथ तलाक का होना तब होगा जब उल्लेखित विशेषण मौजूद हो। उदाहरण के लिए, जब पति कहता है "तुम्हें पूर्ण (क़तई) तलाक है," भले ही वह इसके साथ निरंतरता में "इन शा अल्लाह" (यदि अल्लाह चाहे) कहे, तो यह तलाक घटित नहीं होगा (क्योंकि 'इन शा अल्लाह' का संबंध 'पूर्ण तलाक' से है, न कि केवल 'पूर्ण' शब्द से)। यदि इसमें...

[पाद लेख]: 1. जद्-उल-मुम्तार हाशिया रद-उल-मुह्तार, बाब-उर-रजअत (लौटने का अध्याय), हाशिया नंबर 107, अल-मजमा-उल-इस्लामी, मुबारकपुर, भारत, 26/2-565। 2. दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीर-उल-अबसार, बाब-उस-सरीह (स्पष्ट अध्याय), मत्तबा मुज्तबाई, दिल्ली, 222/1।

पृष्ठ 212/688

ان یکون الامر بیدك فیصیر مفوضا بعد النکاح اھ قلت و به تبین حکم ما اذا ابتدأت المرأة من دون شرط وقبل الزوج بشرط حیث یصح الطلاق و التفویض لان کلام المرأة لا عبرة به فی هذا الباب، کانت الصحة فیها مرلوقوعه فی قبول الزوج تقدیراً لتضمن الجواب ما فی السؤال، فاذا وقع فیه تحقیقا کان اولی بالصحة اھ ما کتبت علیه و به یظهر لك کل ما ذکرنا ههنا۔

"قبول کیا" چونکہ جواب میں سوال کا اعادہ مراد ہوتا ہے تو گویا یوں کہا میں نے قبول کیا اس شرط پر کہ تجھے طلاق ہے، یا تفویض کی صورت میں یوں کہا میں نے قبول کیا اس شرط پر کہ طلاق کا اختیار تیرے ہاتھ میں ہے تو تفویض نکاح کے بعد ہوئی اھ، (میں کہتا ہوں) اس سے صورت کا حکم معلوم ہو گیا جس میں بغیر شرط عورت ایجاب میں پہل کرے اور خاوند قبول کرتے ہوئے شرط ذکر کرے تو طلاق اور تفویض صحیح ہو گی، کیونکہ طلاق کے متعلق عورت کا کلام بے معنی ہے اس کی صحت کا دار و مدار خاوند کے قبول کرنے پر ہے جو کہ قبول کرنے میں مقدر طور پر مذکور ہے کیونکہ خاوند کا جواب عورت کے ایجاب یعنی سوال کو متضمن ہے تو جب خاوند کے قبول کرنے میں صراحتاً شرط مذکور ہو تو بطریق اولٰی صحیح ہو گا اھ میں نے یہاں حاشیہ میں جو لکھا وہ ختم ہوا، اس سے یہاں پر تمام بحث کا آپ کو علم ہو گیا۔ (ت)

پھر بہر صورت منکوحہ ثانیہ خواہ ہندہ صورت مذکورہ میں جس پر طلاق پڑے گی تین طلاقیں ہوں گی کہ عرف میں طلاق مغلظ اسی کو کہتے ہیں۔

اقول وحيث كان البناء عليه فلا يرد ان قال انت طالق اغلظ الطلاق واحدة بائنة ان لم ينو ثلثاً كما في التنوير ثم اعلم ان الوقوع بالصفة عند ذكرها كما اذا قال انت طالق البتة حتى لو قال بعدها ان شاء الله متصلا لا يقع ولو كان الوقوع باسم الفاعل لوقع كما في رد المحتار فلا يتوهم۔

اقول (میں کہتا ہوں کہ) جب گفتگو عرف پر مبنی ہے تو اب تنویر کی اس عبارت سے اعتراض پیدا نہ ہو گا کہ "غلیظ تر طلاق والی ہے" یہ ایک طلاق بائنہ ہوگی بشرطیکہ تین کی نیت نہ کرے۔ پھر یہ معلوم ہونا چاہئے کہ طلاق کا وقوع صفت کے ساتھ ہو گا جب صفت مذکور ہو گی، مثلاً جب خاوند کہے " تجھے طلاق ہے قطعی" حتی کہ اس کے ساتھ متصل ان شاء اللہ کہہ دے تو یہ طلاق واقع نہ ہو گی (کیونکہ ان شاء اللہ کا تعلق طلاق قطعی کے ساتھ ہے صرف "قطعی" سے نہیں) اگر اس میں

۱ جد الممتار حاشية رد المحتار باب الرجعة حاشیہ نمبر ۱۰۷ المجمع الاسلامی مبارکپور انڈیا

۲ ۲۶/۲-۵۶۵ درمختار شرح تنوير الابصار باب الصريح مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۲/۱

Fatawa Ridawiyya Volume 13

[Arabic Quote]: "The other [divorce] descends upon her while she is not entered into. Suspension is like speaking at the time of the fulfillment of the condition. It is as if he said to her then, 'You are divorced with a severe (mughallazah) divorce.' Thus, she is divorced with 'divorced' and the description becomes void. Understand this. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best."

[Urdu Explanation]: If the occurrence of divorce were solely through the word 'Taaliq' (divorced) as a subject noun, then 'inshaAllah' (if Allah wills) would only relate to the word 'qatai' (definite), i.e., 'certainly'. Because it wasn't with 'Taaliq', the divorce would occur, as stated in Radd al-Muhtar. Based on this rule, one cannot assume that because the second new wife was not entered into, the mentioned severe (mughallazah) divorce with the condition did not fall on her, making her 'bainah' (irrevocably divorced) by saying 'you are divorced'. This is because, in suspension (ta'liq), the act of speaking the words of divorce is realized at the time the condition is met. So, when the condition is met, it is as if he said, 'You are divorced along with a severe divorce.' Thus, calling an unentered wife 'divorced' results in an irrevocable divorce, and after that, the description of 'severe' is considered void. This point should be pondered to remove any doubt. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 19: From Rampur State, sent by Habibullah Beg, Maulvi Fazil group, Oriental College, 7 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person says to his wife, 'Divorce upon you by three conditions', as a statement in and of itself. He did not point to anything etc., just said 'by three conditions'. What kind of divorce has occurred and why? And what is meant by 'three conditions' and why?

Answer: The apparent meaning of the words is that he is giving divorce subject to an unknown condition. So saying this is like saying she is divorced if three conditions are met. In this case, divorce will not occur at all. It is in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Quote]: "A condition for its validity is the mention of the conditioned thing. Thus, for example, 'You are divorced if' is void; this is the fatwa."

[Explanation]: For the validity of suspension (ta'liq), it is necessary to mention the conditioned thing. Therefore, saying 'You are divorced if' will be considered void. The fatwa is on this. (T)

There is also a possibility that in his ignorant idiom, he called the number 'three' as 'three conditions', just as some ignorant people say about washing hands three times, 'complete all three conditions'. If this is his idiom and intention, then three divorces have occurred. It is in Radd al-Muhtar:

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Suspension (Bab al-Ta'liq), Mujtabai Press Delhi, 1/230.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

[अरबी उद्धरण]: "दूसरी [तलाक] उस पर तब आती है जब उसका निकाह मुकम्मल नहीं हुआ होता (ग़ैर मदख़ूला)। शर्त का पाया जाना बोलने के समान है। जैसे कि उसने तब उससे कहा हो, 'तुझे सख़्त (मुग़ल्लज़ा) तलाक़ है।' तो वह 'तलाक़' से तलाक़शुदा हो गई और उसका वर्णन (सिफ़त) निरर्थक हो गया। इसे समझो। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।"

[उर्दू स्पष्टीकरण]: अगर तलाक़ का होना सिर्फ़'तालिक़' (तलाक़शुदा) शब्द से होता, तो 'इंशाअल्लाह' का संबंध सिर्फ़'क़तई' शब्द से होता, यानी 'यकीनन'। चूँकि वह 'तालिक़' के साथ नहीं था, इसलिए तलाक़ हो जाता, जैसा कि रद्दुल मुहतार में वर्णित है। इस नियम के आधार पर, यह संदेह नहीं किया जा सकता कि चूंकि दूसरी नई पत्नी ग़ैर मदख़ूला थी, इसलिए उस पर शर्त वाली मुग़ल्लज़ा तलाक़ नहीं पड़ी और वह 'अन्त तालिक़' (तू तलाक़ वाली है) से बाइना (अंतिम विच्छेद) हो गई। क्योंकि तालीक़ (निलंबन) में शर्त पूरी होने के समय तलाक़ के शब्दों का बोलना सिद्ध माना जाता है। तो शर्त पूरी होने पर मानो उसने कहा, 'तू मुग़ल्लज़ा तलाक़ के साथ तलाक़ वाली है।' अतः ग़ैर मदख़ूला को तलाक़ कहने पर बाइना तलाक़ हो गया और उसके बाद 'मुग़ल्लज़ा' का गुण निरर्थक करार पाया। इस संदेह को दूर करने के लिए विचार करना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 19: रियासत रामपुर से, प्रेषक हबीब उल्लाह बेग, मौलवी फ़ाज़िल जमात, ओरिएंटल कॉलेज, 7 सफ़र 1338 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति अपनी पत्नी से कहता है कि 'तुझ पर तीन शर्तों से तलाक़', सिर्फ़ एक कथन के रूप में। उसने किसी चीज़ की ओर इशारा आदि नहीं किया, बस 'तीन शर्तों से' कह दिया। यह कौन सी तलाक़ हुई और क्यों? और 'तीन शर्तों' से क्या मतलब है और क्यों?

जवाब: शब्दों के ज़ाहिरी अर्थ का सार यह है कि वह अज्ञात शर्त पर तलाक़ दे रहा है। तो यह कहना ऐसा हुआ कि वह तलाक़शुदा है यदि तीन शर्तें पाई जाएँ। इस स्थिति में तलाक़ बिल्कुल नहीं होगा। दुर्रे मुख़्तार में है:

[अरबी उद्धरण]: "इसकी वैधता के लिए शर्त यह है कि जिस चीज़ पर शर्त लगाई गई है उसका उल्लेख किया जाए। अतः'तुझे तलाक़ है अगर' कहना निरर्थक है, इसी पर फ़तवा है।"

और एक संभावना यह भी है कि उसने अपने अनपढ़ मुहावरे में संख्या 'तीन' को 'तीन शर्तें' कहा हो, जैसे कुछ अनपढ़ लोग तीन बार हाथ धोने को कहते हैं कि 'तीनों शर्तें पूरी कर लो'। अगर यह उसका मुहावरा और उद्देश्य है तो तीन तलाक़ें हो गईं। रद्दुल मुहतार में है:

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल तालीक़, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/230.

पृष्ठ 213/688

ان الاخری ینزل علیھا الطلاق وھو غیر مدخول بھا والتعلیق کالتکلم عند وجود الشرط فکانہ قال لھا حینئذانت طالق طلاقامغلظا فطلقت بطالق ولغا الوصف فافھم، واللہ سبحانہ تعالی اعلم۔

طلاق کا وقوع صرف لفظ "طالق" اسم فاعل سے ہوتا تو پھر ان شاء اللہ کا تعلق صرف لفظ "قطعی" یعنی البتہ سے ہوتا، اور طالق کے ساتھ نہ ہونے کی بناء پر طلاق واقع ہو جاتی، جیسا کہ ردالمحتار میں بیان کیا ہے تو اس قاعدہ کی بنا پر یہ وہم نہیں کیا جا سکتا کہ دوسری نئی بیوی غیر مدخولہ ہونے کی وجہ سے اس پر مذکورہ شرط والی مغلظ طلاق نہ پڑی تو وہ انت طالق (تو طلاق والی ہے) سے بائنہ ہو گئی، کیونکہ تعلیق میں شرط کے پائے جانے کے وقت طلاق والی کلام کا تکلم متحقق ہوتا ہے تو شرط پائے جانے پر گویا اس نے کہا تو طلاق والی ہے طلاق مغلظ کے ساتھ، تو غیر مدخولہ کو طلاق کہنے پر بائنہ طلاق ہو گئی اور اس کے بعد مغلظ کا وصف لغو قرار پایا، اس وہم کے مدفوع ہونے پر غور کرنا چاہئے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۹: از ریاست رامپور مرسلہ حبیب اللہ بیگ جماعت مولوی فاضل اور نٹیل کالج ۷ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص اپنی عورت سے کہتا ہے کہ تجھ پر تین شرطوں سے طلاق قول من حیث ھو قول کیا، کسی چیز کی طرف اشارہ وغیرہ نہیں کیا بس تین شرطوں سے کہہ دیا یہ طلاق کون طلاق واقع ہو گئی اور کیوں؟ اور تین شرطوں سے کیا مراد ہے اور کیوں؟

الجواب: ظاہر الفاظ کا مفاد یہ ہے کہ طلاق بشرط مجھول دیتا ہے تو یہ کہنا ایسا ہوا کہ مطلقہ ہے، اگر تین شرطیں پائی جائیں اس صورت میں طلاق اصلاً واقع نہ ہوگی، در مختار میں ہے:

وشرط صحتہ ذکر المشروط فنحو "انت طالق ان" لغو بہ یفتی 1۔

تعلیق کی صحت کے لئے مشروط کا ذکر ضروری ہے، تو یوں کہنا "تتجھے طلاق ہے اگر " لغو قرار پائے گا، اسی پر فتوٰی ہے (ت)

اور ایک احتمال یہ بھی ممکن کہ اس نے اپنے جاہلانہ محاورہ سے تین عدد کو تین شرطیں کہا ہو جیسے تین بار ہاتھ دھونے کو بعض جہال کہتے ہیں تینوں شرطیں پوری کر لو۔ اگر یہ اس کا محاورہ و مقصود ہے تو تین طلاقیں ہو گئیں۔ ردالمحتار میں ہے:

1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۰

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

یحمل کلام کل عاقل وحالف علی عرفه والله تعالی اعلم۔ The speech of every sane person and oath-taker shall be interpreted according to their custom, and Allah Almighty knows best. (T)

Problem 20: From Cantonment Berar, Gwalior State region, adjacent to the back of the Girls' School, via Munshi Syed Amjad Ali Sahib, sent by Ata Hussain Sahib, Draftsman, 5 Rabi al-Akhir 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hinda's father and Hinda had Zaid write an agreement on a stamp paper and had it registered in court, in which several conditions are mentioned: (1) Hinda will stay at her father's house for her entire life. (2) Hinda will be the owner of the children currently present; Zaid cannot be the owner. Hinda will also be the owner of any children born in the future. (3) You cannot marry another woman during Hinda's lifetime. (4) Zaid must send 10 rupees monthly for Hinda's expenses to her father's house. (5) I (Zaid) declare that if at any time for three months, except for unforeseen circumstances that my wife accepts, I do not send expenses or fail to fulfill any of the above conditions, then this writing of mine shall be considered as three irrevocable (Mughallazah) divorces according to Sharia. After writing all these conditions, Zaid did not go to meet Hinda for six months, nor did he send expenses for six months. After six months, Zaid went to Hinda's house; Hinda's father allowed Zaid to meet Hinda and sent Hinda with Zaid. Zaid brought Hinda to his house. Thus, visits continued. After four months, Zaid received a letter from Hinda asking him to send expenses. At that time, Zaid could not send expenses due to debt. Hinda's father then sent another letter to Zaid stating: you did not send expenses as per your writing, four months have passed instead of three, therefore Sharia has completely separated both of you, divorce has occurred, now no meeting/interaction can happen, you are given notice to pay the dower (Mahr) of 1320 rupees in lump sum, at this time claiming children... Zaid went to Hinda's father and said: when I did not send expenses for six months and you sent Hinda with me, why did divorce not occur at that time for not sending expenses for such a long period? Hinda's father replied: Hinda had not written for you to send expenses then, now Hinda has written for you to send expenses, three months have been counted from this time. Then Zaid...

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Suspension, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/299.

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

یحمل کلام کل عاقل وحالف علی عرفه والله تعالی اعلم. प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति और शपथ लेने वाले के वचन को उसकी प्रथा के अनुसार माना जाएगा और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 20: छावनी बरार, ग्वालियर राज्य क्षेत्र, गर्ल्स स्कूल के पीछे से, मुंशी सैयद अमजद अली साहब के माध्यम से, अता हुसैन साहब, नक्शानवीस द्वारा भेजा गया, 5 रबी-उल-आखिर 1338 हिजरी। क्या धर्म के विद्वान इस मामले में क्या फरमाते हैं कि: हिंदा के पिता और हिंदा ने जैद से स्टाम्प पेपर पर लिखवाकर अदालत में रजिस्ट्री करा ली है, जिसमें कुछ शर्तें दर्ज हैं: (1) हिंदा जीवन भर अपने पिता के घर में ही रहेगी। (2) वर्तमान में जो संतान है उसकी स्वामिनी हिंदा होगी, जैद स्वामी नहीं हो सकता, और भविष्य में जो संतान होगी उसकी स्वामिनी भी हिंदा ही होगी। (3) हिंदा के जीवनकाल में तुम दूसरी शादी नहीं कर सकोगे। (4) जैद को हिंदा के खर्च के लिए हिंदा के पिता के घर पर 10 रुपये मासिक भेजने होंगे। (5) मैं (ज़ैद) स्वीकार करता हूँ कि यदि किसी भी समय तीन महीने तक, समय की दुर्घटनाओं के अपवाद के साथ जिन्हें मेरी पत्नी स्वीकार करे, मैं खर्च न भेजूँ या उपरोक्त शर्तों में से किसी का पालन न करूँ तो मेरा यह लेखन शरिया के अनुसार तीन मुग़ल्लज़ह (अटल) तलाक़ के स्थान पर समझा जाए। इन सभी शर्तों को लिखने के बाद, जैद छह महीने तक हिंदा से मिलने नहीं गया और न ही छह महीने तक हिंदा के लिए खर्च भेजा। छह महीने के बाद, जैद हिंदा के घर गया; हिंदा के पिता ने जैद को हिंदा से मिलने दिया और हिंदा को जैद के साथ विदा कर दिया। जैद हिंदा को अपने घर ले आया, इस प्रकार आना-जाना बना रहा। चार महीने बाद, जैद को हिंदा का एक पत्र मिला जिसमें खर्च भेजने के लिए कहा गया था। उस समय जैद कर्ज के कारण खर्च नहीं भेज सका। हिंदा के पिता ने फिर जैद को एक पत्र भेजा कि: आपने अपने लेखन के अनुसार खर्च नहीं भेजा, तीन महीने के बजाय चार महीने बीत गए हैं, इसलिए शरिया ने आप दोनों को पूरी तरह से अलग कर दिया है, तलाक हो गया है, अब किसी भी तरह का मेल-जोल नहीं हो सकता, आपको नोटिस दिया जाता है कि 1320 रुपये महर (स्त्रीधन) एकमुश्त अदा कर दो, इस समय बच्चों का दावा करना... जैद हिंदा के पिता के पास गया और कहा: जब मैंने छह महीने तक खर्च नहीं भेजा और आपने हिंदा को मेरे साथ विदा कर दिया, तो इतने समय तक खर्च न भेजने पर उस समय तलाक क्यों नहीं हुआ? हिंदा के पिता ने उत्तर दिया: हिंदा ने तब तुम्हें खर्च भेजने के लिए नहीं लिखा था, अब हिंदा ने तुम्हें खर्च मँगवाने के लिए लिखा है, इस समय से तीन महीने गिने गए हैं। फिर जैद ने...

1 रद अल-मुह्तार, तालीक़ का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/299। पृष्ठ 214 of 688

یحمل کلام کل عاقل وحالف علی عرفه والله تعالی اعلم۔ عقد کرنے والے کے اور حلف دینے والے کلام کو اس کے عرف پر محمول کیا جائے گا واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۰: از چھاؤنی برار علاقہ ریاست گوالیار متصل عقب گرلز اسکول بمعرفت منشی سید امجد علی صاحب مرسلہ عطا حسین صاحب نقشہ نویس ۵ ربیع الآخر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کے والد اور ہندہ نے زید سے اسٹامپ لکھوا کر کچہری میں رجسٹری کروالی ہے جن میں کے چند شرائط درج ہیں : (۱) ہندہ تمام عمر اپنے باپ ہی کے مکان پر رہے گی۔ (۲) جو اس وقت اولاد موجود ہے اس کی مالک ہندہ ہوگی زید مالک نہیں ہوسکتا اور آئندہ جو اولاد ہوگی اس کی بھی مالک ہندہ ہوگی۔ (۳) ہندہ کی حیات میں تم دوسری شادی نہیں کر سکو گے۔ (۴) دس ۱۰ روپیہ ماہوار ہندہ کے خرچ کے لئے زید کو ہندہ کے والد کے مکان پر بھیجنا ہوں گے۔ (۵) میں اقرار کرتا ہوں کہ اگر کسی وقت میں تین ماہ تک بہ استثنائے حادثات زمانہ جس کو میری زوجہ تسلیم کر لے خرچ نہ بھیجوں یا شرط مذکورہ بالا میں سے کسی شرط کا ایفاء نہ کروں تو میری یہ تحریر بجائے تین طلاق مغلظہ و شرع کے سمجھی جائے، یہ سب شرائط لکھنے کے بعد زید چھ ماہ تک ہندہ سے ملنے نہیں گیا اور نہ چھ ماہ تک ہندہ کے لیے خرچ بھیجا، بعد چھ ماہ کے زید ہندہ کے مکان پر گیا، ہندہ کے والد نے زید کو ہندہ سے ملنے دیا اور ہندہ کو زید کے ہمراہ رخصت کردیا، زید ہندہ کو اپنے مکان پر لے آیا، اسی طرح سے آنا جانا بنارہا، بعد چار ماہ کے ہندہ کا خط زید کے پاس آیا مجھ کو خرچ بھیجو، زید اس وقت بوجہ قرضداری کے خرچ نہیں بھیج سکا، ہندہ کے والد نے پھر ایک خط زید کو بھیجا تم نے اپنی تحریر کے موافق خرچ نہیں بھیجا تین ماہ کے بجائے چار ماہ گزر گئے اس لئے تم دونوں کو شریعت نے بالکل علیحدہ کیا طلاق ہوچکی

اب کسی طرح میل جول نہیں ہوسکتا تم کو نوٹس دیا جاتا ہے کہ تیرہ سو بیس ۱۳۲۰ روپے حق مہر یکمشت ادا کردو، اس وقت اولاد کا دعویٰ کرنا، زید ہندہ کے والد کے پاس گیا زید نے یہ کہا جبکہ میں نے چھ ماہ تک خرچ نہیں بھیجا اور ہندہ کو آپ نے میرے ہمراہ رخصت کردیا، اتنے عرصہ تک خرچ نہ بھیجنے پر اس وقت طلاق کیوں نہیں ہوئی، ہندہ کے والد نے جواب دیا ہندہ نے تم کو خرچ بھیجنے کیلئے نہیں لکھا تھا اب ہندہ نے تم کو خرچ منگوانے کے لئے لکھا ہے اس وقت سے تین ماہ رکھے گئے ہیں، پھر زید نے

۱ ردالمحتار باب التعلیق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۹۹/۲ Page 214 of 688

Fatawa-e-Razawiya, Volume 13

This question was asked: Neither you nor Hind (the wife's name) recorded in the stamp paper that she should be kept for three months upon requesting expenses. Then Zaid (the husband) presented Hind's letter to Hind's father. With five days remaining until the completion of three months, Hind's father told Zaid, "Give 30 rupees for the three months. Even upon giving 30 rupees, you will not be able to meet Hind until you are considered excused for not sending expenses to your wife. And let it be inquired from the religious scholars; if the religious scholars permit the meeting, we will inform you at that time, and you can come and take your wife back. And if the religious scholars do not permit the meeting and decree a divorce, then your 30 rupees will be returned to you." Zaid said, "Currently, I do not have 30 rupees. For now, take ten rupees, and upon reaching home, I will send twenty more rupees." They did not accept the ten rupees and returned them to Zaid. Hind's father neither gives children to Zaid nor allows him to meet Hind. Zaid is not in a position to pay thirteen hundred and twenty (1320) rupees of dower (Mahr) in a lump sum. Now Hind's father says, "Get permission from the scholars. If the religious scholars permit the meeting with Hind, then I will have no objection and will let Hind go with you." Now the request is, did divorce occur based on all these conditions? Hind's father wrote to Zaid that whichever scholar you get the fatwa from, if they write that divorce did not occur, they must certainly write the name and page number of the book which proves that divorce did not occur. Explain and be rewarded.

Answer: These are all ignorant superstitions. That agreement is purely void. All the conditions placed in it are null, void, rejected, and contrary to Sharia. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box Content] "What is the matter with people who stipulate conditions that are not in the Book of Allah? Any condition that is not in the Book of Allah is void, even if there were a hundred conditions. Allah's decree is more rightful, and Allah's condition is more binding." [Reported by Bukhari and Muslim on the authority of the Mother of the Believers, Aisha al-Siddiqah (may Allah be pleased with her).]

And now she will stay at her father's house, and he (the father) will be the owner/guardian of the existing children and will also be the owner/guardian of future children and...

1 Sahih al-Bukhari, Kitab al-Shurut, Bab al-Shurut fil-Wala, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/377.

फतावा रज़विया, खंड 13

यह सवाल किया गया कि स्टांप पेपर में आपने या हिंदा ने यह दर्ज नहीं करवाया है कि खर्च मंगवाने पर तीन महीने रखे जाएँ। फिर जैद ने हिंदा का पत्र हिंदा के पिता के सामने पेश किया। तीन महीने पूरे होने में पांच दिन बाकी थे, तब हिंदा के पिता ने जैद से कहा, "तीन महीने के30 रुपये दे दो। 30 रुपये देने पर भी तुम हिंदा से तब तक नहीं मिल सकोगे जब तक तुम्हें अपनी पत्नी को खर्च न भेजने के लिए मजबूर (माज़ूर) न मान लिया जाए। और धर्मगुरुओं (उलेमा) से पूछा जाए, अगर धर्मगुरु मिलने की इजाजत दे दें तो हम तुम्हें उस समय सूचित कर देंगे, तुम आकर अपनी पत्नी की विदाई करा लेना। और अगर धर्मगुरुओं ने मिलने की इजाजत नहीं दी और तलाक तय कर दिया, तो तुम्हारे 30 रुपये तुम्हें वापस कर दिए जाएँगे।" जैद ने कहा, "फिलहाल मेरे पास 30 रुपये नहीं हैं, अभी 10 रुपये ले लीजिए, घर पहुँचकर 20 रुपये और भेज दूँगा।" उन्होंने 10 रुपये नहीं लिए और जैद को लौटा दिए। हिंदा के पिता न तो जैद को बच्चे देते हैं और न ही हिंदा से मिलने देते हैं। जैद की इतनी हैसियत नहीं है कि वह तेरह सौ बीस (1320) रुपये मेहर एकमुश्त अदा कर सके। अब हिंदा के पिता कहते हैं कि "उलेमा से इजाजत लो। अगर उलेमा हिंदा से मिलने की इजाजत दे दें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी और मैं हिंदा को तुम्हारे साथ विदा कर दूँगा।" अब निवेदन यह है कि क्या इन सभी शर्तों से तलाक हो गया? हिंदा के पिता ने जैद को लिखा कि जिस विद्वान (आलिम) से तुम फतवा मंगवाओ, अगर वे लिखें कि तलाक नहीं हुआ, तो वे उस किताब का नाम और पेज नंबर जरूर लिख दें जिससे यह साबित होता है कि तलाक नहीं हुआ। बयान करें, पुण्य पाएँ।

जवाब: ये सब अज्ञानतापूर्ण बकवास (खुराफ़ात) हैं। वह इकरारनामा पूरी तरह से शून्य (बातिल) है। उसमें जितनी भी शर्तें लगाई गई हैं, वे सभी शून्य, रद्द और शरीयत के खिलाफ हैं। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स सामग्री] "उन लोगों का क्या हाल है जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जो अल्लाह की किताब (शरीयत) में नहीं हैं? जो शर्त अल्लाह की किताब के खिलाफ हो, वह बातिल है, चाहे ऐसी सौ शर्तें क्यों न हों। अल्लाह का फैसला ही हक है और अल्लाह की शर्त ही सबसे मजबूत (मोअक्कद) है।" [इसे बुखारी और मुस्लिम ने उम्मुल मोमिनीन हजरत आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत किया है।]

और अब वह अपने पिता के घर ही रहेगी और वर्तमान बच्चों का भी वही मालिक (अभिभावक) होगा और भविष्य के बच्चों का भी वही मालिक होगा और...

---

1 सहीह अल-बुखारी, किताब अल-शुरुत, बाब अल-शुरुत फिल-वला, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/377.

पृष्ठ 215/688

یہ سوال کیا کہ اسٹامپ میں آپ نے یا ہندہ نے یہ نہیں درج کروایا ہے کہ خرچ منگوانے پر تین ماہ رکھے جائیں، پھر زید نے ہندہ کا خط ہندہ کے والد کے روبرو پیش کیا، تین ماہ گزرنے میں پانچ یوم باقی ہیں ہندہ کے والد نے زید سے کہا تین ماہ کے تیس ۳۰ روپے دے دو تمہیں ۳۰ روپے دینے پر بھی تم ہندہ سے نہیں مل سکو گے اس وقت تک جبکہ تمہاری زوجہ کو خرچ نہ بھیجنے پر معذور سمجھے، اور علمائے دین سے دریافت کیا جائے اگر علمائے دین ملنے کی اجازت دے دیں اس وقت تم کو اطلاع دے دیں گے تم آکر اپنی زوجہ کو رخصت کرالے جانا، اور اگر علمائے دین نے ملنے کی اجازت نہ دی اور طلاق مقرر کردی تو تمہارے تمہیں ۳۰ روپے واپس کردئے جائیں گے، زید نے کہا اس وقت میرے پاس تیس ۳۰ روپے نہیں فی الحال دس روپے لئے لیجئے مکان پر پہنچ کر بیس ۲۰ روپے اور بھیج دوں گا انہوں نے دس روپے نہیں لئے، زید کو واپس لوٹا دیا، ہندہ کے والد نہ تو زید کو اولاد دیتے ہیں اور نہ ہندہ سے ملنے دیتے ہیں، زید میں اس قدر حیثیت نہیں ہے کہ تیرہ سو بیس ۱۳۲۰ روپیہ حق مہر یکمشت ادا کرسکے، اب ہندہ کے والد یہ کہتے ہیں کہ علماء سے اجازت لو اگر علمائے دین ہندہ سے ملنے کی اجازت دے دیں تو پھر مجھ کو کچھ عذر نہ ہوگا تمہارے ساتھ ہندہ کو رخصت کردوں گا، اب عرض یہ ہے کہ ان سب شرائط سے طلاق ہوئی یا نہیں؟ ہندہ کے والد نے زید کو لکھا کہ جس عالم سے تم فتوی منگواؤ اگر وہ لکھیں کہ طلاق نہیں ہوئی تو ان کو یہ ضرور لکھ دینا کہ جس کتاب سے طلاق نہیں ہوئی ہے (ثابت ہے) اس کتاب کا نام اور صفحہ کا نمبر ضرور لکھیں۔ بینوا توجروا الجواب: یہ سب جاہلانہ خرافات ہیں، وہ اقرار نامہ باطل محض ہے اس میں جتنی شرطیں لگائیں سب باطل و مردود و خلاف شرع ہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

مابال رجال یشترطون شروطا لیست في کتاب اللہ ماکان من شرط لیس في کتاب اللہ فھو باطل وان کان مائۃ شرط فقضاء اللہ احق و شرط اللہ اوثق ۔ رواہ البخاری و مسلم عن ام المؤمنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ۔ کیا حال ہے ان لوگوں کا جو ایسی شرطیں لگاتے ہیں جو اللہ کی شریعت میں نہیں، جو شرط شریعت کے خلاف ہو وہ باطل ہے اگرچہ سو شرطیں ہوں، اللہ کا حکم حق ہے، اور اللہ کی شرط مؤکد۔ (اس کو بخاری اور مسلم نے حضرت ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کیا ہے۔ت)

اور اب باپ ہی کے یہاں رہے گی اور موجودہ اولاد کی وہی مالک ہوگی اور آئندہ اولاد کی بھی وہی مالک ہوگی اور

---

۱ صحیح البخاری کتاب الشروط باب الشروط فی الولاء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۳۷۷

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

She will benefit by sitting at her father's house. All these conditions are contrary to Shariah and rejected. If she violates the fifth condition, this written document will be considered three divorces; this is also void. What is the meaning of considering something other than divorce as divorce? It is stated in Fatawa Qazi Khan:

"A woman said to her husband, 'Give me divorce.' The husband replied, 'Consider it given or done.' Divorce does not occur, even if he intended it. It is as if the husband said in Arabic, 'Consider yourself divorced.' If he said that, divorce does not occur even if there was an intention of divorce. Summarized (T)."

In the same source: "If a man is asked, 'Have you divorced your wife?' and he replies, 'Count her as divorced' or 'Consider her divorced,' his wife is not divorced (T)."

In short, neither did divorce occur in the queried situation, nor can the woman become the owner of the children. Allah Almighty said: "And upon the father is their provision..." Allah Almighty says: The maintenance of the wife is upon the one who has the children, i.e., the husband. (T)

Yes, in terms of custody, the boy will stay with the mother until the age of seven and the girl until the age of nine, then the father will take them. If the husband wants to call them to him, the woman has no right to stay at her father's house. Allah Almighty said: "Lodge them where you dwell..." Allah Almighty says: Keep your wives where you are residing. (T)

If she refuses to come to her husband, she will not be entitled to maintenance. It is in common books: "There is no maintenance for a disobedient wife (Nashiza)."

1. Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Talaq, Naval Kishore, Lucknow, 3/210.
2. Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Talaq, Naval Kishore, Lucknow, 2/213.
3. Al-Quran al-Karim 2/233.
4. Al-Quran al-Karim 65/6.
5. Bahr al-Raiq Bab al-Nafaqah, H.M. Saeed Company, Karachi 4/194; Radd al-Muhtar Bab al-Nafaqah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/647.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

वह अपने पिता के घर बैठकर लाभ पाएगी। ये सभी शर्तें शरीयत के खिलाफ और खारिज (रद्द) हैं। यदि वह पांचवीं शर्त का उल्लंघन करती है, तो इस लेख को तीन तलाक माना जाएगा; यह भी बातिल (अमान्य) है। तलाक के अलावा किसी चीज़ को तलाक समझने का क्या अर्थ है? फ़तावा काज़ी ख़ान में है:

"एक महिला ने अपने पति से कहा, 'मुझे तलाक दे दो।' पति ने उत्तर दिया, 'इसे दिया हुआ या किया हुआ समझो।' तलाक नहीं होगा, भले ही उसकी नियत (इरादा) भी रही हो। यह ऐसा है जैसे पति ने अरबी में कहा हो, 'समझ ले कि तू तलाकशुदा है।' यदि उसने ऐसा कहा, तो तलाक नहीं होता चाहे तलाक की नियत भी हो। सारांशित (त)।"

उसी में है: "यदि किसी व्यक्ति से पूछा जाए, 'क्या तुमने अपनी पत्नी को तलाक दिया है?' और वह उत्तर दे, 'उसे तलाकशुदा गिन ले' या 'उसे तलाकशुदा समझ ले', तो उसकी पत्नी को तलाक नहीं होगा (त)।"

संक्षेप में, न तो पूछी गई स्थिति में तलाक हुआ, और न ही महिला बच्चों की मालिक बन सकती है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और पिता पर उनका भरण-पोषण है..." अल्लाह तआला ने फरमाया: पत्नी का भरण-पोषण बच्चों वाले यानी पति पर है। (त)

हाँ, संरक्षण (परवरिश) के अधिकार के तहत, लड़का सात साल की उम्र तक और लड़की नौ साल की उम्र तक माँ के पास रहेगी, फिर पिता उन्हें ले जाएगा। यदि पति उन्हें अपने पास बुलाना चाहता है, तो महिला को पिता के घर रहने का अधिकार नहीं है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "उन्हें वहीं रखो जहाँ तुम रहते हो..." अल्लाह तआला ने फरमाया: अपनी पत्नियों को वहीं रखो जहाँ तुम निवास करते हो। (त)

यदि वह पति के पास आने से इनकार करती है, तो वह भरण-पोषण पाने की हकदार नहीं होगी। सामान्य पुस्तकों में है: "नाशुज़ा (अवज्ञाकारी) पत्नी के लिए कोई भरण-पोषण नहीं है।"

1. फ़तावा काज़ी ख़ान, किताब अल-तलाक़, नवल किशोर, लखनऊ, 3/210।
2. फ़तावा काज़ी ख़ान, किताब अल-तलाक़, नवल किशोर, लखनऊ, 2/213।
3. अल-कुरान अल-करीम 2/233।

4. अल-कुरान अल-करीम 65/6।
5. बहर अल-राइक़ बाब अल-नफ़क़ह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 4/194; रद अल-मुह्तार बाब अल-नफ़क़ह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/647।

पृष्ठ 216 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیز دہم، صفحہ ۱۳

باپ کے گھر بیٹھے نفع پائے گی یہ سب شرطیں خلاف شرع و مردود ہیں پانچویں شرط کو خلاف کرے تو یہی تحریر تین طلاق سمجھی جائے یہ بھی باطل ہے، غیر طلاق کو طلاق سمجھنا کیا معنی، فتاوٰی قاضی خاں میں ہے:

امرأۃ قالت لزوجھا مرا طلاق دہ۔ فقال الزوج دادہ انگار او کردہ انگار لا یقع وان نوی کانہ قال لہا بالعربیۃ احسبی انك طالق وان قال ذلك لا یقع وان نوی اھ ملخصًا۔ ایک عورت نے اپنے خاوند کو کہا تو مجھے طلاق دے، تو خاوند نے کہا دی ہوئی یا کی ہوئی سمجھ، تو طلاق نہ ہوگی خواہ نیت بھی کی ہو۔ گویا خاوند نے عربی میں کہا تو خیال کر لے کہ تو طلاق والی ہے۔ تو ایسا کہنے پر طلاق نہیں اگرچہ نیتِ طلاق بھی ہو، اھ ملخصاً (ت)

اسی میں ہے: لو قیل لرجل اطلقت امرأتك فقال عدھا مطلقۃ او احسبھا مطلقۃ لا تطلق امرأتہ۔ اگر کسی شخص کو یہ کہا جائے کیا تو نے اپنی بیوی کو طلاق دی تو وہ جواب میں کہے تو اس مطلقہ شمار کر یا کہے بیوی کو مطلقہ سمجھ لے، تو اس سے طلاق نہ ہوگی (ت)

بالجملہ نہ صورتِ مستفسرہ میں طلاق ہوئی نہ عورت مالک اولاد ہو سکتی ہے، قال اللہ تعالٰی وَعَلَی الْمَوْلُوْدِ لَہٗ رِزْقُھُنَّ ۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا: بیوی کا نفقہ اولاد والے یعنی خاوند پر ہے۔ (ت)

ہاں بحقِ حضانت لڑکا سات برس کی عمر تک ماں کے پاس رہے گا اور لڑکی نو برس کی عمر تک، پھر باپ لے گا۔ شوہر اگر اپنے پاس بلانا چاہے تو عورت کو باپ کے گھر رہنے کا اختیار نہیں، قال اللہ تعالٰی اَسْكِنُوْھُنَّ مِنْ حَیْثُ سَكَنْتُمْ ۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا: تم اپنی بیویوں کو وہاں رکھو جہاں سکونت پذیر ہو۔ (ت)

اگر شوہر کے پاس آنے سے انکار کرے گی نفقہ پانے کی مستحق نہ ہوگی۔ عامہ کتب میں ہے:

لانفقة للناشزة

1 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۳/ ۲۱۰ 2 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۱۳ 3 القرآن الکریم ۲/ ۲۳۳ 4 القرآن الکریم ۶/ ۲۵ 5 بحرالرائق باب النفقة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/ ۱۹۴، ردالمحتار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۴۷

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 217

(There is no maintenance for a disobedient wife. - Translator's note) If the dower (mahr) was neither prompt (mu'ajjal) nor deferred (mu'ajjal), i.e., if it was not settled to be given before the consummation of marriage, nor was any fixed term agreed upon, for example, a year or two, then the woman has no right to demand it until death or divorce occurs. It is stated in Radd al-Muhtar:

"The right to demand deferred dower is established for her only after death or divorce." (T)

The condition set by Hindah's father to be shown the page of the book is among those conditions he had written in the agreement. Had he been a learned person, these rulings would not have been hidden from him, nor would he have had such a pointless agreement written, nor would it be that he did not understand divorce after six months. Divorce occurs after three months. For one who is ignorant, to demand references and page numbers is to overstep one's bounds with their arbitrator, and providing the page number to them is futile. The instruction for such a person is to inquire from the scholars, not to verify page and line. And Allah the Almighty knows best.

Problem 21: From Jabalpur, Mohalla Bhan Talaiya, sent by Muhammad Nazir Dad Khan, Petition Writer, Small Cause Court, 20 Rajab 1318 AH.

I, Alauddin, son of Sheikh Rajab, Muslim by community, resident of Jabalpur, Mohalla Galgala Talab, state that since my wife and I used to have disputes due to my having two wives, today, in the presence of the following witnesses, a settlement has been reached: I will provide food and clothing without excuse and will also stay in the house at night. If, for instance, for one month I fail to provide food and clothing without reason and do not stay in the house at night, then it is settled before witnesses that the said woman shall be out of my marriage, like a divorce, and my marriage tie shall be dissolved. Any court decree in my name shall also become void. The married woman has the right to live in her house, which belongs to her father. I will also live there and provide food and clothing. I will not make any kind of excuse or pretext in this regard. If I do, it will be a lie. Therefore, these few words have been written as an agreement so that it may serve as a record and be useful in time of need.

My marriage to Alauddin took place seven years ago. Now my parents have passed away and I have no guardian left. My husband has contracted a second marriage six years ago and has been living with her. He does not provide for me in any way. Once in a panchayat (community council), he agreed to my maintenance and wrote an agreement dated June 7, 1899, promising that if he failed to fulfill the agreement, it would result in divorce. But he has not fulfilled his promise, and my condition remains as it was before. Now, how should I manage my livelihood? And am I still in marriage... [continues]

---

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Qada, Section on Majlis, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/343.

फतावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 217

(अवज्ञाकारी पत्नी के लिए कोई भरण-पोषण नहीं है। - अनुवादक का नोट) यदि मेहर (दहेज) न तो नकद (मुअज्जल) था और न ही विलंबित (मुअज्जल), यानी यदि इसे विवाह संपन्न होने से पहले देना तय नहीं किया गया था, और न ही कोई निश्चित अवधि तय की गई थी, उदाहरण के लिए, एक या दो साल, तो मृत्यु या तलाक होने तक महिला को इसकी मांग करने का कोई अधिकार नहीं है। रद अल-मुह्तार में कहा गया है:

"विलंबित मेहर की मांग करने का उसका अधिकार केवल मृत्यु या तलाक के बाद ही स्थापित होता है।" (त)

हिंदाह के पिता द्वारा किताब का पेज दिखाए जाने की शर्त रखना उन शर्तों में से है जो उसने इकरारनामे (समझौते) में लिखवाई थीं। यदि वह विद्वान होता, तो ये नियम उससे छिपे नहीं रहते, और न ही वह ऐसा निरर्थक इकरारनामा लिखवाता, और न ही ऐसा होता कि वह छह महीने बाद तलाक न समझ पाता। तीन महीने बाद तलाक हो जाता है। जो अज्ञानी है, उसके लिए संदर्भ और पेज नंबर मांगना अपने मध्यस्थ (अम्पायर) के साथ सीमा लांघना है, और उसे पेज नंबर बताना व्यर्थ है। ऐसे व्यक्ति के लिए निर्देश यह है कि वह विद्वानों से पूछे, न कि पेज और लाइन की जाँच करे। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

प्रश्न 21: जबलपुर, मोहल्ला भान तलैया से, मोहम्मद नज़ीर दाद खान, अर्जी नवीस, स्मॉल कॉज कोर्ट द्वारा भेजा गया, 20 रजब 1318 हिजरी।

मैं, अलाउद्दीन, वल्द शेख रजब, कौम मुसलमान, निवासी जबलपुर, मोहल्ला गलगला तालाब का हूँ। चूंकि मेरी दो पत्नियाँ होने के कारण मेरी पत्नी से आपस में अनबन रहती थी, इसलिए आज गवाहों के सामने यह समझौता हुआ है कि मैं बिना किसी बहाने के खाना-कपड़ा दिया करूँगा और रात के समय मकान में भी रहा करूँगा। मान लीजिए अगर मैं एक महीने तक बिना किसी कारण के खाना-कपड़ा न दूँ और मकान में रात के समय न रहूँ, तो गवाहों के सामने यह तय हुआ है कि उक्त महिला हमारे निकाह से बाहर तलाक की तरह हो जाएगी और मेरा निकाह खत्म (फस्ख) हो जाएगा। और अदालत से मेरे नाम की जो भी डिक्री है वह भी रद्द हो जाएगी। और विवाहित महिला को अधिकार है कि वह अपने मकान में रहे जो उसके पिता का है। मैं भी उसी जगह रहूँगा और खाना-कपड़ा दूँगा।

इसमें किसी प्रकार का कोई बहाना या हीला-हवाला नहीं करूँगा। अगर करूँ तो झूठ होगा। इसलिए यह चंद शब्द इकरारनामे के तौर पर लिख दिए हैं ताकि प्रमाण रहे और ज़रूरत के वक्त काम आए।

अलाउद्दीन के साथ मेरी शादी को सात साल हो चुके हैं। अब मेरे माता-पिता का देहांत हो चुका है और मेरा कोई संरक्षक नहीं बचा है। मेरे पति ने छह साल पहले दूसरा निकाह कर लिया है और उसी के साथ रहता है। वह किसी भी तरह से मेरा भरण-पोषण नहीं करता। एक बार पंचायत में उसने मेरे नान-नफका (भरण-पोषण) का वादा किया और 7 जून 1899 को एक इकरारनामा लिखकर दिया था कि यदि वादा पूरा न करूँ तो तलाक हो जाए। लेकिन उसने अपना वादा पूरा नहीं किया और मेरी हालत वैसी ही है जैसी पहले थी। अब मैं अपना गुजारा कैसे करूँ और क्या मैं निकाह में... [जारी]

---

1 रद अल-मुह्तार, किताब अल-क़ज़ा, फ़स्ल फ़ी अल-मजलिस, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 4/343।

فتاوٰی رضویہ ، جلد سیزدہم ، ص ۲۱۷

(نافرمان بیوی کے لئے نفقہ نہیں۔ت) مہر اگر نہ معجل تھانہ مؤجل یعنی رخصت سے پہلے دینا قرار پایا تھا نہ کوئی میعاد معین مثلاً سال دو سال قرار پائی تھی، تو جب تک موت یا طلاق نہ ہو عورت کو اس کے مطالبہ کا کچھ اختیار نہیں۔ ردالمختار میں ہے: مؤخر المہرحق طلبہ انما ثبت لہا بعد الموت او مؤخر کردہ مہر کا مطالبہ، طلاق یا موت کے بعد ہو سکتا ہے۔ الطلاق 1۔ (ت) پدر ہندہ کا یہ شرط لگانا کہ کتاب کا صفحہ بتایا جائے انہیں شرائط کے قبیل سے ہے جو اس نے اقرار نامہ میں لکھوائیں اگر وہ ذی علم ہوتا اس پر یہ احکام مخفی نہ رہتے نہ ایسا مہمل اقرار نامہ لکھواتا نہ یہ ہوتا کہ چھ مہینے گزرنے پر طلاق نہ سمجھی، تین مہینے گزرنے پر طلاق ہے، اور جو بے علم ہے اس کا حوالہ وصفحہ طلب کرنا اپنے منصف سے بڑھنا ہے اور اسے صفحہ بتانا فضول، اسے یہ حکم ہے کہ علماء سے دریافت کرے نہ یہ کہ صفحہ سطر جانچے واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۱: از جبلپور محلہ بھان تلیامر سلہ محمد نظیر داد خاں سوال نویس کچہری خفیفہ ۲۰ رجب ۱۳۱۸ھ منکہ علاء الدین ولد شیخ رجب قوم مسلمان ساکن جبلپور محلہ گلگالتالاب کا ہوں، چونکہ بوجہ دو عورتوں کے بیاہا تھا عورت میری سے آپس میں تکرار ہوا کرتی تھی سو آج کے روز روبرو گواہان ذیل یہ تصفیہ ہوا کہ میں بلاعذر کھانا کپڑا دیا کروں گا اور رات کے وقت مکان میں بھی رہا کروں گا اور بالفرض اگر میں ایک ماہ تک بلاوجہ کھانا کپڑا نہ دوں اور مکان میں رات کے وقت نہ رہوں تو روبرو گواہان یہ تصفیہ ہوا کہ عورت مذکورہ ہمارے نکاح سے باہر مثل طلاق کے ہو جائے اور میری لغت فسخ ہو جائے اور جو ڈیگری عدالت سے ہمارے نام کی ہے وہ بھی باطل ہو جائے اور بیاہتا عورت کو اختیار ہے کہ وہ اپنے مکان میں جو اس کے باپ کا ہے رہے میں بھی اسی جگہ رہوں گا اور کھانا کپڑا دوں گا اس میں کسی طرح کا عذر وحیلہ نہ کروں

گا عذر کروں تو جھوٹ، اس واسطے یہ چند کلمے بطریق اقرار نامہ کے لکھ دئے کہ سند رہے اور وقت ضرورت کام آئے۔ میری شادی علاء الدین کے ساتھ عرصہ سات سال کا ہوا ہو گئی تھی اب میرے والدین قضا کر گئے اور میرا کوئی شرپرست نہیں رہا، میرے خاوند نے عرصہ چھ سال کا ہوا کہ ایک دوسرا نکاح کر لیا اور اس کے ہمراہ رہا کرتا ہے میری کسی طرح سے کفالت نہیں کرتا ایک مرتبہ پنچایت میں اس نے میرے نان نفقہ کا اقرار کر کے ایک اقرار نامہ مورخہ ۷ جون ۱۸۹۹ء کو تحریر کر دیا تھا اور اقرار کیا تھا کہ اگر اقرار پورا نہ کروں تو طلاق ہو جائے مگر اس نے اپنا عہد پورا نہیں کیا اور میری وہ کیفیت ہے جو سابق میں تھی اب میں گزر اوقات کس طرح کروں اور میں نکاح سے

---

1 ردالمحتار کتاب القضاء فصل فی المجلس داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۴۳/۴

Fatawa Razawiya Volume 13, Page 13

...how can I be outside [of marriage], I have no hope from him. Dated 15 August 1900. Petition of Musammat Batul daughter of Beechan Khan, Mian Nazir Dad Khan: Despite the panchayat [village council] and the written agreement, Alauddin does not provide for Musammat Batul at all and remains hidden. Has divorce occurred according to the stamped writing? If it has occurred, please inform me so that her second marriage can be arranged to save her from this calamity. This person has never provided maintenance, nor is any expected. Dated 16 August 1900.

Muhammad Khan: To the presence of Maulana Abdus Salam Sahib (may his grace increase). Since this is a religious matter, these papers came to me. I have looked at them from beginning to end. Truly, Alauddin has no concern of any kind with his wedded wife nor does he maintain her. He has contracted a second marriage and lives with her. In such a situation, it seems very difficult for her life to pass. Please write whether she is out of [the first] marriage or not, and can a second marriage take place or not? That is all. 16 August 1900. Muhammad Nazir Dad.

Summary Answer: In the questioned case, proof of the writing of this agreement without compulsion, by Alauddin or on behalf of Alauddin, along with verification of the violation of the agreement—namely, the cessation of providing food and maintenance for the wife and ceasing to spend nights with the wife for one month—the divorce suspended upon it necessitates the result following the condition. That is, the occurrence of divorce. Immediately upon the expiration of the specified period, without a doubt, an irrevocable divorce (Talaq Ba'in) will occur on the said wife, and that woman will be out of his marriage. It is stated in Fatawa al-Khairiyyah li Naf' al-Bariyyah:

| No doubt, when the absence and abandonment upon which the divorce was suspended are found, it occurs due to the presence of the condition that necessitates the result, etc. -1 | There is no doubt that if the absence and abandonment upon which the divorce was suspended are found, then it occurs due to the presence of the condition that necessitates the result, etc. (T) After the completion of the waiting period ('iddat) of the divorce, that woman can enter into a marriage contract. |

These exact papers are sent to the noble presence of Maulana Ahmad Raza Sahib Barelvi with the request that after consideration, please provide appropriate advice. Written on 4 September 1900.

Answer: In reality, the aforementioned statement of Alauddin, as far as the requirement of jurisprudential insight is concerned, is a Sharia suspension (ta'liq). At the time the condition exists, it necessitates the occurrence of an irrevocable divorce (Talaq Ba'in) and the termination of the marriage, making a second marriage for the woman permissible after the completion of the waiting period ('iddat), as the learned respondent (may Allah, the Near, the Responder, protect him) has stated.

---

1 Fatawa al-Khairiyyah, Kitab al-Talaq, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/25. Page 218 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

...बाहर कैसे हो सकती हूँ, मुझे उससे कोई उम्मीद नहीं है। दिनांक 15 अगस्त 1900। मुसम्मात बतुल पुत्री बीचन खान की अर्जी, मियां नज़ीर दाद खान: पंचायत और लिखित इकरारनामे के बावजूद अलाउद्दीन मुसम्मात बतुल का पालन-पोषण बिल्कुल नहीं करता और छिपा रहता है। क्या स्टाम्प पर लिखे अनुसार तलाक हो गया है? अगर हो गया है, तो सूचित करें ताकि उसका दूसरा निकाह कर दिया जाए ताकि बला से छुटकारा मिले। इस व्यक्ति ने कभी भरण-पोषण नहीं किया और न ही कोई उम्मीद है। दिनांक 16 अगस्त 1900।

मोहम्मद खान: मौलाना अब्दुल सलाम साहब (ज़ैद फ़ैज़हु) की सेवा में, चूंकि यह एक धार्मिक मामला है, ये दस्तावेज़ मेरे पास आए। मैंने शुरू से अंत तक देखा, वास्तव में अलाउद्दीन अपनी विवाहित पत्नी के साथ किसी प्रकार का सरोकार नहीं रखता और न ही उसका भरण-पोषण करता है। उसने दूसरा निकाह कर लिया है और उसी के साथ रहता है। ऐसी स्थिति में उसकी ज़िंदगी गुज़रना बहुत मुश्किल लग रहा है। आप लिखकर बताएं कि क्या वह निकाह से बाहर हो गई है या नहीं, और क्या दूसरा निकाह हो सकता है या नहीं? बस। 16 अगस्त 1900। मोहम्मद नज़ीर दाद।

उत्तर का सारांश: पूछताछ के मामले में, बिना किसी दबाव के इस इकरारनामे के लेखन का प्रमाण, अलाउद्दीन द्वारा या अलाउद्दीन की ओर से, इकरारनामे के उल्लंघन की पुष्टि के साथ - यानी पत्नी को खाना-खर्चा देना बंद करना और एक महीने तक पत्नी के साथ रात बिताना छोड़ना - उस पर निलंबित तलाक शर्त के परिणाम के रूप में अनिवार्य हो जाता है, यानी तलाक का घटित होना। निर्धारित अवधि की समाप्ति के तुरंत बाद, बिना किसी संदेह के उक्त पत्नी पर 'तलाक-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) प्रभावी हो जाएगा और वह महिला उसके निकाह से बाहर हो जाएगी। फ़तावा अल-खैरियाह ली नफ़' अल-बरिय्याह में है:

| निःसंदेह, जब अनुपस्थिति और त्याग जिस पर तलाक निलंबित किया गया था पाया जाता है, तो यह परिणाम को अनिवार्य करने वाली शर्त की उपस्थिति के कारण होता है, आदि। -1 | इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह अनुपस्थिति और त्याग जिस पर तलाक को निलंबित किया गया था, यदि पाया जाता है, तो तलाक हो जाएगा क्योंकि परिणाम को अनिवार्य करने वाली शर्त पाई गई, इत्यादि। (त) तलाक की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने के बाद वह महिला निकाह कर सकती है। |

यही मूल दस्तावेज़ मौलाना अहमद रज़ा साहब बरेलवी की महान सेवा में भेजे गए हैं और अनुरोध है कि उचित राय से सूचित करें। लिखित 4 सितंबर 1900।

जवाब: वास्तव में अलाउद्दीन का उक्त कथन जहाँ तक फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय) दृष्टिकोण की आवश्यकता का प्रश्न है, एक शरीयत निलंबन (ता'लीक़) है। शर्त के अस्तित्व में आने के समय यह तलाक-ए-बाइन के होने और निकाह की समाप्ति का कारण बनता है, जिससे इद्दत की समाप्ति के बाद महिला के लिए दूसरे निकाह का औचित्य बनता है, जैसा कि विद्वान उत्तरदाता (अल्लाह उनकी रक्षा करे) ने कहा है।

---

1 फ़तावा अल-खैरियाह, किताब अल-तलाक, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 1/25। पृष्ठ 688 का 218

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

باہر کیونکر ہو سکتی ہوں مجھے اس سے کچھ امید نہیں۔ مورخہ ۱۵ اگست ۱۹۰۰ء عرضی مسماۃ بتول ولد بیچن خاں میاں نظیر داد خاں: باوجود ہونے پنچایت اور تحریر اقرار نامہ کے علاء الدین مسماۃ بتول کی پرورش بالکل نہیں کرتا اور مخفی رہتا ہے، کیا بموجب تحریر اسٹامپ طلاق ہو گئی، اگر ہو گئی ہو تو مطلع کرو اس کا عقد ثانی کر دیا جائے تاکہ بلا سے نجات ہو، اس شخص نے کبھی کفالت نہیں کی اور نہ امید پائی جاتی ہے۔ مورخہ ۱۶/ اگست ۱۹۰۰ء

محمد خاں: بخدمت مولنا عبدالسلام صاحب زاد فیضہ، چونکہ یہ مذہبی معاملہ ہے، میرے پاس یہ کاغذات آئے، میں نے شروع سے اخیر تک دیکھا واقعی علاء الدین اپنی بیاہتا عورت سے کسی قسم کا سروکار نہیں رکھتا اور نہ اس کی کفالت کرتا ہے، اس نے ایک دوسرا نکاح کر لیا ہے اس کی ہمراہی میں رہتا ہے، ایسی حالت میں اسکی زندگی پار ہونا بہت مشکل معلوم ہوتا ہے، آپ تحریر فرمائیے کہ یہ نکاح سے باہر ہوئی یا نہیں، اور عقد ثانی ہو سکتا ہے یا نہیں؟ فقط ۱۶/ اگست ۱۹۰۰ء محمد نظیر داد

خلاصہ جواب: صورت مستفسرہ میں ثبوت کتابت اقرار نامہ ہذا بلا اکراہ، از علاء الدین یا از جانب علاء الدین مع تحقیق خلاف اقرار نامہ یعنی ترک نان و نفقہ زوجہ و ترک شب باشی بازوجہ تابیک ماہ معلق علیہا الطلاق مستلزم ترتب الجزاء علی الشرط یعنی وقوع طلاق کا ہے بمجرد انقضائے مدت معینہ بلاشک اس کی زوجہ مذکورہ پر طلاق بائن واقع ہوگی اور وہ عورت اس کے نکاح سے باہر ہو جائے گی۔ فتاویٰ الخیریہ لنفع البریہ میں ہے:

| لاشك اذا وجدت الغيبة والترك المعلق عليهما الطلاق انه يقع لوجود الشرط الموجب للجزاء الخ -1 |

اس میں شک نہیں کہ وہ غیر حاضری اور ترک معاملہ جس پر طلاق کو معلق کیا گیا ہو اگر پایا جائے تو طلاق ہو جائیگی کیونکہ جزاء لازم کرنے والی شرط پائی گئی الخ (ت) بعد انقضائے عدت طلاق وہ عورت عقد کر سکتی ہے۔ |

بجنسہ کاغذات ہذا خدمت میں عالی جناب مولانا احمد رضا صاحب بریلوی مرسلہ ہو کر گزارش کی جائے بعد ملاحظہ رائے مناسب سے اطلاع بخشیں۔ المرقوم ۴ ستمبر ۱۹۰۰ء

الجواب: فی الواقع علاء الدین کا کلام مذکور جہاں تک مقتضاء نظر فقہی ہے تعلیق شرعی ہے کہ وقت وجود شرط موجب وقوع طلاق بائن وزوال نکاح جواز نکاح ثانی زن بعد انقضائے عدت ہے جیسا کہ فاضل مجیب سلمہ اللہ القریب المجیب نے بیان فرمایا،

---

1 فتاویٰ خیریہ کتاب الطلاق دار المعرفۃ بیروت ۲۵/۱ صفحہ 218 از 688

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

It is apparent that the husband's saying "let this be a settlement in front of witnesses" shall not be considered a separator between the condition and its consequence, because his statement in between is for the purpose of beneficial emphasis and additional support, hence it shall not be considered alien speech. (It is stated in Al-Durr): If he said to her, "You are divorced, if Allah Wills," consecutively—unless interrupted by breathing, coughing, belching, sneezing, heaviness of tongue, closing of mouth, or a beneficial gap for emphasis, completion, a limit, divorce, or a call (such as saying "You are divorced, O adulteress, if Allah Wills" or "You are divorced, if Allah Wills")—the exception shall be valid. Conversely, if the separator is nonsensical, such as saying "You are divorced revocably, if Allah Wills," etc., the exception shall not be valid and the divorce will occur. It is in Al-Hindiya: A man said to his wife, "You are divorced three times, so know it, if Allah Wills," then the exception is valid. If he said, "You are divorced three times, know it if Allah Wills," or said "Go, if Allah Wills," then three divorces will occur for the wife and the exception will be nullified. Likewise, it is mentioned in Fatawa Qadhi Khan, etc. And in Al-Hindiya, in the chapter of divorce before consummation, if he says, "You are divorced, be witnesses, if Allah Wills," the exception shall not be valid and one divorce occurs, and if [he says] be witnesses...

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Ta'liq, Mujtabai Press Delhi, 1/233.
2. Fatawa Hindiyah, Chapter Four regarding Exception, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/260.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

यह ज़ाहिर है कि पति का कहना "गवाहों के सामने यह समझौता हो" शर्त और जज़ा के बीच विच्छेदक नहीं माना जाएगा क्योंकि बीच में उसका यह कहना लाभदायक ताकीद और अतिरिक्त समर्थन के लिए है, इसलिए इसे बाहरी कलाम नहीं माना जाएगा। (दुर्र में कहा गया है): यदि उसने अपनी पत्नी से कहा "तुझे तलाक़ है, यदि अल्लाह चाहे" (इन्शा अल्लाह) निरंतर रूप से—सिवाय इसके कि सांस लेने, खाँसने, डकार लेने, छींकने, जीभ के भारीपन, मुँह बंद करने, या ताकीद, पूर्णता, सीमा, तलाक़ या पुकार के लिए उपयोगी अंतराल (जैसे कहना "तुझे तलाक़ है ऐ व्यभिचारिणी, यदि अल्लाह चाहे" या "तुझे तलाक़ है, यदि अल्लाह चाहे") के कारण रुकावट आए—तो वह अपवाद (इस्तिस्ना) मान्य होगा। इसके विपरीत, यदि अंतराल निरर्थक है, जैसे कहना "तुझे प्रतिसंहरणीय (रजई) तलाक़ है, यदि अल्लाह चाहे" आदि, तो अपवाद मान्य नहीं होगा और तलाक़ हो जाएगी। अल-हिन्दिया में है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा "तुझे तीन तलाक़ हैं, सो जान ले, यदि अल्लाह चाहे," तो अपवाद मान्य है। यदि उसने कहा "तुझे तीन तलाक़ हैं, जान ले यदि अल्लाह चाहे," या कहा "चली जा, यदि अल्लाह चाहे," तो पत्नी को तीन तलाक़ें हो जाएँगी और अपवाद अमान्य हो जाएगा। इसी प्रकार फ़तावा क़ाज़ी खां आदि में उल्लेख है। और अल-हिन्दिया में, मिलन से पूर्व तलाक़ के अध्याय में, यदि वह कहता है "तुझे तलाक़ है, गवाह बनो, यदि अल्लाह चाहे," तो अपवाद मान्य नहीं होगा और एक तलाक़ होगी, और यदि [कहता है] गवाह बनो...

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल तालीक़, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/233
2. फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल राबे फ़िल इस्तिस्ना, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/260

पृष्ठ 219 / 688

الظاهر ان لايجعل قوله تورو برو گواہان یہ تصفیہ ہو فاصلا بين الشرط والجزاء لانه من باب التاكيد المفيد والتائيد المزيد فلايكون اجنبيا. (قال في الدر) فقال لها انت طالق ان شاء الله تعالى متصلا الالتنفس او سعال او جشاء او عطاس او ثقل لسان او امساك فم او فاصل مفيد لتاكيد او تكميل او حدا و طالق او نداء، كانت طالق يازانية او طالق ان شاء الله صح الاستثناء، بخلاف الفاصل اللغو كانت طالق رجعيا ان شاء الله الخ وفی الهنديہ رجل قال لامرأتہ انت طالق ثلاثا فلعلی ان شاء الله صح الاستثناء ولو قال انت طالق ثلاثا اعلمی ان شاء الله او قال اذہبی ان شاء الله طلقت ثلثا و بطل الاستثناء كذافي فتاوی قاضی خاں اھ وفیها فی فصل الطلاق قبل الدخول لو قال انت طالق اشهدوا ثلثا فواحدة ولو قال فاشهدوا فثلث

ظاہر یہی ہے کہ خاوند کا کہنا "روبرو گواہان یہ تصفیہ ہو" اور جزاء کے درمیان فاصل نہ بنے گا کیونکہ درمیان میں اس کا یہ کہنا مفید تاکید و تائید مزید ہے لہذا یہ کلام اجنبی نہ ہوگا، در میں فرمایا: خاوند نے بیوی کو کہا تجھے طلاق ہے ان شاء اللہ تعالیٰ، تو یہ متصل استثناء صحیح ہوگا یعنی طلاق نہ ہوگی اور اگر کھانسی سانس یا باسی ڈکار یا چھینک یا زبان کے ثقل یا منہ کی بندش یا کوئی اور فاصل جو مفید تاکید یا تکمیل ہو یا وہ فاصل حد یا طلاق یا ندا کیلئے مفید ہو تو بھی استثناء صحیح ہوگا، مثلاً کوئی کہے انت طالق اے زانیہ ان شاء اللہ یا کہے تجھے طلاق ان شاء اللہ، تو طلاق نہ ہوگی، اس کے برخلاف کلام اور استثناء میں وہ فاصل ہے جو لغو ہو مثلاً یوں کہے تجھے طلاق رجعی ان شاء اللہ ، استثناء صحیح نہ ہوگا اور طلاق ہو جائے گی الخ۔ ہندیہ میں ہے ایک شخص نے بیوی کو کہا تجھے تین طلاق پس جان لے ان شاء اللہ تو استثناء صحیح ہوگا، اور اگر یوں کہا تجھے تین طلاق جان لے ان شاء اللہ، یا کہا چلی جان شاء اللہ تو بیوی کو تین طلاقیں واقع ہونگی اور یہ استثناء باطل قرار پائیگا، یوں ہی فتاوی قاضی خان میں ہے الخ۔ اور ہندیہ میں

طلاق قبل دخول کی فصل میں ہے کہ اگر کہے تجھے طلاق ہے گواہ ہو جاؤ ان شاء اللہ، تو استثناء صحیح نہ ہوگا اور ایک طلاق ہوگی، اور اگر گواہ ہو جاؤ

1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۲۳۳/۱ 2 فتاوی هنديه الفصل الرابع في الاستثناء نورانی کتب خانہ پشاور ۲۶۰/۱

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 220

[Boxed Content] Arabic: As stated in al-Utaniyyah etc., and similar to this is mentioned in this chapter of Radd al-Muhtar, quoting from al-Bahr via al-Zahiriyyah. It states: The summary is that a pause for breath or closing the mouth does not break the connection between the pronouncement of divorce and its count. Similarly, a vocative call does not act as a separator because it is used to specify the person addressed. Likewise, a conjunction like "fa-ashhadu" (so witness) with the letter "fa" is not a separator, as it links what follows it with what precedes it, making the entire statement a single continuous one. Urdu Translation: Instead of [saying it separately], if one says "so be a witness," then three divorces will take place. This is also stated in al-Utaniyyah. Similarly, in Radd al-Muhtar under this chapter, it is narrated from al-Bahr via al-Zahiriyyah that the summary is: taking a breath or closing the mouth will not break the continuity between the divorce and its count. Likewise, calling out to specify the person addressed will not be a separator. Similarly, "fa-ashhadu" with the prefix "fa" will not be a separator because what follows is linked to what precedes it, thus the entire statement becomes one. (T)

[Main Paragraph] In the fulfillment of the condition, it is essential to consider that the failure to provide food and clothing for a month and not staying in the house at night must be "without a valid Shariah reason." Since the phrase "without reason" is mentioned in the condition, if a month or even a year passes and maintenance is not provided or the house is not shared due to a reason acceptable in Sharia, divorce will not occur. Likewise, if only one of the two conditions—lack of maintenance or lack of staying at night—is proven (e.g., it's proven food/clothing wasn't given for a month without reason, but proof of not staying at the house for a month without reason is missing, or vice-versa), then divorce will not be established, as proving both conditions is necessary for establishing divorce here.

[Boxed Content] Arabic: In Radd al-Muhtar: If the conditional particle is not repeated, then both things must occur, whether the consequence precedes or follows the condition. Al-Bahr, summarized. Urdu Translation: In Radd al-Muhtar, it is stated that if the conditional particle is not repeated, then both things, i.e., the condition and the consequence, must be found. It is the same whether the consequence is mentioned before or after the condition. Al-Bahr, summarized. (T)

[Concluding Paragraph] And from here it becomes clear that in this case, by consensus, the burden of proof lies on the woman. Although regarding the non-

receipt of maintenance for a month, the woman does not need witnesses; her sworn statement alone is sufficient,

[Last Boxed Content] Arabic: ...while the marriage persists and she is entitled [to it]. Urdu Translation: ...while marriage exists and the wife receives maintenance from the husband.

[Footnotes] 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 4 regarding Divorce before Consummation, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/473. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Divorce before Consummation, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/456. 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Conditional Divorce (At-Taliq), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/508.

फ़तावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 220

[बॉक्स सामग्री] अरबी: जैसा कि अल-उतानियाह आदि में है, और इसके समान इस अध्याय में रद अल-मुह्तार में अल-बहर के माध्यम से अल-ज़ाहिरियाह से उद्धृत है। इसमें कहा गया है: सारांश यह है कि सांस का टूटना या मुँह बंद करना तलाक़ और उसकी संख्या के बीच के संबंध को नहीं तोड़ता है। इसी तरह, संबोधन करने के लिए पुकारना भी बीच में रुकावट नहीं बनता। वैसे ही "फ़-अशहदु" (तो गवाह बनो) में 'फ़' अक्षर के साथ जोड़ना भी रुकावट नहीं है, क्योंकि यह बाद की बात को पिछली बात से जोड़ता है, जिससे पूरा कथन एक बन जाता है। उर्दू अनुवाद: के बजाय "तो गवाह हो जाओ" कहा, तो तीन तलाक़ें होंगी, उतानियाह में ऐसा ही है। इसी अध्याय में रद अल-मुह्तार में बहर से उन्होंने ज़हीरिय्याह से नक़्ल किया और कहा कि हासिल यह है कि सांस का टूट जाना या मुँह बंद हो जाना तलाक़ और उसकी संख्या में जुड़ाव को नहीं तोड़ेगा। और संबोधित व्यक्ति को निश्चित करने के लिए पुकारना भी बाधा नहीं बनेगा। और इसी तरह 'फ़-अशहदु', 'फ़' के साथ जोड़ने पर भी बाधा नहीं होगा क्योंकि बाद वाले का पहले वाले से संबंध होता है, तो पूरा कलाम एक ही होगा। (त)

[मुख्य पैराग्राफ] शर्त के पूरा होने में इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि महीने भर तक रोटी-कपड़ा न देना और रात को घर में न रहना "बिना किसी जायज़ शरई कारण" के हुआ हो। चूंकि शर्त में "बिना कारण" शब्द का उल्लेख है, इसलिए यदि किसी शरई तौर पर स्वीकार्य कारण से महीना या साल भी गुज़र गया और उसे भोजन-कपड़ा नहीं दिया गया या घर में नहीं रखा गया, तो तलाक़ नहीं होगी। इसी तरह, यदि उल्लिखित दोनों शर्तों यानी भरण-पोषण न देने और साथ न रहने में से केवल एक ही साबित होती है—जैसे यह साबित हो गया कि बिना कारण महीने भर तक रोटी-कपड़ा नहीं दिया गया, लेकिन महीने भर तक रात को बिना कारण घर में न रहने का सबूत नहीं मिल सका या इसके विपरीत—तब भी तलाक़ साबित नहीं होगी, क्योंकि यहाँ तलाक़ के साबित होने के लिए दोनों शर्तों का साबित होना ज़रूरी है।

[बॉक्स सामग्री] अरबी: रद अल-मुह्तार में है: यदि शर्त के शब्द को दोहराया नहीं गया है, तो दोनों चीज़ों का होना ज़रूरी है, चाहे परिणाम शर्त से पहले हो या बाद में। अल-बहर, संक्षेप में। उर्दू अनुवाद: रद अल-मुह्तार में है कि अगर हर्फ़ए-शर्त दोहराया न जाए तो दो चीज़ों यानी शर्त और जज़ा (परिणाम) का पाया जाना ज़रूरी है, जज़ा को शर्त से पहले बयान किया गया हो या बाद में, बराबर है। बहर, संक्षेप में। (त)

[अंतिम पैराग्राफ] और यहीं से स्पष्ट हुआ कि इस मामले में सर्वसम्मति से सबूत पेश करने की ज़िम्मेदारी महिला पर है। हालांकि महीने भर तक गुज़ारा भत्ता न मिलने के मामले में महिला को गवाहों की ज़रूरत नहीं है, बल्कि केवल उसका शपथ पत्र (बयान-ए-हल्फी) काफी है,

[अंतिम बॉक्स] अरबी: ...जब वैवाहिक संबंध कायम हो और वह हकदार हो। उर्दू अनुवाद: ...जब वैवाहिक संबंध पाया जाए और पत्नी पति से खर्चा प्राप्त करने की हकदार हो।

[पादलेख] 1. फ़तावा हिंदियाह, अध्याय 4, तलाक़-ए-क़ब्ल-उद-दुख़ूल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/473 2. रद अल-मुह्तार, बाब तलाक़ गैर-उल-मदख़ूल बिहा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/456 3. रद अल-मुह्तार, बाब अत-ता'लीक़, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/508

فتاوی رضویہ، جلد ۱۳، صفحہ ۲۲۰

[باکس میں موجود عبارت] عربی: کذا فی العتانیۃ اھ ومثلہ فی ھذا الباب المذکور من رد المحتار عن البحر من الظہیریۃ قال وحاصلہ ان انقطاع النفس وامساک الفم لا یقطع لاتصال بین الطلاق وعددہ وکذا النداء لانہ لتعیین المخاطبۃ وکذا عطف فاشھد بالفاء لانہا تعلق ما بعدہا بما قبلہا فصار الکل کلاماً واحداً۔

اردو: کی بجائے پس گواہ ہو جاؤ کہا، تو تین طلاقیں ہوں گی، عتابیہ میں یونہی ہے اھ، اسی باب میں ردالمحتار میں بحر سے انہوں نے ظہریہ سے نقل کیا اور کہا حاصل یہ ہے سانس کا ٹوٹ جانا یا منہ بند ہو جانا طلاق اور اس کے عدد میں اتصال کو منقطع نہ کرے گا اور یوں مخاطبہ کو معین کرنے کے لئے ندا بھی فاصل نہ بنے گی، اور اسی طرح فاشھد وا، فاء کے ساتھ عطف بھی فاصل نہ ہوگا کیونکہ مابعد کا ماقبل سے تعلق ہوتا ہے تو پورا کلام واحد ہوگا (ت)

[مرکزی عبارت] تحقق شرط میں اتنے امر کا لحاظ ضرور ہے کہ مہینہ بھر تک روٹی کپڑا نہ دینا اور شب کو مکان میں نہ رہنا بلاوجہ مقبول شرعی ہوا ہو کہ شرط میں "بلاوجہ" کا لفظ مذکور ہے تو کسی وجہ قابل قبول شرع کے باعث اگر مہینہ بلکہ برس گزر گیا اور اسے نہ کھانا کپڑا دیا نہ مکان میں رہا تو طلاق نہ ہوگی، یونہی اگر دونوں شرط مذکور یعنی عدم انفاق وعدم شب باشی سے صرف ایک ثابت ہوئی مثلاً یہ تو ثابت ہوا کہ بلاوجہ مہینہ بھر تک روٹی کپڑا نہ دیا مگر مہینہ بھر تک رات کو مکان میں بلاوجہ نہ رہنے کا ثبوت نہ ہو سکا یا بالعکس تو جب بھی طلاق ثابت نہ ہو گی کہ یہاں دونوں شرطوں کا ثبوت ثبوت طلاق کے لئے ضرور ہے۔

[باکس میں موجود عبارت] عربی: فی ردالمحتار، ان لم یکرر اداۃ الشرط فلابد من وجود الشیئین قدم الجزاء علیہا او اخرہ ۳ بحر، ملخصاً۔ اردو: ردالمحتار میں ہے اگر حرف شرط مکرر نہ ہو تو دو

چیزوں یعنی شرط وجزا کا پایا جانا ضروری ہے، جزا کو شرط سے مقدم ذکر کیا ہو یا مؤخر ذکر کیا ہو ، برابر ہے، بحر، ملخصاً۔ (ت)

[اختتامی پیراگراف] اور یہیں سے ظاہر ہوا کہ اس مقدمے میں بالاتفاق بار ثبوت عورت کے ذمے ہے کہ مہینہ بھر تک نان و نفقہ نہ ملنے کے باب میں اگرچہ عورت محتاج گواہان نہیں بلکہ صرف اس کا بیان حلفی کافی ہے،

[آخری باکس] عربی: وعند قیام الزوجیۃ وکونہا مستحقۃ اردو: زوجیت پائی جائے اور بیوی خاوند سے خرچہ وصول

[حواشی] ۱ فتاوٰی ہندیہ الفصل الرابع فی الطلاق قبل الدخول نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۳ ۲ ردالمحتار باب طلاق غیرالمدخول بھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۵۶ ۳ ردالمحتار باب التعلیق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۰۸

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

...to spend it, as the husband's writing testifies. There can be no reason to prevent maintenance except for some new occurrence. Therefore, the apparent situation is in favor of the woman who denies such an occurrence. If the husband claims such an occurrence, he must prove it. (T)

However, this alone was not the condition for divorce; rather, there was also the condition of avoiding spending the night for a whole month without reason. Undoubtedly, providing proof for this through legal witnesses is mandatory for the woman; her mere statement, even if under oath, is not acceptable here at all.

Because through this, the wife intends to establish the divorce while the husband denies it, whereas testimony regarding negation is admissible concerning conditions. In Durr al-Mukhtar, it states: "(If they differ concerning the existence of the condition)," i.e., its occurrence, to include non-existent conditions, "(then the word belongs to him [the husband] along with an oath)" because he is the one denying the divorce. Its implication is that if he made her divorce conditional upon her not receiving maintenance for a number of days, and then he claims it reached her while she denies it, then the word belongs to him. This is what was affirmed in al-Qunyah. However, it was corrected in al-Khulasah and al-Bazzaziyyah that the word belongs to her, and this was upheld in al-Bahr and al-Nahr, which necessitates specifying the primary texts (matun). But the author said that our Sheikh, in his fatwa, expressed certainty on what the primary texts and commentaries convey, for they are the established sources for conveying the school of thought (madhhab), as is not hidden. "(Unless she provides proof)" for the evidence...

Page 221 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

...ख़र्च करने की हक़दार हो, जैसा कि पति का लेखन इसका गवाह है। अतः किसी नई घटना के बिना गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) रोकने का कोई कारण नहीं है। ज़ाहिरी तौर पर मामला उस महिला के पक्ष में है जो ऐसी किसी घटना से इनकार करती है। फिर अगर पति इस घटना का दावा करता है, तो पति पर उस घटना को साबित करना अनिवार्य होगा। (त)

मगर सिर्फ इतना ही तलाक़ की शर्त नहीं थी, बल्कि बिना वजह महीने भर तक रात को साथ न रहना (शब बाशी छोड़ना) भी एक शर्त थी। और इसका सबूत शरीयत के गवाहों से देना निस्संदेह महिला पर अनिवार्य है; सिर्फ उसका बयान, चाहे वह हलफ़िया (शपथपूर्वक) ही क्यों न हो, यहाँ बिल्कुल भी मान्य नहीं है।

क्योंकि पत्नी इसके माध्यम से तलाक़ साबित करना चाहती है और पति तलाक़ से इनकार कर रहा है, जबकि शर्तों के संबंध में निषेध (नफ़्फ़ी) पर भी गवाही सुनी जा सकती है। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: "(अगर पति और पत्नी ने तलाक़ से संबंधित शर्त के पाए जाने में मतभेद किया)," यानी शर्त के साबित होने में, ताकि यह अभावपूर्ण (अदमी) शर्त को भी शामिल कर सके "(तो पति की बात उससे क़सम लेकर स्वीकार कर ली जाएगी)" क्योंकि वह तलाक़ से इनकार करने वाला है। इस मसले का सारांश यह है कि अगर पति ने तलाक़ को कुछ दिनों तक गुज़ारा भत्ता न पहुँचाने पर लटकाया (मुअल्लाक़) था, तो अब मतभेद होने पर पति का पक्ष यह है कि उसने गुज़ारा भत्ता पाबंदी से पहुँचाया है और पत्नी उससे इनकार करती है, तो इसमें पति की बात मान्य होगी। 'कुनिया' में इसी पर दृढ़ता व्यक्त की गई है। लेकिन 'ख़ुलासा' और 'बज़ाज़िया' में पत्नी की बात मान्य होने को सही माना गया है, और इसी को 'बहर' और 'नहर' में भी स्थिर रखा गया है। और यह मूल ग्रंथों (मतून) के विशिष्टीकरण की माँग करता है। लेकिन लेखक ने कहा कि हमारे शेख ने अपने फ़तवों में उसी पर दृढ़ता व्यक्त की है जिसे मूल ग्रंथों और व्याख्याओं (शुरुह) ने वर्णित किया है, क्योंकि मज़हब (विचारधारा) की व्याख्या के लिए ये ही प्रामाणिक स्रोत हैं, जैसा कि गुप्त नहीं है। "(मगर यह कि पत्नी गवाह पेश करे)" क्योंकि प्रमाण...

पृष्ठ 221 / 688

لینفقه کما یشهد به کتابة الزوج لایکون الوجه المانع الاحداثا فیکون الظاهر مع المرأة المنکرة حدوثه فان ادعاه الزوج فلیثبتهـ کرنے کی مستحق ہو، جیسا کہ خاوند کی تحریر شاہد ہے تو پھر کسی نئے حادثہ کے بغیر نفقہ سے کوئی مانع نہیں اور ظاہر حال عورت کے حق میں جبکہ وہ ایسے حادثے کا انکار کرتی ہو پھر اگر خاوند اس حادثہ کا مدعی ہو تو خاوند پر حادثہ کو ثابت کرنا لازم ہوگا (ت)

مگر صرف اسی قدر تو شرط طلاق نہ تھا بلکہ مہینہ بھر تک بلاوجہ ترک شب باشی بھی ، اور اس کا ثبوت گواہان شرعی سے دینا بلاشبہ عورت پر لازم ہے فقط اس کا بیان اگر چہ حلفی ہو یہاں ہر گز معتبر نہیں

لانہا ترید بھذا اثبات الطلاق وھو ینکرہ والبینة علی النفی مسموعة فی الشروط، فی الدرالمختار (ان اختلفا فی وجود الشرط) ای ثبوته لیعم العدمی (فالقول لہ مع الیمین) لانہ کارہ الطلاق ومفادہ انہ لو علق طلاقھا بعدم وصول نفقتھا ایاما فادعی الوصول و انکرت ان القول لہ وبہ جزم فی القنیة، لکن صحح فی الخلاصة والبزازیة ان القول لہا واقرہ فی البحر والنھر وھو یقتضی تخصیص المتون لکن قال المصنف وجزم شیخنا فی فتواہ بما تفیدہ المتون والشروح لانہا الموضوعة لنقل المذھب کما لا یخفی، (الا اذا برھنت) فان البینة کیونکہ بیوی اس سے اثبات طلاق کا ارادہ رکھتی ہے اور خاوند طلاق سے انکار کر رہا ہے جبکہ شرائط کے متعلق نفی پر بھی گواہی قابل سماعت ہے۔ در مختار میں ہے (اگر خاوند اور بیوی نے طلاق سے متعلق شرط کے پائے جانے میں اختلاف کیا) یعنی شرط کے ثبوت میں ، تاکہ یہ عدمی شرط کو بھی شامل ہو سکے (تو خاوند کی بات کو اس سے قسم لے کر تسلیم کر لیا جائے گا) کیونکہ وہ طلاق سے انکاری ہے۔ اس مسئلہ کا خلاصہ یہ ہے کہ اگر خاوند نے طلاق کو چند دن نفقہ نہ پہنچانے سے معلق کیا تھا تو اب اختلاف میں خاوند کا مؤقف یہ

ہے کہ اس نے نفقہ پابندی سے پہنچایا ہے اور بیوی اس کا انکار کرتی ہے تو اس میں خاوند کی بات معتبر ہوگی ، قنیہ میں اسی پر جزم کیا ہے لیکن خلاصہ اور بزازیہ میں بیوی کی بات معتبر قرار دینے کو صحیح قرار دیا ہے ، اسی کو بحر اور نہر میں ثابت رکھا ہے، اور وہ متون کی تخصیص کا متقاضی ہے لیکن مصنف نے فرمایا کہ ہمارے شیخ نے اپنے فتاویٰ میں اس پر جزم کا اظہار فرمایا جس کو متون اور شروح نے بیان کیا ہے کیونکہ مذہب کی ترجمانی کے لئے یہی موضوع ہیں جیسا کہ مخفی نہیں ہے (الا یہ کہ بیوی گواہ پیش

(Arabic Text Column): ...accepted regarding a condition, even if it is negative. [1] End of quote from Radd al-Muhtar. His statement was affirmed in al-Bahr, where it says in the chapter on 'Matter in Hand' (al-amr bi-l-yad): 'It is said the word is his (the husband's) because he denies the occurrence, but it does not prove the delivery of maintenance to her. The more correct view is that the word is hers in this and in every place where fulfillment of a right is claimed and she denies it.' End of quote. Khayr al-Din al-Ramli also quoted its correction from al-Fayd and al-Fusul. His statement, 'and this necessitates the specification of the texts (mutun),' meaning their specification to the case where the word is his when it does not involve a claim of delivering wealth, interpreting the absolute in light of the restricted. [2] End of quote in brief. In al-Bazzaziyya: 'His word is not accepted in any place where fulfillment of a financial right is claimed and she denies it.' Thus, this necessitates the specification of the texts, so take note of this. [3]

(Urdu Translation Column): (be accepted) because testimony regarding a condition is accepted even if the condition is negative. End of quote. At this point in Radd al-Muhtar, it is stated that the author of al-Bahr maintained the statement that the wife's word is credible. They said this in the chapter on 'Matter in Hand' as some stated the husband's word would be credible because he denies the occurrence of divorce, but along with that, he is not proving the delivery of maintenance to the wife. Therefore, the more correct view is that in this matter, the wife's word is credible. Similarly, in every such place where the husband claims to have fulfilled a right and the wife denies it, the wife's word will be credible. End of quote. Khayr al-Din al-Ramli also quoted its correction from al-Fayd and al-Fusul. The author's statement that this (considering the wife's word credible) necessitates the specification of the texts means the texts' statement that the husband's word is credible is in the case where the husband's claim does not involve delivering a financial right; i.e., specification will occur by making the absolute statement of the texts restricted. End of quote in brief. And in Ghamz al-Uyun, it is stated that in Khulasat al-Fatawa and Bazzaziyya, in every such place where there is a claim of delivering the husband's financial right and the wife denies it, the correction of the husband's word not being credible has been made. Therefore, this matter necessitates the specification of the texts; consider this discussion a gain. (T)

The Shari'ah reasons that could be acceptable here are many, but they are being withheld so that they are not misused. If there were any reason for omission, Alauddin himself would explain it. And Allah Almighty knows best.

Problem 22: From Calcutta, 92 Train Street, Masjid Sarmad, sent by Khalifa Abdul Rashid Sahib, 9 Dhu al-Hijjah al-Mubarak 1320 AH. Resort of both the elite and the general public, refuge of the noble scholars, may your threshold forever remain a sanctuary for mankind. Standard greetings presented by your devoted and loyal followers.

[Footnotes]: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Suspension (al-Ta'liq), Mujtabai Press, Delhi, 1/231. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Suspension, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/502. 3. Ghamz Uyun al-Basair, Commentary on al-Ashbah wa al-Nadhair, Book of Divorce, Idarat al-Qur'an, Karachi, 1/256.

(अरबी पाठ स्तंभ): ...एक शर्त के बारे में स्वीकार की जाती है, भले ही वह नकारात्मक हो। [1] रद-उल-मुहतार से उद्धरण समाप्त। अल-बहर में उनके कथन की पुष्टि की गई है, जहाँ 'अम्र बि-ल-यद' अध्याय में कहा गया है: 'कहा जाता है कि बात उसकी (पति की) मानी जाएगी क्योंकि वह होने से इनकार करता है, लेकिन यह उसे भरण-पोषण की डिलीवरी साबित नहीं करता है। अधिक सही विचार यह है कि इस मामले में और हर उस स्थान पर जहाँ अधिकार की पूर्ति का दावा किया जाता है और वह इनकार करती है, बात उसकी (पत्नी की) मानी जाएगी।' उद्धरण समाप्त। खैर अल-दीन अल-रमली ने भी अल-फ़ैद और अल-फ़ुसूल से इसके सुधार को उद्धृत किया। उनका कथन, 'और यह ग्रंथों (मुतून) के विनिर्देश की आवश्यकता है,' का अर्थ है उन्हें उस मामले तक सीमित करना जहाँ बात उसकी तब मानी जाती है जब इसमें धन देने का दावा शामिल न हो, निरपेक्ष की व्याख्या प्रतिबंधित के आलोक में करना। [2] संक्षेप में उद्धरण समाप्त। अल-बज़्ज़ाज़िया में: 'उसकी बात किसी भी ऐसे स्थान पर स्वीकार नहीं की जाती है जहाँ वित्तीय अधिकार की पूर्ति का दावा किया जाता है और वह इनकार करती है।' इस प्रकार, यह ग्रंथों के विनिर्देश की आवश्यकता है, अतः इस पर ध्यान दें। [3]

(उर्दू अनुवाद स्तंभ): (स्वीकार किया जाए) क्योंकि शर्त के संबंध में गवाही स्वीकार की जाती है भले ही वह शर्त नकारात्मक हो। उद्धरण समाप्त। रद-उल-मुहतार में इस बिंदु पर कहा गया है कि अल-बहर के लेखक ने इस कथन को बनाए रखा कि पत्नी की बात विश्वसनीय है। उन्होंने 'अम्र बि-ल-यद' अध्याय में ऐसा इसलिए कहा क्योंकि कुछ ने कहा कि पति की बात विश्वसनीय होगी क्योंकि वह तलाक के होने से इनकार करता है, लेकिन इसके साथ ही, वह पत्नी को भरण-पोषण की डिलीवरी साबित नहीं कर रहा है। इसलिए, अधिक सही विचार यह है कि इस मामले में पत्नी की बात विश्वसनीय होगी। इसी तरह, हर ऐसे स्थान पर जहाँ पति अधिकार पूरा करने का दावा करता है और पत्नी इनकार करती है, पत्नी की बात विश्वसनीय होगी। उद्धरण समाप्त। खैर अल-दीन अल-रमली ने भी अल-फ़ैद और अल-फ़ुसूल से इसके सुधार को उद्धृत किया। लेखक का यह कथन कि यह (पत्नी की बात को विश्वसनीय मानना) ग्रंथों के विनिर्देश की आवश्यकता है, का अर्थ है ग्रंथों का यह कथन कि पति की बात विश्वसनीय है, उस मामले में है जहाँ पति के दावे में वित्तीय अधिकार देना शामिल नहीं है; यानी ग्रंथों के निरपेक्ष कथन को प्रतिबंधित बनाकर विनिर्देश किया जाएगा। संक्षेप में उद्धरण समाप्त। और ग़म्ज़ अल-उयून में कहा गया है कि खुलासत अल-फ़तावा और बज़्ज़ाज़िया में, हर ऐसे

स्थान पर जहाँ पति के वित्तीय अधिकार को देने का दावा हो और पत्नी इनकार करे, पति की बात के विश्वसनीय न होने का सुधार किया गया है। इसलिए, यह मामला ग्रंथों के विनिर्देश की मांग करता है; इस चर्चा को एक उपलब्धि समझें। (त)

यहाँ स्वीकार्य होने वाले शरिया कारण कई हैं, लेकिन उन्हें रोक दिया गया है ताकि उनका दुरुपयोग न हो। यदि चूक का कोई कारण होता, तो अलाउद्दीन स्वयं इसे स्पष्ट कर देते। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

समस्या 22: कलकत्ता, 92 ट्रेन स्ट्रीट, मस्जिद सरमद से, खलीफा अब्दुल रशीद साहब द्वारा प्रेषित, 9 ज़ुल-हिज्जा अल-मुबारक 1320 हिजरी। विशिष्ट और आम दोनों का सहारा, महान विद्वानों की शरणस्थली, आपकी दहलीज हमेशा मानव जाति के लिए एक अभयारण्य बनी रहे। आपके समर्पित और वफादार अनुयायियों द्वारा मानक अभिवादन प्रस्तुत।

[पाद लेख]: 1. दुर अल-मुख्तार, निलंबन का अध्याय (अल-ता'लीक), मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/231। 2. रद अल-मुहतार, निलंबन का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/502। 3. ग़म्ज़ उयून अल-बसायर, अल-अशबाह वा अल-नधैर की व्याख्या, तलाक की किताब, इदारात अल-कुरान, कराची, 1/256।

पृष्ठ 222 का 688

تقبل علی الشرط وان کان نفیا ۱ھ فی ردالمحتار قولہ واقرہ فی البحر حیث قال فی فصل الامر بالید قیل القول لہ لانہ ینکر الوقوع لکن لایثبت وصول النفقۃ الیھا والاصح ان القول قولھا فی ھذا وفی کل موضع یدعی ایفاء حق وھی تنکر اھ، ونقل الخیر الرملی ایضاً تصحیحہ عن الفیض والفصول، قولہ وھو یقتضی تخصیص المتون ای تخصیصھا بکون القول لہ اذالم یتضمن دعوی ایصال مال حملا للمطلق علی المقید ۲ اھ باختصار، البزازیۃ عدم قبول قولہ فی کل موضع یدعی ایفاء حق مالی وھی تنکر فھذا یقتضی تخصیص المتون فاغتنم ھذا ۳۔

کردے) کیونکہ شرط کے متعلق گواہی قبول ہوتی ہے اگرچہ یہ شرط منفی ہواھ، اس مقام پر ردالمحتار میں ہے کہ ماتن کا قول کہ اس (بیوی کی بات معتبر ہے) کو بحر میں ثابت رکھا، یہ بات انہوں نے فصل امر بالید میں یوں کہی ہے کہ بعض نے کہا ہے کہ خاوند کی بات معتبر ہوگی کیونکہ وہ طلاق کے وقوع کا منکر ہے، مگر اس کے ساتھ وہ نفقہ بیوی تک پہنچانے کو ثابت نہیں کر رہا، لہذا اصح یہ ہے کہ اس مسئلہ میں بیوی کی بات معتبر ہوگی اور اسی طرح ہر ایسے مقام میں جہاں خاوند حق کو پورا کرنے کا مدعی ہو اور بیوی منکر ہو تو بیوی کی بات معتبر ہوگی اھ، خیر الدین رملی نے بھی فیض اور فصول سے اس کی تصحیح کو نقل کیا ہے، اور ماتن کا قول کہ یہ (بیوی کی بات کا معتبر قرار دینا) متون کی تخصیص کا متقاضی ہے یعنی متون کے اس قول کا کہ خاوند کی بات معتبر ہوگی بایں صورت کہ خاوند کا دعوی مالی حق کو پہنچانے پر مشتمل نہ ہو یعنی متون کی مطلق عبارت کو مقید بنانے سے تخصیص ہو گی اھ مختصراً۔ اور غمز العیون میں ہے کہ خلاصۃ الفتاوی اور بزازیہ میں ہے ہر ایسے مقام پر جہاں خاوند کے مالی حق کو پہنچانے

کا دعوی ہو اور بیوی کا انکار ہو تو خاوند کی بات کے معتبر نہ ہونے کی تصحیح کی ہے، لہذا یہ بات متون کی تخصیص کا تقاضا کر رہی ہے، اس بحث کو غنیمت سمجھو۔ (ت)

وجوہ شرعیہ جو یہاں قابل قبول ہوں متعدد مگر ان کے بیان سے دست کشی کی جاتی ہے کہ تعلیم نہ ہو اگر کوئی وجہ باعث ترک تھی تو علاء الدین خود بیان کردے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲: از کلکتہ ٹرین اسٹریٹ ۹۲ مسجد سرمد خلیفہ مرسلہ عبدالرشید صاحب ۹ ذی الحجہ المبارک ۱۳۲۰ھ مرجع خاص و عام ملاذ علمائے کرام لازالت عتبتم کہف الانام سلام مسنون برسیم فدویان عقیدت کیش

۱ در مختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۱ ۲ ردالمحتار باب التعلیق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۰۲ ۳ غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر کتاب الطلاق ادارۃ القرآن کراچی ۱/۲۵۶

Fatawa Ridawiyya Volume 13, Page 13

Question: It is submitted that in some regions of Bengal, there is a custom that when the groom, as part of the wedding procession, goes to the bride's house, the bride's guardians and relatives force him to sign a marriage contract containing inappropriate conditions. If he refuses to sign, they refuse to give the girl away. The poor groom, out of fear of embarrassment and loss of wedding ornaments and supplies, is forced to sign it. After signing, he even gets it formally registered, whereas previously, before the wedding ceremony, these absurd conditions were not even mentioned. Among these inappropriate conditions, one is that "as long as the current wife is alive, I will never marry another woman. If I do, the second wife will be divorced with triple irrevocable divorce (talaq-e-thulatha ba'ina), whether she is present in my marriage at that time with the permission of others or not." In this situation, the question is whether there is any way according to Sharia that marrying another woman while the said wife is alive becomes permissible. Please clarify with reference to Islamic legal texts, and may you be rewarded by the All-Bestower (Al-Wahhab). Kindly provide the answer with references and excerpts from books of jurisprudence.

Answer: If an unauthorized person (fuzuli), without being appointed as an agent (wakil), performs a marriage on someone's behalf, and that person validates and implements it through an action (ijazat-e-fi'li) without uttering any words verbally, then in this case, the second wife will not be divorced at all, even if the first wife is still in his marriage. And if the unauthorized person does not act on their own, the person should say words like, "I wish someone would marry me to such-and-such a woman," or "How good it would be if a friend on his own initiative performed my marriage contract with her."

Arabic Text: "And that is because these are words of wishing, not of delegation, so that it could be a power of attorney (wikalah)." Urdu Translation: This is because these are words of wishing; they do not establish representation (niyabat) such that appointing a representative (wakil) can be conceived. (T)

And "permission by action" (ijazat-e-fi'li) means, for example, sending the fixed dower (mahr) to the woman, or not saying it verbally but writing on paper that "I have implemented this marriage." And if an unauthorized person, or anyone else, congratulates him on this unauthorized marriage contract, and hearing this he

remains silent, then the contract becomes valid and implemented, and divorce will not occur. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Arabic Text: "An unauthorized person married him, so if he authorized it verbally, he breaks his oath; but if by action, including writing, he does not break it. Thus it is fatwa in Khaniyah." Urdu Translation: If an unauthorized person performs someone's marriage, and that person authorizes it verbally, the oath will be broken. But if he authorizes it through practical action, which includes writing, the oath will not be broken. Khaniyah. (T)

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Oaths regarding Hitting, Killing, etc., Mujtabai Press, Delhi, 1/314. Page 223 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

प्रश्न: निवेदन यह है कि बंगाल के कुछ इलाकों में यह प्रथा है कि जब दूल्हा बारात के साथ दुल्हन के घर जाता है, तो दुल्हन के अभिभावक और रिश्तेदार उसे अनुचित शर्तों वाले निकाहनामे पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर करते हैं। हस्ताक्षर न करने की स्थिति में वे लड़की देने से इनकार कर देते हैं। शर्मिंदगी और गहनों तथा शादी के सामान के नुकसान के डर से, बेचारा दूल्हा मजबूरी में उस पर हस्ताक्षर कर देता है। हस्ताक्षर करने के बाद वह उसे औपचारिक रूप से पंजीकृत भी करवा देता है, हालाँकि निकाह की मजलिस से पहले इन बेतुकी शर्तों का ज़िक्र तक नहीं होता। इन अनुचित शर्तों में से एक शर्त यह भी होती है कि "जब तक यह पत्नी जीवित है, मैं किसी और औरत से हरगिज़ निकाह नहीं करूँगा। अगर करूँ तो दूसरी औरत को तीन तलाक (तलाक़-ए-सलासा बाईना) हो जाएगी, चाहे वह दूसरी औरत उस समय किसी और की अनुमति से मेरे निकाह में मौजूद हो या न हो।" अतः इस स्थिति में प्रश्न यह है कि क्या शरीयत के अनुसार ऐसी कोई सूरत है कि उक्त पत्नी के जीवनकाल में ही दूसरी औरत से निकाह करना जायज़ हो जाए? शरीयत की किताबों के हवाले से स्पष्ट करें, अल्लाह आपको इसका बदला दे। मेहरबानी करके फ़िक़्ह की किताबों के संदर्भ और मूल पाठ के साथ जवाब प्रदान करें।

उत्तर: अगर कोई फ़ुज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति) बिना वकील बने अपनी ओर से किसी का निकाह किसी औरत से कर दे, और वह व्यक्ति "इजाज़त-ए-फेली" (क्रियात्मक अनुमति) से उसे जायज़ और लागू कर दे और ज़ुबान से कोई शब्द न कहे, तो इस सूरत में दूसरी पत्नी पर कतई तलाक़ नहीं होगी, चाहे पहली पत्नी अभी उसके निकाह में ही क्यों न हो। और अगर फ़ुज़ूली खुद से ऐसा न करे, तो व्यक्ति उसके सामने इस तरह के शब्द कहे कि "काश! कोई फलां औरत से मेरा निकाह कर देता" या "कितना अच्छा होता कि कोई दोस्त अपनी ओर से मेरा निकाह उससे करवा देता।"

अरबी पाठ: "और यह इसलिए है क्योंकि ये शब्द केवल इच्छा प्रकट करने के लिए हैं, न कि कार्य सौंपने के लिए, जिससे कि यह वकालत बन सके।" उर्दू अनुवाद: यह इसलिए है क्योंकि ये शब्द कामना (तमन्ना) के हैं; ये प्रतिनिधित्व (नियाबत) साबित नहीं करते कि वकील बनाना मुमकिन हो सके। (त)

और "इजाज़त-ए-फ़ेली" (क्रियात्मक अनुमति) यह है कि, उदाहरण के लिए, औरत को तय किया गया महर भेज दे, या ज़ुबान से न कहे बल्कि कागज़ पर लिख दे कि "मैंने इस निकाह को लागू किया।"

और अगर फ़ुज़ूली या किसी और ने उसे इस अनधिकृत निकाह की मुबारकबाद दी और उसने सुनकर खामोशी अख्तियार की, तब भी निकाह सही और लागू हो गया और तलाक़ नहीं होगी। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

अरबी पाठ: "एक अनधिकृत व्यक्ति ने उसका निकाह कर दिया, तो अगर उसने मौखिक रूप से अनुमति दी, तो उसकी शपथ टूट जाएगी; लेकिन यदि क्रिया द्वारा दी, जिसमें लिखना भी शामिल है, तो शपथ नहीं टूटेगी। ऐसा 'ख़ानिया' में फ़तवा है।" उर्दू अनुवाद: अगर किसी का निकाह किसी अनधिकृत (फ़ुज़ूली) व्यक्ति ने कर दिया और उस व्यक्ति ने मौखिक रूप से 'जायज़' कह दिया, तो शपथ टूट जाएगी। लेकिन अगर उसने क्रियात्मक कार्यवाही से, जिसमें लिखना भी शामिल है, जायज़ किया, तो शपथ नहीं टूटेगी। 'ख़ानिया'। (त)

1. दुर्र-ए-मुख्तार, अध्याय: शपथ - मारने, मारने और अन्य विषयों पर, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/314। पृष्ठ 688 में से 223

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

بجا آوردہ، گزارش یہ ہے بنگالہ کے بعض دیار میں یہ دستور ہے کہ جب نوشہ شامل برات دلہن کے مکان پر جاتا ہے تو دلہن کے اولیاء واقرباء غیر مناسب شرائط سے کابین لکھوا کر نوشہ کو اوپر دستخط کرنے پر مجبور کرتے ہیں اور در صورت عدم دستخط لڑکی دینے سے انکار کرتے ہیں، بیچارہ نوشہ بخوف ندامت و تضییع زیورات و اسباب شادی جبراً و قہراً اس پر دستخط کردیتا ہے اور بعد دستخط کرنے کے باقاعدہ رجسٹری بھی کرادیتا ہے حالانکہ پیشتر اس مجلس نکاح کے ان بیہودہ شرائط کا تذکرہ تک نہیں ہوتا ہے، منجملہ ان غیر مناسب شرائط کے ایک شرط یہ بھی ہوتی ہے کہ تاحین حیات منکوحہ ہذا اور کسی عورت سے ہرگز شادی و نکاح نہ کروں گا، اگر کروں تو دوسری عورت مطلقہ بطلاق ثلاثہ بائنہ ہوگی خواہ منکوحہ ہذا بروقت نکاح بازن دیگر میرے نکاح میں موجود ہو یا نہ ہو۔ پس دریں صورت مسئولست کہ شرعاً ایسی بھی صورت ہے کہ نکاح مذکور کو اس منکوحہ کے حین حیات میں دوسری عورت سے نکاح کرنا جائز ہو جائے ، بینوا بحوالہ الکتاب توجروا عند الوھاب جواب بحوالہ کتب فقہیہ مع نقل عبارت مرحمت ہو۔

الجواب: اگر کوئی فضولی بطور خود بے اس کی توکیل کے اس کا نکاح کسی عورت سے کردے اور وہ شخص اجازت فعلی سے اسے جائز و نافذ کردے زبان سے کچھ لفظ نہ کہے تو اس صورت میں منکوحہ ثانیہ پر طلاق اصلاً نہ ہوگی اگرچہ منکوحہ اولی ہنوز خود اس کے نکاح میں موجود ہو اور فضولی یوں آپ نہ کردے تو اس قسم کے الفاظ اس کے سامنے کہے کہ کاش کوئی فلاں عورت سے میرا نکاح کر دیتا یا کیا اچھا ہوتا کہ کوئی دوست بطور خود میرا عقد اس سے کردیتا،

وذٰلك لأن ھٰذا الفاظ الأمانی دون الإنابة حتی یکون توکیلا۔ | یہ اس لئے کہ یہ الفاظ تمنائی ہیں یہ نیابت ثابت نہیں کرتے حتی کہ وکیل بنانا متصور ہوسکے۔(ت)

اور اجازت فعلی یہ کہ مثلاً عورت کو مہر جو مقرر ہوا ہے بھیج دے یا زبان سے نہ کہے کاغذ پر لکھ دے کہ میں نے اس نکاح کو نافذ کیا اور اگر فضولی خواہ کسی نے اس عقد فضولی کی اس کو مبارکباد دی اور اسے سن کر سکوت کیا جب بھی عقد صحیح اور نافذ ہو گیا اور طلاق نہ پڑے گی، در مختار میں ہے:

زوجه فضولی فاجاز بالقول حنث وبالفعل ومنه الکتابة لا یحنث به یفتي خانیة 1 | کسی کا نکاح فضولی شخص نے کر دیا تو اس شخص نے زبانی جائز کہہ دیا تو قسم ٹوٹ جائیگی اور عملی کارروائی سے جس میں لکھنا بھی شامل ہے، جائز کرے تو قسم نہ ٹوٹے گی، خانیہ۔ (ت)

1 در مختار باب الیمین في الضرب والقتل وغیر ذلك مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۱۴ Page 223 of 688

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

In Radd al-Muhtar, it is stated: (Arabic): "In Hawi al-Zahidi: If people congratulate someone on a Fuduli marriage (a marriage contracted by an unauthorized person) and he remains silent, this constitutes permission." (Urdu Translation): In Zahidi's book 'Hawi', it says that if people congratulate someone on a Fuduli marriage and he remains silent, then this will be considered as permission. (T)

In Al-Ashbah, it is stated: (Arabic): "If he swore not to marry, the stratagem is for a Fuduli to marry him off and he validates it by action." (Urdu Translation): If someone has sworn not to get married, the trick for him to get married is for an unauthorized (Fuduli) person to marry him off, and then this person validates that marriage through some action. (T)

In Ghamz, it is stated: (Arabic): "Validation by action is like sending the dower (Mahr) or something from it. What is meant is that it reaches her, as mentioned by Sadr al-Shahid (may Allah have mercy on him). It is said that merely sending the dower is sufficient absolutely because the validating factor is the actual permission, and it is realized by sending." (Urdu Translation): The way to validate a marriage through action is for that person to send the dower or something from his side to the bride. This means it should specifically reach her. This point was mentioned by Sadr al-Shahid. Some say that instead of giving it to the wife, just sending the dower is sufficient as actual permission for the marriage, because validation through action has been declared permissible, and sending is also an action. (T)

In Al-Bahr al-Ra'iq, it is stated: (Arabic): "It is appropriate for him to go to a scholar and tell him what he swore and his need for a Fuduli marriage. Then the scholar marries him to a woman, and he validates it by action, so he does not break his oath. Similarly, if he says to a group, 'I have a need for a Fuduli marriage'..." (Urdu Translation): It is appropriate for such a person to come to a scholar, inform him about his oath, and express the need for someone to perform a Fuduli marriage. Then that scholar himself should marry him to a woman, and if he (the man) gives permission for this marriage through some action...

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Oaths regarding Hitting, Killing, etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/137. 2. Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Fifth Art, Stratagems in Marriage, Idara al-Qur'an Karachi, 2/295, 96. 3. Ghamz Uyun al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa al-Naza'ir with Al-Ashbah, Fifth Art, Stratagems in Marriage, Idara al-Qur'an Karachi, 2/295, 96.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

रद्द अल-मुह्तार में है: (अरबी): "हावी अल-ज़ाहीदी में: यदि लोग किसी को फुज़ूली निकाह (किसी अनधिकृत व्यक्ति द्वारा कराए गए निकाह) पर बधाई देते हैं और वह चुप रहता है, तो यह अनुमति मानी जाएगी।" (उर्दू अनुवाद): ज़ाहीदी की किताब 'हावी' में है कि अगर लोगों ने किसी को फुज़ूली निकाह पर मुबारकबाद दी और वह खामोश रहा, तो इसे अनुमति माना जाएगा। (त)

अल-अशबाह में है: (अरबी): "यदि उसने कसम खाई कि वह निकाह नहीं करेगा, तो इसके लिए तरकीब यह है कि कोई फुज़ूली उसका निकाह करा दे और वह उसे किसी कार्य द्वारा मान्य कर दे।" (उर्दू अनुवाद): अगर किसी ने शादी न करने की कसम खा रखी हो, तो उसके लिए शादी करने की तरकीब यह है कि कोई फुज़ूली व्यक्ति उसका निकाह कर दे और यह व्यक्ति किसी कार्य (एक्शन) के ज़रिए उस निकाह को जायज़ कर दे। (त)

ग़म्ज़ में है: (अरबी): "कार्य द्वारा अनुमति देना जैसे मेहर या उसका कुछ हिस्सा भेजना है। इसका अर्थ यह है कि वह उस तक पहुँच जाए, जैसा कि सदर अल-शहीद (रहमतुल्लाह अलैह) ने ज़िक्र किया है। कहा गया है कि केवल मेहर को भेज देना ही पूर्णतः पर्याप्त है क्योंकि मान्य करने वाली चीज़ वास्तविक अनुमति है और वह भेजने से ही सिद्ध हो जाती है।" (उर्दू अनुवाद): वास्तव में (कार्य के माध्यम से) निकाह जायज़ करने का तरीका यह है कि वह व्यक्ति मेहर या अपनी ओर से कोई चीज़ दुल्हन को भेज दे। इसका मतलब है कि वह खास तौर पर उस तक पहुँच जाए। यह बात सदर शहीद ने ज़िक्र की है। कुछ लोगों का कहना है कि पत्नी को देने के बजाय केवल मेहर रवाना कर देना ही निकाह की व्यावहारिक अनुमति के लिए काफी है, क्योंकि वास्तविक अनुमति को जायज़ करार दिया गया है, तो रवाना करना भी एक कार्य ही है। (त)

बहर अल-राईक़ में है: (अरबी): "उचित यह है कि वह किसी आलिम (विद्वान) के पास जाए और उन्हें अपनी कसम और फुज़ूली निकाह की ज़रूरत के बारे में बताए। फिर वह आलिम स्वयं किसी महिला से उसका निकाह करा दे, और वह इसे कार्य द्वारा मान्य कर ले, तो उसकी कसम नहीं टूटेगी। इसी प्रकार यदि वह किसी समूह से कहे कि मुझे फुज़ूली निकाह की आवश्यकता है..." (उर्दू अनुवाद): उचित यह है कि ऐसा व्यक्ति किसी आलिम के पास आकर अपनी कसम के बारे में बताए और फुज़ूली व्यक्ति के निकाह कर देने की ज़रूरत ज़ाहिर करे। तो वह आलिम उसका किसी महिला से खुद निकाह कर दे, और अगर वह इस निकाह की इजाज़त अपने किसी कार्य से दे दे तो...

फुटनोट्स: 1. रद्द अल-मुह्तार, प्रहार, हत्या आदि के संबंध में शपथ का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/137। 2. अल-अशबाह वा अल-नज़ायर, पाँचवीं कला, निकाह में रणनीतियाँ, इदारा अल-कुरान कराची, 2/295, 96। 3. ग़म्ज़ उयून अल-बसार शरह अल-अशबाह वा अल-नज़ायर अल-अशबाह के साथ, पाँचवीं कला, निकाह में रणनीतियाँ, इदारा अल-कुरान कराची, 2/295, 96।

पृष्ठ 688 का 224

جلد تیرہ دہم ۱۳ فتاوی رضویہ

ردالمحتار میں ہے: فی حاوی الزاہدی لوھنأہ الناس بنکاح الفضولی فسکت فھذا اجازۃ ۔1 | زاہدی کی کتاب حاوی میں ہے کہ اگر کسی کو لوگوں نے فضولی نکاح پر مبارکبادی دی، تو وہ خاموش رہا، تو یہ اجازت متصور ہوگی۔(ت)

اشباہ میں ہے: حلف لایتزوج فالحیلۃ ان یزوجہ فضولی ویجیزہ بالفعل۔2 | اگر کسی نے شادی نہ کرنے کی قسم کھا رکھی ہو تو اس کے لئے شادی کرنے کا حیلہ یہ ہے کہ کوئی فضولی شخص اس کا نکاح کردے اور یہ شخص کسی فعل کے ذریعہ سے اس نکاح کو جائز کردے۔(ت)

غمز میں ہے: الاجازۃ بالفعل کبعث المھر و شئی منہ والمراد الوصول الیھا ذکرہ الصدر الشھید رحمہ اللہ تعالٰی، وقیل سوق المھر یکفی مطلقاً لان المجوزۃ الاجازۃ بالفعل و ھو تحقق بالسوق۔3 | عملاً (فعل کے ذریعے) نکاح جائز کرنے کی صورت یہ ہے کہ وہ شخص مہر یا اپنی طرف سے کوئی چیز بھیج دے یعنی منکوحہ کو۔ اس سے مراد یہ ہے کہ خاص اس تک پہنچادے۔ یہ بات صدر شہید نے ذکر کی ہے۔ بعض کا قول یہ ہے کہ بیوی کو دینے کی بجائے محض مہر روانہ کردینا ہی نکاح کی فعلی اجازت کو کافی ہے کیونکہ بالفعل اجازت کو جائز قرار دیا گیا ہے تو روانہ کردینا بھی فعل ہے۔(ت)

بحرالرائق میں ہے: ینبغی ان یجیئی الی عالم ویقول لہ ماحلف واحتیاجہ الی نکاح الفضولی فیزوجہ العالم امرأۃ یجیزبالفعل فلایحنث وکذا اذا قال لجماعۃ لی حاجۃ الی نکاح الفضولی | مناسب یہ ہے کہ ایسا شخص کسی عالم کے پاس آکر اپنی قسم کے بارے میں بتائے اور فضولی شخص کے نکاح

کردینے کی حاجت ظاہر کرے تو وہ عالم اس کا کسی عورت سے خود نکاح کردے، اور یہ اس نکاح کی اجازت اپنے کسی فعل سے دے تو

1 ردالمحتار باب الیمین فی الضرب والقتل وغیرہ ذلک داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۱۳۷ 2 الاشباہ والنظائر الفن الخامس الحیل فی النکاح ادارۃ القرآن کراچی ۲/ ۲۹۵، ۹۶ 3 غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر مع الاشباہ الفن الخامس الحیل فی النکاح ادارۃ القرآن کراچی ۲/ ۲۹۵، ۹۶

Page 13, Volume 13 - Fatawa Ridawiyya

[Boxed Text Top Left - Arabic]: "...then one of them married her. However, if he said to a man, 'Contract a marriage for me', he would be a proxy (Wakil), not a Fuduli (an unauthorized person acting on behalf of another). And Allah Almighty knows best."

[Boxed Text Top Right - Urdu]: "The oath will not be broken. The same rule applies if he says before a group, 'I need an unauthorized person (Fuduli) to perform my marriage,' and then any individual from that group performs his marriage. However, if he specifically says to someone, 'Act as a Fuduli and perform my marriage,' then the oath will be broken because in this case, he is appointing him as a proxy. Therefore, he will be a proxy and not a Fuduli. And Allah Almighty knows best. (T)"

Issue 23: From Calcutta, sent by Maulvi Imdad Ali Lin, via Maulvi Muhammad Abdul Aziz Sahib, 21 Shawwal 1314 AH.

[Middle Sections - Urdu/Persian Mix]: "To the high-ranking servants, may your prosperity continue. After the sunnah greeting of the best of mankind (peace and blessings be upon him), the request is that an unsolvable problem from our region is presented to you. If you could provide a satisfactory answer, I would be grateful. Sir, some have raised an objection that for a woman with whom marriage has not been consummated, the second and third divorce (Talaq) will not occur after the first. However, the husband's intention here was not to give three divorces separately, but rather to give them together, and the context of the Bengali language is also the same. I am presenting the exact translation of the Bengali language here, with utmost respect."

[Case Details]: "What is your ruling, may Allah have mercy on you, regarding this issue: A person wrote in his marriage certificate to his wife, 'I will not enter into a second marriage without your permission and the permission of your credible guardian (Wali). If I do, your full dowry (Mahr) will be considered paid, and it will be with permission from you and your guardian, otherwise, one divorce, two divorces, three divorces will occur on my second wife.' Then that person did not fulfill any of the mentioned conditions and married another woman, making her his second wife..."

[Footnote]: 1 Bahr al-Ra'iq, Bab al-Ta'liq, H.M. Saeed Company Karachi, 7/4

Page 225 of 688

पृष्ठ १३, खंड १३ - फतावा रज़विया

[ऊपरी बाएँ बॉक्स का पाठ - अरबी]: "...फिर उनमें से एक ने उसका विवाह कर दिया। लेकिन यदि उसने किसी व्यक्ति से कहा, 'मेरे लिए विवाह का अनुबंध करो', तो वह एक वकील (प्रतिनिधि) होगा, फुदुली (एक अनधिकृत व्यक्ति) नहीं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।"

[ऊपरी दाएँ बॉक्स का पाठ - उर्दू]: "शपथ नहीं टूटेगी। यही नियम तब भी लागू होता है जब वह किसी समूह के सामने कहता है, 'मुझे अपने विवाह के लिए एक फुदुली व्यक्ति की आवश्यकता है,' और फिर उस समूह का कोई भी व्यक्ति उसका विवाह कर देता है। हालाँकि, यदि वह किसी को विशेष रूप से कहता है, 'फुदुली बनकर मेरा विवाह कर दो', तो शपथ टूट जाएगी क्योंकि इस मामले में वह उसे एक वकील के रूप में नियुक्त कर रहा है। इसलिए, वह एक वकील होगा न कि फुदुली। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)"

मसला २३: कलकत्ता से, मौलवी इमदाद अली लिन द्वारा प्रेषित, मौलवी मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ साहब के माध्यम से, २१ शव्वाल १३१४ हिजरी।

[मध्य अनुभाग - उर्दू/फारसी मिश्रण]: "उच्च पदस्थ सेवकों के लिए, आपकी समृद्धि बनी रहे। मानव जाति के सर्वश्रेष्ठ (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सुन्नत अभिवादन के बाद, अनुरोध यह है कि हमारे क्षेत्र की एक अनसुलझी समस्या आपके सामने प्रस्तुत की गई है। यदि आप संतोषजनक उत्तर प्रदान कर सकें, तो मैं आभारी रहूँगा। महोदय, कुछ लोगों ने यह आपत्ति उठाई है कि जिस महिला के साथ विवाह संपन्न नहीं हुआ है, उस पर पहली तलाक के बाद दूसरी और तीसरी तलाक प्रभावी नहीं होगी। जबकि यहाँ पति का इरादा तीन तलाक अलग-अलग देने का नहीं था, बल्कि उन्हें एक साथ देने का था, और बंगाली भाषा का संदर्भ भी यही है। मैं यहाँ बंगाली भाषा का सटीक अनुवाद प्रस्तुत कर रहा हूँ, अत्यंत सम्मान के साथ।"

[मामले का विवरण]: "अल्लाह आप पर दया करे, इस मुद्दे पर आपका क्या निर्णय है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को अपने विवाह प्रमाण पत्र में लिख कर दिया कि, 'मैं तुम्हारी और तुम्हारे विश्वसनीय अभिभावक (वली) की अनुमति के बिना दूसरा विवाह नहीं करूँगा। यदि मैं ऐसा करता हूँ, तो तुम्हारा पूरा मेहर (दहेज) भुगतान माना जाएगा, और यह तुम्हारी और तुम्हारे अभिभावक की अनुमति से होगा, अन्यथा, मेरी दूसरी पत्नी पर एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक प्रभावी होंगे।' फिर उस

व्यक्ति ने उल्लेखित शर्तों में से किसी को भी पूरा नहीं किया और दूसरी महिला से विवाह कर लिया, उसे अपनी दूसरी पत्नी बना लिया..."

[पाद लेख]: १ बहर अल-राइक, बाब अल-तअलीक, एच.एम. सईद कंपनी कराची, ७/४

पृष्ठ २२५ का ६८८

[بائیں اوپر کا خانہ]: فزوجه واحد منهم اما اذا قال لرجل اعقدلی عقد فضولی یکون وکیلاً ۱ھ واللہ تعالیٰ اعلم۔

[دائیں اوپر کا خانہ]: قسم نہ ٹوٹے گی اور یہی حکم ہے اگر کسی جماعت کے سامنے وہ کہے کہ مجھے فضولی شخص کے نکاح کی ضرورت ہے تو اس جماعت کا کوئی فرد اس کا نکاح کر دے، لیکن جب کسی کو اس نے یوں کہہ دیا کہ تو فضولی بن کر میرا نکاح کردے تو قسم ٹوٹ جائے گی کیونکہ اس صورت میں وکیل بنا رہا ہے لہٰذا وہ وکیل بنے گا فضولی نہ ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۳: از کلکتہ مولوی امداد علی لین مرسلہ مولوی محمد عبد العزیز صاحب ۲۱ شوال ۱۳۱۴ھ

[درمیانی حصہ - اردو/فارسی]: خدام کی عرض کو پورا کرنے والے، برتر مقام والے، دام اقبالکم، حضور علیہ والصلوۃ والسلام کے مسنون سلام کے بعد معروض یہ ہے کہ ہمارے علاقہ کا ایک لایحل مسئلہ جناب کی خدمت میں پیش کیا جاتا ہے اس کا شافی جواب عنایت فرما دیں تو ممنون احسان ہوں گے، جناب من! بعض نے یہ اختلاف کیا ہے کہ طلاق غیر مدخولہ عورت پر ایک طلاق کے بعد دوسری اور تیسری طلاق واقع نہ ہو گی جبکہ یہاں خاوند کا منشاء تینوں طلاقوں کا علیحدہ علیحدہ دینا نہیں ہے بلکہ اکٹھی دینے کا ارادہ ہے اور بنگالی زبان کا سیاق بھی یہی ہے۔ احقر یہاں بنگالی زبان کا ترجمہ بعینہ پیش کرتا ہے، زیادہ ادب۔

[تفصیلات]: اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے آپ کا کیا ارشاد ہے اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے نکاح نامہ میں بیوی کو لکھ دیا کہ میں تیری اور تیرے معتبر ولی کی اجازت کے بغیر دوسرا نکاح نہ کروں گا، اگر کروں تو تیر ا مکمل مہر ادا شدہ ہو گا اور تجھ سے اور تیرے ولی سے اجازت

کے ساتھ ہو گا ورنہ میری دوسری منکوحہ پر ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق واقع ہوں گی، پھر اس شخص نے کسی شرط پر عمل نہ کیا اور دوسری عورت سے نکاح کر لیا۔

[حاشیہ]: ۱ بحر الرائق باب التعلیق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷/۴

صفحہ ۲۲۵ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

Question: Will a divorced woman receive three divorces or not? Please explain and you will be rewarded. Another person married a second woman without fulfilling any condition after the second and third divorce; will his second wife receive three divorces or not? Please explain and you will be rewarded. (T)

Answer: The rule is that a divorce made contingent upon a condition occurs when that condition is met, as if at that moment he had uttered the divorce unconditionally. An unconsummated wife is a subject for the occurrence of three divorces at once. Therefore, if a husband says to his unconsummated wife, "You are divorced three times," or says, "If you enter this house, you are divorced three times," then in the first case it happens immediately, and in the second case, three divorces will occur upon her entering the house. Furthermore, if he makes three separate divorces contingent upon a condition, provided that those separate divorces are mentioned using the conjunctive particles "wao" (and) or "faa" (then), and not with the word "thumma" (afterward), and the condition is mentioned after them—for example, he says, "You are divorced, and divorced, and divorced if you do such-and-such a task"—then in this case too, upon the fulfillment of the condition, three divorces will occur. This is because the conjunction with 'wao' and 'faa' joins them all together, and when the condition is mentioned afterward, that condition makes the entire preceding speech contingent. So, upon the condition being met, the three divorces contingent upon it occur simultaneously. However, contrary to this, if he gives three unconditional separate divorces to an unconsummated wife—for example, he says, "You have one divorce, and a second divorce, and a third," or mentions all three separately but mentions the condition before them, for example, says, "If you did such-and-such, then you are divorced..."

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

प्रश्न: क्या तलाकशुदा औरत को तीन तलाकें होंगी या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा। एक अन्य व्यक्ति ने दूसरी और तीसरी तलाक के बाद बिना किसी शर्त को पूरा किए दूसरी औरत से निकाह कर लिया, तो क्या उसकी दूसरी बीवी को तीन तलाकें होंगी या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा। (त)

उत्तर: नियम यह है कि किसी शर्त के साथ जुड़ी हुई (मुअल्लक) तलाक, उस शर्त के पाए जाने पर घटित होती है, जैसे कि उस समय उसने बिना शर्त तलाक दी हो। एक वह पत्नी जिसके साथ संभोग न हुआ हो (गैर मदख़ूला), वह एक साथ तीन तलाकें पाने की पात्र है। इसलिए, यदि पति अपनी गैर मदख़ूला पत्नी से कहे, "तुझे तीन तलाक," या कहे, "अगर तू इस घर में दाखिल हुई तो तुझे तीन तलाक," तो पहली स्थिति में तुरंत और दूसरी स्थिति में उसके घर में दाखिल होने पर तीन तलाकें हो जाएंगी। बल्कि, अगर वह तीन अलग-अलग तलाकों को किसी शर्त से जोड़ दे, बशर्ते कि उन अलग-अलग तलाकों को 'वाओ' (और) या 'फ़ा' (फिर) शब्द के साथ जोड़ा गया हो, न कि 'थुम्मा' (बाद में) शब्द के साथ, और शर्त का उल्लेख उनके बाद किया जाए—उदाहरण के लिए, वह कहे, "तुझे तलाक और तलाक और तलाक अगर तू फलां काम करे"—तो इस स्थिति में भी शर्त पूरी होने पर तीन तलाकें होंगी। क्योंकि 'वाओ' और 'फ़ा' का संयोजन सबको मिला देता है और जब उसके बाद शर्त का उल्लेख किया गया, तो उस शर्त ने पूरे पिछले कथन को शर्त पर आधारित कर दिया। अतः शर्त पूरी होने पर उससे जुड़ी तीनों तलाकें एक साथ घटित हो जाएंगी। लेकिन इसके विपरीत, यदि वह गैर मदख़ूला को बिना शर्त तीन अलग-अलग तलाक देता है—उदाहरण के लिए, वह कहे, "तुझे एक तलाक, और दूसरी तलाक, और तीसरी," या तीनों को अलग-अलग उल्लेख करे लेकिन शर्त को उनसे पहले उल्लेख करे, उदाहरण के लिए, कहे, "अगर तूने फलां काम किया तो तुझे तलाक..."

पृष्ठ 226 का 688

مطلقہ بسہ طلاق خواہد شد یا نہ؟ بینوا توجروا۔ دوسری طلاق اور تیسری طلاق ہوگی، اس کے بعد اس شخص نے کوئی شرط پوری کئے بغیر دوسری عورت سے نکاح کرلیا، تو اس کی دوسری بیوی کو تین طلاق ہوں گی یا نہیں؟ بینوا توجروا (ت)

الجواب: قاعدہ یہ ہے کہ کسی شرط کے ساتھ معلق طلاق، اس شرط کے پائے جانے پر وقوع پذیر ہوتی ہے گویا کہ اس وقت اس نے طلاق کا تکلم غیر مشروط طور پر کیا ہے اور غیر مدخولہ عورت یکبار تین طلاقوں کے وقوع کا محل ہے لہذا اگر خاوند نے غیر مدخولہ بیوی کو کہا تجھے تین طلاق، یا کہا تو اگر اس گھر میں داخل ہوئی تو تجھے تین طلاق، تو پہلی صورت میں فوراً اور دوسری صورت میں اس کے گھر میں داخل ہونے پر تین طلاقیں ہو جائیں گی، بلکہ اگر متفرق طور پر تین طلاقیں کسی شرط سے معلق کردے بشرطیکہ ان متفرق طلاقوں کو لفظ "واؤ" یا "فاء" کے ساتھ بطور عطف ذکر کرے نہ کہ لفظ "ثم" کے ساتھ، اور شرط کا ذکر اس کے بعد کرے، مثلاً یوں کہے تجھے طلاق و طلاق و طلاق اگر تو فلاں کام کرے، تو اس صورت میں بھی شرط پائے جانے پر تین طلاقیں ہوں گی، کیونکہ واؤ اور فاء کا عطف سب کو ملا دیتا ہے اور جب اس کے بعد شرط ذکر کی تو اس شرط نے پہلی پوری کلام کو معلق کردیا تو شرط کے پائے جانے پر اس سے معلق تینوں طلاقیں دفعۃً واقع ہو جائیں گی لیکن اس کے برخلاف اگر غیر مدخولہ کو تین طلاقیں غیر مشروط طور پر متفرق دے مثلاً یوں کہے تجھے ایک طلاق اور دوسری طلاق اور تیسری یا تینوں کو متفرق طور پر ذکر کرے مگر شرط کو ان سے پہلے ذکر کرے مثلاً یوں کہے اگر تو نے فلاں کام کیا تو تجھے طلاق

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13.

...and divorce, and divorce. Or if someone mentions three conditional divorces but mentions the divorces before the condition without a conjunction. For example, if someone says: "To you divorce, divorce, divorce if you do such and such work." In all these three scenarios, only one divorce will occur from the separated divorces, which will become 'Bain' (irrevocable), and the remaining two will be void (null). Because in the first case, when he said "To you one divorce," the wife became excluded from the marriage without iddah (waiting period), so she no longer remained a subject for divorce after that. Therefore, at the time the remaining two occurred, the wife was not a subject for divorce, so both those divorces became useless (null). In the second case, since the condition is placed at the beginning, upon the fulfillment of the condition, after the first divorce, the subject for the remaining two divorces no longer remained because she became 'Bain' with the first divorce. Therefore, the remaining two became null upon the fulfillment of the condition. It is as if he said, "To you divorce, and divorce, and divorce," so this became like the first case. And in the third case, because the suspension (condition) applied only to the last divorce since he mentioned the condition after the divorces, which prevented the third divorce from occurring. However, the first two could not be connected to the third because of the absence of a conjunction. Therefore, as soon as they were mentioned, they occurred unconditionally. So, when the first one occurred, she became 'Bain,' and after that, she was no longer a subject for the second unconditional one and the third suspended and conditional one. Therefore, the second and third became null. When these aforementioned issues became known...

It was said that "you are divorced, and divorced, and divorced," and similarly [Note 'A'], one [divorce] occurred. And in the third instance, the changer found at the end of the speech changed the third divorce from being immediate to being conditional. Because the preceding ones were not linked due to the omission of the conjunction. Thus, at the moment of speaking the first word, one divorce occurred immediately, and no place remained for the immediate occurrence of the second and the suspension of the third. When these matters became clear, the ruling on the asked question became clear that only one divorce occurs on the second wife, and that is all.

In Al-Hindiyyah: If he suspended divorce on a condition, and if the condition was mentioned first, saying: "If you enter the house, then you are divorced, and divorced, and divorced," and she is unconsummated, she becomes 'Bain' with one [divorce]

upon the occurrence of the condition according to the opinion of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), and the rest is void. And if the condition was mentioned later, saying: "You are divorced, and divorced, and divorced if you enter the house," or he mentioned it with 'Fa' (so), then she enters the house and becomes 'Bain' with three by consensus, whether she was consummated or unconsummated. But if he mentioned it without a conjunction, and if the condition was mentioned first, then he said...

Note 'A': Here in the manuscript, there is a blank space.

फतावा रजविया, जिल्द 13, पृष्ठ 13।

...और तलाक, और तलाक। या यदि कोई तीन सशर्त तलाक का उल्लेख करे लेकिन तलाक को बिना किसी संयोजन के शर्त से पहले उल्लेख कर दे। उदाहरण के लिए, यदि कोई कहता है: "तुझे तलाक तलाक तलाक अगर तू फलां काम करे।" तो इन तीनों स्थितियों में, अलग-अलग की गई तलाकों में से केवल एक ही तलाक होगा जो बाइन (अटल) हो जाएगा और शेष दो निरर्थक हो जाएंगे। क्योंकि पहली स्थिति में, जब उसने कहा "तुझे एक तलाक," तो पत्नी बिना इद्दत के निकाह से बाहर हो गई, तो वह उसके बाद तलाक के योग्य ही नहीं रही। इसलिए शेष दो के घटित होने के समय पत्नी तलाक के योग्य नहीं थी, अतः वे दोनों तलाक बेकार (निरर्थक) हो गए। और दूसरी स्थिति में, चूंकि शर्त पहले है, इसलिए शर्त के अस्तित्व पर पहली तलाक के बाद शेष दो तलाकों के लिए कोई स्थान नहीं रहा क्योंकि वह पहली तलाक के साथ ही बाइन हो गई, इसलिए शेष दोनों निरर्थक हो गए। शर्त पूरी होने पर, मानो उसने कहा "तुझे तलाक और तलाक और तलाक," तो यह पहली स्थिति की तरह हो गया। और तीसरी स्थिति में इसलिए कि शर्त का संबंध केवल अंतिम तलाक से हुआ क्योंकि तलाकों के बाद उसने शर्त का उल्लेख किया जिसने तीसरी तलाक को होने से रोक दिया। और पहली दोनों, संयोजन न होने के कारण, तीसरी के साथ जुड़ नहीं सकीं। इसलिए जैसे ही उनका उल्लेख किया गया, वे बिना शर्त घटित हो गईं। तो जब पहली घटित हुई, तो वह बाइन हो गई, जिसके बाद वह दूसरी बिना शर्त और तीसरी स्थगित और सशर्त तलाक के योग्य नहीं रही। इसलिए दूसरी और तीसरी निरर्थक हो गईं। जब ये उक्त मसले ज्ञात हो गए...

ऐसा कहा गया कि "तू तलाक है और तलाक और तलाक," और इसी तरह [नोट 'ए'], एक [तलाक] घटित हुआ। और तीसरे मामले में, अंत में पाए गए परिवर्तन ने तीसरी तलाक को तत्काल से हटाकर सशर्त कर दिया। क्योंकि पिछला संयोजन न होने के कारण जुड़ा नहीं था। अत; पहला शब्द बोलने के समय, तत्काल एक तलाक हो गया और दूसरे के तत्काल होने और तीसरे के सशर्त होने के लिए कोई स्थान नहीं बचा। जब ये बातें स्पष्ट हो गईं, तो पूछे गए मसले का हुक्म स्पष्ट हो गया कि दूसरी पत्नी पर केवल एक ही तलाक पड़ता है, बस।

अल-हिंदिया में है: यदि उसने तलाक को शर्त पर निलंबित किया, और यदि शर्त पहले उल्लेख की गई हो, जैसे कि कहा: "यदि तू घर में प्रवेश करे तो तू तलाक है और तलाक और तलाक," और निकाह अभी मुकम्मल (संभोग) नहीं हुआ है, तो इमाम अबू हनीफा (रज़ी अल्लाहू तआला अन्हु) के अनुसार शर्त पूरी होने पर एक तलाक से वह बाइन हो जाएगी और बाकी निरर्थक हो जाएंगे। और यदि शर्त

बाद में उल्लेख की गई हो, जैसे कहा: "तू तलाक है और तलाक और तलाक यदि तू घर में प्रवेश करे," या उसने 'फा' के साथ उल्लेख किया, फिर वह घर में प्रवेश करती है, तो वह सर्वसम्मति से तीन तलाकों से बाइन हो जाएगी, चाहे निकाह मुकम्मल हुआ हो या नहीं। लेकिन अगर उसने बिना किसी संयोजन शब्द के इसका उल्लेख किया, और यदि शर्त पहले थी, तो उसने कहा...

नोट 'ए': यहाँ मसौदे में खाली जगह है।

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

اور طلاق اور طلاق، یا مشروط تین طلاقیں ذکر کرے مگر طلاقوں کو بغیر عطف شرط سے پہلے ذکر کر دیا ہو مثلاً یوں کہے تجھے طلاق طلاق طلاق اگر تو فلاں کام کرے، تو ان تینوں صورتوں میں متفرق شدہ طلاقوں میں سے ایک ہی طلاق ہوگی جو بائنہ ہو جائے گی اور باقی دو لغو ہو جائیں گی، کیونکہ ان میں سے پہلی صورت میں جب اس نے "تجھے ایک طلاق" کہا تو بیوی بغیر عدت نکاح سے خارج ہو جائے گی تو وہ اس کے بعد طلاق کا محل ہی نہ رہی تو باقی دو کے وقوع کے وقت بیوی طلاق کا محل نہ تھی لہٰذا وہ دونوں طلاقیں بیکار (لغو) ہو گئیں، اور دوسری صورت میں چونکہ شرط مقدم ہے اس لئے شرط کے وجود پر پہلی طلاق کے بعد باقی دو طلاقوں کا محل نہ رہی کیونکہ وہ پہلی طلاق کے ساتھ ہی بائنہ ہو گئی لہٰذا باقی دونوں لغو ہو گئیں، شرط کے پائے جانے پر، گویا یوں کہا تجھے طلاق وطلاق وطلاق، تو یہ پہلی صورت کی طرح ہو گئی، اور تیسری صورت میں اس لئے کہ تعلیق کا تعلق صرف آخری طلاق سے ہوا کیونکہ طلاقوں کے بعد اس نے شرط ذکر کی جس نے تیسری طلاق کے وقوع سے روک دیا، اور پہلی دونوں عطف نہ ہونے کی وجہ سے تیسری کے ساتھ مربوط نہ ہو سکیں، لہٰذا وہ دونوں ذکر کرتے ہی غیر مشروط واقع ہو گئیں تو جب پہلی واقع ہوئی تو وہ بائنہ ہو گئی تو اس کے بعد وہ دوسری غیر مشروط اور تیسری معلق اور مشروط کا محل نہ رہی لہٰذا دوسری اور تیسری لغو ہو گئیں، جب یہ مذکورہ مسائل معلوم ہو گئے

چناں گفت کہ تو طلاق و طلاقی و طلاقی و بدیلی ہمیں عہ یک وقوع یافت و در ثالثہ مغیر کہ در آخر کلام یافتہ شد ہمیں طلاق ثالث را از تنجیز بہ تعلیق تغییر داد کہ ماسلف بجہت ترک عطف باد مربوط نبود، پس ہنگام تکلم بہ کلمہ اولیٰ یک طلاق فی الحال واقع شد و محل تنجیز دوم و تعلیق

سوم نماند چوں ایں مسائل حالی شد حکم مسئلہ مسئولہ رنگ وضوح یافت کہ بر منکوحہ ثانیہ ہمیں یک طلاق واقع شود و بس۔ فی الھندیۃ ان علق الطلاق بالشرط ان کان الشرط مقدماً فقال ان دخلت الدار فانت طالق وطالق و طالق و ھی غیر مدخولہ بانت بواحدة عند وجود الشرط في قول ابی حنیفة رضی اللہ تعالیٰ عنہ ولغا الباقي، وان کان الشرط مؤخراً فقال انت طالق وطالق وطالق ان دخلت الدار ،أو ذکرہ بالفاء فدخلت الدار بانت بثلث اجماعاً سواء کانت مدخولة اوغیر مدخولة، فان ذکرہ بغیر حرف العطف ان کان الشرط مقدماً فقال

عہ: یہاں مسودہ میں بیاض ہے۔

Fatawa Rizvia Volume 13 / Page 13

[Arabic Column] If you enter the house, then you are divorced, divorced, divorced, and she is a non-consummated wife. Then the first is conditional on the requirement, the second occurs immediately, and the third is redundant. If the condition is delayed, the first occurs immediately and the rest are void, as mentioned in Al-Siraj summarily. In Al-Durr al-Mukhtar: "Baint (irrevocable) divorced once, and once if she enters the house, two occur if she enters because they are both attached to the condition simultaneously. And one occurs if the condition is stated first because the conditional is like the accomplished." In Radd al-Muhtar: His saying 'because they are both attached to the condition simultaneously' is because the condition changes the occurrence, so if the changer is attached, the beginning of the speech stops upon it, so both divorces are attached to it together and they occur upon the existence of the condition likewise. This is contrary to when the condition is stated first, for then it does not stop due to the absence of the changer. His saying 'because the conditional is like the accomplished' means it becomes like the accomplished upon the existence of its condition. If it were truly accomplished, the second would not occur, unlike when the condition is delayed due to the presence of the changer.

[Urdu Column] So the queried matter became clear that the second wedded wife will also only have this one divorce, and that's it. It is in Hindia: If someone made a divorce conditional and mentioned the condition first, for example, said "If you enter the house, then you are divorced and divorced and divorced" while the woman is non-consummated, then upon fulfillment of the condition, she will become irrevocably divorced (Ba'ina) with that first divorce according to the school of Imam Abu Hanifa (may Allah Almighty have mercy on him), and the remaining two will become void. And if the condition is mentioned later, for example, said "You are divorced and divorced and divorced if you enter the house", or joined them with 'fa' (conjunction), then when the woman enters the house, she will become irrevocably divorced with three divorces, whether she is consummated or non-consummated. This matter is by consensus. And if the divorces are mentioned without a conjunction, then if the condition precedes, e.g., he says "If you enter the house, then you are divorced, divorced, divorced", when the wife is non-consummated, the first divorce will be conditional, the second will occur immediately making her irrevocably divorced, and the third will be void. And if the condition is mentioned later, then the first divorce will occur immediately and the other two will be void. It is mentioned similarly in Al-Siraj summarily. It is in Durr-e-Mukhtar: If someone said "one divorce

and one (with a conjunction) if you enter the house", then both divorces will occur because both are conditional upon one requirement, therefore...

---

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter Four regarding divorce before consummation, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/473. [2] Durr-e-Mukhtar, Chapter on divorce of the non-consummated wife, Matba Mujtabai Delhi, 1/223.

फ़तावा रज़विया खंड 13 / पृष्ठ 13

[अरबी कॉलम] यदि तुम घर में प्रवेश करती हो, तो तुम्हें तलाक है, तलाक है, तलाक है, और वह एक ऐसी पत्नी है जिसका विवाह अभी परिपूर्ण नहीं हुआ है। तो पहला शर्त पर निर्भर है, दूसरा तुरंत प्रभावी होता है, और तीसरा व्यर्थ है। और यदि शर्त को बाद में रखा जाए, तो पहला तुरंत प्रभावी होता है और बाकी शून्य हो जाते हैं, जैसा कि अल-सिराज में संक्षिप्त रूप से वर्णित है। अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: "एक बार तलाकशुदा बाइन (विच्छेदित), और एक बार यदि वह घर में प्रवेश करती है, तो दो घटित होते हैं यदि वह प्रवेश करती है क्योंकि वे दोनों एक साथ शर्त से जुड़े हैं। और एक घटित होता है यदि शर्त पहले दी गई हो क्योंकि शर्त वाला कार्य संपन्न कार्य के समान होता है।" रद अल-मुहतार में: उनका कहना 'क्योंकि वे दोनों एक साथ शर्त से जुड़े हैं' इसलिए है क्योंकि शर्त होने वाली घटना को बदल देती है, इसलिए जब बदलने वाला तत्व जुड़ जाता है, तो भाषण की शुरुआत उस पर रुक जाती है, इसलिए दोनों तलाक एक साथ उससे जुड़ जाते हैं और शर्त पूरी होने पर वैसे ही घटित होते हैं। यह उस स्थिति के विपरीत है जब शर्त पहले बताई गई हो, क्योंकि तब बदलने वाले तत्व की अनुपस्थिति के कारण वह नहीं रुकता। उनका कहना 'क्योंकि शर्त वाला कार्य संपन्न कार्य के समान होता है' का अर्थ है कि अपनी शर्त पूरी होने पर वह संपन्न कार्य की तरह हो जाता है। यदि वह वास्तव में संपन्न होता, तो दूसरा घटित नहीं होता, इसके विपरीत जब शर्त में देरी होती है तो बदलने वाले तत्व की उपस्थिति के कारण।

[उर्दू कॉलम] तो पूछा गया मामला स्पष्ट हो गया कि दूसरी विवाहित पत्नी को भी केवल यही एक तलाक होगा, और बस। अल-हिंदिया में है: यदि किसी ने तलाक को शर्त के साथ जोड़ा और शर्त का पहले उल्लेख किया, उदाहरण के लिए कहा "यदि तुम घर में प्रवेश करती हो, तो तुम्हें तलाक और तलाक और तलाक" जबकि महिला का विवाह परिपूर्ण न हुआ हो, तो शर्त पूरी होने पर वह इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर रहम करे) के मत के अनुसार उस पहले तलाक से बाइन (विच्छेदित) हो जाएगी, और शेष दो शून्य हो जाएंगे। और यदि शर्त का उल्लेख बाद में किया गया हो, उदाहरण के लिए कहा "तुम्हें तलाक और तलाक और तलाक यदि तुम घर में प्रवेश करती हो", या 'फा' (संयोजक) के साथ जोड़ा गया हो, तो जब महिला घर में प्रवेश करेगी, तो वह तीन तलाकों से बाइन हो जाएगी, चाहे वह परिपूर्ण विवाह वाली हो या अपरिपूर्ण विवाह वाली। यह मामला सर्वसम्मति (इज्मा) से है। और यदि तलाकों का उल्लेख बिना किसी संयोजक के हो, तो यदि शर्त पहले हो, उदाहरण के लिए वह कहे "यदि तुम घर में प्रवेश करती हो, तो तुम्हें तलाक तलाक तलाक", जब पत्नी अपरिपूर्ण

विवाह वाली हो, तो पहला तलाक शर्त पर निर्भर होगा, दूसरा तुरंत प्रभावी हो जाएगा जिससे वह बाइन हो जाएगी, और तीसरा शून्य हो जाएगा। और यदि शर्त का बाद में उल्लेख किया गया, तो पहला तलाक तुरंत प्रभावी होगा और अन्य दो शून्य होंगे। अल-सिराज में इसी तरह संक्षिप्त में वर्णित है। दुर्र-ए-मुख्तार में है: यदि किसी ने कहा "तुम्हें एक तलाक और एक (संयोजक के साथ) यदि तुम घर में प्रवेश करती हो", तो दोनों तलाक प्रभावी होंगे क्योंकि दोनों एक ही शर्त के साथ जुड़े हैं, इसलिए...

---

[1] फतावा हिंदिया, अध्याय चार, विवाह पूर्व तलाक के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/473। [2] दुर्र-ए-मुख्तार, अपरिपूर्ण विवाह वाली पत्नी के तलाक का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/223।

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم / صفحہ ۱۳

[عربی کالم] ان دخلت الدار فانت طالق طالق طالق وھی غیر مدخولة فالاولی معلق بالشرط والثانی یقع للحال والثالث لغو، وان اخر فالاولی ینزل للحال ولغالبا قي کذا فی السراج اھـ ملخصا، وفی الدر المختار یقع بانت طالق واحدة وواحدة ان دخلت الدار ثنتان لودخلت لتعلقھما بالشرط دفعة و تقع واحدة ان قدم الشرط لان المعلق کالمنجز اھـ فی رد المحتار قولہ لتعلقھما بالشرط دفعة لان الشرط مغیر للایقاع فاذا اتصل المغیر توقف صدر الکلام علیہ فیتعلق بہ کل من الطلقتین معا فیقعان عند وجود الشرط کذلك بخلاف مالو قدم الشرط فلا یتوقف لعدم المغیر، قولہ لان المعلق کالمنجز ای یصیر عند وجود شرطہ کالمنجز ولو نجزہ حقیقة لم تقع الثانیة بخلاف ما اذا اخر الشرط لوجود المغیر

[اردو کالم] تو مسئلہ مسئولہ واضح ہو گیا کہ دوسری منکوحہ کو بھی یہ ایک ہی طلاق ہوگی، اور بس۔ ہندیہ میں ہے اگر کسی نے طلاق کو مشروط کیا اور شرط کو پہلے ذکر کیا مثلاً یوں کہا اگر تو گھر میں داخل ہوئی تو تجھے طلاق اور طلاق اور طلاق جبکہ عورت غیر مدخولہ ہو تو شرط پائے جانے پر وہ پہلی طلاق سے بائنہ ہو جائے گی امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالٰی کے مسلک پر اور باقی دو لغو ہو جائیں گی، اور اگر شرط مؤخر ذکر کی ہو مثلاً یوں کہا تجھے طلاق اور طلاق اور طلاق اگر تو گھر میں داخل ہوئی، یا فاء کے ساتھ عطف کیا، تو عورت جب گھر میں داخل ہو گئی تو تین طلاقوں سے بائن ہو جائے گی خواہ عورت مدخولہ ہو یا غیر مدخولہ، یہ مسئلہ بالاجماع ہے، اور اگر طلاقوں کا ذکر عطف کے بغیر ہو تو اگر شرط مقدم ہو مثلاً یوں کہے اگر تو گھر میں داخل ہوئی تو تجھے طلاق طلاق طلاق ، جب بیوی غیر مدخولہ ہو تو پہلی طلاق شرط سے معلق ہو گی دوسری فی الحال واقع ہو جائے گی جو بائنہ ہو گی اور تیسری لغو ہو جائے گی، اور اگر شرط کو مؤخر ذکر کیا تو پہلی طلاق فوراً واقع ہو گی اور باقی دونوں لغو ہوں گی، سراج میں

ایسے ہی مذکور ہے اھ ملخصاً۔ در مختار میں ہے اگر کسی نے یوں کہا تجھے ایک طلاق اور ایک (عطف کے ساتھ) اگر تو گھر میں داخل ہو، تو دونوں طلاقیں واقع ہوں گی کیونکہ دونوں ایک شرط سے مشروط ہیں، لہذا

---

1 فتاوی ہندیہ الفصل الرابع فی الطلاق قبل الدخول نورانی کتب خانہ پشاور ۱/٤٧٣ 2 درمختار باب طلاق غیر المدخول بھا مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۳

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

[Left Column] Zayla'i: In conjunction with 'thumma' (then), if it is at the end, one divorce becomes effective immediately and the ones after it are void. If it is placed at the beginning, the third one is void, the second one is immediate, and the first one is conditional, so it will occur at the condition after the second marriage. (End of summary). In al-Bahr al-Ra'iq: If one says to a woman, "The day I marry you, you are divorced, and divorced, and divorced," and then he marries her, one divorce occurs and the other two are void. If he said, "You are divorced, and divorced, and divorced the day I marry you," then all three occur. This is as stated in al-Hawi al-Qudsi, and similarly if he said "If I marry you" as mentioned in al-Muhit. (End of summary). - The complete details of this issue—considering whether the conjunction is with 'waw' (and), 'fa' (then), or 'thumma' (afterwards), or none at all, and whether it is immediate or conditional, with the condition preceded or followed, and whether the woman is consummated or not—leads to eighteen scenarios. By considering other detailed cases from al-Bazzaziyya, Fath al-Qadir, al-Bahr al-Ra'iq, and al-Hindiyya, more forms can be found. And Allah Almighty knows best.

[Right Column] ...upon the occurrence of the condition, both will occur simultaneously. And if the condition is mentioned first, then only one divorce will occur because here the conditional is like the non-conditional (End of quote). In Radd al-Muhtar, it is said about the text's statement that "(in the first case) both are suspended upon a single condition" because the mention of the condition has made both conditional instead of non-conditional. Due to this change-inducing condition, the first statement became dependent on it, hence both divorces got linked to this condition simultaneously. Therefore, upon the occurrence of the condition, both will occur together. In contrast, if the condition is mentioned first, they will not both be suspended; instead, only the first will be conditional and the second will remain non-conditional, which will occur immediately. And the statement "(in the second case) that the conditional will be like the non-conditional" means that what is suspended by a condition will be like a non-conditional one upon the fulfillment of that condition. If it is truly non-conditional, then the second one will not occur because she would have already become 'baina' (separated) from the first one. In contrast, when he mentions the condition last, both divorces become suspended because they are conditioned by the subsequent condition. If he mentions the condition first, the third is void and the second occurs immediately. The first will be suspended by the condition and occur when the condition is met after he remarries her following

another husband. (Summarized). And in al-Bahr al-Ra'iq, it says: If someone said to a woman, "The day I marry you, you are divorced, and divorced, and divorced," and after that he married her, then one divorce will occur and the rest will be void and invalid, and...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Divorce of a non-consummated woman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/257. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Section on Divorce of a non-consummated woman, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/297.

[बायाँ कॉलम] जैलई: 'सुम्मा' (फिर) के साथ जोड़ में, यदि यह अंत में है, तो एक तलाक तुरंत प्रभावी हो जाता है और उसके बाद वाले शून्य हो जाते हैं। यदि इसे शुरू में रखा जाता है, तो तीसरा शून्य होता है, दूसरा तत्काल होता है, और पहला शर्त पर आधारित होता है, इसलिए यह दूसरी शादी के बाद शर्त पर घटित होगा। (संक्षेप में समाप्त)। अल-बह्र अल-राइक में: यदि कोई किसी महिला से कहे, "जिस दिन मैं तुमसे शादी करूँतुम तलाकशुदा हो, और तलाकशुदा हो, और तलाकशुदा हो," और फिर वह उससे शादी कर ले, तो एक तलाक होता है और अन्य दो शून्य हो जाते हैं। यदि उसने कहा, "तुम तलाकशुदा हो, और तलाकशुदा हो, और तलाकशुदा हो जिस दिन मैं तुमसे शादी करूँ" तो तीनों घटित हो जाते हैं। जैसा कि अल-हावी अल-कुदसी में है, और इसी तरह यदि उसने कहा "अगर मैं तुमसे शादी करूँजैसा कि अल-मुहीत में है। (संक्षेप में समाप्त)। - इस मसले का पूरा विवरण कि क्या संबंध 'वाव' (और), 'फ़ा' (फिर), या 'सुम्मा' (उसके बाद) के साथ है, या किसी के भी साथ नहीं, और चाहे वह तत्काल हो या शर्त पर आधारित हो, शर्त से पहले हो या बाद में, और चाहे महिला के साथ संभोग हुआ हो या नहीं—अठारह स्थितियां बनती हैं। अल-बज्जाज़िया, फ़तह अल-क़दिर, अल-बह्र अल-राइक और अल-हिंदिया के अन्य विस्तृत मामलों को देखते हुए, इन्हें पाया जा सकता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

[दायाँ कॉलम] ...शर्त पूरी होने पर, दोनों एक साथ घटित होंगे। और यदि शर्त का उल्लेख पहले किया गया है, तो केवल एक तलाक होगा क्योंकि यहाँ शर्त वाला बिना शर्त वाले के समान है (अह)। रद अल-मुह्तार में पाठ के इस कथन के बारे में कहा गया है कि "(पहली स्थिति में) दोनों एक ही शर्त पर निलंबित हैं" क्योंकि शर्त के उल्लेख ने दोनों को बिना शर्त के बजाय सशर्त बना दिया है। इस परिवर्तनकारी शर्त के कारण, पहला कथन उस पर निर्भर हो गया, इसलिए दोनों तलाक एक साथ इस शर्त से जुड़ गए। इसलिए, शर्त पूरी होने पर, दोनों एक साथ घटित होंगे। इसके विपरीत, यदि शर्त का उल्लेख पहले किया गया हो, तो वे दोनों निलंबित नहीं होंगे; बल्कि केवल पहला सशर्त होगा और दूसरा बिना शर्त रहेगा, जो तुरंत घटित हो जाएगा। और कथन "(दूसरी स्थिति में) कि सशर्त बिना शर्त के समान होगा" का अर्थ है कि जो किसी शर्त द्वारा निलंबित है वह उस शर्त के पूरा होने पर बिना शर्त वाले के समान होगा। यदि वह वास्तव में बिना शर्त है, तो दूसरा घटित नहीं होगा क्योंकि वह पहले से ही 'बैना' (अलग) हो चुकी होगी। इसके विपरीत, जब वह शर्त का उल्लेख अंत में करता है, तो दोनों तलाक निलंबित हो जाते हैं क्योंकि वे बाद वाली शर्त द्वारा सशर्त होते हैं। यदि वह शर्त का

उल्लेख पहले करता है, तो तीसरा शून्य है और दूसरा तुरंत घटित होता है। पहला शर्त द्वारा निलंबित होगा और शर्त पूरी होने पर घटित होगा जब वह दूसरे पति के बाद उससे दोबारा शादी करेगा। (संक्षेप में)। और अल-बह्र अल-राइक में है: यदि किसी ने एक महिला से कहा, "जिस दिन मैं तुमसे शादी करूँतुम्हें तलाक और तलाक और तलाक," और उसके बाद उसने उससे शादी की, तो एक तलाक घटित होगा और बाकी बेकार और अमान्य हो जाएंगे, और...

[पाद टिप्पणियाँ] १. रद अल-मुह्तार, बिना संभोग वाली महिला के तलाक का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/२५७। २. अल-बह्र अल-राइक, बिना संभोग वाली महिला के तलाक पर अनुभाग, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, ३/२९७।

पृष्ठ २२९/६८८

[بایاں کالم] زیلعی، وفی العطف بثم ان اخرہ تنجزت واحدۃ ولغاما بعدھا وان قدم لغا الثالث وتنجز الثانی وتعلق الاول فیقع عند الشرط بعد التزوج الثاني ۱ اھ مختصرا، وفی البحر الرائق لو قال لامرأۃ یوم اتزوجك فانت طالق وطالق وطالق فتزوجھا وقعت واحدۃ وبطلت الثنتان ولو قال انت طالق وطالق و طالق یوم اتزوجك وقعت الثلاث کذافی الحاوی القدسی و کذا لو قال ان تزوجتك کما في المحیط ۲ اھ - تمام تفاصیل ایں مسئلہ کہ بلحاظ آنکہ عطف بواؤوفاء باشد یا بثم یا ہیچ و بہر تقدیر منجز باشد معلق بشرط مقدم یا مؤخر و بہر وجہ زن مدخولہ باشد یا غیر آں ہیمیجدہ صورت میرسد و بلحاظ تفصیلات اخر صور دیگر صورت بند داز بزازیہ وفتح القدیر وبحر الرائق وہندیہ تواں جست واللہ تعالٰی اعلم۔

[دایاں کالم] شرط پائے جانے پر دونوں دفعہ واقع ہو جائیں گی۔ اور اگر شرط کو مقدم ذکر کیا تو ایک طلاق واقع ہوگی کیونکہ یہاں مشروط، غیر مشروط کی طرح ہے اھ ردالمحتار میں اس پر فرمایا کہ متن کا قول کہ "(پہلی صورت میں) دونوں معلق بشرط واحد ہیں" کیونکہ شرط کے ذکر نے دونوں کو غیر مشروط سے مشروط بنا دیا اس لئے کہ اس تبدیلی والی شرط کی وجہ سے پہلا کلام اس پر موقوف ہو گیا لہٰذا دونوں طلاقوں کا معاً اس شرط سے تعلق ہو گیا لہٰذا شرط پائے جانے پر دونوں اس طرح معاً واقع ہو جائیں گی، اس کے برخلاف اگر شرط کو مقدم ذکر کیا ہو تو دونوں پر موقوف نہ ہوں گی بلکہ صرف پہلی معلق ہوگی اور دوسری غیر مشروط رہے گی جو فی الحال فوراً واقع ہو جائیں گی، اور اس کا قول "(دوسری صورت میں) کہ مشروط، غیر مشروط کی طرح ہوگی" یعنی معلق بالشرط وہ شرط کے پائے جانے پر غیر مشروط کی طرح ہوگی اور حقیقۃً غیر مشروط ہو تو پھر دوسری واقع نہ ہوگی کیونکہ وہ پہلی سے ہی بائنہ ہو جائے گی، اس کے برخلاف جب شرط کو مؤخر ذکر کرے کیونکہ وہاں دونوں طلاقیں بعد والی شرط سے مشروط ہو

جانے کی وجہ سے معلق ہو جائیں گی، اور شرط کو مقدم کیا تو تیسری لغو اور دوسری فوراً واقع۔ اور پہلی شرط سے معلق ہو کر شرط پائے جانے پر واقع ہوگی جب وہ دوسرے خاوند کے بعد دوبارہ اس سے نکاح کرے گا، اھ مختصراً۔ اور بحرالرائق میں ہے اگر کسی نے ایک عورت کو کہا جس دن میں تجھ سے نکاح کروں تو تجھے طلاق اور طلاق اور طلاق، اس کے بعد اس سے نکاح کیا تو ایک طلاق واقع ہوگی اور باقی لغو و باطل ہو جائیں گی، اور

[حواشی] ۱ ردالمحتار باب طلاق غیر المدخول بھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۵۷ ۲ بحر الرائق فصل فی الطلاق غیر المدخول بھا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳ / ۲۹۷

Fatawa Razawiyya, Volume 13

If he said, "You are divorced, and divorced, and divorced on the day I marry you," then because the condition was mentioned later, all three divorces will take effect. This is mentioned in *Hawi Qudsi*. The same ruling applies if he says, "If I marry you, then divorce, and divorce, and divorce," for there will be a difference between placing the condition later or earlier, as stated in *Al-Muhit*. (End quote). In this matter, depending on the use of 'waw' (and), 'fa' (so/then), 'thumma' (then), or any other conjunction, and then in each case with or without a condition, and then mentioning the condition earlier or later, and further considering whether the wife is consummated (madkhula) or unconsummated (ghayr madkhula), a total of eighteen (18) scenarios arise. More scenarios can be formed based on other details. These can be searched in *Bazzaziyah*, *Fath al-Qadir*, *Bahr al-Ra'iq*, and *Hindiyyah*. And Allah Almighty knows best.

Issue 24: From Ghulam Gilani Sahib Punjabi, District Patra, Post Office Patan, village Chanbak Nagar, via Tar and Chaudhry, early Safar 1326 AH. The husband, before the marriage contract, wrote this condition in the *kabin-nama* (marriage deed) for the woman: "If I remain separate from you for a period of one year, or in any case do not look after you, then if you wish, you can leave the husband and give divorce," (End quote). In the deed, such an ambiguous phrase is written in the Bengali language whose literal translation is exactly this. Can its apparent meaning be abandoned for a customary meaning in accordance with the wife's purpose in this situation, such as (You can remove me from your husbandhood and marital status and give yourself a divorce)? But it is not clear to whom the divorce can be given. The attribution of divorce is not towards the wife. In the Bengali language, the husband intentionally wrote such a phrase whose translation becomes something like *Ana minka taliq* (I am divorced from you). And now the wife is the claimant of the occurrence of the condition, and the husband denies it. He says, "I came several times within the period, but the wife's relatives prevented me from going to the wife, meeting her, talking to her, and did not let me enter the house." Both have evidence for their claims. However, the husband does not appoint any cleric as an arbitrator nor goes to anyone. Three years have passed, and it seems that the husband also takes the customary meaning according to the woman's claim from his words and denies the occurrence of the conditions; otherwise, it would have been enough for him in defense against the wife to say that "it does not follow from my statement that the woman has the choice of divorce after the occurrence of the condition." Now this

humble petitioner requests that Your Eminence state what meaning should be taken from this statement, and will the woman's evidence be reliable or what? How many divorces can she give or not?

अगर उसने कहा कि "तुझे तलाक़ और तलाक़ और तलाक़ है जिस दिन मैं तुझसे निकाह करूँ, तो शर्त को बाद में ज़िक्र करने की वजह से तीनों तलाक़ें वाक़े हो जाएँगी, हावी क़ुदसी में यूँ ज़िक्र है, और यही हुक्म है जब कहे "अगर मैं तुझसे निकाह करूँ तो तलाक़ और तलाक़ और तलाक़", कि शर्त को मोअख़्ख़र (बाद में) और मुक़द्दम (पहले) करने पर फ़र्क होगा जैसा कि मुहीत में है। (अतः) इस मसले की वाव और फ़ा या सुम्मा या किसी और अतफ़ (संयोजन) और फिर हर सूरत में ब-शर्त या बग़ैर शर्त और फिर शर्त को मुक़द्दम या मोअख़्ख़र ज़िक्र करने और फिर हर सूरत में बीवी के मदखूला (जिसके साथ सहवास हुआ हो) और ग़ैर मदखूला होने के लिहाज़ से कुल अठारह (18) सूरतें बनती हैं और दीगर तफ़सीलात के एतबार से मज़ीद सूरतें बन सकती हैं, ये बज़ाज़िया, फ़त्हुल क़दीर, बहरुल राइक, और हिन्दिया से तलाश की जा सकती हैं, वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 24: गुलाम गिलानी साहब पंजाबी अज़ ज़िला पतरा डाकखाना पटन मौज़ा चंबक नगर मारफ़त तार व चौधरी अवाइल सफ़र 1326 हिजरी। ज़ौज (पति) ने क़ब्ल अक़्द-ए-निकाह (निकाह से पहले) काबीन नामे में औरत को ये शर्त लिख दी कि "मैं अगर आप से एक बरस की मुद्दत तक जुदा रहूँ या किसी सूरत से आपका ख़बरगीर (देखभाल करने वाला) न हूँ तो अगर आपकी मर्जी हो तो हम को शौहर से छोड़ कर तलाक़ दे सकती हो", इन्तहा। काबीन में बंगला ज़बान में ऐसी इबारत मोहम्मल (अस्पष्ट) लिखी है जिसका तर्जुमा ब-ऐनिही (ठीक-ठीक) यही होता है, आया ये मानी ज़ाहिरी इसका तर्क(छोड़कर) करके उर्फ़ी (प्रचलित) मुवाफ़िक़ ग़र्ज़-ए-ज़ौजा के इस सूरत से ले सकते हैं (तुम मुझको अपनी शौहरी और ज़ौज़ियत से निकाल कर तलाक़ दे सकती हो) मगर ये नहीं मालूम होता कि किसको तलाक़ दे सकते हो। इज़ाफ़त-ए-तलाक़ ज़ौजा की तरफ़ नहीं है, बंगला ज़बान में ज़ौज ने क़स्दन ऐसी इबारत लिखी है कि जिसका तर्जुमा ऐसा कुछ बनता है जैसा कि 'अना मिन्का तालिक़' (मैं तुझसे तलाक़ वाला हूँ) और अब ज़ौजा वुक़ूए-शर्त की मुद्दइया (दावा करने वाली) है और ज़ौज मुनकिर है, वो कहता है कि मैं मुद्दत के अंदर चंद बार आया मगर मुझको ज़ौजा के अक़ारिब (रिश्तेदारों) ने ज़ौजा के पास जाने, मुलाक़ात, बात-चीत करने से रोक दिया और मकान में दाखिल होने नहीं दिया, दोनों अपने दावे पर बैयना (सबूत) रखते हैं, मगर ज़ौज किसी मौलवी को हकम (मध्यस्थ) नहीं बनाता और न किसी के पास आता है, तीन बरस गुज़ार दिया है, और मालूम होता है कि ज़ौज भी अपने अल्फाज़ से उर्फ़ी मानी मुवाफ़िक़ मुद्दआ-ए-औरत लेकर इंकार-ए-वुक़ूए-शुरूत

का करता है वरना ज़ौजा के दफ़ा (बचाव) में उसको इसी क़दर बस है कि कह दे कि मेरी इबारत से ये नहीं निकलता कि औरत को बाद वुक़ूए-शर्त के इख्तियार-ए-तलाक़ का है। अब फ़क़ीर-ए-पुरतक़सीर अर्ज़ करता है कि हुज़ूर वाला इर्शाद फ़रमाएं कि इस इबारत से क्या मतलब लिया जाए और औरत का बैयना मोअतबर (विश्वसनीय) होगा या क्या? कितनी तलाक़ दे सकती है या नहीं?

اگر یوں کہا کہ تجھے طلاق اور طلاق اور طلاق ہے جس دن میں تجھ سے نکاح کروں، تو شرط کو بعد میں ذکر کرنے کی وجہ سے تینوں طلاقیں واقع ہوجائیں گی، حاوی قدسی میں یوں ذکر ہے، اور یہی حکم ہے جب کہے اگر میں تجھ سے نکاح کروں تو طلاق اور طلاق اور طلاق، کہ شرط کو مؤخر اور مقدم کرنے پر فرق ہوگا جیسا کہ محیط میں ہے اھ اس مسئلہ کی واؤ اور فاء یا ثم یا کسی اور عطف اور پھر ہر صورت میں بالشرط یا بغیر شرط اور پھر شرط کو مقدم یا مؤخر ذکر کرنے اور پھر ہر صورت میں بیوی کے مدخولہ اور غیر مدخولہ ہونے کے لحاظ سے کل اٹھارہ ۱۸ صورتیں بنتی ہیں اور دیگر تفصیلات کے اعتبار سے مزید صورتیں بن سکتی ہیں، یہ بزازیہ، فتح القدیر، بحر الرائق، اور ہندیہ سے تلاش کی جاسکتی ہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴: غلام گیلانی صاحب پنجابی از ضلع پترہ ڈاکخانہ پٹن موضع چنبک نگر معرفت تار و چودھری اوائل صفر ۱۳۲۶ھ زوج نے قبل عقد نکاح کے کابین نامہ میں عورت کو یہ شرط لکھ دی کہ میں اگر آپ سے ایک برس کی مدت تک جدا رہوں یا کسی صورت سے آپ کا خبر گیر نہ ہوں تو اگر آپ کی مرضی ہو تو ہم کو شوہر سے چھوڑ کر طلاق دے سکتی ہو، انتہی۔ کابین میں بنگلہ زبان میں ایسی عبارت مہمل لکھی ہے جس کا ترجمہ بعینہا یہی ہوتا ہے، آیا یہ معنی ظاہری اس کا ترک کرکے عرفی موافق غرض زوجہ کے اس صورت سے لے سکتے ہیں (تم مجھ کو اپنی شوہری اور زوجیت سے نکال کر طلاق دے سکتی ہو) مگر یہ نہیں معلوم ہوتا کہ کس کو طلاق دے سکتے ہو۔ اضافت طلاق زوجہ کی طرف نہیں ہے، بنگلہ زبان میں زوج نے قصداً ایسی عبارت لکھی ہے کہ جس کا ترجمہ ایسا کچھ بنتا ہے جیسا کہ انا منك طالق (میں تجھ سے طلاق والا ہوں۔ ت) اور اب زوجہ وقوع شرط کی مدعیہ ہے اور زوج منکر ہے، وہ کہتا ہے کہ میں مدت کے اندر

چند بار آیا مگر مجھ کو زوجہ کے اقارب نے زوجہ کے پاس جانے، ملاقات، بات چیت کرنے سے روک دیا اور مکان میں داخل ہونے نہیں دیا، دونوں اپنے دعوے پر بینہ رکھتے ہیں، مگر زوج کسی مولوی کو حکم نہیں بناتا اور نہ کسی کے پاس آتا ہے، تین برس گزار دیا ہے، اور معلوم ہوتا ہے کہ زوج بھی اپنے الفاظ سے عرفی معنی موافق مدعائے عورت لے کر انکار وقوع شروط کا کرتا ہے ورنہ زوجہ کے دفعہ میں اس کو اسی قدر بس ہے کہ کہہ دے کہ میری عبارت سے یہ نہیں نکلتا کہ عورت کو بعد وقوع شرط کے اختیار طلاق کا ہے۔ اب فقیر پر تقصیر عرض کرتا ہے کہ حضور والا ارشاد فرمائیں کہ اس عبارت سے کیا مطلب لیا جائے اور عورت کا بینہ معتبر ہوگا یا کیا؟ کتنی طلاق دے سکتی ہے یا نہیں

...can she give?

The Answer:

In the case asked, the woman has no authority whatsoever to divorce herself. If the words of the condition in the marriage deed (kabin-nama) are only as mentioned in the question and there is no mention of attributing it to marriage—such as saying "If I marry you" or "When I take you into my wedlock, and after that if such a thing happens, you have the right to divorce"—then the condition in the marriage deed is purely futile and void. This is because its writing occurred before the marriage and there is no attribution to marriage in it. Thus, neither ownership was established nor the attribution of ownership, and such a suspension (of divorce) is purely void. It is stated in *Durr-e-Mukhtar*:

Arabic Original	**Urdu Explanation / Translation**
The condition for it is ownership, such as saying to his wedded wife, "If you go, you are divorced," or attribution to it (marriage), such as "If I marry a woman" or "If I marry you, you are divorced." Therefore, his saying to a stranger woman, "If you visit Zaid, you are divorced," is void. If he then marries her and she visits, divorce will not occur because of the absence of ownership and attribution to it. (Briefly ended)	Its condition is that ownership or attribution towards ownership must exist. For example, ownership is saying to a wedded wife, "If you go, you are divorced." Attribution towards ownership is saying, for instance, "If I marry a certain woman" or to a stranger woman, "If I marry you, you are divorced." So, simply saying to a stranger woman, "If you saw Zaid, you are divorced," would be futile. Therefore, if he later marries that woman and she visits Zaid, divorce will still not occur because here there is neither ownership nor attribution of divorce towards ownership. (T)

And if the marriage deed contains an attribution to the marriage, then this suspension and delegation (of the right to divorce) becomes valid. Its implication is not like "I am divorced from you," as the word "to me" relates to the word "leaving" and not to the word "divorce." And the fact that this divorce is not attributed to the woman in the husband's speech does not negate the validity of the delegation, because in delegation, the attribution in the speech of either the husband or the wife is sufficient. It is stated in *Durr-e-Mukhtar*:

Arabic Original	Urdu Explanation / Translation
Mentioning "self" or "choice" in the speech of either of them is a condition for the validity of the occurrence by consensus, and mentioning it is required.	Mentioning the self or the word "choice" in the speech of either the husband or the wife is a condition for the occurrence of divorce by consensus, and its connection is a condition.

^1 *Durr-e-Mukhtar*, Chapter of Suspension, Mujtabai Press Delhi, 1/230

फ़तावा रज़विया | जिल्द 13 | 13

...दे सकती है?

जवाब:

पूछी गई स्थिति में, स्त्री को किसी भी तरह से स्वयं को तलाक देने का अधिकार नहीं है। यदि निकाहनामे (काबीन-नामा) में शर्त के शब्द केवल वही हैं जो प्रश्न में बताए गए हैं, और निकाह से जोड़ने (अज़ाफ़त इलल निकाह) का इसमें कहीं उल्लेख नहीं है—जैसे कि यह कहना कि "यदि मैं तुमसे निकाह करूँया "जब मैं तुम्हें अपने निकाह में लाऊँ उसके बाद यदि ऐसा हुआ तो तुम्हें तलाक का अधिकार है"—तो निकाहनामे की शर्त पूरी तरह से व्यर्थ और अमान्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसे निकाह से पहले लिखा गया था और इसमें निकाह की ओर कोई संबंध नहीं जोड़ा गया। अतः न तो स्वामित्व पाया गया और न ही स्वामित्व का संबंध, और ऐसा निलंबन (तअलीक़) पूरी तरह से अमान्य है। 'दुर्रे मुख्तार' में उल्लेख है:

अरबी मूलपाठ

इसकी शर्त स्वामित्व है, जैसे अपनी ब्याहता पत्नी से कहना, "यदि तुम गई तो तुम्हें तलाक है," या उससे (निकाह से) जोड़ना, जैसे "यदि मैं किसी स्त्री से निकाह करूँ या "यदि मैं तुमसे निकाह करूँ तो तुम्हें तलाक है।" अतः किसी अजनबी स्त्री से उसका यह कहना, "यदि तुमने ज़ैद से मुलाक़ात की तो तुम्हें तलाक है," व्यर्थ होगा। यदि वह बाद में उससे निकाह कर लेता है और वह मुलाक़ात करती है, तो तलाक नहीं होगा क्योंकि स्वामित्व और उससे संबंध का अभाव है। (संक्षेप में समाप्त)

उर्दू व्याख्या / अनुवाद

इसकी शर्त यह है कि स्वामित्व या स्वामित्व की ओर संबंध (अज़ाफ़त) पाया जाए। स्वामित्व का उदाहरण है ब्याहता पत्नी से कहना, "यदि तुम गई तो तुम्हें तलाक है।" स्वामित्व की ओर संबंध का उदाहरण है जैसे यह कहना, "यदि मैं फलां स्त्री से निकाह करूँया किसी अजनबी स्त्री से कहना, "यदि मैं तुमसे निकाह करूँ तो तुम्हें तलाक है।" तो किसी अजनबी स्त्री से महज़ यह कहना, "यदि तुमने ज़ैद को देखा तो तुम्हें तलाक है," निरर्थक होगा। इसलिए यदि वह बाद में उस स्त्री से निकाह कर ले और वह स्त्री ज़ैद से मिलने चली जाए, तो भी तलाक नहीं होगा, क्योंकि यहाँ न तो स्वामित्व है और न ही स्वामित्व की ओर तलाक का संबंध है। (त)

और यदि निकाहनामे में निकाह के साथ संबंध है, तो यह निलंबन और अधिकार सौंपना (तफ़वीज़) सही हो गया। इसका अर्थ 'मैं तुमसे तलाकशुदा हूँ' जैसा नहीं है, क्योंकि शब्द "मुझको" शब्द "छोड़कर" से संबंधित है न कि शब्द "तलाक" से। और पति के कथन में इस तलाक का स्त्री की ओर संबंध न होना तफ़वीज़ की वैधता के विरुद्ध नहीं है, क्योंकि तफ़वीज़ में पति-पत्नी दोनों में से किसी एक के कथन में संबंध काफी है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी मूलपाठ	**उर्दू व्याख्या / अनुवाद**
उन दोनों में से किसी एक के कथन में "स्वयं" या "विकल्प" का उल्लेख करना आम सहमति से तलाक होने की वैधता के लिए शर्त है, और इसका उल्लेख किया जाना अनिवार्य है।	तलाक होने के लिए पति और पत्नी दोनों में से किसी एक के कथन में स्वयं या विकल्प शब्द का उल्लेख करना आम सहमति (इज्मा) से शर्त है, और इसका जुड़ा होना भी शर्त है।

^1 दुर्रे मुख्तार, बाब-उत-तअलीक़, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/230

पेज 231 ऑफ़ 688

دے سکتی؟

الجواب:

صورتِ مستفسرہ میں عورت کو کسی طرح اپنے نفس کو طلاق دینے کا اختیار نہیں، الفاظِ شرط کابین نامہ اگر اسی قدر ہیں جو سوال میں مذکور ہوئے اور اضافت الی النکاح کا اس میں کہیں ذکر نہیں کہ اگر میں تجھ سے نکاح کروں یا جب میں تجھے اپنی زوجیت میں لاؤں اس کے بعد اگر ایسا واقع ہو تو تجھے اختیار طلاق ہے جب تو شرط کابین نامہ محض فضول و باطل ہے کہ اس کی تحریر قبل نکاح ہوئی اور نکاح کی طرف اس میں اضافت نہیں تو نہ ملک پائی گئی نہ اضافتِ ملک، اور ایسی تعلیق محض باطل ہے درمختار میں ہے :

عربی عبارت	اردو تشریح
شرطه الملك كقوله لمنكوحته ان ذهبت فانت طالق او الاضافة اليه كان نكحت امرأة وان نكحتك فأنت طالق فلغا قوله لاجنبية ان زرت زيد افانت طالق فنكحها فزارت لم تطلق لعدم الملك والاضافة اليه 1انتهى مختصراً۔	اس کی شرط یہ ہے کہ ملکیت یا ملکیت کی طرف اضافت پائی جائے، ملکیت مثلاً منکوحہ بیوی کو کہے اگر تو گئی تو تجھے طلاق، ملکیت کی طرف اضافت مثلاً کہے کہ اگر میں فلاں عورت سے نکاح کروں کسی اجنبی عورت کو کیوں کہے اگر میں تجھ سے نکاح کروں تو تجھے طلاق، تو محض اجنبی عورت کو اس کا یہ کہنا اگر تو نے زید کو دیکھا تو تجھے طلاق، لغو ہوگا، لہٰذا اگر اس کے بعد وہ اس عورت سے نکاح کر لے اور وہ عورت زید کی

عربی عبارت	اردو تشریح
	زیارت کو چلی جائے تو بھی طلاق نہ ہوگی، کیونکہ یہاں نہ ملکیت ہے اور نہ ہی ملکیت کی طرف طلاق کی اضافت ہے، اھ (ت)

اور اگر کابین نامہ میں اضافت الی النکاح ہے تو یہ تعلیق و تفویض صحیح ہو گئی اور اس کا مفاد مثل انامنک طالق کے نہیں کہ لفظ "ہم کو" لفظ "چھوڑ کر" سے متعلق ہے نہ کہ لفظ طلاق سے، اور اس طلاق کی اضافت کلامِ زوج میں عورت کی طرف نہ ہونا کچھ منافی صحتِ تفویض نہیں کہ تفویض میں زن وشوہر دونوں کی اضافت سے ایک کے کلام میں اضافت کافی ہے۔ درمختار میں ہے :

عربی عبارت	اردو تشریح
وذکر النفس اوالاختیار فی کلام احدکلامیھما شرط صحۃ الوقوع بالاجماع، ویشترط ذکرھا	نفس یا لفظ اختیار کا ذکر کرنا خاوند اور بیوی دونوں میں سے کسی ایک کے کلام میں وقوع طلاق کے لئے شرط ہے بالا جماع، اور اس کا متصل ہونا شرط

1^8 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۰

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Arabic Text]: ...connectedly. If it is separated, then if it occurs in the same sitting (majlis), it is valid, otherwise not. And he said: "My choice, my choice" (ikhtiyari) or "a divorce" (talqa), it falls. If she said: "I have chosen" (ikhtartu), then mentioning the choice is like mentioning the self (nafs), and likewise mentioning the divorce. The condition is that this is mentioned in the speech of one of them, it is not specific to the husband's speech as some might think. (End of summary). [Urdu Explanation]: If it is mentioned separately, then if it is in the same sitting, it is correct, otherwise not. Therefore, if the husband said to the wife "ikhtiyari ikhtiyari" (choose, choose) or "ikhtiyari talqa" (choose a divorce), and the wife replied in response "ikhtartu" (I have chosen), then divorce will occur. Because mentioning "choice" (ikhtiyar) is like mentioning the "self" (nafs), and mentioning "divorce" (talqa) is also similar. The condition is that either the husband or the wife mentions the "self" or its equivalent in their speech; it is not necessary that it be exclusively in the husband's speech, as some imagine. (Summarized) (T).

However, the delegation of divorce (tafwiz-e-talaq) that is conditional (muallaq bil-shart) remains limited to the same sitting in which the woman became aware of the occurrence of the condition. After changing the sitting, she no longer has the option to take a divorce. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic Text]: Making it conditional on will (mashi'ah), desire (iradah), pleasure (rida), passion (hawa), or love (mahabbah) is a form of transfer of ownership (tamleek) containing the meaning of making it conditional. Thus, it is restricted to the sitting (majlis). [Urdu Explanation]: Making divorce conditional on the wife's will, desire, pleasure, passion, or love is to make the wife the owner of divorce by way of conditionality. This will be a "transfer of ownership restricted to the sitting" (tamleek muqayyad bi-majlis), meaning the wife's option for divorce will be limited to that sitting. (T).

Here, the woman is the claimant of the condition, and she has not divorced herself yet. As soon as the first sitting ended, she lost the option for divorce. In any case, in the question asked, the woman's claim is not maintainable at all. And Allah the Almighty knows best. Problem 25: 13 Jamadi al-Akhira 1321 AH. What do the scholars of religion and muftis of the manifest Sharia say regarding this issue: Zaid sent his wife from Bareilly to Rampur because of a grievance that arose between Zaid and the maternal uncle of Zaid's wife. He also wrote a note stating, "I am sending my wife to

Rampur happily with her jewelry due to the grievance, and in the future, I will have no connection, and I fix two rupees monthly for the girl's nursing." People asked Zaid, "Are you giving a divorce?" Zaid denied giving a divorce and said, "When my state of anger subsides, I will call her back." After a week, while Zaid's wife was in Rampur...

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Delegation of Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/72-22. 2 Durr-e-Mukhtar, Section on Will (Mashi'ah), Mujtabai Press, Delhi, 1/230.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी पाठ]: ...निरंतरता में। यदि यह अलग हो, तो यदि यह उसी मजलिस (बैठक) में हो तो सही है, अन्यथा नहीं। और कहा: "इख्तियारी इख्तियारी" (मेरा चुनाव) या "तल्हा" (तलाक), तो यह हो जाएगा। यदि उसने कहा: "मैंने चुन लिया," तो चुनाव का उल्लेख करना स्वयं (नफ़्स) का उल्लेख करने के समान है, और इसी तरह तलाक का उल्लेख करना भी। शर्त यह है कि इनमें से किसी एक के भाषण में इसका उल्लेख हो, यह केवल पति के भाषण के लिए विशिष्ट नहीं है जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। [संक्षिप्त समाप्त]। [उर्दू व्याख्या]: यदि इसे अलग से उल्लेख किया जाता है, तो यदि यह उसी बैठक में है तो सही है, अन्यथा नहीं। इसलिए, यदि पति ने पत्नी से कहा "इख्तियारी इख्तियारी" या "इख्तियारी तल्हा", और पत्नी ने जवाब में "इख्तरतु" (मैंने चुन लिया) कहा, तो तलाक हो जाएगा। क्योंकि "इख्तियार" (चुनाव) का उल्लेख करना वैसा ही है जैसे "नफ़्स" (स्वयं) का उल्लेख किया जाए, और "तल्हा" (तलाक) का उल्लेख भी वैसा ही है। शर्त यह है कि पति या पत्नी में से किसी एक के भाषण में "नफ़्स" या उसके प्रतिनिधि का उल्लेख हो; यह केवल पति के भाषण तक ही सीमित नहीं है, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। (संक्षिप्त) (त)।

लेकिन तलाक सौंपना (तफ़वीज़-ए-तलाक़) जो शर्त पर आधारित (मुअल्लक़ बिल-शर्त) हो, उसी बैठक तक सीमित रहता है जिसमें महिला को शर्त पूरी होने का पता चला। बैठक बदलने के बाद उसे तलाक लेने का अधिकार नहीं रहता। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी पाठ]: इच्छा (मशियत), इरादा, रज़ा, चाहत या प्रेम पर आधारित करना एक प्रकार का स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) है जिसमें शर्त का अर्थ समाहित है। इसलिए यह बैठक (मजलिस) तक सीमित है। [उर्दू व्याख्या]: तलाक को पत्नी की इच्छा, इरादे, रज़ा, चाहत या प्रेम पर आधारित करना पत्नी को शर्त के रूप में तलाक का मालिक बनाना है। तो यह बैठक तक सीमित स्वामित्व (तमलीक-ए-मुक़य्यद ब-मजलिस) होगा (यानी पत्नी का तलाक का अधिकार उसी बैठक तक सीमित रहेगा)। (त)।

यहाँ महिला शर्त की दावेदार है और उसने अभी तक खुद को तलाक नहीं दिया है। जैसे ही पहली बैठक समाप्त हुई, उसका तलाक का अधिकार समाप्त हो गया। बहरहाल, पूछे गए मामले में महिला का दावा बिल्कुल भी विचारणीय नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मसला 25: 13 जमादी-उल-आखिर 1321 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या

कहते हैं: ज़ैद ने अपनी पत्नी को बरेली से रामपुर भेज दिया क्योंकि ज़ैद और ज़ैद की पत्नी के मामा के बीच विवाद हो गया था। उसने एक चिट्ठी भी लिखी कि "मैं अपनी पत्नी को खुशी-खुशी उसके गहनों के साथ विवाद के कारण रामपुर विदा करता हूँ और भविष्य में मेरा कोई संबंध नहीं होगा, और मैं लड़की के दूध पिलाने के लिए दो रुपये मासिक तय करता हूँ।" लोगों ने ज़ैद से पूछा, "क्या तुम तलाक दे रहे हो?" ज़ैद ने तलाक से इनकार किया और कहा, "जब मेरा गुस्सा शांत हो जाएगा, तो मैं उसे वापस बुला लूँगा।" एक हफ्ते बाद, जब ज़ैद की पत्नी रामपुर में थी...

1 दुर्रे मुख्तार, बाब तफ़वीज़-उत-तलाक़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/72-22। 2 दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल मशियत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/230।

पृष्ठ 232 का 688

فتاوی رضویہ، جلد سیز دہم، صفحہ ۱۳

متصلا فان کان منفصلا فان فی المجلس صح والا فلا وقال اختیاری اختیاری اوطلقة وقع لوقال ت اخترت فان ذکر الاختیار کذکر النفس وکذا ذکر التطلیقة والشرط ذکر ذلك فی کلام احدهما فلم یختص بکلام الزوج کما ظن 1انتهی مختصرا۔ ہے اگر منفصل ذکر کیا جائے تو اگر اسی مجلس میں ہو تو صحیح ہے ورنہ نہیں، لہذا اگر خاوند نے بیوی کو کہا اختیاری اختیاری یا اختیاری طلقہ، اگر بیوی نے جواب میں اخترت (میں نے اختیار کر لیا) کہا تو طلاق واقع ہو جائیگی کیونکہ "اختیاراً" کا ذکر ایسا ہی ہے جیسے نفس کو ذکر کر دیا جائے اور طلقہ کا ذکر بھی ایسا ہی ہے اور نفس یا قائم مقام نفس کا خاوند بیوی میں سے کسی ایک کے کلام میں ذکر ہونا شرط ہے نہ کہ خاوند کا کلام اس کے لئے مخصوص ہے، جیسا کہ بعض کا گمان ہے اھ مختصراً (ت)

مگر تفویضِ طلاق کہ معلق بالشرط ہو، بعد وقوعِ شرط اسی مجلس پر محدود رہتی ہے جس میں عورت کو وقوعِ شرط کا علم ہوا مجلس بدلنے کے بعد اسے طلاق لینے کا اختیار نہیں رہتا۔

درمختار میں ہے:

التعلیق بالمشیئة او الارادة او الرضاء او الهوی او المحبة یکون تملیکا فیه معنی التعلیق فتقید بالمجلس 2۔ طلاق کو عورت کی مشیت، ارادہ، رضا، خواہش یا محبت پر معلق کرنا بیوی کو تعلیق کے طور پر طلاق کا مالک بنانا ہے تو یہ تملیکِ مقید بمجلس تک محدود ہوگی (یعنی بیوی کو طلاق کا اختیار اسی مجلس تک محدود ہوگا۔ (ت)

یہاں کہ عورت مدعیہ شرط ہے اور اس نے اب تک اپنے کو طلاق نہ دی مجلس اول ختم ہوتے ہی اسے اختیار طلاق نہ رہا، بہر حال صورتِ مسئولہ میں عورت کا دعوی اصلا قابل سماعت نہیں،

واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۵: ۱۳ جمادی الآخرہ ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ کو بریلی سے رام پور بھیج دیا کہ بوجہ رنج ہو جانے کے باہم زید و ماموں زوجہ زید کے اور ایک رقعہ بھی لکھ دیا کہ میں اپنی بیوی کو بخوشی معہ زیور کے بوجہ رنجش کے رامپور کو رخصت کرتا ہوں اور آئندہ مجھ کو کوئی تعلق نہ ہو گا اور دو روپیہ ماہوار لڑکی کے دودھ پلائی کے مقرر کرتا ہوں، لوگوں نے زید سے دریافت کیا کہ کیا طلاق دیتے ہو، زید نے طلاق سے انکار کرکے یہ کہا جس وقت میری حالتِ غصہ درست ہو جائے تو پھر بلوا لوں گا، بعد ایک ہفتہ کے جبکہ زوجہ زید رامپور

1 درمختار باب تفویض الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۲-۲۲ 2 درمختار فصل فی المشیئۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۰

...went away, Zaid wrote a letter to Maulvi Lutf-ul-Allah saying that there was a dispute between me and my wife's maternal uncle. Please resolve the matter and tell them to send my wife to Bareilly by the 1st. If they do not send her, then this is one divorce I am giving. Meanwhile, during the period Zaid had set for his wife to come, while in Rampur and in the presence of his wife, he performed 'ruju' (revocation of divorce). However, Zaid's wife did not come from Rampur to Bareilly within that set period. In such a case, has a divorce occurred or not? If it has, of what kind is it—revocable (raj'i) or irrevocable (ba'in)? After one month, Zaid went to Rampur, and the wife's uncle said that a divorce has occurred and I will not let her go yet. To this, Zaid replied that if the matter is not decided today, I will complete three divorces. Having said this, he left. Has a divorce occurred or not? If it has, of what type—revocable or irrevocable? Some scholars claim that this divorce became irrevocable because it was conditional. What is the status of this saying? State the ruling and be rewarded.

Answer: In the questioned scenario, one revocable (raj'i) divorce has occurred. Zaid's saying "I will complete three divorces" is merely a promise, and a divorce does not occur by a promise. Zaid's going and performing ruju before the time of the occurrence of the divorce, i.e., before the 1st arrived, is completely ineffective because 'ruju' cannot precede the divorce (as revocation cannot happen before the occurrence of divorce). However, Zaid's statement that "if they don't send her by the 1st, then I am giving one divorce" was a conditional divorce. The 1st passed, and the woman was not sent; the condition was met, and the divorce took effect. And this divorce is certainly revocable. Becoming irrevocable (ba'in) due to a condition is absolutely invalid as per the investigation we have already provided. And Allah the Almighty knows best.

Problem 26: From Bengal, Noakhali, Rampur neighborhood, Fazlur Rahman Sahib, 6 Shawwal 1325 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this issue: Zaid wrote a marriage contract (kabin nama) for his wife with the condition that "if I marry any woman other than you, she will be given one, two, three divorces." After this, Zaid married a second woman after taking permission from his wedded wife, but there was no mention of the marriage contract's permission etc. at the time. In the mentioned scenario, would that permission be valid according to Shariah or not?

And is it correct to make such a condition according to Shariah? If he does, what is the ruling? State the ruling and be rewarded.

Answer: In the questioned scenario, as soon as the marriage takes place, one irrevocable (ba'in) divorce occurs on the second wife immediately. She is out of the marriage, but there is no need for 'halala' (remarriage to another before returning to him). If Zaid wants, he can marry her again. Whether he marries another woman or not, the wife will not be divorced again even if the first wife does not give permission.

फतावा रज़विया जिल्द 13

...चली गई, ज़ैद ने मौलवी लुत्फुल्ला साहब के नाम एक पत्र लिखा कि मेरे और मेरी पत्नी के मामा के बीच रंज (विवाद) हो गया है, आप सफाई (सुलह) करा दें और उनसे कह दें कि पहली तारीख तक बरेली भेज दें और अगर नहीं भेजेंगे तो यह एक तलाक देता हूँ। इस दौरान ज़ैद ने अपनी पत्नी के आने के लिए जो अवधि तय की थी, रामपुर में अपनी पत्नी की उपस्थिति में रुजू (तलाक वापस लेना) कर लिया, लेकिन ज़ैद की पत्नी उस तय अवधि के अंदर रामपुर से बरेली नहीं आई। ऐसी स्थिति में तलाक हुआ या नहीं? अगर हुआ तो किस प्रकार का - रजी (प्रतिसंहरणीय) या बाइन (अप्रतिसंहरणीय)? एक महीने बाद ज़ैद रामपुर गया, पत्नी के मामा ने कहा कि तलाक हो गया है, मैं अभी विदा नहीं करूँगा। इस पर ज़ैद ने जवाब दिया कि आज ही इस मामले का फैसला न होगा तो तीन तलाक पूरी करूँगा, यह कहकर चला आया। तलाक हुआ या नहीं? हुआ तो किस प्रकार का - रजी या बाइन? कुछ विद्वानों का कहना है कि यह तलाक मुअल्लक (सशर्त) होने के कारण बाइन हो गया। यह कहना कैसा है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में एक तलाक-ए-रजी (प्रतिसंहरणीय) हुआ है। ज़ैद का यह कहना कि 'तीनों तलाक पूरी करूँगा' मात्र एक वादा है और वादे से तलाक नहीं होता। ज़ैद का तलाक होने की अवधि यानी पहली तारीख आने से पहले जाकर रुजू करना पूरी तरह निष्प्रभावी है क्योंकि 'फैन अर-रुजू ला-यतक़द्दम' (क्योंकि रुजू, तलाक होने से पहले नहीं हो सकता)। ज़ैद का वह कथन कि 'अगर पहली तारीख तक नहीं भेजेंगे तो यह एक तलाक देता हूँ', यह तलाक इस शर्त पर निर्भर था। पहली तारीख बीत गई और औरत को नहीं भेजा गया, शर्त पूरी हो गई और तलाक पड़ गया। और यह तलाक निश्चित रूप से रजी (प्रतिसंहरणीय) है। शर्त के कारण बाइन (अप्रतिसंहरणीय) हो जाना पूरी तरह से गलत है जैसा कि हम पहले ही इसकी तहकीक़ (शोध) पेश कर चुके हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २६: बंगाल, नोआखली, मोहल्ला रामपुर, फजलुर रहमान साहब की ओर से, ६ शव्वाल १३२५ हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी पत्नी को इस शर्त के साथ काबीन नामा (निकाहनामा) लिख दिया कि 'अगर तुम्हारे अलावा कोई दूसरी पत्नी करूँ तो उसे एक, दो, तीन तलाक है'। इसके बाद ज़ैद ने अपनी पत्नी से अनुमति लेकर दूसरा विवाह कर

लिया, लेकिन काबीन की अनुमति आदि का कोई उल्लेख बिल्कुल नहीं आया। उक्त स्थिति में वह अनुमति शरीयत के अनुसार मान्य होगी या नहीं? और शरीयत के अनुसार ऐसी शर्त लगाना सही है या नहीं? अगर लगा ले तो क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में निकाह होते ही दूसरी पत्नी पर तुरंत एक तलाक-ए-बाइन (अप्रतिसंहरणीय) हो गया। वह निकाह से बाहर हो गई लेकिन हलाला की आवश्यकता नहीं है। अगर ज़ैद चाहे तो उससे दोबारा निकाह कर ले, चाहे वह किसी और औरत से निकाह करे, अब पत्नी को तलाक नहीं होगा, भले ही पहली पत्नी अनुमति न दे।

पृष्ठ २३३ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد تیرہ دہم

چلی گئی، زید نے ایک خط بنام مولوی لطف اللہ صاحب کے لکھا کہ باہم میرے اور میری زوجہ کے ماموں میں رنج ہوگیا ہے آپ صفائی کرادیں اور ان سے کہہ دیجئے کہ یکم تاریخ تک روانہ بریلی کردیں اور اگر نہ روانہ کریں گے تو یہ ایک طلاق دیتا ہوں ایسے درمیان میں جو زید نے واسطے آنے میعاد اپنی زوجہ کے مقرر کی تھی رامپور میں بحضور اپنی زوجہ کے رجوع کرلیا لیکن زوجہ زید رامپور سے بریلی کو اس میعاد مقررہ کے اندر نہیں آئی ایسی صورت طلاق واقع ہوئی یا نہیں، اگر ہوئی تو کس قسم کی رجعی یا بائن، بعد ایک ماہ کے زید رامپور گیا، زوجہ کے ماموں نے یہ کہا کہ طلاق ہوگئی ہے میں رخصت ابھی نہ کروں گا، اس پر زید نے جواب دیا کہ آج ہی اس معاملہ کا فیصلہ نہ ہوگا تو تین طلاق پوری کروں گا، یہ کہہ کر چلا آیا، طلاق واقع ہوئی یا نہیں، ہوئی تو کس قسم کی واقع ہوئی رجعی یا بائن؟ بعض علماء کا بیان ہے کہ یہ طلاق بوجہ معلق ہونے کے بائن ہوگئی، یہ قول کیسا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں ایک طلاق رجعی واقع ہوئی، زید کا کہنا کہ تینوں طلاق پوری کروں گا محض وعدہ ہے اور وعدہ سے طلاق نہیں ہوتی، اور زید کا میعاد وقوع طلاق یعنی یکم آنے سے پہلے جاکر رجوع کرنا محض بے اثر ہے فان الرجوع لایتقدم (کیونکہ رجوع، طلاق کے وقوع سے پہلے نہیں ہوسکتا۔ ت) تو نہ رہا مگر زید کا وہ قول کہ یکم تک نہ روانہ کرینگے تو یہ ایک طلاق دیتا ہوں، یہ طلاق اس شرط پر معلق تھی یکم گزر گئی اور عورت کو روانہ نہ کیا، شرط متحقق ہوئی طلاق پڑ گئی، اور یہ طلاق یقیناً رجعی ہے، تعلیق کے سبب بائن ہوجانا باطل قطعی کما قد منا تحقیقہ (جیسا کہ اس کی تحقیق گزر گئی۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶: از بنگالہ نواکھالی محلہ رامپور فضل الرحمان صاحب ۶ شوال ۱۳۲۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بی بی کو اس شرط کے ساتھ کابین نامہ لکھ دیا کہ اگر تمہارے سوا کوئی دوسری بی بی کروں تو وہ ایک دو تین طلاق ہے، بعد اس کے زید نے اپنی منکوحہ سے اجازت لے کر دوسری کرلی مگر کابین اجازت وغیرہ کا ذکر مطلقاً نہیں آیا۔ صورت مذکورہ میں وہ اجازت عند الشرع معتبر ہوگی یا نہیں، اور شرعاً ایسی شرط کرنا درست ہے یا نہیں؟ اگر کرلے تو کیا حکم؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں نکاح ہوتے ہی زوجہ ثانیہ پر معاً ایک طلاق بائن ہوگئی وہ نکاح سے نکل گئی مگر حلالہ کی حاجت نہیں، اگر زید چاہے تو اس سے دوبارہ نکاح کرلے خواہ اور عورت سے نکاح کرے، اب زوجہ کو طلاق نہ ہوگی اگرچہ زوجہ اولیٰ اجازت بھی نہ دے۔

[Top Box - Left: Arabic, Right: Urdu Translation] As for the occurrence of the divorce, it is due to the fulfillment of the condition, and permission does not prevent it. As for it being a single and irrevocable (ba'in) divorce, it is because it occurred before consummation and due to the separation in the pronouncement, as he did not say 'three' (teen) but said 'one, two, three'. The matter of non-occurrence of further divorce if he marries another woman or this same wife again is because the oath is resolved due to the absence of the word 'kullama' (whenever) or its equivalent. And Allah Almighty knows best.

Divorce occurs because the condition was met and permission is not a hindrance to it. However, it is a single irrevocable divorce because this divorce occurred before consummation and before the three were pronounced collectively; this is because the husband did not use the word 'three' but said 'one, two, three'. And there will be no further divorce upon remarriage with another woman or with the same wife because he did not say "kullama" or its synonymous term. And Allah Almighty knows best. (T)

[Body Text] Issue 72: From Bombay, Peerulin Post, Umar Khadi, sent by Munshi Muhammad Siddiq Qudsiyah Jantri, 23 Jumadi al-Akhirah 1327 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Zaid appeared in the court of justice and declared that "from today onwards, if I drink alcohol or create mischief, and those five persons (whose names are listed in the declaration as supervisors) provide proof of my misconduct, then my wife, Musammat Hindah, is out of my marriage and is my divorcee." Following the said pledge and declaration, five or seven reliable persons who were present at the time of writing the declaration found Zaid in an intoxicated state on the street. They informed Zaid's father as well as one of the specified five persons mentioned above at that time of his intoxicated state. However, Zaid's father and the said person, out of fear or out of consideration for Zaid, did not pay attention. A few days after this incident, Zaid created a disturbance with his father while intoxicated and was arrested and fined in the court on the same basis, i.e., drinking alcohol and creating a disturbance. Afterwards, the members of the community gathered, including the aforementioned five persons as judges, and found Zaid guilty. However, regarding the aforementioned case, they have a hesitation* in giving verbal testimony about Zaid's apparent misconduct that occurred. So, in all these circumstances, has the divorce occurred on Zaid's wife or

not? If the divorce occurred, from which day will the Iddah (waiting period) be counted? Explain and be rewarded.

The Answer: The gist of Zaid's statement is that if drinking alcohol or mischief/ disturbance is committed by him, and along with whatever occurs of the two, another matter is necessary: that those five mentioned persons provide proof of his misconduct. Upon the collection of these conditions, his woman is out of his marriage and is his divorcee.

*Note: There is a blank space in the manuscript here. Page 234 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द १३ | पृष्ठ १३

[ऊपरी बॉक्स - बाएँ अरबी, दाएँ उर्दू अनुवाद] तलाक होने का कारण यह है कि शर्त पूरी हो गई और अनुमति इसे नहीं रोकती। रही बात इसके एक और 'बाइन' (अटल) होने की, तो वह इसलिए कि यह निकाह संपन्न होने (दुख़ूल) से पहले हुआ और उच्चारण में अलगाव के कारण हुआ, क्योंकि उसने 'तीन' (तीन) नहीं कहा बल्कि 'एक, दो, तीन' कहा। किसी अन्य स्त्री या इसी पत्नी से दोबारा निकाह पर मज़ीद तलाक न होने का कारण यह है कि उसने 'कुलमा' (जब कभी) या उसके समान शब्द का प्रयोग नहीं किया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

तलाक का वाक़े होना इसलिए है कि शर्त पाई गई और इजाज़त इसके लिए रुकावट नहीं है, लेकिन एक और बाइन तलाक इसलिए कि यह तलाक दुख़ूल से पहले और तीनों के अलग-अलग वाक़े होने से पहले हुई क्योंकि शौहर ने तीन का लफ़्ज़ नहीं कहा बल्कि एक, दो, तीन कहा, और दूसरी औरत से या इसी बीवी से दोबारा निकाह से मज़ीद तलाक न होगी इसलिए कि उसने "कुलमा" या इसका हम मानी लफ़्ज़ नहीं कहा। वल्लाहु तआला आलम (त)

[मुख्य पाठ] मसला ७२: मुंबई से, पीरुलिन पोस्ट, उमर खाड़ी, प्रेषक मुंशी मोहम्मद सिद्दीक़ क़ुदसिया जंतरी, २३ जमादी अल-आख़िरा १३२७ हिजरी। क्या फरमाते हैं दीन के विद्वान इस मामले में कि ज़ैद ने न्याय विभाग (महकमा-ए-क़ज़ा) में उपस्थित होकर इक़रार किया कि "आज से मुस्तक़बिल में अगर मैं शराब पीऊं या फ़ितना व फ़साद करूं और वे पाँच अश्ख़ास (जिनके नाम इक़रारनामे में बतौरे निगरानी दर्ज हैं) मेरी बदचलनी का सुबूत पहुँचा दें तो मेरी ज़ौजा मुसम्मात हिंदा मेरे निकाह से बाहर है और मेरी मुतलक़ा है।" पस उक्त अहद व इक़रार के बाद पाँच या सात मोतबर अफ़राद ने जो तहरीर इक़रारनामा के वक़्त मौजूद थे, ज़ैद को सर-ए-राह नशे की हालत में पाया और ज़ैद के वालिद को और मरक़ूमा बाला पाँच मुअय्यन अश्ख़ास में से एक शख़्स को उसी वक़्त नशे की हालत की ख़बर दी। मगर ज़ैद के वालिद और उक्त शख़्स ने ख़ौफ़ या पास-ए-ख़ातिर (लिहाज) की वजह से तवज्जो न की। और इस वाकये के चंद रोज़ बाद ज़ैद ने अपने वालिद के साथ नशे की हालत में फ़साद किया और गिरफ्तार होकर महकमे में इसी बिना यानी शराबख़ोरी और फ़साद-रेज़ी पर जुर्माना दिया। बाद अज़ाँ अहल-ए-जमाअत जमा हुए जिनमें मज़कूरा सदर पाँच अश्ख़ास भी बतौरे मुंसिफ़ मौजूद थे और ज़ैद को तक़्सीरवार (दोषी) ठहराया। मगर मुक़द्दमा मज़कूरा बाला में ज़ैद की ज़ाहिरी बदचलनी जो वक़ूअ में आई उसको ज़बानी बयान करने में पास

(लिहाज)* रखते हैं। पस इन तमाम सूरतों में ज़ैद की ज़ौजा पर तलाक वाक़े हुई या नहीं? अगर तलाक वाक़े हुई तो इद्दत किस रोज़ से शुमार होगी? बयान फ़रमाएं, सवाब पायें।

अल-जवाब: क़ौल-ए-ज़ैद का हासिल यह है कि अगर उससे शराबख़ोरी या फ़ितना व फ़साद का सुदूर हो और दोनों में से जो कुछ हो उसके साथ एक और अमर ज़रूर हो, वह यह कि पाँच अश्ख़ास मज़कूरीन उसकी बदचलनी का सुबूत पहुँचाएं। इन बातों के जमा होने पर उसकी औरत उसके निकाह से बाहर और उसकी मुतलक़ा है।

*नोट: यहाँ मसौदा (हस्तलिपि) में रिक्त स्थान है। पेज २३४/६८८

[اوپر والا خانہ] اما وقوع الطلاق فلتحقق الشرط والاجازة لا تمنعه واما الواحدة والبينونة فلوقوعه قبل الدخول وتفريقه في الايقاع حيث لم يقل تين بل ايك دوتين امر عدم الوقوع اذ انكح اخرى او هذه مرة اخرى فلان حلال اليمين لعدم كلما وما يقوم مقامه واللہ تعالٰی اعلم۔ طلاق کا وقوع اس لئے ہے کہ شرط پائی گئی اور اجازت اس کے لئے مانع نہیں ہے، لیکن ایک اور بائنہ طلاق اس لئے کہ یہ طلاق قبل دخول اور تینوں کے جدا جدا واقع ہونے سے پہلی واقع ہوئی اس لئے کہ خاوند نے تین کا لفظ نہیں کہا بلکہ ایک، دو، تین کہا، اور دوسری عورت سے یا اسی بیوی سے دوبارہ نکاح سے مزید طلاق نہ ہوگی اس لئے کہ اس نے "کلما" یا اس کا ہم معنی لفظ نہیں کہا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[متن] مسئلہ ۷۲: از بمبئی پیر ولین پوسٹ عمر کھاڑی مرسلہ منشی محمد صدیق قدسیہ جنتری ۲۳ جمادی الآخرہ ۱۳۲۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے محکمہ قضاء میں حاضر ہو کر اقرار کیا کہ آج سے آئندہ میں اگر شراب پیوں یا فتنہ و فساد کروں اور وہ پانچ اشخاص (جن کے نام اقرار نامہ میں بطور نگرانی درج ہیں) میری بد چلنی کا ثبوت پہنچادیں تو میری زوجہ مسماۃ ہندہ میرے نکاح سے باہر ہے اور میری مطلقہ ہے پس بعد عہد و اقرار مذکور کے پانچ یا سات نفر معتبر نے جو تحریر اقرار نامہ کے وقت موجود تھے زید کو بر سر راہ حالت نشہ میں پایا اور زید کے والد کو نیز مرقومہ بالا پانچ اشخاص معینہ میں سے ایک شخص کو اسی وقت حالت نشہ کی خبر دی مگر زید کے والد اور شخص مذکور نے بخوف یا پاس خاطر زید توجہ نہ کی اور اس واقعہ کے چند روز بعد زید نے اپنے والد کے ساتھ حالت نشہ میں فساد کیا اور گرفتار ہو کر محکمہ میں اسی بناء یعنی شراب خوری فساد ریزی پر جرمانہ دیا بعد ازاں اہل جماعت جمع ہوئے جن میں مذکور الصدر پانچ اشخاص بھی بصورت منصف موجود تھے اور زید

کو تقصیر وار گردانا مگر مقدمہ مذکورہ بالا میں زید کی ظاہری بد چلنی جو وقوع میں آئی اس کو زبانی بیان کرنے میں پاس عہ رکھتے ہیں، پس ان تمام صورتوں میں زید کی زوجہ پر طلاق واقع ہوئی یا نہیں؟ اگر طلاق واقع ہوئی تو عدت کس روز سے شمار ہوگی؟ بینوا توجروا الجواب: قول زید کا حاصل یہ ہے کہ اگر اس سے شراب خوری یا فتنہ و فساد کا صدور ہو اور دونوں میں سے جو کچھ ہو اس کے ساتھ ایک اور امر ضرور ہو وہ یہ پانچ اشخاص مذکورین اس کی بد چلنی کا ثبوت پہنچائیں، ان باتوں کے جمع ہونے پر اس کی عورت اس کے نکاح سے باہر اور اس کی مطلقہ ہے، عہ: یہاں مسودہ میں بیاض ہے۔

Fatawa Rizvia, Volume 13

وذلك لانه عطف الثاني على الاول باو ثم الثالث بالواو فكان الشرط وقوع احد الامرين الاولين مع الثالث۔

This is because the second statement is conjoined to the first with the word 'aw' (or), and then the third is conjoined to the second with 'wa' (and). Therefore, the occurrence of the third statement is conditional upon the occurrence of either of the first two. (T)

Imam Fakhr al-Islam Bazdawi (may his soul be sanctified) states in 'Usul':

ولهذا قلنا فيمن قال هذا حر وهذا وهذا ان الثالث يعلق ويخير بين الاولين لان صدر الكلام تناول احدهما عملا بكلمة التخيير والواو تو جب الشركة فيما سبق له الكلام فيصير عطفاً على البعض من الاولين كقوله احدكما حر وهذا۔

For this reason, we said regarding one who says "This is free, or this, and this," that the third becomes free necessarily, and the owner has the choice to designate one of the first two for freedom. This is because the beginning of the speech encompasses one of them due to the effect of the word of choice (or), and afterwards, the conjunction "wa" (and) necessitates partnership in what preceded in speech. Thus, it becomes conjoined to some part of the first two, just as if he had said to the first two: "One of you is free, and this one is free." (T)

In our language, there is a difference between 'conveying the proof of a thing' and 'conveying a thing to proof.' In the first phrase, 'proof' [Note 1] occurs, meaning oral testimony or written evidence, and its conveyance means providing, fulfilling, or presenting it. In the second phrase, 'proof' [Note 2] refers to its literal meaning, and conveying it to proof means proving and justifying it, or ruling for its proof. The first term relates to witnesses and those seeking proof, while the second relates to the ruler and the judge. The most likely intended meaning of 'proof' is its apparent benefit. If the common usage there is the same, then those individuals, while abstaining from even mentioning her misconduct out of fear, awe, or respect and regard, did not 'convey the proof of misconduct.' Since that was the penalty for the condition, and the condition was not fully realized, no divorce took place at all.

لان ماعلق وجود شيئين لا ينزل الا بعد وجودهما جميعاً۔

Because whatever existence of two things is made conditional upon, it will only manifest after both conditions are met simultaneously. (T)

Note 1: In the original, there is a blank space here. Note 2: In the original, it is worm-eaten here.

[1] Usul Imam Fakhr al-Din Bazdawi, Chapter on 'Huruf al-Ma'ani', Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 103.

फ़तावा रिज़विया, खंड 13

وذلك لانه عطف الثاني على الاول باو ثم الثالث بالواو فكان الشرط وقوع احد الامرين الاولين مع الثالث۔

ऐसा इसलिए है क्योंकि दूसरी बात को पहली पर शब्द 'अव' (या) से जोड़ा गया है, और फिर तीसरी को दूसरी पर 'वा' (और) से जोड़ा गया है। इसलिए, तीसरी बात का होना पहली दोनों में से किसी एक के होने पर सशर्त होगा। (त)

इमाम फ़ख़्र अल-इस्लाम बज़दवी (अल्लाह उनकी रूह को पाक रखे) 'उसूल' में फ़रमाते हैं:

ولهذا قلنا فيمن قال هذا حر وهذا وهذا ان الثالث يعلق ويخير بين الاولين لان صدر الكلام تناول احدهما عملا بكلمة التخيير والواو تو جب الشركة فيما سبق له الكلام فيصير عطفاً على البعض من الاولين كقوله احدكما حر وهذا۔

इसी आधार पर हमने कहा कि यदि मालिक ने कहा "यह आज़ाद है, या यह, और यह," तो तीसरा अनिवार्य रूप से आज़ाद हो जाएगा, और मालिक के पास पहले दोनों में से किसी एक को आज़ादी के लिए चुनने का विकल्प होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि बातचीत की शुरुआत विकल्प वाले शब्द (या) के प्रभाव के कारण उनमें से एक को शामिल करती है, और बाद में 'वा' (और) का जुड़ाव पहले की बातचीत में हिस्सेदारी को ज़रूरी बनाता है। इस प्रकार, यह पहले दोनों के किसी हिस्से पर जुड़ाव बन जाता है, जैसे कि उसने पहले दोनों से कहा हो: "तुममें से एक आज़ाद है, और यह आज़ाद है।" (त)

हमारी भाषा में किसी वस्तु का 'प्रमाण पहुँचाना' और किसी वस्तु को 'प्रमाण तक पहुँचाना', इन दोनों में अंतर है। पहले वाक्यांश में 'प्रमाण' [टिप्पणी 1] होता है, अर्थात मौखिक गवाही या लिखित प्रमाण, और उसे पहुँचाने का अर्थ उसे उपलब्ध कराना, पूरा करना या प्रस्तुत करना है। दूसरे वाक्यांश में 'प्रमाण' [टिप्पणी 2] अपने शाब्दिक अर्थ में है, और उसे प्रमाण तक पहुँचाने का अर्थ उसे सिद्ध और तर्कसंगत बनाना या उसके प्रमाण का आदेश देना है। पहले शब्द का संबंध गवाह और प्रमाण चाहने वाले से है, और दूसरे का शासक और न्यायाधीश से। प्रमाण का मुख्य अर्थ स्पष्ट लाभ ही है। यदि वहाँ भी चलन वैसा ही है, तो वे लोग जब डर, खौफ या सम्मान और लिहाज़ के कारण उसके दुराचरण का ज़िक्र तक करने से बचते हैं, तो उनके द्वारा 'दुराचरण का प्रमाण पहुँचाना' नहीं हुआ। चूँकि वह शर्त की सज़ा थी और शर्त पूरी तरह पूरी नहीं हुई, इसलिए तलाक़ बिल्कुल नहीं हुई।

لان ماعلق وجود شيئين لا ينزل الا بعد وجودهما جميعاً. क्योंकि जिस चीज़ का अस्तित्व दो चीज़ों पर टिका हो, वह तभी होगा जब दोनों शर्तें एक साथ पूरी हों। (त)

टिप्पणी 1: मूल प्रति में यहाँ खाली स्थान है। टिप्पणी 2: मूल प्रति में यहाँ कीड़ों द्वारा खाया गया हिस्सा है।

[1] उसूल इमाम फ़ख्र अल-दीन बज़दवी, अध्याय 'हुरूफ अल-मा'नी', नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृष्ठ 103।

وذلك لانه عطف الثاني على الاول باو ثم الثالث بالواو فكان الشرط وقوع احد الامرين الاولين مع الثالث۔

یہ اسلئے کہ دوسری بات کو پہلی پر لفظ او (یا) سے اور پھر تیسری کا دوسری پر "و" سے عطف کیا لہٰذا تیسری بات کا وقوع پہلی دونوں میں سے ایک کے وقوع سے مشروط ہوگا۔ (ت)

امام فخرالاسلام بزدوی قدس سرہ اصول میں فرماتے ہیں:

ولهذا قلنا فيمن قال هذا حر وهذا وهذا ان الثالث يعلق ويخير بين الاولين لان صدر الكلام تناول احدهما عملا بكلمة التخيير والواو تو جب الشركة فيما سبق له الكلام فيصير عطفاً على البعض من الاولين كقوله احدكما حر وهذا۔

اسی بناء پر ہم نے کہا کہ اگر مالک نے کہا "یہ آزاد یا یہ اور یہ ہے" تو تیسرا لازمی طور پر آزاد ہو جائیگا اور پہلے دونوں میں سے کسی ایک کو آزادی کیلئے متعین کرنے کا اختیار مالک کو ہوگا، کیونکہ اس کے کلام کا ابتدائی حصہ پہلے دونوں میں سے ایک کو شامل ہے لفظ "او" کے عمل کی وجہ سے اور بعد میں واو کا عطف پہلے دونوں میں مصداق کو شراکت کو چاہتا ہے لہٰذا پہلے دونوں میں سے جو آزاد ہوگا اس پر عطف ہوگا، یہ یوں ہوا جیسے کسی نے پہلے دونوں کو کہا ہو تم میں سے ایک اور یہ آزاد ہے (ت)

ہماری زبان میں کسی شئی کا ثبوت پہنچانا، اور کوئی شئی ثبوت کو پہنچانا، ان دونوں میں فرق ہے لفظ اول میں ثبوت عہ۱ ہوتا ہے یعنی شہادت زبانی حجت تحریری اور اس کا پہنچانا، مہیا کرنا، ادا کرنا، پیش کرنا، اور لفظ ثبوت عہ۲ اپنے معنی پر اور ثبوت کو پہنچانا ثابت ومدلل کرنا اس کے

ثبوت کا حکم دینا، پہلے لفظ کا تعلق شاہد وساعی ثبوت سے ہے اور دوسرے کا حاکم وقاضی، ثبوت سے بھی غالب مراد ظاہر مفاد یہی ہے، اگر وہاں بھی عرف اسی طرح ہے، تو وہ اشخاص جبکہ بخوف وہراس یا بہ لحاظ وپاس اس کی بدچلنی زبان پر لانے سے بھی احتراز کرتے ہیں تو بدچلنی کا ثبوت پہنچانا ان سے واقع نہ ہوا اور وہ بھی جزاء شرط تھا تو شرط کا مل متحقق نہ ہوئی تو طلاق اصلاً نہ ہوئی،

لان ماعلق وجود شیئین لا ینزل الا بعد وجودھما جمیعاً۔

کیونکہ جس چیز کو دو چیزوں کے وجود پر معلق کیا ہو تو وہ مشروط دونوں شرطوں کے اکھٹے پائے جانے پر متحقق ہوگا۔ (ت)

عہ۱: اصل میں یہاں بیاض ہے۔ عہ۲: اصل میں یہاں کرم خوردہ ہے۔

[1] اصول امام فخر الدین بزدوی باب حروف المعانی نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۱۰۳

And if according to the local custom and idiom, there is no difference and identifying something as proven is also considered its proof, then since the five aforementioned individuals accepted the proof of her misconduct and declared her guilty on that basis, and in reality, after the agreement, acts of drinking or creating mischief and disorder also occurred from her side, then divorce has taken place on Hind because of the convergence of all parts of the two conditions, hence the penalty descends (because due to the presence of all parts of both conditions, the complete penalty will be found - T). And the iddah (waiting period) will be counted from the moment those five individuals gave the verdict of proof of her misconduct, because the occurrence is by the collective, and indeed the iddah is from the time of occurrence (because the occurrence of divorce happened upon the collective of both, and the iddah will undoubtedly be counted from the time of the occurrence of divorce - T). Merely declaring someone guilty, if it's not meant as proving misconduct, will not be sufficient for the occurrence of divorce.

| Arabic: لان الشرط هذا لا ذاك واثبات التقصير مطلقاً لا يستلزم اثبات الدعارة۔ | Urdu: Because this is the condition, not that [one], because the proof of negligence/fault absolutely does not necessitate the proof of misconduct (T). |

Similarly, if in reality, drinking and mischief-making did not occur from her after the agreement, and the proof was falsely provided based on which the aforementioned individuals gave the verdict of proof, then according to Allah, in this case too, divorce will not have occurred on Hind due to the non-fulfillment of the first part of the penalty (due to the first part of the penalty not being found - T). Although in the court of law, due to Sharia proof, the judges may give the verdict of divorce, and when Sharia proof has passed and the aforementioned individuals have given the verdict of proof, and that difference of idiom mentioned above is not present in the local custom, then it is also mandatory for the woman to consider herself divorced, because the woman is like a judge, as mentioned in Al-Fath and Radd al-Muhtar, etc. 1 (because in this matter the woman i.e. the wife holds the status of a judge's ruling, as it is in Fath and Radd al-Muhtar etc. - T). And Allah the Sublime and Most High knows best.

Masla 28: From Bareilly, sent by Maulvi Bashiruddin Sahib, Lawyer, 11 Jumada al-Ula 1326 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter that a person made the following agreement in a certified registered deed with his wedded wife; is

that agreement valid or not? And can that agreement be implemented which is for Mst. Mushtari Jan, a courtesan, daughter of Ballah, the wedded wife of the declarant? The aforementioned woman requested permission from the declarant, therefore, being in sound mind and stable intellect, of his own free will without any coercion or pressure, having understood well, he gives permission to the aforementioned Mst. Mushtari Jan to continue the profession of singing and dancing as per her previous custom.

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/468.

और अगर वहाँ के उर्फ़(प्रचलन) और मुहावरे में यह फ़र्क नहीं है कि किसी चीज़ को साबित करार देने को भी उस चीज़ का सबूत पहचानते हैं, तो जबकि पाँच ज़िक्र किए गए व्यक्तियों ने उसकी बदचलनी का सबूत माना और इस बिना पर उसे क़सूरवार ठहराया और वास्तव में इसके बाद समझौते के बाद शराबखोरी या फ़ितना-ओ-फ़साद का सुदूर भी हुआ हो, तो हिन्द पर तलाक़ हो गई, क्योंकि दोनों शर्तों के तमाम हिस्सों के इकट्ठा होने से सज़ा वाक़े हो गई (क्योंकि दोनों शर्तों के हिस्सों के पाए जाने की वजह से पूरी सज़ा पाई जाएगी - त)। और इद्दत उसी समय से गिनी जाएगी जिस समय उन पाँच व्यक्तियों ने उसकी बदचलनी के सबूत का हुक्म दिया, क्योंकि वाक़ू(घटना) मजमूआ (समूह) से होता है और इद्दत तो वाक़ू के समय से ही होती है (क्योंकि तलाक़ का वाक़ू दोनों के मजमूआ पर हुआ, और इद्दत निस्संदेह तलाक़ के वाक़ू के समय से शुमार होगी - त)। महज़ क़सूरवार ठहराना अगर बदचलनी को साबित मानना न हो, तो तलाक़ के वाक़ू के लिए काफ़ी न होगा।

| अरबी: لان الشرط هذا لا ذاك واثبات التقصير مطلقاً لا يستلزم اثبات الدعارة | उर्दू: क्योंकि यह शर्त है, वह नहीं है क्योंकि तक़्सीर (क़सूर) का सबूत मुतलक़ तौर पर बदचलनी के सबूत को लाज़िम नहीं करता है (त)। |

इसी तरह अगर वास्तव में उससे शराबखोरी और फ़ितना-परदाज़ी समझौते के बाद सादिर (प्रकट) न हुई हो और सबूत गलत तौर पर जुटाया गया हो जिसकी वजह से ज़िक्र किए गए व्यक्तियों ने सबूत का हुक्म दिया हो, तो अल्लाह के नज़दीक इस सूरत में भी हिन्द पर तलाक़ न होगी क्योंकि पहली सज़ा का हिस्सा मुकम्मल नहीं हुआ (पहली सज़ा के न पाए जाने की वजह से - त)। हालांकि अदालत (क़ज़ा) में शरीअत के सबूत के कारण काज़ी तलाक़ का हुक्म दें, और जब शरीअत का सबूत गुज़र गया और ज़िक्र किए गए व्यक्तियों ने सबूत का हुक्म दे दिया हो और मुहावरे का वह फ़र्क जो ऊपर ज़िक्र हुआ वहाँ के उर्फ़ में न हो, तो औरत पर भी लाज़िम है कि अपने आप को मुतलक़ा (तलाक़शुदा) समझे क्योंकि औरत काज़ी की तरह है जैसा कि फ़तह और रद-उल-मुह्तार वगैरह में है 1 (क्योंकि इस मामले में औरत यानी बीवी काज़ी के हुक्म का मकाम रखती है, जैसा कि फ़तह और रद-उल-मुह्तार वगैरह में है - त)। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला २८: बरेली से मुरसला मौलवी बशीर उद्दीन साहब वकील, ११ जमादी-उल-अव्वल १३२६ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने एक तस्दीक़शुदा रजिस्टर्ड इक़रारनामे में अपनी निकाह वाली बीवी से हसब-ए-ज़ैल मुआहदा (समझौता) किया; क्या वह मुआहदा जायज़ है या नहीं? और क्या इस मुआहदे का निफ़ाज़ (कार्यान्वयन) हो सकता है या नहीं, जो कि मुसम्मात मुश्तरी जान तवायफ़, बिंत-ए-बल्लाह, मुक़िर्र (घोषणाकर्ता) की निकाह वाली ज़ौजा (पत्नी) है। मुसम्मात मज़कूर ने मुक़िर्र से इजाज़त की ख़्वास्तगार (आकांक्षी) हुई, लिहाज़ा सेहत-ए-नफ़्स और सुबूत-ए-अक़्ल के साथ, अपनी ख़ुशी से, बिना किसी ज़बर और दबाव के, अच्छी तरह समझकर मुसम्मात मुश्तरी जान मज़कूर को इजाज़त देता हूँ कि नाचने और गाने का पेशा जिस तरह पुराने दस्तूर के मुताबिक करती आई है, वैसे ही करे।

---

१ रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-किनायात, दार-ए-एह़या-उत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, २/४६८।

पृष्ठ २३६/६८८

اور اگر وہاں کے عرف و محاورہ میں یہ فرق نہیں کسی شے کے ثابت قرار دینے کو بھی اس شے کا ثبوت پہچانتے ہیں تو جبکہ پانچ اشخاص مذکورین نے اس کی بد چلنی کا ثبوت مانا اور اس بنا پر اسے تقصیر وار ٹھہرایا ہوا اور واقع میں اس سے بعد معاہدہ شرابخوری یا فتنہ و فساد کا صدور بھی ہوا ہو تو ہندہ پر طلاق ہو گئی لاجتماع کل اجزئی الشرطین فینزل الجزاء (کیونکہ دونوں شرطوں کے اجزاء پائے جانے کی وجہ سے مکمل جزاء پائی جائے گی ۔ت) اور عدت اسی وقت سے لی جائیگی جس وقت ان پانچ اشخاص نے اس کی بد چلنی کے ثبوت کا حکم دیا لان الوقوع بالمجموع وانما العدۃ من حین الوقوع (کیونکہ طلاق کا وقوع دونوں کے مجموعہ پر ہوا، اور عدت بلا شبہ وقوع طلاق کے وقت سے شمار ہوگی ۔ت) مجرد تقصیر وار ٹھہرانا اگر بد چلنی ثابت مان کرنا نہ ہو وقوع طلاق کے لئے کافی نہ ہوگا۔

| لان الشرط ھذا لا ذاك واثبات التقصیر مطلقاً لا یستلزم اثبات الدعارۃ۔ | کیونکہ یہ شرط ہے، وہ نہیں ہے کیونکہ تقصیر کا اثبات مطلق طور پر بد چلنی کے اثبات کو مستلزم نہیں ہے (ت) |

یونہی اگر فی الواقع اس سے شراب خوری و فتنہ پردازی بعد معاہدہ صادر نہ ہوئی اور ثبوت غلط طور پر بہم پہنچایا گیا جس سے اشخاص مذکورین نے حکم ثبوت دیا تو عند اللہ اس صورت میں بھی ہندہ پر طلاق نہ ہوگی لعدم تحقق الجزاء الاول (پہلی جزاء کے نہ پائے جانے کی وجہ سے ۔ت) اگرچہ محکمہ قضاء میں ثبوت شرعی کے باعث قضاۃ حکم طلاق دیں اور جبکہ ثبوت شرعی گزر گیا اور اشخاص مذکورین نے حکم ثبوت دیا ہو اور محاورہ کا وہ فرق کہ اوپر مذکور ہوا وہاں کے عرف میں نہ ہو تو عورت پر بھی لازم ہے کہ اپنے آپ کو مطلقہ جانے لان المرأۃ کالقاضی کما فی

الفتح وردالمحتار وغیرہ 1 (کیونکہ اس معاملہ میں عورت یعنی بیوی قاضی کا حکم رکھتی ہے، جیسا کہ فتح اور ردالمحتار وغیرہ میں ہے۔ت) واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۸: از بریلی مرسلہ مولوی بشیر الدین صاحب وکیل ۱۱ جمادی الاول ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اقرار نامہ مصدقہ رجسٹری میں معاہدہ حسب ذیل اپنی منکوحہ بی بی سے کیا وہ معاہدہ جائز ہے یا نہیں؟ اور اس معاہدہ کا نفاذ ہو سکتا ہے یا نہیں جو کہ مسماۃ مشتری جان طوائف دختر باللہ زوجہ منکوحہ مقر کی ہے مسماۃ مذکور مقرر سے خواستگار اجازت مسماۃ مذکور نے کی ہے لہذا بصحت نفس و ثبات عقل بخوشی خاطر اپنے بلا کسی جبر و دباؤ کے اچھی طرح سمجھ کو مسماۃ مشتری جان مذکور کو اجازت دیتا ہوں کہ پیشہ ناچنے و گانے کا جس طور سے سابق دستور کرتی چلی آئی ہے

---

1 ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۴۶۸/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

...will remain in force and effect as before, and for the purpose of assisting in singing and dancing, whether she resides in Badaun or stays elsewhere, I will not be a hindrance, or obstructer, or interferer at any time or in any state. If at any time loss or harm occurs to the aforementioned woman due to my action or inaction, then in such a state the marriage will be annulled and the woman will have every kind of freedom. Therefore, this agreement is written without fail so that it remains as a record. It is clear that the person making the agreement is from a noble family, not from a clan of traditional performers (Kanjari) etc. From the writing of these words, will the marriage be annulled or not? And can the husband give her permission for singing and dancing and give her permission for work elsewhere or not? And is his permission permissible or not?

The Answer: Such permission is strictly forbidden (Haram Qat'i) and the one who gives permission is a 'Dayyuth' (a man who lacks protective jealousy regarding his female family members). If he does not repent, Paradise is forbidden to him, and the curse of Allah is upon him. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Urdu Translation
Three people will not enter Paradise: the one who is disobedient to his parents, the Dayyuth, and the woman who imitates men. (1. Narrated by al-Hakim and al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman from Ibn 'Umar, may Allah be pleased with them both, with a Sahih chain.)	Three people will not enter Paradise: the one who causes unjust harm to his parents, the Dayyuth, and the woman who adopts a masculine appearance. (Imam Hakim and Bayhaqi narrated this in Shu'ab al-Iman from Abdullah bin Umar, may Allah be pleased with them both, with a Sahih chain. - T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Urdu Translation
Three will never enter Paradise: the Dayyuth, the woman who imitates men, and the habitual drinker of wine. (2. Narrated by al-Tabarani in al-Kabir from Ammar bin Yasir, may Allah be	Three people will never enter Paradise: the Dayyuth, the woman who adopts a masculine appearance, and the wine-drinker. (Tabarani narrated this in al-Kabir

Arabic	Urdu Translation
pleased with them both, with a Hasan chain.)	with a Hasan chain from Ammar bin Yasir, may Allah be pleased with them both. - T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) says:

---

1. Al-Mustadrak lil-Hakim, Book of Faith, Dar al-Fikr Beirut, 1/72; Shu'ab al-Iman, Chapter on Jealousy and Shamelessness, Hadith 10897, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 4/312.
2. Shu'ab al-Iman, Chapter on Jealousy and Shamelessness, Hadith 10800, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut, 4/412; Majma' al-Zawa'id citing al-Tabarani, Chapter on those who are not pleased with their family except with filth, Dar al-Kitab al-Arabi, 4/327.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

...पहले की तरह जारी और कायम रहेगी और नाच-गाने में मदद करने के उद्देश्य से, चाहे वह बदायूँ में रहे या किसी अन्य स्थान पर ठहरे, मैं किसी भी समय और किसी भी स्थिति में बाधा डालने वाला या अवरोधक या हस्तक्षेप करने वाला नहीं बनूँगा। यदि मेरे किसी कार्य या अकर्म से किसी समय उक्त महिला को कोई हानि या कष्ट पहुँचता है, तो ऐसी स्थिति में निकाह (विवाह) रद्द हो जाएगा और महिला को हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त होगी। इसलिए, यह इकरारनामा बिना किसी चूक के लिख दिया गया है ताकि प्रमाण रहे। यह स्पष्ट है कि समझौता करने वाला एक कुलीन परिवार से है, न कि कंजर आदि से। इन शब्दों के लिखे जाने से क्या निकाह रद्द हो जाएगा या नहीं? और क्या पति उसे नाचने-गाने और किसी अन्य स्थान पर काम करने के लिए अनुमति दे सकता है या नहीं? और क्या उसे अनुमति देना जायज़ है या नहीं?

उत्तर: ऐसी अनुमति पूर्णतः वर्जित (हराम कतई) है और अनुमति देने वाला 'दय्यूथ' (अपनी महिलाओं के प्रति गैरत न रखने वाला) है। यदि वह तौबा (प्रायश्चित) नहीं करता है, तो उसके लिए जन्नत (स्वर्ग) हराम है, और उस पर अल्लाह की लानत है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
'तीन व्यक्ति जन्नत में नहीं जाएँगे: अपने माता-पिता की अवज्ञा करने वाला, दय्यूथ और पुरुषों जैसा वेश बनाने वाली महिला।' (1. हाकिम और बैहक़ी ने शुअब अल-ईमान में इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सही सनद के साथ रिवायत किया है।)	तीन व्यक्ति जन्नत में नहीं जाएँगे: अपने माता-पिता को अनुचित कष्ट देने वाला, दय्यूथ और मर्दानी शक्ल बनाने वाली औरत। (इसे हाकिम और बैहक़ी ने शुअब अल-ईमान में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सही सनद के साथ रिवायत किया है। - त)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
'तीन व्यक्ति कभी जन्नत में नहीं जाएँगे: दय्यूथ, पुरुषों जैसा वेश बनाने वाली महिला और शराब का आदी।' (2. तबरानी ने कबीर में अम्मार बिन	तीन व्यक्ति कभी जन्नत में नहीं जाएँगे: दय्यूथ, मर्दानी शक्ल बनाने वाली औरत और शराबी। (इसे तबरानी ने कबीर में हसन सनद के साथ

अरबी	उर्दू अनुवाद
यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हसन सनद के साथ रिवायत किया है।)	अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है। - त)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

---

1. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताब अल-ईमान, दार अल-फ़िक्र बेरुत, 1/72; शुअब अल-ईमान, गैरत और बेशर्मी का अध्याय, हदीस 10897, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 4/312।
2. शुअब अल-ईमान, गैरत और बेशर्मी का अध्याय, हदीस 10800, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरुत, 4/412; मजमा अज़-ज़वाइद तबरानी के हवाले से, उन लोगों के बारे में अध्याय जो अपनी महिलाओं की गंदगी पर राज़ी होते हैं, दार अल-किताब अल-अरबी, 4/327।

पृष्ठ 237/688

بدستور جاری و قائم رکھنے اور بغرض مدد کرنے ناچ و گانے کے خواہ بداؤں سکونت رکھے یا دیگر جگہ قیام کرے میں کسی وقت اور کسی حالت میں مانع اور مزاحم یا حارج نہیں ہوں گا اگر میرے فعل یا ترک فعل سے کسی وقت میں مسماۃ مذکور کا نقصان یا حرج واقع ہو تو ایسی حالت میں نکاح فسخ ہو جائے گا اور مسماۃ کو ہر قسم کی آزادی حاصل ہوگی لہٰذا یہ اقرار نامہ بلا ناغہ لکھ دیا کہ سند رہے، واضح ہے کہ معاہدہ کرنے والا شریف خاندان کنجنے وغیرہ سے نہیں ہے اور ان الفاظ کی تحریر سے نکاح فسخ ہو جائے گا یا نہیں اور شوہر اسے اجازت ناچنے گانے کی اور دیگر جگہ اسے کام کے واسطے اجازت دے سکتا ہے یا نہیں؟ اور اسے اجازت جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: ایسی اجازت حرام قطعی ہے اور اجازت دینے والا دیوث ہے، اگر توبہ نہ کرے تو اس پر جنت حرام، اور اس پر اللہ کی لعنت ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

عربی متن	**اردو ترجمہ**
ثلاثة لا یدخلون الجنة العاق لوالدیه والدیوث ورجلة النساء. ۱۔ رواہ حاکم والبیهقی فی شعب الایمان عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنهما بسند صحیح۔	تین شخص جنت میں نہ جائیں گے اپنے ماں باپ کو ناحق ایذا دینے والا اور دیوث اور مردانی وضع بنانے والی عورت (اس کو حاکم نے اور بیہقی نے شعب الایمان میں عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے صحیح سند کے ساتھ روایت کیا ہے ۔ ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

عربی متن	اردو ترجمہ
ثلاثة لا یدخلون الجنة ابدا الدیوث والرجلة من النساء ومدمن الخمر. ۲۔ رواہ الطبرانی فی الکبیر عن عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ عنہما بسند حسن۔	تین شخص کبھی جنت میں نہ جائیں گے دیوث اور مردانی وضع بنانے والی عورت اور شرابی (اس کو طبرانی نے کبیر میں سند حسن کے ساتھ عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے۔ ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

---

۱ المستدرک للحاکم کتاب الایمان دارالفکر بیروت ۱ / ۷۲، شعب الایمان باب فی الغیرۃ والمذاء حدیث ۱۰۹۹۷ دارالکتب العلمیہ بیروت ۴ / ۳۱۲ ۲ شعب الایمان باب فی الغیرۃ والمذاء حدیث ۱۰۸۰۰ دارالکتب العلمیہ بیروت ۴ / ۴۱۲، مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانی باب فیمن لا یرضی باہلہ بالخبیث دارالکتاب العربی ۴ / ۳۲۷

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

Arabic Text	Urdu Translation
Three people for whom Allah has forbidden Paradise: the habitual wine drinker, the one who is disobedient to his parents, and the dayyuth who tolerates vileness in his family. [1] Reported by Ahmad, an-Nasa'i, al-Bazzar, and al-Hakim, who said its chain is authentic.	Allah Almighty has forbidden Paradise for three individuals: the drunkard, the one who causes pain to his parents, and the dayyuth who allows filthiness to persist in his family. (Reported by Ahmad, Nasa'i, Bazzar, and Hakim with an authentic chain of narration.)

As for divorce, its ruling is that annulment of marriage is through metaphorical expressions (Kinayah). If the husband intended divorce with these words, divorce will occur, otherwise not. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
"Go to Hell" results in divorce if the intention was for dissolution [of marriage], and similarly "Go away from me," "Succeed," and "I have annulled the marriage." [2]	If one says "Go to Hell" with the intention of divorce, divorce will occur (Khulasah). And if one says "Go away from me, attain success, and I have annulled the marriage," in these cases, divorce will occur if intended. (T)

It is stated in Alamgiri:

Arabic Text	Urdu Translation
If he said, "I have annulled the marriage," and intended divorce, it occurs. [3]	If he said, "I have annulled the marriage," and intended divorce, divorce will occur. (T)

Description of freedom follows the same rule. In the given scenario, if the husband admits that he wrote these words with the intention of divorce, then upon the fulfillment of the condition, one irrevocable divorce (Talaq al-Ba'in) will occur for the woman. If he does not admit it, then an oath will be taken from him. If he refuses to take the oath, and the condition has been met, then the ruling of divorce will be issued. If he takes an oath saying, "By Allah, I did not write these words with the intention of divorce," then divorce will not occur, and the woman will remain his wife as before. Subsequently, if he takes a false oath, its sin lies upon him, and the woman is not to be blamed. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
Words like "Get out" carry the possibility of rejecting or answering a question about divorce, while words like "Khalia" (unoccupied) have the possibility of being an insult, and phrases like "You are free" do not carry such possibilities.	Words like "Get out" carry the possibility of rejecting or answering a question about divorce. Words like "Khalia" have the possibility of being an insult...

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Ibn Umar (Radi Allahu Anhu), Dar al-Fikr Beirut 2/29 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors, Mujtabai Press Delhi 1/226 [3] Fatawa Hindiyya, Fifth Chapter on Metaphors, Peshawar Library 1/475

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
तीन लोग ऐसे हैं जिनके लिए अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है: शराब का आदी, अपने माता-पिता की नाफरमानी करने वाला, और दय्यूथ (वह पुरुष जो अपने परिवार की अनैतिकता को सहन करता है)। [1] अहमद, नसई, बज़ार और हाकिम द्वारा वर्णित, और उन्होंने इसे सहीह कहा है।	अल्लाह तआला ने तीन व्यक्तियों पर जन्नत हराम कर दी है: शराबी, माता-पिता को कष्ट पहुँचाने वाला और दय्यूथ जो अपने परिवार में गंदगी बरकरार रखता है। (इसे अहमद, नसई, बज़ार और हाकिम ने सहीह इस्नाद के साथ रिवायत किया है।)

जहाँ तक तलाक का सवाल है, इसका हुक्म यह है कि निकाह का रद्द होना (फस्ख) सांकेतिक शब्दों (किनायाह) से होता है। यदि पति ने इन शब्दों से तलाक का इरादा किया है, तो तलाक हो जाएगा, अन्यथा नहीं। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
"जहन्नुम में जाओ" कहने से तलाक हो जाता है यदि इरादा विच्छेद (खलासा) का था, और इसी तरह "मुझसे दूर जाओ," "सफल हो," और "मैंने निकाह रद्द कर दिया।" [2]	यदि "जहन्नुम में जाओ" तलाक की नियत से कहा गया तो तलाक हो जाएगा (खुलासा)। और अगर यूँ कहा "मेरे पास से चली जाओ, फलाह पाओ, और मैंने निकाह रद्द कर दिया" तो इन सूरतों में तलाक की नियत होने पर तलाक हो जाएगा। (त)

आलमगीरी में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
यदि उसने कहा, "मैंने निकाह रद्द कर दिया," और तलाक की नियत की, तो यह हो जाता है। [3]	यदि कहा "मैंने निकाह रद्द कर दिया" और तलाक की नियत की तो तलाक हो जाएगा। (त)

यही हाल आज़ादी का है। अतः प्रश्नगत स्थिति में यदि पति स्वीकार करता है कि उसने ये शब्द तलाक की नियत से लिखे थे, तो शर्त पूरी होने पर महिला पर एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो जाएगा। और यदि वह स्वीकार नहीं करता है, तो उससे कसम ली जाएगी। यदि वह कसम खाने से इनकार कर देता है, और शर्त पूरी हो चुकी है, तो तलाक का हुक्म होगा। और यदि उसने कसम खा ली कि "वल्लाह मैंने ये शब्द तलाक की नियत से नहीं लिखे थे", तो तलाक का हुक्म नहीं होगा और

महिला पहले की तरह उसकी विवाहित पत्नी बनी रहेगी। फिर यदि वह झूठी कसम खाता है, तो उसका बोझ उसी पर है, महिला पर कोई इल्जाम नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
"निकल जा" जैसे शब्द तलाक के सवाल को ठुकराने या उसका जवाब देने की संभावना रखते हैं, और "खलिया" जैसे शब्द गाली होने की योग्यता रखते हैं और "तुम स्वतंत्र हो" जैसे शब्द ऐसी संभावना नहीं रखते।	"निकल जा" जैसे शब्द तलाक के सवाल के जवाब या उसे ठुकराने की संभावना रखते हैं। "खलिया" जैसे शब्द गाली होने की संभावना...

---

[1] मुसनद अहमद बिन हंबल, इब्ने उमर (रज़ि.) से वर्णित, दार अल-फ़िक्र बेरूत 2/29 [2] दुर्रे मुख्तार, बाबुल किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/226 [3] फतावा हिन्दिया, बाबुल किनायात में पांचवां अध्याय, कुतुब खाना पेशावर 1/475

عربی متن	اردو ترجمہ
ثلثۃ قد حرم اللہ علیہم الجنۃ مدمن الخمر والعاق لوالدیہ والدیوث الذی یقر فی اھلہ الخبث1۔ رواہ احمد والنسائی والبزار والحاکم وقال صحیح الاسناد۔	تین شخصوں پر اللہ تعالٰی نے جنت حرام فرمادی ہے شرابی اور ماں باپ کا موذی اور دیوث کہ اپنے اہل میں گندی بات برقرار رکھے (اس کو احمد، نسائی، بزار اور حاکم نے صحیح الاسناد کہہ کر روایت کیا ت)

رہی طلاق اس کا حکم یہ ہے کہ فسخ نکاح کنایات سے ہے اگر شوہر نے اس لفظ سے طلاق مراد لی ہے طلاق پڑ جائے گی ورنہ نہیں۔ در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
اذھبی الٰی جھنم یقع ان نوی خلاصۃ وکذا اذھبی عنی وافلحی وفسخت النکاح2۔	"جہنم میں جا" طلاق کی نیت سے کہا تو طلاق ہو جائیگی، خلاصہ۔ اور اگر یوں کہا "میرے پاس سے چلی جا، تو فلاح پالے، اور میں نے نکاح فسخ کیا" اور ان صورتوں میں طلاق کی نیت سے طلاق ہو جائیگی۔ (ت)

عالمگیری میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
لو قال فسخت النکاح ونوی الطلاق یقع3۔	اگر کہا "میں نے نکاح فسخ کیا" اور طلاق کی نیت کی تو طلاق ہو جائے گی۔ (ت)

یہی حال آزادی کا ہے پس صورت مسئولہ میں اگر شوہر اقرار کرے کہ یہ الفاظ اس نے بہ نیت طلاق لکھے تھے تو بحال وقوع عورت پر ایک طلاق بائن ہو جائے گی اور اگر وہ اقرار نہ کرے تو اس سے قسم لی جائے گی قسم کھانے سے انکار کر دے تو اب بھی جبکہ شرط واقع ہوئی ہو، وقوع طلاق کا حکم ہوگا اور اگر قسم کھالی کہ واللہ میں نے یہ الفاظ بہ نیت طلاق نہ لکھے تھے تو حکم طلاق نہ ہوگا عورت بدستور اس کی منکوحہ رہے گی، پھر اگر وہ جھوٹ قسم کھالے گا تو اس کا وبال اس پر ہے عورت پر الزام نہیں۔ در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
نحو اخرج یحتمل ردا ونحو خلیۃ یصلح سبا ونحو انت حرۃ لا یحتمل	"نکل جا" جیسے الفاظ رد و جواب سوال طلاق کا احتمال رکھتے ہیں، خلیہ۔ جیسے الفاظ گالی ہونے کا

---

1 مسند احمد بن حنبل مروی از ابن عمر رضی اللہ عنہ دار الفکر بیروت ۲۹/۲ 2 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۶/۱ 3 فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات کتب خانہ پشاور ۴۷۵/۱

[Arabic Boxed Text]: Al-Sabb wal-Radd fafi halat al-rida' ghair al-ghadhab wal-mudhakara tatawaqqaf al-aqsam al-thalatha ta'thiran 'ala niyya lil-ihtimal wal-qawl lahu bi-yamiinihi fi 'adam al-niyya wa yakfi tahlifuha lahu fi manzilihi fa-in aba rafa'athu lil-hakim fa-in nakala farraqa baynahuma mujtaba 1 AH multaqata, wallahu ta'ala a'lam.

[Urdu Translation of Boxed Text]: ...have possibility, and words like "you are free" do not have the possibility of being abuse or a reply. So, in a state of contentment, i.e., not in anger, and if there is no discussion of divorce, the impact of these three types of metaphors (kinaya) will depend on the intention, as there is a possibility of both intention and its absence. In the case of no intention for divorce, the husband's word will be considered credible, and it is sufficient for the wife to have him take an oath at home. If the husband refuses to take the oath at home, the wife should present her case before the authority. If he refuses there as well, the judge should separate them. (From Mujtaba, summarized). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 29: From Sadar Bazaar Cantonment, Beech Mohalla, Badi Mandi, sent by Chaudhary Nanhe Saudagar Charm, 25 Jamadi-ul-Awwal 1336 AH. Bakr married his daughter to Zaid nine years ago. Both Bakr and Zaid are poor. At the time of marriage, Zaid was 15 or 16 years old, and the girl was approximately sixteen years old. Upon marriage, she was sent with Zaid. After three months, she came to Bakr's house and was sent back with Zaid after six months. Six months later, Zaid came with his wife to Bakr's and they started living there. After four months, Zaid left and was arrested on charges of theft. Bakr got Zaid released and brought him back, but after eight or ten days, he ran away with someone else's belongings. Bakr brought him back again; he stayed for about a month, then stole grain from a grocer and ran away. After two and a half months, Zaid returned and signed an agreement. About two months later, Zaid beat his wife, forcibly took her jewelry, and ran away. About three months later, a caste council (panchayat) was held, and the members wrote a council report (panchnama). Zaid came back to live with Bakr after about six months, and two months later, he ran away with people's utensils, etc. At that time, his wife was pregnant. A year later, Zaid's father came to take Zaid's wife, but she refused to go. Then Zaid was summoned through letters, etc., for a period of eight months, but neither did Zaid come nor did he reply to the letters. For nearly a year, the burden of Zaid's wife and child has been on Bakr. Zaid's wife is unhappy with living with Zaid. In such a situation, can Zaid's wife remarry or not?

Copy of Agreement I, Saboor Shah, son of Madhari Shah Faqir, resident of village Rent Maria, Shahpur area, who...

---

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter of Metaphors (Bab al-Kinayat), Mujtabai Press Delhi, 1/224. Page 239 of 688

[अरबी पाठ]: अस-सब्ब वर-रद फफी हालतिल रिज़ा' ग़ैरुल ग़ज़ब वल मुज़ाकरा ततवक़्क़फ़ुल अक़्सामुल सलासा तासीरन अला निय्यह लिल-इहतिमाल वल-क़वल लहू बि-यमीनिही फ़ी अदमिन निय्यह व यकफ़ी तहलीफ़ुहा लहू फ़ी मंज़िलिही फ़-इन अबा रफ़अतुहू लिल-हाकिम फ़-इन नकला फ़र्रक़ा बैनहुमा मुज्तबा १ हिजरी मुल्तक़ता, वल्लाहु तआला आलम।

[उर्दू अनुवाद]: ...संभावना रखते हैं, और "तुम आज़ाद हो" जैसे शब्द गाली या जवाब होने की संभावना नहीं रखते, तो रज़ामंदी की हालत में यानी गुस्से की हालत में न हो और तलाक की चर्चा भी न हो तो इन तीनों प्रकार के किनाया (अप्रत्यक्ष शब्दों) का प्रभाव नीयत पर निर्भर होगा, क्योंकि नीयत होने और न होने दोनों की संभावना है। तलाक की नीयत न होने की स्थिति में पति की बात विश्वसनीय मानी जाएगी और पत्नी का उससे घर में कसम ले लेना काफी है। यदि पति घर में कसम देने से इनकार करे तो पत्नी हाकिम (अधिकारी) के पास अपना मामला पेश करे। यदि वह वहाँ भी इनकार करे तो काज़ी दोनों के बीच जुदाई करा दे। (मुज्तबा से संकलित), और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 29: सदर बाज़ार छावनी, बीच मोहल्ला, बड़ी मंडी, चौधरी नन्हे सौदागर चर्म द्वारा प्रेषित, 25 जमादी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। बक्र ने 9 साल पहले अपनी बेटी की शादी ज़ैद से की थी। बक्र और ज़ैद दोनों गरीब हैं। शादी के वक्त ज़ैद की उम्र 15-16 साल थी और लड़की की उम्र लगभग सोलह साल थी। शादी होते ही उसे ज़ैद के साथ भेज दिया गया। तीन महीने बाद वह बक्र के यहाँ आई और फिर छह महीने बाद ज़ैद के साथ भेज दी गई। छह महीने बाद ज़ैद अपनी बीवी के साथ बक्र के यहाँ आया और रहने लगा। चार महीने बाद ज़ैद चला गया और चोरी के आरोप में गिरफ्तार हो गया। बक्र ज़ैद को छुड़ाकर लाया, मगर आठ-दस दिन बाद वह फिर किसी का सामान लेकर भाग गया। बक्र उसे फिर वापस लाया; वह लगभग एक महीना रहा, फिर एक पंसारी का अनाज चुराकर भाग गया। ढाई महीने बाद ज़ैद फिर आया और एक इकरारनामा लिखकर दिया। लगभग दो महीने बाद ज़ैद अपनी पत्नी को पीटकर, ज़बरदस्ती ज़ेवर लेकर भाग गया। लगभग तीन महीने बाद बिरादरी की पंचायत हुई और पंचों ने पंचनामा लिखकर दिया। ज़ैद लगभग छह महीने बाद फिर बक्र के पास आकर रहने लगा और दो महीने बाद लोगों के बर्तन आदि लेकर भाग गया। उस समय उसकी पत्नी गर्भवती थी। एक साल बाद ज़ैद का पिता उसकी पत्नी को लेने आया, लेकिन पत्नी ने जाने

से इनकार कर दिया। फिर ज़ैद को आठ महीने तक पत्रों आदि के माध्यम से बुलाया गया, लेकिन न तो ज़ैद आया और न ही पत्रों का जवाब दिया। लगभग एक साल से ज़ैद की बीवी और बच्चे का बोझ बक्र पर है। ज़ैद की पत्नी ज़ैद के साथ रहने से असंतुष्ट है। ऐसी स्थिति में क्या ज़ैद की पत्नी का दूसरा निकाह हो सकता है या नहीं?

इकरारनामा की प्रति मैं कि सबूर शाह पुत्र मधारी शाह फ़क़ीर निवासी ग्राम रेंट मारिया, शाहपुर क्षेत्र का हूँ जो कि...

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल किनायात, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/224। पृष्ठ 239/688

السب والرد ففی حالة الرضائ غیر الغضب والمذاکرة تتوقف الاقسام الثلثة تاثیرا علی نیة للاحتمال والقول له بیمینه فی عدم النیة ویکفی تحلیفها له فی منزله فان ابی رفعته للحاکم فان نکل فرق بینهما مجتبی ۱ھ ملتقطا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

احتمال رکھتے ہیں ، اور "تو آزاد ہے" جیسے الفاظ سب و دشنام اور جواب ہونے کا احتمال نہیں رکھتے ، تو حالت رضامندی میں یعنی غصہ کی حالت میں نہ ہو اور مذاکرہ طلاق بھی نہ ہو تو یہ تینوں قسم کے کنایا ت کی تاثیر نیت پر موقوف ہوگی ، کیونکہ نیت اور عدم نیت کا احتمال ہے، اور طلاق کی نیت نہ ہونے میں خاوند کی بات کو معتبر سمجھا جائے گا اور بیوی کا اس سے گھر میں قسم لے لینا کافی ہے ، اور اگر خاوند گھر میں بیوی کو قسم دینے سے انکار کرے تو بیوی حاکم کے پاس اپنا معاملہ پیش کرے ، وہاں بھی اگر خاوند انکار کرے تو قاضی دونوں میں تفریق کردے اھ ملتقطا ، واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۹: از صدر بازار چھاؤنی بیچ محلہ بڑی منڈی مرسلہ چودھری ننھے سوداگر چرم ۲۵ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ بکر نے شادی زید کے ساتھ اپنی دختر کی کی جس کو عرصہ ۹ سال کا ہوا بکر اور زید دونوں فقیر ہیں بوقت شادی زید کی عمر ۱۶، ۱۵ سال کی تھی اور لڑکی کی تقریباً سولہ سال کی ، شادی ہوتے ہی زید کے ہمراہ بھیج دی گئی تین ماہ بعد بکر کے یہاں آئی اور پھر چھ ماہ بعد زید کے ہمراہ بھیج دی گئی چھ ماہ بعد زید مع اپنی بی بی کے بکر کے یہاں آیا اور رہنے لگے چار ماہ بعد زید چلا گیا اور چوری کی علت میں گرفتار ہوگیا ، بکر زید کو چھڑا کر لے آیا مگر آٹھ دس روز کے بعد پھر کسی کی چیز لے کر بھاگ گیا بکر پھر اس کو لے آیا کوئی ایک ماہ رہا پھر ایک بقال کا غلہ چرا کر بھاگ گیا ڈھائی ماہ بعد پھر زید آگیا اور اقرار نامہ منسلک

تحریر کردیا ، کوئی دو ماہ بعد زید اپنی عورت سے مار پیٹ کرکے جبر اً زیور لے کر بھاگ گیا کوئی تین ماہ بعد ذات کی پنچایت ہوئی اور پنچوں نے پنچنامہ منسلک تحریر کیا زید کوئی چھ ماہ بعد پھر بکر کے پاس آکر رہنے لگا اور دو ماہ بعد لوگوں کے برتن وغیرہ لے کر بھاگ گیا اس وقت اس کی عورت کا حامل تھا ایک سال کے بعد زید کا باپ زید کی عورت کو لینے آیا زید کی عورت نے جانے سے انکار کیا پھر زید کو بذریعہ خطوط وغیرہ بلایا گیا جسے عرصہ آٹھ ماہ کا منقضی ہوا ہے نہ زید آیا نہ خطوں کا جواب دیا ، قریب ایک سال سے زید کی بی بی بچے کا بار بکر پر ہے ، زید کی عورت زید کے پاس رہنے سے ناراض مند ہے ، ایسی صورت میں زید کی عورت کا دوسرا نکاح ہوسکتا ہے یا نہیں؟

نقل اقرارنامہ میں کہ سبور شاہ ولد مدھاری شاہ فقیر ساکن موضع رینٹ ماریہ علاقہ شاہ پور کا ہوں جو کہ

---

1 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۲۴ صفحہ 239 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 13

My marriage took place with Musammat Maili daughter of Kunwardi Shah Faqir resident of Chanadi Napich. After marriage, I lived in the house of my father-in-law Kunwardi Shah and also went to Moza Recent Maria due to a dispute. Now, I want to live my life by residing in the house of my father-in-law Kunwardi Shah himself. Therefore, I declare and write that for the rest of my life, I will reside in the house of Kunwardi Shah and whatever I earn or bring by asking, I will give to my father-in-law, wife, and mother-in-law. I will not cause any kind of trouble to my wife, nor will I beat her, nor will I commit any bad deed. If by chance I have to go somewhere outside, I will inform Kunwardi Shah, my wife, and the residents of the neighborhood. If I do not reside in the house of my father-in-law in Chanadi, or commit any bad deed, or leave Chanadi without permission, then my father-in-law Kunwardi Shah has the right to marry off my wife elsewhere. I will not make any kind of claim or dispute in any court or council. Therefore, these few words have been written as a declaration so that it remains as proof. 25 Jamadi-ul-Awwal 1336 AH (30 December).

The Servant _____ Thumb impression of Sapo Barf Shah Witnessed: Allah Bakhsh son of Sheikh Kallu Chaudhary Witnessed: Qamaruddin son of Sheikh Gianthan Witnessed: Rahim Bakhsh son of Sadi Mujawar, resident of Manabur Pari

The Answer: As long as divorce is not proven or the husband does not die, a woman's marriage cannot take place elsewhere. That declaration which he wrote is not sufficient as proof of divorce. Yes, if he admits that by this declaration his intention was to give divorce to the woman, and when he said "if I do such then the father-in-law has the choice to marry her off to whomever he wants," his intention was that "if I do such then she is divorced," then in that case divorce will be established. And since he has already said all these things, from that very moment the woman is out of the marriage bond. If he does not admit it, then an oath should be taken from him. If he takes an oath that "I did not have the intention of divorce with these words," then she remains his wife as before and marrying elsewhere is strictly forbidden. If he refuses to take the oath, then divorce will be established, and if the 'iddah' (waiting period) has passed or passes now, then marriage elsewhere will be permissible. And Allah Ta'ala knows best.

Problem 30: From Jhalod, District Panchmahal, Gujarat, Bombay Circle, sent by Sheikh Umar Wali Dahia, 7 Dhu al-Qi'dah 1336 AH. Muhammad Adam, resident of Mora, proposed marriage to the daughter of Ibrahim, resident of Jhalod. Ibrahim said,

"Write down a few conditions for me, then I will marry her to you." Muhammad Adam accepted and said, "Whatever condition you make is happily accepted."

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं

मेरी शादी मुसम्मात मायली बिन्ते कुंवरदी शाह फ़क़ीर साकिन चनादी नपीच के साथ हुई है। शादी के बाद मैं अपने ससुर कुंवरदी शाह के घर में रहा और विवाद के कारण मौज़ा रीसेंट मारिया भी चला गया। अब मैं अपने ससुर कुंवरदी शाह के घर में ही रहकर अपना जीवन बिताना चाहता हूँ। अतः मैं स्वीकार करता हूँ और लिख देता हूँ कि मैं आजीवन कुंवरदी शाह के घर में ही रहूँगा और जो कुछ भी कमा कर या मांग कर लाऊँगा वह अपने ससुर, पत्नी और सास को दूँगा। मैं अपनी पत्नी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं दूँगा, न उसे मारूँगा और न ही कोई बुरा कार्य करूँगा। यदि दैवयोग से मुझे कहीं बाहर जाना पड़ा, तो मैं कुंवरदी शाह, अपनी पत्नी और मोहल्ले वालों को सूचित करूँगा। यदि मैं चनादी में ससुर के घर में न रहूँ या कोई बुरा कार्य करूँ या बिना अनुमति के चनादी छोड़कर चला जाऊँ तो मेरे ससुर कुंवरदी शाह को अधिकार है कि वह मेरी पत्नी का निकाह दूसरी जगह कर दें। मैं कचहरी या पंचायतों में किसी भी प्रकार का दावा या झगड़ा नहीं करूँगा। इसलिए, यह कुछ शब्द इकरारनामा (घोषणापत्र) के रूप में लिख दिए गए हैं ताकि प्रमाण रहे। २५ जमादी-उल-अव्वल १३३६ हिजरी (३० दिसंबर)।

अल-अब्द (सेवक) _____ सपो बर्फ शाह के अंगूठे का निशान साक्षी: अल्लाह बख्श वल्द शेख कल्लू चौधरी साक्षी: क़मरुद्दीन वल्द शेख ज्ञानथिन साक्षी: रहीम बख्श वल्द सादी मुजावर, निवासी मनाबुर पारी

उत्तर (अल-जवाब): जब तक तलाक सिद्ध न हो जाए या पति की मृत्यु न हो जाए, स्त्री का विवाह दूसरी जगह नहीं हो सकता। उसने जो इकरारनामा लिखा है, वह तलाक के प्रमाण के लिए पर्याप्त नहीं है। हाँ, यदि वह स्वीकार करे कि इस इकरारनामे से मेरा तात्पर्य स्त्री को तलाक देना था, और जब उसने यह कहा कि "यदि मैं ऐसा करूँ तो ससुर को अधिकार है कि जिससे चाहे उसका निकाह कर दे," तो उसका तात्पर्य यह था कि "यदि मैं ऐसा करूँ तो उसे तलाक है," तो ऐसी स्थिति में तलाक सिद्ध हो जाएगा। और चूंकि वह ये सब बातें कह चुका है, तो उसी समय से स्त्री निकाह से बाहर हो गई। यदि वह स्वीकार न करे, तो उससे शपथ ली जाए। यदि वह शपथ ले ले कि "मैंने इन शब्दों से तलाक की नीयत नहीं की थी," तो वह पहले की तरह उसकी पत्नी बनी रहेगी और दूसरी जगह निकाह करना पूर्णतः वर्जित है। यदि वह शपथ लेने से मना कर दे, तो तलाक सिद्ध हो जाएगा, और

यदि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत चुकी है या अब बीत जाए, तो दूसरी जगह निकाह करना जायज़ होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

समस्या ३०: झालोद, जिला पंचमहाल, गुजरात, बॉम्बे सर्कल से, प्रेषक शेख उमर वली दहिया, ७ जुल-क़ादा १३३६ हिजरी। मोरा निवासी मुहम्मद आदम ने झालोद निवासी इब्राहिम की बेटी से विवाह का प्रस्ताव रखा। इब्राहिम ने कहा, "मुझे कुछ शर्तें लिख कर दो, तो मैं तुमसे विवाह कर दूँगा।" मुहम्मद आदम ने स्वीकार किया और कहा कि "जो भी शर्त तुम रखोगे, वह खुशी-खुशी स्वीकार है।"

पृष्ठ २४०/६८८

میری شادی ہمراہ مسماۃ مایلی بنت کنوردی شاہ فقیر ساکن چنادی نپیچ ہوئی ہے، بعد شادی کے میں بخانہ کنور دی شاہ خسر خود رہا اور موضع ریسنٹ ماریہ بھی بوجہ تنازع چلا گیا اب کہ میں بخانہ کنوردی شاہ خسر خود رہ کر زندگی خود بسر کرنا چاہتا ہوں، لہذا اقرار کرتا ہوں اور لکھ دیتا ہوں کہ میں تازندگی خود بخانہ کنوردی شاہ رہوں گا اور جو کچھ کما کر یا مانگ کر لاؤں گا وہ اپنے خسر وزوجہ وخوشدامن کو دوں گا اور زوجہ خود کو کسی طرح کی تکلیف نہ دوں گا نہ ماروں گا اور نہ کوئی فعل خراب کروں گا اور بر تقدیر کہیں باہر چلا جاؤں تو اس کی اطلاع کنور دی شاہ وزوجہ خود واہل محلہ سے کردوں گا اگر میں چنادی بخانہ خسر نہ رہوں یا کوئی خراب فعل کروں اور بدون اجازت کے چنادی سے چلا جاؤں تو کنوردی شاہ خسر میرے کو اختیار ہے کہ دوسری جگہ زوجہ میری کا نکاح کر دے میں کوئی کسی طرح کا دعوی جھگڑا کچہری و پنجوں میں نہ کروں گا، بناء برآں یہ چند کلمے بطور اقرار نامہ لکھ دئے کہ سند رہے، ۲۵ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ (۳۰ دسمبر)

العبـــد نشانی انگوٹھا سپو برف شاہ گواہ شد اللہ بخش ولد شیخ کلو چودھری، گواہ شد قمر الدین ولد شیخ گیانتھن، گواہ شد ولد منا بور پاری رحیم بخش ولد سعدی

مجاور الجواب: جب تک طلاق ثابت نہ ہو یا وہ مر نہ جائے عورت کا نکاح دوسری جگہ نہیں ہو سکتا، وہ اقرار جو اس نے لکھا ثبوت طلاق کے لئے کافی نہیں، ہاں اگر وہ اقرار کرے کہ اس اقرار نامہ سے میری مراد عورت کو طلاق دینا تھی، یہ جو اس نے کہا کہ ایسا کروں تو خسر کو اختیار ہے کہ جس سے چاہے اس کا نکاح کردے اس سے مراد یہ تھی کہ ایسا کروں تو اسے طلاق ہے تو اس صورت میں طلاق ثابت ہو جائیگی، اور جبکہ وہ یہ سب باتیں کر چکا تو اسی وقت سے

عورت نکاح سے نکل گئی، اور اگر وہ اقرار نہ کرے تو اس سے قسم لی جائے، اگر قسم کھا لے گا کہ میں نے ان لفظوں سے طلاق کی نیت نہیں کی تھی تو وہ بدستور اس کی عورت ہے دوسری جگہ نکاح حرام قطعی ہے اور اگر قسم کھانے سے انکار کرے گا تو طلاق ثابت ہو جائے گی، اور اگر عدت گزر گئی یا اب گزر جائے تو دوسری جگہ نکاح جائز ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۰: از جھالود ضلع پنچ محال گجرات احاطہ بمبئی مرسلہ شیخ عمرولی ڈاہیا ۷ ذی القعدہ ۱۳۳۶ھ محمد آدم ساکن مورا نے ابراہیم ساکن جھالود اس کی لڑکی کی شادی کا پیام کیا، ابراہیم نے کہا کہ مجھ کو چند شرطیں لکھ دو تو میں تم سے شادی کر دوں، محمد آدم نے قبول کیا اور کہا کہ جو شرط کرو بخوشی منظور ہے،

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

After that, the person named Adam wrote a stamp paper, the text of which follows: Ms. Fatima daughter of Ibrahim, resident of Jhalod, age 16 years, and Muhammad Adam, resident of Mora, age 16 years. I marry you according to the customs of the community. After the marriage, we will live as husband and wife. Later, regarding this, I give 75 tolas of silver as dowry (Mahr) according to the community custom agreement; I have no right of any kind over this jewelry. And I pledge that I will leave my homeland Mora and reside in Jhalod. Despite this, if my intention changes and I take you from Jhalod to another place or any village or outside Jhalod by beating you, then without [further] divorce, divorce, divorce, divorce shall occur. I have written this valid agreement, which is acceptable to me and my heirs. Besides this, I will keep you pleased and happy within twelve (12) months and will live [with you]. If I act contrary to this, then consider it according to the above writing; this written [statement] is correct. If I separate from you or leave for another place within twelve months, then consider it divorce. This written [statement] is correct. After writing the mentioned document, it was read out to the girl. The girl accepted it. After twenty-seven (27) days, the marriage took place according to the community customs and the conditions mentioned above, and the girl was sent off (Rukhst). She lived in Jhalod for three years. After three years, one day, without the woman's consent, he set off on a ride from Jhalod towards the village of Jeebaran. He might have traveled about three-quarters of a mile when her father came to know that he had taken the girl. At that time, he himself and three or four men from the community ran and stopped the cart. They asked the girl, "Where are you going?" She said, "I am not going willingly, but he is taking me to Jeebaran by beating me." They told the girl to get down from the cart; she got down immediately. They said to Muhammad Adam, "You have written an agreement, where are you taking her?" He replied, "I am not taking her to my village; I am taking her to another place, i.e., I am going to open a shop myself." They said, "You have broken the condition, therefore the woman is divorced." Then they went to the Qazi. He asked, "Did you write a conditional document?" He said, "Yes, indeed I have written it, and I am not taking her to Mora; I am going to another village on my own."

The Answer:

The condition did not specify "his own village"; his excuse is wrong. It was general: taking her from Jhalod to any other place. However, the condition involves "taking her by beating". Proof of this must either come from reliable witnesses or Adam must

confess that yes, he took her by beating. The woman's statement alone is not sufficient. If taking her by beating is proven through witnesses or confession, then three divorces have occurred. She cannot marry him without Halala.

Allah Almighty said: "So if he divorces her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until she has married another husband." (1)

Allah the Almighty has said: If the husband gives a third divorce, then the woman will not be lawful until she marries another person. (T)

(1) Al-Quran Al-Karim 2/230

फतावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

इसके बाद मुसम्मी आदम ने एक स्टांप लिख दिया, जिसका विवरण नीचे दिया गया है: मुसमात फातिमा पुत्री इब्राहिम निवासी झालोद उम्र 16 वर्ष, मोहम्मद आदम निवासी मोरा उम्र 16 वर्ष, मैं तुम्हारे साथ बिरादरी की रस्म के अनुसार शादी करता हूं। शादी के बाद हम और तुम पति-पत्नी की तरह रहेंगे। बाद में इसके संबंध में बिरादरी की रस्म के अनुसार इकरारनामा (अनुबंध) के तौर पर 75 तोला चांदी मेहर के बदले देता हूं, इस गहने पर मेरा किसी प्रकार का अधिकार नहीं है। और इकरार करता हूं कि अपना वतन मोरा छोड़ कर झालोद में निवास करूंगा। इसके बावजूद अगर मेरी नीयत बदली और मैं तुम्हें मारपीट कर झालोद से दूसरी जगह या किसी गांव या झालोद से बाहर ले जाऊं तो बिना [दोबारा] तलाक दिए, तलाक, तलाक, तलाक हो जाएगा। यह इकरारनामा मैंने सही लिखा है जो मुझे और मेरे वारिसों को मंजूर है। इसके अलावा मैं तुम्हें बारह (12) महीनों के अंदर राजी और खुश रखूंगा और रहूंगा। अगर इसके खिलाफ करूं तो उपरोक्त लिखित के अनुसार समझना, यह लिखा हुआ सही है। अगर बारह महीने तक मैं तुमसे अलग रहूं या दूसरी जगह छोड़ कर चला जाऊं तो तलाक समझना, यह लिखा हुआ सही है। दस्तावेज लिखने के बाद उक्त लड़की को सुनाया गया, लड़की ने स्वीकार कर लिया। सत्ताइस (27) दिन बाद बिरादरी की रस्म और ऊपर लिखी शर्तों के साथ निकाह हुआ और लड़की की रुखसती हुई। तीन साल तक झालोद में रही। तीन साल बाद एक दिन महिला की मर्जी के बिना झालोद से जीबरन गांव के लिए सवारी पर सवार होकर चला। करीब पौन मील गया होगा कि उसके पिता को पता चला कि वह लड़की को ले गया है। उस समय वह खुद और बिरादरी के तीन-चार आदमी दौड़ कर गए और गाड़ी रोक ली। लड़की से पूछा कि तुम कहां जा रही हो? उसने कहा, "मैं खुशी से नहीं जा रही हूं, बल्कि वह मुझे मारपीट कर जीबरन ले जा रहा है।" लड़की से कहा गया कि गाड़ी से उतर जाओ, वह तुरंत उतर आई। मोहम्मद आदम से कहा गया कि तुमने इकरारनामा लिखा है, अब कहां ले जा रहे हो? उसने जवाब दिया कि मैं अपने गांव नहीं ले जा रहा हूं, दूसरी जगह ले जा रहा हूं यानी खुद दुकान करने जा रहा हूं। उन्होंने कहा कि तुमने शर्त तोड़ दी है इसलिए महिला को तलाक हो गया। फिर काजी के पास गए, उन्होंने पूछा कि क्या तुमने शर्तिया दस्तावेज लिखा है? उसने कहा, "हां, बिल्कुल मैंने लिखा है और मैं मोरा नहीं ले जा रहा हूं, दूसरे गांव खुद जा रहा हूं।"

उत्तर:

शर्त में अपने गांव की विशिष्टता नहीं थी, उसका बहाना गलत है। उसमें सामान्य बात थी कि झालोद से किसी दूसरी जगह ले जाऊं। लेकिन शर्त में मारपीट कर ले जाना शामिल है। इसका प्रमाण या तो विश्वसनीय गवाहों से हो या आदम स्वीकार करे कि हाँ, वह मारपीट कर ले गया। केवल महिला का कहना पर्याप्त नहीं है। यदि गवाहों या स्वीकारोक्ति से मारपीट कर ले जाना सिद्ध हो जाए, तो तीन तलाक हो गए। बिना हलाला के वह उससे निकाह नहीं कर सकती।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "फिर अगर वह उसे (तीसरी बार) तलाक दे दे, तो उसके बाद वह उसके लिए तब तक वैध नहीं होगी जब तक कि वह किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले।" (1)

अल्लाह तआला ने फरमाया: अगर पति तीसरी तलाक दे दे तो औरत हलाल नहीं होगी जब तक कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले। (T)

(1) अल-कुरान अल-करीम 2/230

पृष्ठ 241 का 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم، ۱۳

بعد اس کے مسمیٰ آدم نے ایک اسٹامپ تحریر کردیا، تحریر ذیل مسماۃ فاطمہ بنت ابراہیم ساکن جھالود عمر ۱۶ سال محمد آدم ساکن مورا عمر ۱۶ سال، میں تمہارے ساتھ برسم برادری شادی کرتا ہوں، بعد شادی ہونے کے ہم اور تم بطور مرد عورت کے رہیں گے، بعد میں اس کے متعلق اقرار نامہ برادری کی رسم کے مطابق زیور ۷۵ اتولہ چاندی کے بعوض مہر دیتا ہوں اس زیور پر میرا کسی قسم کا حق نہیں، اور اقرار کرتا ہوں کہ اپنا وطن مورا چھوڑ کر جھالود میں سکونت کروں گا باوجود اس کے اگر میری نیت میں فرق اور تم مار پیٹ کر کے جھالود سے دوسری جگہ یا کوئی گاؤں یا جھالود سے باہر لے جاؤں تو بغیر طلاق کے طلاق طلاق طلاق واقع ہو، یہ اقرار نامہ صحیح میں نے لکھ دیا مجھے اور میرے وارثوں کو منظور ہے سوائے اس کے میں تم کو بارہ ۱۲ ماہ کے اندر راضی اور خوش رکھوں گا اور رہوں گا اگر خلاف اس کے کروں تو تحریر بالا کے مطابق سمجھنا، یہ لکھا ہوا صحیح ہے، اگر بارہ ماہ تک میں تم سے جدا ہوں یا دوسری جگہ چھوڑ کر چلا جاؤں تو طلاق سمجھنا یہ لکھا ہوا درست ہے بعد تحریر دستاویز مذکور لڑکی کو سنایا گیا لڑکی نے قبول کیا، ستائیس ۲۷ روز بعد برسم برادری بشرائط مرقومہ بالا شادی کرکے لڑکی کو رخصت کیا۔ تین سال تک جھالود میں رہی بعد تین سال کے ایک روز بلا رضا مندی عورت کے جھالود سے جیبرن گاؤں میں سوار کرکے چلا، قریب پون میل گیا ہوگا کہ اس کے والد کو معلوم ہوا کہ لڑکی کو لے گیا اس وقت وہ خود اور برادری کے تین چار آدمی دوڑ کر گئے اور گاڑی روک لی، لڑکی سے دریافت کیا کہ تو کہاں جاتی ہے؟ کہا میں بخوشی نہیں جاتی بلکہ مجھے مار پیٹ کر جیبرن لئے جاتا ہے، لڑکی سے کہا کہ گاڑی سے اتر، فوراً اتر آئی، محمد آدم سے کہا کہ تو نے اقرار نامہ لکھ دیا ہے اور کہاں لئے جاتا ہے، جواب دیا کہ میں اپنے گاؤں نہیں لے جاتا

دوسری جگہ لے جاتا ہوں یعنی خود دکان کرنے جاتا ہوں، انہوں نے کہا کہ تم نے شرط توڑ دی اس لئے عورت کو طلاق ہو گئی، پھر قاضی کے پاس گئے انہوں نے کہا کہ تو نے شرطی دستاویز لکھ دیا ہے کہاہاں بیشک میں نے لکھ دیا ہے اور میں موری نہیں لے جاتا ہوں دوسرے گاؤں خود ہی جاتا ہوں۔

الجواب:

شرط میں اپنے گاؤں کی تخصیص نہ تھی اس کا عذر غلط ہے اس میں عام تھا کہ جھالود سے کسی دوسری جگہ لے جاؤں لیکن شرط میں مار پیٹ کر لے جانا ہے، اس کا ثبوت یا تو گواہانِ ثقہ سے ہو یا آدم اقرار کرے کہ ہاں مار پیٹ کر لے گیا فقط عورت کا کہنا کافی نہیں اگر گواہان یا اقرار سے مار پیٹ کر لے جانا ثابت ہو تو تین طلاقیں ہو گئیں بے حلالہ اس سے نکاح نہیں کر سکتی۔

قال اللہ تعالیٰ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۔ ۱ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اگر خاوند تیسری طلاق دے دے تو عورت حلال نہ ہوگی و تا وقتیکہ وہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرلے۔ (ت)

۱- القرآن الکریم ۲/۲۳۰

And if there are no witnesses, or if those witnesses are not reliable according to Sharia, and the person does not confess to taking her away by force, then an oath shall be taken from the person. If he takes an oath that he did not take her away by force, then divorce will not occur. It is not necessary for this oath to be taken before a judge; it can also be taken at home. As stated in 'Durr-e-Mukhtar':

[Arabic Box] 'Yakfi tahlifuhu laha fi manzilihi'[1] [Urdu Explanation] It is sufficient to take the husband's oath in his own home. (T)

Then, if he takes the oath and the woman knows he has lied, it is mandatory for her to consider herself divorced with three divorces. Since the divorce is not proven, she cannot use the government for compulsion. Therefore, she should surrender her dower (Mehr) or give other property to obtain an open divorce from him. If he does not give a divorce, she should flee from him however possible. If she is unable to do so, she is helpless and the sin lies upon the husband. As stated in 'Radd-ul-Muhtar':

[Arabic Section]: 'Iza sami'at aw akhbaraha adlun la yahillu laha tamkinuhu bal tafdi nafsuha bi-malin aw tahrub fa'in halafa wa la bayyata laha fal-ithmu alaihi iza lam taqdir ala al-fida'i aw al-harbi[2] (in summary).'

[Urdu Section]: 'If she hears herself, or a reliable person informs her, of three divorces from the husband, it is not permissible for her to allow him access for intercourse. Instead, she should try as much as possible to obtain an open divorce by giving property or by fleeing to save herself. If the husband takes an oath not to give divorce and the woman has no witnesses for the divorce, and the wife cannot save herself by giving property or fleeing, then the sin will be upon the husband (in summary). And Allah Almighty knows best (T).'

Problem 31: From Jaunpur, sent by Maulana Abdul Awwal Sahib, 28 Ramadan 1338 AH.

Zaid wrote a condition in his wife's marriage contract that if he enters into a second marriage without obtaining a registered permission letter from her and without paying her full dower, the new wife will be considered divorced with three divorces from his side. Now the situation is that the wife waived the dower and the husband obtained an unregistered permission letter and entered into a second marriage. What is the Shariah ruling in this matter, as the permission letter is unregistered and

the dower was not fulfilled but rather waived by the wife; has the new wife become divorced?

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter of Metaphors (Al-Kinayat), Mujtabai Press Delhi, 1/224 [2] Radd-ul-Muhtar, Chapter of Explicit Statements (Al-Sarih), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/434

और यदि गवाह न हों या वे गवाह शरीयत के अनुसार विश्वसनीय न हों, और व्यक्ति उसे मारपीट कर ले जाने का स्वीकार न करे, तो व्यक्ति से शपथ ली जाएगी। यदि वह शपथ लेता है कि वह उसे मारपीट कर नहीं ले गया, तो तलाक नहीं होगा। इस शपथ का न्यायाधीश के सामने होना आवश्यक नहीं है; यह घर पर भी ली जा सकती है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स] 'यकफी तहलीफुहू लहा फी मंज़िलिही'[1] [उर्दू स्पष्टीकरण] पति की शपथ उसके अपने घर में ही लेना पर्याप्त है। (त)

फिर यदि वह शपथ ले ले और स्त्री जानती हो कि उसने झूठ बोला है, तो स्त्री पर अनिवार्य है कि वह स्वयं को तीन तलाक के साथ तलाकशुदा समझे। चूंकि तलाक सिद्ध नहीं हुआ है, वह सरकार के माध्यम से विवश नहीं कर सकती। इसलिए, वह अपना महर छोड़कर या अन्य संपत्ति देकर उससे खुल्लम-खुल्ला तलाक ले ले। यदि वह तलाक न दे, तो वह जिस प्रकार भी संभव हो उसके पास से भाग जाए। यदि वह इस पर भी सक्षम न हो, तो वह मजबूर है और पाप पति पर है। 'रद्दुल मुहतार' में है:

[अरबी खंड]: 'इज़ा समिअत औ अखबरहा अदलुन ला यहिल्लु लहा तमकीनुहू बल तफ़्दी नफ़्सुहा बि-मालिन औ तहरूबे फ़इन हलफ़ा वा ला बय्यता लहा फल-इश्मु अलैहि इज़ा लम तक़दिर अला अल-फ़िदाई औ अल-हर्ब[2] (संक्षेप में)।'

[उर्दू खंड]: 'यदि स्त्री स्वयं पति की ओर से तीन तलाक सुन ले, या किसी विश्वसनीय व्यक्ति ने उसे यह सूचना दी हो, तो पत्नी के लिए हलाल (जायज़) नहीं है कि वह पति को संभोग का अवसर दे। बल्कि जैसे भी बन पड़े, संपत्ति देकर खुल्लम-खुल्ला तलाक ले ले या भागकर स्वयं को बचाए। और यदि पति तलाक न देने की शपथ ले ले और तलाक पर स्त्री के पास गवाह न हों और पत्नी संपत्ति के बदले या भागकर स्वयं को न बचा सके, तो अब पाप पति पर होगा (संक्षेप में)। वल्लाहु तआला आलम (त)।'

मसला 31: जौनपुर से, प्रेषक मौलवी अब्दुल अव्वल साहिब, 28 रमज़ान 1338 हिजरी।

ज़ैद ने अपनी पत्नी के निकाहनामे में शर्तों में से एक शर्त यह लिखी कि यदि मैं तुमसे पंजीकृत अनुमति पत्र प्राप्त किए बिना और तुम्हारा पूरा महर अदा किए बिना दूसरा निकाह करूँ तो नई पत्नी

को मेरी ओर से तीन तलाक होंगे। अब स्थिति यह है कि पत्नी ने महर माफ़ कर दिया और पति ने अपंजीकृत अनुमति पत्र प्राप्त करके दूसरा निकाह कर लिया। अब शरीयत के अनुसार इस मामले में क्या आदेश है कि अनुमति पत्र अपंजीकृत है और महर का भुगतान नहीं हुआ बल्कि पत्नी ने माफ़ कर दिया, तो क्या नई पत्नी तलाकशुदा हो गई?

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-किनायात, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/224 [2] रद्दुल मुहतार, बाब अल-सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/434

اور اگر گواہ نہ ہوں یا وہ گواہ ثقہ شرعی نہ ہوں اور آدم مار پیٹ کر لے جانے کا اقرار بھی نہ کرے تو آدم سے حلف لیا جائے اگر حلف کرے گا کہ مار پیٹ کر نہیں لے گیا تو طلاق نہ ہوگی اور اس حلف کا حاکم کے سامنے ہونا ضرور نہیں مکان پر بھی لیا جا سکتا ہے، در مختار میں ہے:

[Arabic Box] یکفي تحلیفہالہ فی منزلہ [1] [Urdu Explanation] بیوی کا خاوند سے اپنے گھر میں ہی قسم لے لینا کافی ہے۔ (ت)

پھر اگر حلف کر لے اور عورت جانتی ہو کہ اس نے جھوٹا کیا، تو عورت پر لازم ہے کہ اپنے آپ کو تین طلاقوں سے مطلقہ سمجھے اور بوجہ طلاق نہ ثابت ہونے کے بذریعہ حکومت جبر نہیں کر سکتی لہذا اپنا مہر چھوڑ کر یا اور مال دے کر اس سے اعلانیہ طلاق لے، اگر طلاق نہ دے تو جس طرح بن پڑے اس کے پاس سے بھاگے اور اگر اس پر بھی قدرت نہ ہو تو مجبور ہے اور وبال شوہر پر ہے، ردالمحتار میں ہے :

[Arabic Section]: اذا سمعت اواخبرھا عدل لایحل لھا تمکینہ بل تفدی نفسھا بمال او تھرب فان حلف ولا بینۃ لھا فالاثم علیہ اذا لم تقدر علی الفداء او الھرب[2] (باختصار)

[Urdu Section]: اگر خود عورت، مرد کی طرف سے تین طلاقیں سن لے، یا کسی عادل شخص نے اس کو یہ اطلاع دے دی تو پھر بیوی کو حلال (جائز) نہیں کہ وہ خاوند کو اپنے پر جماع کا موقع دے بلکہ جیسے بن پڑے مال دے کر اعلانیہ طلاق لے یا بھاگ کر اپنے کو بچائے، اور اگر خاوند طلاق نہ دینے کی قسم کھا لے اور طلاق پر عورت کے پاس گواہ نہ ہوں اور بیوی

مال کے بدلے یا بھاگ کر اپنے آپ کو نہ بچا سکے تو اب گناہ خاوند پر ہوگا (باختصار)۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۱: از جونیور مرسلہ مولوی عبدالاول صاحب ۲۸ رمضان ۱۳۳۸ھ

زید نے اپنی زوجہ کے کابین نامہ میں منجملہ شرائط ایک شرط یہ لکھی کہ اگر بغیر رجسٹری شدہ اجازت نامہ تم سے حاصل کئے ہوئے اور بغیر تمہارا کل مہر ادا کئے ہوئے دوسرا نکاح کروں تو منکوحہ جدیدہ کو میری طرف سے تین طلاق ہوں گی، اب صورت حال یہ ہے کہ زوجہ نے مہر معاف کر دیا اور اجازت نامہ بلارجسٹری شدہ شوہر نے حاصل کر کے دوسرا نکاح کر لیا، اب شرعاً اس مسئلہ میں کیا حکم ہے کہ اجازت نامہ بلارجسٹری شدہ ہے اور ایفائے مہر نہیں پایا بلکہ زوجہ نے معاف کر دیا تو منکوحہ جدیدہ مطلقہ ہو گئی

[1] در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۴ [2] ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۳۴

...or not?

The Answer:

The humble servant [the author] has come to this mountain since the night of the new moon of the blessed month for the treatment of some relatives. Far from home, separated from books, apparently according to the jurisprudential requirement, divorce will not occur in the inquired situation. The purpose of fulfillment is the discharge of obligation, which has been achieved. And registration, which is for protection at the time of denial, once the woman gave permission and had the permit written, the actual goal was achieved. It is like saying to a woman, "If you don't bring me such and such thing tomorrow, or don't come with such and such thing, then you are divorced," and she sends that thing through someone; divorce does not occur when the purpose is the arrival of that object. Allah Almighty knows best.

Problem 32: From the Shariah Court of Nal Bazar Bombay, submitted by Syed Hussain Sahib, Deputy Qazi, 19 Ramadan 1339 AH.

What do the scholars of religion say about a person who wrote an agreement for his wife in which one condition was that if I, the deponent, do not remain steadfast in my repentance and commit any act against the Sharia, then at that time my wife will have the authority to immediately go to her heirs or her father and brothers without my permission, or her heirs may take her away without my inquiry. In this violation of the noble Sharia, let the divorce be considered absolute from my side for my wife. Also, my wife will have the authority that after the legal divorce has taken place and the waiting period (Iddah) has ended, she can perform her second marriage herself, or her heirs can perform her second marriage wherever she wishes. I will have no excuse in this. If he violates his written condition, does divorce occur or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer:

Divorce did not occur in the inquired situation.

As we have stated in our Fatwas, and the text in Al-Khaniya is: "f-an ahsibi annaki taliq laysa bi-taliq" (for 'consider yourself divorced' is not a divorce)[1]. And in Al-Hindiya from Al-Khulasa:

Just as we have stated in our Fatwas, and the text exists in Khaniya that a husband's saying to his wife "consider yourself divorced" is not a divorce, and Hindiya...

---

[1] Fatawa Qazikhan, Kitab-ut-Talaq, Naval Kishore Lucknow, 210/2. F: The words of Khaniya are as follows: Divorce does not occur even if intended, as if he said to her in Arabic "ahsibi annaki taliq" (think that you are divorced), and even if he said that, it does not occur even if intended. (Nazir Ahmad Saeedi)

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | 13

...या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर):

फ़क़ीर (लेखक) मुबारक महीने के चांद की रात से कुछ रिश्तेदारों के इलाज के लिए इस पहाड़ पर आया हुआ है, वतन से दूर, किताबों से महरूम, ज़ाहिरी तौर पर फ़िक़्ही तक़ाज़े के अनुसार, पूछी गई स्थिति में तलाक़ नहीं होगा क्योंकि वादे को पूरा करने का मक़सद ज़िम्मेदारी से बरी होना है, जो हासिल हो गया। और रजिस्ट्री, जो इनकार के समय सुरक्षा के लिए होती है, जब औरत ने इजाज़त दे दी और इजाज़तनामा लिखवा दिया, तो असल मक़सद हासिल हो गया। यह वैसा ही है जैसे किसी औरत से कहा जाए, "अगर कल तुम मुझे फलां चीज़ लाकर नहीं दोगी या फलां चीज़ लेकर नहीं आओगी, तो तुम्हें तलाक़ है," और उसने वह चीज़ किसी के हाथ भेज दी; तलाक़ नहीं होगा जब मक़सद उस चीज़ का पहुंचना हो। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 32: शरीयत विभाग नल बाज़ार बंबई से, प्रेषक सैयद हुसैन साहब, नायब काज़ी, 19 रमज़ान 1339 हिजरी।

दीन के उलेमा क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के लिए एक इक़रारनामा लिखा जिसमें एक शर्त यह थी कि यदि मैं (प्रस्तावक) अपनी तौबा पर क़ायम नहीं रहा और शरीयत के खिलाफ कोई काम किया, तो उस समय मेरी पत्नी को अधिकार होगा कि वह बिना मेरी अनुमति के तुरंत अपने वारिसों या अपने पिता और भाइयों के पास चली जाए, या उसके वारिस उसे बिना मेरी पूछताछ के ले जाएं। शरीयत-ए-मुक़द्दसा के इस उल्लंघन में, मेरी ओर से मेरी पत्नी के लिए तलाक़ को क़तई (पूर्ण) समझा जाए। साथ ही, मेरी पत्नी को यह भी अधिकार होगा कि शरीयत के अनुसार तलाक़ होने के बाद इद्दत की अवधि बीतने पर वह अपना दूसरा निकाह खुद कर ले या उसके वारिस उसका दूसरा निकाह जहाँ उसकी खुशी हो कर दें। मुझे इसमें किसी प्रकार का कोई ऐतराज़ नहीं होगा। यदि वह अपनी लिखित शर्त का उल्लंघन करता है, तो तलाक़ हुआ या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

अल-जवाब (उत्तर):

पूछी गई स्थिति में तलाक़ नहीं हुआ,

जैसा कि हमने अपने फतवा में बयान किया है, और खानिया में इबारत (नॉस) मौजूद है "फ-अन अहसिबी अन्नाकी तालिक़ लैसा बि-तालिक़" (यानी 'समझ लो कि तुम्हें तलाक़ है' यह तलाक़ नहीं है)[1]। और हिन्दिया में खुलासा से:

जैसा कि हमने अपने फतवों में बयान किया है, और खानिया में उल्लेख मौजूद है कि पति का पत्नी को कहना कि "तू तलाक़ समझ ले" यह तलाक़ नहीं है, और हिन्दिया...

---

[1] फतावा काज़ीखान, किताब-उत-तलाक़, नवल किशोर लखनऊ, 210/2। F: खानिया के शब्द इस प्रकार हैं: तलाक़ नहीं होता चाहे नियत ही क्यों न हो, जैसे कि उसने उससे अरबी में कहा "अहसिबी अन्नाकी तालिक़" (सोचो कि तुम तलाकशुदा हो), और यदि उसने ऐसा कहा, तो वह (तलाक़) नहीं होता चाहे नियत भी हो। (नज़ीर अहमद सईदी)

पेज 243 ऑफ 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

یا نہیں ؟

الجواب :

فقیر شب ہلال ماہِ مبارک سے بغرضِ علاج بعض اعزہ اس پہاڑ پر آیا ہوا ہے ، وطن سے دور ، کتب سے مہجور ، بظاہر مقتضائے نظر فقہی یہ ہے کہ صورت مستفسرہ میں طلاق نہ ہوگی کہ ایفا سے مقصود برات ذمہ ہے وہ حاصل اور رجسٹری کہ وقت انکار تحفظ کے لیے ہوتی ہے جب عورت نے اجازت دے دی اجازت نامہ لکھوا دیا اصل مقصود حاصل ہو گیا جیسے عورت سے کہا اگر کل مجھے فلاں چیز لا کر نہ دے یا فلاں چیز لے کر نہ آئے تو تجھ پر طلاق، اس نے چیز کسی کے ہاتھ بھیج دی، طلاق نہ ہوئی جبکہ مقصود اس شے کا پہنچنا ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۲: از محکمہ شرعیہ نل بازار بمبئی مسئولہ سید حسین صاحب نائب قاضی ۱۹ رمضان ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ایک شخص نے ایک اقرار نامہ اپنی زوجہ کو لکھ دیا جس میں ایک شرط یہ تھی کہ اگر منمقر اپنی توبہ کا پابند نہ ہوا اور خلافِ شرع کوئی فعل کرے تو اسی وقت میری زوجہ کو اختیار ہوگا کہ وہ بلا اجازت میری اپنے ورثاء کے یہاں یا اپنے باپ بھائی کے یہاں فوراً چلی جائے یا اس کے ورثاء بلا میری دریافت کے اسے لے جائیں اور اس خلاف ورزی شرع شریف میں میری جانب سے میری زوجہ کو طلاق قطعی سمجھی جائے نیز میری زوجہ کو یہ بھی اختیار ہوگا کہ بموجب ہو جانے طلاق طلاق شرعی کے بعد میعاد عدت اپنا نکاح ثانی خود کرلے یا

اس کے ورثاء اس کا نکاح ثانی جہاں اس کی خوشی ہو کر دیں مجھ کو اس میں کسی قسم کا عذر نہ ہوگا اگر وہ اپنے تحریر کردہ شرط کی خلاف ورزی کر کے تو طلاق ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب :

صورت مستفسرہ میں طلاق نہ ہوئی ،

کما بیناہ فی فتاونا ونص فی الخانیۃ ف ان احسبی انک طالق لیس بطلاق ۱۔وفی الھندیۃ عن الخلاصۃ

جیسا کہ ہم نے اپنے فتاویٰ میں بیان کیا ہے ، اور خانیہ میں نص موجود ہے کہ خاوند کا بیوی کو کہنا کہ "تو طلاق سمجھ لے" یہ طلاق نہیں ہے، اور ہندیہ

---

۱ فتاوی قاضیخان کتاب الطلاق نو لکشور لکھنؤ ۲/۲۱۰ ف: خانیہ کے الفاظ اس طرح ہیں : لا یقع الطلاق وان نوی کانہ قال لھا بالعربیۃ احسبی انک طالق وان قال ذلک لایقع وان نوی۔ نذیر احمد سعیدی)

امرأة قالت لزوجها مرا طلاق دہ فقال دادہ انگار او کردہ انگار لایقع وان نوی - واللہ تعالیٰ اعلم۔ |
| It is narrated in 'Al-Khulasa' that a woman said to her husband, "Give me divorce." The husband replied, "Consider it given or done." Divorce does not occur even if he intended it. And Allah Almighty knows best. |

Problem 343 & 344: From Sarai Bhanoli, Post Office Shahganj, District Faizabad, sent by Muhammad Faizullah Sahib, 20 Jumada al-Ula 1339 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about the following matters: (1) An agreement (Iqrar Nama) was written with the following content, all conditions of which were set by the guardian of the woman (Wali-e-Hindah), as is evident from the text of the agreement. No condition was set by Muhammad Shafi' nor was he allowed to propose any condition, even though Muhammad Shafi' did not agree with even a single word of the agreement. He had no assistant or guardian to raise any objection. The guardian of the woman is a powerful and influential person who forced Muhammad Shafi' to sign it. So, is this agreement legally valid according to Shariah or invalid? Explain and be rewarded. (2) Before writing the agreement, the woman's guardian, who was far more powerful and influential than Muhammad Shafi' in every way, was intent on taking a divorce from the helpless and powerless Muhammad Shafi' by force. At that time, Muhammad Shafi' pleaded with some crying and entreaties, which had an effect, and the result was that they refrained from divorce but made him sign the following agreement. Muhammad Shafi', considering this opportunity a blessing, signed it. After some days, Muhammad Shafi' went to Rangoon and for a short time, as per his capacity, sent twenty to twenty-five rupees to the woman. However, for some time, due to necessity, he could not send the expenses, though he continued to send letters explaining his helplessness through them. Later, he also sent three or four rupees. Now Muhammad Shafi' has returned from Rangoon after about three and a half years and stated the reason for non-payment of expenses was that he was severely burnt and there was no hope for his life. Consequently, he remained in the hospital for six months (the news of the burning was also heard orally from people coming from that area, and scars are still visible on his body, i.e., found present). In this state, he became indebted for fifty rupees. After recovering, he remained unemployed for a few days, and when he found work, he paid off the debt, and the rest was spent on travel expenses. Due to the non-sending of expenses, the woman, because of her guardian being influential, was not in need of food and maintenance from him.

1 Fatawa al-Hindiyya, Chapter 7, regarding Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/380. Page 244 of 688

जिल्द 13 | फतावा रज़विया | पृष्ठ 13

| لایقع وان نوی - واللہ اعلم۔ تعالیٰ | امرأة قالت لزوجها مرا طلاق ده فقال داده انگار او کرده انگ | 'अल-खुलासा' से उद्धृत है कि एक महिला ने अपने पति से कहा, "मुझे तलाक दे दो।" पति ने उत्तर दिया, "इसे दिया हुआ या किया हुआ समझ लो।" तलाक नहीं होता चाहे उसने नियत (इरादा) की हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। |

मसला 343 और 344: सराय भनौली, डाकखाना शाहगंज, जिला फैजाबाद से प्रेषित, मुहम्मद फैजुल्लाह साहब, 20 जमादी-उल-उला 1339 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती निम्नलिखित मामलों में क्या कहते हैं: (1) एक इकरारनामा (सहमति पत्र) निम्नलिखित विषय-वस्तु के साथ लिखा गया जिसकी सभी शर्तें स्त्री के संरक्षक (वली-ए-हिंदा) द्वारा निर्धारित की गई थीं, जैसा कि इकरारनामे की विषय-वस्तु से स्पष्ट है। मुहम्मद शफी की ओर से कोई शर्त निर्धारित नहीं की गई और न ही उसे शर्त रखने की अनुमति दी गई, हालाँकि इकरारनामे के एक शब्द से भी मुहम्मद शफी को सहमति नहीं थी और न ही उसका कोई सहायक या संरक्षक था जो कोई आपत्ति करता। स्त्री का संरक्षक एक शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्ति है जिसने मुहम्मद शफी से जबरदस्ती हस्ताक्षर करा लिए। तो क्या यह इकरारनामा शरीयत के अनुसार मान्य है या अमान्य? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (2) इकरारनामा लिखने से पहले, स्त्री का संरक्षक, जो मुहम्मद शफी के मुकाबले हर हाल में बहुत अधिक शक्तिशाली और साधन संपन्न था, असहाय और बेबस मुहम्मद शफी से जबरदस्ती तलाक लेने पर आमादा था। उस समय मुहम्मद शफी ने कुछ रोने-धोने और मिन्नत-समाजत के साथ विनती की जिसका असर हुआ और परिणाम यह हुआ कि तलाक से तो रुक गए लेकिन उपरोक्त इकरारनामे पर हस्ताक्षर करा लिए। मुहम्मद शफी ने इस अवसर को गनीमत समझकर हस्ताक्षर कर दिए। कुछ दिनों के बाद मुहम्मद शफी रंगून चला गया और कुछ समय तक अपनी सामर्थ्य के अनुसार बीस-पच्चीस रुपये स्त्री को भेजे। लेकिन कुछ समय तक मजबूरी के कारण खर्च नहीं भेज सका, अलबत्ता पत्र भेजता रहा और उसके माध्यम से अपनी मजबूरी प्रकट करता रहा और बाद में भी तीन-चार रुपये भेजे। अब मुहम्मद शफी लगभग साढ़े तीन साल बाद रंगून से वापस आया और खर्च न दे पाने का कारण यह बताया कि वह बुरी तरह जल गया था और जीवन की कोई आशा नहीं थी, इसलिए छह महीने तक अस्पताल में पड़ा रहा (जलने का हाल उस क्षेत्र से आने वाले लोगों से भी मौखिक रूप से सुना गया और अब भी उसके शरीर पर निशान देखे गए यानी मौजूद पाए गए)। इस स्थिति में वह पचास रुपये का कर्जदार हो गया। स्वस्थ होने के बाद कुछ दिन बेकार रहा और जब

सफल हुआ तो कर्ज चुकाया, बाकी यात्रा खर्च में खर्च हो गया। खर्च न भेजने के कारण स्त्री, संरक्षक के साधन संपन्न होने के कारण, रोटी-कपड़े के लिए उस पर निर्भर नहीं थी।

---

1 फतावा-ए-हिन्दिया, अध्याय 7, फारसी शब्दों के अंतर्गत, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/380। पृष्ठ 244/688

امرأۃ قالت لزوجھا مرا طلاق دہ فقال دادہ انگار او کردہ انگار لایقع وان نوی ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ میں خلاصہ سے منقول ہے کہ کسی عورت نے اپنے خاوند کو کہا کہ "مجھے طلاق دے" تو خاوند نے جواب میں کہا "تو اس کو طلاق دی ہوئی یا طلاق کی ہوئی سمجھ لے" تو طلاق نہ ہوگی اگرچہ اس سے طلاق کی نیت کی ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۴۳ و ۳۴۴: از سرائے بھنولی ڈاک خانہ شاہ گنج ضلع فیض آباد مرسلہ محمد فیض اللہ صاحب ۲۰ جمادی الاولی ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مسائل ذیل میں:

(۱) ایک اقرار نامہ مندرجہ ذیل مضمون کا لکھا گیا جس کے کل شرائط ولی ہندہ کے مقرر کئے ہوئے ہیں جو کہ مضمون اقرار نامہ سے صاف ظاہر ہے اور محمد شفیع کی طرف سے کوئی شرط مقرر نہیں کی گئی اور نہ اس کو قرار داد شرط کی اجازت دی گئی حالانکہ اقرار نامہ کے ایک لفظ سے بھی محمد شفیع کو اتفاق نہیں تھا اور نہ اس کا کوئی معاون و ولی تھا کہ کچھ عذر کرتا ، ولی ہندہ ایک زبردست واہل مقدور شخص ہے اس نے بالبر محمد شفیع سے دستخط کرا لیا، پس یہ اقرار نامہ شرعاً معتبر ہے یا کہ غیر معتبر؟ بینوا توجروا۔ (۲) قبل تحریر اقرار نامہ ولی ہندہ جو کہ بمقابلہ محمد شفیع ہر حالت میں بدرجہا زور آور واہل مقدور تھا بیکس و بے بس محمد شفیع سے بالجبر طلاق لینے پر آمادہ تھا مگر اس وقت محمد شفیع کچھ گریہ وزاری سے منت وسماجت کی کہ اس کا اثر اس پر کارگر ہوا اور نتیجہ یہ ہوا کہ طلاق سے تو باز رہے مگر اقرار نامہ مذکورہ ذیل پر دستخط کرا لیا محمد شفیع نے اس فرصت کو غنیمت سمجھ کر دستخط کردیا کچھ دن کے بعد محمد شفیع رنگون چلا گیا اور تھوڑے عرصے تک حسب وسعت مبلغ بیس پچیس روپیہ ہندہ کو روانہ کیا مگر کچھ عرصہ تک بوجہ مجبوری خرچ روانہ نہ کرسکا البتہ خطوط روانہ کرتا رہا

اور اسکے ذریعہ سے اپنی مجبوری ظاہر کرتا رہا اور بعد کو بھی تین چار روپیہ روانہ کیا اب محمد شفیع قریب ساڑھے تین سال کے بعد رنگون سے واپس آیا اور وجہ عدم ادائیگی خرچ میں یہ عذر بیان کیا کہ میں سخت جل گیا تھا اور کوئی امید زندگی نہ تھی، چنانچہ چھ ماہ میں ہسپتال میں پڑا رہا (جلنے کا حال زبانی آئندگان آنصوبہ سے بھی سنا گیا اور اب بھی اس کے جسم پر نشان دیکھا گیا یعنی موجود پایا گیا) اس حالت میں مبلغ پچاس روپیہ کا قرضدار ہو گیا بعد صحت چند روز بیکار رہا اور جب کامیاب ہوا تو قرض ادا کیا بقیہ زاد راہ میں صرف ہوا عدم روانگی خرچ سے ہندہ بوجہ اہل مقدور ہونے اپنے ولی کے محتاج نان ونفقہ نہ تھی

---

۱ فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع بالالفاظ الفارسیة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۰ Page 244 of 688

Fatawa Rizvia Volume 13

[Top Section Table] Left (Arabic): Divorce does not occur even if intended, as if he said to her in Arabic "Suppose you are divorced". Even if he said that, it does not occur even if intended. And Allah Almighty knows best. Right (Urdu explanation): "Consider yourself divorced" - divorce will not occur even if it was intended, because this is just like someone saying in Arabic, translation: "You think that you are one with divorce." So by saying this, divorce will not occur, even if he intends divorce. And Allah Almighty knows best (T).

Problem 35: From Rampur, Mohalla Farangan Mahal, Bazm-e-La Zareef, sent by Molvi Riyasat Husain Khan Sahib, 22 Shawwal 1315 AH.

[Middle Section Table] Left (Persian query): What do the masters of Shariah and the people of piety say about this: that a person after offer and acceptance of marriage wrote a declaration with this text: "I, Yunus Ali, son of late Husain Ali, currently resident of Nakandia, area of Mankanda police station, Arkanam district, in a state of good health and sound mind, without any coercion or force, of my own free will, declare that I take Musammat Mehr-un-Nisa, daughter of late Ghulam Ali, into my marriage with several conditions: First condition: That I will make every effort to provide religious education regarding prayer, fasting, and other religious matters to the aforementioned lady. (Until he said) Eighth condition: I will not marry another woman without the consent and desire of the aforementioned lady; if I do, three divorces will occur on the second one. Ninth condition: If I deviate from any of the aforementioned conditions, then the said lady will have the authority, on the basis of this document, to remove herself from my marriage with three divorces and engage in another marriage, or remain in marriage. End of the exact copy of the declaration."

Right (Urdu Translation): What do the masters of Shariah and piety say in this matter that a person, after offer and acceptance in his marriage, wrote in a declaration that: "I, Yunus Ali, son of late Husain Ali, resident of Nakandia, area of Mankanda police station, Arkanam district, in my state of health and sound mind, without coercion or force, of my own free will, declare that I take Musammat Mehr-un-Nisa, daughter of late Ghulam Ali, into my marriage with several conditions: First condition is that I will make full effort in giving the aforementioned lady religious education regarding prayer, fasting, etc. religious matters, until it was said, the eighth condition is that I will not marry any other woman without the consent of the aforementioned lady, if I do, the second wife will have three divorces, and the ninth condition is that if I

deviate from any of the mentioned conditions, the said lady will have the power that according to this paper and writing, she can exclude herself from my marriage with three divorces and marry another person or remain in my marriage. End of the exact copy of the declaration."

1. Fatawa Qazikhan, Kitab al-Talaq, Nawal Kishore Lucknow 1/210. Page 246 of 688

फतावा रजविया जिल्द 13

[शीर्ष अनुभाग तालिका] बायां (अरबी): तलाक नहीं होगा चाहे नीयत की हो, जैसे उसने अरबी में उससे कहा हो "मान लो कि तू तलाकशुदा है"। अगर उसने ऐसा कहा तो तलाक नहीं होगा चाहे नीयत भी कर ले। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। दायां (उर्दू व्याख्या): "तलाक की हुई समझ" - तो तलाक नहीं होगी अगरचे तलाक की नीयत की हो, क्योंकि यह ऐसा ही है जैसा कि कोई अरबी में कहे, अनुवाद: "तू ख्याल कर ले कि तू तलाक वाली है"। तो यह बात कहने से तलाक नहीं होगी, अगरचे तलाक की नीयत भी कर ले। वल्लाह तआला आलम (त)।

मसला 35: रामपुर, मोहल्ला फरंगन महल, बज़्म-ए-ला ज़रीफ़, मौलवी रियासत हुसैन ख़ान साहब द्वारा प्रेषित, 22 शव्वाल 1315 हिजरी।

[मध्य अनुभाग तालिका] बायां (फ़ारसी प्रश्न): शरीयत के विद्वान और परहेज़गार लोग इस बारे में क्या कहते हैं: कि एक व्यक्ति ने निकाह के ईजाब-ओ-क़ुबूल के बाद एक इकरारनामे में यह इबारत लिखी कि: "मैं यूनुस अली, पुत्र स्वर्गीय हुसैन अली, वर्तमान निवासी नाकांदिया, थाना मनकंडा क्षेत्र, जिला अर्कानाम, पूर्ण स्वास्थ्य और स्वस्थ मस्तिष्क की स्थिति में, बिना किसी दबाव या ज़बरदस्ती के, अपनी स्वेच्छा से घोषणा करता हूँ कि मैं मुसम्मात मेहरुन्निसा, पुत्री स्वर्गीय गुलाम अली को चंद शर्तों के साथ अपने निकाह में लाता हूँ: पहली शर्त: यह कि मुसम्मात मजकूर (उक्त महिला) को नमाज़, रोज़ा और अन्य धार्मिक मामलों के बारे में शरीयती शिक्षा देने में पूरी कोशिश करूँगा। (यहाँ तक कि कहा) आठवीं शर्त: मुसम्मात मजकूर की मर्जी और रफ़्त (इच्छा) के बिना किसी दूसरी औरत से अपना निकाह न करूँगा; अगर करूँ तो दूसरी बीवी को तीन तलाक होंगे। नौवीं शर्त: अगर मजकूर शर्तों में से किसी शर्त से इनहराफ़ (उल्लंघन) करूँ तो मुसम्मात मौसूफ़ा को इख़्तियार होगा कि इस कागज़ के वसीले से खुद को मेरे निकाह से तीन तलाक के साथ अलग कर ले और दूसरे निकाह की कोशिश करे या निकाह में रहे। इकरारनामे की हुबहू नकल समाप्त।"

दायां (उर्दू अनुवाद): शरीयत और तक़वा वाले इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने अपने निकाह में ईजाब और क़ुबूल के बाद इकरारनामे में यह लिखा कि: "मैं यूनुस अली, पुत्र स्वर्गीय हुसैन अली, निवासी नाकांदिया, थाना मनकंडा जिला अर्कानाम, अपनी सेहत और अकल की सलामती में बिना किसी जोर-ज़बरदस्ती के अपनी खुशी से इकरार करता हूँ कि मुसम्मात मेहरुन्निसा, पुत्री स्वर्गीय गुलाम अली को चंद शर्तों के साथ अपने निकाह में लाता हूँ: पहली शर्त यह कि मुसम्मात मजकूर को

नमाज़, रोज़ा वगैरह दीनी उमूर की शरीई तालीम देने में पूरी कोशिश करूँगा, यहाँ तक कि कहा गया आठवीं शर्त यह है कि मुसम्मात मजकूर की मर्जी के बिना किसी दूसरी औरत से अपना निकाह न करूँगा, अगर करूँ तो दूसरी बीवी को तीन तलाक होंगे, और नौवीं शर्त यह कि अगर मजकूर शर्तों में से किसी शर्त से इनहराफ़ करूँ तो मुसम्मात मौसूफ़ा को इख़्तियार होगा कि इस कागज़ और तहरीर के बमूजिब अपने आप को तीन तलाक के साथ मेरी ज़ौज़ियत से ख़ारिज करके दूसरे शख़्स से निकाह कर ले या मेरे निकाह में रहे। इकरारनामे की हुबहू नकल समाप्त हुई।"

1. फतावा क़ाज़ीखान, किताब अल-तलाक, नवल किशोर लखनऊ 1/210। पृष्ठ 246/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

لا یقع الطلاق وان نوی کانہ قال لہا بالعربیۃ احسبی انك طالق وان قال ذلك لا یقع وان نوی ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ طلاق کی ہوئی سمجھ "تو طلاق نہ ہوگی اگر چہ طلاق کی نیت کی ہو، کیونکہ یہ ایسا ہی ہے جیسا کہ کوئی عربی میں کہے، ترجمہ: تو خیال کر لے کہ تو طلاق والی ہے "تو یہ بات کہنے سے طلاق نہ ہوگی، اگرچہ طلاق کی نیت بھی کرلے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۵: از رامپور محلہ فرنگن محل، بزملا ظریف مرسلہ مولوی ریاست حسین خاں صاحب ۲۲ شوال ۱۳۱۵ھ

چہ می فرمایند اصحاب شرع وارباب ورع اندرینکہ شخصی بعد ایجاب وقبول نکاح خود را اقرار نامہ ایں عبارت تحریر نمود کہ منکہ یونس علی پسر حسین علی مرحوم حال ساکن ناکندیہ علاقہ تھانہ منکنڈہ ضلع ارکانم منتقر در حالت صحت ذات وثبات عقل بلا جبر واکراہ بخوشی مہر النساء دختر غلام علی مرحوم را بچند شرائط بنکاح خود آوردم: شرط اول اینکہ مسماۃ مذکورہ را در باب تعلیم احکام شرعیہ مثل نماز و روزہ وغیرہ امور دینیہ کوشش کما حقہ بکار آرم (الی ان قال) شرط ہشتم بغیر رضا و رغبت مسماۃ مذکورہ زنی دیگر بنکاح خود نیارم اگر آرم بر ثانیہ سہ طلاق واقع خواھد شد۔ شرط نہم اگر ز شرطی ازیں شرائط مرقومہ بالا انحراف ورزم آنگہ اختیار مسماۃ موصوفہ را است کہ بتوسل کاغذ ہذا نفس خود را از زوجیتم سہ طلاق کردہ بنکاح دیگر پرداز و یا بنکاح ماند انتی نقل اقرار نامہ بعینہ۔

کیا فرماتے ہیں اصحاب شرع و تقوی اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنے نکاح میں ایجاب و قبول کے بعد اقرار نامہ میں یہ تحریر کیا کہ منکہ یونس علی پسر حسین علی مرحوم ساکن ناکندیہ

علاقہ تھانہ منکنڈ ضلع ارکانم، اپنی صحت اور بقائ عقل بغیر جبر و اکراہ اپنی خوشی سے اقرار کرتا کہ مسماۃ مہر النساء دختر غلام علی مرحوم کو چند شرائط کے ساتھ اپنے نکاح میں لاتا ہوں: پہلی شرط یہ کہ مسماۃ مذکورہ کو شرعی تعلیم بابت نماز، روزہ وغیرہ امور دینیہ دینے میں پوری کوشش کروں گا، حتی کہ یہ کہا آٹھویں شرط یہ ہے کہ مسماۃ مذکورہ کی مرضی کے بغیر کسی دوسری عورت سے اپنا نکاح نہ کروں گا، اگر کروں تو دوسری بیوی کو تین طلاق ہوں گی، اور نویں شرط یہ کہ اگر مذکور شرائط میں سے کسی شرط سے انحراف کروں تو مسماۃ موصوفہ کو اختیار ہوگا کہ اس کاغذ اور تحریر کے بموجب اپنے آپ کو تین طلاق کے ساتھ میری زوجیت سے خارج کرکے دوسرے شخص سے نکاح کرلے یا میرے نکاح میں رہے، نقل بعینہ اقرار نامہ ختم ہوئی۔

۱ فتاویٰ قاضیخان کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۱/۲۱۰ Page 246 of 688

Fatawa Razviya, Volume Thirteen, Page 13

Question: Now, Yunus Ali has given three divorces to the lady Mahr-un-Nisa. Without the consent and desire of Mahr-un-Nisa, he married another woman. In the described situation, will the three divorces occur to the second wife of Yunus Ali or not? Honorable Maulana Sahib! May your grace and prosperity remain forever. After salutations, it is requested that you provide the answer to this question soon and make us grateful, just as you have previously made us indebted and distinguished. In this matter, other scholars also differ; some are in favor of the second divorce and some are against it. What is the decision in Egypt and what is the Fatwa (legal ruling) and preferred opinion? Since I do not have various books, I am bothering you. I apologize for the trouble. Only, Peace be upon you.

Answer: O Allah, I seek guidance for the truth and correctness from You. In the situation questioned, the legal ruling requires detailed jurisprudential (Fiqhi) analysis. If Mahr-un-Nisa says that Yunus Ali entered into this second marriage without my consent and desire, and Yunus Ali confirms her statement, then the second wife is divorced three times from the moment of marriage. Otherwise, no divorce or separation occurs. I say: And with Allah is the success. The investigation of this matter is that the divorce of the second wife is conditional upon the absence of consent and desire of Mahr-un-Nisa. Therefore, at the time of marriage, this absence must be established, and the fulfillment of the condition leads to the consequence that...

फ़तावा रज़विया, तेरहवाँ भाग, पृष्ठ 13

प्रश्न: अब यूनुस अली ने मुसम्मात महर-उन-निसा को तीन तलाक़ दे दिए। महर-उन-निसा की रज़ा और मर्जी के बिना उसने दूसरी महिला से निकाह (विवाह) कर लिया। वर्णित स्थिति में, क्या यूनुस अली की दूसरी पत्नी को तीन तलाक़ हो गए या नहीं? श्रीमान मौलाना साहब! आपकी कृपा और सौभाग्य सदैव बना रहे। सलाम के बाद निवेदन है कि इस प्रश्न का उत्तर शीघ्र प्रदान कर हमें अनुगृहीत करें, जैसा कि आपने पहले भी हमें ऋणी और प्रतिष्ठित किया है। इस विषय में अन्य विद्वान भी मतभेद रखते हैं; कुछ दूसरी तलाक़ के पक्ष में हैं और कुछ इसके विरुद्ध हैं। मिस्र में क्या फैसला है और फ़तवा और अधिमान्य राय क्या है? मेरे पास विभिन्न पुस्तकें उपलब्ध न होने के कारण मैं आपको कष्ट दे रहा हूँ। कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूँ। केवल, वस्सलाम।

उत्तर: हे अल्लाह, मैं तुझसे सत्य और शुद्धता (दुरुस्ती) के मार्गदर्शन का प्रार्थी हूँ। पूछे गए मामले में, शरिया का निर्णय फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय) दृष्टि से विस्तृत विश्लेषण की अपेक्षा रखता है। यदि महर-उन-निसा कहे कि यूनुस अली ने यह दूसरा निकाह मेरी रज़ा और मर्जी के बिना किया है, और यूनुस अली उसके बयान की पुष्टि करता है, तो निकाह के समय से ही दूसरी पत्नी को तीन तलाक़ हो गए। अन्यथा, कोई तलाक़ या अलगाव नहीं होगा। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से, इस स्थान की तहकीक़ (जांच) यह है कि दूसरी पत्नी की तलाक़, महर-उन-निसा की रज़ा और मर्जी के अभाव पर सशर्त है। इसलिए, निकाह के समय इस अभाव का होना आवश्यक है और शर्त का पूरा होना परिणाम की ओर ले जाता है कि...

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

اکنوں یونس علی مسماۃ مہر النساء را سہ طلاق دادہ بلارضا ورغبت مہر النساء بزن دیگر نکاح نمود است دریں صورت مرقومہ بزوجہ ثانیہ یونس علی سہ طلاق واقع خواھد شد یا نہ، جناب فیض مآب مولانا صاحب دام اقبالہم و فیضہم بعد سلام عرض اینکہ جواب سوال بزودی عنایت فرمودہ ممنون فرمایند چنانکہ نخستین ہم مرہون منت و ممتاز دارین فرمودہ بودند دریں باب نیز علماء مختلف اند بعضے طلاق ثانیہ قائلے ست و بعضے بعد مش مصر فیصلہ چیست و مفتی بہ ومختار کدام، نزدم کتب مختلفہ موجود نیست بناء علیہ مکلف شدم عفو فرمایند، والسلام۔ اب اس کے بعد یونس علی نے مسماۃ مہر کور کو تین طلاقیں دے کر مہر النساء کی رضا ورغبت کے بغیر دوسرا نکاح کرلیا، تو مستولہ صورت میں یونس علی کی دوسری بیوی کو تین طلاقیں ہوئیں یا نہیں، جناب فیض مآب مولانا صاحب ! آپ کا فیض واقبال ہمیشہ قائم رہے، سلام کے بعد عرض ہے کہ اس سوال کا جواب جلدی عنایت فرما کر ممنون فرمائیں تاکہ ہم ہمیشہ ممنون احسان رہیں، اس مسئلہ میں دوسرے علماء بھی اختلاف کر رہے ہیں، بعض دوسری بیوی کی طلاق پر مصر ہیں اور بعض اس کی طلاق نہیں مانتے، آپ کا فیصلہ اور فتویٰ کیا ہے اور مختار قول کیا ہے میں اپنے مختلف کتب نہ ہونے کی بناء پر تکلیف دے رہا ہوں، تکلیف پر معافی چاہتا ہوں، فقط، والسلام۔

الجواب: اللھم ھدایۃ الحق والصواب در صورت مستفسرہ قضیہ نظر فقہی تفصیل ست، اگر مہر النساء گوید کہ یونس علی ایں نکاح دوم بے رضا ورغبت من کردہ است، ویونس علی دریں معنیٰ تصدیق بیانش کند زن پسیں ہم از وقت نکاح سہ طلاق شود ورنہ ہیچ طلاق وفراق نیست۔ اے اللہ تجھ سے حق وصواب (درستگی) کی رہنمائی کا طلبگار ہوں، مسئولہ صورت میں شرعی فیصلہ فقہی نظر میں تفصیل طلب ہے، اگر مہر النساء کہے کہ یونس علی نے یہ دوسرا نکاح میری رضا

ورغبت کے بغیر کیا ہے اور یونس علی اس کی تصدیق کرتا ہے تو دوسری بیوی کو نکاح کے وقت سے ہی تین طلاقیں ہو گئیں، ورنہ کوئی طلاق اور جدائی نہ ہوگی، اقول: وباللہ التوفیق (اللہ کی توفیق سے میں کہتا ہوں کہ) اس مقام کی تحقیق یہ ہے کہ دوسری بیوی کی طلاق، مہر النساء کی رضا ورغبت کے معدوم ہونے سے مشروط ہے، تو شرط کا پایا جانا جزاء کے

[Left Column - Persian] ...it necessitates the realization of the penalty and the loss of marital sanctity. Its acceptance is dependent on Shari'ah proof, which is either the husband's confession or the presentation of clear evidence (bayyinah). As for the evidence, it is clear as its name suggests. Regarding the husband's confession, it is because he has the power to initiate [divorce], so he is not disputed in [giving] news. The sole statement of Mahr-un-Nisa regarding the second wife is not to be heard, as the statement of one woman is not a Shari'ah proof, especially regarding a co-wife who is a place of suspicion. And Yunus Ali's proceeding with this marriage contract without seeking permission from Mahr-un-Nisa cannot be a proof of the condition, for the condition was the 'lack of pleasure' (adam-e-raza), not the 'failure to seek pleasure' (tark-e-istirdha), and there is a great difference between the two. Therefore, scholars have said that in conditioning something upon pleasure (raza), knowledge of that pleasure is not required. For example, a husband who has taken an oath [of divorce] says to his wife, 'Do not go out without my pleasure,' and then quietly says, 'Go.' The wife did not hear, or heard but did not understand, and went out. Divorce will not occur because she did not go without pleasure, even if she herself was not aware of the pleasure. This is unlike 'permission' (idhn), for it does not exist except with a heard and understood statement, until clear proofs of pleasure also do not work there. For instance, if he swears not to drink from the wife's bowl without her permission, and the wife takes the bowl in her hand and gives it to him to drink, and she says nothing or says it and the husband does not hear or understand, he becomes a violator of the oath because permission was not realized. Therefore, lack of permission in the place of a condition can be proven by evidence, because testimony regarding a negation is acceptable in conditions. However, there is no way to prove the lack of pleasure and desire, because it is a spiritual attribute and knowledge of it is from the knowledge of the unseen; the utmost witnesses can do is to grasp at external evidences, and in such...

[Right Column - Urdu] ...it will necessitate the occurrence [of the condition] by which the marriage will end. However, its acceptance is dependent on Shari'ah proof, and Shari'ah proof is either the husband's confession or testimony. Testimony is necessary because it clarifies the matter, and the husband's confession is necessary because the husband alone is the owner of enforcing divorce; therefore, he can provide information about the current state. The sole statement of Mahr-un-Nisa regarding the second wife is not admissible because the statement of one woman is

not a Shari'ah proof, especially regarding her co-wife where there is a possibility of accusation. And Yunus Ali's performing this second marriage without seeking permission from Mahr-un-Nisa is not sufficient for the occurrence of the condition of divorce, because the condition for divorce is Mahr-un-Nisa's lack of consent/pleasure (adam-e-raza), not the seeking of permission from her, while there is a big difference between the two. For this reason, scholars state that in the occurrence of a matter conditioned upon consent (raza), knowledge of that consent is not necessary; rather, the existence of consent itself is sufficient. For example, a person, while taking an oath of divorce, says to his wife, 'Do not go out without my consent.' Then he says softly, 'Go.' The wife did not hear it, or heard it but did not understand, and went out. In this case, divorce will not occur because she went out based on consent, even if she herself was not aware of that consent. On the contrary, if instead of 'consent' (raza) he had used the word 'permission' (idhn), divorce would have occurred, because for 'permission' (idhn), such a statement is necessary that can be heard and understood, even if clear evidence of consent is found there, it will not be effective [to prevent divorce]. For example, the husband said on oath that I [will not do something without] the wife's permission

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | पृष्ठ 688 का 248

[बायां कॉलम - फ़ारसी] ...जज़ा (दंड) के साकार होने और अस्मत (शुद्धता) के अंत के लिए अनिवार्य है। उसे स्वीकार करना शरई प्रमाण पर निर्भर है जो या तो पति का इकरार हो या स्पष्ट प्रमाण (बैय्यना) की प्रस्तुति। जहाँ तक प्रमाण का प्रश्न है, वह अपने नाम की तरह स्पष्ट है। पति के इकरार के संबंध में, ऐसा इसलिए है क्योंकि उसे तलाक शुरू करने का अधिकार है, इसलिए खबर देने में उसका विरोध नहीं किया जाता है। दूसरी पत्नी के संबंध में महर-उन-निसा का अकेला बयान सुनने योग्य नहीं है, क्योंकि एक महिला का बयान शरई प्रमाण नहीं है, विशेष रूप से सौतन के संबंध में जो संदेह का स्थान है। और यूनुस अली का महर-उन-निसा से अनुमति मांगे बिना इस विवाह अनुबंध के साथ आगे बढ़ना शर्त का प्रमाण नहीं हो सकता, क्योंकि शर्त 'रज़ा (खुशी) का अभाव' (अदम-ए-रज़ा) थी, न कि 'रज़ा प्राप्त करने में विफलता' (तर्कए-इस्तिर्ज़ा), और इन दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर है। इसलिए, विद्वानों ने कहा है कि किसी चीज़ को रज़ा (खुशी) पर सशर्त करने में, उस रज़ा का ज्ञान होना आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए, एक पति जिसने शपथ ली है वह अपनी पत्नी से कहता है, 'मेरी रज़ा के बिना बाहर मत जाओ,' और फिर धीरे से कहता है, 'जाओ।' पत्नी ने नहीं सुना, या सुना लेकिन समझ नहीं पाई, और बाहर चली गई। तलाक नहीं होगा क्योंकि वह रज़ा के बिना नहीं गई, भले ही वह खुद रज़ा से अवगत न हो। यह 'इज़न' (अनुमति) के विपरीत है, क्योंकि वह तब तक मौजूद नहीं होता जब तक कि सुना और समझा गया बयान न हो, यहाँ तक कि रज़ा के स्पष्ट प्रमाण भी वहाँ काम नहीं करते। उदाहरण के लिए, यदि वह पत्नी की अनुमति के बिना उसके कटोरे से न पीने की शपथ लेता है, और पत्नी कटोरा अपने हाथ में लेती है और उसे पीने के लिए देती है, और वह कुछ नहीं कहती या कहती है और पति नहीं सुनता या समझता है, तो वह शपथ का उल्लंघन करने वाला बन जाता है क्योंकि अनुमति प्राप्त नहीं हुई थी। इसलिए, शर्त के स्थान पर अनुमति के अभाव को प्रमाण द्वारा सिद्ध किया जा सकता है, क्योंकि शर्तों में नकारात्मकता के बारे में गवाही स्वीकार्य है। हालाँकि, रज़ा और इच्छा के अभाव को साबित करने का कोई तरीका नहीं है, क्योंकि यह एक आध्यात्मिक गुण है और इसका ज्ञान अनदेखे के ज्ञान (इल्म-ए-ग़ैब) से है; गवाह ज़्यादा से ज़्यादा बाहरी प्रमाणों को पकड़ सकते हैं, और ऐसे में...

[दायां कॉलम - उर्दू] ...पाए जाने को मुस्तल्ज़िम (आवश्यक) होगा जिससे निकाह ख़त्म हो जाएगा, लेकिन इसको तस्लीम करना शरई सबूत पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है और सबूत-ए-शरई ख़ाविंद का इक़रार या शहादत है। शहादत इसलिए ज़रूरी है कि वह मामले को वाज़ेह (स्पष्ट) करती है, और

ज़ौज (पति) का इक़रार इसलिए कि ख़ाविंद ही तलाक़ को नाफ़िज़ (लागू) करने का मालिक है, लिहाज़ा फिलहाल की ख़बर वह ख़ुद ही दे सकता है। तनहा महर-उन-निसा का बयान दूसरी बीवी के मुताल्लिक़ क़ाबिल-ए-समाअत (सुनने योग्य) नहीं है क्योंकि एक औरत का बयान शरई हुज्जत (प्रमाण) नहीं है, ख़ास तौर पर अपनी सौकन के बारे में कि तोहमत का एहतिमाल (आशंका) है। और यूनुस अली का महर-उन-निसा से इजाज़त तलब किए बग़ैर यह दूसरा निकाह करना तलाक़ की शर्त के पाए जाने के लिए काफ़ी नहीं है क्योंकि तलाक़ की शर्त महर-उन-निसा की अदम-ए-रज़ा (असहमति) है न कि उससे इजाज़त तलब करना, जबकि इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। इसीलिए उलमा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि रज़ा के साथ मशरूत (शर्तयुक्त) अम्र के पाए जाने में रज़ा का इल्म ज़रूरी नहीं बल्कि रज़ा का पाया जाना ही काफ़ी है। मिसाल के तौर पर, एक शख़्स ने तलाक़ का हलफ़ लेते हुए अपनी बीवी को कहा कि 'तू मेरी रज़ा के बग़ैर बाहर मत जा।' फिर आहिस्ता से कहा 'जा', बीवी ने न सुना, या सुना मगर समझा नहीं और बाहर चली गई तो तलाक़ न होगी, क्योंकि वह रज़ा पर बाहर गई अगरचे वह ख़ुद रज़ा पर मुत्तला (सूचित) न हुई। इसके बरअक्स अगर रज़ा की जगह वह इज़न (इजाज़त) का लफ़्ज़ कहता तो तलाक़ हो जाती क्योंकि इज़न के लिए ऐसा क़ौल ज़रूरी है जो सुना और समझा जा सके हत्ताकि (यहाँ तक कि) वहाँ इज़न की वाज़ेह दलील भी पाई जाए तो कारआमद न होगी। मिसाल के तौर पर, ख़ाविंद ने हलफ़न कहा कि मैं बीवी की इजाज़त

[بایاں کالم - فارسی] مستلزم تحقق جزا وزوال عصمت است تسلیم او مرہون ثبوت شرعی است کہ اقرار زوج باشد یا اظہار بینہ اما البینة فلانها کاسمها مبینة۔ اما اعتراف الزوج فلانہ یملك الانشاء فلایزاحم فی الاخبار، تنہا بیان مہرالنساء در حق زوجہ ثانیہ شنودن ندارد کہ بیان یک زن حجت شرعیہ نیست خاصہ در حق ضرہ کہ محل تہمت ست واقدام یونس علی بریں عقد بے استئذان مہر النساء مثبت شرط نتواں شد کہ شرط عدم رضا بود نہ ترک استرضاء و شتان مابینما، و لہذا علماء گفتہ اند کہ در تعلیق بالرضا علم برضا در کار نیست، مثلاً شوہر حلف بطلان کردہ مرزنش را گوید کہ بے رضائے من بیروں نروی باز آہستہ گفت۔ برو، زن نشنید یا شنید و نفہمید وبیروں رفت طلاق نہ شود کہ بے رضا نرفتہ است، گو خود برضا مطلع مباش۔ بخلاف اذن کہ او نباشد الا بقول مسموع و مفہوم تا آنکہ دلائل واضعہ رضا نیز آں جابکار نیاید مثلاً حلف کند بے اذن زن نیا شامم زن کاسہ بدست خود گرفتہ نو شاند و بر زبان بیچ نگفت یا گفت وشوے نشنود یا مفہومش نشد حانث شود کہ اذن متحقق نگشت، پس عدم اذن در محل شرط بہ بینہ ثابت تواں کر د لان الشہادة علی النفی مقبولة فی الشروط اما باثبات عدم رضا ورغبت را ہے نیست زیرا کہ او صفتے قلبی ست و علمش از علوم غیبی، نہایت کار شہود چنگ بدلائل خارجہ زدن ست و در ہچو...

[دایاں کالم - اردو] پائے جانے کو مستلزم ہوگا جس سے نکاح ختم ہو جائے گا لیکن اس کو تسلیم کرنا شرعی ثبوت پر موقوف ہے اور ثبوت شرعی خاوند کا اقرار یا شہادت ہے، شہادت اس لئے ضروری کہ وہ معاملہ کو واضح کرتی ہے، اور زوج کا اقرار اس لئے کہ خاوند ہی طلاق کو نافذ کرنے کا مالک ہے، لہٰذا بحال کی خبر وہ خود ہی دے سکتا ہے، تنہا مہر النساء کا بیان دوسری بیوی کے متعلق قابلِ سماعت نہیں ہے کیونکہ ایک عورت کا بیان شرعی حجت نہیں ہے خاص کر

اپنی سوکن کے بارے میں کہ تہمت کا احتمال ہے اور یونس علی کا مہر النساء سے اجازت طلب کئے بغیر یہ دوسرا نکاح کرنا طلاق کی شرط کے پائے جانے کے لئے کافی نہیں ہے کیونکہ طلاق کی شرط مہر النساء کی عدمِ رضا و رغبت ہے نہ کہ اس سے اجازت طلب کرنا، جبکہ ان دونوں میں بڑا فرق ہے، اسی لئے علماء کرام فرماتے ہیں کہ رضا کے ساتھ مشروط امر کے پائے جانے میں رضا کا علم ضروری نہیں بلکہ رضا کا پایا جانا ہی کافی ہے، مثلاً ایک شخص نے طلاق کا حلف کہتے ہوئے اپنی بیوی کو کہا کہ تو میری رضا کے بغیر باہر مت جا۔ پھر آہستہ سے کہا جا، بیوی نے نہ سنا، یا سنا مگر سمجھا نہیں اور باہر چلی گئی تو طلاق نہ ہوگی، کیونکہ وہ رضا پر باہر گئی اگرچہ وہ خود رضا پر مطلع نہ ہوئی، اس کے بر خلاف اگر رضا کی جگہ وہ اذن کا لفظ کہتا تو طلاق ہو جاتی کیونکہ اذن کے لئے ایسا قول ضروری ہے جو سنا اور سمجھا جاسکے حتی کہ وہاں اذن کی واضح دلیل بھی پائی جائے تو کار آمد نہ ہوگی، مثلاً خاوند نے بحلف کہا کہ میں بیوی کی اجازت

Fatawa Rizvia Volume 13

[Left Column - Persian text summary]: The status of external signs, however clear they may be, is of no consequence. Scholars have stated that if a man tells his wife, "If so-and-so is a believer, you are divorced," even if that person is considered among the most righteous and pious of the time and claims a thousand times to be a believer, the divorce will not be confirmed until the husband acknowledges it, because faith resides in the heart. Thus, signs are not considered evidence in this matter, and individual testimony is separated from acceptance. Furthermore, if proofs such as the wife frowning or previously opposing the marriage come after the second marriage, they are of no use because the condition is the absence of consent at the exact time of the contract. The heart fluctuates; therefore, past or future lack of consent cannot prove lack of consent at the time of the contract, except by presumption. All such things are merely apparent, and Allah alone knows what is in the hearts. This is a matter of weakness upon weakness in evidence. Even if signs of anger appear at the time of the contract, the cause is not limited to one thing; there could be many reasons for anger. Knowing the true reason would require a statement from the wife herself, thus negating the testimony of witnesses.

[Right Column - Urdu text]: ...I will not drink without [permission]. If the wife gives a cup of water with her own hand and he drinks it, and at that moment the wife did not say anything with her tongue, or she told him to drink but the husband did not hear or understood, then the oath will be broken because permission was not found. Therefore, if the condition is the absence of permission, it can be proven by testimony because in conditions, it is difficult to prove a negative by testimony since it is a matter of the heart, the knowledge of which is from the hidden sciences, while testimony relies on external matters. No matter how clear the signs of such a state of heart are, they cannot be effective. Scholars have said that if a husband says to his wife, "If such and such person is a believer, then you are divorced," while that person is seen as virtuous and pious in the city and claims a thousand times to be a believer, his claim will not be confirmed in the matter of divorce. Divorce will not occur until the husband confesses to his faith; divorce will not happen because faith is in the heart. Here, signs cannot be evidence, and signs will not be accepted based on any individual's testimony. Furthermore, if these signs occur after the second marriage, for example, if Mahr-un-Nisa had forbidden it before the second marriage and was angry at the mention of it, these signs also cannot be effective because the condition

is that if the second marriage is not with the heart's consent of Mahr-un-Nisa, then divorce will occur, while the state of heart...

फ़तावा रिज़विया खंड 13

[बायाँ कॉलम]: बाहरी संकेतों का स्थान, चाहे वे कितने ही स्पष्ट क्यों न हों, काम नहीं आता। विद्वानों ने कहा है कि यदि कोई अपनी पत्नी से कहे, "यदि अमुक व्यक्ति मोमिन है तो तुझे तलाक़ है," और वह व्यक्ति शहरों के नेक लोगों और ज़माने के सबसे पवित्र लोगों में से माना जाता हो, भले ही उसने हज़ार बार कहा हो, "मैं मोमिन हूँ," तलाक़ के मामले में उसकी बात की पुष्टि नहीं की जाएगी और तलाक़ तब तक नहीं होगी जब तक कि पति इसे स्वीकार न करे, क्योंकि ईमान दिल में होता है। इसलिए, यहाँ संकेत प्रमाण नहीं माने जा सकते। पुन; यदि निकाह के बाद ऐसे प्रमाण मिलते हैं जैसे पत्नी का माथा सिकोड़ना या पहले विरोध करना, तो यह पर्याप्त नहीं है क्योंकि शर्त निकाह के समय सहमति के अभाव की है। दिल हर समय एक सा नहीं रहता; इसलिए पहले या बाद का अभाव निकाह के समय के अभाव का प्रमाण नहीं हो सकता। यह सब केवल प्रतीति है और अल्लाह ही सीनों की बातों को जानता है। यदि निकाह के समय ही गुस्से के संकेत मिलें, तो भी कारण केवल यही नहीं हो सकता। गुस्से के हज़ारों कारण हो सकते हैं।

[दायाँ कॉलम]: ...के बिना [अनुमति] नहीं पीऊंगा। यदि पत्नी अपने हाथ से पानी का प्याला दे और वह पी ले और पत्नी ने उस समय अपनी ज़ुबान से कुछ न कहा हो, या ज़ुबान से पीने को कहा हो लेकिन पति ने न सुना हो या सुना हो पर समझ न सका हो, तो कसम टूट जाएगी क्योंकि अनुमति नहीं मिली। अतः, यदि शर्त अनुमति न होना है, तो इसे गवाही से साबित किया जा सकता है क्योंकि शर्तों में नकारात्मक बात को गवाही से साबित करना कठिन है क्योंकि वह दिल का मामला है, जिसका ज्ञान परोक्ष ज्ञानों में से है। गवाही बाहरी मामलों पर निर्भर करती है, और दिल की ऐसी स्थिति पर कितने ही स्पष्ट संकेत क्यों न हों, वे प्रभावी नहीं हो सकते। विद्वानों ने कहा है कि यदि पति पत्नी से कहे, "यदि अमुक व्यक्ति मोमिन है, तो तुझे तलाक़ है," जबकि वह व्यक्ति शहर में नेक और पवित्र माना जाता हो और वह हज़ार बार मोमिन होने का दावा करे, तो तलाक़ के मामले में उसके दावे की पुष्टि नहीं की जाएगी। तलाक़ तब तक नहीं होगी जब तक पति उसके ईमान को स्वीकार न कर ले। तलाक़ नहीं होगी क्योंकि ईमान दिल में है। यहाँ संकेत साक्ष्य नहीं हो सकते। इसके अलावा, यदि ये संकेत दूसरे निक۷ (विवाह) के बाद मिलते हैं, उदाहरण के लिए, यदि मेहरुन्निसा ने दूसरे विवाह से पहले मना किया था और इसके ज़िक्र पर नाराज़ हुई थी, तो ये संकेत भी प्रभावी नहीं हो सकते क्योंकि शर्त यह है कि यदि दूसरा विवाह मेहरुन्निसा के दिल की रज़ामंदी से न हो तो तलाक़ होगी, जबकि दिल का हाल...

[بایاں کالم]: مقام امارات ظاہرہ اگر باچند ہر چہ تمامتر واضحہ باشد بکار نیاید، علماء فرمودہ اند زن را گفت اگر فلاں مومن ست تو طلاقہ وفلاں را می بینم از صلحائے امصار واتقیائے روزگار ست اور ہزار گفتہ باشد من مومنم در حق تطلیق تصدیق نباشد و طلاق نیفتد تازوج بائیں معنی اعتراف نکند زیرا کہ ایمان در دل ست و امارات ازینجا حجت منعزل و شہادت فرداز قبول منفصل، باز ایں دلائل اگر بعد وقوع ایں نکاح ثانی یافتہ شد مثلاً مہر النساء را خبر رسید اور وئے درہم کشید یا پیش از نکاح منع ایں معنی می کرد و بر ذکر او غضب می آورد خود بکار نیست زیرا کہ شرط بوقوع نکاح متلبسا بعدم الرضاست، دل ہر وقت بر یک حال نیست، القلب یتقلب، پس عدم رضائے سابق ولاحق دلیل عدم مقارن نتواں شد الا بہ استصحاب در سابق یا قیاس در لاحق و اینمہ از ظاہر ست وظاہر واقع است نہ مثبت بلکہ آں سابق ولاحق نیز خود ظاہری بیش نبود واللہ علیم بذات الصدور، ایں ظاہر در ظاہر شد و ضعف در ضعف راہ یافت و اگر خود عین وقت ایں عقد دلائل غضب یافتہ شود علت منحصر دریں نیست اسباب غضب ہزار ست یمکن کہ یاد تطلیق خودش در غضب آوردہ باشد نہ عدم رضا بایں عقد، اطلاع بر آنکہ وجہ غضب چیست باز نیاز باں آرد کہ آں وقت سخناں مہر النساء اور دستاویز نمایند ایں باز رجوع بہ بیان زن شدہ و شہادت شہود از میاں برخاست۔

[دایاں کالم]: کے بغیر نہ پیوں گا، اگر بیوی اپنے ہاتھ سے پانی والا پیالہ دے اور وہ پی لے اور بیوی نے اس موقعہ پر اپنی زبان سے کچھ نہ کہا یا زبان سے پینے کو کہا مگر خاوند نے نہ سنا یا سنا مگر سمجھ نہ سکا، تو قسم ٹوٹ جائے گی کیونکہ اذن نہ پایا گیا، پس عدم اذن کی شرط ہو تو یہ گواہی سے ثابت ہو سکتی ہے کیونکہ شرائط میں منفی پر گواہی سے ثابت کرنا مشکل ہے کیونکہ

وہ قلبی معاملہ ہے جس کا علم غیبی علوم میں سے ہے، جبکہ گواہی میں خارجی امور پر سہارا ہوتا ہے اور ایسے قلبی حال پر کتنی ہی واضح علامات کیوں نہ ہوں وہ کار آمد نہیں ہو سکتیں، علماء نے فرمایا کہ خاوند بیوی کو کہے اگر فلاں شخص مومن ہے تو تجھے طلاق ہے، جبکہ فلاں شخص کو شہر میں نیک اور زمانہ کا پرہیز گار دیکھا جا رہا ہو اور وہ ہزار بار مومن ہونے کا دعوی کرے لیکن طلاق دینے کے معاملہ میں اس کی بات کی تصدیق نہ کی جائے گی اور طلاق نہ پڑے گی جب تک کہ خاوند اس کے مومن ہونے کا اعتراف نہ کرے گا طلاق نہ ہو گی، کیونکہ ایمان دل میں ہے اس پر علامات یہاں حجت نہیں بن سکتیں اور کسی فرد کی شہادت پر علامات یہاں مقبول نہ ہوں گی، پھر اگر یہ علامات نکاح ثانی کے بعد سر زد ہوں، مثلاً مہر النساء کو دوسرے نکاح سے قبل مہر النساء نے اس سے منع کیا ہو اور دوسرے نکاح کے ذکر پر ناراض ہوئی ہو، یہ علامات بھی کار آمد نہیں ہو سکتیں کیونکہ شرط یہ ہے کہ دوسرا نکاح مہر النساء کے دل کی رضا مندی سے نہ ہو تو طلاق ہو گی، جبکہ دل کا حال۔

Volume 13 Fatawa Rizvia

(Left Column - Persian Text) Rather, the common habit of women, especially in these lands and times, is that they do not like their husbands' second marriage, even if they themselves have been divorced. However, this outward appearance, as it is external and lacking in certainty, is even weaker. Often, divorced or even abandoned women pray and wish that their husband gets ensnared in the clutches of a foul-mouthed, ill-mannered woman so that he tastes the consequences of his actions and suffers for the pain he caused us. Knowledge of an event's occurrence at the time it happens is not necessary for consent. For instance, a father wishes for his son Zaid to attain the post of minister, and in the father's absence, Zaid is made a minister; it wouldn't be said that this ministry is without the father's consent. Thus, the occurrence of this marriage contract without Mehr-un-Nisa's knowledge also does not fulfill the condition. In summary, there is no way to prove this condition except through Mehr-un-Nisa's reporting along with Yunus Ali's confirmation. The core of the matter remains Yunus Ali's admission. If three divorces occurred immediately upon marriage, it is the present time for the second, as an unconsummated wife is a subject for three instantaneous divorces, even if separation is not achieved, for following the conditions is not limited to the period of the first wife's marital subsistence, otherwise, no.

(Right Column - Urdu Text) ...it keeps changing. Therefore, the lack of consent before or after the marriage cannot serve as proof of the heart's dissatisfaction at the exact time of the marriage. Yes, prior dissatisfaction can be an indication based on the continuity of the state, and subsequent dissatisfaction can be an indication based on analogy. However, all these are external appearances. While the external can occur, it cannot become a definitive proof. In fact, both the preceding and succeeding feelings are no more than external indicators. The true state of the heart is known only to Allah Almighty. Whatever is apparent is an external matter and carries weakness, following the path of weakness. Even if Mehr-un-Nisa's anger is found at the very moment of the second marriage, it cannot be proof that she is displeased with the second marriage itself. This is because there can be many reasons for anger. It is possible that at that time, the anger was not due to lack of consent for the marriage. Ultimately, determining the cause of anger would depend on Mehr-un-Nisa's own statement—that she spoke angry words at the time of the second marriage. This then relies on the wife's testimony, and in the absence of other witnesses, it remains unproven. Furthermore, it is a known habit of women in this country and era that

they do not like their husbands' second marriages, even if they themselves have obtained a divorce. But this habitual behavior is also an external matter and is insufficient and weak as evidence for the state of the heart at the time of the marriage. Oftentimes, even divorced or abandoned women make curses and ill-wishes, saying they hope the husband meets a bad end or gets caught in the clutches of a bad woman so he pays for his deeds and suffers for the pain he caused. Consent for something does not necessarily require knowledge of its occurrence or existence. For example, if Zaid's father wishes for Zaid to become a minister, and Zaid is appointed in his father's absence, it won't be said that this ministry was without the father's consent. (In short, despite the presence or absence of consent, it cannot be proven that consent existed at the exact moment of the event). Therefore, the fact that Yunus Ali's second marriage happened without Mehr-un-Nisa's knowledge does not constitute proof of the condition. The conclusion is that...

(बायां कॉलम - फ़ारसी पाठ) बल्कि महिलाओं की सामान्य आदत, विशेष रूप से इन देशों और समय में, यही है कि वे अपने पतियों के दूसरे विवाह को पसंद नहीं करती हैं, भले ही वे स्वयं तलाकशुदा हों। हालाँकि, यह बाहरी दिखावा, क्योंकि यह बाहरी है और निश्चितता की कमी है, और भी कमजोर है। अक्सर, तलाकशुदा या छोड़ी गई महिलाएं भी दुआ और इच्छा करती हैं कि उनका पति किसी बदज़ुबान, बदतमीज़ औरत के चंगुल में फंस जाए ताकि वह अपने किए का फल चखे और उस दर्द को भुगते जो उसने हमें दिया। किसी चीज़ के होने के समय उसकी जानकारी होना सहमति के लिए आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए, एक पिता चाहता है कि उसका बेटा ज़ैद मंत्री के पद तक पहुँचे, और पिता की अनुपस्थिति में ज़ैद को मंत्री बना दिया जाए; यह नहीं कहा जाएगा कि यह मंत्रालय पिता की सहमति के बिना है। अत; मेहर-उन-निसा की जानकारी के बिना इस विवाह अनुबंध का होना भी शर्त को पूरा नहीं करता है। संक्षेप में, मेहर-उन-निसा की रिपोर्ट और यूनुस अली की पुष्टि के अलावा इस शर्त को साबित करने का कोई तरीका नहीं है। मामले का सार यूनुस अली की स्वीकारोक्ति ही है।

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ) ...बदलता रहता है, इसलिए विवाह के समय पहले या बाद की असहमति दिल की नाराजगी का प्रमाण नहीं बन सकती। हाँ, पिछली नाराजगी वर्तमान स्थिति की निरंतरता के आधार पर एक संकेत हो सकती है, और बाद की नाराजगी सादृश्य के आधार पर एक संकेत हो सकती है। लेकिन ये सब बाहरी बातें हैं। जबकि बाहरी बातें घटित तो हो सकती हैं, लेकिन वे निश्चित प्रमाण नहीं बन सकतीं। वास्तव में, पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों भावनाएं बाहरी संकेतकों से अधिक कुछ नहीं हैं। दिल की सच्ची स्थिति तो केवल अल्लाह तआला ही जानता है। जो कुछ भी प्रकट है वह एक बाहरी मामला है और इसमें कमजोरी है, जो कमजोरी के रास्ते पर चलती है। यदि दूसरे विवाह के ठीक समय पर मेहर-उन-निसा का गुस्सा पाया भी जाए, तो यह भी प्रमाण नहीं हो सकता कि वह दूसरे विवाह से नाराज है। ऐसा इसलिए है क्योंकि गुस्से के कई कारण हो सकते हैं। संभव है कि उस समय गुस्सा विवाह की असहमति के कारण न हो। अंततः गुस्से का कारण क्या है, यह जानने का प्रमाण यही हो सकता है कि मेहर-उन-निसा ने दूसरे विवाह के समय नाराजगी वाली बातें की थीं। यह फिर पत्नी के बयान पर निर्भर हो गया, और बीच में गवाहों की गवाही का अभाव रहा। इसके अलावा, यह इस देश और समय की महिलाओं की एक स्वीकृत आदत है कि वे अपने पतियों के दूसरे विवाह को पसंद नहीं करती हैं, भले ही उन्होंने स्वयं तलाक प्राप्त कर लिया हो। लेकिन यह आदतन व्यवहार

भी एक बाहरी मामला है और विवाह के समय दिल की स्थिति के प्रमाण के रूप में अपर्याप्त और कमजोर है। अक्सर तलाकशुदा या छोड़ी गई महिलाएं बददुआएं और बुरी इच्छाएं करती हैं, यह कहते हुए कि उनके पति का बुरा हो या वह किसी बुरी औरत के चंगुल में फंस जाए ताकि वह अपने किए की सजा पाए। किसी चीज़ के लिए सहमति के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उसके होने का ज्ञान भी हो। उदाहरण के लिए, ज़ैद के पिता की इच्छा है कि ज़ैद मंत्री बने, और ज़ैद को पिता की अनुपस्थिति में मंत्री बना दिया जाए, तो यह नहीं कहा जाएगा कि यह सहमति के बिना है। (संक्षेप में, सहमति की उपस्थिति के बावजूद, यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि घटना के समय सहमति मौजूद थी)। इसलिए, यूनुस अली का दूसरा विवाह मेहर-उन-निसा की जानकारी के बिना होना शर्त का प्रमाण नहीं बनता।

पृष्ठ 250 का 688

(بائیں کالم - فارسی متن) بلکہ غالب عادت زناں خاصہ دریں بلاد وزمان ہمانست کہ نکاح ثانی شوہر ان پسند نکنند اگرچہ خود آنہا طلاقہ شدہ باشند، اما این ظاہر بانکہ ظاہر واز جمعیت قاصر ست ضعیف ترست، بار ہا زناں مطلقہ بلکہ معلقہ بدعا، آرزو کنند کہ شوہر پنجہ زنے بلایاسلیط کج ادا گرفتار آید تا کیف کردار خود چشد وعذابے کہ مارا کردہ است خمیازہ اش کشد ورضا بچیزے را علم بآں چیز ھم در وقت حدوث اور ضروری نیست مثلاً پدر زید را تمنا است کہ زید بمنصب وزارت رسد در غیبت پدر وزیرش کردند گفتہ نشود کہ ایں وزارت بے رضائے پدرست پس وقوع ایں عقد بے اطلاع مہر النساء نیز محقق شرط نباشد، بالجملہ راہ باثبات ایں شرط نیست، جز باخبار مہر النساء مع تصدیق یونس علی، واصل کار ہماں اقرار یونس علی ست اگر یافتہ شد سہ طلاق بفور نکاح نقد وقت ثانیہ است کہ نامدخولہ محل سہ طلاق دفعی ست اگر چہ تفریق بر نیابد کہ امتثال تعلیقات بزمان بقائے زوجیت زوجہ اولیٰ مقتصر نیست ورنہ خیر۔

(دائیں کالم - اردو متن) بدلتا رہتا ہے، پس پہلے یا بعد کی عدم رضا نکاح کے وقت ناراضگی دل کی دلیل نہیں بن سکتی، ہاں سابق ناراضگی استصحاب حال اور بعد والی قیاس بن سکتی ہے، لیکن یہ سب کچھ ظاہری چیزیں جبکہ ظاہر واقع تو ہو سکتا مگر وہ ثبت نہیں بن سکتا بلکہ وہ سابق اور لاحق خود بھی ظاہر سے بڑھ کر نہیں ہیں، دل کی کیفیت تو اللہ تعالیٰ ہی جانتا ہے یہ جو کچھ ظاہر ہو ظاہری معاملہ ہے اور ضعف ہے جو کہ ضعف کا راستہ پاتا ہے بلکہ عین نکاح ثانی کے وقت بھی مہر النساء کا غصہ پایا جائے تو یہ بھی دلیل نہیں ہو سکتی کہ یہ دوسرے نکاح سے ناراض ہو رہی ہے کیونکہ غصہ کی وجود کئی ہو سکتی ہیں ممکن ہے اس وقت نکاح عدم رضا کی وجہ سے نہ ہو، یہ معلوم کرنا کہ غصہ کی وجہ کیا ہے آخر کار دلیل اس کی یہی ہو سکتی ہے کہ مہر النساء

نے دوسرے نکاح کے وقت غصہ کی باتیں کی ہیں یہ پھر بیوی کے بیان پر موقوف ہوا، اور درمیان میں گواہوں کی گواہی ناپید رہی بلکہ تسلیم شدہ ہے کہ اس ملک میں موجودہ زمانے کی عورتوں کی عادت ہے کہ وہ خاوند کے دوسرے نکاح کو پسند نہیں کرتیں اگرچہ ان میں سے خود طلاق بھی حاصل کر چکی ہوں مگر یہ بات عادت بھی تو ظاہر معاملہ ہے اور نکاح کے وقت دل کی کیفیت پر دلالت قاصر اور ضعیف تر ہے، کیونکہ بار ہا اور معلقہ عورتیں بد دعائیں اور بری آرزوئیں کرتے ہوئے کہتی ہیں کہ خاوند کا برا ہو اور کسی بری عورت کے پنجہ یا مصیبت میں گرفتار ہوتا کہ وہ اپنے کیفر کردار کو پہنچے اور اس نے جو مجھے تکلیف دی اس کا خمیازہ بھگتے، کسی چیز پر رضا کو یہ لازم نہیں کہ اس چیز کے حدوث اور وجود کا علم بھی ہو مثلاً زید کے والد کی تمنا ہے کہ زید وزارت کے منصب تک پہنچے جبکہ والد کی عدم موجودگی میں زید کو وزیر بنا دیا جائے تو یہ نہ کہا جائے گا کہ یہ وزارت والد کی رضا کے بغیر دی گئی ہے (غرضیکہ رضا و عدم رضا پائے جانے کے باوجود یہ ثابت نہیں ہو سکتا کہ عین واقعہ کے وقت رضا موجود تھی) پس یونس علی کے دوسرے نکاح کا مہر النساء کی اطلاع کے بغیر ہونا بھی شرط کا ثبوت نہیں بنتا، حاصل یہ کہ

صفحہ 250 از 688

[Right Column] Now we read some of the statements of the scholars and bring what we have said to the level of proof, and success is from Allah.

Imam al-Muhaqqiq 'Ali al-Itlaq [Ibn al-Humam] says in 'Fath al-Qadir', Book of Oaths, in Miscellaneous Issues: "If a man says to his wife: 'Every woman I marry without your permission is divorced,' and then he divorces his wife with a revocable (ba'in) divorce or three divorces, and then he marries another woman without her permission, the second wife is divorced. This is because his oath was not restricted by the continuation of the marriage [with the first wife]. It would only be restricted by it if the woman gained the authority of permission and prohibition through the marriage contract."

Allama Muhaqqiq Zain bin Nujaym says in 'Al-Bahr al-Ra'iq': "Permission is known through words, unlike love [summarized]. There too, it is stated: 'The reality of love and hatred is a hidden matter; no one can be certain of it, neither from her side nor from anyone else's, because the heart fluctuates and does not remain stable.'"

[Left Column] At the time of the second marriage, proving the lack of consent from Mehr-un-Nisa is not possible unless Mehr-un-Nisa herself says so and Yunus Ali confirms it. Rather, the main dependency is on Yunus Ali's admission. If such an admission is found, then immediately upon performing the second marriage, the second un-consummated wife will be given three divorces simultaneously. This is because an un-consummated wife is subject to three divorces in one instance, even if she is not subject to three in separate instances. This is because the effectiveness of conditional statements (ta'liqat) does not depend on the continuation of the first wife's marital status. And if Yunus Ali does not admit it, then it is well (i.e., no divorce will occur). (T)

Now we will state some words of the scholars to prove our aforementioned position, and success is from Allah. Imam Muhaqqiq 'Ali al-Itlaq has stated in 'Fath al-Qadir' in the Miscellaneous Issues of the Book of Oaths: If a person says to his wife, 'Whichever woman I marry without your permission, she is divorced,' then that person gives his wife a 'bain' divorce or three divorces. Then during this time, he marries another woman without the permission of the first wife, then the second one will be divorced. This is because he did not restrict the marriage with the second woman in his oath to the continuation of the first wife's marriage. It would have been restricted if the first wife had gained the power of permission or prohibition at the

time of her marriage. (T) Allama Muhaqqiq Zain bin Nujaym stated in 'Bahr al-Ra'iq': Information about permission can only be had through words, unlike love. In the same, it is also stated that the reality of love and hatred is a hidden matter, no one can be aware of it from the man or woman's side, because it is a state of heart which keeps changing, for the heart is a changing thing.

[Footnotes] 1. Fath al-Qadir, Book of Oaths, Miscellaneous Issues, Maktaba Nooriya Razviya, Sukkur, 3/68 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Conditional Divorce (Ta'liq), H.M. Saeed Company, Karachi, 26/3

[दायां कॉलम] अब हम विद्वानों के कुछ कथनों को पढ़ते हैं और जो हमने कहा है उसे प्रमाण के स्तर तक पहुँचाते हैं, और सफलता अल्लाह की ओर से है।

इमाम अल-मुहक्किक़ अली अल-इतलाक [इब्न अल-हुमाम] 'फ़तह अल-क़दीर' की 'किताब अल-ईमान' (शपथों की पुस्तक) के विविध मसलों में फरमाते हैं: "यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी से कहे: 'हर वह स्त्री जिससे मैं तुम्हारी अनुमति के बिना निकाह करूँ उसे तलाक है,' फिर उसने अपनी पत्नी को तलाक-ए-बाइन या तीन तलाक दे दिए, और फिर उसने उसकी अनुमति के बिना किसी अन्य महिला से निकाह किया, तो दूसरी पत्नी को तलाक हो जाएगा। क्योंकि उसकी शपथ निकाह के बने रहने के साथ प्रतिबंधित नहीं थी। यह केवल तब प्रतिबंधित होती जब महिला निकाह के अनुबंध के माध्यम से अनुमति और निषेध का अधिकार प्राप्त करती।"

अल्लामा मुहक्किक़ ज़ैन बिन नुजैम 'अल-बहर अर-राइक' में फरमाते हैं: "अनुमति का पता केवल शब्दों के माध्यम से चल सकता है, प्यार के विपरीत [संक्षिप्त में]। वहीं यह भी कहा गया है: 'प्यार और नफरत की वास्तविकता एक छिपा हुआ मामला है; इस पर किसी की ओर से निश्चितता नहीं हो सकती, न उसकी ओर से और न ही किसी और की ओर से, क्योंकि दिल बदलता रहता है और स्थिर नहीं रहता।'"

[बायां कॉलम] दूसरे निकाह के समय मेहरुन्निसा की असहमति का प्रमाण देना इसके सिवाय संभव नहीं है कि मेहरुन्निसा स्वयं बताए और यूनुस अली इसकी पुष्टि करे। बल्कि मुख्य आधार यूनुस अली की स्वीकारोक्ति पर है। यदि उसकी यह स्वीकारोक्ति पाई जाए, तो दूसरा निकाह करते ही दूसरी गैर-मदखूला (जिसके साथ सहवास न हुआ हो) पत्नी को एक साथ तीन तलाक हो जाएंगे। क्योंकि गैर-मदखूला पत्नी एक शब्द में तीन तलाकों का पात्र है, भले ही वह अलग-अलग तलाकों का पात्र न हो। क्योंकि शर्तों (ता'लीक़ात) का प्रभाव पहली पत्नी के वैवाहिक संबंधों के बने रहने पर निर्भर नहीं है। और यदि यूनुस अली स्वीकार न करे, तो खैर (यानी तलाक नहीं होगा)। (त)

अब हम विद्वानों की कुछ बातों का उल्लेख करके अपने उक्त रुख को प्रमाणित करेंगे, और सफलता अल्लाह से है। इमाम मुहक्किक़ अली अल-इतलाक ने 'फ़तह अल-क़दीर' में शपथों की पुस्तक के विविध मसलों में फरमाते हैं: यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से कहे, 'जिस किसी भी औरत से मैं तेरी इजाज़त के बिना निकाह करूँउसे तलाक है', फिर उस व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक-ए-बाइन

या तीन तलाक दे दिए, फिर उसने इस दौरान पहली पत्नी की इजाज़त के बिना दूसरी औरत से निकाह किया, तो दूसरी को तलाक हो जाएगी क्योंकि उसने अपनी शपथ में दूसरी औरत से निकाह को पहली पत्नी के निकाह के बाकी रहने से सीमित नहीं किया था। यह उससे तब सीमित होता जब पहली पत्नी अपने निकाह के समय इजाज़त या मना करने का अधिकार प्राप्त करती। (त) अल्लामा मुहक्किक़ ज़ैन बिन नुजैम ने 'बहर अर-राइक' में फरमाया: इजाज़त की सूचना केवल शब्दों के ज़रिए हो सकती है, प्यार के विपरीत। इसी में यह भी फरमाया कि प्यार और नफरत की हकीकत एक छुपा हुआ मामला है, इस पर पुरुष या औरत किसी की तरफ से जानकारी नहीं हो सकती, क्योंकि यह दिली कैफियत है जो बदलती रहती है क्योंकि दिल बदलता रहने वाली चीज़ है।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-ईमान, विविध मसले, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/68 2. अल-बहर अर-राइक, बाब अल-ता'लीक़, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 26/3

[دایاں کالم] حالا برخے از کلمات علماء برخوانیم وانچہ گفتہ ایم بپایہ اثبات رسانیم، وباللہ التوفیق۔ امام محقق علی الاطلاق در فتح القدیر کتاب الایمان فی مسائل متفرقہ فرماید، لو قال لامرأتہ کل امرأۃ اتزوجھا بغیر اذنك طالق فطلق امرأتہ طلاقا بائنا او ثلاثا ثم تزوج بغیر اذنھا طلقت لانہ لم تتقید یمینہ ببقاء النکاح لانھا انما تتقید بہ لوکانت المرأۃ تستفید ولایۃ الاذن والمنع بعقد النکاح۔ علامہ محقق زین بن نجیم در بحر الرائق فرماید الاذن یطلع علیہ بالقول بخلاف المحبۃ ملخصاً، ھمدان ست حقیقۃ المحبۃ والبغض امر خفی لایوقف علیھا من قبل احد لامن قبلھا ولامن قبل غیرھا لان القلب یتقلب لایستقر

[بایاں کالم] دوسرے نکاح کے وقت مہر النساء کی عدم رضا کا اثبات سوائے اس کے ممکن نہیں کہ مہر النساء خود بتائے اور یونس علی اس کی تصدیق کرے بلکہ اصل دارومدار یونس علی کے اقرار پر ہے اگر اس کا یہ اقرار پایا جائے تو فوری طور پر دوسرے نکاح کو کرتے ہی دوسری غیر مدخولہ بیوی کو بیک وقت تین طلاقیں ہو جائیں گی، کیونکہ غیر مدخولہ بیوی بیک لفظ تین طلاقوں کا محل ہے اگرچہ متفرق طلاقوں میں تینوں کا محل نہیں، کیونکہ تعلیقات کا عمل پہلی بیوی کی زوجیت کی بقاء پر منحصر نہیں ہے اور اگر یونس علی کا اقرار نہ ہو تو خیر (یعنی طلاق نہ ہوگی) (ت) اب ہم علماء کا کچھ کلام بیان کرکے اپنے مذکورہ موقف کو ثابت کریں گے وباللہ التوفیق۔ امام محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں کتاب الایمان کے مسائل متفرقہ میں فرمایا ہے اگر کوئی شخص اپنی بیوی سے کہے جس عورت سے بھی تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں تو اسے طلاق ہے، پھر اس شخص نے اپنی بیوی کو طلاق بائنہ دی یا تین طلاقیں دے دیں پھر اس نے اس دوران پہلی بیوی کی اجازت کے بغیر دوسری عورت سے نکاح کیا تو دوسری کو طلاق ہو جائے گی کیونکہ اس نے حلف میں دوسری عورت سے نکاح کو پہلی بیوی کے نکاح کے باقی

رہنے سے مقید نہیں کیا، اس سے مقید تب ہوتا جب پہلی بیوی اپنے نکاح کے وقت اذن یا منع کا اختیار حاصل کرتی۔ (ت) علامہ محقق زین بن نجیم نے بحر الرائق میں فرمایا اذن پر صرف قول کے ذریعہ اطلاع ہو سکتی ہے، بخلاف محبت کے، اسی میں یہ بھی فرمایا کہ محبت اور بغض کی حقیقت مخفی معاملہ ہے اس پر مرد یا عورت کسی کی طرف سے واقفیت نہیں ہو سکتی، کیونکہ یہ دلی کیفیت ہے جو بدلتی رہتی ہے کیونکہ دل بدلتے رہنے والی

[حواشی] 1. فتح القدیر کتاب الایمان مسائل متفرقة مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۶۸ 2. بحر الرائق باب التعلیق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۶/۳

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

-1- ...thing, the heart does not settle on one thing. (T) (La)

Imam Hafiz al-Din Muhammad Kurdari in Wajiz Kitab al-Iman, Chapter 9, said: If permission was given but the other person did not hear it, then this permission will not be considered valid; this is the school of thought of Imam al-A'zam (Abu Hanifa) and Imam Muhammad (may Allah have mercy on them). In Al-Sughra, it is stated: If a husband said to his wife, "She shall not go out without my pleasure/consent," and after that, the husband gave permission but the wife did not hear it, or she heard it but did not understand, she would not be breaking the oath (hanith) by leaving. Contrary to this, if he had made her leaving conditional on his "permission" (idhn), then in the mentioned case, it would be considered a violation, meaning he would break his oath. This is because pleasure/consent can exist even without the wife's knowledge, whereas permission cannot be realized without her knowledge. (T)

It is also mentioned in the same work: One person said to another, "You shall not drink without my permission." After that, he himself handed the cup of water to the other person's hand but said nothing verbally. If the other person took the water, it would be a violation and he would break his oath (because handing the cup can be evidence of pleasure/consent but it cannot be permission). Similarly, if he said to his wife, "She shall not go out without my knowledge," and then his wife went out while he was watching, the oath would not be broken. And if he gave verbal permission to leave after that, even if she leaves without his knowledge now, the oath will not be broken. (T)

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter: At-Taleeq, HM Saeed Company Karachi, 2/71
2. Fatawa Bazzaziya on the margin of Fatawa Hindiyya, Ninth in 'The Oath regarding Permission', Noorani Kutub Khana Karachi, 3/294
3. Fatawa Bazzaziya on the margin of Fatawa Hindiyya, Ninth in 'The Oath regarding Permission', Noorani Kutub Khana Karachi, 3/296

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

-१- ...चीज़ है, दिल को किसी एक चीज़ पर क़रार नहीं। (त) (ला)

इमाम हाफ़िज़ अल-दीन मुहम्मद कुरदरी ने 'वजीज़ किताबुल ईमान' की नौवीं फ़स्ल (अध्याय) में फ़रमाया: अगर इज़न (अनुमति) दिया और दूसरे ने न सुना तो यह इज़न मोतबर (मान्य) न होगा, यह इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद (रहिमाहुमुल्लाह) का मसलक (मार्ग) है। 'सुग़रा' में है: शौहर (पति) ने बीवी से कहा कि मेरी रज़ा (सहमति/इच्छा) के बग़ैर बाहर न जाएगी, तो उसके बाद शौहर ने बीवी को इजाज़त दी मगर बीवी ने न सुना, या सुना है लेकिन समझी नहीं, तो बीवी निकल जाने से हानिथ (शपथ भंग करने वाली) न होगी। इसके बरख़िलाफ़ अगर उसने बीवी के निकलने को 'इज़न' पर मौक़ूफ़ (निर्भर) किया हो तो मज़्कूरा सूरत में ख़िलाफ़-वर्ज़ी क़रार पाएगी यानी हानिथ होगी, क्योंकि रज़ा बीवी के इल्म के बग़ैर भी हो सकती है जबकि इज़न उसके इल्म के बग़ैर मुतहक्क़िक़ (सिद्ध) नहीं हो सकता। (त)

इसी में है: एक ने दूसरे को कहा "तू मेरे इज़न के बग़ैर न पिएगा", इसके बाद उसने ख़ुद पानी का प्याला उसके हाथ में दे दिया लेकिन ज़बान से कुछ न कहा, दूसरे ने पानी लिया तो ख़िलाफ़-वर्ज़ी हो जाएगी और वह हानिथ हो जाएगा (क्योंकि हाथ में देना रज़ा की दलील तो हो सकती है मगर इज़न नहीं हो सकता)। यूँ ही बीवी को कहा "मेरे इल्म के बग़ैर बाहर न जाएगी", फिर उसके देखते हुए उसकी औरत निकली तो हानिथ न होगा, और अगर उसके बाद निकलने की इजाज़त ज़बानी दे दी तो अब इल्म के बग़ैर भी निकल जाए तो हानिथ न होगा। (त)

---

1. बहरुल रायिक़, बाबुल ता'लीक़, एच.एम. सईद कंपनी कराची, २/७१
2. फ़तावा बज़ाज़िया हाशिये पर फ़तावा हिन्दिया, नौवाँ 'अल-यमीन फ़िल-इज़न' में, नूरानी कुतुब ख़ाना कराची, ३/२९४
3. फ़तावा बज़ाज़िया हाशिये पर फ़तावा हिन्दिया, नौवाँ 'अल-यमीन फ़िल-इज़न' में, नूरानी कुतुब ख़ाना कराची, ३/२९६

पृष्ठ २५२ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

علی شیئی ۔ ۱ چیز ہے دل کو کسی ایک چیز پر قرار نہیں۔ (ت) (لا امام حافظ الدین محمد کردری در وجیز کتاب الایمان فصل تاسع فرماید ان اذن ولم تسمع لا یعتبر عند الامام ومحمد رحمہما اللہ تعالٰی، وفي الصغری، لا تخرج الا برضائی او بغیر رضائی فاذنہا ولم تسمع او سمعت ولم تفہم لا یحنث بالخروج، بخلاف الا باذنی او بغیر اذنی حیث یحنث لان الرضا یتحقق بلا علمہا والاذن لا یتحقق۔ ۲ امام حافظ الدین محمد کردری نے وجیز کتاب الایمان کی نویں فصل میں فرمایا: اگر اذن دیا اور دوسرے نے نہ سنا تو یہ اذن معتبر نہ ہوگا، یہ امام اعظم اور امام محمد رحمہما اللہ کا مسلک ہے، صغری میں ہے: خاوند نے بیوی کو کہا تو میری رضا کے بغیر باہر نہ جائیگی، تو اس کے بعد خاوند نے بیوی کو اجازت دی مگر بیوی نے نہ سنا، یا سنا ہے لیکن سمجھی نہیں تو بیوی نکل جانے سے حانث نہ ہوگی، اس کے برخلاف اگر اس نے بیوی کے نکلنے کو اذن پر موقوف کیا ہو تو مذکورہ صورت میں خلاف ورزی قرار پائے گی یعنی حانث ہوگی، کیونکہ رضا بیوی کے علم کے بغیر بھی ہو سکتی ہے جبکہ اذن اس کے علم کے بغیر متحقق نہیں ہو سکتا۔ (ت)

ہمدران ست لا یشرب الا باذنہ فناولہ القدح بیدہ ولم یقل بلسانہ شیئا فشرب یحنث لانہ دلیل الرضا، لا الا اذن، لا تخرج امرأتہ الا بعلمہ فخرجت وہو یراہا لا یحنث، وان اذن لہا بالخروج فخرجت بعدہ بلا علمہ لا یحنث۔ ۳ اسی میں ہے: ایک نے دوسرے کو کہا "تو میرے اذن کے بغیر نہ پیئے گا" اس کے بعد اس نے خود پانی کا پیالہ اس کے ہاتھ میں دے دیا لیکن زبان سے کچھ نہ کہا دوسرے نے پانی لیا تو خلاف ورزی ہو جائیگی اور وہ حانث ہو جائیگا (کیونکہ ہاتھ میں دینا رضا کی دلیل تو ہو سکتی ہے مگر اذن نہیں ہو سکتا) یونہی بیوی کو کہا "میرے علم کے بغیر باہر نہ جائے گی" پھر

اس کے دیکھتے ہوئے اس کی عورت نکلی تو حانث نہ ہوگا، اور اگر اس کے بعد نکلنے کی اجازت زبانی دے دی تو اب علم کے بغیر بھی نکل جائے تو حانث نہ ہوگا۔ (ت)

۱۔ بحر الرائق باب التعلیق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۷۱ ۲۔ فتاوی بزازیہ علی ھامش فتاوی ہندیہ التاسع فی الیمین فی الاذن نورانی کتب خانہ کراچی ۳ / ۲۹۴ ۳۔ فتاوی بزازیہ علی ھامش فتاوی ہندیہ التاسع فی الیمین فی الاذن نورانی کتب خانہ کراچی ۳ / ۲۹۶

The great Imam Burhan al-Millah wa al-Din stated in al-Hidayah: 'If the condition is such that it is not known except from her side, then her statement is accepted regarding herself, such as if he said: "If you menstruate, you are divorced, and so-and-so (another wife) is also divorced." If she says, "I have menstruated," she is divorced, but the other woman is not. The occurrence of divorce is based on juristic preference (istihsan), while analogical reasoning (qiyas) dictates it should not occur, because it is a condition, and her word is not trusted regarding conditions, as in the case of entering a house. The reason for juristic preference is that she is considered trustworthy regarding her own matter, as it is only known through her. Thus, her word is accepted, as is said regarding the waiting period (iddah) and intercourse. However, she is a witness regarding her co-wife; rather, she is suspected, so her word is not accepted concerning her.' And in Fath al-Qadir: 'Her testimony regarding that is the testimony of a single individual, and her test of it does not extend to the other wife in the face of denial.' Allama Afandi Shami stated in Radd al-Muhtar: 'It is said in al-Bahr: He restricted it to her love, because if he had tied it to the love of someone else, then what is apparent in al-Muhit is that the husband's confirmation is necessary.'

The great Imam Burhan al-Millah wa al-Din stated in al-Hidayah: If the condition is such that its knowledge depends solely on the statement and disclosure of the woman, then the woman's word will be credible regarding what pertains to her own person. For example, if he said, "If you menstruate, you are divorced, and so-and-so (another wife) is also divorced," and now that woman says, "I have menstruated," then she herself will be divorced, but the other woman will not. Her being divorced is by way of juristic preference (istihsan), whereas the logical analogy (qiyas) is that divorce should not occur, because this is a condition, and regarding the occurrence of a condition, a woman's word alone is not credible, as is the case with the condition of entry (into a house), etc. The reason for istihsan is that in her own matter, she will be considered trustworthy (ameen) because the matter is such that its knowledge depends on her statement. Therefore, her word regarding her own person will be credible, just as her word regarding the waiting period (iddah) and intercourse related to it is credible. But this statement of hers becomes testimony in favor of her co-wife; rather, it is considered an accusation. Therefore, her word regarding the co-wife or another woman will not be credible and will not be accepted. It is in Fath al-Qadir: A woman's testimony regarding another woman becomes the testimony of a

single individual, so therefore her statement will not affect the other because it can be declared false due to suspicion. Allamah Afandi Shami in Radd al-Muhtar...

1. Hidayah, Chapter on Oaths in Divorce, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 2/366
2. Fath al-Qadir, Chapter on Oaths in Divorce, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 3/251

महान इमाम बुरहान अल-मिल्लह व अल-दीन ने हिदाया में फ़रमाया: 'यदि शर्त ऐसी हो जिसका ज्ञान केवल उसकी ओर से हो, तो उसकी बात स्वयं के अधिकार में स्वीकार्य होगी, जैसे कि यदि उसने कहा: "यदि तुम्हें मासिक धर्म आए तो तुम्हें तलाक है और फलां (दूसरी पत्नी) को भी।" यदि वह कहती है, "मुझे मासिक धर्म आ गया है," तो उसे तलाक हो जाएगा, लेकिन दूसरी महिला को नहीं। तलाक का होना 'इस्तिहसान' (न्यायिक वरीयता) पर आधारित है, जबकि 'क़ियास' (अनुरूप तर्क) यह कहता है कि यह नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह एक शर्त है, और शर्तों के बारे में उसकी बात पर भरोसा नहीं किया जाता, जैसा कि घर में प्रवेश करने के मामले में होता है। इस्तिहसान का कारण यह है कि वह अपने स्वयं के मामले में भरोसेमंद मानी जाती है, क्योंकि यह केवल उसके माध्यम से ही जाना जाता है। इस प्रकार, उसकी बात स्वीकार की जाती है, जैसा कि इद्दत और संभोग के संबंध में कहा जाता है। हालाँकि, वह अपनी सौतन के संबंध में एक गवाह है; बल्कि, वह संदिग्ध है, इसलिए उसकी बात उसके संबंध में स्वीकार नहीं की जाती है।' और फ़तह अल-क़दीर में है: 'उस संबंध में उसकी गवाही एक अकेले व्यक्ति की गवाही है, और उसका परीक्षण इनकार की स्थिति में दूसरी पत्नी तक विस्तारित नहीं होता है।' अल्लामा अफ़ंदी शामी ने रद अल-मुह्तार में फ़रमाया: 'अल-बहर में कहा गया है: उसने इसे उसके प्रेम तक सीमित रखा, क्योंकि यदि उसने इसे किसी और के प्रेम से जोड़ा होता, तो अल-मुहीत में जो स्पष्ट है उसके अनुसार पति की पुष्टि आवश्यक है।'

महान इमाम बुरहान अल-मिल्लह व अल-दीन ने हिदाया में फरमाया: अगर शर्त ऐसी हो कि उसका ज्ञान केवल महिला के बयान और प्रकटीकरण पर निर्भर हो, तो महिला की बात उसके अपने संबंध में विश्वसनीय होगी। उदाहरण के लिए, यदि उसने कहा, "यदि तुम्हें मासिक धर्म आए तो तुम्हें तलाक है और फलां (दूसरी पत्नी) को भी," अब उस महिला ने कहा कि "मुझे मासिक धर्म आ गया है," तो वह स्वयं तलाकशुदा हो जाएगी, लेकिन दूसरी महिला नहीं होगी। उसका तलाकशुदा होना 'इस्तिहसान' (न्यायिक वरीयता) के आधार पर है, जबकि 'क़ियास' (अनुरूप तर्क) यह है कि तलाक नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह एक शर्त है और शर्त के घटित होने में केवल महिला की बात विश्वसनीय नहीं होती जैसा कि प्रवेश (घर में) आदि की शर्त में होता है। इस्तिहसान का कारण यह है कि वह अपने मामले में अमानतदार (भरोसेमंद) मानी जाएगी क्योंकि मामला ऐसा है जिसका ज्ञान उसके बयान पर निर्भर है। इसलिए उसके अपने बारे में उसकी बात विश्वसनीय होगी, जैसे कि इद्दत और संभोग के संबंध में उसकी बात विश्वसनीय होती है। लेकिन उसकी यह बात सौतन के हक में

गवाही बनती है; बल्कि इसे एक आरोप माना जाता है। इसलिए सौतन या दूसरी महिला के बारे में उसकी यह बात विश्वसनीय नहीं होगी और स्वीकार नहीं की जाएगी। फ़तह अल-क़दीर में है: दूसरी महिला के बारे में एक महिला की गवाही एक व्यक्ति की गवाही बनती है, इसलिए उसकी यह बात दूसरी पर असर नहीं डालेगी, संदेह के कारण इसे झूठ करार दिया जा सकता है। अल्लामा अफ़ंदी शामी ने रद अल-मुह्तार में...

1. हिदाया, तलाक में शपथ का अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची, 2/366
2. फ़तह अल-क़दीर, तलाक में शपथ का अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची, 3/251

पृष्ठ 253/688

امام اجل برہان الملۃ والدین در ہدا یہ فرماید: ان کان الشرط لا یعلم الا من جھتھا فالقول قولھا فی حق نفسھا مثل ان یقول ان حضت فانت طالق وفلانۃ فقالت قد حضت طلقت ھی ولم تطلق فلانۃ ووقوع الطلاق استحسان ، والقیاس ان لا یقع لانہ شرط فلا تصدق کما فی الدخول، وجہ الاستحسان انھا امینۃ فی حق نفسھا اذ لا یعلم ذلك الا من جھتھا فیقبل قولھا کما قیل في حق العدۃ والغشیان ولکنھا شاھدۃ فی حق ضرتھا بل ھي متھمۃ فلا یقبل قولھا في حقھا ، اور فتح القدیر ست شھادتھا علی ذلك شھادۃ فرد واختبارھا بہ لا یسری فی حقھا مع التکذیب علامہ آفندی شامی در رد المحتار فرماید قال فی البحر قید بمحبتھا لانہ لو علقہ بمحبۃ غیرھا فظاھر ما فی المحیط انہ لابد من تصدیق الزوج

امام اجل برہان الملۃ والدین نے ہدایہ میں فرمایا اگر شرط ایسی ہو کہ اس کا علم صرف عورت کے بیان و اظہار پر موقوف ہو تو عورت کی بات معتبر ہوگی جس کا تعلق اس عورت کی ذات سے ہو، مثلاً کہا اگر تجھے حیض آئے تو تجھے طلاق ہے اور فلانی کو بھی ، اب اس عورت نے کہ مجھے حیض آیا ہے، تو اس کو خود طلاق ہو جائیگی دوسری فلانی کو نہ ہوگی ، اس کو طلاق ہونا بطور استحسان ہے جبکہ قیاس یہ ہے کہ طلاق نہ ہو، کیونکہ یہ شرط ہے جبکہ شرط کے وقوع میں صرف عورت کی بات معتبر نہیں ہوتی جیسا کہ دخول وغیرہ کی شرط میں، استحسان کی وجہ یہ ہے کہ اپنے معاملہ میں وہ امین متصور ہوگی کیونکہ معاملہ ایسا ہے جس کا علم اس کے بیان پر موقوف ہے اس لئے اس کی ذات کے بارے میں اس کی بات معتبر ہوگی ، جیسا کہ عدت اور اس سے وطی کے متعلق اس کی بات معتبر ہوتی ہے لیکن اس کی یہ بات سوکن کے حق میں شہادت بنتی ہے بلکہ تہمت متصور ہوتی ہے اس لئے سوکن وغیرہ دوسری عورت کے بارے میں اس کی یہ بات معتبر نہیں ہوگی اور قبول نہ کی جائے گی۔ فتح القدیر میں ہے: عورت کی گواہی دوسری

عورت کے بارے میں یہ ایک فرد کی گواہی بنتی ہے تو اس لئے اس کی بات دوسری پر اثر انداز نہ ہوگی تہمت کی وجہ سے اس کو جھوٹ قرار دیا جاسکتا ہے۔ علامہ آفندی شامی نے ردالمختار

1 ہدایہ باب الایمان فی الطلاق المکتبۃ العربیۃ کراچی ۳۶۶/۲ 2 فتح القدیر باب الایمان فی الطلاق المکتبۃ العربیۃ کراچی ۲۵۱/۳

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Arabic Column]: Because it is said that if he said: "You are divorced if your mother does not wish for it," and the mother says, "I do wish for it," and the husband declares her a liar, the divorce does not occur. But if he believes her, the divorce takes place as is known. Ibn Rustam narrated from Muhammad that if he said: "If so-and-so is a believer, you are divorced," the divorce does not occur because only He (Allah) knows this, and he is not to be believed regarding another person even if he is among the Muslims who pray and perform Hajj. And if someone else said to him, "I have a need from you, so fulfill it for me," and he replied, "My wife is divorced if I do not fulfill your need," and the other person said, "My need is that you divorce your wife," then he has the right not to believe him in this, and his wife is not divorced because it is possible to be true or false, so he is not believed against another, as stated. Al-Khayr al-Ramli said that it is known from these branches that if it was made conditional on the action of another...

[Urdu Column]: It is stated in [Bahr al-Raiq]: the matter was restricted to the wife's love because if divorce is made conditional on someone else's love, then according to the statement in Al-Muheet, it is apparent that the divorce will not occur solely on the wife's word without the husband's confirmation. For there it is stated: if the husband said, "If your mother does not wish for this," and the husband labels the mother's statement as false, then the divorce will not occur. Yes, if the husband confirms the mother's statement, then the divorce will take place as is known. Ibn Rustam narrated from Imam Muhammad that a husband said: "If so-and-so is a believer, then you are divorced," here the divorce will not occur because this is a matter of the heart which only that person can inform about himself, but his statement cannot be accepted as truth against another, even if he appears to be a Muslim who performs prayers and Hajj etc. And if one person said to another, "I have a need from you, so fulfill my need," and the other replied, "If I do not fulfill your need, my wife is divorced," then the first person said, "My need is that you divorce your wife," then the second person has the right to refuse to accept his word, so the wife will not be divorced because the first person's word has the possibility of being true or false, therefore it cannot be established as proof against another. Khairuddin Ramli commented on this, saying that it is known from these issues that if divorce was made conditional on the action of another person, then in that case...

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी कॉलम]: क्योंकि यह कहा गया है कि यदि उसने कहा: "तुम्हें तलाक है यदि तुम्हारी माँ यह नहीं चाहती," और माँ कहती है, "मैं यह चाहती हूँ," और पति उसे झुठलाता है, तो तलाक नहीं होता। यदि वह उसे सच मानता है, तो तलाक हो जाता है जैसा कि ज्ञात है। इब्न रुस्तम ने मुहम्मद से वर्णन किया कि यदि उसने कहा: "यदि फलां व्यक्ति मोमिन है, तो तुम्हें तलाक है," तो तलाक नहीं होता क्योंकि यह केवल वही (अल्लाह) जानता है, और किसी अन्य व्यक्ति के बारे में उसकी बात नहीं मानी जाएगी भले ही वह नमाज़ पढ़ने और हज करने वाले मुसलमानों में से हो। और यदि किसी अन्य ने उससे कहा, "मुझे आपसे एक काम है, तो उसे पूरा करें," और उसने उत्तर दिया, "मेरी पत्नी को तलाक है यदि मैं आपका काम पूरा न करूँ" और दूसरे व्यक्ति ने कहा, "मेरा काम यह है कि आप अपनी पत्नी को तलाक दे दें," तो उसे यह अधिकार है कि वह उसकी बात न माने, और उसकी पत्नी को तलाक नहीं होगा क्योंकि इसमें सच या झूठ होने की संभावना है, इसलिए किसी अन्य के खिलाफ उसकी बात नहीं मानी जाएगी, जैसा कि उल्लेख किया गया है। अल-खैर अल-रमली ने कहा कि इन शाखाओं से यह ज्ञात होता है कि यदि इसे किसी अन्य के कार्य पर निर्भर किया गया हो...

[उर्दू कॉलम]: में फ़रमाया कि बहर में कहा है कि बीवी की मोहब्बत से इसको मुक़ैयद किया क्योंकि अगर किसी ग़ैर की मोहब्बत से तलाक़ को मश्रूत किया जाए, तो मुहीत के बयान से ज़ाहिर यही है कि ख़ावंद की तस्दीक़ के बग़ैर महज़ बीवी के कहने पर तलाक़ न होगी क्योंकि वहां यह फ़रमाया है कि अगर ख़ावंद ने कहा, अगर तेरी माँ यह न चाहती, और ख़ावंद ने माँ की बात को ग़लत क़रार दिया तो तलाक़ न होगी हाँ अगर ख़ावंद माँ की तस्दीक़ कर दे तो तलाक़ हो जाएगी जैसे कि मालूम है। इब्न रुस्तम ने इमाम मुहम्मद से नक़्ल किया कि ख़ावंद ने कहा अगर फ़लाँ मोमिन है तो तुझे तलाक़ है, तो यहाँ तलाक़ न होगी क्योंकि यह दिल का मामला है जिसकी इत्तिला वह फ़लाँ शख़्स ख़ुद दे सकता है लेकिन उसका बयान दूसरे के ख़िलाफ़ क़ाबिले तस्दीक़ नहीं हो सकता अगरचे वह मुसलमान नज़र आए नमाज़ और हज वग़ैरह अदा करता हो, और अगर एक ने दूसरे को कहा मुझे तुझसे एक हाजत है तो मेरी हाजत पूरी करदे, दूसरे ने कहा अगर मैं तेरी हाजत पूरी न करूँ तो मेरी बीवी को तलाक़, तो पहले ने कहा मेरी हाजत यह है कि तू अपनी बीवी को तलाक़ दे, तो दूसरे शख़्स को हक़ है कि वह उसकी बात तस्लीम करने से इंकार करदे तो बीवी को तलाक़ न होगी क्योंकि पहले की बात झूठ और सच होने का एहतिमाल रखती है लिहाज़ा ग़ैर के ख़िलाफ़ यह दलील नहीं क़रार नहीं दी जा

सकती अह, ख़ैर उद्दीन रमली ने इस पर फ़रमाया कि इन मसाइल से मालूम हुआ कि अगर दूसरे के फ़ेअल पर तलाक़ को मश्रूत किया हो तो इस

पृष्ठ 254/688

فتاوی رضویہ ۱۳ جلد تیرد ہم

[عربی کالم]: فانہ قال لوقال انت طالق ان لم تکن امك تھوی ذلك فقالت الام انا اھوی وکذبھا الزوج لاتطلق فان صدقھا طلقت لما عرف، وروی ابن رستم عن محمد انہ لوقال ان کان فلان مؤمنا فأنت طالق لا تطلق لان ھذا لا یعلمہ الا ھو، ولا یصدق ھو علی غیرہ و ان کان ھو من المسلمین یصلی ویحج، ولو قال الآخر لی الیك حاجة فاقضھا لی فقال امرأتہ طالق ان لم اقض حاجتك ، فقال حاجتی ان تطلق زوجتك فلہ ان لا یصدقہ فیہ ولا تطلق زوجتہ لانہ محتمل للصدق والکذب فلا یصدق علی غیرہ اھ، قال الخیر الرملی وقد علم من ھذہ الفروع انہ ان علق بفعل الغیر

[اردو کالم]: میں فرمایا کہ بحر میں کہا ہے کہ بیوی کی محبت سے اس کو مقید کیا کیونکہ اگر کسی غیر کی محبت سے طلاق کو مشروط کیا جائے ، تو محیط کے بیان سے ظاہر یہی ہے کہ خاوند کی تصدیق کے بغیر محض بیوی کے کہنے پر طلاق نہ ہوگی کیونکہ وہاں یہ فرمایا ہے کہ اگر خاوند نے کہا، اگر تیری ماں یہ نہ چاہتی، اور خاوند نے ماں کی بات کو غلط قرار دیا تو طلاق نہ ہوگی ہاں اگر خاوند ماں کی تصدیق کر دے تو طلاق ہو جائے گی جیسے کہ معلوم ہے۔ ابن رستم نے امام محمد سے نقل کیا کہ خاوند نے کہا اگر فلاں مومن ہے تو تجھے طلاق ہے، تو یہاں طلاق نہ ہوگی کیونکہ یہ دل کا معاملہ ہے جس کی اطلاع وہ فلاں شخص خود دے سکتا ہے لیکن اس کا بیان دوسرے کے خلاف قابل تصدیق نہیں ہو سکتا اگرچہ وہ مسلمان نظر آئے نماز اور حج وغیرہ ادا کرتا ہو، اور اگر ایک نے دوسرے کو کہا مجھے تجھ سے ایک حاجت ہے تو میری حاجت پوری کردے ، دوسرے نے کہا اگر میں تیری حاجت پوری نہ کروں تو میری بیوی کو طلاق ، تو پہلے نے کہا میری حاجت یہ ہے کہ تو اپنی بیوی کو طلاق دے ، تو دوسرے شخص کو حق ہے کہ وہ اس کی بات تسلیم کرنے سے انکار کردے تو بیوی کو طلاق نہ ہوگی کیونکہ پہلی کی بات

جھوٹ اور سچ ہونے کا احتمال رکھتی ہے لہٰذا غیر کے خلاف یہ دلیل نہیں قرار نہیں دی جاسکتی

اھ ، خیر الدین رملی نے اس پر فرمایا کہ ان مسائل سے معلوم ہوا کہ اگر دوسرے کے فعل پر

طلاق کو مشروط کیا ہو تو اس

[Arabic Text]: The other person is not to be believed regarding him, whether it is something that is not known except from him or not. And it is necessary for the husband to confirm in both cases, or for there to be evidence in what is established by it from the matter that is known.[1] This is exactly the sought-after subsidiary point. All praise is due to Allah, and Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation]: Confirmation from another person is not necessary, whether this act of the other person can be known to others or only he can express it and it cannot be known to another. In both cases, confirmation from the husband is necessary, or it should be proven by testimony regarding the act of which others can be informed. This is our sought-after subsidiary point. All praise is due to Allah, and Allah Almighty knows best. (T)

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Suspension (At-Taliq), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/505.

[अरबी पाठ]: इस बारे में दूसरे व्यक्ति की बात नहीं मानी जाएगी, चाहे वह ऐसी चीज़ हो जो केवल उसी से जानी जा सकती हो या नहीं। और दोनों ही स्थितियों में पति की पुष्टि आवश्यक है, या उन मामलों में गवाही होनी चाहिए जो उन चीज़ों से साबित होते हैं जिन्हें जाना जा सकता है।[1] यह बिल्कुल वही वांछित उप-शाखा (जुज़िया) है। समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: दूसरे व्यक्ति की पुष्टि आवश्यक नहीं है, चाहे दूसरे का वह कार्य दूसरों को ज्ञात हो सके या केवल वही उसे व्यक्त कर सकता हो और दूसरे को ज्ञात न हो सके। दोनों ही स्थितियों में पति की ओर से पुष्टि करना आवश्यक है या फिर गवाही से साबित हो जाए, वह कार्य जिसकी जानकारी दूसरों को हो सकती हो। यही हमारा वांछित अंश (जुज़िया) है। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

[1] रद्द अल-मुह्तार, बाब-अल-तअलीक़, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/505.

لا یصدق ذلك الغیر علیه سواء كان مما لا یعلم الا منه ام لا ولا بد من تصدیق الزوج فیهما او البینة فیما یثبت بها من الامر الذي یعلم ۱ این عین جزئیہ مطلوبہ ماست، ولله الحمد، والله تعالیٰ اعلم۔

غیر کی تصدیق ضروری نہیں ہے خواہ غیر کا یہ فعل دوسروں کو معلوم ہوسکے یا صرف وہی اظہار کر سکتا ہو دوسری کو معلوم نہ ہو سکتا ہو، دونوں صورتوں میں خاوند کی طرف سے تصدیق کرنا ضروری ہے یا پھر گواہی سے ثابت ہو جائے وہ فعل جس پر دوسروں کو اطلاع ہو سکتی ہو، یہی ہمارا مطلوبہ جزئیہ ہے والله الحمد، والله تعالیٰ اعلم (ت)

---

۱ ردالمحتار باب التعلیق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۵۰۵

Fatawa Razawiya, Volume 13 | 13

Chapter of Ila (Description of Ila)

Problem 36: 13 Shaban al-Muazzam 1311 AH. What do the scholars of religion say about this issue: What is 'Ila' called, and what is its ruling? Does it result in a 'Talaq Mughallaza' (irrevocable divorce) or not? Clarify and you shall be rewarded.

The Answer: Ila means that a man takes an oath against having sexual intercourse with his wife or makes it conditional (ta'liq), meaning he says that if he has intercourse with her, then a certain penalty will be incumbent upon him. This oath or condition may be absolute, for example: "By Allah, I will not have intercourse with you," or "If I have intercourse with you, fasting becomes obligatory for me." Or it may be permanent, explicitly for forever, for example: "By God, I will never have relations with you," or "If I ever have relations with you, Hajj becomes obligatory for me." Or it may be for a specific duration, provided that duration is not less than four months, for example: "I swear I will not go near you for four months," or "If I have intercourse with you within five months, a hundred units (rak'ahs) of prayer become mandatory for me." In the case of making it conditional (ta'liq), it is also necessary that the matter made incumbent involves some hardship, as in the aforementioned examples, or such as saying "my slave is free," or "divorce is upon you," or "my deeds are for charity," or "I must pay an expiation for an oath," and so on. And that condition must be something that can legally become obligatory through such a statement, like prayer, fasting, Hajj, charity, I'tikaf (seclusion), Umrah, divorce, expiation, etc. It should not be like wudu (ablution), ghusl (bathing), recitation of the Quran, sajdah-e-tilawat (prostration of recitation), or following a funeral procession, etc., as these things do not become obligatory through vows (nadhr) or conditional statements (ta'liq). Furthermore, this oath or condition should be such that once the penalty is incurred, there is absolutely no escape from it; there should be no way out such that this...

फतावा रजविया, जिल्द तेरहवीं | १३

ईला का अध्याय (ईला का वर्णन)

मसला ३६: १३ शाबान अल-मुअज़्ज़म १३११ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि ईला किसे कहते हैं और इसका क्या हुक्म है? और क्या इससे तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (अटल तलाक़) हो जाती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: ईला का अर्थ यह है कि एक पुरुष अपनी पत्नी के साथ संभोग न करने की कसम खा ले या उसे किसी शर्त से जोड़ दे (ता'लीक़), यानी यह कहे कि यदि मैं उसके साथ संभोग करूँ तो मुझ पर यह सज़ा (जज़ा) अनिवार्य हो जाएगी। यह कसम या शर्त या तो पूर्ण (मुतलक़) हो, जैसे: "अल्लाह की कसम, मैं तुझसे संभोग नहीं करूँगा," या "यदि मैं तुझसे संभोग करूँ तो मुझ पर रोज़ा रखना अनिवार्य है।" या वह स्थायी (मुअब्बद) हो, यानी स्पष्ट रूप से हमेशा के लिए, जैसे: "खुदा की कसम, मैं तुझसे कभी शारीरिक संबंध नहीं रखूँगा," या "यदि मैं तुझसे कभी शारीरिक संबंध रखूँ तो मुझ पर हज अनिवार्य हो जाए।" या वह एक विशिष्ट अवधि के लिए हो, तो वह अवधि चार महीने से कम न हो, जैसे: "मुझे कसम है कि मैं चार महीने तक तेरे पास नहीं आऊँगा," या "यदि मैं पाँच महीने तक तुझसे संभोग करूँ तो मुझ पर सौ रकात नमाज़ अनिवार्य है।" और शर्त लगाने (ता'लीक़) की स्थिति में यह भी आवश्यक है कि जिस चीज़ को अनिवार्य बताया गया है, उसमें कुछ कठिनाई (मशक्कत) हो जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में है, या यह कि "मेरा गुलाम आज़ाद है," या "तुझ पर तलाक़ है," या "मेरे कर्म दान के लिए हैं," या "मुझ पर कसम का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) हो," इत्यादि। और वह चीज़ शरीयत की दृष्टि से 'ता'लीक़' (शर्त लगाने) से भी अनिवार्य हो सकती हो, जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, सदका (दान), एतिकाफ़, उमराह, तलाक़, कफ़्फ़ारा आदि। वह वज़ू, ग़ुस्ल, कुरान का पाठ, सज्दा-ए-तिलावत या जनाजे के पीछे चलने आदि जैसी चीज़ें न हों, क्योंकि ये चीज़ें मन्नत (नज़्र) और शर्त (ता'लीक़) से अनिवार्य नहीं होतीं। और यह कसम और शर्त इस तरह से हो कि किसी चीज़ के अनिवार्य होने पर उससे बचने का कोई रास्ता न रहे, ऐसी स्थिति न बन सके कि वह उस...

पृष्ठ २५७ का ६८८

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم ۱۳

باب الایلاء (ایلاء کا بیان)

مسلہ ۳۶ : ۱۳ شعبان معظم ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایلاء کسے کہتے ہیں اور اس کا کیا حکم ہے اور اس سے طلاق مغلظہ پڑتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ایلاء کے یہ معنی کہ مرد اپنی عورت سے جماع کی قسم کھا لے یا تعلیق کرے یعنی یوں کہے کہ اس سے جماع کروں تو مجھ پر یہ جزا لازم آئے، اور یہ قسم و تعلیق یا تو مطلق ہوں مثلاً واللہ میں تجھ سے جماع نہ کروں گا، یا تجھ سے جماع کروں تو مجھ پر روزہ لازم، یا موبد یعنی صراحۃً ہمیشہ کے لئے ہوں مثلاً خدا کی قسم میں تجھ سے کبھی صحبت نہ کروں گا، یا تجھ سے کبھی صحبت کروں تو مجھ پر حج واجب ہو، یا کسی خاص مدت کے لئے ہوں تو وہ مدت چار مہینے سے کم نہ ہو مثلاً مجھے قسم ہے چار مہینے تک تیرے پاس نہ جاؤں گا، یا پانچ مہینے تک تجھ سے وطی کروں تو مجھ پر سو رکعت نماز لازم، اور تعلیق کی صورت میں یہ بھی ضرور کہ وہ امر جس کا لازم آنا کہے اس میں مشقت ہو جیسے امثلہ مذکورہ، یا یہ کہ میرا غلام آزاد ہے، یا تجھ پر طلاق ہے، یا میرے اعمال خیرات ہے، یا مجھ پر قسم کا کفارہ ہو وغیر ذلک، اور وہ شرعاً تعلیق کہے سے بھی لازم آ سکتا ہو جیسے نماز، روزہ، حج، صدقہ، اعتکاف، عمرہ، طلاق، کفارہ، وغیرہ، نہ مثل وضو و غسل وتلاوت قرآن و سجدہ تلاوت واتباع جنازہ وغیرہ کہ یہ چیزیں نذر و تعلیق سے لازم نہیں ہو جاتیں، اور یہ قسم و تعلیق ایسے طور پر واقع ہو کہ بے کسی چیز کے لازم آئے اصلا مفر نہ رہے، ایسی صورت نہ نکل سکے کہ یہ اس

صفحہ 257 کا 688

...intercourse with the woman and nothing becomes obligatory. When these five things are combined, it will be 'Ila' [a specific form of temporary separation in Islamic law initiated by a husband's oath]; if even one is missing, it won't be. For example, if he didn't swear an oath or make it conditional but just made an empty promise saying "I will never come near you for my whole life," this is nothing because an empty promise counts for nothing. Or if he mentioned an oath or a condition but set the duration to less than four months, even if by an hour, it is not 'Ila'. If he has intercourse within the set time, then in the case of a specific oath, expiation (kaffarah) is due, and in the case of a conditional act like fasting etc., whatever was declared obligatory will be due, even if it's like an oath's expiation. This is the ruling for that oath and condition. However, if the duration passes without intercourse, the woman will not leave the marriage [automatically], which is the specific ruling of 'Ila'. Similarly, if in the condition he said performing two units of prayer (rak'ahs) would become obligatory, it is not 'Ila' because there is no hardship in two units. If he goes to her within the time, he must pray two units; if the time passes, nothing happens. And if in the condition he mentioned non-obligatory things like reciting the Quran, it is simply futile; divorce does not occur upon the expiry of the period, nor is anything obligatory for having intercourse within the period. Similarly, if he said, "By Allah, I will not have intercourse with you in this house," or "If I ever touch you in this city, then Hajj is obligatory for me," this is also not 'Ila'. Because when a specific house or city is mentioned, an escape exists without anything becoming obligatory; he can take her out of that house or city and have intercourse whenever he wants, and nothing will be due. No matter how much time passes without intercourse, even beyond four months, divorce will not occur. Yes, if he breaks that oath or condition, he must pay the penalty accordingly—in a specific oath, expiation is due, and in a condition, one has a choice to either do what was made obligatory or give expiation like an oath. Likewise, in any case where an escape is possible without anything becoming obligatory, it is not 'Ila'. The explanation and details of all these conditions and rulings are in 'Durr-e-Mukhtar' and 'Radd-al-Muhtar'. "Whoever wishes may refer to them" (T). Then, when 'Ila' is established, its ruling is that if he has intercourse with the woman within four months, the detailed expiation of the oath or the difficult act declared obligatory will be due. And if four months pass without intercourse, or if intercourse was impossible, for instance, due to illness, imprisonment, or long distance such that he couldn't reach the woman within the time, and he didn't make

a verbal return (ruju')—for example, by not saying "I have returned to my wife" or "I retracted my statement" or "I have annulled the 'Ila'"—then in this case, one irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) will occur upon the woman, through which she will become independent.

Arabic: فی الدر حکمة وقوع طلقة بائنة ان بر ولم یطأ ولزم الکفارة او الجزاء المعلق ان حنث بالقربان فـی رد المحتار

Urdu: It is stated in Radd-al-Muhtar that the ruling of 'Ila' is that if he remains steadfast in his oath and does not have intercourse, then an irrevocable divorce will occur, and upon having intercourse, expiation will be mandatory; or if he had made something conditional, that penalty will be mandatory upon having intercourse.

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Ila, Matba Mujtabai Delhi, 1/242 Page 258 of 688

...स्त्री से संभोग करे और कुछ अनिवार्य न हो। जब ये पांच बातें एकत्र होंगी तो 'इला' [इस्लामी कानून में एक पति द्वारा शपथ के माध्यम से अलगाव का एक विशेष रूप] होगा और यदि एक भी कम हुई तो नहीं। उदाहरण के लिए, न कसम खाई न शर्त लगाई, बस खाली वादा कर लिया कि मैं जीवन भर तुम्हारे पास नहीं आऊंगा, तो यह कुछ भी नहीं है क्योंकि खाली वादे से कुछ नहीं होता। या यदि कसम या शर्त का उल्लेख तो किया लेकिन अवधि चार महीने से कम रखी, चाहे एक घंटा ही कम हो, तो यह 'इला' नहीं हुआ। जितनी अवधि तय की है, उसके भीतर संभोग किया तो कसम की स्थिति में कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) और शर्त की स्थिति में रोज़ा आदि जो कुछ अनिवार्य होना कहा था, वह अनिवार्य होगा, चाहे कफ़्फ़ारा की तरह ही अनिवार्य हो। यह आदेश तो उस कसम और शर्त का है। लेकिन यदि अवधि बिना संभोग के बीत गई तो स्त्री निकाह से बाहर नहीं होगी, जो 'इला' का विशेष आदेश है। इसी तरह, यदि शर्त में दो रकात नमाज़ अनिवार्य होना कहा तो वह 'इला' नहीं है क्योंकि दो रकात में कोई कष्ट नहीं है। यदि अवधि के भीतर पास गया तो दो रकात पढ़नी होंगी और यदि अवधि खाली बीत गई तो कुछ नहीं। और यदि शर्त में कुरान की तिलावत आदि गैर-अनिवार्य चीजों का उल्लेख किया तो वह महज व्यर्थ है; न अवधि बीतने पर तलाक होगा और न अवधि के भीतर संभोग करने से कुछ अनिवार्य होगा। इसी प्रकार, यदि यों कहा कि "अल्लाह की कसम, मैं इस घर में तुझसे संभोग नहीं करूंगा" या "इस शहर में तुझे कभी हाथ लगाऊं तो मुझ पर हज अनिवार्य है", तो यह भी 'इला' नहीं है क्योंकि जब इस घर या शहर की विशिष्टता है तो बिना कुछ अनिवार्य हुए बचाव का रास्ता मौजूद है; वह जब चाहे उस घर या शहर से बाहर ले जाकर संभोग कर सकता है, कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा। चाहे बिना संभोग के चार महीने ही नहीं कितनी ही अवधि बीत जाए, तलाक नहीं होगा। हाँ, यदि वह कसम या शर्त तोड़ी तो उसका जुर्माना उसी तरह देना होगा कि विशेष कसम में कफ़्फ़ारा और शर्त में विकल्प है कि चाहे वह चीज पूरी करे जो अनिवार्य मानी थी या कसम की तरह कफ़्फ़ारा दे ले। इसी प्रकार जिस-जिस स्थिति में बिना कुछ अनिवार्य हुए बचाव का रास्ता मिलता हो, वह 'इला' नहीं है। इन सभी शर्तों और आदेशों का विवरण और विस्तार 'दुर-ए-मुख्तार' और 'रद्द-उल-मुहतार' में है। "जो चाहे वह उनकी ओर रुजू (सम्पर्क) करे" (त)। फिर जब 'इला' सिद्ध हो जाए तो उसका आदेश यह है कि यदि चार महीने के भीतर उस स्त्री से संभोग किया तो ज्ञात विवरण के अनुसार कसम का कफ़्फ़ारा या वही कठिन कार्य जिसका अनिवार्य होना कहा था, अनिवार्य होगा। और यदि चार महीने बीत गए कि उससे संभोग न किया या संभोग उदाहरण के लिए बीमारी, कैद या

दूरी के कारण असंभव था कि अवधि के भीतर स्त्री तक नहीं पहुँच सकता था, तो ज़बानी रुजू नहीं किया, उदाहरण के लिए यों नहीं कह लिया कि "मैंने अपनी पत्नी की ओर रुजू किया" या "मैं अपनी इस बात से फिर गया" या "मैंने इला को रद्द कर दिया", तो इस स्थिति में स्त्री पर एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) पड़ जाएगा जिससे वह स्वतंत्र हो जाएगी।

अरबी: فی الدر حکمة وقوع طلقة بائنة ان بر ولم یطأ ولزم الکفارة او الجزاء المعلق ان حنث بالقربان فی رد المحتار	**उर्दू: 'रद्द-उल-मुहतार' में है कि 'इला' का आदेश यह है कि यदि कसम पर कायम रहा और संभोग नहीं किया तो तलाक-ए-बाइन हो जाएगा और संभोग करने पर कफ़्फ़ारा अनिवार्य होगा; या यदि किसी चीज़ को सशर्त किया था तो संभोग करने पर वह सजा अनिवार्य होगी।**

[1] दुर-ए-मुख्तार, बाब-अल-इला, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/242 Page 258 of 688

عورت سے جماع کرے اور کچھ لازم نہ آئے ، جب یہ پانچوں باتیں جمع ہوں گی ایلاء ہو گا اور ایک بھی کم ہوئی تو نہیں، مثلاً نہ قسم کھائی نہ تعلیق، خالی عہد کر لیا کہ عمر بھر تیرے پاس نہ جاؤں گا یہ کچھ بھی نہیں کہ خالی عہد سے کچھ نہیں ہوتا، یا قسم تعلیق تو ذکر کی مگر مدت چار مہینے سے کم رکھی اگرچہ ایک ہی ساعت کم ، یہ ایلاء نہ ہوا، جتنی مدت کی قید لگائی ہے اس کے اندر جماع کیا تو بصورت قسم خاص کفارہ اور بصورت تعلیق روزہ وغیرہ جو کچھ لازم آنا کہا تھا خواہ مثل قسم کفارہ لازم آئے گا کہ یہ حکم تو اس قسم و تعلیق کا ہے، مگر مدت بے جماع گزر گئی تو عورت نکاح سے نہ نکلے گی جو خاص حکم ایلاء ہے، یونہی اگر تعلیق میں دو رکعت نماز لازم آنی کہے تو ایلاء نہیں کہ دو رکعت میں کچھ مشقت نہیں، اگر مدت کے اندر پاس گیا تو دو رکعتیں پڑھنی ہوں گی اور مدت خالی گزر گئی تو کچھ نہیں، اور اگر تعلیق میں تلاوت قرآن وغیرہ اشیائے غیر لازمہ ذکر کیں تو محض مہمل، نہ مدت گزرنے پر طلاق پڑی نہ مدت کے اندر صحبت کرنے سے کچھ لازم، اسی طرح اگر یوں کہا کہ واللہ میں اس میں تجھ سے وطی نہ کروں گا یا اس شہر میں تجھے کبھی ہاتھ لگاؤں تو مجھ پر سوچ لازم، یہ بھی ایلاء نہیں کہ جب اس گھر یا شہر کی تخصیص ہے تو بغیر کچھ لازم آئے مفر موجود ہے جب چاہے اس گھر یا شہر سے باہر لے جا کر جماع کر سکتا ہے کچھ بھی لازم نہ آئے گا، بس بے جماع چار مہینے نہیں کتنی ہی مدت گزر جائے طلاق نہ ہو گی، ہاں وہ قسم یا تعلیق جھوٹی کی تو اس کا جرمانہ اسی طرح دینا ہو گا کہ قسم خاص کفارہ اور تعلیق میں اختیار ہے چاہے وہ چیز بجالائے جو لازم مانی تھی چاہے قسم کے مثل کفارہ دے لے علیٰ ہذا القیاس جس جس صورت میں بغیر کچھ لازم آئے مفر ملتی ہو ایلاء نہیں، ان سب قیود و احکام کی تصریح و تفصیل در مختار و ردالمحتار میں ہے من شاء فلیراجعھما (جس

کا جی چاہے ان کی طرف رجوع کرے۔ ت) پھر جب ایلاء متحقق ہو تو اس کا حکم یہ ہے کہ چار مہینے کے اندر اس عورت سے جماع کیا تو تفصیل معلوم قسم کا کفارہ یا وہی امر شاق جس کا لازم آنا کہا تھا لازم آئے گا اور چار مہینے گزر گئے کہ اس سے جماع نہ کیا یا جماع مثلاً بوجہ مرض یا حبس یا دوری مسافت کہ مدت کے اندر عورت تک نہیں پہنچ سکتا نا ممکن تھا تو زبانی رجوع نہ کیا مثلاً یوں نہ کہہ لیا کہ میں نے اپنی عورت کی طرف رجوع کی یا اپنے اس کہنے سے پھر گیا یا میں نے ایلاء باطل کر دیا تو اس صورت میں عورت پر ایک طلاق بائن پڑ جائے گی جس سے وہ خود مختار ہو جائے گی،

فی الدر حکمة وقوع طلقة بائنة ان میں ہے کہ ایلاء کا حکم یہ ہے کہ اگر قسم پر قائم رہا اور وطی بر ولم یطأ ولزم الکفارة او الجزاء نہ کی تو طلاق بائنہ ہو جائے گی اور جماع کرنے پر کفارہ لازم المعلق ان حنث بالقربان فی رد ہو گا یا اگر کسی چیز کو معلق کیا تھا تو جماع کرنے پر وہ المحتار جزاء لازم ہو گی ۔ ردالمحتار میں

[1] در مختار باب الایلاء مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴۲ Page 258 of 688

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Box 1] (Arabic): His saying 'and he did not have intercourse' is an explanatory conjunction, and what is meant by intercourse is the actual act if capable, or what takes its place like speech in case of inability. So, what is meant is 'he did not return,' i.e., he did not go back on what he swore upon. In 'Al-Durr': Inability refers to actual inability, not legal, such as being in Ihram because that is by choice. Inability for intercourse may be due to illness of either, her minority, impotence, lack of organ, or a distance he cannot cover within the duration of Ila, or unjust imprisonment. His return (Fai') in such cases is by saying with his tongue: 'I returned to her' or 'I took you back' or 'I invalidated the Ila' or 'I retracted what I said' and the like. (Abridged)

(Urdu): On this, he stated that the text's phrase "and did not have intercourse" is an explanatory conjunction, and intercourse means actual coitus if capable. If not capable, then something standing in its place, like saying "I have returned to my wife." This means he will not stand by his oath, and if he does not fulfill the oath, atonement (kaffara) will be mandatory. In 'Ad-Dur', it says "becomes unable" refers to actual inability, not legal inability, like being in the state of Ihram which is legal inability because it is optional. Inability to have intercourse with the wife means the husband or wife is ill, or the wife is minor, or the husband is impotent or lacks the organ, or the distance is so far that it's beyond his power to cover it within the oath's duration, or he is unjustly imprisoned. In these cases, he should return to his wife verbally and say, "I have returned to my wife" or "I have voided the Ila (oath)" or say "I swore an oath and I have returned from it" or say similar words. (Abridged)

[Main Text] However, Ila is not an irrevocable divorce (Talaq Mughallaza) such that Halala is required; they can marry each other during the waiting period (Iddah) or after it whenever they wish. Yes, if he had already given two divorces before this, then Halala would be necessary because this third one would complete three divorces. That is a separate matter. Or if there was no (Note: [missing word]) constraint but it was absolute or explicitly perpetual, and four months passed without return, then one irrevocable divorce occurs. If he then remarries her and four months pass empty again, a second one will occur. Then he remarries her and similarly four months pass, there will be three divorces, and now he cannot bring her into marriage without Halala.

[Bottom Box] (Arabic): In Al-Tanwir regarding an oath by Allah, atonement becomes mandatory. | (Urdu): In Tanwir it is: In Ila, if it's an oath by Allah, that you from her...

[Footnotes] Note: In the original, it is worm-eaten. 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Ila, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/526. 2. Dur al-Mukhtar, Chapter of Ila, Mujtabai Press, Delhi, 1/223.

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[बॉक्स 1] (अरबी): उनका कथन 'और उसने संभोग नहीं किया' एक व्याख्यात्मक संयोजन है, और संभोग से तात्पर्य वास्तविक संभोग से है यदि सक्षम हो, या अक्षमता के मामले में बोलने जैसा उसका स्थान लेने वाला कार्य। तो, इसका अर्थ है 'उसने रुजू नहीं किया,' यानी वह उस पर वापस नहीं आया जिसकी उसने शपथ ली थी। 'अल-दुर' में: अक्षमता से तात्पर्य वास्तविक अक्षमता से है, न कि कानूनी, जैसे कि एहराम की स्थिति में होना क्योंकि वह स्वैच्छिक है। संभोग की अक्षमता दोनों में से किसी की बीमारी, उसका नाबालिग होना, नपुंसकता, अंग का अभाव, या इतनी दूरी जिसे वह ईला की अवधि के भीतर तय नहीं कर सकता, या अन्यायपूर्ण कारावास के कारण हो सकती है। ऐसी स्थितियों में उसकी वापसी (फई) ज़बान से यह कहने से होती है: 'मैं उसकी ओर लौट आया' या 'मैंने तुम्हें वापस ले लिया' या 'मैंने ईला को अमान्य कर दिया' या 'मैंने जो कहा था उसे वापस ले लिया' और इसी तरह। (संक्षिप्त)

(उर्दू): इस पर उन्होंने फरमाया कि पाठ का कथन "और संभोग नहीं किया" व्याख्यात्मक संयोजन है, और संभोग से तात्पर्य वास्तविक संभोग है यदि सक्षम हो। यदि सक्षम न हो, तो संभोग के स्थान पर कोई चीज़, जैसे कि यह कहना कि "मैंने अपनी पत्नी से रुजू कर लिया है।" इसका अर्थ है कि वह अपनी शपथ पर कायम नहीं रहेगा, और यदि वह शपथ पूरी नहीं करता है, तो कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य होगा। 'अद-दुर' में है कि "अक्षम हो जाए" वास्तविक अक्षमता को संदर्भित करता है, कानूनी अक्षमता को नहीं, जैसे कि एहराम की स्थिति में होना जो कानूनी अक्षमता है क्योंकि यह वैकल्पिक है। पत्नी के साथ संभोग करने में अक्षमता का अर्थ है कि पति या पत्नी बीमार हैं, या पत्नी नाबालिग है, या पति नपुंसक है या अंग नहीं है, या दूरी इतनी अधिक है कि शपथ की अवधि के भीतर उसे तय करना उसकी शक्ति के बाहर है, या वह अन्यायपूर्ण रूप से कैद है। इन मामलों में, उसे अपनी पत्नी के पास मौखिक रूप से लौटना चाहिए और कहना चाहिए, "मैंने अपनी पत्नी से रुजू कर लिया है" या "मैंने ईला (शपथ) को शून्य कर दिया है" या कहें "मैंने शपथ ली थी और मैं उससे लौट आया हूँ" या समान शब्द कहें। (संक्षिप्त)

[मुख्य पाठ] हालाँकि, ईला एक अपरिवर्तनीय तलाक (तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा) नहीं है कि हलाला की आवश्यकता हो; वे इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान या उसके बाद जब चाहें एक-दूसरे से निकाह कर सकते हैं। हाँ, यदि उसने इससे पहले ही दो तलाक दे दिए थे, तो हलाला आवश्यक होगा क्योंकि यह तीसरा मिलकर तीन तलाक पूरे कर देगा। वह एक अलग बात है। या यदि कोई (नोट: [शब्द गायब

है]) प्रतिबंध नहीं था बल्कि वह निरपेक्ष या स्पष्ट रूप से शाश्वत था, और बिना रुजू के चार महीने बीत गए, तो एक अपरिवर्तनीय तलाक (तलाक-ए-बाइन) हो जाता है। यदि वह फिर से उससे निकाह करता है और फिर से चार महीने खाली बीत जाते हैं, तो दूसरा तलाक होगा। फिर वह उससे निकाह करता है और इसी तरह चार महीने बीत जाते हैं, तो तीन तलाक हो जाएंगे, और अब वह बिना हलाला के उसे निकाह में नहीं ला सकता।

[नीचे का बॉक्स] (अरबी): अल्लाह की शपथ के संबंध में अत-तनवीर में, कफ़्फ़ारा अनिवार्य हो जाता है। | (उर्दू): तनवीर में है: ईला में, यदि अल्लाह की शपथ है, कि तुम उससे...

[पाद टिप्पणियाँ] नोट: मूल प्रति में दीमक लगा हुआ है। 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-ईला, दार इहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/526। 2. दुर अल-मुख्तार, बाब अल-ईला, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/223।

पृष्ठ 688 का 259

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[Box 1] (Arabic): قولہ ولم یطأعطف تفسیر والمراد بالوطی حقیقتہ عند القدرۃ او مایقوم مقامہ کالقول عند العجز فالمراد ولم یفئ ای لم یرجع الی ماحلف علیہ ۱ اہ و فی الدر عجز عجز حقیقیًا لا حکمیًا کأحرام لکونہ باختیارہ عن وطئھا لمرض باحدھما او صغرھا او جبہ او عنتہ او بمسافۃ لایقدر علی قطعھا فی مدۃ الایلاء او لحبسہ لا بحق ففیئہ نحوقولہ بلسانہ فئت الیھا اور اجعتک او ابطلت الایلاء اورجعت عما قلت ونحوہ اہ ملخصا۲۔

(Urdu): اس پر فرمایا کہ متن کا قول "ولم یطأ" (اور وطی نہ کی) عطف تفسیری ہے، اور وطی سے حقیقی جماع مراد ہے اگر قدرت ہو، اگر قدرت نہ ہو تو جماع کے قائم مقام مثلاً یہ کہنا کہ میں نے بیوی سے رجوع کرلیا، کہے، اس سے مراد یہ ہے کہ وہ اپنی قسم پر قائم نہ رہے اور قسم کو پورا نہ کرے تو کفارہ لازم آئے گا اھ، اور در میں ہے "عاجز ہو جائے" سے مراد حقیقی عجز ہے حکمی عجز نہیں جیسا کہ احرام کی حالت میں ہونا عجز حکمی ہے کیونکہ یہ عجز اختیاری ہے، بیوی سے وطی کے عجز کا مطلب یہ ہے کہ خاوند یا بیوی کو مرض لاحق ہو، یا بیوی صغیرہ ہو، یا خاوند نامرد یا آلہ سے محروم ہے، یا اتنی دور مسافت ہے کہ قسم کی مدت میں اس کو طے کرنا، قدرت میں نہیں ہے، یا ناحق قید میں ہے، تو ان صورتوں میں بیوی سے رجوع زبانی کرے اور یوں کہے کہ میں نے بیوی سے رجوع کرلیا ہے یا میں نے ایلاء یعنی قسم کو باطل کردیا ہے، یا کہے میں نے قسم کھائی اس سے میں نے رجوع کرلیا ہے یا اس کی مثل الفاظ کہہ دے، اھ ملخصاً(ت)

[Main Text] مگر ایلاء طلاق مغلظہ نہیں کہ حلالہ کی ضرورت ہو، عدت میں خواہ بعد عدت جب چاہیں باہم نکاح کرسکتے ہیں، ہاں اس سے پہلے کبھی دو طلاقیں دے چکا تھا تو آپ ہی حلالہ

درکار ہوگا کہ اب یہ تیسری مل کر تین طلاقیں ہوگئیں یہ جدا بات ہے یا اگر (مدت عہ) کی قید نہ تھی بلکہ مطلق یا صراحتاً موبد تھا اور چار مہینے بے رجوع گزر گئے کہ ایک طلاق بائن پڑی پھر اس سے نکاح کرلیا اور پھر چار مہینے خالی گزر گئے تو دوسری پڑے گی پھر نکاح کرلیا اور یونہی چار مہینے گزر گئے تو تین طلاقیں ہوجائیں گی اور اب بے حلالہ نکاح میں نہ لاسکے گا،

[Bottom Box] فی التنویر فی الحلف باللہ وجبت الکفارۃ | تنویر میں ہے: ایلاء میں، اگر اللہ کی قسم، کہ تو اس سے

[Footnotes] عہ: اصل میں کرم خوردہ ہے۔ ۱ ردالمحتار باب الایلاء داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۲۶ ۲ درمختار باب الایلاء مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۳

(Arabic Section): "In cases other than this, penance (kaffara) is mandatory upon reconciliation. If a condition was set, the consequence (jaza) will apply, and the 'ila' (vow of abstinence) will lapse. Otherwise, upon completion of the oath, the wife will be divorced with a single irrevocable divorce (talaq-e-bain). If the oath was for a specific duration, it ends; but if it was an eternal oath, it doesn't end. Therefore, upon remarrying a second or third time, she will continue to be divorced with a second and third irrevocable divorce if the 'ila' period expires without reconciliation. The duration of the oath is counted from the time of marriage. Thus, if the wife returns to his marriage after 'halala', divorce will not occur, but penance will still be mandatory for sexual intercourse because the eternal oath remains. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best. (T)"

Problem 73: Dhalor First H-Road House 101, asked by Abu Bakr, 7 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter that a person says he has seen in a book that according to the Hanafi school, if a person has a falling out with his wife over some matter and has no relationship for four menses, it will be one divorce. Then, after another menstruation passes, it will be a second divorce, and after yet another menstruation passes, it will be a third divorce. Is this correct or not?

The Answer: This is completely baseless. There is no trace of this in the Hanafi school nor in any other school. The actual ruling is when a person takes an oath of abstinence from intimacy with his wife. The Lord, Exalted is He, has given him a respite of four months. If he has intimacy within four months, the woman will not leave the marriage; penance (kaffara) must be paid. And if four full months pass, it will become one irrevocable divorce (talaq-e-bain), and the woman will leave the marriage. Then, in the second or third month, there will be no divorce.

Allah Almighty said: "For those who take an oath of abstinence from their wives, a waiting period of four months [is ordained]." (Quran 2:226) Allah Almighty said: Those who perform Ila from their wives, the duration of their oath is four months.

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Ila, Mujtabai Press, Delhi, 1/243-244. Page 260 of 688

(अरबी/उर्दू टेक्स्ट ब्लॉक): "वापसी (रिफ़क़त) पर कफ्फारा अनिवार्य होगा, और यदि कोई शर्त रखी गई थी तो वह सज़ा (जज़ा) लागू होगी, और ईला समाप्त हो जाएगा। अन्यथा, शपथ पूरी होने पर पत्नी एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) से अलग हो जाएगी। यदि शपथ एक निश्चित समय के लिए थी तो वह समाप्त हो जाएगी, और यदि शपथ शाश्वत (हमेशा के लिए) थी तो वह समाप्त नहीं होगी। इसलिए, दूसरी और तीसरी बार विवाह करने पर ईला की अवधि पूरी होने और वापसी न करने पर वह दूसरे और तीसरे तलाक से अलग होती रहेगी। शपथ की अवधि का आधार विवाह के समय का होगा। इसलिए, यदि पत्नी हलाला के बाद उसके निकाह में वापस आती है, तो तलाक नहीं होगा, हालांकि संभोग करने पर कफ्फारा ज़रूर अनिवार्य होगा क्योंकि शाश्वत शपथ होने के कारण वह शेष है। और अल्लाह, जो पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है। (त)"

मसला ७३: डालोर फर्स्ट एच रोड मकान १०१, प्रेषक अबू बक्र, ७ शव्वाल १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति कहता है कि उसने एक किताब में देखा है कि हनफी मज़हब के अनुसार यदि किसी व्यक्ति का अपनी पत्नी से किसी मामले में अनबन हो गई और चार माहवारी तक कोई संबंध नहीं रहा तो एक तलाक होगा, फिर उस पर एक और माहवारी गुजरने से दूसरा तलाक होगा, फिर एक और माहवारी गुजरने से तीसरा तलाक होगा। क्या यह सही है या नहीं?

जवाब: यह पूरी तरह से निराधार है। इसका कोई पता न तो हनफी मज़हब में है और न ही किसी और मज़हब में। वास्तविक हुक्म यह है कि यह व्यक्ति अपनी पत्नी से निकटता न रखने की शपथ ले। रब अज़्ज़वजल ने उसे चार महीने की मोहलत दी है। अगर वह चार महीने के अंदर निकटता कर लेता है तो औरत निकाह से नहीं निकलेगी, कफ्फारा देना होगा। और अगर पूरे चार महीने गुजर जाएंगे तो एक तलाक-ए-बाइन हो जाएगा, औरत निकाह से निकल जाएगी, फिर दूसरे या तीसरे महीने में कोई तलाक नहीं होगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "जो लोग अपनी पत्नियों से ईला करते हैं (न मिलने की कसम खाते हैं), उनके लिए चार महीने की प्रतीक्षा अवधि है।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया: वे लोग जो पत्नियों से ईला करते हैं, उनकी कसम की अवधि चार महीने है।

1. दुर्रे मुख्तार, ईला का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/२४३-२४४। पेज 260 of 688

وفي غیرہ وجب الجزاء وسقط الایلاء والابانت بواحدۃ وسقط الحلف لو مو قتاً لالوکان موبدافلو نکحھا ثانیا وثالثا ومضت المدتان من وقت التزوج فان نکحھا بعد زوج آخر لم تطلق وان وطئھا کفر لبقاء الیمین ۱۔ واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔ | رجوع کرنے پر کفارہ لازم ہوگا، اور اگر کوئی شرط رکھی تھی تو وہ جزاء لازم آئے گی، اور ایلاء ساقط ہو جائیگا ورنہ قسم کو پورا کرنے پر بیوی ایک طلاق سے بائنہ ہو جائیگی اور حلف مقررہ وقت کیلئے ہو تو ختم ہو جائے گا اور اگر حلف ابدی ہو تو ختم نہ ہوگا، لہذا دوبارہ اور سہ بارہ نکاح کرنے پر ایلاء کی مدت پورا ہونے اور رجوع نہ کرنے پر دوسری اور تیسری طلاق سے بائنہ ہوتی رہے گی اور قسم کی مدت کا اعتبار نکاح کے وقت ہوگا لہذا اگر بیوی حلالہ کے بعد واپس اس کے نکاح میں آئے تو طلاق نہ ہوگی تاہم وطی کرنے پر کفارہ ضرور لازم ہوگا کیونکہ قسم ابدی ہونے کی وجہ سے باقی ہے، واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۳: ڈالور فرسٹ ایچ روڈ مکان ۱۰۱ مسئولہ ابوبکر ۷ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کہتا ہے کہ میں نے کتاب میں دیکھا ہے کوئی شخص حنفی مذہب کے موافق اپنی عورت سے کسی معاملہ میں ان بن ہوگئی اور چہار حیض تک کچھ تعلق نہ رہا تو ایک طلاق ہوگی، پھر اس پر ایک اور حیض گزرنے سے دوسری طلاق ہوگی پھر ایک اور حیض گزرنے سے تیسری طلاق ہوگی، یہ صحیح ہے یا نہیں؟ الجواب: یہ محض بے اصل ہے اس کا پتہ نہ مذہب حنفی میں ہے نہ کسی مذہب میں، اصل حکم جو ہے کہ یہ شخص اپنی عورت سے قربت کی قسم کھائے، رب عزوجل نے اسے چار مہینے کی مہلت دی ہے، اگر چار مہینے کے اندر قربت کرلے گا تو عورت نکاح سے نہ نکلے گی کفارہ دینا ہوگا، اور اگر چار مہینے کامل گزر

جائیں گے تو ایک طلاق بائن ہو جائے گی، عورت نکاح سے نکل جائے گی، پھر دوسرے یا تیسرے مہینے کوئی طلاق نہ ہوگی،

قال اللہ تعالی: لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ج | اللہ تعالیٰ نے فرمایا : وہ لوگ جو بیویوں سے ایلاء کرتے ہیں ان کی قسم کی مدت چار ماہ ہے

۱ درمختار باب الایلاء مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴۴۔ ۲۴۳ Page 260 of 688

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

[Table Header] Quranic Verse (Arabic): 1. فَإِنْ فَاءُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ Urdu Translation: If they return during this period, then Allah Almighty is the Most Forgiving, the Most Merciful.

Quranic Verse (Arabic): 2. وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ Urdu Translation: And if they resolve on divorce (by not returning), then Allah Almighty is All-Hearing, All-Knowing.

Closing (Arabic): And Allah Almighty knows best. Closing (Urdu): And Allah Almighty knows best (T).

[Footnotes] 1. Al-Quran al-Karim 2/226 2. Al-Quran al-Karim 2/227

Page 261 of 688

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

[तालिका शीर्षक] कुरान की आयत (अरबी): १. فَإِنْ فَاءُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ उर्दू अनुवाद: अगर इस दौरान रुजू कर लें तो अल्लाह तआला बख्शने वाला, रहम फरमाने वाला है।

कुरान की आयत (अरबी): २. وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ उर्दू अनुवाद: और अगर वे (रुजू न करके) तलाक़ का इरादा कर लें तो अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

समापन (अरबी): और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। समापन (उर्दू): और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

[पाद लेख] १. अल-कुरान अल-करीम २/२२६ २. अल-कुरान अल-करीम २/२२७

पृष्ठ २६१ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[جدول] فَإِنْ فَاءُوْا فَإِنَّ اللّٰہَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ 1 اگر اس دوران رجوع کرلیں تو اللہ تعالٰی بخشنے والا، رحم فرمانے والا ہے،

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰہَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ 2 واللہ تعالٰی اعلم۔ اور اگر وہ (رجوع نہ کرکے) طلاق کا عزم کرلیں تو اللہ تعالٰی سننے والا جاننے والا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[حواشی] 1 القرآن الکریم ۲/۲۲۶ 2 القرآن الکریم ۲/۲۲۷

Fatawa Ridawiyya Volume 13

Chapter on Khula (Statement of Khula)

Problem 38: From Rampur State, Mardan Khan locality, sent by Syed Muhammad Noor Sahib, 6 Shawwal 1319 AH.

Question: What do the scholars of religion and the muftis of the sound Sharia say in this situation where there was constant discord and fighting between the spouses, and no form of reconciliation was possible? Finally, the spouses gathered some people of the locality; the summary is that the spouses wanted to settle their separation. The people of the locality settled it in such a way that the existing items under the wife's possession, such as the bed, trunk, jewelry, etc., were given to the wife, and the wife was made to forgive the entire dower (mahr), and the husband gave divorce and uttered the word of divorce once or twice. Did this divorce occur as 'Raj'i' (revocable) or 'Ba'in' (irrevocable)? Please grant a detailed and explained answer from the reliable books of Hanafi jurisprudence. State the ruling and be rewarded.

The Answer: If it was clear from this settlement or mutual conversations or the circumstances that this divorce was given in exchange for this waiver of dower, then the divorce is 'Ba'in' (irrevocable).

In Fath al-Qadir, then Radd al-Muhtar, it is said: "Absolve me of every right that women have over men." She did so. Then he said immediately: "I have divorced you," and she is...

It is in Fath al-Qadir and then in Radd al-Muhtar that if a husband said to his wife: "Absolve me of all those rights which are due to a wife from her husband," and the wife did so, then immediately connected with that, the husband...

Page 263 of 688

फ़तावा रज़विया खंड 13

बाब-अल-ख़ुलअ (ख़ुलअ का बयान)

मसला 38: रियासत रामपुर, मोहल्ला मर्दान खान से, प्रेषक सैयद मुहम्मद नूर साहब, 6 शव्वाल 1319 हिजरी।

प्रश्न: दीन के विद्वान और शरीअत-ए-मतीन के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि पति-पत्नी के बीच आपसी विवाद और झगड़ा रहता था और किसी भी तरह से सुलह नहीं हो रही थी। अंततः पति-पत्नी ने मोहल्ले के कुछ लोगों को इकट्ठा किया; सारांश यह है कि पति-पत्नी ने अपनी जुदाई का फैसला चाहा। मोहल्ले के लोगों ने फैसला इस तरह किया कि पत्नी के पास जो सामान था, जैसे पलंग, संदूक, जेवर आदि, वह पत्नी को दिलवा दिए गए और पत्नी से पूरा मेहर माफ करवा दिया गया और पति ने तलाक दे दी और तलाक शब्द एक या दो बार कहा। क्या यह तलाक 'रजई' (वापसी योग्य) हुआ या 'बाइन' (अटल)? विश्वसनीय हनफी किताबों से विस्तार और व्याख्या के साथ उत्तर प्रदान करें। स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब: अगर इस समझौते या आपसी बातचीत या परिस्थितियों के संकेतों से यह स्पष्ट था कि यह तलाक मेहर की इस माफी के बदले में दी गई थी, तो तलाक 'बाइन' हुई।

फ़तह अल-क़दीर और फिर रद अल-मुह्तार में कहा गया है: "मुझे उन सभी अधिकारों से मुक्त कर दो जो महिलाओं के पुरुषों पर होते हैं।" उसने ऐसा कर दिया। फिर उसने तुरंत कहा: "मैंने तुम्हें तलाक दे दिया," और वह...

फ़तह अल-क़दीर में है और फिर रद अल-मुह्तार में कि अगर पति ने पत्नी से कहा: "मुझे उन सभी अधिकारों से बरी कर दो जो पत्नी के लिए पति के जिम्मे होते हैं," तो पत्नी ने ऐसा कर दिया, तो उसके साथ तुरंत जुड़े हुए पति ने...

पृष्ठ 263/688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم

باب الخلع (خلع کا بیان)

مسئلہ ۳۸: از ریاست رامپور محلہ مردان خاں مرسلہ سید محمد نور صاحب ۶ شوال ۱۳۱۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس صورت میں کہ زوجین میں باہم نزاع و جھگڑا رہتا تھا اور کسی صورت سے مصالحت نہیں ہوتی تھی آخر الامر زوجین نے چند اہل محلہ کو جمع کیا، خلاصہ یہ کہ زوجین نے اپنی علیحدگی ہونے کا تصفیہ چاہا، اہل محلہ نے تصفیہ اس طرح پر کیا کہ جو اشیائے موجودہ زوجہ کی تحت میں تھیں مثل پلنگ و صندوق و زیور وغیرہ زوجہ کو دلوا دئیے گئے اور زوجہ سے کل مہر بخشوا دیا اور زوج نے طلاق دی اور لفظ طلاق کا ایک مرتبہ یا دو مرتبہ کہا، آیا یہ طلاق رجعی واقع ہوئی یا بائن؟ کتب معتمدہ حنفیہ سے تفصیلاً و تشریحاً جواب مرحمت فرمائیے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر اس تصفیہ یا باہمی مکالمات یا قرائن حالات سے واضح تھا کہ یہ طلاق اس معافیِ مہر کے عوض دی گئی تو طلاق بائن ہوئی،

فِی فتح القدیر ثم ردالمحتار قال ابرئینی من کل حق یکون للنساء علی الرجال ففعلت فقال فی فورہ طلقتک وھی

فتح القدیر میں ہے اور پھر ردالمحتار میں کہ اگر خاوند نے بیوی کو کہا تو مجھے ان تمام حقوق سے بری کردے جو بھی بیوی کے لئے خاوند کے ذمہ ہوتے ہیں، تو بیوی نے ایسا کردیا تو اس کے ساتھ متصل فوراً خاوند نے

Page 13, Volume 13 Fatawa Razawiyya

[Left Column Text]: Madkhool Biha Yaqa'u Ba'inan liannahu bi-'iwadh. Ah. And in Ad-Dhakhirah and Al-Khaniyah and others, and from them in Radd al-Muhtar: It occurs as Ba'in because it is a divorce in exchange for something, and it is a discharge of rights implicitly. 2 Ah. And Allah Subhanahu wa Ta'ala knows best.

[Right Column Text]: He said, "I have divorced you," if the wife is one with whom marriage has been consummated, then this will be an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) because this is a divorce in exchange for something. Ah. And in Ad-Dhakhirah, Al-Khaniyah, etc., and in Radd al-Muhtar it is narrated from both of them that this will be an irrevocable divorce because it is a divorce in exchange for something, and to discharge from rights is implicitly a compensation. Ah. And Allah Subhanahu wa Ta'ala knows best. (T)

[Question Section]: Issue 39: From 24 Parganas, Post Office Hali Shahar, place Hajinagar, Chatkal Deli Sardar, sent by Amirullah Miyan, 12 Jamadi-ul-Awwal 1336 AH. Zaid's sister was married to Bakr in her childhood according to the tribal custom. Now she has reached puberty, she has also read the Holy Quran etc., and is extremely punctual in fasting and prayers, and does not act against the Shariah. Her husband, Bakr, is a total disgrace to Islam, meaning he neither prays nor fasts, but rather mocks and ridicules this girl, Zaid's sister, for praying and fasting. He also drinks toddy (an intoxicant), and the girl's heirs repeatedly try to stop and advise him against these acts, but he does not listen at all. For this reason, the girl has been at her parents' home for a long time, and Bakr's behavior has not changed yet. Therefore, the girl's heirs are also very distressed about what to do with the girl, how long can they keep a grown-up girl unmarried? The girl is also fed up with Bakr and wants to get a divorce (Khula) from him, and the heirs share the same opinion. Can the girl initiate Khula in such a state or not? And a valid seclusion (Khilwat-e-Sahiha) has not yet occurred with Bakr.

[The Answer]: In Shariah, Khula means that the husband, with his own consent, separates the woman from the marriage in exchange for dower or other property; it cannot be done by the wife alone. And if the marriage of a minor girl was performed by her father, the girl, upon becoming an adult, does not even have the right to object to it. And if a guardian other than the father or grandfather performed it, and at that time the husband was a suitable match (Kufu) for the woman...

[Footnotes]: 1. Radd al-Muhtar with reference to Fath al-Qadir, Chapter on Khula, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 560/2 2. Radd al-Muhtar with reference to Al-Dhakhirah and Al-Khaniyah, Chapter on Khula, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 566/2

पृष्ठ १३, खंड १३ फ़तावा रज़विया

[बायां कॉलम पाठ]: मदख़ूल बिहा यक़अ बाइनन लिअन्नहू बि-इवज़। अह। और 'अद-ज़ख़ीरा' और 'अल-ख़ानिया' आदि में, और उनसे 'रद्द अल-मुह्तार' में: यह बाइन (अटल) के रूप में घटित होता है क्योंकि यह मुआवज़े के बदले तलाक़ है, और यह अधिकारों का परोक्ष रूप से त्याग है। २ अह। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

[दायां कॉलम पाठ]: कह दिया कि "मैंने तुझे तलाक़ दी," अगर पत्नी मदख़ूला (जिसके साथ विवाह सम्पन्न हो चुका हो) हो तो यह तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) होगी क्योंकि यह तलाक़ बिल-एवज़ (मुआवज़े के बदले) है। अह। और 'ज़ख़ीरा', 'ख़ानिया' आदि में, और 'रद्द अल-मुह्तार' में भी इन दोनों से उद्धृत है कि यह तलाक़-ए-बाइन होगी क्योंकि यह तलाक़ बिल-एवज़ है, और अधिकारों से मुक्त करना परोक्ष रूप से एक मुआवज़ा है। अह। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

[प्रश्न अनुभाग]: मसला ३९: २४ परगना, डाकखाना हाली शहर, स्थान हाजीनगर, चटकल डेली सरदार से, प्रेषक अमीरउल्लाह मियां, १२ जमादी-उल-अव्वल १३३६ हिजरी। ज़ैद की बहन की शादी बचपन में क़बीले के रिवाज़ के अनुसार बक्र से हुई थी। अब वह यौवन (बुलूग़) की आयु को पहुँच गई है, और उसने पवित्र क़ुरआन शरीफ़ आदि भी पढ़ा है और नमाज़-रोज़े की बहुत पाबंद है, और शरीयत के ख़िलाफ़ नहीं है। उसका पति बक्र, इस्लाम के लिए पूरी तरह कलंक है, यानी वह न नमाज़ पढ़ता है और न रोज़ा रखता है, बल्कि इस लड़की, यानी ज़ैद की बहन के नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने पर उसका मज़ाक़ उड़ाता है और उपहास करता है। और वह बक्र ताड़ी (नशीला पदार्थ) भी पीता है, और लड़की के वारिस उसे इन कामों से बहुत रोकते और समझाते हैं, लेकिन वह एक नहीं सुनता। इसी वजह से लड़की बहुत समय से मायके में है, और बक्र का आचरण अब तक नहीं बदला। इसलिए लड़की के वारिस भी बहुत परेशान हैं कि लड़की का क्या करें, एक वयस्क लड़की को कब तक कुंवारी रखें? लड़की भी बक्र से तंग आकर चाहती है कि मैं उससे 'खुला' (विवाह विच्छेद) करा लूँ, और वारिसों की भी यही राय है। क्या लड़की ऐसी स्थिति में खुला करा सकती है या नहीं? और बक्र के साथ अब तक एकांतवास (ख़ल्वत-ए-सहीहा) भी नहीं हुआ है।

[उत्तर]: शरीयत में 'खुला' उसे कहते हैं कि पति अपनी सहमति से मेहर या अन्य संपत्ति के बदले में औरत को निकाह से अलग कर दे; यह अकेले पत्नी द्वारा नहीं हो सकता। और यदि किसी नाबालिग

लड़की का निकाह उसके पिता ने किया हो, तो वयस्क होने पर लड़की को उस पर आपत्ति करने का भी अधिकार नहीं है। और यदि पिता या दादा के अलावा किसी अन्य संरक्षक (वली) ने किया हो और उस समय पति औरत का कुफ़ू (बराबर का) था...

[पादलेख]: १. रद्द अल-मुह्तार ब-हवाला फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-खुला, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, ५६०/२ २. रद्द अल-मुह्तार ब-हवाला अल-ज़ख़ीरा व अल-ख़ानिया, बाब अल-खुला, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, ५६६/२

पृष्ठ २६४ का ६८८

[بائیں کالم کی تحریر]: مدخول بها يقع بائنا لانه بعوض اه وفي الذخيرة والخانية وغيرهما وعنهما في رد المحتار تقع بائنة لانه طلاق بعوض وهو الابراء دلالة ۲اه والله سبحانہ تعالیٰ اعلم۔

[دائیں کالم کی تحریر]: کہہ دیا کہ میں نے تجھے طلاق دی، بیوی اگر مدخولہ ہو تو یہ طلاق بائنہ ہو گی کیونکہ یہ طلاق بالعوض ہے اھ، اور ذخیرہ، خانیہ وغیرہما میں، اور ردالمحتار میں بھی ان دونوں سے منقول ہے کہ یہ طلاق بائنہ ہو گی کیونکہ یہ طلاق بالعوض ہے، اور حقوق سے بری کرنا وہ دلالۃً معاوضہ ہے، اھ واللہ سبحانہ تعالیٰ اعلم (ت)

[مسئلہ کا سیکشن]: مسئلہ ۳۹: از چوبیس پرگنہ ڈاکخانہ حالی شہر مقام حاجی نگر چتکل ڈیلی سردار مرسلہ امیر اللہ میاں ۱۲ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ زید کی ہمشیرہ کی نابالغی کی حالت میں حسب رواج قوم بکر سے شادی ہوئی، اب وہ سن بلوغ کو پہنچی، اور وہ قرآن شریف وغیرہ بھی پڑھی ہے اور صوم وصلوٰۃ میں از بس پابند ہے، اور شرع شریف کے بھی برخلاف نہیں ہے، اور اس کا بیان یعنی بکر بالکل تبرہ اسلام ہے یعنی نہ وہ نماز پڑھتا ہے نہ روزہ رکھتا ہے بلکہ اس لڑکی یعنی زید کی بہن کو نماز پڑھنے و روزہ رکھنے پر نقل و مضحکہ کرتا ہے، اور وہ بکر تاڑی بھی پیتا ہے، اور لڑکی کے ورثہ اسے ان فعلوں سے بہت روکتے اور سمجھاتے ہیں لیکن وہ ایک نہیں مانتا، اور لڑکی اسی وجہ سے بہت دن سے میکے میں ہے، اور بکر کی چال چلن اب تک نہیں بدلی، اس لئے لڑکی کے وارث بھی بہت تنگ ہیں کہ لڑکی کو کیا کریں، کتنے دن تک بالغ لڑکی کو کنواری رکھیں، اور لڑکی بھی بکر سے بیزار ہو کر چاہتی ہے کہ میں اس سے خلع کرا لوں، اور ورثہ کی بھی یہی رائے ہے۔ آیا لڑکی ایسی حالت میں خلع کرا سکتی ہے یا نہیں؟ اور بکر کے ساتھ اب تک خلوتِ صحیحہ بھی ہوئی نہیں۔

[الجواب]: خلع شرع میں اسے کہتے ہیں کہ شوہر برضائے خود مہر وغیرہ مال کے عوض عورت کو نکاح سے جدا کردے تنہا زوجہ کے لئے نہیں ہو سکتا، اور نابالغہ کا نکاح جو اس کے باپ نے کیا ہو عورت بالغہ ہو اس پر اعتراض کا بھی حق نہیں رکھتی، اور اگر باپ دادا کے سوا اور ولی نے کیا اور شوہر اس وقت عورت کا کفو تھا

[حواشی]: ۱ ردالمحتار بحوالہ فتح القدیر باب الخلع داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۶۰ ۲ ردالمحتار بحوالہ الذخیرۃ والخانیۃ باب الخلع داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۶۶

That is, if he was not so deficient in religion, lineage, profession, or conduct that his marriage would be a cause of disgrace and shame for the woman's guardians, then in this case, although the woman gets the option to have the marriage annulled after reaching maturity, she must immediately express her dissatisfaction upon becoming an adult, stating that she does not accept this marriage. The remedy is to obtain a divorce from him, provided he remains a Muslim. The questioner did not specify what kind of mockery he makes of the woman regarding prayer and fasting. If that mockery is directed towards prayer and fasting itself, then he has exited Islam, and the woman is out of his marriage contract. If, in fact, seclusion (consummation) has not occurred yet, then there is no need for a waiting period (iddah); she can marry whomever she wishes now. And Allah Almighty knows best.

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

यानी मज़हब या नसब या पेशा या चाल-चलन में ऐसा कम न था जिससे निकाह औरत के वलियों (अभिभावकों) के लिए नंग-ओ-आर (अपमान और शर्म) का कारण हो, तो इस सूरत में यद्यपि औरत को बालिग होने के बाद निकाह फ़स्ख़ (रद्द) कराने का अधिकार मिलता है, लेकिन शर्त यह है कि बालिग होते ही तुरंत अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करे कि मुझे यह निकाह मंज़ूर नहीं। चारा-ए-कार (समाधान) यह है कि उससे तलाक़ ली जाए, यह उस सूरत में है जब वह इस्लाम पर क़ायम हो। साइल (प्रश्नकर्ता) ने यह नहीं लिखा कि वह नमाज़-रोज़ा पर औरत से क्या मज़ाक करता है। अगर वह मज़ाक नमाज़-रोज़ा की तरफ़ राज़े (संबंधित) हो तो वह इस्लाम ही से निकल गया और औरत उसके निकाह से बाहर हो गई। और अगर वाक़ई अब तक ख़लवत (एकांतवास/सुहागरात) नहीं हुई है तो इद्दत की भी ज़रूरत नहीं, अभी जिससे चाहे निकाह कर सकती है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

पेज २६५ ऑफ ६८८

یعنی مذہب یا نسب یا پیشہ یا چال چلن میں ایسا کم نہ تھا اس سے نکاح اولیائے زن کے لئے باعثِ ننگ و عار ہو تو اس صورت میں اگرچہ عورت کو بعدِ بلوغ فسخ کرانے کا اختیار ملتا ہے مگر جبکہ بالغ ہوتے ہی فوراً اس سے اظہار ناراضی کرے کہ مجھے یہ نکاح منظور نہیں، چارہ کار یہ ہے کہ اس سے طلاق لی جائے یہ اس صورت میں کہ وہ اسلام پر قائم ہو، سائل نے نہ لکھا کہ وہ نماز روزہ پر عورت سے کیا مضحکہ کرتا ہے، اگر وہ مضحکہ نماز روزہ کی طرف راجع ہو تو وہ اسلام ہی سے نکل گیا اور عورت اس کے نکاح سے خارج ہو گئی، اور اگر واقعی اب تک خلوت نہیں ہوئی تو عدت کی بھی حاجت نہیں، ابھی جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Volume 13 Fatawa Razawiyya Chapter on Zihar (Description of Zihar) Issue 40: From Bhairati Panjam, 7 Muharram al-Haram 1307 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, in anger at his wife, said these words: "I will divorce you. I consider you like a mother or sister. If I speak to you, it would be like speaking to my sister." In this situation, has the woman left his marriage or not? What is the ruling concerning this? Explain and be rewarded. The Answer: The first phrase, "I will divorce you," is merely invalid as it is only a promise; nothing occurs because of it. Similarly, the last phrase, "If I speak to you, I would be speaking to my mother or sister," is of no consequence even if by "speaking" he intended to mean sexual intercourse. In Al-Hindiyya, it is stated: "If he says, 'If I have intercourse with you, it's as if I have intercourse with my mother,' there is no consequence upon him." This is also mentioned in Ghayat al-Suruji. (1) In Al-Hindiyya, it is written that if a husband says, "If I have intercourse with you, it's as if I have intercourse with my mother," then nothing is binding on the husband. It is mentioned the same way in Ghayat al-Suruji. (T) Regarding the middle phrase, the petitioner states that his intention by saying this was that "you are like my mother and sister to me..." 1 Fatawa Hindiyya, Chapter Nine on Zihar, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/50. Page 267 of 688

खण्ड 13 फ़तावा रज़विया बाब-उज़-ज़िहार (ज़िहार का बयान) मसला 40: भेरटी पंचम से, 7 मुहर्रम अल-हराम 1307 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी औरत पर ग़ुस्सा होकर ज़ौजा (पत्नी) से ये लफ़्ज़ कहे कि "मैं तुझको तलाक़ दे दूँगा, मैं तुझे बजाय माँ-बहन के समझता हूँ, अगर तुझसे कलाम (बात) करूँ तो अपनी बहन से कलाम करूँ।" इस सूरत में औरत उसके निकाह से ख़ारिज हो गई या नहीं? तो इसके मुताल्लिक़ क्या हुक्म है। बयान फ़रमाएं, सवाब पाएँ। अल-जवाब: पहला जुमला कि "मैं तुझे तलाक़ दे दूँगा" महज़ ना-मोतबर (अमान्य) है क्योंकि यह सिर्फ़ एक वादा है, इससे कुछ नहीं होता। इसी तरह पिछला जुमला कि "मैं तुझसे कलाम करूँ तो अपनी माँ-बहन से कलाम करूँकोई चीज़ नहीं है, चाहे कलाम करने से मुराद हमबिस्तरी ही क्यों न हो। फ़िल हिंदिया: "लु क़ा-ल इन वत़ितुका वत़ितु अम्मी फ़ला शई-अ अलैह कज़ा फ़ी ग़ायत-उस-सरूजी"। (1) हिंदिया में है कि अगर शौहर ने कहा, "अगर मैं तुझसे सोहबत (यौन संबंध) करूँ तो अपनी माँ से सोहबत करूँ, तो शौहर पर कुछ लाज़िम नहीं। ग़ायत-उस-सरूजी में भी ऐसा ही ज़िक्र है। (त) रहा बीच का लफ़्ज़, इसके बारे में सवाल करने वाला ज़ाहिर करता है कि मेरी मुराद इस कहने से यह थी कि "तुझे अपनी माँ और बहन की तरह अपने ऊपर..." (1) फ़तावा हिंदिया, बाब नौवाँ ज़िहार के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/50. पृष्ठ 267/688

جلد سیزدہم فتاوٰی رضویہ باب الظھار (ظہار کا بیان) مسئلہ ۴۰: از بھیرٹی پنچم ۷ محرم الحرام ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی عورت پر غصہ ہو کر زوجہ سے یہ لفظ کہے کہ میں تجھ کو طلاق دے دوں گا میں تجھے بجائے ماں بہن کے سمجھتا ہوں اگر تجھ سے کلام کروں تو اپنی بہن سے کلام کروں۔ اس صورت میں عورت اس کے نکاح سے خارج ہو گئی یا نہیں؟ تو اس کی نسبت کیا حکم ہے۔ بینوا توجروا الجواب: پہلا لفظ کہ "میں تجھے طلاق دے دوں گا" محض نا معتبر ہے کہ صرف وعدہ ہی وعدہ ہے اس سے کچھ نہیں ہوتا، یونہی پچھلا لفظ کہ "میں تجھ سے کلام کروں تو اپنی ماں بہن سے کلام کروں" کوئی چیز نہیں اگرچہ کلام کرنے سے ہمبستری ہی کرنا مراد لیا ہو، فی الھندیۃ لو قال ان وطئتک وطئت امی فلا شیئی علیہ کذا فی غایۃ السروجی ۱۔ ہندیہ میں ہے کہ اگر خاوند نے کہا اگر میں تجھ سے وطی کروں تو اپنی ماں سے وطی کروں، تو خاوند پر کچھ لازم نہیں۔ غایۃ السروجی میں یونہی مذکور ہے (ت) رہا بیچ کا لفظ، اس کی نسبت سائل مظہر کہ میری مراد اس کہنے سے یہ تھی کہ تجھے مثل اپنی ماں بہن کے اپنے اوپر ۱ فتاوی ہندیہ الباب التاسع فی الظہار نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۰ صفحہ ۲۶۷ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya, Volume 13, 13

"I consider it forbidden; divorce was not my intention." If this statement is factual, then it is a case of Zihar.

| In Al-Alamgiriyya: If he said to her, "You are to me like my mother's back," intending prohibition, there is a difference of opinion in reports, but the correct report is that it constitutes Zihar according to all, as mentioned in Fatawa Qadi Khan. [Summary] | In Alamgiri, it is: If the husband said, "You are like my mother to me," if his intention was to make her forbidden, then there is a difference in reports about it, and the correct report is that this will be Zihar according to everyone, as it is in Fatawa Qazi Khan. [Summary] | | In Radd al-Muhtar from Al-Bahr: "From me," "at me," and "with me" are like "on me." I say: You know that "I consider" (samajhta hoon) in our language conveys the meaning of "indee" (عندی - with/at me) in the Arabic language. | And it is quoted from Al-Bahr in Radd al-Muhtar that if instead of "upon me," he used the words "from me," "at my place," or "with me," they will also be under the ruling of "upon me." I say: In our language, the word "samajhta hoon" (I consider) stands in place of the Arabic "indee." (T) |

Thus, the ruling in this case is that the woman is not removed from the marriage, but it is forbidden for him to have intercourse with her, or to kiss her with desire, or to touch her body with desire, or to look at her private parts in that manner. All these things become forbidden and will remain forbidden until he pays the expiation (kaffara).

| In Tanwir al-Absar, Ad-Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar: Through these words, he becomes a muzahir (one who committed Zihar). Therefore, intercourse and its preliminaries become forbidden for him. The preliminaries of intercourse include kissing, embracing, and looking at the wife's private parts with desire. However, touching without desire is excluded from this ruling by consensus (Ijma). Similarly, it is forbidden for the wife to allow him access for intercourse. Looking at her back, abdomen, chest, or hair is not forbidden. | In Tanwir al-Absar, Durr-e-Mukhtar, and Radd al-Muhtar, it is stated that through these words, that person will be declared a muzahir (one who has committed Zihar). Therefore, intercourse with the wife and the preliminaries of intercourse will become forbidden for him. The preliminaries of intercourse include kissing, embracing, and looking at the wife's private parts with desire, etc. But touching without desire is excluded from this ruling by consensus.

And similarly, it is forbidden for the wife to give the husband the opportunity for intercourse. Looking at the wife's back, stomach, chest, and hair [is not forbidden]. |

1. Fatawa Hindiyya, Chapter 9 regarding Zihar, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/507.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/575.

फतावा रज़विया, खंड 13, 13

"मैं इसे हराम समझता हूँ; तलाक देना मेरी नीयत में नहीं था।" अगर यह बयान सच है, तो यह 'ज़िहार' (Zihar) की स्थिति है।

| 'आलमगीरिया' में है: अगर उसने उससे कहा, "तुम मुझ पर मेरी माँ की तरह हो," और उसका इरादा हराम करना था, तो रिवायतों में मतभेद है, लेकिन सही रिवायत यह है कि यह सबके नज़दीक ज़िहार होगा, जैसा कि 'फतावा काज़ी ख़ान' में है। [संक्षेप] | 'आलमगीरी' में है: अगर पति ने कहा "तुम मुझ पर मेरी माँ की तरह हो", अगर इससे हराम करने की नीयत की हो तो इसमें रिवायतों का मतभेद है, और सही रिवायत यह है कि यह ज़िहार होगा सबके नज़दीक जैसा कि 'फतावा काज़ी ख़ान' में है। [संक्षेप] | | 'रद्द अल-मुह्तार' में 'बहर' के हवाले से है कि "मुझसे," "मेरे पास," "मेरे साथ" के शब्द "मुझ पर" के हुक्म में होंगे। मैं कहता हूँ: आप जानते हैं कि हमारी ज़बान में "समझता हूँ" शब्द अरबी ज़बान में "इंदी" (عندی) का स्थान लेता है। | और 'रद्द अल-मुह्तार' में 'बहर' से मनक़ूल है कि "अगर तू मुझ पर" की बजाय "मुझसे, मेरे यहाँ, मेरे साथ" के अल्फाज़ कहे तो वह भी "मुझ पर" के हुक्म में होंगे। अकुल: (मैं कहता हूँ) हमारी ज़बान में "समझता हूँ" का लफ्ज़ अरबी ज़बान में "इंदी" के कायम मकाम है। (त) |

अतः, इस मसले का हुक्म यह है कि औरत निकाह से नहीं निकली, लेकिन उसके साथ संभोग करना, या कामुकता के साथ उसका चुंबन लेना, या कामुकता के साथ उसके शरीर को छूना, या उसी तरह उसके गुप्तांग को देखना, ये सब बातें हराम हो गईं और तब तक हराम रहेंगी जब तक वह कफ़्फ़ारा अदा न करे।

| 'तन्वीर अल-अबसार', 'दुर्र-ए-मुख्तार' और 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि इन शब्दों से वह व्यक्ति 'मुज़ाहिर' (ज़िहार करने वाला) माना जाएगा। इसलिए, पत्नी से संभोग और संभोग के प्रारंभिक कार्य उस पर हराम हो जाएंगे। संभोग के प्रारंभिक कार्यों में चुंबन, आलिंगन और कामुकता के साथ पत्नी के गुप्तांग को देखना आदि शामिल हैं। लेकिन बिना कामुकता के छूना इस हुक्म से सर्वसम्मति (इज्मा) से बाहर है। इसी प्रकार, पत्नी के लिए पति को संभोग का मौका देना हराम है। पत्नी की पीठ, पेट, छाती और बालों को देखना हराम नहीं है। | 'तन्वीर अल-अबसार', 'दुर्र-ए-मुख्तार' और 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि इन अल्फाज़ से वह शख्स ज़िहार करने वाला करार पाएगा, लिहाज़ा बीवी से वती और वती के दवायी उस पर हराम हो जाएंगे। वती के दवायी बोस-ओ-किनार और शहवत से

बीवी की शर्मगाह पर नज़र डालना वगैरह हैं लेकिन बगैर शहवत छूना इस हुक्म से बिल-इज्मा खारिज है, नहर और यूँही बीवी पर खाविन्द को जमाअ का मौका देना हराम है, और बीवी की पुश्त, पेट, छाती और बालों [को देखना हराम नहीं]। |

1. फतावा हिंदिया, अध्याय 9 ज़िहार के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/507।
2. रद्द अल-मुह्तार, ज़िहार का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/575।

पृष्ठ 688 का 268

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، ۱۳

حرام سمجھتا ہوں طلاق دینا میری نیت میں نہ تھا، اگر یہ بیان واقعی ہے تو صورت ظہار کی ہے،

| فی العالمگیریہ لو قال لھا انت علی مثل امی ان نوی التحریم اختلفت الروایات فیہ والصحیح انہ یکون ظھار اعند الکل کذافی فتاوی قاضی خاں اھ ملخصاً، | عالمگیری میں ہے: اگر خاوند نے کہا "تو مجھ پر میری ماں کی طرح ہے" اگر اس سے حرام کرنے کی نیت کی ہو تو اس میں روایات کا اختلاف ہے، اور صحیح روایت یہ ہے کہ یہ ظہار ہوگا سب کے نزدیک جیسا کہ فتاوٰی قاضی خان میں ہے اھ ملخصاً، | | وفی ردالمحتار عن البحر منی وعندی ومعی کعلی اھ اقول وانت تعلم ان سمجھتا ہوں بلسا ننا یؤدی عندی بلسان العرب۔ | اور ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے کہ "اگر تو مجھ پر" کی بجائے "مجھ سے، میرے ہاں، میرے ساتھ" کے الفاظ کہے تو وہ بھی "مجھ پر" کے حکم میں ہوں گے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) ہماری زبان میں "سمجھتا ہوں" کا لفظ عربی زبان میں "عندی" کے قائم مقام ہے۔ (ت) |

پس صورت مسئولہ کا حکم یہ ہے کہ عورت نکاح سے نہ نکلی مگر اسے اس کے ساتھ صحبت کرنا یا شہوت کے ساتھ اس کا بوسہ لینا یا شہوت سے اس کے بدن کو ہاتھ لگانا یا اسی طور پر اس کی شرمگاہ دیکھنا یہ سب باتیں حرام ہو گئیں اور ہمیشہ حرام رہیں گی جب تک کفارہ ادا نہ کرے،

| فی تنویر الابصار والدر المختار وردالمحتار یصیر بہ مظاھر فیحرم وطؤھا علیہ ودواعیہ من القبلۃ والمس والنظر الی فرجھا بشھوۃ اما المس بغیر شھوۃ فخارج بالاجماع نھر، وکذا یحرم علیھا تمکینہ ولایحرم النظر الی ظھرھا او بطنھا ولاالی الشعر اھ | تنویر الابصار، درمختار اور ردالمحتار میں ہے کہ ان الفاظ سے وہ شخص ظہار کرنے والا قرار پائے گا، لہٰذا بیوی سے وطی اور وطی کے

دواعی اس پر حرام ہوجائیں گے، وطی کے دواعی بوس و کنار اور شہوت سے بیوی کی شرمگاہ پر نظر ڈالنا وغیرہ ہیں لیکن بغیر شہوت چھونا اس حکم سے بالا جماع خارج ہے، نہر اور یونہی بیوی پر خاوند کو جماع کا موقع دینا حرام ہے، اور بیوی کی پشت، پیٹ، چھاتی اور بالوں |

1 فتاویٰ ہندیہ الباب التاسع فی الظہار نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۰۷ 2 ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۵۷۵

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Arabic Section]: "...and the chest [as per 'Bahr'], even with lust, unlike looking at the private parts with lust. From Muhammad: if he returns from a journey, he may kiss her out of compassion, until he pays expiation; this is the limit for his saying 'then it is forbidden' [Summary]."

[Corresponding Urdu Explanation]: It is not forbidden to look at [the chest], according to 'Bahr', even if it is with lust. In contrast, looking at the wife's private parts with lust is forbidden. And it is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that if someone returns from a journey and kisses his wife out of compassion, it is permissible until he pays expiation (Kaffarah). This defines the limit for the author's statement "then it is forbidden" (T).

And the expiation for this is to free a slave. If one does not have the capacity for that, he must fast for two consecutive months. During these days, he should not miss any fast, nor should he have intercourse with the woman at any time, day or night; otherwise, he will have to restart the fasts from the beginning. And one who is so ill or so old that he does not have the strength to fast, should feed sixty poor people two full meals a day, or give sixty poor people wheat—for each poor person, one and three-quarter seers and eight annas more by Bareilly weight, or pay an equivalent value. Until he is finished with this expiation, he must never touch the woman.

[Arabic Section]: "In 'Al-Durr al-Mukhtar': It is the freeing of a slave. If he does not find one to free, he fasts for two months—even if it is fifty-eight days by the lunar calendar—otherwise sixty consecutive days before intercourse. If he breaks the fast for an excuse or without one, or has intercourse within the two months, absolutely, by night or day, intentionally or forgetfully, he restarts the fasting, but not so for feeding. If he is unable to fast due to an illness from which recovery is not expected or old age, he feeds sixty poor people, even legally like Sadaqat-ul-Fitr, or its value. If he feeds them lunch and dinner and satiates them, it is permissible, just as if he fed one person for sixty days because of the renewal of need [Selected]. And Allah Almighty knows best."

[Corresponding Urdu Explanation]: It is stated in 'Durr al-Mukhtar': The expiation is to free a slave. If this is not possible, fast for two months before intercourse. Even if according to the lunar calendar, these total fifty-eight (58) days, otherwise complete sixty consecutive days according to count. Then, if any fast is missed in between due to an excuse or without excuse, or if he has intercourse with the wife during these

two months, day or night, intentionally or forgetfully, however it may be, then he must fast sixty days afresh. If he pays the expiation by feeding, and has intercourse with the wife while feeding, it will not be necessary to start the feeding over. Then, if due to such an illness from which recovery is not expected, he cannot fast, or due to old age, he does not have the strength for fasting, then...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/76-575.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Kaffarah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/51-250.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पेज 13

[अरबी भाग]: "...और सीने को देखना ['बहर' के अनुसार], भले ही कामुकता (शहवत) के साथ हो, इसके विपरीत गुप्तांग को कामुकता से देखना हराम है। इमाम मुहम्मद से रिवायत है कि अगर कोई यात्रा से लौटे और अपनी पत्नी को करुणा वश चूमे, तो यह जायज़ है जब तक कि वह कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) न दे दे; यह लेखक के कथन 'तब यह हराम है' की व्याख्या है [संक्षिप्त]।"

[उर्दू व्याख्या]: सीने को देखना हराम नहीं है, 'बहर' के अनुसार, भले ही वह कामुकता के साथ हो। इसके विपरीत, पत्नी के गुप्तांग को कामुकता से देखना हराम है। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से रिवायत है कि यदि कोई यात्रा से आए और अपनी पत्नी को करुणा (शफ़क़त) के कारण चूम ले, तो यह जायज़ है जब तक कि वह कफ़्फ़ारा न दे दे। यह लेखक के कथन "फ़यहुराम" (तो हराम है) की सीमा है (त)।

और इसका कफ़्फ़ारा यह है कि एक गुलाम आज़ाद करे। यदि वह इसकी सामर्थ्य न रखता हो, तो लगातार दो महीने के रोज़े रखे। इन दिनों के बीच में न कोई रोज़ा छोड़े, न ही दिन या रात किसी भी समय स्त्री से संभोग (जिमा) करे, अन्यथा उसे फिर से नए सिरे से रोज़े रखने होंगे। और जो व्यक्ति इतना बीमार या बूढ़ा हो कि रोज़ों की ताक़त न रखता हो, वह साठ निर्धनों (मिसकीनों) को दोनों समय पेट भरकर खाना खिलाए, या साठ निर्धनों को गेहूं दे—प्रति निर्धन बरेली के माप से पौने दो सेर और आठ आने अधिक, या उतनी ही कीमत अदा करे। जब तक वह इस कफ़्फ़ारे से मुक्त (फ़ारिग) न हो जाए, तब तक स्त्री को कदापि हाथ न लगाए।

[अरबी भाग]: "'अल-दुर्रुल मुख्तार' में है: यह गुलाम को आज़ाद करना है। यदि उसे आज़ाद करने के लिए गुलाम न मिले, तो संभोग से पहले दो महीने के रोज़े रखे—भले ही चांद के हिसाब से ये कुल अट्ठावन दिन हों—अन्यथा साठ निरंतर दिन। यदि वह किसी उज़्र (कारण) से या बिना किसी उज़्र के रोज़ा तोड़ देता है, या इन दो महीनों के दौरान संभोग करता है, चाहे रात में हो या दिन में, जानबूझकर या भूलवश, तो वह रोज़ा फिर से शुरू करे, लेकिन खिलाने के मामले में ऐसा नहीं है। यदि वह ऐसी बीमारी के कारण रोज़ा रखने में असमर्थ है जिससे ठीक होने की उम्मीद नहीं है या बुढ़ापे के कारण, तो वह साठ निर्धनों को खिलाए, भले ही क़ानूनी रूप से सदक़तुल फ़ित्र की तरह या उसका मूल्य दे। यदि उसने उन्हें दोपहर और रात का भोजन खिलाया और तृप्त किया, तो यह जायज़

है, जैसे उसने ज़रूरत के नवीनीकरण के कारण साठ दिनों तक एक व्यक्ति को खिलाया हो [चुनिंदा]। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।"

[उर्दू व्याख्या]: 'दुर्रुल मुख्तार' में है: कफ़्फ़ारा गुलाम आज़ाद करना है। यदि यह संभव न हो, तो संभोग से पहले दो महीने के रोज़े रखे। भले ही चांद के हिसाब से ये कुल अट्ठावन (58) दिन बनें, अन्यथा गिनती के हिसाब से साठ निरंतर रोज़े पूरे करे। फिर यदि बीच में कोई रोज़ा छूट गया, चाहे वह किसी कारणवश हो या बिना कारण, या इन दो महीनों में अपनी पत्नी से संभोग कर लिया, दिन में या रात में, जानबूझकर या भूलवश, जैसा भी हो, तो उसे फिर से नए सिरे से साठ रोज़े रखने होंगे। यदि वह खिलाने के रूप में कफ़्फ़ारा अदा करता है और खिलाने के दौरान पत्नी से संभोग कर लेता है, तो नए सिरे से खाना खिलाना अनिवार्य नहीं होगा। फिर यदि ऐसी किसी बीमारी के कारण जिससे मुक्ति की आशा नहीं है, रोज़ा न रख सके या बुढ़ापे के कारण रोज़े पर सामर्थ्य न हो, तो फिर...

1. रद-उल-मुह्तार, बाब-उज़-ज़िहार, दार-ए-एहया-उत-तुरात-अल-अरबी, बेरुत, 4/76-575
2. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उल-कफ़्फ़ारा, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/51-250

والصدر بحرای ولو بشہوۃ بخلاف النظر الی الفرج بشہوۃ، عن محمد لو قدم من سفرلہ تقبیلھا للشفقۃ، حتی یکفر غایۃ لقولہ فیحرم اھ ملخصۃ۔ کو دیکھنا حرام نہیں ہے، بحر یعنی اگرچہ شہوت سے ہو، اس کے برخلاف بیوی کی شرمگاہ کو شہوت سے دیکھنا حرام ہے اور امام محمد رحمۃ اللہ علیہ سے روایت ہے کہ اگر سفر سے آئے اور بیوی کو شفقت سے بوسہ دے لے تو جائز ہے حتی یکفر (کفارہ دینے تک) یہ ماتن کے قول فیحرم (پس حرام ہے) کی غایت ہے (ت)

اور کفارہ اس کا یہ ہے کہ ایک غلام آزاد کرے اور اس کی طاقت نہ رکھتا ہو تو دو مہینے کے روزے لگاتار رکھے، ان دنوں کے بیچ میں نہ کوئی روزہ چھوڑے نہ دن کو یا رات کو کسی وقت عورت سے صحبت کرے ورنہ پھر سرے سے روزے رکھنے پڑیں گے، اور جو ایسا بیمار یا اتنا بوڑھا ہے کہ روزوں کی طاقت نہیں رکھتا وہ ساٹھ مسکینوں کو دونوں وقت پیٹ بھر کر کھانا کھلائے یا ساٹھ مسکینوں کو گیہوں دے فی مسکین بریلی کی تول سے پونے دوسیر آٹھ آنے بھر زائد یا اس قدر کی قیمت ادا کرے، جب تک اس کفارہ سے فارغ نہ ہو ہرگز عورت کو ہاتھ نہ لگائے،

في الدرالمختار، هي تحرير رقبة فان لم يجد ما يعتق، صام شهرين ولوثمانية وخمسين يوما بالهلال والافستين يوما متتابعين قبل المسيس، فان افطر بعذر او بغيره اووطئها في الشهرين مطلقا ليلا او نهارا عامدا او ناسيا استأنف الصوم، لا الا طعام فان عجز عن الصوم لمرض لا يرجى برؤه او كبر اطعم ستين مسكينا ولو حكما كالفطرة او قيمة ذلك، وان غداهم وعشاهم واشبعهم جاز كما لو اطعم واحدا ستين يوما لتجدد الحاجة اھ ملتقطا، واللہ تعالی اعلم۔ در مختار میں ہے: کفارہ غلام کو آزاد کرنا ہے، اگر

یہ نہ ہو سکے تو جماع سے قبل دوماہ کے روزے رکھے، اگرچہ چاند کے حساب سے یہ کل روزے اٹھاون ۵۸ بنیں، ورنہ دنوں کے حساب سے ساٹھ روزے مسلسل پورے کرے، پھر اگر درمیان میں کوئی روزہ چھوڑ دیا عذر کی بناء پر خواہ بغیر عذر، یا ان دوماہ میں بیوی سے جماع کرلیا، دن یا رات میں، قصداً یا بھول کر، جیسے بھی ہو تو پھر نئے حساب سے ساٹھ روزے رکھے، اگر طعام کی صورت میں کفارہ ادا کرے اور کھانا کھلانے کے دوران بیوی سے جماع کرلیا تو نئے سرے سے کھانا کھلانا لازم نہیں آئے گا، پھر اگر کسی ایسے مرض کی وجہ سے جس سے برات کی امید نہیں، روزہ نہ رکھ سکے، یا بڑھاپے کی وجہ سے روزے پر قدرت نہ ہو تو پھر

۱ ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ۴/۷۶-۵۷۵ ۲ درمختار باب الکفارہ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۵۱-۲۵۰

13 Volume 13 Fatawa Razawiya

Feed sixty poor people, even if the feeding is constructive, i.e., giving grain in the amount of Fitrana or its value. And if they are satisfied by eating twice a day, morning and evening, it will be permissible, just as it is permissible to feed one poor person for sixty days, morning and evening, until satisfied, because even one poor person has a new need every day. (End of summary, and Allah knows best (T)).

Issue 41: From Mathura, Mohalla Kishorpura, sent by Syed Madad Ali Sahib Rais, 19 Shaban 1307 AH.

Question: What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say in this matter that Zaid is affectionate towards Hindah and expresses love to her in seclusion? In response to Hindah's question, "Why do you love me when your wife Humra is present?", Zaid said twice or even three times in front of Hindah and other attendees, "In my love for you, I consider my wife Humra as my mother and sister and I like you." Later, upon being asked in an assembly, Zaid stated that when Hindah asked me, I did indeed say about Humra that she is my mother and sister. So, in this situation, does Humra remain in the marriage of Zaid or not? What is the Sharia ruling in this matter? Please issue a fatwa with research and precision. Provide the answer and you will be rewarded.

Answer: In the mentioned situation, Zaid is a sinner, transgressor, and a liar because of these words. Allah Almighty said: "They are not their mothers; their mothers are none but those who gave birth to them. And indeed, they utter an objectionable statement and a falsehood."[1] Not their wives are their mothers. Then, if Zaid intended to divorce his wife with these words...

[1] Quran Al-Kareem 58/2 Page 270 of 688

साठ गरीबों को खाना खिलाना, भले ही खिलाना काल्पनिक हो, यानी फितराना की मात्रा में अनाज देना या उसका मूल्य देना। और अगर वे सुबह और शाम दो समय खाने से संतुष्ट हो जाते हैं, तो यह जायज़ होगा, जैसे एक ही गरीब को साठ दिनों तक सुबह और शाम भरपेट खिलाना भी जायज़ है क्योंकि एक गरीब को भी हर दिन नई ज़रूरत होती है। (सारांश समाप्त, और अल्लाह बेहतर जानता है (T))।

मसला 41: मथुरा, मोहल्ला किशोरपुरा से, सैयद मदद अली साहब रईस द्वारा भेजा गया, 19 शाबान 1307 हिजरी।

प्रश्न: दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद हिंदह से स्नेह रखता है और एकांत में उससे प्यार जताता है? हिंदह के इस सवाल के जवाब में कि "जब तुम्हारी पत्नी हमरा मौजूद है तो तुम मुझसे प्यार क्यों करते हो?" ज़ैद ने हिंदह और अन्य उपस्थित लोगों के सामने दो या तीन बार कहा, "तुम्हारे प्यार में मैं अपनी पत्नी हमरा को अपनी माँ और बहन की जगह समझता हूँ और तुम्हें पसंद करता हूँ।" बाद में, एक सभा में पूछे जाने पर ज़ैद ने बयान किया कि जब हिंदह ने मुझसे पूछा था, तो मैंने वास्तव में हमरा के बारे में यह कहा था कि वह मेरी माँ-बहन है। तो क्या इस स्थिति में हमरा ज़ैद के निकाह में रही या नहीं? इस मामले में शरीयत का क्या हुक्म है? कृपया शोध और सूक्ष्मता के साथ फतवा जारी करें। उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: बताई गई स्थिति में, ज़ैद इन शब्दों के कारण फासिक (पापी), गुनहगार और झूठा है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "वे उनकी माताएं नहीं हैं; उनकी माताएं तो केवल वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है। और वास्तव में, वे एक घृणित बात और झूठ बोल रहे हैं।"[1] उनकी पत्नियाँ उनकी माताएँ नहीं हैं। फिर अगर ज़ैद ने इन शब्दों से पत्नी को तलाक देने का इरादा किया...

[1] कुरान अल-करीम 2/58 Page 270 of 688

ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلائے اگرچہ کھلانا حکمی ہو یعنی غلہ بمقدار فطرانہ دے دے یا اس کی قیمت دے دے، اور اگر صبح وشام دو وقت کھانے سے مسکینوں کو سیر کردیا تو یہ جائز ہو جائیگا، جس طرح ایک ہی مسکین کو ساٹھ روز صبح وشام سیر کرکے کھلا دیا تو بھی جائز ہے کیونکہ ایک مسکین کو بھی روزانہ نئی حاجت ہوتی ہے اھ ملتقطا، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۴۱: از متھرا محلہ کیشور پورہ مرسلہ سید مدد علی صاحب رئیس ۱۹ شعبان ۱۳۰۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین کہ زید ہندہ سے محبت کرتا ہے اور خلوت میں اس سے اظہار محبت کرتے ہوئے، ہندہ کے اس سوال کے جواب میں کہ، تو مجھ سے محبت کیوں کرتا ہے جبکہ حمرا تیری بیوی موجود ہے، دو بار بلکہ تین بار ہندہ اور دوسرے حاضرین کے سامنے زید نے کہا کہ میں تیری محبت میں اپنی بیوی حمرا کو اپنی ماں، بہن کی جگہ سمجھتا ہوں اور تجھے پسند کرتا ہوں، اور پھر زید ایک بار مجلس میں پوچھنے پر بیان کرتا ہے کہ جب ہندہ نے مجھ سے پوچھا تھا تو واقعی میں نے حمرا کی بابت یہ بات کہی تھی کہ وہ میری ماں بہن ہے، تو کیا اس صورت میں حمرا زید کے نکاح میں باقی رہی یا نہ؟ اس مسئلہ میں شرعی حکم کیا ہے؟ براہ نوازش تحقیق و تدقیق کے ساتھ فتوی ارشاد فرمائیں بینوا توجروا۔

الجواب: مسئولہ صورت میں زید اپنے ان کلمات کی وجہ سے فاسق، گنہگار اور جھوٹا ہے، اللہ تعالٰی نے فرمایا وہ (بیویاں) مائیں نہیں ہیں، مائیں تو وہی ہیں جنہوں نے ان کو جنم دیا ہے اور بیشک یہ بری اور جھوٹی بات کہتے ہیں۔۱ بمخواہ بہا مادراں ایشاں۔ پھر اگر زید نے ان کلمات سے بیوی کو طلاق دینے کا ارادہ کیا

[1] القرآن الكريم ٢/٥٨ Page 270 of 688

Fatawa Razawiya - Volume 13

(Left Column - Original Persian Text): ...as their mothers who gave birth to them. And truly, they speak nonsensical words and weave lies. Furthermore, if Zaid intended divorce for Hamra with these words and set his heart on removing her from the bond of marriage, then Hamra has become irrevocably (ba'in) divorced by one divorce. Even if the occurrence of speaking these words reached three times, it will not become a 'heavy' (mughallazah - triple) divorce because an irrevocable divorce does not follow an irrevocable one, as clarified in general books. Therefore, with Hamra's consent and without the need for 'tahlil' (halala), he can bring Hamra back into his marriage bond. And if he spoke with the intention of 'Zihar', then he becomes a 'muzahir' (one who committed Zihar), meaning Hamra remains in the marriage, but sexual intercourse with Hamra, kissing with desire, touching her body with desire, and looking at her private parts with inclination are all forbidden for him. And it is forbidden for Hamra to give herself to him for these acts until Zaid pays the expiation for Zihar. This involves freeing a slave who is not lacking any essential physical faculty, such as hearing or sight. An unconscious person, or one with both hands or both feet cut off, or a hand and a foot from the same side cut off, and the like, cannot be used for expiation. If he cannot find a slave, he must fast for two consecutive months before having intercourse with that wife. If during the period of fasting he came close to that woman, whether at night or during the day, he must start the fasting all over again. And if due to extreme old age or a severe illness with no hope of recovery...

(Right Column - Urdu Translation/Explanation): ...and if he had intended in his heart to exclude his wife Hamra from the marriage, then one irrevocable (ba'in) divorce has occurred for Hamra. Even if the words were spoken three times, it will be only one divorce; it will not be a triple (mughallazah) divorce from three divorces, because an irrevocable divorce does not occur after an irrevocable one, as is explicitly mentioned in general books. Therefore, Zaid can remarry Hamra with her consent without the need for 'halala'. And if Zaid uttered these words with the intention of 'Zihar', then it will be 'Zihar'. Therefore, in this case, Hamra will remain in Zaid's marriage as before, but sexual intercourse with Hamra or kissing and embracing, touching with desire, or looking at her private parts with desire—all these things are forbidden for Zaid, and it is forbidden for the wife to give the husband an opportunity for intercourse until Zaid pays the expiation for Zihar. The expiation for Zihar is to free a slave who is not afflicted with any defect due to which any of their physical utility has ended—for

example, hearing, sight, intellect, etc., utility must not have ended. Therefore, a blind, deaf, insane, or unconscious person, or one with both hands or both feet or a hand and a foot from one side cut off, and other slaves with such defects will not be useful in fulfilling the expiation. And if a slave is not found, then he will keep consecutive fasts for two months without a break before having intercourse with his wife. If during these two months of fasting, he has intercourse with his wife during the day or night, whether by mistake or intentionally, then he will have to keep consecutive fasts for two months all over again from the beginning. And if...

फ़तावा रज़विया - जिल्द 13

(बायां कॉलम - मूल फ़ारसी पाठ): ...जैसे उनकी माताएँ जिन्होंने उन्हें जन्म दिया। और वास्तव में, वे व्यर्थ की बातें करते हैं और झूठ बुनते हैं। इसके अलावा, यदि ज़ैद ने इन शब्दों से हमरा के लिए तलाक़ का इरादा किया और उसे निकाह के बंधन से निकालने पर अपना दिल लगाया, तो हमरा एक 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) तलाक़ से तलाक़शुदा हो गई है। भले ही इन शब्दों को बोलने की संख्या तीन बार तक पहुँच गई हो, यह 'मुग़ल्लज़ा' (तीन तलाक़) नहीं होगा क्योंकि एक अपरिवर्तनीय तलाक़ के बाद दूसरा अपरिवर्तनीय तलाक़ नहीं होता, जैसा कि सामान्य पुस्तकों में स्पष्ट किया गया है। इसलिए, हमरा की सहमति से और 'तहलील' (हलाला) की आवश्यकता के बिना, वह हमरा को वापस अपने निकाह के बंधन में ला सकता है। और यदि उसने 'ज़िहार' की नीयत से कहा, तो वह 'मुज़ाहिर' हो गया, जिसका अर्थ है कि हमरा निकाह में बनी रहेगी, लेकिन हमरा के साथ संभोग, कामेच्छा के साथ चूमना, कामेच्छा के साथ उसके शरीर को छूना और झुकाव के साथ उसके निजी अंगों को देखना, ये सब उसके लिए हराम हैं। और हमरा के लिए इन कार्यों के लिए स्वयं को उसे सौंपना तब तक हराम है जब तक कि ज़ैद ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा न कर दे। इसमें एक ऐसे गुलाम को आज़ाद करना शामिल है जिसमें सुनने या देखने जैसी किसी आवश्यक शारीरिक क्षमता की कमी न हो। एक बेहोश व्यक्ति, या जिसके दोनों हाथ या दोनों पैर कटे हों, या एक ही तरफ का एक हाथ और एक पैर कटा हो, और इसी तरह के अन्य दोषों वाले गुलाम का उपयोग कफ़्फ़ारे के लिए नहीं किया जा सकता है। यदि उसे गुलाम नहीं मिलता है, तो उसे उस पत्नी के साथ संभोग करने से पहले लगातार दो महीने तक रोज़े रखने चाहिए। यदि रोज़े की अवधि के दौरान वह उस स्त्री के करीब आया, चाहे रात में या दिन में, तो उसे फिर से नए सिरे से रोज़े शुरू करने होंगे। और यदि अत्यधिक बुढ़ापे या गंभीर बीमारी के कारण स्वस्थ होने की कोई आशा न हो...

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या): ...और यदि उसने अपने दिल में अपनी पत्नी हमरा को निकाह से बाहर कर देने का इरादा कर रखा था, तो हमरा को एक 'बाइन' तलाक़ हो गया। चाहे शब्द तीन बार कहे गए हों, एक ही तलाक़ होगा; तीन तलाक़ों से 'मुग़ल्लज़ा' नहीं होगा, क्योंकि बाइन तलाक़ के बाद दूसरा बाइन तलाक़ नहीं होता, जैसा कि आम किताबों में इसकी स्पष्ट व्याख्या है। इसलिए ज़ैद दोबारा हमरा से उसकी सहमति से बिना 'हलाला' के निकाह कर सकता है। और यदि ज़ैद ने ये शब्द 'ज़िहार' की नीयत से कहे हों, तो यह ज़िहार होगा। अतः इस स्थिति में हमरा पहले की तरह ज़ैद के निकाह में रहेगी, लेकिन हमरा से संभोग या चूमना-सहलाना, कामेच्छा के साथ छूना, कामेच्छा के

साथ उसके निजी अंगों को देखना—ये तमाम चीज़ें ज़ैद पर हराम हैं, और पत्नी के लिए पति को संभोग का मौका देना हराम है जब तक कि ज़ैद ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा न कर दे। ज़िहार का कफ़्फ़ारा यह है कि ऐसा गुलाम आज़ाद करे जो किसी ऐसे दोष से युक्त न हो जिसकी वजह से उसकी कोई शारीरिक उपयोगिता समाप्त हो गई हो—उदाहरण के तौर पर सुनने, देखने, बुद्धि आदि की उपयोगिता समाप्त न हुई हो। इसलिए अंधा, बहरा, पागल, बेहोश, दोनों हाथ या दोनों पैर या एक ही तरफ का एक हाथ और एक पैर कटा हुआ, और इस किस्म के अन्य दोषों वाला गुलाम कफ़्फ़ारे की अदायगी में काम नहीं आएगा। और यदि गुलाम न मिले, तो फिर वह अपनी पत्नी के साथ संभोग से पहले लगातार बिना नागा (ब्रेक) के दो महीने के रोज़े रखेगा। यदि इन दो महीनों के रोज़ों में पत्नी से दिन या रात को भूलकर या जानबूझकर संभोग कर लिया, तो नए सिरे से फिर दो महीने के रोज़े लगातार रखने पड़ेंगे। और यदि...

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

(بایاں کالم - اصل فارسی عبارت): نیند، ہم مادر ان شاں ہم آں ان اند کہ اینان را زائیدہ اند وبدرستی ہمچناں ست کہ ایشاں ہرزہ می لافند ودروغ می بافند، باز اگر زید بایں کلمہ ارادہ طلاق حمرا داشت ودل بر اخراجش از قید نکاح گماشت حمرا بیک طلاق بائن مطلقہ شد اگرچہ نوبت تکلم بایں کلمہ بسہ رسید باشد مغلظ نشود لان البائن لا یلحق کما صرحوا بہ فی عامۃ الکتب، پس برضائے حمرا بے حاجت تحلیل حمراء را بسلک نکاح خود میتوان کشید، واگر بقصد ظہار گفت مظاہر گشت کہ حمرا ہمچناں در نکاح است اما جماع حمرا وبوسہ شہوت و دست بخواہش بہ تنش سودن و نگاہ رغبت بفر جش نمودن ہمہ ہا برو حرام شد و تن باینہا دادن بر حمرا حرام، تا آنکہ زید کفارہ ظہار ادا نماید، واو بندہ آزاد کردن ست کہ فانت جنسی از اجناس منفعت نیست ہمچو سمع وبصر و بیہوش و ہردودست یا ہردوپایا یک دست و پاز یک جانب بریدہ و امثال اینہا در کفارہ بکار نیایند، و اگر بندہ نیابد دو ماہ پے در پے فصل روزے پیش از جماع آں زوجہ دارد اگر در مدت صیام باں زن نزدیکے نمود اگرچہ شبانہ اگرچہ بسو تار وز ہا از سر گیرد و اگر نہایت پیرانہ سالی یا مرضی قوی بے امید بہی طاقت

(دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح): اور دل میں بیوی حمرا کا نکاح سے خارج کردینے کا ارادہ کررکھا تھا تو حمرا کو ایک بائنہ طلاق ہوگئی، اگرچہ کلمات تین بار کہے ہوں ایک ہی طلاق ہوگی، تین طلاقوں سے مغلظ نہ ہوگی، کیونکہ بائنہ کے بعد بائنہ طلاق نہیں ہوتی، جیسا کہ عام کتب میں اس کی تصریح ہے، لہذا زید دوبارہ حمرا سے بغیر حلالہ حمرا کی رضامندی سے نکاح کرسکتا ہے، اور اگر زید نے یہ کلمات ظہار کی نیت سے کہے ہوں تو ظہار ہوگا، لہذا اس صورت میں حمرا زید کے نکاح میں بدستور رہے گی لیکن حمرا سے جماع یا بوس وکنار، شہوت کے ساتھ

چھونا، شہوت کے ساتھ اسکی شرمگاہ کو دیکھنا یہ تمام چیزیں زید پر حرام ہیں اور بیوی پر خاوند کو جماع کا موقعہ دینا حرام ہے تاوقتیکہ زید کفارہ ظہار ادا کردے، اور کفارہ ظہار یہ ہے کہ غلام ایسا آزاد کرے جو کسی عیب سے متصف نہ ہو جس کی وجہ سے اس کی کوئی جسمانی منفعت ختم ہوگئی ہو مثلاً سمع، بصر، عقل وغیرہ منفعت ختم نہ ہو، لہذا نابینا، بہرا، مجنون، بے ہوش، دونوں ہاتھ یا دونوں پاؤں یا ایک ہی جانب کا ایک ہاتھ اور پاؤں کٹا ہوا، اور اس قسم کے دیگر عیب والا غلام کفارہ کی ادائیگی میں کارآمد نہ ہوگا، اور اگر غلام نہ ملے تو پھر پے در پے مسلسل بغیر ناغہ دو ماہ کے روزے اپنے بیوی کے ساتھ جماع سے قبل رکھے گا، اگر اس دوماہ کے روزوں میں بیوی سے دن یارات کو بھول کریا قصداً جماع کرلیا تو نئے سرے سے پھر دوماہ کے روزے مسلسل رکھنے پڑیں گے، اور اگر

13 Volume 13 Fatawa Rizvia

In the case of extreme old age or a severe illness from which recovery is not expected, and there is no hope of regaining the strength to fast, such a person should provide food to sixty needy people (miskeen) in an amount equal to Sadaqah al-Fitr. That is, make each needy person the owner of one 'sa' of barley or half a 'sa' of wheat, or its value. Alternatively, feed sixty needy people to their fill, both morning and evening. Once this is done, his wife, Hamra, will become lawful (halal) for him. If Zaid, by using these words, only meant that Hamra was forbidden (haram) to him and did not intend divorce (talaq) or zihar (comparing his wife to a forbidden female relative), for example, if he said, "In my love for you, I consider her forbidden for myself," it would still constitute zihar, and an expiation (kaffarah) would be mandatory. However, if he intended neither divorce, zihar, nor for her to be forbidden, and these words were merely spoken without any specific intention, then Zaid is not liable for anything. Hamra remains his wife as before, and sexual intercourse and its precursors are all permissible. Furthermore, if Zaid intended with these words that Hamra is as respected as a mother or sister to him, then also nothing is mandatory. (T)

It is stated in Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar: If a man said to his wife, "You are to me like my mother," or "as my mother," and similarly if the word 'ala' (upon me) is omitted—as per al-Khaniya. If with these words, he intended respect for the wife, or divorce, or zihar, then his intention will be valid and the ruling will be according to the intention because these are metaphorical expressions (kinayah). (It is stated in al-Bahr that if the husband intended divorce, it would be an irrevocable divorce (talaq al-ba'in). Khayr al-Din al-Ramli stated: Similarly, if he only intended for her to be forbidden, it would be zihar. And disputes...

अत्यंत बुढ़ापे या किसी शक्तिशाली रोग जिसके ठीक होने की आशा न हो और रोज़ा रखने की शक्ति बहाल होने की आशा भी न हो, तो फिर ऐसा व्यक्ति साठ निर्धनों (मिस्कीनों) को सदक़ा-ए-फ़ित्र की मात्रा के बराबर भोजन दे। यानी प्रत्येक निर्धन को एक 'साअ' जौ या आधा 'साअ' गेहूँ या उनकी कीमत का मालिक बनाए, या साठ निर्धनों को सुबह और शाम भरपेट भोजन कराए। जब वह यह कार्य कर ले, तो उसकी पत्नी 'हमरा' उसके लिए हलाल (वैध) हो जाएगी। और यदि ज़ैद ने इन शब्दों से केवल 'हमरा' का हराम (अवैध) होना मुराद लिया हो, और तलाक़ या ज़िहार की नियत न की हो, यानी इस प्रकार कहा हो: 'तेरी मुहब्बत में मैं इसे अपने ऊपर हराम समझता हूँ', तो भी यह 'ज़िहार' ही होगा और कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य होगा। और यदि उसने इन शब्दों से तलाक़, ज़िहार या हराम होना कुछ भी मुराद न लिया हो और केवल ज़बान पर ये शब्द बिना किसी नियत के आ गए हों, तो फिर ज़ैद पर कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा, और 'हमरा' पूर्ववत उसकी पत्नी रहेगी, उससे सहवास और सहवास के कारण (चुंबन आदि) सब वैध होंगे। और यदि ज़ैद ने इन शब्दों से यह नियत की हो कि 'हमरा' मेरे लिए माँ और बहन की तरह सम्मानित है, तो भी कुछ अनिवार्य नहीं होगा। (त)

तन्वीरुल अबसार, दुर्रे मुख्तार और रद्दुल मुह्तार में कहा गया है कि यदि पत्नी से इस प्रकार कहा कि 'तू मुझ पर मेरी माँ के समान है' या 'मेरी माँ की तरह है' और इसी प्रकार यदि 'अली' (मुझ पर) शब्द हटा दिया जाए - ख़ानिया। इन शब्दों से यदि पत्नी के सम्मान, तलाक़ या ज़िहार की नियत की, तो उसकी नियत सही होगी और नियत के अनुसार आदेश लागू होगा क्योंकि यह 'कनाया' (अप्रत्यक्ष शब्द) है। (बहर में कहा गया है कि जब पति ने तलाक़ की नियत की तो 'तलाक़-ए-बाइन' (विच्छेदक तलाक़) हो जाएगी। और खैरुल दीन रम्ली ने कहा: इसी तरह यदि केवल हराम होने की नियत की तो 'ज़िहार' होगा। और झगड़े...

نہایت بڑھاپے یا کسی قوی مرض جس کے ختم ہونے کی امید نہ ہو اور روزہ رکھنے کی طاقت بحال ہونے کی امید بھی نہ ہو تو پھر ایسا شخص ساٹھ مسکینوں کو صدقہ فطر کی مقدار کھانا دے یعنی ہر مسکین کو ایک صاع جو یا نصف صاع گندم یا ان کی قیمت کا مالک بنائے یا ساٹھ مسکینوں کو صبح و شام پیٹ بھر کر کھانا کھلائے، جب یہ کام کر لے تو اس کی بیوی ہمراہ اس کے لئے حلال ہو جائے گی، اور اگر زید نے ان کلمات سے صرف حمرا کا حرام ہونا مراد لیا ہو، اور طلاق یا ظہار کی نیت نہ کی ہو یعنی یوں کہا تیری محبت میں اس کو میں اپنے اوپر حرام جانتا ہوں۔ تو بھی ظہار ہی ہوگا اور کفارہ لازم ہوگا، اور اگر اس نے ان کلمات سے طلاق، ظہار یا حرام ہونا کچھ مراد نہ لیا اور صرف زبان پر یہ کلمات بغیر نیت جاری ہو گئے تو پھر زید کے ذمہ کچھ نہ ہوگا، اور ہمراہ بدستور اس کی بیوی ہوگی اس سے جماع اور دواعی جماع سب مباح ہوں گے، اور اگر زید نے ان کلمات سے یہ نیت کی ہو کہ ہمرا میرے لئے ماں اور بہن کی طرح کرامت والی ہے تو بھی کچھ لازم نہ آئے گا۔ (ت)

تنویر الابصار، در مختار اور رد المحتار میں فرمایا ہے اگر بیوی کو یوں کہا کہ تو مجھ پر میری ماں کی مثل یا میری ماں کی طرح ہے او یوں ہی اگر "علی" (مجھ پر) کا لفظ حذف کر دے خانیہ۔ ان الفاظ سے اگر تعظیم زوجہ یا طلاق یا ظہار کی نیت کی تو اس کی نیت صحیح ہو گی اور نیت کے مطابق حکم ہو گا کیونکہ یہ کنایہ ہے۔ (بحر میں فرمایا خاوند نے جب طلاق کی نیت کی تو طلاق بائنہ ہو گی۔ اور خیر الدین رملی نے فرمایا: یوں ہی اگر صرف حرام ہونے کی نیت کی تو ظہار ہو گا، اور جھگڑے

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13.

(Arabic Text Translation / Urdu Explanation): In judicial matters, if a husband claims he intended 'al-birr' (goodness/honor) during a dispute where divorce was mentioned, his claim should not be accepted (as mentioned in the source). If there was no intention at the time of speaking, the speech would be considered void (laghw), and the minimum possibility, i.e., honor/respect, will be determined. The summary of these texts ends here. In 'Durr-ul-Mukhtar' and 'Radd-ul-Muhtar', it is stated: By these words, that person will be established as a 'muzhahir' (one who performs Zihar). Therefore, intercourse and its precursors—such as kissing, touching, and looking at the private parts with desire—become prohibited for the husband. However, touching without desire is excluded from this prohibition by consensus (Ijma), as per 'An-Nahr'. Similarly, it is prohibited for the wife to allow him sexual intercourse. Looking at her back, abdomen, hair, or chest is not prohibited, as per 'Al-Bahr', even if it is with desire, unlike looking at the private parts with desire. It is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that if a husband returns from a journey and kisses his wife out of compassion, it is permissible. (This indicates that kissing is only prohibited if done with desire). This prohibition...

Footnotes: 1. Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/239; Radd-ul-Muhtar, Chapter of Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/576-77. 2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/239; Radd-ul-Muhtar, Chapter of Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/575-576.

Page 273 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13।

(अरबी पाठ अनुवाद / उर्दू व्याख्या): न्यायिक मामलों में, यदि पति विवाद के दौरान, जहाँ तलाक का उल्लेख हुआ हो, यह दावा करता है कि उसका इरादा 'अल-बिर्र' (भलाई/सम्मान) का था, तो उसके इस दावे को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए (जैसा कि स्रोत में वर्णित है)। यदि बोलते समय कोई इरादा नहीं था, तो बात निरर्थक (लघ्व) मानी जाएगी, और न्यूनतम संभावना, यानी सम्मान/मर्यादा, निर्धारित की जाएगी। इन ग्रंथों का सारांश यहाँ समाप्त होता है। 'दुर्र-उल-मुख्तार' और 'रद्द-उल-मुहतार' में कहा गया है: इन शब्दों से वह व्यक्ति 'मुज़ाहिर' (ज़िहार करने वाला) स्थापित हो जाएगा। इसलिए, पति के लिए अपनी पत्नी के साथ संभोग और उसके अग्रदूत—जैसे चूमना, स्पर्श करना और कामुकता के साथ निजी अंगों को देखना—निषिद्ध (हराम) हो जाते हैं। हालाँकि, बिना कामुकता के स्पर्श करना सर्वसम्मति (इज्मा) से इस निषेध से बाहर है, 'अन-नहर' के अनुसार। इसी तरह, पत्नी के लिए पति को संभोग की अनुमति देना निषिद्ध है। 'अल-बहर' के अनुसार, उसकी पीठ, पेट, बाल या छाती को देखना निषिद्ध नहीं है, भले ही वह कामुकता के साथ हो, कामुकता के साथ निजी अंगों को देखने के विपरीत। इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) से वर्णित है कि यदि कोई पति यात्रा से लौटता है और करुणावश अपनी पत्नी को चूमता है, तो यह जायज़ है। (इससे पता चलता है कि चूमना केवल तभी निषिद्ध है जब वह कामुकता के साथ किया जाए)। यह निषेध...

पादलेख: 1. दुर्र-उल-मुख्तार, ज़िहार का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/239; रद्द-उल-मुहतार, ज़िहार का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/576-77। 2. दुर्र-उल-मुख्तार, ज़िहार का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/239; रद्द-उल-मुहतार, ज़िहार का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/575-576।

पृष्ठ 273/688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳۔

وینبغی ان لا یصدق قضاءً فی ارادۃ البر، اذا کان فی حال المشاجرۃ وذکر الطلاق اہـ)، والا ینو شیأ لغاً وتعین الادنی ای البر یعنی الکرامۃ مـ۱ انتہت ملخصات، وفیہما یصیر بہ مظاہرا فیحرم وطؤہا علیہ ودواعیہ (من القبلۃ والمس والنظر الی فرجہا بشہوۃ اما المس بغیر شہوۃ فخارج بالاجماع نہر) وکذا یحرم علیہا تمکینہ ولا یحرم النظر (ای الی ظہرہا وبطنہا ولا الی الشعر والصدر بحرای ولو بشہوۃ بخلاف النظر الی الفرج بشہوۃ) وعن محمد لو قدم من سفر لہ تقبیلہا للشفقۃ (افاد ان التقبیل لا یحرم الا اذا کان عن شہوۃ) حتی یکفر ۲ انتہت تلخیصاً، وفیہما الکفارۃ تحریر رقبۃ

ومذاکرہ طلاق میں اگر یہ بات کہی ہو اور خاوند کہے کہ میں نے اس سے ماں کی طرح عزت و کرامت والی مراد لی ہے، تو قاضی کو چاہئے کہ وہ اس کی تصدیق نہ کرے اھ) اور اگر یہ بات کرتے وقت کوئی نیت نہ تھی تو کلام لغو ہوگا، اور ادنیٰ احتمال یعنی کرامت والا متعین ہوگا، عبارات کی تلخیص ختم ہوئی۔ درمختار و ردالمحتار میں ہے: ان الفاظ سے وہ شخص ظہار کرنے والا قرار پائے گا لہذا خاوند پر بیوی سے وطی اور اس کے دواعی یعنی بوس و کنار، شہوت سے شرمگاہ کو دیکھنا وغیرہ حرام ہوں گے، تاہم بغیر شہوت چھونا بالاجماع حرام ہونے سے خارج ہے، نہر۔ یو نہی بیوی پر حرام ہے کہ وہ خاوند کو جماع کا موقع دے، اور ظہار میں خاوند کو بیوی کی پیٹھ، پیٹ، بال اور چھاتی کو دیکھنا حرام نہیں ہے بحر، یعنی دیکھنا اگرچہ شہوت سے ہو، اس کے بر خلاف شرمگاہ کو شہوت سے دیکھنا حرام ہے۔ امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ سے منقول ہے کہ اگر خاوند سفر سے واپس آئے اور ازراہ شفقت بیوی کو بوسہ دے دے تو جائز ہے (اس سے معلوم ہوا کہ بوسہ لینا صرف شہوت سے حرام ہے) یہ حرمت

1 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۲۳۹/۱، ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۵۷۶-۷۷ 2 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۲۳۹/۱، ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۵۷۶-۵۷۵

Even if it is a small suckling infant, or deaf—if he hears when shouted at, then it is acceptable, otherwise no; and not one who has lost the essence of utility (i.e., sight, hearing, speech, grasping, walking, and intellect - according to Quhistani, and the meaning is the total loss of utility), such as a blind person, an insane person who does not understand, or one whose hands or feet are cut off, or a hand and a foot from one side. If one does not find a slave to free, one must fast for two consecutive months before physical contact. If he has intercourse with her—i.e., the woman from whom he performed Zihar—during those two months, day or night, intentionally or forgetfully, he must restart the fast. If he is unable due to an illness from which recovery is not expected, or old age, he shall feed—i.e., give ownership to—sixty poor people, like the amount of Fitra, or its equivalent value or its destination. If he wishes to make it permissible by feeding them lunch and dinner, it is allowed (even if there is a weaned child among them, it is not sufficient for him because he does not eat a full portion; the meaning of a weaned child is one who does not consume standard food amount)[1]. Concluded in summary.

...will be until the payment of the expiation, Summary. In Dur-re-Mukhtar and Radd-ul-Muhtar, it is stated that expiation (kaffara) is to free a slave, even if the slave is a nursing infant or one who can hear loud voices; whoever cannot hear any sound at all, it is not permissible. And physical utility (e.g., seeing, hearing, speaking, grasping, walking, and being completely deprived of intellect is not permissible - Quhistani; and by loss of physical utility is meant that it is completely lost) such as the blind, the insane without intellect, both hands, both feet, or one foot and one hand on the same side amputated. If a slave is not found, one should fast for two consecutive months before intercourse. If the one who performed Zihar has intercourse during these two months, day or night, forgetfully or intentionally, then he should fast for two months again from the beginning. Then, if that Muẓāhir (the one who did Zihar) is not able to fast due to an endless disease or extreme old age, he should give ownership of food to sixty poor people. This food is the amount of Fitr, and the recipient will also be the one for Sadaqah Fitr, or give the price of that amount of grain. And if instead of giving ownership of the amount of expiation to the poor, he feeds them two meals to their fill, it is permissible (if there is a child among the poor who has finished nursing, do not count him because he cannot eat a full meal, and by a child finished with nursing is meant one who cannot eat a full normal meal) Summary. (T)

[1] Radd-ul-Muhtar, Chapter of Expiation, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 9/275, and Dur-re-Mukhtar, Chapter of Expiation, Mujtabai Press, Delhi, 1/250.

भले ही वह एक छोटा सा दूध पीता बच्चा हो, या बहरा हो—यदि चिल्लाने पर वह सुन लेता है, तो स्वीकार्य है, अन्यथा नहीं; और वह नहीं जिसने अपनी उपयोगिता खो दी है (जैसे दृष्टि, श्रवण, बोलना, पकड़ना, चलना और बुद्धि - कहिस्तानी के अनुसार, और इसका अर्थ है उपयोगिता का पूर्ण रूप से समाप्त होना), जैसे कि अंधा व्यक्ति, एक पागल व्यक्ति जो समझता नहीं है, या वह जिसके हाथ या पैर कटे हुए हों, या एक ही तरफ का एक हाथ और एक पैर। यदि किसी को आजाद करने के लिए गुलाम नहीं मिलता है, तो उसे शारीरिक संपर्क से पहले लगातार दो महीने तक उपवास (रोज़े) रखना चाहिए। यदि वह उस महिला के साथ संभोग करता है—अर्थात वह महिला जिससे उसने 'ज़िहार' किया है—उन दो महीनों के दौरान, दिन या रात में, जानबूझकर या भूलवश, तो उसे फिर से रोज़े शुरू करने होंगे। यदि वह ऐसी बीमारी के कारण असमर्थ है जिससे ठीक होने की उम्मीद नहीं है, या बुढ़ापे के कारण, तो वह खिलाएगा—अर्थात साठ गरीबों को स्वामित्व देगा—फ़ितरा की मात्रा के बराबर, या उसके समकक्ष मूल्य या उसके गंतव्य के समान। यदि वह उन्हें दोपहर और रात का भोजन खिलाकर इसे जायज़ बनाना चाहता है, तो इसकी अनुमति है (भले ही उनके बीच कोई दूध पीया हुआ बच्चा हो, यह उसके लिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि वह पूरा भोजन नहीं खा सकता; दूध पिए हुए बच्चे का अर्थ वह है जो मानक भोजन की मात्रा का उपभोग नहीं करता है)[1]। सारांश में समाप्त।

...प्रायश्चित के भुगतान तक होगा, सारांश। दुर-ए-मुख्तार और रद्द-उल-मुहतार में उल्लेख है कि प्रायश्चित (कफ्फारा) एक गुलाम को आज़ाद करना है, भले ही वह गुलाम दूध पीने वाला बच्चा हो या ऐसा व्यक्ति जो ऊंची आवाज सुन सके, जो कोई भी आवाज न सुन सके, वह मान्य नहीं है। और शारीरिक उपयोगिता (जैसे देखना, सुनना, बोलना, पकड़ना, चलना और बुद्धि से पूरी तरह वंचित होना मान्य नहीं है - कहिस्तानी; और शारीरिक उपयोगिता खोने से तात्पर्य है कि वह पूरी तरह से समाप्त हो गई हो) जैसे अंधा, बुद्धिहीन पागल, दोनों हाथ, दोनों पैर, या एक ही तरफ का एक पैर और एक हाथ कटा हुआ हो। यदि गुलाम न मिले, तो संभोग से पहले दो महीने लगातार उपवास रखना चाहिए। यदि ज़िहार करने वाले ने इन दो महीनों के दौरान दिन या रात में, भूलवश या जानबूझकर संभोग कर लिया, तो उसे फिर से शुरू से दो महीने के उपवास रखने चाहिए। फिर, यदि वह मुज़ाहिर (जिसने ज़िहार किया) किसी कभी न खत्म होने वाली बीमारी या अत्यधिक बुढ़ापे के कारण उपवास रखने में सक्षम नहीं है, तो उसे साठ गरीबों को भोजन का मालिकाना हक देना चाहिए। यह भोजन फ़ितर की मात्रा के बराबर है, और प्राप्तकर्ता भी सदका-ए-फ़ितर वाला ही होगा,

या अनाज की उस मात्रा की कीमत दे दे। और यदि गरीबों को प्रायश्चित की मात्रा का मालिकाना हक देने के बजाय, उन्हें दो समय का भरपेट भोजन करा दे, तो यह जायज़ है (यदि गरीबों में कोई ऐसा बच्चा हो जिसने दूध पीना छोड़ दिया हो, तो उसे न गिनें क्योंकि वह पूरा भोजन नहीं खा सकता, और दूध पीना छोड़ चुके बच्चे से तात्पर्य वह है जो पूरा सामान्य भोजन नहीं खा सकता) सारांश। (त)

[1] रद्द-उल-मुहतार, प्रायश्चित का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 9/275, और दुर-ए-मुख्तार, प्रायश्चित का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/250।

ولو صغیرا رضیعا او اصم ان صبیح به یسمع، والا لا، لافائت جنس المنفعة (اي البصر والسمع والنطق والبطش والسعی والعقل قهستانی، والمراد فوت منفعة بتمامها) کالاعمی ومجنون الذی لا یعقل والمقطوع یداه اور جلاه او ید ور جل من جانب فان لم یجد ما یعتق صام شهرین متتابعین قبل المسیس فان وطئها ای المظاهر منها فیهما ای الشهرین لیلا او نهارا عامدا او ناسیاً استأنف الصوم فان عجز لمرض لا یرجی برؤه او کبر اطعم ای ملك ستین مسکینا کالفطرة قدر او مصرفا او قیمة ذلك وان اراد الاباحة غداهم وعشاهم جاز (ولو کان فیهن اطعمهم صبی فطیم لم یجزه لانه لا یستوفی کاملا، المراد بالفطیم من لا یستوفی فی الطعام المعتاد)[1] انتهت بالتلخیص۔

کفارہ کی ادائیگی تک ہوگی اھ ملخصاً۔ درمختار وردالمحتار میں ہے کہ کفارہ یہ ہے کہ غلام آزاد کرے اگرچہ غلام دودھ پینے والا بچہ یا ایسا جو بلند آواز کو سن سکے اور جو کوئی آواز نہ سن سکے تو وہ جائز نہیں اور بدنی منفعت (مثلاً دیکھنا، سننا، بولنا، پکڑنا، چلنا اور عقل سے کلیۃً محروم، جائز نہیں، قہستانی، اور بدنی منفعت فوت ہونے سے مراد یہ ہے کہ وہ کلیۃً فوت ہو) جیسے نابینا، مجنون بے عقل، دونوں ہاتھ، دونوں پاؤں یا ایک پاؤں یا ایک ہی جانب سے ایک ہاتھ اور پاؤں کٹا ہو، اور اگر غلام نہ پائے تو دوماہ کے روزے پے درپے جماع سے قبل رکھے، اور اگر ظہار والے نے ان دوماہ کے دوران دن یا رات کو، بھول کر یا قصداً جماع کرلیا تو پھر نئے سرے سے دوبارہ دوماہ کے روزے رکھے، پھر اگر وہ مظاہر کسی ختم نہ ہونے والی مرض یا نہایت بڑھاپے کی وجہ سے روزہ رکھنے پر قادر نہ ہو تو ساٹھ مسکینوں کو کھانا ملک کرے، اور یہ کھانا فطر کی مقدار ہے اور مصرف بھی صدقہ فطر والا ہوگا یا اتنی مقدار غلہ کی قیمت دے دے اور اگر کفارہ کی مقدار کو مسکینوں کی ملکیت کی بجائے دو وقت کا کھانا پیٹ بھر کر کھلا

دے تو جائز ہے (اگر مسکینوں میں کوئی شیر خواری سے فارغ بچہ ہو تو اس کو شمار نہ کرے کیونکہ وہ پوری خوراک نہیں کھاسکتا، اور شیر خواری سے فارغ بچے سے مراد یہ ہے کہ وہ پوری عادی خوراک نہ کھاسکے) اھ، ملخصاً (ت)

[1] ردالمحتار، باب الکفارۃ، دار احیاء التراث العربی بیروت ۹/۲۷۵ و درمختار، باب الکفارۃ، مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۰

Fatawa Razawiyya, Volume 13, page 13

[Left Column - Persian/Arabic text] This is the detailed explanation of the forms of this disliked statement of Zaid, with whatever intention he had, and he knows best, and his Lord knows better than him. He should fear God and regarding whatever intention he had in uttering these words, its ruling is derived from this detailed explanation; he should act accordingly. This ruling was for religious conscience (diyanatan). But legally (qada’an), in the issue regarding the final scenario, there is no scope. The manner of speech, the context, and the circumstances at that time are all just witnesses that at that moment Zaid was far from intending 'honour like a mother'. It is a universal principle of Sharia that of the possible meanings of speech, whatever is contrary to the obvious shall never be accepted legally, especially when there is a mitigation in it for the claimant. In critical analysis, the nullification of this possibility also causes the nullification of the fourth possibility, because it is also among the principles of Sharia that as much as possible, they do not leave the speech of a sane adult as nonsensical (muhmal), due to what it entails of likening him to animals. Indeed, a separate principle for this has been formulated in 'Al-Ashbah wa al-Nazair'. Did you not see that in 'Dur al-Mukhtar', in the case of absence of intention, when they ruled speech as 'laghw' (absurd) in the sense of not yielding a ruling, they still did not leave it as nonsensical and meaningless, but rather brought it down to the lowest of possibilities, i.e., the meaning of 'honour'. As it is said: 'And if he did not intend anything, it is laghw, and the lowest is specified, i.e., honour.'[1] Here, since the meaning of 'honour' is not applicable as you heard, inevitably it falls upon the lowest of the remaining ones which are Zihar and Tahreem.

[Right Column - Urdu text] This is the detail of Zaid's disliked statement and he knows best about his intention, and Allah Almighty knows even better. Therefore, in stating his intention, he should fear Allah Almighty. Whatever he said and with whatever intention he said it, he should act upon it according to this detailed ruling. All this discussion is the detail of the ruling in terms of religious conscience (diyanatan). But legally (qada'an), it will not be permissible to take the last possibility in his statement, i.e., "honour and dignity like a mother," because there is no room for it due to the style of speech, context, and the situation at that time. All these matters testify that he is not intent on giving his wife honour and dignity like a mother; rather, this possibility is very remote. It is a universal principle of Sharia that such a possibility in speech will be considered null and void which is contrary to the obvious meaning, especially when that possibility leads to a mitigation for the speaker. Upon careful

analysis, the nullification of this possibility here will also nullify the fourth possibility, i.e., it being absurd/nonsensical due to lack of intention. This is also a legal principle that as far as possible, the speech of a sane adult should be saved from being considered nonsensical, because declaring his speech nonsensical is like declaring him an animal. An independent principle for this has been stated in 'Al-Ashbah wa al-Nazair'. Have you not seen in 'Durr al-Mukhtar' that they did not declare the absence of any intention in this speech as nonsensical in the sense of being fruitless, nor did they just leave it as nonsensical and meaningless, but rather attributed it to...

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/249. Page 275 of 688

फ़तावा रज़वियह, खंड 13, पृष्ठ 13

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी/अरबी पाठ] यह ज़ैद के इस नापसंद बयान के रूपों का विस्तृत विवरण है, जो भी उसका इरादा था, वह बेहतर जानता है और उसका रब उससे बेहतर जानता है। उसे खुदा से डरना चाहिए और इन शब्दों को कहने में उसका जो भी इरादा था, उसका हुक्म इसी विस्तृत विवरण से निकाला गया है; उसे तदनुसार कार्य करना चाहिए। यह हुक्म धार्मिक अंतरात्मा (दियानतन) के लिए था। लेकिन कानूनी रूप से (क़ज़ान), अंतिम परिदृश्य के संबंध में इस मुद्दे में कोई गुंजाइश नहीं है। बोलने का ढंग, संदर्भ और उस समय की परिस्थितियाँ सभी इस बात की गवाह हैं कि उस क्षण ज़ैद 'माँ जैसी इज़्ज़त' का इरादा करने से बहुत दूर था। शरीयत का यह एक व्यापक नियम है कि बातचीत के संभावित अर्थों में से, जो कुछ भी ज़ाहिरी अर्थ के विपरीत होगा उसे कानूनी तौर पर कभी स्वीकार नहीं किया जाएगा, खासकर जब इसमें दावेदार के लिए कोई रियायत हो। सूक्ष्म विश्लेषण में, इस संभावना का अमान्य होना चौथी संभावना के भी अमान्य होने का कारण बनता है, क्योंकि यह शरीयत के नियमों में से भी है कि जहाँ तक संभव हो, वे एक समझदार वयस्क की बात को व्यर्थ (मुहमल) नहीं छोड़ते, क्योंकि ऐसा करना उसे जानवरों के समान मानने के बराबर है। वास्तव में, 'अल-अशबाह वल नज़ाइर' में इसके लिए एक अलग नियम बनाया गया है। क्या आपने 'दुर्रे मुख्तार' में नहीं देखा कि नीयत के अभाव में, जब उन्होंने बातचीत को 'लघ्व' (व्यर्थ) के रूप में फलहीन होने के अर्थ में हुक्म दिया, तब भी उन्होंने इसे यूँ ही बेकार और बेमानी नहीं छोड़ा, बल्कि इसे संभावनाओं के सबसे निचले स्तर, यानी 'इज़्ज़त' के अर्थ तक ले आए। जैसा कि कहा गया है: 'और यदि उसने कुछ भी इरादा नहीं किया, तो यह लघ्व है, और निम्नतम को निर्दिष्ट किया जाता है, यानी इज़्ज़त।'[1] यहाँ, चूँकि 'इज़्ज़त' का अर्थ लागू नहीं होता जैसा कि आपने सुना, अपरिहार्य रूप से यह शेष में से निम्नतम पर आता है जो ज़िहार और तहरीम हैं।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] यह ज़ैद के नापसंद किए गए कथन का विवरण है और वह अपनी नीयत के बारे में बेहतर जानता है, और अल्लाह तआला और भी बेहतर जानता है। इसलिए अपनी नीयत बताते समय उसे अल्लाह तआला से डरना चाहिए। उसने जो बात कही और जिस इरादे से कही, उसे इस विस्तृत आदेश के अनुसार उस पर अमल करना चाहिए। यह पूरी बहस धार्मिक अंतरात्मा (दियानतन) के संदर्भ में आदेश का विवरण है। लेकिन कानूनी रूप से (क़ज़ान), उसके कथन में अंतिम संभावना, यानी "माँ जैसी इज़्ज़त और गरिमा", लेना जायज़ नहीं होगा। इसकी गुंजाइश उसके बोलने के अंदाज़, संदर्भ और उस समय की स्थिति के कारण नहीं हो सकती। ये सभी बातें इस बात

की गवाही देती हैं कि वह यहाँ अपनी पत्नी को माँ जैसी इज़्ज़त और गरिमा देने का इरादा नहीं रख रहा है; बल्कि यह संभावना बहुत दूर की है। शरीयत का यह एक व्यापक नियम है कि बातचीत में वह संभावना अमान्य मानी जाएगी जो ज़ाहिरी अर्थ के विपरीत हो, विशेष रूप से तब जब वह संभावना बोलने वाले के लिए राहत (तख़्फ़ीफ़) का कारण बनती हो। सूक्ष्म विश्लेषण करने पर, यहाँ इस संभावना का अमान्य होना चौथी संभावना को भी अमान्य कर देगा, यानी नीयत न होने पर उसे व्यर्थ (लघ्व) मानना। यह भी एक शरीयत का नियम है कि जहाँ तक संभव हो, एक समझदार वयस्क की बात को व्यर्थ होने से बचाया जाना चाहिए, क्योंकि उसकी बात को व्यर्थ करार देना उसे जानवर करार देने के समान है। इसके लिए 'अल-अशबाह वल नज़ाइर' में एक स्वतंत्र नियम बताया गया है। क्या आपने 'दुर्रे मुख्तार' में नहीं देखा कि उन्होंने इस बातचीत में किसी भी नीयत के न होने को फलहीन होने के अर्थ में व्यर्थ करार देते हुए उसे यूँ ही बेकार और बेमानी नहीं छोड़ दिया, बल्कि उसे...

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-ज़िहार, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/249। पृष्ठ 275 of 688

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[بایاں کالم - فارسی/عربی متن] این ست تفصیل صور ایں قول منکر زید با ارادہ کہ داشت نیکی و دانا ست و خدائے اوداناتر از و، از خدائے ترسد و بہر ارادہ کہ ایں سخن گفتہ باشد حکمش ازیں تفصیل بر آرد براں کار بند واینما حکم دیانت بود فاما قضاء در مسئلہ دائرہ صورت آخرہ را گنجائش نیست طرز کلام و سیاق و سباق و حال آں وقت ہمہ گواہ عدل ست کہ زید آن ہنگام از ارادہ برو کرامت حمر ابراحل دور بود وضابطہ کلیہ شرع ست کہ از محتملات سخن ہر چہ خلاف ظاہر باشد زنہار قضاء پذیر ا نیفتد خاصہ کہ دراں تخفیفے باشد مر مدعی را و در نظر تحقیق سقوط ایں احتمال موجب سقوط احتمال چہارم نیز ست زیرا کہ ہم از ضوابط شرع ست کہ تاتوانند کلام عاقل بالغ را مہمل نگزارند لما فیہ من الحاقہ بالبہائم وقد عقد لذلك فی الاشباہ والنظائر قاعدۃ مستقلۃ آخر ندیدی کہ در مختار بحالت عدم نیت چوں کلام را لغو بمعنی غیر مثمر حکم کردند ہمچناں مہمل و بیمعنی نہ گزاشتند بلکہ برادنی محتملات یعنی معنی برو کرامت فرو آوردند حیث قال والاینو شیأً لغا ویتعین الادنی ای البر ۱ ایں جاچوں معنی بر رابار نیست چنانکہ شنیدی لاجرم برادنی البواقی کہ ظہار و تحریم

[دایاں کالم - اردو متن] یہ زید کے ناپسندیدہ قول کی تفصیل ہے اور وہ اپنی نیت کے متعلق بہتر جانتا ہے اور اللہ تعالیٰ زیادہ بہتر جانتا ہے اس لئے نیت کے بیان میں وہ اللہ تعالیٰ کا خوف کرے، اس نے جو بات کی ہے اور جس ارادہ سے کی، اس تفصیلی حکم کے مطابق اس پر عمل کرے، یہ تمام بحث دیانۃً حکم کی تفصیل ہے لیکن قضاءً اس کی اس بات میں آخری احتمال یعنی ماں جیسی عزت و کرامت والی، مراد لینا جائز نہ ہوگا، اس کی گنجائش، انداز کلام اور اس کے سیاق سباق اور حال کی وجہ سے نہیں ہو سکتی کیونکہ یہ تمام امور اس بات کی شہادت ہیں کہ یہاں وہ

ہمراہیوی کو ماں جیسی عزت و کرامت دینے کے درپے نہیں ہے بلکہ یہ احتمال بعید تر ہے، اور شریعت کا ضابطہ کلیہ ہے کہ کلام میں وہ احتمال ساقط قرار پائیگا جو ظاہر کے خلاف ہوگا، خصوصاً جبکہ وہ احتمال قائل کے لئے تخفیف کا باعث بھی ہو، اور تحقیق نظر میں اس احتمال کا یہاں ساقط قرار پانا احتمال چھارم یعنی نیت نہ ہونے پر لغو ہونا، کو بھی ساقط کر دے گا، کیونکہ یہ بھی شرعی ضابطہ ہے کہ جہاں تک ممکن ہو عاقل بالغ کے کلام کو مہمل ہونے سے بچایا جائے، کیونکہ اس کی بات کو مہمل قرار دینا گویا اس کو حیوان قرار دینا ہے اشباہ ونظائر میں اس کے لئے مستقل قاعدہ بیان کیا گیا ہے، کیا آپ نے در مختار کو دیکھا نہیں کہ اس کلام میں کوئی بھی نیت نہ ہونے کو لغو بمعنی غیر ثمر آور قرار دیتے ہوئے یو نہی مہمل اور بے معنی قرار نہ دیا بلکہ اس کو...

---

۱ درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۲۴۹/۱ Page 275 of 688

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13

(Persian Column): It is brought down, and how can it be acceptable to a sound mind that Zaid repeatedly says these words in response to Hindah and in addressing people, and never has any intention of meaning in his heart, but rather, without intent, brings forth words in the manner of nonsense on his tongue? Do you know of any possibility more remote than this? Furthermore, during questioning, he clearly and openly admits that he has indeed placed his wife on the same level as his mother and sister, and does not say that he spoke words superfluously without intent or meaning. Therefore, legally, among those five forms, only these three previous forms are permissible. So, if Zaid admits to the intent of one of them, his ruling is clear; otherwise, his legal denial is inadmissible and it is necessary to apply it to one of them. As for divorce, which is the highest and most remote, and no evidence for it exists among them; Zihar or mere prohibition (Tehreem), the outcome of both being the same, remains. And if you look closely, observing the state of the common people determines the meaning of prohibition (Tehreem) itself. If you investigate, you will surely see that other than this meaning, this speech would have had little place in their minds.

(Urdu Column): It was considered on the basis of the lowest possibility and taken to mean honor and dignity ____ and said thus: if no intention was made, then it would become null and void and the lowest meaning would be determined, meaning honor and dignity would be intended. When the meaning of honor and dignity cannot be applicable here as you have heard, then in the remaining first three possibilities, the lowest meaning will be intended, which is Zihar or prohibition (Tehreem). Since Zaid has said this several times in response to Hindah and in addressing people, how can a sound mind tolerate that he said this without intention and without meaning any specific sense, just as nonsense? No other possibility can be more remote than this one. Then, upon inquiry, Zaid clearly admitted that indeed I have equated my wife to my mother and sister, and did not say that I spoke useless and meaningless words. Therefore, it is mandatory that legally, out of the five mentioned cases, only the first three cases be determined. Thus, if Zaid admits to intending one of these three, then that ruling will be enforced upon him; otherwise, a legal denial of all of them will not be acceptable, rather it will be necessary to settle on one possibility. Among them, the possibility of divorce is the last thing and is remote, for which there is no evidence. So Zihar or prohibition (Tehreem), both of which result in the same thing, remain. And if the Qazi (judge) deems it better, observing the state of the common

people, he will determine the meaning of prohibition (Tehreem) because upon reflection, it will be known that common people do not mean less than prohibition from this word, and at the very least, this is what is meant. (T)

In short, if Zaid admits to the intention of divorce, it is divorce; otherwise, in any case, in the eyes of the Qazi, it is Zihar. The gist of the matter is that if Zaid admits to divorce, it is divorce, otherwise, in any case, in the eyes of the Qazi.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

(फ़ारसी स्तंभ): यह नीचे लाया गया है, और एक स्वस्थ मस्तिष्क के लिए यह कैसे स्वीकार्य हो सकता है कि ज़ैद बार-बार हिंदा के जवाब में और लोगों को संबोधित करते हुए ये शब्द कहता है, और उसके दिल में अर्थ का कोई इरादा नहीं होता है, बल्कि बिना किसी इरादे के, प्रलाप के रूप में अपनी ज़ुबान पर शब्द लाता है? क्या आप इससे अधिक दूर की किसी संभावना को जानते हैं? इसके अलावा, पूछताछ के दौरान, वह स्पष्ट और खुले तौर पर स्वीकार करता है कि उसने वास्तव में अपनी पत्नी को अपनी माँ और बहन के स्तर पर रखा है, और यह नहीं कहता कि उसने बिना किसी इरादे या अर्थ के फालतू शब्द कहे। इसलिए, कानूनी तौर पर, उन पाँच रूपों में से केवल ये तीन पिछले रूप ही स्वीकार्य हैं। अत; यदि ज़ैद उनमें से एक के इरादे को स्वीकार करता है, तो उसका आदेश स्पष्ट है; अन्यथा, उसका कानूनी इनकार अस्वीकार्य है और इसे उनमें से एक पर लागू करना आवश्यक है। जहाँ तक तलाक का सवाल है, जो सबसे उच्च और सबसे दूरस्थ है, और उनके बीच इसका कोई प्रमाण नहीं है; ज़ेहार या केवल निषेध (तहरीम), दोनों का परिणाम एक ही है, शेष रहता है। और यदि आप बारीकी से देखें, तो जनसामान्य की स्थिति का अवलोकन स्वयं निषेध (तहरीम) के अर्थ को निर्धारित करता है। यदि आप जाँच करेंगे, तो आप निश्चित रूप से देखेंगे कि इस अर्थ के अलावा, उनके दिमाग में इस भाषण का बहुत कम स्थान रहा होगा।

(उर्दू स्तंभ): इसे निम्नतम संभावना के आधार पर माना गया और इसका अर्थ सम्मान और गरिमा लिया गया ____ और इस प्रकार कहा गया: यदि कोई नियत नहीं की गई, तो यह व्यर्थ हो जाएगा और निम्नतम अर्थ निर्धारित होगा, अर्थात् सम्मान और गरिमा अभिप्रेत होगी। जब सम्मान और गरिमा का अर्थ यहाँ लागू नहीं हो सकता जैसा कि आपने सुना है, तो शेष पहली तीन संभावनाओं में, निम्नतम अर्थ अभिप्रेत होगा, जो कि ज़ेहार या निषेध (तहरीम) है। चूंकि ज़ैद ने हिंदा के जवाब में और लोगों को संबोधित करते हुए कई बार यह बात कही है, तो एक स्वस्थ मस्तिष्क यह कैसे स्वीकार कर सकता है कि उसने बिना किसी इरादे के और बिना किसी विशिष्ट अर्थ के, बस प्रलाप के रूप में यह बात कही है? इस संभावना से अधिक दूर की कोई और संभावना नहीं हो सकती। फिर, पूछताछ करने पर, ज़ैद ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि वास्तव में मैंने अपनी पत्नी को अपनी माँ और बहन के बराबर माना है, और यह नहीं कहा कि मैंने बेकार और निरर्थक शब्द कहे। इसलिए, यह अनिवार्य है कि कानूनी तौर पर, पाँच उल्लेखित मामलों में से केवल पहले तीन मामलों को ही निर्धारित किया जाए। इस प्रकार, यदि ज़ैद इन तीनों में से किसी एक का इरादा करने की बात स्वीकार करता है, तो वह आदेश

उस पर लागू किया जाएगा; अन्यथा, उन सभी का कानूनी इनकार स्वीकार्य नहीं होगा, बल्कि किसी एक संभावना पर निर्णय लेना आवश्यक होगा। उनमें तलाक की संभावना अंतिम बात है और दूरस्थ है, जिसके लिए कोई प्रमाण नहीं है। तो ज़ेहार या निषेध (तहरीम), दोनों का परिणाम एक ही होता है, शेष रह जाते हैं। और यदि काज़ी (न्यायाधीश) बेहतर समझे, तो जनसामान्य की स्थिति को देखते हुए, वह निषेध (तहरीम) के अर्थ को निर्धारित करेगा क्योंकि विचार करने पर यह ज्ञात होगा कि जनसामान्य इस शब्द से निषेध से कम अर्थ नहीं लेते हैं, और कम से कम, यही अभिप्रेत होता है। (त)

संक्षेप में, यदि ज़ैद तलाक की नियत स्वीकार करता है, तो यह तलाक है; अन्यथा, किसी भी स्थिति में, काज़ी की दृष्टि में, यह ज़ेहार है। मामले का सार यह है कि यदि ज़ैद तलाक स्वीकार कर लेता है, तो यह तलाक है, अन्यथा, किसी भी स्थिति में, काज़ी की नज़र में।

पृष्ठ 276 ऑफ़ 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

(فارسی کالم): ست تنزیل کردہ آید، وخود چہ گونہ گوارائے عقل سلیم باشد کہ زید بکرات ومرات در جواب ہندہ وبخطاب مردمماں ایں کلام گوید وپیچ گاہ ارادہ پیچ معنی بدل ندارد بلکہ ہمچناں بے قصد معنے در رنگ ہذیاں بر زبان آرد پیچ احتمالی بعید تر ازیں احتمال می شناسی باز ہنگام استفسار سپید و آشکار اقرار می کند کہ واقعی ہمخوابہ خود را برابر مادر خواہر نہادہ ام و نمی گوید کہ بفضولی سخنی بمعنی بے نیت وقصدے بر دادہ ام، لا جرم قضاءً ازاں پنج صور ہمیں سہ صورت پیشین را مساغ ست پس اگر زید اعتراف بہ نیت یکے از انہا کند حکمش پیداست ورنہ انکارش قضاءً نا مسموع وحمل بر یکے از انہا لازم فاما طلاق کہ اعلیٰ وابعد ست و پیچ دلیلی براں نے از میاں رود، و ظہار یا مجرد تحریم کہ حاصل ہر دو یکبست باقی ماند، و اگر نیکو بنگری ملاحظہ حال عوام ہمیں معنی تحریم را متعین میکند اگر تفتیش ہمانا بینی کہ جزیں معنی این کلام را در ذہن ایشاں کمتر محلی بودہ باشد۔

(اردو کالم): ادنی احتمال قرار دے کر عزت و کرامت کے معنی پر محمول کیا ____ اور یوں کہا اگر کوئی نیت نہ کی تو لغو ہو کر ادنی معنی متعین قرار پائیگا، یعنی عزت و کرامت مراد ہوگا، جب یہاں عزت و کرامت والا معنی نہیں بن سکتا جیسا کہ آپ سن چکے تو باقی پہلے تین احتمالات میں ادنی معنی مراد ہوگا، جو کہ ظہار یا تحریم ہے، زید چونکہ کئی مرتبہ ہندہ کے جواب میں اور لوگوں سے خطاب میں یہ بات کہہ چکا ہے تو عقلِ سلیم کیسے یہ گوارا کرلے کہ اس نے یہ بات بغیر نیت اور کوئی معنی مراد لئے بغیر بطور ہذیاں زبان سے کہہ دی ہے، تو اس احتمال سے بعید اور کوئی احتمال نہیں ہو سکتا۔ پھر زید نے استفسار کرنے پر واضح طور پر اقرار کیا ہے کہ واقعی میں نے اپنی بیوی کو ماں اور بہن کے برابر قرار دیا ہے اور یہ نہیں کہا کہ میں نے فضول

اور بے معنی بات کی ہے، تو لازم طور پر قضاء پانچ مذکورہ صورتوں میں سے پہلی تین صورتوں کو ہی متعین کیا جائے، لہٰذا اگر زید ان تین میں سے کسی ایک کے ارادہ کرنے کا اعتراف کرے تو وہ حکم اس پر نافذ ہو جائے گا، ورنہ ان سب سے انکار قضاءً قابلِ قبول نہ ہوگا، بلکہ کسی ایک احتمال پر کرنا ضروری ہوگا، ان میں طلاق کا احتمال تو آخری بات ہے اور بعید ہے جس پر کوئی دلیل نہیں ہے تو ظہار یا تحریم جن دونوں کا حاصل ایک ہی ہے باقی رہ جاتے ہیں، اور قاضی اگر بہتر سمجھے تو عوام کے حال کو ملاحظہ کرتے ہوئے تحریم والا معنی متعین قرار دے گا کیونکہ غور کرنے سے معلوم ہو جائے گا عوام اس لفظ سے تحریم سے کم معنی مراد نہیں لیتے اور کم از کم یہی مراد ہوتا ہے۔ (ت)

بالجملہ زید اگر اقرار نیت طلاق کند طلاق بود ورنہ بہر حال در چشم قاضی ظہار حاصل کلام یہ ہے کہ، زید اگر طلاق کا اقرار کر لے تو طلاق ہے ورنہ بہر حال قاضی کی نگاہ میں

Page Header: Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Left Column] ...be, and every other woman in this matter is like a judge because of their commonality with all other creation in limiting their sight to the outward Zihar. And Allah, Glory be to Him, is the Guardian of secrets. Therefore, if Humra heard with her own ears or a just and trustworthy man brought her news that her husband has spoken such words, she is compelled to consider herself a woman under Zihar and must not surrender her body for intercourse. She should not allow Zaid to kiss with lust, embrace, touch, or see her private parts. Looking at the private parts without lust or at any part other than the private parts, like the chest or stomach, even with lust, is not a problem, as was previously mentioned from Radd al-Muhtar. So if Zaid does not pay the expiation and does not spare Humra from the intention of intercourse and its preliminaries, then Humra, however she can, should get herself out of his hands [Note: blank space in original draft], meaning in exchange for her dower (mahr) or in exchange for other property, obtain divorce from his hands. If she sees that he is not giving divorce either, she should flee the house with the legs she has and turn to the ruler so that he may, by force, through imprisonment and beating, hold him to one of two tasks: "Retain her in honor or release her in kindness."[1] Either pay the expiation or give a divorce. And indeed, his Lord has forbidden him to leave her like one suspended. In Radd al-Muhtar, it is said: The woman is like a judge when she hears him or a just person informs her; it is not lawful for her to enable him. And the fatwa is that it is not...

[Right Column] It is Zihar, and anyone, even the wife, will agree with the judge because they will all understand it as Zihar like common people. And Allah Almighty alone is the Master of internal affairs. Then, if Humra heard it with her own ears or a just and trustworthy person informed her that her husband spoke such words, it is mandatory for her to consider herself as having undergone Zihar and protect herself from Zaid from having intercourse, or touching him with lust, or kissing and embracing, or looking at the private parts with lust. However, there is no harm if she touches a limb, for example, the breast or belly, without lust, even if touched with lust, as has been mentioned with reference to Radd al-Muhtar. So, if Zaid does not pay the expiation and during this time does not refrain from intercourse or the preliminaries of intercourse with Humra, then Humra herself should obtain a divorce from his possession in exchange for some property, even if it is in exchange for the dower. And if he does not give a divorce, then she should stay away from his house in whatever way possible and complain to the ruler of the time so that he may forcibly

imprison or punish him to prevent him and compel him to one of two things: if he wants to keep her, he should keep her according to Sharia, or else set her free, meaning by expiation or...

عم (Note): There is a blank in the draft. [1] Al-Quran al-Kareem 2/229

पेज हेडर: फतावा रज़विया, खंड 13, पेज 13

[बायां कॉलम] ...हो, और इस मामले में कोई भी अन्य स्त्री काज़ी (न्यायाधीश) के समान है क्योंकि वे दोनों ज़िहार के बाह्य रूप तक दृष्टि सीमित रखने में अन्य सभी सृष्टि के समान हैं। और अल्लाह, वह पवित्र है, रहस्यों का स्वामी है। अतः यदि हमरा ने स्वयं अपने कानों से सुना या किसी न्यायप्रिय और विश्वसनीय पुरुष ने समाचार पहुँचाया कि उसके पति ने ऐसी बात कही है, तो वह विवश है कि स्वयं को ज़िहार वाली स्त्री समझे और संभोग के लिए शरीर न सौंपे। वह ज़ैद को कामेच्छा के साथ चुंबन लेने, आलिंगन करने, स्पर्श करने या निजी अंगों को देखने न दे। बिना कामेच्छा के निजी अंगों को देखना या निजी अंगों के अलावा किसी अन्य भाग जैसे छाती या पेट को देखना, भले ही कामेच्छा के साथ हो, कोई समस्या नहीं है, जैसा कि पहले रद्द-अल-मुह्तार के संदर्भ में उल्लेख किया गया है। अतः यदि ज़ैद कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं देता है और हमरा को संभोग के इरादे और संभोग की पूर्व-क्रियाओं से मुक्त नहीं करता है, तो हमरा, जैसे भी संभव हो, अपने मेहर के बदले या अन्य संपत्ति के बदले में उसके हाथों से [नोट: मसौदे में खाली स्थान है] तलाक प्राप्त करे। यदि वह देखती है कि वह तलाक भी नहीं दे रहा है, तो उसके पास जो पैर हैं उनसे घर से भाग जाए और शासक की शरण ले ताकि वह बलपूर्वक, कारावास और पिटाई के माध्यम से उसे दो कार्यों में से एक के लिए बाध्य करे: "सम्मान के साथ रोकें या दया के साथ छोड़ दें।"[1] या तो कफ़्फ़ारा दे या तलाक। और वास्तव में, उसके रब ने उसे अधर में छोड़ने से मना किया है। रद्द-अल-मुह्तार में कहा गया है: स्त्री काज़ी के समान है जब वह उसे सुनती है या कोई न्यायप्रिय व्यक्ति उसे सूचित करता है; उसके लिए उसे अनुमति देना हलाल (वैध) नहीं है। और फतवा इस पर है कि यह नहीं है...

[दायां कॉलम] यह ज़िहार है और कोई भी, चाहे वह पत्नी ही क्यों न हो, काज़ी की सहमति व्यक्त करेगी क्योंकि वे सभी आम लोगों की तरह इसे ज़िहार ही समझेंगे। और अल्लाह तआला ही आंतरिक मामलों का मालिक है। फिर, यदि हमरा ने अपने कानों से सुना या किसी न्यायप्रिय और विश्वसनीय व्यक्ति ने उसे सूचित किया कि उसके पति ने ऐसी बात कही है, तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह स्वयं को ज़िहार की हुई समझे और स्वयं को ज़ैद से संभोग, या कामेच्छा के साथ उसे छूने, चुंबन और आलिंगन करने, और कामुक दृष्टि से निजी अंगों को देखने से सुरक्षित रखे। हालाँकि, यदि वह कामेच्छा के बिना किसी अंग, जैसे कि स्तन या पेट को छूती है, भले ही कामेच्छा के साथ छुआ गया हो, तो इसमें कोई बुराई नहीं है जैसा कि रद्द-अल-मुह्तार के संदर्भ में बताया गया है। अत; यदि ज़ैद कफ़्फ़ारा नहीं देता है और इस दौरान हमरा के साथ संभोग या संभोग की पूर्व-क्रियाओं से बाज़ नहीं

आता है, तो हमरा को स्वयं किसी संपत्ति के बदले में, चाहे वह मेहर के बदले में ही क्यों न हो, उसके कब्ज़े से तलाक प्राप्त करना चाहिए। और यदि वह तलाक नहीं देता है, तो जिस तरह भी संभव हो उसके घर से अलग रहे और समय के शासक से शिकायत करे ताकि वह उसे रोकने के लिए बलपूर्वक कैद या सज़ा दे और दो कामों में से एक पर उसे मजबूर करे: यदि रखना है तो शरीयत के अनुसार रखे, वरना उसे आज़ाद कर दे, यानी कफ़्फ़ारे या...

ﻉ (नोट): मसौदे में खाली स्थान है। [1] अल-कुरान अल-करीम 229/2

688 में से पृष्ठ 277

[بایاں کالم] باشد و دیگر ہیچ زن دریں کار بمشابہ قاضی است لاشتراکھما کسائر الخلق فی قصر النظر علی الظہار واللہ سبحنہ یتولی السرائر پس حمرا اگر بگوشِ خود شنید یا مرد عادل و ثقہ او را خبر رسانید کہ شوہرش ایں چنیں چانہ زدہ است ناچار خویشتن را زن مظاہر داند و تن بجماع در ندہد و زید را بشہوت بوسہ چیدن و در بر کشیدن و دست رسانیدن و شرمگاہ دیدن نگزارد نظر بر فرج بے شہوت یا بہر غیر فرج اگرچہ سینہ و شکم اگرچہ بشہوت باکے نیست کما مر عن رد المحتار پس اگر زید کفارہ ندہد و حمرا را از قصد جماع و دواعی جماع معاف نہ دارد و حمرا ہر چوں کہ تواند خویشتن را از دست عہ او یعنی بعوضِ مہر خواہ بدلِ مال دیگر طلاق از دستا ند اگر بیند کہ طلاق ہم نمی دہد بپائے کہ دارد از خانہ گریزد و بحاکم رجوع آرد تا او را بالجبر بحبس و ضرب بر یکے از دو کار دارد فَأَمْسِاکٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِیحٌ بِإِحْسَانٍ ۱ کفارہ دہد یا طلاق وقد حرم علیہ ربہ ان یذرھا کالمعلقۃ، در رد المحتار فرمود المرأۃ کالقاضی اذا سمعتہ او خبرھا عدل لایحل لھا تمکینہ والفتویٰ علی انہ لیس

[دایاں کالم] ظہار ہے اور کوئی بھی خواہ بیوی ہو وہ قاضی کی موافقت کرے گا کیونکہ وہ سب عام لوگوں کی طرح ظہار ہی سمجھیں گے، اور اللہ تعالیٰ ہی باطنی امور کا مالک ہے، پھر اگر حمرا نے اپنے کانوں سے سنا یا کسی عادل اور ثقہ آدمی نے اس کو اطلاع دی کہ اس کے خاوند نے یوں بات کی ہے تو اس پر لازم ہے کہ وہ اپنے آپ کو ظہار کی ہوئی سمجھے اور اپنے آپ کو زید سے جماع اور شہوت کے ساتھ اس کو ہاتھ لگانے، بوس و کنار کرنے اور شرمگاہ کو بنظر شہوت دیکھنے سے محفوظ رکھے، لیکن بغیر شہوت شرمگاہ یا کسی عضو کو مثلاً چھاتی، پیٹ اگرچہ شہوت سے چھوئے تو کوئی حرج نہیں جیسا کہ ردالمحتار کے حوالہ سے بیان گزرا ہے، پس اگر

زید کفارہ نہ دے اور اس دوران حمرا سے جماع یا دواعی جماع کے متعلق باز نہ آئے تو پھر خود حمرا کو چاہئے کہ اپنے آپ کو اس کے قبضہ سے کسی مال کے عوض خواہ مہر کے بدلے طلاق حاصل کرے اور اگر طلاق نہ دے تو پھر جس طرح ممکن ہو اس کے گھر سے جدا رہے اور حاکمِ وقت سے شکایت کرے تاکہ وہ جبراً اس کو باز رکھنے کے لئے قید کرے یا سزا دے اور دو کاموں میں سے ایک پر اس کو مجبور کرے کہ رکھنا ہو تو شریعت کے مطابق رکھے ورنہ اس کو آزاد کردے، یعنی کفارے یا

عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔ ۱ القرآن الکریم ۲۲۹/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 13

[Right Column] ...compel him to divorce, without these two options, that he leaves her in suspense [which] Allah the Almighty has declared forbidden. In Radd al-Muhtar it is stated: When a woman hears it herself or a reliable, upright person informs her, then it is not lawful for the woman to allow her husband the opportunity for sexual intercourse. The fatwa in this matter is that it is not permissible for the woman to kill the man or commit suicide; rather, the woman should free herself in exchange for wealth or move away from his house. In this matter, the woman herself has the status of a judge's ruling. It is narrated from Awzajandi in al-Bazzaziyya that a wife should present her case to the judge. Then, in the absence of witnesses for the woman, if the husband takes an oath, the sin is upon the husband. I say, this is when the woman cannot save herself by paying a ransom or fleeing, nor can she prevent herself from her husband. Therefore, the statement in al-Bazzaziyya will not be contradictory to the previous discourse. In brief, in al-Durr al-Mukhtar it is stated: A woman has the right to demand sexual intercourse because her right is linked to it, and it is obligatory upon the woman to prevent the husband from intercourse without [paying] kaffara (expiation). It is obligatory upon the judge to compel the man to pay the kaffara and fulfill the woman's rights so that the harm to the woman can be eliminated. This is by the judge imprisoning him or punishing him to compel him towards divorce or kaffara. Yes, if Zaid takes an oath that I [did not intend] zihar...

[Left Column] ...for her [is the right] to kill him, but she should not kill herself; rather, she should ransom herself with wealth or flee. In al-Bazzaziyya, from al-Awzajandi: She should take the matter to the judge. If he swears [an oath] and she has no proof, then there is no sin upon him. I say: That is, when she is unable to pay ransom or flee, and is unable to prevent him from her. So it does not contradict what preceded it. Briefly, in al-Durr al-Mukhtar: A woman has the right to demand intercourse because her right is attached to it, and she must prevent him from enjoyment until he expiates. The judge must compel him to expiate to remove the harm from her, by imprisonment or beating until he expiates or divorces. Yes, if Zaid informs that 'I have paid the expiations' and he was not previously known for lying and falsehood, then the woman can believe his word and come together with him and not refuse intercourse etc. If in reality Zaid said those words with the intention of zihar and has not yet given the kaffara, then he has made a false declaration, so the sin is on his neck, while the woman is free from blame on one side. In al-Durr al-Mukhtar: "If he says, 'I have expiated', he is believed as long as he is not known for lying."

[Footnotes] 1 Radd al-Muhtar, Bab al-Sarih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 43/2 2 Durr-e-Mukhtar, Bab al-Zihar, Matba Mujtabai, Delhi, 249/1 3 Durr-e-Mukhtar, Bab al-Zihar, Matba Mujtabai, Delhi, 249/1

फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 13

[दायाँ कॉलम] ...तलाक़ पर मजबूर करे, इन दो सूरतों के बिना कि उसको लटकाए रखे, जिसे अल्लाह तआला ने हराम करार दिया है। रद-उल-मुहतार में है: जब औरत खुद सुन ले या कोई विश्वसनीय नेक व्यक्ति उसे सूचित कर दे, तो फिर औरत के लिए हलाल नहीं कि वह पति को संभोग का मौका दे। और इस मामले में फ़तवा यह है कि औरत के लिए मर्द की हत्या करना या खुदकुशी करना जायज़ नहीं है, बल्कि औरत माल के बदले खुद को आज़ाद कराए या उसके घर से दूर हो जाए। इस मामले में औरत खुद फ़ैसला करने में क़ाज़ी का हुक्म रखती है। और बज़ाज़िया में औज़जन्दी से वर्णित है कि पत्नी अपना मामला क़ाज़ी के सामने पेश करे। फिर औरत के पास गवाह न होने की स्थिति में, यदि पति शपथ ले ले, तो पाप पति पर है। मैं कहता हूँ, यह तब है जब औरत खुद को फ़िद्या (फिरौती) देकर या भागकर न बचा सके, और न ही खुद को पति से रोक सके। अतः बज़ाज़िया का बयान पिछले कलाम के विपरीत नहीं होगा। संक्षेप में, दुर्रे मुख्तार में है: औरत को संभोग की मांग का अधिकार है क्योंकि उसका अधिकार इससे जुड़ा है, और औरत पर अनिवार्य है कि वह कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) के बिना पति को संभोग से रोके। और क़ाज़ी पर अनिवार्य है कि वह पुरुष को कफ़्फ़ारा देकर औरत के अधिकारों की अदायगी पर मजबूर करे ताकि औरत का नुकसान खत्म हो सके। वह इस तरह कि क़ाज़ी उसे जेल में डाले या सज़ा देकर तलाक़ या कफ़्फ़ारे पर मजबूर कर सकता है। हाँ, अगर ज़ैद शपथ लेता है कि मैंने ज़िहार का...

[बायाँ कॉलम] ...उसके लिए उसे मारना जायज़ है, लेकिन वह खुद को न मारे; बल्कि धन के बदले खुद को छुड़ाए या भाग जाए। और बज़ाज़िया में औज़जन्दी से है: वह मामला क़ाज़ी के पास ले जाए। यदि वह शपथ ले और उसके पास कोई प्रमाण न हो, तो उस पर कोई पाप नहीं है। मैं कहता हूँ: यानी, जब वह फ़िद्या या भागने में सक्षम न हो, और न ही उसे खुद से रोकने में सक्षम हो। तो यह पिछले बयान के विपरीत नहीं है। संक्षेप में, अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: स्त्री को संभोग की मांग करने का अधिकार है क्योंकि उसका अधिकार उससे जुड़ा है, और उसे उसे आनंद लेने से रोकना चाहिए जब तक कि वह प्रायश्चित न कर ले। क़ाज़ी को उसे प्रायश्चित करने के लिए मजबूर करना चाहिए ताकि उससे नुकसान दूर हो सके, कैद या पिटाई के माध्यम से जब तक कि वह प्रायश्चित न करे या तलाक न दे दे। हाँ, अगर ज़ैद यह सूचना दे कि 'मैंने कफ़्फ़ारा अदा कर दिया है' और वह पहले झूठ बोलने के लिए प्रसिद्ध नहीं था, तो महिला उसकी बात पर विश्वास कर सकती है और उसके साथ मिल सकती है और संभोग आदि से इनकार नहीं करेगी। यदि वास्तव में ज़ैद ने वे शब्द ज़िहार की

नीयत से कहे थे और अभी तक कफ़्फ़ारा नहीं दिया है, तो उसने झूठी घोषणा की है, अतः पाप उसकी गर्दन पर है, जबकि महिला एक तरफ से दोषमुक्त है। अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: "यदि वह कहे, 'मैंने प्रायश्चित कर लिया है', तो उस पर विश्वास किया जाता है जब तक कि उसे झूठ के लिए न जाना जाए।"

[पादलेख] 1 रद-उल-मुहतार, बाब अल-सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 43/2 2 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-जिहार, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 249/1 3 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-जिहार, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 249/1

पृष्ठ 278/688

[دایاں کالم] طلاق پر مجبور کرے ان دو صورتوں کے بغیر کہ اس کو معلق چھوڑ دے اللہ تعالیٰ نے حرام قرار دیا ہے۔ ردالمحتار میں ہے: جب عورت خود سن لے یا ثقہ عادل شخص اس کو مطلع کر دے تو پھر عورت کو حلال نہیں کہ وہ خاوند کو جماع کا موقعہ دے اور اس معاملہ میں فتویٰ اس پر ہے کہ عورت کو مرد کا قتل کرنا یا خود کشی کرنا جائز نہیں، بلکہ عورت مال کے بدلے اپنے آپ کو آزاد کرائے یا اس کے گھر سے دور ہو جائے، اس معاملہ میں عورت خود فیصلہ کرنے میں قاضی کا حکم رکھتی ہے، اور بزازیہ میں اوزجندی سے منقول ہے کہ بیوی اپنے معاملہ کو قاضی کے ہاں پیش کرے، پھر عورت کے گواہ نہ ہونے کی صورت میں اگر خاوند قسم دے دے تو پھر گناہ خاوند پر ہے اھ، میں کہتا ہوں یہ جب ہے کہ عورت خود کو فدیہ دے کر یا بھاگ کر نہ بچا سکے اور نہ ہی اپنے آپ کو خاوند سے روک سکے، لہذا بزازیہ کا بیان پہلے کلام کے منافی نہ ہوگا اھ اختصاراً، درمختار میں ہے: عورت کو وطی کے مطالبہ کا حق ہے کیونکہ عورت کا حق وطی کے ساتھ متعلق ہے اور اس کے ساتھ عورت پر لازم ہے کہ وہ کفارہ کے بغیر خاوند کو جماع سے باز رکھے، اور قاضی پر لازم ہے کہ مرد کو کفارہ دے کر عورت کے حقوق کی ادائیگی پر مجبور کرے تاکہ عورت کا ضرر ختم ہوسکے، وہ یوں کہ قاضی اس کو قید کرے یا سزا دے کر طلاق یا کفارہ پر مجبور کرسکتا ہے، ہاں اگر زید قسم اٹھاتا ہے کہ میں نے ظہار کا

[بایاں کالم] لها قتله ولاتقتل نفسها بل تفدی نفسها بمال او تهرب ، وفي البزازية عن الاوزجندی انها ترفع الامر للقاضی فان حلف ولا بينة لها فلا اثم عليه اه قلت ای اذالم تقدر علی الفداء او الهرب ولا علی منعه عنها فلا ينا في ماقبله اه باختصار ، در در مختار ست للمرأة ان تطالبه بالوطی لتعلق حقها به ، وعليها ان تمنعه من الاستمتاع حتی يكفر، وعلی القاضی الزامه به بالتكفير دفعا للضرر عنها

بحبس او ضرب الی ان یکفر او یطلق ـ آری اگر زید خبر دہد کہ من کفارہ ہا ادا کردم و پیشتر ازیں معروف بکذب و دروغ گوئی نبودہ باشد آنگاہ حمرارا می رسد کہ سخنش باور کردہ با او بہم آید واز جماع وغیرہ ابا ننماید اگر در واقع زید بہ نیت ظہار آں سخن گفتہ و ہنوز کفارہ نہ دادہ بغلظ اظہار نمودہ است تا گناہ بر گردن اوست حمر از جرم یکسومت فی الدر المختار فان قال کفرت صدق مالم یعرف بالکذب ـ

[حواشی] 1 ردالمحتار باب الصریح دار احیاء التراث العربي بیروت ٤٣/٢ 2 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ٢٤٩/١ 3 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ٢٤٩/١

Fatawa-e-Razvia Volume 13

[Page Header Left]: Volume 13, 13

[Top Section - Urdu]: ...gave the kaffara (penance). While if Zaid was not previously known and famous for lying and untruthfulness, then in this case it is permissible for Hamra to accept Zaid's statement and allow opportunities for intercourse etc., and not refuse. And if in reality Zaid had spoken those words with the intention of zihar and has not yet paid the kaffara, and is misrepresenting that "I have paid the kaffara", then the sin will be on Zaid, and Hamra will be free from this sin. It is in Durr-e-Mukhtar: If the husband says "I have paid the kaffara", his word will be accepted provided he was not known for lying before this. (T)

[Middle Section - Left Column (Persian)]: I, the humble one (faqir), say that just as this is the worst tactic for someone who has actually committed zihar and gives false information without paying kaffara, it is similarly a very bad situation for someone who is not known for lying and whose spoken words came without intent of divorce, zihar, or prohibition, yet due to the circumstances—as is the case here—the legal claim of his intent is not accepted. If he does not pay kaffara, the woman must not surrender herself for intercourse, and if she agrees, she becomes a sinner. And if this person pays kaffara, wealth is lost without reason or he faces the hardship of a two-month fast, because religiously, due to the absence of cause, kaffara was not mandatory for him. Therefore, he should turn to the Lord (Subhanahu wa Ta'ala) and repent from the atrocity of that reprehensible speech. This repentance will become his kaffara. Then he should tell the woman, "I have paid the kaffara." She will consider it the known kaffara of zihar and it will be permissible for her to allow intercourse with consent. This is the sufficient clarification of the ruling. And Allah Ta'ala knows best.

[Middle Section - Right Column (Urdu)]: I, the humble one (faqir), say that it is a very bad tactic that in reality a person commits zihar and gives false news without paying kaffara. Even worse is the person who is not known for lying and says that I spoke those words without intent of zihar, divorce, or prohibition, but based on the current situation—as in this questioned case—the judge (qazi) will not accept his claim. If kaffara is not paid, it is necessary for the woman to keep herself away from her husband's intercourse; if she agrees to it, she will be a sinner. And if in reality that person is truthful, then giving money in this kaffara or bearing the hardship of two months of fasting is purposeless because religiously (diyanatan) paying kaffara is not

obligatory for him. So he should turn to Allah Ta'ala and repent for this absurd talk and seek forgiveness; this repentance is the kaffara for his sin. After that, he should tell his wife, "I have paid the kaffara," and if the wife, considering it kaffara of zihar, agrees to intercourse, it will be permissible. This is the clarification of this issue which is sufficient. And Allah Ta'ala knows best. (T)

[Bottom Section]: Issue 42: What do the pious religious scholars and dignified masters say regarding this issue: A person, in a state of anger, called his wife "mother" or "sister" but continued to provide her food and maintenance. Did the woman remain in his marriage or did it end according to the noble Shariah law?

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द तेरहवीं

[पेज हेडर लेफ्ट]: जिल्द तेरहवीं, १३

[शीर्ष खंड - उर्दू]: ...कफ़्फ़ारा दे दिया है जबकि ज़ैद इससे पहले झूठ बोलने और असत्यता के लिए प्रसिद्ध और विख्यात नहीं है, तो इस स्थिति में हमरा के लिए जायज़ है कि वह ज़ैद की बात को स्वीकार करे और संभोग आदि का अवसर दे, और इनकार न करे। और अगर वास्तव में ज़ैद ने ज़हार की नियत (इरादे) से वह बात कही थी और अभी तक कफ़्फ़ारा अदा नहीं किया है, और गलत बयानी कर रहा है कि "मैंने कफ़्फ़ारा अदा कर दिया है", तो फिर गुनाह ज़ैद पर होगा, हमरा इस गुनाह से बरी होगी। 'दुर्रे मुख्तार' में है: अगर पति कहे कि मैंने कफ़्फ़ारा दे दिया है तो उसकी बात स्वीकार की जाएगी, बशर्ते कि वह इससे पहले झूठ बोलने में प्रसिद्ध न हो। (त)

[मध्य खंड - बायां कॉलम (फारसी)]: मैं फ़कीर कहता हूँ कि जिस तरह यह उस व्यक्ति के लिए सबसे बुरी चाल है जिसने वास्तव में ज़हार किया है और कफ़्फ़ारा दिए बिना गलत सूचना देता है, उसी तरह यह उस व्यक्ति के लिए बहुत बुरी स्थिति है जो झूठ बोलने के लिए प्रसिद्ध नहीं है और जिसके मुंह से निकले शब्द तलाक, ज़हार या निषेध की नियत के बिना निकले थे, फिर भी परिस्थितियों के आधार पर - जैसा कि यहाँ मामला है - उसके इरादे का कानूनी दावा स्वीकार नहीं किया जाता है। यदि वह कफ़्फ़ारा नहीं देता है, तो स्त्री को संभोग के लिए खुद को समर्पित नहीं करना चाहिए, और यदि वह सहमत होती है, तो वह पापी हो जाती है। और यदि यह व्यक्ति कफ़्फ़ारा देता है, तो बिना कारण धन नष्ट होता है या वह दो महीने के कठिन उपवास का सामना करता है, क्योंकि धार्मिक रूप से (दियानतन), कारण के अभाव में, कफ़्फ़ारा उस पर अनिवार्य नहीं था। इसलिए, उसे प्रभु (सुब्हानहु व तआला) की ओर मुड़ना चाहिए और उस निंदनीय भाषण की घोरता से तौबा (प्रायश्चित) करनी चाहिए। यह तौबा उसका कफ़्फ़ारा बन जाएगी। फिर उसे स्त्री से कहना चाहिए, "मैंने कफ़्फ़ारा दे दिया है।" वह इसे ज़हार का ज्ञात कफ़्फ़ारा समझेगी और उसके लिए सहमति से संभोग की अनुमति देना जायज़ होगा। यह हुक्म का पर्याप्त स्पष्टीकरण है। और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

[मध्य खंड - दायां कॉलम (उर्दू)]: मैं फ़कीर कहता हूँ कि यह बहुत बुरी चाल है कि वास्तव में कोई व्यक्ति ज़हार करके कफ़्फ़ारा न दे और गलत खबर दे। उससे भी बुरा वह व्यक्ति है जो झूठ बोलने के लिए प्रसिद्ध न हो और कहे कि मैंने ज़हार, तलाक और निषेध की नियत के बिना वह बात कही है,

लेकिन वर्तमान स्थिति के आधार पर - जैसा कि इस मसले में है - काज़ी (न्यायाधीश) उसके इस दावे को स्वीकार नहीं करेगा। और अगर कफ़्फ़ारा न दिया हो तो औरत को लाज़िम है कि वह खुद को पति के संभोग से दूर रखे, और अगर वह इस पर राज़ी हुई तो गुनहगार होगी। और अगर वास्तव में वह व्यक्ति सच्चा है तो इस कफ़्फ़ारे में माल देना या दो महीने के रोज़ों की मशक्कत बर्दाश्त करना बेमक़सद है क्योंकि दियानतन उस पर कफ़्फ़ारा देना वाजिब नहीं है, तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह तआला की तरफ रुजू करते हुए इस लग़्व (व्यर्थ) बात पर तौबा करे और बख्शिश तलब करे; यह तौबा उसके गुनाह का कफ़्फ़ारा है। इसके बाद बीवी को कहे कि मैंने कफ़्फ़ारा दे दिया है और बीवी उसको कफ़्फ़ारा-ए-ज़हार समझते हुए संभोग पर राज़ी हो जाए तो जायज़ होगा, यह इस मसले की तनकीह (स्पष्टीकरण) है जो काफी है। वल्लाह तआला आलम (त)

[नीचे का हिस्सा]: मसला 42: धर्म के विद्वान और सम्मानित बुजुर्ग इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: एक व्यक्ति ने गुस्से की हालत में अपनी पत्नी को माँ या बहन कह दिया लेकिन उसका भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) करता रहा। क्या औरत उसके निकाह में रही या शरीयत के हुक्म के मुताबिक़ बाहर हो गई?

पेज 279 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم [صفحہ کا ہیڈر دائیں]: فتاوٰی رضویہ [صفحہ کا ہیڈر بائیں]: جلد سیزدہم ۱۳

[اوپر کا اردو کالم]: کفارہ دے دیا ہے جبکہ زید قبل ازیں دروغ گوئی اور جھوٹ بولنے میں معروف و مشہور نہیں ہے تو اس صورت میں حمرا کو جائز ہے کہ وہ زید کی بات کو تسلیم کر کے جماع وغیرہ کا موقعہ دے دے اور انکار نہ کرے اور اگر فی الواقع زید نے ظہار کی نیت سے وہ کلام کیا تھا اور ابھی تک کفارہ ادا نہ کیا ہو اور غلط بیانی کرتا ہو کہ میں نے کفارہ ادا کر دیا ہے تو پھر گناہ زید پر ہوگا حمرا اس گناہ سے بری ہوگی۔ در مختار میں ہے: اگر خاوند کہے کہ میں نے کفارہ دے دیا ہے تو اس کی بات تسلیم کی جائے گی بشرطیکہ وہ اس سے قبل جھوٹ بولنے میں معروف نہ ہو۔ (ت)

[بایاں فارسی کالم]: فقیر گوئم آں چناں کہ ایں بد ترین تد بیرے است مر کسے را کہ در واقع ظہار کردہ و کفارہ ندادہ غلط اخبار ہمچنان نیکو بد تری ست مر کسے را کہ معروف بکذب نیست و سخن مذکور بے نیت طلاق وظہار و تحریم بر زبانش آمد وبوجہ دلالت حالے چنانچہ ایں جاست ، قضاء دعوی ارادہ بر مقبول نیفتاد کہ اگر کفارہ نہ دہد زن بجماع تن نہ دہد واگر راضی شود آثمہ گردد و اگر ایں کس کفارہ دہد مالے بے سبب از دست مے رود یا مشقت روزہ دو ماہ بر سر آید زیرا کہ دیانۃ بوجہ عدم موجب کفارہ برو لازم نبودہ است پس باید کہ بسوئے مولٰی سبحانہ وتعالٰی از شناعت آں قول منکر توبہ آرد ایں توبہ کفارہ اش خواہد شد باز زن را گوید من کفارہ ادا کردم او کفارہ معلومہ ظہار پندارد و برضا بجماع دادن براورا روا گردد وایں ست تنقیح حکم بوجہ کافی واللہ تعالٰی اعلم ۔

[دایاں اردو کالم]: میں فقیر کہتا ہوں کہ یہ بہت بری تدبیر ہے کہ فی الواقع کوئی شخص ظہار کر کے کفارہ نہ دے کر غلط خبر دے اس سے زیادہ برا وہ شخص ہے جو معروف بکذب نہ ہو اور کہے کہ میں نے ظہار، طلاق اور تحریم کی نیت کے بغیر وہ کلام کی ہے دلالت حال کی بنا پر جس طرح کہ اس مسئولہ صورت میں ہے تو قاضی اس کے اس دعوی کو قبول نہ کرے گا اور اگر کفارہ نہ دیا ہو تو عورت کو لازم ہے کہ وہ اپنے آپ کو خاوند کے جماع سے دور رکھے، اور اگر وہ اس پر راضی ہوئی تو گنہگار ہوگی، اور اگر فی الواقع وہ شخص سچا ہے تو اس کفارہ میں مال دینا یا دو ماہ کے روزوں کی مشقت برداشت کرنا بے مقصد ہے کیونکہ دیانۃً اس پر کفارہ دینا واجب نہیں ہے، تو اسے چاہئے کہ وہ اللہ تعالٰی کی طرف رجوع کرتے ہوئے اس لغو بات پر توبہ کرے اور بخشش طلب کرے یہ توبہ اس کے گناہ کا کفارہ ہے تو اس کے بعد بیوی کو کہے کہ میں نے کفارہ دے دیا ہے اور بیوی اس کو کفارہ ظہار سمجھتے ہوئے جماع پر راضی ہو جائے تو جائز ہوگا، یہ اس مسئلہ کی تنقیح ہے جو کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[نیچے کا حصہ]: مسئلہ ۴۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دیندار ومشارئخ باوقار اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی زوجہ کو بحالت غصہ میں ماں بہن کہہ دیا مگر نان نفقہ دیتا رہا عورت اس کے نکاح میں رہی یا بحکم شرع شریف جاتی رہی؟

The Answer: Calling a wife "mother" or "sister" (whether one calls her "mother" or "sister" addressing her, or says "you are my mother/sister") is a severe sin and impermissible.

Allah Almighty says: "They are not their mothers. Their mothers are only those who gave birth to them. And indeed, they are saying an objectionable statement and a falsehood."[1]

However, this does not affect the validity of the marriage, nor is anything obligatory except repentance. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"If no intention was made or the [particle of comparison] 'kaf' was omitted, it is considered futile/void, and the lowest possibility, meaning honor and dignity, is determined. It is disliked to say 'You are my mother,' 'O my daughter,' 'O my sister,' and the like."[2]

Explanation: If no intention was made or the particle of comparison (the 'kaf') was not mentioned, then this intention is void, and among the possibilities, the lowest possibility, meaning honor and respect, will be determined. And saying "You are my mother" or "my daughter" or "my sister" or similar words is disliked (Makruh). (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

"Regarding his statement 'omitting the kaf', such as saying 'you are my mother', not as some thought it is like 'Zaid is a lion' where the particle of comparison is considered omitted for eloquent comparison (Tashbih Baligh), as narrated in Durr al-Muntaqa from Al-Quhistani. I say: the evidence for its absence without the particle of comparison is what we will soon cite from Al-Fath—that for Zihar, mentioning the particle of comparison is necessary."[3]

Explanation: His statement "omitting the kaf of comparison" for example by saying "you are my mother" is not as some thought, like "Zaid is a lion" where the particle of comparison is assumed to be omitted, making it an eloquent comparison, as quoted in Durr al-Muntaqa from Quhistani. I (the author) say that the proof for it being without the particle of comparison is what we will soon quote from Al-Fath—that for 'Zihar' (pre-Islamic divorce formula), mentioning the particle of comparison is necessary. (T)

In the same [source] it is mentioned:

"'You are my mother' without [the particle of] comparison is void, even if intended."[4]

Explanation: Saying "You are my mother" without the particle of comparison is void, even if intended as a divorce. (T)

[1] Al-Quran al-Karim 58:2 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter of Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/249 [3] Radd al-Muhtar, Chapter of Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/577 [4] Radd al-Muhtar, Chapter of Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/574

फतावा रज़विया, खंड 13 | पृष्ठ 280/688

अल-जवाब (उत्तर): पत्नी को माँ या बहन कहना (चाहे उसे माँ-बहन कहकर पुकारे, या यों कहे कि "तू मेरी माँ/बहन है") एक गंभीर पाप और नाजायज़ है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "वे उनकी माएँ नहीं हैं। उनकी माएँ तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया है। और बेशक वे एक बुरी और झूठी बात कहते हैं।"[1]

लेकिन इससे निकाह में कोई समस्या नहीं आती, और तौबा (प्रायश्चित) के अलावा कुछ और अनिवार्य नहीं है। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

"अगर कोई नियत (इरादा) नहीं की गई या तुलनात्मक अक्षर 'काफ' को छोड़ दिया गया, तो यह व्यर्थ है और सबसे कम संभावना यानी सम्मान और गरिमा निर्धारित होगी। यह कहना मकरूह (नापसंद) है कि 'तू मेरी माँ है', 'ऐ मेरी बेटी', 'ऐ मेरी बहन' आदि।"[2]

स्पष्टीकरण: अगर कोई नियत नहीं की या तुलनात्मक अक्षर 'काफ' का उल्लेख नहीं किया, तो यह नियत बेकार है और संभावनाओं में से सबसे कम संभावना यानी सम्मान और प्रतिष्ठा निर्धारित होगी। और यह कहना कि "तू मेरी माँ है" या "मेरी बेटी है" या "मेरी बहन है" या इसी तरह के शब्द, मकरूह (अप्रिय) हैं। (त)

'रद्द अल-मुह्तार' में है:

"उनके कथन 'काफ को छोड़ना' के संबंध में, जैसे कि यह कहना 'तू मेरी माँ है', न कि जैसा कुछ लोगों ने सोचा कि यह 'ज़ैद शेर है' की तरह है जहाँ तुलनात्मक अक्षर को अलंकारिक तुलना (तश्बीह बलीग) के लिए लुप्त माना जाता है, जैसा कि 'दुर्र अल-मुंतका' में कुहिस्तानी से उद्धृत है। मैं कहता हूँ: बिना तुलनात्मक अक्षर के होने का प्रमाण वह है जिसे हम जल्द ही 'अल-फ़तह' से उद्धृत करेंगे कि 'ज़िहार' के लिए तुलनात्मक अक्षर का उल्लेख करना आवश्यक है।"[3]

स्पष्टीकरण: उनके कथन "तुलना के काफ को छोड़ना" उदाहरण के लिए "तू मेरी माँ है" कहना वैसा नहीं है जैसा कुछ लोगों ने सोचा कि "ज़ैद शेर है" की तरह तुलनात्मक अक्षर को छिपा हुआ माना जाए और यह एक अलंकारिक तुलना (तश्बीह बलीग) हो, जैसा कि 'दुर्र-ए-मुंतका' में कुहिस्तानी से उद्धृत है। मैं कहता हूँ कि तुलनात्मक अक्षर के बिना होने का प्रमाण वह है जिसे हम जल्द ही 'फ़तह' से उद्धृत करेंगे कि 'ज़िहार' के लिए तुलनात्मक अक्षर का ज़िक्र ज़रूरी है। (त)

उसी में है:

"बिना तुलना के'तू मेरी माँ है' कहना अमान्य है, भले ही इरादा (नियत) किया गया हो।"[4]

स्पष्टीकरण: तुलनात्मक अक्षर के बिना "तू मेरी माँ है" कहना, भले ही तलाक की नियत से कहा गया हो, बातिल (अमान्य) है। (त)

[1] अल-कुरान अल-करीम 58/2 [2] दुर्र-ए-मुख्तार, ज़िहार का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/249 [3] रद्द अल-मुह्तार, ज़िहार का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/577 [4] रद्द अल-मुह्तार, ज़िहार का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/574

الجواب زوجہ کو ماں، بہن کہنا (خواہ یوں کہے اسے ماں بہن کہہ کر پکارے، یا یوں کہے تو میری ماں، بہن ہے، سخت گناہ و ناجائز ہے۔

قَالَ اللہُ تَعَالٰی مَا ھُنَّ اُمَّھٰتِھِمْ اِنْ اُمَّھٰتُھُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔیْ وَلَدْنَھُمْ ط ۱ وَ اِنَّھُمْ لَیَقُوْلُوْنَ مُنْکَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ط ۱

ترجمہ: جو روئیں ان کی مائیں نہیں ان کی مائیں تو وہی ہیں جنہوں نے انہیں جنا ہے اور وہ بیشک بری اور جھوٹی بات کہتے ہیں۔

مگر اس سے نکاح میں خلل آئے نہ توبہ کے سوا کچھ اور لازم ہو، در مختار میں ہے:

الا ینو شیئاً او حذف الکاف لغاً وتعین الادنی ای البر یعنی الکرامۃ ویکرہ قولہ انت امی ویا بنتی ویا اختی ونحوہ ۔۲ اگر کوئی نیت نہ کی یا حرف تشبیہ (کاف) کو ذکر نہ کیا ہو تو یہ نیت لغو ہے اور احتمالات میں سے ادنی احتمال یعنی عزت و کرامت متعین ہوگا اور یہ کہنا کہ تو میری ماں ہے یا میری بیٹی ہے یا میری بہن ہے یا اس کی مثل الفاظ، مکروہ ہیں۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

قولہ حذف الکاف بأن قال انت امی ومن بعض الظن جعلہ من باب زید اسد در منتقی عن القھستانی قلت ویدل علیہ ماذکرہ عن الفتح من انہ لابد من التصریح بالاداۃ ۔۳ قولہ "کاف تشبیہ کو حذف کرنا" مثلاً یوں کہتا ہے تو میری ماں ہے نہ کہ جیسے بعض نے گمان کیا کہ "زید اسد" کی طرح حرف تشبیہ کو محذوف مانا جائے، اور تشبیہ بلیغ ہے جیسا کہ در منتقٰی میں قہستانی سے منقول ہے قلت میں کہتا ہوں کہ حرف تشبیہ کے بغیر ہونے پر دلیل وہ ہے جو ہم عنقریب فتح سے نقل کریں گے کہ ظہار کے لئے حرف تشبیہ کا ذکر ضروری ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

انت امی بلا تشبیه فإنه باطل وان نوی ٤ حرف تشبیہ کے بغیر "تو میری ماں ہے" کہنا اگرچہ طلاق کی نیت سے کہا باطل ہے۔ (ت)

١ القرآن الکریم ٢/٥٨ ٢ درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ١/٢٤٩ ٣ ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ٣/٥٧٧ ٤ ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ٢/٥٧٤

Yes, if it was said that "you are like or as or in place of my mother or sister," then if it was said with the intention of divorce, one 'Talaq-e-Ba'in' (irrevocable divorce) has occurred and the woman is out of the marriage contract. And if it was said with the intention of 'Zihar' or prohibition—meaning the intention is that "she is forbidden to me like my mother or sister"—then 'Zihar' has occurred. Now, until the expiation (kaffara) is paid, it is forbidden to have intercourse with the woman, or to kiss her with desire, or to touch any part of her body with a look of desire, or to look at her private parts with a gaze of desire. Its expiation is to free a slave before intercourse; if one does not have the capacity for that, then fast for two consecutive months; if one does not have the strength for that either, then give grain or food to sixty poor people like 'Sadaqa al-Fitr', as the Lord, Glorified and Exalted is He, commanded in the Great Quran. (As Allah, Glorified and Exalted is He, commanded in the Great Quran. - T). And if there was no such intention among these, then this word will also be futile and meaningless, from which no divorce or expiation etc. will be mandatory. It is in Durr al-Mukhtar:

Arabic	Urdu Translation
If he intends [it], she is separated from me like my mother, and similarly if 'upon me' (alayya) is omitted, [from] Khaniyyah. [Whether he intends] honor, or Zihar, or divorce, his intention is valid and what he intended occurs because it is an allusion (kinayah), otherwise it is void.[1]	If he intends (divorce), the wife will be 'Ba'inah' (separated). When he says thus, "you are to me like my mother or as my mother," or says it by omitting the word 'alayya' (on me) - Khaniyyah. If with these words he intends honoring the wife, or Zihar, or divorce, then his intention will be correct; whatever intention he makes, that will be the ruling because this is an allusion (kinayah), and if no intention was made, then this talk will be futile. (T)

In Hindiyyah, it is from Khaniyyah:

Arabic	Urdu Translation
If he intends prohibition, narrations differ regarding it, and the correct view is that it is Zihar according to all.[2] And Allah, Glorified and Exalted, knows best.	If he only intended prohibition by this, then there are different narrations about it. The correct view is that according to all, it will be Zihar. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 23: From Calcutta, Imam Bagh Lane, No. 41 Mosque, sent by Hafiz Aziz-ur-Rahman Sahab, 29 Jumadi al-Akhirah 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if a person is not aware of the meanings and implications of divorce, and instead of an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in), he says to his wife, "You are my mother," and makes her known as a divorced person among people and considers her forbidden for himself, then has this person's wife become divorced or not? Explain and be rewarded.

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/249. [2] Fatawa Hindiyyah, Chapter Nine on Zihar, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/50.

हाँ, अगर ऐसा कहा गया हो कि "तू मेरी माँ या बहन की तरह या उसके समान या उसके स्थान पर है," तो यदि तलाक की नियत से कहा गया तो एक 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) हो गया और औरत निकाह से निकल गई। और अगर 'ज़िहार' या हराम करने की नियत से कहा गया—अर्थात इसका अर्थ यह है कि "वह माँ या बहन की तरह मुझ पर हराम है"—तो 'ज़िहार' हो गया। अब जब तक कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) न दे दे, तब तक औरत से संभोग करना, या कामवासना के साथ उसे चूमना, या वासना भरी दृष्टि से उसके शरीर के किसी भी हिस्से को छूना, या वासना भरी निगाह से उसके गुप्तांगों को देखना, सब हराम हो गया। और इसका कफ़्फ़ारा यह है कि संभोग से पहले एक गुलाम आज़ाद करे; यदि इसकी शक्ति न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े रखे; यदि इसकी भी शक्ति न हो तो साठ गरीबों को 'सदक़ा-ए-फ़ित्र' की तरह अनाज या भोजन दे, जैसा कि महान कुरान में अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने आदेश दिया है। (जैसा कि अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने महान कुरान में आदेश दिया है। - त)। और अगर इनमें से कोई नियत न थी, तो यह शब्द भी व्यर्थ और निरर्थक होगा, जिससे तलाक या कफ़्फ़ारा आदि कुछ भी अनिवार्य नहीं होगा। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
यदि वह नियत करता है, तो वह मेरी माँ की तरह मुझसे अलग है, और इसी तरह अगर 'मुझ पर' (अलैया) हटा दिया जाए, [खनिया से]। [चाहे वह] सम्मान, या ज़िहार, या तलाक की नियत करे, उसकी नियत सही है और जो उसने नियत की वह घटित होता है क्योंकि यह एक संकेत (किनाया) है, अन्यथा यह अमान्य है।[1]	अगर वह (तलाक की) नियत करेगा तो पत्नी 'बाइनह' (अलग) हो जाएगी। जब वह इस तरह कहेगा "तू मुझ पर मेरी माँ की तरह या माँ के समान है," या 'अलैया' (मुझ पर) शब्द हटाकर कहे—खनिया। इन शब्दों से पत्नी का सम्मान, या ज़िहार, या तलाक की नियत करे तो उसकी नियत सही होगी; जो भी नियत करेगा वही हुक्म होगा क्योंकि यह संकेत (किनाया) है, और अगर कोई नियत नहीं की गई हो तो यह बात व्यर्थ होगी। (त)

हिन्दिया में खनिया से है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
यदि वह हराम करने की नियत करता है, तो इसके बारे में रिवायतें अलग-अलग हैं, और सही यह है	अगर इससे सिर्फ हराम करने की नियत की तो इसमें अलग-अलग रिवायतें हैं। सही यह है कि

अरबी	उर्दू अनुवाद
कि सभी के अनुसार यह ज़िहार होगा।[2] और अल्लाह तआला सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।	सभी के नज़दीक यह ज़िहार होगा। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 23: कलकत्ता, इमाम बाग लेन, नंबर 41 मस्जिद, हाफ़िज़ अज़ीज़ुर रहमान साहब द्वारा भेजा गया, 29 जमादी-उल-आख़िर 1312 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: यदि कोई व्यक्ति तलाक के अर्थ और अभिप्राय से अवगत न हो और वह 'तलाक़-ए-बाइन' के बदले अपनी पत्नी से कहे कि "तू मेरी माँ है," और उसे लोगों में तलाकशुदा के रूप में मशहूर कर दे और उसे अपने ऊपर हराम समझे, तो क्या इस व्यक्ति की पत्नी तलाकशुदा हो गई या नहीं? बयान करें और पुण्य कमाएं।

[1] दुर्रे मुख़्तार, ज़िहार का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/249। [2] फ़तावा हिन्दिया, ज़िहार के बारे में नौवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/50।

पृष्ठ 281/688

ہاں اگر یوں کہا ہو کہ تو مثل یا مانند یا بجائے ماں بہن کے ہے تو اگر بہ نیت طلاق کہا تو ایک طلاق بائن ہوگئی اور عورت نکاح سے نکل گئی اور بہ نیت ظہار یا تحریم کہا یعنی یہ مراد ہے کہ مثل ماں بہن کے مجھ پر حرام ہے تو ظہار ہوگیا اب جب تک کفارہ نہ دے لے عورت سے جماع کرنا یا شہوت کے ساتھ اس کا بوسہ لینا یا بنظر شہوت اس کے کسی بدن کو چھونا یا بنگاہ شہوت اس کی شرمگاہ دیکھنا سب حرام ہوگیا، اور اس کا کفارہ یہ ہے کہ جماع سے پہلے ایک غلام آزاد کرے، اسکی طاقت نہ ہو تو لگاتار دو مہینہ کے روزے رکھے، اس کی بھی قوت نہ ہو تو ساٹھ مسکینوں کو صدقہ فطر کی طرح اناج یا کھانا دے کما امر بہ المولٰی سبحانہ وتعالٰی فی القرآن العظیم (جیسا کہ اللہ سبحانہ وتعالٰی نے قرآن عظیم میں حکم فرمایا ہے۔ ت) اور اگر ان میں سے کوئی نیت نہ تھی تو یہ لفظ بھی لغو و مہمل ہوگا جس سے طلاق یا کفارہ وغیرہ کچھ لازم نہ آئے گا۔ در مختار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
ان نوی بانت علیّ مثل امی وکانی و کذا لو حذف "علیّ" خانیۃ۔ برا او ظہارا او طلاقاً صحت نیتہ ووقع مانواہ لانہ کنایۃ والالغاء 1	اگر (طلاق کی) نیت کرے گا تو بیوی بائنہ ہو جائیگی، جب یوں کہے تو مجھ پر میری ماں کی مثل یا ماں کی طرح ہے، یا حرف علیّ (مجھ پر) کو حذف کر کے کہے، خانیہ۔ ان الفاظ سے کرامت زوجہ یا ظہار یا طلاق کی نیت کرے تو اس کی نیت صحیح ہوگی جو بھی نیت کرے وہی حکم ہوگا کیونکہ یہ کنایہ ہے اور اگر کوئی نیت نہ کی ہو تو یہ بات لغو ہوگی۔ (ت)

ہندیہ میں خانیہ سے ہے:

عربی	اردو ترجمہ
ان نوی التحریم اختلف الروایات فیہ والصحیح انہ یکون ظہارا عند الکل 2، واللہ تعالیٰ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔	اگر اس سے صرف تحریم کی نیت کی تو اس میں روایات مختلف ہیں، صحیح یہ ہے کہ سب کے نزدیک ظہار ہوگا۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۳: از کلکتہ امام باغ لین نمبر ۴۱ مسجد مرسلہ حافظ عزیز الرحمٰن صاحب ۲۹ جمادی الآخرہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کوئی شخص طلاق کے معنی و مطالب سے آگاہ نہ ہو اور وہ بالعوض طلاق بائن کے اپنی زوجہ سے یوں کہے کہ تو ماں ہے میری، اور اس کو مطلقہ لوگوں میں مشہور کرے اور اپنے اوپر حرام سمجھے تو آیا اس شخص کی زوجہ مطلقہ ہوگی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

1 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴۹ 2 فتاویٰ ہندیہ الباب التاسع فی الظہار نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۰

Fatawa Razviya, Volume 13, Page 13

The Answer: Saying to a woman, "You are that person's mother, sister, or daughter," does not result in divorce, even if intended for divorce. It is stated in Radd al-Muhtar:

Arabic	Urdu
Anta ummi bila tashbih fa-innahu batil wa-in nawa - 1	If he says "You are my mother" without comparison, then it is void even if said with the intention of divorce. (T)

Making this famous among people and considering her forbidden for himself based on these words was also merely void before Allah as it was based on a misunderstanding. Similarly, if it was clear from his statement that this admission of divorce was based on those specific words, then even among people, divorce did not occur. However, if this matter is not clear from his statement and the circumstances, then by making her known as a divorcee, divorce will be legally accepted upon him among people; he will be held accountable for his admission. It is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

Arabic	Urdu
A man divorced his wife while suffering from pleurisy (sarsam). Upon recovery, he admitted to the divorce, saying, "I thought that divorce occurs due to this illness." Our Shaykhs (may Allah have mercy on them) said: "If, at the time of admitting the divorce, he attributed it to the state of pleurisy and said, 'I divorced my wife while in the state of pleurisy,' then the divorce is not effective. But if at that time he did not attribute the divorce to the state of pleurisy, then legally (by court decree), the divorce will be effective." 2	A person divorced his wife in a state of pleurisy (sarsam). When he became healthy, he admitted to the divorce and said, "I had the thought that divorce happens because of this illness." So our Shaykhs stated that if at the time of admitting the divorce, he attributed the divorce to the illness of pleurisy and said, "I gave divorce to my woman in the state of sarsam," then divorce will not happen. And if at that time he did not attribute the divorce to the illness of sarsam, then legally, divorce will happen. (T)

It is also in the same book: | Arabic | Urdu | | :--- | :--- | | A minor child said, "If I drink, then every woman I marry is divorced." | A minor child said, "If I drink [something prohibited], then whoever woman I marry, she is divorced." |

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Al-Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/574

2. Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore, Lucknow, 2/213

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पेज 13

जवाब: औरत को यह कहने से कि "तू उस व्यक्ति की माँ, बहन या बेटी है", तलाक नहीं होता, चाहे तलाक की नीयत से ही क्यों न कहा जाए। रद्दुल मुहतार में है:

अरबी	उर्दू
अंत उम्मी बिला तशबीह फ़इन्नहु बातिल व-इन नवा - 1	यदि बिना उपमा के कहा "तू मेरी माँ है" तो यह बातिल है, चाहे तलाक की नीयत से ही कहा जाए। (त)

लोगों में इसे मशहूर करना और इन शब्दों के आधार पर खुद पर हराम समझना भी अल्लाह के नज़दीक केवल बातिल था क्योंकि यह गलतफहमी पर आधारित था। इसी तरह यदि उसके बयान से स्पष्ट था कि तलाक का यह इकरार इन्हीं शब्दों के आधार पर है, तो लोगों के बीच भी तलाक नहीं हुआ। हाँ, यदि बयान और परिस्थितियों से यह बात स्पष्ट न हो, तो उसे मुतलका (तलाकशुदा) के रूप में मशहूर करने से लोगों के बीच उस पर तलाक मान ली जाएगी और उसे उसके इकरार पर पकड़ा जाएगा। फतावा इमाम क़ाज़ी ख़ाँ में है:

अरबी	उर्दू
एक व्यक्ति ने सरसाम (pleurisy) की बीमारी की हालत में अपनी पत्नी को तलाक दिया। स्वस्थ होने पर उसने तलाक का इकरार करते हुए कहा कि मेरा विचार था कि इस बीमारी की वजह से तलाक हो जाती है। हमारे मशायख (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फरमाया: "तलाक के इकरार के समय अगर उसने तलाक को सरसाम की बीमारी की ओर जोड़ा और कहा कि मैंने अपनी औरत को सरसाम की हालत में तलाक दी है, तो तलाक प्रभावी नहीं होगी। लेकिन अगर उस समय उसने तलाक को बीमारी की स्थिति से नहीं जोड़ा, तो कानूनी तौर पर तलाक हो जाएगी।" 2	किसी ने सरसाम की बीमारी की हालत में अपनी पत्नी को तलाक दिया। जब वह स्वस्थ हुआ तो उसने तलाक का इकरार करते हुए कहा कि मेरा गुमान था कि इस बीमारी की वजह से तलाक हो जाती है, तो हमारे मशायख ने फरमाया कि इकरार-ए-तलाक के समय अगर उसने तलाक को सरसाम की बीमारी की ओर मंसूब किया और कहा मैंने अपनी औरत को सरसाम की हालत में तलाक दी है तो तलाक न होगी और अगर उस वक्त उसने तलाक को सरसाम की बीमारी की ओर मंसूब न किया, तो कज़ाअन तलाक हो जाएगी। (त)

इसी में है: | अरबी | उर्दू | | :--- | :--- | | एक नाबालिग बच्चे ने कहा, "अगर मैं पियूँ, तो जिस भी औरत से मैं निकाह करूँउसे तलाक है।" | एक नाबालिग बच्चे ने कहा, "अगर मैं पियूँ [कोई वर्जित चीज़], तो जिस औरत से भी मैं निकाह करूँउसे तलाक है।" |

1. रद्दुल मुहतार, बाब अल-ज़िहार, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/574
2. फतावा काज़ी खान, किताब अल-तलाक, नवल किशोर, लखनऊ, 2/213

पेज 282/688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

الجواب: عورت کو یوں کہنے سے کہ تو اس شخص کی ماں بہن یا بیٹی ہے طلاق نہیں ہوتی اگرچہ بہ نیت طلاق کہے، ردالمحتار میں ہے :

عربی	اردو
انت امی بلا تشبیہ فانہ باطل وان نوی-1	اگر تشبیہ کے بغیر "تو میری ماں ہے" کہا تو یہ باطل ہے اگرچہ طلاق کی نیت سے کہے (ت)

لوگوں میں اسے مشہور کرنا اور اپنے اوپر حرام سمجھنا اگر انہیں لفظوں کی بناء پر تھا تو عنداللہ یہ بھی محض باطل کہ بربنائے غلط فہمی تھا، اسی طرح اگر اس کے بیان سے ظاہر تھا کہ یہ اقرار طلاق انہیں الفاظ کی بناء پر ہے تو عندالناس بھی طلاق نہ ہوئی، ہاں اگر بیان و قرائن سے یہ امر ظاہر نہ ہو تو مطلقہ مشہور کرنے سے عندالناس اس پر طلاق مانی جائے گی اپنے اقرار پر ماخوذ ہوگا۔ فتاوی امام قاضی خاں میں ہے:

عربی	اردو
رجل طلق امرأته وهو صاحب برسام فلما صح قال قد طلقت امرأتی ، ثم قال انی کنت اظن ان الطلاق فی تلك الحالة کان واقعا، قال مشائخنا رحمهم الله تعالی حین ما اقر بالطلاق ان رده الی حالة البرسام وقال قد طلقت امرأتی فی حالة	کسی نے مرضِ برسام کی حالت میں بیوی کو طلاق دی جب تندرست ہوا تو اس نے طلاق کا اقرار کرتے ہوئے کہا کہ میرا گمان تھا کہ اس مرض کی وجہ سے طلاق ہو جاتی ہے، تو ہمارے مشائخ نے فرمایا کہ اقرار طلاق کے وقت اگر اس نے طلاق کو مرضِ برسام کی طرف منسوب کیا اور کہا میں نے اپنی عورت کو برسام کی حالت میں

عربی	اردو
البرسام فالطلاق غير واقع وان لم يرد الى حالة البرسام فهو مأخوذ بذلك قضاءً -2	طلاق دی ہے تو طلاق نہ ہوگی اور اگر اس وقت اس نے طلاق کو مرضِ برسام کی طرف منسوب نہ کیا، تو قضاءً طلاق ہوجائے گی۔ (ت)

اسی میں ہے: | عربی | اردو | | :--- | :--- | | صبی قال ان شربت فکل امرأة اتزوجها فهی طالق | ایک نابالغ بچے نے کہا اگر میں نوش کروں تو جس عورت سے بھی میں نکاح کروں اس کو طلاق ہے |

1. رد المحتار باب الظهار دار احياء التراث العربی بيروت ۵۷۴/۲
2. فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۲۱۳/۲

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Arabic Text Block]: He consumed (intoxicants) while a child, then married as an adult, and his father-in-law thought that divorce had occurred. This adult then said, "Yes, she is forbidden to me." They (the jurists) said: This is an admission of prohibition from him, so his wife becomes forbidden to him. And this is the correct view, because he did not admit to the prohibition initially, but rather he admitted to the cause upon which they both agreed, and that cause is void [Footnote 1]. It is concluded. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation of Arabic]: After this, he consumed (intoxicants) in childhood, then married upon becoming an adult. His in-laws presumed that based on this statement, divorce had occurred. Upon this, the adult boy said, "Yes, the wife is forbidden to me." So the jurists stated that since the boy admitted to the prohibition, his wife became forbidden to him from the start. However, some stated that she will not become forbidden, and this is correct because he did not admit to the prohibition initially; rather, he said this based on the statement of the in-laws. The reason given by the in-laws pertains to a childhood event, which is void because the divorce of a minor does not take place. It is concluded. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 44: From Pilibhit, Mohalla Ashraf Khan, sent by Azizur Rahman Khan, 16 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. Question: What do the scholars of religion and the muftis of the clear Sharia say about this matter: Zaid said to his wife's mother, "Your daughter is yours for life, I consider her like my sister." What is the Sharia ruling in this? Clarify and be rewarded.

The Answer: If his intention by these words was Zihar (likening the wife to a forbidden relative) or prohibition—meaning, "I perform Zihar from my wife for your lifetime" or "I consider her forbidden for your lifetime"—then Zihar has occurred. This means the marriage remains intact as before, but it becomes forbidden to go to the woman or even to touch her with desire until the death of the mother-in-law without paying expiation (Kaffara). Expiation is freeing a slave; if one is unable, then fasting for two consecutive months; if one lacks the strength for that, then giving grain like Sadaqat al-Fitr to sixty poor people, or its value, or feeding them full meals twice a day. As long as the mother-in-law is alive, if he touches the woman without paying expiation, he will be a sinner. He must repent and not approach her until he pays the expiation. Yes, after the death of the mother-in-law, the Zihar will end, and intercourse with the woman will become lawful without expiation. Then, if the

mother-in-law is alive and this person does not pay expiation whereby the woman would become lawful, the wedded wife can claim against him that he should either pay expiation and have intercourse or divorce her so that the harm to the woman is removed.

[Footnote 1]: Fatawa Qadhi Khan, Bab al-Ta'liq, Nawal Kishore, Lucknow, 3/235.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी पाठ ब्लॉक]: उसने बचपन में (नशीला पदार्थ) पिया, फिर वयस्क होने पर विवाह किया, और उसके ससुर ने सोचा कि तलाक हो गया। इस वयस्क ने तब कहा, "हाँ, वह मुझ पर हराम है।" उन्होंने (न्यायविदों ने) कहा: यह उसकी ओर से हराम होने की स्वीकारोक्ति है, इसलिए उसकी पत्नी उस पर हराम हो जाती है। और यही सही है, क्योंकि उसने शुरुआत में हराम होने को स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसने उस कारण को स्वीकार किया जिस पर वे दोनों सहमत थे, और वह कारण शून्य है [फुटनोट 1]। समाप्त, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[अरबी का उर्दू अनुवाद]: इसके बाद उसने नाबालिग़ी में नशीला पदार्थ पी लिया, फिर वयस्क होने पर निकाह किया और उसके ससुराल वालों ने गुमान किया कि इस कहने पर तलाक हो गई। इस पर उस वयस्क लड़के ने कहा, 'हाँ बीवी मुझ पर हराम है।' तो फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने फ़रमाया चूंकि लड़के ने हराम होने का इक़रार (स्वीकार) किया है इसलिए उसकी बीवी उस पर इब्तिदा (शुरुआत) से हराम हो गई। और कुछ ने फ़रमाया कि हराम न होगी, और यही सही है क्योंकि उसने इब्तिदा में हराम होने का इक़रार नहीं किया बल्कि ससुराल वालों की बात पर उसने ये कहा है। और ससुराल वालों के कहने का सबब बचपन की बात है जो कि बातिल (शून्य) है क्योंकि नाबालिग़ की तलाक़ नहीं होती। समाप्त, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 44: पीलीभीत, मोहल्ला अशरफ़ ख़ान से, अजीजुर रहमान ख़ान द्वारा भेजा गया, 16 ज़िल-क़ादा 1312 हिजरी। सवाल: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी पत्नी की माँ से यह बात कही कि "तेरी लड़की ता-हयात (जीवन भर) तेरी, अपनी बहन की तरह समझता हूँ," तो इसमें शरीयत का क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

अल-जवाब (उत्तर): यदि इन शब्दों से उसका इरादा 'ज़िहार' (पत्नी को निषिद्ध रिश्तेदार के समान कहना) या हराम करना था, यानी "तुम्हारी ज़िंदगी तक अपनी बीवी से ज़िहार करता हूँ" या "तुम्हारी ज़िंदगी तक उसे हराम समझता हूँ", तो ज़िहार हो गया। यानी निकाह पहले की तरह बाक़ी है, लेकिन सास की ज़िंदगी तक बिना कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दिए औरत के पास जाना, बल्कि कामुकता के साथ छूना भी हराम हो गया। कफ़्फ़ारा एक ग़ुलाम आज़ाद करना है; यदि उसकी क्षमता न हो तो लगातार दो महीने के रोज़े रखना; यदि उसकी भी ताक़त न हो तो साठ ग़रीबों को सदक़ा-ए-फ़ित्र के समान अनाज या उसका मूल्य देना, या दो समय पेट भर खाना खिलाना। जब तक सास ज़िंदा है, बिना

कफ़्फ़ारा दिए औरत को हाथ लगाएगा तो गुनहगार होगा। तौबा करे और तब तक नज़दीक न जाए जब तक कफ़्फ़ारा अदा न कर ले। हाँ, सास के इंतक़ाल (मृत्यु) के बाद ज़िहार खत्म हो जाएगा और बिना कफ़्फ़ारा के औरत से सहवास हलाल हो जाएगा। फिर अगर सास ज़िंदा है और यह व्यक्ति कफ़्फ़ारा नहीं देता जिसके कारण औरत हलाल हो जाए, तो विवाहिता उस पर दावा कर सकती है कि या तो कफ़्फ़ारा देकर सहवास करे या तलाक़ दे ताकि औरत पर से नुकसान दूर हो।

[फुटनोट 1]: फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, बाब अल-तअलीक़, नवल किशोर, लखनऊ, 3/235।

فشرب وھو صبي، فتزوج وھو بالغ وظن صھرہ ان الطلاق واقع، فقال ھذا البالغ آرے حرام است بر من قالوا ھذا اقرار منه بالحرمة فتحرم امراته وھو الصحیح لانه ما اقر با لحرمة ابتداء وانما اقر بالسبب الذی تصادقا علیه وذلك السبب باطل 1 ، انتھی، واللہ تعالی اعلم۔

اس کے بعد اس نے نابالغی میں نوش کرلیا پھر اس نے بالغ ہونے پر نکاح کیا اور اس کے سسرال نے گمان کیا کہ اس کہنے پر طلاق ہوگئی، اس پر اس لڑکے بالغ نے کہا ہاں بیوی مجھ پر حرام ہے، تو فقہاء نے فرمایا چونکہ لڑکے نے حرام ہونے کا اقرار کیا ہے لہذا اس کی بیوی اس پر ابتداء حرام ہوگئی، اور بعض نے فرمایا کہ حرام نہ ہوگی، اور یہی صحیح ہے کیونکہ اس نے ابتداء حرام ہونے کا اقرار نہیں کیا بلکہ سسرال کی بات پر اس نے یہ کہا ہے، اور سسرال والوں کے کہنے کا سبب بچپن کی بات ہے جو کہ باطل ہے کیونکہ نابالغ کی طلاق نہیں ہوتی انتہی، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴۴: از پیلی بھیت محلہ اشرف خاں مرسلہ عزیز الرحمان خاں ۱۶ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ کی ماں سے یہ بات کہی کہ تیری لڑکی تاحیات تیری، مثل اپنی بہن کے سمجھتا ہوں، تو اس میں کیا حکم شرع ہے؟ بینوا توجروا الجواب: اگر ان لفظوں سے اس کی مراد ظہار یا تحریم تھی یعنی تیری حیات تک اپنی زوجہ سے ظہار کرتا ہوں یا تیری حیات تک اسے حرام سمجھتا ہوں، جب تو ظہار ہوگیا یعنی نکاح بدستور باقی ہے، مگر حیات خوشدامن تک بے کفارہ دئے عورت کے پاس جانا بلکہ شہوت کے ساتھ ہاتھ لگانا بھی حرام ہوگیا، کفارہ ایک غلام آزاد کرنا، ار اس کی قدرت نہ تو دو مہینے کے لگاتار روزے، اس کی طاقت بھی نہ ہو تو ساٹھ مسکینوں کو صدقہ فطر کے مثل اناج یا اس کی

قیمت دینا یا دونوں وقت پیٹ بھر کھانا کھلانا، جب تک ساس زندہ ہے بغیر کفارہ دئے عورت کو ہاتھ لگائے گا تو گنہگار ہوگا، توبہ کرے، اور پھر نزدیک نہ ہو جب تک کفارہ نہ ادا کرلے، ہاں بعد انتقال خوشدامن ظہار جاتا رہے گا، اور بے کفارہ عورت سے جماع حلال ہوجائے گا، پھر اگر ساس زندہ ہے اور یہ شخص کفارہ نہیں دیتا جس کے سبب عورت حلال ہوجائے تو منکوحہ اس پر دعوی کرسکتی ہے کہ یا تو کفارہ دے کر جماع کرے یا طلاق دے کہ عورت پر سے ضرر دفع ہو

1 فتاوی قاضی خان باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۲۳۵/۳ Page 283 of 688

Fatawa Razawiya Volume 13

[Left Column - Arabic Text] In Tanwir al-Absar: Sexual intercourse and its preliminaries are forbidden for him until he pays the expiation (kaffarah). If he has intercourse before expiating, he must seek forgiveness and pay the expiation for Zihar only, and must not repeat it before expiating. [Footnote 1] etc. And in it regarding expiation: freeing a slave; if he does not find one, then fasting for two consecutive months before touching (intercourse); if he is unable, then feeding sixty poor people like Sadaqah al-Fitr or its value. If he feeds them breakfast and dinner, it is permissible. [Footnote 2] Summary. In al-Durr: If he limited it to a time, it falls away after the passage of that time. [Footnote 3] Thus in Radd al-Muhtar regarding 'Kaffarah of Bahr'. [Footnote 4] In al-Durr: The woman has the right to demand intercourse, and the judge must compel him to pay the expiation to prevent harm from her, by imprisonment or beating until he expiates or divorces. [Footnote 5] Summary.

[Right Column - Urdu Translation] In Tanwir al-Absar it is stated: Sexual intercourse and its preliminaries become forbidden for the one performing Zihar until he pays the expiation. If he has intercourse before expiating, he should repent and give only the expiation for Zihar, and should not do so again before expiating. And in the same, it says: The expiation for Zihar is to free a slave; if this is not possible, then he must complete two months of continuous fasting before intercourse. If he is even unable to do this, then he should feed sixty poor people, giving each the amount of Sadaqah al-Fitr or its value. If he feeds them two full meals a day, morning and evening, it is permissible. In Durr-e-Mukhtar it is stated: If Zihar is restricted to a fixed time, it will end once that time passes. In Radd al-Muhtar, it says: If he wishes to have intercourse within that fixed time, it is not permissible without paying the expiation. In Bahr and Durr-e-Mukhtar, it says: The wife has the right to demand intercourse in Zihar; therefore, the judge should compel the husband to pay the expiation so that the wife's harm can be removed, such that the judge may imprison or punish him until the husband pays the expiation or divorces the woman. (Summary)

[Bottom Section - Urdu Text] From these words, the intention of prohibition and Zihar is apparent, especially when he limited it to a certain time, saying "I consider you as such as long as you live." Its ruling was that, and perhaps he uttered these words with the intention of divorce, then Zihar became an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) and the woman left the marriage. Giving divorce limited by a certain extent is also a permanent divorce, and that limit is considered invalid. (Note A)

Note A: There is a blank space in the draft. 12

Footnotes: 1. Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Bab al-Zihar, Matba' Mujtabai Delhi, 1/249 2. Durr-e-Mukhtar Bab al-Kaffarah, Matba' Mujtabai Delhi, 1/250-51 3. Durr-e-Mukhtar Bab al-Zihar, Matba' Mujtabai Delhi, 1/249 4. Radd al-Muhtar Bab al-Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/567 5. Durr-e-Mukhtar Bab al-Zihar, Matba' Mujtabai Delhi, 1/249

फ़तावा रज़विया खंड 13

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] तन्वीर अल-अबसार में: उस पर पत्नी के साथ संभोग और उसके पूर्व लक्षण तब तक हराम हैं जब तक वह कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) न दे दे। यदि उसने कफ़्फ़ारा से पहले संभोग कर लिया, तो वह तौबा करे और केवल ज़ेहार का कफ़्फ़ारा दे, और कफ़्फ़ारा से पहले ऐसा दोबारा न करे। [पाद-टिप्पणी 1] इत्यादि। और उसी में कफ़्फ़ारा के बारे में है: एक गुलाम को आज़ाद करना; यदि वह न मिले, तो संभोग से पहले लगातार दो महीने के रोज़े रखे; यदि वह असमर्थ हो, तो साठ ग़रीबों को सदक़ा-ए-फ़ित्र के बराबर भोजन या उसका मूल्य दे। यदि वह उन्हें सुबह और शाम का भोजन करा दे, तो यह जायज़ है। [पाद-टिप्पणी 2] सारांश। अल-दुर में: यदि उसने इसे किसी समय के लिए सीमित किया, तो वह समय बीतने पर समाप्त हो जाता है। [पाद-टिप्पणी 3] इसी तरह 'कफ़्फ़ारा-ए-बहर' के बारे में रद्द अल-मुह्तार में है। [पाद-टिप्पणी 4] अल-दुर में: महिला को संभोग की मांग करने का अधिकार है, और न्यायाधीश को उसे कफ़्फ़ारा देने के लिए मजबूर करना चाहिए ताकि उस पर से नुकसान दूर हो सके, कैद या सजा के माध्यम से जब तक वह कफ़्फ़ारा न दे दे या तलाक न दे दे। [पाद-टिप्पणी 5] सारांश।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] तन्वीर अल-अबसार में लिखा है: ज़ेहार करने वाले पर पत्नी के साथ संभोग और उसके पूर्व लक्षण तब तक हराम हो जाते हैं जब तक वह कफ़्फ़ारा न दे दे। यदि उसने कफ़्फ़ारा देने से पहले संभोग कर लिया, तो उसे तौबा करनी चाहिए और केवल ज़ेहार का कफ़्फ़ारा देना चाहिए, और कफ़्फ़ारा से पहले ऐसा फिर कभी न करे। और उसी में है: ज़ेहार में कफ़्फ़ारा एक गुलाम को आज़ाद करना है; यदि यह संभव न हो, तो संभोग से पहले लगातार दो महीने के रोज़े रखे। यदि वह यह भी करने में असमर्थ हो, तो उसे साठ ग़रीबों को खाना खिलाना चाहिए, प्रत्येक को सदक़ा-ए-फ़ित्र की मात्रा के बराबर या उसका मूल्य देना चाहिए। यदि वह उन्हें सुबह और शाम दो समय का भरपेट खाना खिला दे, तो यह जायज़ है। दुर्रे मुख्तार में कहा गया है: यदि ज़ेहार को एक निश्चित समय के लिए सीमित किया गया है, तो वह समय बीतने के बाद समाप्त हो जाएगा। रद्द अल-मुह्तार में लिखा है: यदि वह उस निश्चित समय के भीतर संभोग करना चाहता है, तो कफ़्फ़ारा दिए बिना यह जायज़ नहीं है। बहर और दुर्रे मुख्तार में लिखा है: ज़ेहार में पत्नी को संभोग की मांग करने का अधिकार है; इसलिए, न्यायाधीश को पति को कफ़्फ़ारा देने के लिए मजबूर करना चाहिए ताकि पत्नी के नुकसान को दूर किया जा सके, जैसे कि न्यायाधीश उसे तब तक कैद कर सकता है या सजा दे सकता है जब तक कि पति कफ़्फ़ारा न दे दे या महिला को तलाक न दे दे। (सारांश)

[निचला हिस्सा - उर्दू पाठ] इन शब्दों से हराम करने और ज़ेहार की नियत स्पष्ट है, विशेषकर जब उसने इसे एक निश्चित समय तक सीमित कर दिया, यह कहते हुए कि "जब तक तू जीवित है मैं तुझे ऐसा ही समझता हूँ।" इसका हुक्म वही था, और शायद उसने ये शब्द तलाक के इरादे से कहे थे, तो ज़ेहार एक स्थायी तलाक (तलाक़-ए-बाइन) बन गया और महिला निकाह से बाहर हो गई। किसी सीमा तक सीमित करके तलाक देना भी स्थायी तलाक है, और उस सीमा को अमान्य माना जाता है। (नोट A)

नोट A: मसौदे में खाली स्थान है। 12

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-ज़ेहार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/249 2. दुर्रे मुख्तार बाब अल-कफ़्फ़ारा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/250-51 3. दुर्रे मुख्तार बाब अल-ज़ेहार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/249 4. रद्द अल-मुह्तार बाब अल-ज़ेहार, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/567 5. दुर्रे मुख्तार बाब अल-ज़ेहार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/249

पृष्ठ 284/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

[بایاں کالم - عربی عبارت] في تنوير الابصار فيحرم وطؤها عليه ودواعيه حتى يكفر فان وطی قبله استغفر وكفر للظهار فقط ولا يعود قبلها ۱ الخ وفيه الكفارة تحرير رقبة فان لم يجد صام شهرين متتابعين قبل المسيس، فان عجز اطعم ستين مسكينا كالفطرة او قيمة ذلك وان غداهم وعشاهم جاز ۲ اھ ملخصا، وفی الدر لو قيده بوقت سقط بمضيه ۳ اھ في ردالمحتار كفارة بحر ۴ اھ وفي الدر للمرأة ان تطالبه بالوطی وعلی القاضي الزامه به بالتكفير دفعاً للضرر عنها بحبس او ضرب الی ان يكفر او يطلق ۵ اھ ملخصاً۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] تنویر الابصار میں ہے: ظہار کرنے والے پر بیوی سے وطی اور اس کے دوائی حرام ہو جاتے ہیں تا وقتیکہ وہ کفارہ دے، اگر اس نے کفارہ سے قبل وطی کرلی تو توبہ کرکے صرف ظہار کا کفارہ دے اور پھر کفارہ سے قبل ایسا نہ کرے الخ، اور اسی میں ہے ظہار میں کفارہ غلام کو آزاد کرنا ہے، اگر یہ نہ ہوسکے تو پھر وطی سے قبل دو ماہ کے روزے مسلسل پورے کرے، اگر یہ بھی نہ ہوسکے بلکہ عاجز ہو تو پھر ساٹھ مسکینوں کو کھانا دے ہر مسکین کو صدقہ فطر کی مقدار دے یا اسکی قیمت دے، اگر صبح وشام دو وقت کا کھانا پیٹ بھر کر کھلادے تو جائز ہے اھ ملخصاً، اور در مختار میں ہے اگر ظہار کو کسی مقررہ وقت کے ساتھ مقید کیا ہو تو اس وقت کے گزر جانے پر ظہار ختم ہو جائیگا اھ اس پر ردالمحتار میں ہے کہ اگر اس مقررہ وقت کے اندر جماع کرنا چاہے تو کفارہ دئے بغیر جائز نہیں بحر اھ اور در مختار میں ہے کہ ظہار میں بیوی کو جماع کے مطالبے کا حق ہے لہذا قاضی خاوند کو کفارہ ادا کرنے پر مجبور کرے تاکہ بیوی کے ضرر کا ازالہ ہو سکے یوں کہ قاضی اس کو قید کرے یا سزا دے یہاں تک کہ خاوند کفارہ ادا کرے یا عورت کو طلاق دے اھ ملخصاً(ت)

[نیچے والا حصہ - اردو عبارت] ظاہر ان لفظوں سے یہی نیت تحریم و ظہار ہوتی ہے خصوصاً جبکہ ایک وقت تک اسے محدود کردیا کہ تیری حیات تک ایسا سمجھتا ہوں، اس کا حکم وہ تھا اور شاید اس نے یہ الفاظ بارادہ طلاق کہے تھے تو ظہار ایک طلاق بائن ہو کر عورت نکاح سے نکل گئی کسی حد تک محدود کرکے طلاق دینا بھی طلاقِ دائم ہے اور وہ حد نا معتبر عہ

عہ: مسودہ میں بیاض ہے ۱۲

حواشی: 1 درمختار شرح تنویر الابصار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۴۹ 2 درمختار باب الکفارۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۵۱-۲۵۰ 3 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۴۹ 4 ردالمحتار باب الظہار داراحیاء التراث العربی بیروت ۵۶/۲ 5 درمختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۴۹

Header: Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13.

[Table Top Section] Left Column (Arabic): As for "Al-Husban" (counting/supposing), in such speech it is only intended to establish similarity, not its negation from the reality of the matter, like someone who wants to abstain from taking something and says, "I count it for myself as swine." He only means that it is forbidden for him as it is forbidden for others. This is in contrast to when it is said to him, "Did you divorce your wife?" and he says, "Count it" or "Count her as divorced," where it does not occur even if he intended it. Similarly, "Count me as if you are divorced," as in al-Khaniyah, for it is apparent in the negation of divorce in the reality of the matter. The difference between them is not hidden from those who know the custom. So understand and know. And Allah Almighty knows best.

Right Column (Urdu Translation of above): "To understand and to think," if it is in such speech, then the intention is to establish similarity, and its negation from reality is not intended. For instance, when someone refuses to take something, saying, "I consider this as swine for myself," he definitely means that this thing is as haram (forbidden) for him as swine is haram. Contrary to this, in the matter of divorce, when someone is asked, "Did you divorce your wife?" and he replies, "You count it as divorce," or says, "You consider her as a divorcee," then divorce will not occur even if he says it with the intention of divorce. Similarly, the ruling is if he says to his wife, "Consider yourself as a divorcee," as mentioned in al-Khaniyah, because here these words apparently indicate the negation of the occurrence of divorce. The difference between these two places is not hidden from those who know the custom. Understand and reflect. And Allah Almighty knows best. (t)

[Middle Section (Urdu)]: And if there was no intention, or there was an intention of honor and respect or affection and love, meaning "I consider you as dear or beloved as my sister," then these words are vain and futile. The woman remains a wife as before, and no expiation etc. is due. But if the conversation and state of that time bear witness that he did not say these words without intention or with the intention of honor and love, then the judge (Hakim) will not accept this claim; then the woman can accept it.

[Table Bottom Section] Left Column (Arabic): For the woman is like a judge, as in al-Fath and others. And in al-Durr al-Mukhtar: if he intends by "You are to me like my mother" or "as my mother," and likewise if he omits "to me" (Khaniyah), as a metaphor for zihar or divorce, it is valid.

Right Column (Urdu Translation of above): Because a woman has the status of a judge in this matter, as mentioned in al-Fath etc. And in al-Durr al-Mukhtar, it is stated that if he said to his wife, "You are like my mother to me" or "like my mother," and similarly if he said it by omitting the word "Alayya" (upon me), as per al-Khaniyah. From these words, if...

Footnotes: 1. Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore Lucknow, 2/210. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/468.

शीर्षक: फतवा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13.

[तालिका शीर्ष अनुभाग] बायाँ कॉलम (अरबी): जहाँ तक "अल-हस्बान" (गिनने/समझने) का संबंध है, तो ऐसी बातचीत में इसका उद्देश्य समानता स्थापित करना होता है, वास्तविकता में इसके होने को नकारना नहीं। जैसे कि कोई व्यक्ति किसी चीज़ के सेवन से बचने के लिए कहता है 'मैं इसे अपने लिए सुअर जैसा समझता हूँ'; उसका अर्थ केवल यह होता है कि यह उसके लिए उसी प्रकार हराम है जिस प्रकार सुअर हराम है। इसके विपरीत, तलाक के मामले में, यदि किसी से पूछा जाए 'क्या तुमने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया?' और वह उत्तर दे 'इसे ऐसा ही गिन लो' या 'उसे तलाकशुदा समझ लो', तो तलाक नहीं होगा भले ही उसने नियत (इरादे) से कहा हो। इसी प्रकार, "मुझे ऐसा समझो कि तुम तलाकशुदा हो," जैसा कि अल-खानिया में है, क्योंकि यह वास्तविकता में तलाक के निषेध में स्पष्ट है। रीति-रिवाजों को जानने वालों के लिए उनके बीच का अंतर छिपा नहीं है। अतः समझें और जानें। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

दायाँ कॉलम (उपरोक्त का उर्दू अनुवाद): "समझना और ख्याल करना" अगर ऐसे कलाम में हो तो उससे समानता को प्रमाणित करना उद्देश्य होता है और वास्तविकता से उसके निषेध का इरादा नहीं होता। जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी वस्तु को लेने से इंकार करते हुए कहे कि "इसे मैं अपने लिए सुअर समझता हूँ," तो इससे उसका आशय यह होता है कि वह वस्तु उसके लिए निश्चित रूप से उसी तरह वर्जित है जैसे सुअर वर्जित है। इसके विपरीत, तलाक के मामले में, जब कोई पूछे कि "क्या तुमने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया है?" और वह जवाब में कहे, "तुम तलाक मान लो," या कहे, "तुम उसे तलाकशुदा समझ लो," तो यहाँ तलाक नहीं होगा, भले ही वह तलाक की नियत से ही क्यों न कहे। और इसी तरह का नियम है यदि वह पत्नी से कहे कि "तुम अपने आप को तलाकशुदा समझ लो," जैसा कि खानिया में वर्णित है, क्योंकि यहाँ ये शब्द प्रत्यक्ष रूप से तलाक के न होने को दर्शाते हैं। इन दोनों स्थानों पर शब्दों के इस अंतर को प्रथाओं को जानने वाले अच्छी तरह समझते हैं। इसे समझें और इस पर विचार करें। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

[मध्य अनुभाग (उर्दू)]: और यदि कोई नियत नहीं थी या सम्मान और आदर अथवा लगाव और प्रेम की नियत थी, यानी "मैं तुम्हें अपनी बहन की तरह प्रिय समझता हूँ," तो ये शब्द व्यर्थ और निरर्थक हैं। औरत पहले की तरह पत्नी ही रहेगी और कोई कफ्फारा (प्रायश्चित) आदि नहीं देना होगा। परंतु यदि उस समय की बातचीत और स्थिति गवाह हो कि उसने ये शब्द बिना किसी नियत के या सम्मान

और प्रेम की नियत से नहीं कहे थे, तो न्यायाधीश (हाकिम) इस दावे को स्वीकार नहीं करेगा; ऐसी स्थिति में औरत इसे स्वीकार कर सकती है।

[तालिका निचला अनुभाग] बायाँ कॉलम (अरबी): क्योंकि औरत न्यायाधीश (काज़ी) के समान है, जैसा कि अल-फतह आदि में है। और अल-दुर अल-मुख्तार में है: यदि वह "तू मेरे लिए मेरी माँ के समान है" या "मेरी माँ जैसी है" का इरादा रखता है, और इसी तरह यदि वह "मुझ पर" शब्द को हटा देता है (खानिया), तो यह जिहार या तलाक के रूप में सही है।

दायाँ कॉलम (उपरोक्त का उर्दू अनुवाद): क्योंकि इस मामले में औरत न्यायाधीश की हैसियत रखती है, जैसा कि फतह आदि में है। और दुर्रे मुख्तार में है कि यदि उसने अपनी पत्नी से कहा कि "तुम मुझ पर मेरी माँ की तरह हो" या "मेरी माँ जैसी हो," और इसी तरह यदि "मुझ पर" शब्द हटाकर भी कहा हो (खानिया)। इन शब्दों से यदि...

पादलेख: 1. फतावा काज़ी खान, किताबुत तलाक, नवल किशोर लखनऊ, 2/210। 2. रद-उल-मुहतार, बाब-अल-कनायात, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/468। पृष्ठ 285 का 688

جلد سیزد ہم، فتاویٰ رضویہ، صفحہ ۱۳

[ٹیبل کا بالائی حصہ] بایاں کالم (عربی): واما "الحسبان" ففی مثل الکلام انما یراد بہ التحقیق للتشبیہ لا نفیہ عن نفس الامر کمن اراد الامتناع عن تناول شئی یقول احسبہ علی کالخنزیر فانما یرید انہ محرم علیہ کمثلہ، بخلاف ما اذا قیل لہ اطلقت امرأتك فقال عدھا او احسبھا مطلقۃ حیث لا یقع وان نوی وکذا احسبی انك طالق کما فی الخانیۃ فأنہ ظاہر فی نفی الطلاق فی نفس الامر والفرق بینہما لا یخفی علی من عرف العرف فافہم واعلم۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

دایاں کالم (اردو): "سمجھنا اور خیال کرنا" اگر ایسے کلام میں ہو تو اس سے تشبیہ کو ثابت کرنا مقصود ہوتا ہے اور واقع سے اس کا انتفاء مراد نہیں ہوتا، جس طرح کوئی شخص کسی چیز کو لینے سے انکار کرتے ہوئے کہے کہ اس کو میں اپنے لئے خنزیر سمجھتا ہوں تو اس سے اس چیز کا اس پر قطعاً حرام ہونا مراد ہوتا ہے جس طرح خنزیر حرام ہے، اس کے برخلاف طلاق کے معاملہ میں جب کوئی پوچھے کیا تو نے اپنی بیوی کو طلاق دی ہے، تو جواب میں یوں کہے "تو طلاق شمار کرلے، یا کہے تو اس کو مطلقہ خیال کرلے" تو یہاں طلاق نہ ہوگی اگرچہ وہ طلاق کی نیت سے کہے اور یوں ہی حکم ہے اگر بیوی کو کہے کہ تو اپنے آپ کو طلاق والی سمجھ لے، جیسا کہ خانیہ میں مذکور ہے، کیونکہ یہاں یہ الفاظ ظاہری طور پر طلاق کے وقوع میں نفی پر دلالت کرتے ہیں اور دونوں مقاموں میں ان الفاظ کا فرق عرف کو جاننے والے پر مخفی نہیں ہے، سمجھو اور غور کرو۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

[درمیانی حصہ]: اور اگر کچھ نیت نہ تھی یا اعزاز واکرام خواہ الفت ومحبت کی نیت تھی یعنی اپنی بہن کے برابر عزیز یا پیاری جانتا ہوں تو یہ الفاظ لغو وفضول ہیں عورت بدستور عورت اور کفارہ وغیرہ کچھ دینا نہیں مگر اگر اس وقت کی گفتگو وحالت شاہد ہو کہ یہ الفاظ اس نے بلانیت یا

بہ نیت اعزاز ومحبت نہ کہے تھے تو حاکم اس دعوے کو نہ مانے گا تو عورت اسے قبول کرسکتی ہے،

[ٹیبل کا نچلا حصہ] بایاں کالم (عربی): فأن المرأة كالقاضی كما فی الفتح وغیرہ[2]، و فی الدر المختار ان نوی بانت علی مثل امی او كأمی و كذا لو حذف "علی" خانیۃ، برا و الظہار او طلاقاً صحت

دایاں کالم (اردو): کیونکہ عورت اس معاملہ میں قاضی کا حکم رکھتی ہے جیسا کہ فتح وغیرہ میں ہے، اور در مختار میں ہے اگر بیوی کو یوں کہا کہ تو مجھ پر میری ماں کی مثل یا میری ماں کی طرح ہے، اور یونہی اگر "علی" (مجھ پر) کا لفظ حذف کر کے کہا ہو، خانیہ۔ ان الفاظ سے اگر

حواشی: 1 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۲۱۰/۲ 2 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۴۶۸/۲ صفحہ 285 از 688

[Arabic Text]: ...his intention, and what he intended occurs because it is an allusive expression (kinayah). If he intended nothing or omitted the particle of comparison (kaf), it becomes void and the lowest [meaning] is specified, i.e., honor and respect. In [Fatawa] al-Hindiyyah from [Fatawa] al-Khaniyyah: if he intended prohibition, reports differ, but the correct view is that it is 'Zihar' according to all. In Radd al-Muhtar from Allama Khayr al-Din al-Ramli: it is appropriate that in court, the claim of intending honor and respect should not be accepted when these words are spoken during a quarrel or discussion of divorce. And Allah knows best.

[Urdu Explanation]: If the intention was to honor the wife, or for divorce, or for Zihar, then his intention will be valid and the ruling will be according to the intention because this is an allusive expression (So if the husband intended divorce, it will be a divorce (Talaq Ba'in)). And if no intention was made or the particle of comparison was omitted, this speech will be considered idle and among the possibilities, the lowest possibility, i.e., honor and respect, will be established. And in Hindiyyah, it is narrated from Khaniyyah that if the intention was to make [the wife] forbidden, there are various reports, and the correct one is that it will be Zihar according to all. In Radd al-Muhtar, it is narrated from Allama Khayr al-Din al-Ramli: it is appropriate that in this situation, the claim of intending the possibility of honor and respect should not be judicially accepted when these words are uttered during a fight, quarrel, or a discussion of divorce. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 45: What do the scholars of the religion say on this matter: if a husband compares the habits of his wife to the habits of [her] mahram (unmarriageable relatives), or a woman compares her own body parts or habits to the body parts and habits of her husband's mahrams, then in these cases, is expiation (kaffara) mandatory and is sexual intimacy forbidden until its payment, or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: As long as he does not compare his wife, or those parts of her through which the whole body is referred to (for example in Arabic: head, neck, back, and private parts), or a common part like half, one-fourth, or one-third, to a perpetual mahram, it is not Zihar. Therefore, comparing the habits of a wife with the habits of mahrams does not cause prohibition or require expiation.

[Arabic citation]: In Al-Durr al-Mukhtar: It (Zihar) is comparing one's wife, or that which refers to her, from her body parts, or comparing a common part of her to a [perpetual] mahram.

[Urdu translation of citation]: In [Durr] al-Mukhtar it is stated: [Zihar is] comparing the wife or any of her limbs by which her essence can be referred to, or an unspecified portion like half etc., with perpetual mahrams.

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/249.
2. Fatawa Hindiyyah, Ninth Chapter on Zihar, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/507.
3. Radd al-Muhtar, Chapter on Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/567.

जिल्द तेरह 13 फतावा रिज़विया

[अरबी पाठ]: ...उसकी नियत, और जो उसने नियत की वह घटित होता है क्योंकि यह एक किनाया (अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति) है। यदि उसने कुछ भी नियत नहीं किया या तुलना के कण (काफ) को हटा दिया, तो यह व्यर्थ हो जाता है और निम्नतम [अर्थ] निर्दिष्ट होता है, अर्थात सम्मान और प्रतिष्ठा। [फतावा] अल-हिंदिया में [फतावा] अल-खानिया से: यदि उसने हराम करने की नियत की, तो विवरण भिन्न हैं, लेकिन सही विचार यह है कि यह सभी के अनुसार 'ज़िहार' है। रद्द अल-मुह्तार में अल्लामा खैर अल-दीन अल-रामली से: यह उचित है कि अदालत में, सम्मान और प्रतिष्ठा की नियत रखने के दावे को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जब ये शब्द झगड़े या तलाक की चर्चा के दौरान बोले गए हों। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: यदि नियत पत्नी के सम्मान की थी, या तलाक की, या ज़िहार की, तो उसकी नियत मान्य होगी और नियत के अनुसार निर्णय होगा क्योंकि यह किनाया है (इसलिए यदि पति ने तलाक की नियत की, तो यह तलाक-ए-बाइन होगा)। और यदि कोई नियत नहीं की गई या तुलना के अक्षर को छोड़ दिया गया, तो यह बात व्यर्थ मानी जाएगी और संभावनाओं में से, निम्नतम संभावना, यानी सम्मान और प्रतिष्ठा, स्थापित की जाएगी। और हिन्दिया में खानिया से उद्धृत है कि यदि हराम करना उद्देश्य था, तो विभिन्न विवरण हैं, और सही यह है कि सभी के अनुसार यह ज़िहार होगा। रद्द अल-मुह्तार में अल्लामा खैर अल-दीन रमली से उद्धृत है: उचित होगा कि इस स्थिति में सम्मान और प्रतिष्ठा की संभावना की नियत को न्यायिक रूप से स्वीकार न किया जाए जब ये शब्द लड़ाई, झगड़े या तलाक की चर्चा के समय कहे गए हों। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसाला 45: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर शौहर अपनी बीवी की आदतों की तुलना महरम (जिनसे निकाह हराम हो) की आदतों से करे, या औरत अपने अंगों या आदतों की तुलना शौहर के महरमों के अंगों और आदतों से करे, तो क्या इन सूरतों में कफ़्फ़ारा लाज़िम है और इसकी अदायगी तक औरत हराम है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

जवाब: जब तक कोई अपनी बीवी को या उसके उन अंगों को जिनसे पूरे शरीर का बोध होता है (जैसे अरबी में सिर, गर्दन, पीठ और गुप्तांग), या उसके किसी हिस्से जैसे आधा, चौथाई या एक तिहाई को किसी शाश्वत महरम (हमेशा के लिए हराम रिश्तेदार) से तुलना न करे, तो यह 'ज़िहार' नहीं होता।

इसलिए, बीवी की आदतों की तुलना महरमों की आदतों से करना हराम होने या कफ़्फ़ारा का कारण नहीं है।

[अरबी उद्धरण]: अद-दुर्र अल-मुख्तार में है: यह (ज़िहार) अपनी पत्नी की, या उसके अंगों में से उस चीज़ की तुलना करना है जो उसे संदर्भित करती है, या उसके एक सामान्य भाग की तुलना किसी [शाश्वत] महरम से करना है।

[उर्दू अनुवाद]: [दुर्र] अल-मुख्तार में कहा गया है: [ज़िहार है] पत्नी या उसके किसी ऐसे अंग की तुलना करना जिससे उसके अस्तित्व को संदर्भित किया जा सके, या आधा आदि जैसे अनिर्दिष्ट भाग की, शाश्वत महरमों के साथ।

1. दुर्र अल-मुख्तार, ज़िहार का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/249।
2. फतावा हिन्दिया, ज़िहार पर नौवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/507।
3. रद्द अल-मुह्तार, ज़िहार का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/567।

पृष्ठ 286/688

نیته و وقع مانواه لانه کنایة والاینوی شیئاً او حذف الکاف لغاو تعین الادنی ای البر یعنی الکرامة اھ۔ وفی الهندیة عن الخانیة وان نوی التحریم اختلفت الروایات فیہ والصحیح انہ یکون ظهاراً عند الکل اھ۔ وفی رد المحتار عن العلامة خیر الدین الرملی وینبغی ان لایصدق قضاءً فی ارادة البرا ذا کان فی حالة المشاجرة وذکر الطلاق اھ، واللہ تعالٰی اعلم۔

تعظیم زوجہ یا طلاق یا ظہار کی نیت کی ہو تو اس کی نیت صحیح ہوگی اور نیت کے مطابق حکم ہوگا کیونکہ یہ کنایہ ہے (لہذا اگر خاوند نے طلاق کی نیت کی ہو تو طلاق بائنہ ہوگی) اور اگر کوئی نیت نہ کی ہو یا حرفِ تشبیہ کو ترک کردیا ہو تو یہ کلام لغو ہو کر احتمالات میں سے ادنیٰ احتمال یعنی عزت و کرامت متعین قرار پائے گا اھ، اور ہندیہ میں خانیہ سے منقول ہے کہ اگر حرام کرنا مراد ہو تو اس میں روایات مختلف ہیں اور صحیح یہی ہے کہ سب کے ہاں ظہار ہوگا اھ، ردالمحتار میں علامہ خیر الدین رملی سے منقول ہے: مناسب ہوگا کہ اس صورت میں کرامت و عزت والا احتمال مراد لینے کی قضاءً تصدیق نہ کی جائے جبکہ لڑائی جھگڑے اور طلاق کے مذاکرہ کے وقت یہ الفاظ کہے ہوں اھ، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۴۵: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر شوہر عاداتِ زوجہ کو عاداتِ محارم سے تشبیہ دے یا عورت اپنے اعضاء خواہ عادات کو محارم شوہر کے اعضاء و عادات سے تشبیہ دے تو ان صورتوں میں کفارہ لازم اور اس کی ادائیگی تک عورت حرام ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: تاوقتیکہ اپنی زوجہ یا اس کے ان اعضاء کو جن سے کل جسم تعبیر کیا جاتا ہے مثلاً عربی میں راس، ورقبہ، وظہر، وفرج، یا اس کے ایک جزو شائع مثل نصف، و ربع، و ثلث کو کسی محرم

ابدی سے تشبیہ نہ دے ظہار نہیں ہوتا پس تشبیہ عاداتِ زوجہ بعاداتِ محارم موجبِ حرمت و کفارہ نہیں۔

فی الدر المختار ھو تشبیہ زوجتہ او مایعبربہ عنھا من اعضائھا او تشبیہ جزء شائع منھا بمحرم در مختار میں ہے کہ بیوی کو یا اس کے کسی ایسے عضو کو جس سے اس کی ذات کو تعبیر کیا جاسکتا ہو یا غیر معین حصہ مثلاً نصف وغیرہ کو ابدی محرمات کے ساتھ

۱ در مختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۴۹ ۲ فتاویٰ ہندیہ الباب التاسع فی الظہار نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۰۷ ۳ رد المحتار باب الظہار دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۵۶۷

Volume 13, Page 13 Fatawa Rizvia

...prohibition forever.[1] [Note 1: To liken is called Zihar. (T)] And if a woman likens the body parts of her husband to those of her prohibited male relatives (Mahram), the husband does not become prohibited for her. As stated in Durr al-Mukhtar: "Her Zihar is absurd/null, so there is no prohibition (Hurmat)."[2] Just as in Durr al-Mukhtar, it says that a woman likening her husband to her mahram relatives is considered futile talk; it does not lead to prohibition. (T) Therefore, when her own statement is not effective in her own right, how can it affect the right of the husband? And if she likens the body parts and habits of the husband's mahrams to him, why would he become prohibited to her? The cause of atonement (kaffarah) is Zihar; when Zihar is not established, where is the need for atonement? And Allah Almighty knows best.

Case 46: From Gadhwa, Palamu district, sent by Muhammad Ismail Sahib, Leather Merchant, 10 Jumada al-Ukhra 1346 AH. A Muslim man had an argument with his wife at home and in a state of anger became so distraught that he called his wife "mother" and took her breast into his mouth. The wife also, in anger, said, "If you call me mother, then I also call you my son." After the quarrel, when their anger subsided, they became extremely remorseful and ashamed of their words and actions, fearing that they might be sinners for this accountability. At once, they separated their eating, drinking, and living arrangements. Now they wish to know what the religious scholars' fatwa (ruling) is in this matter according to the commands of Allah and His Messenger (peace and blessings be upon him). Are they still husband and wife or not? It has also been asked that if the wife's milk did not enter the husband's mouth, is the marriage still valid?

Annotation: According to the correct and authoritative view of Imam Muhammad as mentioned in al-Alamgiriyah: "A woman does not become one who performs Zihar against her husband according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), and the fatwa is based on this, and it is correct, as in al-Siraj al-Wahhaj."[3] This issue is based on the verified and authoritative view of Imam Muhammad. In Fatawa Hindiyyah, it is stated that according to Imam Muhammad (may Allah be merciful to him), a woman does not commit Zihar against her husband; the fatwa is based on this and this is the correct view as stated in Siraj Wahhaj. - Mufti-e-Azam (T)

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Zihar, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/248 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter of Zihar, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/249 [3] Fatawa Hindiyyah, Chapter Nine regarding Zihar, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/507

जिल्द तेरहवाँ, पृष्ठ १३ फ़तावा रज़विया

...सदैव के लिए प्रतिबंध।[1] [पाद-टिप्पणी १: उपमा देने को ज़िहार कहते हैं। (त)] और यदि स्त्री अपने पति के अंगों की तुलना अपने महरम (निषिद्ध पुरुष संबंधियों) के अंगों से करे, तो पति उस पर हराम (वर्जित) नहीं हो जाता। जैसा कि दुर्रे मुख्तार में है: "उसका ज़िहार व्यर्थ है, अतः कोई वर्जना (हुरमत) नहीं है।"[2] जैसा कि दुर्रे मुख्तार में वर्णित है कि स्त्री का अपने पति की तुलना अपने महरमों से करना व्यर्थ की बात है; इससे हुरमत (वर्जना) उत्पन्न नहीं होगी। (त) अतः, जब उसका अपना कथन स्वयं के अधिकार में प्रभावी नहीं है, तो पति के अधिकार में इसका क्या प्रभाव होगा? और यदि वह पति के महरमों के अंगों और आदतों की तुलना स्वयं से करेगी, तो वह उस पर हराम कैसे होगा? कफ़ारे (प्रायश्चित) का कारण ज़िहार है; जब ज़िहार ही सिद्ध नहीं हुआ, तो कफ़ारा कैसा? और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला ४६: गढ़वा, जिला पलामू से, प्रेषक मुहम्मद इस्माइल साहब, चर्म व्यापारी, १० जमादी-उल-उखरा १३४६ हिजरी। एक मुसलमान व्यक्ति का अपने घर में अपनी पत्नी से झगड़ा हुआ और क्रोध की स्थिति में वह इतना व्याकुल हो गया कि उसने अपनी पत्नी को "माँ" कह दिया और उसका स्तन अपने मुँह में ले लिया। पत्नी ने भी क्रोध में कहा, "अगर तुम मुझे माँ कहते हो, तो मैं भी तुम्हें बेटा कहती हूँ।" झगड़े के बाद, जब उनका क्रोध शांत हुआ, तो वे अपने शब्दों और कार्यों पर अत्यंत शर्मिंदा और पछतावा करने लगे, इस डर से कि वे इस जवाबदेही के लिए पापी न हों। उन्होंने तुरंत अपना खाना-पीना और उठना-बैठना अलग कर लिया। अब वे जानना चाहते हैं कि इस बारे में अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आदेशानुसार दीन के विद्वानों का क्या फतवा है। क्या वे पति-पत्नी हैं या नहीं? यह भी पूछा गया है कि यदि पत्नी का दूध पति के मुँह में नहीं आया, तो क्या निकाह कायम है?

टिप्पणी: इमाम मुहम्मद के सही और मुफ़्ती-बेह (प्रमाणित) मत के अनुसार, जैसा कि अल-आलमगीरिया में कहा गया है: "इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के अनुसार एक महिला अपने पति से ज़िहार करने वाली नहीं होती, और फतवा इसी पर है और यही सही है, जैसा कि अल-सिराज अल-वहाज में है।"[3] यह मसला इमाम मुहम्मद के प्रमाणित और मुफ़्ती-बेह मत पर आधारित है। फतावा हिंदिया में है कि इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहि के निकट औरत अपने पति से मुज़ाहिर (ज़िहार करने वाली) नहीं होती, फतवा इसी पर है और यही सही है जैसा कि सिराज वहाज में है। - मुफ़्ती-ए-आज़म (त)

१ दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-ज़िहार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/२४८ २ दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-ज़िहार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/२४९ ३ फतावा हिंदिया, अल-बाब-उत-तासे फ़िज़-ज़िहार, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/५०७

पृष्ठ २८७/६८८

علیہ تأبید۔ ۱ تشبیہ دینے کو ظہار کہتے ہیں۔ (ت) اور عورت تو اگر اعضائے شوہر کو بھی اپنے محارم کے اعضاء سے تشبیہ دے تو شوہر اس پر حرام نہیں ہو جاتا کما فی الدرالمختار وظہارھا عہ منہ لغو فلا حرمۃ ۲ھ جیسا کہ درمختار میں ہے کہ عورت کا خاوند کو اپنے محرمات کے ساتھ تشبیہ دینا لغو کلام ہے اس سے حرمت نہ ہوگی(ت) پس جبکہ اس کا قول خود اپنے حق میں مؤثر نہ ہوا تو حق شوہر میں کیا تاثیر کرے گا اور اپنے اعضا و عاداتِ محارم شوہر سے تشبیہ دے گی تو کیونکہ اس پر حرام ہو جائے گی اور سببِ کفارہ ، ظہار ہے جب ظہار نہ پایا گیا تو کفارہ کہاں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۶: از گڈھوا ضلع پلاموں مرسلہ محمد اسمعیل صاحب سوداگر چرم ۱۰ جمادی الاخریٰ ۱۳۴۶ھ ایک شخص اہل اسلام نے اپنے گھر میں میاں بی بی سے جھگڑا اور غصہ کی حالت میں یہاں تک بیتاب ہو گیا کہ اپنی بی بی کو ماں کہہ بیٹھا اور اس کا سینہ منہ میں رکھ لیا اور بی بی نے بھی غصہ کی حالت میں کہا کہ اگر تو مجھ کو ماں کہتا ہے تو میں بھی تجھ کو بیٹا کہتی ہوں، بعد اس جھگڑے کے جب ان دونوں کا غصہ رفع ہوا تو اپنے اس کلام اور اس فعل سے نہایت نادم و شرمندہ ہوئے اور کہنے لگے کہ ایسا نہ ہو کہ اس کے مواخذہ میں ہم دونوں گنہگار ہوں ، اور اسی وقت کھانا پینا اٹھنا بیٹھنا سب علیحدہ کر لیا، اب وہ اس بات کے خواہشمند ہیں کہ اس بارے میں مطابق حکم خدا اور رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے علمائے دین کیا فتویٰ دیتے ہیں، آیا میاں بی بی ہیں یا نہیں؟ اور یہ بھی دریافت کیا گیا ہے کہ بی بی کا دودھ شوہر کے منہ میں نہیں آیا تو بی بی نکاح

عہ : علی قولہ محمد المصحح المفتی بہ قال فی العالمگیریۃ عہ: یہ مسئلہ امام محمد کے تصحیح شدہ اور مفتی بہ قول پر ہے فتاوٰی لا تکون المرأۃ مظاہرۃ من زوجھا عند محمد رحمہ اللہ ہندیہ میں ہے امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی کے نزدیک عورت اپنے تعالٰی والفتوی علیہ وھو الصحیح کذا فی السراج الوھاج ۳ شوہر سے مظاہر نہیں ہوتی، فتوٰی اسی پر ہے اور یہی صحیح ہے جیسا کہ مفتی اعظم سراج وہاج میں ہے ۱۲ مفتی اعظم (ت)

---

۱ در مختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۴۸ ۲ در مختار باب الظہار مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۴۹ ۳ فتاوی ہندیہ الباب التاسع فی الظہار نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۰۷

Fatawa Razawiya Volume 13

Is it inside or outside? Did divorce occur or not?

The Answer:

In the mentioned situation, both became sinners by him calling her mother and her calling him son.

Allah Almighty said, "And indeed, they utter a word that is forbidden and a lie."1 - Allah Almighty said that indeed the people's (calling a wife mother or sister) is a bad thing and a lie. (T)

However, it did not affect the marriage. Taking the breast in the mouth is nothing; if he had drunk milk, then drinking it would be haram, but it would not affect the marriage because prohibition (of marriage) does not occur from milk after the age of two and a half years. There is no need for both of them to stay apart; they remain husband and wife as before. And Allah Almighty knows best.

Problem 74: From Daru, District Nainital, sent by Abdul Aziz Khan, 15 Ramadan-ul-Mubarak 1336 AH.

Zaid's wife, in a state of anger, told Zaid, "In your eyes, I am not worth even a single pubic hair." On this, Zaid mockingly said to her, "I regard you more than my father and grandfather." In such a situation, is the ruling of Zihar applicable to Zaid or not?

The Answer:

These are absurd and meaningless words; they have no connection to Zihar or expiation. It is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

"Likening to a man, whoever he may be, is not Zihar."2 - Likening a woman to any man does not constitute Zihar. (T)

It is in Badai and Nahr:

"Among the conditions of Zihar is that the one likened to..." - One of the conditions of Zihar is that in Zihar, the one being likened to...

Note: But there is detail regarding this in Alamgiriya where they stated that if a wife says, "to me like the back..." etc. (T)

1. Al-Quran 2/58
2. Fatawa Qazi Khan, Kitab-ul-Zihar, Naval Kishore Lucknow

3. Fatawa Hindiyya, Chapter Nine on Zihar, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/506

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

अंदर है या बाहर? तलाक़ हुआ या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर):

उक्त स्थिति में, उसे माँ कहने और उसे बेटा कहने से दोनों गुनहगार हुए।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "और बेशक वे एक बुरी बात और झूठ बोलते हैं।"1 - अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि बेशक लोगों का (बीवी को माँ-बहन कहना) बुरी बात और झूठ है। (त)

मगर निकाह में कोई फ़र्क़ नहीं आया, और स्तन मुँह में लेना तो कोई चीज़ नहीं, अगर वह दूध पी लेता तो वह पीना हराम होता, मगर निकाह में इससे ख़लल न आता क्योंकि ढाई वर्ष की आयु के बाद दूध से हुरमत (निकाह की मनाही) नहीं होती। और दोनों को अलग रहने की कोई ज़रूरत नहीं है, वे यथावत पति-पत्नी हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 74: डारु जिला नैनीताल से प्रेषक अब्दुल अज़ीज़ खां, 15 रमज़ान-उल-मुबारक 1336 हिजरी।

ज़ैद की औरत ने गुस्से की हालत में ज़ैद से कहा कि तुम्हारे नज़दीक मेरी क़द्र एक बाल के बराबर भी नहीं है। इस पर ज़ैद ने मज़ाक में उससे कहा कि मैं तुझे अपने बाप और दादा से ज़्यादा समझता हूँ। ऐसी स्थिति में ज़ैद पर ज़िहार का हुक्म लागू होता है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर):

ये व्यर्थ और निरर्थक शब्द हैं; इनका ज़िहार या कफ़ारे से कोई संबंध नहीं है। फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ां में है:

"किसी भी पुरुष से तुलना करना ज़िहार नहीं होता।"2 - औरत को किसी भी पुरुष से उपमा देना ज़िहार नहीं होता। (त)

बदाइ और नह्र में है:

"ज़िहार की शर्तों में से यह है कि जिससे उपमा दी जाए..." - ज़िहार की शर्तों में से यह है कि ज़िहार में जिससे उपमा दी जाए...

नोट: लेकिन आलमगिरी में इसके बारे में विस्तार से बताया गया है जहाँ उन्होंने बयान किया कि यदि कोई पत्नी कहे कि "मुझ पर पीठ की तरह..." इत्यादि। (त)

1. अल-क़ुरआन 2/58
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ां, किताब-उल-ज़िहार, नवल किशोर लखनऊ
3. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय नौ ज़िहार पर, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/506

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم

کے اندر ہے یا باہر؟ طلاق ہوا یا نہیں؟

الجواب:

صورت مذکورہ میں وہ اسے ماں اور اسے بیٹا کہنے سے دونوں گنہگار ہوئے،

قال اللہ تعالی وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا 1 - اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ بیشک لوگوں کا (بیوی کو ماں بہن کہنا) بری بات اور جھوٹ ہے (ت)

مگر نکاح میں کچھ فرق نہ آیا، اور پستان منہ میں لینا تو کوئی چیز نہیں، اگر دودھ پی لیتا تو وہ پینا حرام ہوتا، مگر نکاح میں اس سے خلل نہ آتا کہ ڈھائی برس کی عمر کے بعد دودھ سے حرمت نہیں ہوتی اور دونوں کو جدا رہنے کی کوئی حاجت نہیں، وہ بدستور زوج وزوجہ ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۴: از درو ضلع نینی تال مرسلہ عبدالعزیز خاں ۱۵ رمضان المبارک ۱۳۳۶ھ

زید کی عورت نے بحالت غصہ زید سے کہا کہ تمہارے نزدیک میری، ایک بال زیر ناف کے برابر بھی قدر نہیں۔ اس پر زید نے ازراہ تمسخر اس سے یہ کہا کہ میں تجھ کو اپنے باپ اور دادا سے زیادہ سمجھتا ہوں۔ ایسی حالت میں زید پر ظہار کا حکم لازم آتا ہے یا نہیں؟

الجواب:

یہ لغو و مہمل الفاظ ہیں انہیں ظہار یا کفارے سے کوئی تعلق نہیں فتاوی امام قاضی خاں میں ہے:

التشبیه بالرجل ای رجل کان لایکون ظهاراً 2 - عورت کو کسی بھی مرد سے تشبیہ دینا ظہار نہیں ہوتا۔ (ت)

بدائع و نہر میں ہے:

من شرائط ظهار کون المظاهر به ظہار کی شرائط میں سے یہ ہے کہ ظہار میں جس سے تشبیہ

عہ: لیکن مافی العالمگیریه فیه تفصیل حیث قال عہ: لیکن عالمگیری میں اس کے متعلق تفصیل ہے جہاں انہوں نے بیان کیا کہ کوئی بیوی کہے تو مجھ پر پیٹھ کی طرح الخ (ت) لامرأته علی کظهر الخ۔

1 القرآن ۲/۵۸ 2 فتاوی قاضی خاں کتاب الظہار نولکشور لکھنؤ 3 فتاوی ہندیہ الباب التاسع فی الظہار نورانی کتب خانہ پشاور ۵۰۶/۱

Fatawa-e-Razviya Volume 13 / 13

...of the gender of women - And Allah knows best - | ...be given, that she be of the gender of women. And Allah Almighty knows best (T).

Issue 48: From Lucknow Amin-ud-Daula Park, sent by Muhammad Ibrahim S and Sugar Company, 5 Shaban 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Zaid called his wife for intercourse at night, but when she refused, Zaid took an oath that 'if I have intercourse with you now, then I would be committing adultery with my mother'. Afterwards, Zaid felt very ashamed and repented and sought forgiveness. What should Zaid do in this matter? Assuming if Zaid had intercourse that same night after seeking forgiveness, what should be done?

The Answer: He did a bad thing, a bad thing. Nothing is obligatory upon him except repentance and seeking forgiveness. If he had intercourse, there was no harm, nor did it affect the marriage in any way, as is evident by referring to Al-Fath and Ad-Durr etc. (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 49: The husband called his wife 'mother' and 'sister', he did not give divorce. This is the case, so what is the ruling according to the Sharia? Explain and be rewarded.

The Answer: In the mentioned case, divorce is not established, nor is it Zihar (a specific type of forbidden comparison). He only said a bad thing and became a sinner. He should repent and that's it. Allah Almighty said: "And indeed, they are saying an objectionable statement and a falsehood." | Allah Almighty said: And they indeed speak a bad and sheer lie, and indeed Allah is certainly Pardoning and Forgiving. "And indeed, Allah is Pardoning and Forgiving." (2) And Allah Almighty knows best. | (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 50: From the city of Bareilly Garhi, issue of Abdul Karim Sahib, 5 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Zaid, at his house while his wife was at her parental home, said in front of his brother etc., 'I regard my wife as equal to my mother and sister from this time. Inform her to find another place for herself.' And he said this at a time when he had a fight with another person and people gave him false information that 'your father-in-law got you beaten up'. This was in a state of severe anger...

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter: And that which refers to the one who makes Zihar... H.M. Saeed Company Karachi 233/3
2. Al-Quran 2/58

फतावा-ए-रज़विया खंड 13 / 13

...स्त्रियों के वर्ग से हो - और अल्लाह बेहतर जानता है - | ...दी जाए, वह औरत की जाति हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 48: लखनऊ अमीन-उद-दौला पार्क से, प्रेषक मुहम्मद इब्राहिम एस एंड शुगर कंपनी, 5 शाबान 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने रात के समय अपनी पत्नी को संभोग के लिए बुलाया, तो पत्नी के इनकार करने पर ज़ैद ने यह कसम खाई कि 'अब अगर मैं तुम से संभोग करूँ तो अपनी माँ से ज़िना (व्यभिचार) करूँ, उसके बाद ज़ैद बहुत शर्मिंदा हुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) की, इस मामले में ज़ैद को क्या करना चाहिए? मान लीजिए कि अगर ज़ैद ने उसी रात इस्तिग़फ़ार के बाद संभोग किया, तो क्या करना चाहिए?

जवाब: उसने बुरा किया, बुरा किया, तौबा और इस्तिग़फ़ार के अलावा उस पर कुछ और लाज़िम नहीं है, संभोग किया तो कोई हर्ज नहीं हुआ, न ही इससे निकाह पर कोई आंच आई, जैसा कि फ़तह और दुर्र आदि को देखने से स्पष्ट होता है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 49: पति ने (पत्नी को) माँ बहन कहा, तलाक़ नहीं दी, यह मसले की स्थिति है, अतः शरीयत के अनुसार क्या हुक्म है? वर्णन करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: उपरोक्त स्थिति में तलाक़ साबित नहीं होती, न ही यह ज़िहार है, केवल बुरा कहा और गुनहगार हुआ, तौबा करे और बस। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और वे निश्चित रूप से एक आपत्तिजनक बात और झूठ कह रहे हैं।" | अल्लाह तआला ने फ़रमाया और वे बेशक बुरी और कोरी झूठ बात कहते हैं और बेशक अल्लाह ज़रूर माफ़ करने वाला और बख्शने वाला है। "और बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और बख्शने वाला है।" (2) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 50: बरेली शहर गढ़ी से, मसला अब्दुल करीम साहब, 5 ज़िलक़ादा 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपने मकान पर जबकि उसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, अपने भाई वगैरह के सामने कहा कि मैंने अपनी पत्नी को इस समय से माँ बहन के बराबर जानता हूँ, उसे खबर कर दो कि वह अपना ठिकाना दूसरी जगह कर ले, और यह बात उसने उस समय कही थी जब उसकी दूसरे व्यक्ति से लड़ाई हुई थी और लोगों ने उसे झूठी खबर दी थी कि तुम्हें तुम्हारे ससुर ने पिटवाया है, यह हालत सख्त गुस्से...

1. बदाए अस्सनाए, अध्याय: और वह जो ज़िहार करने वाले की ओर लौटता है... एच.एम. सईद कंपनी कराची 233/3
2. अल-क़ुरआन 2/58

من جنس النساء ۱- واللہ تعالٰی اعلم- | دی جائے وہ عورت کی جنس ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۴۸: از لکھنؤامین الدولہ پارک مرسلہ محمد ابراہیم ایس اینڈ سگر کمپنی ۵ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے رات کے وقت اپنی زوجہ کو واسطہ صحبت کے بلایا تو بیوی کے انکار کرنے پر زید نے یہ قسم کھائی کہ اب میں تم سے صحبت کروں تو اپنی ماں سے زنا کروں، بعدہ زید بہت شرمندہ ہوا اور توبہ واستغفار کیا، اس معاملہ میں زید کو کیا کرنا چاہئے؟ بالفرض اگر زید نے اسی شب بعد استغفار صحبت بھی کی تو کیا کرنا چاہئے؟

الجواب: اس نے برا کیا، برا کیا، توبہ و استغفار کے سوا اور کچھ لازم اس پر نہیں، صحبت کی تو کچھ حرج نہ ہوا، نہ اس سے نکاح پر کچھ حرف آیا، کما یظہر بمراجعۃ الفتح و الدر وغیرہما (جیسا کہ فتح اور در وغیرہ کو دیکھنے سے ظاہر ہوتا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۹: خاوند نے ماں بہن کہا، طلاق نہیں دی، یہ صورت مسئلہ ہے، لہذا عند الشرع کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مذکورہ میں طلاق ثابت نہیں، نہ یہ ظہار، صرف برا کہا اور گناہگار ہوا، توبہ کرے و بس، قال اللہ تعالٰی وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا۔ | اللہ تعالٰی نے فرمایا اور وہ بیشک بری اور نری جھوٹ بات کہتے ہیں اور بیشک اللہ ضرور معاف کرنے والا اور بخشنے والا ہے۔ وَ إِنَّ اللهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ (۲) واللہ تعالٰی اعلم۔ | (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۰: از شہر بریلی گڑھی مسئلہ عبد الکریم صاحب ۵ ذیقعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے مکان پر جبکہ اس کی بیوی اپنے میکے گئی ہوئی تھی، اپنے

بھائی وغیرہ کے روبرو کہا کہ میں نے اپنی بیوی کو اس وقت سے ماں بہن کے برابر جانتا ہوں اس کو خبر کردو کہ وہ اپنا ٹھکانا دوسری جگہ کرلے، اور یہ بات اس وقت اس نے کہی تھی کہ جب اس کی دوسرے شخص سے لڑائی ہوئی تھی اور لوگوں نے اس کو جھوٹی خبر دی تھی کہ تم کو تمہارے سسر نے پٹوایا ہے، یہ حالت سخت غصہ

---

1 بدائع الصنائع فصل و اما الذی یرجع الی المظاھر بہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۳۳/۳ 2 القرآن ۲/۵۸

Fatawa Razawiyya Volume 13

...had occurred, should he now perform a new marriage contract (nikah) or does the previous marriage remain valid?

The Answer: These words, "Inform her that she should find another place for herself," if spoken without the intention of divorce (talaq), then divorce has not occurred. His statement under oath that his intention was not for divorce will be accepted. However, if he spoke them with the intention of divorce, then divorce has occurred and the marriage is terminated. He can remarry her with her consent from the beginning, provided he has not already given two divorces previously; in this case, there is no need for halala (remarriage to another man first). And Allah Almighty knows best.

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

...की थी, क्या उसे अब निकाह करना चाहिए या पिछला निकाह जायज़ रहा?

अल-जवाब: यह शब्द कि "उसे खबर कर दो कि वह अपना ठिकाना दूसरी जगह कर ले" अगर तलाक़ की नीयत से न कहे हों तो तलाक़ नहीं हुई और उसका कसम खाकर कह देना मान लिया जाएगा कि उसकी नीयत तलाक़ की नहीं थी। और अगर तलाक़ की नीयत से कहे तो तलाक़ हो गई, निकाह खत्म हो गया, नए सिरे से उसकी मर्ज़ी से उससे निकाह कर सकता है अगर पहले दो तलाक़ें न दे चुका हो, हलाला की ज़रूरत नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

पेज 290 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

کی تھی، آیا اس کو اب نکاح کرنا چاہئے یا نکاح سابق جائز رہا ؟

الجواب: یہ لفظ کہ "اس کو خبر کر دو کہ وہ اپنا ٹھکانا دوسری جگہ کرلے" اگر بہ نیت طلاق نہ کہے جب تو طلاق نہ ہوئی اور اس کا قسم کھا کر کہہ دینا مان لیا جائے گا کہ اس کی نیت طلاق کی نہ تھی اور اگر بہ نیت طلاق کہے تو طلاق ہوگئی، نکاح جاتا رہا، نئے سرے سے اس کی مرضی سے اس سے نکاح کر سکتا ہے اگر پہلے دو طلاقیں نہ دے چکا ہو حلالہ کی حاجت نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

www.dawateislami.net آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

Chapter of Iddah (Description of Iddah)

Problem 51: 23 Rajab 1322 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: a woman who is currently twelve years old and shows no sign of puberty. In this state, if her husband divorces her, will she observe Iddah or not? And her marriage has lasted for a period of three years. Respond and be rewarded.

The Answer: If seclusion with the husband has not occurred until now, then there is no Iddah at all; her marriage can be performed at this time. And if the husband had access to her, then wait for four months and ten days. During this period, if pregnancy becomes apparent in the woman, then she should observe Iddah until childbirth. If pregnancy does not become apparent, then her Iddah of three months has already passed; do not make her wait any longer.

[In the box]: In Radd al-Muhtar, it is narrated from Imam al-Fadli in al-Bahr that when a divorced woman is an adolescent (near puberty), her Iddah does not conclude by months [alone]. Rather, her case remains suspended until it becomes clear whether she became pregnant from that intercourse or not. If pregnancy becomes evident, her Iddah is until childbirth, otherwise, it is by months. It is in Radd al-Muhtar that it is narrated from Imam al-Fadli in al-Bahr that when a divorced woman is an adolescent (near puberty), she should not observe her Iddah according to the calculation of months. Rather, the state of her Iddah will depend on whether she has conceived or not. If it becomes clear that pregnancy has occurred, then her Iddah will be determined as until childbirth, otherwise, the Iddah is three months.

Page 291 of 688

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

बाब अल-इद्दत (इद्दत का बयान)

मसाला 51: 23 रजब 1322 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला जिसकी उम्र वर्तमान में बारह वर्ष है और उसमें यौवन का कोई लक्षण नहीं पाया जाता है। इस स्थिति में, यदि उसका पति उसे तलाक दे देता है, तो क्या वह इद्दत बिताएगी या नहीं? और उसकी शादी को तीन साल का समय बीत चुका था। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि अब तक पति के साथ एकांत (खलवत) नहीं हुआ था, तो मूल रूप से कोई इद्दत नहीं है, उसका निकाह इसी समय किया जा सकता है। और यदि पति उसके पास जा चुका था, तो चार महीने दस दिन प्रतीक्षा कराएं। यदि इस अवधि में महिला को गर्भ प्रकट हो, तो प्रसव (बच्चे के जन्म) तक इद्दत बिताए। और यदि गर्भ प्रकट न हो, तो पिछली तीन महीने की इद्दत बीत चुकी है, आगे प्रतीक्षा न कराई जाए।

[बॉक्स में]: रद अल-मुह्तार में है कि 'अल-बहर' में इमाम फज़ली से उद्धृत है कि जब तलाकशुदा महिला किशोरावस्था (मुराहिक़ा) में हो, तो उसकी इद्दत केवल महीनों के हिसाब से समाप्त नहीं होती, बल्कि उसका मामला इस बात पर रुका रहेगा कि वह उस संभोग से गर्भवती हुई है या नहीं। यदि गर्भ प्रकट हो जाए, तो उसकी इद्दत प्रसव (बच्चे के जन्म) होगी, अन्यथा महीनों के हिसाब से... रद अल-मुह्तार में है कि 'बहर' में इमाम फज़ली से उद्धृत है कि जब तलाकशुदा औरत मुराहिक़ा हो, तो वह अपनी इद्दत महीनों के हिसाब से न गुज़ारे, बल्कि उसकी इद्दत का हाल इस बात पर निर्भर रहेगा कि उसे गर्भ ठहरा है या नहीं। अगर स्पष्ट हो जाए कि गर्भ हुआ है तो उसकी इद्दत प्रसव (बच्चे के जन्म) होगी, अन्यथा इद्दत तीन महीने।

पेज 291 of 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

باب العدۃ (عدت کا بیان)

مسئلہ ۵۱: ۲۳ رجب ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت جس کی عمر اس وقت بارہ برس ہے کوئی علامتِ بلوغ کی پائی نہیں جاتی، اس حالت میں اس کو شوہر طلاق دے تو عدت بیٹھے گی یا نہیں؟ اور اس کی شادی کو عرصہ تین برس کا گزرا تھا۔ بینوا توجروا

الجواب: اگر اب تک شوہر سے خلوت نہ ہوئی تھی تو اصلاً عدت نہیں اسی وقت اس کا نکاح کیا جا سکتا ہے اور اگر شوہر اس کے پاس جا چکا تھا تو چار مہینے دس دن انتظار کرائیں، اگر اس مدت میں عورت کو حمل ظاہر ہو تو وضع حمل تک عدت بیٹھے، اور اگر حمل ظاہر نہ ہو تو عدت تین ہی مہینے گزشتہ گزر چکی آگے انتظار نہ کرایا جائے،

[خانے میں]: فی ردالمحتار فی البحر عن الامام الفضلی انھا اذا کانت مراھقۃ لا تنقضی عدتھا بالاشہر، بلا یوقف حالھا حتی یظھر ھل حبلت من ذلک الوطی ام لا، فان ظھر حبلھا اعتدت بالوضع والا فبالاشہر قال فی رد المحتار میں ہے کہ بحر میں امام فضلی سے منقول ہے کہ جب مطلقہ عورت مراہقہ ہو تو وہ اپنی عدت مہینوں کے حساب سے نہ گزارے بلکہ اس کی عدت کا حال اس بات پر موقوف رہے گا کیا اس کو حمل ٹھہرا ہے یا نہیں، اگر واضح ہو جائے کہ حمل ہوا ہے تو اس کی عدت وضع حمل قرار پائے گی ورنہ عدت تین ماہ

Fatawa Razawiyya Volume 13 13

[Arabic Text] Al-Fath: "The period of pause (tawaqquf) shall be counted towards her 'iddah (waiting period)." I say: This means if pregnancy does not appear, it is ruled that the 'iddah was completed by the three months that passed, and the period of pause after that will be considered void, to the extent that if she were to marry during it, her marriage contract would be valid. Regarding the maintenance in Al-Fath, it is narrated from Al-Khulasa: "The 'iddah of a minor is three months, unless she is near puberty (murahiqah), in which case maintenance is provided for her as long as the emptiness of her womb is not clear." This is similarly mentioned in Al-Muhit, without mentioning any disagreement, which is a good statement. End of the words of Al-Fath. However, it is appropriate to give fatwa (legal ruling) on this as a precaution before the marriage contract, so that her marriage is not contracted until after the pause. Yet, they did not mention the duration of the pause during which pregnancy becomes apparent. It is mentioned in Al-Hamidiyya, quoting from Al-Bazzaziyya's sales chapter, that a claim of pregnancy is believed, according to one report, if four months and ten days have passed since her purchase, no less. According to another report, it is believed after two months and five days, and people act upon this. Al-Hamidiyya followed the latter report, but there is some scrutiny regarding this because our issue concerns the pause after the passing of three months; therefore, it is better to take the first report, so when [it passes...]

[Urdu Text] ...will be counted. In Al-Fath, it is stated that the period of pause will also be included in the 'iddah. I say (the author): If pregnancy does not appear, then the past three months will be declared as the 'iddah, and the pause after those three months will be useless, such that if she remarried after the three months, it would be valid. In the discussion of maintenance in Al-Fath, it is narrated from Al-Khulasa that the 'iddah of a minor girl is three months; yes, if she is near puberty (murahiqah), then her husband will continue providing maintenance until it becomes clear that her womb is empty. This is similarly mentioned in Al-Muhit. He did not mention any disagreement in this, and this is a better statement. The discussion from Al-Fath ends here. However, it is appropriate to issue a fatwa on this before marriage as a precaution, so that the 'iddah is not decided without a pause. But here, the jurists have not mentioned the duration of the pause for 'iddah—how long it should be for pregnancy to become apparent. It was mentioned in Al-Hamidiyya that in the 'Sales' section of Bazzaziyya, it says that if a slave girl was purchased, then according to one report, the owner's claim of pregnancy will be verified when four months and ten

days have passed since the purchase. The claim will not be verified in less time than this. According to the second report, it can be verified after two months and five days, and the practice of people is upon this. Al-Hamidiyya acted on the second report, but there is an objection to this, as our discussion is about the case where there is a pause after the passing of three months, therefore the first...

फतवा रज़विया जिल्द 13 13

[अरबी पाठ] अल-फतह: "विराम (तवक्कुफ़) की अवधि को उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में गिना जाएगा।" मैं कहता हूँ: इसका अर्थ है कि यदि गर्भावस्था स्पष्ट नहीं होती है, तो यह निर्णय लिया जाएगा कि गुज़रे हुए तीन महीनों से इद्दत पूरी हो गई, और उसके बाद की विराम अवधि व्यर्थ मानी जाएगी, यहाँ तक कि यदि उसने उस दौरान विवाह कर लिया, तो उसका निकाह वैध होगा। अल-फतह के भरण-पोषण (नफ़क़ात) के बारे में अल-खुलसा में वर्णित है: "एक नाबालिग लड़की की इद्दत तीन महीने है, सिवाय इसके कि वह यौवन के समीप (मुराहिका) हो, तो उसे तब तक भरण-पोषण दिया जाएगा जब तक कि उसके गर्भाशय का खाली होना स्पष्ट न हो जाए।" अल-मुहीत में भी इसी तरह उल्लेख किया गया है, बिना किसी मतभेद के ज़िक्र के और यह बेहतर है। अल-फतह का कथन यहाँ समाप्त होता है। हालांकि, निकाह से पहले एहतियातन इस पर फ़तवा देना उचित है ताकि विराम के बिना इद्दत का निर्णय न कर दिया जाए। लेकिन यहाँ फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने विराम की अवधि का उल्लेख नहीं किया है कि वह कितनी लंबी होनी चाहिए जिससे गर्भावस्था स्पष्ट हो सके। हामिदिया में उल्लेख किया गया है कि बज़्ज़िया के व्यापार (बियूअ) के मुद्दों में है कि यदि एक दासी खरीदी गई हो, तो एक रिवायत के अनुसार मालिक के गर्भावस्था के दावे की पुष्टि तब की जाएगी जब उसे खरीदे हुए चार महीने और दस दिन बीत चुके हों, इससे कम समय में इस दावे की पुष्टि नहीं होगी। और दूसरी रिवायत में है कि दो महीने और पाँच दिन के बाद पुष्टि हो सकेगी, जबकि लोगों का व्यवहार इसी पर है। हामिदिया ने दूसरी रिवायत पर अमल किया है, लेकिन इस पर आपत्ति है क्योंकि हमारी चर्चा उस स्थिति में है जब तीन महीने बीत जाने के बाद विराम हो, इसलिए पहली...

[उर्दू पाठ] ...गिना जाएगा और फ़तह में है कि विराम का समय भी इद्दत में शामिल किया जाएगा। मैं (लेखक) कहता हूँ: यदि गर्भावस्था स्पष्ट न हो तो पिछले तीन महीनों को इद्दत घोषित कर दिया जाएगा और उन तीन महीनों के बाद वाला विराम बेकार होगा यहाँ तक कि अगर उसने तीन महीने के बाद और निकाह कर लिया तो वह सही होगा। और फ़तह में भरण-पोषण की चर्चा में 'खुलसा' से उद्धृत है कि नाबालिग की इद्दत तीन महीने है हाँ अगर वह यौवन के समीप (मुराहिका) हो तो फिर पति उसे उस समय तक भरण-पोषण देता रहेगा जब तक गर्भाशय का खाली होना स्पष्ट न हो जाए, मुहीत में भी इसी तरह उल्लेख है। और इसमें मतभेद का उल्लेख नहीं किया, और यह बेहतर बात है, फ़तह का कथन समाप्त हुआ, लेकिन निकाह से पहले इस पर फ़तवा देना उचित है ताकि विराम के बिना इद्दत का फ़ैसला न कर दिया जाए, लेकिन यहाँ न्यायविदों ने विराम की इद्दत का उल्लेख नहीं किया

कि वह कितनी अवधि है जिससे गर्भावस्था स्पष्ट हो सके हामिदिया में उल्लेख हुआ कि बज़्ज़िया के व्यापार के मसलों में है कि अगर दासी खरीदी हो तो एक रिवायत के अनुसार मालिक के गर्भावस्था के दावे की पुष्टि तब की जाएगी जब दासी को खरीदे हुए चार महीने दस दिन बीत चुके हों, इससे कम अवधि में इस दावे की पुष्टि नहीं होगी, और दूसरी रिवायत में है कि दो महीने पाँच दिन के बाद पुष्टि हो सकेगी जबकि लोगों का आचरण इसी पर है। और हामिदिया ने दूसरी रिवायत पर अमल किया है और इसमें आपत्ति है कि हमारी चर्चा इस सूरत में है जब तीन महीने गुज़र जाने के बाद विराम हो इसलिए पहली...

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

[عربی متن] الفتح ویعتد بزمن التوقف من عدتها اه قلت یعنی اذا ظهر عدم حبلها یحکم بمضي العدة بثلاثة اشهر مضت ویکون زمن التوقف بعدها لغوا حتی لو تزوجت فیه صح عقدها و فی نفقات الفتح في الخلاصة عدة الصغیرة ثلاثة اشهر الا اذا کانت مراهقة فینفق علیها مالم یظهر فراغ رحمها کذا فی المحیط اه، من غیر ذکر خلاف وهو حسن اه کلام الفتح، لکن ینبغی الافتاء به احتیاطا قبل العقد بان لا یعقد علیها الا بعد التوقف لکن لم یذکروا مدة التوقف التی یظهر بها الحمل، وذکر فی الحامدیة عن بیوع البزازیة انه یصدق فی دعوی الحبل فی روایة اذا کان من حین شرائها اربعة اشهر وعشر لا اقل، وفی روایة بعد شهرین وخمسة ایام وعلیه عمل الناس اه ومشی فی الحامدیة علی الاخیرة وفیه نظر لان المراد من مسألتنا التوقف بعد مضی ثلثة اشهر فالا ولی الاخذ بالروایة الاولی فاذا مضت

[اردو متن] شمار ہوگی اور فتح میں ہے کہ توقف کا زمانہ بھی عدت میں شامل کیا جائے گا اھ قلت (میں کہتا ہوں) اگر حمل ظاہر نہ ہو تو گزشتہ تین ماہ کو عدت قرار دیا جائیگا اور ان تین ماہ کے بعد والا توقف بیکار ہوگا حتی کہ اگر اس نے تین ماہ کے بعد اور نکاح کرلیا تو وہ صحیح ہو گا اور فتح میں نفقات کی بحث میں خلاصہ سے منقول ہے کہ نابالغہ کی عدت تین ماہ ہے ہاں اگر وہ مراہقہ ہو تو پھر اس کو خاوند اس وقت تک نفقہ دیتا رہے گا جب تک رحم کا خالی ہونا واضح نہ ہوجائے، محیط میں یوں ہی مذکور ہے اھ اور اس میں اختلاف کو ذکر نہیں کیا، اور یہ بہتر کلام ہے، فتح کا کلام ختم ہوا، لیکن نکاح سے قبل اس پر فتوٰی مناسب ہے تاکہ توقف کے بغیر عدت کا فیصلہ نہ کر دیا جائے، لیکن یہاں فقہاء نے توقف کی عدت کو ذکر نہیں کیا وہ کتنی مدت ہے جس سے حمل ظاہر ہو سکے، حامدیہ میں مذکور ہوا کہ بزازیہ کے مسائل بیوع میں ہے کہ اگر لونڈی خریدی ہو تو ایک روایت کے مطابق مالک کے دعوٰی حمل کی تصدیق تب کی جائے گی جب

لونڈی کو خریدے ہوئے چار ماہ دس دن گزر چکے ہوں، اس سے کم مدت میں اس دعویٰ کی تصدیق نہ ہوگی، اور دوسری روایت میں ہے کہ دو ماہ پانچ دن کے بعد تصدیق ہوسکے گی جبکہ لوگوں کا عمل اسی پر ہے اھـ اور حامدیہ نے دوسری روایت پر عمل کیا ہے اور اس میں اعتراض ہے کہ ہماری بحث اس صورت میں ہے جب تین ماہ گزر جانے کے بعد توقف ہو لہذا پہلی

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

[Arabic Box] Four months and ten [days]. If pregnancy does not appear, it is known that the 'iddah (waiting period) expired when three months had passed. [End of summary from original text], and Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation in Box] It would be better to act upon the narration that when four months and ten days have passed and pregnancy is not apparent, it will be known that her 'iddah had passed when three months were completed. [End of summary], and Allah Almighty knows best. (T)

Problem 52: From Bengal, submitted by Maulvi Abdul Ghafoor Sahab, 19 Dhu al-Qi'dah 1319 AH. What do the scholars of religion say in a case where a minor is divorced or her husband dies, whether the marriage was consummated or not? According to Sharia, is there an 'iddah for her or not, and what is the age limit for being considered a minor? Explain and be rewarded.

Answer: The 'iddah for the death of the husband for a non-pregnant woman is absolutely four months and ten days, whether she is a minor or an adult, and whether the marriage was consummated (madkhula) or not. Regarding divorce, there is fundamentally no 'iddah for a woman whose marriage was not consummated, even if she is an adult. For a woman whose marriage was consummated—meaning one with whom seclusion (khalwah) occurred, even if it was 'flawed seclusion' (khalwah fasidah), or actual intercourse took place in an invalid marriage—the 'iddah for one who does not menstruate is three months. This applies whether she is a minor who has not yet started menstruating or an elderly woman (ayisah) past the age of menstruation. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Box] The 'iddah for one who does not menstruate due to childhood, such as not reaching nine [years], or due to old age, such as reaching the age of menopause, is three months if intercourse occurred in all cases, even if legally (hukman) like seclusion (khalwah), even if flawed. The 'iddah for death is four [months and ten days]... or for a scriptuary woman (Kitabiyyah) under a Muslim husband even if he is a slave. None are exempt from this except a pregnant woman. Seclusion in an invalid marriage does not necessitate 'iddah. [End of summary].

[Urdu Translation in Box] If menstruation does not occur because of childhood, as she is under nine years of age, or because of old age, as she has reached an advanced age due to which she no longer menstruates, then their 'iddah will be

three months, provided actual intercourse or legal (hukmi) seclusion has occurred, even if it was flawed seclusion. The death 'iddah is absolutely four months and ten days, whether the wife was a consort or not, even if she is a minor or a Kitabiyyah married to a Muslim, even if the Muslim is a slave; the ruling for death 'iddah is the same. Only a pregnant wife is excluded from this ruling, as her 'iddah ends upon childbirth. And in an invalid marriage, 'iddah does not become mandatory through seclusion. [End of summary] (T)

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on 'Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/201. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on 'Iddah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/56-255. 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on 'Iddah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/56-255.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

[अरबी बॉक्स] चार महीने और दस [दिन]। यदि गर्भावस्था दिखाई नहीं देती है, तो यह ज्ञात होता है कि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तीन महीने बीतने पर समाप्त हो गई थी। [मूल पाठ से सारांश], और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद] रिवायत पर अमल करना बेहतर होगा, तो जब चार महीने दस दिन गुज़र जाएँ और हमल (गर्भावस्था) ज़ाहिर न हो तो मालूम होगा कि उसकी इद्दत गुज़र चुकी है जब तीन माह पूरे हो चुके थे। [सारांश], और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 52: बंगाल से, मौलवी अब्दुल गफ़ूर साहब द्वारा पूछा गया, 19 ज़िलक़ादा 1319 हिजरी। दीन के उलेमा इस सूरत में क्या फरमाते हैं कि अगर एक नाबालिग (सगीरा) तलाकशुदा हो या उसका शौहर इंतकाल कर जाए, चाहे निकाह के बाद हमबिस्तरी (दुखूल) हुई हो या न हुई हो? शरीअत के मुताबिक उसके लिए इद्दत है या नहीं और नाबालिग होने की हद कहाँ तक है? बयान करें और सवाब पायें।

उत्तर: गैर-गर्भवती औरत के लिए शौहर की वफ़ात की इद्दत मुतलक़न (बिना शर्त) चार महीने दस दिन है, चाहे वह नाबालिग हो या बालिग (कबीरा), दुख़ूल (हमबिस्तरी) हुआ हो या न हुआ हो। और तलाक की इद्दत गैर-मदख़ूला (जिससे हमबिस्तरी न हुई हो) पर असल में है ही नहीं, चाहे वह बालिग हो। और मदख़ूला पर यानी जिससे खुलवत (एकांत) हुई हो, चाहे वह खुलवते फ़ासिदा (अमान्य एकांत) हो या निकाह-ए-फ़ासिद में हक़ीक़त में वती (संभोग) कर ली गई हो, ऐसी औरत के लिए जिसे हैज़ (माहवारी) न आता हो, इद्दत तीन महीने है, चाहे वह नाबालिग हो जिसे अभी हैज़ आया ही नहीं या बूढ़ी (आयसा) कि अब हैज़ की उम्र न रही। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी बॉक्स] उस स्त्री की इद्दत जिसे बचपन के कारण हैज़ नहीं आता, जैसे कि नौ साल की नहीं हुई, या बुढ़ापे के कारण जैसे कि रजोनिवृत्ति की उम्र तक पहुँच गई है, तीन महीने है यदि सभी स्थितियों में वती (संभोग) हुई हो, भले ही वह हुक्मन (कानूनी रूप से) हो जैसे कि खुलवत भले ही वह फासिदा हो। और मृत्यु की इद्दत चार [महीने दस दिन] है... या किसी मुस्लिम के अधीन किताबी औरत, चाहे वह गुलाम ही क्यों न हो। गर्भवती को छोड़कर कोई भी इस हुक्म से बाहर नहीं है। निकाह-ए-फासिद में खुलवत से इद्दत वाजिब नहीं होती। [सारांश] ।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद] बचपन की वजह से हैज़ न आता हो क्योंकि वह अभी नौ साल से कम उम्र है या बुढ़ापे की वजह से कि वह उम्र दराज़ हो गई है जिसकी वजह से उसे हैज़ नहीं आता, तो उनकी इद्दत तीन माह होगी जबकि हक़ीक़तन वती या हुक्मन यानी खुलवत हो चुकी हो, चाहे खुलवते फ़ासिदा हो। और मौत वाली की इद्दत मुतलक़न चार माह दस दिन है, चाहे बीवी मदख़ूला हो या गैर-मदख़ूला, चाहे वह नाबालिग हो या किताबी औरत जो मुसलमान के निकाह में हो, चाहे मुसलमान गुलाम हो, मौत की इद्दत का यही हुक्म है। इस हुक्म से सिर्फ हामिला (गर्भवती) बीवी बाहर है, क्योंकि उसकी इद्दत वज़-ए-हमल (बच्चे की पैदाइश) है। और निकाह-ए-फ़ासिद में खुलवत से इद्दत वाजिब नहीं होती। [सारांश] (त)

पाद टिप्पणियाँ: 1. रद-उल-मुहतार, बाबू-ल-इद्दत, दार-ए-एहया-उल-तुरास-उल-अरबी, बेरूत, 2/201 2. दुर्रे मुख्तार, बाबू-ल-इद्दत, मतबअ मुजतबाई, दिल्ली, 1/56-255 3. दुर्रे मुख्तार, बाबू-ल-इद्दत, मतबअ मुजतबाई, दिल्ली, 1/56-255

पृष्ठ 293 / 688

اربعة اشهر وعشرو لم یظهر الحبل علم ان العدة انقضت من حین مضی ثلثة اشهر ۱ اه ملتقطاً، واللہ تعالی اعلم۔ روایت پر عمل بہتر ہوگا، تو جب چار ماہ دس دن گزر جائیں اور حمل ظاہر نہ ہو تو معلوم ہوگا کہ اس کی عدت گزر چکی ہے جب تین ماہ پورے ہو چکے تھے اہ ملتقطاً، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۵۲: از بنگالہ مسئولہ مولوی عبد الغفور صاحب ۱۹ ذیقعدہ ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ صغیرہ مطلقہ ہو یا متوفیہ الزوج مدخولہ ہو یا غیر مدخولہ شرعاً اس کے لئے عدت ہے یا نہیں اور حد صغر کہاں تک ہے؟ بینواتوجروا (بیان کرکے اجر حاصل کرو)

الجواب: وفات کی عدت عورت غیر حامل پر مطلقاً چار مہینے دس دن ہے خواہ صغیرہ ہو یا کبیرہ، مدخولہ ہو یا غیر مدخولہ اور طلاق کی عدت غیر مدخولہ پر اصلاً نہیں اگرچہ کبیرہ ہو اور مدخولہ پر یعنی جس سے خلوت واقع ہوئی اگرچہ خلوت فاسد ہو یا نکاح فاسد میں حقیقۃً وطی کر لی غیر حیض والی کے لئے تین مہینے ہیں خواہ صغیرہ ہو کہ ابھی حیض آیا ہی نہیں یا کبیرہ آئسہ کہ اب عمر حیض کی نہ رہی۔ درمختار میں ہے:

العدة في حق من لم تحض لصغر بان لم تبلغ تسعاً او کبر بان بلغت سن الایاس ثلثة اشهر ان وطئت في الکل ولو حکماً کالخلوة ولو فاسدة والعدة للموت اربعة او کتابیة تحت مسلم ولو عبداً فلم یخرج عنها الا الحامل ۲ والخلوة في النکاح الفاسد لا توجب العدة ۳ اه ملتقطاً۔

بچپن کی وجہ سے حیض نہ آتا ہو کہ وہ ابھی نو سال سے کم عمر ہے یا بڑھاپے کی وجہ سے کہ وہ عمر رسیدہ ہو گئی ہے جس کی وجہ سے وہ حیض والی نہیں ہے تو ان کی عدت تین ماہ ہوگی

جبکہ حقیقۃً وطی یا حکماً یعنی خلوت ہو چکی ہو، اگرچہ خلوت فاسدہ ہو، اور موت والی کی عدت مطلقاً چار ماہ دس دن ہے بیوی مدخولہ ہو یا غیر مدخولہ اگرچہ نابالغہ ہو یا کتابیہ مسلمان کے نکاح میں اگرچہ مسلمان غلام ہو موت کی عدت کا یہی حکم ہے اس حکم سے صرف حاملہ بیوی خارج ہے کہ اس کی عدت وضع حمل ہے، اور فاسد نکاح میں خلوت سے عدت واجب نہیں ہوتی اہ ملتقطا (ت)

۱ رد المحتار باب العدۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۰۱ ۲ درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۵۶-۲۵۵ ۳ درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۵۶-۲۵۵

جلد سیزدہم (Volume 13), ۱۳ (Page 13), فتاوی رضویہ (Fatawa Rizvia)

The minimum age for a female is up to 9 years; youth never occurs before this. After this, up to 15 years, there is a possibility. If signs of puberty like menstruation, nocturnal emission, or pregnancy are found, she is considered mature (Baligha). Otherwise, when she completes 15 years of age, she will be decreed as having reached youth even if no signs are apparent. This is according to the Fatwa as mentioned in Ad-Durr and other esteemed books (This is what was said and the fatwa is based on it, as in Ad-Durr and other famous books. T). And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best.

Problem 53: From Thakurdwara, district Moradabad, Bazarganj, sent by Najibullah Sahib Attar, 9 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this case: a man kicked his wife out of his house and said, "I will not keep you," to the extent that the woman, in order to frighten her husband, attempted suicide and was fined thirty rupees by the court for the crime of attempted suicide. Her husband had no concern; rather, he stated in court, "I have left the woman, I have no interest in her." Since that day, the woman has been with another man. Her husband was told several times to divorce his woman, but he says, "I don't know about divorce; I left her five years ago." Is her marriage now valid with the other man she is living with or not?

The Answer: If he truly said those words in court, "I have left her," then the divorce took place at that very moment. From that time, if three menstrual cycles have started and ended, she can marry elsewhere. If they haven't finished yet, she can marry after they finish. Living as she is currently among relatives is forbidden (Haram). As for his statement "I left her five years ago," it is not considered unless he had previously said the word "left" in court five years ago, then the Iddah (waiting period) would start from then. In short, from whichever moment the words were spoken, three menstrual cycles must start and end. Without this, marriage elsewhere is forbidden (Haram). And Allah Almighty knows best.

Problem 54: From Mewandi post office Shahi, district Bareilly, sent by Syed Amir Alam Hasan Sahib, 16 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say about this issue: what is the waiting period (Iddah) for a wife and for a divorcee?

The Answer: The waiting period for a pregnant woman is until delivery, whether she is a divorcee or a widow. For a non-pregnant widow, if the husband died on the first

night or first date of any lunar month, even if at the time of Asr, the period is four months and ten days, meaning four lunar months and then...

जिल्द 13, 13, फतावा रज़विया

औरत के लिए छोटी उम्र की हद 9 साल की उम्र तक है, इससे कम उम्र में जवानी हरगिज़ नहीं होती। इसके बाद 15 साल की उम्र तक संभावना है। अगर यौवन के लक्षण जैसे मासिक धर्म का आना, स्वप्नदोष या गर्भ ठहरना पाया जाए तो वह बालिग़ है, वरना जब 15 साल पूरे हो जाएंगे तो जवानी का हुक्म दे देंगे, चाहे कोई लक्षण ज़ाहिर न हों। यह 'अलैहिल फ़तवा' (जिस पर फतवा है) के अनुसार है जैसा कि 'अद-दुर' आदि मशहूर किताबों में है। (यही कहा गया और इसी पर फतवा है जैसा कि दर आदि मशहूर किताबों में है। त) और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसला 53: ठाकुरद्वारा, जिला मुरादाबाद, बाज़ारगंज से, प्रेषक नजीब उल्लाह साहब अत्तार, 9 शव्वाल 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को अपने घर से निकाल दिया और कह दिया कि "तुझे नहीं रखता", यहाँ तक कि उस महिला ने अपने पति को डराने के उद्देश्य से आत्महत्या का प्रयास किया और अदालत ने आत्महत्या के अपराध में महिला पर तीस रुपये का जुर्माना लगाया। उसके पति को कोई सरोकार नहीं था, बल्कि उसने अदालत में बयान दिया कि "मैंने औरत को छोड़ दिया, मुझे उससे कोई मतलब नहीं।" उस दिन से वह औरत दूसरे मर्द के पास है। उसके पति से कई बार कहा गया कि अपनी औरत को तलाक दे दे, वह कहता है "मैं तलाक को नहीं जानता, मैंने उसे पाँच साल पहले छोड़ दिया था।" अब दूसरे आदमी के साथ निकाह, जिसके साथ वह रह रही है, जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): अगर वाकई अदालत में उसने वे शब्द कहे कि "मैंने उसे छोड़ दिया", तो उसी समय से तलाक हो गया। उस समय से अगर तीन मासिक धर्म (हैज़) शुरू होकर खत्म हो गए तो वह दूसरी जगह निकाह कर सकती है, और अगर अभी खत्म नहीं हुए तो जब खत्म हो जाएं उसके बाद कर सकती है। और इस तरह जो रिश्तेदारों के यहाँ रहती है, यह हराम है। और उसने जो कहा कि "पाँच साल से छोड़ चुका हूँ", इसका ऐतबार (भरोसा) नहीं है। अगर अदालत में "छोड़ने" का शब्द पाँच साल पहले कहा था, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तब से है, और अगर यह शब्द पाँच साल पहले कहने की बात पहले कही थी तो तब से है। संक्षेप में, जिस समय शब्द कहे गए उसके बाद तीन मासिक धर्म शुरू होकर खत्म होना ज़रूरी है, इसके बिना दूसरी जगह निकाह हराम है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 54: मियोंडी डाकखाना शाही, जिला बरेली से, प्रेषक सैयद अमीर आलम हसन साहब, 16 शव्वाल 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि पत्नी की इद्दत कितनी है और तलाकशुदा की कितनी?

अल-जवाब (उत्तर): गर्भवती महिला की इद्दत प्रसव (बच्चे का जन्म) है, चाहे वह तलाकशुदा हो या विधवा। और गैर-गर्भवती विधवा की इद्दत, अगर पति किसी महीने की पहली रात या पहली तारीख को मरा हो, चाहे वह असर के समय ही क्यों न हो, चार महीने दस दिन है, यानी चार चाँद (महीने) और उसके बाद...

عورت کے لئے حد صغر ۹ سال کی عمر تک ہے اس سے کم عمر میں جوانی ہر گز نہیں ہوتی، اس کے بعد ۱۵ سال کی عمر تک احتمال ہے اگر آثارِ بلوغ حیض آنا یا احتلام ہونا یا حمل رہ جانا پایا جائے تو بالغہ ہے ورنہ جب ۱۵ سال کامل کی عمر ہوجائے گی جوانی کا حکم کر دیں گے اگرچہ آثار کچھ ظاہر نہ ہوں یہ بہ قول علیہ الفتوی کما فی الدر وغیرہ من الاسفار الغر (یہی کہا اور اسی پر فتوی ہے جیسا کہ در وغیرہ مشہور کتب میں ہے۔ ت) واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۳: از ٹھاکر دوارہ ضلع مراد آباد بازار گنج مرسلہ نجیب اللہ صاحب عطار ۹ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارہ میں کہ ایک عورت کو اس کے خوند نے اپنے گھر سے نکال دیا اور کہہ دیا کہ تجھ کو نہیں رکھتا، یہاں تک کہ اس عورت نے اپنے خاوند کے ڈرانے کی غرض سے خودکشی کا قصد کیا اور کچہری سے بجرم خود کشی تیس روپیہ جرمانہ عورت پر ہوئے، اس کے خاوند کو کچھ سروکار نہ ہوا بلکہ کچہری میں بیان کیا کہ میں نے عورت کو چھوڑ دیا مجھ سے کچھ غرض نہیں، اس روز سے وہ عورت دوسرے مرد کے پاس ہے، اس کے خاوند سے چند بار کہا گیا کہ عورت اپنی کو طلاق دے، وہ کہتا ہے میں طلاق کو نہیں جانتا میں نے عرصہ پانچ سال کا ہوا چھوڑ دیا۔ اب نکاح دوسرے آدمی کے ساتھ جس کے ساتھ وہ رہتی ہے جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر واقعی کچہری میں اس نے وہ الفاظ کہے کہ "میں نے اس کو چھوڑ دیا" تو اسی وقت سے طلاق ہو گئی، اس وقت سے اگر تین حیض شروع ہو کر ختم ہو گئے تو دوسری جگہ نکاح کر سکتی ہے اور اگر ابھی ختم نہ ہوئے تو جب ختم ہو جائیں اس کے بعد کر سکتی ہے اور یوں جو عزیزوں کے یہاں رہتی ہے یہ حرام ہے، اور وہ جو اس نے کہا "پانچ برس سے چھوڑ چکا ہوں"

اس کا اعتبار نہیں اگرچہ کچہری میں "چھوڑنے" کا لفظ پہلے کہا تھا تو جب سے عدت ہے اور اگر یہ لفظ پانچ برس سے چھوڑنے کا پہلے کہا تھا تو جب سے ہے غرض جو لفظ کہا ہو اس کے بعد تین حیض شروع ہو کر ختم ہونا درکار ہے بغیر اس کے دوسری جگہ نکاح حرام ہے، وھو تعالی اعلم۔

مسئلہ ۵۴: از میونڈی ڈاکخانہ شاہی ضلع بریلی مرسلہ سید امیر عالم حسن صاحب ۱۶ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عدت بیوی کی کتنی ہے اور مطلقہ کی کتنی؟

الجواب: حاملہ کی عدت وضع حمل ہے مطلقہ ہو یا بیوہ، اور غیر حاملہ بیوہ کی عدت اگر خاوند کسی مہینے کی پہلی شب یا پہلی تاریخ میں مرا اگر چہ عصر کے وقت، چار مہینے دس دن ہیں یعنی چار ہلال اور ہو کر اس

...on the fifth lunar month, ten full days should pass according to the time of the husband's death. If he died on any date other than the first, then one hundred and thirty (130) full days should be taken. If the divorcee is menstruating, then three menstrual cycles should begin and finish after the divorce. If she is a minor who hasn't reached puberty or an elderly woman past the age of menstruation, then the waiting period (Iddah) is three months. And Allah Almighty knows best.

Problem 55: From City, 1st Zil-Qa'dah 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a girl was married off while being a minor. Since the girl was not physically ready for that boy, he inflicted all sorts of hardships on her? The girl's parents kept her at their house. The boy gathered the community four times and said, "I will give her a divorce," but the community restrained him. Now that he has married again, the community got him to give the divorce. In such a situation, will the waiting period (Iddah) be counted or not?

The Answer: If the girl was capable of sexual intercourse, even if not specifically with that man, and valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha) had occurred, then Iddah is mandatory; otherwise, it is not. And Allah Almighty knows best.

Problem 56: Maulana Hafiz Hashmat Ali Sahib Lucknawi, student of Madrasa Ahl-e-Sunnat, Bareilly, 10th Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: Zaid divorced his wife Hindah due to her misconduct. After the divorce, Hindah lived with Amr and became pregnant by Amr. After the days of Iddah had passed, Amr married Hindah. After the marriage, Amr found out that Hindah is pregnant by him. Is this marriage valid? And what is the duration of the waiting period for marriage after divorce?

The Answer: The waiting period (Iddah) for divorce for a menstruating woman is three menstrual cycles that start and end after the divorce. For those who have not yet menstruated or have passed the age of menstruation, it is three months. For a pregnant woman, it is until delivery (childbirth). These commands are explicitly stated in the Great Quran. As for Amr having a relationship with her before the Iddah and she becoming pregnant as per the questioner's statement, what Iddah days did she observe? Her Iddah was three menstrual cycles, and a pregnant woman does not menstruate. The Iddah for a pregnant woman is delivery, and delivery has not happened yet. Therefore, this marriage is invalid (fasid). It is mandatory for the man to separate from the woman immediately and wait. If this child is born within two

years of the husband's divorce, then it belongs to the husband, and now she is out of her Iddah and marriage with her is possible. If born after two years, it is not the husband's, and now marriage will be valid in any case. And Allah Almighty knows best.

पृष्ठ 13 | फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

...पांचवें चाँद पर शौहर की वफ़ात के वक़्त के ऐतबार से दस दिन कामिल और गुज़र जाएँ और पहली तारीख के सिवा और किसी तारीख में मरा तो एक सौ तीस (130) दिन कामिल लिए जाएँ। और मुतलक़ा (तलाकशुदा) अगर हैज़ (माहवारी) वाली है तो बाद-ए-तलाक तीन हैज़ शुरू होकर ख़त्म हो जाएँ। और अगर सगीरा (नाबालिग) है कि अभी हैज़ नहीं आता या कबीरा (बुज़ुर्ग) कि हैज़ आने की उम्र गुज़र गई, तो इद्दत तीन महीने है। वल्लाहु तआला आलम।

मसाला 55: अज़ शहर, 1 ज़ीक़ादा 1338 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक लड़की का निकाह नाबालिग़ी में कर दिया गया था, चूंकि लड़की उस लड़के के काबिल न थी लिहाज़ा उसने हर तरह की तकलीफ़ें पहुँचाईं? लड़की के वालिदैन ने उसे अपने घर रख लिया। उस लड़के ने चार बार बिरादरी को जमा करके कहा कि मैं तलाक़ दे दूँ लेकिन बिरादरी ने उसे रोके रखा। अब जबकि उसने दूसरा निकाह कर लिया तो बिरादरी ने तलाक़ दिलवा दी, तो ऐसी सूरत में इद्दत मोतबर (मान्य) होगी या नहीं?

अल-जवाब: अगर लड़की जिमा (यौन संबंध) के काबिल थी अगरचे ख़ास उस मर्द के काबिल न हो और खलवत-ए-सहीहा (एकांत) हो चुकी थी तो इद्दत लाज़िम है वरना नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसाला 56: मौलाना हाफ़िज़ हशमत अली साहब लखनवी, तालिब-ए-इल्म मदरसा अहल-ए-सुन्नत बरेली, 10 मुहर्रम 1339 हिजरी। उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी ज़ौजा (पत्नी) हिंदा को उसके बदचलन होने की वजह से तलाक़ दे दी। हिंदा तलाक़ के बाद अम्र के पास रही और हिंदा को अम्र से हमल (गर्भवस्था) रह गया। अम्र ने हिंदा के साथ इद्दत के दिन गुज़रने के बाद निकाह कर लिया और निकाह के बाद अम्र को पता चला कि हिंदा को मुझ से हमल है। क्या यह निकाह जायज़ है? और यह कि तलाक़ के बाद निकाह के लिए इद्दत का ज़माना क्या है?

अल-जवाब: तलाक़ की इद्दत हैज़ वाली के लिए तीन हैज़ हैं जो तलाक़ के बाद शुरू होकर ख़त्म हो जाएँ और जिसे हैज़ अभी नहीं आया या हैज़ की उम्र से गुज़र चुकी उसके लिए तीन महीने, और हमल वाली के लिए वज़अ-ए-हमल (बच्चे की पैदाइश)। ये अहकाम क़ुरआन-ए-अज़ीम में मनसूस (स्पष्ट वर्णित) हैं। और अम्र ने जो इद्दत से पहले उससे ताल्लुक़ किया और बयान के मुताबिक़ उससे हमल रह गया, तो वे कौन से इद्दत के दिन थे जो उसने गुज़ारे? उसकी इद्दत तीन हैज़ थे, और हामिला

(गर्भवती) को हैज़ आता नहीं, और हामिला की इद्दत वज़अ-ए-हमल है, और अभी वज़अ-ए-हमल हुआ नहीं। यह निकाह फ़ासिद (अमान्य) हुआ, उस पर फ़र्ज़ है कि औरत को फ़ौरन अलग कर दे और इंतज़ार किया जाए। अगर यह बच्चा शौहर की तलाक़ से दो साल के अंदर पैदा हो तो शौहर ही का है और अब वह इद्दत से निकली, उससे निकाह हो सकता है। और अगर दो साल के बाद पैदा हो तो शौहर का नहीं, अब निकाह हर हाल में जायज़ होगा। वल्लाहु तआला आलम।

पृष्ठ 295/688

پانچویں ہلال پر وقت وفات شوہر کے اعتبار سے دس دن کامل اور گزر جائیں اور پہلی تاریخ کے سوا اور کسی تاریخ میں مرا تو ایک سو تیس ۱۳۰ دن کامل لئے جائیں اور مطلقہ اگر حیض والی ہے تو بعد طلاق تین حیض شروع ہو کر ختم ہو جائیں اور اگر صغیرہ کہ ابھی حیض نہیں آتا یا کبیرہ کہ حیض آنے کی عمر گزر گئی تو عدت تین مہینے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۵: از شہر یکم ذیقعدہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کا نکاح نابالغی میں کر دیا تھا چونکہ لڑکی اس لڑکے کے قابل نہ تھی لہٰذا اس نے ہر طرح کی تکلیفیں پہنچائیں؟ لڑکی کے والدین نے اسے اپنے گھر رکھ لیا اس لڑکے نے چار بار برادریوں کو جمع کر کے کہا میں طلاق دے دوں لیکن برادریوں نے اسے باز رکھا، اب جبکہ اس نے دوسرا نکاح کر لیا تو برادریوں نے طلاق دلوا دی، تو ایسی صورت میں عدت معتبر ہوگی یا نہیں؟

الجواب: اگر لڑکی قابلِ جماع تھی اگرچہ خاص اس مرد کے قابل نہ ہو اور خلوتِ صحیحہ ہو چکی تھی عدت لازم ہے ورنہ نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۶: مولانا حافظ حشمت علی صاحب لکھنوی طالب علم مدرسہ اہلسنت بریلی ۱۰ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ ہندہ کو طلاق دے دی بوجہ اس کی بد چلنی کے۔ ہندہ طلاق کے بعد عمرو کے پاس رہی اور ہندہ کو عمرو سے حمل رہ گیا، عمرو نے ہندہ کے ساتھ بعد گزرنے ایامِ عدت نکاح کر لیا اور بعد نکاح عمرو کو اس بات کا علم ہوا کہ ہندہ کو مجھ سے حمل ہے، آیا یہ نکاح جائز ہے اور یہ کہ بعد طلاق، نکاح کے واسطے عدت کا زمانہ کیا ہے؟

الجواب: طلاق کی عدت حیض والی کے لئے تین حیض ہیں جو بعد طلاق شروع ہو کر ختم ہو جائیں، اور جسے حیض ابھی نہیں آیا یا حیض کی عمر سے گزر چکی اس کے لئے تین مہینہ اور حمل والی کے لئے وضع حمل۔ یہ احکامِ قرآنِ عظیم میں منصوص ہیں اور عمرو نے جو قبل عدت اس سے تعلق کیا اور حسب بیانِ سائل اس سے حمل رہ گیا تو وہ کون سے ایامِ عدت تھے جو اس نے گزارے، اس کی عدت تین حیض تھے، اور حاملہ کو حیض آتا نہیں، اور حاملہ کی عدت وضع حمل ہے، اور ابھی وضع حمل ہوا نہیں، یہ نکاح فاسد ہوا، اس پر فرض ہے کہ عورت کو فوراً الگ کر دے اور انتظار کیا جائے اگر یہ بچہ طلاقِ شوہر سے دو برس کے اندر پیدا ہو تو شوہر ہی کا ہے اور اب وہ عدت سے نکلی اس سے نکاح ہو سکتا ہے اور دو برس کے بعد پیدا ہو تو شوہر کا نہیں اب نکاح بہر حال جائز ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Rizvia Volume Thirteen 13

Problem 57: From Village Kesarpur, District Bareilly, asked by Khuda Bakhsh Ansari, 2 Rabi' al-Akhir 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's marriage was arranged with a widow. When the marriage took place, the community members gathered, and in their presence, the officiant (Aaqid) inquired whether there was any defect or dispute regarding this woman. Two individuals replied that there was none, she is a widow, and you should proceed with the marriage ceremony. Finally, the marriage discourse was concluded. Now, when the solitary meeting (Khalwat) took place at night, it was discovered that the woman is pregnant. Eventually, the police were informed. The police sub-inspector questioned the woman; she did not disclose whose pregnancy it was but named a person. The police handed her over to him. Several people in the community knew about this widow's condition but kept it hidden and did not reveal it. Now, according to the Noble Shari'ah, what is the ruling for the person in whose house that woman is, and what is the ruling for the officiant, the representative (Wakil), and the witnesses?

Answer: The questioner states that it has been a year and a half since the husband's death and the pregnancy seems to be from him. In this case, it is mandatory for the person who married her to keep the woman separate from himself in another house and wait for the child to be born. If the child is born within a full two years from the husband's death, then this marriage was absolute nullity, and those who were aware of the situation and participated in the marriage have committed a severe sin. After the child is born, this person can then marry her. And if more than two full years pass since the husband's death and then the child is born, then this marriage was valid, and there is no need for a remarriage; it will become permissible to touch her after the child is born. And Allah Almighty knows best.

Problem 58: From Jaleesar, District Etah, top of the fort, asked by Hakim Muhammad Ahsan Sahib, 4 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say about Hindah, who got married six months ago? After three months, her husband died, and they did not have a valid solitary meeting (Khalwat-e-Sahiha). She is still at her parents' house. There are two possibilities for the duration of the waiting period (Iddat) after death: either she is pregnant after death, or pregnancy is awaited. In any case, she is not pregnant, and her menstrual cycles are regular. The period of four months and ten days was solely for the purpose that pregnancy would manifest during this time. In this case, can she enter into a second marriage before the completion of the waiting period after death, or should she marry after four months and ten days have

passed? The waiting period for divorce is three menstrual cycles (Quru'); if they did not have a valid solitary meeting, she does not need three menstrual cycles, and she can remarry immediately after divorce. Similarly, is the situation of the case in question the same? Since she did not go to her husband's house and was not blessed with a valid solitary meeting, then what is the need for the waiting period after death? In any case, both situations are identical. Therefore, whatever the Shari'ah ruling is...

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह 13

मसला 57: मौज़िअ केसरपुर, ज़िला बरेली, मुस्तफ़सीर (पूछने वाले) ख़ुदा बख़्श अंसारी, 2 रबी-उल-आख़िर 1339 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद का निकाह एक बेवा औरत से मुक़र्रर हुआ, जिस वक़्त निकाह हुआ बिरादरी के लोग जमा हुए और उनके रूबरू आक़िद (निकाह पढ़ाने वाले) ने दरयाफ़्त किया कि इस औरत में कोई नक़्स या झगड़ा तो नहीं है, तो उसमें दो शख़्सों ने कहा कि कुछ नहीं बेवा है आप निकाह पढ़ा दें, आख़िर कलाम निकाह हो गया। अब जिस वक़्त शब को ख़लवत हुई तो मालूम हुआ कि औरत हामिला (गर्भवती) है, आख़िर पुलिस को ख़बर हो गई तो दारोग़ा-ए-पुलिस ने औरत से दरयाफ़्त किया, उसने जिसका हमल था उसको न बताया और किसी शख़्स का नाम ले दिया, पुलिस ने उसके सुपुर्द कर दिया, और अहल-ए-बिरादरी में कई शख़्स उस बेवा को जानते थे मगर पोशीदा रखा ज़ाहिर न किया, अब शरअ शरीफ़ से जिसके घर वो औरत है उसको क्या हुक्म है और आक़िद व वकील व शाहिदों के लिए क्या हुक्म है?

अल-जवाब: साईल का बयान है कि शौहर के इंतिक़ाल के डेढ़ बरस हुआ और हमल वहीं का मालूम होता है, इस सूरत में जिस शख़्स से उसका निकाह हुआ है उस पर लाज़िम है कि औरत को अपने से जुदा दूसरे मकान में रखे और बच्चा पैदा होने का इंतज़ार करे, अगर शौहर की वफ़ात से पूरे दो बरस के अंदर बच्चा पैदा हो जाए तो ये निकाह बातिल महज़ हुआ और जो लोग वाक़िफ़ हाल शरीक-ए-निकाह थे सख़्त गुनहगार हुए, बाद बच्चा पैदा होने के फिर ये शख़्स उससे निकाह कर सकता है, और अगर वफ़ात-ए-शौहर को दो बरस कामिल गुज़र जाएँ इसके बाद बच्चा पैदा हो तो ये निकाह सही हो गया दोबारा निकाह की हाजत नहीं, बच्चा पैदा होने के बाद उसे हाथ लगाना भी जाइज़ हो जाएगा। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 58: अज़ जलीसर ज़िला एटा बाल-ए-क़िला मसऊला हकीम मोहम्मद अहसन साहब 4 रमज़ान 1339 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन कि हिन्दा ने निकाह किया जिसको अब तक छह माह हुए, बाद तीन माह के उसका ख़ावंद मर गया और उसको ख़लवत-ए-सहीहा नहीं हुई अब तक अपने माँ-बाप के यहाँ है, मुद्दत-ए-इद्दत-ए-वफ़ात की दो सूरतें हैं, या वो बाद-ए-वफ़ात के हामिला है या हमल का इंतज़ार है, बहरहाल उसको हमल नहीं हुआ, नीज़ अयाम मामूल के आते हैं, मुद्दत चार माह दस दिन महज़ इस ग़रज़ से थी कि इस अर्सा में ज़ुहूर-ए-हमल हो जाएगा, इस सूरत में वो क़ब्ल अज़ इद्दत-ए-वफ़ात अक़्द-ए-सानी कर ले या बाद गुज़रने चार माह दस दिन के निकाह करे, इद्दत-ए-तलाक़ तीन क़ुरू (मासिक धर्म) हैं, अगर उसको ख़लवत-ए-सहीहा नहीं हुई तो उसको तीन

क़ुरू की ज़रूरत नहीं, बाद तलाक़ फ़ौरन अक़्द कर सकते हैं, अला हाज़ा सूरत-ए-मसऊला की शक्ल भी यही है, जबकि वो ख़ावंद के यहाँ नहीं गई और ख़लवत-ए-सहीहा नहीं नसीब हुई तो फिर इद्दत-ए-वफ़ात की क्या ज़रूरत है, बहरहाल दोनों सूरतें एक हैं, लिहाज़ा जो हुक्म शरअ...

فتاویٰ رضویہ جلد تیرہ دہم ۱۳

مسئلہ ۵۷: از موضع کیسر پور ضلع بریلی مسئولہ خدا بخش انصاری ۲ ربیع الآخر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا نکاح ایک بیوہ عورت سے مقرر ہوا، جس وقت نکاح ہوا برادری کے لوگ جمع ہوئے اور ان کے روبرو عاقد نے دریافت کیا کہ اس عورت میں کوئی نقص یا جھگڑا تو نہیں ہے تو اس میں دو شخصوں نے کہا کہ کچھ نہیں بیوہ ہے آپ نکاح پڑھا دیں، آخر کلام نکاح ہو گیا اب جس وقت شب کو خلوت ہوئی تو معلوم ہوا کہ عورت حاملہ ہے، آخر پولیس کو خبر ہو گئی تو داروغہ پولیس نے عورت سے دریافت کیا، اس نے جس کا حمل تھا اس کو نہ بتایا اور شخص کا نام لے دیا، پولیس نے اس کے سپرد کر دیا، اور اہلِ برادری میں کئی شخص اس بیوہ کو جانتے تھے مگر پوشیدہ رکھا ظاہر نہ کیا، اب شرع شریف سے جس کے گھر وہ عورت ہے اس کو کیا حکم ہے اور عاقد و وکیل و شاہدوں کے لئے کیا حکم ہے؟

الجواب: سائل کا بیان ہے کہ شوہر کے انتقال کے ڈیڑھ برس ہوا اور حمل وہیں کا معلوم ہوتا ہے، اس صورت میں جس شخص سے اس کا نکاح ہوا ہے اس پر لازم ہے کہ عورت کو اپنے سے جدا دوسرے مکان میں رکھے اور بچہ پیدا ہونے کا انتظار کرے، اگر شوہر کی وفات سے پورے دو برس کے اندر بچہ پیدا ہو جائے تو یہ نکاح باطل محض ہوا اور جو لوگ واقف حال شریک نکاح تھے سخت گنہ گار ہوئے، بعد بچہ پیدا ہونے کے پھر یہ شخص اس سے نکاح کر سکتا ہے، اور اگر وفاتِ شوہر کو دو برس کامل گزر جائیں اس کے بعد بچہ پیدا ہو تو یہ نکاح صحیح ہو گیا دوبارہ نکاح کی حاجت نہیں، بچہ پیدا ہونے کے بعد اسے ہاتھ لگانا بھی جائز ہو جائے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۸: از جلیس ضلع ایٹہ بالائے قلعہ مسئولہ حکیم محمد احسن صاحب ۴ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ہندہ نے نکاح کیا جس کو اب تک چھ ماہ ہوئے، بعد تین ماہ کے اس کا خاوند مر گیا اور اس کو خلوتِ صحیحہ نہیں ہوئی اب تک اپنے ماں باپ کے یہاں ہے، مدتِ عدتِ وفات کی دو صورتیں ہیں، یا وہ بعدِ وفات کے حاملہ ہے یا حمل کا انتظار ہے، بہر حال اس کو حمل نہیں ہوا، نیز ایام معمولی آتے ہیں، مدت چار ماہ دس دن محض اس غرض سے تھی کہ اس عرصہ میں ظہور حمل ہو جائے گا، اس صورت میں وہ قبل از عدتِ وفات عقدِ ثانی کرلے یا بعد گزرنے چار ماہ دس دن کے نکاح کرے، عدت طلاق تین قروء ہیں، اگر اس کو خلوتِ صحیحہ نہیں ہوئی تو اس کو تین قروء کی ضرورت نہیں، بعد طلاق فوراً عقد کر سکتے ہیں، علی ہذا صورتِ مسئولہ کی شکل بھی یہی ہے، جبکہ وہ خاوند کے یہاں نہیں گئی اور خلوتِ صحیحہ نہیں نصیب ہوئی تو پھر عدتِ وفات کی کیا ضرورت ہے، بہر حال دونوں صورتیں ایک ہیں، لہٰذا جو حکم شرع

...is acceptable wholeheartedly. There must be some rational proof so that a distinction can be made between both cases. There is no Shariah issue that is not based on some principle. The command of reason is that for a woman who has not had intercourse, there is no need for a waiting period ('Iddah); then what is the need for waiting four months and ten days? "They shall wait for four months and ten days" [Quran 2:234] (They should restrain themselves for four months and ten days. t) The wait for four months and ten days is merely for the manifestation of pregnancy. So in this situation, there was neither seclusion nor pregnancy. Fatawa 'Alamgiri is full of most minor details; you can extract whatever detail you want from it. Perhaps this specific detail is mentioned in it, but there is an extreme need for rational proof. Explain and be rewarded. (t)

The Answer: Observing a waiting period of four months and ten days is obligatory for her. Before this, marriage, or even talk of marriage, is prohibited. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

وللموت اربعة اشهر و عشرا مطلقاً وطئت اولا ولو صغيرة او كتابية تحت مسلم ولو عبد افلم يخرج عنها الا الحامل	**The waiting period for death is absolutely four months and ten days, whether the wife has had intercourse or not, even if she is a minor or a Kitabiyah (Woman of the Book) married to a Muslim free man or a Muslim slave. Only the ruling for a pregnant woman is different, as her waiting period is childbirth. (t)**

One should not question Divine commands. "Islam is to bow the neck, not to open the tongue with audacity." (Islam is to submit the head, not to speak up with boldness. t). Many Divine commands are devotional ('ta'abbudi'), and even those that have a rational meaning, their wisdom does not reach the understanding of people like me and you. Why are there two rak'ats for Fajr, three for Maghrib, and four each for the rest? For knowing the emptiness of the womb, one menstruation was enough; if three were kept as a precaution, then why for the waiting period of death was it changed from menstruations to four months and ten additional days? In short, opening the door to such absurd questions is closing the door to knowledge and blessings. The grandeur of a Muslim is this:

سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ	**We heard and we obeyed, we seek Your forgiveness, and to You is the return. (t)**

1. Al-Quran al-Karim 2/234
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Iddah, Mujtabai Press, Delhi 1/256
3. Al-Quran al-Karim 2/285

फतावा रजविया जिल्द तेरहवीं | १३

...यह सिर-आँखों पर है। कोई तार्किक प्रमाण ज़रूर होना चाहिए ताकि दोनों स्थितियों में अंतर किया जा सके। कोई शरीयत का मसला ऐसा नहीं है जो किसी सिद्धांत पर आधारित न हो। तर्क का आदेश तो यही है कि जिस स्त्री से संभोग नहीं हुआ, उसे इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की आवश्यकता नहीं है। फिर चार महीने दस दिन प्रतीक्षा करने की क्या आवश्यकता है? "वे अपने आप को चार महीने और दस दिन रोके रखें" (त)। केवल गर्भ के प्रकटीकरण के लिए चार महीने दस दिन की प्रतीक्षा है। तो इस स्थिति में न तो एकांत था और न ही गर्भ। फतावा आलमगीरी अधिकांश उप-विवरणों (जुज़ियात) से भरा हुआ है; आप इसमें जो चाहें उप-विवरण निकाल सकते हैं। शायद इसमें इस विशेष उप-विवरण का उल्लेख हो, लेकिन तार्किक प्रमाण की अत्यधिक आवश्यकता है। बयान करें, पुण्य (अज्र) पाएँ। (त)

उत्तर: उस पर चार महीने दस दिन की इद्दत फ़र्ज़ (अनिवार्य) है। इससे पहले निकाह, बल्कि निकाह की बातचीत भी हराम है। दुर्रे मुख्तार में है:

وللموت اربعة اشهر و عشرا مطلقاً وطئت اولا ولو صغيرة او كتابية تحت مسلم ولو عبد افلم يخرج عنها الا الحامل

मृत्यु की इद्दत पूर्ण रूप से चार महीने दस दिन है, चाहे पत्नी मदख़ूला (जिसके साथ संभोग हुआ हो) हो या ग़ैर-मदख़ूला, चाहे वह नाबालिग हो या किताबिया, किसी आज़ाद मुसलमान के निकाह में हो या मुसलमान गुलाम के निकाह में। केवल गर्भवती का नियम इससे अलग है कि उसकी इद्दत प्रसव (बच्चे का जन्म) है। (त)

ईश्वरीय आदेशों में चू-ओ-चरा (सवाल-जवाब) नहीं करते। इस्लाम गर्दन झुका देना है, न कि ज़बान निर्भीकता से खोलना। (इस्लाम, सिर झुका लेना है न कि दिलेरी से बोलना। त)। बहुत से ईश्वरीय आदेश 'तअ़ब्बुदी' (भक्तिपरक) होते हैं और जिनके अर्थ समझ में आते हैं, उनकी हिकमतें (बुद्धिमत्ता) भी मेरे और आपके जैसे लोगों की समझ में नहीं आतीं। सुबह की दो, मग़रिब की तीन, बाक़ी की चार-चार रकअतें क्यों हैं? गर्भाशय की सफ़ाई (बरात-ए-रहम) जानने के लिए एक मासिक धर्म पर्याप्त था, यदि सावधानी के तौर पर तीन रखे गए, तो वफ़ात (मृत्यु) की इद्दत को मासिक धर्म से बदलकर चार महीने दस दिन और अधिक क्यों फ़रमाया गया? संक्षेप में, ऐसे बेतुके सवालों का दरवाज़ा खोलना ज्ञान और बरकतों का दरवाज़ा बंद करना है। एक मुसलमान की शान यह है:

سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ **हमने सुना और आज्ञा मानी, तेरी बख़्शिश के तलबगार हैं और तेरी तरफ़ ही लौटना है। (त)**

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/234
2. दुर्रे मुख्तार बाबुल इद्दह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/256
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/285

पृष्ठ 297/688

ہے وہ سر آنکھوں پر کوئی دلیل عقلی ضرور ہونی چاہئے تاکہ دونوں صورتوں میں تمیز ہوجائے کوئی مسئلہ شرعی ایسا نہیں جو کسی اصول پر مبنی نہ ہو عقل کا حکم تو یہی ہے کہ جو عورت ہمبستر نہ ہو اس پر عدت کی ضرورت نہیں پھر چار ماہ دس دن کے انتظار کی کیا ضرورت "یَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا"1 (وہ چار مہینے دس دن اپنے آپ کو روکے رہیں۔ت) محض ظہور حمل کے لئے چار ماہ دس دن کا انتظار ہے، سو صورت ہذا میں نہ خلوت نہ حمل فتاوٰی عالمگیری اکثر جزئیات سے مملو ہے جو جزئی چاہو اس میں نکال سکتے ہیں شاید اس میں اس خاص جزئی کا ذکر ہو لیکن دلیل عقلی کی از حد ضرورت ہے۔ بینوا توجروا (بیان کیجئے اجر پائیے۔ت)

الجواب: اس پر چار مہینے دس دن عدت فرض ہے اس سے پہلے نکاح بلکہ نکاح کی گفتگو بھی حرام ہے۔ درمختار میں ہے:

وللموت اربعة اشهر و عشرا	**موت کی عدت مطلقاً چار ماہ دس دن ہے بیوی مدخولہ ہو یا غیر**
مطلقاً وطئت اولا ولو صغيرة او	**مدخولہ اگرچہ نابالغہ ہو یا کتابیہ مسلمان آزاد کے نکاح میں ہو**
كتابية تحت مسلم ولو عبد افلم	**یا مسلمان غلام کے نکاح میں، صرف حاملہ کا حکم اس سے**
يخرج عنها الا الحامل	**علیحدہ ہے کہ اس کی عدت وضع حمل ہے (ت)**

احکام الٰہی میں چوں وچرا نہیں کرتے، الاسلام گردن نہادن نہ کہ زبان بجرات کشادن (اسلام، سر تسلیم خم کرنا ہے نہ کہ دلیری سے لب کشائی کرنا۔ت) بہت احکام الٰہیہ تعبدی ہوتے ہیں اور جو معقول المعنٰی ہیں ان کی حکمتیں بھی من وتو کی سمجھ میں نہیں آتیں۔ صبح کو دو، مغرب کی تین،

باقی کی چار چار رکعتیں کیوں ہیں، تعرف براءت رحم کے لئے ایک حیض کافی تھا تین اگر احتیاطاً رکھے گئے تو عدت وفات حیضوں سے بدل کر مہینہ دس دن اور زائد کیوں فرمائے گئے، غرض ایسے بیہودہ سوالوں کا دروازہ کھولنا علوم و برکات کا دروازہ بند کرنا ہے، مسلمان کی شان یہ ہے:

سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ3

ہم نے سنا اور اطاعت کی، تیری بخشش کے طلبگار ہیں اور تیری طرف ہی لوٹنا ہے (ت)

1 القرآن الکریم ۲/ ۲۳۴ 2 درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۶ 3 القرآن الکریم ۲/ ۲۸۵

Fatawa Razawiya Volume 13, Page 13

The purpose of a divorce notification is to establish the emptiness of the womb. If the emptiness of the womb is already known before privacy (khalwat), then why should there be an 'iddah (waiting period)? However, 'iddah following death is not just for that purpose; it is also a mourning for the husband's death. In this case, whether privacy occurred or not has no relevance. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box] It is not lawful for a woman who believes in Allah and the Last Day to mourn for any deceased person for more than three nights, except for her husband, for whom the mourning period is four months and ten days. 1. Narrated by al-Bukhari and Muslim from the Mother of the Believers Umm Habiba and Zaynab bint Jahsh (may Allah be pleased with them both). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 59: From the town of Kiryali, Tehsil Kharian, District Gujrat, Punjab, Post Office Sarai Aurangabad, asked by Ghulam Yasin Sahib, 11 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married his infant daughter named Musammat Noor Bano to a person named Amr, who is twenty-five years old. After the marriage, the mother of this infant girl left her in a house where Amr, the one married to Noor Bano, was present, and went outside. When the mother returned, Amr gave an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) to his infant wife. Did 'valid privacy' (khalwat-e-sahiha) take place or not? And is 'iddah mandatory for this divorced infant girl or not? And is she entitled to 'Mahr' (dowry) or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: Valid privacy did not occur, nor is 'iddah mandatory; half of the Mahr must be given. It is stated in Durr al-Mukhtar: "There is no 'iddah for the privacy of a 'Ratqa' (a woman physically incapable of intercourse)." (No 'iddah on privacy with an incapable wife - T). It is stated in Jami' al-Rumuz:

[Table] If he divorced her before consummation or after invalid privacy (khalwat-e-fasida), and the invalidity was due to his inability to perform intercourse... | If divorce was given before intercourse or after invalid privacy, for example, the husband is actually incapable of intercourse.

1. Sahih Muslim, Chapter on the Obligation of Mourning during the 'iddah of Death, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/486
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on 'Iddah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/255

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

तलाक़ की सूरत में 'बरअत-ए-रेहम' (गर्भ की शून्यता) का पता लगाने के लिए इद्दत होती है। यदि एकांत (खलवत) से पहले ही गर्भ की शून्यता ज्ञात हो, तो इद्दत क्यों हो? लेकिन मृत्यु के बाद की इद्दत का उद्देश्य केवल यही नहीं है, बल्कि पति की मृत्यु का शोक भी है। और इसमें एकांत होने या न होने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी बॉक्स] अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाली किसी भी महिला के लिए यह हलाल नहीं है कि वह अपने पति के अलावा किसी अन्य मृत व्यक्ति पर तीन दिन से अधिक शोक मनाए। पति की मृत्यु पर शोक की अवधि चार महीने दस दिन है। 1. इसे बुखारी और मुस्लिम ने उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा और ज़ैनब बिन्त जहश (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 59: कस्बा करयाली, तहसील खारियाँ, जिला गुजरात, पंजाब, डाकखाना सराय औरंगाबाद से, प्रेषक गुलाम यासीन साहब, 11 मुहर्रम 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी दुधमुँही बेटी मुस्मात नूर बानो का निकाह अम्र नाम के व्यक्ति से कर दिया जिसकी आयु पच्चीस वर्ष है। निकाह के बाद उस दुधमुँही बच्ची की माँ उसे एक घर में जहाँ अम्र (जिसके साथ नूर बानो का निकाह हुआ था) था, अम्र के साथ छोड़कर कहीं बाहर चली गई। जब बच्ची की माँ वापस आई, तो अम्र ने अपनी उस दुधमुँही पत्नी को 'तलाक़-ए-बाइन' (अटल तलाक़) दे दिया। क्या 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) सिद्ध हुआ या नहीं? और क्या इस तलाक़शुदा बच्ची पर इद्दत अनिवार्य हुई या नहीं? और क्या वह महर की हकदार हुई या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: 'खलवत-ए-सहीहा' नहीं हुई, और न ही इद्दत अनिवार्य हुई; आधा महर देना होगा। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: "ला इद्दता बि-खलवति रतक़ा" (अर्थात संभोग के लिए शारीरिक रूप से अक्षम पत्नी के साथ एकांत पर इद्दत नहीं है)। 'जामेउर रुमूज़' में है:

[तालिका] यदि संभोग से पहले या 'खलवत-ए-फासिदा' (दोषपूर्ण एकांत) के बाद तलाक़ दी हो और वह दोष पति के संभोग करने में वास्तविक अक्षमता के कारण हो... | यदि संभोग से पहले या दोषपूर्ण एकांत के बाद तलाक़ दी गई हो और दोष यह हो कि पति संभोग से वास्तव में अक्षम हो।

1. सहीह मुस्लिम, बाब वुजूबुल अज़ाद फी इद्दतुल वफ़ात, पुरानी कुतुब ख़ाना, कराची 1/486

2. दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली 1/255

पृष्ठ 298/688

صورتِ طلاقِ تعرف بر اءت رحم کے لیے ہے قبل خلوت بر اءت خود معلوم پھر عدت کیوں ہو اور عدتِ وفات میں صرف یہی مقصود نہیں بلکہ موت شوہر کا سوگ بھی۔ اور اس میں خلوت ہونے نہ ہونے کو کچھ دخل نہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لا یحل لامرأۃ تؤمن باللہ والیوم الآخر ان تحد علی میت فوق ثلث لیال الا علی زوج اربعۃ اشھر وعشرا ۱۔ اللہ اور آخرت پر ایمان رکھنے والی عورت کے لئے حلال نہیں کہ وہ خاوند کی موت کے بغیر کسی میت پر تین دن سے زائد سوگ کرے، صرف خاوند کے موت کے لئے چار مہینے دس دن سوگ ہے۔ اس کو بخاری اور مسلم نے ام المؤمنین ام حبیبہ اور زینب بنت جحش رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۵۹: از قصبہ کریا لی تحصیل کھاریاں ضلع گجرات پنجاب ڈاکخانہ سرائے اورنگ آباد مسئولہ غلام یسین صاحب ۱۱ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر شیر خوارہ مسماۃ نور بانو کا نکاح ہمراہ مسمّٰی عمرو جس کی عمر پچیس سال ہے کردیا، بعد نکاح کے اس دختر شیر خوارہ کو اس کی والدہ ایک مکان میں جہاں عمرو جس کے ساتھ مسماۃ نور بانو شیر خوارہ کا نکاح ہوا تھا مع عمرو کے چھوڑ کر کہیں باہر چلی گئی اس کے بعد جب والدہ شیر خوارہ واپس آئی عمرو نے اس شیر خوارہ منکوحہ خود کو طلاق بائن دے دی، آیا خلوتِ صحیحہ ثابت ہوئی یا نہ؟ اور اس مطلقہ شیر خوارہ پر عدت لازم ہوئی یا نہ اور مستحق مہر ہوئی یا نہ؟ بینوا توجروا

الجواب: خلوتِ صحیحہ نہ ہوئی، نہ عدت لازم آئی، نصف مہر دینا ہوگا، در مختار میں ہے: لا عدۃ بخلوۃ الرتقاء ۲ (ناقابلِ جماع بیوی کی خلوت پر عدت نہیں ہے۔ ت) جامع الرموز میں ہے:

لوطلقھا قبل الدخول او بعد الخلوۃ الفاسدۃ والفساد لعجزہ عن الوطی | اگر جماع سے پہلے یا خلوتِ فاسدہ کے بعد طلاق دی ہو اور فساد مثلاً یہ کہ خاوند وطی سے حقیقتاً عاجز ہو

۱ صحیح مسلم باب وجوب الاحداد فی عدۃ الوفاۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۸۶ ۲ در مختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۵

Fatawa Razawiya, Volume 13

[Box 1] Arabic: Haqiqatan lam tajib al-idda. Ah wa unzur ma katabna 'ala Radd al-Muhtar. Translation: In this situation, the 'Iddah (waiting period) will not be mandatory. End. See my marginalia on Radd al-Muhtar here. (T)

Issue 60: From the village of Deorniya, district Bareilly, posed by Inayat Hussain Sahib, 29 Rajab 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: is the Iddah of a divorced woman three months or more?

The Answer: If the divorced woman is pregnant, the Iddah ends with childbirth. If she is a minor or past the age of menstruation (menopause), the Iddah is three months. Otherwise, it is three menstrual cycles, whether they occur in two months or, for example, two years. And Allah Almighty knows best.

Issue 61: From the town of Mitranwali, Post Office Ghaghar Railway, district Gujranwala, sent by Mian Amir Ahmad Sahib, 7 Muharram al-Haram 1309 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: a man kept a divorced woman in his house for two years without marriage, and they even had children. Then the man died. His biological brother then married this woman without waiting for her Iddah to pass. Is Iddah mandatory for this woman or not? Some say there is no Iddah for adultery (zina), while others say she should stay for two years like a wife for purification of the womb (istibra-e-rahm), and Iddah is necessary. Explain and be rewarded.

The Answer: If both lived in one house like husband and wife and had mutual openness like a spouse, the man kept her like wives, and the woman stayed with him like wives, they will be considered husband and wife according to Sharia. To the extent that whoever saw them in this state, it is permissible for them to testify before a Sharia judge that they are husband and wife, even if they did not witness the marriage ceremony. It is stated in Hidayah:

[Box 2] Arabic: Idha ra'a rajulan wa imra'atan yaskunani baytan wa yanbasitu kullu wahidun minhuma ila al-akhir inbisat al-azwaj wasa'ahu an yash-hada annaha zawjatuhu. Translation: When a person sees a man and a woman living in one house and interacting with the informal ease of a husband and wife, it is permissible for that person to give testimony that they are husband and wife. (T)

1 Jami' al-Rumuz, Chapter of Iddah, Maktaba-e-Islamia, Gumbad Qamus Iran, 1/578.
2 Hidayah, Chapter on what the witness attains, Matba'-e-Yousufi, Lucknow, 3/158.

फतावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं

[बॉक्स 1] अरबी: हकीक़तन लम तजिब अल-इद्दह। अह व उन्ज़ुर मा कतबना अला रद्द अल-मुह्तार। अनुवाद: तो इस स्थिति में इद्दत लाज़िम (अनिवार्य) नहीं होगी। यहाँ रद्द अल-मुह्तार पर मेरा हाशिए (टिप्पणी) देखें। (त)

मसला 60: मौज़अ दियोरनिया, ज़िला बरेली से, मुस्तौ़ला इनायत हुसैन साहब, 29 रजब 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि तलाक़शुदा महिला की इद्दत तीन महीने होती है या उससे अधिक?

जवाब: तलाक़शुदा महिला यदि गर्भवती है तो इद्दत प्रसव (बच्चे के जन्म) तक है। और यदि वह नाबालिग है या वृद्धावस्था के कारण अब मासिक धर्म नहीं आता है, तो इद्दत तीन महीने है, अन्यथा तीन मासिक धर्म (हैज़) है, चाहे वे दो महीने में आएँ या उदाहरण के लिए दो वर्ष में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 61: क़स्बा मितरांवाली, डाकखाना घग्घर रेलवे, ज़िला गुजरांवाला से, प्रेषक मियाँ अमीर अहमद साहब, 7 मुहर्रमुल हराम 1309 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने एक तलाक़शुदा महिला को बिना निकाह के दो साल तक अपने घर में रखा, यहाँ तक कि उनसे संतान भी हुई। फिर वह व्यक्ति मर गया, तो उसके सगे भाई ने उस महिला के साथ बिना इद्दत गुज़ारे निकाह कर लिया। क्या इस महिला पर इद्दत लाज़िम है या नहीं? कुछ कहते हैं कि ज़िना (व्यभिचार) की कोई इद्दत नहीं होती और कुछ कहते हैं कि वह शौहर की तरह दो साल तक रहे ताकि गर्भ की शुद्धि (इस्तिबरा-ए-रहम) हो जाए, इसलिए इद्दत लाज़िम है। बयान कीजिए, पुण्य पाइए।

जवाब: यदि वे दोनों एक घर में पति-पत्नी की तरह रहते थे और उनमें आपस में पति-पत्नी जैसी बेतकल्लुफ़ी थी, पुरुष उसे पत्नियों की तरह रखता था और महिला उसके पास पत्नियों की तरह रहती थी, तो वे शरई तौर पर पति-पत्नी ही समझे जाएँगे। यहाँ तक कि जिसने उन्हें इस स्थिति में देखा, उसके लिए शरई काज़ी के सामने उनके पति-पत्नी होने की गवाही देना हलाल (जायज़) है, भले ही उसने निकाह होते हुए न देखा हो। हिदाया में है:

[बॉक्स 2] अरबी: इज़ा रआ रज़ुलन व इम्रअतन यस्कुननि बैतन व यनबसितु कुल्लु वाहिदुन मिन्हुमा इलल आखिर इंबिसात अल-अज़वाज वसअहु अन यश्ह-द अन्नहा ज़ौ़जतुहू। अनुवाद: जब कोई

व्यक्ति किसी पुरुष और महिला को एक मकान में रहते हुए और पति-पत्नी जैसी बेतकल्लुफ़ी के तौर पर दोनों को रहते हुए देखे, तो ऐसे व्यक्ति के लिए जायज़ है कि वह गवाही दे कि ये दोनों पति-पत्नी हैं। (त)

1 जामेउर रुमूज़, फ़स्ल अल-इद्दत, मकतब-ए-इस्लामिया, गुंबद क़ामूस ईरान, 1/578 2 हिदाया, बाब मा यतहासिलुहुश शाहिद, मतब-ए-यूसुफ़ी, लखनऊ, 3/158

[باکس 1] حقیقة لم تجب العدة 1 اھ وانظر ما کتبنا علی رد المحتار- تو اس صورت میں عدت لازم نہ ہوگی اھ یہاں ردالمحتار پر میرا حاشیہ دیکھو۔ (ت)

مسئلہ ۶۰ : از موضع دیور نیا ضلع بریلی مسئولہ عنایت حسین صاحب ۲۹ رجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مطلقہ عورت کی عدت تین ماہ ہو یا زائد؟ الجواب: مطلقہ اگر حاملہ ہو تو عدت وضع حمل ہے۔ اور اگر نابالغہ ہو یا کبر سن کے سبب اب حیض نہیں آتا تو عدت تین ماہ ہے ورنہ تین حیض خواہ دو مہینے ہوں یا مثلاً دو برس میں ۔ واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۶۱ : از قصبہ میترانوالی ڈاکخانہ گھگھر ریلوے ضلع گوجرانوالہ مرسلہ میاں امیر احمد صاحب ۷ محرم الحرام ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے عورت مطلقہ کو بلا نکاح دو سال تک اپنے گھر میں رکھا بلکہ اس سے اولاد بھی ہوئی پھر وہ شخص فوت ہو گیا تو اس کے برادر حقیقی نے اس عورت کے ساتھ بغیر عدت گزرے نکاح کر لیا اس عورت پر عدت لازم ہے یا نہیں؟ بعض کہتے ہیں کہ زنا کی کوئی عدت نہیں اور بعض کہتے ہیں وہ مثل عورت خاوند کے دو سال تک رہے واسطے استبراء رحم کے عدت لازم ہے بینوا توجروا (بیان کیجئے اجر پائیے) الجواب: اگر وہ دونوں ایک مکان میں مثل زن و شوہر رہتے اور باہم انبساط زوج وزوجہ رکھتے، مرد اسے بیویوں کی طرح رکھتا، عورت اس کے پاس ازواج کی مانند رہتی تو وہ دونوں شرعاً زوج وزوجہ ہی سمجھے جائیں گے یہاں تک کہ جس نے ان کی یہ حالت دیکھی اسے قاضی شرع کے حضور زن و شوہر ہونے پر گواہی دینی حلال اگرچہ نکاح ہوتے نہ دیکھا ہو، ہدایہ میں ہے :

[باکس 2] اذا رأی رجلاً وامرأۃ یسکنان بیتاً وینبسط کل واحد منھما الی الآخر انبساط الازواج وسعہ ان یشھد انھا زوجتہ 2۔ جب کوئی شخص مرد و عورت کو ایک مکان میں رہتے ہوئے اور خاوند بیوی والی بے تکلفی کے طور پر دونوں کو رہتے ہوئے دیکھے تو ایسے شخص کو جائز ہے کہ وہ شہادت دے کہ یہ دونوں خاوند بیوی ہیں (ت)

1 جامع الرموز فصل العدۃ مکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/۵۷۸ 2 ہدایہ باب مایتحصلہ الشاہد مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/۱۵۸

صفحہ 299 من 688

Fatawa Razawiyya - Volume 13

To consider the absence of marriage occurring before one's own eyes as the non-existence of marriage is a grave folly; it is a lack of knowledge, not knowledge of absence. There are countless husbands and wives in the world; were we all present at their marriage ceremonies? Then why do we consider them husband and wife? The pure Shariah considers suspicion to be strictly forbidden. And when they have been declared husband and wife according to Shariah, then marriage without the completion of the waiting period (iddah) is prohibited and forbidden by the explicit text of the Quran. To the extent that some scholars have stated that no ruling of marriage will apply to this contract at all, as knowingly marrying a woman in her waiting period from another man is completely void. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Table Header: Arabic Text | Urdu Meaning] Arabic: In 'Al-Bahr' from 'Al-Mujtaba', as for marrying a woman married to another or one in her waiting period (iddah) from another, then consummation within it does not necessitate iddah if he knew she belonged to another, because no one has spoken of its permissibility, so it did not conclude at all. Urdu: It is narrated from Mujtaba in Bahr that if one marries another's wife or a woman in her iddah from a divorce from another, iddah will not be mandatory after consummation, provided he knows she is another's wife or in iddah, because no one is in favor of the validity of this marriage, therefore this marriage did not conclude at all. (T)

Yes, if the aforementioned situation does not exist and their being an adulterer and adulteress is established, then certainly this marriage became valid because there is no prohibition in the Shariah regarding the 'water of zina' (the result of adultery), nor is there an iddah for zina upon the adulteress. To the extent that a woman who is pregnant from zina, it is permissible for a non-adulterer to marry her despite the pregnancy. However, since the pregnancy belongs to another, intercourse is forbidden until delivery. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Table Header: Arabic Text | Urdu Meaning] Arabic: The marriage with a woman pregnant from zina is valid even if intercourse with her is forbidden until she gives birth, so that he does not water another's crop with his own water. And Allah Subhanahu wa Ta'ala knows best. Urdu: Marriage with a woman pregnant from zina is permissible, although intercourse after marriage is forbidden until the birth of the child, so that he does not become one who waters another's field with his own water. And Allah Subhanahu wa Ta'ala knows best. (T)

Problem 62: From the city of Bareilly, 11th Ramadan al-Mubarak 1337 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: a woman became a widow; the widow went to her brother-in-law, and her sister was also present. The brother-in-law also married her to himself. Now, for several years, he has expelled this woman, and has not given her an apology etc. Now that woman wants to marry elsewhere; is the marriage permissible or not? The Answer: In the presence of the sister, marriage with the brother-in-law became forbidden, forbidden, strictly forbidden. The brother-in-law who expelled her, if any word...

---

1 Radd al-Muhtar, Bab al-Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/407 2 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/189

अपने सामने निकाह न होने को निकाह न होना समझ लेना सख्त बेवकूफी है; यह इल्म की कमी है, न कि अदम का इल्म। दुनिया में बेशुमार शौहर और बीवियां हैं; क्या हम सब उनके निकाह के वक्त मौजूद थे? फिर हम उन्हें निकाहशुदा और शौहर-बीवी क्यों समझते हैं? शरीयत-ए-मुतह्हरा बदगुमानी को सख्त हराम करार देती है। और जब वे शरई तौर पर मियाँ-बीवी करार दिए गए, तो इद्दत पूरी हुए बिना निकाह कुरान की आयत के अनुसार नाजायज़ और हराम है। यहाँ तक कि कुछ उलमा ने फ़रमाया कि इस अक़्द (अनुबंध) पर निकाह का कोई हुक्म लागू नहीं होगा, क्योंकि किसी दूसरे की मोअतदा (इद्दत वाली औरत) से जान-बूझकर निकाह करना पूरी तरह बातिल (अमान्य) है। रदुल मुह्तार में है:

[तालिका शीर्षक: अरबी इबारत | उर्दू तर्जुमा] अरबी: 'अल-बहर' में 'अल-मुजतबा' से रिवायत है कि जहाँ तक किसी दूसरे की निकाहशुदा औरत या किसी दूसरे की मोअतदा से निकाह का सवाल है, तो इसमें दुखूल (संभोग) से इद्दत वाजिब नहीं होगी बशर्ते कि उसे पता हो कि वह किसी दूसरे की है, क्योंकि इसकी जायज़ होने का कोई भी कायल नहीं है, इसलिए यह निकाह सिरे से हुआ ही नहीं। उर्दू: बहर में मुजतबा से नक़ल किया गया है कि किसी गैर की मनकूहा बीवी या गैर की मुतलक़ा इद्दत वाली से निकाह के बाद दुखूल से इद्दत लाज़िम न होगी, बशर्ते कि वह जानता हो कि यह गैर की मनकूहा या मोअतदा है, क्योंकि इस निकाह के जायज़ होने का कोई भी कायल नहीं है, लिहाज़ा यह निकाह ही असल में मुनअक़िद नहीं हुआ। (त)

हाँ, अगर ऊपर दी गई सूरत न हो और उनका ज़ानी और ज़ानिया (व्यभिचारी) होना साबित हो, तो बेशक यह निकाह सही हो गया क्योंकि ज़िना के पानी की शरीयत में कोई हुरमत नहीं है और न ही ज़ानिया पर ज़िना की कोई इद्दत है। यहाँ तक कि जिस औरत को ज़िना का हमल (गर्भ) हो, गैर-ज़ानी के लिए भी हमल के बावजूद उससे निकाह जायज़ है। अलबत्ता, चूंकि हमल किसी और का है, इसलिए बच्चे के पैदा होने तक हमबिस्तरी नाजायज़ है। दुर्रे मुख्तार में है:

[तालिका शीर्षक: अरबी इबारत | उर्दू तर्जुमा] अरबी: ज़िना से हामिला (गर्भवती) औरत के साथ निकाह सही है, अगरचे विलादत तक उससे सोहबत हराम है, ताकि वह अपने पानी से किसी दूसरे की खेती को न सींचे। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। उर्दू: ज़िना से हामिला औरत के साथ निकाह जायज़ है अगरचे निकाह के बाद वती (संभोग) हराम है जब तक कि बच्चे की

पैदाइश न हो जाए, ताकि वह गैर की खेती को अपने पानी से सैराब करने वाला न बने। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 62: शहर बरेली से, 11 रमज़ानुल मुबारक 1337 हिजरी उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: एक औरत बेवा हो गई; बेवा अपने बहनोई के पास गई और उसकी बहन भी मौजूद थी। बहनोई ने उसका भी निकाह अपने साथ कर लिया। अब कई साल से उस औरत को निकाल दिया है, तौबा-अस्तगफ़ार वगैरह नहीं किया। अब वह औरत दूसरी जगह निकाह करना चाहती है; निकाह जायज़ है या नहीं? अल-जवाब: बहन की मौजूदगी में बहनोई से निकाह हराम, हराम, सख्त हराम हुआ। बहनोई ने जो उसे निकाला, अगर कोई लफ्ज़...

---

1 रदुल मुह्तार, बाबुल इद्दत, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/407 2 दुर्रे मुख्तार, किताबुल निकाह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/189

اپنے سامنے نکاح نہ ہونے کو نکاح نہ ہونا سمجھ لینا سخت سفاہت ہے، عدم علم، علمِ عدم نہیں۔ دنیا میں بے شمار زوج وزوجہ ہیں کیا ہم سب کے عقد میں حاضر تھے۔ پھر ہم کیوں کر انہیں نکاح ومنکوحہ سمجھتے ہیں، شرع مطہر بد گمانی کو سخت حرام فرماتی ہے، اور جب وہ شرعاً زن و شوہر قرار دے گئے تو بے انقضائے عدت نکاح بنصِ قطعی قرآن ناجائز و حرام۔ یہاں تک کہ بعض علماء نے فرمایا کہ اس عقد پر اصلاً کوئی حکم نکاح مرتب نہ ہو گا کہ معتدہ غیر سے دانستہ نکاح کرنا باطل محض ہے۔ ردالمحتار میں ہے:

[جدول: عربی عبارت | اردو ترجمہ] عربی: فی البحر عن المجتبی اما نکاح منکوحۃ الغیر و معتدتہ فالدخول فیہ لا یوجب العدۃ ان علم انھا للغیر لانہ لم یقل احد بجوازہ فلم ینعقد اصلا اردو: بحر میں مجتبی سے منقول ہے کہ غیر کی منکوحہ بیوی یا غیر مطلقہ عدت والی سے نکاح کے بعد دخول سے عدت لازم نہ ہوگی بشر طیکہ وہ جانتا ہو کہ یہ غیر کی منکوحہ یا معتدہ ہے کیونکہ اس نکاح کے جواز کا کوئی بھی قائل نہیں ہے لہذا یہ نکاح ہی اصلا منعقد نہ ہوا۔ (ت)

ہاں اگر صورت مذکورہ نہ ہو اور ان کا زانی وزانیہ ہونا متحقق ہو تو بیشک یہ نکاح صحیح ہو گیا کہ زنا کے پانی کی شرع میں کوئی حرمت نہیں نہ زانیہ پر زنا کی عدت، یہاں تک کہ جس عورت کو زنا کا حمل ہو غیر زانی کو بھی باوجودِ حمل اس سے نکاح جائز ، البتہ ازانجا کہ حمل غیر ہے تا وضع حمل جماع ناجائز ہے، درمختار میں ہے:

[جدول: عربی عبارت | اردو ترجمہ] عربی: صح نکاح حبلی من زنا وان حرم وطؤھا حتی تضع لئلا یسقی ماءہ زرع غیرہ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔ اردو: زنا سے حاملہ عورت کے ساتھ نکاح جائز

ہے اگرچہ نکاح کے بعد وطی حرام ہے تاوقتیکہ بچے کی پیدائش ہو تاکہ غیر کی کھیتی کو اپنے پانی سے سیراب کرنے والا نہ بنے واللہ سبحنہ وتعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۶۲: از شہر بریلی ۱۱ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت رانڈ ہوگئی، رانڈ اپنے بہنوئی کے پاس گئی اور بہن بھی موجود تھی بہنوئی نے اس کا بھی نکاح اپنے ساتھ کر لیا، اب کئی سال سے اس عورت کو نکال دیا، استغفار وغیرہ نہیں دیا، اب وہ عورت اور جگہ نکاح کرنا چاہتی ہے، نکاح جائز ہے یا نہیں؟ الجواب: بہن کی موجودگی میں بہنوئی سے نکاح حرام حرام سخت حرام ہوا، بہنوئی نے کہ اس کو نکالا اگر کوئی لفظ

---

1 ردالمحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۴۰۷ 2 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۸۹

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Page 301 of 688

[He] had said such [words] at that time or afterwards, from which his resolve could be understood that now he will never keep this woman. And after saying these words, if the woman's three menstrual cycles have started and ended, she can marry elsewhere. And if such words are not proven, then now the woman should say, 'I have rejected this marriage which was done with my brother-in-law,' after which she can observe her menses and then marry another. In Durr al-Mukhtar it is stated:

Arabic Text	Translation
مبدؤها فی النکاح الفاسد بعد التفریق اواظهار العزم علی ترك وطئها[1]۔	The beginning of the waiting period (Iddat) of an invalid marriage (Nikah-e-Fasid) is after separation or after the husband himself leaves (Mutaraka). 'Leaving' means the husband has expressed his resolve to cease sexual intercourse with the woman. (T)

In the same [book] it is stated:

Arabic Text	Translation
ویثبت لکل واحد منهما فسخه ولو بغیر محضر من صاحبه دخل بها اولا فی الاصح[2]۔	Both the husband and wife have the option to annul (Faskh) an invalid marriage; both have this option even in the absence of the other, whether consummation (Dukhool) has occurred or not; this is the most correct narration. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated:

Arabic Text	Translation
قال فی البحر ورجحنا فی باب المهر انها(ای المتارکۃ) تکون من المرأۃ ایضا اه والمقدسی تابع البحر[3] اه اقول: وحققنا فیما علقنا علیه ان الفساد ان کان مقارنا کما ههنا کان لکل فسخه والمتارکة غیرہ وان کان طارئا تفرد به الزوج۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔	It is stated in al-Bahr that in the chapter of dowry (Bab al-Mahr), we mentioned the preference that abandonment (Mutaraka) from the woman's side is also permissible, and al-Maqdisi followed al-Bahr. I say: (I say) I have researched in the marginal notes of Radd al-Muhtar that if the invalidity of the marriage is concurrent with the start of the marriage, as is the case here, then both husband and wife have the option of annulment, and the ruling on abandonment is separate. However, if the invalidity of the

Arabic Text	Translation
	marriage occurs later, then only the husband has the option. And Allah Almighty knows best. (T)

[1] Durr al-Mukhtar, Bab al-Iddah, Mujtabai Press Delhi, 1/258 [2] Durr al-Mukhtar, Bab al-Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/201 [3] Radd al-Muhtar, Bab al-Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/612

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

पेज 301 ऑफ़ 688

[उसने] उस समय या उसके बाद ऐसे शब्द कहे थे जिनसे उस पर उसका संकल्प समझा जाए कि अब वह इस औरत को कभी नहीं रखेगा। और इन शब्दों को कहने के बाद उस औरत के तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त हो गए हों, तो वह दूसरी जगह निकाह कर सकती है। और अगर ऐसे शब्द सिद्ध न हों, तो अब औरत कह दे कि मैंने उस निकाह को रद्द किया जो बहनोई से किया था, उसके बाद मासिक धर्म देखकर दूसरे से निकाह कर ले। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ	अनुवाद
مبدؤها فی النکاح الفاسد بعد التفریق اواظہار العزم علی ترک وطئھا[1]۔	अमान्य विवाह (निकाह-ए-फासिद) की इद्दत की शुरुआत अलगाव (तफ़रीक़) के बाद या खुद पति द्वारा छोड़ने (मुतारका) के बाद होती है। 'छोड़ने' का अर्थ यह है कि पति ने औरत के साथ संभोग छोड़ने का अपना इरादा जाहिर कर दिया हो। (त)

उसी में है:

अरबी पाठ	अनुवाद
ویثبت لکل واحد منھما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بھا اولا فی الاصح[2]۔	पति और पत्नी दोनों को अमान्य विवाह में इसे रद्द (फ़स्ख़) करने का अधिकार है; दोनों को यह अधिकार दूसरे की उपस्थिति के बिना भी है, चाहे संभोग (दुख़ूल) किया गया हो या नहीं; सबसे सही रिवायत (कथन) यही है। (त)

रद्दुल मुहतार में है:

अरबी पाठ	अनुवाद
قال فی البحر ورجحنا فی باب المھر انھا(ای المتارکۃ) تکون من المرأۃ ایضا اھ والمقدسی تابع البحر[3] اھ اقول: وحققنا فیما علقنا علیہ ان الفساد ان کان	बह्र में कहा गया है कि हमने 'बाबुल मह्र' (महर के अध्याय) में औरत की ओर से मुतारका के जायज़ होने को तरजीह (प्राथमिकता) दी है और मुक़द्दसी ने बह्र का अनुसरण किया है। मैं कहता हूँ: मैंने 'रद्दुल मुहतार' के हाशिए (टिप्पणी) में यह शोध किया है कि यदि निकाह की अमान्यता निकाह की

अरबी पाठ	अनुवाद
مقارنا كما ههنا كان لكل فسخه والمتاركة غيره وان كان طارئا تفرد به الزوج۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔	शुरुआत से ही जुड़ी हो जैसा कि यहाँ है, तो फिर पति और पत्नी दोनों को फ़स्ख़ (रद्द करने) का अधिकार है और मुतारका का हुक्म अलग है। लेकिन यदि निकाह की अमान्यता बाद में आई हो, तो फिर केवल पति को अधिकार है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/258 [2] दुर्रे मुख्तार, बाबुल महर, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/201 [3] रद्दुल मुहतार, बाबुल इद्दत, दारुल इहया अल-तुरात अल-अरबी बेरुत, 2/612

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم

۱۳ ایسے کہے تھے اس وقت خواہ اس کے بعد، جن سے اس کا عزم اس پر سمجھا جائے کہ اب اس عورت کو کبھی نہ رکھے گا اور ان الفاظ کے کہنے کے بعد اس عورت کو تین حیض شروع ہو کر ختم ہو گئے تو یہ اور جگہ نکاح کر سکتی ہے، اور اگر ایسے الفاظ ثابت نہ ہوں تو اب عورت کہہ دے میں نے اس نکاح کو رد کیا جو بہنوئی سے کر لیا تھا اس کے بعد حیض دیکھ کر دوسرے سے نکاح کر لے۔ درمختار میں ہے:

عربی عبارت	**ترجمہ**
مبدؤھا فی النکاح الفاسد بعد التفریق اواظھار العزم علی ترك وطئھا[1]۔	نکاحِ فاسد کی عدت کی ابتداء تفریق کے بعد یا خود خاوند کے متارکہ کے بعد ہے، متارکہ یہ کہ خاوند نے عورت سے وطی کے ترک پر اپنے عزم کا اظہار کردیا ہو۔ (ت)

اسی میں ہے:

عربی عبارت	**ترجمہ**
ویثبت لکل واحد منھما فسخہ ولو بغیر محضر من صاحبہ دخل بھا اولا فی الاصح[2]۔	خاوند اور بیوی دونوں کو فاسد نکاح میں فسخ کا اختیار ہے، دونوں کو یہ اختیار دوسرے کی موجودگی کے بغیر بھی ہے دخول کیا ہو یا نہ، اصح روایت یہی ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

عربی عبارت	ترجمہ
قال فی البحر ورجحنا فی باب المهر انها(ای المتارکۃ) تکون من المرأة ایضا اه والمقدسی تابع البحر[3] اه اقول: وحققنا فیما علقنا علیه ان الفساد ان کان مقارنا کما ههنا کان لکل فسخه والمتارکة غیره وان کان طارئا تفرد به الزوج۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔	بحر میں فرمایا ہے کہ ہم نے باب المہر میں عورت کی طرف سے متارکہ کو بھی جائز ہونے کی ترجیح ذکر کی ہے اھ اور مقدسی نے بحر کی اتباع کی ہے اھ اقول:(میں کہتا ہوں) میں نے ردالمحتار کے حاشیہ میں یہ تحقیق کی ہے کہ اگر نکاح کا فساد ابتداء نکاح سے مقارن ہو جیسے یہاں ہے تو پھر خاوند اور بیوی دونوں کو فسخ کا اختیار ہے اور متارکہ کا حکم علیحدہ ہے، اور اگر نکاح کا فساد بعد میں طاری ہو تو پھر صرف خاوند کا اختیار ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

---

1 درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۸ 2 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۱ 3 ردالمحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۱۲

Issue 63: 4 Rajab al-Murajjab 1307 AH What do the scholars of the religion say about this issue: Zaid divorced his wife Hind. Her 'iddah' (waiting period) had not expired; only twenty or twenty-five days later, Bakr married her. After four years, Bakr also divorced her. Now, a third person wants to marry her. Can this marriage take place after four months and ten days of the divorce, or can it happen immediately, given that Bakr had married her before the completion of the 'iddah', which was legally incorrect? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If Bakr knowingly married her, aware that she was still in her 'iddah', then that marriage never took place at all. For such a case, there is no 'iddah' at all, even if Bakr had intercourse with the woman hundreds of times, because the 'water' of adultery (zina) holds no honor or standing in Sharia. The woman is free to marry whenever she wishes.

[Arabic Text]: In Radd al-Muhtar, quoted from Al-Bahr al-Ra'iq: "As for marrying the wife of another or a woman in her waiting period, then consummating it does not necessitate 'iddah' if it was known that she belongs to another, because no one has spoken of its permissibility. Thus, it is not established at all. For this reason, the prescribed punishment (Hadd) is mandatory upon knowing its prohibition because it is adultery (zina), as stated in Al-Qunyah and other works." [Urdu Translation in text]: It is narrated in Radd al-Muhtar from Al-Bahr al-Ra'iq that after marriage and consummation with another's wedded wife or another's divorced woman who is in her waiting period, 'iddah' will not be mandatory, provided he knew that the woman belongs to another. This is because no one believes in the validity of such a marriage. Therefore, the marriage itself was never established. This is why, despite knowing she is another's wedded wife, if marriage and consummation take place, the punishment for adultery (Hadd of Zina) will be mandatory because it is adultery, as mentioned in Al-Qunyah and other works. (T)

And if Bakr married her unknowingly, we will see whether he had intercourse with the woman at any point during those four years or not. If he never did, there is still no 'iddah'; she may marry whoever she wishes immediately after Bakr leaves her.

[Arabic Text]: In Al-Bahr, among examples of marriage that is 'fasid' (irregular) but not 'batil' (void), the marriage of a woman in her 'iddah' to another is mentioned... etc. And Al-Shami restricted this to the condition that he did not know she was in her 'iddah', as previously quoted from Al-Bahr. [Urdu Translation in text]: In Al-Bahr, the

marriage of another's woman in 'iddah' is mentioned among examples of marriages that are irregular (fasid) but not void (batil). Allamah Shami has restricted this to the case where one does not know about her being in 'iddah', as was mentioned with reference to Al-Bahr.

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/607
2. Al-Bahr al-Ra'iq

मसला 63: 4 रजब मुअज्ज़ब 1307 हिजरी। इस मसले में दीन के उलमा क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी बीवी हिन्दा को तलाक़ दी, इद्दत के दिन पूरे नहीं हुए थे, सिर्फ बीस-पच्चीस दिन बाद बक्र ने उससे निकाह कर लिया। चार साल बाद बक्र ने भी तलाक़ दे दी। अब एक तीसरा शख़्स उससे निकाह करना चाहता है। क्या यह निकाह तलाक़ के चार महीने दस दिन बाद हो या फ़ौरन हो सकता है, क्योंकि बक्र ने इद्दत ख़त्म होने से पहले निकाह कर लिया था जो शरई तौर पर ग़लत था? बयान फ़रमाएँ सवाब पाएँ।

अल-जवाब: अगर बक्र ने यह जान-बूझकर कि औरत अभी इद्दत में है, उससे निकाह किया था, तो वह निकाह, निकाह ही नहीं हुआ। तो उसके लिए असल में कोई इद्दत नहीं है, चाहे बक्र ने उस औरत से सैकड़ों बार हमबिस्तरी की हो, क्योंकि ज़िना के पानी की शरीअत में कोई इज़्ज़त और हैसियत नहीं है। औरत को इख़्तियार है कि जब चाहे निकाह कर ले।

[अरबी इबारत]: 'रद्द अल-मुह्तार' में 'अल-बहर अल-राइक़' से नक़ल है: "जहाँ तक किसी दूसरे की निकाह की हुई बीवी या इद्दत वाली औरत से निकाह का सवाल है, तो उसमें दुख़ूल (सम्भोग) से इद्दत लाज़िम नहीं होती अगर यह मालूम हो कि वह दूसरे की है, क्योंकि किसी ने भी इसके जायज़ होने की बात नहीं की है, इसलिए वह निकाह सिरे से हुआ ही नहीं। और इसी कारण हराम होने के इल्म के साथ इस पर 'हद्द' (सज़ा) लाज़िम है क्योंकि यह ज़िना है, जैसा कि 'क़ुन्या' आदि में है।" [उर्दू अनुवाद]: 'रद्द अल-मुह्तार' में 'अल-बहर अल-राइक़' से नक़ल है कि किसी दूसरे की निकाह की हुई बीवी या दूसरे की मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) जो इद्दत में हो, उससे निकाह के बाद दुख़ूल (हमबिस्तरी) से इद्दत लाज़िम नहीं होगी, बशर्ते कि उसे मालूम हो कि औरत किसी और की है। क्योंकि इस निकाह के जाइज़ होने का कोई भी क़ायल नहीं है, लिहाज़ा यह निकाह असल में हुआ ही नहीं। यही वजह है कि यह मालूम होने पर कि वह दूसरे की निकाह की हुई है, इसके बावजूद निकाह और दुख़ूल पर हद्दे ज़िना लाज़िम होगी क्योंकि यह ज़िना है जैसा कि 'क़ुन्या' वग़ैरह में है। (त)

और अगर बक्र ने अनजाने में निकाह किया तो यह देखेंगे कि इन चार बरसों में उसने औरत से कभी हमबिस्तरी की है या नहीं। अगर कभी नहीं की तो भी इद्दत नहीं, बक्र के छोड़ते ही फ़ौरन जिससे चाहे निकाह कर ले।

[अरबी इबारत]: 'अल-बहर' में ऐसे निकाह जो 'फ़ासिद' हों मगर 'बातिल' न हों, उनकी मिसालों में इद्दत वाली औरत के निकाह का ज़िक्र है... इत्यादि। और अल्लामा शामी ने इसे इस शर्त के साथ सीमित किया है कि वह न जानता हो कि वह इद्दत में है, जैसा कि 'अल-बहर' के हवाले से गुज़रा।
[उर्दू अनुवाद]: 'अल-बहर' में ऐसे निकाह जो 'फ़ासिद' हों मगर 'बातिल' न हों की मिसालों में दूसरे की मुतअद्दा (इद्दत वाली) के निकाह का ज़िक्र किया है। और अल्लामा शामी ने इसको औरत के इद्दत में होने का इल्म न होने के साथ मुक़य्यद (सीमित) किया है जैसा कि 'बहर' के हवाले से गुज़रा।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-इद्दत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/607
2. अल-बहर अल-राइक़

पेज 302/688

مسئلہ ۶۳: ۴ رجب مرجب ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ ہندہ کو طلاق دی ایام عدت منقضی نہ ہوئے تھے صرف بیس پچیس دن بعد بکر نے اس سے نکاح کر لیا، چار برس بعد بکر نے بھی طلاق دی، اب شخص ثالث اس سے نکاح کرنا چاہتا ہے، یہ نکاح طلاق کے چار مہینے دس دن بعد ہو یا فوراً ہو سکتا ہے کہ بکر نے قبل انقضائے عدت نکاح کر لیا تھا جو شرعاً نادرست تھا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر بکر نے یہ جان بوجھ کر کہ ابھی عورت عدت میں ہے اس سے نکاح کر لیا تھا جب تو وہ نکاح نکاح ہی نہ ہوا، تو اس کے لئے اصلاً عدت نہیں اگرچہ بکر نے صدہا بار عورت سے جماع کیا ہو کہ زنا کا پانی شرع میں کچھ عزت و وقعت نہیں رکھتا عورت کو اختیار ہے جب چاہے نکاح کرلے،

[عربی عبارت]: في ردالمحتار عن البحر الرائق اما نكاح منكوحة الغير و معتدته فالدخول فيه لا يوجب العدة ان علم انها للغير لانه لم يقل احد بجوازه فلم ينعقد اصلا و لهذا يجب الحد مع العلم بالحرمة لكونه زنا كما فی القنية وغيرها۔ [اردو ترجمہ]: ردالمحتار میں بحر الرائق سے منقول ہے کہ غیر کی منکوحہ بیوی یا غیر کی مطلقہ عدت والی سے نکاح کے بعد دخول سے عدت لازم نہ ہوگی بشرطیکہ اسے معلوم ہو کہ عورت غیر کی ہے کیونکہ اس نکاح کے جواز کا کوئی بھی قائل نہیں ہے لہذا یہ نکاح ہی اصلاً منعقد نہ ہوا، یہی وجہ ہے کہ یہ معلوم ہونے پر کہ یہ غیر کی منکوحہ ہے اس کے باوجود نکاح اور دخول پر حد زنا لازم ہو گی کیونکہ یہ زنا ہے جیسا کہ قنیہ وغیرہ میں ہے۔ (ت)

اور اگر بکر نے انجانی میں نکاح کیا تو یہ دیکھیں گے کہ اس چار برس میں اس نے عورت سے کبھی جماع کیا ہے یا نہیں، اگر کبھی نہ کیا تو بھی عدت نہیں، بکر کے چھوڑتے ہی فوراً جس سے چاہے نکاح کر لے،

[عربی عبارت]: ففي البحر فی امثلة النكاح فسد ولم يبطل نكاح المعتدة[2] الخ وقيده الشامي بما اذالم يعلم بانها معتدة لما مر عن البحر، [اردو ترجمہ]: بحر میں ایسے نکاح جو فاسد ہوں مگر باطل نہ ہوں کی مثالوں میں غیر کی معتدہ کا نکاح ذکر کیا ہے۔ اھ اور علامہ شامی نے اس کو غیر کی معتدہ کا علم نہ ہونے کے ساتھ مقید کیا ہے جیسا کہ بحر کے حوالے سے گزرا،

[1] ردالمحتار باب العدة دار احياء التراث العربی بیروت ۲ / ۶۰۷ [2] بحر الرائق

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

[Boxed Text] In *Ad-Durr al-Mukhtar* regarding the rulings of invalid marriage (Nikah-e-Fasid), it is mentioned that in an invalid marriage, 'Iddah (waiting period) becomes obligatory after intercourse, not just after seclusion (Khulwah). This 'Iddah begins from the time of separation or when the husband leaves her. [Summarized] (T)

And if intercourse has occurred even once, the woman's 'Iddah becomes obligatory from the day he left her. Until she completes her 'Iddah, she cannot marry another person. The 'Iddah for divorce is not four months and ten days; that is the 'Iddah for death. The 'Iddah for divorce is three complete menstrual cycles, meaning one new cycle starts after the divorce, then a second, then a third. When this third one ends, she will come out of her 'Iddah, and it will be permissible for her to marry whomever she wishes.

[Boxed Text] Allah Almighty said: "And divorced women shall wait [concerning] themselves for three menstrual cycles."[2] - Allah Almighty said: Divorced women should keep themselves waiting until three menstrual cycles are completed. (T)

Problem 64: From Mathra, Mohalla Mahupura, sent by Ramadan Khan, 13 Shaban 1312 AH. Question: What do the scholars of religion say about this: The wedded wife of a person, due to some specific grievance, separated from her husband without a divorce and went somewhere else against his will and entered into marriage with another person. Now, she has left there as well and wants to re-marry her first husband. Divorce from both husbands is not proven. So, the question is: Will the first marriage still stand, or is a new contract (Nikah) necessary, or is there any other Shariah-based solution? Please explain and be rewarded.

Answer: The old marriage contract remains valid; there is no need for a new one. The second person who married this woman, if he was aware that she was already another man's wife, then there is no need even for 'Iddah because it was adultery (Zina), and there is no 'Iddah for adultery. It is in *Ad-Durr al-Mukhtar*: "There is no 'Iddah for adultery."[3] (T). And if he was unaware and married her thinking she was unattached and lawful...

---

1. *Ad-Durr al-Mukhtar*, Chapter of Mahr (Dower), Mujtabai Press, Delhi, 201/1
2. Al-Quran Al-Karim, 2/228
3. *Ad-Durr al-Mukhtar*, Chapter of 'Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 255/1

फतावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

[बॉक्स वाला टेक्स्ट] 'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में निकाह-ए-फासिद (अवैध विवाह) के नियमों के संबंध में उल्लेख है कि अवैध विवाह में संभोग के बाद इद्दत अनिवार्य हो जाती है, केवल एकांत (खलवत) से अनिवार्य नहीं होगी। यह इद्दत अलगाव के समय से या जब पति उसे छोड़ दे, तब से शुरू होगी। [संक्षिप्त] (त)

और यदि एक बार भी संभोग हो चुका हो, तो जिस दिन पति ने उसे छोड़ा, उस दिन से स्त्री पर इद्दत अनिवार्य हो गई। जब तक वह अपनी इद्दत से बाहर नहीं निकलती, वह किसी दूसरे से विवाह नहीं कर सकती। तलाक की इद्दत चार महीने दस दिन नहीं है, वह मृत्यु की इद्दत है। तलाक की इद्दत तीन पूर्ण मासिक धर्म चक्र हैं, यानी तलाक के बाद एक नया मासिक धर्म आए, फिर दूसरा, फिर तीसरा। जब यह तीसरा समाप्त होगा, तब वह इद्दत से बाहर निकलेगी और वह जिससे चाहे विवाह करना वैध होगा।

[बॉक्स वाला टेक्स्ट] अल्लाह तआला ने फरमाया: "और तलाकशुदा औरतें तीन मासिक धर्म तक स्वयं को प्रतीक्षा में रखें।"[2] - अल्लाह तआला ने फरमाया: तलाकशुदा स्त्रियाँ तीन मासिक धर्म पूर्ण होने तक स्वयं को रोके रखें। (त)

मसला 64: मथुरा, मोहल्ला महूपुरा से प्रेषित, रमज़ान खान द्वारा, 13 शाबान 1312 हिजरी। प्रश्न: धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति की विवाहित पत्नी, किसी विशेष रंजिश के कारण बिना तलाक के अपने पति से अलग होकर उसकी इच्छा के विरुद्ध कहीं चली गई और किसी दूसरे व्यक्ति से अपना निकाह कर लिया। वर्तमान में वह वहां से भी निकलकर फिर से पहले पति से निकाह करना चाहती है, और दोनों पतियों की ओर से तलाक प्रमाणित नहीं है। अतः यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या अब पहले पति से निकाह कायम रहेगा या नए निकाह की आवश्यकता है या इसके अलावा कोई और शरीयत का रास्ता है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पुराना निकाह कायम है, नए की कोई आवश्यकता नहीं है। जिस दूसरे व्यक्ति ने इस पराई विवाहित स्त्री से निकाह किया, यदि वह जानता था कि यह दूसरे की पत्नी है, तो इद्दत की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह व्यभिचार (ज़िना) था और ज़िना की कोई इद्दत नहीं होती। 'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में है: "व्यभिचार के लिए कोई इद्दत नहीं है।"[3] (त)। और यदि वह अनभिज्ञ था और स्त्री को खाली और हलाल समझकर निकाह किया...

1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, महर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 201/1
2. अल-कुरान अल-करीम, 228/2
3. अद-दुर्र अल-मुख्तार, इद्दत का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 255/1

[باکس کا متن] وفی الدر المختار فی احکام النکاح الفاسد، تجب العدۃ بعد الوطی لا الخلوۃ وقت التفریق او متارکۃ الزوج اھ ملخصاً۔ اور درمختار کے احکام نکاح فاسد میں مذکور ہے کہ فاسد نکاح میں وطی کے بعد عدت لازم ہوگی، صرف خلوت سے لازم نہ ہوگی اور یہ عدت یا خود خاوند کی طرف سے متارکہ کے وقت سے شروع ہوگی اھ ملخصاً (ت)

اور جو ایک بار بھی جماع کر چکا ہے تو جس دن بکر نے چھوڑا اس دن سے عورت پر عدت واجب ہوئی جب تک اس کی عدت سے نہ نکلے دوسرے سے نکاح نہیں کر سکتی، اور عدت طلاق کی چار مہینے دس دن نہیں یہ عدت موت کی ہے، طلاق کی عدت تین حیض کامل ہیں یعنی بعد طلاق کے ایک نیا حیض آئے، پھر دوسرا، پھر تیسرا، جب یہ تیسرا ختم ہوگا اس وقت عدت سے نکلے گی اور اسے جس سے چاہے نکاح کرنا روا ہوگا،

[باکس کا متن] قال اللہ تعالٰی وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِھِنَّ ثَلٰثَۃَ قُرُوْءٍ ط - اللہ تعالٰی نے فرمایا: مطلقہ عورتیں تین حیض مکمل ہونے تک اپنے آپ کو روکے رکھیں۔ (ت)

مسئلہ ۶۴: از متھر امحلہ مہو پورہ مرسلہ رمضان خاں ۱۳ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ایک شخص کی زوجہ منکوحہ ایک عرصہ سے بوجہ کسی خاص رنجی کے بلا طلاق اپنے شوہر سے علیحدہ ہو کر اور خلاف مرضی اس کے کہیں چلی گئی اور کسی غیر شخص سے اپنا عقد کرلیا بالفعل وہاں سے بھی نکل کر پھر شوہر اول سے عقد چاہتی ہے اور طلاق ہر دو شوہروں کی جانب سے ثابت نہیں، پس قابل استفسار یہ امر ہے کہ اب شوہر اول سے عقد قائم رہے گا یا عقدِ جدید کی ضرورت ہے یا اس کے سوا کوئی اور شرعی صورت ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: عقدِ قدیم قائم ہے جدید کی کچھ حاجت نہیں، دوسرا شخص جس نے اس منکوحہ غیر سے نکاح کیا اگر آگاہ تھا کہ یہ منکوحہ غیر ہے جب تو عدت کی بھی ضرورت نہیں کہ یہ زنا تھا اور زنا کی عدت نہیں، درمختار میں ہے: لاعِدّۃ للزِّنَا (زنا کی عدت نہیں ہوتی۔ ت) اور اگر وہ واقف نہ تھا عورت کو خالی و حلال سمجھ کر نکاح

۱۔ درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۱ ۲۔ القرآن الکریم ۲/۲۲۸ ۳۔ درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۵

...if he brought her back, it is an absolute obligation upon him to separate from the woman. From the time of separation, the woman shall observe 'iddah (waiting period) for three menstrual cycles. After that, the first husband can resume marriage with her without needing a new marriage contract. This is on the assumption that the second person had intercourse with the woman; otherwise, there is no need for 'iddah. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Text]: There is no 'iddah if one marries another's wife and has intercourse with her knowing that she is already married. In some copies of the text, the phrase "and he had intercourse with her" is present, and this condition is necessary. The fatwa is given based on this. Therefore, despite knowing [the illegality], the legal punishment (hadd) will be applied for this illicit act because it is adultery (zina), and an adulterous woman does not become prohibited for her husband for this reason, etc. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Explanation]: There will be no 'iddah required after intercourse following a marriage with another's wedded wife, provided it is known that the woman belongs to someone else. In the versions of the text, the word "dakhala biha" (he had intercourse with her) is present, and this condition is essential. The fatwa is issued on this basis. Thus, despite knowledge, the penalty of 'hadd' will be imposed for this forbidden act as it constitutes zina, and a woman who has committed zina does not become forbidden to her husband for this reason, etc. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 65: From Mauza Tanda, Pargana Bheri, via Pyare Mian, 21 Jumada al-Akhira 1315 AH. What do the scholars of religion say? A man passed away by divine decree and his wife was pregnant. A month after his death, the pregnancy was miscarried. Should this woman observe 'iddah, or does the waiting period end with this miscarriage? The pregnancy was four or five months along. What do the people of Sharia say?

The Answer: The questioner stated that the limbs (hands and feet) had formed. So, with the miscarriage, the 'iddah is completed; there is no further need for 'iddah.

In Radd al-Muhtar: "If a miscarriage occurs, if some features are apparent, the 'iddah ends with it because it is considered a child; otherwise, it does not." And Allah Almighty knows best.

[Urdu Explanation]: It is stated in Radd al-Muhtar that if a pregnant woman miscarries, and if the formation of some of the child's limbs is apparent, then the 'iddah ends with it because it is counted as a complete child. If the limbs have not yet appeared, the 'iddah will not end. And Allah Almighty knows best. (T)

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/259. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/203.

फ़तावा रज़विया | खंड 13 | पृष्ठ 13

...यदि वह उसे वापस ले आया, तो उस पर यह अनिवार्य कर्तव्य (फ़र्ज़ ए क़तई) है कि वह महिला को छोड़ दे। छोड़ने के समय से, महिला तीन माहवारी की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बिताएगी। उसके बाद पहला पति बिना नए निकाह के उसके साथ वैवाहिक जीवन फिर से शुरू कर सकता है। यह उस स्थिति में है जब दूसरे व्यक्ति ने महिला के साथ सहवास (मैथुन) किया हो, अन्यथा इद्दत की आवश्यकता नहीं है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी पाठ]: यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे की विवाहित पत्नी से निकाह करता है और यह जानते हुए भी कि वह किसी और की पत्नी है, उसके साथ सहवास करता है, तो इद्दत अनिवार्य नहीं होगी। मूल पाठ की प्रतियों में 'दखल बिहा' (उसने प्रवेश किया) शब्द है, जबकि यह शर्त आवश्यक है। और फतवा इसी पर दिया जाएगा। इसलिए, जानते हुए भी इस हराम कार्य (अवैध संबंध) पर 'हद' (सजा) लगाई जाएगी क्योंकि यह ज़िना (व्यभिचार) है, और ज़िना करने वाली महिला इस कारण अपने पति पर हराम नहीं होती, आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: गैर की विवाहित पत्नी से निकाह के बाद सहवास करने से इद्दत लाज़िम नहीं होगी बशर्ते उसे मालूम हो कि औरत किसी और की है। और पाठ की प्रतियों में 'दखल बिहा' (उसने प्रवेश किया) का शब्द है जबकि यह शर्त ज़रूरी है। और फ़तवा इसी पर दिया जाएगा। इसलिए इल्म के बावजूद इस हरामकारी पर 'हद' लगाई जाएगी क्योंकि यह ज़िना है और ज़िना वाली औरत अपने शौहर पर इस वजह से हराम नहीं होती आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 65: मौज़ा टांडा, परगना भेड़ी, पीआरे मियां के माध्यम से, 21 जमादी-उल-उखरा 1315 हिजरी। दीन के विद्वान क्या कहते हैं? एक व्यक्ति अपनी कज़ा (मृत्यु) से मर गया और उसकी पत्नी गर्भवती थी। उसकी मृत्यु के एक महीने बाद गर्भ गिर गया (गर्भपात हो गया)। तो क्या इस महिला को इद्दत करनी चाहिए या गर्भ गिरने से इद्दत समाप्त हो गई? गर्भ चार या पांच महीने का था। शरीअत के जानकार क्या फरमाते हैं?

उत्तर: सवाल करने वाले ने ज़ाहिर किया कि उसके हाथ-पैर बन गए थे। तो उसके गिर जाने से इद्दत पूरी हो गई, अब इद्दत की ज़रूरत नहीं है।

'रद्दुल मुहतार' में है: "यदि गर्भ गिर जाए, यदि उसके शरीर का कुछ हिस्सा स्पष्ट हो गया हो, तो उससे इद्दत समाप्त हो जाती है क्योंकि उसे बच्चा माना जाता है, अन्यथा नहीं।" और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू स्पष्टीकरण]: 'रद्दुल मुहतार' में है कि गर्भवती का गर्भ गिर जाए तो अगर बच्चे के कुछ अंगों की बनावट ज़ाहिर होती हो तो फिर उससे इद्दत खत्म हो गई क्योंकि वह मुकम्मल बच्चा शुमार होता है, और अगर अभी अंग ज़ाहिर न हुए हों तो इद्दत खत्म न होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/259। 2. रद्दुल मुहतार, बाबुल इद्दत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/203।

میں لایا تو اس پر فرض قطعی ہے کہ عورت کو ترک کر دے وقت ترک سے عورت تین حیض کی عدت کرے اس کے بعد شوہر اول بے حاجت تجدید نکاح اس سے مترتب کر سکتا ہے، یہ اس تقدیر پر کہ شخص ثانی نے عورت سے صحبت یعنی مجامعت کر لی ہو، ورنہ حاجتِ عدت نہیں، در مختار میں ہے:

لا عدة لو تزوج امراة الغير ووطئها عالماً بذلك وفی نسخ المتن ودخل بها ولا بد منه وبه يفتى ولهذا يحد مع العلم بالحرمة لانه زنا والمزني بها لا تحرم علی زوجها الخ - واللہ تعالٰی اعلم۔

غیر کی منکوحہ سے نکاح کے بعد وطی کرنے سے عدت لازم نہ ہوگی بشرطیکہ اسے معلوم ہو کہ عورت غیر کی ہے اور متن کے نسخوں میں "دخل بها" (اس نے دخول کیا ہو) کا لفظ ہے جبکہ یہ قید ضروری ہے۔ اور فتوی اسی پر دیا جائے گا۔ اس لئے علم کے باوجود اس حرام کاری پر حد لگائی جائے کیونکہ یہ زنا ہے اور زنا والی عورت اپنے خاوند پر اس وجہ سے حرام نہیں ہوتی الخ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۶۵: از موضع ٹانڈار پر گنہ بھیڑی معرفت پیارے میاں ۲۱ جمادی الاخری ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین، ایک شخص اپنی قضا سے فوت ہو گیا اور اس کی بیوی کو حمل تھا، بعد اس کے مر جانے کے ایک مہینہ کے بعد وہ حمل ساقط ہو گیا تو اس عورت کو عدت کرنا چاہئے یا اس حمل کے گر جانے سے عدت جاتی رہی اور وہ حمل چار یا پانچ مہینہ کا تھا اہل شرع کیا فرماتے ہیں؟

الجواب: سائل نے ظاہر کیا کہ اس کے ہاتھ پاؤں بن گئے تھے تو اس کے گر جانے سے عدت تمام ہو گئی اب عدت کی حاجت نہیں، فی رد المحتار اذا اسقطت سقطا ان استبان بعض خلقه انقضت به العدة لانه ولد والافلا - واللہ تعالیٰ اعلم۔

رد المحتار میں ہے حاملہ کا حمل ساقط ہو جائے تو اگر بچے کے کچھ اعضاء کی تخلیق ظاہر ہوتی ہو تو پھر اس سے عدت ختم ہو گئی کیونکہ یہ مکمل بچہ شمار ہوتا ہے اور اگر ابھی اعضاء ظاہر نہ ہوئے ہوں تو عدت ختم نہ ہوگی۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

۱ در مختار باب العدة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۹ ۲ رد المحتار باب العدة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۰۳

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 14

Problem 66: From Bengal, Sylhet District, Kamalganj Post Office, Phultoli village, sent by Abdul Ghani Sahib, 19 Shawwal 1317 AH.

What do the scholars say on this matter: Zaid married Hindah with a valid marriage contract (Nikah Sahih), and divorced her before consummation (Dukhul) but after a valid private meeting (Khalwat Sahih). Is Hindah now required to observe the waiting period (Iddah) or not? In one place in Fatawa Alamgiri, it is implied that it is mandatory:

Arabic	Urdu Translation/Explanation
A man married a woman in a permissible marriage and divorced her after consummation or after valid privacy; she must observe Iddah, as stated in Fatawa Qazi Khan.[1]	If someone marries a woman in a valid marriage and then divorces her after consummation or after valid privacy, then Iddah is mandatory for that woman, as in Fatawa Qazi Khan. (T)

And in another place in Alamgiri, it is implied that even if it is after valid privacy, Iddah is not mandatory:

Arabic	Urdu Translation/Explanation
There are four types of women who do not have to observe Iddah: the one divorced before consummation, etc.[2]	There are four women who have no waiting period, one of whom is the one divorced before consummation, etc. (T)

And in the Holy Quran, it is stated in one place:

Arabic	Urdu Translation/Explanation
"O you who have believed, when you marry believing women and then divorce them before you have touched them, then there is not for you any waiting period to count concerning them."[3]	When you marry believing women and then divorce them before consummation, then there is no waiting period for you over those women. (T)

The Answer: In the inquired case, Iddah is mandatory. There is no contradiction between the two statements of Alamgiri, nor does the Quranic verse negate the first statement. The fundamental principle is that the cause for Iddah is contact and consummation, i.e., intercourse. However, in a valid marriage, mere privacy (Khalwat), even if it is valid (Sahihah), stands in place of intercourse for the obligation of Iddah. It is stated in Tanwir:

Arabic	Urdu Translation/Explanation
Privacy is like intercourse regarding the waiting period[4] (Summarized).	In the matter of Iddah, the ruling for privacy is the same as for intercourse. (T)

[1] Fatawa Hindiyyah, Book of Iddah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/526 [2] Fatawa Hindiyyah, Book of Iddah, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/526 [3] Al-Quran al-Karim, 33/49 [4] Durr-e-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Book of Dowry, Mujtabai Press Delhi, 1/98-99

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 14

मसला 66: बंगाल, जिला सिलहट, डाकखाना कमालगंज, मौजा फूलतोली, प्रेषक अब्दुल ग़नी साहब, 19 शव्वाल 1317 हिजरी।

विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने हिंदा से सही निकाह किया, और दुखुल (संभोग) से पहले लेकिन खलवते सहीहा (एकांत मिलन) के बाद तलाक दे दी। क्या अब हिंदा पर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है या नहीं? फतावा आलमगीरी में एक जगह से यह बोध होता है कि अनिवार्य है:

अरबी	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
एक व्यक्ति ने एक महिला से वैध विवाह किया और दुखुल के बाद या सही एकांत के बाद उसे तलाक दे दिया; उसे इद्दत का पालन करना चाहिए, जैसा कि फतावा काजी खान में है।[1]	किसी ने एक औरत से सही निकाह किया फिर दुखुल के बाद तलाक दी या खलवते सहीहा के बाद तलाक दी तो उस औरत पर इद्दत लाज़िम होगी जैसा कि फ़तावा काज़ी ख़ां में है। (त)

और आलमगीरी में दूसरी जगह से यह बोध होता है कि भले ही खलवते सहीहा के बाद हो, इद्दत अनिवार्य नहीं है:

अरबी	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
चार स्त्रियाँ ऐसी हैं जिन पर इद्दत नहीं है: दुखुल से पहले तलाकशुदा इत्यादि।[2]	चार औरतें हैं जिन पर इद्दत नहीं उनमें से एक क़ब्ल अज़ दुखुल (संभोग से पहले) तलाक़ वाली है इत्यादि। (त)

और कलाम-ए-मजीद (कुरान) में एक जगह इस प्रकार है:

अरबी	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
"ऐ ईमान वालों! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो और फिर दुखुल (संभोग) से पहले उन्हें तलाक दे दो, तो उनके लिए तुम्हारे हक में कोई इद्दत नहीं जिसे तुम गिनो।"[3]	जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करके क़ब्ल अज़ दुखुल (संभोग से पहले) उनको तलाक़ दे दो तो तुम्हारे हक़ में उन औरतों पर इद्दत नहीं। (त)

उत्तर (अल-जवाब): पूछे गए मामले में इद्दत अनिवार्य है। आलमगीरी के दोनों कथनों में कोई विरोधाभास नहीं है, और न ही कुरान की आयत पहले कथन का खंडन करती है। मूल सिद्धांत यह है

कि इद्दत का कारण स्पर्श और दुखुल यानी संभोग है। हालांकि, एक वैध निकाह में, केवल एकांत (खलवत), भले ही वह वैध (सहीहा) हो, इद्दत की अनिवार्यता के लिए संभोग के स्थान पर माना जाता है। तनवीर में लिखा है:

अरबी	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
इद्दत के मामले में एकांत, संभोग के समान है।[4] (संक्षिप्त)	इद्दत के मामले में खलवत का हुक्म वती (संभोग) वाला है। (त)

---

[1] फतावा हिंदिया, बाबुल इद्दत, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/526 [2] फतावा हिंदिया, बाबुल इद्दत, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/526 [3] अल-कुरान अल-करीम, 33/49 [4] दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अब्सार, बाबुल महर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/98-99

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۴

مسئلہ ۶۶: از بنگال ضلع سلہٹ ڈاک خانہ کمال گنج موضع پھوٹولی مرسلہ عبدالغنی صاحب ۱۹ شوال ۱۳۱۷ھ

کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے نکاح صحیح کیا، قبل از دخول بعد خلوتِ صحیحہ طلاق دی، اب عدت ہندہ پر واجب ہے یا نہیں؟ ایک جگہ عالمگیری سے مفہوم ہوتا ہے کہ واجب ہے،

عربی متن	اردو ترجمہ
رجل تزوج امرأۃ نکاحاً جائزاً فطلقھا بعد الدخول او بعد الخلوۃ الصحیحۃ کان علیھا العدۃ کذا فی فتاوٰی قاضی خان۔ 1	کسی نے ایک عورت سے صحیح نکاح کیا پھر دخول کے بعد طلاق دی یا خلوتِ صحیحہ کے بعد طلاق دی تو اس عورت پر عدت لازم ہو گی جیسا کہ فتاوٰی قاضی خاں میں ہے۔ (ت)

اور دوسری جگہ عالمگیری سے مفہوم ہوتا ہے کہ اگرچہ بعد خلوتِ صحیحہ کے ہو عدت واجب نہیں،

عربی متن	اردو ترجمہ
اربع من النساء لا عدۃ علیھن المطلقۃ قبل الدخول الخ۔ 2	چار عورتیں ہیں جن پر عدت نہیں ان میں سے ایک قبل از دخول طلاق والی ہے الخ (ت)

اور کلام مجید میں ایک جگہ یوں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا 3	جب تم مومن عورتوں سے نکاح کر کے قبل از دخول ان کو طلاق دے دو تو تمہارے حق میں ان عورتوں پر عدت نہیں۔ (ت)

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں عدت واجب ہے اور عالمگیری کی دونوں عبارتوں میں تنافی نہ آیہ کریمہ عبارت اولٰی کی نافی ، اصل یہی ہے کہ موجب عدت مس و دخول یعنی وطی ہے مگر نکاحِ صحیح میں مجرد خلوت اگرچہ صحیحہ ہو ایجابِ عدت کے لئے قائم مقام وطی ہے، تنویر میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
الخلوة كالوطء فی العدة 4 (ملخصاً)۔	عدت کے معاملے میں خلوت کا حکم وطی والا ہے (ت)

---

1 فتاوٰی ہندیہ باب العدة نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۲۶ 2 فتاوٰی ہندیہ باب العدة نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۲۶ 3 القرآن الکریم ۳۳ / ۴۹ 4 درمختار شرح تنویر الابصار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۹۸-۹۹

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

In Radd al-Muhtar, it is stated: | The obligation of 'iddah is among the rulings of privacy (khalwah), whether it is valid privacy or not. | The obligation of 'iddah (waiting period) is one of the rulings pertaining to privacy (khalwah), whether it is valid (sahihah) or corrupt (fasidah). At-Tahawi says: this ruling applies to a valid marriage. However, in a corrupt marriage, 'iddah becomes obligatory only through sexual intercourse, as will be mentioned shortly. (T) | | i.e., when it is in a valid marriage; as for a corrupt one, 'iddah is obligatory through intercourse, as will follow. | |

In Madarik ash-Sharif, it is mentioned: "From... | ...before you touch them; and valid privacy is like touching (i.e., intercourse)." End quote. | "...before you touch them (i.e., have intercourse); and valid privacy is also like intercourse." End quote. And I recall writing on its margin that it would have been better if the author of Madarik had phrased it as: privacy in a valid marriage is like intercourse. In this way, marriage could be restricted by the condition of validity, and privacy could be stated generally. This is because when a marriage is valid, even corrupt privacy makes 'iddah obligatory, but in a corrupt marriage, 'iddah is only mandatory upon actual intercourse, as stated in ad-Durr and other works. And Allah the Almighty knows best. (T) | | And I saw myself writing on its margin: It is better to say (may his soul be sanctified): "And privacy in a valid marriage is like touching," thus restricting marriage to the valid one and using privacy generally, because privacy, even if corrupt, necessitates 'iddah if the marriage is valid. As for the corrupt [marriage], there is no 'iddah in it except by actual intercourse, as in ad-Durr and others. And Allah knows best. | |

Problem 73 to 76: From Old City, Bareilly. Respected Sir! A person named Jumman states that his biological brother married off his minor daughter without his consent. Later, he persuaded me to agree and sent the girl off (to her husband). The girl stayed with her husband, and they reached the stage of consummation. Later, after being sent back from there, she arrived at her father's house. It has been three years since then, and she never went back, to the extent that the matter reached legal proceedings. Finally, he divorced her through a panchayat (community council) decision.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Dowry (Bab al-Mahr), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/321. 2. Madarik al-Tanzil, under Surah al-Ahzab, Dar al-Kitab al-Arabi, 3/308. 3. Hawashi Madarik, Ala-Hadrat (Allah's mercy be upon him).

रद्द-उल-मुहतार में है: | इद्दत की अनिवार्यता एकांत (खलवत) के नियमों में से है, चाहे वह एकांत सही हो या नहीं। | इद्दत की अनिवार्यता एकांत (खलवत) के नियमों में से है, चाहे वह एकांत सही (सहिह) हो या दोषपूर्ण (फ़ासिद)। तह़ावी के अनुसार, यह नियम सही निक़ाह के लिए है, लेकिन दोषपूर्ण निक़ाह में इद्दत केवल शारीरिक संबंध (वत़्ई) से ही अनिवार्य होती है, जैसा कि शीघ्र ही बताया जाएगा। (त) | | यानी जब वह सही निक़ाह में हो; जहाँ तक दोषपूर्ण का सवाल है, इद्दत शारीरिक संबंध से अनिवार्य होती है, जैसा कि आगे आएगा। | |

मदारिक शरीफ़ में है: "से... | ...इससे पहले कि तुम उन्हें छुओ; और सही एकांत (खलवत-ए-सहिह़ा) छूने (अर्थात् संभोग) के समान है।" समाप्त। | "...इससे पहले कि तुम उन्हें छुओ (अर्थात् संभोग करो); और सही एकांत भी संभोग की तरह है।" समाप्त। और मुझे याद आ रहा है कि मैंने इसके हाशिये पर लिखा था कि बेहतर होता यदि मदारिक के लेखक इस प्रकार कहते: 'सही निक़ाह में एकांत संभोग की तरह है।' इस तरह निक़ाह को 'सही' की शर्त से सीमित किया जा सकता था और एकांत को सामान्य रखा जा सकता था। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब निक़ाह सही होता है, तो दोषपूर्ण एकांत भी इद्दत को अनिवार्य कर देता है, लेकिन दोषपूर्ण निक़ाह में इद्दत केवल वास्तविक शारीरिक संबंध से ही अनिवार्य होती है, जैसा कि अद-दुर्र और अन्य में है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त) | | और मैंने स्वयं को इसके हाशिये पर यह लिखते देखा: यह कहना बेहतर है (उनकी आत्मा पवित्र हो): "और सही निक़ाह में एकांत छूने के समान है," इस प्रकार निक़ाह को सही तक सीमित करना और एकांत का सामान्यतः उपयोग करना, क्योंकि एकांत, भले ही दोषपूर्ण हो, इद्दत को अनिवार्य बनाता है यदि निक़ाह सही हो। जहाँ तक दोषपूर्ण [निक़ाह] की बात है, इसमें वास्तविक संभोग के बिना कोई इद्दत नहीं है, जैसा कि अद-दुर्र आदि में है। और अल्लाह बेहतर जानता है। | |

मसअला 73 से 76: शहर-ए-कुहना, बरेली से। जनाब-ए-आली! जुम्मन नामक व्यक्ति का बयान है कि उसकी नाबालिग लड़की का निक़ाह उसके सगे भाई ने उसकी सहमति के बिना कर दिया। बाद में मुझे राज़ी करके रुख़सती करा दी। वह लड़की अपने उस पति के पास रही और सोहबत (संभोग) की नौबत आई। उसके यहाँ से रुख़सत होकर जब वह अपने पिता के घर आई तो उसे तीन साल का समय बीत चुका है, वह फिर कभी वापस नहीं गई, यहाँ तक कि मामला मुक़दमेबाज़ी तक पहुँच गया। अंततः उसने उसे पंचायत के फ़ैसले से तलाक़ दे दी।

पाद-टिप्पणियाँ (फ़ुटनोट्स): 1. रद्द-उल-मुहतार, बाब-उल-महर, दार इह़या-उत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/321. 2. मदारिक-उत-तन्ज़ील, सूरह अल-अह़ज़ाब के अंतर्गत, दार अल-किताब अल-अरबी, 3/308. 3. हवाशी मदारिक, आला ह़ज़रत (रह़मतुल्लाहि अलैहि)।

पृष्ठ 306 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزد ہم ۱۳

ردالمحتار میں ہے: | وجوبها من احكام الخلوة سواء كانت صحيحة ام لاط | عدت کا وجوب خلوت کے احکام میں سے ہے خلوت صحیحہ | | ای اذاکانت في نكاح صحيح اما الفاسد فتجب العدة | ہو یا فاسدہ ہو، طحاوی، یعنی صحیح نکاح میں یہ حکم ہے لیکن فاسد | | بالوطء كما سيأتی۔ | نکاح میں صرف وطی سے عدت لازم ہوتی ہے، جیسا کہ | | | عنقریب آئے گا۔ (ت) |

مدارک شریف میں ہے: من | قبل ان تمسوهن والخلوة الصحيحة كالمس ۲ اه | قبل ازیں کہ تم ان کو مس کرو (یعنی جماع کرو) اور خلوت | | ورأيتني كتبت على هامشها الاولی ان يقول قدس | صحیحہ بھی جماع کی طرح ہے اہ اور مجھے یاد آ رہا ہے کہ میں | | سره والخلوة في النكاح الصحيح كالمس فيقيد النكاح | نے اس کے حاشیہ پر یہ لکھا ہے کہ بہتر تھا کہ صاحب مدارک | | بالصحيح ويطلق الخلوة لان الخلوة وان فسدت | یوں کہتے اور خلوت نکاح صحیح میں جماع کی طرح ہے اس | | توجب العدة اذا صح النكاح۔ اما الفاسد فلا عدة فيه الا | طرح نکاح کو صحیح کی قید سے مقید اور خلوت کو مطلق قرار دیا | | بحقيقة الوطء كما فی الدر وغيره ۳۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | جاسکتا ہے کیونکہ جب نکاح صحیح ہو تو خلوت فاسدہ بھی عدت | | | کو لازم کرتی ہے لیکن نکاح فاسد میں صرف حقیقی وطی سے | | | ہی عدت لازم ہوتی ہے جیسا کہ در وغیرہ میں ہے، | | | واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

مسئلہ ۷۳ تا ۷۶ : از شہر کہنہ بریلی حضور والا ! مسمیٰ جمن کا بیان ہے کہ میری لڑکی نابالغ کا نکاح میرے حقیقی بھائی نے بلا رضا مندی میرے کر دیا اور مجھ کو راضی کر کے رخصت کرا دی، وہ لڑکی اپنے اس خاوند کے پس رہی اور نوبت مجامعت کی پہنچی، اس کے یہاں سے بعد کو

رخصت ہو کر جس وقت کہ وہ اپنے باپ کے مکان پر آئی کہ اس کو عرصہ تین سال کا ہوا پھر کبھی نہ گئی حتی کہ نوبت نالش تک پہنچی، بالآخر اس نے اس کو فیصلہ پنچایت سے طلاق دی،

۱ ردالمحتار باب المهر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۱/۲ ۲ مدارک التنزیل تحت سورة الاحزاب دار الکتاب العربیہ ۳۰۸/۳ ۳ حواشی مدارک اعلحضرت رحمتہ اللہ علیہ

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

Now, can her marriage take place during the 'iddah' (waiting period) of divorce or not? And was this first marriage, which occurred in childhood without the father's consent, valid or not? Only, in this community, the marriage of minor girls with minor boys often occurs under guardianship, and before reaching puberty, a divorce takes place due to some conflict. In this case, is the 'iddah' of divorce mandatory or not? And how much dower (mahr) should be paid? What is the ruling regarding 'khalwat-e-sahiha' (valid seclusion) and intercourse? And what is the ruling in the case of divorce? If a marriage takes place while 'iddah' is mandatory and she remains separate from her husband for three full months, will this marriage be valid or should she remarry? Only.

The Answer: The first marriage, which the uncle performed without the father's permission, was dependent on the father's consent. If after this marriage, he spoke any words of disapproval or rejection, then it became void and no relationship remained between the husband and wife. Consequently, any subsequent cohabitation was strictly forbidden (haram), and any intercourse that occurred was mere adultery (zina), because consent cannot be attached to something that has been annulled. There is no need for divorce, nor is there an 'iddah' for this separation, because where there is no marriage, there is no divorce and no 'iddah'. She may marry whenever she wishes. However, if after the marriage and before expressing disapproval, the father spoke words of approval or sent the girl at the brother's insistence (as sending her is also sufficient for the validity of the marriage, provided disapproval has not been expressed), then this marriage became valid. In that case, the divorce would be a real divorce and its 'iddah' is mandatory. Any marriage performed before the 'iddah' expires will be absolutely void. A minor boy is not capable of divorce; neither can he grant a divorce, nor can his guardian grant a divorce on his behalf. Divorces obtained before the boy reaches puberty due to conflict are absolutely void. There is no 'iddah' for it, and marriage with another person is not permissible in any way. However, if a sane adult grants a divorce before 'khalwat-e-sahiha', half the dower is due, and after 'khalwat-e-sahiha', the full dower is due. Marriage within 'iddah' is absolutely void; it is not considered a marriage at all, even if she remains separate from the second man until the 'iddah' ends. After the 'iddah' concludes, to establish a valid marital bond, remarriage is obligatory; otherwise, it would be adultery. And Allah the Almighty knows best.

Problem 47: Questioned by Maulvi Abdul Rasheed Sahib, Head Teacher of Madrasa Akbariyah, 28 Rabi' al-Akhir 1316 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid said to his wife, "If you do not return to my house from your parents' home, I will divorce you." The woman stayed at her parents' house for a long time. Later, the woman intended to perform a second marriage with another man. The husband said, "I have not divorced you, so how can you marry? If you give me one hundred rupees, I will divorce you." The woman [gave] one hundred rupees...

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

अब क्या उसका निकाह तलाक़ की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान हो सकता है या नहीं? और क्या यह पहला निकाह, जो बचपन में पिता की सहमति के बिना हुआ था, वैध था या नहीं? केवल, इस समुदाय में नाबालिग लड़कियों का निकाह नाबालिग लड़कों के साथ अक्सर अभिभावकत्व में होता है, और यौवन तक पहुँचने से पहले किसी विरोध के कारण तलाक़ हो जाता है। ऐसी स्थिति में क्या तलाक़ की इद्दत अनिवार्य है या नहीं? और महर (दहेज) कितना दिया जाना चाहिए? 'ख़लवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) और संभोग के संबंध में क्या नियम है? और तलाक़ के मामले में क्या नियम है? यदि निकाह तब होता है जब इद्दत अनिवार्य हो और वह तीन पूरे महीनों तक अपने पति से अलग रहे, तो क्या यह निकाह वैध रहेगा या उसे दोबारा निकाह करना चाहिए? केवल।

उत्तर: पहला निकाह, जो चाचा ने पिता की अनुमति के बिना स्वयं किया था, पिता की सहमति पर निर्भर था। यदि इस निकाह के बाद उन्होंने अस्वीकृति या अस्वीकार का कोई शब्द कहा, तो वह शून्य हो गया और पति-पत्नी के बीच कोई संबंध नहीं रहा। इसके बाद, उनका साथ रहना पूरी तरह से हराम (वर्जित) था, और जो संभोग हुआ वह केवल ज़िना (व्यभिचार) था, क्योंकि जो चीज़ रद्द कर दी गई है उसके साथ सहमति नहीं जोड़ी जा सकती। तलाक़ की कोई आवश्यकता नहीं है, और न ही इस अलगाव के लिए कोई इद्दत है, क्योंकि जहाँ निकाह नहीं है, वहाँ कोई तलाक़ और कोई इद्दत नहीं है। वह जब चाहे निकाह कर सकती है। हालाँकि, यदि निकाह के बाद और अस्वीकृति व्यक्त करने से पहले, पिता ने स्वीकृति के शब्द कहे या भाई के आग्रह पर लड़की को विदा कर दिया (क्योंकि विदा करना भी निकाह की वैधता के लिए पर्याप्त है, बशर्ते अस्वीकृति व्यक्त न की गई हो), तो यह निकाह वैध हो गया। उस स्थिति में, तलाक़ एक वास्तविक तलाक़ होगा और इसकी इद्दत अनिवार्य है। इद्दत समाप्त होने से पहले किया गया कोई भी निकाह पूर्णतः शून्य होगा। एक नाबालिग लड़का तलाक़ देने में सक्षम नहीं है; न तो वह तलाक़ दे सकता है, और न ही उसका वली (अभिभावक) उसकी ओर से तलाक़ दे सकता है। लड़के के यौवन तक पहुँचने से पहले विरोध के कारण प्राप्त किए गए तलाक़ पूर्णतः शून्य हैं। इसके लिए कोई इद्दत नहीं है, और किसी अन्य व्यक्ति के साथ निकाह किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं है। हालाँकि, यदि एक समझदार वयस्क 'ख़लवत-ए-सहीहा' से पहले तलाक़ देता है, तो आधा महर देय है, और 'ख़लवत-ए-सहीहा' के बाद, पूरा महर देय है। इद्दत के भीतर निकाह पूर्णतः शून्य है; इसे निकाह नहीं माना जाता है, भले ही वह इद्दत समाप्त होने तक दूसरे व्यक्ति से अलग रहे। इद्दत समाप्त होने के बाद, वैध वैवाहिक बंधन स्थापित करने के

लिए, पुन: निकाह अनिवार्य है; अन्यथा, यह व्यभिचार होगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 47: मौलवी अब्दुल रशीद साहब, प्रधान शिक्षक, मदरसा अकबरिया, 28 रबी अल-आख़िर 1316 हिजरी द्वारा पूछा गया। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तुम अपने मायके से मेरे घर वापस नहीं आईं, तो मैं तुम्हें तलाक़ दे दूँगा।" स्त्री लंबे समय तक अपने मायके में रही। बाद में, स्त्री ने दूसरे पुरुष के साथ दूसरा निकाह करने का इरादा किया। पति ने कहा, "मैंने तुम्हें तलाक़ नहीं दिया है, तो तुम निकाह कैसे कर सकती हो? यदि तुम मुझे सौ रुपये दोगी, तो मैं तुम्हें तलाक़ दे दूँगा।" स्त्री ने सौ रुपये...

पृष्ठ 307 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

اب اس کا نکاح در میانِ عدتِ طلاق کے ہوسکتا ہے یا نہیں؟ اور یہ نکاح اول جو نابالغی میں بلا استرضا باپ کے ہوا، جائز تھا یا نہیں۔؟ فقط، اس قوم میں نابالغ لڑکیوں کا نکاح نابالغ لڑکوں کے ساتھ بولایت اکثر ہوتا ہے اور حالتِ بلوغ تک پہنچنے سے پہلے کسی مخالفت سے طلاق ہو جاتی ہے، اس صورت میں عدتِ طلاق کی لازم آتی ہے یا نہیں؟ اور مہر کس قدر دلایا جا سکتا ہے۔؟ بحالتِ خلوتِ صحیحہ اور مجامعت کے کیا حکم ہے؟ اور بحالتِ طلاق اس کا کیا حکم ہے؟ اگر بحالتِ لازم آنے عدت کے نکاح ہو جائے اور وہ اپنے خاوند سے علیحدہ رہ کر تین ماہ تمام کرے تو یہ نکاح صحیح رہے گا یا پھر نکاح کرنا چاہئے؟ فقط

الجواب: نکاح اول کہ بے اجازتِ پدر چچا نے خود کر دیا تھا اجازتِ پدر پر موقوف تھا، اگر اس نکاح کے بعد اس نے کوئی لفظِ نا منظوری اور رد کرنے کا کہا تھا تو باطل ہو گیا اور زن و شوہر میں کوئی علاقہ نہ رہا تھا، اس کے بعد جور خصت ہوئی محض حرام ہوئی اور جو مجامعت ہوئی نری زنا ہوئی فان الاجازۃ لا تلحق المفسوخ (کیونکہ فسخ شدہ کو اجازت لاحق نہیں ہوتی۔ت) طلاق کی کوئی حاجت نہیں نہ اس فراق کی عدت اذ لانکاح فلاتلاق فلا عدۃ (اس لئے کہ نکاح ہی نہیں ہوا تو طلاق اور عدت کا ہے کی ۔ت) جس وقت چاہے نکاح کرے اور اگر نکاح کے بعد قبلِ اظہارِ نا منظوری باپ نے کوئی لفظِ منظوری کہا یا بھائی کے اصرار سے لڑکی کو رخصت کر دیا (کہ رخصت کر دینا بھی صحتِ نکاح کو کافی ہے جبکہ نا منظوری نہ ظاہر کر چکا ہو) تو اب یہ نکاح صحیح ہو گیا اور یہ طلاق طلاق ہوئی اور اس کی عدت لازم ہے، عدت گزرنے سے پہلے جو نکاح کیا جائیگا باطل محض ہوگا، نابالغ لڑکا اہل طلاق نہیں، نہ اس کے دئے سے طلاق ہو سکتی ہے نہ اس کی طرف سے اس کا ولی طلاق دے سکتا ہے، ببلوغ پسر سے پہلے جو بوجہ مخالفت

طلاق دلوا لیتے ہیں محض باطل ہے ، نہ اس کی عدت ہے نہ اس کے بعد دوسرے سے نکاح کسی طرح حلال ہو سکتا ہے، ہاں عاقل بالغ جو طلاق دے اگر قبل خلوت صحیحہ دی نصف مہر لازم آئے گا اور بعد خلوتِ صحیحہ دی تو پھر پورا مہر ، عدت کے اندر نکاح محض باطل ہے وہ نکاح ہی نہ ہوگا اگر چہ عدت تک اس دوسرے مرد سے جدا رہے ، بعد ختم بتخصیل زوجیت کے لئے دوبارہ نکاح فرض ہو گا ورنہ زنا ہوگا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۴۷: مسئولہ مولوی عبدالرشید صاحب مدرس اول مدرسہ اکبریہ ۲۸ ربیع الآخر ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بی بی سے کہا کہ اگر تو میکے سے میرے گھر نہ آئی تو تجھ کو طلاق دے دوں گا، عورت دورس اپنے میکے میں رہی، پھر اس عورت نے دوسرے مرد کے ساتھ نکاحِ ثانی کرنے کا قصد کیا، شوہر نے کہا کہ میں نے تجھے طلاق نہیں دی تو نکاح کیسا کرتی ہے اگر مجھ کو سو روپئے دے تو میں تجھے طلاق دے دوں، عورت نے سو روپئے---

صفحہ ۳۰۷ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya Volume Thirteen 13

The husband gave a divorce. Now, should she complete the 'iddah' (waiting period) or not? Please explain and be rewarded.

Answer: Certainly, and being away from her husband for ten or even twenty years cannot waive the 'iddah', because the absolute statement of Allah Almighty is: "And divorced women shall wait [as regards their marriage] for three menstrual periods" [Quran 2:228]. Because Allah Almighty's saying that "divorced women should restrain themselves until the completion of three menses" is absolute. And Allah Almighty knows best. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 75: 15 Jumada al-Ula 1320 AH What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say about this issue: Zaid is ill at his home and his wife was with him during his illness. With Zaid's consent, his wife went to her parents' home. She was called back the next day but she did not go because she feared they might snatch her jewelry etc. or treat her badly. The reason was that Zaid, in his normal state, used to say he would take her on a journey, and her (the wife's) parents were preventing her from going out because she was pregnant, for the sake of avoiding hardship to Zaid's wife. Now Zaid, being ill, died after three days, and Zaid's wife is at her parents' house. So, where should she complete her 'iddah'? Furthermore, she dislikes going to her husband's house for fear of loss to her property or life, fearing that her husband's relatives might kill her or snatch her belongings. So, what is the ruling in this situation? And on whom is the wife's dower (mahr) due? Her parents even fear that if they go out, their honor might not be safe, otherwise impossible. Zaid's wife is still pregnant, almost six months. What is the ruling in these cases? Please explain and be rewarded.

Answer: It is obligatory for the wife to go to her husband's house immediately upon hearing the news of his death and stay there until delivery. She should not present false excuses. The notion that she might be killed is highly unacceptable. As for her property, she should not take it with her. She should keep one of her relatives with her from whom protection is expected. However, if...

1 Al-Quran al-Karim 2:228 Page 308 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

पति ने तलाक़ दे दी है, अब उसे इद्दत पूरी करनी चाहिए या नहीं? बयान फ़रमाएं पुण्य मिलेगा।

उत्तर: ज़रूर, और उसका दस या बीस बरस तक पति से अलग रहना इद्दत को ख़त्म नहीं कर सकता, क्योंकि अल्लाह तआला का स्पष्ट कथन है: "और तलाक़शुदा औरतें अपने आप को तीन मासिक धर्म (हैज़) पूरे होने तक रोके रखें।" (क़ुरआन २:२२८)। क्योंकि अल्लाह तआला का यह फ़रमान कि 'मूतलक़ा (तलाक़शुदा) औरतें खुद को तीन हैज़ पूरे होने तक रोके रखें' मुतलक़ (निरपेक्ष) है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ७५: १५ जमादी-उल-उला १३२० हिजरी धर्म गुरु और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद अपने घर में बीमार है और उसकी पत्नी बीमारी की हालत में उसके साथ है। ज़ैद की रज़ामंदी से उसकी पत्नी अपने माता-पिता के घर गई। उसे दूसरे दिन फिर बुलाया गया, लेकिन वह इस डर से नहीं गई कि कहीं वे उसके ज़ेवर आदि न छीन लें या उसे बुरा न कहें। इसकी वजह यह थी कि ज़ैद सामान्य स्थिति में कहता था कि वह उसे सफ़र पर ले जाएगा, और उसके(पत्नी के) माता-पिता उसे बाहर जाने से रोकते थे क्योंकि वह गर्भवती थी, ताकि ज़ैद की पत्नी को तकलीफ़ न हो। अब ज़ैद तीन दिन बीमार रहने के बाद मर गया और ज़ैद की पत्नी अपने माता-पिता के यहाँ है। तो वह अपनी इद्दत कहाँ पूरी करे? इसके अलावा, वह अपने जान-माल के नुक़सान के डर से अपने पति के घर जाना नापसंद करती है कि पति के रिश्तेदार उसे मार न डालें या उसका सामान न छीन लें। तो इस सूरत में क्या हुक्म है और पत्नी का महर किसके ज़िम्मे है? और यहाँ तक कि उसके माता-पिता को अंदेशा है कि अगर हम बाहर जाएंगे तो शायद ही इज़्ज़त बचे, वरना नामुमकिन है। ज़ैद की पत्नी अभी भी गर्भवती है, लगभग छह महीने का गर्भ है। इन सूरतों में क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं सवाब मिलेगा।

उत्तर: पत्नी पर फ़र्ज़ है कि अपने पति की मौत की ख़बर सुनते ही तुरंत उसके घर चली जाए और बच्चे के जन्म (वज़-ए-हमल) तक वहीं रहे और फ़िज़ूल के बहाने बीच में न लाए। यह ख़्याल कि उसे जान से मार दिया जाएगा, बहुत ही अस्वीकार्य है। जहाँ तक उसके सामान का सवाल है, वह उसे साथ न ले जाए, अपने साथ अपने किसी क़रीबी रिश्तेदार को रखे जिससे सुरक्षा की उम्मीद हो। हाँ, अगर...

१ अल-क़ुरआन अल-करीम २:२२८ पेज ३०८ ऑफ़ ६८८

دے دئے شوہر نے طلاق دے دی، اب اس پر عدت پوری کرنا چاہئے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ضرور، اور اس کا دور دس خواہ دس برس شوہر سے جدا رہنا مسقط عدت نہیں ہو سکتا، لاطلاق قولہ تعالٰی وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْءٍ ط ۱ کیونکہ اللہ تعالٰی کا قول کہ "مطلقہ عورتیں اپنے آپ کو تین حیض مکمل ہونے تک روک رکھیں۔" مطلق ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۷۵: ۱۵ جمادی الاولٰی ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید اپنے گھر بیمار ہے اور اس کی زوجہ اس حالت بیماری میں اس کے پاس ہے، زوجہ زید کی برضامندی اپنے شوہر کے اپنے گھر گئی اسی کو دوسرے روز پھر بلایا تو وہ عورت بلحاظ اس کے کہ میرا زیور وغیرہ نہ چھین لیں اور مجھ کو برا نہ کہیں نہ گئی اس کی وجہ یہ تھی کہ زید درحالت اصلی کہا کرتا تھا کہ میں سفر کو لے جاؤں گا اور اس کے یعنی زوجہ کے والدین اس وجہ سے باہر جانے کے مانع ہوتے تھے کہ اس عورت یعنی زوجہ زید کو حمل تھا بوجہ زید کی زوجہ کے تکلیف کی غرض سے، اب وہ زید بیمار بعد تین دن کے مر گیا اور زوجہ زید کی اپنے والدین کے یہاں ہے بس وہ عدت کہاں ختم کرے اور دیگر یہ کہ اپنے شوہر کے یہاں بغرض نقصان اپنے مال یا اپنی جان بچانے کی وجہ سے وہاں جانا ناپسند کرتی ہے کہ مجھ کو میرے زوجہ کے متعلقین مارنہ ڈالیں یا میرا اسباب چھین لیں، پس اس صورت میں کیا حکم ہے اور مہر زوجہ کا کس کے ذمہ باقی ہے، اور یہاں تک اس کے والدین کو اندیشہ ہے کہ ہم باہر چلے جائیں گے تو شاید آبرو بچے ورنہ نا ممکن، اور زوجہ زید اب تک حالت حمل میں ہے یعنی حمل اس کو قریب چھ ماہ کا ہے، ان صورتوں میں کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: زوجہ پر فرض ہے کہ اپنے شوہر کی خبر مرگ سنتے ہی فوراً اس کے گھر چلی جائے اور وضع حمل تک وہیں رہے اور غلط عذر درمیان میں نہ لائے، ایسا خیال بہت ناقابل قبول ہے کہ قتل کر دی جائے گی، رہا مال اسے ساتھ نہ لے جائے، اپنے ساتھ اپنے اقارب سے کسی کو رکھے جس سے حفاظت متوقع ہو، ہاں اگر

Fatawa Rizvia, Volume Thirteen, Page 13

...if no way is possible and there is a real, genuine fear for life, the remedy for which is not in his control, then it is a valid excuse for not going. And Allah Almighty knows everything right and wrong perfectly. And Allah Almighty knows best.

Problem 76: From the village of Mahmania, Siri Rampur, District Barahal, sent by Abdul Hamid Sahib, 24 Ramadan-ul-Mubarak 1325 AH.

[Persian text in the left column translates as:] Question: Zainab, a minor girl whose age has not yet reached nine years, was married approximately two years ago to a person. Her husband divorced her and married her sister a day or two later. Now, Zainab's husband says that he divorced Zainab before consummation. Is the marriage of Zainab's husband to her sister before the waiting period (Iddah) of Zainab's divorce has passed correct according to the noble Sharia or not? If the mentioned marriage is correct, then what is the meaning of the statements in Durr-ul-Mukhtar, Radd-ul-Muhtar, and other books that the waiting period for a minor divorcee under nine years of age is three months, without any mention of a restriction before or after consummation? Explain and receive a reward.

[Urdu text in the right column translates as:] Question: The question is that a girl named Zainab, whose age is not yet nine years, was married to a person about two years ago. Her husband divorced her and after one or two days married her sister. While Zainab's waiting period (Iddah) was not yet over, did the marriage with her sister become valid according to the noble Sharia or not? If the mentioned marriage is correct, then what is the meaning of this statement from Durr-e-Mukhtar, Radd-ul-Muhtar, and other books that for a minor girl whose age is less than nine years, her Iddah is three months, in which no condition of before or after consummation is mentioned? Please explain and receive a reward.

Answer: [From left column]: If seclusion (Khalwat), whether valid or invalid, had occurred between the husband and wife, and then the adult husband divorced that seven or eight-year-old girl, then a waiting period of three months is obligatory, and marriage with her sister before the expiry of the waiting period is unlawful and prohibited. If seclusion had not occurred, then certainly there is no effect of a waiting period, and after her divorce, her sister can be taken as a wife. Allah Almighty said, "Then for you there is no waiting period to be counted against them."[1] In the mentioned books...

[From right column]: Answer: If valid or invalid seclusion (Khalwat) had occurred between Zainab and her husband, and then he divorced her, even if Zainab's age was seven or eight years, the waiting period (Iddah) is obligatory. Marriage with her sister before the expiry of her waiting period is unlawful. And if seclusion had not occurred, then there is no waiting period for Zainab, and after divorcing her, marriage with her sister is permissible. Allah Almighty stated regarding a divorcee before consummation: "Then for you there is no waiting period to be counted against them."[1]

---

[1] Al-Quran al-Karim 33:49 Page 309 of 688

फ़तावा रिज़विया, खंड तेरह, पृष्ठ 13

...यदि कोई रास्ता संभव न हो और वास्तव में जान का सच्चा भय हो, जिसका समाधान उसके नियंत्रण में न हो, तो न जाने के लिए यह एक वैध बहाना है। और अल्लाह तआला सही और गलत को पूरी तरह से जानता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 76: ग्राम महमानिया, सिरी रामपुर, जिला बाराहाल से, अब्दुल हमीद साहिब द्वारा भेजा गया, 24 रमजान-उल-मुबारक 1325 हिजरी।

[बाएँ कॉलम में फ़ारसी पाठ का अनुवाद:] प्रश्न: ज़ैनब नाम की एक नाबालिग लड़की, जिसकी उम्र अभी नौ साल नहीं हुई है, उसका निकाह लगभग दो साल पहले एक व्यक्ति से हुआ था। उसके पति ने उसे तलाक दे दिया और एक-दो दिन बाद उसकी बहन से निकाह कर लिया। अब ज़ैनब का पति कहता है कि उसने ज़ैनब को संभोग से पहले तलाक दे दिया था। क्या ज़ैनब का पति उसकी बहन से ज़ैनब की तलाक की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने से पहले निकाह करना शरीयत के अनुसार सही है या नहीं? यदि उक्त निकाह सही है, तो 'दुर्रे मुख़्तार', 'रद्दुल मुहतार' और अन्य किताबों के उन कथनों का क्या अर्थ है कि नौ वर्ष से कम उम्र की नाबालिग लड़की की इद्दत तीन महीने है, जिसमें संभोग से पहले या बाद की कोई शर्त नहीं दी गई है? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

[दाएँ कॉलम में उर्दू पाठ का अनुवाद:] प्रश्न: सवाल यह है कि ज़ैनब नाम की लड़की, जिसकी उम्र अभी नौ साल नहीं हुई है, उसका निकाह लगभग दो साल पहले एक व्यक्ति से हुआ था। उसके पति ने उसे तलाक दे दिया और एक-दो दिन बाद उसकी बहन से निकाह कर लिया। जबकि ज़ैनब की इद्दत गुज़रने से पहले उसकी बहन से निकाह शरीयत के अनुसार सही हुआ या नहीं? यदि उक्त निकाह सही है, तो फिर 'दुर्रे मुख़्तार' और 'रद्दुल मुहतार' और अन्य किताबों की यह इबारत कि नाबालिग लड़की जिसकी उम्र नौ साल से कम हो उसकी इद्दत तीन महीने है जिसमें संभोग के बाद या पहले की कोई शर्त नहीं दी गई है, इसका क्या मतलब है? बयान कीजिए और पुण्य प्राप्त कीजिए।

उत्तर: [बाएँ कॉलम से]: यदि पति और पत्नी के बीच ख़लवत (एकांत वास), चाहे वह सही हो या फ़ासिदा, हो चुका हो और उसके बाद वयस्क पति ने उस सात या आठ साल की लड़की को तलाक दे दिया हो, तो तीन महीने की इद्दत अनिवार्य है और इद्दत पूरी होने से पहले उसकी बहन से निकाह करना नाजायज़ और हराम है। और यदि ख़लवत भी नहीं हुई थी, तो इद्दत का कोई प्रभाव नहीं होगा

और तलाक के बाद उसकी बहन को पत्नी के रूप में लिया जा सकता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत नहीं है जिसे तुम गिनो।"[1] उक्त किताबों में...

[दाएँ कॉलम से]: उत्तर: यदि ज़ैनब और उसके पति के बीच ख़लवत-ए-सहीह़ा या फ़ासिदा हो चुका हो और उसके बाद तलाक दी गई हो, भले ही ज़ैनब की उम्र सात या आठ साल हो, तो इद्दत अनिवार्य है। इद्दत पूरी होने से पहले उसकी बहन से निकाह करना नाजायज़ है। और यदि ख़लवत न हुई हो, तो ज़ैनब पर कोई इद्दत नहीं है, और उसे तलाक देने के बाद उसकी बहन से निकाह करना जायज़ है। अल्लाह तआला ने संभोग से पहले तलाकशुदा महिला के बारे में फ़रमाया: "तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत नहीं है जिसे तुम गिनो।"[1]

---

[1] अल-कुरान अल-करीम 33:49 पृष्ठ 309 of 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

کوئی صورت ممکن نہ ہو اور واقعی سچا اندیشہ جان کا ہے جس کا تدارک اس کے قابو میں نہیں تو نہ جانے کے لئے عذر صحیح ہے، اور اللہ تعالیٰ صحیح و غلط سب کو خوب جانتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۶: از ملک موضع مہمانیة سیری رامپور ضلع بارہ ہال مرسلہ عبد الحمید صاحب ۲۴ رمضان المبارک ۱۳۲۵ھ

[بائیں کالم میں فارسی متن:] سوال اینکہ زینب نابالغہ راکہ سنش بہ نہ سال نہ رسیدہ است و تخمیناً مدت نکاحش بدوسال رسیدہ زوجش طلاق دادہ خواھر زینب را زوج زینب بعد یکروز یا دوروز نکاح کرد حالا آنکہ زوج زینب می گوید کہ زینب را قبل دخول طلاق دادہ پس اکنوں نکاح کردن زوج زینب خواہر زینب را پیش از گزشتن عدت طلاق زینب موجب شرع شریف درست باشد یا چہ؟ اگر نکاح مذکور درست باشد پس عباراتِ در مختار ورد المحتار و دیگر کتب کہ عدت مطلقہ صغیرہ کہ سنش بہ نہ سال نہ رسیدہ است سہ ماہ است بلا قید دخول و بعد دخول آمدہ است مطالب آنہا چہ؟ بینواتو جرو۔

[دائیں کالم میں اردو متن:] سوال یہ ہے کہ زینب نامی لڑکی جس کی عمر ابھی نو سال نہیں ہوئی اس کا نکاح اندازاً دو سال قبل ایک شخص سے ہوا تو اس کے خاوند نے اسے طلاق دے کر ایک دو دن بعد اس کی بہن سے نکاح کرلیا جبکہ زینب کی عدت گزرنے سے قبل اس کی بہن سے نکاح بموجب شرع شریف درست ہوا یا نہیں، اگر نکاح مذکور درست ہوا ہے تو پھر در مختار و رد المحتار اور دیگر کتب کی یہ عبارت کہ نابالغہ لڑکی جس کی عمر نو سال سے کم ہو اس کی عدت

تین ماہ ہے جس میں دخول کے بعد یا قبل کی کوئی قید مذکور نہیں ہے، اس کا مطلب کیا ہے؟ بیان کیجئے اور اجر حاصل کیجئے۔

الجواب: [بائیں کالم سے]: اگر میان زن شو خلوت واقع شدہ بود اگرچہ خلوت فاسدہ باشد بعد ازاں شوہر بالغ آں دختر ہفت یا ہشت سالہ را طلاق داد عدت سہ ماہ واجب است و نکاح باخواہرش قبل انقضائے عدت ناجائز وحرام، اگر خلوت ہم نکاح باخواہرش قبل انقضائے عدت ناجائز وحرام، اگر خلوت ہم نشدہ بود البتہ از عدت اثرے نیست واز بعد طلاقش خواہرش را بزنی تواں گرفت قال اللہ تعالٰی "فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّونَهَا"[1] در کتب مذکورہ

[دائیں کالم سے]: الجواب: اگر زینب اور اس کے خاوند میں خلوت صحیحہ یا فاسدہ ہو چکی ہو تو اس کے بعد طلاق دی ہو اگرچہ زینب کی عمر سات یا آٹھ سال ہو تو عدت واجب ہے اور اس کی عدت گزرنے سے قبل اس کی بہن سے نکاح نا جائز ہے۔ اور اگر خلوت نہ ہوئی ہو تو پھر زینب پر کوئی عدت نہیں ہے اور اس کو طلاق دینے کے بعد اس کی بہن سے نکاح جائز ہے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا تمہارے حق میں دخول سے قبل مطلقہ۔

---

[1] القرآن الکریم ۳۳/۴۹ Page 309 of 688

Fatawa Rizvia, Volume 13

Page 13

[Arabic/Urdu Text in Table]

The ruling on Iddah (waiting period) has not been left absolute; rather, it has been restricted in two places, previously and subsequently, by 'entry' (consummation), i.e., even if it is constructive entry (Hukmi), such as seclusion (Khalwah) even if it is invalid (Fasidah). The text of 'Tanwir al-Absar' and 'Durr al-Mukhtar', in an abridged and summarized form, is: "The cause for the obligation of Iddah is marriage, which is confirmed by delivery (of the bride) or what takes its place, such as death or seclusion. For a free woman who menstruates, after actual or constructive entry, it is three menstrual cycles. For one who does not menstruate due to young age (not having reached nine years) or old age, it is three months, provided there was intercourse in all cases, even if constructive, such as seclusion, even if invalid." (Summarized). In 'Radd al-Muhtar', it is stated regarding this: The author's saying 'in all' means that the restriction of intercourse is a condition in all the aforementioned issues of Iddah, whether it is Iddah by menstruation or by months, as the author has previously stated with his words 'referring to all' (meaning it includes both Iddah by menstruation and Iddah by months). (T). And Allah Almighty knows best.

Issue 77: What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding this issue: Zaid divorced Hindah, now...

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/256. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/255-5. 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/202.

Page 310 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13

पृष्ठ 13

[तालिका में अरबी/उर्दू पाठ]

इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के नियम को पूर्णतः स्वतंत्र नहीं छोड़ा गया है; बल्कि इसे पहले और बाद में दो स्थानों पर 'प्रवेश' (सम्भोग) द्वारा प्रतिबंधित किया गया है, यानी भले ही वह रचनात्मक प्रवेश (हुक्मी) हो, जैसे एकांत (खलवत) चाहे वह अवैध (फासिदा) ही क्यों न हो। 'तन्वीर अल-अब्सार' और 'दुर्र अल-मुख्तार' का पाठ, संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है: "इद्दत की अनिवार्यता का कारण निकाह है, जो विदाई या उसके स्थान पर होने वाली चीज़ जैसे मृत्यु या एकांत से पुख्ता होता है। एक स्वतंत्र महिला जो मासिक धर्म से गुजरती है, वास्तविक या रचनात्मक प्रवेश के बाद उसके लिए इद्दत तीन मासिक चक्र है। और जो महिला मासिक धर्म वाली न हो (जैसे कम उम्र के कारण, नौ साल से कम, या बुढ़ापे के कारण), उसके लिए इद्दत तीन महीने है, बशर्ते कि सभी मामलों में सम्भोग हुआ हो, भले ही वह रचनात्मक हो, जैसे एकांत, चाहे वह फासिदा (अवैध) हो।" (संक्षिप्त)। 'रद्द अल-मुह्तार' में इस पर कहा गया है: लेखक का कथन 'सभी में' का अर्थ है कि सम्भोग की शर्त इद्दत के सभी उल्लिखित मसलों में है, चाहे वह मासिक धर्म वाली इद्दत हो या महीनों वाली इद्दत, जैसा कि लेखक पहले ही अपने शब्दों 'सभी को शामिल करते हुए' के साथ स्पष्ट कर चुके हैं (यानी इसमें मासिक धर्म की इद्दत और महीनों की इद्दत दोनों शामिल हैं)। (त)। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 77: दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिंदा को तलाक़ दे दिया, अब...

पादलेख: 1. दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/256। 2. दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/255-5। 3. रद्दुल मुह्तार, बाबुल इद्दत, दारुल इहया अत-तुरात अल-अरबी, बेरूत, 2/202।

पृष्ठ 310 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد تیرہ دہم

صفحہ ۱۳

[جدول کا متن] (دائیں کالم - اردو) بیویوں پر عدت نہیں ہے جس کو تم شمار کرو۔ کتب مذکور میں نابالغہ کی عدت کو عام قرار نہیں دیا گیا بلکہ اس سے قبل اور بعد دونوں جگہ عبارت دخول کی قید سے مقید ہے اگرچہ وہ دخول حکمی ہو جیسے خلوت خواہ فاسد ہی کیوں نہ ہو تنویر الابصار اور در مختار کی عبارت ملتقطاً اور اختصاراً یوں ہے عدت کے وجوب کا سبب نکاح جو رخصتی یا اس کے قائم مقام موت یا خلوت سے پختہ ہوتا ہے اور وہ عدت آزاد حیض والی عورت کے لئے اس سے دخول حقیقی یا حکمی کے بعد ہو تو تین حیض ہے، اور جو عورت حیض والی نہ ہو تو اس کی عدت تین ماہ ہے، یہ تمام بیان مدخولہ عورتوں کے لئے ہے اگرچہ دخول حکمی ہو، جیسے خلوت اگرچہ فاسدہ ہو (ملخصاً) اور رد المحتار میں اس پر یوں ہے ماتن کا قول "فی الکل" یعنی وطی شرط ہے تمام مذکورہ مسائل عدت میں خواہ حیض والی کی عدت ہو یا مہینوں والوں کی، جیسا کہ ماتن اس کو پہلے بیان کر چکے ہیں اس قول کے ساتھ کہ "یہ سب کو شامل ہے" (یعنی عدت بالحیض و عدت بالاشہر دونوں کو شامل ہے)۔ (ت)

(بائیں کالم - عربی) حکم عدت را مطلق نگذاشتہ اند بلکہ سابقاً ولاحقاً دو جا مقید بدخول یعنی ولو حکماً کالخلوۃ ولو فاسدۃ (۱) داشتہ اند، عبارت تنویر الابصار و درمختار بالتقاط و اختصار این است العدۃ سبب وجوبھا النکاح والمتأکد بالتسلیم و ما جری مجراہ من موت او خلوۃ، وھی فی حق حرۃ تحیض بعد الدخول حقیقۃ او حکماً ثلث حیض، وفی حق من لم تحض لصغر بأن لم تبلغ تسعاً او کبر ثلثۃ اشھر ان وطئت فی الکل ولو حکماً کالخلوۃ ولو فاسدۃ (۲) (ملخصاً) در ردالمحتار ست قولہ فی

الکل یعنی ان التقیید بالوطئ شرط فی جمیع مامر من مسائل العدۃ بالحیض والعدۃ بالاشہر کما افادہ سابقاً بقولہ راجع للجمیع (۳) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ کو طلاق دی اب

حواشی: ۱ درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۶ ۲ درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۵-۵ ۳ ردالمحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۰۲

Fatawa Razawiyya Volume 13

Question: Until she completes the waiting period (Iddah), is the provision of maintenance (nan-nafqah) the responsibility of Zaid or the heir of Hindah? And is Zaid obliged to provide the house where Hindah completes her waiting period or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The maintenance for the entire duration of the waiting period is the responsibility of Zaid, and she shall complete her waiting period in Zaid's house, provided that before the divorce, that same house was her place of residence. Even if she had gone to her father's house for treatment a few months prior, as the questioner personally stated to me (t). And this divorce, which occurred through Khul' as also explained (t), was irrevocable (Ba'inah). Thus, it is mandatory for Zaid to provide her a place in his own house until the completion of the waiting period and observe hijab with her due to the dissolution of marriage. If Zaid unjustly does not let her stay in his house, he should point out another house where she can complete the waiting period. If that house is rented, the rent is Zaid's responsibility until the end of the waiting period. When Zaid allows her to stay in his house or designates another house for her, it is mandatory for Hindah to go to that house immediately and not come out of it at all until the waiting period ends.

Arabic Text	**Urdu Translation**
In 'Al-Khaniyah': A woman observing the waiting period after divorce is entitled to maintenance and housing, whether the divorce was revocable (Raj'i), irrevocable (Ba'in), or triple (Thalath), etc.	In 'Khaniyah' it is stated: A woman observing the waiting period for divorce is entitled to maintenance and housing, whether the divorce is revocable, irrevocable, or with three divorces, etc.
In 'Al-Durr al-Mukhtar': If she is divorced or [her husband] dies while she is visiting someone away from her home, she must return to it immediately because it is obligatory for her.	And in 'Durr-e-Mukhtar' it is stated: If a woman goes out to visit someone and during that time she is divorced or her husband dies, she must return home immediately as this is mandatory for her.
Both [the woman in Iddah of divorce and the woman in Iddah of death] observe their waiting period in the house where it became obligatory.	And both, meaning those observing waiting periods due to divorce and death, should spend their waiting period in the house where the obligation arose. (This is

Arabic Text	Urdu Translation
(Both are attributed to them by residence before the separation, etc. - Shami).	the house which was assigned as their residence before the separation, etc. - Shami).
They must not leave it unless they are forced out (this includes the husband's unjust expulsion, etc. - Shami). Then she moves to the nearest place to it. In the case of divorce, [she moves] to wherever the husband wishes.	And they should not move from that house unless they are forced out. (This also includes the husband's unjust expulsion, etc. - Shami).
(The ruling for the place she moves to is the same as the original residence), so she does not leave it.	For the one in the waiting period due to death...

1 Fatawa Qadi Khan, Section on Maintenance of Iddah, Nawal Kishore, Lucknow 2/200

फ़तावा रज़विया जिल्द १३

सवाल: जब तक वह इद्दत पूरी न करे, क्या नान-नफ़क़ह (खर्च) ज़ैद के ज़िम्मे है या हिन्दा के वारिस के? और जिस मकान में हिन्दा अपनी इद्दत पूरी करे, क्या वह ज़ैद पर लाज़िम है या नहीं? बयान फरमाएं सवाब पायें।

जवाब: पूरी इद्दत तक नान-नफ़क़ह ज़ैद के ज़िम्मे है और वह ज़ैद के ही मकान में इद्दत पूरी करे, बशर्ते कि तलाक़ से पहले वही मकान उसके रहने का था। अगरचे वह इलाज के लिए कुछ महीने पहले अपने बाप के यहाँ चली आई थी, जैसा कि सायल ने खुद अपनी ज़बान से मुझसे बयान किया है (त)। और यह तलाक़ जो खुलअ के तरीके पर वाक़े हुई थी जैसा कि उसने यह भी कहा (त), बाइना थी। तो ज़ैद पर लाज़िम है कि इद्दत पूरी होने तक अपने ही मकान में उसे जगह दे और निकाह खत्म होने की वजह से उससे पर्दा करे। और अगर ज़ैद ज़ुल्म करते हुए अपने घर में न रहने दे तो कोई और मकान बताए जिसमें वह इद्दत पूरी करे। और अगर वह मकान किराये का हो तो इद्दत के खत्म होने तक किराया ज़ैद के ज़िम्मे है। और जब ज़ैद अपने मकान में रहने दे या दूसरा मकान उसके लिए बताए तो हिन्दा पर लाज़िम है कि फ़ौरन उस मकान में चली जाए और इद्दत खत्म होने तक हरगिज़ उससे बाहर न आए।

अरबी इबारत

'अल-खानिया' में है: तलाक़ की इद्दत गुज़ारने वाली औरत नफ़क़ह और रिहाइश (सकनी) की हक़दार है, चाहे तलाक़ रजई हो, बाइना हो या तीन तलाक़ें हों, आदि।

'अद-दुर्रुल मुख्तार' में है: अगर उसे तलाक़ हो जाए या [शौहर] मर जाए जबकि वह अपने घर के अलावा कहीं मुलाक़ात के लिए गई हो, तो वह फ़ौरन वहां लौट आए क्योंकि यह उस पर वाजिब है।

दोनों (तलाक़ और मौत की इद्दत वाली) उस घर में इद्दत गुज़ारेंगी जिसमें वह वाजिब हुई। (दोनों

उर्दू अनुवाद

'खानिया' में है कि तलाक़ की इद्दत वाली औरत नफ़क़ह और सकनी की मुस्तहिक़ (हक़दार) है, चाहे तलाक़ रजई हो या बाइना या तीन तलाक़ों वाली हो आदि।

और 'दुर्रे-मुख्तार' में है: औरत जब घर से बाहर किसी को मिलने गई हो और इस दौरान उसे तलाक़ हो जाए या शौहर वफ़ात पा जाए तो फ़ौरन घर वापस आ जाए कि यह उस पर वाजिब है।

और दोनों यानी तलाक़ और मौत की वजह से इद्दत वाली औरतें उस घर में इद्दत बसर करें जिस

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
जुदाई से पहले रिहाइश की वजह से उनकी तरफ मंसूब हैं आदि - शामी)।	घर में इद्दत वाजिब हुई है। (यह वह घर है जो फुरक़त (जुदाई) से पहले उनकी रिहाइश के लिए मंसूब है आदि - शामी)।
वे उससे न निकलें जब तक कि उन्हें निकाला न जाए (इसमें शौहर का ज़ुल्म से निकालना भी शामिल है आदि - शामी)। वह अपने सबसे नज़दीकी जगह पर चली जाए। और तलाक़ के मामले में जहाँ शौहर चाहे।	और वे उस घर से मुंतक़िल (शिफ्ट) न हों सिवाए इसके कि उन्हें ज़बरदस्ती निकाला जाए। (इसमें शौहर का ज़ुल्म से निकालना भी शामिल है आदि - शामी)।
(जिस जगह वह मुंतक़िल हुई उसका हुक्म असली मकान जैसा ही है) अतः वह वहां से न निकले।	मौत की इद्दत वाली को...

1 फ़तावा क़ाज़ी खां, फ़स्ल फ़ी नफ़क़तुल इद्दत, नवल किशोर, लखनऊ 2/200

पृष्ठ ३११ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

سوال: تاوقتیکہ عدت پوری کرے، نان نفقہ آیا زید کے ذمہ ہے یا وارث ہندہ کے؟ اور وہ مکان جس میں ہندہ اپنی عدت پوری کرے زید پر لازم ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: تمام عدت تک نان نفقہ زید کے ذمہ ہے اور زید ہی کے مکان میں عدت پوری کرے جبکہ قبل از طلاق وہی مکان اس کے رہنے کا تھا اگرچہ علاج کے لئے چند ماہ پیشتر اپنے باپ کے یہاں چلی آئی تھی کما قال لی السائل بلسانہ (جیسا کہ سائل نے خود اپنی زبان سے مجھے بیان کیا ہے۔ ت) اور یہ طلاق کہ بطریق خلع واقع ہوئی تھی کما بین ایضا (جیسا کہ اس نے یہ بھی کہا۔ ت) بائندہ تھی تو زید پر لازم ہے کہ عدت پوری ہونے تک اپنے ہی مکان میں اسے جگہ دے اور بوجہ زوال نکاح اس سے پردہ کرے، اور اگر زید ظلماً اپنے گھر میں نہ رہنے دے تو کوئی اور مکان بتائے جس میں وہ عدت پوری کرے اور اگر وہ مکان کرایہ کا ہو تو اختتام عدت تک کرایہ زید کے ذمہ ہے، اور جب زید اپنے مکان میں رہنے دے یا دوسرا مکان اس کے لئے بتائے تو ہندہ پر لازم ہے کہ فوراً اس مکان میں چلی جائے اور ختم عدت تک ہر گز اس سے باہر نہ آئے۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
في الخانية المعتدة عن الطلاق تستحق النفقة والسكنى كان الطلاق رجعيا او بائنا او ثلثا الخ	خانیہ میں ہے کہ طلاق کی عدت والی نفقہ اور سکنی کی مستحق ہے خواہ طلاق رجعی یا بائنہ یا تین طلاقوں والی ہو الخ اور درمختار میں ہے عورت جب گھر سے باہر کسی کو ملنے گئی ہو اور اس دوران اس کو طلاق ہو جائے یا

عربی عبارت	اردو ترجمہ
وفي الدرالمختار طلقت او مات وهي زائرة في غير مسكنها عادت اليه فورا لوجوبه عليها	خاوند فوت ہو جائے تو فوراً گھر واپس آجائے کہ یہ اس پر واجب ہے
وتعتدان ای معتدة طلاق وموت في بيت وجبت فيه (هما مما يضاف اليهما بالسكنى قبل الفرقة الخ شامی)	اور دونوں یعنی طلاق اور موت کی وجہ سے عدت والی عورتیں اس گھر میں عدت بسر کریں جس گھر میں عدت واجب ہوئی ہے (یہ وہ گھر ہے جو فرقت سے قبل ان کی رہائش کے لئے منسوب ہے الخ شامی)
ولا يخرجان منه الا ان تخرج (وشمل اخراج الزوج ظلما الخ شامي فتخرج لاقرب موضع اليه وفي الطلاق الى حيث شاء الزوج	اور وہ اس گھر سے منتقل نہ ہوں الا یہ کہ ان کو جبراً نکالا جائے (اس میں خاوند کا ظلماً نکالنا بھی شامل ہے الخ شامی)
(وحكم ما انتقلت اليه حكم المسكن الاصلی فلا تخرج	موت کی عدت والی کو

1 فتاویٰ قاضی خاں فصل فی نفقة العدة نولکشور لکھنؤ ۲ / ۲۰۰

Fatawa Ridawiyya, Volume 13

[Top Box Left:] From Shami, (summary) And Allah Almighty knows best. [Top Box Right:] If forced to leave, she should move to the nearest house. A woman in the iddah (waiting period) of divorce may be moved by her husband to whichever house he chooses (and once moved to the second house, that will then be considered the original residence, so the woman should not leave from there, etc., Shami). Summary, and Allah Almighty knows best. (T)

Problem 78: 27 Rajab 1318 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid divorced his wife three times in one sitting in front of two praying individuals, and the woman was also pregnant. Now, should Zaid turn her out of his house or not, or should he keep her in his house and provide her with food, and until when should he provide food for her? Zaid divorced her because of an argument between husband and wife, but now both are willing, and Zaid wants to keep her in the house again. Now, the questioner's query to the scholars of religion is: what is the ruling according to the Quran and Hadith, and what is the ruling according to Sharia in the view of Imam Abu Hanifa, Imam Shafi'i, and Imam Ibn Hanbal (may Allah have mercy on them all)?

Answer: Three divorces have occurred; this is the position of all four Imams. Now, he cannot marry her without 'Halala'. This is the command of the Quran and Hadith. She will stay in the house until the completion of her iddah, i.e., until the birth of the child, and Zaid will have to provide food and clothing, but she will stay like a complete stranger and non-mahram woman; he must observe purdah (veil) from her.

[Bottom Box Left:] Allah the Almighty said: "Lodge them where you lodge, according to your means, and do not harm them so as to distress them. And if they are pregnant, spend on them until they deliver their burden." [Bottom Box Right:] Allah Almighty said: Provide residence for the women in iddah where you yourself reside, according to your status, and do not cause them harm by causing them distress. Then, if they are pregnant, give them maintenance until they give birth to the child. (T)

In the case of pregnancy, this is the position of all four Imams. And Allah Almighty knows best.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Hidad, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/221; Durr al-Mukhtar, Chapter on Hidad, Mujtabai Press, Delhi, 1/260.

2. The Holy Quran 65/6.

फ़तावा रज़विया, खंड 13

[ऊपर का बॉक्स बाएँ] शामी से, (संक्षेप में) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। [ऊपर का बॉक्स दाएँ] यदि मजबूरी में निकलना पड़े, तो निकटतम घर में स्थानांतरित हो जाए। तलाक़ की इद्दत वाली स्त्री को उसका पति जिस घर में चाहे वहां स्थानांतरित कर सकता है (और जब वह दूसरे घर में चली जाए, तो वही मूल निवास के रूप में माना जाएगा, इसलिए वह वहाँ से न निकले आदि शामी)। संक्षेप में, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 78: 27 रजब 1318 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी पत्नी को दो नमाज़ियों के सामने एक ही बैठक में तीन बार तलाक़ दे दी, और वह स्त्री गर्भवती भी थी। अब ज़ैद उसे अपने घर से निकाल दे या नहीं, या उसे अपने घर में रखे और उसे भोजन दे, और कब तक उसे भोजन दे? ज़ैद ने पति-पत्नी के बीच झगड़े के कारण तलाक़ दी थी, अब दोनों सहमत हैं, और ज़ैद चाहता है कि उसे फिर से घर में रखे। अब, सवाल करने वाले का धर्म के विद्वानों से यह सवाल है कि कुरान और हदीस के अनुसार क्या हुक्म है और इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई और इमाम इब्न हंबल (अल्लाह उन पर रहमत करे) के अनुसार शरीअत का क्या हुक्म है?

अल-जवाब: तीन तलाक़ हो गईं, चारों इमामों का यही धर्म है। अब वह बिना हलाला के उससे निकाह नहीं कर सकता। कुरान और हदीस का यही हुक्म है। वह इद्दत तक यानी बच्चा होने तक घर में रहेगी और ज़ैद को रोटी-कपड़ा देना होगा, लेकिन वह बिल्कुल पराई और अजनबी औरत की तरह रहेगी, उससे पर्दा करे।

[नीचे का बॉक्स बाएँ] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उन्हें वहीं रहने दो जहाँ तुम ख़ुद रहते हो अपनी सामर्थ्य के अनुसार, और उन्हें तंग करने के लिए नुक़सान न पहुँचाओ। और यदि वे गर्भवती हों, तो उन पर ख़र्च करो जब तक कि वे अपने गर्भ का बोझ न उतार दें।" [नीचे का बॉक्स दाएँ] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: इद्दत वाली औरतों को वहीं रहने दो जहाँ तुम ख़ुद रहते हो अपनी हैसियत के मुताबिक़, और उन्हें तंगी देकर नुक़सान मत पहुँचाओ। फिर अगर वे गर्भवती हों, तो उन्हें ख़र्च दो यहाँ तक कि वे बच्चे को जन्म दे दें। (त)

गर्भावस्था की स्थिति में, चारों इमामों का यही धर्म है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. रद-उल-मुहतार, हिदाद का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/221; दुर्र-ए-मुख्तार, हिदाद का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/260.
2. अल-कुरान अल-करीम 65/6.

पृष्ठ 312 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم ۱۳

[اوپر والا خانہ بائیں:] منہ شامی۱ (اہـ ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم۔ [اوپر والا خانہ دائیں:] اگر مجبوراً نکلنا پڑے تو قریب ترین مکان میں منتقل ہو جائے اور طلاق کی عدت والی خاوند جس مکان میں چاہے وہاں منتقل ہو جائے (اور جب دوسرے مکان میں منتقل ہو تو پھر وہی اصل مسکن کے حکم میں ہوگا لہٰذا عورت وہاں سے نہ نکلے الخ شامی) ملخصاً، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۸: ۲۷ رجب ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین بیچ اس مسئلہ کے کہ زید نے اپنی زوجہ کو طلاق دی ایک جلسہ میں تین مرتبہ سامنے دو شخص نمازیوں کے، اور وہ عورت حاملہ بھی تھی، اب زید اپنے گھر سے اس کو نکال دے یا نہیں، یا اپنے گھر میں اس کو رکھے اور کھانے کو اس کو دے اور کب تک اس کو کھانے کو دے، اور زید نے تکرار زن و شوہر کے سبب سے طلاق دی تھی، اب دونوں رضامند ہیں، اب زید چاہتا ہے کہ پھر گھر میں رکھے، اب سائل کا سوال علمائے دین سے یہ ہے کہ ازروئے قرآن و حدیث کیا حکم ہے اور امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ اور امام شافعی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ اور امام ابن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کے نزدیک شرع شریف سے کیا حکم ہے؟

الجواب: تین طلاقیں ہو گئیں، چاروں اماموں کا یہی مذہب ہے، اب وہ بغیر حلالے اس سے نکاح نہیں کر سکتا، یہی حکم قرآن وحدیث کا ہے وہ عدت تک یعنی بچہ ہونے تک گھر میں رہے گی اور روٹی کپڑا زید کو دینا ہو گا مگر بالکل غیر واجنبی عورت کی طرح رہے اس سے پردہ کرے،

[نیچے والا خانہ بائیں:] قال اللہ تعالٰی اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَ لَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ ۲۔ [نیچے والا خانہ دائیں:] اللہ تعالٰی

نے فرمایا: عدت والی عورتوں کو وہاں رہائش دو جہاں تم خود رہائش رکھتے ہو اپنی حیثیت کے مطابق، اور ان کو تنگی دے کر ضرر مت پہنچاؤ، پھر اگر وہ حاملہ ہوں تو ان کو خرچہ دو تا وقتیکہ وہ بچہ کو جنم دیں۔ (ت)

صورت حمل میں یہی مذہب چاروں ائمہ کا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

---

1 ردالمحتار فصل فی الحداد داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۲۱/۲، درمختار فصل فی الحداد مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۰/۱ 2 القرآن الکریم ۶/۶۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

Issue 79: From Mohalla Mardad, sent by Hazrat Maulana Sulaiman Ashraf Sahib (former Professor of Theology, Muslim University Aligarh), 26 Shawwal 1318 AH. O scholar of Ahle Sunnat, Fazil Barelvi, may Allah grant Muslims benefit through your long life. Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. Zaid gave his wife a talaq ba'in (irrevocable divorce) and died after one month. After how long can his wife remarry? Explain, and you shall be rewarded.

Answer: If this divorced woman was pregnant, then her iddah (waiting period) is until delivery, regardless. If she was not pregnant, and the divorce was given by the husband while in health, or during terminal illness with the wife's consent, then the iddah is three menstrual cycles; it will not change upon the husband's death. However, if the irrevocable divorce was given during terminal illness without the woman's consent, the iddah is the longer of the two periods: three menstrual cycles or four months and ten days. This means if three complete menstrual cycles finish after the divorce but before the death, she must wait four months and ten days after the death. If four months and ten days have passed since the husband's death but three complete menstrual cycles have not occurred since the divorce, she must wait until three complete menstrual cycles are finished.

[Arabic Column]: In Radd al-Muhtar: If he divorced her irrevocably during his illness without her consent such that he became a fleer [from her inheritance rights], and he died during her iddah, then her iddah is the longer of the two terms. If he divorced her irrevocably with her consent such that he did not become a fleer, she observes the iddah of divorce only. If he divorced her irrevocably while healthy and then died, her iddah does not change by consensus. Summarized, and Allah Almighty knows best.

[Urdu Column]: It is stated in Radd al-Muhtar that if a husband divorces his wife during his terminal illness without her consent, attempting to flee from her becoming an heir, and then the husband dies during the divorced wife's iddah, in such a case, the woman's iddah will be whichever is longer: the iddah of death or the iddah of divorce. And if the divorce was given during the terminal illness with the wife's consent, such that he would not be fleeing from her becoming an heir, then in such a case, the woman's iddah will be only the divorce iddah. And if the husband gave an irrevocable divorce while in health and then died during the wife's iddah,

then in this case, by consensus, the iddah of divorce will remain and will not change due to death. End summary. And Allah Almighty knows best. (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/205. Page 313 of 688

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

मसला 79: मोहल्ला मरदाद से, हज़रत मौलाना सुलेमान अशरफ साहब (पूर्व धर्मशास्त्र प्रोफेसर, मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़) द्वारा भेजा गया, 26 शव्वाल 1318 हिजरी। ऐ अहले सुन्नत के विद्वान, फ़ाज़िल बरेलवी, अल्लाह आपकी लंबी उम्र से मुसलमानों को लाभान्वित करे। आप पर सलाम और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों। ज़ैद ने अपनी बीवी को तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) दिया और एक महीने के बाद मर गया। अब उसकी बीवी कितने समय बाद दूसरा निकाह कर सकती है? बयान फरमाएं आपको सवाब मिलेगा।

उत्तर: यदि यह तलाकशुदा महिला गर्भवती थी, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) प्रसव तक है, चाहे जो भी हो। और यदि वह गर्भवती नहीं थी, और उक्त तलाक पति ने अपने स्वास्थ्य के दौरान दिया था या पत्नी की सहमति से मृत्यु-शैय्या (मरज़ुल मौत) पर दिया था, तो इद्दत तीन मासिक धर्म है; पति की मृत्यु से यह नहीं बदलेगी। और यदि तलाक-ए-बाइन मृत्यु-शैय्या पर महिला की सहमति के बिना दिया गया था, तो इद्दत वह है जो दो अवधियों में लंबी हो: तीन मासिक धर्म या चार महीने और दस दिन। यानी अगर तलाक के बाद लेकिन मौत से पहले तीन पूर्ण मासिक धर्म समाप्त हो जाते हैं, तो मौत के बाद चार महीने दस दिन इंतजार करे। और अगर पति की मौत के बाद चार महीने दस दिन बीत गए और तलाक के बाद अभी तक तीन पूर्ण मासिक धर्म नहीं हुए, तो तीन पूर्ण मासिक धर्म होने तक प्रतीक्षा करे।

[अरबी स्तंभ]: रद अल-मुह्तार में: यदि उसने अपनी बीमारी में उसकी सहमति के बिना उसे अटल तलाक दे दिया, इस तरह कि वह [उसके उत्तराधिकार अधिकारों से] भागने वाला बन गया, और उसकी इद्दत के दौरान मर गया, तो उसकी इद्दत दो अवधियों में से लंबी वाली है। यदि उसने उसकी सहमति से उसे अटल तलाक दिया जिससे वह भागने वाला नहीं बना, तो वह केवल तलाक की इद्दत मनाएगी। यदि उसने स्वास्थ्य की स्थिति में उसे अटल तलाक दिया और फिर मर गया, तो सर्वसम्मति से उसकी इद्दत नहीं बदलती। सारांश, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू स्तंभ]: रद अल-मुह्तार में है कि यदि पति ने अपनी मृत्यु-शैय्या पर पत्नी की मर्जी के बिना तलाक दे दिया, इस उद्देश्य से कि वह वारिस बनने से बच जाए, और फिर वह पति तलाकशुदा बीवी की इद्दत के दौरान मर जाए, तो ऐसी स्थिति में महिला की इद्दत, मौत या तलाक की इद्दत में से जो भी लंबी हो, वही मानी जाएगी। और अगर मृत्यु-शैय्या पर पत्नी की रजामंदी से तलाक दिया गया हो कि

उससे वह वारिस होने से भागने वाला न होगा, तो ऐसी स्थिति में महिला की केवल तलाक वाली इद्दत होगी। और अगर पति ने अपने स्वास्थ्य के दौरान तलाक-ए-बाइन दिया हो और फिर बीवी की इद्दत के दौरान पति मर जाए, तो इस सूरत में सर्वसम्मति से तलाक वाली इद्दत होगी और मौत की वजह से इद्दत नहीं बदलेगी। सारांश समाप्त। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1 रद अल-मुह्तार, बाबुल इद्दत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/205. पृष्ठ 313/688

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، ۱۳

مسئلہ ۷۹: از محلہ مرداد مرسلہ حضرت مولانا سلیمان اشرف صاحب (سابق پروفیسر دینیات مسلم یونیورسٹی علی گڑھ) ۲۶ شوال ۱۳۱۸ھ عالم اہلسنت فاضل بریلوی متع اللہ المسلمین بطول بقائکم، السلام علیکم و رحمۃ اللہ و برکاتہ، زید نے اپنی بی بی کو طلاق بائن دی اور بعد ایک مہینہ کے مر گیا، اب اس کی بی بی کتنی مدت بعد عقد ثانی کرے؟ بینوا توجروا

الجواب: یہ مطلقہ اگر حاملہ تھی تو عدت حمل ہے مطلقاً، اور اگر حمل نہ تھا تو طلاق مذکور اگر شوہر نے اپنی صحت میں دی یا برضائے زوجہ مرض الموت میں دی تو عدت تین حیض ہے، موت شوہر سے نہ بدلے گی، اور اگر طلاق بائن مرض الموت میں بے رضائے زن دی تو تین حیض، اور چار مہینے دس دن سے جو مدت دراز تر ہے وہ عدت ہے یعنی چار ماہ و دہ روز بعد موت گزرنے سے پہلے طلاق کے بعد تین حیض کامل ختم ہو جائیں تو بعد مرگ چار ماہ دس یوم انتظار کرے، اور اگر مرگ شوہر پر چار مہینے دس دن ہو گئے اور ہنوز بعد طلاق تین حیض کامل نہ ہوئے تو تین حیض کامل ہونے تک منتظر رہے،

[Arabic Column]: فی ردالمحتار ابانها فی مرضہ بغیر رضاہا بحیث صار فارا و مات فی عدتها فعدتها ابعد الاجلین، ولو ابانها برضاہا بحیث لم یصر فارا تعتد عدۃ الطلاق فقط، ولو طلقها بائنا فی صحتہ ثم مات لاتنتقل عدتها اتفاقاً ملخصاً واللہ تعالیٰ اعلم۔

[Urdu Column]: ردالمحتار میں ہے خاوند نے اپنی مرض الموت میں بیوی کی مرضی کے بغیر طلاق دے دی عورت کے وارث بننے سے فرار اختیار کرتے ہوئے پھر وہ خاوند مطلقہ بیوی کی عدت میں فوت ہو جائے تو ایسی صورت میں عورت کی عدت، موت یا طلاق کی عدت میں

سے جو بھی طویل ہو وہی قرار پائے گی۔ اور اگر مرض موت میں عورت کی رضامندی سے طلاق دی ہو کہ اس سے وہ عورت کے وارث ہونے سے فرار اختیار کرنے والا نہ ہو گا تو ایسی صورت میں عورت کی فقط طلاق والی عدت ہو گی، اور اگر خاوند نے اپنی صحت میں طلاق بائنہ دی ہو پھر بیوی کی عدت کے دوران خاوند فوت ہو جائے تو اس صورت میں بالاتفاق طلاق والی عدت ہو گی اور موت کی وجہ سے عدت تبدیل نہ ہو گی اھ ملخصاً، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

۱ ردالمحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۰۵ Page 313 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 13

Problem 80: From Marehra Mutahira, sent by Hazrat Syed Hussain Haider Mian Sahib, 11th Ramadan-ul-Mubarak 1313 AH.

What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding the following case? The parents of Hindah, who is of the Sunni school of thought, married her to Zaid, who is of the Shia sect (who fully followed the beliefs of the mujtahids of present-day Lucknow, considering Lord Ali, may Allah the Almighty honor his face, superior to all preceding prophets except the Master of the Universe, peace and blessings of Allah be upon him, and believing the Holy Quran to be incomplete and distorted). This marriage was done considering compatibility and brotherhood. Zaid was suffering from a terminal illness before the marriage. After the marriage, it worsened such that he would only regain consciousness for a fleeting moment occasionally during the day and night. For this reason, a "valid privacy" (Khalwat-e-Sahiha) could not take place. All that happened was that Hindah's aunt took her to Zaid in the evening and made her sit on a stool near him. At that moment, Zaid regained enough consciousness that he intended to lift his hand from Hindah's face, but as soon as he touched her, due to extreme weakness and unconsciousness, his hand fell. Seeing this, her aunt, who was standing a short distance away observing, came and took Hindah away. After that, they never had another chance to see each other as Zaid died within seven or eight days. The parents then married Hindah to Bakr, who is of the Sunni school of thought and also compatible and within the brotherhood, before four months and ten days had passed. The marriage with Zaid took place on 15th Dhul-Hijjah, and Zaid died on 21st Dhul-Hijjah. On 17th Rabi-ul-Thani, Hindah's marriage to Bakr took place. There were 14 days remaining in the iddah period. Now Hindah has children. Some people are questioning the legitimacy of Hindah's children's lineage, arguing that Bakr performed this marriage within the iddah period. In this situation, after deep consideration of these ranks, please provide an answer: Was the marriage of Zaid and Hindah valid or not? Due to the invalidity of the marriage or the non-occurrence of valid privacy, was the iddah of death mandatory upon Hindah after Zaid's death or not? What is the ruling regarding the second marriage and the children born from it? Please explain, and may you be rewarded.

The Answer:

In the case under query, the second marriage is undoubtedly valid, and the children born from it are of legitimate lineage without any doubt. For the iddah of death to be four months and ten days, there is no need for privacy or anything else; the iddah becomes mandatory for a non-pregnant woman upon the death of her husband.

In Al-Durr al-Mukhtar: The iddah for death is four months and ten days, provided the marriage remained valid until death, absolutely, whether it was consummated or not, even if the wife is a minor. Nothing is excluded from this except a pregnant woman - 1.

In Durr al-Mukhtar, it is stated that due to death, the iddah will absolutely be four months and ten days, provided the marriage remained valid until death, whether intercourse occurred with the wife or not, even if the wife was a minor. From this rule, only the iddah of a pregnant woman will be different. (Translator)

1 Dur al-Mukhtar, Chapter of Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/256 Page 314 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह

मसला 80: मारहरा मुतहरा से, हज़रत सैयद हुसैन हैदर मियां साहब द्वारा भेजा गया, 11 रमज़ान-उल-मुबारक 1313 हिजरी।

दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या फ़रमाते हैं? हिंदा के माता-पिता, जो सुन्नी संप्रदाय की है, ने हिंदा का निकाह ज़ैद से कर दिया जो शिया संप्रदाय का था (जो लखनऊ के वर्तमान मुजतहिदीन के अक़ीदों का पूरी तरह अनुयायी था, मौला अली रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा तमाम पिछले नबियों से अफ़ज़ल मानता था और क़ुरान मजीद को अधूरा और परिवर्तित मानता था)। यह निकाह कफ़ू (समानता) और बिरादरी के आधार पर किया गया था। ज़ैद निकाह से पहले ही मरणोन्मुख बीमारी (मरज़-उल-मौत) में था। निकाह के बाद बीमारी इतनी बढ़ गई कि उसे दिन-रात में कभी-कभार ही पल भर के लिए होश आता था। इस कारण से "ख़लवत-ए-सहीहा" (वैध एकांत) संभव नहीं हो सकी। बस इतना हुआ कि हिंदा की चाची शाम के समय हिंदा को ज़ैद के पास ले गईं और उसके पास बिछी हुई चौकी पर बिठा दिया। ज़ैद को उस समय इतना होश आया कि उसने हिंदा के चेहरे से हाथ हटाने का इरादा किया, लेकिन स्पर्श करते ही अत्यधिक कमज़ोरी और बेहोशी के कारण उसका हाथ गिर पड़ा। यह देखकर उसकी चाची, जो थोड़ी दूर अलग खड़ी देख रही थी, आई और हिंदा को उठा ले गई। इसके बाद फिर कभी एक-दूसरे को देखने की नौबत नहीं आई क्योंकि ज़ैद सात-आठ दिनों में मर गया। माता-पिता ने हिंदा का निकाह बक्र के साथ, जो सुन्नी संप्रदाय का और कफ़ू व बिरादरी से था, चार महीने दस दिन गुज़रने से पहले ही कर दिया। ज़ैद से निकाह 15 ज़ुल-हिज्जा को हुआ था और 21 ज़ुल-हिज्जा को ज़ैद की मृत्यु हो गई। 17 रबी-उल-थानी को हिंदा का निकाह बक्र से हुआ। इद्दत में 14 दिन कम थे। अब हिंदा संतान वाली है। कुछ लोग हिंदा की औलाद के नसब (वंश) की वैधता पर आपत्ति कर रहे हैं कि बक्र ने यह निकाह इद्दत के अंदर ही कर लिया। इस स्थिति में, इन पहलुओं पर गहराई से विचार करने के बाद उत्तर दें कि क्या ज़ैद और हिंदा का निकाह सही था या नहीं? निकाह के सही न होने या ख़लवत-ए-सहीहा न होने के कारण ज़ैद की मृत्यु के बाद हिंदा पर मौत की इद्दत अनिवार्य थी या नहीं? दूसरे निकाह और उससे पैदा हुई औलाद के बारे में क्या हुक्म है? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर):

पूछी गई सूरत में, दूसरा निकाह बिना किसी संकोच के सही है और उससे जो औलाद हुई वह बिना किसी कारण के सही नसब (वैध) है। मौत की इद्दत चार महीने दस दिन होने के लिए चाहे ख़लवत (एकांत) आदि किसी बात की ज़रूरत नहीं है, गैर-गर्भवती महिला पर पति की मृत्यु से इद्दत लाज़िम (अनिवार्य) आती है।

अद-दुर्रुल मुख्तार में है: मृत्यु के लिए इद्दत चार महीने और दस दिन है, इस शर्त के साथ कि निकाह मृत्यु तक सही रहा हो, पूरी तरह से, चाहे पत्नी छोटी ही क्यों न हो। इससे केवल गर्भवती महिला ही बाहर है - 1।

दुर्रे मुख्तार में है कि मृत्यु के कारण इद्दत मुतलक़न (पूरी तरह) चार महीने दस दिन होगी, बशर्ते कि मृत्यु तक निकाह सही रहा हो, पत्नी से संभोग हुआ हो या नहीं, पत्नी चाहे नाबालिग ही क्यों न हो, इस नियम से केवल गर्भवती महिला की इद्दत अलग होगी। (अनु.)

1 दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली 1/256 पेज 314 of 688

فتاوٰی رضویہ جلد تیرہ دہم

مسئلہ ۸۰: از مارہرہ مطہرہ مرسلہ حضرت سید حسین حیدر میاں صاحب ۱۱ رمضان المبارک ۱۳۱۳ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین کہ والدین ہندہ سنی المذہب نے ہندہ سنی المذہب کا نکاح زید شیعہ مذہب سے (جو پورا پورا عقائد مجتہدین حال لکھنو کا پیرو تھا جناب مولیٰ علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کو سوائے سرورِ عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے تمام انبیائے سلف سے افضل جانتا اور قرآنِ مجید کو ناقص اور محرف مانتا) بوجہ کفو و برادری کے کر دیا، زید قبل از عقد مرض الموت میں تھا بعد عقد اور اشتداد ہوا کہ روز و شب میں گاہ گاہ لمحہ بھر کو ہوش آتا اس باعث سے خلوتِ صحیحہ نہ ہو سکی صرف اتنا ہوا کہ ہندہ کی چچی ہندہ کو بوقتِ شام زید کے پاس لے گئی اس کے قریب جو چوکی بچھی تھی اس پر بٹھا دیا، زید کو اس وقت اتنا ہوش آیا تھا کہ اس نے ہندہ کے منہ پر سے ہاتھ اٹھانے کا قصد کیا مگر ہاتھ لگاتے ہی کثرتِ ضعف و بیہوشی سے زید کا ہاتھ گر پڑا، یہ حال دیکھ کر اس کی چچی کہ کچھ دور علیحدہ کھڑی دیکھ رہی تھی آئی اور ہندہ کو اٹھا لے گئی، اس کے بعد کبھی نوبت ایک دوسرے کو دیکھنے کی بھی نہ آئی کہ زید سات آٹھ روز میں مر گیا، والدین نے ہندہ کا نکاح بکر سنی المذہب کے ساتھ نیز کفو و برادری تھا چار مہینے دس دن گزرنے سے پہلے کر دیا، ۱۵ ذی الحجہ کو زید سے نکاح ہوا تھا ۲۱ ذی الحجہ کو زید مر گیا، ۱۷ ربیع الثانی کو ہندہ کا نکاح بکر سے ہوا، عدت میں ۱۴ روز کم تھے، اب ہندہ صاحبِ اولاد ہے، بعض لوگ اولادِ ہندہ کی صحتِ نسب پر معترض ہیں کہ بکر نے یہ نکاح عدت کے اندر ہی کر لیا، اس صورت میں بعدِ نظرِ عمیق ان مراتب کا جواب عنایت ہو کہ زید و ہندہ کا عقد صحیح ہوا تھا یا نہیں؟ ہندہ پر بوجہ عدمِ صحتِ نکاح یا عدمِ وقوعِ خلوتِ صحیحہ کے بعد مرگِ

زید عدتِ موت واجب تھی یا نہیں؟ عقدِ ثانی اور اس سے جو اولاد پیدا ہوئی اس کی نسبت کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب:

صورتِ مستفسرہ میں عقدِ ثانی بلا تامل صحیح اور اس سے جو اولاد ہوئی بلا وجہ صحیح النسب ہے، عدتِ موت چار مہینے دس دن ہونے کے لئے اگر چہ خلوت وغیرہ کسی بات کی حاجت نہیں غیر حاملہ عورت پر مرگِ شوہر سے عدت لازم آتی ہے،

في الدرالمختار العدة للموت اربعة اشهر و عشرا بشرط بقاء النكاح صحيحاً الى الموت مطلقاً اولاً ولو صغيرة فلم يخرج عنها الا الحامل- 1

در مختار میں ہے کہ موت کی وجہ سے عدت مطلقاً چار ماہ دس دن ہوگی بشرطیکہ موت تک نکاح صحیح رہا ہو، بیوی سے وطی ہوئی ہو یا نہ، بیوی اگر چہ نابالغہ ہی کیوں نہ ہو، اس ضابطہ سے صرف حاملہ عورت کی عدت مختلف ہوگی۔ (ت)

1 در مختار باب العدة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۶ Page 314 of 688

Fatawa-e-Razvia Volume 13, Page 13

However, Iddah (waiting period) is only for a married woman. There was no marriage at all between Hind and Zaid in the first place, because when Zaid, like the general Rafidah (Shias) of the time, believed in those blasphemous beliefs, he was definitely an infidel and apostate. It is stated in Alamgiriya:

"It is necessary to declare the Rafidah as infidels based on their sayings (some of their blasphemous beliefs were mentioned, and then it is said in Hindiya that) these people are outside the fold of Islam, and their rulings are like those of apostates, as mentioned in Al-Zahiriyya." (T)

And the marriage of an apostate man or woman cannot be with anyone of any nation or religion; neither with believers, nor with infidels, nor even with those of their own religion. It is in Hindiya:

"It is not permissible for an apostate man to marry an apostate woman, a Muslim woman, or an original female infidel. Likewise, the marriage of an apostate woman with anyone is not permissible, as stated in Al-Mabsut." (T)

So even if Hind had entered into a marriage contract with Bakr during the lifetime of Zaid without a divorce, it would have been permissible and valid. (Received an incomplete answer).

Problem 81: From Marehra, District Etah, sent by Mahbub Ali Sahib, 10 Shawwal-ul-Mukarram 1322 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a woman, during the lifetime of her husband Zaid, whose divorce was not proven, went to another city and entered into a marriage contract with a person named Amr out of passion. A few days later, her former husband died. After his death, the woman remained in Amr's possession as a wife for four years. One day, due to mutual disagreement and a fight, Amr gave the woman a 'Talaq-e-Ba'in' (irrevocable divorce) and for several days said, "I have given divorce," and in one sitting said five to ten times, "I have given you divorce," and remained separate for fifteen days. Now, due to mutual love, the woman and Amr want a renewal of marriage (Tajdeed-e-Nikah). He makes the excuse that since no marriage occurred without the divorce of the previous husband, then what is divorce? And Amr is a Muezzin in the mosque. The people of Islam are preventing him from the renewal of marriage.

[1] Fatawa Hindiya, Chapter Nine on Rulings of Apostates, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/264 [2] Fatawa Hindiya, Chapter on Prohibitions due to Polytheism, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

मगर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तो विवाहित स्त्री पर होती है। हिंद और जैद के बीच मूल रूप से निकाह ही नहीं था, क्योंकि जब जैद उस समय के आम राफ़ज़ियों (शियाओं) की तरह उन कुफ़्र वाले अकीदों (विश्वासों) का कायल था, तो वह निश्चित रूप से काफ़िर और मुर्तद (धर्मत्यागी) था। आलमगीरिया में है:

"राफ़ज़ियों को काफ़िर करार देना ज़रूरी है, उनके उन अकीदों के बारे में (यहाँ राफ़ज़ियों के बाद कुफ़्रिया अकीदों का ज़िक्र करके हिंदिया में फ़रमाया कि) यह कौम मिल्लत-ए-इस्लामिया से बाहर है, और उनके अहकाम (नियम) मुर्तदों (धर्मत्यागियों) जैसे होंगे जैसा कि ज़हीरिय्या में है।" (त)

और मुर्तद पुरुष हो या स्त्री, उसका निकाह किसी भी मिल्लत और मज़हब वाले से हो ही नहीं सकता; न मोमिनों (मुसलमानों) से, न काफ़िरों से और न ही खुद अपने हम-मज़हबों से। हिंदिया में है:

"मुर्तद के लिए जायज़ नहीं कि वह किसी मुर्तदा, मुस्लिमा या काफ़िरा असलिया से निकाह करे, और इसी तरह मुर्तदा का निकाह किसी के साथ भी जायज़ नहीं, जैसा कि मबसूत में है।" (त)

तो हिंद अगरचे जैद के जीवन में ही बिना तलाक़ के उसी समय अपना निकाह बक्र से कर लेती, तब भी वह जायज़ और सही था। (जवाब अधूरा मिला)।

मसला 81: मारहरा, जिला एटा से, प्रेषक महबूब अली साहब, 10 शव्वाल-उल-मुकर्रम 1322 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला ने अपने पति जैद के जीवनकाल में, जिसकी तलाक़ सिद्ध नहीं थी, अम्र नामक व्यक्ति से प्रेमवश दूसरे शहर जाकर निकाह कर लिया। उसके कुछ ही दिनों बाद पूर्व पति की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद चार वर्षों तक वह महिला पत्नी के रूप में अम्र के पास रही। एक दिन आपसी अनबन और लड़ाई के कारण अम्र ने महिला को 'तलाक़-ए-बाइन' दे दी और कई दिनों तक कहता रहा, "मैंने तलाक़ दे दी," और एक ही सभा में दस-पाँच बार कहा, "मैंने तुझे तलाक़ दे दी," और पन्द्रह दिनों तक अलग रहा। अब आपसी प्रेम के कारण वह महिला और अम्र चाहते हैं कि फिर से निकाह (तज्दीद-ए-निकाह) होना चाहिए। वह यह बहाना बनाता है कि जब पूर्व पति की तलाक़ के बिना निकाह ही नहीं हुआ, तो तलाक़ क्या चीज़ है? और अम्र मस्जिद में मुअज़्ज़िन है। इस्लाम के लोग उसे निकाह के नवीनीकरण से रोक रहे हैं।

[1] फ़तावा हिंदिया, अध्याय नौ: मुर्तदों के अहकाम, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/264 [2] फ़तावा हिंदिया, अध्याय: शिर्क के कारण वर्जित निकाह, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/282

مگر عدت تو منکوحہ پر ہوتی ہے ہندہ و زید میں باہم نکاح ہی اصلاً نہ تھا کہ جب زید مثلِ عام روافض زمانہ ان عقائد کفر کا معتقد تھا تو قطعاً کافر مرتد تھا، عالمگیریہ میں ہے:

یجب اکفار الروافض فی قولہم (وعد بعض عقائد ھم المکفرۃ وقال) وھؤلاء القوم خارجون عن ملۃ الاسلام و احکامھم احکام المرتدین کذا فی الظھیریۃ ۔ ۱ رافضیوں کو کافر قرار دینا ضروری ہے ان کے عقائد بابت (یہاں روافض کے بعد عقائدِ کفریہ ذکر کرکے ہندیہ میں فرمایا کہ) یہ قوم ملتِ اسلامیہ سے خارج ہے ، اور ان کے احکام مرتدین جیسے ہوں گے جیسا کہ ظہیر یہ میں ہے۔ (ت)

اور مرتد مرد خواہ عورت کا نکاح کسی ملت و مذہب والے سے ہو ہی نہیں سکتا نہ مومنین سے نہ کفار سے نہ خود اسی کے ہم مذہبوں سے۔ ہندیہ میں ہے:

لا یجوز للمرتدان یتزوج مرتدۃ ولا مسلمۃ ولاکافرۃ اصلیۃ و کذلک لایجوز نکاح المرتدۃ مع احد کذا فی المبسوط ۔ ۲ مرتد کو جائز نہیں کہ وہ مرتدہ ، مسلمان یا کافرہ اصلیہ سے نکاح کرے، اور یونہی مرتدہ کا نکاح کسی سے بھی جائز نہیں ، جیسا کہ مبسوط میں ہے (ت)

تو ہندہ اگرچہ زید کی حیات ہی میں بلا طلاق اسی وقت اپنا عقد بکر سے کر لیتی جب بھی جائز و صحیح تھا۔ (جواب ناقص ملا)۔

مسئلہ ۸۱: از مارہرہ ضلع ایٹہ مرسلہ محبوب علی صاحب ۱۰ شوال المکرم ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت نے اپنے شوہر زید کی حیات میں جس کی طلاق ثابت نہیں عمر و نامی سے بطور عاشقی کے دوسرے شہر میں جا کر عقد نکاح کیا ، اس کے تھوڑے ہی دن بعد شوہر سابق مر گیا ، بعد مرنے کے چار برس تک عورت عمرو کے قبضہ میں

رہی بطور زوجہ۔ ایک روز باہم نا اتفاقی اور لڑائی کے عمرو نے عورت کو طلاق بائن دی اور کئی روز تک کہا کہ میں نے طلاق دی اور ایک جلسہ میں دس پانچ دفعہ کہا کہ میں نے تجھ کو طلاق دی ، اور پندرہ روز تک علیحدہ رہا۔ اب باعثِ عشق باہمی کے عورت اور عمرو چاہتا ہے کہ پھر تجدیدِ نکاح کی ہونی چاہئے ، اور عذر کرتا ہے کہ جب بغیر طلاق شوہر سابق کے نکاح ہی نہیں ہوا تو طلاق کیا چیز ہے اور عمرو مسجد میں مؤذن ہے اہل اسلام اس کو تجدید نکاح سے روک

۱ فتاویٰ ہندیہ الباب التاسع فی احکام المرتدین نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۲۶۴ ۲ فتاویٰ ہندیہ باب فی المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۲

Fatawa Razawiyya Volume 13

... they say that by the death of the previous husband and the passing of the 'iddah' (waiting period), that marriage itself became established because of which your marriage lasted five years; otherwise, have you been doing what is haram (forbidden) with her until today? We will expel you from the mosque until 'halala' is done, until a new marriage is performed, the woman is haram for you. Moreover, Amr is also not a suitable match (kufu). What is the ruling on this matter? Should a new marriage be performed, or will marriage with the woman be permissible after 'halala'? And if Amr commits any act against Sharia with this woman, should he be made a Mu'adhin (caller to prayer) or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If it is a fact that while Zaid was alive, the woman married Amr without a divorce, and then after Zaid's death and the expiry of the 'iddah' for death, she did not perform a new marriage with Amr but remained in that void marriage, then they were never husband and wife but were adulterers. The divorces that Amr gave were merely void. There is no need for 'halala'; simply performing the marriage anew is sufficient, provided that Amr is not so inferior in tribe, religion, or profession etc., compared to the woman's guardians that marrying him would be a cause of shame and disgrace for the woman's guardians, or if he is so inferior but the woman's guardian, knowing Amr to be such before the marriage, gave explicit permission for his marriage with the said woman, or if the woman has no guardian at all. In these three cases, the marriage will be valid; otherwise, if Amr is of such low status and the woman has a guardian, and the guardian, being aware of his low status before the marriage, does not give permission for marriage, then the woman's marriage with Amr cannot take place in any way. Until Amr repents and marries legally or separates completely from the woman, he should never be made a Mu'adhin; he is a 'Fasiq Mu'lin' (open sinner), and a 'Fasiq' is not worthy of this religious office. And Allah knows best.

Issue 82: From Mauza Kargina, sent by Imam Bakhsh Ali Bakhsh, 25 Rabi al-Akhir 1336 AH.

Mittho Lohar's wife was a widow for 4 months. After a few days, some women recognized that she was pregnant. When asked, she said that in her solitude, Azimullah, from the Nadaf tribe, forced himself on her and she became pregnant. Afterwards, people confined the woman for her protection. When the boy was born, they sent her away; she left. Azimullah made it known among the public that the boy

is mine. The villagers have confined him and expelled the woman. What is the ruling for them now?

The Answer: There is a ruling for severe punishment for them, but who can give punishment here? This punishment is sufficient that they be kept out of the community. As for the boy, if he was born two years after Mittho's death or four months and ten days after the woman...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

... वे कह रहे हैं और यह कहते हैं कि पूर्व पति की मृत्यु और इद्दत बीतने से वह निकाह ही कायम हो गया जिसकी वजह से तुम्हारी ज़ौजियत पाँच साल रही वरना क्या आज तक तूने उससे हराम किया? हम तुझे मस्जिद से निकाल देंगे जब तक हलाला न हो जाए, जब तक निकाह जदीद (नया निकाह) न हो जाए औरत तुझ पर हराम है, और इसके अलावा अम्र ग़ैर-कुफ़ू (बराबर का न होना) भी है, इस मसले में क्या फ़रमाते हैं क्या निकाह जदीद किया जाए या हलाला के बाद औरत से निकाह जायज़ होगा, और अगर इस औरत से अम्र खिलाफ़-ए-शरा कोई फेल (कार्य) करे तो मोअज़्ज़िन बनाना चाहिए या नहीं? बयान फरमाएं सवाब पायें।

अल-जवाब: अगर यह बात सच है कि ज़ैद की ज़िंदगी में बिना तलाक़ के औरत ने अम्र से निकाह कर लिया फिर ज़ैद की मौत और वफ़ात की इद्दत गुज़रने के बाद अम्र के साथ निकाह जदीद नहीं किया बल्कि उसी निकाह-ए-बातिल (अमान्य निकाह) पर कायम रही तो वे हरगिज़ मियाँ-बीवी न थे बल्कि ज़ानी और ज़ानिया थे, अम्र ने जो तलाक़ें दीं वे महज़ बेकार थीं, हलाला की कोई ज़रूरत नहीं, सिर्फ निकाह नए सिरे से कर लेना काफ़ी है बशर्ते कि अम्र कौम या मज़हब या पेशे वग़ैरह में औरत के औलिया (संरक्षकों) से इतना कम न हो कि उससे निकाह होना औरत के औलिया के लिए नंग-ओ-आर (शर्म और अपमान) का सबब हो या ऐसा कम है तो औरत के वली ने निकाह से पहले अम्र को ऐसा जानकर उसे उक्त औरत के निकाह की साफ़ इजाज़त दे दी हो या औरत का कोई वली ही न हो, इन तीनों सूरतों में निकाह हो जाएगा वरना अम्र ऐसा कम रुतबा है और औरत वली रखती है और वली निकाह से पहले उसकी कम रुतबे की जानकारी के बाद निकाह की इजाज़त न दे तो औरत का अम्र से निकाह किसी तरह नहीं हो सकता। अम्र जब तक तौबा करके निकाह के जायज़ होने की सूरत में निकाह न कर ले या औरत से साफ़ तौर पर अलग न हो जाए, उसे हरगिज़ मोअज़्ज़िन न बनाया जाए, वह फ़ासिक़-ए-मोलिन (खुला गुनहगार) है और फ़ासिक़ इस दीनी ओहदे के लायक नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 82: मौज़ा करगीना से, मुर्सेला इमाम बख्श अली बख्श 25 रबीउल आखिर 1336 हिजरी।

मिट्ठू लोहार की औरत 4 महीने से बेवा थी, कुछ दिनों बाद कुछ औरतों ने पहचाना कि यह गर्भवती है, उससे पूछा गया तो उसने कहा कि मेरी तन्हाई में ज़बरदस्ती अज़ीमउल्लाह कौम नदाफ़ ने मेरे साथ यह काम किया मैं हामिला (गर्भवती) हुई, तो बाद में लोगों ने औरत को बंद कर दिया, उसकी

हिफ़ाज़त की, बाद में जब लड़का पैदा हुआ तो निकाल दिया वह चली गई और अज़ीमउल्लाह ने लोगों में मशहूर किया कि लड़का मेरा है, बस्ती वालों ने उसको बंद कर दिया, औरत को निकाल दिया, अब उनके लिए क्या हुक्म है?

अल-जवाब: उनके लिए सख्त सज़ा का हुक्म है मगर यहाँ कौन सज़ा दे सकता है यही सज़ा काफी है कि बिरादरी से बाहर रखे जाएं। रहा लड़का, अगर मिट्ठू के मरने से दो साल बाद पैदा हुआ या चार महीने दस दिन बाद औरत ने...

رہے ہیں اور یہ کہتے ہیں کہ مرنے شوہر سابق اور گزرنے عدت سے وہ نکاح ہی قائم ہو گیا کہ جس کی وجہ سے تیری زوجیت پانچ سال رہی ورنہ کیا آج تک تو نے اس سے حرام کیا ہم تجھ کو مسجد سے نکال دیں گے جب تک حلالہ نہ ہو جائے، جب تک نکاح جدید نہ ہو جائے عورت تجھ پر حرام ہے، اور علاوہ اس کے عمرو غیر کفو بھی ہے، اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں آیا نکاح جدید کیا جائے یا بعد حلالہ کے عورت سے نکاح جائز ہوگا، اور اگر اس عورت سے عمرو خلاف شرع کوئی فعل کرے تو مؤذن بنانا چاہئے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر یہ امر واقعی ہے کہ زید کی حیات میں بے طلاق عورت نے عمرو سے نکاح کر لیا پھر بعد موت زید وانقضائے عدت وفات عمرو کے ساتھ نکاح جدید نہ کیا بلکہ اسی نکاح باطل پر قائم رہی تو وہ ہرگز زن و شوہر نہ تھے بلکہ زانی وزانیہ تھے، طلاقیں کہ عمرو نے دیں محض لغو تھیں، حلالے کی کوئی حاجت نہیں، صرف نکاح از سر نو کر لینا کافی ہے جبکہ عمرو قوم یا مذہب یا پیشے وغیرہ میں عورت کے اولیاء سے ایسا کم نہ ہو کہ اس سے نکاح ہونا اولیائے زن کے لئے باعث ننگ و عار ہو یا ایسا کم ہے تو عورت کے ولی نے پیش از نکاح عمرو کو ایسا جان کر اس سے نکاح زن مذکور کی صریح اجازت دے دی یا عورت کوئی ولی رکھتی ہی نہ ہو، ان تینوں صورتوں میں نکاح ہو جائے گا ورنہ عمرو ایسا کم رتبہ ہے اور عورت ولی رکھتی ہے اور ولی پیش از نکاح اس کی کم رتبگی پر مطلع ہو کر اجازت نکاح نہ دے تو عورت کا عمرو سے نکاح کسی طرح نہیں ہو سکتا۔ عمرو جب تک تائب ہو کر بحال جواز نکاح، نکاح نہ کرے یا عورت سے صاف جدا نہ ہو جائے ہر گز مؤذن نہ بنایا جائے وہ فاسق معلن ہے اور فاسق اس عہدہ دین کے لائق نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۲: از موضع کرگینا مرسلہ امام بخش علی بخش ۲۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

مٹھو لوہار کی عورت بیوہ تھی ۴ مہینے سے، چند روز بعد کچھ عورتوں نے شناخت کیا کہ یہ حاملہ ہے، اس سے دریافت کیا تو اس نے کہا اپنی تنہائی میں زبردستی عظیم اللہ قوم نداف نے میرے ساتھ یہ کام کیا میں حاملہ ہوئی، تو بعد کو لوگوں نے عورت کو بند کر دیا حفاظت اس کی کی، بعد کو جب لڑکا پیدا ہوا تو نکال دیا وہ چلی گئی اور عظیم اللہ نے عوام میں مشہور کیا کہ لڑکا میرا ہے، بستی والوں نے اس کو بند کر دیا، عورت کو نکال دیا، اب ان کے واسطے کیا حکم ہے؟

الجواب: ان کے لئے سخت سزا کا حکم ہے مگر یہاں کون سزا دے سکتا ہے یہی سزا کافی ہے کہ برادری سے خارج رکھے جائیں۔ رہا لڑکا، اگر مٹھو کے مرنے سے دو برس بعد پیدا ہوا یا چار مہینے دس دن بعد عورت نے

...had admitted that she had finished her 'iddat' (waiting period), then in these two cases, the boy's lineage is unknown. If she had not admitted to finishing 'iddat' and the boy was born within two years of Mutthu's death, then the boy belongs to Mutthu and the carder is a liar. And Allah Almighty knows best.

Problem 83: From Ranchi, Mohalla Upar Bazar, sent by Maulvi Abdul Rabb Sahib, 8 Jamadi-ul-Awwal 1336 AH. If a person unknowingly marries a woman who is in her 'iddat' from another man and has relations with her, and upon gaining knowledge, separates from her*, would this relation be considered adultery or not?

Answer: Since it was not known to him, and as soon as it became known he separated immediately, it is in no way adultery for him. Far from being adultery, there is no blame on him at all. However, that intercourse was certainly prohibited intercourse in reality, but the sin is lifted, as scholars have explicitly stated: "and that is because ignorance in a hidden matter is an acceptable excuse." (As is stipulated, and this is because ignorance in a hidden place is an acceptable excuse. - Translator's note). And Allah Almighty knows best.

Problem 84: From the city, sent by Nawab Nisar Ahmad Sahib, dated 30 Safar 1337 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this matter: Zaid died; he used to live in a village where there is no physician. Therefore, can his wife, while in her 'iddat' days, go to another place for the treatment of her daughter as well as her minor children due to illness, and can she show her pulse to any hakim (doctor) or not?

Answer: She can show her pulse out of necessity, and she can go to another place in such a way that she spends the major part of the night in her husband's house. And if staying in that same house is possible, then going elsewhere is also prohibited. And Allah Almighty knows best.

Problem 85: From the state of Faridkot, district Ferozepur, Punjab, sent by Munshi Muhammad Ali Iram, 6 Rajab 1337 AH. What do the scholars of religion say about this matter: If a marriage takes place during the 'iddat' days of divorce or death, is it automatically void or is there a need to re-issue divorce? Does the original 'iddat' remain or a new one start, and what is the ruling for the one who knowingly performs such a marriage ceremony?

Answer: Marriage during 'iddat' is absolutely forbidden. It is obligatory for both the man and the woman to abandon it. If the man says, "I have..."

*Note: The original manuscript was worm-eaten at this point. Page 317 of 688

...स्वीकार कर लिया था कि उसने अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी कर ली है, तो इन दो स्थितियों में लड़के का वंश अज्ञात है। और यदि उसने इद्दत पूरी करने की बात स्वीकार नहीं की थी और मुत्थू की मृत्यु के दो वर्ष के भीतर लड़का पैदा हुआ, तो लड़का मुत्थू का है और धुनकी (नद्दाफ़) झूठ बोल रहा है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मस्अला 83: राँची, मोहल्ला ऊपर बाज़ार से, प्रेषक मौलवी अब्दुल रब्ब साहिब, 8 जमादी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। यदि कोई व्यक्ति अनजाने में किसी ऐसी महिला से निकाह (विवाह) कर ले जो किसी अन्य की इद्दत में हो और उससे संभोग (तमत्तु) करे, और जानकारी होने पर उससे अलग हो जाए*, तो क्या यह संभोग ज़िना (व्यभिचार) माना जाएगा या नहीं?

उत्तर: चूँकि उसे पता नहीं था और जैसे ही पता चला उसने तुरंत उसे अलग कर दिया, तो उसके हक़ में यह किसी भी तरह ज़िना नहीं है। ज़िना होना तो दूर, उस पर कोई आरोप भी नहीं है। हालाँकि, वह संभोग वास्तव में हराम (निषिद्ध) संभोग था, लेकिन पाप हटा दिया गया है, जैसा कि विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है: "और वह इसलिए क्योंकि गुप्त मामलों में अज्ञानता एक स्वीकार्य बहाना है।" (जैसा कि इस पर स्पष्ट प्रमाण है और यह इसलिए क्योंकि छिपे हुए स्थान पर अज्ञानता स्वीकार्य बहाना है। - अनुवादक)। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मस्अला 84: शहर से, प्रेषक नवाब निसार अहमद साहिब, दिनांक 30 सफ़र 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं: ज़ैद की मृत्यु हो गई; वह एक ऐसे गाँव में रहता था जहाँ कोई चिकित्सक (तबीब) नहीं है। तो, क्या उसकी पत्नी अपनी इद्दत के दिनों में अपनी बेटी और अपने छोटे बच्चों के इलाज के लिए किसी अन्य स्थान पर जा सकती है या नहीं, और क्या वह किसी हकीम को अपनी नब्ज़ दिखा सकती है या नहीं?

उत्तर: ज़रूरत पड़ने पर वह अपनी नब्ज़ दिखा सकती है, और वह दूसरे स्थान पर इस तरह जा सकती है कि रात का अधिकांश हिस्सा अपने पति के घर में ही बिताए। और यदि उसी घर में रहना संभव हो, तो बाहर जाना भी हराम है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मस्अला 85: रियासत फ़रीदकोट, ज़िला फ़िरोज़पुर, पंजाब से, प्रेषक मुंशी मोहम्मद अली इरम, 6 रजब 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि यदि तलाक़ या मृत्यु की इद्दत के दिनों में निकाह हो जाए, तो क्या वह स्वतः ही रद्द (फ़स्ख़) हो जाता है या तलाक़ दोबारा देने की

आवश्यकता होगी? क्या इद्दत पहली वाली ही रहेगी या नई शुरू होगी, और जो जानबूझकर ऐसा निकाह पढ़ाता है उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तर: इद्दत के अंदर निकाह करना क़तई (पूर्णत) हराम है। स्त्री और पुरुष दोनों पर इसे छोड़ना फ़र्ज़ है। अगर पुरुष कहे कि मैंने उस...

*नोट: मूल पाण्डुलिपि में यह स्थान कीड़ों द्वारा खाया गया था। पृष्ठ 688 में से 317

اقرار کر لیا تھا کہ وہ عدت سے فارغ ہوگئی تو ان دو صورتوں میں وہ لڑکا مجہول النسب ہے اور اگر عدت سے فارغ ہونے کا اقرار نہ کیا تھا اور مٹھو کے مرنے سے دو برس کے اندر لڑکا پیدا ہوا تو لڑکا مٹھو کا ہے وہ نداف جھوٹا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۳: از رانچی محلہ اوپر بازار مرسلہ مولوی عبدالرب صاحب ۸ جمادی الاول ۱۳۳۶ھ اگر معتدہ غیر سے بصورت لاعلمی کوئی شخص نکاح کرے اور تمتع کرے اور بصورت علم اس سے کنارہ عہ کیا یہ تمتع داخل زنا ہو گا یا نہیں؟

الجواب: جبکہ اسے معلوم نہ تھا اور جس وقت معلوم ہوا فوراً جدا کر دیا تو اس کے حق میں کسی طرح زنا نہیں، زنا ہونا درکنار اس پر کوئی الزام بھی نہیں البتہ وہ وطی واقع میں ضرور وطی حرام تھی اور اثم مرفوع، کما نصوا علیہ وذلک لان الجھل فی موضع الخفاء عذر مقبول (جیسا کہ اس پر نص ہے اور یہ اس لئے کہ پوشیدہ مقام پر جہالت عذر مقبول ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۴: از شہر مرسلہ نواب نثار احمد صاحب مورخہ ۳۰ صفر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید فوت ہوا ایک موضع میں رہتا تھا وہاں کوئی طبیب نہیں ہے، پس اس کی زوجہ ایام عدت ہی میں بوجہ علالت اپنی دختر نیز اپنے بچوں خورد سال کے واسطے علاج کے کسی دوسری جگہ جاسکتی ہے یا نہیں اور نبض کسی حکیم کو دکھا سکتی ہے یا نہیں؟

الجواب: نبض بضرورت دکھا سکتی ہے اور دوسری جگہ اس طور پر جا سکتی ہے کہ رات کا اکثر حصہ شوہر ہی کے مکان میں گزارے، اور اگر اسی مکان میں ممکن ہو تو یہ بھی حرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۵: از ریاست فرید کوٹ ضلع فیروز پور پنجاب مرسلہ منشی محمد علی ارم ۶ رجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایام عدت طلاق یا مرگ میں نکاح ہو جائے تو از خود فسخ ہے یا اعادہ طلاق کی ضرورت ہوگی عدت پہلی ہی رہی یا جدید، اور دانستہ ایسا نکاح پڑھانے والے کا کیا حکم ہے؟

الجواب: عدت کے اندر نکاح حرام قطعی ہے مردوزن دونوں پر اس کا ترک فرض ہے مرد کہے میں نے اس

Let him renounce the marriage, whether he tells her or not. If both do not agree, then the Shariah judge should forcibly separate them. This renunciation or separation is sufficient; there is no need for divorce. If that second person did not have intimacy with her, then the iddah (waiting period) remains the first one. Otherwise, the second one also becomes mandatory; both will be fulfilled together. The one that remains in the end will be completed. Allah Almighty knows best.

Problem 86: From the city, Bhod neighborhood, asked by Sheikh Nanhe, 9 Rajab 1338 AH. A girl who was divorced less than a month ago got married to a Hafiz elsewhere who is an Imam. Is this marriage valid or not? And what is the ruling on praying behind him? And what is the ruling for those who participated in it?

Answer: If that girl was consummated by her husband and was not pregnant, such that a child was born within that month after the divorce before the second marriage, then this second marriage occurred during the iddah and is absolutely haram (forbidden), haram. Intimacy in it is pure adultery. If the one with whom adultery occurred knew she was a divorcee and that the iddah had not yet passed, yet knowingly performed the marriage, then he is an extreme transgressor (fasiq and fajir). Praying behind him is a sin and repeating it is obligatory. Making him an Imam is a sin upon sin. Similarly, if it was not known and now it becomes known, and they do not separate immediately, the same rulings apply to him. And those who knowingly participated in this haram marriage and ate/drank there are also severe sinners and consumers of haram. Repentance is obligatory for all of them. Allah Almighty knows best.

Problem 87: From Chhattan Shah, 28 Rajab 1338 AH. What do the scholars of religion and Muftis say in this matter that a person passed away by divine decree. Within three weeks, Zaid took his wife away. Zaid was a resident of the country (Des), so he married that woman. The woman was not willing and returned within a month. Now is it permissible to marry her elsewhere or not?

Answer: That marriage was purely haram. Then if Zaid did not have intercourse with her, she can marry after four months and ten days from the husband's death. And if Zaid had intercourse, it is mandatory for them to separate, and the woman should wait for three menstrual cycles. If three cycles pass within those four months and ten days, she may marry after four months and ten days. If three cycles have not yet

passed after this separation, she should wait longer after this separation until three cycles are completed, and at that time marry someone else. It is in Durr-ul-Mukhtar:

If the woman observing Iddah is cohabited with by mistake, Iddah becomes mandatory. | If a divorced woman in her iddah period is copulated with due to doubt...

फ़तावा रजविया खंड 13

निकाह को छोड़ दे चाहे उससे कह दे, और दोनों न मानें तो हाकिम-ए-शरअ जबरन अलग कर दे। बस यह छोड़ना या अलग करना ही काफ़ी है, तलाक़ की ज़रूरत नहीं। उस दूसरे व्यक्ति ने अगर उससे निकटता (सम्भोग) नहीं की तो इद्दत वही पहली वाली है, अन्यथा दूसरी भी अनिवार्य हो जाएगी, दोनों साथ-साथ पूरी होती जाएँगी। अंत में जो शेष बचेगी उसे पूरा कर लिया जाएगा। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 86: शहर के मोहल्ला भोड़ से, सायल शेख नन्हे, 9 रजब 1338 हिजरी। एक लड़की जिसे तलाक़ हुए एक महीना नहीं हुआ था, उसकी दूसरी जगह एक हाफ़िज़ से शादी हो गई जो इमाम है। क्या यह निकाह सही है या नहीं? और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना कैसा है और जो लोग इसमें शामिल हुए उनके लिए क्या हुक्म है?

जवाब: अगर वह लड़की अपने शौहर की मदख़ूला (जिससे सम्भोग हुआ हो) थी और गर्भवती नहीं थी कि उस महीने के अंदर तलाक़ के बाद बच्चा पैदा हो गया हो और फिर दूसरा निकाह हुआ हो, तो यह दूसरा निकाह इद्दत के दौरान हुआ और सरासर हराम, हराम हुआ और इसमें निकटता शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) है। अगर जिसके साथ ज़िना हुआ उसे पता था कि यह तलाक़शुदा है और अभी इद्दत नहीं गुज़री है, यह जानते हुए निकाह किया तो वह घोर फ़ासिक़ और फ़ाजिर है। उसके पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह है और उसे दोहराना वाजिब। और उसे इमाम बनाना गुनाह दर गुनाह है। इसी तरह अगर पहले मालूम नहीं था और अब मालूम हुआ और फ़ौरन अलग न हुआ, तब भी उस पर यही हुक्म हैं। और जो लोग जान-बूझकर इस हराम निकाह में शरीक हुए और खाया-पिया, वे भी सख्त गुनहगार हुए और हराम खाने वाले हुए। इन सब पर तौबा करना फ़र्ज़ है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 87: छट्टन शाह की ओर से, 28 रजब 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान और मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति का निधन हो गया। तीन सप्ताह के भीतर ज़ैद उसकी पत्नी को ले गया। ज़ैद देश का रहने वाला था, इसलिए उसने उस औरत से निकाह कर लिया। औरत राज़ी नहीं थी और एक महीने के भीतर वापस आ गई। अब उसका निकाह दूसरी जगह किया जाना जायज़ है या नहीं?

जवाब: वह निकाह पूरी तरह हराम हुआ। फिर अगर ज़ैद ने उससे सम्भोग नहीं किया, तो वह शौहर की मृत्यु के चार महीने दस दिन बाद निकाह कर सकती है। और अगर ज़ैद सम्भोग कर चुका हो, तो

उन पर फ़र्ज़ है कि अलग हो जाएँ और औरत तीन हैज़ (मासिक धर्म) का इंतज़ार करे। अगर तीन हैज़ उन्हीं चार महीने दस दिन के भीतर गुज़र जाएँ तो चार महीने दस दिन के बाद निकाह कर ले। और अगर इस अलगाव के बाद अभी तीन हैज़ नहीं गुज़रे हैं, तो इस अलगाव के बाद और इंतज़ार करे कि तीन हैज़ पूरे हो जाएँ और उस वक़्त दूसरे से निकाह करे। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

इज़ा वुतिअत अल-मुअतद्दतु बि-शुबहतिन वजबत इद्दतुन | अगर इद्दत वाली तलाक़शुदा औरत से शुबहा की वजह से सम्भोग...

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

نکاح کو ترک کیا خواہ اس سے کہہ دے، اور دونوں نہ مانیں تو حاکم شرع جبراً تفریق کر دے بس یہ ترک یا تفریق ہی کافی ہے طلاق کی حاجت نہیں ، اس دوسرے شخص نے اگر اس سے قربت نہ کی تو عدت وہی پہلی ہے ورنہ دوسری بھی لازم آئی دونوں ایک ساتھ ادا ہوتی جائیں گی اخیر میں جو باقی رہے گی پوری کرلی جائے گی واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۶: از شہر محلہ بھوڑ مسئولہ شیخ ننھے ۹ رجب ۱۳۳۸ھ ایک لڑکی جسے طلاق ہوئے ایک مہینہ نہیں ہوا تھا دوسری جگہ ایک حافظ سے نکاح ہوا وہ پیش امام ہے، یہ نکاح درست ہے یا نہیں؟ اور اس کے پیچھے نماز پڑھنا کیسا ہے اور اس میں جو لوگ شریک ہوئے ان کے لئے کیا حکم ہے؟

الجواب: اگر وہ لڑکی اپنے شوہر کی مدخولہ تھی اور حاملہ نہ تھی کہ اس مہینہ کے اندر بعد طلاق بچہ پیدا ہو گیا ہو اس کے بعد نکاح ثانی ہوا ہو تو یہ دوسرا نکاح عدت کے اندر ہوا اور محض حرام حرام ہوا اور میں قربت خالص زنا، اگر جس کے ساتھ زنا ہوا اسے خبر تھی کہ یہ مطلقہ ہے اور ہنوز عدت نہ گزری جان کر نکاح کر لیا تو اشد فاسق وفاجر ہے ، اس کے پیچھے نماز پڑھنی گناہ اور پھیرنی واجب، اور اسے امام بنانا گناہ گناہ، یونہی اگر معلوم نہ تھا اور اب معلوم ہوا اور فوراً جدا نہ ہو گیا جب بھی اس پر یہی احکام ہیں اور جو لوگ دانستہ اس حرام نکاح میں شریک ہوئے اور کھایا پیا وہ بھی سخت گنہگار ہوئے اور وہ حرام کھانے والے ہوئے ان سب پر بھی توبہ فرض ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۷: از چھٹن شاہ ۲۸ رجب ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ اس مسئلہ میں کہ ایک شخص قضائے الہی سے فوت ہو گیا اس کی عورت کو زید تین ہفتہ کے اندر لے گیا، زید رہنے والا دیس کا تھا اسلئے اس عورت سے نکاح کیا وہ عورت راضی نہیں تھی ایک ماہ کے اندر چلی آئی اب اس کا نکاح اور جگہ کیا جائے جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: وہ نکاح حرام محض ہوا، پھر اگر زید نے اس سے صحبت نہ کی تو وفات شوہر سے چار مہینے دس دن کے بعد نکاح کر سکتی ہے، اور اگر زید صحبت کر چکا تو ان پر فرض ہے کہ جدا ہو جائیں اور عورت تین حیض کا انتظار کرے، اگر تین حیض اسی چار مہینے دس دن کے اندر گزر جائیں تو چار مہینے دس دن کے بعد نکاح کرلے، اور اگر ابھی تین حیض اس جدائی کے بعد نہ گزریں تو انتظار اسی جدائی کے بعد اور کرے کہ تین حیض پورے ہو جائیں اور اس وقت دوسرے سے نکاح کرے، درمختار میں ہے:

اذا وطئت المعتدة بشبهة وجبت عدة | اگر عدت والی مطلقہ عورت سے شبہ کی وجہ سے وطی

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

...another, and they overlap, and she must complete the second Iddah (waiting period). If [the second marriage/act] is done, then the second Iddah is mandatory for this woman, and the remaining time of the first Iddah will be counted in the second. And if the first Iddah had ended, then she should complete the second Iddah fully. (T)

Problem 88: From village Pastaur, Tehsil Kachha, District Nainital. Sent by Fida Hussain Sahib on 29 Ramadan 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this: Abdul Rahman took 200 rupees from me and willingly gave 'Istifa' (divorce) to his wife. Can a marriage take place now or after the woman's Iddah? For three years, the wife was at her mother's house, during which time the husband gave 'Istifa'.

The Answer: Until the Iddah has passed, giving a proposal for marriage is absolutely forbidden (Haram Qat'i). And that money, which was like a bribe, giving and taking it were both forbidden. It is obligatory upon Abdul Rahman to return that money to Fida Hussain. And Allah Almighty knows best.

Problem 89: From the town of Paksar Aluran, post office Rasulpur, district Rae Bareli. Asked by Abdul Wahab. What do the scholars of religion say about this issue: A woman named Hindah, whose husband threw her out of his house four years ago and did not give her a divorce. In the meantime, she became pregnant through adultery (Zina). Now her husband has passed away, but the Iddah is not yet complete. In such a situation, while she has committed adultery, is marriage permissible within the Iddah period or not?

The Answer: Marriage within Iddah is absolutely forbidden (Haram Qat'i). And since this pregnancy occurred during the husband's lifetime, it legally belongs to the husband, and until delivery (childbirth), she remains in Iddah. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The child belongs to the [marriage] bed, and for the adulterer is the stone [deprivation]." And Allah Almighty said: "And for those who are pregnant, their term is until they give birth." And Allah Almighty knows best. (T)

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Iddah, Mujtabai Press Delhi, 1/256. 2. Sahih al-Bukhari, Book of Inheritance, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/999; Musnad Ahmad bin Hanbal, Dar al-Fikr Beirut 2/209. 3. The Holy Quran 2/65 [Refers to Surah At-Talaq 65:4]

फतावा-ए-रजविया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

...अन्य, और वे आपस में मिल गए और उस पर दूसरी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी करना अनिवार्य है। यदि [दूसरा विवाह/कृत्य] किया जाए, तो इस महिला पर दूसरी इद्दत अनिवार्य है, और पहली इद्दत की शेष अवधि दूसरी में गिनी जाएगी। और यदि पहली इद्दत समाप्त हो चुकी हो, तो उसे दूसरी इद्दत पूरी करनी चाहिए। (त)

मसला 88: ग्राम पस्तौर, तहसील कच्चा, जिला नैनीताल से। फिदा हुसैन साहब द्वारा 29 रमजान 1337 हिजरी को भेजा गया। धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि अब्दुल रहमान ने मुझसे 200 रुपये लिए और अपनी पत्नी को स्वेच्छा से 'इस्तिफा' (तलाक) दे दिया। क्या अब निकाह (विवाह) हो सकता है या महिला की इद्दत के बाद? तीन वर्षों से पत्नी अपनी माँ के घर पर थी, इसी दौरान पति ने 'इस्तिफा' दे दिया।

अल-जवाब: जब तक इद्दत न गुजर जाए, निकाह का प्रस्ताव देना कतई हराम (वर्जित) है। और वह पैसा जो रिश्वत की तरह था, उसे देना और लेना दोनों हराम था। अब्दुल रहमान पर यह अनिवार्य है कि वह वह पैसा फिदा हुसैन को वापस कर दे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 89: कस्बा पक्सर अलूरन, डाकघर रसूलपुर, जिला रायबरेली से। अब्दुल वहाब द्वारा पूछा गया। धर्म के विद्वान इस मुद्दे पर क्या कहते हैं: हिन्दा नाम की एक महिला, जिसके पति ने उसे चार साल पहले अपने घर से निकाल दिया था और उसे तलाक नहीं दिया था। इस बीच, वह ज़िना (व्यभिचार) से गर्भवती हो गई। अब उसके पति का निधन हो गया है, लेकिन इद्दत अभी पूरी नहीं हुई है। ऐसी स्थिति में, जबकि उसने ज़िना किया है, क्या इद्दत की अवधि के भीतर निकाह जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: इद्दत के भीतर निकाह कतई हराम है। और चूंकि यह गर्भ पति के जीवन काल के दौरान हुआ था, इसलिए शरई तौर पर यह पति का है, और जब तक प्रसव न हो जाए, वह इद्दत में ही है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बच्चा [निकाह वाले] बिस्तर का है, और ज़िना करने वाले के लिए पत्थर [वंचना] है।" और अल्लाह तआला ने फरमाया: "और जो गर्भवती हैं, उनकी अवधि उनके प्रसव तक है।" और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/256। 2. सहीह अल-बुखारी, किताबुल फराइज़, कदीमी कुतुब खाना कराची 2/999; मसनद अहमद बिन हनबल, दारुल फिक्र बेरुत 2/209। 3. अल-कुरान अल-करीम 2/65 [सूरह अत-तलाक़ 65:4 के सन्दर्भ में]

اخری وتداخلتا وعلیھا ان تتم العدۃ الثانیۃ ان کرلی جائے تو اس عورت پر دوسری عدت ضروری ہے اور پہلی عدت کی بقیہ مدت دوسری میں شمار ہو جائے گی اور اگر پہلی عدت تمت الاولی 1۔ ختم ہو چکی ہو تو پھر دوسری عدت پوری کرے۔ (ت)

مسئلہ ۸۸: از موضع پستوڑ تحصیل کچھا ضلع نینی تال مرسلہ فدا حسین صاحب ۲۹ رمضان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ عبدالرحمن نے مبلغ دوسور وپے مجھ سے لے کر بخوشی استعفاء دے دیا اپنی بی بی کو، اب اس میں نکاح ابھی ہو سکتا ہے یا نہیں؟ یا بعد عدت عورت کے، تین سال سے بیوی اپنی ماں کے مکان پر تھی اس اثناء میں خاوند استعفاء دے گیا۔

الجواب: جب تک عدت نہ گزرے نکاح کا پیام دینا حرام قطعی ہے، اور وہ روپیہ کہ دیار شوت تھا، دینا لینا دونوں حرام تھا۔ عبدالرحمن پر لازم ہے کہ وہ روپیہ فدا حسین کو واپس دے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۸۹: از قصبہ پکسر الورن ڈاکخانہ رسولپور ضلع رائے بریلی مسئولہ عبدالوہاب کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ کہ اس کے شوہر نے عرصہ چار برس سے اس کو اپنے گھر سے نکال دیا ہے اور طلاق نہیں دی، اور اس اثناء میں وہ زنا سے حاملہ ہو چکی ہے اب اس کا شوہر انتقال کر گیا ہے مگر عدت پوری نہیں ہوئی ایسی حالت میں جبکہ وہ زنا کی مرتکب ہوئی ہے عدت کے اندر نکاح جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: عدت کے اندر نکاح حرام قطعی ہے، اور جب یہ حمل حیات شوہر سے ہے شرعاً شوہر کا ہے اور جب تک وضع نہ ہو عدت ہی میں ہے۔ قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم الولد للفراش رسول اللہ

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بچہ نکاح والے وللعاھر الحجر 2، وقال تعالیٰ کی طرف ہی منسوب ہوگا اور زانی نسب سے محروم ہوگا، اور وأولات الأحمال أَجَلُهُنَّ أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ 3 - اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا: حمل والی عورتوں کی عدت بچے واللہ تعالیٰ اعلم۔ کی پیدائش تک ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

حواشی: 1 درمختار باب العدة مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۵۶ 2 صحیح البخاری کتاب الفرائض قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۹۹/۲، مسند احمد بن حنبل دارالفکر بیروت ۲۰۹/۲ 3 القرآن الکریم ۲/۶۵

Fatwa Razawiyya Volume 13

Issue 90: 7 Sha'ban 1312 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid divorced Hindah, and Amr married Hindah on the very same day or the following day. Is this marriage valid or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: From the questioner's statement, it appears that the first husband had consummated the marriage (khalwat) with this woman and divorced her after several years, and the woman was not pregnant. Therefore, this marriage, which took place with another person before the completion of the waiting period (Iddah), is not valid at all. It is mandatory for both of them to separate immediately. Allah Almighty says: "And divorced women shall wait [concerning] themselves for three menstrual cycles." Allah Almighty has ordained: Divorced women should restrain themselves until three menstrual cycles are completed. And Allah knows best. (T) And Allah knows best.

Issue 91: What do the scholars of religion say in a case where, for example, Zaid divorced his wife Hindah, and after the passing of one or two months, she married another person. This marriage took place with a stranger before the expiration of the waiting period (Iddah). Is this permissible according to Sharia or not? And is Hindah's claim for dower (Mahr) and inheritance against that person valid or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: The questioner states that Hindah is among those whose waiting period is measured by menstrual cycles. Therefore, in the inquired case, if that marriage took place after one month, it is undoubtedly void (fasid) because such a duration is not a reasonable completion of the waiting period. Hindah is not entitled to inheritance. As for the dower, she will receive the lesser of the specified dower (Mahr-e-Musamma) or the customary dower (Mahr-e-Mithl). If no dower was specified or it was unknown, then the full customary dower (Mahr-e-Mithl) will be mandatory.

In Al-Durr al-Mukhtar: "The customary dower becomes obligatory in a void (fasid) marriage only upon consummation, not otherwise. And it shall not exceed the specified dower because she agreed to the lower specified amount. If the customary dower is less than the specified dower, then in such a case, only the customary dower is obligatory, because due to the voidness of the marriage, the specification of the dower also becomes void. And if no dower was named or it was unknown, it becomes necessary."

In Durr-e-Mukhtar, it is stated: In a void marriage, the customary dower (Mahr-e-Mithl) becomes obligatory only due to consummation, not without it. Furthermore, that customary dower will not exceed the fixed dower because the woman had agreed to the lower fixed dower. If the customary dower is less than the fixed dower, then in such a case, only the customary dower will be obligatory, because the fixed dower becomes void due to the voidness of the marriage. And if the dower...

[1] Holy Quran 228/2 Page 320 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं

मसला ९०: ७ शाबान १३१२ हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिंदा को तलाक दे दिया और अम्र ने उसी दिन या अगले दिन हिंदा से निकाह कर लिया, क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: सवाल करने वाले के बयान से यह स्पष्ट है कि पहले पति ने इस महिला के साथ एकांतवास (ख़लवत) किया था और कई वर्षों के बाद तलाक दिया था, और महिला गर्भवती नहीं थी। इसलिए यह निकाह, जो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने से पहले दूसरे व्यक्ति से हुआ, कतई सही नहीं है। इन दोनों पर फर्ज़ है कि वे तुरंत अलग हो जाएँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तलाकशुदा औरतें तीन हैज़ (मासिक धर्म) पूरे होने तक अपने आप को रोके रखें।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया: तलाकशुदा महिलाएँ तीन मासिक धर्म पूरे होने तक प्रतीक्षा करें। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला ९१: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि उदाहरण के लिए ज़ैद ने अपनी पत्नी हिंदा को तलाक दिया, उसने एक या दो महीने बीतने के बाद दूसरे व्यक्ति से निकाह कर लिया, यह निकाह इद्दत पूरी हुए बिना किसी अजनबी व्यक्ति से हुआ, क्या यह शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं? और क्या हिंदा का उस व्यक्ति से मेहर (स्त्रीधन) और विरासत का दावा जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: सवाल करने वाले का कहना है कि हिंदा उन लोगों में से है जिनकी इद्दत मासिक धर्म से तय होती है। अतः पूछी गई स्थिति में यदि वह निकाह एक महीने बाद हुआ था, तो वह निस्संदेह फासिद (अमान्य) है क्योंकि इतनी अवधि में इद्दत का पूरा होना तर्कसंगत नहीं है। हिंदा विरासत की हकदार नहीं है, और उसे मेहर-ए-मुसम्मा (तयशुदा मेहर) और मेहर-ए-मिसल (प्रचलित मेहर) में से जो भी कम होगा, वह मिलेगा। और यदि मेहर-ए-मुसम्मा कुछ न था या अज्ञात था, तो पूरा मेहर-ए-मिसल अनिवार्य होगा।

अद-दुर्र अल-मुख्तार में है: "निकाह-ए-फासिद में केवल सहवास (वतन) के कारण मेहर-ए-मिसल अनिवार्य होता है, उसके बिना नहीं। और यह तयशुदा मेहर से अधिक नहीं होगा क्योंकि वह कम मेहर पर सहमत थी। यदि मेहर-ए-मिसल तयशुदा मेहर से कम है, तो ऐसी स्थिति में केवल मेहर-ए-

मिसल ही अनिवार्य होगा, क्योंकि निकाह के अमान्य होने के कारण तयशुदा मेहर भी अमान्य हो जाता है। और यदि मेहर का नाम न लिया गया हो या वह अज्ञात हो, तो अनिवार्य है।"

दुर्र-ए-मुख्तार में है और निकाह-ए-फासिद में सिर्फ सहवास की वजह से मेहर-ए-मिसल अनिवार्य होता है, सहवास के बिना नहीं, फिर वह मेहर-ए-मिसल निर्धारित मेहर से अधिक नहीं होगा क्योंकि महिला कम मेहर पर सहमत थी, और अगर मेहर-ए-मिसल निर्धारित मेहर से कम हो तो ऐसी स्थिति में मेहर-ए-मिसल ही अनिवार्य होगा क्योंकि निकाह के फासिद होने की वजह से निर्धारित मेहर फासिद हो जाता है, और अगर मेहर...

[1] पवित्र कुरान २२८/२ पृष्ठ ३२० का ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم

مسئلہ ۹۰: ۷ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ کو طلاق دی اور عمرو نے اس کے دوسرے دن یا اسی دن ہندہ سے نکاح کر لیا، یہ نکاح جائز ہے یا نہیں بینوا توجروا

الجواب: بیان سائل سے ظاہر ہوا کہ شوہر اول اس عورت سے خلوت کر چکا تھا کئی سال کے بعد طلاق دی اور عورت کو حمل نہ تھا پس یہ نکاح کہ قبل گزرنے عدت کے دوسرے شخص سے ہوا اصلاً صحیح نہیں، ان دونوں پر فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں۔ قال اللہ تعالٰی وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ اللہ تعالٰی نے فرمایا: مطلقہ عورتیں تین حیض مکمل ہونے تک اپنے آپ کو روکے رکھیں۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ مثلاً زید نے اپنی زوجہ ہندہ کو طلاق دی، اس نے بعد منقضی ہونے ایک ماہ یا دو ماہ کے دوسرے شخص سے نکاح کر لیا، یہ نکاح بدون انقضائے عدت کے شخص اجنبی سے ہوا شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ اور ہندہ کو اس شخص سے دعوی مہر اور وراثت جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ (بیان کرو اور اجر پاؤ۔)

الجواب: سائل مظہر کہ ہندہ معتدات بالحیض سے ہے پس صورت مستفسرہ میں اگر وہ نکاح ایک مہینہ بعد ہوا تھا بیشک فاسد کہ اس قدر مدت میں معنی عدت معقول نہیں، ہندہ ترکہ کی مستحق نہیں، اور مہر مسمی و مہر مثل سے جو کم ہوگا اس قدر پائے گی، اور اگر مہر مسمی کچھ نہ تھا مجہول ہو گیا تو پورا مہر مثل لازم آئے گا،

فی الدرالمختار و یجب مهر المثل فی نکاح فاسد بالوطی لابعیره ولم یزد علی المسمی لرضا ها بالحط، ولو کان دون المسمی لزم مهر المثل لفساد التسمیۃ بفساد العقد، ولولم یسم اوجهل لزم

در مختار میں ہے اور نکاح فاسد میں صرف وطی کی وجہ سے مہر مثل واجب ہوتا ہے وطی کے بغیر نہیں، پھر وہ مہر مثل مقررہ سے زائد نہ ہوگا کیونکہ عورت مقررہ کم مہر پر راضی تھی، اور اگر مہر مثل مقرر مہر سے کم ہو تو ایسی صورت میں مہر مثل ہی واجب ہوگا کیونکہ نکاح کے فساد کی وجہ سے مقررہ مہر فاسد ہو جاتا ہے، اور اگر مہر

[1] القرآن الکریم ۲۲۸/۲ Page 320 of 688

[Arabic]: However much it reaches. [Footnote 1] End of summary. And in it as well: entitlement to inheritance is through blood relation and valid marriage; thus, there is no mutual inheritance based on an irregular (fasid) or void (batil) marriage by consensus. [Footnote 2] End of selection. [Urdu Translation]: If [the dowry] has not been fixed or the amount cannot be known, then Mahr-e-Mithl (customary dowry), however much it may be, will be mandatory. End of summary. And in the same [book] it is stated that entitlement to inheritance arises due to kinship and valid marriage; therefore, there will be no entitlement to inheritance by consensus based on a merely irregular or void marriage. End of summary. (T)

And if [the second marriage] occurred after two months, i.e., sixty days, and the woman (Hindah) claims that three complete menstrual cycles have passed by then and the waiting period ('iddah) had expired, then the statement of Hindah under oath will be reliable. If the heirs of the second husband prove the contrary with witnesses, then the ruling in this case will be the same as the first case; otherwise, when Hindah declares the passing of the 'iddah under oath, she will receive both inheritance and dowry.

[Arabic]: In Al-Durr al-Mukhtar: If she says 'My 'iddah has passed' and the time period allows for it, while the husband denies it, her word is accepted along with her oath; otherwise, [if] the time period does not allow for it, [it is not accepted] because a trustee's word is only believed in what does not contradict the obvious. Then, if [the 'iddah is counted] by months, the mentioned amount applies, and if by menses, the minimum for a free woman is sixty days. [Footnote 3] And Allah knows best. [Urdu Translation]: It is in Durr-e-Mukhtar: The wife said my 'iddah has ended and the husband declares her a liar, so if the duration is such that it allows for the 'iddah to have passed, the woman's statement will be confirmed after taking an oath. If the period is not such, then the woman's confirmation will not be accepted, because the confirmation of a trustee is made in such a case when the outward evidence is not against it. Then if the 'iddah is according to the count of months, there are three months for 'iddah, and if 'iddah is according to the count of menses, then the minimum 'iddah for a free woman is sixty days (upon which the woman will be believed). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 92: From Old City, requested by Nannhe, 25 Muharram al-Haram 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a woman was divorced,

and three or four days after the divorce, her marriage took place elsewhere. She lived there for one or one and a half years, after which the husband turned her out. This woman then married in a third place. Now, it is to be inquired whether the second marriage of this woman, which took place six or four days after the divorce, was permissible or [not]?

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Dowry, Mujtabai Press, Delhi, 1/201
2. Durr-e-Mukhtar, Book of Inheritance, Mujtabai Press, Delhi, 2/352
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on 'Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/258 Page 321 of 688

[अरबी]: चाहे वह कितना ही क्यों न पहुँचे। [पादलेख १] संक्षिप्त समाप्ति। और इसी में यह भी है: विरासत का अधिकार रक्त संबंध और सही निकाह के कारण होता है; इसलिए सर्वसम्मति से फासिद (अनियमित) या बातिल (अमान्य) निकाह के आधार पर कोई पारस्परिक विरासत नहीं होगी। [पादलेख २] संक्षिप्त चयनित अंश। [उर्दू अनुवाद]: यदि [मेहर] निर्धारित न किया गया हो या मात्रा ज्ञात न हो सके, तो फिर मेहर-ए-मिस्ल (उचित मेहर) जितना भी हो, वही अनिवार्य होगा। संक्षेप। और इसी [किताब] में है कि विरासत का अधिकार रिश्तेदारी और सही निकाह की वजह से होता है; इसलिए केवल फासिद या बातिल निकाह की बुनियाद पर सर्वसम्मति से विरासत का अधिकार नहीं होगा। संक्षेप। (त)

और जो दो महीने यानी साठ दिन बीतने के बाद हुआ और हिन्दा (स्त्री) दावा करे कि उस समय तक तीन पूर्ण मासिक धर्म बीत चुके थे और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त हो गई थी, तो शपथ लेने पर हिन्दा का कथन विश्वसनीय होगा। यदि दूसरे पति के उत्तराधिकारी गवाहों से इसके विपरीत सिद्ध कर दें, तो इस स्थिति का निर्णय भी पहली स्थिति के समान होगा; अन्यथा, जब हिन्दा शपथ के साथ इद्दत बीतने का बयान कर देगी, तो वह विरासत और मेहर दोनों प्राप्त करेगी।

[अरबी]: अल-दुर अल-मुख्तार में है: यदि वह कहे 'मेरी इद्दत बीत गई' और समय इसकी संभावना रखता हो, जबकि पति उसे झुठलाए, तो शपथ के साथ उसकी बात मान ली जाएगी; अन्यथा [यदि] समय इसकी संभावना न रखता हो [तो नहीं मानी जाएगी], क्योंकि एक अमीन (ट्रस्टी) की बात केवल उसी में मानी जाती है जो प्रत्यक्ष के विरुद्ध न हो। फिर, यदि [इद्दत] महीनों के हिसाब से हो, तो उल्लेखित मात्रा लागू होती है, और यदि मासिक धर्म के हिसाब से हो, तो एक स्वतंत्र महिला के लिए न्यूनतम साठ दिन है। [पादलेख ३] और अल्लाह बेहतर जानता है। [उर्दू अनुवाद]: दुर्रे मुख्तार में है: पत्नी ने कहा मेरी इद्दत खत्म हो चुकी है और पति उसे झूठा करार देता है, तो अगर अवधि इतनी हो जो इद्दत गुजरने की गुंजाइश रखती है, तो शपथ लेकर महिला की पुष्टि कर दी जाएगी। यदि वह अवधि वैसी नहीं है, तो फिर महिला की पुष्टि नहीं की जाएगी, क्योंकि किसी अमीन की पुष्टि ऐसी स्थिति में की जाती है जब प्रत्यक्ष प्रमाण उसके विरुद्ध न हों। फिर यदि इद्दत महीनों के हिसाब से हो तो तीन महीने इद्दत के हैं और इद्दत मासिक धर्म के हिसाब से हो तो कम से कम आज़ाद महिला के लिए साठ दिन इद्दत है (जिस पर महिला की पुष्टि की जाएगी)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ९२: पुराने शहर से, नन्हे द्वारा पूछा गया, २५ मुहर्रम अल-हराम १३१८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक महिला को तलाक दिया गया, तलाक के तीन या चार दिन बाद उसका निकाह दूसरी जगह हो गया और वह एक या डेढ़ साल तक वहां रही, बाद में पति ने उसे निकाल दिया। इस महिला ने तीसरी जगह निकाह किया। अब यह पूछना है कि इस महिला का दूसरा निकाह, जो तलाक के छह या चार दिन बाद हुआ, क्या वह जायज़ था या...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल मेहर, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/ २०१
2. दुर्रे मुख्तार, किताबुल फराइज़, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली २/ ३५२
3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/ २५८ पेज 321 of 688

بالغاً مابلغ ۱ انتہی ملخصاً وفیه ایضاً یستحق الارث برحم ونکاح صحیح فلاتوارث بفاسد ولا باطل اجماعاً ۲ انتہی ملتقطاً، مقرر نہ کیا گیا ہو یا مقدار معلوم نہ ہوسکے تو پھر مہر مثل جتنا بھی ہو وہی لازم ہوگا اھ ملخصا اور اسی میں ہے کہ وراثت کا استحقاق رشتہ اور صحیح نکاح کی وجہ سے ہوتا ہے لہذا محض نکاح فاسد یا باطل کی بناء پر استحقاق وراثت بالاجماع نہ ہوگا اھ ملخصاً (ت)

اور جو بعد گزرنے دو مہینے یعنی ساٹھ دن کے ہوا اور ہندہ دعوٰی کرے کہ تین حیض کامل اس وقت تک گزر چکے اور عدت منقضی ہو گئی تھی تو قول ہندہ بقسم معتبر ہوگا، اگر ورثاء زوج ثانی اس کا خلاف گواہوں سے ثابت کردینگے تو حکم اس صورت کا بھی مثل صورت اولٰی کے ہے ورنہ جب ہندہ مضئی عدت بحلف بیان کردے گی تو میراث و مہر دونوں پائے گی،

فی الدر المختار قالت مضت عدتی والمدة تحتملہ وکذبها الزوج قبل قولها مع حلفها والا تحتمله المدة لالان الامین انما یصدق فیما لایخالفه الظاهر ثم لو بالشهور فالمقدار المذکور ولو بالحیض فاقلها للحرة ستون یوماً ۳ ، واللہ تعالٰی اعلم۔ در مختار میں ہے: بیوی نے کہا میری عدت ختم ہو چکی ہے اور خوند اس کو جھوٹا قرار دیتا ہے تو اگر مدت اتنی ہو جو عدت گزرنے کی گنجائش رکھتی ہے تو حلف لے کر عورت کی تصدیق کردی جائے گی، اگر وہ مدت ایسی نہیں تو پھر عورت کی تصدیق نہ کی جائیگی، کیونکہ کسی امین کی تصدیق ایسی صورت میں کی جاتی ہے جب ظاہر شواہد اس کے مخالف نہ ہوں پھر اگر عدت مہینوں کے حساب سے ہو تو تین ماہ عدت کے ہیں اور عدت حیض کے حساب سے ہو تو کم از کم آزاد عورت کے لئے ساٹھ دن عدت ہے (جس پر عورت کی تصدیق کی جائے گی) واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۹۲: از شہر کہنہ مسئولہ ننھے ۲۵ محرم الحرام ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کو طلاق دی بعد طلاق تین یا چار یوم اس کا نکاح اور جگہ ہو گیا اور ایک یا ڈیڑھ سال تک وہاں رہی بعد کو خوند نے اس کو نکال دیا اس عورت نے تیسری جگہ نکاح کیا، اب یہ دریافت کرنا ہے کہ اس عورت کا دوسرا نکاح جو بعد طلاق بعد چھ یا چار یوم ہوا آیا جائز تھا یا

۱ در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۱ ۲ در مختار کتاب الفرائض مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۳۵۲ ۳ در مختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۸ Page 321 of 688

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

...invalid? And was the third marriage also valid or invalid in the same way? Explain and you shall be rewarded.

Answer: The questioner states that the woman had already stayed with her first husband after the Rukhsati (consummation). After that, a divorce occurred. Before her second marriage, she did not give birth to any child. Only three or four days after the divorce, she married another man. This man was also aware that only three or four days had passed since the divorce. Therefore, in this situation, according to the authority of Bahr al-Raiq, this second marriage of the woman was pure adultery. A daughter was also born to her during this time. Then this second person turned her out, and after only three or four days, the woman married a third person. This third marriage is correct and permissible because by now the Iddah (waiting period) of the first marriage has passed, and the second marriage was not a marriage at all; it was mere adultery. In Sharia, there is no prohibition regarding the 'water of adultery' (semen from illicit intercourse), nor is there an Iddah for it. And Allah Almighty knows best.

Problem 93: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: Zaid called his wife his mother and remained separated from this wife for one year in such a way that he sent her to her parents' house. When one year passed, Zaid gave an explicit divorce to his wife. One week after that, the wife married another person. Is this marriage before the completion of Iddah valid or not? Explain and you shall be rewarded.

Answer: Calling a wife 'mother' is a sin, but it does not cause a divorce.

As the absolute researcher (Al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) explicitly stated in Fath al-Qadir, and then Allama Shami in Radd al-Muhtar. And Allah Almighty said: "And verily, they utter a forbidden word and a falsehood" (Quran 58:2). And in the Hadith, upon being called 'sister', the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) disliked it and said: "Is she your sister?" and forbade it. (T)

1. The Holy Quran 58/2.
2. Sunan Abu Dawud, Kitab al-Talaq, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/301; Al-Sunan al-Kubra, Chapter: On what is disliked of that, Dar Sadr Beirut, 7/366.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

...नाजायज़? और तीसरा निकाह भी इसी तरह जायज़ हुआ या नाजायज़? बयान फरमाएं सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: सायल बयान करता है कि औरत पहले शौहर के पास रुख़सत होकर रह चुकी थी इसके बाद तलाक़ हुई और तलाक़ के बाद दूसरे निकाह से पहले औरत का कोई बच्चा पैदा न हुआ। तलाक़ के तीन चार ही दिन बाद औरत ने दूसरे शख़्स से निकाह कर लिया। इस शख़्स को भी यह सब हाल मालूम था कि अभी तलाक़ को तीन चार ही दिन हुए हैं। पस इस सूरत में औरत का यह दूसरा निकाह 'बرهر-उर-रायिक' के इख़्तियार के मुताबिक़ महज़ ज़िना (व्यभिचार) हुआ। यहाँ उसकी लड़की भी पैदा हुई। फिर इस दूसरे शख़्स ने निकाल दिया और औरत ने तीन चार ही दिन के बाद तीसरे शख़्स से निकाह कर लिया। यह तीसरा निकाह सही व जायज़ हुआ क्योंकि अब पहले निकाह की इद्दत गुज़र चुकी थी और दूसरा निकाह निकाह ही न था महज़ ज़िना था और ज़िना के पानी (मनी) की शरीअत में कोई हुरमत (प्रतिबंध) नहीं, न इसके लिए इद्दत है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 93: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी ज़ौजा (पत्नी) को अपनी माँ कहा और एक साल तक उसी ज़ौजा से इस तौर पर जुदाई रखी कि ज़ौजा को उसके वाJदैन के घर भेज दिया। जब एक साल गुज़र गया तब ज़ैद ने साफ़ लफ़्ज़ों में अपनी ज़ौजा को तलाक़ दे दी। ज़ौजा ने एक हफ़्ता गुज़रने के बाद दूसरे शख़्स से निकाह कर लिया। पस यह निकाह इद्दत ख़त्म होने से पहले जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: ज़ौजा को माँ कहना गुनाह है मगर इससे तलाक़ नहीं होती,

जैसा कि इस पर मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ ने 'फ़तह-उल-क़दीर' में और फिर अल्लामा शामी ने 'रद-उल-मुहतार' में ज़िक्र किया है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि "बेशक वे नापसंद बात और झूट कहते हैं" (क़ुरान 58:2)। और हदीस शरीफ़ में बहन कहने पर फ़रमाया: क्या यह तेरी बहन है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नापसंद फ़रमाते हुए यही फ़रमाया और इससे मना फ़रमाया। (त)

1. अल-क़ुरान अल-करीम 2/58

2. सुनन अबू दाऊद किताबुल तलाक़ आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/301, सुनन अल-कुबरा बाब मा युकरहु मिन ज़ालिक दार सादिर बैरुत 7/366

ناجائز؟ اور تیسرا نکاح بھی اسی طرح جائز ہوا یا ناجائز؟ بینوا توجروا۔

الجواب: سائل بیان کرتا ہے کہ عورت پہلے خاوند کے پاس رخصت ہو کر رہ چکی تھی اس کے بعد طلاق ہوئی اور طلاق کے بعد دوسرے نکاح سے پہلے عورت کے کوئی بچہ پیدا نہ ہوا طلاق کے تین چار ہی دن بعد عورت نے دوسرے شخص سے نکاح کرلیا اس شخص کو بھی یہ سب حال معلوم تھا کہ ابھی طلاق کو تین چار ہی دن ہوئے پس اس صورت میں عورت کا یہ دوسرا نکاح حسب اختیار بحر الرائق محض زنا ہوا یہاں اس کی لڑکی بھی پیدا ہوئی پھر اس دوسرے شخص نے نکال دیا اور عورت نے تین چار ہی دن کے بعد تیسرے شخص سے نکاح کرلیا، یہ تیسرا نکاح صحیح وجائز ہوا کہ اب پہلے نکاح کی عدت گزر چکی تھی اور دوسرا نکاح نکاح ہی نہ تھا نرا زنا تھا اور زنا کے پانی کی شرع میں کوئی حرمت، نہ اس کے لئے عدت۔ واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۹۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ کو اپنی ماں کہا اور ایک سال تک اسی زوجہ سے اس طور پر مفارقت رکھی کہ زوجہ کو اس کے والدین کے گھر بھیج دیا جب ایک سال گزر گیا تب زید نے بالفاظ صریح اپنی زوجہ کو طلاق دے دی، زوجہ نے بعد گزرنے ایک ہفتے کے دوسرے شخص سے نکاح کرلیا، پس یہ نکاح قبل انقضائے عدت جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: زوجہ کو ماں کہنا گناہ مگر اس سے طلاق نہیں ہوتی،

كما نص عليه المحقق على الاطلاق في فتح القدير ثم العلامة الشامي في ردالمحتار وقد قال تعالى " وَإِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُورًا " وفي الحديث أختك هي فكره ذلك رسول الله صلى الله تعالى

علیه وسلم ونهی عنه- 2 جیسا کہ اس کو محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں پھر علامہ شامی نے ردالمحتار میں ذکر کیا ہے اور اللہ تعالی نے فرمایا کہ یہ لوگ غلط اور جھوٹی بات کہتے ہیں، اور حدیث شریف میں بہن کہنے پر فرمایا: کیا یہ تیری بہن ہے، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے ناپسند فرماتے ہوئے یہی فرمایا اور اس سے منع فرمایا۔ (ت)

1 القرآن الکریم ۲/۵۸ 2 سنن ابو داؤد کتاب الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۳۰۱/۱، سنن الکبری باب مایکرہ من ذلك دار صادر بیروت ۳۶۶/۷

So from the day divorce was given, she became a divorcee, and before the completion of the 'iddah' (waiting period), marriage is absolutely prohibited and haram; it is obligatory for them to separate. And Allah Almighty knows best.

Problem 94: Sent by Rafi-ud-Din Sahib Mukhtar, 25 Shawwal 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Chand Bibi was married at the age of eleven to Peer Khan. After the marriage, according to custom, Chand Bibi came to her husband's house. After staying for a day or two, she returned to her parents' house. Three years after the marriage, she became a widow. The second marriage of the aforementioned woman was performed with Ata Khan, whose age was six years, after the 'Fatiha Chehlum' (the fortieth-day memorial service). The waiting period (iddah) was not observed. At the time of the second marriage, Chand Bibi's age was approximately 13 or 14 years. Now the question is: Was this second marriage valid without waiting for the iddah to pass? And if the widow's brother and mother are alive, whose permission is required?

Answer: If a free woman was in a valid marriage contract with a Muslim, and that marriage remained intact and valid until the husband's death without any legal defect arising, and at the time of the husband's death, it was not proven that the woman was pregnant in any way, then in all cases—whether she is a Muslim or a Kitabiyyah (a woman from the People of the Book), whether she is an adult or a minor, whether the husband was an adult or a child, whether seclusion (khalwat) and consummation (rukhsat) took place or not—it is mandatory to wait for four months and ten days. Marriage before the expiry of this period is haram and invalid.

(Arabic Segment)

In 'Ad-Durr al-Mukhtar' regarding Iddah: (For death, it is four months and ten days) on the condition that the marriage remained valid until death (abridged), whether consummation occurred or not, even if she is a minor or a Kitabiyyah under a Muslim, even if he is a slave. Nothing is excluded from it except for a pregnant woman, (even) if (her husband) who died was (a minor) who had not

(Urdu Translation)

It is in 'Durr-e-Mukhtar' that the iddah due to death is four months and ten days, provided that the marriage was valid absolutely until death, i.e., whether intercourse took place or not. Even if the woman is a minor or a Kitabiyyah woman is in the marriage of a Muslim, even if that Muslim is a slave, the ruling for all is the same. Even if the husband was so young that he had not reached

(Arabic Segment)	(Urdu Translation)
reached puberty. [End of abridged excerpt].	near puberty and died. [End of abridged excerpt]. (T)

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/256.

जिल्द तेरह 13 फ़तावा-ए-रज़विया

तो जिस दिन से तलाक़ दी गई, वह उस दिन से तलाक़शुदा हो गई और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने से पहले निकाह कतई तौर पर नाजायज़ और हराम है; उनका अलग हो जाना फ़र्ज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मस्अला 94: प्रेषित: रफ़ी-उद-दीन साहब मुख़्तार, 25 शव्वाल 1315 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या फ़रमाते हैं: चाँद बीबी का निकाह ग्यारह साल की उम्र में पीर ख़ान के साथ हुआ था। निकाह के बाद दस्तूर के मुताबिक चाँद बीबी अपने शौहर के घर आईं। एक-दो दिन रहकर वह अपने माँ-बाप के घर वापस चली गईं। निकाह के तीन साल बाद वह विधवा हो गईं। उक्त महिला का दूसरा निकाह अता ख़ान के साथ, जिसकी उम्र छह साल थी, चालीसवें की फ़ातिहा के बाद कर दिया गया। इद्दत बीतने का इंतज़ार नहीं किया गया। दूसरे निकाह के वक़्त चाँद बीबी की उम्र लगभग 13-14 साल रही होगी। अब यह बात पूछने योग्य है कि इद्दत गुज़रे बिना क्या यह दूसरा निकाह जायज़ हुआ या नहीं? और विधवा के भाई और माँ ज़िंदा हैं, तो किसकी अनुमति की आवश्यकता है?

जवाब: जो आज़ाद औरत किसी सही निकाह के अनुबंध (अक़्द) से किसी मुसलमान के निकाह में हो और शौहर की मौत तक वह निकाह अपनी जगह बरक़रार रहे, उसमें कोई ख़राबी पैदा न हुई हो, और शौहर की मौत के वक़्त औरत का किसी भी तरह गर्भवती होना साबित न हो, तो औरत पर हर हाल में—चाहे वह मुसलमान हो या किताबी (अहले किताब), बालिग हो या नाबालिग, शौहर बालिग था या बच्चा, ख़लवत (एकांतवास) और रुख़सती हुई हो या नहीं—हर सूरत में चार महीने दस दिन इंतज़ार करना लाज़िम है। इस मुद्दत के गुज़रने से पहले उसका निकाह हराम और नाजायज़ है।

(अरबी खंड)

'अद-दुर्र अल-मुख़्तार' में इद्दत के बारे में: (मृत्यु के लिए यह चार महीने और दस दिन है) इस शर्त पर कि निकाह मौत तक सही बना रहे (संक्षिप्त), चाहे संभोग (वति) हुआ हो या नहीं, भले ही वह नाबालिग हो या किसी मुस्लिम के अधीन किताबी औरत हो, चाहे वह गुलाम ही क्यों न हो। इसमें से केवल गर्भवती महिला को बाहर रखा गया है, (भले

(उर्दू अनुवाद)

'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है कि मौत की वजह से इद्दत चार महीने दस दिन है, बशर्ते कि मौत तक निकाह मुतलक़न (पूरी तरह) सही रहा हो, यानी वति (संभोग) की गई हो या न की गई हो। चाहे औरत नाबालिग हो या कोई किताबी औरत किसी मुसलमान के निकाह में हो, चाहे वह मुसलमान गुलाम ही क्यों न हो, सबके लिए यही

(अरबी खंड)

ही) (उसका पति) जिसकी मृत्यु हुई, (एक नाबालिग) हो जो अभी युवावस्था के करीब न पहुँचा हो। [संक्षिप्त अंश समाप्त]।

(उर्दू अनुवाद)

हुक्म है। चाहे शौहर इतना छोटा हो जो अभी बालिग होने के करीब न पहुँचा हो और मर गया हो। [संक्षिप्त अंश समाप्त]। (त)

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल इद्दत, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/256.

पृष्ठ 323/688

تو جس روز سے طلاق دی اس دن سے مطلقہ ہوئی اور پیش از انقضائے عدت نکاح قطعاً ناجائز حرام ہوا ان پر جدا ہو جانا فرض ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۴: مرسلہ رفیع الدین صاحب مختار ۲۵ شوال ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ چاند بی بی کا نکاح بعمر گیارہ برس پیر خاں کے ساتھ ہوا، چاند بی بی بعد نکاح حسب دستور اپنے شوہر کے گھر آئی، ایک دوروز رہ کر ماں باپ کے گھر واپس گئی، بعد نکاح کے تین برس بعد بیوہ ہوگئی، مسماۃ مذکور کا نکاح ثانی عطا خاں کے ساتھ جس کی عمر چھ برس کی تھی بعد فاتحہ چالیسویں کے کردیا، انتظار گزرنے عدت کا نہ کیا گیا، وقت نکاح ثانی چاند بی بی تخمیناً ۱۴، ۱۳برس کی ہوگی، اب یہ بات دریافت طلب ہے کہ بلا انتظار گزرنے عدت کے یہ نکاح ثانی جائز ہوا یا نہیں؟ اور بیوہ کے بھائی اور ماں زندہ ہیں تو کس کی اجازت درکار ہے؟

الجواب: جو عورت آزاد کسی عقد صحیح سے کسی مسلمان کے نکاح میں ہوا اور موت شوہر تک وہ نکاح اپنی صحت پر باقی رہے، کوئی فساد اس میں عارض نہ ہوا اور موت شوہر کے وقت عورت کو کسی طرح کا حمل ہونا ثابت نہ ہو تو عورت پر ہر حال میں خواہ مسلمہ ہو یا کتابیہ بالغہ ہو یا صغیرہ شوہر بالغ تھا یا صبی خلوت و رخصت ہوئی یا نہیں بہر صورت چار مہینے دس دن کا انتظار لازم ہوتا ہے، اس مدت کے گزرنے سے پہلے اس کا نکاح حرام و ناجائز ہے،

| فی الدر المختار العدۃ (للموت اربعۃ اشھر وعشر ا) بشرط بقاء النکاح صحیحاً الی الموت (ملتقطا) وطئت اولا، ولو صغیرۃ او کتابیۃ تحت مسلم و لو عبدا فلم یخرج عنھا الا الحامل (ولو) کان (زوجھا) المیت (صغیرا) غیر مراھق ۱ اھ ملتقطا۔ | در مختار میں ہے موت کی وجہ سے عدت چار ماہ دس

دن ہے بشر طیکہ موت تک نکاح صحیح رہا ہو مطلقاً، یعنی وطی کی گئی ہو یانہ کی گئی ہو، اگرچہ عورت نابالغہ ہو یا کوئی کتابیہ عورت مسلمان کے نکاح میں ہو اگرچہ وہ مسلمان غلام ہی ہو سب کا حکم یہی ہے، اگرچہ خاوند اس قدر چھوٹا ہو جو ببلوغ کے قریب نہ ہو فوت ہوا ہو اھ ملتقطا۔ (ت) |

۱ در مختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۶

Volume 13, Page 13 Fatawa Razawiyya

Regarding the second marriage of the questioner Mazhar's Chand Bibi, which was performed by the deceased husband's father on the forty-first or forty-second day after his son's death with his other minor son; this marriage, since it was intentionally performed within the iddah (waiting period), is purely void (batil) and cannot even be called a marriage, as mentioned in Al-Bahr and from it in Radd al-Muhtar. After four months and ten days have passed from the husband's death, if Chand Bibi is an adult, she has the authority herself, otherwise her guardian (wali) has the authority to marry her off to whomever they wish. If Chand Bibi does not have a father or grandfather, her elder real brother is the legal guardian for marriage. While he is present, the mother does not have the authority. These matters are clear and have been mentioned in books. And Allah knows best.

Problem 95: From Ahmedabad, near Kanch Mohalla Mosque, Jamalpur, sent by Maulana Abdul Rahim Sahib, 3 Safar 1326 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: A person divorced his wife on 10 Shaban 1325 AH. She was a woman with whom the marriage had been consummated. The second husband married her on the 29th of the same Shaban. He kept his wife in his house for 10-12 days and had intercourse with her. During this time, she became pregnant. Now the scholars have given a fatwa that the marriage took place within the iddah period, therefore it is void (fasid). Now he married the woman again on the 24th or 25th of Shawwal. Is this marriage now religiously valid or not? What should the second husband do according to Sharia? Explain and be rewarded, with a clear explanation.

The Answer: If the woman was pregnant at the time of divorce and childbirth had occurred before 29 Shaban (the date of the second marriage), then that marriage was correct and occurred after the iddah; there was no need for a second marriage. And if it was not proven that the woman was pregnant at the time of divorce, then both these marriages performed by the second person are illegal and void as they both occurred within the iddah. The first one being within iddah is obvious as three menstrual cycles cannot pass in 19 days. And for the second one, because when a divorced woman becomes pregnant within the iddah, her iddah then lasts until the delivery of that child. Therefore, it is obligatory upon him to separate from the woman immediately. Since this pregnancy has become apparent, he should wait for its delivery. After delivery, he can marry her.

In Radd al-Muhtar, it is quoted from An-Nahr al-Fa'iq, who quoted from Al-Bada'i: Know that if a woman in iddah becomes pregnant during her iddah, Imam Karkhi's statement is...

खंड तेरह, पृष्ठ १३ फ़तावा रज़विय्या

साहिल मज़हर की चाँद बीबी का यह दूसरा निकाह मरहूम शौहर के बाप ने अपने बेटे की मौत से इकतालिसवें या बयालिसवें दिन अपने दूसरे छोटे बेटे के साथ कर दिया, तो यह निकाह चूँकि जान-बूझकर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के अंदर किया गया, इसलिए यह सराسر बातिल (अमान्य) है और इसे निकाह ही नहीं कहा जा सकता, जैसा कि 'अल-बहर' और उससे 'रद्द अल-मुह्तार' में ज़िक्र किया गया है। शौहर की मौत से चार महीने दस दिन गुज़रने के बाद, अगर चाँद बीबी बालिग़ हो तो उसे ख़ुद, वरना उसके वली (संरक्षक) को यह अधिकार है कि जिससे चाहे उसका निकाह कर दे। अगर चाँद बीबी के बाप-दादा नहीं हैं, तो उसका सगा बड़ा भाई निकाह का असली वली है उसके होते हुए माँ को अधिकार नहीं है। ये मसले स्पष्ट हैं और किताबों में चले आ रहे हैं। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला ९५: अहमदाबाद, निकट काँच मोहल्ला मस्जिद, जमालपुर, प्रेषक मौलाना अब्दुल रहीम साहब, ३ सफ़र १३२६ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को १० शाबान १३२० हिजरी को तलाक़ दिया। वह औरत मदखूला-बहा (जिसके साथ सहवास हुआ हो) थी। दूसरे शौहर ने उसी शाबान की २९ तारीख़ को निकाह किया और उसने अपनी पत्नी को अपने घर में १०-१२ दिन रखकर उसके साथ सोहबत (सहवास) की। इस दौरान उसे गर्भ ठहर गया। अब विद्वानों ने फ़तवा दिया कि निकाह इद्दत के अंदर हुआ है, इसलिए फ़ासिद (अमान्य) हुआ। अब उसने २४ या २५ शव्वाल को फिर दोबारा औरत से निकाह किया। क्या अब यह निकाह शरई तौर पर जायज़ है या नहीं? दूसरी सूरत में शौहर को शरीयत के अनुसार क्या करना चाहिए? बयान करें और सवाब पायें, स्पष्ट विवरण के साथ।

जवाब: अगर तलाक़ के समय औरत गर्भवती थी और २९ शाबान को जब दूसरे शौहर ने निकाह किया, उससे पहले प्रसव (बच्चे का जन्म) हो चुका था, तो वह निकाह सही हुआ और इद्दत के बाद ही हुआ, दोबारा निकाह की ज़रूरत न थी। और अगर तलाक़ के वक़्त औरत का गर्भवती होना साबित न था, तो ये दोनों निकाह जो दूसरे व्यक्ति ने किए, नाजायज़ और बातिल हैं क्योंकि दोनों इद्दत के अंदर हुए। पहले का इद्दत में होना तो साफ़ है क्योंकि १९ दिन में तीन हैज़ (मासिक धर्म) नहीं गुज़र सकते। और दूसरे का इसलिए कि जब तलाक़शुदा औरत इद्दत के अंदर गर्भवती हो जाए, तो अब उसकी इद्दत उस गर्भ के प्रसव तक हो जाती है। लिहाज़ा उस पर फ़र्ज़ है कि औरत को फ़ौरन अलग

कर दे। चूँकि यह गर्भ अब ज़ाहिर हो गया है, वह उसके प्रसव का इंतज़ार करे, प्रसव के बाद उससे निक॥ कर सकता है।

रद्द अल-मुह्तार में 'अन-नह्र अल-फ़ाइक' से मंक़ूल है, उन्होंने 'अल-बदाइ' से नक़ल किया कि: यह जान लें कि इद्दत वाली औरत अगर अपनी इद्दत के दौरान गर्भवती हो जाए, तो इमाम करख़ी के क़ौल के अनुसार...

पृष्ठ ३२१ ऑफ़ ६८८

سائل مظہر کی چاند بی بی کا یہ دوسرا نکاح شوہر متوفی کے باپ نے اپنے بیٹے کی موت سے اکتالیسویں بیالیسویں دن اپنے دوسرے بیٹے صغیر السن کے ساتھ کر دیا تو یہ نکاح از آنجا کہ دیدہ و دانستہ عدت کے اندر کیا گیا محض باطل ہوا جسے نکاح ہی نہیں کہہ سکتے کما ذکرہ فی البحر وعنہ فی ردالمحتار (جیسا کہ بحر میں اور اس سے ردالمحتار میں ذکر کیا گیا ہے۔ت) چار مہینے دس دن موت شوہر سے گزرنے کے بعد چاند بی بی اگر بالغہ ہو تو اسے خود ورنہ اس کے ولی کو اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کر دے، چاند بی بی کے اگر باپ دادا نہیں تو اس کا جوان بھائی حقیقی ولی نکاح ہے اس کے ہوتے ہوئے ماں کو اختیار نہیں والمسائل ظاھرۃ وفی الکتب دائرۃ (یہ مسائل ظاہر ہیں اور کتب میں مذکور چلے آرہے ہیں۔) واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۹۵: از احمد آباد متصل مسجد کانچ محلہ جمالپور مرسلہ مولانا عبدالرحیم صاحب ۳ صفر ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی عورت کو تاریخ ۱۰ شعبان ۱۳۲۵ھ کو طلاق دی اور وہ عورت مدخولہ بہا تھی اور زوج ثانی نے اسی شعبان کی تاریخ ۲۹ کو نکاح کیا اور اس نے اپنی زوجہ کو اپنے مکان میں ۱۲، ۱۰ دن رکھ کر اس سے صحبت کی اس عرصہ میں اس کو حمل رہ گیا اب علماء نے اس کو فتوی دیا کہ نکاح عدت کے اندر ہوا ہے اس لئے فاسد ہوا، اب اس نے شوال کے تاریخ ۲۴ یا ۲۵ کو پھر دوبارہ عورت سے نکاح کیا، اب یہ نکاح شرعاً جائز ہے یا نہیں؟ شق ثانی میں زوج شرعاً کیا کرے؟ بینوا توجروا بیاناشافیا۔ الجواب: اگر عورت وقتِ طلاق حاملہ تھی اور ۲۹ شعبان کو جو زوج ثانی نے نکاح کیا اس سے پہلے وضع حمل ہو چکا تھا تو وہ نکاح صحیح ہوا اور عدت کے بعد ہی ہوا دوبارہ نکاح کی حاجت نہ تھی، اور اگر عورت کا وقت طلاق حاملہ ہونا ثابت نہ تھا تو یہ دونوں نکاح کہ شخص دوم نے کئے ناجائز و باطل ہیں کہ دونوں عدت

کے اندر واقع ہوئے، پہلے کا عدت میں ہونا تو ظاہر کہ ۱۹ دن میں تین حیض نہیں گزر سکتے اور دوسرے کا یوں کہ جب زنِ مطلقہ عدت کے اندر حاملہ ہو جائے تو اب اس کی عدت اس حمل کے وضع تک ہو جاتی ہے، پس اس پر فرض ہے کہ عورت کو فوراً الگ کر دے، یہ حمل جواب ظاہر ہوا ہے اس کے وضع کا انتظار کرے، بعد وضع اس سے نکاح کر سکتا ہے، فی ردالمحتار عن النهر الفائق عن البدائع اعلم ان المعتدة لو حملت فی عدتها ذکر الکرخی ان ردالمحتار میں نہر الفائق سے منقول ہے انہوں نے بدائع سے نقل کیا کہ واضح رہے کہ عدت والی دوران عدت اگر حاملہ ہو جائے تو امام کرخی کے قول کے

Fatawa Razawiyya | Volume 13, Page 13

[Arabic Column] Her waiting period ('iddah) is giving birth, and he did not detail it further. What Imam Muhammad mentioned is that this applies to the waiting period for divorce. As for the waiting period for death, it does not change due to pregnancy, and this is the correct position [1]. I say: Its reason is clear, as the waiting period for death is by months, while the waiting period for divorce is by menstrual cycles, and menstruation ceases due to pregnancy. So understand, and Allah Almighty knows best.

[Urdu Column] Accordingly, her waiting period is until the birth of the child; Imam Karkhi did not provide these details. According to what Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) himself mentioned, this ruling applies to the waiting period for divorce. However, if it is the waiting period for death, then due to pregnancy, her waiting period will remain four months and ten days and will not change to the pregnancy-based waiting period; this is the correct school of thought. I say: (I say) its reason is clear: that the waiting period for death is calculated by months, and the waiting period for divorce is by menstrual cycles, and menstruation stops due to pregnancy. Reflect on this. And Allah Almighty knows best (T).

[Footnote] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on 'Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/203.

Page 325 of 688

फतावा रज़विया | जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी कॉलम] उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बच्चे के जन्म तक है, और उसने विस्तार से नहीं बताया। इमाम मुहम्मद ने जो उल्लेख किया है वह यह है कि यह तलाक की इद्दत के लिए है। जहाँ तक वफ़ात (मृत्यु) की इद्दत का सवाल है, यह गर्भावस्था के कारण नहीं बदलती है, और यही सही मत है [1]। मैं कहता हूँ: इसका कारण स्पष्ट है, क्योंकि वफ़ात की इद्दत महीनों के हिसाब से होती है, जबकि तलाक की इद्दत मासिक धर्म के चक्र से होती है, और गर्भावस्था के कारण मासिक धर्म रुक जाता है। तो समझें, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू कॉलम] तदनुसार, उसकी प्रतीक्षा अवधि बच्चे के जन्म तक है; इमाम करखी ने ये विवरण नहीं दिए। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने स्वयं जो उल्लेख किया है, उसके अनुसार यह नियम तलाक की इद्दत पर लागू होता है। हालाँकि, यदि यह वफ़ात की इद्दत है, तो गर्भावस्था के कारण उसकी इद्दत चार महीने और दस दिन ही रहेगी और यह वफ़ात वाली इद्दत (गर्भावस्था आधारित) में नहीं बदलेगी; यही सही मज़हब है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इसका कारण स्पष्ट है: वफ़ात की इद्दत की गणना महीनों से की जाती है, और तलाक की इद्दत मासिक धर्म चक्र द्वारा होती है, और गर्भावस्था के कारण मासिक धर्म रुक जाता है। इस पर विचार करें। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है (T)।

[पाद लेख] 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-इद्दत, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/203।

पृष्ठ 325 में से 688

[عربی کالم] عدتها وضع الحمل ولم یفصل، والذی ذکرہ محمد ان ھذا فی عدۃ الطلاق امافی عدۃ الوفاۃ فلاتتغیر بالحمل وھو الصحیح ۱ اھ اقول: ووجھہ ظاہر ان عدۃ الوفاۃ بالاشھر والطلاق بالحیض والحیض یرتفع بالحبل فافھم، واللہ تعالٰی اعلم۔

[اردو کالم] مطابق اس کی عدت بچے کی پیدائش تک ہے، امام کرخی نے اس کی تفصیل نہ فرمائی، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے خود جو ذکر فرمایا اس کے مطابق یہ حکم طلاق کی عدت کا ہے لیکن اگر وفات کی عدت ہو تو پھر حمل کی وجہ سے اس کی عدت چار ماہ دس دن ہی رہے گی اور وفات والی عدت میں تبدیل نہ ہوگی، یہی صحیح مذہب ہے، اھ اقول: (میں کہتا ہوں) اس کی وجہ ظاہر کہ وفات کی عدت مہینوں کے حساب سے ہوتی ہے اور طلاق کی عدت حیض کے حساب سے ہوتی ہے اور حیض حمل کی وجہ سے ختم ہو جاتا ہے، غور کرو۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[حاشیہ] ۱ ردالمحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۰۳

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen, 13

Chapter on Mourning (Hiddad) (Description of Mourning)

Problem 92: Questioned by Muhammad Inayatullah, 6 Rabi-ul-Awwal Sharif 1308 AH. Respected Maulvi, greetings. That girl who has become a widow, I want to take her to Shahjahanpur. What is the ruling on this? And during the days of the waiting period (iddah) of death, can a woman go to another house or another place out of necessity or not? Peace be upon you, Muhammad Inayatullah.

The Answer: Until the end of the iddah, it is obligatory for the woman to stay in the same house; it is not permissible to take her to Shahjahanpur or any other place. Yes, if one does not have anything to eat or wear and there is a need to go out to obtain these things, such that without it she cannot manage the provisions for food and drink while staying at home, then she may go out in the morning and evening and spend the night in the same house. Moving to another house is absolutely not permissible. However, if the house was not hers and the owners forcibly evicted her, or she lived on rent and now lacks the means to pay rent, or the house has collapsed or is about to collapse, or there is some other threat to her life or property—in short, if there are such necessities—then she may leave that place and move into a house that is nearest to her original house; otherwise, absolutely not. It is mentioned in Durr al-Mukhtar:

Page 327 of 688 I.T. Majlis of Dawateislami

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, १३

बाबुल हिदाद (शोक का वर्णन)

मसला ९२: उत्तरदाता मुहम्मद इनायतुल्लाह, ६ रबीउल अव्वल शरीफ १३०८ हिजरी। हज़रत मौलवी साहब, तस्लीम अर्ज़ है। वह लड़की जो विधवा हो गई है, मैं उसे शाहजहाँपुर ले जाना चाहता हूँ, इस बारे में क्या हुक्म है? और मृत्यु की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दिनों में औरत ज़रूरत पड़ने पर भी दूसरे मकान या दूसरी जगह जा सकती है या नहीं? वस्सलाम, मुहम्मद इनायतुल्लाह।

जवाब: इद्दत ख़त्म होने तक औरत पर उसी मकान में रहना वाजिब (अनिवार्य) है; उसे शाहजहाँपुर या किसी भी और जगह ले जाना जायज़ नहीं है। हाँ, जिसके पास खाने-पहनने के लिए कुछ न हो और इन चीज़ों को हासिल करने के लिए बाहर निकलने की ज़रूरत हो, इस तरह कि इसके बिना वह घर बैठे खाने-पीने का सामान नहीं जुटा सकती, तो वह सुबह-शाम बाहर निकले और रात उसी मकान में बिताए। दूसरे मकान में चले जाना हरगिज़ जायज़ नहीं है। लेकिन अगर यह मकान उसका नहीं था और मकान मालिकों ने ज़बरदस्ती निकाल दिया, या वह किराए पर रहती थी और अब किराया देने की ताक़त नहीं है, या मकान गिर गया या गिरने वाला है, या किसी और तरह से अपनी जान या माल का ख़तरा है—संक्षेप में, अगर इस तरह की ज़रूरतें हों—तो वहाँ से निकलकर जो मकान उसके मकान के सबसे करीब हो, उसमें चली जाए; वरना हरगिज़ नहीं। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

पृष्ठ ३२७/६८८ आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

باب الحداد (سوگ کا بیان)

مسئلہ ۹۲: مسئولہ محمد عنایت اللہ ۶ ربیع الاول شریف ۱۳۰۸ھ حضرت مولوی تسلیم عرض، وہ لڑکی کہ بیوہ ہوگئی ہے میں اسے شاہجہاں پور لے جانا چاہتا ہوں اس میں کیا حکم ہے ؟ اور ایام عدت وفات میں عورت بضرورت بھی دوسرے مکان یا دوسری جگہ جاسکتی ہے یا نہیں؟ والسلام محمد عنایت اللہ

الجواب: تا ختم عدت عورت پر اسی مکان میں رہنا واجب ہے، شاہجہاں پور خواہ کسی جگہ لے جانا جائز نہیں، ہاں جس کے پاس کھانے پہنے کو نہیں اور ان چیزوں کی تحصیل میں باہر نکلنے کی ضرورت ہے کہ بغیر اس کے خور و نوش کا سامان گھر میں بیٹھے نہیں کرسکتی تو وہ صبح وشام باہر نکلے اور شب اسی مکان میں بسر کرے دوسرے مکان میں چلے جانا ہر گز جائز نہیں، مگر یہ مکان اس کا نہ تھا مالکانِ مکان نے جبراً نکال دیا، یا کرایہ پر رہتی تھی اب کرایہ دینے کی طاقت نہیں یا مکان گرپڑا یا گرنے کو ہے یا اور کسی طرح اپنی جان یا مال کا اندیشہ ہے غرض اسی طرح کی ضرورتیں ہوں تو وہاں سے نکل کر جو مکان اس کے مکان سے قریب تر ہو اس میں چلی جائے ورنہ ہر گز نہیں درمختار میں ہے:

Volume 13 | Page 13 Fatawa Razawiyya

[Arabic Box Column 1]: A woman in the waiting period ('iddah) due to death may go out during the two periods [day and night] for needs and spend the majority of the night in her home because her maintenance is her own responsibility, so she needs to go out. This is until, if she has sufficient means, she becomes like a divorced woman, for whom it is not permissible to go out. [Fath al-Qadir]. I say: Likewise, if she is able to earn in the house without going out, then the permission is based on necessity. So where there is no necessity, there is no permission, and this is very clear.

[Urdu Box Column 2]: A woman observing the 'iddah of death can go out of her house during the day and night out of necessity, but she must stay in her house for the majority of the night because she has to meet her own expenses, hence she is in need of going out. To the extent that if she has enough for her sufficiency and needs, then she is like a divorced woman for whom it is not permissible to go out. [Fath al-Qadir]. I say: Similarly, if she can stay at home and earn her living through some labor, then going out will not be permissible because her going out was allowed based on necessity, and when there is no necessity, there is no permission, and this point is absolutely clear. (T)

In the same source it is stated:

[Arabic Box Column 1]: And both of them, i.e., the woman in 'iddah of divorce and death, shall observe it in the house in which it became obligatory. They shall not leave it unless they are evicted, the house collapses, there is fear of its collapse, loss of property, inability to find rent for the house, or similar necessities. Then she may move to the nearest place to it. And in the case of divorce, to wherever the husband wishes. And Allah knows best.

[Urdu Box Column 2]: Women in 'iddah of death and divorce should spend their waiting period in the same house where the 'iddah became obligatory and they should not go out unless they are forcibly evicted, the house falls down or there is a danger of it falling, or there is a danger of loss of property there, or the house was on rent and the woman does not have the strength to pay the rent, or there are other such needs. In such cases, she should move to the nearest possible house. And for the divorced woman, the ruling is that she should reside wherever her husband gives her residence. And Allah knows best. (T)

Problem 97: From Bareilly, Muhallah Shahabad, near Chah Kankar. Questioner: Sayyid Mansoor Ali Sahib. 15 Shawwal 1326 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Can a woman whose husband has died go out of the house during the days of 'iddah to strengthen any of her inheritance rights, and if she goes out, for how long can she stay, and will her going out affect any of her rights? Please explain, may you be rewarded.

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Hidad, Mujtabai Press, Delhi, 1/260 2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Hidad, Mujtabai Press, Delhi, 1/260

जिल्द तेरहवीं | पृष्ठ १३ फ़तावा रज़विया

[अरबी बॉक्स कॉलम १]: मृत्यु की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) वाली महिला ज़रूरतों के लिए दिन और रात के समय बाहर जा सकती है और रात का अधिकांश हिस्सा अपने घर में बिताएगी क्योंकि उसका खर्च उसी पर है, इसलिए उसे बाहर निकलने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि यदि उसके पास पर्याप्त साधन हों, तो वह उस तलाक़शुदा महिला की तरह हो जाती है जिसके लिए बाहर निकलना जायज़ नहीं है। [फ़तह अल-क़दीर]। मैं कहता हूँ: इसी प्रकार यदि वह बिना बाहर निकले घर में ही कमाने में सक्षम है, तो अनुमति आवश्यकता पर आधारित है। जहाँ आवश्यकता नहीं है, वहाँ अनुमति नहीं है, और यह बहुत स्पष्ट है।

[उर्दू बॉक्स कॉलम २]: मौत की इद्दत वाली औरत ज़रूरत पर दिन में और रात में घर से बाहर निकल सकती है, और रात का अक्सर हिस्सा अपने घर में ही रहे क्योंकि उसने अपना ख़र्च ख़ुद पूरा करना है इसलिए वह बाहर निकलने की मोहताज है हत्ता कि अगर अपनी किफ़ायत और ज़रूरत के लिए उसके पास नफ़क़ा (ख़र्च) हो तो यह मुतलक़ा (तलाक़शुदा) औरत की तरह है इसको बाहर निकलना हलाल नहीं है, फ़तह अह् अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यूँही अगर वह घर में रह कर कोई मेहनत कर के अपना ख़र्च बना सकती है तो निकलना हलाल न होगा क्योंकि उसका बाहर निकलना ज़रूरत की बिना पर जाइज़ हुआ है और जब ज़रूरत नहीं तो जवाज़ भी नहीं, और यह बात बिल्कुल वाज़ेह (स्पष्ट) है। (त)

इसी में है:

[अरबी बॉक्स कॉलम १]: और वे दोनों, यानी तलाक़ और मौत की इद्दत वाली, उस घर में इद्दत गुज़ारेंगी जिसमें वह वाजिब हुई। वे उससे नहीं निकलेंगी जब तक कि उन्हें निकाला न जाए, या घर गिर जाए, उसके गिरने का डर हो, माल का नुक़सान हो, घर का किराया न मिल पाए, या इसी तरह की अन्य ज़रूरतें हों। तब वह उसके निकटतम स्थान पर चली जाए। और तलाक़ के मामले में, जहाँ पति चाहे। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[उर्दू बॉक्स कॉलम २]: मौत और तलाक़ की इद्दत वाली औरतें उसी घर में इद्दत गुज़ारें जिस में इद्दत वाजिब हुई और वहाँ से बाहर न निकलें इल्ला ये कि उनको ज़बरन निकाला जाए या वह मकान गिर जाए या गिरने का ख़तरा हो, या वहाँ माल के नुक़सान का ख़तरा हो या मकान किराया पर था औरत में किराया देने की ताक़त न हो या और इस क़िस्म की ज़रूरयात हों तो क़रीब तरीन मकान में

मुंतक़िल (स्थानांतरित) हो जाए, और तलाक़ वाली को यह हुक्म है कि जहाँ ख़ावंद (पति) उसे सकूनत (निवास) दे वहाँ रहे। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला ९७: बरेली, मोहल्ला शाहबाद, चाह कंकर से। प्रेषक: सैयद मंसूर अली साहब। १५ शव्वाल १३२६ हिजरी। विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: क्या वह औरत जिसका शौहर मर गया है, इद्दत के दिनों में अपने किसी विरासत के अधिकार को पुख्ता करने के लिए घर से बाहर जा सकती है या नहीं, और अगर बाहर जाए तो कितनी अवधि के लिए, और क्या उसके बाहर जाने से उसके किसी अधिकार में कोई फ़र्क़ आएगा? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

पाद-टिप्पणियाँ: १. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब अल-हिदाद, मत़बा मुजतबाई, दिल्ली, १/२६० २. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब अल-हिदाद, मत़बा मुजतबाई, दिल्ली, १/२६०

पृष्ठ ३२८/६८८

[عربی باکس]: معتدة موت تخرج في الحديين و تبيت اكثر الليل في منزلها لان نفقتها عليها فتحتاج للخروج حتى لو كان عندها كفايتها صارت كالمطلقة فلا يحل لها الخروج فتح ۱ اه اقول فكذا اذا قدرت على الكسب في البيت من دون خروج فان المبيح هي بالضرورة فبحيث لا ضرورة فلا اباحة وهذا واضح جدا۔

[اردو باکس]: موت کی عدت والی عورت ضرورت پر دن میں اور رات میں گھر سے باہر نکل سکتی ہے، اور رات کا اکثر حصہ اپنے گھر میں ہی رہے کیونکہ اس نے اپنا خرچہ خود پورا کرنا ہے اس لئے وہ باہر نکلنے کی محتاج ہے حتی کہ اگر اپنی کفایت اور ضرورت کے لئے اس کے پاس نفقہ ہو تو یہ مطلقہ عورت کی طرح ہے اس کو باہر نکلنا حلال نہیں ہے، فتح اھ اقول: (میں کہتا ہوں) یونہی اگر وہ گھر میں رہ کر کوئی محنت کر کے اپنا خرچہ بنا سکتی ہے تو نکلنا حلال نہ ہوگا کیونکہ اس کا باہر نکلنا ضرورت کی بناء پر جائز ہوا ہے اور جب ضرورت نہیں تو جواز بھی نہیں، اور یہ بات بالکل واضح ہے۔(ت)

اسی میں ہے:

[عربی باکس]: وتعتدان ای معتدة طلاق وموت فی بیت وجبت فیه ولا تخرجان منه الان تخرج او ينهدم المنزل او تخاف انهدامه او تلف مالها او لا تجد كراء البيت ونحو ذلك من الضرورات فتخرج لاقرب موضع اليه وفی الطلاق الی حيث شاء الزوج ۲ ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

[اردو باکس]: موت اور طلاق کی عدت والی عورتیں اسی گھر میں عدت گزاریں جس میں عدت واجب ہوئی اور وہاں سے باہر نہ نکلیں الایہ کہ ان کو جبراً نکالا جائے یا وہ مکان گر جائے یا

گرنے کا خطرہ ہو، یا وہاں مال کے نقصان کا خطرہ ہو یا مکان کرایہ پر تھا عورت میں کرایہ دینے کی طاقت نہ ہو یا اور اس قسم کی ضروریات ہوں تو قریب ترین مکان میں منتقل ہو جائے، اور طلاق والی کو یہ حکم ہے کہ جہاں خاوند اسے سکونت دے وہاں رہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۹۷: از بریلی محلہ شاہ آباد متصل چاہ کنکر مسئولہ سید منصور علی صاحب ۱۵ شوال ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عورت جس کا خاوند مرگیا وہ ایام عدت میں اپنے کسی استحقاق وراثت کے استحکام کے واسطے باہر گھر سے جاسکتی ہے یا نہیں، اور اگر باہر جائے تو کس قدر عرصہ تک اور اس کے باہر جانے سے اس کے کسی حقوق میں فرق تو نہ آئے گا بینوا توجروا۔

۱ درمختار باب الحداد مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۰ ۲ درمختار باب الحداد مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۰

Answer The questioner has stated that the woman is poor; she only possesses a single source of income of five rupees which her husband had deeded to her. She absolutely does not have the means to pay a commission to call court officials to her. If she does not go, that property will not be registered in her name. The place she wants to visit is only six miles away from her residence of 'iddah (waiting period). She will go and return within the same day and spend the night here. If this is the case, then in the described situation, she is permitted to go and return on the same day and spend the night at the house of 'iddah. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic Text	**Urdu Translation**
A woman observing 'iddah for death may go out during the day and for most of the night for necessities, because her maintenance is her own responsibility, so she needs to go out. Even if she has enough for her needs, she becomes like a divorced woman, and it is not permissible for her to go out (Fath). In Al-Quniya, it is permitted for her to go out to attend to essential matters, such as farming, when she has no agent to do it for her.	A woman in 'iddah due to death may leave the house during the day and night for necessity, and she must return and spend the greater part of the night in her own home because she is responsible for her own expenses. Therefore, she is in need of going out, to the extent that if she has sufficient provision, she is like a divorced woman and it is not permissible for her to go out (Fath). And in Quniya, it is declared permissible for her to go out for the management of her essential things, for example, to supervise agriculture if she has no representative. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar: It is said in Al-Nahr that this must be restricted to spending the night in her husband's house. (In Al-Nahr, it is stated that this condition is necessary: that she returns to the husband's house at night and spends the night there. And Allah knows best.) And Allah Almighty knows best.

Case 98: From the city of Rohilla Tola, Bareilly, submitted by Meit Khan, 19 Rajab al-Murajab 1336 AH. Zaid died. His wife has no means of livelihood, nor is any person among the heirs and relatives of the deceased responsible for her maintenance and support. Instead, the mentioned individuals are thieves, alcoholics, abandoners of prayer, gamblers, and commit other acts contrary to Sharia. Regarding the mentioned woman, there is a risk of loss of chastity, wastage of property, and other such matters...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Al-Hidad, Mujtabai Press, Delhi, 1/260 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Al-Hidad, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/620

अल-जवाब (उत्तर) प्रश्नकर्ता ने बताया है कि महिला बेचारी है; उसके पास केवल पाँच रुपये की एक आजीविका का साधन है जो उसके पति ने उसके नाम लिख दिया था। उसके पास कचहरी के कर्मचारियों को कमीशन देकर बुलाने की बिल्कुल सामर्थ्य नहीं है और यदि वह नहीं जाती है, तो वह संपत्ति उसके नाम नहीं होगी। वह स्थान जहाँ वह जाना चाहती है, उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के निवास से केवल छह मील दूर है। वह दिन ही दिन में जाकर वापस आ जाएगी और रात यहीं बिताएगी। यदि स्थिति ऐसी है, तो वर्णित सूरत में उसे दिन के दिन वापस आकर रात इद्दत के घर में ही बिताने की अनुमति है। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी पाठ

मृत्यु की इद्दत वाली महिला आवश्यकता पड़ने पर दिन में और रात के अधिकांश भाग में बाहर निकल सकती है, क्योंकि उसका भरण-पोषण उसी की ज़िम्मेदारी है, इसलिए उसे बाहर निकलने की ज़रूरत है। यहाँ तक कि यदि उसके पास पर्याप्त संसाधन हों, तो वह एक तलाक़शुदा महिला की तरह हो जाती है और उसके लिए बाहर निकलना जायज़ नहीं है (फ़तह)। 'अल-कुनिया' में उसके लिए अपनी आवश्यक वस्तुओं के प्रबंधन के लिए बाहर निकालना जायज़ बताया गया है, जैसे कि खेती की देखरेख करना जब उसका कोई प्रतिनिधि न हो।

उर्दू अनुवाद

मृत्यु की इद्दत वाली महिला ज़रूरत पर दिन में और रात में घर से निकले और रात का अधिकांश हिस्सा वापस अपने मकान ही में बिताए क्योंकि उसका अपना खर्च खुद उसी के जिम्मे है इसलिए वह मोहताज है कि बाहर निकले यहाँ तक कि अगर उसके पास किफायत के मुताबिक खर्चा मौजूद है तो फिर ये मुतलका (तलाक़शुदा) औरत की तरह है उसको बाहर जाना जायज़ नहीं है, फ़तह। और कुनिया में इसे अपनी ज़रूरी चीज़ों के सुधार के लिए निकलना जायज़ करार दिया है, जैसे कृषि की निगरानी करनी है और उसका कोई वकील (प्रतिनिधि) न हो। (त)

रद-उल-मुहतार में है: 'अन-नहर' में कहा गया है कि इसे इस शर्त के साथ सीमित किया जाना चाहिए कि वह अपने पति के घर में रात बिताए। ('नहर' में कहा है यह शर्त ज़रूरी है कि वह रात को पति वाले घर में वापस आए और वहाँ रात गुज़ारे। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 98: शहर रूहेली टोला, बरेली से, प्रेषक मैत ख़ां, 19 रजब अल-मुरज्जब 1336 हिजरी। ज़ैद की मृत्यु हो गई, उसकी पत्नी के पास जीविका का कोई साधन नहीं है, और न ही मृतक के वारिसों और संबंधियों में से कोई व्यक्ति उसके भरण-पोषण का ज़िम्मेदार है। बल्कि उपर्युक्त व्यक्ति चोर, शराबी, नमाज़ छोड़ने वाले, जुआरी हैं और शरीअत के विरुद्ध अन्य कार्यों में लिप्त रहते हैं। उक्त महिला के संबंध में शील भंग होने, संपत्ति के नष्ट होने और अन्य प्रकार के..

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबुल हिदाद, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/260 [2] रद-उल-मुहतार, बाबुल हिदाद, दारुल एहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/620

الجواب سائل نے ظاہر کیا کہ عورت مسکینہ ہے پانچ روپے کی ایک معاش کہ اس کے شوہر نے اسے لکھ دی تھی صرف وہی پاس رکھتی ہے اور اہلکار کچہری کو کمیشن دے کر بلانے کی استطاعت اصلاً نہیں اور اگر نہ جائے تو وہ جائداد اس کے نام نہ ہوگی اور وہ جگہ جہاں جانا چاہتی ہے اس کے مکان عدت سے صرف چھ میل دور ہے دن ہی دن میں جانا اور مکان میں واپس آنا ہو جائے گا رات یہیں آکر بسر کرے گی اگر بات یوں ہے تو صورت مذکورہ میں اسے جانا اور دن کے دن واپس آکر رات مکان عدت ہی میں بسر کرنے کی اجازت ہے۔ در مختار میں ہے:

| معتدۃ موت تخرج فی الحدیدین وتبیت اکثر اللیل فی منزلھا لان نفقتھا علیھا فتحتاج للخروج۔ حتی لوکان عندھا کفایتھا صارت کالمطلقۃ ولا یحل لھا الخروج فتح، وجوز فی القنیۃ خروجھا لاصلاح لا بدلھا منہ کزراعۃ ولاوکیل لھا[1]۔ | موت کی عدت والی عورت ضرورت پر دن میں اور رات میں گھر سے نکلے اور رات کا اکثر حصہ واپس اپنے مکان ہی میں بسر کرے کیونکہ اس کا اپنا خرچہ خود اس کے ذمہ ہے اس لئے وہ محتاج ہے کہ باہر نکلے حتی کہ اگر اس کے پاس کفایت کے مطابق خرچہ موجود ہے تو پھر یہ مطلقہ عورت کی طرح ہے اس کو باہر جانا جائز نہیں ہے، فتح۔ اور قنیہ میں اسے اپنی ضروری اشیاء کی اصلاح کے لئے نکلنا جائز قرار دیا ہے، مثلاً زراعت کی نگرانی کرنی ہے اور اس کا کوئی وکیل نہ ہو۔ (ت) |

ردالمختار میں ہے: قال فی النہر ولابدان یقید ذلک بان تبیت زوجھا نہر میں کہا ہے یہ قید ضروری ہے کہ رات کو خاوند والے گھر میں واپس آئے اور وہاں رات گزارے۔ واللہ تعالی اعلم۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۸: از شہر روہیلی ٹولہ بریلی مسئولہ میت خاں ۱۹ رجب المرجب ۱۳۳۶ھ زید فوت ہوا اس کی زوجہ کوئی ذریعہ معاش نہیں رکھتی اور نہ کوئی شخص ورثاء و متعلقین متوفی سے اس کے نان و نفقہ کا متکفل ہو بلکہ اشخاص مذکور کی جانب سے چور شارب الخمر تارک الصلوۃ قمار باز ہیں و نیز دیگر امور خلاف شریعت کے مرتکب رہتے ہیں نسبت مسماۃ مذکور کے انعدام عصمت واتلاف مال و دیگر قسم کے

---

[1] در مختار باب الحداد مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۰ [2] ردالمحتار باب الحداد دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۶۲۰

...there is a strong and complete apprehension of mischief. In such a situation, is it permissible for the aforementioned woman to leave her current residence and spend the days of her 'Iddah (waiting period) at another place or not?

The Answer: Maintenance (Nafqah) during the 'Iddah of death is not mandatory on anyone; she must provide for herself. If she doesn't have the means, she can go out during the day for work and labor. It is obligatory to spend four months and ten days there. Tricks should not be used in fulfilling the obligations of Allah Almighty. "And Allah knows the corrupter from the reformer." (Translation: Allah Almighty knows the one who causes mischief and the one who reforms. - Ed.) If the fear is real and genuine, an arrangement should be made through the government. And Allah Almighty knows best.

Problem 99: From Old City, Rohilla Tola, Bareilly, sent by Ahmed Ullah Khan Sahib. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: a woman named Hindah belongs to the barber community and always goes out for barbering work. In such a case, is it permissible for her to go out during the day and night during the days of 'Iddah? And can she stay at night in another house? Please explain and be rewarded.

The Answer: From the questioner's statement, it is understood that this is the 'Iddah of death. Thus, if the woman has enough wealth to sit at home and eat for four months and ten days, then it is not permissible for her to go out. Otherwise, for as many days as she has food provisions, it is necessary for her to sit at home and eat, and then going out is permissible, but she must spend the night in her own home. And Allah Almighty knows best.

Problem 100: From Bareilly City, 30 Ramadan 1336 AH. Zaid passed away, leaving behind a pregnant wife, one son, and two minor daughters. He was a poor man who didn't even have a house of his own to live in; it was a rented house. The landlord wants two months' rent and says either pay the rent or vacate the house. Zaid's wife has nothing to eat or drink, nor the means to pay the house rent. In such a situation, can Zaid's wife leave the house where Zaid died and go to her mother's house within the 'Iddah period or not?

The Answer: She should pay the rent from wherever possible and spend the days of 'Iddah there.

(Arabic)

I commanded the female questioner, who was the mother of the woman whose husband had died, and she agreed.

I did so because she was capable; it was only a trick.

Page 330 of 688

(Urdu)

I said this to the mother of the woman whose husband had died. She was the questioner. She agreed to this. So I understood that the woman was capable of paying rent and maintenance, and that (excuse) was just a trick.

...फ़साद (गड़बड़ी) की पूरी और मज़बूत आशंका है। ऐसी स्थिति में क्या उक्त महिला के लिए अपने रहने वाले घर को छोड़कर किसी दूसरी जगह इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दिन गुज़ारना जायज़ है या नहीं?

उत्तर: मृत्यु की इद्दत का खर्च (नफ़क़ा) किसी पर नहीं होता, उसे स्वयं अपने पास से खाना चाहिए। यदि पास में कुछ न हो, तो दिन में मेहनत-मज़दूरी के लिए बाहर जा सकती है। चार महीने दस दिन वहीं गुज़ारना फ़र्ज़ है। अल्लाह अज़्ज़वजल के फ़र्ज़ अदा करने में बहाने नहीं बनाने चाहिए। "और अल्लाह बिगाड़ने वाले को सुधारने वाले से अलग जानता है।" (अनुवाद: अल्लाह तआला फ़साद करने वाले और सुधारने वाले को जानता है। - सं.) यदि डर वास्तविक और सही है, तो सरकार के माध्यम से व्यवस्था करें। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 99: पुराना शहर रुहेला टोला, बरेली से, प्रेषक अहमद उल्लाह खां साहब। दीन के उलेमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा हज्जाम (नाई) बिरादरी से है और हमेशा हज्जामी के काम की वजह से बाहर निकलती है। ऐसी स्थिति में क्या उसके लिए इद्दत के दिनों में दिन और रात में बाहर निकलना जायज़ है या नहीं? और क्या वह रात दूसरे मकान में गुज़ार सकती है या नहीं? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: साहिल (पूछने वाले) के बयान से मालूम हुआ कि यह मृत्यु की इद्दत है। अत; यदि औरत के पास इतना माल है कि वह चार महीने दस दिन घर बैठकर खा सके तो उसके लिए निकलना जायज़ नहीं है। अन्यथा, जितने दिनों का उसके पास खाने का सामान है, उतने दिन उसे घर बैठकर खाना अनिवार्य है, और फिर निकलना जायज़ है, लेकिन रात अपने घर में गुज़ारे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 100: बरेली शहर से, 30 रमज़ान 1336 हिजरी। ज़ैद का इंतक़ाल हो गया, वह एक गर्भवती पत्नी, एक लड़का और दो नाबालिग बेटियां छोड़ गया। वह एक ग़रीब आदमी था जिसके पास रहने के लिए अपना मकान भी नहीं था, वह किराए का मकान था। मकान मालिक दो महीने का किराया मांग रहा है और कहता है कि किराया दो या मकान खाली करो। ज़ैद की पत्नी के पास न खाने-पीने को कुछ है और न ही मकान का किराया देने को। ऐसी स्थिति में क्या ज़ैद की पत्नी इद्दत

की अवधि के भीतर उस मकान को छोड़कर जहाँ ज़ैद का इंतक़ाल हुआ था, अपनी माँ के घर जा सकती है या नहीं?

उत्तर: जहाँ से संभव हो किराया अदा करे और इद्दत के दिन वहीं गुज़ारे।

(अरबी)	**(उर्दू)**
मैंने महिला साहिला (पूछने वाली) को इसका आदेश दिया और वह मृतक की पत्नी की माँ थी, तो वह सहमत हो गई।	यह बात मैंने उसकी माँ से कही जिसके शौहर का इंतक़ाल हो गया था। वही साहिला (सवाल पूछने वाली) थी, तो वह इस बात पर राज़ी हो गई, तो मैंने जान लिया कि औरत किराया और नफ़क़ा देने में समर्थ है...
मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह सक्षम थी; वह केवल एक चाल (बहाना) थी।	...और वह केवल एक बहाना था।

पृष्ठ 330 का 688

فساد کا اندیشہ کامل و قوی ہے ایسی صورت میں مسماۃ مذکورہ کو مکان مسکونہ اپنا چھوڑ کر کسی دوسری جگہ پر ایام گزاری عدت جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: عدت موت کا نفقہ کسی پر نہیں ہوتا خود اپنے پاس سے کھائے پاس نہ ہو تو دن کو محنت ومزدوری کے لئے باہر جاسکتی ہے، چار مہینے دس دن وہیں گزارنا فرض ہے، اللہ عزوجل کے ادا ئے فرض میں حیلے نہ کئے جائیں واللہ یعلم المفسد من المصلح (اللہ تعالی مفسد اور مصلح کو جانتا ہے۔ ت) اگر اندیشہ واقعی و صحیح ہے بذریعہ حکومت بندوبست کرے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۹: از پرانا شہر روہیلہ ٹولہ بریلی مرسلہ احمد اللہ خاں صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ قوم حجام سے ہے اور ہمیشہ بوجہ حجامی باہر نکلتی ہے، ایسی صورت میں اس کو بایام عدت دن میں اور شب میں باہر نکلنا جائز ہے یا نہیں؟ اور قیام شب دوسرے مکان پر کرسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: سائل کے بیان سے معلوم ہوا کہ یہ عدت موت کی ہے، پس اگر عورت کے پاس اتنا مال ہے کہ چار ماہ دس دن گھر بیٹھ کر کھائے جب تو اسے نکلنا جائز نہیں ورنہ جتنے دنوں کھانے کا سامان رکھتی ہے اتنے دنوں اسے گھر بیٹھ کر کھانا لازم، اور پھر نکلنا جائز، رات اپنے گھر میں گزارے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۰: از شہر بریلی ۳۰ رمضان ۱۳۳۶ھ زید فوت ہوا، ایک زوجہ حاملہ اور ایک لڑکا اور دو لڑکیاں نابالغ چھوڑیں، وہ ایک غریب آدمی تھا جس کے رہنے کو مکان بھی نہ تھا کرایہ کا مکان تھا مکان والے کا دو مہینہ کا کرایہ چاہئے وہ کہتا ہے کہ کرایہ دو یا مکان خالی کرو، زوجہ

زید کے پاس نہ کھانے پینے کو کچھ ہے اور نہ کرایہ مکان ادا کرنے کو، ایسی حالت میں زوجہ زید اندر میعاد عدت کے وہ مکان جس میں زید فوت ہوا چھوڑ کر اپنی ماں کے گھر جاسکتی ہے یا نہیں؟

الجواب: جہاں سے ممکن ہو کرایہ ادا کرے اور عدت کے دن وہیں گزارے،

| امرت به السائلة وهی ام المتوفی عنها زوجها فرضییت | جس کا خاوند فوت ہو گیا تھا یہ بات میں نے اس کی ماں سے کہی وہی سائلہ تھی تو اس بات پر وہ راضی ہو گئی تو میں نے معلوم کر لیا کہ عورت کرایہ اور نفقہ پر | | فعلت انها قادرة انما ذلک احتیال | |

Fatawa Razawiyya, Volume 13

[Arabic]: ...for relocation, and how often we have experienced such things. [Urdu]: She is capable, and this statement was just an excuse for moving; we have experienced this many times. (T)

In *Radd al-Muhtar*: [Arabic]: And she is in a rented house, capable of paying it; so she does not have the right to leave, but should pay [it][1]. [Urdu]: If a woman observing the iddah (waiting period) of death is in a rented house and is capable of paying the rent, she is not permitted to go out; instead, she should pay the rent. (T)

In *Durr al-Mukhtar*: [Arabic]: The woman in the waiting period for divorce or death should stay in the house where it became obligatory, and they should not leave it unless they are evicted, or the house collapses, or there is fear of it collapsing, or fear of loss of her property, or she cannot afford the house rent, or other such necessities. In such cases, she may move to the nearest place to it[2]. And Allah Almighty knows best. [Urdu]: It is not permissible for women observing the iddah of death or divorce to go out of the house. They should complete their iddah in the same house where it became obligatory, unless they are forcibly evicted, or the house falls, or there is a danger of it falling, or there is a fear of loss of property there, or the house was on rent and the woman does not have the means to pay the rent, or there are other such necessities due to which she is compelled, then she should move to the nearest possible place. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 101: These few issues were sent to Muhammad Mir Khan Sahib, Pilibhit. Dated 4 Sha'ban al-Mu'azzam. During iddah, these things are forbidden for a woman: every type of jewelry, even rings and bands; henna, kohl (surma), perfume, silk cloth, garlands of flowers, any kind of fragrance on the body or clothes, combing hair—and if necessary, use a wide-toothed comb only to untangle the hair, not to style it. Scented oils, sweet oil, clothes dyed with kusum (safflower) or saffron, similarly any color that provides adornment, even if it is ochre (geru), bangles even if they are of glass; in short, every kind of adornment is forbidden until the end of the iddah. Sleeping on a bed, or spreading bedding to sleep or sit on, is not forbidden.

Problem 102: From Mayondi Post Office Shahi, District Bareilly, sent by Syed Amir Alam Hasan Sahib, 16 Shawwal 1337 AH. What do the scholars say on this matter that during the iddah, inquiry from the woman for the purpose of marriage...

[1] *Radd al-Muhtar*, Chapter on al-Hidad, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/620. [2] *Durr al-Mukhtar*, Chapter on al-Hidad, Matba Mujtabai, Delhi, 1/260.

फ़तावा रज़विया, खंड 13

[अरबी]: ...स्थानांतरण के लिए, और हमने ऐसी चीज़ों का कितनी बार अनुभव किया है। [उर्दू]: वह सक्षम है, और यह बयान केवल स्थानांतरित होने का एक बहाना था; हमने इसका कई बार अनुभव किया है। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है: [अरबी]: और वह एक किराए के घर में है, उसका भुगतान करने में सक्षम है; इसलिए उसे बाहर जाने का अधिकार नहीं है, बल्कि उसे [इसे] भुगतान करना चाहिए[1]। [उर्दू]: यदि मृत्यु की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) वाली महिला किराए के घर में है और किराया देने में सक्षम है, तो उसे बाहर जाने की अनुमति नहीं है; बल्कि उसे किराया देना चाहिए। (त)

दुर्र अल-मुख्तार में है: [अरबी]: तलाक या मृत्यु की इद्दत वाली महिला को उसी घर में रहना चाहिए जहाँ यह अनिवार्य हो गया है, और उन्हें इसे तब तक नहीं छोड़ना चाहिए जब तक कि उन्हें निकाल न दिया जाए, या घर गिर जाए, या उसके गिरने का डर हो, या उसकी संपत्ति के नुकसान का डर हो, या वह घर का किराया वहन न कर सके, और अन्य ऐसी ज़रूरतें। ऐसे मामलों में, वह उसके निकटतम स्थान पर जा सकती है[2]। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। [उर्दू]: मृत्यु या तलाक की इद्दत वाली महिलाओं के लिए घर से बाहर निकलना जायज़ नहीं है। वे उसी घर में अपनी इद्दत पूरी करें जहाँ यह अनिवार्य हुई है, जब तक कि उन्हें जबरन न निकाला जाए, या घर गिर जाए, या गिरने का खतरा हो, या वहाँ संपत्ति के नुकसान का डर हो, या घर किराए पर था और महिला किराया देने की शक्ति नहीं रखती हो, या इस प्रकार की अन्य ज़रूरतें हों जिनसे वह मजबूर हो, तो वह निकटतम संभव स्थान पर स्थानांतरित हो जाए। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसाला 101: ये कुछ मसले मोहम्मद मीर खान साहब, पीलीभीत को भेजे गए थे। दिनांक 4 शाबान अल-मुअज़्ज़म। इद्दत के दौरान महिला के लिए ये चीज़ें वर्जित हैं: हर प्रकार के आभूषण, यहाँ तक कि अँगूठी और छल्ला भी; मेहंदी, सुरमा, इत्र, रेशमी कपड़ा, फूलों का हार, शरीर या कपड़ों पर किसी भी प्रकार की सुगंध, बालों में कंघी करना—और यदि मजबूरी हो तो बालों को सुलझाने के लिए केवल मोटे दांतों वाली कंघी का उपयोग करें, बालों को संवारने के लिए नहीं। सुगंधित तेल, मीठा तेल, कुसुम या केसर से रंगे कपड़े, इसी तरह कोई भी रंग जिससे श्रृंगार होता हो, चाहे वह गेरू ही क्यों न हो, चूड़ियाँ चाहे कांच की ही क्यों न हों; संक्षेप में, इद्दत के अंत तक हर प्रकार का श्रृंगार वर्जित है। चारपाई पर सोना, या सोने या बैठने के लिए बिस्तर बिछाना मना नहीं है।

मसाला 102: म्योंडी डाकखाना शाही, ज़िला बरेली से, प्रेषक सैयद अमीर आलम हसन साहब, 16 शव्वाल 1337 हिजरी। विद्वान इस मसले पर क्या फरमाते हैं कि इद्दत के दौरान निकाह के उद्देश्य से महिला से पूछताछ...

[1] रद्द अल-मुह्तार, बाबू अल-हिदाद, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/620। [2] दुर्र अल-मुख्तार, बाबू अल-हिदाद, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/260।

पृष्ठ 331 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

للانتقال وکم جربنا مثل ذلك۔ قادر ہے، اور یہ بیان منتقل ہونے کا ایک بہانہ تھا اس بات کا تجربہ بارہا ہم کر چکے ہیں۔ (ت)

رد المحتار میں ہے: وھی في دار بأجرة قادرة علی دفعھا فلیس لھا ان تخرج بل تدفع[1] ۔ اگر موت کی عدت والی کسی کرایہ کے مکان میں ہو اور کرایہ دینے پر قادر ہو تو اس کو باہر نکلنے کی اجازت نہیں بلکہ کرایہ ادا کرے (ت)

در مختار میں ہے: تعتدان معتدة طلاق و موت في بیت وجبت فیه ولاتخرجان منه الان تخرج او ینھدم المنزل او تخاف انھدامه او تلف مالھا اولا تجد کراء البیت و غیر ذلك من الضروریات فتخرج لاقرب موضع الیه[2] واللہ تعالٰی اعلم۔ موت اور طلاق کی عدت والی عورتوں کو گھر سے باہر نکلنا جائز نہیں اسی مکان میں عدت بسر کریں جہاں عدت واجب ہوئی ہے الا یہ کہ ان کو جبراً نکالا جائے یا وہ مکان گر جائے یا گرنے کا خطرہ ہو یا وہاں مال کے نقصان کا خطرہ ہو، یا مکان کرایہ پر تھا عورت کرایہ دینے کی طاقت نہ رکھتی ہو، یا اور اس قسم کی ضروریات ہوں جن سے مجبور ہو تو قریب ترین موضع میں منتقل ہو جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۰۱: یہ چند مسائل محمد میر خان صاحب پیلی بھیت کو ارسال فرمائے گئے۔ بتاریخ ۴ شعبان المعظم عدت میں عورت کو یہ چیزیں منع ہیں: ہر قسم کا گہنا یہاں تک کہ انگوٹھی چھلا بھی مہندی، سرمہ، عطر، ریشمی کپڑا، ہار پھول، بدن یا کپڑے میں کسی قسم کی خوشبو، سر میں کنگھی کرنا، اور مجبوری ہو تو موٹے دندانوں کی کنگھی کرے جس سے فقط بال سلجھالے پٹی نہ جھکالے۔ پھلیل، میٹھا تیل، کسم، کیسر کے رنگے کپڑے، یونہی ہر رنگ جس سے زینت ہوتی

ہواگرچہ پڑیہ گیرو کا، چوڑیاں اگرچہ کانچ کی، غرض ہر قسم کا سنگار ختم عدت تک منع ہے۔ چارپائی پر سونا، بچھونا سونے یا بیٹھنے میں بچھانا منع نہیں۔

مسئلہ ۱۰۲: از میونڈی ڈاکخانہ شاہی ضلع بریلی مرسلہ سید امیر عالم حسن صاحب ۱۶ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ درمیان عدت کے عورت سے واسطے کرنے نکاح کے دریافت

[1] ردالمحتار باب الحداد داراحیاء التراث العربی بیروت ۶۲۰/۲ [2] درمختار باب الحداد مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۰/۱

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

How is it to do so?

The Answer: It is also forbidden (haram) to propose marriage during the 'iddat' (waiting period). However, if it is not a proposal, for instance, if her family members ask whether she intends to remarry or what her plans are, then there is no harm. And Allah Almighty knows best.

Problem 103: From the city near Jamia Masjid Pyare Miyan, care of Inayat Khan, 4 Muharram-ul-Haram 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah was away and upon hearing the news of her husband's death, she came and stayed in a house which has a sitting area (baithak) and one main door. Therefore, can she move from the sitting area to the main house during the days of iddat?

The Answer: The questioner stated that the woman was in Gwalior and came from there. Her husband's house is in a village; she did not go there but stayed in the city at a stranger's (non-mahram's) place. Regardless of the sitting area and the women's quarters, her journeying from there was forbidden (haram), and staying at a stranger's house was forbidden. Whether it is the sitting area or the women's quarters, she is ordered to complete her iddat in her husband's house. And Allah Almighty knows best.

Problem 104: 13 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid died while still a minor, his age was 14 or 15 years. His wife Hindah was 13 years old, showing no signs of puberty. Three days after Zaid's death, Zaid's father took Zaid's wife to his house in Mauza Soda. There, he made Hindah sign a stamp paper waiving her dower (mahr). After staying for a few days, he returned to the same house where Zaid had passed away, which belonged to Zaid's maternal grandmother. Now, Zaid's father does not let Hindah's father see her, saying, "I will arrange Hindah's marriage according to my own will after or during the iddat." Hindah is ill, suffering from fever and chills. Hindah's father is distressed and wants to treat her, but Zaid's father neither sends her nor allows him to see her, nor does he allow any of Hindah's relatives to see her. Hindah's father asks: Does the same restriction of staying in one place during iddat still apply to Hindah according to the Sharia of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him), or has it changed because Zaid's father moved Hindah from that house to another, kept her there for a few days, and then brought her back? Now Hindah's father wishes that if Sharia

permits, he might take Hindah to his own house because Zaid used to mistreat her in front of him, and now she is suffering even more. Therefore, kindly provide an answer to this question. From Zaid's maternal grandmother's house, Zaid's father...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

ऐसा करना कैसा है?

अल-जवाब (उत्तर): इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान निकाह का प्रस्ताव देना भी हराम है। और यदि प्रस्ताव नहीं है, उदाहरण के लिए, यदि उसके घरवाले पूछें कि क्या वह पुनर्विवाह करने का इरादा रखती है या क्या योजना है, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 103: जामा मस्जिद प्यारे मियां के पास के शहर से, इनायत खान के माध्यम से, 4 मुहर्रम-उल-हराम 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: हिन्दा बाहर थी और अपने पति की मृत्यु की खबर सुनकर आई और एक घर में ठहरी जिसमें एक बैठक (बैठने का कमरा) है और एक मुख्य द्वार है। इसलिए, क्या वह इद्दत के दिनों में बैठक से घर के अंदर जा सकती है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): प्रश्नकर्ता ने बताया कि महिला ग्वालियर में थी और वहां से आई। पति का घर गांव में है; वह वहां नहीं गई बल्कि शहर में एक अजनबी व्यक्ति के यहां ठहरी। बैठक और जनानाखाना (महिलाओं का क्षेत्र) की तो बात ही क्या, वहां से यात्रा करके आना हराम था और अजनबी व्यक्ति के यहां ठहरना हराम था। चाहे बैठक हो या जनानाखाना, उसे आदेश है कि वह अपने पति के घर में इद्दत पूरी करे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 104: 13 सफर 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद की मृत्यु नाबालिग अवस्था में हो गई, उसकी आयु 14 या 15 वर्ष थी। उसकी पत्नी हिन्दा 13 वर्ष की थी, जिसमें यौवन का कोई लक्षण नहीं था। ज़ैद की मृत्यु के तीन दिन बाद, ज़ैद के पिता ज़ैद की पत्नी को मौज़ा सोडा में अपने घर ले गए। वहां ले जाकर उन्होंने हिन्दा से स्टाम्प पेपर पर मेहर (स्त्रीधन) माफ करने का लिखवा लिया। कुछ दिन वहां रहने के बाद वे फिर उसी घर में आ गए जहां ज़ैद की मृत्यु हुई थी, वह घर ज़ैद की नानी का था। अब ज़ैद के पिता हिन्दा के पिता को हिन्दा से मिलने नहीं देते, कहते हैं कि "मैं इद्दत के बाद या इद्दत के अंदर अपनी मर्जी से हिन्दा का निकाह कर दूंगा।" हिन्दा बीमार है, उसे ठंड और बुखार आता है। हिन्दा के पिता दुखी हैं और उसका इलाज करना चाहते हैं, लेकिन ज़ैद के पिता न तो उसे भेजते हैं और न ही मिलने देते हैं, और न ही हिन्दा के किसी रिश्तेदार को मिलने देते हैं। हिन्दा के पिता पूछते हैं: क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीयत के अनुसार इद्दत के दौरान घर न बदलने की वही पाबंदी हिन्दा पर बनी हुई है या बदल गई है क्योंकि ज़ैद के पिता हिन्दा को उस घर से दूसरे घर ले गए, कुछ दिन वहां रखा और फिर वापस ले आए?

अब हिन्दा के पिता चाहते हैं कि यदि शरीयत अनुमति दे, तो मैं हिन्दा को अपने घर ले आऊं क्योंकि ज़ैद उसके सामने उसे तकलीफ पहुंचाता था और अब तो हिन्दा को और भी ज्यादा तकलीफ हो रही है। अतः इस प्रश्न का उत्तर प्रदान किया जाए। ज़ैद की नानी के घर से ज़ैद के पिता...

पृष्ठ 332 का 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

کرنا کیسا ہے؟

الجواب: عدت میں نکاح کا پیام دینا بھی حرام ہے اور اگر پیام نہیں، مثلاً اس کے گھر والے دریافت کریں کہ نکاح ثانی کا ارادہ ہے یا کیا، تو حرج نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۳: از شہر متصل جامع مسجد پیارے میاں معرفت عنایت خاں ۴ محرم الحرام ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ باہر تھی اور خبر انتقالِ شوہر سن کر آئی اور ایک مکان میں قیام کیا جس میں بیٹھک ہے اور ایک دروازہ صدر ہے لہذا ایام عدت میں بیٹھک سے مکان میں جا سکتی ہے یا نہیں؟

الجواب: سائل نے بیان کیا کہ عورت گوالیار میں تھی اور وہاں سے آئی، شوہر کا مکان گاؤں میں، یہ وہاں نہ گئی بلکہ شہر میں ایک غیر شخص کے یہاں ٹھہری، اس کے بیٹھک اور زنانخانہ کیا پوچھنا اس سے سفر کر کے آنا حرام تھا اور غیر شخص کے یہاں ٹھہرنا حرام تھا، بیٹھک ہو یا زنانخانہ اسے حکم ہے کہ شوہر کے مکان میں عدت پوری کرے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۴: ۱۳ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید مر گیا حالتِ نابالغی میں، عمر ۱۴ یا ۱۵ برس کی تھی، زوجہ اس کی ہندہ ۱۳ سال کی، کوئی علامتِ بلوغت کی نہ تھی، بعد مرنے زید کے تین روز کے بعد زید کا باپ زید کی زوجہ کو اپنے مکان کو لے گیا، موضع سوڈا میں، اور وہاں لے جا کر ہندہ سے اسٹامپ لکھایا معافی مہر کا، دو چار روز رہ کر پھر اسی مکان پر آ گیا جہاں زید کا انتقال ہوا تھا وہ مکان زید کی نانی کا تھا، اب زید کا باپ ہندہ کے باپ کو ہندہ کو دیکھنے نہیں دیتا، کہتا ہے بعد عدت یا عدت کے اندر میں ہندہ کا نکاح اپنی

رائے سے کردوں گا اور ہندہ بیمار ہے جاڑا بخار آتا ہے، ہندہ کے باپ کو صدمہ ہوتا ہے کہ میں اس کا علاج کروں لیکن زید کا باپ نہیں بھیجتا نہ دیکھنے دے، ہندہ کے کسی رشتہ دار کو نہیں دیکھنے دیتا، ہندہ کے باپ کہتا ہے کہ شریعتِ محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں بدلنے مکان کے وہی قید باقی رہی ہندہ کے ذمہ یا بدل گئی کیونکہ زید کا باپ ہندہ کو اس مکان سے اور مکان میں لے گیا دو چار روز رکھا اب ہندہ کا باپ چاہتا ہے کہ شریعت اجازت دے تو میں ہندہ کو اپنے مکان پر لے آؤں اس وجہ سے کہ ہندہ کو زید کے سامنے تکلیف پہنچاتا تھا اب تو اور بھی زیادہ تکلیف پہنچی ہے ہندہ کو، لہذا اسوال کا جواب عنایت فرمایا جائے، زید کی نانی کے مکان سے زید کے باپ

...house is four kos away.

The Answer: It was forbidden (haram) to move her to another place during the Iddah, and keeping her there was also forbidden, but it did not invalidate the Iddah. She must stay in her husband's house for four months and ten days from the time of death. If she is a minor, the dower (Mahr) cannot be waived by her waiver. No one can marry her during the Iddah; any such marriage will be completely void (batil). After the Iddah, Hindah's father has the right to marry her off. Zaid's father has no right; if he does so, it will depend on the permission of Hindah's father. If he rejects it, it will be immediately rejected. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 105: 6 Shawwal 1316 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah's husband died, and she is observing Iddah in another city in the house where her husband used to reside. However, due to ignorance and being around non-Mahrams, she is terrified and wants to go and live at her parents' house. Does the Sharia permit her or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: Firstly, Sharia looks for a genuine excuse or true necessity. 'And Allah knows the mischief-maker from the peacemaker.' (Allah Almighty knows the corrupt and the righteous. T) God knows everyone's hidden and manifest thoughts. If there is no legitimate fear or real danger to Hindah's property, life, or honor in staying there until the days of Iddah are over, and there is no real harm in spending those days there, then a solution for her fear is possible. For example, some of her close Mahram relatives can stay with her, or she can keep trustworthy women for company, even if she has to pay them. In that case, she will not be permitted at all. Mere 'perhaps' or 'no wonder' is not considered in fear; true fear must arise from a valid cause, not from the anxiety inherent in young age, especially in a state of grief, unless it is so intense that there is an explicit danger to her intellect, etc.

Secondly, if it is a state of genuine necessity, then it will be seen which house is closest to the current residence where there is no such apprehension or danger. If there is another reliable house belonging to one of her relatives in the same city, she should go there. Permission to go outside the city is not granted. Rather, if there are two reliable houses in two neighborhoods, one far and one near, she is not permitted to go to the far one. And if there is no such house in that city, but there is a reliable house in another city that is closer than her parents' city and her current city of residence, she should go there. Yes, if...

१३ (पृष्ठ १३) फ़तावा रज़विया जिल्द १३

...का मकान चार कोस है।

उत्तर: इद्दत के दौरान उसे दूसरी जगह ले जाना हराम था और जब तक वहाँ रखा गया यह भी हराम हुआ, लेकिन इससे इद्दत खत्म नहीं हुई। मृत्यु से चार महीने दस दिन तक उसे पति के ही मकान पर रहना पड़ेगा। यदि वह नाबालिग है, तो उसके माफ करने से मेहर माफ नहीं हो सकता। इद्दत के दौरान कोई उसका निकाह नहीं कर सकता; जो करेगा वह बिल्कुल बातिल (अवैध) होगा। इद्दत के बाद हिन्दा के पिता को उसके निकाह का अधिकार है। जैद के पिता को कोई अधिकार नहीं है; यदि वह ऐसा करता है, तो यह हिन्दा के पिता की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि वह अस्वीकार कर दे, तो वह तुरंत रद्द हो जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १०५: ६ शव्वाल १३१६ हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: हिन्दा के पति का देहांत हो गया और वह दूसरे शहर में उस मकान में इद्दत बिता रही है जहाँ उसका पति रहता था। लेकिन नादानी और गैर-महरमों की वजह से वह घबरा गई है और चाहती है कि अपने माता-पिता के घर जाकर रहे। क्या शरीयत उसे अनुमति देती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: सबसे पहले, यहाँ शरीयत के अनुसार वास्तविक उज़्र (बहाना) और सच्ची मजबूरी देखी जाती है। 'और अल्लाह बिगाड़ करने वाले और संवारने वाले को जानता है।' (अल्लाह तआला फसादी और सुधारक को जानता है। त) खुदा हर एक की छुपी और ज़ाहिर बात जानता है। अगर इद्दत के दिनों तक वहाँ रहने में हिन्दा के माल, जान या सम्मान को कोई वास्तविक भय या चिंता नहीं है, और वहाँ इतने दिन बिताने में कोई वास्तविक नुकसान नहीं है, तो उसके डर का समाधान संभव है। उदाहरण के लिए, उसके कुछ करीबी महरम रिश्तेदार उसके पास रह सकते हैं या वह विश्वसनीय महिलाओं को साथ के लिए रख सकती है, चाहे उसे पैसे ही क्यों न देने पड़ें। ऐसी स्थिति में उसे बिल्कुल अनुमति नहीं दी जा सकती। डर में 'शायद' या 'अजीब नहीं' का विचार नहीं किया जाता; वास्तविक डर किसी ठोस कारण से पैदा होना चाहिए, न कि उस घबराहट से जो कम उम्र का स्वभाव है, विशेष रूप से शोक की स्थिति में, जब तक कि वह इतनी तीव्र न हो कि बुद्धि आदि को स्पष्ट नुकसान पहुँचने का खतरा हो।

दूसरे, यदि वास्तव में मजबूरी की स्थिति है, तो यह देखा जाएगा कि वर्तमान निवास के पास कौन सा ऐसा घर है जहाँ कोई चिंता या खतरा न हो। यदि उसी शहर में उसके किसी रिश्तेदार का कोई दूसरा

भरोसेमंद घर हो, तो वह वहाँ चली जाए। शहर से बाहर जाने की अनुमति नहीं है। बल्कि, यदि एक ही शहर के दो मुहल्लों में दो भरोसेमंद घर हों, एक दूर और एक पास, तो दूर वाले घर में जाने की अनुमति नहीं है। और यदि उस शहर में कोई घर न हो, लेकिन किसी दूसरे शहर में, जो माता-पिता के शहर और वर्तमान निवास के शहर की तुलना में करीब हो, कोई भरोसेमंद घर हो, तो वह वहाँ जाए। हाँ, अगर...

पृष्ठ ३३३/६८८

کا مکان چار کوس ہے۔ الجواب: عدت کے اندر اسے دوسری جگہ لے جانا حرام تھا اور جب تک وہاں رکھا یہ بھی حرام ہوا مگر اس سے عدت جاتی نہ رہی موت سے چار مہینے دس دن تک شوہر ہی کے مکان پر رہنا پڑے گا اگر وہ نابالغہ ہے تو اس کے معاف کئے سے مہر معاف نہیں ہوسکتا اور عدت کے اندر تو کوئی اس کا نکاح نہیں کرسکتا جو کرے گا باطل محض ہوگا عدت کے بعد ہندہ کے باپ کو اس کے نکاح کا اختیار ہے پدر زید کو کچھ اختیار نہیں کہ اگر یہ کردے گا پدر ہندہ کی اجازت پر موقوف رہے گا وہ رد کردے فورا رد ہو جائے گا واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

مسئلہ ۱۰۵: ۶ شوال ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کے شوہر کا انتقال ہوگیا اور وہ غیر شہر میں جس مکان میں اس کا شوہر سکونت رکھتا تھا عدت میں ہے، لیکن بسبب نادانی اور غیر محرم کے وحشتناک ہو کر چاہتی ہے کہ والدین کے مکان میں جاکر رہوں، آیا اس کو شرع اجازت دیتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: اولاً یہاں شرعاً واقع عذر سچی مجبوری دیکھی جاتی ہے وَاللّٰہُ یَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ (اللہ تعالٰی مفسد اور مصلح کو جانتا ہے۔ت) خدا ہر ایک کا نہاں و عیاں سب جانتا ہے اگر ایامِ عدت تک وہاں رہنے میں کوئی خوف صحیح و اندیشہ واقعی ہندہ کے مال یا جان ناموس پر نہیں، کوئی ضرر صحیح وہاں اتنے دن گزارنے میں نہیں ہے تو اس کا علاج اسے ممکن ہے مثلاً اسکے بعض اعزہ محارم اس کے پاس رہ سکتے ہیں یا قابل اعتماد عورتوں کو ساتھ کے لئے رکھ سکتی ہے اگر چہ اجرت دے کر، تو اسے ہر گز اجازت نہیں ہو سکتی، خوف میں شاید اور عجب نہیں کا لحاظ نہیں ہوتا خوف صحیح منشاء صحیح سے ناشی ہونا چاہئے نہ اس وحشت کا کچھ اعتبار جو کم عمری کا لازمہ ہے خصوصاً ایسے غم کی حالت میں جب تک وہ ایسی شدت پر نہ ہو جس سے نقصانِ صریح عقل وغیرہ پر پہنچنے کا خطرہ ہو۔

ثانیاً اور اگر واقعی حالتِ مجبوری ہے تو یہ دیکھا جائے گا کہ اس مکان سکونت سے قریب تر کون سا مکان ایسا ہے جس میں وہ اندیشہ و خطرہ نہ ہو، اگر اسی شہر میں کوئی دوسرا مکان قابل اطمینان اپنے کسی عزیز کا ہو تو وہاں چلی جائے، شہر سے باہر جانے کی اجازت نہیں بلکہ وہیں دو محلوں میں دو مکان قابل اطمینان ہوں ایک دور ایک پاس، تو دور والے میں جانے کی اجازت نہیں، اور اگر اس شہر میں نہ ہو مگر دوسرے شہر کہ بہ نسبت شہر والدین اور اس شہر سکونت سے قریب تر ہے میں کوئی مکان قابل اطمینان ہے تو وہیں جائے، ہاں اگر

If all (other) conditions are absent, then permission is granted only in case of clear harm and absolute necessity. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Table Header] Arabic Text: Two types of women observe Iddah, i.e., of divorce and of death, in the house where it became obligatory, and they shall not leave it unless she is expelled or the house is destroyed or she fears its destruction or loss of her property, and she does not find rent for the house and such necessities, so she shall go to the nearest place to it. And in divorce, to wherever the husband wishes. [Footnote 1]

Urdu Translation: Women observing 'iddah (waiting period) after death or divorce should spend their 'iddah in the same house where it became obligatory, and they should not move from there unless they are forcibly expelled, or the house collapses, or there is a danger of it collapsing, or there is a danger of loss of property, or the house is rented and the woman cannot afford the rent, and she is forced due to other such necessities, then she should move to the nearest house. For the divorced woman, the ruling is that she should stay wherever the husband makes arrangements. (T)

In Alamgiriya it is stated:

[Table Header] Arabic Text: The woman observing 'iddah, when she is in a house with no one with her, and she is not afraid of thieves or neighbors, but she is terrified of staying overnight; if the fear is not severe, she is not allowed to move from that place. And if the fear is severe, she is allowed to move. Thus it is in Fatawa Qazi Khan [Footnote 2]. And Allah Almighty knows best.

Urdu Translation: When a woman in 'iddah is in a house where no one lives with her, and she is not afraid of thieves or neighbors, but she is afraid at night; if this fear is not severe, it is not permissible for the woman to move from there. And if this fear is severe, then it is permissible for the woman to move. This is mentioned in Fatawa Qazi Khan. And Allah Almighty knows best.

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Mourning, Mujtabai Press, Delhi, 1/260
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Fourteen on Mourning, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/535

जिल्द १३ | १३ | फ़तावा रज़विया

यदि सभी स्थितियाँ अनुपस्थित हों, तो स्पष्ट हानि और पूर्ण मजबूरी की स्थिति में ही अनुमति है। दुर्रे मुख़्तार में है:

[तालिका] अरबी पाठ: दो प्रकार की महिलाएँ यानी तलाक और मृत्यु की इद्दत वाली, उसी घर में इद्दत बिताती हैं जहाँ वह अनिवार्य हुई हो, और वे वहाँ से तब तक न निकलें जब तक उन्हें निकाल न दिया जाए या घर गिर न जाए या गिरने का डर न हो या माल के नुकसान का डर न हो और घर का किराया न मिल सके और इसी तरह की ज़रूरतें हों, तो वह निकटतम स्थान पर चली जाए। और तलाक की स्थिति में, वहाँ जहाँ पति चाहे। (१)

उर्दू अनुवाद: मृत्यु और तलाक की इद्दत वाली महिलाएँ उसी मकान में इद्दत गुज़ारें जिसमें इद्दत वाजिब हुई हो, और वहाँ से मुंतक़िल (स्थानांतरित) न हों सिवाय इसके कि उन्हें ज़बरदस्ती निकाला जाए या वह मकान गिर जाए या गिरने का ख़तरा हो या माल के नुक़सान का ख़तरा हो या मकान किराए पर हो और औरत किराया न दे पाए, और अन्य ऐसी ज़रूरतों की वजह से मजबूर हो तो क़रीब तरीन (निकटतम) मकान में मुंतक़िल हो जाए, और तलाक वाली को यह हुक्म है कि जहाँ खाविंद (पति) इंतज़ाम करे वहाँ रहे। (त)

आलमगीरिया में है:

[तालिका] अरबी पाठ: इद्दत वाली महिला जब ऐसे घर में हो जहाँ उसके साथ कोई न हो और उसे चोरों या पड़ोसियों का डर न हो लेकिन वह रात बिताने से डरती हो; अगर डर तीव्र न हो तो उसे उस स्थान से हटने का अधिकार नहीं है। और अगर डर तीव्र हो तो उसे हटने का अधिकार है। फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ (२) में ऐसा ही है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

उर्दू अनुवाद: इद्दत वाली औरत जब किसी ऐसे मकान में हो कि वहाँ उसके साथ कोई न रहता हो और चोरों या पड़ोसियों से ख़ाइफ़ (भयभीत) न हो लेकिन वह औरत रात को डरती हो, अगर यह डर शदीद (तीव्र) न हो तो औरत को वहाँ से मुंतक़िल होना जायज़ नहीं, और अगर यह डर शदीद हो तो औरत को फिर मुंतक़िल होना जायज़ है। फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ में ऐसे ही मज़कूर (वर्णित) है। वल्लाहु तआला आलम।

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल हदाद, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/२६०

2. फ़तावा हिन्दिया, अल-बाब अराबे अशर फ़िल हदाद, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, १/५३५

पृष्ठ ३३४ का ६८८

سب صورتیں معدوم ہوں تو البتہ بحالتِ ضررِ صریح و مجبوری محض اجازت ہے۔ در مختار میں ہے:

تعتدان ای معتدۃ طلاق وموت فی بیت وجبت فیہ ولا تخرجان منہ الان تخرج او ینہدم المنزل او تخاف انہدامہ او تلف مالھاولا تجد کراء البیت ونحو ذلک من الضرورات فتخرج لاقرب موضع الیہ وفی الطلاق الی حیث شاء الزوج-1 موت اور طلاق کی عدت والی عورتیں اسی مکان میں عدت گزاریں جس میں عدت واجب ہوئی ہو، اور وہاں سے منتقل نہ ہوں الا یہ کہ ان کو جبراً نکالا جائے یا وہ مکان گر جائے یا گرنے کا خطرہ ہو یا مال کے نقصان کا خطرہ ہو یا مکان کرایہ پر ہو اور عورت کرایہ نہ پائے، اور دیگر ایسی ضروریات کی وجہ سے مجبور ہو تو قریب ترین مکان میں منتقل ہو جائے، اور طلاق والی کو یہ حکم ہے کہ جہاں خاوند انتظام کرے وہاں رہے۔ (ت)

عالمگیریہ میں ہے:

المعتدۃ اذا کانت فی منزل لیس معھااحد وھی لا تخاف من اللصوص ولا من الجیران ولکنھا تفزع من امر المبیت ان لم یکن الخوف شدیدا لیس لھا ان تنتقل من ذلک الموضع۔ وان کان الخوف شدیدا کان لھا ان تنتقل کذا فی فتاوی قاضی خان 2۔ واللہ تعالی اعلم۔ عدت والی عورت جب کسی ایسے مکان میں ہو کہ وہاں اس کے ساتھ کوئی نہ رہتا ہو اور چوروں یا پڑوسیوں سے خائف نہ ہو لیکن وہ عورت رات کو ڈرتی ہو، اگر یہ ڈر شدید نہ ہو تو عورت کو وہاں سے منتقل ہونا جائز نہیں، اور اگر یہ ڈر شدید ہو تو عورت کو پھر منتقل ہونا جائز ہے۔ فتاوی قاضی خاں میں ایسے ہی مذکور ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 درمختار باب الحداد مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۰ 2 فتاوی ہندیہ الباب الرابع عشر فی الحداد نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۳۵

Fatawa Razawiya 13 Volume 13

Chapter: Wife of the Missing (Ruling on the wife of a person whose whereabouts are unknown)

Issue 106: The four-year waiting period for the wife of a missing person is the school of thought of Hazrat Imam Malik (may Allah be pleased with him). The majority of the noble Imams are against it. On the other hand, the Great Quran clearly states: 'And [also prohibited are] women already married [to others]'[1] (Surah An-Nisa 4:24). The marriage of this woman to the missing person is certainly known, while after four years, his death remains doubtful and imaginary. Does a person necessarily die in such a period, or is there a strong presumption of death? To the point that the Maliki scholars themselves (may Allah have mercy on them) admit that we have no evidence for this four-year estimation except for the following (Taqleed) of the Commander of the Faithful, Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him), and legal reasoning does not support it at all.

[Arabic Text in Box]: As Allamah al-Zarqani narrated in the commentary of al-Muwatta from al-Kafi: "This is a matter in which we followed [authority]."

[Urdu Text in Box]: Just as Allamah Zarqani narrated in Sharh al-Muwatta from Al-Kafi that this is the matter in which we [followed] Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him).

Footnote (عہ): This topic, from 'Mas'ala' to 'Ajin', was copied from some magazine by Molvi Zia-ul-Mustafa Sahib and included by the late Maulana Abdul Rauf Sahib. 12

[1] The Holy Quran 4/24

Page 335 of 688

फ़तावा रिज़विया 13 तेरहवीं जिल्द

बाब ज़ौजतुल मफ़क़ूद (लापता व्यक्ति की पत्नी का हुक्म)

मसला 106: लापता (मफ़क़ूद) की पत्नी के लिए चार साल की मोहलत हज़रत इमाम मालिक (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का मज़हब है। जमहूर अइम्मा किराम इसके ख़िलाफ़ हैं। दूसरी तरफ़ क़ुरआन अज़ीम साफ़-साफ़ फ़रमा रहा है: 'और (तुम पर हराम हैं) वे औरतें जो दूसरों के निकाह में हैं।'[1] (सूरह अन-निसा 4:24)। इस औरत का लापता व्यक्ति के साथ निकाह होना तो यक़ीनन मालूम है, और चार साल के बाद उसकी मौत मशकूक और काल्पनिक (मवहूम) है। क्या आदमी इतनी मुद्दत में ज़रूर मर ही जाता है, या उसकी मौत पर प्रबल अनुमान (ज़न्ने ग़ालिब) होता है? यहाँ तक कि ख़ुद उलमा-ए-मालकिया (रहमहुमुल्लाहु तआला) इक़रार फ़रमाते हैं कि इस चार साल की अवधि पर अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की तक़लीद (अनुकरण) के सिवा हमारे पास कोई दलील नहीं है, और न ही फ़िक़्ही (क़ानूनी) नज़र इसका समर्थन करती है।

[बॉक्स का अरबी पाठ]: जैसा कि अल्लामा ज़रक़ानी ने शरह अल-मुवत्ता में अल-काफ़ी से नक़्ल किया है: 'यह वह मसला है जिसमें हमने तक़लीद की है।'

[बॉक्स का उर्दू पाठ]: जैसा कि अल्लामा ज़रक़ानी ने शरह अल-मुवत्ता में अल-काफ़ी से नक़्ल किया कि यह वह मसला है जिसमें हमने हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की [पैरवी की]।

फ़ुटनोट (عہ): यह मज़मून 'मसला' से 'अजीन' तक, मौलवी ज़िया-उल-मुस्तफ़ा साहब ने किसी रिसाले से नक़्ल करके दिया और मरहूम मौलाना अब्दुल रऊफ़ साहब ने इसे शामिल किया। 12

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 4/24

पृष्ठ 335/688

باب زوجة المفقود (مفقود الخبر کی زوجہ کا حکم)

مسئلہ ۱۰۶: زوجہ عہ مفقود کے لئے چار برس کی مہلت کہ حضرت امام مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مذہب ہے ، جمہور ائمہ کرام اس کے خلاف پر ہیں ، ادھر قرآن عظیم صاف صاف ارشاد فرمارہا ہے: وَالْمُحْصَنَٰتُ مِنَ النِّسَاءِ۱ تم پر حرام ہیں وہ عورتیں جو دوسرے کے نکاح میں ہیں۔ اس عورت کا نکاح مفقود میں ہونا تو یقیناً معلوم، اور چار برس کے بعد اس کی موت مشکوک و موہوم، کیا آدمی اتنی مدت میں خواہ مخواہ مر ہی جاتا ہے یا اس کی مرگ پر ظنِ غالب کرتا ہے یہاں تک کہ خود علمائے مالکیہ رحمہم اللہ تعالیٰ اقرار فرماتے ہیں کہ اس چار سال کی تقدیر پر سوائے تقلید امیر المومنین فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہمارے پاس کوئی دلیل نہیں ، نہ ہرگز نظر فقہی اس کے مساعد،

[عربی عبارت]: كما نقل العلامة الزرقاني في شرح الموطأ عن الكافي انها مسئلة قلدنا فيها

[اردو ترجمہ]: جیسا کہ علامہ زرقانی نے شرح الموطأ میں کافی سے نقل کیا کہ یہ وہ مسئلہ ہے جس میں ہم نے حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ عنہ

عہ: یہ مضمون مسئلہ ازا جین تک، مولوی ضیاء المصطفیٰ صاحب نے کسی رسالہ سے نقل کر کے دیا اور مولانا عبدالرؤف صاحب مرحوم نے شامل کیا ۱۲

۱ القرآن الکریم ۴/۲۴

Fatawa Ridawiyya Volume Thirteen

Umar, and it is not a matter of independent reasoning[1]	followed them, and this is not a theoretical issue. (T)

And all the Imams agree that certainty is not removed by doubt. Therefore, the Maliki Imams themselves did not favor the four-year period regarding property, even though it is highly improbable that after a four-year grace period, a man would be considered dead regarding his wife's rights, but his property would not be distributed among his heirs. Fadhil Ibrahim writes in Sharh Anwar Darbili:

His judgment will be overturned because it contradicts clear analogy, for it is not permissible for a person to be alive regarding his property and dead regarding his wife's rights.[2]	The judge's order will be declared null and void as it is against obvious analogy, because it cannot be that a missing person is considered alive for property rights and dead for the wife's rights. (T)

Against a definitive text and certain premise, how can a doubtful thing, which is unanimously not accepted in property rights, allow the wife of Zaid to marry Amr? Furthermore, there is no trace of this school of thought in the hadiths of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). On the contrary, if any hadith has arrived, it aligns with our view, as the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

The wife of a missing person remains his wife until the matter is clarified.[3] Narrated by Darqutni in his Sunan from Mughira bin Shu'bah (may Allah be pleased with him).	The wife of a missing person is his wife until the circumstances of his death become clear. (Darqutni has narrated this in his Sunan from Mughirah bin Shu'bah, may Allah be pleased with him. T)

The Commander of the Faithful, Master of the Muslims, Hazrat Sayyiduna Ali al-Murtaza, and the vessel of knowledge, Master of the Jurists, Support of the Imams, Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with both of them) are on our side. This is narrated from both of them by Abd al-Razzaq[4] in his 'Musannaf'. (Abd al-Razzaq narrated it in his Musannaf from both Hazrat Ali and Ibn Mas'ud, may Allah be pleased with them. T) And strength upon strength is that the Commander of the Faithful, Leader of the Just, Hazrat Sayyiduna Umar al-Faruq al-A'zam (may Allah be pleased with him), who was initially a proponent of the four-year period—in fact, he

was the first to advocate for it—later turned towards the opinion of Hazrat Mawla Ali (may Allah honor his face).

As mentioned by the jurist of Kufa, Ibn Abi Layla (may Allah Almighty have mercy on him).	As mentioned by the jurist of Kufa, Ibn Abi Layla (may Allah Almighty have mercy on him).

[1] Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta Imam Malik, iddat of the woman who loses her husband, Al-Maktabah al-Tijariyah al-Kubra, Egypt, 3/200. [2] Sharh al-Anwar, Section Two, iddat of death, Matba'ah al-Jamaliyah, Egypt, 3/212. [3] Sunan al-Daraqutni, Chapter on Mahr, Hadith Nashr al-Sunnah, Multan, 3/312. [4] Musannaf Abd al-Razzaq, Chapter on the woman who does not know where her husband perished, Hadith 7901 and 9190, Majlis Ilmi, Beirut.

उमर, और यह कोई स्वविवेक का विषय नहीं है -1

का अनुसरण किया है और यह कोई सैद्धांतिक मसला नहीं है। (त)

और सभी इमामों का मत है कि संदेह से निश्चितता समाप्त नहीं होती। इसलिए, स्वयं मालिकी इमामों ने संपत्ति के मामले में चार साल की इस अवधि का समर्थन नहीं किया, जबकि यह अत्यंत असंभव बात है कि चार साल की मोहलत के बाद एक व्यक्ति अपनी पत्नी के अधिकारों के मामले में मृत मान लिया जाए, लेकिन उसकी संपत्ति उत्तराधिकारियों के बीच वितरित न हो। फाज़िल इब्राहिम 'शरह अनवार दरबीली' में लिखते हैं:

उनके फैसले को निरस्त कर दिया जाएगा क्योंकि यह स्पष्ट कयास (सादृश्य) के खिलाफ है क्योंकि यह जायज़ नहीं है कि वह अपनी संपत्ति के मामले में जीवित हो और अपनी पत्नी के अधिकार के मामले में मृत हो। -2

काज़ी का आदेश रद्द माना जाएगा क्योंकि यह स्पष्ट सादृश्य (क़यास) के विरुद्ध है, क्योंकि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई लापता व्यक्ति संपत्ति के मामले में जीवित और पत्नी के अधिकार के मामले में मृत करार दिया जाए। (त)

एक निश्चित प्रमाण और तयशुदा मामले के विरुद्ध एक संदेहास्पद बात पर, जो संपत्ति के मामले में सर्वसम्मति से स्वीकार्य नहीं है, ज़ैद की पत्नी बकर (अम्र) से निकाह कैसे कर सकती है? इसके अलावा, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीसों में इस विचारधारा का कहीं कोई पता नहीं चलता, बल्कि जो हदीस आई है वह हमारे ही पक्ष में है, जैसा कि पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं:

लापता व्यक्ति की पत्नी उसी की पत्नी है जब तक कि उसकी स्थिति स्पष्ट न हो जाए। -3 इसे दारकुतनी ने अपनी 'सुनन' में मुग़ीरा बिन शुबा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

लापता व्यक्ति की पत्नी उसी की पत्नी है जब तक कि उसकी स्थिति स्पष्ट न हो जाए। (इसे दारकुतनी ने अपनी 'सुनन' में मुग़ीरा बिन शुबा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। त)

अमीरल मोमिनीन, मुसलमानों के मौला हज़रत सैय्यदुना अली अल-मुर्तज़ा और ज्ञान के भंडार, फकीहों के सरदार, इमामों के आधार हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) हमारी ही तरफ हैं। इसे अब्दुल रज़ाक ने अपनी 'मुसन्नफ' -4 में दोनों महानुभावों से रिवायत किया है। (इसे अब्दुल रज़ाक ने अपनी मुसन्नफ़ में दोनों महानुभावों अली और इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से

रिवायत किया है। त) और शक्ति पर शक्ति यह है कि न्यायप्रिय शासक हज़रत सैय्यदुना उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु), जो पहले चार साल की अवधि के समर्थक थे, बल्कि वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने चार साल की बात कही थी, बाद में उन्होंने हज़रत मौला अली (करमल्लाहु वज्हहुल करीम) के मत की ओर रुजू फरमाया।

जैसा कि कूफ़ा के फ़क़ीह इब्न अबी लैला (रहमहुल्लाहु तआला) ने इसका उल्लेख किया है।

जैसा कि कूफ़ा के फ़क़ीह इब्न अबी लैला (रहमहुल्लाहु तआला) ने इसका उल्लेख किया है।

1. शरह अल-ज़रक़ानी अला मुवट्टा इमाम मालिक, पति खो देने वाली महिला की इद्दत, अल-मकतबाह अल-तिजारियाह अल-कुबरा, मिस्र, 3/200।
2. शरह अल-अनवार, भाग दो, मृत्यु की इद्दत, मतबा अल-जामलियाह, मिस्र, 3/212।
3. सुनन अद-दारकुतनी, मेहर का अध्याय, हदीस नश्र अस-सुन्नाह, मुल्तान, 3/312।
4. मुसन्नफ़ अब्दुल रज़ाक, उस महिला का अध्याय जिसे अपने पति की मृत्यु के स्थान का पता न हो, हदीस 7901 और 9190, मज्लिस इल्मी, बेरुत।

عمر ولیست مسئلۃ النظر -۱ کی تقلید کی ہے اور یہ نظری مسئلہ نہیں ہے (ت)

اور تمام ائمہ کہ شک سے یقین زائل نہیں ہوتا، ولہذا خود ائمہ مالکیہ درباره مال اس تقدیر چار سال کے قائل نہ ہوئے، حالانکہ یہ نہایت مستبعد ہے کہ آدمی مہلت چار سال کے بعد حق زوجہ میں مرده ٹھہر کر اس کا مال ورثاء پر تقسیم نہ ہو، فاضل ابراہیم شرح انوار دربیلی میں لکھتے ہیں:

نقض حکمہ لمخالفتہ القیاس الجلی قاضی کا حکم کالعدم قرار دیا جائے گا کہ یہ ظاہر قیاس کے اذلایجوز ان یکون حیّاً فی مالہ خلاف ہے کیونکہ ایسا نہیں ہوسکتا ہے مفقود شخص کو مال کے میتاً فی حق زوجہ -۲ حق میں زندہ اور بیوی کے حق میں مرده قرار دیا جائے۔ (ت)

تونس قطعی وقضیہ یقینی کے خلاف ایک موہوم بات پر کہ حق مال میں بالاتفاق مقبول نہیں، کیونکر زن زید نکاح عمرو میں آسکتی ہے، ادھر احادیث حضور المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں اس مذہب کا کہیں پتا نہیں، بلکہ حدیث آئی ہے تو ہمارے ہی موافق آئی ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

امرأۃ المفقود امرأتہ حتی یأتیھا البیان مفقود کی عورت اسی کی عورت ہے یہاں تک کہ اس کی -۳ رواہ الدار قطنی فی سننہ عن موت کا حال ظاہر ہو۔ (اس کو دار قطنی نے اپنی سنن میں المغیرۃ بن شعبۃ رضی اللہ عنہ۔ مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ت)

امیر المومنین مولی المسلمین حضرت سیدنا علی المرتضٰی و کنیف العلم سید الفقہاء سند الائمہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہما ہماری ہی طرف ہیں رواہ عنہما عبد الرزاق ۴ فی مصنفہ (اس کو عبدالرزاق نے اپنی مصنف میں دونوں حضرات علی اور ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی

عنہما سے روایت کیا ہے۔ت) اور قوت بر قوت یہ کہ امیر المومنین امام العادلین سیدنا عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہ پہلے قائل چار سال کے تھے بلکہ وہی پہلے قائل چار سال کے ہوئے بعدہ قول حضرت مولی علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم کی طرف رجوع فرمایا،

کما ذکرہ فقیہ الکوفۃ ابن ابی لیلی رحمہ اللہ تعالیٰ — جیسا کہ اس کو فقیہ الکوفہ ابن ابی لیلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

۱ شرح الزرقانی علی موّطا امام مالک عدۃ التی تفقد زوجھا المکتبۃ التجاریۃ الکبریٰ مصر ۳/۲۰۰ ۲ شرح الانوار فصل القسم الثانی عدۃ الوفاۃ مطبعۃ الجمالیہ مصر ۳/۲۱۲ ۳ سنن الدار قطنی باب المہر حدیث نشر السنۃ ملتان ۳/۳۱۲ ٤ مصنف عبد الرزاق باب التی لاتعلم مھلك زوجھا حدیث ۷۹۰۱ و ۹۱۹۰ مجلس علمی بیروت

The researcher mentioned it in 'Al-Fath' -

He mentioned it; this is narrated from the researcher in Fath al-Qadir. (T)

So the evidence that led the Malikis to this opinion, i.e., following Al-Faruqi, no longer remains. Similarly, Hazrat Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him), who was one of the senior students of Imam Malik, initially held Imam Malik's opinion, then returned to our opinion, and that became the predominant view in his school.

As stated in Mizan al-Shari'ah al-Kubra and Rahma al-Ummah fi Ikhtilaf al-A'immah, and these are their words: "They differed regarding the wife of a missing person. Abu Hanifa and Shafi'i, in his new predominant opinion, and Ahmad in one of his two narrations, said she is not permissible for marriage until a period has passed in which a person like him would typically not remain alive."

As mentioned in Mizan al-Shari'ah al-Kubra and Rahma al-Ummah fi Ikhtilaf al-A'immah, these words are consistent with both: that the jurists differed regarding the wife of a missing person. According to Imam Abu Hanifa, Imam Shafi'i's new predominant opinion, and one narration from Imam Ahmad, it is not permissible for her to remarry until the missing person reaches an age where he would typically no longer be alive. (T)

Rather, the majority of Shafi'i imams (may Allah have mercy on them) disagree to the extent that if a judge separates them after a four-year waiting period, his judgment should be overturned because he ruled against this explicit evidence. Imam Nur ad-Din Yusuf bin Ibrahim al-Ardabili al-Shafi'i says in the book 'Al-Anwar li-'Amal al-Abrar':

If a judge rules that she should wait four years, then observe the waiting period ('iddah) for death and then marry, and she waits, and he rules again for separation, and she observes the waiting period and marries, his judgment is overturned unless it becomes clear that he was dead at the time of the judgment.	**If a judge gave a decision that she should observe the waiting period for death after waiting for four years and then marry someone, and accordingly, if the woman waited for four years and that judge gave a new order of separation, after which the woman observed the waiting period and married, then this order of the judge will be considered null and void unless it becomes clear that at the time of the judge's mentioned decision, the missing person had passed away. (T)**

In the same book it is stated:

1. Fath al-Qadir, Kitab al-Mafqud, Maktaba Nooria Razavia, Sukkur, 2/375.
2. Al-Mizan al-Kubra, Kitab al-'Iddah wa al-Istibra, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/136; Rahma al-Ummah fi Ikhtilaf al-A'immah, Kitab al-'Iddah, Matabi' Qatar al-Wataniyyah, Doha, Qatar, p. 312.
3. Al-Anwar li-'Amal al-Abrar, Second Section, 'Iddah al-Wafat, Matba'ah al-Jamaliyah, Egypt, 2/212.

'अल-फतह' में शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने इसे उद्धृत किया है -

उन्होंने उल्लेख किया; यह फतह अल-कादिर में शोधकर्ता से उद्धृत है। (त)

अतः वह प्रमाण जो मलिकियों को इस राय पर ले गया, यानी फारूकी की पैरवी, वह भी नहीं रहा। इसी प्रकार, हज़रत इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु), जो इमाम मालिक के वरिष्ठ शिष्यों में से थे, पहले इमाम मालिक की राय के कायल थे, फिर हमारी राय की ओर लौट आए, और उनके पंथ में वही प्रमुख माना गया।

जैसा कि 'मीज़ान अल-शरीअह अल-कुबरा' और 'रहमह अल-उम्माह फ़ी इख़्तिलाफ़ अल-आइम्माह' में है, और ये उनके शब्द हैं: "वे लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में असहमत थे। अबू हनीफा और शाफ़ई अपनी नई प्रमुख राय में, और अहमद अपने दो वर्णनों में से एक में, कहते हैं कि वह विवाह के लिए तब तक हलाल नहीं है जब तक कि ऐसी अवधि न बीत जाए जिसमें उसके जैसा व्यक्ति सामान्यतः जीवित न रहे।"

जैसा कि 'मीज़ान अल-शरीअह अल-कुबरा' और 'रहमह अल-उम्माह फ़ी इख़्तिलाफ़ अल-आइम्माह' में है, ये शब्द दोनों के साथ संगत हैं: कि लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में न्यायविदों (फुक़हा) ने मतभेद किया है। इमाम अबू हनीफा, इमाम शाफ़ई की नई प्रमुख राय और इमाम अहमद की एक रिवायत के अनुसार, उसके लिए दूसरा निकाह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि लापता व्यक्ति इतनी उम्र का न हो जाए कि वह आम तौर पर जीवित न रह सके। (त)

बल्कि अधिकांश शाफ़ई इमाम (रहमतुल्लाह अलैहिम) यहाँ तक असहमति रखते हैं कि यदि कोई काज़ी चार साल की प्रतीक्षा के बाद अलगाव का आदेश देता है, तो उसके फैसले को रद्द कर दिया जाना चाहिए क्योंकि उसने इस स्पष्ट प्रमाण के विरुद्ध फैसला दिया। इमाम नूरुद्दीन यूसुफ बिन इब्राहिम अरदबेली शाफ़ई अपनी किताब 'अल-अनवार लि-अमल अल-अबरार' में फरमाते हैं:

यदि किसी हाकिम (न्यायाधीश) ने यह फैसला दिया कि वह चार साल प्रतीक्षा करे, फिर मृत्यु की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी करे और फिर विवाह करे, और उसने प्रतीक्षा की, और उसने फिर से अलगाव का आदेश दिया, और उसने इद्दत पूरी की और विवाह किया, तो उसका निर्णय रद्द कर दिया जाएगा जब तक कि यह स्पष्ट न हो जाए कि निर्णय के समय वह व्यक्ति मृत था।

अगर किसी हाकिम ने यह फैसला दिया कि वह चार साल इंतज़ार के बाद मौत की इद्दत पूरी करे और फिर किसी से निकाह करे, तो उस फैसले के मुताबिक अगर औरत ने चार साल इंतज़ार किया और उस हाकिम ने जुदाई का नया हुक्म दे दिया और उसके बाद औरत ने इद्दत गुज़ार कर निकाह कर लिया, तो काज़ी का यह हुक्म खत्म माना जाएगा, सिवाय इसके कि यह साफ़ हो जाए कि काज़ी के ज़िक्र किए गए फैसले के वक्त लापता शख्स मर चुका था। (त)

उसी में है:

1. फतह अल-कादिर, किताब अल-मफक़ूद, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 2/375.
2. अल-मीज़ान अल-कुबरा, किताब अल-इद्दह वल-इस्तिबरा, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 2/136; रहमह अल-उम्माह फ़ी इख़्तिलाफ़ अल-आइम्माह, किताब अल-इद्दह, मताबे कतर अल-वतनिया, दोहा, कतर, पृष्ठ 312.
3. अल-अनवार लि-अमल अल-अबरार, दूसरा खंड, इद्दह अल-वफात, मतबा अल-जमालिया, मिस्र, 2/212.

نقله المحقق فی الفتح -

نے ذکر فرمایا، یہ فتح القدیر میں محقق سے منقول ہے (ت)

تو وہ دلیل کہ مالکیہ کو اس قول پر حامل تھی یعنی تقلید فاروقی وہ بھی نہ رہی۔ اسی طرح حضرت امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ کہ ارشد تلامذہ امام مالک ہیں پہلے قول امام مالک کے قائل تھے پھر ہمارے ہی قول کے طرف رجوع لائے ، اور وہی ان کے مذہب میں راجح قرار پایا،

کما فی میزان الشریعة الکبری، ورحمة الامة فی اختلاف الائمة، وهذا لفظهما اختلفوا فی زوجة المفقود فقال ابو حنیفة والشافعی فی الجدید الراجح و احمد فی احد روایتیه لا تحل للازواج حتی تمضی مدة لا یعیش فی مثلها غالباً -

جیسا کہ میزان الشریعۃ الکبرٰی اور رحمۃ الامۃ فی اختلاف الائمۃ میں ہے، یہ الفاظ دونوں سے متفق ہیں کہ مفقود کی بیوی کے متعلق فقہاء نے اختلاف کیا ہے، امام ابو حنیفہ اور امام شافعی کے جدید راجح قول اور امام احمد کے ایک قول کے مطابق اس کو دوسرا نکاح حلال نہیں حتی کہ گم شدہ اتنی عمر میں غالب طور پر زندہ نہ رہ سکے۔ (ت)

بلکہ جمہور ائمہ شافعیہ رحمہم اللہ تعالٰی تو یہاں تک اس سے اختلاف رکھتے ہیں کہ اگر قاضی مہلت چار سالہ بعد تفریق کر دے تو اس کی قضا توڑ دی جائے کہ اس دلیل صریح کے خلاف حکم کیا، امام نور الدین یوسف بن ابراہیم اردبیلی شافعی کتاب الانوار لعمل الابرار میں فرماتے ہیں:

لو حکم حاکم بانها تتربص اربع سنین فتعتد عدة الوفاة ثم تنکح وتربصت وحکم ثانیاً بالفرقة واعتدت ونکحت نقض حکمه الا اذا بان انه کان میتا وقت الحکم۔ 3

اگر کسی حاکم نے یہ فیصلہ دیا کہ وہ چار سال انتظار کے بعد وفات کی عدت پوری کرے اور پھر کسی سے نکاح کرے، چنانچہ فیصلہ کے مطابق اگر عورت نے چار سال انتظار کیا اور اس حاکم نے فرقت کا نیا حکم دے دیا اور اس کے بعد عورت نے عدت گزار کر نکاح کرلیا تو قاضی کا یہ حکم کالعدم قرار پائے گا الا یہ کہ واضح ہو جائے کہ قاضی کے مذکورہ فیصلے کے وقت گم شدہ شخص فوت ہو چکا تھا۔ (ت)

اسی میں ہے:

1. فتح القدیر کتاب المفقود مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲/۳۷۵
2. المیزان الکبریٰ کتاب العدد والاستبراء مصطفی البابی مصر ۲/۱۳۶ ، رحمۃ الامۃ فی اختلاف الائمۃ کتاب العدد مطابع قطر الوطنیہ الدوحہ قطر ص ۳۱۲
3. الانوار لاعمال الابرار فصل الثانی عدۃ الوفاۃ مطبعۃ الجمالیہ مصر ۲/۲۱۲

If a judge rules on the validity of the marriage of a missing person's wife after four years of waiting and the completion of the waiting period (iddah), his ruling shall be overturned. (Summary - T)

In Sharh al-Anwar: Due to its contradiction with the clear analogy (Qiyas Jali) that the missing person is considered dead regarding marriage but alive regarding property. What the author asserted is what the majority follow, as is evident from the words of Imam al-Rafi'i here, etc. (T)

So those who were proponents of this view, its weakness became apparent to them, thus they receded from it. Issuing a ruling or fatwa based on a weak opinion is ignorance and a violation of the consensus (Ijma).

In Al-Durr al-Mukhtar: The summary of what Sheikh Qasim mentioned is that there is no difference between a Mufti and a Judge here, except that the Mufti informs of the ruling and the Judge enforces it. Whereas, issuing a fatwa or judgment based on a less-preferred (marjuh) opinion is ignorance and a breach of consensus. (T)

Then, which matter is it? It is the matter of marital relations (furuj) in which the pure Sharia observes strict caution. So much so that while the default state of things is permissibility and lawfulness, the default in marital relations is prohibition. So, in such a matter, what blatant carelessness it is to leave one's strong and reasoned school of thought for such an opinion. As for the claim of necessity, its reality is revealed by the fact that young women in India who become widows, even though remarriage is Sharia-permissible for them, remain seated all their lives following a false custom. At that time, they do not feel the necessity, nor does the thought occur how their youth will pass, nor where the maintenance will come from.

1. Al-Anwar li A'mal al-Abrar, Kitab Adab al-Qada, Al-Taraf al-Sabi' fi al-Ishhad etc., Al-Jamaliyya Press, Egypt, 2/413 & 414.
2. Sharh al-Anwar, Kitab Adab al-Qada, Al-Taraf al-Sabi' fi al-Ishhad etc., Al-Jamaliyya Press, Egypt, 2/413.
3. Al-Durr al-Mukhtar, Rasm al-Mufti, Mujtabai Press, Delhi, 1/15.

यदि किसी काज़ी ने लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में चार साल के इंतज़ार और इद्दत की अवधि पूरी होने के बाद निकाह की वैधता का फैसला दिया, तो उसका फैसला रद्द कर दिया जाएगा। (सारांश - त)

शरह अनवार में है: यह 'क़ियास जली' (स्पष्ट सादृश्य) के विरोध के कारण है कि लापता व्यक्ति को निकाह के मामले में मृत और संपत्ति के मामले में जीवित माना जाए। लेखक ने जिस बात पर ज़ोर दिया है, वह वही है जिस पर अधिकांश इमामों ने भरोसा किया है, जैसा कि यहाँ इमाम राफ़ेई के शब्दों से पता चलता है, इत्यादि। (त)

तो जो लोग इस विचार के समर्थक थे, उन पर भी इसकी कमज़ोरी स्पष्ट हो गई जब वे इससे पीछे हट गए। और कमज़ोर मत (क़ौल ज़ईफ़) पर फैसला या फतवा देना अज्ञानता और सर्वसम्मति (इज्मा) का उल्लंघन है।

अद-दुर्रुल मुख्तार में है: शेख़ कासिम ने अपनी सुधार (तसहीह) में जो उल्लेख किया है उसका सार यह है कि यहाँ मुफ़्ती और काज़ी के बीच कोई अंतर नहीं है, सिवाय इसके कि मुफ़्ती हुक्म की सूचना देता है और काज़ी उसे लागू करता है। जबकि कमज़ोर (मरजूह) मत पर फतवा और फैसला देना अज्ञानता और इज्मा का उल्लंघन है। (त)

फिर मामला भी कौन सा मामला, निकाह का मामला (फ़ुरूज) जिसमें शरीयत-ए-मुतह्हरा ने कड़ी सावधानी बरती है, यहाँ तक कि जबकि मूल रूप से चीज़ों में अनुमति और वैधता है, निकाह के मामलों में मूल रूप से वर्जना (हुरमत) है। तो ऐसे मामले में अपने ऐसे मज़बूत और तर्कपूर्ण मत को छोड़कर इस तरह के विचार की ओर जाना कितनी खुली लापरवाही है। रहा ज़रूरत का दावा, तो उसकी हकीकत इस बात से खुलती है कि भारत की युवा महिलाएँ जो विधवा हो जाती हैं, जबकि उन्हें शरीयत के अनुसार पुनर्विवाह की अनुमति है, अपनी एक झूठी रस्म के पालन में जीवन भर बैठी रहती हैं। उस समय उन्हें न तो ज़रूरत सूझती है और न ही यह ख्याल आता है कि जवानी कैसे कटेगी और न ही यह कि रोटी-कपड़ा कहाँ से आएगा।

1. अल-अनवार ली अमाल अल-अबरार, किताब अदब अल-क़ज़ा, अत-तरफ़ अस-साबे' फ़िल इशाद आदि, अल-जमालिया प्रेस, मिस्र, 2/413 और 414।

2. शरह अल-अनवार, किताब अदब अल-क़ज़ा, अत-तरफ़ अस-साबे' फ़िल इशाद आदि, अल-जमालिया प्रेस, मिस्र, 2/413।
3. अद-दुर्रुल मुख्तार, रस्म अल-मुफ्ती, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/15।

لو قضی قاض بصحة نکاح زوجة المفقود بعد اربع سنین ومدّة العدة نقض حکمہ اہ ملخصاً۔ اگر کسی قاضی نے مفقود کی بیوی کے متعلق چار سال انتظار اور اس کے بعد عدت پوری کرکے نکاح کی صحت کا فیصلہ دیا تو اس کا حکم کالعدم ہوگا اہ ملخصاً (ت)

شرح انوار میں ہے: لمخالفته القیاس الجلي في جعل المفقود میتا في النکاح دون المال و ما جزم به المصنف هو الذي علیه الاکثرون کما یعلم من کلام الرافعي هنا الخ۔ (ت) یہ قیاس جلی کی مخالفت کی وجہ سے کہ مفقود کو نکاح کے حق میں مردہ اور مال کے حق میں زندہ قرار دیا جائے، اور مصنف نے جس پر جزم فرمایا وہ ہے جس پر اکثر ائمہ نے اعتماد فرمایا جیسا کہ یہاں امام رافعی کے کلام سے معلوم ہورہا ہے الخ (ت)

تو جو اس قول کے قائل تھے ان پر بھی اس کا ضعف ظاہر ہوا جب تو اس سے رجوع کرتے آئے اور قول ضعیف پر حکم و فتوٰی دینا جہل و مخالفتِ اجماع ہے۔

فی الدر المختار، حاصل ماذکرہ الشیخ قاسم القاضي الان المفتی مخبر عن الحکم والقاضي ملزم به وان الحکم والفتیا بالقول المرجوح جهل وخرق الاجماع۔ (ت) در مختار میں ہے: شیخ قاسم نے اپنی تصحیح میں جو ذکر فرمایا اس کا حاصل یہ ہے کہ مفتی اور قاضی کا یہاں کوئی فرق نہیں ماسوائے اس کے کہ مفتی حکم کی خبر دیتا ہے اور قاضی اس کو نافذ کرتا ہے جبکہ مرجوح قول پر فتوٰی اور فیصلہ جہالت ہے اور اجماع کی مخالفت ہے۔ (ت)

پھر معاملہ بھی کون سا معاملہ فروج جس میں شریعت مطہرہ کو سخت احتیاط ملحوظ، یہاں تک کہ باآنکہ اصل اشیاء میں اباحت وحلت ہے، فروج میں اصل حرمت ٹھہری، تو ایسے امر میں ایسے

قول کی طرف اپنا ایسا قوی و مدلل مذہب چھوڑ کر جانا کیسی کھلی بے احتیاطی ہے، رہا دعویٰ ضرورت، اس کا حال یوں کھلتا ہے کہ ہندوستان کی نوجوان عورتیں جو بیوہ ہوجاتی ہیں باآنکہ انہیں شرعاً نکاح ثانیہ کی اجازت ہے اپنی ایک جھوٹی رسم کی پیروی میں عمر بھر بیٹھی رہتی ہیں اس وقت نہ انہیں ضرورت سوجھتی ہے نہ یہی خیال آتا ہے کہ جوانی کیونکر کٹے گی نہ یہ کہ نان و نفقہ کہاں سے

1 الانوار لاعمال الابرار کتاب ادب القضاء الطرف السابع فی الاشہاد الخ مطبعہ الجمالیہ مصر ۴۱۳/۲ و ۴۱۴ 2 شرح الانوار کتاب ادب القضاء الطرف السابع فی الاشہاد الخ مطبعہ الجمالیہ مصر ۴۱۳/۲ 3 در مختار رسم المفتی مطبع مجتبائی دہلی ۱۵/۱

Fatawa-e-Razawiya Volume 13 XIII

But when the husband is missing, all these claims crowd in. If the claim of necessity was true, why wouldn't there be patience there? And when it is practiced there, although they are definitely without a husband and marriage is permissible for them, then why is patience not practiced here when they were certainly married and the death of the husband was not proven. But the fact is that for the ignorant, following tradition is more important than following commands. Here, excuses are sought so that a way out may be found in some school of thought even if it is purely forbidden in one's own school. There, tradition is not abandoned even if there is clear permissibility in all four schools. May Allah Almighty guide the Muslims. The fact is that when you loosen the reins of the soul, it overpowers you. At that time, need, necessity, disability, and helplessness come to mind. And when you tighten the reins, it is suppressed. At that time, it becomes apparent that those emotions were mere claims. In a Hadith, the radiant presence, the Master of Messengers, peace and blessings of Allah Almighty be upon him, says:

Arabic	Translation
"He who seeks sufficiency through Allah, Allah will make him self-sufficient. And he who seeks to remain chaste, Allah will keep him chaste." - Narrated by Imam Ahmad, An-Nasa'i, and Ad-Diya' from Abu Sa'id al-Khudri, may Allah be pleased with him.	Whoever relies on Allah Almighty and shows indifference towards the creation, Allah Almighty will make him rich. And whoever sincerely wishes to become virtuous, Allah Almighty will make him virtuous. (This was narrated by Imam Ahmad, An-Nasa'i, and Ad-Diya' from Abu Sa'id al-Khudri, may Allah be pleased with him. - T)

For those who do not have the ability to marry, the cure prescribed in an authentic Hadith is to keep fasts:

Arabic	Translation
"Whoever is unable, let him fast, for it is a protection for him." - Narrated by Ahmad and the Six [compilers] from Ibn Mas'ud, may Allah be pleased with him, from the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. And the context of the Hadith, even if it is regarding men, then [the rule	Whoever does not have the ability to marry, fasting is mandatory for him because it is a restraint against lust. Imam Ahmad and the six Imams narrated this from Abdullah bin Mas'ud, may Allah be pleased with him. And although these words of the Hadith are

Arabic	Translation
applies as] "Women are the counterparts of men; you are of one another."	about men, women are like men, and you are like one another. (T)

In fact, if you consider the excuse of needing maintenance (nafaqah), that too is accompanied by the excuse of youth, the cure for which has been stated in the Hadith.

---

1. Sunan an-Nasa'i, Kitab al-Zakat, Bab al-Ihaaf fil-Mas'alah, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 1/36
2. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abdullah bin Mas'ud, may Allah be pleased with him, Dar al-Fikr Beirut, 1/424
3. Jami' at-Tirmidhi, Abwab al-Taharah, Amin Company Kutub Khana Rashidiyah Delhi, 1/16

फतावा-ए-रज़विया, खंड तेरह १३

लेकिन जब पति लापता हो जाता है, तो ये सभी दावे उमड़ पड़ते हैं। यदि आवश्यकता का दावा सच्चा होता, तो वहां धैर्य क्यों नहीं होता? और जब वहां किया जाता है, हालांकि वे पूरी तरह से पति के बिना हैं और विवाह उनके लिए हलाल हैं, तो यहां धैर्य क्यों नहीं रखा जाता, जबकि वे निश्चित रूप से सुहागन थीं और पति की मृत्यु सिद्ध नहीं हुई थी। लेकिन बात यह है कि अज्ञानियों के लिए रस्म का पालन, आदेश के पालन से अधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ बहाने खोजे जाते हैं कि किसी मज़हब में कोई रास्ता निकल आए, चाहे अपने मज़हब में वह पूरी तरह से हराम ही क्यों न हो। वहां रस्म नहीं छोड़ी जाती, चाहे चारों मज़हबों में स्पष्ट अनुमति हो। अल्लाह अज़्ज-व-जल्ल मुसलमानों को हिदायत दे। बात यह है कि जब आप नफ़्स (मन) की बाग ढीली छोड़ देंगे, तो वह आप पर हावी हो जाएगा। उस समय आवश्यकता, ज़रूरत, लाचारी और मजबूरी सूझती है। और जब आप लगाम कस लेंगे, तो वह दब जाएगा। उस समय स्पष्ट होता है कि वे भावनाएँ महज़ दावे ही दावे थे। हदीस में हुज़ूर पुरनूर, सैय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

अरबी	**अनुवाद**
"من استغنى بالله اغناه الله ومن استعف اعفه الله" - इसे इमाम अहमद, नसई और ज़िया ने अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।	जो अल्लाह अज़्ज-व-जल्ल के भरोसे पर मख़्लूक़ (सृष्टि) से बेपरवाही करेगा, अल्लाह तआला उसे ग़नी (धनी/आत्मनिर्भर) कर देगा; और जो सच्चे दिल से पारसा (पवित्र) बनना चाहेगा, अल्लाह तआला उसे पारसा बना देगा। (इसे इमाम अहमद, नसई और ज़िया ने अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त)

जिन्हें निकाह पर शक्ति न हो, उनके लिए सही हदीस में इलाज रोज़े रखना बताया गया है:

अरबी	**अनुवाद**
"من لم يستطع فعليه بالصوم فانه له وجاء" - इसे अहमद और सिता (छह इमामों) ने इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया है। और हदीस का संदर्भ, "النساء।	जो निकाह पर सामर्थ्य न रखे, उसे रोज़ा रखना लाज़िम है क्योंकि यह उसके लिए शहवत (कामवासना) से रुकावट है। इसे इमाम अहमद और अइम्मा-ए-सित्ता ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। और हदीस के

अरबी	अनुवाद
شقائقهم" (महिलाएँ पुरुषों के समकक्ष हैं), "بعضكم من بعض" (तुम एक-दूसरे के समान हो)।	ये शब्द हालांकि पुरुषों के बारे में हैं, तो औरतें भी उन पुरुषों की तरह हैं और तुम आपस में एक-दूसरे की तरह हो। (त)

बल्कि नफ़क़ा (खर्च) की आवश्यकता के बहाने पर ग़ौर करें, तो वह भी उसी जवानी के बहाने के साथ है, जिसका इलाज हदीस में इरशाद हो गया है।

---

1. सुनन अन-नसई, किताब अल-ज़कात, बाब अल-इहाफ़ फ़िल-मसअला, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिजारत कुतुब कराची, 1/36
2. मुसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरूत, 1/424
3. जामे अत-तिरमिज़ी, अबवाब अत-तहारत, अमीन कंपनी कुतुब ख़ाना रशीदिया दिल्ली, 1/16

पृष्ठ 339, 688 में से

ملے گا مگر خاوند مفقود ہو کر یہ سب دعوی ہجوم کرتے ہیں، اگر ضرورت کا دعوی سچا ہے تو وہاں صبر کیوں نہ ہوتا ہے اور جب وہاں کیا جاتا ہے، حالانکہ قطعاً بے شوہر، اور ازواج کے لئے حلال ہیں تو یہاں صبر کیوں نہیں کیا جاتا کہ یقیناً شوہر دار تھیں اور موت شوہر ثابت نہیں ہوئی مگر ہے یہ کہ جہال کے نزدیک رسم کا اتباع حکم کے اتباع سے زیادہ اہم ہے، یہاں حیلے تلاش کئے جاتے ہیں کہ کسی مذہب میں کوئی راستہ نکلے اگرچہ اپنے مذہب میں نرا حرام ہو، وہاں رسم نہیں چھوڑی جاتی اگرچہ چاروں مذہب میں کھلی حلت ہے، اللہ عز وجل مسلمانوں کو ہدایت فرمائے، بات یہ ہے کہ نفس کی باگ جب نرم کر لیجئے دبا لیتا ہے۔ اس وقت ضرورت، حاجت، معذوری، مجبوری، سوجھتی ہے اور باگ جب کڑی کر لیجئے دب جاتا ہے۔ اس وقت ظاہر ہوتا ہے کہ وہ جوش نرا دعوی ہی دعوی تھا۔ حدیث میں حضور پرنور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی	**ترجمہ**
من استغنی باللہ اغناہ اللہ ومن استعف اعفہ اللہ 1 - رواہ الامام احمد والنسائی والضیاء عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالٰی عنہ۔	جو اللہ عزوجل کے بھروسا پر خلق سے بے پروائی کریگا اللہ تعالٰی اسے غنی کردے گا، اور جو سچے دل سے پارسا بننا چاہے گا اللہ تعالٰی اسے پارسا بنا دے گا۔ (اسے امام احمد، نسائی اور ضیاء نے ابو سعید خدری رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

جنہیں نکاح پر قدرت نہ ہو ان کا علاج صحیح حدیث میں روزے رکھنا ہوا ہے:

عربی	ترجمہ
من لم یستطع فعلیه بالصوم فانه له وجاء 2 - رواه احمد والستة عن ابن مسعود رضی الله تعالیٰ عنہ عن النبی صلی الله تعالٰی علیہ وسلم، وسوق الحدیث وان کان في الرجال۔ فالنساء شقائقهم 3 - بعضکم من بعض۔	جو نکاح پر قدرت نہ رکھے اس کو روزہ لازم ہے کیونکہ یہ اس کے لئے شہوت سے رکاوٹ ہے۔ اس کو امام احمد اور ائمہ ستہ نے عبد الله بن مسعود رضی الله تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے، اور حدیث کے یہ الفاظ اگرچہ مردوں کے بارے میں ہیں، تو عورتیں وہ مردوں کی طرح ہیں اور تم آپس میں ایک دوسرے کی طرح ہو۔ (ت)

بلکہ احتیاج نفقہ کے عذر کو غور کیجئے تو وہ بھی اسی عذر جوانی کے ساتھ ہے جس کا علاج حدیث میں ارشاد ہو گیا۔

---

1 سنن النسائی کتاب الزکاۃ باب الاحاف فی المسلۃ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۱/۳۶ 2 مسند احمد بن حنبل مروی از عبد الله بن مسعود رضی الله عنہ دارالفکر بیروت ۱/۴۲۴ 3 جامع الترمذی ابواب الطھارۃ امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/۱۶

Fatawa Razawiyyah, Volume 13, Page 340

Elderly women whose husbands die or go missing do not worry about marriage to seek maintenance; how do they survive? And young widows in India are in the same situation. God knows why, in their case, the attribute of being the Provider seems exclusively tied to the husband. The irony is that here, the following of Imam Malik (may Allah have mercy on him) is claimed as a pretext. Ignorant people think his school of thought is that if four years have passed since the man left, the woman can sit for iddah (waiting period) and marriage becomes lawful. Far from it! That is not his school. Rather, he says that the woman should present her case before the Sharia judge (Qadi). After proof of disappearance and complete loss of hope of hearing from him, the judge should set a four-year period by his order. If even in this period no trace is found, then the judge shall separate them. After this, the woman should sit for an iddah of four months and ten days, and then she becomes lawful for [other] husbands. If twenty years have passed before approaching the judge, it has no weight at all. Allama Zarqani Maliki, in the commentary of Muwatta Imam Malik (may Allah be pleased with him), says:

[Arabic Quote]: The saying of [Imam] Malik: Even if she stays for twenty years and then presents [the case], a [new] period is started for her. 1. (Urdu Translation): Imam Malik's saying is that even if a woman has spent twenty years and later presents the case to the judge, the judge will set a new period for her. (T)

In the same [work] it is: [Arabic Quote]: The saying of [Imam] Malik also: The four [years] are restarted after despair, and they begin from the day of presenting [the case]. 2. (Urdu Translation): Imam Malik's saying is also that a new period of four years will be set after despair, and the beginning of this period will be after presenting the case to the judge. (T)

Now say, if you act upon the saying of Imam Malik, then first of all, where is a Maliki judge here! And why would a Hanafi judge rule against his own school! And even if he does, there are difficulties in its implementation, and even if implemented, four and a half years are still left; how will they be spent! Such impatience and claims of lack of sustenance are no cure anyway. In short, the summary of the purpose is: fear Allah, fear Allah. Do not take matters of private parts lightly. Do not equate the disappearance of a husband with his death, and consider following the [divine] command more important than following custom. Reflect on how young widows in

India survive; rather, setting that aside, in this land of trials (India) full of afflictions, many noblewomen will be found whose...

---

1 Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta al-Imam Malik, Iddah of a woman whose husband is missing, Al-Maktabat al-Tijariyah al-Kubra, Egypt, 3/199. 2 Sharh al-Zarqani 'ala Muwatta al-Imam Malik, Iddah of a woman whose husband is missing, Al-Maktabat al-Tijariyah al-Kubra, Egypt, 3/199.

फ़तावा रज़विया, जिल्द १३, पृष्ठ ३४०

बुजुर्ग महिलाएं जिनके पति मर जाते हैं या लापता हो जाते हैं, उन्हें गुजारा भत्ता के लिए निकाह की चिंता नहीं होती; वे कैसे गुजारा करती हैं? और विधवापन की यही स्थिति भारत की युवतियों के साथ भी है। वहां खुदा जाने क्यों 'रज़्ज़ाकी' (रोजी देने वाला) की शान केवल पति तक ही सीमित मानी जाती है। मजे की बात यह है कि यहां इमाम मालिक (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अनुसरण का सहारा लिया जाता है। अज्ञानी लोग उनका मज़हब यह समझते हैं कि यदि पुरुष को गए चार साल बीत गए, तो स्त्री इसी तरह इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में बैठकर निकाह के लिए हलाल हो गई। हरगिज नहीं! यह उनका मज़हब नहीं है, बल्कि वे यह फरमाते हैं कि स्त्री शरीयत के काजी (न्यायाधीश) के सामने अपना दावा पेश करे। लापता होने के प्रमाण के बाद जब उसकी खबर मिलने से पूरी तरह निराशा हो जाए, तब काजी अपने आदेश से चार साल की अवधि निर्धारित करे। यदि इस अवधि में भी कोई पता न चले, तो काजी अलगाव (तफ़रीक) कर दे। इसके बाद स्त्री चार महीने दस दिन इद्दत में बैठे और दूसरे पतियों के लिए हलाल हो जाए। काजी के पास मामला ले जाने से पहले अगर बीस साल भी बीत गए हों, तो उसका कोई विचार नहीं किया जाएगा। अल्लामा ज़रकानी मालिकी, 'शरह मुवत्ता इमाम मालिक' (रज़ियल्लाहु अन्हु) में फरमाते हैं:

[अरबी उद्धरण]: इमाम मालिक का कथन: यदि वह बीस वर्ष तक रुकी रही और फिर [मामला] पेश किया, तो उसके लिए नई अवधि शुरू की जाएगी। १। (उर्दू अनुवाद): इमाम मालिक का कहना है कि यदि स्त्री ने बीस वर्ष भी गुजार दिए हों और बाद में काजी के पास मामला पेश करे, तो काजी उसके लिए नई मोहलत निर्धारित करेगा। (टी)

उसी में है: [अरबी उद्धरण]: इमाम मालिक का यह भी कथन है: निराशा के बाद चार [वर्ष] फिर से शुरू किए जाएंगे, और यह मामला पेश करने के दिन से होगा। २। (उर्दू अनुवाद): इमाम मालिक का यह भी कहना है कि निराशा के बाद चार साल की नई मोहलत दी जाएगी और इस मोहलत की शुरुआत काजी के पास मामला पेश होने के बाद होगी। (टी)

अब कहिए, यदि इमाम मालिक के कथन पर ही अमल करना है, तो पहली बात तो यह कि यहाँ मालिकी काजी कहाँ है! और हनफ़ी काजी अपने मज़हब के खिलाफ फैसला क्यों देने लगा! और दे भी दे, तो उसके लागू होने में कठिनाइयाँ हैं, और यदि लागू हो भी जाए, तो अभी साढ़े चार साल बाकी हैं; वे कैसे कटेंगे! ऐसी बेसब्री और जीविका न होने के दावों का कोई इलाज वैसे भी नहीं बना। संक्षेप

में उद्देश्य यह है कि अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो। और विवाह (शारीरिक संबंधों) के मामलों को हल्का न समझो। पति के लापता होने को उसकी मृत्यु के बराबर न समझो, और रीति-रिवाजों के अनुसरण से अधिक महत्वपूर्ण आदेश (हुक्म) के अनुसरण को समझो। और सोचो कि भारत की युवतियाँ विधवा होकर कैसे जीवन व्यतीत करती हैं; बल्कि इसे छोड़ो, परीक्षणों की इस भूमि (भारत) में दुखों के बीच कई ऐसी कुलीन महिलाएं मिलेंगी जिनके..

---

1. शरह अल-ज़रकानी अला मुवत्ता अल-इमाम मालिक, उस स्त्री की इद्दत जिसका पति लापता हो, अल-मकतबत अल-तिजारियाह अल-कुबरा, मिस्र, ३/१९९।
2. शरह अल-ज़रकानी अला मुवत्ता अल-इमाम मालिक, उस स्त्री की इद्दत जिसका पति लापता हो, अल-मकतबत अल-तिजारियाह अल-कुबरा, मिस्र, ३/१९९।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۳۴۰

سن رسیدہ عورتیں جن کے شوہر مرتے یا مفقود ہوجاتے ہیں انہیں تلاشِ نفقہ کے لئے فکرِ نکاح نہیں ہوتی وہ کیونکر بسر کرتی ہیں اور یہ حالت بیوگی تو ہند کی نوجوانیں بھی اسی حال میں شریک ہیں ، وہاں خدا جانے شانِ رزاقی خاوند میں کیوں نہیں منحصر ہو جاتی ہے، لطف یہ ہے کہ یہاں تقلیدِ امام مالک رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کا دامن پکڑا جاتا ہے ، جاہل لوگ ان کا مذہب یہ سمجھتے ہیں کہ مرد کو گئے چار برس گزرے اور عورت کو یونہی عدت بیٹھ کر نکاح حلال ہو گیا ، حاشا یہ ان کا مذہب نہیں بلکہ وہ یہ فرماتے ہیں کہ عورت قاضیِ شرع کے حضور دعوٰی پیش کرے ، قاضی بعدِ ثبوتِ مفقودی کہ اس کی خبر ملنے سے بالکل ناامید ہو گئی ہو اب چار برس کی مدت اپنے حکم سے مقرر کرے ، اس مدت میں بھی پتا نہ چلے تو پھر قاضی تفریق کر دے ، اس کے بعد عورت چار مہینے دس دن عدت بیٹھے اور شوہروں کے لئے حلال ہو جائے ، حضورِ قاضی میں رجوع لانے سے پہلے اگر بیس برس گزر گئے ہوں تو اس کا اصلاً اعتبار نہیں۔ علامہ زرقانی مالکی شرح مؤطا امام مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ میں فرماتے ہیں:

قول مالك لو أقامت عشرين سنة ثم رفعت يستأنف لها الأجل 1. (ترجمہ): امام مالک کا قول ہے کہ اگر عورت بیس سال بھی گزار چکے اور بعد میں قاضی کے ہاں معاملہ پیش کرے تو بھی قاضی اس کے لئے نئی مہلت مقرر کرے گا۔(ت)

اسی میں ہے: قول مالك أيضا تستأنف الأربع من بعد اليأس وأنها من يوم الرفع 2. (ترجمہ): امام مالک کا یہ بھی قول ہے کہ ناامیدی کے بعد چار سال کی نئی مہلت مقرر کی جائے گی اور اس مہلت کی ابتداء قاضی کے ہاں معاملہ پیش ہونے کے بعد ہو گی(ت)

اب کہئے قولِ امام مالک ہی پر عمل کیجئے تو اول تو یہاں قاضی مالکی کہاں! اور قاضیِ حنفی اپنے خلاف مذہب کیوں حکم دینے لگا! اور دے بھی تو اس کے نفاذ میں دقتیں ہیں، اور نافذ ہو بھی جائے تو ابھی ساڑھے چار برس پڑے ہیں یہ کیونکر کٹیں گے! ایسی بے صبری وادعائے بے رزقی کا علاج تو یوں بھی نہ بنا۔ غرض خلاصہ مقصد یہ ہے کہ اللہ سے ڈرے ، اللہ سے ڈرے۔ اور امرِ فروج کو سہل نہ جانے۔ نہ فقدانِ شوہر کو مرگِ شوہر کے پلے میں رکھے اور اتباعِ حکم کو اتباعِ رسم سے اہم تر سمجھے اور تصور کرے کہ ہند کی نوجوانیں بیوہ ہو کر کیونکر بسر کرتی ہیں بلکہ یہ بھی درکنار اس دارالفتن ہند پر محن میں بہت شریف زادیاں ایسی نکلیں گی جن کے

---

1 شرح الزرقاني على موطأ الإمام مالك عدة التي تفقد زوجها المكتبة التجارية الكبرى مصر ۱۹۹/۳ 2 شرح الزرقاني على موطأ الإمام مالك عدة التي تفقد زوجها المكتبة التجارية الكبرى مصر ۱۹۹/۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

God-fearing husbands have kept them suspended [in limbo] while they are alive—neither maintaining a relationship nor severing it. These poor women are neither among those with husbands nor those without. How then can they preserve their chastity, the honor of their fathers and grandfathers, and obedience to Shari'ah? To suppress desires, one should fast excessively. Keep the heart's thoughts occupied with the remembrance of death and the grave, for the remembrance of death makes one forget every desire and pleasure. If there is no means of sustenance through parents or brothers, she should spend her time in tasks like sewing and embroidery, so that she may be recorded among the patient ones by Allah Almighty and receive immeasurable reward according to the Quranic command. If relatives and mahrams (close male relatives) can look after her, they should seek a great reward from Allah Almighty; they should not let their daughter, without proof of widowhood, fall into the ordeal of marrying another. Common people in India, over trivial and baseless worldly disputes, keep their daughters and sisters sitting [unmarried] and bear their total expenses themselves. This is a religious command and a matter involving the specific forbidden (haram) and permissible (halal) of one's honor. They should exercise a little sense of shame and dignity in this too, and not remain ignorant after understanding. Success is from Allah, and He is the Guide to the straight path.

Supporters: (1) Muhaddith Surati Sahib (Mercy be upon him), (2) Maulana Abdul Muqtadir Sahib Badayuni, (3) Maulana Al-Shah Ahmad Hasan Sahib Kanpuri, (4) Maulana Karamatullah Sahib Dehlvi, (5) Maulana Al-Shah Hidayat Rasul Sahib Qadri.

Problem 710: From Ajain, sent by Muhammad Yaqoob Ali Sahib, 14 Rabi' al-Thani 1310 AH.

[Question in Persian]: What do the scholars of truth and rightful muftis say on this issue: Abdullah's brother has been sentenced to life imprisonment; he does not divorce his wife, and she cannot live without a husband. What is the ruling in this situation? Also, the issue is that Mahmoodah's husband has been missing (mafqud al-khabar) for twelve years. His wife is young and cannot control herself. Therefore, acting upon the school of Imam Malik (Mercy be upon him), according to whom separation is valid after a period of four years, this woman was married to Mir Taqi. A few days after this marriage, the former husband of this woman arrived there. Now, whose wife will that woman be considered, and upon whom will the mahr (dowry) be

obligatory? Please clarify the Shari'ah ruling on these two issues with references from books. May Allah have mercy on them all.

[Urdu Translation of the Question]: What do the scholars of truth and rightful muftis say on this issue: Abdullah's brother has been sentenced to life imprisonment; he does not divorce his wife, and the wife cannot manage without a husband. What is the ruling in this situation? Furthermore, the issue is that Mahmoodah's husband has been missing for twelve years. His wife is young and cannot control herself. Therefore, acting according to the school of Imam Malik, according to whom separation is valid at the duration of four years, this woman's marriage was performed with Mir Taqi. A few days after this marriage, the woman's former husband arrived there. Now, who will that woman be declared as a wife of, and upon whom will the mahr be obligatory? Please clarify the Shari'ah ruling in both these issues from the texts of books. May Allah have mercy on them all. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

खुदा से न डरने वाले शौहरों ने उन्हें जीते जी लटकाए रखा है—न रिश्ता रखते हैं न खत्म करते हैं। वे बेचारियाँ न तो शौहर वालियों में हैं और न बे-शौहर वालों में। फिर वे क्या करें और अपनी पाकीज़गी, बाप-दादा की इज़्ज़त और शरीअत की इताअत की हिफ़ाज़त कैसे करें? अपनी ख्वाहिशात को दबाने के लिए कसरत से रोज़े रखें। दिल के ख़यालात को मौत और कब्र की याद में लगाए रखें, क्योंकि मौत की याद हर ख्वाहिश और लज्जत को भुला देती है। अगर माँ-बाप या भाई के ज़रिए गुज़ारे की सूरत नहीं है, तो सिलाई-कढ़ाई जैसे कामों में वक्त गुज़ारें ताकि अल्लाह तआला के यहाँ सब्र करने वालों में लिखी जाएँ और कुरआन के हुक्म के मुताबिक बेहिसाब सवाब पाएँ। अगर रिश्तेदार और महरम उनकी खबरगीरी कर सकते हैं, तो अल्लाह तआला से अज़ीम सवाब लें; अपनी बेटी को बिना बेवा होने के सबूत के किसी और के निकाह की बला में न पड़ने दें। हिन्दुस्तान के आम लोग छोटी-छोटी और फालतू दुनियावी लड़ाइयों की वजह से अपनी बेटियों और बहनों को बिठाए रखते हैं और उनका सारा खर्चा खुद उठाते हैं। यह दीन का हुक्म है और अपनी इज़्ज़त के हराम और हलाल का मामला है, इसमें भी थोड़ी गैरत और हमियत से काम लें और जानबूझकर अनजान न बनें। अल्लाह ही तौफीक देने वाला है और वही सीधा रास्ता दिखाने वाला है।

समर्थक: (१) मुहद्दिस सूरती साहब, (२) मौलाना अब्दुल मुक्तदिर साहब बदायूँनी, (३) मौलाना अल-शाह अहमद हसन साहब कानपुरी, (४) मौलाना करामतुल्लाह साहब देहलवी, (५) मौलाना अल-शाह हिदायत रसूल साहब कादरी।

मसला ७१०: अजैन से, प्रेषक मुहम्मद याकूब अली साहब, १४ रबी-उल-आखिर १३१० हिजरी।

[फ़ारसी में प्रश्न]: हक़ के उलमा और सच्चे मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह का भाई उम्रकैद की सज़ा पा चुका है, वह अपनी बीवी को तलाक़ नहीं देता, और बीवी का शौहर के बिना गुज़ारा मुमकिन नहीं। इस मसले का क्या हुक्म है? साथ ही, मसला यह है कि महमूदा का शौहर बारह साल से लापता (मफ़कूद-उल-ख़बर) है। उसकी बीवी जवान है और अपने ऊपर काबू नहीं रख सकती। लिहाज़ा, इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैहि) के मज़हब के मुताबिक, जिनके यहाँ चार साल की मुद्दत पर जुदाई (तफ़रीक) जाइज़ है, उस पर अमल करते हुए इस औरत का निकाह मीर तक़ी से कर दिया गया। इस निकाह के कुछ दिन बाद उस औरत का पहला शौहर वहाँ आ गया। अब वह

औरत किसकी बीवी मानी जाएगी और महर किस पर वाजिब होगा? इन दोनों मसलों में शरई हुक्म को किताबों के हवाले से साफ़ फ़रमाएँ। अल्लाह उन सब पर रहमत फ़रमाए।

[प्रश्न का उर्दू अनुवाद]: उलमा-ए-हक़ और मुफ़्तियान-ए-बरहक़ क्या फ़रमाते हैं इस मसले में कि अब्दुल्लाह का भाई क़ैद-ए-दवामी (उम्रकैद) हुआ है, अपनी औरत को तलाक़ नहीं देता, और बीवी का शौहर के बग़ैर गुज़ारा नहीं। इस मसले का क्या हुक्म है? साथ ही मसला यह है कि महमूदा का शौहर बारह साल से मफ़कूद-उल-ख़बर (लापता) है, उसकी बीवी जवान है अपने पर कंट्रोल नहीं कर सकती, लिहाज़ा इमाम मालिक के मज़हब के मुवाफ़िक़ जिनके यहाँ चार साल की मुद्दत पर तफ़रीक़ (जुदाई) सही है, पर अमल कर के इस औरत का निकाह मीर तक़ी से कर दिया गया और इस निकाह के चंद रोज़ बाद उस औरत का साबिक़ (पिछला) खाविन्द वहाँ आ गया तो वह औरत अब किस की बीवी क़रार पाएगी और महर किस पर वाजिब होगा? इन दोनों मसलों में शरई हुक्म को कुतुब (किताबों) की इबारात से वाज़ेह फ़रमाएँ। अल्लाह उन सब पर रहमत फ़रमाए। (त)

पृष्ठ ३४१/६८८

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

خدا ناترس شوہروں نے انہیں جیتے جی معلقہ کر رکھا ہے نہ تعلق رکھیں نہ قطع کریں، وہ بیچاریاں نہ شوہر والیاں نہ بے شوہروں میں۔ پھر وہ کیا کرتی اور اپنی عفت، باپ دادا کی عزت، شرع کی اطاعت کیونکر نگاہ رکھتی ہیں۔ قطع خواہش کے لئے روزوں کی کثرت کرے۔ خیالات دل کو یادِ موت و قبر سے لگائے کہ موت کی یاد ہر خواہش ولذت کو بھلا دیتی ہے۔ اگر ماں باپ بھائی کے ذریعہ سے گزر کی صورت نہیں، سینے پرونے وغیرہ کاموں سے وقت کاٹے کہ اللہ عزوجل کے یہاں صابروں میں لکھی جائے اور بہ حکم قرآن بے حساب ثواب پائے۔ اقارب، محارم اگر خبر گیری کر سکتے ہیں تو اللہ تعالیٰ کا ثواب عظیم لیں، اپنی بیٹی بے ثبوت بیوگی نکاح غیر کی بلا میں نہ پڑنے دیں۔ عوام ہند ذرا ذرا سے فضول و بے جا دنیوی جھگڑوں پر دختروں خواہروں کو بٹھا رکھتے اور ان کا کلی خرچ اپنے پاس سے کرتے ہیں۔ یہ دینی حکم ہے اور اپنی ناموس کے خاص حرام وحلال کا معاملہ، اس میں بھی ذرا غیرت وحمیت کو کام میں لائیں اور سمجھ بوجھ کر انجان نہ بن جائیں، وباللہ التوفیق وھو الھادی الی سواء الطریق۔ مؤ یدین: (۱) محدث سورتی صاحب علیہ الرحمۃ (۲) مولانا عبدالمقتدر صاحب بدایونی (۳) مولانا الشاہ احمد حسن صاحب کانپوری (۴) مولانا کرامت اللہ صاحب دہلوی (۵) مولانا الشاہ ہدایت رسول صاحب قادری۔

مسئلہ ۷۱۰: ازاجین مرسلہ محمد یعقوب علی صاحب ۱۴ ربیع الآخر ۱۳۱۰ھ

چہ فرمایند علمائے اہلِ حق و مفتیانِ برحق دریں مسئلہ کہ برادر عبد اللہ دائمی محبوس گردید عورت خود را طلاق نمی دہد و او بدون شوہر نمی تواند ماند صورت ایں مسئلہ چگونہ است، و شوہر محمودہ نیز از مدت دوازدہ سالہ مفقود الخبر وزوجہ او جوان طاقتی ضبط ندارد لہٰذا موافق مذہب امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کہ نزداو شان تفریق در چہار سال صحیح عمل نمودہ در حبالہ نکاح میر

تقی داده شد بعد از چند روز نکاح سوئے سابق اور ا مقام ہذا آمده بوده، عورت مستحق اواز ہر دو کیست و مہرش بر کہ واجب می شود دریں مسئلہ چہ حکم شرع بیان فرمایند بعبارت کتب مشرح رحمة الله علیہم اجمعین۔

علمائے حق اور مفتیانِ برحق کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ عبد اللہ کا بھائی قید دوامی ہوا ہے اپنی عورت کو طلاق نہیں دیتا، اور بیوی کا شوہر کے بغیر گزارہ نہیں، اس مسئلہ کا کیا حکم: نیز مسئلہ یہ ہے کہ محمودہ کا شوہر بارہ سال سے مفقود الخبر ہے، اس کی بیوی جوان ہے اپنے پر کنٹرول نہیں کر سکتی، لہٰذا امام مالک کے مذہب کے موافق جن کے ہاں چار سال کی مدت پر تفریق صحیح ہے پر عمل کر کے اس عورت کا نکاح میر تقی سے کر دیا گیا اور اس نکاح کے چند روز بعد اس عورت کا سابق خاوند وہاں آگیا تو وہ عورت اب کس کی بیوی قرار پائے گی اور مہر کس پر واجب ہوگا، ان دونوں مسئلوں میں شرعی حکم کو کتب کی عبارات سے واضح فرمائیں رحمة الله علیہم اجمعین (ت)

Fatawa Rizvia, Volume 13

Page 13

The Answer:

In the first scenario, the ruling for Abdullah's brother is that he should divorce his wife. Allah the Almighty said: "Either keep them honorably or release them with kindness." (1) When a man becomes unable to keep his wife properly, it becomes mandatory to let her go with kindness. To fulfill this obligation, if he does not give an actual divorce, delegating the power of divorce is also sufficient. This is because the purpose is to protect the woman from the harm of being left suspended (fatazarūhā kal-mu'allaqah) (2). This purpose is achieved by handing the power of divorce over to the woman; that is, he should write to her saying: "I have placed your divorce in your own hand; whenever you wish, divorce yourself and release yourself from the bond of my marriage." The benefit of this is that the wife will decide according to her own interest, whether she chooses to remain patient in loyalty to her husband or, due to the pressure of her needs, seeks another way. However, as long as a separation from the husband has not occurred, marriage with another is prohibited. Allah the Almighty said: "And [forbidden to you are] married women" (3). And in the second scenario, the woman will undoubtedly be returned to the previous husband. In Radd al-Muhtar, from the commentary of al-Majma' by Ibn Malak, under the statement of al-Durr: "A man disappeared from his wife, and she married another..."

Footnotes: 1. Al-Quran Al-Karim 2/229 2. Al-Quran 4/129 [Note: text says 3/129] 3. Al-Quran Al-Karim 4/24

Page 342 of 688

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13

पृष्ठ 13

जवाब:

पहली सूरत में अब्दुल्ला के भाई के लिए हुक्म यह है कि वह अपनी बीवी को तलाक़ दे दे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: "या तो भलाई के साथ (बीवी को) अपने पास रखो या नेकी के साथ आज़ाद कर दो।" (1) जब एक आदमी अच्छी तरह से बीवी को पास रखने से मजबूर हो जाए, तो उसे नेकी के साथ छोड़ देना उस पर वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है। इस वाजिब की अदायगी में अगर वह बिल-फ़ेल (वास्तव में) तलाक़ नहीं देता, तो बीवी को तलाक़ का अधिकार सौंप देना भी काफ़ी है क्योंकि मक़सद यह है कि औरत को 'मुअल्लक़' (लटकती हुई, न विवाहित न स्वतंत्र) रखने के नुक़सान से बचाया जाए। यह मक़सद औरत को तलाक़ का अधिकार सौंपने से हासिल हो जाता है। यानी वह बीवी को लिख दे कि तेरी तलाक़ तेरे हाथ में देता हूँ; जब तू चाहे तलाक़ चुन ले और मेरी क़ैद से आज़ाद हो जा। इसका फ़ायदा यह है कि बीवी अपनी मसलेहत (हित) के मुताबिक़ फ़ैसला करेगी; चाहे वह शौहर की वफ़ादारी में सब्र करे या मजबूरन अपनी इच्छाओं की ख़ातिर कोई दूसरा रास्ता अपना ले। हालाँकि, जब तक शौहर से अलगाव न हो जाए, किसी और से निकाह हराम है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि निकाह वाली औरतें (3) निस्संदेह पहले शौहर की ही बीवी रहेंगी। 'रद्दुल मुहतार' में 'शर्ह अल-मजमा' इब्न मलक के हवाले से 'दुर्र' के इस क़ौल के तहत लिखा है कि एक शख़्स बीवी को छोड़ कर ग़ायब हो गया और उसने दूसरे से निकाह कर लिया...

फ़ुटनोट्स: 1. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/229 2. अल-क़ुरआन 4/129 [नोट: मूल पाठ में 3/129 लिखा है] 3. अल-क़ुरआन अल-करीम 4/24

पेज 342 का 688

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم

صفحہ ۱۳

الجواب:

در صورت اولیٰ برادر عبداللہ فرمان آں چنان ست کہ زن را طلاق دہد قال اللہ تعالٰی: فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ط ۱ مرد چوں از داشتن بخوبی عاجز آمد گذاشتن بہ نیکی واجب گشت و در ادای این واجب اگر طلاق بالفعل ندہد تفویض طلاق نیز کافی ست زیرا کہ مقصود آنست کہ زن از مضرت فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ط ۲ محفوظ ماند وایں بہ سپردن طلاق بدست زن نیز حاصل ست یعنی زن را بنویسد کہ طلاق تو بدست تو نہادم ہر گاہ کہ خواہی خود را طلاق دہی واز قید نکاح من بدر آئی، نفعش آنست کہ زن مصلحت خود دیدہ کار خواھد بود فاداری شوہر پیش گرفتن خواہ بنا چاری خواہش چارہ دگر جستن اماتا از شوئے افتراق نشود نکاح با دیگر حرام بود قال اللہ تعالٰی وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۳ ودر صورت ثانیہ زن بلاشبہ بزوج پیشین دادہ شود،فی رد المحتار عن شرح المجمع لابن ملك تحت قول الدر، غاب من امرأته فتزوجت بأخرو

پہلی صورت میں عبداللہ کے بھائی کے لئے حکم یہ ہے کہ وہ اپنی بیوی کو طلاق دے دے۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا ہے کہ بیوی کو بھلائی سے پاس رکھو یا نیکی کے ساتھ آزاد کردو، خاوند بخوبی پاس رکھنے سے عاجز ہے تو نیکی کے ساتھ چھوڑ دینا اس پر واجب ہے ، اس واجب کی ادائیگی میں اگر بالفعل طلاق نہیں دیتا تو بیوی کو طلاق کا اختیار سونپ دے تو بھی کافی ہے کیونکہ مقصد یہ ہے کہ عورت کو معلق کر کے رکھنے کے ضرر سے بچایا جائے تو یہ مقصد عورت کو اختیار تفویض کرنے سے حاصل ہو جاتا ہے یعنی بیوی کو لکھ دے کہ تیری طلاق تیرے ہاتھ دیتا ہوں تو

جب چاہے طلاق اختیار کرلے اور میری قید سے آزاد ہو جا، اس کا فائدہ یہ ہے کہ بیوی اپنی مصلحت کے مطابق فیصلہ کریگی خواہ خاوند کی وفاداری میں صبر کرے خواہ مجبوری خواہشات کی بنا پر کوئی دوسرا راستہ اپنا لے، تاہم جب تک خاوند سے مفارقت نہ ہو جائے کسی اور سے نکاح حرام ہے، اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ نکاح والی عورتیں بلاشبہ پہلے خاوند کی بیوی ہے اسی کو دی جائے ۔ رد المحتار میں شرح المجمع ابن ملک سے در مختار کے قول، ایک شخص بیوی کو چھوڑ کر غائب ہو گیا

حواشی: ۱ القرآن الکریم ۲۲۹/۲ ۲ القرآن ۱۲۹/۳ ۳ القرآن الکریم ۲۴/۴

Fatawa Rizwia, Volume Thirteen, Page 13

...children were born. Then the first husband returned, under which it was cited, the text of which is that the woman shall be returned to the first husband by consensus, and the dower (mahr) that was settled in the first marriage is the responsibility of the first husband, and it is also mandatory for the second one to pay a dower like it (Mahr-e-Misl) provided he has come together with this woman and had intercourse with her. But if a dower was fixed in the second marriage which is less than the Mahr-e-Misl, then only that much will be payable and no more will be mandatory upon him. Otherwise, in the case of it not being fixed or being fixed higher than the Mahr-e-Misl, only the Mahr-e-Misl or whichever is less among the fixed and the Mahr-e-Misl will be payable. The dower must be given because the private parts were made permissible in exchange for it, and the stated amount is because the invalidity of the second marriage has become clear. The ruling of dower in an invalid marriage (Nikah-e-Fasid) is also the same. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar' that Mahr-e-Misl becomes mandatory in an invalid marriage upon intercourse; without intercourse in the vagina, dower does not become mandatory even if seclusion (khalwat) has taken place. And Mahr-e-Misl, and if it is less than the fixed dower, then Mahr-e-Misl will be mandatory because the invalidity of the fixed dower occurred due to the invalidity of the marriage contract (Summarized). And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best, and His knowledge, may His majesty be glorified, is most complete and most wise. (T)

Problem 108: From Bengal. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say in this matter that Hind's husband, for a period of four years...

Footnotes: 1. Radd-ul-Muhtar, Chapter on the Establishment of Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/231 2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Dower, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/201

Page 343 of 688

फ़तावा रिज़विया, खंड तेरह, पृष्ठ १३

...संतान उत्पन्न हुई। फिर पहला पति वापस आ गया, जिसके तहत उद्धृत किया गया, जिसका विवरण यह है कि सर्वसम्मति से महिला को पहले पति को वापस कर दिया जाएगा, और पहले विवाह में जो मेहर (दहेज) तय किया गया था, वह पहले पति की जिम्मेदारी है, और दूसरे पति के लिए भी मेहर-ए-मिस्ल (समतुल्य मेहर) देना अनिवार्य है, बशर्ते वह इस महिला के साथ रहा हो और उसके साथ संभोग किया हो। लेकिन अगर दूसरे विवाह में मेहर-ए-मिस्ल से कम मेहर तय किया गया है, तो वही देय होगा और उस पर अधिक अनिवार्य नहीं होगा। अन्यथा, मेहर तय न होने की स्थिति में या मेहर-ए-मिस्ल से अधिक तय होने की स्थिति में, केवल मेहर-ए-मिस्ल और तय मेहर में से जो भी कम होगा, वही देय होगा। मेहर इसलिए देना होगा क्योंकि इसके बदले निजी अंगों को वैध किया गया, और बताई गई राशि इसलिए क्योंकि दूसरे विवाह की अमान्यता स्पष्ट हो गई। निकाह-ए-फ़ासिद (अमान्य विवाह) में भी मेहर का नियम इसी प्रकार है। 'दुर्र-उल-मुख्तार' में है कि निकाह-ए-फ़ासिद में संभोग पर मेहर-ए-मिस्ल अनिवार्य होता है; योनि में संभोग के बिना मेहर अनिवार्य नहीं होता, भले ही एकांत (खलवत) हुआ हो। और मेहर-ए-मिस्ल, और यदि वह तय मेहर से कम है, तो मेहर-ए-मिस्ल अनिवार्य होगा क्योंकि तय मेहर की अमान्यता विवाह अनुबंध की अमान्यता के कारण हुई (संक्षिप्त)। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा महिमामय हो, सबसे पूर्ण और सबसे बुद्धिमान है। (त)

मसला १०८: बंगाल से। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि हिंदा का पति चार साल की अवधि से...

पादलेख: १. रद-उल-मुह्तार, वंश स्थापना पर अध्याय, दार इह्या अल-तुरथ अल-अरबी, बेरूत, २/२३१ २. दुर्र-उल-मुख्तार, मेहर पर अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/२०१

पृष्ठ ३४३ ऑफ़ ६८८

ولدت اولاد۔ ثم جاء الزوج الاول مانصہ۔ المرأة ترد الی الاول اجماعا ومہرے کہ در نکاح اول بستہ بودند خود بر ذمہ شوہر اول است و بریں دوم نیز مہر مثل لازم بشر طیکہ با ایں زن بہم آمدہ و جماعش کردہ باشد اما اگر کا بنے در نکاح ثانی قرار دادہ اند کم از مہر مثل ست تا آنگاہ ہموں قدر دہند وبرونیفر ایند ورنہ مہر مثل تمام و کمال لازم آید و زیادہ براں بہیچ صورت واجب نشود گو مہر قرار دادہ ایشاں زائد ازو باشد خلاصہ آنکہ ہر چہ از مہر مثل و مہر مسمٰی کم ست ہموں لازم بود، اما وجوب المهر فيما استحل من فرجها و اما ماذكرنا من التقدير فلظهور فساد النكاح وهذا هو حكم المهر في النكاح الفاسد فی الدر المختار یجب مهر المثل فی نكاح فاسد بالوطی في القبل لا بغيره كالخلوة لحرمة وطئها ولم يزد على المسمى لرضاها بالحط ولوكان دون المسمى لزم مهر المثل لفساد التسمية بفساد العقد بالالتقاط والله سبحنہ وتعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ اس نے دوسرے شخص سے نکاح کرلیا اور اس سے اولاد ہوگئی پھر پہلا خاوند واپس آگیا، کے تحت نقل کیا، جس کی عبارت یہ ہے کہ عورت پہلے خاوند کو بالاجماع واپس کی جائیگی، اور مہر پہلے خاوند نے جو مقرر کیا وہ پہلے خاوند کے ذمہ ہے اور دوسرے خاوند پر بھی مہر مثلا ادا کرنا واجب ہے بشر طیکہ دوسرے نے اس عورت سے جماع کرلیا ہو، لیکن اگر نکاح ثانی میں مہر مثل سے کم مقرر ہو تو وہی واجب الادا ہوگا اس پر زائد واجب نہ ہوگا ورنہ مقررہ نہ ہونے یا مہر مثل سے زائد مقرر ہونے کی صورت صرف مہر مثل اور مقررہ سے جو بھی کم ہوگا وہی واجب الادا ہوگا، مہر اس لئے دینا ہوگا کہ اس کے بدلے شرمگاہ کو حلال کیا اور بیان کردہ مقدار اس لئے کہ اس ثانی نکاح کا فساد واضح ہو گیا اور نکاح فاسد میں بھی مہر کا حکم اسی طرح ہے، درمختار میں ہے کہ وطی کرنے پر نکاح فاسد میں مہر مثل واجب ہوتا ہے شرمگاہ میں وطی کے بغیر مہر

واجب نہیں ہوتا اگر چہ خلوت کر چکا ہو، اور مہر مثل اور اگر وہ مہر مقررہ سے کم ہو تو مہر مثل واجب ہوگا کیونکہ مہر مقررہ کا فساد نکاح کے فساد پر ہو گیا (ملتقطاً) واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم و علمہ جل مجدہ اتم و احکم۔(ت)

مسئلہ ۱۰۸: از بنگال کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا شوہر عرصہ چار سال سے

1 رد المحتار فصل في ثبوت النسب دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۳۱/۲ 2 در مختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۱/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 13

The news of a missing person is unknown, whether he is alive or dead. He did not leave any food or drink for his wife at home, nor did he leave anything by which his wife could survive. She cannot get a loan from anywhere, and she does not know any trade or profession to earn a living. Or, the wife of the missing person is currently suffering from various types of hardships and also fears committing adultery. In such a situation, is it permissible for her to remarry or not? And if it is permissible, can she remarry without completing the waiting period (Iddah) and without a decree from a Qazi (Islamic judge) or a Muslim ruler, just by informing some cleric or unlearned person? Or will she have to observe Iddah? And when will she start her Iddah? Will it be counted from the day her husband went missing? Or from the day the Qazi decreed the separation of marriage? And a person who issues a fatwa (legal ruling) stating that Hindah (the wife) can remarry without observing Iddah or without a Qazi's separation decree, saying that after four years, according to Imam Malik (may Allah have mercy on him), the missing person is counted among the dead, and if the Qazi separates them now, the Iddah is for the dead person and not for the annulment of marriage, and since four years have already passed, she does not need to observe Iddah; based on this, if someone performs the marriage of Hindah to another person without a Qazi's separation and without completing the Iddah for death, has that person committed a forbidden act or not? Is this second marriage valid or not? And is it correct for him to write such a fatwa? Please explain, and may you be rewarded.

Answer: The second marriage is forbidden, and giving such a fatwa is forbidden. It is mandatory to stop such a Mufti. Remarrying on one's own after four years has passed is not the doctrine of any Imam. Imam Malik, who stipulated four years, meant that the woman should file a petition before the Qazi of Sharia. After proof, he would grant a four-year period from that day. If twenty years have passed before this, it is not considered at all. In our (Hanafi) school, waiting is obligatory for the woman until the husband's age reaches seventy years. If he went missing at the age of fifty, she should wait for twenty years, and at sixty, for ten years. After that, he will be declared dead, and the woman shall observe Iddah for four months and ten days, then she can marry someone else. This is also the school of Imam Shafi'i; he turned towards this view. This is also the saying of Imam Ahmad, and his second opinion is similar to that of Imam Malik (may Allah be pleased with them all). The horrifying points of this question—that he left nothing, she has nothing, she cannot do any

trade, nor can she get a loan from anywhere—their summary is that all means of sustenance are closed. However, this is against the Quran. Sustenance is upon Allah, not upon the husband. "Upon Allah is its sustenance"[1] and not "upon the husband". "And whoever fears Allah, He will make a way for him..."

[1] Al-Quran Al-Karim 11/6 Page 344 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13

एक लापता व्यक्ति (मफ़क़ूदुल ख़बर) का कोई समाचार नहीं है कि वह जीवित है या मर चुका है। उसने अपनी पत्नी के लिए घर में खाने-पीने का कोई प्रबंध नहीं किया है, और न ही ऐसी कोई चीज़ छोड़ी है जिससे उसकी पत्नी का गुज़र-बसर हो सके। उसे कहीं से ऋण भी नहीं मिल रहा है, और वह कोई शिल्प या पेशा भी नहीं जानती जिससे वह अपना जीवन यापन कर सके। या फिर स्थिति यह है कि लापता व्यक्ति की पत्नी इस समय विभिन्न प्रकार के कष्टों में घिरी हुई है और उसे व्यभिचार (ज़िना) का भी डर है। ऐसी स्थिति में, क्या उसके लिए दूसरा विवाह करना वैध है या नहीं? और यदि वैध है, तो क्या वह इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बिताए बिना और काज़ी (इस्लामी न्यायाधीश) या मुस्लिम शासक के आदेश के बिना, किसी मौलवी या कम पढ़े-लिखे व्यक्ति के कहने पर दूसरा विवाह कर सकती है या नहीं? या फिर उसे इद्दत बितानी होगी? और वह इद्दत कब से बिताएगी? क्या उस दिन से इद्दत गिनी जाएगी जिस दिन से पति लापता हुआ है? या उस दिन से जब काज़ी ने विवाह विच्छेद का आदेश दिया है? और वह व्यक्ति जो इस आशय का फ़तवा लिखता है कि हिंदा (पत्नी) इद्दत बिताए बिना या काज़ी द्वारा विच्छेद कराए बिना स्वयं दूसरा विवाह कर ले, और यह तर्क देता है कि जब इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार 4 वर्ष बीतने के बाद लापता व्यक्ति को मृत माना जाता है, और यदि अब काज़ी विच्छेद करता है, तो इद्दत मृतक के लिए है न कि विवाह विच्छेद के लिए, और चूंकि यह चार वर्ष बीत चुके हैं इसलिए अब उसे इद्दत की आवश्यकता नहीं है; इस आधार पर, यदि कोई काज़ी से विच्छेद कराए बिना और मृत्यु की इद्दत पूरी किए बिना हिंदा का निकाह किसी दूसरे से करा दे, तो क्या ऐसा फ़तवा देने वाला हराम का अपराधी हुआ या नहीं? और क्या यह दूसरा निकाह जायज़ हुआ या नहीं? और क्या उसके लिए ऐसे फ़तवे लिखना सही है या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: दूसरा निकाह हराम हुआ, और ऐसा फ़तवा देना हराम है। ऐसे मुफ्ती को रोकना अनिवार्य है। चार वर्ष बीत जाने पर स्वयं ही निकाह कर लेना किसी भी इमाम का मज़हब (विचारधारा) नहीं है। इमाम मालिक ने जो चार वर्ष रखे हैं, उसका अर्थ यह है कि स्त्री शरिया काज़ी के समक्ष अपनी शिकायत दर्ज करे, और वह प्रमाण मिलने के बाद आज से चार वर्ष की मोहलत दे। इससे पहले यदि बीस वर्ष भी बीत गए हों, तो वे बिल्कुल भी मान्य नहीं हैं। और हमारे मज़हब (हनाफी) में स्त्री पर प्रतीक्षा करना फ़र्ज़ है जब तक कि पति की आयु सत्तर वर्ष न हो जाए। यदि वह पचास वर्ष की आयु में लापता हुआ है, तो बीस वर्ष प्रतीक्षा करे, और साठ वर्ष की आयु में दस वर्ष। उसके बाद उसकी

मृत्यु का आदेश दिया जाएगा, और स्त्री चार महीने दस दिन की इद्दत पूरी करे, फिर दूसरे से निकाह कर सकती है। यही इमाम शाफ़ई का भी मज़हब है, उन्होंने इसी ओर रुख किया है। और यही इमाम अहमद का कथन है, और उनका दूसरा कथन इमाम मालिक की तरह है (अल्लाह उन सब से प्रसन्न हो)। इस प्रश्न की डरावनी बातें कि वह कुछ नहीं छोड़ गया, उसके पास कुछ नहीं है, वह कोई काम नहीं कर सकती, न ही कहीं से उधार मिल सकता है—इन सबका सार यह है कि जीविका के सभी साधन बंद हैं। लेकिन यह कुरान के विरुद्ध है। जीविका (रिज़्क़) अल्लाह के ज़िम्मे है, पति के ज़िम्मे नहीं। "अल्लाह ही पर उसकी रोज़ी (जीविका) है"[1] न कि पति पर। "और जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए कोई रास्ता निकाल देगा..."

[1] अल-कुरान अल-करीम 11/6 पृष्ठ 344/688

مفقود الخبر ہے اس کی حیات و موت کی کچھ خبر نہیں ملی اور وہ گھر میں اپنی بی بی کو خور و نوش بھی نہیں دے گیا ہے اور ایسی کوئی چیز نہیں چھوڑ گیا ہے جس سے اس کی بیوی کی گزر اوقات ہو، اور اس بی بی کو کہیں سے قرض دام بھی نہیں ملتا ہے، اور وہ بی بی کوئی حرفہ یا پیشہ نہیں جانتی ہے جس سے گزر اوقات ہو یا یہ کہ اس وقت مفقود کی بیوی ایسی ہے کہ انواع انواع کی تکلیف میں مبتلا ہے اور نیز خوفِ زنا بھی ہے، تو ایسی صورت میں اس کو نکاحِ ثانی کرنا جائز ہے یا نہیں؟ اور اگر جائز ہے تو بلا عدت گزارے اور بلا حکمِ قاضی یا حاکم مسلم کسی مولوی یا کم علم سے کہہ دینے سے نکاح دوسرا کر سکتی ہے یا نہیں؟ یا عدت بھی گزارے گی؟ اور عدت کب سے گزارے گی؟ یا اس روز سے عدت محسوب ہو گی کہ جس روز سے شوہر مفقود ہوا ہے؟ یا جس روز سے قاضی نے حکم تفریقِ نکاح کا کیا ہے؟ اور جو شخص فتوٰی اس بات کا لکھے کہ بلا عدت گزارے یا بلا تفریقِ قاضی نکاحِ ثانی ہندہ خود کرے اور یہ کہے کہ جب بعد انقضائے ۴ سال موافق امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کے مفقود اموات میں شمار ہو اب اگر قاضی تفریق کرے گا اور مردہ کے واسطے عدت ہے نہ فسخِ نکاح، اور جس حالت میں یہ چار سال گزر چکے اب اسے عدت کی ضرورت نہیں، اس بناء پر ہندہ کا نکاح بلا تفریق کرائے قاضی اور بلا عدت پوری کرنے وفات کے کسی دوسرے سے کرا دے تو وہ فتوٰی دینے والا مرتکب حرام ہوا یا نہیں اور یہ نکاح ثانی جائز ہوا یا نہیں اور ایسے فتوٰی لکھنا اس کو درست ہیں یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: نکاحِ ثانی حرام ہوا، اور ایسا فتوٰی دینا حرام ہے، ایسے مفتی کو بند کرنا واجب ہے، چار برس گزرنے پر بطور خود نکاح کر لینا کسی امام کا مذہب نہیں، امام مالک نے کہ چار برس رکھے ہیں، یوں کہ عورت قاضی شرع کے حضور نالش کرے وہ بعد ثبوت اپنے یہاں سے آج سے

چار برس کی مہلت دے اس سے پہلے اگر بیس برس گزر گئے ہیں اصلاً معتبر نہیں اور ہمارے مذہب میں عورت پر انتظار فرض ہے یہاں تک کہ شوہر کی عمر سے ستر برس گزر جائیں، اگر پچاس برس کی عمر میں مفقود ہوا ہے تو بیس برس انتظار کرے اور ساٹھ برس کی عمر میں دس برس، اس کے بعد اس کی موت کا حکم دیا جائے، اور عورت چار مہینے دس دن عدت کرے پھر دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے، یہی مذہبِ امام شافعی کا ہے اسی طرف انہوں نے رجوع فرمائی، اور یہی قول امام احمد کا ہے، اور دوسرا قول مثل امام مالک ہے رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین۔ اس سوال کی ہولناک باتیں کہ نہ وہ چھوڑ گیا نہ اس کے پاس کچھ ہے نہ کچھ حرفہ کر سکتی ہے نہ کہیں سے قرض مل سکتا ہے، اس کا حاصل یہ ہے کہ تمام ذرائعِ رزق بند ہیں مگر یہ قرآن کے خلاف، رزق اللہ پر ہے نہ کہ شوہر پر عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا[1] نہ کہ علی الزوج وَ مَنْ يَّتَّقِ اللهَ يَجْعَلْ لَّهٗ

[1] القرآن الکریم ۱۱/۶ Page 344 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 13 XIII

"...a way out. And He will provide for him from where he does not expect"[1] And whoever fears Allah, Allah will create a way out for him and provide him with sustenance from a place he would never have imagined. There are not just hundreds but thousands of cases where husbands are alive and have left their wives in a state of suspension, neither providing food and clothing nor fulfilling marital rights. Now, give them permission to marry whoever they want, even though the husband is alive and no divorce has occurred. That is, to avoid the fear of fornication, actually commit fornication. The remedy mentioned in the Hadith to avoid the fear of fornication is frequent fasting:

[Boxed Text:] "And whoever is not able [to marry], then he must fast, for it is a shield for him."[2] And he who does not have the means [to marry], fasting is obligatory for him because it suppresses desire. (T)

And he said: "And whoever seeks chastity, Allah will keep him chaste."[3] And Allah Almighty knows best. Whoever desires chastity, Allah will make him chaste. And Allah Almighty knows best.

Problem 109: Sent by Molvi Nazar Muhammad Sahib, Imam of Jamia Masjid Mangana, District Rohtak. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say about this matter: A man is missing, and there is no reliable proof of his death, nor has anyone seen it. It only happened that he was in the hospital, i.e., undergoing treatment. He left his clothes and disappeared. The British spread a rumor that he died, but no one saw him die. Now, can another person marry his wife or not? He has been missing for eight months. After how long will marriage be valid? And now, what accusation will fall upon the person who performs the marriage of this woman and the witnesses? Please provide a complete explanation with references to books, and what is the way for them to be cleared of any accusation that might fall on them?

The Answer: If it is confirmed that he died in the hospital or elsewhere, then after the waiting period (iddah), the woman can marry elsewhere. And if death is not proven, then until seventy years have passed from the person's birth, or if he were alive he would have reached seventy years of age—if until that time no news of his life or death is found, then a ruling of his death will be given at that time, and after the waiting period...

[1] Al-Quran al-Karim 3/25 [Surah At-Talaq 65:2-3] [2] Musnad Imam Ahmad bin Hanbal narrated from Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr Beirut, 1/424 [3] Sunan an-Nasa'i, Book of Zakat, Chapter on Persistency in Asking, Nur Muhammad Karkhana Kutub Karachi, 1/363

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

"...निकलने का रास्ता। और उसे ऐसी जगह से रिज़क़ पहुँचाएगा जहाँ उसका गुमान भी न होगा"[1] और जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए रास्ता निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी पहुंचाएगा जहां उसका गुमान भी न होगा। सैकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों ऐसी हैं जिनके शौहर ज़िंदा बैठे हैं और उन्हें अधर में छोड़ रखा है, न रोटी-कपड़ा देते हैं और न ही वैवाहिक अधिकारों को पूरा करते हैं। अब उन्हें भी इजाज़त दे दो कि शौहर ज़िंदा बैठा है और तलाक़ हुई नहीं, जिससे चाहें निकाह कर लें, यानी ज़िना (व्यभिचार) के डर से बचने के लिए वास्तव में ज़िना करो। ज़िना के डर से बचने का इलाज हदीस में अधिक रोज़ा (उपवास) रखना बताया गया है:

[बॉक्स में पाठ:] "और जो सामर्थ्य न रखे तो वह रोज़ा रखे, क्योंकि यह उसके लिए काम-इच्छा को रोकने वाला है।"[2] और जो सामर्थ्य न रखे उस पर रोज़ा लाज़िम है क्योंकि यह काम-इच्छा को रोकता है। (त)

और फ़रमाया: "और जो पाकबाज़ी चाहेगा, अल्लाह उसे पाकबाज़ बना देगा।"[3] और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। जो पाकबाज़ी चाहेगा, अल्लाह उसे पाकबाज़ बना देगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसअला १०९: प्रेषित मौलवी नज़र मुहम्मद साहब, पेश इमाम जामा मस्जिद मंगाना, ज़िला रोहतक। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति लापता है और उसकी मृत्यु का कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है और न ही किसी ने देखा है। बस इतना हुआ कि वह अस्पताल में था यानी उपचाराधीन था, वह अपने कपड़े छोड़कर लापता हो गया। अंग्रेजों ने यह मशहूर कर दिया कि वह मर गया, लेकिन मरते किसी ने नहीं देखा। अब क्या उसकी पत्नी से दूसरा व्यक्ति निकाह कर सकता है या नहीं? वह आठ महीने से लापता है। कितने समय के बाद निकाह सही होगा? और अब जो व्यक्ति इस महिला का निकाह पढ़ाएगा और गवाह, उन पर क्या आरोप लगेगा? कृपया किताबों के हवाले के साथ पूरी स्पष्टता प्रदान करें, और उन पर जो आरोप लगेगा उससे बचने का क्या रास्ता होगा?

अल-जवाब: यदि यह जांच से सिद्ध हो जाए कि वह अस्पताल में या कहीं और मर गया है, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद महिला दूसरी जगह निकाह कर सकती है। और यदि मृत्यु सिद्ध न हो, तो जब उस व्यक्ति के जन्म से सत्तर वर्ष बीत जाएं या यदि वह जीवित होता तो सत्तर वर्ष का हो जाता—

अगर उस समय तक उसके जीवन या मृत्यु का पता न चले, तो उस समय उसकी मृत्यु का हुक्म दिया जाएगा और इद्दत के बाद...

[1] अल-कुरआन अल-करीम ३/२५ [सूरह अत-तलाक़ ६५:२-३] [2] मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ीअल्लाहु अन्हु) से वर्णित, दारुल फिक्र बेरुत, १/४२४ [3] सुनन अन-नसाई, किताबुज़ ज़कात, मसअले में इस्रार करने का बाब, नूर मुहम्मद कारख़ाना कुतुब कराची, १/३६३

पृष्ठ ३४५/६८८

مَخْرَجًا وَ یَرْزُقْہُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ ط ۱ اور جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کے لئے راہ نکال دے گا اور اسے وہاں سے روزی پہنچائے گا جہاں اس کا گمان بھی نہ ہوگا۔ صدہا نہیں ہزار ہاوہ ہیں کہ ان کے شوہر زندہ بیٹھے ہیں اور انہیں معلق چھوڑ رکھا ہے، نہ روٹی کپڑا دیتے ہیں نہ حقوق زوجیت ادا کرتے ہیں، اب انہیں بھی اجازت دے دو کہ شوہر زندہ بیٹھا ہے اور طلاق ہوئی نہیں جس سے چاہیں نکاح کرلیں یعنی خوف زنا سے بچنے کے لئے واقعی زنا کرو۔ خوف زنا سے بچنے کا علاج حدیث میں کثرت روزہ فرمایا ہے:

[Boxed text:] و من لم یستطع فعلیہ بالصوم فانہ لہ وجاء ۲ اور جو قدرت نہ رکھے اس پر روزہ لازم ہے کیونکہ اس کے لئے شہوت کو روکتا ہے (ت)

اور فرمایا: و من استعف اعفہ اللہ ۳ واللہ تعالٰی اعلم۔ جو پارسائی چاہے گا اللہ اسے پارسا بنادے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۹: مرسلہ مولوی نظر محمد صاحب پیش امام جامع مسجد منگانہ ضلع رہتک کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک آدمی گمشدہ ہے اور اس کے مرنے کی کوئی معتبر سند نہیں اور نہ کسی نے دیکھا صرف یہ ہوا کہ ہسپتال میں سکھ تھا یعنی زیر علاج تھا وہ اپنے کپڑے چھوڑ کر گم ہو گیا انگریزوں نے یہ مشہور کر دیا کہ وہ مر گیا اور مرا کسی نے نہیں دیکھا اب اس کی بیوی سے دوسرا شخص نکاح کر سکتا ہے یا نہیں عرصہ آٹھ ماہ سے گم ہے، اور کتنے عرصہ کے بعد نکاح درست ہوگا، اور اب جو شخص اس عورت کا نکاح پڑھادے

گا اور گواہ، ان کے اوپر کیا الزام آئے گا؟ اس کی پوری پوری بمعہ حوالہ کتب تصریح فرمادیں اور جو الزام آئے گا ان پر اس سے بری ہونے کا کیا راستہ ہوگا؟

الجواب: اگر تحقیق ہو جائے کہ وہ ہسپتال میں یا کہیں اور مر گیا تو عدت کے بعد عورت دوسری جگہ نکاح کر سکتی ہے اور اگر موت ثابت نہ ہو تو جب اس شخص کی پیدائش سے ستر برس گزر جائیں یا زندہ ہوتا تو جس وقت ستر برس کا ہو جاتا اس وقت تک اگر اس کی موت وحیات کا پتان نہ چلے تو اس وقت اس کی موت کا حکم دیا جائے اور عدت کے بعد

۱ القرآن الکریم ۳/۲۵ ۲ مسند امام احمد بن حنبل مروی از عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ دارالفکر بیروت ۱/ ۴۲۴ ۳ سنن النسائی کتاب الزکوٰۃ باب الالحاف فی المسئلۃ نور محمد کارخانہ کتب کراچی ۱/ ۳۶۳

Fatawa Razawiyya Volume 13

...the woman can marry; otherwise it is haram, haram, haram. Allah Almighty says in the Holy Quran: "And [forbidden to you are] married women" [1] (i.e., those who have husbands are forbidden. - T). And Allah knows best.

Problem 110: From Lalitpur, asked by Muhammad Bakhsh, Karim Bakhsh Soda-garan, 7 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say about this: a minor girl's marriage was performed by her mother and stepfather. Afterwards, the girl's husband went away for military service. It has been more than eight years, and for the last six years, he hasn't sent any letters or regular expenses, and it is unknown whether he is dead or alive. Now the girl has reached puberty. Her parents cannot bear her expenses. Both the girl and her parents want a second marriage. Therefore, will a second marriage be permissible or not? And if the first husband returns, what will be the ruling? Please clarify and be rewarded.

The Answer: In the situation described, if the person she was married to was her 'Shari' Kufu' (social/religious equal) - meaning he was not so low in terms of religion, lineage, behavior, or profession that marrying him would be a cause of shame and disgrace for the girl's guardians, as is apparent from the question - then the marriage became valid. And since the girl did not exercise her 'option of puberty' (Khiyar al-Bulugh) immediately upon reaching adulthood, as is the intent of the question, the marriage is now binding. It is obligatory for the woman to wait for such a duration that the husband, if alive, would have completed seventy years of age. If until then there is no trace of his life or death, he will be declared dead. Then the woman must observe a waiting period ('iddah) of four months and ten days. After that, she can marry someone else, otherwise not. Then, if that duration has passed and the woman has married after the 'iddah, and if after that the first husband returns, he will take his woman back from the second husband. If there are children from the second husband, those children will be given to the second husband; only the woman will return to the first husband. It is stated in Rad al-Muhtar:

"If he returns alive after the ruling of his death, Al-Tahawi said: I saw the late Abu al-Sa'ud quoting that the wife belongs to him (the first husband) and the children to the second [2]. This is what is in ash-Shami, but in Al-Hindiyyah from Al-Tatarkhaniyyah, it is mentioned that if her husband returns alive after the period has passed, he is more entitled [to her]."

If the first husband returns after the judge's decision, Al-Tahawi said: I found the late Abu Sa'ud quoting that the woman will be the first husband's wife, and if there are children from the second husband, they will belong to the second. The statement of Shami ends here, but in Hindiyyah, it is quoted from Tatarkhaniyyah that if the period stipulated by the judge has expired...

---

1. The Holy Quran 4/24.
2. Rad al-Muhtar, Book of the Missing Person, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/332. Page 346 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द १३

...औरत निकाह कर सकेगी वरना हराम हराम हराम, अल्लाह अज़-ओ-जल्ल क़ुरान मजीद में फ़रमाता है: 'وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَاءِ' [१] (और शौहर वाली औरतें तुम पर हराम हैं। - त) वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसाला ११०: ललितपुर से, सायल: मुहम्मद बख्श, करीम बख्श सौदागरान, ७ शव्वाल १३३९ हिजरी। उलमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं कि एक नाबालिग लड़की का निकाह उसकी माँ और सौतेले बाप ने कर दिया था। बाद में लड़की का शौहर फ़ौज में मुलाज़िम होकर चला गया। आठ साल से ज़्यादा का अरसा हो गया और छह साल से उसने न कोई ख़त भेजा न ही मुसलसल ख़र्च भेजा, मगर उसका पता नहीं कि मर गया या ज़िंदा है। अब लड़की बालिग हो गई है। उसके माँ-बाप उसका ख़र्च बर्दाश्त नहीं कर सकते। लड़की और उसके वालिदैन दूसरा निकाह करना चाहते हैं, लिहाज़ा दूसरा निकाह जायज़ होगा या नहीं? और अगर पहला शौहर वापस आ जाए तो क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं और सवाब पायें।

अल-जवाब: पूछी गई सूरत में, जिससे निकाह किया गया अगर वह उस लड़की का 'शई कुफ़ू' (सामाजिक और धार्मिक बराबरी वाला) था - यानी मज़हब, नसब (वंश), चाल-चलन या पेशे में किसी बात में इतना कम न था कि उससे निकाह करना लड़की के सरपरस्तों के लिए शर्म और रुसवाई का कारण हो, जैसा कि सवाल से ज़ाहिर है - तो निकाह सही हो गया। और चूंकि लड़की ने बालिग होते ही 'ख़ियार-ए-बुलूग' (बचपन के निकाह को ख़त्म करने का हक़) का इस्तेमाल नहीं किया, जैसा कि सवाल से ज़ाहिर है, तो अब निकाह लाज़िम (अनिवार्य) हो गया। औरत पर फ़र्ज़ है कि इतनी मुद्दत इंतिज़ार करे कि शौहर अगर ज़िंदा रहे तो सत्तर साल का हो जाए। उस वक़्त तक अगर उसकी मौत या ज़िंदगी का पता न चले, तो उसकी मौत का हुक्म दिया जाएगा। फिर औरत चार महीने दस दिन की इद्दत बैठे। उसके बाद वह दूसरे से निकाह कर सकती है, वरना नहीं। फिर अगर इतनी मुद्दत गुज़र गई और औरत ने इद्दत के बाद निकाह कर लिया, उसके बाद पहला शौहर वापस आया तो वह अपनी औरत को दूसरे शौहर से ले लेगा। और अगर दूसरे से औलाद हो चुकी है, तो वह औलाद दूसरे ही को दी जाएगी, सिर्फ औरत पहले शौहर को मिलेगी। 'रद अल-मुह्तार' में है:

"अगर वह उसकी मौत के फ़ैसले के बाद ज़िंदा वापस आ जाए, तो अल-तहावी ने फ़रमाया: मैंने मरहूम अबू सऊद को नक़ल करते हुए पाया कि बीवी उसकी (पहले शौहर की) होगी और औलाद

दूसरे की [२]।" यह 'शामी' का बयान है, लेकिन 'हिंदिया' में 'तातारख़ानिया' के हवाले से ज़िक्र है कि अगर मुद्दत गुज़रने के बाद उसका शौहर ज़िंदा वापस आ जाए, तो वह ज़्यादा हक़दार है।

अगर काज़ी के फ़ैसले के बाद पहला शौहर वापस आ जाए, तो तहावी ने फ़रमाया: मैंने मरहूम अबू सऊद को नक़ल करते हुए पाया कि वह औरत पहले शौहर की बीवी होगी और अगर दूसरे से औलाद हो तो वह दूसरे की होगी। 'शामी' का बयान ख़त्म हुआ, लेकिन 'हिंदिया' में 'तातारख़ानिया' से मंकूल है कि अगर काज़ी की तरफ़ से मुक़र्रर मुद्दत ख़त्म हो...

---

1. अल-क़ुरान अल-करीम ४/२४।
2. रद अल-मुह्तार, किताबुल मफ़क़ूद, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, ३/३३२। पेज ३४६/६८८

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳ عورت نکاح کر سکے گی ورنہ حرام حرام حرام، اللہ عز و جل قرآن مجید میں فرماتا ہے : وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَاءِ ۱ (اور خاوند والی حرام ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۱۰: از للت پور مسئولہ محمد بخش، کریم بخش سوداگران ۷ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ایک لڑکی نابالغہ کا نکاح اس کی ماں اور سوتیلے باپ نے کر دیا تھا بعدہ لڑکی کا شوہر فوج میں نوکر ہو کر چلا گیا آٹھ سال سے زائد عرصہ ہوا اور چھ سال سے اس نے نہ کوئی خط بھیجانہ خرچہ متواتر بھیجے مگر اس کا پتا نہیں کہ مر گیا یا زندہ ہے اور اب لڑکی بالغ ہوگئی ہے اس کے ماں باپ خرچ برداشت نہیں کرسکتے خود لڑکی اور اس کے والدین دوسرا نکاح کرنا چاہتے ہیں لہذا دوسرا نکاح جائز ہوگا یا نہیں اور اگر پہلا شوہر واپس آجائے تو کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: صورت مستفسرہ میں جس سے نکاح کیا گیا اگر وہ اس لڑکی کا کفو شرعی تھا یعنی مذہب یا نسب یا چال چلن یا پیشہ کسی بات میں ایسا کم نہ تھا کہ اس سے نکاح ہونا اولیائے دختر کے لئے باعث ننگ وعار ہو جیسا کہ یہی ظاہر سوال ہے تو نکاح صحیح ہو گیا اور جبکہ لڑکی نے بفور بلوغ خیار بلوغ کا استعمال نہ کیا جیسا کہ یہی مفاد سوال ہے تو اب نکاح لازم ہو گیا، عورت پر فرض ہے کہ اتنی مدت انتظار کرے کہ شوہر اگر زندہ رہے تو ستر برس کامل کا ہو جائے اس وقت تک اگر اس کی موت وحیات کا پتا نہ چلے اس کی موت کا حکم کیا جائے گا پھر عورت چار مہینے دس دن عدت بیٹھے اس کے بعد دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے ورنہ نہیں، پھر اگر اتنی مدت گزر گئی اور عورت نے بعد عدت نکاح کر لیا اسکے بعد شوہر اول واپس آیا تو اپنی عورت کو شوہر دوم سے لے گا اور دوم سے اگر اولاد ہو چکی ہے تو وہ اولاد دوم ہی کو دلائی جائے گی صرف عورت شوہر اول کو ملے گی، ردالمختار میں ہے : لو عاد حياً بعد الحكم بموته قال ط رأيت المرحوم ابا السعود نقل عن زوجته له والاولاد للثانی ۲ اھ ما في ش، لكن في

الهندية عن التاتارخانية انه ان عاد زوجها حياً بعد مضى المدة فهو احق اگر قاضی کے فیصلہ کے بعد پہلا خاوند واپس آجائے تو طحاوی نے فرمایا : میں نے مرحوم ابو سعود کو نقل کرتے ہوئے پایا کہ وہ عورت پہلے خاوند کی بیوی ہوگی اور دوسرے سے اولاد ہو تو وہ دوسرے کی ہوگی ، شامی کا بیان ختم ہوا ، لیکن ہندیہ میں تاتارخانیہ سے منقول ہے کہ اگر قاضی کی طرف سے مقررہ مہلت ختم

---

۱ القرآن الکریم ۴/ ۲۴ ۲ رد المحتار کتاب المفقود دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۳۲ Page of 688 346

FATAWA RAZAWIYYA Volume Thirteen 13

[Right Column Text] ...after occurring, if the husband returns, then he alone is entitled to the wife. And if the wife has remarried in this situation, then the first husband has no entitlement. End quote. I say: The reason for the statement in Rad al-Muhtar is that the wife herself entered into the marriage thinking her husband had died. Now upon the return of the first husband, it is known he is alive. So in this situation, the action based on a false assumption will not be valid. While she is the wedded wife of the husband (Zaid), how can she become the wife for Amr? And the reason for the second statement, i.e., the statement from Hindiyya, is that here there is a proceeding after the judge's decision of death, which is a Sharia ruling, and a proceeding to declare her lawful for another marriage after the fixed waiting period has ended. So this Sharia decision will not be void, just as a judge's decision is not void, rather it would be even more protected. However, it is clarified in Tatarkhaniyya that if after the judge's order, a second marriage has not yet taken place, then the first husband alone will be entitled. If the judge's ruling of death alone was considered a definitive decision without the waiting period passing, then a Sharia separation would have occurred from the first husband. In such a case, how would the first husband be declared entitled? This should be clarified and the books should be referred to. And Allah Almighty knows best. (T)

[Left Column Text] ...with her, and if she has remarried, he has no way over her. End. I say: The reason for the first [opinion] is that her marrying him was based on the assumption of his death, and he turned out to be alive. An obvious error in assumption is not taken into account, and she is the legally wedded wife of Zaid, so how can she be handed over to Amr? The reason for the second [opinion] is that the Sharia ruled him dead after the period passed and made her lawful for remarriage. Therefore, the judgment of the Sharia is not annulled, just as the judgment of a judge is not annulled, rather it is even more so. However, it is explicitly stated in al-Tatarkhaniyya that if he returns alive and she has not remarried, he has more right to her. If the Sharia's ruling of his death were an absolute final judgment, the Sharia would have separated them. So how can he be more entitled? Let this be examined and referred back [to the books]. And Allah Almighty knows best.

[Bottom Section] Problem 112 to 114: From Kotli Loharan, district Sialkot, requested by Abu Yusuf Muhammad Sharif, 7 Dhu al-Hijjah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: Zaid went away for employment at the age of ten or fifteen. For twenty-five years they kept searching for him, found no trace. After

twenty-five years had passed, his wife, being distressed by the lack of maintenance and basic needs, took a fatwa from a Hanafi scholar and entered into marriage with a Hanafi person who is a Hafiz of the Quran. Today it has been twenty years since she got married, and it has been forty-five years since Zaid went missing. Now, in the house of the said Hafiz, three or four girls have also been born from this woman's womb. Now a Hanafi scholar has given a fatwa that this marriage of the said Hafiz sahib is absolutely illegitimate and performing prayers behind him is not permissible at all. And another scholar of the Hanafi school...

[Footnote] 1 Fatawa Hindiyya, Kitab al-Mafqud, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/300.

[दायां कॉलम पाठ] ...होने के बाद, यदि पति वापस आता है, तो वह अकेला ही पत्नी का हकदार है। और यदि पत्नी ने इस स्थिति में दूसरा विवाह कर लिया है, तो फिर पहले पति का कोई अधिकार नहीं है। उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: 'रद्द अल-मुहतार' के कथन का कारण यह है कि पत्नी ने स्वयं अपने पति की मृत्यु मानकर विवाह किया था। अब पहले पति के लौटने पर पता चला कि वह जीवित है। तो इस स्थिति में, गलत धारणा पर आधारित कार्यवाही मान्य नहीं होगी। जबकि वह पति (ज़ैद) की विवाहित पत्नी है, तो वह अम्र की पत्नी कैसे बन सकती है? और दूसरे कथन, यानी 'हिंदिया' के कथन का कारण यह है कि यहाँ काज़ी (न्यायाधीश) के मृत्यु के निर्णय के बाद की कार्यवाही है, जो एक शरीयत का आदेश है, और निश्चित प्रतीक्षा अवधि समाप्त होने के बाद उसे दूसरे विवाह के लिए वैध घोषित करने की कार्यवाही है। इसलिए यह शरीयत का निर्णय शून्य नहीं होगा, जैसे कि काज़ी का निर्णय शून्य नहीं होता, बल्कि यह और भी अधिक सुरक्षित होगा। हालाँकि, 'तातारखानिह' में यह स्पष्ट किया गया है कि यदि काज़ी के आदेश के बाद अभी दूसरा विवाह नहीं हुआ है, तो पहला पति ही हकदार होगा। यदि केवल काज़ी के मृत्यु के आदेश को, बिना प्रतीक्षा अवधि बीते, एक अंतिम निर्णय माना जाता, तो पहले पति से शरीयत के अनुसार अलगाव हो गया होता। ऐसी स्थिति में पहला पति कैसे हकदार घोषित किया जाता? इसे स्पष्ट किया जाना चाहिए और किताबों का संदर्भ लेना चाहिए। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (टी)

[बायां कॉलम पाठ] ...उसके साथ, और यदि उसने विवाह कर लिया है तो उसके ऊपर उसका कोई अधिकार नहीं है। समाप्त। मैं कहता हूँ: पहले [विचार] का कारण यह है कि उसका विवाह उसकी मृत्यु के अनुमान पर आधारित था, और वह जीवित निकला। अनुमान में स्पष्ट त्रुटि को ध्यान में नहीं रखा जाता है, और वह ज़ैद की कानूनी रूप से विवाहित पत्नी है, तो उसे अम्र को कैसे सौंपा जा सकता है? दूसरे [विचार] का कारण यह है कि शरीयत ने अवधि बीतने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया और उसे पुनर्विवाह के लिए वैध बना दिया। इसलिए, शरीयत का निर्णय रद्द नहीं किया जाता है, जैसे काज़ी का निर्णय रद्द नहीं किया जाता है, बल्कि यह और भी अधिक है। हालाँकि, अल-तातारखानिह में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि वह जीवित लौट आता है और उसने पुनर्विवाह नहीं किया है, तो उसका उस पर अधिक अधिकार है। यदि शरीयत द्वारा उसकी मृत्यु का निर्णय एक पूर्ण अंतिम निर्णय होता, तो शरीयत उन्हें अलग कर देती। तो वह अधिक हकदार कैसे हो सकता है?

इसकी जाँच की जानी चाहिए और किताबों का संदर्भ लिया जाना चाहिए। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[निचला भाग] समस्या 112 से 114: कोटली लोहारान, जिला सियालकोट से, अबू यूसुफ मोहम्मद शरीफ द्वारा पूछा गया, 7 ज़ुल-हिज्जा 1339 हिजरी। क्या फरमाते हैं दीन के उलेमा इस मसले में कि ज़ैद दस-पच्चीस साल की उम्र में नौकरी के लिए कहीं चला गया, पच्चीस साल तक उसकी तलाश करते रहे, कुछ पता नहीं चला। पच्चीस साल बीतने के बाद, उसकी पत्नी ने भरण-पोषण और बुनियादी जरूरतों से परेशान होकर एक हनफी विद्वान से फतवा लिया और एक हनफी व्यक्ति, जो हाफिज-ए-कुरान है, के साथ निकाह कर लिया। आज निकाह किए हुए बीस साल हो गए हैं और ज़ैद को लापता हुए पैंतालीस साल हो गए हैं। अब उक्त हाफ़िज़ के घर उस महिला की कोख से तीन-चार लड़कियाँ भी पैदा हुई हैं। अब एक हनफी विद्वान ने फतवा दिया है कि उक्त हाफिज साहब का यह निकाह बिल्कुल नाजायज है और उनके पीछे नमाज पढ़ना कतई सही नहीं है। और एक अन्य हनफी विद्वान...

[पाद टिप्पणी] 1 फ़तावा हिंदिया, किताब अल-मफ़क़ूद, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 2/300.

पृष्ठ 688 में से 347

[دایاں کالم] ہونے کے بعد خاوند واپس آئے تو وہی بیوی کا حقدار ہے اور اگر بیوی نے اس صورت میں دوسرا نکاح کر لیا تو پھر پہلے خاوند کو استحقاق نہیں ہے اھ ، اقول (میں کہتا ہوں) ردالمحتار کے قول کی وجہ یہ ہے کہ خود بیوی نے خاوند کے فوت ہو جانے کا گمان کر کے نکاح کیا تو اب پہلے خاوند کی واپسی پر معلوم ہوا کہ زندہ ہے تو اس صورت میں غلط گمان پر مبنی کارروائی ہے لہذا معتبر نہ ہوگی جبکہ وہ عورت خاوند (زید) کی منکوحہ ہے تو عمرو کے لئے کیسے بیوی بن سکتی ہے، اور دوسرے قول یعنی ہندیہ والے قول کی وجہ یہ ہے کہ یہاں قاضی کے فیصلہ موت کے بعد کارروائی ہے جو کہ شرعی حکم اور مقررہ مہلت ختم ہونے کے بعد دوسرے نکاح کے لئے حلال قرار دینے پر کارروائی ہے تو یہ شرعی فیصلہ کالعدم نہ ہوگا جیسا کہ قاضی کا فیصلہ کالعدم نہیں ہوتا بلکہ اس سے اولیٰ تر محفوظ ہوگا حالانکہ تاتارخانیہ میں تصریح ہے کہ اگر قاضی کے حکم کے بعد ابھی دوسرا نکاح نہ ہو تو پہلا خاوند ہی حقدار ہوگا، اگر مہلت گزرے بغیر محض قاضی کے حکم موت کو ہی قطعی فیصلہ قرار دیا جاتا تو پھر پہلے خاوند سے تفریق شرعی ہو جاتی تو ایسی صورت میں پہلا خاوند کیسے حقدار قرار پاتا، اس کی تنقیح کرلی جائے اور کتب کی طرف مراجعت چاہئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

[بایاں کالم] بها وان تزوجت فلا سبیل له علیها اهـ اقول: ووجه الاول ان تزوجها کان بظن موته وقد بان حیا ولا عبرة بالظن البین خطؤه وهی محصنة زید فکیف تسلم لعمرو وجه الثانی ان الشرع حکم بموته بعد مضی المدة وحلها للازواج فلا ینقض قضاء الشرع کما لا ینقض قضاء القاضی بلا اولی لکن قد صرح فی التاتار خانیة انه ان عاد حیا ولم تتزوج فهواحق بها، فلو کان حکم الشرع بموته حتماً مقضیا لکان الشرع فرق بینهما فکیف یکون احق بها فلیحرر و لیراجع واللہ تعالی اعلم۔

[نچلا حصہ] مسئلہ ۱۱۲تا ۱۱۴: از کوٹلی لوہاراں ضلع سیالکوٹ مسئولہ ابو یوسف محمد شریف ۷ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید دس پندرہ سال کی عمر میں ملازم ہو کر کہیں چلا گیا، بیس پچیس سال اس کی تلاش کرتے رہے، کچھ پتا نہ چلا پچیس سال گزرنے کے بعد اس کی زوجہ نے نان نفقہ ضروریات سے تنگ آکر ایک حنفی عالم سے فتویٰ لے کر ایک حنفی شخص حافظ قرآن کے ساتھ نکاح کر لیا، آج بیس سال اس کو نکاح کئے ہوئے اور زید کو گم ہوئے پینتالیس سال ہو گئے ہیں، اب حافظ موصوف کے گھر اس عورت کے بطن سے تین چار لڑکیاں بھی پیدا ہوئیں، اب ایک حنفی عالم نے فتویٰ دیا ہے کہ حافظ صاحب موصوف کا یہ نکاح بالکل ناجائز ہے اور ان کے پیچھے نماز پڑھنا ہر گز درست نہیں اور ایک اور عالم حنفی المذہب ان کے

[حاشیہ] 1 فتاوی ہندیہ کتاب المفقود نورانی کتب خانہ پشاور ۳۰۰/۲

Volume 13 - 13 Fatawa Rizvia

...behind [him] prayer is correct and according to the research of Shami and other jurists (may Allah have mercy on them), acting upon the narration of Imam Malik at the time of necessity, considering it permissible, they even declare marriage valid. So, please decide on this matter: (1) Can the marriage of Hafiz Sahib be declared valid in any way or not? (2) Can a Hanafi at any time, in any state, not act upon the narration of another school of thought? If not, then what did Abdul Hai Lakhnawi write in 'Umda-tur-Ri'aya' that 'incidentally one can act upon the narration of another school', what does it mean? And if he can, then why would this marriage be invalid? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the school of Hanafi Imams and the majority of noble Imams, waiting for the wife of a missing person (mafqood) is mandatory until such a time passes that the death of the missing person is customarily presumed. Its determination according to the fatwa, supported by authentic Hadith, is that seventy years should have passed from the day of the birth of the missing person. Imam Malik (may Allah be pleased with him) also gives the same ruling regarding the property of a missing person, but regarding the wife, he differs. Yet, his school is certainly not what some ignorant people or even some claimants of knowledge have misunderstood—that four years have passed since the disappearance and the woman marries of her own accord. Rather, his school is that the wife of the missing person should file a case before the Sharia judge (Qadi). After investigation, the judge gives a period of four years from his side starting from the day of filing. The woman should spend these days, then appeal again, and the judge, after investigation, should effect a separation. After that, the woman should observe the waiting period (Iddah) and then she can marry. Imam Malik himself has clarified this in his book 'Al-Mudawwanah' and clearly stated that even if twenty years have passed before filing the case, they will not be counted at all; four years will be taken from today. A Hanafi can act upon this at the time of realizing a true necessity, but not on an invented claim that is not even the school of Imam Malik—and then name it as acting upon the school of Imam Malik. Its example is the ruling in the Hanafi school for the wife of an impotent person (Innin) that she should file a case before the judge. After investigation, the judge gives a period of one full year from his side. When the year passes and the objective is not achieved, the woman appeals again. After investigation, the judge instructs the husband to give a divorce. If he refuses, he asks the woman, "Do you choose yourself or the husband?" If she immediately chooses

herself, the judge effects a separation between them. The woman observes the Iddah and can now marry whomever she wishes. If twenty years had passed before the judge's deferment, they would not be considered at all; one full year will be taken from today. If the wife of an impotent person leaves him after a year from the time of marriage on her own and marries another, can anyone say that she acted upon the Hanafi school? Did her marriage occur validly? God forbid (not so). And we ask Allah for forgiveness and well-being. The investigation of all these matters is in our fatwas and the treatise 'Al-Liwa-ul-Ma'qood li-Bayan Hukm Imra-at-il-Mafqood'. And Allah the Almighty knows best.

जिल्द तेरह - १३ फ़तावा रज़विया

...पीछे नमाज़ दुरुस्त बताते हैं और शामी और अन्य फ़ुक़हा (अल्लाह उन पर रहम करे) के शोध के अनुसार, ज़रूरत के वक्त इमाम मालिक की रिवायत पर अमल करना जायज़ समझकर निकाह को भी जायज़ करार देते हैं, पस आप इस मामले का फ़ैसला फरमाएं (१) क्या हाफ़िज़ साहब का निकाह किसी सूरत जायज़ करार दिया जा सकता है या नहीं? (२) क्या हनफ़ी किसी वक्त किसी हालत में भी किसी दूसरे मज़हब की रिवायत पर अमल नहीं कर सकता, अगर नहीं कर सकता तो अब्दुल हई लखनवी ने 'उम्दतुर रिआया' में जो लिखा है कि इत्तिफ़ाक़न दूसरे मज़हब की रिवायत पर अमल कर सकता है, इसका क्या मतलब है, और अगर कर सकता है तो यह निकाह क्यों नाजायज़ होगा? बयान फ़रमाएं और सवाब पायें।

अल जवाब: हनफ़ी इमामों और जमहूर इमामों के मज़हब में मफ़क़ूद (लापता व्यक्ति) की बीवी पर इंतज़ार फ़र्ज़ है यहाँ तक कि इतना समय बीत जाए कि सामान्य रूप से मफ़क़ूद की मौत का गुमान हो। फ़तवा के अनुसार इसकी अवधि, जो सही हदीस से समर्थित है, यह है कि मफ़क़ूद के जन्म के दिन से सत्तर वर्ष बीत गए हों। इमाम मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी मफ़क़ूद के माल के बारे में यही हुक्म देते हैं लेकिन बीवी के बारे में अलग राय रखते हैं। फिर भी, उनका मज़हब हरगिज़ वह नहीं है जो आजकल के जाहिलों बल्कि कुछ इल्म के दावेदारों ने समझ रखा है कि मफ़क़ूद हुए चार साल बीत गए और औरत ने अपनी मर्जी से निकाह कर लिया। बल्कि उनका मज़हब यह है कि मफ़क़ूद की बीवी शरीयत के काज़ी के सामने मुक़दमा पेश करे। काज़ी तहक़ीक़ के बाद मुक़दमे के दिन से अपनी ओर से चार साल की मोहलत दे। औरत ये दिन गुज़ारे, उसके बाद फिर फरियादी हो और काज़ी तहक़ीक़ के बाद तफ़रीक़ (जुदाई) कर दे। उसके बाद औरत इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में बैठे, फिर निकाह कर सकती है। खुद इमाम मालिक ने अपनी किताब 'मुदव्वना' में इसकी स्पष्ट व्याख्या की है और साफ़ तौर पर फ़रमाया है कि मुक़दमा पेश करने से पहले भले ही बीस साल बीत गए हों, वे गिनती में नहीं आएंगे; आज से चार साल गिने जाएंगे। हनफ़ी सही ज़रूरत के समय इस पर अमल कर सकता है, न कि अपनी एक मनगढ़ंत बात पर जो हरगिज़ इमाम मालिक का मज़हब नहीं है— और उसे इमाम मालिक के मज़हब पर अमल का नाम दे। इसकी मिसाल यह है कि हनफ़ी मज़हब में इन्नीन (नपुंसक) की बीवी के लिए हुक्म है कि वह काज़ी के सामने मुक़दमा पेश करे। काज़ी तहक़ीक़ के बाद अपनी ओर से एक साल की मोहलत दे। जब साल बीत जाए और मकसद हासिल न हो, औरत फिर मुक़दमा करे। काज़ी तहक़ीक़ के बाद शौहर को तलाक़ देने का निर्देश दे। अगर वह

न माने तो औरत से पूछे कि तू अपने आप को चुनती है या शौहर को? अगर वह फौरन खुद को चुन ले तो काज़ी उनके बीच जुदाई कर दे। औरत इद्दत में बैठे और अब जिससे चाहे निकाह कर ले। काज़ी की मोहलत से पहले अगर बीस साल बीत गए हों, उनका बिल्कुल ख्याल नहीं किया जाएगा; आज से एक पूरा साल लिया जाएगा। क्या अगर किसी इन्नीन की बीवी निकाह के समय से साल भर बाद अपनी मर्जी से उसे छोड़कर चली जाए और दूसरा निकाह कर ले, तो क्या कोई कह सकता है कि उसने हनफ़ी मज़हब पर अमल किया? क्या उसका यह निकाह जायज़ हुआ? हरगिज़ नहीं (हाशा)। और हम अल्लाह से माफ़ी और सलामती मांगते हैं। इन तमाम मसलों की तहक़ीक़ हमारे फ़तावा और रिसाला 'अल-लिवा-उल-मअक़ूद लि-बयान हुक्म इमरा-अतिल-मफ़क़ूद' में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

پیچھے نماز درست بتاتے ہیں اور مطابق تحقیق شامی و دیگر فقہاء رحمہم اللہ امام مالک کی روایت پر عمل کر لینا بوقتِ ضرورت جائز سمجھ کر نکاح بھی جائز قرار دیتے ہیں، پس آپ اس امر کا فیصلہ فرمائیں: (۱) کیا حافظ صاحب کا نکاح کسی صورت جائز قرار دیا جا سکتا ہے یا نہیں؟ (۲) کیا حنفی کسی وقت کسی حالت میں بھی کسی دوسرے مذہب کی روایت پر عمل نہیں کر سکتا، اگر نہیں کر سکتا تو عبدالحہ لکھنوی نے عمدۃ الرعایہ میں جو لکھا ہے کہ اتفاقاً دوسرے مذہب کی روایت پر عمل کر سکتا ہے 'اس کا کیا مطلب ہے، اور اگر کر سکتا ہے تو یہ نکاح کیوں ناجائز ہوگا؟ بینوا توجروا

الجواب: مذہب ائمہ حنفیہ و جمہور ائمہ کرام میں زنِ مفقود پر انتظار فرض ہے یہاں تک کہ اتنا زمانہ گزر جائے کہ عادۃً موتِ مفقود مظنون ہو اور اس کی تقدیر مفتی بہ مؤید بحدیث صحیح یہ ہے کہ روزِ ولادت مفقود سے ستر سال گزر جائے ، امام مالک رضی اللہ عنہ بھی دربارہ مالِ مفقود یہی حکم دیتے ہیں مگر دربارہ زن خلاف کرتے ہیں پھر بھی ہر گز یہ ان کا مذہب نہیں جو آج کل کے جاہل بلکہ بعض مدعیانِ علم نے سمجھ رکھا ہے کہ مفقود ہوئے چار برس گزرے اور عورت بطور خود نکاح کر لے بلکہ ان کا مذہب یہ ہے کہ زنِ مفقود قاضیِ شرع کے حضور مرافعہ کرے قاضی بعدِ تحقیق روزِ مرافعہ سے چار برس کی مہلت اپنی طرف سے دے، عورت یہ دن گزارے، اس کے بعد پھر مستغیث ہو اور قاضی بعدِ تحقیق تفریق کرے ، اسکے بعد عورت عدت بیٹھے پھر نکاح کر سکتی ہے ، خود امام مالک نے اپنی کتاب مدونہ میں اس کی تصریح فرمائی اور صاف ارشاد فرمایا کہ مرافعہ سے پہلے اگرچہ بیس برس گزر گئے وہ اصلاً شمار میں نہ آئیں گے، آج سے چار برس لئے جائیں گے، حنفی وقتِ تحقق ضرورتِ صحیحہ اس پر عمل کر سکتا ہے نہ یہ

کہ اپنی ایک اختراعی بات پر کہ ہر گز امام مالک کا بھی مذہب نہیں، چلو اور مذہب امام مالک پر عمل کا نام لو ، اس کی نظیر یہی ہے کہ مذہب حنفی میں زنِ عنین کے لئے حکم ہے کہ قاضی کے حضور مرافعہ کرے قاضی بعدِ تحقیق اپنی طرف سے ایک سالِ کامل کی مہلت دے، جب سال گزر جائے اور مطلب حاصل نہ ہو عورت پھر مرافعہ کرے، قاضی بعدِ تحقیق شوہر کو طلاق دینے کی ہدایت فرمائے ، اگر وہ نہ مانے عورت سے پوچھے تو اپنے نفس کو اختیار کرتی ہے یا شوہر کو؟ اگر وہ فوراً اپنے نفس کو اختیار کرے قاضی ان میں تفریق کر دے ، عورت عدت بیٹھے اور اب جس سے چاہے نکاح کر لے، تا جیل قاضی سے پہلے اگر بیس برس گزر گئے ہیں ان کا اصلاً لحاظ نہ ہوگا آج سے ایک سالِ کامل لیا جائے گا۔ کیا اگر کسی عنین کی عورت بطورِ خود وقتِ نکاح سے سال بھر کے بعد اسے چھوڑ کر چل دے اور دوسرا نکاح کر لے کیا کوئی کہہ سکتا ہے کہ اس نے مذہب حنفی پر عمل کیا، کیا اس کا یہ نکاح جائز واقع ہوا، حاشا (ایسا نہیں ت) ونسئل اللہ العفو والعافیۃ ان تمام مسائل کی تحقیق ہمارے فتاوٰی اور رسالہ اللواء المعقود لبیان حکم امرأۃ المفقود میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Rizvia | Vol 13

Chapter on Lineage (Explanation of Lineage)

23 Dhu al-Hijjah 1311 AH

Issue 113: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married a widow, believing her to be reputable and virtuous in ignorance. After five months, a live girl was born from the womb of this woman, appearing to be full-term, i.e., there is no difference in any of the child's limbs. All women and men say that such a child cannot be born five months after marriage, but rather the pregnancy presumably seems to predate the marriage. The woman's statement is that this pregnancy is from my husband. Zaid, the husband, did not notice any signs for a month and a half after the marriage; it was only when the woman spoke that he realized. In this situation, should Zaid leave this woman or let her stay? And if he leaves her thinking about his own reputation, is Zaid obligated to pay the dower (Mahr) to this woman or not? And does the marriage with the woman remain or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If the woman claims that this pregnancy was from the same husband and says that the marriage took place more than six months before the birth, or states it is more than six months and also takes an oath with it, then her statement will be considered credible. This girl will be attributed to the same husband, and there will be absolutely no defect in the marriage. If the husband claims the duration between his marriage to the woman and the birth was less than six months, his claim will absolutely not be heard. Even if he provides witnesses for his statement, they will not be heard.

Page 349 of 688

फतावा रिज़विया | खंड 13

वंश का अध्याय (वंश का वर्णन)

23 ज़ुल-हिज्जा 1311 हिजरी

मसला 113: इस मसले में दीन के उलेमा क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने एक विधवा औरत को अज्ञानता में प्रतिष्ठित और नेक समझकर उसके साथ निकाह किया और पांच महीने बाद उस औरत के पेट से एक ज़िंदा लड़की पैदा हुई जो पूरे दिनों की लगती है, यानी बच्ची के किसी अंग में कोई कमी नहीं है। सभी औरतें और मर्द कहते हैं कि ऐसा बच्चा निकाह के पांच महीने बाद नहीं हो सकता, बल्कि यह गर्भ कयासन (अनुमानत) निकाह से पहले का मालूम होता है। औरत का बयान यह है कि यह गर्भ मेरे पति का ही है। ज़ैद यानी पति को निकाह के डेढ़ महीने बाद तक कोई लक्षण मालूम नहीं हुए; जब उस औरत ने बयान किया तो मालूम हुआ। इस सूरत में क्या ज़ैद उस औरत को छोड़ दे या रहने दे? और अगर वह अपनी बदनामी के ख्याल से उसे छोड़ दे, तो क्या ज़ैद पर उस औरत का मेहर (दीन मेहर) देना वाजिब है या नहीं? और क्या औरत के साथ निकाह बरकरार रहा या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: औरत जो दावा करती है कि यह गर्भ उसी पति से था, अगर वह कहती है कि उसकी पैदाइश से छह महीने पहले निकाह हो गया था, या छह महीने से अधिक बताती है और इसके साथ कसम भी खाती है, तो उसकी बात विश्वसनीय मानी जाएगी। यह लड़की उसी पति की मानी जाएगी और निकाह में मूल रूप से कोई खराबी नहीं आएगी। पति का अपनी निकाह और औरत के साथ बच्चे की पैदाइश के बीच छह महीने से कम का अंतर बताना बिल्कुल भी नहीं सुना जाएगा। अगर वह अपने बयान पर गवाह भी देगा, तो उन्हें नहीं सुना जाएगा।

पृष्ठ 349 का 688

فتاویٰ رضویہ | جلد سیز دہم

باب النسب (نسب کا بیان)

۲۳ ذی الحجہ ۱۳۱۱ھ

مسئلہ ۱۱۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک بیوہ عورت کو لاعلمی میں معتبر و نیکبخت جان کر اس کے ساتھ نکاح کیا اور بعد پانچ ماہ کے اس عورت کے بطن سے ایک لڑکی زندہ پورے دنوں کی سی یعنی اس بچی کے کسی عضو میں کسی طرح فرق نہیں ہے پیدا ہوئی اور جملہ عورات و مردگان کہتے ہیں کہ ایسا بچہ نکاح کرنے کے بعد پانچ ماہ کا نہیں ہوسکتا بلکہ وہ حمل قیاساً نکاح کرنے سے پہلے کا معلوم ہوتا ہے اور عورت کا یہ بیان ہے کہ یہ حمل میرے شوہر کا ہے اور زید یعنی خاوند کو کوئی آثار بعد نکاح ڈیڑھ ماہ تک نہیں معلوم ہوئے جب اس عورت نے بیان کیا تو معلوم ہوا، اس صورت میں زید اس عورت کو چھوڑ دے یا رہنے دے، اور اگر اپنی بدنامی کا خیال کرکے چھوڑ دے تو دین مہر اس عورت کا ذمہ زید واجب الادا ہے یا نہیں، اور نکاح عورت سے رہا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: عورت جو دعویٰ کرتی ہے کہ یہ حمل اسی شوہر سے تھا اگر یوں کہتی ہے کہ اس کی پیدائش سے چھ مہینے پہلے نکاح ہو گیا تھا، یا چھ مہینے سے زائد بتائے اور اس کے ساتھ قسم بھی کھائے تو اس کا قول معتبر ہوگا اور یہ لڑکی اسی شوہر کی ٹھہرے گی اور نکاح میں اصلاً خلل نہ آئے گا شوہر اس کی پیدائش اور عورت کے ساتھ اپنے نکاح میں چھ مہینے اسے کم فاصلہ بتایا کرے اصلاً نہ سنا جائے گا اگر اپنے بیان پر گواہ بھی دے گا مسموع نہ ہونگے

Rather, it will be decided that the secret marriage took place as the woman claims, and then they remarried publicly, as described by the husband and his witnesses. It is stated in 'Durr al-Mukhtar':

[Box 1] If a woman in her iddah (waiting period) gives birth and there's a dispute between the husband and wife regarding the duration of the pregnancy, with the woman claiming it's been six months since the marriage and the husband claiming a shorter period, then the woman's statement is accepted without an oath. According to the Sahibayn (Imams Abu Yusuf and Muhammad), an oath will be taken from the woman, and the child will be attributed to the man so that the woman's situation remains upright (islah). [Summary]

In 'Radd al-Muhtar' it is stated:

[Box 2] Witnesses from the husband's side or his heirs regarding the date of marriage will not be heard to support his claim, because in essence, this is a testimony to a negation, which is not acceptable. Every possible means should be used to establish lineage (nasab), and here it is possible that a secret marriage with a small dowry (mahr) occurred first (as the wife claims), followed by a public marriage with a larger dowry to inform the people (as the heirs and witnesses claim), which often happens. (T)

In this case, if Zaid leaves the woman, the full fixed dowry will be mandatory. If the woman does not provide an explanation under oath but instead claims she conceived after that marriage (which hasn't lasted six months until the birth of the daughter), or admits to it before marriage, or says nothing and just keeps claiming the daughter is from this husband, then her statement will not be heard at all. This girl cannot be attributed to this husband because a child cannot stay in the womb for less than six months. Nor can she be attributed to the first husband because, according to the questioner, more than four years have passed since his death when the girl was born, and no child stays in the womb for more than two years. However, the girl will not be called illegitimate (walad al-zina) either.

1. Durr al-Mukhtar, Section on Establishment of Lineage, Matba' Mujtabai Delhi, 1/262.
2. Radd al-Muhtar, Section on Establishment of Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/627.

बल्कि यूं क़रार देंगे कि ख़ुफ़िया निकाह तो उस औरत का हो लिया था जिसका औरत दावा करती है और उसके बाद एलानिया निकाह आपस में फिर किया जिसका बयान शौहर और उसके गवाह करते हैं, दर्र-ए-मुख़्तार में है:

[बॉक्स 1] अगर मोअतदा का बच्चा पैदा हो फिर शौहर और बीवी में मुद्दत-ए-हमल में इख़्तिलाफ़ हो, औरत कहे कि छह माह मुकम्मल हो गए हैं कि तुमने मुझसे निकाह किया है, और शौहर छह माह से कम मुद्दत का दावा करे तो इस सूरत में बीवी की बात बिला-क़सम मोअतबर होगी, साहिबैन के नज़दीक औरत से क़सम ली जाए और बच्चा उस शख़्स का क़रार पाएगा ताकि औरत का मामला इस्लाह पर रहे। [ख़ुलासा]

रद्द-उल-मुह्तार में है:

[बॉक्स 2] शौहर और उसके वारिसों की तरफ़ से बीवी के निकाह की तारीख़ पर गवाही नहीं ली जाएगी कि शौहर सच्चा है क्योंकि माअनी यह शहादत नफ़ी पर है जो मक़बूल न होगी, और नसब के इसबात के लिए बक़दरे इमकान हीला किया जाना चाहिए और वह यहाँ मौजूद है। हो सकता है कि पहले पोशीदा तौर पर क़लील महर के साथ निकाह किया गया हो (जैसे बीवी कहती है), और बाद में लोगों को मुत्तला करने के लिए एलानिया ज़्यादा महर के साथ दोबारा निकाह किया हो (जैसे कि वारिस और गवाह कहते हैं) और बहुत दफ़ा ऐसा होता रहता है। (त)

इस सूरत में अगर ज़ैद औरत को छोड़ देगा तो तमाम-ओ-कमाल महर जितना बंधा था लाज़िम आएगा और अगर औरत मजकूरह ब-क़सम बयान नहीं करती बल्कि उसी निकाह के बाद जिसे पैदाइश-ए-दुख़्तर तक छह महीने न गुज़रे थे हमल रहना कहती है या पेश अज़ निकाह मानती है या कुछ नहीं कहती सिर्फ़ यूँ ही दावा किए जाती है कि यह दुख़्तर इसी शौहर से है तो उसका कहना हरगिज़ मस्मुअ न होगा और यह लड़की इस शौहर से हरगिज़ नहीं ठहर सकती कि बच्चा छह महीने से कम पेट में नहीं रह सकता, न शौहर-ए-अव्वल की ठहर सकती है कि हस्बे बयान-ए-साइल उसकी मौत को चार बरस से ज़्यादा गुज़र चुके थे जब लड़की पैदा हुई और कोई बच्चा दो बरस से ज़्यादा पेट में नहीं रहता, मगर लड़की वल्द-उज़-ज़िना भी न कही जाएगी।

1. दर्र-ए-मुख़्तार, फ़स्ल फ़ी सुबूत-उन-नसब, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/262.

2. रद्द-उल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ी सुबूत-उन-नसब, दार एह्ऐया-उत-तुरास-उल-अरबी बैरूत, 2/627.

पृष्ठ ३५० / ६८८

بلکہ یوں قرار دیں گے خفیہ نکاح تو اس عورت کا ہو لیا تھا جس کا عورت دعوٰی کرتی ہے اور اس کے بعد علانیہ نکاح آپس میں پھر کیا جس کا بیان شوہر اور اس کے گواہ کرتے ہیں، در مختار میں ہے:

[باکس 1] لو ولدت فاختلفا فی المدۃ فقالت المرأۃ نکحتنی منذ نصف حول وادعی الاقل فالقول لھا وقال تحلف والو لدابنہ حملا لھا علی الاصلاح اھ ملخصاً۔ اگر معتدہ کا بچہ پیدا ہو پھر خوند بیوی میں مدت حمل میں اختلاف ہو عورت کہے چھ ماہ منکمل ہوگئے ہیں کہ تونے مجھ سے نکاح کیا ہے، اور خوند چہ ماہ سے کم مدت کا دعوٰی کرے تو اس صورت میں بیوی کی بات بلاقسم معتبر ہوگی، صاحبین کے نزدیک عورت سے قسم لی جائے اور بچہ اس شخص کا قرار پائیگا تاکہ عورت کا معاملہ اصلاح پر رہے اھ ملخصاً۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

[باکس 2] لا تسمع بینتہ ولا بینتہ ورثتہ علی تاریخ نکاحھا بما یطابق قولہ لانھا شھادۃ علی النفی معنی فلا تقبل، والنسب یحتال لا ثباتہ مھما ا مکن والا مکان ھھنا بسبق التزوج بھا سرا بمھر یسیر وجھرا با کثر سمعۃ و یقع ذلک کثیرا۔ خاوند اور اس کے ورثاء کی طرف سے بیوی کے نکاح کے متعلق تاریخ پر گواہی نہ لی جائے گی کہ خوند سچا ہے کیونکہ معنیً یہ شہادت نفی پر ہے جو مقبول نہ ہوگی، اور نسب کے اثبات کے لئے بقدر امکان حیلہ کیا جانا چاہئے اور وہ یہاں موجود ہے ہوسکتا ہے کہ پہلے پوشیدہ طور پر قلیل مہر کے ساتھ نکاح کیا گیا ہو (جیسے بیوی کہتی ہے، اور بعد میں

لوگوں کو مطلع کرنے کے لئے اعلانیہ زیادہ مہر کے ساتھ دوبارہ نکاح کیا ہو (جیسے کہ ورثاء اور گواہ کہتے ہیں) اور بہت دفعہ ایسا ہوتا رہتا ہے۔ (ت)

اس صورت میں اگر زید عورت کو چھوڑ دے گا تمام و کمال مہر جتنا بندھا تھا لازم آئے گا اور اگر عورت مذکورہ بقسم بیان نہیں کرتی بلکہ اسی نکاح کے بعد جسے پیدائش دختر تک چھ مہینے نہ گزرے تھے حمل رہنا کہتی ہے یا پیش از نکاح مانتی ہے یا کچھ نہیں کہتی صرف یونہی دعوٰی کئے جاتی ہے کہ یہ دختر اسی شوہر سے ہے تو اس کا کہنا ہر گز مسموع نہ ہوگا اور یہ لڑکی اس شوہر سے ہرگز نہیں ٹھہر سکتی کہ بچہ چھ مہینے سے کم پیٹ میں نہیں رہ سکتا نہ شوہر اول کی ٹھہر سکتی ہے کہ حسب بیان سائل اس کی موت کو چار برس سے زیادہ گزر چکے تھے جب لڑکی پیدا ہوئی اور کوئی بچہ دوس رس سے زیادہ پیٹ میں نہیں رہتا، مگر لڑکی ولد الزنا بھی نہ کہی جائیگی۔

1 درمختار فصل فی ثبوت النسب مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۲ 2 ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۶۲۷

Fatawa Razawiyyah, Volume 13, Page 351

They will only be called "of unknown lineage," meaning the father is unknown, not that they are known to be from adultery. It is possible that before the current husband, the widow had secretly married someone else and this pregnancy was from him, or someone had intercourse with this woman due to deceit or suspicion, and this girl resulted from that intercourse. In both these cases, the girl will not be considered illegitimate (born of adultery). And since it is not proven that this pregnancy was from adultery, the woman's marriage to the current husband became invalid (fasid).

[Arabic Box 1]: And it will not be void (batil), as is implied by the text of Bada'i, Al-Bahr, Al-Hindiyyah, and Radd al-Muhtar, as we have explained in the marginal notes of Radd al-Muhtar in the chapter on the establishment of lineage, especially here, because the husband was not aware of her pregnancy, as mentioned by the questioner. Therefore, the discourse of Al-Qunyah and Al-Mujtaba does not apply here. (T)

Now it is mandatory for the husband to leave the woman immediately. In this case, if Zaid had intercourse with the woman, i.e., in the private part, then the lesser of the "customary dower" (Mahr al-Mithl) and the "stipulated dower" (Mahr al-Musamma) will be due. That is, they will see how much dower was fixed and what the customary dower is for this woman; whichever of the two is less will be paid. In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Box 2]: In Al-Zayla'i and others, it is mentioned that if a married woman gives birth in less than six months after marriage, the lineage will not be established from the husband because conception preceded the marriage. The marriage will be declared invalid due to the possibility that this semen was from another valid marriage or a marriage of doubt. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[Arabic Box 3]: In an invalid marriage, customary dower (Mahr al-Mithl) becomes obligatory upon intercourse in the front passage, not by anything else like seclusion (Khalwah). And the customary dower shall not exceed the stipulated amount, even if...

1. Radd al-Muhtar, Section on Establishment of Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/232.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 351

उन्हें केवल "अज्ञात वंश" (मजहूल-उन-नसब) कहा जाएगा, यानी पिता का पता नहीं है, न कि यह कि व्यभिचार (ज़िना) से होना ज्ञात है। यह संभव है कि वर्तमान पति से पहले विधवा ने गुप्त रूप से किसी और से निकाह किया हो और यह गर्भ उसी से हो, या किसी व्यक्ति ने धोखे या संदेह में उस महिला के साथ संभोग किया हो और यह लड़की उस संभोग से हो। इन दोनों स्थितियों में लड़की व्यभिचारिणी (वलद-उल-ज़िना) नहीं होगी। और जब यह सिद्ध नहीं हुआ कि यह गर्भ व्यभिचार से है, तो उस महिला का इस वर्तमान पति से निकाह अमान्य (फ़ासिद) हो गया।

[अरबी बॉक्स 1]: और यह बातिल (शून्य) नहीं होगा जैसा कि 'बदाई', 'अल-बहर', 'अल-हिन्दिया' और 'रद्द-अल-मुह्तार' के उल्लेख से संकेत मिलता है, जैसा कि हमने 'रद्द-अल-मुह्तार' के हाशिए पर वंश स्थापना के अध्याय में स्पष्ट किया है, विशेष रूप से यहाँ क्योंकि पति को उसकी गर्भावस्था का ज्ञान नहीं था जैसा कि प्रश्नकर्ता ने उल्लेख किया है। इसलिए यहाँ 'अल-कुन्या' और 'अल-मुजतबा' का कथन लागू नहीं होता। (टी)

अब पति के लिए अनिवार्य है कि वह महिला को तुरंत छोड़ दे। इस स्थिति में यदि ज़ैद ने महिला से संभोग किया था, यानी गुप्त अंग में, तो 'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) और 'महर-ए-मुसम्मा' (तयशुदा मेहर) में से जो कम होगा, वह देना होगा। अर्थात्, यह देखा जाएगा कि मेहर कितना तय हुआ था और इस महिला का 'महर-ए-मिस्ल' क्या है; इन दोनों में से जो कम हो वह दिया जाएगा। 'रद्द-अल-मुह्तार' में है:

[अरबी बॉक्स 2]: 'अल-ज़ैलई' आदि में है कि यदि निकाह की हुई महिला निकाह के छह महीने से कम समय में बच्चे को जन्म देती है, तो पति से वंश सिद्ध नहीं होगा क्योंकि गर्भधारण निकाह से पहले हुआ था। और निक۷। इस संभावना के आधार पर अमान्य (फ़ासिद) माना जाएगा कि हो सकता है यह गर्भ किसी अन्य वैध निकाह या संदेहपूर्ण निकाह से ठहरा हो। (टी)

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स 3]: फ़ासिऽ निकाह में 'महर-ए-मिस्J' तब अनिवार्य होगा जब पति ने योनि मार्ग से संभोग किया हो, संभोग के अतिरिक्त किसी अन्य तरीके से जैसे कि 'खलवत' (एकांत) से अनिवार्य नहीं होगा। और 'महर-ए-मिस्ल', 'महर-ए-मुसम्मा' से अधिक नहीं होगा, भले ही...

1. रद्द-अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़ी सुबूत-उन-नसब, दार इह्या अत-तुराث अल-अरबी, बेरुत, २/२१४।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۳۵۱

صرف مجھول النسب کہیں گے یعنی باپ معلوم نہیں نہ یہ کہ زنا سے ہونا معلوم ہے کہ ممکن ہے کہ اس شوہر موجود سے پہلے بیوہ نے خفیہ کسی اور سے نکاح کیا ہو یہ حمل اس سے رہا ہو یا کسی شخص نے دھوکے اور شبہ سے اس عورت کے ساتھ ہمبستری کی ہو یہ لڑکی اس جماع کی ہو، ان دونوں صورتوں میں لڑکی ولدالزنا نہ ہوگی، اور جب اس حمل کا زنا سے ہونا ثابت نہ ہوا تو عورت کا نکاح اس شوہر موجود سے فاسد ہو گیا،

[عربی باکس 1]: ولایکون باطلا کما یفیدہ کلام البدائع والبحر والھندیۃ وردالمحتار کما بیناہ علی ھامشہ من باب ثبوت النسب لاسیما ھھنا فان الزوج لم یکن عالماً بحبلھا کما ذکر السائل فلا یتاتی ھھنا کلام القنیۃ والمجتبی۔ اور باطل نہ ہوگا جیسا کہ بدائع، بحر، ہندیہ اور ردالمحتار کے کلام کا مفاد ہے اور جیسا کہ ہم نے ردالمحتار کے حاشیہ پر ثبوت نسب کے باب میں اس کو بیان کیا ہے خصوصاً یہاں کیونکہ خاوند بیوی کے حمل پر مطلع نہ ہوا جیسا کہ سائل نے ذکر کیا ہے، لہذا یہاں قنیہ اور مجتبیٰ کا کلام منطبق نہیں ہوتا۔ (ت)

اب شوہر پر لازم ہے کہ عورت کو فوراً چھوڑ دے اس صورت میں اگر زید نے عورت سے صحبت یعنی خاص فرج میں جماع کیا تھا تو مہر مثل و مہر مسمیٰ سے جو کم ہے وہ دینا آئے گا یعنی یہ دیکھیں گے کہ مہر بندھا کتنا تھا اور اس عورت کا مہر مثل کیا ہے ان دونوں میں جو کم ہے وہ دیا جائے گا، ردالمحتار میں ہے:

[عربی باکس 2]: فی الزیلعی وغیرہ لوولدت المنکوحۃ لاقل من ستۃ اشھر مذتزوجھا لم یثبت النسب لان العلوق سابق علی النکاح ویفسد النکاح لاحتمال انہ من زوج اخر بنکاح صحیح او بشبھۃ[1]۔ زیلعی

وغیرہ میں ہے کہ اگر منکوحہ نکاح کے بعد چھ ماہ سے کم مدت میں بچے کو جنم دے تو خاوند سے نسب ثابت نہ ہوگا کیونکہ نطفہ کا استقرار نکاح سے قبل ہوا، اور نکاح اس احتمال کی بنا پر فاسد قرار پائے گا کہ ہو سکتا ہے کہ یہ نطفہ کسی دوسرے صحیح نکاح یا شبہ نکاح سے ٹھہرا ہو۔ (ت)

درمختار میں ہے:

[عربی باکس 3]: یجب مھر المثل في نکاح فاسد بالوطئ فی القبل لا بغیرہ کالخلوۃ ولم یزد مھر المثل علی المسمی ولو فاسد نکاح میں مہر مثل تب واجب ہوگا جبکہ خاوند نے شرمگاہ میں وطی کی ہو، وطی کے علاوہ کسی اور طریقہ سے مثلاً خلوت سے واجب نہ ہوگا، اور یہ مہر مثل

---

1. ردالمحتار فصل في ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۳۲

Fatawa Razawiya, Volume 13

[Table Top Section] Arabic: If it [the dower] was less than the specified amount, then mahr-ul-mithl (proper dower) becomes mandatory, summarized. And Allah knows best. Urdu: If it is less than the fixed dower, then mahr-ul-mithl will be mandatory, summarized. And Allah Almighty knows best (T).

Masla 114: From Chittagong, Bengal, sent by Sheikh Asghar Ali, Muhalla Qutb Diya, 29 Jumada al-Ula 1311 AH.

[Question Section] Persian: What is your ruling, may Allah have mercy on you, regarding this matter: a virgin woman who has not yet entered into marriage with anyone has given birth to a son. The woman says, "I saw a man in a dream who was with me, and I had a nocturnal emission and became pregnant; this boy is from that." In this case, will her word be accepted or not? And will the boy be considered illegitimate (walad-uz-zina) or what? Give a ruling and be rewarded. Urdu: What is your ruling (may Allah Almighty have mercy on you) on this matter that a young virgin girl has given birth to a child and she says that "I saw a man with me in a dream, due to which I had a nocturnal emission and this child was born from that pregnancy." Will the girl's statement be accepted in this case or not? And will this child be called illegitimate or not? Give a ruling and be rewarded (T).

[Answer Section] Al-Jawab (The Answer): Persian & Arabic: No meaningless statement is in any way acceptable. Becoming pregnant due to intercourse in a dream is a physical impossibility, just as a son being born without a father. In Al-Mizan, Imam al-Arif al-Sha'rani stated: "Verily, a child is not formed except from the fluid of both the man and the woman together, and the formation of a child from a single fluid is among the exclusive characteristics of Isa (Jesus), peace and blessings be upon him." (2) If such claims were accepted, a great trial (fitna) would open up for Muslims. Unrestrained women would do as they please and when held accountable, they would resort to such fabrications, as said by the great Imam, our master Malik bin Anas, may Allah Almighty be pleased with him, in what is most apparent. Urdu: Such a meaningless statement can in no way be accepted. Pregnancy resulting from intercourse in a dream and similarly the birth of a child without a father is a physical impossibility. Imam Arif Sha'rani stated in Al-Mizan that a child is born from the joint fluid of a man and a woman, and the birth of a child from only one's fluid is a unique characteristic of Prophet Isa (peace be upon him). If such a claim were accepted, it would cause great strife among Muslims, and women would do whatever they want

and at the time of accountability, they would start making up such lies, as the great Imam, our master Malik bin Anas, may Allah be pleased with him, said regarding the nullity of marriage with a human woman...

[Footnotes] 1. Dur-e-Mukhtar, Chapter on Mahr (Dower), Mujtabai Press, Delhi, 1/201 2. Al-Mizan al-Kubra, Chapter on the Ruling of Zina (Adultery), Mustafa al-Babi, Egypt, 2/159

फतावा रज़विया, जिल्द 13

[शीर्ष तालिका खंड] अरबी: यदि वह (महर) निर्दिष्ट राशि से कम था, तो महर-उल-मिसल (उचित महर) अनिवार्य हो जाता है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। उर्दू: यदि यह तयशुदा महर से कम है, तो महर-ए-मिसल ही अनिवार्य होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है (त)।

मसाला 114: चटगाँव, बंगाल से, शेख असगर अली, मुहल्ला कुतुब दिया, 29 जमादी-उल-ऊला 1311 हिजरी द्वारा भेजा गया।

[प्रश्न खंड] फारसी: इस मामले में आपका क्या हुक्म है, अल्लाह आप पर रहम करे: एक कुंवारी महिला जिसका अभी तक किसी से निकाह नहीं हुआ है, उसने एक बेटे को जन्म दिया है। महिला कहती है, "मैंने सपने में एक आदमी को देखा जो मेरे साथ था, और मुझे स्वप्नदोष हुआ और मैं गर्भवती हो गई; यह लड़का उसी से है।" इस मामले में, क्या उसकी बात मानी जाएगी या नहीं? और क्या लड़के को वल्द-उज़-ज़िना (अवैध संतान) माना जाएगा या क्या? फतवा दें और पुण्य प्राप्त करें। उर्दू: आप हज़रात (अल्लाह तआला आप पर रहम करे) का इस मसले में क्या इर्शाद है कि एक युवा कुंवारी लड़की ने बच्चे को जन्म दिया है और वह यह कहती है कि "मैंने सपने में एक मर्द को अपने साथ देखा जिसकी वजह से मुझे एहतेलाम (स्वप्नदोष) हुआ और यह बच्चा उस हमल (गर्भ) से पैदा हुआ है," क्या इस सूरत में उस लड़की की बात तस्लीम (स्वीकार) की जाएगी या नहीं? और क्या इस बच्चे को वल्द-उज़-ज़िना कहा जाएगा या नहीं? जवाब दें और सवाब पायें (त)।

[उत्तर खंड] अल-जवाब (उत्तर): फारसी और अरबी: कोई भी बेमानी बात किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं है। सपने में संभोग के कारण गर्भवती होना स्वाभाविक रूप से असंभव है, ठीक वैसे ही जैसे बिना पिता के पुत्र का जन्म होना। अल-मीज़ान में, इमाम अल-आरिफ अल-शअ़रानी ने कहा: "निश्चित रूप से, बच्चा केवल पुरुष और महिला दोनों के तरल (वीर्य) से ही बनता है, और एक ही तरल से बच्चे का बनना ईसा (यीशु) अलैहिस्सलाम की विशेष विशेषताओं में से है।" (2) यदि ऐसे दावों को स्वीकार कर लिया जाए, तो मुसलमानों के लिए एक बड़ा फितना (संकट) पैदा हो जाएगा। बेलगाम औरतें जो चाहेंगी करेंगी और जवाबदेही के समय ऐसे ही झूठ का सहारा लेंगी, जैसा कि महान इमाम, हमारे स्वामी मलिक बिन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया। उर्दू: ऐसी बेमानी बात किसी तरह काबिले-क़ुबूल (स्वीकार्य) नहीं हो सकती कि ख़्वाब में जिमाअ (संभोग) की वजह से हमल का ठहरना और ऐसे ही बग़ैर बाप के बच्चा पैदा होना मुहाले-आदी (प्राकृतिक रूप से असंभव) है। इमाम

आरिफ़ शअ़रानी ने मीज़ान में फ़रमाया कि बच्चा मर्द और औरत के मुश्तरका (संयुक्त) नुत्फ़े से पैदा होता है और सिर्फ एक के नुत्फ़े से बच्चे का पैदा होना हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ही ख़ुसूसियत (विशेषता) है। अगर ऐसी बात तस्लीम कर ली जाए तो मुसलमानों में अज़ीम फ़ितना पैदा हो जाए और औरतें जो चाहें करती रहें और मुआख़ज़े (जवाबदेही) के वक़्त ऐसे झूठ गढ़ना शुरू कर देंगी, जैसा कि इमाम-ए-अजल सय्यदुना मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया यानी जिनका किसी इंसान औरत से निकाह के बत़लान (रद्द होने) के मुतअल्लिक़...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-महर, मत़बा-ए-मुज्तबाई दिल्ली, 1/201 2. अल-मीज़ान अल-कुबरा, बाब हुक्म अल-ज़िना, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/159

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم

[ٹیبل ٹاپ سیکشن] عربی: کان دون المسمی لزم مہرالمثل اھ ملخصا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ اردو: مقرر کردہ مہر سے کم ہو تو مہر مثل ہی لازم ہوگا اھ ملخصا واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۱۴: از چاٹگام ملک بنگالہ مرسلہ شیخ اصغر علی محلہ قطب دیا ۲۹ جمادی الاولی ۱۳۱۱ھ

[سوال کا سیکشن] فارسی: ماقولکم رحمکم اللہ تعالٰی اندریں مسئلہ کہ زن دوشیزہ را کہ ہنوز بحبالہ نکاح کسے نیامدہ است فرزندے آمد زن میگوید کہ بخواب دیدم کہ مردے با من بہم شد و احتلام کردم و بار گرفتم ایں پسر ازاں ست دریں صورت قولش مقبول شود یا نہ و پسر را ولد الزنا دانند یا چہ ؟ بینوا توجروا۔ اردو: آپ حضرات (رحمکم اللہ تعالٰی) کا کیا ارشاد ہے اس مسئلہ میں کہ ایک نوجوان کنواری لڑکی نے بچے کو جنم دیا ہے اور وہ یہ کہتی ہے کہ میں نے خواب میں ایک مرد کو اپنے ساتھ دیکھا جس کی وجہ سے مجھے احتلام ہوا اور یہ بچہ اس حمل سے پیدا ہوا ہے ، کیا اس صورت میں اس لڑکی کی بات تسلیم کی جائے گی یا نہیں اور اس بچے کو ولد الزنا کہا جائے گا یا نہیں۔ بینوا توجروا (ت)

[جواب کا سیکشن] الجواب: فارسی و عربی: ہیچ سخنے بے معنی ہیچ گونہ قابل پذیرائی نیست کہ بجماع خواب بار آور شدن محال عادی ست ،ہمچنانکہ پسر بے پدر بوجود آمدن فی میزان الامام العارف الشعرانی ان الولد لا یتخلق الامن ماء الرجل والمرأۃ معا و تخلق الولد من ماء واحد من خصائص عیسی علیہ الصلوۃ و السلام ۲ اگر امثال ایں دعاوی بگوش قبول آید در فتنہ عظیمہ بروئے مسلمانان کشاید زنان بے قید ہر چہ خواہند کنند و ہنگام مواخذہ بہمجوں اکاذیب واضعہ چنگ زنند کما قال الامام الاجل سیدنا مالك بن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ فیما ھواظھرو اردو: ایسی بے معنی بات

کسی طرح قابل قبول نہیں ہو سکتی کہ خواب میں جماع کی وجہ سے حمل کا ٹھہرنا اور ایسے ہی بغیر باپ بچہ پیدا ہونا محال عادی ہے ، امام عارف شعرانی نے میزان میں فرمایا کہ بچہ مرد اور عورت کے مشترکہ نطفہ سے پیدا ہوتا ہے اور صرف ایک کے نطفہ سے بچہ کا پیدا ہونا حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی ہی خصوصیت ہے ، اگر ایسی بات تسلیم کر لی جائے تو مسلمانوں میں عظیم فتنہ پیدا ہو جائے اور عورتیں جو چاہیں کرتی رہیں گی اور مواخذہ کے وقت ایسے جھوٹ گھڑنا شروع کر دیں گی ، جیسا کہ امام اجل سیدنا مالک بن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا یعنی جن کا کسی انسان عورت سے نکاح کے بطلان کے متعلق

[فٹ نوٹ] ۱ درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۱/۱ ۲ المیزان الکبریٰ باب حکم الزنا مصطفی البابی مصر ۱۵۹/۲

صفحہ 688 میں سے 352

Fatawa Razawiyya Volume 13

[Arabic Text Block] Closer than this—meaning the marriage of a Jinn with a human woman—it is more apparent and detestable that when a woman is found pregnant and asked, 'Who is your husband?', she says, 'From the Jinn.' Thus, corruption in Islam increases. This was narrated by Abu Uthman bin Said bin al-Abbas al-Razi in the book 'al-Ilham wa al-Waswasa'. He said: Muqatil narrated to us from Said bin Dawud al-Zubaydi... and he mentioned it, and in it is a story narrated by my master Ahmad al-Hamawi in 'al-Ghamz'. Whether in such a case the woman should be called an adulteress and the son a child of adultery (illegitimate) or not, the narration of 'Badai' is helpful for the first possibility, i.e., declaring the woman an adulteress and the child a child of adultery. It is stated in 'al-Durr al-Mukhtar' that if a woman observing the iddah (waiting period) of a final divorce (bain) marries during the iddah and gives birth to a child before six months have passed from the marriage, or gives birth to a child two years after the final divorce, then the lineage will not be established for the first husband nor for the second husband, while the marriage will be considered valid (Sahih). (Extracted summary). On this, Allama Shami said that this marriage would be valid according to Imam-e-Azam and Imam Muhammad (may Allah be pleased with them both) and it would be void (Fasid) according to Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him) because when the second husband's...

[Urdu Text Block] A more clear and undesirable matter is that when a woman is found pregnant and she is asked, 'Who has approached you (had intercourse)?', she says, 'My marriage was with a Jinn, due to which this pregnancy exists.' This matter is more undesirable to me because it will cause great strife and corruption in Islam. This was narrated by Abu Uthman bin Said bin Abbas in the book 'al-Ilham wa al-Waswasa'; they narrated it such that Muqatil narrated to me from Said bin Dawud Zubaydi and in it is a story which Syed Ahmad Hamawi mentioned in 'al-Ghamz'. In any case, in such a situation, should this woman be called an adulteress and the child born of adultery or not? The narration of 'Badai' is useful for the first possibility, i.e., declaring the woman an adulteress and the child born of adultery. It is in 'Durr al-Mukhtar' that if a woman observing the iddah of a bain (final) divorce marries during her iddah and gives birth to a child before six months after the marriage, or gives birth to a child two years after the bain divorce, then the lineage will be established for neither the first husband nor the second husband, while the marriage will be declared valid (Sahih). (Extracted summary). Upon this, Allama Shami said that this marriage would be valid according to Imam Azam and Imam Muhammad (may Allah

be pleased with them both) and would be void (Fasid) according to Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him) because when the second husband's...

Footnotes: 1. Al-Mizan al-Kubra, Chapter on the ruling of adultery, Mustafa al-Babi Egypt, 159/2. 2. Al-Ashbah wa al-Nazair, with reference to Abu Uthman in 'Kitab al-Ilham wa al-Waswasa', Ahkam al-Jinn, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/83-582. 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on the establishment of lineage, Matba' Mujtabai Delhi, 1/263.

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवाँ (13)

[अरबी पाठ] इससे अधिक स्पष्ट और नापसंद बात यह है कि जब किसी महिला को गर्भवती पाया जाए और उससे पूछा जाए कि 'किसने तुम्हारे साथ संभोग किया?', तो वह कहे कि 'मेरा निकाह जिन्न से हुआ है जिसकी वजह से यह गर्भ है'। मुझे यह बात अधिक नापसंद इसलिए है क्योंकि इससे इस्लाम में बड़ा फ़ितना और फसाद पैदा होगा। इसे अबू उस्मान बिन सईद बिन अल-अब्बास अल-राज़ी ने 'किताब अल-इल्हाम वल-वसवसा' में रिवायत किया है। उन्होंने इस प्रकार वर्णन किया कि 'मुझे मुकातिल ने सईद बिन दाऊद अल-ज़ुबैदी से बताया...' और इसमें एक कहानी है जिसे मेरे स्वामी अहमद अल-हमवी ने 'अल-ग़मज़' में उल्लेख किया है। बहरहाल, क्या ऐसी स्थिति में महिला को व्यभिचारिणी और बच्चे को नाजायज कहा जाए या नहीं? 'बदाए' की रिवायत पहली संभावना यानी महिला को व्यभिचारिणी और बच्चे को नाजायज करार देने के लिए उपयोगी है। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है कि यदि एक बाइन (अंतिम) तलाक वाली इद्दत वाली महिला इद्दत के दौरान निकाह कर ले और निकाह के छह महीने से पहले बच्चे को जन्म दे, या बाइन तलाक के दो साल बाद बच्चे को जन्म दे, तो वंश न तो पहले पति से साबित होगा और न ही दूसरे पति से, जबकि निकाह सही माना जाएगा। यह सारांश है। इस पर अल्लामा शामी ने कहा कि यह निकाह इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार सही होगा, और इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार फ़ासिद (अमान्य) होगा क्योंकि जब दूसरे पति का...

[उर्दू पाठ] ज्यादा स्पष्ट और नापसंद बात यह है कि जब किसी औरत को हामला (गर्भवती) पाया जाए तो उससे पूछा जाए कि 'तुझसे किसने कुर्बत (संभोग) की है?' तो वह कहे कि 'मेरा निकाह जिन्न से हुआ है जिसकी वजह से यह हमल (गर्भ) है'। मुझे यह बात ज्यादा नापसंद इसलिए है कि इसकी वजह से इस्लाम में अज़ीम (महान) फ़ितना व फ़साद बरपा हो जाएगा। इसको अबू उस्मान बिन सईद बिन अब्बास ने 'किताब अल-इल्हाम वल-वसवसा' में रिवायत किया है। उन्होंने यूँ बयान किया कि मुझे मुकातिल ने सईद बिन दाऊद ज़ुबैदी से बयान किया है और इसमें एक किस्सा है जिसको सैय्यद अहमद हमवी ने 'ग़मज़' में ज़िक्र किया है। बहरहाल ऐसी सूरत में उस औरत को ज़ानिया और बच्चे को वलद-उज़-ज़िना (नाजायज) कहा जाए या न? 'बदाए' की रिवायत पहले एहतमाल (संभावना) यानी औरत को ज़ानिया और बच्चे को वलद-उज़-ज़िना करार देने के लिए मुफीद है। 'दुर्रे मुख्तार' में है कि अगर बाइना तलाक वाली मोतदा (इद्दत वाली औरत) दौरान-ए-इद्दत निकाह करे और निकाह के बाद छह माह से कब्ल (पहले) बच्चे को जन्म दे, या तलाक-ए-बाइना के दो साल बाद बच्चा जने तो वह

नसब (वंश) न पहले खाविंद (पति) और न दूसरे खाविंद के लिए साबित होगा, जबकि निकाह सही करार पाएगा। (मुल्तकिता-सारांश)। इस पर अल्लामा शामी ने कहा कि यह निकाह इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हा) के नज़दीक सही होगा और इमाम अबू यूसुफ (रज़ियल्लाहु अन्हु) के नज़दीक फ़ासिद (अमान्य) होगा क्योंकि जब दूसरे खाविंद का...

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. अल-मीज़ान अल-कुबरा, व्यभिचार के नियम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 159/2. 2. अल-अश्बाह वन-नज़ायर, अबू उस्मान के हवाले से 'किताब अल-इल्हाम वल-वसवसा' में, अहकाम अल-जिन्न, इदारातुल कुरान कराची, 83/2-582. 3. दुर्रे मुख्तार, वंशावली की स्थापना पर अध्याय, मज़तबा-ए-मुज्तबाई दिल्ली, 263/1.

اقرب من هذا اعنی نکاح الجنی انسیۃ انی اکرہ اذا وجدت امرأۃ حاملا قیل لها من زوجك قالت من الجن فیکثر الفساد فی الاسلام بذلک رواہ ابو عثمن بن سید بن العباس الرازی فی کتاب الالهام والوسوسۃ قال حدثنا مقاتل عن سعید بن داؤد الزبیدی فذکرہ وفیہ قصۃ اورده سیدی احمد الحموی فی الغمز کما آنکہ در ہمچو صورت زن را زانیہ و پسر را زنازادہ گویند یا نہ روایت بدائع مفید اول ست فی الدر المختار لو تزوجت معتدۃ بائن فولدت لاقل من الاقل مذ تزوجت ولاکثر منهما مذبانت لم یلزم الاول ولاالثانی والنکاح صحیح اھ ملتقطاً، قال الشامی صحیح ای عندهما وعند ابی یوسف فاسد لانہ اذا لم یثبت من الثانی کان من الزنا، ونکاح الحامل من الزنا

زیادہ واضح اور ناپسندیدہ بات یہ ہے کہ جب کسی عورت کو حاملہ پایا جائے تو اس سے پوچھا جائے کہ تجھ سے کس نے قربت کی ہے تو وہ کہے کہ میرا نکاح جن سے ہوا ہے جس کی وجہ سے یہ حمل ہے مجھے یہ بات زیادہ ناپسند اس لئے ہے کہ اس کی وجہ سے اسلام میں عظیم فتنہ وفساد برپا ہو جائے گا ، اس کو ابو عثمان بن سعید بن عباس نے کتاب الالہام والوسوسہ میں روایت کیا ہے انہوں نے یوں بیان کیا کہ مجھے مقاتل نے سعید بن داؤد زبیدی سے بیان کیا ہے اور اس میں ایک قصہ ہے جس کو سید احمد حموی نے غمز میں ذکر کیا ہے ، بہرحال ایسی صورت میں اس عورت کو زانیہ اور بچے کو ولد الزنا کہا جائے یا نہ ، بدائع کی روایت پہلے احتمال یعنی عورت کو زانیہ اور بچے کو ولد الزنا قرار دینے کے لئے مفید ہے ، در مختار میں ہے کہ اگر بائنہ طلاق والی معتدہ دوران عدت نکاح کرے اور نکاح کے بعد چھ ماہ سے قبل بچے کو جنم دے یا طلاق بائنہ کے دو سال بعد بچہ جنے تو وہ نسب نہ پہلے خاوند اور نہ دوسرے خاوند کے لئے ثابت ہوگا جبکہ نکاح صحیح قرار پائے گا اھ ملتقطا ، اس پر علامہ شامی نے کہا کہ یہ نکاح امام اعظم

اور امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے نزدیک صحیح ہوگا اور امام ابو یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک فاسد ہوگا کیونکہ جب دوسرے خاوند کا

1 المیزان الکبری باب حکم الزنا مصطفی البابی مصر ۱۵۹/۲ 2 الاشباہ والنظائر بحوالہ ابو عثمان فی کتاب الالہام والوسوسۃ احکام الجن ادارۃ القرآن کراچی ۸۳/۲۔ ۵۸۲ 3 درمختار فصل فی ثبوت النسب مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۳/۱

Fatawa Rizwia Volume 13, Page 13

Correct according to both of them (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad), not according to him (Imam Abu Yusuf), as mentioned in al-Bada'i[1]. The narration of Imam al-Zayla'i and others is useful for the second point, and this is clearer in terms of evidence. In such a grand matter, beautiful caution lies in this: what if the woman had a secret marriage or was involved in intercourse by mistake (shubha), and now, out of modesty, she is covering it up and trying to use false statements? Yes, calling him 'of unknown parentage'—meaning a boy whose father is not known—is found in Radd al-Muhtar regarding al-Zayla'i and others: If a married woman gives birth in less than six months from the time of marriage, lineage is not established because conception preceded the marriage, and the marriage is invalidated due to the possibility that it was from another husband through a valid marriage or a mistake (shubha)[2]. Earlier, after quoting the words of al-Bada'i, it was stated: [The author of] al-Bahr followed him, but the reason was not clear to me, because when lineage is not established from either of them, it is known to be from someone else, and it does not necessarily follow that it is from adultery, due to the possibility of it being by mistake (shubha). Marriage is not valid unless it is known to be from adultery. This is in al-Zayla'i and others until the end, so reflect upon it[3]. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

Lineage will not be established, so the pregnancy will be from adultery, whereas the marriage of a woman pregnant from adultery is valid according to Imam-e-Azam and Imam Muhammad (may Allah have mercy on them) and invalid according to Imam Abu Yusuf. This is similarly mentioned in al-Bada'i. The narration of Imam al-Zayla'i and others is useful for the second possibility, i.e., not calling her an adulteress and the child a child of adultery, and this is also clearer according to the evidence. Moreover, the excellence of caution in such a grand matter lies in this, because it is possible that this woman had a secret marriage or someone had intercourse with her by mistake, and now out of modesty and shame she is covering it up and resorting to false statements, therefore, it is appropriate to declare the child as 'Majhool' (i.e., a child whose father is not known). It is in Radd al-Muhtar that in al-Zayla'i and others it is stated that if a married woman gives birth to a child before the completion of six months after marriage, the lineage of the child will not be established from that husband because this semen is from before the marriage and this marriage will be declared invalid because it is possible that this pregnancy resulted from a valid marriage with another person or intercourse by mistake. He quoted the statement of

al-Bada'i before this and said that the author of al-Bahr followed al-Bada'i, while I could not find the reason for the statement of al-Bada'i because in such a case when the lineage of the child was established neither from the first husband nor from the second...

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Establishing Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/232 [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Establishing Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/33 [3] Radd al-Muhtar, Chapter on Establishing Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/232

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद (रह.) के अनुसार सही है, इमाम अबू युसुफ़ के अनुसार नहीं, जैसा कि अल-बदई'[1] में है। इमाम अल-ज़यल'ई और अन्य का वर्णन दूसरी संभावना यानी उसे व्यभिचारिणी और बच्चे को अवैध न कहने के लिए सहायक है, और सबूत के तौर पर भी यही अधिक स्पष्ट है। ऐसे महत्वपूर्ण मामले में सुंदर सावधानी इसी में है, क्योंकि यह संभव है कि उस महिला ने गुप्त रूप से विवाह किया हो या किसी ने संदेह (शुभा) के आधार पर उसके साथ संभोग किया हो, और अब शर्म और हया के कारण वह इस पर पर्दा डाल रही हो और गलत बयानी कर रही हो। इसलिए बच्चे को 'मजहूल-उल-नसब' (जिसका पिता ज्ञात न हो) मानना ही उचित है। रद अल-मुह्तार में अल-ज़यल'ई और अन्य के हवाले से है: यदि किसी विवाहित महिला ने विवाह के छह महीने पूरे होने से पहले बच्चे को जन्म दिया, तो उस पति से बच्चे का वंश (नसब) साबित नहीं होगा क्योंकि गर्भधारण विवाह से पहले का है, और यह विवाह अमान्य (फ़ासिद) माना जाएगा क्योंकि संभव है कि यह गर्भ किसी अन्य व्यक्ति के साथ वैध विवाह या संदेह के साथ संभोग से ठहरा हो[2]। इससे पहले उन्होंने अल-बदई' के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा: अल-बहर के लेखक ने अल-बदई' का अनुसरण किया है जबकि मुझे अल-बदई' के कथन का कारण समझ में नहीं आया, क्योंकि ऐसी स्थिति में जब बच्चे का वंश न तो पहले पति से साबित हुआ और न ही दूसरे से, तो यह स्पष्ट है कि यह किसी और से है, और यह आवश्यक नहीं है कि वह व्यभिचार (ज़िना) से हो, क्योंकि संदेह (शुभा) की संभावना है। निकाह तब तक वैध नहीं है जब तक यह ज्ञात न हो जाए कि गर्भ व्यभिचार से है। अल-ज़यल'ई आदि में अंत तक यही है, अतः इस पर विचार करें[3]। और अल्लाह, वह पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे बेहतर जानता है।

नसब भी साबित न हुआ तो हमल ज़िना से होगा जबकि ज़िना से हामिला का निकाह इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद रहिमहुमुल्लाह के नज़दीक सही होता है और इमाम अबू यूसुफ के नज़दीक फासिद होता है, बदई' में यूंही मज़कूर है। और इमाम ज़यलई वगैरह की रिवायत दूसरे एहतिमाल यानी ज़ानिया और वलद-उज़-ज़िना न कहने को मुफीद है जबकि दलील के एतबार से भी यही ज़्यादा वाज़ेह है। नीज़ ऐसे अज़ीम मामले में एहतियात की खूबी भी इसी में है, क्यूंकि हो सकता है कि उस औरत ने खुफिया निकाह किया या शुबह में उस से किसी ने वती कर ली हो और अब हया व शर्म की वजह से वो पर्दा पोशी कर रही हो और गलत बयानी से काम ले रही हो इसलिए बच्चा मजहूल (यानी ऐसा बच्चा जिस का बाप मालूम न हो) करार देना ही मुनासिब है। रद-अल-मुह्तार में है कि ज़यलई

वगैरह में है कि अगर किसी मनकूहह ने निकाह के बाद छह माह पूरे होने से कब्ल बच्चे को जन्म दिया तो उस खाविंद से बच्चे का नसब साबित न होगा क्यूंकि ये नुत्फ़ा निकाह से कब्ल का है और ये निकाह फासिद करार पाएगा क्यूंकि हो सकता है कि ये हमल किसी दूसरे शख्स से निकाह सही या शुबह से वती के साथ ठहरा हो। उन्होंने उस से कब्ल बदई' का कलाम नक़ल कर के फरमाया कि बहर में बदई' की इत्तिबा की है जबकि मुझे बदई' के कलाम की वजह मालूम नहीं हो सकी क्यूंकि ऐसी सूरत में जब बच्चे का नसब न पहले खाविंद से साबित हुआ और न ही दूसरे...

[1] रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फी सुबूत अल-नसब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/232 [2] रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फी सुबूत अल-नसब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/33 [3] रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फी सुबूत अल-नसब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/232

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، ص ۱۳

صحیح عند ھما لا عندہ کما فی البدائع ۱ وروایت امام زیلعی و غیرہ مفید ثانی ست و ہمیں است اظہر من حیث الدلیل و ہمدریں ست احتیاط جمیل در ہمچو امر جلیل چہ می رسد کہ زن پنہانی عقد زن و شوئی با کسے بستہ یا بوطی شبہہ مبتلا گشتہ باشد حالا بوجہ حیا تتّر می پوشد بپسخنے باطل می کوشد آری مجہول النسب خواندنش یعنی پسرے کہ پدرش معلوم نیست ففی ردالمحتار فی الزیلعی و غیرہ لو ولدت المنکوحۃ لاقل من ستۃ اشھر مذ تزوجھا لم یثبت النسب لان العلوق سابق علی النکاح و یفسد المنکاح لاحتمال انہ من زوج آخر بنکاح صحیح او بشبھۃ ۲ و پیش ازاں بعد نقل کلام بدائع فرمود تبعہ فی البحر ولم یظھر لی وجھہ لانہ اذ الم یثبت من واحد منھما ، علم انہ من غیرھما ولا یلزم ان یکون من الزنا لاحتمال کونہ بشبھۃ، ولا یصح النکاح الا اذا علم انہ من زنا ففی الزیلعی وغیرہ الی اخرہ فلیتأمل ۳ اھ واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

نسب بھی ثابت نہ ہوا تو حمل زنا سے ہوگا جبکہ زنا سے حاملہ کا نکاح امام اعظم اور امام محمد رحمہما اللہ کے نزدیک صحیح ہوتا ہے اور امام ابو یوسف کے نزدیک فاسد ہوتا ہے بدائع میں یونہی مذکور ہے اھ، اور امام زیلعی وغیرہ کی روایت دوسرے احتمال یعنی زانیہ اور ولد الزنا نہ کہنے کو مفید ہے جبکہ دلیل کے اعتبار سے بھی یہی زیادہ واضح ہے نیز ایسے عظیم معاملہ میں احتیاط کی خوبی بھی اسی میں ہے، کیونکہ ہوسکتا ہے کہ اس عورت نے خفیہ نکاح کیا باشبہہ میں اس سے کسی نے وطی کرلی ہو اور اب حیا و شرم کی وجہ سے وہ پردہ پوشی کر رہی ہو اور غلط بیانی سے کام لے رہی ہو اس لئے بچہ مجہول (یعنی ایسا بچہ جس کا باپ معلوم نہ ہو) قرار دینا ہی مناسب ہے، ردالمحتار میں ہے کہ زیلعی وغیرہ میں ہے کہ اگر کسی منکوحہ نے نکاح کے بعد چھ ماہ پورے ہونے سے قبل بچے کو جنم دیا تو اس خاوند سے بچے کا نسب ثابت نہ ہوگا

کیونکہ یہ نطفہ نکاح سے قبل کا ہے اور یہ نکاح فاسد قرار پائے گا کیونکہ ہو سکتا ہے کہ یہ حمل کسی دوسرے شخص سے نکاح صحیح یا شبہ سے وطی کے ساتھ ٹھہرا ہو، انہوں نے اس سے قبل بدائع کا کلام نقل کرکے فرمایا کہ بحر میں بدائع کی اتباع کی ہے جبکہ مجھے بدائع کے کلام کی وجہ معلوم نہیں ہوسکی کیونکہ ایسی صورت میں جب بچے کا نسب نہ پہلے خاوند سے ثابت ہوا اور نہ ہی دوسرے

۱ ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۳۲/۲ ۲ ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۳/۲ ۳ ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۳۲/۲

Fatawa Razawiyya Volume 13, page 13

...from [him], then it is apparent that it belongs to someone other than both of them, and that 'other' person's involvement does not necessarily mean adultery. It is possible that this pregnancy occurred due to sexual intercourse by mistake (wat'i bi al-shubhah), and this marriage would not be valid until it is known that this pregnancy is from adultery. Then the previous discourse of Zayla'i and others continues until the end. Therefore, one should ponder over this. (End). And Allah, the Glorified and Exalted, knows best. (T)

Issue 115: 4 Rabi' al-Akhir Sharif 1309 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman named Majeedan, a resident of Badaun, fled from her home 22 years ago. It is not known where she remained. After two years, it was found out that she took a job as an ayah (nanny). Consequently, she became pregnant there and made a claim against an Englishman regarding that pregnancy. Later, in Bareilly, she met a person named Asad Ali Khan and gave birth to that child at Asad Ali Khan's place. After the birth, she stayed for a month and then fled leaving the child behind, and again took a job as an ayah. Asad Ali Khan also reached there and passed away there after a few years. After the death of Asad Ali Khan, that woman continued to wander around and several children were born who died. Among them, one boy of fifteen years and one of one year are present. During the period she was meeting this Ali Khan, she was not behind the veil at all. There is no complete witness to her marriage. Mutam Miyan states that when I made Asad Ali Khan feel very ashamed (of the situation), he said that I have performed nikah (marriage). Some people state that it happened in my presence. At that time, her age was twenty-three years, and at the time of nikah, she was ten years old because twenty years have passed since this incident, so their testimony is from the time of their minority. And the boy who is fifteen or sixteen years old, they attribute him to Asad Ali Khan. So, in this situation, the inquiry is whether this woman remained in the marriage of her husband from Badaun or not? And can the reporting of Asad Ali Khan's statement by Mutam Miyan serve as testimony of the marriage contract or not? Is the testimony of a few people, who were minors at the time, reliable or not? And does the boy whom they attribute to Asad Ali Khan belong to him or not? Yes, the time of conception is within the period of his life. In the case of proof of marriage, is that boy an heir to the estate of Asad Ali Khan or not? Only state based on the authority of the Book, you shall be rewarded on the Day of Reckoning.

The Answer: In the questioned situation, Majeedan remains in the marriage of her Badauni husband as per custom, because vagrancy and adultery do not dissolve a marriage. According to the Hadith of Abu Dawud and al-Nasa'i: | It is in the Hadith of Abu Dawud and al-Nasa'i that the husband...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

...से, तो ज़ाहिर है कि उन दोनों के अलावा किसी और का है, और वह 'और' ज़रूरी नहीं कि ज़िना (व्यभिचार) हो, मुमकिन है कि यह गर्भ 'वति बि-अश-शुब्ह' (संदेहास्पद संभोग) की वजह से हुआ हो, और यह निकाह सही नहीं होगा जब तक कि यह मालूम न हो जाए कि यह गर्भ ज़िना से है, फिर ज़ैली आदि का पिछला बयान अंत तक है, अतः इसमें गौर करना चाहिए। अल्लाहु सुब्हानहु व तआला आलम (त)।

मसला 115: 4 रबी-उल-आख़िर शरीफ़ 1309 हिजरी उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मुसम्मात मजीदन, निवासी बदायूँ, को अपने घर से भागे हुए 22 साल हुए। खुदा जाने वह कहाँ-कहाँ रही। दो साल बाद पता चला कि उसने आयागिरी (नर्स/दाई) की नौकरी कर ली। वहाँ वह गर्भवती भी हुई और उस गर्भ का दावा एक अंग्रेज़ पर किया। फिर बरेली में मुसम्मात असद अली ख़ान से मुलाक़ात की और उस गर्भ को असद अली ख़ान के यहाँ जन्म दिया। जन्म के एक महीने बाद वह बच्चे को छोड़कर भाग गई और फिर आयागिरी की नौकरी कर ली। वहाँ असद अली ख़ान भी पहुँचे और कुछ वर्षों बाद वहीं उनका इंतकाल हो गया। असद अली ख़ान के इंतकाल के बाद वह औरत आवारा फिरती रही और कई बच्चे पैदा होकर मर गए। उनमें से एक लड़का पंद्रह साल का और एक साल भर का मौजूद है। जिस समय तक इस अली ख़ान से मुलाक़ात थी, वह हरगिज़ पर्दे में नहीं रही। उसके निकाह का कोई पूर्ण गवाह नहीं है। मुत्तम मियाँ बयान करते हैं कि जब मैंने असद अली ख़ान को बहुत ग़ैरत दिलाई तो उन्होंने कहा कि मैंने निकाह कर लिया है। कुछ लोग बयान करते हैं कि मेरे सामने हुआ था, उस समय उसकी उम्र तेईस साल है और निकाह के समय दस साल थी क्योंकि इस वाकये को बीस साल पूरे हो गए हैं, तो उनकी गवाही नाबालिग़ी के वक़्त की है। और जो लड़का पंद्रह या सोलह साल का है, उसे असद अली ख़ान का बताते हैं। तो इस सूरत में सवाल है कि क्या यह औरत बदायूँ वाले पति के निकाह में रही या नहीं? और क्या मुत्तम मियाँ का असद अली ख़ान के कौल (कथन) को नक़ल करना निकाह की गवाही का काम दे सकता है या नहीं? और कुछ नाबालिग व्यक्तियों की गवाही विश्वसनीय है या नहीं? और वह लड़का जिसे असद अली ख़ान का बताते हैं, उनका है या नहीं? हाँ, गर्भ ठहरने का समय उनके जीवित रहने का समय है। और निकाह के सुबूत की सूरत में क्या वह लड़का असद अली ख़ान की जायदाद का वारिस है या नहीं? केवल किताब के प्रमाण के साथ उत्तर दें, क़यामत के दिन आपको इसका सवाब मिलेगा।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में मजीदन यथावत अपने बदायूँनी पति के निकाह में है, क्योंकि आवारागर्दी और बदकारी (व्यभिचार) निकाह को खत्म नहीं करती। अबू दाऊद और नसाई की हदीस के अनुसार: | अबू दाऊद और नसाई की हदीस में है कि पति...

पृष्ठ 355/688

سے، تو ظاہر ہے کہ دونوں کے علاوہ کسی غیر کا ہے اور وہ غیر ضروری نہیں کہ زنا ہو، ہو سکتا ہے کہ یہ حمل وطی بالشبہ کی وجہ سے ہوا ہو، اور یہ نکاح صحیح نہ ہوگا مگر جب معلوم ہوجائے کہ یہ حمل زنا سے ہے، پھر زیلعی وغیرہ کا گزشتہ کلام آخر تک ہے، پس اس میں غور کرنا چاہیے اھ، واللہ سبحنہ و تعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۱۵: ۴ ربیع الآخر شریف ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ مجیدن ساکنہ بدایوں عرصہ ۲۲ سال ہوا کہ اپنے گھر سے بھاگ کر خدا معلوم کہاں کہاں رہی بعد دو برس کے معلوم ہوا کہ نوکری آیا گیری کرلی چنانچہ وہاں کا حمل بھی رہا اور دعوٰی ایک انگریز پر اس حمل کا کیا پھر بریلی میں مسمی اسد علی خاں سے ملاقات کرلی اور اس حمل کو اسد علی خاں کی یہاں وضع کیا، بعد وضع کے ایک ماہ اور رہی، اور پھر بچہ چھوڑ کر بھاگ گئی، اور نوکری آیا گیری کرلی، وہاں اسد علی خاں بھی پہنچے اور چند سال کے بعد وہیں انتقال کیا، وہ عورت بعد انتقال اسد علی خاں کے آوارہ پھرتی رہی اور کئی بچے پیدا ہو کر مر گئے، ان میں سے ایک لڑکا پندرہ برس کا اور ایک سال بھر کا موجود ہے، جس مدت میں کہ اس علی خاں سے ملاقات تھی پردہ میں ہرگز نہیں رہی اس کے نکاح کا کوئی گواہ کامل نہیں، متم میاں بیان کرتے ہیں کہ میں نے جب اسد علی خاں کو بہت غیرت دلائی تو کہا کہ میں نے نکاح کرلیا ہے۔ چند امیاں بیان کرتے ہیں کہ میرے سامنے ہوا تھا اس کی عمر اس وقت تئیس برس کی ہے اور بوقت نکاح کی دس برس کی تھی کیونکہ اس واقعہ کو بیس برس پورے ہوگئے تو ان کی شہادت بوقت نابالغی کی ہے اور جو لڑکا کہ پندرہ یا سولہ برس کا ہے اس کو اسد علی خاں کا بتاتے ہیں، پس اس صورت میں استفسار ہے کہ یہ عورت بدایوں والے خاوند کے نکاح میں رہی یا

نہیں، اور متم میاں جو اسد علی خاں کے قول کو نقل کرتے ہیں یہ نقل کرنا قول کا شہادت عقد کا کام دے سکتا ہے یا نہیں، اور چند امیاں شخص واحد نابالغ کی شہادت معتبر ہے یا نہیں اور وہ لڑکا جو اسد علی خاں کا بتاتے ہیں ان کا ہے یا نہیں، ہاں زمانہ قرار نطفہ ان کی حیات کا زمانہ ہے اور در صورت ثبوت نکاح کے وہ لڑکا وارث ترکہ اسد علی خاں کا ہے یا نہیں؟ فقط بینوا بسند الکتاب توجروا فی یوم الحساب۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں مجیدن بدستور اپنے شوہر بدایونی کے نکاح میں ہے کہ آوارگی و بدکاری مزیلِ نکاح نہیں، لحدیث ابی داؤد و النسائی | ابوداؤد اور نسائی کی حدیث میں ہے خاوند

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Arabic]: He said, "Indeed I love her." He (the Prophet ﷺ) said, "Then keep her." And in 'al-Durr al-Mukhtar' from 'al-Qunyah': It is not obligatory for the husband to divorce a sinful wife. [Urdu]: He said, "I love my wife," so the Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Then keep her with you." And it is narrated from 'Qunyah' in 'al-Durr al-Mukhtar' that it is not mandatory for a husband to divorce a sinful wife. (T)

And the aforementioned testimony is insufficient because in marriage, when one witness reports an observation and another reports an admission, this discrepancy is shari'a grounds for rejecting the testimony.

[Arabic]: In 'al-Khaniyyah' and then 'al-Hindiyyah', if the matter being testified to is a verbal statement that is not complete without an action, such as marriage, and the witnesses differ regarding the location, time, or the initiation (insha) and admission (iqrar), then their testimony will not be accepted. [End] And in 'Jami' al-Fusulayn', if two witnesses differ such that one of them testifies to the initiation and the other to the admission regarding an act like a crime (jinayah) or a statement attached to an action like marriage, it prevents [acceptance]. [Urdu]: It is stated in 'Khaniyyah' then 'Hindiyyah' that if the matter about which testimony is being given is a statement that is not complete without an action, for example, marriage, then if there is a difference among the witnesses regarding the place or time or its initiation or admission, their testimony will not be accepted. [End] And in 'Jami' al-Fusulayn', it is stated that if two witnesses differ regarding an action such that one testifies to the initiation and the other to the admission, for example, a crime or discrepancy of testimony regarding that statement which is complete upon action, like marriage, then their this [difference is a hindrance].

Footnotes: 1. Sunan Abu Dawud, Book of Marriage, Aftab-e-Alam Press Lahore 1/280; Sunan al-Nasa'i, Marriage of an Adulteress 2/17 and the chapter regarding Khul' 2/70, Anwar Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi. 2. Durr al-Mukhtar, Section on Prohibited Matters, Matba' Mujtabai Delhi 1/190 and 1/252. 3. Fatawa Qadi Khan, Section on Testimony which contradicts the Claim, Nawal Kishore Lucknow 3/529; Fatawa al-Hindiyyah, Chapter Eight on differences between witnesses, Noorani Kutub Khana Peshawar 3/509. F: The words of Sunan Abu Dawud are: "Indeed, my wife does not repel the hand of a toucher." He (the Prophet) said, "Discard her." He said, "I fear my soul will follow her." He said, "Then enjoy her." And on page 17 of Sunan al-Nasa'i also have these same words while on page 71 the words are: "I have a wife who is

more beloved to me than people and she does not repel the hand of a toucher." He said, "Divorce her." He said, "I cannot be patient without her." He said, "Enjoy her." - Nazir Ahmad Saeedi

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी]: उसने कहा, "निश्चित रूप से मैं उससे प्यार करता हूँ।" उन्होंने (पैगंबर ﷺ) कहा, "तो उसे रख लो।" और 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में 'अल-कुन्या' से उद्धृत है: पति के लिए व्यभिचारी पत्नी को तलाक़ देना अनिवार्य नहीं है। [उर्दू]: उसने कहा, "मुझे अपनी पत्नी से प्यार है," तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तो उसे अपने पास रख लो।" और 'दुर-ए-मुख्तार' में 'कुन्या' से उद्धृत है कि व्यभिचारी पत्नी को तलाक़ देना पति पर अनिवार्य नहीं है। (त)

और उपरोक्त गवाही अपर्याप्त है क्योंकि निकाह में जब एक गवाह आँखों देखी घटना का और दूसरा स्वीकारोक्ति (इकरार) का बयान दे, तो यह विसंगति शरीयत के अनुसार गवाही रद्द होने का कारण बनती है।

[अरबी]: 'अल-खानिया' और फिर 'अल-हिंदिया' में उल्लेख है कि यदि वह मामला जिसके बारे में गवाही दी जा रही है, एक ऐसा मौखिक कथन है जो बिना किसी कार्य के पूर्ण नहीं होता, जैसे निकाह, और गवाहों में स्थान, समय, या आरम्भ (इंशा) और स्वीकारोक्ति (इकरार) के बारे में मतभेद हो जाए, तो उनकी गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। [समाप्त] और 'जामी अल-फुसुलैन' में है कि यदि दो गवाहों के बीच मतभेद हो जाए कि उनमें से एक ने आरम्भ की और दूसरे ने स्वीकारोक्ति की गवाही दी, जैसे अपराध (जिनायत) के मामले में, या किसी ऐसे कथन में जो कार्य से जुड़ा हो जैसे निकाह, तो यह [गवाही की स्वीकार्यता को] रोकता है। [उर्दू]: 'खानिया' और फिर 'हिंदिया' में उल्लेख है कि जिस मामले में गवाही दी जा रही है, वह एक ऐसा कथन हो जो बिना किसी कार्य के पूर्ण न हो, जैसे निकाह, तो वहाँ गवाहों के स्थान या समय या इसके आरम्भ या स्वीकारोक्ति में मतभेद हो, तो उनकी गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। [समाप्त] और 'जामी अल-फुसुलैन' में है कि यदि दो गवाहों का किसी कार्य के संबंध में मतभेद हो कि एक ने आरम्भ और दूसरे ने स्वीकारोक्ति की गवाही दी, जैसे अपराध या गवाही का मतभेद उस कथन से संबंधित हो जो कार्य पर पूर्ण हो, जैसे निकाह, तो उनका यह [मतभेद बाधक है]।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. सुनन अबू दाऊद, निकाह की किताब, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/280; सुनन अन-नसाई, व्यभिचारी से विवाह 2/17 और खुलअ से संबंधित अध्याय 2/70, अनवर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची। 2. दुर्र-ए-मुख्तार, हराम चीज़ों का अनुभाग, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/190 और 1/252। 3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, दावे के विरुद्ध गवाही का अनुभाग, नवल

किशोर लखनऊ 3/529; फ़तावा-ए-हिंदिया, गवाहों के बीच मतभेद पर आठवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 3/509। फ़: सुनन अबू दाऊद के शब्द इस प्रकार हैं: "निश्चित रूप से मेरी पत्नी किसी छूने वाले के हाथ को नहीं रोकती।" आपने (पैगंबर ﷺ) फ़रमाया, "उसे छोड़ दो।" उसने कहा, "मुझे डर है कि मेरा मन उसके पीछे लगा रहेगा।" आपने फ़रमाया, "तो उससे लाभ उठाओ।" सुनन अन-नसाई के पृष्ठ 17 पर भी यही शब्द हैं जबकि पृष्ठ 71 पर शब्द इस प्रकार हैं: "मेरे पास एक पत्नी है जो मुझे लोगों में सबसे अधिक प्रिय है और वह किसी छूने वाले के हाथ को नहीं रोकती।" आपने फ़रमाया, "उसे तलाक़ दे दो।" उसने कहा, "मैं उसके बिना सब्र नहीं कर सकता।" आपने फ़रमाया, "उससे लाभ उठाओ।" - नज़ीर अहमद सईदी

पृष्ठ 356/688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[عربی]: قال فانی احبها قال فامسکها وفی الدر المختار عن القنیة لا یجب علی الزوج تطلیق الفاجرة۔

[اردو]: نے کہا مجھے بیوی سے محبت ہے، تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا: تو اسے پاس رکھ لے، اور درمختار میں قنیہ سے منقول ہے فاجرہ بیوی کو طلاق دینا خاوند پر واجب نہیں ہے۔ (ت)

اور شہادت مذکورہ ناکافی ہے کہ نکاح میں جب ایک گواہ معاینہ اور ایک اقرار بیان کرے تو یہ اختلاف شرعاً موجب ردِ شہادت ہے،

[عربی]: في الخانیة ثم الهندیة لو کان المشهود به قولا لا یتم الا بفعل، کالنکاح واختلف الشهود فی المکان والزمان او فی الانشاء والاقرار لا تقبل شهادتهم اھ وفی جامع الفصولین لو اختلف الشاهد بأن شهد احدهما علی الانشاء، والاخر علی اقرار فی فعل کجنایة او قول ملحق بالفعل کنکاح یمنع۔ [اردو]: خانیہ پھر ہندیہ میں ہے جس کے متعلق گواہی دی جارہی ہو وہ ایسا قول ہو جو فعل کے بغیر تام نہ ہو، مثلاً نکاح، تو وہاں گواہوں کا مکان یا زمان یا اس کے انشاء یا اقرار میں اختلاف ہو تو ان کی شہادت مقبول نہ ہوگی اھ، اور جامع الفصولین میں ہے اگر دو گواہوں کا کسی فعل کے متعلق اختلاف ہو کہ ایک نے انشاء اور دوسرے نے اقرار کی گواہی دی مثلاً جنایت یا اختلاف شہادت اس قول سے متعلق جو فعل پر تام ہو، مثلاً نکاح، توان کا یہ [اختلاف مانع ہے]۔

حواشی: ۱۔ سنن ابو داؤد کتاب النکاح آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۸۰، سنن النسائی تزویج الزانیۃ ۲/ ۱۷ وباب ماجاء فی الخلع ۲/ ۷۰ انور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی۔ ۲۔ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۰ و ۱/ ۲۵۲۔ ۳۔ فتاوٰی قاضی خاں فصل الشہادۃ التی تخالف

الدعویٰ نولکشور لکھنؤ ۳/ ۵۲۹، فتاویٰ ہندیہ الباب الثامن فی الاختلاف بین الشاہدین نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۵۰۹۔ فـ: سنن ابو داؤد کے الفاظ یوں ہیں: ان امرأتی لا تمنع ید لامس قال غربہا قال اخاف ان تتبعہا نفسی قال فاستمتع بہا، اور سنن النسائی ص ۱۷ پر بھی یہی الفاظ ہیں جبکہ ص ۷۱ پر الفاظ یوں ہیں: ان عندی امرأۃ ھی احب من الناس الی وھی لا تمنع ید لامس قال طلقہا قال لا اصبر عنہا قال استمتع بہا۔ نذیر احمد سعیدی

صفحہ 356 از 688

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 357

[Arabic Text]: Acceptance of testimony (Summary ended). Chapter 11 on the discrepancy between the claim and the testimony: if one testifies to the marriage and the other to its acknowledgment, it will not be accepted, similar to the ruling in cases of illegal seizure (ghasb).

[Urdu Translation]: Discrepancy in testimony will be a barrier to its acceptance, summarized. In the same work, chapter 11 on the difference between claim and testimony states that if one testifies to the marriage and another to its acknowledgment, it will not be accepted, just as the ruling is in cases of usurpation. (T)

Since the husband's valid bed (marital status) is proven and there is no original proof of Asad Ali Khan's marriage—even assuming a marriage occurred in ignorance, it would be considered an invalid bed, while the valid legal bed remained the point of reference based on the fatwa-giving narration derived from Imam al-Thani, as investigated in Al-Durr al-Mukhtar and clarified in Radd al-Muhtar—then, according to the authentic and widespread (mutawatir) hadith: "The child belongs to the bed (marital relationship) and for the adulterer is deprivation," the boy will legally be established as belonging to that person from Budaun, as long as he does not negate the lineage through li'an (imprecation). He has no relationship with Asad Ali Khan to be his heir. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

Problem 116: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: For how many days is a woman forbidden from remarrying after the death of her husband? If someone marries the said woman during the iddah (waiting period), is that marriage valid or not? And will the children born after the said marriage be considered of legitimate lineage or how? Explain with references from books.

The Answer: If she is pregnant, then until delivery; otherwise, she cannot marry for four months and ten days, as is explicitly stated in the Noble Quran (as a provision has occurred in the Quran regarding this. T):

"And those of you who die and leave wives behind, they shall wait, keeping themselves apart, for four months and ten days." (T)

Footnotes: 1 Jami' al-Fasulayn, chapter on the discrepancy between claim and testimony etc., Islami Kutub Khana Binori Town Karachi, 1/163-164 2 Jami' al-Fasulayn, chapter on the discrepancy between claim and testimony etc., Islami Kutub Khana Binori Town Karachi, 1/165 3 Al-Quran al-Karim, 2/234

फ़तावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 357

[अरबी पाठ]: गवाही की स्वीकृति (सारांश समाप्त)। दावे और गवाही के बीच विसंगति पर अध्याय 11: यदि एक व्यक्ति विवाह की गवाही देता है और दूसरा उसकी स्वीकृति की, तो इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा, जैसा कि अवैध कब्ज़े (ग़स्ब) के मामलों में नियम है।

[उर्दू अनुवाद]: गवाही में विसंगति इसकी स्वीकृति के लिए बाधा होगी, संक्षेप में। इसी में, दावे और गवाही के बीच के अंतर पर अध्याय 11 कहता है कि यदि एक ने निकाह (विवाह) की गवाही दी और दूसरे ने उसकी स्वीकृति की, तो यह स्वीकार्य नहीं होगा जैसा कि ग़स्ब के मामलों में भी यही नियम है। (त)

चूंकि पति का वैध बिस्तर (वैवाहिक स्थिति) सिद्ध है और असद अली खान के निकाह का कोई मूल प्रमाण नहीं है—यह मानते हुए कि अज्ञानता में विवाह हुआ, इसे एक अमान्य बिस्तर माना जाएगा, जबकि वैध कानूनी बिस्तर इमाम अल-थानी से प्राप्त फतवा-प्रदान करने वाली रिवायत के आधार पर संदर्भ का बिंदु बना रहा, जैसा कि 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में इसकी जांच की गई है और 'रद्द अल-मुह्तार' में स्पष्ट किया गया है—तो, प्रामाणिक और मुतवातिर हदीस के अनुसार: "बच्चा बिस्तर (वैवाहिक संबंध) का है और व्यभिचारी के लिए वंचना है," लड़का कानूनी रूप से बदायूँ के उस व्यक्ति का माना जाएगा, जब तक कि वह लिआन (शपथ पूर्वक पितृत्व का खंडन) के माध्यम से वंश का खंडन न करे। उसका असद अली खान से कोई संबंध नहीं है कि वह उसका उत्तराधिकारी बन सके। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे उत्तम है।

मसाला 116: दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले पर क्या फरमाते हैं कि औरत अपने पति की मृत्यु के बाद कितने दिनों तक निकाह करने से मना है? अगर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान कोई व्यक्ति उक्त औरत से निकाह कर ले, तो वह निकाह सही है या नहीं? और उक्त निकाह के बाद पैदा होने वाली औलाद सही नसब (वैध वंश) की समझी जाएगी या कैसे? किताब के हवाले के साथ बयान फरमाएं।

उत्तर: यदि वह गर्भवती है, तो प्रसव तक; अन्यथा वह चार महीने दस दिन तक निकाह नहीं कर सकती, जैसा कि कुरान मजीद में स्पष्ट है (जैसा कि इसके बारे में कुरान करीम में हुक्म आया है। त):

"और तुम में से जो मरें और बीवियां छोड़ें, वे चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रखें।" (त)

पादलेख: 1 जामि अल-फ़सूलैन, दावे और गवाही के बीच विसंगति पर अध्याय आदि, इस्लामी कुतुब खाना बिनोरी टाउन कराची, 1/163-164 2 जामि अल-फ़सूलैन, दावे और गवाही के बीच विसंगति पर अध्याय आदि, इस्लामी कुतुब खाना बिनोरी टाउन कराची, 1/165 3 अल-कुरान अल-करीम, 2/234

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم ۱۳، صفحہ ۳۵۷

قبول الشهادة اھ ملخصاً وفیه من الفصل من اختلاف الدعوی والشهادة لو شهد احدهما بنکاح والاخر باقراربه لا یقبل کغصب ۲۔

اختلاف شہادت کے قبول کرنے کے لئے مانع ہوگا اھ، ملخصاً، اسی میں فصل ۱۱ اختلاف دعوے و شہادت سے ہے کہ ایک نے نکاح اور دوسرے نے اس کے اقرار پر شہادت دی تو یہ مقبول نہ ہوگی جیسا کہ غصب میں بھی یہی حکم ہے۔ (ت)

پس جبکہ شوہر کا فراش صحیحہ ثابت اور اسد علی خاں کے نکاح کا اصلاً ثبوت نہیں کہ بر تقدیر تزوج بحالت ناواقفیت از نکاح غیر فراش فاسد حقیقی ٹھہر کر فراش صحیح حکمی پر بربنائے روایت مفتی بھا ماخوذ للامام الثانی مرجع رہی، کما حققه فی الدر المختار و اوضحه فی رد المحتار (جیسا کہ در مختار میں اس کی تحقیق کی ہے اور ردالمحتار میں اس کی وضاحت کی گئی ہے۔ ت) تو بحکم حدیث صحیح متواتر الولد للفراش وللعاھر الحجر (بچے کا نسب نکاح والے کے لئے ہے اور زانی کے لئے محرومی ہے۔ ت) وہ لڑکا شرعاً اسی بدایونی کا قرار پائے گا مالم ینف لعانا (جب تک لعان سے نسب کی نفی نہ کرے۔ ت) اسد علی خاں سے کوئی علاقہ نہیں رکھتا کہ اس کا وارث ہوسکے واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۱۱۶ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ عورت بعد وفات اپنے شوہر کے کس قدر ایام تک نکاح کرنے سے ممنوع ہے اگر درمیان عدت کے عورت مذکور کے ساتھ کوئی شخص نکاح کرلے تو وہ نکاح صحیح ہے یا نہیں اور اولاد جو نکاح مذکور کے بعد پیدا ہوگی وہ صحیح النسب سمجھی جائیگی یا کیسے؟ بینوا مع حوالہ الکتاب۔

الجواب : اگر حامل ہے تو وضع حمل تک ورنہ چار مہینے دس دن تک نکاح نہیں کر سکتی کما ھو منصوص فی القرآن العزیز (جیسا کہ اس کے بارے میں قرآن کریم میں نص وارد ہوئی ہے۔ ت) :

وَالَّذِیْنَ یُتَوَفَّوْنَ مِنْکُمْ وَیَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا یَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِھِنَّ اَرْبَعَۃَ اَشْھُرٍ وَعَشْرًا ۳۔

اور تم میں جو مریں اور بیبیاں چھوڑیں وہ چار مہینے دس دن اپنے آپ کو روکے رہیں۔ (ت)

حواشی: 1 جامع الفصولین فصل فی الاختلاف بین الدعوٰی والشھادت الخ اسلامی کتب خانہ بنوری ٹاؤن کراچی ۱/ ۶۴- ۱۶۳ 2 جامع الفصولین فصل فی الاختلاف بین الدعوٰی والشھادت الخ اسلامی کتب خانہ بنوری ٹاؤن کراچی ۱/ ۱۶۵ 3 القرآن الکریم ۲/ ۲۳۴

Fatawa Rizvia Volume 13 | Page 13

Marriage during the waiting period ('iddah) is absolutely prohibited. However, if the husband was unaware that the woman was in the 'iddah of another and married her unknowingly, the offspring will be considered legitimate in lineage. But if he knowingly committed this pure forbidden act, then according to Al-Quniyah, Al-Mujtaba, Bahr-ul-Raiq, and others, the requirement is that the offspring be considered illegitimate (born out of wedlock). It is stated in Radd al-Muhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
In 'Bahr', citing 'Mujtaba', it is mentioned that the marriage with another man's wife or a woman in her 'iddah, and having intercourse in such a case, does not necessitate a waiting period if he knew her status at all. Therefore, the prescribed punishment (Hadd) is mandatory upon knowing its prohibition because it is adultery (zina), as mentioned in 'Al-Quniyah' and others. (1)	In 'Bahr' from 'Mujtaba', it is stated that if someone knowingly married and had intercourse with another person's wife or a woman in 'iddah, then a waiting period would not be mandatory for the woman from this act. This is because no one considers such a marriage valid; thus, the marriage was never contracted. Therefore, the prescribed punishment for adultery will be mandatory on the person doing this intentionally because it is adultery, as it is in 'Al-Quniyah' etc. (T)

However, the research is that in this situation, as far as possible, the child will be attributed to the first husband as long as the birth occurs within two years of his death. If it occurs after two years, it will be attributed to the second husband provided it occurs six months after the second marriage and intercourse. If two full years have passed since the first husband's death, and six months have not yet passed since the second marriage and intercourse, the child's lineage will be called unknown (Majhul-ul-Nasab). As cited in Bahr from Badai'. (T)

Arabic Text	Urdu Translation
If he knew, the second marriage is invalid (fasid). Then if she gives birth to a child, the lineage is established from the first husband if its establishment from him is possible, such as if she gives birth in less than	Knowing that this woman is in another's 'iddah, if someone married her, the second marriage would be invalid (fasid). Then if that woman gives birth to a child, the child's lineage will be attributed to the first husband if it is possible to establish it from him; for

Arabic Text	Urdu Translation
two years from the time her first husband divorced her or died. (2)	example, if the child is born within two years of the first husband's divorce or his death, then the lineage will be attributed to the first one. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

Arabic Text	Urdu Translation
However, when it is not possible, such as when she gives birth more than two years after the separation and [after] six months...	But when such is not possible, for example, the birth of the child is two years after the irrevocable divorce (talaq-e-bain) and six months after the second marriage...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/207.
2. Bahr-ul-Raiq, Chapter of Establishment of Lineage, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/158.

इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के भीतर निकाह पूरी तरह से नाजायज़ है। हाँ, अगर शौहर को यह मालूम न था कि औरत दूसरे की इद्दत में है और अनजाने में निकाह कर लिया, तो औलाद सही नसब (वैध वंश) की मानी जाएगी। और अगर जान-बूझकर इस हराम काम का अपराधी हुआ, तो.क़ुनिया, मुजतबा, बहरुर्राइक़ और अन्य ग्रंथों का तक़ाज़ा यह है कि औलाद वलद-उज़्-ज़िना (अवैध) हो। रद-उल-मुह्तार में है:

अरबी पाठ

'बहर' में 'मुजतबा' के हवाले से है कि किसी दूसरे की विवाहिता या इद्दत वाली औरत से निकाह और उसमें संभोग इद्दत को अनिवार्य नहीं करता यदि उसे मूलतः पता हो। इसलिए ह़राम होने के ज्ञान के साथ 'ह़द' (सज़ा) वाजिब होगी क्योंकि यह ज़िना है, जैसा कि :क़ुनिया' आदि में है। (१)

उर्दू अनुवाद

'बहर' में 'मुजतबा' से है कि अगर किसी ने जान-बूझकर किसी दूसरे की विवाहिता या इद्दत वाली औरत से निकाह के बाद संभोग किया, तो उससे औरत पर इद्दत लाज़िम न होगी क्योंकि किसी ने भी इसे जायज़ नहीं कहा है, इसलिए यह निकाह संपन्न ही नहीं होगा। इसलिए जान-बूझकर ऐसा करने वाले पर ज़िना की ह़द वाजिब होगी क्योंकि यह ज़िना है जैसा कि :क़ुनिया' आदि में है। (त)

मगर तह़क़ीक़ (शोध) यह है कि इस सूरत में जहाँ तक मुमकिन हो, औलाद पहले शौहर की ठहरेगी जबकि उसकी मौत के दो साल के अंदर पैदा हुई हो। और अगर दो साल के बाद हुई, तो दूसरे शौहर की क़रार देंगे जबकि निकाह और संभोग के छह महीने बाद हुई हो। और अगर पहले की मौत को पूरे दो साल हो चुके थे, और दूसरे के निकाह और संभोग को अभी छह महीने न हुए हों, तो उसे मजहूल-उन-नसब (अज्ञात वंश) कहेंगे। 'बहर' में 'बदाइअ' से मन्क़ूल (उद्धृत) है। (त)

अरबी पाठ

अगर उसे मालूम था, तो दूसरा निकाह फ़ासिद (अमान्य) होगा। फिर अगर औरत बच्चा जने, तो नसब पहले शौहर से साबित होगा अगर उससे साबित करना मुमकिन हो, जैसे कि पहले की

उर्दू अनुवाद

यह मालूम होते हुए कि यह औरत दूसरे की इद्दत में है, अगर किसी ने उससे निकाह कर लिया तो निकाह-ए-सानी फ़ासिद होगा। फिर अगर वह औरत बच्चा जने तो बच्चे का नसब पहले खाविंद से क़रार दिया जाएगा अगर उससे साबित करना मुमकिन हो, मसलन यूँ कि पहले खाविंद की

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
तलाक़ या मौत के दो साल से कम अर्से में बच्चा पैदा हो। (२)	तलाक़ या उसकी मौत से दो साल के अंदर बच्चा पैदा हो तो नसब पहले का क़रार दिया जाएगा। (त)

रद-उल-मुह्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
लेकिन जब मुमकिन न हो, जैसे कि बच्चा जुदाई (तलाक) के दो साल से अधिक बाद और छह महीने बाद पैदा हो...	लेकिन जब ऐसा मुमकिन न हो, मसलन बच्चे की पैदाइश तलाक़-ए-बाइन से दो साल बाद और दूसरे निकाह से छह माह बाद हो...

1. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-इद्दत, दार इह़या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, २/२०७
2. बहर-उल-रैक़, बाब सुबूत-उन-नसब, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, ३/१५८

पृष्ठ ३५८/६८८

عدت کے اندر نکاح مطلقاً ناجائز ہے، ہاں اگر شوہر کو معلوم نہ تھا کہ دوسرے کی عدت میں ہے نادانستگی میں نکاح کرلیا تو اولاد صحیح النسب سمجھی جائے گی اور دانستہ اس حرام خالص کا مرتکب ہوا تو قنیہ و مجتبٰی و بحر الرائق و غیر ہا کا مقتضٰی یہ ہے کہ اولاد ولد الزنا ہو، ردالمحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فی البحر عن المجتبی ان نکاح منکوحة الغیر و معتدتہ فالدخول فیہ لایوجب العدة ان علم انھا اصلا و لھذا یجب الحد مع العلم بالحرمة لانہ زنا کما فی القنیة وغیرہ ۱۔	بحر میں مجتبٰی سے ہے اگر غیر شخص کی منکوحہ یا معتدہ کو جانتے ہوئے کسی نے اس سے نکاح کے بعد جماع کیا تو اس سے عورت پر عدت لازم نہ ہوگی کیونکہ کسی نے بھی اس کو جائز نہیں کہا اس لئے یہ نکاح منعقد ہی نہ ہوگا اس لئے جان بوجھ کر ایسا کرنے والے پر زنا کی حد واجب ہوگی کیونکہ یہ زنا ہے جیسا کہ قنیہ وغیرہ میں ہے۔(ت)

مگر تحقیق یہ ہے کہ اس صورت میں حتی الامکان اولاد شوہر اول کی ٹھہرے گی جبکہ اس کی موت سے دو برس کے اندر ہوئی ہو اور اگر دو برس کے بعد ہوئی تو شوہر ثانی کی قرار دیں گے جبکہ نکاح ووطی سے چھ مہینے بعد ہوئی ہو اور اگر اول کی موت کو دو سال کامل ہوچکے تھے، اور دوسرے کے نکاح ووطی کو ابھی چھ مہینے نہ ہوئے تو اسے مجہول النسب کہیں گے، فی البحر عن البدائع (بحر میں ہے بدائع سے منقول ہے۔ت)

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فان علم وقع الثانی فاسد فان جاءت بولد فان النسب یثبت من الاول ان امکن اثباتہ منہ بان جاءت بہ لاقل من سنتین منذطلقہا الاول او مات ۲۔	یہ معلوم ہوتے ہوئے کہ یہ عورت غیر کی عدت میں ہے اگر کسی نے اس سے نکاح کرلیا تو نکاح ثانی فاسد ہوگا، پھر اگر وہ عورت بچہ جنے تو بچے کا نسب پہلے خاوند سے قرار دیا جائے گا اگر اس سے ثابت کرنا ممکن ہو، مثلاً یوں کہ پہلے خاوند کی طلاق یا اس کی موت سے دو سال کے اندر بچہ پیدا ہو تو نسب پہلے کا قرار دیا جائیگا۔(ت)

ردالمحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اما اذا لم یمکن بان جاءت بہ لاکثر من سنتین مذبانت ولستۃ اشہر	لیکن جب ایسا ممکن نہ ہو مثلاً بچے کی پیدائش طلاق بائن سے دوسال بعد اور دوسرے نکاح سے چھ ماہ

۱۔ ردالمحتار باب العدۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۰۷ ۲۔ بحر الرائق باب ثبوت النسب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۱۵۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 13

[Boxed text at top] "...since she married, she belongs to the second [husband], as stated in Al-Bahr from Al-Badai'. And Allah Almighty knows best. (Explanation: If it occurred after completion [of iddah], in this case, the child will be attributed to the second person, as reported from Badai' in Al-Bahr. And Allah Almighty knows best. (T))"

Problem 117: 12 Jumada al-Akhirah 1321 AH

What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say about this matter: A person gave an irrevocable divorce (Talaq Ba'in) to his wife, who had stayed with him for fifteen days after marriage, but the man did not have seclusion (khalwat) with her. Two intermediaries, who were fully aware of this situation, took a bribe on the same day and got the woman married to another person. After one year, a boy was born to this woman. At that time, the second husband came to know that the marriage took place before the completion of the waiting period (iddah) days. Now, those people who had the marriage performed by deception are saying that this marriage is not valid. According to the noble Sharia, is the woman's marriage valid or not? If it is not valid, what is the ruling for those who arranged it, along with the husband, wife, and for the boy? Is it forbidden (haram) or not? Please explain and be rewarded.

The Answer:

The meaning of 'khalwat' (seclusion) is that a man and a woman were alone together in a place for a short time where there was no obstacle to intercourse, even if intercourse did not actually take place. If 'khalwat' in this sense had not occurred between those two when the man gave the divorce, then no waiting period (iddah) was necessary for the woman at all. At that very moment, it was permissible to marry her. In this estimation, the second marriage that this woman contracted became valid, and the offspring is legitimate (Walad al-Halal). Yes, if such seclusion had occurred and then divorce took place, and the woman did not observe the waiting period, then the second marriage would be absolutely forbidden (haram qat'i). And all those who were aware of it and participated or assisted in the second marriage have fallen into a great sin (haram 'azeem). If the second husband was unaware that this woman was a divorcee and her waiting period had not yet passed, but only came to know after the birth, as the questioner states, then this child is undoubtedly not a child of adultery (walad al-zina). And even if he was aware and intentionally

committed this act, the child is still not illegitimate. The difference is that in the first case, the child will be considered the child of the second husband, and in the second case, the child of the first husband. It is stated in Durr al-Mukhtar:

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Establishing Lineage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/233.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

[शीर्ष पर बॉक्स किया हुआ पाठ] "...जब से उसने विवाह किया, तो वह दूसरे का है जैसा कि अल-बहर में अल-बदाइ से वर्णित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (स्पष्टीकरण: यदि [इद्दत] पूरा होने पर हुई तो इस स्थिति में बच्चा दूसरे की तरफ़ मंसूब होगा जैसा कि बहर में बदाइ से मनक़ूल है। वल्लाह तआला आलम। (त))"

मसाला 117: 12 जमादि-उल-उख़रा 1321 हिजरी

दीन के विद्वान और शरीयत-ए-मतीन के मुफ्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) दी जो निकाह के बाद उसके पास पंद्रह दिन रही थी, लेकिन मर्द ने उसके साथ ख़लवत (एकांतवास) नहीं की थी। दो बिचौलियों ने, जो इस हाल से पूरी तरह वाकिफ़ थे, उसी दिन रिश्वत लेकर उस औरत का निकाह दूसरे व्यक्ति से करा दिया। एक साल बाद उस औरत से एक लड़का पैदा हुआ। उस समय दूसरे पति को पता चला कि निकाह इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दिन पूरे होने से पहले हो गया था। अब वे लोग जिन्होंने धोखे से उस व्यक्ति का निकाह कराया था, कह रहे हैं कि यह निकाह जायज़ नहीं है। शरीयत-ए-मुतहरा की दृष्टि से औरत का निकाह जायज़ हुआ या नहीं? अगर नहीं हुआ तो कराने वालों के लिए, पति-पत्नी के साथ और उस लड़के के लिए क्या हुक्म है? क्या यह हराम है या नहीं? बस, बयान करें और पुण्य पायें।

अल-जवाब:

ख़लवत के अर्थ यह हैं कि मर्द और औरत दोनों अकेले एक मकान में थोड़ी देर के लिए इकट्ठे हुए हों जहाँ संभोग (मुबाशरत) से कोई रुकावट न हो, चाहे संभोग हुआ न हो। अगर इस अर्थ में उन दोनों के बीच ख़लवत नहीं हुई थी जब मर्द ने तलाक दी, तो औरत पर बिल्कुल भी इद्दत लाज़िम नहीं हुई। उसी समय उससे निकाह कर लेना जायज़ था। इस लिहाज़ से दूसरा निकाह जो उस औरत ने किया वह जायज़ हुआ, और औलाद हलाल है। हाँ, अगर ऐसी ख़लवत हो गई थी और फिर तलाक हुई और औरत ने इद्दत नहीं की, तो दूसरा निकाह कतई हराम हुआ। और जितने लोग इससे वाकिफ़ होकर दूसरे निकाह में शामिल और सहायक हुए, वे सब हराम-ए-अज़ीम (बड़े पाप) में मुब्तिला हुए। यदि दूसरे पति को जानकारी नहीं थी कि यह औरत तलाक़शुदा है और अभी इद्दत नहीं गुज़री है, बल्कि जन्म के बाद जानकारी हुई जैसा कि सवाल पूछने वाले का बयान है, तो यह बच्चा निस्संदेह वलद-उज़-ज़िना (अवैध संतान) नहीं है। और अगर वह भी अवगत था और जानबूझकर इस काम का

अपराधी हुआ, तब भी बच्चा हरामी नहीं है। फ़र्क़ इतना है कि पहली स्थिति में बच्चा दूसरे पति का माना जाएगा और दूसरी स्थिति में पहले पति का। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

1 रद-उल-मुहतार, फ़स्ल फ़ी सुबूत-उन-नसब, दार इहया-उत-तुरास-अल-अरबी, बेरुत, 2/233.

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

[اوپر والے خانے میں تحریر] "مذتزوجت فھو للثانی کمافی البحر عن البدائع ۱۔ واللہ تعالی اعلم۔ پورے ہونے پر ہوئی تو اس صورت میں بچہ دوسرے کی طرف منسوب ہوگا جیسا کہ بحر میں بدائع سے منقول ہے۔ واللہ تعالی اعلم۔(ت)"

مسئلہ ۱۱۷: ۱۲جمادی الاخری ۱۳۲۱ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی زوجہ کو طلاق بائن دی جو اس کے پاس بعد نکاح پندرہ روز رہی تھی مگر مرد نے خلوت اس کے ساتھ نہیں کی، دو اشخاص در میانوں نے کہ جو پورے اس حال سے واقف تھے اسی روز رشوت لے کر دوسرے شخص سے نکاح اس عورت کا کرا دیا، بعد ایک سال کے اس عورت سے ایک لڑکا پیدا ہوا، اس وقت خوند کو معلوم ہوا کہ ایام عدت پورے ہونے سے پہلے نکاح ہو گیا تھا، اب وہ لوگ جنہوں نے اس شخص کا نکاح دھوکے سے کرا دیا تھا کہتے ہیں کہ یہ نکاح جائز نہیں، عورت کا ازروئے شرع شریف کے نکاح جائز ہوا یا نہیں؟ اگر نہیں ہوا تو کیا حکم کرانے والوں کے واسطے مع زوجہ زوج کے اور اس لڑکے کے واسطے؟ آیا حرام ہے یا نہیں؟ فقط، بینوا توجروا۔

الجواب:

خلوت کے معنی یہ ہیں کہ مردو عورت دونوں تنہا ایک مکان میں تھوڑی دیر اکٹھے ہوئے ہوں جہاں مباشرت سے کوئی مانع نہ ہوا گرچہ مباشرت واقع نہ ہو۔ اگر خلوت بایں معنی ان مرد وزن میں نہ ہوئی تھی کہ مرد نے طلاق دے دی تو عورت پر اصلاً عدت لازم نہ ہوئی، اسی وقت اس سے نکاح کر لینا جائز تھا، اس تقدیر پر دوسرا نکاح کہ اس عورت نے کیا جائز ہوا، اور اولاد ولد

الحلال ہے، ہاں اگر ایسی خلوت ہو گئی تھی اور پھر طلاق ہوئی اور عورت نے عدت نہ کی تو نکاح ثانی حرام قطعی ہوا اور جتنے لوگ اس سے واقف ہو نکاح ثانی میں شریک و ساعی ہوئے سب حرامِ عظیم میں مبتلا ہوئے، شوہر دوم کو اگر اطلاع نہ تھی کہ یہ عورت مطلقہ ہے اور ہنوز عدت نہیں گزری ہے بلکہ بعد ولادت پر اطلاع ہوئی جیسا کہ بیان سائل ہے جب تو یہ بچہ بلا شبہ ولد الزنا نہیں، اور اگر وہ بھی آگاہ تھا اور دانستہ اس امر کا مرتکب ہوا تو بھی بچہ حرامی نہیں، فرق اتنا ہے کہ پہلی صورت میں شوہرِ ثانی کا بچہ قرار پائے گا اور دوسری صورت میں شوہر اول کا۔ در مختار میں ہے:

۱ ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۲۳۳

[Top Box Left - Arabic]: A woman undergoing the waiting period (Iddah) for a 'Ba'in' (irrevocable) divorce remarried. If she gives birth within two years from the time of the irrevocable divorce and after six months from the second marriage, it is narrated from 'al-Bada'i' that this child will belong to the second husband. The reason given is that the woman's step to remarry will be considered evidence that her 'Iddah' has ended. However, if both the man and the woman knew that the 'Iddah' was still ongoing, then this marriage will be void (fasid), and the child will be attributed to the first husband. (Summarized, and Allah knows best).

[Top Box Right - Urdu]: A woman undergoing the waiting period for an irrevocable divorce remarried. She then gave birth to a child within two years of the irrevocable divorce and six months after the second marriage. It is narrated from Bada'i that this child will belong to the second husband. Explaining the reason, it was said that the woman taking the step for a second marriage will be considered evidence of the completion of the Iddah. Even so, if both the man and woman know that the Iddah is still remaining, then this marriage will be void, and the child will be attributed to the first husband. (Summarized, and Allah knows best). (T)

Problem 118: 27 Jumada al-Akhira 1316 AH. What do the scholars of the noble religion say regarding this matter: Zaid turned his wife out, saying she is a bad and adulterous woman. After this, the woman wandered for a period. Now Zaid has brought her back and kept her in his house. Three months after entering the house, a daughter was born. In this case, first, does Zaid's marriage remain valid or not? Second, will that girl be considered Zaid's daughter or illegitimate? Because during the days of wandering, she never came to Zaid. And now that Zaid has kept this woman again, should he remarry her or not? And for turning the woman out and then taking her back, is Zaid liable for any punishment according to Sharia?

The Answer: Simply turning her out did not make any difference to Zaid's marriage. The girl will be considered Zaid's, even if during the days of wandering this woman never came to Zaid and the girl was born on the very day she returned to the house.

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The child belongs to the [owner of the] bed, and for the adulterer is deprivation." (T)

1 Durr al-Mukhtar, Section on Establishment of Lineage, Mujtabai Press, Delhi, 1/263.
2 Sahih al-Bukhari, Book of Inheritance Laws, Chapter: The child belongs to the bed etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/999.

[ऊपरी बॉक्स बायां - अरबी]: एक महिला ने बाइन (अटल) तलाक की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान दूसरा निकाह कर लिया। यदि वह बाइन तलाक के समय से दो साल के भीतर और दूसरे निकाह के छह महीने बाद बच्चे को जन्म देती है, तो 'अल-बदाइ' से वर्णित है कि यह बच्चा दूसरे पति का होगा। कारण यह बताया गया कि महिला का दूसरे निकाह के लिए कदम उठाना इद्दत समाप्त होने का प्रमाण माना जाएगा। हालांकि, यदि पुरुष और महिला दोनों को पता था कि इद्दत अभी बाकी है, तो यह निकाह फासिद (अमान्य) होगा, और बच्चे को पहले पति का माना जाएगा। (संकलित, और अल्लाह बेहतर जानता है)।

[ऊपरी बॉक्स दायां - उर्दू]: बाइन तलाक की इद्दत वाली महिला ने निकाह कर लिया, फिर उसने बाइन तलाक के समय से दो वर्ष के भीतर और दूसरे निकाह से छह महीने बाद बच्चे को जन्म दिया, तो बदाइ' से उद्धृत है कि यह बच्चा दूसरे पति का होगा। इसका कारण बताते हुए कहा गया कि महिला का दूसरे निकाह के लिए कदम उठाना इद्दत समाप्त होने का प्रमाण माना जाएगा, यहाँ तक कि यदि पुरुष और महिला दोनों को पता हो कि इद्दत अभी बाकी है, तो यह निकाह फासिद होगा, और बच्चे को पहले पति का माना जाएगा। (संकलित, और अल्लाह बेहतर जानता है)। (त)

मसला 118: 27 जमादी अल-आख़िरा 1316 हिजरी। शरीयत के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी पत्नी को यह कहकर निकाल दिया कि वह एक खराब और बदचलन औरत है। इसके बाद वह औरत एक अवधि तक आवारा घूमती रही। अब ज़ैद उसे अपने घर ले आया है। घर में प्रवेश करने के तीन महीने बाद एक बेटी पैदा हुई। इस स्थिति में, पहला तो यह कि ज़ैद का निकाह बना रहा या नहीं? दूसरा यह कि वह लड़की ज़ैद की मानी जाएगी या नाजायज? क्योंकि आवारागर्दी के दिनों में वह कभी ज़ैद के पास नहीं आई। और अब ज़ैद ने उस औरत को फिर से रखा है, तो क्या वह फिर से निकाह करे या नहीं? और ज़ैद द्वारा औरत को निकालने और फिर वापस रखने पर क्या वह शरीयत के अनुसार किसी सजा का पात्र है?

उत्तर: केवल घर से निकाल देने से ज़ैद के निकाह में कोई अंतर नहीं आया। लड़की ज़ैद की ही मानी जाएगी, चाहे आवारागर्दी के दिनों में यह औरत कभी ज़ैद के पास न आई हो और घर वापस आते ही उसी दिन लड़की पैदा हो जाती।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बच्चे का वंश निकाह वाले (बिस्तर के मालिक) से होगा और व्यभिचारी के लिए वंचना है।" (त)

1 दुर्र-ए-मुख्तार, नसब (वंश) की स्थापना पर अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/263. 2 सहीह अल-बुखारी, विरासत के कानूनों की पुस्तक, अध्याय: बच्चा बिस्तर का है आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/999.

पृष्ठ 360/688

[باکس بایاں - عربی]: تزوجت معتدة بائن فولدت لاقل من سنتین مذبائنت ولنصف حول مذ تزوجت عن البدائع انها للثانی معللاً بان اقدامها علی التزوج دلیل انقضاء عدتها ، حتی لو علمه بالعدة فالنکاح فاسد وولدها للاول اھ ملتقطاً، واللہ تعالٰی اعلم۔

[باکس دایاں - اردو]: بائنہ طلاق کی عدت والی نے نکاح کر لیا پھر اس نے بائنہ طلاق کے وقت سے دو سال کے اندر اندر دوسرے نکاح سے چھ ماہ کے بعد بچے کو جنم دیا، تو بدائع سے منقول ہے کہ یہ بچہ دوسرے کا ہوگا، اس کی وجہ بیان کرتے ہوئے کہا عورت کا دوسرے نکاح کے لئے اقدام کرنا عدت ختم ہونے کی دلیل قرار دی جائیگی حتی کہ اگر مرد و عورت دونوں کو معلوم ہو کہ عدت ابھی باقی ہے، تو یہ نکاح فاسد ہوگا، اور بچہ پہلے خاوند کا قرار دیا جائے گا، ملتقطاً، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۱۸: ۲۷ جمادی الآخرہ ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بیوی کو یہ کہہ کر نکال دیا کہ عورت خراب اور بدکار ہے، پس وہ عورت مذکورہ ایک مدت آوارہ طور پر پھرا کی، اب زید نے اس عورت کو اپنے مکان میں لاکر رکھ لیا، مکان میں داخل ہونے کے تین ماہ بعد دختر پیدا ہوئی، اس صورت میں اول تو یہ کہ زید کا نکاح نکاح رہا یا نہیں؟ دوسرے یہ کہ وہ لڑکی زید کی قرار دی جائے گی یا حرام کی؟ کیونکہ ایام آوارگی میں کبھی زید کے پاس نہیں آئی، اور اب زید نے جو اس عورت کو پھر رکھا ہے نکاح کرے یا نہیں؟ اور زید عورت کے نکال دینے پر اور پھر رکھ لینے پر از روئے شریف مستوجب کسی سزا ہے؟

الجواب: صرف نکال دینے سے زید کے نکاح میں کچھ فرق نہ آیا، لڑکی زید ہی کی قرار پائے گی اگرچہ ایام آوارگی میں یہ عورت کبھی زید کے پاس نہ آئی اور مکان میں واپس آتے ہی اسی دن لڑکی پیدا ہوجاتی۔

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم الولد للفراش وللعاھر الحجر 2۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: بچہ کا نسب نکاح والے سے ہوگا اور زانی کو محرومی ہے (ت)

1 درمختار فصل في ثبوت النسب مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۳ 2 صحیح البخاری کتاب الفرائض باب الولد للفراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۹۹۹

Zaid does not need to remarry. There is no blame on him for keeping her again; however, if sending her away was without a valid Sharia reason, then he is a sinner. And Allah knows best.

Problem 119: What do the scholars of the religion say about this issue: Zaid's grandfather was Pathan, while his grandmother and mother were Syedanis. In this case, is Zaid a Syed or a Pathan? Explain, and may you be rewarded.

The Answer: In the pure Sharia, lineage is derived from the father. One whose father and grandfather are Pathan, Mughal, or Sheikh will belong to those tribes, even if his mother and grandmothers are all Syedanis. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said in a Sahih (authentic) Hadith:

Arabic Text	**Urdu Translation**
Whoever claims a father other than his own, upon him is the curse of Allah, the angels, and all of mankind. Allah will not accept from him on the Day of Resurrection any obligatory or voluntary act. (This is a summary)	Whoever attributes himself to someone other than his father, upon him is the curse of Allah Almighty Himself, and of all the angels and humans. Allah Almighty will not accept his obligatory or voluntary prayers on the Day of Judgment. (Summarized)

This Hadith has been narrated from Maula Ali (may Allah be pleased with him) by Bukhari, Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, Nasai, and others. Yes, Allah Almighty granted this special excellence to Imam Hasan and Imam Hussain and their full siblings (may Allah be pleased with them all) that they are considered the sons of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). However, for their specific progeny, the same general rule applies: they are attributed to their fathers. Therefore, the descendants of the two noble grandsons are Syeds, but not the descendants of the daughters of Hazrat Fatima (may Allah be pleased with her), as they will be attributed to their own fathers. And Allah (Glorified and Exalted is He) knows best.

Problem 120: From Najibabad, district Bijnor, Mohalla Nawab Pura, sent by Niazullah Khan, 5 Rabi-ul-Awwal Sharif 1313 AH. Huzoor Lame-un-Noor, scholar of the manifest and the hidden, of the rational and the traditional, most respected Mufti Muhammad Ahmad Raza Khan Sahib (may his blessings continue), Your Excellency! The request is that a man committed adultery with a woman for a period, then during her lifetime,

he also committed prohibited acts with her daughter. He kept her (the daughter) in his house behind a veil for ten years, continuing the illicit relationship. Four children were born—three girls and one boy—who have been raised. And this wedded woman whose illegitimate offspring are present...

Footnote: 1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith narrated from Amr bin Kharijah, Al-Maktabah al-Faysaliyyah, Beirut, 7/34. Page 361 of 688

ज़ैद को दोबारा निकाह करने की ज़रूरत नहीं है। उसे फिर से रख लेने में उस पर कोई दोष नहीं है; हाँ, अगर बिना किसी शरीयत की वजह के उसे निकाल दिया गया था, तो वह गुनाहगार हुआ। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 119: दीन के उलेमा इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद के दादा पठान थे, जबकि उसकी दादी और माँ सैयदानी थीं। इस सूरत में ज़ैद सैयद है या पठान? बयान करें, सवाब पाएँ।

जवाब: पाक शरीयत में नसब (वंश) बाप से लिया जाता है। जिसके बाप-दादा पठान या मुग़ल या शेख़ हों, वह उन्हीं क़ौमों से होगा, चाहे उसकी माँ और दादी सब सैयदानी हों। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक सहीह हदीस में फ़रमाया है:

अरबी इबारत	**उर्दू तर्जुमा**
जो अपने बाप के सिवा किसी और को अपना बाप बताए, उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लानत है। अल्लाह क़यामत के दिन उससे न कोई फ़र्ज़ इबादत क़ुबूल करेगा और न नफ़्ल। (यह मुख़्तसर है)	जो अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ अपनी निस्बत करे, उस पर ख़ुद अल्लाह तआला और तमाम फ़रिश्तों और आदमियों की लानत है, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसका न फ़र्ज़ क़ुबूल करे न नफ़्ल। मुख़्तसर।

बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई वगैरह ने यह हदीस मौला अली (कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम) से रिवायत की है। हाँ, अल्लाह तआला ने यह फ़ज़ीलत ख़ास इमाम हसन और इमाम हुसैन और उनके सगे भाई-बहनों को अता फ़रमाई (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन) कि वे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बेटे ठहरे। फिर उनकी जो ख़ास औलाद है उनमें भी वही आम क़ायदा जारी हुआ कि वे अपने बाप की तरफ़ मंसूब होंगे, इसीलिए सब्तैन करीमैन की औलाद सैयद हैं, न कि बनत-ए-फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की औलाद, क्योंकि वे अपने वालिदों ही की तरफ़ निस्बत की जाएँगी। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

मसला 120: नजीबाबाद, ज़िला बिजनौर, मोहल्ला नवाब पुरा से, भेजने वाले नियाज़ुल्लाह ख़ाँ, 5 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1313 हिजरी। हुज़ूर लामे-उन-नूर, आलिमे ज़ाहिर ओ बातिन ओ माक़ूल ओ मनक़ूल जनाब फ़ैज़ मआब मुफ़्ती मोहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ साहब (दाम फ़ुयूज़हुम), आलीजाह! अर्ज़ यह है कि एक शख़्स ने एक औरत से ज़िना किया मुद्दत तक, फिर उसी की ज़िंदगी में उसकी

बेटी से भी हराम किया, यहाँ तक कि दस बरस तक उसे घर में डाल कर परदे में रख कर हराम करता रहा, चार बच्चे पैदा हुए—तीन लड़कियाँ और एक लड़का, वे परवरिश पा गए, और यह औरत मन्कूहा जिसकी यह औलाद हरामी मौजूद है...

फ़ुटनोट: 1. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस अम्र बिन खारिजा से रिवायत, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बैरूत, 7/34।

زید کو دوبارہ نکاح کی حاجت نہیں پھر رکھ لینے میں اس پر کوئی الزام نہیں، ہاں نکال دینا اگر بلاوجہ شرعی تھا تو گنہگار ہوا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا دادا پٹھان تھا، دادی اور والدہ سیدانی۔ اس صورت میں زید سید ہے یا پٹھان؟ بینوا توجروا

الجواب: شرع مطہر میں نسب باپ سے لیا جاتا ہے جس کے باپ دادا پٹھان یا مغل یا شیخ ہوں وہ انہیں قوموں سے ہوگا اگرچہ اس کی ماں اور دادی سب سیدانیاں ہوں، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے صحیح حدیث میں فرمایا ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
من ادعی الی غیر ابیہ فعلیہ لعنۃ اللہ والملئکۃ والناس اجمعین لا یقبل اللہ منہ یوم القیمۃ صرفاً ولا عدلاً ہٰذا مختصر۔	جو اپنے باپ کے سوا دوسرے کی طرف اپنے آپ کو نسبت کرے اس پر خود اللہ تعالیٰ اور سب فرشتوں اور آدمیوں کی لعنت ہے، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کا نہ فرض قبول کرے نہ نفل۔ مختصراً۔

بخاری و مسلم و ابوداؤد و ترمذی و نسائی و غیر ہم نے یہ حدیث مولا علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ سے روایت کی ہے، ہاں اللہ تعالیٰ نے یہ فضیلت خاص امام حسن و امام حسین اور ان کے حقیقی بھائی بہنوں کو عطا فرمائی رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کہ وہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بیٹے ٹھہرے پھر ان کی جو خاص اولاد ہے ان میں بھی وہی قاعدہ عام جاری ہوا کہ اپنے باپ کی

طرف منسوب ہوں اس لئے سبطین کریمین کی اولاد سید ہیں نہ کہ بناتِ فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی اولاد کہ وہ اپنے والدوں ہی کی طرف نسبت کی جائیں گی، واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۰: از نجیب آباد ضلع بجنور محلہ نواب پورہ مرسلہ نیاز اللہ خاں ۵ ربیع الاول شریف ۱۳۱۳ھ حضور لامع النور عالم ظاہر و باطن و معقول و منقول جناب فیس مآب مفتی محمد احمد رضا خاں صاحب دام فیوضہم، عالیجاہ! عرض یہ ہے کہ ایک شخص نے ایک عورت سے زنا کیا مدت تک پھر اسی کی زندگی میں اس کی بیٹی سے بھی حرام کیا، یہاں تک کہ دس برس تک اسے گھر میں ڈال کر پردہ میں رکھ کر حرام کرتا رہا، چار بچے پیدا ہوئے تین لڑکیاں اور ایک لڑکا، وہ پرورش پا گئے، اور یہ عورت منکوحہ جس کی یہ اولاد حرامی موجود ہے

حاشیہ: 1 المعجم الکبیر حدیث مروی از عمرو بن خارجہ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۷/ ۳۴ Page 361 of 688

Fatawa Ridawiyya, Volume 13

Page 13

A woman ran away from her husband to another man and started living with him. Seeing her conduct and due to community pressure, the husband divorced her. Allah knows best the truth and the hidden. Now that man, after repenting from adultery, wants to marry her. Is this marriage possible or not? And in case of it being invalid, if she were to be removed from the marriage along with those children, who will support those children? Please explain and be rewarded.

Answer: In the mentioned situation, if the husband has divorced her, then marriage could take place. However, if he committed adultery with her daughter, then she (the mother) becomes forbidden (haram) to him forever.

In Dur al-Mukhtar: The roots (ancestors) and branches (descendants) of a woman with whom adultery was committed, or who was touched with lust, or whose internal part of the private parts was looked at with lust, become forbidden. [Summary]

And since it is known that this adulterer had not married her until now, and now wants to marry her after repenting from adultery, these children cannot be attributed to this person in any way. Rather, if the husband did not give a divorce, or if these children were born before the divorce or within six months after it, they will all be attributed to the husband, and for the adulterer, there is nothing (disappointment/stoning).

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The child belongs to the bed (legal marriage), and for the adulterer, there is disappointment."[1]

And after six months or more from the divorce, [Note: blank space in manuscript], it was a revocable divorce (raj'i), and the child was born at a time when the woman had not yet acknowledged the completion of her waiting period (iddah), or she acknowledged it at a time when it was not probable that the iddah had passed—meaning, according to the Imam, two months had not passed since the divorce, and according to the Sahihayn, thirty-nine (39) days had not passed—or at the time of acknowledgement it was probable, but later... [Note: Manuscript has a blank space].

Note: Blank space in the manuscript.

[1] Dur al-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relations, Mujtabai Press, Delhi, 1/188. [2] Sahih al-Bukhari, Chapter: The child belongs to the bed, whether she is free or a slave, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/999.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

पृष्ठ 13

एक औरत अपने पति से भागकर दूसरे आदमी के पास रहने लगी, पति ने उसके चाल-चलन को देखकर बिरादरी के दबाव में उसे तलाक दे दिया। अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है। अब वह आदमी ज़िना (व्यभिचार) से तौबा करके उससे निकाह करना चाहता है। क्या यह निकाह संभव है या नहीं? और अवैध होने की स्थिति में, यदि उस औरत को उन बच्चों के साथ निकाह से बाहर कर दिया जाए, तो उन बच्चों का पालन-पोषण कौन करेगा? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: बताई गई स्थिति में, यदि पति ने उसे तलाक दे दिया है, तो निकाह हो सकता है। हालाँकि, यदि उसने उसकी बेटी के साथ व्यभिचार किया है, तो वह (मां) उसके लिए हमेशा के लिए हराम (वर्जित) हो जाती है।

दुर अल-मुख्तार में: उस स्त्री के मूल (पूर्वज) और शाखाएँ(वंशज) हराम हो जाते हैं जिसके साथ व्यभिचार किया गया हो, या जिसे वासना के साथ छुआ गया हो, या जिसके निजी अंगों के आंतरिक भाग को वासना के साथ देखा गया हो। [सारांश]

और चूंकि यह ज्ञात है कि इस व्यभिचारी ने अब तक उससे निकाह नहीं किया था, और अब व्यभिचार से तौबा करके निकाह करना चाहता है, तो ये बच्चे किसी भी तरह इस व्यक्ति के नहीं माने जा सकते। बल्कि, यदि पति ने तलाक नहीं दिया, या तलाक से पहले या उसके छह महीने के भीतर ये बच्चे पैदा हुए, तो वे सभी पति के ही माने जाएंगे, और व्यभिचारी के लिए केवल निराशा (पत्थर) है।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बच्चा बिस्तर (वैध निकाह) का है, और व्यभिचारी के लिए निराशा/पत्थर है।"[2]

और तलाक के छह महीने या उससे अधिक के बाद, [नोट: पांडुलिपि में खाली स्थान], यह एक प्रतिसंहरणीय (रजई) तलाक था, और बच्चा उस समय पैदा हुआ जब औरत ने अभी तक अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने का स्वीकार नहीं किया था, या उसने ऐसे समय में स्वीकार किया जब इद्दत का पूरा होना संभावित नहीं था—अर्थात, इमाम के अनुसार तलाक के बाद दो महीने नहीं बीते थे, और साहिबैन के अनुसार उनतालीस (39) दिन नहीं बीते थे—या स्वीकार के समय यह संभावित था, लेकिन बाद में... [नोट: पांडुलिपि में खाली स्थान]।

नोट: पांडुलिपि में खाली स्थान है।

[1] दुर अल-मुख्तार, हराम रिश्तों का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/188। [2] सहीह अल-बुखारी, अध्याय: बच्चा बिस्तर का है, चाहे वह स्वतंत्र हो या दासी, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/999।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم

۱۳

دوسرے شخص کی منکوحہ تھی اس کے پاس سے بھاگ کر زانی کے پاس رہنے لگی، خاوند اس کو لینے آیا خلق بیان کرتی ہے کہ خاوند نے اس فعل کو دیکھ کر برادری کے سبب سے طلاق دے دی واللہ اعلم بالصواب والغیب عنداللہ اب وہ شخص زنا سے توبہ کر کے نکاح میں لانا چاہتا ہے، آیا نکاح ہوسکتا ہے یا نہیں؟ اور در صورت ناجائز ہونے نکاح کے وہ عورت مع ان بچوں کے نکال دی جائے گی یا بچے اس سے وہ شخص پرورش کرنے کے لئے لے لے گا؟ بینوا توجروا الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر شوہر نے اسے طلاق بھی دی ہو تاہم زانی سے نکاح نہیں ہوسکتا جب یہ اس کی ماں سے زنا کرچکا، بیٹی ہمیشہ کو حرام ہو گئی۔

فی الدرالمختار حرم اصل مزنیۃ و ممسوسۃ والمنظور الی فرجھا الداخل وفروعھن اھ ملخصاً۔ در مختار میں مزنیہ اور جس عورت کو شہوت کے ساتھ مس کیا اور وہ جس کی شرمگاہ کے داخل حصہ کو شہوت سے دیکھا ہو ان عورتوں کے اصول وفروع حرام ہو جائیں گے اھ ملخصاً (ت)

اور جبکہ معلوم ہے کہ اس زانی نے اب تک اس سے نکاح نہ کیا تھا اب زنا سے توبہ کر کے نکاح کرنا چاہتا ہے تو یہ بچے اس شخص کے کسی طرح نہیں ٹھہر سکتے بلکہ اگر شوہر نے طلاق نہ دی یا طلاق سے پہلے یا اس کے بعد چھ مہینے کے اندر تک یہ اولادیں پیدا ہوئیں تو سب شوہر ہی کی قرار پائیں گی اور زانی کے لئے پتھر۔

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الولد للفراش وللعاھر الحجر ۲- رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: بچے کا نسب نکاح والے سے ہوگا اور زانی کو محرومی ہے (ت)

اور طلاق سے چھ مہینے یا زائد کے ۱عہ رجعی تھی اور بچہ اس وقت ہوا کہ عورت نے ہنوز عدت گزر جانے کا اقرار نہ کیا تھا یا اقرار ایسے وقت کیا تھا کہ اتنی مدت میں عدت کا گزر جانا محتمل نہیں یعنی امام کے نزدیک طلاق کو دو مہینے اور صاحبین کے نزدیک انتالیس ۳۹ دن نہ گزرے تھے یا اقرار وقت تو گزرنا محتمل تھا مگر بعد کو اس کا ۱عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔

۱عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔

[1] درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ [2] صحیح البخاری باب الولد للفراش حرۃ کانت اوامۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۹۹/۲

The lie became evident that at the time she had mentioned for the completion of the Iddah (waiting period), a child was born within six months of it. In these cases, the first child born after the divorce will absolutely be attributed to the husband. Even if the child is born twenty years after the divorce, as there is no set upper limit for the duration of Tuhr (purity period between menstruations). It is possible that three menstruations occur over thirty years, so the completion of Iddah is neither proven in itself nor by the woman's accepted confession. Consequently, the presence of the child in the womb was either during the days of marriage or during the Iddah period; in any case, the lineage is established. In a revocable divorce (Talaq-e-Raj'i), when the husband has intercourse within the Iddah period, it is not forbidden; rather, it constitutes a revocation (Ruju). Therefore, if it's not proven that the pregnancy started during Iddah, but rather it's possible it was from before the divorce, then its birth will not establish revocation but will establish the end of Iddah, because there's no meaning to the continuation of Iddah after childbirth. In this scenario, other children born six months or more after this child's birth cannot be attributed to the husband, as their presence in the womb was neither during the marriage nor the Iddah. Yes, if a second child is born within six months of the first child's birth, it will also be attributed to the husband because a second pregnancy's child cannot be born in less than six months. Necessarily, it was with the first one. And if it was an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in), even if it was severe (Mughallazah), and the woman had been consummated by her husband, and she had not yet made an accepted confession of the end of Iddah as mentioned, and if a child was born within two years of the divorce, it will still be attributed to the husband because its presence in the womb during the marriage is possible. If it occurs after two years, then it certainly wasn't from the marriage period, nor can it be attributed to the Iddah period, because intercourse is forbidden during the Iddah of an irrevocable divorce without a new marriage. In this case, it cannot be the husband's, unless he had already accepted one child as his, and this second one was born within six months of it; then, based on the previous reasoning, they will attribute it to the husband too. In short, these are the cases where all or some of these children will be attributed to the husband and will have established lineage, and calling them illegitimate (Walad-uz-Zina) will be unlawful. And if, for the sake of argument, none of these forms are found, the ultimate outcome is that they won't be attributed to the husband; they would be illegitimate or of unknown lineage. In any case, they can in no way be

attributed to an adulterer, nor does he have any right or claim over them. It is stated in Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar:

[Arabic Box Text] The lineage of a child of a woman in Iddah of a revocable divorce is established even if she gives birth after more than two years, even after twenty years or more, due to the possibility of prolonged Tuhr and conception occurring during Iddah, as long as she has not confessed the completion of Iddah and the birth has occurred.

[Urdu Translation in Box] If a child is born to a woman undergoing the waiting period of a revocable divorce, the lineage will belong to that same husband, even if this child is born two years, twenty years, or even more than twenty years after the divorce. This is because it is possible that the conception occurred during the Iddah period and the periods of purity during the Iddah were prolonged, until she confesses...

झूठ ज़ाहिर हो गया कि जो समय उसने इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की समाप्ति का बताया था, उससे छह महीने के भीतर बच्चा पैदा हुआ। इन स्थितियों में, तलाक़ के बाद होने वाला पहला बच्चा पूर्णतः पति का ही माना जाएगा। भले ही तलाक़ के बीस साल बाद पैदा हुआ हो, क्योंकि शुद्धता की अवधि (तुह्र) के लिए अधिकतम की कोई सीमा निर्धारित नहीं है। यह संभव है कि तीन मासिक धर्म तीस वर्षों में आएँ तो इद्दत की समाप्ति न तो स्वयं सिद्ध है और न ही स्त्री के स्वीकारोक्ति से। परिणामस्वरूप, उसका पेट में होना या तो निकाह के दिनों में था या इद्दत की अवधि में; हर तरह से वंश (नसब) प्रमाणित है। तलाक़-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) में जब पति इद्दत के भीतर संभोग करता है, तो वह हराम नहीं होता बल्कि उससे रुजू (वापसी) हो जाती है। इसलिए इद्दत में ही गर्भ ठहरना सिद्ध नहीं हुआ, बल्कि यह संभव है कि तलाक़ से पहले का हो, तो उसके जन्म से रुजू सिद्ध नहीं होगा बल्कि इद्दत की समाप्ति सिद्ध होगी, क्योंकि प्रसव के बाद इद्दत जारी रहने का कोई अर्थ नहीं है। इस स्थिति में और बच्चे जो इस जन्म के छह महीने या उससे अधिक समय के बाद पैदा हुए, पति के नहीं हो सकते क्योंकि उनका पेट में रहना न तो निकाह के दिनों में था और न ही इद्दत की अवधि में। हाँ, यदि दूसरा बच्चा पहले बच्चे के जन्म से छह महीने के भीतर हो गया, तो वह भी पति का ही माना जाएगा क्योंकि छह महीने से कम समय में दूसरे गर्भ का बच्चा नहीं हो सकता। निश्चित रूप से वह पहले के साथ ही था। और यदि तलाक़-ए-बाइन (अप्रतिसंहरणीय तलाक़) थी, चाहे वह मुग़ल्लज़ाह (अत्यधिक गंभीर) हो, और स्त्री अपने पति द्वारा उपभोग की गई थी, और उसने अभी तक इद्दत की समाप्ति की स्वीकृत स्वीकारोक्ति (जैसा कि उल्लेख किया गया है) नहीं की थी, और तलाक़ से दो वर्ष के भीतर बच्चा हुआ, तो भी पति का ही माना जाएगा क्योंकि उसका पेट में रहना निकाह के दिनों में संभव है। और दो वर्ष के बाद हुआ, तो अब गर्भ निश्चित रूप से निकाह के समय का नहीं था, न ही इद्दत की अवधि का माना जा सकता है क्योंकि नए निकाह के बिना इद्दत-ए-बाइन में संभोग हराम है। इस स्थिति में विवशतापूर्वक पति का नहीं होगा, सिवाय इसके कि उसने अपना एक बच्चा स्वीकार कर लिया हो और यह दूसरा उसके छह महीने के भीतर हो गया हो; तो पिछली वजह से इसे भी पति का ही ठहरा देंगे। संक्षेप में, ये वे स्थितियाँ हैं जिनमें ये बच्चे पूर्ण रूप से या कुछ पति के ही ठहरेंगे और प्रमाणित वंश वाले होंगे, और उन्हें 'वलद-उज़-ज़िना' (अवैध संतान) कहना नाजायज़ होगा। और अगर मान लिया जाए कि इन स्थितियों में से कोई भी रूप नहीं पाया गया, तो अंतिम बात यह है कि पति के नहीं ठहरेंगे, वलद-उज़-ज़िना या अज्ञात वंश के होंगे। बहरहाल, वे किसी भी तरह से

व्यभिचारी (ज़ानी) के नहीं ठहर सकते, न ही उसका उन पर कोई अधिकार या दावा है। 'तन्वीर अल-अबसार', 'दुर्र अल-मुख्तार' और 'रद्द अल-मुह्तार' में है:

[अरबी बक्सा पाठ] रजई तलाक़ की इद्दत वाली स्त्री के यहाँ बच्चा पैदा हो तो वंश उसी पति का होगा, चाहे यह बच्चा तलाक़ से दो साल, बीस साल या बीस साल से भी ज़्यादा समय में पैदा हुआ हो, क्योंकि हो सकता है कि गर्भ इद्दत में ठहरा हो और इद्दत के दौरान शुद्धता (तुह्र) लंबी रही हो, जब तक कि उसने इद्दत पूरी होने की स्वीकारोक्ति न की हो और प्रसव हो गया हो।

[बक्से का उर्दू अनुवाद] रजई तलाक़ की इद्दत वाली के यहाँ बच्चा पैदा हो तो नसब (वंश) उसी पति का होगा, अगरचे यह बच्चा तलाक़ से दो साल, बीस साल या बीस साल से भी ज़्यादा समय में पैदा हुआ हो, क्योंकि हो सकता है कि नुतफ़ा (गर्भ) इद्दत में ठहरा हो और इद्दत के दौरान तुह्र (पवित्रता के दिन) लंबे हुए हों, जब तक कि...

पृष्ठ ३६३/६८८

کذب ظاہر ہوا کہ جو وقت اس نے انقضائے عدت کا بتایا تھا اس سے چھ مہینے کے اندر بچہ ہوا تو ان صورتوں میں پہلا بچہ جو بعد طلاق ہوا ہے علی الاطلاق شوہر ہی کا ٹھہرے گا طلاق سے بیس برس بعد پیدا ہوا کہ طہر کے لئے زیادت کی جانب کوئی حد مقرر نہیں۔ ممکن ہے کہ تین حیض تیس برس میں آئیں تو انقضائے عدت نہ فی نفسہ ثابت ہو نہ عورت کے اقرار مقبول سے، لاجرم اس کا پیٹ میں رہنا ایام نکاح میں تھا یا زمانہ عدت میں ہر طرح نسب ثابت ہے کہ طلاق رجعی میں شوہر جب عدت کے اندر وطی کرے تو وہ حرام نہیں ہوتی بلکہ رجعت ہو جاتی ہے لہذا عدت ہی میں حمل رہنا ثابت نہ ہوا بلکہ محتمل کہ طلاق سے پہلے کا ہو تو اس کی ولادت مثبت رجعت نہ ہوگی بلکہ مثبت انقضائے عدت ہو گی کہ وضع حمل کے بعد بقائے عدت کے کوئی معنی نہیں۔ اس صورت میں اور بچے جواسی کی ولادت کے چھ مہینے یا زائد کے بعد پیدا ہوئے شوہر کے نہیں ٹھہر سکتے کہ ان کا پیٹ میں رہنا نہ ایام نکاح میں ہوا نہ زمانہ عدت میں، ہاں اگر دوسرا بچہ اس سے پہلے کی پیدائش سے چھ مہینے کے اندر ہو گیا تو یہ بھی شوہر کا قرار پائے گا کہ چھ مہینے سے کم میں دوسرے حمل کا بچہ نہیں ہوسکتا، لاجرم یہ اسی کے ساتھ تھا، اور اگر طلاق بائن تھی اگر چہ مغلظہ ہو اور عورت اپنے شوہر کی مدخولہ تھی اور اس نے ہنوز انقضائے عدت کے اقرار مقبولہ بمعنی مذکور کیا تھا کہ طلاق سے دو برس کے اندر بچہ ہوا تو بھی شوہر کا ٹھہرے گا کہ اس کا پیٹ میں رہنا ایام نکاح میں محتمل ہے، اور دو برس کے بعد ہوا تو اب حمل زمانہ نکاح کا تو یقیناً نہ تھا نہ ایام عدت کا ٹھہر سکتے ہیں کہ بے نکاح جدید عدت بائن میں قربت حرام ہے، اس صورت میں ناچار شوہر کا نہ ہوگا مگر یہ کہ وہ اپنا ایک بچہ ہولیا تھا یہ دوسرا اس سے چھ مہینے کے اندر ہو گیا تو بوجہ سابق اسے بھی شوہر کا ٹھہرادیں گے، بالجملہ اتنی صورتیں ہیں جن میں

یہ بچے کل یا بعض شوہر ہی کے ٹھہریں گے اور ثابت النسب ہوں گے اور انہیں ولد الزنا کہنا ناجائز ہوگا، اور اگر بالفرض ان صورتوں سے کوئی شکل نہ پائی جائے تو غایت یہ کہ شوہر کے نہ ٹھہریں ولد الزنا یا مجہول النسب ہوں، بہر حال زانی کے کسی طرح نہیں ٹھہر سکتے نہ اسے ان پر کوئی استحقاق ودعوی۔ تنویر الابصار ودرمختار و ردالمختار میں ہے:

[عربی عبارت در باکس] یثبت نسب ولد معتدة الرجعی وان ولدت لاکثر من سنتین ولو لعشرین سنة فاکثر لاحتمال امتداد طهرها وعلوقها في العدة مالم تقر بمضی العدة وکانت الولادة۔

[اردو ترجمہ در باکس] رجعی طلاق کی عدت والی کے ہاں بچہ پیدا ہو تو نسب اسی خاوند کا ہوگا اگرچہ یہ بچہ طلاق سے دو سال، بیس سال یا بیس سال سے بھی زیادہ عرصہ میں پیدا ہوا ہو کیونکہ ہو سکتا ہے کہ نطفہ عدت میں ٹھہرا ہو اور عدت کے دوران طہر طویل ہوئے ہوں تاوقتیکہ

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 364

Arabic Column: Revocation is valid during most of the period or upon its completion if conception occurred during the 'iddah (waiting period). (Thus, through intercourse, he becomes one who has revoked the divorce, Nahr). Not in a shorter period due to doubt. (If she admitted the completion of the period and the duration allows for it, such as sixty days according to the opinion of the Imam and thirty-nine according to the opinion of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), then she gives birth to a child, its lineage is not established unless she gives birth in less than six months from the time of admission. In that case, the lineage is established due to the certainty that pregnancy existed at the time of admission, thereby proving her admission false. Similarly, this applies to a woman who is irrevocably divorced (Baina) and a widow if she claims the completion of her 'iddah and then gives birth to a child at the completion of six months; the lineage is not established. If it is less than that, it is established as a precaution, just as it is established without a claim in an irrevocably divorced woman (whether the divorce was one or three, and whether she married another during 'iddah or not, Bahr), provided it is within two years of the divorce.

Urdu Column: If the woman has not admitted the completion of iddah before, the birth of the child will be considered a revocation (ruju') by the husband if a revocably divorced woman (Mutallaqa-e-Raj'i) gives birth after two years or more, because it is possible that conception occurred during the iddah. (Therefore, the husband will be considered to have revoked through intercourse, Nahr). And if birth occurs in less than two years, the husband's revocation will not be established due to doubt (because it's possible this pregnancy predates the divorce). Then, if the woman admitted the completion of iddah and that duration also had the possibility of being the end of iddah - for example, sixty days have passed according to Imam-e-Azam's opinion, and thirty-nine (39) days according to the Sahibayn's (the two companions') opinion - then she gives birth after this admission, in this case, the child's lineage from the first husband will not be established. However, if she gives birth within six months from the time of admission, the lineage will be established from him because she was certainly pregnant at the time of admission, making her admission false. Similarly, if an irrevocably divorced woman or a widow claims the completion of iddah and then gives birth six months after the claim, this lineage will also not belong to the first husband. If the period is less than six months, as a precaution, the lineage will belong to the first husband, as lineage is established in an irrevocably

divorced woman even without a claim (whether she was irrevocably divorced by one or three divorces and whether she married someone else during iddah or not, Bahr), provided she gives birth within two years of the divorce.

Note: The text within brackets is from Rad al-Muhtar, while the text outside brackets is from Tanweer and Durr al-Mukhtar. - Nazir Ahmed.

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 364

अरबी स्तंभ: रुजू (तलाक की वापसी) अधिकांश अवधि में या उसके पूरा होने पर मान्य है यदि गर्भधारण इद्दत के दौरान हुआ हो। (इस प्रकार, संभोग के माध्यम से वह रुजू करने वाला हो जाता है, 'नहर')। संदेह के कारण कम अवधि में नहीं। (यदि उसने अवधि के पूरा होने को स्वीकार किया और समय इसके अनुकूल है, जैसे कि इमाम आज़म के अनुसार साठ दिन और साहिबैन के अनुसार उनतालीस दिन, फिर उसने बच्चे को जन्म दिया, तो उसका वंश स्थापित नहीं होता है जब तक कि वह स्वीकारोक्ति के समय से छह महीने से कम समय में जन्म न दे। उस स्थिति में, वंश स्थापित होता है क्योंकि स्वीकारोक्ति के समय गर्भावस्था का होना निश्चित है, जिससे उसकी स्वीकारोक्ति झूठी सिद्ध होती है। इसी तरह, यह एक अपरिवर्तनीय रूप से तलाकशुदा महिला और एक विधवा पर लागू होता है यदि वह अपनी इद्दत पूरी होने का दावा करती है और फिर छह महीने पूरे होने पर बच्चे को जन्म देती है; तो वंश स्थापित नहीं होता है। यदि यह उससे कम हो, तो सावधानी के तौर पर वंश स्थापित होता है, जैसे कि बिना दावे के भी अपरिवर्तनीय तलाकशुदा महिला में स्थापित होता है (चाहे वह एक या तीन तलाक से हो, और चाहे उसने इद्दत में दूसरे से विवाह किया हो या नहीं, 'बहर'), बशर्ते कि यह तलाक के दो वर्ष के भीतर हो।

उर्दू स्तंभ: यदि महिला ने पहले इद्दत पूरी होने की बात स्वीकार नहीं की है और बच्चा दो साल या उससे अधिक समय के बाद पैदा होता है, तो बच्चे के जन्म को पति द्वारा रुजू (तलाक की वापसी) माना जाएगा, क्योंकि यह संभव है कि गर्भधारण इद्दत के दौरान हुआ हो। (इसलिए, पति को संभोग के माध्यम से रुजू करने वाला माना जाएगा, 'नहर')। और यदि जन्म दो साल से कम समय में होता है, तो संदेह के कारण पति का रुजू साबित नहीं होगा (क्योंकि यह संभव है कि यह गर्भधारण तलाक से पहले का हो)। फिर, यदि महिला ने इद्दत पूरी होने को स्वीकार कर लिया है और वह अवधि भी इद्दत के अंत की संभावना रखती थी - उदाहरण के लिए, इमाम-ए-आज़म की राय के अनुसार साठ दिन बीत चुके हैं, और साहिबैन की राय के अनुसार उनतालीस (39) दिन बीत चुके हैं - फिर वह इस स्वीकारोक्ति के बाद बच्चे को जन्म देती है, तो इस मामले में बच्चे का वंश पहले पति से स्थापित नहीं होगा। हालांकि, यदि वह स्वीकारोक्ति के समय से छह महीने के भीतर बच्चे को जन्म देती है, तो वंश उसी से स्थापित होगा क्योंकि स्वीकारोक्ति के समय वह निश्चित रूप से गर्भवती थी, जिससे उसकी स्वीकारोक्ति झूठी साबित होती है। इसी तरह, यदि कोई अपरिवर्तनीय रूप से तलाकशुदा महिला या विधवा इद्दत पूरी होने का दावा करती है और फिर दावे के छह महीने बाद बच्चे को जन्म देती है, तो

यह वंश भी पहले पति का नहीं होगा। यदि अवधि छह महीने से कम है, तो एहतियात के तौर पर वंश पहले पति का होगा, जैसा कि बिना दावे के भी अपरिवर्तनीय तलाक वाली महिला में वंश स्थापित होता है (चाहे वह एक या तीन तलाक से अलग हुई हो और चाहे उसने इद्दत में दूसरे से निकाह किया हो या नहीं, 'बहर'), बशर्ते कि उसने तलाक के दो साल के भीतर जन्म दिया हो।

नोट: कोष्ठक के भीतर का पाठ 'रद्दुल मुह्तार' से है, जबकि कोष्ठक के बाहर का पाठ 'तनवीर' और 'दुर्रे मुख्तार' से है। - नज़ीर अहमद।

فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۳، صفحہ ۳۶۴

عربی کالم: رجعة لوفي الاكثر منهما اولتمامهما لعلوقهاني العدة (فيصير فـ بالوطء مراجعاً نهر) لافي الاقل للشك (فان اقرت بانقضائها والمدة تحتملة بان تكون ستين يوما على قول الامام وتسعة وثلثين على قولهما ثم جاءت بولد لا يثبت نسبه الا اذا جاءت به لاقل من ستة اشهر من وقت الاقرار فانه يثبت نسبه للتيقن بقيام الحمل وقت الاقرار فيظهر كذبها، وكذا هذا في المطلقة البائنة والمتوفى عنها اذا ادعت انقضائها ثم جاءت بولد لتمام ستة اشهر لا يثبت نسبه، ولاقل يثبت كما يثبت بلادعوة احتياطاً في مبتوتة (يشمل البت بالواحدة والثلاث تزوجها في العدة اولا بحر) جاءت به لاقل منهما من

اردو کالم: عورت نے عدت ختم ہونے سے پہلے اقرار نہ کیا ہو اور بچے کی ولادت کو خاوند کا رجوع قرار دیا جائے گا اگر مطلقہ رجعی دو سال یا دو سال کے بعد بچہ جنم دے کیونکہ ممکن ہے کہ استقرار حمل عدت میں ہوا ہو (لہٰذا خاوند وطی کے ساتھ رجوع کرنے والا قرار پائے گا، نہر) اور دو سال سے کم مدت میں پیدائش ہو تو شک کی بنا پر خاوند کا رجوع ثابت نہ ہوگا (کیونکہ ہو سکتا ہے کہ یہ حمل طلاق سے پہلے کا ہو) پھر اگر عورت نے عدت ختم ہونے کا اقرار کر لیا ہو اور وہ مدت بھی عدت کے ختم ہونے کا احتمال رکھتی ہو مثلاً امام اعظم کے قول پر ساٹھ دن اور صاحبین کے قول پر انتالیس ۳۹ دن گزر چکے ہیں پھر اس اقرار کے بعد بچہ کو جنم دے تو اس صورت میں بچے کا نسب پہلے خاوند سے ثابت نہ ہوگا مگر جبکہ اقرار کے وقت سے چھ ماہ کے اندر بچہ جنم دے تو نسب اسی سے ہی ثابت ہوگا کیونکہ اب یقیناً اقرار کے وقت وہ حاملہ تھی تو اس سے عورت کا اقرار جھوٹا ثابت ہو جائے گا اور یوں ہی اگر مطلقہ بائنہ یا جس کا خاوند فوت ہو جائے گا اور یوں ہی اگر مطلقہ بائنہ یا جس کا خاوند فوت ہوا ہو جب وہ عدت ختم ہو جانے کا دعویٰ کرے پھر دعویٰ کے چھ ماہ بعد بچہ کو جنم دے تو یہ نسب بھی پہلے خاوند کا نہ ہوگا اور

اگر چھ ماہ سے کم مدت ہو تو احتیاطاً نسب پہلے خاوند کا ہوگا جیسا کہ بغیر دعویٰ بھی بائنہ طلاق والی میں نسب ثابت ہوتا ہے (خواہ ایک طلاق یا تین طلاق سے بائنہ ہوئی ہو اور اس نے عدت میں دوسرے سے نکاح کیا یا نہ کیا ہو، بحر) بشرطیکہ اس نے طلاق سے دو سال کے اندر

ف: قوسین کے درمیان والی عبارت ردالمحتار کی ہے جبکہ قوسین سے باہر والی عبارت تنویر اور درمختار کی ہے۔ نذیر احمد Page 364 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 365

The time of divorce, for its validity and occurrence at that time, is considered if she did not acknowledge its completion as mentioned previously. Even if the full term is completed, paternity is not established except through his claim, because he committed to it, and it also bears a resemblance to a contract. Otherwise, if she gives birth to twins, one in less than two years and the other in more than that, then paternity is established. However, in Al-Quhistani, a claim is a condition for birth after more than two years, even if the woman does not confirm his statement, according to the most valid view in 'Al-Fath'. Paternity is established for a child born to a woman who has acknowledged the completion of her waiting period (iddah) if she gives birth in less than six months from the time of acknowledgment, or within two years from the time of irrevocable divorce (talaq-e-bain). This is because the woman's falsehood is certain in this case. Al-Zaylai raised an objection to this: for example, if a woman acknowledges the end of her iddah after a year, then gives birth within six months of the acknowledgment and within two years of separation. In such a case, there is a possibility that the iddah ended at that specific time, so the woman's falsehood would not be established with certainty. However, if she says, "My iddah has just ended now," and then gives birth within six months from that time, her falsehood becomes evident.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 365

तलाक का समय, इसकी वैधता और उस समय इसकी घटना के लिए, तब माना जाता है जब उसने इसकी समाप्ति को स्वीकार नहीं किया हो जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। यदि पूरी अवधि पूरी हो जाती है, तो पितृत्व उसके दावे के बिना स्थापित नहीं होता है, क्योंकि उसने इसे स्वयं पर अनिवार्य कर लिया है, और यह एक अनुबंध के सदृश भी है। अन्यथा, यदि वह जुड़वां बच्चों को जन्म देती है, जिनमें से एक दो साल से कम समय में और दूसरा उससे अधिक समय में, तो पितृत्व स्थापित हो जाता है। लेकिन 'अल-कुहिस्तानी' में है कि दो साल से अधिक समय के बाद जन्म की स्थिति में दावा करना एक शर्त है, भले ही महिला पति की पुष्टि न करे, 'अल-फ़तह' के सबसे प्रामाणिक दृष्टिकोण के अनुसार। उस महिला के बच्चे का पितृत्व स्थापित माना जाता है जिसने अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीतने का इकरार कर लिया हो, यदि वह इकरार के समय से छह महीने से कम समय में या तलाक-ए-बाइन के समय से दो साल के भीतर बच्चे को जन्म देती है। क्योंकि इस स्थिति में महिला का झूठ बोलना निश्चित है। अल-ज़ैलई ने इस पर यह आपत्ति जताई है कि उदाहरण के लिए, यदि एक महिला एक साल बाद इद्दत समाप्त होने का इकरार करती है, फिर इकरार के समय से छह महीने के भीतर और अलगाव के समय से दो साल के भीतर बच्चे को जन्म देती है। ऐसी स्थिति में इद्दत की समाप्ति की संभावना बनी रहती है कि वह उसी समय समाप्त हुई हो, इसलिए महिला का झूठ बोलना निश्चित रूप से सिद्ध नहीं होगा। लेकिन यदि वह कहती है, "मेरी इद्दत अभी समाप्त हुई है", और फिर उस समय से छह महीने के भीतर बच्चे को जन्म देती है, तो उसका झूठ स्पष्ट हो जाता है।

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۳۶۵

وقت الطلاق لجوازه وجوده وقته ولم تقر بمضيها كما مر، ولو تما مهما لا يثبت النسب الا بدعواته لانه التزمه وهی شبهة عقداً ايضاً والا اذا ولدت توأمين احدهما لاقل من سنتين والآخر لاكثر فيثبت لكن في القهستاني الدعوة مشروطة في الولادة لاكثر منهما وان لم تصدقه المرأة في الاوجه فتح، ويثبت نسب ولد المقرة بمضيها لولاقل من اقل مدته من وقت الاقرار ولا قل من اكثرها من وقت البت للتيقن بكذبها (استشكله الزيلعي بماذا اقرت بعد سنة مثلا ثم ولدت لاقل من ستة اشهر من وقت الاقرار ولا قل من ستين من وقت الفراق فانه يحتمل بانقضائها ان تنقضی في ذلك الوقت فلم يظهر كذبها بيقين الا اذا قالت انقضت عدتي الساعة ثم ولدت لاقل المدة من ذلك

بچہ کو جنم دیا ہو کیونکہ ہوسکتا ہے کہ طلاق کے وقت اس کا حمل موجود ہو اور اقرار بھی نہ پایا گیا ہو جیسا کہ گزر چکا ہے اور اگر طلاق سے دوسال پورے ہو جانے کے بعد بچہ جنا ہو تو پھر اس کے دعوی کے بغیر نسب ثابت نہ ہوگا، کیونکہ زوج نے نسب اپنے اوپر خود لازم کر لیا اور یہ مشابہ عقد بھی ہے مگر یہ کہ عورت نے اس حمل سے دو بچے جنے ہوں کہ ایک کو دو سال پورے ہونے سے قبل اور دوسرے کو دو سال کے بعد جنم دیا ہو تو اس صورت میں دعوی کے بغیر نسب ثابت ہو جائے گا لیکن قہستانی میں ہے اوجہ روایت کے مطابق دو سال کے بعد کی ولادت کی صورت میں دعوی شرط ہے اگرچہ عورت زوج کی تصدیق نہ کرتی ہو، فتح۔ ایسی عورت جس نے عدت گزر جانے کا اقرار کر رکھا ہو اور وہ اقرار کے وقت سے چھ ماہ سے کم مدت میں بچہ کو جنم دے یا طلاق بائن کے وقت سے دو سال کے اندر بچہ کو جنم دے تو اس بچہ کا نسب ثابت ہوگا کیونکہ اس صورت میں عورت کا جھوٹا ہونا یقینی ہے، اس پر زیلعی نے یہ اشکال پیدا کیا ہے کہ مثلاً جب عورت سال بعد عدت ختم ہونے کا اقرار کرے پھر وقت اقرار سے

چھ ماہ کے اندر اور وقت فراق سے دو سال کے اندر بچہ کو جنم دے تو ایسی صورت میں عدت کے ختم ہونے کا احتمال موجود ہے کہ عدت اسی وقت میں ختم ہوئی ہو تو عورت کا جھوٹا ہونا بطور یقین ثابت نہ ہوگا مگر اس صورت میں کہ جب وہ یوں کہے کہ میری عدت اب ختم ہوئی ہے پھر اس وقت سے چھ ماہ کے اندر بچہ کو جنم دے تو جھوٹا ہونا ظاہر۔

[Box at the top containing Arabic and its Urdu translation] Al-Waqt [at the time... etc.][1]. This was clarified in *Al-Bahr*, and it was said that it is necessary to interpret the speech of the jurists according to this meaning, as understood from *Ghayat al-Bayan*. It was followed in *An-Nahr* and *Al-Shurunbulaliya*. End of excerpt. And Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 121 to 124: From Koh Mansoori, Kalhari Post Office, Kam Air India Gate. Sent by Kaleemullah Sahib, 30th Jumada al-Ula 1346 AH. 1. In the fourth part of the book 'Bahishti Zewar', I saw it written that if a woman's husband dies and a child is born within two years minus one day, it will be considered the child of the deceased husband. Is this issue based on Muhammadan Law, medicine, or medical research? Is it permissible or impermissible? And if permissible, since when? Or is it an old issue, or is it permissible because of the saints? 2. Secondly, if after the iddah of four months and ten days established by Sharia, she remarries, and after a year or 9 months a child is born, will it be considered the child of the first husband or the one she is currently married to? 3. Thirdly, in which right of ownership will that child be entitled? In the first father's ownership or the second's? 4. Fourthly, some Imams place their hands on their heads after saying the Salam [at the end of prayer]. For what wisdom/purpose do they do this?

Answer: Do not read the book 'Bahishti Zewar'; looking at it is forbidden. It contains many incorrect rulings and many things of misguidance. All the scholars of the Two Holy Sanctuaries [Makkah and Madinah] have unanimously written by name about its author: "Whoever doubts his disbelief has himself disbelieved"[2]. One who doubts the disbelief of the aforementioned person is also a disbeliever. This ruling [mentioned in the question] is not correct as stated. Rather, if a woman completes the iddah of four months and ten days and then remarries, and a child is born six months after the marriage—even if it is ten months and ten days after the first husband's death—the child will definitely not be considered the first husband's. Instead, it belongs to the second husband. It will receive nothing from the inheritance of the first husband. This second person is his father; if he dies, the child will inherit from him. Moreover, even if the woman does not marry another person, but after four months and ten days, her iddah... [continues on the next page]

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Establishment of Lineage, Mujtabai Press Delhi 1/261-262; Radd al-Muhtar, Chapter on Establishment of Lineage, Dar Ihya al-Turath

al-Arabi Beirut 2/623 to 626. [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on the Apostate, Mujtabai Press Delhi 1/356.

फ़तावा रज़विया खंड 13 | पृष्ठ 13

[शीर्ष पर स्थित बॉक्स जिसमें अरबी और उसका उर्दू अनुवाद है] अल-वक़्त [समय पर... इत्यादि][1]। इसे 'अल-बहर' में स्पष्ट किया गया था, और कहा गया था कि न्यायविदों के कथनों को इस अर्थ के अनुसार व्याख्या करना आवश्यक है, जैसा कि 'ग़ायत अल-बयान' से समझा जाता है। 'अन-नहर' और 'अल-शुरुनबुललिया' में इसका पालन किया गया। उद्धरण समाप्त। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसअला 121 से 124: कोह मंसूरी, कलहरी डाकखाना, काम एयर इंडिया गेट से। कलीमुल्लाह साहब द्वारा प्रेषित, 30 जमादी अल-उला 1346 हिजरी। 1. 'बहिश्ती ज़ेवर' पुस्तक के चौथे भाग में लिखा हुआ देखा है कि यदि किसी स्त्री का पति मर जाए और दो वर्ष से एक दिन कम के भीतर बच्चा पैदा हो, तो वह मृत पति का माना जाएगा। क्या यह मसअला शरीयत-ए-मोहम्मदी, चिकित्सा या डॉक्टरी शोध से है? यह जायज़ है या नाजायज़? और यदि जायज़ है, तो कब से है? या यह कोई पुराना मसअला है, या यह औलिया किराम की ओर से जायज़ है? 2. दूसरा यह कि शरीयत द्वारा निर्धारित चार महीने दस दिन की इद्दत के बाद यदि वह निकाह करे, और बाद में एक साल या 9 महीने बाद बच्चा पैदा हो, तो वह पहले पति का माना जाएगा या जिससे अब निकाह हुआ है उसका? 3. तीसरा यह कि वह बच्चा किस स्वामित्व के अधिकार का हकदार होगा? पहले पिता के स्वामित्व में या दूसरे के? 4. चौथा यह कि कुछ इमाम सलाम फेरने के बाद अपने सिर पर हाथ रखते हैं, तो किस भलाई या कारण से रखते हैं?

उत्तर: 'बहिश्ती ज़ेवर' पुस्तक न देखा करें, इसे देखना हराम है। इसमें बहुत से मसअले गलत हैं और बहुत सी बातें गुमराह करने वाली हैं। इसके लेखक के बारे में हरमैन शरीफैन के तमाम उलेमा ने सर्वसम्मति से नाम लेकर लिखा है: "जिसने उसके कुफ्र (अविश्वास) में संदेह किया, उसने स्वयं कुफ्र किया"[2]। जो उक्त व्यक्ति के काफिर होने में संदेह करे, वह भी काफिर है। यह मसअला इस तरह ठीक नहीं है, बल्कि यदि चार महीने दस दिन की इद्दत गुज़ार कर औरत निकाह कर ले और निकाह के छह महीने बाद बच्चा पैदा हो—चाहे वह पति की मृत्यु के दस महीने दस दिन बाद ही क्यों न हो—तो वह हरगिज़ पहले पति का नहीं ठहरेगा, बल्कि उसी दूसरे का है। पहले पति के विरासत (तरके) से उसे कुछ नहीं मिलेगा। यही दूसरा व्यक्ति उसका पिता है; यदि यह मरेगा, तो वह बच्चा उसका वारिस होगा। बल्कि यदि औरत दूसरे व्यक्ति से निकाह न भी करे, और सिर्फ इतना हो कि चार माह दस दिन बाद वह अपनी इद्दत... [अगले पृष्ठ पर जारी]

[1] दुर्रे मुख़्तार, नसब के प्रमाण पर अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/261-262; रद्दे मुहतार, नसब के प्रमाण पर अध्याय, दार इह्या अल-तुरात अल-अरबी बेरुत 2/623 से 626। [2] दुर्रे मुख़्तार, मुर्तद (धर्मत्यागी) का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/356।

[اوپر والے خانے میں عربی عبارت اور اس کا اردو ترجمہ ہے] الوقت اھ[1] استظھرہ فی البحر، وقال یجب حمل کلامھم علیہ کما یفھم من غایۃ البیان وتبعہ فی النھر والشرنبلالیۃ انتھت ملتقطاً۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ہوگا اھ اس کو بحر میں ظاہر قرار دیا، اور کہا کہ فقہاء کے کلام کو اس معنی پر محمول کرنا ضروری ہے جیسا کہ غایۃ البیان سے سمجھا جارہا ہے، اور نہر اور شرنبلالی میں اس کی پیروی کی ہے انتہٰی ملتقطاً، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۲۱ تا ۱۲۴: از کوہ منصوری ڈاکخانہ کلہڑی کام ایر انڈیا گیٹ مرسلہ کلیم اللہ صاحب ۳۰ جمادی الاولٰی ۱۳۴۶ھ ۱ کتاب بہشتی زیور میں حصہ چہارم میں لکھا ہوا دیکھا ہے کہ اگر کسی عورت کا خاوند مر جائے اور ایک دن کم دوسال کے اندر بچہ پیدا ہو تو وہ مرحوم خاوند کا مانا جائے گا، یہ مسئلہ شرع محمدی یا طب یا ڈاکٹری سے تحقیق ہے، یہ جائز ہے یا نا جائز؟ اور اگر جائز ہے تو کب سے ہے؟ یا کہ یہ پرانا مسئلہ ہے یا اولیائے کرام سے جائز ہے؟ ۲ دوسرے یہ کہ چار مہینے دس دن جو شرع سے قائم ہیں بعد عدت سے نکاح کرے تو بعد کو ایک سال یا ۹ مہینے کے بچہ پیدا ہوا تو پہلے خاوند کا مانا جائے گا یا جب جس سے نکاح ہوا اس کا؟ ۳ تیسرے یہ کہ وہ بچہ کونسی حق ملکیت میں مستحق ہوگا پہلے باپ کی ملکیت میں یا دوسرے کی؟ ۴ چوتھے یہ کہ بعض امام سلام پھیر کر سر پر ہاتھ رکھتے ہیں تو کس مصلحت سے رکھتے ہیں؟

الجواب: کتاب بہشتی زیور نہ دیکھا کیجئے، اس کا دیکھنا حرام ہے، اس میں بہت سے مسائل غلط اور بہت باتیں گمراہی کی ہیں اس کے مصنف کو تمام علمائے حرمین شریفین نے بالاتفاق نام لے کر لکھا ہے من شک فی کفرہ فقد کفر[2] جو اس شخص مذکور کے کافر ہونے میں شک کرے وہ بھی کافر ہے۔ یہ مسئلہ یوں ٹھیک نہیں بلکہ اگر چار مہینے دس دن عدت کے گزار کر عورت نکاح

کر لے اور نکاح سے چھ مہینے بعد بچہ پیدا ہو کہ موت شوہر سے دس مہینے دس ہی دن بعد ہوا ہرگز پہلے شوہر کا نہ ٹھہرے گا بلکہ اسی دوسرے کا ہے پہلے شوہر کے ترکہ سے اسے کچھ نہ ملے گا، یہ دوسرا شخص ہی اس کا باپ ہے اگر یہ مرے گا تو وہ بچہ اس کا وارث ہوگا بلکہ اگر عورت دوسرے شخص سے نکاح نہ بھی کرے صرف اتنا ہو کہ چار ماہ دس دن بعد وہ اپنی عدت ... [جاری ہے اگلے صفحہ پر]

[1] درمختار فصل فی ثبوت النسب مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۱-۲۶۲، ردالمحتار فصل فی ثبوت النسب داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۲۳ تا ۶۲۶ [2] درمختار باب المرتد مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵۶

Fatawa Razawiyya Volume 13

If she has already acknowledged the completion [of the waiting period], and a child is born six months after that, it will never be attributed to the deceased husband. It is stated in Durr al-Mukhtar:

If she acknowledges its completion after four months and ten days, and its birth is at six months, it is not established due to the possibility of its occurrence after the acknowledgment. (Summarized)

If a woman acknowledges the completion of the waiting period of four months and ten days from the time of her husband's death, and then gives birth to a child exactly six months from the time of acknowledgment, the child's lineage will not be established because there is a possibility that the pregnancy occurred after the acknowledgment. (T)

Reciting a prayer after putting one's hand on the forehead after prayer is mentioned in the Hadith; it is not for writing in a card. And Allah the Almighty knows best.

Problem 125: From Pilibhit, sent by Usman Sahib via Maulana Abdul Haq Sahib, 22 Shawwal 1336 AH.

Hinda's husband has not had intimacy with her for two and three-quarter years. During this period, Hinda lived at her father's house. In this situation, while at her parental home, she had no relative other than her father; even her mother was not there, nor any other woman with her. Now, after two and three-quarter years, she has given birth to a child. Hinda says under oath and by swearing that the child belongs to her husband, saying "you can satisfy yourself however you wish." During these two and three-quarter years, she did not inform her husband or his family, nor her parents' relatives, although there was a great desire for a child on both sides because the husband had no children from his other wife or from her either. Hinda says, "Signs of pregnancy started appearing for me two and a half months ago. Due to my co-wife, I did not disclose it to anyone, fearing she might become troublesome. However, I called my husband and my aunt, but she did not come to me." The child was born at the father's house. On the fourth day, the husband was informed in writing. Hinda also told her aunt that her vision had changed and her body often felt hot/feverish; this was her condition. Her aunt also states the same. Her menstruation had stopped, though sometimes it would seem to start and then stop. When Hinda and her father informed the husband about the newborn in writing, the husband

sent a written reply in a state of grief, saying, "I have had no relationship with her for a long time, therefore the child is not mine and I have no connection with it." Please provide an answer based on the statements of jurists, Hadiths, and precedents. Finis.

---

1. Durr al-Mukhtar, Section on Establishment of Lineage, Matba' Mujtabai Delhi, 1/262.

फतावा रज़विया जिल्द 13

[इद्दत] गुजर जाने का इकरार कर चुकी हो, उसके छह महीने बाद बच्चा पैदा हुआ, तब भी वह हरगिज़ उस मृत पति का नहीं माना जाएगा। दुर्रे मुख़्तार में है:

यदि उसने चार महीने और दस दिन के बाद उसके बीतने का इकरार किया, और जन्म छह महीने पर हुआ, तो वह साबित नहीं होगा क्योंकि इकरार के बाद उसके होने की संभावना है। (संक्षेपित)

अगर औरत पति की मौत के समय से चार महीने दस दिन की इद्दत गुजरने का इकरार करे, फिर इकरार के वक्त से पूरे छह महीने में बच्चे को जन्म दे, तो बच्चे का नसब (वंश) साबित न होगा क्योंकि संभावना है कि हमल (गर्भाधान) इकरार के बाद हुआ हो। (त)

नमाज़ के बाद माथे पर हाथ रखकर एक दुआ पढ़ना हदीस में आया है, कार्ड में लिखने की नहीं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है)।

मसला 125: पीलीभीत से, प्रेषक उस्मान साहब ज़रिए मौलवी अब्दुल हक़ साहब, 22 शव्वाल 1336 हिजरी।

हिन्दा से उसके शौहर (पति) ने पौने तीन साल से क़ुरबत (नजदीकी/शारीरिक संबंध) नहीं की है और इस ज़माने में पौने तीन साल हिन्दा अपने बाप के यहाँ रही। इस सूरत में कि मायके में सिवाय बाप के और कोई उसका रिश्तेदार नहीं था और माँ भी उसकी नहीं थी और न कोई औरत उसके पास थी, अब पौने तीन साल के बाद उसका बच्चा पैदा हुआ। हिन्दा हलफ़ (शपथ) और क़सम से कहती है कि बच्चा मेरे शौहर का है, जिस तरह चाहो इत्मीनान कर लो। इस ज़माने (पौने तीन साल) में अपने शौहर या उसके खानदान वालों को या अपने माँ-बाप के रिश्तेदारों को सूचित नहीं किया, हालांकि दोनों तरफ़ बच्चा होने की कमाल तमन्ना थी क्योंकि उसके शौहर की दूसरी बीवी से भी और न ही इससे कोई औलाद थी। हिन्दा कहती है कि मुझको ढाई महीने से आसार-ए-हमल (गर्भाधान के लक्षण) कुछ ज़ाहिर हुए, मैंने अपनी सौत (सौतन) की वजह से किसी से इज़हार नहीं किया कि कहीं सौत पीछे न पड़ जाए, मगर मैंने अपने शौहर और अपनी चाची को बुलाया, वह मेरे पास नहीं आई। बच्चा बाप के यहाँ पैदा हुआ, चौथे दिन शौहर को तहरीर (लिखकर) के ज़रिए सूचित किया गया। हिन्दा ने यह भी अपनी चाची से कहा कि मेरी आँखों की रोशनी में फ़र्क़ आ गया है और मेरा जिस्म अक्सर तपता है, यह उसकी हालत थी, यह उसकी चाची का भी बयान है। माहवारी भी बंद थी लेकिन कभी-कभी कुछ महसूस होकर बंद हो जाता था। जब हिन्दा और उसके बाप ने तहरीर के ज़रिए शौहर को नवजात

की सूचना दी, तब शौहर ने गम की हालत में उसका लिखित जवाब भेजा कि 'काफ़ी समय से मेरा उससे ताल्लुक नहीं है, लिहाज़ा वह बच्चा मेरा नहीं है और मेरा उससे कोई संबंध नहीं है।' इसका जवाब फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्रियों) की इबारतों, अहादीस (हदीसों) और मिसालों से फ़रमाया जाए, फ़क़त।

---

1. दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फ़ी सुबूत अल-नसब, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/262।

گزر جانے کا اقرار کر چکی ہو اس کے چھ مہینے بعد بچہ پیدا ہوا جب بھی ہر گز اس شوہر مردہ کا نہ ٹھہرے گا۔ درمختار میں ہے:

لوا قرت بمضیھا بعد اربعة اشھر وعشرا فولاد تہ لستة اشھرلم یثبت لاحتمال حدوثہ بعد الاقرار ۱ (ملخصاً)

اگر عورت موت زوج کے وقت سے چار ماہ دس دن عدت گزرنے کا اقرار کرے پھر وقت اقرار سے پورے چھ ماہ میں بچہ کو جنم دے تو بچے کا نسب ثابت نہ ہوگا کیونکہ احتمال ہے کہ حمل کا حدوث اقرار کے بعد ہوا ہو۔ (ت)

نماز کے بعد پیشانی پر ہاتھ رکھ کر ایک دعا پڑھنا حدیث میں آیا ہے کارڈ میں دعا لکھنے کی نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۵: از پیلی بھیت مرسلہ عثمان صاحب معرفت مولوی عبدالحق صاحب ۲۲ شوال ۱۳۳۶ھ

ہندہ سے اس کے شوہر نے پونے تین سال سے قربت نہیں کی اور اس زمانہ میں پونے تین سال ہندہ اپنے باپ کے یہاں رہی اور اس صورت میں کہ میکے میں سوائے باپ کے اور کوئی اس کا رشتہ دار نہیں تھا اور ماں بھی اس کی نہیں تھی اور نہ کوئی عورت اور اس کے پاس تھی ، اب پونے تین سال کے بعد اس کے بچہ پیدا ہوا، ہندہ حلف سے اور قسم سے کہتی ہے کہ بچہ میرے شوہر کا ہے جس طرح چاہے اطمینان کرلو، اس زمانہ پونے تین سال میں اپنے شوہر یا اس کے خاندان والوں کو یا اپنے ماں باپ کے رشتہ داروں کو مطلع نہیں کیا حالانکہ دونوں طرف بچہ ہونے کی کمال تمنا تھی کیونکہ اس کے شوہر کی دوسری بی بی سے بھی نیز اس سے اور کوئی اولاد نہ

تھی ، ہندہ کہتی ہے کہ مجھ کو ڈھائی مہینے سے آثار حمل کچھ ظاہر ہوئے میں نے بوجہ اپنی سوت کے کسی سے اظہار نہیں کیا کہ مبادا سوت درپے آزار ہو مگر میں نے اپنے شوہر کو نیز اپنی چچی کو بلایا وہ میرے پاس نہیں آئی بچہ باپ کے یہاں پیدا ہوا ، چوتھے روز شوہر کو بذریعہ تحریر مطلع کیا، ہندہ نے یہ بھی اپنی چچی سے کہا میری بینائی میں فرق آگیا ہے اور میرا جسم اکثر پکتا ہے، یہ اس کی حالت تھی ، یہ اس کی چچی کا بھی بیان ہے اور ایام بھی بند تھے مگر گاہے کچھ معلوم ہو کر بند ہو جاتا تھا، جب ہندہ اور اس کے باپ نے بذریعہ تحریر شوہر کو اطلاع دی مولود کی ، تب شوہر نے حالت غم میں اس کا جواب تحریری بھیجا کہ عرصہ سے میرا اس سے تعلق نہیں لہذا وہ بچہ میرا نہیں ہے اور میرا اس سے تعلق نہیں ہے۔ اس کا جواب عباراتِ فقہاء واحادیث و تمثیلات سے فرمایا جائے ، فقط

---

۱ درمختار فصل فی ثبوت النسب مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۲/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

The Answer: In the queried situation, legally the child undoubtedly belongs to that husband. It is not permissible for him to deny it. Not to mention two and three-quarter years, even if they had been apart for thirty or forty years, the child would still be his. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Arabic: The child belongs to the (marriage) bed, and for the adulterer is the stone.] [Translation: The child belongs to the one with the marriage, and the fornicator is deprived. (T)]

It is stated in Durr al-Mukhtar: [Arabic: The jurists have considered the establishment of the marriage bed sufficient without consummation, such as a Western man marrying an Eastern woman with a year's distance between them. If she gives birth six months after the marriage, the lineage is established due to the possibility of miracles (karamat) or the use of supernatural beings (istikhdam). Fath.] [Translation: The noble jurists have deemed the existence of marriage sufficient for establishing lineage, even if intercourse is not proven. For instance, if a person living in the West marries a woman living in the East, and there is a year's travel distance between them, and the woman gives birth six months after the time of marriage, the lineage will belong to the husband. This is because it is possible and conceivable through miracles or the use of spirits. Fath. (T)]

Our Imams have set the maximum duration of pregnancy at two years because this is predominant, and in jurisprudence, what is predominant is considered. Rare occurrences, especially those not heard of in hundreds of years across millions of births, are not taken into account. During the blessed era of the Commander of the Faithful, Umar Faruq al-Azam (may Allah be pleased with him), a gentleman left his wife in his homeland and went on a journey. He returned after two years and found his wife pregnant. After some time, a child was born whose front four teeth had already emerged in the womb, and he resembled his father in appearance. When the man saw the child, he said, "By the Lord of the Kaaba, he is my son." This is mentioned in Fath al-Qadir, and it is stated that this applies as long as the marriage exists and the husband claims lineage.

[Arabic: I say: At the beginning of the hadith, it is mentioned that Umar (may Allah be pleased with him) intended to stone her.] [Translation: I say: (I say that) at the beginning of the hadith it is mentioned that Umar Faruq (may Allah be pleased with him) intended to stone that woman...]

Footnotes: 1. Sahih al-Bukhari, Chapter: The child belongs to the bed, whether she is a free woman or a slave, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/999 2. Durr al-Mukhtar, Section on Establishing Lineage, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/223 3. Fath al-Qadir, Chapter: Section on Establishing Lineage, Nooriya Razawiyya, Sukkur, 4/181

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

अल-जवाब (उत्तर): पूछी गई स्थिति में, वह बच्चा कानूनी रूप से निस्संदेह उसी पति का है। उसे इसका इनकार करना जायज़ नहीं है। पौने तीन साल तो क्या, अगर वे तीस-चालीस साल से भी अलग होते, तब भी बच्चा उसी का होता। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[अरबी: बच्चा बिछौने (निकाह) वाले का है, और ज़िनाकार के लिए पत्थर है।] [अनुवाद: बच्चा निकाह वाले का है और व्यभिचारी के लिए वंचना है। (त)]

दुर्रे मुख़्तार में है: [अरबी: फकीहों ने बिना संभोग के भी निकाह के अस्तित्व को पर्याप्त माना है, जैसे कि पश्चिम के रहने वाले का पूर्व की महिला से विवाह, जिनके बीच एक साल की दूरी हो। यदि विवाह के छह महीने बाद बच्चा पैदा हो, तो करामात या जिन्नात की मदद की संभावना के कारण वंश स्थापित हो जाता है। फतह।] [अनुवाद: फकीह (न्यायविदों) ने वंश की स्थापना में निकाह के अस्तित्व को पर्याप्त माना है, भले ही संभोग न हुआ हो। जैसे कोई पश्चिम में रहने वाला व्यक्ति पूर्व में रहने वाली महिला से विवाह करे और दोनों के बीच साल भर की दूरी हो, और उस महिला के यहाँ निकाह के छह महीने बाद बच्चा पैदा हो, तो वंश पति का ही माना जाएगा क्योंकि करामात या जिन्नात की मदद (इस्तिखदाम) के माध्यम से यह संभव और कल्पनीय है। फतह। (त)]

हमारे इमामों ने गर्भ की अधिकतम अवधि दो वर्ष रखी है क्योंकि यही अक्सर होता है, और फिक़्ह (न्यायशास्त्र) में अक्सर होने वाली स्थिति का ही विचार किया जाता है। दुर्लभ मामले, विशेष रूप से ऐसे जो सैकड़ों वर्षों और करोड़ों जन्मों में भी सुनने में न आए हों, उन पर ध्यान नहीं दिया जाता। अमीरुल मोमिनीन उमर फारूक-ए-आजम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के धन्य काल में, एक व्यक्ति अपनी पत्नी को वतन में छोड़कर यात्रा पर गया। वह दो साल बाद लौटा तो उसने अपनी पत्नी को गर्भवती पाया। कुछ समय बाद एक बच्चा पैदा हुआ जिसके सामने के चार दांत गर्भ में ही निकल आए थे और वह सूरत में अपने पिता के समान था। जब उस व्यक्ति ने बच्चे को देखा तो कहा, "काबा के रब की कसम, यह मेरा बेटा है।" इसका उल्लेख 'फतह' में है, और कहा गया है कि यह तब है जब निकाह मौजूद हो और पति वंश का दावा करे।

[अरबी: अक़ूलु: हदीस की शुरुआत में है कि उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसे पत्थर मारने का इरादा किया।] [अनुवाद: अक़ूलु: (मैं कहता हूँ कि) हदीस की शुरुआत में है कि उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उस औरत को रज्म (पत्थर मारना)...]

पादलेख: 1. सहीह अल-बुखारी, अध्याय: बच्चा बिछौने वाले का है चाहे वह स्वतंत्र हो या दासी, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/999 2. दुर्रे मुख्तार, वंश की स्थापना का खंड, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/223 3. फतह अल-कादिर, अध्याय: वंश की स्थापना का खंड, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 4/181

पृष्ठ 688 का 368

الجواب صورتِ مستفسرہ میں وہ بچہ شرعاً بلاشبہ اسی شوہر کا ہے اسے اس کا انکار جائز نہیں پونے تین در کنار تیس چالیس برس سے دونوں الگ ہوتے جب بھی بچہ اسی کا ہوتا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[الولد للفراش وللعاھر الحجر ۱۔] [بچہ نکاح والے کا ہے اور زانی کے لئے محرومی ہے۔(ت)]

درمختار میں ہے: [قد اکتفوا بقیام الفراش بلا دخول کتزوج المغربی بمشرقیة بینھما مسافة سنة فولدت لستة اشھر مذ تزوجھا لتصور کرامة و استخداماً، فتح ۲۔] [فقہاء کرام نے ثبوت نسب میں نکاح موجود ہونے کو کافی قرار دیا اگرچہ جماع نہ پایا جائے ، جیسے کوئی مغرب میں رہنے والا شخص مشرق میں رہنے والی عورت سے نکاح کرے اور دونوں کے درمیان سال بھر کی مسافت ہو اور اس عورت کے ہاں وقت نکاح سے چھ ماہ بعد بچہ پیدا ہو تو نسب نکاح والے کا ہوگا کیونکہ کرامت اور استخدام کے طور پر یہ ممکن ہے اور منصور ہے ، فتح۔(ت)]

ہمارے ائمہ نے اکثر مدت حمل دو سال رکھی ہے کہ غالب یہی ہے اور فقہ میں غالب ہی کا اعتبار ہے نادر خصوصاً ایسا کہ صدہا سال کروڑوں ولادتوں میں اس کا خلاف نہ مسموع ہو لحاظ نہیں کیا جاتا، امیر المومنین عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے عہد مبارک میں ایک صاحب اپنی زوجہ کو وطن میں چھوڑ کر سفر کو گئے، دو برس بعد واپس آئے تو عورت کو حاملہ پایا ایک مدت بعد بچہ ہوا قد نبتت ثنیتاہ یشبہ اباہ اس کے اگلے چاروں دانت پیٹ ہی سے نکل چکے تھے صورت میں اپنے باپ سے مشابہ تھا فلماراہ الرجل قال ولدی و رب الکعبہ جب ان صاحب نے اس بچے کو دیکھا کہا خدا کی قسم میرا بچہ ذکرہ فی الفتح، وقال انما ھو بقیام الفراش و دعوی الرجل

نسبہ ۱۳اھ (اس کو فتح میں ذکر کیا ہے، اور فرمایا یہ تب ہے کہ نکاح موجود ہو اور زوج نسب کا دعویٰ کرے۔ اھ ت)

[اقول: فی صدر الحدیث ان عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ ھم برجمھا] [اقول: (میں کہتا ہوں کہ) حدیث کے شروع میں ہے کہ عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس عورت کو رجم]

۱ صحیح البخاری باب الولد للفراش حرۃ کانت او امۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۹۹۹ ۲ درمختار فصل فی ثبوت النسب مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۳ ۳ فتح القدیر باب فصل فی ثبوت النسب نوریہ رضویہ سکھر ۱۸۱/۴

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Mu'adh (may Allah be pleased with him) said to him (Umar ibn al-Khattab): "If you have authority over her, you have no authority over what is in her womb." So he (Umar) left her until she gave birth to a child whose teeth had already grown, etc. Thus, the marriage bond (the 'bed') was established when he intended to stone her, and it does not require a formal claim of paternity. Therefore, the correct view, if Allah wills, is that such an event occurs with extreme rarity, and in jurisprudence, what is common and predominant is taken into account. Understand this. Then, after a short while, praise be to Allah, I saw that Imam al-Sarakhsi (may Allah have mercy on him) explicitly stated in his 'al-Mabsut' exactly what had occurred to the mind of this humble person. After mentioning the aforementioned hadith, he said that rulings are based on apparent norms, while a child staying in the mother's womb for more than two years is an extremely rare occurrence. (T)

Al-Daraqutni and al-Bayhaqi narrated in their respective 'Sunan' from Walid ibn Muslim, who reported that Imam Dar al-Hijrah, the scholar of Medina, our master Imam Malik (may Allah be pleased with him) said: "This is our neighbor, the wife of Muhammad ibn Ajlan, a truthful woman, and her husband is a truthful man. She had three pregnancies in twelve years, each pregnancy lasting four years."

These are our neighbor Muhammad ibn Ajlan's wife; she is a truthful woman and he is a truthful man. Their three pregnancies occurred over twelve years, each lasting four years.

[1] Fath al-Qadir, Chapter on Establishing Paternity, Maktabah Nooria Rizvia, Sukkur, 4/181. [2] Al-Mabsut by al-Sarakhsi, Chapter on Iddah and Woman Leaving Her Home, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 6/45. [3] Fath al-Qadir with reference to al-Daraqutni and al-Bayhaqi, Chapter on Establishing Paternity, Maktabah Nooria Rizvia, Sukkur, 4/180-181.

Page 369 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

मुआज़ (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने उनसे (उमर इब्न अल-ख़त्ताब) कहा: "यदि आपको इस महिला पर अधिकार है, तो उसके गर्भ में जो है उस पर आपका कोई अधिकार नहीं है।" इसलिए उन्होंने (उमर) उसे छोड़ दिया जब तक कि उसने एक ऐसे बच्चे को जन्म नहीं दिया जिसके दांत पहले ही निकल चुके थे, इत्यादि। इस प्रकार, जब उन्होंने उसे पत्थर से मारने (रज्म) का इरादा किया था, तब विवाह का बंधन (बिस्तर) स्थापित था, और इसके लिए पितृत्व के औपचारिक दावे की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, सही विचार यह है, यदि अल्लाह चाहे, कि ऐसी घटना अत्यंत दुर्लभता के साथ होती है, और न्यायशास्त्र में जो सामान्य और प्रचलित है, उस पर विचार किया जाता है। इसे समझें। फिर, थोड़ी देर बाद, अल्लाह की प्रशंसा हो, मैंने देखा कि इमाम अल-सरखसी (अल्लाह उन पर दया करे) ने अपनी पुस्तक 'अल-मबसूत' में स्पष्ट रूप से वही बात कही जो इस तुच्छ व्यक्ति के मन में आई थी। उपर्युक्त हदीस का उल्लेख करने के बाद, उन्होंने कहा कि नियम प्रत्यक्ष मानदंडों पर आधारित होते हैं, जबकि एक बच्चे का माँ के गर्भ में दो साल से अधिक समय तक रहना एक अत्यंत दुर्लभ घटना है। (त)

अल-दारकुतनी और अल-बैहकी ने अपनी-अपनी 'सुनन' में वलीद इब्न मुस्लिम से वर्णन किया है, जिन्होंने बताया कि इमाम दार अल-हिजरा, मदीना के विद्वान, हमारे आका इमाम मालिक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "यह हमारी पड़ोसी है, मुहम्मद इब्न अजलान की पत्नी, एक सच्ची महिला है और उसका पति एक सच्चा आदमी है। उसने बारह वर्षों में तीन गर्भ धारण किए, प्रत्येक गर्भ चार वर्ष का था।"

ये हमारे पड़ोसी मुहम्मद इब्न अजलान की पत्नी हैं; वह एक सच्ची महिला है और वह एक सच्चा आदमी है। उनके तीन गर्भ बारह वर्षों में हुए, प्रत्येक चार वर्ष का था।

[1] फतह अल-कादिर, पितृत्व स्थापित करने का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 4/181। [2] इमाम सरखसी द्वारा अल-मबसूत, इद्दत और महिला का अपने घर से निकलने का अध्याय, दार अल-मआरिफा, बेरुत, 6/45। [3] अल-दारकुतनी और अल-बैहकी के संदर्भ के साथ फतह अल-कादिर, पितृत्व स्थापित करने का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 4/180-181।

पेज 369/688

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

فقال له معاذ رضی الله تعالی عنه ان کان لك علیها سبیل فلاسبیل لك علی مافی بطنها. فترکها حتی ولدت ولداقد نبتت[1] الخ فالفراش قد کان قائما حین هم برجمها وهو لایحتاج الی الدعوة فالصواب ان یشاء الله تعالی ان ذلك قد یقع بغایة الندرة والعبرة فی الفقه الغالب فافهم، ثم بعد سویعة رأیت ولله الحمد الامام السرخسی رحمه الله تعالی صرح فی مبسوطه بما سبق الیه خاطر الفقیر اذ قال بعد ذکر الحدیث المذکور والاحکام تبتنی علی العادة الظاهرة وبقاء الولد فی بطن امه اکثر من سنتین فی غایة الندرة[2] ۔

کرنے کا قصد فرمایا تو ان سے حضرت معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کیا کہ اگر چہ آپ کو اس عورت پر قدرت ہے مگر اس کے پیٹ میں جو بچہ ہے اس پر آپ کی قدرت نہیں، تو اس پر عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عورت کو چھوڑ دیا حتی کہ اس عورت نے ایسے بچے کو جنم دیا جس کے دانت نکل چکے تھے الخ تو جب حضرت عمر فاروق نے اس عورت کے رجم کا ارادہ فرمایا تو اس وقت اس کا نکاح موجود تھا، تو ایسی صورت میں نسب کا دعویٰ کی ضرورت نہیں، تو درست یہی ہے۔ اگر اللہ تعالیٰ نے چاہا کہ ایسا واقعہ انتہائی نادر ہوتا ہے۔ جبکہ فقہ میں کثیر الوقوع کا اعتبار کیا جاتا ہے ، اس پر غور کرو۔ پھر تھوڑی دیر بعد للہ الحمد میں نے امام سرخسی کا نقل کردہ کلام دیکھا کہ آپ نے اپنی مبسوط میں اسی بات کی تصریح فرمائی جو میرے دل پر وارد ہوئی تھی، جب انہوں نے مذکورہ حدیث اور کچھ ایسے واقعات جن کا ذکر آ رہا ہے ، کو بیان کر کے فرمایا ہمارے لئے احکام ظاہر عادت پر مبنی ہیں، جبکہ ماں کے پیٹ میں دو سال سے زائد عرصہ بچہ کا رہنا انتہائی نادر واقعہ ہے۔ (ت)

دار قطنی و بیہقی اپنے اپنے سنن میں ولید بن مسلم سے راوی امام دار الہجرة عالم المدینہ سیدنا امام مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا : هذه جارتنا امرأة محمد بن عجلان امرأة صدق وزوجها رجل

صدق حملت ثلثة ابطن فی اثنی عشرة سنة کل بطن فی اربع سنین[3] ۔ یہ ہیں ہماری ہمسائی محمد بن عجلان کی بی بی، یہ بچی عورت اور وہ سچے مرد ، ان کے تین حمل بارہ ۱۲ برس میں ہوئے ، ہر حمل چار سال میں۔

[1] فتح القدیر باب ثبوت النسب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۸۱/۴ [2] مبسوط سرخسی باب العدة وخروج المرأة من بیتها دار المعرفة بیروت ۴۵/۶ [3] فتح القدیر بحوالہ الدارقطنی والبیهقی باب ثبوت النسب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۸۱/۴- ۱۸۰

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi states in Al-Mabsut:

[Box Start] Arabic Text: It is said that al-Dahhak was born to his mother after four years [of pregnancy], and she gave birth to him after four years, and she gave birth to him after his incisors had sprouted while he was laughing. Thus, he was named Dahhak (the one who laughs a lot). And Abdul Aziz al-Majishuni (may Allah Almighty be pleased with him) was also born to his mother after four years. This is a well-known habit among the women of Majishun (may Allah Almighty be pleased with them) that they give birth after four years.

Urdu Translation: That is, it is narrated that the Imam, commentator, and scholar of Hadith, Dahhak, remained in his mother's womb for four years. When he was born, his front four teeth had already emerged, and he appeared to be laughing. Therefore, he was named Dahhak (meaning 'the one who laughs a lot'). Similarly, Imam Muhaddith Abdul Aziz Al-Majishuni also remained in pregnancy for four years. It is a famous habit of the women of Bani Majishun that children stay in their wombs for four years. [Box End]

A husband says regarding his wife, "That child is not mine and I have no relation to it." In this final phrase, if the pronoun refers to the child (contrary to the first phrase), then it is clear that it has no relation to divorce. However, if like the first phrase, the pronoun refers to the woman, then this word is among the 'Kinaya' (allusive terms) for divorce, and it carries the possibility of insult and blame, meaning "I am weary of such a woman." If this is said in a state of anger, then without the husband's confession, proof of the intention of divorce will not be established. He will be asked to swear an oath. If he swears that he did not utter this word with the intention of dissolving the marriage contract, then no divorce occurs. If he swears a false oath, the sin is upon him. It is stated in Al-Mabsut of Imam Shams al-A'immah:

[Box Start] Arabic Text: "You are Bā'in (severed), Harām (forbidden), Battah (absolutely cut off), Khaliyyah (void), Bariyyah (free/disconnected)." These words carry the meaning of insult, i.e., you are severed from the religion, disconnected from Islam, void of goodness, prohibited in companionship and cohabitation, and absolutely cut off from good character. It is narrated from Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) that he joined four other phrases to these words: "I have let go of your path" (Khallaytu sabilak), "I have parted from you" (Faraqtuk), "I have no way over you" (La sabila li 'alayk), "I have no ownership" (La milka).

Urdu Translation: If a husband says to his wife, "You are Bā'in, you are Harām, you are distant, you are empty, you are free/disconnected," then these words carry the possible meanings of insult and blame. Meaning, you are separate from the religion, you are free from Islam, you are void of goodness, you are deprived of companionship and cohabitation, and you are far from good character. (Therefore, because of these mentioned meanings, these words can become insults, so without the intention of divorce, divorce will not occur). It is narrated from Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) that he mentioned four more phrases in addition to these five words (in which there is a possibility of being an insult... [Box End]

1 Al-Mabsut al-Sarakhsi, Book of Iddah and the exit of a woman from her home, Dar al-Ma'rifah Beirut, 25/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-सरखसी 'मब्सूत' में फरमाते हैं:

[बॉक्स प्रारंभ] अरबी पाठ: कहा जाता है कि ज़ह्हाक की माँ ने उन्हें चार साल तक कोख में रखा, और उनकी माँ ने उन्हें चार साल तक रखा, और उनकी माँ ने उन्हें तब जन्म दिया जब उनके सामने के दाँत निकल चुके थे और वह हँस रहे थे। इसलिए उनका नाम ज़ह्हाक (बहुत हँसने वाला) रखा गया। और अब्दुल अज़ीज़ अल-माजीशुनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी चार साल तक कोख में रहे, और माजीशून की महिलाओं में यह एक जानी-मानी आदत है कि वे चार साल बाद बच्चों को जन्म देती हैं।

उर्दू अनुवाद: यानी रिवायत है कि इमाम, मुफ़स्सिर और मुहद्दिस ज़ह्हाक चार साल तक माँ के पेट में रहे। जब पैदा हुए तो सामने के चारों दाँत निकल चुके थे, और हँसते हुए मालूम होते थे, इसलिए उनका नाम ज़ह्हाक रखा गया (यानी बहुत हँसने वाला)। इसी तरह, इमाम मुहद्दिस अब्दुल अज़ीज़ माजीशुनी भी चार साल तक गर्भ में रहे। बनी माजीशून की महिलाओं की यह आदत मशहूर है कि बच्चा उनके पेट में चार साल तक रहता है। [बॉक्स समाप्त]

एक पति अपनी पत्नी के बारे में कहता है, "वह बच्चा मेरा नहीं है और मेरा उससे कोई संबंध नहीं है।" इस अंतिम शब्द में, यदि सर्वनाम (पहले वाक्यांश के विपरीत) बच्चे की ओर संकेत करता है, तो स्पष्ट है कि इसका तलाक से कोई संबंध नहीं है। लेकिन अगर पहले की तरह सर्वनाम स्त्री की ओर है, तो यह शब्द तलाक के'किनाया' (परोक्ष शब्दों) में से है, और इसमें अपमान और निंदा की संभावना है, अर्थात् "मैं ऐसी औरत से तंग आ चुका हूँ।" यदि यह गुस्से की स्थिति में कहा गया है, तो पति के इकरार के बिना तलाक की नीयत का प्रमाण नहीं होगा। उससे कसम ली जाएगी। यदि वह कसम खाकर कहे कि उसने यह शब्द निकाह का संबंध खत्म करने की नीयत से नहीं कहा था, तो तलाक नहीं होगा। यदि वह झूठी कसम खाएगा, तो उसका गुनाह उस पर है। इमाम शम्स अल-अइम्मा की 'मब्सूत' में है:

[बॉक्स प्रारंभ] अरबी पाठ: "तुम बाइन (अलग), हराम (वर्जित), बत्ता (पूर्णतः कटी हुई), खलिया (खाली), बरिया (मुक्त) हो।" ये शब्द गाली के अर्थ भी रख सकते हैं, अर्थात् तुम दीन से अलग हो, इस्लाम से मुक्त हो, भलाई से खाली हो, साथ रहने और संभोग के लिए वर्जित हो, और अच्छे व्यवहार से पूर्णतः कटी हुई हो। इमाम अबू यूसुफ (रहमहुल्लाह अलैहि) से वर्णित है कि उन्होंने इन शब्दों के

साथ चार अन्य शब्द और जोड़े: 'मैंने तुम्हारा रास्ता छोड़ दिया', 'मैं तुमसे अलग हो गया', 'मेरा तुम पर कोई अधिकार नहीं है', 'कोई स्वामित्व नहीं'।

उर्दू अनुवाद: यदि पति अपनी पत्नी से कहे, "तुम बाइन हो, हराम हो, दूर हो, खाली हो, बरी हो," तो ये शब्द अपमान और निंदा के अर्थ के संभावित हैं। यानी तुम दीन से अलग हो, तुम इस्लाम से बरी हो, भलाई से खाली हो, सोहबत और मेल-मिलाप से वंचित हो, अच्छे अख़लाक़ से दूर हो। (अतः इन वर्णित अर्थों के कारण ये शब्द गाली बन सकते हैं, इसलिए तलाक की नीयत के बिना तलाक नहीं होगा)। इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैहि) से वर्णित है कि उन्होंने इन पाँच शब्दों के अलावा चार और शब्दों का ज़िक्र किया (जिनमें गाली की संभावना होने... [बॉक्स समाप्त]

1 मब्सूत अल-सरखसी, बाब अल-इद्दत और औरत का घर से निकलना, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 25/2

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

امام شمس الائمہ سرخسی مبسوط میں فرماتے ہیں:

[باکس کا آغاز] عربی عبارت: قیل ان الضحاک ولدته امه لاربع سنین، وولدته امه لاربع سنین، وولدته بعد مانبتت ثنیتاه وهو یضحک فسمی ضحاکا و عبدالعزیز الماجشونی رضی اللہ تعالیٰ عنه ولدته امه لاربع سنین وهذه عادة معروفة فی نساء ماجشون رضی اللہ تعالیٰ عنهم انهن یلدن لاربع سنین -

اردو ترجمہ: یعنی منقول ہوا کہ امام مفسر محدث ضحاک چار برس ماں کے پیٹ میں رہے ، پیدا ہوئے تو اگلے چاروں دانت نکل چکے تھے ، ہنستے معلوم ہوتے تھے اس لئے ضحاک نام رکھا گیا (یعنی بہت ہنسنے والے) ، اور امام محدث عبدالعزیز ماجشونی بھی چار برس حمل میں رہے ، اور بنی ماجشون کی عورتوں کی یہ عادت مشہور ہے کہ بچہ ان کے پیٹ میں چار برس رہتا ہے۔ [باکس کا اختتام]

شوہر زن کا کہنا ہے کہ وہ بچہ میرا نہیں اور میرا اس سے تعلق نہیں، اس لفظ اخیر میں اگر لفظ اول کے خلاف اس کی ضمیر بچے کی طرف ہے جب تو ظاہر ہے کہ اسے طلاق سے کوئی تعلق نہیں اور اگر مثل اول ضمیر عورت کی طرف ہے تو یہ لفظ کنایات طلاق سے ہے اور وہ محتمل سبّ وذم ہے یعنی میں ایسی عورت سے بیزار ہوں اور حالتِ حالت غضب ہے تو بے اقرار شوہر نیت طلاق کا ثبوت نہ ہوگا اس سے قسم لی جائے اگر بحلف کہہ دے کہ میں نے یہ لفظ نہ نیت ازالہ علاقہ نکاح نہ کہا تھا تو طلاق نہ ہوئی اگر جھوٹی قسم کھائے گا و بال اس پر ہے ، مبسوط امام شمس الائمہ میں ہے :

[باکس کا آغاز] عربی عبارت: انت بائن حرام بتة خلية برية تحتمل معنى السب اى انت بائن من الدين برية من الاسلام خلية من الخير حرام الصحبة والعشرة بتة عن الاخلاق الحسنة وعن ابى يوسف رحمہ الله تعالىٰ انه الحق بهذه الالفاظ اربعة الفاظ اخر خليت سبيلک فارقتک لاسبيل لى عليک لاملک

اردو ترجمہ: اگر خاوند بیوی کو کہے "تو بائن ہے ، حرام ہے ، دور ہے ، خالی ہے ، بری ہے " تو یہ الفاظ محتمل معنی سب وذم ہیں یعنی تو دین سے الگ ہے ، تو اسلام سے بری ہے ، خیر سے خالی ہے ، صحبت و عشرت سے محروم ہے ، اخلاق حسنہ سے دور ہے (لہٰذا یہ الفاظ مذکورہ معانی کی وجہ سے گالی بن سکتے ہیں اس لئے طلاق کی نیت کے بغیر طلاق نہ ہو گی) امام ابو یوسف رحمہ الله تعالىٰ سے مروی ہے کہ انہوں نے ان پانچ الفاظ پر مزید چار الفاظ ذکر فرمائے (جن میں گالی کا احتمال ہونے [باکس کا اختتام]

١ مبسوط السرخسى باب العدة وخروج المرأة من بيتها دار المعرفة بيروت ٢/٢٥

Fatawa Rizwia Volume 13, Page 13

(Arabic text): “Li 'alayka li'annaha tahtamilu ma'na as-sabb ay la milka li 'alayka li'annaka adwana min an tamliki, la sabila li 'alayka lisharrika wa su'i khuluqika, wa faraqtuka ittiqa'an lisharrika wa khallaytu sabilaka lihawanika 'alayy - 1” (Urdu Translation): (Due to which it will not count as divorce without intention). Those four phrases are: I have opened your path, I am separate from you, I have no recourse against you, I have no ownership over you. This is because these words carry the possibility of being an insult; meaning, I have no ownership over you because you are not worthy of it. I have no recourse against you because of your evil and bad character. I am separate from you to avoid your evil and bad character. I have opened your path because you are low/vile to me. (T)

Similarly, it is mentioned in 'Tabyin' by Imam Zaila'i. In 'Bada'i' by Imam Malik al-Ulama, it states: (Arabic text): “Ruwiya 'an Abi Yusuf annahu zada 'ala hadhihil alfadhil khamsati khamsatan ukhra: la sabila li 'alayka, faraqtuka, khallaytu sabilaka, la milka li 'alayka, binti minni, li'anna hadhihil alfadha tahtamilush shatma kama tahtamilut talaqa, fayaquluz zawju: la sabila li 'alayka lisharrika, wa faraqtuka fil makani likarahati ijtima'i ma'aka, wa khallaytu sabilaka wa ma anti 'alayhi, wa la milka li 'alayka li'annaki aqallu min an amlikaki, wa binti minni li'annaki ba'inatun minad dini aw ilakh - 2” (Urdu Translation): It is narrated from Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) that he added five more words to the first five mentioned, of which four are the same as before and one is "you are far from me," because these words, just as they carry the possibility of divorce, also carry the possibility of being an insult. For example, the husband says: because of your evil, I have no recourse against you; I live separately from you in the house because I dislike being together with you; I leave your path to your own state; I have no ownership over you because you are not worthy; you are distant from me because you are distant from religion, etc. (T)

Hidayah states: (Arabic text): “'An Abi Yusuf fi qawlihi la milka” (Urdu): "You are far from me" except for the other four words...

1. Al-Mabsut by al-Sarakhsi, chapter on what causes separation among things resembling divorce, Dar al-Ma'rifah Beirut, 6/80 & 81.
2. Bada'i al-Sana'i, section: As for metaphors, they are of two types... H.M. Saeed Company, Karachi, 3/107.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

(अरबी पाठ): "ली अलैक लिअन्हा ताहतमिलु मा'न-अस-सब आई ला मलि-का ली अलैक लिअन्नका अद-ऊना मिन अन तुमलीकी, ला सबीला ली अलैक लिशर-रिका व सु-ई खुल्किका, व फ़ारकतुका इत्तका-अन लिशर-रिका व ख़ल-लैतु सबीला-का लिहवा-निका अलैय् - 1" (उर्दू अनुवाद): (जिसके कारण नियत के बिना तलाक़ नहीं होगी) वे चार शब्द ये हैं: मैंने तुम्हारा रास्ता खोल दिया, मैं तुमसे अलग हूँ, मेरा तुम पर कोई चारा नहीं, मेरा तुम पर कोई स्वामित्व नहीं। क्योंकि इन शब्दों में गाली होने की संभावना है, अर्थात्, मेरा तुम पर स्वामित्व नहीं है क्योंकि तुम इसके योग्य नहीं हो। तुम्हारे बुरे और खराब व्यवहार के कारण मेरा तुम पर कोई वश नहीं है। मैं तुम्हारी बुराई और बुरे व्यवहार से बचने के लिए तुमसे अलग हूँ। मैंने तुम्हारा रास्ता खोल दिया है क्योंकि तुम मेरे लिए तुच्छ हो। (त)

इसी तरह इमाम ज़ैला'ई की 'तयबीन' में है। इमाम मलिक अल-उलमा की 'बदाई' में है: (अरबी पाठ): "रुआ अन अबी यूसुफ़ अन्नाहु ज़ादा आला हाज़िहिल अलफ़ाज़िल ख़मसा ख़मसा उखरा ला सबीला ली अलैक, फ़ारकतुका, ख़ल-लैतु सबीलाका, ला मालिका ली अलैक, बन्तु मिन्नी, लिअन्ना हाज़िहिल अलफ़ाज़ा ताहतमिलुश शत्मा कमा ताहतमिलुत तलाक़, फ़यक़ूलुज़ ज़ौज ला सबीला ली अलैक लिशररिका, व फ़ारकतुका फ़िल मकान लिकराहति इज़्तिमाई मा'का, व ख़ल-लैतु सबीलाका व मा अन्ता अलैहि, व ला मालिका ली अलैक लिअन्नका अक़ल्लु मिन अतमल्लुकि, व बन्तु मिन्नी लिअन्नका बा-इनुन मिनद् दीन अव इलख़ - 2" (उर्दू अनुवाद): इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) से वर्णित है कि उन्होंने पहले बताए गए पाँच शब्दों में पाँच और शब्द जोड़े, जिनमें से चार वही पुराने हैं और एक 'तू मुझसे दूर है', क्योंकि इन शब्दों में जिस तरह तलाक़ की संभावना है, गाली होने की संभावना भी है। उदाहरण के लिए, पति कहता है: तुम्हारी बुराई के कारण मेरा तुम पर कोई वश नहीं है; मैं घर में तुमसे अलग रहता हूँ क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहना पसंद नहीं करता; मैं तुम्हारा रास्ता तुम्हारी स्थिति पर छोड़ता हूँ; मेरा तुम पर कोई स्वामित्व नहीं है क्योंकि तुम इसके योग्य नहीं हो; तुम मुझसे दूर हो क्योंकि तुम धर्म से दूर हो आदि। (त)

'हिदाया' में है: (अरबी पाठ): "अबू यूसुफ़ से 'कोई स्वामित्व नहीं' के बारे में:" (उर्दू): "तुम मुझसे दूर हो" कि अन्य चार शब्दों के अलावा...

1. अल-मबसूत अल-सरखसी, तलाक़ जैसी चीज़ों के बीच जुदाई का अध्याय, दार अल-मआरिफ़ बेरूत, 6/80 और 81।

2. बदाई अस-सलाई, खंड: जहाँ तक रूपकों का प्रश्न है, वे दो प्रकार के होते हैं... एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/107।

पृष्ठ 371 / 688

لی علیك لانها تحتمل معنی السب ای لا ملك لی علیك لانك ادون من ان تملکی، لاسبیل لی علیك لشرك وسوء خلقك، وفارقتك انقاء لشرك وخلیت سبیلك لهوانك علیّ ۔ 1 کی وجہ سے بغیر نیت طلاق نہ ہوگی) وہ چار الفاظ یہ ہیں، میں نے تیرا راستہ کھول دیا، میں تجھ سے الگ ہوں، میرا تجھ پر چارہ نہیں، میری تجھ پر ملکیت نہیں۔ کیونکہ یہ الفاظ گالی کا احتمال رکھتے ہیں یعنی میری تجھ پر ملکیت نہیں کیونکہ تو اس قابل نہیں، میرا تجھ پر چارہ نہیں تیرے شر اور بد اخلاقی کی وجہ سے، میں تجھ سے الگ ہوں تیرے شر اور بد اخلاقی سے بچتے ہوئے، میں نے تیرا راستہ کھول دیا ہے کہ تو میرے ہاں کمینی ہے۔ (ت)

اسی طرح تبیین امام زیلعی میں ہے۔ بدائع امام ملک العلماء میں ہے: روی عن ابي یوسف انه زاد علی هذه الالفاظ الخمسة خمسة اخری لاسبیل لی علیك، فارقتك، خلیت سبیلك، لا ملك لی علیك، بنت منی، لان هذه الالفاظ تحتمل الشتم کما تحتمل الطلاق، فیقول الزوج لاسبیل لی علیك لشرك، وفارقتك في المکان لکراهة اجتماعی معك، وخلیت سبیلك وما انت علیه، ولا ملك لی علیك لانك اقل من اتملك، وبنت منی لانك بائن من الدین او الخ ۔ 2 امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالٰی سے مروی ہے کہ انہوں نے ان پہلے پانچ مذکورہ الفاظ پر مزید پانچ ذکر فرمائے جن میں چار وہی پہلے والے اور ایک 'تو مجھ سے دور ہے' کیونکہ یہ الفاظ جیسے طلاق کا احتمال رکھتے ہیں گالی ہونے کا احتمال بھی رکھتے ہیں، مثلاً خاوند کہتا ہے تیرے شر کی وجہ سے میرا تجھ پر چارہ نہیں، میں مکان میں تجھ سے جدا رہتا ہوں کیونکہ تیرے ساتھ اکٹھا رہنا نا پسند کرتا ہوں، تیرا راستہ تیرے حال پر کھولتا ہوں، تجھ پر میری ملکیت نہیں کیونکہ تو اس قابل نہیں، تو مجھ سے دور ہو کیونکہ تو دین سے دور ہے یا الخ (ت)

ہدایہ میں ہے: عن ابي یوسف فی قوله لا ملک "تو مجھ سے دور ہے" کہ ماسوا باقی چار الفاظ کو

1۔ مبسوط السرخسی باب ما تقع به الفرقة مما یشبه الطلاق دارالمعرفة بیروت ۸۰/۶ و ۸۱ 2۔ بدائع الصنائع فصل واما الکنایة فنوعان الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳ / ۱۰۷

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Arabic]: لي عليك ولا سبيل لي عليك وخليت سبيلك وفارقتك، انه يصدق في حالة الغضب لما فيها من احتمال معنى السب 1- [Urdu]: Mentioning it, he said it is narrated from Abu Yusuf that if the husband says, "I did not intend divorce" [with these words], then in a state of anger, the husband's word will be accepted because there is a possibility of insult in these words. (T)

In 'Inayah' it is stated: [Arabic]: فان قوله لاملك لى عليك يحتمل ان يكون معناه لانك اقل من ان تنسبى الى ملكي او نسب اليك بالملك ولا سبيل لي عليك لسوء خلقك واجتماع انواع الشر فيك، وخليت سبيلك لقذارتك وفارقتك في المضجع لذفرك وعدم نظافتك والحقي باهلك لانك اوحش من ان تكونى خليلتي- 2 [Urdu]: The husband's saying "I have no ownership over you" could mean "you are not worthy of my ownership" or "if I were to be your owner, you are not capable of it." "I have no way over you" could mean "this is because of your bad character and the gathering of all kinds of evil in you." "I have vacated your path" because of your filthiness. "I have separated from you in bed" due to your bad odor and lack of cleanliness. "Join your family" because you feel aversion in staying with me. (T)

In 'Fath al-Qadir' it is stated: [Arabic]: الحق ابو يوسف بالتى تحتمل السب الفاظ أخرى وهى لاملك عليك ، لاسبيل لى عليک، خليت سبيلك، فارقتك فهذه اربعة الفاظ ذكرها الوالوالجى وذكرها العتابى خمسة ، لاسبيل، لاملك، خليت سبيلك، الحقى باهلك، حبلك على [Urdu]: Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) added four more words to those that carry the possibility of being an insult; these same four were mentioned by Al-Walwalaji. In Al-Atabi, five were mentioned: "No way over you," "No ownership over you," "I vacated your path," "Join your family," "Your rope is on your shoulder." Similarly, in 'Sharh Jami' al-Saghir', Shams al-A'immah mentioned these same five, but regarding "Your rope is on your shoulder"...

---

1 Al-Hidayah, Kitab al-Talaq, chapter on divorce before consummation, Al-Maktabat al-Arabiyya, Karachi, 2/355 2 Al-Inayah Sharh al-Hidayah, on the margin of Fath al-Qadir, chapter on divorce before consummation, Maktaba Nooriya Rizvia, Sukkur, 3/202

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी]: لي عليك ولا سبيل لي عليك وخليت سبيلك وفارقتك، انه يصدق في حالة الغضب لما فيها من احتمال معنى السب 1- [उर्दू]: उल्लेख करते हुए कहा कि अबू यूसुफ़ से रिवायत है कि अगर शौहर कहे कि "मैंने तलाक की नीयत से नहीं कहा," तो गुस्से की हालत में शौहर की बात तस्दीक की जाएगी क्योंकि इन अलफ़ाज़ में गाली होने का एहतमाल (संभावना) है। (त)

'इनाया' में है: [अरबी]: فان قوله لاملك لى عليك يحتمل ان يكون معناه لانك اقل من ان تنسبى الى ملكي او نسب اليك بالملك ولا سبيل لي عليك لسوء خلقك واجتماع انواع الشر فيك، وخليت سبيلك لقذارتك وفارقتك في المضجع لذفرك وعدم نظافتك والحقي باهلك لانك اوحش من ان تكونى خليلتي- 2 [उर्दू]: शौहर का यह कहना कि "तुझ पर मेरी मिल्कियत (स्वामित्व) नहीं है" का अर्थ हो सकता है कि "तू मेरी मिल्कियत के काबिल नहीं" या "मैं तेरा मालिक बनूँ तो इस काबिल नहीं।" "मेरा तुझ पर चारा (कोई रास्ता) नहीं" का यह अर्थ हो सकता है कि "यह तेरी बद-अख्लाकी की वजह से और तेरे हर किस्म के शर (बुराई) की वजह से है।" "तेरा रास्ता खोल दिया" तेरी गंदगी की वजह से। "मैं बिस्तर में तुझसे अलग हूँ" तेरी बदबू और सफ़ाई न होने की वजह से। "अपने घर वालों के पास चली जा" क्योंकि तू मेरे साथ रहने में वहशत महसूस करती है। (त)

'फ़तह अल-क़दीर' में है: [अरबी]: الحق ابو يوسف بالتى تحتمل السب الفاظ أخرى وهى لاملك عليك ، لاسبيل لى عليک، خليت سبيلك، فارقتك فهذه اربعة الفاظ ذكرها الوالوالجى وذكرها العتابى خمسة ، لاسبيل، لاملك، خليت سبيلك، الحقى باهلك، حبلك على [उर्दू]: अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) ने उन शब्दों के साथ जिनमें गाली होने की संभावना है, चार और शब्दों को शामिल किया; इन्हीं चारों का उल्लेख अल-वलवालजी ने किया। अल-अताबी ने पाँच का उल्लेख किया: "तुझ पर चारा नहीं," "तुझ पर मिल्कियत नहीं," "तेरा रास्ता खोल दिया," "अपने घर वालों के पास चली जा," "तेरी रस्सी तेरे कंधे पर है।" इसी तरह 'शरह जामे अस-सगीर' में शम्स अल-अइम्मा ने यही पाँच ज़िक्र फ़रमाए, लेकिन, "तेरी रस्सी तेरे कंधे पर है" की...

---

1 अल-हिदाया, किताबुल तलाक़, दुखूल से पहले तलाक़ का अध्याय, अल-मकतबत अल-अरबिया, कराची, 2/355 2 अल-इनाया शरह अल-हिदाया, फ़तह अल-क़दीर के हाशिये पर, दुखूल से पहले तलाक़ का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सक्खर, 3/202

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

لي عليك ولا سبيل لي عليك وخليت سبيلك وفارقتك، انه يصدق في حالة الغضب لما فيها من احتمال معنى السب [1]۔ ذکر کر کے کہا کہ ابو یوسف سے مروی ہے کہ اگر خاوند کہے کہ میں نے طلاق کی نیت سے نہیں کہے، تو غصہ کی حالت میں کہنے پر خاوند کی تصدیق کی جائے گی کیونکہ ان الفاظ میں گالی ہونے کا احتمال ہے۔ (ت)

عنایہ میں ہے: فان قوله لاملك لی عليك يحتمل ان يكون معناه لانك اقل من ان تنسبی الی ملكي او نسب اليك بالملك ولا سبيل لي عليك لسوء خلقك واجتماع انواع الشر فيك، وخليت سبيلك لقذارتك وفارقتك في المضجع لذفرك وعدم نظافتك والحقي باهلك لانك اوحش من ان تكونی خليلتي- [2] خاوند کا کہنا کہ "تجھ پر میری ملکیت نہیں ہے" کا معنی ہو سکتا ہے کہ "تو میری ملکیت کے قابل نہیں" یا "میں تیرا مالک بنوں تو اس قابل نہیں"، "میرا تجھ پر چارہ نہیں" کا یہ معنی ہو سکتا ہے کہ "یہ تیری بداخلاقی کی وجہ سے اور تیرے ہر قسم کے شر کی وجہ سے"، اور "تیرا راستہ کھول دیا" تیری بری حالت کی وجہ سے، "میں تجھ سے جدا ہوں لیٹنے میں" تیری بدبو اور صفائی نہ ہونے کی وجہ سے، "تو اپنے گھر والوں کے پاس چلی جا" کیونکہ تو میرے ہمراہ رہنے میں وحشت محسوس کرتی ہے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: الحق ابو یوسف بالتی تحتمل السب الفاظ أخری وهی لاملك عليك ، لاسبيل لی عليک، خليت سبيلك، فارقتك فهذه اربعة الفاظ ذكرها الوالوالجی وذكرها العتابی خمسة ، لاسبيل، لاملك، خليت سبيلك، الحقی باهلك، حبلك علی ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ نے جوان الفاظ کے ساتھ گالی ہونے کا احتمال رکھتے ہیں مزید چار مذکورہ الفاظ شامل کئے، انہی چاروں کو ولوالجی نے ذکر کیا اور عتابیہ میں یہ پانچ ذکر کئے، تجھ پر چارہ نہیں، تجھ پر ملکیت نہیں، تیرا راستہ کھول

دیا، اپنے گھر والوں کے پاس چلی جا، تیری رسی تیرے کندھے پر ہے، ایضاً اور شرح جامع صغیر میں شمس الائمہ نے پانچ یہی ذکر فرمائے، لیکن، تیری رسی تیرے کندھے پر ہے، کی

---

1 الہدایۃ کتاب الطلاق فصل فی الطلاق قبل الدخول المکتبۃ العربیہ کراچی ۳۵۵/۲ 2 العنایۃ شرح الہدایۃ علی ہامش فتح القدیر فصل فی الطلاق قبل الدخول مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲۰۲/۳

Vol. 13 | Fatwa Rizvia

Section 1: Arabic Text: *Gharibuka*, and in *Al-Idah* and *Sharh al-Jami' al-Saghir* by Shams al-A'immah, five terms are mentioned. Here, instead of "your rope is on your shoulder," he mentioned "I have parted from you," thus making six terms in total. The reason they carry the possibility of being an insult is: "I have no ownership over you," meaning you are too lowly to be attributed to my ownership; "I have no way over you" because of your excessive evil; "I have left your path," meaning I am separated from you; "I have parted from you and go join your family"; and "your rope is on your shoulder," meaning you are so bad that no one can discipline you because no one has the strength for your repeated misbehavior. End quote. I say: The mentioned explanation is proof that these words are not exhaustive; rather, any word that signifies disassociation, separation, severance, and ending the relationship with the wife carries the potential of being an insult, as is not hidden. (T)

Section 2: In *Durr-e-Mukhtar* it is stated: "His statement under oath regarding the absence of intention [of divorce] is accepted. It is sufficient for her to make him swear in her house. If he refuses, she takes the case to the ruler (judge), and if he refuses [to swear], he separates them." —*Mujtaba*. **Urdu Explanation:** After uttering the mentioned words, if the husband states that he did not intend divorce, his statement will be accepted. In this matter, it is sufficient for the wife to demand an oath from her husband at home. If the husband refuses to swear at home regarding his statement, the wife should present the matter to the ruler. If he still refuses to swear at the ruler's request, the ruler should then decide on the separation of the husband and wife. —*Mujtaba*. (T)

Section 3: In *Radd al-Muhtar* it is stated: "If he refuses, meaning before the judge, because..." **Urdu Explanation:** If he refuses to swear before the judge, then he (the judge) should effect a separation.

---

1. *Fath al-Qadir*, Chapter on Divorce before Consummation, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 3/402.
2. *Durr-e-Mukhtar*, Chapter of *Kinayat* (Metaphors), Matba' Mujtabai, Delhi, 1/230.

Page 373 of 688

जिल्द 13 | फ़तावा रज़विया

अनुभाग 1: अरबी पाठ: ग़ारिबक, और शम्स अल-आईमा द्वारा अल-ईदाह और शरह अल-जामी अल-सगीर में पांच शब्दों का उल्लेख है। यहाँ "हब्लिक अला ग़ारिबक" के स्थान पर उन्होंने "फ़ारक़्तुकी" (मैंने तुमसे अलग कर लिया) का उल्लेख किया है, जिससे कुल छह शब्द हो जाते हैं। उनके अपमान होने की संभावना का कारण यह है: "मेरा तुम पर कोई अधिकार नहीं है," अर्थात तुम मेरे स्वामित्व के योग्य नहीं हो; "मेरा तुम पर कोई बस नहीं चलता" तुम्हारी अत्यधिक बुराई के कारण; "मैंने तुम्हारा रास्ता छोड़ दिया," अर्थात मैं तुमसे अलग हो गया; "मैंने तुमसे नाता तोड़ लिया, अपने घर वालों के पास चली जाओ"; और "तुम्हारी रस्सी तुम्हारे कंधे पर है," अर्थात तुम इतनी बुरी हो कि कोई तुम्हें सुधार नहीं सकता क्योंकि किसी में भी बार-बार समझाने की शक्ति नहीं है। उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: उपर्युक्त विवरण इस बात का प्रमाण है कि ये शब्द सीमित नहीं हैं; बल्कि, कोई भी शब्द जो पत्नी से विरक्ति, अलगाव, विच्छेद और संबंध तोड़ने का संकेत देता है, उसमें अपमान बनने की संभावना होती है, जैसा कि स्पष्ट है। (त)

अनुभाग 2: 'दुर्रे मुख़्तार' में लिखा है: "नियत की अनुपस्थिति के संबंध में शपथ के साथ उनका बयान स्वीकार्य है। उसके घर में उससे शपथ लेना उसके लिए पर्याप्त है। यदि वह इनकार करता है, तो वह मामला हाकिम (न्यायाधीश) के पास ले जाए, और यदि वह इनकार करता है, तो वह उनके बीच अलगाव कर देता है।" — मुजतबा। **उर्दू व्याख्या:** उपर्युक्त शब्द कहने के बाद, यदि पति यह बयान देता है कि उसका इरादा तलाक का नहीं था, तो उसकी पुष्टि की जाएगी। इस मामले में, पत्नी के लिए घर पर पति से शपथ मांगना पर्याप्त है। यदि पति अपने बयान के संबंध में घर पर शपथ लेने से इनकार करता है, तो पत्नी को मामला हाकिम के पास पेश करना चाहिए। यदि वह हाकिम के अनुरोध पर भी शपथ लेने से इनकार करता है, तो हाकिम को पति-पत्नी के बीच अलगाव का निर्णय देना चाहिए। — मुजतबा। (त)

अनुभाग 3: 'रद अल-मुहतार' में लिखा है: "यदि वह इनकार करता है, अर्थात न्यायाधीश के सामने, क्योंकि..." **उर्दू व्याख्या:** यदि वह न्यायाधीश के सामने शपथ लेने से इनकार करता है, तो वह (न्यायाधीश) अलगाव कर दे।

---

1. फ़तह अल-क़दीर, तलाक से संबंधित अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/402।
2. दुर्रे मुख़्तार, किनायात (रूपकों) का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/230।

غاربک، وفي الایضاح و شرح الجامع الصغیر لشمس الائمۃ ذکر خمسۃ ھي ھذہ الانہ ذکر مکان حبلك علی غاربك فارقتک، فتتم ستۃ الفاظ ووجہ احتمالھا السب ان لاملك لی یعنی انت اقل من ان تنسبی الی بالملك، ولا سبیل لی علیک لزیادۃ شرك، و خلیت سبیلك، و فارقتک والحقی باھلک، وحبلك علی غاربك ای انت مسیئۃ لایشتغل احد بتأدیبك اذلا طاقۃ لاحد بما رستک اقول: والدلیل دلیل ان لا حصر بل کل لفظ یدل علی التبری عنھا والتخلی والانقطاع وترک الاشتغال بھا فھو مما یحتمل المعنی المذکور کما لا یخفی۔ بجائے انہوں نے "میں تجھ سے الگ ہوں" ذکر کیا، یوں کل چھ الفاظ ہوئے، ان کی وجہ یہی ہے کہ گالی ہونے کا احتمال رکھتے ہیں "تو میری ملک نہیں" یعنی تو اس قابل نہیں کہ میری ملکیت کے لئے منسوب ہو، "میرا تجھ پر چارہ نہیں" یعنی تیری بداخلاقی اور تیرے شر کی وجہ سے، "میں نے تیرا راستہ کھول دیا" یعنی میں تجھ سے جدا ہوا، "تو اپنے گھر والوں کے پاس چلی جا"، "تیری رسی تیرے کندھے" یعنی تو ایسی بد ہے کہ کوئی تجھے تربیت نہیں دے سکتا کیونکہ بار بار سمجھانے کی کسی میں طاقت نہیں ہے اھ، اقول: (میں کہتا ہوں) مذکور بیان اس بات کی دلیل ہے کہ ان الفاظ میں حصر نہیں بلکہ جو الفاظ بھی براءت، علیحدگی، انقطاع اور بیوی سے ترک تعلق پر دلالت کریں وہ تمام گالی بننے کا احتمال رکھتے ہیں، جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

در مختار میں ہے: القول لہ بیمینہ فی عدم النیۃ ویکفی تحلیفھا لہ فی منزلہ فان ابی رفعتہ للحاکم فان نکل فرق بینھما۔ مجتبٰی ۲ ۔ مذکورہ الفاظ کہنے کے بعد خاوند بیان دے کہ طلاق کی نیت نہ کی تھی، تو اس کی تصدیق کردی جائے گی، اور اس معاملہ میں بیوی کا خاوند سے گھر میں قسم لے لینا کافی ہے اور اگر خاوند اپنے بیان سے متعلق گھر میں قسم نہ کھائے بلکہ انکار کر دے تو بیوی

معاملہ کو حاکم کے ہاں پیش کرے اگر حاکم کے مطالبے پر بھی قسم کھانے سے انکار کرے تو پھر حاکم میاں بیوی میں علیحدگی کا فیصلہ دے دے، مجتبیٰ۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: فان نکل ای عند القاضی لان اگر قاضی کے ہاں قسم سے انکار کرے تو تفریق کرے،

1 فتح القدیر فصل فی الطلاق قبل الدخول مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳ / ۴۰۲ 2 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۳۰

Fatawa Rizvia Volume 13

Arabic	Urdu/Translation
Refusal [to take the oath] before anyone other than him [the judge] is not considered. (T). I say: This is derived from the statement "If he refuses, she raises it to him", so he did not make his refusal before her of any consequence.	Because if he refuses before someone other than a judge, that refusal will not be valid for separation. (T). I say: (I say) This point is clear from this statement of the text that "If he refuses in the house, the wife should present the matter to the ruler." Thus, they declared the refusal before the wife as invalid. (T)

Yes, if he admits that the pronoun (in his speech) referred to the woman and he said these words with the intention of severing the marital bond, then indeed one 'talaq-e-ba'in' (irrevocable divorce) would occur and the woman would be out of the marriage. Now, the child has become so necessary for this husband that he cannot be separated from him because after separation, even the possibility of 'Li'an' (mutual imprecation) which could happen before an Islamic ruler does not remain. And when after that the judge separates the husband and wife and cuts off the child's lineage from that husband, not being established as his, the child would remain with an unknown lineage. In Durr al-Mukhtar, in the chapter of Li'an, it says: "Its condition is the subsistence of the marriage" (The condition for Li'an is that the marriage must still exist. T). It is also mentioned therein:

Arabic	Urdu/Translation
It is dropped after it becomes obligatory by an irrevocable divorce, then it does not return by remarrying her.	Li'an, after becoming obligatory, will be dropped if an irrevocable divorce is given, and even upon remarrying, Li'an cannot take place. (T)

It is also mentioned therein:

Arabic	Urdu/Translation
If the husband accuses with a living child, the judge negates his lineage from his father and attaches him to his mother.	When a husband levels an accusation against his wife regarding a living child, the ruler/judge should sever that child's lineage from the husband and link the child to the mother. (T)

In Rad al-Muhtar it is stated:

Arabic	Urdu/Translation
That is, he must say: I have severed the lineage of this [child].	Meaning, it is necessary for the judge at this point to say this...

1. Rad al-Muhtar, Bab al-Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 465/2
2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Li'an, Matba' Mujtabai, Delhi, 251/1
3. Durr al-Mukhtar, Bab al-Li'an, Matba' Mujtabai, Delhi, 252/1
4. Durr al-Mukhtar, Bab al-Li'an, Matba' Mujtabai, Delhi, 252/1

फतावा रज़विया खंड 13

अरबी	उर्दू/अनुवाद
क़ाज़ी के अलावा किसी और के सामने इनकार (शपथ से) का कोई महत्व नहीं है। (त)। मैं कहता हूँ: यह बात 'अगर वह इनकार करे तो वह उसे उसके पास ले जाए' के कथन से ली गई है, इसलिए उन्होंने उसकी (पत्नी की) मौजूदगी में उसके इनकार को कोई महत्व नहीं दिया।	क्योंकि यदि वह क़ाज़ी के अलावा किसी और के सामने इनकार करता है, तो वह इनकार अलगाव (तलाक) के लिए मान्य नहीं होगा। (त)। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह बात मूल पाठ के इस कथन से स्पष्ट हो रही है कि "यदि वह घर में इनकार करे तो पत्नी इस मामले को शासक के सामने पेश करे", अतः उन्होंने पत्नी के सामने किए गए इनकार को अमान्य करार दिया। (त)

हाँ, अगर वह स्वीकार करता है कि (उसका) सर्वनाम स्त्री की ओर था और यह शब्द उसने निकाह के संबंध को समाप्त करने के इरादे से कहे थे, तो वास्तव में एक 'तलाक-ए-बाइन' (अटल तलाक) हो जाएगा, स्त्री निकाह से बाहर हो गई। और अब बच्चा इस पति के लिए ऐसा अनिवार्य हो गया कि वह उससे अलग हो ही नहीं सकता क्योंकि अलगाव के बाद 'लिआन' (पारस्परिक शपथ) की संभावना भी नहीं रही जो इस्लामी शासक की उपस्थिति में हो सकती थी। और जब उसके बाद क़ाज़ी उन पति-पत्नी के बीच अलगाव कर देता और बच्चे के वंश को उस पति से काट देता तो उसका स्थापित न होना उसे अज्ञात वंश (मजहूल-उल-नसब) बना देता। 'दुर्रे मुख्तार' में 'लिआन' के अध्याय में है: "इसकी शर्त वैवाहिक संबंध का कायम रहना है" (लिआन की शर्त यह है कि निकाह मौजूद हो। त)। उसी में है:

अरबी	उर्दू/अनुवाद
अटल तलाक (तलाक-ए-बाइन) के बाद लिआन अनिवार्य होने पर समाप्त हो जाता है, फिर उससे दोबारा निकाह करने पर भी वापस नहीं आता।	लिआन अनिवार्य हो जाने के बाद, बाइन तलाक दे देने पर वह समाप्त हो जाएगा, और दोबारा निकाह करने पर भी लिआन नहीं हो सकेगा। (त)

उसी में है:

अरबी	उर्दू/अनुवाद
और यदि पति किसी जीवित बच्चे के बारे में आरोप लगाता है, तो शासक उसके वंश को	जब पति अपनी पत्नी पर किसी जीवित बच्चे के बारे में आरोप लगाए, तो शासक उस बच्चे के वंश को

अरबी	उर्दू/अनुवाद
उसके पिता से हटा देता है और उसे उसकी माँ से जोड़ देता है।	उस पति से विच्छेद कर दे और बच्चे को माँ से जोड़ दे। (त)

'रदुल मुहतार' में है:

अरबी	उर्दू/अनुवाद
अर्थात् उसके लिए कहना अनिवार्य है कि मैंने इसका वंश विच्छेद कर दिया है।	यानी क़ाज़ी के लिए इस अवसर पर यह कहना अनिवार्य है कि वह यह...

---

1. रद अल-मुहतार, बाब अल-किनायात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 465/2
2. दुर अल-मुख्तार, बाब अल-लिआन, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 251/1
3. दुर अल-मुख्तार, बाब अल-लिआन, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 252/1
4. दुर अल-मुख्तार, बाब अल-लिआन, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 252/1

عربی **اردو**

النکول عند غیرہ لایعتبر، ط، اھ ۔ اقول: ھو مستفاد من قولہ فان ابی رفعتہ فلم یجعل اباء ہ عندھا شیئاً۔

کیونکہ قاضی کے علاوہ کسی غیر کے ہاں انکار کرے تو وہ انکار تفریق کے لئے معتبر نہیں ہوگا، ط، اھ ۔ اقول: (میں کہتا ہوں) یہ بات متن کے اس قول سے عیاں ہورہی ہے کہ "اگر گھر میں انکار کرے تو بیوی حاکم کے ہاں معاملہ کو پیش کرے" تو انہوں نے بیوی کے ہاں انکار کو غیر معتبر قرار دیا۔ (ت)

ہاں اگر وہ اقرار کرے کہ (اس) کی ضمیر عورت کی طرف تھی اور یہ لفظ قطع تعلق نکاح ہی کی نیت سے کہے تو بیشک ایک طلاق بائن ہوگئی عورت نکاح سے نکل گئی، اور اب بچہ اسی شوہر کو ایسا لازم ہو گیا کہ اس سے چھوٹ ہی نہیں سکتا کہ بینونت کے بعد احتمال لعان بھی نہ رہا جو حاکم اسلام کے حضور ہو سکتا اور جب اس کے بعد قاضی ان زن وشو میں تفریق کرکے بچے کی نسبت اس شوہر سے قطع کرد یتا اس کا نہ ٹھہر نا مجہول النسب رہ جاتا، در مختار میں باب اللعان میں ہے: شرطہ قیام الزوجیۃ (لعان کی شرط یہ ہے کہ نکاح موجود ہو۔ ت) اسی میں ہے:

عربی **اردو**

ویسقط بعد وجوبہ بالطلاق لعان واجب ہو جانے کے بعد بائنہ طلاق دے دینے پر ساقط ہو جائے البائن ثم لایعود بتزوجھا۔ گا، اور دوبارہ نکاح کرنے پر بھی لعان نہ ہو سکے گا۔ (ت)

اسی میں ہے:

عربی	اردو
وان قذف الزوج بولد حی نفی الحاکم نسبه عن ابیه والحقه بأمه۔	جب خاوند بیوی پر تہمت لگائے کسی زندہ بچے کے بارے میں، تو حاکم اس بچے کے نسب کو اس خاوند سے منقطع کردے اور بچے کو ماں سے ملحق کردے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

عربی	اردو
ای لابد ان یقول قطعت نسب هذا یعنی قاضی کے لئے اس موقعہ پر ضروری ہے کہ وہ یہ	

---

1 رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۴۶۵/۲ 2 در مختار باب اللعان مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۱/۱ 3 در مختار باب اللعان مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۲/۱ 4 در مختار باب اللعان مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۲/۱

Fatawa Rizvia Volume 13

[Boxed Text] Arabic: الولد عنه بعد ما قال فرقت بينكما وفى المبسوط هذا هو الصحيح - واللہ تعالیٰ اعلم۔ Urdu: Declare that I have severed the lineage of this child from this person. This declaration should be made after separation. And in Al-Mabsut it is stated that this is correct, and Allah knows best. (T) Wallahu Ta'ala A'lam (And Allah the Almighty knows best).

Mas'ala 126: From Jaipur State, Salt Market, Ajmeri Gate, sent by Muhammad Abdul Aziz Baig, 21 Sha'ban 1337 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Mst. Rabia, the daughter of Mst. Hind, was born, and Mst. Hind passed away immediately after birth. Consequently, Mst. Rabia was breastfed by Mst. Shafiya and Mst. Kafiya for a full one and a half years during her infancy. By chance, Mst. Rabia's marriage was solemnized with the biological brother of Mst. Shafiya and Mst. Kafiya, named Zaid, and they also had children. (In reality, Zaid and Mst. Rabia are foster uncle and niece). Can such a marriage remain valid or not? And if it remains valid, will any expiation be due? In whose custody will the children remain? And will the dower be due from the husband or not?

The Answer: God forbid! Such an evil marriage shall never be maintained. It is a strictly obligatory duty upon both the man and the woman to separate immediately. If the man does not agree, the woman should separate herself. If both do not agree, the ruler shall separate them by force. The woman is entitled to her full 'Mahr al-Mithl' (proper dower), even if it is much higher than the fixed dower. Regarding children, the boy will stay with the mother until seven years of age and the girl until nine, then the father will take them. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Boxed Text] Arabic: في الخانية لوتزوج محرمة لا حد عليه عند الامام عليه مهر مثلها بالغا ما بلغ -[2] Urdu: In Al-Khania, it is said: If one marries a Mahram (prohibited relative), there is no 'Hadd' (prescribed punishment) upon him according to the Imam (rather there is a severe discretionary punishment), and 'Mahr al-Mithl' regardless of its amount shall be mandatory upon him. This is according to Imam Azam. (T)

In the same work, from An-Nahr:

[Boxed Text] Arabic: قال فى الدراية الصحيح انها شبهة عقد فيثبت النسب وهكذا ذكر فى المنية[3] اهـ Urdu: It is stated in Al-Dirayah: The correct view is that this is a 'Shubha-e-Aqd'

(doubtful contract), so the lineage (of children) will be established. The same is mentioned in Al-Munyah. End. Abridged.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Lian, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/589 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/351 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Sexual Intercourse, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/154

फ़तावा रिज़विया खंड १३

[बॉक्स में पाठ] अरबी: الولد عنه بعد ما قال فرقت بينكما وفى المبسوط هذا هو الصحيح - اعلم۔ واللہ تعالیٰ उर्दू: घोषणा करें कि मैंने इस बच्चे का वंश इस व्यक्ति से अलग कर दिया है। यह घोषणा अलगाव के बाद की जानी चाहिए। और अल-मब्सूत में है कि यही सही है, और अल्लाह बेहतर जानता है। (त) वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला १२६: रियासत जयपुर, नमक मंडी, अजमेरी दरवाज़ा, प्रेषक मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ बेग, २१ शाबान १३३७ हिजरी।

उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: मुसम्मात हिंदा की बेटी राबिया पैदा होते ही हिंदा का इंतकाल हो गया। चुनाँचे मुसम्मात राबिया ने अपने जन्म से डेढ़ साल के पूर्ण स्तनपान काल के दौरान मुसम्मात शाफ़िया और काफ़िया का दूध पिया। इत्तेफ़ाक़ से मुसम्मात राबिया का निकाह मुसम्मात शाफ़िया और काफ़िया के सगे भाई ज़ैद से हो गया और औलाद भी हो गई (जबकि ज़ैद और मुसम्मात राबिया आपस में रज़ाई मामा और भांजी हैं)। तो ऐसी सूरत में निकाह कायम रह सकता है या नहीं? और कायम रहने की सूरत में क्या कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा? और औलाद किसकी परवरिश में रहेगी? और मेहर का भार पति पर होगा या नहीं?

जवाब: हाशा-ओ-ख़बीस! (ईश्वर न करे) ऐसा गंदा निकाह हरगिज़ कायम नहीं रखा जाएगा। मर्द और औरत पर सख़्त फ़र्ज़ है कि फ़ौरन जुदा हो जाएँ। अगर मर्द न माने तो औरत ख़ुद जुदा हो जाए। अगर दोनों न मानें तो हाकिम ज़बरदस्ती जुदा कर दे। औरत के लिए पूरा मेहर-ए-मिस्ल (उचित मेहर) है, चाहे वह तय किए गए मेहर से कितना ही ज़्यादा हो। औलाद में लड़का सात साल और लड़की नौ साल की उम्र तक माँ के पास रहेंगे, फिर बाप ले जाएगा। रद-उल-मुहतार में है:

[बॉक्स में पाठ] अरबी: في الخانية لوتزوج محرمة لا حد عليه عند الامام عليه مهر مثلها بالغا ما بلغ - [2] उर्दू: ख़ानिया में है: अगर किसी ने अपनी महरम (वर्जित रिश्तेदार) से निकाह किया तो इमाम के नज़दीक उस पर 'हद' (निर्धारित दंड) नहीं है (बल्कि सख़्त ताज़ीर है) और मेहर-ए-मिस्ल चाहे कितना भी हो, उस पर लाज़िम होगा। यह इमाम-ए-आज़म के नज़दीक है। (त)

उसी में 'नहर' से है:

[बॉक्स में पाठ] अरबी: قال فى الدراية الصحيح انها شبهة عقد فيثبت النسب وهكذا ذكر فى المنية[3]اھ। उर्दू: दिराया में है कि यह 'शुबा-ए-अक़्द' (संदेहास्पद अनुबंध) है, इसलिए नसब (वंश) साबित हो जाएगा। मुनिया में भी ऐसा ही ज़िक्र है। (संक्षेप में)

पादलेख: १. रद-उल-मुहतार, बाबुल लआन, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, २/५८९ २. रद-उल-मुहतार, बाबुल मेहर, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, २/३५१ ३. रद-उल-मुहतार, बाबुल वती, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, ३/१५४

पृष्ठ ३७५/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[عبارت در باکس] عربی: الولد عنه بعد ما قال فرقت بینکما وفی المبسوط هذا هو الصحیح - واللہ تعالٰی اعلم۔ اردو: اعلان کرے کہ میں نے اس بچے کا نسب اس شخص سے منقطع کردیا ہے ، یہ اعلان وہ تفریق کرنے کے بعد کرے۔ اور مبسوط میں ہے کہ یہی صحیح ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۶: ازریاست جے پور نمک منڈی اجمیری دروازہ مرسلہ محمد عبدالعزیز بیگ ۲۱ شعبان ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ کے دختر رابعہ پیدا ہوتے ہی ہندہ کا انتقال ہو گیا چنانچہ مسماۃ رابعہ نے ابتدائے پیدائش خود سے ڈیڑھ سال کامل ایام رضاعت میں مسماۃ شافیہ وکافیہ کا دودھ پیا، اتفاق سے مسماۃ شافیہ وکافیہ کے حقیقی بھائی مسمّٰی بزید سے مسماۃ رابعہ کا عقد ہو کر اولاد بھی ہو گئی (حالانکہ مسمّٰی بزید و مسماۃ رابعہ زن و شوہر باہمی رضاعی ماموں اور بھانجی ہوتے ہیں) تو ایسی صورت میں نکاح قائم رہ سکتا ہے یا نہیں؟ اور بصورت قائم رہنے کے کفارہ عائد ہوگا یا نہیں؟ اور اولاد کس کی کفالت میں رہے گی اور بار مہر زوج پر عائد ہوگا یا نہیں؟

الجواب: حاشاہ خبیث نکاح ہرگز قائم نہ رکھا جائے گا، مرد و عورت پر فرض فرض عظیم فرض ہے کہ فوراً فوراً جدا ہو جائیں، مرد نہ مانے تو عورت خود جدا ہو جائے، دونوں نہ مانیں تو حاکم بالجبر جدا کر دے گا۔ عورت کے لئے مہر پور امہر مثل ہے اگر چہ جو مہر بندھا تھا اس سے کتنا

ہی زائد ہو، اولاد میں لڑکا سات برس اور لڑکی نو برس کی عمر تک ماں کے پاس رہے پھر باپ لے گا۔ ردالمحتار میں ہے:

[عبارت در باکس] عربی: في الخانية لوتزوج محرمة لا حد عليه عند الامام عليه مهر مثلها بالغا ما بلغ -[2] اردو: خانیہ میں ہے اگر کسی نے اپنی محرم سے نکاح کیا تو اس پر حد نہیں (بلکہ سخت تعزیر ہے) اور مہر مثل جتنا بھی ہو اس پر لازم ہوگا، یہ امام اعظم کے نزدیک ہے۔ (ت)

اسی میں نہر سے ہے:

[عبارت در باکس] عربی: قال فی الدرایة الصحیح انها شبهة عقد فیثبت النسب وهکذاذکر في المنیة[3] اھ اردو: درایہ میں ہے کہ یہ شبہہ نکاح ہے لہذا نسب ثابت ہو جائے گا، منیہ میں بھی یونہی مذکور ہے اھ ملخصاً

حواشی: 1. ردالمحتار باب اللعان داراحیاء التراث العربی بیروت ۵۸۹/۲ 2. ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۱/۲ 3. ردالمحتار باب الوطی داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۵۴/۳

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

(Summarized) and Khayr al-Din al-Ramli mentioned it from al-'Ayni and Majma' al-Fatawa. And Allah Almighty knows best. And he has quoted it from Khayr al-Din al-Ramli, al-'Ayni and Majma' al-Fatawa. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 127: From Hafiz Ganj, District Bareilly, questioned by Haider Bakhsh. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman became a widow and her pregnancy remained for a period of three months. When the community elders (panch) inquired, a person named Haider Bakhsh, who belonged to the same village and is the woman's nephew (sister's son), said, "I will marry this woman after delivery. I have taken the woman's fault upon myself for reward (Sawab)." On this account, the elders and the entire village, because of the act being forbidden (haram), boycotted (stopped water and hookah) both the woman and this person, Haider Bakhsh, with the aim that in future, no woman or man should commit such an unauthorized act. Now, whatever the Shariat's command is, let it be done or let it be opened according to Shariat.

The Answer: A child born within two years of the husband's death belongs to the husband. The questioner states that it has been ten months since the husband's death and mentions a pregnancy of three months. If the woman had not already declared the end of her waiting period ('iddat) after four months and ten days, and this child is born within two years of the husband's death, then the child will belong to the husband. Attributing the woman to an illicit relationship (haram) would be forbidden. If the woman had already manifested the completion of her 'iddat after four months and ten days, and now a three-month pregnancy has appeared, then the accusation is on the woman; her boycott (hookah and water) should continue. However, there is no blame on Haider Bakhsh for saying what he said; his boycott should be lifted. And Allah Almighty knows best.

Issue 128: From Village Kareli, District Bareilly, questioned by Imam-ud-Din Sahib, 12 Shaban 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: It has been five months and ten days since Zaid married Hindah. Hindah gave birth to a child. What is the ruling regarding this child? Will it be attributed to Zaid or not? The community members are objecting. In this situation, what is the ruling regarding Zaid, Hindah, and the child?

The Answer: The questioner stated that the woman was a widow and it had been three years since her husband died. After that, this child was born. So, it belongs

neither to the previous husband nor to Zaid. Rather, its lineage is unknown (majhul al-nasab). There is no blame on Zaid. God knows Hindah's situation; she cannot be called an adulteress without proof. It is possible that intercourse occurred through deception (Wat' bi-shubha), resulting in this child. It is mentioned in Bada'i', al-Bahr, al-Durr al-Mukhtar, and al-Hindiyyah:

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पेज 13

(संक्षेप में) खैर अल-दीन अल-रमली ने इसे अल-ऐनी और मजमा अल-फतावा से उद्धृत किया है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। और इसे खैर अल-दीन रमली, ऐनी और मजमा अल-फतावा से उद्धृत किया गया है। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (टी)

मसला 127: हाफ़िज़ गंज, जिला बरेली से, हैदर बख्श द्वारा पूछा गया। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला विधवा हो गई और उसकी गर्भावस्था तीन महीने की अवधि तक रही। जब पंचों ने पूछताछ की, तो उसी गाँव के रहने वाले मुसम्मी हैदर बख्श ने, जो उस महिला का भांजा है, कहा कि मैं प्रसव के बाद इस महिला से निकाह करूँगा, मैंने पुण्य (सवाब) की खातिर महिला के दोष को अपने ऊपर ले लिया है। इस बात पर पंचों और पूरे गाँव ने, इसे हराम होने के कारण, महिला और इस व्यक्ति यानी हैदर बख्श दोनों का हुक्का-पानी इस उद्देश्य से बंद कर दिया कि भविष्य में कोई भी महिला या पुरुष ऐसा अनधिकृत कार्य न करे। अब शरीयत का जो भी हुक्म हो, वही किया जाए या शरीयत के अनुसार हुक्का-पानी खोला जाए।

जवाब: पति की मृत्यु के दो वर्ष के भीतर पैदा होने वाला बच्चा पति का ही होता है। प्रश्नकर्ता का कहना है कि पति की मृत्यु को दस महीने हो गए हैं और वह तीन महीने की गर्भावस्था बताता है। यदि महिला ने चार महीने दस दिन के बाद अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त होने की घोषणा नहीं की थी, और यह बच्चा पति की मृत्यु के दो साल के भीतर पैदा होता है, तो बच्चा पति का ही होगा और महिला को हराम (अवैध संबंध) की ओर इंगित करना हराम होगा। यदि महिला ने चार महीने दस दिन के बाद अपनी इद्दत समाप्त होने की बात स्पष्ट कर दी थी और अब तीन महीने की गर्भावस्था दिखाई दी है, तो महिला पर आरोप है, उसका हुक्का-पानी बंद रखें। लेकिन हैदर बख्श पर ऐसा कहने से कोई दोष नहीं आता, उसका हुक्का-पानी खोल दिया जाना चाहिए। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 128: मौज़ा करेली, जिला बरेली से, इमाम-उद-दीन साहिब द्वारा पूछा गया, 12 शाबान 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: जैद को हिन्दा से निकाह किए हुए पांच महीने और दस दिन हुए हैं। हिन्दा ने बच्चे को जन्म दिया। तो उस बच्चे के बारे में क्या हुक्म है? क्या उसे जैद का बच्चा माना जाएगा या नहीं? बिरादरी के लोग आपत्ति कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में जैद, हिन्दा और बच्चे के बारे में क्या हुक्म है?

जवाब: प्रश्नकर्ता ने बताया कि महिला विधवा थी और उसके पति को मरे हुए तीन साल हो गए थे। उसके बाद यह बच्चा हुआ। तो यह न तो पिछले पति का है और न ही जैद का। बल्कि यह 'मजहूल-उल-नसब' (अज्ञात वंश) का है। जैद पर कोई दोष नहीं है। हिन्दा का हाल खुदा जाने, बिना सबूत के उसे भी ज़ानिया (व्यभिचारिणी) नहीं कहा जा सकता। संभव है कि धोखे से संभोग (वती ब-शुबा) हुआ हो, जिससे यह बच्चा हुआ हो। बदाइ, अल-बहर, अल-दुर्र अल-मुख्तार और अल-हिन्दिया में है:

(ملخصاً) وذکرہ الخیر الرملی عن العینی ومجمع الفتاوٰی واللہ تعالٰی اعلم۔ اور اس کو خیر الدین رملی عینی اور مجمع الفتاوٰی سے نقل کیا ہے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۲۷: از حافظ گنج ضلع بریلی مسئولہ حیدر بخش کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت رانڈ ہو گئی اور اس کے حمل عرصہ تین ماہ سے رہ گیا، جب پنچوں نے دریافت کیا تو مسمٰی حیدر بخش نے جو اسی گاؤں کا آدمی تھا یعنی اس عورت کا بھانجا ہے کہ میں اس عورت کو بعد وضع حمل نکاح میں لاؤں گا میں نے اس عورت کا عیب ثواب اپنے اوپر رکھ لیا، اس بات پر پنچوں نے اور کل بستی نے بوجہ ہونے حرام کے اس عورت واس شخص یعنی حیدر بخش دونوں کا حقہ پانی اس غرض سے بند کردیا کہ آئندہ عورت وآدمی ایسا فعل ناجائز نہ کرے، اب جو حکم شریعت ہو وہ کیا جائے یابروئے شریعت کھولاجائے۔

الجواب: خاوند کی موت سے دو برس کے اندر بچہ پیدا ہو وہ خاوند ہی کا ہے، سائل بیان کرتا ہے کہ خاوند کی موت کو دس مہینے ہوئے اور تین مہینے سے حمل بتاتا ہے اگر عورت چار مہینے دس دن کے بعد عدت ختم ہوجانے کا اقرار نہ کر چکی ہو اور یہ مرگ شوہر سے دو برس کے اندر پیدا ہو تو شوہر ہی کا ہوگا اور عورت کو حرام کی طرف نسبت کرنا حرام ہوگا، اگر عورت چار مہینے دس دن کے بعد اپنی عدت ختم ہوجانا ظاہر کر چکی تھی اور اب تین مہینے سے حمل ظاہر ہوا تو عورت پر الزام ہے اس کا حقہ پانی بند کردیں، لیکن حیدر بخش پر اس کہنے سے کوئی الزام نہیں اس کا حقہ پانی کھول دیا جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۸: از موضع کریلی ضلع بریلی مسئولہ امام الدین صاحب، ۱۲ شعبان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کو ہندہ سے نکاح کئے ہوئے پانچ ماہ اور دس یوم ہوئے ہیں، ہندہ نے بچہ جنا، تو اس بچہ پر کیا حکم ہے آیا وہ زید کا قرار دیا جائے گا یا نہیں؟ اہل برادری معترض ہیں تو اس حالت میں زید اور ہندہ پر اور بچہ پر کیا حکم ہے؟

الجواب: سائل نے بیان کیا کہ عورت بیوہ تھی شوہر کے مرے تین برس ہوئے، اس کے بعد یہ بچہ ہوا تو یہ نہ اگلے شوہر کا ہے نہ زید کا، بلکہ مجہول النسب ہے، اور زید پر کچھ الزام نہیں، ہندہ کا حال خدا جانے، بے ثبوت اسے بھی زانیہ نہیں کہہ سکتے، ممکن کہ دھوکے سے وطی واقع ہوئی ہو جس سے یہ بچہ ہے۔ بدائع وبحر ودر مختار وہندیہ میں ہے :

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Arabic quote] If she gives birth to it more than two years since her first (husband) divorced her or died, and less than six months since her second (husband) married her, it belongs neither to the first nor the second. And is the second marriage valid? In the opinion of Abu Hanifa and Muhammad, it is valid. Reflect on this validity in 'Radd al-Muhtar', so refer to it. And Allah Almighty knows best.

If a woman gives birth to a child more than two years after the death or divorce of her first husband, or within six months of her second marriage, the child's lineage will not be attributed to either the first or the second husband. And will the second marriage be valid in this case? According to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on them), it will be considered valid. However, this validity is questioned in 'Radd al-Muhtar'. Refer to it. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 129 to 130: From Gopindgarh, district Ajmer Sharif, Masjid-e-Khurd, sent by Faiz Muhammad Sahib, Imam of the Mosque, 18 Shawwal 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: (1) A person ran away with a woman whose husband was alive. The woman died, and the man returned. A boy and a girl were born to that woman. What is the ruling for these children and that man? How is shaking hands and eating with him? (2) A person committed adultery with his mother-in-law, and she became pregnant. A girl was born, and then he married. From this marriage, a boy was born. What is the ruling regarding this boy?

The Answer: (1) In the aforementioned case, that person is an adulterer, deserving of the punishment for adultery and the fire of hell. If Muslims do not greet him, talk to him, eat with him, or shake hands with him, he certainly deserves it until he repents. The children of the husband and wife belong to the husband. It is stated in a Sahih Hadith:

[Table Header: Arabic / Urdu] Arabic: The child belongs to the bed (husband), and for the adulterer is the stone. Urdu: The child belongs to him whose bed it is, meaning the husband, and for the adulterer is the stone (punishment).

(2) Whoever commits adultery with his mother-in-law has committed adultery with his mother. If he married another woman and a boy was born to them, there is no defect in that boy. If the questioner's meaning is that a person...

1. Fatawa al-Hindiyyah, Chapter 15 regarding the establishment of lineage, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/538.
2. Sahih al-Bukhari, Book of Laws of Inheritance, Chapter: The child belongs to the bed, etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/999. Page 377 of 688

फतवा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी उद्धरण] यदि वह अपने पहले (पति) द्वारा तलाक दिए जाने या मरने के दो साल से अधिक समय बाद, और अपने दूसरे (पति) द्वारा शादी किए जाने के छह महीने से कम समय में इसे जन्म देती है, तो यह न तो पहले का है और न ही दूसरे का। और क्या दूसरी शादी वैध है? अबू हनीफा और मुहम्मद की राय में, यह वैध है। 'रद्द अल-मुह्तार' में इस वैधता पर विचार करें, इसलिए उसे देखें। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

यदि कोई महिला अपने पहले पति की मृत्यु या तलाक के दो साल से अधिक समय बाद बच्चे को जन्म देती है, या दूसरी शादी के छह महीने के भीतर जन्म देती है, तो उस बच्चे का वंश न तो पहले पति से होगा और न ही दूसरे से। और क्या इस स्थिति में दूसरी शादी सही मानी जाएगी? तो इमाम अबू हनीफा और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहमत करे) के अनुसार इसे वैध माना जाएगा। 'रद्द अल-मुह्तार' में इस वैधता पर संदेह व्यक्त किया गया है, उसकी ओर रुजू करें (उसे देखें)। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसला 129 से 130: गोपिंदगढ़, जिला अजमेर शरीफ, मस्जिद-ए-खुर्द से, मस्जिद के इमाम फैज़ मुहम्मद साहब द्वारा भेजा गया, 18 शव्वाल 1338 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: (1) एक व्यक्ति एक ऐसी महिला को भगा ले गया जिसका पति जीवित था। वह महिला मर गई और वह व्यक्ति वापस आ गया। उस महिला से एक लड़का और एक लड़की पैदा हुई। अब इन बच्चों और उस व्यक्ति के लिए क्या हुक्म है? उसके साथ मुसाफ़ा (हाथ मिलाना) और खाना खाना कैसा है? (2) एक व्यक्ति ने अपनी सास के साथ जिना (व्यभिचार) किया और गर्भ रह गया। लड़की पैदा हुई और फिर उसने शादी की। इस शादी से एक लड़का पैदा हुआ। उस लड़के पर क्या हुक्म है?

जवाब: (1) उक्त स्थिति में वह व्यक्ति ज़ानी (व्यभिचारी) है, जिना की सज़ा का हक़दार और नर्क की आग का पात्र है। यदि मुसलमान उससे सलाम-कलाम न करें, उसके साथ खाना न खाएं, उससे मुसाफ़ा न करें, तो वह निश्चित रूप से इसका पात्र है जब तक कि वह तौबा न कर ले। पति और पत्नी के बच्चे पति के ही होते हैं। सही हदीस में फ़रमाया गया है:

[तालिका शीर्षक: अरबी / उर्दू] अरबी: बच्चा बिस्तर (पति) का है और ज़ानी के लिए पत्थर है। उर्दू: बच्चा उसका है जिसका बिछौना है यानी पति का, और ज़ानी के लिए पत्थर (सजा) है।

(2) जिसने अपनी सास के साथ जिना किया, उसने अपनी माँ के साथ जिना किया। और अगर उसने किसी दूसरी औरत से शादी की और उससे लड़का पैदा हुआ, तो उस लड़के में कोई दोष नहीं है। और अगर सवाल करने वाले का मतलब यह है कि एक व्यक्ति ने...

---

1. फतवा अल-हिंदिया, अध्याय 15 वंश की स्थापना के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/538।
2. सही अल-बुखारी, विरासत के कानूनों की किताब, अध्याय: बच्चा बिस्तर का है आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/999। पृष्ठ 377 का 688

فتاوٰی رضویہ ، جلد سیز دہم ، ص ۱۳

ان جائت بہ لاکثر من سنتین منذ طلقھا الاول او مات ولاقل من ستۃ اشھر منذ تزوجھا الثانی لم یکن للاول ولا للثانی وھل یجوز نکاح الثانی فی قول ابی حنیفۃ ومحمد جائز اھ وتأمل فی ھذا الجواز فی رد المحتار فراجعہ واللہ تعالٰی اعلم۔

پہلے خاوند کی موت یا طلاق کے بعد دو سال سے زائد عرصہ پر عورت نے بچہ کو جنم دیا ہو یا دوسرے نکاح سے چھ ماہ کے اندر جنم دیا ہو تو اس بچے کا نسب نہ پہلے سے ہو گا نہ دوسرے سے۔ اور کیا اس صورت میں دوسرا نکاح صحیح پائے گا، تو امام ابو حنیفہ اور امام محمد رحمہما اللہ تعالیٰ کے نزدیک جائز قرار پائے گا اھ ، ردالمحتار میں اس جواز پر تامل کیا ہے، اس کی طرف رجوع کرو۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۲۹ تا ۱۳۰ : از گوپند گڑھ ضلع اجمیر شریف مسجد خورد مرسلہ فیض محمد صاحب امام مسجد ۱۸ شوال ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ : (۱) ایک شخص ایک عورت کو فرار کر کے لے گیا، عورت کا خاوند زندہ ہے، وہ عورت مر گئی اور وہ شخص واپس چلا آیا، اس عورت کے ایک لڑکا اور ایک لڑکی پیدا ہوئی، اب ان بچوں اور اس شخص کے واسطے کیا حکم ہے، اس کے ساتھ مصافحہ اور کھانا کھانا کیسا ہے؟ (۲) ایک شخص نے اپنی ساس سے زنا کیا اور حمل رہا، لڑکی ہوئی اور پھر شادی کی، اس شادی سے لڑکا ہوا، اس لڑکے پر کیا حکم ہے؟

الجواب : (۱) صورت مذکورہ میں وہ شخص زانی ہے، سزائے زنا کا سزا وار اور مستحق عذاب نار ہے، مسلمان اگر اس سے سلام کلام نہ کریں، اس کے ساتھ کھانا نہ کھائیں، اس سے مصافحہ نہ

کریں تو وہ ضرور اس قابل ہے جب تک توبہ نہ کرے، شوہر اور عورت کے بچے اس کے شوہر ہی کے ہوتے ہیں۔ صحیح حدیث میں فرمایا :

الولد للفراش وللعاھر الحجر 2 / بچہ اس کا جس کا بچھونا یعنی خاوند کا اور زانی کے لئے پتھر۔

(۲) جس نے اپنی ساس سے زنا کیا اس نے اپنی ماں سے زنا کیا، اور شادی اگر کسی اور عورت سے کی اور اس سے لڑکا پیدا ہوا تو اس لڑکے میں کوئی خلل نہیں، اور اگر سائل کا مطلب یہ ہے کہ ایک شخص نے

---

1 فتاویٰ ہندیہ الباب الخامس عشر فی ثبوت النسب نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۳۸ 2 صحیح البخاری کتاب الفرائض باب الولد للفراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۹۹ Page 377 of 688

Fatawa Razviya Volume 13, Page 13

If a man committed adultery with a woman and then married her daughter and had a son, that man was an adulterer then and is committing a forbidden act in this marriage as well, for she is like his own daughter. And now, the boy born is an illegitimate child (Walad-ul-Haram). And Allah knows best.

Issue 131: From the city of Bareilly, Madrasa Ahl-e-Sunnat-o-Jamaat, asked by a student of the said Madrasa. 23 Shawwal 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid married the granddaughter of his paternal half-sister six years ago. They had a daughter. Now Zaid and the people of the neighborhood have come to know that Zaid's marriage was not valid. Separation was arranged for Zaid. Was this marriage of Zaid valid or not? Who is entitled to this girl (for custody)? Is dowry (Mahr) mandatory or not? Will there be an 'iddah (waiting period) or not? And what is the ruling for the representative (Wakil), witnesses, and the officiant of this marriage? And what is the ruling for Zaid, despite the fact they were ignorant?

The Answer: The aforementioned marriage is strictly and definitely forbidden (Haraam-e-Qat'i). Zaid, the marriage officiant, the representative, and the witnesses are all involved in a most severe major sin (Gunah-e-Kabira). Ignorance will not exempt them from it being a major sin; rather, ignorance itself is another major sin. Therefore, it is stated in the Hadith:

"The sin of a scholar is one, and the sin of an ignorant person is double."

'Iddah is definitely mandatory for the woman, and Zaid must pay the full 'Mahr al-Mithl' (customary dowry). That is, whatever the customary dowry for a woman of her status is, regardless of what was initially fixed, even if it is less or more than 'Mahr al-Mithl'. It is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

"When someone marries a woman within prohibited degrees (Mahram) and consummates it, there is no 'Hadd' (prescribed Sharia punishment for adultery) upon him (rather, there is severe 'Ta'zir' or discretionary punishment), and Mahr al-Mithl, however much it may be, will be mandatory for him." (Summarized)

The daughter will be given to Zaid. She will stay with her mother until she is 9 years old, provided the mother does not marry someone who is not a 'Mahram' relative to

the girl (like a paternal uncle). After that, the father, i.e., Zaid, will take her. It is stated in Durr-ul-Mukhtar, Book of Hudud:

"This falls under 'Shubha al-Mahall' (doubt in the legality of the act), and in this, lineage (is established)."

1 Kanz-ul-Ummal with reference to Fir, from Ibn Abbas (may Allah be pleased with him), Hadith, Muassasat-ul-Risala Beirut 10/153. Kanz-ul-Ummal with reference to Fir, from Ibn Abbas (may Allah be pleased with him), Hadith, Muassasat-ul-Risala Beirut 10/175. 2 Fatawa Qazi Khan, Chapter on Mahr issues, Naval Kishore Lucknow 1/175.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

एक औरत से ज़िना किया फिर उसकी लड़की से निकाह किया, उससे लड़का पैदा हुआ, तो वह व्यक्ति उस समय भी ज़ानी हुआ और इस निकाह में भी हराम काम कर रहा है क्योंकि वह उसकी बेटी की जगह है, और अब यह जो लड़का पैदा हुआ वह वलद-उल-हराम (अवैध संतान) है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 131: शहर बरेली, मदरसा अहले सुन्नत व जमाअत से, मदरसा के एक छात्र द्वारा पूछा गया। 23 शव्वाल 1338 हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी अल्लाती (सौतेली) बहन की पोती के साथ छह साल पहले निकाह किया था। उससे एक लड़की हुई। अब ज़ैद और मुहल्ले के लोगों को मालूम हुआ कि ज़ैद का यह निकाह सही नहीं हुआ। ज़ैद से अलगाव करा दिया गया। क्या ज़ैद का यह निकाह सही हुआ या नहीं? तो इस लड़की का हक़दार कौन है (परवरिश के लिए)? महर लाज़िम हुआ या नहीं? इद्दत होगी या नहीं? और इस निकाह के वकील, गवाह और पढ़ाने वालों का क्या हुक्म है? और ज़ैद पर क्या हुक्म है? जबकि वे अनभिज्ञ (बे-इल्म) थे।

अल-जवाब: उक्त निकाह हराम-ए-क़तई (निश्चित रूप से वर्जित) है। ज़ैद, निकाह पढ़ाने वाला, वकील और गवाह सभी बहुत ही सख़्त गुनाह-ए-कबीरा (बड़े पाप) में मुब्तिला हैं। अज्ञानता (जहल) इसे गुनाह-ए-कबीरा होने से बाहर नहीं करेगी, बल्कि अज्ञानता स्वयं दूसरा गुनाह-ए-कबीरा है। इसीलिए हदीस में है:

"आलिम (विद्वान) का गुनाह एक गुनाह है और जाहिल (अज्ञानी) का गुनाह दोहरा गुनाह है।"

औरत पर इद्दत लाज़िम है और ज़ैद पर पूरा 'महर-ए-मिस्ल' वाजिब है। यानी जिस तरह उस औरत के स्तर की महिलाओं का महर होता है, जो निकाह के समय तय किया गया था उसका लिहाज़ नहीं किया जाएगा चाहे वह महर-ए-मिस्ल से कम हो या ज़्यादा। फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ान में है:

"जब किसी ने ज़ी-रहम महरम (निकटतम रिश्तेदार जिनसे निकाह वर्जित हो) औरत से निकाह करके सोहबत (संभोग) कर ली, तो उस पर 'हद' नहीं है (बल्कि सख़्त ताज़ीर यानी सज़ा है), और महर-ए-मिस्ल जितना भी हो, उस पर लाज़िम होगा।" (संक्षिप्त)

लड़की ज़ैद को ही दिलाई जाएगी। वह 9 बरस की उम्र तक अपनी माँ के पास रहेगी, बशर्ते माँ किसी ऐसे व्यक्ति से निकाह न करे जो लड़की का महरम न हो (जैसे सगा चाचा)। उसके बाद बाप यानी ज़ैद उसे ले लेगा। दुर्रे मुख्तार 'किताबुल हुदूद' में है:

"यह 'शुबा-ए-महल' (कार्य की वैधता में संदेह) है और इसमें नसब (वंश) स्थापित होता है।"

1 कन्ज़ुल उम्माल, फिर के हवाले से, इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हदीस, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 10/153। कन्ज़ुल उम्माल, फिर के हवाले से, इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हदीस, मुअस्ससतुर रिसाला बेरूत 10/175। 2 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, महर के मसलों का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ 1/175।

पृष्ठ 378/688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

ایک عورت سے زنا کیا پھر اس کی لڑکی سے نکاح کیا اس سے لڑکا ہوا تو وہ شخص اس وقت بھی زانی ہوا اور اس نکاح میں بھی حرام کار کہ یہ اس کی بیٹی کی جگہ ہے، اور اب یہ جو لڑکا پیدا ہوا ولد الحرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۱: از شہر بریلی مدرسہ اہلسنت و جماعت مسئولہ طالب علم مدرسہ مذکور ۲۳ شوال ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی علاتی اخت کی نواسی کے ساتھ چھ برس ہوئے نکاح کیا تھا اس سے ایک لڑکی ہوئی، اب زید کو اور محلہ کے لوگوں کو معلوم ہوا کہ زید کا یہ نکاح صحیح نہیں ہوا زید سے تفریق کرادی، زید کا یہ نکاح صحیح ہو ا یا نہیں تو اس لڑکی کا مستحق کون ہے، مہر لازم ہوا یا نہیں؟ عدت ہو گی یا نہیں؟ اور اس نکاح کے وکیل و گواہ اور پڑھانے والوں کا کیا حکم؟ اور زید پر کیا حکم؟ باوجود اس کے کہ بے علم ہیں۔

الجواب: نکاح مذکور حرام قطعی حرام، اور زید اور نکاح خواں و وکیل و گواہ سب سخت تر گناہ کبیرہ میں گرفتار، اور جہل اس کے گناہ کبیرہ ہونے سے خارج نہ کرے گا بلکہ جہل خود دوسرا گناہ کبیرہ ہے، ولہذا حدیث میں ہے:

ذنب العالم واحد و ذنب الجاہل ذنبان۔ (عالم کا گناہ ایک گناہ ہے اور جاہل کا گناہ دوہرا گناہ۔)

عورت پر ضرور عدت لازم ہے اور زید پر پورا مہر مثل واجب ہے یعنی اس طرح کہ عورت کا مہر مثل کیا ہے وہ جو باندھا تھا اس کا لحاظ نہ ہوگا چاہے مہر مثل سے کم ہو یا زائد، فتاوی امام قاضی خاں میں ہے:

اذا تزوج بذات رحم محرم منہ و دخل بھا لا حد علیہ و علیہ مھر مثلھا بالغاً ما بلغ۔ (ملخصاً) (جب کسی نے ذی رحم محرم عورت سے نکاح کر کے جماع کر لیا تو اس پر حد نہیں (بلکہ تعزیر سخت ہے) اور مہر مثل جتنا بھی ہو اس پر لازم ہو گا (ملخصاً)۔ (ت))

لڑکی زید ہی کو دلائیں گے، ۹ برس کی عمر ہونے تک ماں کے پاس رہے گی اور اگر وہ کسی ایسے سے نکاح کرے جو اس لڑکی کا محرم مثل چچا کے نہ ہو، اس کے بعد باپ یعنی زید لے لے گا۔ در مختار کتاب الحدود میں ہے:

انھا من شبہۃ المحل و فیہا (یہ محل کا شبہ ہے اور اس میں نسب)

1 کنز العمال بحوالہ فر، عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہ حدیث موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/۱۵۳، کنز العمال بحوالہ فر، عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ حدیث موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۰/۱۷۵ 2 فتاوی قاضی خاں باب ذکر مسائل المھر نولکشور لکھنؤ ۱/۱۷۵

Fatawa-e-Razviya Volume 13, Page 13

Lineage is established[1] **It becomes established. (T)**

In Mi'raj al-Dirayah, then Nahr al-Fa'iq, then Radd al-Muhtar, it is stated:

الصحيح انها شبهة عقد لانه روى عن محمد انه قال سقوط الحد عنه لشبهة حكمية فيثبت النسب و هكذا اذكر في المنية 2۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

The correct view is that this is a doubt regarding the marriage contract (Shubha-e-Aqd), because it is narrated from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) that he said the waiver of the prescribed punishment (Hadd) in this case is based on a legal doubt (Shubha-e-Hukmiyah). Therefore, lineage will be established. This has been similarly mentioned in 'Al-Munyah'. And Allah Almighty knows best.

Problem 132: From Indore, Ranipura. Petitioner: Wahid Mulla. 15 Muharram al-Haram 1339 AH. What do the learned scholars and noble elders say regarding this matter: Zaid has passed away. Hind married Bakr in the seventh month after his death. Hind was five to six months pregnant at the time, but she did not disclose the pregnancy at the time of the marriage contract. One month after the marriage, a dispute arose between Hind and Bakr regarding whose child it is. Bakr says, "The child is mine," and Hind says, "It is not yours." Is this marriage valid or not? And to whom will the lineage of this child be established? Explain and be rewarded.

The Answer: If the child is born more than two years after the death of the first husband, then it belongs to the second husband, and the marriage is valid. If it is born in less than two years, the boy belongs to the first husband, and the marriage with this second one is void, as is clear from what we have summarized in the marginalia of Radd al-Muhtar. (As is evident from what we have summarized in the notes on Radd al-Muhtar. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 133: From Kareli, District Bareilly. Petitioner: 7 Rajab 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: What is the maximum duration of pregnancy in years? And what are the minimum number of years? Explain and be rewarded.

The Answer: The minimum is six months and the maximum is exactly two full years, no more and no less. However, for a woman whose husband is alive, even if he has

been far away from her for many years, the child will be considered the offspring of that husband, whether it be ten, twenty, or fifty years...

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Intercourse that requires Punishment and that which does not, Mujtabai Press Delhi, 1/319. [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Intercourse that requires Punishment and that which does not, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/152.

फतावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

वंश सिद्ध होता है[1] **सिद्ध हो जाता है। (त)**

मिराज अल-दिरयाह, फिर नहर अल-फ़ैक, फिर रद अल-मुहतार में है:

الصحيح انها شبهة عقد لانه روى عن محمد انه قال سقوط الحد عنه لشبهة حكمية فيثبت النسب و هكذ اذكر في المنية 2۔ والله تعالىٰ اعلم۔

सही यह है कि यह निकाह का संदेह (शुबहा-ए-अक़्द) है क्योंकि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह तआला अलैह) से वर्णित है कि उन्होंने कहा कि इससे दंड (हद) का हटना कानूनी संदेह (शुबहा-ए-हुकमिया) के आधार पर है, इसलिए वंश सिद्ध होगा, मुन्या में भी इसी तरह उल्लेख किया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 132: इंदौर रानीपुरा से, मुस्तफ़ा (याचिकाकर्ता): वाहिद मुल्ला, 15 मुहर्रम अल-हराम 1339 हिजरी। विद्वान और महानुभाव इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद की मृत्यु हो गई है, हिंदा ने उसकी मृत्यु के सातवें महीने में बक्र के साथ निकाह किया, और हिंदा को पांच-छह महीने का गर्भ था, निकाह के समय हिंदा ने गर्भ को प्रकट नहीं किया, निकाह के एक महीने बाद हिंदा और बक्र में विवाद हुआ कि गर्भ किसका है, बक्र कहता है कि मेरा गर्भ है और हिंदा कहती है कि तुम्हारा नहीं है, तो क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? और यह गर्भ किसका माना जाएगा? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: यदि पहले पति की मृत्यु के दो साल बाद बच्चा पैदा होता है, तो वह दूसरे पति का है और निकाह सही है, और यदि दो साल से कम में पैदा होता है, तो लड़का पहले पति का है और इस दूसरे का निकाह बातिल (अवैध) है, जैसा कि रद अल-मुहतार के हाशिए पर हमारे द्वारा किए गए संक्षिप्तीकरण से स्पष्ट है (जैसा कि यह उससे स्पष्ट है जिसे हमने रद अल-मुहतार के हाशिए पर संक्षेप में लिखा है। त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 133: करेली, जिला बरेली से, मुस्तफ़ा (याचिकाकर्ता): 7 रजब 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि गर्भावस्था की अधिकतम अवधि कितने वर्ष है? और कम से कम कितने वर्ष है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: कम से कम छह महीने और अधिक से अधिक पूरे दो साल, न कम न ज़्यादा, लेकिन वह महिला जिसका पति जीवित हो, भले ही वह उससे कितने ही वर्षों से कितना ही दूर हो, उसकी संतान पति की ही संतान मानी जाएगी, चाहे दस, बीस, पचास साल हो...

---

[1] दुर-ए-मुख्तार, बाबुल वती जो हद वाजिब करता है और जो नहीं करता, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली 1/319 [2] रद-उल-मुहतार, बाबुल वती जो हद वाजिब करता है और जो नहीं करता, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत 3/152

पृष्ठ 379/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

یثبت النسب ۱ **ثابت ہو جاتا ہے۔ (ت)**

معراج الدرایہ پھر نہر الفائق پھر

ردالمحتار میں ہے:

الصحیح انھا شبھۃ عقد لانہ روی عن محمد انہ قال سقوط الحد عنہ لشبھۃ حکمیۃ فیثبت النسب و ھکذ اذکر فی المنیۃ ۲۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

صحیح یہ ہے کہ یہ شبہ نکاح ہے کیونکہ امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے مروی ہے کہ انہوں نے فرمایا کہ اس سے حد کا سقوط حکمی شبہ کی بناء پر ہے، لہذا نسب ثابت ہوگا، منیہ میں یونہی ذکر کیا ہے۔ اور اللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۲: از اندور رانی پورہ مسئولہ واحد ملا ۱۵ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے کرام و فضلائے عظام اس مسئلہ میں کہ زید فوت ہو گیا ہے، ہندہ نے ساتویں ماہ عقد کیا بکر کے ساتھ، اور ہندہ کو پانچ چھ ماہ کا حمل تھا، بروقت نکاح ہندہ نے حمل کو ظاہر نہ کیا، بعد عقد ایک ماہ کے ہندہ اور بکر میں جھگڑا ہوا کہ حمل کس کا ہے، بکر کہتا ہے میرا حمل ہے اور ہندہ کہتی ہے تیرا نہیں ہے، تو یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ اور یہ حمل کس کا قائم ہوگا؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر موتِ شوہر اول سے دوسال کے بعد بچہ پیدا ہو تو شوہر دوم کا ہے اور نکاح صحیح ہے اور دوسال سے کم میں پیدا ہو تو لڑکا پہلے شوہر کا ہے اور اس دوسرے کا نکاح باطل، کما یظھر مما لخصناہ علی ھامش ردالمحتار (جیسا کہ یہ اس سے ظاہر ہے جو ردالمحتار پر حاشیہ میں ہم نے اس کی تلخیص کی ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۳: از کر یلی ضلع بریلی مسئولہ ۷ رجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مدت حمل کی زائد سے زائد کے برس ہے؟ اور کم سے کم کتنے سال ہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: کم سے کم چھ مہینے اور زیادہ سے زیادہ دوسال کامل بے کم و بیش، مگر عورت جس کا شوہر زندہ ہو اگرچہ کتنے ہی برسوں سے اس سے کتنا ہی دور ہو، اس کی اولاد شوہر ہی کی اولاد قرار پائے گی، اس کے لئے دس بیس پچاس سال

---

۱ درمختار باب الوطء یوجب الحد والذی لا یوجب مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۱۹ ۲ ردالمحتار باب الوطء الذی یوجب الحد والذی لا یوجب دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۱۵۲

There is no fixed duration. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"The child belongs to the marriage bed, and for the fornicator is deprivation (stoning/ loss)." - And Allah knows best.	The child belongs to the one in marriage, and the fornicator is deprived. (T) And Allah knows best.

Problem 134: From Marehra Mutahira, Bagh Pukhta, sent by Syed Abdul Jalil Sahab, 21 Shaban 1309 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's marriage contract with Hindah took place, but according to the custom of India, the formal ceremony of the bride's departure (Rukhsati) did not occur. Both Zaid and Hindah were adults and resided in the same house. Other men also frequented this house, including non-mahram individuals from the family's social circle. Suddenly, Hindah became pregnant. She kept it hidden until the time of delivery approached. When the boy was born, people were greatly surprised. In short, the newborn died immediately. Women privately asked Hindah whose child this was. Hindah named a person from among her relatives. Nearly four years have passed since this incident. Now, the husband is angry with her because of this heinous act and does not want to keep Hindah in his marriage. Apparently, no intimacy or physical contact occurred between husband and wife, but secretly it is possible the pregnancy was Zaid's. Since the Rukhsati ceremony hadn't happened, perhaps out of consideration and shame, she named someone else instead of Zaid. Now the matter to be inquired is: if Zaid is made to divorce Hindah, how many months will Hindah's waiting period (Iddah) be? And also advise regarding the dower (Mahr), how much is obligatory upon Zaid? Explain and be rewarded.

The Answer: In the questioned scenario, although worldly thoughts have much scope, and to the suspicious, Zaid's anger indicates he would have known if it were his own, and Hindah's attribution to another is another point. Furthermore, to explain it such that due to the lack of Rukhsati, she didn't name the husband out of worldly shame is a very weak excuse. After all, having lawful intercourse before Rukhsati is not more shameful to worldly people than adultery. These thoughts will provide much support to suspicions, but God forbid, the pure Shariah does not accept them at all and gives a definitive ruling that the child belonged to the husband only. The Radiant Presence, Master of the Messengers (peace and blessings

of Allah be upon him) says: *"Al-Waladu lil-firashi wa lil-'ahiril-hajar"* (The child belongs to the marriage bed, and for the fornicator is deprivation). (T)

---

[1] Sahih Bukhari, Bab al-Waladu lil-Firash etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/999 [2] Sahih Bukhari, Bab al-Waladu lil-Firash etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/999; Musnad Ahmad bin Hanbal, Dar al-Fikr Beirut, 2/209

फतावा रज़विया खंड 13 | पृष्ठ 13

कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"बच्चा विवाह के बिस्तर का है, और व्यभिचारी के लिए वंचना (पत्थर) है।" - और अल्लाह बेहतर जानता है।	बच्चा निकाह वाले का है और व्यभिचारी वंचित है। (त) और अल्लाह बेहतर जानता है।

समस्या 134: मारहरा मुतहरा, बाग़ पुख्ता से, प्रेषक सैयद अब्दुल जलील साहब, 21 शाबान 1309 हिजरी।

दीन के उलेमा इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद का निकाह हिंदा से हुआ, लेकिन हिंदुस्तान के रिवाज के मुताबिक दुल्हन की विदाई (रुक़्सती) की रस्म नहीं हुई। ज़ैद और हिंदा दोनों बालिग थे और एक ही घर में रहते थे। उस घर में गैर पुरुषों का भी आना-जाना था, जिनमें बिरादरी के गैर-महरम लोग भी शामिल थे। अचानक हिंदा गर्भवती हो गई। उसने इसे छिपाकर रखा यहाँ तक कि प्रसव का समय करीब आ गया। जब लड़का पैदा हुआ तो लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। संक्षेप में, नवजात की उसी समय मृत्यु हो गई और महिलाओं ने स्वयं हिंदा से पूछा कि यह गर्भ किसका है। हिंदा ने अपने रिश्तेदारों में से एक व्यक्ति का नाम लिया। इस घटना को लगभग चार साल बीत चुके हैं। अब पति इस घृणित कृत्य के कारण उससे नाराज़ है और हिंदा को अपने निकाह में नहीं रखना चाहता। प्रत्यक्ष रूप से पति-पत्नी के बीच कोई शारीरिक संबंध या मेल-मिलाप नहीं हुआ, लेकिन गुप्त रूप से यह संभव है कि वह गर्भ ज़ैद का ही हो। चूँकि विदाई की रस्म नहीं हुई थी, शायद लोक-लाज और शर्म के कारण उसने ज़ैद का नाम न लेकर किसी और का नाम ले लिया हो। अब पूछने योग्य बात यह है कि अगर ज़ैद से हिंदा को तलाक दिलवाया जाए, तो हिंदा की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) कितने महीने की होगी? और महर के बारे में भी मार्गदर्शन करें कि ज़ैद के ज़िम्मे कितना वाजिब है? कृपया बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, हालांकि दुनियावी ख्यालों की बहुत गुंजाइश है, और शक्की लोगों के नज़दीक ज़ैद की नाराजगी अलग गवाही दे रही है कि अगर अपना होता तो वह खुद जानता, और हिंदा का दूसरे की तरफ निस्बत करना अलग बात है। फिर इसे इस तरह बताना कि विदाई न होने के कारण दुनियावी शर्म की वजह से पति का नाम नहीं लिया, बहुत ही कमज़ोर बहाना है। आखिरकार, विदाई से पहले जायज़ संभोग होना दुनिया वालों के नज़दीक ज़िना (व्यभिचार) से ज़्यादा

शर्म की बात नहीं है। ये ख्याल बदगुमानियों को बहुत बल देंगे, लेकिन खुदा न खास्ता, पाक शरीयत उन्हें बिल्कुल स्वीकार नहीं करती और निश्चित रूप से हुक्म देती है कि लड़का पति का ही था। सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "अल-वलदु लिल-फिराशि व लिल-आहिरिल हजर" (बच्चा निकाह वाले का है और ज़ानी महरूम है)। (त)

---

1 सहीह बुखारी, बाब अल-वलदु लिल-फिराश आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/999 2 सहीह बुखारी, बाब अल-वलदु लिल-फिराश आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/999; मसनद अहमद बिन हंबल, दार अल-फिक्र बेरुत, 2/209

کوئی مدت مقرر نہیں، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الولد للفراش وللعاھر الحجر ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ بچہ نکاح والے کا ہے اور زانی محروم ہے (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۴: از مارہرہ مطہرہ باغ پختہ مرسلہ سید عبدالجلیل صاحب ۲۱ شعبان ۱۳۰۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا عقد ہندہ سے واقع ہوا، مگر بموجب رواج ہندوستان رسم رخصت عروس عمل میں نہ آئی اور زید وہندہ دونوں بالغ تھے اور ایک ہی مکان میں سکونت پذیر تھے اور اس مکان میں غیر مردوں کا بھی گزر تھا اہل کفو میں سے نامحرم لوگ آتے جاتے تھے، یکایک ہندہ کو حمل رہ گیا، اس نے اس کو پوشیدہ رکھا یہاں تک کہ وضع حمل قریب آگیا، جب لڑکا پیدا ہوا تو لوگوں کو نہایت تعجب آیا، الغرض مولود تواسی دم مر گیا اور ہندہ سے مستورات نے بطور خود دریافت کیا کہ یہ حمل کس کا ہے، ہندہ نے اپنے اعزہ میں سے ایک شخص کا نام لیا اور اس قضیہ کو عرصہ قریب چار سال کے گزر گیا، پس شوہر اس کا بسبب اس فعل شنیع کے اس سے ناراض ہے، ہندہ کو اپنے عقد میں رکھنا نہیں چاہتا، بظاہر زن وشو میں مقاربت و مواصلات واقع نہ ہوئی، مگر پوشیدہ طور پر ممکن ہے کہ وہ حمل زید کا ہو، چونکہ رسم رخصت عمل میں نہ آئی تھی شاید بوجہ لحاظ و شرم غیر کا نام ظاہر کر دیا ہو اور زید کا نام نہ لیا ہو۔ اب دریافت طلب امر یہ ہے کہ زید سے ہندہ کو طلاق دلوائی جائے تو عدت ہندہ کی کے ماہ کی ہوگی؟ اور در باب مہر کے بھی ارشاد ہو کہ بذمہ زید کس قدر واجب ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر چہ دنیوی خیالات کو بہت وسعت ہے، اہل بدگمانی کے نزدیک ناراضی زید جدا خبر دے رہی ہے کہ اپنا ہوتا تو وہ خود جانتا، اور ہندہ کا دوسرے کی طرف نسبت کرنا جدا۔ پھر اسے یوں بتانا کہ بوجہ عدم رخصت شرم دنیا کے سبب شوہر کا نام نہ لیا بہت پوچ عذر ہے، آخر قبل رخصت جماع حلال ہونا اہل دنیا کے نزدیک زنا سے زیادہ شرم کی بات نہیں، یہ خیالات بدگمانیوں کو بہت تائید دیں گے، مگر حاشا شرع مطہر انہیں اصلاً مقبول نہیں فرماتی اور قطعاً حکم دیتی ہے کہ لڑکا شوہر ہی کا تھا، حضور پر نور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الولد للفراش وللعاھر الحجر (بچہ نکاح والے کا ہے اور زانی محروم ہے۔ت)

---

[1] صحیح بخاری باب الولد للفراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۹۹/۲ [2] صحیح بخاری باب الولد للفراش الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۹۹/۲، مسند احمد بن حنبل دار الفکر بیروت ۲۰۹/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13

When Sharia, in the matter of a man in the West and a woman in the East, despite the vast distance between the two, has declared the child to be of the husband based on the possibility of a miracle (Karamat) or the service of a Jinn, then Zaid and Hinda lived in the same house. How is it possible here, without definitive Sharia proof, to declare someone—God forbid—an adulterer or to declare a child as illegitimate despite a valid marriage? As for Hinda's attribution [of the act] to that person, it is possible Hinda had some enmity towards him, and perhaps that resentment arose because Hinda found him looking at her with bad intentions, she resisted, it was not effective, and she became an enemy. Due to intense rage and with the thought that Hinda's guardians, upon hearing this grave matter, would pursue that person to trouble him as much as possible, she committed this slander, even if it caused her clear harm. It is not surprising for such things to originate from deceitful and crafty people, through which their enemy suffers harm, even if they themselves... [Note: Blank in the manuscript].

"Indeed, your plot is great." [1] (Indeed, your trickery is very large. - Translation) And now there is also a clear justification for Zaid's displeasure, as he became weary of Hinda for falsely and wrongly claiming the occurrence of this impure act with him. In any case, the ruling is that the child belonged to Zaid. And once Sharia has accepted this, Hinda's status as a woman with whom the marriage was consummated is proven. Upon divorce, a waiting period (Iddat) of three complete menstrual cycles is mandatory. "Divorced women shall remain in waiting for three menstrual periods." [2] (Divorced women should keep themselves in waiting until three menstrual cycles are complete. - Translation). And Allah, the Pure and Most High, knows best.

Note: There is a blank space in the manuscript.

[1] Al-Quran Al-Karim 12/28 [2] Al-Quran Al-Karim 2/228

Page 381 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं १३

जब शरीयत ने पश्चिम के पुरुष और पूर्व की स्त्री के मसले में, दोनों के बीच अपार दूरी के बावजूद, करामात की संभावना या जिन्न की मदद के आधार पर बच्चे को पति का ही ठहराया है, तो ज़ैद और हिंदा तो एक ही घर में रहते थे। यहाँ यह कैसे मुमकिन है कि बिना किसी निश्चित शरीई प्रमाण के किसी को—अल्लाह की पनाह—व्यभिचारी (ज़ानी) करार दिया जाए या वैध विवाह के बावजूद बच्चे को अवैध (वल्द-उल-हराम) करार दिया जाए? रही बात हिंदा द्वारा उस व्यक्ति की ओर इशारा करने की, तो संभव है कि हिंदा को उससे कोई शत्रुता हो, और शायद वह नाराज़गी इसी कारण पैदा हुई हो कि हिंदा ने उसे बुरी नज़र रखते पाया, उसने रोका, बात नहीं बनी, तो वह दुश्मन बन गई। तीव्र क्रोध के कारण और इस विचार से कि हिंदा के अभिभावक इतनी बड़ी बात सुनकर उस व्यक्ति को यथाशक्ति कष्ट पहुँचाएंगे, उसने यह कलंक लगाया, चाहे इसमें उसका अपना भी स्पष्ट नुकसान हो। छल-कपट करने वालों से इस तरह की बात का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं, जिससे उनके दुश्मन को तकलीफ पहुँचे, भले ही वे स्वयं... [नोट: पांडुलिपि में खाली स्थान है]।

"निश्चय ही, तुम्हारी चाल बहुत बड़ी है।" १ (बेशक तुम्हारा चरित्र बहुत बड़ा है। - त) और अब ज़ैद की नाराज़गी का भी स्पष्ट कारण मौजूद है कि वह हिंदा द्वारा गलत और झूठ बोलकर अपने साथ इस अपवित्र कार्य के होने की बात बताने पर उससे विमुख हो गया। बहरहाल, हुक्म यही है कि वह बच्चा ज़ैद का ही था। और जब शरीअत ने यह मान लिया, तो हिंदा का सुहागन (जिसके साथ सहवास हुआ हो) होना स्वयं सिद्ध हो गया। तलाक होने पर तीन पूर्ण मासिक धर्म की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है। "तलाकशुदा औरतें अपने आप को तीन मासिक धर्म पूर्ण होने तक रोक रखें।" २ (तलाक वाली औरतें अपने आप को तीन हैज़ मुकम्मल होने तक रोक रखें। - त) और अल्लाह पाक और बुलंद सबसे बेहतर जानता है।

नोट: पांडुलिपि में खाली स्थान है।

१ अल-कुरान अल-करीम १२/२८ २ अल-कुरान अल-करीम २/२२८

पृष्ठ ३८१ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

جب شریعت نے مرد مغربی وزن مشرقی کے مسئلہ میں باوجود بعد المشرقین باحتمال کرامت یا استخدام جن بچہ شوہر ہی کا ٹھہرایا تو زید وہندہ تو ایک ہی مکان میں رہتے تھے یہاں کیونکر ممکن کہ بے ثبوت قطعی شرعی فلاں کا معاذ اللہ زانی یا باوجود فراشِ صحیح بچہ کو ولد الحرام قرار دیں۔ رہا ہندہ کا فلاں کی نسبت کردینا، ممکن ہندہ کو اس سے کوئی عداوت ہو اور شاید وہ رنجش اسی بنا پر پیدا ہوئی ہو کہ ہندہ نے اس سے بدنگاہی پائی، مانع آئی، کار گر نہ ہوا، دشمن ہو گئی، اور بوجہ شدتِ غیظ اس خیال سے کہ اولیائے ہندہ یہ امرِ عظیم سن کر حتی المقدور اس شخص کے درپے آزار ہوں گے، اس تہمت کی مرتکب ہوئی، اپنا بھی صریح ضرر سہی، اہل مکر و حیلہ سے اس قسم کی بات کا صدور کچھ عجب نہیں جس میں ان کے دشمن کو ایذا پہنچے اگرچہ خود بھی عہ _____

اِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيْمٌ ﴿۲۸﴾ (بیشک تمہارا چرتر بہت بڑا ہے۔ ت) اور اب ناراضی زید کی بھی صریح توجیہ موجود کہ بغلط و دروغ اپنے ساتھ اس امرِ ناپاک کا وقوع بتانے پر ہندہ سے بیزار ہوا، بہر حال حکم یہی ہے کہ وہ بچہ زید ہی کا تھا، اور جب شرع نے یہ مان لیا تو ہندہ کا مدخولہ ہونا خود ہی ثابت ہو لیا طلاق تین حیضِ کامل کی عدت لازم، وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ﴿۲۲۸﴾ ط (طلاق والی عورتیں اپنے آپ کو تین حیض مکمل ہونے تک روک رکھیں۔ ت) واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔

1 القرآن الکریم ۲۸/۱۲ 2 القرآن الکریم ۲۲۸/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Chapter on Custody (Statement on Upbringing)

Issue 135: 24 Rajab 1309 AH

What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this issue: A person named Zaid passed away, leaving behind two minor sons from his first wife (who died during Zaid's lifetime) and three daughters from his second wife (who is alive) as heirs. Now there is a concern regarding the guardianship (walayat) of these minor children. Among the ancestors of these minors, two persons are present: one named Amr, the paternal cousin of the grandfather, and second Bakr, the maternal cousin of the grandfather, to whom the real sister of the deceased Zaid (the real paternal aunt of the five minors) is married. Also present are three real paternal aunts, Hindah, Masoomah, and Siddiqah, the mother of the aforementioned daughters, and the maternal grandmother and maternal uncles of the aforementioned sons. In this situation, which persons are entitled to the guardianship of these five minors and in what order? Please state and be rewarded.

Answer: In the mentioned situation, the right of custody (hizanat) for both sons belongs to their maternal grandmother, and they will remain with her until the age of seven years. Until reaching adulthood, they will be kept with Amr, who is the paternal cousin of the grandfather. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Boxed Text]: Arabic: The one performing custody, whether it be the mother or someone else, has a greater right over the boy... Urdu: Whether the caregiver is the mother or someone else, she has the right over the boy...

Page 383 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

बाबुल हज़ानत (परवरिश का बयान)

मसला 135: 24 रजब 1309 हिजरी

इस मसले में दीन के उलमा और शरीयत के मुफ़्ती क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद नामी शख्स का इंतकाल हो गया, उसने अपनी पहली बीवी (जो ज़ैद की ज़िंदगी में ही फ़ौत हो चुकी थी) से दो नाबालिग बेटे और दूसरी बीवी (जो ज़िंदा है) से तीन बेटियाँ वारिस छोड़ीं। अब इन नाबालिग बच्चों की विलायत (सरपरस्ती) की चिंता है। इन नाबालिगों के बुज़ुर्गों में दो शख्स मौजूद हैं: एक अम्र जो दादा का चचेरा भाई है, दूसरा बक्र जो दादा का ममेरा भाई है, जिससे ज़ैद की सगी बहन (इन पाँचों नाबालिगों की सगी फूफी) निकाह में है। इसके अलावा तीन सगी फूफियाँ हिंदा, मासूमा और सिद्दीका, उन बेटियों की माँ, और उन बेटों की नानी और मामा मौजूद हैं। तो इस सूरत में इन पाँचों नाबालिगों की विलायत का हक़ किन-किन लोगों को और किस तरतीब से हासिल है? बयान फ़रमाएं सवाब पायें।

जवाब: पूछी गई सूरत में, दोनों (बेटों) की परवरिश का हक़ उनकी नानी को है कि सात साल की उम्र तक वे उसके पास रहेंगे। जवानी (बालिग होने) तक वे अम्र के पास रखे जाएंगे जो दादा का चचेरा भाई है। दुर्रे मुख्तार में है:

[बॉक्स किया गया टेक्स्ट]: अरबी: परवरिश करने वाली चाहे माँ हो या कोई और, वह लड़के की हक़दार है... उर्दू: परवरिश करने वाली माँ हो या कोई और, वह लड़के की...

पृष्ठ 688 में से 383

جلد سیزدہم

باب الحضانۃ (پرورش کا بیان)

مسئلہ ۱۳۵: ۲۴ رجب ۱۳۰۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ مسمیٰ زید نے رحلت کی، دو پسر نابالغ زوجہ اولیٰ سے جو زید کے روبرو فوت ہو چکی ہے اور تین دختر زوجہ ثانیہ سے جو حی و قائم ہے وارث چھوڑے، اب دربارہ ان بچوں نابالغان کے ولایت کی فکر در پیش ہے، نابالغان مذکورین کے اجداد میں دو شخص موجود ہیں ایک مسمیٰ عمرو دادا کا چچازاد بھائی، دوسرا بکر دادا کا ماموں زاد بھائی جس کو مسمیٰ زید مورث کی حقیقی ہمشیرہ جوان پانچوں نابالغان کی حقیقی پھوپھی ہے منسوب ہے، اور تین پھوپھی حقیقی بیاہی ہندہ و معصومہ و صدیقہ اور دختران مذکورین کی والدہ اور پسران مذکورین کی نانی وما موں موجود ہیں پس اس صورت میں ان پانچوں نابالغان کی ولایت کا استحقاق کس کس شخص کو مرتبہ حاصل ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں دونوں کا حق حضانت ان کی نانی کو ہے کہ سات برس کی عمر تک اس کے پاس رہیں گے جوانی تک عمرو کے پاس کہ دادا کا چچازاد بھائی ہے رکھے جائیں گے۔

درمختار میں ہے:

[خانہ میں تحریر]: الحاضنۃ امًا او غیرھا احق بالغلام پرورش کرنے والی ماں ہو یا کوئی اور، وہ لڑکے کی

Fatawa Razawiyya Volume 13 - Page 13

- (Arabic): Until he is independent of women, and this is estimated at seven years, and fatwa is given on this[1].
- (Urdu): She will be the rightful custodian as long as the boy does not become independent of women's care, and this period is approximately seven years, and the fatwa shall be given accordingly.

In Radd al-Muhtar it is stated:

- (Arabic): When the boy becomes independent, then the agnates are more entitled; the closest is preferred, then the next closest[2].
- (Urdu): When the child becomes independent, then the paternal male relatives (Asabat) are entitled in order of priority, the nearest having precedence. (T)

And if girls get married and are capable of staying with husbands, they will stay with their husbands; otherwise, they stay with the mother until the age of nine. Then, if there is a sane, mature male among their Mahram (unmarriageable kin), like a real maternal uncle etc., they will be handed over to him; otherwise, the mother will keep them until youth. In Durr al-Mukhtar it is stated:

- (Arabic): The mother and grandmother are more entitled to the young girl, as per the manifest report (Zahir al-Riwayah). Others are entitled to her until she becomes desirable (to men), and this is estimated at nine years, and fatwa is given on this. From Imam Muhammad, it is narrated that the ruling for the mother and grandmother is the same, and fatwa is given on this due to the prevalence of corruption. Al-Zayla'i stated and benefited that custody is not forfeited by her marriage as long as she is not fit for men[3]. Summarized.
- (Urdu): The mother or grandmother is entitled to the girl until she reaches puberty; this is the manifest report (Zahir al-Riwayah). If it is someone other than the mother and grandmother, they are entitled until the girl becomes desirable (to men). This period is approximately nine years, and the fatwa shall be given on this. It is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that the same ruling applies to the mother and grandmother, and fatwa will be given on this due to the abundance of mischief (fitna). Zayla'i... and from this text, it is known that a woman's right of custody (Hidhanah) will not be forfeited due to marriage as long as the girl is not fit for a man. Summarized (T).

In Radd al-Muhtar it is stated:

- (Arabic): If she is fit, it falls etc.[4]- I say: We prefer the manifest report (Zahir al-Riwayah) when she has no Mahram for her because she (the mother) is the designated one.
- (Urdu): When the girl becomes fit for a man, the custodian's right will be forfeited etc. (T) I say: (I say) We will prefer the Zahir al-Riwayah (manifest report) when the girl has no Mahram guardian, and this is manifest...

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Custody, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/265 [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/641 [3] Durr al-Mukhtar, Chapter on Custody, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/265 [4] Radd al-Muhtar, Chapter on Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/641

फतावा रज़विया जिल्द 13 - पृष्ठ 13

- (अरबी): यहाँ तक कि वह औरतों से स्वतंत्र (मुस्तग़नी) हो जाए और यह सात वर्ष अनुमानित है और इसी पर फतवा दिया जाता है।[1]
- (उर्दू): वह तब तक हकदार होगी जब तक लड़का औरत के पालन-पोषण से स्वतंत्र नहीं हो जाता और यह अवधि अनुमानतः सात वर्ष है और इसी पर फतवा दिया जाएगा।

'रद्द-उल-मुह्तार' में है:

- (अरबी): जब लड़का स्वतंत्र हो जाए तो पितृपक्ष के संबंधी (असाबात) अधिक हकदार हैं, निकटतम को प्राथमिकता दी जाएगी।[2]
- (उर्दू): जब बच्चा स्वतंत्र हो जाए तो फिर क्रमवार पितृपक्ष के संबंधी (असाबात) इसके हकदार हैं, निकटतम को प्राथमिकता प्राप्त होगी। (त)

और लड़कियों की शादी हो जाए, वे पतियों के योग्य हों तो पतियों के पास रहेंगी वरना नौ वर्ष की आयु तक माँ के पास, फिर अगर उनके महरम (जिनसे विवाह हराम हो) में कोई पुरुष अक्ल वाला बालिग जैसे सगे मामा आदि होंगे तो उनके सुपुर्द की जाएँगी वरना जवानी तक माँ ही रखेगी, 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

- (अरबी): माता और दादी छोटी बच्ची की अधिक हकदार हैं, यहाँ तक कि ज़ाहिर रिवायत के अनुसार भी, और उनके अलावा कोई और हो तो वह तब तक हकदार होगी जब तक वह वांछनीय (मुश्तहा) न हो जाए, और यह नौ वर्ष अनुमानित है और इसी पर फतवा दिया जाता है। और इमाम मुहम्मद से वर्णित है कि माँ और दादी के लिए भी यही हुक्म है और फसाद की अधिकता के कारण इसी पर फतवा दिया जाता है। ज़ैलई ने कहा कि निकाह से हज़ानत (परवरिश का अधिकार) समाप्त नहीं होता जब तक वह पुरुषों के योग्य न हो जाए।[3] संक्षेप में।
- (उर्दू): लड़की की हकदार उसकी माँ या दादी है जब तक वह बालिग न हो जाए, यह ज़ाहिर रिवायत (स्पष्ट वर्णन) है, और माँ और दादी के अलावा कोई और हों तो फिर वे लड़की के वांछनीय (मुश्तहा) होने तक हकदार होंगे, यह अवधि अनुमानतः नौ वर्ष है, और इसी पर फतवा दिया जाएगा, और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से वर्णित है कि माँ और दादी के लिए भी यही हुक्म है और इसी पर फतवा दिया जाएगा फ़ितना (बुराई) की अधिकता के

कारण, ज़ैलई... और इस इबारत से मालूम हुआ कि औरत का हक़-ए-हज़ानत (पालन-पोषण का अधिकार) निकाह के कारण समाप्त नहीं होगा जब तक लड़की पुरुष के योग्य नहीं हो जाती, संक्षेप में (त)।

'रद्द-उल-मुह्तार' में है:

- (अरबी): फिर यदि वह योग्य हो जाए तो अधिकार गिर जाता है इत्यादि[4]- मैं कहता हूँ: हमने ज़ाहिर रिवायत को चुना है जब उसका कोई महरम न हो क्योंकि वही निर्धारित है।
- (उर्दू): जब बच्ची पुरुष के योग्य हो जाए तो पालन-पोषण करने वाली का अधिकार समाप्त हो जाएगा इत्यादि (त) अकुल: (मैं कहता हूँ) हम ज़ाहिर रिवायत को ही वरीयता देंगे, जब बच्ची का कोई महरम वली न हो और यह ज़ाहिर...

---

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उल-हज़ानत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/265 [2] रद्द-उल-मुह्तार, बाब-उल-हज़ानत, दारु-एह्या-उत-तुरास-उल-अरबी बेरुत, 2/641 [3] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उल-हज़ानत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/265 [4] रद्द-उल-मुह्तार, बाब-उल-हज़ानत, दारु-एह्या-उत-तुरास-उल-अरबी बेरुत, 2/641

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

- حتّٰی یستغنی عن النساء وقدر بسبع و بہ یفتی[1]۔
- حقدار ہو گی جب تک لڑکا عورت کی پرورش سے مستغنی نہیں ہو جاتا اور یہ مدت اندازاً سات سال ہے اور اسی پر فتوٰی دیا جائے گا۔

ردالمحتار میں ہے:

- اذا استغنی الغلام فالعصبۃ اولٰی یقدم الاقرب فالا قرب[2]۔
- جب بچہ مستغنی ہو جائے تو پھر درجہ بدرجہ عصبات اس کے حقدار ہیں، قریب ترین کو تقدم حاصل ہوگا۔ (ت)

اور لڑکیوں کی شادی ہو جائے وہ شوہروں کے قابل ہوں تو شوہروں کے پاس رہیں گی ورنہ نو برس کی عمر تک ماں کے پاس، پھر اگر ان کے محارم میں کوئی مرد عاقل بالغ مثل حقیقی ماموں وغیرہ کے ہوگا تو اس کے سپرد کی جائیں گی ورنہ جوانی تک ماں ہی رکھے گی، در مختار میں ہے:

- الام والجدۃ احق بالصغیرۃ حتیٰ فی ظاہر الروایۃ وغیرھا احق بھا حتیٰ تشتھی وقدر بتسع و بہ یفتی وعن محمد ان الحکم فی الام والجدۃ کذلك و بہ یفتی لکثرۃ الفساد زیلعی وافاد انہ لا تسقط الحضانۃ بتزوجھا مادامت لا تصلح للرجال۔[3] ملخصاً۔
- لڑکی کی حقدار اس کی ماں یا دادی ہے جب تک وہ بالغ نہ ہو جائے، یہ ظاہر روایت ہے، اور ماں اور دادی کے غیر ہوں تو پھر وہ لڑکی کے مشتہا ہونے تک حقدار ہوں گے، یہ مدت اندازاً

نو سال ہے، اور اسی پر فتویٰ دیا جائے گا، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ سے مروی ہے کہ ماں اور دادی کے لئے بھی یہی حکم ہے اور اسی پر فتویٰ دیا جائے گا فتنہ کی کثرت کی وجہ سے، زیلعی___ اور اس عبارت سے معلوم ہوا کہ عورت کا حق حضانت (پرورش) نکاح کی وجہ سے ساقط نہ ہوگا جب تک لڑکی مرد کے قابل نہیں ہو جاتی، ملخصاً (ت)

ردالمحتار میں ہے:

- فان صلحت تسقط الخ[4]- اقول: واخترنا ظاہر الروایۃ حین لا محرم لھا لانہا ھی المتعینۃ.
- جب بچی مرد کے قابل ہو جائے تو پرورش کرنے والی کا حق ساقط ہو جائے گا الخ (ت) اقول: (میں کہتا ہوں) ہم ظاہر روایت کو ہی ترجیح دیں گے، جب بچی کا کوئی محرم ولی نہ ہو اور یہ ظاہر

---

1 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۵ 2 ردالمحتار باب الحضانۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۴۱ 3 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۵ 4 ردالمحتار باب الحضانۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۴۱

Fatawa Razawiyya - Volume 13 - Page 13

[Arabic Box at the Top Left] Narration is determined for the Fatwa because, in this case, it is better for the girl to be raised in her mother's lap, and leaving the mother would result in weaker affection for the girl when there is no one else to care for her, although you know that a non-mahram (stranger) has no right of custody (hadana) over the girl. (T) [Arabic text inside the box: ح للفتیا فان نشوہا فی حضن امہا خیر لہا والنظر من ترکھا ضائقۃ لاحاضن لہا وقد علمت ان لا حق لغیر محرم فی حضانتھا۔]

And the guardianship (Wilayah) for the marriage of these five minors belongs only to Amr because there is no other agnate (Asaba) besides him. (T) And the guardianship of the mother does not belong to any of the aforementioned individuals because it is specific to the father and his executor, and the grandfather and his executor, and the Shariah judge (this guardianship is exclusive to the father and his executor or the grandfather and his executor and the Shariah judge. T). Yes, if Zaid has designated someone from among them or others to safeguard and manage his property or for the care and upbringing of the children, then the guardianship of the property will belong to him as he has been appointed as their executor (Wasi) (T). And Allah, Glory be to Him and the Exalted, knows best.

Problem 136: 30 Dhu al-Qi'dah 1309 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Abadullah died leaving behind one wife, one minor son, and one cousin brother, Faizullah. The woman married a stranger who has no relation to this minor. This child has no maternal grandmother, no paternal grandmother, nor any sister, but has a maternal step-aunt and a real paternal aunt. In this situation, where will this child, who is four years old, stay, and does the guardianship of his property belong to Faizullah or not? Explain and you shall be rewarded.

Answer: Since the mother of the minor married a stranger, she no longer has the right to keep the minor. The child will stay with the maternal step-aunt until the age of seven. If she refuses, he will be placed with the paternal aunt. If she also refuses, he will be compelled to stay with the maternal aunt. All this is provided that there is no impediment to custody for both the maternal and paternal aunts; otherwise, if there is an impediment for one, he will stay with the other. After the age of seven, until adulthood, he will stay with Faizullah.

[Arabic Box at the Bottom Left] In Durr al-Mukhtar: Custody belongs to the mother unless she is dissolute or married to someone who is not a mahram to the minor, etc. [Urdu text inside the box: در مختار میں ہے بچے کی پرورش کا حق ماں کو حاصل ہے مگر یہ

فی الدر المختار الحضانۃ :Arabic text] [کہ وہ فاجرہ ہو یا بچے کے غیر محرم سے نکاح کرلے (ت)
[للام الا ان تکون فاجرۃ او متزوجۃ بغیر محرم الصغیر الخ۔

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Hadana, Mujtabai Press, Delhi, 1/264

फ़तावा रज़विया - जिल्द 13 - पृष्ठ 13

[ऊपर बाईं ओर अरबी बॉक्स] रिवायत ही फ़तवे के लिए निर्धारित है क्योंकि इस स्थिति में बच्ची का अपनी माँ की गोद में पलना उसके लिए बेहतर है और माँ को छोड़ने में बच्ची पर कमजोर ममता होगी जबकि उसका कोई और परवरिश करने वाला नहीं है, हालांकि आप जानते हैं कि गैर-महरम को बच्ची का कस्टडी (हज़ानत) का अधिकार नहीं है। (त) [बॉक्स के अंदर अरबी पाठ: ح للفتیا فان لہا وقد علمت ان لا حق لغیر ہ نشوبا فی حضن امہا خیر لہا والنظر من ترکھا ضائقۃ لاحاض محرم فی حضانتھا۔]

और इन पांचों नाबालिगों के निकाह की विलायत (संरक्षकता) केवल अम्र को ही है क्योंकि उनके अलावा कोई दूसरा असबा (पितृवंशीय संबंधी) नहीं है। (त) और माँ की विलायत इन उपरोक्त व्यक्तियों में से किसी को नहीं है क्योंकि यह पिता और उसके वसी (उत्तराधिकारी), दादा और उसके वसी, और शरीयत के न्यायाधीश के साथ विशिष्ट है (यह विलायत पिता और उसके वसी या दादा और उसके वसी और शरीयत के न्यायाधीश के साथ खास है। त)। हाँ, अगर ज़ैद ने अपनी संपत्ति की देखभाल या बच्चों की देखरेख के लिए इनमें से किसी को या किसी और को नियुक्त किया है, तो संपत्ति की विलायत उसे होगी क्योंकि वह उन पर वसी नियुक्त रहा है (त)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसला 136: 30 ज़िल-क़ादा 1309 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि: इबादुल्लाह एक पत्नी, एक नाबालिग पुत्र और एक चचेरे भाई फ़ैज़ुल्लाह को छोड़कर मर गया। औरत ने एक अजनबी व्यक्ति से निकाह कर लिया जिसका उस नाबालिग से कोई रिश्ता नहीं है। इस बच्चे की न नानी है, न दादी है, न कोई बहन, बल्कि सौतेली खाला और सगी फूफी है। इस स्थिति में यह बच्चा जिसकी उम्र चार साल है, किसके पास रहेगा और उसकी संपत्ति की विलायत फ़ैज़ुल्लाह को है या नहीं? बयां करें और सवाब पाएं।

जवाब: चूंकि नाबालिग की माँ ने एक अजनबी से निकाह कर लिया, अब उसे नाबालिग को रखने का अधिकार नहीं रहा। बच्चा सात साल की उम्र तक सौतेली खाला के पास रहेगा। अगर वह मना करेगी तो फूफी के पास रखा जाएगा। और अगर वह भी इनकार करेगी तो जबरन खाला के पास रहेगा। यह सब उस स्थिति में है जब खाला और फूफी दोनों में कस्टडी के लिए कोई बाधा (माने हज़ानत) न हो;

अन्यथा यदि एक में बाधा हो तो दूसरे के पास रहेगा। सात साल की उम्र के बाद जवान होने तक फ़ैज़ुल्लाह के पास रहेगा।

[नीचे बाईं ओर अरबी बॉक्स] दुर्रे मुख्तार में है: कस्टडी का हक माँ को है जब तक कि वह दुराचारी न हो या नाबालिग के गैर-महरम से शादी न कर ले, इत्यादि। [बॉक्स के अंदर उर्दू पाठ: दर मुख्तार में है बच्चे की परवरिश का हक माँ को हासिल है मगर ये कि वो फाजरा हो या बच्चे के गैर महरम से निकाह करले (त)] [अरबी पाठ: فی الدر المختار الحضانۃ للام الا ان تکون فاجرۃ او متزوجۃ بغیر محرم الصغیر الخ۔]

1. दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-हज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/264

[اوپر بائیں جانب عربی باکس] روایت ہی فتوٰی کے لئے متعین ہے کیونکہ اس صورت میں بچی کا اپنی ماں کے پاس نشو و نما پانا بہتر ہے اور ماں کو چھوڑنے میں بچی پر کمزور شفقت ہوگی جبکہ اس کا کوئی پرورش کرنے والا محض نہ ہو حالانکہ آپ جانتے ہیں کہ غیر محرم کو بچی کا حق حضانت نہیں ہے۔ (ت) [عربی عبارت: ح للفتیا فان نشوہا فی حضن امہا خیر لہا والنظر من ترکھا ضائقۃ لاحاضن لہا وقد علمت ان لاحق لغیر محرم فی حضانتھا۔]

اور ان پانچوں نابالغوں کے نکاح کی ولایت عمرو ہی کو ہے لان العصبۃ لاغیر (کیونکہ ان کے علاوہ کوئی عصبہ نہیں۔ ت) اور ماں کی ولایت ان مذکورین میں سے کسی کو نہیں لاختصاصہا بالاب ووصیہ والجد ووصیہ والحاکم الشرعی (یہ ولایت باپ اور اس کے وصی یا دادا اور اس کے وصی اور شرعی حاکم کے ساتھ خاص ہے۔ ت) ہاں اگر زید ان لوگوں خواہ ان کے غیر میں سے کسی کو اپنی جائیداد کے حفظ و نگہداشت یا اولاد کے غور و پرداخت کے لئے کہہ گیا ہو تو ولایت مال اسے ہوگی لکونہ وصیا علیہم (کیونکہ وہ ان پر وصی مقرر رہا ت) واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۶: ۳۰ ذیقعدہ ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عباد اللہ ایک زوجہ اور ایک پسر نابالغ اور ایک چچازاد بھائی فیض اللہ چھوڑ کر فوت ہوا۔ عورت نے ایک اجنبی شخص سے نکاح کر لیا جسے اس نابالغ سے کوئی علاقہ نہیں، اس بچے کی نہ نانی ہے نہ دادی ہے نہ کوئی بہن بلکہ سوتیلی خالہ اور سگی پھوپھی ہے، اس صورت میں یہ بچہ جس کی چار برس کی عمر ہے کس کے پاس رہے گا اور اس کے مال کی ولایت فیض اللہ کو ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ نابالغ کی ماں نے ایک اجنبی سے نکاح کر لیا، اب اسے نابالغ کے رکھنے کا اختیار نہ رہا ایک سات برس کی عمر تک سوتیلی خالہ کے پاس رہے گا، اگر وہ نہ مانے گی تو پھوپھی کے پاس رکھا جائے گا اور اگر وہ بھی انکار کرے گے تو جبراً خالہ کے پاس رہے گا، یہ سب اس صورت میں ہے کہ خالہ اور پھوپھی دونوں میں کوئی مانع حضانت نہ ہو ورنہ اگر ایک میں مانع حضانت ہو تو دوسرے کے پاس رہے گا، سات برس کے عمر بعد جوان ہونے تک فیض اللہ کے پاس رہے گا،

[نیچے بائیں جانب عربی باکس] در مختار میں ہے بچے کی پرورش کا حق ماں کو حاصل ہے مگر یہ کہ وہ فاجرہ ہو یا بچے کے غیر محرم سے نکاح کرلے (ت) [عربی عبارت: فی الدر المختار الحضانۃ للام الا ان تکون فاجرۃ او متزوجۃ بغیر محرم الصغیر الخ۔]

۱ درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۴

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

It is stated in the same [reference]: [Arabic]: "Then after the mother, if she dies, or does not accept, or marries a stranger, [the right of custody goes to] the maternal grandmother (mother's mother), then the paternal grandmother (father's mother), then the full sister, then the uterine sister, then the consanguine sister, then the maternal aunts in the same manner, then the paternal aunts, etc." [Urdu]: If the mother passes away, or does not accept, or marries an outsider to the child, then after the mother, the maternal grandmother, then the paternal grandmother, then the real sister, then the maternal half-sister, then the paternal half-sister, then the maternal aunts in the same order, then the paternal aunts, etc. (T)

It is stated in Bahr al-Ra'iq: [Arabic]: "The apparent meaning of their words is that if the mother refuses and [the child] is offered to those below her among the custodians and they also refuse, the mother is compelled, but not those below her." [Urdu]: The apparent statement of the noble jurists is that when the mother refuses and the child is presented to another caregiver and she also refuses, then in such a case, the mother will be compelled to provide care; caregivers other than the mother will not be compelled. (T)

It is stated in Khulasa, etc.: [Arabic]: "If the child has no father and the period of custody (Hadanah) has ended, then whoever is beyond him from among the agnates (Asaba) has priority, the closest followed by the next closest." [Urdu]: If the child's father is not present and the period of upbringing has finished, then other agnate relatives will be the guardians (Wali); they will have guardianship according to the degree of kinship, meaning the closest relative will have the right first. (T)

Regarding the guardianship of property, Faidullah has no original right; rather, it will be given to the one who was told by the minor's father at the time of death, "Look after my children," or "The management of my estate is related to you," or "I entrust this child to you." Such a person is called a 'Wasi' (executor/trustee). If there is no Wasi of the father, then the one whom the father's Wasi made their Wasi will be the financial guardian. If that person is also not present, then the grandfather's Wasi, and then the grandfather's Wasi's Wasi. It is in Durr al-Mukhtar: [Arabic]: "His guardian is his father, then his executor, then his executor's executor, then his paternal grandfather, then his executor, then his executor's executor, etc. And Allah knows best." [Urdu]: The child's guardian is the father, then his executor, then the executor's executor, then the paternal grandfather (meaning the grandfather who is

related without a female intermediary), then his executor, then his executor's executor.

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody (Hadanah), Mujtabai Press, Delhi, 1/264 2. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Custody (Hadanah), H.M. Saeed Company, Karachi, 4/166 3. Radd al-Muhtar with reference to Khulasa etc., Chapter of Custody (Hadanah), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/643 4. Durr al-Mukhtar, Book of the Authorized, Mujtabai Press, Delhi, 2/203

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

उसी में है: [अरबी]: "फिर माँ के बाद, यदि वह मर जाए, स्वीकार न करे, या किसी अजनबी से विवाह कर ले, [तो अधिकार है] नानी (माँ की माँ), फिर दादी (पिता की माँ), फिर सगी बहन, फिर सहोदर (एक माँ वाली) बहन, फिर सौतेली (एक पिता वाली) बहन, फिर उसी प्रकार मौसियाँ, फिर बुआएँ आदि।" [उर्दू]: यदि माँ की मृत्यु हो जाए, या वह स्वीकार न करे, या वह किसी ऐसे अजनबी से विवाह कर ले जो बच्चे का रिश्तेदार न हो, तो माँ के बाद नानी, फिर दादी, फिर सगी बहन, फिर माँ की ओर से आधी बहन, फिर पिता की ओर से आधी बहन, फिर उसी क्रम में मौसियों, फिर बुआओं को हक होगा। (त)

बहर-उर-रैक़ में है: [अरबी]: "उनके शब्दों का स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि माँ इनकार कर दे और बच्चा उसके नीचे के अन्य संरक्षकों को दिया जाए और वे भी इनकार कर दें, तो माँ को मजबूर किया जाएगा, लेकिन उसके नीचे वालों को नहीं।" [उर्दू]: सम्मानित न्यायविदों (फ़ुक़्हा) का स्पष्ट कथन यह है कि जब माँ इनकार कर दे और बच्चे को किसी अन्य देखभाल करने वाली के पास ले जाया जाए और वह भी मना कर दे, तो ऐसी स्थिति में माँ को देखभाल के लिए मजबूर किया जाएगा; माँ के अलावा किसी अन्य देखभाल करने वाली को मजबूर नहीं किया जाएगा। (त)

खुलासा आदि में है: [अरबी]: "यदि बालक का पिता न हो और पालन-पोषण (हज़ानत) की अवधि समाप्त हो गई हो, तो उसके बाद के असबा (रक्त संबंधी) में से जो हो, वह अधिक हकदार है, जो सबसे करीब है और फिर उसके बाद वाला।" [उर्दू]: यदि बच्चे का पिता न हो और पालन-पोषण की अवधि समाप्त हो गई हो, तो अन्य असबा (पितृवंशीय संबंधी) वली (अभिभावक) होंगे; उन्हें विलायत (अभिभावकत्व) रिश्ते की निकटता के अनुसार मिलेगी, यानी जो सबसे करीब होगा उसे पहले अधिकार मिलेगा। (त)

संपत्ति के संरक्षण के मामले में फ़ैज़ुल्लाह का कोई मौलिक अधिकार नहीं है; बल्कि यह उसे दिया जाएगा जिसे नाबालिग के पिता ने मृत्यु के समय यह कहा हो कि "मेरे बच्चों की देखभाल करना" या "मेरे छोड़े हुए धन का प्रबंधन तुम्हारे ज़िम्मे है" या "मैं इस बच्चे को तुम्हारी सुपुर्दगी में देता हूँ।" ऐसे व्यक्ति को 'वसी' (निष्पादक/अभिभाषक) कहा जाता है। यदि पिता का कोई वसी न हो, तो जिसे पिता के वसी ने अपना वसी बनाया हो, वह संपत्ति का वली होगा। यदि वह भी न हो, तो दादा का वसी, और फिर दादा के वसी का वसी। दुर्रे-मुख्तार में है: [अरबी]: "उसका वली उसका पिता है, फिर उसका

वसी, फिर उसके वसी का वसी, फिर उसका दादा (जद्दे सहीह), फिर उसका वसी, फिर उसके वसी का वसी आदि। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।" [उर्दू]: बच्चे का वली पिता है, फिर उसका वसी, फिर वसी का वसी, फिर उसका जद्दे सहीह (अर्थात् वह दादा जो महिला के माध्यम के बिना हो), फिर उसका वसी, फिर उसका वसी।

पादलेख: 1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल हज़ानत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/264 2. बहर-उर-रैक़, बाबुल हज़ानत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 4/166 3. रद्दुल मुहतार ब-हवाला खुलासा आदि, बाबुल हज़ानत, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 2/643 4. दुर्रे मुख्तार, किताबुल माज़ून, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/203

पृष्ठ 386/688

جلد سیزدہم ۱۳، فتاوی رضویہ

اسی میں ہے: ثم بعد الام بأن ماتت اولم تقبل او تزوجت باجنبی ام الام ثم ام الاب ثم الاخت لاب وام ثم لام ثم لاب ثم الخالات کذلک ثم العمات الخ۔ ماں فوت ہوجائے یا ماں قبول نہ کرے یا بچے کے اجنبی سے نکاح کرلے تو ماں کے بعد نانی پھر دادی کو پھر حقیقی بہن کو پھر مادری بہن کو پھر پدری بہن کو پھر خالات کو اسی ترتیب سے پھر پھوپھیوں کو الخ۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: ظاہر کلامھم ان الام اذامتنعت وعرض علی من دونھا من الحاضنات فامتنعت اجبرت الام لامن دونھا فقہاء کرام کا ظاہر کلام یہ ہے کہ جب ماں انکار کردے اور بچہ کو دوسری پرورش کنندہ پر پیش کیا گیا ہو تو اس نے بھی انکار کردیا ہو تو ایسی صورت میں ماں کو پرورش پر مجبور کیا جائیگا، ماں کے سوا دوسری پرورش کنندہ کو مجبور نہیں جائے گا۔ (ت)

خلاصہ وغیرہ میں ہے: ان لم یکن للصبی اب وانقضت الحضانۃ فمن وسواہ من العصبۃ اولی الاقرب فالاقرب۔ اگر بچے کا باپ نہ ہو اور پرورش کی مدت ختم ہوچکی ہو تو پھر دوسرے عصبات ولی ہوں گے، ان کو ولایت درجہ بدرجہ قرابت کے لحاظ سے ہوگی یعنی سب سے قریب تر کو پہلے حق ہوگا۔ (ت)

اور ولایت مال میں فیض اللہ کا اصلاً حق نہیں بلکہ اسے ملے گی جسے نابالغ کا باپ کہہ کر مرا ہو کہ میری اولاد کی نگہداشت تو کرنا یا میرے ترکہ کی غور پرداخت تیرے متعلق ہے یا اس بچہ کو میں تیری سپردگی میں دیتا ہوں، اسے وصی کہتے ہیں، اگر باپ کا کوئی وصی موجود نہ ہو تو باپ کے وصی نے جسے اپنا وصی کیا ہو وہ ولی مال ہوگا، وہ بھی نہ ہو تو دادا کا وصی، وہ بھی نہ ہو تو دادا کے وصی کا وصی۔ در مختار میں ہے: ولیہ ابوہ ثم وصیہ ثم وصیہ ثم جدہ الصحیح ثم

وصیه ثم وصی وصیه الخ واللہ سبحانہ ۔ بچے کا ولی باپ، پھر اس کا وصی، پھر وصی کا وصی، پھر اس کا جد صحیح (یعنی جو عورت کے واسطہ کے بغیر جد ہو) پھر اس کا وصی، پھر اس کے وصی۔

۱ در مختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲٦٤ ۲ بحر الرائق باب الحضانة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ٤/ ١٦٦ ۳ رد المحتار بحوالہ خلاصہ وغیرہ باب الحضانة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ٦٤۳ ٤ در مختار کتاب المأذون مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۰۳

Fatawa Rizwia, Volume 13

...and Allah knows best what is correct, and to Him is the return and final destination. Like the executor etc., and Allah Glory be to Him and the Most High knows best what is correct, and to Him is the return and final destination. (T)

Problem 73: 20 Rabi al-Akhir Sharif 1310 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid passed away leaving behind parents, a wife, and a breastfeeding boy. The boy's maternal grandmother had already died. In this situation, if the boy's mother marries a stranger, who will the boy stay with? Explain, and you shall be rewarded.

The Answer: If the mother marries a person who is not a biological 'Mahram' of the boy, such as an uncle etc., the boy will be taken from the mother. Since the maternal grandmother is not present, he will stay with the paternal grandmother until the age of seven years, and then the grandfather will keep him.

[Arabic Citation]: In 'Al-Durr' then after the mother, if she dies or does not accept [the child] or forfeits her right or marries a stranger, then the maternal grandmother, even if higher (great-grandmother), has the right in the absence of a closer eligible relative. Then the paternal grandmother, even if higher, with the aforementioned condition etc. And it is also mentioned therein: the caregiver, whether it's the mother or someone else, has more right to him, i.e., the boy, until he is independent of women, which is estimated at seven years, and the Fatwa is issued upon this. In 'Radd al-Muhtar', it is quoted from 'Sharh al-Majma'': when the boy becomes independent of women's service, the father or the executor or the guardian will be compelled to take him, because he is more capable of disciplining and educating him. In 'Al-Khulasah' and others: when the boy becomes independent, then the agnatic relatives ('Asbah) are more entitled, giving precedence to the nearest then the next nearest. A summary. And Allah the Most High knows best.

[Urdu Translation of the above]: It is in 'Dur al-Mukhtar' that if the mother dies, or does not accept the child, or forfeits her right of custody, or marries a stranger to the child, then after the mother, the maternal grandmother has the right to nurture, even upwards, if no closer female relative has the right to nurture. Then the paternal grandmother upwards, provided there is no closer female relative etc. It is also in the same book that whether the caregiver is the mother or someone else, they have this right regarding the boy until the boy is independent of women's supervision, which is estimated to be seven years of age, and the fatwa will be issued on this. On this, it is

quoted in 'Radd al-Muhtar' from 'Sharh al-Majma'' that when the boy becomes independent of women's service, the father or his executor or guardian will be compelled to take the boy because after that, these people are more capable of the boy's education and discipline compared to women...

1 Dur al-Mukhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264 2 Dur al-Mukhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 2/265 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/602

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

...और अल्लाह ही बेहतर जानता है कि क्या सही है, और उसी की ओर लौटना और ठिकाना है। जैसे वसी वगैरह, और अल्लाह सुभानहु व तआला बेहतर जानता है कि क्या सही है, और उसी की ओर लौटना और ठिकाना है। (त)

मसला 73: 20 रबी उल-आख़िर शरीफ़ 1310 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: ज़ैद ने माता-पिता, एक पत्नी और एक दूध पीते लड़के को छोड़कर वफ़ात पाई। लड़के की नानी का पहले ही देहांत हो चुका है। इस सूरत में अगर लड़के की माँ किसी अजनबी (ग़ैर-महरम) से निकाह करे, तो लड़का किसके पास रहेगा? बयान करें, सवाब पाएँ।

अल-जवाब: अगर माँ किसी ऐसे व्यक्ति से निकाह कर ले जो लड़के का महरम नसबी (जैसे चाचा आदि) न हो, तो लड़का माँ से ले लिया जाएगा। और चूंकि नानी नहीं है, तो वह सात साल की उम्र तक दादी के पास रहेगा, फिर दादा रखेगा।

[अरबी उद्धरण का अनुवाद]: 'दुर्रे मुख़्तार' में है कि माँ के बाद, अगर वह वफ़ात पा जाए या बच्चे को स्वीकार न करे या अपना हक़-ए-हज़ानत (परवरिश का हक़) छोड़ दे या बच्चे के किसी अजनबी से निकाह कर ले, तो फिर माँ के बाद नानी को परवरिश का हक़ है, भले ही वह ऊपर तक हो, जब कोई क़रीबी औरत परवरिश का हक़ न रखती हो। फिर दादी को ऊपर तक, बशर्ते कि उससे कोई क़रीबी औरत न हो, आदि। इसी में है कि परवरिश करने वाली माँ हो या कोई और, तो उन्हें लड़के के मुताल्लिक़ यह हक़ उस वक़्त तक है जब तक लड़का औरतों की निगरानी से मुस्तग़नी (स्वतंत्र) न हो जाए, जिसकी मुद्दत का अंदाज़ा सात साल की उम्र है, और इसी पर फ़तवा दिया जाएगा। 'रद्दुल मुह्तार' में 'शरहुल मजमा' से मन्कूल (उद्धृत) है कि जब लड़का औरतों की ख़िदमत से मुस्तग़नी हो जाए, तो बाप या उसके वसी या वली को मजबूर किया जाएगा कि वह लड़के को हासिल करे, क्योंकि उसके बाद ये लोग औरतों के मुक़ाबले में लड़के की तालीम और तरबियत के लिए अधिक सक्षम हैं। 'अल-खुलासा' और अन्य में है: जब लड़का स्वतंत्र हो जाए, तो असबा (रक्त संबंधी पुरुष) अधिक पात्र हैं, पहले सबसे करीबी, फिर उससे करीबी। सारांश। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतर]: 'दुर्रे मुख़्तार' में है कि माँ फ़ौत हो जाए या बच्चे को क़बूल न करे या अपना हक़-ए-हज़ानत साक़ित (रद्द) कर दे या बच्चे के किसी अजनबी से निकाह कर ले तो फिर माँ के बाद नानी को परवरिश का हक़ है अगरचे ऊपर तक जब कोई क़रीबी औरत परवरिश का हक़ न

रखती हो फिर दादी को ऊपर तक बशर्ते कि उससे कोई क़रीबी औरत न हो इलख़ (इत्यादि) इसी में है परवरिश करने वाली माँ हो या कोई और, तो इन को लड़के के मुताल्लिक़ यह हक़ उस वक़्त तक है जब तक लड़का औरतों की निगरानी से मुस्तग़नी (स्वतंत्र) न हो जाए, जिस की मुद्दत का अंदाज़ा सात साल की उम्र है, और इसी पर फ़तवा दिया जाएगा, इस पर 'रद्दुल मुह्तार' में 'शरहुल मजमा' से मन्कूल है कि जब लड़का औरतों की ख़िदमत से मुस्तग़नी हो जाए तो बाप या उस के वसी या वली को मजबूर किया जाएगा कि वह लड़के को हासिल करे क्यूंकि इस के बाद ये लोग औरतों की बनिस्बत लड़के की तालीम व...

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल हज़ानत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/264 2 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल हज़ानत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/265 3 रद्दुल मुह्तार, बाबुल हज़ानत, दार इहयाउत तुरासुल अरबी बैरूत, 2/602

وتعالیٰ اعلم بالصواب والیہ المرجع والمآب۔ کاوصی الخ،واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم بالصواب والیہ المرجع والمآب۔(ت)

مسئلہ ۷۳: ۲۰ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے والدین اور ایک زوجہ اور ایک شیر خوار لڑکا چھوڑ کر انتقال کیا، لڑکے کی نانی پہلے فوت ہو چکی ہے ، اس صورت میں اگر لڑکے کی ماں کسی اجنبی سے نکاح کرے تو لڑکا کس کے پاس رہے گا؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر ماں کسی ایسے شخص سے نکاح کر لے جو لڑکے کا محرم نسبی مثل چچا وغیرہ نہ ہو تو لڑکا ماں سے لے لیا جائے گا اور جبکہ نانی نہیں ہے تو سات برس کی عمر تک دادی کے پاس رہے گا پھر دادا رکھے گا۔

فی الدرثم بعد الام بان ماتت اولم تقبل او اسقطت حقھا او تزوجت باجنبی ام الام وان علت عند عدم اھلیۃ القربی۔ ثم ام الاب وان علت بالشرط المذکور الخ وفیہ والحاضنۃ اما او غیرھا احق بہ ای بالغلام حتی یستغنی عن النساء وقدر بسبع، وبہ یفتی اھ۔ وفی ردالمحتار عن شرح المجمع و اذا استغنی الغلام عن الخدمۃ اجبر الاب او الوصی او الولی علی اخذہ لانہ اقدر علی تادیبہ و تعلیمہ اھ۔ وفی الخلاصۃ وغیرھا و اذا استغنی الغلام فالعصبۃ اولی یقدم الاقرب فالاقرب اہ ملخصا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

درمختار میں ہے کہ ماں فوت ہو جائے یا بچے کو قبول نہ کرے یا اپنا حق حضانت ساقط کردے یا بچے کے کسی اجنبی سے نکاح کر لے تو پھر ماں کے بعد نانی کو پرورش کا حق ہے اگرچہ اوپر تک جب کوئی قریبی عورت پرورش کا حق نہ رکھتی ہو پھر دادی کو اوپر تک بشرطیکہ اس سے

کوئی قریبی عورت نہ ہو الخ اسی میں ہے پرورش کرنے والی ماں ہو یا کوئی اور ، تو ان کو لڑکے کے متعلق یہ حق اس وقت تک ہے جب تک لڑکا عورتوں کی نگرانی سے مستغنی نہ ہو جائے ، جس کی مدت کا اندازہ سات سال کی عمر ہے ، اور اسی پر فتویٰ دیا جائے گا ، اس پر ردالمحتار میں شرح المجمع سے منقول ہے کہ جب لڑکا عورتوں کی خدمت سے مستغنی ہو جائے تو باپ یا اس کے وصی یا ولی کو مجبور کی جائے گا کہ وہ لڑکے کو حاصل کرے کیونکہ اس کے بعد یہ لوگ عورتوں کی بنسبت لڑکے کی تعلیم و

1 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۴ 2 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۶۵ 3 ردالمحتار باب الحضانۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۶۰۲

Fatawa Razawiyya | Volume 13, Page 13

...know better the upbringing. It is mentioned in "Al-Khulasa" etc. that when a boy becomes independent, his male agnates (asaba) will be entitled to him according to the degrees of proximity, summarized, and Allah knows best (T).

Problem 138: 27 Sha'ban 1312 AH

Question: What do the scholars of religion say regarding the right of custody (hadana) and upbringing of young children after the mother's death? Between maternal uncles and paternal uncles, who is preferred? And until what age does that right remain? State and be rewarded.

Answer: The questioner states these children are girls. They have a father, brother, nephew, sisters, maternal grandmother, maternal uncle, and real paternal uncle. One girl is nine years old and another is eleven. In this inquired situation, the maternal grandmother and maternal uncle have no authority to keep them. The girls will stay with their paternal uncle because when a girl reaches nine years, even the mother cannot keep her, she will be given to the paternal uncle; the grandmother etc. are of the second degree. It is stated in "Durr al-Mukhtar":

[Arabic Box Text] Left: The mother, maternal grandmother, and paternal grandmother have the right to the female child until she menstruates, and others have the right until she becomes desirable (mushtahat), which is estimated at nine years of age, and the fatwa is based on this. It is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that the ruling for the mother, maternal grandmother, and paternal grandmother is the same, summarized. And Allah Almighty knows best. Right: The mother, maternal grandmother, and paternal grandmother are entitled to the girl until she starts menstruating, and other women are entitled until the girl becomes 'mushtahat' (desirable), and the age for 'mushtahat' is estimated at 9 years; the fatwa will be issued on this. And it is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that the same applies to the mother, maternal grandmother, and paternal grandmother, summarized, and Allah knows best (T).

Problem 139: From Miranpur Katra Kamalzai Shahjahanpur, sent by Nader Khan Sahib, Chief of Katra. 18 Dhu al-Qi'dah 1312 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: a small boy and girl whose mother has passed away, and the father has remarried. There are maternal grandfather, maternal uncle, maternal uncle's wife, and daughters of

maternal aunts and paternal aunts. The children are with the maternal grandfather. The father wants to take them by force, although due to the second marriage, there is a fear of harm to the children's lives in his care. In this case, who has the right to raise the children? Please state the full details of the order of the right of custody and until what age they will stay with the caregiver? State and be rewarded.

Answer: The right of custody is for a Dhu-Rahm Muhram (a relative within the prohibited degrees), meaning a blood relative with whom marriage is permanently prohibited. Thus, the maternal grandmother...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press Delhi, 1/265 Page 388 of 688

...परवरिश ज़्यादा बेहतर जानते हैं। 'अल-खुलासा' आदि में है कि जब लड़का आत्मनिर्भर हो जाए, तो उसके पुरुष सगे संबंधी (असबाह) निकटता के क्रम के अनुसार उसके हकदार होंगे। संक्षेपित, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला १३८: २७ शाबान १३१२ हिजरी।

सवाल: इस मसले में दीन के उलेमा क्या कहते हैं कि माँ की मृत्यु के बाद छोटे बच्चों के पालन-पोषण (हज़ानत) का अधिकार किसे है? और मामा और चाचाओं में किसे वरीयता प्राप्त है? और वह अधिकार किस उम्र तक रहता है? बयान करें, सवाब पाएं।

अल-जवाब: सवाल पूछने वाले ने ज़ाहिर किया कि ये बच्चे लड़कियाँ हैं, उनके बाप, भाई, भतीजा, बहनें, नानी, मामा, सगे चाचा हैं। एक लड़की नौ साल की है और एक ग्यारह की। अतः पूछी गई स्थिति में नानी और मामा को उन्हें रखने का कोई अधिकार नहीं है, लड़कियाँ अपने चाचा के पास रहेंगी क्योंकि जब लड़की नौ साल की हो जाए तो माँ भी उसे नहीं रख सकती, उसे चाचा को सौंप दिया जाएगा। नानी आदि दूसरा दर्जा हैं। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स का पाठ] बायाँ: माँ, नानी और दादी लड़की की हक़दार उसके जवान होने (मासिक धर्म आने) तक हैं, और अन्य महिलाएँ लड़की के'मुश्तहात' (वांछनीय) होने तक हक़दार हैं, और 'मुश्तहात' की उम्र का अंदाज़ा ९ साल लगाया गया है, इसी पर फतवा दिया जाएगा। और इमाम मोहम्मद (रहमहुल्लाह) से रिवायत है कि माँ, नानी और दादी का भी यही हुक्म है। संक्षेपित, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। दायाँ: माँ नानी और दादी लड़की की हक़दार उसको हैज़ (मासिक धर्म) आने तक हैं और दूसरी औरतें लड़की के मुश्तहात (वांछनीय) होने तक हक़दार हैं, और मुश्तहात का अंदाज़ा ९ साल की उम्र लगाया गया है, इसी पर फ़तवा दिया जाएगा, और इमाम मोहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से मरवी है कि माँ नानी और दादी का भी यही हुक्म है, संक्षेपित, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला १३९: मीरानपुर कटरा कमाल ज़ई, शाहजहाँपुर से, प्रेषक नादिर खां साहब रईस कटरा, १८ ज़िलकादा १३१२ हिजरी।

सवाल: दीन के उलेमा इस मसले में क्या कहते हैं कि एक छोटा लड़का और एक छोटी लड़की जिनकी माँ का इंतकाल हो गया और बाप ने दूसरा निकाह कर लिया। उनके नाना, मामा, ममानी और खाला-ज़ाद और फूफी-ज़ाद नानियाँ और नानियों की बेटियाँ हैं। बच्चे नाना के पास हैं, बाप उन्हें ज़बरदस्ती लेना चाहता है, जबकि दूसरे निकाह के कारण उसके पास बच्चों की जान को खतरा होने की आशंका है। इस स्थिति में बच्चों के पालन-पोषण का हक़ किसे है? पूरी तफ़्सील दर्ज हो कि हज़ानत का हक़ क्रमानुसार किसे है और वे पालने वाले के पास किस उम्र तक रहेंगे? बयान करें, सवाब पाएं।

अल-जवाब: हज़ानत का हक़ 'ज़ी रहम महरम' के लिए है, यानी वह रक्त संबंधी जिससे निकाह हमेशा के लिए हराम हो, तो नानी की...

१ दुर्रे मुख्तार, बाबू हज़ानत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली १/२६५ पृष्ठ ३८८ का ६८८

تربیت زیادہ بہتر جانتے ہیں اھ خلاصہ وغیرہ میں ہے کہ جب لڑکا مستغنی ہو جائے تو اس کے عصبہ مرد قرابت کے لحاظ سے درجہ بدرجہ اس کے حقدار ہوں گے اھ ملخصاً، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۳۸: ۲۷ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حق حضانت اور پرورش اطفالِ صغیر سن کا بعدِ وفاتِ ماں کے کس کو ہے؟ اور ماموں چچاؤں میں کس کو ترجیح ہے؟ اور وہ حق کس عمر تک رہتا ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: سائل مظہر کہ یہ اطفال لڑکیاں ہیں، ان کے باپ، بھائی، بھتیجا، بہنیں، نانی، ماموں، چچا حقیقی ہیں، ایک لڑکی نو برس کی ہے ایک گیارہ کی، پس صورتِ مستفسرہ میں نانی ماموں کو ان کے رکھنے کا کچھ اختیار نہیں، لڑکیاں اپنے چچا کے پاس رہیں گی کہ جب نو برس کی ہو جائے تو ماں بھی اسے نہیں رکھ سکتی چچا کو دلا دی جائے گی، نانی وغیرہا تو دوسرا درجہ ہے۔ درمختار میں ہے:

الام والجدۃ لام اولاب احق بالصغیرۃ حتی تحیض وغیرہما احق بھا حتی تشتھی وقدر بتسع و بہ یفتی وعن محمد ان الحکم فی الام والجدۃ کذلك وبہ یفتی۱ اھ ملخصاً واللہ تعالٰی اعلم۔ ماں نانی اور دادی لڑکی کی حقدار اس کو حیض آنے تک ہیں اور دوسری عورتیں لڑکی مشتات ہونے تک حقدار ہیں، اور مشتات کا اندازہ ۹ سال کی عمر لگایا گیا ہے، اسی پر فتوٰی دیا جائے گا، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے مروی ہے کہ ماں نانی اور دادی کا بھی یہی حکم ہے اھ ملخصاً واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۳۹: از میران پور کٹرہ کمال زئی شاہجہان پور مرسلہ نادر خاں صاحب رئیس کٹرہ ۱۸ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ صغیر و صغیرہ جن کی ماں انتقال کر

گئی اور باپ نے دوسرا نکاح کر لیا نانا، ماموں، ممانی اور خالہ زاد اور پھوپھی زاد نانیاں اور نانیوں کی بیٹی بیٹیاں ہیں بچے نانا کے پاس ہیں باپ ان سے بالجبر لینا چاہتا ہے حالانکہ بوجہ نکاح ثانی اس کے پاس بچوں کی مضرتِ جان کا اندیشہ ہے، اس صورت میں حق پرورش اطفال کس کو ہے؟ پوری تفصیل درج ہو کہ حق حضانت ترتیب وار کس کو ہے اور پرورش کنندہ کے پاس کس عمر تک رہیں گے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: حق حضانت ذی رحم محرم کے لئے ہے یعنی وہ نسبی رشتہ جس میں نکاح ہمیشہ کو حرام ہوتا ہے تو نانی کی

۱ درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۵/۱ Page 388 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Paternal or maternal cousins, their offspring, or the maternal aunt-in-law have no right to custody (hazanat), just as the minor's own maternal or paternal cousins are excluded from the list of 'Mahrams'. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Box 1] Arabic: لاحق لولد عم وعمة وخالة لعدم المحرمية[1]۔ Urdu: Paternal cousins and maternal cousins do not have the right to raise the child because they are not Mahram (t).

Then, among the Mahram (unmarriageable kin), women are first entitled, provided that—God forbid—they are not apostates, immoral, unreliable, or married to someone who is not a Mahram to the child. An instance of unreliability is if she frequently leaves the child unprotected and goes out; even if a mother acts with such neglect, the child will be taken from her. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Box 2] Arabic: الحضانة للام الا ان تكون مرتدة او فاجرة او غير ما مونة بان تخرج كل وقت و تترك الولد ضائعا او متزوجة بغير محرم الصغير[2]الخ ملخصاً۔ Urdu: The right of upbringing belongs to the mother, unless she is an apostate, immoral, or untrustworthy such that she leaves the child alone and goes out all the time, or she has married someone who is a non-Mahram stranger to the minor... etc. summarized (t).

Among women, the mother is foremost, then (1) the real maternal grandmother, then (2) her mother, then (3) the real paternal grandmother, then (4) her mother, then (5) the real sister, then (6) the uterine sister (sharing the same mother but different father), then according to standard texts (7) the consanguine sister (step-sister), then (8) the real niece (sister's daughter), then (9) the uterine niece (daughter of the uterine sister), then (10) the real maternal aunt, then (11) the uterine maternal aunt, then (12) the consanguine maternal aunt, then (13) the real niece, then (14) the step-niece, then (15) the real niece (brother's daughter), then (16) the step-niece, then (17) the real paternal aunt, then (18) the uterine paternal aunt, then (19) the step-paternal aunt, then (20) the mother's real maternal aunt, then (21) her uterine maternal aunt, then (22) her step-maternal aunt, then (23) the father's real maternal aunt, then (24) her uterine maternal aunt, then (25) her step-maternal aunt, then (26) the mother's real paternal aunt, then (27) her uterine paternal aunt, then (28) her step-paternal aunt, then (29) the father's real paternal aunt, then (30) her uterine paternal aunt, then (31) her step-paternal aunt. These are the thirty-two (32) women. When none of these are present or they lose their right for the reasons mentioned, the right of custody transfers to male agnates (Asabat), among whom the father is

foremost, then the grandfather, then the full brother, then the step-brother, then the real nephew, then the step-nephew, then the real paternal uncle, then the step-paternal uncle. While any of these are present, the maternal grandfather, maternal uncles, etc. who are 'Dhawi al-Arham' (distant kindred) have no entitlement; how then can they be entitled in the presence of the father himself? It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Box 3] Arabic: ثم بعد الام ام الام وان علت، ثم ام الاب وان Urdu: After the mother, the maternal grandmother upwards, then the paternal grandmother upwards, then...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press Delhi, 1/265 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press Delhi, 1/264

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

मामी या फुफेरी बहनों या उनकी औलाद या ममानी के लिए कोई हक़-ए-हज़ानत (परवरिश का अधिकार) नहीं है, जैसे स्वयं नाबालिग की ममेरी, चचेरी, फुफेरी या मौसेरी बहनें कि ये 'महारम' (जिनसे निकाह हराम हो) से बाहर हैं। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[बॉक्स 1] अरबी: لاحق لولد عم وعمة وخالة لعدم المحرمية[1]۔ उर्दू: चचेरी, फुफेरी और मौसेरी औलाद को परवरिश का हक़ नहीं है क्योंकि वे महरम नहीं हैं (त)।

महारम में सबसे पहले महिलाएं अधिकारिणी हैं, बशर्ते कि—अल्लाह की पनाह—वे धर्मत्यागी, दुराचारी, या अविश्वसनीय न हों, या किसी ऐसे व्यक्ति के निकाह में न हों जो उस बच्चे का महरम नहीं है। अविश्वसनीय होने की एक सूरत यह है कि वह बच्चे को असुरक्षित छोड़कर बाहर चली जाती हो; ऐसी लापरवाही अगर माँ भी करे तो बच्चा उससे भी ले लिया जाएगा। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[बॉक्स 2] अरबी: الحضانة للام الا ان تكون مرتدة او فاجرة او غير ما مونة بان تخرج كل وقت و تترك الولد ضائعا او متزوجة بغير محرم الصغير[2]الخ ملخصاً۔ उर्दू: परवरिश का अधिकार माँ को है, लेकिन अगर वह धर्मत्यागी या बदचलन हो या लापरवाह हो कि हर समय बच्चे को छोड़कर बाहर चली जाए, या उसने बच्चे के गैर-महरम अजनबी से निकाह कर लिया हो आदि संक्षेप में (त)।

महिलाओं में सबसे पहला स्थान माँ का है, फिर (1) सगी नानी, फिर (2) उसकी माँ, फिर (3) सगी दादी, फिर (4) उसकी माँ, फिर (5) सगी बहन, फिर (6) मादरी बहन (जिसकी माँ एक और बाप अलग हो), फिर रिवायतों में (7) सौतेली बहन, फिर (8) सगी भांजी, फिर (9) मादरी भांजी (मादरी बहन की बेटी), फिर (10) सगी खाला (मौसी), फिर (11) मादरी खाला, फिर (12) सौतेली खाला, फिर (13) सगी भांजी, फिर (14) सौतेली भांजी, फिर (15) सगी भतीजी, फिर (16) सौतेली, फिर (17) सगी फुफी (बुआ), फिर (18) मादरी, फिर (19) सौतेली, फिर (20) माँ की सगी खाला, फिर (21) मादरी, फिर (22) सौतेली, फिर (23) बाप की सगी खाला, फिर (24) मादरी, फिर (25) सौतेली, फिर (26) माँ की सगी फुफी, फिर (27) मादरी, फिर (28) सौतेली, फिर (29) बाप की सगी फुफी, फिर (30) मादरी, फिर (31) सौतेली। ये बत्तीस (32) औरतें हैं। जब इनमें से कोई न हो या ऊपर बताए गए कारणों से अयोग्य हो जाए, तो परवरिश का अधिकार 'असबात' (पिता पक्ष के पुरुष रिश्तेदारों) की ओर जाएगा, जिनमें सबसे पहले पिता है, फिर दादा, फिर सगा भाई, फिर सौतेला

भाई, फिर सगा भतीजा, फिर सौतेला भतीजा, फिर सगा चाचा, फिर सौतेला चाचा। इनमें से किसी के होते हुए नाना, मामू आदि जो 'ज़वी-उल-अरहाम' हैं, उन्हें अधिकार नहीं मिलता, तो वे स्वयं पिता के सामने कब अधिकार पा सकते हैं। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[बॉक्स 3] अरबी: ثم بعد الام ام الام وان علت، ثم ام الاب وان उर्दू: माँ के बाद नानी और उससे ऊपर की पीढ़ियां, फिर दादी और उससे ऊपर की पीढ़ियां, फिर...

[1] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल हज़ानत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/265 [2] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल हज़ानत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/264

خالہ زاد یا پھوپھی زاد بہنوں یا ان کی اولاد یا ممانی کے لئے کوئی حق حضانت نہیں جیسے خود صغیر صغیرہ کی خالہ زاد ماموں زاد پھوپھی زاد چچازاد بہنیں کہ یہ محارم سے خارج ہیں۔ در مختار میں ہے:

[Box 1] لاحق لولد عم وعمة وخالة لعدم المحرمیة[1]۔ | چچازاد، پھوپھی زاد اور خالہ زاد کو بچے کا حق پرورش نہیں ہے کیونکہ یہ محارم نہیں ہیں (ت)

پھر محارم میں پہلے مستحق عورتیں ہیں بشر طیکہ معاذ اللہ مرتدہ یا بد کار یا بے اطمینان یا کسی ایسے شخص کے نکاح میں نہ ہوں جس اس بچہ کا محرم نہیں، بے اطمینانی کی یہ صورت کہ بچہ کو بے حفاظت چھوڑ کر باہر چلی جایا کرتی ہو، ایسی بے پرورائی ماں بھی کرے تو بچہ اس سے بھی لے لئے جائیں گے، در مختار میں ہے:

[Box 2] الحضانة للام الا ان تکون مرتدة او فاجرة او غیر ما مونة بان تخرج کل وقت و تترك الولد ضائعا او متزوجة بغیر محرم الصغیر[2]الخ ملخصاً۔ | پرورش کا حق ماں کو ہے مگر جب ہو مرتدہ یا فاجرہ یا غیر محتاط ہو کہ ہر وقت بچے کو چھوڑ کر باہر چلی جاتی ہو یا اس نے بچے کے غیر محرم اجنبی سے نکاح کر لیا ہو الخ ملخصاً (ت)

عورتوں میں سب سے مقدم ماں ہے، پھر ۱سگی نانی، پھر ۲اس کی ماں، پھر ۳سگی دادی، پھر ۴اس کی ماں، پھر ۵سگی بہن، پھر ۶مادری بہن (یعنی جو اس بچے سے ماں میں شریک اور باپ میں جدا ہو) پھر روایت متون میں ۷سوتلی بہن، پھر ۸سگی بھانجی، پھر ۹مادری (یعنی مادری بہن کی) بیٹی، پھر ۱۰سگی خالہ، پھر ۱۱مادری خالہ، پھر ۱۲سوتلی خالہ، پھر ۱۳سگی بھانجی، پھر

۱۴سوتلی بھانجی، پھر ۱۵سگی بھتیجی، پھر ۱۶سوتلی، پھر ۱۷سگی پھوپھی، پھر ۱۸مادری، پھر ۱۹سوتلی، پھر ۲۰ ماں کی سگی خالہ، پھر ۲۱مادری، پھر ۲۲سوتلی، پھر ۲۳ باپ کی سگی خالہ، پھر ۲۴مادری، پھر ۲۵سوتلی، پھر ۲۶ ماں کی سگی پھوپھی، پھر ۲۷مادری، پھر ۲۸سوتلی، پھر ۲۹ باپ کی سگی پھوپھی، پھر ۳۰مادری، پھر ۳۱سوتلی، یہ بتیس ۳۲ عورتیں ہیں جب ان سے کوئی نہ ہو یا بوجوہ مذکورہ مستحق نہ رہے تو حق حضانت عصبات ذکور کی طرف منتقل ہو گا جن میں سب سے مقدم باپ ہے، پھر دادا، پھر سگا بھائی، پھر سوتیلا، پھر سگا بھتیجا، پھر سوتیلا، پھر سگا چچا، پھر سوتیلا۔ ان میں سے کسی کے ہوتے نانا ماموں وغیرہ ہما ذوی الارحام کو استحقاق نہیں تو خود باپ کے سامنے کب مستحق ہو سکتے ہیں، در مختار میں ہے:

[Box 3] ثم بعد الام ام الام وان علت، ثم ام الاب وان | ماں کے بعد نانی اوپر تک، پھر دادی اوپر تک، پھر

[1] درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۵ [2] درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 13

...then the sister from father and mother (full sister), then from mother's side, then from father's side, then the daughter of the full sister, then of the sister from mother's side, then of the sister from father's side, similarly the maternal aunts (khalaat) i.e., from both parents, then from mother's side, then from father's side, then the daughter of the paternal sister, then the daughters of the brothers (full, maternal, or paternal in order), then paternal aunts (ammaat) (full, maternal, then paternal), then the mother's maternal aunt similarly, then the father's maternal aunt similarly, then the paternal aunts of the mothers and fathers in this order, then the male relatives (Asabat) in the order of inheritance, so the father is prioritized, then the grandfather, then the full brother, then the paternal brother, then their sons similarly, then the paternal uncle, then his sons, then if there are no 'Asabat', then the 'Dhu al-Arham' (distant kindred) - summarized from 'Muntaqa' with additions from 'Radd al-Muhtar'.

1. Full sister, then real sister from mother's side, then real sister from father's side, then daughter of full sister, then sister's daughter from mother's side, then real sister's daughter from father's side, then real sister's daughter from father's side, then in this order 9, 10, 11 maternal aunts, then from father's side 12 sister's daughter, then brother's 13, 14, 15 daughters in this order, then 16, 17, 18 paternal aunts in this order, then 19 mother's maternal aunt, then 20 father's maternal aunt in this order, then maternal aunts of mothers 21, then paternal aunts of fathers 22 in the same order, then the male relatives (Asabat) in the order of heirship i.e., first 23 father, 24 then grandfather, 25 then full brother, 26 then paternal brother, 27 then brother's sons in this order, 28 then uncle, 29 then his sons, and then if there are no 'Asabat', then 30 'Dhu al-Arham' will be the rightful claimants. (Summary from Muntaqa with additions from Radd al-Muhtar). (T)

Thus, in the inquired case, if any woman from these thirty-two (32) women is present who is capable of custody and has not forfeited her right to custody due to the aforementioned obstacles, then the minor (girl) shall be taken from the grandfather and placed with that woman until the boy reaches seven years of age and the girl reaches nine years of age. After that, they shall be given to the father. And if no deserving woman remains among the aforementioned women, then from today onwards, the children will stay with the father. The maternal grandfather, who is at

the forty-first level, has no right. The fear of harm to the children's lives at the father's house due to his second marriage is a false suspicion.

For the scholars do not consider marriage as one of the things that forfeits the right of custody for male relatives (Asabat). How can their right be forfeited when men are protectors over women? Unlike women, for they are captives in your hands. Scholars have not invalidated the right of custody of male relatives (Asabat) due to their marriage. How can their right be lost while men are dominant over their wives? On the contrary, the case of a woman is different because she is under her husband's control. (T)

And hypothetically, even if this false matter (harm to children) is proven by sufficient evidence, the ultimate result would be to give them to the father and then down to the aforementioned male relatives in order as long as any of them remain. The maternal grandfather has no right; the maternal uncle is even below the maternal grandfather.

1 Durr al-Mukhtar, Bab al-Hadhana, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/255-264

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 13

...फिर माँ-باپ की ओर से बहन (सगी बहन), फिर माँ की ओर से, फिर बाप की ओर से, फिर सगी बहन की बेटी, फिर माँ की ओर से बहन की बेटी, फिर बाप की ओर से सगी बहन की बेटी, इसी प्रकार मौसियाँ (खलात) यानी माँ-باپ की ओर से, फिर माँ की ओर से, फिर बाप की ओर से, फिर सौतेली बहन की बेटी, फिर भाइयों की बेटियाँ (सगे, माँ शरीक या बाप शरीक क्रमानुसार), फिर फुआएं(अम्मात) (सगी, फिर माँ की ओर से, फिर बाप की ओर से), फिर माँ की मौसी इसी प्रकार, फिर बाप की मौसी इसी प्रकार, फिर माँओं और बाप की फुआएं इसी क्रम में, फिर वारिस होने के क्रम में पुरुष संबंधी (असाबात), अतः पिता को प्राथमिकता दी जाती है, फिर दादा को, फिर सगा भाई, फिर पिता की ओर से भाई, फिर उनके बेटे इसी प्रकार, फिर चाचा, फिर उनके बेटे, फिर यदि कोई 'असाबात' न हो, तो 'ज़ू अल-अर्हाम' (दूर के रिश्तेदार) - 'मुन्तक़ा' से संक्षेपित और 'रद्द अल-मुह्तार' से अतिरिक्त जानकारी के साथ।

1. सगी बहन, फिर माँ की तरफ से सगी बहन, फिर बाप की तरफ से सगी बहन, फिर सगी बहन की बेटी, फिर माँ की तरफ से बहन की बेटी, फिर बाप की तरफ से सगी बहन की बेटी, फिर बाप की तरफ से सगी बहन की बेटी, फिर इसी क्रम में 9, 10, 11 मौसियाँ, फिर बाप की तरफ से 12 बहन की बेटी, फिर भाई की 13, 14, 15 बेटियाँ इस क्रम में, फिर 16, 17, 18 फुआएं इस क्रम में, फिर 19 माँ की मौसी, फिर 20 बाप की मौसी इस क्रम में, फिर माताओं की 21 फुआएं फिर पिताओं की 22 फुआएं इसी क्रम में, फिर पुरुष संबंधी (असाबात) के वारिस होने के क्रम में यानी पहले 23 पिता, 24 फिर दादा, 25 फिर सगा भाई, 26 फिर बाप की तरफ से सगा भाई, 27 फिर भाई के बेटे इस क्रम में, 28 फिर चाचा, 29 फिर उसके बेटे, और फिर अगर 'असाबात' न हों तो 30 'ज़ू अल-अर्हाम' हकदार होंगे। (मुन्तक़ा से संक्षेपित और उस पर रद्द अल-मुह्तार से बढ़ाते हुए)। (त)

अतः पूछी गई स्थिति में, यदि इन बत्तीस (32) महिलाओं में से कोई भी ऐसी महिला मौजूद है जो बच्चों की परवरिश (हज़ानत) के योग्य है और जिसने ऊपर बताए गए कारणों से अपना परवरिश का अधिकार नहीं खोया है, तो छोटी बच्ची को नाना से लेकर उस महिला के पास रखा जाएगा जब तक कि लड़का सात वर्ष की आयु का और लड़की नौ वर्ष की आयु की न हो जाए। इसके बाद बच्चों को पिता को दे दिया जाएगा। और यदि ऊपर बताई गई महिलाओं में से कोई भी हकदार महिला नहीं

बचती है, तो आज से ही बच्चे पिता के पास रहेंगे। नाना, जो इकतालीसवें स्तर पर हैं, का कोई हक नहीं है। पिता के दूसरे विवाह के कारण पिता के घर में बच्चों के जीवन को नुकसान होने का डर एक गलत शंका (गुमान-ए-फासिद) है।

क्योंकि विद्वान (उलेमा) विवाह को पुरुष संबंधियों (असाबात) के परवरिश के अधिकार को समाप्त करने वाला नहीं मानते। उनका अधिकार कैसे समाप्त हो सकता है जबकि पुरुष महिलाओं पर संरक्षक हैं? महिलाओं के विपरीत, क्योंकि वे तुम्हारे हाथों में बंदी के समान हैं। विद्वानों ने पुरुष संबंधियों (असाबात) के निकाह कर लेने के कारण उनके परवरिश (हज़ानत) के अधिकार को समाप्त नहीं किया है। उनका अधिकार कैसे समाप्त हो सकता है जबकि ये पुरुष अपनी पत्नियों पर प्रभावी हैं? इसके विपरीत महिला का मामला अलग है क्योंकि वह अपने पति के नियंत्रण में होती है। (त)

और मान लीजिए अगर यह गलत बात पर्याप्त प्रमाणों से साबित भी हो जाए, तो इसका अंतिम परिणाम यह होगा कि पिता से लेकर और उसके बाद नीचे के पुरुष संबंधियों (असाबात) को उपर्युक्त क्रम में बच्चे दिए जाएंगे जब तक कि उनमें से कोई शेष है। नाना को कोई अधिकार नहीं है, और मामा तो नाना से भी नीचे के स्तर पर हैं।

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-हज़ानत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/255-264

علت۔ ثم الاخت لاب وام، ثم لام، ثم لاب، ثم بنت الاخت لابوین، ثم لام، ثم لاب، ثم الخالات کذلک ای الابوین، ثم لام، ثم لاب، ثم بنت الاخت لاب، ثم بنات الاخ (لاب و ام، او لام او لاب علی الترتیب) ثم العمات (لاب و ام، ثم لام ثم لاب) ثم خالۃ الام کذلک، ثم خالۃ الاب کذلک، ثم عمات الامھات والآباء بھذا الترتیب، ثم العصبات بترتیب الارث فیقدم الاب، ثم الجد، ثم الاخ الشقیق، ثم لاب، ثم بنوہ کذلک، ثم العم، ثم بنوہ، ثم اذالم تکن عصبۃ فلذوی الارحام اھ۔ ملخصا منتقی مزیدا من رد المحتار۔

۳۔ حقیقی بہن، پھر ماں کی طرف سے سگی بہن، پھر باپ کی طرف سے سگی بہن، پھر حقیقی بہن کی بیٹی، پھر ماں کی طرف سے بہن کی بیٹی، پھر باپ کی طرف سے سگی بہن کی بیٹی، پھر باپ کی طرف سے سگی بہن کی بیٹی، پھر اس ترتیب پر ۹، ۱۰، ۱۱ خالات، پھر باپ کی طرف سے ۱۲ بہن کی بیٹی، پھر بھائی کی ۱۳، ۱۴، ۱۵ بیٹیاں اس ترتیب، پھر ۱۶، ۱۷، ۱۸ پھوپھیاں اس ترتیب پر، پھر ۱۹ ماں کی خالہ، پھر ۲۰ باپ کی خالہ اس ترتیب سے، پھر ماؤں کی ۲۱ پھوپھیاں، پھر آباء کی ۲۲ پھوپھیاں اسی ترتیب پر پھر عصبہ مرد حضرات وارث ہونے کی ترتیب پر یعنی پہلے ۲۳ باپ ۲۴ پھر دادا، پھر ۲۵ حقیقی بھائی، پھر باپ کی طرف سے ۲۶ سگا بھائی، پھر ۲۷ بھائی کے بیٹے اس ترتیب پر، پھر ۲۸ چچا، پھر ۲۹ اس کے بیٹے، اور پھر اگر عصبات نہ ہوں تو ۳۰ ذوالارحام حقدار ہوں گے اھ ملخصا منتقحا اس پر ردالمحتار سے بڑھاتے ہوئے۔ (ت)

پس صورتِ مستفسرہ میں ان بتیس ۳۲ عورتوں سے اگر کوئی عورت بھی قابلِ حضانت موجود ہے جس نے بوجہ موانع مذکورہ اپنے حقِ حضانت کو ساقط نہ کیا تو صغیرہ نانا سے لے کر اس عورت کے پاس رکھے جائیں گے لڑکا سات برس کی عمر اور لڑکی نو برس کے سن تک بعد

ازاں باپ کو دے دئے جائیں گے اور اگر زنان مذکورہ سے کوئی عورت مستحق باقی نہیں تو آج ہی سے بچے باپ کے پاس رہیں گے، نانا کہ اکتالیسویں درجہ میں ہے ان کا استحقاق نہیں رکھتا اور نکاحِ ثانی کے سبب باپ کے پاس مضرتِ جان اطفال کا اندیشہ گمان فاسد ہے،

فان العلماء لایعدون التزوج من مسقطات حضانة العصبات کیف والرجال قوامون علی النساء بخلاف المرأة فانهن عوان بین یدیکم۔ علمائے عصبہ مردوں کے حقِ حضانت کو ان کے نکاح کر لینے کی وجہ سے ساقط نہیں کیا ان کا حق کیسے ساقط ہو جبکہ یہ مرد بیویوں پر غالب ہیں اس کے برخلاف عورت کا معاملہ ہے کیونکہ وہ خاوند کے کنٹرول میں ہے۔ (ت)

اور بالفرض اگر یہ امر باطل بثبوت کافی ثابت بھی ہو جائے تو غایت یہ کہ باپ سے لے کر اور نیچے کے عصبات بترتیب مذکور کو دیں گے جب تک ان سے کوئی باقی ہے نانا کو استحقاق نہیں، ماموں تو نانا سے بھی

۱ درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۵-۲۶۴

Page 13, Fatawa Razawiyya, Volume 13

In the fifth rank/category it is:

[Table/Box 1] Left (Arabic): As it appears from ad-Durr al-Mukhtar and Radd al-Muhtar, and Allah Almighty knows best. (T) Right (Urdu): As it appears from Durr al-Mukhtar and Radd al-Muhtar, and Allah Almighty knows best. (T)

Question 140: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid passed away leaving behind a wife, a minor boy, a minor girl, a married adult daughter, and a brother. The wife, who is the mother of these children, has married a stranger (non-mahram). The boy is four years old and the girl is eight. The mother wants to arrange a marriage for them in one place, but the uncle does not agree; instead, he wants to marry them to his own nephews. In this case, who has the authority for the marriage of these minors, the mother or the uncle? And who has the right of custody (to keep them)? There is no grandmother of the minors; there is a maternal aunt and two paternal aunts, and the paternal aunts are not willing to keep them. The minors have no property, so who is responsible for their feeding and expenses? Explain and you shall be rewarded.

Answer: In the stated case, no one except their paternal uncle has the authority for the marriage of the minors. In his presence, the mother has no involvement in the marriage. Since she has married a stranger, she also has no right to keep the children. Instead, the boy until seven years of age and the girl until puberty should stay with their (married) sister. If she does not keep them, then with the maternal aunt, and if she also does not accept, then with the paternal aunts.

[Table/Box 2] Left (Arabic): In ad-Durr al-Mukhtar: "Custody is for the mother unless she is immoral or married to someone who is not a mahram to the minor. Then after the mother, if she dies, or does not accept, or marries a stranger, then the maternal grandmother, then the paternal grandmother, then the sister, then maternal aunts, then paternal aunts... until the end, summarized." Right (Urdu): In Durr al-Mukhtar it is: "The mother, if she is not immoral or married to a non-mahram of the child, holds the right to upbringing. Then if the mother passes away, or does not accept the child, or marries a stranger, then after her the maternal grandmother, then the paternal grandmother, then the sister, then the maternal aunts, then the paternal aunts have the right of custody (hadana). End, summarized. (T)"

In Radd al-Muhtar it is:

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264

पृष्ठ 13, फतावा रज़विया, जिल्द 13

पांचवें दर्जे में है,

[टेबल/बॉक्स 1] बायाँ (अरबी): जैसा कि अल-दुर्र अल-मुख्तार और रद अल-मुहतार से स्पष्ट है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) दायाँ (उर्दू): जैसा कि दुर्रे मुख्तार और रद अल-मुहतार से स्पष्ट हो रहा है, वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 140: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: जैद का निधन हो गया, वह अपने पीछे एक पत्नी, एक नाबालिग लड़का, एक नाबालिग लड़की, एक विवाहित वयस्क बेटी और एक भाई छोड़ गया। पत्नी, जो इन बच्चों की माँ है, ने एक अजनबी (गैर-महरम) व्यक्ति से विवाह कर लिया है। लड़का चार साल का है और लड़की आठ साल की है। माँ उनका निकाह एक जगह करना चाहती है, लेकिन चाचा सहमत नहीं है, बल्कि वह अपने भतीजों से उनका निकाह करना चाहता है। इस स्थिति में, इन नाबालिगों के निकाह का अधिकार माँ को है या चाचा को? और उन्हें अपने पास रखने का अधिकार किसे है? नाबालिगों की कोई दादी नहीं है; एक मौसी और दो बुआएँ हैं, और बुआएँ उन्हें अपने पास रखने के लिए तैयार नहीं हैं। नाबालिगों के पास कोई संपत्ति नहीं है, तो उनके खान-पान और खर्च का ज़िम्मेदार कौन है? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछे गए मामले में, नाबालिगों के निकाह का अधिकार उनके चाचा के अलावा किसी और को नहीं है। उनकी उपस्थिति में माँ का निकाह में कोई दखल नहीं है। चूँकि उसने एक अजनबी व्यक्ति से निकाह कर लिया है, इसलिए उसे बच्चों को रखने का भी अधिकार नहीं है। बल्कि, लड़का सात साल की उम्र तक और लड़की यौवन तक अपनी (बड़ी) बहन के पास रहे। यदि वह उन्हें न रखे, तो मौसी के पास, और यदि वह भी स्वीकार न करे, तो बुआओं के पास।

[टेबल/बॉक्स 2] बायाँ (अरबी): दुर्रे मुख्तार में है: "परवरिश का हक माँ का है बशर्ते वह बदचलन न हो या छोटे बच्चे के गैर-महरम से निकाह करने वाली न हो। फिर माँ के बाद यदि वह मर जाए, या बच्चा स्वीकार न करे, या किसी अजनबी से निकाह कर ले, तो नानी, फिर दादी, फिर बहन, फिर मौसियाँ, फिर बुआएँ.. अंत, संक्षिप्त।" दायाँ (उर्दू): दुर्रे मुख्तार में है: माँ अगर फाजरा (दुराचारी) या बच्चे के गैर-महरम से निकाह वाली न हो वही परवरिश का हक रखती है, फिर माँ अगर फौत हो जाए या बच्चा को कबूल न करे या बच्चे के अजनबी से निकाह कर ले तो उसके बाद नानी फिर दादी फिर बहन फिर खालाएं(मौसियाँ), फिर फूफीओं को हक-ए-हज़ानत है। अंत, संक्षिप्त। (त)

रद अल-मुहतार में है:

---

1. दुर्रे मुख्तार, बाबू अल-हिज़ाना, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/264

पेज 391/688

پانچویں درجہ میں ہے،

[خانہ 1] عربی: کما یظھر من الدر المختار ورد المحتار واللہ تعالی اعلم۔(ت) اردو: جیسا کہ درمختار اور ردالمحتار سے ظاہر ہورہا ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

مسئلہ ۱۴۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک زوجہ اور لڑکا اور ایک لڑکی نابالغ اور ایک بیٹی بالغہ منکوحہ اور ایک بھائی چھوڑ کر انتقال کیا زوجہ نے کہ ان بچوں کی ماں ہے ایک اجنبی آدمی سے نکاح کر لیا، لڑکا چار برس کا ہے اور لڑکی آٹھ کی ، اس کی ماں اس کا نکاح ایک جگہ کیا چاہتی ہے، چچا وہاں راضی نہیں بلکہ اپنے بھتیجے سے نکاح کرنا چاہتا ہے ، اس صورت میں ان نابالغوں کے نکاح کا اختیار ماں کو یا چچا کو ہے، اور ان کو رکھنے کا اختیار کسے ہے ، نابالغوں کی دادی کوئی نہیں، خالہ اور دو پھوپھیاں ہیں، اور پھوپھیاں انہیں اپنے پاس رکھنے پر راضی نہیں، اور نابالغوں کا کچھ مال نہیں ، تو ان کا کھلانا بلانا کس کے ذمہ ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں نابالغوں کے نکاح کا اختیار ان کے چچا کے سوا کسی کو نہیں ، اس کے ہوتے ہوئے ماں کا نکاح میں کچھ دخل نہیں، اور جبکہ وہ ایک اجنبی شخص سے نکاح کر چکی تو اسے بچوں کے رکھنے کا بھی اختیار نہیں، بلکہ لڑکا سات برس کی عمر تک اور لڑکی جوانی تک اپنی بہن کے پاس رہیں، اور وہ نہ رکھے تو خالہ کے پاس ، اور وہ بھی قبول نہ کرے تو پھوپھیوں کے پاس ،

[خانہ 2] عربی: فی الدر المختار الحضانۃ للام الا ان تکون فاجرۃ او متزوجۃ بغیر محرم الصغیر ثم بعد الام بان ماتت اولم تقبل اوتزوجت باجنبی ام الام، ثم ام الاب، ثم الاخت ثم الخالات ثم العمات اھ ملخصا۔ اردو: درمختار میں ہے : ماں اگر فاجرہ یا بچے کے غیر محرم سے نکاح والی نہ ہو وہی پرورش کا حق رکھتی ہے، پھر ماں اگر فوت ہو جائے یا بچہ کو قبول نہ کرے یا بچے کے اجنبی سے نکاح کرلے تو اس کے بعد نانی پھر دادی پھر بہن پھر خالات، پھر پھوپھیوں کو حقِ حضانت ہے اھ ملخصاً (ت)

رد المحتار میں ہے :

---

1 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۴

Fatawa Razawiyya - Volume 13

[Section 1] Arabic: The custodian woman (Al-Hadina) is not compelled if she is not uniquely designated. This is because the right of the child in custody (Al-Mahdun) will not be lost, as there is someone else to provide custody besides her. (Extracted summary). The full investigation on this is found in it [the book], and this is the summary of reconciliation between two different narrations.

Urdu Translation (as per text): If the woman providing custody is not uniquely designated because there is only one such person, she will not be forced to provide custody. This is because, with another person available for custody, the child's care will not be compromised. However, if she is the only one designated, she will be compelled as there is no one else. (Summary). Its complete research is in Radd al-Muhtar; this is the essence of reconciling and harmonizing two different narrations. (T)

[Middle Paragraph] Urdu Text: And since these minor orphans have no wealth of their own, their food and clothing are the responsibility of those among their heirs who have surplus after meeting the necessary expenses for themselves and their own children, so they can assist these relatives. Here, although the mother, sister, paternal uncle (Chacha), paternal aunt (Phuphi), and maternal aunt (Khala) are all mahrams (close relatives), the maternal and paternal aunts are not heirs in the presence of the former three. Therefore, if any of them is well-to-do, it is not obligatory for the maternal or paternal aunt to provide maintenance.

[Section 2] Arabic: In Ad-Durr al-Mukhtar: Maintenance is also obligatory for every relative who is a prohibited uterine kin (Dhu Mahram Rahm), whether they are a minor or a female absolutely, even if the female is an adult and healthy, or if the male is an adult but incapable of earning due to chronic illness like blindness, mental instability, or paralysis, or if he is poor and does not know how to earn well such that charity (sadaqah) becomes permissible for him, even if he owns a house and a servant, according to the correct opinion. (Al-Bada'i, summarized).

Urdu Translation (as per text): It is stated in Durr al-Mukhtar that maintenance is obligatory for every 'Dhu Mahram' relative (whether they are minors or females). This applies even if the woman is an adult and healthy, or if the man is an adult but unable to work and earn, for example, being crippled, blind, mentally unstable, or paralyzed, or a needy person lacking earning skills for whom charity is permissible,

even if he has a house and a servant. According to the correct view, this is the ruling. (Bada'i, summarized) (T)

[Section 3] Urdu Heading: In Alamgiriyya it is stated: Arabic: If there is a paternal uncle, a paternal aunt, and a maternal aunt, then the maintenance is upon the paternal uncle. If the paternal uncle is in financial hardship, then the maintenance is upon both of them (the paternal and maternal aunts).

Urdu Translation (as per text): If there is a paternal uncle, a paternal aunt, and a maternal aunt, then the maintenance will be mandatory for the paternal uncle. And if the paternal uncle is destitute, then it will be mandatory for both the paternal aunt and the maternal aunt. (T)

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/636 2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Matba Mujtabai, Delhi, 1/276 3. Fatawa Hindiyya, Chapter Five regarding Maintenance of Kindred (Dhu al-Arham), Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/566

फ़तावा रज़विया - भाग 13

[अनुभाग 1] अरबी: पालन-पोषण करने वाली (हाज़िना) को तब तक विवश नहीं किया जाएगा जब तक वह अकेली न हो। क्योंकि इससे बच्चे के अधिकारों का हनन नहीं होगा क्योंकि उसके अलावा कोई और पालन-पोषण करने वाला मौजूद है। (सारांश)। इसकी पूर्ण जाँच इसमें [किताब में] है, और यह दो अलग-अलग वर्णनों के बीच तालमेल का परिणाम है।

उर्दू अनुवाद (पाठ के अनुसार): यदि पालन-पोषण करने वाली महिला केवल एक होने के कारण निश्चित नहीं है, तो उसे पालन-पोषण के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा क्योंकि दूसरे पालन-पोषण करने वाले की उपस्थिति के कारण बच्चे का पालन-पोषण बर्बाद नहीं होगा। और यदि वह अकेली ही निश्चित है, तो उसे मजबूर किया जाएगा क्योंकि कोई दूसरा नहीं है। (सारांश)। इसका पूरा शोध 'रद्द अल-मुह्तार' में है; यह दो अलग-अलग विवरणों के बीच सामंजस्य बिठाने का निचोड़ है। (त)

[मध्य पैराग्राफ] उर्दू पाठ: और चूंकि इन अनाथ नाबालिगों के पास कोई धन नहीं है, इसलिए उनके भोजन और कपड़ों का खर्च उनके उन उत्तराधिकारियों पर है जिनके पास अपने और अपने बच्चों के आवश्यक खर्चों के बाद बचत होती है, जिससे वे अपने इन रिश्तेदारों की सहायता कर सकें। यहाँ, हालांकि माँ, बहन, चाचा, बुआ और मौसी सभी मेहरम (निकट संबंधी) हैं, लेकिन चाचा के सामने बुआ और मौसी उत्तराधिकारी नहीं हैं। इसलिए, यदि उनमें से कोई संपन्न है, तो बुआ या मौसी पर भरण-पोषण (नफ़क़ा) देना अनिवार्य नहीं है।

[अनुभाग 2] अरबी: 'दुर-ए-मुख्तार' में है: हर उस व्यक्ति के लिए भरण-पोषण अनिवार्य है जो 'ज़ी-मेहरम' (निकट संबंधी) हो, चाहे वह नाबालिग हो या महिला, चाहे वह महिला वयस्क और स्वस्थ ही क्यों न हो, या पुरुष वयस्क हो लेकिन कमाने में असमर्थ हो जैसे अंधापन, मानसिक अस्थिरता, या लकवा, या वह व्यक्ति कमाने की कुशलता न रखने वाला गरीब हो जिसे दान (सदक़ा) देना जायज़ हो, भले ही उसके पास घर और सेवक हो, सही मत के अनुसार। ('बदाए' का सारांश)।

उर्दू अनुवाद (पाठ के अनुसार): 'दुर-ए-मुख्तार' में है कि हर 'ज़ी-मेहरम' (चाहे नाबालिग हो या महिला) का भरण-पोषण अनिवार्य है। भले ही महिला वयस्क और स्वस्थ हो, या पुरुष वयस्क हो लेकिन काम करने में असमर्थ हो, जैसे अपंग, अंधा, मंदबुद्धि या लकवाग्रस्त, या काम की कुशलता न रखने वाला मोहताज हो जिसके लिए सदक़ा हलाल हो, भले ही उसके पास अपना घर और नौकर हो। सही कथन के अनुसार यही नियम है। ('बदाए' सारांश) (त)

[अनुभाग 3] उर्दू शीर्षक: 'आलमगीरिया' में है: अरबी: यदि चाचा, बुआ और मौसी हों, तो भरण-पोषण का खर्च चाचा पर होगा। यदि चाचा निर्धन हो, तो भरण-पोषण उन दोनों (बुआ और मौसी) पर होगा।

उर्दू अनुवाद (पाठ के अनुसार): यदि चाचा, बुआ और मौसी हों, तो भरण-पोषण चाचा पर अनिवार्य होगा। और यदि चाचा तंगहाल हो, तो बुआ और मौसी दोनों पर अनिवार्य होगा। (त)

पाद टिप्पणियाँ: 1. 'रद्द अल-मुह्तार', पालन-पोषण का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/636 2. 'दुर-ए-मुख्तार', भरण-पोषण का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/276 3. 'फ़तावा हिंदिया', रिश्तेदारों के भरण-पोषण के संबंध में पाँचवाँ अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/566

[پہلا خانہ] الحاضنة لاتجبر اذا لم تتعین لھا لان المحضون ح لایضیع حقه لوجود من یحضنه غیرھا اھ ملتقطاً وتمام تحقیقه فیه وھذا حاصل ما وفق به بین نقلین مختلفین۔ اردو ترجمہ (مطابق متن): پرورش کرنے والی صرف ایک ہونے کی وجہ سے متعین نہ ہو تو اس کو پرورش پر مجبور نہ کیا جائے گا کیونکہ دوسری پرورش کرنے والی موجود ہونے کی وجہ سے بچے کی پرورش ضائع نہ ہوگی اور اگر وہ ایک ہی متعین ہو تو اس کو مجبور کیا جائے گا کیونکہ کوئی دوسرا نہیں ہے اھ ملتقطا اور اس کی مکمل تحقیق ردالمحتار میں ہے یہ دو مختلف روایات میں تطبیق و توفیق کا ماحصل ہے۔(ت)

[درمیانی عبارت] اور جبکہ ان یتیم نابالغوں کا کچھ مال نہیں تو ان کا کھانا کپڑا ان کے ان قابلِ وراثت پر ہے جن کے پاس اپنے اور اپنے بال بچوں کے کھانے پہننے وغیرہ ضروری مصارف کے بعد پس انداز ہوتا ہو جس سے اپنے ان عزیزوں کی امداد کر سکیں یہاں ماں بہن چچا پھوپھی خالہ اگرچہ سب محارم ہیں مگر خالہ پھوپھی ان تین کے سامنے وارث نہیں لہٰذا ان میں اگر کوئی ویسا مرفہ الحال ہو تو خالہ پھوپھی پر نفقہ دینا واجب نہیں۔

[دوسرا خانہ] في الدر المختار ویجب ایضاً لکل ذی محرم رحم محرم صغیرا او انثی مطلقا ولو کانت الانثی بالغة صحیحة اوکان الذکر بالغا لکن عاجزا عن الکسب نحو زمانة کعمی وعته وفلج اولایحسن الکسب فقیرا بحیث تحل له الصدقة ولوله منزل وخادم علی الصواب بدائع اھ ملخصا۔ اردو ترجمہ (مطابق متن): در مختار میں ہے کہ ہر ذی محرم (خواہ نابالغ ہو یا عورت ہو) کا نفقہ واجب ہے، اگر چہ عورت بالغہ اور صحتمند ہو یا مرد بالغ ہو لیکن عاجز ہو محنت نہ کر سکتا ہو مثلاً اپاہج،

نابینا، بے عقل یا فالج زدہ ہو، یا محنت کی مہارت نہ رکھنے والا محتاج ہو جس کو صدقہ حلال ہو اگر چہ اس کا مکان اور خادم ہو، درست قول کے مطابق یہی حکم ہے، بدائع، ملخصاً(ت)

[تیسرا خانہ] عالمگیریہ میں ہے: لوکان لہ عم وعمۃ وخالۃ فالنفقۃ علی العم فان کان العم معسرا فالنفقۃ علیھما۔ اردو ترجمہ (مطابق متن): اگر چچا، پھوپھی اور خالہ ہو تو نفقہ چچا پر لازم ہوگا، اور اگر چچا تنگدست ہو تو پھر پھوپھی اور خالہ دونوں پر لازم ہوگا۔(ت)

حواشی: 1. ردالمحتار باب الحضانۃ داراحیاء التراث العربي بیروت ۶۳۶/۲ 2. درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۷۶/۱ 3. فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی النفقۃ ذوی الارحام نورانی کتب خانہ پشاور ۵۶۶/۱

Now it remains to be seen who among these three heirs is wealthy in the manner we have described. It should be remembered that if a woman possesses nothing of her own, she will not be considered affluent, and maintenance will not be taken from her, even if her husband is a man of thousands (i.e., very wealthy). Otherwise, it would necessitate making maintenance obligatory upon a stranger, as is well known. Thus, in the questioned scenario, if only one of these three heirs remains affluent, then the maintenance of those two children will be obligatory on that one alone, whether it be the mother, sister, or uncle. If only the mother and sister are wealthy and not the uncle, then however much is deemed necessary for the children's food and clothing, divide it into five parts: two parts should be taken from the mother and three parts from the sister. For example, if the monthly expense is considered to be 100 rupees, the mother gives 80 and the sister 120. If the uncle is wealthy and not the sister, then divide it into three parts: take two-thirds from the mother and one-third from the uncle. If the sister and uncle are wealthy and not the mother, then make four shares: the uncle gives one-fourth and the sister gives three shares. And if all three are wealthy, then make six shares: the mother gives two parts, the sister three parts, and the uncle one part.

Arabic Text

And that is because of what you have known that maintenance is proportional to inheritance. It is stated in Al-Hindiyyah: "The principle in this is that whoever would inherit the entire estate but is insolvent is treated as if they were dead. When they are treated as dead, the maintenance falls upon the remaining heirs in proportion to their inheritance shares. Whoever would inherit part of the estate is not treated as dead. Thus, the maintenance is according to the inheritance shares of those who would inherit along with them..."[1]

Urdu Translation

This is because, as you have learned, maintenance is obligatory in proportion to inheritance. In Al-Hindiyyah, it is stated that the rule in this regard is that a person who has the right to obtain the entire inheritance, when they are destitute, is considered deceased (non-existent). And when they are considered non-existent, then the maintenance will be obligatory on the remaining heirs according to their inheritance shares. And if that heir does not obtain the entire inheritance but rather receives some portion of the inheritance, then they are not considered deceased (non-existent) due to destitution. Therefore, in their presence, those who are sharers in the inheritance

Arabic Text	Urdu Translation
etc. Similarly, it is in Al-Durr al-Mukhtar and others. And you have known that there is no one among the three here who excludes the others and inherits everything.	along with them will be obligated to pay maintenance according to their share, etc. Similarly, it is mentioned in Durr al-Mukhtar etc. And you have already learned that among these three, there is none who deprives the other heirs and claims the whole...

[1] Fatawa Hindiyyah, Chapter Five on Maintenance of Relatives (Dhu al-Arham), Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/566.

अब यह देखना बाकी है कि इन तीन वारिसों (उत्तराधिकारियों) में से कौन उस तरह से धनवान है जिसका हमने वर्णन किया है। और यह याद रखना चाहिए कि यदि महिला के पास अपना कुछ न हो, तो उसे संपन्न नहीं माना जाएगा और उससे भरण-पोषण (नफ़क़ा) नहीं लिया जाएगा, भले ही उसका पति हजारों वाला आदमी (बहुत अमीर) हो। अन्यथा, किसी अजनबी पर भरण-पोषण अनिवार्य करना आवश्यक हो जाएगा, जैसा कि स्पष्ट है। अत; यदि पूछी गई स्थिति में इन तीनों वारिसों में से केवल एक ही संपन्न बचा है, तो उन दो बच्चों का भरण-पोषण केवल उसी एक पर अनिवार्य होगा, चाहे वह माँ हो, बहन हो या चाचा। और यदि केवल माँ और बहन धनवान हैं और चाचा नहीं, तो उन बच्चों के खाने-पीने और पहनने में जितना खर्च समझा जाए, उसके पांच हिस्से करें: दो हिस्से माँ से लिए जाएं और तीन हिस्से बहन से। उदाहरण के लिए, यदि मासिक खर्च 100 रुपये माना जाए, तो माँ 80 और बहन 120 देगी। और यदि चाचा धनवान है और बहन नहीं, तो तीन हिस्से करें: दो-तिहाई माँ से लें और एक-तिहाई चाचा से। और यदि बहन और चाचा धनवान हैं और माँ नहीं, तो चार हिस्से करें: चाचा एक-चौथाई दे और बहन तीन हिस्से। और यदि तीनों धनवान हैं, तो छह हिस्से करें: माँ दो हिस्से दे, बहन तीन हिस्से और चाचा एक हिस्सा।

अरबी पाठ

और यह इसलिए है क्योंकि आप जान चुके हैं कि भरण-पोषण विरासत के अनुपात में होता है। अल-हिन्दिया में कहा गया है: "इसका मूल नियम यह है कि जो कोई पूरी विरासत प्राप्त करने का हकदार हो लेकिन वह कंगाल हो, उसे मृत मान लिया जाता है। जब उसे मृत मान लिया जाता है, तो भरण-पोषण शेष वारिसों पर उनके विरासत के हिस्सों के अनुपात में अनिवार्य होता है। और जो कोई विरासत का कुछ हिस्सा प्राप्त करने वाला हो, उसे (कंगाली के कारण) मृत नहीं माना जाता है। इसलिए भरण-पोषण उनके विरासत के हिस्सों के

हिंदी अनुवाद

यह इसलिए है क्योंकि जैसा कि आपने जान लिया है कि भरण-पोषण विरासत के अनुसार अनिवार्य होता है, और हिन्दिया में कहा गया है कि इसमें नियम यह है कि जो व्यक्ति पूरी विरासत प्राप्त करने का अधिकार रखता हो, जब वह तंगदस्त (निर्धन) हो तो उसे मृत (शून्य) मान लिया जाता है। और जब वह शून्य माना जाएगा तो फिर भरण-पोषण शेष वारिसों पर विरासत के अनुपात में अनिवार्य होगा। और यदि वह वारिस पूरी विरासत प्राप्त नहीं करता बल्कि विरासत का कुछ हिस्सा पाता है, तो उसे तंगदस्ती के कारण मृत (शून्य) नहीं माना जाता। इसलिए उसकी उपस्थिति में उसके

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद
अनुपात में होता है जो उसके साथ वारिस बनते हैं..."[1] आदि। इसी तरह अल-दुर्र अल-मुख्तार आदि में भी है। और आप जान चुके हैं कि यहाँ इन तीनों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो शेष को वंचित कर दे और पूरी विरासत स्वयं प्राप्त कर ले।	साथ जो लोग विरासत में हिस्सेदार होते हैं, उन पर हिस्से के अनुसार भरण-पोषण अनिवार्य होगा, आदि। और इसी तरह दुर्र-ए-मुख्तार आदि में वर्णित है, और आप जान चुके हैं कि यहाँ तीनों में से कोई भी ऐसा नहीं है जो दूसरे वारिसों को वंचित...

---

[1] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय पाँच, दूर के रिश्तेदारों (ज़ु अल-अर्हाम) के भरण-पोषण के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/566.

पृष्ठ 393/688

اب یہ دیکھنا رہا کہ ان تین وارثوں میں اس طرح کا مالدار کون ہے جس کا ہم نے بیان کیا، اور یہ یاد رکھنا چاہئے کہ عورت اگر اپنا کچھ نہ رکھتی ہو تو وہ مرفع الحال نہ گنی جائے گی اور اس سے نفقہ نہ لیا جائے گا اگر چہ اس کا شوہر ہزاروں کا آدمی ہو، والالزم ایجاب النفقۃ علی الاجنبی کمالایخفی (ورنہ اجنبی پر نفقہ واجب کرنا لازم آئے گا جیسا کہ مخفی نہیں۔ت) پس اگر صورت مستفسرہ میں ان تینوں وارثوں سے صرف ایک ایسا مرفع الحال ہی باقی ہے تو ان دونوں بچوں کا نفقہ صرف اس ایک پر واجب ہوگا خواہ ماں ہو یا بہن یا چچا، اور اگر صرف دو ماں اور بہن مالدار ہیں چچا نہیں تو جس قدر ان بچوں کے کھانے پہننے میں صرف ہونا سمجھا جائے اس کے پانچ حصے کریں دو حصے ماں سے لئے جائیں اور تین حصے بہن سے، مثلاً سو روپے مہینے کا خرچ سمجھیں تو ۸۰ ماں دے اور ۱۲۰ بہن، اور اگر چچا مالدار ہیں بہن نہیں تو تین حصے کریں دو تہائی ماں سے لیں ایک تہائی چچا سے، اور اگر بہن، چچا مالدار ہیں ماں نہیں تو چار سہام کریں ایک چوتھائی چچا دے تین حصے بہن، اور اگر تینوں مالدار تو چھ سہام کریں دو حصے ماں دے، تین حصے بہن، ایک حصہ چچا،

عربی متن	**اردو ترجمہ**
وذلك لما عرفت ان النفقة بقدر الارث	یہ اس لئے کہ جس کو آپ نے جان لیا کہ نفقہ بقدر وراثت
وقد قال في الهندية الاصل فی هذا ان	لازم ہوتا ہے، اور ہندیہ میں کہا ہے اس میں ضابطہ یہ ہے
کل من کان یحرز جمیع المیراث وهو	کہ جو شخص تمام وراثت حاصل کرنے کا حق رکھتا ہو جب
معسر یجعل کالمیت واذا جعل کالمیت	وہ تنگدست ہو تو اس کو مردہ (کالعدم) قرار دیا جاتا ہے اور
کانت النفقة علی الباقیین علی قدر	جب وہ کالعدم قرار پائے گا تو پھر نفقہ باقی ورثاء پر بقدر

عربی متن	اردو ترجمہ
	وراثت واجب ہوگا اور وہ وارث یہ تمام وراثت کو حاصل
مواريثهم وكل من كان يحرز بعض	نہیں کرتا بلکہ وراثت کا کچھ حصہ پاتا ہے تو اس کو
الميراث لا يجعل كالميت فكانت النفقة	تنگدستی پر مردہ (کالعدم) نہیں قرار دیا جاتا لہذا اس کی
على قدر مواريث من كان يرث معه ١	موجودگی میں اس کے ساتھ جو لوگ وراثت میں حصہ دار
الخ ومثله في الدرالمختار وغيره وقد	ہوتے ہوں ان پر حصہ کے مطابق نفقہ لازم ہوگا الخ، اور
علمت انه ليس ههنا احد من الثلثة	اسی طرح در مختار وغیرہ میں مذکور ہے، اور آپ معلوم
يحجب الباقيين ويحرز كل	کر چکے ہیں کہ یہاں تینوں میں سے کوئی بھی ایسا نہیں جو
	دوسرے ورثاء کو محروم

---

١ فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی نفقۃ ذوی الارحام نورانی کتب خانہ پشاور ١ / ٥٦٦

Fatawa Razawiyya Volume 13

[Arabic segment]: Al-mirath fa'in kana ahaduhum mu'asiran la yuj'alu kal-mayyiti wa yu'tabaru fit-taqsimi thumma yakhruju minal-bayni kama yuf'alu fil-khariji wa hina'idhin yatadihu laka ma dhakarna bitawfiqillahi subhanahu wa ta'ala, wallahu ta'ala a'lam.

[Urdu translation of Arabic]: ...so that one can acquire the entire inheritance, if one of them becomes destitute, he will not be considered dead (null and void), but will be considered remaining and included in the distribution and then separated from the middle, as someone is separated in the distribution of inheritance. Now that point which we mentioned has become clear by the guidance of Allah, the Glorified. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 121: What do the scholars of religion and jurists of the clear Shariah say regarding this matter: A woman named Hindah passed away, leaving behind her mother, a breastfeeding infant, and her husband. However, there is no mother, sister, paternal aunt, etc., of Hindah's husband to care for the breastfeeding infant. The maternal grandmother (Nani) of the said infant is caring for him, but the father does not want the boy to stay with the maternal grandmother. In this situation, will the boy be given to the father according to Shariah, or will he stay with the maternal grandmother? Furthermore, regarding the furniture and utensils, etc., which the deceased Hindah received as her dowry, and which the husband has taken into his own possession—will that possessed property belong to the minor son, or will it remain in the father's possession? And whose responsibility are the expenses for food and sustenance during the breastfeeding period? Explain and you shall be rewarded.

Answer: In the described situation, the maternal grandmother has the right to care for the son until he reaches the age of seven. The father cannot interfere without a valid Shariah reason.

[Arabic]: Fi al-Durr al-Mukhtar: Al-hadanatu tathbutu lil-ummi thumma ummil-ummi wal-hadinatu amman aw ghayraha ahaqqu bihi ay bil-ghulami hatta yastaghniya 'anin-nisa'i wa quddira bisab'in wa bihi yufta. Ilaihi Multaqatan.

[Urdu translation of Arabic]: It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: "The right of custody is established for the mother, then for the mother's mother... and the female custodian, whether the mother or someone else, has a greater right to the boy until he no

longer needs the care of women. This duration is estimated to be seven years, and the Fatwa is given according to this." Excerpted. (T)

[1] Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264. Page 394 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द १३

[अरबी]: अल-मीरास फ़इन काना अहादुहुम मुअसिरन ला युजअलु कल-मय्यिति वा युअतबरु फ़ित-तक़सीमि सुम्मा यखरुजु मिनल-बयनि कमा युफ़अलु फ़िल-खारिजि वा हीनाइज़िन यतदिहु लका मा ज़करना बितौफ़ीक़िल्लाहि सुब्हानहु वा तआला, वल्लाहु तआला आलम।

[उर्दू से अनुवाद]: ...विरासत हासिल करने के लिए, यदि उनमें से कोई निर्धन हो जाए, तो उसे मृत (शून्य) नहीं माना जाएगा, बल्कि उसे वितरण में शेष और शामिल मानकर बीच से अलग किया जाएगा, जैसा कि विरासत के वितरण में किसी को अलग किया जाता है। अब वह बात स्पष्ट हो गई जो हमने अल्लाह की तौफ़ीक़ से ज़िक्र की थी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १२१: दीन के उलमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत मुसम्मात हिंदा का इंतकाल हो गया और उसने अपनी माँ, एक दूध पीता बच्चा और अपना शौहर पीछे छोड़ा। लेकिन हिंदा के शौहर की कोई माँ, बहन या फूफी आदि नहीं है जो उस बच्चे की परवरिश कर सके। बच्चे की नानी उसकी परवरिश कर रही है और बाप नहीं चाहता कि बच्चा नानी के पास रहे। तो ऐसी स्थिति में शरीयत के अनुसार बच्चा बाप को दिलाया जाएगा या नानी के पास रहेगा? और हिंदा को दहेज़ में जो सामान और बर्तन आदि मिले थे, जिन्हें शौहर ने अपने कब्ज़े में ले लिया है, क्या वह सामान उस नाबालिग लड़के का होगा या बाप के कब्ज़े में रहेगा? और दूध पिलाने के दिनों के खाने-पीने और परवरिश का ख़र्च किसके ज़िम्मे होगा? बयान फरमाएं, सवाब मिलेगा।

जवाब: पूछी गई सूरत में, सात साल की उम्र तक बेटे की परवरिश का हक़ उसकी नानी का है, बाप बिना किसी शरीय वजह के इसमें रुकावट नहीं डाल सकता।

[अरबी]: फ़िल-दुर्रिल मुख्तार: अल-हज़ानतु तसबुतु लिल-उम्मी सुम्मा उम्मिल-उम्मी वल-हाज़िनतु अम्मन औ ग़ैराहा अहाक़्क़ु बिही अय बिल-गुलामि हत्ता यस्तग़निया अनिन-निसा-इ वा क़ुद्दिरा बिसब-इन वा बिही युफ़्ता। इलईहि मुल्तक़तन।

[उर्दू से अनुवाद]: अल-दुर्रुल मुख्तार में है: "परवरिश का हक़ माँ को है, फिर नानी को है, और परवरिश करने वाली औरत लड़के की उस वक्त तक हक़दार है जब तक वह औरतों की निगरानी से बे-नियाज़ (स्वतंत्र) नहीं हो जाता, जिसकी मुद्दत अंदाज़न सात साल की उम्र है और इसी पर फ़तवा दिया जाएगा।" (त)

[1] दुर्रुल मुख्तार, बाबुल हज़ाना, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, १/२६४ पृष्ठ ३९४ / ६८८

المیراث فأن کان احدھم معسرا لایجعل کالمیت و | کرکے تمام وراثت کو حاصل کر سکے تو ان میں سے اگر کوئی یعتبر في التقسیم ثم یخرج من البین کما یفعل في | تنگدست ہو جائے تو اس کو مردہ (کالعدم) نہیں قرار دیا جائے گا الخارج وح یتضح لك ماذکرنا بتوفیق اللہ سبحنہ | بلکہ اس کو تقسیم میں باقی اور شامل تصور کرکے درمیان سے وتعالی، واللہ تعالی اعلم۔ | الگ کر دیا جائے گا، جیسا کہ وراثت کی تقسیم میں کسی کو الگ کر دیا جاتا ہے، تو اب وہ بات واضح ہو گئی جو ہم نے ذکر کی ہے اللہ سبحانہ کی توفیق سے، واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۲۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت مسماۃ ہندہ فوت ہوئی اور مادر اس کی، اور طفلِ شیر خوار اس نے چھوڑا اور شوہر بھی اس کا باقی رہا لیکن کوئی شخص ماں یا بہن یا پھوپھی وغیرہ شوہر ہندہ کا نہیں رہا ہے کہ پرورش اس طفلِ شیر خوار کی کرے، نانی اس طفلِ مذکور کی پرورش کرتی ہے اور باپ اس طفل کا نہیں چاہتا ہے کہ نانی کے پاس وہ لڑکا رہے، تو اس حالت میں وہ لڑکا باپ کو عندالشرع دلایا جائے گا یا نانی کے پاس رہے گا؟ اور اسباب و ظروف وغیرہ کہ ہندہ متوفیہ کا جہیز ہندہ نے پایا تھا وہ بھی شوہر اس کے نے اپنے تصرف میں کر لیا تو وہ مال و اسباب متصرفہ شوہر ہندہ ملک اس پسرِ صغیرہ کی ہو گا یا اس کے باپ کے قبضہ میں رہے گا اور مصارف نان ونفقہ ایام رضاعت کا کس کے ذمہ چاہئے، بینوا توجروا الجواب: صورتِ مسئولہ میں سات برس کی عمر تک پسر کی پرورش ان کی نانی کا حق ہے، باپ بلاوجہ شرعی اس کا مزاحم نہیں ہو سکتا، فی الدرالمختار الحضانۃ تثبت للام ثم ام الام | در مختار میں ہے: پرورش کا حق ماں کو پھر نانی کو ہے، اور والحاضنۃ اما او غیرھا احق بہ ای بالغلام حتی یستغنی | پرورش کرنے والی عورت لڑکے کی اس وقت تک حقدار ہے عن

النساء وقدر بسبع و به یفتی اھ ملتلقطاً۔ | جب تک وہ عورتوں کی نگرانی سے مستغنی نہیں ہو جاتا جس کی مدت اندازاً سات سال کی عمر ہے اور اسی پر فتویٰ دیا جائے گا، اھ ملتقطاً (ت)

[1] درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۴ Page 394 of 688

Fatawa-e-Razvia, Volume 13

And whatever goods Hind received in her dowry were all her property, and after her death, they will be distributed according to the divine laws of inheritance (Fara'idh-e-Allah).

[Box 1] Arabic: In 'Al-Uqud al-Durriyah', it is stated that everyone knows that the dowry is the property of the daughter; no one else has a right to it. Urdu: In 'Al-Uqud al-Durriyah', it is stated that everyone knows that the dowry is the property of the daughter; no one else has a right to it. (T)

However, whatever portion of the wealth is determined for the minor, its possession will belong to the father alone, but not as an owner, rather by way of guardianship. For as long as the father is alive, no other person is the guardian of the child or the protector of their wealth, as stated in 'al-Durr al-Mukhtar' and other general books (T). As for the child's maintenance (bread and water), nursing fees, and other heavy expenses, the ruling is that if the child has received enough wealth from the mother's legacy or by any other means that they are legally considered 'rich' (Ghani) and paying Zakat would be inappropriate for them, then all these expenses will be met from their own specific wealth. It is not obligatory for the father to spend from his own pocket. Yes, the management of these expenses, by order of guardianship, will be the responsibility of the father. And if the child does not have that much wealth, then certainly these are solely the father's responsibility.

[Box 2] Arabic: In 'Radd al-Muhtar', it is narrated from Khayr al-Din al-Ramli that custody (Hadanah) is like nursing. Therefore, the one providing custody is entitled to a fee from the minor's property if they have wealth; otherwise, from their father's property (summarized). In 'al-Durr al-Mukhtar', maintenance is obligatory for the poor child; the maintenance of the rich child is from their own present property. Similarly, maintenance is obligatory for every poor relative within the prohibited degrees (Dhu Rahm Mahram) for whom charity is lawful, even if they have a house and a servant, according to the correct opinion, summarized. Urdu: In 'Radd al-Muhtar', it is narrated from Khayr al-Din al-Ramli that the ruling for custody (Hadanah) is like that of nursing. Therefore, the one providing custody is entitled to a fee. If the child has their own wealth, it shall be paid from that; otherwise, from the child's father's wealth (summarized). And in 'al-Durr al-Mukhtar', it is stated that the child's maintenance is upon the father if the child is poor. Because if the child is not poor, maintenance will be from their own existing wealth due to their being 'rich'.

Similarly, for any poor relative within the prohibited degrees (Dhu Rahm Mahram) for whom charity is lawful, maintenance is also necessary even if they own a house and a servant; this ruling is according to the correct opinion.

1 2 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/63. 3 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/274, 275.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द तेरहवीं

और हिंदा ने अपने दहेज में जो कुछ भी सामान पाया था, वह सब उसकी अपनी संपत्ति थी और उसकी मृत्यु के बाद, इसे ईश्वरीय उत्तराधिकार कानूनों (फ़राइज़-ए-अल्लाह) के अनुसार विभाजित किया जाएगा।

[बॉक्स 1] अरबी: 'अल-उकूद अल-दुर्रिया' में है कि हर कोई जानता है कि दहेज लड़की की मिल्कियत है, इसमें किसी और का कोई अधिकार नहीं है। उर्दू: 'अल-उकूद अल-दुर्रिया' में है कि हर कोई जानता है कि दहेज लड़की की मिल्कियत है, इसमें किसी और का कोई अधिकार नहीं है। (त)

हालांकि, संपत्ति का जितना हिस्सा नाबालिग के लिए निर्धारित किया जाएगा, उसका कब्ज़ा केवल उसके पिता के पास होगा, लेकिन मालिक के रूप में नहीं, बल्कि संरक्षण (विलायत) के माध्यम से। क्योंकि पिता के होते हुए कोई दूसरा व्यक्ति बच्चे का वली और उसकी संपत्ति का संरक्षक नहीं है, जैसा कि 'दर्रे-मुख्तार' और अन्य सामान्य पुस्तकों में है (त)। जहाँ तक बच्चे के खाने-पीने (नान-ओ-नफ़्क़ा), दूध पिलाने की फीस और अन्य बड़े खर्चों का सवाल है, तो उसका नियम यह है कि यदि बच्चे को अपनी माँ की विरासत या किसी अन्य कारण से इतनी संपत्ति मिली है कि उसे शरीयत के अनुसार 'धनी' (ग़नी) कहा जाए और उसे ज़कात देना अनुचित हो, तो ये सभी खर्च उसकी अपनी विशेष संपत्ति से ही होंगे। पिता के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि वह अपनी जेब से खर्च करे। हाँ, इन खर्चों का प्रबंधन, संरक्षण के आदेशानुसार, पिता की ज़िम्मेदारी होगी। और यदि बच्चे के पास इतनी संपत्ति नहीं है, तो निश्चित रूप से ये केवल पिता की ज़िम्मेदारी हैं।

[बॉक्स 2] अरबी: 'रद्दुल मुहतार' में ख़ैर-उद-दीन रम्ली से उद्धृत है कि पालन-पोषण (हज़ानत) दूध पिलाने के समान है। अत; पालन-पोषण करने वाली नाबालिग की संपत्ति से पारिश्रमिक की हकदार है यदि उसके पास संपत्ति हो; अन्यथा उसके पिता की संपत्ति से (सारांश)। 'अल-दर अल-मुख्तार' में, निर्धन बच्चे के लिए भरण-पोषण अनिवार्य है; धनी बच्चे का भरण-पोषण उसकी अपनी वर्तमान संपत्ति से है। इसी प्रकार, प्रत्येक निर्धन रिश्तेदार (ज़ी-रहम महरम) के लिए भरण-पोषण अनिवार्य है जिसके लिए दान (सदक़ा) वैध है, भले ही उसके पास घर और सेवक हो, सही मत के अनुसार, सारांश। उर्दू: 'रद्दुल मुहतार' में ख़ैर-उद-दीन रम्ली से उद्धृत है कि पालन-पोषण का नियम दूध पिलाने जैसा ही है। इसलिए पालन-पोषण करने वाली को पारिश्रमिक का अधिकार है। यदि बच्चे की अपनी संपत्ति हो तो उसमें से, अन्यथा बच्चे के पिता की संपत्ति से पारिश्रमिक दिया जाएगा (सारांश)।

और 'दर्रे-मुख्तार' में है कि बच्चे का भरण-पोषण पिता पर है यदि वह निर्धन (फ़क़ीर) हो। क्योंकि यदि वह निर्धन नहीं है, तो धनी होने के कारण भरण-पोषण उसकी अपनी मौजूदा संपत्ति से किया जाएगा। और इसी प्रकार किसी भी निर्धन रिश्तेदार (ज़ी-रहम महरम) के लिए, जिसके लिए दान (सदक़ा) वैध है, भरण-पोषण आवश्यक है भले ही उसके पास अपना घर और सेवक हो; यह नियम सही मत के अनुसार है।

1 2 अल-दर अल-मुख्तार, पालन-पोषण का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/63। 3 अल-दर अल-मुख्तार, भरण-पोषण का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/274, 275।

पृष्ठ 688 का 395

اور ہندہ نے جو کچھ اسباب اپنے جہیز میں پایا تھا سب اسی کی ملک تھا اور بعد اس کی مرگ کے فرائض اللہ پر تقسیم پائے گا،

[باکس 1] عربی: فی العقود الدریة کل احد یعلم ان الجهاز ملك البنت لا حق لاحد فیها۔ اردو: عقود الدریہ میں ہے کہ ہر ایک جانتا ہے کہ جہیز لڑکی کی ملکیت ہوتا ہے اس میں کسی اور کا حق نہیں ہوتا۔(ت)

البتہ جس قدر مال حصہ نابالغ قرار پائے گا اس پر قبضہ اس کے باپ ہی کا ہو گا مگر نہ مالکانہ ازراہ ولایت کہ باپ کے ہوتے ہوئے دوسرا شخص بچہ کا ولی اور اس کے مال کا محافظ نہیں کما فی الدرالمختار و عامة الاسفار (جیسا کہ درمختار اور عامہ کتب میں ہے۔ت) رہایہ بچہ کا نان و نفقہ اور اجرت رضاعت وغیرہ مصارف کثیرہ ہیں تو اس کا حکم یہ ہے کہ اگر بچہ نے اپنی ماں کے ترکہ یا کسی اور وجہ سے اتنا مال پایا ہے جس کے سبب اسے شرعاً غنی کہا جائے اور زکوٰۃ دینا ناروا ہو تو یہ سب صرف خاص اسی کے مال سے ہوں گے باپ پر واجب نہیں کہ اپنے پاس سے صرف کرے، ہاں ان مصارف کی کار پردازی بحکم ولایت باپ کے ذمہ ہو گی، اور اگر بچہ کے پاس اتنا مال نہیں تو بیشک یہ صرف باپ کے ذمہ ہیں،

[باکس 2] عربی: فی ردالمحتار عن الخیر الرملي ان الحضانة کالرضاع فلها الاجرة من مال الصغیر ان کان له مال والافمن مال ابیه ملخصاً۔ وفی الدر المختار وتجب النفقة لطفه الفقیر فان نفقة الغنی فی ماله الحاضر وتجب ایضا لکل ذي رحم محرم فقیر ابحیث تحل له الصدقة ولوله منزل و خادم علی الصواب بدائع اه بالالتقاط، فی رد المحتار قوله ولوله منزل و خادم وهو محتاج الیهما۔ وهذا عام فی

الوالدین والمولودین وذوی الارحام کما صرح اردو: ردالمحتار میں خیر الدین رملی سے منقول ہے کہ پرورش کا حکم رضاعت والا ہے لہٰذا پرورش کرنیوالی کو اجرت کا استحقاق ہے، اگر بچہ کا اپنا مال ہو تو اس میں سے ورنہ بچہ کے والد کے مال میں سے اجرت دی جائے گی اھ ملخصاً۔ اور درمختار میں ہے کہ بچہ کا نفقہ اگر وہ فقیر ہو تو باپ پر ہے کیونکہ اگر وہ فقیر نہ ہو تو غنی ہونے کی وجہ سے نفقہ اس کے اپنے موجود مال سے کیا جائے گا، اور یونہی جو ذی محرم فقیر ہو اس کے لئے صدقہ حلال ہو تو اس کے لئے بھی نفقہ ضروری ہے اگرچہ اس کا مکان اور خادم بھی ہو یہ حکم درست قول کے مطابق ہے

1 2 درمختار باب الحضانة داراحیاء التراث العربي بیروت 2/ 63 3 درمختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی 1/ 274، 275

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 396 of 688

Badai', etc., summarized. From Az-Zakhirah. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. It is stated in Radd al-Muhtar regarding the author's statement "even if he has a house and a servant," meaning when he is in need of them. This ruling applies to parents, children, and relatives, as clarified in Az-Zakhirah. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (T)

Problem 142: 19 Rabi' al-Awwal Sharif 1315 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid divorced Hinda and left a suckling boy, who is from Zaid's seed, with Hinda for upbringing and fixed a monthly allowance for his care. Now the boy is three years and some months old. Hinda has married another person. Can Zaid now get that boy or not, and if he can, at what age? Hinda left the boy with her parents and went to her husband's house. That woman is not Hinda's biological mother. Does Hinda's father and (step)mother have the right to custody of the said boy against Zaid or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: The questioner states that the person Hinda married is not a mahram (blood relative) to the boy but a stranger. Hinda's mother and maternal grandmother have passed away. The father, stepmother, and the boy's own paternal grandmother are alive. Therefore, in the mentioned situation, Hinda's father or stepmother have no right to keep the boy. Rather, he will remain with his paternal grandmother until the age of seven, after which the father will take him. Even the mother's grandmother cannot keep the boy in the presence of the boy's paternal grandmother.

In Ad-Durr al-Mukhtar: Then after the mother, if she dies or marries a stranger (non-mahram), the maternal grandmother, even if higher, in the absence of a closer eligible relative. Then the paternal grandmother, even if higher, under the mentioned condition. However, the mother's grandmother is postponed after the paternal grandmother, and even after the maternal aunt. Al-Bahr. And the mother is most entitled to the boy until he is independent of women, and this is estimated at seven years, and upon this, the fatwa is given. Summarized.

In Durr-e-Mukhtar, it is stated that if the mother dies or marries a stranger who is not a mahram to the child, then after the mother, the maternal grandmother, even if higher, has the right, provided no closer woman is eligible for custody. Then the paternal grandmother, even if higher, under the mentioned condition. But the maternal grandmother's mother is secondary to the child's paternal grandmother

and even to his maternal aunt, according to Al-Bahr. The mother (or her female substitutes) is entitled to the boy until he becomes independent of women's care, which is estimated at seven years of age, and the fatwa will be given accordingly.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/282
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Custody, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/264

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 396 / 688

बदाये, आदि संकलित। अज़-ज़खीरा में। और अल्लाह सुब्हानहू व ताला बेहतर जानता है। इस पर रद-उल-मुह्तार में है कि लेखक का कथन "भले ही उसके पास घर और नौकर हो", यानी जब उसे उनकी ज़रूरत हो। यह हुक्म माता-पिता, संतान और रिश्तेदारों सभी पर लागू होता है जैसा कि ज़खीरा में स्पष्ट किया गया है। और अल्लाह सुब्हानहू व ताला बेहतर जानता है। (टी)

मसला 142: 19 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1315 हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: ज़ैद ने हिंदा को तलाक़ दी और एक दूध पीता लड़का, जो ज़ैद के वीर्य से है, हिंदा के पास परवरिश के लिए छोड़ा और उसकी परवरिश के लिए मासिक भत्ता तय कर दिया। अब वह लड़का तीन साल कुछ महीने का हो गया है। हिंदा ने एक दूसरे व्यक्ति से निकाह कर लिया है। अब क्या ज़ैद को वह लड़का मिल सकता है या नहीं, और यदि मिल सकता है तो किस उम्र में? हिंदा ने लड़के को अपने माता-पिता के पास छोड़ दिया और अपने पति के घर चली गई। वह महिला हिंदा की सगी माँ नहीं है (सौतेली माँ है)। क्या ज़ैद के मुक़ाबले में हिंदा के माता-पिता को उक्त लड़के की परवरिश का अधिकार प्राप्त है या नहीं? कृपया मार्गदर्शन करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: प्रश्नकर्ता का बयान है कि हिंदा ने जिस व्यक्ति से निकाह किया है वह लड़के का महरम (रक्त संबंधी) नहीं बल्कि एक अजनबी व्यक्ति है। हिंदा की माँ और नानी का इंतकाल हो गया है। हिंदा के पिता और सौतेली माँ, और लड़के की अपनी सगी दादी जीवित हैं। अत; उक्त स्थिति में हिंदा के पिता या सौतेली माँ को लड़के को रखने का कोई अधिकार नहीं है। बल्कि लड़का सात साल की उम्र तक अपनी दादी के पास रहेगा, उसके बाद पिता उसे ले लेगा। नानी की माँ भी लड़के की दादी की मौजूदगी में लड़के को नहीं रख सकती।

'दुर्रे मुख़्तार' में है: फिर माँ के बाद, यदि उसकी मृत्यु हो जाए या वह किसी अजनबी (ग़ैर-महरम) से निकाह कर ले, तो नानी, चाहे कितनी भी ऊपर की हो, यदि कोई नज़दीकी पात्र महिला न हो। फिर दादी, चाहे कितनी भी ऊपर की हो, उक्त शर्त के साथ। लेकिन नानी की माँ, लड़के की दादी और यहाँ तक कि उसकी ख़ाला (मौसी) के बाद आती है। अल-बहर। और लड़का सात साल की उम्र तक औरतों की निगरानी में रहने का हक़दार है, जब तक कि वह औरतों की देखभाल से बेनयाज़ (स्वतंत्र) न हो जाए, और इसी पर फ़तवा दिया जाएगा। (संक्षिप्त)

'दुर्रे मुख़्तार' में लिखा है कि यदि माँ का देहांत हो जाए या वह बच्चे के लिए किसी अजनबी ग़ैर-महरम व्यक्ति से निकाह कर ले, तो माँ के बाद नानी, चाहे वह कितनी भी ऊपर के दर्जे की हो, हक़दार होगी, बशर्ते कि कोई नज़दीकी महिला परवरिश का अधिकार न रखती हो। फिर दादी, चाहे वह कितनी भी ऊपर के दर्जे की हो, उपर्युक्त शर्त के साथ। लेकिन माँ की नानी बच्चे की दादी और उसकी ख़ाला से भी पीछे है, 'बहर' के अनुसार। लड़का माँ (या उसकी जगह लेने वाली महिलाओं) के पास रहने का हक़दार है जब तक कि वह महिलाओं की देखरेख से स्वतंत्र न हो जाए, जिसका अनुमान सात वर्ष की आयु है और इसी पर फ़तवा दिया जाएगा।

1. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-नफ़क़ा, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/282
2. दुर्रे मुख़्तार, बाब-उल-हज़ाना, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/264

पृष्ठ 396 / 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۳۹۶ از ۶۸۸

بدائع، اھ ملتقطاً۔ فی الذخیرۃ اھ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم اس پر ردالمحتار میں ہے ماتن کا قول کہ "اگرچہ اس کا مکان اور خادم ہو" یعنی جبکہ اس کو ان کی احتیاجی ہو۔ یہ حکم والدین، اولاد اور ذوالارحام سب کو شامل ہے جیسا کہ ذخیرہ میں اس کی تصریح کی گئی ہے اھ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۴۲: ۱۹ ربیع الاول شریف ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ کو طلاق دی اور ایک پسر شیر خوار جو زید کو نطفے سے ہے واسطے پرورش کے ہندہ کے پاس چھوڑا اور اس کی پرورش کے واسطے ماہانہ مقرر کر دیا اب وہ لڑکا بعمر تین برس کچھ ماہ کے ہوا ہندہ نے نکاح ایک شخص سے کر لیا اب وہ لڑکا زید کو مل سکتا ہے یا نہیں، اور اگر مل سکتا ہے تو کس عمر میں؟ اور ہندہ کو اپنے ماں باپ کے پاس چھوڑ کر شوہر کے یہاں چلی گئی وہ عورت ہندہ کی مادر حقیقی نہیں ہے تو زید کے مقابلہ میں ہندہ کے ماں باپ کو استحقاق پرورش پسر مذکور حاصل ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: سائل مظہر کہ ہندہ نے جس شخص سے نکاح کیا وہ لڑکے کا محرم نہیں بلکہ اجنبی شخص ہے اور ہندہ کی ماں اور نانی مر گئیں، باپ اور سوتیلی ماں، اور ہندہ کی سگی دادی خود کی سگی دادی زندہ ہیں، پس صورت مذکورہ میں ہندہ کے باپ یا سوتیلی ماں کو لڑکے کے رکھنے کا کوئی حق نہیں بلکہ سات برس کی عمر تک اپنی دادی کے پاس رہے گا بعدہ باپ لے لے گا ماں کی دادی بھی لڑکے کی دادی کے ہوتے نہیں رکھ سکتی۔

فی الدرالمختار ثم بعد الام بان مائت او تزوجت بالجنبی ام الام وان علت عند عدم اهلیة القربی، ثم ام الاب وان علت بالشرط المذکور و اما ام اب الام فتؤخر عن ام الاب بل عن الخالة ایضاً بحر، والام احق بالغلام حتی یستغنی عن النساء وقدر بسبع وبه یفتی اھ ملتقطاً، و در مختار میں ہے کہ ماں فوت ہو جائے یا بچے کے اجنبی غیر محرم سے نکاح کرلے تو ماں کے بعد نانی خواہ اوپر والی ہو جبکہ کوئی قریبی عورت پرورش کا حق نہ رکھتی، پھر دادی خواہ اوپر والی ہو مذکورہ شرط کے ساتھ، لیکن ماں کی دادی تو وہ بچے کی دادی بلکہ اس کی خالہ سے بھی مؤخر ہے، بحر۔ ماں لڑکے کی حقدار ہے جب تک لڑکا عورتوں کی نگرانی سے مستغنی نہ ہو جائے جس کا اندازہ سات سال کی عمر ہے اور اسی پر فتویٰ دیا جائیگا،

1 ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۸۲/۲ 2 در مختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۴

Volume 13, Page 13. Fatawa Razawiyya.

In Radd al-Muhtar from al-Fath: The father is compelled to take the child after he no longer needs the mother's care. And Allah Almighty knows best.

It is quoted in Radd al-Muhtar from al-Fath that the father will be compelled to take custody of the child after the child becomes independent of the mother's care. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 143: What do the scholars of religion say regarding this matter? Zaid divorced Hindah five years ago. They had a son who was also about five years old then. Now Hindah has remarried. The boy's maternal grandmother is a step-grandmother, and his maternal aunt is a minor. His paternal grandmother, great-grandmother, grandfather, and father are all present. In this situation, who should the aforementioned boy live with? Please explain and you shall be rewarded.

The Answer: The questioner stated that the woman married a stranger who has no relation to the boy. The maternal grandmother is a step-grandmother, and there is no biological great-grandmother (mother's mother). The paternal grandmother is biological. Therefore, in this case, the mother no longer has any right to keep the boy, and the step-grandmother has no standing. The boy will stay with his paternal grandmother (his father's mother) until the age of seven, and then the father will take him. It is stated in Durr al-Mukhtar:

The right of the caregiver is forfeited if she marries someone who is not a 'Mahram' (unmarriageable relative) to the minor.[2]

The right of the one providing upbringing is forfeited when she marries a non-Mahram of the child. (T)

It is also mentioned therein: Then after the mother, if she dies or marries a stranger, the maternal grandmother has the right, even if she is higher up (great-grandmother), then the paternal grandmother.[3] Summary, and Allah Almighty knows best.

If the mother passes away or marries a stranger to the child, then the maternal grandmother has the right (even if she is a maternal great-grandmother), followed by the paternal grandmother. Briefly, and Allah Almighty knows best. (T)

Issue 144: What do the scholars of religion say regarding this matter? A certain woman passed away leaving behind a boy aged six or seven months...

Majlis-e-Dawat-e-Islami.

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Custody (Hadanah), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/240.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/265.
3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/264.

जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३। फतावा रज़विया।

रद्द अल-मुह्तार में अल-फतह से उद्धृत है: पिता को बच्चे को उसकी माँ की देखभाल की ज़रूरत खत्म होने के बाद अपनी कस्टडी में लेने के लिए मजबूर किया जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

रद्द अल-मुह्तार में अल-फतह से उद्धृत है कि पिता को बच्चे को माँ की निगरानी से स्वतंत्र होने के बाद अपनी कस्टडी में लेने के लिए मजबूर किया जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १४३: इस मसले में दीन के उलमा क्या कहते हैं? ज़ैद ने हिंदा को तलाक दे दी जिसे पाँच साल बीत चुके हैं। उनका एक लड़का था जो उस समय लगभग पाँच साल का था। अब हिंदा ने दूसरा निकाह कर लिया है। लड़के की नानी सौतेली है और खाला (मौसी) नाबालिग है। उसकी दादी, परदादी, दादा और पिता मौजूद हैं। इस स्थिति में, उक्त लड़के को किसके पास रहना चाहिए? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: पूछने वाले ने बताया कि औरत ने एक अजनबी व्यक्ति से निकाह किया है जिसका लड़के से कोई रिश्ता नहीं है। नानी सौतेली है, और सगी परनानी भी नहीं है। दादी सगी है। अतः इस स्थिति में, माँ को लड़के को रखने का कोई अधिकार नहीं रह गया, और सौतेली नानी का कोई अधिकार नहीं है। लड़का सात साल की उम्र तक अपनी दादी (यानी अपने पिता की माँ) के पास रहेगा, फिर पिता उसे ले लेगा। दुर्रे मुख्तार में है:

देखभाल करने वाली का अधिकार समाप्त हो जाता है यदि वह किसी ऐसे व्यक्ति से निकाह करती है जो नाबालिग का 'मेहरम' (निकट संबंधी जिससे विवाह वर्जित हो) नहीं है।[2]

परवरिश करने वाली का हक साकित (खत्म) हो जाता है जब वह बच्चे के गैर-मेहरम से निकाह कर ले। (त)

उसी में है: फिर माँ के बाद, यदि वह मर जाती है या किसी अजनबी से निकाह कर लेती है, तो नानी का हक है चाहे वह ऊपर की (परनानी) हो, फिर दादी का हक है।[3] संक्षेप में, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

माँ मर जाए या बच्चे के अजनबी से निकाह कर ले तो फिर नानी को हक है चाहे वह ऊपर वाली (परनानी) हो, फिर दादी को हक है। संक्षेप में, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १४४: दीन के उलमा इस मसले में क्या कहते हैं कि एक महिला का इंतकाल हो गया और पीछे छह-सात महीने का एक लड़का छोड़ गई...

मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-हज़ानह (हिरासत का अध्याय), दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/240।
2. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-हज़ानह, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/265।
3. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-हज़ानह, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/264।

पेज ३९७ / ६८८

فی ردالمحتار عن الفتح یجبر الاب علی اخذ الولد بعد استغنائہ عن الام ۱- واللہ تعالیٰ اعلم۔ اھ ملتقطاً، اور ردالمحتار میں فتح سے منقول ہے کہ والد کو مجبور کیا جائے گا کہ وہ بچے کو ماں کی نگرانی سے مستغنی ہو جانے کے بعد اپنی تحویل میں لے لے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۴۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ کو طلاق دے دی جس کو عرصہ پانچ سال کا ہوا اور اس کا ایک لڑکا تھا وہ بھی تقریباً پانچ سال کا ہوا، اب ہندہ نے نکاح ثانی کرلیا ہے، اور اس لڑکے کی نانی سوتیلی ہے اور خالہ نابالغ ہے اور اس کی دادی اور پر دادی اور دادا اور باپ موجود ہیں اس حالت میں لڑکا مذکور کس کے پاس رہنا چاہئے؟ بیان کیجئے- بینوا توجروا

الجواب: سائل نے بیان کیا کہ عورت نے اجنبی شخص سے نکاح کیا جو اس لڑکے کا کوئی نہیں اور نانی سوتیلی ہے، اور سگی نانی کی ماں بھی نہیں اور دادی حقیقی ہے، پس اس صورت میں ماں کو اس لڑکے کے رکھنے کا کوئی حق نہ رہا، اور سوتیلی نانی کوئی چیز نہیں، لڑکا سات برس کی عمر تک دادی یعنی اپنے باپ کی ماں کے پاس رہے گا پھر باپ لے لے گا۔ درمختار میں ہے:

الحاضنۃ یسقط حقھا بنکاح غیر محرم الصغیر- ۲ پرورش کرنے والی کا حق ساقط ہو جاتا ہے جب وہ بچے کے غیر محرم سے نکاح کرلے۔ (ت)

اسی میں ہے: ثم بعد الام ان ماتت او تزوجت بأجنبی ام الام وان علت ثم ام الاب ۳ اھ مختصرا واللہ تعالی اعلم۔ ماں فوت ہو جائے یا بچے کے اجنبی سے نکاح کر لے تو پھر نانی کو حق ہے خواہ اوپر والی ہو، پھر دادی کو حق ہے اھ مختصراً واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۴۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مسماۃ نے انتقال کیا اور ایک لڑکا بعمر چھ سات ماہ...

Majlis of Dawat-e-Islami

۱ ردالمحتار باب الحضانة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۴۰ ۲ درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۵ ۳ درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۴

Fatawa Razawiya Volume 13

[The deceased] left an infant, and the husband, the deceased woman's paternal aunt (i.e., her father's full sister), her sister, and the deceased woman's maternal uncle are present. Among all of them, to whom does the guardianship of upbringing belong? And in case of refusal by the first entitled person, to whom does it pass in the second degree?

The Answer: Since this boy has no maternal grandmother, no elder sister, no niece (sister's daughter), no maternal aunt (khala), no paternal aunt (phuphi), no maternal grandmother's sister, nor paternal grandmother's sister; there is only the mother's paternal aunt, and she is a widow. As the questioners have stated, in this situation, the boy will stay with the mother's paternal aunt until the age of seven years. In her presence, even the father does not have authority. The mother's maternal uncle is very distant. And since, according to the questioners' statement, the boy's father's paternal aunt is also not present; in short, there is no woman other than the mother's paternal aunt who has the right of custody (hadanat). Therefore, the mother's paternal aunt does not have the option to refuse this. However, if she wishes to take a fee for this upbringing, the father must pay it. It is stated in Tanwir al-Absar:

Custody (Hadanat) is established for the mother, then the maternal grandmother, then the paternal grandmother however high, then the full sister, then the uterine sister (from mother's side), then the consanguine sister (from father's side), then the daughter of the full sister, then the daughter of the uterine sister, then maternal aunts (khala), then paternal aunts (phuphi), then the mother's maternal aunt, then the father's maternal aunt, then the paternal aunts of the parents, in this order, then the agnates (asabat) in the order of inheritance. 1

The right of upbringing belongs to the mother, then the maternal grandmother, then the paternal grandmother even if higher up, then the full sister, then the sister from the mother's side, then the sister from the father's side, then the full sister's daughter, then the daughter of the sister from the mother's side, then maternal aunts, then paternal aunts, then the mother's maternal aunt, then the father's maternal aunt, then the paternal aunts of the mother and father, in the same order, then to the male agnates (asaba) according to the order of inheritance. (T)

In the same source it is mentioned:

The custodian (woman) cannot waive the right of the minor, and if no one else is found besides her, she is compelled without disagreement. She is entitled to a fee for custody, which is separate from the fee for breastfeeding and child support. [From] Bahr, from...	**The one performing the upbringing cannot invalidate the right of the minor. If there is no one else to perform the upbringing besides the mother, the mother will be compelled to bring up the child; there is no disagreement in this. She will, however, be entitled to the upbringing fee, which is in addition to the breastfeeding fee and the child's maintenance.**

1 Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Custody, Matba' Mujtabai Delhi, 1/263

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

[मृतका ने] एक दुधमुंहा बच्चा छोड़ा है, और पति, मृतका की बुआ (यानी उसके पिता की सगी बहन), उसकी बहन और मृतका का मामा मौजूद हैं। इन सब में परवरिश का अधिकार (विलायत-ए-परवरिश) किसे मिल सकता है? और यदि पहला हकदार मना कर दे, तो दूसरे दर्जे में यह अधिकार किसे मिलेगा?

उत्तर: चूंकि इस लड़के की न तो नानी है, न कोई बड़ी बहन, न भांजी, न खाला, न बुआ, न माँ की खाला, न पिता की खाला; केवल माँ की बुआ है और वह विधवा है। जैसा कि प्रश्नकर्ताओं ने बताया है, ऐसी स्थिति में लड़का सात साल की उम्र तक अपनी माँ की बुआ के पास रहेगा। उनकी मौजूदगी में पिता को भी अधिकार नहीं है। माँ का मामा तो बहुत दूर का रिश्तेदार है। और चूंकि प्रश्नकर्ताओं के बयान के अनुसार लड़के के पिता की बुआ भी नहीं है; संक्षेप में, माँ की बुआ के अलावा ऐसी कोई महिला मौजूद नहीं है जिसे परवरिश (हज़ानत) का अधिकार हो। इसलिए, माँ की बुआ को इससे इनकार करने का अधिकार नहीं है। अलबत्ता, यदि वह इस परवरिश के लिए शुल्क लेना चाहती है, तो पिता को उसे देना होगा। 'तनवीरुल अबसार' में लिखा है:

हज़ानत (परवरिश का अधिकार) माँ के लिए है, फिर नानी, फिर दादी चाहे कितनी भी ऊपर की हों, फिर सगी बहन, फिर माँ शरीक (एक ही माँ की) बहन, फिर बाप शरीक (एक ही पिता की) बहन, फिर सगी बहन की बेटी, फिर माँ शरीक बहन की बेटी, फिर मौसियां (खाला), फिर बुआएं फिर माँ की मौसी, फिर पिता की मौसी, फिर माता-पिता की बुआएं इसी क्रम में, फिर वारिसों के क्रम में 'अ़सबा' (पुरुष रिश्तेदार)। 1

परवरिश का हक माँ को है, फिर नानी को, फिर दादी को चाहे वे ऊपर की हों, फिर सगी बहन को, फिर माँ की तरफ से सौतेली बहन को, फिर पिता की तरफ से सौतेली बहन को, फिर सगी बहन की बेटी को, फिर माँ की तरफ से बहन की बेटी को, फिर मौसियों को, फिर बुआओं को, फिर माँ की मौसी को, फिर पिता की मौसी को, फिर माँ और पिता की बुआओं को, इसी तरतीब से, फिर विरासत की तरतीब के अनुसार पुरुष अ़सबा को। (त)

इन्हीं में यह भी उल्लेख है:

परवरिश करने वाली महिला (हाज़िना) नाबालिग के अधिकार को खत्म नहीं कर सकती, और यदि उसके अलावा कोई और न मिले, तो उसे बिना किसी मतभेद के मजबूर किया जाएगा। वह परवरिश के शुल्क की हकदार होगी, जो बच्चे को दूध पिलाने के शुल्क और उसके खर्च (नफ़क़ा) के अलावा होगा। [किताब] बहर से...

परवरिश करने वाली नाबालिग के हक को रद्द नहीं कर सकती। अगर माँ के अलावा परवरिश करने वाला कोई और न हो, तो माँ को बच्चे की परवरिश के लिए मजबूर किया जाएगा, इसमें कोई मतभेद नहीं है। अलबत्ता, वह परवरिश के शुल्क की हकदार होगी, जो दूध पिलाने के शुल्क और बच्चे के भरण-पोषण के अलावा होगा।

1 दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल हज़ानत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/263

کا شیر خوار چھوڑا، اور شوہر اور مسماۃ متوفیہ کی پھوپھی یعنی اس کے باپ کی حقیقی بہن اور مسماۃ بہن اور مسماۃ متوفیہ کا ماموں موجود ہیں، ان سب میں کس کو ولایت پرورش پہنچ سکتی ہے؟ اور بحالت انکارِ اول حقدار کے دویم درجہ میں کس کو پہنچے گی؟ الجواب: جبکہ اس لڑکے کی نہ نانی ہے نہ کوئی جوان بہن ہے، نہ بھانجی نہ خالہ، نہ پھوپھی نہ ماں کی خالہ، نہ باپ کی خالہ، صرف ماں کی پھوپھی ہے اور وہ بیوہ ہے۔ جیسا کہ سائلوں نے بیان کیا تو اس صورت میں لڑکا سات برس کی عمر تک ماں کی پھوپھی کے پاس رہے گا اس کے ہوتے ہوئے باپ کو بھی اختیار نہیں ماں کا ماموں تو بہت بعید ہے اور جبکہ لڑکے کے باپ کی پھوپھی بھی حسبِ بیانِ سائلان نہیں، غرض ماں کی پھوپھی کے سوا کوئی عورت جسے حقِ حضانت ہو موجود نہیں تو ماں کی پھوپھی کو اس سے انکار کا اختیار نہیں البتہ اس پرورش کی اجرت لینی چاہے تو باپ کو دینی ہوگی۔ تنویر الابصار میں ہے :

الحضانة تثبت للام، ثم ام الام، ثم ام الاب وان علت، ثم الاخت لاب وام، ثم لاب، ثم بنت الاخت لابوین، ثم الخالات، ثم العمات، ثم خالة الام، ثم خالة الاب، ثم عمات الامهات والآباء بهذا الترتیب ثم العصبات بترتیب الارث۔ 1

پرورش کا حق ماں کو ہے پھر نانی پھر دادی کو اگرچہ اوپر والی ہوں، پھر حقیقی بہن کو پھر ماں کی طرف سے سگی بہن کو پھر باپ کی طرف سے سگی بہن کو پھر حقیقی بہن کی بیٹی کو پھر ماں کی طرف سے بہن کی بیٹی کو پھر خالات کو پھر پھوپھیوں کو پھر ماں کی خالہ پھر باپ کی خالہ کو پھر ماں اور باپ کی پھوپھیوں کو، اسی ترتیب سے پھر، عصبہ مردوں کو وراثت کی ترتیب پر۔ (ت)

انہیں میں ہے:

ولا تقدر الحاضنة على ابطال حق الصغير وان لم يوجد غيرها اجبرت بلا خلاف وتستحق اجرة الحضانة وهى غير اجرة ارضاعه ونفقته بحر عن

پرورش کرنے والی حقِ صغیر کو باطل نہیں کر سکتی، اگر ماں کے علاوہ کوئی پرورش کرنے والی نہ ہو تو ماں کو بچے کی پرورش پر مجبور کیا جائے گا، اس میں اختلاف نہیں، وہ البتہ پرورش کی اجرت کی مستحق ہوگی جو کہ دودھ پلانے کی اجرت اور نفقہ ولد کے علاوہ

1 در مختار شرح تنویر الابصار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۳

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Box Header] Summarized from 'Al-Sirajiyyah'. And Allah Almighty knows best. 'Al-Bahr' has narrated it from 'Al-Sirajiyyah', summarized. And Allah Almighty knows best (T).

Problem 145: From Rampur State, Mohalla Chah Shor, sent by Manna Khan, 22 Jamadi-ul-Awwal 1321 AH.

What do the scholars of the religion and the jurists of the clear Sharia say about this issue? Zaid, at the time of his death, left behind a wedded wife, a minor son, and two minor daughters as heirs, and then passed away. After his death, his aforementioned wedded wife and heir also passed away by divine decree. Now, one minor boy and two minor daughters born from the deceased woman remain. There is no one, male or female, from the paternal or maternal side of the deceased woman. The late Zaid has two paternal cousins. And a woman named Husaini, who had raised the deceased woman as her own child, claims that the guardianship of these three minor children belongs to her. So, between the brothers of the late Zaid (who are his paternal cousins) and the woman who raised the wedded wife like a child, who has the right of guardianship of the minors according to the noble Sharia? State the answer and be rewarded.

The Answer: The questioner states that the son's age is eleven years, one daughter is ten years, and the other is three years. Therefore, in the described situation, the boy will stay with Zaid's paternal cousins until he reaches maturity. The authority (wilayat) to arrange the marriage of the boy and the girls also belongs to the cousins. However, the girls shall not be handed over to any of them. It is the duty of the Sharia Qadhi (judge) to appoint a pious, religious, and trustworthy woman for their upbringing, so that the girls remain under her protection until they reach puberty or get married. As for the property of these three minors, if there is an executor (wasi) appointed by their father or grandfather—that is, someone to whom they entrusted the protection and care of their property or children—or if such a person is not present, then it should be handed over to the executor of that executor. Otherwise, it is also the duty of the Sharia Qadhi to appoint a trustworthy, pious, religious, capable, and good Muslim who has true faith in the Quran, considers the orphan's property as fire, and Allah is the one who takes account of all. As for the woman who raised their mother, she has absolutely no legal right. Yes, if in the opinion of the Sharia Qadhi, that woman is the most suitable for the protection of the girls, he may

give them to her, but she will have no authority over their marriage or the protection of their property. It is mentioned in Minhaj, Khulasah, Tatar Khaniyah, Hashiya al-Khayr al-Ramli, and Radd al-Muhtar:

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264.

फ़तावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[बॉक्स हेडर] 'अल-सिराजिया' से संक्षेपित। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। 'अल-बहर' ने इसे 'अल-सिराजिया' से उद्धृत किया है, संक्षेपित। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है (त)।

मसाला 145: रामपुर रियासत, मोहल्ला चाह शोर से, मन्ना खान द्वारा प्रेषित, 22 जमादी-उल-अव्वल 1321 हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं? ज़ैद ने अपनी मृत्यु के समय एक विवाहित पत्नी, एक नाबालिग बेटा और दो नाबालिग बेटियाँ वारिस के रूप में छोड़ी थीं, और फिर उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद, उनकी उपरोक्त विवाहित पत्नी और वारिस की भी ईश्वरीय इच्छा से मृत्यु हो गई। अब, मृत महिला से पैदा हुए एक नाबालिग लड़के और दो नाबालिग बेटियाँ बची हैं। मृत महिला के ददिहाल या ननिहाल में से कोई भी पुरुष या महिला जीवित नहीं है। दिवंगत ज़ैद के दो चचेरे भाई हैं। और हुसैनी नाम की एक महिला, जिसने मृत महिला को अपनी संतान की तरह पाला था, दावा करती है कि इन तीनों नाबालिग बच्चों का संरक्षण उसे मिलना चाहिए। तो, दिवंगत ज़ैद के चचेरे भाइयों और उस महिला के बीच, जिसने ज़ैद की पत्नी को पाला था, शरीयत के अनुसार नाबालिगों के संरक्षण का कानूनी अधिकार किसे प्राप्त है? कृपया उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: प्रश्नकर्ता का कहना है कि लड़के की उम्र ग्यारह साल है, एक बेटी की दस साल और दूसरी की तीन साल। इसलिए, वर्णित स्थिति में, लड़का वयस्क होने तक ज़ैद के चचेरे भाई के पास रहेगा। लड़के और लड़कियों के निकाह (विवाह) कराने का अधिकार (विलायत) भी चचेरे भाइयों के पास है। हालाँकि, लड़कियों को उनमें से किसी के सुपुर्द नहीं किया जाएगा। शरीयत के काज़ी (न्यायाधीश) का यह कर्तव्य है कि वह उनकी देखभाल के लिए किसी नेक, धार्मिक और अमानतदार महिला को नियुक्त करे, ताकि लड़कियाँ वयस्क होने तक या शादी होने तक उसकी सुरक्षा में रहें। इन तीनों नाबालिगों की जो संपत्ति है, यदि उनके पिता या दादा का कोई वसी (वसीयतदार) मौजूद है—यानी जिसे वे अपनी संपत्ति या बच्चों की देखभाल के लिए वसीयत कर गए हों—या यदि ऐसा व्यक्ति मौजूद नहीं है, तो इसे उस वसी के वसी की सुरक्षा में सौंपा जाना चाहिए। अन्यथा, इसके लिए भी शरीयत के काज़ी का कर्तव्य है कि वह किसी अमानतदार, नेक, धार्मिक, सक्षम और अच्छे मुसलमान को

नियुक्त करे, जिसका कुरान पर सच्चा ईमान हो, जो यतीम (अनाथ) के माल को आग के समान समझे, और अल्लाह इन सबका हिसाब लेने वाला है। जहाँ तक उस महिला की बात है जिसने उनकी माँ को पाला था, उसका कोई कानूनी अधिकार नहीं है। हाँ, यदि शरीयत के काज़ी की राय में लड़कियों की सुरक्षा के लिए वही महिला सबसे उपयुक्त हो, तो वह उन्हें उसे दे सकता है, लेकिन निकाह या संपत्ति के संरक्षण में उसका कोई अधिकार नहीं होगा। मिन्हाज, खुलासा, तातार खानिया, हाशियह अल-खैर अल-रमली और रद अल-मुहतार में उल्लेख है:

1. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल हज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/264।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

السراجیۃ اھ ملخصین، واللہ تعالٰی اعلم۔ ہوئی بحر نے اسے سراجیہ سے نقل کیا ہے اھ ملخصاً واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۴۵: از ریاست رامپور محلہ چاہ شور مرسلہ منا خاں ۲۲ جمادی الاولٰی ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے وقت وفات اپنی ایک زوجہ منکوحہ اور ایک پسر نابالغ اور دو لڑکیاں نابالغہ ہیں، وراثت مع الحصر چھوڑ کر وفات پائی، اور بعد وفات مذکور کے اس کی منکوحہ وارثہ نے بقضاء الہی وفات پائی، اب ایک لڑکا نابالغ اور دو لڑکیاں نابالغہ بطن مسماۃ متوفیہ سے باقی رہی، مسماۃ متوفیہ مذکورہ کا دادھیال اور نانھیال میں سے کوئی ذکور اور اناث میں سے نہیں ہے اور زید مرحوم مذکور کے دو چچازاد بھائی ہیں اور ایک عورت حسینی کہ متوفیہ مرحومہ کو بطور فرزندی پرورش کیا تھا دعویدار ہیں کہ ولایت ان ہرسہ نابالغ صغیرہ کی ہم کو پہنچی ہے پس ولایت صغیران مذکور برادرانِ زید متوفی جو چچازاد بھائی زید کے ہیں اور وہ عورت جس نے منکوحہ کو فرزندانہ پرورش کیا تھا ان دونوں میں کس کو حسب شرع شریف حق ولایت نابالغان حاصل ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: سائل مظہر کہ پسر کی عمر گیارہ سال ہے اور ایک دختر کی دس سال اور دوسرے کی تین سال، پس صورت مستفسرہ میں لڑکا جوان ہونے تک زید کے چچازاد بھائی کے پاس رہے گا اور لڑکے اور لڑکیوں کے نکاح کرنے کی ولایت بھی بھائیوں کو ہے مگر لڑکیاں ان میں سے کسی کو سپرد نہ کی جائیں گی قاضی شرع پر فرض ہے کہ ان کے رکھنے کے لئے کوئی عورت صالحہ متدینہ امینہ تجویز کرے کہ تابلوغ یا جب تک شادی نہ ہو لڑکیاں اس کی حفاظت میں رہیں

اور ان تینوں نابالغوں نابالغات کا جو مال ہے اگر ان کے باپ یاد ادا کا کوئی وصی موجود ہے یعنی جسے وہ اپنے مال یا اولاد کی حفاظت و نگہداشت کی وصیت کر گئے ہوں یا وہ نہ ہو تو ایسے وصی کا جو وصی ہو اس کی حفاظت میں سپرد کیا جائے ورنہ اس کے لئے بھی قاضی شرع پر فرض ہے کہ امین صالح دیندار قادر نیک مسلمان تجویز کرے جو قرآن پر سچا ایمان رکھے یتیم کے مال کو آگ جانے اور اللہ ان سب حسب لینے والا ہے، رہی وہ عورت جس نے ان کی ماں کو پالا تھا اس کا اصلاً کوئی حق نہیں، ہاں لڑکیوں کی حفاظت کے لئے اگر قاضی شرع کی رائے میں وہ عورت ہی انسب ہو تو اسے دے دے مگر نکاح یا حفاظت مال میں اس کا کوئی اختیار نہ ہوگا۔

منہاج و خلاصہ و تاتار خانیہ و حاشیہ الخیر الرملی ورد المحتار میں ہے:

۱ درمختار شرح تنویر الابصار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 400

| Arabic: If the child has no father and the period of custody (Hadhana) has ended, then among the male agnates (Asaba), the nearest relative is more entitled, followed by the next nearest. However, a female child shall not be handed over except to a Mahram (unmarriageable relative). [1] | Urdu: When the period of child rearing ends and the father is not present, the child will be handed over to the closest male agnate after the father. But if it is a girl, she will not be given to a non-mahram. (T) |

It is mentioned in Tuhfat al-Fuqaha, Bahr al-Ra'iq, and Radd al-Muhtar:

| Arabic: If a girl has no agnate other than a cousin (paternal uncle's son), then the choice belongs to the Judge (Qadi). If he deems it most beneficial for her, [he may hand her over to him], otherwise she shall be placed with a trustworthy woman. (Ah). Al-Shami said: What is in 'al-Tuhfa' was reasoned by him in its commentary 'al-Bada'i' by saying: 'Because in this situation guardianship belongs to him (the Qadi), so he considers what is most beneficial'. (Ah). This is apparent in that the cousin has no absolute right over the girl, etc. | Urdu: If the girl has no agnate other than a paternal cousin, the Judge has the authority to hand her over to the cousin if he considers him upright and suitable; otherwise, he should entrust her to a trustworthy and pious woman. (Ah). Allama Shami stated that the reason and cause for the statement in 'Tuhfa' is explained in its commentary 'Bada'i' as follows: since in such a case the Judge possesses guardianship, he should act in the best interest. (Ah). This point is clear because a paternal cousin does not have an absolute right over the girl, etc. (T) |

It is mentioned in Tanwir al-Absar:

| Arabic: His guardian is his father, then (after his death) his executor (Wasi), then the executor's executor, then his grandfather, then his executor, then his executor's executor, then the Judge. [3] (Ah). With additions from al-Durr al-Mukhtar. And Allah, the Sublime and Almighty, knows best. | Urdu: The child's guardian is his father; then, upon the father's death, the father's executor; then the executor's executor; then the grandfather; then his executor; then his executor's executor; and then the Judge. (Ah). Including some additions from Durr al-Mukhtar, and Allah the Sublime and Almighty knows best. (T) |

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Hadhana (Custody), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/622.

2. Radd al-Muhtar, Chapter on Hadhana (Custody), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/639.
3. Durr al-Mukhtar commentary of Tanwir al-Absar, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/203.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 400

| अरबी: अगर बच्चे का पिता न हो और हज़ानत (परवरिश) की अवधि समाप्त हो जाए, तो पिता के बाद के पुरुष उत्तराधिकारियों (असबा) में से जो निकटतम हो, उसे प्राथमिकता दी जाएगी। हालांकि, लड़की को किसी ग़ैर-महरम (जिनसे विवाह जायज़ हो) के सुपुर्द नहीं किया जाएगा। [1] | उर्दू: जब बच्चे के पालन-पोषण की अवधि समाप्त हो जाए और पिता न हो, तो पिता के बाद वाले असबा पुरुषों में से जो सबसे करीब हो, उसे उसकी सुपुर्दगी में दे दिया जाएगा। लेकिन अगर लड़की हो, तो उसे ग़ैर-महरम की सुपुर्दगी में नहीं दिया जाएगा। (त) |

'तुहफ़तुल फ़ुक़हा', 'बहरुर राइक़' और 'रद्दुल मुहतार' में है:

| अरबी: अगर लड़की का चचेरे भाई के अलावा कोई असबा न हो, तो फैसला काज़ी के अधिकार में है। अगर वह उसे उसके लिए उपयुक्त समझता है, तो उसे दे सकता है, अन्यथा उसे किसी विश्वसनीय महिला के हाथों में रखा जाए। (अह)। अल्लामा शामी ने फ़रमाया कि 'तुहफ़ा' में जो बयान है उसकी वजह और कारण को उसकी व्याख्या 'बदाइ' में इस प्रकार बयान किया गया है: क्योंकि ऐसी स्थिति में विलायत (अभिभावकत्व) काज़ी के पास होती है, इसलिए वह जो सबसे बेहतर हो उसका ख्याल रखता है। (अह)। यह स्पष्ट है कि चचेरे भाई का लड़की पर कोई पूर्ण अधिकार नहीं है, इत्यादि। | उर्दू: अगर लड़की का चचेरे भाई के सिवा कोई असबा न हो, तो काज़ी को अधिकार है कि अगर वह चचेरे भाई को नेक और भला समझता है तो लड़की उसकी सुपुर्दगी में दे दे, वरना किसी अमानतदार नेक औरत के सुपुर्द करे। (अह)। अल्लामा शामी ने फ़रमाया कि तुहफ़ा में जो बयान है उसकी वजह और इल्लत को उसकी शरह बदाइ' में इस तरह बयान किया गया है कि चूंकि ऐसी सूरत में काज़ी को विलायत हासिल होती है इसलिए वो बेहतरी की तदबीर करे। (अह)। यह बात ज़ाहिर है क्योंकि चचेरे भाई को लड़की पर कोई हक़ मुतलक़ा नहीं है, आदि। (त) |

'तन्वीरुल अबसार' में है:

| अरबी: बच्चे का वली उसका पिता है, फिर (उसकी मृत्यु के बाद) उसका वसी (कार्यकारी), फिर वसी का वसी, फिर दादा, फिर उसका वसी, फिर उसके वसी का वसी, और फिर काज़ी है। [3] (अह)। दुर्रे मुख्तार से कुछ अतिरिक्त जानकारी शामिल करते हुए। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। | उर्दू: बच्चे का वली उसका बाप है, फिर बाप के फौत होने पर बाप का वसी और

फिर वसी का वसी, फिर दादा, फिर उसका वसी, फिर उसके वसी का वसी और फिर काज़ी है। (अह)। दुर्रे मुख्तार से कुछ ज़्यादती शामिल करते हुए, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम (त) |

1. रद्दुल मुहतार, बाबुल हज़ानत, दारु इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/622.
2. रद्दुल मुहतार, बाबुल हज़ानत, दारु इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/639.
3. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 2/203.

पेज 400 का 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

| ان لم یکن للصبی اب وانقضت الحضانة فمن سواہ من العصبة اولی الاقرب فالاقرب غیران الاثنی لا تدفع الالی محرم ۱۔ | جب بچے کی پرورش کی مدت ختم ہوجائے اور باپ نہ ہو تو باپ کے بعد والے عصبہ مردوں میں سے جو قریب تر ہواس کی تحویل میں دے دیا جائے گا لیکن اگر لڑکی ہو تو اسے غیر محرم کی تحویل میں نہ دیا جائے گا۔(ت) |

تحفۃ الفقہاء، وبحر الرائق وردالمحتار میں ہے :

| ان لم یکن للجاریة غیر ابن العم فالاختیار للقاضي ان راہ اصلح الیہ والاتوضع علی یدامینة اھ قال الشامی مافی التحفة علله فی شرحها البدائع بقوله لان الولایة في هذه الحالة الیه فیراعي الاصلح اھ وھو ظاھر فی انه لا حق لابن العم في الجاریة مطلقاً الخ۔ | اگر لڑکی کا چچازاد کے بغیر کوئی عصبہ نہ ہو تو قاضی کو اختیار ہے کہ اگر وہ چچازاد کو نیک وصالح سمجھتا ہے تو لڑکی اس کی تحویل میں دے دے ورنہ کسی امین صالح عورت کے سپرد کرے اھ، علامہ شامی نے فرمایا کہ تحفہ میں جو بیان ہے اس کی وجہ اور علت کو اس کی شرح بدائع میں یوں بیان کیا ہے، چونکہ ایسی صورت میں قاضی کو ولایت حاصل ہوتی ہے لہٰذا وہ بہتری کی تدبیر کرے اھ ، یہ بات ظاہر ہے کیونکہ چچازاد کو لڑکی پر حق مطلقاً نہیں ہے الخ۔(ت) |

تنویر الابصار میں ہے :

| ولیه ابوہ ثم وصیه(بعد موته) ثم وصی وصیه ثم جدہ ثم وصیه ثم وصی وصیه ثم القاضی ۳ اھ مزیداً من الدر المختار، واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔ | بچے کا ولی اس کا باپ پھر باپ کے فوت ہونے پر باپ کا وصی اور پھر وصی کا وصی، پھر دادا، پھر اس کا وصی، پھر اس کے وصی کا وصی،

اور پھر قاضی ہے اھ، در مختار سے کچھ زیادتی شامل کرتے ہوئے، واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم(ت)

|

۱۔ رد المحتار باب الحضانة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۴۲ ۲۔ رد المحتار باب الحضانة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۳۹ ۳۔ درمختار شرح تنویر الابصار مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۰۳

Fatawa Razvia, Volume 13

Case 146: 14 Shawwal 1321 AH From Pilibhit, Punjab Tola, sent by Sheikh Abdul Aziz (Family Tree of Haji Kifayatullah, Deceased) (First wife alive: Najmun Nisa) [Red text: Here a diagram in the shape of 'H' is to be made, Vol 13, p 401] (Second wife deceased: Hamidun Nisa) [Red text: Here a diagram in the shape of 'H' is to be made, Vol 13, p 401]

Haji Kifayatullah passed away, leaving behind his mother who has reached an age of senility and is no longer in her right senses, two sisters, one wife, and from this living wife two sons and four daughters. From the other deceased wife, he left three sons and two daughters. All the children of the first party, i.e., the first wife, are adults, while among the children of the second party, the second wife, some are adults and some are minors. Since the first party was adult and dominant, and the second party was minor and suppressed, the first party always had a natural opposition towards the second party due to their step-relationship. Thus, the step-siblings of these minors, in agreement with Najmun Nisa (the stepmother), remained opposed to the mother of the minors and were bent on causing ruin, harm, and distress. They completely ceased participation in weddings, funerals, and social interactions during the lifetime of the deceased Hamidun Nisa, mother of the minors. However, during the lifetime of Haji Kifayatullah, the effects of their enmity were not fully apparent. But after the death of Haji Kifayatullah, the enmity of the first party towards the second party became quite evident; the reasons for which are as follows:

(1) That after the death of Haji Kifayatullah, they took those minors who were the youngest and under their control, handed them over to a female servant, and sent them to Garhi Manikpur, which is located at a great distance from the place of residence, separating them from other relatives and kin. They were left there in an unclaimed status for six months, causing them to suffer various types of hardships and distress regarding food and drink etc.

फतावा रिज़विया, जिल्द तेरह (13)

मसला 146: 14 शव्वाल 1321 हिजरी पीलीभीत, पंजाब टोला से, प्रेषक शेख अब्दुल अज़ीज़ (मरहूम हाजी किफ़ायतुल्लाह का वंशवृक्ष) (पहली पत्नी जीवित: नजमुन निसा) [लाल पाठ: यहाँ एच (H) के आकार में एक नक्शा बनाया जाना है, जिल्द 13, पृष्ठ 401] (दूसरी पत्नी मरहूम: हमीदुन निसा) [लाल पाठ: यहाँ एच (H) के आकार में एक नक्शा बनाया जाना है, जिल्द 13, पृष्ठ 401]

हाजी किफ़ायतुल्लाह का इंतकाल हो गया और उन्होंने अपनी एक माँ जो बुढ़ापे के कारण सठिया गई हैं और उनके होश-हवास ठिकाने नहीं हैं, दो बहनें, एक पत्नी और इसी जीवित पत्नी से दो बेटे और चार बेटियाँ छोड़ीं। दूसरी मरहूम पत्नी से तीन बेटे और दो बेटियाँ छोड़ीं। पहले पक्ष यानी पहली पत्नी की संतान सभी बालिग हैं, और दूसरे पक्ष यानी दूसरी पत्नी की संतान में कुछ बालिग और कुछ नाबालिग हैं। चूंकि पहला पक्ष बालिग और हावी था और दूसरा पक्ष नाबालिग और दबा हुआ, इसलिए पहले पक्ष की दूसरे पक्ष के साथ सौतेलेपन के कारण हमेशा प्राकृतिक रूप से मुखालफत (विरोध) रही। चुनाँचे इन नाबालिगों के सौतेले भाई-बहन, नजमुन निसा (सौतेली माँ) की सहमति से नाबालिगों की माँ के मुखालिफ रहे और उन्हें बर्बाद करने, कष्ट पहुँचाने और दुख देने पर तुले रहे। नाबालिगों की माँ मरहूम हमीदुन निसा के जीवनकाल में उन्होंने शादी-ब्याह, दुख-सुख और मेल-मिलाप पूरी तरह छोड़ दिया था। मगर हाजी किफ़ायतुल्लाह के जीवनकाल में उनकी दुश्मनी का कोई असर पूरी तरह जाहिर नहीं हो सका। लेकिन हाजी किफ़ायतुल्लाह के इंतकाल के बाद पहले पक्ष की दूसरे पक्ष के प्रति दुश्मनी बखूबी जाहिर हो गई, जिसके कारण ये हैं:

(1) यह कि हाजी किफ़ायतुल्लाह के इंतकाल के बाद, उन्होंने उनमें से उन नाबालिगों को, जो सबसे छोटे थे और उनके अधिकार में थे, एक खादिमा (नौकरानी) के सुपुर्द कर दिया। उन्हें बाकी रिश्तेदारों और करीबियों से अलग करके गढ़ी मानिकपुर भेज दिया, जो निवास स्थान से काफी दूरी पर स्थित है। छह महीने तक उन्हें वहां लावारिस हालत में छोड़ रखा, जिसकी वजह से उन्हें खाने-पीने आदि की तरह-तरह की तकलीफें और यातनाएं झेलनी पड़ीं।

पृष्ठ 401/688

فتاویٰ رضویہ جلد تیرہ دہم

مسئلہ ۱۴۶: از پیلی بھیت پنجاب ٹولہ مرسلہ شیخ عبدالعزیز ۱۴/ شوال ۱۳۲۱ھ (شجرہ حاجی کفایت اللہ متوفی) (زوجہ اولیٰ حیات نجم النساء) یہاں ایچ کی شکل میں نقشہ بنانا ہے جلد ۱۳ ص ۴۰۱ (زوجہ ثانی متوفیہ حمید النساء) یہاں ایچ کی شکل میں نقشہ بنانا ہے جلد ۱۳ ص ۴۰۱

حاجی کفایت اللہ نے انتقال کیا اور انہوں نے اپنی ایک مادر جو سن خرافات کو پہنچ گئی ہیں اور ہوش و حواس ان کے قائم نہیں ہیں اور دو بہنیں اور ایک زوجہ اور اسی زوجہ حیات سے دو لڑکے اور چار لڑکیاں اور دوسری زوجہ متوفیہ سے تین لڑکے اور دو لڑکیاں چھوڑیں، فریق اول یعنی زوجہ اولیٰ کی اولاد سب بالغ ہے اور فریق ثانی زوجہ ثانیہ کی اولاد بعض بالغ اور بعض نابالغ ہیں۔ فریق اول چونکہ بالغ اور غالب تھے اور فریق ثانی نابالغ اور مغلوب، لہذا فریق اول کو ہمیشہ فریق ثانی کے ساتھ بوجہ سوتیلے پن کے قدرتی مخالفت ہے، چنانچہ ان نابالغان کے سوتیلے بہن بھائی بہ اتفاق نجم النساء سوتیلی ماں کی والدہ نابالغان کے مخالف اور درپے تخریب و ایذا رسانی و دل آزاری رہی اور شرکت شادی و غمی اور ملنا جلنا تاحیات متوفیہ حمید النساء والدہ نابالغان قطعی ترک رہا مگر حین حیات حاجی کفایت اللہ ان کی عداوت کا کوئی اثر پورے طور پر ظاہر نہیں ہو پایا لیکن بعد وفات حاجی کفایت اللہ فریق اول کی عداوت فریق ثانی کے ساتھ بخوبی ظاہر ہوگئی چنانچہ اس کی وجوہات یہ ہیں:

(۱) یہ کہ بعد وفات حاجی کفایت اللہ ان میں سے نابالغوں کو جو سب سے چھوٹے اور ان کے اختیار میں تھے ایک خادمہ کے سپرد کرکے گڑھی مانکپور کو جو جائے سکونت سے ایک مسافت بعید پر واقع ہے باقی اعزاء و اقارب سے جدا کرکے روانہ کردیا چھ ماہ تک ان کو لاوارث

حیثیت سے چھوڑ رکھا جس کی وجہ سے ان کو طرح طرح کی خورد و نوش وغیرہ کی تکلیف اور اذیتیں پہنچیں۔

(2) That they have already spent the entire income from their respective shares on themselves and do not take any care of their expenses. (3) That they have hidden many movable items, cash, jewelry, and household goods belonging to the minors and have not disclosed them; and they have collected the debts of the deceased and applied them to their personal use. (4) That the lifestyle of the step-brothers of these minors is indecent, uncivilized, and involves bad conduct.

Question: Haji Muhammad Kifayatullah (deceased) has passed away leaving heirs according to the above-mentioned family tree. Now, among these guardians, to whom does the right of guardianship of life and property (Wilayat-e-Jan-o-Maal) for the minor children of the deceased second wife—Fazl-ul-Haq, Zia-ul-Haq, Riaz-ul-Haq, and Wahidi Begum—belong according to the Sharia, in view of the above-mentioned reasons? Brother (paternal) - Brother (paternal) - Sister (paternal) - Sister (paternal) - Sister (paternal) - Sister (paternal) - Sister (paternal and maternal) - True Grandmother. Umar. Umar. Abdul Haq, Ihsan-ul-Haq, Ajaib-un-Nisa, Latif-un-Nisa, Habib-un-Nisa, Jameel-un-Nisa, Karim-un-Nisa, Allah Jalai, Najm-un-Nisa, Sahib-un-Nisa.

Answer: The right of custody (Hizanat) remains with the boy until the age of seven and with the girl until nine years of age. After that, the child will stay with the 'Asaba' (agnatic relative) who is foremost in the order of 'Asobat' (agnates). Here too, the condition is that the relative is not a transgressor (Fasiq) or of bad character, so there is no fear for the minor; and for a girl, it is also a condition that he be her 'Mahram'. For children up to seven or nine years of age, women who are 'Zawat-ul-Furooz' (sharers), such as the mother and sister, and then 'Zawat-ul-Arham' (maternal relatives), such as maternal and paternal aunts, have priority over 'Asabat' (agnates). The condition for them is that they are not married to a 'non-mahram' of the minor; otherwise, the children will not be handed over even to the mother. In cases where there is no woman who fulfills all the conditions of custody, the custody shall transfer to the male 'Asabat' and then to 'Zuwi-al-Arham' (cognates), with the requirement of being a 'mahram' still applying for a girl. Furthermore, if no relative is trustworthy for these children, then the knowledgeable, pious, and God-fearing Muslims of the city—who do not hold any heretical beliefs like 'Naturism' (Nechariyat) or 'Rafidism' (Rafz), nor consider those who deny Allah (the Almighty) or deny the finality of the Prophethood of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) as Muslims—should gather and appoint such a religious and capable person for the protection of

the children. Especially girls should be handed over to a wise, trustworthy, and firm woman who is not married to a 'non-mahram' and does not live with such people who could harm or cause suffering to the children. The condition of absence of 'Naturism', 'Rafidism', and other heretical innovations that we mentioned for the decision-makers applies universally.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

(२) यह कि उन्होंने अपने संबंधित हिस्सों की पूरी आय खुद पर खर्च कर दी है और उनके खर्चों की कोई देखभाल नहीं करते हैं। (३) यह कि नाबालिगों से संबंधित कई चल संपत्ति, नकद, आभूषण और घरेलू सामान को इन लोगों ने छिपा लिया है और ज़ाहिर नहीं किया है; और मृतक के ऋण वसूल करके अपने व्यक्तिगत उपयोग में ले आए हैं। (४) यह कि इन नाबालिगों के सौतेले भाइयों की जीवनशैली अभद्र, असभ्य और बुरे आचरण वाली है।

सवाल: हाजी मोहम्मद किफ़ायतउल्लाह (मृतक) ने उपरोक्त वंशवृक्ष के अनुसार उत्तराधिकारी छोड़कर इंतकाल किया। अब इन उत्तराधिकारियों में से उपरोक्त कारणों के मुक़ाबले में मृतक की दूसरी पत्नी की नाबालिग औलाद—फ़ज़ल-उल-हक़, ज़िया-उल-हक़, रियाज़-उल-हक़ और वाहिदी बेगम—के जान और माल की विलायत (अभिभावकत्व) का अधिकार शरीयत के अनुसार किसे प्राप्त होता है? भाई (पिता की ओर से) - भाई (पिता की ओर से) - बहन (पिता की ओर से) - बहन (पिता की ओर से) - बहन (पिता की ओर से) - बहन (सगी) - दादी/नानी (सही)। उमर। उमर। अब्दुल हक़, एहसान-उल-हक़, अजाइब-उन-निसा, लतीफ़-उन-निसा, हबीब-उन-निसा, जमील-उन-निसा, करीम-उन-निसा, अल्लाह जलाई, नज्म-उन-निसा, साहिब-उन-निसा।

अल-जवाब (उत्तर): लड़के के मामले में हिज़ानत (परवरिश) का अधिकार सात वर्ष की आयु तक और लड़की के मामले में नौ वर्ष की आयु तक रहता है। उसके बाद वह 'असबा' (पितृपक्षी रिश्तेदार) के पास रहेगी जो 'असोबत' (उत्तराधिकार क्रम) में सबसे ऊपर हो। यहाँ भी शर्त यह है कि वह फासिक़ (पापी) या बुरे चरित्र वाला न हो, जिससे नाबालिग को कोई खतरा न हो; और लड़की के लिए यह भी शर्त है कि वह उसका 'महरम' हो। और सात या नौ साल की उम्र तक, हिज़ानत के अधिकार में 'ज़वात-उल-फ़ुरूज़' महिलाएं जैसे माँ और बहन, फिर 'ज़वात-उल-अरहाम' (मातृपक्षी रिश्तेदार) जैसे मौसी और बुआ, असबात (पितृपक्षी) पर प्राथमिकता रखती हैं। उनके लिए शर्त यह है कि उन्होंने नाबालिग के'ग़ैर-महरम' से निकाह न किया हो, अन्यथा बच्चे माँ को भी नहीं सौंपे जाएँगे। जहाँ हिज़ानत की शर्तों को पूरा करने वाली कोई महिला न हो, वहाँ हिज़ानत का अधिकार पुरुष 'असबात' और फिर 'ज़ुवी-अल-अरहाम' (दूर के रिश्तेदारों) की ओर स्थानांतरित हो जाएगा, और लड़की के लिए 'महरम' होना अनिवार्य होगा। फिर यदि इन बच्चों के हक में कोई भी रिश्तेदार भरोसेमंद न हो, तो शहर के विद्वान, धर्मपरायण और अल्लाह से डरने वाले मुसलमान—जो 'नेचरियत' (प्राकृतिकवाद) या 'रफ़्ज़' (शिया पंथ का एक कट्टर रूप) जैसी किसी भी कुफ़्रिया बिदअत (धर्मविरोधी नवाचारों) को

न मानते हों, और न ही अल्लाह के झुठलाने वालों या पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खत्म-ए-नुबुव्वत (अंतिम पैगंबर होने) का इनकार करने वालों को मुसलमान समझते हों—एकत्र होकर बच्चों की सुरक्षा के लिए किसी ऐसे ही धार्मिक और सक्षम व्यक्ति को नियुक्त करें। विशेष रूप से लड़कियों को ऐसी समझदार, भरोसेमंद और प्रभावशाली महिला को सौंपा जाना चाहिए जो किसी 'ग़ैर-महरम' से निकाह में न हो और न ही ऐसे लोगों के पास रहती हो जिनसे बच्चों को नुकसान या कष्ट पहुँचने का डर हो। नेचरियत, रफ़्ज़ और अन्य कुफ़्रिया बिदअतों के न होने की जो शर्त हमने उन राय देने वालों के लिए ज़िक्र की है, वह पूर्ण रूप से लागू होती है।

(۲) یہ کہ جملہ آمدنی ان کے حصص واقعہ میں سے اپنے صرف میں لا چکے ہیں اور ان کے مصارف کی کوئی خبر گیری نہیں کرتے۔ (۳) یہ کہ بہت سے اشیاء منقولہ زر نقد و زیورات و اشیاء خانگی جو نابالغان سے تعلق رکھتے ہیں ان لوگوں نے مخفی کر لیں اور ظاہر نہیں کیں اور دیون مورث کے وصول کر کے تصرف ذاتی اپنے میں لائے۔ (۴) یہ کہ طریقہ زندگی سوتیلے بھائیوں ان نابالغان کا ناشائستہ اور غیر مہذب بد چلنی کے ساتھ ہے۔

سوال حاجی محمد کفایت اللہ متوفی نے انتقال کر کے اس شجرہ مندکورہ بالا کے مطابق ورثاء چھوڑے اب ان اولاد نابالغان زوجہ ثانی متوفیہ ، فضل حق، ضیاء الحق ، ریاض الحق واحدی بیگم کا حق ولایت جان و مال از روئے شرع شریف ان اولیاء میں سے بمقابلہ وجوہات بالا کے کس کو پہنچتا ہے: اخ لاب۔ اخ لاب۔ اخت لاب۔ اخت لاب۔ اخت لاب۔ اخت لاب۔ اخت لاب وام۔ جدہ صحیحہ۔ عمر۔ عمر۔ عبدالحق۔ احسان الحق۔ عجائب النساء۔ لطیف النساء۔ حبیب النساء۔ جمیل النساء۔ کریم النساء۔ اللہ جلائی۔ نجم النساء۔ صاحب النساء۔

الجواب: حق حضانت لڑکے میں سات اور دختر میں نو برس کی عمر تک رہتا ہے اس کے بعد عصبہ کے پاس رہے گی جو عصوبت میں مقدم ہے یہاں بھی مقدم ہے بشرطیکہ فاسق بد چلن نہ ہو اس سے صغیر پر اندیشہ نہ ہو اور دختر کے لئے اس کا محرم ہونا بھی شرط اور سات یا نو برس کی عمر تک جو حق حضانت میں عورت ذوات فروض مثل مادر و خواہر پھر ذوات رحم مثل خالہ وعمہ عصبات پر مقدم ہیں ان میں شرط یہ ہے کہ صغیر کے نامحرم کے نکاح میں نہ ہوں ورنہ بچے ماں کو بھی سپرد نہ کئے جائیں گے جہاں شرائط حضانت کی جامعہ کوئی عورت نہ ہو گی، حضانت عصبات پھر ذوی الارحام ذکور کی طرف انتقال کرے گی اور دختر کے لئے وہی

محرمیت ضرور ہو گی پھر اگر کوئی ذی رحم ان بچوں کے حق میں قابل اعتماد نہ ہو تو ذی علم دیندار خدا ترس مسلمانان شہر کہ کوئی بدعت کفریہ مثل نیچریت ورفض و غیر ہمانہ رکھتے ہوں نہ مکذ بان باری عزوجل یا منکران ختم نبوت نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو مسلمان جانتے ہوں جمع ہو کر کسی ایسے ہی متدین لائق کو بچوں کی حفاظت کے لئے تجویز کریں اور لڑکیاں بالخصوص کسی ایسی ہی عورت عاقلہ امینہ قاہرہ کو سپرد کی جائیں جو نامحرم کے نکاح میں نہ ہو نہ ایسوں کے یہاں رہتی ہو جن سے بچوں پر مضرت واذیت کا اندیشہ ہو اور یہ شرط عدم نیچریت و رفض وغیرہ بدعات کفریہ کہ ہم نے ان رائے دہندوں کے لئے ذکر کی مطلقاً

Fatawa Rizvia, Volume 13

Every man and woman must ensure that whoever is given the custody (Hazanat) or protection of the lives or property of children is qualified. The guardianship (wilayat) over a child's property after the father belongs to the father's executor (wasi)—meaning someone he designated before death to look after his children or property. If there is no executor, then it passes to the executor's executor, then to the grandfather, then to the grandfather's executor, and then to his executor's executor. If none of these exist, then the rule is that knowledgeable and religious Muslims should consult with great care and appoint a protector who views an orphan's property as fire (i.e., dangerous to misuse). In a city where a reliable, Sunni, religious scholar and jurist is present, his opinion in these matters is authoritative. If there are several such scholars, the one who is the most knowledgeable among them is to be consulted. When no designated person for custody or property guardianship exists, the city's scholar should, based on his judgment regarding the aforementioned matters, assign men and women with the mentioned qualities for the care of the children's lives and property. In matters of Sharia where an Islamic judge (Qazi) is not present, the opinion of such a scholar is like the opinion of a Qazi, and it is mandatory for Muslims to follow it. The government has granted Muslims freedom in matters such as marriage, divorce, custody, guardianship, inheritance, and executorship. It does not force them not to decide these matters among themselves according to their law; rather, it refers such matters to Sharia and Fatwa. As far as I think, these matters belong to this category. If, in reality, it is not so and freedom is limited to some extent, then action is mandatory within the scope of that freedom. Allah is the Granter of success. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

"The woman providing custody (Al-Hazina) has the right over the boy until he no longer needs women [for care], which is estimated at seven years of age, and the fatwa is given on this. She has the right over the girl until she becomes desirable (mushtaha), which is estimated at nine years of age, and the fatwa is given on this."

The woman providing custody has the right over the boy until he becomes independent of women's care, estimated at seven years of age, and the fatwa is based on this. Her right over the girl remains until she reaches a marriageable age, estimated at nine years, and the fatwa is based on this. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

"In the marginal notes of [Allama] Ramli on Al-Bahr, Al-Minhaj, Al-Khulasa, and At-Tatarkhaniyya, it is mentioned that if a child has no father and the period of custody ends, the child should be handed over to the nearest male agnate relative (asaba). However, if it is a girl, she should not be handed over to an agnate relative who is not a mahram (unmarriageable relative)."

In Ramli's marginal notes on Al-Bahr, it is mentioned that in Minhaj, Khulasa, and Tatarkhaniyya, it is stated that if a child has no father and the period of custody ends, the child should be handed over to the nearest male relative (asaba). However, if it is a girl, she shall not be handed over to a non-mahram asaba. (T)

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/265.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/643.

फतवा रज़विया, खंड 13

हर उस पुरुष और स्त्री के लिए आवश्यक है जिसे बच्चों की कस्टडी (परवरिश) या उनके जीवन या संपत्ति की सुरक्षा सौंपी जाए। पिता के बाद बच्चों की संपत्ति का संरक्षण (विलायत) पिता के वसीयतदार (वसी) के पास होता है, यानी वह व्यक्ति जिसे पिता ने मरते समय अपनी संतानों की देखभाल या संपत्ति की सुरक्षा के लिए नियुक्त किया हो। यदि वसीयतदार न हो, तो वसीयतदार का वसीयतदार, फिर दादा, फिर दादा का वसीयतदार, और फिर उसके वसीयतदार का वसीयतदार। यदि इनमें से कोई न हो, तो नियम यह है कि जानकार और धर्मपरायण मुसलमान गहन परामर्श के बाद किसी ऐसे मुसलमान को संरक्षक नियुक्त करें जो अनाथ की संपत्ति को आग (हानिकारक) समझता हो। जिस शहर में कोई विश्वसनीय, सुन्नी, धर्मपरायण विद्वान और न्यायविद् मौजूद हो, इन मामलों में उसी की राय मान्य है। यदि वहाँ कई ऐसे विद्वान हों, तो उनमें से सबसे अधिक ज्ञानी पर ध्यान दिया जाएगा। जब कस्टडी या संपत्ति का कोई कानूनी हकदार न हो, तो शहर का वह विद्वान अपनी राय से, बच्चों के जीवन और संपत्ति की सुपुर्दगी के लिए उक्त गुणों वाले पुरुषों और महिलाओं को नियुक्त करेगा। शरीयत के ऐसे मामलों में जहाँ इस्लामी न्यायाधीश (काजी) मौजूद न हो, उस शहर के विद्वान की राय काजी की राय के समान है, और मुसलमानों के लिए उसका पालन करना अनिवार्य है। सरकार ने विवाह, तलाक, कस्टडी, विलायत, विरासत और वसीयत जैसे मामलों में मुसलमानों को स्वतंत्रता दी है। वह उन्हें बिल्कुल मजबूर नहीं करती कि वे इन मामलों का फैसला अपनी शरीयत के अनुसार न करें, बल्कि वह स्वयं इन मामलों में शरीयत और फतवे की ओर रुख करती है। जहाँ तक मेरा विचार है, ये मामले इसी श्रेणी के हैं। और यदि वास्तव में ऐसा नहीं है बल्कि स्वतंत्रता किसी सीमा तक सीमित है, तो जहाँ तक स्वतंत्रता है, उस पर कार्रवाई करना आवश्यक है। अल्लाह ही सफलता देने वाला है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

"परवरिश करने वाली महिला का लड़के पर तब तक हक है जब तक वह महिलाओं की देखभाल से स्वतंत्र न हो जाए, जिसका अनुमान सात वर्ष की आयु है और इसी पर फतवा दिया जाएगा। और लड़की पर उसका हक तब तक है जब तक कि वह 'मुश्तहा' (युवावस्था के करीब) न हो जाए, जिसका अनुमान नौ वर्ष की आयु है और इसी पर फतवा दिया जाएगा।"

लड़के पर परवरिश करने वाली का हक उस वक्त तक है जब तक वह महिलाओं की निगरानी से स्वतंत्र नहीं हो जाता, जिसका अनुमान सात साल उम्र है और इसी पर फतवा दिया जाएगा। और

लड़की पर उसका हक लड़की के'मुश्तहा' होने तक है, जिसका अनुमान नौ साल की उम्र है और इसी पर फतवा दिया जाएगा। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है:

"बह्र पर रमीली के हाशिये (टिप्पणी) में है कि मिन्हाज, खुलासा और तातारखनिया में उल्लेख है कि यदि बच्चे का पिता न हो और कस्टडी की अवधि समाप्त हो जाए, तो उसे निकटतम पुरुष 'असबा' (रक्त संबंधी) के सुपुर्द किया जाएगा। लेकिन अगर लड़की हो, तो उसे गैर-महरम 'असबा' के सुपुर्द नहीं किया जाएगा।"

बह्र पर रमीली के हाशिये में है कि मिन्हाज, खुलासा और तातारखनिया में उल्लेख है कि अगर बच्चा का पिता न हो और बच्चे की मुद्दत-ए-परवरिश खत्म हो जाए, तो करीब तरीन मर्द 'असबा' के सुपुर्द किया जाएगा, मगर बच्ची हो तो वह गैर-महरम असबा के सुपुर्द नहीं की जाएगी। (त)

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल हज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/265.
2. रद्दुल मुहतार, बाबुल हज़ानत, दारु इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/643.

पृष्ठ 403 / 688

ہر عورت و مرد میں ضرور ہے جسے حضانت یا حفاظت جان یا مال دی جائے بچوں کے مال کو ولایت باپ کے بعد باپ کے وصی کو ہے یعنی جسے وہ کہہ کر مرا ہو کہ میری اولاد کی غور و پرداخت کرنا یا کہا ہو میری جائداد کی نگہداشت کرنا، وصی نہ ہو تو وصی کا وصی، وہ بھی نہ ہو تو دادا، پھر دادا کا وصی، پھر اس کے وصی کا وصی، اور ان میں کوئی نہ ہو تو پھر وہی حکم ہے کہ ذی علم متدین مسلمان نہایت غائر نظر سے مشورہ کر کے کسی ایسے ہی مسلمان کو محافظ مقرر کریں جو یتیم کے مال کو آگ جانتا ہو، اور جس شہر میں کوئی عالم دین معتمد سنی المذہب فقیہ متدین موجود ہو تو ان امور میں رائے اسی کی معتبر ہے، اور جہاں ایسے چند عالم ہوں وہاں جو ان سب میں زیادہ علم والا ہو اس پر نظر ہے، جب کوئی مستحق حضانت و ولایت مال نہ ہو تو وہ عالم شہر اپنی رائے سے بلحاظ امور مذکورہ بچوں کی سپردگی جان و مال کے لئے رجال و نساء باوصاف مذکورہ تجویز کرے، شریعت کی ایسی باتوں میں جہاں قاضی اسلام نہ ہو اس عالم شہر کی رائے رائے قاضی اسلام کی مثل ہے، اور مسلمانوں پر اس کا اتباع لازم ہے، گورنمنٹ نے معاملات مثل نکاح و طلاق و حضانت و ولایت و وراثت و وصایت میں مسلمانوں کو آزادی دی ہے وہ ہرگز مجبور نہیں کرتی کہ تم ان امور کو اپنی شرع کے مطابق باہم فیصلہ نہ کر لو بلکہ وہ خود ان امور میں شریعت و فتوٰی کی طرف رجوع کرتی ہے، جہاں تک میرا خیال ہے یہ امور اسی قبیل سے ہیں، اور اگر فی الواقع ایسا نہیں بلکہ آزادی کسی حد تک محدود کی گئی ہے تو جہاں تک آزادی ہے اس پر کارروائی لازم ہے واللہ الموفق، درمختار میں ہے :

الحاضنة احق بالغلام حتی یستغنی عن النساء وقدر بسبع وبه یفتی واحق بها حتی تشتهي وقدر بتسع وبه یفتی - 1

لڑکے پر پرورش کرنے والی کا حق اس وقت تک ہے جب تک وہ عورتوں کی نگرانی سے مستغنی نہیں ہو جاتا جس کا اندازہ سات سال عمر ہے اور اسی پر فتوٰی دیا جائے گا اور لڑکی پر اس کا حق لڑکی کے مشتہاہ ہونے تک ہے جس کا اندازہ نو سال کی عمر ہے اور اسی پر فتوٰی دیا جائیگا (ت)

ردالمحتار میں ہے :

في حاشية البحر للرملي فی المنهاج والخلاصة و التارخانية ان لم يكن للصبي اب وانقضت الحضانة فمن سواه من العصبة اولی الاقرب فالاقرب غيران الانثی لا تدفع الا الی محرم - 2

بحر پر رملی کے حاشیہ میں ہے کہ منہاج، خلاصہ اور تاتارخانیہ میں مذکور ہے کہ اگر بچہ کا والد نہ ہو اور بچے کی مدت پرورش ختم ہو جائے تو قریب ترین مرد عصبہ کے سپرد کیا جائیگا، مگر بچی ہو تو وہ غیر محرم عصبہ کے سپرد نہ کی جائے گی۔ (ت)

1 درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۵ 2 ردالمحتار باب الحضانة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۴۳

Fatawa-e-Razvia Volume 13

In Tanvir al-Absar, it is stated: The right of custody (Hadanah) is established for the mother unless she is an apostate, unreliable, or married to someone who is not a mahram to the child. After the mother, it goes to the maternal grandmother, then the paternal grandmother, then the full sister, then the maternal half-sister, then the paternal half-sister, then the maternal aunts, and then the paternal aunts in the same order. (T)[1]

In Durr-e-Mukhtar, it is stated: Then the male agnates (Asabat) according to the order of inheritance, except for the transgressor (fasiq) and the insane. If there are no agnates, then the distant kindred (Dhu-al-Arham) shall be entitled (Summarized). (T)[2]

In Burhan, Aini, Bahr, and Radd al-Muhtar, it is stated: It is mentioned in Bada'i that if the brothers and uncles are not trustworthy regarding her (the girl's) person or her property, she shall not be handed over to them. The judge shall look for a trustworthy, just, and honest woman and hand her over to her until she reaches maturity. (T)[3]

In Durr-e-Mukhtar, it is stated: The right of the custodian is forfeited by her marriage to someone who is not a mahram to the child (the minor), and similarly by her residing with those who hate him. (T)[4]

In the same [book], it is stated:

1. Durr-e-Mukhtar, Tanvir al-Absar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264
2. Durr-e-Mukhtar, Tanvir al-Absar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264
3. Radd al-Muhtar, Chapter of Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/638
4. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/265

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 13

तनवीर अल-अबसार में है: बच्चे के पालन-पोषण (हज़ानाह) का अधिकार माता को होगा बशर्ते कि वह धर्मत्यागी (मुरतद), अविश्वसनीय या बच्चे के गैर-महरम से विवाहित न हो। माता के बाद नानी, फिर दादी, फिर सगी बहन, फिर माँ की ओर से सौतेली बहन, फिर पिता की ओर से सौतेली बहन, फिर मौसियां और फिर बुआएं इसी क्रम में होंगी। (त)[1]

दुर-ए-मुख्तार में है: फिर विरासत के क्रम के अनुसार पुरुष संबंधी (असाबात), सिवाय अपराधी (फ़ासिक़) और पागल के। यदि असाबात न हों, तो धू-अल-अरहाम (निकट संबंधी) हकदार होंगे (संक्षिप्त)। (त)[2]

बुरहान, ऐनी, बहर और रद्द अल-मुह्तार में है: बदई में उल्लेख है कि यदि भाई और चाचा लड़की या उसकी संपत्ति की सुरक्षा के मामले में अविश्वसनीय हों, तो लड़की उनके सुपुर्द नहीं की जाएगी। और काज़ी लड़की के बालिग होने तक उसे किसी विश्वसनीय और नेक महिला के सुपुर्द कर देगा। (त)[3]

दुर-ए-मुख्तार में है: पालन-पोषण करने वाली महिला का अधिकार बच्चे के गैर-महरम से विवाह करने या बच्चे के विरोधियों के यहाँ रहने के कारण समाप्त हो जाएगा। (त)[4]

इसी में है:

1. दुर-ए-मुख्तार, तनवीर अल-अबसार, बाब अल-हज़ानाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/264
2. दुर-ए-मुख्तार, तनवीर अल-अबसार, बाब अल-हज़ानाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/264
3. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-हज़ानाह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/638
4. दुर-ए-मुख्तार, बाब अल-हज़ानाह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/265

पृष्ठ 404/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

تنویر الابصار میں ہے: الحضانة تثبت للام الان تکون مرتدة او غیر مأمونة او متزوجة بغیر محرم ثم ام الام ثم ام الاب ثم الاخت لاب وام ثم لام ثم لاب ثم الخالات ثم العمات کذلك۔ [1] پرورش کا حق والدہ کو ہوگا بشرطیکہ وہ مرتد، غیر محتاط اور بچے کے غیر محرم کی منکوحہ نہ ہو، والدہ کے بعد نانی، پھر دادی، پھر حقیقی بہن، پھر ماں کی طرف سے سگی بہن، پھر والد کی طرف سے سگی بہن، پھر خالات اور پھر پھوپھیاں اسی ترتیب سے۔ (ت)

در مختار میں ہے: ثم العصبات بترتیب الارث سوی فاسق و معتوہ ثم اذا لم یکن عصبة فلذوی الارحام [2] (ملخصاً) پھر عصبہ مرد حضرات کی ترتیبِ وراثت پر ماسوائے فاسق اور پاگل کے، اگر عصبات نہ ہوں تو ذوی الارحام حقدار ہوں گے (ملخصاً)۔ (ت)

برہان و عینی و بحر وردالمحتار میں ہے: في البدائع لو کانت الاخوة والاعمام غیر مأمونین علی نفسها اومالها لا تسلم الیهم وینظر القاضی امرأة ثقة عدلة امینة فتسلمها الیها الی ان تبلغ [3]۔ بدائع میں مذکور ہے اگر بھائی اور چچے، لڑکی اور اس کے مال کی حفاظت میں غیر محتاط ہوں تو لڑکی ان کے سپرد نہ کیا جائے گی اور قاضی لڑکی کے بالغ ہونے تک کسی قابل اعتماد مادہ دیانتدار عورت کے سپرد کردے گا۔ (ت)

در مختار میں ہے: الحاضنة یسقط حقها بنکاح غیر محرمه ای الصغیر وکذا بسکنها عند المبغضین له [4]۔ پرورش کرنے والی بچے کے غیر محرم کی منکوحہ ہونے یا بچے کے مخالفین کے ہاں رہائش پذیر ہونے کی بناء پر پرورش صغیر کی حقدار نہ رہے گی۔ (ت)

اسی میں ہے:

1 درمختار تنویر الابصار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۴ 2 درمختار تنویر الابصار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۴ 3 ردالمحتار باب الحضانة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۳۸ 4 درمختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۵

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

Guardian of property: His guardian regarding property is the father, then his executor, then the executor of his executor, then the true grandfather (who is related without an intervening woman), then the grandfather's executor, then the executor of his executor, then the Qazi (judge). (T)

It is in Hadiqah Nadiyyah: In al-'Attabi: If a time is void of a competent ruler, then all affairs belong to the scholars, and it is mandatory for the community to refer to them. If it is difficult for all of them to gather around one person, then each region shall act independently by following its scholars. If there are many in a region, then the most knowledgeable among them is to be followed. It is mentioned in al-'Attabi that when a competent Sharia ruler is not found, then matters will be entrusted to the scholars, so it is incumbent upon the community to refer to the scholars in their affairs. Then, when it becomes difficult for everyone to refer to one scholar, then the people of each region should refer to the scholars of their own region, and if there is a large number of scholars in the region, they should follow the most knowledgeable scholar. (T)

Now that these issues are known, let us move to the inquired case. Fadl al-Haq and Diya al-Haq have passed the age of custody as their ages are over seven years. They should have been handed over to paternal relatives ('asabat). The 'asabah here are half-brothers whom the questioner describes as ill-mannered and also ill-wishers and enemies of the minors. Indeed, among step-relatives, especially where property is involved, it is surprising if there is no ill-will. Therefore, it is necessary to search for another religious and reliable paternal relative for these two children under the aforementioned conditions. The questioner stated orally that Ahmadi Begum is younger than Riyad al-Haq, so both are still in need of custody. The questioner says Allah Jallai is mentally unstable, and Karim-un-Nisa, the real sister, is married to a non-mahram of the children; the same is the case for the half-sisters. Besides their being unreliable, no maternal aunt (khala) of the children was mentioned. It was also heard regarding the paternal aunts (phuphiyan) that they are married to non-mahrams. On this basis, their custody also goes to the brothers, but the same obstacles exist in them. So, for her as well, some paternal relative ('asabah) should be searched for, and if not, then a blood relative (dhul-rahm), and for Ahmadi Begum, her mahram is also required. This was for the protection of life; as for the handing over of property, it is necessary for it to be the father's executor or...

[1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Ma'dhun, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/303 [2] Al-Hadiqah al-Nadiyyah Sharh al-Tariqah al-Muhammadiyyah, Type Three, Maktabah Nuriyah Radawiyah, Faisalabad, 1/351

माल का वली (संरक्षक): बच्चे के माल के बारे में वली बाप होगा, फिर बाप का वसी (निष्पादक), फिर वसी का वसी, फिर हकीकी जद्द सहीह (दादा जो किसी औरत के माध्यम के बिना हो), फिर दादा का वसी, फिर उसके वसी का वसी और फिर क़ाज़ी होगा। (त)

हदीक़ा नदिय्या में है: अत्ताबी में है: यदि समय एक सक्षम शासक से खाली हो, तो सभी मामले विद्वानों (उलेमा) के पास होंगे, और उम्मत के लिए उनकी ओर रुजू करना अनिवार्य है। यदि उन सबका एक व्यक्ति पर एकत्रित होना कठिन हो, तो प्रत्येक क्षेत्र अपने विद्वानों के अनुसरण में स्वतंत्र होगा। यदि किसी क्षेत्र में विद्वान अधिक हों, तो उनमें जो सबसे अधिक विद्वान हो, उसका अनुसरण किया जाए। अत्ताबी में उल्लेख है कि जिस समय अधिकार संपन्न शरीयत का हाकिम न पाया जाए, तो फिर मामले उलेमा के सुपुर्द करार पाएंगे, तो उम्मत पर लाज़िम है कि वह अपने मामलों में उलेमा की तरफ रुजू करे। फिर जब सबका एक आलिम की तरफ रुजू करना मुश्किल हो, तो फिर हर इलाके वाले अपने-अपने इलाके के उलेमा की तरफ रुजू करें, और अगर इलाके में उलेमा की अधिकता हो, तो फिर सबसे बड़े आलिम का अनुसरण करें। (त)

जब ये मसले मालूम हो गए, अब पूछे गए मामले की ओर चलते हैं। फ़ज़लुल हक़ और ज़ियाउल हक़ तो परवरिश (हिज़ानत) की उम्र की सीमा से निकल चुके हैं क्योंकि उनकी उम्र सात साल से अधिक है। उन्हें चाहिए था कि वे पिता पक्ष के रिश्तेदारों (असबात) के सुपुर्द होते। यहाँ 'असबा' सौतेले भाई हैं जिन्हें सवाल करने वाला बदचलन बताता है और नाबालिगों का बुरा चाहने वाला और दुश्मन भी। वास्तव में सौतेलों में, विशेष रूप से जहाँ जायदाद की बात हो, बुरा न चाहना ही आश्चर्य की बात है। इसलिए लाज़िम है कि इन दोनों बच्चों के लिए कोई और दीनदार और भरोसेमंद पिता पक्ष का रिश्तेदार (असबा) ऊपर बताई गई शर्तों के अनुसार ढूँढा जाए। सवाल करने वाले ने मौखिक रूप से अहमदी बेगम को रियाज़ुल हक़ से भी छोटी बताया, तो ये दोनों अभी परवरिश (हिज़ानत) के हकदार हैं। अल्लाह जलाई को सवाल करने वाला मानसिक रूप से अस्थिर बताता है और करीमुन्निसा, जो सगी बहन है, बच्चों के गैर-महरम के निकाह में है, वैसे ही सौतेली बहनें भी। उनके गैर-भरोसेमंद होने के अलावा, बच्चों की किसी खाला (मौसी) का ज़िक्र नहीं आया। फूफियों के बारे में भी सुना गया कि वे गैर-महरमों के निकाह में हैं। इस आधार पर उनकी परवरिश भी भाइयों की तरफ आती है, लेकिन उनमें भी वही रुकावटें हैं। तो उसके लिए भी कोई पिता पक्ष का रिश्तेदार (असबा) ढूँढा जाना चाहिए, और अगर वह न हो तो ननिहाल पक्ष का कोई करीबी रिश्तेदार (ज़ुल रहम) ढूँढा जाना

चाहिए, और अहमदी बेगम के लिए उसका महरम भी ज़रूरी है। यह जान की हिफाज़त के लिए था; रही बात माल की सुपुर्दगी की, तो उसके लिए लाज़िम है कि बाप का वसी या...

1 दुर्रे मुख्तार किताबुल माज़ून मतबा मुजतबाई दिल्ली 303/2 2 अल-हदीक़ा अल-नदिय्या शरह अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया अल-नउ अल-सालिस मकतबा नूरिय्या रज़विय्या फैसलाबाद 351/1

पृष्ठ 405 का 688

ولیه في المال ابوه ثم وصیه ثم وصي وصیه ثم جده الصحیح ثم وصیه ثم وصي وصیه ثم القاضي[1] ۔ بچے کے مال کے متعلق والی والد ہوگا پھر والد کا وصی پھر وصی کا وصی پھر حقیقی جد صحیح (جو کسی عورت کے واسطے کے بغیر ہو) پھر دادے کا وصی پھر اس کے وصی کا وصی اور پھر قاضی ہوگا۔ (ت)

حدیقہ ندیہ میں ہے : في العتابي اذا خلا الزمان من سلطان ذی کفایة فالامور کلة الی العلماء ویلزم الامة الرجوع الیهم فاذا عسر جمعهم علی واحد استقل کل قطر باتباع علمائه فان کثروا فالمتبع اعلمهم[2] ۔ عتابی میں مذکور ہے کہ جس وقت بااختیار حاکم شرعی نہ پایا جائے تو پھر معاملات علماء کے سپرد قرار پائیں گے تو امت پر لازم ہے کہ وہ علماء کی طرف اپنے معاملات میں رجوع کرے، پھر جب سب کا ایک عالم کی طرف رجوع کرنا مشکل ہو تو پھر ہر علاقہ والے اپنے اپنے علاقہ کے علماء کی طرف راجع ہوں، اور اگر علاقہ میں علماء کی کثرت ہو تو پھر سب سے بڑے عالم کی اتباع کریں۔ (ت)

جب یہ مسائل معلوم ہوئے اب صورت مستفسرہ کی طرف چلئے ، فضل حق و ضیاء الحق تو حد حضانت سے نکل چکے ہیں کہ ان کی عمریں سات سال سے زائد ہیں، انہیں چاہئے تھا کہ عصبات کے سپرد ہوں، عصبہ یہاں سوتیلے بھائی ہیں جنہیں سائل بد چلن بتاتا ہے اور نابالغوں کا بد خواہ و دشمن بھی، اور فی الواقع سوتیلوں میں خصوصاً جہاں جائداد کا قدم درمیان ہو بدخواہی نہ ہونا ہی تعجب ہے ، تو لازم ہے کہ ان دونوں بچوں کے لئے کوئی اور عصبہ دیندار معتمد بشرائط مذکورہ تلاش کیا جائے ، سائل نے زبانی احمدی بیگم کو ریاض الحق سے بھی چھوٹی بتایا تو یہ دونوں ابھی حضانت طلب ہیں، اللہ جلائی کو سائل مختل الحواس بتاتا ہے اور کریم النساء، حقیقی بہن بچوں

کے نامحرم کے نکاح میں ہے یو نہی سوتیلی بہنیں بھی ، اور ان کا نا معتمد ہونا علاوہ ، بچوں کی کوئی خالہ بیان میں نہ آئی، پھوپھیوں کی نسبت بھی مسموع ہوا کہ نامحرموں کے نکاح میں ہیں ، اس تقدیر ان کی حضانت بھی بھائیوں کی طرف آتی ہے مگر ان میں وہی موانع ہیں تو اس کے لئے بھی کوئی عصبہ اور وہ نہ ہو تو ذوم رحم تلاش کرنا چاہئے اور احمدی بیگم کے واسطے اس کا محرم بھی درکار ، یہ حفاظت جان تھی، رہی سپردگی مال اس کے لئے لازم کہ باپ کا وصی یا

[1] درمختار کتاب المأذون مطبع مجتبائی دہلی ۳۰۳/۲ [2] الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية النوع الثالث مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۳۵۱/۱

Verify the executor of the executor, i.e., the father's father's executor. For example, if Haji Kifayatullah bequeathed the care of these children or his property to Karim-un-Nisa, or his sister Najm-un-Nisa, or Sahib-un-Nisa, or any other person, the minors' assets shall be entrusted to them. These are three points of search and investigation. If after searching through these, no person meeting these conditions is found, then the opinion of the city's scholar (alim) shall be sought. This issue pertains to 'Pehli Bhent' (a location), and there is no scholar of the aforementioned qualities there except Maulana Wasi Ahmad Sahib Muhaddith Surati (may his blessings continue). Therefore, it is necessary to refer to him. It is obligatory for him to carefully consider and thoroughly investigate all mentioned issues and the interests of the minors, their assets, and what is due to/from them. He should work with firm resolve and complete caution, and involve the wise and pious Ahl-e-Sunnat leaders of the city in consultation. "And with Allah is protection and success" (Protection and success come from Allah's help. T). And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

Problem 174: A woman's husband passed away. Two months after his death, a boy was born to her. After some time, when the 'iddah' (waiting period) passed, the woman remarried. She has been raising the child until now, as he is nearly three years old. During this time, the child's grandfather wanted to raise him, but the woman did not give him up, saying that he should take him after he becomes sensible. Now, the question is: how long is the mother entitled to raise this child? If the grandfather takes the child to keep him with him, should he designate some food or maintenance for the mother according to Sharia, or give it as compensation? And does the boy have any right to the jewelry that is with his mother? If so, how much? Please explain, may you be rewarded.

The Answer: If the woman has married a mahram relative of the boy, for example, a real uncle, the boy will stay with the mother until he reaches seven years of age. Until this period, the woman will receive a monthly allowance for raising him, which will be obligatory from the boy's own wealth. If the boy has no wealth, it will be the responsibility of his grandfather.

| In Al-Durr al-Mukhtar, it is stated that the guardian (hazinah) is entitled to a guardianship fee, which is separate from the breastfeeding fee and maintenance, as mentioned in Al-Bahr from Al-Sirajiyyah. In the books of the Shafi'is, it is referred to as the maintenance of guardianship. | It is stated in Durr-e-Mukhtar that the female

guardian will be entitled to a fee which is in addition to the breastfeeding fee and the child's maintenance, as Al-Bahr has quoted from Sirajiyah, and it is in the books of the Shafi'i scholars that the cost of upbringing... |

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

वसी के वसी, यानी दादा के वसी की तहकीक करें। मिसाल के तौर पर, अगर हाजी किफायतुल्लाह ने इन बच्चों या अपनी जायदाद की देखरेख के लिए करीम-उन-निसा, या अपनी बहन नज्म-उन-निसा, या साहिब-उन-निसा, या किसी और व्यक्ति को वसीयत की हो, तो नाबालिगों का माल उन्हीं को सौंपा जाएगा। ये तलाश और तहकीक के तीन मुकाम हैं। अगर तलाश के बाद भी इन शर्तों वाला कोई व्यक्ति न मिले, तो शहर के आलिम की राय ली जाएगी। यह मामला पहली भेंत (स्थान) का है और वहाँ मौलाना वसी अहमद साहब मुहद्दिस सूरती (दामत फुयूज़ुहुम) के अलावा उक्त गुणों वाला कोई आलिम नहीं है। अतः उनकी ओर रुजू करना आवश्यक है। उन पर वाजिब है कि गौर-ओ-फिक्र और पूरी तहकीकात के बाद नाबालिगों के सभी मामलात, उनके माल और उनकी जरूरतों पर गहरी नज़र डालें। वे दृढ़ता और पूरी एहतियात के साथ काम लें और शहर के राय रखने वाले दीनदार सुन्नी बुज़ुर्गों को मशवरे में शामिल करें। "व बिल्लाहि अल-इसमतु वत-तौफीक" (और अल्लाह की मदद से ही परहेज़गारी और तौफीक मिलती है)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसला 174: एक औरत का शौहर मर गया। इंतकाल के दो महीने बाद उस औरत के लड़का पैदा हुआ। कुछ समय बाद जब इद्दत की मुद्दत गुजर गई, तो औरत ने दूसरा निकाह कर लिया। वह अब तक इस बच्चे की परवरिश कर रही है, जो करीब तीन साल का है। इस बीच बच्चे के दादा ने चाहा था कि मैं बच्चे की परवरिश करूँलेकिन औरत ने नहीं दिया और कहा कि जब वह होशियार हो जाए तब ले लेना। अब सवाल यह है कि माँ इस बच्चे की परवरिश कब तक करने की हकदार है? अगर दादा बच्चे को अपने पास रखने के लिए ले ले, तो क्या उसे शरीयत के मुताबिक माँ के लिए कुछ खुराक या नफ़का तय करना चाहिए या मुआवजे के तौर पर देना चाहिए? और माँ के पास जो जेवर हैं, क्या उनमें इस लड़के का कोई हक है? अगर है तो कितना? बयान करें और अज्र पाएँ।

अल-जवाब: अगर औरत ने लड़के के किसी महरम, जैसे सगे चाचा से निकाह किया है, तो लड़का सात साल की उम्र तक माँ ही के पास रहेगा। इस मुद्दत तक औरत को उसकी परवरिश के लिए मासिक वजीफा मिलेगा, जो लड़के के माल में से देना वाजिब होगा। अगर लड़के का अपना माल न हो, तो यह उसके दादा पर होगा।

| 'अल-दुर्रुल मुख्तार' में है कि हाज़िना (परवरिश करने वाली) परवरिश की उजरत (मजदूरी) की हकदार है, जो दूध पिलाने की उजरत और नफ़के के अलावा है, जैसा कि 'अल-बहर' में 'सिराजिया' से नक़ल किया गया है। और शाफई हज़रात की किताबों में इसे परवरिश का खर्च कहा गया है। | 'दुर्रे मुख्तार' में है कि परवरिश करने वाली उजरत की हकदार होगी जो बच्चे को दूध पिलाने की उजरत और नफ़का-ए-वलद (बच्चे का खर्च) के अलावा होगी, जैसा कि 'बहर' ने 'सिराजिया' से नक़ल किया है और शाफई हज़रात की किताबों में है कि परवरिश का खर्चा... |

पृष्ठ 406 का 688

وصی وصی یادا یعنی پدر پدر کا وصی وصی کی تحقیق کریں، مثلاً حاجی کفایت اللہ نے اگر کریم النساء یا اپنی بہن نجم النساء یا صاحب النساء یا جس کسی شخص کو ان بچوں یا اپنی جائداد کی نگہداشت کی وصیت کی ہو نابالغوں کے مال اسی کو سپرد کئے جائیں گے، یہ تین مقام تلاش و تحقیق کے ہیں، ان میں سے جس میں بعد تلاش بھی کوئی شخص ان شرائط کا نہ ملے تو عالم شہر کی رائے لی جائے گی۔ یہ مسئلہ پہلی بھینٹ کا ہے اور وہاں ان صفات مذکورہ کا کوئی عالم نہیں سوا مولانا وصی احمد صاحب محدث سورتی دامت فیوضہم کے، تو ان کی طرف رجوع لازم اور ان پر واجب کے بعد غور تمام و تحقیقات تام جملہ مسائل مذکورہ و مصالح نابالغین و مالہم و ماعلیہم پر نظر غائر فرما کر جزم واحتیاط کامل سے کام لیں اور ذی رائے دیندار اہلسنت عمائد شہر کو رائے و شوری میں شریک کریں ، وباللہ العصمۃ والتوفیق (اور اللہ تعالیٰ کی امداد سے ہی عصمت اور توفیق ہے۔ت) واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۴: ایک عورت کا خاوند فوت ہو گیا، بعد انتقال دو ماہ اس عورت کے لڑکا پیدا ہوا اور بعد چندے زمانہ عدت گزرنے پر عورت نے نکاح ثانی کر لیا، پرورش اس بچے کی اب تک کہ قریب تین سال کے ہوئے وہ عورت کرتی ہے اس بچے کے دادا نے اس درمیان میں یہ چاہا تھا کہ اس بچہ کی پرورش میں کروں لیکن اس عورت نے نہیں دیا اور کہا کہ بعد ہوشیار ہو جانے کے لے لینا، اب صورت مسئولہ یہ ہے کہ اس بچہ کی پرورش اس کی والدہ کب تک کرنے کی مستحق ہے، اگر دادا بچہ کا اس بچہ کو اپنے پاس رکھنے کو لے تو اس کی ماں کو بطریقہ شرعی کچھ خوراک یا نفقہ معین کرنا یا معاوضہ میں دینا چاہئے یا نہیں، اور اس زیور میں اس لڑکے کا کچھ حق ہے یا نہیں جو اس کی ماں کے پاس ہے، اگر ہے تو کس قدر ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: عورت نے اگر پسر کے محرم مثلاً حقیقی چچا سے نکاح کیا ہے تو لڑکا سات برس کی عمر تک ماں ہی کے پاس رہے گا اور اس مدت تک عورت اسی کے پالنے پر ماہانہ پائے گی جس کا وجوب لڑکے کے مال میں ہو گا اور لڑکے کا مال نہ رہے تو اس کے دادا پر ہوگا۔

| فی الدر المختار تستحق الحاضنة اجرة الحضانة وھی غیر اجرة ارضاعہ ونفقته کما فی البحر عن السراجیة وفی کتب الشافعیة مؤنة الحضانة. | در مختار میں ہے کہ پرورش کرنے والی اجرت کی مستحق ہوگی جو بچے کو دودھ پلانے کی اجرت اور نفقہ ولد کے علاوہ ہوگی، جیسا کہ بحر نے سراجیہ سے نقل کیا ہے اور شافعی حضرات کی کتب میں ہے کہ پرورش کا خرچہ۔ |

Fatawa Ridawiyya Volume 13 | Page 13

| (Arabic) In the property of the ward, if he has property, otherwise upon the one who is obliged to provide his maintenance. Our teacher said: and our principles require it, so the fatwa is given accordingly. Summarized (1). In Radd al-Muhtar from al-Shami from al-Barjandi: The mother is compelled to custody if she does not have a husband, and the maintenance is upon the father. Faqih Abu Ja'far said: She is compelled and the expenditure on her is from the property of the young girl, and this was adopted by Faqih Abu al-Layth (2). Summarized. | (Urdu) It will be paid from the wealth of the child under custody if the child has his own wealth; if the child does not have his own wealth, then it will be upon the same person on whom the child's maintenance is obligatory. Our Shaykh said: our rules also demand the same, therefore, the fatwa will be given on this. Summary. In Radd al-Muhtar, Shami has quoted from Barjandi that when there is no husband, the mother will be compelled to provide custody, and the cost of custody will be on the child's father, and Faqih Abu Ja'far said that for the child's upbringing, the mother will be compelled and the expenditure will be paid from the child's own wealth. This was adopted by Faqih Abu al-Layth Samarqandi. Summary (T). |

Yes, if a close female relative of the boy, who is capable of custody, for example, a maternal or paternal aunt, agrees to provide custody without a fee, in such a case where the boy has wealth, to save his wealth, the mother of the boy will be told: either keep him for free or give him to this other person so she may provide free upbringing.

| (Arabic) In Radd al-Muhtar: If the volunteer is not a stranger, and the minor has property, it is said to the mother: either you keep him for free or you hand him over to the paternal aunt, for example, the volunteer, to protect his property if he has property (3). (Abridged). | (Urdu) In Radd al-Muhtar it is: If the woman volunteering free upbringing is not a stranger (she is a mahram) and the child has his own wealth, the mother will be told that either you raise the child for free or hand him over to the mahram woman, for example, the paternal aunt, who is volunteering for free upbringing, so that the child's wealth remains protected. (Abridged). (T) |

And the woman whom she married is not a mahram to the boy, so the woman's right of custody is terminated. The boy should be taken from her immediately. If there is no maternal grandmother, then the paternal grandmother, then sister, then maternal aunt, then paternal aunt, whoever among them is capable of custody and is

not in the marriage of a stranger to the boy. He shall be kept with her until seven years of age, and if there is no such woman among the women, then the grandfather.

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/636
3. Radd al-Muhtar, Chapter of Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/638

फतवा रज़विया जिल्द 13 | पेज 13

| (अरबी) बच्चे के माल में से, अगर उसके पास माल है, अन्यथा उस पर जिसकी जिम्मेदारी बच्चे का खर्चा (नफ़का) उठाना है। हमारे उस्ताद ने फ़रमाया: हमारे नियम भी यही मांग करते हैं, इसलिए इसी पर फतवा दिया जाएगा। संक्षेप में (1)। रद अल-मुहतार में शामी ने बरजंदी से नकल किया है: यदि पति न हो तो माँ को पालन-पोषण के लिए मजबूर किया जाएगा, और खर्चा पिता पर होगा। फकीह अबू जाफ़र ने फ़रमाया: उसे मजबूर किया जाएगा और खर्चा बच्चे के माल से लिया जाएगा, और फकीह अबू लैथ ने भी यही अपनाया है (2)। संक्षेप में। | (उर्दू) पालन-पोषण पाने वाले बच्चे के माल से अदा होगा अगर बच्चे का अपना माल हो, अगर बच्चे का अपना माल न हो तो फिर यह उसी शख्स पर होगा जिस पर बच्चे का नफ़का वाजिब है। हमारे शेख ने फ़रमाया: हमारे कवाइद (नियम) भी यही तकाज़ा करते हैं, लिहाज़ा इस पर फतवा दिया जाएगा। मुख्तसर (संक्षेप)। रद अल-मुहतार में शामी ने बरजंदी से नकल किया है कि जब खाविन्द (पति) न हो तो माँ को परवरिश पर मजबूर किया जाएगा और परवरिश का खर्चा बच्चे के वालिद (पिता) पर होगा, और अबू जाफ़र फकीह ने फ़रमाया कि बच्चे की परवरिश के लिए माँ को मजबूर किया जाएगा और खर्चा खुद बच्चे के माल से अदा किया जाएगा, इसी को फकीह अबू लैथ समरकंदी ने लिया है। मुख्तसर (त)। |

हाँ, अगर लड़के की कोई करीबी रिश्तेदार औरत जो हज़ानत (पालन-पोषण) की अहल हो, मिसाल के तौर पर खाला (मौसी) या फूफी, बिना उजरत (पारिश्रमिक) के हज़ानत पर राज़ी हो, तो इस सूरत में कि लड़का माल रखता है, उसका माल बचाने के लिए लड़के की माँ से कहा जाएगा कि या तो मुफ्त में अपने पास रख या फिर उस दूसरी को दे दे कि मुफ्त परवरिश करे।

| (अरबी) रद अल-मुहतार में है: अगर मुफ्त सेवा देने वाली गैर-अजनबी (महरम) हो, और बच्चे का माल हो, तो माँ से कहा जाएगा: या तो तुम उसे मुफ्त में रखो या उसे फूफी, मिसाल के तौर पर जो मुफ्त सेवा दे रही है, उसे सौंप दो, ताकि उसके माल की सुरक्षा हो सके, अगर उसका माल है (3)। (मलख्खासन - संक्षेपित)। | (उर्दू) रद अल-मुहतार में है: अगर मुफ्त में परवरिश करने वाली गैर-अजनबी औरत (महरम) हो और बच्चा का अपना माल हो तो माँ को कहा जाएगा कि तू बच्चे की मुफ्त में परवरिश कर या फिर मुफ्त परवरिश करने वाली महरमा मिसाल के तौर पर फूफी को सौंप दे, ये इसलिए कि बच्चा का माल महफूज़ रहे। (मलख्खासन)। (त) |

और जिस (मर्द) से औरत ने निकाह किया, वह लड़के का महरम नहीं है, तो औरत का हज़ानत का हक साकित (समाप्त) हो गया। लड़का उससे फौरन ले लिया जाए। और अगर नानी न हो तो दादी, फिर बहन, फिर खाला, फिर फूफी, जो इनमें हज़ानत के काबिल हो और लड़के के अजनबी के निकाह में न हो। उसके पास सात साल की उम्र तक रखा जाए, और अगर औरतों में कोई ऐसी न हो तो दादा।

---

1. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-हज़ानत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/264
2. रद अल-मुहतार, बाब अल-हज़ानत, दारु इहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/636
3. रद अल-मुहतार, बाब अल-हज़ानत, दारु इहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/638

पृष्ठ 407/688

| فی مال المحضون لوله مال و الا فعلی من تلزمه نفقته قال شیخنا وقواعدنا تقتضیه فیفتی به ۱ اھ مختصرا وفي ردالمختار عن الشامی عن البرجندی تجبر الام علی الحضانة اذالم یکن لها زوج والنفقة علی الاب ، وقال الفقیه ابو جعفر تجبر وینفق علیها من مال الصغیرة و به اخذ الفقیه ابواللیث ۲ اھ مختصرا ۔ | پرورش پانے والے بچے کے مال سے ادا ہوگا اگر بچے کا اپنا مال ہو ، اگر بچے کا اپنا مال نہ ہو تو پھر یہ اسی شخص پر ہوگا جس پر بچے کا نفقہ واجب، ہمارے شیخ نے فرمایا ہمارے قواعد بھی یہی تقاضا کرتے ہیں لہٰذا اس پر فتوٰی دیا جائے گا اھ مختصراً۔ رد المحتار میں شامی نے برجندی سے نقل کیا ہے کہ جب خاوند نہ ہو تو ماں کو پرورش پر مجبور کیا جائے گا اور پرورش کا خرچہ بچے کے والد پر ہوگا، اور ابو جعفر فقیہ نے فرمایا کہ بچے کی پرورش کے لئے ماں کو مجبور کیا جائے گا اور خرچہ خود بچے کے مال سے ادا کیا جائے گا ، اسی کو فقیہ ابواللیث سمرقندی نے لیا ہے اھ مختصراً (ت) |

ہاں اگر لڑکے کی کوئی قریب رشتہ دار عورت لائق حضانہ مثلاً خالہ یا پھوپھی بلا اجرت حضانت پر راضی ہو تو اس صورت میں کہ لڑکا مال رکھتا ہے اور اس کا مال بچانے کو لڑکے کی ماں سے کہا جائے گا یا تو مفت اپنے پاس رکھ یا اس دوسرے کو دے دے کہ مفت پرورش کرے،

| في ردالمختار ان کان المتبرع غیر اجنبي . والصغیرله مال یقال للام اما ان تمسکیه مجاناً او تدفعیه للعمة مثلا المتبرعة صونا لماله لوله مال ۳ (ملخصاً) | ردالمحتار میں ہے : اگر مفت میں پرورش کرنے والی غیر اجنبی عورت (محرم) ہو اور بچہ کا اپنا مال ہو تو ماں کو کہا جائے گا کہ تو بچے کی مفت میں پرورش کر یا پھر مفت پرورش کرنے والی محرمہ مثلاً پھوپھی کو سونپ دے ، یہ اس لئے کہ بچہ کا مال محفوظ رہے ، (ملخصاً)۔ (ت) |

اور جس سے عورت نے نکاح کیا لڑکے کا محرم نہیں تو عورت کا حق حضانت ساقط ہوگیا لڑکا اس سے فوراً لے لیا جائے اور نانی وہ نہ ہو تو دادی پھر بہن پھر خالہ پھر پھوپھی جوان میں قابل حضانت ہو کہ لڑکے کے اجنبی کے نکاح میں نہ ہو اسی کے سات سال کی عمر تک رکھا جائے اور عورتوں میں کوئی ایسی نہ ہو تو دادا

---

۱ در مختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۴ ۲ ردالمحتار باب الحضانة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۳۶ ۳ ردالمحتار باب الحضانة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۳۸

...take it, whatever jewelry his father had gifted to his mother, the boy has no right in it. Otherwise, after allocating the shares of the obligatory heirs (Ashab-ul-Fara'id), the remainder belongs to the son. For example, if his father has no heirs except for a wife, father, and son, then after clearing debts and fulfilling any will, the estate will be divided into 24 parts: 3 parts for the wife, 4 for the father, and 17 for the son. And Allah Almighty knows best.

Problem 128: 7 Shaban 1306 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid died leaving behind a wife, a minor boy, a minor girl, a widowed adult married daughter, and a brother. The wife, who is the mother of these children, married a stranger who is not a relative of these children. The boy is four years old and the girl is eight. The mother wants to marry her off at a certain place, but the uncle does not agree; he wants to marry her to his nephew, i.e., his other brother's son. In this situation, does the authority over these minors lie with the mother or the uncle? And who has the right to their custody? There is no maternal or paternal grandmother for the minors, and the maternal aunt and two paternal aunts are not willing to keep them. State the ruling and be rewarded.

The Answer: In the queried situation, no one except the uncle has the authority over the marriage of these minors. While he is present, the mother has no involvement in the marriage.

[Table/Box]: - Arabic: In Tanwir al-Absar: If there is no agnate guardian, then guardianship belongs to the mother. (1) - Urdu: In Tanwir al-Absar: If there is no agnate guardian, then guardianship will be obtained by the mother. (T)

And since she has married a stranger, she also has no right to the custody of these children.

[Table/Box]: - Arabic: In al-Durr al-Mukhtar: Custody belongs to the mother unless she is immoral or is married to someone who is not a mahram to the minor. (2) (Summary) - Urdu: In al-Durr al-Mukhtar: The right of upbringing belongs to the mother, but not when she is immoral or married to a non-mahram of the child. (Summary) (T)

Instead, the boy [up to seven] years and the girl until nine years of age should stay with their widowed sister. If she does not keep them, then with the maternal aunt. If she also does not accept, then with the paternal aunts.

[Table/Box]: - Arabic: In al-Durr al-Mukhtar: Then after the mother, if she dies... - Urdu: In al-Durr al-Mukhtar: If the mother dies or [refuses] to accept the child...

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press Delhi, 1/193 2. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Custody, Mujtabai Press Delhi, 1/263 Page 408 of 688

...ले ले, जो ज़ेवर उसके बाप ने उसकी माँ को हिबा (उपहार) कर दिया हो उसमें लड़के का हक़ नहीं, वरना फ़र्ज़ वारिसों के हिस्से निकालने के बाद बाक़ी लड़के का है। मिसाल के तौर पर अगर उसके बाप का सिवा ज़ौजा (पत्नी), वालिद (पिता) और बेटे के कोई वारिस न हो, तो कर्ज़ और वसीयत अदा करने के बाद २४ हिस्से होकर ३ हिस्से ज़ौजा को, ४ वालिद को और १७ बेटे को मिलेंगे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १२८: ७ शाबान १३०६ हिजरी उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने एक ज़ौजा, एक नाबालिग़ लड़का, एक नाबालिग़ लड़की और एक बालिग़ शादीशुदा बेवा बेटी और एक भाई छोड़कर इंतक़ाल किया। ज़ौजा ने, जो इन बच्चों की माँ है, एक अजनबी से निकाह कर लिया जो इन बच्चों का रिश्तेदार नहीं है। लड़का चार साल का है और लड़की आठ साल की। उसकी माँ एक जगह उसका निकाह करना चाहती है, चाचा वहाँ राज़ी नहीं, वह अपने भतीजे यानी दूसरे भाई के बेटे से निकाह करना चाहता है। इस सूरत में इन नाबालिग़ों के निकाह का इख़्तियार माँ को है या चाचा को? और उन्हें अपने पास रखने का हक़ किसे है? नाबालिग़ों की नानी-दादी कोई नहीं, ख़ाला और दो फूफ़ियाँ उन्हें अपने पास रखने पर राज़ी नहीं। जवाब दें और सवाब पायें।

जवाब: पूछी गई सूरत में इन नाबालिग़ों के निकाह का इख़्तियार चाचा के सिवा किसी को नहीं, उसके होते हुए माँ निकाह में कोई दख़ल नहीं रखती।

[तालिका]: - अरबी: तनवीरुल अबसार में: यदि कोई 'असबा' वली न हो, तो विलायत माँ की होती है। (१) - उर्दू: तनवीरुल अबसार में है: अगर कोई असबा वली न हो तो फिर विलायत माँ को हासिल होगी। (त)

और जब कि वह अपना निकाह एक अजनबी शख़्स से कर चुकी तो उसे इन बच्चों को रखने का भी इख़्तियार नहीं।

[तालिका]: - अरबी: दुर्रे मुख़्तार में: परवरिश माँ का हक़ है, जब तक कि वह बदचलन न हो या नाबालिग के ग़ैर-मेहरम से विवाहित न हो। (२) (संक्षेप में) - उर्दू: दुर्रे मुख़्तार में है: परवरिश का हक़ माँ को है मगर जब वह फ़ाजिरा हो या बच्चे के ग़ैर-मेहरम की मनकूहा (विवाहित) हो तो फिर नहीं। (संक्षेप में) (त)

बल्कि लड़का [सात] बरस और लड़की नौ बरस की उम्र तक अपनी बेवा बहन के पास रहें, और वह न रखे तो ख़ाला के पास, वह भी क़ुबूल न करे तो फूफ़ियों के पास।

[तालिका]: - अरबी: दुर्रे मुख़्तार में: फिर माँ के बाद, यदि वह मर जाए... - उर्दू: दुर्रे मुख़्तार में है: माँ फ़ौत हो जाए या बच्चे को क़ुबूल [न करे]...

फुटनोट्स: १. दुर्रे मुख़्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाब अल-वली, मतबा मुज्तबाई दिल्ली १/१९३ २. दुर्रे मुख़्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाब अल-हज़ानाह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली १/२६३ पेज 408 of 688

لے لے، جو زیور اس کے باپ نے اس کی ماں کو ہبہ کردیا ہوا اس میں لڑکے کا حق نہیں ورنہ بعد فرض اصحاب فرائض باقی لڑکے کا ہے مثلاً اس کے باپ کا سوا زوجہ و پدر و پسر کے کوئی وارث نہ ہو تو بعد دین و وصیت ۲۴ حصے ہو کر ۳ حصے زوجہ اور ۴ والد ۱۷ پسر کو ملیں گے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۸: ۷ شعبان ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک زوجہ اور ایک لڑکا ایک لڑکی نابالغ اور ایک بیٹی بالغہ منکوحہ بیوہ اور ایک بھائی چھوڑ کر انتقال کیا، زوجہ نے کہ اس بچے کی ماں ہے ایک اجنبی سے نکاح کر لیا جو ان بچوں کا رشتہ دار نہیں، لڑکا چار برس کا ہے اور لڑکی آٹھ برس کی، اس کی ماں ایک جگہ اس کا نکاح کیا چاہتی ہے، چچا وہاں راضی نہیں اپنے بھتیجے یعنی دوسرے بھائی کے پسر سے نکاح کرنا چاہتا ہے، اس صورت میں ان نابالغوں کے اختیارِ ماں کو ہے یا چچا کو؟ اور ان کے رکھنے کا اختیار کسے ہے؟ نابالغوں کی نانی دادی کوئی نہیں، خالہ اور دو پھوپھیاں انہیں اپنے پاس رکھنے پر راضی نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں ان نابالغوں کے نکاح کا اختیار چچا کے سوا کسی کو نہیں، اس کے ہوتے ہوئے ماں نکاح میں کچھ دخل نہیں رکھتی۔

[باکس]: - فی تنویر الابصار لم تکن عصبة فالولایة للام ۱۔ - تنویر الابصار میں ہے: اگر کوئی عصبہ ولی نہ ہو تو پھر ولایت ماں کو حاصل ہوگی۔ (ت)

اور جبکہ وہ اپنا نکاح ایک اجنبی شخص سے کر چکی تو اسے ان بچوں کے رکھنے کا بھی اختیار نہیں،

[باکس]: - فی الدر المختار الحضانة للام الان تکون فاجرة او متزوجة بغیر محرم الصغیر ۲ اھ مختصراً۔ - در مختار میں ہے: پرورش کا حق ماں کو ہے مگر جب وہ فاجرہ ہو یا بچے کے غیر محرم کی منکوحہ ہو تو پھر نہیں اھ مختصراً (ت)

بلکہ لڑکا [۷] برس اور لڑکی نو برس کی عمر تک اپنی بیوہ بہن کے پاس رہیں، اور وہ نہ رکھے تو خالہ کے پاس، وہ بھی قبول نہ کرے تو پھوپھیوں کے پاس،

[باکس]: - فی الدر المختار ثم بعد الام بان ماتت - در مختار میں ہے: ماں فوت ہوجائے یا بچے کو قبول [نہ کرے]

۱ در مختار شرح تنویر الابصار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۳ ۲ در مختار شرح تنویر الابصار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۳ Page 408 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Arabic Side]: ...if she does not accept or is married to a stranger (non-mahram to the child), then the maternal grandmother, then the paternal grandmother, then the sister, then the maternal aunts, then the paternal aunts, abbreviated. In Radd al-Muhtar: The female custodian is not compelled if she is not uniquely designated for it, because the child's right is not lost due to the presence of someone else to provide custody. She is compelled if she is uniquely designated due to the absence of others who can provide custody, so that the child's right is not lost. Abbreviated. The complete investigation is in it, and this is the summary of the reconciliation between two different reports. In al-Durr al-Mukhtar: The female custodian, whether the mother or someone else, has more right to the boy until he no longer needs women [for care], estimated at seven years, and this is what is fatwa-given. And for a young girl until she becomes desirable, estimated at nine years, and this is what is fatwa-given. From Al-Ilteqat. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Side]: ...does not do so, or is the wife of someone non-mahram to the child, then after the mother, the maternal grandmother, then the paternal grandmother, then the sister, then maternal aunts, then paternal aunts are eligible in order. (Summarized). And it is in Radd al-Muhtar that if the custodian is not alone, she should not be forced because if the custodian is not the sole one, she should not be forced because the right of the child being raised will not be lost since another custodian is present. Yes, if she is the only one due to being a single custodian, then she will be compelled, because due to the absence of another, the child's right would be lost. The complete research of this discussion is in it; this is the result of reconciling two different reports. In Durr Mukhtar, it says that whether the custodian is the mother or someone else, they have the right to the boy as long as the boy is not independent of women's supervision, which is estimated to be seven years of age, and the fatwa will be given on this. And they have the right to a girl until she becomes desirable, which is estimated to be nine years of age, and the fatwa will be given on this. (Summarized). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 149: 10 Jamadi al-Akhira 1307 AH There is discord between a husband and wife. Their daughter's age is nearly six years. The husband has forcibly separated her from the mother and does not let her come to the mother. Therefore, in this situation, the ruling of the noble Sharia is requested: who should the girl stay with, and up to what age does the mother have the right to keep the girl? While the father

of the girl is capable in the presence of the girl's mother and she can provide her with a good education, "can he keep the girl with himself?"

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/264
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Custody, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/636
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/265

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी पक्ष]: ...यदि वह स्वीकार नहीं करती है या बच्चे के लिए अजनबी (गैर-महरम) से विवाहित है, तो माँ के बाद नानी, फिर दादी, फिर बहन, फिर मौसियाँ, फिर बुआएँ(संक्षिप्त)। और रद अल-मुह्तार में है: हज़ाना (परवरिश करने वाली) को मजबूर नहीं किया जाएगा यदि वह इसके लिए विशेष रूप से नामित न हो, क्योंकि किसी और के मौजूद होने के कारण बच्चे का अधिकार नष्ट नहीं होता। यदि वह अकेले होने के कारण नामित है तो उसे मजबूर किया जाएगा ताकि बच्चे का अधिकार नष्ट न हो। (संग्रहीत)। इसका पूर्ण शोध इसी में है और यह दो अलग-अलग लेखों के बीच सामंजस्य का निष्कर्ष है। दुर्र-ए-मुख्तार में है: हज़ाना, चाहे माँ हो या कोई और, लड़के के लिए तब तक अधिक हकदार है जब तक वह महिलाओं की देखरेख से स्वतंत्र न हो जाए, जिसका अनुमान सात वर्ष लगाया गया है और इसी पर फतवा है। और छोटी लड़की के लिए तब तक जब तक वह कामुकता योग्य न हो जाए, जिसका अनुमान नौ वर्ष है और इसी पर फतवा है। (अल-इल्तेकात से)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू पक्ष]: ...नहीं करती है या बच्चे के गैर-महरम की पत्नी है तो फिर माँ के बाद नानी, फिर दादी, फिर बहन, फिर मौसियाँ, फिर बुआएँ क्रमवार हकदार हैं। (संक्षिप्त)। और रद अल-मुह्तार में है कि यदि परवरिश करने वाली अकेली न हो तो उसे मजबूर न किया जाए, क्योंकि यदि परवरिश करने वाली अकेली न हो तो उसे मजबूर न किया जाए क्योंकि परवरिश पाने वाले बच्चे का अधिकार नष्ट नहीं होगा क्योंकि दूसरी परवरिश करने वाली मौजूद है। हाँ, अगर परवरिश करने वाली अकेली होने के कारण वही निश्चित है तो उसे मजबूर किया जाएगा, क्योंकि दूसरी न होने के कारण बच्चे का अधिकार नष्ट हो जाएगा। इस चर्चा का पूर्ण शोध इसी में है, यह दो अलग-अलग विवरणों के बीच समन्वय का परिणाम है। दुर्र मुख्तार में है कि परवरिश करने वाली माँ हो या कोई और, वे लड़के की तब तक हकदार हैं जब तक लड़का महिलाओं की निगरानी से स्वतंत्र नहीं हो जाता, जिसका अनुमान सात वर्ष की आयु है और इसी पर फतवा दिया जाएगा। और वे लड़की की तब तक हकदार हैं जब तक लड़की मुश्तहा (कामुकता योग्य) न हो जाए जिसका अनुमान नौ वर्ष की आयु है और इसी पर फतवा दिया जाएगा। (संग्रहीत)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसाला 149: 10 जमादि-उल-आख़िर 1307 हिजरी पति-पत्नी के बीच अनबन है। उनकी बेटी की उम्र करीब छह साल है। पति ने जबरदस्ती उसे माँ से अलग कर लिया है और उसे माँ के पास नहीं आने देता है। अतः इस स्थिति में शरीयत का हुक्म पूछा गया है कि लड़की किसके पास रहेगी और

माँ को लड़की को अपने पास रखने का अधिकार किस उम्र तक है? जबकि लड़की का पिता माँ की मौजूदगी में सक्षम है और वह उसे अच्छी शिक्षा दिला सकती है, "क्या वह लड़की को अपने पास रख सकता है?"

1. दुर्र अल-मुह्तार, बाब अल-हज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/264
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-हज़ानत, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/636
3. दुर्र अल-मुह्तार, बाब अल-हज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/265

اولم تقبل او تزوجت باجنبی ام الام، ثم ام الاب، ثم الاخت، ثم الخالات، ثم العمات اھ مختصرا، وفی رد المحتار الحاضنۃ لا تجبر اذالم تتعین لھا، لان المحضون لا یضیع حقہ لوجود من یحضنہ غیرھا و تجبر اذا تعینت لعدم من یحضنہ غیرھا اھ ملتقطا وتمام تحقیقہ فیہ و ھذا حاصل ما وفق بہ بین نقلین مختلفین، وفی الدرالمختار الحاضنۃ اما او غیرھا احق بالغلام حتی یستغنی عن النساء وقدد بسبع و بہ یفتٰی وبالصغیرۃ حتی تشتھی و قدر بتسع و بہ یفتٰی اھ بالالتقاط واللہ تعالٰی اعلم۔

نہ کرے یا بچے کے غیر محرم کی منکوحہ ہو تو پھر ماں کے بعد نانی، پھر دادی، پھر بہن، پھر خالات، پھر پھوپھیاں ترتیب وار حقدار ہیں اھ مختصراً، اور ردالمختار میں ہے کہ پرورش کرنے والی اگر اکیلی نہ ہو تو اس کو مجبور نہ کیا جائے کیونکہ پرورش کرنے والی اگر واحد اکیلی نہ ہو تو اس کو مجبور نہ کیا جائے کیونکہ پرورش پانے والے بچے کا حق ضائع نہ ہو گا اس لئے کہ دوسری پرورش کرنے والی موجود ہے، ہاں اگر پرورش کرنے والی واحد اکیلی ہونے کی وجہ سے وہی متعین ہے تو اس کو مجبور کیا جائے گا، کیونکہ دوسری نہ ہونے کی وجہ سے بچے کا حق ضائع ہوگا اھ ملتقطاً، اس بحث کی مکمل تحقیق اسی میں ہے، یہ دو مختلف نقول میں توفیق کا حاصل ہے، در مختار میں ہے کہ پرورش کرنے والی ماں ہو یا کوئی اور وہ لڑکے کی حقدار ہیں جب تک لڑکا عورتوں کی نگرانی سے مستغنی نہیں ہو جاتا، جس کا اندازہ سات سال کی عمر ہے اور اسی پر فتوٰی دیا جائے گا، اور پرورش کرنے والی لڑکی کی حقدار ہیں جب تک لڑکی مشتہاۃ نہ ہو جائے جس کا اندازہ نو سال کی عمر ہے اور اسی پر فتوٰی دیا جائے گا اھ ملتقطاً۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۴۹: ۱۰ جمادی الآخرہ ۱۳۰۷ھ زن وشوہر میں نااتفاقی ہے ان کی لڑکی کی عمر قریب چھ برس کے ہے شوہر نے جبر کر کے اس کو ماں کے پاس سے علیحدہ کر لیا ہے اور اس کو ماں کے پاس نہیں آنے دیتا ہے، پس اس صورت میں حکم شرع شریف استفسار ہے کہ لڑکی کس کے پاس رہے اور حق ماں کو لڑکی کے رکھنے کا کے برس کی عمر تک ہے اور باپ لڑکی کا بحالت موجود ہونے لڑکی کی ماں کے مستطیع ہے اور اس کی تعلیم اچھی طرح کر سکتی ہے "لڑکی کو اپنے پاس رکھ سکتا ہے"

1 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۴ 2 ردالمختار باب الحضانۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۳۶ 3 درمختار باب الحضانۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۵

...or not? And the father of the girl is not capable, so please explain and you will be rewarded.

The Answer: The girl shall remain with the mother until the age of nine, after which she will be given to the father. Before that, as long as no other legal ground for loss of custody (Masqat-e-Hazanat) is proven in the mother, no one has the authority to take her from her without a valid Shari'i reason.

In al-Durr al-Mukhtar: "The mother and grandmother are more entitled to her (custody) until she reaches the age of attraction (Mushtaha)." In Durr-e-Mukhtar, it is stated that the mother and grandmother are entitled to the girl's custody until she becomes 'Mushtaha' (reaches the age of attraction/desirability), and the fatwa will be given based on this. (T) And upon this, the fatwa is given.[1]

In the same book, it is stated: And it is estimated at nine [years], and upon this fatwa is given. Allah the Almighty knows best. 'Mushtaha' age is approximately nine years, and the fatwa will be given accordingly. Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 150: From Rangoon, Surti Bazar, Shop 268, sent by Sheikh Abdul Sattar bin Ismail Sahib, 26 Dhu al-Qi'dah 1346 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: Amr had two daughters, Zubaida and Hinda. Zubaida was married to Khalid and Hinda to Walid, the son of Bakr. Hinda gave birth to a son, Zaid, from Walid. Later, Walid passed away. After some time, Zubaida, who was the wife of Khalid, also passed away; she too had several children. After a period of time, Amr, considering it the Sunnah of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), married the widow Hinda to the husband of his deceased daughter Zubaida (Khalid). This matter was displeasing to Bakr, the father of Hinda's late husband Walid. He took Walid's son Zaid into his possession and made strict arrangements so that the boy could not meet his mother or her relatives. Now, Zaid's mother, who has remarried, is extremely distressed in the separation from the boy. She remembers the boy day and night and wants to meet him by any means possible, to the extent that Hinda's health has deteriorated. Because of this, Hinda's father Amr is also distressed and has appealed to Bakr through many channels. Even in a gathering of the Muslim community, it was decided that the community should request Bakr to send Zaid to his mother Hinda occasionally for a short meeting. However, this produced no result. Now the question is, is Bakr's action permissible or

not? What kind of rights do they have over each other at this time? Is it not obligatory for Bakr to send Zaid to his mother just for meetings? What about such...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/265. [2] Durr al-Mukhtar, Chapter of Custody, Mujtabai Press, Delhi, 1/265.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह | पृष्ठ १३

...या नहीं? और लड़की का पिता सक्षम नहीं है, बस व्याख्या करें और आपको पुण्य मिले।

उत्तर: लड़की नौ साल की उम्र तक माँ के पास रहेगी, उसके बाद पिता को दे दी जाएगी। उससे पहले, जब तक माँ में हिरासत खोने का कोई अन्य कारण (मस्क़त-ए-हज़ानत) सिद्ध न हो, किसी को भी बिना शरई कारण के उसे माँ से लेने का अधिकार नहीं है।

अल-दुर्र अल-मुख्तार में: "माता और दादी उसकी (हिरासत की) अधिक हकदार हैं जब तक कि वह मुश्तहा (वांछनीय) न हो जाए।" दुर-ए-मुख्तार में है कि माँ और दादी लड़की के'मुश्तहा' (आकर्षण की आयु) होने तक हकदार हैं, और इसी पर फतवा दिया जाएगा। (त) और इसी पर फतवा दिया जाता है।[1]

उसी में है: और इसका अनुमान नौ (वर्ष) लगाया गया है, और इसी पर फतवा दिया जाता है। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। 'मुश्तहा' की आयु लगभग नौ वर्ष है, और इसी पर फतवा दिया जाएगा। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसाला १५०: रंगून, सूरती बाज़ार, दुकान २६८ से प्रेषित, शेख अब्दुल सत्तार बिन इस्माइल साहब द्वारा, २६ ज़ीक़दा १३४६ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: अम्र की दो बेटियाँ थीं, ज़ुबैदा और हिंदा। ज़ुबैदा का निकाह खालिद से हुआ था और हिंदा का निकाह बक्र के बेटे वलीद से। वलीद से हिंदा को एक बेटा ज़ैद पैदा हुआ। बाद में वलीद का इंतकाल हो गया। कुछ समय बाद ज़ुबैदा, जो खालिद की पत्नी थी, का भी देहांत हो गया; उसकी भी कुछ संतानें थीं। कुछ समय बाद, अम्र ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत समझकर विधवा हिंदा का निकाह अपनी दिवंगत बेटी ज़ुबैदा के पति (खालिद) से कर दिया। यह बात हिंदा के पूर्व पति वलीद के पिता बक्र को नागवार गुज़री। उसने वलीद के बेटे ज़ैद को अपने कब्ज़े में ले लिया और कड़े इंतज़ाम किए ताकि लड़का अपनी माँ या उसके रिश्तेदारों से न मिल सके। अब ज़ैद की माँ, जिसने दूसरा निकाह कर लिया है, लड़के के वियोग में बहुत बेचैन है। वह दिन-रात लड़के को याद करती है और किसी भी तरह उससे मिलना चाहती है, यहाँ तक कि हिंदा का स्वास्थ्य भी बिगड़ गया है। इस कारण हिंदा के पिता अम्र भी बेचैन हैं और कई माध्यमों से बक्र से निवेदन कर चुके हैं। यहाँ तक कि मुस्लिम समुदाय की एक सभा में यह तय हुआ कि समुदाय की ओर से बक्र से निवेदन किया जाए कि वह समय-समय पर ज़ैद को उसकी माँ हिंदा के पास कुछ देर मिलने के लिए भेजा करे। लेकिन फिर भी

कोई परिणाम नहीं निकला। अब सवाल यह है कि बक्र का यह कार्य जायज़ है या नहीं? इस समय एक-दूसरे पर किस तरह के अधिकार हैं? क्या बक्र पर यह फ़र्ज़ नहीं है कि वह ज़ैद को उसकी माँ के पास सिर्फ मिलने के लिए भेजा करे? क्या ऐसे...

[1] दुर-ए-मुख्तार, बाबुल् हिज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १/ २६५। [2] दुर-ए-मुख्तार, बाबुल् हिज़ानत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १/ २६५।

पृष्ठ ४१० / ६८८

یا نہیں؟ اور باپ لڑکی کا غیر مستطیع ہے فقط بینوا توجروا الجواب: لڑکی نو برس کی عمر تک ماں کے پاس رہے گی بعدہ باپ کو دے دی جائے گی، اس سے پہلے جب تک ماں میں کوئی اور مسقط حضانت نہ ثابت ہو کسی کو بلاوجہ شرعی اس سے لینے کا اختیار نہیں،

فی الدرالمختار الام والجدۃ احق بھا حتی تشتھی | در مختار میں ہے کہ ماں اور دادی لڑکی کے مشتہاۃ ہونے تک حقدار ہیں، اور اسی پر فتوٰی دیا جائے گا۔(ت) وبہ یفتی۔1 |

اسی میں ہے: وقدر بتسع وبہ یفتی۔2 واللہ تعالٰی اعلم۔ | مشتہاۃ اندازاً نو سال کی عمر ہے، اور اسی پر فتوٰی دیا جائیگا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۵۰: از رنگون سورتی بازار دکان ۲۶۸ مرسلہ شیخ عبدالستار بن اسمعیل صاحب ۲۶ ذیقعدہ ۱۳۴۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عمرو کی دو لڑکیاں زبیدہ اور ہندہ تھیں، زبیدہ کا نکاح خالد سے ہوا اور ہندہ کا نکاح بکر کے لڑکے ولید سے۔ ولید سے ہندہ کو ایک لڑکا زید تولد ہوا، بعد کو ولید انتقال کر گیا، کچھ عرصہ بعد زبیدہ جو کہ خالد کے نکاح میں تھی گزر گئی، اس کے بھی چند اولاد ہیں، بعد ایک عرصہ کے عمرو نے سنت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سمجھ کر بیوہ ہندہ کا نکاح اپنی مرحومہ لڑکی زبیدہ کے خاوند سے کر دیا، یہ بات ہندہ کے اگلے شوہر ولید کے باپ بکر کو ناگوار گزری اور ولید کے لڑکے زید کو اپنے قبضے میں لے لیا اور اس لڑکے کو اس کی والدہ سے اور والدہ کے رشتہ داروں سے ملنے جلنے نہ پائے اس کا سخت بندوبست کیا اس طرف اب زید کی والدہ جو نکاح ثانی کر چکی ہے لڑکے فراق میں سخت بے چین ہے روز و شب لڑکے کو یاد کرتی ہے اس بچے سے کسی طرح بھی ملنا چاہتی ہے حتی

کہ ہندہ کی صحت بھی بگڑ چکی ہے اس سبب سے ہندہ کے والد عمرو بھی بے چین ہیں اور بہت ذریعے سے بکر سے عرض کر چکے ہیں حتی کہ ایک جلسے جماعت مسلمین میں بھی یہ طے پایا کہ بکر کو جماعت کی طرف سے عرض کیا جائے کہ زید کو اس کی والدہ ہندہ کے پاس وقتاً فوقتاً کچھ دیر ملاقات کے لئے بھیجا کرے، مگر پھر بھی نتیجہ کچھ حاصل نہ ہوا، اب سوال یہ ہے کہ فعل بکر کا جائز ہے یا نہیں؟ کس طرح کے حقوق اس وقت ایک دوسرے پر ہیں، کیا بکر پر فرض نہیں کہ زید کو اس کی والدہ کے پاس صرف ملاقات کے لئے بھیجا کرے، کیا ایسے

1 در مختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۵ 2 در مختار باب الحضانة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۵

Fatawa Razawiyya, Volume 13 13

Through actions and compulsion, obstacles will not be created in performing a second marriage, which is a highly important Sunnah (tradition of the Prophet). Especially in a situation where in India this reprehensible custom is prevalent of not remarrying. Does the poor mother, whose love for her child is clearer than the sun, especially when the child is only seven, eight, or nine years old, not even have the right to see the child's face once in a while?

The Answer: If the mother does not remarry, the boy will not be kept with her after the age of seven; the grandfather will take him. If he is under seven years old and the mother does not remarry, or if she marries a mahram (blood relative) of the boy, like his uncle, then the boy will stay with his mother until he is seven years old, and the grandfather cannot take him. However, if she marries someone who is not a mahram for the boy, for example, a maternal aunt's husband, as happened here, then anyone who speaks ill of this marriage will be a severe sinner. But because the second husband is a non-mahram to the son, the boy will be taken away from the mother. All these rulings are clearly mentioned in 'Durr-e-Mukhtar' and other common books. But this does not mean that the child should be completely snatched away from the mother and not allowed to meet her; this is forbidden (haram) and strictly prohibited. It is narrated in Sunan Ibn Majah from Abu Musa Ash'ari (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Translation
لعنه الله من فرق بين الوالدة وولدها[1]۔	Allah's curse is upon the one who causes separation between a mother and her child.

It is mandatory for Bakr to repent for this action, let the child meet his mother, and not take upon himself the severe burden of causing distress to a Muslim without reason. In an authentic Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Translation
من اذی مسلما اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ[2] - رواہ الطبرانی فی الاوسط عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بسند حسن۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔	Whoever has unjustly caused harm to a Muslim has caused harm to me, and whoever has caused harm to me has caused harm to Allah Almighty. (Narrated by al-Tabarani in al-Awsat from Hazrat Anas (may Allah be

Arabic	Translation
	pleased with him) with a sound chain of narration. - T). And Allah knows best.

[1] Sunan Ibn Majah, Chapter on the Prohibition of Separating Children, etc. H.M. Saeed Company Karachi, p. 163. [2] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktabat al-Ma'arif al-Riyadh, 3/373.

कार्यों और मजबूरी के ज़रिए दूसरे निकाह (पुनर्विवाह) में बाधाएँ पैदा नहीं की जाएंगी, जो कि एक अत्यंत महत्वपूर्ण सुन्नत है। विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जहाँ भारत में यह निंदनीय प्रथा प्रचलित है कि दूसरा निकाह नहीं करते। क्या वह बेचारी माँ, जिसका अपने बच्चे के प्रति प्रेम सूर्य के समान स्पष्ट है, विशेष रूप से जब बच्चा केवल सात, आठ या नौ साल का हो, इतना भी अधिकार नहीं रखती कि कभी-कभार अपने बच्चे का चेहरा देख ले?

उत्तर: यदि माँ दूसरा निकाह नहीं भी करती है, तो सात वर्ष की आयु के बाद लड़के को उसके पास नहीं रखा जाएगा; दादा उसे अपने पास ले लेगा। यदि वह सात वर्ष से कम उम्र का है और माँ दूसरा निकाह नहीं करती है, या लड़के के किसी महरम (जैसे चाचा) से निकाह करती है, तो लड़का सात वर्ष की आयु तक माँ के पास रहेगा और दादा उसे नहीं ले सकता। लेकिन, यदि वह किसी ऐसे व्यक्ति से निकाह करती है जो लड़के के लिए महरम नहीं है, उदाहरण के लिए खालू (मौसा), जैसा कि यहाँ हुआ है, तो जो कोई इस निकाह को बुरा कहेगा वह घोर पापी होगा। लेकिन क्योंकि दूसरा पति लड़के के लिए गैर-महरम है, इसलिए लड़का माँ से ले लिया जाएगा। ये सभी मसले 'दुर्रे मुख़्तार' और अन्य सामान्य पुस्तकों में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चे को माँ से पूरी तरह अलग कर दिया जाए और उसे माँ से मिलने न दिया जाए; यह हराम और सख्त हराम है। सुनन इब्न माजाह में अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

अरबी	अनुवाद
لعنه الله من فرق بين الوالدة وولدها[1]۔	अल्लाह की लानत है उस पर जो माँ और उसके बच्चे के बीच जुदाई पैदा करे।

बक्र पर अनिवार्य है कि वह इस कृत्य से तौबा करे, बच्चे को उसकी माँ से मिलने दे और बिना किसी कारण के एक मुसलमान को कष्ट पहुँचाने का गंभीर पाप अपने सिर न ले। सही हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

अरबी	अनुवाद
من اذى مسلما اذانى ومن اذانى فقد اذى الله[2] - رواه الطبرانى	जिसने किसी मुसलमान को नाहक ईज़ा (दुख) दी, उसने मुझे ईज़ा दी और जिसने मुझे ईज़ा दी, उसने अल्लाह अज़्ज़वजल को

अरबी	अनुवाद
فی الاوسط عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بسند حسن۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔	ईज़ा दी। (इसे तबरानी ने 'औसत' में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से सनदे हसन के साथ रिवायत किया है। - त)। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

[1] सुनन इब्न माजाह, बच्चों को अलग करने की मनाही का अध्याय, आदि। एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 163. [2] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस, मकतबत अल-माआरिफ अर-रियाज़, 3/373.

افعال اور جبر سے نکاح ثانی جو کہ نہایت ضروری سنّت شریف ہے کہ کرنے میں رکاوٹیں پیدا نہ ہوں گی خصوصاً ایسی حالت میں جبکہ ہند میں اکثر یہ مذموم رسم جاری ہے کہ نکاح ثانی نہیں کرتے، کیا والدہ بیچاری جس کی محبت بچے کے ساتھ اظہر من الشمس ہے خصوصاً بچہ جبکہ سات، آٹھ، نو سال ہی کا ہو اتنا بھی حق نہیں رکھتی کہ ایک آدھ مرتبہ بچے کی صورت دیکھ لے۔

الجواب: اگر ماں دوسرا نکاح نہ بھی کرے تو لڑکا سات برس کی عمر کے بعد اس کے پاس نہ رکھا جائے گا دادا سے لے لے گا اور اگر سات برس سے کم عمر ہوا اور ماں دوسرا نکاح نہ کرے یا کرے تو لڑکے کے محرم یعنی چچا سے، تو لڑکا سات سال کی عمر ہونے تک ماں کے پاس رہے گا دادا نہیں لے سکتا، لیکن جب لڑکے کے نامحرم مثلاً خالو سے نکاح کرلے جیسے یہاں ہوا تو اس نکاح کرنے کو جو برا کہے گا سخت گنہگار ہوگا لیکن شوہرِ دوم نامحرم پسر ہونے کے سبب لڑکا ماں سے لے لیا جائے گا، یہ سب مسائل در مختار وغیرہ عامہ کتب میں مصرح ہیں مگر اس کا یہ مطلب نہیں کہ بچہ ماں سے بالکل تڑا لیا جائے اس سے ملنے تک نہ دیں، یہ حرام اور سخت حرام ہے۔ سنن ابن ماجہ میں ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی	ترجمہ
لعنه الله من فرق بين الوالدة وولدها[1]۔	اللہ کی لعنت ہے اس پر جو ماں اور اس کے بچے میں جدائی ڈالے۔

بکر پر لازم ہے کہ اس حرکت سے توبہ کرے اور بچے کو اس کی ماں سے ملنے دے اور بلا وجہ ایذائے مسلمان کا شدید وبال اپنے سر نہ لے۔ صحیح حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی	ترجمہ
من اذی مسلما اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ[2] - رواہ الطبرانی فی الاوسط عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ بسند حسن۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔	جس نے کسی مسلمان کو ناحق ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔ (اس کو طبرانی نے اوسط میں حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سند حسن کے ساتھ روایت کیا ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

[1] سنن ابن ماجہ باب النہی عن التفریق بین الصبی الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۶۳ [2] المعجم الاوسط حدیث مکتبۃ المعارف الریاض ۳/ ۳۷۳

Fatawa Rizvia, Volume 13

Problem 151: From Hasanpur, district Saran, requested by Shah Hamida Ahmad, 28 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say on this matter: Zaid passed away, leaving behind a father, a wife, and a minor ten-year-old girl. After the iddah period, Zaid's wife remarried a brother of Zaid, who is the legal heir of Zaid's inheritance after the death of Zaid's father. His house is also directly adjacent to Zaid's house, and he is a shareholder in every part of Zaid's property. To this day, the girl is being raised and cared for by her mother. In such a situation, does the right of upbringing, care, and guardianship for marriage belong to the girl's mother or to the grandfather, despite the girl still being raised and cared for by her mother? Please explain, and may you be rewarded.

The Answer: No one but the grandfather had the right to oversee the girl's marriage or her property after the father. The mother had the right of custody (hidanat). When the girl reached nine years of age, that right also expired. Now the grandfather will take her; the mother or uncle have no right to object. And Allah knows best.

Problem 152: From Jaora state, Ratlam road, gate sent by Chhotey Khan through Syed Hassan Inspector, 22 Jamadi-ul-Akhirah 1338 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this matter: Zaid, who had children, gave one of his daughters to childless Hamid out of love, kinship, and Islamic compassion for the sake of Allah, giving him the authority saying, "Now this girl is yours; we have no claim or dispute over her. Raise her as your own child and marry her off wherever you wish; we have no concern." Accordingly, Hamid kept this daughter as his own for ten to eleven years and raised her at his own expense. Now that the girl has matured, Zaid, due to greed or whatever reason, wants to take her back, and Hamid refuses to give her. In such a case, under Sharia, can the said daughter be returned to her parents or not? And if she can be returned, can it be done without paying for the girl's upbringing expenses?

The Answer: Gifting a daughter is invalid; she was neither the father's property nor did she become Hamid's property. Now that she has reached puberty or is close to reaching it, until she is married, she must definitely stay with her father, even up to nine years of age...

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13

मसला 151: हसनपुर, जिला सारण, प्रश्नकर्ता शाह हमीदा अहमद, 28 रमजान 1339 हिजरी। विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने पिता, पत्नी और दस साल की नाबालिग लड़की को छोड़कर देहांत किया। इद्दत के बाद ज़ैद की पत्नी ने ज़ैद के एक ऐसे भाई से दूसरा विवाह कर लिया जो ज़ैद के पिता की मृत्यु के बाद उसकी विरासत का कानूनी वारिस है। उसका घर भी ज़ैद के घर से बिल्कुल सटा हुआ है और वह ज़ैद की संपत्ति के हर हिस्से में साझेदार भी है। लड़की आज तक अपनी माँ के पास परवरिश पा रही है। ऐसी स्थिति में लड़की की परवरिश, देखरेख और निकाह की विलायत (अभिभावकत्व) का अधिकार माँ को है या दादा को, जबकि लड़की अभी भी अपनी माँ की परवरिश में है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब: लड़की के निकाह या उसकी संपत्ति की देखरेख का अधिकार पिता के बाद दादा के अलावा किसी और को नहीं था। पास रखने (परवरिश) का अधिकार माँ को था, जब लड़की नौ साल की हो गई तो वह अधिकार भी समाप्त हो गया। अब दादा उसे ले लेगा, माँ या चाचा को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 152: रियासत जावरा, रतलाम रोड, द्वार, प्रेषक छोटे खां, द्वारा सैयद हसन इंस्पेक्टर, 22 जमादी-उल-आखिरा 1338 हिजरी। विद्वान और मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद, जिसके बच्चे थे, उसने अपनी एक बेटी को बेऔलाद हामिद को प्रेम, आत्मीयता और इस्लामी हमदर्दी के कारण अल्लाह के लिए दे दिया और यह अधिकार दे दिया कि "अब यह लड़की तुम्हारी है, हमारा इस पर किसी तरह का कोई दावा या झगड़ा नहीं है। इसे अपनी संतान की तरह पालो और जहाँ चाहो इसकी शादी आदि कर देना, हमारा कोई संबंध नहीं होगा।" तदनुसार हामिद ने उस लड़की को दस-ग्यारह साल तक अपनी संतान की तरह अपने पास रखकर अपने खर्च पर पाला। अब जबकि लड़की समझदार हो गई है, ज़ैद ने लालच या किसी अन्य कारण से उसे वापस माँगना चाहा और हामिद देने से इंकार कर रहा है। ऐसी स्थिति में शरीयत के अनुसार उक्त लड़की को उसके माता-पिता को दिलाया जा सकता है या नहीं? और अगर दिलाया जा सकता है, तो क्या लड़की की परवरिश के खर्च की अदायगी के बिना?

अल-जवाब: बेटी का दान (हिबा) करना अमान्य है। वह न तो पिता की मिल्कियत थी और न ही हामिद की मिल्कियत हुई। और अब जबकि वह बालिग हो गई है या बालिग होने के करीब पहुँच गई

है, जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती, उसे निश्चित रूप से अपने पिता के पास रहना चाहिए, यहाँ तक कि नौ साल की उम्र...

पेज 412 of 688

مسئلہ ۱۵۱: از حسن پور ضلع سارن مسئولہ شاہ حمیدہ احمد ۲۸ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے باپ، بی بی اور دس سالہ لڑکی نابالغہ چھوڑ کر انتقال کیا، زید کی بی بی نے بعد ایام عدت زید کے ایک ایسے بھائی سے عقد ثانی کرلیا جو بعد وفات پدر زید کے اس کے ترکہ کا وہی وارث جائز ہے اور مکان بھی اس کا بالکل زید کے مکان سے متصل ہے اور زید کے ہر جزو جائیداد میں حصہ دار بھی ہے اور لڑکی زید کی آج تک پرورش اور پرداخت میں اپنی ماں کے ہے، ایسی صورت میں حق پرورش و پرداخت و ولایت نکاح کا لڑکی کی ماں کو حاصل ہے یا دادا کو باوجود لڑکی ہنوز پرورش و پرداخت میں اپنی ماں کی ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: لڑکی کے نکاح یا اس کے مال کی نگہداشت کا حق تو باپ کے بعد دادا کے سوا کسی کو نہ تھا، پاس رکھنے کا حق ماں کو تھا، جب لڑکی نو برس کی ہوئی وہ بھی ختم ہو گیا اب دادا اسے لے لے گا، ماں یا چچا کسی کو تعرض کا اختیار نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۵۲: از ریاست جاورہ سڑک رتلام دروازہ مرسلہ چھوٹے خاں معرفت سید حسن انسپکٹر ۲۲ جمادی الاخرہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ حامد لاولد کو زید صاحب اولاد نے اپنی ایک دختر بسبب محبت ویگانگت و ہمدردی اسلامی لوجہ اللہ دے کر یہ اختیار دے دیا کہ اب یہ لڑکی تمہاری ہے ہمارا کسی قسم کا اس پر دعوی جھگڑا نہیں ہے اس کو بطور اولاد کے تم پرورش کرو اور جہاں چاہو اس کی شادی وغیرہ کردینا ہمیں کوئی تعلق نہیں، چنانچہ حامد نے دس گیارہ سال تک اس دختر کو بطور اولاد خود اپنے پاس رکھ کر اپنے صرفہ سے پرورش کیا اور اب جبکہ دختر ہوشیار ہوئی تو زید نے ببا عث طمع یا جو کچھ ہوا اپنی طرف اس کو لوٹانا چاہا اور حامد اس کے دینے سے انکاری ہے تو ایسی صورت میں عند الشرع

دختر مذکورہ اس کے والدین کو دلائی جا سکتی ہے یا نہیں؟ اور اگر دلائی جا سکتی ہے تو کیا بلا ادائے صرفہ پرورش دختر؟ الجواب: دختر کا ہبہ کردینا باطل ہے نہ وہ باپ کی ملک تھی نہ حامد کی ملک ہوگئی، اور اب کہ بالغہ ہوئی یا قریب بلوغ پہنچی جب تک شادی نہ ہو ضرور اس کو باپ کے پاس رہنا چاہئے یہاں تک کہ نوبرس کی عمر

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

...after that, the girl will be taken from the biological mother and will stay with the father, and not with a stranger, with whom staying is not permissible in any way. By raising someone as a daughter, they do not become a daughter. Whatever he spent, he spent considering her as his own child and not as a loan; therefore, he is not entitled to any reimbursement. And Allah Almighty knows best.

...उसके बाद सगी माँ से लड़की ले ली जाएगी और बाप के पास रहेगी न कि किसी अजनबी के पास जिसके पास रहना किसी भी तरह जायज़ ही नहीं है, बेटी बनाकर पालने से कोई बेटी नहीं हो जाती, उसने जो कुछ खर्च किया वह अपनी संतान मानकर किया न कि ऋण के रूप में, इसलिए वह वापसी का भी हकदार नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

کے بعد سگی ماں سے لڑکی لے لی جائے گی اور باپ کے پاس رہے گی نہ کہ اجنبی جس کے پاس رہنا کسی طرح جائز ہی نہیں، بیٹی کر کے پانے سے بیٹی نہیں ہو جاتی، اس نے جو خرچ کیا اپنی اولاد بنا کر کیا نہ کہ بطور قرض، لہذا واپسی کا بھی مستحق نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiya Volume Thirteen (13) Chapter of Maintenance (Statement of Maintenance)

Issue 153: 9 Rabi-ul-Awwal 1309 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid gave three divorces to his wife, and the waiting period (Iddah) has passed. Is maintenance for the woman now obligatory upon Zaid or not? Explain and be rewarded. (Explicate, may you be rewarded. T)

Answer: If in reality the waiting period has passed (meaning if she was pregnant, childbirth has occurred, otherwise after the divorce, three menstrual cycles began and ended), then maintenance is no longer obligatory. This is because the maintenance of a divorced woman is until the end of the waiting period; after the waiting period, no relationship remains due to which maintenance would be necessary. In Radd al-Muhtar: "Maintenance is dependent on the waiting period." (In Radd al-Muhtar, it is: The woman's maintenance follows the waiting period. T). And Allah Almighty knows best.

Issue 154: From Tonk, Qafila locality, sent by Maulvi Syed Waliullah Sahib, 21 Shawwal 1309 AH. After the high presence of the source of grace, Hazrat Maulana, and by grace our Maulana, Qibla and Kaaba, Imam Maulana Ahmad Raza Khan Sahib, may Allah perpetuate his grace, after respectful greetings, it is submitted. A copy of the agreement is hereby communicated to your noble service. According to it...

[Footnote]: Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/269. Page 415 of 688

फतावा रज़विया तेरहवाँ खंड (१३) भरण-पोषण का अध्याय (नफ़के का बयान)

मसला १५३: ९ रबी-उल-अव्वल १३०९ हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी पत्नी को तीन तलाक़ दिए और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत चुकी है। क्या अब स्त्री का भरण-पोषण ज़ैद पर अनिवार्य है या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य पायें। (बयान कीजिये, प्रतिफल पायें। त)

उत्तर: यदि वास्तव में इद्दत बीत चुकी है (अर्थात यदि वह गर्भवती थी तो प्रसव हो गया, अन्यथा तलाक़ के बाद तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त हो गए), तो अब भरण-पोषण अनिवार्य नहीं है क्योंकि तलाक़शुदा स्त्री का भरण-पोषण इद्दत तक ही है। इद्दत के बाद कोई संबंध शेष नहीं रहता जिसके कारण भरण-पोषण आवश्यक हो। रद-अल-मुह्तार में है: "भरण-पोषण इद्दत के अधीन है।" (रद-अल-मुह्तार में है: स्त्री का भरण-पोषण इद्दत के अनुगामी है। त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १५४: टोंक से, मोहल्ला क़ाफ़िला, प्रेषक मौलवी सैयद वलीउल्लाह साहब, २१ शव्वाल १३०९ हिजरी परम आदरणीय फ़ैज़-मआब हज़रत मौलाना और कृपापूर्वक हमारे मौलाना, क़िबला और काबा, इमाम मौलाना अहमद रज़ा ख़ान साहब, अल्लाह उनका फ़ैज़ जारी रखे, सलाम-ओ-नियाज़ के बाद निवेदन है कि इक़रारनामे की नक़ल इसके द्वारा आपकी सेवा में भेजी जा रही है। इसके अनुसार...

[पादलेख]: रद-अल-मुह्तार, बाब-उन-नफ़का, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/२६९। पृष्ठ ४१५ (६८८ में से)

فتاوٰی رضویہ جلد تیرہ دہم (۱۳) باب النفقہ (نفقہ کا بیان)

مسئلہ ۱۵۳: ۹ ربیع الاول شریف ۱۳۰۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی عورت کو تین طلاقیں دیں اور عدت گزر چکی اب عورت کا نفقہ زید پر واجب ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان کیجئے اجر پائے۔ ت)

الجواب: اگر فی الواقع عدت گزر چکی (یعنی حاملہ تھی تو وضع حمل ہو گیا ورنہ طلاق کے بعد تین حیض شروع ہو کر ختم ہوئے) تو اب نفقہ واجب نہیں کہ مطلقہ کا نفقہ عدت تک ہے بعد عدت کوئی علاقہ باقی نہیں جس کے سبب نفقہ لازم ہو، فی ردالمحتار النفقة تابعة للعدة (ردالمحتار میں ہے: عورت کا نفقہ عدت کے تابع ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۴: از ٹونک محلہ قافلہ مرسلہ مولوی سید ولی اللہ صاحب ۲۱ شوال ۱۳۰۹ھ بعد عالی جناب فیض مآب حضرت مولانا وبالفضل اولانا قبلہ وکعبہ ام مولانا احمد رضا خاں صاحب ادام اللہ فیضہ، پس از تسلیم نیاز معروض می دارد۔ نقل اقرار نامہ بذریعہ ہذا خدمت شریف میں ابلاغ ہے بروئے اس کے

[فٹ نوٹ]: ردالمحتار باب النفقہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۹ صفحہ 415 of 688

Volume 13 | Fatawa Razawiya

Does the plaintiff, Ms. Ruqayya Begum, have the right to permanently move to her parents' house in case of hardship, and is this permissible according to Sharia? First, the hardship is that he no longer provides maintenance (naan-o-nafqah) as he used to, despite having the means. Second, he speaks harshly and abusively. Third, he commits a breach of promise by not fulfilling the rights of the wife. Fourth, he does not allow her to go to her parents' house as agreed. Fifth, he promised to pay the prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal), and a Sharia decree was also issued for it to be paid in a lump sum, but he has not paid it to date. Contrary to that, he has paid only 1/8th per month, and the rest remains unpaid. The lady also says that if there is hardship in the current residence adjacent to her parents and she wishes to live in another neighborhood, he does not allow it. Is this request also worthy of consideration? (Seal of Shariat) Nazim-e-Shariat.

Copy of the Agreement I, Syed Ahmed Ali son of the late Syed Akbar Ali, resident of Kali Paltan, state that whereas Ms. Ruqayya Begum, the wife of the declarant, has filed various claims in the Sharia court regarding hardships and the dower amount, etc.; therefore, I hereby declare and record that in the future, I will not cause any kind of hardship to the aforementioned lady and will keep her satisfied in every way through good conduct. If I act contrary to Sharia regarding the aforementioned lady and my wife becomes displeased with me, then as a consequence of this breach of promise and according to this written agreement, the plaintiff has the right to go to her parents' house; I will not obstruct her, and she will not be allowed to go on a journey. Therefore, these few words have been written as an agreement to serve as evidence. Written on 7 Dhu al-Qi'dah 1308 Hijri.

Servant Syed Ahmed Ali

Witnessed Witnessed Munshi Abdullah, Lawyer, by his own pen | Nusrat Yar Khan (Signature in Hindi)

It is hoped that out of elder-like kindness, an answer will be written to honor this subordinate. Respectful petition: Muhammad Waliullah (may Allah forgive him), real brother of Maulvi Syed Zahoorullah Sahib from Tonk State.

Page 416 of 688

क्या वादिनी मुसम्मात रुकय्या बेगम को यह अधिकार प्राप्त है कि कष्ट होने की स्थिति में वह हमेशा के लिए अपने माता-पिता के घर जाकर रहे या नहीं, और क्या शरीयत में इसकी अनुमति है या नहीं? पहला कष्ट यह है कि वह भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) नहीं देता जो वह पहले देता था, सामर्थ्य होने के बावजूद। दूसरा, वह कड़वा और बुरा-भला बोलता है। तीसरा, वह वादाखिलाफी करता है कि पत्नी के अधिकार पूरे नहीं करता। चौथा, वादे के अनुसार माता-पिता के घर जाने नहीं देता। पांचवां, वादा था कि 'मेहर-ए-मोअज्जिल' (तत्काल देय मेहर) दूँगा, और शरीयत की अदालत से इसे एकमुश्त दिलाने की डिक्री भी हो गई, लेकिन आज तक नहीं दिया। इसके विपरीत (1/8 प्रतिमाह) दिए हैं, बाकी अभी तक वसूल नहीं हुए। मुसम्मात यह भी कहती है कि यदि माता-पिता के पास स्थित वर्तमान निवास स्थान में कष्ट है और वह दूसरे मोहल्ले में रहना चाहती है, तो वह उसे रहने नहीं देता। क्या यह अनुरोध भी विचारणीय है या नहीं? मोहर-ए-शरीयत, नाज़िम-ए-शरीयत।

इकरारनामे की नकल मैं, सैयद अहमद अली पुत्र स्वर्गीय सैयद अकबर अली, निवासी काली पल्टन, यह बयान करता हूँ कि चूंकि मुसम्मात रुकय्या बेगम, पत्नी 'मज़हर' (वर्णनकर्ता), ने मेरे विरुद्ध विभिन्न प्रकार के कष्टों और मेहर की राशि आदि के संबंध में शरीयत की अदालत में दावे दायर किए हैं; इसलिए मैं वर्तमान में इकरार करता हूँ और लिख देता हूँ कि भविष्य में उक्त मुसम्मात को किसी प्रकार का कष्ट नहीं दूँगा और अपने अच्छे व्यवहार से उन्हें हर तरह से संतुष्ट रखूँगा। यदि मैं उक्त महिला के प्रति शरीयत के विरुद्ध कोई कार्य करता हूँ और मेरी पत्नी मुझसे नाराज़ होती है, तो इस वादाखिलाफी के बदले में, इस लिखित समझौते के अनुसार, वादिनी को अधिकार होगा कि वह अपने माता-पिता के घर जाए; मैं इसमें कोई बाधा उत्पन्न नहीं करूँगा, और उसे यात्रा पर नहीं जाने दिया जाएगा। अतः, ये कुछ शब्द इकरारनामे के तौर पर लिख दिए हैं ताकि प्रमाण रहे। दिनांक 7 ज़ुल-क़ादा 1308 हिजरी।

सेवक सैयद अहमद अली

गवाह हुआ गवाह हुआ मुंशी अब्दुल्ला, वकील, स्वयं की कलम से | नुसरत यार खां (हिंदी में हस्ताक्षर)

आशा है कि बड़ों जैसी कृपा दिखाते हुए इसका उत्तर लिखकर इस अधीनस्थ को सम्मानित किया जाएगा। सम्मानपूर्वक निवेदन: मोहम्मद वलीउल्लाह (अल्लाह उन्हें क्षमा करे), मौलवी सैयद ज़हूरुल्लाह साहब के सगे भाई, रियासत टोंक।

पृष्ठ 688 का 416

مدعیہ مسماۃ رقیہ بیگم کو اختیار حاصل ہے کہ بصورت ہونے تکلیف کے اپنے والدین کے مکان پر جاکر ہمیشہ رہے یا نہیں ، اور جواز اس کا شرع سے ہے یا نہیں ؟ اوّل یہ تکلیف ہے نان نفقہ جو پہلے دیتا تھا نہیں دیتا باوجود مقدوری کے۔ دوسرے سخت و سست بولتا ہے۔ تیسرے بد عہدی کرتا ہے کہ حق زوجہ ادا نہیں کرتا ہے۔ چوتھے والدین کے مکان پر حسب اقرار جانے نہیں دیتا۔ پانچویں وعدہ تھا کہ مہر معجل دوں گا، اور ڈگری بھی شریعت سے ہو گئی یکمشت دلانے کی ، آج تک نہیں دیا، برخلاف اس کے (ماہ ۸/۱) دئے ہیں باقی ہنوز بے وصول ہیں، اور یہ بھی مسماۃ کہتی ہے اگر مکان مسکونہ جو متصل والدین کے ہے اس میں تکلیف ہے دیگر محلہ میں رہے تو نہیں رہنے دیتا ، یہ درخواست بھی قابلِ لحاظ ہے یا نہیں؟ مہر شریعت ناظم شریعت

نقل اقرار نامہ میں کہ سید احمد علی بن سید اکبر علی مرحوم ساکن کالی پلٹن ام جو کہ مسماۃ رقیہ بیگم زوجہ مظہر نے نسبت میرے دعویات تکلیفات قسم قسم وزرِ مہر وغیرہ دائر عدالت شرع شریف کئے ہیں بناء بر اں فی الحال اقرار کرتا ہوں و لکھے دیتا ہوں کہ آئندہ کسی قسم کی تکلیف مسماۃ مذکور کو نہ دوں گا اور حسن سلوک خود سے سب طرح رضا مند رکھا کروں گا اگر خلاف شرع کے کوئی بات نسبت مسماۃ مذکور کروں اور زوجہ میری مجھ سے ناراض ہو تو بدل اس بد عہدی کا اس صورت میں حسبِ تحریر معاہدہ ہذا کے مدعیہ اختیار رکھتی ہے کہ اپنے والدین کے مکان پر جا رہے میں مزاحمت نہیں کروں گا اور مسافرت کو نہیں جانے پائے گی، لہذا یہ چند کلمہ بطریق اقرار نامہ لکھ دئے کہ سند ہو فقط ، المر قوم ۷ ذی قعدہ ۱۳۰۸ ہجری العبد سید احمد علی گواہ شد گواہ شد منشی عبد اللہ وکیل بقلم خود | نصرت یار خاں (دستخط ہندی)

امید کہ براہ عنایت بزرگانہ اس کا جواب تحریر فرما کر تا بعدار کو سرفراز فرمایا جائے۔ عریضہ

ادب: محمد ولی اللہ عفاعنہ مولاہ برادر حقیقی مولوی سید ظہور اللہ صاحب از ریاست ٹونک

Fatawa Razawiyya, Volume 13

Answer: This agreement holds no weight; nor can Ruqayya Begum, on its account, forfeit or invalidate the right that Sharia establishes for her husband after it has been proven. The pure Sharia has granted the husband the right of 'habs' (retention) to keep his wife with him. However, the point here is that since Syed Ahmed Ali has not yet fully paid Ruqayya Begum's 'Mahr-e-Muajjal' (prompt dower), the said Syed has not yet acquired any authority to retain or keep Ruqayya Begum with him at all. The husband only gains this right after the payment of the prompt dower. In fact, according to the school of our Great Imam (Abu Hanifa), may Allah be pleased with him, even if intercourse has occurred with the wife's consent before receiving the dower, it does not compel her to be retained by the husband.

This is the school of the Imam, and the canonical texts follow it, and upon it is the reliance, as we have established in the 'Book of Marriage' from our Fatawa by the grace of Allah Almighty.	**This is the school of thought of Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him), and the texts are based on it. Reliance is placed on this, as we have researched in the 'Book of Marriage' of our Fatawa with the guidance of Allah Almighty. (T)**

In 'Durr-e-Mukhtar' it is stated: | She has the right to prevent him from intercourse and its preliminaries (as in Sharh al-Majma'), and from traveling with her, even after intercourse and seclusion with her consent; because every instance of intercourse is a subject of the contract, so the delivery of a part does not necessitate the delivery of the rest. | The wife will have the right to prevent the husband from sexual intercourse and its prerequisites (Sharh al-Majma'). She can also prevent him from taking her on a journey, even if sexual intercourse and seclusion occurred with her consent; she can still stop him because each instance of intercourse is a substitute for the contract, and handing over some does not constitute handing over the entire substitute. (T) | |---|---|

In 'Radd-ul-Muhtar' it is stated: | His statement 'and travel': it is better to express it as 'taking her out' as expressed in 'al-Kanz', so that it includes taking her out from her house, as stated by its commentator. | His statement: 'taking her on a journey'; this is better than the expression 'taking out' as used in 'al-Kanz' because 'taking out' includes taking her outside the house as well, as the commentators of 'Kanz' have said. (T) | |---|---|

Therefore, in the situation inquired about, as long as the remaining prompt dower is not paid, Ruqayya Begum has the right not to go to her husband's house...

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/202
2. Radd-ul-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/358

फ़तावा रज़विया, खंड १३

उत्तर: यह इक़रारनामा कोई चीज़ नहीं है, और न ही इसके कारण रुकैया बेगम अपने पति के उस अधिकार को, जो शरीअत उसके लिए स्थापित करती है, स्थापित होने के बाद रद्द या शून्य कर सकती हैं। पवित्र शरीअत ने पति को 'हब्स' (रोकने) का अधिकार दिया है कि वह अपनी पत्नी को अपने पास रखे। लेकिन यहाँ बात यह है कि जब तक सैयद अहमद अली ने अभी रुकैया बेगम का 'महर-ए-मुअज्जिल' (नक़द मेहर) ही पूरा अदा नहीं किया है, तब तक उक्त सैयद को रुकैया बेगम को रोकने और अपने पास रखने का अधिकार सिरे से प्राप्त ही नहीं हुआ, क्योंकि पति को यह अधिकार महर-ए-मुअज्जिल की अदायगी के बाद प्राप्त होता है। बल्कि हमारे इमाम-ए-आज़म (अबू हनीफ़ा) रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़हब में तो मेहर मिलने से पहले पत्नी की सहमति से संभोग होने के बाद भी उसे रोकने पर मजबूर नहीं किया जा सकता।

यही इमाम का मज़हब है और इसी पर ग्रंथ आधारित हैं और इसी पर भरोसा है जैसा कि हमने अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से अपने फ़तावा की किताबुन निकाह में इसकी पुष्टि की है।

इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाह अलैह का यही मज़हब है और इस पर मतून (ग्रंथ) आए हैं, इसी पर भरोसा है जैसा कि हमने अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से अपने फ़तावा की किताबुन निकाह में इसकी तहक़ीक़ की है। (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में है: | उसे (पत्नी को) उसे संभोग और उसकी पूर्व-क्रियाओं से रोकने का अधिकार है (शर्ह-ए-मजमा के अनुसार), और उसके साथ यात्रा करने से भी, भले ही उसकी सहमति से संभोग और एकांत हो चुका हो; क्योंकि हर बार का संभोग अनुबंध का विषय है, इसलिए एक हिस्से की सुपुर्दगी शेष की सुपुर्दगी को आवश्यक नहीं बनाती है। | पत्नी को अधिकार होगा कि वह पति को संभोग और उसकी शुरुआती क्रियाओं से रोक दे (शर्ह-ए-मजमा)। और यात्रा पर साथ ले जाने से भी रोक सकती है, भले ही संभोग और एकांत सहमति से हो चुका हो, तब भी रोक सकती है; क्योंकि हर बार का संभोग अनुबंध का प्रतिफल है, कुछ को सौंपना पूरे प्रतिफल को सौंपना नहीं होता। (त) |

|---|---|

रद्द-उल-मुह्तार में है: | उनका कथन 'सफ़र' (यात्रा): इसे 'इख़राज' (बाहर ले जाना) के रूप में व्यक्त करना बेहतर होगा जैसा कि 'कंज' में व्यक्त किया गया है, ताकि इसमें उसे उसके घर से बाहर ले जाना शामिल हो सके जैसा कि इसके व्याख्याकार ने कहा है। | उनका कथन: सफ़र पर ले जाना;

यह 'बाहर ले जाने' की अभिव्यक्ति से बेहतर है जैसा कि 'कंज' में वर्णित किया गया है क्योंकि बाहर ले जाना तो घर से बाहर साथ करने को भी शामिल करता है जैसा कि कंज के व्याख्याकारों ने कहा है। (त) | |---|---|

तो पूछी गई स्थिति में, जब तक शेष 'महर-ए-मुअज्जिल' का भुगतान नहीं हो जाता, रुकैया बेगम को अधिकार है कि पति के घर न जाएँ..

---

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबू-ल-महर, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/२०२
2. रद्द-उल-मुह्तार, बाबू-ल-महर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/३५८

الجواب: یہ اقرار نامہ کوئی چیز نہیں، نہ اس کے سبب رقیہ بیگم اپنے شوہر کا وہ حق جو شرع اس کے لئے ثابت کرے، بعد ثابت ہونے کے ساقط و باطل کر سکتی ہے، شرع مطہر نے شوہر کو حق حبس دیا ہے کہ عورت کو اپنے پاس رکھے، مگر یہاں بات یہ ہے کہ جب سید احمد علی نے ابھی رقیہ بیگم کا مہر معجل ہی پورا ادا نہ کیا ہنوز سید مذکور کو رقیہ بیگم کے حبس کرنے اور اپنے پاس رکھنے کا سرے سے اختیار ہی حاصل نہ ہوا کہ شوہر کو یہ اختیار بعد ادائے مہر معجل حاصل ہوتا ہے بلکہ ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے مذہب میں تو اس کے وصول سے پہلے برضائے زوجہ وطی واقع ہونا بھی عورت کو حبس پر مجبور نہیں کرتا،

ہذا ھو مذھب الامام وعلیہ المتون فعلیہ التعویل کما حققناہ فی کتاب النکاح من فتاونا بتوفیق اللہ تعالٰی۔ (ت)

امام اعظم رحمۃ اللہ تعالٰی کا یہی مذہب اور اس پر متون وارد اسی پر اعتماد ہے جیسا کہ ہم نے اللہ تعالٰی کی توفیق سے اپنے فتاوٰی کے کتاب النکاح میں اس کی تحقیق کی ہے۔

در مختار میں ہے: | لہا منعہ من الوطی ودواعیہ، شرح مجمع، والسفر بھا ولو بعد وطی وخلوۃ رضیتھمالان کل وطأۃ معقود علیہا فتسلیم البعض لایوجب تسلیم الباقی۔۱ | بیوی کو حق حاصل ہوگا کہ وہ خاوند کو جماع اور اس کے دواعی سے روک دے، شرح مجمع۔ اور سفر پر ہمراہ لے جانے سے بھی روک سکتی ہے اگرچہ وطی اور خلوت برضا کے بعد چاہے تو بھی روک سکتی ہے، کیونکہ ہر بار کا جماع عقد کا بدل ہے بعض کو سونپنا کل بدل کا سونپ دینا نہیں بنتا۔ (ت) |

|---|---|

ردالمحتار میں ہے: | قولہ والسفر الاولی التعبیر بالاخراج کما عبرفی الکنز لیعم الاخراج من بیتھا کما قالہ شارحہ ۲ ط | قولہ سفر پر لے جانا، یہ باہر لے جانے کی تعبیر سے بہتر ہے جیسا کہ کنز میں تعبیر کیا گیا ہے کیونکہ باہر لے جانا تو گھر باہر ہمراہ کرنے کو بھی شامل ہے جیسا کہ کنز کے شارحین نے کہا ہے ط (ت) | |---|---|

تو صورتِ مستفسرہ میں جب تک باقی مہر معجل ادا نہ ہوجائے رقیہ بیگم کو اختیار ہے کہ شوہر گھر نہ جائے اسے اپنے

---

۱ درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۲/۱ ۲ ردالمحتار باب المہر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۸/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13

...not allow him to come near, nor allow him to touch her body. Yes, when he pays the prompt dower (Mahr Mu'ajjal) in full and perfectly, at that time Ruqayya Begum cannot stay at her house without the husband's permission, nor can she hold the husband accountable based on this agreement. Because just as the fact that the husband does not currently have the right of confinement (haqq-e-habs) gives Ruqayya Begum freedom until the payment of the prompt dower, similarly, it makes the agreement utterly null and void. For its essence, if any, is that the husband waives his right of confinement in case of breach of promise; he does not possess that right yet, so what will he waive? For waiver (isqat), prior establishment (thubut) is required. How can something that is not yet established be waived? Therefore, this writing by Ahmad Ali is merely futile and useless, providing no basis for Ruqayya Begum at any time. Imam Allama Zayla'i states in Tabyeen al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq:

[Table/Box 1] Arabic: لها ان ترجع ان وهبت قسمها للاخرى ،لانها اسقطت حقالم يجب بعد فلا يسقط، وهذ الان الاسقاط انما يتحقق في القائم الخ۔ Urdu: If a wife has given her turn to another wife, she can take back her right because she waived a right that was not yet obligatory and established for her, thus it was not waived. This is because waiver is only realized when the thing itself is established. (T)

Furthermore, even if the text of the document is considered free from defect—though a jurisprudential (fiqhi) view, setting aside whether the prompt dower has been paid or whether intercourse occurred with Ruqayya Begum's consent, shows the text itself to be futile and flawed—it is because it made the waiver of confinement conditional (mu'allaq), and this waiver is fundamentally not capable of being conditional.

[Table/Box 2] Arabic: لانه مما لايحلف كما لا يخفى وكل اسقاط لايحلف به فانه لا يصح تعليقه۔ Urdu: Because it is something for which an oath (making it conditional on something) cannot be taken, as is not hidden. And the waiver of anything that is not subject to an oath, its suspension (making it conditional on a condition) is not valid. (T)

It is in Durr al-Mukhtar:

[Table/Box 3] Arabic: ما يجوز تعليقه بالشرط مختص بالاسقاطات المحضة التى يحلف بها كطلاق وعتاق وبالالتزامات التى يحلف Urdu: The things that can be made conditional on a

condition are only pure waivers (isqatat-e-mahda) for which an oath can be taken, such as divorce and manumission, and those obligations for which an oath...

---

1 Tabyeen al-Haqa'iq, Bab al-Qasm, al-Matba'a al-Kubra al-Amiriyya, Bulaq, Egypt, 2/181.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

...पास आने न दे, न अपने बदन को हाथ लगाने दे। हाँ, जब वह मेहर मुअज्जाल (त्वरित मेहर) पूर्णतः और कुशलता से अदा कर दे, उस समय रुकैया बेगम बिना पति की अनुमति के अपने घर में नहीं रह सकतीं, न ही इस इकरारनामे के आधार पर पति से कोई जवाब-तलब कर सकती हैं। क्योंकि जिस तरह फिलहाल पति को हब्सा (घर में रोकने) का अधिकार न होना रुकैया बेगम को मेहर की अदायगी तक आज़ादी दे रहा है, उसी तरह यह इकरारनामा भी बिल्कुल व्यर्थ और निष्प्रभावी हो जाता है। इसका सार यदि कुछ है, तो यही कि पति वादाखिलाफी की स्थिति में अपने हब्सा के अधिकार को छोड़ता है; वह अधिकार अभी उसे प्राप्त ही नहीं है, तो वह क्या छोड़ेगा? छोड़ने (इस्क़ात) के लिए पहले अधिकार का सिद्ध (सुबूत) होना आवश्यक है, जो चीज़ अभी तक सिद्ध ही नहीं हुई उसे कैसे छोड़ा जा सकता है? अतः अहमद अली की यह लिखावट महज़ बेकार और व्यर्थ हुई जिससे रुकैया बेगम को कभी भी सहारा लेने का अवसर नहीं मिलता। इमाम अल्लामा ज़ैला'ई 'तबीनुल हक़ाएक़ शरह कंज़ुद्दक़ाएक़' में फरमाते हैं:

[बॉक्स 1] अरबी: لها ان ترجع ان وهبت قسمها للاخرى ،لانها اسقطت حقالم يجب بعد فلا يسقط، وهذ الان الاسقاط انما يتحقق في القائم الخ۔ उर्दू: पत्नी ने अगर अपनी बारी का अधिकार दूसरी पत्नी को दे दिया हो, तो वह अपना अधिकार वापस ले सकती है क्योंकि उसने उस अधिकार को छोड़ा जो अभी तक उसके लिए अनिवार्य और सिद्ध नहीं हुआ था, इसलिए वह छूटा नहीं। यह इसलिए कि इस्क़ात (छोड़ना) तब माना जाता है जब वह स्वयं सिद्ध हो जाए। (त)

फिर इस लेख की भी आवश्यकता कि दस्तावेज़ की मूल इबारत को दोषरहित मान लिया जाए, अन्यथा फ़िक़्ही दृष्टि तो (इस बात को छोड़ते हुए कि मेहर मुअज्जाल अभी अदा हुआ या नहीं और पत्नी की सहमति से सहवास हुआ या नहीं) स्वयं इस लेख को बेकार और त्रुटिपूर्ण बताती है कि इसने हब्सा छोड़ने को किसी शर्त पर निर्भर (मुअल्लक़) कर दिया, जबकि यह इस्क़ात सिरे से शर्त पर निर्भर होने की योग्यता ही नहीं रखता।

[बॉक्स 2] अरबी: لانه مما لايحلف كما لا يخفى وكل اسقاط لايحلف به فانه لا يصح تعليقه۔ उर्दू: क्योंकि यह वह चीज़ है जिसके लिए शपथ (किसी चीज़ के साथ शर्तबद्ध करना) नहीं ली जा सकती जैसा कि स्पष्ट है। और हर उस चीज़ का इस्क़ात जो शपथ के योग्य न हो, उसका ता'लीक़ (शर्त से शर्तबद्ध करना) सही नहीं। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है:

[बॉक्स 3] अरबी: ما يجوز تعليقه بالشرط مختص بالاسقاطات المحضة التى يحلف بها كطلاق وعتاق وبالالتزامات التى يحلف उर्दू: जिस चीज़ को किसी शर्त से शर्तबद्ध किया जा सकता है वह केवल इस्क़ातात-ए-महज़ा (पूर्ण त्याग) हैं जिनके लिए शपथ ली जा सकती है जैसे कि तलाक़ और आज़ादी देना है, और वे प्रतिबद्धताएं हैं जिनके लिए शपथ...

---

1 तबीनुल हक़ाएक़, बाबुल क़स्म, अल-मतबअतुल कुबरा अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 2/181.

پاس آنے نہ دے، نہ اپنے بدن کو ہاتھ لگانے دے، ہاں جب وہ مہر معجل تمام و کمال ادا کرلے اس وقت رقیہ بیگم بے اذن شوہر اپنے گھر نہیں رہ سکتی، نہ اس اقرار نامہ کی بنا پر شوہر سے مواخذہ کر سکتی ہے کہ بالفعل شوہر کو حق حبس حاصل نہ ہونا جس طرح ابھی رقیہ بیگم کو تادائے مہر معجل آزادی دے رہا ہے یونہی اقرار نامہ کو بھی باطل محض و بے اثر کر رہا ہے کہ اس کا حاصل اگر ہے تو یہی کہ شوہر در صورت بد عہدی اپنے حق حبس کو ساقط کرتا ہے وہ حق اسے ہنوز حاصل ہی نہیں تو ساقط کس چیز کو کرے گا، اسقاط کے لئے پہلے ثبوت درکار، جو شئی ہنوز ثابت نہیں ساقط کیا ہو گی، تو احمد علی کی یہ تحریر محض مہمل و بیکار ہوئی جس سے رقیہ بیگم کو کسی وقت استناد کا محل نہیں، امام علامہ زیلعی تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق میں فرماتے ہیں:

[جدول/باکس ۱] عربی: لها ان ترجع ان وهبت قسمها للاخری ،لانها اسقطت حقالم یجب بعد فلا یسقط، وهذ الان الاسقاط انما یتحقق في القائم الخ۔ اردو: بیوی نے اگر اپنی باری کا حق دوسری بیوی کو دیا ہو تو وہ واپس اپنا حق لے سکتی ہے کیونکہ اس نے اپنے حق کو ساقط کیا جو ابھی تک خود اس کے لئے واجب و ثابت نہ ہوا تھا لہذا وہ ساقط نہ ہوا، یہ اس لئے کہ اسقاط تب قرار پاتا ہے جب وہ خود ثابت ہو جائے (ت)

پھر اس تحریر کی بھی حاجت کہ نفس عبارت دستاویز کو خلل سے سالم مان لیا جائے ورنہ نظر فقہی تو (قطع نظر اس سے کہ مہر معجل ہنوز ادا ہوا یا نہیں اور وطی برضائے رقیہ بیگم واقع ہوئی یا نہیں) خود اس نفس تحریر کو مہمل و مختل بتاتی ہے کہ اس نے اسقاط حبس کو معلق کیا اور یہ اسقاط سرے سے قابلیت تعلیق نہیں رکھتا،

[جدول/باکس ۲] عربی: لانه مما لایحلف کما لا یخفی وکل اسقاط لایحلف به فانه لا یصح تعلیقه۔

اردو: کیونکہ یہ وہ چیز ہے جس کا حلف (کسی شے سے مشروط کرنا) نہیں دیا جاسکتا جیسا کہ مخفی نہیں ہے، اور ہر اس چیز کا اسقاط جو قابل حلف نہ ہو تو اس کی تعلیق (شرط سے مشروط کرنا) صحیح نہیں۔ (ت)

در مختار میں ہے:

[جدول/باکس ۳] عربی: ما یجوز تعلیقه بالشرط مختص بالاسقاطات المحضة التی یحلف بها کطلاق وعتاق وبالالتزامات التی یحلف اردو: جس چیز کو کسی شرط سے مشروط کیا جاسکتا ہے وہ صرف اسقاطات محضہ ہیں جن کا حلف دیا جاسکتا ہے جیسا کہ طلاق و عتاق ہے، اور وہ التزامات ہیں جن کا حلف

---

۱ تبیین الحقائق باب القسم المطبعة الکبری الامیریة ببولاق مصر ۲/۱۸۱

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

بها كحج وصلوة والتوليات كقضاء وامارة عينى وزيلعى[1] - (Urdu) It can be given just as Hajj and prayer are, and those are administrative responsibilities. Just as judgeship and leadership are, 'Ayni and Zayla'i. (T)

From the summary in Radd al-Muhtar: انما يحتمل التعليق بالشرط ما يجوز ان يحلف به[2] - (Urdu) Only those things are liable to be suspended upon a condition which can be sworn by. (T)

In the same from 'Ayni: (تلخيصاً) انه ليس مما يحلف به فلا يصح تعليقه بالشرط[3] - (Urdu) Since it is not something that can be sworn by, therefore its suspension on any condition is not permissible, summarized. (T)

In the same: اعلم ان قوله لا يصح تعليقه ليس المراد به بطلان نفس التعليق مع صحة المعلق بل المراد انه لا يقبل التعليق بمعنى انه يفسد به[4] - (Urdu) It is clear that by the text's statement "it is not valid to suspend it", it is not meant that merely making a suspension (the act of suspension itself) is void while the suspended thing remains valid. Rather, it means that the thing does not accept suspension, hence due to not being capable of suspension, it becomes invalid by the suspension. (T)

Anyway, the ruling is this: that the mentioned document is useless and void, and Ruqayya Begum herself has the right to stay at her parents' house and not let her husband touch her until the prompt dower (Mahr Mu'ajjal) is paid, and after the fulfillment of the entire prompt dower, this right of Ruqayya Begum is completely lost. Yes, she can go to her parents' house every eighth day even without her husband's permission so that she stays for the day and returns at night. In Radd al-Muhtar: فى البحر الصحيح المفتى به انها تخرج - (Urdu) In Al-Bahr: The correct fatwa is that the wife every week...

[1] Durr al-Mukhtar, Book of Sales, Chapter: What is voided by invalid conditions etc., Matba' Mujtabai, Delhi, 54/2 [2] Radd al-Muhtar, Book of Sales, Chapter: What is voided by invalid conditions etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 225/4 [3] Radd al-Muhtar, Book of Sales, Chapter: What is voided by invalid conditions etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 226/4 [4] Radd al-Muhtar, Book of Sales, Chapter: What is voided by invalid conditions etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 222/4

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

[1]بها كحج وصلوة والتوليات كقضاء وامارة عينى وزيلعى - (उर्दू) दिया जा सकता है जैसा कि हज और नमाज़ है और वे मामलात की ज़िम्मेदारियाँ हैं। जैसा कि कज़ा और अमारत है, ऐनी और ज़ैलई। (त)

रद्द अल-मुह्तार में खुलासे से है: [2]انما يحتمل التعليق بالشرط ما يجوز ان يحلف به - (उर्दू) किसी शर्त के साथ वही चीज़ें मुअल्लक (निलंबित) होने का एहतिमाल (संभावना) रखती हैं जिनका हलफ़ (शपथ) दिया जा सके। (त)

उसी में ऐनी से है: (تلخيصاً) [3]انه ليس مما يحلف به فلا يصح تعليقه بالشرط - (उर्दू) वह चूंकि ऐसी चीज़ है जिसका हलफ़ नहीं दिया जा सकता लिहाज़ा उसकी किसी शर्त से ता'लीक (निलंबन) जायज़ नहीं, संक्षेप में। (त)

उसी में है: نفس التعليق مع صحة المعلق اعلم ان قوله لا يصح تعليقه ليس المراد به بطل [4]بل المراد انه لا يقبل التعليق بمعنى انه يفسد به - (उर्दू) वाज़ेह कि मतन (मूल पाठ) के क़ौल "ला यसिहु ता'लीकुहू" से मुराद यह नहीं कि मुअल्लक शुदा चीज़ की सेहत (वैधता) के बावजूद महज़ मुअल्लक करना (नफ़्स-ए-ता'लीक) बातिल है, बल्कि इससे मुराद यह है कि वह चीज़ ता'लीक को क़बूल नहीं करती लिहाज़ा वह ता'लीक के क़ाबिल न होने की वजह से ता'लीक से फ़ासिद हो जाती है। (त)

बहरहाल हुक्म यही है कि दस्तावेज़ मज़कूर मुहमल व बातिल है और रक़िया बेगम को ता-अदाए मेहर-ए-मुअज्जल (तत्काल मेहर की अदायगी तक) अपने माँ-बाप के घर रहने और शौहर को हाथ न लगाने देने का ख़ुद ही इख़्तियार हासिल है और बा'द ईफ़ाए तमाम मेहर-ए-मुअज्जल रक़िया बेगम का यह इख़्तियार यकलख़्त ज़ाइल (तुरंत समाप्त), हाँ वालिदैन के यहाँ आठवें दिन बे-इजाज़त शौहर भी जा सकती है कि दिन के दिन रहे और रात को चली आए। रद्द अल-मुह्तार में है: فى البحر الصحيح المفتى به انها تخرج - (उर्दू) बहर में है: सही मुफ़्ती-बिह यह है कि बीवी हर हफ़्ता में...

1. दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल बुयूअ, अध्याय: मा युबतुलु बिश-शर्तुल फ़ासिद अलख, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, ५४/२

2. रद्द अल-मुह्तार, किताबुल बुयूअ, अध्याय: मा युबतुलु बिश-शर्तुल फ़ासिद अलख, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बैरुत, २२५/४
3. रद्द अल-मुह्तार, किताबुल बुयूअ, अध्याय: मा युबतुलु बिश-शर्तुल फ़ासिद अलख, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बैरुत, २२६/४
4. रद्द अल-मुह्तार, किताबुल बुयूअ, अध्याय: मा युबतुलु बिश-शर्तुल फ़ासिद अलख, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बैरुत, २२२/४

पृष्ठ ४१९/६८८

بھا کحج وصلوۃ والتولیات کقضاء وامارۃ عینی وزیلعی[1] - دیا جاسکتا جیسا کہ حج و نماز ہے اور وہ معاملات کی ذمہ داریاں ہیں۔ جیسا کہ قضاء اور امارت ہے، عینی اور زیلعی۔ (ت)

رد المحتار میں خلاصہ سے ہے: انما یحتمل التعلیق بالشرط ما یجوز ان یحلف بہ[2] - کسی شرط کے ساتھ وہی چیزیں معلق ہونے کا احتمال رکھتی ہیں جن کا حلف دیا جاسکے۔ (ت)

اسی میں عینی سے ہے: انہ لیس مما یحلف بہ فلا یصح تعلیقہ بالشرط[3] (تلخیصاً) - وہ چونکہ ایسی چیز ہے جس کا حلف نہیں دیا جاسکتا لہٰذا اس کی کسی شرط سے تعلیق جائز نہیں تلخیصاً (ت)

اسی میں ہے: اعلم ان قولہ لا یصح تعلیقہ لیس المراد بہ بطلان نفس التعلیق مع صحۃ المعلق بل المراد انہ لا یقبل التعلیق بمعنی انہ یفسد بہ[4] - واضح کہ متن کے قول "لا یصح تعلیقہ" سے مراد یہ نہیں کہ معلق شدہ چیز کی صحت کے باوجود محض معلق کرنا (نفس تعلیق) باطل ہے، بلکہ اس سے مراد یہ ہے کہ وہ چیز تعلیق کو قبول نہیں کرتی لہٰذا وہ تعلیق کے قابل نہ ہونے کی وجہ سے تعلیق سے فاسد ہو جاتی ہے (ت)

بہر حال حکم یہی ہے کہ دستاویز مذکور مہمل و باطل اور رقیہ بیگم کو تا ادائے مہر معجل اپنے ماں باپ کے گھر رہنے اور شوہر کو ہاتھ نہ لگانے دینے کا خود ہی اختیار حاصل اور بعد ایفائے تمام مہر معجل رقیہ بیگم کا یہ اختیار یک لخت زائل، ہاں والدین کے یہاں آٹھویں دن بے اجازت شوہر بھی جا سکتی ہے کہ دن کے دن رہے اور رات کو چلی آئے۔ رد المحتار میں ہے: فی البحر الصحیح المفتی بہ انہا تخرج - بحر میں ہے: صحیح مفتی بہ یہ ہے کہ بیوی ہر ہفتہ میں

١ درمختار كتاب البيوع ما يبطل بالشرط الفاسد الخ مطبع مجتبائى دہلى ٢/٥۴ ٢ رد المحتار كتاب البيوع ما يبطل بالشرط الفاسد الخ دار احياء التراث العربى بيروت ۴/٢٢۵ ٣ رد المحتار كتاب البيوع ما يبطل بالشرط الفاسد الخ دار احياء التراث العربى بيروت ۴/٢٢۶ ۴ رد المحتار كتاب البيوع ما يبطل بالشرط الفاسد الخ دار احياء التراث العربى بيروت ۴/٢٢٢

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

[Arabic]: For parents every week with or without his permission, and for unmarriageable kin (Maharim) once a year with or without his permission. [1] [Urdu]: (In the sharia terminology of Friday) Whether the husband gives permission or not, she can go out of the house to meet her parents, and to meet her other Mahram relatives she can go once a year, whether the husband permits or not. (T)

And if Ruqayya Begum's request to live in another neighborhood means that she should stay away from her husband and the husband should not be allowed to come to her, then the answer has already been given: she has the right to be separate from her husband before the payment of the prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal), but absolutely not after payment. However, if the intention is that here the husband causes her pain and suffering and there is no one to stop him, and therefore she wants the husband to keep her in such a place where his hands of transgression are shortened, then indeed this request of hers is definitely worthy of consideration. The Sharia judge (Hakim Shar'a) will look into this matter. If Ruqayya Begum's statement is found to be correct and he sees that reprimanding the husband is not working, nor are any neighbors there capable of restraining the husband and preventing harm to the wife, then he will surely propose a safe place and order Ahmad Ali to keep Ruqayya Begum there. It is stated in Alamgiri:

[Arabic]: If he settled her in a house where no one else is with her, and she complained to the judge that the husband beats her and harms her, and asked the judge to order him to settle her among pious people who would know of his goodness or badness; if the judge knows the matter is as she said, he should reprimand him for that and prevent him from transgression. If he does not know, he should see if the neighbors of this house are pious people, he should keep her there, but he should ask the neighbors about his behavior; if they mention something like what she mentioned...

[Urdu]: If the husband provided housing to the wife in a house where the woman is alone, so the woman complained to the judge that the husband beats and hurts her, and requests the judge to order the husband to give her housing in such a place where there are good people around who can know the husband's good and evil. So if the judge knows the woman's complaint is correct, he should scold the husband and stop him from excess. If the judge does not know, he should find out if the neighbors are good people, then he should bind the woman to stay there, but at the

same time, the judge should get information from the neighbors about the husband's treatment. If the neighbors support the woman's complaint...

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/226 Page 420 of 688

फ़तावा रज़विया तेरहवीं जिल्द १३

[अरबी]: माता-पिता के लिए हर हफ़्ते उसकी अनुमति के साथ या उसके बिना, और मेहरम (जिनसे निकाह हराम हो) के लिए साल में एक बार उसकी अनुमति के साथ या उसके बिना। [१] [उर्दू]: (जुमा की शरई शब्दावली में) पति की अनुमति हो या न हो, वह अपने माता-पिता से मिलने के लिए घर से बाहर जा सकती है और अपने अन्य मेहरम रिश्तेदारों से मिलने के लिए साल में एक बार जा सकती है, चाहे पति की अनुमति हो या न हो। (त)

और दूसरे मोहल्ले में रहने के अनुरोध से यदि रुकैया बेगम का तात्पर्य यह है कि वह पति से अलग रहे और पति उसके पास न आ पाए, तो इसका उत्तर तो दिया जा चुका है कि त्वरित मेहर (मेहर-ए-मुअज्जल) की अदायगी से पहले उसे पति से अलग रहने का अधिकार है, और अदायगी के बाद हरगिज़ नहीं। और यदि यह उद्देश्य है कि यहाँ पति उसे कष्ट पहुँचाता है और तकलीफें देता है और उसे रोकने वाला कोई नहीं है, इसलिए वह चाहती है कि पति उसे ऐसी जगह अपने पास रखे जहाँ उसका ज़ुल्म का हाथ छोटा रहे, तो बेशक यह उसका अनुरोध अवश्य विचारणीय है। हाकिम-ए-शरा (शरई न्यायाधीश) इस मामले पर गौर करेगा। यदि रुकैया बेगम का यह कथन सही पाया गया और वह देखेगा कि पति को डांटने-डपटने से काम नहीं चल रहा है और न ही वहाँ पड़ोसियों में कोई ऐसा है जो पति को काबू में रख सके और पत्नी को होने वाले कष्ट को रोक सके, तो वह अवश्य ही किसी सुरक्षित स्थान का प्रस्ताव करेगा और अहमद अली को आदेश देगा कि रुकैया बेगम को वहां रखे। आलमगीरी में है:

[अरबी]: यदि उसने उसे ऐसे घर में बसाया जहाँ उसके साथ कोई और नहीं है, और उसने काज़ी से शिकायत की कि पति उसे मारता है और उसे कष्ट पहुँचाता है, और काज़ी से विनती की कि वह उसे आदेश दे कि वह उसे नेक लोगों के बीच बसाए जो उसकी नेकी और बुराई को जान सकें, तो यदि काज़ी जानता है कि मामला वैसा ही है जैसा उसने कहा, तो वह उसे उसके लिए डांटेगा और उसे ज़्यादती करने से रोकेगा। और यदि वह नहीं जानता है, तो वह देखेगा कि क्या इस घर के पड़ोसी नेक लोग हैं, तो वह उसे वहीं रहने देगा, लेकिन वह पड़ोसियों से उसके व्यवहार के बारे में पूछेगा; यदि वे वैसा ही कुछ बताते हैं जैसा उसने बताया...

[उर्दू]: यदि पति ने पत्नी को ऐसे मकान में रहने की जगह दी जहाँ औरत अकेली है, तो औरत ने काज़ी से शिकायत की कि पति उसे पीटता और कष्ट देता है, और काज़ी से अनुरोध करती है कि वह

पति को आदेश दे कि वह उसे ऐसी जगह रहने की जगह दे जहाँ आस-पास नेक लोग हों जो पति की नेकी और बुराई को जान सकें। तो यदि काज़ी को पता हो कि औरत की शिकायत सही है, तो वह पति को डाँटकर उसे ज़्यादती करने से मना करे। यदि काज़ी को पता न हो तो वह मालूम करे कि अगर आस-पास वाले नेक लोग हैं तो औरत को वहाँ रहने के लिए पाबंद करे, लेकिन साथ ही काज़ी पड़ोसियों से पति के व्यवहार के बारे में जानकारी हासिल करे। अगर पड़ोसी औरत की शिकायत का समर्थन करें...

[१] रद्दुल मुहतार, बाबुन नफ़क़ा, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, २/२२६ पृष्ठ ४२० का ६८८

للوالدین فی کل جمعۃ باذنہ و بدونہ و للمحارم فی کل سنۃ مرۃ باذنہ و بدونہ۔[1][8] (شرعی اصطلاح جمعہ میں) خاوند کی اجازت ہو یا نہ ہو والدین کی ملاقات کے لئے گھر سے باہر جاسکتی ہے اور اپنے باقی محارم کی ملاقات کے لئے سال میں ایک مرتبہ جاسکتی ہے خاوند کی اجازت ہو یا نہ ہو۔ (ت)

اور دوسرے محلہ میں رہنے کی درخواست سے اگر رقیہ بیگم کی یہ مراد ہے کہ شوہر سے جدا رہے اور شوہر اس کے پاس نہ آنے پائے تو اس کا جواب تو ہوچکا کہ قبل ادائے مہر معجل اسے شوہر سے جدائی کا اختیار ہے اور بعد ادا ہر گز نہیں، اور اگر یہ مقصود ہے کہ یہاں شوہر اسے ایذائیں پہنچاتا تکلیفیں دیتا ہے اور کوئی اسے روکنے والا نہیں ہوتا لہذا چاہتی ہے کہ شوہر اسے ایسی جگہ اپنے پاس رکھے جہاں اس کا دست تعدی کوتاہ رہے تو بیشک یہ درخواست اس کی ضرور قابلِ لحاظ ہے حاکم شرع اس معاملہ میں غور فرمائے گا اگر رقیہ بیگم کا یہ بیان صحیح پایا جائے گا اور شوہر کو زجر و منع سے کام چلتا نہ دیکھے گا نہ وہاں ہمسایوں میں کوئی اس قابل پائے گا جو شوہر کو دبائے اور ایذائے زوجہ سے مانع آئے تو ضرور ایسی ہی کوئی امن کی جگہ تجویز کرکے احمد علی کو حکم دے گا کہ رقیہ بیگم کو وہاں رکھے، عالمگیری میں ہے :

ان اسکنھا فی منزل لیس معھا احد فشکت الی القاضی ان الزوج یضربھا ویؤذیھا وسألت القاضی ان یأمرہ ان یسکنھا بین قوم صالحین یعرفون احسانہ واساءتہ فان علم القاضی ان الامر کما قالت زجرہ عن ذلك و منعہ عن التعدی وان لم یعلم ینظر ان کان جیران ھذہ الدار قوماً صالحین اقرھا ھناك ولکن یسأل الجیران عن صنعہ فان ذکر و امثل الذی ذکرت اگر خاوند نے بیوی کو ایسے مکان میں رہائش دی جہاں عورت اکیلی ہے تو عورت نے قاضی سے شکایت کی کہ خاوند اسے پیٹتا اور اذیت دیتا

ہے، اور قاضی سے درخواست کرتی ہے کہ وہ خاوند کو حکم دے کہ وہ ایسی جگہ اس کو رہائش دے جہاں ارد گرد نیک لوگ ہوں جو خاوند کی نیکی و بدی معلوم کرسکیں تو اگر قاضی کو معلوم ہو عورت کی شکایت درست ہے تو وہ خاوند کو ڈانٹ کر اس کو زیادتی سے منع کرے اگر قاضی کو معلوم نہ ہو تو وہ معلوم کرے کہ اگر ارد گرد والے نیک لوگ ہیں تو عورت کو وہاں رہنے پر پابند کرے لیکن ساتھ ہی قاضی پڑوسیوں سے خاوند کے سلوک کے متعلق معلومات حاصل کرے اگر پڑوسی، عورت کی شکایت کی تائید کریں

[1]۸ ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۲۶/۲ Page 420 of 688

Fatawa Razawiyyah, Volume 13

[Right Column (Urdu)]: Then the Qazi (judge) should scold the husband and prevent him from excess. If the neighbors say the husband is not being excessive or causing harm, then the Qazi should compel the woman to stay in the same house. If there is no trustworthy person in the woman's neighborhood or if the neighbors favor the husband, then the Qazi will order the husband to house the woman in a neighborhood of virtuous people. Then the Qazi should gather information regarding this matter and base the proceedings on the neighbors' statements. This is stated in Al-Muheet. And Allah Almighty knows best, and the knowledge of Allah, whose glory be magnified, is complete and firm. (T)

[Left Column (Arabic)]: The judge shall rebuke him for that and prevent him from encroaching upon her rights. If they (the neighbors) state that he does not harm her, the judge shall leave her there. If there is no trustworthy person in her vicinity, or if they are inclined towards the husband, the judge shall order the husband to house her among righteous people, and shall inquire about that and base his decision on their report. Thus it is in Al-Muheet. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most firm.

Problem 155: From Saholi Post Office, District Bahraich, sent by Sheikh Abdul Aziz Sahib, 7 Ramadan 1310 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Alimony (nafaqah) and a place of residence (sukna) during the days of Iddah (waiting period) were obligatory upon Zaid. However, after divorcing Hind, Zaid expelled her from his house and also did not provide alimony. In this situation, can Hind receive compensation from Zaid for the alimony and housing during the days of Iddah, or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Alimony and residence for divorce Iddah, although obligatory upon Zaid, and he committed a sin by expelling the woman; however, since the Iddah has passed and the alimony was neither fixed (by court) nor determined (by agreement), Hind will not receive any compensation for it.

[Right Column (Urdu)]: It is in Hindiyyah that when a woman in Iddah does not file a claim against her husband regarding her alimony, and neither has the Qazi fixed any alimony for her yet, until the Iddah ends, then now there is no entitlement to alimony

for the woman. It is mentioned similarly in Al-Muheet. (T) And Allah Almighty knows best.

[Left Column (Arabic)]: In Al-Hindiyyah: If a woman in her waiting period (mu'taddah) does not litigate for her alimony, and the judge does not mandate anything until the waiting period expires, then there is no alimony for her. Thus it is in Al-Muheet. And Allah Almighty knows best.

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter Two on Residence, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/556.
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Three on Alimony of a woman in waiting period, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/558.

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं

[दायां कॉलम (उर्दू)]: तो काज़ी शौहर को डांटे और ज़्यादती से मना करे, और अगर पड़ोसी लोग कहें कि शौहर कोई ज़्यादती और अज़ीयत नहीं देता तो काज़ी औरत को उसी मकान में रहने का पाबंद करे और अगर औरत के पड़ोस में कोई काबिले एतमाद शख़्स न हो या पड़ोसी शौहर के तरफ़दार हों तो फिर काज़ी शौहर को हुक्म देगा कि औरत को नेक लोगों के पड़ोस में रिहाइश दे और फिर काज़ी इस मामले के मुतअल्लिक मालूमात हासिल करे और पड़ोसियों के बयान को कार्रवाई की बुनियाद बनाए, मुहीत में यूँ ही बयान किया गया है, वल्लाहु तआला आलम, और अल्लाह जल्ला मज्दुहु का इल्म कामिल और मोहकम है। (त)

[बायां कॉलम (अरबी)]: तो काज़ी उसे इसके लिए डांटे और उसे उसके अधिकारों के अतिक्रमण से रोके। यदि वे (पड़ोसी) कहें कि वह उसे कष्ट नहीं पहुँचाता है, तो काज़ी उसे वहीं रहने देगा। यदि उसके पड़ोस में कोई भरोसेमंद व्यक्ति न हो, या वे पति की ओर झुके हुए हों, तो काज़ी पति को आदेश देगा कि वह उसे नेक लोगों के बीच रखे, और इसके बारे में पूछताछ करेगा और उनके बयान के आधार पर निर्णय लेगा। ऐसा ही अल-मुहीत में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसकी महिमा का ज्ञान सबसे पूर्ण और दृढ़ है।

मसअला १५५: डाकख़ाना सहोली ज़िला बहराइच से मुर्सला शेख अब्दुल अज़ीज़ साहब, ७ रमज़ान १३१० हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि अयाम-ए-अद्दत का नफ़क़ा और सुकूनत का मकान देना ज़िम्मे ज़ैद वाजिब था लेकिन ज़ैद ने बा'द तलाक़ हिंदा को अपने मकान से निकाल दिया और नफ़क़ा भी नहीं दिया इस शक्ल में अयाम-ए-अद्दत का नफ़क़ा और मकान सुकूनत का मुआवज़ा हिंदा ज़ैद से पा सकती है या नहीं? बय्यिनू तूजिरू।

अल-जवाब: अद्दत-ए-तलाक़ का नफ़क़ा व सुकना अगरचे ज़िम्मे ज़ैद वाजिब था और वह औरत को निकाल देने से गुनहगार हुआ मगर जबकि अद्दत गुज़र गई और नफ़क़ा मफ़रूज़ व मक़दूर न हो चुका था तो उसका कोई मुआवज़ा हिंदा को न मिलेगा।

[दायां कॉलम (उर्दू)]: हिनदिया में है कि जब अद्दत वाली औरत अपने नफ़क़ा के मुतअल्लिक शौहर के ख़िलाफ़ दावा न करे और न ही काज़ी ने अभी उसके लिए कोई नफ़क़ा मुक़र्रर किया हो हत्ता कि

अद्दत ख़त्म हो जाए तो अब औरत के लिए नफ़क़ा का इस्तहक़ाक़ नहीं है, मुहीत में यूँ ही मज़कूर है। (त) वल्लाहु तआला आलम।

[बायां कॉलम (अरबी)]: हिनदिया में है: यदि अद्दत वाली स्त्री अपने भरण-पोषण (नफ़क़ा) के लिए मुकदमा नहीं करती है, और काज़ी कुछ भी निर्धारित नहीं करता है जब तक कि अद्दत समाप्त न हो जाए, तो उसके लिए कोई भरण-पोषण नहीं है। ऐसा ही अल-मुहीत में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. फ़तावा हिनदिया, दूसरा अध्याय सुकूनत के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर १/५५६।
2. फ़तावा हिनदिया, तीसरा अध्याय अद्दत वाली औरत के नफ़क़ा के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर १/५५८।

पृष्ठ ४२१ / ६८८

[دایاں کالم]: تو قاضی خاوند کو ڈانٹنے اور زیادتی سے منع کرے، اور اگر پڑوسی لوگ کہیں کہ خاوند کوئی زیادتی اور اذیت نہیں دیتا تو قاضی عورت کو اسی مکان میں رہنے کا پابند کرے اور اگر عورت کے پڑوس میں کوئی قابلِ اعتماد شخص نہ ہو یا پڑوسی خاوند کے طرفدار ہوں تو پھر قاضی خاوند کو حکم دے گا کہ عورت کو نیک لوگوں کے پڑوس میں رہائش دے اور پھر قاضی اس معاملہ کے متعلق معلومات حاصل کرے اور پڑوسیوں کے بیان کو کارروائی کی بنیاد بنائے، محیط میں یوں ہی بیان کیا ہے، واللہ تعالٰی اعلم، اور اللہ جل مجدہ کا علم کامل اور محکم ہے (ت)

[بایاں کالم (عربی)]: زجره عن ذلك ومنعه عن التعدي في حقها وان ذكروا انه لايؤذيها فالقاضي يتركها ثمه وان لم يكن في جواره من يوثق به او كانوا يميلون الى الزوج فالقاضي يأمر الزوج ان يسكنها في قوم صالحين ويسأل عن ذلك ويبني الامر على خبرهم كذا فى المحيط، واللہ تعالٰی اعلم وعلمه جل مجده اتم واحكم۔

مسئلہ ۱۵۵: از ڈاکخانہ سہولی ضلع بہرائچ مرسلہ شیخ عبدالعزیز صاحب ۷ رمضان ۱۳۱۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایام عدت کا نفقہ اور سکونت کا مکان دینا بذمہ زید واجب تھا لیکن زید نے بعد طلاق ہندہ کو اپنے مکان سے نکال دیا اور نفقہ بھی نہیں دیا اس شکل میں ایام عدت کا نفقہ اور مکان سکونت کا معاوضہ ہندہ زید سے پاسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: عدت طلاق کا نفقہ وسکنٰی اگرچہ بذمہ زید واجب تھا اور وہ عورت کو نکال دینے سے گنہگار ہوا مگر جبکہ عدت گزر گئی اور نفقہ مفروض و مقدور نہ ہو چکا تھا تو اس کا کوئی معاوضہ ہندہ کو نہ ملے گا۔

[دایاں کالم]: ہندیہ میں ہے کہ جب عدت والی عورت اپنے نفقہ کے متعلق خاوند کے خلاف دعوٰی نہ کرے اور نہ ہی قاضی نے ابھی اس کے لئے کوئی نفقہ مقرر کیا ہو حتیٰ کہ عدت ختم ہو جائے تو اب عورت کے لئے نفقہ کا استحقاق نہیں ہے، محیط میں یونہی مذکور ہے۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

[بایاں کالم (عربی)]: في الهندية المعتدة اذالم تخاصم نفقتها ولم يفرض القاضي شيأً حتى انقضت العدة فلانفقة لها كذا فى المحيط۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الثانی فی السکنیٰ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۵۶ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الثالث فی نفقة المعتدة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۵۸

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Problem 156: From Pilibhit, 21 Shawwal 1307 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person has married twice and reduced the maintenance and allowance (Nan-o-Nafqa) for one wife. Due to the hardship of necessities, that wife took a loan according to her needs and spent it. In this situation, will the repayment of the debt be the responsibility of the husband or the wife? Is she entitled to demand her dowry (Mahr) at any time without a divorce? And in case of no divorce, can she demand a place of residence as well? And upon proof and demand, how much can she take from the husband's income? Explain and be rewarded.

The Answer: To cause unnecessary hardship to a wife is one sin, and to provide her less than the second wife is another severe sin, the prohibition of which is explicitly stated in the Quran and Hadith. However, as long as the maintenance is not fixed through mutual agreement or a judge's (Qazi's) decree, whatever loan a woman takes on her own for her expenses will be her own responsibility. She will not be able to offset it against the husband even if it was for necessary food and drink, etc., only to the extent of necessity and in a state of necessity, even if the husband oppressively refuses to give her maintenance. It is stated in Alamgiri:

[Arabic Text]: If she took a loan in the husband's name while the judge (Qazi) had not yet fixed anything, nor had maintenance been agreed upon mutually, and the woman had already spent this loan, then the woman cannot demand this loan from her husband. Rather, this action of hers will be considered voluntary. The rule is the same whether the husband is present or absent. (T)

Yes, if it had been decided by a judge's order or mutual agreement that, for example, five rupees daily or twenty rupees monthly, or a certain amount of grain and clothing annually is the maintenance for this woman, which the husband will pay daily, monthly, or annually, and after this agreement, he did not pay and the woman took a loan or spent from her personal wealth, then she can certainly offset it from the husband according to the agreement.

[Arabic Text]: If the woman took a loan, she herself is responsible when that loan was taken without the judge's (Qazi's) decision. (T)

[1] Fatawa Hindiyyah, Chapter One on the Maintenance of the Wife, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/551.

फ़तावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

मसाला 156: पीलीभीत से, 21 शव्वाल 1307 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने दो निकाह किए और एक पत्नी के गुज़ारे (नान-ओ-नफ़्क़ा) में कमी कर दी। आवश्यकताओं की कठिनाई के कारण उस पत्नी ने ज़रूरत के अनुसार ऋण लिया और खर्च किया। इस स्थिति में, ऋण का भुगतान पति की ज़िम्मेदारी होगी या पत्नी की? क्या वह तलाक के बिना किसी भी समय अपने मेहर की हकदार और माँग करने वाली है? और तलाक न होने की स्थिति में, क्या वह रहने के लिए आवास की भी माँग कर सकती है? और प्रमाण और माँग पर, वह पति की आय से कितना ले सकती है? बयान करें और पुरस्कृत हों।

उत्तर: पत्नी को बिना वजह कष्ट देना एक पाप है और दूसरी पत्नी से कम देना दूसरा गंभीर पाप है, जिसकी मनाही कुरान और हदीस में स्पष्ट है। लेकिन जब तक आपसी सहमति या न्यायाधीश (काज़ी) के आदेश से गुज़ारा (नफ़्क़ा) तय नहीं हो जाता, तब तक एक महिला अपने खर्चों के लिए जो भी ऋण लेती है, वह स्वयं उसी पर होगा। वह इसे पति से वसूल नहीं कर सकेगी, भले ही वह आवश्यक खाने-पीने आदि के लिए ज़रूरत के अनुसार और ज़रूरत की स्थिति में ही लिया गया हो, भले ही पति ज़ुल्म करते हुए उसे नफ़्क़ा न दे। आलमगिरी में है:

[अरबी पाठ]: यदि उसने पति के नाम पर ऋण लिया जबकि काज़ी ने अभी तक कुछ तय नहीं किया था, और न ही अभी तक आपसी सहमति से नफ़्क़ा तय हुआ था, जबकि महिला इस ऋण को खर्च कर चुकी हो, तो अब महिला इस ऋण के बारे में पति से माँग नहीं कर सकती है, बल्कि उसकी यह कार्यवाही स्वैच्छिक मानी जाएगी। पति मौजूद हो या अनुपस्थित, दोनों स्थितियों में नियम समान है। (त)

हाँ, यदि काज़ी के आदेश या आपसी सहमति से यह तय हो गया था कि उदाहरण के लिए 5 रुपये दैनिक या बीस रुपये मासिक या इतना अनाज और कपड़े वार्षिक रूप से इस महिला का नफ़्क़ा है जिसे पति दैनिक या मासिक या वार्षिक रूप से भुगतान करेगा, और इस समझौते के बाद उसने भुगतान नहीं किया और महिला ने ऋण लिया या अपने व्यक्तिगत धन से खर्च किया, तो वह निश्चित रूप से समझौते के अनुसार पति से इसकी भरपाई कर सकती है।

[अरबी पाठ]: यदि महिला ने ऋण लिया है, तो वह स्वयं ज़िम्मेदार है जब वह ऋण काज़ी के फैसले के बिना लिया गया हो। (त)

[1] फ़तावा हिंदिया, पत्नी के भरण-पोषण पर पहला अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/551।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

مسئلہ ۱۵۶: از پیلی بھیت ۲۱ شوال ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنے دو نکاح کئے اور ایک زوجہ کے نان و نفقہ میں کم کمی کی اس زوجہ نے بوجہ تکلیف ضروریات بقدر ضرورت قرض لے کر خرچ کیا اس صورت میں ادائے قرضہ ذمہ زوج ہو گا یا زوجہ اور مستحق و طالب اپنے مہر کی بغیر طلاق ہر وقت ہے یا نہیں اور در صورت نہ ہونے طلاق خواہانِ مکان سکونت و نیز ہو سکتی ہے یا نہیں اور بر تقدیر ثبوت و طلب زوج کی آمدنی سے کس قدر لے سکتی ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: زوجہ کو بلاوجہ تکلیف دینا ایک گناہ اور دوسری زوجہ سے کم رکھنا دوسرا گناہ شدید جس کی تحریم پر قرآن و حدیث ناطق مگر جب تک نفقہ باہمی تراضی اور قضائے قاضی سے مقرر نہ ہو جائے عورت جو کچھ بطور خود اپنے مصارف کے لئے قرض لے کر اٹھائے گی وہ قرض عورت ہی پر ہوگا شوہر سے مجرانہ پا سکے گی اگر خورد و نوش و غیر ہما مصارف ضروریہ ہی کے لئے بقدر ضرورت و بحال ضرورت ہی لے اگرچہ زوج محض ظلماً اسے نفقہ نہ دے۔ عالمگیری میں ہے:

[عربی متن]: عدت والی نے خاوند کے نام پر قرض لیا جبکہ ابھی تک قاضی نے کوئی مقرر نہ کیا ہو اور نہ ہی ابھی آپس میں رضامندی سے نفقہ ہوا جبکہ عورت اس قرض کو خرچ کر چکی ہو، تو اب عورت اس قرض کے متعلق خاوند سے مطالبہ نہیں کر سکتی بلکہ یہ کارروائی اس کی رضا کارانہ قرار دی جائے گی، خاوند موجود ہو یا غائب دونوں صورتوں میں حکم یکساں ہے۔ (ت)

ہاں اگر حکم قاضی یا باہمی تراضی سے قرار پا گیا تھا کہ مثلاً ۵ روپے روز یا بیس روپے ماہانہ خواہ اس قدر غلہ و لباس سالانہ اس عورت کا نفقہ ہے کہ روزانہ یا ماہ بہ ماہ یا سالانہ شوہر ادا کرے گا اور اس قرار داد کے بعد نہ دیا اور عورت نے قرض لیا خواہ اپنے ذاتی مال سے صرف کیا تو بیشک شوہر سے بقرار داد مجرالے سکتی ہے

[عربی متن]: اگر عورت نے قرض لیا ہو تو وہ خود ذمہ دار جب وہ قرض قاضی کے فیصلہ کے بغیر لیا ہو۔ (ت)

۱ فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فی نفقۃ الزوجۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۵۱

صفحہ 422 of 688

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

It is in Alamgiri: 'And if she spent from her own wealth after it was fixed or agreed upon, she may reclaim it from her husband. Likewise, if she borrowed on the husband's name, whether her borrowing was with the permission of the judge or without his permission. However, if it was without the permission of the judge, the demand is specifically against her, and the creditor does not have the right to demand from the husband what she borrowed. If it was with the permission of the judge, she may transfer the creditor to the husband so he can demand the debt from him.' Thus it is in Al-Bada'i. 1 Urdu Explanation: If a woman spent from her own wealth when the judge had fixed her maintenance (nafaqa) or if the woman and husband had mutually agreed upon it, then the woman can recover that spent wealth from the husband. Similarly, if instead of her own wealth she took a loan in the husband's name, then if it was taken with the judge's order and permission, she will recover it from the husband. If it was taken without the judge's order and permission, the demand for the loan will be against the woman only; the creditor will not have the right to demand from the husband instead of the woman. And when the woman took the loan with the judge's order and permission, it will be permissible for the woman to transfer the demand for that loan to the husband's responsibility so that the creditor now demands from the husband; it is similarly stated in Bada'i. (T)

In Durr-e-Mukhtar: 'Maintenance does not become a debt except by judgment or agreement, meaning both agreed on a specific amount, types or dirhams. Before that, nothing is binding on him, and after it, she reclaims what she spent, even if from her own wealth without a judge's order.' 2 Urdu Explanation: A loan taken by a woman will be the husband's responsibility only when the woman has taken that loan on the judge's order or has settled it herself with the husband in a compromise that such-and-such item or cash will be of such-and-such amount. A loan taken before that will not be the husband's responsibility. And afterward, a loan taken by the woman, whether she spent from her own wealth without the judge's order, she can recover from the husband. (T)

In Radd-ul-Muhtar from Bahr-ur-Ra'iq: 'She does not reclaim what she borrowed, but only the fixed amount.' 3 Urdu Explanation: If a woman takes a loan for maintenance, there will be no demand for it from the husband; rather, she will only be able to demand from the husband in the case where it has been decided by the judge or agreed upon mutually. (T)

1 Fatawa Hindiyya, Chapter One on Spousal Maintenance, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/551 2 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/270 3 Radd-ul-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/259 Page 423 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

आलमगिरी में है: 'और यदि उसने अपने माल में से निर्धारित या सहमत होने के बाद खर्च किया, तो उसे अपने पति से इसे वापस लेने का अधिकार है। इसी प्रकार, यदि उसने पति के नाम पर ऋण लिया, चाहे उसका ऋण लेना काज़ी की अनुमति से हो या उसकी अनुमति के बिना। हालांकि, यदि यह काज़ी की अनुमति के बिना था, तो मांग विशेष रूप से उसके खिलाफ है, और लेनदार को पति से वह मांग करने का अधिकार नहीं है जो उसने ऋण लिया था। यदि यह काज़ी की अनुमति के साथ था, तो वह लेनदार को पति की ओर भेज सकती है ताकि वह उससे ऋण की मांग कर सके।' अल-बदाइ' में इसी प्रकार है। 1 उर्दू व्याख्या: यदि एक महिला ने अपने माल में से तब खर्च किया जब काज़ी ने उसका भरण-पोषण (नफ़क़ा) निर्धारित कर दिया था या यदि महिला और पति ने आपस में उसे तय कर लिया था, तो महिला वह खर्च किया हुआ माल पति से वसूल कर सकती है। इसी तरह, अपने माल के बजाय यदि उसने पति के नाम पर क़र्ज़ लिया, तो यदि काज़ी के हुक्म और इजाज़त पर लिया हो तो शौहर से वसूल करेगी। यदि काज़ी के हुक्म और इजाज़त के बिना लिया हो तो क़र्ज़ का मुतालबा सिर्फ औरत से होगा; क़र्ज़ख्वाह को औरत के बजाय शौहर से मुतालबा का हक़ न होगा। और जब काज़ी के हुक्म और इजाज़त से औरत ने क़र्ज़ लिया तो औरत को जायज़ होगा कि वह उस क़र्ज़ के मुतालबा को शौहर के ज़िम्मे कर दे ताकि क़र्ज़ख्वाह अब शौहर से मुतालबा करे; बदाइ' में इसी तरह बयान है। (त)

दुर्रे मुख्तार में है: 'भरण-पोषण तब तक ऋण नहीं बनता जब तक कि निर्णय या सहमति से न हो, अर्थात दोनों ने एक निश्चित मात्रा, प्रकार या दिरहम पर समझौता कर लिया हो। उससे पहले, उस पर कुछ भी अनिवार्य नहीं है, और उसके बाद वह जो खर्च करती है उसे वापस लेती है, भले ही काज़ी के आदेश के बिना अपने माल से हो।' 2 उर्दू व्याख्या: औरत का लिया हुआ क़र्ज़ शौहर के ज़िम्मे सिर्फ उस वक़्त होगा जब औरत ने वह क़र्ज़ काज़ी के हुक्म पर या खुद शौहर के साथ सुलह में तय कर लिया हो कि फ़लां चीज़ या नक़द इतनी मिक़दार होगी। उससे पहले लिया हुआ क़र्ज़ शौहर के ज़िम्मे न होगा। और बाद में औरत का लिया हुआ क़र्ज़, चाहे अपने माल से ही काज़ी के हुक्म के बग़ैर उसने खर्च किया हो, वह शौहर से वसूल कर सकती है। (त)

रदुल मुह्तार में बहरुर राइक़ से है: 'वह उधार ली गई वस्तु को वापस नहीं लेती, बल्कि केवल निर्धारित राशि को लेती है।' 3 उर्दू व्याख्या: औरत ने नफ़क़ा के लिए क़र्ज़ लिया तो शौहर से उसका

मुतालबा नहीं होगा; बल्कि शौहर से सिर्फ उसी सूरत में मुतालबा कर सकेगी जब काज़ी की तरफ से या आपस में तय कर लिया हो। (त)

1 फ़तावा हिन्दिया, पत्नी के भरण-पोषण पर पहला अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/551 2 दुर्रे मुख्तार, भरण-पोषण पर अध्याय, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/270 3 रदुल मुह्तार, भरण-पोषण पर अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/259 पृष्ठ 423 का 688

عالمگیری میں ہے: ولو انفقت من مالها بعد الفرض او التراضي لها ان ترجع علی الزوج وکذا اذا استدانت علی الزوج سواء کانت استدانتها باذن القاضي او بغیر اذنہ غیر انها ان کانت بغیر اذن القاضي کانت المطالبة علیها خاصة ولم یکن للغریم ان یطالب الزوج بما استدانت وان کانت باذن القاضي لها ان تحیل الغریم علی الزوج فیطالبہ بالدین ھکذا فی البدائع۔ 1 اگر عورت نے اپنے مال میں سے صرف کیا جبکہ قاضی نے اس کا نفقہ مقرر کردیا ہو یا آپس میں عورت اور خاوند نے طے کر لیا ہو تو پھر عورت وہ صرف شدہ مال خاوند سے وصول کر سکتی ہے اور یونہی اپنے مال کی بجائے اگر اس نے خاوند کے نام پر قرض لیا ہو تو اگر قاضی کے حکم و اجازت پر لیا ہو تو خاوند سے وصول کرے گی اور اگر قاضی کے حکم و اجازت کے بغیر لیا ہو تو قرض کا مطالبہ صرف عورت سے ہو گا قرض خواہ کو عورت کی بجائے خاوند سے مطالبہ کا حق نہ ہوگا، اور جب قاضی کے حکم اور اجازت سے عورت نے قرض لیا تو عورت کو جائز ہوگا کہ وہ اس قرض کے مطالبہ کو خاوند کے ذمہ کر دے تاکہ قرض خواہ اب خاوند سے مطالبہ کرے، بدائع میں یوں ہی بیان ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: النفقۃ لا تصیر دینا الا بالقضاء او الرضاء ای اصطلحا ھما علی قدر معین اصنافا او دراھم فقبل ذلك لا یلزمہ شیئ و بعدہ ترجع بما انفقت ولو من مال نفسھا بلا امر قاض 2۔ عورت کا لیا ہوا قرض خاوند کے ذمہ صرف اس وقت ہوگا جب عورت نے وہ قرض قاضی کے حکم پر یا خود خاوند کے ساتھ مصالحت میں طے کرلیا ہو کہ فلاں جنس یا نقد اتنی مقدار ہوگی، اس سے قبل لیا ہوا قرض خاوند کے ذمہ نہ ہوگا، اور بعد میں عورت کا لیا ہوا قرض، خواہ اپنے مال سے ہی قاضی کے حکم کے بغیر اس نے صرف کیا ہو تو خاوند سے وصول کرسکتی ہے (ت)

ردالمحتار میں بحر الرائق سے ہے: لا ترجع بما استقرضت بل بالمفروض فقط 3۔ عورت نے نفقہ کے لئے قرض لیا تو خاوند سے اس کا مطالبہ نہیں ہوگا بلکہ خاوند سے صرف اسی صورت میں مطالبہ کرسکے گی جب قاضی کی طرف سے یا آپس میں طے کرلیا ہو۔ (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فی نفقۃ الزوجہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۵۱ 2 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۷۰ 3 ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۹/۲ Page 423 of 688

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

And regarding the mahr (dowry), when no mention was made of immediate (ta'jeel) or deferred (tajeel) payment, and no condition was set that a certain amount would be taken in advance, nor was any period fixed for payment at a known time or after a certain duration, then it will be left to the local custom and tradition of the city. It is stated in Nuqayah:

[Arabic Box: The immediate and the deferred (mahr), if they are specified, then it is that; otherwise, it is according to the custom. -1] | If the immediate or deferred mahr has been specified, then it will be that; otherwise, it will be according to custom. (T)

The situation presented verbally by the questioner was exactly like this, meaning no condition for immediate or deferred payment was made. Indeed, in our lands, general dowries are established in this manner. Thus, according to the widespread and known custom (that giving any portion of the dowry in advance is not customary at all, nor is there any known customary period for it, but rather in most households it remains deferred until death or divorce), the women here do not have the right to demand the dowry until separation occurs due to death or divorce. Nor does the judge (Qazi) have the authority to compel the payment of the dowry before separation in such a situation. It is stated in Khaniyah:

[Arabic Box: If the term is known, the deferment is valid; and if it is not, it is not valid. The judge does not compel him to deliver the remainder, nor does he imprison him. -2] | If the period for the mahr is fixed, then deferment is valid; otherwise, it is not valid, and the judge cannot compel the husband to pay the remaining mahr nor can he imprison him. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Box: Because her right to demand it only becomes established for her after death or divorce, not from the time of marriage. -3] | Because the wife's right to demand the mahr will be after the husband's death or divorce; she will not have the right to demand it immediately upon marriage. (T)

And as long as no factor preventing maintenance (nafaqa) is found, such as the woman leaving her husband's house unlawfully or refusing to come to him without a valid reason, she will undoubtedly remain entitled to maintenance. Similarly, when these obstacles are removed, for example, the woman returns to her husband's

home, she will again be entitled to maintenance as before. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Box: Maintenance is obligatory for the wife upon her husband, even if...] | If the wife is at her father's house, then the husband towards her...

Footnotes: 1. Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Chapter: The minimum mahr is ten dirhams, Nur Muhammad Kar Khana Tijarat Kutub Karachi, p. 56. 2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on mentioning matters of Mahr, Nawal Kishore Lucknow, 1/74. 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Imprisonment, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/333.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पेज 13

और मेहर के मामले में, जब अदायगी की जल्दी (तअजील) या देरी (ताजील) के बारे में कुछ बयान नहीं किया गया, न ही यह शर्त रखी गई कि इतना पेशगी लिया जाएगा और न ही कोई अवधि तय की गई कि फलां समय या इतनी मुद्दत के बाद अदा होगा, तो इसे शहर के रस्म-ओ-रिवाज पर छोड़ दिया जाएगा। नक़ाया में है:

[अरबी बॉक्स: मुअज्जिल और मुअज्जिल (मेहर), अगर बयान कर दिए गए हों तो वही (मान्य) है, वरना जो रिवाज हो। -1] | मेहर मुअज्जिल या मुअज्जिल अगर बयान कर दिया हो तो वही वरना उर्फ़ (रिवाज़) के मुताबिक होगा। (त)

सायल (पूछने वाले) ने जो स्थिति मौखिक रूप से बयान की है वह बिल्कुल ऐसी ही थी, यानी तुरंत या विलंबित भुगतान की कोई शर्त नहीं रखी गई थी, और वास्तव में हमारे शहरों में आम तौर पर मेहर इसी तरह तय किए जाते हैं। तो प्रचलित रिवाज़ के अनुसार (कि मेहर का कुछ हिस्सा अग्रिम देना बिल्कुल भी रिवाज नहीं है, और न ही इसके लिए कोई ज्ञात अवधि है, बल्कि आम घरों में यह मौत या तलाक़ तक विलंबित रहता है), यहाँ की औरतें तब तक मेहर माँगने का हक नहीं रखतीं जब तक कि मौत या तलाक़ से अलगाव न हो जाए। न ही काज़ी को यह अधिकार है कि ऐसी सूरत में अलगाव से पहले मेहर की अदायगी के लिए मजबूर करे। खानिया में है:

[अरबी बॉक्स: अगर मुद्दत मालूम हो तो ताजील (देरी) सही है, और अगर मालूम न हो तो सही नहीं। काज़ी उसे शेष राशि सौंपने के लिए मजबूर नहीं करता, न ही उसे कैद करता है। -2] | अगर मेहर की मुद्दत तय है तो ताजील सही है वरना सही नहीं, और काज़ी बाकी मेहर की अदायगी के लिए शौहर पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकता और न ही उसे कैद कर सकता है। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी बॉक्स: क्योंकि इसे (मेहर) माँगने का उसका हक़ केवल मौत या तलाक़ के बाद ही साबित होता है, निकाह के समय से नहीं। -3] | क्योंकि बीवी को मेहर माँगने का हक़ शौहर की मौत या तलाक़ के बाद होगा, निकाह करते ही माँगने का हक़ नहीं होगा। (त)

और जब तक नफ़क़ा (खर्च) रोकने वाली कोई बात न हो, जैसे औरत का शौहर के घर से बिना वजह निकल जाना या शौहर के पास आने से बिना वजह इनकार करना, वह बेशक नफ़क़ा की हकदार

रहेगी। इसी तरह जब ये रुकावटें दूर हो जाएँगी, मिसाल के तौर पर औरत शौहर के पास वापस आ जाएगी, तो वह फिर से नफ़क़ा की हकदार हो जाएगी। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी बॉक्स: नफ़क़ा बीवी के लिए शौहर पर लाज़िम है, चाहे वह...] | अगर बीवी अपने बाप के घर हो तो शौहर उसे अपने...

फुटनोट्स: 1. मुख्तसर अल-विकाया फी मसाइल अल-हिदाया, बाब: अकलुल मेहर अशरत दरहम, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब कराची, पेज 56। 2. फ़तावा काज़ी ख़ान, बाब फ़ी ज़िक्र मसाइल अल-मेहर, नवल किशोर लखनऊ, 1/74। 3. रद्द अल-मुह्तार, फ़सल फ़िल हब्स, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बैरूत, 2/333।

पेज 424/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیز د ہم، صفحہ ۱۳

اور مہر میں جبکہ تعجیل وتاجیل کچھ بیان میں نہ آئی یہ نہ شرط کی جائے کہ کل اس قدر پیشگی لیا جائے گا نہ کوئی میعاد قرار پائے کہ فلاں وقت معلوم یا اتنی مدت کے بعد ادا ہو گا تو اس وقت عرف ورواج بلدیہ پر چھوڑا جائے گا۔ نقایہ میں ہے:

المعجل والمؤجل ان بینا فذلك والا فالمتعارف- ۱ | مہر معجل یا مؤجل اگر بیان کردیا ہو تو وہی ورنہ عرف کے مطابق ہوگا۔ (ت)

سائل زبانی مظہر کے یہاں صورتِ واقعہ یونہی تھی یعنی تعجیل و تاجیل کچھ مشروط نہ ہوئی اور واقعی ہمارے بلاد میں عامہ مہر ایسے ہی بندھتے ہیں تو بحکم عرف شائع و ذائع (کہ ہرگز نہ کسی قدر مہر پیشگی دینا معہود ہے، نہ اسکے لئے کوئی میعاد معلوم متعارف بلکہ عامہ بیوت میں موت یا طلاق تک مؤخر رہتا ہے) یہاں کی عورتیں جب تک مرگ یا طلاق سے افتراق نہ واقع ہو ہرگز مطالبہ مہر کا استحقاق نہیں رکھتیں، نہ قاضی کو اختیار کہ ایسی صورت میں پیش از فراق ادائے مہر پر جبر کرے، خانیہ میں ہے:

ان کان الاجل معلوما صح التاجیل وان لم یکن لایصح، ولا یجبرہ القاضی علی تسلیم الباقی ولا یحبسہ-۲ | اگر مہر کی مدت مقرر ہے تو مؤخر صحیح ہے ورنہ صحیح نہیں اور قاضی باقی مہر کی ادائیگی کے لئے خاوند پر جبر نہیں کر سکتا اور نہ ہی اس کو قید کر سکتا ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

لان حق طلبہ انما یثبت لہا بعد الموت او الطلاق لامن وقت النکاح-۳ | کیونکہ بیوی کو مہر کے مطالبے کا حق خاوند کی موت یا طلاق کے بعد ہو گا، نکاح کرتے ہی مطالبے کا حق نہیں ہوگا۔ (ت)

اور جب تک کوئی امر مانع نفقہ مثلاً عورت کا شوہر کے گھر سے ناحق نکل جانا یا اس کے یہاں آنے سے ناحق انکار کرنا نہ پایا جائے بلاشبہ وہ مستحق نفقہ رہ سکتی رہے گی۔ اسی طرح جب یہ موانع زائل ہوجائیں گے مثلاً عورت شوہر کے یہاں واپس آئے گی تو پھر بدستور مستحق نفقہ ہو جائے گی، در مختار میں ہے:

النفقة تجب للزوجة علی زوجها ولو | اگر بیوی اپنے والد کے گھر ہو تو خاوند اس کو اپنے

۱ مختصر الوقایة في مسائل الہدایة فصل اقل المہر عشرة دراہم نور محمد کار خانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶ ۲ فتاوٰی قاضی خاں باب في ذکر مسائل المہر نولکشور لکھنو ۱/ ۷۴۔ ۳ ردالمحتار فصل في الحبس دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۳۳

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Arabic Text Block 1] Arabic: If she resides in her father's house while the husband has not requested her transfer, the fatwa (legal ruling) is given that she is entitled to maintenance. Similarly, if he requested it and she did not refuse, or if she refused due to her unpaid mahr (dower). However, she is not entitled if she left his house without a legitimate reason, and she is considered disobedient until she returns. [Summarized] Urdu Translation from Page: If the husband does not demand that the wife move to his house, maintenance remains obligatory on him. Similarly, if she does not refuse to move upon his demand, or if she refuses because she is demanding her dower, the husband is still obligated to provide maintenance. However, if she resides outside the husband's house without a valid reason, maintenance will not be obligatory because in that case, she is considered disobedient until she returns to the husband's house. [Summarized (T)]

[Main Body Text] As for the demand, if the maintenance has been fixed by a court or by mutual consent, she can demand payment for the days that have passed since the agreement without payment, as we have previously mentioned. For the future as well, she can demand for the period fixed for recurring maintenance after it starts. For example, if maintenance is fixed monthly, she can demand it at the beginning of each month; and if fixed annually, at the beginning of each year. She cannot demand more than that, such as seeing the next month's moon or the turning of the next year, for two months or two years ahead, if that month or year has not yet begun. In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Text Block 2] Arabic: Maintenance is mandated due to recurring needs. Thus, if a certain amount is mandated for each month, the need is renewed with the start of each month. Before its renewal, the mandate is not renewed, so maintenance is not obligatory before it. If an amount is mandated for each year, then a discharge (acquittal) for the year that has begun is valid, but not for more than that, nor for a year that has not yet begun. [Summarized] Urdu Translation from Page: Future maintenance becomes obligatory due to a future new need. So when a monthly allowance is fixed, it is as if the woman has a new need each month. Before the new need arises, new maintenance will not be mandated, hence payment will also not be obligatory beforehand. And if an annual allowance is fixed, only the maintenance for the beginning year will be mandatory; maintenance for the time before the year starts or for more than a year will not be mandatory. [Summarized (T)]

In Bahr al-Ra'iq, it is stated:

[Arabic Text Block 3] Arabic: The obligation for the first month is fulfilled, and regarding... Urdu Translation from Page: The allowance given in the first month of the year, at the end of the period...

[Footnotes] 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 253/2.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी पाठ खंड 1] अरबी: यदि वह अपने पिता के घर में रहती है और पति ने उसके स्थानांतरण की मांग नहीं की है, तो फतवा दिया जाता है कि वह भरण-पोषण (नफ़क़ा) की हकदार है। इसी तरह, यदि उसने मांग की और उसने मना नहीं किया, या उसने अपने मेहर के कारण मना किया। हालांकि, यदि वह बिना किसी वैध कारण के उसके घर से बाहर चली गई है, तो वह हकदार नहीं है और वापस आने तक वह अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) मानी जाएगी। [संक्षेपित] पृष्ठ से उर्दू अनुवाद: यदि पति पत्नी को अपने घर स्थानांतरित करने की मांग नहीं करता है, तो पति पर पत्नी का भरण-पोषण अनिवार्य होगा। इसी प्रकार, यदि वह पति की मांग पर उसके घर जाने से इनकार नहीं करती है, या वह अपने मेहर की मांग के कारण स्थानांतरित होने से इनकार कर रही है, तो भी पति पर उसका भरण-पोषण अनिवार्य होगा। जबकि पति के घर के बाहर बिना किसी कारण के रहने की स्थिति में भरण-पोषण अनिवार्य नहीं होगा क्योंकि उस स्थिति में वह पति के घर वापस आने तक अवज्ञाकारी मानी जाएगी। [संक्षेपित (त)]

[मुख्य पाठ] जहाँ तक माँग का सवाल है, यदि भरण-पोषण अदालती फैसले या आपसी सहमति से तय हो गया है, तो वह उन दिनों के भुगतान की माँग कर सकती है जो समझौते के बाद बिना भुगतान के बीत गए हैं, जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है। भविष्य के लिए भी, वह आवर्ती भरण-पोषण के लिए निर्धारित अवधि के शुरू होने के बाद उसी के अनुसार माँग कर सकती है। उदाहरण के लिए, यदि भरण-पोषण मासिक तय किया गया है, तो वह हर महीने की शुरुआत में उस महीने के लिए माँग कर सकती है; और यदि वार्षिक तय किया गया है, तो हर साल की शुरुआत में उस साल का भरण-पोषण माँग सकती है। वह इससे अधिक की माँग नहीं कर सकती, जैसे कि अगला महीना देखने या अगले साल के आने पर, दो महीने या दो साल आगे के लिए, यदि वह महीना या साल अभी शुरू नहीं हुआ है। रद अल-मुह्तार में उल्लेख है:

[अरबी पाठ खंड 2] अरबी: भरण-पोषण आवर्ती आवश्यकताओं के कारण अनिवार्य किया जाता है। अतः, यदि प्रत्येक माह के लिए एक निश्चित राशि तय की जाती है, तो प्रत्येक माह की शुरुआत के साथ आवश्यकता भी नई हो जाती है। इसके नवीनीकरण से पहले, अनिवार्यता नई नहीं होती, इसलिए इससे पहले भरण-पोषण अनिवार्य नहीं होता। यदि प्रत्येक वर्ष के लिए एक राशि तय की जाती है, तो शुरू हुए वर्ष के लिए दोषमुक्ति मान्य है, लेकिन उससे अधिक के लिए नहीं, और न ही उस वर्ष के लिए जो अभी शुरू नहीं हुआ है। [संक्षेपित] पृष्ठ से उर्दू अनुवाद: भविष्य का भरण-पोषण

भविष्य की नई ज़रूरत के कारण अनिवार्य होता है। अतः जब मासिक खर्च तय हो गया, तो नए महीने पर मानो स्त्री को ज़रूरत भी नई हुई, तो नई ज़रूरत से पहले नया भरण-पोषण तय नहीं होगा, इसलिए भुगतान भी पहले अनिवार्य नहीं होगा। और यदि खर्च वार्षिक तय हुआ हो, तो केवल शुरू होने वाले वर्ष का भरण-पोषण आवश्यक होगा, वर्ष शुरू होने से पहले का और एक वर्ष से अधिक का भी आवश्यक नहीं होगा। [संक्षेपित (त)]

बहर अल-रैक़ में उल्लेख है:

[अरबी पाठ खंड 3] अरबी: पहले महीने के लिए अनिवार्यता पूरी हो गई है, और जिसके बारे में... पृष्ठ से उर्दू अनुवाद: साल के पहले महीने में दिया गया खर्च अवधि के अंत में...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. दुर्रे मुख्तार, नफ़क़ा का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/266। 2. रद अल-मुह्तार, नफ़क़ा का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 253/2।

पृष्ठ 425/688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[ٹیبل ۱] عربی: هي في بيت ابيها اذالم يطالبها الزوج بالنقلة به يفتى وكذا اذا طالبها ولم تمتنع او امتنعت للمهر، لا خارجة من بيته بغير حق وهى الناشزة حتى تعود اه ملخصاً اردو: گھر منتقل کرنے کا مطالبہ نہ کرے تو تب بھی خاوند پر نفقہ زوجہ واجب ہوگا، اور یوں ہی جب وہ خاوند کے مطالبہ پر اس کے گھر منتقل ہونے سے انکار نہ کرتی ہو یا وہ اپنے مہر کے مطالبہ کی وجہ سے منتقل ہونے سے انکار کر رہی ہو تو بھی خاوند پر اس کا نفقہ واجب ہوگا جبکہ خاوند کے گھر سے باہر بلاوجہ رہ رہی ہو تو نفقہ واجب نہ ہوگا کیونکہ اس صورت میں وہ خاوند کے گھر واپس نہ آنے تک نافرمان قرار پائے گی اھ ملخصاً (ت)

رہا مطالبہ اگر نفقہ قضایا رضاسے مقررہولیا ہے تو جتنے دن بعد قرار داد بے نفقہ گزر گئے ان کا بھی مطالبہ کرسکتی ہے کما اسلفنا (جیساکہ ہم نے پہلے بیان کردیا ہے ت) اور آئندہ کے لئے بھی جومعیاد تکرار نفقہ کے لئے قرار پائی ہے اس کے شروع کے بعد اسی قدر کا مطالبہ کرسکتی ہے مثلاً نفقہ ماہ بماہ دینا ٹھہرا ہو تو ہر مہینے کے شروع پر اس مہینے اور سال بسال مقرر ہوا ہو تو ہر سال کے آغاز پر اس سال کا نفقہ مانگ سکتی ہے اس سے زیادہ مثلاً چاند دیکھے یا سال پلٹے آئندہ کے دو مہینے یا دو برس خواہ اس ماہ یا سال کا ہنوز آغاز نہ ہوا نفقہ نہیں مانگ سکتی، ردالمختار میں ہے :

[ٹیبل ۲] عربی: النفقة تفرض لمعنى الحاجة المتجددة فاذا فرضت كل شهر كذا صارت الحاجة متجددة بتجدد كل شهر فقبل تجدده لا يتجدد الفرض فلم تجب النفقة قبله انه لو فرض كل سنة كذا صح الابراء عن سنة دخلت، لا عن اكثر ولا عن سنة لم تدخل اھ ملخصاً اردو: آئندہ کا نفقہ آئندہ نئی حاجت کی وجہ سے فرض ہوتا ہے تو جب ماہانہ خرچہ مقرر ہو لئے تو نئے ماہ پر گویا عورت کو حاجت بھی

نئی ہوئی تو نئی حاجت سے قبل نیا نفقہ مقرر نہ ہوگا لہذا ادائیگی بھی پہلے واجب نہ ہوگی، اور اگر خرچہ سالانہ طے شدہ ہو تو صرف شروع ہونے والے سال کا نفقہ لازم ہوگا، سال شروع ہونے سے پہلے کا اور سال سے زیادہ کا بھی لازم نہ ہو گا اھ ملخصاً (ت)

بحر الرائق میں ہے :

[ٹیبل ۳] عربی: الفرض في الشهر الاول تنجز وفيما اردو: سال کے پہلے مہینہ میں دیا ہوا خرچہ مدت کے اختتام

[حواشی] 1 درمختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۶ 2 ردالمختار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۳/ ۲

Fatawa Rizvia Volume 13 Page 13

[Arabic]: ...it is added after it, so it is finalized by the beginning of the month and so on. (1) [Urdu]: ...until then payment is made, after which it is an addition, therefore payment will be made upon the start of the month, and it will continue in this way. (T)

And if no fixation or determination of maintenance (nafaqah) has occurred either through a judicial decree or mutual consent, then the woman cannot demand for past days nor for the future. It is stated in Radd al-Muhtar: [Arabic]: Maintenance for the past period is not binding upon him before being fixed by a decree or mutual consent, nor for the future, because it has not yet become obligatory. (2) [Urdu]: Without being fixed by a judge or settled through mutual compromise, the expenses for the previous period will not be binding on the husband, and similarly, paying in advance will also not be mandatory because maintenance has not yet become obligatory upon the husband. (T)

Yes, before an agreement, the woman has the right that if the husband does not fix the maintenance by mutual consent, she may file a suit for an agreement before the Shariah judge. When any monthly, yearly, daily, or seasonal amount is fixed by order of the judge, she will then have the right of demand and claim as detailed above. It is stated in Tanwir al-Absar: [Arabic]: The judge fixes it if she demands it. (3) (Abridged). (If the woman demands, the judge should fix the maintenance. Abridged - T). And maintenance will be fixed by considering the status of both man and woman. She can take that much income from the husband; if both are wealthy, then appropriate for the wealthy, and if both are poor, then appropriate for the poor. If one is wealthy and one is poor, then an intermediate amount, i.e., less than the maintenance of the wealthy and more than that of the poor. For example, if the woman's status is to wear satin, gold-embroidery, and brocade, and to eat biryani, saffron dishes, and chicken, while the man's capacity is to wear calico or checkered cloth and eat mash pulses and barley bread, or vice versa, then they will fix a dress of fine muslin (Tanzeb), silk-blend (Gulbadan), or legal fabric (Mashru') for the woman, and mutton and wheat bread; he shall give as much as he can currently, and the remainder will remain a debt upon him until Allah Almighty grants him the means. It is in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic]: Maintenance is obligatory on her husband according to the status of both of them. Fatwa is given on this, and he is addressed according to his capacity, and the remainder is a debt until ease of means. (4) (Abridged). [Urdu]: Maintenance will be

obligatory on the husband according to the status of both; on this, the fatwa will be given. The husband will be obligated to pay according to his capacity, and if any remains, it will be a debt upon him, which he will pay at his convenience. (Abridged - T)

1. Al-Bahr ar-Raiq, Chapter on Maintenance, HM Saeed Company Karachi, 4/188
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya at-Turath al-Arabi Beirut, 2/258
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Matba' Mujtabai Delhi, 1/268
4. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Matba' Mujtabai Delhi, 1/266

फ़तावा रज़विया खंड 13 पृष्ठ 13

[अरबी]: ...इसके बाद जोड़ा जाता है, इसलिए महीने की शुरुआत में ही यह तय हो जाता है और इसी तरह। (1) [उर्दू]: ...तब तक भुगतान किया जाता है, उसके बाद वृद्धि होती है, इसलिए महीने के शुरू होने पर ही भुगतान होगा, और यह इसी प्रकार जारी रहेगा। (त)

और यदि अभी तक गुजारा भत्ता (नफ़क़ा) के लिए कोई निर्धारण या तय न तो न्यायिक आदेश (क़ज़ा) से हुआ है और न ही आपसी सहमति (रज़ा) से, तो महिला न तो बीते हुए दिनों का दावा कर सकती है और न ही आने वाले समय का। रद अल-मुह्तार में है: [अरबी]: न्यायाधीश द्वारा तय किए जाने या आपसी सहमति से पहले पिछली अवधि का खर्च उस पर अनिवार्य नहीं है, और न ही आने वाले समय के लिए क्योंकि यह अभी तक अनिवार्य नहीं हुआ है। (2) [उर्दू]: न्यायाधीश की ओर से निर्धारित किए बिना या आपसी सुलह से तय किए बिना, पिछली अवधि का खर्च पति पर अनिवार्य नहीं होगा, और इसी तरह अग्रिम भुगतान करना भी अनिवार्य नहीं होगा क्योंकि गुजारा भत्ता अभी पति की जिम्मेदारी में अनिवार्य नहीं हुआ है। (त)

हाँ, समझौते से पहले महिला को यह अधिकार है कि यदि पति आपसी सहमति से गुजारा भत्ता तय न करे, तो वह शरीयत के न्यायाधीश के सामने समझौते के लिए मुकदमा दायर करे। जब न्यायाधीश के आदेश से कोई मासिक, वार्षिक, दैनिक या मौसमी भत्ता तय हो जाए, तो उसके बाद उसे उक्त विवरण के अनुसार मांग और दावे का अधिकार होगा। तनवीर अल-अबसार में है: [अरबी]: यदि महिला मांग करे तो न्यायाधीश इसे निर्धारित करे। (3) (संक्षेप में)। (यदि महिला मांग करे तो न्यायाधीश को गुजारा भत्ता तय कर देना चाहिए। संक्षेप में - त)। और गुजारा भत्ता पुरुष और महिला दोनों की हैसियत देखकर तय किया जाएगा। वह पति से उतनी ही आय ले सकती है; यदि दोनों धनी हैं तो धनवानों के योग्य, और यदि दोनों गरीब हैं तो गरीबों के योग्य, और यदि एक धनी और एक गरीब है तो मध्यम, यानी धनवानों के भत्ते से कम और गरीबों के भत्ते से अधिक। उदाहरण के लिए, यदि महिला की हैसियत साटन और जरी के कपड़े पहनने और बिरयानी, केसरिया व्यंजन और मुर्गे का मांस खाने की है, और पुरुष की सामर्थ्य छींट या चारखाने के कपड़े पहनने और उड़द की दाल और जौ की रोटी खाने की है, या इसके विपरीत, तो महिला के लिए तंजीब और गुलबदन और मशरू का लिबास और भेड़ का मांस और गेहूं की रोटी निर्धारित करेंगे, वह वर्तमान में जितना दे सकता है उतना देगा और शेष उस पर कर्ज रहेगा जब तक कि अल्लाह सर्वशक्तिमान उसे सामर्थ्य न दे। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

[अरबी]: पति पर उन दोनों की हैसियत के अनुसार गुजारा भत्ता अनिवार्य है। इसी पर फतवा दिया जाता है और उसे उसकी सामर्थ्य के अनुसार संबोधित किया जाता है, और शेष सुविधा होने तक कर्ज रहता है। (4) (संक्षेप में)। [उर्दू]: पति पर दोनों की हैसियत के लिहाज़ से गुजारा भत्ता अनिवार्य होगा, इसी पर फतवा दिया जाएगा, और पति अपनी सामर्थ्य के अनुसार भुगतान करने का पाबंद होगा और जो बाकी रह जाए, वह उसके ज़िम्मे कर्ज होगा जिसे वह अपनी सुविधा के अनुसार अदा करेगा। (संक्षेप में - त)

1. अल-बहर अर-राइक, बाब अल-नफ़क़ा, एचएम सईद कंपनी कराची, 4/188
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-नफ़क़ा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/258
3. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/268
4. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/266

पृष्ठ 688 में से 426

(بعدہ مضاف فتنجز بدخول الشھر وھکذا (۱)) تک کی ادائیگی ہوتی ہے اس کے بعد اضافت ہوتی ہے اس لئے مہینہ شروع ہونے پر ہی ادائیگی ہوگی ، یوں ہی جاری رہے گا۔ (ت)

اور اگر ہنوز نفقہ کے لئے کوئی تقرر و تعیین نہ قضاءً ہوا نہ رضاءً تو عورت نہ ایام ماضیہ کا مطالبہ کر سکتی ہے نہ آئندہ کا۔ ردالمحتار میں ہے : (لا یلزمہ عما مضی قبل الفرض بالقضاء او الرضاء ولا عما یستقبل لانہ لم یجب بعد (۲)) قاضی کی طرف سے مقرر کئے یا آپس میں مصالحت سے طے کئے بغیر سابقہ مدت کا خرچہ خاوند پر لازم نہ ہوگا اور یونہی پیشگی ادا کرنا بھی لازم نہ ہوگا کیونکہ نفقہ ابھی خاوند کے ذمہ واجب نہیں ہوا۔ (ت)

ہاں قبل از قرار داد عورت یہ اختیار رکھتی ہے کہ شوہر رضا مندی نفقہ مقرر نہ کرے تو حاکم شرع کے حضور قرار داد کرنے کی نالش کرے جب بحکم قاضی کوئی ماہانہ سالانہ یار وزانہ یا فصلانہ مقرر ہو جائے تو اس کے بعد اسے بہ تفصیل مذکور مطالبہ و دعوی پہلے گا۔ تنویر الابصار میں ہے : (یقدرھا ان طلبتہ (۳) اھ ملخصاً) (اگر عورت مطالبہ کرے تو قاضی نفقہ مقرر کردے اھ ملخصاً۔ ت) اور نفقہ مردوزن دونوں کی حیثیت دیکھ کر مقرر کیا جائے گا اسی قدر آمدنی زوج سے لے سکتی ہے، اگر دونوں غنی ہیں تو اغنیاء کے لائق، اور دونوں فقیر تو فقراء کے قابل، اور ایک غنی اور ایک فقیر تو متوسط یعنی نفقہ اغنیاء سے کم اور نفقہ فقراء سے زائد، مثلاً عورت کی حیثیت اطلس وزربفت و مشجر پہننے اور بریانی و مزعفر و گوشت مرغ کھانے کی ہے اور مرد کی مقدرت چھینٹ چار خانے دال ماش نان جو کھانے کے قابل یا بالعکس تو عورت کے لئے تنزیب و گلبدن و مشروع کا لباس اور گوشت گوسپند و نان گندم مقرر کریں گے ، جتنا بالفعل

دے سکتا ہے دے باقی اس کے ذمے دین رہے گا یہاں تک کہ اللہ عز وجل استطاعت بخشے۔ در مختار میں ہے :

(تجب علی زوجھا بقدر حالھما بہ یفتی ویخاطب بقدر وسعہ والباقی دین الی المیسرۃ (۴) اھ ملخصاً)

خاوند پر دونوں کی حیثیت کے لحاظ سے نفقہ واجب ہوگا، اسی پر فتوی دیا جائے گا، اور خاوند اپنی وسعت کے مطابق ادائیگی کا مکلف ہوگا اور باقی رہ جائے تو وہ اس کے ذمہ قرض ہوگا جس کو اپنی سہولت سے ادا کریگا اھ ملخصاً (ت)

۱ بحرالرائق باب النفقۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/۱۸۸ ۲ ردالمحتار باب النفقۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۵۸ ۳ درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۸ ۴ درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۶

Volume Thirteen, 13. Fatawa Razawiyya.

From Radd al-Muhtar: In 'Al-Bahr', it is stated: Everyone agrees that if both are wealthy, maintenance (nafaqah) is obligatory upon the husband according to their status, and if both are poor, it is obligatory according to their status. The disagreement is only in the case where one of them is rich and the other is poor. In this situation, the fatwa is that a middle-level maintenance is obligatory, taking both their conditions into account, which is less than what is for the wealthy and more than what is for the poor. (Summarized) (T)

From Badai' al-Sanai': If the husband is extremely wealthy, such that he eats fine white bread and chicken meat, and the wife is extremely poor, such that she eats barley bread at her family's house, the husband shall provide her wheat bread and goat meat as maintenance. And Allah, Glorified and Exalted, knows best, His glory is most complete and His wisdom most firm. (T)

Issue 157: From Likban, District Bareilly, sent by Sheikh Ahmed Hussain, 21 Rajab 1308 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Hind, who was a small-scale landowner, fled without the consent and permission of her husband Zaid for adultery with Amr and lived with Amr for a long period. Then she returned. Now she files a claim against Zaid for her dower (mahr) and for providing maintenance (food and clothing). In this case, will she receive the dower and maintenance or not? And Zaid is completely destitute, but Zaid's father is wealthy; will Hind's claim have any effect on Zaid's father or not? Furthermore, Hind was pregnant with Zaid's child at the time of her flight; after delivery, will Zaid be responsible for the upbringing of this minor child or not?

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/625.
2 Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/625.

खंड तेरह, 13. फतावा रज़विया।

रद्दुल मुहतार से: 'बहर' में है: सबका इत्तेफ़ाक़ है कि अगर दोनों खुशहाल हों, तो उनके हाल के अनुसार पति पर नफ़क़ा (भरण-पोषण) वाजिब होगा और यदि दोनों निर्धन हों, तो उनके हाल के अनुसार पति पर वाजिब होगा। मतभेद केवल उस स्थिति में है जब उनमें से एक अमीर हो और दूसरा गरीब; तो जिस पर फ़तवा दिया गया है वह बात यह है कि दोनों की स्थिति का ध्यान रखते हुए मध्यम स्तर का नफ़क़ा वाजिब होगा, जो खुशहाली से कम और तंगी से अधिक हो। (संक्षेप में) (त)

बदाए अल-सनाए से: यदि पति अत्यंत समृद्ध होने के कारण महीन सफेद आटा और मुर्गे का मांस खाता है, और पत्नी अत्यंत निर्धन होने के कारण अपने परिवार के यहाँ जौ की रोटी खाती है, तो पति उसे नफ़क़ा के रूप में गेहूँ की रोटी और बकरी का मांस प्रदान करेगा। और अल्लाह, जो पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है, उसकी महिमा सबसे पूर्ण और उसका विवेक सबसे दृढ है। (त)

मसअला 157: लिकबन, जिला बरेली से, प्रेषित शेख अहमद हुसैन, 21 रजब 1308 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसअले में क्या कहते हैं: हिन्दा, जो एक छोटी ज़मीनदार थी, अपने पति ज़ैद की सहमति और अनुमति के बिना व्यभिचार के लिए अम्र के साथ भाग गई और लंबे समय तक अम्र के साथ रही। फिर वह वापस आ गई। अब वह ज़ैद पर मेहर और रोटी-नफ़क़ा दिलाने का दावा करती है। इस स्थिति में, क्या उसे मेहर और नफ़क़ा मिलेगा या नहीं? और ज़ैद पूरी तरह से कंगाल है, लेकिन ज़ैद का पिता धनी है; तो क्या हिन्दा के दावे का ज़ैद के पिता पर कोई प्रभाव पड़ेगा या नहीं? इसके अलावा, भागने के समय हिन्दा ज़ैद के बच्चे से गर्भवती थी; प्रसव के बाद, क्या ज़ैद इस नाबालिग बच्चे के पालन-पोषण का जिम्मेदार होगा या नहीं?

1 रद्तुल मुहतार, बाब अल-नफ़क़ा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/625. 2 रद्तुल मुहतार, बाब अल-नफ़क़ा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/625.

पृष्ठ 427/688

ردا لمختار میں ہے: فی البحر اتفقوا علی وجوب نفقۃ الموسرین اذا کانا موسرین وعلی نفقۃ المعسرین اذا کانا معسرین وانما الاختلاف فیما اذا کان احدھما موسرا او الاخر معسرا فعلی المفتی بہ تجب نفقۃ الوسط وھو فوق نفقۃ المعسرۃ ودون نفقۃ الموسرۃ ۱ اھ ملخصاً۔ بحر میں ہے: سب کا اتفاق ہے کہ اگر دونوں خوشحال ہوں تو ان کے حال کے مطابق خاوند پر نفقہ واجب ہوگا اور اگر دونوں تنگ دست ہیں تو ان کے حال کے مطابق خاوند پر واجب ہوگا، اور اختلاف صرف اس صورت میں ہے جب دونوں میں سے ایک امیر اور دوسرا غریب ہے تو مفتی بہ قول یہ ہے کہ دونوں کے حال کی رعایت پر درمیانہ نفقہ واجب ہوگا، اور وہ یہ کہ خوشحالی سے کم اور تنگ دستی سے زائد ہو۔ اھ ملخصاً۔ (ت)

اسی میں بدائع سے ہے: حتی لو کان الرجل مفرطاً فی الیسار یاکل خبز الحواری ولحم الدجاج والمراۃ مفرطۃ فی الفقر تأکل فی بیت اھلھا خبز الشعیر یطعمھا خبز الحنطۃ ولحم الشاۃ ۲۔ واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم جل مجدہ اتم واحکم۔ اگر خاوند انتہائی خوشحال ہونے کی بناء پر صاف باریک آٹا، مرغ کا گوشت کھاتا ہے اور بیوی انتہائی تنگ دستی کی بناء پر اپنے گھر والوں کے ہاں جو کی روٹی کھاتی ہو تو خاوند اس کو گندم کی روٹی اور بکرے کا گوشت نفقہ کے طور پر کھانے کو دے گا۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم جل مجدہ اتم واحکم۔ (ت)

مسئلہ ۱۵۷: از لکبن ضلع بریلی مرسلہ شیخ احمد حسین ۲۱ رجب ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ جو ایک قلیل حقیت کی زمیندار تھی بلا رضامندی واجازتِ زید اپنے شوہر کے بطور بدکاری عمرو کے ساتھ فرار ہو گئی اور مدت دراز تک عمرو کے ساتھ رہی، پھر واپس آئی، اب زید پر دعوی مہر اور دلا پانے نان نفقہ کا کرتی ہے اس صورت میں وہ مہر ونفقہ

پائے گی یا نہیں؟ اور زید محض نادار ہے مگر زید کا باپ متمول ہے تو دعوی ہندہ کا پدرِ زید پر کچھ اثر ہوگا یا نہیں؟ اور ہندہ بحالت فراری زید کا حمل رکھتی تھی، بعد وضع حمل اس نابالغ کی پرورش کا زید ذمہ دار ہوگا یا نہیں۔

۱ ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۶۲۵ ۲ ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۶۲۵

...or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: For the period the woman remained away (fled), maintenance (nafaqah) is not due from Zaid at all. However, now that she has returned, she is entitled to future maintenance. She should demand maintenance from Zaid; if he provides it, well and good; otherwise, she should file a suit in the Qazi's (judge's) court to have her maintenance fixed. If Zaid is destitute, the Qazi will order her to take a loan and spend it, and when Zaid attains the means, she should adjust it against him.

In Al-Durr al-Mukhtar: "There is no maintenance for a woman who leaves her home without a valid right; she is considered rebellious (nashiza) until she returns, even if it is after his travel." [1] If a wife resides outside her husband's house without a valid reason, she will be considered disobedient until she returns to her husband, even if she does so after the husband has gone on a journey. Therefore, maintenance will not be obligatory for her. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated: "Meaning she becomes entitled to maintenance, so she writes to him to provide for her, or she takes her case to the Qazi so that he may authorize a loan for her maintenance against him." [2] That is, if the husband is on a journey and the wife is entitled to maintenance, she should write a letter to the husband demanding that her maintenance be paid. Or, the wife should petition the Qazi so that the Qazi may order her to take a loan in the husband's name and spend it. (T)

In Durr al-Mukhtar it is stated: "They are not separated due to his inability to provide it. After the maintenance is fixed, the Qazi orders her to take a loan to be charged to him." [3] If the husband is unable to pay maintenance, separation shall not be effected between the two. If maintenance has been fixed, the Qazi will order her to take a loan in the husband's name and spend it. (T)

And a claim against Zaid's father can have no effect at all, because the maintenance of the wife of a young, non-disabled son is not mandatory on the father anywhere. It is stated in Durr al-Mukhtar: In Al-Multaqa: "The maintenance of the son's wife is upon his father if..." It is mentioned in Multaqa that if the husband is a minor, poor, or disabled, then his...

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/267

2. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/246
3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/269

फतावा रज़विया जिल्द 13 | 13

...या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: जितनी मुद्दत औरत फरार रही, उस मुद्दत का नफ़क़ा (गुजारा भत्ता) तो ज़ैद पर बिल्कुल नहीं है। हाँ, अब जब वह वापस आ गई है, तो आइंदा नफ़क़ा की मुस्तहिक (हकदार) है। वह ज़ैद से नफ़क़ा तलब करे। अगर वह दे दे तो बेहतर, वर्ना काज़ी (न्यायाधीश) के यहाँ दावा करके अपना नफ़क़ा मुकर्रर करा ले। अगर ज़ैद नादार (कंगाल) है, तो काज़ी हुक्म देगा कि तू कर्ज़ लेकर खर्च कर, और जब ज़ैद को इस्तताअत (सामर्थ्य) हो, तो उससे वह रक़म वसूल कर ले।

दुर्रे मुख्तार में है: "उस औरत के लिए नफ़क़ा नहीं है जो बिला वजह अपने घर से बाहर रहे। वह नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) है जब तक कि वापस न आ जाए, चाहे वह (पति के) सफ़र पर जाने के बाद ही वापस आए।" [1] बीवी अगर खाविन्द के घर से बाहर बिला वजह रिहाइश पज़ीर हो तो वह वापस खाविन्द के पास आने तक नाफ़रमान करार पाएगी अगरचे खाविन्द के सफ़र पर जाने के बाद ही ऐसा करे लिहाजा इस के लिये नफ़क़ा लाज़िम नहीं होगा। (त)

रद्दुल मुहतार में है: "यानी वह नफ़क़ा की हक़दार है, इसलिए उसे (पति को) लिखे ताकि वह उसे नफ़क़ा दे, या अपना मामला काज़ी के पास ले जाए ताकि वह उसके लिए पति के ज़िम्मे कर्ज़ पर नफ़क़ा मुकर्रर करे।" [2] यानी खाविन्द सफ़र में हो और बीवी नफ़क़ा की मुस्तहिक हो तो वह खाविन्द को ख़त लिख कर मुतालबा करे कि मेरा नफ़क़ा अदा किया जाए, या बीवी काज़ी के यहाँ दरख्वास्त करे ताकि काज़ी खाविन्द के नाम कर्ज़ ले कर खर्च करने का हुक्म दे। (त)

दुर्रे मुख्तार में है: "पति की असमर्थता के कारण उनके बीच अलगाव नहीं किया जाएगा। नफ़क़ा तय होने के बाद, काज़ी उसे कर्ज़ लेने का आदेश देता है ताकि वह उस पर बोझ बने।" [3] खाविन्द अगर नफ़क़ा की अदायगी से आजिज़ हो तो दोनों में तफ़रीक़ न की जाएगी और नफ़क़ा मुक़र्रर कर दिया हो तो काज़ी खाविन्द के नाम कर्ज़ ले कर खर्च करने का हुक्म देगा। (त)

और ज़ैद के बाप पर दावे का असल में कोई असर नहीं हो सकता क्योंकि जवान बेटे जो अपाहिज न हो, उसकी बीवी का नफ़क़ा बाप पर कहीं भी लाज़िम नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है: मुल्तक़ा में है: "पुत्रवधू का नफ़क़ा उसके पिता पर है यदि..." मुल्तक़ा में मजकूर है कि अगर खाविन्द नाबालिग़ फ़क़ीर या अपाहिज हो तो उसकी...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/267
2. रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, दार अहया-उत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 3/246
3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/269

یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: جتنی مدت عورت فرار رہی اس مدت کا نفقہ تو زید پر اصلاً نہیں، ہاں اب کہ واپس آئی آئندہ نفقہ کی مستحق ہے زید سے نفقہ طلب کرے، اگر دے فبہا، ورنہ قاضی کے یہاں نالش کرکے اپنا نفقہ مقرر کرالے اگر زید نادار ہے قاضی حکم دے گا کہ تو قرض لے کر صرف کر، اور جب زید کو استطاعت ہو اس سے مجرا لے،

فی الدرالمختار لانفقة لخارجة من بیتہ بغیر حق وھی الناشزة حتی تعود ولو بعد سفرہ 1۔ بیوی اگر خاوند کے گھر سے باہر بلا وجہ رہائش پذیر ہو تو وہ واپس خاوند کے پاس آنے تک نافرمان قرار پائے گی اگر چہ خاوند کے سفر پر جانے کے بعد ہی ایسا کرے لہذا اس کے لئے نفقہ لازم نہیں ہوگا۔ (ت)

ردالمختار میں ہے: ای فتستحق النفقة فتکتب الیہ لینفق علیھا او ترفع امرھا الی القاضی لیقرض لھا علیہ نفقہ 2۔ یعنی خاوند سفر میں ہو اور بیوی نفقہ کی مستحق ہو تو وہ خاوند کو خط لکھ کر مطالبہ کرے کہ میرا نفقہ ادا کیا جائے، یا بیوی قاضی کے ہاں درخواست کرے تاکہ قاضی خاوند کے نام قرض لے کر خرچ کرنے کا حکم دے۔ (ت)

در مختار میں ہے: لایفرق بینھما بعجزہ عنھا و بعد الفرض یا مرہ القاضی بالاستدانة لتحیل علیہ 3۔ خاوند اگر نفقہ کی ادائیگی سے عاجز ہو تو دونوں میں تفریق نہ کی جائے گی اور نفقہ مقرر کردیا ہو تو قاضی خاوند کے نام قرض لے کر خرچ کرنے کا حکم دے گا۔ (ت)

اور زید کے باپ پر دعویٰ کا اصلاً اثر نہیں ہو سکتا کہ جوان بیٹے غیر اپاہج کی زوجہ کا نفقہ باپ پر کہیں لازم نہیں، در مختار میں ہے: فی الملتقی نفقة زوجة الابن علی ابیہ ان کان ملتقٰی میں مذکور ہے کہ اگر خاوند نابالغ فقیر یا اپاہج ہو تو اسکی

---

1 درمختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۷ 2 ردالمحتار باب النفقة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۴۶/۳ 3 درمختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۹

Volume 13 | 13 | Fatawa Rizwia

- [Arabic] A minor who is poor or chronically ill. - 1 | The maintenance of a minor's wife is the responsibility of the minor's father. (T)

It is stated in Rad al-Muhtar: [Arabic] And you have known that the position [of the school] is the non-obligation of maintenance for the son's wife, even if he is a poor minor. - 2 | You have learned that the [legal] position is that the father is not responsible for the maintenance of the minor son's wife, even if he (the son) is poor. (T)

Regarding the dower (Mahr), the questioner states that there was no condition of prompt (mu'ajjal) or deferred (mu'ajjal) payment, but the custom here in common lands is that it is not paid before separation by death or divorce. Therefore, Hindah's demand for dower is misplaced as long as Zaid does not divorce her or either of them does not pass away.

It is stated in Niqayah: [Arabic] The prompt and deferred [dower], if specified, then that is it; otherwise, it follows custom. - 3 | If prompt or deferred dower has been specified, then that is obligatory; otherwise, whatever is the custom will be obligatory. (T)

And the upbringing of this minor child is certainly obligatory upon Zaid. He will remain with the mother until the age of seven years, provided she desists from misconduct and has left vagrancy. He will receive maintenance from the father provided he has no wealth of his own. Until he reaches an age where he can earn enough for his food and clothing through wages or a trade, his care is obligatory upon the father. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[Arabic] Maintenance is obligatory for his poor child. - 4 | The maintenance of a small poor child is obligatory upon the father. (T)

It is stated in Rad al-Muhtar: [Arabic] That is, if he has not reached the age of earning. If he has reached it, the father may hire him out or place him in a trade so that he may earn and spend on himself from his earnings if he is male, etc. And Allah knows best. | Provided that the minor child has not reached the age of labor. If he has reached that age, the father should get him employment or put him to work in a factory so that his earnings can be spent on him, provided it is a boy, etc. And Allah Almighty knows best. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Book of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/237 2 Rad al-Muhtar, Book of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/774 3 Al-Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Book of Marriage, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 561 4 Durr al-Mukhtar, Book of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/237 5 Rad al-Muhtar, Book of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/604 and 767

- [अरबी] एक गरीब या बीमार नाबालिग। - १ | नाबालिग की पत्नी का भरण-पोषण नाबालिग के पिता की जिम्मेदारी है। (त)

रद अल-मुह्तार में है: [अरबी] और आपको पता चल गया है कि मत (मज़हब) यह है कि बेटे की पत्नी के लिए भरण-पोषण अनिवार्य नहीं है, चाहे वह एक गरीब नाबालिग ही क्यों न हो। - २ | आपको मालूम हो गया है कि नाबालिग की बीवी का नफ़क़ा (खर्च) वालिद (पिता) के ज़िम्मे न होना ही मज़हब है, चाहे वह फ़क़ीर (गरीब) हो। (त)

जहाँ तक मेहर का सवाल है, जैसा कि सवाल करने वाले ने बताया कि इसमें शीघ्र (मुअज्जल) या विलंबित (मुअज्जल) भुगतान की कोई शर्त नहीं थी, लेकिन यहाँ के आम शहरों में यही रिवाज़ है कि मृत्यु या तलाक द्वारा अलग होने से पहले इसे अदा नहीं किया जाता। इसलिए, हिंदा की मेहर की माँग तब तक बेजा है जब तक ज़ैद उसे तलाक न दे दे या दोनों में से किसी की मृत्यु न हो जाए।

निक़ाया में है: [अरबी] शीघ्र और विलंबित [मेहर], यदि स्पष्ट कर दिया गया हो तो वही है; अन्यथा प्रचलित रिवाज़ का पालन किया जाएगा। - ३ | मेहर मुअज्जल (नकद) या मुअज्जल (उधार) अगर बयान कर दिया गया हो तो वही वाजिब है, वरना उर्फ़(प्रचलन) में जो रिवाज हो वही वाजिब होगा। (त)

और इस नाबालिग बच्चे का पालन-पोषण बेशक ज़ैद पर लाज़िम है। वह सात साल की उम्र तक माँ के पास रहेगा, बशर्ते वह अपने दुराचार से बाज़ आ जाए और आवारागर्दी छोड़ चुकी हो। और उसे पिता से भरण-पोषण मिलेगा, बशर्ते उसका अपना कोई धन न हो। जब तक वह मज़दूरी या किसी हुनर से अपने खाने-पहनने के योग्य न कमा सके, उसकी देखभाल पिता पर अनिवार्य है। दुर्र अल-मुख़्तार में है:

[अरबी] उसके गरीब बच्चे के लिए भरण-पोषण अनिवार्य है। - ४ | छोटे फ़क़ीर बच्चे का नफ़क़ा वालिद पर लाज़िम है। (त)

रद अल-मुह्तार में है: [अरबी] यानी अगर वह कमाने की उम्र तक नहीं पहुँचा है। यदि वह उस तक पहुँच गया है, तो पिता उसे काम पर लगा सकता है या किसी पेशे में डाल सकता है ताकि वह कमा सके और अपनी कमाई से अपना खर्च चला सके, यदि वह पुरुष है आदि। और अल्लाह सबसे बेहतर

जानता है। | बशर्ते कि वह नाबालिग बच्चा मेहनत की उम्र को न पहुँचा हो, और अगर वह उस उम्र को पहुँच गया हो तो वालिद (पिता) उसको मुलाज़मत (नौकरी) दिलाए या किसी कारखाने में मज़दूरी पर लगाए ताकि उसकी कमाई को उस पर ख़र्च करे, बशर्ते लड़का हो आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

१ दुर्र अल-मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/२३७ २ रद अल-मुह्तार, बाबुल नफ़क़ा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत २/७७४ ३ अल-मुख़्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, किताबुन निकाह, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब, कराची, पृष्ठ ५६१ ४ दुर्र अल-मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/२५७ ५ रद अल-मुह्तार, बाबुल नफ़क़ा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत २/६०४ और ७६७

صغیراً فقیراً او زمناً ۔۱ بیوی کا نفقہ نابالغ کے والد کے ذمہ ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے : وقد علمت ان المذھب عدم وجوب النفقۃ لزوجۃ الابن ولو صغیراً فقیراً ۔۲ آپ کو معلوم ہو گیا ہے کہ نابالغ کی بیوی کا نفقہ والد کے ذمہ نہ ہونا ہی مذہب ہے اگرچہ وہ فقیر ہو۔ (ت)

رہا مہر سائل مظہر کہ اس میں کوئی شرط تعجیل و تا جیل نہ تھی اور لیکن میں بھی یہی رواج ہے جو یہاں عامہ بلاد میں ہے کہ قبل از افتراق بموت یا طلاق ادا نہیں ہوتا تو ہندہ کا مطالبہ مہر بیجا ہے جب تک زید اسے طلاق نہ دے یا دونوں میں کوئی مر نہ جائے۔ نقایہ میں ہے: المعجل والمؤجل ان بینا فذاك والافالمتعارف ۔۳ مہر معجل یا مؤجل اگر بیان کردیا ہو تو وہی واجب ہے ورنہ عرف میں جو رواج ہو وہ واجب ہوگا۔ (ت)

اور اس بچے نابالغ کی پرورش بیشک ذمہ زید لازم ہے، رہے گا سات برس کی عمر تک ماں کے پاس بشرطیکہ وہ اپنی بدکاری سے باز آئے اور آوارگی چھوڑ چکی ہو اور نفقہ پائے گا باپ سے بشرطیکہ اپنا کوئی مال نہ رکھتا ہو اس عمر تک اجرت یا حرفت سے اپنے کھانے پہننے کے قابل کما سکے اس کی خبر گیری باپ پر واجب ہے، در مختار میں ہے : تجب النفقۃ لطفلہ الفقیر ۔۴ چھوٹے فقیر بچے کا نفقہ والد پر لازم ہے۔(ت)

ردالمحتار میں ہے : ای ان لم یبلغ حد الکسب فان بلغہ کان للاب ان یوجرہ او یدفعہ فی حرفۃ لیکتسب و ینفق علیہ من کسبہ لو کان ذکراً الخ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ بشرطیکہ وہ نابالغ بچہ محنت کی عمر کو نہ پہنچا ہو، اور اگر وہ اس عمر کو پہنچ گیا ہو تو والد اس کو ملازمت دلائے یا کسی کارخانہ میں

مزدوری پر لگائے تاکہ اس کی کمائی کو اس پر خرچ کرے بشرطیکہ لڑکا ہو الخ ، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

۱ در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۳۷ ۲ ردالمحتار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۷۷۴ ۳ المختصر الوقایة فی مسائل الہدایة کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶۱ ۴ در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۳۷ ۵ ردالمحتار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۰۴ و ۷۶۷

Fatawa Razawiyya Volume 13

Problem 158: From Baroda, Gujarat, Kalan Mohalla Bhooti ka Chapah Nizam Pura, sent by Umrao Bai daughter of Ghulam Hussain, 16 Rajab 1311 AH.

What do the scholars of the religion say about this matter (First Problem)? A man married his real paternal aunt's daughter. After a few days, he sent her with a man and a woman for some necessary work. Upon her return, he stopped providing her with food and clothing (maintenance) for two years. This case is presented in the Gaikwadi court. The court asks why he doesn't provide maintenance. The husband says, "Why did she go without my command?" The woman presented strong witnesses - her real uncle and aunt and several other family members. All stated in our presence that her husband ordered his wife to go and even took an oath. In this situation, what is the ruling of Sharia?

The Answer: In the situation questioned, not giving the woman food and clothing is pure oppression by this person, for which he is an oppressor, a sinner, and indebted to the woman's right. Allah Almighty says:

"And upon the father is their provision and their clothing according to what is acceptable." 1 — Provision and clothing for wives with kindness is upon the one for whom children are born. (T)

And his absurd excuse that "Why did the woman go without my command?" is absolutely false and inadmissible. Even if he were truthful in this, when a woman leaves her husband's home unjustly without permission, then providing her with food and clothing is not mandatory only for as long as she remains outside unjustly. When she returns to her husband's home, then from that very moment, providing maintenance becomes obligatory for the husband. It is in 'Durr-e-Mukhtar':

"There is no maintenance for a woman who leaves her husband's house without a right until she returns, even if it is after his journey." 2 — There is no maintenance for one who stays outside the husband's house without reason until she returns, even if she stayed out after the husband went on a journey. (T)

It is in 'Radd al-Muhtar':

"If she returns to the husband's house after he has traveled." — Meaning if the wife returns to the husband's house after the husband has gone on a journey.

1. Al-Quran 2/233

2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi 1/267

फ़तावा रज़विया खंड 13

मसाला 158: बड़ौदा गुजरात कलां मोहल्ला भूती का छापा निज़ाम पुरा से प्रेषित, उमराव बाई पुत्री गुलाम हुसैन, 16 रजब 1311 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले (प्रथम समस्या) में क्या कहते हैं? एक व्यक्ति ने अपनी सगी बुआ की बेटी से निकाह किया। कुछ दिनों बाद उसने उसे किसी आवश्यक कार्य के लिए एक पुरुष और एक महिला के साथ कहीं भेजा। वापस आने के बाद उसने दो साल तक उसका दाना-पानी (भरण-पोषण) बंद कर दिया। यह मामला गायकवाड़ी अदालत में पेश है। अदालत पूछती है कि वह भरण-पोषण क्यों नहीं देता। पति कहता है, "वह मेरी आज्ञा के बिना क्यों गई?" महिला ने अपने सगे चाचा और चाची और परिवार के कई अन्य लोगों को मजबूत गवाह के रूप में पेश किया। सभी ने हमारे सामने यही कहा कि उसके पति ने अपनी पत्नी को जाने का आदेश दिया था और शपथ भी ली थी। इस स्थिति में शरीयत का क्या हुक्म है?

उत्तर: पूछी गई स्थिति में स्त्री को दाना-पानी न देना इस व्यक्ति का सरासर जुल्म है, जिसके कारण वह जालिम और गुनहगार है और स्त्री के हक का कर्जदार है। अल्लाह तआला फरमाता है:

"और बच्चे के पिता पर उन (माताओं) का भोजन और वस्त्र भले तरीके से अनिवार्य है।" 1 — पत्नियों का भरण-पोषण और वस्त्र भलाई के साथ उसके जिम्मे है जिसके लिए संतान है। (त)

और उसका यह बेहूदा बहाना कि "स्त्री मेरी आज्ञा के बिना क्यों गई" पूरी तरह से गलत और अस्वीकार्य है। अगर वह इसमें सच्चा भी हो, तो जब पत्नी बिना अनुमति के अन्यायपूर्वक घर से चली जाए, तो उसका भरण-पोषण केवल उसी अवधि तक अनिवार्य नहीं रहता जब तक वह अन्यायपूर्वक बाहर रहती है। जब वह फिर पति के घर वापस आ जाएगी, तो उसी समय से पति पर भरण-पोषण देना अनिवार्य हो जाएगा। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

"पति के घर से बिना अधिकार के बाहर जाने वाली स्त्री के लिए तब तक कोई भरण-पोषण नहीं है जब तक कि वह लौट न आए, चाहे वह उसके(पति के) सफर पर जाने के बाद ही बाहर रही हो।" 2 — बिना कारण पति के घर से बाहर रहने वाली के लिए कोई भरण-पोषण नहीं है जब तक कि वह वापस न आ जाए, भले ही वह पति के सफर पर जाने के बाद बाहर रही हो। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है:

"यदि वह पति के सफर पर जाने के बाद उसके घर लौट आए।" — यानी अगर पति के सफर पर जाने के बाद पत्नी पति के घर लौट आए।

1. अल-कुरान 2/233
2. दुर्रे मुख्तार, नफका का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/267

पृष्ठ 688 का 430

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم

مسئلہ ۱۵۸: از بڑودہ گجرات کلاں محلہ بھوتی کا چھاپہ نظام پورہ مرسلہ امراؤ بائی بنت غلام حسین حالہ ۱۶ رجب ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں (مسئلہ اولٰی) ایک شخص نے اپنی حقیقی پھوپھی کی لڑکی سے نکاح کیا، چند روز بعد ایک آدمی اور ایک عورت کے ہمراہ کسی کام ضروری کے لئے کہیں بھیجا، بعد واپس آنے کے دو برس تک نان ونفقہ موقوف کر دیا، کچہری گائیکواڑی میں یہ مقدمہ پیش ہے، کچہری کہتی ہے نان ونفقہ کیوں نہیں دیتا، خاوند کہتا ہے بغیر حکم میرے یہ کیوں گئی، عورت نے گواہ شاہد قوی اپنے حقیقی چچا اور چچی اور کئی آدمی کنبہ کو پیش کیا ہے سب نے یہی کہا کہ ہمارے رو برو اس کے خاوند نے اپنی عورت کو جانے کے لئے حکم دیا اور حلف بھی اٹھایا، اس صورت میں شریعت کا کیا حکم ہے؟

الجواب: صورت مستفسرہ میں عورت کو نان و نفقہ نہ دینا اس شخص کا محض ظلم ہے جس کے سبب وہ ظالم و گنہگار اور عورت کے حق میں گرفتار ہے، اللہ تعالٰی فرماتا ہے:

وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَہٗ رِزْقُھُنَّ وَ كِسْوَتُھُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ط ۱۔ (بیویوں کا نفقہ اور لباس بھلائی کے ساتھ اس کے ذمہ ہے جس کے لئے اولاد ہے۔ (ت))

اور اس کا یہ بیہودہ عذر کہ "عورت بے میرے حکم کے کیوں گئی" محض باطل و ناقابلِ سماعت ہے اگر وہ اس میں سچا بھی ہو تو عورت جب بے اجازت شوہر ناحق چلی جائے تو اس کا نان و نفقہ اسی مدت تک کالازم نہیں ہوتا جب تک وہ اس ناحق طور پر باہر رہے جب پھر شوہر کے گھر چلی آئے گی اسی وقت سے نان و نفقہ دینا شوہر پر فرض ہو جائے گا، در مختار میں ہے:

لانفقة لخارجة من بیتہ بغیر حق حتی تعود ولو بعد سفرہ ۲۔ (بلاوجہ خاوند کے گھر سے باہر رہنے والی کے لئے نفقہ نہیں تاوقتیکہ وہ واپس نہ آ جائے اگرچہ خاوند کے سفر پر جانے کے بعد ہی باہر رہی ہو۔ (ت))

ردالمختار میں ہے: لوادت الی بیت الزوج بعد ماسافر (یعنی اگر خاوند کے سفر پر جانے کے بعد بیوی خاوند کے گھر لوٹ آئے)

۱ القرآن ۲/۲۳۳ ۲ درمختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۷

[Box 1] Arabic: She ceased to be recalcitrant (Nashizah) - Al-Bahr quoting Al-Khulasa - i.e., she becomes entitled to maintenance (Nafaqah). Urdu: Then her disobedience will end; this is quoted in Al-Bahr from Al-Khulasa, meaning at that time the wife will be entitled to maintenance. (t)

[Main Text] The person who stopped providing food and maintenance after the woman returned committed a great injustice. It is obligatory upon him to resume it from that very moment. As for the maintenance of the past period, there are two possibilities: if a specific amount of maintenance had been fixed beforehand by mutual consent or by a judge's order—for instance, that so many rupees or such an amount of grain and clothing would be given per month—and it was stopped without a Shar'i (legal) reason, then the woman shall be granted maintenance for that entire period according to the agreed rate. But if the woman lived, ate, and wore clothes without any mutual agreement or judicial order as to how much would be given monthly, annually, or semi-annually, then for the days he did not provide, he is an oppressor and a sinner, but the woman cannot claim for that past period. She should make a claim now and have it fixed for the future by the judge's order. After that, if he does not pay, she can recover it forcefully through a lawsuit. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Box 2] Arabic: Maintenance does not become a debt except by a judicial decree or mutual agreement, meaning they agreed on a specific amount in kind or money. Before that, nothing is binding upon him, and after it, she may claim back what she spent, even from her own property, without a judge's order. Urdu: A loan taken by a woman will be the husband's responsibility only when the woman took that loan by order of a judge or agreed through reconciliation with the husband himself that such a commodity or cash of such an amount would be given. A loan taken before this will not be the husband's responsibility. And a loan taken by the woman afterward, even if she spent from her own property without a judge's order, can be recovered from the husband. (t)

[Box 3] It is stated in Radd al-Muhtar: Arabic: It does not become a debt, meaning if he did not provide maintenance for her, whether he was absent or present and refused, she cannot demand it; rather, it lapses with the passage [of time]. Urdu: Maintenance will not become a debt, meaning when the husband was absent or

present but did not give maintenance to the wife, maintenance for that period cannot be demanded from the husband; instead, as the period passes...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/646. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/207.

[बॉक्स 1] अरबी: उसने अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) होना छोड़ दिया - अल-बहर, अल-खुलसा के हवाले से - यानी वह भरण-पोषण (नफ़क़ा) की हकदार हो जाती है। उर्दू: तो उसकी नाफ़रमानी खत्म हो जाएगी, यह 'बहर' में 'खुलसा' से उद्धृत है, यानी उस समय पत्नी भरण-पोषण की हकदार होगी। (त)

[मुख्य पाठ] जिस व्यक्ति ने स्त्री के लौटने के बाद भोजन और भरण-पोषण बंद कर दिया, उसने बड़ा अन्याय किया। उस पर यह फर्ज है कि वह उसी समय से इसे जारी कर दे। रही पिछले समय के भरण-पोषण की बात, तो उसकी दो स्थितियाँ हैं: यदि पहले आपसी सहमति या जज (क़ाज़ी) के आदेश से भरण-पोषण की राशि तय हो चुकी थी - उदाहरण के लिए, प्रति माह इतने रुपये या इतना अनाज और कपड़ा दिया जाएगा - और अब बिना किसी शरीई कारण के बंद कर दिया गया, तो जब तक नहीं दिया गया है, उस पूरी अवधि का भरण-पोषण उसी तयशुदा दर के हिसाब से स्त्री को दिलाया जाएगा। और यदि स्त्री यूँ ही रहती, खाना खाती और कपड़े पहनती थी और आपसी समझौते या क़ाज़ी के आदेश से कोई राशि तय नहीं हुई थी कि मासिक, वार्षिक या छमाही कितना दिया जाएगा, तो जितने दिन उसने नहीं दिया वह अत्याचारी और गुनहगार हुआ, लेकिन स्त्री उस पिछली अवधि का दावा नहीं कर सकती। वह अब दावा करे और क़ाज़ी के आदेश से भविष्य के लिए तय करवा ले। इसके बाद अगर वह नहीं देगा, तो वह मुकदमे के जरिए जबरन वसूल कर सकती है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[बॉक्स 2] अरबी: भरण-पोषण तब तक कर्ज नहीं बनता जब तक कि अदालती आदेश या आपसी सहमति न हो, यानी उन्होंने वस्तु या धन के रूप में एक निश्चित राशि पर सहमति व्यक्त की हो। उससे पहले उस पर कुछ भी अनिवार्य नहीं है, और उसके बाद वह जो कुछ भी खर्च करती है, भले ही अपनी संपत्ति से, जज के आदेश के बिना वापस मांग सकती है। उर्दू: स्त्री द्वारा लिया गया कर्ज पति की जिम्मेदारी तभी होगा जब स्त्री ने वह कर्ज क़ाज़ी के आदेश पर या स्वयं पति के साथ सुलह करके तय किया हो कि अमुक वस्तु या नकद इतनी मात्रा में होगा। इससे पहले लिया गया कर्ज पति की जिम्मेदारी नहीं होगा। और बाद में स्त्री द्वारा लिया गया कर्ज, चाहे उसने अपने माल से ही क़ाज़ी के आदेश के बिना खर्च किया हो, तो पति से वसूल कर सकती है। (त)

[बॉक्स 3] रद-उल-मुहतार में है: अरबी: यह कर्ज नहीं बनता, यानी यदि उसने उसका भरण-पोषण नहीं किया, चाहे वह अनुपस्थित रहा हो या उपस्थित रहकर इनकार कर दिया हो, तो वह इसकी मांग

नहीं कर सकती; बल्कि यह समय बीतने के साथ समाप्त हो जाता है। उर्दू: नफ़क़ा (भरण-पोषण) कर्ज नहीं बनेगा, यानी जब पति गायब रहा या मौजूद रहा लेकिन पत्नी को नफ़क़ा नहीं दिया, तो उस अवधि के नफ़क़ा की मांग पति से नहीं की जा सकती, बल्कि समय बीत जाने...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. रद-उल-मुहतार, भरण-पोषण का अध्याय, दार इह्या अत-तुराث अल-अरबी, बेरूत, 2/646। 2. दुर्रे मुख्तार, भरण-पोषण का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/207।

[Box 1] عربی: خرجت عن کونها ناشزة بحر عن الخلاصة ای فتستحق النفقة اردو: تو اس کی نافرمانی ختم ہوجائے گی، یہ بحر میں خلاصہ سے منقول ہے، یعنی اس وقت بیوی نفقہ کی حقدار ہوگی۔ (ت)

[Main Text] تو اس شخص نے کہ عورت کے واپس آنے کے بعد نان ونفقہ موقوف کردیا بڑا ظلم کیا، تو اس پر فرض ہے کہ اسی وقت سے جاری کردے۔ رہا گذشتہ مدت کا نفقہ، اسکی دو صورتیں ہیں، اگر پہلے آپس کی رضامندی یا قاضی کے حکم سے مقدار نفقہ مقرر ہوچکی تھی کہ مثلاً مہینے میں اتنے روپے یا اس قدر اناج اور کپڑا دیا جائے گا اور اب بلاوجہ شرعی بند کردیا تو جب تک نہیں دیا ہے اس ساری مدت کا اسی قرارداد کے حساب سے عورت کو دلایا جائے گا، اور اگر عورت یونہی رہتی کھانا کھاتی کپڑا پہنتی تھی کچھ قرارداد باہمی یا بحکم قاضی نہ ہوا تھا کہ ماہوار یا سالانہ یا ششماہی پر اتنا دیا جائے گا تو جتنے دنوں اس نے نہ دیا ظالم وگنہگار ہوا مگر عورت اس گزری مدت کا دعوی نہیں کرسکتی اب سے دعوی کرکے بحکم قاضی آئندہ کے لئے مقرر کرالے، اس کے بعد اگر وہ نہ دے گا تو یہ جبراً بذریعہ نالش وصول کرسکتی ہے، درمختار میں ہے:

[Box 2] عربی: النفقة لاتصیر دینا الا بقضاء او الرضاء ای اصطلحا هما علی قدر معین اصنافا و دراهم فقبل ذلک لا یلزمہ شیئ و بعده ترجع بما انفقت ولو من مال نفسها بلا امر قاض اردو: عورت کا لیا ہوا قرض خاوند کے ذمہ صرف اس وقت ہوگا جب عورت نے وہ قرض قاضی کے حکم پر یا خود خاوند کے ساتھ مصالحت میں طے کرلیا ہو کہ فلاں جنس یا نقد اتنی مقدار ہوگی، اس سے قبل

لیا ہوا قرض خاوند کے ذمہ نہ ہوگا، اور بعد میں عورت کا لیا ہوا قرض، خواہ اپنے مال سے ہی قاضی کے حکم کے بغیر اس نے صرف کیا ہو تو خاوند سے وصول کرسکتی ہے (ت)

[Box 3] ردالمحتار میں ہے: عربی: لاتصیر دینا ای اذا لم ینفق علیھا بان غاب عنھا او کان حاضرا فامتنع فلا یطالب بھا بل تسقط بمضی اردو: نفقہ قرض نہ بنے گا یعنی جب خاوند غائب رہا یا موجود رہا لیکن بیوی کو نفقہ نہ دیا ہو تو اس مدت کے نفقہ کا مطالبہ خاوند سے نہیں کیا جاسکتا بلکہ مدت گزر جانے

[Footnotes] 1 ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۴۶ 2 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۷

Fatawa Ridawiyya Volume 13 | Page 13

...will be waived on account of it. (T)

In it is: Except by a court decree, such that the judge fixes it for him in various forms, dirhams or dinars. Al-Nahr. And Allah Almighty knows best.

However, if the maintenance fixed by the judge upon the husband is in kind, dirhams, or dinars, then it will be obligatory for the husband to pay. Nahr, and Allah Almighty knows best (T).

Question 159: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid has an adult son who is nearly thirty years old and has full capacity to earn, and can acquire livelihood through professions like barbering, etc. He burdens Zaid with the expenses of his food, clothing, etc., and prevents him from disposing of his own property. In this situation, is Zaid obligated to provide him with food and clothing, and is Zaid prohibited from disposing of his own property or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Since the son is an adult and fully capable of earning, his food, clothing, or any other expenses are not obligatory upon Zaid. Zaid has the authority not to give him anything, and Zaid cannot be prohibited from disposing of his own property due to the son's objection.

In al-Durr al-Mukhtar: Likewise, maintenance is obligatory for his adult child who is incapable of earning, like a female absolutely, or one who is chronically ill, or one for whom earning would bring shame, or a student of knowledge who does not have free time for it. Thus it is in al-Zayla'i and al-'Ayni. And Allah Almighty knows best.

It is stated in Durr-e-Mukhtar that similarly, maintenance is necessary for an adult son who is incapable of labor and earning, such as absolutely for a daughter, and for a crippled son, and for children who find it shameful to do manual labor, and for that student who does not find leisure from work due to studies. This is mentioned in Zayla'i and Ayni. And Allah Almighty knows best (T).

Question 160: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married Hindah, and from her, a girl who is now seven years old and a boy who is now five or six months old were born. Now Zaid has [provided for] himself and...

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/258

2. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/258
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/237

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | पृष्ठ १३

...की बिना पर साक़ित (रद्द) हो जाएगा। (त)

इसमें है: मगर ये कि जो नफ़क़ा (खर्च) क़ाज़ी ने शौहर पर मुक़र्रर किया हो जिंस, दराहम या दनानीर के रूप में। अल-नहर। वल्लाह तआला आलम।

किन्तु, यदि न्यायाधीश द्वारा पति पर निर्धारित किया गया भरण-पोषण वस्तुओं, दिरहम या दीनार में है, तो पति के लिए उसका भुगतान करना अनिवार्य होगा। नहर, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है (त)।

मसला १५९: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद का एक बालिग लड़का जिसकी उम्र तीस बरस के करीब है और कमाई पर खूब कुदरत रखता है और हज्जाम (नाई) वगैरह के पेशों से रोज़ी कमा सकता है, ज़ैद पर अपने खाने-पीने वगैरह के खर्चों का बोझ डालता है और उसे अपने माल में तसर्रुफ़ (उपयोग) करने से रोकता है। क्या इस सूरत में ज़ैद पर उसका रोटी-कपड़ा वाजिब है और क्या ज़ैद को अपने माल में तसर्रुफ़ करने से मना किया जा सकता है या नहीं? बयान फ़रमाएं और सवाब पायें।

अल-जवाब: चूंकि वह लड़का बालिग है और हर तरह से कमाने के लायक है, इसलिए उसका रोटी-कपड़ा या कोई भी खर्च ज़ैद पर वाजिब नहीं है। ज़ैद को अधिकार है कि उसे कुछ न दे, और उस लड़के के मना करने से ज़ैद को अपनी जायदाद में तसर्रुफ़ करने से नहीं रोका जा सकता।

दुर्र-ए-मुख़्तार में है: इसी प्रकार बड़े बालिग बेटे का भरण-पोषण अनिवार्य होगा जो कमाई करने में असमर्थ हो, जैसे मुतलक़न (पूरी तरह) बेटी के लिए, या जो अपाहिज हो, और जिसके लिए कमाई करना अपमानजनक हो, और ज्ञान का वह छात्र जो इसके लिए समय नहीं निकाल पाता हो। ज़ैली और ऐनी में भी ऐसा ही है। वल्लाह तआला आलम।

दुर्र-ए-मुख़्तार में लिखा है कि इसी प्रकार, एक बालिग बेटे के लिए भरण-पोषण आवश्यक है जो श्रम और कमाई में असमर्थ हो, जैसे कि बेटी के लिए अनिवार्य है, और एक अपाहिज बेटे के लिए, और उन बच्चों के लिए जिन्हें शारीरिक श्रम करना शर्मनाक लगता हो, और उस छात्र के लिए जिसे पढ़ाई के कारण काम से फ़ुरसत न मिले। ज़ैली और ऐनी में इसका उल्लेख इसी प्रकार है। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है (त)।

मसला १६०: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया और उससे एक लड़की जो अब सात बरस की है और एक लड़का जो अभी पांच-छह महीने का है पैदा हुए। अब ज़ैद ने अपना और...

1. रद-उल-मुहतार, बाब-उन-नफ़क़ा, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, २/२५८
2. रद-उल-मुहतार, बाब-उन-नफ़क़ा, दार इहया-उत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, २/२५८
3. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/२३७

पृष्ठ ६८८ में से ४३२

کی بنا پر ساقط ہو جائے گا۔ (ت)

اسی میں ہے: الا بالقضاء بأن یفرضھا القاضی علیه اصنافاً ودراھم او دنانیر نھر 2۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مگر یہ کہ جو نفقہ قاضی نے خاوند پر مقرر کیا ہو جنس، دراہم یا دنانیر تو وہ خاوند کے ذمہ واجب الادا ہوگا، نہر واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۵۹: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا ایک لڑکا بالغ جس کی عمر تیس برس کے قریب ہے اور کمائی پر خوب قدرت رکھتا ہے اور پیشہ حجامی وغیرہ طرق سے تحصیل رزق کر سکتا ہے زید پر اپنے کھانے پہنے وغیرہ مصارف کا بار ڈالتا ہے اور اسے اپنے مال میں تصرف سے مانع آتا ہے ، آیا اس صورت میں زید پر روٹی کپڑا اس کا واجب اور زید اپنے مال میں تصرف سے ممنوع ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب جبکہ وہ لڑکا بالغ اور کسب پر ہر طرح قادر تو اس کا روٹی کپڑا یا کوئی صرفہ زید پر واجب نہیں زید کو اختیار ہے اسے کچھ نہ دے اور زید اس لڑکے کے منع کرنے سے اپنی جائداد میں تصرف سے ممنوع نہیں ہو سکتا،

فی الدرالمختار وکذا تجب لولدہ الکبیر العاجز عن الکسب کأنثی مطلقاً و زمن ومن یلحقه العار بالتکسب وطالب علم لا یتفرغ لذلك کذافی الزیلعي والعیني 3۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ در مختار میں ہے کہ یوں ہی بڑے بالغ بیٹے کا نفقہ لازم ہو گا جو کسب و محنت سے عاجز ہو جیسا کہ بیٹی کے لئے مطلقاً اور اپاہج بیٹے کے لئے اور اولاد کے لئے جن کو محنت مزدوری کرنے میں عار ہو، اور اس طالبعلم کے لئے جو مزدوری فراغت نہ پائے، زیلعی اور عینی میں یوں مذکور ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے نکاح کیا اور اس کے بطن سے ایک لڑکی اب سات برس کی ہے اور ایک لڑکا کہ ابھی پانچ چھ مہینے کا ہے پیدا ہوئے، اب زید نے اپنا اور

1 ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۸/۲ 2 ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۸/۲ 3 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۳۷

13 Fatawa Rizvia Volume 13

Married [her] and then forcibly expelled Hindah, so she went to her father's house with both children. Now Zaid does not call her back, nor does he take care of the children's food and clothing. In this situation, is the maintenance (food and expenses) for Hindah, the daughter, and the son obligatory upon Zaid or not? Please explain and may you be rewarded.

The Answer: Certainly, the maintenance of Hindah is obligatory upon Zaid, and if the children do not have any personal wealth of their own, then taking care of them is also mandatory for Zaid. If the husband does not provide, the woman can approach a ruler (judge) to have maintenance fixed for herself and her children.

From Ad-Durr al-Mukhtar: Maintenance is obligatory for a wife upon her husband even if she is in her father's house, as long as the husband has not demanded her move to his house. On this, the fatwa is given. Likewise, if he demanded it and she did not refuse. (Summarized) - 1. In Ad-Durr al-Mukhtar it is stated: Even if the wife is at her father's house and the husband does not demand her to move to his house, or he demands it and the wife does not refuse, maintenance will be obligatory upon the husband. This is what the fatwa will be given upon. (Summarized). (T)

In the same source it is stated: Various types of maintenance are obligatory for children, females and the poor males, because the maintenance of wealthy children is from their own wealth. If the mother disputes regarding their maintenance, the Qazi (judge) will fix it and order him to pay it to the mother as long as her betrayal (misuse) is not proven. Then he shall pay her every morning and evening or appoint someone to spend on them. 2 - Finished, summarized. And Allah Almighty knows best. Maintenance is obligatory for daughters and poor, helpless boys, because the maintenance of wealthy offspring is from their own personal wealth. And if for the mentioned children, their mother insists on receiving maintenance fixed by a Qazi, the Qazi will fix the maintenance and order the husband to pay, provided that the mother's betrayal in spending on children is not proven. Then the husband will pay their expenses to the mother every morning and evening, or he will tell someone to spend on them. Both passages concluded in summarized form. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 161: What do the scholars of religion say in this matter that Hindah became... with her brother-in-law, her husband Zaid and Zaid...

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266.
2. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/273.

निकाह कर लिया और हिन्दा को ज़बरदस्ती निकाल दिया जिससे वह अपने दोनों बच्चों के साथ अपने पिता के यहाँ चली आई। अब ज़ैद न तो उसे वापस बुलाता है और न ही बच्चों के खान-पान का ध्यान रखता है। क्या इस स्थिति में हिन्दा, उसकी बेटी और बेटे का भरण-पोषण (नान-ओ-नफ़क़ा) ज़ैद पर अनिवार्य है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: निश्चित रूप से हिन्दा का भरण-पोषण ज़ैद पर अनिवार्य है, और यदि बच्चों के पास अपनी कोई व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है, तो उनकी देखरेख करना भी ज़ैद पर वाजिब है। यदि पति नहीं देता है, तो महिला शासक (न्यायाधीश) के पास जाकर अपने और अपने बच्चों के लिए भरण-पोषण निर्धारित करवा सकती है।

अल-दुर अल-मुख्तार से: पत्नी का भरण-पोषण उसके पति पर अनिवार्य है, भले ही वह अपने पिता के घर में हो, जब तक कि पति ने उसे अपने घर लाने की मांग न की हो। इसी पर फ़तवा दिया जाता है। इसी प्रकार यदि उसने मांग की और उसने इनकार नहीं किया। (संक्षिप्त) - 1 दुर्रे मुख्तार में है: पत्नी भले ही अपने पिता के घर हो और पति उसे अपने घर ले जाने की मांग न करता हो, या मांग करता हो और पत्नी इनकार न कर रही हो, तो पति पर भरण-पोषण अनिवार्य होगा। इसी पर फ़तवा दिया जाएगा। (संक्षिप्त)। (त)

उसी में है: बच्चों, लड़कियों और गरीब लड़कों के लिए विभिन्न प्रकार का भरण-पोषण अनिवार्य है, क्योंकि धनी संतान का भरण-पोषण उनके अपने धन से होता है। यदि माँ उनके भरण-पोषण के बारे में विवाद करती है, तो क़ाज़ी (न्यायाधीश) इसे निर्धारित करेगा और पति को माँ को भुगतान करने का आदेश देगा जब तक कि उसका विश्वासघात (दुरुपयोग) सिद्ध न हो जाए। फिर वह उसे हर सुबह और शाम भुगतान करेगा या किसी को उन पर खर्च करने के लिए नियुक्त करेगा। 2 - समाप्त, संक्षिप्त। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। बेटी और गरीब लाचार लड़कों के लिए भरण-पोषण अनिवार्य है क्योंकि धनी औलाद का भरण-पोषण उनकी अपनी व्यक्तिगत संपत्ति से होता है। और यदि उक्त बच्चों के लिए उनकी माँ क़ाज़ी द्वारा निर्धारित भरण-पोषण प्राप्त करने पर जोर देती है, तो क़ाज़ी भरण-पोषण निर्धारित करके पति को भुगतान का आदेश देगा, बशर्ते कि बच्चों पर खर्च करने में माँ का विश्वासघात सिद्ध न हो। तब पति सुबह-शाम माँ को उनका खर्च अदा करेगा या वह

किसी को उन पर खर्च करने के लिए कहेगा। दोनों उद्धरण संक्षिप्त रूप में समाप्त हुए। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 161: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि हिन्दा अपने देवर के साथ... हुई, उसका पति ज़ैद और ज़ैद...

1. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-नफ़क़ा, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/266.
2. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-नफ़क़ा, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/273.

نکاح کرلیا اور ہندہ کو جبراً نکال دیا کہ وہ مع دونوں بچوں کے اپنے باپ کے یہاں چلی آئی، اب زید نہ اسے بلاتا ہے نہ اس کے بچوں کے کھانے پہنے کی خبر گیری کرتا ہے، اس صورت میں ہندہ و دختر و پسر کا نان ونفقہ زید پر لازم ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجوا ب: بیشک ہندہ کا نان نفقہ زید پر لازم ہے اور بچوں کا اپنا کوئی ذاتی مال نہ ہو تو ان کی خبر گیری بھی زید پر واجب ہے اگر شوہر نہ دے عورت حاکم کے یہاں رجوع کرکے اپنا اور اپنے بچوں کا نفقہ مقرر کرا سکتی ہے،

فی الدر المختار النفقۃ تجب للزوجۃ علی زوجھا ولو ہی فی بیت ابیھا اذا لم یطالبھا الزوج بالنقلۃ بہ یفتی وکذا ان طالبھا ولم تمنع ملخصاً - ۱ در مختار میں ہے: بیوی اگرچہ اپنے والد کے گھر ہو اور خاوند وہاں سے اپنے گھر منتقل ہونے کا مطالبہ نہ کرتا ہو یا مطالبہ کرتا ہو اور بیوی انکاری نہیں ہے تو خاوند پر نفقہ واجب ہوگا، اسی پر فتویٰ دیا جائیگا، ملخصاً۔ (ت)

اسی میں ہے: تجب النفقۃ بانواعھا لطفالہ الانثی و الجمع الفقیر فان نفقۃ الغنی فی مالہ ولو خاصمتہ الام فی نفقتھم فرضھا القاضی وامرہ بدفعھا للام مالم تثبت خیانتھا فیدفع لھا صباحاً ومساء او یأمر من ینفق علیھم ۲- انتھٰی ملخصین۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ بیٹی اور فقیر عاجز لڑکوں کے لئے نفقہ واجب ہے کیونکہ غنی اولاد کا نفقہ اس کے اپنے ذاتی مال سے ہے، اور اگر مذکورہ بچوں کے لئے ان کی ماں قاضی کی طرف سے مقرر کردہ نفقہ کو وصول کرنے میں اصرار کرے تو قاضی نفقہ مقرر کرکے خاوند کو ادائیگی کا حکم دیگا بشرطیکہ بچوں پر صرف کرنے میں ماں کی خیانت ثابت نہ

ہو تو خاوند صبح و شام ماں کو ان کا خرچہ ادا کرے گا یا وہ کسی کو ان پر خرچ کرنے کے لئے کہے گا، دونوں عبارتیں ختم ہوئیں ملخص طور پر ، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۶۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ اپنے دیور کے ساتھ مستہم ہوئی اس کے شوہر زید اور زید

۱ درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۶ ۲ درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۷۳

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13.

[Question]: Her father expelled her from his house. Hind (the wife) has been at her father's house for two years. Neither Zaid (the husband) calls her back, nor does he provide food and clothing, nor does he divorce her. In this situation, is Zaid obligated to provide her food and clothing? And is Zaid sinful in this case?

The Answer: Since Hind's stay at her father's house is due to her being expelled by Zaid and Zaid's father, and Zaid has not called her back, and even if called, she does not refuse to go, then indeed, providing for her food and clothing is obligatory upon Zaid.

[Table 1] Column 1 (Arabic): It is mentioned in 'Al-Durr al-Mukhtar': Maintenance is obligatory for the wife even if she is in her father's house, as long as the husband does not demand her transfer to his house. This is the given fatwa. Similarly, if he demands it and she does not refuse, it remains obligatory. (Summarized)

Column 2 (Urdu): It is stated in Durr-e-Mukhtar: Even if the wife is at her father's home, if the husband does not demand her to move to his house, then maintenance is obligatory upon him. The fatwa is based on this. Similarly, if the husband demands and the wife does not refuse, it will still be obligatory. (Summarized) (T)

And because of this accusation, even if it is true in reality, the marriage does not dissolve.

[Table 2] Column 1 (Arabic): In the Hadith, it is narrated that a man said to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), "My wife does not reject the hand of any toucher." He said, "Then separate from her." The man said, "I love her." He said, "Then keep her," or as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said. In 'Al-Durr al-Mukhtar' and others, it is stated that it is not obligatory for a husband to divorce a profligate wife. Thus, this text is definitive regarding the continuation of the marriage.

Column 2 (Urdu): In the noble Hadith, it is: A person submitted to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that my wife does not refuse the hand of a toucher. So you said, separate her. Then that person submitted, I love her. So you said: Then keep her with you, or as was the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). And in Durr-e-Mukhtar etc., it is that it is not

mandatory for a husband to divorce a sinful wife. So this passage is a clear text (Nass) regarding the continuation of the marriage. (T)

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/266
2. Sunan Abi Dawood, Book of Marriage, Aftab-e-Alam Press Lahore 1/280; Sunan an-Nasa'i, Book of Marriage, Marriage of an Adulteress, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi 2/71; Sunan an-Nasa'i, Book of Divorce, Chapter on Khul', Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi 2/10; Radd al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 2/292
3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/190

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13।

[प्रश्न]: उसके पिता ने उसे अपने यहाँ से निकाल दिया, हिन्द अब दो साल से अपने पिता के पास है। न तो ज़ैद उसे बुलाता है और न ही रोटी-कपड़ा पहुँचाता है, न ही तलाक़ देता है। क्या इस सूरत में ज़ैद पर हिन्द का रोटी-कपड़ा वाजिब है या नहीं? और क्या ज़ैद इस सूरत में गुनहगार है या नहीं?

अल-जवाब: चूंकि हिन्द का अपने पिता के यहाँ रहना इस आधार पर है कि उसे ज़ैद और ज़ैद के पिता ने निकाल दिया और ज़ैद बुलाता भी नहीं और अगर बुलाए तो उसे जाने में कोई इनकार भी नहीं है, तो बेशक उसका रोटी-कपड़ा ज़ैद के ज़िम्मे वाजिब है।

[तालिका 1] स्तंभ 1 (अरबी): 'अल-दुर्रुल मुख़्तार' में है: पत्नी के लिए भरण-पोषण अनिवार्य है भले ही वह अपने पिता के घर में हो, जब तक कि पति उसे अपने घर लाने की माँग न करे। इसी पर फ़तवा दिया जाता है। इसी तरह यदि वह माँग करे और पत्नी इनकार न करे, तो भी भरण-पोषण अनिवार्य है। (संक्षिप्त)

स्तंभ 2 (उर्दू): दुर्रे मुख़्तार में है: अगर पत्नी अपने पिता के घर हो, जब पति उसे अपने घर ले जाने की माँग न करे, तो पति पर उसका नफ़क़ा (भरण-पोषण) वाजिब होगा। इसी पर फ़तवा है। और इसी तरह अगर पति माँग करे लेकिन पत्नी इनकार न करे, तो भी वाजिब होगा। (संक्षिप्त) (त)

और इस तोहमत की वजह से, चाहे वह हकीक़त में सच ही क्यों न हो, निकाह समाप्त नहीं होता।

[तालिका 2] स्तंभ 1 (अरबी): हदीस में है कि एक आदमी ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से कहा, "मेरी पत्नी किसी भी हाथ लगाने वाले के हाथ को नहीं ठुकराती।" आपने फ़रमाया, "तो उसे अलग कर दो।" उसने कहा, "मुझे उससे प्यार है।" आपने फ़रमाया, "तो उसे अपने पास रखो," या जैसा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया। और दुर्रे मुख़्तार आदि में है कि पति पर फाजिरा (पापिनी) पत्नी को तलाक़ देना अनिवार्य नहीं है। अतः यह इबारत निकाह के बाक़ी रहने पर स्पष्ट प्रमाण है।

स्तंभ 2 (उर्दू): हदीस शरीफ़ में है: एक व्यक्ति ने हुज़ूर (अलैहिस्सलातो वस्सलाम) से अर्ज़ की कि मेरी बीवी छूने वाले के हाथ को रद्द नहीं करती, तो आपने फ़रमाया उसे अलग कर दे। तो उस व्यक्ति ने अर्ज़ की मुझे उससे मुहब्बत है, तो आपने फ़रमाया: फिर उसे पास रख, या जैसा आपका (सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम) इर्शाद है। और दुर्रे मुख़्तार वगैरह में है कि शौहर पर फाजिरा बीवी को तलाक़ देना लाज़िम नहीं है, तो यह इबारत निकाह के बाक़ी रहने में नह्स (स्पष्ट प्रमाण) है। (त)

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा' मुजतबाई दिल्ली 1/266
2. सुनन अबी दाऊद, किताबुन निकाह, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/280; सुनन अन-नसाई, किताबुन निकाह, तज़वीजुल ज़ानिया, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची 2/71; सुनन अन-नसाई, किताबुत् तलाक़, बाब माजाआ फिल खुल', नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची 2/10; रद्दुल मुह्तार, फ़स्ल फिल मुह्र्रमात, दार इह्याउत तुरास अल-अरबी, बेरूत 2/292
3. दुर्रे मुख़्तार, फ़स्ल फिल मुह्र्रमात, मतबा' मुजतबाई दिल्ली 1/190

کے باپ نے اسے اپنے یہاں سے نکال دیا، ہندہ اب دو برس سے اپنے باپ کے یہاں ہے نہ تو زید اسے بلاتا ہے اور نہ روٹی کپڑا پہنچاتا ہے نہ طلاق دیتا ہے، اس میں ہندہ کا روٹی کپڑا ذمہ زید کے واجب ہے یا نہیں؟ اور زید اس صورت میں گناہ گار ہے یا نہیں؟

الجواب: جبکہ ہندہ کا اپنے باپ کے یہاں رہنا اس بناء پر ہو کہ اسے زید اور زید کے باپ نے نکال دیا اور زید بلاتا بھی نہیں اور بلائے تو اسے جانے میں انکار بھی نہیں تو بیشک اس کا روٹی کپڑا زید کے ذمہ واجب ہے،

[جدول ۱] کالم ۱ (عربی): فی الدر المختار النفقۃ تجب للزوجۃ و لو ھی فی بیت ابیھا اذا لم یطالبھا الزوج بالنقلۃ بہ یفتی و کذا اذا طالبھا و لم تمنع اھ ملخصا۔

کالم ۲ (اردو): در مختار میں ہے: اگر چہ بیوی اپنے والد کے گھر ہو جب خاوند اپنے گھر منتقل ہونے کا مطالبہ نہ کرے تو خاوند پر اس کا نفقہ واجب ہوگا، اسی پر فتوٰی ہے، اور یونہی اگر خاوند مطالبہ کرے لیکن بیوی انکار نہ کرے تو بھی واجب ہوگا، اھ ملخصاً (ت)

اور اس تہمت کی وجہ سے اگرچہ وہ واقع میں صحیح ہی ہو نکاح زائل نہیں ہوتا،

[جدول ۲] کالم ۱ (عربی): ففی الحدیث ان رجلا قال للنبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ان امراتی لا تردید لامس قال ففارقھا قال انی احبھا قال فامسکھا او کما قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم . و فی الدر المختار و غیرہ لا یجب علی الزوج تطلیق الفاجرۃ اھ فکان ذلک نصاً فی بقاء النکاح۔

کالم ۲ (اردو): حدیث شریف میں ہے: ایک شخص نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے عرض کی کہ میری بیوی چھونے والے کے ہاتھ کو رد نہیں کرتی ، تو آپ نے فرمایا اس کو علیحدہ کردے۔ تو

اس شخص نے عرض کی مجھے اس سے محبت ہے، تو آپ نے فرمایا: پھر اسے پاس رکھ یا جیسے آپ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کا ارشاد ہے، اور در مختار وغیرہ میں ہے کہ خاوند پر فاجرہ بیوی کو طلاق دینا لازم نہیں ہے اھ، تو یہ عبارت نکاح کے باقی رہنے میں نص ہے (ت)

۱۔ در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۶ ۲۔ سنن ابی داؤد کتاب النکاح آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۸۰ ، سنن النسائی کتاب النکاح تزویج الزانیہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۲ / ۷۱، سنن النسائی کتاب الطلاق باب ماجاء فی الخلع نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۲ / ۱۰، ردالمحتار فصل فی المحرمات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۹۲ ۳۔ در مختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۰

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13.

The popular notion among the ignorant that if a woman, God forbid, acts immorally, the marriage is annulled, is completely false. Since the marriage remains intact, it is obligatory upon Zaid in this situation to either divorce her or provide for her maintenance (food and clothing). Otherwise, by keeping her suspended like this, Zaid is undoubtedly a sinner and is acting against a clear commandment of the Quran.

"...and do not incline with total inclination [to one] and leave her [another] hanging..."[1] - And Allah Almighty knows best. | And there should not be complete inclination such that you leave the wife hanging. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 162: From Shahjahanpur, sent by Meherban Ali Sahib, 19 Shaban 1313 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter? A woman went to her brothers' house without her husband Zaid's permission. When Zaid returned from his job, he did not find his wife. In this situation, does the marriage and dowry (Mahr) remain or not? After some time, Zaid, based on expediency and for his own dignity, fixed some maintenance for the aforementioned woman, stating that whether the wife stays in my house or with her brothers, it will be given. Now, according to the Noble Sharia, is that maintenance still obligatory for Zaid to pay based on the reasons mentioned above? That's all.

The Answer: The marriage and dowry remain as they were. However, maintenance is waived due to her leaving without the husband's permission. The questioner states that Zaid calls her and she does not come, so until now she is not entitled to any maintenance at all until she comes to the husband's house. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

"There is no maintenance for a woman who leaves her home without a right, and she is disobedient until she returns. With this, the fixed maintenance also lapses."[2] (Summarized). | A woman staying out of her husband's house without a valid reason is disobedient. Until she returns to his house, there is no maintenance for her, even if the maintenance was fixed by a judge (Qazi). (T)

The maintenance that Zaid fixed for her while she was away was initially not obligatory because maintenance is a reward for being restricted [to the home] (because maintenance is the compensation for a wife's confinement. T). Rather, it was merely a benevolent promise, and there is no compulsion to fulfill a promise, as stated in Al-Alamgiriya etc. (as it is in Alamgiriya etc. T). Furthermore, when he called

her and she did not come, that also lapsed, as is known from Al-Durr al-Mukhtar (as known from Durr-e-Mukhtar. T). And Allah Almighty knows best.

[1] Al-Quran al-Karim 4/129 [2] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, 1/467

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13.

जाहिलों में यह जो मशहूर है कि अगर औरत, अल्लाह न करे, बदचलनी करे तो निकाह टूट जाता है, यह बिल्कुल गलत बात है। और जब निकाह बाकी है, तो इस सूरत में ज़ैद पर फर्ज़ है कि या तो उसे तलाक दे दे या उसके नान-नफ्का (भोजन-वस्त्र) की खबरगीरी करे, वरना इस तरह लटकाए रखने में ज़ैद यकीनन गुनाहगार है और कुरान के स्पष्ट आदेश के खिलाफ करने वाला है।

"...और पूरी तरह एक ही तरफ न झुक जाओ कि उसे अधर में लटका छोड़ दो..."[1] - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | और मुकम्मल झुकाव न हो कि बीवी को अधर में लटका हुआ छोड़ दो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 162: शाहजहाँपुर से, प्रेषक मेहरबान अली साहब, 19 शाबान 1313 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक औरत अपने शौहर ज़ैद की इजाज़त के बिना अपने भाइयों के घर चली गई। जब ज़ैद अपनी नौकरी से आया, तो औरत को नहीं पाया। इस सूरत में निकाह और महर बाकी रहा या नहीं? कुछ समय बाद ज़ैद ने अपनी मर्जी और अपनी इज़्ज़त की खातिर उक्त महिला के लिए कुछ नान-नफ्का तय कर दिया था कि चाहे पत्नी मेरे घर में रहे या अपने भाई के पास रहे, उसे दिया जाएगा। अब शरीयत के अनुसार, क्या वह नान-नफ्का उपरोक्त कारणों के आधार पर ज़ैद पर देना अनिवार्य है या नहीं? बस।

अल-जवाब: निकाह और महर यथावत बने रहेंगे। हाँ, शौहर की इजाज़त के बिना जाने के कारण नफ्का (भत्ता) समाप्त हो गया। सवाल करने वाला कहता है कि ज़ैद बुलाता है और वह नहीं आती, तो अब तक वह असल में नफ्का की हकदार नहीं है जब तक कि शौहर के घर न आ जाए। दुर्रे मुख़्तार में है:

"बिना किसी हक के अपने घर से बाहर जाने वाली औरत के लिए कोई नफ्का नहीं है और वह नाफ़रमान है जब तक कि वापस न आ जाए। और इसके साथ ही तयशुदा नफ्का भी समाप्त हो जाता है।"[2] (सारांश)। | बिना वजह शौहर के घर से बाहर रहने वाली औरत नाफ़रमान है जब तक कि वापस उसके घर न आ जाए, उसके लिए नफ्का नहीं है, चाहे नफ्का काज़ी की तरफ से ही क्यों न तय किया गया हो। (त)

ज़ैद ने घर बैठे जो नफ्का तय किया था, वह शुरू में ही अनिवार्य नहीं था क्योंकि नफ्का पाबंद होने का बदला है (क्योंकि नफ्का बीवी के पाबंद होने का सिला है। त), बल्कि यह केवल एक परोपकारी

वादा था और वादे पर मजबूरी नहीं है जैसा कि आलमगीरिया आदि में है (जैसा कि आलमगीरिया आदि में है। त)। इसके अलावा, जब उसने उसे बुलाया और वह नहीं आई, तो वह भी समाप्त हो गया जैसा कि अल-दुर्र अल-मुख़्तार से ज्ञात होता है (जैसा कि दुर्रे मुख़्तार से मालूम हुआ है। त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[1] अल-कुरान अल-करीम 4/129 [2] दुर्रे मुख़्तार, बाब-उल-नफ्का, मतबा मुजतबाई 1/467

جاہلوں میں جو یہ مشہور ہے کہ عورت اگر معاذ اللہ بد وصفی کرے تو نکاح جاتا رہتا ہے محض غلط بات ہے، اور جب نکاح باقی ہے تو اس صورت میں زید پر فرض ہے کہ یا تو اسے طلاق دے دے یا اس کے نان نفقہ کی خبر گیری کرے ورنہ یوں معلق رکھنے میں زید بیشک گنہگار ہے اور صریح حکم قرآن کا خلاف کرنے والا،

فَلَا تَمِيْلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ط ۱ - واللہ تعالٰی اعلم۔ | اور کلی میلان نہ ہو کہ بیوی کو معلق کر چھوڑو، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۲: از شاہجہاں پور مرسلہ مہربان علی صاحب ۱۹ شعبان ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عورت بے اجازت شوہر زید کے اپنے بھائیوں کے گھر چلی گئی، جب زید اپنی نوکری سے آیا عورت کو نہ پایا، اس صورت میں نکاح و مہر باقی رہا یا نہیں؟ بعد ایک عرصہ کے زید حسب مصلحت اور پاس اپنی حرمت کے زید نے کچھ خرچ نان و نفقہ کا مسماۃ مذکورہ کا مقرر کردیا تھا کہ خواہ زوجہ میرے مکان میں رہے یا اپنے بھائی کے پاس رہے دیا جائے گا، اب بموجب شرع شریف کے وہ نان و نفقہ حسب وجوہ مندرجہ بالا ذمہ زید کے واجب الادا رہا یا نہیں؟ فقط۔

الجواب نکاح و مہر بدستور قائم رہے، ہاں بے اجازت شوہر چلے جانے کے باعث نفقہ ساقط ہو گیا، سائل مظہر کہ زید بلاتا ہے اور وہ نہیں آتی تو اب تک وہ نان نفقہ کی اصلاً مستحق نہیں جب تک شوہر کے گھر میں نہ آئے، درمختار میں ہے:

لانفقة لخارجة من بيته بغير حق وهي الناشزة حتى تعود وتسقط به المفروضة ۲ (ملخصاً)۔ | بلا وجہ خاوند کے گھر سے باہر رہنے والی نافرمان ہے تاوقتیکہ واپس اس کے گھر نہ آئے اس کے لئے نفقہ نہیں ہے خواہ نفقہ قاضی کی طرف سے ہی کیوں نہ مقرر ہو۔ (ت)

گھر بیٹھے کا جو نفقہ زید نے مقرر کردیا اول تو وہ نفقہ واجب نہ تھا فان النفقة جزاء الاحتباس (کیونکہ نفقہ بیوی کے پابند ہونے کا صلہ ہے۔ ت) بلکہ صرف ایک احسانی وعدہ تھا اور وعدہ پر جبر نہیں کما فی العالمگیریة وغیرھا (جیسا کہ عالمگیریہ وغیرہ میں ہے۔ ت) معہذا جب اس نے بلایا اور وہ نہ آئی وہ بھی ساقط ہو گیا کما من الدرالمختار (جیسا کہ درمختار سے معلوم ہوا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

۱ القرآن الکریم ۴/۱۲۹ ۲ درمختار باب النفقة مطبع مجتبائی ۱/۴۶۷

Volume 13 Fatawa Razawiyya

Issue 163: 26 Muharram al-Haram 1312 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married Hindah and went to work before the rukhsati (departure of the bride to her husband's home). Hindah's parents repeatedly asked for the rukhsati. After four years, he took her to his home. Hindah was ill; after two days, she returned to her parents' house and passed away a month later. Is the husband liable for the maintenance (nafaqah) of those four years and the expenses incurred by the parents for her medical treatment, funeral, and burial? Will the dowry (jahez) go to the husband or the parents? Please clarify and be rewarded.

Answer: The husband cannot be demanded to pay for maintenance and medical expenses. It is stated in Durr al-Mukhtar: "Maintenance does not become a debt except by a judicial decree or mutual agreement. With the death of either of them or divorce, the fixed maintenance is forfeited because it is an act of kindness (sila), unless she had taken a loan by the judge's order." [1] Maintenance does not become a debt upon the husband unless it is fixed by a judge or agreed upon mutually. Maintenance is forfeited upon the death of either spouse or divorce, as it is obligatory as a matter of connection/kindness. However, if the wife had taken a loan on the judge's orders, then its payment would be obligatory for the husband. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated: "He is responsible for what sustains the body, not for medicines for illness, nor the physician's fee, nor phlebotomy, nor cupping." [2] The husband is responsible for providing items that protect the body. Medicines for illness, doctor's fees, bloodletting, or cupping costs are not obligatory upon him. (T)

Similarly, the expenses for the funeral and burial will not be reimbursed if the parents or anyone else spent it on their own without the husband's permission. In the section on Wills (Wasaya) in Radd al-Muhtar, quoted from Ar-Ramli's marginalia on Al-Fusulayn: "If someone spends their own wealth on the wife's funeral/burial without the permission of the husband or the judge, then they are a volunteer (mutabarri'), like a stranger." [3] It is quoted in Radd al-Muhtar at the end of the discussion on wills from the notes on Fusulayn that if someone provided a shroud for his wife without the permission of the husband or the judge, then this expense will be considered a gift from the one who spent it, just as a stranger would spend freely of their own accord. (T)

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/70 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/649 3 Radd al-Muhtar, Section on Testimony of Executors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 5/459

जिल्द १३ फ़तावा रज़विया

मसला १६३: २६ मुहर्रम उल हराम १३१२ हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने हिन्दा से निकाह किया और रुख़्सती से पहले नौकरी पर चला गया। हिन्दा के वालिदैन ने बार-बार रुख़्सती के लिए कहा। चार साल बाद वह उसे रुख़्सत कराकर अपने घर ले गया। हिन्दा बीमार थी; दो दिन बाद वह फिर वालिदैन के घर वापस आ गई और एक महीने बाद उसका इंतकाल हो गया। क्या उन चार सालों का नफ़क़ा (खर्चा) और वालिदैन द्वारा दवा, इलाज और कफ़न-दफ़न पर किया गया खर्चा शौहर पर वाजिब है या नहीं? जहेज़ शौहर को मिलेगा या माँ-बाप को? बयान फ़रमाएं और सवाब पायें।

जवाब: नफ़क़ा और दवा-इलाज के खर्च का मुतालबा शौहर से नहीं किया जा सकता। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: "यह (नफ़क़ा) तब तक कर्ज़ नहीं बनता जब तक कि काज़ी (न्यायाधीश) का आदेश न हो या आपसी सहमति न हो। दोनों में से किसी एक की मौत या तलाक़ से तयशुदा नफ़क़ा ख़त्म हो जाता है क्योंकि यह एक प्रकार का सिला (एहसान/रिश्ता निभाना) है, जब तक कि उसने काज़ी के हुक्म से कर्ज़ न लिया हो।" [1] नफ़क़ा शौहर के ज़िम्मे तब तक कर्ज़ नहीं बनता जब तक वह काज़ी द्वारा तय न किया गया हो या आपसी रज़ामंदी से तय न हुआ हो। मियाँ-बीवी में से किसी एक की मौत या तलाक़ से नफ़क़ा साक़ित (ख़त्म) हो जाता है क्योंकि यह सिला के तौर पर लाज़िम होता है। हाँ, अगर काज़ी के हुक्म पर बीवी ने कर्ज़ लिया हो, तो शौहर को उसकी अदायगी करनी होगी। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है: "शौहर पर बदन की हिफ़ाज़त वाली चीज़ लाज़िम है। बीमारी के लिए दवा, हकीम की उजरत (फ़ीस), फ़स्द (खून निकलवाना) या सींगी लगवाने का खर्चा लाज़िम नहीं है।" [2] शौहर पर सिर्फ शरीर की रक्षा के लिए ज़रूरी चीज़ें देना लाज़िम है। बीमारी के लिए दवा, डॉक्टर की फ़ीस, या खून निकालने जैसी चीज़ों का खर्चा उसके ज़िम्मे नहीं है। (त)

इसी तरह तज्हीज़-ओ-तकफ़ीन (कफ़न-दफ़न) का खर्चा भी वापस नहीं मिलेगा अगर वालिदैन या किसी और ने शौहर की इजाज़त के बिना अपनी तरफ़ से किया हो। 'रद्दुल मुहतार' के वस़ाया (वसीयत) के आख़िर में रमीली के हाशिए (नोट्स) से नकल है: "अगर किसी ने शौहर या काज़ी की इजाज़त के बिना बीवी को कफ़न दिया, तो वह खर्चा करने वाले की तरफ़ से मुफ़्त होगा जैसे कोई अजनबी अपनी तरफ़ से मुफ़्त खर्च कर दे।" [3] रद्दुल मुहतार में वसीयत की बहस के अंत में ह़ाशिया अल-फ़ुसूलैन से वर्णित है कि अगर किसी ने शौहर या काज़ी की अनुमति के बिना किसी की

पत्नी को कफ़न दिया, तो यह खर्च करने वाले की ओर से दान माना जाएगा, जैसे कि कोई अजनबी अपनी ओर से स्वेच्छा से खर्च करता है। (त)

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा, मुत़बा मुज्तबाई दिल्ली १/७० 2 रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, दार इह्याउत तुराऩ अल-अरबी बैरूत २/६१९ 3 रद्दुल मुहतार, फ़सल फ़ी शहादतिल औऩिया, दार इह्याउत तुराऩ अल-अरबी बैरूत ५/४५९

पृष्ठ ४३६/६८८

جلد سیزد ہم فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۱۶۳: ۲۶ محرم الحرام ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید ہندہ سے نکاح کرکے قبل رخصت نوکری پر چلا گیا، بارہا والدینِ ہندہ نے رخصت کو کہا، چار برس کے بعد رخصت کراکراپنے گھر لے گیا، ہندہ بیمار تھی دو ایک دن کے بعد پھر والدین کے یہاں واپس آکر ایک ماہ بعد فوت ہوگئی، نفقہ اس چار سال کا اور جو خرچ دواو علاج و تجہیز و تکفین میں والدین نے کیا شوہر پر واجب ہے یا نہیں؟ جہیز شوہر کو ملے گا یا ماں باپ کو؟ بینوا توجروا

الجواب: نفقہ و خرچ دوا و علاج کا مطالبہ شوہر سے نہیں ہوسکتا، درمختار میں ہے: لا تصیر دینا الا بالقضاء او الرضاء وبموت احدھما وطلاقھا یسقط المفروض لانھا صلۃ الا اذا استدانت بامر القاضی

1۔ نفقہ خاوند کے ذمہ قرض نہیں بنتا تاوقتیکہ قاضی کا مقرر کردہ یا باہمی رضامندی سے طے کردہ نہ ہو، اور خاوند بیوی دونوں میں سے ایک کی موت یا طلاق سے نفقہ ساقط ہو جاتا ہے کیونکہ یہ صلہ کے طور پر لازم ہوتا ہے، ہاں اگر قاضی کے حکم پر بیوی نے قرض لے رکھا ہو تو پھر خاوند کو اس کی ادائیگی لازم ہوگی۔ (ت)

ردالمختار میں ہے: علیہ ماتقطع بہ السنان لا الدواء للمرض ولا اجرۃ الطبیب ولا الفصاد ولا الحجام

2۔ خاوند پر بدن کی حفاظت والی چیز لازم ہے۔ مرض کیلئے دوا، طبیب کی اجرت، فصد یا سینگی لگانے کی اجرت لازم نہیں ہے۔ (ت)

یونہی خرچ تجہیز و تکفین بھی مجرانہ ملے گا جبکہ والدین خواہ کسی نے بے اذنِ شوہر بطورِ خود کیا، فی اواخر وصایا ردالمحتار عن حاشیۃ الفصولین للر ملی، الزوجۃ اذا صرفہ من مالہ غیر الزوج بلا اذانہ اواذن القاضی فھو متبرع کالاجنبی 3۔ ردالمحتار میں وصایا کی بحث کے آخر میں فصولین

پر رملی کے حاشیہ سے منقول ہے کہ اگر کسی نے خاوند یا قاضی کی اجازت کے بغیر اس کی بیوی کو کفن دیا تو یہ خرچہ صرف کرنے والے کی طرف سے مفت ہوگا جیسا کہ کوئی اجنبی اپنی طرف سے مفت خرچ کر دے (ت)

---

1 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۰ 2 ردالمختار باب النفقۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۴۹ 3 ردالمختار فصل فی شہادۃ الاوصیاء داراحیاء التراث العربی بیروت ۵/۴۵۹

The dowry (Jahez) is the property and legacy of Hindah. In the absence of impediments to inheritance and after the settlement of debts and will, if the estate is divided into six shares, three shares shall go to the husband, two shares to the father, and one share to the mother. Similarly, Hindah's dower (Mahr), if remaining, shall be distributed according to this calculation. And Allah Almighty knows best.

Problem 164: 4 Jumada al-Ula 1314 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married his daughter to Amr. Before the marriage, Zaid had Amr sign an agreement stating, "I cannot take her anywhere without the wife's consent and I will live there, i.e., at the wife's house, and in case of breach of promise, I will provide maintenance (Nan-Nafqa)." Subsequently, the marriage took place and the mahr was fixed at two hundred and fifty rupees, with no condition for advance payment or a specific term. Now Amr wants to stay at his father-in-law's house at night, but his father-in-law and the wife herself do not tolerate it. Amr's house is in the same city; he wants to take his wife to his house. Does he have the authority in this matter or not? And if Zaid does not let him take her and Hindah does not go, will she be entitled to maintenance or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Undoubtedly, in the inquired case, Amr has the authority to take his wife and keep her at his house. The prevention by the wife and her father without a Sharia-compliant reason is pure oppression, and if the wife does not go, she will not be entitled to maintenance.

[Table Content] Arabic: Because she is disobedient (nashiza) due to her refusal without right, and maintenance is only a recompense for confinement (to the husband's home). So when there is no confinement, there is no maintenance, as they have all explicitly stated. Urdu: Because she is disobedient for refusing without cause. While maintenance is in exchange for being bound to the husband's right, so where there is no binding, there will be no maintenance, as everyone has clarified this (T).

Amr writing an agreement that he would provide maintenance in case of breach of promise is of no consequence. Arabic: "For the condition of Allah is more worthy of fulfillment, and whoever stipulates a condition not in the Book of Allah, it is not for him, even if he stipulates it a hundred times," as the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said in the authentic Hadith. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. Urdu: The condition according to the command of Allah Almighty is acceptable, and whoever sets a condition against the command of Allah Almighty, it is unjust

even if set a thousand times, as is the noble saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in the Sahih Hadith. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best (T).

1. Sahih Muslim, Chapter on the Explanation that Al-Wala' belongs to the one who manumitted, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/494. Page 437 of 688

फतावा रज़विया खंड 13 | पृष्ठ 13

दहेज़ हिंदा की संपत्ति और विरासत है। विरासत में बाधाओं की अनुपस्थिति में और ऋण तथा वसीयत के निपटान के बाद, यदि जायदाद को छह हिस्सों में विभाजित किया जाता है, तो तीन हिस्से पति को, दो हिस्से पिता को और एक हिस्सा माँ को मिलेगा। इसी तरह हिंदा का मेहर, यदि शेष है, तो इसी गणना के अनुसार वितरित किया जाएगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 164: 4 जमादी अल-उला 1314 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी बेटी का निकाह अम्र से किया। निकाह से पहले ज़ैद ने अम्र से एक इकरारनामा लिखवाया कि "मैं पत्नी की सहमति के बिना उसे कहीं नहीं ले जा सकता और खुद वहीं यानी पत्नी के घर पर रहूँगा, और वादे के उल्लंघन की स्थिति में मैं नान-नफ़क़ा (भरण-पोषण) दूँगा।" इसके बाद निकाह हुआ और मेहर दो सौ पचास रुपये तय हुआ, जिसमें अग्रिम भुगतान या किसी निश्चित अवधि की कोई शर्त नहीं थी। अब अम्र रात में अपने ससुर के यहाँ रहना चाहता है, लेकिन उसके ससुर और खुद पत्नी इसे गवारा नहीं करते। अम्र का घर उसी शहर में है; वह अपनी पत्नी को अपने घर ले जाना चाहता है। क्या उसे इस मामले में अधिकार है या नहीं? और अगर ज़ैद ले जाने न दे और हिंदा न जाए, तो क्या वह नान-नफ़क़ा की हकदार होगी या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: निश्चित रूप से पूछी गई स्थिति में अम्र को अधिकार है कि वह अपनी पत्नी को अपने घर ले जाकर रखे। पत्नी और उसके पिता का बिना किसी शरीयत के कारण रोकना सरासर ज़ुल्म है, और यदि पत्नी नहीं जाएगी तो वह नान-नफ़क़ा की हकदार नहीं होगी।

[तालिका सामग्री] अरबी: क्योंकि वह बिना किसी अधिकार के इनकार करने के कारण नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) है, और भरण-पोषण केवल पति के अधिकार में रहने का प्रतिफल है। अतः जहाँ पति के अधिकार में रहना नहीं है, वहाँ भरण-पोषण भी नहीं है, जैसा कि सभी ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। उर्दू: क्योंकि वह नाफ़रमान है क्योंकि वह बिना किसी कारण के बाधा बनी हुई है। जबकि नफ़क़ा पति के हक में पाबंद होने का मुआवज़ा है, तो जहाँ पाबंदी नहीं वहाँ नफ़क़ा नहीं होगा जैसा कि सबने इसकी व्याख्या की है (त)।

अम्र का इकरारनामा लिख देना कि वादे के उल्लंघन की स्थिति में नान-नफ़क़ा दूँगा, इसका कोई महत्व नहीं है। अरबी: "अल्लाह की शर्त ज़्यादा हक़दार है (पूरा किए जाने के), और जिसने ऐसी शर्त रखी जो अल्लाह की किताब में नहीं है, तो वह उसके लिए नहीं है, चाहे वह सौ बार शर्त रखे," जैसा

कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहीह हदीस में फ़रमाया है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। उर्दू: अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक शर्त मक़बूल है और जिसने अल्लाह तआला के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई शर्त लगाई तो वह नाहक़ है अगरचे हज़ार बार शर्त लगाए, जैसा कि सहीह हदीस में हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का इर्शाद-ए-गिरामी है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है (त)।

1. सहीह मुस्लिम, बाब बयान अन-नल-वलाई लिमन अतका, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/494। पृष्ठ 688 में से 437

جیز ملک و ترکہ ہندہ ہے۔ بر تقدیر عدم موانع ارث و وارث آخر و تقدیم دین و وصیت چھ سہام ہو کر تین سہام شوہر، دو سہام پدر، ایک مادر کو ملے گا۔ اسی حساب سے مہر ہندہ اگر باقی ہو تقسیم ہو گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۴: ۴ جمادی الاولٰی ۱۳۱۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر کا نکاح عمرو سے کیا اور پیش از نکاح ایک اقرار نامہ زید نے عمرو سے لکھوایا کہ میں بے رضامندی زوجہ کے اسے کہیں نہیں لیجا سکتا ہوں اور خود میں وہیں یعنی زوجہ کے مکان پر رہوں گا اور در صورت وعدہ خلافی میں نان نفقہ دوں گا، بعدہ نکاح ہوا اور مہر ڈھائی سو روپے کا بندھا جس میں کوئی شرط پیشگی دینے یا کسی میعاد کے قرار نہ پائی، اب عمرو اپنے خسر کے یہاں شب کو رہنا چاہتا ہے تو اس کا خسر اور خود زوجہ اسے گوارہ نہیں کرتے، عمرو کا مکان اسی شہر میں ہے وہ چاہتا ہے کہ اپنی زوجہ کو اپنے مکان پر لے جائے، اس صورت میں اسے اس امر کا اختیار ہے یا نہیں؟ اور اگر زید نہ لے جانے دے اور ہندہ نہ جائے تو مستحق نان نفقہ کی ہو گی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بیشک صورت مستفسرہ میں زید (عمرو) کو اختیار ہے کہ اپنی زوجہ کو اپنے مکان پر لے جا کر رکھے، زوجہ اور اس کے باپ کا بلا وجہ شرعی روکنا محض ظلم ہے، اور زوجہ نہ جائے گی تو نان نفقہ کی مستحق نہ ہو گی،

لانها ناشزة لامتناعها بغیر حق وانما النفقة جزاء | کیونکہ وہ نافرمان ہے اس لئے کہ وہ بلاوجہ مانع بنی ہوئی ہے الاحتباس فاذا الاحتباس لانفقة کما صرحوا به قاطبة۔ | جبکہ نفقہ خاوند کے حق میں

پابند ہونے کا عوض ہے تو جہاں پابندی نہیں وہاں نفقہ نہیں ہوگا جیسا کہ سب نے اس کی تصریح کی ہے (ت)

عمرو کا اقرار نامہ لکھ دینا کہ در صورت وعدہ خلافی نان نفقہ دوں گا کوئی چیز نہیں، فان شرط الله احق، ومن اشترط شرطا ليس في كتاب | اللہ تعالٰی کے حکم کے موافق شرط مقبول ہے اور جس نے اللہ تعالٰی کے حکم کے خلاف کوئی شرط لگائی تو وہ ناحق ہے اگرچہ ہزار بار شرط لگائے، جیسا کہ صحیح حدیث میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام کا ارشاد گرامی ہے۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم (ت) الله فليس له ، وان شرط مائة مرة ۱ كما قال النبى صلى الله تعالٰى عليه وسلم فى الحديث الصحيح ، والله سبحنه و تعالٰى اعلم۔

۱ صحیح مسلم باب بیان ان الولاء لمن اعتق قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۹۴ Page 437 of 688

Volume 13 - Fatawa Razawiya - Page 13

Mas'ala 165: 12 Dhu al-Hijjah 1314 AH

Question: What do the noble scholars (may Allah Almighty have mercy on them) say regarding this matter: Hindah's father asked Zaid to marry his daughter. Zaid replied that he could not marry at present because he is a student and does not know how long it will take to complete his education, and he will not be able to provide maintenance (food and clothing) for a wife during this period. At this, Hindah's father, in the presence of several people, took full responsibility for Zaid's situation upon himself and, with mutual consent, performed the marriage of his daughter to Zaid and gave Zaid permission to continue his studies. After a few years, while Zaid was still a student and before he finished his education, Hindah's father demanded maintenance from Zaid. In this situation, is Zaid obligated to pay for his wife's maintenance or not? Furthermore, if during this time Hindah commits adultery with another man, does she remain in Zaid's marriage or not? What will be the Shariah ruling on Hindah, and will Zaid be absolved from his wife's misconduct or not? And if Hindah voluntarily waives her dower (Mahr) but later, after a dispute, says she did not waive it, can she legally claim the dower from Zaid now or not? Please clarify and may you be rewarded.

Answer: In the situation described, if the wife has surrendered herself to Zaid and has not caused any unjustified hindrance, then her maintenance is obligatory upon the husband. As for the father-in-law taking responsibility for the requirements before the marriage, if...

जिल्द तेरहवीं - फ़तावा रज़विया - पृष्ठ १३

मसला १६५: १२ ज़ुल-हिज्जा १३१४ हिजरी

सवाल: विद्वान (अल्लाह उन पर रहम करे) इस मसले में क्या कहते हैं कि हिंदा के पिता ने ज़ैद से कहा कि मेरी बेटी से शादी कर लो। ज़ैद ने कहा कि मैं फिलहाल शादी नहीं कर सकता क्योंकि मैं छात्र हूँ और नहीं जानता कि शिक्षा प्राप्त करने में कितना समय लगेगा, और इस दौरान मुझमें पत्नी के भरण-पोषण (रोटी-कपड़ा) की सामर्थ्य नहीं होगी। इस पर हिंदा के पिता ने कई लोगों की मौजूदगी में ज़ैद की इस मजबूरी की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और रजामंदी के साथ अपनी लड़की का निकाह ज़ैद से कर दिया और ज़ैद को शिक्षा जारी रखने की अनुमति दे दी। कुछ सालों बाद, जब ज़ैद शिक्षा प्राप्त कर ही रहा था, हिंदा के पिता ने ज़ैद से भरण-पोषण की मांग की। क्या ऐसी स्थिति में ज़ैद पर पत्नी का भरण-पोषण अनिवार्य होगा या नहीं? इसके अलावा, अगर इस दौरान हिंदा किसी अन्य पुरुष के साथ व्यभिचार करती है, तो क्या वह ज़ैद के निकाह में रहेगी या नहीं? हिंदा पर क्या शरीयत का हुक्म होगा और क्या ज़ैद अपनी पत्नी के इस बुरे कृत्य से बरी माना जाएगा या नहीं? और अगर हिंदा स्वेच्छा से अपना मेहर माफ कर दे और बाद में विरोध होने पर कहे कि मैंने उसे माफ नहीं किया, तो क्या अब वह शरीयत के अनुसार ज़ैद से मेहर का दावा कर सकती है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: पूछे गए मामले में, यदि पत्नी ने स्वयं को ज़ैद को सौंप दिया है और बिना किसी कारण के कोई बाधा नहीं डाली है, तो पति पर उसका भरण-पोषण अनिवार्य होगा। और ससुर का निकाह से पहले उन शर्तों को अपने ऊपर लेना अगर...

جلد سیزدہم - فتاویٰ رضویہ - صفحہ ۱۳

مسئلہ ۱۶۵: ۱۲ ذی الحجہ ۱۳۱۴ھ

ماقولکم رحمکم اللہ تعالیٰ چہ می فرمایند علمائے دین اندریں مسئلہ کہ ہرگاہ بازید، پدر ہندہ گفت دخترم را شادی بکن زید گفت من فی الحال شادی نتوانستم چرا کہ طالب علم ہستم و حصول علم را مدتے معلوم نیست کہ بچند سال بدست آید و قدرت نان و نفقہ اندریں مدت ندارم و پدر ہندہ دریں حالت اضطراری او بہ پیش چند مردم ایں ہمہ شرائط مذکورہ برذمہ خود قبول کردہ وراضی شدہ دختر او بازید نکاح کنانیدہ برائے تحصیل علوم اجازت داد، پس بعد از چند سال قبل از تحصیل علوم ازونان و نفقہ طلب کردو بریں تقدیر نان ونفقہ وغیرہ دادن بروے واجب خواہد شد یانہ واز ہندہ اگر بامر داجنبی ازیں مدت حرام کاری و غیرہ صادر گردد در نکاح زید ثابت ماند یانہ ورحندہ شرعاً چہ حکم دادہ شود و شوہر ہندہ از بد فعلی او بری گردد یانہ واگر ہندہ مہر خود عندالرضا ساقط گردد بعد ازاں عندالنزاع می گوید کہ مہر م را ز و ساقط نکردہ ام دعوی مہر اور بر زید شرعاً ثابت گردد یانہ۔ بینوا توجروا۔

علمائے کرام (رحمہم اللہ تعالیٰ) آپ کی کیا رائے ہے، کیا فرماتے ہیں علمائے کرام اس مسئلہ میں کہ ہندہ کے باپ نے زید کو کہا کہ میری بیٹی سے شادی کر لو، زید نے کہا کہ میں فی الحال شادی نہیں کر سکتا کیونکہ میں طالب علم ہوں اور حصول علم میں نہ معلوم کتنی مدت صرف ہو، مجھے اس مدت میں بیوی کے نان ونفقہ پر قدرت نہ ہوگی، تو اس پر ہندہ کے والد نے چند لوگوں کی موجودگی میں زید کی اس مجبوری کے حالت کی تمام ذمہ داری اپنے ذمہ لے لی اور رضامندی کے ساتھ زید سے اپنی لڑکی کا نکاح کردیا اور زید کو تحصیل علم کے لئے اجازت دے دی، اور

اس کے چند سال بعد زید کی طلب علمی کے دوران تحصیل علم سے پہلے، ہندہ کے والد نے زید سے نان ونفقہ کا مطالبہ کردیا، تو کیا اس صورت میں زید کو بیوی کا نان و نفقہ دینا واجب ہوگا یا نہیں، اور اس دوران اگر ہندہ کسی غیر مرد سے بدکاری کرے تو کیا وہ زید کے نکاح میں باقی رہے گی یا نہیں اور ہندہ پر کیا حکم شرعی ہوگا اور زید اپنی بیوی کی اس بدفعلی سے بری قرار پائے گا یا نہیں، اور اگر ہندہ رضامندی سے اپنا مہر معاف کر دے اور بعد مخالفت ہو جانے پر کہے کہ میں نے اس کو مہر معاف نہیں کیا تو کیا اب زید پر شرعاً مہر کا دعویٰ کر سکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: در صورت مستفسرہ اگر از جانب زن تسلیم نفس واقع شد و خویشتن را از شوہر بناواجی باز نداشت نفقہ او بر ذمہ شوہر لازم شد و آں کہ پدرزن پیش از نکاح آں شرائط برذمہ خود قبول کرداگر مسئولہ صورت میں اگر بیوی نے اپنے آپ کو زید کے سپرد کردیا اور بلاوجہ رکاوٹ نہ کی ہو تو خاوند کے ذمہ اس کا نفقہ واجب ہوگا اور بیوی کے والد کا نکاح سے پہلے اس کی ذمہ داریوں کو اپنے ذمہ لینا اگر

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] It meant that he agreed not to provide maintenance during this period and pledged that during the pursuit of knowledge, the wife would not demand food and maintenance from you. This pledge and consent of the father have no standing, even if this agreement was made with the consent of the adult wife, because there is no meaning in waiving a debt before it becomes obligatory, especially the matter of maintenance which becomes obligatory bit by bit daily. It is stated in Durr-ul-Mukhtar: "Absolution before it becomes obligatory (Fard) is void, and after it, it is valid for what has passed and for a future month, even if it was stipulated in the contract that maintenance would be without estimation and clothing would be for winter and summer, it is not binding; she has the right after that to demand estimation for both, etc." And in Radd-ul-Muhtar, it is narrated from Al-Fath: "Because it is waiving something before its obligation, hence it is not permissible." And if the meaning of this pledge and consent of the father was that I myself would be the provider for the wife's food and maintenance instead of the husband and I would be responsible, then the purpose is to absolve the husband from responsibility, as is apparent. Then this would be a contract of transfer (Hawala) because a guarantee (Kafala) with the condition of absolving the original debtor changes and becomes a transfer (Hawala), while the meaning of Hawala is...

[Left Column - Arabic/Persian Original Text] Its meaning is that he agreed not to provide maintenance and gave a pledge that until the duration of seeking knowledge, the woman would not demand food and maintenance from you. This consent and pledge are nothing themselves, even if they were made according to the permission of an adult woman, because the waiving of a debt before its obligation has no meaning, especially maintenance which becomes obligatory bit by bit daily. In ad-Durr al-Mukhtar: "Absolution before the obligation is void, and after it, it is correct for what has passed and from a future month, even if he stipulated in the contract that the maintenance would be without estimation and the clothing would be for winter and summer, it would not be binding, and she has the right after that to request estimation for both etc." And in Radd al-Muhtar on the authority of al-Fath: "So it is waiving something before its obligation, so it is not permissible." And if the intention was that on behalf of the husband, he became a guarantor for this debt and took it upon his own responsibility, if the goal is the acquittal of the husband as is clear from the speech, then this is a transfer (Hawala), for indeed guarantee

(Kafala) with the condition of acquittal of the principal is a transfer, and transfer is the relocation of a debt.

1. Durr al-Mukhtar, Book of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/268
2. Radd al-Muhtar, Book of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/253

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[दाहिना कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] इसका मतलब यह था कि वह इस दौरान भरण-पोषण (नफ़क़ा) न देने पर सहमत है और वचन देता है कि शिक्षा प्राप्ति के दौरान पत्नी आपसे भोजन और भरण-पोषण की मांग नहीं करेगी। पिता का यह वचन और सहमति कोई महत्व नहीं रखती, भले ही यह समझौता वयस्क पत्नी की सहमति से किया गया हो, क्योंकि ऋण के अनिवार्य होने से पहले उसे समाप्त करने का कोई अर्थ नहीं है, विशेष रूप से भरण-पोषण का मामला जो दैनिक आधार पर थोड़ा-थोड़ा अनिवार्य होता है। दुर्र-ए-मुख्तार में है कि, "अनिवार्य होने से पहले मुक्त (समाप्त) करना शून्य है, जबकि अनिवार्य होने के बाद पिछले या आगामी महीने के भरण-पोषण को समाप्त करना सही है, यहाँ तक कि यदि निकाह में यह शर्त रखी गई कि भरण-पोषण का निर्धारण नहीं होगा और कपड़े सर्दी और गर्मी में एक ही होंगे, तो इस शर्त का कोई विचार नहीं होगा। अतः पत्नी निकाह के बाद भरण-पोषण और कपड़ों के निर्धारण की मांग कर सकेगी इत्यादि।" और रद-उल-मुहतार में फ़तह से उद्धृत है क्योंकि यह "किसी चीज़ के अनिवार्य होने से पहले उसे समाप्त करना है, इसलिए यह जायज़ नहीं होगा।" और यदि पिता के इस वचन और सहमति का मतलब यह था कि मैं पति के बजाय स्वयं पत्नी के भोजन और भरण-पोषण का जिम्मा लूँगा और मैं उत्तरदायी रहूँगा, तो इससे उद्देश्य पति को जिम्मेदारी से मुक्त करना है जैसा कि स्पष्ट है, तो यह 'हवाला' (हस्तांतरण) का अनुबंध होगा क्योंकि मूल ऋणी को मुक्त करने की शर्त के साथ 'कफ़ालत' (गारंटी) बदलकर 'हवाला' बन जाती है, जबकि 'हवाला' का अर्थ यह है कि...

[बायां कॉलम - अरबी/फारसी मूल पाठ] इसका अर्थ यह है कि वह भरण-पोषण न देने पर सहमत हो गया और उसने वचन दिया कि ज्ञान प्राप्ति की अवधि तक स्त्री आपसे भोजन और भरण-पोषण नहीं माँगेगी। यह सहमति और वचन स्वयं में कुछ भी नहीं है, भले ही यह वयस्क स्त्री की अनुमति के अनुसार किया गया हो, क्योंकि किसी ऋण के अनिवार्य होने से पहले उसे समाप्त करने का कोई अर्थ नहीं है, विशेष रूप से भरण-पोषण जो दैनिक रूप से थोड़ा-थोड़ा करके अनिवार्य होता है। दुर्र अल-मुख्तार में है: "अनिवार्य होने से पहले ऋणमुक्ति शून्य है, और उसके बाद पिछले समय और भविष्य के एक महीने के लिए सही है, यहाँ तक कि यदि उसने अनुबंध में शर्त रखी कि भरण-पोषण बिना किसी अनुमान के होगा और वस्त्र सर्दी और गर्मी के लिए होंगे, तो यह बाध्यकारी नहीं होगा, और उसे इसके बाद दोनों के अनुमान के लिए अनुरोध करने का अधिकार है इत्यादि।" और फ़तह से रद अल-मुहतार में: "तो यह किसी चीज़ को उसके अनिवार्य होने से पहले छोड़ना है, इसलिए यह अनुमति

योग्य नहीं है।" और यदि मंशा यह थी कि पति की ओर से उसने इस ऋण की जिम्मेदारी ली और उसे अपने ऊपर ले लिया, यदि उद्देश्य पति को ऋणमुक्त करना है जैसा कि वचन से स्पष्ट है, तो यह 'हवाला' है, क्योंकि वास्तव में मूल ऋणी को मुक्त करने की शर्त के साथ ज़मानत (कफ़ालत) एक 'हवाला' है, और 'हवाला' ऋण का हस्तांतरण है।

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, मुतबा-ए-मुज्तबाई दिल्ली, 1/268.
2. रद-उल-मुहतार, बाब-उन-नफ़क़ा, दार इहया अत-तुराث अल-अरबी बेरुत, 2/253. पृष्ठ 688 का 439

[دائیں کالم کا متن] اس کا مطلب یہ تھا کہ اس دوران نفقہ نہ دینے پر راضی ہے اور عہد کرتا ہے کہ تحصیلِ علم کے دوران بیوی تجھ سے نان ونفقہ طلب نہ کرے گی تو والد کا یہ عہد و پیمان اور رضامندی کوئی حیثیت نہیں رکھتی اگرچہ بالغ بیوی کی رضامندی سے یہ معاہدہ کیا ہو کیونکہ واجب ہونے سے پہلے دین کو ساقط کرنے کا کوئی مطلب نہیں ہے خصوصاً نفقہ کا معاملہ جو کہ روزانہ تھوڑا تھوڑا واجب ہوتا ہے۔ در مختار میں ہے کہ، مقرر ہونے سے قبل بری (ساقط) کرنا باطل ہے جبکہ مقرر ہوجانے کے بعد گزشتہ یا آئندہ ماہ کے نفقہ کو ساقط کرنا صحیح ہے، حتیٰ کہ اگر نکاح میں یہ شرط رکھی کہ نفقہ کا تقرر نہ ہوگا اور لباس سردی اور گرمی میں ایک ہوگا تو اس شرط کا کوئی اعتبار نہ ہوگا لہذا بیوی نکاح کے بعد نفقہ اور لباس کے تقرر کا مطالبہ کر سکے گی الخ۔ اور ردالمحتار میں فتح سے منقول ہے کیونکہ یہ وجوب سے قبل کسی چیز کو ساقط کرنا ہے لہذا جائز نہ ہوگا، اور اگر والد کے اس عہد و رضا کا مطلب یہ تھا کہ بیوی کے نان ونفقہ کا خاوند کی بجائے میں خود کفیل ہوں گا اور میں ذمہ دار ہوں گا تو اس سے مقصد خاوند کو ذمہ سے بری کرنا ہے جیسا کہ ظاہر ہے تو یہ عقد حوالہ ہوگا کیونکہ اصل کو بری کرنے کی شرط سے کفالت تبدیل ہو کر حوالہ بن جاتی ہے جبکہ حوالہ کا معنی یہ ہے کہ

[بائیں کالم کا متن] معنیش اینست کہ اونبنا دادن نفقہ راضی شد و پیمان داد کہ تا مدت تحصیل علم زن از تو نان و نفقہ نخواهد این رضا و پیمان خود چیزے نیست اگرچہ حسبِ اجازت زن بالغہ شده باشد زیرا کہ اسقاطِ دین پیش از وجوب معنی ندارد خاصۃً نفقہ کہ روزانہ شیاً فشیاً واجب می شود فی الدرالمختار الابراء قبل الفرض باطل و بعده یصح مما مضی و من شهر مستقبل حتی لو شرط في العقد ان النفقة تكون من غير تقدير والكسوة كسوة الشتاء والصيف لم يلزم فلها بعد ذلك طلب التقدير فيهما ۱

الخ، وفي رد المحتار عن الفتح فهو اسقاط للشيئي قبل وجوبه فلا يجوز ۲ واگر مراد آنست کہ از جانبِ شوہر این دین را کفیل شده برذمہ خود گرفت اگر مقصود براتِ شوہرست کما ہو ظاہر الکلام ایں حوالہ باشد فان الکفالة بشرط برائة الاصیل حوالہ و حوالہ نقل دین ست

۱ درمختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۸/۱ ۲ ردالمحتار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۳/۲

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

As mentioned in Al-Tanwir, and it is correct as cited in Al-Hindiyyah from Al-Nahr: taking someone's debt upon oneself to discharge them from it. As it is in Tanwir al-Absar, Al-Hindiyyah cites it from Al-Nahr and declares it correct. In this case, since the debt is currently non-existent, how can it be transferred to someone else's responsibility?

It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: "Hawala (debt transfer) is valid in a known debt etc." It is stated in Radd al-Muhtar: "In Hawala, the condition is that the debt of the creditor is established against the original debtor etc." And it is also mentioned there that Hawala will not be valid if the property is unknown, etc. And it is also mentioned there that a transfer of the stipend of a warrior or other entitled person will not be valid because this stipend is not established for them against the ruler or supervisor, etc.

And if by the father's agreement and consent it was not meant to discharge the husband from maintenance (nafaqah), then this guarantee (kafala) will be valid (and the husband will not be discharged from liability). For it is in Al-Hindiyyah, in the chapter "Guaranteeing the Dower at the Time of Marriage," that guarantee of the dower before marriage is valid; you may refer to Al-Hindiyyah if you wish. This statement in Al-Hindiyyah is in accordance with the fatwa-giving opinion of Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), that the guarantee for future maintenance is valid even if that maintenance has not yet become obligatory, as has been clarified in Radd al-Muhtar.

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hawala, Matba' Mujtabai, Delhi, 29/2 2 Radd al-Muhtar, Kitab al-Hawala, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 290/4 3 Radd al-Muhtar, Kitab al-Hawala, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 290/4 4 Radd al-Muhtar, Kitab al-Hawala, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 291/4

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

जैसा कि 'अल-तन्वीर' में है और यही सही है जैसा कि 'अल-हिन्दिया' में 'अन-नह्र' से उद्धृत है: किसी के ऋण को अपने ऊपर लेकर उसे ऋणमुक्त करना। जैसा कि 'तन्वीर अल-अबसार' में है, इसे 'हिन्दिया' में 'नह्र' से उद्धृत करते हुए सही करार दिया गया है। तो इस स्थिति में जब ऋण अभी अस्तित्वहीन है, तो उसे स्थानांतरित करके दूसरे के ज़िम्मे कैसे किया जा सकता है?

'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है कि 'हवाला' (ऋण हस्तांतरण) ज्ञात ऋण में सही होता है आदि। 'रद्द-अल-मुह्तार' में है कि हवाला में यह शर्त है कि ऋणदाता का मूल ऋणी पर ऋण सिद्ध हो आदि। और उसमें यह भी कहा गया है कि माल अज्ञात होने पर हवाला सही नहीं होगा, आदि। और इसमें यह भी उल्लेख है कि गाज़ी (योद्धा) और अन्य पात्र व्यक्तियों के वजीफे(भत्ते) का हवाला सही नहीं होगा क्योंकि यह वजीफा हाकिम और संरक्षक के ज़िम्मे उनके लिए सिद्ध नहीं है आदि।

और यदि पिता के उस वादे और सहमति से पति को गुज़ारे (नफ़क़ा) से मुक्त करना उद्देश्य नहीं था, तो यह ज़मानत (कफ़ालत) सही होगी (और पति दोषमुक्त नहीं होगा)। क्योंकि 'हिन्दिया' में "महर की ज़मानत पर निकाह का अध्याय" में है कि निकाह से पहले महर की ज़मानत सही है; यदि आप चाहें तो 'हिन्दिया' देख सकते हैं। और यह 'हिन्दिया' का कथन इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के उस मुफ़्ती-बिह (जिस पर फ़तवा दिया गया है) कथन के अनुरूप है कि भविष्य के गुज़ारे (नफ़क़ा) की ज़मानत सही है, भले ही वह गुज़ारा अभी अनिवार्य न हुआ हो, जैसा कि इस बात को 'रद्द-अल-मुह्तार' में स्पष्ट किया गया है।

1 दुर्र-ए-मुख़्तार, किताब अल-हवाला, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 29/2 2 रद्द-अल-मुह्तार, किताब अल-हवाला, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 290/4 3 रद्द-अल-मुह्तार, किताब अल-हवाला, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 290/4 4 रद्द-अल-मुह्तार, किताब अल-हवाला, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 291/4

पृष्ठ 440 of 688

فتاویٰ رضویہ، جلد تیرہ دہم، صفحہ ۱۳

کما في التنویر وھو الصحیح کما في الھندیة عن النھر کسی کو قرض سے بری کر کے اپنے ذمے لے لینا، جیسا کہ تنویر الابصار میں ہے، اس کو ہندیہ میں نہر سے نقل کرتے ہوئے صحیح قرار دیا ہے، تو اس صورت میں ابھی قرض معدوم ہے تو اس کو نقل کرکے دوسرے کے ذمہ کیسے کیا جاسکتا ہے،

درمختار میں ہے کہ، حوالہ، معلوم قرض میں صحیح ہوتا ہے الخ، ردالمحتار میں ہے کہ، حوالہ میں یہ شرط ہے کہ قرض خواہ کا اصیل پر قرض ثابت ہو الخ، اور اس میں یہ بھی کہے، مال مجہول ہونے پر حوالہ صحیح نہ ہوگا، الخ، اور اس میں یہ بھی مذکور ہے کہ، غازی اور دیگر مستحق شخص کے وظیفہ کا حوالہ صحیح نہ ہوگا کیونکہ یہ وظیفہ حاکم اور نگران کے ذمہ ان کے لئے ثابت شدہ نہیں ہے الخ،

اور اگر والد کے اس عہد ورضا سے خاوند کو نفقہ سے بری قرار دینا نہیں تھا تو یہ کفالت صحیح ہوگی (اور خاوند بری الذمہ نہ ہوگا) کیونکہ ہندیہ میں ہے "مہر کی ضمانت پر نکاح کی فصل" میں ہے کہ، نکاح سے قبل مہر کی ضمانت صحیح ہے، اگر آپ چاہیں تو ہندیہ کی طرف رجوع کریں، اور یہ ہندیہ کا بیان امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کے مفتی بہ قول کے موافق ہے کہ مستقبل کے نفقہ کی کفالت صحیح ہے اگرچہ یہ نفقہ ابھی واجب نہیں ہوا، جیسا کہ اس بات کو ردالمحتار میں واضح کیا ہے،

1 درمختار کتاب الحوالۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۹/۲ 2 ردالمحتار کتاب الحوالۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۹۰/۴ 3 ردالمحتار کتاب الحوالۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۹۰/۴ 4 ردالمحتار کتاب الحوالۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۹۱/۴

Therefore, the father's sponsorship does not necessitate the exoneration of the husband (Zaid) from providing maintenance (Nafaqah). Thus, in any case, maintenance will be obligatory upon the husband according to its conditions. Yes, if the amount of maintenance had not yet been determined by mutual consent or by a judge's decree—for example, a certain monthly cash amount or a specific quantity of food and clothing at a particular time was not fixed—and a period passed without maintenance being provided, then the maintenance for the past period will lapse. The wife will not have the right to demand it. She will have the right to get the amount fixed for the future so that it becomes a debt upon the husband and she can obtain it upon demand. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar' that maintenance does not become a debt upon the husband until it has been settled by a judge or by mutual consent. For example, if a certain amount of goods or cash has been fixed, then maintenance prior to this decision will not be payable. However, for subsequent maintenance, if the wife spent it by taking a loan or from her own wealth without a judge's order, she can recover it from the husband, etc. It is stated in 'Radd-ul-Muhtar': past maintenance prior to the judge's decree or mutual consent will not be payable by the husband (it will, however, be payable after the settlement), and future maintenance will also not be payable yet because it has not yet become obligatory. If the wife, out of her own free will without any coercion, has absolved the husband from the dower (Mahr), then the dower is dropped from the husband's responsibility, even if this occurred in private seclusion...

Radd-ul-Muhtar 1: Maintenance sponsorship does not result in the exoneration of the husband's responsibility. Therefore, in any case, maintenance is mandatory for the husband according to the conditions. Indeed, if maintenance was not quantified or predetermined by mutual consent or the judge's decree—for example, a certain amount of monthly money or food and clothing was not fixed—and a period passed without the payment of maintenance, then the maintenance for that period lapses and cannot be demanded. For the future, she should seek a determination of the amount so that it becomes a debt and she can gain a right to demand it. In Al-Durr al-Mukhtar: "Maintenance does not become a debt except by a decree or mutual consent, i.e., their agreement on a specific amount of goods or money. Before that, nothing is binding upon him. After that, she may claim what she spent, even if it was from her own wealth, without a judge's order" 2. And in Radd-ul-Muhtar: "He is not liable for what passed before the determination by decree or consent, nor for what is

in the future because it has not become mandatory yet" 3. If a woman absolves her husband of the dower (Mahr) for Shariah purposes without coercion, the dower is dropped from the husband's responsibility even if this happened in private seclusion.

Footnotes: 1. Radd-ul-Muhtar, Kitab-ul-Kifalah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/263. 2. Durr-ul-Mukhtar, Bab-un-Nafaqah, Matba Mujtabai, Delhi, 1/70. 3. Radd-ul-Muhtar, Bab-un-Nafaqah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/258.

इसलिए, पिता का उत्तरदायित्व पति (ज़ैद) को भरण-पोषण (नफ़क़ा) की ज़िम्मेदारी से मुक्त नहीं करता। अतः, हर हाल में पति पर उसकी शर्तों के अनुसार भरण-पोषण अनिवार्य होगा। हाँ, यदि आपसी सहमति या न्यायाधीश (काज़ी) के फैसले से अभी तक भरण-पोषण की मात्रा निर्धारित नहीं हुई थी—उदाहरण के लिए, मासिक रूप से इतनी नकद राशि या भोजन और कपड़ों की यह मात्रा और फलां समय पर कपड़े तय नहीं हुए थे—और कुछ समय भरण-पोषण दिए बिना बीत गया, तो पिछले समय का भरण-पोषण समाप्त हो जाएगा। पत्नी को इसकी मांग करने का अधिकार नहीं होगा। उसे भविष्य के लिए मात्रा निर्धारित करवाने का अधिकार होगा ताकि वह पति के ज़िम्मे ऋण बन सके और मांग करने पर उसे प्राप्त कर सके। 'दुर्रे मुख्तार' में उल्लेख है कि पति पर भरण-पोषण तब तक ऋण नहीं बनता जब तक कि उसे न्यायाधीश या आपसी सहमति से तय न कर लिया गया हो। उदाहरण के लिए, यदि माल या नकद की एक निश्चित मात्रा तय कर ली गई हो, तो इस फैसले से पहले का भरण-पोषण देय नहीं होगा। और उसके बाद वाले भरण-पोषण में, जो पत्नी ने ऋण लेकर या स्वयं अपने धन से न्यायाधीश के आदेश के बिना खर्च किया हो, वह पति से वसूल कर सकती है आदि। 'रद्दुल मुह्तार' में है: न्यायाधीश या आपसी सहमति से पहले का पिछला भरण-पोषण पति पर देय नहीं होगा (निश्चय ही तय होने के बाद का देय होगा), और भविष्य का भरण-पोषण भी अभी देय नहीं होगा क्योंकि वह अभी अनिवार्य नहीं हुआ है। यदि पत्नी ने कानूनी रूप से अपनी सहमति से बिना किसी ज़बरदस्ती या दबाव के पति को मेहर (स्त्रीधन) से मुक्त कर दिया हो, तो मेहर पति के उत्तरदायित्व से समाप्त हो गया, चाहे यह एकांत (खलवत-ए-सह़ीह़ा) में हुआ हो...

रद्दुल मुह्तार १: (अमा कफ़ालत मुजिब बराअत ज़िम्मा शौहर नबाशद) भरण-पोषण का उत्तरदायित्व पति की ज़िम्मेदारी को समाप्त नहीं करता, इसलिए हर हाल में शर्तों के अनुसार पति पर भरण-पोषण अनिवार्य है। हाँ, यदि आपसी सहमति या काज़ी के फैसले से नफ़क़ा निर्धारित नहीं किया गया था—जैसे कि मासिक इतनी राशि या भोजन और कपड़े की मात्रा तय नहीं थी—और बिना नफ़क़ा दिए कुछ समय बीत गया, तो वह नफ़क़ा समाप्त हो गया और उसकी मांग नहीं की जा सकती। भविष्य के लिए उसे निर्धारण की मांग करनी चाहिए ताकि वह ऋण बन जाए और मांग पर उसे प्राप्त कर सके। 'अल-दुरुल मुख्तार' में है: "नफ़क़ा ऋण नहीं बनता सिवाय काज़ी के फैसले या आपसी सहमति के, यानी माल या नकदी की एक निश्चित मात्रा पर उनकी सहमति। उससे पहले उस पर कुछ भी अनिवार्य नहीं है, और उसके बाद वह अपने खर्च किए हुए धन का दावा कर सकती है,

भले ही वह उसके अपने धन से हो, बिना काज़ी के आदेश के २। और 'रद्दुल मुह्तार' में है: "वह उस नफ़क़ा के लिए ज़िम्मेदार नहीं है जो काज़ी के फैसले या सहमति से पहले बीत गया है, और न ही भविष्य के लिए क्योंकि वह अभी तक अनिवार्य नहीं हुआ है" ३। यदि महिला ने बिना किसी दबाव के पति को मेहर से मुक्त कर दिया, तो मेहर पति के ज़िम्मे से खत्म हो गया भले ही यह एकांत में हुआ हो।

पाद-टिप्पणियाँ: १. रद्दुल मुह्तार, किताबुल किफ़ाला, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, ४/२६३. २. दुर्रे मुख्तार, बाबन नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/७०. ३. रद्दुल मुह्तार, बाबन नफ़क़ा, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, २/२५८.

पृष्ठ ४४१ का ६८८

لہذا والد کی کفالت خاوند (زید) کی نفقہ سے براءت کو واجب نہیں کرتی) پس ہر حال میں خاوند پر نفقہ اپنی شرائط کے مطابق واجب ہوگا۔ ہاں اگر باہمی رضامندی یا قاضی کے فیصلہ سے ابھی نفقہ کی مقدار متعین نہیں ہوئی تھی، مثلاً ماہانہ اس قدر نقد یا خوراک کی یہ مقدار اور فلاں وقت پر لباس طے نہیں ہوا تھا اور کچھ مدت نفقہ دیئے بغیر گزر گئی ہو تو گزشتہ مدت کا نفقہ ساقط ہوجائے گا بیوی کو اس کے مطالبہ کا حق نہ ہوگا، اور آئندہ کے لئے مقدار متعین کرانے کا اس کو حق ہوگا تاکہ خاوند کے ذمہ قرض بن سکے اور مطالبہ پر اسے حاصل کر سکے در مختار میں ہے کہ نفقہ خاوند کے ذمہ قرض نہیں بنتا تاوقتیکہ قاضی نے یا باہمی رضامندی سے طے نہ کر لیا گیا ہو، مثلاً یوں کہ اتنی مقدار جنس یا نقد مقرر کرلیا گیا ہو تو اس فیصلہ سے قبل کا نفقہ واجب الادا نہ ہوگا اور اس کے بعد والے نفقہ میں جو بیوی نے قرض لے کر یا خود اپنے مال سے قاضی کے حکم کے بغیر جو خرچ کیا ہو تو وہ خاوند سے وصول کر سکتی ہے الخ، ردالمحتار میں ہے: قاضی یا باہمی رضامندی سے قبل کا گزشتہ نفقہ خاوند پر واجب الادانہ ہو گا (البتہ طے کرنے کے بعد کا واجب الادا ہوگا) اور آئندہ مستقبل کا نفقہ بھی واجب الادا نہ ہوگا کیونکہ وہ ابھی واجب نہیں ہوا، بیوی نے اگر شرعی طور پر اپنی رضامندی سے بلا جبر واکراہ خاوند کو مہر سے بری کر دیا ہو تو وہ مہر

ردالمحتار ۱ اما کفالت موجب براءت ذمہ شوہر نباشد، پس بہر حال نفقہ بر شوہر بشرائطہ لازم ست، آرے اگر بتراضی یا قضائے قاضی نفقہ رافرضی و تقدیری میان نیامد مثلاً ماہانہ ایں قدر زر یا ایں مقدار طعام و پارچہ آں گاہ ہر قدر مدت کے بے ادائے نفقہ گزشت نفقہ اوساقط گشت مطالبہ اش نتواں کرد آئندہ راطلب فرض و تقدیر کند تا دین شود وبر مطالبہ دست یا بد فی الدر المختار النفقة لا

تصیر ديناً الا بالقضاء او الرضاء ای اصطلاحهما علی قدر معین اصنافاً او دراهم فقبل ذلك لا یلزمہ شیئ، وبعده ترجع بما انفقت ولو من مال نفسها بلا امر قاض 2، وفی ردالمحتار لا یلزمہ عما مضی قبل الفرض بالقضاء او الرضاء ولا عما یستقبل لانه لم یجب بعد 3، زن اگر شوئے خود را از مہر برائے شرعی بلا اکراہ کرد مہر از ذمہ شوہر ساقط شد اگر چہ ایں معنی در خلوت محضہ۔

حواشی: 1 ردالمحتار کتاب الکفالہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۶۳/۴ 2 درمختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۷۰/۱ 3 ردالمحتار باب النفقہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۸/۲

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13

[Left Column] The case details in the court of a Qazi (judge) will not take the form of proof without the wife's confession or a just testimony. If she, without fearing God, files a claim after exoneration, the Qazi will establish the husband's liability. Their internal matter will be judged by the True Judge (Allah), the Knower of the Unseen and the Witnessed, Jalla Jalaluhu, who will lift the veil from the truth. For the Qazi only judges by the apparent, and Allah Subhanahu takes charge of the secrets. Indeed, where the prompt or deferred nature of the dower (mahr) has not been stated, as is the case with most dowers in this land, the basis for action lies in the custom of the land. The common and prevalent custom of these lands, and even other countries, is the same: the dower becomes due solely upon separation by death or divorce. Thus, before that, a wife's demand is not heard, as we have clarified in our fatawa repeatedly. Adultery by women does not cause the nullification of their marriage. Allah Almighty said: "In whose hand is the marriage tie."[1] Even if such a disgrace occurs with the husband's father or son, the marriage is not annulled, although the wife becomes eternally forbidden (haram) to the husband, and immediate separation becomes obligatory. In Al-Durr al-Mukhtar regarding the prohibition of affinity (Hurmat-e-Musaharah).

[Right Column] It will be dropped from the husband even if the wife had forgiven it in her privacy. However, in the court of the Qazi, exoneration will not be proven without the wife's confession or testimony. If the wife, without fearing God, claims the dower in court after forgiving it, the Qazi will make the husband liable for its payment. However, this internal matter between the two will be presented in the court of Allah Almighty, who is the True Judge, the Knower of the Unseen and the Witnessed, and the real decision will be reached there. The Qazi gives judgment on the apparent; internal matters are entrusted to Allah Almighty. Yes, if there is no decision on whether the dower is prompt (Mu'ajjal) or deferred (Mu'ajjal), as is common in this area, then the matter will be based on the local custom. In this area, and even in other countries, it is the same: whatever dower there is, it is paid at the time of the death of the husband or wife, or divorce, and before that, a woman's demand is not considered worthy of attention, as we have stated many times in our fatawa. A marriage is not invalidated by a wife's adultery. Allah Almighty said: "In whose hand is the marriage tie" (the marriage knot is only in the hand of the husband). This is why if a wife commits an act of indecency with her husband's father or son, the marriage still does not become void, although the wife becomes forbidden to the

husband forever, and an immediate separation between the two becomes obligatory. In Durr-e-Mukhtar it is stated that, the prohibition of affinity...

[Footer] [1] Al-Qur'an al-Karim 2 / 237 Page 442 of 688

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[बाएं कॉलम का अनुवाद] काज़ी (न्यायाधीश) की अदालत में मामले का विवरण पत्नी के इकबालिया बयान या न्यायपूर्ण गवाही के बिना सबूत का रूप नहीं लेगा। यदि वह, ईश्वर से डरे बिना, दोषमुक्ति के बाद दावा दायर करती है, तो काज़ी पति की जिम्मेदारी स्थापित करेगा। उनका आंतरिक मामला असली काज़ी (अल्लाह), परोक्ष का ज्ञाता और साक्षी, जल्ला जलालुहू की अदालत में पेश होगा, जो सच्चाई से पर्दा उठा देगा। क्योंकि काज़ी केवल प्रकट के आधार पर निर्णय देता है, और अल्लाह सुब्हानहु रहस्यों का कार्यभार संभालता है। वास्तव में, जहाँ मेहर (दहेज़) के तुरंत या विलंबित होने की प्रकृति नहीं बताई गई है, जैसा कि इस देश में अधिकांश मेहर के साथ होता है, वहां कार्रवाई का आधार क्षेत्र की प्रथा है। इन क्षेत्रों और अन्य देशों की भी सामान्य और प्रचलित प्रथा यही है कि मेहर केवल मृत्यु या तलाक द्वारा अलगाव पर देय होता है। इस प्रकार, उससे पहले पत्नी की मांग पर ध्यान नहीं दिया जाता है, जैसा कि हमने अपने फतवों में बार-बार स्पष्ट किया है। महिलाओं द्वारा व्यभिचार उनके विवाह के विलोपन का कारण नहीं बनता है। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा: "जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है।"[1] यहाँ तक कि अगर पति के पिता या बेटे के साथ ऐसी बेशर्मी होती है, तब भी निकाह बातिल (अमान्य) नहीं होता, हालांकि पत्नी पति के लिए हमेशा के लिए हराम (वर्जित) हो जाती है, और तुरंत अलगाव अनिवार्य हो जाता है। अल-दुर अल-मुख्तार में 'हुर्मत-ए-मुसाहारह' (सम्बन्ध की वर्जना) के संबंध में।

[दाएं कॉलम का अनुवाद] पति के ऊपर से वह (मेहर) समाप्त हो जाएगा भले ही पत्नी ने अपनी तन्हाई में उसे माफ़ कर दिया हो। लेकिन काज़ी के पास पत्नी के इकबालिया बयान या गवाही के बिना दोषमुक्ति साबित नहीं होगी। यदि पत्नी, ईश्वर से डरे बिना, माफ़ करने के बाद काज़ी के पास मेहर का दावा कर दे, तो काज़ी पति के ज़िम्मे मेहर की अदायगी लाज़िम कर देगा। हालाँकि, दोनों का यह आंतरिक मामला अल्लाह तआला के दरबार में पेश होगा, जो असली काज़ी और परोक्ष व प्रत्यक्ष का ज्ञाता है, और असली फ़ैसला वहीं मिलेगा। काज़ी तो ज़ाहिर (प्रकट) पर फ़ैसला देता है, बातिनी (आंतरिक) मामले तो अल्लाह तआला के सुपुर्द हैं। हाँ, अगर मेहर के मुअज्जल (तुरंत) या मुअज्जल (विलंबित) होने का फ़ैसला न हुआ हो, जैसा कि आम तौर पर इस इलाके में होता है, तो ऐसी सूरत में मामला इलाके की प्रथा पर होगा। जबकि इस इलाके और अन्य देशों में भी यही है कि मियाँ या बीवी की मौत या तलाक़ के वक़्त जो भी मेहर हो वह अदा किया जाता है और उससे पहले औरत के मुतालबा (मांग) को क़ाबिल-ए-तवज्जो नहीं समझा जाता, जैसा कि हमने कई बार अपने

फ़तावा में बयान किया है। बीवी के ज़िना (व्यभिचार) से निकाह बातिल नहीं होता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "निकाह की गिरह (गाँठ) सिर्फ़ खाविन्द (पति) के हाथ में है"। यही वजह है कि अगर बीवी अपने खाविन्द के बाप या बेटे से बदफ़ेली (कुकर्म) करे तो भी निकाह बातिल नहीं होता, अगरचे बीवी हमेशा के लिए खाविन्द पर हराम हो जाती है, और फ़ौरी तौर पर दोनों में मुतारका (अलगाव) फ़र्ज़ हो जाता है। दर्र-ए-मुख़्तार में है कि, हुर्मत-ए-मुसाहारह...

[फुटर] [1] अल-कुरान अल-करीम 2/237 पृष्ठ 442 का 688

فتاویٰ رضویہ ، جلد سیز دہم ، ۱۳

[بایاں کالم] روئے داد فامانزدِ قاضی بے اقرار زن یا بینہ عادلہ رنگ ثبوت نیاید اگر خدا ناترسی کردہ بعد ابراءِ دعوے پر داز قاضی بر ذمہ شوہر ثابت سازد و معاملہ باطنی ایشاں بحکم قاضی حقیقی عالم الغیب والشہادۃ جل جلالہ پردہ از روئے حقیقت اندازد فالقاضی انما یقضی بالظاہر واللہ سبحانہ یتولی السرائر آرے جائیکہ تعجیل و تاخیل مہر بہ بیان نیامدہ باشد چناں کہ غالب مہردر ایں دیار ، ہمچناں مے باشد آنجا بنائے کار بر عرفِ دیار ست و عرفِ عام وشائع ایں بلاد بلکہ دیگر ممالک ہم ہمیں ست کہ بمجرد صورت مہر نزد افتراق بموت یا طلاق حال مے شود پس پیش ازاں مطالبہ زن مسموع ندار د کما بیناہ فی فتاؤنا مرارا ، زنائے زناں موجب بطلان نکاح آناں نیست قال تعالیٰ بِیَدِہٖ عُقْدَۃُ النِّکَاحِ 1 تا آنکہ اگر با پدر یا پسر شوہر ایں چنیں وقاحت روئے دہد ہم نکاح باطل نشود اگر چہ زن حرام ابدی گردد و متارکہ فی الفور فرض شود، فی الدر المختار بحرمۃ المصاھرۃ

[دایاں کالم] خاوند سے ساقط ہو جائے گا اگر چہ بیوی نے اپنی خلوت میں معاف کیا ہو، لیکن قاضی کے ہاں بیوی کے اقرار یا شہادت کے بغیر برائت ثابت نہ ہوگی، اگر بیوی خدا ترسی نہ کرتے ہوئے معاف کرنے کے بعد قاضی کے ہاں مہر کا دعویٰ کر دے تو قاضی خاوند کے ذمہ مہر کی ادائیگی لازم کر دے گا۔ تاہم دونوں کا یہ باطنی معاملہ، اللہ تعالیٰ جو کہ حقیقی قاضی عالم الغیب والشہادۃ ہے کے دربار میں پیش ہوگا اور حقیقی فیصلہ پائے گا، قاضی تو ظاہر پر فیصلہ دیتا ہے باطنی امور تو اللہ تعالیٰ کے سپرد ہیں ، ہاں اگر مہر کے معجل ہونے یا مؤجل کا فیصلہ نہ ہوا ہو جیسا کہ عام طور پر اس علاقے میں ہوتا ہے تو ایسی صورت میں معاملہ علاقہ کے عرف پر ہوگا، جبکہ اس علاقے بلکہ دیگر ممالک میں بھی یہی ہے کہ میاں یا بیوی کی موت یا طلاق کے وقت جو بھی مہر ہو وہ ادا کیا جاتا ہے اور اس سے قبل عورت کے مطالبہ کو قابلِ توجہ نہیں سمجھا

جاتا، جیسا کہ ہم نے کئی مرتبہ اپنے فتاویٰ میں بیان کیا ہے، بیوی کے زنا سے نکاح باطل نہیں ہوتا، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ (نکاح کی گرہ صرف خاوند کے ہاتھ میں ہے) یہی وجہ ہے کہ اگر بیوی اپنے خاوند کے باپ یا بیٹے سے بدفعلی کرے تو بھی نکاح باطل نہیں ہوتا اگر چہ بیوی ہمیشہ کے لئے خاوند پر حرام ہو جاتی ہے، اور فوری طور پر دونوں میں متارکہ فرض ہو جا تا ہے۔ درِ مختار میں ہے کہ، حرمتِ مصاہرہ

Marriage is not annulled until it becomes permissible for her to marry another person after the completion of the waiting period (Iddah) following separation. Intercourse with her before separation is not considered adultery (Zina). However, the woman is responsible for her own crime and is liable to the prescribed punishment (Hadd) or discretionary punishment (Ta'zir). If the husband was not negligent in his duty of protection and supervision and was not pleased with her action, he bears no burden. Allah Almighty says: 'And no bearer of burdens shall bear the burden of another.' And Allah, glorified and exalted be He, knows best. (T)

Question 166: 22 Rabi-ul-Awwal 1315 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, a property owner, expelled his wife, Hindah, from his house twenty years ago without any religious fault, due to a dispute over taking another woman. She went to her father Khalid's house. Her father took care of her expenses, so she did not feel the need to claim maintenance (nan-o-nafaqah). Since Khalid has now passed away, she now needs maintenance. During these twenty years, Zaid and Hindah did not happen to live together. Will this fact prevent her from getting maintenance? Please explain, may you be rewarded.

Answer: The maintenance for the past twenty years has lapsed in any case. For the future, since her leaving was not of her own accord but she was expelled by her husband, it will be seen whether the woman's staying at her father's house is due to the husband's compulsion—meaning, if he were to call her, she would not refuse to go, but he himself does not call her and does not want her to come—in that case, she is entitled to maintenance. If she herself does not want to go, and he calls her but she does not go, then she has no entitlement.

It is stated in 'Ad-Durr al-Mukhtar': Maintenance is obligatory for the wife even if she is in her father's house, as long as the husband does not demand her to move to his house; and the fatwa is given on this basis.

[1] Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Relations, Mujtabai Press, Delhi, 1/188.

निकाह तब तक समाप्त नहीं होता कि उस स्त्री के लिए दूसरे व्यक्ति से निकाह करना जायज़ हो जाए जब तक कि अलगाव (मुतारका) के बाद इद्दत की अवधि पूरी न हो जाए। अलगाव से पहले उसके साथ संभोग करना व्यभिचार (ज़िना) नहीं माना जाएगा। बहरहाल, पत्नी अपने अपराध के लिए स्वयं ज़िम्मेदार है, उसे निर्धारित दंड (हद) या विवेकाधीन दंड (ताज़ीर) दिया जाएगा। यदि पति ने उसकी सुरक्षा और निगरानी में कोताही नहीं की और वह उसके इस कार्य से सहमत नहीं था, तो उस पर कोई बोझ नहीं होगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।' और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 166: 22 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1315 हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद एक संपत्ति का मालिक है। बीस साल पहले, उसने अपनी पत्नी हिंदा को बिना किसी शरीयत के दोष के दूसरी औरत लाने के विवाद के कारण घर से निकाल दिया था। वह अपने पिता खालिद के घर चली गई। उसका पिता उसका भरण-पोषण कर रहा था, इसलिए उसे नान-ओ-नफ़क़ा (भरण-पोषण खर्च) प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। चूँकि अब खालिद का निधन हो गया है, इसलिए उसे नान-ओ-नफ़क़ा प्राप्त करने की आवश्यकता है। इन बीस वर्षों के दौरान, ज़ैद और हिंदा का साथ रहना नहीं हुआ। क्या यह बात नान-ओ-नफ़क़ा के लिए रुकावट होगी? बयान करें, आपको पुण्य मिले।

जवाब: पिछले बीस वर्षों का नफ़क़ा तो हर हाल में समाप्त (साक़ित) हो गया है। भविष्य के लिए, चूँकि उसका निकलना उसकी अपनी खुशी से नहीं था बल्कि पति ने निकाला था, यह देखा जाएगा कि क्या औरत का अपने पिता के घर रहना पति के ही दबाव के कारण है—अर्थात यदि वह बुलाए तो वह जाने से इनकार न करे, लेकिन वह खुद ही उसे नहीं बुलाता और उसका आना नहीं चाहता—तो वह नफ़क़ा की हकदार है। और अगर वह खुद ही जाना नहीं चाहती, वह बुलाता है और वह नहीं जाती, तो उसे अधिकार नहीं है।

'अद-दुर्र अल-मुख़्तार' में है: पत्नी के लिए नफ़क़ा अनिवार्य (वाजिब) है, भले ही वह अपने पिता के घर में हो, यदि पति उसे अपने घर स्थानांतरित होने के लिए न कहे; और इसी पर फतवा दिया जाएगा।

[1] अद-दुर्र अल-मुख़्तार, अल-मुहर्रमात का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/188। पृष्ठ 443 का 688

لا یرتفع النکاح حتی لا یحل لھا التزوج بآخر الابعد المتارکۃ وانقضاء العدۃ والوطی بھا لا یکون زناً ۱۔ بہر حال زن بقدر جرم خودش مستحق حد یا تعزیر شود شوے اگر در حفظ و منعش از قدر واجب تقصیر نہ کرد و بریں کار راضی نشد پیچ وبال برونیست لَا تَزِرُ وَازِرَۃٌ وِّزْرَ اُخْرٰی واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔ کے ساتھ نکاح باطل نہیں ہوتا حتی کہ دوسرے شخص سے اس بیوی کا نکاح حلال نہیں ہوگا تا وقتیکہ متارکہ کے بعد عدت نہ گزر جائے، اور متارکہ سے قبل اگر خاوند وطی کرلے تو زنا کا حکم نہ لگے گا، بہر حال بیوی اپنے جرم کی خود ذمہ دار ہے اس پر حد لگے گی یا تعزیر ہوگی، خاوند نے اگر حفاظت و نگرانی میں کوتاہی نہ کی ہو اور وہ اس کے اس فعل سے راضی نہ ہو تو اس پر کوئی وبال نہیں ہوگا، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ایک کا بوجھ دوسرے پر نہ ہوگا واللہ سبحٰنہ وتعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۶: ۲۲ ربیع الاول شریف ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید صاحب جائداد ہے اس نے عرصہ بیس سال سے اپنی زوجہ ہندہ کو بسبب ڈال لینے دوسرے عورت کے تکرار کے بلا قصور شرعی گھر سے نکال دیا وہ اپنے باپ خالد کے مکان پر چلی آئی اس کا باپ متکفل رہا اس وجہ سے اس کو نان و نفقہ حاصل کرنے کی ضرورت نہ ہوئی چونکہ اب خالد کا انتقال ہو گیا لہٰذا اس کو نان و نفقہ حاصل کرنے کی ضرورت ہے، اس مدت بیس سال میں زید ہندہ کو اتفاق یکجائی نہ ہوا یہ امر مانع نان و نفقہ تو نہ ہوگا ۔بینوا توجروا۔

الجواب: بیس سال گزشتہ کا نفقہ تو ہر طرح ساقط ہی ہو گیا ،آئندہ کے لئے جبکہ اس کا نکلنا اپنی خوشی سے نہ تھا بلکہ شوہر نے نکال دیا یہ دیکھا جائے گا کہ عورت کا اپنے باپ کے گھر رہنا شوہر ہی کے جبر سے ہے کہ وہ بلائے تو اسے جانے سے انکار نہ ہو تو وہ خود ہی نہیں بلاتا اس

کا آنا نہیں چاہتا جب تو نفقہ کی مستحق ہے اور اگر یہی جانا نہیں چاہتی ، وہ بلاتا ہے اور یہ نہیں جاتی تو استحقاق نہیں،

في الدرالمختار تجب للزوجة و لو هی فی بیت ابیها اذا لم یطالبها الزوج بالنقلة و به یفتی، درمختار میں ہے: بیوی اگر اپنے والد کے گھر ہو اور خاوند اپنے گھر منتقل ہونے کا مطالبہ نہ کرے تو بیوی کے لئے نفقہ واجب ہوگا، اسی پر فتویٰ دیا جائیگا،

[1] درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ Page 443 of 688

Fatawa Ridawiyyah Volume 13

[Box Content] (Arabic side): Likewise, if the husband requests her to move and she does not refuse, or if she falls ill in her house and stays there, and she does not prevent herself (from him), then maintenance is incumbent upon him. This is the fatwa—summary ends. And in Al-Hindiyyah, from Al-Bada'i: Maintenance is due to her after the move and also before it if she requests maintenance and the husband does not move her, while she is not preventing the move if the husband requests it. If she refuses, then there is no maintenance for her, similar to a healthy woman who refuses. I say: the condition is her non-refusal, not the existence of his request, as we have established in our notes on Radd al-Muhtar. This is explicitly stated in Al-Fath from Al-Khulasah on the authority of Al-Jami' al-Kabir, and the end of the text in Al-Bada'i also points to this. And Allah Almighty knows best.

(Urdu side): And likewise, if moving is requested and the wife does not refuse, or if the wife is ill at that time and in her home and is not preventing herself from being handed over to her husband, then the wife's maintenance is obligatory; the fatwa is on this (end of summary). And in Al-Hindiyyah it is narrated from Al-Bada'i that maintenance will be obligatory for the wife when she moves to her husband's house, or before moving, when the woman demands maintenance and the husband does not move her although the wife is not refusing to move, even if the husband wants to move her. If she refuses to move, then there is no maintenance for her, just as there is no maintenance for a healthy woman who refuses. I say: the condition is that the woman should not be refusing; the husband's demand is not a condition, as we have researched in the margin of Radd al-Muhtar, and this is narrated in Fath from Al-Khulasa with reference to Jami' Kabir, and the final words of Bada'i also point to this. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 167: From Mandi Haldwani, District Nainital, Deputy Commissioner's office, sent by Munshi Ali-ud-Din Ahmad, 25 Ramadan al-Mubarak 1319 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's wife, Hindah, has severe enmity towards Zaid. Once, in Zaid's absence, she sold grain. Zaid beat her slightly, and she jumped into a well. Non-mahram men pulled her out; her thin clothes on a young body got soaked in water, causing immodesty. Coming out of the well, she said, "I will sit in the bazaar and inn but will not go to Zaid's house." At this, those strange men took her to their house. When Zaid returned from his job, he sent her to Hindah's parents' house on a ride. From there she came back and kept this habit that upon a slight argument, in broad daylight, she would go on foot through the bazaar for half

a mile to someone's house to spite and defame Zaid. Zaid's sons have reached puberty; they are with their mother in every way and join her in opposing Zaid, to the point where it has come to biting and pulling his beard.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/266. 2 Fatawa Hindiyyah, First Section on Wife's Maintenance, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/546.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

[बॉक्स की सामग्री] (अरबी पक्ष): इसी तरह, यदि पति उसे स्थानांतरित होने के लिए कहता है और वह मना नहीं करती है, या यदि वह अपने घर में बीमार हो जाती है और वहीं रहती है, और वह खुद को (पति को) सौंपने से नहीं रोकती है, तो उसका भरण-पोषण पति पर वाजिब है। इसी पर फतवा है - उद्धरण समाप्त। और अल-हिन्दिया में अल-बदाए से उद्धृत है: पत्नी के लिए भरण-पोषण स्थानांतरण के बाद और उससे पहले भी वाजिब है, यदि वह भरण-पोषण की मांग करती है और पति उसे स्थानांतरित नहीं करता है, जबकि पति द्वारा मांग किए जाने पर वह स्थानांतरण से मना नहीं करती है। यदि वह मना करती है, तो उसके लिए कोई भरण-पोषण नहीं है, ठीक वैसी ही जैसे एक स्वस्थ महिला (जो मना कर देती है)। मैं कहता हूँ: शर्त उसका मना न करना है, न कि पति की मांग का होना, जैसा कि हमने रद अल-मुह्तार पर अपने नोट्स में सिद्ध किया है। यह अल-फ़तह में अल-ख़ुलासा से अल-जामे अल-कबीर के हवाले से स्पष्ट रूप से कहा गया है, और अल-बदाए की चर्चा का अंत भी इसी ओर इशारा करता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

(उर्दू पक्ष): और इसी तरह, यदि वह स्थानांतरित होने की मांग करे और पत्नी मना न करे, या पत्नी उस समय बीमार हो और अपने घर में हो और पति को खुद सौंपने से मना न कर रही हो, तो पत्नी का भरण-पोषण अनिवार्य है; इसी पर फतवा है (सारांश समाप्त)। और हिन्दिया में बदाए से वर्णित है कि पत्नी के लिए भरण-पोषण तब अनिवार्य होगा जब वह अपने पति के घर चली जाए, या जाने से पहले, जब स्त्री भरण-पोषण की मांग करे तो पति उसे स्थानांतरित न करे, हालांकि पत्नी स्थानांतरण से इनकार नहीं कर रही है, भले ही पति उसे स्थानांतरित करना चाहे। यदि वह स्थानांतरित होने से इनकार करती है, तो उसके लिए कोई भरण-पोषण नहीं है, जैसा कि स्वस्थ होने के बावजूद मना करने पर भरण-पोषण नहीं मिलता। मैं कहता हूँ कि शर्त यह है कि स्त्री को इनकार नहीं करना चाहिए; पति का मांग करना शर्त नहीं है, जैसा कि हमने रद अल-मुह्तार के हाशिये में शोध किया है, और यही फतह में खुलासा से जामे कबीर के संदर्भ में वर्णित है, और बदाए के अंतिम शब्द भी इसी ओर संकेत करते हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 167: मंडी हल्द्वानी, जिला नैनीताल, डिप्टी कमिश्नरी कार्यालय से, प्रेषक मुंशी अली-उद-दीन अहमद, 25 रमज़ान-उल-मुबारक 1319 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद की पत्नी हिंदा का ज़ैद के प्रति गहरा द्वेष है। एक बार ज़ैद की अनुपस्थिति में उसने अनाज बेच दिया। ज़ैद ने उसे थोड़ा मारा, और वह कुएँ में कूद गई। गैर-महरम पुरुषों ने उसे बाहर निकाला; जवान

शरीर पर उसके बारीक कपड़े पानी में भीग गए जिससे बेपर्दगी हुई। कुएँ से निकलकर उसने कहा, "मैं बाज़ार और सराय में बैठूँगी लेकिन ज़ैद के घर नहीं जाऊँगी।" इस पर वे अजनबी आदमी उसे अपने घर ले गए। जब ज़ैद अपनी नौकरी से लौटा, तो उसने उसे सवारी पर हिंदा के माता-पिता के घर भेज दिया। वहाँ से वह वापस आई और उसने यह आदत बना ली कि थोड़ी सी तकरार पर, दिन-दहाड़े, वह बाज़ार में पैदल ही आधा मील दूर किसी के घर ज़ैद को नीचा दिखाने और बदनाम करने के लिए चली जाती है। ज़ैद के बेटे वयस्क हो गए हैं; वे हर तरह से अपनी माँ के साथ हैं और ज़ैद का विरोध करने में उसका साथ देते हैं, यहाँ तक कि बात काटने और दाढ़ी पकड़ने तक नौबत पहुँच गई है।

1 दुर्रे मुख़्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/266। 2 फ़तावा हिन्दिया, अल-फ़सल अल-अव्वल फ़ी नफ़क़त-उज़-ज़ौजा, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/546।

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

[باکس کی تفصیل] (عربی متن): وکذا اذا طالبھا ولم تمتنع او مرضت فی منزلھا بقیت ولنفسھا ما منعت وعلیہ الفتوی اہ ملتقطا، وفی الھندیۃ عن البدائع لھا النفقۃ بعد النقلۃ وقبلھا ایضاً اذا طلبت النفقۃ فلم ینقلھا الزوج وھی لا تمنع من النقلۃ لو طالبھا الزوج وانکانت تمنع فلانفقۃ لھا کالصحیحۃ قلت والشرط عدم منعھا لا وجود طلبھا کما حققنا فیما علقناہ علی ردالمحتار وھو المصرح فی الفتح عن الخلاصۃ عن الجامع الکبیر والیہ آخر کلام البدائع ایضا یشیر۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

(اردو متن): اور یونہی اگر وہ منتقل ہونے کا مطالبہ کرے اور بیوی انکار نہ کرے یا بیوی اس وقت بیمار ہو اور اپنے گھر میں اور اپنے آپ کو خاوند کے سپرد کرنے سے مانع نہ ہو تو بیوی کا نفقہ واجب ہے، اسی پر فتوی ہے اھ ملتقطا۔ اور ہندیہ میں بدائع سے منقول ہے بیوی کیلئے نفقہ واجب ہوگا جب وہ خاوند کے ہاں منتقل ہو جائے، یا قبل منتقل ہونے کے جب عورت نفقہ کا مطالبہ کرے تو خاوند اسے منتقل نہ کرے حالانکہ بیوی منتقل ہونے سے انکاری، نہ اگر خاوند اسے منتقل کرنا چاہے، اور اگر وہ منتقل ہونے سے انکار کرے تو پھر اس کے لئے نفقہ نہیں جیسا کہ صحت مند ہونے کے باوجود منع کرنے پر نفقہ نہیں ہے، قلت (میں کہتا ہوں) شرط یہ ہے کہ عورت انکاری نہ ہو، خاوند کا مطالبہ کرنا شرط نہیں، جیسا کہ ہم نے ردالمحتار کے حاشیہ میں اس کی تحقیق کی ہے اور یہی فتح میں خلاصہ سے بحوالہ جامع کبیر منقول ہے، اور بدائع کا آخری کلام بھی یہی اشارہ دیتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۶۷: از منڈی بلد وانی ضلع نینی تال سر رشتہ ڈپٹی کمشنری مرسلہ منشی علی الدین احمد ۲۵ رمضان المبارک ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی عورت ہندہ زید سے سخت دشمنی رکھتی ہے، ایک دفعہ زید کے غیبت میں اناج بیچا، زید نے بہت تھوڑا سا مارا

کنویں میں کود پڑی، غیر مردوں نے نکالا، باریک کپڑے جو ان عمر، پانی میں بھیگ کر بے ستری ہوئی، کنویں سے نکل کر بولی بازار اور سراء میں بیٹھوں گی مگر زید کے گھر نہ جاؤں گی، اس پر وہ غیر آدمی اپنے گھر لے گئے جب زید نوکری سے آیا وہاں سے سوار ہو کر ہندہ کے ماں باپ کے یہاں بھیج دیا، وہاں سے پھر آئی اور یہ عادت رکھی کہ ذرا سی تکرار پر دن دو پہر کو سر بازار پیادہ پا آدھ آدھ میل تک کسی کے مکان زید کو زک دینے اور بدنام کرنے کے لئے چلی جاتی ہے، زید کے لڑکے بالغ ہو گئے ہیں وہ ہر طرح اپنی ماں کے ساتھ ہیں اس سے مل کر زید کا مقابلہ کرتے ہیں کاٹنے اور داڑھی پکڑنے تک نوبت پہنچ گئی ہے

1 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۶۶ 2 فتاوی ہندیہ الفصل الاول فی نفقۃ الزوجۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۴۶

And they say, "What issue do you have that you show such attitude? We have more than you now." Hindah always makes excuses and refuses to come to her husband. A pattern has also been established where, without informing Zaid, she comes to Zaid's place with one of the boys, stays for four or five months, takes all cash and goods into her possession, and when Zaid leaves for his job in Allahabad, Hindah and the boy return to her mother's house in Lucknow. No trace of that wealth is ever found again. In this situation, what are the rulings of the noble Sharia regarding the rights of the boys and the maintenance and dower (mahr) of Hindah? Explain and be rewarded.

The Answer: Since the boys are young and independent, Zaid no longer has any obligation towards them, especially in a state where they are so troublesome and disobedient. We seek refuge in Allah, the Lord of the worlds. Such boys and women deserve disgrace in this world and severe punishment and great wrath in the hereafter. When the woman always makes excuses and refuses to come to him, and whenever she does come, it is not to live as a wife (as if 'imprisoned' by the husband's rights) but independently and forcibly with the corrupt intent of looting and taking away savings, as is evident from the question's statement, then in such a case, this woman is explicitly disobedient (*nashizah*). Her maintenance is not at all the responsibility of Zaid. It is stated in *Durr-ul-Mukhtar*:

> **The maintenance is compensation for being held (for the husband). For everyone who is held for the benefit of another, their maintenance becomes mandatory upon that person.** Maintenance is compensation for the wife's commitment to the husband, and whoever is confined for the benefit of another, their maintenance is obligatory upon the latter. (T)

However, the dower is not forfeited due to these actions. If no time limit was fixed for its payment, then according to the custom of the land, it must be paid after death or divorce. And Allah Almighty knows best.

Problem 168: From Rampur state, via Mullah Zarif Gher, late Abdul Rahman Khan, sent by Abdul Rauf Khan on 25th Muharram 1316 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a person out of malice neither calls his wife to him nor divorces her, but says "I will keep you hanging (neither married nor divorced)." Now, in this situation, can the poor woman appeal to the court of a ruler and obtain a divorce or not? Explain and be rewarded.

1. *Durr-ul-Mukhtar*, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266. Page 445 of 688

और वे कहते हैं कि "तुम्हारे पास क्या मसला ही है जिस पर मिज़ाज दिखाते हो? अब हमारे पास तुमसे ज़्यादा है।" हिंदा अपने पति के पास आने से हमेशा बहाना और इनकार करती है। एक नियम यह भी बन गया है कि ज़ैद को बताए बिना किसी लड़के को साथ लेकर ज़ैद के यहाँ आ जाती है और चार-पाँच महीने रहकर सारा नकद और सामान अपने कब्ज़े में कर लेती है। जब ज़ैद अपनी नौकरी पर इलाहाबाद चला जाता है, तो हिंदा और लड़का अपनी माँ के यहाँ लखनऊ चले जाते हैं। उस धन का फिर कभी पता नहीं चलता। इस स्थिति में लड़कों के अधिकारों और हिंदा के भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) और मेहर के बारे में शरीयत के अनुसार क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर: चूँकि लड़के जवान और आत्मनिर्भर हैं, तो ज़ैद का उन पर कोई दायित्व नहीं बचा है, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में जब वे इतने कष्टदायक और अवज्ञाकारी हैं। अल्लाह, जो तमाम जहानों का रब है, उससे पनाह मांगते हैं। ऐसे लड़कों और औरत के लिए दुनिया में रुसवाई और आख़िरत में गंभीर अज़ाब और भारी ग़ुस्से का हक़ है। जब औरत उसके यहाँ आने से हमेशा बहाना और इनकार रखती है, और जब कभी आना होता है तो इसलिए नहीं कि पति की पत्नी बनकर रहे, बल्कि अपनी मर्ज़ी से और ज़बरदस्ती इस बुरे इरादे से आती है कि संचित धन लूट कर ले जाए, जैसा कि सवाल के विवरण से स्पष्ट है, तो ऐसी स्थिति में यह औरत स्पष्ट रूप से अवज्ञाकारी (नाशिज़ा) है। उसका भरण-पोषण ज़ैद की ज़िम्मेदारी बिलकुल नहीं है। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

> **भरण-पोषण (नफ़क़ा) पति के लिए स्वयं को समर्पित करने का प्रतिफल है। जो कोई दूसरे के लाभ के लिए रुकता है, उसका भरण-पोषण उसी पर अनिवार्य हो जाता है।** भरण-पोषण पत्नी के पाबंद होने का मुआवज़ा है और जो दूसरे के हक़ में महबूस (सीमित) हो तो उसका नफ़क़ा उस पर लाज़िम होता है। (त)

हालाँकि, इन हरकतों से मेहर ख़त्म नहीं होता। यदि इसके भुगतान के लिए कोई समय सीमा तय नहीं की गई थी, तो शहरों के रिवाज के अनुसार मृत्यु या तलाक़ के बाद इसका भुगतान करना अनिवार्य होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

समस्या १६८: रियासत रामपुर से, मुल्ला ज़रीफ़ घेर मरहूम अब्दुल रहमान ख़ान के माध्यम से, अब्दुल रऊफ़ ख़ान द्वारा प्रेषित, २५ मुहर्रम १३१६ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति शरारत से न तो अपनी पत्नी को अपने पास बुलाता है और न ही तलाक़ देता है,

बल्कि कहता है कि "तुझे लटकाए रखूँगा (न विवाहित न तलाक़शुदा)"। अब इस सूरत में क्या वह बेचारी अदालत के हाकिम से फ़रियाद करके तलाक़ ले सकती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य के पात्र बनें।

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/२६६। पेज ४४५ / ६८८

اور کہتے ہیں تمہارے پاس مسالہ ہی کیا ہے جس پر مزاج دکھاتے ہو تم سے زائد تو اب ہمارے پاس ہے ، ہندہ کو اپنے شوہر کے پاس آنے سے بھی عذر اور انکار ہمیشہ رکھتی ہے ، ایک قاعدہ یہ بھی مقرر کیا ہے کہ بغیر اطلاع زید کے کسی لڑکے کو ساتھ لے کر زید کے یہاں آجاتی ہے اور چار پانچ مہینے رہ کر کل نقد و جنس اپنے قبضے میں کر کے جب زید اپنی نوکری پر الہ آباد جاتا ہے ہندہ اور لڑکا اپنے ماں کے یہاں لکھنو چلے آتے ہیں اس مال کا پھر کبھی پتہ نہیں چلتا اس صورت میں لڑکوں کے حق حقوق اور ہندہ کے نان و نفقہ اور مہر کی نسبت از روئے شرع شریف کیا حکم فرماتے ہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: لڑکے جبکہ جوان اور خودمختار ہیں تو ان کا کوئی حق ذمہ زید باقی نہیں خصوصاً ایسی حالت میں کہ وہ اس قدر موذی و عاق ہیں والعیاذ باللہ رب العلمین ایسے لڑکوں اور عورت کے لئے دنیا میں رسوائی اور آخرت میں عذاب شدید و غضب عظیم کا استحقاق ہے، عورت جبکہ اس کے یہاں آنے سے ہمیشہ عذر وانکار رکھتی ہے اور جب کبھی آنا ہوتا ہے وہ اس لئے نہیں کہ شوہر کی قیدی بن کر رہے بلکہ خود مختارانہ بالجبر آنا اس غرض فاسد سے ہوتا ہے کہ اندوختہ لوٹ کر لے جائے جیسا کہ تقریر سوال سے ظاہر تو ایسی صورت میں یہ عورت صریح ناشزہ ہے اس کا نان و نفقہ اصلاً زید کے ذمہ نہیں، در مختار میں ہے:

> **النفقۃ جزاء الاحتباس وکل محبوس لمنفعۃ غیرہ تلزمہ نفقتہ ۱** ۔ نفقہ بیوی کے پابند ہونے کا معاوضہ ہے اور جو دوسرے کے حق میں محبوس ہو تو اس کا نفقہ پر لازم ہوتا ہے۔(ت)

البتہ مہر ان حرکات سے ساقط نہیں ہوتا اور اس کی کوئی میعاد ادا مقرر نہ ہوئی تھی تو حسب عرف بلاد بعد موت یا طلاق ادا کرنا واجب ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶۸: از ریاست رام پور بذریا ملا ظریف گھیر عبدالرحمن خاں مرحوم مرسلہ عبدالرؤف خاں ۲۵ محرم ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص شرارت سے نہ تو اپنی زوجہ کو اپنے پاس بلاتا ہے نہ طلاق دیتا ہے بلکہ کہتا ہے کہ تجھ کو معلقہ رکھوں گا، اب اس صورت میں وہ بیچاری حاکم عدالت سے فریاد کرکے طلاق لے سکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

---

۱ در مختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۶/۱ Page 445 of 688

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

The Answer

Allah, the Glorious and Most High, said: “Retain them in kindness or release them in kindness.” (1) (Allah subhanahu wa ta'ala said: Either keep women in a good manner or let them go in a good manner.)

And He said: “Either keep [them] in an acceptable manner or release [them] with good treatment.” (2) (And Allah Almighty said: Keep with kindness or release with goodness.)

And He said: “And live with them in kindness.” (3) (And Allah Almighty said: Live with women with good behavior.)

And He said: “Lodge them [in a section] of where you dwell out of your means and do not harm them in order to oppress them.” (4) (And Allah Almighty said: Where you live, keep the women there according to your capacity and do not harm them to bring distress upon them.)

And He said: “So do not incline with total inclination and leave her suspended.” (5) (And Allah Almighty said: Do not lean entirely to one side such that you leave the women hanging like those in limbo.)

In short, providing maintenance (food and clothing) to the wife is obligatory, providing a house to live in is also obligatory, and having sexual intercourse with her from time to time is also obligatory so that she does not fall into visual distress (lusting after others). Keeping her suspended (neither fully a wife nor divorced) is prohibited. Abandoning sexual intercourse for four months without her permission and consent and without a valid Sharia excuse is unlawful. After marriage, having intercourse at least once is unanimously the right of the woman. If the husband cannot fulfill even this, then upon the woman's claim, the Qadi (judge) will give the man a year's grace. If intercourse does not occur within that year as well, the Qadi will separate them upon the woman's request. However, after the first time, the Qadi does not have the power of forced separation (for lack of intercourse), nor according to us can separation occur due to non-payment of maintenance. Yes, the Qadi is appointed to aid the weak and help the oppressed, so it is necessary for him to remove oppression in whatever way possible. It is stated in Rad al-Muhtar:

He said in al-Fath: Know that abandoning her intercourse... It is stated in Fath al-Qadir: Let it be clear that intercourse with the wife absolutely...

(1) The Holy Quran 2/231 (2) The Holy Quran 2/229 (3) The Holy Quran 4/19 (4) The Holy Quran 65/6 (5) The Holy Quran 4/129

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

उत्तर

अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फ़रमाया: "या तो उन्हें अच्छी तरह रखो या अच्छी तरह छोड़ दो।" (1) (अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फ़रमाया: औरतों को या तो अच्छी तरह रखो या अच्छी तरह छोड़ दो।)

और फ़रमाया: "या तो भलाई के साथ रखना या नेकी के साथ छोड़ देना।" (2) (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: या भलाई के साथ रखना या नेकी के साथ छोड़ देना।)

और फ़रमाया: "और उनके साथ अच्छी तरह से जीवन बिताओ।" (3) (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: औरतों के साथ अच्छे बर्ताव के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो।)

और फ़रमाया: "उन्हें वहीं रहने दो जहाँ तुम अपनी सामर्थ्य के अनुसार रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए नुकसान न पहुँचाओ।" (4) (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: जहाँ तुम रहो वहाँ औरतों को रखो अपनी हैसियत के मुताबिक और उन्हें नुक़सान न पहुँचाओ कि उन पर तंगी लाओ।)

और फ़रमाया: "तो पूरी तरह एक तरफ़ न झुक जाओ कि उन्हें अधर में लटका छोड़ दो।" (5) (और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: पूरे एक तरफ़ न झुक जाओ कि औरतों को यूँ छोड़ कर जैसे अधर में लटकती हों।)

संक्षेप में, औरत को रोटी-कपड़ा देना भी वाजिब है और रहने के लिए घर देना भी वाजिब है और समय-समय पर उससे संभोग करना भी वाजिब है ताकि उसमें नज़रों की व्याकुलता (दूसरों की ओर देखना) पैदा न हो, और उसे अधर में लटकाए रखना (न बीवी रखना न तलाक़ देना) हराम है। उसकी अनुमति और सहमति के बिना चार महीने तक बिना किसी वैध शरई कारण के संभोग त्यागना नाजायज़ है। निकाह के बाद कम से कम एक बार संभोग करना सर्वसम्मति से स्त्री का अधिकार है। यदि पति इसे भी पूरा न कर सके, तो स्त्री के दावे पर क़ाज़ी पुरुष को एक साल की मोहलत देगा। यदि उस दौरान भी संभोग नहीं होता है, तो स्त्री की माँग पर क़ाज़ी उनका विच्छेद (तलाक़) करा देगा। लेकिन एक बार के बाद, क़ाज़ी को ज़बरदस्ती विच्छेद का अधिकार नहीं है, और न ही हमारे नज़दीक ख़र्च न देने पर विच्छेद हो सकता है। हाँ, क़ाज़ी कमज़ोरों की सहायता और मजलूमों की

मदद के लिए नियुक्त किया गया है, इसलिए उस पर लाज़िम है कि जिस तरह संभव हो ज़ुल्म को दूर करे। 'रद अल-मुह्तार' में है:

'अल-फ़तह' में कहा गया है: "जान लो कि उसके साथ संभोग का त्याग..." 'फ़तह अल-क़दीर' में कहा गया है: "स्पष्ट हो कि बीवी से संभोग मुतलक़न..."

(1) अल-क़ुरान अल-करीम 2/231 (2) अल-क़ुरान अल-करीम 2/229 (3) अल-क़ुरान अल-करीम 4/19 (4) अल-क़ुरान अल-करीम 65/6 (5) अल-क़ुरान अल-करीम 4/129

الجواب قال اللہ سبحانہ وتعالٰی فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۱- (اللہ سبحانہ وتعالی نے فرمایا:) عورتوں کو یا تو اچھی طرح رکھو یا اچھی طرح چھوڑ دو۔ وقال تعالٰی فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ۲- (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا:) یا بھلائی کے ساتھ رکھنا یا نکوئی کے ساتھ چھوڑ دینا۔ وقال تعالٰی وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۳- (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا:) عورتوں سے اچھے برتاؤ کے ساتھ زندگانی کرو۔ وقال تعالٰی أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ٤- (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا:) جہاں آپ رہو وہاں عورتوں کو رکھو اپنے مقدور کے قابل اور انہیں نقصان نہ پہنچاؤ کہ ان پر تنگی لاؤ۔ وقال تعالٰی فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ٥- (اور اللہ تعالٰی نے فرمایا:) پورے ایک طرف نہ جھک جاؤ کہ عورتوں کو یوں چھوڑ کر جیسی ادھر میں لٹکتی۔

بالجملہ عورت کو نان و نفقہ بھی واجب اور رہنے کو مکان دینا بھی واجب اور گاہ گاہ اس سے جماع کرنا بھی واجب جس میں اسے پریشان نظری نہ پیدا ہو، اور اسے معلقہ کر دینا حرام، اور بے اس کے اذن اور رضا کے چار مہینے تک ترک جماع بلا عذر صحیح شرعی ناجائز، اور بعد نکاح ایک بار جماع تو بالاجماع بالاتفاق حق زن ہے کہ اسے بھی ادا نہ کر سکے تو عورت کے دعوٰی پر قاضی مرد کو سال بھر کی مہلت دے گا اگر اس میں بھی جماع نہ ہو تو بطلب زن تفریق کردے گا، مگر ایک بار کے بعد پھر جبری تفریق کا قاضی کو اختیار نہیں، نہ ہمارے نزدیک نفقہ نہ دینے پر تفریق ہوسکتی ہے، ہاں قاضی اعانت ضعفاء ومددِ مظلومین کے لئے مقرر ہوا ہے، تو اس پر لازم کہ جس طرح ممکن ہو دفع ظلم کرے، ردالمحتار میں ہے: قال فی الفتح اعلم ان ترك جماعها فتح القدیر میں فرمایا: واضح ہو کہ بیوی سے جماع مطلقاً

١ القرآن الكريم ٢/٢٣١ ٢ القرآن الكريم ٢/٢٢٩ ٣ القرآن الكريم ٤/١٩ ٤ القرآن الكريم ٦٥/٦ ٥ القرآن الكريم ٤/١٢٩

Fatawa Ridawiyyah, Volume 13

[Arabic Section]: It is not permissible to abandon [intercourse] altogether. Our scholars have explicitly stated that periodically having intercourse with the wife is a religious obligation (Diyanatan), but it does not fall under the jurisdiction of the judge to enforce it, except for the first instance [after marriage]. They have not specified a timeframe for it. It is necessary that it does not reach the period of Ila (four months), unless it is with her consent and goodwill. Her legal right [to demand through a judge] is waived after one instance, because if he does not approach her even once, the judge gives him a year's deadline and then annuls the marriage. However, if he has approached her even once, the judge will not interfere because it is known that he was not impotent at the time of the contract. Rather, the judge will command him to increase it at times because it is obligatory upon him, unless there is an excuse of illness, temporary impotence, or something similar. It will be mentioned in the chapter on Zihar that the judge must compel the one who has performed Zihar to pay expiation (Kaffarah) to remove the harm from her, through imprisonment or beating, until he pays expiation or divorces. (Summarized)

[Urdu Section]: To abandon [intercourse] is not permissible; our scholars have clarified that religiously, it is mandatory to have intercourse with the wife periodically. However, the judge does not have the right to take action to make it mandatory for the husband. Nonetheless, after marriage, the judge can make the first instance of intercourse mandatory for the husband. Jurists have not specified a period within which this first act is mandatory; however, it is essential that this interval does not reach the period of Ila (four months), unless it is with the wife's consent and pleasure. Once intercourse has occurred even once, the wife's legal right [through a judge] will be waived. That is, if intercourse has not taken place even once during the marriage, the judge will grant the husband a one-year deadline upon the wife's request, and if he fails to have intercourse within this period, the judge will annul the marriage. If he has had intercourse once, then the judge will not intervene because it has become known that the husband was not impotent at the time of marriage. Nevertheless, the judge will advise the husband to have more frequent intercourse because marital rights are mandatory upon the husband, unless he is ill, has temporary impotence, or any other reason makes it not mandatory. In the chapter on Zihar, it is stated that it is necessary for the judge to compel the husband who has performed Zihar to pay the expiation for Zihar, using imprisonment and physical punishment, to remove the wife's distress, so that he either pays the expiation or gives a divorce. (Summarized)

In Bahr al-Ra'iq it is stated: [Arabic]: They said: A woman has the right to demand intercourse from him, and it is incumbent upon her to prevent him from intimacy until he pays expiation, and the judge must compel him to pay expiation. [Urdu]: Jurists have said that a woman has the right to demand intercourse from her husband, and along with that, it is obligatory for her to prevent the husband from intercourse until he pays expiation, and the judge [is] to...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Division, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/398.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

[अरबी अनुभाग]: [सहवास] को पूरी तरह छोड़ना जायज़ नहीं है। हमारे विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि पत्नी के साथ समय-समय पर सहवास करना धार्मिक कर्तव्य (दयानतन) है, लेकिन यह न्यायाधीश (काज़ी) के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है, सिवाय पहली बार के। उन्होंने इसके लिए कोई समय सीमा तय नहीं की है। यह आवश्यक है कि यह ईला की अवधि (चार महीने) तक न पहुँचे, जब तक कि उसकी सहमति और प्रसन्नता न हो। काज़ी के माध्यम से उसका कानूनी अधिकार एक बार के बाद समाप्त हो जाता है, क्योंकि यदि वह एक बार भी उसके पास नहीं आता है, तो न्यायाधीश उसे एक वर्ष की समय सीमा देता है और फिर विवाह विच्छेद कर देता है। हालाँकि, यदि वह एक बार भी उसके पास गया है, तो न्यायाधीश हस्तक्षेप नहीं करेगा क्योंकि यह ज्ञात हो गया है कि अनुबंध के समय वह नपुंसक नहीं था। बल्कि, न्यायाधीश उसे समय-समय पर इसे बढ़ाने का आदेश देगा क्योंकि यह उस पर अनिवार्य है, जब तक कि बीमारी, अस्थायी नपुंसकता, या ऐसा ही कोई बहाना न हो। ज़ीहार के अध्याय में यह उल्लेख किया जाएगा कि न्यायाधीश को ज़ीहार करने वाले को उसके नुकसान को दूर करने के लिए प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) करने के लिए मजबूर करना चाहिए, जेल या पिटाई के माध्यम से, जब तक कि वह प्रायश्चित न कर ले या तलाक न दे दे। (संक्षिप्त)

[उर्दू अनुभाग]: [सहवास] छोड़ देना हलाल नहीं है; हमारे विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि धार्मिक रूप से, पत्नी के साथ समय-समय पर सहवास करना अनिवार्य है। हालांकि, न्यायाधीश को पति के लिए इसे अनिवार्य करने के लिए कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है। फिर भी, निकाह के बाद, न्यायाधीश पति के लिए सहवास का पहला अवसर अनिवार्य कर सकता है। न्यायविदों ने उस अवधि को निर्दिष्ट नहीं किया है जिसके भीतर यह पहला कार्य अनिवार्य है; हालांकि, यह आवश्यक है कि यह अंतराल ईला की अवधि (चार महीने) तक न पहुँचे, जब तक कि पत्नी की सहमति और खुशी न हो। एक बार सहवास होने के बाद, अदालत के माध्यम से पत्नी का कानूनी अधिकार समाप्त हो जाएगा। यानी, यदि विवाह के दौरान एक बार भी सहवास नहीं हुआ है, तो न्यायाधीश पत्नी के अनुरोध पर पति को एक साल की मोहलत देगा, और यदि वह इस अवधि के भीतर सहवास करने में विफल रहता है, तो न्यायाधीश निकाह रद्द कर देगा। यदि उसने एक बार सहवास किया है, तो न्यायाधीश हस्तक्षेप नहीं करेगा क्योंकि यह ज्ञात हो गया है कि निकाह के समय पति नपुंसक नहीं था। फिर भी, न्यायाधीश पति को अधिक बार सहवास करने की सलाह देगा क्योंकि पति पर वैवाहिक अधिकार अनिवार्य हैं, जब तक कि वह बीमार न हो, अस्थायी नपुंसकता हो, या कोई अन्य कारण इसे अनिवार्य न बनाए।

ज़ीहार के अध्याय में कहा गया है कि न्यायाधीश के लिए यह आवश्यक है कि वह ज़ीहार करने वाले पति को पत्नी की परेशानी दूर करने के लिए ज़ीहार का प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) देने हेतु जेल और शारीरिक दंड का उपयोग करके मजबूर करे, ताकि वह या तो प्रायश्चित दे या तलाक दे दे। (संक्षिप्त)

बहर अल-राइक में कहा गया है: [अरबी]: उन्होंने कहा: एक महिला को उससे सहवास की मांग करने का अधिकार है, और उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह उसे तब तक अंतरंगता से रोके जब तक वह प्रायश्चित न कर ले, और न्यायाधीश को उसे प्रायश्चित करने के लिए मजबूर करना चाहिए। [उर्दू]: फ़कीहों ने कहा है कि एक महिला को अपने पति से सहवास की मांग करने का अधिकार है, और इसके साथ ही, उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह पति को सहवास से तब तक रोके जब तक वह प्रायश्चित न कर ले, और न्यायाधीश को...

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-क़स्म, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/398.

[Arabic Section]: مطلقا لا یحل لہ صرح اصحابنا بان جماعھا احیانا واجب دیانۃ لکن لا یدخل تحت القضاء والالزام الا الوطأۃ الاولی ولم یقدروا فیہ مدۃ، ویجب ان لا یبلغ بہ مدۃ الایلاء الا برضاھا وطیب نفسھا بہ اہ ویسقط حقھا بمرۃ في القضاء ای لانہ لولم یصبھا مرۃ یؤجلہ القاضي سنۃ ثم یفسخ العقد اما لو اصابھا مرۃ واحدۃ لم یتعرض لہ لانہ علم انہ غیر عنین وقت العقد بل یأمرہ بالزیادۃ احیانا لوجوبھا علیہ الا لعذر مرض او عنۃ عارضۃ او نحو ذلك وسیأتی في باب الظھار ان علی القاضي الزام المظاھر بالتکفیر دفعا للضرر عنھا بحبس او ضرب الی ان یکفر او یطلق اہ مختصرا۔

[Urdu Section]: ترک کر دینا حلال نہیں، ہمارے اصحاب نے تصریح فرمائی ہے کہ دیانۃً گاہے گاہے بیوی سے جماع کرنا واجب ہے لیکن اس پر قاضی کو کارروائی کا حق نہیں کہ وہ خاوند پر لازم قرار دے تاہم نکاح کے بعد پہلا جماع خاوند پر قاضی لازم کر سکتا ہے اور فقہاء کرام نے اس جماع کے لئے مدت کا تعین نہیں کیا کہ کتنہ مدت کے اندر واجب ہے تاہم یہ ضروری ہے کہ یہ وقفہ ایلاء کی مدت (چار ماہ) تک نہ پہنچے پائے الایہ کہ بیوی کی رضامندی اور خوش طیبی سے جتنا وقفہ ہو اھ ایک دفعہ جماع کر لینے سے قضاءً بیوی کا حق ساقط ہو جائے گا یعنی اگر دوران نکاح ایک مرتبہ بھی جماع نہ کیا ہو تو بیوی کے مطالبے پر قاضی خاوند کو ایک سال کی مہلت دے گا اور اس مدت میں جماع نہ کرنے پر قاضی نکاح کو فسخ کر دے گا، اور ایک مرتبہ جماع کر لیا ہو تو پھر قاضی مداخلت نہ کرے کیونکہ معلوم ہو چکا ہے کہ خاوند نکاح کے وقت نامرد نہ تھا تاہم قاضی خاوند کو مزید جماع کا مشورہ دے گا کیونکہ خاوند پر حقوق زوجیت واجب ہے لیکن مریض ہو یا عارضی مردمی کمزوری یا کوئی اور وجہ ہو تو واجب نہیں اور ظہار کے باب میں بیان رہا ہے کہ قاضی پر ضروری ہے کہ وہ بیوی کی پریشانی دور کرنے کیلئے

ظہار کرنے والے خاوند کو کفارہ ظہار دینے پر قید اور جسمانی سزا کے ساتھ مجبور کرے تاکہ وہ کفارہ دے یا طلاق دے، اھ، مختصراً (ت)

بحر الرائق میں ہے : [Arabic]: قالو وللمرأۃ ان تطالبہ بالوطأ وعلیھا ان تمنعہ الاستمتاع حتی یکفر، وعلی القاضی ان یجبرہ علی التکفیر [Urdu]: فقہاء کرام نے فرمایا ہے کہ عورت کو حق کہ خاوند سے جماع کا مطالبہ کرے، اور ساتھ ہی اس پر لازم ہے کہ کفارہ دینے تک خاوند کو جماع سے روکے، اور قاضی کو

1 ردالمحتار باب القسم دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۹۸/۲

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

To remove harm from her, the husband should be imprisoned. If he refuses, he should be struck, but physical punishment is not given in matters of debt. If he says he has performed the expiation (Kaffarah), he should be believed unless his lie is evident. In 'Al-Tatarkhaniya', it is mentioned that if he refuses to expiate, he should be punished by striking and imprisonment until he either expiates or divorces. (T)

Once these principles are known, the ruling of the issue becomes clear. Not calling her implies a cessation of intercourse and may also involve not providing maintenance. If the abandonment of intercourse remains—meaning he has not gone to her at all after marriage—then the Shariah judge (Qazi) will compel him to go to her. If it becomes apparent that he is incapable of having intercourse with this woman, then following the woman's claim, the procedures for an impotent person (Inin), a one-year grace period, and forced separation at the woman's request will be implemented. If, despite being capable, he does not go, whether from the start or due to a complete intention to abandon, and the woman is harmed by this, then the judge will compel him to either have intercourse or divorce. If he refuses, he will be imprisoned; if he still refuses, he will be struck until he does one of the two things.

And that is to remove sin and prevent harm. Jurists have stated, as in 'Al-Bahr', 'Ad-Durr', and others, that for every perpetrator of a sin for which there is no fixed punishment (Hadd), there is a discretionary punishment (Tazir). In 'Radd al-Muhtar', regarding the statement 'and the judge must compel him to it', this is an answer to an objection. The objection is that the purpose of forcing the husband to expiate is only for intercourse with the wife, whereas in the matter of intercourse, the judge cannot compel the husband more than once after marriage. Thus, Al-Hamawi said, as an answer:

'The issue is assumed in a case where he has not yet had intercourse with her.'

---

1. Al-Bahr al-Raiq, Book of Zihar, HM Saeed Company, Karachi, 4/96-97.
2. Durr-e-Mukhtar, Book of Tazir, Mujtabai Press, Delhi, 1/32.

Page 448 of 688

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

उसके नुकसान को दूर करने के लिए पति को कैद किया जाए। यदि वह इनकार करे, तो उसे मारा जाए, जबकि ऋण के मामले में शारीरिक दंड नहीं दिया जा सकता। यदि वह कहे कि मैंने कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दे दिया है, तो उसकी पुष्टि की जाए जब तक कि उसका झूठ स्पष्ट न हो। 'तातारख़ानिया' में है कि यदि वह कफ़्फ़ारा देने से इनकार करे, तो क़ाज़ी उसे कफ़्फ़ारा अदा करने या तलाक़ देने तक शारीरिक ताज़ीर (दंड) और कैद दे सकता है। (त)

जब ये सिद्धांत ज्ञात हो गए, तो मसले का हुक्म स्पष्ट हो गया। पास न बुलाना संभोग त्यागने का सूचक है और भरण-पोषण न देने की भी संभावना रखता है। यदि संभोग का त्याग बना रहता है—अर्थात निकाह के बाद वह उसके पास गया ही नहीं—तो शरीयत का क़ाज़ी उसे पास जाने के लिए मजबूर करेगा। यदि यह प्रकट हो जाए कि वह इस स्त्री के साथ संभोग करने में सक्षम नहीं है, तो स्त्री के दावे के बाद नामर्द (इनिन) के नियम, एक वर्ष की मोहलत और स्त्री की मांग पर ज़बरन अलगाव की प्रक्रियाएँ लागू होंगी। और यदि सक्षम होने के बावजूद वह नहीं जाता, चाहे शुरुआत से हो या पूर्ण त्याग के इरादे से, और इससे स्त्री को नुकसान हो रहा है, तो क़ाज़ी उसे मजबूर करेगा कि वह संभोग करे या तलाक़ दे। यदि वह नहीं मानेगा तो कैद करेगा, और यदि फिर भी नहीं मानेगा तो तब तक मारेगा जब तक कि वह इन दो बातों में से एक न कर ले।

और यह पाप को समाप्त करने और नुकसान को रोकने के लिए है। जैसा कि 'अल-बहर', 'अद-दुर्र' और अन्य में उल्लेख है, फ़क़ीह (धर्मशास्त्रियों) ने कहा है कि जिस अपराध के लिए 'हद' (निश्चित दंड) नहीं है, उसमें 'ताज़ीर' (विवेकाधीन दंड) होगी। 'रद अल-मुह्तार' में 'क़ाज़ी पर उसे बाध्य करना अनिवार्य है' वाला कथन एक आपत्ति का उत्तर है। आपत्ति यह है कि पति को कफ़्फ़ारा देने के लिए मजबूर करने का उद्देश्य केवल पत्नी से संभोग करना है, जबकि संभोग के मामले में क़ाज़ी निकाह के बाद पति को एक से अधिक बार मजबूर नहीं कर सकता। तो हमवी ने उत्तर में कहा:

'मसले की धारणा उस स्थिति के लिए है जिसमें उसने अभी तक उसके साथ संभोग न किया हो।'

---

1. बहरुल रैक, ज़ोहार का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 4/96-97
2. दुर्रे मुख्तार, ताज़ीर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/32

पृष्ठ 448 का 688

دفعاً للضرر عنها بحبس فان ابی ضربه ولا یضرب فی الدین ولو قال قد کفرت صدق مالم یعرف بالکذب وفی التتارخانیة اذا ابی عن التکفیر عزره بالضرب والحبس الی ان یکفر او یطلق۔ حق یہ ہے کہ وہ بیوی کی پریشانی دور کرنے کیلئے خاوند کو قید کرکے کفارہ دینے پر مجبور کرے اور اگر خاوند انکار کرے تو اس کو جسمانی سزا دے جبکہ قرض کے معاملہ میں قاضی جسمانی سزا نہیں دے سکتا، اور اگر خاوند بتائے کہ میں نے کفارہ دے دیا ہے تو قاضی اس کی تصدیق کرے جب تک اس کا جھوٹ واضح نہ ہو، اور تاتارخانیہ میں ہے کہ اگر کفارہ دینے سے انکار کرے تو قاضی خاوند کے کفارہ ادا کرنے یا طلاق دینے تک اسے جسمانی تعزیر اور قید کرسکتا ہے۔ (ت)

جب یہ اصول معلوم ہوگئے حکم مسئلہ واضح ہوگیا پاس نہ بلانا ترکِ جماع کو مستلزم اور نفقہ نہ دینے کو بھی محتمل، ترک جماع اگر رہا ساہے یعنی بعد نکاح اس کے پاس گیا ہی نہیں تو قاضی شرع اس پر جبر کرے گا کہ پاس جائے، اگر ظاہر ہو گا کہ اسے اس عورت سے مجامعت پر قدرت نہیں تو بعد دعوٰی عورت وہی مسائل عنین و مہلت یکسال و تفریق جبری بطلب زن جاری ہونگے، اور اگر باوصفِ قدرت نہیں جاتا خواہ ابتداءً خواہ ترکِ مطلق کا ارادہ کرلیا ہے اور عورت کو اس سے ضرر ہے تو قاضی مجبور کرے گا کہ جماع کرے یا طلاق دے، اگر نہ مانے گا قید کرے گا اگر نہ مانے گا مارے گا یہاں تک دو باتوں سے ایک کرے،

وذلک رفعاً للمعصیة ودفعاً للضرر وقد نصوا کما فی البحر والد وغیرهما ان کل مرتکب معصیة لاحد فیها ففیها التعزیر [2] وفی ردالمحتار قوله وعلی القاضی الزامه به. اعتراض بأنه لا فائدة للاجبار علی التکفیر الا الوطی والوطی لایقضی به علیه الامرة. قال الحموی و فرض المسئلة فیما اذالم یطأها یہ

تعزیر اس لئے ہے کہ خاوند گناہ ختم کرے اور بیوی کی پریشانی دور کرے، اور فقہاء کرام نے ذکر کیا ہے کہ وہ جرم جس پر حد نہیں ہے تو اس میں تعزیر ہوگی جیسا کہ بحر اور در وغیرہما میں مذکور ہے۔ اور ردالمحتار میں ہے کہ درمختار کا یہ بیان کہ قاضی پر لازم ہے الخ، یہ ایک اعتراض کا جواب ہے، اعتراض یہ ہے کہ خاوند کو کفارہ دینے پر مجبور کرنے کا مقصد صرف بیوی سے جماع ہے جبکہ جماع کے معاملے میں قاضی خاوند کو نکاح کے بعد ایک سے زائد مرتبہ پر مجبور نہیں کرسکتا تو حموی نے کہا اور جواب کے لئے:

فرض المسئلة فيما اذالم يطأها

1۔ بحر الرائق باب الظهار ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/ ۹۷-۹۶ 2۔ درمختار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۲

Fatawa Razawiyya Volume 13

[Regarding Zihar - a form of separation in Islamic Law] It is far-fetched to assume that the husband never had intercourse even once before Zihar. Alternatively, it could be said that the purpose of compelling him is to eliminate his sin. That is, Zihar is a sin that prevents the husband from fulfilling the right of his wife which is religiously obligatory upon every husband. Therefore, the judge (Qazi) will order him to eliminate the sin so that the wife becomes lawful for him, just as a master can order his slave during the period of Zihar to either have intercourse with his wife or divorce her so that her distress can be removed. (Summarized)

Regarding the non-payment of maintenance (Nafaqah), if the husband is capable of paying, the judge will fix a suitable amount for the wife and order the husband to pay it. If he refuses, he will be imprisoned. Whatever the wife spends on her maintenance during this period, whether by borrowing or from her own property, it will be a debt upon the husband and will be recovered from him. However, in this case, there is no provision for forcing a separation or a divorce.

I say: The reason for the difference is clear. A woman is in need of both intercourse and maintenance, and their absence causes her harm. Removing harm, in whatever way possible, is obligatory. In the method of removal, it is necessary to consider the easiest way so that the other party is also not harmed. Intercourse is something impossible to get from anyone other than the husband. Thus, the method of removal is limited to the husband either having intercourse or divorcing her so she can marry someone else. In contrast, the need for maintenance can be fulfilled from her own wealth or by borrowing from others. The woman's harm is thus removed as her need is met, and whatever expense was incurred remains a debt upon the husband after the judge's decree. Here, forcing a divorce would cause more harm to the husband, which is not required to remove the harm from the wife. As mentioned in 'Tanweer':

"Separation is not made between them due to his inability for it [intercourse], nor for not fulfilling her right even if he is wealthy." (Summarized)

The judge shall not separate them if he is unable to provide maintenance or if he is wealthy but does not give the wife her full right. (Summarized)

As mentioned in 'Radd al-Muhtar': 1. Tanweer al-Absar, Chapter on Zihar, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/576 2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, 1/269

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह १३

[ज़िहार के संबंध में] यह मान लेना कि ज़िहार से पहले पति ने एक बार भी संभोग न किया हो, बहुत दूर की बात है। या जवाब में यह कहा जाएगा कि पति को मजबूर करने का उद्देश्य पति के अपराध को समाप्त करना है। यानी ज़िहार करना एक अपराध है जो पति को पत्नी के उस अधिकार की अदायगी से रोकता है जो धार्मिक रूप से हर पति पर वाजिब है। इसलिए काज़ी उसे अपराध समाप्त करने का आदेश देगा ताकि पत्नी उसके लिए हलाल हो सके, जैसे एक स्वामी अपने गुलाम को ज़िहार की अवधि में पत्नी से संभोग करने या तलाक देने का आदेश दे सकता है ताकि पत्नी की परेशानी दूर हो सके। (संक्षिप्त)

और खर्च (नफ़क़ा) न देने पर, यदि पति भुगतान करने में सक्षम है, तो काज़ी पत्नी के लिए उचित खर्च तय करेगा और पति को उसके भुगतान का आदेश देगा। यदि वह नहीं मानता है, तो उसे कैद करेगा। इस अवधि के दौरान पत्नी ने अपने खर्च के लिए जो कुछ भी कर्ज लेकर या अपनी संपत्ति से खर्च किया है, वह सब पति पर कर्ज होगा और उससे वसूला जाएगा। लेकिन यहाँ अलग करने या तलाक पर मजबूर करने का प्रावधान नहीं है।

मैं कहता हूँ: अंतर का कारण स्पष्ट है। एक महिला संभोग और खर्च दोनों की मोहताज है और इनके न मिलने में उसकी हानि है। हानि को दूर करना, जिस तरह भी संभव हो, वाजिब है। निवारण के तरीके में सबसे आसान तरीके का ध्यान रखना आवश्यक है ताकि दूसरे पक्ष को भी हानि न हो। संभोग ऐसी चीज़ है जो पति के अलावा किसी और से मिलना असंभव है। तो निवारण का तरीका इसमें सीमित है कि पति संभोग करे या तलाक दे ताकि वह दूसरे से निकाह कर सके। इसके विपरीत खर्च की ज़रूरत अपनी संपत्ति से या दूसरों से कर्ज लेकर भी पूरी की जा सकती है। महिला की हानि इस प्रकार दूर हो गई कि उसकी ज़रूरत पूरी हो गई और जो खर्च हुआ वह काज़ी के आदेश के बाद पति पर कर्ज रहा। यहाँ तलाक पर मजबूर करने में पति की हानि अधिक है, जिसकी पत्नी से हानि दूर करने में कोई आवश्यकता नहीं है। जैसा कि 'तन्वीर' में है:

"उन दोनों के बीच वियोग नहीं कराया जाएगा यदि वह इसके लिए असमर्थ है, और न ही उसके अधिकार को पूरा न करने पर चाहे वह धनी ही क्यों न हो।"

नफ़क़ा से मजबूर हो जाने पर और अमीर होते हुए भी पत्नी को पूरा अधिकार न देने पर काज़ी दोनों के बीच वियोग नहीं कराएगा। (संक्षिप्त)

'रद्द अल-मुह्तार' में है: १. तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-ज़िहार, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/५७६ २. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-नफ़क़ा, मुतबा मुज्तबाई, १/२६९

पृष्ठ ४४९ / ६८८

قبل الظہار ابداً بعید۔ او قد یقال فائدۃ الاجبار دفع المعصیۃ اہ ای ان الظہار معصیۃ حاملۃ لہ علی الامتناع من حقہا الواجب علیہ دیانۃ فیأمرہ برفعہا لتحل لہ کما یأمر المولی من امرأتہ بقربانہا فی المدۃ اویفرق بینہما لدفع الضرر عنہا اہ ۱ مختصرا۔

یہ فرض کرنا کہ ظہار سے قبل خاوند نے ایک مرتبہ بھی جماع نہ کیا ہو تو تب قاضی مجبور کر سکتا ہے، تو یہ بعید سی بات ہے، یا جواب میں یوں کہا جائے گا کہ خاوند کو مجبور کرنے کا مقصد خاوند کے جرم کا ازالہ ہے اہ، یعنی ظہار کرنا جرم ہے جو خاوند کو بیوی کے اس حق کی ادائیگی سے روکتا ہے جو دیانۃً ہر خاوند پر واجب ہے تو اس لئے قاضی اس کو جرم کے ازالہ کا حکم دے گا تاکہ بیوی حلال ہوسکے، جیسے مولیٰ اپنے غلام کو ظہار کی مدت میں بیوی سے جماع کرنے یا طلاق دینے کا حکم کر سکتا ہے تاکہ بیوی کی پریشانی دور ہوسکے۔ اہ مختصراً (ت)

اور نفقہ نہ دینے پر اگر ادائے نفقہ پر قادر ہے تو قاضی بقدر مناسب عورت کے لئے نفقہ مقرر کرے گا اور شوہر کو اس کے ادا کا حکم دے گا اگر نہ مانے گا قید کرے گا اور اس مدت میں اس سے نہ پانے کے سبب جو کچھ عورت قرض لے کر خواہ اپنے مال سے اپنے نفقہ میں صرف کرے گی سب شوہر پر دین ہوگا اور اس سے دلایا جائیگا مگر یہاں تفریق کر دینے یا طلاق پر جبر کرنے کی صورت نہیں،

اقول: اور وجہ فرق ظاہر ہے جماع و نفقہ دونوں کی طرف عورت محتاج اور ان کے نہ ملنے میں اس کا ضرر، اور دفع ضرر جس طرح ممکن ہو واجب، اور طریق دفع میں آسان تر کا لحاظ لازم

کہ طرفِ ثانی کا بھی اضرار نہ ہو، جماع ایسی چیز ہے کہ غیر شوہر سے اس کا ملنا محال، تو طریق دفع اس میں منحصر کہ شوہر جماع کرے یا طلاق دے کہ وہ دوسرے سے نکاح کرسکے بخلاف نفقہ کہ یہ حاجت اپنے مال سے خواہ دوسرے سے قرض لے کر بھی مندفع ہوسکتی ہے، عورت کا ضرر یوں دفع ہو گیا کہ حاجت روا ہوئی اور جو اٹھاوہ بعد فرضِ قاضی شوہر پر قرض رہا تو یہاں طلاق پر مجبور کرنے میں شوہر کا ضرر زائد ہے جس کی طرف عورت سے دفعِ ضرر میں حاجت نہیں۔ تنویر میں ہے:

لا یفرق بینھما بعجزہ عنہا ولا بعدم ایفائہ حقہا ولو موسرا ۲- اہ مختصرا۔

نفقہ سے عاجز ہو جانے پر اور امیر ہوتے ہوئے بھی بیوی کو پورا حق نہ دینے پر قاضی دونوں کی تفریق نہ کرے گا، اہ مختصراً۔ (ت)

رد المحتار میں ہے: ۱ تنویر الابصار باب الظہار دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۷۶ ۲ در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی ۱/۲۶۹

- Rather, the judge will fix the maintenance of the wife upon the husband and order her to borrow. 1
- Rather, the judge will fix the maintenance for the wife upon the husband and will rule that the wife should take a loan in the husband's name and spend it. (T)

It is stated in Durr-e-Mukhtar: - Afterwards, she recovers what she spent, even if it was from her own property without the judge's order. 2 - Afterwards, the wife will recover from the husband the maintenance she spent, whether she spent from her own property without the judge's order. (T)

In Shamiyyah, it is from Bada'i: - He is imprisoned for the maintenance of relatives just as for wives. 3 - Imprisonment is possible for the maintenance of relatives just as it is possible for the maintenance of wives. (T)

And if the husband is poor such that he cannot provide maintenance, even then the ruling is the same: no separation. And according to Mujtaba, if his poverty is known, there is no imprisonment either. Instead, the judge should fix the maintenance and order the woman to spend by taking a loan. Whatever is spent according to the judge's agreement will remain a debt upon the husband until his situation turns towards prosperity, at which time everything will be recovered. However, if the judge sees that the woman cannot obtain a loan on this hope, he should advise the husband to divorce her. If he does not agree, then the judge, if he has the authority to appoint a deputy, should do so himself; otherwise, by order of the Muslim ruler, hand over the case to someone of the Shafi'i school of thought. In their school, when the husband is unable to provide maintenance, they allow for separation. After summoning both parties, hearing the case, and proving the inability, the Shafi'i judge would decree separation. When this ruling is presented before a Hanafi judge, he should execute it, for when the husband is present, such a ruling by a Shafi'i magistrate is considered valid for execution in our view. Thus, the woman can obtain relief from this predicament. It is mentioned in Durr-e-Mukhtar:

- Ash-Shafi'i allowed it due to the husband's insolvency, and if a Hanafi judges by it, it is not executed; yes, if he orders a Shafi'i and he judges by it, it is executed. 4
- Imam Shafi'i has declared separation permissible due to the husband's insolvency regarding maintenance. If a Hanafi judge gives this ruling, it will not

be executed. Yes, if a Hanafi judge refers the decision to a Shafi'i judge, and the Shafi'i judge then gives the ruling, his decision will be executed. (T)

- Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/256
- Durr-e-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/70
- Radd al-Muhtar with reference to al-Bada'i, Chapter of Maintenance, 2/287 and Section on Imprisonment, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/322
- Durr-e-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/269

- बल्कि काज़ी पति पर पत्नी का गुज़ारा निर्धारित करेगा और उसे उधार लेने का आदेश देगा। 1
- बल्कि काज़ी पति के ज़िम्मे पत्नी का गुज़ारा (नफ़का) तय कर देगा और पत्नी को पति के नाम पर ऋण लेकर खर्च करने का फैसला सुनाएगा। (त)

दुर्रे-मुख्तार में है: - इसके बाद वह जो कुछ भी खर्च करती है उसे वापस ले लेती है, चाहे वह काज़ी के आदेश के बिना उसकी अपनी संपत्ति से ही क्यों न हो। 2 - इसके बाद, पत्नी गुज़ारे के लिए खर्च की गई राशि पति से वसूल करेगी, चाहे उसने अपने स्वयं के धन से काज़ी के आदेश के बिना खर्च किया हो। (त)

शामिया में बदाए से है: - रिश्तेदारों के गुज़ारे के लिए उसी तरह कैद किया जाता है जैसे पत्नियों के लिए। 3 - रिश्तेदारों के गुज़ारे के मामले में कैद किया जा सकता है जैसा कि पत्नियों के गुज़ारे के मामले में किया जा सकता है। (त)

और यदि पति निर्धन है कि वह गुज़ारा नहीं दे सकता, तब भी यही हुक्म है कि विच्छेद (तफ़रीक़) नहीं होगा। और मुजतबा के अनुसार, यदि निर्धनता ज्ञात हो तो कैद भी नहीं होगी, बल्कि काज़ी गुज़ारा निर्धारित करके महिला को ऋण लेकर खर्च करने का आदेश दे। जो कुछ काज़ी के समझौते के अनुसार खर्च होता रहेगा, वह पति पर ऋण माना जाएगा, जब तक कि उसका समय संपन्नता की ओर न मुड़ जाए, उस समय सब कुछ वसूल कर लिया जाएगा। लेकिन अगर काज़ी देखे कि महिला को इस आशा पर ऋण नहीं मिलता, तो वह पति को समझाए कि वह तलाक दे दे। यदि वह नहीं मानता, तो काज़ी, यदि उसे प्रतिनिधि नियुक्त करने का अधिकार हो, तो स्वयं करे; अन्यथा मुस्लिम शासक के आदेशानुसार मामला किसी शाफ़ई संप्रदाय (मज़हब) के व्यक्ति को सौंप दे। उनके यहाँ जब पति गुज़ारा देने में असमर्थ हो, तो वे विच्छेद करा देते हैं। वह दोनों पक्षों को बुलाकर, मामला सुनने और असमर्थता साबित होने के बाद विच्छेद कर देगा। जब यह आदेश हनफ़ी काज़ी के सामने पेश हो, तो वह इसे लागू कर दे, क्योंकि जब पति उपस्थित हो, तो शाफ़ई शासक का ऐसा आदेश हमारे यहाँ

लागू करने योग्य माना जाता है। इस प्रकार, महिला इस मुसीबत से छुटकारा पा सकती है। दुर्रे-मुख्तार में है:

- शाफ़ई ने पति की दिवालियापन के कारण इसे अनुमति दी है, और यदि कोई हनफ़ी इसके द्वारा न्याय करता है, तो इसे लागू नहीं किया जाता है; हाँ, यदि वह किसी शाफ़ई को आदेश देता है और वह उसके द्वारा न्याय करता है, तो इसे लागू किया जाता है। 4
- पति के तंगहाल हो जाने पर गुज़ारे के कारण विच्छेद को इमाम शाफ़ई ने जायज़ माना है। और यदि हनफ़ी काज़ी यह फैसला दे, तो वह लागू नहीं होगा। हाँ, यदि हनफ़ी काज़ी शाफ़ई काज़ी को फैसला देने का कार्य सौंप दे और फिर शाफ़ई काज़ी फैसला दे, तो उसका फैसला लागू हो जाएगा। (त)

- रद अल-मुह्तार, गुज़ारा अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/२५६

- दुर्रे-मुख्तार, गुज़ारा अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १/७०
- रद अल-मुह्तार बदाए के संदर्भ में, गुज़ारा अध्याय, २/२८७ और कैद पर अनुभाग, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/३२२
- दुर्रे-मुख्तार, गुज़ारा अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, १/२६९

पृष्ठ ४५०/६८८

بل یفرض لھا النفقة علیه ویأمرھا بالاستدانة - 1 بلکہ قاضی خاوند کے ذمہ بیوی کا نفقہ کردے گا اور بیوی کو خاوند کے نام قرض لے کر خرچ کرنے کا فیصلہ دے گا۔ (ت)

درمختار میں ہے: وبعده ترجع بما انفقت ولو من مال نفسھا بلا امر قاض - 2 اس کے بعد بیوی خرچ کیلئے نفقہ کو خاوند سے وصول کرے گی جو بیوی نے خرچ کیا ہو خواہ اس نے اپنے ہی مال سے قاضی کے حکم کے بغیر خرچ کیا ہو۔ (ت)

شامیہ میں بدائع سے ہے: یحبس فی نفقة الاقارب کالزوجات - 3 قریبوں کے نفقہ میں قید کیا جاسکتا ہے جیسا کہ بیویوں کے نفقہ میں قید کیا جاسکتا ہے۔ (ت)

اور اگر شوہر فقیر ہے کہ نفقہ نہیں دے سکتا جب بھی حکم یہی ہے کہ تفریق نہیں اور مجتبیٰ معلوم ہو تو قید بھی نہیں بلکہ قاضی نفقہ مقرر کرکے عورت کو قرضاً صرف کرنے کا حکم دے جو کچھ حسب قرارداد قاضی خرچ ہوتا رہے ذمہ شوہر دین ہوا کرے گا یہاں تک کہ زمانہ اس کو تونگری کی طرف پلٹا لے، اس وقت سب وصول کرلیا جائے مگر اگر قاضی دیکھے کہ عورت کو اس امید پر قرض نہیں ملتا تو شوہر کو سمجھائے کہ طلاق دے دے، اگر نہ مانے تو قاضی جبکہ نائب مقرر کرنے کا اختیار ہو باختیار خود ورنہ بحکم والی مسلم مقدمہ کسی شافعی المذہب کے سپرد کردے کہ ان کے یہاں جب کہ شوہر کا نفقہ دینے سے عاجز ہو تفریق کرادیتے ہیں وہ فریقین کو بلا کر بعد سماع مقدمہ و ثبوت عجز تفریق کردے، یہ حکم جب قاضی حنفی کے حضور پیش ہوا اسے نافذ کردے کہ شوہر جب حاضر ہو تو حاکم شافعی کا ایسا حکم ہمارے نزدیک لائق تنفیذ مانا جاتا ہے، یوں عورت اس بلا سے خلاصی پاسکتی ہے۔ درمختار میں ہے:

جوزہ الشافعی بأعسار الزوج، ولو قضی بہ حنفی لم ینفذ نعم لو امر شافعیاً فقضی بہ نفذ - 4 خاوند کے تنگدست ہوجانے پر نفقہ کی وجہ سے تفریق کو امام شافعی نے جائز قرار دیا ہے، اور اگر حنفی قاضی یہ فیصلہ دے تو نافذ نہ ہوگا، ہاں حنفی قاضی اگر شافعی قاضی کو فیصلہ دینا سپرد کردے پھر شافعی قاضی فیصلہ دے تو اس کا فیصلہ نافذ ہوجائے گا۔ (ت)

1 رد المحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۵۶ 2 درمختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۰ 3 رد المحتار بحوالہ البدائع باب النفقۃ ۲/۲۸۷ و فصل فی الحبس دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۲۲ 4 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۹

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

In Radd al-Muhtar, it is stated: "The text says 'yes, if he says to a Shafi'i judge,' meaning provided that the Hanafi judge has the authority to delegate the decision to another. In Khaniyah and Ghurar al-Adhkar, it is mentioned: Know that our masters (Mashaykh) have preferred that a Hanafi judge should appoint as his deputy someone whose school of thought (Madhhab) allows separation between husband and wife due to lack of maintenance. So, when the husband is present and refuses to give a divorce, the deputy, upon the wife's demand, should effect separation because the continuous need for maintenance cannot be resolved by borrowing, as it is apparent that the wife will not find anyone to lend to her, and the possibility of the husband becoming wealthy later is a vague matter. Therefore, separation is necessary upon her demand. However, if the husband is absent, separation should not be done because his inability to provide maintenance due to absence is not certain. In such a case, if separation is decreed, it will not be enforced because, in the case of absence, since inability is not proven, the matter will no longer remain an 'Ijtihadi' (legal reasoning) issue. A complete explanation is in Radd al-Muhtar. And Allah Almighty knows best."

Problem 169: From Punjab, sent by Maulvi Fazil Sahib, 20 Safar 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Two sisters of Zaid became widows in their youth and did not remarry. They both have two houses provided by their husbands, but there is no paternal inheritance from which these widows can support themselves. Zaid is also of limited means and has a family, yet he takes on hardship himself to look after his sisters. Therefore, in this situation, is Zaid's treatment of his sisters considered a favor/kindness or an obligation? And is the maintenance (food and clothing) of sisters obligatory on brothers, or is it out of piety and benevolence? And if it is obligatory, under what circumstances? Explain, and may you be rewarded.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/256. Page 451 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

रद-उल-मुहतार में है: "मूल पाठ का कहना है 'हाँ अगर शाफ़ई को कहे', यानी बशर्ते कि हनफ़ी काज़ी दूसरे को फ़ैसला सौंपने का पात्र हो। खानिया और ग़ुरर अल-अज़कार में कहा गया है कि यह स्पष्ट हो कि हमारे मशायख़ ने इसे पसंद किया है कि हनफ़ी काज़ी किसी ऐसे व्यक्ति को अपना नायब (प्रतिनिधि) नियुक्त करे जिसका मज़हब (विचारधारा) यह हो कि पति और पत्नी में ख़र्चे (नफ़क़ा) की वजह से जुदाई (तफ़रीक़) जायज़ है। तो जब पति मौजूद हो और तलाक़ देने से इनकार करे, तो वह नायब पत्नी की मांग पर जुदाई कर दे क्योंकि गुज़ारे की निरंतर ज़रूरत क़र्ज़ लेने से हल नहीं होती, जबकि ज़ाहिर यही है कि पत्नी को कोई क़र्ज़ देने वाला नहीं मिलता और पति का बाद में कभी अमीर होना एक काल्पनिक मामला है। इसलिए पत्नी की मांग पर जुदाई ज़रूरी है। और अगर पति ग़ायब हो तो फिर जुदाई न करे क्योंकि ग़ैर-मौजूदगी की वजह से पति का ख़र्चे से मजबूर होना मालूम नहीं है। तो इस स्थिति में अगर जुदाई कर दी गई तो वह लागू नहीं होगी क्योंकि ग़ायब होने की स्थिति में मजबूरी (इज्ज़) साबित न होने पर मामला इजतिहादी (कानूनी शोध का) नहीं रहेगा। पूरी व्याख्या रद-उल-मुहतार में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।"

मसला 169: पंजाब से, प्रेषक मौलवी फ़ाज़िल साहब, 20 सफ़र 1318 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद की दो बहनें अपनी जवानी में विधवा हो गईं और उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। उन दोनों के पास उनके पतियों द्वारा दिए गए दो मकान हैं, लेकिन पिता की विरासत में कुछ भी नहीं है जिससे इन विधवाओं का गुज़ारा हो सके। ज़ैद की आर्थिक स्थिति भी कमज़ोर है और उसका अपना परिवार भी है, फिर भी वह स्वयं तकलीफ़ उठाकर अपनी बहनों की देखभाल करता है। तो इस स्थिति में ज़ैद का अपनी बहनों के साथ यह व्यवहार उपकार (सुलूक) है या अनिवार्य (वाजिब)? और बहनों का भरण-पोषण भाइयों पर वाजिब है या यह केवल धर्मनिष्ठा और परोपकार है? और अगर वाजिब है, तो किन परिस्थितियों में? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

---

1. रद-उल-मुहतार, बाब-अल-नफ़क़ा, दार-ए-एहया-अल-तुराथ-अल-अरबी, बेरूत, 2/256. पृष्ठ 451/688

ردالمحتار میں ہے: قولہ نعم لو امر شافعیا،ای بشرط ان یکون مأذونالہ بالاستنابۃ، خانیۃ، قال فی غررالاذکار ثم اعلم ان مشائخنا استحسنوا ان ینصب القاضی الحنفی نائبا ممن مذھبہ التفریق بینھما اذا کان الزوج حاضرا و ابی عن الطلاق لان دفع الحاجۃ الدائمۃ لایتیسر بالاستدانۃ اذ الظاھر انھا لا تجد من یقرضھا وغنی الزوج مألا امر متوھم فالتفریق ضروری اذا طلبتہ وان کان غائبا لا یفرق لان عجزہ غیر معلوم حال غیبتہ وان قضی بالتفریق لا ینفذ قضائہ لانہ لیس فی مجتھد فیہ لان العجز لم یثبت اھ وتمامہ فیہ، واللہ تعالٰی اعلم۔

متن کا کہنا کہ "ہاں اگر شافعی کو کہے" یعنی بشرطیکہ ہو حنفی قاضی دوسرے کو فیصلہ سپرد کرنے کا مجاز ہو، خانیہ غررالاذکار میں کہا ہے کہ واضح ہو کہ ہمارے مشائخ نے یہ پسند کیا ہے کہ حنفی قاضی کسی ایسے شخص کو اپنا نائب قرار دے جس کا مذہب یہ ہو کہ خاوند اور بیوی میں نفقہ کی وجہ سے تفریق جائز ہے، تو جب خاوند حاضر ہو اور طلاق دینے سے انکاری ہو تو وہ نائب بیوی کے مطالبہ پر تفریق کر دے کیونکہ نفقہ کی دائمہ حاجت قرض لینے سے حل نہیں ہوتی جبکہ ظاہر یہی ہے کہ بیوی کسی قرض دینے والے کو نہیں پاتی اور خاوند کا بعد میں کسی وقت امیر ہونا موہوم معاملہ ہے لہٰذا بیوی کے مطالبہ پر تفریق ضروری ہے، اور اگر خاوند غائب ہو تو پھر تفریق نہ کرے کیونکہ غیر موجودگی کی وجہ سے خاوند کا نفقہ سے عاجز ہونا معلوم نہیں ہے تو اس صورت میں اگر تفریق کی تو نافذ نہ ہوگی کیونکہ غائب ہونے کی صورت میں عجز ثابت نہ ہونے پر مسئلہ اجتہادی نہ رہے گا، مکمل بیان ردالمحتار میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

مسئلہ ۱۶۹: از پنجاب مرسلہ مولوی فاضل صاحب ۲۰ صفر ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی دو ہمشیریں حالت جوانی میں بیوہ ہو گئیں اور انہوں نے عقد ثانی نہیں کیا

اور دونوں کے پاس دو مکان پیدا کردہ شوہر کے ہیں لیکن ترکہ پدری کچھ بھی نہیں ہے کہ جس سے ان بیوگان کی گزر ہو سکے، اور زید بھی کم مقدرت ہے اور اہل وعیال رکھتا ہے مگر اپنے اوپر تکلیف اٹھا کر ہمشیروں کی خبر گیری بھی کرتا ہے، پس اس صورت میں زید کا بہنوں کے ساتھ یہ برتاؤ از قسم سلوک ہے یا از قسم واجب، اور بہنوں کا نان و نفقہ بھائیوں پر واجب ہے یا تورع واحسان، اور اگر واجب ہے تو کس صورت میں؟ بینوا توجروا۔

---

1 ردالمحتار باب النفقۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۵۶ Page 451 of 688

Volume 13 - Fatawa Rizvia - Page 13

The Answer: In the stated case, providing maintenance for sisters is obligatory for the brother under two conditions: First: Zaid is capable of assisting them, meaning he owns wealth amounting to fifty-six rupees beyond his basic necessities, or if he doesn't possess such wealth but is a professional, he has enough left over after meeting the maintenance costs of himself, his wife, and children to be able to assist his sisters. Second: The sisters do not possess any personal property such as jewelry etc. worth more than fifty-six rupees beyond their basic necessities. Nor should they have grain for food, clothes for wearing, or cash available; as long as they have these, maintenance will not be obligatory on others, even if it is less than fifty-six rupees. Furthermore, they should not possess a house such that a portion of it could be sold for sustenance while living in the remainder; if that is the case, it is mandatory for them to sell it and use it for their own maintenance. Only when nothing remains will the responsibility for maintenance fall on the brother. Also, those women should not be engaged in handicrafts like sewing etc. that provide sufficient income for their maintenance; if so, they are responsible for their own maintenance, not the brother. However, if they do not practice handicrafts and cannot sustain themselves from any of their own wealth, then maintenance is obligatory on the brother. He cannot say to them, "Earn a livelihood by doing some labor like sewing etc. to fill your stomach." If these two conditions are met, maintenance is the brother's responsibility—solely his if he is their only heir, otherwise, in proportion to the inheritance share if there are other capable heirs like another brother, sister, or daughter besides him. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic Text Section]: (Maintenance is obligatory upon one who has the financial capacity for Fitra) according to the most correct opinion. Az-Zaila'i and Al-Kamal preferred the obligation upon one who earns more than their essential income. (Maintenance for every blood relative within prohibited degrees, whether minor or female) absolutely (even if the female is an adult and healthy) or if the male is (an adult but incapable) of earning (and poor). This 'poverty' is a condition for all, such that Sadaqah is permissible for them, even if they possess their own house and a servant, according to the correct opinion in Bada'i'. (Maintenance is obligatory in proportion to the inheritance share) - Ending of excerpt.

[Urdu Translation of the above Arabic section provided in the image]: Maintenance is obligatory (upon one who has the capability for the obligation of Fitrana) according to the more correct opinion, whereas Zaila'i and Kamal have preferred the obligation

upon those who earn more than the necessary income. (Giving maintenance to every relative within prohibited degrees who is a minor or a woman) is mandatory, absolutely (even if the woman is an adult and healthy) or the boy is (an adult but incapable) of labor (while they are poor). So, being poor is the condition for all, such that charity (Sadaqah) is lawful for them even if they have their own house and servant; this is the rule according to the correct opinion, 'Bada'i' (it is mandatory to give this maintenance to each according to the proportion of inheritance). End of excerpt (T).

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi 2/264 to 267. Page 452 of 688

जिल्द तेरहवीं - फ़तावा रज़विया - पृष्ठ १३

उत्तर: प्रस्तुत स्थिति में बहनों का भरण-पोषण (नान-ओ-नफ़क़ा) भाई पर दो शर्तों के साथ अनिवार्य है: पहला: ज़ैद उनकी सहायता करने में सक्षम हो, अर्थात् अपनी मूल आवश्यकताओं के अतिरिक्त छप्पन रुपये के बराबर धन का स्वामी हो, या यदि उसके पास ऐसा धन नहीं है, लेकिन वह कामकाजी है, तो अपने और अपनी पत्नी और बच्चों के भरण-पोषण के बाद उसके पास इतना धन बचता हो जिससे वह अपनी बहनों की सहायता कर सके। दूसरा: बहनों के पास स्वयं की कोई ऐसी संपत्ति जैसे आभूषण आदि न हो जो उनकी मूल आवश्यकताओं के अतिरिक्त छप्पन रुपये से अधिक मूल्य की हो। न ही भोजन के लिए अनाज, पहनने के लिए कपड़े या नकद धन उपलब्ध हो; जब तक यह वस्तुएं मौजूद रहेंगी, दूसरों पर भरण-पोषण अनिवार्य नहीं होगा, चाहे वह छप्पन रुपये से कम ही क्यों न हो। न ही उनके पास ऐसा घर हो जिसका एक हिस्सा बेचकर वे बाकी में गुजारा कर सकें; यदि ऐसा है, तो उसे बेचकर अपने स्वयं के भरण-पोषण के लिए उपयोग करना अनिवार्य होगा। जब कुछ नहीं बचेगा, तब भरण-पोषण की जिम्मेदारी भाई पर आएगी। साथ ही, वे महिलाएं सिलाई आदि जैसे हस्तशिल्प के कार्य में संलग्न न हों जो उनके भरण-पोषण के लिए पर्याप्त हो; यदि ऐसा है, तो उनका भरण-पोषण स्वयं उन्हीं की जिम्मेदारी है, भाई की नहीं। हाँ, यदि वे हस्तशिल्प नहीं करतीं और न ही अपनी किसी संपत्ति से अपना गुजारा कर सकती हैं, तो भाई पर भरण-पोषण अनिवार्य होगा। और वह उनसे यह नहीं कह सकेगा कि 'सिलाई आदि कोई मजदूरी का काम करके अपना पेट पालो'। यदि ये दो शर्तें पूरी होती हैं, तो भरण-पोषण की जिम्मेदारी भाई पर है—अकेले उस पर यदि वह उन महिलाओं का एकमात्र उत्तराधिकारी है, अन्यथा विरासत के हिस्से के अनुपात में यदि उसके अतिरिक्त कोई और सक्षम उत्तराधिकारी जैसे दूसरा भाई, बहन या पुत्री हो। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी पाठ अनुभाग]: (फ़ित्रा की अनिवार्यता की योग्यता रखने वाले पर) अधिक प्रमाणित कथन के अनुसार भरण-पोषण अनिवार्य है। ज़ैलाई और कमाल ने आवश्यक आय से अधिक कमाने वाले पर अनिवार्यता को वरीयता दी है। (प्रत्येक रक्त संबंधी जो निकाह के लिए वर्जित हो, चाहे वह नाबालिग हो या महिला) को भरण-पोषण देना अनिवार्य है, पूर्णतः(भले ही महिला वयस्क और स्वस्थ हो) या पुरुष (वयस्क लेकिन अक्षम हो) कमाई से (जबकि वे निर्धन हों)। 'निर्धन' होना सभी की स्थिति है, इस प्रकार कि उनके लिए सदक़ा हलाल हो, भले ही उनका अपना घर और नौकर हो, सही कथन के

अनुसार यही आदेश है, 'बदाइ' (यह भरण-पोषण प्रत्येक को विरासत के अनुपात में देना अनिवार्य है) - सारांशित।

[छवि में दिए गए अरबी अनुभाग का उर्दू अनुवाद]: (फ़ितराना की अनिवार्यता की योग्यता रखने वाले पर) अधिक प्रमाणित कथन के अनुसार नफ़क़ा (भरण-पोषण) वाजिब है, जबकि ज़ैलाई और कमाल ने आवश्यक आय से अधिक कमाने वाले पर वजूब (अनिवार्यता) को वरीयता दी है। (नफ़क़ा देना हर ज़ी-रहम महरम नाबालिग या औरत को) मुतलक़न (पूर्णत:) वाजिब है (भले ही औरत बालिग और सेहतमंद हो) या लड़का (बालिग हो पर मेहनत करने में अक्षम हो) जबकि वे फ़क़ीर (निर्धन) हों। तो फ़क़ीर होना सभी के लिए शर्त है, इस प्रकार कि उसे सदक़ा हलाल हो भले ही उसका अपना मकान और ख़ादिम (नौकर) हो, सही क़ौल के मुताबिक यही हुक्म है, 'बदाइ' (यह नफ़क़ा हर एक को बक़दर-ए-विरासत देना लाज़िम है)। समाप्ति (त)।

1. दुर्रे मुख्तार, बाब-उल-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली २/ २६४ से २६७। पृष्ठ ४५२ / ६८८

جلد سیزدہم - فتاویٰ رضویہ - صفحہ ۱۳

الجواب: صورت مستفسرہ میں بہنوں کا نان و نفقہ بھائی پر واجب ہے دو شرط سے: اول: زید ان کی اعانت پر قادر ہو یعنی اپنی حاجت اصلیہ سے فاضل چھپن روپے کا مالک ہو یا ایسا مال نہیں رکھتا بلکہ پیشہ ور ہے تو اپنے اور اپنے بیوی بچوں کے نفقہ سے پس انداز ہوتا ہو جس سے بہنوں کی اعانت کر سکے۔ دوم: بہنیں زیور وغیرہ کوئی مال ذاتی نہ رکھتی ہوں جو ان کی حاجت اصلیہ سے زائد چھپن روپے کا ہو، نہ کھانے کے لئے اناج پہننے کے لئے کپڑا یا دام موجود ہو کہ یہ جب تک رہے گا اس قدر نفقہ دوسرے پر واجب نہ ہوگا اگرچہ چھپن روپیہ سے کم کا ہو، نہ مکان اس قابل ہو کہ اس کا ایک حصہ بیچ کر باقی میں گزر کرسکیں، ایسا ہو گا تو بیچ کر خود اپنے نفقہ میں اٹھانا لازم ہوگا جب نہ رہے گا بھائی پر نفقہ آئے گا، نہ وہ عورتیں دستکاری مثل سلائی وغیرہ کے ایسا کر رہی ہوں جو ان کے نفقہ کو کافی ہو، اگر ایسا ہے تو اپنا نفقہ خود انہیں پر ہے بھائی پر نہیں، ہاں اگر وہ دستکاری نہیں کرتیں، نہ اپنے کسی مال سے اپنی بسر کر سکتی ہیں تو بھائی پر نفقہ واجب ہوگا اور وہ یہ نہ کہہ سکے گا کہ تم سلائی وغیرہ کوئی کام مزدوری کا کر کے اپنا پیٹ پالو، یہ دو شرطیں متحقق ہوں تو نفقہ بھائی پر ہے تنہا اس پر جب کہ ان عورتوں کا وارث صرف وہی ہو ورنہ بقدر میراث جبکہ اس کے سوا ان کا اور کوئی وارث ذی مقدور مثل دوسرے بھائی یا بہن یا دختر کے ہو۔ در مختار میں ہے:

[عربی عبارت کا حصہ]: تجب (على موسر يسار الفطرة) على الاصح ورجح الزيلعي والكمال انفاق فاضل كسبه (النفقة لكل ذى رحم محرم صغيرا وانثى) مطلقا(ولو بالغة صحيحة او) كان الذكر(بالغا عاجزا) عن الكسب(فقيرا) حال من المجموع بحيث تحل له الصدقة ولو له منزل وخادم على الصواب بدائع (بقدر الارث) اهـ ملتقطا۔

[درج بالا عربی عبارت کا اردو ترجمہ جو تصویر میں موجود ہے]: (فطرانہ کے وجوب والی استعداد والے پر) زیادہ راجح قول کے مطابق نفقہ واجب ہے، جبکہ زیلعی اور کمال نے ضروری آمدن سے زائد کسب والے پر وجوب کو ترجیح دی ہے (نفقہ دینا ہر ذی رحم محرم نابالغ یا عورت کو) مطلقا (اگرچہ عورت بالغہ صحت مند ہو) یا لڑکا (بالغ عاجز ہو) محنت سے (جبکہ یہ فقیر ہوں) لازم ہے تو فقیر ہونا تمام کا حال ہے یوں کہ اس کو صدقہ حلال ہو اگرچہ اس کا اپنا مکان اور خادم ہو، درست قول کے مطابق یہی حکم ہے، بدائع (یہ نفقہ ہر ایک کو بقدر وراثت دینا لازم ہے) اھ ملتقطاً (ت)

1 درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲۶۴ تا ۲۶۷ Page 452 of 688

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13

In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Quote Table] His statement "absolutely" (mutlaqan) is a restriction for the female, meaning whether she is an adult or healthy and capable of earning. However, if she is actually earning, such as being a midwife or a washerwoman, she is not entitled to maintenance. His statement "to the extent that charity is permissible for him" means he does not possess a productive or non-productive wealth (Nisab) beyond his basic needs. It appears that the intended wealth is what is not of the same type as maintenance. For if he possesses food or money less than the Nisab, though charity is permissible for him, maintenance is apparently not obligatory for him. This is because maintenance is reasoned by sufficiency, and as long as he has what suffices him of that, others are not required to provide for him. His statement "even if he has a house and a servant" means while he is in need of them. It is in Al-Dhakhira: If a part of the house suffices him, he will be ordered to sell a portion of it and spend it on himself. Similarly, if he has a valuable animal, he will be ordered to buy a cheaper one and spend the excess on himself. Similar is mentioned in Sharh Adab al-Qadi, in brief. And Allah Almighty knows best.

[End of Table Section]

Issue 170 to 171: From Bhoona Farket, Karachi Port, sent by Pir Syed Ibrahim Gilani Qadri Baghdadi, 15 Rajab 1337 AH. What do the scholars of the religion say about this issue:

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/82-281

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

रद-अल-मुह्तार में उल्लेख है:

[अरबी उद्धरण तालिका] मूल ग्रंथ का कथन "मुतलक़न" (बिल्कुल) यह शब्द "उनसा" (स्त्री) का विशेषण है, यानी चाहे वह वयस्क हो या स्वस्थ हो और कमाई करने में सक्षम हो। लेकिन अगर वह वास्तव में कमाई कर रही हो, जैसे कि दाई या नहलाने वाली हो, तो उसके लिए गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) वाजिब नहीं होगा। और मूल ग्रंथ का कथन "बहैसु तहल्लु लहु अस्-सदक़ा" (इस हद तक कि उसके लिए सदक़ा हलाल हो) का अर्थ है कि वह नामी (बढ़ने वाले) या गैर-नामी निसाब का मालिक न हो जो बुनियादी ज़रूरतों से अतिरिक्त हो। इसमें ज़ाहिर यह है कि जिस संपत्ति का वह मालिक है वह गुज़ारे भत्ते की श्रेणी की न हो, क्योंकि अगर वह निसाब से कम अनाज या नकद का मालिक है, तो हालांकि उसके लिए सदक़ा हलाल है लेकिन ज़ाहिरी तौर पर उसके लिए नफ़क़ा वाजिब नहीं है। क्योंकि नफ़क़ा के वाजिब होने का कारण ज़रूरत की पूर्ति है और जब तक उसके पास नफ़क़ा की पर्याप्त संपत्ति मौजूद है, तब तक दूसरे पर उसका नफ़क़ा नहीं होगा। और मूल ग्रंथ का कथन "लौ लहू मंज़िलुन व खादिमुन" (चाहे उसका मकान और खादिम हो) का अर्थ है जबकि उसे उनकी ज़रूरत हो। और 'ज़खीरा' में है कि अगर उसकी ज़रूरत मकान के कुछ हिस्से से पूरी हो जाती है, तो उसे मकान के बाकी हिस्से को बेचकर अपने गुज़ारे पर खर्च करने को कहा जाएगा। इसी तरह अगर उसके पास उच्च श्रेणी की सवारी है, तो उसे बेचकर कम दर्जे की सवारी खरीदने के लिए कहा जाएगा ताकि अतिरिक्त राशि को वह अपने गुज़ारे पर खर्च करे। और 'शर्ह अदब अल-क़ाज़ी' में भी इसी तरह का वर्णन है। संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[तालिका खंड का अंत]

मसला 170 से 171: भूना फारकेट, कराची बंदरगाह से, प्रेषक पीर सैयद इब्राहिम गिलानी क़ादरी बग़दादी, 15 रजब 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं:

---

1. रद अल-मुह्तार, गुज़ारा भत्ता का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/82-281

पृष्ठ 688 में से 453

فتاویٰ رضویہ، جلد سیز دہم، صفحہ ۱۳

ردالمحتار میں ہے:

[جدول متن] قولہ مطلقا قید للانثی ای سواء کانت بالغۃ اوصحیحۃ قادرۃ علی الکسب لکن لوکانت مکتسبۃ بالفعل کالقابلۃ والمغسلۃ لانفقۃ لھا، قولہ بحیث تحل لہ الصدقۃ بان لایملک نصاباً نامیاً اوغیرنام زائد عن حوائجہ الاصلیۃ والظاہر ان المراد ما کان من غیر جنس النفقۃ اذلو کان یملک دون نصاب من طعام او نقود تحل لہ الصدقۃ ولاتجب لہ النفقۃ فیما یظھر لانھا معللۃ بالکفایۃ ومادام عندہ مایکفیہ من ذلک لایزم غیرہ کفایتہ، قولہ ولولہ منزلہ منزل و خادم ای وھو محتاج الیھما وفی الذخیرۃ لوکان یکفیہ بعض المنزل امر ببیع بعضہ وانفاقہ علی نفسہ وکذالو کانت لہ دابۃ نفیسۃ یومر بشراء الادنی وانفاق الفضل اھ ومثلہ فی شرح ادب القاضی اھ مختصرا واللہ تعالیٰ اعلم۔

متن کا قول "مطلقا" یہ لفظ "انثی" کی قید ہے یعنی خواہ بالغہ ہو یا تندرست ہو محنت پر قادر ہو، لیکن اگر وہ عملاً محنت کر رہی ہو مثلاً دایہ یا غسل دینے والی ہو، تو اس کے لئے نفقہ واجب نہ ہوگا، اور متن کا قول "بحیث تحل لہ الصدقۃ" (اس کے لئے صدقہ حلال ہو) یعنی وہ نامی نصاب یا غیر نامی جو اصلی حاجت سے زائد، کا مالک نہ ہو، اس میں ظاہر یہ ہے کہ جس مال کا وہ مالک ہو وہ نفقہ کی جنس سے نہ ہو، کیونکہ اگر وہ نصاب سے کم غلہ یا نقد کا مالک ہو تو اگرچہ اس کے لئے صدقہ حلال ہے لیکن اس کے لئے نفقہ ظاہراً واجب نہیں، کیونکہ نفقہ کے وجوب کی علت ضرورت کی کفایت ہے اور جب تک اس کے پاس نفقہ کی کفایت والا مال موجود ہے تو دوسرے پر اس کا نفقہ نہ ہوگا۔ اور متن کا قول "لو لہ منزل و خادم" (اگرچہ اس کا مکان اور خادم ہو) یعنی جبکہ وہ ان کا حاجتمند ہو۔ اور ذخیرہ میں ہے کہ اگر اس کی حاجت مکان کے کچھ حصے میں پوری ہوجاتی ہے تو اس کو مکان کے باقی حصہ کو فروخت کرکے اپنے نفقہ میں خرچ کرنے کو

کہا جائے گا، اور یونہی اگر اس کے پاس اعلیٰ قسم کی سواری ہے تو اس کو فروخت کرکے ادنیٰ قسم کی سواری خریدنے کے لئے کہا جائے گا تاکہ زائد رقم کو اپنے نفقہ میں خرچ کرے اھ اور شرح ادب القاضی میں اس کی مثل بیان ہے، اھ، مختصراً۔ (ت)

[جدول کا اختتام]

مسئلہ ۱۷۰ تا ۱۷۱: از بھونا فارکیٹ کراچی بندر مرسلہ پیر سید ابراھیم گیلانی قادری بغدادی ۱۵ رجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ :

---

۱ ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۸۲۔۲۸۱

Fatawa Razawiya, Volume 13

(1) A person who leaves his elderly father in his original homeland in a state of poverty and need, putting him in such grief and hardship that the elderly father has to wander from door to door and city to city in search of him. Is such a person from a noble family considered disobedient and a violator of parental rights, and is it permissible to pray behind him? (2) What is the Shariah's ruling regarding a person who has abandoned his wedded wife along with two young adult daughters born of his seed, without providing any food or maintenance, and reports from people indicate they are living in extreme hardship and utter humiliation?

The Answer: (1) If the father is weak and needy, and this person is capable of serving and assisting him but does not do so, keeps away from him, and disregards his poverty and starvation, then he is indeed disobedient and deserving of Hell. Such a person is not fit for Imamate (leading prayers), and praying behind him would be severely disliked (Makruh). (2) Such a person is a sinner, entangled in violating the rights of servants (huquq al-ibad), and deserves the punishment of fire. The Hadith states:

"It is enough of a sin for a man to neglect those whose sustenance depends on him." (It is sufficient sin for a person not to provide for someone whose maintenance is his responsibility.) And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 172: From Kanpur, Mohalla Feel Khana, Bazaar Kuhna, house of Syed Ashraf Sahib, Lawyer; sent by Syed Muhammad Asif Sahib, 13 Dhu al-Hijjah 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if the expenses for the wife's food, maintenance etc. are borne by the husband's father or some relative, and they grant the woman permission to go to her parents' house, can the husband stop the wife from going? Would the woman be a sinner for going without the husband's permission, or is it not permissible for the husband to stop her, and she would not be a sinner for going? State and be rewarded.

The Answer: If the prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal) was not due, or if the amount that was due has been paid, then apart from a few instances of Shari'i necessity which have been exempted—for example, visiting parents every eighth day, visiting other mahrams (unmarriageable relatives) once a year for the day while spending the night

at the husband's house, etc.—a woman is not permitted to go anywhere without her husband's permission. If she goes, she will be a sinner. The husband...

1. Al-Mustadrak 'ala al-Sahihayn, Kitab al-Zakat, Dar al-Fikr, Beirut, 1/215

फ़तावा रज़विया, खंड 13

(1) जो व्यक्ति अपने वृद्ध पिता को अपने मूल देश में गरीबी और लाचारी की स्थिति में छोड़ देता है और उसे ऐसे दुख और विपत्ति में डाल देता है कि वह वृद्ध पिता उसके पीछे दर-दर और शहर-शहर भटकता फिरता है। क्या कुलीन परिवार का ऐसा व्यक्ति माता-पिता का अवज्ञाकारी और उनके अधिकारों का उल्लंघन करने वालों में शामिल है या नहीं? क्या उसके पीछे नमाज़ जायज़ है? (2) जो व्यक्ति अपनी विवाहित पत्नी और अपनी ही संतान दो युवा वयस्क बेटियों को बिना भोजन और भरण-पोषण के छोड़ दे और उनकी सुध न ले, और लोगों की बातों से पता चले कि वे अत्यंत कठिनाई और अपमान में दिन बिता रहे हैं, ऐसे व्यक्ति के बारे में शरीयत का क्या हुक्म है?

उत्तर: (1) यदि पिता कमज़ोर और मोहताज है और यह व्यक्ति उसकी सेवा और सहायता कर सकता है और नहीं करता, और उससे दूर रहता है और उसकी गरीबी और भूख की परवाह नहीं करता, तो वह निश्चित रूप से अवज्ञाकारी (आक़) है और नर्क का पात्र है। ऐसा व्यक्ति इमामत के योग्य नहीं है, उसके पीछे नमाज़ पढ़ना सख्त मकरूह होगा। (2) ऐसा व्यक्ति गुनहगार है और 'हुकूक-उल-इबाद' (बन्दों के अधिकार) के मामले में फँसा हुआ है और नर्क की आग के अज़ाब का हकदार है। हदीस में फ़रमाया गया है:

"किसी व्यक्ति के लिए इतना गुनाह काफी है कि जिसके भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी उस पर हो, उसे वह पूरा न करे।" और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 172: कानपुर मोहल्ला फील खाना, बाज़ार कुहना, मकान सैयद अशरफ साहब वकील, प्रेषक सैयद मोहम्मद आसिफ साहब, 13 ज़ुल-हिज्जा 1318 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि यदि पत्नी के भरण-पोषण आदि का खर्च पति का पिता या कोई रिश्तेदार उठाता हो और वे औरत को उसके माता-पिता के यहाँ जाने की अनुमति दे दें, तो क्या पति पत्नी को जाने से रोक सकता है? और क्या औरत बिना पति की अनुमति के जाने से गुनहगार होगी, या पति का रोकना जायज़ नहीं है और औरत जाने से गुनहगार नहीं होगी? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: यदि मेहर-ए-मुअज्जल (तुरंत देय मेहर) नहीं था या जितना मुअज्जल था वह अदा हो गया, तो शरीयत की ज़रूरतों के कुछ स्थानों को छोड़कर जिन्हें अलग रखा गया है - जैसे कि हर आठवें दिन माता-पिता के यहाँ जाना, अन्य महरमों के यहाँ साल में एक बार दिन के वक्त जाना और रात पति के

घर ही बिताना आदि - इनके अलावा औरत को पति की अनुमति के बिना कहीं जाने की इजाज़त नहीं है। यदि वह जाएगी तो गुनहगार होगी। पति...

1. अल-मुस्तदरक अल-सहिहैन, किताब अल-ज़कात, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 1/215

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم

(۱) جو شخص العمر باپ کو اصلی وطن میں مفلسی اور محتاجی کی حالت میں چھوڑ دے اور اس کو رنج و مصیبت میں ایسے ڈال دے کہ وہ ضعیف العمر اس کے پیچھے در بدر شہر بہ شہر پھرے شریف خاندان ایسے شخص عاق الوالدین اور نافرمانی حقوق الوالدین میں داخل ہے یا نہیں، اس کے پیچھے نماز جائز ہے: (۲) جو شخص اپنی منکوحہ بی بی کو مع دو جوان بالغ لڑکیاں جو کہ اس کے نطفہ سے ہوں بلانان و نفقہ چھوڑ رکھا ہو اور ان کی خبر نہ لیتا ہو اور لوگوں کی تحریر سے معلوم ہوا کہ نہایت سختی و کمال ذلت سے اوقات بسر کر رہے ہیں ایسے شخص کے بارے میں شریعت کا کیا حکم ہے؟

الجواب: (۱) اگر باپ ضعیف و محتاج ہے اور یہ اس کی خدمت و اعانت کر سکتا ہے اور نہ کرے اور اس سے باز رہے اور اس کے فقر و فاقے کی پروا نہ رکھے تو بیشک عاق ہے اور مستحق جہنم، ایسا شخص قابل امامت نہیں، اس کے پیچھے نماز سخت مکروہ ہوگی۔ (۲) ایسا شخص گنہگار اور حقوق العباد میں گرفتار اور مستحق عذاب نار ہے۔ حدیث میں فرمایا: کفی بالمرء اثماً ان یضیع من یقوت - واللہ تعالٰی اعلم۔ (کسی شخص کو یہ گناہ کافی ہے کہ جس کا نفقہ اس کے ذمہ ہو اسے ادا نہ کرے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت))

مسئلہ ۱۷۲: از کانپور محلہ فیل خانہ بازار کہنہ مکان سید اشرف صاحب وکیل مرسلہ سید محمد آصف صاحب ۱۳ ذی الحجہ ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر زوجہ کے نان و نفقہ وغیرہ اخراجات کا بار زوج کا والد یا کوئی عزیز اٹھاتا ہو اور وہ عورت کو والدین کے یہاں جانے کی اجازت دے تو خاوند زوجہ کو جانے سے روک سکتا ہے اور عورت بلا اجازت

خاوند کے جانے سے گنہگار ہوگی یا زوج کو روکنا جائز نہیں اور زوجہ جانے سے گنہگار نہ ہوگی؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر مہر معجل نہ تھا یا جس قدر معجل تھا ادا ہوگیا تو چند مواضع حاجت شرعیہ جن کا استثناء فرما دیا گیا مثلاً والدین کے یہاں آٹھویں دن دیگر محارم کے یہاں سال پیچھے دن کے دن کو جانا اور شب شوہر ہی کے یہاں کرنا وغیرہ ذلک ان کے سوا کسی جگہ عورت کو بے اذن شوہر جانے کی اجازت نہیں، اگر جائے گی گنہگار ہوگی، شوہر

۱ المستدرک علی الصحیحین کتاب الزکوۃ دار الفکر بیروت ۲۱۵/۱

Fatawa Rizwia Volume 13

[The husband] has the right to stop [the wife], even if another person bears the burden of maintenance and that person allows the woman to go; such permission will be considered void, and the husband's prohibition must be followed. Scholars clarify that after the payment of the prompt dowry (Mahr-e-Mu'ajjal), the woman is absolutely bound to the husband; they do not state any restriction or specification regarding the provision of maintenance and taking care of needs. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

(Arabic Text)

It is permissible for her to leave her husband's house for a need, and she has the right to visit her family without his permission as long as she has not received the prompt dowry. She shall not leave except for a right due to her or upon her, or to visit her parents once every week, or her Mahram relatives once every year, or because she is a midwife or a washerwoman [of the dead], but not for any reason other than these. (Summary)

(Urdu Translation)

It is permissible for the wife to leave the husband's house in case of need, and it is permissible to go for visiting her family (parents) without the husband's permission until she has received the prompt dowry. Therefore, she should not go out for any reason other than to receive her right, fulfill a duty, visit her parents once a week, visit Mahram relatives once a year, or work as a midwife or for bathing [the deceased]. (T)

(Arabic Text)

His words "She shall not leave" are the answer to an implied condition, meaning "if she has received it, then she shall not leave," etc.

(Urdu Translation)

The text's saying "She shall not leave" (fala takhruj) is the answer to an implied condition, meaning if she has received the prompt dowry, she should not leave, etc. (T)

A father being responsible for the maintenance of his son and his son's wife is common in our lands, and if some other relatives also voluntarily take responsibility, it does not necessarily mean the husband is refusing to give maintenance. In the situation where a husband has unjustly stopped spending to the point that the woman had to file a complaint, until she requested imprisonment to force the husband to give maintenance, and the ruler, seeing the husband's obstinacy, imprisoned him - in this case, scholars clarify that the woman should stay in the husband's house. Rather, if there is a real fear of mischief for the woman, the

husband can request to keep her with him in the prison. If the room in the prison is separate, the ruler will order the woman to stay there with him. In Hindiyyah, it is stated:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
If the ruler has fixed maintenance for the wife upon the husband, and he refuses to pay it while being well-off, and the woman requests his imprisonment, then [the ruler] has the right to imprison him.	If the ruler has fixed maintenance for the wife upon the husband, and the husband does not pay despite having the means, and the wife demands the husband's imprisonment, then the judge can imprison him.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Mahr (Dowry), Mujtabai Press Delhi, 1/202 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/359

फतावा रिज़विया जिल्द तेरहवीं १३

[पति] उसे रोकने का अधिकार रखता है चाहे कोई अन्य व्यक्ति उसके भरण-पोषण (नफ़क़ा) का भार उठाता हो और वह अन्य व्यक्ति महिला को जाने की अनुमति देता हो; ऐसी अनुमति निरर्थक होगी और पति का निषेध मानना अनिवार्य होगा। विद्वान स्पष्ट करते हैं कि महेर-ए-मुअज्जल (त्वरित मेहर) के भुगतान के बाद महिला पूरी तरह से पति के प्रति बाध्य है; इसमें भरण-पोषण और जरूरतों की देखभाल की कोई शर्त या विशिष्टता नहीं है। 'दुर्रे मुख़्तार' में लिखा है:

(अरबी मूल पाठ)

ज़रूरत के समय पत्नी का पति के घर से निकलना जायज़ है, और जब तक उसने महेर-ए-मुअज्जल प्राप्त न कर लिया हो, तब तक पति की अनुमति के बिना अपने परिवार (माता-पिता) से मिलने जाना जायज़ है। अतः वह अपने अधिकार को प्राप्त करने, किसी कर्तव्य को पूरा करने, हफ़्ते में एक बार माता-पिता से मिलने, साल में एक बार महरम रिश्तेदारों से मिलने, दाई का काम करने या शव नहलाने के अलावा किसी अन्य कारण से बाहर न निकले। (संक्षिप्त)

(उर्दू अनुवाद)

बीवी को ज़रूरत के वक्त ख़ावंद के घर से निकलना जाइज़ है और अपने घर वालों (वालिदैन) की ज़ियारत के लिये ख़ावंद की इजाज़त के बग़ैर निकलना जाइज़ जब तक उसने महर-ए-मुअज्जल वसूल न किया हो, लिहाज़ा वो अपने हक़ की वसूली या अपने ज़िम्मे हक़ की अदायगी या वालिदैन की ज़ियारत हफ़्ते में एक मर्तबा, और ज़ी महरम की ज़ियारत साल में एक मर्तबा, दाया गिरी या ग़ुस्ल देने के बग़ैर किसी और वजह के लिये बाहर न निकले। (त)

(अरबी मूल पाठ)

उनका कहना "वह न निकले" एक छिपी हुई शर्त का उत्तर है, अर्थात् "यदि उसने इसे प्राप्त कर लिया है, तो वह न निकले" आदि।

(उर्दू अनुवाद)

मतन का क़ौल "फ़ला तख़रुज" (तो बाहर न निकले) ये मुक़द्दर शर्त का जवाब है, यानी अगर उसने महर-ए-मुअज्जल वसूल कर लिया हो तो न निकले इल्ख़ (त)

पिता का अपने पुत्र और पुत्र की पत्नी के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व उठाना हमारे क्षेत्रों में सामान्य है, और यदि कुछ अन्य रिश्तेदार भी स्वेच्छा से उत्तरदायित्व उठाते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि पति भरण-पोषण देने से इनकार कर रहा है। उस स्थिति में जहाँ पति ने अन्यायपूर्वक खर्च करना बंद कर दिया, यहाँ तक कि महिला को शिकायत करनी पड़ी, जब तक कि पति को भरण-पोषण देने के लिए मजबूर करने के लिए कारावास की प्रार्थना नहीं की गई और शासक ने पति की हठधर्मिता

देख कर उसे जेल भेज दिया - इस स्थिति में विद्वान स्पष्ट करते हैं कि महिला पति के घर ही रहे। बल्कि, यदि महिला के लिए वास्तव में फसाद का डर हो, तो पति जेल में अपने साथ रखने का अनुरोध कर सकता है। यदि जेल में कमरा अकेला हो, तो शासक महिला को आदेश देगा कि वह वहीं उसके साथ रहे। 'हिन्दिया' में है:

(अरबी मूल पाठ)	**(उर्दू अनुवाद)**
यदि शासक ने पति पर पत्नी का भरण-पोषण निर्धारित किया हो, और वह समर्थ होने के बावजूद उसे देने से इनकार करे, और महिला उसके कारावास की मांग करे, तो शासक को उसे जेल भेजने का अधिकार है।	अगर हाकिम ने ख़ावंद पर बीवी का नफ़क़ा मुक़र्रर कर दिया हो और ख़ावंद इस्तिताअत के बावजूद नफ़क़ा न दे और बीवी ख़ावंद को क़ैद करने का मुतालबा करे तो क़ाज़ी इस को क़ैद कर सकता है,

१ दुर्रे मुख़्तार, बाबुल महर, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/२०२ २ रद्दुल मुहतार, बाबुल महर, दार एहयाउत तुरासुल अरबी बेरुत, २/३५९

पेज ४५५ ऑफ़ ६८८

روکنے کا اختیار رکھتا ہے اگرچہ نفقہ کا بار دوسرا شخص اٹھاتا اور وہ دوسرا عورت کو جانے کی اجازت دیتا ہو اس کی اجازت مہمل ہو گی اور شوہر کی ممانعت واجب العمل۔ علماء تصریح فرماتے ہیں کہ بعد ادائے مہر معجل عورت مطلقاً پابند شوہر ہے اس میں کوئی قید و تخصیص ادائے نفقہ و تکفل حوائج کی نہیں فرماتے۔ در مختار میں ہے :

(عربی عبارت)

لہا الخروج من بیت زوجہا للحاجۃ ولہا زیارۃ اھلہا بلا اذنہ مالم تقبض المعجل فلا تخرج الالحق لہا او علیہا، وزیارۃ ابویہا کل جمعۃ مرۃ او المحارم کل سنۃ اولکونہا قابلۃ او غاسلۃ لافیما عدا ذلک۔ (ملخصاً)

(اردو ترجمہ)

بیوی کو حاجت کے وقت خاوند کے گھر سے نکلنا جائز ہے اور اپنے گھر والوں (والدین) کی زیارت کے لئے خاوند کی اجازت کے بغیر نکلنا جائز جب تک اس نے مہر معجل وصول نہ کیا ہو، لہذا وہ اپنے حق کی وصولی یا اپنے ذمہ حق کی ادائیگی یا والدین کی زیارت ہفتہ میں ایک مرتبہ، اور ذی محرم کی زیارت سال میں ایک مرتبہ، دایہ گیری یا غسل دینے کے بغیر کسی اور وجہ کے لئے باہر نہ نکلے۔ (ت)

(عربی عبارت)

قولہ فلا تخرج جواب شرط مقدر ای فان قبضتہ فلا تخرج الخ۔

(اردو ترجمہ)

متن کا قول "فلا تخرج" (تو باہر نہ نکلے) یہ مقدر شرط کا جواب ہے، یعنی اگر اس نے مہر معجل وصول کر لیا ہو تو نہ نکلے الخ (ت)

والد کا متکفل نفقہ پسر وزن پسر ہونا تو ہمارے بلاد میں معمول ہے اور دیگر بعض اعزہ بھی تبرعاً تکفل کریں تو یہ ضرور نہیں کہ شوہر نفقہ دینے سے منکر ہو علمائے کرام تو اس صورت میں کہ شوہر نے ظلماً انفاق سے دست کشی کی یہاں تک کہ عورت محتاج نالش ہوئی تا آنکہ شوہر کو نفقہ دینے پر مجبور کرنے کے لئے حبس کی درخواست دی اور حاکم نے شوہر کا تعنت دیکھ کر اسے قید کر دیا اس صورت میں تصریح فرماتے ہیں کہ عورت شوہر ہی کے گھر رہے بلکہ عورت پر واقعی اندیشہ فساد ہو تو شوہر قید خانہ میں اپنے پاس رکھنے کی درخواست کر سکتا ہے اور محبس میں مکان تنہا ہو تو حاکم عورت کو حکم دے گا کہ وہیں اس کے پاس رہے۔ ہندیہ میں ہے:

(عربی عبارت) **(اردو ترجمہ)**

لو فرض الحاکم النفقہ علی الزوج فامتنع من دفعھا وھو موسر وطلبت المرأۃ حبسہ لہ ان یحبسہ

اگر حاکم نے خاوند پر بیوی کا نفقہ مقرر کردیا ہو اور خاوند استطاعت کے باوجود نفقہ نہ دے اور بیوی خاوند کو قید کرنے کا مطالبہ کرے تو قاضی اس کو قید کر سکتا ہے،

1 درمختار باب المھر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۲ 2 ردالمحتار باب المھر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۹/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Arabic Box Text]: "Thus it is in al-Bada'i': If [the husband] is imprisoned, maintenance (nafaqah) is not waived from him. The wife is commanded to take a loan so she can spend [on herself] and then recover it from the husband later. If the husband says to the judge, 'Imprison her with me, for I have a vacant space in the prison,' the judge shall not imprison her with him. However, she shall stay patiently in the husband's house while the husband remains imprisoned. Thus it is in al-Muhit."

[Urdu Box Text]: "As it is in Bada'i', and even when he is imprisoned, maintenance will not be waived from his responsibility. The wife will be told to spend by taking a loan so that she can later collect it from her husband. If the husband, while in prison, demands the judge that the wife be kept with him in prison because he has a vacant place here, the judge will not allow the wife to be in prison with him. However, the wife will stay patiently in the husband's house while the husband is in prison, as stated in al-Muhit. (T)"

In al-Durr al-Mukhtar it is stated:

[Arabic Box Text]: "In al-Bahr, from Ma'al al-Fatawa: If corruption (fasad) is feared for her [in solitude], she is imprisoned with him according to the later scholars."

[Urdu Box Text]: "In al-Bahr, it is narrated from Ma'al al-Fatawa: And if there is a fear of corruption for the wife in solitude, then according to the later jurists, the wife will be kept in prison with the husband. (T)"

So when the woman remains bound to her husband even when maintenance is not explicitly given, how can she become independent in the case mentioned in the query? If not giving maintenance were to lift the restriction, then not giving maintenance would cancel the right to maintenance, and the woman would have no right to claim maintenance at all. Maintenance is the compensation for restriction; when there is no restriction, what is the maintenance for? It is stated in al-Durr al-Mukhtar:

[Arabic Box Text]: "Maintenance is the compensation for restriction (ihtibas). For everyone who is restricted for another's benefit, their maintenance is obligatory upon that other person, like a Mufti, a Judge, and an Executor (Wasi). Al-Zayla'i etc."

[Urdu Box Text]: "Maintenance is the substitute for restricting the wife. One who is restricted for someone else's benefit, their maintenance is upon the one who

restricts them, just like a Mufti and an Executor, etc. Al-Zayla'i. I say: (I tell you) let it not be an illusion for you that since maintenance is the reward for restriction, if maintenance becomes non-existent, restriction will also become non-existent. This illusion is incorrect because maintenance is derived from restriction. Therefore, the obligation of restriction on her precedes the obligation of maintenance on him, not that the restriction..."

[Arabic Text at Bottom of Box]: "I say: Beware of imagining that since maintenance is the compensation for imprisonment (ihtibas), if it is absent, [restriction] is also absent. This is because its obligation is derived from it; hence, the obligation of restriction upon her precedes the obligation of maintenance upon him, not that the restriction [depends on maintenance]..."

Footnotes: 1. Fatawa Hindiyya, Chapter One on Maintenance of the Wife, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/552. 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/267. 3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/266.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी बॉक्स पाठ]: "बदाइ' में इसी तरह है: यदि [पति] कैद है, तो उससे भरण-पोषण (नफ़क़ा) समाप्त नहीं होता। पत्नी को ऋण लेने का आदेश दिया जाता है ताकि वह खर्च कर सके और बाद में पति से उसे वसूल कर सके। यदि पति न्यायाधीश से कहे, 'उसे मेरे साथ कैद करें, क्योंकि मेरे पास जेल में एक खाली जगह है,' तो न्यायाधीश उसे उसके साथ कैद नहीं करेगा। हालांकि, वह पति के घर में धैर्यपूर्वक रहेगी जबकि पति कैद रहेगा। मुहीत में ऐसा ही है।"

[उर्दू बॉक्स पाठ]: "जैसा कि बदाइ' में है, और जब कैद कर दिया गया हो तब भी नफ़क़ा उसके ज़िम्मे से साक़ित (समाप्त) न होगा, और पत्नी से कहा जाएगा कि वह ऋण लेकर खर्च करे ताकि बाद में पति से उसे वसूल कर सके। यदि पति कैद में न्यायाधीश से यह माँग करे कि पत्नी को कैद में मेरे साथ रखा जाए क्योंकि यहाँ मेरे पास खाली जगह है, तो न्यायाधीश पत्नी को उसके साथ कैद में नहीं रखेगा, हालांकि पत्नी पति के घर में सब्र से रहेगी और पति कैद होगा, जैसा कि मुहीत में है। (त)"

'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[अरबी बॉक्स पाठ]: "अल-बहर में मा'ल अल-फ़तावा से उद्धृत है: और यदि उसके लिए [अकेलेपन में] बिगड़ने (फ़साद) का डर हो, तो बाद के विद्वानों (मुताअख़िरीन) के अनुसार उसे उसके साथ कैद किया जाएगा।"

[उर्दू बॉक्स पाठ]: "बहर में मा'ल अल-फ़तावा से मनक़ूल (उद्धृत) है: और अगर पत्नी को तन्हाई में फ़साद (बुराई) का ख़तरा हो तो मुताअख़िरीन फ़ुक़हा के नज़दीक पत्नी को पति के पास कैद में रखा जाएगा। (त)"

तो जब स्पष्ट रूप से नफ़क़ा न दिए जाने पर भी औरत पति की पाबंद रही, तो सवाल की सूरत में वह कैसे स्वतंत्र हो सकती है? यदि नफ़क़ा न देना पाबंदी हटाने वाला हो, तो नफ़क़ा न देना नफ़क़ा को समाप्त करने वाला हो जाएगा और औरत को नफ़क़ा का दावा करने का कोई अधिकार नहीं रहेगा, क्योंकि नफ़क़ा पाबंदी का बदला है। जब पाबंदी नहीं, तो नफ़क़ा किस बात का? दुर्रे मुख़्तार में है:

[अरबी बॉक्स पाठ]: "नफ़क़ा पाबंदी (इहतिबास) का बदला है। हर वह व्यक्ति जो दूसरे के लाभ के लिए पाबंद है, उसका नफ़क़ा उस दूसरे पर अनिवार्य है, जैसे मुफ़्ती, न्यायाधीश और वसी (वसीयत का निष्पादक), ज़ैलई आदि।"

[उर्दू बॉक्स पाठ]: "नफ़क़ा पत्नी को पाबंद करने का बदला है, जो किसी दूसरे के फ़ायदे के लिए पाबंद हो उसका नफ़क़ा पाबंद करने वाले पर होता है जैसा कि मुफ़्ती और वसी, ज़ैलई आदि। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) तुम्हें यह भ्रम न हो कि जब नफ़क़ा पाबंदी का बदला है, तो नफ़क़ा के न रहने पर पाबंदी भी खत्म हो जाएगी। यह भ्रम इसलिए सही नहीं है क्योंकि नफ़क़ा पाबंदी पर निर्भर है। अतः पत्नी पर पाबंदी पहले अनिवार्य होगी, उसके बाद पति पर नफ़क़ा अनिवार्य होगा, न कि पाबंदी..."

[बॉक्स के नीचे अरबी पाठ]: "अक़ूल: और सावधान रहें कि यह न सोचें कि चूंकि नफ़क़ा कैद का बदला है, इसलिए यदि वह अनुपस्थित है, तो वह भी अनुपस्थित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका अनिवार्य होना उससे निकला है; अतः उस पर कैद की अनिवार्यता उस पर नफ़क़ा की अनिवार्यता से पहले है, न कि यह कि कैद..."

पादलेख (Footnotes): 1. फ़तावा हिंदिया, पत्नी के भरण-पोषण पर पहला अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/552। 2. दुर्रे मुख़्तार, नफ़क़ा का अध्याय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/267। 3. दुर्रे मुख़्तार, नफ़क़ा का अध्याय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/266।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ 13

کذا فی البدائع، واذا حبسه لاتسقط عنه النفقة و تؤمر بالاستدانة حتی ترجع علی الزوج فان قال الزوج للقاضی احبسها معی فان لی موضعا فی الحبس خالیا فالقاضی لا یحبسها معه ولکنها تصبر فی منزل الزوج ویحبس الزوج کذا فی المحیط' جیسا کہ بدائع میں ہے ، اور جب قید کردیا ہو تب بھی نفقہ اس کے ذمہ سے ساقط نہ ہوگا، اور بیوی کو کہا جائے گا کہ وہ قرض لے کر خرچ کرے تاکہ بعد میں خاوند سے اس کو وصول کر سکے، اگر خاوند قید میں قاضی سے یہ مطالبہ کرے کہ بیوی کو قید میں میرے ساتھ رکھا جائے کیونکہ یہاں میرے پاس خالی جگہ ہے تو قاضی بیوی کو اس کے ساتھ قید میں نہ دے گا تاہم بیوی خاوند کے گھر میں صبر سے رہے گی اور خاوند قید ہوگا، جیسا کہ محیط میں ہے (ت)

در مختار میں ہے: وفی البحر عن مال الفتاوی ولو خیف علیها الفساد تحبس معه عند المتأخرین-[2] بحر میں مآل الفتاوی سے منقول ہے: اور اگر بیوی کو تنہائی میں فساد کا خطرہ ہو تو متاخرین فقہاء کے نزدیک بیوی کو خاوند کے پاس قید میں رکھا جائے گا۔ (ت)

تو جب صریح نفقہ نہ دینے پر بھی عورت پابندِ شوہر رہی تو صورت سوال میں کیونکر خود مختار ہو سکتی ہے نفقہ نہ دینا رافع پابندی ہو تو نفقہ نہ دینا مسقط نفقہ ہو جائے اور عورت کو ہر گز دعوی نفقہ کا اختیار نہ رہے کہ نفقہ جزائے پابندی ہے جب پابندی نہیں نفقہ کس بات کا ہے۔ در مختار میں ہے:

النفقة جزاء الاحتباس وکل محبوس لمنفعة غیره یلزمه نفقته کمفت وقاض و وصی زیلعی الخ۔ نفقہ بیوی کو پابند کرنے کا بدل ہے جو کسی غیر کے فائدہ کے لئے پابند ہو اس کا نفقہ پابند کرنے

والے پر ہوتا ہے جیسا کہ مفتی اور وصی، زیلعی الخ اقول : (میں کہتا ہوں) تجھے یہ وہم نہ ہو کہ جب نفقہ پابندی کی جزا ہے تو نفقہ معدوم ہو جانے پر پابندی بھی معدوم ہو جائے گی، یہ وہم اس لئے درست نہیں کہ نفقہ پابندی پر متفرع ہوتا ہے تو بیوی پر پابندی پہلے لازم ہو گی اسکے بعد شوہر پر نفقہ لازم ہو گا نہ یہ کہ پابندی

اقول: واياك ان تتوهم ان النفقة اذا كانت جزاء الحبس فاذا عدمت عدم وذلك لان وجوبها متفرع عنه فوجوب الاحتباس عليها متقدم على وجوب النفقة عليه لا ان الاحتباس

1 فتاوی ہندیہ الفصل الاول فی نفقة الزوجة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۵۲ 2 در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۷ 3 در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۶

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13.

[Box 1 Content] Arabic: It is branched upon maintenance; if it is absent, [something else] is absent. In summary, if what is necessary is the existence of maintenance, not its actual occurrence, then due to the branch of occurrence, the requirement is not removed - and Allah Almighty knows best. Urdu: It is dependent on maintenance; if maintenance is absent, then imprisonment also becomes absent. However, if maintenance is made mandatory as a constraint, its obligation will remain; its payment will not be such that the constraint ends when the payment ceases. And Allah Almighty knows best (T).

Issue 173: 30 Muharram al-Haram 1319 AH. If a person, after his marriage, reveals that before the marriage he had an illicit relationship (adultery) with his wife's mother, thus claiming his marriage was void and his wife has no rights over him due to this reason. He reveals this matter after fifteen to twenty years, during which time children from the said wife were also present. What do the scholars of religion say regarding such a person? That is, is his wife entitled to her dower (Mahr) and maintenance (nan-o-nafqah) or not, as she was unaware of her husband's past action? Provide a ruling and be rewarded.

The Answer: Due to this statement of the husband, the corruption (annulment) of the marriage was immediately decreed.

[Box 2 Content] Arabic: In Al-Durr al-Mukhtar from Al-Khulasah: It was said to someone, "What did you do with your wife's mother?" He replied, "I had intercourse with her." The prohibition is established, and his claim that he lied, even if jokingly, is not believed. Urdu: It is narrated in Durr al-Mukhtar from Al-Khulasah that a husband was asked, "What action did you take with your wife's mother (mother-in-law)?" In response, he said, "I had intercourse with her." So, based on his statement and confession, his wife becomes forbidden for him. Thereafter, his claim that he spoke a lie in jest will not be acceptable (T).

It became mandatory for him to separate from the woman immediately. An 'Iddah (waiting period) is mandatory for the woman from the day of separation. As long as she remains in 'Iddah, her food and maintenance remain obligatory upon the husband. The husband's claim that she has no right over him is pure falsehood.

[Box 3 Content] Arabic: In Radd al-Muhtar from Al-Bahr: The summary is that separation is either from his side or from her side. If it is from his side, she is entitled

to maintenance absolutely, whether it was through sin or not, and whether it was divorce or annulment. Urdu: It is narrated in Radd al-Muhtar from Bahr that the separation between husband and wife will either be due to the husband's action or the wife's action. If it is from the husband's side, then the wife must be given maintenance in every case, whether the husband's action involved sin or not.

Footnote: 1 Durr al-Mukhtar, Section on Prohibited Relationships, Mujtabai Press, Delhi, 1/188. Page 457 of 688

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13.

[बॉक्स 1 की सामग्री] अरबी: यह भरण-पोषण (नफ़क़ा) पर आधारित है; यदि वह अनुपस्थित है, तो [कुछ और] अनुपस्थित है। संक्षेप में, यदि आवश्यकता भरण-पोषण के अस्तित्व की है, न कि उसकी वास्तविक घटना की, तो घटना की शाखा के कारण, आवश्यकता समाप्त नहीं होती है - और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। उर्दू: यह भरण-पोषण पर निर्भर है कि यदि भरण-पोषण समाप्त हो जाए, तो कारावास भी समाप्त हो जाता है। हालाँकि, यदि भरण-पोषण को पाबंदी पर अनिवार्य कर दिया जाए, तो उसका अनिवार्य होना समाप्त नहीं होगा; उसकी अदायगी ऐसी नहीं होगी कि अदायगी खत्म हो जाने पर पाबंदी खत्म हो जाए। अल्लाह बेहतर जानता है (T)।

मसला 173: 30 मुहर्रम अल-हराम 1319 हिजरी। यदि कोई व्यक्ति निकाह के बाद यह प्रकट करे कि निकाह से पहले उसकी अपनी पत्नी की माता के साथ अवैध संबंध (व्यभिचार) थे, इसलिए मेरा निकाह शून्य है और इस कारण मेरी पत्नी का मुझ पर कोई अधिकार नहीं है। वह यह मामला पंद्रह-बीस वर्षों के बाद प्रकट करता है, जबकि उनकी संतान भी मौजूद है। धर्म के विद्वान ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या कहते हैं? क्या उसकी पत्नी मेहर और भरण-पोषण की हकदार है या नहीं, जबकि उसे अपने पति के इस कृत्य की जानकारी नहीं थी? उत्तर दें और पुण्य कमाएँ।

उत्तर: पति के इस बयान से निकाह के अमान्य (फ़ासिद) होने का तुरंत आदेश हो गया।

[बॉक्स 2 की सामग्री] अरबी: दुर्र-ए-मुख्तार में 'खुलासा' से उद्धृत: किसी से पूछा गया, "तुमने अपनी पत्नी की माँ के साथ क्या किया?" उसने उत्तर दिया, "मैंने उसके साथ संभोग किया।" इससे निषेध (हुरमत) स्थापित हो जाता है, और उसका यह दावा कि उसने झूठ बोला, चाहे मज़ाक में ही क्यों न हो, स्वीकार नहीं किया जाता। उर्दू: दुर्र-ए-मुख्तार में खुलासा से उद्धृत है कि पति से पूछा गया, "तुमने अपनी पत्नी की माँ (सास) के साथ क्या कार्रवाई की?" उसने जवाब में कहा, "मैंने उसके साथ संभोग किया।" तो उसके बयान और इक़रार पर पत्नी उस पर हराम हो जाएगी। इसके बाद उसका यह कहना कि उसने मज़ाक में झूठ बोला था, स्वीकार्य नहीं होगा (T)।

उस पर अनिवार्य हो गया कि वह तुरंत उस स्त्री से अलग हो जाए। स्त्री पर अलग होने के दिन से इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है। जब तक वह इद्दत में रहेगी, उसका भरण-पोषण पति पर अनिवार्य रहेगा। पति का यह कहना कि उसका मुझ पर कोई अधिकार नहीं है, सरासर झूठ है।

[बॉक्स 3 की सामग्री] अरबी: रद्द-उल-मुहतार में 'बहर' से उद्धृत: सारांश यह है कि अलगाव या तो पति की ओर से है या पत्नी की ओर से। यदि यह पति की ओर से है, तो पत्नी पूर्णतः भरण-पोषण की हकदार है, चाहे वह पाप के माध्यम से हो या नहीं, और चाहे वह तलाक़ हो या फ़स्ख़। उर्दू: रद्द-उल-मुहतार में बहर से उद्धृत है कि पति और पत्नी के बीच अलगाव या तो पति की कार्रवाई के कारण होगा या पत्नी की कार्रवाई के कारण। यदि यह पति की ओर से है, तो पत्नी को हर हाल में भरण-पोषण देना होगा, चाहे पति की कार्रवाई गुनाह हो या न हो।

पादलेख: 1 दुर्र-ए-मुख्तार, हराम रिश्तों का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/188। पृष्ठ 457 / 688

[متنِ باکس ۱] عربی: متفرع علی الانفاق فان عدم عدم، وبالجملۃ ان کان اللازم فوجود الانفاق لاوقوعہ فبفرع الوقوع لا یرتفع الملزوم - واللہ تعالی اعلم۔ اردو: نفقہ پر متفرع ہے کہ نفقہ معدوم ہو جائے تو حبس بھی معدوم ہو جائے تاہم اگر نفقہ کو پابندی پر لازم قرار دیا جائے تو نفقہ کا وجوب لازم اس کی ادائیگی لازم نہ ہو گی کہ ادائیگی ختم ہو جانے پر پابندی ختم ہو جائے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۷۳: ۳۰ محرم الحرام ۱۳۱۹ھ اگر کوئی شخص اپنے نکاح کے بعد یہ ظاہر کرے کہ میری زوجہ کی مادر کے ساتھ قبل نکاح سے میری آشنائی یعنی سابقہ زناکاری تھی اس واسطے میرا نکاح باطل ہوا میری زوجہ کا اس سبب سے مجھ پر کچھ حق نہیں ہے اور یہ معاملہ پندرہ بیس برس کے بعد ظاہر کرے کہ اولاد بھی زوجہ مذکور سے موجود تھی تو ایسے شخص کے واسطے علمائے دین کیا فرماتے ہیں یعنی زوجہ اس کی دین مہر و نان و نفقہ کی مستحق ہے یا نہیں جس کے علم میں اپنے شوہر کی یہ حرکت نہ تھی۔ بینوا توجروا۔ الجواب: شوہر کے اس بیان سے نکاح کے فساد کا فوراً حکم ہو گیا،

[متنِ باکس ۲] عربی: فی الدر المختار عن الخلاصۃ قیل لہ ما فعلت بام امرأتك فقال جامعتھا تثبت الحرمۃ ولا یصدق انہ کذب ولو ھازلا۔ ۱ اردو: در مختار میں خلاصہ سے منقول ہے کہ خاوند سے پوچھا گیا کہ تو نے اپنی بیوی کی ماں (ساس) سے کیا کاروائی کی ہے تو جواب میں اس نے کہا میں نے اس سے جماع کیا ہے تو اس کے بیان واقرار پر بیوی اس پر حرام ہو جائے گی، اس کے بعد اس کا یہ کہنا کہ میں نے مذاق میں جھوٹ بولا قابل قبول نہ ہو گا۔ (ت)

اس پر لازم ہو گیا کہ عورت کو فوراً جدا کر دے اور عورت پر روزِ متارکہ سے عدت لازم ہے، جب تک عدت میں رہے گی اس کا نان و نفقہ شوہر پر لازم رہے گا، شوہر کا کہنا کہ اس کا کوئی حق مجھ پر نہیں محض جھوٹ ہے۔

[متنِ باکس ۳] عربی: فی ردالمحتار عن البحر الحاصل ان الفرقة اما من قبله او من قبلها فلو من قبله فلها النفقة مطلقا سواء كان بمعصية اولا، طلاقا او فسخا اردو: ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے کہ خاوند بیوی میں فرقت خاوند کی کاروائی کی وجہ سے ہو گی یا بیوی کی کاروائی سے ہو گی اگر خاوند کی طرف سے ہو تو بیوی کو ہر حال میں نفقہ دینا ہو گا خاوند کی کاروائی گناہ ہو یا نہ ہو،

۱ درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ Page 457 of 688

Fatawa Rizvia, Volume 13

[Arabic Box 1] "If the separation is from her side, and if it was due to a sinful act, then there is no maintenance for her, but she has the right to residence in all cases. - 1" [Urdu Explanation in Box 1] Whether it is divorce or annulment, and if the separation proceedings were initiated by the wife and annulment became mandatory, then if her action was a crime, she will not receive maintenance; however, she will get housing in all situations. (T)

As for the dower (Mahr), if it is admitted that the husband had committed adultery with her mother before marriage, then in this case, whichever is less between the mahr al-mithl (customary dower) of this woman and the fixed dower will be payable. For example, if the mahr al-mithl is one thousand rupees and two thousand were fixed, then one thousand will be payable, and if the mahr al-mithl is two thousand and one thousand was fixed, then still it will be one thousand.

[Arabic Box 2] "In 'Al-Tanwir': In an invalid marriage, mahr al-mithl is not mandatory without consummation, and this mahr al-mithl shall not exceed the specified dower. - 2" [Urdu Explanation in Box 2] In 'Tanwir' it is: in an invalid marriage, mahr al-mithl will not be mandatory without consummation, and this mahr al-mithl will not be more than the fixed dower. (T)

And if she denies it, she will receive the full dower that was fixed. This is the same issue as when she accuses him of lying in the chain of narration (This issue is for the case when the wife declares the husband a liar. T). And Allah, the Exalted, knows best.

Problem 177: 30 Ramadan al-Mubarak 1320 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman was expelled by her husband. She worked hard for three years to support herself. Afterward, a settlement was reached that if she lived separately in a house as instructed (because the man has another wife), he would pay her ten rupees per month. According to this settlement, the husband paid the monthly amount for two years and some days, then stopped for eleven months and some days. The woman sent a notice; the husband received it and kept it. Some days later, he came to the woman's house, caused a great disturbance, and then gave three divorces. Now, it should be known from the religious scholars whether she is authorized to take from him the maintenance that was due before the divorce, and whether the dower is also due from him or not?

The Answer: By divorce, the full and complete dower has become payable. From the statement of the question, it appears that the fault lies with the man; he simply does not want to provide maintenance. Therefore, in this situation, maintenance is obligatory. This is according to the fatwas of Durr-e-Mukhtar, Allama Tahtawi, Allama Shami, and great scholars, consistent with the reliance and preference of the researcher author of Bahr al-Ra'iq and researcher Shurunbulali, and the explicit correction of the author of Khizanat al-Muftin (may Allah have mercy on them).

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/269
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Dower, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/201

फतावा रजविया, खंड १३

[अरबी बॉक्स १] "यदि यह (अलगाव) उसकी ओर से है, और यदि यह किसी पापपूर्ण कार्य के कारण था, तो उसके लिए कोई भरण-पोषण नहीं है, लेकिन उसे सभी मामलों में निवास का अधिकार है। - १" [बॉक्स १ में उर्दू स्पष्टीकरण] चाहे वह तलाक हो या विच्छेद, और यदि विच्छेद की कार्यवाही पत्नी द्वारा शुरू की गई थी और विच्छेद अनिवार्य हो गया था, तो यदि उसकी कार्यवाही अपराध थी, तो उसे भरण-पोषण नहीं मिलेगा; हालाँकि, उसे सभी स्थितियों में आवास मिलेगा। (त)

जहाँ तक महर का सवाल है, यदि यह स्वीकार कर लिया जाता है कि पति ने विवाह से पहले उसकी माँ के साथ व्यभिचार किया था, तो इस मामले में, इस स्त्री के महर-ए-मिस्ल (प्रथागत महर) और निर्धारित महर में से जो भी कम हो, वह देय होगा। उदाहरण के लिए, यदि महर-ए-मिस्ल एक हज़ार रुपये है और दो हज़ार तय किए गए थे, तो एक हज़ार देय होंगे, और यदि महर-ए-मिस्ल दो हज़ार है और एक हज़ार तय किए गए थे, तो भी एक हज़ार ही होंगे।

[अरबी बॉक्स २] "'अल-तन्वीर' में: एक अमान्य विवाह में, संभोग के बिना महर-ए-मिस्ल अनिवार्य नहीं है, और यह महर-ए-मिस्ल निर्धारित महर से अधिक नहीं होगा। - २" [बॉक्स २ में उर्दू स्पष्टीकरण] 'तन्वीर' में है: फासिद (अमान्य) निकाह में संभोग के बिना महर-ए-मिस्ल वाजिब नहीं होगा और यह महर-ए-मिस्ल, तयशुदा महर से ज़्यादा नहीं होगा। (त)

और यदि वह इसे नकारती है, तो उसे पूरा महर मिलेगा जो तय किया गया था। यह वही मसला है जब वह उसे सनद में झूठ बोलने का आरोप लगाती है (यह मसला उस सूरत में है जब बीवी खावंद (पति) को झूठा करार दे। त)। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १७७: ३० रमज़ान अल-मुबारक १३२० हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले के बारे में क्या कहते हैं: एक महिला को उसके पति ने निकाल दिया था। उसने अपना भरण-पोषण करने के लिए तीन साल तक कड़ी मेहनत की। बाद में, एक समझौता हुआ कि यदि वह निर्देशानुसार एक अलग घर में रहती है (क्योंकि उस व्यक्ति की दूसरी पत्नी है), तो वह उसे दस रुपये प्रति माह देगा। इस समझौते के अनुसार, पति ने दो साल और कुछ दिनों तक मासिक राशि का भुगतान किया, फिर ग्यारह महीने और कुछ दिनों तक नहीं दिया। महिला ने एक नोटिस भेजा; पति ने उसे प्राप्त किया और रख लिया। कुछ दिनों बाद, वह महिला के घर आया, बहुत हंगामा किया, और फिर तीन तलाक दे दिए। अब,

धार्मिक विद्वानों से यह ज्ञात होना चाहिए कि क्या वह तलाक से पहले के बकाया भरण-पोषण को उससे लेने के लिए अधिकृत है या नहीं, और क्या महर भी उसके ज़िम्मे देय है या नहीं?

उत्तर: तलाक से पूरा और मुकम्मल महर देय हो गया है। प्रश्न के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि दोष पुरुष का है; वह बस भरण-पोषण नहीं देना चाहता। इसलिए, इस स्थिति में, भरण-पोषण अनिवार्य है। यह दुर्र-ए-मुख्तार, अल्लामा तहतावी, अल्लामा शामी और महान विद्वानों के फतवों के अनुसार है, जो बह्र अल-राइक के शोधकर्ता लेखक और शोधकर्ता शरुन्बुलाली की विश्वसनीयता और प्राथमिकता के अनुरूप है, और खिज़ानत अल-मुफ़्तीन के लेखक का स्पष्ट सुधार है (अल्लाह उन पर दया करे)।

1. रद अल-मुह्तार, भरण-पोषण का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/२६९
2. दुर्रे मुख्तार, महर का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/२०१

पृष्ठ ४५८ का ६८८

1 - [عربی باکس ۱] وان کانت من قبلھا فان کانت بمعصیۃ فلا نفقۃ لھا ولھا السکنی فی جمیع الصور [اردو وضاحت] طلاق ہو یا فسخ ہو، اور اگر بیوی کی طرف سے فرقت کی کاروائی ہوئی ہو فسخ واجب ہوا تو اگر اسکی کاروائی جرم تھی تو اس کو نفقہ نہیں، تاہم اس کو رہائش تمام صورتوں میں ملے گی۔ (ت)

رہا مہر اگر تسلیم کرے کہ شوہر نے اس کی ماں سے پیش از نکاح زنا کیا تھا تو اس صورت میں جو مہر مثلا اس عورت کا ہو اور جو مقرر ہوا ہو ان دونوں میں جو کم ہے وہ دینا آئے گا مثلاً مہر مثل ہزار روپے ہے اور دو ہزار بندھے تھے تو ہزار دینے آئیں گے اور مہر مثل دو ہزار ہے اور ہزار بندھے تھے تو بھی ہزار ہی ہوں گے،

2 - [عربی باکس ۲] فی التنویر یجب مھر المثل فی نکاح فاسد بالوطئ لا بغیرہ ولم یزد علی المسمی [اردو وضاحت] تنویر میں ہے: فاسد نکاح میں وطی کے بغیر مہر مثل واجب نہ ہوگا اور یہ مہر مثل، مقررہ مہر سے زائد نہ ہوگا۔ (ت)

اور اگر تکذیب کرے تو جو مہر بندھا تھا وہ کامل پائے گی وہی مسئلۃ ماذا کذبتہ فی الاسناد (یہ مسئلہ اس صورت میں ہے جب بیوی خاوند کو جھوٹا قرار دے۔ ت) واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۷: ۳۰ رمضان المبارک ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عورت کو خاوند نے نکال دیا وہ تین برس تک محنت کر کے تن پروری کرتی رہی بعدہ یہ تصفیہ ہوا کہ اگر تو میرے کہنے پر الگ ایک مکان میں رہے جس طرح کہ رہتی ہے (اس لئے کہ اس شخص کے دوسری بی بی ہے) تو میں تجھ کو دس روپیہ ماہوار دیتا رہوں گا، بموجب اس تصفیہ کے خاوند

نے دو سال اور کچھ دن تک ماہوار دیا یا گیارہ ماہ کچھ دن سے نہ دیا عورت نے نوٹس دیا خاوند نے لے کر رکھ لیا اور کچھ دن بعد عورت کے مکان پر آکر بہت فساد مچایا بعدہ تین طلاقیں دے دیں، اب علمائے دین سے معلوم ہونا چاہئے کہ وہ جو اس کے ذمے واجب الادا یعنی طلاق سے پیشتر کا نفقہ اس سے لینے کی عورت پر مجاز ہے یا نہیں اور مہر بھی اس کے ذمہ واجب الادا ہے یا نہیں؟

الجواب: طلاق سے مہر تمام و کمال واجب الادا ہو گیا اور بیان سوال سے ظاہر یہی ہوتا ہے کہ قصور مرد کا ہے یہی اسے نفقہ دینا نہیں چاہتا تو اس صورت میں نفقہ واجب ہے، درمختار و علامہ طحطاوی و علامہ شامی و علمائے کبار کا فتویٰ موافق اعتماد و ترجیح محقق صاحب بحر الرائق و محقق شرنبلالی و تصحیح صریح صاحب خزانہ المفتین رحمہم اللہ تعالی

1 ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۹/۲ 2 در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۱/۱

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

The consensus is that the monthly amount mutually agreed upon remains the woman's right to receive until it is paid. It is stated in Durr al-Mukhtar: "Al-Shurunbulali, in his commentary on Al-Wahbaniyah, affirmed the discussion in Al-Bahr that maintenance is not forfeited even in the case of an irrevocable (bain) divorce. He stated: 'This is the most correct view, and he refuted what Ibn al-Shihnah mentioned; thus, one should reflect when issuing a fatwa.'" (T)

It is stated in Radd al-Muhtar: "The man's circumstances should be examined: did he act thus to evade maintenance or, for instance, due to her ill-temper? If the former, he is bound by it; if the latter, he is not. This is what Al-Maqdisi stated, and it is appropriate to rely upon it." (Taḥṭāwī) (T)

It is stated in Khizanat al-Muftin: "Fixed maintenance is not forfeited by divorce according to the most correct opinion. And Allah Almighty knows best."

Issue 175: From Saroli, District Bareilly, sent by Mr. Ishaq Ahmed, dated 5th Dhu al-Hijjah 1338 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say regarding this matter: A man's wife, due to a domestic quarrel, has been away at her parents' home for two years, angry with her mother-in-law and father-in-law. The wife is content with her husband, but the husband is unwilling to leave his parents. Consequently, the woman refuses to return to her in-laws' home, despite her mother-in-law and father-in-law visiting her house several times to bring her back; she did not return. Now, the boy's parents...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/277. 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/259. 3 Khizanat al-Muftin, Section on Maintenance, Manuscript, 1/102.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

सबकी यही राय है कि जो मासिक राशि आपसी सहमति से तय हुई थी, जब तक वह मिल न जाए, औरत को उसे लेने का अधिकार है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "अश-शुरुनबुलाली ने अपनी 'अल-वहबानिया' की व्याख्या में 'अल-बहर' की उस बहस को सही करार दिया है कि तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) होने पर भी निर्वाह भत्ता (नफ़क़ा) समाप्त नहीं होगा। उन्होंने कहा कि यही सबसे सही विचार है और इब्न-ए-शिहना ने जो ज़िक्र किया, उन्होंने उसका खंडन किया है। अतः फतवा देते समय इस पर विचार करना चाहिए।" (त)

'रद्दुल मुहतार' में है: "पुरुष की स्थिति पर गौर किया जाना चाहिए: क्या उसने ऐसा निर्वाह भत्ते से बचने के लिए किया है या उदाहरण के लिए स्त्री के खराब स्वभाव के कारण? यदि पहला कारण है, तो वह उसके लिए बाध्य है; यदि दूसरा है, तो वह बाध्य नहीं है। यह अल-मक़दिसी का कथन है और इसी पर भरोसा करना उचित है।" (तहतावी) (त)

'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में है: "तयशुदा निर्वाह भत्ता तलाक के कारण समाप्त नहीं होगा, सबसे सही कथन के अनुसार। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।"

मसाला १७५: सरोली, ज़िला बरेली से, प्रेषक जनाब इशाक अहमद साहब, दिनांक ५ ज़ुल हिज्जा १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति की पत्नी घरेलू झगड़े के कारण अपनी सास और ससुर से नाराज़ होकर दो साल से मायके चली गई है। वह पत्नी अपने पति से तो खुश है, लेकिन पति अपने माता-पिता को छोड़ना नहीं चाहता। इस वजह से वह स्त्री अपनी ससुराल नहीं आ रही है, बावजूद इसके कि कई बार उसके सास और ससुर उसे विदा कराने के लिए उसके घर गए, लेकिन वह नहीं आई। अब लड़के के माता-पिता...

१ दुर्रे मुख्तार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/२७७ २ रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, दारुल इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, २/२५९ ३ ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन, फ़स्ल फ़ीन नफ़क़ा, कलम संस्करण, १/१०२

पृष्ठ ४५९ / ६८८

جمیعاً یہی ہے کہ جو ماہوار باہم دونوں میں رضامندی سے قرار پایا تھا جب تک کانہ ملاسب لینے کا عورت کو اختیار ہے۔ درمختار میں ہے: صحیح الشرنبلالی فی شرحہ للوھبانیۃ مابحثہ فی البحر من عدم السقوط ولو بائناً قال ھوالاصح ورد ماذکرہ ابن الشحنۃ فیتأمل عند الفتوٰی ۱۔ شرنبلالی نے وہبانیۃ کی شرح میں بحر کی اس بحث کو، کہ اگرچہ بائنہ طلاق ہو تو بھی نفقہ ساقط نہ ہوگا، صحیح قرار دیا ہے، اور کہا کہ یہی اصح ہے اور ابن شحنہ نے جو ذکر کیا اس کا انہوں نے رد کیا ہے، تو فتوٰی دیتے وقت غور کرنا چاہئے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: بأن ینظر فی حال الرجل ھل فعل ذلک تخلصاً من النفقۃ اولسوء اخلاقھا مثلاً فان کان الاول یلزم بھا وان کان الثانی لایلزم ھذا ماقالہ المقدسی وینبغی التعویل علیہ ۲۔طـ ایسی کاروائی میں قاضی کو غور کرنا چاہئے کہ کیا خاوند مثلاً یہ کاروائی نفقہ سے چھٹکارا حاصل کرنے کے لئے کی ہے یا واقعتاً بیوی بدفطرت ہے، اگر پہلی وجہ ہو تو قاضی بیوی کے لئے نفقہ کو لازم قرار دے اور اگر دوسری وجہ ہو تو پھر لازم نہ کرے، یہ مقدسی کا بیان ہے اور اسی پر اعتماد چاہئے۔ طحطاوی۔ (ت)

خزانہ المفتیین میں ہے: المفروضۃ لاتسقط بالطلاق علی الاصح ۳۔ واللہ تعالی اعلم۔ مقررہ نفقہ طلاق کی وجہ سے ساقط نہ ہوگا اصح قول پر۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۵: از سرولی ضلع بریلی مرسلہ جناب عشاق احمد صاحب مورخہ ۵ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ

چہ می فرمایند علمائے دین و مفتیانِ شرع متین دریں مسئلہ کہ ایک شخص کی عورت عرصہ دو سال سے اپنے ساس اور سسر سے ناراض ہو کر میکے چلی گئی خانگی جھگڑے پر، اور وہی

عورت اپنے خاوند سے رضامند ہے لیکن خاوند اس کا پانے والدین کو چھوڑنا نہیں چاہتا اس وجہ سے وہ عورت اپنی سسرال میں نہیں آتی با وجودیکہ چند مرتبہ اس کے ساس اور سسر رخصت کے واسطے اس عورت کے مکان پر گئے لیکن نہیں آئی ، اب لڑکے کے والدین

۱ درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۷۷ ۲ ردالمحتار باب النفقۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۹/۲ ۳ خزانہ المفتیین فصل فی النفقۃ قلمی نسخہ ۱/ ۱۰۲

Fatawa Rizvia Volume 13 | 13

Question: Someone wants to marry for a second time and does not wish to divorce the first wife. In this situation, can the first wife, according to Sharia, claim her dower (mahr) through a legal complaint? And if a divorce is given, will she be entitled to the mahr or not, as her parents are the ones asking for the divorce? Explain and be rewarded.

The Answer: If a divorce is given, the woman will be able to claim the mahr. Otherwise, if the mahr is not set as prompt (mu'ajjal) nor has any time limit been fixed for it, the woman cannot claim it before death or divorce. Since she went to her parents' house in anger and did not return when called, her maintenance (food and clothing) is also suspended from the husband until she returns to him. It is also not mandatory for the husband to divorce her while he wants to call her back and she refuses to come without a valid Sharia reason; the blame lies with the woman, not the husband. And Allah Almighty knows best.

Problem 176: From Jaora State, Dongar Darwaza, sent by Hidayat Noor Khan Sahib, brother of the Nawab of Jaora, 24 Ramadan 1326 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this matter: A woman who, by disobeying her husband, leaves the husband's house without permission and without right, and resides separately at her parents' or some relative's house, whom the people of Sharia call 'Nashiza' (rebellious). Will it be obligatory for a guarantor (kafil) to provide maintenance for such a woman, and did the guarantor's guarantee and surety for such a woman remain valid and reliable or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Maintenance for a rebellious woman (Nashiza) will not be due; meaning as long as she stays in an unauthorized place without the husband's permission, she cannot claim maintenance for that period even from the guarantor. This is because guarantee (kafala) is 'the joining of one liability to another liability regarding a debt' (joining another responsible person for a debt) or regarding a claim, which is more correct as stated in Al-Hidaya. When the maintenance is not mandatory even upon the principal (the husband), how could it be possible to claim it from the guarantor? As for whether the guarantee of maintenance remained valid or not: if the guarantee initially occurred validly and it was not for a fixed period that would end at its expiration, then the woman becoming rebellious will not terminate it. If the woman ceases her rebellion and submits herself to her husband again, she will be able to claim from the guarantor whatever maintenance she becomes entitled to. In the

preferred legal opinion (mufta bihi), the guarantee for maintenance is perpetual if it is absolute. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Table Content] Arabic: "If someone guarantees a certain amount for her every month forever, it is fixed permanently, and similarly if 'forever' was not mentioned according to [the Imam]..." Urdu Translation: "If someone becomes a guarantor for a certain amount of maintenance for a wife every month permanently, they will be the guarantor for that much permanently, and [the Imam]..."

फतावा रज़विया जिल्द 13 | 13

प्रश्न: कोई व्यक्ति दूसरी शादी करना चाहता है और पहली पत्नी को तलाक देना नहीं चाहता। ऐसी स्थिति में क्या पहली पत्नी शरिया के अनुसार मुकदमे के जरिए अपने मेहर (दहेज) की मांग कर सकती है? और यदि तलाक दे दिया जाए, तो क्या वह मेहर की हकदार होगी या नहीं, क्योंकि उसके माता-पिता तलाक की मांग कर रहे हैं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि तलाक दिया जाता है, तो महिला मेहर का दावा कर सकेगी। अन्यथा, यदि मेहर 'मुअज्जल' (तत्काल देय) के रूप में निर्धारित नहीं है और न ही इसके लिए कोई समय सीमा तय की गई है, तो महिला मृत्यु या तलाक से पहले इसका दावा नहीं कर सकती। चूंकि वह नाराज होकर अपने मायके चली गई और बुलाने पर भी नहीं आई, तो पति पर से उसका भरण-पोषण (नान व नफ़का) भी तब तक के लिए समाप्त हो गया है जब तक वह पति के पास वापस नहीं आती। पति के लिए उसे तलाक देना भी अनिवार्य नहीं है जबकि वह उसे वापस बुलाना चाहता है और वह बिना किसी शरीय कारण के नहीं आ रही है; दोष महिला का है, पति का नहीं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला 176: जावरा रियासत, डोंगर दरवाजा से, हिदायत नूर खान साहब, जावरा के नवाब के भाई द्वारा प्रेषित, 24 रमजान 1326 हिजरी। विद्वान और शरिया के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला जो अपने पति की अवज्ञा करके, बिना अनुमति और बिना अधिकार के पति का घर छोड़कर अलग होकर अपने माता-पिता या किसी रिश्तेदार के घर रहने लगती है, जिसे शरीयत वाले 'नाशिज़ा' (विद्रोही) कहते हैं। क्या ऐसी महिला का भरण-पोषण ज़मानतदार (कफ़ील) पर देना अनिवार्य होगा, और ऐसी महिला के लिए ज़मानतदार की ज़मानत और गारंटी सही और विश्वसनीय रही या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: विद्रोही महिला (नाशिज़ा) का भरण-पोषण देय नहीं होगा; अर्थात जब तक वह पति की अनुमति के बिना अनधिकृत स्थान पर रहेगी, वह उस अवधि के भरण-पोषण का दावा ज़मानतदार से भी नहीं कर सकती। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज़मानत (कफ़ालत) 'ऋण के संबंध में एक दायित्व को दूसरे दायित्व के साथ जोड़ना' है (ऋण के लिए एक और जिम्मेदार व्यक्ति को जोड़ना) या दावे के संबंध में, जो कि 'हिदाया' में बताए अनुसार अधिक सही है। जब स्वयं पति (असील) पर ही भरण-पोषण अनिवार्य नहीं है, तो ज़मानतदार से इसकी मांग कैसे संभव है? रही बात यह कि भरण-पोषण

की ज़मानत सही रही या नहीं: यदि ज़मानत शुरू में सही तरीके से हुई थी और वह किसी निश्चित अवधि के लिए नहीं थी जो उसकी समाप्ति पर समाप्त हो जाए, तो महिला का विद्रोही होना उसे समाप्त नहीं करेगा। यदि महिला अपना विद्रोह छोड़ देती है और पुनः स्वयं को पति को सौंप देती है, तो वह जितने भरण-पोषण की हकदार होगी, उसका दावा ज़मानतदार से कर सकेगी। पसंदीदा कानूनी राय (मुफ़्ता बिही) में, भरण-पोषण की ज़मानत स्थायी है यदि वह पूर्ण (मुतलक) है। 'दुर्रे मुख्तार' में कहा गया है:

[तालिका सामग्री] अरबी: "यदि कोई उसके लिए हर महीने एक निश्चित राशि की हमेशा के लिए ज़मानत देता है, तो यह स्थायी रूप से तय हो जाती है, और इसी तरह यदि [इमाम] के अनुसार 'हमेशा' शब्द का उल्लेख नहीं किया गया हो..." उर्दू अनुवाद: "यदि कोई व्यक्ति पत्नी के लिए हर महीने एक निश्चित भरण-पोषण का स्थायी रूप से ज़मानतदार बनता है, तो वह स्थायी रूप से उतने का ज़मानतदार होगा, और [इमाम]..."

पृष्ठ 460 of 688

دوسری شادی کرنا چاہتے ہیں اور اس کو طلاق دینا نہیں چاہتے اس صورت میں پہلی بیوی ازروئے شرع اپنے مہر کا مطالبہ بذریعہ نالش کر سکتی، اور اگر طلاق دے دی جائے تو مستحق مہر کی ہوگی یا نہیں کیونکہ اس کے والدین طلاق کو کہتے ہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر طلاق دی جائے گی عورت مطالبہ مہر کر سکے گی ورنہ جو مہر نہ معجل بندھا ہو نہ اس کی کوئی میعاد مقرر کی گئی ہو عورت قبل موت یا طلاق اس کا مطالبہ نہیں کر سکتی، جبکہ وہ ناراض ہو کر اپنے میکے چلی گئی اور بلانے سے نہیں آئی تو اس کا نان و نفقہ بھی شوہر پر سے ساقط ہے جب تک وہ شوہر کے یہاں واپس نہ آئے اور شوہر پر یہ بھی لازم نہیں اسے طلاق دے، جب کہ یہ بلانا چاہتا ہے اور وہ بلا وجہ شرعی نہیں آتی تو الزام عورت پر ہے شوہر پر نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۷۶: از ریاست جاورہ ڈونگر دروازہ مرسلہ ہدایت نور خاں صاحب برادر نواب جاورہ ۲۴ رمضان ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ جو عورت اپنے زوج کی نافرمانی کر کے بلا اجازت و بغیر حق مکان شوہر سے نکل کر علیحدہ بخانہ والدین کسی عزیز کے یہاں جا کر سکونت کرے جس کو اہل شرع ناشزہ کہتے ہیں، پس اس عورت کا نان و نفقہ کفیل پر دینا واجب ہوگا نہیں اور ایسی عورت میں کفیل کی کفالت و ضمانت صحیح و معتبر رہی یا نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: زنان نشوز کا نفقہ دینا نہ آئے گا یعنی جب تک وہ بے اجازت شوہر بروجہ ناحق جگہ رہے گی اتنی مدت کے نفقہ کا مطالبہ کفیل سے بھی نہیں کر سکتی کہ کفالت ضم الذمۃ الی الذمۃ فی الدین

(ایک ذمہ دار کے ساتھ دوسری ذمہ دار کو قرضہ میں ملانا) یا فی المطالبۃ وھو الاصح کما فی الھدایۃ (مطالبہ میں ملانا، یہی اصح ہے جیسا کہ ہدایہ میں ہے) اور ناشزہ کا نفقہ خود اصیل یعنی زوج ہی پر لازم نہیں تو کفیل سے اس کا مطالبہ کیونکر ممکن۔ رہا یہ کہ اس صورت میں کفالت نفقہ صحیح رہی یا نہیں، اگر کفالت ابتداءً بروجہ صحت واقع ہوئی ہے اور وہ کسی مدت معینہ تک کے لئے نہ تھی کہ اس کی انتہا سے منتہی ہو جائے تو عورت کا ناشزہ ہونا اسے رفع نہ کرے گا، اگر عورت نشوز سے باز آ کر پھر تسلیم نفس شوہر کو کر دے گی تو جتنے نفقہ کی مستحق ہو گی کفیل سے اس کا مطالبہ کر سکے گی مذہب مفتی بہ میں کفالت نفقہ اگر مطلقہ ہو ، ابد کے لئے ہے۔

در مختار میں ہے:

[Boxed content at the bottom] ولو کفل لھا کل شھر کذا ابدا وقع علی الابد وکذا لولم یقل ابد اعند | بیوی کے لئے ہر ماہ اتنا نفقہ دائمی ہو گا، کا کوئی شخص اگر ضامن بنے تو یہ دائماً اتنے کا ضامن ہو گا اور امام

Vol. 13, Page 13

[Top Boxes] “The second [opinion] is the one upon which fatwa is given [as per] Bahr, and the verification of the matter is in Radd al-Muhtar. And Allah knows best.” According to Abu Yusuf, even if one says 'damgana' (at a certain price/rate), it will be considered permanent. The fatwa will be issued on this basis, [as per] Bahr. A complete investigation of this matter is found in Radd al-Muhtar. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 177: From Sandhan Post Office, Achnera, District Agra. Sent by Mahbub Ahmad Sahib. 24 Rabi al-Akhir 1336 AH. Zaid asked the heirs of Zubayda to become her guardian (wali) through a notice and verbally. Zubayda's heirs refused. Zaid informed them via notice that if they do not become guardians now but wish to do so later, the expenses for Zubayda's food and drink etc. will be taken from them. Now, if Zubayda's heirs wish to become guardians after a few years, can he (Zaid) take the expenses for Zubayda's food and drink etc. from them? Explain and be rewarded. Answer: This notice is not a Sharia contract; no demand can be made on its basis. And Allah Almighty knows best.

Problem 178: From Hafiz Ismail Khan, behind Kotwali, Bareilly. 4 Rajab 1336 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid gave Hinda a final (Mughallazah) divorce. She has a minor daughter by Zaid. After several years, Hinda claimed that she had been living at her parents' house for all this time, fulfilling her and her daughter's needs by taking loans. Therefore, she demands maintenance for herself for four months and ten days after the day of divorce, and for the daughter at the rate of fifty rupees per month until today. However, neither Zaid nor a judge had fixed any monthly maintenance amount. Furthermore, Hinda had previously filed a criminal case for maintenance which was dismissed. In this situation, is Hinda's claim maintainable or not? Is the maintenance for the entire past period for Hinda or her daughter obligatory upon Zaid or not? And is there any difference between the maintenance of a wife and children in this regard? Explain and be rewarded. Answer: In the mentioned situation, Hinda's claim is completely void and unmaintainable. Not a single grain (habba) of the past months' maintenance is obligatory upon Zaid, neither for the woman nor for the daughter. The difference between the maintenance of a wife and children is that maintenance for a woman is obligatory upon the husband even if she is wealthy, as long as she resides with him. If she stays at her parents' house without a valid Sharia reason, she is fundamentally not entitled

to maintenance. The maintenance of children is obligatory in their state of need; if they possess wealth, their maintenance is not upon the father, otherwise it is.

Footnote: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/268.

जिल्द 13, पृष्ठ 13

[शीर्ष बॉक्स] "दूसरा [मत] वह है जिस पर 'बहर' के अनुसार फतवा दिया जाता है, और इस विषय की पूरी तहकीकात 'रद्द अल-मुह्तार' में है। और अल्लाह बेहतर जानता है।" अबू यूसुफ के अनुसार, यदि कोई 'दामगाना' (स्थायी मूल्य पर) कहे तो भी वह स्थायी माना जाएगा, इसी पर फतवा दिया जाएगा, बहर। इस विषय की पूरी तहकीकात रद्द अल-मुह्तार में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 177: सान्धन डाकखाना, अछनेरा, जिला आगरा से। महबूब अहमद साहब द्वारा प्रेषित। 24 रबी अल-आख़िर 1336 हिजरी। ज़ैद ने जुबैदा के वारिसों को नोटिस और ज़ुबानी तौर पर वली (अभिभावक) बनने को कहा, लेकिन जुबैदा के वारिसों ने इनकार कर दिया। ज़ैद ने नोटिस के ज़रिए सूचित किया कि यदि तुम अब वली नहीं बनोगे और बाद में बनना चाहोगे, तो तुम से जुबैदा के खाने-पीने आदि का खर्च ले लिया जाएगा। अब यदि कुछ वर्षों बाद जुबैदा के वारिस वली बनना चाहें, तो क्या वह (ज़ैद) उनसे जुबैदा के खाने-पीने आदि का खर्च ले सकता है? बयान करें और पुण्य पायें। उत्तर: यह नोटिस कोई शरीयत का अनुबंध (अक़्द) नहीं है, इसके आधार पर कोई मांग नहीं की जा सकती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 178: हाफ़िज़ इस्माइल ख़ान, कोतवाली के पीछे, बरेली से। 4 रजब 1336 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद ने हिंदा को तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (अंतिम तलाक़) दे दी और उससे ज़ैद की एक छोटी बेटी है। कुछ साल बाद हिंदा ने दावा किया कि वह इतने समय से अपने मायके में रह रही है और उसने अब तक कर्ज़ लेकर अपनी और अपनी बेटी की ज़रूरतें पूरी की हैं। इसलिए, तलाक़ के दिन से चार महीने दस दिन बाद तक का अपना नफ़क़ा (गुजारा भत्ता) और आज तक का बेटी का पचास-पचास रुपये मासिक के हिसाब से उसे दिलाया जाए। हालांकि, न तो ज़ैद ने और न ही किसी जज (हाकिम) ने कोई मासिक नफ़क़ा तय किया था। इसके अलावा, हिंदा इससे पहले नफ़क़ा का एक आपराधिक केस दायर कर चुकी थी जो खारिज हो गया था। इस स्थिति में, क्या हिंदा का दावा सुनने योग्य है या नहीं? और क्या पिछले पूरे समय का नफ़क़ा हिंदा या उसकी बेटी का ज़ैद पर वाजिब (अनिवार्य) है या नहीं? और क्या इस बारे में औरत और बच्चों के नफ़क़ा में कोई अंतर है या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें। उत्तर: उक्त स्थिति में हिंदा का दावा पूरी तरह निराधार और न सुनने योग्य है। पिछले महीनों के नफ़क़ा का एक पैसा भी ज़ैद पर वाजिब नहीं है, न औरत के लिए और न बेटी के लिए। पत्नी और बच्चों के नफ़क़ा में यह अंतर है कि औरत के लिए नफ़क़ा पति पर

अनिवार्य है, भले ही वह अमीर हो, जब तक वह उसके पास रहती है। यदि वह बिना किसी शरीयत के वैध कारण के मायके में रहती है, तो वह मूल रूप से नफ़क़ा की हकदार नहीं है। बच्चों का नफ़क़ा उनकी ज़रूरत (मुहताजी) की स्थिति में अनिवार्य होता है; यदि उनके पास अपना धन है, तो उनका नफ़क़ा पिता पर नहीं है, अन्यथा है।

फुटनोट: 1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली 1/268।

جلد سیزدہم ۱۳

الثانی و بہ یفتٰی بحر ۱ و تحقیق المقام فی رد المحتار۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

ابویوسف کے نزدیک اگر دامگانہ کہے تو بھی دائمی ہوگا، اسی پر فتوٰی دیا جائے گا، بحر۔ اس مقام کی مکمل تحقیق رد المحتار میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۷۷: از ساندھن ڈاکخانہ اچھنیرہ ضلع آگرہ مرسلہ محبوب احمد صاحب ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ زید نے زبیدہ کے وارثوں کو نوٹس اور زبانی ذریعہ سے ولی بننے کو کہا اور زبیدہ کے وارثوں نے انکار کردیا، زید نے نوٹس کے ذریعہ اطلاع دی کہ اگر اب تم ولی نہ بنو گے اور بعد میں بننا چاہو گے تو تم سے زبیدہ کے خوردونوش وغیرہ کا خرچ لے لیا جائے گا، اب اگر چند سال بعد زبیدہ کے وارث ولی بننا چاہیں تو کیا زبیدہ کے خوردونوش وغیرہ کا خرچ لے سکتا ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: یہ نوٹس کوئی عقد شرع نہیں اس کی بناء پر کوئی مطالبہ نہیں ہو سکتا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۸: از حافظ اسمعیل خاں عقب کوتوالی بریلی ۴ رجب ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کو زید نے طلاق مغلظہ دے دی اور اس کی زید سے ایک دختر صغیرہ ہے چند سال بعد ہندہ مدعی ہوئی کہ وہ اتنی مدت سے اپنے میکے میں رہتی ہے میں نے اب تک قرض دام لے کر اپنی اور اپنی دختر کی حاجت پوری کی لہذا روزِ طلاق سے چار مہینے دس دن بعد تک میرا نفقہ اور آج تک کا دختر کا پچاس پچاس روپے ماہوار کے حساب سے مجھ کو دلایا جائے حالانکہ نہ کوئی ماہوار وغیرہ تقررِ نفقہ زید نے کیانہ حاکم نے بلکہ ہندہ اس سے پہلے نفقہ کا دعوٰی فوجداری میں دائر کر چکی تھی جو خارج ہوا اس صورت میں ہندہ کا دعوٰی مسموع ہے یا

نہیں اور کل گزشتہ مدت کا نفقہ ہندہ یا دختر ہندہ کا زید پر واجب الادا ہے یا نہیں اور عورت اور اولاد کے نفقہ میں اس بارے میں کوئی فرق ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: صورتِ مذکورہ میں ہندہ کا دعویٰ محض باطل و نامسموع ہے گزشتہ ماہ کا ایک حبہ نہ عورت کے نفقہ کا زید پر لازم ہے نہ دختر کا، زن اور اولاد کے نفقہ میں یہ فرق ہے کہ عورت اگرچہ مالدار ہو اس کا نفقہ شوہر پر لازم ہوتا ہے جبکہ وہ اس کے یہاں رہے اور بلاوجہ شرعی میکے میں رہے تو اصلاً نفقہ کی مستحق نہیں اور اولاد کا نفقہ ان کی محتاجی کی حالت میں لازم ہوتا ہے، اگر مال رکھتے ہیں ان کا نفقہ باپ پر نہیں ورنہ ہے

۱ در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۸

Even if she does not stay with him, if the maintenance (nafaqah) was not fixed by mutual agreement or by a ruler's (judge's) order, then even if months or many years pass during which the woman and children satisfy their needs through loans or any other means, or if the woman feeds and clothes herself and her children from her own wealth, debt, or begging, no penny of that period can be demanded from the husband. Yes, if maintenance had been decided by a ruler's order or mutual consent, for instance, a fixed monthly amount was agreed upon, and periods passed without the husband providing maintenance for her or the children, then the woman can demand her fixed maintenance. However, as for the children's maintenance, even if fixed by mutual consent or by a ruler's order, once time has passed, it lapses because it was for a need, and the need for the past period has been met, however it was met. This goes so far that if a ruler fixed a monthly amount for a young child against his father and ordered the mother that if she doesn't receive it, she should take a loan and spend it on the child; if she spent it by taking a loan, then due to the ruler's order, she will get it back from the father. But if she spent from her own pocket, she will not be entitled to receive even a penny, because the ruler told her to spend by taking a loan, which she did not do. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"There is no maintenance for a woman who leaves her house without right, and she is disobedient (nashizah) until she returns." Maintenance is not for a woman living outside the husband's house; she will be considered disobedient until she returns. (T)

In the same book, it is stated: "Maintenance does not become a debt except by a judicial decree or mutual agreement, meaning their agreement on a specific amount in kind or money; before that, nothing is obligatory upon him." Maintenance will not become a debt on the husband until it has been decided by a judge or mutual consent, meaning until the husband and wife have fixed the quantity of maintenance in kind or cash through mutual reconciliation, nothing will be obligatory on the husband before that. (T)

It is stated in Tanwir al-Absar: "If maintenance is decreed for someone other than the wife and a period passes, it lapses." If a judge has made maintenance obligatory for someone other than the wife, and the period passed without payment, the maintenance for that period will be considered lapsed. (T)

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/767

2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/770
3. Durr al-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/771

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13 | पृष्ठ 13

अगरचे वह उसके यहाँ न रहें, फिर जो नफ़क़ा (भरण-पोषण) न आपसी करारदाद से मुक़र्रर हुआ हो न हाकिम के हुक्म से उसे अगर एक महीना या ज़्यादा कितने ही बरस गुज़र जाएँ और इस मुद्दत में औरत और औलाद क़र्ज़-ओ-वाम से ख़्वाह किसी तरीक़े से अपनी हाजत निकालते रहें या औरत अपने माल ख़्वाह क़र्ज़ या गदागरी से अपना और अपने बच्चों का पेट पाले तन ढके तो इस मुद्दत के किसी हब्बा (पैसा) का मुतालबा शौहर से नहीं हो सकता, हाँ अगर बहुकम-ए-हाकिम या तराज़ी-ए-बाहमी करारदाद नफ़क़ा हो लिया था कि मसलन इतना माहवार देना ठहरा और मुद्दतें गुज़रीं शौहर ने न उसका नफ़क़ा दिया न औलाद का, तो औरत अपने नफ़क़ा मुक़र्रर शुदा का मुतालबा कर सकती है और औलाद का नफ़क़ा अगरचे बरज़ा-ए-बाहमी या बहुकम-ए-हाकिम मुक़र्रर हुआ हो जब वक़्त गुज़र गया साक़ित हो गया कि वह बवजह हाजत था और मुद्दत गुज़शता की हाजत निकल चुकी अगरचे किसी तरह निकली यहाँ तक कि अगर हाकिम ने सगीर बच्चे के लिये माहवार उसके बाप पर मुक़र्रर किया और माँ को हुक्म दिया कि उससे न मिले तो तू क़र्ज़ लेकर बच्चे पर ख़र्च कर तो अगर उसने क़र्ज़ लेकर ख़र्च किया जब तो बवजह हुक्म-ए-हाकिम बाप से वापस पाएगी और अगर अपने पास से ख़र्च किया तो हब्बा लेने की मुस्तहक़ न होगी कि हाकिम ने क़र्ज़ लेकर ख़र्च करने को कहा था सो उसने न किया, 'दुर-ए-मुख़्तार' में है:

"ला नफ़क़ा लि-ख़ारिजा मिम-बयतिहा बि-ग़ैरि हक़्क़िन व हियान-नाशिज़ा हत्ता तऊदा।" ख़ावन्द के घर से बाहर रहने वाली के लिये नफ़क़ा नहीं है वह वापस आने तक नाफ़रमान क़रार पाएगी। (त)

इसी में है: "अन-नफ़क़ा ला तसीरु द्दैनन इल्ला बिल-क़ज़ाई अ़व अर-रिज़ा अ़य इस्तिलाहिहिमा अ़ला क़दरिन मुअ़य्यनिन इज़ाफ़न अ़व दराहमा फ़-क़बला ज़ालिका ला यल्ज़मुहु शय-उ़न।" नफ़क़ा उस वक़्त तक ख़ावन्द के ज़िम्मा क़र्ज़ न होगा जब तक क़ाज़ी ने या बाहमी रज़ामंदी से तय न कर लिया हो, यानी जब तक ख़ावन्द बीवी ने बाहमी मसालहत से नफ़क़ा की मिक़दार जिंस या नक़द मुतअ़य्यन न कर दी हो, तो उससे क़बल ख़ावन्द पर कुछ लाज़िम नहीं होगा। (त)

तन्वीरुल अबसार में है: "क़ज़ा बि-नफ़क़ति ग़ैरिज़-ज़ौजा व मज़त मुद्दतुन सक़तत।" अगर क़ाज़ी ने बीवी के इलावा ग़ैर का नफ़क़ा लाज़िम किया हो और बग़ैर अदायगी जो मुद्दत गुज़र गई उस मुद्दत का नफ़क़ा साक़ित क़रार पाएगा। (त)

1. दुर-ए-मुख़्तार बाब-उल-नफ़क़ा मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/767
2. दुर-ए-मुख़्तार बाब-उल-नफ़क़ा मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/770
3. दुर-ए-मुख़्तार शरह तनवीर-उल-अबसार बाब-उल-नफ़क़ा मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/771

पृष्ठ 462 का 688

اگر چہ وہ اس کے یہاں نہ رہیں، پھر جو نفقہ نہ باہمی قرارداد سے مقرر ہوا ہو نہ حاکم کے حکم سے اسے اگر ایک مہینہ یا زیادہ کتنے ہی برس گزر جائیں اور اس مدت میں عورت اور اولاد قرض وام سے خواہ کسی طریقہ سے اپنی حاجت نکالتے رہیں یا عورت اپنے مال خواہ قرض یا گداگری سے اپنا اور اپنے بچوں کا پیٹ پالے تن ڈھکے تو اس مدت کے کسی حبہ کا مطالبہ شوہر سے نہیں ہوسکتا، ہاں اگر بحکم حاکم یا تراض باہمی قرار داد نفقہ ہو لیا تھا کہ مثلاً اتنا ماہوار دینا ٹھہرا اور مدتیں گزریں شوہر نے نہ اس کا نفقہ دیانہ اولاد کا، تو عورت اپنے نفقہ مقرر شدہ کا مطالبہ کرسکتی ہے اور اولاد کا نفقہ اگرچہ برضائے باہمی یا بحکم حاکم مقرر ہوا ہو جب وقت گزر گیا ساقط ہو گیا کہ وہ بوجہ حاجت تھا اور مدت گزشتہ کی حاجت نکل چکی اگرچہ کسی طرح نکلی یہاں تک کہ اگر حاکم نے صغیر بچہ کے لئے ماہوار اس کے باپ پر مقرر کیا اور ماں کو حکم دیا کہ اس سے نہ ملے تو تو قرض لے کر بچہ پر خرچ کر تو اگر اس نے قرض لے کر خرچ کیا جب تو بوجہ حکم حاکم باپ سے واپس پائے گی اور اگر اپنے پاس سے خرچ کیا تو حبہ لینے کی مستحق نہ ہوگی کہ حاکم نے قرض لے کر خرچ کرنے کو کہا تھا سو اس نے نہ کیا، در مختار میں ہے:

لانفقة لخارجة من بيته بغير حق وهي الناشرة حتى تعود۔ 1 | خاوند کے گھر سے باہر رہنے والی کے لئے نفقہ نہیں ہے وہ واپس آنے تک نافرمان قرار پائے گی۔ (ت)

اسی میں ہے: النفقة لا تصير ديناً الا بالقضاء او الرضاء ای اصطلاحهما علی قدر معین اضافاً اودراہم فقبل ذلک لایلزمہ شئ۔ 2 | نفقہ اس وقت تک خاوند کے ذمہ قرض نہ ہوگا جب تک قاضی نے یا

باہمی رضامندی سے طے نہ کر لیا ہو، یعنی جب تک خاوند بیوی نے باہمی مصالحت سے نفقہ کی مقدار جنس یا نقد متعین نہ کر دی ہو، تو اس سے قبل خاوند پر کچھ لازم نہیں ہوگا۔ (ت)

تنویر الابصار میں ہے: قضی بنفقة غیر الزوجة ومضت مدة سقطت۔ 3 | اگر قاضی نے بیوی کے علاوہ غیر کا نفقہ لازم کیا ہو اور بغیر ادائیگی جو مدت گزر گئی اس مدت کا نفقہ ساقط قرار پائے گا۔ (ت)

---

1 در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۷۶۷/۱ 2 در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۷۷۰/۱ 3 در مختار شرح تنویر الابصار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۷۷۱/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 13

In Al-Hidayah, it is stated: "If the judge (Qazi) rules for maintenance for children, parents, and kinsmen, and the period passes, the maintenance for the past period lapses unless the judge had authorized borrowing against him." When a judge decides on the payment of maintenance for children, parents, or kinsmen, the maintenance for the elapsed time will be forfeited, unless the judge ordered them to borrow money in his name and spend it; in that case, it will not be forfeited. (T)

In Fatawa Bazzaziyya, it is stated: "If she (the mother) spends on him from her own wealth or from what she sought from people, she shall not have recourse against the father." If the mother spent her own wealth on the child or spent by asking from people, she cannot recover that expense from the child's father. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated: "If she was ordered to borrow but did not borrow, rather she spent from her own wealth, then there is no recourse for her, because she did not do what the judge ordered her to do." (Summary) If the judge decided that the woman should borrow and spend, and then the woman spent her own wealth instead of borrowing, she would not have the right to recover it, because she did not act upon the judge's decision. (Summary). (T)

And to consider the waiting period (iddah) for divorce to be four months and ten days is sheer ignorance; its duration is three menstrual cycles. And Allah the Almighty knows best.

Problem 179: From Yaad Suganj, District Hardoi (Oudh), sent by Syed Inayat Hussain, Girdawar Qanoongo, 13 Dhu al-Hijjah 1336 AH. Zaid's marriage took place about three years ago; until now, there have been no children. The married woman is of unsound mind, to the extent that she does not even know the accounting for a single anna. She has lost jewelry worth three hundred rupees; she lost it due to being of unsound mind. She lacks the etiquette of conversation to speak with whoever is hers. She also does not know how to cook food or sew clothes, nor does she understand or remember prayer and fasting. Now that person wants to remarry for these reasons. Does the issue of Islam grant permission or not, and in what manner...

1. Al-Hidayah, Chapter on Maintenance, Al-Maktabah al-Arabiyya, Karachi, 1/28-29.
2. Fatawa Bazzaziyya, on the margin of Fatawa Hindiyya, the nineteenth (chapter) on Maintenance, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 4/165.

3. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/282.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

हिदाया में है: "इज़ा अल-क़ाज़ी लिल-वलदि वल-वालिदैनि व ज़वी-ल-अरहामि बिन-नफ़क़ति फ़-मज़त मुद्दतुन सक़तत इल्ला अन यअज़नल-क़ाज़ी बिल-इस्तिदानति अलैह।" जब काज़ी (न्यायाधीश) संतान, माता-पिता या रिश्तेदारों के लिए भरण-पोषण (नफ़क़ा) के भुगतान का निर्णय दे, और वह अवधि बीत जाए, तो पिछले समय का भरण-पोषण समाप्त हो जाएगा, सिवाय इसके कि काज़ी ने उनके नाम पर ऋण लेकर खर्च करने का आदेश दिया हो; ऐसी स्थिति में वह समाप्त नहीं होगा। (त)

फ़तावा बज़्ज़िया में है: "व इन अनफ़क़त (अय-यल-उम्मु) अलैहि मिन मालिहा औ मिम-मल-मसअलति मिनन-नासि ला तरजिउ अलल-अबि।" यदि माँ ने बच्चे पर अपना धन खर्च किया हो या लोगों से माँगकर खर्च किया हो, तो वह इस खर्चे को बच्चे के पिता से वसूल नहीं कर सकेगी। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है: "अमरत बिल-इस्तिदानति फ़लम तस्तदिन बल अनफ़क़त मिन मालिहा फ़ला रुजूअ लहा, लिअन्नहा लम तफ़अल मा अमरहा बिहिल-क़ाज़ी।" (संक्षिप्त) यदि काज़ी ने महिला को ऋण लेकर खर्च करने का निर्णय दिया हो और महिला ने ऋण लेने के बजाय अपना धन खर्च कर दिया, तो उसे वसूली का अधिकार नहीं होगा, क्योंकि उसने काज़ी के निर्णय पर अमल नहीं किया। (संक्षिप्त)। (त)

और तलाक की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) को चार महीने दस दिन समझना कोरी अज्ञानता है; इसकी अवधि तीन माहवारी (हैज़) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 179: याद सुगंज, ज़िला हरदोई (अवध) से, सैयद इनायत हुसैन, गिरदावर कानूनगो द्वारा प्रेषित, 13 ज़ुल हिज्जाह 1336 हिजरी। ज़ैद की शादी हुए लगभग तीन साल हो गए हैं; अब तक कोई संतान नहीं हुई है। विवाहित स्त्री मंदबुद्धि है, यहाँ तक कि उसे एक आने का भी हिसाब नहीं पता। वह तीन सौ रुपये के आभूषण खो चुकी है, मंदबुद्धि होने के कारण उसने उन्हें खो दिया। उसे बातचीत करने की तमीज़ नहीं है कि वह अपनों से बात कर सके। वह खाना बनाना और कपड़े सीना भी नहीं जानती, न ही वह नमाज़ और रोज़े को समझती है और न ही उसे याद रहता है। अब वह व्यक्ति इन कारणों से दूसरी शादी करना चाहता है। इस्लामी शरीयत इसकी अनुमति देती है या नहीं, और किस तरीके से...

1. हिदाया, बाब अल-नफ़क़ा, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/28-29।

2. फ़तावा बज़्ज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, उन्नीसवां (अध्याय) नफ़क़ा, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 4/165।
3. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-नफ़क़ा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/282।

ہدایہ میں ہے: اذا القضٰی للولد والوالدین وذوی الارحام بالنفقة فمضت مدہ سقطت الان یأذن القاضی بالاستدانة علیہ۱۸ جب قاضی اولاد، والدین یا ذوی الارحام کے لئے نفقہ کی ادائیگی کا فیصلہ دے تو گزری ہوئی مدت کا نفقہ ساقط ہو جائے گا الایہ کہ قاضی نے اس کے نام پر ان لوگوں کو قرض لے کر خرچ کرنے کا حکم دیا ہو تو ساقط نہ ہو گا۔ (ت)

فتاوٰی بزازیہ میں ہے: وان انفقت(ای الام)علیہ من مالھا او من المسئلة من الناس لاترجع علی الاب۲۸ اگر ماں نے بچے پر اپنا مال خرچ کیا ہو یا لوگوں سے مانگ کر خرچ کیا ہو تو اس خرچہ کو بچے کے والد سے وصول نہ کر سکے گی۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: امرت بالاستدانة فلم تستدن بل انفقت من مالھا فلا رجوع لھا، لانھا لم تفعل ما امرھا بہ القاضی۔۳۸ (ملخصاً) اگر قاضی نے عورت کو قرض لے کر خرچ کرنے کا فیصلہ دیا ہو تو پھر عورت نے قرض کی بجائے اپنا مال خرچ کیا تو اس کی وصولی کا حق اسے نہ ہوگا، کیونکہ اس نے قاضی کے فیصلہ پر عمل نہ کیا۔ (ملخصاً)۔ (ت)

اور عدت طلاق چار مہینے دس دن سمجھنا محض جہالت ہے اس کی مدت تین حیض ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۷۹: از یاد سو گنج ضلع ہردوئی (اودھ) مرسلہ سید عنایت حسین گرداور قانون گو ۱۳ ذی الحجہ ۱۳۳۶ھ زید کی شادی تقریباً تین سال ہوئے کہ ہوئی، اس وقت تک کوئی اولاد نہیں ہوئی، عورت منکوحہ ناقص العقل یہاں تک کہ ایک آنہ کا حساب نہیں جانتی، تین سو روپے کا زیور گم کر چکی ہے، ناقص العقل ہونے کی وجہ سے اسے گم کر دیا، اسے گفتگو کی تمیز نہیں ہے کہ جو اس کا ہے اس سے گفتگو کر سکے، وہ کھانا پکانا اور کپڑا سینا بھی نہیں جانتی ہے اور

نماز روزے کو بھی نہیں سمجھتی ہے اور نہ اسے یاد ہوتا ہے، اب وہ شخص شادی دوسری ان وجوہات سے کرنا چاہتا ہے، مسئلہ اسلام اجازت دیتا ہے یا نہیں، اور اس کو کس صورت سے

1^ هدایه باب النفقة المکتبة العربیة کراچی ۲۹/۱-۲۸ 2^ فتاوی بزازیه علی هامش فتاوی هندیه التاسع عشر النفقة نورانی کتب خانه پشاور ۱۶۵/۴ 3^ ردالمحتار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۸۲/۴

[Question:] Will the husband have to keep her while she is mentally unstable? Will the expenses for both wives have to be borne equally or not? And if the second married woman is wealthy, in what capacity should she be kept? And does the husband have to keep both wives with him, or will he not have to keep one because of her mental instability?

The Answer: Second marriage is permitted, but justice (equal treatment) is mandatory. Both must be kept equally. It will not be permissible for him to stay with the second wife and remain separate from the first due to her mental deficiency. If the second woman is wealthy and the first is needy, then if the husband is wealthy, wealth-equivalent maintenance (Nafaqah) is obligatory for the second, and for the first, the average of wealth-equivalent and needy-equivalent maintenance. If the husband is needy, maintenance for the needy is obligatory for the first, and the average for the second. If he cannot provide this average now, he should give as much as he can, and the remainder will be a debt upon him for that second wife, to be paid when he is able. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"Maintenance is obligatory for the wife upon her husband according to the state of both of them; this is the fatwa. It is demanded according to his means, and the remainder remains a debt until he becomes well-off."[1] - Summarized. (Maintenance of the wife is obligatory on the husband considering the status of both. The fatwa will be given on this basis. Therefore, collection from the husband will be according to his ability. If any part remains, it will be a debt upon the husband, which will be collected when his situation improves. Summarized. (T))

There will be a difference in the maintenance of both women if one of them is wealthy and the other is needy. As for spending the night and other optional matters of giving and taking, both must be treated equally, even if one is mentally deficient and lacks manners. It is stated in Alamgiri:

"Equality should be maintained between the new and the old, the virgin and the previously married, the healthy and the sick, the one with physical obstruction (ratqa), the insane from whom harm is not feared, the menstruating woman, the one in postnatal bleeding, the pregnant and the non-pregnant, and the young girl who is capable of intercourse. Thus it is in at-Tabyin."[2] - And Allah knows best. (New, old, virgin, previously married, healthy, sick, one with vaginal constriction, insane whose harm is not feared, menstruating, in post-partum bleeding, pregnant etc., and the

minor with whom intercourse is possible; the rights of all wives will be equal upon him, as in Tabyin al-Haqa'iq. And Allah Almighty knows best. (T))

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266. [2] Fatawa Hindiyya, Chapter of Partition, Noorani Kutub Khana, 1/340.

[प्रश्न:] पति को उसे रखना पड़ेगा जबकि वह मानसिक रूप से अस्थिर है, क्या दोनों महिलाओं के खर्चे बराबर उठाने होंगे या नहीं, और अगर दूसरी विवाहिता महिला संपत्ति की मालकिन (धनी) हो तो उसे किस हैसियत से रखना चाहिए और क्या पति को दोनों पत्नियों को अपने साथ रखना पड़ेगा या मानसिक अस्थिरता के कारण सिर्फ एक को रखना और एक को नहीं रखना होगा?

उत्तर: दूसरी शादी की इजाज़त है मगर अदल (न्याय) फ़र्ज़ होगा, दोनों को बराबर रखना होगा, यह जायज़ न होगा कि दूसरी के पास रहे और पहली से उसकी कम अक़्ली (मानसिक कमजोरी) के कारण अलग रहे। दूसरी औरत अगर मालदार है और पहली मोहताज (ज़रूरतमंद) है तो पति अगर मालदार है तो दूसरी के लिए मालदारों वाला नफ़का (भरण-पोषण) वाजिब होगा और पहली के लिए मालदारों और मोहताजों के नफ़के का औसत, और अगर पति मोहताज है तो पहली के लिए मोहताजों वाला नफ़का वाजिब होगा और दूसरी के लिए औसत, यह औसत अब न दे सका तो जितना दे सकेगा, बाकी उस पर उस दूसरी औरत के लिए कर्ज़ रहेगा जब सामर्थ्य पाए तो अदा करे। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

"नफ़का पत्नी के लिए पति पर उन दोनों के हाल के मुताबिक वाजिब है, इसी पर फतवा दिया जाता है। और उसकी गुंजाइश के मुताबिक मांग की जाती है और बाकी ख़ुशहाली तक कर्ज़ रहता है।" १- संक्षेपित। (पति पर पत्नी का नफ़का दोनों की स्थिति को देखते हुए वाजिब होगा, इसी पर फतवा दिया जाएगा, इसलिए पति से वसूली उसकी तौफ़ीक (क्षमता) के मुताबिक होगी, अगर कुछ बाकी रह जाए तो वह पति के ज़िम्मे कर्ज़ होगा जिसकी वसूली उसकी बेहतर स्थिति होने पर की जाएगी, संक्षेपित। (त))

दोनों औरतों के नफ़के में फ़र्क होगा अगर उनमें से एक मालदार और दूसरी मोहताज है, बाकी रात को रहने और लेने-देने आदि अख्तियारी (स्वैच्छिक) बातों में दोनों को बराबर रखना होगा चाहे एक कम अक़्ल और बे-सलीका हो। आलमगीरी में है:

"नई, पुरानी, कुंवारी, विवाहिता, स्वस्थ, बीमार, योनि की संकीर्णता वाली, वह पागल जिससे नुकसान का डर न हो, मासिक धर्म वाली, प्रसव के बाद की स्थिति वाली, गर्भवती और गैर-गर्भवती, और वह छोटी बच्ची जिसके साथ सहवास संभव हो, इन सबके बीच समानता बरती जाए। जैसा कि तबयीन में है।" २- और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (नई, पुरानी, कुंवारी, विवाहिता, तंदुरुस्त, बीमार, योनि

की संकीर्णता वाली, पागल जिससे नुकसान का डर न हो, मासिक धर्म और प्रसव के बाद की स्थिति वाली, गर्भवती आदि और नाबालिग जिससे संभोग किया जा सके, सभी पत्नियों का अधिकार उस पर बराबर होगा, जैसा कि तबयीनुल हकाइक में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त))

१ दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल नफ़का, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/ २६६ २ फ़तावा हिंदिया, बाबुल क़स्म, नूरानी कुतुब खाना १/ ३४०

पेज 464 / 688

شوہر کو رکھنا پڑے گا جبکہ وہ خبط الحواس ہے، کیا اخراجات دونوں عورتوں کے برابر اٹھانا پڑیں گے یا نہیں، اور اگر وہ منکوحہ دوسری عورت صاحب جائیداد ہو وے تب کس حیثیت سے اس کو رکھنا چاہئے اور آیا شوہر کو دونوں عورتیں اپنے ہمراہ رکھنا پڑیں گی یا صرف ایک اور ایک بہ سبب خبط الحواس ہونے کے نہیں رکھنا پڑے گی۔

الجواب: دوسری شادی کی اجازت ہے مگر عدل فرض ہوگا، دونوں کو برابر رکھنا ہوگا، یہ جائز نہ ہوگا کہ دوسری کے پاس رہے اور پہلی سے اس کی کم عقلی کے باعث جدا رہے، دوسری عورت اگر مالدار ہے اور پہلی محتاج ہے تو شوہر اگر مالدار ہے تو دوسری کے لئے مالداروں کا نفقہ واجب ہوگا اور پہلی کے لئے مالداروں اور محتاجوں کے نفقہ کا اوسط، اور اگر شوہر محتاج ہے تو پہلے کے لئے محتاجوں کا نفقہ واجب ہوگا اور دوسری کے لئے اوسط، یہ اوسط اب نہ دے سکا تو جتنا دے سکے گا باقی اس پر اس دوسری عورت کے لئے قرض رہے گا جب طاقت پائے ادا کرے۔ در مختار میں ہے:

النفقة تجب للزوجة علی زوجها بقدر حالهما به یفتی ویخاطب بقدر وسعه والباقی دین الی المیسره ۱۔ ملخصاً۔ خاوند پر بیوی کا نفقہ دونوں کے حال کے پیش نظر واجب ہوگا، اسی پر فتوی دیا جائے گا، لہذا خاوند سے وصولی اس کی توفیق کے مطابق ہوگی، اگر کچھ باقی رہ جائے تو وہ خاوند کے ذمہ قرض ہوگا جس کی وصولی اس کی بہتر پوزیشن پر کی جائے گی، ملخصاً۔ (ت)

دونوں عورتوں کے نفقہ میں فرق ہوگا اگر ایک ان میں مالدار اور دوسری محتاج ہے، باقی رات کو رہنے اور لینے دینے وغیرہ اختیاری باتوں میں دونوں کو برابر رکھنا ہوگا اگرچہ ایک کم عقل اور بے سلیقہ ہے۔ عالمگیری میں ہے:

یسوی بین الجدیدۃ والقدیمۃ والبکر والثیب والصحیحۃ والمریضۃ والرتقاء والمجنونۃ التي لا یخاف منھا والحائض والنفساء والحامل والحائل والصغیرۃ التنی یمکن وطؤھا کذا فی التبیین ۲- وھو تعالٰی اعلم۔

نئی، پرانی، باکرہ، ثیبہ، تندرست، بیمار، شرمگاہ کی تنگی والی، مجنونہ جس سے ضرر کا خوف نہ ہو، حیض و نفاس والی، حاملہ وغیرہ اور نابالغہ جس سے وتی کی جاسکتی ہو، تمام بیویوں کا حق برابر اس پر ہوگا، جیسا کہ تبیین الحقائق میں ہے۔ وھو تعالیٰ اعلم (ت)

۱ در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۶ ۲ فتاوی ہندیہ باب القسم نورانی کتب خانہ ۱/ ۳۴۰

Fatawa Razawiyya Volume 13

Issue 180: From Aligarh Madrasatul Uloom, Maulvi Abdullah Sahab, Director of Religious Affairs, and Nusrat Sher Khan, Scribe of Religious Affairs, 19 Rabi-ul-Awwal 1337 AH. For twenty-three years, Zaid has been receiving seventy-five rupees monthly through employment, and apart from this monthly salary, Zaid has no other income. It has been Zaid's continuous habit to give the entire monthly amount he receives to his wife. Zaid has told his wife that whatever amount is left over after spending on her legal maintenance (nafaqah), his personal expenses, or his children from his first wife, she should keep accounting that saving towards her dower (mahr) so that in eight to ten years, he can be relieved of his dower debt to her. Zaid has also made his and his wife's relatives witnesses to this matter, and Zaid's wife does not deny this agreement and matter; rather, she acknowledges it to this day. However, there is a dispute between Zaid and his wife regarding the amount of maintenance. Zaid says that he has no income other than his salary and is in debt for five thousand rupees, which is the dower he is trying to pay off. In this case, the monthly maintenance amount should legally be that of a "mu'sir" (destitute/person in hardship). Zaid's wife, Raiqa, says that his salary is large, and the monthly maintenance amount should be fixed according to the status of a "musir" (wealthy person). Now, the question to the high-ranking scholars of Islam is: Is Zaid's statement legally acceptable, or is the statement of Zaid's wife, Raiqa, legally acceptable? And how many rupees monthly should be given to a destitute person starting from eight years ago? And for the current price hikes, what amount should be allocated for maintenance? It is also necessary to mention that Zaid, due to his standing, has someone or other bring outside items like grain, lentils, or betel leaf, etc., and since the marriage, the work of cooking at home has been managed by Zaid's wife or her mother, as is generally the customary practice in honorable households. Explain and be rewarded.

The Answer: Several matters are taken into account here: (1) The amount of income. (2) High and low prices (inflation/deflation). (3) The state of the location; for example, in colder countries, more winter supplies are needed, less in temperate ones; and in terms of climate, there is also a difference in diet. (4) Current times and local customs regarding standard and accustomed food and clothing; for example, current norms, especially in Madinah Tayyibah.

Page 465 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

प्रश्न 180: अलीगढ़ मदरसातुल उलूम से मौलवी अब्दुल्ला साहब, नाज़िम-ए-दीनियात और नुसरत शेर खान, मुहर्रिर-ए-दीनियात, 19 रबी-उल-अव्वल 1337 हिजरी। ज़ैद को तेईस साल से नौकरी के ज़रिए पचहत्तर रुपये मासिक मिलते हैं और इस मासिक वेतन के अलावा ज़ैद की किसी भी प्रकार की आय नहीं है। ज़ैद की यह निरंतर आदत है कि जो भी मासिक रुपया मिलता है, वह सब अपनी पत्नी को दे देता है। ज़ैद ने अपनी पत्नी से कह रखा है कि जो राशि शरीयत के अनुसार तुम्हारे भरण-पोषण (नफ़क़ा), मेरे व्यक्तिगत ख़र्चों या मेरी पहली पत्नी की संतानों पर ख़र्च होने के बाद बच जाए, उसे तुम अपने मेहर (स्त्रीधन ऋण) में गिनती रहो ताकि आठ-दस वर्षों में मैं तुम्हारे मेहर से मुक्त हो जाऊँ। ज़ैद ने इस मामले पर अपने और अपनी पत्नी के रिश्तेदारों को गवाह भी बना लिया है और ज़ैद की पत्नी को भी इस समझौते और मामले से इनकार नहीं है, बल्कि वह अब तक इसे स्वीकार करती है। लेकिन भरण-पोषण की राशि को लेकर ज़ैद और उसकी पत्नी के बीच मतभेद है। ज़ैद कहता है कि इस नौकरी के अलावा मेरे पास कोई आय नहीं है और मैं पाँच हज़ार रुपये का क़र्ज़दार हूँ जो मेहर का है जिसे चुकाने की मैं कोशिश कर रहा हूँ। इस स्थिति में, मासिक भरण-पोषण की राशि शरीयत के अनुसार 'मुइसर' (तंगदाल/निर्धन) के हिसाब से होनी चाहिए। ज़ैद की पत्नी रायका कहती है कि तुम्हारा वेतन बड़ा वेतन है, इसलिए मासिक भरण-पोषण की राशि 'मूसिर' (धनी) की हैसियत से तय होनी चाहिए। अब इस्लाम के उच्च विद्वानों से यह प्रश्न है कि शरीयत के अनुसार ज़ैद की बात स्वीकार्य है या ज़ैद की पत्नी रायका की बात स्वीकार्य है? और एक निर्धन व्यक्ति को पिछले आठ वर्षों से प्रति माह कितने रुपये दिए जाने चाहिए? और इस समय की महंगाई में भरण-पोषण के लिए कितने रुपये लगाए जाएँ? यह भी निवेदन करना ज़रूरी है कि बाहर के काम जैसे अनाज, दाल या पान आदि मँगाना ज़ैद अपनी प्रतिष्ठा के कारण किसी न किसी से करा लेता है और घर में खाना पकाने का काम निकाह के समय से ही ज़ैद की पत्नी या उसकी माँ ने अपने ज़िम्मे ले रखा है, जैसा कि आमतौर पर शरीफ़ घरानों में प्रचलित प्रथा है। उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यहाँ कई बातों का ध्यान रखा जाता है: (1) आय की राशि। (2) महंगाई और सस्ती। (3) स्थान की स्थिति, उदाहरण के लिए अधिक ठंडे देशों में सर्दियों के सामान की आवश्यकता होती है, समशीतोष्ण में कम, और जलवायु के आधार पर भोजन में भी अंतर होता है। (4) वर्तमान समय में उस स्थान की आदत जहाँ जैसा भोजन और वस्त्र सामान्य और प्रचलित हो, उदाहरण के लिए अब के रीति-रिवाज़ विशेष रूप से मदीना तैयबा में।

فتاوٰی رضویہ جلد تیرہویں

مسئلہ ۱۸۰: از علی گڑھ مدرسۃ العلوم مولوی عبداللہ صاحب ناظم دینیات و نصرت شیر خاں محرر دینیات ۱۹ ربیع الاول ۱۳۳۷ھ زید کو عرصہ تئیس سال سے پچھتر روپے ماہوار بذریعہ ملازمت کے ملتا ہے اور بجز اس ماہواری تنخواہ کے اور کسی قسم کی زید کو آمدنی نہیں ہے اور زید کی یہ عادت مستمرہ ہے کہ جو روپیہ ماہواری ملتا ہے وہ سب کا سب اپنی اہلیہ کو دے دیتا ہے، اور زید نے اپنی اہلیہ سے یہ کہہ رکھا ہے کہ جو مقدار شرعی طور سے تمہارے نان نفقہ میں یا میرے ذاتی اخراجات یا میری زوجہ اولیٰ کی اولاد پر اس میں سے خرچ ہو کر جو کچھ پس انداز ہو اس رقم کو تم اپنے مہر میں محسوب کرتی رہو تاکہ آٹھ دس برس میں تمہارے مہر سے مجھ کو سبکدوش حاصل ہو، اور اس معاملہ پر زید نے اپنے اور اپنی اہلیہ کے اقربا کو گواہ بھی کر لیا ہے اور زید کی زوجہ کو بھی اس معاہدہ اور معاملہ سے انکار نہیں ہے بلکہ اس وقت تک اقرار ہے لیکن نان نفقہ کی مقدار رقم میں زید اور اس کی زوجہ کا اختلاف ہے، زید تو یہ کہتا ہے کہ میرے پاس بجز اس ملازمت کی آمدنی کے اور کسی قسم کی آمدنی نہیں او میں پانچ ہزار روپے کا قرضدار ہوں جو مہر کا ہے جس کے ادا کرنے کا میں نے ڈول ڈالا ہے، اس صورت میں نان نفقہ کی مقدار رقم ماہواری معسر یعنی تنگدست کی شرعاً ہونی چاہئے، اور زید کی زوجہ رائقہ یہ کہتی ہے کہ تمہارا مشاہرہ بڑا مشاہرہ ہے نان و نفقہ کی رقم ماہواری کی مقدار موسر یعنی مالدار کی حیثیت سے مقرر ہونی چاہئے، اب علمائے اسلام عالی مقام سے یہ سوال ہے کہ شرعاً زید کا کہنا مقبول ہے یا زید کی زوجہ رائقہ کا قول شرعاً مقبول ہے؟ اور معسر شخص کو کتنے روپے ماہوار آٹھ سال سابق سے دینے چاہئے؟ اور اس زمانہ میں جو گرانی ہے کے روپیہ نان و نفقہ کے لگائے جائیں؟ اور یہ بھی عرض کر دینا ضرور ہے کہ باہر کے کام مثلاً غلہ یا دال یا پان وغیرہ منگانے

کا زید اپنی وجاہت سے کسی نہ کسی سے کرا دیتا ہے اور گھر کے کھانا پکانے کا کام جب سے نکاح ہوا زید کی زوجہ یا اس کی والدہ نے اپنے متعلق کر رکھا ہے جیسے کہ عموماً شرفاء کے گھروں میں عرفاً مروج معمول بہ ہو رہا ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: یہاں متعدد امور ملحوظ ہوتے ہیں: (۱) مقدار دخل۔ (۲) گرانی و ارزانی۔ (۳) حال مقام، مثلاً زیادہ سرد ممالک جاڑے کا سامان درکار ہوتا ہے معتدل میں کم، اور بلحاظ، آب و ہوا غذا میں بھی تفاوت ہوتا ہے۔ (۴) زمانہ موجودہ میں عادت بلد جہاں جیسی خوراک و پوشاک معتاد و معہود ہو مثلاً اب عرف خصوصاً مدینہ طیبہ۔

Fatawa Rizvia Volume 13

...it is generally a habit to eat well and dress well, although these same Arabs were once described as having extreme simplicity and frugality. Consideration will be given to general customs, not to a specific stingy or extravagant person. In some cities, for example Shahjahanpur, people generally eat oil; they are used to pulao and korma. In our cities, this is naturally disliked and customarily considered flawed, so there will be no demand for ghee there, but it will be here, and so on. After considering all these matters conventionally, it can be said that such an income and such expenses belong to a wealthy person, a poor person, or a middle-class person in such a time and place. It is stated in 'Tanweer al-Absar':

Maintenance will be determined according to dearness and cheapness. (T) | يقدرها بقدر الغلاء والرخص -1-

Furthermore, in the same book and with reference to 'Ikhtiyar' in 'Durr al-Mukhtar', it is stated:

Maintenance will differ according to prosperity, adversity, region, and current circumstances. (T) | 2- يختلف ذلك يساراً و اعساراً وحالاً و بلدا-

It is stated in 'Radd al-Muhtar':

If the text had mentioned 'time' here as well, it would have been better. (T) | لو قال و وقتا لكان اولٰى -3-

In the same book, it is stated:

Maintenance will be fixed appropriately, taking time and place into account. (T) | 4- يراعٰى كل وقت او مكان بما يناسبہ-

In the same book, from 'Dhakhira', it is stated:

Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) has mentioned the consideration of people's habits. Maintenance will vary with the difference of places being hot or cold and the local habits. Therefore, the Qazi must consider sufficiency in custom according to every place and time. (T) | ما ذكره محمد على عادتهم و ذلک يختلف باختلاف الاماكن حرا وبردا والعادات فعلى القاضى اعتبار الكفالة بالمعروف فى كل وقت مكان -5-

1 Durr al-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/268 2 Durr al-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/268 3 Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-

Turath al-Arabi, Beirut, 2/252 4 Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/251 5 Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/252

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

...आम तौर पर अच्छा खाने और अच्छा पहनने का चलन है, हालाँकि यही अरब एक समय में अपनी अत्यधिक सादगी और किफ़ायत के लिए जाने जाते थे। सामान्य रीति-रिवाजों का ध्यान रखा जाएगा, न कि किसी विशेष कंजूस या फ़िज़ूलखर्च व्यक्ति का। कुछ शहरों में, उदाहरण के लिए शाहजहाँपुर में, आम तौर पर तेल खाते हैं; वे पुलाव और कोरमा के आदी हैं। हमारे शहरों में, यह स्वाभाविक रूप से नापसंद किया जाता है और पारंपरिक रूप से दोषपूर्ण माना जाता है, इसलिए वहां घी की मांग नहीं होगी, लेकिन यहां होगी, और इसी तरह अन्य चीजों के लिए भी। इन सभी बातों पर पारंपरिक रूप से विचार करने के बाद यह कहा जा सकता है कि इतनी आय और इतने खर्च वाला व्यक्ति ऐसे समय और स्थान पर समृद्ध, निर्धन या मध्यम वर्गीय है। 'तनवीरुल अबसार' में है:

गुज़ारा (नफ़क़ा) महंगाई और मंदी के हिसाब से होगा। (त) | 1- يقدرها بقدر الغلاء والرخص-

इसके अलावा, उसी में और 'दुर्रे मुख्तार' में 'इख़्तियार' के हवाले से है:

गुज़ारा (नफ़क़ा) खुशहाली, तंगी, क्षेत्र और वर्तमान परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होगा। (त) | 2- يختلف ذلك يساراً و اعساراً وحالاً و بلدا-

'रद्दुल मुहतार' में है:

यदि पाठ (मतन) में यहाँ 'समय' का भी उल्लेख किया जाता तो बेहतर होता। (त) | لو قال و وقتا لكان اولٰى -3-

उसी में है:

समय और स्थान का ध्यान रखते हुए उचित गुज़ारा (नफ़क़ा) निर्धारित किया जाएगा। (त) | يراعٰى كل وقت او مكان بما يناسبہ -4-

उसी में 'ज़खीरा' से उद्धृत है:

इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने लोगों की आदतों के विचार का उल्लेख किया है। गुज़ारा (नफ़क़ा) स्थानों की गर्मी और सर्दी तथा वहां की आदतों के अंतर से भिन्न होगा, अतः काज़ी को हर स्थान और समय के अनुसार रीति-रिवाजों में पर्याप्तता का विचार करना होगा। (त) | ما ذكره محمد

على عادتهم و ذلک یختلف باختلاف الاماکن حرا وبردا والعادات فعلی القاضی اعتبار الکفالة بالمعروف فی کل وقت مکان -5-

1 दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 268/1 2 दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 268/1 3 रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, दारुल इहया-उत-तुरास-अल-अरबी, बेरूत, 252/2 4 रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, दारुल इहया-उत-तुरास-अल-अरबी, बेरूत, 251/2 5 रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, दारुल इहया-उत-तुरास-अल-अरबी, बेरूत, 252/2

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

میں عموماً خوش خوراکی و خوش پوشاکی معمول ہے حالانکہ یہی عرب ایک وقت کمال سادگی و تقلل سے موصوف تھا اعتبارِ عام عوائد کا ہوگا نہ خاص کسی بخیل یا مسرف کا بعض بلاد مثلاً شاہجہانپور میں عام طور پر تیل کھاتے ہیں، پلاؤ قورمہ پر اٹھے کے ہوتے ہیں، ہمارے بلاد میں یہ طبعاً مکروہ اور عرفاً معیوب، تو وہاں گھی کا مطالبہ نہ ہوگا یہاں ہوگا وقس علیہ، متعارف طور پر ان سب باتوں کے لحاظ کے بعد کہہ سکتے ہیں کہ اتنی آمدنی اتنے مصارف والا ایسے وقت ایسے مقام میں موسر مرفہ الحال یا معسر تنگدست یا متوسط تنویر الابصار میں ہے:

یقدرھا بقدر الغلاء والرخص -1- | نفقہ مہنگائی اور ارزانی کی اعتبار سے ہوگا۔ (ت)

نیز اسی میں اور بحوالہ اختیار در مختار میں ہے:

یختلف ذلك یساراً و اعساراً وحالاً و بلدا -2- | نفقہ خوشحالی، تنگدستی، علاقے اور صورت حال کے لحاظ سے مختلف ہوگا۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

لو قال و وقتا لکان اولٰی -3- | اگر متن یہاں وقت کو بھی ذکر کرتے تو بہتر ہوتا (ت)

اسی میں ہے:

یراعٰی کل وقت او مکان بما یناسبہ -4- | وقت اور جگہ کا اعتبار کرتے ہوئے نفقہ مناسب مقرر ہوگا۔ (ت)

اسی میں ذخیرہ سے ہے:

ما ذکرہ محمد علی عادتھم و ذلک یختلف باختلاف الاماکن حرا وبردا والعادات فعلی القاضی اعتبار الکفالۃ بالمعروف فی کل وقت مکان -5- | امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے لوگوں کی عادت کے اعتبار کو ذکر کیا ہے، تو نفقہ جگہوں کے گرم سرد اور وہاں کی عادات کے اختلاف سے مختلف ہوگا، تو قاضی کو ہر مقام اور وقت کے لحاظ سے عرف میں کفایت کا اعتبار کرنا ہوگا۔ (ت)

1 در مختار شرح تنویر الابصار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۸/۱ 2 در مختار شرح تنویر الابصار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۸/۱ 3 رد المحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۲/۲ 4 رد المحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۱/۲ 5 رد المحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۵۲/۲

Volume 13, Page 13 Fatawa-e-Razvia

It is stated in al-Bahr:

Arabic Text	Urdu Translation
In Al-Zahiriyya, Muhammad determined the clothing as two long shirts, two head coverings, and a wrap in every year, meaning for summer and winter. He did not mention trousers in the summer because they are essential in winter. This was in their custom. As for our custom, trousers are mandatory along with other clothes like cloaks, bedding for sleeping, quilts, and whatever protects from the harm of heat and cold. In winter, a silk garment, a silk cloak, and a silk head covering. In Al-Mujtaba, it is stated that this varies with the difference of places and customs. Thus, it is obligatory for the judge to consider sufficiency according to recognized norms in every time and place[1].	In Al-Zahiriyya, it is mentioned that the Imam (Allah the Almighty have mercy on him) specified the annual clothing allowance as two sheets, one wrap, and two head coverings. This refers to both summer and winter seasons. He did not mention trousers for the summer season because they are necessary in the winter season. This was according to their custom. However, in our custom, trousers and other clothes like the mattress on which one sleeps, quilts, and the cloth through which protection is sought from the intensity of cold and heat are mandatory; and in winters, a woolen sheet, a warm cloak, and a silk scarf. In Al-Mujtaba, it is stated that clothing differs due to regions and habits, so it is obligatory for the judge to consider every region and time and decide according to the customary sufficiency of that place. (T)

Similarly, it is in Fath al-Qadir under the chapter of Judgments and in al-Hindiyyah from al-Muhit. As for the husband being in debt, I say (Aqulu—T): Apparently, one cannot restrict the wife's maintenance because of this as this is also a human demand. Rather, it is in the Fatawa of the Great Imam Qazi Khan and then in al-Hindiyyah:

Arabic Text	Urdu Translation
A person imprisoned for debt, if he is extravagant in taking food, the judge shall prevent him from extravagance and determine for him a known sufficiency. Likewise, in clothes, he	If a person imprisoned for debt acts with extravagance in the preparation of food, the judge should prevent him from extravagance and bind him to spend according to the customary sufficiency.

Arabic Text	Urdu Translation
should be economical, and the judge should order him to be moderate, and he should not be restricted in his food, drink, and clothing[2].	Similarly, in the matter of clothing, he should act with moderation and be bound by it; however, there should be no hardship placed upon him regarding food, drink, and clothing. (T)

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Maintenance, H.M. Saeed Company Karachi, 4/77 [2] Fatawa Qadi Khan, Book of Al-Hajr, Naval Kishore Lucknow, 4/918

जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३ फतावा-ए-रज़विया

बहर (al-Bahr) में उल्लेख है:

अरबी पाठ

अल-ज़हीरिया में मुहम्मद ने कपड़ों की मात्रा प्रति वर्ष दो लंबे कुर्ते, दो सिर ढंकने वाले कपड़े (दुपट्टे) और एक चादर निर्धारित की, इससे उनका आशय गर्मी और सर्दी दोनों से था। उन्होंने गर्मी में शलवार का उल्लेख नहीं किया क्योंकि सर्दी में इसकी आवश्यकता अनिवार्य होती है। यह उनके रीति-रिवाजों (उर्फ़) में था। जहाँ तक हमारे रीति-रिवाजों का प्रश्न है, शलवार और अन्य वस्त्र जैसे जुब्बा, बिस्तर जिस पर सोया जाता है, लिहाफ़ और वे चीज़ें जिनसे गर्मी और सर्दी की तकलीफ को दूर किया जाता है, अनिवार्य हैं। सर्दी में रेशमी वस्त्र, रेशमी जुब्बा और रेशमी दुपट्टा। अल-मुज्तबा में है कि यह स्थानों और रीति-रिवाजों के बदलने से बदलता है, अतः न्यायाधीश (काज़ी) पर हर समय और स्थान में प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार पर्याप्तता का विचार करना अनिवार्य है।[1]

उर्दू अनुवाद

अल-ज़हीरिया में है कि इमाम (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने कपड़ों में वार्षिक दो चादरों, एक लिहाफ़ और दो ओढ़नियों की मात्रा का ज़िक्र किया है। इससे उनका तात्पर्य गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों के लिए था। उन्होंने गर्मी के मौसम में शलवार का ज़िक्र नहीं किया क्योंकि यह सर्दी के मौसम में ज़रूरी है। यह उनके रीति-रिवाजों (उर्फ़) के अनुसार था। लेकिन हमारे रीति-रिवाजों में शलवार और अन्य कपड़े, जैसे गद्दा जिस पर सोते हैं, लिहाफ़ और वह कपड़े जो गर्मी और सर्दी की तीव्रता से सुरक्षा प्रदान करते हैं, अनिवार्य हैं; और सर्दियों में ऊनी चादर, गर्म जुब्बा और रेशमी दुपट्टा। अल-मुज्तबा में है कि वस्त्र क्षेत्रों और आदतों की वजह से अलग-अलग होते हैं, इसलिए न्यायाधीश पर अनिवार्य है कि वह हर क्षेत्र और समय का विचार करते हुए वहाँ के रीति-रिवाजों के अनुसार पर्याप्तता का निर्णय ले। (त)

इसी प्रकार 'फ़तह अल-क़दीर' में अक़्ज़िया (निर्णयों) के अध्याय में और 'हिंदिया' में 'मुहीत' से उद्धृत है। जहाँ तक पति के कर्जदार होने की बात है, मैं कहता हूँ (अक़ुलू-त): स्पष्ट रूप से इसके कारण पत्नी के भरण-पोषण (नफ़क़ा) में तंगी नहीं की जा सकती क्योंकि यह भी एक मानवीय माँग है। बल्कि इमाम अजल क़ाज़ी ख़ाँ के फ़तावा और फिर 'हिंदिया' में उल्लेख है:

अरबी पाठ

ऋण के कारण कैद व्यक्ति, यदि वह भोजन ग्रहण करने में फिजूलखर्ची करता हो, तो न्यायाधीश उसे फिजूलखर्ची से रोके और उसके लिए प्रचलित पर्याप्त मात्रा निर्धारित करे। इसी प्रकार वस्त्रों के मामले में भी वह मितव्ययिता अपनाए और न्यायाधीश उसे मध्यम मार्ग अपनाने का आदेश दे, और उसके खाने, पीने और पहनावे में तंगी न की जाए।[2]

उर्दू अनुवाद

ऋण में कैद व्यक्ति यदि भोजन की तैयारी में फिजूलखर्ची करता हो, तो न्यायाधीश उसे फिजूलखर्ची से रोके और प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार पर्याप्त खर्च का पाबंद करे। इसी प्रकार कपड़ों के मामले में भी वह संयम से काम ले और उसका पाबंद रहे; हालांकि खाने-पीने और कपड़ों में उस पर तंगी न की जाए। (त)

[1] अल-बहर अर-राइक़, बाब अल-नफ़क़ा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, ४/७७ [2] फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ, किताब अल-हज्र, नवल किशोर लखनऊ, ४/९१८

पृष्ठ ४६७ / ६८८

بحر میں ہے:

عربی عبارت

في الظهيرية قدر محمد الكسوة بدرعين وخمارين وملحفة في كل سنة، اراد بهما صيفياً وشتوياً ولم يذكر السراويل في الصيف اذلا بد منه في الشتاء، وهذا في عرفهم اما في عرفنا فتجب السراويل وثياب اخر كالجبة والفراش التي تنام عليه واللحاف وما تدفع به اذى الحر والبرد، وفي الشتاء درع خز وجبة قز وخمار ابريسم اهـ وفي المجتبى ان ذلك يختلف باختلاف الاماكن والعادات فيجب على القاضي اعتبار الكفاية بالمعروف وفي كل وقت ومكان[1]۔

اردو ترجمہ

ظہیریہ میں ہے کہ امام رحمہ اللہ تعالٰی نے لباس میں سالانہ دو چادروں، ایک لحاظ اور دو اوڑھنیوں کی مقدار ذکر کی ہے، اس سے مراد گرما اور سرما دونوں موسموں کے لئے، انہوں نے موسم گرما میں شلوار کا ذکر نہ فرمایا کیونکہ یہ سردی کے موسم میں ضروری ہے، یہ ان کے عرف میں ہے، لیکن ہمارے عرف میں شلوار اور دیگر کپڑے مثلاً گدا جس پر سوتے ہیں اور لحاف اور وہ کپڑا جس سے سردی اور گرمی کی شدت سے تحفظ کیا جاتا ہے اور سردیوں میں اونی چادر اور گرم جبہ اور ریشمی دوپٹہ اھ، مجتبٰی میں ہے کہ لباس علاقوں اور عادتوں کی وجہ سے مختلف ہوتا ہے تو قاضی پر لازم ہے کہ وہ ہر علاقے اور وقت کا اعتبار کرتے ہوئے وہاں کے عرف کے مطابق کفایت والے کا فیصلہ کرے۔(ت)

اسی طرح فتح القدیر میں اقضیہ اور ہندیہ میں محیط سے ہے۔ رہا شوہر کا مدیون ہونا اقول (میں کہتا ہوں۔ ت) ظاہر اً اس کے سبب نفقہ زن میں تنگی نہیں کر سکتے کہ یہ بھی مطالبہ عبد ہے بلکہ فتاوٰی امام اجل قاضی خاں پھر ہندیہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
المحبوس بالدين اذاكان يسرف في اتخاذ الطعام يمنع القاضي عن الاسراف ويقدر له الكفاف المعروف وكذلك في الثياب يقتصد فيها ويأمره بالوسط ولا يضيق عليه في مأكوله ومشرو به وملبوسه[2]۔	قرض میں مقید شخص اگر خوراک کی تیاری میں اسراف سے کام لیتا ہو تو قاضی اس کو اسراف سے منع کرے اور بقدر کفایت عرف کے مطابق خرچ کا پابند کرے اور ایسے ہی لباس کے معاملے میں میانہ روی سے کام لے اور اس کا پابند کرے تاہم کھانے پینے اور لباس میں اس پر تنگی نہ کرے۔(ت)

[1] بحر الرائق باب النفقة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/۷۷ [2] فتاوی قاضی خاں کتاب الحجر نولکشور لکھنؤ ۴/۹۱۸

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

When a debtor's own maintenance is not restricted and an average standard is maintained, then regarding the obligatory maintenance for others, it is even more deserving of consideration (it should be referred to and scrutinized - T). Allah knows best. Along with this, the woman's own state will also be considered; whether she is excessively wealthy, poor, or of average means. If both husband and wife are of the same state, then maintenance of that level will be necessary. If they differ, then an average of both their states will be taken. For example, if according to one's status, the woman's maintenance should be ten rupees monthly, and according to the other's, four rupees, then seven rupees monthly will be made obligatory. Then, if the husband is currently capable of paying it, well and good; otherwise, he will pay as much as he can, and the remainder will stay as a debt upon him until a time of ease.

Arabic Text	**Urdu Translation**
Allah the Almighty said: "Let a man of wealth spend from his wealth, and he whose provision is restricted - let him spend from what Allah has given him. Allah does not charge a soul except [according to] what He has given it. Allah will bring about, after hardship, ease." (1)	Allah the Almighty said: Let the one with abundance spend according to his abundance, and he whose sustenance is measured should spend from what Allah has given him. Allah does not burden anyone except according to what He has given them. Soon Allah will bring ease after hardship. (T)

In Durr al-Mukhtar it is stated: | Arabic Text | Urdu Translation | |---|---| | Maintenance is deserved according to their [both husband and wife] status; this is the fatwa given. He is addressed according to his capacity, and the remainder is a debt until ease. (2) | He will bear the maintenance according to the state of both; this is the fatwa given. And the command for payment will be according to whatever capacity there is, and the rest will be his responsibility, which he should pay at the time of ease. (T) |

In Radd al-Muhtar and Bahr al-Ra'iq it is stated: | Arabic Text | Urdu Translation | |---|---| | They [the jurists] agreed on the obligation of the maintenance of the wealthy when both are wealthy, and on the maintenance of the needy when both are needy. Disagreement only exists when one of them is wealthy and the other... | The honorable jurists agree that if both are in affluent circumstances, maintenance will

be obligatory accordingly, and if both are destitute, then accordingly. The difference of opinion is only in the case when one is in abundance and the other... |

(1) Al-Qur'an 65/7 (2) Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/267

फतावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

जब ऋणी (कर्जदार) के स्वयं के भरण-पोषण में तंगी नहीं की गई और औसत का ध्यान रखा गया, तो दूसरों के लिए अनिवार्य भरण-पोषण (नफ़क़ा) के मामले में यह और भी अधिक विचारणीय है (इस पर गौर और जांच की जानी चाहिए - टी)। अल्लाह बेहतर जानता है। इसके साथ ही, महिला की अपनी स्थिति भी देखी जाएगी कि वह अत्यधिक धनी है, गरीब है या औसत दर्जे की है। यदि पति और पत्नी दोनों एक ही स्थिति के हैं, तो उसी स्तर का भरण-पोषण आवश्यक होगा। यदि उनकी स्थितियां भिन्न हैं, तो दोनों की स्थितियों का औसत लिया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि एक की स्थिति के अनुसार महिला का भरण-पोषण दस रुपये मासिक होना चाहिए, और दूसरे के अनुसार चार रुपये, तो सात रुपये मासिक अनिवार्य किया जाएगा। फिर, यदि पति वर्तमान में इसे देने में सक्षम है, तो बेहतर है; अन्यथा वह जितना सक्षम है उतना देगा, और शेष राशि आसानी होने तक उस पर ऋण के रूप में रहेगी।

अरबी मूलपाठ

अल्लाह तआला ने फरमाया: "सामर्थ्य वाले को अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना चाहिए, और जिसकी जीविका मापी गई हो, उसे अल्लाह द्वारा दिए गए में से खर्च करना चाहिए। अल्लाह किसी पर उसकी दी गई शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालता। अल्लाह तंगी के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देगा।" (1)

उर्दू अनुवाद

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: सामर्थ्य वाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च करे और जिस पर खर्च मापा गया हो वह अल्लाह के दिए हुए में से खर्च करे। अल्लाह किसी को उसकी दी गई शक्ति से अधिक कष्ट नहीं देता। जल्द ही अल्लाह तंगी के बाद आसानी फरमाएगा। (टी)

दुर्रे मुख्तार में उल्लेख है: | अरबी मूलपाठ | उर्दू अनुवाद | |---|---| | भरण-पोषण उन दोनों की स्थिति के अनुसार देय है; यही फतवा दिया गया है। उसे उसकी क्षमता के अनुसार संबोधित किया जाता है, और शेष आसानी होने तक ऋण है। (2) | वह दोनों की स्थिति के अनुसार भरण-पोषण वहन करेगा; इसी पर फतवा दिया जाएगा। और भुगतान का आदेश उसकी क्षमता के अनुसार होगा, और बाकी उसकी जिम्मेदारी होगी जिसे वह आसानी के समय अदा करेगा। (टी) |

रद्दुल मुहतार और बहरुर रायक़ में उल्लेख है: | अरबी मूलपाठ | उर्दू अनुवाद | |---|---| | फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने धनी होने की स्थिति में धनी के भरण-पोषण के अनिवार्य होने और निर्धन होने

की स्थिति में निर्धन के भरण-पोषण पर सहमति व्यक्त की है। मतभेद केवल उस स्थिति में है जब उनमें से एक धनी हो और दूसरा... | फ़ुक़हा-ए-किराम का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि अगर दोनों खुशहाल हों तो उसके मुताबिक और अगर दोनों तंगदस्त हों तो उसके मुताबिक नफ़क़ा (खर्च) वाजिब होगा। और इख्तिलाफ़ (मतभेद) सिर्फ इस सूरत में है जब एक खुशहाली वाला हो और दूसरा... |

(1) अल-कुरान 65/7 (2) दुर्रे मुख्तार, बाबुल नफ़क़ा, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/267

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

جب مدیون پر خود اس کے نفقہ میں تنگی نہ کی گئی اوسط کا لحاظ رہا تو دوسرے کے نفقہ واجبہ میں بدرجہ اولی فلیراجع ولیحرر (اس کی طرف رجوع کیا جائے اور چھان بین کی جائے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ اس کے ساتھ عورت کا خود اپنا حال بھی دیکھا جائے گا کہ غنیہ مفرط فی الغنا ہے یا فقیرہ یا متوسطہ الحال۔ اگر زن و شو دونوں ایک طرح کے ہیں تو اسی طرح کا نفقہ لازم آئے گا اور مختلف ہیں تو دونوں کے حال کے اوسط مثلاً ایک کے اعتبار سے عورت کا نفقہ دس روپے ماہوار ہونا چاہئے اور دوسرے کے لحاظ سے چار روپے تو سات روپے ماہوار واجب کریں گے پھر اگر شوہر فی الحال اس کی ادا پر قادر ہے فبہا ورنہ جس قدر پر قادر ہے دے گا باقی وقت فراخی تک اس پر دین رہے گا۔

عربی متن **اردو ترجمہ**

قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی لِیُنْفِقْ ذُو سَعَۃٍ مِّنْ سَعَتِہٖ ط وَ مَنْ قُدِرَ عَلَیْہِ رِزْقُہٗ فَلْیُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰىہُ اللّٰہُ ط لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا اِلَّا مَآ اٰتٰىہَا ط سَیَجْعَلُ اللّٰہُ بَعْدَ عُسْرٍ یُسْرًا ﴿۷﴾ اللہ تعالٰی نے فرمایا: وسعت والا اپنی وسعت کے مطابق خرچ کرے اور جس پر خرچہ مقدر کیا گیا ہو وہ اللہ تعالیٰ کے دئے سے خرچ کرے اللہ تعالیٰ کسی کو تکلیف نہیں دیتا مگر اسی کے جو اس نے اسے عطا کیا ہے عنقریب اللہ تعالیٰ تنگی کے بعد آسانی فرمائے گا۔ (ت) ۱

درمختار میں ہے: | عربی متن | اردو ترجمہ | |---|---| | یستحق النفقۃ بقدر حالھما بہ یفتی ویخاطب بقدر وسعہ والباقی دین الی المیسرہ ۲۔ | دونوں کے حال کے مطابق وہ نفقہ برداشت کرے گا، اسی پر فتوی دیا جائے گا، اور جتنی توفیق ہو اسی کے مطابق ادائیگی کا حکم ہو گا اور باقی اس کے ذمہ ہو گا اس کو آسانی کے وقت ادا کرے گا۔ (ت) |

ردالمحتار و بحر الرائق میں ہے: | عربی متن | اردو ترجمہ | |---|---| | اتفقوا علی وجوب نفقۃ الموسرین اذا کانا موسرین وعلی نفقۃ المعسرین اذا کانا معسرین، وانما الاختلاف فیما اذا کان احدھما موسرا والاخر | فقہاء کرام کا اتفاق ہے کہ اگر دونوں کشادہ حال ہوں تو اسکے مطابق اور اگر دونوں تنگدست ہوں تو اس کے مطابق نفقہ واجب ہوگا اور اختلاف صرف اس صورت میں ہے جب ایک فراخی والا ہو اور دوسرا |

۱ القرآن ۷/۶۵ ۲ درمختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۷

Fatawa Razawiyya, Volume 13

If [the husband] is poor, then according to the manifest narration, the husband's status will be considered in this case. If the husband is affluent and the wife is poor, then the maintenance for the affluent is due, and if the husband is poor and the wife is wealthy, then the maintenance for the poor is due. However, the opinion upon which the fatwa is based is that in both cases, instead of just the husband's status, intermediate maintenance will be due considering the status of both, and it will be more than the maintenance of the poor and less than the maintenance of the affluent. (T)

Apart from this, the scholars have not specified any particular definition for affluence and poverty; the matter is left to custom ('urf). This is unlike the maintenance of relatives, where affluence is determined by reaching the Nisab (minimum threshold of wealth).

And I saw in Fatawa al-Khayriyya that he mentioned what they cited up to here. Then, when he was asked regarding a couple where both are wealthy: Is the maintenance of the wealthy obligatory upon him, and what is the limit of wealth in the chapter of maintenance? (He replied) Yes, the maintenance of the wealthy is obligatory. It is stated in Al-Bahr that jurists have differed regarding the limit of affluence into four opinions. First, the limit of wealth is estimated by the Nisab of Zakat. In Al-Khulasa, it says that the fatwa is based on this, and Al-Walwalji preferred it, explaining that maintenance is based on ease, and there is no upper limit for ease, while its lower limit is the Nisab, hence it should be set as the standard. Second, the limit of wealth is that which makes receiving charity (sadaqah) forbidden. This is the Nisab that is not productive (not commercial or cash-based). In Al-Hidayah, it says that the fatwa is based on this, and it was validated in Al-Dhakhira... [incomplete]

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/645.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

यदि [पति] गरीब है, तो ज़ाहिर रिवायत के अनुसार इस स्थिति में पति की हालत का विचार होगा। यदि पति समृद्ध है और पत्नी गरीब है, तो समृद्धि वाला खर्च (नफ़क़ा) अनिवार्य होगा, और यदि पति गरीब है और पत्नी अमीर है, तो गरीबी वाला खर्च अनिवार्य होगा। हालाँकि, जिस पर फतवा है वह मत यह है कि दोनों स्थितियों में केवल पति के हाल के बजाय दोनों के हाल के आधार पर मध्य स्तर का खर्च अनिवार्य होगा, और वह तंगी से अधिक और समृद्धि से कम होगा। (त)

इसके अलावा, विद्वानों ने यहाँ समृद्धि और गरीबी की कोई विशेष सीमा तय नहीं की है; इसे प्रथा (उर्फ़) पर निर्भर रखा है। रिश्तेदारों के खर्च के विपरीत, जहाँ समृद्धि निसाब (धन की न्यूनतम सीमा) से निर्धारित होती है।

और मैंने फ़तावा-ए-खैरिया में देखा कि उन्होंने यहाँ तक वही मार्ग अपनाया जो फकीहों ने ऊपर उल्लेख किया है। जब उनसे ऐसे पति-पत्नी के बारे में पूछा गया जो दोनों अमीर हों: क्या उन पर अमीरों वाला खर्च अनिवार्य है, और खर्च के मामले में अमीरी की सीमा क्या है? (उन्होंने उत्तर दिया) हाँ, अमीरों वाला खर्च अनिवार्य होगा। अल-बह्र में कहा गया है कि अमीरी की सीमा के बारे में फकीहों के बीच चार मतभेद हैं। पहला यह कि अमीरी की सीमा ज़कात के निसाब का अनुमान है। खुलासा में कहा गया है कि इसी पर फतवा है, और अल-वलवाल्जी ने इसे पसंद किया और कारण यह बताया कि खर्च सुगमता पर आधारित है, और सुगमता की कोई अंतिम सीमा नहीं है जबकि इसकी प्रारंभिक सीमा निसाब है, इसलिए इसे ही मानक माना जाना चाहिए। दूसरा मत यह है कि अमीरी की सीमा वह है जिस पर सदका (दान) लेना हराम होता है। यह वह निसाब है जो 'नामी' (बढ़ने वाला) न हो, यानी व्यापारिक या नकद वाला निसाब न हो। हिदाया में कहा गया है कि इसी पर फतवा है, और ज़खीरा में इसे सही... [अपूर्ण]

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-नफ़क़ा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/645.

معسرا فعلی ظاہرا الروایۃ الاعتبار لحال الرجل فان کان موسرا وھی معسرۃ فعلیہ نفقۃ الموسرین وفی عکسہ نفقۃ المعسرین واما علی المفتی بہ فتجب نفقۃ الوسط فی المسألتین وھو فوق نفقۃ المعسرۃ ودون نفقہ الموسرۃ ۱۔ تنگدست ہو تو ظاہر روایت کے مطابق اس صورت میں خاوند کی حالت کا اعتبار ہوگا اگر خاوند فراخ دست اور بیوی تنگدست ہو تو فراخی والا نفقہ اور اگر خاوند تنگدست ہو اور بیوی امیر ہو تو تنگی والا نفقہ واجب ہوگا جبکہ فتوی والا قول یہ ہے کہ دونوں صورتوں میں صرف خاوند کے حال کی بجائے دونوں کے حال کے اعتبار سے درمیانہ نفقہ واجب ہوگا، اور وہ تنگ حالی سے زائد اور فراخی سے کم ہوگا۔ (ت)

اس کے سوا یسار واعسار کی کوئی خاص تحدید یہاں علماء نے نہ فرمائی امر عرف پر دائر رکھا ہے۔ بخلاف نفقہ اقارب کے وہاں یسار مقدر بہ نصاب ہے،

ورأیت فتاوی الخیریۃ انہ ساق الی ھنا ماذکروہ ثمہ اذ سئل فی الزوجین اذاکاناغنیین ھل تجب علیہ نفقۃ الاغنیاء وماحد الغنی فی باب النفقۃ(اجاب) نعم تجب نفقۃ الاغنیاء قال فی البحر اختلفوا فی حدالیسار علی اربعۃ اقوال احدھا انہ مقدر بنصاب الزکوۃ قال فی الخلاصہ وبہ یفتی واختارہ الولو الجی معللا بأن النفقۃ تجب علی الموسر ونھایۃ الیسار لاحدلھا وبدایتہ النصاب فیقدر بہ والثانی انہ نصاب حرمان الصدقۃ وھو النصاب الذی لیس بنام قال فی الھدایۃ وعلیہ الفتوی وصححہ فی الذخیرۃ اھ اور میں نے فتاوٰی خیریہ میں دیکھا تو انہوں نے وہی روش اختیار کی جو فقہانے اوپر ذکر کی ہے، جب ان سے سوال ہوا کہ جب دونوں غنی ہوں تو کیا غنی والا نفقہ واجب ہوگا اور نفقہ میں غنی کی حد کیا ہے تو انہوں نے جواب دیا ہاں غنی والا نفقہ واجب ہوگا، بحر میں فرمایا کہ غنا کی حد میں فقہاء

نے اختلاف کیا جو چار قول ہیں، ایک یہ غنا کی حد نصاب زکوۃ کا اندازہ ہے، خلاصہ میں کہا، اسی پر فتوی ہے، ولوالجی نے اسی کو پسند کیا اور وجہ یہ بیان کی کہ نفقہ سہولت پر مبنی ہے اور سہولت کی کوئی آخری حد نہیں ہے جبکہ اس کی ابتدائی حد نصاب ہے لہذا اسی کو معیار قرار دیا جائے گا۔ اور دوسرا قول یہ کہ غناء کی حد وہ ہے جس پر صدقہ لینا حرام ہوتا ہے یہ وہ نصاب ہے جو نامی نہ ہو یعنی تجارتی یا نقدی والا نصاب نہ ہو، ہدایہ میں فرمایا اسی پر فتوی ہے، اور ذخیرہ میں اسی کو صحیح قرار دیا گیا۔

۱۔ رد المحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۴۵

Fatawa Rizvia Volume 13

[Arabic Column:] What appears to a jurist proficient in Fiqh is that the first opinion is more worthy of acceptance. This is because wealth that is not growing/productive is quickly exhausted when expenses are continuously drawn from it, as is evident. And Allah (the Exalted) knows best. This concludes the quote from Al-Khayriyyah. I say (the author): The reasoning provided by Imam Al-Walwalaji only necessitates the "nisab" (threshold) and does not necessitate it being "growing" (productive). However, if the reasoning stated by Allama Ramli—that in the matter of maintenance, "ghina" (sufficiency/wealth) is considered—is included, then it could be a reason for it being productive. Yet, this is something to be pondered, so reflect upon it. Then I say: In bringing it up to this point, there is room for consideration. For what is considered regarding relatives is capability and means. So much so that Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) has ruled regarding the maintenance for relatives that if a person earns one dirham daily and his own survival needs four "daniqs" (a small unit of currency), he must spend two "daniqs" on his prohibited relatives (Dhu al-Arham). It is stated in Al-Fath: "This is the opinion upon which reliance can be placed for issuing a fatwa." Thus, in the maintenance of relatives, one who can fulfill another's need without incurring harm to himself will be called well-to-do (prosperous), and one who cannot do so will be considered needy, and for this reason, it will not be obligatory on him at all. However, the maintenance of a wife is mandatory upon the husband in every circumstance...

[Urdu Column:] ...has been decided. Ah! And what is apparent to someone with expertise in Fiqh is that the first statement is superior in acceptance because a non-productive asset is quickly depleted when expenses are levied against it successively, as is obvious. Allah Almighty knows best. The passage from Al-Khayriyah ends here. I say: (I say) the cause stated by Imam Walwalaji only requires the 'nisab' (minimum threshold), it does not require it to be productive (nami). Yes, if the reason given by Allama Ramli is included—that in the matter of maintenance, wealth (ghina) is taken into account—then it could be a reason for it being productive. It could be a reason for it being productive, whereas it is a point worth considering, so do consider it. Then I say: (I say again) there is an objection to the statement from Al-Khayriyah up to this point because in the maintenance of relatives, only power and capability are considered. So much so that Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) has made it obligatory for a person earning one dirham a day for the maintenance of relatives that if the person earning a dirham survives on four daniqs, he should

spend two daniqs on his relatives (Dhu al-Arham). It is stated in Fath that this is the statement that can be relied upon for issuing a fatwa. Ah! So, in the maintenance of relatives, he who can fulfill the needs of others without being affected by harm himself will be called prosperous, and he who cannot do so will be considered destitute, and for this reason, it will not be obligatory on him at all, but the maintenance of the wife is upon the husband in every situation.

Footnotes: 1 Fatawa Khayriyah, Chapter on Maintenance, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/5 2 Fath al-Qadir, Chapter: And it is upon the man to spend on his parents etc., Maktabah Nooriya Razaviya, Sukkur, 4/42

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 13 (तेरह)

[अरबी कॉलम:] एक फ़क़ीह (विधिवेत्ता), जो फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) में निपुण है, के लिए जो ज़ाहिर हो रहा है वह यह है कि पहला मत स्वीकार्यता में अधिक उपयुक्त है। क्योंकि जो निसाब (न्यूनतम संपत्ति) बढ़ने वाली न हो, वह लगातार खर्चों के कारण जल्दी समाप्त हो जाती है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (खैरिय्या का कथन समाप्त हुआ)। मैं कहता हूँ: इमाम अल-वलवालजी द्वारा दिया गया तर्क केवल निसाब की मांग करता है, उसके बढ़ने वाले (उत्पादक) होने की नहीं। हाँ, यदि अल्लामा रमली द्वारा बताया गया कारण—कि भरण-पोषण (नफ़क़ा) के मामले में 'ग़िना' (समृद्धि) का विचार किया जाता है—शामिल किया जाए, तो यह उत्पादक होने का कारण बन सकता है। फिर भी, यह विचारणीय बात है, अतः विचार करें। फिर मैं कहता हूँ: यहाँ तक की बहस में आपत्ति की गुंजाइश है, क्योंकि रिश्तेदारों के भरण-पोषण में केवल सामर्थ्य और विस्तार मान्य है। यहाँ तक कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने दैनिक एक दिरहम कमाने वाले व्यक्ति पर रिश्तेदारों के भरण-पोषण के संबंध में यह अनिवार्य किया है कि यदि दिरहम कमाने वाले का गुज़ारा चार 'दानिक़' (एक मुद्रा इकाई) पर होता है, तो वह अपने रिश्तेदारों पर दो 'दानिक़' खर्च करे। 'अल-फ़तह' में कहा गया है कि यही वह मत है जिस पर फ़तवा देने में भरोसा किया जा सकता है। अत; रिश्तेदारों के भरण-पोषण में जो दूसरे की ज़रूरत पूरी कर सके और स्वयं किसी नुकसान में न पड़े, उसे समृद्ध (खुशहाल) कहा जाएगा, और तंगदस्त वह होगा जो ऐसा न कर सके और इस वजह से उस पर यह बिल्कुल अनिवार्य नहीं होगा। लेकिन पत्नी का भरण-पोषण तो हर हाल में पति पर अनिवार्य है...

[उर्दू कॉलम:] ...क़रार दिया है अह् और फ़िक़्ह में महारत रखने वाले पर जो ज़ाहिर हो रहा है वह यह कि पहला क़ौल क़बूलियत में औला है क्योंकि जो निसाब नामी न हो यके बाद दीगरे अख़राजात में वह जल्दी ख़त्म हो जाता है जैसा कि ज़ाहिर है, वल्लाहु तआला आलम, ख़ैरिय्या की इबारत ख़त्म हुई, अक़ूल: (मैं कहता हूँ) इमाम वलवालजी की बयान करदा इल्लत सिर्फ़ निसाब की मुतक़ाज़ी है नामी होने को मुतक़ाज़ी नहीं है हाँ अगर अल्लामा रमली की बयान करदा वजह कि नफ़क़ा के बाब में ग़िना का एतबार होता है, को शामिल किया जाए तो नामी की वजह बन सकती है, को शामिल किया जाए तो नामी की वजह बन सकती है जबकि वह क़ाबिल-ए-ग़ौर बात है तो ग़ौर करो, सुम्मा अक़ूल: (मैं फिर कहता हूँ) ख़ैरिय्या का जो यहाँ तक बयान है इसमें एतराज़ है क्योंकि अक़रबा के नफ़क़ा में सिर्फ़ क़ुदरत वाली वुसअत मोतबर है हत्ता कि इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने रोज़ाना

एक दिरहम कमाने वाले पर अक़रबा के नफ़क़ा के मुतअल्लिक़ यह वाजिब किया है कि अगर दिरहम कमाने वाले का गुज़ारा चार दानिक़ पर होता है तो वह अपने ज़ुवल अरहाम पर दो दानिक़ ख़र्च करे। फ़तह में फ़रमाया कि यही वह क़ौल है जिस पर फ़तवा देने में एतमाद किया जा सकता है अह्, तो ज़ुवल अरहाम के नफ़क़ा में जो दूसरे की हाजत को पूरा कर सके और ख़ुद ज़रर में मुब्तिला न हो वह फ़राख़ दस्त कहलाएगा, और तंगदस्त वह होगा जो ऐसा न कर सके और इस वजह से उस पर बिल्कुल वाजिब न होगा लेकिन बीवी का नफ़क़ा तो ख़ावंद पर हर हाल में

फ़ुटनोट: 1 फ़तावा ख़ैरिय्या बाब अल-नफ़क़ा दारुल मआरिफ़त बेरूत 5/1 2 फ़तह अल-क़दीर फ़स्ल व-अलल रजुल अन युनफ़िक़ अला अबवईह शख़्स मकतबा नूरिया रज़विय्या सुक्खर 4/42

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

[عربی عبارت:] والذی یظھر للفقیه البارع فی الفقه ان الاول اولی بالقبول لان مالیس بنام سریع النفاد اذا تواردت علیه النفقات کما ھو ظاھر واللہ تعالی اعلم اه مانی الخیریة .اقول : تعلیل الامام الولو الجی لایفید الاشتراط النصاب دون النمو الان یضم الیه ما افاد العلامة الرملی وفیه تأمل فتأمل ثم اقول : فی سوقه الی ھنانظر فان المعتبر فی الاقارب القدرة حتی اوجب محمد علی من یکسب کل یوم درھماً وتکفیه اربع دوانق ان ینفق الدانقین علی محارمه قال فی الفتح وھذا یجب ان یعول علیه فی الفتوی اه فالموسر ثمه من یمکنه دفع حاجة غیره بدون لحوق ضرر به والمعسر بخلافه ولذا لم تجب علیه اصلا اما نفقة المرأة فتجب علی الزوج مطلقا وان لم یکن

[اردو ترجمہ و تشریح:] قرار دیا ہے اھ اور فقہ میں مہارت رکھنے والے پر جو ظاہر ہو رہا ہے وہ یہ کہ پہلا قول قبولیت میں اولیٰ ہے کیونکہ جو نصاب نامی نہ ہو یکے بعد دیگرے اخراجات میں وہ جلدی ختم ہو جاتا ہے جیسا کہ ظاہر ہے ، واللہ تعالیٰ اعلم ، خیریہ کی عبارت ختم ہوئی ، اقول: (میں کہتا ہوں) امام ولوالجہی کی بیان کردہ علت صرف نصاب کی متقاضی ہے نامی ہونے کو متقاضی نہیں ہے ہاں اگر علامہ رملی کی بیان کردہ وجہ کہ نفقہ کے باب میں غناء کا اعتبار ہوتا ہے ، کو شامل کیا جائے تو نامی کی وجہ بن سکتی ہے ، کو شامل کیا جائے تو نامی کی وجہ بن سکتی ہے جبکہ وہ قابل غور بات ہے تو غور کرو ، ثم اقول: (میں پھر کہتا ہوں) خیریہ کا جو یہاں تک بیان ہے اس میں اعتراض ہے کیونکہ اقرباء کے نفقہ میں صرف قدرت والی وسعت معتبر ہے حتیٰ کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے روزانہ ایک درہم کمانے والے پر اقرباء کے نفقہ کے متعلق یہ واجب کیا ہے کہ اگر درہم کمانے والے کا گزارہ چار دانق پر ہوتا ہے تو وہ اپنے ذوالارحام پر دو دانق خرچ کرے ۔ فتح میں فرمایا کہ یہی وہ قول ہے جس پر فتویٰ دینے میں اعتماد کیا جا سکتا ہے اھ ،

تو ذوی الارحام کے نفقہ میں جو دوسرے کی حاجت کو پورا کر سکے اور خود ضرر میں مبتلا نہ ہو وہ فراخ دست کہلائے گا ، اور تنگدست وہ ہوگا جو ایسا نہ کر سکے اور اس وجہ سے اس پر بالکل واجب نہ ہوگا لیکن بیوی کا نفقہ تو خاوند پر ہر حال میں

حواشی: 1 فتاوٰی خیریہ باب النفقۃ دارالمعرفۃ بیروت ۱/۵ 2 فتح القدیر فصل وعلی الرجل ان ینفق علی ابویہ الخ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۷/ ۴۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

(Arabic text snippet): It is obligatory for him even if he has nothing. Here, 'rich' and 'poor' mean being possessed of ample means or being in straitened circumstances. This is not restricted by 'Nisab' (minimum zakatable wealth), nor does it necessitate it. Rather, it differs as we have previously mentioned. Declaring someone who possesses Nisab as 'capable' does not necessarily mean they are deemed 'rich' such that the maintenance of the wealthy is obligatory upon them for their wife, as a wife might exhaust the Nisab in less than six months, or even in a quarter of a year.

(Urdu translation): It is obligatory even if the husband has nothing. Therefore, in the matter of maintenance for the wife, 'rich' and 'poor' mean being possessed of ample means or being in straitened circumstances. This meaning cannot be restricted to the 'Nisab', nor is the Nisab necessary for it. Instead, the two are separate, as we have explained earlier. So, considering a husband to be a possessor of Nisab and thus capable of providing maintenance does not necessarily mean he is considered 'rich' (prosperous) such that the maintenance for the wealthy is obligatory upon him for his wife, whereas a wife could exhaust the Nisab in less than six months, rather in a quarter of a year. (T)

Certainly, it is mentioned in Radd al-Muhtar:

(Arabic text snippet): They (the jurists) have explicitly stated the definitions of prosperity (Yasar) and poverty (I'sar) regarding the maintenance of relatives, but I have not seen anyone define them regarding the maintenance of the wife. Perhaps they have left it to custom (Urf) and the observation of the current state concerning expansion in spending or its lack. This is supported by the statement in 'al-Bada'i': "If a man is excessively wealthy, etc.", and its full statement will come ahead.

(Urdu translation): The jurists have described prosperity and poverty regarding the maintenance of relatives, but I have not seen anyone describe the criteria for prosperity and poverty regarding the maintenance of the wife. It is possible they left this criterion to custom (Urf), as to what constitutes maintenance for prosperity and non-prosperity in practice. This is supported by the statement in 'al-Bada'i' that "if a person is extremely wealthy, etc." The full statement from al-Bada'i follows. (T)

Therefore, in the maintenance of relatives, only two categories remain: the capable and the incapable. However, here (for wives), there are three categories: rich (Ghani), poor (Faqir), and middle-class (Mutawassit). Different statements have appeared

regarding the differences in their maintenance. Imam Siraj al-Din, the commentator of al-Hidayah, stated: For the rich, there is wheat bread and meat for both meals; for the middle-class, bread and oil; for the poor, bread with cheese and vinegar. It is stated in 'Aqdiya': The rich person's sustenance is meat, the middle-class's is milk, and the poor person's is oil, i.e., olive oil. And Allah Almighty said: "and seasoning for those who eat" (i.e., Allah Almighty has said: and there is gravy/sauce for those who eat. T) And...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/645
2. The Holy Quran 23/20

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

(अरबी पाठ): यह अनिवार्य है चाहे उसके पास कुछ भी न हो। यहाँ 'धनी' और 'कंगाल' का अर्थ 'विस्तार वाला' (समृद्ध) और 'तंगहाल' है। यह 'नसाब' (ज़कात के लिए निर्धारित न्यूनतम राशि) से सीमित नहीं हो सकता और न ही इसके लिए नसाब आवश्यक है। बल्कि दोनों अलग-अलग हैं, जैसा कि हमने पहले बताया है। अतः नसाब के मालिक को 'सक्षम' मान लेना इस बात को अनिवार्य नहीं करता कि उसे 'समृद्ध' माना जाए और उस पर पत्नी के लिए अमीरों वाला भरण-पोषण अनिवार्य हो जाए, जबकि पत्नी छह महीने से भी कम समय में, बल्कि साल के चौथाई भाग में ही नसाब को खत्म कर सकती है।

(उर्दू अनुवाद): यह अनिवार्य है चाहे पति के पास कुछ भी न हो। इसलिए, पत्नी के भरण-पोषण (नफ़का) के मामले में 'धनी' और 'तंगहाल' का अर्थ 'विस्तार वाला' (समृद्ध) और 'तंगी वाला' है। यह अर्थ नसाब से सीमित नहीं हो सकता और न ही इसके लिए नसाब आवश्यक है। बल्कि दोनों अलग-अलग हैं, जैसा कि हमने पहले बताया है। तो पति को नसाब का मालिक मानकर उसे भरण-पोषण पर सक्षम मानना इस बात को अनिवार्य नहीं करता कि पति को 'विस्तार वाला' (समृद्ध) माना जाए और उस पर अपनी पत्नी के लिए अमीरों वाला भरण-पोषण अनिवार्य हो जाए, जबकि पत्नी छह महीने में नसाब का अंत कर देती है, बल्कि साल के चौथाई भाग में ही उसे खत्म कर देती है। (त)

निश्चित रूप से 'रद्द अल-मुह्तार' में है:

(अरबी पाठ): उन्होंने (फ़कीहों ने) रिश्तेदारों के भरण-पोषण के संबंध में संपन्नता (यसार) और विपन्नता (इसार) का स्पष्ट वर्णन किया है, लेकिन मैंने किसी को पत्नी के भरण-पोषण के संबंध में इन दोनों को परिभाषित करते हुए नहीं देखा। संभवतः उन्होंने इसे प्रथा (उर्फ़) और खर्च में विस्तार या उसकी कमी की वर्तमान स्थिति के अवलोकन पर छोड़ दिया है। इसकी पुष्टि 'अल-बदाइ' के इस कथन से होती है कि "यदि कोई व्यक्ति संपन्नता में अत्यधिक हो, इत्यादि", और इसका पूरा कथन आगे आएगा।

(उर्दू अनुवाद): फ़कीहों ने रिश्तेदारों के भरण-पोषण में खुशहाली और तंगहाली का वर्णन किया है, लेकिन मैंने पत्नी के भरण-पोषण में किसी को खुशहाली और तंगहाली के मानदंड को बयान करते हुए नहीं देखा। हो सकता है कि उन्होंने यह मानदंड 'उर्फ़ (प्रथा) पर छोड़ दिया हो कि समाज में खुशहाली और गैर-खुशहाली का भरण-पोषण क्या है। इसकी पुष्टि 'अल-बदाइ' के इस कथन से होती

है कि "अगर कोई व्यक्ति खुशहाली में अत्यधिक हो, आदि"। बदाइ का पूरा कथन आगे आ रहा है। (त)

इसलिए रिश्तेदारों के भरण-पोषण में केवल दो ही श्रेणियां रह गई हैं क्योंकि यह 'सक्षम' और 'अक्षम' तक सीमित है। लेकिन यहाँ (पत्नियों के लिए) तीन श्रेणियां हैं: धनी (ग़नी), गरीब (फ़कीर) और मध्यम (मुतवस्सित)। उनके भरण-पोषण के अंतर के बारे में विभिन्न विवरण आए हैं। 'अल-हिदाया' के टीकाकार इमाम सिराजुद्दीन ने कहा: धनी के लिए दोनों समय गेहूं की रोटी और मांस है; मध्यम वर्ग के लिए रोटी और तेल; और गरीब के लिए पनीर और सिरके के साथ रोटी। 'अक्ज़िया' में कहा गया है: धनी व्यक्ति का भोजन मांस है, मध्यम वर्ग का दूध, और गरीब का तेल यानी जैतून का तेल। और अल्लाह तआला ने फरमाया: "और खाने वालों के लिए सालन (व्यंजन) है।" (त) और...

---

1. रद्द अल-मुह्तार, भरण-पोषण का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/645
2. अल-कुरान अल-करीम, 23/20

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

لہ شیئ وانما الموسر والمعسر ھھنا بمعنی الموسع و المقتر وذلك لایتقید بالنصاب ولایلزمه-بل یختلف بما قدمنا فجعلھم مالك النصاب قادرا لا یستلزم جعله موسعا وان یلزم علیه لامرأته نفقة الاغنیاء-وھی ربما تفنی النصاب فی اقل من نصب سنة بل فی ربعھا-

واجب ہوتا ہے اگرچہ خاوند کے پاس کچھ بھی نہ ہو، تو بیوی کے نفقہ کے معاملہ میں غنی اور تنگدست بمعنی صاحب وسعت اور تنگی ہے اور یہ معنی نصاب سے مقید نہیں ہوسکتا اور نہ ہی اس کو نصاب لازم ہے بلکہ دونوں جدا ہو جاتے ہیں، جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا ہے، تو ان کا خاوند کو صاحب نصاب قرار دے کر نفقہ پر قادر ماننا اس چیز کو مستلزم نہیں کہ خاوند وسعت والا قرار پائے اور اس پر غنیوں والا نفقہ بیوی کے لئے واجب ہو جبکہ بیوی چھ ماہ میں نصاب کا خاتمہ کردیتی ہے بلکہ سال کے چوتھائی حصہ میں خاتمہ کردیتی ہے۔(ت)

لاجرم ردالمحتار میں ہے:

صرحوا ببیان الیسار والاعسار في نفقة الاقارب ولم ارمن عرفھما فی نفقة الزوجة ولعلھم وکلو ذلك الی العرف والنظر الی الحال من التوسع فی الانفاق و عدمه ویؤیده قول البدائع لوکان الرجل مفر طافی الیسار الخ، وسیأتی تمامه-

فقہاء نے اقرباء کے نفقہ میں خوشحالی اور تنگ حالی کو بیان کیا لیکن میں نے بیوی کے نفقہ میں کسی کو خوشحالی اور تنگ حالی کے معیار کو بیان کرتے ہوئے نہیں دیکھا، اور ہوسکتا ہے کہ انہوں نے یہ معیار عرف پر چھوڑ دیا ہو کہ عرف میں خوشحالی کا نفقہ اور غیر خوش حالی کا کیا

ہے، اور اس کی تائید بدائع کا یہ قول کہ " اگر کوئی شخص خوش حالی میں انتہائی زیادہ ہوالخ" کر رہا ہے، بدائع کا مکمل قول آگے آرہا ہے۔(ت)

ولہذا نفقہ اقارب میں دو ہی قسمیں رہیں کہ قادر اور عاجز میں حصر ہے اور یہاں تین قسمیں ہیں: غنی، فقیر، متوسط اور ان کے نفقات کے فرق میں عبارات مختلف آئیں، امام سراج الدین قاری الہدایہ نے فرمایا غنی کے لئے دونوں وقت گیہوں کی روٹی اور گوشت ہے، متوسط کے لئے روٹی اور روغن، فقیر کے لئے روٹی اور پنیر وسرکہ۔ اقضیہ میں فرمایا: غنی کی نانخورش گوشت، متوسط کی دودھ، فقیر کی روغن یعنی زیتون، وقال تعالیٰ "وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ" (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اور کھانے والوں کے لئے سالن ہے۔ت) اور

۱۔ رد المحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۴۵ ۲۔ القرآن الکریم ۲۰/۲۳

Closer to our custom is what Imam Malik al-Ulama stated: high quality is chicken meat and fine flour (semolina) flatbreads, average is wheat bread with goat meat, and low is barley bread. It is stated in 'Uqud al-Durriya':

Arabic Text	**Urdu Translation**
Su'ila Qari al-Hidaya: If a woman requests an estimation of maintenance in dirhams for herself and her children, does she have that right? (He replied) It is not obligatory; rather, what is obligatory upon him is food and curry. For a wealthy person, it is wheat bread and meat for breakfast and dinner according to her sufficiency. For one of moderate means, it is bread and oil/fat. For a poor person, it is bread, cheese, and vinegar[1].	Qari al-Hidaya was asked: When a wife demands a fixed daily maintenance of a few dirhams for herself and her children, does she have that right? He replied: It is not necessary to fulfill this demand of the woman; rather, if the husband is wealthy, wheat bread and meat in sufficient quantity for breakfast and dinner are due. If he is of moderate status, bread and fat are due twice a day. If he is poor, then bread, cheese, and vinegar are mandatory. (T)

In Fath al-Qadir, it is stated: | In legal rulings, curry is also prescribed; the highest is meat, the lowest is olive oil, and the middle is milk[2]. | In the description of judicial rulings, it is stated that curry should also be fixed, of which the highest quality is meat, the lowest is olive oil, and the middle is milk. (T) |

In Radd al-Muhtar from Bada'i: | If a man is excessively wealthy, eating fine flour bread and chicken meat, and the woman is excessively poor, eating barley bread in her family's house, he should feed her wheat bread and mutton[3]. | If the husband is a high-ranking wealthy person who eats semolina flatbreads and chicken meat, and the woman is extremely poor who eats barley bread at her home, then this husband should give her wheat bread and goat meat. (T) |

In Alamgiriyah from Kafi: | If she is wealthy and he is poor, she is entitled to more than what would be prescribed if she were poor. Thus it is said: | If the husband is poor, he should give the wealthy wife food that is more than what is fixed for a poor wife, that... |

---

[1] Uqud al-Durriya fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiya, Chapter on Maintenance, Haji Abdul Ghaffar Traders, Arg Bazar Kandahar Afghanistan 1/72 [2] Fath al-Qadir, Chapter

on Maintenance, Maktaba Nooriya Razwiya Sukkur 2/400 [3] Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 3/625

हमारे रीति-रिवाजों के सबसे करीब वह है जो इमाम मलिक अल-उलमा ने फरमाया: उच्च श्रेणी में मुर्गे का मांस और सूजी की पूड़ियाँ (पहलके), मध्यम श्रेणी में गेहूं की रोटी और बकरी का मांस, और निम्न श्रेणी में जौ की रोटी। 'उक़ूद अद-दुर्रिया' में है:

अरबी पाठ

क़ारी अल-हिदाया से पूछा गया: यदि कोई महिला अपने और अपने बच्चों के लिए दिरहम में रखरखाव के अनुमान का अनुरोध करती है, तो क्या उसे वह अधिकार है? (उन्होंने उत्तर दिया) यह अनिवार्य नहीं है; बल्कि, उस पर जो अनिवार्य है वह भोजन और सालन है। एक धनी व्यक्ति के लिए, उसकी पर्याप्तता के अनुसार नाश्ते और रात के खाने के लिए गेहूं की रोटी और मांस है। मध्यम साधनों वाले के लिए, यह रोटी और तेल/वसा है। एक गरीब व्यक्ति के लिए, यह रोटी, पनीर और सिरका है[1]।

उर्दू अनुवाद

क़ारी अल-हिदाया से सवाल किया गया कि जब पत्नी अपने और बच्चों के लिए दैनिक कुछ दिरहम के गुज़ारे (नफ़क़ा) का निर्धारण करने की मांग करे, तो क्या उसे यह अधिकार है? उन्होंने उत्तर दिया: पत्नी की इस मांग को पूरा करना ज़रूरी नहीं है, बल्कि पति पर यदि वह धनी हो तो सुबह-शाम पर्याप्त मात्रा में गंदम (गेहूं) की रोटी और मांस देना होगा। यदि वह मध्यम स्थिति का हो, तो दोनों समय रोटी और घी/तेल। और यदि वह गरीब हो, तो रोटी, पनीर और सिरका अनिवार्य है। (त)

फ़तह अल-क़दीर में है: | न्यायिक फैसलों में सालन भी निर्धारित किया गया है; उच्चतम मांस है, निम्नतम जैतून का तेल है, और मध्यम दूध है[2]। | फैसलों के बयान में है कि सालन भी निर्धारित किया जाए जिसका उच्चतम स्तर मांस, निम्नतम जैतून और मध्यम दूध है। (त) |

रद्द अल-मुहतार में बदाए' से है: | यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक धनी हो, मैदा की रोटी और मुर्गे का मांस खाता हो, और महिला अत्यधिक गरीब हो, अपने परिवार के घर में जौ की रोटी खाती हो, तो वह उसे गेहूं की रोटी और बकरी का मांस खिलाए[3]। | अगर पति उच्च श्रेणी का अमीर है जो सूजी के पहलके और मुर्गे का मांस खाता है और औरत निहायत गरीब हो जो अपने घर में जौ की रोटी खाती हो, तो यह पति उसे गंदम की रोटी और बकरी का मांस दे। (त) |

आलमगीरिया में काफ़ी से है: | यदि वह धनी है और वह गरीब है, तो वह उससे अधिक की हकदार है जो उसके गरीब होने पर निर्धारित किया जाता। तो कहा जाता है: | अगर पति गरीब हो तो अमीर बीवी को वह खुराक दे जो गरीब बीवी के लिए मुकर्ररा (निर्धारित) से ज्यादा हो, उस... |

---

[1] उक़ूद अद-दुर्रिया फ़ी तन्क़ीह अल-फ़तावा अल-हामीदिया, बाबू नफ़क़ा, हाजी अब्दुल ग़फ़्फ़ार ताज़िरान, अर्क बाज़ार क़ंधार अफ़ग़ानिस्तान १/७२ [2] फ़तह अल-क़दीर, बाबू नफ़क़ा, मक्तबा नूरुया रज़विया सुक्कुर २/४०० [3] रद्द अल-मुहतार, बाबू नफ़क़ा, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बैरूत ३/६२५

पृष्ठ ४७२ / ६८८

ہمارے عرف سے قریب تر وہ ہے جو امام ملک العلماء نے فرمایا کہ اعلٰی درجہ مرغ کا گوشت اور سوجی کے پھلکے، اور اوسط گیہوں کی روٹی بکری کا گوشت اور ادنٰی جو کی روٹی۔

عقودالدریہ میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
سئل قارئ الهداية اذا طلبت تقدير النفقة لها ولا ولدها دراهم هل لها ذلك (اجاب) لا يجب بل الواجب عليه طعام وادام على الغنى خبز حنطة ولحم غدا وعشاء بقدر كفايتها والموسط خبز و دهن وعلى الفقير خبز وجبن وخل[1].	قاری الہدایہ سے سوال کیا گیا کہ جب بیوی اپنے لئے اور اولاد کے لئے روزانہ چند درہم کا نفقہ مقرر کرنے کا مطالبہ کرے تو کیا اس کو یہ حق ہے، تو انہوں نے جواب میں فرمایا کہ عورت کا یہ مطالبہ پورا کرنا ضروری نہیں بلکہ خاوند پر اگر غنی ہو تو روٹی اور سالن میں صبح و شام گندم کی روٹی اور گوشت بقدر کفایت اور درمیانے حال والا ہو تو اس پر دونوں وقت روٹی اور روغن، اور اگر فقیر ہو تو روٹی، پنیر اور سرکہ واجب ہے(ت)

فتح القدیر میں ہے: | وفی الاقضیة یفرض الادام ایضاً اعلاه اللحم وادناه الزیت واوسطه اللبن[2]. | فیصلوں کے بیان میں ہے کہ سالن بھی مقرر کیا جائے جس کا اعلٰی درجہ گوشت، ادنٰی درجہ زیتون اور درمیانہ درجہ دودھ ہے۔(ت) |

ردالمحتار میں بدائع سے ہے: | لو کان الرجل مفر طا فی الیسار یأکل خبز الحواری ولحم الدجاج والمرأة مفرطة فی الفقر تأکل فی بیت اهلها خبز الشعیر یطعمها خبز الحنطة ولحم الشاة[3]. | اگر خاوند

اعلیٰ درجے کا امیر ہے جو سوجی کے پھلکے اور مرغ کا گوشت کھاتا ہے اور عورت انتہائی فقیر ہو جو اپنے گھر میں جو کی روٹی کھاتی ہو، تو یہ خاوند اس کو گندم کی روٹی اور بکری کا گوشت دے۔(ت) |

عالمگیریہ میں کافی سے ہے: | ان کانت موسرۃ وھو معسر لھا فوق ما یفرض لو کانت معسرۃ فیقال | اگر خاوند فقیر ہو تو امیر بیوی کو وہ خوراک دے جو غریب بیوی کے لئے مقررہ سے زیادہ ہو، اس |

---

[1] عقود الدرية في تنقيح الفتاوى الحامدية باب النفقة حاجی عبدالغفار تاجران ارگ بازار قندھار افغانستان ۱/ ۷۲ [2] فتح القدير باب النفقة مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲/ ۴۰۰ [3] ردالمحتار باب النفقة دار احياء التراث العربی بیروت ۳/ ۶۲۵

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Arabic Text Box] Arabic: له اطعمها خبز البر وباجة او باجتين، وان كان الزوج موسرا مفرط اليسار نحوان ياكل الحلواء واللحم المشوى والباجات وهى فقيرة كانت تاكل فى بيتها خبز الشعير لا يجب عليه ان يطعمها ما ياكل بنفسه ولا ما كانت تاكل في بيتها، لكن يطعمها خبز البر وباجة او باجتين۔ Urdu Explanation: In this case, the husband will be bound to provide her with wheat bread and 'bajah' or two 'bajahs' (sheep/goat trotters) as food. If the husband is of the highest class of wealth, for example, he eats halwa (sweets), roasted meat, or sheep/goat trotters, and the wife was poor and used to eat barley bread in her home, then it is not mandatory for the husband to give her the same food he eats, nor is it mandatory to give the food she ate at her home; rather, he should give her wheat bread and sheep/goat trotters in one or two meals. (T)

In these times and cities, a person with a monthly income of seventy-five rupees would be called neither rich nor poor but of middle-class status. If the woman is also of similar status and the maintenance for middle-class women is wheat bread and goat meat—sometimes plain, sometimes with vegetables, and sometimes other food whose value is close to it—and for clothing, muslin or fine printed cloth (there is a blank space in the manuscript here), then it is a case of 'the right reaching the rightful owner.' Neither can he decrease it, nor does she have the right to demand more or spend more. If she belongs to the upper class in terms of wealth, she is certainly entitled to more, provided it does not exceed the average of the upper-middle class. If she belongs to the lower class, she is certainly entitled to less, provided it is not less than the average of the lower-middle class. A correct accounting should be done based on these principles. If she has exceeded her entitlement by a small amount, it is not noteworthy. But if there is an excessive surplus, for example, if her expenses according to Shariah calculations should have been ten rupees per month and she spent fifteen rupees per month, while initially the husband had only permitted her to spend the Shariah amount, then the excess is considered misappropriation (ghasb), and its compensation falls on the woman, which can be deducted from her dower (mahr). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Hadith Box] Arabic: على اليد ما اخذت حتى تؤدى۔ هذا ما ظهر لى والله تعالىٰ اعلم۔ Urdu: "The hand is responsible for what it has taken until it pays it back." This is what has become clear to me, and Allah the Almighty knows best. (T)

1. Fatawa Hindiyya, Chapter One regarding Maintenance of the Wife, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/528.
2. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on Sales, Amin Company Kutub Khana Rashidiya, Delhi, 1/152.

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी पाठ बॉक्स] अरबी: له اطعمها خبز البر وباجة او باجتين، وان كان الزوج موسرا مفرط اليسار نحوان ياكل الحلواء واللحم المشوى والباجات وهى فقيرة كانت تاكل فى بيتها خبز الشعير لا يجب عليه ان يطعمها ما ياكل بنفسه ولا ما كانت تاكل في بيتها، لكن يطعمها خبز البر وباجة او باجتين۔ उर्दू व्याख्या: इस स्थिति में, पति को गेहूं की रोटी और 'बाजा' या दो 'बाजे' (भेड़/बकरी के पाये) भोजन के रूप में देने के लिए बाध्य किया जाएगा। यदि पति उच्च श्रेणी का अमीर है, उदाहरण के लिए, वह हलवा, भुना हुआ मांस या भेड़/बकरी के पाये खाता है, और पत्नी गरीब थी जो अपने घर में जौ की रोटी खाती थी, तो पति पर यह अनिवार्य नहीं है कि वह उसे वही भोजन दे जो वह स्वयं खाता है, और न ही वह भोजन दे जो पत्नी अपने घर में खाती थी, बल्कि वह उसे गेहूं की रोटी और भेड़/बकरी के पाये एक या दो बार के भोजन में दे। (त)

इन युगों और शहरों में, पचहत्तर रुपये मासिक आय वाला व्यक्ति न तो अमीर कहलाएगा और न ही गरीब, बल्कि मध्यम श्रेणी का होगा। यदि स्त्री भी वैसी ही है और मध्यम श्रेणी की स्त्रियों का निर्वाह खर्च—गेहूं की रोटी और बकरी का मांस कभी सादा, कभी सब्जी के साथ, और कभी अन्य भोजन जिसका मूल्य इसके करीब हो, और पहनने के लिए मलमल या विशेष छींट (यहाँ पांडुलिपि में खाली स्थान है)—लिया गया हो, तो यह 'हक ब-हकदार रसीद' (हकदार को उसका हक मिला) है। न तो वह इसमें कमी कर सकता है और न ही उसे इससे अधिक की मांग या खर्च करने का अधिकार है। और यदि वह संपन्नता में उच्च वर्ग से है, तो वह निश्चित रूप से अधिक की हकदार है, बशर्ते वह उच्च-मध्यम वर्ग के औसत से अधिक न हो। और यदि वह निम्न वर्ग से है, तो वह निश्चित रूप से कम की हकदार है, बशर्ते वह निम्न-मध्यम वर्ग के औसत से कम न हो। इन सिद्धांतों पर सही गणना की जानी चाहिए। यदि उसने अपने हक से थोड़ी अधिक वृद्धि की है, तो वह ध्यान देने योग्य नहीं है, और यदि भारी वृद्धि (ज़ियादते फ़ाशा) की है, उदाहरण के लिए, शरीयत की गणना के अनुसार उसका मासिक खर्च दस रुपये होना चाहिए था और उसने पंद्रह रुपये मासिक खर्च किए, जबकि शुरू में पति ने उसे शरीयत की मात्रा पर खर्च करने की अनुमति दी थी, तो अधिकता 'ग़सब' (अवैध कब्जा) मानी गई और उसका हर्जाना औरत पर आया जो उसके मेहर में से काटा जा सकता है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[हदीस बॉक्स] अरबी: على اليد ما اخذت حتى تؤدى۔ هذا ما ظهر لى والله تعالىٰ اعلم۔ उर्दू: "हाथ ने जो लिया वह उस पर बोझ है जब तक कि वह उसे अदा न कर दे।" यह वह शोध है जो मुझ पर स्पष्ट हुआ। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

---

1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय एक पत्नी के भरण-पोषण के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/528।
2. जामी अत-तिर्मिज़ी, बिक्री के अध्याय, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया दिल्ली, 1/152।

[عربی اور اردو متن] له اطعمها خبز البر وباجة او باجتين، وان كان الزوج موسرا مفرط اليسار نحوان ياكل الحلواء واللحم المشوى والباجات وهى فقيرة كانت تاكل فى بيتها خبز الشعير لا يجب عليه ان يطعمها ما ياكل بنفسه ولا ما كانت تاكل في بيتها، لكن يطعمها خبز البر وباجة او باجتين۔[1-۸]

صورت میں خاوند کو پابند کیا جائے گا کہ وہ اس کو گندم کی روٹی باجہ یا دو باجے (بھیڑ بکری کے پائے) خوراک دے، اور اگر خاوند اعلٰی درجے کا امیر ہو مثلاً وہ حلوا، گوشت بھنا ہوا یا بھیڑ بکری کے پائے کھاتا ہے اور بیوی فقیر ہو جو اپنے گھر میں جو کی روٹی کھاتی تھی تو خاوند پر یہ واجب نہیں کہ اس کو وہی خوراک دے جو خود کھاتا ہے، اور نہ ہی وہ خوراک دے جو بیوی اپنے گھر میں کھاتی تھی بلکہ وہ اس کو گندم کی روٹی اور بھیڑ بکری کے پائے ایک یا دو خوراک میں دے۔ (ت)

ان اعصار وامصار میں پچھتر روپے ماہوار کی آمدنی والا نہ امیر کہلائے گانہ فقیر بلکہ ایک متوسط الحال ہے، اگر عورت بھی ایسی ہی ہے اور متوسط زناں کا نفقہ لیا گیا ہو کہ گیہوں کی روٹی اور بکری کا گوشت کبھی سادہ کبھی ترکاری کا، کبھی اور کھانا کہ قیمہ اس کے قریب ہو، اور پہننے کو ململ خاصا چھینٹ (یہاں مسودہ میں بیاض ہے) تو حق بحقدار رسید، نہ یہ اس میں کمی کرسکتا ہے نہ وہ اس سے زائد کے مطالبے یا صرف کا اختیار رکھتی ہے، اور اگر وہ غنا میں طبقہ اعلٰی سے ہے تو ضرور زائد کی مستحق ہے جو اوسط اعلٰی کے اوسط سے زائد نہ ہو، اور اگر طبقہ ادنٰی سے ہے تو ضرور کم کی مستحق و مستوجب ہے جو اوسط و ادنٰی کے اوسط سے کم نہ ہو، ان اصول پر صحیح محاسبہ کیا جائے، اگر اس نے اپنے استحقاق سے زیادت قلیلہ کی ہے تو قابل لحاظ نہیں اور زیادت فاحشہ کی ہے مثلاً اس کے خرچ میں حساب شرعی سے دس

روپے ماہوار ہونا چاہئے تھا اور اس نے پندرہ روپے ماہوار خرچ کیا تو جبکہ اول سے شوہر نے اسے مقدار شرعی پر خرچ کی اجازت دی تھی زیادت غصب ہوئی اور اس کا تاوان عورت پر آیا جو اس کے مہر میں محسوب ہو سکتا ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

[عربی اور اردو حدیث] علی الید ما اخذت حتی تؤدی^2 ۔ ھذا ما ظھر لی واللہ تعالیٰ اعلم۔ ہاتھ نے جو لیا وہ اس پر بوجھ ہے جب تک وہ اسے ادا نہ کرے۔ یہ وہ بحث ہے جو مجھ پر ظاہر ہوئی۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

---

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فی نفقۃ الزوجۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۵۲۸ 2 جامع الترمذی ابواب البیوع امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/۱۵۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13, page 13.

Problem 181: From Jaora Mohalla, sent by Syed Zulfiqar Ahmed Sahib, 12 Shawwal 1337 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Ms. Hindah, who is young and of good character, has been abandoned by her husband, Zaid, for eight to nine years. He does not provide her with maintenance (food, clothing, shelter), nor does he look after her in any way. Instead, he refuses to divorce her with the intent of causing her distress and suffering, so she cannot escape his oppression and marry someone else to survive. Hindah lives in seclusion (purdah); there is no one to provide her with food or clothes, no one lends her money, and she has no assets to sell for her livelihood. She is not skilled in any craft to earn enough for her basic needs of food and drink. If Hindah does not remarry, she will certainly fall into adultery, as she is in the prime of her youth and has no other means of sustenance without a second marriage. Moreover, she is in a place where there is no Islamic judge (Qazi). In this described situation, is there any way for Hindah to be released from this oppressive husband? If there is no way for her to be freed, does Sharia permit Hindah to commit adultery for her survival? Please clarify and be rewarded.

The Answer: The Pure Sharia is the command of Allah and His Messenger. Asking for permission from Allah and His Messenger to commit adultery is disbelief (Kufr). As long as the husband is alive and has not given a divorce, a second marriage is forbidden, forbidden, forbidden, and it is adultery, adultery, adultery. What are these doubts and fears about adultery? To commit actual adultery to avoid hypothetical adultery—what kind of religion is this? The recourse is to file a legal claim for maintenance (food and clothing) or divorce. If that is also not possible, then there is no remedy except patience. Allah eases the difficulties for one who remains patient for His sake. Sustenance is from Allah, the husband is not the sustainer. She should work hard to earn a living and keep fasts to overcome sexual desire. The Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said:

"And whoever is not able to marry, let him fast, for it will be a shield for him (to curb his desires)."

Allah Almighty says: "And whoever fears Allah, He will make for him a way out."

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abdullah bin Abbas, Dar al-Ma'rifah Beirut 1/422, 432.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13.

मसला 181: जावरा मोहल्ले से, सैयद ज़ुल्फ़िकार अहमद साहब द्वारा प्रेषित, 12 शव्वाल 1337 हिजरी।

प्रश्न: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: सुश्री हिंदा, जो युवा और अच्छे चरित्र की हैं, उन्हें उनके पति ज़ैद ने आठ-नौ वर्षों से छोड़ दिया है। वह उन्हें भरण-पोषण (रोटी, कपड़ा) नहीं देता है, न ही उनकी किसी तरह देखभाल करता है। बल्कि उन्हें कष्ट और पीड़ा पहुँचाने की नियत से तलाक भी नहीं देता है ताकि हिंदा उनके ज़ुल्म से निजात पाकर किसी और से निकाह करके अपनी गुजर-बसर कर सकें। हिंदा परदा-नशीं हैं; उन्हें भोजन या कपड़े देने वाला कोई नहीं है, न ही कोई उन्हें उधार देता है, और न ही उनके पास कोई ऐसी संपत्ति है जिसे बेचकर वह अपना गुजारा कर सकें। हिंदा किसी हुनर में भी निपुण नहीं हैं कि अपनी मेहनत से खाने-पीने की ज़रूरतों को पूरा कर सकें। यदि हिंदा का दूसरा निकाह नहीं हुआ, तो वह निश्चित रूप से व्यभिचार (ज़िना) में मुब्तला हो जाएँगी क्योंकि वह युवावस्था में हैं और दूसरे निकाह के बिना आजीविका का कोई दूसरा साधन नहीं हो सकता। इसके अलावा, हिंदा ऐसी जगह पर हैं जहाँ कोई क़ाज़ी (इस्लामी न्यायाधीश) नहीं है। अतः वर्णित स्थिति में, क्या हिंदा के लिए उस ज़ालिम पति से छुटकारे का कोई रास्ता है? यदि हिंदा की रिहाई का कोई रास्ता नहीं है, तो क्या शरीयत हिंदा को गुजर-बसर के लिए ज़िना (व्यभिचार) करने की अनुमति देती है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पाक शरीयत अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म है। अल्लाह और उसके रसूल से ज़िना की अनुमति मांगना कुफ़्र है। जब तक पति जीवित है और उसने तलाक नहीं दिया है, दूसरा निकाह हराम हराम हराम है, और वह ज़िना ज़िना ज़िना है। ये ज़िना के बारे में वसवसे और अंदेशे कैसे हैं? काल्पनिक ज़िना से बचने के लिए मौजूदा ज़िना करवाओ—यह कैसा धर्म है? समाधान यह है कि रोटी-कपड़े या तलाक के लिए मुक़दमा किया जाए। और यदि वह भी संभव न हो, तो सिवाय सब्र (धैर्य) के कोई चारा नहीं है। जो अल्लाह के लिए सब्र करता है, अल्लाह उसकी मुश्किल आसान कर देता है। रिज़्क़ (जीविका) अल्लाह के हाथ में है, पति रिज़्क़ देने वाला नहीं है। वह मेहनत-मज़दूरी करे और काम-वासना पर नियंत्रण के लिए रोज़े रखे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

"और जो शादी करने का सामर्थ्य नहीं रखता, उसे चाहिए कि वह रोज़ा रखे, क्योंकि रोज़ा उसकी काम-वासना को तोड़ने वाला (ढाल) है।"

अल्लाह अज़्वजल फरमाता है: "और जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए (निकलने की) राह बना देगा।"

1. मुस्नद अहमद bin हंबल, अब्दुल्ला bin अब्बास से वर्णित, दार अल-मारिफा बेरूत 1/422, 432।

688 में से पृष्ठ 474

فتاوی رضویہ جلد تیرہ د ہم ۱۳

مسئلہ ۱۸۱: از جاورہ محلہ مرسلہ سید ذوالفقار احمد صاحب ۱۲ شوال ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ جو جوان العمر نیک چلن ہے عرصہ آٹھ نو سال سے ہندہ کے شوہر زید نے ہندہ کو چھوڑ دیا ہے اس کا نان و نفقہ نہیں دیتا ہے، نہ کسی طرح کی خبر گیری اس کی کرتا ہے، بلکہ ہندہ کو ایذا و تکلیف پہنچانے کی غرض سے طلاق بھی نہیں دیتا ہے تاکہ ہندہ اس کے ظلم سے نجات پا کر کسی شخص سے نکاح کر کے اپنی گزر اوقات کرے، ہندہ پردہ نشین ہے اس کو کوئی کھانا کپڑا دینے والا نہیں ہے، نہ اس کو کوئی قرض دیتا ہے، نہ اس کے پاس اثاثہ ہے جس کو فروخت کر کے بسر اوقات کرے، نہ ہندہ دستکار ہے، کہ جس کی اجرت سے ضروریات خورد و نوش کو پورا کر سکے، اگر ہندہ کا نکاح ثانی نہ ہو گا تو وہ یقینی طور پر ضرور زناکاری میں مبتلا ہو گی کیونکہ اس کا عالم شباب ہے اور بغیر نکاح ثانی کے دوسرا ذریعہ معاش نہیں ہو سکتا، اور ہندہ ایسے مقام پر ہے جہاں قاضی نہیں ہے پس صورت مرقومہ میں ہندہ کے واسطے خاوند ظالم سے کوئی صورت رہائی کی نکلتی ہے یا نہیں؟ اگر کوئی صورت ہندہ کی خلاصی کی نہیں نکلتی ہے تو کیا شرع ہندہ کو زنا کرا کر گزر اوقات کرنے کی اجازت دیتی ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: شرع مطہر اللہ و رسول کا حکم ہے، اللہ و رسول سے زنا کی اجازت مانگنی کفر ہے، جب تک شوہر زندہ ہے اور طلاق نہیں دی دوسرا نکاح حرام حرام حرام، زنا زنا زنا ہے۔ وساوس اور اندیشے کاہے کے ہیں زنا سے، موہوم زنا سے بچنے کے لئے موجودہ زنا کراؤ یہ کون سا دین ہے، چارہ کار نالش ہے کہ روٹی کپڑا دے یا طلاق، اور یہ بھی نہ ہو سکے تو سوائے صبر کے

کچھ علاج نہیں، اور جو اللہ کے لئے صبر کرتا ہے اللہ اس کی مشکل کھول دیتا ہے، رزق اللہ پر ہے شوہر رزاق نہیں، محنت مزدوری کرے اور غلبہ خواہش کے لئے روزے رکھے۔ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

ومن لم یستطع فعلیه بالصوم فانه له وجاء 1 ۔ اور جو شادی کے خرچے کی استطاعت نہیں رکھتا اس پر لازم ہے کہ وہ روزہ رکھے کیونکہ روزہ اس کے لئے شہوت کا توڑ ہے۔ (ت)

اللہ عزوجل فرماتا ہے: وَمَنْ یَتَّقِ اللّٰهَ یَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا (۲) جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کے لئے راہ نکال دے گا

1 مسند احمد بن حنبل مروی از عبداللہ بن عباس دار المعرفۃ بیروت ۱ / ۴۲۲، ۴۳۲

Fatawa Razawiya Volume 13

"And He provides for him from where he does not expect. And whoever relies upon Allah - then He is sufficient for him." (1) And He will provide for him from where he cannot even imagine. Whoever puts his trust in Allah, Allah is sufficient for him.

And He says: "And whoever fears Allah - He will remove for him his misdeeds and make great for him his reward." (2) Whoever fears Allah, Allah will make his task easy. Allah is Truthful and His promises are true, and Satan is a liar and his threats are false. Fear Allah and trust Him; surely Allah will make things easy for him and will find a way out for him. And Allah Almighty knows best.

Problem 182: From Udaipur Mewar Rajputana, Chhawatwari neighborhood, sent by Qadir Bakhsh Chahbuk Sawar, 13 Ramadan 1338 AH. Is there any written document that Zaid wrote for Musammat Hindah at the time of her second marriage regarding the arrangement of maintenance? Does Hindah have any kind of right from this writing after a divorce?

The Answer: Apart from the dower (Mahr) and maintenance for the period of iddah, no other right is legally obligatory according to Sharia. If Zaid has written that 'your maintenance for life is my responsibility', then this is a promise; it should be fulfilled, but it cannot be forcibly demanded on its basis. It is stated in Al-Ashbah: "There is no compulsion in fulfilling a promise." (3) Apart from this, the outcome of this writing, if there is anything else, can be known after observing the text. And Allah Almighty knows best.

(1) Al-Quran Al-Karim 65/2 & 3 (2) Al-Quran Al-Karim 65/5 (3) Al-Ashbah wa'l-Naza'ir, Kitab al-Hazr wa'l-Ibahah, Idaratul Quran Karachi 2/511

Note: Regarding fulfilling a promise, the passage I found from Al-Ashbah is: "If he promised to come to him but did not, he does not sin, and the promise is not binding unless it was conditional." A passage with similar meaning can be seen in Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 on Hiring a Hirer, Vol 4, p. 424. Nazir Ahmad Sa'idi.

Page 475 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

"और वह उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ से उसे गुमान भी न होगा। और जो अल्लाह पर भरोसा करे, तो वह उसके लिए काफ़ी है।" (१) और उसे वहाँ से रिज़्क़ (रोज़ी) पहुँचाएगा जहाँ से उसे गुमान भी न होगा, जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह उसे काफ़ी है।

और फ़रमाता है: "और जो अल्लाह से डरेगा, वह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसके लिए बड़ा अज्र (बदला) देगा।" (२) जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसका काम आसान कर देगा। अल्लाह सच्चा है और उसके वादे सच्चे हैं, और शैतान झूठा है और उसके डरावे झूठे हैं। अल्लाह से डरे और उस पर भरोसा करे, यक़ीनन अल्लाह उसके लिए आसानी कर देगा और उसके लिए राह निकाल देगा। वल्लाह तआला आलम।

मसाला १८२: उदयपुर मेवाड़ राजपूताना, मोहल्ला छावतवाड़ी से, प्रेषक क़ादिर बख़्श चाबुक सवार, १३ रमज़ान १३३८ हिजरी। क्या कोई ऐसा दस्तावेज़ जिसे ज़ैद ने मुसम्मात हिंदा को दूसरी शादी के समय ख़र्च-पानी (नान-नफ़क़ा) के इंतज़ाम के बारे में लिख कर दिया हो, क्या तलाक़ के बाद हिंदा का उस दस्तावेज़ के आधार पर किसी प्रकार का कोई अधिकार रह जाता है?

अल-जवाब (उत्तर): महर और इद्दत के दिनों के ख़र्च (नफ़क़ा) के अलावा शरीयत के हिसाब से और कोई अधिकार अनिवार्य नहीं है। और अगर ज़ैद ने लिख दिया हो कि "ज़िंदगी भर तुम्हारा ख़र्च-पानी मेरे ज़िम्मे है", तो यह एक वादा है, इसे पूरा करना चाहिए, लेकिन इसके आधार पर जबरन मांग नहीं की जा सकती। 'अशबाह' में है: "वादे को पूरा करने पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है।" (३) इसके अलावा इस दस्तावेज़ का निष्कर्ष अगर कुछ और हो, तो दस्तावेज़ देखने के बाद ही पता चल सकता है। वल्लाह तआला आलम।

(१) अल-क़ुरआन अल-करीम ६५/ २ और ३ (२) अल-क़ुरआन अल-करीम ६५/ ५ (३) अल-अशबाह वल नज़ायर, किताब अल-हज़र वल इबाहह, इदारतुल क़ुरआन कराची २/ ५११

नोट: वादे को पूरा करने के संबंध में 'अशबाह' से जो इबारत मुझे मिली उसके शब्द इस प्रकार हैं: "उसने उससे आने का वादा किया लेकिन नहीं आया, तो वह गुनहगार नहीं हुआ, और वादा तब तक अनिवार्य नहीं होता जब तक वह किसी शर्त से जुड़ा न हो।" इसी अर्थ की इबारत 'फ़तावा हिंदीया', अध्याय ७, किराए पर लेने के बयान में, जिल्द ४, पेज ४२४ पर देखी जा सकती है। नज़ीर अहमद सईदी।

पेज ४७५/६८८

وَیَرْزُقْهُ مِنْ حَیْثُ لَا یَحْتَسِبُ ؕ وَ مَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ ۱ اور اسے وہاں سے رزق پہنچائے گا جہاں سے اسے گمان بھی نہ ہوگا، جو اللہ پر بھروسہ کرے تو اللہ اسے کافی ہے۔

اور فرماتا ہے: وَ مَنْ یَّتَّقِ اللّٰهَ یُكَفِّرْ عَنْهُ سَیِّاٰتِهٖ وَ یُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۲ جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کا کام آسان کر دے گا۔ اللہ سچا اور اس کے وعدے سچے، اور شیطان جھوٹا اور اس کے ڈراوے جھوٹے، اللہ سے ڈرے اور اس پر بھروسہ کرے، یقیناً اللہ اس کے لئے آسانی کر دے گا اور اس کے لئے راہ نکال دے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۲: از اودے پور میواڑ راجپوتانہ محلہ چھاوت واڑی مرسلہ قادر بخش چابک سوار ۱۳ رمضان ۱۳۳۸ھ کیا کوئی ایسی تحریر دستاویز کہ جس کو زید نے مسماۃ ہندہ کو دوسری شادی کے وقت بابت انتظام نان نفقہ لکھ دی ہو کیا بعد طلاق ہندہ کا اس تحریر سے کسی قسم کا کوئی حق رہتا ہے؟

الجواب: مہر و نفقہ ایام عدت کے سوا اور کوئی حق واجب شرعاً نہیں اور اگر زید نے لکھ دیا ہو کہ عمر بھر تیرا نان و نفقہ میرے ذمہ ہے تو یہ ایک وعدہ ہے اسے وفا کرنا چاہئے مگر اس کی بنا پر جبراً مطالبہ نہیں ہو سکتا۔ اشباہ میں ہے: لاجبر فی الوفاء بالوعد ۳ (وعدہ پورا کرنے پر جبر نہیں۔ ت) اس کے سوا اس تحریر کا حاصل اگر کچھ اور ہو تو بعد ملاحظہ تحریر معلوم ہو سکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

۱ القرآن الکریم ۶۵/ ۲ و ۳ ۲ القرآن الکریم ۶۵/ ۵ ۳ الاشباہ والنظائر کتاب الحظر والاباحۃ ادارۃ القرآن کراچی ۲/ ۵۱۱ و ۵۱۱

ف: وفائے وعدہ سے متعلق اشباہ سے جو عبارت مجھے ملی اس کے الفاظ یوں ہیں: وعدہ ان یأتیہ فلم یأتہ فلا یأثم ولا یلزم الوعد الا اذا کان معلقاً اسی معنی کی عبارت فتاوی ہندیہ الباب السابع فی اجارۃ المستاجر جلد ۴ ص ۴۲۴ پر ملاحظہ ہو۔ نذیر احمد سعیدی

Volume 13 13 Fatawa Rizvia

Problem 183: From Chittorgarh, Mohalla Chhipiyan, requested by all Muslims of Gangrar, 15 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman's husband left India eight years ago for another country. He is alive and keeps writing letters about his well-being. However, he has no property here, nor has he ever sent money for his wife's expenses. He has neither come back during this period nor does he intend to return in the future. The wife wrote to him several times regarding maintenance arrangements and, out of desperation, asked for a divorce. But he neither provides maintenance nor gives a divorce. Now it is heard that the woman, being distressed, is about to adopt Christianity. In such a case, is it permissible or impermissible to have the marriage of said woman annulled through a reliable scholar after the expiration of the waiting period (Iddat) and then have her marry another person? Is there any Sharia-compliant way to save her from becoming an apostate?

Answer: The one who intended to become an apostate (murtad) became an apostate at that very moment. How can she be saved? In the lifetime of the husband, there is no way for her to marry someone else without a divorce. Allah the Almighty says: "And [also prohibited are] women who are already married." (Al-Quran 4:24). Here, there is no judge of the Hanbali school of thought, nor does any Hanafi follower have the authority to give a judgment against this school. Even if he does, it will not be enforceable. Such attempts make the religion mandatory. The details are in 'Al-Bahr al-Ra'iq', 'Radd al-Muhtar' and other books of journey. And Allah the Almighty knows best.

Problem 184: From Akorha, Post Office Gangiri, District Aligarh, requested by Imdad Ali Khan Sahib, First Teacher, 20 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say in this matter: My wife appeared to be ill-tempered at the time of marriage. Later, that same ill-temper escalated and turned into mental instability (fatur-e-aql). In the state of mental instability, three children were born to her at different times and died. Her illness was treated for a long time through Hakims (traditional healers), midwives, doctors, and spiritual healers, and more was spent than my means allowed, but no improvement occurred. Many financial losses occurred due to the patient's actions. Her condition due to mental instability has become such that she...

The Holy Quran 4/24 Page 476 of 688

खंड 13 13 फ़तावा रज़विया

मसला 183: चित्तौड़गढ़, मोहल्ला छिपियां से, गंग्रार के सभी मुसलमानों द्वारा पूछा गया, 15 मुहर्रम 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: एक महिला का पति आठ साल से हिंदुस्तान छोड़कर विदेश चला गया है। वह जीवित है और अपनी खैरियत लिखता रहता है, लेकिन उसके पास यहाँ न तो कोई संपत्ति है और न ही उसने आज तक अपनी पत्नी के खर्च के लिए कोई रुपया-पैसा भेजा है। न तो वह इस दौरान कभी आया और न ही भविष्य में आने का इरादा रखता है। पत्नी ने गुज़ारा भत्ता (नान-नफ़क़ा) के इंतज़ाम के लिए उसे कई बार लिखा, मजबूर होकर तलाक़ चाही, मगर वह न तो गुज़ारा भत्ता देता है और न ही तलाक़ देता है। अब सुना जा रहा है कि महिला परेशान होकर ईसाई धर्म अपनाने वाली है। ऐसी स्थिति में क्या उक्त महिला का किसी विश्वसनीय विद्वान से निकाह निरस्त कराके इद्दत गुज़रने के बाद किसी दूसरे व्यक्ति से नया निकाह करा देना जायज़ है या नाजायज़? क्या उसके लिए कोई शरीयत के अनुसार रास्ता है कि उसे धर्मद्रोही (मुरतद) होने से बचाया जा सके?

उत्तर: जिसने धर्मद्रोही होने का इरादा किया, वह उसी समय धर्मद्रोही हो गई। उसे बचाने का क्या तरीका? और पति के जीवित रहते बिना तलाक़ के दूसरे से निकाह की कोई सूरत नहीं है। अल्लाह ताला ने फ़रमाया: "और [तथा वह स्त्रियाँ भी तुम पर हराम हैं] जो निकाह में हों।" (अल-क़ुरआन 4:24)। यहाँ न तो हंबली मज़हब का कोई काज़ी है और न ही किसी हनफ़ी अनुयायी को इस मज़हब के ख़िलाफ़ फ़ैसला देने का अधिकार है, और अगर वह ऐसा करेगा तो वह लागू नहीं होगा। ऐसी कोशिशें धर्म को अनिवार्य बनाती हैं। इसका विवरण 'अल-बहरुल राइक', 'रद-उल-मुहतार' और अन्य पुस्तकों में है। और अल्लाह ताला बेहतर जानता है।

मसला 184: अकोरहा, डाकखाना गंगीरी, जिला अलीगढ़ से, इमदाद अली खान साहब, प्रथम शिक्षक द्वारा पूछा गया, 20 मुहर्रम 1339 हिजरी। दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं: मेरी पत्नी निकाह के समय बदमिज़ाज मालूम होती थी, बाद में वही बदमिज़ाजी बढ़ते-बढ़ते मानसिक अस्थिरता (फ़तूर-ए-अक़्ल) साबित हुई। मानसिक अस्थिरता की स्थिति में उससे अलग-अलग समय पर तीन बच्चे भी पैदा हुए और मर गए। उसकी बीमारी का इलाज लंबे समय तक हकीमों, दाइयों, डॉक्टरों और आमिलों के ज़रिए कराया गया और अपनी हैसियत से ज़्यादा खर्च किया गया, मगर सेहत में कोई सुधार नहीं हुआ। मरीज़ा के कामों से बहुत कुछ वित्तीय नुकसान हुए। उसकी हालत मानसिक अस्थिरता के कारण ऐसी हो गई है कि वह...

पवित्र क़ुरआन 4/24 पेज 688 का 476

مسئلہ ۱۸۳: از چتوڑ گڑھ محلہ چھپیاں مسئولہ جمیع مسلمانان گنگرار ۱۵ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کو شوہر عرصہ آٹھ سال سے ہندوستان چھوڑ کر غیر ملک میں چلا گیا زندہ ہے خیریت کا حال لکھتا رہتا ہے مگر اس کے لئے نہ تو یہاں اس کی جائداد ہے اور نہ اس نے آج تک خرچ کے لئے زوجہ کے پاس روپیہ پیسہ روانہ کیا نہ اس عرصہ میں وہ کبھی آیا اور نہ آئندہ آنے کا قصد رکھتا ہے، زوجہ نے نان نفقہ کے انتظام کے لئے کئی مرتبہ اسے لکھا مجبور ہو کر طلاق چاہی مگر نہ تو نان نفقہ دیتا ہے اور نہ طلاق دیتا ہے، اب سنا جاتا ہے کہ عورت پریشان ہو کر نصرانیت اختیار کرنے والی ہے، ایسی صورت میں عورت مذکورہ سے معاملہ مندرجہ سوال میں کسی عالم با معتبر سے فسخ نکاح کی درخواست کرا کے بعد انقضائے عدت فسخ نکاح جدید کسی دوسرے شخص سے کرا دینا جائز ہے یا نا جائز، آیا اس کے لئے کوئی صورت ہے شرعی کہ اسے مرتد ہونے سے بچائے۔

الجواب: جس نے مرتد ہونے کا قصد کیا وہ اسی وقت مرتد ہو گئی، بچائی کا ہے سے جائے، اور شوہر کی زندگی میں بلا طلاق دوسرے سے نکاح کی کوئی صورت نہیں قال تعالیٰ وَ الْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: نکاح والی عورتیں (حرام ہیں)۔ ت) یہاں نہ کوئی حنبلی مذہب کا قاضی ہے نہ کسی حنفی مقلد کو اس مذہب کے خلاف قضا کا اختیار ہے اور اگر کرے گا نافذ نہ ہوگی ایسی تو سعییں لازم مذہب کرتی ہیں، والتفصیل فی البحر الرائق ورد المحتار وغیرھما من الاسفار (اور اسکی تفصیل بحر الرائق اور رد المحتار وغیرہما کتب میں ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸۴: از اکورہا ڈاک خانہ گنگیری ضلع علی گڑھ مسئولہ امداد علی خاں صاحب مدرس اول ۲۰ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ میری زوجہ

وقت نکاح بدمزاج معلوم ہوتی تھی بعد میں وہی بد مزاجی بڑھتے بڑھتے فتور عقل ثابت ہوئی، فاتر العقلی کی حالت میں اس سے تین بچے بھی پیدا ہوئے اور مرے، اس کے مرض کا علاج مدت مدید تک حکیموں، دائیوں، ڈاکٹروں، عاملوں کے ذریعہ کرایا گیا اور اپنی حیثیت سے زیادہ صرف کیا مگر کوئی صورت افاقہ کی نہ ہوئی اور مریضہ کے عملوں سے بہت کچھ نقصانات مالی ظہور میں آئے، اس کی حالت فاتر العقلی کے باعث ایسی ہو گئی ہے کہ وہ

…cannot comply with Sharia rulings and the legitimate commands of her husband, nor can she sense her own desires, nor distinguish between purity and impurity, nor understand household affairs and life’s relations. In short, all benefits seem lost to me. Having lost all hope in her cure, under pressure from relatives and in hope of comfort and continuation of lineage, I entered into a second marriage after much hardship. By Allah’s grace, a child was born. Now my dependents include my elderly mother, two wives, one child, and myself, making five persons. There is also some burden of debt incurred due to Sharia requirements. Now the mother of my former wife, i.e., the mentally unsound one, (I believe, feigning ignorance) suspects that her daughter suffers hardships from these people, and that she cannot live comfortably among them. Therefore, her desire is to keep her daughter with her and share half of my income. With this hope, she is soon going to file a lawsuit in the competent court. I am telling them that no hardship has ever been caused by me, nor will there be in the future; rather, you should stay yourself and help in my work, and provide comfort to your daughter as per your wish. And because of her being impure and not in her right mind, you should exercise caution in eating and drinking with your daughter and her utensils. Or, waive the dower (Mahr) and continue to receive four rupees monthly for your daughter, my wife, besides clothing for life. Because at this time, the maintenance of five people, repayment of debt, upbringing of children, and meeting accidental needs are my responsibility. They do not accept any of these things. So, what is the ruling of the Noble Sharia for me in such a situation, so that I may not be held accountable before Allah and His Messenger? The second question is whether the dower and maintenance of such a woman is obligatory upon me in exchange for any service.

The Answer: Dower (Mahr) is not compensation for any service; it is the compensation for the marital bond (consummation) in marriage and is obligatory in any case. When she is mentally unsound, neither can she waive her dower, nor her mother, nor anyone else. Similarly, as long as she is in the husband's house or does not refuse to come to his house, her maintenance (Nafaqa) is obligatory upon the husband, which will be provided at a moderate level considering the condition of both husband and wife. The mother-in-law's demand for half of the income is an explicit injustice when this amount exceeds the wife's maintenance. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar:

[Table Content] Arabic Text: Maintenance is obligatory for the wife upon her husband according to the status of both of them; the fatwa is based on this and the husband is addressed accordingly. Urdu Translation: Maintenance for the wife is obligatory upon the husband according to the status of both of them; the fatwa will be given on this, and the husband will be [directed] accordingly.

...वह शरीयत के आदेशों और पति की जायज़ आज्ञाओं का पालन नहीं कर सकती, न ही वह अपनी इच्छाओं को महसूस कर सकती है, न ही वह पवित्रता और अपवित्रता में अंतर कर सकती है, और न ही वह घरेलू मामलों और जीवन के संबंधों को समझ सकती है। संक्षेप में, मुझे उससे सभी लाभ खोते हुए दिखाई दे रहे हैं। उसके इलाज से पूरी तरह निराश होकर, रिश्तेदारों के आग्रह और अपने आराम तथा वंश जारी रखने की आशा में, मैंने मजबूरी में बहुत समय बाद दूसरी शादी कर ली है। अल्लाह की कृपा से एक बच्चा भी पैदा हुआ है। अब मेरे आश्रितों में मेरी एक वृद्ध माँ, दो पत्नियाँ, एक बच्चा और मैं स्वयं—ये पाँच लोग हैं। मुझ पर कुछ ऋण का भार भी है जो शरीयत की ज़रूरतों के कारण हुआ है। अब पूर्व पत्नी, यानी मानसिक रूप से अस्वस्थ पत्नी की माँ को (मेरे विचार में जानबूझकर अनजान बनते हुए) यह संदेह है कि मेरी बेटी को इन लोगों से कष्ट पहुँचता है, और न ही वह इन लोगों में सुख से रह सकती है। इसलिए उनकी इच्छा है कि अपनी बेटी को अपने पास रखकर मेरी आधी आय ले लें, और इसी आशा में वे शीघ्र ही सक्षम न्यायालय में मुकदमा दायर करने वाली हैं। मैं उनसे कह रहा हूँ कि मेरी ओर से कभी कोई कष्ट नहीं हुआ और न ही भविष्य में होगा, बल्कि आप स्वयं रहकर मेरे कार्यों में सहायता करें और अपनी बेटी को अपनी इच्छानुसार आराम पहुँचाएँ। और उसके अपवित्र रहने तथा होश-ओ-हवास ठीक न होने के कारण, अपनी बेटी के साथ खाने-पीने और उसके बर्तनों में सावधानी बरतें। या फिर मेहर की राशि छोड़ दें और मुझसे अपनी बेटी (मेरी पत्नी) के लिए जीवन भर के लिए चार रुपये मासिक भत्ता और कपड़ों के अतिरिक्त लेते रहें। क्योंकि वर्तमान में पाँच लोगों का भरण-पोषण, ऋण की अदायगी, बच्चों की परवरिश और आकस्मिक ज़रूरतों को पूरा करना मेरा दायित्व है। वे इनमें से किसी भी बात को स्वीकार नहीं करती हैं। अतः ऐसी स्थिति में मेरे लिए शरीयत का क्या आदेश है जिससे मैं अल्लाह और उसके रसूल के समक्ष जवाबदेह न बनूँ? दूसरा प्रश्न यह है कि क्या ऐसी स्त्री का मेहर और गुज़ारा भत्ता किसी सेवा के बदले मुझ पर अनिवार्य है?

उत्तर: मेहर किसी सेवा का मुआवज़ा नहीं है, वह निकाह में विवाह-सम्बन्ध (सहवास) का प्रतिफल है और हर स्थिति में अनिवार्य है। जब वह मानसिक रूप से अस्वस्थ है, तो न तो वह अपना मेहर छोड़ सकती है, न ही उसकी माँ या कोई अन्य। इसी प्रकार, जब तक वह पति के घर में है या पति के घर आने से इनकार नहीं करती, उसका गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) पति पर अनिवार्य है, जो पति और पत्नी

दोनों की स्थिति को देखते हुए औसत दर पर दिलाया जाएगा। सास का आधी आय माँगना स्पष्ट अन्याय है, यदि यह राशि पत्नी के गुज़ारा भत्ते से अधिक हो। अल-दुर्र अल-मुख्तार में है:

[तालिका का अंश] अरबी पाठ: पत्नी का गुज़ारा भत्ता उसके पति पर उन दोनों की आर्थिक स्थिति के अनुसार अनिवार्य है; फतवा इसी पर आधारित है और पति को इसी का निर्देश दिया जाता है। उर्दू अनुवाद: पति पर पत्नी का गुज़ारा भत्ता उन दोनों की स्थिति के अनुसार है, इसी पर फतवा दिया जाएगा, और पति को इसकी (हिदायत की जाएगी)।

पृष्ठ 477 का 688

احکام شرعیہ اور خاوند کے جائز حکموں کی تعمیل نہیں کرسکتی نہ وہ اپنی خواہشات کو محسوس کر سکتی ہے نہ پاکی و ناپاکی میں تمیز رکھتی ہے نہ امورات خانہ داری و علائقِ زندگی کو سمجھ سکتی ہے غرض کہ مجھے اس سے تمام مصلحتیں فوت نظر آتی ہیں اس کے علاج سے ہر طرح مایوس ہو کر اعزاہ و اقربا کے اصرار و اپنی آسائش و قیامِ نسلی کی امید پر میں نے بحالتِ مجبوری بعد بسیار کے دوسری شادی کرلی ہے اس سے بفضلہ ایک بچہ بھی پیدا ہوا ہے، اب میرے متعلقین میں میری ایک والدہ ضعیفہ اور زوجگان و ایک بچہ و ایک میں خود یہ پانچ کس ہیں اور کچھ بارِ قرضہ بھی ہے جو بوجہ ضروریات شرعی ہوا ہے اب زوجہ سابقہ یعنی فاترالعقلی کی والدہ کو (میرے خیال میں تجاہلِ عارفانہ سے) شبہ ہے کہ میری لڑکی کو ان لوگوں سے تکالیف پہنچتی ہیں، اور نہ وہ ان لوگوں میں آسائش رہ سکتی ہے، اس لئے ان کی خواہش ہے کہ اپنی بیٹی کو اپنے پاس رکھ کر میری نصف آمدنی کو بٹالیں اور اسی امید پر وہ عنقریب کچہری مجاز میں نالش کرنے والی ہیں میں ان سے کہہ رہا ہوں کہ میری جانب سے کوئی تکلیف کبھی نہیں ہوئی نہ آئندہ ہوگی بلکہ آپ خود رہ کر میرے کاموں میں مدد کیجئے اور اپنی بیٹی کو حسبِ منشا آرام پہنچائیے اور بوجہ ناپاک رہنے اور ہوش وحواس درست نہ ہونے کے اپنی بیٹی کے ساتھ کھانے پینے اور اس کے برتنوں سے احتیاط رکھئے یا زر دین مہر سے دست بردار ہو کر مجھ سے اپنی بیٹی زوجہ میرے کے واسطے چار روپیہ ماہوار علاوہ پارچہ پوشیدنی کے تاحین حیات لیتی رہئے، کیونکہ اس وقت پانچ آدمیوں کی پرورش، قرضہ کی ادائیگی، تربیت اولاد، اتفاقی ضروریات کا پورا کرنا میرے ذمہ ہے، اور اس کو اپنے مکان پر رکھئے وہ ان باتوں میں سے کسی کو منظور نہیں کرتیں، پس ایسی صورت میں میرے لئے شرع شریف کا کیا حکم ہے جس

سے کہ میں خدا و رسول کے نزدیک مواخذہ دار نہ ہوں اس میں دوسرا سوال یہ ہے کہ ایسی عورت کا دین مہر و نان نفقہ کسی خدمت کے عوض مجھ پر واجب ہے۔

الجواب: مہر کسی خدمت کا معاوضہ نہیں وہ نکاح میں بضع کا عوض ہے اور بہر حال واجب ہے اور جب فاتر العقل ہے تو اس کے مہر سے دستبرداری نہ وہ کر سکتی ہے نہ اس کی ماں نہ کوئی اور، یوں ہی جب تک وہ شوہر کے گھر ہے یا اس کے گھر آنے سے انکار نہ کرے، اس کا نفقہ شوہر پر واجب ہے جو زن و شو و دونوں کو حال کی رعایت سے بقدر متوسط دلایا جائے گا مادر زن کا نصف آمدنی مانگنا ظلمِ صریح ہے جب کہ یہ مقدار نفقہ زن سے زائد ہو، در مختار میں ہے:

النفقة تجب للزوجة على زوجها بقدر حالهما به يفتى ويخاطب | خاوند پر بیوی کا نفقہ ان دونوں کے حال کے مطابق ہے، اسی پر فتویٰ دیا جائے گا، اور خاوند کو اس کی

Fatawa Razawiya Volume 13 / 13

According to his capacity, and the remaining is a debt until ease[1]. By the command of Allah Almighty, payment will be according to capacity, and if something remains, it will be obligatory on him to pay when he is in ease. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 185: From Jamia Masjid Bareilly, requested by Nawab Chhote Miyan Sahib, 7 Rajab 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid married his daughter to Bakr's son. After the marriage, Zaid's daughter stayed at her husband's house for one month. Since then, about nine months have passed that the girl has been at Zaid's house. Neither the husband nor the husband's father has inquired about her maintenance (naan nafqa). Now it is requested that Zaid sends his daughter away (rukhsat). Zaid has no objection to sending her. The request to the scholars is, upon whom is the responsibility for maintenance for these days, and after the daughter's departure, whose houses among Zaid's and the Sharia-based family's relatives can she visit? Please explain and be rewarded.

The Answer: There is no maintenance for these nine months on anyone; the days that have passed are gone. Yes, if a certain amount of maintenance had been fixed and determined to be paid monthly, and Zaid did not hold back the girl, nor did the girl refuse to go to the husband's house but instead had come to her father's house and was then waiting for her husband to call for her, and he did not call for so many months, then in this case he will pay the fixed maintenance for those months. However, if he wanted to call her and the girl did not go, then there is no maintenance for those months even if it was fixed. A woman can go to her parents' house once every eight days from morning to evening without her husband's permission. And she can go to her Mahrams (unmarriageable relatives), such as real or step siblings, nephews, nieces, nephews, nieces, uncles, maternal uncles, aunts, maternal aunts, maternal grandfathers, paternal grandfathers, once every year for a day. She must return to her husband's house by nightfall anyway; this is without permission. With the husband's permission, she can stay at these people's houses for a month or more, as long as he permits. But she cannot go to non-Mahrams, such as the children of paternal uncles, maternal uncles, maternal aunts, or paternal aunts, or elder brothers-in-law, younger brothers-in-law, sisters' husbands, etc., or strangers, even with the husband's permission. If the husband gives permission, he will also be a sinner. And Allah Almighty knows best.

Problem 186: From Bareilly city, Malookpur locality, requested by Ahmad Yar Khan Sahib, 18 Shaban 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: a woman had several children, among them one…

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266.

उसकी सामर्थ्य के अनुसार, और शेष सुलभ होने तक ऋण है। अल्लाह तआला के आदेशानुसार, भुगतान सामर्थ्य के अनुसार होगा, और यदि कुछ शेष रह जाता है, तो जब वह सुलभ अवस्था में होगा, उसे चुकाना अनिवार्य होगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

मसला १८५: जामा मस्जिद बरेली से, नवाब छोटे मियां साहब द्वारा प्रस्तुत, ७ रजब १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी बेटी का निकाह बक्र के बेटे से किया। निकाह के बाद ज़ैद की बेटी एक महीने तक अपने पति के घर रही। तब से लगभग नौ महीने बीत चुके हैं कि लड़की ज़ैद के घर पर है। न तो पति और न ही पति के पिता ने उसके भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) के बारे में कोई खबर ली। अब यह मांग है कि ज़ैद अपनी बेटी को विदा कर दे। ज़ैद को उसे विदा करने में कोई आपत्ति नहीं है। विद्वानों से केवल यह निवेदन है कि इन दिनों के भरण-पोषण का दायित्व किस पर है, और विदा होने के बाद, वह ज़ैद और शरीयत के आधार पर परिवार के किन-किन रिश्तेदारों के घर जा सकती है? स्पष्ट करें ताकि पुण्य मिले।

अल-जवाब: इन नौ महीनों का भरण-पोषण किसी पर नहीं है; जो दिन बीत गए सो बीत गए। हाँ, यदि भरण-पोषण की कोई निश्चित राशि तय की गई थी कि इतना मासिक दिया जाएगा, और ज़ैद ने लड़की को रोक कर नहीं रखा था, न ही लड़की ने पति के घर जाने से इनकार किया था, बल्कि वह अपने पिता के घर आई थी और फिर पति के बुलावे का इंतज़ार कर रही थी और उसने इतने महीनों तक नहीं बुलाया, तो ऐसी स्थिति में वह उन महीनों का तयशुदा भरण-पोषण देगा। और यदि वह उसे बुलाना चाहता था और लड़की नहीं गई, तो उन महीनों का भरण-पोषण किसी पर नहीं है, भले ही वह तयशुदा क्यों न हो। एक स्त्री पति की अनुमति के बिना हर आठवें दिन सुबह से शाम तक अपने माता-पिता के घर जा सकती है। और अपने महरमों (जिनसे विवाह वर्जित है), जैसे कि सगे या सौतेले भाई-बहन, भतीजे-भतीजी, भांजे-भांजी, चाचा, मामा, बुआ, मौसी, नाना, दादा के यहाँ हर साल एक बार दिन भर के लिए जा सकती है। रात को हर हाल में पति के घर वापस आना होगा; यह बिना अनुमति के है। पति की अनुमति से वह इन लोगों के यहाँ महीने भर या उससे अधिक, जितने दिनों की वह अनुमति दे, रह सकती है। लेकिन वह गैर-महरमों, जैसे चाचा, मामा, बुआ, मौसी के बेटा-बेटी या जेठ, देवर, बहनोई आदि या अजनबियों के यहाँ पति की अनुमति से भी नहीं जा सकती। यदि पति अनुमति देगा तो वह भी गुनहगार होगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला १८६: बरेली शहर, मलूकपुर मोहल्ले से, अहमद यार खान साहब द्वारा प्रस्तुत, १८ शाबान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक स्त्री की कई संतानें हुईं, उनमें से एक...

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली २६६/१

بقدر وسعہ والباقی دین الی المیسرۃ[1]. واللہ تعالٰی وسعت کے مطابق ادائیگی کا حکم ہوگا اور باقی ہو تو اس کے ذمہ واجب الادار ہے گا جب وہ آسانی والا ہو گا، واللہ تعالٰی اعلم۔ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۸۵: از جامع مسجد بریلی مسئولہ نواب چھوٹے میاں صاحب ۷ رجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی لڑکی کا عقد بکر کے لڑکے کے ساتھ کیا عقد کے بعد ایک ماہ تک زید کی لڑکی اپنے شوہر کے مکان پر رہی اس وقت سے زمانہ تخمیناً نو ماہ کا ہوا کہ لڑکی زید کے مکان پر موجود ہے، نان نفقہ کی شوہر یا شوہر کے باپ نے خبر نہیں لی ، اب اس امر کا تقاضا ہے کہ زید اپنی لڑکی کی رخصت کر دے، زید کو رخصت کرنے سے کچھ انکار نہیں ہے ، علمائے دین کی خدمت میں صرف یہ گزارش ہے کہ ان ایام کا نان نفقہ کس پر فرض ہے اور لڑکی کی رخصت ہونے کے بعد زید کے اور شرعی خاندان کے تعلق والوں کے کس کس کے یہاں جا سکتی ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: اس نو مہینے کا نان نفقہ کسی پر نہیں، جو دن گزر گئے گزر گئے، ہاں اگر نان و نفقہ کچھ مقرر و معین قرار پا چکا کہ اتنا ماہوار دیں گے، اور زید نے لڑکی کو بٹھا نہ رکھا، نہ لڑکی نے شوہر کے یہاں جانے سے انکار کیا بلکہ باپ کے یہاں آئی تھی، پھر شوہر کے بلانے کی منتظر رہی اور اس نے اتنے مہینوں نہ بلایا تو اس صورت میں وہ مقرر شدہ نفقہ ان مہینوں کا دے گا، اور اگر یہ بلانا چاہتا تھا اور لڑکی نہ گئی تو ان مہینوں کا نفقہ کسی پر نہیں اگر چہ مقرر شدہ ہو، عورت آٹھویں دن اپنے ماں باپ کے یہاں صبح سے شام تک کے لئے بلا اجازت شوہر جا سکتی ہے اور اپنے محارم مثلاً حقیقی یا سوتیلے بہن، بھائی، بھتیجے، بھتیجی، بھانجے، بھانجی، چچا، ماموں، پھوپھی، خالہ، نانا، دادا کے یہاں ہر سال بھر بعد دن بھر کے لئے، رات کو بہر حال شوہر

کے یہاں آنا ہوگا، یہ بلا اجازت ہے، اور شوہر کی اجازت سے انہیں لوگوں کے یہاں مہینہ بھر اور زائد جتنے دنوں کی وہ اجازت دے رہ سکتی ہے، لیکن غیر محارم مثلاً چچا ماموں خالہ پھوپھی کے بیٹوں بیٹیوں یا جیٹھ دیور بہنوئی وغیرہ ہم یا اجنبی کے یہاں شوہر کی اجازت سے بھی نہیں جاسکتی اگر شوہر اجازت دے گا تو وہ بھی گنہگار ہوگا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸۶: از شہر بریلی محلہ ملوکپور مسئولہ احمد یار خاں صاحب ۱۸ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کے چند اولادیں ہوئیں ان میں سے ایک

[1] در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۶

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13.

Question: A girl aged six is present. When this woman gives birth, she undergoes severe suffering and comes close to death. Therefore, now this woman and her mother, brother, etc., say that it is mandatory for us to save her life. This woman does not want to have intercourse with her husband and says she fears for her life. In this situation, is it obligatory for her husband to provide her with maintenance (food, clothing, etc.) or not? And this woman and her mother and brother say that you should marry a second time, but her husband does not have enough strength to bear the expenses of two women because he is an extremely poor man. Therefore, whatever the command of the Shariah Sharif is, please state it and be rewarded.

Answer: If the woman does not stay in the husband's house, she will not receive maintenance. But if she stays there and does not agree to intercourse, yet the husband can have intercourse if he wishes, then even if he does not, she will receive maintenance. If the man turns her out because he cannot bear the expenses of two, and the woman wishes to stay there, and he is capable of forced intercourse with her, then maintenance will be due. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Table Header] Arabic Text: She has the right to maintenance if she is ill and remains in her home and does not prevent herself (from him). There is no maintenance for one who leaves his house without right, and she is a 'Nashizah' (disobedient/ rebellious) until she returns. It is restricted to leaving because if she prevents him from intercourse while remaining in the house, she is not a 'Nashizah'. (1) Urdu Translation: The wife will have the right to maintenance if she is ill, and is in her home, and does not prevent herself from surrendering. Maintenance is not for one who stays outside the husband's house without cause; she will be disobedient until she returns. The author specified the condition of being outside the husband's house, because if she stays in the husband's house and obstructs intercourse, she will not be (considered) disobedient. (T)

It is stated in Radd-ul-Muhtar:

[Table Header] Arabic Text: His saying 'if she prevents him': it is restricted in Al-Siraj (Al-Wahaj) to the husband's house and his ability to have intercourse with her by force. (2) And Allah Ta'ala knows best. Urdu Translation: What Durr-e-Mukhtar said about preventing intercourse, it has been restricted in Siraj-ul-Wahaj to being in the husband's house and the husband having the power to have intercourse with her by

force (meaning in such a case she will not be called disobedient). And Allah Ta'ala knows best. (T)

(1) Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/267 (2) Radd-ul-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar-ul-Ihya-ut-Turath-ul-Arabi Beirut, 4/76

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३।

प्रश्न: छह साल की एक बच्ची मौजूद है। जब इस स्त्री को संतान होती है, तो उसे अत्यधिक पीड़ा होती है और वह मृत्यु के निकट पहुँच जाती है। इसलिए, अब यह स्त्री और उसकी माता, भाई आदि कहते हैं कि हमारे लिए जीवन बचाना अनिवार्य है, और यह स्त्री अपने पति के साथ संभोग नहीं करना चाहती और कहती है कि उसे अपने जीवन का भय है। इस स्थिति में, क्या उसके पति पर उसका भरण-पोषण (रोटी-कपड़ा) देना अनिवार्य है या नहीं? और यह स्त्री तथा उसकी माता और भाई कहते हैं कि तुम दूसरा विवाह कर लो, जबकि उसके पति में इतनी शक्ति नहीं है कि वह दो स्त्रियों का व्यय वहन कर सके क्योंकि वह अत्यंत निर्धन व्यक्ति है। अतः शरीयत शरीफ का जो भी आदेश हो, उसे व्यक्त करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि स्त्री पति के घर में न रहे तो उसे भरण-पोषण नहीं मिलेगा, और यदि वह यहाँ रहे और संभोग के लिए सहमत न हो, लेकिन पति चाहे तो संभोग कर सके तो भले ही वह न करे, उसे भरण-पोषण मिलेगा। यदि पुरुष दो का खर्च न उठा पाने के कारण उसे निकाल दे और स्त्री वहीं रहना चाहे और पति जबरन संभोग करने में सक्षम हो, तो भरण-पोषण देय होगा। दुर्रे मुख़्तार में उल्लेख है:

[तालिका] अरबी पाठ: वह भरण-पोषण की पात्र है यदि वह बीमार हो और अपने घर में रहे और स्वयं को (पति से) न रोके। बिना किसी अधिकार के उसके घर से बाहर जाने वाली के लिए कोई भरण-पोषण नहीं है, और वह 'नाशिज़ा' (अवज्ञाकारी) है जब तक कि वह वापस न आ जाए। इसे घर से बाहर जाने तक सीमित रखा गया है क्योंकि यदि वह घर में रहते हुए उसे संभोग से रोकती है, तो वह नाशिज़ा नहीं होगी। (१) उर्दू अनुवाद: पत्नी के लिए भरण-पोषण का अधिकार होगा चाहे वह बीमार हो, और अपने घर में हो और स्वयं को समर्पित करने से न रोके। पति के घर से बिना किसी कारण के बाहर रहने वाली के लिए भरण-पोषण नहीं है, वह तब तक अवज्ञाकारी होगी जब तक वापस न आ जाए। लेखक ने पति के घर से बाहर रहने की शर्त का उल्लेख किया है, क्योंकि यदि वह पति के घर में रहते हुए संभोग में बाधा डालती है, तो वह अवज्ञाकारी नहीं होगी। (त)

रद्दुल मुह्तार में उल्लेख है:

[तालिका] अरबी पाठ: उनका कथन 'यदि वह उसे रोके: इसे सिराज (अल-वहाज) में पति के घर में रहने और जबरन संभोग करने की शक्ति होने के साथ सीमित किया गया है। (२) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: दुर्रे मुख़्तार ने जो संभोग से मना करने के बारे में कहा, उसे

सिराज-उल-वहाज में पति के घर में रहने और पति को जबरन उससे संभोग करने की शक्ति होने के साथ सीमित किया गया है (कि ऐसी स्थिति में वह अवज्ञाकारी नहीं कहलाएगी)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(१) दुर्रे मुख़्तार, बाबुल नफ़का, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/२६७ (२) रद्दुल मुहतार, बाबुल नफ़का, दार-उल-इहया-उत-तुरास-उल-अरबी बेरूत, ४/७६

पृष्ठ ४७९/६८८

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳ لڑکی بعمر چھ سال موجود ہے اس عورت کے جب بچہ پیدا ہوتا ہے تو بہت سخت تکلیف ہوتی ہے اور قریب المرگ ہو جاتی ہے، لہٰذا اب یہ عورت اور اس کی ماں اور بھائی وغیرہ کہتے ہیں کہ ہم کو جان بچانا فرض ہے، اور یہ عورت اپنے خاوند سے جماع کرنا نہیں چاہتی اور کہتی ہے کہ مجھ کو اپنی جان کا اندیشہ ہے، اس حالت میں اس کے خاوند پر نان نفقہ دینا لازم ہے یا نہیں؟ اور یہ عورت اور اس کی ماں اور بھائی کہتے ہیں کہ تم اپنی دوسری شادی کرلو، اس کے خاوند میں اتنی قوت نہیں کہ دو عورتوں کا خرچ برداشت کر سکے کیونکہ یہ بیحد غریب آدمی ہے، لہٰذا شرع شریف کا جو حکم ہو۔ بینوا توجروا۔ الجواب: عورت اگر مکان شوہر میں نہ رہے نفقہ نہ پائے گی، اور اگر یہاں رہے اور جماع پر راضی نہ ہو مگر شوہر چاہے تو جماع کر سکے پھر اگرچہ نہ کرے نفقہ پائے گی، مرد اگر دو کا خرچ برداشت نہ کر سکنے کے سبب اسے نکال دے گا اور عورت اس کے یہاں رہنا چاہے گی اور یہ اس سے زبردستی جماع پر قادر ہو گا تو نفقہ آئے گا۔ در مختار میں ہے:

لها النفقة لو مرضت وفي منزلها بقيت ولنفسها مامنعت لانفقة لخارجة من بيته بغير حق وهی الناشزة حتی تعود قيد بالخروج لانها لو مانعته من الوطئ لم تكن ناشزة ۱ اه | بیوی کے لئے نفقہ کا حق ہوگا وہ بیمار ہو، اور اپنے گھر میں ہو اور اپنے آپ کو سپرد کرنے سے مانع نہ ہو اور خاوند کے گھر سے بلا وجہ باہر رہنے والی کے لئے نفقہ نہیں وہ نافرمان ہوگی تا وقتیکہ واپس آئے، اور ماتن نے خاوند کے گھر سے باہر کی قید ذکر کی، اس لئے کہ اگر خاوند کے گھر میں رہتے ہوئے جماع سے رکاوٹ کرے تو نافرمان نہ ہوگی اھ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

قولہ لو مانعتہ قیدہ في السراج بمنزل الزوج و بقدرتہ علی وطئھا کرھاً ۲ واللہ تعالی اعلم۔ | در مختار نے جو کہا کہ جماع سے منع کرے، تو اس کو سراج الوہاج میں، خاوند کے گھر، اور خاوند کو جبراً اس سے جماع کی قدرت ہونے کے ساتھ مقید کیا ہے (کہ ایسی صورت ہو تو وہ نافرمان نہ کہلائے گی) واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

۱ در مختار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۶۷ ۲ ردالمحتار باب النفقة دار احیاء التراث العربی بیروت ۴/۷۶

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

Problem 187: From Kanpur, Talaq Mahal, residence of Hakim Nuruddin, submitted by Ubaidullah on 4 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid, besides being a vagabond and of bad character, cannot even provide maintenance (food and expenses). His father, Khalid, although able to provide maintenance if he wishes, gives Hindah (the wife) severe hardships regarding food, drink, and clothing, and takes severe service from her like a slave girl. In such a case, does Hindah have the right to withhold herself because their way of life is extremely bad, and there is even a danger to her life? And does the judge have the right to cause a separation (i.e., Khula) between them? State your ruling and be rewarded.

The Answer: Upon failure to provide maintenance, the ruler (judge) shall compel him to either provide maintenance or grant a divorce, according to the words of Allah Almighty: "either retain her on reasonable terms or release her with kindness" (because the command of Allah Almighty is: keep her with goodness or let go with kindness). But the judge cannot initiate a separation on his own for this reason. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar': "Separation shall not be made between them due to his inability to provide the three types [of maintenance] (which are food, clothing, and housing, as per Bahr-al-Raiq/Shami), nor for his failure to fulfill her rights even if he is wealthy - And Allah Almighty knows best." Separation will not occur between husband and wife due to the husband's inability to fulfill the three rights: food, clothing, and housing (end of commentary). Nor will separation occur for not fulfilling these rights of the wife despite being wealthy. And Allah Almighty knows best.

Problem 188: From Udaipur, Mewar, Madrasa Sharqia, sent by Sayyid Abdul Rahim Sahib on 20 Shawwal 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Qadir Bakhsh's wife is named Muharram. They have been married for 30 years. Due to not having children, he performed a second marriage. He gave a written statement to Muharram saying: "I will continue to pay 300 rupees annually from my jagir village without excuse, and I have given the newly built house for you to live in. If a son is born to you, he will be the owner of all my property, and if a son is born to this second wife, he will abide by this document." After some time, a son was born to the second wife. Muharram remained obedient to Qadir Bakhsh, but mutual disputes arose between her and the second wife on the grounds that she should return the

document Qadir Bakhsh wrote to his first wife because a son has been born to me. Muharram, despite the disputes and discord...

1. Al-Quran Al-Kareem 2/229
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press Delhi, 1/269; Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/656 Page 480 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पेज 13

मसला 187: कानपुर, तलाक महल, हकीम नूरुद्दीन का निवास, उबैदुल्लाह द्वारा प्रेषित, 4 शव्वाल 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद, आवारा और दुराचारी होने के अलावा, गुज़ारा (भोजन और खर्च) प्रदान करने में भी असमर्थ है। उसका पिता खालिद, हालांकि चाहे तो गुज़ारा दे सकता है, लेकिन वह और उसकी पत्नी आदि हिंदा (पत्नी) को खाने-पीने और पहनने में बहुत कष्ट देते हैं और उससे दासी की तरह कठिन सेवा लेते हैं। क्या ऐसी स्थिति में हिंदा को खुद को रोकने (अलग रहने) का अधिकार है क्योंकि उनका रहन-सहन बहुत खराब है बल्कि जान का खतरा है? और क्या काज़ी को यह अधिकार है कि वह उन दोनों के बीच अलगाव यानी खुला करा दे? बयान करें, पुण्य पाएँ।

जवाब: गुज़ारा न देने पर शासक (काज़ी) उसे मजबूर करेगा कि वह गुज़ारा दे या तलाक़ दे, जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: "या तो भलाई के साथ पास रखो या नेकी करते हुए छोड़ दो।" लेकिन काज़ी अपनी ओर से इस कारण अलगाव नहीं करा सकता। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "उन दोनों के बीच इन तीन प्रकारों (भोजन, वस्त्र और आवास) में पति की अक्षमता के कारण अलगाव नहीं किया जाएगा, और न ही पत्नी के अधिकारों को पूरा न करने के कारण, भले ही वह धनी हो - और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।" तीनों अधिकारों (भोजन, वस्त्र और आवास) को पूरा करने में पति की लाचारी के कारण पति-पत्नी में अलगाव नहीं होगा। और न ही अमीर होने के बावजूद पत्नी के इन अधिकारों को पूरा न करने पर अलगाव होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 188: उदयपुर, मेवाड़, मदरसा शर्किया, सैयद अब्दुल रहीम साहब द्वारा प्रेषित, 20 शव्वाल 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: कादिर बख्श की पत्नी का नाम मुहर्रम है। शादी को 30 साल हो गए हैं। संतान न होने के कारण उसने दूसरा निकाह किया और मुहर्रम को लिखित में दिया कि: "मेरे जागीर वाले गाँव से जो आमदनी है उसमें से 300 रुपये सालाना बिना किसी बहाने के देता रहूँगा, और हाल ही में जो नया घर बनाया है वह तुम्हारे रहने के लिए दे दिया है। अगर तुम्हारे बेटा होगा तो वह मेरी पूरी संपत्ति का मालिक होगा और अगर इस दूसरी पत्नी से बेटा होगा तो वह इस दस्तावेज़ का पाबंद रहेगा।" कुछ समय बाद दूसरी पत्नी से बेटा पैदा हुआ। मुहर्रम कादिर बख्श की आज्ञाकारी रही लेकिन उसकी और दूसरी पत्नी के बीच इस बात पर झगड़ा होता

रहा कि कादिर बख्श ने पहली पत्नी को जो दस्तावेज़ लिखकर दिया है वह उसे वापस कर दे क्योंकि मेरा बेटा पैदा हो गया है। मुहर्रम ने झगड़े और फसाद के बावजूद...

1. अल-कुरान अल-करीम 2/229
2. दुर्रे मुख्तार, बाब अन-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/269; रद्दुल मुहतार, बाब अन-नफ़क़ा, दार इहया अत-तुरात अल-अरबी बेरुत 2/656 पृष्ठ 480/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ، ۱۳

مسئلہ ۱۸۷: از کانپور طلاق محل مکان حکیم نورالدین مسئولہ عبید اللہ ۴ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید آوارہ اور بد چلن ہونے کے علاوہ نان و نفقہ کا کفیل بھی نہیں ہوسکتا اور اس کا باپ یعنی خالد اگرچہ نان و نفقہ کا کفیل ہوسکتا ہے اگر وہ چاہے، مگر وہ اور اس کی اہلیہ وغیرہ بھی ہندہ کو سخت تکالیف کھانے پینے پہننے کی دیتے ہیں اور سخت خدمت مثل ایک لونڈی کے لیتے ہیں تو کیا ایسی صورت میں ہندہ کو اپنے نفس کے روکنے کا اختیار ہے کیونکہ ان کی معاشرت نہایت خراب ہے بلکہ جان کا خطرہ ہے، اور کیا قاضی کو حق ہے کہ وہ دونوں میں تفریق یعنی خلع کرادے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: نفقہ نہ دینے پر حاکم اسے مجبور کرے گا کہ نفقہ دے یا طلاق لقولہ تعالٰی "فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ" (کیونکہ اللہ تعالٰی کا ارشاد ہے: بھلائی کے ساتھ پاس رکھو یا نیکی کرتے ہوئے چھوڑ دو۔ ت) لیکن قاضی بطور خود اس وجہ سے تفریق نہیں کرسکتا۔ در مختار میں ہے: لَا يُفَرَّقُ بَيْنَهُمَا بِعَجْزِهِ عَنْهَا بِأَنْوَاعِهَا الثَّلَاثَةِ (وَهِيَ مَاكُولٌ وَمَلْبُوسٌ وَمَسْكَنٌ ح اھ ش) وَلَا بِعَدَمِ إِيفَائِهَا حَقَّهَا وَلَوْ مُوسِرًا - وَاللَّهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ۔ تینوں کے حقوق سے عجز پر خاوند اور بیوی میں تفریق نہ ہوگی، وہ حقوق، خوراک، لباس اور مسکن ہیں، بحر، اھ ش (شرح کی عبارت ختم) اور نہ ہی امیر ہونے کے باوجود بیوی کے یہ حقوق مکمل نہ کرنے پر تفریق ہوگی۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۸۸: از اودے پور میواڑ مدرسہ شرقیہ مرسلہ سید عبدالرحیم صاحب ۲۰ شوال ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ قادر بخش کی عورت مسماۃ محرم ہے ۳۰ سال شادی کو ہوئے اولاد نہ ہونے کی وجہ سے نام بردہ سے عقد ثانی کیا اور محرم کو اس مضمون کی تحریر لکھ دی کہ جو میرا گاؤں جاگیر کا ہے اس میں ۳۰۰ روپے سالانہ ادا کرتا رہوں گا بلا عذر، اور

حال میں نیامکان جو بنایا ہے وہ تیرے رہنے کو دے دیا، اگر تیرے لڑکا ہوگا تو میری تمام جائیداد کا مالک ہوگا اور اگر اس دوسری عورت سے ہوگا تو وہ اس تحریر کی پابندی کرے گا، کچھ عرصہ بعد دوسری کے لڑکا پیدا ہوا، مسماۃ محرم قادر بخش کی تابعداری کرتی رہی لیکن دوسری عورت کی اور اس کی باہمی تکرار اس بنا پر ہوتی رہی کہ جو تحریر قادر بخش نے زوجہ اولیٰ کو لکھ دی ہے وہ واپس دے دے کیونکہ میرے لڑکا تولد ہوگیا ہے، محرم نے باوجو تکرار فساد

1. القرآن الکریم ۲/ ۲۲۹

2. در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۹، ردالمحتار باب النفقۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۵۶

Fatawa Razawiyya Volume 13 Page 13

[The question:] ...did not give in writing. Qadir Bakhsh, under the influence of his second wife, expelled the first wife. Meanwhile, Muharram filed a claim in court for maintenance and the fulfillment of the written commitment. To this, the husband recorded his statement that he had divorced Muharram. However, the reality is that he did neither divorce her nor write any divorce deed, nor are there any witnesses to the divorce. He only said so and publicized it due to being misled by the other woman. Muharram has committed no fault towards her husband. Does saying so and publicizing it by Qadir Bakhsh result in an Islamic divorce (Talaq) for Muharram? If so, does Muharram have the Islamic right to enforce the written commitment Qadir Bakhsh gave her, and to what extent is she entitled to it?

The Answer: Talaq is based on the husband's tongue. If he says, "I have given Talaq," then Talaq has occurred. Even if he hadn't given it before, it occurs now. As for providing a house to live in, making her the owner of a house is not required unless the authority of transfer of ownership (Wilayat-e-Tamlik) is proven. However, providing her with possession after emptying it of his belongings etc. is necessary. As for giving three hundred rupees annually, if it was in addition to basic maintenance, it was merely a promise. A lawsuit cannot be based on a promise. In Al-Ashbah and other books, it is stated: "There is no compulsion to fulfill a promise."^1 (1) And if this amount was fixed as maintenance, it becomes void upon divorce, and she cannot claim it, except for the current month in which he stated he had divorced her. In Tanwir, it is stated:

"The fixed maintenance is dropped upon the death of one of them or upon their divorce."^2 (2)

In Radd al-Muhtar, it is stated: "Khair al-Din al-Ramli said: Our teacher, Sheikh Muhammad bin Siraj al-Din al-Hanuti, restricted the dropping [of maintenance] due to divorce to the passing of one month or more, and this restriction is necessary; reflect on this."^3 End. And Allah the Almighty knows best.

^1 Al-Ashbah wal-Naza'ir, Kitab al-Hazr wal-Ibaha, Idara al-Quran Karachi, 2/511, 110. ^2 Durr al-Mukhtar, Bab al-Nafaqah, Matba' Mujtabai Delhi, 1/70. ^3 Radd al-Muhtar, Bab al-Nafaqah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/659.

Page 481 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 पृष्ठ 13

[प्रश्न:] ...लिखित में नहीं दिया। क़ादिर बख्श ने अपनी दूसरी पत्नी के बहकावे में आकर पहली को घर से निकाल दिया। इस बीच, मुहर्रम ने अदालत में गुज़ारा भत्ता (नान-ओ-नफ़क़ा) और लिखित वादे की पाबंदी का दावा किया। इस पर पति ने अपना बयान दर्ज कराया कि मैंने मुहर्रम को तलाक दे दिया है। लेकिन वास्तविकता यह है कि उसने न तो उसे तलाक दिया, न कोई तलाकनामा लिखा, और न ही तलाक का कोई गवाह है। केवल दूसरी औरत के बहकावे में आकर उसने ऐसा कह दिया और इसे मशहूर कर दिया। मुहर्रम ने अपने पति के प्रति कोई गलती नहीं की है। क्या क़ादिर बख्श के ऐसा कहने और मशहूर करने से शरीयत की दृष्टि में मुहर्रम को तलाक हो गया? यदि हो गया, तो क्या मुहर्रम को शरीयत के अनुसार यह अधिकार प्राप्त है कि वह क़ादिर बख्श द्वारा दिए गए लिखित वादे को लागू करवाए, और वह किस सीमा तक इसकी हकदार है?

उत्तर: तलाक पति की ज़बान पर निर्भर है। यदि वह कहता है कि "मैंने तलाक दे दी," तो तलाक हो गया। यदि पहले नहीं दिया था, तो अब हो गया। जहाँ तक रहने के लिए मकान देने की बात है, उसे मकान का मालिक बनाना अनिवार्य नहीं है जब तक कि स्वामित्व हस्तांतरण (विलायत-ए-तमलीक) साबित न हो। हालाँकि, अपना सामान आदि हटाकर खाली करके उसे कब्जा दिलाना आवश्यक है। सालाना तीन सौ रुपये देना, यदि यह बुनियादी गुज़ारा भत्ते के अतिरिक्त था, तो यह केवल एक वादा था। वादे के आधार पर दावा नहीं किया जा सकता। 'अशबाह' आदि में है: "वादे को पूरा करने पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है।"^1 (1) और यदि यह राशि गुज़ारा भत्ते (नफ़क़ा) के रूप में तय की गई थी, तो तलाक के साथ यह समाप्त हो गया, वह इसका दावा नहीं कर सकती, सिवाय उस वर्तमान महीने के जिसमें उसने कहा कि उसने उसे तलाक दे दिया है। 'तन्वीर' में है:

"पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु या तलाक से तयशुदा गुज़ारा भत्ता समाप्त हो जाता है।"^2 (2)

'रद्द अल-मुह्तार' में है: "खैर-उद्दीन रमली ने फरमाया कि तलाक के कारण गुज़ारा भत्ता समाप्त होने को, हमारे शेख मुहम्मद बिन सिराज-उद्दीन हनूती ने एक महीना या उससे अधिक समय बीत जाने के साथ सीमित किया है, और यह शर्त आवश्यक है, इस पर गौर करें।"^3 समाप्त। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

^1 अल-अशबाह वल-नज़ाइर, किताब अल-हज़्र वल-इबाहा, इदारा अल-क़ुरान कराची, 2/511, 110. ^2 दुर्रे मुख़्तार, बाब अन-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/70. ^3 रद्द अल-मुह्तार, बाब अन-नफ़क़ा, दार इहया अल-तुरास अल-अरबी बेरुत, 2/659.

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

تحریر نہیں دی، قادر بخش نے زوجہ ثانیہ کے بہکانے سے پہلی کو نکال دیا، جبکہ محرم نے کچہری میں نان و نفقہ و پابندی تحریر کا دعوی کیا اس پر شوہر نے اپنا بیان قلمبند کرایا کہ محرم کو میں نے طلاق دے دی، لیکن اصلیت یہ ہے کہ اس نے اسے طلاق نہ دی نہ کوئی طلاق نامہ تحریر کیا نہ کوئی گواہ طلاق دینے کا ہے، صرف دوسری عورت کے ورغلانے پر اس نے ایسا کہہ دیا اور مشہور کیا ہے، محرم نے شوہر کی کوئی خطا نہیں کی ہے، کیا قادر بخش کے ایسا کہہ دینے اور شہرت دے دینے سے محرم کو عند الشرع طلاق ہو گئی اگر ہو گئی تو محرم کو عند الشرع یہ حق حاصل ہے کہ وہ تحریر جو قادر بخش نے محرم کو دی ہے اس کی پابندی کرانے کی وہ کس حد تک مستحق ہے؟

الجواب: طلاق شوہر کے زبان پر ہے وہ کہتا ہے کہ میں نے طلاق دے دی طلاق ہو گئی نہ دی تھی تو اب ہو گئی اور رہنے کو مکان دینا مالک کر دینا نہیں جب تک ولایت تملیک ثابت نہ ہو، اور اس کے ساتھ اپنے اسباب وغیرہ سے خالی کرکے قبضہ دلا دینا ضرور ہے، تین سو روپے سالانہ دینا اگر علاوہ نان و نفقہ تھا تو محض ایک وعدہ تھا وعدہ کی بناء پر دعوی نہیں ہو سکتا۔ اشباہ وغیرہ ہما میں ہے: لّا جبر علی الوفاء بالوعد۱۸ (وعدہ پورا کرنے پر جبر نہیں۔ت) اور اگر یہ نفقہ مقرر کیا گیا تھا تو طلاق سے ساقط ہو گیا اس کا دعوی نہیں کر سکتی، مگر ماہ رواں کا جس میں اس نے کہا کہ میں نے اسے طلاق دے دی۔ تنویر میں ہے: بموت احدھما و طلاقھما یسقط المفروض۲۸- خاوند بیوی میں سے ایک کے فوت ہو جانے یا طلاق سے مقررہ نفقہ ساقط ہو جاتا ہے (ت)

ردالمحتار میں ہے: قال الخیر الرملي وقید السقوط بالطلاق شیخنا الشیخ محمد بن سراج الدین الحانوتی بما اذا مضی شھر فازید وھو قید لابد منه تأمل۸3 اھ واللہ تعالی اعلم۔ خیر الدین رملی نے فرمایا کہ طلاق کی وجہ سے نفقہ ساقط ہونے کو، ہمارے شیخ محمد بن سراج الدین حانوتی نے ایک ماہ یا زائد گزر جانے سے مقید کیا ہے اور یہ قید ضروری ہے، غور کرو، اھ، واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

1 الاشباہ والنظائر کتاب الحظر والاباحۃ ادارۃ القرآن کراچی ۲/۵۱۱، ۱۱۰ 2 در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۰ 3 ردالمحتار باب النفقۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۵۹

Fatawa-e-Razvia Volume 13, Page 13

Problem 189 to 193: From Mehandi Headworks Division, District Raipur CP, sent by Sardar Khan Clerk, 26 Safar 1337 AH.

What do the scholars of religion say in this matter: Zaid's wife, Hindah, treats him with severe verbal abuse and harsh language, and she has performed the following actions without her husband Zaid's consent:

(1) She left her house several times without Zaid's permission, and in the weddings of her relatives, she gave several of Zaid's items as dowry without his permission and consent.

(2) Without Zaid's permission and will, she adopted her younger brother's daughter and continued to support her with jewelry, food, and clothing; she even had these jewels made for the girl using Zaid's income without his permission.

(3) Since Zaid's job requires him to occasionally go on tours with officials and travel to other places for government work, he asked Hindah to accompany him. However, she did not comply with Zaid's instructions; even if she did go, she would return after a few days without his permission or consent under some pretext. Consequently, for his own arrangements, Zaid had to hire another female servant and bear the burden of additional expenses.

(4) Zaid endured these matters with restraint and patience because he is a noble person, whereas Hindah is foul-mouthed and abusive. Furthermore, Hindah's relatives support her, fearing that more conflict might arise. In short, Zaid remained silent despite seeing the wasteful spending and other actions occurring without his consent. However, when Zaid realized that Hindah was not coming to the right path in any way, he counseled her extensively and emphasized that she should not act this way. Instead of choosing the right path, Hindah threatened Zaid and spoke to him in extremely obscene terms, saying, 'If you are your father's child, then divorce us and never speak to us again.'

Therefore, in the presented scenario, the matters requiring investigation are: When Hindah stepped out without Zaid's permission, is she still entitled to maintenance (food and clothing) or not? Hindah adopted a girl without Zaid's permission and continued to provide her with jewelry, clothing, and food against Zaid's will, as well as putting the burden of additional expenses on Zaid by not staying with him during tours and other locations. In such a situation, can she be entitled to her full mahr

(dowry)? Although her mahr is obligatory, who will be responsible for the debt incurred due to Hindah not accompanying Zaid and the resulting additional expenses? And who will be responsible for the costs of adopting the girl without permission and providing her with jewelry, clothing, and food against Zaid's will? It should be kept in mind that Zaid, keeping his nobility in view...

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

मसला १८९ से १९३: मेहंदी हेडवर्क्स डिवीजन, जिला रायपुर सी.पी. से, प्रेषक सरदार खान क्लर्क, २६ सफ़र १३३७ हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: जैद की पत्नी हिंदा उसके साथ अत्यधिक अभद्र भाषा और कठोर शब्दों का व्यवहार करती है और उसने अपने पति जैद की सहमति के बिना निम्नलिखित कार्य किए हैं;

(१) जैद की अनुमति के बिना वह कई बार अपने घर से बाहर गई और अपने रिश्तेदारों और सगे-संबंधियों की शादियों में उसने जैद की कई चीजें जैद की अनुमति और सहमति के बिना दहेज के रूप में दे दीं।

(२) जैद की अनुमति और मर्जी के बिना उसने अपने छोटे भाई की बेटी को गोद लिया (मत्तबन्नी बनाया) और उसके गहने, खान-पान और कपड़ों के साथ उसका भरण-पोषण करती रही। ये गहने आदि भी उसने जैद की अनुमति के बिना उस लड़की के लिए जैद की आय से बनवाए।

(३) चूंकि जैद की नौकरी ऐसी है कि उसे कभी-कभी अधिकारियों के साथ दौरे पर और सरकारी काम के लिए अन्य स्थानों पर जाना पड़ता था, इसलिए उसने हिंदा को साथ चलने के लिए कहा, लेकिन उसने जैद के आदेशों का पालन नहीं किया, या यदि किया भी तो किसी बहाने से कुछ दिनों के बाद उसकी अनुमति और सहमति के बिना वापस आ गई। इसलिए अपनी व्यवस्था को देखते हुए जैद को दूसरी महिला नौकरानी रखनी पड़ी और अतिरिक्त खर्च का बोझ उठाना पड़ा।

(४) जैद ने इन बातों को संयम और धैर्य से सहा क्योंकि वह कुलीन है और हिंदा बदज़बान और कटुभाषी है। इसके अलावा, हिंदा के रिश्तेदार उसके सहायक हैं, कहीं अधिक फसाद न हो जाए। संक्षेप में, जैद की सहमति के बिना जो भी फिजूलखर्ची और अन्य कार्य होते रहे, उन्हें देखकर जैद चुप रहा। लेकिन जब जैद ने देखा कि हिंदा किसी भी तरह सही रास्ते पर नहीं आ रही है, तो उसने उसे बहुत समझाया और ज़ोर दिया कि वह ऐसा न करे। लेकिन हिंदा ने सही रास्ता अपनाने के बजाय जैद को धमकी दी और अत्यंत अश्लील शब्दों में बुरा-भला कहा कि "यदि तुम अपने पिता की संतान हो तो हमें तलाक दे दो और हमसे कभी बात मत करो"।

तो, पूछे गए मामले में जाँच के विषय ये हैं: जब हिंदा ने जैद की अनुमति के बिना घर से बाहर कदम रखा, तो क्या वह रोटी-कपड़े (नान-ओ-नफ़क़ा) की हकदार है या नहीं? हिंदा ने जैद की अनुमति के बिना एक लड़की को गोद लिया और जैद की मर्जी के खिलाफ उसके गहनों, कपड़ों और भोजन की जिम्मेदारी उठाती रही। साथ ही दौरे और अन्य स्थानों पर जैद के साथ न रहकर उस पर अतिरिक्त खर्च का बोझ डाला। ऐसी स्थिति में क्या वह अपने पूरे मेहर की हकदार हो सकती है? यद्यपि उसका मेहर वाजिब (देय) है, तो हिंदा के जैद के साथ न जाने और जिसके कारण जैद को अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ा, उसका देनदार कौन होगा? और जैद की अनुमति के बिना एक लड़की को गोद लेने और जैद की मर्जी के खिलाफ उसके गहनों, कपड़ों और भोजन की जिम्मेदारी उठाने के कारण होने वाले खर्च का देनदार कौन होगा? यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जैद ने शराफ़त को ध्यान में रखते हुए...

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

مسئلہ ۱۸۹ تا ۱۹۳: از مہاندی ہیڈ ورکس ڈویژن ضلع رائے پور سی پی مرسلہ سردار خاں کلرک ۲۶ صفر ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی زوجہ ہندہ اس سے سخت بدزبانی اور درشت کلامی سے پیش آتی ہے اور مندرجہ ذیل امور اس نے بغیر اپنے خاوند زید کی رضامندی کے کئے؛

(۱) بغیر اجازت زید کے وہ اپنے مکان سے باہر کئی مرتبہ گئی اور اپنے عزیزوں رشتہ داروں کی شادی میں اس نے زید کی کئی چیزیں بغیر اجازت و رضامندی زید کے بطور جہیز دے دیں۔

(۲) بلا اجازت و مرضی زید اس نے اپنے چھوٹے بھائی کی لڑکی کو اپنا متبنی کیا اور زیورات، آب و خورش اور ملبوسات سے اس کی کفالت کرتی رہی، یہ زیورات وغیرہ بھی اس نے بلا اجازت زید کے اس لڑکی کیلئے زید کی آمدنی سے بنوائے۔

(۳) چونکہ زید کی ملازمت ایسی ہے کہ اسے گاہے گاہے حکام کے ساتھ دورہ پر نیز گورنمنٹ کی بجا آوری کے لئے دوسری جگہ جانا پڑا اس لئے اس نے ہندہ کو ساتھ چلنے کے لئے کہا مگر اس نے تعمیل احکام زید نہ کی یا اگر کی بھی تو کسی بہانہ سے چند روز کے بعد بلا اس کی اجازت رضامندی کے واپس آگئی اس لئے اپنے انتظامات کے خیال سے زید کو دوسری ملازمہ رکھنی پڑی اور مزید خرچ کا بار اٹھانا پڑا۔

(۴) زید نے ان امور کو ضبط اور تحمل سے اس وجہ سے برداشت کیا کہ وہ شریف ہے اور ہندہ بد زبان بد کلام، نیز ہندہ کے رشتہ دار اس کے معاون، مبادا زیادہ فساد برپا ہو، غرض جو کچھ فضول

خرچیاں اور دیگر امور بلا رضامندی زید کے ہوتے رہے انہیں دیکھ کر زید نے خاموشی اختیار کی مگر جب زید نے دیکھا ہندہ کسی طرح راہِ راست پر نہیں آتی تو اس نے اسے بہت کچھ سمجھایا اور تاکید کی کہ ایسا نہ کرے مگر ہندہ نے بالعوض راستی اختیار کرنے کے زید کو دھمکایا اور اس نے نہایت فحش الفاظ میں برا کہا کہ اگر تم اپنے باپ کی اولاد ہو تو ہمیں طلاق دے دو اور ہر گز ہم سے بات نہ کرو، پس صورت مسئولہ میں تحقیق طلب یہ امور ہیں، بلا اجازت زید کے جب ہندہ نے باہر قدم رکھا تو آیا وہ نان و نفقہ کی مستحق ہے یا نہیں؟ ہندہ نے بلا اجازت زید کے ایک لڑکی کو اپنی فرزند می میں لیا نیز خلاف مرضی زید کے اس کو زیورات و لباس و خورش کی کفیل ہوتی رہی و نیز دورہ و دیگر مقامات میں زید کے ہمراہ نہ رہ کر اس پر مزید خرچہ کا بار ڈالا پس ایسی حالت میں کیا وہ اپنے پورے مہر مستحق ہو سکتی ہے اگرچہ مہر اس کا واجب ہے تو ہندہ جو زید کے ساتھ نہ گئی اور نہ ہی جس کی وجہ سے زید کو مزید خرچہ کا بار پڑا اس کا دین دار کون ہوگا، اور لڑکی کی متبنی کو زید کی بلا اجازت اپنی فرزند می میں لی اور خلاف مرضی زید کے اس کو زیورات اور لباس و خورش کی کفیل جو ہوتی رہی اس کا دیندار کون ہوگا، یہ امر ذہن نشین رہے کہ زید نے شرافت کو مدِ نظر رکھ کر

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13.

With the intention of preventing future discord, as mentioned in paragraph number 5, I did not interfere in the matters of Hindah. (5) Since Hindah swore an oath to Zaid to give her divorce, in such a situation, the possibility of Khula (divorce initiated by the wife) can exist.

The Answer: Hindah is a severe sinner, but the mere fact that she asked for divorce from her own mouth does not constitute Khula. Zaid cannot demand from Hindah the additional burden of servants etc. that fell on him for his comfort, even if it was caused by Hindah not staying with him. Yes, for as many days as she stayed elsewhere after leaving Zaid's place without his permission, she will not receive maintenance. The wealth of Zaid that she spent on that adopted child or on the weddings of her relatives or on the food and drink of the adopted child without Zaid's permission, she is liable to reimburse. Zaid's silence despite his displeasure will not be considered as permission. "Silence is not attributed as a statement." (Meaning: Silence does not imply consent. Ed.) The total value of all this can be deducted by Zaid from her dowry (Mahr) because settlement of accounts between husband and wife is valid. (Ed.) And Allah Almighty knows best.

Problem 192 to 195: From Sikandra Rao, District Aligarh, sent by Imdad Ali Khan, 15 Rajab al-Murajjab 1337 AH.

What do the scholars of religion say in this matter? My wife, due to being mentally deficient, cannot feel or express her life's necessities and physical desires. She does not protect my honor, life, or property; instead, she spoils and destroys things. She is completely negligent in the upbringing of children, physical cleanliness, fasting, prayer, Sharia matters, and household affairs. She does not follow guidance. When the illness began, three boys were born to her, who died by the will of God due to lack of care. During the approximately ten years since the marriage, while bearing these losses, I and my weak mother, as much as possible, did not fall short in comforting and showing hospitality to the patient. Upon being certain of the disease, we tried treatment from Hakeems, doctors, midwives, and spiritual healers, but without success. The disease became permanent, hope of recovery was lost. Silence has prevailed for about five years and she is unable to serve me. Now it is my mother's opinion and my wish that I should marry another woman. But the mother of the patient, upon becoming aware of this matter, expressed severe displeasure with me and my mother, and on that basis, feigning ignorance, she is making it

known throughout the community that her daughter is not mad, but rather her ill-temper has increased due to the oppression of her in-laws. To support this claim, she has kept her daughter with her for about six months without consent and wants me to fix five rupees per month for her food and drink at her place or to pay five hundred and fifty rupees as the fixed dowry amount and [text continues on next page].

फतावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13।

भविष्य के कलह को रोकने के विचार से, जैसा कि अनुच्छेद संख्या 5 में उल्लेखित है, मैंने हिंदा के मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। (5) चूंकि हिंदा ने ज़ैद को कसम दी कि वह उसे तलाक दे दे, इसलिए ऐसी स्थिति में ख़ुला (पत्नी द्वारा शुरू किया गया तलाक) की संभावना हो सकती है।

उत्तर: हिंदा घोर गुनहगार है, लेकिन सिर्फ इतनी सी बात कि उसने अपने मुँह से तलाक माँगी, ख़ुला नहीं हो सकता। ज़ैद अपने आराम के लिए नौकरों आदि का अतिरिक्त भार जो उस पर पड़ा, हिंदा से उसकी माँग नहीं कर सकता, भले ही वह हिंदा के उसके पास न रहने के कारण ही क्यों न हुआ हो। हाँ, जितने दिन वह ज़ैद की अनुमति के बिना उसके यहाँ से जाकर दूसरी जगह रही, उतने दिनों का गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) उसे नहीं मिलेगा। ज़ैद का जो धन उसने उस गोद लिए हुए बच्चे या अपने रिश्तेदारों की शादियों या गोद लिए बच्चे के खान-पान पर ज़ैद की अनुमति के बिना खर्च किया, उसका हर्जाना हिंदा पर अनिवार्य है। और अप्रसन्नता के साथ ज़ैद की चुप्पी को अनुमति नहीं माना जाएगा। "मौन को वचन नहीं माना जाता है।" (अर्थात: चुप्पी को सहमति नहीं माना जाता। सं.) इन सब का कुल मूल्य जितना भी हो, ज़ैद उसे उसके मेहर (दहेज) में से कम कर सकता है क्योंकि पति-पत्नी के बीच लेन-देन का हिसाब वैध है। (सं.) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 192 से 195: सिकंदर राव, ज़िला अलीगढ़ से, प्रेषक इमदाद अली खान, 15 रजब अल-मुरज्जब 1337 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि मेरी पत्नी बुद्धिहीन (दिमागी रूप से कमज़ोर) होने के कारण अपनी जीवन की आवश्यकताओं और शारीरिक इच्छाओं को महसूस नहीं कर पाती या व्यक्त नहीं करती। वह न तो मेरे सम्मान, जान और माल की रक्षा करती है, बल्कि चीजों को खराब और बर्बाद करती है। बच्चों के पालन-पोषण, शरीर की स्वच्छता, रोज़ा, नमाज़, शरीयत के मामलों और घरेलू कामकाज से पूरी तरह बेपरवाह है और निर्देशों का पालन नहीं करती। जब बीमारी शुरू हुई थी, तो उससे तीन लड़के पैदा हुए थे, जो देखभाल की कमी के कारण ईश्वरीय इच्छा से मर गए। शादी के लगभग दस साल के समय में इन नुकसानों को सहन करते हुए, जहाँ तक संभव हो सका मैंने और मेरी कमज़ोर माँ ने मरीज़ा का दिल बहलाने और उसकी खातिरदारी में कोई कमी नहीं की। बीमारी का यकीन होने पर हकीमों, डॉक्टरों, दाइयों और आमिलों (झाड़-फूँक करने वालों) से इलाज कराने पर भी कोई सफलता नहीं मिली। बीमारी स्थायी हो गई, स्वस्थ होने की उम्मीद खत्म हो गई। लगभग

पाँच साल से खामोशी छाई हुई है और वह मेरी सेवा करने में असमर्थ है। अब मेरी माँ की राय और मेरी इच्छा है कि दूसरी महिला से निकाह किया जाए। लेकिन मरीज़ा की माँ को इस बात का पता चलने पर उन्होंने मुझसे और मेरी माँ से सख्त नाराजगी जताई है और इसी आधार पर जानबूझकर अनजान बनते हुए पूरी बिरादरी में यह मशहूर कर रही हैं कि मेरी बेटी पागल नहीं है, बल्कि उसके ससुराल वालों के ज़ुल्म से उसका मिज़ाज बिगड़ गया है। और अपने इस दावे की पुष्टि के लिए उन्होंने अपनी बेटी को बिना रज़ामंदी के लगभग छह महीने से अपने पास रख रखा है और चाहती हैं कि मेरे पास ही उसके लिए पाँच रुपये महीना और खाने-पीने का तय कर दो या साढ़े पाँच सौ रुपये की तयशुदा मेहर की राशि अदा करके उसको [अगले पृष्ठ पर जारी]।

पेज 483/688

آئندہ کے فساد کی مدافعت کے خیال سے جیسا کہ فقرہ نمبر ۵ میں مذکور ہے ہندہ کے معاملات میں دخل نہیں دیا۔ (۵) چونکہ ہندہ نے زید کو قسم دی کہ اسے طلاق دے دے پس ایسی حالت میں خلع کی صورت ہو سکتی ہے۔ الجواب ہندہ سخت گناہگار ہے مگر صرف اتنی بات کہ اس نے اپنے منہ سے طلاق مانگی خلع نہیں ہوسکتی، نوکر وغیرہ کا مزید بار جو زید پر اپنے آرام کے لئے پڑا ہندہ سے اس کا مطالبہ نہیں کر سکتا اگر چہ ہندہ کا اس کے پاس نہ رہنا ہی اس کے باعث ہوا ہو، ہاں جتنے دنوں بے اجازت زید زید کے یہاں سے جا کر دوسری جگہ رہی اتنے دنوں نفقہ نہ پائیگی جو مال زید اس نے اس متبنی یا اپنے اعزاء کی شادیوں یا متبنی کے خورد و نوش میں بے اجازت زید صرف کیا اس کا تاوان ہندہ پر لازم ہے اور ناگواری کے ساتھ زید کا خاموش رہنا اجازت نہ سمجھا جائے گا " لا ینسَب الی ساکت قول" (خاموش کی طرف قول منسوب نہ کیا جائے۔ت) اس سب کا مجموعہ جتنی قیمت کا ہو زید اس کے مہر میں سے کم کر سکتا ہے لصحة جریانہ المقاصة بینهما (کیونکہ خاوند بیوی میں لین دین کا حساب صحیح ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۱۹۲ تا ۱۹۵: از سکندر ہ راؤ ضلع علی گڑھ مرسلہ امداد علی خاں ۱۵ رجب المرجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ میری زوجہ فاتر العقل ہونے کے باعث اپنی ضروریات زندگی و نفسانی خواہش کو محسوس نہیں کر سکتی یا ظاہر نہیں کرتی۔ نہ مری آبرو اور جان و مال کی حفاظت کرتی ہے بلکہ اشیاء کو خراب و برباد کرتی ہے اور تربیت اولاد و پاکیزگی جسم و صوم و صلوۃ امورات شرعیہ و معاملات خانہ داری سے بالکل غافل ہے ہدایت پر عمل نہیں کرتی، جب بیماری شروع تھی تو اس سے تین لڑکے پیدا ہوئے، بے حفاظتی کے باعث بقضائے الہی فوت ہوئے، وقت شادی سے جس کو عرصہ تقریباً دس سال کا گزرا ان نقصانات کو برداشت کرتے ہوئے

حتی الامکان میں نے اور میری ضعیفہ ماں نے مریضہ کی دلجوئی، خاطر تواضع میں کوئی کمی نہ کی مرض کا یقین ہونے پر حکیموں ڈاکٹروں دائیوں اور عاملوں سے علاج کرانے پر بھی کامیابی نہ ہوئی، مرض مستقل ہو گیا صحت سے مایوسی ہو گئی تقریباً پانچ سال سے خاموشی طاری ہے اور وہ میری خدمت سے قاصر ہے، اب میری ماں کی رائے اور میری خواہش ہے کہ دوسری عورت سے عقد کیا جائے مگر مریضہ کی ماں نے اس امر سے مطلع ہو کر مجھ سے اور میری ماں سے سخت ناراضگی کا اظہار کیا ہے اور اسی بنا پر تجاہل عارفانہ سے کام لے کر تمام برادری میں مشہور کرتی ہیں کہ میری بیٹی پاگل نہیں ہے بلکہ اس کے سسرالیوں کے ظلم سے اس کی بد مزاجی بڑھ گئی ہے، اور اپنے اس قول کی تائید کے لئے اپنی بیٹی کو بلا رضا مندی اپنے پاس تقریباً چھ ماہ سے رکھ چھوڑا ہے اور چاہتی ہیں کہ میرے پاس ہی اس کے لئے پانچ روپیہ ماہوار اور خورد و نوش کو مقرر کردو یا ساڑھے پانچ سو روپیہ ماہوار زر مہر معینہ ادا کرکے اس کو

Volume Thirteen 13 Fatawa Rizwia

Give her a divorce. I requested the mother of the sick woman to write an agreement of three rupees monthly for life, on the condition that she waives her claim to the dower (Mehr). This amount is sufficient for her food and drink; I only have this much capacity, and I do not have the ability to pay the full dower amount at this time. She does not accept this request. In this situation, what action should I take according to Sharia?

Secondly, in the mentioned situation, if after a second marriage, the [first] woman serves and obeys her husband less or not at all, and the second woman serves and obeys him more, then will it be mandatory for the husband to maintain equality in marital rights, or can there be any distinction? And what else?

The Answer: As long as she stays at her mother's place or any other place without your permission, she is not entitled to maintenance. And as long as there is no divorce or death, the non-deferred (Mu'ajjal) dower is not due for payment. If a second marriage is performed and the first wife also remains with the husband, then there must be equality in providing maintenance/gifts and in spending nights with them. And Allah Almighty knows best.

From Bareilly City, Mohalla Kankar Tola, asked by Talan, 25 Dhu al-Hijjah 1338 AH.

Problem 196: What do the scholars of religion say regarding this problem: Hind was married off during her childhood. She reached puberty at her husband's house and had children; now even her children are grown up. However, during this period, she became a wanderer and an adulteress. For this reason, her husband kicked her out and sent her to her real brother's house. The brother then sent her back to the husband. This happened three or four times. Once, Hind was invited to her husband's uncle's daughters' wedding, and the Chaudhry (community leader) brought her to her husband's home at the wedding venue. But in the morning, her husband again sent her to her brother's house. Once, when the brother did not keep Hind, she came to her maternal uncle's house. After keeping her for a few days, the uncle said, "I have a family, I no longer have the capacity to keep her. Go stay with your paternal uncles and other relatives." The community members are boycotting (cutting off 'huqqa pani') the brother and Hind's maternal uncle. According to Sharia, should they be boycotted or not? And on whom is it mandatory to keep Hind? On her paternal uncle, husband, maternal uncle, or brother? Who will be responsible for her food and clothing, or will no one be responsible for keeping her? Furthermore, the

husband has not divorced Hind yet and provides her with food and clothing regularly. For the year prior, it has been the responsibility of her brother and maternal uncle. Should the husband provide maintenance to Hind even if he doesn't divorce her? And upon verification of adultery, should the husband give a divorce immediately or stop providing food?

जिल्द तेरहवीं १३ फतावा रज़विया

तलाक दे दो, मैंने बीमार औरत की माँ से दरख्वास्त की कि मेहर से दावा छोड़कर मुझसे उम्र भर के लिए तीन रुपये मासिक का इकरारनामा लिखवा लो, यह उसके खाने-पीने के लिए काफी है। मेरी इतनी ही हैसियत है और इस वक्त मेरे पास पूरा मेहर अदा करने की ताकत नहीं है। वह इस दरख्वास्त को मंज़ूर नहीं करतीं। इस सूरत में शरीअत की रोशनी में मुझे क्या अमल करना चाहिए?

दूसरा यह कि उक्त सूरत में दूसरी शादी होने पर अगर [पहली] औरत शौहर की खिदमत और इताअत (आज्ञाकारिता) कम करे या बिल्कुल न करे और दूसरी औरत उससे ज्यादा खिदमत व इताअत करे, तो क्या शौहर के लिए वैवाहिक अधिकारों में बराबरी रखना लाज़िम होगा या कोई फर्क रखा जा सकता है? और क्या?

जवाब: जब तक वह आपकी इजाज़त के बिना अपनी माँ के यहाँ या किसी दूसरी जगह रहे, वह नफ़के(भरण-पोषण) की हकदार नहीं है। और जब तक तलाक या मौत न हो जाए, गैर-मीयादी (मुअज्जल) मेहर वाजिब-उल-अदा नहीं होता। अगर दूसरी शादी की जाए और पहली बीवी भी शौहर के पास रहे, तो लेनदेन और रात बिताने में बराबरी रखनी होगी। वल्लाह ताआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

बरेली शहर, मोहल्ला कंकर टोला से, सायल: तलन, २५ ज़िल-हिज्जा १३३८ हिजरी।

मसला १९६: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: हिंदा का निकाह बचपन की हालत में कर दिया गया था। वह अपने शौहर के घर बालिग हुई और उसके बच्चे पैदा हुए, यहाँ तक कि अब उसके बच्चे जवान हैं। मगर इसी दौरान वह आवारा और ज़ानिया (व्यभिचारिणी) हो गई। इस वजह से उसके शौहर ने उसे निकाल कर उसके सगे भाई के घर पहुँचा दिया। भाई ने फिर उसे शौहर के यहाँ पहुँचा दिया। ऐसा वाकया तीन-चार बार हुआ। एक बार ऐसा हुआ कि हिंदा को उसके शौहर के चचा ने अपनी लड़कियों की शादी में बुलवाया, और चौधरी ने उसे उसके शौहर के यहाँ शादी के पंडाल में पहुँचा दिया। मगर सुबह को फिर उसके शौहर ने उसे उसके भाई के यहाँ पहुँचा दिया। एक बार जब भाई ने हिंदा को नहीं रखा तो वह अपने मामा के घर आ गई। मामा ने कुछ दिन रख कर कहा कि मेरा अपना परिवार है, मुझमें अब उसे रखने की ताकत नहीं है, तुम अपने चचा, ताया और दूसरे अज़ीज़ों के यहाँ रहो। बिरादरी के लोग भाई और हिंदा के मामा का 'हुक्का-पानी' बंद कर रहे हैं। शरीअत के मुताबिक उनका हुक्का-पानी बंद होना चाहिए या नहीं? और हिंदा को रखना किस पर

वाजिब होगा? चचा, शौहर, मामा या भाई, इनमें से किस पर उसकी रोटी-कपड़े की ज़िम्मेदारी होगी या कोई भी रखने का ज़िम्मेदार न होगा? दोबारा यह कि शौहर ने हिंदा को अभी तलाक नहीं दी है और बराबर उसे रोटी-कपड़ा देता है। पिछले एक साल से उसके भाई और मामा पर बोझ है। शौहर के तलाक न देने की सूरत में क्या उसे हिंदा का नफ़का देना चाहिए या नहीं? और ज़िना (व्यभिचार) की पुष्टि होने पर क्या शौहर को तुरंत तलाक दे देनी चाहिए या रोटी-कपड़ा बंद कर देना चाहिए?

पृष्ठ ४८४ (६८८ में से)

طلاق دے دو، میں نے مریضہ کی ماں سے درخواست کی مہر سے لاد عوی ہو کر مجھ سے تین روپیہ ماہوار کا اقرار نامہ عمر بھر کے واسطے لکھالو یہ اس کے خورد و نوش کو کافی ہے مجھے اتنی ہی توفیق ہے اور کل زر مہر ادا کرنے کی استطاعت اس وقت مجھے نہیں ہے ، وہ اس درخواست کو منظور نہیں کرتیں، اس صورت میں از روئے شرع مجھے کیا عمل کرنا چاہئے؟

دوم یہ کہ مندرجہ صورت میں دوسرا عقد ہونے پر اگر عورت خاوند کی خدمت و اطاعت کم کرے یا بالکل نہ کرے اور دوسری عورت اس سے زیادہ خدمت و اطاعت کرے تو حقوق زوجگان میں مساوات رکھنی شوہر کے ذمہ لازم ہوگی یا کوئی تفریق رہ سکتی ہے اور کیا؟

الجواب: جب تک وہ آپ کی اجازت کے بغیر اپنی ماں کے یہاں یا کسی دوسری جگہ رہے نفقہ کی مستحق نہیں ، اور جب تک طلاق یا موت نہ ہو غیر میعادی مہر واجب الادا نہیں ہوتا۔ دوسری شادی اگر کی جائے اور زوجہ اولیٰ بھی شوہر کے پاس رہے تو دینے لینے اور شب کو پاس رہنے میں مساوات ہوگی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

از شہر بریلی محلہ کا نکر ٹولہ مسئولہ تلن ۲۵ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ

مسئلہ ۱۹۶: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا حالت نا بالغی میں نکاح کر دیا تھا وہ اپنے شوہر کے گھر بالغ ہوئی اور اس کے اولادیں پیدا ہوئیں حتی کہ اب اس کے اولاد جوان موجود ہے مگر اسی عرصہ میں وہ آوارہ اور زانیہ ہو گئی اس سبب سے اس کے شوہر نے نکال کر اس کے حقیقی بھائی کے گھر پہنچادیا، بھائی نے پھر اس کو شوہر کے یہاں پہنچادیا، ایسا قصہ تین چار مرتبہ ہوا، اور ایک مرتبہ ایسا ہوا کہ ہندہ کو اس کے شوہر کے چچانے اپنی لڑکیوں کی

شادی میں بلوایا، اور چودھری نے اسکے شوہر کے یہاں حلقہ شادی میں پہنچادیا، مگر صبح کو پھر اس کے شوہر نے اس کو اس کے بھائی کے یہاں پہنچادیا، اور ایک مرتبہ ہندہ مذکور کو بھائی نے نہیں رکھا تو وہ اپنے ماموں کے گھر آئی تماموں نے چند روز رکھ کے کہا کہ میں کنبہ والا ہوں مجھ میں اب طاقت رکھنے کی نہیں ہے اپنے چچا تایاؤں اور دوسرے عزیزوں کے یہاں رہو، برادر لوگ، بھائی اور ہندہ کے ماموں کا حقہ پانی بند کرتے ہیں ، از روئے شرع کے ان کا حقہ پانی بند ہونا چاہئے یا نہیں؟ اور ہندہ کا رکھنا کس پر واجب ہوگا؟ چچا یا شوہر یا ماموں اور بھائی وغیرہ کس پر اس کا روٹی کپڑا مقرر ہو گا یا کوئی بھی رکھنے کا ذمہ دار نہ ہوگا؟ مکرر یہ کہ شوہر نے ہندہ کو ابھی طلاق نہیں دی ہے اور برابر اس کو روٹی کپڑا دیتا ہے، سال بھر سے ما قبل کے اپنے بھائی اور ماموں کے سر ہے شوہر کے بوجہ نہ دینے طلاق کے نان و نفقہ ہندہ کو دینا چاہئے یا نہیں؟ اور شوہر کو تحقیق ہو جانے زنا پر فوراً طلاق دینا چاہئے یا روٹی بند کرنا چاہئے؟

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

The Answer: Even if adultery is established, it is not mandatory to give a divorce until he divorces her. If Hindah (the wife) does not leave his house on her own, providing food and clothing is the husband's responsibility; it is obligatory for him to provide food and clothing. Or if he gives a divorce, he will have to provide food and clothing until the end of the 'iddah (waiting period) and pay her dower (Mahr). After the 'iddah, Hindah will support herself for food etc. from her own wealth if she has any, or from her second husband if she remarries. If she neither has wealth nor can earn, and has not remarried, then her food and clothing are the responsibility of her adult son. It is not mandatory for a brother, paternal uncle, or maternal uncle etc. And Allah Almighty knows best.

Problem 719: From Calcutta, Dharmatala, house of Haji Sulaiman Yusuf Mahpara No. 45, sent by Maulvi Syed Ibrahim Sahib Madni, 18 Shawwal 1319 AH. What is your opinion, may your excellence endure, O assembly of the scholars of Islam, may Allah Almighty have mercy on you in both worlds, regarding a man who constantly drinks wine, desecrates and tears noble papers containing sketches of the Masjid al-Haram and the sacred Prophetic Garden (Rawdah) - upon him be millions of blessings and salutations - and in their place hangs pictures of the idols of wicked disbelievers on the walls? He threw the blessed papers into filth, prevents his wife from performing prayers and beats her for it. He beats her when she refuses to drink wine. When told to come to the mosque, he says, "I will go to liquor stores to drink; I have no need to go to the mosque." He does not provide maintenance (nafaqah) to his wife, and when pressured to divorce her, he refuses and does not give a divorce. Eventually, the wife, helpless due to lack of maintenance, complains to the ruler/judge. He then promises the ruler to pay the wife ten rupees monthly, whereas until now...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पेज 13

उत्तर: यदि व्यभिचार (ज़िना) सिद्ध भी हो जाए, तब भी तलाक़ देना अनिवार्य नहीं है जब तक कि वह तलाक़ न दे दे। और यदि हिंदा स्वयं उसके घर से न निकले, तो रोटी-कपड़ा पति की ज़िम्मेदारी है; उस पर अनिवार्य है कि वह रोटी-कपड़ा दे। या यदि वह तलाक़ देता है, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त होने तक उसे रोटी-कपड़ा देना होगा और उसका मेहर अदा करना होगा। इद्दत के बाद, हिंदा अपने भोजन आदि का खर्च स्वयं अपने धन से उठाएगी यदि उसके पास धन है, या अपने दूसरे पति से यदि वह पुनर्विवाह करती है। यदि उसके पास न तो धन है और न ही वह कमा सकती है और न ही उसने पुनर्विवाह किया है, तो उसका रोटी-कपड़ा उसके वयस्क पुत्र पर अनिवार्य है। भाई, चाचा या मामा आदि पर कुछ भी अनिवार्य नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 719: कलकत्ता, धर्मतल्ला, हाजी सुलेमान यूसुफ महपारा मकान नंबर 45 से, मौलवी सैयद इब्राहिम साहब मदनी द्वारा प्रेषित, 18 शव्वाल 1319 हिजरी। इस्लाम के विद्वानों की जमात, अल्लाह तआला आप पर दोनों जहानों में रहमत फरमाए और आपकी फज़ीलत को कायम रखे, आप का क्या मार्गदर्शन है ऐसे व्यक्ति के बारे में जो हमेशा शराब पीता है और मस्जिद-ए-हराम और नबी पाक के पवित्र रौज़े - उन पर लाखों दरूद व सलाम हों - के नक्श वाले मुकद्दस काग़ज़ात की तौहीन करते हुए उन्हें फाड़ता है, और दीवारों पर उनकी जगह काफिरों के बुतों (मूर्तियों) की तस्वीरें लगाता है? उसने मुकद्दस काग़ज़ात को गंदगी में फेंका है और पत्नी को नमाज़ पढ़ने से रोकता है और मारता है, और उसे शराब न पीने पर मारता है। और जब उसे मस्जिद जाने के लिए कहा जाता है, तो वह कहता है, "मैं तो शराबखानों में जाकर शराब पीऊंगा; मुझे मस्जिद जाने की ज़रूरत नहीं है।" वह अपनी पत्नी को गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) नहीं देता, और जब उसे तलाक़ देने के लिए मजबूर किया जाता है, तो वह इनकार करते हुए अपनी पत्नी को तलाक़ नहीं देता। अंततः पत्नी गुज़ारे भत्ते के अभाव में लाचार होकर शासक/न्यायाधीश (हाकिम) से शिकायत करती है। वह हाकिम के सामने अपनी पत्नी को हर महीने दस रुपये देने का वादा करता है, जबकि अब तक...

الجواب: اگر زنا متحقق بھی ہو جائے جب بھی طلاق دینا واجب نہیں جب تک طلاق نہ دے، اور ہندہ اس کے یہاں سے خود نہ نکلے تو روٹی کپڑا شوہر کے ذمہ ہے اس پر واجب ہے کہ روٹی کپڑا دے یا طلاق دے گا تو ختم عدت تک کاروٹی کپڑا اور مہر اسے ادا کرنا ہوگا، بعد عدت ہندہ مہر وغیرہ اپنے مال سے کھائے گی اگر مال رکھتی ہو یا دوسرے شوہر کے پاس سے ، اگر دوسرا نکاح کرے، اور مال نہ رکھتی ہو نہ کما سکتی ہو نہ دوسرا نکاح ہو تو اس کا روٹی کپڑا اس کے جوان بیٹے پر واجب ہے بھائی یا چچا یا ماموں وغیرہ پر کچھ نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۱۹: از کلکتہ دھرم تلالین مکان حاجی سلیمان یوسف مہ پارہ نمبر ۴۵ مرسلہ مولوی سید ابراہیم صاحب مدنی ۱۸ شوال ۱۳۱۹ھ ماقولکم دام فضلکم معشر علماء الاسلام رحمکم اللہ تعالیٰ فی الدارین فی رجل یشرب الخمر دائماً ویھتك ویمزق الاوراق الکریمة التی فیھا نقش المسجد الحرام والروضة المطھرة النبویة علیه الف الف صلوة وتحیة ویعلق بدلھا علی الجدران تصاویر آلھة الکفار الفجار، وقدر می اوراق المتبرکة فی القاذورات ویضرب الزوجة علی اداء الصلوة ویمنعھا وویضربھا اذا لاتشرب الخمر واذا قیل له تعال نذھب الی المسجد فیقول انا اذھب الی المسکرات لاشربھا و مالی حاجة الیه ولاینفق علیھاً النفقة واذا اجبر علی الطلاق لایطلقھا ویأبی الطلاق حتی عجزت ورفعت شکواھا الی الحاکم فاقر عندہ فی الشھر بعشرة مضروبة مسکوکة والان علماء اسلام کی جماعت ، اللہ تعالیٰ تم پر دونوں جہان میں رحمت فرمائے اور تمہاری فضیلت کو دائم رکھے، آپ کا کیا ارشاد ہے ایسے شخص کے بارے میں جو ہمیشہ شراب پیتا ہے اور مسجد حرام اور روضہ مطہر نبی پاک ان پر ہزار ہزار صلوٰۃ وسلام ہو، کے نقش والے مبارک اوراق کی ہتک کرتے ہوئے ان کو پھاڑتا ہے، اور دیوار پر ان کی جگہ کافروں کے بتوں کی تصاویر کو آویزاں کرتا ہے اور اس نے

مبارک اوراق کو گندگی میں پھینکا ہے اور بیوی کو نماز سے روکتا اور مارتا ہے اور اسے شراب نہ پینے پر مارتا ہے، اور جب اسے مسجد میں جانے کے لئے کہا جاتا ہے تو کہتا ہے میں تو شراب خانوں میں جاکر شراب نوشی کرونگا اور مجھے مسجد میں جانے کی ضرورت نہیں ہے، اور بیوی کو نفقہ نہیں دیتا اور جب اسے طلاق دینے پر مجبور کیا جائے تو وہ انکار کرتے ہوئے بیوی کو طلاق نہیں دیتا حتیٰ کہ بیوی نفقہ سے عاجز ہو کر حاکم سے شکایت کرتی ہے تو وہ حاکم کے پاس بیوی کو ماہانہ دس روپے دینے کا اقرار کرتا ہے جبکہ اب تک

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

It has been three years and he hasn't given anything to his wife. So, what is the ruling for this person in all the mentioned scenarios? Does his wife remain in his marriage or not? And will he be ruled an infidel or not? If his marriage is void due to the mentioned matters, can the wife marry another person out of necessity, especially since it is apparent that she finds no one to lend her money for maintenance? And have the Hanafis favored that a Hanafi judge appoints a Shafi'i deputy so that he, according to the Shafi'i school of thought, demands divorce from the husband in his presence, and if he refuses, decides on a separation between them? Because meeting the wife's constant need for maintenance through borrowing is not easy. Therefore, there is no choice but separation due to necessity. Explain with reference to books, and may you be rewarded on the Day of Judgment. (T)

Answer: O Allah! All praise is for You. O Lord! I seek refuge in You from the whisperings of the devils, and I seek refuge in You, my Lord, lest they come near me. Everything described in the question regarding the person's evil deeds and worst sayings are ultimate major sins and burdens, and all of them carry the possibility of infidelity. For drinking alcohol is a major sin, and addiction to it is a greater sin. Along with this, if he drinks it considering it lawful or making light of its prohibition, then he has committed disbelief. And tearing the mentioned sacred papers...

Page 486 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

तीन साल हो चुके हैं और उसने अपनी पत्नी को कुछ नहीं दिया है। तो इन सभी वर्णित स्थितियों में इस व्यक्ति के लिए क्या नियम है? क्या उसकी पत्नी उसके निकाह (विवाह) में बनी रहेगी या नहीं? और क्या उसे काफिर (अविश्वासी) घोषित किया जाएगा या नहीं? यदि उक्त मामलों के कारण उसका निकाह बातिल (शून्य) है, तो क्या पत्नी आवश्यकता के कारण किसी अन्य व्यक्ति से निकाह कर सकती है, जबकि यह स्पष्ट है कि उसे भरण-पोषण के लिए ऋण देने वाला कोई नहीं मिलता? और क्या हनफियों ने यह पसंद किया है कि एक हनफी काजी किसी शाफई संप्रदाय वाले को अपना उप-काजी नियुक्त करे ताकि वह शाफई संप्रदाय के अनुसार पति की उपस्थिति में उससे तलाक की मांग करे, और इनकार करने पर उन दोनों के बीच अलगाव का फैसला दे? क्योंकि पत्नी की भरण-पोषण की निरंतर आवश्यकता को उधार लेकर पूरा करना आसान नहीं है। इसलिए, आवश्यकता के कारण अलगाव के बिना कोई चारा नहीं है। किताब के हवाले से स्पष्ट करें, और कयामत के दिन इसका प्रतिफल प्राप्त करें। (त)

उत्तर: ऐ अल्लाह! तेरे लिए ही सारी प्रशंसा है। ऐ रब! मैं शैतानों के वसवसों से तेरी पनाह चाहता हूँ, और ऐ रब! मैं उनकी मौजूदगी से तेरी पनाह चाहता हूँ। प्रश्न में वर्णित व्यक्ति के बुरे कार्यों और बदतर बातों का जो उल्लेख किया गया है, वे पाप और भार (वबाल) में अत्यंत कबीरा (बड़े पाप) हैं, और वे सभी कुफ्र (अविश्वास) की संभावना रखते हैं। क्योंकि शराब पीना कबीरा गुनाह है और इसकी लत उससे भी बड़ा गुनाह है। इसके साथ ही, यदि वह इसे हलाल समझकर और शराब की हुरमत (निषेध) को हल्का जानकर पीता है, तो वह काफिर हो गया। और उक्त पवित्र कागजों को फाड़ना और...

पृष्ठ 688 में से 486

تین سال ہوچکے ہیں اس نے بیوی کو کچھ نہیں دیا، تو ان تمام مذکورہ صورتوں میں اس شخص کے لئے کیا حکم ہے، کیا اس کی بیوی اس کے نکاح میں باقی ہے، اور کیا اس کے کافر ہوجانے کا حکم ہوگا یا نہیں، تو کیا مذکورہ امور کی وجہ سے جب اس کا نکاح باطل ہے تو بیوی دوسری شخص سے ضرورت کی بنا پر نکاح کر سکتی ہے جبکہ ظاہر یہ ہے کہ نفقہ کے لئے اس کو قرض دینے والا کوئی نہیں ملتا اور کیا احناف نے حنفی قاضی کے لئے کسی شافعی مذہب والے کو اپنا نائب بنانا پسند کیا ہے تاکہ وہ شافعی مذہب کے مطابق خاوند کی موجودگی میں اس سے طلاق کا مطالبہ کرے اور انکار پر وہ دونوں میں تفریق کا فیصلہ دے، کیونکہ بیوی کی دائمی نفقہ کی حاجت قرض سے پوری ہونا آسان نہیں ہے اس بنا پر دونوں میں ضرورت کی وجہ سے تفریق کے بغیر چارہ نہیں ہے، کتاب کے حوالے سے بیان کرو اور قیامت کے روز اجر پاؤ۔ (ت)

الجواب: یا اللہ ! تیرے لئے ہی حمد ہے، اے رب! میں شیطانوں کے وسوسوں سے تیری پناہ چاہتا ہوں، اور اے رب! شیطانوں کی موجودگی سے تیری پناہ چاہتا ہوں۔ سوال میں شخص مذکور کے برے افعال اور بدترین اقوال جو ذکر کئے گئے ہیں وہ گناہ اور وبال میں انتہائی کبیرہ ہیں، اور تمام کفر کا احتمال رکھتے ہیں کیونکہ شراب پینا کبیرہ گناہ ہے اور اس پر دوام اس سے بھی بڑا گناہ ہے اور اگر اس کے ساتھ ساتھ وہ حلال جان کر اور شراب کی حرمت میں تخفیف جان کر پیتا ہے تو وہ کافر ہے۔ اور مبارک اوراق کو پھاڑنا اور

Fatawa Razawiyya Volume 13 Page 13

And throwing them in dirty places, if it is based on the principles of the notorious Najdi Wahhabis—may Allah Almighty forsake them—that these are innovations (Bid'at) and innovations must be eliminated, then this is ignorance, misguidance, and deserving of punishment and retribution. And if the intent was to insult those places (sacred sites), then it is manifest disbelief (Kufr-e-Bawah) and clear apostasy. Hanging those impure pictures on walls, if it is done as a habit by foolish people who think it decorates the place without intending disbelief, then it is a filthy major sin that invites fire, distances angels, and brings devils near. And if it was done as a way of approving the actions of disbelievers and venerating the deities of the people of Hell, then it is explicit, manifest disbelief that necessitates an accusation of disbelief (Takfir). Beating a wife for performing prayers and forbidding her from it, and beating her for not drinking alcohol and refusing to do so, all of this is the ultimate manifestation of devilishness, arrogance, and rebellion. If along with this, he denies the obligation of prayer or the prohibition of alcohol, or mocks the Shariah and its commands and prohibitions, then it is open disbelief and disgraceful apostasy. His turning away from the mosque, which is the best of places, and saying foul and stinking words in arrogance to the one calling to Allah (e.g., saying "I will go to a bar, I don't need a mosque"), then he has become closer to disbelief and farther from faith (may Allah protect us from the madness of the mad). Then this matter...

Page 487 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 पृष्ठ 13

और उन्हें गंदी जगहों पर फेंकना, अगर यह बदनाम ज़माना नजद्री वहाबियों के उसूलों पर आधारित है—अल्लाह तआला उन्हें बेसहारा करे—कि ये बिदअत हैं और बिदअत को खत्म करना चाहिए, तो यह जहालत, गुमराही और अज़ाब व सज़ा का हक़दार होना है। और अगर इस अमल से उन (पवित्र) जगहों की तौहीन और तहक़ीर मक़सूद है, तो यह खुला कुफ़्र (कुफ़्र-ए-बवाह) और साफ़ तौर पर इरतदाद (धर्मत्याग) है। और उन नापाक तस्वीरों को दीवारों पर लटकाना, अगर यह वैसे ही आदत के तौर पर है जैसा कि पागल लोग समझते हैं कि इससे मकान की ज़ीनत होती है और किसी कुफ़्र की तरफ़ तजावुज़ न किया गया हो, तो यह बहुत बुरा कबीरा गुनाह है जो जहन्नुम में ले जाने वाला, फ़रिश्तों को दूर करने वाला और शैतानों को करीब लाने वाला है। और अगर यह काम काफ़िरों की रस्म को पसंद करते हुए और दोज़खियों के माबूदों (देवताओं) की ताज़ीम के तौर पर किया गया हो, तो यह सरीह (स्पष्ट) कुफ़्र है जो उसकी तक़फ़री (काफ़िर ठहराने) का बाइस है। अपनी पत्नी को नमाज़ अदा करने पर मारना और उसे इससे रोकना, और उसे शराब न पीने पर और शराब पीने से इनकार करने पर मारना, तो ये सब इंतिहाई शैतानियत, फ़िरऔनियत और बग़ावत है। और इसके साथ-साथ अगर वह नमाज़ की फर्ज़ियत और शराब की हुरमत (मनाही) का मुनकिर है और शरीअत और उसके हुक्मों और मनाही की तहक़ीर करता है, तो यह खुला कुफ़्र है और रुसवाकुन इरतदाद है। उसका बेहतरीन मकान जो मस्जिद है से एराज़ (कतराना) करना और अल्लाह तआला की दावत सुनाने वाले को मुकाबरा (अहंकार) के तौर पर खबीस और बदबू वाली बात कहना (जैसे कि मैं शराबखाने जाऊंगा, मुझे मस्जिद की ज़रूरत नहीं है), तो इससे वह कुफ़्र के करीब और ईमान से दूर हो गया (पागलों के पागलपन से अल्लाह तआला की पनाह)। तो यह बात...

पेज 487/688

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم صفحہ ۱۳

والقاء وهانی موضع القاذورات ان کان مبنیا علی اصول الوهابیة النجدیة خذلهم الله تعالی من ان ذلك بدعة والبدعة تزال ، فجهل وضلال واستحقاق لعذاب ونكال وان قصد اهانة تلك البقاع فكفر بواح وارتداد صراح وتعلیق تلك التصاویر النجسة علی الجدران ان كان علی ما یعتاداه المجان یزعمون فیه تزیین المكان غیر متعمدین الی الكفر من الكفران فكبیرة خبیثة تدعوا الی النیران وتبعد الملئكة وتقرب الشیطان، وان وقع علی جهة استحسان صنیع الكفار وتعظیم الهة اصحاب النار فكفر صریح جلی الا كفار وضرب المرأة علی اداء الصلوة ومنعها منه وضربها علی ترك شرب الخمر وابائها عنه كل ذلك تناه في التنشطین والبغي والتفرعن وان كان مع ذلك ینكر فرضیة الصلوة او حرمة الخمر او یستخف بالشرع والنهي والامر فكفر واعراضه عن المسجد خیر الاماكن ومكابرة الداعي الی الله بذلك القول الخبیث المنتن فهو به للكفر اقرب منه للایمان و بالله العیاذ من مجون المجان فان كان قاله علی نهج الملاعبة فیا لها

ان کو گندگی میں پھینکنا اگر بد نام زمان نجدی وہابیوں کی روش پر مبنی ہے کہ یہ بدعت ہیں اور بدعت کو ختم کرنا چاہئے تو یہ جہالت، گمراہی اور عذاب و سزا کا مستحق بننا ہے، اور اگر اس عمل سے اس کا مقصد اوراق پر تصویروں والے مقامات کی اہانت و تحقیر مقصود ہے تو یہ کھلا کفر ہے اور واضح طور پر ارتداد ہے۔ اور بتوں کی ناپاک تصویروں کو دیواروں پر آویزاں کرنا اگر ویسے عادت کے طور پر کہ اس کو پاگل لوگ مکانات کی زینت سمجھتے ہیں اور کسی کفر کی طرف تجاوز نہ کیا ہو تو یہ خبیث ترین کبیرہ گناہ ہے جو جہنم میں لے جانے والا فرشتوں کو دور اور شیطانوں کو قریب کرنے والا ہے، اور اگر یہ کام کفار کی رسم کو پسند کرتے ہوئے اور دوزخیوں کے معبودوں کی تعظیم کے طور پر کیا ہو تو یہ صریح کفر جو اس کی تکفیر کا باعث

ہے، واضح و ارتداد فاحش بیوی کو نماز کی ادائیگی پر مارنا اور اس سے منع کرنا اور شراب نہ پینے پر اور شراب نوشی سے انکار پر اس کو مارنا تو یہ تمام انتہائی شیطنیت، فرعونیت اور بغاوت ہے اور اس کے ساتھ ساتھ وہ نماز کی فرضیت اور شراب کی حرمت کا منکر ہے اور شریعت اور اس کے امر اور نواہی کی تحقیر کرتا ہے تو یہ کھلا کفر ہے اور رسوا کن ارتداد ہے۔ اس کا بہترین مکان جو مسجد ہے سے اعراض کرنا اور اللہ تعالیٰ کی دعوت سنانے والے کو مکابرہ کے طور پر خبیث اور بدبو والی بات کہنا (کہ میں شراب خانے جاؤں گا مجھے مسجد کی ضرورت نہیں ہے) تو اس سے وہ کفر سے قریب اور ایمان سے دور ہو گیا (پاگلوں کے پاگل پن سے اللہ تعالیٰ کی پناہ) تو یہ بات

Fatawa Rizvia, Volume 13

(Arabic Text Quote): ...from a great sin of immense atrocity, otherwise infidelity is apparent in it without any doubt. However, infidelity is a severe matter; a verdict of infidelity is not given as long as there is a possibility of Islam, even if remote. A woman does not become separated (from her husband) except through a manifest judicial separation or clear infidelity. Yes, he should be ordered to repent from those abominations and then, after that, to renew the marriage. In 'Jami' al-Fusulayn', towards the end of the chapter, it is mentioned: It was said to him, "Give one Dirham so I can spend it on the building of the mosque" or "Come to the mosque to pray," and he said, "I neither come to the mosque nor give a Dirham; what business do I have with the mosque?" while he was insistent on that, he is not declared an infidel but should be chastised/punished. (1)

(Urdu Column Translation/Explanation): If it was done as a matter of inclination in play, then it is such a great audacity of a major sin and is highly detestable; otherwise, it is open infidelity (Kufr) in which there is no doubt. However, Kufr is a severe matter, so as long as a facet of Islam can be found, the ruling of Kufr should not be applied, even if the possibility of Islam is remote. Whereas a wife will exit the marriage only due to a Qazi's separation or explicit Kufr. Yes, such a person should be ordered to repent for his aforementioned abominations and subsequently to renew the marriage. It is stated at the end of Chapter 38 of Jami' al-Fusulayn: Someone was told to give one Dirham as a donation for the mosque building or was told to come to the mosque and pray, so he replied, "I neither come to the mosque nor give a Dirham; what do I have to do with the mosque?" even if he insisted on this, he would not be called an infidel, but a legal punishment (Ta'zir) will be imposed.

But regarding separation due to non-payment of maintenance (Nafaqah), when the husband is present, wealthy, and capable of providing maintenance, neither any Hanafi nor any Shafi'i has spoken for separation; rather, Imam Shafi'i (may Allah Almighty have mercy on him) has explicitly stated the opposite. Therefore, when the husband is capable and wealthy, the only way to achieve the goal is for the wife to complain to the authorities so that they compel the husband to provide maintenance. If he is not willing to provide maintenance, they should then compel him to divorce, because the command of Allah Almighty is: "Then either keep them in an acceptable manner or release them in an acceptable manner." (2)

(1) Jami' al-Fusulayn, Chapter 38, Islami Kutub Khana Karachi, 2/316 (2) The Holy Quran, 2/231

फतावा रिज़विया, खंड १३

(अरबी पाठ उद्धरण): ...एक बड़े पाप और घोर अत्याचार से, वरना इसमें स्पष्ट रूप से कुफ़्र (अधर्म) है जिसमें कोई संदेह नहीं है। फिर भी, कुफ़्र एक गंभीर मामला है; जब तक इस्लाम की कोई संभावना हो, कुफ़्र का फैसला नहीं दिया जाना चाहिए, चाहे वह संभावना कितनी ही दूर की क्यों न हो। एक स्त्री अपने पति से केवल स्पष्ट न्यायिक अलगाव या स्पष्ट कुफ़्र के आधार पर ही अलग होती है। हाँ, उसे उन बुराइयों से तौबा (प्रायश्चित) करने और उसके बाद निकाह (विवाह) को नवीनीकृत करने का आदेश दिया जाना चाहिए। 'जामे उल-फुसुलैन' के अध्याय के अंत में उल्लेख है: उससे कहा गया, "एक दिरहम दो ताकि मैं उसे मस्जिद की इमारत पर खर्च करूँया "नमाज़ के लिए मस्जिद आओ," तो उसने जवाब में कहा कि न तो मैं मस्जिद आता हूँ और न ही दिरहम देता हूँ, मुझे मस्जिद से क्या काम, और यदि उसने इस बात पर हठ किया हो तो उसे काफिर (अधर्मी) नहीं कहा जाएगा लेकिन उसे सजा (ताज़ीर) दी जाएगी। (१)

(उर्दू कॉलम अनुवाद/व्याख्या): यदि यह खेल-खेल में रुचि के तौर पर किया गया है, तो यह कितनी बड़ी धृष्टता और पाप है और अत्यंत घृणित है, अन्यथा यह खुला कुफ़्र है जिसमें कोई संदेह नहीं है। तथापि, कुफ़्र एक गंभीर मामला है, इसलिए जब तक इस्लाम का कोई पहलू निकल सकता है, कुफ़्र का हुक्म नहीं लगाया जाना चाहिए, चाहे इस्लाम की संभावना कितनी ही दूर की क्यों न हो। जबकि पत्नी केवल काज़ी के अलगाव या स्पष्ट कुफ़्र के आधार पर ही निकाह से बाहर होगी। हाँ, ऐसे व्यक्ति को उसकी उपर्युक्त बुराइयों पर तौबा करने और फिर बाद में निकाह के नवीनीकरण का आदेश दिया जाए। जामे उल-फुसुलैन के ३८वें अध्याय के अंत में है: किसी व्यक्ति से कहा गया कि मस्जिद की इमारत के लिए एक दिरहम चंदा दे या उससे कहा गया कि मस्जिद में आकर नमाज़ पढ़, तो उसने जवाब में यूँ कहा कि मैं न मस्जिद में आता हूँ और न दिरहम देता हूँ, मुझे मस्जिद से क्या काम, और उसने इस पर ज़ोर दिया हो तो उसे काफ़िर नहीं कहा जाएगा बल्कि ताज़ीर (सज़ा) लगाई जाएगी।

लेकिन खर्च (नफ़क़ा) न देने पर जब पति मौजूद हो और अमीर हो और नफ़क़ा देने में सक्षम हो, तो इस स्थिति में न तो किसी हनफी और न ही किसी शाफ़ई ने अलगाव की बात कही है; बल्कि इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने इसके विरुद्ध स्पष्ट रूप से कहा है। अतः जब पति सक्षम और अमीर हो, तो मक़सद पूरा करने का यही तरीका है कि पत्नी अधिकारियों से शिकायत करे ताकि वे पति को नफ़क़ा देने पर मजबूर करें। यदि वह नफ़क़ा देने पर सहमत न हो, तो फिर वे उसे तलाक देने पर

मजबूर करें क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: "या तो उन्हें भले तरीके से रोके रखो या भले तरीके से विदा कर दो।" (२)

(१) जामे उल-फुसुलैन, अध्याय ३८, इस्लामी कुतुब खाना कराची, २/३१६ (२) अल-कुरान अल-करीम २/२३१

فتاویٰ رضویہ، جلد سیزدہم ۱۳

(عربی متن کا اقتباس): ...انتہائی شناعت والے گناہِ کبیرہ سے، ورنہ اس میں کفر ظاہر ہے جس میں کوئی شک نہیں، تاہم کفر ایک شدید معاملہ ہے، تو جب تک اسلام کا کوئی پہلو نکل سکتا ہے کفر کا حکم نہ لگایا جائے، اگرچہ اسلام کا احتمال بعید ہی کیوں نہ ہو، جبکہ بیوی صرف قاضی کی تفریق یا واضح کفر کی بناء پر ہی نکاح سے خارج ہوگی، ہاں ایسے شخص کو اس کی مذکورہ قباحتوں پر توبہ کرنے اور پھر بعد میں تجدیدِ نکاح کا حکم کیا جائے، جامع الفصولین کی فصل کے آخر میں ہے: اس سے کہا گیا "ایک درہم دے تاکہ میں اسے مسجد کی عمارت پر صرف کروں" یا "مسجد میں آکر نماز پڑھ"، تو اس نے جواب میں یوں کہا کہ "میں نہ مسجد میں آتا ہوں اور نہ درہم دیتا ہوں مجھے مسجد سے کیا کام"، اور وہ اس بات پر مصر رہا ہو تو اسے کافر نہ کہا جائے گا لیکن تعزیر لگائی جائے گی۔ (۱)

(اردو کالم کی وضاحت): اگر کھیل میں رغبت کے طور پر کی ہے تو یہ کتنی بڑی جرات کبیرہ ہے اور بہت زیادہ قابل نفرت ہے، ورنہ یہ کھلا کفر ہے جس میں کوئی شک نہیں، تاہم کفر شدید معاملہ ہے، تو جب تک اسلام کا پہلو نکل سکتا ہے کفر کا حکم نہ لگایا جائے، اگرچہ اسلام کا احتمال بعید ہی کیوں نہ ہو، جبکہ بیوی صرف قاضی کی تفریق یا واضح کفر کی بناء پر ہی نکاح سے خارج ہوگی، ہاں ایسے شخص کو اس کی مذکورہ قباحتوں پر توبہ کرنے اور پھر بعد میں تجدید نکاح کا حکم کیا جائے، جامع الفصولین کی فصل نمبر ۳۸ کے آخر میں ہے کسی شخص کو کہا کہ مسجد کی عمارت کے لیے ایک درہم چندہ دے یا اس کو کہا گیا مسجد میں آکر نماز پڑھ، تو اس نے جواب میں یوں کہا کہ میں نہ مسجد میں آتا ہوں اور نہ درہم دیتا ہوں مجھے مسجد سے کیا کام، اور اس نے اصرار کیا ہو تو اسے کافر نہ کہا جائے گا لیکن تعزیر لگائی جائیگی۔

لیکن خرچ نہ دینے پر جب خاوند حاضر ہو اور امیر ہو نفقہ دینے پر قادر ہو تو اس صورت میں کسی حنفی نہ کسی شافعی نے تفریق کا قول کیا ہے بلکہ امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ نے اس کے خلاف تصریح کی ہے لہٰذا خاوند جب قادر ہو اور امیر ہو تو پھر مقصد برآری کی یہی صورت ہے کہ حکام سے بیوی شکایت کرے تاکہ وہ خاوند کو نفقہ دینے پر مجبور کریں اگر نفقہ دینے پر راضی نہ ہو تو پھر اس کو طلاق دینے پر مجبور کریں کیونکہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: "فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ" (یا تو انہیں بھلے طریقے سے روک رکھو یا بھلے طریقے سے رخصت کر دو)۔ (۲)

۱۔ جامع الفصولین، الفصل الثامن والثلاثون، اسلامی کتب خانہ کراچی، ۲/۳۱۶ ۲۔ القرآن الکریم ۲/۲۳۱

Fatawa Razawiya Volume 13, Page 13

[Arabic Column] In Radd al-Muhtar, quoting from Ghurar al-Adhkar: "Then know that our scholars have deemed it commendable for a Hanafi judge to appoint a deputy from a school of thought that allows separation (tafriq) between a couple if the husband is present but refuses to grant a divorce. This is because meeting a continuous need through borrowing is not feasible, as it is apparent that the wife will not find someone to lend to her indefinitely, and the husband's potential future wealth is merely a speculative matter. Therefore, separation is necessary if she requests it. However, if the husband is absent, separation is not granted because his inability to provide is unknown during his absence. Even if a judgment for separation is passed without establishing his inability during absence, it will not be valid because it does not fall under issues of ijtihad (legal reasoning), as the inability was not proven. Thus, look at his statement 'and the husband's potential future wealth is a speculative matter' and his statement regarding the absent husband 'because his inability is unknown'; it guides you that the discussion pertains only to the unable and destitute husband, not the capable and arrogant one. Look at the end of the text; it informs you that a judgment of separation where inability is not proven is utterly null. He also stated in Radd al-Muhtar previously..."

[Urdu Column] Treat wives well or separate from them with kindness. It is narrated in Radd al-Muhtar from Ghurar al-Adhkar that our masters (scholars) preferred that a Hanafi judge should appoint a Shafi'i or someone whose school of thought holds that a present husband who refuses to provide maintenance (nafaqah) should be compelled to divorce. If he does not divorce, the judge should effect a separation by appointing a deputy and having them carry out the separation. This is because the need for maintenance is permanent and cannot be fulfilled by the wife taking loans, as naturally, no one is found who would continue to lend to her, while the possibility of the husband eventually becoming wealthy is a mere conjecture. Therefore, upon the wife's demand in this case, separation is necessary. In the aforementioned case, if the husband is absent, separation shall not be carried out because, in the state of absence, the husband's inability to provide maintenance cannot be known. If separation is granted in this case, it will not be effective because separation in such an instance is not a debated issue among the Mujtahideen (jurists), as the husband's inability is unknown. In this passage, consider "the husband's eventually becoming wealthy is conjecture" and regarding the absentee "that his inability is unknown"; this provides the guidance that the matter of separation is only in the case of a husband

being indigent and unable, not in the case of a capable and stubborn husband. Furthermore, the last part of the mentioned text clearly states that when the husband's inability is not proven, the decision of separation there...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 2/256 Page 489 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[अरबी कॉलम] रद्द अल-मुह्तार में ग़ुरर अल-अज़कार के हवाले से: "फिर जान लें कि हमारे विद्वानों ने इसे बेहतर माना है कि एक हनफी न्यायाधीश (काज़ी) किसी ऐसे व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि नियुक्त करे जिसका मत (मज़हब) पति-पत्नी के बीच अलगाव (तफ़रीक़) कराने का हो, यदि पति उपस्थित हो और तलाक़ देने से इनकार करे। ऐसा इसलिए है क्योंकि निरंतर आवश्यकता को ऋण लेकर पूरा करना संभव नहीं है, क्योंकि यह स्पष्ट है कि पत्नी को अनिश्चित काल तक ऋण देने वाला कोई नहीं मिलेगा, और भविष्य में पति के धनी होने की बात केवल एक संभावना मात्र है। इसलिए, यदि पत्नी माँग करे तो अलगाव आवश्यक है। हालाँकि, यदि पति अनुपस्थित हो, तो अलगाव नहीं कराया जाएगा क्योंकि उसकी अनुपस्थिति में उसकी अक्षमता ज्ञात नहीं है। यदि अनुपस्थिति की स्थिति में अक्षमता सिद्ध हुए बिना अलगाव का निर्णय दे दिया जाए, तो वह प्रभावी नहीं होगा क्योंकि यह इज्तिहाद (कानूनी तर्क) के विषयों के अंतर्गत नहीं आता, क्योंकि अक्षमता सिद्ध नहीं हुई थी। अतः उसके इस कथन 'और भविष्य में पति का धनी होना एक संभावना मात्र है' और अनुपस्थित व्यक्ति के बारे में उसके कथन 'क्योंकि उसकी अक्षमता ज्ञात नहीं है' पर ध्यान दें; यह आपको मार्गदर्शन देता है कि चर्चा केवल अक्षम और निर्धन पति के बारे में है, न कि सक्षम और अहंकारी पति के बारे में। पाठ के अंत में देखें; यह आपको सूचित करता है कि अलगाव का निर्णय जहाँ अक्षमता सिद्ध न हो, पूरी तरह से शून्य है। उन्होंने पहले भी रद्द अल-मुह्तार में कहा था..."

[उर्दू कॉलम] पत्नियों को अच्छी तरह से रखो या उनके साथ भलाई के साथ विदाई कर लो। रद्द अल-मुह्तार में ग़ुरर अल-अज़कार से उद्धृत है कि हमारे बुज़ुर्गों (विद्वानों) ने यह पसंद किया है कि हनफी काज़ी किसी शाफ़ई या उस व्यक्ति को, जिसका मज़हब यह हो कि खर्च (नफ़क़ा) न देने पर उपस्थित पति को तलाक़ देने के लिए मजबूर किया जाए, नियुक्त करे। यदि वह तलाक़ न दे, तो काज़ी अपना प्रतिनिधि बनाकर उससे अलगाव करा दे। ऐसा इसलिए है क्योंकि खर्च की ज़रूरत स्थायी है जो पत्नी के ऋण लेने से पूरी नहीं हो सकती, क्योंकि स्वाभाविक रूप से ऐसा कोई नहीं मिलता जो उसे ऋण देता रहे, जबकि अंततः पति का धनी होना एक अनुमान मात्र है। इसलिए, इस मामले में पत्नी की माँग पर अलगाव ज़रूरी है। उपरोक्त मामले में, यदि पति अनुपस्थित हो, तो अलगाव नहीं किया जाएगा क्योंकि अनुपस्थिति की स्थिति में पति का खर्च देने में अक्षम होना ज्ञात नहीं हो सकता। यदि इस मामले में अलगाव कर दिया गया, तो वह प्रभावी नहीं होगा क्योंकि ऐसी स्थिति में अलगाव मुजतहिदीन (न्यायविदों) के बीच विचाराधीन मुद्दा नहीं है, क्योंकि पति की अक्षमता

ज्ञात नहीं है। इस अंश में, "पति का अंततः धनी होना एक अनुमान है" और अनुपस्थित व्यक्ति के बारे में "कि उसकी अक्षमता ज्ञात नहीं है" पर विचार करें; यह मार्गदर्शन प्रदान करता है कि अलगाव का मामला केवल पति के निर्धन और अक्षम होने की स्थिति में है, न कि सक्षम और हठी पति की स्थिति में। इसके अलावा, उल्लेखित पाठ का अंतिम भाग स्पष्ट रूप से कहता है कि जब पति की अक्षमता सिद्ध न हो, तो वहाँ अलगाव का निर्णय...

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 256/2 पृष्ठ 489 of 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[عربی کالم] فی ردالمحتار عن غرر الاذکار ثم اعلم ان مشائخنا استحسنوا ان ینصب القاضی الحنفی نائباً ممن مذھبہ التفریق بینھما اذا کان الزوج حاضراً و ابی عن الطلاق لان دفع الحاجۃ الدائمۃ لا یتیسر بالاستدانہ اذ الظاھر انھا لا تجد من یقرضھا وغنی الزوج مألا امر متوھم فالتفریق ضروری اذا طلبتہ وان کان غائباً لا یفرق لان عجزہ غیر معلوم حال غیبتہ و ان قضی بالتفریق لا ینفذ قضاؤہ لانہ لیس فی مجتھد فیہ لان العجز لم یثبت اھ فانظر الی قولہ وغنی الزوج مألا امر متوھم وقولہ فی الغائب لان عجزہ غیر معلوم یرشدك ان الکلام انما ھو فی العاجز المعسر دون القادر المستکبر وانظر أخر الکلام یفیدك ان القضاء بالتفریق حیث لم یثبت عجزہ باطل سحیق وقد قال فی ردالمحتار ایضاً قبلہ

[اردو کالم] بیویوں کو اچھی طرح رکھو یا ان سے بھلائی کے ساتھ جدائی کرلو۔ ردالمحتار میں غرر الاذکار سے منقول ہے کہ ہمارے مشائخ نے یہ پسند کیا ہے کہ حنفی قاضی کسی شافعی یا اس شخص کو جس کا مذہب یہ ہو کہ نفقہ نہ دینے پر حاضر خاوند کو طلاق دینے پر مجبور کیا جائے اگر طلاق نہ دے تو قاضی تفریق کرے، اپنا نائب بنا کر اس سے تفریق کرا دے کیونکہ نفقہ کی حاجت دائمی ہے جو کہ بیوی کے قرض اٹھانے پر پوری نہیں ہو سکتی کیونکہ ظاہر میں کوئی ایسا شخص نہیں ملتا جو اس کو قرض دیتا رہے جبکہ خاوند کا بالآخر غنی ہونا کرنا موہوم بات ہے تو بیوی کے مطالبہ پر اس صورت میں تفریق ضروری ہے، اور مذکورہ صورت میں اگر خاوند غائب ہو تو تفریق نہ کی جائے کیونکہ غائب ہونے کی صورت میں خاوند کا نفقہ سے عجز معلوم نہ ہو سکے گا اس صورت میں اگر تفریق کر دی تو وہ نافذ نہ ہوگی کیونکہ اس صورت میں تفریق مجتہدین کے ہاں زیر بحث مسئلہ نہیں ہے کیونکہ خاوند کا عجز معلوم نہیں ہے، اھ اس عبارت میں "بالآخر خاوند کا غنی ہونا موہوم ہے" اور غائب ہونے والے کے بارے میں "یہ کہ اس کا عجز

معلوم نہیں" پر غور کریں تو یہ رہنمائی ملتی ہے کہ تفریق کی بات صرف خاوند کے تنگدست اور عاجز ہونے کی صورت میں ہے، نہ کہ قادر اور ہٹ دھرم خاوند کی صورت میں، اور پھر مذکورہ کلام کا آخری حصہ تو واضح طور پر بتا رہا ہے کہ جب خاوند کا عجز ثابت نہ ہو تو وہاں تفریق کا فیصلہ

---

۱ ردالمحتار باب النفقة داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۵۶ Page 489 of 688

[Arabic Column] What he stated, and the gist is that according to al-Shafi'i, if the husband becomes insolvent for maintenance, she has the right to annulment (faskh). Similarly, if he is absent and it is impossible to obtain it from him, according to what many of them chose. However, the more correct and relied upon opinion among them is that there is no annulment as long as he is wealthy, even if news of him is cut off and it is impossible to fulfill the maintenance from his property, as stated in 'al-Umm'. He said in 'al-Tuhfah' (meaning our master Imam al-Shafi'i, may Allah be pleased with him): He said (meaning the scholar Ibn Hajar al-Makki al-Shafi'i, may Allah have mercy on him) after quoting that: our Sheikh (meaning the scholar Sheikh al-Islam Zakariyya al-Ansari) affirmed in the commentary of his 'Manhaj' that the opinion of annulment regarding one whose news is cut off and has no present property is contrary to what is transmitted, as you have known, etc. And in the book 'al-Anwar' by Imam Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i, may Allah Almighty have mercy on him: if he refuses while capable, or goes absent while wealthy, or she is able to access his property, then there is no choice (for annulment). And in it: if the condition of the absent one regarding wealth or poverty is unknown, or there is doubt about his wealth, then there is no choice because...

[Urdu Column] It is completely invalid, while before the aforementioned speech in 'Radd al-Muhtar', it was also stated, the text is as follows: The gist is that according to Imam Shafi'i, when the husband is found to be destitute, the wife has the right to demand annulment (faskh). Likewise, if the husband is absent and there is no hope of meeting him, then even upon hopelessness of maintenance, annulment is preferred according to most Shafi'i scholars. But the relied upon and most correct view in their school is that there is no right of annulment until his destitution is proven, even if he is absent such that there is no news of him and there is no way to obtain maintenance for the wife from his property, as is explicitly stated in Imam Shafi'i's book 'al-Umm'. In 'al-Tuhfah', it is mentioned that Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) said, and after quoting this, Allama Ibn Hajar al-Makki al-Shafi'i stated that our Sheikh, i.e., Sheikh al-Islam Zakariyya Ansari, in his commentary of 'Manhaj', firmly stated that for such an absent person about whom there is no news and whose wealth is also not present, the decision of annulment is against the transmitted (texts) as you have known. In 'Kitab al-Anwar' of Imam Yusuf Ardabili Shafi'i, it is stated that if the husband does not give despite being capable, or he is absent while being rich, or the wife is able to obtain maintenance from his wealth,

then there is no option for annulment. And it contains that if he is absent and his destitution or wealth is not known, or there is doubt about his condition, then there will be no option for annulment, because the annulment's...

1. Radd al-Muhtar, Book of Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/656
2. Al-Anwar

जिल्द तेरहवीं १३ फ़तावा रज़विया

[अरबी कॉलम] उसका उद्धरण और सारांश यह है कि शाफ़ी के अनुसार, यदि पति भरण-पोषण (नफ़क़ा) देने में असमर्थ हो जाता है, तो पत्नी को विवाह विच्छेद (फ़स्ख़) का अधिकार है। इसी तरह यदि वह अनुपस्थित हो और उससे भरण-पोषण प्राप्त करना असंभव हो, जैसा कि उनमें से कई ने चुना है। लेकिन उनके बीच अधिक सही और विश्वसनीय मत यह है कि जब तक वह धनी है तब तक कोई फ़स्ख़ नहीं है, भले ही उसकी कोई खबर न हो और उसकी संपत्ति से भरण-पोषण पूरा करना असंभव हो, जैसा कि 'अल-उम्म' में स्पष्ट रूप से बताया गया है। 'अत-तुहफ़ा' (अर्थात हमारे स्वामी इमाम शाफ़ी, अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) में कहा गया है - उन्होंने (अर्थात विद्वान इब्न हजर अल-मक्की अल-शाफ़ी, अल्लाह उन पर दया करें) इसे उद्धृत करने के बाद कहा: 'हमारे शेख (अर्थात विद्वान शेख अल-इस्लाम ज़करिया अल-अंसारी) ने 'अल-मन्हाज' पर अपनी टिप्पणी में दृढ़ता से कहा है कि ऐसे व्यक्ति के लिए फ़स्ख़ की राय जिसकी खबर कटी हुई है और जिसके पास कोई उपलब्ध संपत्ति नहीं है, संचरित (नक़ल) के विपरीत है जैसा कि आप जान चुके हैं, इत्यादि।' और इमाम यूसुफ अल-अर्दाबिली अल-शाफ़ी की पुस्तक 'अल-अनवार' में, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करें: 'यदि वह सक्षम होने के बावजूद मना करता है, या धनी होने पर अनुपस्थित हो जाता है, या वह उसकी संपत्ति तक पहुँचने में सक्षम है, तो कोई विकल्प (फ़स्ख़ के लिए) नहीं है।' और इसमें है: 'यदि धन या गरीबी के संबंध में अनुपस्थित व्यक्ति की स्थिति अज्ञात है, या उसके धन के बारे में संदेह है, तो कोई विकल्प नहीं होगा, क्योंकि...'

[उर्दू कॉलम] यह बिल्कुल बातिल है, जबकि 'रद अल-मुह्तार' में उपरोक्त कलाम से पहले भी फरमाया, इबारत इस प्रकार है: संक्षेप में इमाम शाफ़ई के पास जब पति दरिद्र पाया जाए तो पत्नी को निकाह रद्द (फ़स्ख़) करने की माँग का अधिकार होता है और इसी तरह अगर पति अनुपस्थित हो और उसके मिलने की उम्मीद न हो तो भी नफ़क़ा की निराशा पर अधिकांश शाफ़ई विद्वानों के पास फ़स्ख़ ही पसंदीदा (मुख़्तार) है। लेकिन उनके मज़हब में भरोसेमंद और सबसे सही बात यह है कि उस समय तक फ़स्ख़ का अधिकार नहीं जब तक कि उसकी दरिद्रता सिद्ध न हो जाए भले ही वह गायब हो और उसकी कोई खबर न हो और उसकी संपत्ति से पत्नी के लिए नफ़क़ा का कोई रास्ता न बन पाता हो, जैसा कि इमाम शाफ़ई की किताब 'अल-उम्म' में स्पष्ट है। 'अत-तुहफ़ा' में इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने फरमाया, अल्लामा इब्न हजर मक्की शाफ़ई ने यह इबारत उद्धृत करने के बाद फरमाया कि हमारे शेख यानी शेख अल-इस्लाम ज़करिया अंसारी ने अपनी 'मन्हाज'

की व्याख्या में यह दृढ़ता से कहा है कि ऐसे अनुपस्थित व्यक्ति के बारे में जिसकी कोई खबर न हो और उसकी संपत्ति भी मौजूद न हो, फ़स्ख़ का फैसला परंपरा (मनक़ूल) के खिलाफ है जैसा कि आपको ज्ञात हुआ। इमाम यूसुफ अर्दबीली शाफ़ई की 'किताब अल-अनवार' में है कि यदि पति सक्षम होने के बावजूद न दे, या अमीर होने पर वह गायब हो जाए, या पत्नी उसकी संपत्ति से नफ़क़ा प्राप्त करने में सक्षम हो, तो फिर फ़स्ख़ का अधिकार नहीं है, और उसमें है कि यदि वह गायब हो और उसकी दरिद्रता या संपन्नता का पता न हो या उसकी स्थिति में संदेह हो, तो फ़स्ख़ का अधिकार नहीं होगा, क्योंकि फ़स्ख़ का...

1. रद अल-मुह्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, २/६५६
2. अल-अनवार

पेज ४९० का ६८८

[Arabic Column] مانصه والحاصل ان عند الشافعی اذا اعسر الزوج بالنفقة فلها الفسخ وكذا اذا غاب وتعذر تحصيلها منه على ما اختاره كثيرون منهم لكن الاصح المعتمد عندهم ان لافسخ مادام موسرا وان انقطع خبره وتعذر استيفاء النفقة من ماله كما صرح به فی الام قال فی التحفة (یعنی سیدنا الامام الشافعی رضی اللہ تعالی عنه) قال (یعنی العلامة ابن حجر المكی الشافعی رحمه اللہ تعالی) بعد نقله ذلك فجزم شيخنا (یعنی العلامة شيخ الاسلام زكريا الانصاری) فی شرح منهجه ان القول بالفسخ فی منقطع خبر لمال له حاضر مخالف للمنقول كما علمت الخ وفی كتاب الانوار للامام يوسف اردبيلی الشافعی رحمه اللہ تعالی لوامتنع مع القدرة اوغاب مع اليسار اوقدرت على ماله فلا خيار ۲ وفيه ولو جهل حال الغائب من اليسار او الاعسار او شك فی يساره فلا خيار لان

[Urdu Column] بالکل باطل ہے جبکہ ردالمحتار میں مذکور کلام سے قبل بھی فرمایا، عبارت یوں ہے، الحاصل امام شافعی کے ہاں جب خاوند تنگدست قرار پائے تو بیوی کو فسخ کے مطالبے کا حق ہوتا ہے اور یونہی اگر خاوند غائب ہو اور اس کے ملنے کی امید نہ ہو تو بھی نفقہ کی ناامیدی پر اکثر شافع حضرات کے ہاں فسخ مختار ہے لیکن ان کے مذہب میں معتمد علیہ اور اصح یہ ہے کہ اس وقت تک فسخ کا اختیار نہیں جب تک اس کی تنگدستی ثابت نہ ہو جائے اگرچہ غائب ہو کہ اس کی کوئی خبر نہ ہو اور اس کے مال سے بیوی کے لئے نفقہ کی کوئی صورت نہ بن پاتی ہو ، جیسا کہ امام شافعی کی کتاب " الام" میں تصریح ہے کہ امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ نے تحفہ میں فرمایا، علامہ ابن حجر مکی شافعی نے یہ عبارت نقل کرنے کے بعد فرمایا کہ ہمارے شیخ یعنی شیخ الاسلام زکریا انصاری نے اپنی منہج کی شرح میں یہ جزم فرمایا ہے کہ ایسے غائب شخص جس کی کوئی خبر نہ ہو اور اس کا مال بھی موجود نہ ہو، تو فسخ کا فیصلہ منقول کے

خلاف ہے جیسا کہ آپ کو معلوم ہوا ہے۔ امام یوسف اردبیلی شافعی کی "کتاب الانوار" میں ہے کہ خاوند قادر ہونے کے باوجود نہ دے ، یا امیر ہونے پر وہ غائب ہو، یا بیوی اس کے مال سے نفقہ حاصل کرنے پر قادر ہو تو پھر فسخ کا اختیار نہیں ہے، اور اس میں ہے کہ اگر غائب ہو اور اس کی تنگدستی یا تونگری معلوم نہ ہو یا اس کے حال میں شک ہو تو فسخ کا اختیار نہیں ہوگا، کیونکہ فسخ کا

۱ ردالمحتار باب النفقة دار احیاء التراث العربی بیروت ۶۵۶/۲ ۲ الانوار

Vol. 13, Page 13 | Fatawa Razawiyya

[Arabic Text Column] The cause is not verified. From this, it is understood that if a destitute husband is absent and a period passes, there is no option [for the wife] to annul [the marriage] because of the possibility of him becoming wealthy[1]. It is stated in the commentary of Al-Kumathri that in Al-Tuhfah and Al-Minhaj, the correct view is that there is no annulment if a wealthy or middle-class husband prevents maintenance, whether he is present or absent, as she can obtain it from him even if he is absent, such as [through] his assets via a judge. What is in the text is relied upon. Hence, it is explicitly stated in Al-Umm that there is no annulment as long as he is wealthy, even if news of him is cut off and it is difficult to extract maintenance from his property. The school's position is as narrated by Al-Adhra'i. Our teacher, in the commentary of his Manhaj, decided on annulment in the case of one whose news is cut off and who has no assets present; this contradicts what is narrated, as you have known. There is no annulment due to his absence if his state of wealth or poverty is unknown; indeed, even if witnesses testify that he went absent while destitute, there is no annulment because the testimony does not pertain to the current situation. This is the end of the text from Al-Tuhfah[2], abbreviated. In the glosses of the eminent Ibrahim al-Shafi'i, he stated that the Shaykh, in the commentary of his Manhaj, decided that the absent one whose news...

[Urdu Text Column] The reason is not present. And from this, it is known that if a destitute husband is absent and some time passes, there is still no option for annulment because it is possible that he has now become wealthy. It is mentioned in the commentary of Al-Kumathri that it is stated in Al-Tuhfah and Al-Minhaj that the correct view is that if a wealthy husband is absent or a middle-class one is present or absent, there will be no annulment because it is possible for the wife to obtain maintenance, just as in the case of absence, if his property is available, she can obtain it through a judge. And what is reliable is what is in the text; for this reason, it is clearly stated in Al-Umm that even if a wealthy husband is absent and there is no news of him and it is difficult to obtain maintenance from his property, this is the narrated school of thought, as Al-Adhra'i said that our Shaykh stated in the commentary of his Manhaj that such an absent person of whom there is no news and no present property, in that case, the statement of annulment is contrary to the narrated school of thought as you have come to know. And annulment is not possible even when it is not known whether the absent person is destitute or wealthy; rather, even if witnesses have testified that the person going absent was destitute, even

then there is no annulment because this testimony is not of the current situation. The discourse from Al-Tuhfah is finished, [end], in summary. The eminent Ibrahim Shafi'i said in his glosses that the Shaykh in the commentary of his Manhaj has firmly stated that the absent person whose news...

[1] Al-Anwar [2] Al-Anwar Page 491 of 688

खंड 13, पृष्ठ 13 | फतावा रजविया

[अरबी पाठ स्तंभ] कारण प्रमाणित नहीं है। इससे यह समझा जाता है कि यदि कोई निर्धन पति अनुपस्थित हो और कुछ समय बीत जाए, तो भी [पत्नी के पास] निकाह रद्द (नस्ख) करने का अधिकार नहीं है क्योंकि उसके धनी होने की संभावना है[1]। 'अल-कुमथरी' की व्याख्या में कहा गया है कि 'तौहफ़ा' और 'मिन्हाज' में सही मत यह है कि यदि कोई धनी या मध्यम वर्ग का पति भरण-पोषण (नफ़क़ा) देने से रोकता है, चाहे वह उपस्थित हो या अनुपस्थित, तो निकाह रद्द नहीं होगा क्योंकि पत्नी के लिए भरण-पोषण प्राप्त करना संभव है, जैसे कि पति की अनुपस्थिति में उसकी संपत्ति से काजी (न्यायाधीश) के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। मूल पाठ में जो दिया गया है वही विश्वसनीय है। इसीलिए 'अल-उम्म' में स्पष्ट किया गया है कि जब तक पति धनी है, तब तक निकाह रद्द नहीं होगा, भले ही उसकी कोई खबर न हो और उसकी संपत्ति से भरण-पोषण प्राप्त करना कठिन हो। जैसा कि अदज़रा'ई ने कहा है, हमारे गुरु ने अपने 'मन्हाज' की व्याख्या में उस व्यक्ति के लिए निकाह रद्द करने का निर्णय दिया है जिसकी कोई खबर न हो और जिसकी कोई संपत्ति मौजूद न हो; यह जैसा कि आप जान चुके हैं, नकल किए गए मूल मत के विरुद्ध है। अनुपस्थिति के कारण निकाह रद्द नहीं होता यदि उसकी अमीरी या गरीबी की स्थिति अज्ञात हो; बल्कि, यदि गवाहों ने यह गवाही दी हो कि वह गरीबी की हालत में अनुपस्थित हुआ है, तब भी निकाह रद्द नहीं होगा क्योंकि यह गवाही वर्तमान स्थिति की नहीं है। 'तौहफ़ा' का कथन संक्षेप में समाप्त हुआ[2]। प्रतिष्ठित इब्राहिम अल-शाफई ने अपनी टिप्पणियों में कहा कि गुरु ने अपने 'मन्हाज' की व्याख्या में यह दृढ़ता से कहा है कि वह अनुपस्थित व्यक्ति जिसकी खबर...

[उर्दू पाठ स्तंभ] कारण मौजूद नहीं है। और इससे यह ज्ञात हुआ कि यदि निर्धन पति अनुपस्थित हो और कुछ समय बीत जाए, तब भी निकाह रद्द करने का अधिकार नहीं है क्योंकि संभव है कि वह अब धनी बन गया हो। 'अल-कुमथरी' की व्याख्या में है कि 'तौहफ़ा' और 'मिन्हाज' में कहा गया है कि सबसे सही बात यह है कि धनी पति अनुपस्थित हो या मध्यम स्थिति वाला उपस्थित या अनुपस्थित हो, तो निकाह रद्द नहीं होगा क्योंकि पत्नी के लिए भरण-पोषण प्राप्त करना संभव है, जैसे कि अनुपस्थिति की स्थिति में यदि उसका धन उपलब्ध हो, तो वह काजी के माध्यम से प्राप्त कर सकती है। और विश्वसनीय वही है जो मूल पाठ में है, इसी कारण 'अल-उम्म' में स्पष्ट उल्लेख है कि धनी पति अनुपस्थित हो जाए, भले ही उसकी कोई खबर न हो और उसके धन से भरण-पोषण प्राप्त करना कठिन हो, यही नकल किया हुआ मूल मत है। जैसा कि अदज़रा'ई ने कहा कि हमारे शेख ने अपने

'मन्हाज' की व्याख्या में कहा कि ऐसा अनुपस्थित जिसकी कोई खबर न हो और न ही कोई संपत्ति मौजूद हो, तो उस स्थिति में निकाह रद्द करने की बात नकल किए गए मत के विरुद्ध है जैसा कि आप जान चुके हैं। और निकाह रद्द तब भी नहीं होगा जब अनुपस्थित व्यक्ति के निर्धन या धनी होने का ज्ञान न हो; बल्कि यदि गवाहों ने गवाही भी दी हो कि अनुपस्थित होने वाला निर्धन है, तब भी निकाह रद्द नहीं होगा क्योंकि यह गवाही वर्तमान स्थिति की नहीं है। 'तौहफ़ा' का कथन समाप्त हुआ, संक्षेप में। प्रतिष्ठित इब्राहिम शाफई ने अपनी टिप्पणियों में कहा कि शेख ने अपने 'मन्हाज' की व्याख्या में इस पर दृढ़ता व्यक्त की है कि वह अनुपस्थित जिसकी खबर...

[1] अल-अनवार [2] अल-अनवार पृष्ठ 491 / 688

[عربی متن] السبب لم یتحقق ویفهم من هذا انه لو غاب معسر او مضت مدة فلا خیار لها لاحتمال الیسار[1]، وفي شرح الکمثری قال فی التحفة والمنهاج والاصح ان لافسخ بمنع موسر او متوسط حضر اوغاب لتمکنها منه ولو غائباً کماله بالحاکم والمعتمد ما فی المتن ومن ثم صرح فی الام بأنه لافسخ مادام موسرا وان انقطع خبره وتعذر استیفاء النفقة من ماله والمذهب نقل کما قاله الاذرعی فجزم شیخنا فی شرح منهجه بالفسخ فی منقطع خبر لاملال له حاضرا مخالف للمنقول کما علمت ولافسخ بغیبته من جهل حاله یسارا او اعسارا بل لو شهدت بینة انه غاب معسرا فلافسخ ما یشهد باعساره الان اه کلام التحفة[2] باختصار، وفی تعلیقاته للفاضل ابراهیم الشافعی جزم فی شرح منهجه بالفسخ فی منقطع خبر

[اردو ترجمہ] سبب موجود نہیں ہے۔ اور اس سے یہ معلوم ہوا کہ اگر خاوند تنگدست غائب ہو اور کچھ مدت گزر جائے تو بھی اختیارِ فسخ نہیں کیونکہ ہو سکتا ہے کہ اب وہ امیر بن چکا ہو۔ کمثری کی شرح میں ہے کہ تحفہ اور منہاج میں فرمایا کہ اصح یہ ہے کہ امیر خاوند غائب یا متوسط حال والا حاضر ہو یا غائب تو فسخ نہیں ہوگا کیونکہ بیوی کو نفقہ کا حصول ممکن ہے جیسا کہ غائب ہونے کی صورت میں اس کا مال موجود ہو تو قاضی کے ذریعہ حاصل کر سکتی ہے، اور قابلِ اعتماد وہ ہے جو متن میں ہے، اسی لئے الام میں تصریح ہے کہ امیر خاوند غائب ہوا گرچہ اس کی کوئی خبر نہ ہو اور اس کے مال سے نفقہ حاصل کرنا مشکل ہو، یہی مذہبِ منقول ہے، جیسا کہ اذرعی نے فرمایا کہ ہمارے شیخ نے اپنی منہج کی شرح میں فرمایا کہ ایسا غائب جس کی کوئی خبر نہ ہو اور حاضر مال بھی نہ ہو تو اس صورت میں فسخ کا قول منقول مذہب کے خلاف ہے جیسا کہ تمہیں معلوم ہوا ہے، اور فسخ جب بھی نہیں کہ غائب شخص کے تنگدست یا امیر ہونے کا علم نہ ہو بلکہ گواہوں نے شہادت بھی دی ہو کہ غائب ہونے والا تنگدست ہے تب بھی فسخ نہیں کہ

یہ شہادت موجودہ حال کی نہیں ہے، تحفہ کا کلام ختم ہوا، اھ، اختصاراً۔ الفاضل ابراہیم شافعی نے اپنی تعلیقات میں فرمایا کہ شیخ نے اپنی منہج کی شرح میں اس پر جزم کیا ہے کہ وہ غائب جس کی خبر

[1] الانوار [2] الانوار صفحہ 491 از 688

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Column 1 - Arabic text and references] "...he has no wealth. Ibn Hajar said this is contrary to what is transmitted, for he stated in 'Al-Umm' that as long as he is wealthy, even if news of him is cut off and it is impossible to fulfill the maintenance from his wealth [the marriage is not annulled] – until the end. And in 'Qurrat al-Ayn bi Muhimmat al-Din' and its commentary 'Fath al-Mu'in', both by Allama Zayn al-Din al-Shafi'i, a student of Imam Ibn Hajar al-Makki (may Allah have mercy on them both): (The marriage of one who is destitute will be annulled, but there is no annulment) according to the reliable view (due to the refusal of others) who are wealthy or of moderate means to provide maintenance, whether present or absent. (And there is no annulment before the proof of destitution) by his own admission or by testimony stating his destitution *now*; it is not sufficient to have testimony that mentioned he was destitute when he went missing. Summarized, and Allah Almighty knows best."

[Column 2 - Urdu translation of the above] "...be not known and he has no wealth, then annulment will occur. Whereas Ibn Hajar has said that this is against the transmitted school of thought because Imam Shafi'i has clarified in 'Al-Umm' that a missing person whose news is unknown, as long as he is wealthy and even if it is difficult to fulfill the maintenance from his wealth, annulment will not occur. In both books of Allama Zayn al-Din Shafi'i, a student of Imam Ibn Hajar al-Makki (may Allah have mercy on them both), 'Qurrat al-Ayn bi Muhimmat al-Din' and its commentary 'Fath al-Mu'in', it is stated that the marriage of a destitute person will be annulled, and according to the reliable view, the marriage of a person who is wealthy or of moderate means and does not provide maintenance, whether present or absent, will not be annulled. Proof of destitution will be through his admission or through testimony in which it is mentioned that he is destitute *now*; in this, it is not sufficient to mention that he was destitute at the time of going missing. Summarized, and Allah Almighty knows best (T)."

Issue 198: From Howrah, Ram Kathopur, Mohalla Bans Talla Ghat Road, sent by Muhammad Hasan Raza Khan Sahib, 16 Shaban al-Muazzam 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A veiled woman is a divorcee of her first husband. After completing her Iddah (waiting period), she entered into a second marriage. After the passage of one year, she came to her parents' house and due to personal or marital distress, she does not wish to return to her second husband's home and seeks Khula (divorce initiated by wife) from him, preferring the companionship of her first husband. The second husband, due to ignorance and

being misled by others, does not grant divorce nor can he adequately fulfill the rights of the wife. Regarding her means of livelihood, the woman has no personal status nor is there any ease at her parents' home. Observing the veil is also obligatory, and food and clothing are also mandatory. In such a situation, why can't the rulings of Hazrat Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) be followed? Since all four Imams are on the path of truth, if Imam Shafi'i is followed, what is the reality of this matter? In such a situation, following another...

Footnotes: 1. Ta'liqat (Annotations). 2. Fath al-Mu'in Sharh Qurrat al-Ayn, Amir al-Islam Pur Press, Tarungari Kabir, pages 424 to 427.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[कॉलम 1 - अरबी पाठ और सन्दर्भ] "...उसके पास कोई धन नहीं है। इब्न हजर ने कहा कि यह वर्णित मत के विरुद्ध है, क्योंकि उन्होंने 'अल-उम्म' में स्पष्ट किया है कि जब तक वह धनी है, भले ही उसकी खबर न मिले और उसके धन से भरण-पोषण (नफ़क़ा) पूरा करना कठिन हो, [निकाह रद्द नहीं होगा] - अंत तक। और अल्लामा ज़ैनुद्दीन अल-शाफ़ई, जो इमाम इब्न हजर अल-मक्की (अल्लाह उन दोनों पर रहमत करे) के छात्र थे, की दोनों पुस्तकों 'क़ुर्रतुल ऐन बि-मुहिम्मातित दीन' और इसकी व्याख्या 'फ़तहुल मुईन' में है: (तंगहाल व्यक्ति का निकाह रद्द हो जाएगा, लेकिन रद्द नहीं होगा) विश्वसनीय मत के अनुसार (दूसरों के इनकार के कारण) जो धनी या मध्यम श्रेणी के हों और नफ़क़ा न दें, चाहे उपस्थित हों या अनुपस्थित। (और तंगहाली सिद्ध होने से पहले निकाह रद्द नहीं होगा) उसकी अपनी स्वीकारोक्ति से या ऐसी गवाही से जिसमें अब उसकी तंगहाली का ज़िक्र हो; ऐसी गवाही पर्याप्त नहीं है जिसमें यह कहा गया हो कि गायब होते समय वह तंगहाल था। संक्षेप में, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।"

[कॉलम 2 - उपरोक्त का उर्दू अनुवाद] "...मालूम न हो और उसका माल न हो तो फ़स्ख़ (रद्द) होगा। जबकि इब्न हजर ने कहा है कि यह मनक़ूल (वर्णित) मज़हब के खिलाफ है क्योंकि इमाम शाफ़ई ने 'अल-उम्म' में तसरीह (स्पष्टीकरण) की है कि ग़ायब शख़्स जिसकी खबर मालूम न हो, वह जब तक अमीर है और उसके माल से नफ़क़ा पूरा करना मुश्किल हो तो भी फ़स्ख़ न होगा। अल्लामा ज़ैनुद्दीन शाफ़ई, जो इमाम इब्न हजर मक्की (रहमतुल्लाह अलैहि) के शागिर्द थे, की दोनों किताबों 'क़ुर्रतुल ऐन बि-मुहिम्मातित दीन' और इसकी शरह 'फ़तहुल मुईन' में है कि तंगदस्त का निकाह फ़स्ख़ होगा और मोतमिद (विश्वसनीय) क़ौल के मुताबिक किसी ऐसे शख़्स का जो अमीर हो या मुतवस्सित (मध्यम श्रेणी) हो और वह नफ़क़ा न दे, चाहे हाज़िर हो या ग़ायब, निकाह फ़स्ख़ न होगा। तंगदस्ती का सुबूत उसके इक़रार से होगा या शहादत से होगा जिसमें यह ज़िक्र हो कि अब तंगदस्त है, इसमें यह ज़िक्र काफी नहीं कि ग़ायब होते वक़्त वह तंगदस्त था। संक्षेप में, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।"

मसला 198: हावड़ा, राम कठोपुर, मोहल्ला बांस तल्ला घाट रोड से, प्रेषक मुहम्मद हसन रज़ा खान साहब, 16 शाबान अल-मुअज्जम 1337 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि एक पर्दानशीं औरत अपने शौहर की मुतलक़ा (तलाकशुदा) है, इद्दत के बाद दूसरा निकाह किया। एक साल गुज़रने के बाद मायके आई और ज़ाती या ज़ौजी (वैवाहिक) तकलीफ़ की वजह से दूसरे शौहर

के यहाँ जाना पसंद नहीं करती है और उससे ख़ुला चाहती है और पहले शौहर की मानूसीयत (साथ) को पसंद करती है। दूसरा शौहर जहालत और दूसरों के बहकाने की वजह से तलाक़ नहीं देता और न ही बीवी का हक़ पूरी तरह अदा कर सकता है। और गुज़ारे के मामले में औरत की अपनी कोई ज़ाती हैसियत नहीं है और न ही मायके में फ़रागत (सुख-चैन) है। पर्दा करना भी फ़र्ज़ है और रोटी-कपड़ा भी वाजिब है। फिर ऐसे मौक़े पर हज़रत इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैहि) के मसलों का इक़्तिदा (अनुसरण) क्यों नहीं हो सकता? चूंकि चारों इमाम हक़ पर हैं, और अगर इमाम शाफ़ई की इक़्तिदा की जाए तो इस मसले की हक़ीक़त क्या है? ऐसी हालत में दूसरे की पैरवी...

फुटनोट्स: 1. तालीकात (टिप्पणियाँ)। 2. फ़तहुल मुईन शरह क़ुर्रतुल ऐन, आमिरुल इस्लाम पुर प्रेस, तरुंगारी कबीर, पृष्ठ 424 से 427।

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[کالم ۱ - عربی عبارت اور حوالہ جات] "لامال لہ قال ابن حجر وھو خلاف المنقول فانہ صرح فی الام بانہ فسخ مادام موسرا وان انقطع خبرہ وتعذر استیفاء النفقۃ من مالہ اھ و فی قرۃ العین بمہمات الدین وشرحہا فتح المعین کلاھما للعلامۃ زین الدین الشافعی تلمیذ الامام ابن حجر المکی رحمھما اللہ تعالٰی (فسخ نکاح من اعسر فلا فسخ) علی المعتمد (بامتناع غیرہ) موسرا او متوسطا من الانفاق حضر او غاب (و لافسخ قبل ثبوت اعسارہ) باقرارہ او بینۃ تذکر اعسارہ الآن ولا تکفی بینۃ ذکرت انہ غائب معسرا ملتقطا واللہ تعالٰی اعلم۔"

[کالم ۲ - اردو ترجمہ] "معلوم نہ ہو اور اس کا مال نہ ہو تو فسخ ہوگا جبکہ ابن حجر نے کہا ہے کہ یہ منقول مذہب کے خلاف ہے کیونکہ امام شافعی نے الام میں تصریح کی ہے کہ غائب شخص جس کی خبر معلوم نہ ہو وہ جب تک امیر ہے اور اس کے مال سے نفقہ پورا کرنا مشکل ہو تو بھی فسخ نہ ہوگا۔ علامہ زین الدین شافعی تلمیذ امام ابن حجر مکی رحمہما اللہ تعالیٰ کی دونوں کتب، قرۃ العین بمہمات الدین، اور اس کی شرح فتح المعین، میں ہے کہ تنگ دست کا نکاح فسخ ہوگا اور معتمد قول کے مطابق کسی ایسے شخص کا جو امیر ہو یا متوسط ہو اور وہ نفقہ نہ دے خواہ حاضر ہو یا غائب نکاح فسخ نہ ہوگا تنگ دستی کا ثبوت اس کے اقرار سے ہوگا یا شہادت سے ہوگا جس میں یہ ذکر ہو کہ اب تنگ دست ہے اس میں یہ ذکر کافی نہیں کہ غائب ہوتے وقت وہ تنگ دست تھا اھ ملتقطا، واللہ تعالٰی اعلم (ت)"

مسئلہ ۱۹۸: از ہوڑہ رام کٹھوپور محلہ بانس تلا گھاٹ روڈ مرسلہ محمد حسن رضا خاں صاحب ۱۶ شعبان المعظم ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت پردہ نشین اپنے شوہر کی مطلقہ ہے، بعد عدت عقد ثانی کیا، بعد گزرنے ایک برس میکے آئی اور ذاتی یا زوجی

تکلیف کی وجہ سے شوہر ثانی کے یہاں جانا پسند نہیں کرتی ہے اور اس سے خلع چاہتی ہے اور شوہر اولی کی موانست کو پسند کرتی ہے، شوہر ثانی باعث جہالت اور بہکانے دوسروں کے طلاق نہیں دیتا اور نہ کافی طور پر بی بی کا حق ادا کرسکتا ہے اور صورت اوقات بسری عورت کی ذاتی حیثیت کچھ بھی نہیں اور نہ میکے میں فراغت، پردہ بھی فرض ہے اور کھانا کپڑا بھی واجب، پھر ایسے موقعہ میں کیوں اقتداء مسائل حضرت امام شافعی رحمہ اللہ تعالیٰ نہیں ہوسکتی ہے کیونکہ چاروں امام جب کہ برحق ہیں اور اگر اقتداء امام شافعی کی کی جائے تو حقیقت اس مسئلہ کی کیا ہے، ایسی حالت میں پیروی دوسرے

تعلیقات: ۱ تعلیقات ۲ فتح المعین شرح قرۃ العین عامر الاسلام پور پریس ترونگاری کبیر ص ۴۲۴ تا ۴۲۷

By not (appointing/following) an Imam, there is a fear of the devil's dominance. It is unknown what major sin is being committed. Therefore, it seems appropriate that following out of necessity and benefit is mandatory.

The Answer: The Great Quran has declared married women absolutely forbidden. The questioner's vague words do not fulfill the conditions of the Shafi'i school of thought. For women to follow their whims and blame it on some Imam of the religion is not religion. Nor is a Hanafi authorized to give a fatwa on this; rather, even if a Hanafi Sharia judge rules on it, the judgment will not be executed. It is in Durr al-Mukhtar:

Separation shall not be made between them due to his inability for it (maintenance), nor due to his failure to fulfill her right.	**In the Hanafi school of thought, separation will not occur due to inability to provide maintenance or for not fulfilling the wife's rights. If any Hanafi performed this separation, it would not be executed. (T)**
And if a Hanafi judge rules for it, it shall not be executed. 1	

The remedy is to turn to the government so that it compels him to do one of two things: either pay maintenance or give a divorce. And Allah Almighty knows best.

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/269.

इमाम की (पैरवी) न करने से शैतान के वर्चस्व का डर है। पता नहीं किस कबीरा गुनाह का इर्तिकाब हो रहा है, इसलिए मुनासिब मालूम होता है कि ज़रूरत और मसलहतन इक़्तिदा (पैरवी) लाज़िम है।

अल-जवाब (उत्तर): क़ुरआन-ए-अज़ीम ने शादीशुदा औरतों को हराम-ए-क़तई फ़रमाया है। साइल (सवाल करने वाले) के गोल शब्द शाफ़ई मज़हब की शर्त को पूरा नहीं करते। औरतों का अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना और इसे दीन के किसी इमाम के सर मढ़ देना दीन नहीं है। न ही कोई हनफ़ी इस पर फ़तवा देने का हक़ रखता है, बल्कि अगर कोई हनफ़ी शरी'ई हाकिम इस पर हुक्म देगा तो वह लागू (नाफ़िज़) नहीं होगा। दुर्रे मुख़्तार में है:

उनके बीच अलहदगी (तफ़रीक़) नहीं की जाएगी उसके(नफ़क़ा/ख़र्च) से आजिज़ होने की वजह से और न ही उसका हक़ पूरा न करने की वजह से।

और अगर किसी हनफ़ी ने इसका फ़ैसला कर दिया तो वह लागू नहीं होगा। 1

हनफ़ी मज़हब में नफ़क़ा से आजिज़ होने या बीवी का हक़ पूरा न करने पर अलहदगी नहीं होगी। अगर किसी हनफ़ी ने यह अलहदगी की तो लागू नहीं होगी। (त)

इसका हल सरकार की तरफ रुजू करना है कि वह उसे दो बातों में से एक पर मजबूर करे: या तो नफ़क़ा (खर्चा) अदा करे या तलाक़ दे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा। (रखरखाव का अध्याय), मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/269।

امام کی نہ کرنے سے خوف غلبہ شیطان کا ہے نہ معلوم کس گناہِ کبیرہ میں مرتکب ہو اس لئے مناسب معلوم ہوتا ہے کہ ضرورتہ اور مصلحتہ اقتداء لازم ہے۔

الجواب: قرآنِ عظیم نے شوہر دار عورتوں کو حرام قطعی فرمایا سائل کے گول لفظ شرطِ مذہبِ شافعی کو پورا نہیں کرتے، عورتوں کو ہوائے نفس کا اتباع کرنا اور اسے کسی امام دین کے سر رکھ دینا دین نہیں نہ حنفی اس پر فتوے کا مجاز بلکہ اگر حنفی حاکم شرعی اس پر حکم دے گا قضا نافذ نہ ہوگی، در مختار میں ہے:

لا یفرق بینهما بعجزه عنها ولا بعدم ایفائه حقها ولو قضی به حنفی لم ینفذ

حنفی مذہب میں نفقہ سے عاجز ہونے یا بیوی کا حق پورا نہ کرنے پر تفریق نہ ہوگی اگر کسی حنفی نے یہ تفریق کی تو نافذ نہ ہوگی۔ (ت)

۔1

چارہ کار حکومت کی طرف رجوع ہے کہ وہ اسے دو باتوں میں سے ایک پر مجبور کرے یا ادائے نفقہ یا طلاق، واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1 درمختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۲۶۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen

Book of Faith

Issue 199: 5 Jumada al-Akhira 1306 AH In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Praise be to Allah, Lord of the worlds. And the good end is for the righteous. And blessings and peace be upon His Messenger Muhammad, and upon all his family and companions. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say in this matter: Zaid took a solemn oath with the agreement that "if I speak to Bakr at any time, then my wife is divorced." Subsequently, after this pledge, Bakr died. Zaid went to the grave and performed Shariah-prescribed acts, i.e., he said "Assalamu Alaikum" and recited Fatiha at the grave. In this situation, has divorce occurred for Zaid's wife or not? Only.

The Answer:

All praise be to the Ever-Living, the All-Powerful; and blessings and peace be upon the All-Hearing, the All-Seeing, and upon his family and companions until the day of return. Abundant praises are for the One who is Ever-Living and All-Powerful; complete blessings and peace be upon the One with perfect hearing and sight, and upon his family and companions until the Day of Judgment. (T)

In the queried situation, divorce did not occur for Zaid's wife. In Jami' al-Saghir by Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him), it states: Muhammad from Yaqub from Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with them) that a man said to another...

Page 495 of 688

फ़तावा रज़विया तेरहवाँ भाग

ईमान की किताब (किताब-उल-ईमान)

मसअला 199: 5 जमादी-उल-आख़िरा 1306 हिजरी बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम। अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। वल आक़िबातु लिल मुत्तक़ीन। वस सलातु वस सलामु अला रसूलीही मुहम्मदिन व आलिही व असहाबिही अजमईन। उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मामले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने एक सख़्त क़सम खायी इस वादे के साथ कि "अगर मैं बक्र से किसी भी वक़्त बात करूँ्तो मेरी बीवी को तलाक़ है।" इसके बाद बक्र का इंतक़ाल हो गया और ज़ैद उसकी क़ब्र पर गया और शरीयत के मुताबिक़ अमल किया यानी "अस्सलाम-ओ-अलैकुम" कहकर क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ी। तो क्या इस सूरत में ज़ैद की बीवी पर तलाक़ लागू हुई या नहीं? फ़क़त (सिर्फ़ इतना)।

अल-जवाब (उत्तर):

अल-हम्दु अल-कसीर लिल-हय्यिल-क़दीर, वस-सलातु वस-सलामु अलस-समी'इल-बसीर व आलिही व सहबिही इला यौमिल-मसीर - बहुत सारी हम्द-ओ-सना उस हस्ती के लिए जो हमेशा ज़िंदा और कुदरत वाली है; और कामिल (पूर्ण) सलात और सलाम सुनने और देखने वाली हस्ती पर और उनकी आल और असहाब पर क़यामत के दिन तक। (त)

पूछी गई स्थिति में ज़ैद की बीवी पर तलाक़ नहीं हुई। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) की 'जामे' सगीर' में है: मुहम्मद ने याकूब से और उन्होंने इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत की कि एक आदमी ने दूसरे से...

पृष्ठ 495 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

کتاب الایمان

مسئلہ ۱۹۹: ۵ جمادی الآخرہ ۱۳۰۶ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم ہ الحمد للہ رب العالمین ہ والعاقبۃ للمتقین ہ والصلوۃ والسلام علی رسولہ محمد وآلہ واصحابہ اجمعین ہ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ مقدمہ میں کہ زید نے قسم مغلظ کھائی ساتھ اس معاہدہ کے کہ اگر میں بکر سے کسی وقت میں ہمکلام ہوں تو زوجہ میری کو طلاق ہے چنانچہ بعد اس عہد کے بکر نے وفات پائی اور زید قبر پر گیا اور احکام شرعیہ کو کام میں لایا یعنی سلام علیکم کہہ کر فاتحہ قبر پر زید نے پڑھی تو اس صورت میں زوجہ زید پر طلاق عائد ہوئی یا نہیں؟ فقط

الجواب:

الحمد الکثیر للحي القدیر والصلوۃ والسلام علی السمیع البصیر وآلہ وصحبہ الی یوم المصیر - کثیر ترین حمدیں زندہ قدرت والے کے لئے ہیں، صلوۃ و سلام کامل سمع و بصر والے پر اور ان کی آل واصحاب پر تالیوم القیامۃ - (ت)

صورت مستفسرہ میں زنِ زید پر طلاق نہ ہوئی، جامع صغیر امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی میں ہے: محمد عن یعقوب عن ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالٰی عنھم رجل قال امام محمد نے امام ابوبوسف سے اور انہوں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا کہ ایک شخص نے دوسرے

Fatawa Razvia, Volume 13

[Boxed Section 1] (Arabic): To the other, "If I strike you, my slave is free." Then he died and he struck him. He said: This is based on life. Similarly regarding clothing, speech, and entering [a house]. (End of quote) (Urdu): ...said to another, "If I strike you, my slave is free." If he struck him after the death of the other, (the oath would not be broken). Similarly, if an oath is taken regarding clothing, speaking, or entering a house, it will not be broken by any action after death because these oaths relate to the living. (T)

The reason for this is that oaths are based on custom (urf), and in custom, speaking after death is not the intended meaning. Nor is it said regarding speech and greeting after death that the visitor is talking to the deceased, even though literally and legally (sharia-wise) it is speech and greeting. Just as one who swears not to eat meat will not break the oath by eating fish, even though literally and legally the word 'meat' applies to it as well.

[Boxed Section 2] (Arabic): Allah Almighty said: "...that you may eat fresh meat from it." (Urdu): Allah Almighty said: "Eat fresh meat from the sea." (T)

Therefore, if one swears not to speak and then recites the Quran, or performs glorification (tasbih) and proclamation of oneness (tahlil), he will not break his oath, even though literally and legally these are also speech.

[Boxed Section 3] (Arabic): Allah Almighty said: "To Him ascend good words." And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Two words are light on the tongue, heavy in the scales, and beloved to the Most Merciful: 'Subhan Allah wa bihamdihi, Subhan Allahil Azeem' (Glory be to Allah and His praise, Glory be to Allah the Almighty)." Narrated by Bukhari. (Urdu): Allah Almighty said: "Towards Him ascend pure words." And the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Two phrases are light on the tongue, heavy in the balance, and dear to the Most Merciful: 'Subhan-Allah wa bi-hamdihi, Subhan-Allahil-Azeem'. Bukhari narrated this. (T)

To the extent that scholars state if someone swears not to speak to Zaid, and Zaid was standing next to him in congregational prayer, and while turning for the final salutation (Salam), he looked towards him and said "As-salamu alaykum wa rahmatullah," he would not break his oath, even though in this salutation there is a definite intent to address those present. Similarly, if the person he swore about was

the Imam and he made a mistake in prayer and he corrected him (gave a 'luqma') during recitation, he would not break his oath, even though this is definitely addressing him and issued specifically with the intent of addressing him.

[Boxed Section 4] (Arabic): In Al-Hindiyyah: "If one swears he will not speak and has no specific intention..." (Urdu): It is in Hindiyyah: "Someone swore that 'I will not speak,' and..."

---

1 Jami' al-Saghir, Chapter of Oaths regarding Killing and Striking, Yusufi Press Lucknow, p. 74 2 Al-Quran Al-Karim 16/14 (indicated as 12/14 in text) 3 Al-Quran Al-Karim 35/10 4 Sahih Bukhari, Book of Refutation of Jahmiyyah, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/1129

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

[बॉक्स सेक्शन 1] (अरबी): दूसरे से कहा, "अगर मैं तुझे मारूँ तो मेरा गुलाम आज़ाद है।" फिर वह मर गया और उसने उसे मारा। उसने कहा: यह जीवन पर आधारित है। इसी तरह कपड़े, बातचीत और [घर में] प्रवेश के बारे में। (समाप्त) (उर्दू): ...दूसरे से कहा, "अगर मैं तुझे मारूँ तो मेरा गुलाम आज़ाद है।" अगर उसने दूसरे की मौत के बाद उसे मारा, (तो कसम नहीं टूटेगी)। इसी तरह, यदि कपड़े पहनने, बातचीत करने या घर में प्रवेश करने की कसम खाई गई हो, तो वह भी मौत के बाद की किसी भी कार्रवाई से नहीं टूटेगी क्योंकि ये कसमें जीवितों से संबंधित होती हैं। (त)

इसका कारण यह है कि कसम की बुनियाद 'उर्फ़ (प्रचलन) पर है, और उर्फ़ में मृत्यु के बाद की बातचीत अभिप्रेत नहीं होती है। और न ही मृत्यु के बाद बातचीत और सलाम के बारे में यह कहा जाता है कि आगंतुक मृतक से बात कर रहा है, भले ही शाब्दिक और शरीअत के अनुसार यह बातचीत और सलाम ही है। जैसे कि वह व्यक्ति जो मांस न खाने की कसम खाता है, मछली खाने से कसम नहीं तोड़ेगा, भले ही शाब्दिक और शरीअत के अनुसार 'मांस' शब्द उस पर भी लागू होता है।

[बॉक्स सेक्शन 2] (अरबी): अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "...ताकि तुम उससे ताज़ा मांस खाओ।" (उर्दू): अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "समुद्र से ताज़ा गोश्त खाओ।" (त)

इसलिए, यदि कोई कसम खाता है कि वह बात नहीं करेगा और फिर कुरान पढ़ता है, या तस्बीह (महिमा गान) और तहलील करता है, तो वह अपनी कसम नहीं तोड़ेगा, भले ही शाब्दिक और शरीअत के अनुसार ये भी बातचीत ही हैं।

[बॉक्स सेक्शन 3] (अरबी): अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उसी की ओर अच्छे शब्द चढ़ते हैं।" और पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने कहा: "दो शब्द जुबान पर हल्के, तराजू में भारी और रहमान के प्रिय हैं: 'सुब्हान अल्लाह व बि-हम्दिही, सुब्हान अल्लाहिल अज़ीम'।" बुखारी द्वारा वर्णित। (उर्दू): अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उसी की तरफ पवित्र कलमात (शब्द) चढ़ते हैं।" और हुज़ूर (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने फ़रमाया: "दो वाक्यांश जुबान पर हल्के, तराजू में भारी और रहमान के प्रिय हैं: 'सुब्हान-अल्लाह व बि-हम्दिही, सुब्हान-अल्लाहिल-अज़ीम'। बुखारी ने इसे वर्णित किया है। (त)

यहाँ तक कि विद्वान कहते हैं कि यदि किसी ने ज़ैद से बात न करने की कसम खाई, और ज़ैद जमाअत की नमाज़ में उसके बगल में खड़ा था, और सलाम फेरते समय उसने उसकी ओर रुख

किया और "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" कहा, तो उसकी कसम नहीं टूटेगी, भले ही इस सलाम में उपस्थित लोगों को संबोधित करने का निश्चित इरादा है। इसी तरह, यदि वह व्यक्ति जिसके बारे में उसने कसम खाई थी, इमाम था और उसने नमाज़ में गलती की और उसने पाठ के दौरान उसे सुधारा ('लुक़्मा' दिया), तो वह अपनी कसम नहीं तोड़ेगा, भले ही यह निश्चित रूप से उसे संबोधित करना है और विशेष रूप से संबोधित करने के इरादे से जारी किया गया है।

[बॉक्स सेक्शन 4] (अरबी): अल-हिन्दिया में: "यदि कोई कसम खाता है कि वह बात नहीं करेगा और उसका कोई विशिष्ट इरादा नहीं है..." (उर्दू): हिन्दिया में है: "किसी ने कसम खाई कि 'मैं बात नहीं करूँगा,' और..."

---

1 जामिअ अस-सगीर, बाब अल-यमीन फ़िल क़त्ल वद-दर्ब, मतबा यूसुफी लखनऊ, पृ. 74 2 अल-कुरान अल-करीम 16/14 (मूल पाठ में 12/14 अंकित) 3 अल-कुरान अल-करीम 35/10 4 सहीह बुखारी, किताब अर-रद्द अलल जहमिया, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1129/2

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

[پہلا خانہ] عربی: لآخر ان ضربتك فعبدي حرفمات فضربه قال فهو على الحيوة، وكذلك الكسوة والكلام والدخول انتهی- اردو: کو کہا اگر میں تجھے ماروں تو میرا غلام آزاد ہے، دوسرے کے فوت ہونے کے بعد اس نے اسے مارا (تو قسم نہ ٹوٹے گی) یوں ہی لباس، کلام یا دخول دار کی قسم کھائی ہو تو وہ بھی فوت ہونے کے بعد کارروائی پر نہ ٹوٹے گی کہ ان قسموں کا تعلق زندہ سے ہوتا ہے اھ (ت)

وجہ اس کی یہ ہے کہ بنائے یمین عرف پر ہے اور عرف میں اس سے کلام بعد الموت مقصود و مفہوم نہیں ہوتا، نہ بعد موت کلام و سلام کو یہ کہتے ہیں کہ زائر میت سے باتیں کر رہا ہے اگر چہ حقیقۃً و شرعاً کلام و سلام ہے جیسے قسم کھانے والا کہ گوشت نہ کھائے گا مچھلی کھانے سے حانث نہ ہوگا اگر چہ حقیقۃً و شرعاً گوشت اس پر بھی صادق،

[دوسرا خانہ] عربی: قال اللہ تعالٰی لِتَاْ كُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا- اردو: اللہ تعالٰی نے فرمایا: تم دریا سے تازہ گوشت کھاؤ۔ (ت)

ولہذا اگر قسم کھائی کہ کلام نہ کرے گا اور قرآن پڑھا، تسبیح و تہلیل کی، حانث نہ ہوگا، حالانکہ حقیقۃً و شرعاً یہ بھی کلام ہے

[تیسرا خانہ] عربی: قال اللہ تعالٰی اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وقال صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم كلمتان خفيفتان على اللسان ثقيلتان فی الميزان حبيبتان الی الرحمن سبحان اللہ وبحمده سبحان اللہ العظيم -رواه البخاری- اردو: اللہ تعالٰی نے فرمایا: اسی کی طرف طیب کلمات اٹھتے ہیں۔ اور حضور علیہ الصلوۃ

والسلام نے فرمایا: دو کلمے زبان پر خفیف، ترازو میں بھاری، اللہ تعالیٰ کے ہاں محبوب ہیں سبحان اللہ وبحمدہ سبحان اللہ العظیم، اس کو بخاری نے روایت کیا (ت)

یہاں تک کہ علماء فرماتے ہیں اگر قسم کھائی زید سے کلام نہ کروں گا اور زید نماز جماعت میں اس کے برابر کھڑا تھا سلام پھیرتے وقت اس کی طرف منہ کر کے السلام علیکم ورحمۃ اللہ کہا حانث نہ ہوا اگر چہ اس سلام میں نیت حاضرین کا قطعاً حکم ہے اسی طرح اگر جس کی نسبت قسم کھائی تھی وہ امام ہوا اور نماز میں بھولا اس نے بتایا قرات میں لقمہ دیا حانث نہ ہوگا حالانکہ یہ قطعاً اس سے خطاب ہے اور خاص بقصد خطاب صادر،

[چوتھا خانہ] عربی: فی الہندیۃ لو حلف لا یتکلم ولانیۃ اردو: ہندیہ میں ہے کسی نے قسم کھائی کہ کلام نہ کروں گا، اور

---

1 جامع الصغیر باب الیمین فی القتل والضرب مطبع یوسفی لکھنؤ ص ۷۴ 2 القرآن الکریم ۱۲/۱۴

3 القرآن الکریم ۳۵/۱۰ 4 صحیح بخاری کتاب الرد علی الجہمیۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۱۲۹/۲

Fatawa Razawiyya - Volume 13

Page 13

[Arabic Text Block]: If he prayed and recited therein, or glorified Allah (Tasbeeh), or proclaimed His oneness (Tahleel), his oath is not broken. Faqih Abu al-Layth said: If he took his oath in Persian that he will not talk, the oath is not broken by recitation or glorification even outside the prayer, because according to custom, such a person is called a reciter (Qari) or one who glorifies (Musabbih), not a talker (Mutakallim). And the fatwa is upon this, as stated in al-Kafi. (Summary) [Urdu Translation/Explanation]: If a specific intention was not made, then performing recitation, tasbeeh, and tahleel in prayer will not break the oath. And Faqih Abu al-Layth stated: If someone took an oath in Persian language that 'I will not talk', then even outside prayer, performing recitation and tasbeeh will not break the oath because such a person is customarily called a Qari or one who recites Tasbeeh, not a talker, and the fatwa is based on this as in al-Kafi (Summarized). (T)

In the same (book): [Arabic Text Block]: If he took an oath not to speak to someone, then the oath-taker followed the person sworn about in prayer, and the person sworn about made a mistake, so the oath-taker said 'SubhanAllah' to alert him, his oath is not broken. This is in al-Muhit. [Urdu Translation/Explanation]: If he swore he wouldn't talk to so-and-so, and while praying behind him, that person forgot something, and the oath-taker gave him a prompt by saying 'SubhanAllah', he will not be an oath-breaker, i.e., the oath will not break, as in al-Muhit. (T)

In the same (book): [Arabic Text Block]: Likewise if he says Salam from the prayer while so-and-so is by his side. This is in al-Attabiyya. [Urdu Translation/Explanation]: Similarly when he turns for Salam from prayer and so-and-so is by his side, as in al-Attabiyya. (T)

In the same (book): [Arabic Text Block]: If the person sworn about is the Imam and the oath-taker is following him, then if he corrects the Imam's mistake, he does not break the oath, etc. [Urdu Translation/Explanation]: If the person about whom the oath was taken is the Imam and the oath-taker is the follower, then he will not be an oath-breaker for giving a prompt to the Imam, etc. (T)

Likewise, there are hundreds of issues where the basis of rulings on oaths is custom (urf). And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

Problem 200: From Ujjain, residence of Mir Khadim Ali Sahib Assistant, sent by Haji Yaqoob Ali Khan Sahib, 7 Shawwal 1311 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Zaid swore to Amr to do this work, and he...

---

1. Al-Fatawa al-Hindiyya, The Sixth Chapter regarding Oaths on Speech, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/97.
2. Al-Fatawa al-Hindiyya, The Sixth Chapter regarding Oaths on Speech, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/97.
3. Al-Fatawa al-Hindiyya, The Sixth Chapter regarding Oaths on Speech, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/97.
4. Al-Fatawa al-Hindiyya, The Sixth Chapter regarding Oaths on Speech, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/97.

फ़तावा रज़विया - खंड 13

पृष्ठ १३

[अरबी पाठ]: अगर उसने नमाज़ पढ़ी और उसमें क़िरात की या तस्बीह की या तहलील की, तो उसकी कसम नहीं टूटेगी। फ़क़ीह अबुल्लैथ ने फ़रमाया: अगर उसने फ़ारसी भाषा में कसम खाई कि मैं बात नहीं करूँगा, तो नमाज़ के बाहर भी क़िरात करने और तस्बीह पढ़ने पर कसम नहीं टूटेगी क्योंकि लोक-व्यवहार (उर्फ़) में ऐसे व्यक्ति को कारी या तस्बीह पढ़ने वाला कहा जाता है, बात करने वाला नहीं, और इसी पर फ़तवा है जैसा कि 'काफ़ी' में है। (संक्षिप्त) [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: विशिष्ट नियत नहीं की, तो नमाज़ पढ़ने में क़िरात करने, तस्बीह और तहलील करने पर कसम नहीं टूटेगी। और अबुल लैथ फ़कीह ने फ़रमाया: अगर किसी ने फ़ारसी भाषा में कसम खाई कि 'मैं बात नहीं करूँगा', तो नमाज़ के बाहर भी क़िरात करने और तस्बीह पढ़ने पर भी कसम नहीं टूटेगी क्योंकि ऐसे व्यक्ति को लोक-व्यवहार (उर्फ़) में कारी और तस्बीह पढ़ने वाला कहा जाता है, बात करने वाला नहीं, और इसी पर फ़तवा है जैसा कि 'काफ़ी' में है। (संक्षिप्त) (त)

इसी में है: [अरबी पाठ]: जब कसम खाई कि वह फ़लाँ से बात नहीं करेगा, फिर कसम खाने वाले ने उस व्यक्ति की इक़्तिदा की जिसके बारे में कसम खाई थी, फिर वह व्यक्ति भूल गया और कसम खाने वाले ने उसके लिए तस्बीह की (सुब्हान अल्लाह कहा), तो कसम नहीं टूटी, जैसा कि 'मुहीत' में है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: अगर कसम खाई कि वह फ़लाँ से बात नहीं करेगा, तो उसकी इक़्तिदा (पीछे नमाज़ पढ़ना) में नमाज़ पढ़ते हुए वह भूल जाए तो कसम खाने वाले ने उसे 'सुब्हान अल्लाह' कहकर लुक़्मा (संकेत) दिया तो कसम नहीं टूटेगी, जैसा कि 'मुहीत' में है। (त)

इसी में है: [अरबी पाठ]: वैसे ही जब नमाज़ से सलाम फेरे और फ़लाँ उसके पास हो, जैसा कि 'अत्ताबिया' में है। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: वैसे ही जब नमाज़ से सलाम फेरे और वह फ़लाँ उसके पास हो, जैसा कि 'अत्ताबिया' में है। (त)

इसी में है: [अरबी पाठ]: यदि वह व्यक्ति जिसके बारे में कसम खाई गई है इमाम हो और कसम खाने वाला मुक्तदी हो, तो इमाम को लुक़्मा देने पर वह कसम तोड़ने वाला नहीं होगा, आदि। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: जिसके बारे में कसम खाई गई अगर वह इमाम हो और कसम खाने वाला मुक्तदी हो, तो इमाम को लुक़्मा देने पर वह कसम तोड़ने वाला नहीं होगा, आदि। (त)

इसी तरह सैकड़ों मामले हैं जिनका आधार लोक-व्यवहार (उर्फ़) पर कसम के नियमों का होना है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला २००: उज्जैन से, मीर ख़ादिम अली साहब असिस्टेंट का निवास, हाजी याक़ूब अली ख़ान साहब द्वारा प्रेषित, ७ शव्वाल १३११ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अम्र से कसम खाकर कहा कि यह काम कर, और उसने...

---

1. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, छठा अध्याय, बातचीत पर कसम के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, २/९७।
2. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, छठा अध्याय, बातचीत पर कसम के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, २/९७।
3. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, छठा अध्याय, बातचीत पर कसम के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, २/९७।
4. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, छठा अध्याय, बातचीत पर कसम के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, २/९७।

पृष्ठ ४९७/६८८

فتاوٰی رضویہ - جلد سیزدہم

۱۳

[Arabic Block]: له فصلی وقرأ فیها او سبح او هلل لم یحنث وقال الفقیه ابواللیث ان عقد یمینه بالفارسیة لا یحنث بالقراءة والتسبیح خارج الصلوٰة ایضا للعرف فانه یسمی قارئا ومسبحا لا متکلما و علیه الفتوی کذا في الکافی اه ملخصاً- [Urdu Side]: خاص نیت نہ کی، تو نماز پڑھنے میں قرات کرنے، تسبیح و تہلیل کرنے پر قسم نہ ٹوٹے گی۔ اور ابواللیث فقیہ نے فرمایا اگر کسی نے فارسی زبان میں قسم کھائی کہ بات نہ کروں گا، تو خارج از نماز قرات کرنے اور تسبیح پڑھنے پر بھی قسم نہ ٹوٹے گی کیونکہ اس عمل والے کو عرف میں قاری اور تسبیح پڑھنے والا کہا جاتا ہے کلام کرنے والا نہیں کہا جاتا، اور اسی پر فتوی ہے جیسا کہ کافی میں ہے اھ ملخصاً(ت)

اسی میں ہے: [Arabic Block]: اذا حلف لا یکلم فلانا فاقتدی الحالف بالمحلوف علیه فسها المحلوف علیه فسبح له الحالف لم یحنث کذا في المحیط- [Urdu Side]: اگر قسم کھائی کہ وہ فلاں سے بات نہ کرے گا، تو اس کی اقتداء میں نماز پڑھتے ہوئے وہ بھول جائے تو قسم کھانے والے نے اسے سبحان اللہ کہہ کر لقمہ دیا تو حانث نہ ہوگا، یعنی قسم نہ ٹوٹے گی جیسا کہ محیط میں ہے۔ (ت)

اسی میں ہے: [Arabic Block]: کذا اذا سلم عن الصلوة وفلان عن جنبه کذا في العتابیة- [Urdu Side]: یونہی جب نماز سے سلام پھیرے اور وہ فلاں اس کے پہلو میں ہو، جیسے کہ عتابیہ میں ہے۔ (ت)

اسی میں ہے: [Arabic Block]: لوکان المحلوف علیه اما ما والحالف مقتدیا به ففتح علی الامام لا یحنث الخ۔ [Urdu Side]: جس کے متعلق قسم کھائی اگر وہ امام ہو اور قسم کھانے والا مقتدی ہو تو امام کو لقمہ دینے پر وہ حانث نہ ہوگا، الخ (ت)

اسی طرح صدہا مسائل میں جن کا ماخذ وہی عرف پر احکام ایمان کی بنا ہے، واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۰: از اوجین مکان میر خادم علی صاحب اسٹنٹ مرسلہ حاجی یعقوب علی خاں صاحب ۷ شوال ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے عمرو سے قسمیہ کہا کہ یہ کام کر، اور اس نے

---

1 الفتاوٰی الھندیہ الباب السادس فی الیمین علی الکلام نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۹۷ 2 الفتاوٰی الھندیہ الباب السادس فی الیمین علی الکلام نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۹۷ 3 الفتاوٰی الھندیہ الباب السادس فی الیمین علی الکلام نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۹۷ 4 الفتاوٰی الھندیہ الباب السادس فی الیمین علی الکلام نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۹۷

Fatawa Razawiyya Volume 13 - 13

If not done, does an oath apply to 'Amr because of his refusal to do that work? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: An oath is not imposed on someone just because someone else makes them take one, nor does it make that work obligatory. It is mentioned in a Hadith that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Do not make [others] swear oaths.'[1] It is known that it is not obligatory to obey when someone makes you swear; however, if there is no harm, it is recommended to accept it, as clarified by the noble jurists (may Allah have mercy on them). And Allah the Almighty knows best.

Problem 201: Does taking an oath on the Holy Quran constitute a valid oath or not? And what is its atonement? If someone swears an oath to commit a sin, should they break it or what? And what is the ruling for a person who swears to deceive another without the intention of fulfilling it in their heart? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Swearing by the Holy Quran is legally (shari'i) an oath. In 'Al-Durr al-Mukhtar', it is stated: Kamal said, it should not be hidden that nowadays swearing by the Holy Quran has become customary, therefore it will be considered an oath.[2] In the same book, it is stated: 'Oaths are based on custom (urf); so, whatever is recognized as an oath in custom will be considered an oath, and what is not recognized will not be an oath.'[3]

And if the oath is regarding a future matter that is within one's power to do, then there is sin in breaking it, and its atonement removes it, provided it is not for a sin, for example, drinking alcohol or not praying; in such cases, breaking the oath and then giving atonement is obligatory. In 'Al-Durr al-Mukhtar': An 'enforceable oath' (yamin munaqqida) is one where a person swears regarding a possible future matter, and in it [if broken] there is atonement... The one who breaks the oath [hanis]...

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abdullah bin Abbas, Dar al-Fikr Beirut 1/219. [2] Al-Durr al-Mukhtar, Book of Oaths, Matba Mujtabayi Delhi 1/291. [3] Al-Durr al-Mukhtar, Book of Oaths, Matba Mujtabayi Delhi 1/291.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह - १३

यदि नहीं किया, तो क्या उस काम के इनकार के कारण अम्र पर कसम लागू होती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: किसी के कसम दिलाने से न उस पर कसम लागू होती है और न ही उस काम का करना अनिवार्य होता है। हदीस में है कि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: 'कसम मत दिलाओ।'[1] इससे पता चला कि किसी के दिलाने से मानना अनिवार्य नहीं है; हाँ, अगर कोई हर्ज न हो तो मान लेना मुस्तहब (पसंदीदा) है, जैसा कि फ़ुक़हा-ए-किराम (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २०१: क्या कुरआन मजीद की कसम खाने से कसम हो जाती है या नहीं? और इसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) क्या है? और अगर किसी ने गुनाह करने की कसम खाई हो, तो वह उसे तोड़े या क्या करे? और जो व्यक्ति दूसरे को धोखा देने के लिए कसम खाए और दिल में उसे पूरा करने का इरादा न हो, उसके लिए क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: कुरआन मजीद की कसम शरीयत के अनुसार एक कसम है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: कमाल ने फ़रमाया कि यह गुप्त न रहे कि आजकल कुरआन पाक की कसम प्रचलित (मआरुफ़) हो चुकी है, इसलिए इसे कसम माना जाएगा।[2] इसी में है: 'कसमों का आधार रीति-रिवाज़ (उर्फ़) पर है; अतः रीति-रिवाज़ में जिस चीज़ की कसम प्रचलित हो जाए, वह कसम मानी जाएगी, और जो प्रचलित न हो वह कसम नहीं होगी।'[3]

और अगर कसम भविष्य की किसी ऐसी बात पर है जो उसके नियंत्रण में है, तो उसे झूठा करने (तोड़ने) में पाप है और उसका कफ़्फ़ारा उसे मिटा देता है, बशर्ते कि वह किसी पाप के काम पर न हो, जैसे शराब पीने या नमाज़ न पढ़ने की कसम। ऐसी स्थिति में तो कसम तोड़ना और फिर कफ़्फ़ारा देना अनिवार्य है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: 'यमीने मुनक़िदा' (प्रभावी कसम) वह होती है जो भविष्य की किसी संभव बात के बारे में ली जाए, इसमें कफ़्फ़ारा है... इसमें हानिस (कसम तोड़ने वाला)...

[1] मुसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन अब्बास से वर्णित, दार अल-फ़िक्र बेरूत १/२१९। [2] अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-ईमान, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/२९१। [3] अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-ईमान, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/२९१।

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

نہ کیا تو بہ سبب انکار اس کام کے عمرو پر قسم عائد ہوتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: کسی کے قسم دلانے سے نہ اس پر قسم عائد ہو نہ اس کام کا کرنا واجب، حدیث میں ہے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: لا تقسم ۱ قسم نہ دو۔ معلوم ہوا کہ دلانے سے ماننا واجب نہیں ہوتا، ہاں اگر حرج نہ ہو تو مان لینا مستحب ہے کما نص علیہ الفقہاء الکرام (جیسا کہ اس پر فقہاء کرام نے تصریح فرمائی۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۱: قرآن مجید کی قسم کھانے سے قسم ہو جاتی ہے یا نہیں؟ اور اس کا کفارہ کیا ہے؟ اور اگر کسی گناہ کرنے پر قسم کھائی ہو تو اسے توڑے یا کیا کرے؟ اور جو شخص دوسرے کو دھوکا دینے کے لئے قسم کھائے اس کے پورے کرنے کا دل میں ارادہ نہ ہو اس کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: قرآن مجید کی قسم شرعاً قسم ہے، فی الدر المختار قال الکمال لایخفی ان الحلف بالقران الان متعارف فیکون یمینا انتھٰی۔۲ در مختار میں ہے کہ کمال نے فرمایا کہ مخفی نہ رہے کہ آج کل قرآن پاک کی قسم متعارف ہو چکی ہے لہذا یہ قسم قرار پائیگی اھ (ت) اسی میں ہے: الایمان مبنیۃ علی العرف فما تعورف الحلف بہ فیمین وما لافلا انتھٰی۔۳ قسموں کی بناء عرف پر ہے، تو عرف میں جس چیز کی قسم متعارف ہو جائے وہ قسم قرار پائے گی، اور جو متعارف نہ ہو قسم نہ ہوگی اھ (ت)

اور قسم اگر امر مستقبل پر ہے جس کا کرنا اس کے قبضہ اقتدار میں ہے تو اس کے جھوٹا کرنے میں گناہ ہے اور کفارہ اس کا رافع، بشرطیکہ وہ کسی معصیت پر نہ ہو مثلاً شراب پینے یا نماز نہ

پڑھنے کا کہ اس کا تو جھوٹا کرنا پھر کفارہ دینا واجب ہے فی الدر المختار ومنعقدة وھی حلفہ علی مستقبل ات یمکنہ وفیه الکفارة در مختار میں ہے: یمین منعقدہ اور وہ ہوتی ہے کہ آئندہ ممکنہ چیز کے متعلق حلف دیا جائے، اس میں حانث

۱ مسند احمد بن حنبل مروی از عبد الله بن عباس دار الفکر بیروت ۲۱۹/۱ ۲ الدر المختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۲۹۱/۱ ۳ الدر المختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۲۹۱/۱

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Arabic]: If an oath is broken, there is an expiation (Kaffarah), and it removes the sin even if repentance (Tawbah) is not performed alongside it. (Sirajiya, summarized). [Urdu]: It (the expiation) occurs upon breaking an oath and it eliminates the sin of the oath, even if one does not repent alongside it, (Sirajiya, summarized).

[Arabic]: It is also mentioned: If someone takes an oath to commit a sin, such as not speaking to parents or killing someone, it is mandatory to break the oath and pay expiation because it is the lesser of the two evils. [Urdu]: It also states: If someone takes an oath to commit a sin, for example, says "I will not talk to my parents" or "I will kill so-and-so," then it is mandatory for him to break the oath (commit 'hanth') and give expiation, because this expiation is lesser in comparison to that sin. (T)

And the expiation is to free a slave, or to feed ten poor people average food, or to provide clothing that lasts more than three months and covers the entire body. If one is unable to do any of these, then he must fast for three consecutive days.

[Arabic]: In al-Durr al-Mukhtar: Its expiation is freeing a slave, or feeding ten poor people as in Zihar, or clothing them with what is suitable as average, which is useful for more than three months and covers most of the body. If one is unable to do all of them at the time of performance, he should fast for three consecutive days. (Summarized). [Urdu]: In Durr-e-Mukhtar, it is stated that its expiation is freeing a slave, or feeding ten poor people as is done in 'Zihar', or giving ten poor people average clothing that covers the general body and serves for at least three months. And if one is unable to perform these acts, then he should fast for three consecutive days. Summarized (T).

Intentionally taking a false oath to deceive Muslims—where the tongue swears an oath while the heart is resolved against it—is never permissible. It is completely contrary to the respect due to the pure name of Allah. Allah Almighty has condemned in the Great Quran those who make their oaths a shield. Expiation is ordained so that if an oath is broken accidentally, it can be rectified; it is not for one to rely on expiation and intentionally take false oaths, making them a shield for his acquittal. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and most perfect.

Problem 202: 7 Ramadan 1327 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid took an oath that "I will offer today's Zuhr prayer in congregation..."

Footnotes: 1. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Iman, Mujtabai Press Delhi, 1/290 2. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Iman, Mujtabai Press Delhi, 1/293 3. Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Iman, Mujtabai Press Delhi, 1/292-93

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी]: यदि शपथ टूट जाती है, तो उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) होता है और वह पाप को मिटा देता है, भले ही उसके साथ तौबा (क्षमा याचना) न की जाए। (सिराजिया, संक्षिप्त)। [उर्दू]: होने पर कफ़्फ़ारा होता है और वह कफ़्फ़ारा शपथ के पाप को खत्म कर देता है, भले ही वह उसके साथ तौबा भी न करे, (सिराजिया, संक्षिप्त)।

[अरबी]: इसमें यह भी है: यदि किसी ने पाप पर शपथ ली है जैसे कि माता-पिता से बात न करना या फलां को मारना, तो शपथ तोड़ना और कफ़्फ़ारा देना अनिवार्य है क्योंकि यह दो बुराइयों में से कमतर है। [उर्दू]: इसमें यह भी है कि यदि किसी ने पाप पर शपथ खाई, उदाहरण के लिए कहा "मैं माता-पिता से बात नहीं करूँगा" या "फलां को मार दूँगा", तो उस पर अनिवार्य (लाज़िम) है कि वह हन्थ करे (अर्थात शपथ तोड़ दे) और कफ़्फ़ारा दे, क्योंकि यह कफ़्फ़ारा उस पाप के मुक़ाबले में कमतर है। (त)

और कफ़्फ़ारा एक दास को आज़ाद करना या दस गरीबों को औसत भोजन देना या कपड़े देना है जो तीन महीने से अधिक चलें और पूरे शरीर को ढक लें, और यदि कुछ न हो सके तो लगातार तीन दिन रोज़े (उपवास) रखना है।

[अरबी]: 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: इसका कफ़्फ़ारा एक गर्दन आज़ाद करना है, या दस मिसकीनों (गरीबों) को भोजन देना जैसा कि 'ज़िहार' में होता है, या उन्हें मध्यम कपड़े देना जो शरीर के अधिकांश भाग को ढँक सकें और तीन महीने से अधिक चलें। यदि अदायगी के समय वह इनमें से किसी के लिए असमर्थ हो, तो वह लगातार तीन दिन रोज़े रखे। संक्षिप्त। [उर्दू]: दुर्र-ए-मुख्तार में है कि इसका कफ़्फ़ारा यह है कि गर्दन आज़ाद करे, या दस गरीबों को भोजन दे जैसा कि 'ज़िहार' में होता है, या दस गरीबों को औसत दर्जे का वस्त्र दे जो सामान्य शरीर को ढक ले और कम से कम तीन महीने तक काम दे। और यदि इन कार्यों की अदायगी से असमर्थ हो तो लगातार तीन दिन रोज़े रखे। संक्षिप्त (त)।

मुसलमानों को गुमराह करने के लिए जानबूझकर झूठी शपथ खाना—कि ज़बान से शपथ ली जाए और दिल में उसके खिलाफ इरादा हो—कभी भी जायज़ नहीं है। यह अल्लाह के पाक नाम के सम्मान के बिल्कुल खिलाफ है। अल्लाह तआला ने पवित्र कुरान में उन लोगों की निंदा की है जो अपनी शपथों को ढाल बनाते हैं। कफ़्फ़ारा इसलिए निर्धारित किया गया है कि यदि अनजाने में शपथ

टूट जाए तो यह उसका सुधार कर सके न कि इसलिए कि कोई कफ़्फ़ारे पर भरोसा करके जानबूझकर झूठी शपथ खाए और उसे अपनी बेगुनाही की ढाल बनाए। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे मज़बूत है।

मसला 202: 7 रमजान 1327 हिजरी धर्म गुरु (उलेमा-ए-दीन) इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने शपथ खाई कि "मैं आज ज़ुहर की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करूँगा..."

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल ईमान, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/290 2. दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल ईमान, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/293 3. दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल ईमान, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/292-93

पेज 499 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، ۱۳

[Arabic]: ان حنث وهي ای الکفارة ترفع الاثم وان لم توجد منه التوبة معها ای مع الکفارة، سراجیہ اھ ملخصًا۔ [Urdu]: ہونے پر کفارہ ہوتا ہے اور وہ کفارہ قسم کے گناہ کو ختم کر دیتا ہے اگرچہ اس کے ساتھ توبہ بھی نہ کرے، سراجیہ اھ ملخصاً۔

[Arabic]: وفیه ایضا من حلف علی معصیة کعدم الکلام مع ابویه او قتل فلان وجب الحنث والتکفیر لانه اھون الامرین ۲۔ [Urdu]: اس میں یہ بھی ہے اگر کسی نے گناہ پر قسم کھائی مثلاً کہا میں والدین سے بات نہ کروں گا یا فلاں کو قتل کروں گا، تو اس پر لازم ہے کہ وہ حنث کرے (یعنی قسم توڑ دے) اور کفارہ دے دے کیونکہ یہ کفارہ اس گناہ کے مقابلہ میں کم تر ہے۔ (ت)

اور کفارہ ایک غلام آزاد کرنا یا دس مسکینوں کو متوسط کھانا یا کپڑا دینا جو تین مہینہ سے زیادہ چلے اور سب بدن ڈھک لے، اور جو کچھ نہ ہوسکے تو متواتر تین روزے رکھنا ہے،

[Arabic]: في الدرالمختار و کفارته تحریر رقبة او اطعام عشرة مساکین کما فی الظهار اوکسوتهم بما یصلح للاوساط وینفع به فوق ثلثة اشهر ویستر عامة البدن فان عجز عنها کلها وقت الاداء صام ثلثة ایام ولاء ۳ اھ ملخصاً۔ [Urdu]: در مختار میں ہے کہ اس کا کفارہ یہ ہے کہ گردن آزاد کرے، یا دس مسکینوں کو کھانا دے جیسا کہ ظہار میں ہوتا ہے، یا دس مسکینوں کو درمیانہ لباس دے جو عام بدن کو ڈھانپ لے اور کم از کم تین ماہ تک وہ لباس کام دے۔ اور اگر ان امور کی ادائیگی سے عاجز ہو تو مسلسل تین دن روزے رکھے اھ ملخصاً (ت)

اور اپنی بریت کو مغالطہ مسلمین کے لئے قصداً جھوٹی قسم کھانا کہ زبان سے قسم کھانا اور دل میں اس کے خلاف پر عزم رکھنا ہو ہرگز جائز نہیں، اور احترام نام پاک الٰہی سے بالکل خلاف

ہے، حق سبحانہ وتعالیٰ نے قرآن عظیم میں ان لوگوں کی مذمت فرمائی جو قسموں کو اپنی سپر بناتے ہیں، کفارہ اس لئے مقرر ہوا ہے کہ اگر احیاناً حنث واقع ہو یہ اس کا مصلح ہو سکے نہ کہ یہ کفارہ پر تکیہ کر کے قصداً جھوٹی قسم کھائے اسے اپنی بریت کی ڈھال بنائے، واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۲۰۲: ۷ رمضان ۱۳۲۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے قسم کھائی کہ میں آج ظہر جماعت کے ساتھ ادا کروں گا

حواشی: ۱ الدرالمختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۹۰ ۲ الدرالمختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۹۳ ۳ الدرالمختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۹۳-۲۹۲

Fatawa Razawiyya Volume 13 | 13

[Question:] Zaid went to the mosque, but the Imam had already performed two rak'ats. In this case, was Zaid's oath fulfilled [to pray with the congregation] by joining the Imam or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Zaid's oath was not fulfilled because one who joins in two or even three rak'ats is not considered as having prayed with the congregation. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[Box Content:] Arabic: And similarly, one who catches one-third [of the prayer] is not considered as having prayed with the congregation according to the most apparent view. Urdu: The one who finds three rak'ahs in the congregation will not be considered as one who prayed with the congregation, according to the most apparent view. Arabic: And Imam al-Sarakhsi said: The rule for the majority is that of the whole, but this view was declared weak in al-Bahr. (1) Urdu: And Imam Sarakhsi said: The rule for the majority is like the whole, but this has been declared weak in al-Bahr. (T)

However, he will receive the reward for the congregation based on the principle of joining, which is a separate matter. In fact, it is proven from Hadith that whoever leaves their house with the intention of joining the congregation and the congregation has already finished, they have already attained the reward (their reward is due from Allah). (Yes, reward and recompense are obtained from Allah Almighty. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 203: Questioned by Shaykh Ashiq Ali, servant of Bibi Sahiba Mosque, Bareilly city. 4 Jumadi al-Awwal 1313 AH.

[Question:] What do the scholars of religion say regarding this matter: if someone, in anger, took an oath saying, "I will not stay in Bareilly," and then after the anger subsided, he regretted it, is there any strategy such that he stays in Bareilly and does not break his oath (become hanith)? Or is there no way except to pay the expiation (kaffarah)? Explain and be rewarded.

The Answer: If he did not immediately begin the necessary arrangements and planning required for leaving Bareilly and changing residence as soon as those words left his tongue, or did not make a genuine ordinary effort, or delayed leaving once arrangements were ready, then he has broken his oath (become hanith) and expiation is mandatory. Now, whether he leaves or not, he must pay the expiation,

and leaving is no longer necessary. But if from that very moment he is truthfully occupied in planning and shows no such laziness that would be considered laziness in such a task according to custom, then as long as he is in the process of preparing, he will not break his oath, even if some days pass. Yes, he must leave as soon as the arrangements are ready. There is no such way that he can stay in Bareilly of his own accord [without breaking the oath].

---

(1) Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Attaining the Obligatory Prayer, Mujtabai Press, Delhi, 1/100.

[प्रश्न:] ज़ैद मस्जिद गया लेकिन इमाम दो रकअत पढ़ चुके थे। क्या इस स्थिति में इमाम के साथ शामिल होने से ज़ैद की कसम पूरी हुई या नहीं? बयान करें, सवाब मिलेगा।

उत्तर: ज़ैद की कसम पूरी नहीं हुई क्योंकि दो रकअत या तीन रकअत पाने वाला जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाला नहीं कहलाता। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[बॉक्स की सामग्री:] अरबी: इसी तरह, एक-तिहाई [नमाज़] पाने वाला सबसे स्पष्ट मत के अनुसार जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाला नहीं माना जाएगा। उर्दू: जमाअत में तीन रकअतें पाने वाला जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाला नहीं करार पाएगा, सबसे स्पष्ट कथन के अनुसार। अरबी: और इमाम सरख़सी ने कहा: बहुमत का नियम पूरे का नियम होता है, लेकिन 'अल-बहर' में इसे कमज़ोर करार दिया गया है। (1) उर्दू: और इमाम सरख़सी ने फ़रमाया: अक्सर का हुक्म कुल वाला होता है, लेकिन इसे बहर में ज़ईफ़ (कमज़ोर) क़रार दिया गया है। (त)

हाँ, जमाअत में शामिल होने के नियम के आधार पर उसे सवाब मिलेगा, वह अलग बात है। बल्कि हदीस से साबित है कि जो घर से जमाअत के इरादे से निकले और जमाअत हो चुकी हो, उसने सवाब पा लिया (उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे है)। (हाँ, अजर और सवाब अल्लाह तआला से पाएगा। त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 203: मुस्तौफ़ा शेख आशिक अली, ख़ादिम मस्जिद बीबी साहिबा, शहर बरेली। 4 जमादी-उल-अव्वल 1313 हिजरी।

[प्रश्न:] उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि यदि किसी ने गुस्से में कसम खा ली कि 'मैं बरेली में ही नहीं रहूँगा', फिर गुस्सा ठंडा होने के बाद उसे पछतावा हुआ, तो क्या कोई ऐसी तदबीर है कि वह बरेली में रहे और उसकी कसम न टूटे (हानिस न हो)? या कफ़्फ़ारा अदा करने के अलावा कोई और सूरत नहीं? बयान करें, सवाब मिलेगा।

उत्तर: बरेली से हिजरत करने के लिए जिन सामान और इंतज़ाम की ज़रूरत थी, अगर उस व्यक्ति ने कसम खाने के तुरंत बाद उन्हें शुरू नहीं किया या उसमें कोई वास्तविक कोशिश नहीं की, या सामान तैयार होने के बाद निकलने में देरी की, तो उसकी कसम टूट गई (हानिस हो गया) और कफ़्फ़ारा लाज़िम हो गया। अब चाहे वह निकले या न निकले, उसे कफ़्फ़ारा देना होगा और निकलना ज़रूरी

नहीं रहा। लेकिन अगर वह उसी समय से सच्चे दिल से इंतज़ाम में लगा हुआ है और उसमें ऐसी सुस्ती नहीं दिखाई जिसे आम तौर पर सुस्ती कहा जाए, तो जब तक वह सामान मुहैया करने की प्रक्रिया में है, उसकी कसम नहीं टूटेगी, चाहे कुछ दिन गुज़र जाएँ। हाँ, सामान दुरुस्त होते ही निकलना होगा। ऐसी कोई सूरत नहीं है कि वह अपनी मर्ज़ी से बरेली में टिका रहे।

---

(1) अल-दुर अल-मुख्तार, बाब इदराक अल-फ़रीदा, मत्तबा मुजतबाई दिल्ली, 1/100।

पेज 500/688

اور مسجد کو گیا مگر امام دور کعت پڑھ چکا تھا اور رکعت سے امام کے ساتھ اس صورت میں زید کی قسم پوری ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: زید کی قسم پوری نہ ہوئی کہ دور کعت بلکہ تین رکعت پانے والا جماعت کے ساتھ نماز پڑھنے والا نہیں، در مختار میں ہے:

وکذا مدرك الثلث لایکون مصلیاً بجماعة علی الاظهر | جماعت میں تین رکعتیں پانے والا جماعت کے ساتھ نماز پڑھنے والا نہ قرار پائے گا، اظہر قول کے مطابق وقال السرخسی للاکثر حکم الکل وضعفه فی البحر ۱ | اور امام سرخسی نے فرمایا: اکثر کا حکم کل والا ہوتا ہے، لیکن اس کو بحر میں ضعیف قرار دیا ہے۔ (ت)

ہاں ثواب جماعت کا قاعدہ میں شامل ہونے پر بھی پائے گا وہ جدا بات ہے بلکہ حدیث سے ثابت ہے کہ جو گھر سے بارادہ جماعت چلے اور جماعت ہو چکی اس نے ثواب پالیا فقد وقع اجرہ علی اللہ (ہاں اجر و ثواب اللہ تعالٰی سے پائے گا۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۳: مسئولہ شیخ عاشق علی خادم مسجد بی بی صاحبہ شہر بریلی ۴ جمادی الاول ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی نے غصہ میں قسم کھالی کہ میں بریلی ہی میں نہ رہوں گا، پھر غصہ دور ہو جانے کے بعد وہ پچھتایا، تو کوئی تدبیر ایسی ہے کہ بریلی میں رہے اور حانث نہ ہو یا سوا کفارہ ادا کرنے کے کوئی صورت نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: بریلی سے ترک سکونت کر کے نکل جانے کے لئے جس سامان وتدبیر ضروری کی اسے حاجت واقعہ تھی اگر اس کلمہ کے زبان سے نکلتے ہی اس نے شروع نہ کر دی یا اس میں معمولی

واقعی کوشش نہ کی یا سامان مہیا ہو جانے پر پھر نکلنے میں ڈھیل کی تو حانث ہو گیا اور کفارہ لازم، اب چاہے نکلے یا نہ نکلے کفارہ دینا ہوگا اور نکلنا کچھ ضرور نہ رہا، اور اگر اسی وقت سے سچے طور پر تدبیر میں مشغول ہے اور اس میں ایسی سستی نہ کی جسے عرف میں ایسے کام میں سستی کہیں تو جب تک سامان مہیا کرنے میں رہے گا حانث نہ ہو گا اگرچہ کچھ دن گزر جائیں، ہاں سامان درست ہوتے ہی نکل جانا ہو گا، ایسی کوئی صورت نہیں کہ باختیار خود بریلی میں رہے

---

۱ الدر المختار باب ادراک الفریضة مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۰۰

And he will not have to pay kaffarah (expiation). However, if he was preparing to leave but someone imprisoned him and did not let him go, he will not be considered to have broken his oath (hanith) as long as this compulsion exists, even if a lifetime passes. Similarly, if he has no place to stay other than Bareilly and it is not possible for him to live elsewhere through his personal wealth, craft, or trade, he will still be considered compelled as long as such a state remains.

Arabic Text

In Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar, persistence in riding, wearing, and residing is like initiating [them]. Thus, he breaks his oath by staying for an hour[1]. In Radd al-Muhtar: i.e., if he swore not to ride this animal while he was riding it, or not to wear this garment while he was wearing it, or not to reside in this house while he was residing in it, and he stayed for an hour, he breaks his oath. But if he dismounted, or removed the garment, or started moving at that moment, he does not break his oath[2].

Urdu Translation

In Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar, it is stated that persisting in wearing clothes, riding, and residing, i.e., continuing it after the oath, is like the start of the action. Therefore, if it is kept even for a moment after the oath, the oath will break. In Radd al-Muhtar, it is: i.e., if an oath was taken that I will not ride this animal while being mounted on it, or I will not wear this cloth while it was being worn, or I will not reside in this house while residing in it, then if it remained in this state for a moment after the oath, the oath will break. And if he immediately got off the ride, or took off the cloth, or started moving from the house, he will not be oath-broken (hanith). (T)

It is also in the same [book]:

Arabic Text

He [the author] said in al-Fath: Then he only breaks the oath by delaying for an hour if it was possible for him to move during it. Otherwise, if it was due to an excuse like fear of a thief, or prevention by an authority, or lack of a place to move to, or the door was locked upon him and he could not open it, he does

Urdu Translation

It is said in al-Fath that then if he delayed for a while when it was possible for him to move immediately, he would become oath-broken. Otherwise, if it was not immediately possible because there was fear of theft there, or there was a hindrance from an authoritative ruler, or there was no other house to move to, or

Arabic Text

not break the oath. That time is considered as non-existent due to the excuse. If he could have exited by destroying part of the wall and did not destroy it, he does not break the oath because what is considered is the ability to exit.

Urdu Translation

the other house was locked and he was not able to open it, he would not be oath-broken, because in moving immediately, this time will also be counted, and due to the excuse, this interval will be declared as non-existent. And if there...

[1] Ad-Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Kitab al-Iman, Mujtabai Press, Delhi, 1/79. [2] Radd al-Muhtar, Kitab al-Iman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/7.

और कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं देना पड़ेगा, अलबत्ता अगर वह निकलने की तैयारी में व्यस्त था कि किसी ने कैद कर लिया और निकलने न दिया तो जब तक यह मजबूरी रहेगी, वह हानिथ (शपथ भंग करने वाला) नहीं होगा, चाहे पूरी उम्र बीत जाए। इसी तरह, अगर बरेली के अलावा कहीं उसके रहने का ठिकाना नहीं है और न ही अपने निजी धन, शिल्प या व्यापार के माध्यम से दूसरी जगह रहना संभव है, तो भी उसे मजबूर समझा जाएगा जब तक कि ऐसी स्थिति बनी रहे।

अरबी पाठ

तन्वीरुल अबसार और दुर्रे मुख्तार में है कि सवारी करने, कपड़े पहनने और रहने को जारी रखना इन कार्यों को शुरू करने के समान है। इसलिए शपथ के बाद एक क्षण (एक घड़ी)[1] रहने पर शपथ टूट जाएगी। रद्दुल मुहतार में है: अर्थात् यदि उसने शपथ ली कि मैं इस जानवर पर सवारी नहीं करूँगा जबकि वह उस पर सवार था, या यह कपड़ा नहीं पहनूँगा जबकि उसने वह पहना हुआ था, या इस घर में नहीं रहूँगा जबकि वह उसमें रह रहा था; और वह एक घड़ी उसी स्थिति में रहा तो शपथ टूट जाएगी। लेकिन यदि वह तुरंत सवारी से उतर गया या कपड़ा उतार दिया, या उसी क्षण घर से स्थानांतरित होना शुरू कर दिया, तो वह हानिथ नहीं होगा[2]।

उर्दू अनुवाद

तन्वीरुल अबसार और दुर्रे मुख्तार में है कि लिबास (कपड़े), सवारी और रिहायश (रहने) पर निरंतरता करना, यानी कसम के बाद उसे जारी रखना काम शुरू करने की तरह है। इसलिए कसम के बाद एक घड़ी भी बाकी रहने पर कसम टूट जाएगी। रद्दुल मुहतार में है: यानी अगर कसम खाई कि मैं इस जानवर पर सवारी नहीं करूँगा जबकि उस पर सवार था, या यह कपड़ा नहीं पहनूँगा जबकि वह पहने हुए था, या इस घर में रिहायश नहीं करूँगा जबकि उसमें रिहायश रखे हुए था, तो कसम के बाद एक घड़ी भी इस हाल पर बाकी रहा तो कसम टूट जाएगी, और अगर फौरन सवारी से उतर गया या कपड़ा उतार दिया, या मकान से मुंतकिल (स्थानांतरित) होना शुरू हो गया तो हानिथ न होगा। (त)

इसी में है:

अरबी पाठ

फतह में कहा गया है: फिर वह केवल एक घड़ी की देरी से हानिथ होगा यदि उसके लिए उस

उर्दू अनुवाद

फ़तह में फ़रमाया कि फिर अगर कुछ देर कर दी जबकि उसको फौरन मुंतकिल (स्थानांतरित)

अरबी पाठ

दौरान स्थानांतरित होना संभव था। अन्यथा, यदि कोई बहाना था जैसे चोर का डर, या किसी अधिकारी द्वारा रोका जाना, या स्थानांतरित होने के लिए जगह का न होना, या उस पर दरवाजा बंद था जिसे वह खोलने में असमर्थ था, तो वह हानिथ नहीं होगा। बहाने के कारण उस समय को शून्य माना जाएगा। यदि वह दीवार का एक हिस्सा ढहाकर बाहर निकलने में सक्षम था लेकिन उसने नहीं किया, तो भी वह हानिथ नहीं होगा क्योंकि जो महत्वपूर्ण है वह बाहर निकलने की क्षमता है।

उर्दू अनुवाद

होना मुमकिन था तो हानिथ हो जाएगा, वरना अगर फौरन मुमकिन न था कि वहां चोरी का डर था, या अख्तियार वाले हाकिम की तरफ से रुकावट थी, या मुंतकिल होने को दूसरा मकान न था, या दूसरे मकान को ताला पड़ा हुआ था जिसे खोलने पर कादिर न हुआ तो हानिथ न होगा, क्योंकि फौरन मुंतकिल होने में यह वक्त भी शुमार होगा, और उज्र (बहाने) की वजह से इस वक्फ़े(अंतराल) को कल-अदम (शून्य) करार दिया जाएगा, और अगर वहां...

[1] अद-दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, किताबुल ईमान, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/79। [2] रद्दुल मुहतार, किताबुल ईमान, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/7।

اور کفارہ دینا نہ پڑے ، البتہ اگر یہ تہیہ میں مشغول تھا کہ کسی نے قید کرلیا اور نکلنے نہ دیا تو جب تک یہ مجبوری رہے گی حانث نہ ہوگا اگر چہ عمر گزر جائے ، یوں ہی اگر بریلی کے سوا کہیں اس کے رہنے کا ٹھکانا نہیں نہ اپنے ذاتی مال یا حرفت یا تجارت کے ذریعہ سے دوسری جگہ بسر ممکن ہے تو بھی مجبور سمجھا جائے گا جب تک حالت ایسی باقی رہے۔

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

تنویر الابصار اور در مختار میں ہے کہ لباس اور سواری اور

فی تنویر الابصار والدرالمختار دوام الرکوب و اللبس والسکنی کالانشاء فیحنث بمکثہ ساعۃ۱ فی رد المحتار یعنی لو حلف لا یرکب ھذہ الدابۃ وھو راکبھا اولا یلبس ھذا الثوب وھو لابسہ اولا یسکن ھذہ الدار و ھو ساکنھا فمکث ساعۃ حنث فلو نزل او نزع الثوب او اخذ فی النقلۃ من ساعتہ لا یحنث۔۲

سکنی پر مداومت کرنا یعنی قسم کے بعد اس کو جاری رکھنا ابتداء عمل کی طرح ہے، لہذا قسم کے بعد ایک گھڑی بھی باقی رکھنے پر قسم ٹوٹ جائے گی ، ردالمحتار میں ہے : یعنی اگر قسم کھائی کہ میں اس جانور پر سواری نہ کروں گا جبکہ اس پر سوار تھا یا یہ کپڑا نہ پہنوں گا جبکہ وہ پہنے ہوئے تھا ، یا اس گھر میں رہائش نہ کروں گا جبکہ اس میں رہائش پذیر تھا ، تو قسم کے بعد ایک گھڑی بھی اس حال پر باقی رہا تو قسم ٹوٹ جائے گی ، اور اگر فوراً سواری سے اتر گیا یا کپڑا اتار دیا ، یا مکان سے منتقل ہونا شروع ہو گیا تو حانث نہ ہوگا۔ (ت)

اسی میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال فی الفتح ثم انما یحنث بتأخیر ساعة اذا امکنه النقل فیها والا بان کان لعذر خوف اللص او منع ذی سلطان او عدم موضع ینتقل الیه او اغلق علیه الباب فلم یستطع فتحه لا یحنث ویلحق ذلك الوقت بالعدم للعذر اه ولو قدر علی الخروج بهدم بعض الحائط ولم یهدم لم یحنث لان المعتبر القدرة علی الخروج	فتح میں فرمایا کہ پھر اگر کچھ دیر کر دی جبکہ اس کو فوراً منتقل ہونا ممکن تھا تو حانث ہو جائے گا، ورنہ اگر فوراً ممکن نہ تھا کہ وہاں چوری کا ڈر تھا، یا اختیار والے حاکم کی طرف سے رکاوٹ تھی، یا منتقل ہونے کو دوسرا مکان نہ تھا ، یا دوسرے مکان کو تالا پڑا ہوا تھا جس کو کھولنے پر قادر نہ ہوا تو حانث نہ ہوگا، کیونکہ فوراً منتقل ہونے میں یہ وقت بھی شمار ہوگا، اور عذر کی وجہ سے اس وقفہ کو کالعدم قرار دیا جائے گا، اور اگر وہاں...

۱ الدرالمختار شرح تنویر الابصار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۹ ۲ ردالمحتار کتاب الایمان داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/۷

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Arabic Box Text]: From the customary manner among people, as mentioned in Az-Zahiriyya and Al-Bahr [end of quote, summarized]. [Urdu Translation]: Even if one has the ability to exit immediately by breaking down a wall, the oath will not be broken, because exiting in a recognized/customary manner is what is considered, as stated in Az-Zahiriyya and Al-Bahr. (T)

In the same context, under the statement in Durr al-Mukhtar: "If exiting is possible or one becomes occupied in searching for another house or a mount, even if several days pass, one does not violate the oath" (meaning if exiting is possible but he gets busy searching for another residence or a means of transport to move, and several days pass in this search, even then he will not be a violator of the oath. T) It is stated:

[Arabic Box Text]: This is the correct view because searching for a home is part of the act of moving, so the duration of the search is exempted as long as he does not neglect the search. [Fath, end of quote]. And Allah Almighty knows best. [Urdu Translation]: This is correct, because searching for another house is an act of moving; therefore, the search duration will not be counted provided that there is no negligence in the search. Fath, end of quote. And Allah (Glorified and Exalted) knows best. (T)

Issue 202: From Sitapur, Thamsinganj, the residence of Hazrat Syed Sadiq Miyan Sahib, sent by Syed Irtiza Hussain Sahib on 23rd Jumada al-Ula 1316 AH. Zaid took an oath saying, "I will join the Maghrib prayer with the Imam in half of it," while he was performing ablution. Now he joined in the third rak'ah. Has he violated his oath or not? And did he get half the prayer or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: He will be a violator of his oath. It is evident that one rak'ah is one-third of three, not half. The oath would have been fulfilled if he had caught two rak'ahs, as two-thirds, although more than half, is not prevented by the excess.

[Arabic Box Text]: In this way, fulfilling the oath is conceivable, so the oath is contracted even though there is no legally recognized 'half' for a three-rak'ah prayer. Yes, if he swore to catch exactly half, no less and no more, then it is apparent... [Urdu Translation]: So in this way, fulfilling the oath can be envisioned; therefore, the oath will be established even though legally there is no 'half' for a three-rak'ah prayer. Yes, if in the oath he said, "I will get half of this prayer, neither less nor more," then the apparent view is that completely...

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Iman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/77-78. 2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Iman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/78.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी बॉक्स पाठ]: लोगों के बीच प्रचलित तरीके से, जैसा कि अज़-ज़हीरिया और अल-बहर में है [उद्धरण समाप्त, संक्षिप्त]। [उर्दू अनुवाद]: यदि दीवार तोड़कर तुरंत बाहर निकलने की शक्ति हो, तो भी शपथ नहीं टूटेगी, क्योंकि बाहर निकलने के लिए ज्ञात/प्रचलित तरीके से निकलना ही मान्य है, जैसा कि ज़हीरिया और बहर में है। (त)

इसी संदर्भ में, दुर्रे मुख्तार के इस कथन के तहत: "यदि निकलना संभव हो, या वह दूसरा घर या सवारी खोजने में व्यस्त हो जाए, भले ही कई दिन बीत जाएं, वह शपथ नहीं तोड़ेगा" (यानी अगर निकलना मुमकिन हो लेकिन वह दूसरा ठिकाना या आवागमन के साधन की तलाश में लग जाए और कई दिन इस तलाश में गुज़र जाएं, तो भी वह शपथ भंग करने वाला नहीं होगा। त) फ़रमाया गया:

[अरबी बॉक्स पाठ]: यही सही विचार है क्योंकि घर खोजना स्थानांतरित होने की प्रक्रिया का हिस्सा है, इसलिए खोजने की अवधि को तब तक छूट दी जाती है जब तक वह खोज में लापरवाही न करे। [फ़तह, उद्धरण समाप्त]। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। [उर्दू अनुवाद]: यही सही है, क्योंकि दूसरा घर तलाश करना स्थानांतरित होने का ही काम है, इसलिए तलाश की अवधि नहीं गिनी जाएगी बशर्ते तलाश करने में सुस्ती न की जाए। फ़तह, उद्धरण समाप्त। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 202: सीतापुर तामसिनगंज से, हज़रत सैयद सादिक मियाँ साहब के घर से, सैयद इर्तज़ा हुसैन साहब द्वारा प्रेषित, 23 जमादी अल-उला 1316 हिजरी। ज़ैद ने कसम खाई कि "मैं मग़रिब की नमाज़ में इमाम के साथ आधी में शरीक होऊँगा", जबकि वह वज़ू कर रहा था। अब वह तीसरी रक़अत में शरीक हुआ। क्या वह शपथ भंग करने वाला (हानीथ) हो गया या नहीं? और क्या उसे आधी नमाज़ मिली या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: वह शपथ भंग करने वाला होगा। यह स्पष्ट है कि एक रक़अत तीन का एक तिहाई है, न कि आधा। कसम तब पूरी होती जब वह दो रुकू पा लेता, क्योंकि दो-तिहाई, हालांकि आधे से अधिक है, लेकिन अधिकता रुकावट नहीं है।

[अरबी बॉक्स पाठ]: इस तरह शपथ पूरी होना कल्पनीय है, इसलिए शपथ स्थापित मानी जाएगी भले ही शरीयत में तीन रक़अत वाली नमाज़ का आधा नहीं होता। हाँ, यदि कसम में यह कहा गया होता कि "मैं इस नमाज़ का ठीक आधा पाऊंगा, न उससे कम न ज़्यादा," तो ज़ाहिर यह है कि... [उर्दू

अनुवाद]: तो इस तरह शपथ को पूरा करना कल्पनीय हो सकता है, इसलिए शपथ वैध मानी जाएगी भले ही शरीयत के अनुसार तीन रक़अत वाली नमाज़ का कोई 'आधा' नहीं होता। हाँ, अगर कसम में उसने यह कहा हो कि "मैं इस नमाज़ का आधा पाऊँगा, न उससे कम न ज़्यादा," तो ज़ाहिर यह है कि पूरी तरह...

पाद लेख: 1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-ईमान, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/77-78. 2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-ईमान, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/78.

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[Arabic Box]: من الوجه المعهودعند الناس کذافی الظهیریة بحر اھ ملتقطًا۔ [Urdu Translation]: سے دیوار توڑ کر فوراً نکلنے پر قدرت ہو تو بھی قسم نہ ٹوٹے گی، کیونکہ نکلنے کے لئے معروف طریقے پر نکلنا معتبر ہے، جیسا کہ ظہیریة میں ہے، بحر، اھ ملتقطاً (ت)

اسی میں زیر قول در مختار لو یمکنه الخروج او اشتغل بطلب دار اخری اودابة وان بقی ایاما لم یحنث (اگر نکلنا ممکن ہو یا وہ دوسرا مکان تلاش کرنے یا منتقل ہونے کے لئے سواری کی تلاش میں مصروف ہو گیا اور کئی روز اس تلاش میں گزر گئے تو بھی حانث نہ ہوگا) فرمایا:

[Arabic Box]: هو الصحیح لان طلب المنزل من عمل النقلة فصار مدة الطلب مستثنی اذالم یفرط فی الطلب فتح اه واللہ تعالی اعلم۔ [Urdu Translation]: یہی صحیح ہے، کیونکہ دوسرا مکان تلاش کرنا یہ منتقل ہونے کا عمل ہے لہذا تلاش کی مدت شمار نہ ہوگی بشرطیکہ تلاش کرنے میں کوتاہی نہ کرے، فتح، اھ واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۰۲: از سیتا پور تامسن گنج دولت کدہ حضرت سید صادق میاں صاحب مرسلہ سید ارتضا حسین صاحب ۲۳ جمادی الاول ۱۳۱۶ھ زید نے قسم کھائی کہ میں مغرب کی نماز میں امام کے ساتھ آدھی میں شریک ہوں گا، اور وہ وضو کر رہا تھا، اب وہ تیسری رکعت میں شریک ہوا، آیا وہ حانث ہو گیا یا نہیں؟ اور آیا اس کو آدھی نماز ملی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: حانث ہوگا، ظاہر ہے کہ ایک رکعت تین کی تہائی ہے نہ کہ آدھی۔ قسم پوری اس وقت ہوتی کہ دور کوع پاتا کہ دو تہائی اگرچہ نصف سے زائد ہے مگر زیادت مانع بر نہیں۔

[Arabic Box]: وبهذا الوجه كان البرمتصورافانعقدت اليمين وان لم يكن للصلوة الثلاثة نصف معتبر فی الشرع نعم ان حلف ليدركن نصفها لا اقل ولا زيد فالظاهر [Urdu Translation]: تو اس طرح قسم کو پورا کرنا متصور ہوسکتا ہے لہذا قسم قرار پائے گی اگر چہ شرعاً تین رکعت والی نماز کا نصف نہیں ہوتا، ہاں اگر قسم میں یوں کہا ہو میں اس نماز کا نصف پاؤں گا نہ اس سے کم نہ زیادہ، تو پھر ظاہر یہ ہے کہ بالکل

1 ردالمحتار کتاب الایمان دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۷۸-۷۷ 2 ردالمحتار کتاب الایمان دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۷۸

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

[Top Section] He will not be considered a breaker of the oath at all, because fulfilling the oath in this scenario is inconceivable, and it is a condition for the oath to be valid that its fulfillment must be conceivable, as jurists have clearly stated in the issue of the 'ewer' (kuzah) and others. This is what appeared to me, and Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 205: From Bengal, Zain-ul-Abidin Serajganj. If someone gives another person an oath by Allah and His Messenger saying, "If you do this work, then the oath of Allah and His Messenger is upon you," and that second person, disregarding the oath of Allah and His Messenger, persists in doing the work he was forbidden from out of defiance, what would be the Shar'i ruling on that person and what punishment would apply? Explain and be rewarded. (T)

[The Answer] Giving an oath to another person does not make the oath binding on them unless they accept the oath upon themselves. Therefore, in the aforementioned case, the oath was not binding on the second person. So, if he does not accept it, there will be no blame on him. This is because it is stated in the noble Hadith that Hazrat Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) interpreted a dream, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) informed him that some parts of the interpretation were correct and some were wrong. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said this to comfort the heart of Hazrat Siddiq (may Allah be pleased with him) and did not openly point out the error. Upon this, Hazrat Siddiq (may Allah be pleased with him) gave an oath to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that...

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Marwiyat Ibn Abbas, Dar al-Fikr, Beirut. Page 503 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[शीर्ष खंड] वह शपथ तोड़ने वाला नहीं माना जाएगा, क्योंकि इस स्थिति में शपथ पूरी होना अकल्पनीय है, और शपथ के मान्य होने की शर्त यह है कि उसका पूरा होना कल्पनीय हो, जैसा कि न्यायविदों (फ़ुकहा) ने लोटे (कूज़ा) के मसले और अन्य में स्पष्ट रूप से बताया है। यह वही है जो मुझे स्पष्ट हुआ है, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 205: बंगाल से, ज़ैन-उल-आबिदीन सिराजगंज। यदि कोई व्यक्ति दूसरे को अल्लाह और रसूल की शपथ देते हुए कहे, "अगर तुमने यह काम किया तो तुम पर अल्लाह और रसूल की शपथ है", और वह दूसरा व्यक्ति अल्लाह और रसूल की शपथ की परवाह न करते हुए उस काम को करने पर अड़ा रहे जिससे उसे मना किया गया था, तो उस व्यक्ति पर शरीयत का क्या हुक्म होगा और उस पर क्या सज़ा होगी? बयान करें और पुण्य पायें। (त)

[उत्तर] दूसरे को शपथ देना उस पर तब तक शपथ अनिवार्य नहीं करता जब तक कि वह स्वयं उस शपथ को स्वीकार न कर ले। इसलिए, उपर्युक्त मामले में, दूसरे व्यक्ति पर शपथ अनिवार्य नहीं हुई। इसलिए यदि वह इसे स्वीकार नहीं करता है, तो उस पर कोई दोष नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि हदीस शरीफ में उल्लेख है कि हज़रत सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक सपने की व्याख्या की, और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन्हें बताया कि व्याख्या का कुछ हिस्सा सही है और कुछ गलत। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बात हज़रत सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) का दिल रखने (तालीफ-ए-कल्बी) के लिए कही कि गलती को प्रकट नहीं किया। इस पर हज़रत सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शपथ दी कि...

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, मरवियात इब्न अब्बास, दार अल-फ़िक्र, बेरुत। पेज 503 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[اوپری حصہ] انه لا یحنث اصلا لعدم تصور البر فیما یظهر وهو شرط الانعقاد کما قد صرحوا به في مسئلة الکوز وغیره هذا ما ظهر لی واللہ تعالی اعلم۔ حانث نہ ہوگا، کیونکہ اس صورت میں قسم کا پورا ہونا ممکن نہیں ، یہی ظاہر ہو رہا ہے کیونکہ قسم منعقد ہونے کے لئے ، اس کا پورا ہونا متصور ہو، یہ شرط ہے ، جیسا کہ فقہاء نے کوزے کے مسئلہ میں تصریح فرمائی ہے۔ یہ ہے جو مجھے ظاہر معلوم ہوا واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

مسئلہ ۲۰۵: از بنگالہ زین العابدین سراج گنج ۔ کسے شخص را بامر شرعی سوگند خدا و رسول داد است کہ اگر چنیں کار خواہی کرد بر تو سوگند خدا و رسول است آنکس سوگند خدا و رسول در حساب نیاوردہ ہر کارے از و منع کردہ بود از راہ سرکشی آں کار کرد شرعاً بر آنکس چہ حکم صادر آید و تعزیرش در پیش آید۔ بینوا توجروا ۔ اگر کوئی شخص دوسرے کو خدا اور رسول کی قسم دیتے ہوئے یوں کہے اگر تو نے یہ کام کیا تو تجھے اللہ ورسول کی قسم ہے ، تو وہ دوسرا شخص اس قسم کی پرواہ نہ کرتے ہوئے جس کام سے منع کیا تھا اس کو کرنے پر بضد رہے تو اس شخص پر شرعاً کیا حکم ہوگا اور اس پر کیا تعزیر ہو گی۔ بینوا توجروا۔ (ت)

الجواب: سوگند بدادن کسے بر دیگرے لازم نمی شود بے آنکہ دیگر سوگند بر خود گیرد پذیرد پس در قبول نکردنش بر آں الزامی نیست ففی الحدیث ان الصدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ عبر رؤیا فاخبرہ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انہ اصاب بعضاً واخطأ بعضاً تألیفاً للصدیق رضی اللہ تعالٰی عنہ ان نجھرہ واقسم علیہ صلی اللہ تعالٰی وسلم فقال النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا تقسم ۱۔ دوسرے کو قسم دینے سے دوسرے کو اس وقت تک قسم لازم نہ ہوگی جب تک وہ خود قسم نہ اٹھائے لہذا مذکورہ صورت میں دوسرے شخص پر قسم لازم نہ ہوئی اس لئے اگر وہ قبول نہ کرے تو اس پر

الزام نہ ہوگا، اس لئے کہ حدیث شریف میں ہے کہ حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک خواب کی تعبیر بیان کی تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے حضرت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بتایا کہ یہ تعبیر کچھ درست ہے اور کچھ غلط ہے، یہ بات حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے حضرت صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تالیف قلبی کے طور پر فرمائی کہ خطا کو ظاہر نہ فرمایا۔ اس پر حضرت صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام کو قسم دی کہ---

۱ مسند احمد بن حنبل مرویات ابن عباس دار الفکر بیروت Page 503 of 688

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

"In this is a clear evidence for what we said, and the scholars have explicitly stated this issue—And Allah knows best. You should tell (what is wrong and what is right), so the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Do not swear an oath. In this Hadith, there is clear evidence for our statement, and the noble scholars have also mentioned the issue in the same way. And Allah Almighty knows best (T)."

Issue 206: From Kareli, District Bareilly, sent by Molvi Inam-ul-Haq Sahib. What do the scholars of religion say regarding this matter: Four partners bought an orchard crop and a dispute arose over the shares. One of the partners swore an oath, "If I stay in this orchard, I will commit adultery with my mother and daughter," and he went to his home. Eventually, two men forcibly brought him back to the same orchard and kept him there for the night as well. Action was taken contrary to the oath, but it was done by force. In the morning, after making his decision, he went back home. People have expelled him from their community. Now, what punishment (Ta'zir) should there be for this person who swore the oath? Or should there be none? Explain and be rewarded.

The Answer: That impure and absurd oath is absolutely meaningless. People brought him to the orchard after the oath and kept him for the night; because of this, no punishment is due on the one who swore the oath, nor is he deserving of being expelled from the community on this basis. And Allah Almighty knows best.

Issue 207 to 209: 4 Dhu al-Qi'dah 1322 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A group took an oath individually among themselves to be regular in prayers and to follow the rules attached herewith. Now, the members of that group want the rule regarding fines to be abolished, and they should not be guilty of a false oath either, and the prayer rules should also be amended. What could be the way so that a false oath is not incurred, the prayer fine is stopped, and the prayer rules are amended? Question 2: If a fine is fixed as a warning for missing prayers or for making them up late, is it against Sharia? Question 3: If the prayer fine is against the noble Sharia and the oath was taken inadvertently, was that oath valid or invalid, and will they be sinners for breaking it or not?

Rules Regarding Adherence to Prayer (1) If any member does not even offer the makeup (Qada) for any prayer, then from 1st November 1904, for each such time...

"इसमें हमारी कही गई बात का स्पष्ट प्रमाण है और विद्वानों ने इस मसले को स्पष्ट किया है—और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। आप बताएं(क्या गलत है और क्या सही), तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: कसम मत खाओ। तो इस हदीस में हमारे बयान पर स्पष्ट प्रमाण है, और उलेमा-ए-किराम ने भी इसी तरह मसला बयान किया है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है (त)"

मसला २०६: करीली जिला बरेली से, प्रेषक मौलवी इनामुल हक साहब। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि चार साझेदारों ने बाग की फसल खरीदी और हिस्सों के बंटवारे पर झगड़ा हो गया। उन साझेदारों में से एक ने कसम खाई कि अगर मैं इस बाग में रहूँ तो अपनी माँ और बेटी से ज़िना (व्यभिचार) करूँऔर अपने घर चला गया। अंततः दो आदमी उसे ज़बरदस्ती उसी बाग में लाए और रात को भी रखा। कसम के खिलाफ काम हुआ लेकिन ज़बरदस्ती हुआ। सुबह अपना फैसला करके वह घर चला गया। लोगों ने उसे अपनी बिरादरी से बाहर निकाल दिया है। अब इस कसम खाने वाले पर क्या ताज़ीर (दंड) होनी चाहिए? या नहीं होनी चाहिए? बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: वह नापाक और बेतुकी कसम पूरी तरह से व्यर्थ (निरर्थक) है। लोग कसम के बाद उसे बाग में लाए और रात भर रखा, इससे कसम खाने वाले पर कोई ताज़ीर नहीं आई और न ही वह इस आधार पर बिरादरी से निकाले जाने के योग्य है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २०७ से २०९: ४ ज़िलकादा १३२२ हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक समूह ने आपस में व्यक्तिगत रूप से नमाज़ की पाबंदी और उन नियमों की पाबंदी पर शपथ ली है जो इस लेखन के साथ संलग्न हैं। अब उस समूह के लोग चाहते हैं कि उन नियमों में जो जुर्माने का नियम है वह रद्द हो जाए और वे झूठी शपथ के अपराधी भी न हों और नमाज़ के नियमों में संशोधन भी हो सके। तो वह कौन सी सूरत हो सकती है जिससे झूठी शपथ लागू न हो, नमाज़ का जुर्माना बंद हो जाए और नमाज़ के नियम संशोधित हो जाएं? सवाल २: नमाज़ की कज़ा या उसे कज़ा अदा करने पर चेतावनी के तौर पर अगर कोई जुर्माना तय कर दिया जाए तो क्या वह शरीयत के खिलाफ तो नहीं है? सवाल ३: अगर नमाज़ का जुर्माना शरीयत-ए-मुतह्हरा के खिलाफ हो और उस पर अनजाने

में शपथ ले ली गई हो, तो वह शपथ जायज़ तरीके से हुई या नाजायज़, और उसे तोड़ने से वे गुनहगार होंगे या नहीं?

नमाज़ की पाबंदी से संबंधित नियम (१) अगर कोई सदस्य किसी भी समय की नमाज़ की कज़ा भी अदा नहीं करेगा, तो उसे १ नवंबर १९०४ से हर ऐसे समय के लिए...

पेज ५०४/६८८

ففیہ دلیل واضح علی ماقلنا وقد نص علی المسألۃ العلماء-واللہ تعالی اعلم۔ آپ بتائیں (کیا خطا اور کیا درست) تو آپ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: قسم نہ دو، تو اس حدیث میں واضح دلیل ہے ہمارے بیان پر، اور علمائے کرام نے بھی یونہی مسئلہ ذکر کیا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۰۶: از کر یلی ضلع بریلی مرسلہ مولوی انعام الحق صاحب کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ چار شریکوں نے باغ کی فصل خرید کی اور حصے بخرے پر جھگڑا پیدا ہوا، ایک شخص نے منجملہ ان شریکوں کے قسم کھائی اگر اس باغ میں رہوں تو اپنی ماں اور بیٹی سے زنا کروں، اور اپنے مکان کو چلا گیا، آخر کار دو آدمی اس کو جبراً اسی باغ میں لائے اور رات کو بھی رکھا اور قسم کے خلاف عمل میں آیا لیکن جبراً عمل میں آیا ہے، اور صبح کو اپنا فیصلہ کر کے مکان کو چلا گیا اور شخصوں نے اس کو اپنی برادری سے خارج کیا ہے تو اب اس پر جو قسم خوردہ ہے کیا تعزیر ہونا چاہئے؟ یا نہیں ہونا چاہئے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: وہ ناپاک و بیہودہ قسم محض مہمل ہے، لوگ بعد قسم اسے باغ میں لائے اور شب کو رکھا اس سے اس قسم کھانے والے پر کوئی تعزیر نہ آئی نہ وہ اس بناء پر برادری سے خارج کئے جانے کے قابل ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۰۷تا ۲۰۹: ۴ ذیقعدہ ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک گروہ نے آپس میں فرداً فرداً حلف اٹھایا ہے نماز کی پابندی پر اور ان قواعد کی پابندی پر جو ہمرشتہ تحریر ہذا پیش ہیں، اب وہ گروہ والے یہ چاہتے ہیں کہ ان قواعد میں جو قاعدہ جرمانے کا ہے وہ منسوخ ہو جائے اور حلف دروغی کے بھی مرتکب نہ ہوں اور قواعد نماز کی ترمیم بھی ہو سکے تو وہ

صورت کون سی ہو سکتی ہے جس سے حلف دروغی عائد نہ ہو اور جرمانہ نماز بند ہو جائے اور قواعد نماز ترمیم ہو جائے؟ سوال ۲: نماز کی قضایا اس کی قضا ادا کرنے پر بطور تنبیہ اگر کوئی جرمانہ مقرر کر دیا جائے تو وہ خلافِ شرع تو نہیں ہے؟ سوال ۳: اگر جرمانہ نماز خلافِ شرع شریف ہو اور اس پر حلف سہواً اٹھا لیا گیا تو وہ حلف جائز طور سے ہوا یا ناجائز، اور اس کے توڑنے سے گنہگار ہوں گے یا نہیں؟

قواعد متعلق پابندی نماز (۱) اگر کوئی ممبر کسی وقت کی نماز کی قضا بھی ادا نہ کرے گا اس کو یکم نومبر ۱۹۰۴ء ایسے فی وقت کے

Volume Thirteen 13 Fatawa Rizvia

...shall be required to deposit one pie as a fine with the designated official or member of the association to whom the association entrusts this duty. (2) It shall be mandatory for every member and official to report to the association on a weekly basis, without solicitation, any prayer whose missed (Qadha) performance they have also failed to complete. (3) There shall be a separate register for the income from fines. (4) This income shall be utilized for charitable purposes. (5) Payment of fines for missed prayers shall be made weekly while present in Bareilly. (6) If a member or official intentionally fails to pay such a fine at the stipulated time and, in the opinion of the association, their intention is deemed malicious, then the name of that member shall be [dealt with] with the permission of the quorum of an ordinary meeting of the association (Quorum refers to the minimum number of members required). (7) Any person who intentionally commits perjury shall be expelled from the association. (8) No Muslim shall be admitted as a member of this association without taking the oath.

Text of the Oath (1) I swear that I will strive to perform the five daily prayers. (2) And if, due to oversight, accident, or intention, a prayer is missed, I will perform it at another time. (3) If I am still unable to perform the missed prayers, I will adhere heart and soul to the rules regarding the observance of prayer established by this association as of November 1, 1904. Note that it was explained both before and after taking the oath that the effect of the first and second lines of the above oath will remain upon you throughout your life, while the effect of the third and fourth lines will remain only for the duration of your membership in this association.

State the ruling and be rewarded.

The Answer: Punitive fine (Ta'zir bil-Maal), where an offender's property is taken as compensation for a mistake, is abrogated (Mansukh), and acting upon an abrogated ruling is not permissible, as established by Imam al-Tahawi (may Allah Almighty have mercy on him). The matter is mentioned in 'al-Durr al-Mukhtar' and other works, and we have explained it in the marginalia of 'Radd al-Muhtar' (as researched by Imam Tahawi (may Allah Almighty have mercy on him), and this issue is in Durr-e-Mukhtar etc. _____ and we have described it in the marginalia of Radd-ul-Muhtar. T). Furthermore, it is obligatory to break any oath that necessitates performing an impermissible act, as guided by the Hadith.

जिल्द तेरहवीं १३ फ़तावा रज़विया

...जुर्माने के रूप में एक पाई अंजुमन के उस अधिकारी या सदस्य के पास जमा करनी होगी, जिसे अंजुमन ने यह कार्य सौंपा हो। (२) प्रत्येक सदस्य और अधिकारी के लिए अनिवार्य होगा कि वह ऐसी नमाज़ की जानकारी, जिसकी कज़ा भी उसने अदा न की हो, बिना पूछे साप्ताहिक रूप से अंजुमन को दे दे। (३) जुर्माने की आय का रजिस्टर अलग होगा। (४) यह आय किसी परोपकारी कार्य में खर्च की जाएगी। (५) कज़ा नमाज़ की अदायगी का जुर्माना बरेली में उपस्थिति की स्थिति में साप्ताहिक रूप से देय होगा। (६) यदि कोई सदस्य या अधिकारी जानबूझकर नियत समय पर ऐसा जुर्माना अदा नहीं करता है और अंजुमन की राय में उसका यह इरादा शरारतपूर्ण पाया जाता है, तो अंजुमन की साधारण बैठक के कोरम की अनुमति से उस सदस्य के नाम पर [कार्यवाही] की जाएगी (कोरम सदस्यों की संख्या की एक निश्चित सीमा का नाम है)। (७) यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर झूठी शपथ लेने का दोषी पाया जाता है, तो उसे अंजुमन से निष्कासित कर दिया जाएगा। (८) किसी भी मुस्लिम सदस्य को शपथ लिए बिना इस अंजुमन का सदस्य नहीं बनाया जाएगा।

शपथ का पाठ (१) मैं शपथ लेता हूँ कि मैं पाँच समय की नमाज़ अदा करने का पूरा प्रयास करूँगा। (२) और यदि भूलवश, आकस्मिक रूप से या जानबूझकर नमाज़ कज़ा हो जाती है, तो मैं उसे दूसरे समय अदा करूँगा। (३) यदि मैं तब भी कज़ा अदा नहीं कर पाता हूँ, तो १ नवंबर १९०४ से इस अंजुमन द्वारा नमाज़ की पाबंदी के संबंध में बनाए गए नियमों का पूरे मन से पालन करूँगा। यह स्पष्ट रहे कि शपथ लेने से पहले और बाद में भी यह बात समझा दी गई थी कि उपरोक्त शपथ की पहली और दूसरी पंक्ति का प्रभाव आप पर जीवन भर रहेगा, जबकि तीसरी और चौथी पंक्ति का प्रभाव केवल उसी समय तक रहेगा जब तक आप इस अंजुमन के सदस्य रहेंगे।

उत्तर देकर पुण्य के भागी बनें।

उत्तर: जुर्माने के साथ ताज़ीर (दंड), जिसमें अपराधी का कुछ धन त्रुटि के बदले ले लिया जाता है, मंसूख़ (निरस्त) है और मंसूख़ पर अमल करना जायज़ नहीं है, जैसा कि इमाम तहावी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने प्रमाणित किया है। यह मसला 'दुर्रे मुख्तार' आदि में वर्णित है और हमने इसे 'रद-उल-मुहतार' की टिप्पणी (हाशिया) में स्पष्ट किया है (जैसा कि इमाम तहावी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इसकी खोज की है, और यह मसला दुर्रे मुख्तार आदि में है _____ और हमने इसे रद-उल-मुहतार

के हाशिया में उल्लेख किया है। त)। साथ ही, ऐसी शपथ को तोड़ना वाजिब (अनिवार्य) है जो किसी वर्जित कार्य को करने के लिए बाध्य करती हो, जैसा कि हदीस शरीफ़ में निर्देशित है।

पृष्ठ ५०५ / ६८८

عوض ایک پائی بطور جرمانہ کے انجمن کے اس عہدہ دار یا ممبر کے پاس داخل کرنا ہوگا جس کے سپرد انجمن اس خدمت کو کرے گی۔ (۲) ہر ممبر اور عہدہ دار پر لازم ہوگا کہ ایسی نماز کی اطلاع کہ جس کی قضاء بھی اس سے ادانہ ہوئی ہو بلاد دریافت کے ہفتہ وار انجمن کو کردے۔ (۳) آمدنی جرمانہ کا رجسٹر جدا ہوگا۔ (۴) یہ آمدنی کسی کارِ خیر میں صرف ہوگی۔ (۵) جرمانہ قضا نماز کی ادائیگی بحالت موجودگی بریلی ہفتہ وار ہوا کرے گی۔ (۶) اگر ممبر یا عہدہ دار ایسا جرمانہ قصداً وقتِ معینہ پر ادا نہ کرے گا اور انجمن کی رائے میں اس کا یہ ارادہ مفسدانہ پایا جائے گا تو اس ممبر کا نام باجازتِ کورم جلسہ معمولی انجمن کیا جائے گا (تعداد ممبران کی ایک حد کا نام کورم ہے) (۷) اگر کوئی قصداً حلف دروغی کا مرتکب ہو گا وہ انجمن سے خارج کیا جائے گا۔ (۸) کوئی مسلمان ممبر بلا حلف اٹھائے اس انجمن کا ممبر نہ بنایا جائے گا۔

عبارت حلف (۱) میں حلف کرتا ہوں کہ پانچ وقت کی نماز کی ادائیگی میں کوشش کروں گا۔ (۲) اور اگر سہواً یا اتفاقاً یا عمداً قضا ہو جائے گی تو اس کو دوسرے وقت ادا کروں گا۔ (۳) اگر قضا بھی ادا نہ کرسکوں گا تو یکم نومبر ۱۹۰۴ء سے جو قواعد متعلق پابندی نماز انجمن ہذا سے تیار ہوئے ہیں ان کی پابندی بدل وجان کروں گا۔ واضح رہے کہ حلف اٹھانے سے قبل اور بعد بھی یہ بات سمجھادی گئی تھی کہ حلف بالا کی سطر اول اور دوم کا اثر تم لوگوں پر تمام عمر رہے گا اور سطر سوم و چہارم کا اثر فقط اسی زمانے تک رہے گا جب تک کہ تم اس انجمن کے ممبر ہو۔

بینوا توجروا۔

الجواب: جرمانہ کے ساتھ تعزیر کہ مجرم کا کچھ مال خطا کے عوض لے لیا جائے منسوخ ہے اور منسوخ پر عمل جائز نہیں کما حققه الامام الطحاوی رحمه الله تعالیٰ والمسألة فی الدر المختار وغیره وقد بیناها علی هامش ردالمحتار (جیسا کہ اس کی تحقیق امام طحاوی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمائی، اور یہ مسئلہ در مختار وغیرہ میں ہے __ اور ہم نے اس کو ردالمحتار کے حاشیہ میں بیان کیا ہے۔ ت) اور ناجائز بات پر عمل کرنا جس حلف سے لازم آتا ہو اس کو توڑنا واجب ہے کما ارشد الیہ الحدیث۔

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13

And its detail is in Al-Hindiyya (as it is guided in the Hadith for this and its detail is in Hindiyya - Translator). But in the mentioned case, the members of the association did not decide to take that fine for themselves, rather they stated it to be spent on some good work, and there is no compulsion or coercion from the association in taking it. They only established a rule that whoever does not pay the fine will be expelled from the association. So, for the person who pays this amount to remain in the association, it will not be by compulsion and oppression but by his own consent, as there was no harm for him in being expelled from the association. He chose by his own will that this amount be taken from him and spent on a good cause. Therefore, this law does not reach the extent of an unlawful fine. As for the oath, if the wording of the oath is exactly as much and no word was made to be spoken before or after it that would legally link the oath to these four lines, then the oath will only relate to the previous two lines, because the subsequent two lines are devoid of a conjunction.

Arabic Text

An independent sentence does not relate to the previous one except with a conjunction. Therefore, it remained outside the oath because it is known that the separation by an extraneous sentence invalidates the effect of the oath. For example, if someone says, 'By Allah and the Messenger, I will certainly do such-and-such,' it would not be an oath because the saying 'and the Messenger' is not an oath. So it became a separator, as mentioned in Alamgiriyyah and others. It would be like someone saying, 'By Allah, I will certainly drink, I will certainly stand up.' The oath would only apply to drinking and not to standing up, contrary to his saying 'and I will certainly stand up'. This is what appeared to me, and I hope it is correct. (Translator)

Urdu Translation

And this is an independent sentence; it cannot be related to the previous one without a conjunction, therefore it is outside the oath because the action of an oath ends with the separation of an extraneous sentence. Even if a person says, 'By Allah and the Messenger, I will certainly do this work,' it will not be an oath because the oath is by Allah, so the word 'Messenger' in between became a separator because an oath is not by the Messenger, as explained in Alamgiriyya etc. So it is as if someone says, 'By God, I will certainly drink, I will certainly stand up,' then it will be an oath for drinking, not an oath for standing up. Contrary to this, if he says, 'and I will certainly stand up' after the conjunction, then it will also be an oath for standing up. This is what appeared to

Arabic Text	Urdu Translation
	me and I hope this will be correct. (Translator)

On this basis, the restriction of fine and other rules of the association do not come under the oath. And Allah Almighty knows best.

Problem 210: From Daulatpur, District Bulandshahr, sent by Bashir Muhammad Khan Sahib, 15 Shawwal 1329 AH. If a person has made a Shariah oath several times for a matter and then acts against it, and the decision regarding that matter for which he made the Shariah oath several times, then that decision of his is worth accepting...

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

और इसका विस्तार अल-हिन्दिया में है (जैसा कि इस संबंध में हदीस में निर्देश है और इसका विवरण हिन्दिया में है - अनुवादक)। लेकिन उपरोक्त स्थिति में, संगठन के सदस्यों ने वह जुर्माना अपने लिए लेना तय नहीं किया, बल्कि उसे किसी नेक काम में खर्च करने के लिए कहा है, और इसे लेने में संगठन की ओर से कोई जबरदस्ती या दबाव नहीं है। उन्होंने केवल इतना नियम बनाया है कि जो जुर्माना नहीं देगा उसे संगठन से बाहर कर दिया जाएगा। इसलिए, जो व्यक्ति संगठन में बने रहने के लिए यह राशि अदा करेगा, वह जबरदस्ती और अत्याचार के कारण नहीं बल्कि अपनी इच्छा से होगा, क्योंकि संगठन से बाहर होने में उसका कोई नुकसान नहीं था। उसने अपनी मर्जी से यह पसंद किया कि यह राशि उससे लेकर नेक काम में खर्च की जाए। इसलिए, यह नियम अवैध जुर्माने की सीमा तक नहीं पहुँचता। जहाँ तक शपथ (हलफ़) की बात है, यदि शपथ की इबारत हूबहू इतनी ही है और उससे पहले या बाद में कोई ऐसा शब्द मौखिक रूप से नहीं कहलवाया गया जो शपथ को इन चार पंक्तियों से कानूनी रूप से जोड़ दे, तो शपथ केवल पिछली दो पंक्तियों से संबंधित होगी, क्योंकि बाद की दो पंक्तियाँ संयोजक (हर्फ़ए-अत्फ़) से खाली हैं।

अरबी मूल

एक स्वतंत्र वाक्य पिछले वाक्य से तब तक नहीं जुड़ता जब तक कि कोई संयोजक न हो। इसलिए, यह शपथ से बाहर रहा क्योंकि यह ज्ञात है कि एक बाहरी वाक्य का अलगाव शपथ के प्रभाव को समाप्त कर देता है। यहाँ तक कि यदि कोई व्यक्ति कहे, 'अल्लाह और रसूल की कसम, मैं यह काम ज़रूर करूँगा,' तो यह शपथ नहीं होगी क्योंकि 'और रसूल' कहना शपथ नहीं है। इसलिए यह एक विभाजक बन गया, जैसा कि आलमगीरिया आदि में वर्णित है। यह वैसा ही होगा जैसे कोई कहे, 'अल्लाह की कसम, मैं ज़रूर पीऊँगा, मैं ज़रूर खड़ा होऊँगा।' तो शपथ पीने पर होगी, खड़े होने पर

उर्दू अनुवाद

और यह जुमला मुस्तकिल (स्वतंत्र) है, इसका पहले से बिना हर्फ़ए-अत्फ़ के संबंध नहीं हो सकता, इसलिए यह शपथ (क़सम) से बाहर है क्योंकि अजनबी जुमले के फ़ासिले से क़सम का अमल खत्म हो जाता है, यहाँ तक कि अगर कोई शख्स यूँ कहे 'अल्लाह और रसूल की कसम मैं यह काम ज़रूर करूँगा', तो क़सम न होगी क्योंकि अल्लाह की क़सम होती है, तो दरमियान में रसूल का लफ्ज़ फ़ासिल (विभाजक) बन गया, क्योंकि रसूल की क़सम नहीं होती, जैसा कि आलमगीरिया वग़ैरा में बयान है, तो यह यूँ हुआ जैसे कोई कहे 'ख़ुदा की क़सम मैं ज़रूर नोश करूँगा ज़रूर खड़ा होऊँगा', तो यह नोश करने की क़सम होगी खड़े होने की

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
नहीं। इसके विपरीत यदि वह कहे 'और मैं ज़रूर खड़ा होऊँगा', तो खड़े होने की भी शपथ होगी। यह मुझे स्पष्ट हुआ और मुझे आशा है कि यह सही होगा। (अनुवादक)	क़सम न होगी, इसके बरख़िलाफ़ अगर हर्फ़ए-अत्फ़ के बाद 'मैं ज़रूर खड़ा होऊँगा' कहे, तो खड़े होने की भी क़सम होगी। यह मुझे ज़ाहिर हुआ और मुझे उम्मीद है कि यह दुरुस्त होगा। (अनुवादक)

इस आधार पर, जुर्माने की पाबंदी और संगठन के अन्य नियम शपथ के दायरे में नहीं आते। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

समस्या २१०: दौलतपुर, ज़िला बुलंदशहर से, प्रेषक बशीर मोहम्मद खान साहब, १५ शव्वाल १३२९ हिजरी। यदि किसी व्यक्ति ने किसी मामले के लिए कई बार शरीयत के अनुसार शपथ ली हो और फिर उसके विरुद्ध कार्य करे, और उस मामले का निर्णय जिसके बारे में उसने कई बार शरीयत की शपथ ली है, तो उसका वह निर्णय स्वीकार करने योग्य है...

وفصلہ فی الہندیۃ (جیسا کہ اس کے لئے حدیث میں ارشاد ہے اور اسکی تفصیل ہندیہ میں ہے۔ ت) مگر صورت مذکورہ میں وہ جرمانہ انجمن والوں نے اپنے لئے لینا نہ قرار دیا بلکہ کسی کار خیر میں اس کا صرف کرنا بتایا ہے اور اس کے لینے میں انجمن کی طرف سے کوئی جبر و اکراہ نہیں، صرف اتنا قاعدہ قرار دیا ہے کہ جو جرمانہ نہ دے انجمن سے خارج کیا جائے تو انجمن میں داخل رہنے کے لئے جو شخص یہ رقم ادا کرے گا، بجبر و تعدی نہ ہو گا بلکہ اس کی اپنی رضا سے ہو گا کہ انجمن سے خارج ہونے میں اس کا کوئی ضرر نہ تھا اس نے باختیار خود یہ پسند کیا کہ یہ رقم اس سے لے کر کار خیر میں صرف ہو، لہذا یہ قانون جرمانہ ناجائزہ کی حد تک نہیں پہنچتا۔ رہا حلف وہ اگر عبارت حلف بے کم و کاست اسی قدر ہے اور اس سے قبل یا بعد زبانی کوئی لفظ ایسا نہ کہلوایا گیا کہ حلف کو ان چاروں سطروں سے شرعاً متعلق کر دے تو حلف صرف دو سطر سابق سے متعلق ہو کہ بعد کی دو سطریں حرف عطف سے خالی ہیں،

| والجملۃ المستقلۃ لاتتعلق بالسابقۃ الابعاطف فبقیت خارجۃ عن الحلف لماعلم ان فصل الاجنبی یبطل عمل الحلف حتی لو قال واللہ والرسول لافعلن کذا لم یکن یمینا لان قولہ والرسول لیس یمینا فکان فاصلا کما في العلمگیریۃ وغیرھا فکان کقول القائل واللہ لاشربن لاقومن لم یدخل تحت الحلف الا الشرب دون القیام بخلاف قولہ ولاقومن ، ھذا ماظھر لی وارجوان یکون صوابا۔ | اور یہ جملہ مستقل ہے اس کا پہلے عطف کے بغیر تعلق نہیں ہوسکتا، لہذا یہ قسم سے خارج ہے کیونکہ اجنبی جملہ کے فاصلہ سے قسم کا عمل ختم ہو جاتا ہے، حتی کہ اگر کوئی شخص یوں کہے اللہ اور رسول کی قسم میں یہ کام ضرور کروں گا، تو قسم نہ ہوگی کیونکہ اللہ کی قسم ہوتی ہے، تو درمیان میں رسول کا لفظ فاصل بن گیا، کیونکہ رسول کی قسم نہیں ہوتی، جیسا کہ عالمگیر یہ وغیرہ میں بیان ہے، تو

یہ یوں ہوا جیسے کوئی کہے خدا کی قسم میں ضرور نوش کروں گا ضرور کھڑا ہوں گا، تو یہ نوش کرنے کی قسم ہوگی کھڑے ہونے کی قسم نہ ہوگی، اس کے برخلاف اگر حرف عطف کے بعد، میں ضرور کھڑا ہوں گا، کہے، تو کھڑے ہونے کی بھی قسم ہوگی۔ یہ مجھے ظاہر ہوا اور مجھے امید ہے کہ یہ درست ہوگا۔ (ت) |

اس تقدیر پر پابندی جرمانہ و دیگر قواعد انجمن زیر حلف داخل ہی نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۰: از دولت پور ضلع بلند شہر مرسلہ بشیر محمد خان صاحب ۱۵ شوال ۱۳۲۹ھ اگر چند بار کسی شخص نے حلف شرعی کسی امر کے واسطے کیا ہو اور پھر اس کے خلاف کرے اور اس امر کا فیصلہ کہ جس کے بابت اس نے حلف شرعی کئی مرتبہ کیا ہے تو وہ اس کا فیصلہ قابل مان لینے کے

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen Page 507

...will it be or not?

The Answer: If one sees goodness in Sharia by acting against the oath, then one should act against it and give atonement (Kaffarah); otherwise, breaking an oath without a Sharia-compliant reason is prohibited (Haram).

Allah Almighty said: "And guard your oaths." (Quran 5:89)

The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Whoever takes an oath for something and then sees something better than it, let him do that which is better and atone for his oath." Narrated by Ahmad, Muslim, and Tirmidhi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). (T)

The same applies to a judicial decision: if one took an oath to decide in a certain way, and then the Sharia ruling was found to be contrary to it, it is mandatory (Fard) to act according to the Sharia (contrary to the oath) and pay the atonement. If the Sharia ruling was the same as what was sworn upon, and yet it was violated, then there is the sin of breaking the oath, and the sin of an unjust and wrongful decision is even more severe. And Allah Almighty knows best.

Issue 211: From Sironj, requested by Abdul Rashid Khan Sahab, 19 Jumadi al-Awwal 1331 AH.

An elite person gave land to his servant as a reward for service. Later, becoming angry with the servant for some reason, he swore in anger, "I will seize your land," and also swore, "I will not eat food from your house." Now, if that elite person breaks his oath, will atonement be mandatory or not?

The Answer: Atonement for the oath will be mandatory: either feed ten needy people full meals twice a day, or give clothing to ten needy people, or give each of the ten needy people one Sa' of barley or half a Sa' of wheat or its value. One Sa' in terms of a hundred-rupee seer is one rupee and then three and a half seers more. Whoever is unable to do this should fast for three days. And Allah Almighty knows best.

Issue 212: From Raipur Gol Bazar, Central Provinces, sent by Maulvi Muhammad Salim Khan, bookseller, 2 Jumadi al-Akhirah 1330 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding this issue: A person, in front of his stepmother...

---

1. Al-Quran al-Karim 5/89
2. Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/48

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह पृष्ठ 507

...होगा या नहीं?

उत्तर (अल-जवाब): यदि शरीयत के अनुसार उल्लंघन करने में बेहतरी देखे तो उल्लंघन करे और कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दे, अन्यथा बिना किसी शरीयत कारण के कसम तोड़ना हराम है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "और अपनी कसमों की हिफाज़त करो।" (कुरान 5:89)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "जिसने किसी चीज़ की कसम खाई और उसके खिलाफ में बेहतरी देखी, तो वह करे जो बेहतर है और अपनी कसम का कफ़्फ़ारा दे।" इसे अहमद, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (त)

फैसले का भी यही हाल है: अगर कसम खाई थी कि इस तरह फैसला करेगा, फिर शरीयत का हुक्म उसके खिलाफ पाया गया, तो उस पर फ़र्ज़ है कि वह (कसम के) खिलाफ ही करे और कफ़्फ़ारा दे। और अगर शरीयत का हुक्म वही था जिस पर कसम खाई थी, फिर भी उसका उल्लंघन किया, तो कसम तोड़ने का भी गुनाह हुआ और ज़ुल्म व गलत फैसले का गुनाह और भी सख्त हुआ। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 211: सिरोंज से, सायल अब्दुल रशीद खां साहब, 19 जमादी उल अव्वल 1331 हिजरी।

एक अमीर ने अपने नौकर को सेवा के बदले में ज़मीन दी। फिर किसी बात पर नौकर से नाराज़ होकर गुस्से की हालत में कसम खाई कि 'मैं तेरी ज़मीन ज़ब्त कर लूँगा' और यह भी कसम खाई कि 'मैं तेरे घर का खाना भी नहीं खाऊँगा'। अब अगर वह अमीर कसम तोड़े, तो क्या कफ़्फ़ारा वाजिब होगा या नहीं?

उत्तर (अल-जवाब): कसम का कफ़्फ़ारा वाजिब होगा कि दस मिसकीनों (गरीबों) को दोनों वक़्त पेट भरकर खाना खिलाए, या दस मिसकीनों को कपड़े दे, या दस मिसकीनों में से हर एक को एक सा' जौ या आधा सा' गेहूँ या उसकी कीमत दे। एक सा' का वज़न सौ रुपये के सेर के हिसाब से एक रुपया और फिर ऊपर साढ़े तीन सेर है। और जिससे यह न हो सके, वह तीन रोज़े रखे। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 212: रायपुर गोल बाज़ार, मध्य प्रांत से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद सलीम खां, पुस्तक विक्रेता, 2 जमादी उल आख़िर 1330 हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि एक शख़्स ने अपनी सौतेली माँ के सामने...

---

1. अल-कुरान अल-करीम 5/89
2. सहीह मुस्लिम, किताब अल-ईमान, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/48

ہوگا یا نہیں؟

الجواب: اگر خلاف کرنے میں شرعاً خیر دیکھے تو خلاف کرے اور کفارہ دے ورنہ بلاوجہ شرعی قسم توڑنا حرام ہے۔

قال اللہ تعالیٰ وَاحْفَظُوْٓا اَیْمَانَکُمْ ط 1۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ اپنی قسموں کو پورا کرو۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: من حلف علی یمین فرأی غیرھا خیرا منھا فلیأت الذی ھو خیر و لیکفر عن یمینہ 2۔ رواہ احمد و مسلم والترمذی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ جس نے کسی چیز کا حلف دیا اور اس کے خلاف سے بہتر محسوس کرے تو بہتر کو بجالائے اور قسم کا کفارہ دے۔ اس کو احمد، مسلم اور ترمذی نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت)

یہی حال فیصلہ کا ہے اگر حلف کیا تھا کہ یوں فیصلہ کرے گا پھر حکم شرع اس کے خلاف پایا گیا تو اس پر فرض ہے کہ خلاف ہی کرے اور کفارہ دے، اور اگر حکم شرع وہی تھا جس پر حلف کیا پھر اس کا خلاف کیا تو قسم توڑنے کا بھی گناہ ہوا اور ظلم و ناحق فیصلہ کا گناہ سخت تر ہوا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۱: از سرونج مسئولہ عبدالرشید خاں صاحب ۱۹ جمادی الاول ۱۳۳۱ھ ایک امیر نے اپنے ملازم کو خدمت کے صلہ میں زمین دی پھر کسی بات پر ملازم سے خفا ہو کر حالت غصہ میں قسم کھائی کہ میں تیری زمین ضبط کروں گا، اور یہ بھی حلف لیا کہ میں تیرے گھر کا کھانا بھی نہ کھاؤں گا۔ اب وہ امیر اگر حلف شکنی کرے تو کیا کفارہ لازم آئے گا یا نہیں؟

الجواب: قسم کا کفارہ لازم ہوگا کہ دس مسکینوں کو دونوں وقت پیٹ بھر کر کھانا کھلائے یا دس مسکینوں کو جوڑے دے یا دس مسکینوں کو فی مسکین ایک صاع جو یا نصف صاع گیہوں یا اس کی قیمت دے، صاع سور وپیہ کے سیر سے ایک روپیہ پھر اوپر ساڑھے تین سیر ہے، اور جس سے یہ نہ ہوسکے وہ تین روزے رکھے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۲: از را پور گول بازار ممالک متوسطہ مرسلہ مولوی محمد سلیم خاں کتب فروش ۲ جمادی الاخرہ ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی دوسری والدہ کے روبرو

۱ القرآن الکریم ۸۹/۵ ۲ صحیح مسلم کتاب الایمان قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۸/۲

Fatawa Ridawiyya Volume 13, Page 13

Question: A person in his full senses swore an oath: "May I not be granted the vision of Allah and the intercession of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) if I take my father's earnings or property, whether during his lifetime or after his death." Now, can that person take money from his father's property or earnings in any way? It is hoped that an answer to the above matters will be provided according to the Hanafi books. Explain and you will be rewarded.

Answer: What he said is not an oath according to Shari'ah, but rather a supplication against himself. Taking from the father's property has not become prohibited because of it; he can take it. And he should repent for such bad words. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Table Content] Arabic Text: “May His wrath be upon him” is also not an oath because it is a prayer against oneself and it does not necessitate the occurrence of what is prayed for. Rather, it depends on the acceptance of his prayer because it is not customary [as an oath]. Fath. And Allah knows best. Urdu Translation: If someone says "May Allah's wrath be upon me," this will not be an oath either, because it is a curse for himself and its occurrence is not mandatory. Therefore, its occurrence depends on the acceptance of his prayer because this is not customary. Fath. And Allah knows best. (T)

Issue 213: 9 Ramadan al-Mubarak 1330 AH Question: What do the scholars of religion and muftis of the clear Shari'ah say about this matter: Zaid, being angry with his relatives, swore an oath, "If I do not go for Hajj, may God make me an infidel (kafir)." People advised him not to take such an oath, but Zaid repeated it several times saying, "If I do not go for Hajj, I will become a kafir." Therefore, the villagers collected one hundred rupees and gave it to him. Accordingly, Zaid took the money and left the village apparently intending for Hajj. However, after ten days, he returned to his village and said, "I have come back from Bombay, I will not go for Hajj." One day Zaid went to the mosque to pray. There, Bakr prayed: "O Pure Allah! Grant every Muslim the opportunity to perform Hajj." Hearing this prayer, Zaid abused Bakr, saying, "You are taunting me." At that time, Zaid was the owner of things worth approximately two hundred and fifty rupees, meaning he owned oxen, buffaloes, and a sugarcane plow. In such a situation, what is the ruling on that donation which he has already consumed? What term does Shari'ah use for him? How should Muslims behave towards him? If Zaid has gone out of the fold of Islam due to the aforementioned act,

how can he re-enter Islam? How can he be absolved of the sin? And if any Muslim maintains a relationship or socializes with him in this current state, what is the ruling for such a Muslim and his wife?

---

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Aiman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/57. Page 508 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

प्रश्न: होश-ओ-हवास में कसम खाई कि मुझे खुदा का दीदार और हज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत नसीब न हो अगर मैं अपने वालिद की कमाई का रुपया या जायदाद उनकी मौजूदगी या गैर-मौजूदगी में या वालिद माजिद की वफात के बाद उनकी जायदाद या उनकी कमाई में से लूँ। अब वह शख्स किसी तरह से अपने बाप की जायदाद या कमाई का रुपया ले सकता है या नहीं? उम्मीद है कि मज़कूरा बाला उमूर का जवाब हनफिया किताबों की रोशनी में इनायत फरमाएं। बयान कीजिए और सवाब पाइए।

जवाब: उसने जो कहा वह शरीयत की रू से कसम नहीं है, बल्कि अपने हक में बददुआ है। इसकी वजह से बाप के माल से लेना नाजायज नहीं हुआ, वह ले सकता है। और ऐसे बुरे शब्दों से तौबा करे। रद्दुल मुहतार में है:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ का अनुवाद: "उस पर उसका (अल्लाह का) गज़ब हो" यह भी कसम नहीं होगी क्योंकि यह खुद के लिए बददुआ है और जो मांगा गया है उसका होना ज़रूरी नहीं है। बल्कि यह उसकी दुआ के कुबूल होने पर मुनहसिर है क्योंकि यह (कसम के तौर पर) राइज नहीं है। फतह। और अल्लाह बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: अगर किसी ने यूं कहा कि "मुझ पर अल्लाह तआला का गज़ब हो" तो यह भी कसम न होगी, क्योंकि यह अपने लिए बददुआ है और इसका वाकेअ (घटित) होना लाज़िम नहीं है। इसलिए इसका वाकेअ होना उसकी दुआ के कुबूल होने पर मौकूफ है क्योंकि यह गैर-मुतआरिफ है। फतह। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला 213: 9 रमज़ानुल मुबारक 1330 हिजरी प्रश्न: उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियाने शरा-ए-मतीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने अपने रिश्तेदारों से नाराज़ होकर कसम खाई कि "अगर मैं हज को न जाऊं तो खुदा करे मैं काफ़िर हो जाऊं। इस पर लोगों ने समझाया कि ऐसी कसम मत खा, मगर ज़ैद ने बार-बार कसम खाकर कहा "अगर मैं हज को न जाऊं तो काफ़िर हो जाऊं। चुनांचे बस्ती वालों ने सौ रुपये चंदा इकट्ठा करके दे दिए। ज़ैद वह रुपया लेकर हज के इरादे से बस्ती से रवाना हो गया। मगर दस दिन बाद वह फिर अपनी बस्ती में वापस आ गया और कहा "मैं बम्बई से लौट आया हूँ, हज को नहीं जाऊंगा"। एक दिन ज़ैद मस्जिद में नमाज़ पढ़ने गया, वहां बकर ने दुआ मांगी: "या अल्लाह पाक! तू हर मुसलमान को हज नसीब कर"। यह दुआ सुनकर ज़ैद ने बकर को गालियां दीं और कहा "तू मुझे ताना दे रहा है"। जबकि ज़ैद उस वक्त अंदाज़तन ढाई सौ रुपये की

चीज़ों का खुद मालिक था, यानी बैल, भैंस और गन्ने के हल का मालिक था। ऐसी हालत में उस चंदे का क्या हुक्म है जो वह हज़म कर चुका है? शरीयत उसे किस नाम से पुकारती है? मुसलमान उसके साथ कैसा व्यवहार करें? अगर ज़ैद इस उक्त कृत्य के कारण इस्लाम के दायरे से बाहर हो गया है, तो वह किस तरह इस्लाम में दोबारा दाखिल हो सकता है? और किस तरह गुनाह से बरी हो सकता है? और अगर कोई मुसलमान इस मौजूदा हालत में उससे ताल्लुक या मेल-जोल रखे, तो ऐसे मुसलमान के लिए क्या हुक्म है और उसकी बीवी का...

---

1. रद्दुल मुहतार, किताबुल ईमान, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 3/57. पृष्ठ 688 में से 508

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

ہوش وحواس میں قسم کھائی کہ مجھ کو خدا کا دیدار اور حضرت (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم) کی شفاعت نصیب نہ ہو جو میں اپنے والد کی کمائی کا روپیہ یا جائداد موجودگی یا عدم موجودگی یا بعد وفات والد ماجد کے لوں جائداد میں یا ان کی کمائی میں، اب وہ شخص کسی طرح سے اپنے باپ کی جائداد یا کمائی کا روپیہ لے سکتا ہے یا نہیں؟ امید کہ جواب امور مذکورہ بالا از روئے کتب حنفیہ عنایت فرمائیں۔بینوا توجروا۔

الجواب: وہ جو اس نے کہا شرعاً قسم نہیں بلکہ اپنے حق میں بد دعا ہے ، اس کے سبب مال پدر سے لے لینا ناجائز نہ ہو گیا، لے سکتا ہے، اور ایسے برے لفظ سے توبہ کرے ۔ ردالمحتار میں ہے :

[جدول] علیه غضبه لا یکون یمینا ایضا لانه دعاء علی نفسه ولا یستلزم وقوع المدعو بل ذلك متعلق باستجابة دعائه لانه غیر متعارف، فتح، واللہ تعالٰی اعلم۔ اگر کسی نے یوں کہا مجھ پر اللہ تعالیٰ کا غضب ہو تو یہ بھی قسم نہ ہوگی، کیونکہ یہ اپنے لئے بد دعا ہے اور اس کا وقوع لازم نہیں ہے اس لئے یہ وقوع اس کی دعا کے قبول ہونے پر موقوف ہے کیونکہ یہ غیر متعارف ہے، فتح۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۱۳: ۹ رمضان المبارک ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے متعلقوں سے ناراض ہو کر قسم کھائی اگر میں حج کو نہ چلا جاؤں تو خدا کرے میں کافر ہو جاؤں ، اس پر لوگوں نے سمجھایا کہ ایسی قسم مت کھا، مگر زید نے مکرر سہ کرر قسم کھا کر کہا اگر میں حج کو نہ چلا جاؤں کافر ہو جاؤں، لہذا بستی والوں نے مبلغ سو روپیہ

چندہ کر کے دے دئے، چنانچہ زید وہ روپیہ لے کر اس بستی سے حج کے ارادہ سے ظاہر اً روانہ ہو گیا مگر دس روز کے بعد پھر اپنی بستی میں واپس آگیا اور کہا میں بمبئی سے لوٹ آیا ہوں حج کو نہیں جاؤں گا، ایک روز زید مسجد میں نماز پڑھنے کو گیا وہاں بکر نے دعا مانگی: یا اللہ پاک! تو ہر مسلمان کو حج نصیب کر۔ اس دعا کو سن کر زید نے بکر کو گالیاں دیں مجھ کو تو طعنہ دیتا ہے، درانحالیکہ زید اس وقت اندازاً مبلغ ڈھائی سو روپے کی چیزوں کا بذات خود مالک ہے یعنی بیل بھینس اور ہل نیشکر کا مالک ہے تو ایسی حالت میں اس چندہ کا کیا حکم ہے جو کہ وہ ہضم کر چکا ہے اور اس کو شرع کون سے لفظ سے نامزد کرتی ہے اور مسلمان لوگ کیا برتاؤ کریں ، اگر زید اس فعل مذکور سے احاطہ اسلام سے خارج ہو گیا تو دائرہ اسلام میں کس ترکیب سے داخل ہو سکتا ہے اور کس طرح گناہ سے بری ہو سکتا ہے اور کوئی مسلمان اس حالت موجودہ میں اس سے ارتباط و میل جول رکھے تو ایسے مسلمان کے واسطے کیا حکم ہے اور منکوحہ اس کی

---

1 ردالمحتار کتاب الایمان داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۵۷ صفحہ 508 از 688

Fatawa Ridawiyyah Volume Thirteen 13

And what about his children, how should they all treat Zaid? Otherwise, what relationship should his children and his wife maintain with him as Muslims? Explain and be rewarded.

The Answer: The words Zaid spoke were not an oath. By not going for Hajj afterwards, he did not go out of the fold of Islam. The money given by the donors was a gift (Hiba); Zaid became its owner after taking possession. If Zaid truly intended to go for Hajj at that time and went as far as Mumbai, but some excuse arose such that he could not go—for example, Zaid became very weak and was in need of a helper, and he found no one to assist him in this journey—and he returned out of necessity, then there is no blame on him. Regarding the donation money, it is better that he returns it, although legally (according to Shari'ah) its return is not mandatory upon him. Yes, if he had intended to deceive, manifested a false intention, and made off with people's money through this means, then he would certainly have been a criminal. But from the circumstances of the question, this was not his intention at all (Note 1). It is not permissible to have ill-suspicions about anyone without a definitive reason and without Sharia-based proof. Those who label him a deceiver and claim he had a false intention to embezzle the money (Note 2) will be severe criminals; repentance is obligatory for them. And Allah Almighty knows best.

Note 1: There is a blank space in the draft. Note 2: There is a blank space in the draft.

Page 509 of 688

और उसकी संतान का क्या है कि वे सब ज़ैद के साथ कैसा व्यवहार करें? अन्यथा उसकी संतान और उसकी विवाहिता पत्नी उसके साथ मुसलमान के रूप में क्या संबंध रखें? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: ज़ैद ने जो शब्द कहे वे शपथ नहीं थे। उसके बाद हज पर न जाने के कारण वह इस्लाम के दायरे से बाहर नहीं हुआ। चंदा देने वालों ने जो रुपया दिया वह उपहार (हिबा) था, जिसके कब्ज़े के बाद ज़ैद उसका मालिक हो गया। यदि उस समय ज़ैद का वास्तव में हज पर जाने का इरादा था और वह मुम्बई तक गया और कोई ऐसी बाधा उत्पन्न हुई जिसके कारण वह नहीं जा सका—उदाहरण के लिए, ज़ैद बहुत कमज़ोर हो गया और उसे एक सहायक की आवश्यकता थी, और उसे इस यात्रा में सहायता करने वाला कोई नहीं मिला—और वह मजबूरी में लौट आया, तो उस पर कोई दोष नहीं है। चंदे के रुपये के बारे में बेहतर यह है कि वह वापस कर दे, हालांकि शरीयत के अनुसार उस पर वापसी अनिवार्य नहीं है। हाँ, यदि वह धोखा देने के लिए झूठा इरादा प्रकट करता और इस माध्यम से लोगों से रुपया लेकर भाग जाता, तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से अपराधी होता। परन्तु प्रश्न की स्थिति से उसका यह इरादा कतई नहीं था (टीप 1)। बिना किसी ठोस कारण और बिना शरीयत के प्रमाण के किसी पर कुतर्क करना जायज़ नहीं है। जो उसे धोखेबाज़ कहेंगे और यह आरोप लगायेंगे कि उसका इरादा रुपया हड़पने का था (टीप 2), वे गंभीर अपराधी होंगे, उन पर तौबा (पश्चाताप) करना अनिवार्य है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

टीप 1: मसौदे में खाली जगह है। टीप 2: मसौदे में खाली जगह है।

पृष्ठ 688 का 509

اور اولاد اس کی کیا ہے کہ یہ سب زید کے ساتھ کیا سلوک کریں ورنہ اولاد اور منکوحہ اس کی کے ساتھ مسلمان کیا تعلق رکھیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: زید نے جو الفاظ کہے قسم نہ تھی اسکے بعد حج کو نہ جانے کے سبب احاطہ اسلام سے خارج نہ ہوا روپیہ کہ چندہ والوں نے دیا وہ ہبہ تھا کہ زید بعد قبضہ اس کا مالک لے کر گیا اگر واقعی زید کا اس وقت ارادہ حج کو جانے کا تھا اور بمبئی تک گیا اور کوئی عذر پیش آیا کہ نہ جاسکا مثلاً زید بہت ضعیف ہوا اور محتاج معین ہو اور اسے کوئی ایسا نہ ملا کہ اس سفر میں اس کی اعانت کرے، بمجبوری پلٹ آیا تو اس پر کچھ الزام نہیں چندہ کا روپیہ بہتر یہ ہے کہ واپس کردے ورنہ شرعاً اس پر واپسی لازم نہیں، ہاں اگر وہ دھوکا دے کر جھوٹ ارادہ ظاہر کرتا اور اس ذریعہ سے لوگوں سے روپیہ لے کر چلتا ہو ضرور شخص مجرم تھا مگر صورت سوال سے اس کا ہرگز یہ ارادہ نہیں عہ ۱، نہ کسی پر بدگمانی جائز بلاوجہ قطعی اور بلا ثبوت شرعی دھوکا دینے اور جھوٹ ارادہ روپیہ ہضم کرلینے عہ ۲ کرلیں گے وہ سخت مجرم ہوں گے اس پر توبہ فرض ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

عہ ۱: مسودہ میں بیاض ہے۔ عہ ۲: مسودہ میں بیاض ہے۔

Fatawa Rizvia, Volume 13 13 1330 AH Treatise Al-Jawhar al-Thamin fi Ilal Nazlat al-Yamin (A precious gem regarding the calamity of oaths)

Problem 214: From Shamsabad, District Attock, sent by Maulana Maulvi Qazi Ghulam Gilani Sahab, 11 Muharram al-Sharif 1330 AH.

[Persian version]: What do the scholars say in this matter, that Zaid became angry with his son due to a matter against his will and said to his wife, "If you let this son of mine stay in the house, then on me is three-fold divorce (his wife becomes thrice-divorced)." Then after some time, upon his son's apology, Zaid himself became pleased with that son and let him stay in the house. His wife did not say anything like 'yes' or 'no' (to the son's arrival). Did that woman become divorced from Zaid or not? Answer and be rewarded.

[Urdu version]: What do the scholars of the religion say in this matter, that Zaid became angry with his son over some undesirable matter, so Zaid said to his wife, "If you let this son of mine stay in the house, then on me is three divorces," then after some time, upon the son's apology, Zaid became pleased with his son and let him come into the house. Upon the son's coming home, Zaid's wife said nothing to the son, neither said yes nor said no. So in this situation, did Zaid's wife become divorced or not? Answer and be rewarded.

The Answer: [Arabic]: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. O Allah, guidance to the truth and correctness. Praise be to Allah, Lord of... [Urdu]: In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. O Allah! Guidance in truth and correctness is from You alone. All praises are for Allah who...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13 13 1330 हिजरी रिसाला (लघु पुस्तक) अल-जौहर अल-थमीन फ़ी इलाल नाज़लत अल-यमीन (क़सम की मुसीबत से संबंधित कीमती रत्न)

मसला 214: शमसाबाद, जिला अटक से, प्रेषक जनाब मौलाना मौलवी क़ाज़ी गुलाम गिलानी साहब, 11 मुहर्रम शरीफ़ 1330 हिजरी।

[फ़ारसी संस्करण]: विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद अपने बेटे से उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किसी बात पर नाराज़ हो गया और अपनी बीवी से कहा कि "अगर तूने इस मेरे बेटे को घर में छोड़ा तो मुझ पर तीन तलाक़ हैं"। फिर कुछ समय बाद, बेटे की माफ़ी मांगने पर, ज़ैद खुद उस बेटे से राज़ी हो गया और उसे घर में रहने दिया। उसकी बीवी ने (बेटे के आने पर) हाँ या ना में कुछ नहीं कहा। क्या वह औरत ज़ैद पर तलाक़शुदा हो गई या नहीं? उत्तर दें और सवाब पाएं।

[उर्दू संस्करण]: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद किसी नापसंदीदा मामले पर अपने बेटे से नाराज़ हुआ तो ज़ैद ने अपनी बीवी से कहा "अगर तूने मेरे इस बेटे को घर में छोड़ा तो मुझ पर तीन तलाक़ है", फिर कुछ मुद्दत के बाद बेटे की माज़रत ख़्वाही (माफ़ी) पर ज़ैद अपने इस बेटे से राज़ी हो गया और घर में आने दिया, बेटे के घर आने पर ज़ैद की बीवी ने बेटे को कुछ न कहा, न हाँ और न ही ना कहा, तो क्या इस सूरत में ज़ैद की बीवी को तलाक़ हो गई या नहीं? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब (उत्तर): [अरबी]: बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। ऐ अल्लाह! हक़ और दुरुस्ती की राह दिखा। सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो... [उर्दू]: बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। या अल्लाह! तुझसे ही हक़ और सवाब (दुरुस्ती) में रहनुमाई है। सब तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो...

पेज 511 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳ ۱۳۳۰ھ رسالہ الجوہر الثمین فی علل نازلۃ الیمین (قسم کی مصیبت سے متعلق قیمتی جوہر)

مسئلہ ۲۱۴: از شمس آباد ضلع اٹک مرسلہ جناب مولانا مولوی قاضی غلام گیلانی صاحب ۱۱ محرم شریف ۱۳۳۰ھ

چہ می فرمایند علمائے اندریں مسئلہ کہ زید از پسر خود بوجہ امرے خلاف مرضی ناراض شدہ زن خود را گفت کہ اگر این پسر مرادر خانہ گزاشتی تو برمن سہ طلاق طلاق ہستی باز بعد از چند مدت بوجہ عذر خواہی پسرش زید خود ازاں پسر راضی شدودر خانہ گذاشت وزن او چیزی از لاونعم نگفت آیا آں زن بر زید طلاق شد یا نہ؟ بینواتوجروا۔

علمائے دین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ زید کسی ناپسندیدہ معاملہ پر اپنے بیٹے سے ناراض ہوا تو زید نے اپنی بیوی کو کہا "اگر تو نے میرے اس بیٹے کو گھر میں چھوڑا تو مجھ پر تین طلاق ہے"، پھر کچھ مدت کے بعد بیٹے کی معذرت خواہی پر زید اپنے اس بیٹے سے راضی ہوگیا اور گھر میں آنے دیا، بیٹے کے گھر آنے پر زید کی بیوی نے بیٹے کو کچھ نہ کہا، نہ ہاں اور نہ ہی نہ کہا، تو کیا اس صورت میں زید کی بیوی کو طلاق ہوگئی یا نہیں؟ بینواتوجروا

الجواب: [عربی]: بسم اللہ الرحمن الرحیم - اللھم ھدایۃ الحق والصواب - الحمد للہ رب [اردو]: بسم اللہ الرحمن الرحیم - یا اللہ ! تجھ سے ہی حق و صواب میں رہنمائی ہے۔ سب تعریفیں اللہ کے لئے ہیں جو

13 Fatawa Razawiyya Volume 13

[Arabic Preamble Translation] (Allah is the Lord) of the worlds, and the best of blessings and peace be upon the trustworthy master (Prophet Muhammad), to whom his Lord said: 'O beloved! Peace be unto thee from the companions of the right hand.' He honored him with the greatest honors and bestowed upon him the highest prestige, and He turned the conditional promises of His grace regarding his Ummah into certainties. May Allah Almighty's blessings and peace be upon him, his family, and his blessed companions who are of the right hand, equal to the number of every righteous and wicked person, every fulfillment and breach of oath, and every covenant and vow. Amen!

[Legal Discussion Translation] This humble servant (may Allah Almighty forgive him) directed a searching gaze into this matter and reached deep into it according to his capacity and opportunity. I found no heart-satisfying reason for the non-occurrence of divorce. Leaving someone in the house is synonymous with abandonment (tark) and vacation (takhliya). This abandonment and vacation could be negated through two ways: prevention by action or prohibition by words. Here, it is clear from every aspect of the question that the wife did not prevent the son through either of these two methods. Since the prevention is negated, the abandonment and vacation which was made a condition for the breach of oath (hunth) is established. Thus, due to the occurrence of this vacation, three divorces have become mandatory for the wife.

[1] Fatawa Qazi Khan, Issues of Oath on Abandonment, Naval Kishore Lucknow, 2/296

Page 512 of 688

[अरबी प्रस्तावना का अनुवाद] (अल्लाह) जहानों का पालने वाला है, बेहतरीन दुरूद और सलाम उस अमानतदार आका पर जिसके लिए उसके रब ने फ़रमाया: ऐ हबीब! आप के लिए दाहिनी ओर वाले साथियों की तरफ़ से सलाम है, और उसे अत्यंत महानताओं से नवाज़ा और उसे सर्वोच्च सम्मान प्रदान किया और उसने अपने फ़ज़्ल के सशर्त वादों को आपकी उम्मत के हक़ में बिना शर्त (निश्चित) कर दिया। अल्लाह तआला की रहमतें और सलाम आप पर और आपकी आल व असहाब पर जो दाहिनी ओर वाले हैं, हर नेक और बद, और पूरा करने वाले और तोड़ने वाले और अहद व क़सम की तादाद के बराबर हो, आमीन!

[क़ानूनी बहस का अनुवाद] इस फ़क़ीर (अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत फ़रमाए) ने इस मसले में छानबीन के लिए अपनी नज़र दौड़ाई और अपनी हिम्मत और फ़ुर्सत के मुताबिक गहराई तक पहुँचा, तो तलाक़ न होने की कोई इत्मीनान बख़्श वजह न पाई। घर में छोड़ना, जिसका अर्थ छोड़ देना और अलग होना है, और यह छोड़ना व अलग होना दो तरीकों—अमली तौर पर रोकने या ज़ुबानी बात के ज़रिए रोकने—से नकारा जा सकता है। यहाँ हर सवाल से स्पष्ट हो रहा है कि पत्नी ने बेटे को दोनों तरीकों में से किसी भी तरीके से नहीं रोका। तो जब रोकना नकारा है, तो 'तख़लिया' (खाली करना) व तर्क(छोड़ना) साबित हो गया जो हनथ (क़सम टूटने) के लिए शर्त तय की गई थी। अतः इस तख़लिया के पाए जाने से पत्नी को तीन तलाक़ें लाज़िम (अनिवार्य) हो गई हैं।

[1] फ़तावा क़ाज़ी खाँ, मसाइल अल-यमीन अलत-तर्क, नवल किशोर लखनऊ, २/२९६

पृष्ठ ५१२ का ६८८

العلمین، وافضل الصلوۃ والسلام علی السید الامین، الذی قال لہ ربہ فسلم لک من اصحب الیمین، اجلہ اجلا لاعززہ تعزیزا و جعل تعلیقات مواعید فضلہ فی حق امتہ تنجیزا، صلی اللہ تعالی وسلم علیہ وعلی الہ وصحبہ المیامین، عدد کل برو فاجر وبروحنث وعہد ویمین، امین!

سب جہانوں کو پالنے والا ہے، بہترین صلوۃ وسلام اس آقا امین پر جس کے اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اے حبیب! آپ کے لئے دائیں جانب والے اصحاب کی طرف سے سلام ہے، اور اس کو انتہائی بزرگیوں سے نوازا اور اس کو اعلیٰ اعزاز عطا فرمایا اور اس نے اپنے فضل کے مشروط وعدوں کو آپ کی امت کے حق میں غیر مشروط فرمایا، اللہ تعالیٰ کی رحمتیں اور سلام آپ پر اور آل واصحاب پر جو دائیں جانب والے ہیں، ہر نیک وبد اور پورا کرنے والے اور توڑنے والے اور عہد وقسم کی تعداد کے برابر ہو، آمین!

فقیر غفرلہ المولی القدیر دریں مسئلہ نگاہ تنقیح راجولاں دادم وبقدر قدرت وفرصت دور فرستادم عدم طلاق راوجے کہ ثلج صدر دہد نیافتم بخانہ گزاشتن ترک و تخلیہ است واوبد ووجہ منتفی شود منع بالفعل یا نہی بالقول و اینجا بتصریح سوال ہر دو نافی منتفی پس تخلیہ کہ شرط حنث بود روئے نمود وسہ طلاق لازم شد در فتاوی امام اجل قاضی خاں کتاب الایمان مسائل الیمین علی الترک است رجل اجر دارہ سنۃ ثم قال للمستأجر واللہ لا اترکك فی داری ثم قال لہ اخرج من داری یصیر باراً[1]، در عقود الدریہ از

اس فقیر (اللہ تعالیٰ اس کی مغفرت فرمائے) نے اس مسئلہ میں چھان بین کے لئے نظر دوڑائی اور اپنی ہمت اور فرصت کے مطابق دور گہرائی تک پہنچا، تو طلاق نہ ہونے کی کوئی اطمینان بخش

وجہ نہ پائی، گھر میں چھوڑنا، جس کا مطلب ترک کر دینا اور علیحدہ ہونا ہے، اور یہ ترک وعلیحدہ ہونا دو طریقوں عملاً منع کرنے یا زبانی بات کرنے کے ذریعے روکنے سے منتفی ہو سکتا ہے اور یہاں ہر سوال سے واضح ہو رہا ہے کہ بیوی نے بیٹے کو دونوں طریقوں میں سے کسی ایک طریقہ سے بھی منع نہیں کیا، تو جب منع کرنا منتفی ہے تو تخلیہ وترک متحقق ہو گیا جو حنث کے لئے شرط قرار دی تھی، تو اس تخلیہ کے پائے جانے سے بیوی کو تین طلاقیں لازم ہو گئی ہیں،

[1] فتاویٰ قاضی خاں مسائل الیمین علی الترک نولکشور لکھنؤ ۲۹۶/۲

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

In Fatawa Sughra, it is mentioned from Khaniya: A man swore that he would not let so-and-so enter this house. If the house belongs to the oath-taker, and he forbids him verbally but does not prevent him physically until he enters, he has broken his oath. The condition for fulfilling his oath is prevention both verbally and physically to the best of his ability. If the house does not belong to the oath-taker and he forbids him verbally but not physically, such that if he enters he will not be an oath-breaker. [1] Again it is said: A man swore by his wife's divorce that he would not let so-and-so pass over this bridge. He forbade him verbally, and thus he fulfills his oath because he does not possess the authority to prevent him physically. [2] Again it is said: A man said to his son, "If I let you work with so-and-so, then my wife is such (divorced)." If the son is an adult and he (the father) is unable to prevent him physically, then verbal prevention makes him an oath-fulfiller. If the son is a minor, the condition for fulfilling the oath is prevention both verbally and physically. [3] And in Bazzaziya it is like this: He said to his adult son, "If I let you work with so-and-so," then it implies verbal prevention, but if he is a minor, then it implies...

In the book Al-Aiman of the Fatawa of the Great Imam Qazi Khan, regarding issues of oaths on abandonment, it is stated: A person rented out his house for a year, then he said to the tenant, "By God, I will not leave you in my house." Having said this, he then told the tenant verbally, "Leave my house." Upon saying this, the owner became truthful in his oath and fulfilled it. Similarly, it is narrated in 'Uqud al-Durriyya from Fatawa Sughra, and then it is stated in Khaniya that a person took an oath saying, "I will not let so-and-so enter this house." If this house is the property of the one taking the oath, and he forbade him verbally but did not prevent him physically, so the person entered the house, the oath of the one who took it was broken because, as the owner of the house, it was necessary for the fulfillment of his oath to prevent him both verbally and practically according to his capacity. If that house is not the property of the oath-taker, and he forbade him verbally but did not prevent him practically, to the extent that if that person entered the house, he would not be an oath-breaker. In Khaniya, it is further stated that a person took an oath of his wife's divorce that he would not let such-and-such person pass through this bridge, then he verbally stopped him from passing, so his oath was fulfilled because he was not

capable of preventing him practically. Then he said: A person said to his son, "If I leave you to work with so-and-so..."

1. Fatawa Qazi Khan, Issues of Oath on Abandonment, Naval Kishore, Lucknow, 2/296.
2. Fatawa Qazi Khan, Issues of Oath on Abandonment, Naval Kishore, Lucknow, 2/296.
3. Fatawa Qazi Khan, Issues of Oath on Abandonment, Naval Kishore, Lucknow, 2/296.

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

फतावा सुग़रा में खानिया से उद्धृत है: एक व्यक्ति ने शपथ ली कि वह अमुक को इस घर में प्रवेश नहीं करने देगा। यदि घर शपथ लेने वाले का है, और उसने उसे मौखिक रूप से मना किया लेकिन शारीरिक रूप से नहीं रोका यहाँ तक कि वह प्रवेश कर गया, तो उसने अपनी शपथ तोड़ दी। उसकी शपथ पूरी करने की शर्त अपनी सामर्थ्य के अनुसार मौखिक और शारीरिक दोनों तरह से रोकना है। यदि घर शपथ लेने वाले का नहीं है और उसने उसे मौखिक रूप से मना किया लेकिन शारीरिक रूप से नहीं, यहाँ तक कि यदि वह प्रवेश कर जाता है तो वह शपथ तोड़ने वाला नहीं होगा। [1] पुनः कहा गया है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी के तलाक की शपथ ली कि वह अमुक व्यक्ति को इस पुल से नहीं गुजरने देगा। उसने उसे मौखिक रूप से मना किया, और इस तरह वह अपनी शपथ पूरी करने वाला हो गया क्योंकि उसके पास उसे शारीरिक रूप से रोकने का अधिकार नहीं है। [2] पुनः कहा गया है: एक व्यक्ति ने अपने बेटे से कहा, "यदि मैं तुम्हें अमुक के साथ काम करने दूँ, तो मेरी पत्नी ऐसी है (तलाकशुदा)।" यदि बेटा वयस्क है और वह (पिता) उसे शारीरिक रूप से रोकने में असमर्थ है, तो मौखिक मनाही उसे शपथ पूरी करने वाला बना देती है। यदि बेटा नाबालिग है, तो शपथ पूरी करने की शर्त मौखिक और शारीरिक दोनों तरह से रोकना है। [3] और बज़ज़िया में इस प्रकार है: उसने अपने वयस्क बेटे से कहा, "यदि मैं तुम्हें अमुक के साथ काम करने दूँ," तो इसका अर्थ मौखिक मनाही है, लेकिन यदि वह नाबालिग है, तो...

इमाम अजल काज़ी खान के फतावा की किताब अल-अमान में 'तर्क (किसी काम को छोड़ने) पर शपथ के मसलों में है कि एक व्यक्ति ने अपना घर एक साल के लिए किराये पर दिया, फिर उसने किरायेदार से कहा, "खुदा की कसम, मैं तुझे अपने घर में नहीं छोड़ूँगा।" यह कहकर फिर उसने किरायेदार से मौखिक रूप से कहा, "मेरे घर से निकल जा," तो इस कहने पर वह मालिक शपथ में सच्चा हो गया और उसने अपनी शपथ पूरी कर ली। इसी तरह 'उक़ूद-उद-दुर्रिया' में 'फतावा सुग़रा' से उद्धृत है और फिर 'खानिया' में फरमाया कि एक व्यक्ति ने शपथ खाई कि "मैं अमुक को इस घर में दाखिल नहीं होने दूँगा।" तो अगर यह घर शपथ खाने वाले का मालिकाना हक हो और उसने उसे मौखिक रूप से मना किया और व्यावहारिक रूप से मना नहीं किया, फिर वह व्यक्ति उस घर में दाखिल हो गया, तो शपथ खाने वाले की शपथ टूट गई क्योंकि घर का मालिक होने के नाते उसकी शपथ पूरी होने के लिए जरूरी था कि वह मौखिक और व्यावहारिक दोनों तरीकों से अपनी सामर्थ्य के अनुसार मना करता। और अगर वह घर शपथ खाने वाले का मालिकाना हक न हो और उसने उसे

मौखिक रूप से मना किया और व्यावहारिक रूप से मना नहीं किया, यहाँ तक कि अगर वह व्यक्ति उस मकान में दाखिल हो गया, तो वह शपथ तोड़ने वाला (हानिस) न होगा। खानिया में फिर फरमाया कि एक व्यक्ति ने पत्नी के तलाक की शपथ खाई कि वह अमुक व्यक्ति को इस पुल से नहीं गुजरने देगा, फिर उसने मौखिक रूप से उसे गुजरने से रोका, तो उसकी शपथ पूरी हो गई क्योंकि वह उसे व्यावहारिक रूप से रोकने में सक्षम न था। फिर फरमाया कि एक व्यक्ति ने अपने बेटे से कहा, "अगर मैं तुम्हें अमुक के साथ काम करने के लिए छोड़ूँ..."

1. फतावा काज़ी खान, मसाइल-ए-यमीन अलत-तर्क, नवल किशोर, लखनऊ, 2/296.
2. फतावा काज़ी खान, मसाइल-ए-यमीन अलत-तर्क, नवल किशोर, लखनऊ, 2/296.
3. फतावा काज़ी खान, मसाइल-ए-यमीन अलत-तर्क, नवल किशोर, लखनऊ, 2/296.

فتاوی رضویه جلد سیزدہم ۱۳

فتاوی صغری است باز درخانیہ فرمود رجل حلف ان لایدع فلاناً یدخل هذه الدار فان کانت الدار للحالف فمنعه بالقول ولم یمنعه بالفعل حتی دخل حنث فی یمینہ فیکون شرط بره المنع بالقول والفعل بقدر مایطیق وان لم تکن الدارللحالف فمنعه بالقول دون الفعل حتی لودخل لایکون حانثا ۱ باز فرمود رجل حلف بطلاق امرأتہ ان لایدع فلانا یمر علی هذه القنطرة فمنعه بالقول یکون بار الانه لایمنعہ بالقول یکون بارالانہ لایملك المنع بالفعل ۲ باز فرمود رجل قال لابنہ ان ترکتك تعمل مع فلان فامرأتہ کذا فان کان الابن بالغا لایقدر علی منعہ بالفعل فمنعہ بالقول یکون بارا وان کان الابن صغیرا کان شرط بره المنع بالقول والفعل جمیعا ۳ ودر بزازیہ چنا نست قال لابنہ الکبیر ان ترکتك تعمل مع فلان فهو علی المنع بالقول ولو صغیرا فعلی

امام اجل قاضی خاں کے فتاوی کے کتاب الایمان میں ترک پر قسم کے مسائل میں ہے کہ ایک شخص نے اپنا گھر ایک سال کے لئے کرایہ پر دیا تو پھر اس نے کرایہ دار کو کہا خدا کی قسم میں تجھے اپنے گھر میں نہ چھوڑوں گا، یہ کہہ کر پھر اس نے کرایہ دار کو زبانی کہا تو میرے گھر سے نکل جا، تو اس کہنے پر وہ مالک قسم میں سچا ہو گیا اور اس نے اپنی قسم پوری کر لی۔ اسی طرح عقودالدریہ میں فتاوی صغری سے منقول ہے اور پھر خانیہ میں فرمایا کہ ایک شخص نے قسم کھائی کہ "میں فلاں کو اس گھر میں داخل نہ ہونے دوں گا" تو اگر یہ گھر قسم کھانے والے کی ملکیت ہو تو اس نے اس کو زبانی منع کیا اور عملاً منع نہ کیا، پس وہ شخص اس گھر میں داخل ہو گیا تو قسم کھانے والے کی قسم ٹوٹ گئی کیونکہ گھر کا مالک ہونے کی وجہ سے اس کی قسم پوری ہونے کے لئے ضروری تھا کہ وہ زبانی اور عملی دونوں طریقوں سے حسب طاقت منع کرتا اور اگر وہ گھر قسم کھانے والے کی ملکیت نہ ہو تو اس کو زبانی منع کیا اور عملاً منع نہ کیا

حتی کہ اگر وہ شخص اس مکان میں داخل ہو گیا تو حانث نہ ہو گا خانیہ میں پھر فرمایا کہ ایک شخص نے بیوی کی طلاق کی قسم کھائی کہ وہ فلاں شخص کو اس پل سے نہ گزرنے دے گا، پھر اس نے زبانی اس کو گزرنے سے روکا، تو اس کی قسم پوری ہوگئی کیونکہ وہ اس کو عملاً منع کرنے پر قادر نہ تھا۔ پھر فرمایا ایک شخص نے اپنے بیٹے کو کہا اگر میں تجھے فلاں کے ساتھ کام کرنے کے لئے چھوڑوں

۱ فتاوی قاضی خاں مسائل الیمین علی الترک نولکشور لکھنؤ ۲/۲۹۶ ۲ فتاوی قاضی خاں مسائل الیمین علی الترک نولکشور لکھنؤ ۲/۲۹۶ ۳ فتاوی قاضی خاں مسائل الیمین علی الترک نولکشور لکھنؤ ۲/۲۹۶

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13.

[Arabic Text]: The word and the deed. In Bazzazia, it is said: If one says, 'If I let so-and-so enter my house, his wife is such [divorced],' and so-and-so enters without the knowledge of the oath-taker, the oath is not broken (he is not hanith). But if he knows and does not prevent him, he is hanith. (2) Durr-e-Mukhtar. Towards the end of the chapter on oaths in Fath al-Qadir, it is stated: If one swears, 'I will not let so-and-so do such-and-such,' like not letting him pass, go, or enter, he fulfills his oath by saying to him, 'Do not do it.' (3) 'Do not exit,' 'Do not pass,' whether the person obeys or disobeys. (4) In 'Uqud al-Durriyah, it says: A man swore by divorce to his adult sister, 'I will not let you live with your brothers-in-law in the house.' Since the house does not belong to the oath-taker, preventing her verbally without physical action does not break the oath. (4) Likewise in Khania, Bazzazia, and the epistles of Allama Shurunbulali. In Qunyah, it is written: A man swore, 'The resident of his house shall surely leave today,' and the resident is a dominant oppressor, he should strive his best to evict him. If he is unable to do so, the oath rests upon verbal expression. (5) In Alamgiriyah it is stated...

[Urdu Text]: ...then my wife is divorced. If the son is an adult who can be practically stopped, then simply forbidding him verbally will fulfill the oath. But if the son is a minor, then both verbal and practical prevention will be a condition for the oath to be fulfilled. And in Bazzazia, it is like this: if the son is an adult, then only verbal prohibition is a condition for fulfilling the oath, and if the son is a minor, then both verbal and practical prohibition will be a condition. Then it is stated in Khania: If someone said, 'If I let so-and-so enter my house, then my wife is divorced,' and that person entered without his knowledge, he will not be hanith. If he came to know of his entry and did not stop him, then he will be hanith. At the end of the chapter on oaths in Fath al-Qadir, it is written: if someone swore an oath saying, 'I will not let so-and-so do this work,' for example, 'I will not let him pass, I will not let him go, I will not let him enter,' then just saying verbally, 'Don't do it,' 'Don't enter,' 'Don't pass,' is sufficient to fulfill the oath, whether he obeys or not. It is written in 'Uqud al-Durriyah: A person swore by divorce and said to his adult sister, 'I will not let you stay with your brothers-in-law in the house.' So, when that house does not belong to the oath-taker, then verbal prevention will be intended, not practical prevention. Therefore, if he stopped her verbally, the oath will be fulfilled.

Footnotes: 1 Fatawa Bazzazia on the margin of Fatawa Hindiyya, Kitab al-Iman, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/350. 2 Fatawa Qazi Khan, Masa'il al-Yamin 'ala al-

Tark, Nawalkishore Lucknow, 2/29. 3 Fath al-Qadir, Kitab al-Iman, Miscellaneous Issues, Nooriya Rizvia Sukkur, 4/474. 4 Al-'Uqud al-Durriyah fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiyyah, Kitab al-Talaq, Qandahar, Afghanistan, 1/38. 5 Al-'Uqud al-Durriyah fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiyyah, Kitab al-Talaq, Qandahar, Afghanistan, 1/50.

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13.

[अरबी पाठ]: कथन और कर्म। बज़्ज़िया में फ़रमाया गया है: यदि कोई कहे, 'अगर मैं फ़लाँ को अपने घर में प्रवेश करने दूँ, तो उसकी पत्नी ऐसी [तलाक़शुदा] है,' और वह व्यक्ति शपथ लेने वाले की जानकारी के बिना प्रवेश कर जाता है, तो शपथ नहीं टूटती (हानिस नहीं होता)। लेकिन अगर वह जान जाए और उसे न रोके, तो शपथ टूट जाती है। (2) दुर्रे मुख़्तार। फ़तह अल-क़दीर में ईमान (शपथों) के अंत में है: यदि कोई शपथ ले, 'मैं फ़लाँ को ऐसा नहीं करने दूँगा,' जैसे कि नहीं गुज़रने दूँगा, नहीं जाने दूँगा या प्रवेश नहीं करने दूँगा, तो वह उससे यह कहकर अपनी शपथ पूरी कर लेता है, 'ऐसा मत करो।' (3) 'मत निकलो,' 'मत गुज़रो,' चाहे वह व्यक्ति आज्ञा माने या न माने। (4) 'उक़ूद अल-दुर्रियाह' में है: एक व्यक्ति ने अपनी बालिग बहन से तलाक़ की शपथ लेते हुए कहा, 'मैं तुम्हें घर में तुम्हारे देवरों के साथ रहने नहीं दूँगा।' चूँकि वह घर शपथ लेने वाले का नहीं है, तो उसे केवल ज़बानी तौर पर रोकना, बिना किसी व्यावहारिक कार्रवाई के, शपथ को नहीं तोड़ता। (4) इसी तरह खानिया, बज़्ज़िया और अल्लामा शुरुनबुलाली के रिसालों में है। 'कुनिया' में है: यदि कोई शपथ ले, 'उसके घर का निवासी आज ज़रूर निकल जाएगा,' और निवासी एक शक्तिशाली अत्याचारी है, तो वह उसे निकालने की पूरी कोशिश करे। यदि वह ऐसा करने में असमर्थ है, तो शपथ ज़ुबान से कहे गए शब्दों पर आधारित होगी। (5) आलमगीरिया में है...

[उर्दू पाठ]: ...तो मेरी पत्नी को तलाक़। तो अगर बेटा बालिग हो जिसे व्यावहारिक रूप से रोका जा सकता हो, तो उसे सिर्फ़ ज़बानी मना करने पर शपथ पूरी हो जाएगी। और अगर बेटा नाबालिग हो, तो फिर शपथ पूरी होने के लिए ज़बानी और व्यावहारिक दोनों तरह से मना करना शर्त होगा। और बज़्ज़िया में इस तरह है कि अगर बेटा बालिग हो, तो फिर सिर्फ़ ज़बानी मना करना शपथ पूरी होने के लिए शर्त है, और अगर बेटा नाबालिग हो, तो ज़बानी और व्यावहारिक दोनों तरीकों से मना करना शर्त होगा। फिर खानिया में फ़रमाया कि अगर किसी ने यूँ कहा, 'अगर मैं फ़लाँ को अपने घर में दाख़िल होता छोड़ूँ, तो मेरी पत्नी को तलाक़,' तो वह व्यक्ति उसकी अनभिज्ञता में दाख़िल हो गया तो हानिस न होगा, और अगर उसके दाख़िल होने पर ज्ञान हुआ और मना न किया तो हानिस होगा। फ़तह अल-क़दीर में शपथों के बयान के अंत में है कि अगर किसी ने शपथ खाई कि 'मैं फ़लाँ को इस काम पर न छोड़ूँगा,' मसलन गुज़रने न दूँगा, जाने न दूँगा, दाख़िल न होने दूँगा, तो सिर्फ़ ज़बानी, 'न कर', 'न दाख़िल हो', 'न गुज़र' कह देना शपथ को पूरा करने के लिए काफ़ी है, वह माने या न माने। 'उक़ूद अल-दुर्रियाह' में है कि एक व्यक्ति ने तलाक़ की शपथ खाते हुए अपनी बालिग बहन को

कहा, 'मैं तुझे घर में तेरे देवरों के साथ रहना न छोड़ूँगा,' तो जब वह घर शपथ खाने वाले का न हो तो फिर ज़बानी रोकना मुराद होगा, अमलन (व्यावहारिक रूप से) रोकना मुराद नहीं होगा, तो ज़बानी रोक दिया तो शपथ पूरी हो जाएगी।

फुटनोट्स: 1 फतावा बज़्ज़िया हाशिया फतावा हिन्दिया, किताब अल-ईमान, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/350. 2 फतावा क़ाज़ी खान, मसाइल अल-यमीन अला अल-तर्क, नवलकिशोर लखनऊ, 2/29. 3 फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-ईमान, विविध मामले, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 4/474. 4 अल-उक़ूद अल-दुर्रियाह फ़ी तन्क़ीह अल-फ़तावा अल-हामिदिय्याह, किताब अल-तलाक़, कंधार, अफ़गानिस्तान, 1/38. 5 अल-उक़ूद अल-दुर्रियाह फ़ी तन्क़ीह अल-फ़तावा अल-हामिदिय्याह, किताब अल-तलाक़, कंधार, अफ़गानिस्तान, 1/50.

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[عربی متن]: القول والفعل باز درخانیہ فرمود ولو قال ان ترکت فلاناً یدخل بیتي فامرأته کذا فدخل فلان ولم یعلم به الحالف لایحنث وان علم ولم یمنعه حنث ۲ در مختار القدیر آخر ایمان است حلف لا اترك فلانا یفعل کذا کلا یمر اولایذهب اولایذخل یبر بقوله له لا تفعل ۳ لا تخرج لا تمر اطاعه او عصاه ۴ در عقود الدریه است حلف بالطلاق علی اخته البالغة لا اخلیك تسکنین مع حماتك في الدار فحیث لاتکن الدار للحالف فمنعها بالقول دون الفعل لا یحنث ۴ کذا فی الخانیة و البزازیة ورسائل العلامة الشرنبلالیة دراں از قنیہ است حلف لیخرجن ساکن داره الیوم والساکن ظالم غالب یتکلف في اخراجه فان لم یمکنه فالیمین علی التلفظ باللسان ۵ در عالمگیر یہ است

[اردو متن]: تو میری بیوی کو طلاق، تو اگر بیٹا بالغ ہو جس کو عملاً روک سکتا ہو تو اس کو صرف زبانی منع کرنے پر قسم پوری ہو جائیگی، اور اگر بیٹا نابالغ ہو تو پھر قسم پورا ہونے کے لئے زبانی اور عملی دونوں طرح منع کرنا شرط ہوگا۔ اور بزاز یہ میں یوں ہے کہ اگر بیٹا بالغ ہو تو پھر صرف زبانی منع کرنا قسم پورا ہونے کیلئے شرط ہے اور اگر بیٹا نابالغ ہو تو پھر زبانی اور عملی دونوں طریقوں سے منع کرنا شرط ہوگا۔ پھر خانیہ میں فرمایا کہ اگر کسی نے یوں کہا اگر میں فلاں کو اپنے گھر میں داخل ہوتا چھوڑوں تو میری بیوی کو طلاق، پس وہ شخص اس کی لاعلمی میں داخل ہو گیا تو حانث نہ ہوگا، اور اگر اس کے داخلے پر علم ہوا اور منع نہ کیا تو حانث ہو گا۔ فتح القدیر میں قسموں کے بیان کے آخر میں ہے کہ اگر کسی نے قسم کھائی کہ میں فلاں کو اس کام پر نہ چھوڑوں گا، مثلاً گزرنے نہ دوں گا، جانے نہ دوں گا، داخل نہ ہونے دوں گا، تو صرف زبانی، نہ کر، نہ داخل ہو، نہ گزر کہہ دینا قسم کو پورا کرنے کیلئے کافی ہے وہ مانے یا نہ مانے عقود الدریہ میں ہے ایک شخص نے طلاق کی قسم کھاتے ہوئے اپنی بالغ بہن کو کہا میں

تجھے گھر میں تیرے دیوروں کے ساتھ رہنا نہ چھوڑوں گا، تو جب وہ گھر قسم کھانے والے کا نہ ہو تو پھر زبانی روکنا مراد ہو گا عملاً روکنا مراد نہیں ہو گا تو زبانی روک دیا قسم پوری ہو جائیگی،

حواشی: ۱ فتاوی بزازیہ علی حاشیة فتاوی ہندیه کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۳۵۰ ۲ فتاوی قاضی خان مسائل الیمین علی الترك نولکشور لکھنو ۲/ ۲۹ ۳ فتح القدیر کتاب الایمان مسائل متفرقه نوریہ رضویہ سکھر ۴/ ۴۷۴ ۴ العقود الدریة في تنقیح الفتاوی الحامدیة کتاب الطلاق قندھار، افغانستان ۱/ ۳۸ ۵ العقود الدریة في تنقیح الفتاوی الحامدیة کتاب الطلاق قندھار، افغانستان ۱/ ۵۰

Fatawa Razawiyyah, Volume 13

[Right Column] Similarly, it is mentioned in Khaniyah, Bazzaziyah, and the treatises of Allama Shurunbulali. In it, with reference to Quniyah, it is stated that a person took an oath: "Today, I will surely expel so-and-so resident." Now, that resident is oppressive and dominant such that it is difficult to expel him, then in this case, expulsion would mean verbal instruction. Therefore, saying "get out" is sufficient for the fulfillment of the oath. In Alamgiriyah, it is mentioned that if someone said, "If I let so-and-so enter this house, my wife is divorced," then if the house is his property, it is necessary to forbid both verbally and practically for the oath to be fulfilled. Sadr ash-Shaheed (may Allah Almighty have mercy on him) has mentioned this in his book 'Waqi'at'. In 'Nawazil', the power to prevent is a condition for the fulfillment of the oath; he did not mention house ownership but stated that if the oath-taker can prevent entry, then forbidden means both verbal and practical prevention. If he is not capable of preventing entry, then only verbal prevention is intended. Imam Sheikh Zahir-ud-Din considers the power to prevent as the standard, and the fatwa is based on this. (Translator's note: 'T') I say: (I say here a warning on several matters is necessary. First, as you have seen, the statements of the noble scholars differ regarding the issue of 'not leaving so-and-so', i.e., 'I will not let so-and-so come into the house'. Imam Sadr Shaheed considers house ownership: if the house is his own, he must stop him both verbally and practically. If he only stops him verbally, he will be a breaker of the oath (hanith). The second text of Imam Qazi Khan also states this. Yes, if the house is not his property, then verbal prevention is sufficient. And Imam Faqih Abu al-Layth considered the power and authority to prevent as credible, that...)

[Left Column] When he said: "If I let so-and-so enter this house, my wife is divorced." If the oath-taker owns this house, then the condition for his righteousness (fulfillment of the oath) is to prevent him from entering by word and deed. This is how Sadr ash-Shaheed (may Allah Almighty have mercy on him) mentioned it in his 'Waqi'at'. In 'Nawazil', the condition for his righteousness is the ownership of prevention (capability), and he did not stipulate ownership of the house. He said: if the oath-taker has the power to prevent him from entry, then it applies to both prohibition and prevention. If he does not have the power to prevent him, then it is for prohibition without prevention. Sheikh Imam Zahir-ud-Din used to consider the ownership of prevention, and upon this is the fatwa. I say: here a warning is needed on certain matters. Firstly, as you saw, the statements of the scholars regarding the issue of "not leaving so-and-so," for example, "I will not let him come into the house,"

have come in different ways. Imam Sadr ash-Shaheed gave consideration to the ownership of the house, that if the house is his, he should prevent by word and deed. If he only acts verbally, he will be a breaker of the oath (hanith). This is the second text of Imam Qazi Khan. Yes, if the house is not his property, then verbal prevention is enough. Imam Faqih Abu al-Layth considered the ownership of prevention as credible, that if he is able to withhold by force, then mere prohibition does not suffice, even if the house is not his. Otherwise, it is sufficient, even if the house belongs to him. Imam Zahir-ud-Din also gave the fatwa on this, and the first text of Imam Qazi Khan and...

[Footnote] 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 3 regarding suspending divorce with the word 'In' etc. Noorani Kutub Khana Peshawar 1/436

फ़तावा रज़विया, खंड 13

[दायां कॉलम] यही बात खानिया, बज़ाज़िया और अल्लामा शुरुनबुललली के रिसालों में है। इसमें कुनिया के हवाले से है कि एक व्यक्ति ने कसम खाई कि 'मैं आज अमुक निवासी को ज़रूर बाहर निकालूँगा', वह निवासी ज़ालिम और प्रभावी है जिसे निकालना मुश्किल है, तो फिर निकालने से मुराद ज़बानी कहना होगा। लिहाज़ा ज़बानी कह देना कि 'निकल जा', कसम पूरी होने के लिए काफ़ी है। आलमगीरिया में है कि किसी ने कहा, "अगर मैं अमुक को इस घर में दाखिल होने दूँ तो मेरी बीवी को तलाक़।" अगर घर उसकी मिल्कियत (स्वामित्व) हो, तो कसम पूरी होने के लिए ज़बानी और अमली (व्यावहारिक) दोनों तरह से मना करना ज़रूरी है। सदरुश शहीद (रहमतुल्लाह अलैह) ने अपनी किताब 'वाकिआत' में इसी तरह ज़िक्र फ़रमाया है। 'नवाज़िल' में कसम पूरी करने के लिए मना करने की कुदरत (शक्ति) शर्त है, उन्होंने घर की मिल्कियत का ज़िक्र नहीं फ़रमाया और यूँ कहा कि अगर कसम खाने वाला उसे प्रवेश से रोक सकता है तो ज़बानी और अमली दोनों तरह का मना मुराद होगा। और अगर वह प्रवेश रोकने में असमर्थ हो, तो सिर्फ़ ज़बानी मना मुराद होगा। इमाम शेख़ ज़हीर उद्दीन मना करने की कुदरत का एतबार करते हैं और इसी पर फ़तवा है। (टी) अकुल (मैं कहता हूँ): यहाँ कुछ बातों पर सचेत करना ज़रूरी है। अव्वल जैसा कि आपने देखा कि "अमुक को न छोड़ूँ कि वह घर में आए" के मसले में उलेमा-ए-किराम के बयान अलग-अलग हैं। इमाम सदर शहीद घर के मालिक होने का एतबार करते हैं कि अगर घर उसका अपना है तो ज़बानी और अमली दोनों तरह से रोके और अगर सिर्फ़ ज़बानी रोका तो कसम टूट जाएगी (हानिस हो जाएगा)। इमाम काज़ी ख़ाँ का दूसरा बयान भी यही है। हाँ, अगर घर उसका अपना न हो तो ज़बानी रोकना काफ़ी है। और इमाम फ़क़ीह अबुल लैस ने रोकने की कुदरत व अख्तियार को विश्वसनीय माना है कि...

[बायां कॉलम] जब उसने कहा: "अगर मैंने अमुक को इस घर में प्रवेश करने दिया तो मेरी पत्नी को तलाक़ है।" यदि शपथ लेने वाला इस घर का स्वामी है, तो उसकी शपथ के पूरा होने की शर्त यह है कि वह उसे बोलने और करने दोनों से प्रवेश करने से रोके। सदर अल-शहीद (अल्लाह उन पर दया करे) ने अपनी 'वाकिआत' में इसका उल्लेख इसी तरह किया है। 'अन-नवाज़िल' में, उसकी शपथ पूरी होने की शर्त रोकने की क्षमता है, और उन्होंने घर के स्वामित्व को शर्त नहीं बनाया। उन्होंने कहा: यदि शपथ लेने वाले के पास उसे प्रवेश करने से रोकने की शक्ति है, तो यह निषेध और निवारण दोनों पर लागू होता है। यदि उसके पास उसे रोकने की शक्ति नहीं है, तो यह निवारण के बिना निषेध के लिए है। शेख इमाम ज़हीर-उद-दीन रोकने की क्षमता पर विचार करते थे, और इसी पर फ़तवा है।

अकुल (मैं कहता हूँ): यहाँ कुछ बातों पर चेतावनी की आवश्यकता है। सबसे पहले, जैसा कि आपने देखा, विद्वानों के बयान "अमुक को न छोड़ने" के मुद्दे पर, उदाहरण के लिए, "मैं उसे घर में नहीं आने दूँगा", विभिन्न तरीकों से आए हैं। इमाम सदर अल-शहीद ने घर के स्वामित्व पर विचार किया, कि यदि घर उनका है, तो उन्हें शब्द और कार्य से रोकना चाहिए। यदि वह केवल मौखिक रूप से कार्य करता है, तो वह शपथ तोड़ने वाला (हानिस) होगा। यह इमाम काज़ी खान का दूसरा पाठ है। हाँ, यदि घर उसकी संपत्ति नहीं है, तो मौखिक रोकथाम पर्याप्त है। इमाम फ़क़ीह अबू अल-लैथ ने रोकने की क्षमता को विश्वसनीय माना है, कि यदि वह बलपूर्वक रोकने में सक्षम है, तो केवल निषेध पर्याप्त नहीं है, भले ही घर उसका न हो। अन्यथा यह पर्याप्त है, भले ही घर उसका अपना हो। इमाम ज़हीर-उद-दीन ने भी इसी पर फ़तवा दिया, और इमाम काज़ी खान का पहला पाठ और...

[पाद लेख] 1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 3, शब्द 'इन' आदि के साथ तलाक़ को निलंबित करने पर। नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/436

पृष्ठ 515/688

[دایاں کالم] یوں خانیہ، بزازیہ اور علامہ شرنبلالی کے رسائل میں ہے اور اس میں قنیہ کے حوالے سے ہے کہ ایک نے قسم کھائی کہ میں آج فلاں رہائشی کو ضرور نکال باہر کروں گا، تو وہ رہائشی ظالم اور غالب ہو جس کو نکالنا مشکل ہو تو پھر نکالنے سے مراد زبانی کہنا ہوگا، لہٰذا زبانی کہہ دینا کہ نکل جا، قسم کے پورا ہونے کے لئے کافی ہے، عالمگیریہ میں ہے کسی نے کہا اگر میں فلاں کو اس گھر میں داخل ہوتا چھوڑوں تو میری بیوی کو طلاق، تو اگر گھر اس کی ملکیت ہو تو پھر قسم پورا ہونے کے لئے زبانی اور عملی دونوں طرح منع کرنا ضروری ہے، اس کو صدر الشہید رحمہ اللہ تعالٰی نے اپنی کتاب واقعات میں یونہی ذکر فرمایا ہے، اور نواز ل میں ہے قسم پورا کرنے کے لئے منع کی قدرت شرط ہے انہوں نے گھر کی ملکیت کا ذکر نہیں فرمایا اور یوں کہا اگر قسم کھانے والا اس کو دخول سے منع کر سکتا ہے تو پھر زبانی اور عملی دونوں طرح منع مراد ہوگا، اور اگر وہ دخول سے روکنے پر قادر نہ ہو تو پھر صرف زبانی منع مراد ہوگا، اور امام شیخ ظہیر الدین منع کی قدرت کا اعتبار کرتے ہیں اور اسی پر فتوی ہے-(ت) اقول: (میں کہتا ہوں یہاں چند امور پر تنبیہ ضروری ہے۔ اول جیسا کہ آپ نے دیکھا عدم ترک فلاں، یعنی فلاں کو نہ چھوڑوں گا کہ وہ گھر میں آئے، کے مسئلہ میں علماء کرام کی عبارات مختلف ہیں، امام صدر شہید گھر کے مالک ہونے کا اعتبار کرتے ہیں کہ اگر گھر اس کا اپنا ہے تو پھر زبانی اور عملی دونوں طرح سے روکے، اور اگر صرف زبانی روکا تو حانث ہو جائے گا، اور امام قاضی خاں کی دوسری نص بھی یہی ہے، ہاں اگر گھر اس کا اپنا نہ ہو تو پھر زبانی روکنا کافی ہے، اور امام فقیہ ابو اللیث نے روکنے کی قدرت و اختیار کو معتبر رکھا ہے کہ اس

[بایاں کالم] اذ قال ان ترکت فلانا یدخل هذه الدار فامرأتی طالق فان کان الحالف یملك هذه الدار فشرط بره ان یمنعه عن الدخول بالقول الفعل هکذا ذکره الصدر الشهید رحمه الله تعالی في واقعاته، وفی النوازل شرط بره ملك المنع ولم یعترض لملك الدار فقال ان کان الحالف یملك منعه عن الدخول فهو علی النهی والمنع جمیعاً وان کان لایملك منعه فهو علی النهی دون المنع وکان شیخ الامام ظهیر الدین یعتبر ملك المنع وعلیه الفتوی - اقول: اینجا تنبہ باید بر امور اولا عبارات علما چنانکہ دیدی در مسئلہ عدم ترک فلاں مثلاً نگزارم کہ بخانہ آید بر رنگہائے مختلف آمدہ امام صدر شہید اعتبار ملک دار فرمود کہ اگر خانہ خانہ اوست منع بقول و فعل کند اگر تنہا بنی زبانی عمل نماید حانث ہمیں است نص دوم امام قاضی خاں، آرے اگر خانہ ملک او نیست منع زبانی بس است، وامام فقیہ ابواللیث ملک منع را معتبر داشت کہ اگر بزور باز داشتن تواند مجرد نہی کفایت نکند گو خانہ خانہ اش نباش ورنہ کافی است گو خانہ خود ازاں او باش امام ظہیر الدین ہمبریں فتوی داد و نص اول امام قاضی خاں و

[فٹ نوٹ] 1 فتاوی هندیة الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق بکلمة ان الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۳۶

Page Heading: Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

Main Content: [Right Column - Urdu Translation/Explanatory Text] In such a case, if one has the power to prevent someone, then merely verbal prevention is not sufficient, even if the house is his own. Otherwise, verbal prevention is enough, even if the house belongs to him. Imam Zahir-ud-Din has given a fatwa on this. The first text of Imam Qazi Khan and Imam Husam-ud-Din in Fatawa Sughra described this issue regarding the house of the person taking the oath. There, they restricted it purely to verbal prevention, and this is also the decision and text of Fath al-Qadir. In Bazaziyah, a distinction was made between a minor and an adult son in this matter: if the son is a minor, it is necessary to prevent him both verbally and practically. If he is an adult, then only verbal prevention was deemed sufficient. In the fourth text of Khaniyah (Qazikhan), this limitation was clarified: if one does not have the power to practically prevent an adult son, then verbal prevention is enough. Their third text regarding a stranger states that merely verbal prevention will be sufficient for him, because it is practically impossible to stop a stranger. I, the humble one (faqir), say that in reality, there is no contradiction here. Rather, the actual truth is what was hinted at in Khaniyah, that prevention is meant according to one's capability. It is clear that someone who says "I will not leave so-and-so in the house," then if he is capable of removing him—whether the house is his own or not, even if he is a tenant or living there on loan—regardless of the nature of his residence, whether the person mentioned is an adult son or a stranger, his duty is to stop him.

[Left Column - Original Persian Text] Imam Husam-ud-Din formulated his problem in Fatawa Sughra regarding a house owned by the person taking the oath and restricted it to verbal prohibition in an absolute sense, and this is the judgment and text mentioned in Fath al-Qadir. In Bazaziyah, regarding the son's situation, he differentiated between a minor and an adult, stating that for a minor, prevention by both word and deed is necessary, while for an adult, only by word. From the fourth text of Khaniyah, the restriction is inferred that if there is no power to prevent an adult son physically, then verbal prohibition is sufficient. In the third text regarding a stranger, he took it as absolute verbal prohibition, as physical prevention is not possible. I, the humble one, say that in reality there is no difference here. The essence of the matter is what was pointed out in Khaniyah, that it means according to one's capability. It is evident that whoever said "I will not leave so-and-so in the house" and was capable of evicting him, even if the house belonged to another and he was staying there by lease or loan etc., and even if that person was an adult son or

a stranger, if he exerted his strength and did not content himself with just saying once "do not come" or "go out," Zaid would definitely have left him in the house and become an oath-breaker. Whoever is unable, even if the house is his own, and that person is a minor son—for example, the one taking the oath is bedridden, infirm, or paralyzed, and the son is a thirteen or fourteen-year-old rebel who does not obey commands—necessarily here only verbal prohibition would suffice. In his own house, general authority is usually complete, and the jurist's rulings look at the general case. For this reason, Imam Sadr ash-Shahid made that distinction, as the expression of the principle is not based on mere assumption. (Note) in recent times.

Footnote: Note: There is a blank space in the manuscript.

पृष्ठ शीर्षक: फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

मुख्य सामग्री: [दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्यात्मक पाठ] ऐसी स्थिति में यदि किसी के पास रोकने की शक्ति है, तो केवल मौखिक रूप से रोकना पर्याप्त नहीं है, भले ही वह घर उसका अपना ही क्यों न हो। अन्यथा, केवल मौखिक रूप से रोकना पर्याप्त है, भले ही घर उसका अपना हो। इमाम ज़हीर-उद-दीन ने इसी पर फतवा दिया है। इमाम काज़ी ख़ान के पहले पाठ और इमाम हुसाम-उद-दीन ने फ़तावा सुग़रा में, शपथ लेने वाले के अपने घर के संबंध में इस मुद्दे को बयान किया है। वहाँ उन्होंने इसे पूरी तरह से मौखिक रोकथाम तक ही सीमित रखा, और फतह अल-कादिर का फैसला और पाठ भी यही है। बज़ज़ियाह में इस मामले में छोटे और बड़े बेटे के बीच अंतर किया गया है कि यदि बेटा छोटा (नाबालिग) है, तो उसे मौखिक और व्यावहारिक दोनों तरह से रोकना आवश्यक है। यदि वह बड़ा (बालिग) है, तो केवल मौखिक रूप से रोकना ही पर्याप्त माना गया। खानिया (काज़ीख़ान) के चौथे पाठ में, इस प्रतिबंध को स्पष्ट किया गया था कि यदि बड़े बेटे को व्यावहारिक रूप से रोकने की शक्ति नहीं है, तो मौखिक रोकथाम ही पर्याप्त है। एक अजनबी के संबंध में उनके तीसरे पाठ में कहा गया है कि उनके लिए केवल मौखिक रोकथाम ही पर्याप्त होगी, क्योंकि व्यावहारिक रूप से अजनबी को रोकना असंभव है। मैं, फकीर (विनम्र लेखक), कहता हूँ कि वास्तव में यहाँ कोई विरोधाभास नहीं है। बल्कि, वास्तविक सत्य वह है जिसकी ओर खानिया में संकेत दिया गया था, कि रोकथाम का अर्थ अपनी क्षमता के अनुसार है। यह स्पष्ट है कि जो कोई यह कहता है कि "मैं अमुक व्यक्ति को घर में नहीं छोड़ूँगा," तो यदि वह उसे निकालने में सक्षम है—चाहे घर उसका अपना हो या नहीं, भले ही वह किराएदार हो या वहाँ ऋण पर रह रहा हो—निवास की प्रकृति जो भी हो, चाहे जिस व्यक्ति के बारे में कहा गया है वह बालिग बेटा हो या कोई अजनबी, उसका कर्तव्य उसे रोकना है।

[बायां कॉलम - मूल फारसी पाठ] इमाम हुसाम-उद-दीन ने फ़तावा सुग़रा में शपथ लेने वाले के स्वामित्व वाले घर के संबंध में अपनी समस्या तैयार की और इसे पूर्ण अर्थ में मौखिक निषेध तक सीमित कर दिया, और फतह अल-कादिर में उल्लिखित निर्णय और पाठ यही है। बज़ज़ियाह में, बेटे की स्थिति के संबंध में, उन्होंने नाबालिग और बालिग के बीच अंतर किया, यह बताते हुए कि नाबालिग के लिए, शब्द और विलेख दोनों द्वारा रोकथाम आवश्यक है, जबकि बालिग के लिए, केवल शब्द द्वारा। खानिया के चौथे पाठ से, यह प्रतिबंध अनुमानित है कि यदि बालिग बेटे को शारीरिक रूप से रोकने की कोई शक्ति नहीं है, तो मौखिक निषेध पर्याप्त है। एक अजनबी के संबंध में तीसरे

पाठ में, उन्होंने इसे पूर्ण मौखिक निषेध के रूप में लिया, क्योंकि शारीरिक रोकथाम संभव नहीं है। मैं, विनम्र कहता हूँ कि वास्तव में यहाँ कोई अंतर नहीं है। मामले का सार वही है जो खानिया में बताया गया था, कि इसका अर्थ अपनी क्षमता के अनुसार है। यह स्पष्ट है कि जिसने भी कहा "मैं अमुक व्यक्ति को घर में नहीं छोड़ूँगा" और उसे बेदखल करने में सक्षम था, भले ही घर दूसरे का हो और वह वहाँ पट्टे या ऋण आदि से रह रहा हो, और भले ही वह व्यक्ति बालिग बेटा या अजनबी हो, यदि उसने अपनी शक्ति का प्रयोग किया और केवल एक बार यह कहने पर संतोष नहीं किया कि "मत आओ" या "बाहर जाओ", तो ज़ैद ने निश्चित रूप से उसे घर में छोड़ दिया होता और वह शपथ तोड़ने वाला बन जाता। जो कोई असमर्थ है, भले ही घर उसका अपना हो, और वह व्यक्ति छोटा बेटा हो—उदाहरण के लिए, शपथ लेने वाला बिस्तर पर पड़ा, दुर्बल या लकवाग्रस्त है, और बेटा तेरह या चौदह साल का विद्रोही है जो आदेशों का पालन नहीं करता है—अनिवार्य रूप से यहाँ केवल मौखिक निषेध ही पर्याप्त होगा। अपने घर में, सामान्य अधिकार आमतौर पर पूर्ण होता है, और न्यायविद् के नियम सामान्य मामले को देखते हैं। इस कारण से, इमाम सद्र अश्-शहीद ने वह भेद किया, क्योंकि सिद्धांत की अभिव्यक्ति केवल धारणा पर आधारित नहीं है। (नोट) हाल के समय में।

पाद लेख: नोट: पांडुलिपि में एक खाली स्थान है।

[دایاں کالم] صورت میں اگر طاقت سے روک سکتا ہے تو پھر زبانی روکنا کافی نہیں ہے اگرچہ وہ گھر اپنا ہی ہو ورنہ صرف زبانی روکنا کافی ہے اگرچہ گھر اپنا ہی ہو ، امام ظہیر الدین نے اسی پر فتویٰ دیا ہے۔ امام قاضی خاں کی پہلی نص اور امام حسام الدین نے فتاویٰ صغریٰ میں، اپنا یہ مسئلہ ، قسم اٹھانے والے کے اپنے گھر کے متعلق بیان کیا اور وہاں انہوں نے مطلقاً زبانی روکنے پر اقتصار فرمایا اور یہی فتح القدیر کا فیصلہ اور نص ہے، اور بزازیہ میں بیٹے کے معاملہ میں صغیر وکبیر کا فرق کیا ہے کہ اگر بیٹا صغیر ہو تو زبانی اور عملی دونوں طرح سے روکنا ضروری ہے اور اگر کبیر ہو تو پھر صرف زبانی روکنا کافی قرار دیا ہے ، اور خانیہ (قاضیخاں) کی چوتھی نص میں یہ تقیید عیاں فرمائی کہ اگر کبیر بیٹے پر عملاً روکنے کی قدرت نہ ہو تو تب زبانی روکنا کافی ہے، اور ان کی تیسری نص اجنبی شخص کے متعلق ہے کہ اس کو مطلقاً زبانی روکنا ہی کافی ہوگا کیونکہ عملی طور اجنبی کو روکنا ممکن نہیں ہے۔ میں فقیر کہتا ہوں کہ حقیقتاً یہ اختلاف نہیں ہے بلکہ اصل حقیقت وہ ہے جس کی طرف خانیہ میں اشارہ گزرا کہ قدرت کے مطابق روکنا مراد ہے، ظاہر ہے کہ جو یہ کہتا ہے کہ میں فلاں کو گھر میں نہ چھوڑوں گا تو اگر وہ اس کو نکالنے پر قادر ہو گھر اس کا اپنا ہو یا نہ ہو بلکہ کرایہ دار ہو یا عاریتہ ہو جو بھی صورت رہنے کی ہو تو جس کے متعلق یہ کہا وہ بیٹا بالغ ہو یا کوئی اجنبی ہو اس کو روکنے کی

[بایاں کالم] امام حسام الدین در فتاوی صغری مسئلہ خود در دار مملو کہ حالف وضع فرمود وعلی الاطلاق بر نہی زبانی اقتصاد نمود و ہمیں ست قضا و نص مذکور فتح القدیر ، و در بزاز یہ جائے دار پسر فرق بصغیر و کبیر فرمود کہ صغیر را باز داشتن بقول و فعل جمیعا لازم است و کبیر را

تنہا بقول و از نص چہارم خانیہ تقیید مستفاد است کہ اگر بر کبیر قدرت منع بالفعل نہ باشد منع بالقول ست و در نص سومش در حق اجنبی مطلقاً منع قولی گرفت کہ منع فعلی نمی تواند فقیر گویم بحقیقت اینجا ہیچ اختلاف نیست اصل سخن آن است کہ در خانیہ بآں اشارہ رفت کہ قدر ما یطیق پیداست کہ ہر کہ گفت فلاں را بخانہ نگذارم و قادر بود بر اخراج او گرچہ خانہ خانہ دیگری باشد و بہ بکس با جارہ یا اعارہ و غیر ہما آنجا می ماند و اگر چہ آنکس پسر بالغ یا اجنبی بود چون طاقت خود را بکار بز دو تنہا بر یکبار گفتن کہ میا ، یا پیروں شو قناعت در زید قطعاً او را بخانہ گذاشت و حانث شود ہر کہ نتواند گو خانہ خانہ اش باشد و آنکس پسر صغیر، مثلاً حالف مقعد یا زمن یا مفلوج ست و پسر سیزدہ چہاردہ سالہ شریر کہ سر بفرمان ننہد لاجرم اینجا ہمیں نہی بقول کافی بود در خانہ خودش غالب اختیار کلی باشد و احکام فقیہ نظر بغالب دارد از ینجہت امام صدر شہید آں تفرقہ فرمود کہ تعبیر اصل بمظنہ نیست عہ در زمن متآخر

عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔

[Right Column] ...if he possesses power, then verbal prevention will not be enough, such that he forbids verbally once and says "do not come here, stay out," rather, he must stop him both practically and verbally in every way. Otherwise, if he leaves him inside, he will certainly be a violator of his oath. And he who does not have the power to stop him, even if that house is his own and the son is also a minor, then verbal prevention alone is sufficient. For example, the person taking the oath is a cripple, or handicapped, or paralyzed, and the son is a mischievous thirteen or fourteen-year-old who does not obey; in such a case, out of necessity, verbal prevention alone will be declared sufficient. Since having total authority in one's personal home is most likely, and the basis of jurisprudential rulings is also on predominant matters, that is why Imam Sadr Shaheed mentioned the difference between one's own home and another's; otherwise, this is not the statement of a general rule. And since in the latter times, a father has complete authority only over a minor son, that is why the jurists explained the difference between a minor and an adult son for this very reason. Other jurists, keeping in mind the corruption of the times, mentioned only verbal prevention because usually, for prevention, a practical hurdle is necessary, and practical hurdles consist of beating, whereas from this, the fire of strife (fitna) blazes up, and strife is worse than killing. Therefore, the gist of all the texts is the same. This reconciliation of statements is from Allah Almighty. However, the summary is that to avoid "leaving" (permitting to stay), at least verbal prevention is necessary. So when someone did not even perform the act of verbal prevention, it is as if he "left" (permitted). In the problem under discussion, if the wife could not practically turn out the son...

[Left Column] ...complete authority does not remain except over minor children, therefore they distinguished between the minor and the adult. This also belongs to the same realm. Others, considering the corruption of the times, said that likely prevention through pushing back and pushing back leads to physical combat, and the fire of strife raises its head. And strife is worse than killing. Therefore, they restricted themselves to speech, and the meaning of the total is one, and with Allah is success. In short, there is agreement on this much that to keep him [from staying], at least restraining by tongue is inevitable. Whoever could not turn out that son, at least it should not be less than that you said once, "stay or go out." There was no place for it except at first, and when he thereafter chose silence, "leaving" (permitting to stay) was achieved and divorce descended. Again, prevention is useless and futile. And if at

that time you had forbidden once, the oath would have ended because it was not initiated with the word. After that, even if abandonment continued, it would not have caused harm. All that is clear from what we have previously presented from the texts of the scholars. I say: The secret in it is that leaving (takhliya) is a negative concept because it is the absence of prohibition and interference, and it has been established in the condition, so it will be negated, and the negation of negation is affirmation, and...

[दायां कॉलम] ...शक्ति रखता है तो फिर زِبانی रोकना काफी न होगा कि एक बार ज़बानी मना कर दे और कहे कि यहाँ न आ बाहर हो जा, बल्कि व्यावहारिक और ज़बानी हर तरह से रोकना होगा वरना अंदर छोड़ा तो वह निश्चित रूप से हानिस (शपथ भंग करने वाला) हो जाएगा। और जो रोकने की शक्ति नहीं रखता, भले ही वह घर उसका अपना हो और बेटा भी छोटा हो, तो ज़बानी रोकना ही काफी है। उदाहरण के लिए, शपथ लेने वाला अपाहिज हो या विवश हो या लकवाग्रस्त हो और बेटा तेरह-चौदह साल का शरारती हो जो आज्ञा नहीं मानता, तो ऐसी स्थिति में मजबूरी में ज़बानी रोकना ही पर्याप्त माना जाएगा। चूंकि अपने निजी घर में पूर्ण अधिकार होना अधिक संभावित है और कानूनी (फिकही) आदेशों का आधार भी अधिकांश मामलों पर होता है, इसलिए इमाम सद्र शहीद ने अपने और गैर-घर के बीच का अंतर बताया है; अन्यथा यह किसी नियम का वर्णन नहीं है। और चूंकि अंतिम समय में पिता का पूर्ण अधिकार केवल छोटे बेटे पर ही होता है, इसलिए फकीहों (धर्मशास्त्रियों) ने छोटे और बड़े बेटे के बीच अंतर भी इसी कारण से बताया है। अन्य फकीहों ने ज़माने की बुराई को ध्यान में रखते हुए केवल ज़बानी रोकने का उल्लेख किया क्योंकि आमतौर पर रोकने के लिए व्यावहारिक बाधा आवश्यक होती है, और व्यावहारिक बाधा मार-पीट से होती है, जबकि इससे फितना (अशांति) की आग भड़क उठती है और फितना हत्या से भी बदतर है। इसलिए, सभी इबारतों (लेखों) का सार एक ही है। यह सामंजस्य अल्लाह तआला की ओर से है। बहरहाल, निष्कर्ष यह है कि न छोड़ने (रहने न देने) के लिए कम से कम ज़बानी रोकना आवश्यक है। अतः जब किसी ने ज़बानी रोकने का कार्य भी नहीं किया तो मानो उसने उसे छोड़ (रहने दिया) दिया। तो विचाराधीन मामले में यदि पत्नी व्यावहारिक रूप से बेटे को बाहर नहीं निकाल सकती थी...

[बायां कॉलम] ...छोटे बच्चों के अलावा पूर्ण अधिकार नहीं रहता, इसलिए उन्होंने छोटे और बड़े के बीच अंतर किया। यह भी उसी श्रेणी से है। दूसरों ने ज़माने के बिगाड़ को देखते हुए कहा कि संभवतः धक्का-मुक्की से रोकना और धक्का-मुक्की से लड़ाई-झगड़ा होगा और फितना का सिर उठेगा। और फितना कत्ल से भी बुरा है। इसलिए उन्होंने केवल बात तक सीमित रखा और पूरी बात का अर्थ एक ही है, और अल्लाह से ही सफलता है। संक्षेप में, इस बात पर सहमति है कि उसे रहने देने से रोकने के लिए कम से कम ज़बान से रोकना अनिवार्य है। जो कोई उस बेटे को निकालने में असमर्थ था, कम से कम यह तो होना चाहिए था कि एक बार कहते 'अंदर रहो या बाहर जाओ'। इसके लिए पहले के अलावा कोई जगह नहीं थी और जब उसने उसके बाद खामोशी अख्तियार की, तो 'छोड़ देना'

(रहने देना) घटित हो गया और तलाक लागू हो गई। फिर रोकना बेकार और व्यर्थ है। और यदि उस समय एक बार मना कर देते तो शपथ समाप्त हो जाती क्योंकि यह शब्द से शुरू नहीं हुआ था। उसके बाद यदि छोड़ना जारी रहता तो नुकसान नहीं पहुँचाता। और यह सब उन विद्वानों के ग्रंथों से स्पष्ट है जो हमने पहले प्रस्तुत किए हैं। मैं कहता हूँ: इसका रहस्य यह है कि छोड़ देना (तख्लिया) एक अभावात्मक (नेगेटिव) चीज़ है क्योंकि यह मनाही और हस्तक्षेप का अभाव है, और इसे शर्त में साबित किया गया है तो यह नकारात्मक होगा, और नकारात्मक का नकारात्मक सकारात्मक है और...

[دایاں کالم] طاقت رکھتا ہے تو پھر زبانی روکنا کافی نہ ہوگا کہ ایک بار زبانی منع کردے اور کہے کہ یہاں نہ آیا باہر ہو جا بلکہ عملی اور زبانی ہر طرح روکنا ہوگا ورنہ اندر چھوڑا تو قطعاً حانث ہو جائے گا، اور جو روکنے پر قدرت نہیں رکھتا گو وہ گھر اس کا اپنا ہو اور بیٹا بھی صغیر ہو تو زبانی روکنا ہی کافی ہے، مثلاً قسم کھانے والا اپاہج ہو یا معذور ہو یا مفلوج ہو اور بیٹا تیرہ چودہ سال کا شریر ہو کہ فرمانبرداری نہیں کرتا، تو ایسی صورت میں مجبوراً زبانی روکنا ہی کافی قرار پائے گا، چونکہ اپنے ذاتی گھر میں کلی اختیار ہونا اغلب ہے اور فقہی احکام کا مدار بھی غالب امور پر ہوتا ہے اس لئے امام صدر شہید نے اپنے اور غیر گھر کا فرق ذکر کیا ہے ورنہ یہ قاعدہ کا بیان نہیں ہے، اور چونکہ آخر زمانہ میں باپ کو صرف صغیر بیٹے پر ہی مکمل اختیار ہوتا ہے اس لئے فقہاء نے صغیر وکبیر بیٹے کا فرق بیان کرنا بھی اسی وجہ سے ہے، دوسرے فقہاء نے زمانہ کے فساد کو ملحوظ رکھتے ہوئے صرف زبانی روکنے کو ذکر کیا کیونکہ اغلب طور پر روکنے کے لئے عملی رکاوٹ ضروری ہوتی ہے اور عملی رکاوٹ مار پیٹ سے ہوتی ہے جبکہ اس سے فتنہ کی آگ بھڑک اٹھتی ہے اور فتنہ، قتل سے بھی برا ہے، اس لئے تمام عبارات کا ما حاصل ایک ہی ہے، یہ توفیق بیان اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہے۔ تاہم خلاصہ یہ ہے کہ نہ چھوڑنے کے لئے کم از کم زبانی روکنا ضروری ہے، توجب کسی نے زبانی روکنے کا عمل بھی نہ کیا تو گویا اس نے چھوڑا۔ تو زیر بحث مسئلہ میں بیوی اگر بیٹے کو عملاً باہر نہیں نکال سکتی تھی

[بایاں کالم] اختیار تام جز بر اطفال صغار نماند لہٰذا تفریق صغیر وکبیر کردند کہ نیز از ہماں دادی است دیگراں نظر بفساد زمان گفتند کہ غالباً منع بتدافع وتدافع بتضارب انجامد و آتش فتنہ سر بالا

کشود والفتنۃ اشد من القتل لہٰذا سر اقتصار بر سخن کردند و مراد جملہ یکی وباللہ التوفیق، بالجملہ بریں قدر اتفاق ست کہ نگرا شتن را کم از کم بزبان باز داشتن ناگزیر است ہر کہ ایں رازن آں پسر را بر آوردن نتوانست آخر کم نہ ازاں کہ یکبار گفتی میاں یا بیرون رود محلش نہ بود مگر اول و لہ چوں آں گاہ خموشی گزید گذاشتن حاصل شد وطلاق نازل باز منع بے سود ولاطائل واگر آں وقت یکبار منع کردی سوگند منتہی شدے کہ مصدر بکلمہ نبود پس ازاں ترک اگر چہ مستمر ماندے زیاں نہ رساندے وکل ذلک واضح مما قدمنا من نصوص العلماء اقول: والسرافیه ان التخلیة عدمیة لانها عدم النهی والتعرض وقد اثبتت فی الشرط فیکون منفیة ونفی النفي اثبات و

Fatawa Razawiyya Volume 13 / 13

[Arabic Text]: Al-ithbatu takfi marratan ka-an qala in lam tamna'ee tatallaqi ay in mana'ti fala fa-iza anhat nahat wal-yameenu qad intahat.

So, she was not incapable of saying once verbally, "Do not come into the house," or "Go outside." The occasion for prevention is at the initial stage. When she remained silent at the beginning, the act of leaving the son in the house was established, the reason for divorce was found, and the divorce took place. Preventing and stopping afterwards is useless. If she had stopped him verbally even once at the beginning, the oath would have ended because the word "Kulama" (whenever/always) was not in the oath. If non-prevention remained after stopping once, there was no harm. All this discussion is clear from the aforementioned texts of the noble scholars.

I say: (My point is) The subtle point here is that 'Takhliya' (leaving alone/non-interference) is a negative concept because it is the name for not preventing and not interfering. So, the affirmation of this 'Takhliya' was made in the condition, which turned it into a negative. When this negative was abandoned, the double negative became an affirmation (i.e., the absence of not-preventing meant prevention was established). Thus, for the fulfillment of the oath, a single instance of affirmation, i.e., prevention, is sufficient. The summary of which is as follows: It is as if he said to his wife, "If you do not prevent him, you are divorced," meaning if you do prevent him, there will be no divorce. So when she prevents, she is saved from divorce and the oath is finished. (T)

Secondly, I say: [Arabic Text]: Man qadara 'alal-man'i bil-fi'li faktufa bihi kafa iz la yasihhu an yuqala innahu taraka wa khalla bal ata bima huwa nihayatul-ma'na wa maqsuduhul-a'la falaysa 'alayhi an yajma'a ma'ahul-qawla jam'an fama yutawahhamu min zahiri lafzil-waqi'ati wan-nawazili wa thani 'ibaratil-khaniyati wa rabi'uha wal-wajeezi laysa muradan qat'an.

Secondly, I say: (The second thing I say is that) One who is practically capable of preventing, just sufficing with practical prevention is enough because, upon this act of obstruction, it cannot be said that he left it or remained unconcerned; rather, he fulfilled the purpose of the condition. Now, verbal prevention is no longer mandatory for him. Thus, the illusion created by the apparent wording of 'Waqi'at', 'Nawazil', and the second and fourth statements of 'Khaniya' and the apparent statements of 'Wajeez' is definitely not intended. (T)

Thirdly, I say: [Arabic Text]: 'Indal-faqeehi shartu birrihil-man'u falafzul-mulki waqa'a za'idan fi 'ibaratil-nawazili ammal-mulku ay al-qudratu fashartun.

Thirdly, I say: (The third time I say that) According to Faqih Abu al-Layth, the condition for fulfilling the oath is only prevention. Therefore, the word "Milk" (possession/ power) in the phrase "Milk al-Man'" (power of prevention) in the text of 'Nawazil' is redundant. However, if by 'Milk', i.e., power, is meant, then it is a condition...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 / 13

[अरबी]: अल-इश्बातु तक्फी मर्रतन का-अन काला इन लम तमनाई ततल्क्की अय इन मनअ्ती फ़ला फ़-इज़ा अन्हात नहात वल-यमीनु क़द इन्तहात।

तो एक बार ज़बानी यह कह देने से तो वह लाचार न थी कि घर में मत आ, या बाहर जा। रोकने का स्थान शुरुआती चरण में होता है। जब शुरुआत में वह खामोश रही तो बेटे को घर में छोड़ना सिद्ध हो गया और तलाक की वजह पाई गई और तलाक हो गई। बाद में मना करना और रोकना बेसूद है। अगर वह शुरुआत में एक बार भी ज़बान से रोक देती तो कसम खत्म हो जाती क्योंकि कसम में हमेशा के लिए "कुल्लमा" का शब्द नहीं था। एक बार रोकने के बाद अगर न रोकना बाकी रहता तो कोई हर्ज न था। यह तमाम गुफ़्तगू उलमा-ए-किराम के उपरोक्त ग्रंथों से स्पष्ट है।

अकूल (मैं कहता हूँ): इसमें बारीकी यह है कि 'तख्लिया' (यानी अलग करना/न छेड़ना) एक नकारात्मक चीज़ है। क्योंकि यह न रोकने और न छेड़ने का नाम है, तो शर्त में इस तख्लिया की पुष्टि की गई जिससे यह नकारात्मक बन गया। और जब इस नकारात्मकता को त्याग दिया गया, तो नकारात्मक पर नकारात्मक होने से पुष्टि हो गई (यानी न रोकने का अभाव होने से रोकना सिद्ध हो गया)। तो कसम पूरी होने के लिए एक बार की पुष्टि यानी रोकना काफी है। जिसका निष्कर्ष यह हुआ, मानो उसने पत्नी से कहा: अगर तूने मना न किया तो तुझे तलाक है। यानी अगर तू मना कर दे तो तलाक न होगी। तो जब उसने मना कर दिया, तो वह तलाक से बच गई और कसम खत्म हो गई। (त)

सानियन अकूल: [अरबी]: मन क़दरा अलल-मनइ बिल-फ़िअली फ़क्तुफ़ा बिही कफ़ा इज़ ला यसिहु अन युक़ाला इन्नहु तरका व खल्ला बल अता बिमा हुवा निहायतुल-माना व मक़सूदहुला अला फ़लैसा अलैहि अन यजमाआ माआहुल-क़वला जमआन फ़मा युतवाहमु मिन ज़ाहिरी लफ़ज़िल-वाक़िआति वन-नवाज़िली व शानी इबारातिल-खानियति व राबिउहा वल-वजीज़ी लैसा मुरादन क़तन।

सानियन अकूल (दूसरी बात मैं कहता हूँ): जो वास्तव में (क्रियात्मक रूप से) रोकने में सक्षम हो, उसके लिए क्रियात्मक रूप से रोकना ही काफी है। क्योंकि इस क्रियात्मक रुकावट पर यह नहीं कहा जा सकता कि उसने उसे छोड़ दिया और उससे बेतल्लुक रहा, बल्कि उसने शर्त का मकसद पूरा कर दिया। अब उस पर ज़बानी मना करना लाज़िम न रहा। तो वाक़िआत, नवाज़िल और खानिया

की दूसरी और चौथी इबारत और वजीज़ की ज़ाहिरी इबारतों से जो वहम होता है, वह कतई मुराद नहीं है। (त)

सालिसन अकूल: [अरबी]: इन्दल-फ़क़ीही शर्तु बिर्रिहिल-मनउ फ़लफ़ज़ुल-मुल्कि वक़ाआ ज़ाएदन फ़ी इबारातिल-नवाज़िली अम्माल-मुल्कु अय अल-क़ुदरतु फ़शर्तुन।

सालिसन अकूल (तीसरी बार कहता हूँ): फकीह अबुल लैस के नज़दीक कसम पूरी करने की शर्त सिर्फ रोकना है। लिहाज़ा नवाज़िल की इबारत "मिल्क अल-मनअ" में "मिल्क" का शब्द बेमानी है। लेकिन अगर मिल्क से यानी कुदरत से मुराद है तो यह शर्त है...

الاثبات تکفی مرۃ کان قال ان لم تمنعی تطلقی ای ان منعت فلا فاذا انھت نحت والیمین قد انتھت۔

تو ایک بار زبانی یہ کہہ دینے سے تو عاجز نہ تھی کہ گھر میں مت آ، یا باہر جا، روکنے کا مقام ابتدائی مرحلہ میں ہوتا ہے جب ابتداء میں وہ خاموش رہی تو بیٹے کو گھر میں چھوڑنا متحقق ہو گیا اور طلاق کی وجہ پائی گئی اور طلاق ہو گئی، بعد میں منع کرنا اور روکنا بے سود ہے اگر وہ ابتداء میں ایک بار بھی زبان سے روک دیتی تو قسم ختم ہوجاتی کیونکہ قسم میں ہمیشگی کے لئے "کلما" کا لفظ نہ تھا ایک دفعہ روکنے کے بعد اگر نہ روکنا باقی رہتا تو کوئی حرج نہ تھا، یہ تمام گفتگو علماء کرام کے مذکورہ نصوص سے واضح ہے۔

اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں نکتہ یہ ہے کہ تخلیہ یعنی لا تعلقی عدمی چیز ہے کیونکہ یہ، نہ روکنے اور نہ چھیڑنے کا نام ہے تو شرط میں اس تخلیہ کا اثبات کیا گیا جس سے یہ منفی بن گیا اور جب اس منفی کا ترک ہوا تو نفی پر نفی ہو جانے سے اثبات ہو گیا (یعنی نہ روکنے کا عدم ہو جانے سے روکنا متحقق ہو گیا) تو قسم کے پورا ہونے کے لئے ایک دفعہ اثبات یعنی روکنا کافی ہے جس کا ما حصل یوں ہوا، گویا اس نے بیوی کو کہا اگر تو نے منع نہ کیا تو تجھے طلاق ہے یعنی اگر تو منع کر دے تو طلاق نہ ہو گی تو جب وہ منع کر دے تو طلاق سے بچ گئی اور قسم ختم ہو گئی۔ (ت)

ثانیاً اقول: من قدر علی المنع بالفعل فاکتفی بہ کفی اذ لایصح ان یقال انہ ترک وخلی بل اتی بما ھو نھایۃ المعنی و مقصدہ الاعلی فلیس علیہ ان یجمع معہ القول جمعاً فما یتوھم من ظاہر لفظ الواقعات والنوازل وثانی عبارات الخانیۃ واربعہا والوجیز لیس مراد قطعا۔

ثانیاً اقول: (دوسری بات کہتا ہوں کہ) جو عملاً روکنے پر قادر ہو عملاً روکنے پر اکتفاء کر دینا کافی ہے کیونکہ اس عملِ رکاوٹ پر یہ نہیں کہا جاسکتا کہ اس نے چھوڑا اور اس سے لاتعلق رہا، بلکہ اس نے شرط کا مقصد پورا کر دیا اب اس پر زبانی منع کرنا لازم نہ رہا، تو واقعات اور نوازال اور خانیہ کی دوسری اور چوتھی عبارت اور وجیز کی ظاہر عبارات سے جو وہم ہوتا ہے وہ قطعاً مراد نہیں ہے (ت)

ثالثاً اقول: عند الفقیه شرط بره المنع فلفظ الملك وقع زائداً في عبارة النوازل اما الملك ای القدرة فشرط

ثالثاً اقول: (تیسری بار کہتا ہوں کہ) فقیہ ابواللیث کے نزدیک قسم پورا کرنے کی شرط صرف روکنا ہے، لہذا نوازال کی عبارت "ملك المنع" میں "ملک" کا لفظ زائد ہے، لیکن اگر ملک سے یعنی قدرت مراد ہو تو شرط ہے...

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Arabic text excerpt]: The establishment of an oath in absolute terms and the continuity of a time-bound oath specifically, as fulfillment is conceivable through it. The discussion is not about that, but about when fulfillment is achieved through it, unless it is said that it is like achieving a form, i.e., the owned prevention, i.e., to the extent he is capable. [Urdu explanation]: If 'power' is intended, it is necessary for forming an oath in absolute terms, and specifically necessary for the continuity of a time-bound oath because it is through this power that the fulfillment of the oath is conceivable. However, the discussion here is not about 'ownership' in the sense of power, but rather about the thing that fulfills the oath. Yes, it can be said that this is a statement regarding the attainment of the objective, such that he has the power to prevent as much as possible. (T)

[Arabic text excerpt]: Fourthly, I say: Prevention includes both actual (physical) and verbal, as previously mentioned from several texts. It may be specified as actual when mentioned in contrast to verbal. This is the meaning intended in the text of "An-Nawazil" where it says "he owns its prevention" up to "without prevention." In the instance where it says "he owns the prevention," the first meaning, encompassing both, is intended. And where it says "he does not own the prevention," the second meaning, meaning only actual prevention, is intended. Similarly is the second statement of Al-Hindiyya. So, remain firm and do not waver. (T) [Urdu explanation]: Fourthly, I say: (for the fourth time I state that) prevention includes both practical and verbal methods, as previously mentioned in multiple texts. When it is mentioned in comparison with verbal, it will be specific to practical prevention based on this context. In the text of Nawazil, where they said "he owns its prevention" and then mentioned the phrase up to "without prevention," where they said "owns the prevention," the first meaning—including both—is intended. And where they said "does not own the prevention," the second meaning—meaning only practical prevention—is intended. Similarly is the second statement of Al-Hindiyya. So, remain steadfast and do not hesitate. (T)

[Persian text excerpt]: These texts that I present are exactly the specific instances of the issue under discussion, because the debate here is regarding the oath of 'letting go' and what the conditions for fulfillment and violation are. There is no difference whether it is 'I will not let go' or 'if you let go'; it doesn't change the specific instance. Now, anyone who wishes to derive a ruling from this discussed case would need clear evidence, otherwise the ruling is the same as what is evident from the texts. In

explaining the objective and calming doubts, I have reflected, and several doubts came to mind thinking that they should not [persist] in the mind. [Urdu explanation]: The texts I have presented are exactly the specific instances of the issue under discussion, because they discuss "letting go," and regarding the fulfillment and breaking of the oath, the discussion is the same. The specific case does not change with the difference between "I will not let go" and "if you let go." Despite this, if someone separates the case under discussion from these texts, they must provide clear evidence; otherwise, its ruling is the same as what is evident from these texts. In clarifying the objective and removing doubts, I have worked with great care, so several [doubts...]

फतावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

[अरबी पाठ अंश]: शपथ (यमीन) का पूर्णतः अनुबंधित होना और विशेष रूप से समयबद्ध शपथ का बना रहना आवश्यक है, क्योंकि इसके माध्यम से ही शपथ का पालन संभव है। यहाँ चर्चा उस पर नहीं है, बल्कि उस पर है जब इसके माध्यम से शपथ पूरी की जाए, जब तक कि यह न कहा जाए कि यह स्वरूप की प्राप्ति के समान है, अर्थात 'मलकियत वाला निषेध' (अल-मना अल-ममलूक), यानी जिस सीमा तक वह सक्षम है। [उर्दू स्पष्टीकरण]: यदि 'शक्ति' (कुदरत) अभिप्रेत है, तो यह सामान्य रूप से शपथ बनने के लिए आवश्यक है, और विशेष रूप से समय-सीमित शपथ की निरंतरता के लिए आवश्यक है क्योंकि इसी शक्ति के माध्यम से शपथ का पूरा होना कल्पनीय है। लेकिन यहाँ शक्ति के अर्थ में 'स्वामित्व' पर चर्चा नहीं है, बल्कि उस चीज़ पर चर्चा है जो शपथ को पूरा करती है। हाँ, यह कहा जा सकता है कि यह उद्देश्य की प्राप्ति का विवरण है कि वह यथासंभव रोकने की शक्ति रखता हो। (त)

[अरबी पाठ अंश]: चौथा, मैं कहता हूँ: निषेध (मना करना) क्रियात्मक और शाब्दिक दोनों को शामिल करता है, जैसा कि पहले कई ग्रंथों में उल्लेख किया गया है। जब इसे शाब्दिक के विपरीत उल्लेख किया जाए, तो यह क्रियात्मक के लिए विशिष्ट हो सकता है। 'अन-नवाज़िल' के पाठ में यही अर्थ अभिप्रेत है जहाँ कहा गया है "वह इसके निषेध का मालिक है" से लेकर "बिना निषेध के" तक। जहाँ उन्होंने "निषेध का मालिक हो" कहा, वहाँ पहला अर्थ यानी दोनों शामिल हैं, और जहाँ उन्होंने "निषेध का मालिक न हो" कहा, वहाँ दूसरा अर्थ यानी केवल क्रियात्मक निषेध अभिप्रेत है। इसी तरह 'अल-हिन्दिया' का दूसरा कथन है। अतः अडिग रहें और हिचकिचाएं नहीं। (त) [उर्दू स्पष्टीकरण]: चौथा, मैं कहता हूँ: (चौथी बार कहता हूँ कि) रोकना व्यावहारिक और मौखिक दोनों तरीकों को शामिल करता है जैसा कि पहले कई ग्रंथों में उल्लेख किया गया है और जब इसे मौखिक के मुकाबले में उल्लेख किया गया हो, तो इस संदर्भ के आधार पर यह केवल व्यावहारिक रोक के लिए विशिष्ट होगा। नवाज़िल के पाठ में जहाँ उन्होंने "वह इसके निषेध का मालिक है" कहकर उसके बाद "बिना निषेध के" तक का वाक्यांश उल्लेख किया, तो जहाँ उन्होंने "निषेध का मालिक हो" कहा, वहाँ पहला अर्थ यानी दोनों शामिल हैं, अभिप्रेत है और जहाँ उन्होंने "निषेध का मालिक न हो" कहा, वहाँ दूसरा अर्थ यानी केवल व्यावहारिक निषेध अभिप्रेत है, इसी तरह हिन्दिया का दूसरा कथन है, तो अडिग रहें और दुविधा में न पड़ें। (त)

[फारसी पाठ अंश]: ये ग्रंथ जो मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ, विचाराधीन मुद्दे के सटीक उदाहरण हैं, क्योंकि यहाँ बहस 'छोड़ने' की शपथ और इसके पालन व उल्लंघन की शर्तों के बारे में है। 'मैं नहीं छोड़ूँगा' या 'यदि तुम छोड़ोगे' में कोई अंतर नहीं है जो उदाहरण को बदल दे। अब, जो कोई भी इस चर्चा वाले मामले से कोई नियम निकालना चाहता है, उसे स्पष्ट प्रमाण की आवश्यकता होगी, अन्यथा नियम वही है जो ग्रंथों से स्पष्ट है। उद्देश्य को स्पष्ट करने और शंकाओं को शांत करने में मैंने चिंतन किया, और मन में कई शंकाएँ उठीं यह सोचकर कि वे मन में न रहें। [उर्दू स्पष्टीकरण]: जो ग्रंथ मैंने प्रस्तुत किए हैं, वे विचाराधीन मुद्दे के सटीक उदाहरण हैं क्योंकि उनमें "छोड़ने" के बारे में चर्चा है और इसमें शपथ के पूरा होने और इसके टूटने के संबंध में यही चर्चा है। "मैं नहीं छोड़ूँगा" और "यदि तुमने छोड़ा" के अंतर से उदाहरण नहीं बदलता। इसके बावजूद, यदि कोई विचाराधीन मामले को इन ग्रंथों से अलग करता है, तो उसे स्पष्ट प्रमाण देना होगा, अन्यथा इसका नियम वही है जो इन ग्रंथों से स्पष्ट हुआ है। उद्देश्य को स्पष्ट करने और शंकाओं को दूर करने में, मैंने बहुत सावधानी से काम लिया, तो कई [शंकाएं..]

पृष्ठ 519 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[عربی عبارت]: انعقاد الیمین مطلقا وبقاء الموقتة خصوصاً اذبه تصور البر ولیس الکلام فیه بل فیما اذا اتی به بر الا ان یقال انه من وزان حصول الصورة ای المنع المملوك ای قدر ما قدر۔ [اردو وضاحت]: مراد قدرت ہو تو یہ مطلقاً قسم بننے کے لئے ضروری ہے اور وقت سے مقید قسم کی بقاء کے لئے خصوصاً ضروری ہے کیونکہ اسی قدرت سے ہی قسم کو پورا کرنا متصور ہوتا ہے۔ لیکن ملک بمعنی قدرت میں یہاں بحث نہیں ہے بلکہ یہاں تو قسم کو پورا کرنیوالی چیز میں بحث ہے۔ ہاں اگر یوں کہا جا سکتا ہے کہ یہ حصول مراد کا بیان ہے کہ جس قدر ممکن طور پر روکنے پر قدرت رکھتا ہو۔ (ت)

[عربی عبارت]: رابعاً اقول: المنع یعم الفعلی والقولی کما تقدم عن عدة نصوص وقد یخص بالفعلی بقرینة المقابلة بالقولی وهو المراد في کلام النوازل من قوله یملك منعه الی قوله دون المنع والاول المراد في قوله اوفی ملك المنع وکذا قول الهندیة اخر فتثبت ولا تزل۔ [اردو وضاحت]: رابعاً اقول: (چوتھی بار کہتا ہوں کہ) روکنا عملی اور قولی دونوں طریقوں کو شامل ہے جیسا کہ متعدد نصوص میں پہلے مذکور ہوا ہے اور جبکہ اس کو قولی کے مقابلہ میں ذکر کیا گیا ہو تو اس قرینہ کی بناء پر صرف عملی روکنے کو خاص ہوگا اور نوازل کے کلام میں جہاں انہوں نے "یملك منعه" کہہ کر اس کے بعد "دون المنع" تک عبارت ذکر کی، تو جہاں انہوں نے "منع کا مالک ہو" کہا وہاں پہلا معنی یعنی دونوں کو شامل ، مراد ہے اور جہاں انہوں نے "منع کا مالک نہ ہو" کہا وہاں دوسرا معنی یعنی صرف عملی منع مراد ہے، اسی طرح ہندیہ کا دوسرا قول ہے، تو ثابت قدم رہو اور تردد مت کرو۔ (ت)

[فارسی عبارت]: این نصوص کہ آرایم عین جزئیہ مسئلہ دائرہ بود کہ بحث ہمیں از یمین بر گذاشتن است و آنکہ شرط بر وحنث در چیست، و تفاوت بأنکہ من نگزارم، اگر تو بگزاری، چیزی نیست کہ تغییر جزئیہ کند، حالا ہر کہ خواھد کہ صورت دائرہ را ازاں حکم بر آرد محتاج بینہ واضحہ باشد ورنہ حکم ہمان ست کہ از نصوص عیان ست تبیین مرام و تسکین اوہام را نظر کردم و چند شبہہ بخاطر رسید بخیال آنکہ مباد بذہن [اردو وضاحت]: جو نصوص میں نے پیش کی ہیں یہ زیر بحث مسئلہ کا بعینہ جزئیہ ہے کیونکہ ان میں "چھوڑنے" کے متعلق بحث ہے اور اس میں قسم کے پورا ہونے اور اس کے ٹوٹنے کے متعلق یہی بحث ہے اور "میں نہ چھوڑوں گا" اور "تو نے اگر چھوڑا" کے فرق سے جزئیہ تبدیل نہیں ہوتا اور اس کے باوجود اگر کوئی زیر بحث صورت کو ان نصوص سے الگ کرے تو اس کو واضح دلیل پیش کرنی ہوگی ورنہ اس کا حکم وہی ہے جو ان نصوص سے عیاں ہوا، مقصد کو واضح اور اوہام کو دور کرنے میں، میں نے غور سے کام لیا تو چند

Doubts arose in the heart with the thought that perhaps they might occur to someone else's mind, so he considers them better for an answer, therefore I discuss keeping them all in view with the success granted by Allah Almighty. But the suspicion of the first doubt is that in the questioned case, the man left the son in the house, not the wife. I say (I say) there is room for this doubt here on the basis that an act is truly of the actor, and towards the one remaining silent on this act, that act can be attributed metaphorically as consent, but here "leaving" which is vacating and not interfering, this has certainly been realized from the wife in reality, the man did not forbid the wife from it and she maintained this leaving, then where can there be a suspicion of the wife's act not occurring. (T)

Second doubt: This is that the wife is subordinate to the husband, so in the presence of the original, there is no ruling on the subordinate. I say (I say that) facts cannot be rejected that not interfering with the son, there can be no doubt in it being issued from the wife because the questioner himself said that the wife did not say yes or no at this occasion, so just this is enough for being perjured (hanith), more than this is not necessary, just verbal prevention has been considered sufficient, regarding which an oath was taken, let the one bringing him to the house be the owner of the house himself or some stranger or he himself comes and the house owner does not object to the coming, in every case he becomes perjured because...

Note 1: There is a blank space in the draft. Note 2: There is a blank space in the draft. Note 3: There is a blank space in the draft.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | पृष्ठ १३

मन में संदेह इस विचार से उत्पन्न हुए कि शायद वे किसी और के मन में आएं इसलिए वह उन्हें उत्तर के लिए बेहतर मानता है, इसलिए मैं अल्लाह तआला की तौफीक से उन सभी को ध्यान में रखते हुए चर्चा करता हूँ। लेकिन पहले संदेह का भ्रम यह है कि प्रश्नगत स्थिति में पति ने बेटे को घर में छोड़ा, पत्नी ने नहीं छोड़ा। मैं कहता हूँ (कहता हूँ) इस संदेह की गुंजाइश यहाँ इस आधार पर है कि कार्य वास्तव में कर्ता का होता है और इस कार्य पर चुप रहने वाले की ओर वह कार्य रज़ा (सहमति) के रूप में लाक्षणिक रूप से संबंधित हो सकता है, लेकिन यहाँ "छोड़ना" जो कि खाली करना और हस्तक्षेप न करना है, यह निस्संदेह पत्नी से वास्तव में सिद्ध हो चुका है, पति ने पत्नी को इससे नहीं रोका और उसने इस छोड़ने को कायम रखा, तो इससे पत्नी के कार्य के न होने का भ्रम कहाँ हो सकता है। (त)

दूसरा संदेह: यह कि, पत्नी पति के अधीन है तो मूल की उपस्थिति में अधीन पर कोई नियम नहीं होता, मैं कहता हूँ (मैं कहता हूँ कि) तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता कि बेटे के साथ हस्तक्षेप न करना, पत्नी से इसके घटित होने में कोई संदेह नहीं हो सकता क्योंकि प्रश्नकर्ता ने स्वयं कहा है कि पत्नी ने इस अवसर पर हाँ या ना, कुछ नहीं कहा, तो हानिस (शपथ भंग करने वाला) होने के लिए बस यही पर्याप्त है, इससे अधिक की आवश्यकता नहीं है, केवल ज़बानी रोकना ही पर्याप्त माना गया है, जिसके बारे में शपथ ली गई है, उसे घर लाने वाला स्वयं घर का स्वामी हो या कोई अजनबी हो या वह स्वयं आ जाए और घर वाला आने पर आपत्ति न करे, हर स्थिति में वह हानिस होता है क्योंकि...

टिप्पणी १: मसौदे में खाली स्थान है। टिप्पणी २: मसौदे में खाली स्थान है। टिप्पणी ३: मसौदे में खाली स्थान है।

पृष्ठ ५२०/६८८

کسے عہ۱ آید جائے جواب بہتر بیند آنہمہ را پیش نہم وبتوفیقہ تعالٰی عہ۲ اماوہم شبہ اولٰی پسر را مرد بخانہ گذاشت نہ زن اقول این ایراد گنجائش داشت کہ فعل حقیقۃً از فاعل است و بہ ساکت اگر منسوب شود بمعنی رضا ومجاز باشد اما گذاشتن کہ تخلیہ وترک تعرضات شک نیست کہ از زن حقیقۃً متحقق است مرد عہ۳ زن را منع نکرد واداشت ایں گذاشت پس در ترک زن چہ جائے ظن۔

شبہات دل پر وارد ہوئے اس خیال سے کہ شاید کسی کے ذہن میں آئیں تو ان کو وہ جواب کے لئے بہتر خیال کرے، اس لئے میں ان سب کو پیش نظر رکھتے ہوئے بحث کرتا ہوں اللہ تعالٰی کی توفیق سے۔ لیکن پہلے شبہ کا وہم ، وہ یہ کہ مسئولہ صورت میں گھر میں بیٹے کو مرد نے چھوڑا، بیوی نے نہیں چھوڑا۔ اقول (میں کہتا ہوں) اس شبہ کی گنجائش یہاں اس بنیاد پر ہے کہ فعل حقیقۃً فاعل کا ہوتا ہے اور اس فعل پر خاموش رہنے والے کی طرف وہ فعل رضا کے طور مجازاً منسوب ہوسکتا ہے، لیکن یہاں "چھوڑنا" جو کہ تخلیہ اور تعرض نہ کرنا ہے، یہ بیشک بیوی سے حقیقۃً متحقق ہو چکا ہے، مرد نے اس پر بیوی کو منع نہ کیا اور اس نے اس چھوڑنے کو قائم رکھا، تو اس سے بیوی کے فعل کے نہ ہونے کا گمان کہاں ہوسکتا ہے۔ (ت)

شبہ ثانیہ: زن تابع است ولا حکم للتبع مع الاصل اقول: لامر د للحقائق در صدور ترک تعرض از زن جائے سخن نیست سائل خود گوید کہ زن چیزی از لاء نعم نہ گفت وہمیں قدر شرط حنث بود بیش ازیں در کار نیست آیانہ بینی کہ در مکان غیر شرط بر نہی بالقول داشتہ اند گو بخانہ آرندہ محلوف علیہ خود صاحب خانہ باش یا دیگر آوردیا خود آمد و صاحب خانہ ہم معترض نہ شد لاطلاق حکم الکل فی جمیع الکتب بلکہ تصریح فرمودہ اند کہ امر عدمی بحالت اکراہ نیز موجب حنث شود چہ جائے رضا ولو تبعا، امام قاضی خاں فرماید الشیخ الامام ابوبکر محمد بن الفضل فرق و

دوسرا شبہ: یہ کہ، بیوی مرد کے تابع ہے تو اصل کی موجودگی میں تابع پر حکم نہیں ہوتا، اقول (میں کہتا ہوں کہ) حقائق کو رد نہیں کیا جاسکتا کہ بیٹے سے تعرض نہ کرنا، بیوی سے اس کے صادر ہونے میں شبہ نہیں ہوسکتا کیونکہ سائل نے خود کہا ہے کہ بیوی نے اس موقعہ پر ہاں یا نہ، کچھ نہ کہا، تو حانث ہونے کے لئے بس یہی کافی ہے اس سے زیادہ کوئی ضرورت نہیں، صرف زبانی روکنا ہی کافی قرار دیا گیا ہے، جس کے بارے میں قسم کھائی ہے اس کو گھر لانے والا خود صاحب مکان ہو یا کوئی غیر ہو یا وہ خود آجائے اور گھر والا، آنے پر اعتراض نہ کرے، ہر صورت میں حانث ہوتا ہے کیونکہ

عہ۱: مسودہ میں بیاض ہے۔ عہ۲: مسودہ میں بیاض ہے۔ عہ۳: مسودہ میں بیاض ہے۔

صفحہ ۵۲۰/۶۸۸

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

It was said regarding his statement: "If I do not go out," if a preventer prevents him, he breaks the oath (hanth). And regarding his statement: "I will not reside," if a preventer prevents him from leaving, he does not break the oath. The Fatwa is based on this latter statement because in "I will not reside," the condition for breaking the oath is residing, which is an action that cannot be realized without choice. However, in "If I do not go out," the condition for breaking the oath is the absence of going out, and an absence can be realized without choice. [1]

In all books, the ruling for these cases has been kept absolute. In fact, jurists have clarified that in negative (non-existent) matters, one can break an oath even under compulsion or coercion, let alone if it's done voluntarily even if it leads to ruin. Imam Qadi Khan states that Sheikh Imam Abu Bakr Muhammad bin Fadl differentiated, saying: if someone takes an oath "if I do not go out," and someone prevents him from going out, he will still break his oath. But if he takes an oath "I will not reside here," and someone prevents him from leaving, the oath will not be broken. The Fatwa is on this differentiated view because "I will not reside here" requires residing as a condition for breaking the oath, which is an intentional act that cannot occur without free will. Whereas in "if I do not go out," the condition is the non-departure, which is a state of non-action and can exist without free will. (T)

Third Doubt: Here the cause of the oath is the attribute of disobedience, which was present in the son. An oath ceases to exist when the causative attributes cease, as in the case: "I will not eat this unripe date (basr)" and it becomes a ripe date (rutab), or "I will not eat this ripe date (rutab)" and it becomes a dried date (tamr). [2] As mentioned in Al-Hidayah and other books. It is stated in Uqud ad-Durriyah: These are attributes that incite the oath, so it becomes restricted by them. [3] In Fath al-Qadir it was stated: The principle is that the thing sworn about, if it has a causative attribute towards the oath, becomes restricted by it, whether in a definite or indefinite state. So when that attribute disappears, the oath also disappears.

Third Doubt: This is because the cause for the oath here is disobedience, which was a quality of the son. Therefore, with the end of the cause (disobedience), the oath should also end. For example, if someone swears not to eat this unripe date (basr), and it becomes a ripe date (rutab), or swears not to eat this ripe date (rutab), and it becomes a dried date (tamr). In such cases, the oath ends as stated in Al-Hidayah and other books. It is mentioned in Uqud ad-Durriyah that since these qualities of the

date were the cause of the oath, the oath will be restricted by these qualities. Thus, when these qualities change, the oath will no longer remain. In Fath al-Qadir, it is stated that the principle is that the thing sworn about, if it possesses a quality...

[1] Fatawa Qadi Khan, Kitab al-Iman, Chapter on Marriage, Naval Kishore, Lucknow, 2/296. [2] Al-Hidayah, Chapter on Oaths regarding Eating and Drinking, Al-Maktaba al-Arabiya, Karachi, 2/467. [3] Uqud ad-Durriyah, Kitab al-Talaq, Haji Abdul Ghaffar, Kandahar, Afghanistan, 1/49. Page 521 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

उनके इस कथन के बारे में कहा गया: "यदि मैं बाहर न निकलूं," यदि कोई रोकने वाला उन्हें रोक दे, तो शपथ टूट जाती है (हानिस)। और उनके इस कथन के बारे में: "मैं निवास नहीं करूंगा," यदि कोई रोकने वाला उन्हें बाहर जाने से रोक दे, तो शपथ नहीं टूटती। फतवा इसी बाद वाले कथन पर है क्योंकि "मैं निवास नहीं करूंगा" में शपथ टूटने की शर्त निवास करना है, जो एक क्रिया है जिसे इच्छा के बिना सिद्ध नहीं किया जा सकता। जबकि "यदि मैं बाहर न निकलूं" में शपथ टूटने की शर्त बाहर न निकलना है, और किसी कार्य का न होना इच्छा के बिना भी सिद्ध हो सकता है। [1]

सभी पुस्तकों में इन सभी स्थितियों का आदेश निरपेक्ष रखा गया है। वास्तव में, न्यायविदों (फुकहा) ने स्पष्ट किया है कि नकारात्मक (अभावात्मक) मामलों में मजबूरी या दबाव की स्थिति में भी शपथ टूट जाती है, फिर चाहे वह स्वेच्छा से ही क्यों न हो, भले ही वह विनाशकारी हो। इमाम काज़ी ख़ान कहते हैं कि शेख इमाम अबू बकर मुहम्मद बिन फ़ज़ल ने अंतर करते हुए कहा: यदि कोई इस तरह शपथ ले कि "अगर मैं न निकलूं तो", इस स्थिति में यदि किसी ने उसे निकलने से रोका तब भी शपथ टूट जाएगी। लेकिन यदि उसने इस तरह शपथ ली कि "मैं यहाँ निवास नहीं रखूँगा", और किसी ने उसे वहाँ से जाने और निकलने से रोका तो शपथ नहीं टूटेगी। फतवा इसी अंतर वाले कथन पर है, क्योंकि "मैं यहाँ निवास नहीं रखूँगा" में शपथ टूटने की शर्त वहाँ निवास करना है और यह एक क्रिया है जबकि कोई भी क्रिया स्वेच्छा के बिना सिद्ध नहीं होती। और "अगर न निकलूं तो" की स्थिति में शपथ टूटने की शर्त न निकलना है, जो एक अभावात्मक चीज़ है और अभावात्मक चीज़ स्वेच्छा के बिना भी सिद्ध हो जाती है। (त)

तीसरा संदेह: यहाँ शपथ का कारण अवज्ञा का गुण है, जो पुत्र में विद्यमान था। शपथ तब समाप्त हो जाती है जब प्रेरक गुण समाप्त हो जाते हैं, जैसे कि: "मैं यह कच्ची खजूर (बसर) नहीं खाऊंगा" और वह पकी खजूर (रुतब) बन जाए, या "मैं यह पकी खजूर (रुतब) नहीं खाऊंगा" और वह सूखी खजूर (तमर) बन जाए। [2] जैसा कि अल-हिदाया और अन्य पुस्तकों में उल्लेख है। उक़ूद अद-दुर्रेया में कहा गया है: ये वे गुण हैं जो शपथ को प्रेरित करते हैं, इसलिए शपथ इनसे प्रतिबंधित हो जाती है। [3] फतह अल-कादिर में कहा गया है: सिद्धांत यह है कि जिस चीज़ की शपथ ली गई है, यदि उसमें शपथ के प्रति कोई प्रेरक गुण है, तो वह उससे प्रतिबंधित हो जाती है, चाहे वह निश्चित हो या अनिश्चित। इसलिए जब वह गुण समाप्त हो जाता है, तो शपथ भी समाप्त हो जाती है।

तीसरा संदेह: यह कि, यहाँ शपथ का कारण अवज्ञा है और अवज्ञा बेटे का एक गुण था। अतः शपथ के कारण (अवज्ञा) के समाप्त होने पर शपथ भी समाप्त हो जाएगी, जैसे किसी ने शपथ ली कि "मैं यह कच्ची खजूर (बसर) नहीं खाऊँगा" और अब वह पकी खजूर (रुतब) हो गई, या शपथ ली कि "मैं यह पकी खजूर (रुतब) नहीं खाऊँगा" और अब वह सूखी खजूर (तमर) बन गई। ऐसी स्थिति में शपथ समाप्त हो जाती है जैसा कि हिदाया और अन्य पुस्तकों में है। उक़ूद अद-दुर्रैया में है कि खजूर के ये गुण शपथ का कारण थे, तो शपथ भी इन गुणों से प्रतिबंधित मानी जाएगी। अतः जब ये गुण बदल गए तो शपथ भी बाकी नहीं रहेगी। फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाया कि सिद्धांत यह है कि जिसकी शपथ ली गई वह चीज़ यदि कोई गुण रखती है...

[1] फतावा काज़ी ख़ान, किताब अल-ईमान, विवाह पर अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 2/296। [2] अल-हिदाया, खाने और पीने के संबंध में शपथ पर अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 2/467। [3] उक़ूद अद-दुर्रैया, किताब अल-तलाक़, हाजी अब्दुल गफ़्फ़ार, कंधार, अफ़गानिस्तान, 1/49। पृष्ठ 688 का 521

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، ۱۳

قال فی قولہ ان لم اخرج اذا منعہ مانع حنث وفی قولہ لا اسکن اذا منعہ مانع عن الخروج لایحنث و الفتوی علی قولہ لان فی قولہ لا اسکن شرط الحنث السکنی و الفعل لایتحقق بدون الاختیار وفی قولہ ان لم اخرج شرط الحنث عدم الخروج والعدم یتحقق بدون الاختیار ۔ ۱

تمام کتب میں ان جملہ صورتوں کا حکم مطلق رکھا گیا ہے بلکہ فقہاء نے تصریح کی ہے کہ عدمی امور میں جبر واکراہ کی صورت میں بھی حانث ہو جاتا ہے چہ جائیکہ رضامندی سے ہو اگرچہ تبا ہی ہو۔ امام قاضی خاں فرماتے ہیں کہ شیخ امام ابوبکر محمد بن فضل نے فرق کرتے ہوئے فرمایا کہ اگر کوئی یوں قسم اٹھائے کہ "اگر میں نہ نکلوں تو" اس قسم میں اگر کسی نے اس کو نکلنے سے منع کیا تب بھی حانث ہو گا ، اگر یوں قسم کھائی کہ " میں یہاں رہائش نہ رکھوں تو" اس قسم میں اگر کسی نے اس کو وہاں سے جانے اور نکلنے سے منع کیا تو قسم نہ ٹوٹے گی اور اس فرق والے قول پر فتوی ہے، کیونکہ میں یہاں رہائش نہ رکھوں گا، میں حانث ہونے کی شرط وہاں رہائش پذیر ہونا ہے اور یہ فعل ہے جبکہ کوئی فعل اختیار کے بغیر متحقق نہیں ہوتا، اور "اگر نہ نکلوں تو" کی صورت میں حانث ہونے کی شرط، نہ نکلنا ہے جو کہ عدمی چیز ہے اور عدمی چیز اختیار کے بغیر بھی متحقق ہو جاتی ہے۔ (ت)

شبهه ثالثه: این جا داعی یمین صفت عقوق و ہذا در پسر بود و یمین بزوال صفات داعیہ زائل شود کما في لایاکل هذا البسر فصار رطباً او الرطب فصار تمرا ۲ کما فی الہدایة وسائر الکتب، در عقود دریہ است هذه صفات داعیة الی الیمین فتتقید بہ ۳ ، در فتح القدیر فرمود الاصل ان المحلوف علیہ اذا کان بصفة داعیة الی الیمین تقید بہ فی المعرف والمنکر فاذا زالت زال الیمین

تیسرا شبہ : یہ کہ ، یہاں قسم کا سبب نافرمانی ہے اور نافرمانی بیٹے کی صفت تھی لہذا قسم کا سبب نافرمانی ختم ہو جانے پر قسم بھی ختم ہو جائے گی جیسا کہ کسی نے قسم کھائی کہ میں یہ بسر کھجور نہ کھاؤں گا تو اب وہ رطب ہو گئی یا قسم کھائی کہ یہ رطب نہ کھاؤں گا تو اب وہ تمر بن گئی۔ ایسی صورت میں قسم ختم ہو جاتی ہے جیسا کہ ہدایہ اور دیگر کتب میں ہے، عقود الدریہ میں ہے کہ کھجور کی یہ صفات قسم کا سبب تھی تو قسم بھی ان صفات سے مقید قرار پائے گی لہذا یہ صفات تبدیل ہو گئیں تو قسم بھی باقی نہ رہے گی، فتح القدیر میں فرمایا کہ قاعدہ یہ ہے کہ جس کی قسم کھائی وہ چیز اگر صفت رکھتی ہے

۱ فتاوی قاضی خاں کتاب الایمان فصل فی التزویج نولکشور لکھنؤ ۲/۲۹۶ ۲ الہدایہ باب الیمین فی الاکل والشرب المکتبۃ العربیہ کراچی ۲/۴۶۷ ۳ عقود الدریۃ کتاب الطلاق و مطالبہ حاجی عبد الغفار قندھار افغانستان ۱/۴۹ Page 521 of 688

Fatawa Ridawiyyah Volume Thirteen Page 13

[Arabic Quote]: From him, and that which does not serve as a motive is considered in the indefinite (nakirah) but not in the definite (ma'rifah). [Footnote 1] Translation: That which can be the cause of an oath, then that oath will be restricted by that attribute, whether that thing is mentioned as a definite noun (ma'rifah) or an indefinite noun (nakirah). So when that attribute ends, the oath will also end. And if the attribute of that thing is not one that can be the cause of an oath, then its attribute will be considered in the oath if it is mentioned as an indefinite noun, but not if it is mentioned as a definite noun.

[Arabic/Persian Text]: I say (Aqool): The place for this rule is where the attribute that causes the oath is mentioned in the oath, even if it is mentioned as a definite noun, whether the definiteness is made through a demonstrative pronoun (isharah), despite the fact that mentioning an attribute for something present is considered redundant. Therefore, if someone takes an oath saying, 'I will not speak to this child,' and speaks to him when he becomes a young man, he will be breaking his oath (hanith). However, if the attribute is the motive (da'i) for the oath, then it will also be a motive for its consideration. For example, in the case of 'this unripe date' (busr), 'this ripe date' (rutab), and 'this milk,' etc., otherwise, an attribute cannot be considered a basis for the persistence of an oath, because oaths are based on words, not on intentions (aghrad). It is stated in Fath al-Qadir: An example of specializing the state (takhsis al-hal) is when someone says: 'I will not speak to this man while he is standing,' and he intends it only for the duration of his standing; then his intention is redundant, contrary to if he said, 'I will not speak to this standing man,' for then his intention is effective between him and Allah Almighty. [Footnote 2] It is clear that in religious matters (diyanatan), the attribute that is a motive and that which is not are the same; the intention of specificity is necessary, but without mention in the wording, a mere intention is of no use even in religious matters, let alone in judicial matters. Similarly, [the case of]: 'If you go out, my slave is free,' and he intends travel, for example; he is believed in religious matters, so he does not break his oath by going out for other reasons, as a specialization of the act of going out itself, whereas if he intended [only the act of] going out...

[Urdu Commentary]: I say (I am saying): The place for this rule is where the attribute that causes the oath is mentioned in the oath, even if it is mentioned as a definite noun, whether the definite form is through a demonstrative pronoun, because a demonstrative points to something present. Even though mentioning a quality for

something present is deemed redundant, for this reason, if someone swore 'I will not talk to this child', then even if he talked to him when he became a young man, he would break his oath. However, if the quality is the motive for the oath, then it will also be the motive for its consideration, just like 'this unripe date' and 'this ripe date' etc. and 'this milk' etc. These qualities, along with being the motive for the oath, are also valid in the oath. If this were not so, then even if the attribute was a motive, if it were considered invalid, its persistence could not be the basis for the persistence of the oath, because oaths are based on words, they are not based on intentions. In Fath al-Qadir, it is stated that the way to specialize a state is that if a person is standing, someone takes an oath about him that...

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Chapter of Oaths regarding Eating and Drinking, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 4/396. 2. Fath al-Qadir, Chapter of Oaths regarding Eating and Drinking, Nuriyah Ridawiyyah Sukkur, 4/210.

फ़तावा रज़विया खंड तेरहवाँ पृष्ठ १३

[अरबी उद्धरण]: उनकी ओर से, और जो प्रेरक (दाहिया) बनने के योग्य नहीं है, वह अनिश्चित (नकिरा) में मान्य है, निश्चित (मारिफ़ा) में नहीं। [पाद टिप्पणी १] अनुवाद: जो शपथ का कारण बन सकता है, तो वह शपथ उस विशेषता (सिफ़त) से प्रतिबंधित होगी, चाहे वह चीज़ निश्चित (मारिफ़ा) के रूप में वर्णित हो या अनिश्चित (नकिरा) के रूप में। तो जब वह विशेषता समाप्त हो जाएगी, तो शपथ भी समाप्त हो जाएगी। और यदि उस चीज़ की विशेषता शपथ का कारण बनने वाली न हो, तो उसे अनिश्चित संज्ञा के रूप में उल्लेख करने पर शपथ में उसकी विशेषता का विचार किया जाएगा, निश्चित संज्ञा में विचार नहीं होगा।

[अरबी/फारसी पाठ]: मैं कहता हूँ (अक़ूल): इस नियम का स्थान वहाँ है जहाँ शपथ का कारण बनने वाली विशेषता का शपथ में उल्लेख किया गया हो, भले ही वह निश्चित (मारिफ़ा) के रूप में वर्णित हो, चाहे वह निश्चितता संकेत (इशारा) द्वारा बनाई गई हो, इस तथ्य के बावजूद कि उपस्थित वस्तु के लिए विशेषता का उल्लेख करना व्यर्थ (लघ्व) माना जाता है। इसीलिए यदि किसी ने शपथ ली कि 'मैं इस बच्चे से बात नहीं करूँगा,' और उसने उससे तब बात की जब वह युवक हो गया, तो वह शपथ तोड़ने वाला (हानिस) होगा। हालाँकि, यदि विशेषता शपथ की प्रेरक (दाई) होगी, तो वह उसके विचार के लिए भी प्रेरक होगी। जैसे कि 'यह कच्ची खजूर' (बसर), 'यह पकी खजूर' (रुतब) और 'यह दूध' आदि में, अन्यथा विशेषता को शपथ के बने रहने का आधार नहीं माना जा सकता, क्योंकि शपथ शब्दों पर आधारित होती है, उद्देश्यों (अग़राज़) पर नहीं। फ़त्ह अल-क़दीर में कहा गया है: स्थिति के विशेषीकरण (तख़्सीस अल-हाल) का उदाहरण यह है कि यदि कोई कहे: 'मैं इस आदमी से बात नहीं करूँगा जबकि वह खड़ा है,' और उसका इरादा केवल उसके खड़े होने की अवधि के लिए हो; तो उसका इरादा व्यर्थ है, इसके विपरीत यदि उसने कहा होता, 'मैं इस खड़े व्यक्ति से बात नहीं करूँगा,' क्योंकि तब उसका इरादा उसके और अल्लाह सर्वशक्तिमान के बीच प्रभावी होता है। [पाद टिप्पणी २] यह स्पष्ट है कि धार्मिक मामलों (दियानतन) में, जो विशेषता प्रेरक है और जो नहीं है, वे समान हैं; विशेषता का इरादा आवश्यक है, लेकिन शब्दों में उल्लेख के बिना, मात्र इरादा धार्मिक मामलों में भी किसी काम का नहीं है, न्यायिक मामलों की तो बात ही क्या है। इसी तरह, [मामला]: 'यदि तुम बाहर निकलीं, तो मेरा गुलाम स्वतंत्र है,' और उसका इरादा उदाहरण के लिए यात्रा का है; धार्मिक मामलों में उसका विश्वास किया जाता है, इसलिए वह अन्य कारणों से बाहर जाने पर अपनी

शपथ नहीं तोड़ता, स्वयं बाहर निकलने की क्रिया के विशेषीकरण के रूप में, जबकि यदि उसका इरादा [केवल] बाहर निकलने का होता...

[उर्दू टिप्पणी]: मैं कहता हूँ (मैं कह रहा हूँ): इस नियम का स्थान वहाँ है जहाँ शपथ का कारण बनने वाली विशेषता का शपथ में उल्लेख किया गया हो, भले ही वह निश्चित (मारिफ़ा) के रूप में वर्णित हो, चाहे वह निश्चित रूप संकेत के माध्यम से हो, क्योंकि संकेत उपस्थित वस्तु की ओर होता है। भले ही उपस्थित वस्तु के लिए गुण का उल्लेख करना व्यर्थ माना जाता है, इस कारण से, यदि किसी ने शपथ ली 'मैं इस बच्चे से बात नहीं करूँगा', तो भले ही उसने युवक होने पर उससे बात की, वह अपनी शपथ तोड़ देगा। हालाँकि, यदि गुण शपथ की प्रेरक है, तो वह उसके विचार के लिए भी प्रेरक होगी, जैसे 'यह कच्ची खजूर' और 'यह पकी खजूर' आदि और 'यह दूध' आदि। ये गुण, शपथ की प्रेरक होने के साथ-साथ, शपथ में भी मान्य हैं। यदि ऐसा न होता, तो विशेषता प्रेरक होने पर भी, यदि इसे अमान्य माना जाता, तो इसका बने रहना शपथ के बने रहने का आधार नहीं बन सकता था, क्योंकि शपथ शब्दों पर आधारित होती है, उद्देश्यों पर आधारित नहीं होती है। फ़त्ह अल-क़दीर में कहा गया है कि स्थिति को विशेष करने का तरीका यह है कि यदि कोई व्यक्ति खड़ा हो, तो कोई उसके बारे में शपथ ले कि...

पाद टिप्पणियाँ: १. फ़त्ह अल-क़दीर, खाने और पीने के संबंध में शपथ का अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची, ४/३९६। २. फ़त्ह अल-क़दीर, खाने और पीने के संबंध में शपथ का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर, ४/२१०।

पृष्ठ ५२२ / ६८८

عنه وما لاتصلح داعية اعتبر في المنكر دون المعرف[1] ۔ ترجمہ: جو قسم کا سبب بن سکتی ہے تو وہ قسم اس صفت سے مقید ہو گی خواہ وہ چیز معرفہ کے طور پر مذکور ہو یا نکرہ مذکور ہو تو جب وہ صفت ختم ہو جائے تو قسم بھی ختم ہو جائے گی اور اگر اس چیز کی صفت قسم کا سبب بننے والی نہ ہو تو پھر اس کو نکرہ ذکر کرنے پر قسم میں اس کی صفت کا اعتبار ہو گا معرفہ میں اعتبار نہ ہو گا۔

اقول: محلش آنجاست کہ در حلف آن صفت داعیہ را ذکر کردہ باشد اگر چہ در معرف اگر چہ بالاشارہ با آنکہ وصف در حاضر لغواست و لہٰذا الو حلف لا یکلم ھذا الصبی فکلمہ شابا حنث امادا عی بود نش داعی اعتبارش میشود چنانچہ در ھذا البسر وھذا الرطب وھذا اللبن الی غیر ذلک ورنہ وصف ملحوظ رمدار بقائے یمین نتواں کرد کہ بنائے ایمان بر الفاظ ست نہ بر اغراض، در فتح القدیر فرمود من صور تخصیص الحال ان یقول لا اکلم ھذا الرجل و ھو قائم ونوی فی حال قیامہ فنیتہ لغو بخلاف مالو قال لا اکلم ھذا الرجل القائم فان نیتہ تعمل فیما بینہ و بین اللہ تعالیٰ[2] پیدا ست کہ در دیانت صفت داعیہ و غیر داعیہ یکساں ست نیت خصوص باید اما بے ذکر در لفظ نیت مجردہ دیانۃً نیز بکار نیامد تا بقضا چہ رسد ، ہمدراں ست ان خرجت فعبدی حرو نوی السفر مثلا یصدق دیانۃ فلا یحنث بالخروج الی غیرہ تخصیصاً لنفس الخروج مآلو نوی الخروج

اقول (میں کہتا ہوں) اس قاعدہ کا محل وہ ہے جہاں قسم کا سبب بننے والی صفت کو قسم میں ذکر کیا گیا ہو اگر چہ وہ معرفہ کے طور پر مذکور ہو خواہ معرفہ اشارہ سے بنایا گیا ہو کیونکہ اشارہ حاضر چیز کی طرف ہوتا ہے باوجودیکہ حاضرین میں صفت کا ذکر لغو قرار پاتا ہے ، اسی لئے اگر قسم کھائی کہ میں اس بچے سے بات نہ کروں گا تو اگر اس سے جوانی میں بات کی تو تب

بھی حانث ہو گا ، تاہم وصف اگر قسم کا داعی ہو گا تو اس کے اعتبار کا بھی داعی ہو گا ، جیسا کہ یہ بسر اور یہ رطب وغیرہ میں اور یہ دودھ ، وغیرہ میں یہ صفات قسم کا داعی ہونے کے ساتھ قسم میں بھی معتبر ہیں ، اگر ایسا نہ ہو تو پھر وصف داعی بھی ہو تو غیر معتبر ہونے کی صورت میں اس کی بقاء قسم کی بقاء کے لئے مدار نہیں بن سکتی کیونکہ قسمیں الفاظ پر مبنی ہوتی ہیں اغراض پر مبنی نہیں ہوتیں ، فتح القدیر میں فرمایا حال کی تخصیص کرنے کی صورت یوں ہے کہ ایک شخص کھڑا ہو تو کوئی اس کے بارے میں قسم کھائے کہ

1۸ فتح القدیر باب الیمین فی الاکل والشرب المکتبۃ العربیۃ کراچی ۳۹۶/۴ 2۸ فتح القدیر باب الیمین فی الاکل والشرب نوریہ رضویہ سکھر ۲۱۰/۴

Fatawa Razawiyya Volume 13 / Page 13

...to a specific place like Baghdad, where it is not valid because the place is not mentioned. [1]

[Right Column] "I will not talk to him," and if he intends for the person to be standing while making the oath, then this intention will be futile. In contrast, if he says, "I will not talk to this standing person," then in this case, the intention of the person being standing can be considered religiously (Diyanatan). From this, it is clear that in Diyanatan (in the eyes of God), both the motivating quality (wasf da'ee) and the non-motivating quality are equal; therefore, a specific intention is necessary. However, merely intending without mentioning the quality is not effective even religiously, so how can it be effective legally (Qada-an)? In the same [book], it is mentioned: if a person says, "If I go out, my slave is free," and he intended 'going out' as 'traveling,' his statement can be attested religiously because he specified 'going out' with 'traveling.' Thus, this is a specification of the mentioned exit. Therefore, if he goes out for any other purpose, he will not break the oath. On the contrary, if by this he meant going to a specific place, for example, Baghdad, then this intention will not be valid because the place is not mentioned in the oath, so the specification of the place is also not considered. (T)

Fourth Doubt: That when the cause of an oath ends, the oath itself also ends, even if that cause is not mentioned in the oath. Therefore, if a creditor gives an oath to his debtor, or his guarantor, or a guarantor of the person (kafil bi-al-nafs) gives an oath to the person guaranteed, or a guarantor by order (kafil bi-al-amr) gives an oath to his principal (the original debtor), saying "You shall not go out of the city without my permission," then if the cause of this oath—the debt or the guarantee—ends, this oath will also end. It is narrated in Al-Fatawa al-Hindiyya from Al-Muhit: "The creditor swore his debtor that he would not leave the city except with his permission; this oath will be restricted to the period the debt exists. As long as the debt remains, the oath remains; otherwise, when the debt is cleared, this oath will also end." It is stated in Al-Khaniyah: "The guarantor for the person (kafil bi-al-nafs)—meaning the one who guarantees to produce someone—gives an oath to his principal (asil) that you..."

[Left Column] Fourth Doubt: In an oath, the removal of the cause leads to the removal of the oath, even if it is not mentioned in words. Therefore, if the creditor gives an oath to the debtor or guarantor, or the kafil bi-al-nafs to the guaranteed person, or the guarantor by order to the principal, "Do not leave the city without my

permission," and the debt was paid or the guarantee ceased, the oath ends because its cause was nothing but the debt and the guarantee. Thus, it ceases with their cessation. In Al-Hindiyya, from Al-Muhit: "The creditor swore his debtor not to leave the city except with his permission, so the oath is restricted to the state of the existence of the debt." [2] In Al-Khaniyah, it says: "The guarantor for the person, when he swears the principal not to leave the city except with his permission, and then the principal paid the debt of the seeker, then the swearer went out after that..."

---

1. Fath al-Qadir, Chapter on Oaths regarding Eating and Drinking, Nuriya Razawiyya, Sukkur, 4/209.
2. Fatawa Hindiyya.

फतावा रज़विय्या जिल्द 13 / पृष्ठ 13

...किसी विशेष स्थान जैसे बगदाद की ओर, जहां यह सही नहीं है क्योंकि स्थान का उल्लेख नहीं किया गया है। [1]

[दायां कॉलम] "मैं उससे बात नहीं करूँगा," और यदि वह शपथ में उसके खड़े होने की नियत (इरादा) करता है, तो यह नियत व्यर्थ होगी। इसके विपरीत, यदि वह कहे कि "मैं इस खड़े व्यक्ति से बात नहीं करूँगा," तो इस स्थिति में शपथ में खड़े होने की नियत का विचार दयानतन (धार्मिक रूप से) किया जा सकता है। इससे स्पष्ट हुआ कि दयानतन में, प्रेरक गुण (वस्फ़ दा'ई) और गैर-प्रेरक गुण दोनों समान हैं, इसलिए नियत का विशिष्ट होना आवश्यक है। लेकिन गुण का उल्लेख किए बिना केवल नियत करना दयानतन में भी प्रभावी नहीं है, तो क़ज़ान (कानूनी रूप से) कैसे प्रभावी हो सकता है? इसी में है: यदि कोई व्यक्ति कहता है कि "यदि मैं बाहर जाऊं तो मेरा दास स्वतंत्र है," और उसने बाहर जाने से यात्रा करने की नियत की, तो उसकी दयानतन पुष्टि की जा सकती है क्योंकि उसने बाहर जाने को यात्रा के साथ विशिष्ट किया है। अतः यह उक्त निकास का विनिर्देश (तख़सीस) है। इसलिए, यदि वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए बाहर निकलता है, तो वह शपथ नहीं तोड़ेगा। इसके विपरीत, यदि इससे उसका अभिप्राय किसी विशेष स्थान, उदाहरण के लिए बगदाद, के लिए निकलना हो, तो यह नियत सही नहीं होगी क्योंकि शपथ में स्थान का उल्लेख नहीं है, इसलिए स्थान का विनिर्देश भी मान्य नहीं है। (त)

चौथा संदेह: यह कि, शपथ के कारण के समाप्त होने पर शपथ भी समाप्त हो जाती है, भले ही वह कारण शपथ में उल्लिखित न हो। इसलिए, यदि कोई लेनदार अपने देनदार को या उसके जामिन (गारंटर) को, या 'कफ़ील बिल नफ़्स' (व्यक्ति का जामिन) अपने उस व्यक्ति को जिसकी उसने जिम्मेदारी ली है, या आदेश द्वारा जामिन (कफ़ील बिल अम्र) अपने असल देनदार को शपथ दिलाए कि "तुम मेरी अनुमति के बिना शहर से बाहर नहीं जाओगे," तो यदि इस शपथ का कारण - ऋण या जिम्मेदारी - समाप्त हो जाए, तो यह शपथ भी समाप्त हो जाएगी। फ़तावा हंदिया में मुहीत से उद्धृत है: "लेनदार ने अपने देनदार को शपथ दिलाई कि तुम मेरी अनुमति के बिना शहर से बाहर नहीं जाओगे; यह शपथ ऋण के बने रहने तक सीमित होगी। जब तक ऋण है शपथ बनी रहेगी, अन्यथा ऋण समाप्त होने पर यह शपथ भी समाप्त हो जाएगी।" खानिया में है: "कफ़ील बिल नफ़्स - अर्थात किसी व्यक्ति को उपस्थित करने का जामिन - अपने असल देनदार को शपथ दिलाए कि तुम..."

[बायां कॉलम] चौथा संदेह: शपथ में, कारण का हटना शपथ के हटने का कारण बनता है, भले ही वह शब्दों में वर्णित न हो। इसलिए, यदि लेनदार देनदार या जामिन को, या कफ़ील बिल नफ़्स उस व्यक्ति को जिसकी जिम्मेदारी ली है, या आदेश द्वारा जामिन अपने असल देनदार को शपथ दिलाए कि "मेरी अनुमति के बिना शहर से बाहर न जाना," और ऋण का भुगतान हो गया या जिम्मेदारी समाप्त हो गई, तो शपथ समाप्त हो जाती है क्योंकि इसका कारण ऋण और जिम्मेदारी के अलावा कुछ नहीं था। अतः उनके समाप्त होने पर यह भी समाप्त हो जाती है। हंदिया में मुहीत से है: "लेनदार ने अपने देनदार को शपथ दिलाई कि वह उसकी अनुमति के बिना शहर से बाहर न निकले, इसलिए शपथ ऋण के अस्तित्व की स्थिति तक सीमित है।" [2] खानिया में है: "कफ़ील बिल नफ़्स, जब वह असल देनदार को शपथ दिलाए कि उसकी अनुमति के बिना शहर से बाहर न निकले, और फिर असल देनदार ने लेनदार का ऋण चुका दिया, फिर उसके बाद शपथ लेने वाला बाहर निकला..."

---

1. फ़तहुल क़दीर, खाने-पीने में शपथ का अध्याय, नूरिय्या रज़विय्या, सुक्कुर, 4/209।
2. फ़तावा हंदिया।

पृष्ठ 523/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم / صفحہ ۱۳

الی مکان خاص کبغداد حیث لا یصح لان المکان غیر مذکور ۱۔

(دائیں کالم) میں اس سے بات نہ کروں گا اور قسم میں اس کے کھڑے ہونے کی نیت کرے تو یہ نیت لغو ہوگی بخلاف جب یوں کہے کہ میں اس کھڑے شخص سے بات نہ کروں گا تو اس صورت میں قسم میں کھڑے ہونے کی نیت کا اعتبار عند اللہ ہو سکتا ہے اس سے واضح ہوا کہ دیانہ یعنی عند اللہ، میں وصف داعی اور غیر داعی دونوں یکساں ہیں اس لئے نیت تخصیص ضروری ہے لیکن وصف کو ذکر کئے بغیر محض نیت کرنا دیانت میں بھی کار آمد نہیں ہے تو قضاء کیسے کار آمد ہو سکتی ہے، اسی میں ہے اگر کوئی شخص کہتا ہے کہ اگر میں باہر جاؤں تو میرا غلام آزاد ہے، اور باہر جانے سے سفر کی نیت کی تو اس کی تصدیق دیانۃ کی جا سکتی ہے کیونکہ باہر نکلنے کو سفر کے ساتھ خاص کیا ہے تو یہ خروج مذکور کی تخصیص ہے لہذا کسی اور مقصد کے لئے باہر نکلے تو حانث نہ ہوگا۔ اس کے برخلاف اگر اس سے وہ کسی خاص جگہ مثلاً بغداد کے لئے نکلنا مراد لے تو یہ نیت صحیح نہ ہو گی کیونکہ قسم میں جگہ کا ذکر نہیں اس لئے جگہ کی تخصیص بھی معتبر نہیں ہے۔ (ت)

چوتھا شبہ: یہ کہ، قسم کے سبب کے ختم ہو جانے پر قسم بھی ختم ہو جاتی اگرچہ وہ سبب قسم میں مذکور نہ ہو، لہذا اگر قرض خواہ اپنے مقروض کو یا اس کے کفیل کو یا نفس کا کفیل اپنے مکفول عنہ کو یا کفیل بالامر اپنے اصیل یعنی اصل ذمہ دار کو قسم دے کہ تو میری اجازت کے بغیر شہر سے باہر مت جائے گا، تو اس قسم کا سبب قرضہ یا کفالت ختم ہو جائے تو یہ قسم بھی ختم ہو جائے گی۔ ہندیہ میں محیط سے منقول ہے کہ قرض خواہ نے مقروض کو قسم دی کہ تو میری اجازت کے بغیر شہر سے باہر نہ جائے گا تو یہ قسم قرض کی بقاء سے مقید ہوگی کہ جب تک قرض ہے قسم

باقی رہے گی ورنہ قرض ختم ہو جانے پر یہ قسم بھی ختم ہو جائے گی۔ خانیہ میں ہے کفیل بالنفس یعنی کسی شخص کو حاضر کرنے کا ضامن، اپنے اصل ذمہ دار کو قسم دے کہ تو میری

(بائیں کالم) شبہہ رابعہ: در یمین زوال سبب زوال یمین ست گو در لفظ مذکور نباش و لہذا اگر دائن مدیون یا کفیل را یا کفیل بالنفس مکفول عنہ یا کفیل بالامر اصیل را سوگند دہد بے اذن من بیرون شہر نروی و دین ادا نشد یا کفالت نماند یمین منتہی شود کہ باعث برو نبود مگر دین و کفالت پس بزوالش زائل شود در ہندیہ از محیط ست حلف صاحب الدین مدیونہ ان لا یخرج من البلدة الا باذنہ فالیہین مقیدة بحال قیام الدین ۲ در خانیہ فرماید الکفیل بالنفس اذا حلف الاصیل ان لا یخرج من البلدة الا باذنه فقضی الاصیل دین الطالب ثم خرج الحالف بعد ذلك

---

۱ فتح القدیر باب الیمین فی الاکل والشرب نوریہ رضویہ سکھر ۴/ ۲۰۹ ۲ فتاویٰ ہندیہ

صفحہ 523/688

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Top Left Box] "One does not break his oath (La yahnath) [1]. It is mentioned in Tanwir that if a creditor makes his debtor, or a guarantor makes the person for whom he is guaranteeing at the debtor's request, swear not to leave the city without his permission, this oath is restricted to leaving while the debt and guarantee remain [2]. It is evident that here the reason for the oath is anger and displeasure; when it changes to pleasure (satisfaction), the reason ceases to exist, and the consequence follows suit."

[Top Right Box] "...that he will not leave the city without permission. Thus, if the original debtor pays the creditor's debt, and then he leaves the city without permission, the oath will not be broken. It is stated in Tanwir that if a creditor makes a debtor swear, or a guarantor of a matter makes his guaranteed person swear, 'You shall not go out without my permission,' then this oath regarding leaving is restricted to the continuation of the debt and the continuation of the guarantee. If the debt and guarantee end, then this oath also ends. From the above statement, it is clear that in the issue under discussion, the cause of the oath is the father's anger and displeasure with the son. So, when this anger and displeasure turned into pleasure, the cause ended. Therefore, the consequence, i.e., the oath of divorce regarding the wife, also ended."

[Bottom Left Box] "I say (Aqul): This is not so, and no one is of this opinion. Otherwise, the general oaths of common people, which are based on anger, ill-will, wrath, and disagreement—such as 'I will not speak to so-and-so,' 'I will not see his face,' 'I will not go to his house,' 'I will not let him into his house,' or 'I will hit him with a hundred sticks,' 'I will do this or that,' otherwise the wife is divorced, and so on—thousands of oaths would all vanish as soon as anger subsided. They would be annulled without any breach of oath (hanth), atonement (kaffara), or any penalty. There would be absolutely no need for caution. Has anyone in the world ever heard anyone say this? The noble Imams have spoken about mentioned oaths in various forms and diverse explanations in great detail (to the last grain), and in every aspect, they have presented wave after wave of elevated research and army after army of original clarifications. However, they have never said anywhere in any book that all these oaths depend on the continuation of anger, and when pleasure returns, the oath is over."

[Bottom Right Box] "I say (Aqul): (I say) it is not like that at all, and no one says so. Otherwise, common oaths based on anger, displeasure, and disagreement—for example, 'I will not talk to so-and-so,' 'I will not see so-and-so's face,' 'I will not go to so-and-so's house,' 'I will not give so-and-so the way to the house,' 'I will hit so-and-so with a hundred sticks,' 'if I do this, let this happen or that happen,' or 'let the wife be divorced' etc.—it would necessarily mean that thousands of oaths would be ruined as soon as anger ended, and they would end without any atonement and without breaking the oath. No penalty would apply to these oaths, and there would be no need for any legal device (heela) to get rid of these oaths. Such oaths..."

[Footnotes] 1. Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Iman, Fasl fil-Khurooj, Naval Kishore, Lucknow, 2/315. 2. Al-Durr al-Mukhtar, Bab al-Yameen fi al-Darb, etc., Matba' Mujtabai, Delhi, 1/313.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[ऊपरी बायां बॉक्स] "वह अपनी शपथ नहीं तोड़ता (ला यहनथ) [1]। तनवीर में कहा गया है कि यदि एक ऋणदाता अपने ऋणी को, या एक गारंटर ऋणी के अनुरोध पर उस व्यक्ति को जिसके लिए वह गारंटी दे रहा है, उसकी अनुमति के बिना शहर न छोड़ने की शपथ दिलाता है, तो यह शपथ ऋण और गारंटी के बने रहने तक शहर छोड़ने से प्रतिबंधित है [2]। यह स्पष्ट है कि यहाँ शपथ का कारण क्रोध और अप्रसन्नता है; जब यह प्रसन्नता (संतुष्टि) में बदल जाता है, तो कारण समाप्त हो जाता है, और परिणाम भी चला जाता है।"

[ऊपरी दायां बॉक्स] "...कि वह बिना अनुमति के शहर से बाहर नहीं जाएगा। अत; जब मूल ऋणी ऋणदाता का ऋण चुका देता है, और फिर वह बिना अनुमति के शहर से बाहर जाता है, तो शपथ नहीं टूटेगी। तनवीर में कहा गया है कि यदि कोई ऋणदाता ऋणी को शपथ दिलाता है, या किसी मामले का गारंटर अपने गारंटीकृत व्यक्ति को शपथ दिलाता है कि 'तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाओगे', तो बाहर जाने के संबंध में यह शपथ ऋण के बने रहने और गारंटी के बने रहने तक सीमित होगी। यदि ऋण और गारंटी समाप्त हो जाती है, तो यह शपथ भी समाप्त हो जाती है। उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि विचाराधीन मामले में शपथ का कारण पिता का पुत्र के प्रति क्रोध और अप्रसन्नता है। अतः जब यह क्रोध और अप्रसन्नता प्रसन्नता में बदल गई, तो कारण समाप्त हो गया। इसलिए, परिणाम यानी पत्नी के संबंध में तलाक की शपथ भी समाप्त हो गई।"

[निचला बायां बॉक्स] "मैं कहता हूँ (अक़ूल): ऐसा नहीं है, और न ही कोई इस मत का है। अन्यथा सामान्य लोगों की सामान्य शपथें जो क्रोध, दुर्भावना, रोष और असहमति पर आधारित होती हैं—जैसे 'मैं फलां से बात नहीं करूँगा,' 'मैं उसका चेहरा नहीं देखूँगा,' 'मैं उसके घर नहीं जाऊँगा,' 'मैं उसे अपने घर में रास्ता नहीं दूँगा,' या 'मैं उसे सौ डंडों से मारूँगा,' 'मैं ऐसा या वैसा करूँगा,' अन्यथा पत्नी तलाकशुदा है, इत्यादि—हज़ारों-हज़ार शपथें क्रोध के शांत होते ही समाप्त हो जाएँगी। वे बिना किसी शपथ भंग (हंथ), प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) या किसी दंड के रद्द हो जाएँगी। सावधानी बरतने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं होगी। क्या दुनिया में किसी ने कभी किसी को यह कहते सुना है? प्रतिष्ठित इमामों ने उल्लेखित शपथों के बारे में विभिन्न रूपों और विविध व्याख्याओं में विस्तार से (तिल-तिल कर) बात की है, और हर पहलू में उन्होंने उच्च शोध की लहर के बाद लहर और मौलिक स्पष्टीकरण की सेना के बाद सेना प्रस्तुत की है। हालाँकि, उन्होंने कभी भी किसी भी किताब में कहीं भी यह नहीं

कहा है कि ये सभी शपथें क्रोध के बने रहने पर निर्भर करती हैं, और जब प्रसन्नता लौटती है, तो शपथ समाप्त हो जाती है।"

[निचला दायां बॉक्स] "मैं कहता हूँ (अक़ूल): (मैं कहता हूँ) ऐसा बिल्कुल नहीं है, और न ही कोई ऐसा कहता है। अन्यथा क्रोध, अप्रसन्नता और असहमति पर आधारित सामान्य शपथें—उदाहरण के लिए, 'मैं फलां से बात नहीं करूँगा,' 'मैं फलां का चेहरा नहीं देखूँगा,' 'मैं फलां के घर नहीं जाऊँगा,' 'मैं फलां को घर का रास्ता नहीं दूँगा,' 'मैं फलां को सौ डंडों से मारूँगा,' 'अगर मैं ऐसा करूँतो ऐसा हो जाए या वैसा हो जाए,' या 'पत्नी को तलाक हो जाए' आदि—इसका अनिवार्य अर्थ यह होगा कि क्रोध समाप्त होते ही हज़ारों शपथें बर्बाद हो जाएँगी, और वे बिना किसी प्रायश्चित के और बिना शपथ तोड़े समाप्त हो जाएँगी। इन शपथों पर कोई दंड लागू नहीं होगा, और इन शपथों से छुटकारा पाने के लिए किसी कानूनी उपाय (हीला) की आवश्यकता नहीं होगी। ऐसी शपथों..."

[पादलेख] 1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताब अल-ईमान, फ़स्ल फ़िल-ख़ुरूज, नवल किशोर, लखनऊ, 2/315। 2. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, बाब अल-यमीन फ़ि अल-दर्ब, इत्यादि, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/313।

[اوپری بائیں جانب کا خانہ] لا یحنث 1 در تنویر فرمود حلف رب الدین غریمه او الکفیل بامر المکفول عنه ان لا یخرج من البلد الا باذنه تقید بالخروج حال قیام الدین بالکفالة 2 و پیدا است کہ ایں جا سبب یمین ہمیں خشم و ناراضی ست چوں برضا بدل شد سبب نماند و مسبّب رفت،

[اوپری دائیں جانب کا خانہ] اجازت کے بغیر شہر سے باہر نہ جائے گا، تو جب اصیل نے قرض والے کا قرض ادا کر دیا تو پھر وہ اس کی اجازت کے بغیر شہر سے باہر گیا تو قسم نہ ٹوٹے گی۔ تنویر میں فرمایا کہ اگر قرض خواہ نے مقروض کو یا کسی معاملے کے ضامن نے اپنے مکفول کو قسم دی کہ تو میری اجازت کے بغیر باہر نہ جائے گا تو نکلنے کے متعلق یہ قسم قرض کی بقاء اور کفالت کی بقاء سے مقید ہو گی کہ قرض و کفالت ختم ہو جائے تو یہ قسم بھی ختم ہو جائے گی، تو مذکورہ بیان سے واضح ہو گیا کہ زیر بحث مسئلہ میں قسم کا سبب بیٹے پر باپ کی ناراضگی اور غصہ ہے تو جب یہ غصہ و ناراضگی رضا میں بدل گئی تو یہ سبب ختم ہو گیا تو مسبّب یعنی بیوی کے متعلق طلاق کی قسم بھی ختم ہو گئی،

[نچلے بائیں جانب کا خانہ] اقول: چناں نیست نہ ہیچ کس با و قائل ورنہ عامہ ایمانِ عامہ کہ مبتنی بر خشم و ناچاتی و غضب و نااتفاقی باشد بفلان سخن نکند، و رویش نہ بیند بخانہ اش نہ رود و بخانہ اش راہ نہ دہد، یا صد چوب زند چنیں کند، چناں کند، ورنہ زن طلاقہ شود و غیر ذلک ہزاراں ہزار سوگند ہمہ بمجرد زوال خشم بر باد رفتے وبے حنث و کفارہ و لزوم ہیچ جزا باطل شدے واصلاً احتیاج احتیاط بر اثر بر نماندے آیا ہیچکس بجہاں قائل ایں قول شنیدہ، ائمہ کرام در ایمان مذکور بصور تہائے گونا گوں و تفریحات بو قلموں بہ نقیر و قطمیر سخن فرمودہ و بہر پہلوئے آنہا موج

موج تحقیقات رفیعہ و فوج فوج تنقیحات بدیعہ نمودہ فاما پیچگاہ پیچ جابہ پیچ کتاب نگفتہ اند کہ ایں ہمہ بر دوامِ تابقائے خشم ست چوں رضا آمد سوگند سپری

[نچلے دائیں جانب کا خانہ] اقول: (میں کہتا ہوں) ایسا ہر گز نہیں ہے اور نہ ہی کوئی اس کا قائل ہے ورنہ عام قسمیں جو غصہ اور ناراضگی، نااتفاقی پر مبنی ہوتی ہیں، مثلاً فلاں سے بات نہ کروں گا، فلاں کی شکل نہ دیکھوں گا، فلاں کے گھر نہ جاؤں گا، فلاں کو گھر کی راہ نہ دوں گا، فلاں کو ایک سو چھڑی ماروں گا، اگر ایسا کروں تو یہ ہو جائے یا وہ جائے، یا بیوی کو طلاق ہو جائے وغیرہ، تو لازم آئے گا کہ ہزار ہا قسمیں غصہ ختم ہو جانے پر برباد ہو جائیں اور بغیر کفارہ اور بغیر حانث ہوئے ختم ہو کر رہ جائیں، اور ان قسموں پر کوئی جزا لاگو نہ ہو اور ان قسموں سے چھٹکارا حاصل کرنے کیلئے اصلاً کسی حیلہ کی ضرورت پیش نہ آئے، اور ایسی قسموں

[حواشی] 1 فتاوی قاضی خاں کتاب الایمان فصل فی الخروج نولکشور لکھنؤ ۲/ ۳۱۵ 2 الدر المختار باب الیمین فی الضرب الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۳۱۳

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

(Right Column - Urdu Text): ...should have no effect. Have you ever heard this from anyone in the world? Although the noble Imams have conducted various discussions regarding the aforementioned types of oaths and have provided various detailed explanations, and have poured rivers of profound research and remarkable investigations regarding every aspect related to them. However, despite this, they have never stated anywhere in any book that all these oaths are valid only until anger lasts. That once the anger ends and reconciliation is achieved, the oaths automatically become void, and all the rulings based on their deep contemplation and thought become merely formalities. For example, if someone swore that 'if I speak to Zaid, my wife is divorced three times,' then the one who made this oath wants to speak to Zaid. What should be done, because speaking results in three divorces for the wife? What method can be used so that he can speak and the three divorces do not occur? Regarding such a person, these noble jurists (Fuqaha) stated that this person should give his wife one irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'inah). After her waiting period ('Iddat) is complete, he should speak to Zaid. Now the penalty, i.e., divorce, will technically occur, but since the wife is irrevocable (no longer his legal wife) at that moment, she will not be the locus for divorce to fall upon, because the oath has been broken once and has ended. In Sirajiyah and then in Hindiyyah, it is stated that when someone has sworn an oath of three divorces saying 'I will not speak to so-and-so,' the way for him to save himself from three divorces is that he first (divorces his wife)...

(Left Column - Persian Text): ...and all theoretical rulings became such that if someone swore that 'if I speak with Zaid, the woman is divorced three times,' and then he wants to speak with him, what must he do so that the severe (Mughallazah) divorce does not occur? They have said that he should give the woman one irrevocable divorce and leave her until she emerges from the waiting period. Then he may speak with Zaid; the consequence (divorce) will occur but will find no locus (the woman is not a wife at that moment) and pass without effect. Then he may remarry the woman and remain in conversation with Zaid without divorce occurring, because the oath was discharged at once. In Sirajiyah and then in Hindiyyah, it is stated: 'If one swore by three divorces not to speak to so-and-so, the path is to give her one irrevocable divorce and leave her until her waiting period expires, then speak to so-and-so, then remarry her.'[1] Why are all these formalities necessary? Why did they not say that when that anger left and reconciliation was made between them, his oath

became void? And this is (the story of) the Prophet of Allah, our Master Ayyub (upon our Prophet and upon him be peace and blessings); during the days of trial, his holy wife Rahma bint Ephraim (or Meesha) son of Yusuf son of Yaqub son of Ishaq son of Ibrahim (upon him be peace and blessings) used to earn bread through labor and toil and bring it to the Prophet of Allah. Once she brought a lot of bread; the Prophet of Allah suspected that she might have taken someone's property dishonestly and he became angry.

Footnote: [1] Fatawa Hindiyyah, Kitab al-Hiyal, Chapter 7 regarding Divorce, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/397

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ): ...का कोई प्रभाव न रहे। क्या आपने दुनिया में कभी किसी से यह बात सुनी है? हालांकि महान इमामों ने उक्त शपथों के बारे में विभिन्न चर्चाएँ की हैं और कई प्रकार के विवरण बताए हैं, और उनके हर पहलू के बारे में उच्च शोध और अद्भुत जांच की नदियाँ बहा दी हैं, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने कभी किसी स्थान पर किसी पुस्तक में यह नहीं कहा कि ये सभी शपथें केवल क्रोध तक हैं। जब क्रोध समाप्त हो जाए और आपसी सहमति हो जाए, तो शपथें स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं, और उनके सभी चिंतन और विचार पर आधारित नियम केवल औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने शपथ ली कि 'यदि मैं ज़ैद से बात करूँ तो पत्नी को तीन तलाक़ हैं', फिर यह शपथ लेने वाला ज़ैद से बात करना चाहता है। तो क्या किया जाए, क्योंकि बात करने पर पत्नी पर तीन तलाक़ पड़ते हैं? और क्या तरीका हो कि वह बात कर ले और तीन तलाक़ न पड़ें? तो ऐसे व्यक्ति के बारे में इन महान न्यायविदों (फ़क़ीहों) ने कहा कि यह व्यक्ति अपनी पत्नी को एक तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) दे दे, फिर उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने के बाद वह ज़ैद से बात करे। अब उस पर सज़ा यानी तलाक़ लागू होगी, लेकिन उस समय पत्नी के बाइन हो जाने के कारण वह तलाक़ का स्थान नहीं रहेगी, क्योंकि शपथ एक बार टूट चुकी है और समाप्त हो चुकी है। सिराजिया फिर हिंदिया में कहा गया है कि जब किसी ने तीन तलाक़ की शपथ लेकर कहा कि 'मैं अमुक से बात नहीं करूँगा', तो उसके लिए तीन तलाक़ों से बचने का मार्ग यह है कि वह पहले (पत्नी को)...

(बायां कॉलम - फ़ारसी पाठ): ...और सभी सैद्धांतिक नियम ऐसे हो गए कि यदि कोई शपथ ले कि 'यदि मैं ज़ैद से बात करूँ तो पत्नी को तीन तलाक़ हैं', और फिर वह उससे बात करना चाहे, तो उसे क्या करना चाहिए कि तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (कठोर तलाक़) न हो? उन्होंने कहा है कि वह पत्नी को एक तलाक़-ए-बाइन दे दे और उसे छोड़ दे जब तक कि वह इद्दत से बाहर न आ जाए। फिर वह ज़ैद से बात करे; सज़ा लागू होगी लेकिन उसे कोई स्थान नहीं मिलेगा (क्योंकि महिला उस समय पत्नी नहीं है) और वह बेअसर चली जाएगी। फिर वह महिला से पुनः निकाह कर ले और ज़ैद से बात करना जारी रख सकता है बिना तलाक़ हुए, क्योंकि शपथ एक ही बार में पूरी हो गई। सिराजिया और फिर हिंदिया में कहा गया है: 'यदि किसी ने तीन तलाक़ की शपथ ली कि वह अमुक से बात नहीं करेगा, तो तरीका यह है कि उसे एक तलाक़-ए-बाइन दे और उसे छोड़ दे जब तक कि उसकी इद्दत समाप्त न हो जाए, फिर अमुक से बात करे, फिर उससे निकाह कर ले।'[1] ये सभी औपचारिकताएं क्यों हैं?

उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि जब वह गुस्सा खत्म हो गया और मेल-मिलाप हो गया, तो शपथ स्वयं ही शून्य हो गई? और यह अल्लाह के नबी, हमारे आका अय्यूब (हमारे नबी और उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की कहानी है; परीक्षण के दिनों में उनकी पवित्र पत्नी रहमा बिंत एफ्रैम (या मीशा) बिन यूसुफ़ बिन याकूब बिन इसहाक बिन इब्राहिम (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) मज़दूरी और कड़ी मेहनत से रोटी कमाती थीं और अल्लाह के नबी के लिए लाती थीं। एक बार वह बहुत सारी रोटी लाईं; अल्लाह के नबी को संदेह हुआ कि कहीं उन्होंने किसी की संपत्ति बेईमानी से तो नहीं ली है और वह क्रोधित हो गए।

पादलेख (Footnote): [1] फ़तावा हिंदिया, किताब अल-हियल, सातवां अध्याय तलाक़ के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/397

فتاویٰ رضویہ، جلد ۱۳، صفحہ ۱۳

(دایاں کالم - اردو متن): کا کوئی اثر نہ رہے، کیا آپ نے دنیا میں کبھی کسی سے یہ بات سنی ہے، حالانکہ ائمہ کرام نے ان مذکورہ قسموں کی بابت گونا گوں بحثیں کی ہیں اور طرح طرح کی تفریحات بیان کی ہیں، اور ان کے متعلق ہر پہلو سے بلند تحقیقات اور عجیب تنقیحات کے دریا بہادئے ہیں لیکن اس کے باوجود انہوں نے کبھی کسی جگہ کسی کتاب میں یہ بات نہ فرمائی کہ یہ تمام قسمیں غصہ تک ہیں جب غصہ ختم ہو جائے اور رضامندی ہوجائے تو قسمیں خود بخود ختم ہو جاتی ہیں، اور ان کے تمام غور وخوض پر مبنی احکام محض تکلف بن کر رہ جائیں، مثلاً اگر کسی نے قسم کھائی کہ اگر زید سے بات کروں تو بیوی کو تین طلاقیں ہیں، پھر یہ قسم کھانے والا زید سے بات کرنا چاہتا ہے تو کیا کیا جائے کیونکہ بات کرنے پر بیوی کو تین طلاقیں پڑتی ہیں اور کیا صورت ہو کہ بات کرلے اور تین طلاقیں نہ پڑیں، تو ایسے شخص کو ان فقہاء کرام نے فرمایا کہ یہ شخص اپنی بیوی کو ایک طلاق بائنہ دے دے تو اس کی عدت پوری ہونے کے بعد زید سے بات کرے تو اب اس پر جزا یعنی طلاق وارد ہوگی لیکن اس وقت بیوی بائنہ ہو جانے کی وجہ سے طلاق کا محل نہ رہے گی، کیونکہ ایک دفعہ قسم ٹوٹ چکی ہے اور ختم ہو چکی ہے۔ سراجیہ پھر ہندیہ میں فرمایا کہ جب کسی نے تین طلاقوں کی قسم کھا کر کہا میں فلاں سے بات نہ کروں گا، تو اس کے لئے تین طلاقوں سے بچنے کی سبیل یہ ہے کہ بیوی کو پہلے

(بایاں کالم - فارسی متن): شد و جملہ احکام نظری تا آنکہ اگر کسے سوگند خورد کہ اگر بازید سخن کند زن سہ طلاقہ ست باز می خواھد کہ با او سخن گوید چہ بایدش کرد کہ طلاق مغلظ واقع نشود و افرمودہ اند کہ زن رایک طلاق بائن دہد و بگزارد تا از عدت بر آید باز بازید سخن راند جزا فرود آید ومحل نیابد وبے اثر رود باز بازن نکاح کند و بازید ہم کلام ماند گر طلاق نیفتد کہ یمین بیکبار منحل

شد۔ در سراجیہ باز ہندیہ فرمود اذا حلف بثلث تطلیقات ان لا یکلم فلانا فالسبیل ان یطلقها واحدة بائنة و یدعها حتی تنقضی عدتها ثم یتکلم فلانا ثم یتزوجها [1] اینمہ تکلفات چراست چرا نگفتند کہ چوں آں خشم رفت و با ہم مصالحت شد سوگند خود باطل گشت، وایں ست نبی اللہ سید نا ایوب علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام در ایام بلا زوجہ مقدسہ اش رحمہ بنت افرائیم یا میشا بن یوسف بن یعقوب بن اسحق بن ابراہیم علیہ الصلوۃ والتسلیم بمزدوری و محنت نان پیدا کردے و برائے نبی اللہ آوردے نان بسیار سے آورد نبی اللہ گمان برد مباد امال کسے بخیانت گرفت خشم کرد

حاشیہ: [1] فتاوی ہندیہ کتاب الحیل الفصل السابع فی الطلاق نورانی کتب خانہ پشاور ۲ / ۳۹۷

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 14

(Text on the left column, beginning with Persian/Arabic references): He swore an oath to strike a hundred sticks in anger, and then by divine announcement, the lady's innocence became apparent. However, the oath remained until Hazrat Izzat (The Almighty), Majestic be His Glory, taught the way of salvation, saying: "And take in your hand a bundle [of rushes] and strike with it and do not break your oath." [The Quran 38:44]. By taking a bundle in hand and striking the woman, the oath was not broken. It became clear that with the removal of the carrier and the cessation of the cause, the oath does not become void. It is reported by Ibn al-Mundhir from Sa'id ibn al-Musayyib (may Allah be pleased with him) that word reached him that Ayyub (peace be upon him) swore that he would surely strike his wife a hundred times because she came to him with more bread than she used to bring, which she used to work for, and he feared that she might have committed a betrayal. Then, when Allah had mercy on him and removed the distress from him, he came to know of his wife's innocence from what he had accused her of. Then Allah (Mighty and Majestic is He) said: "And take in your hand a bundle [of rushes] and strike with it and do not break your oath." So he took a bundle of rushes, which was a hundred sticks.

(Main text on the right column): If one gives a clear (ba'in) divorce and her waiting period (iddah) passes, then speaks to that person and afterwards remarries the wife, why did these jurists (fuqaha) prescribe such elaborate measures? Why did they not simply say that this was an oath of anger and displeasure, so when the anger and displeasure ended and reconciliation occurred, the oath would automatically expire? Look at Hazrat Sayyiduna Ayyub (upon him and upon our Prophet be peace and blessings), the beloved Prophet of Allah. During the time of trial and affliction, his pure wife—whose name was Rahma bint Ephraim, or Misha bint Yusuf ibn Yaqub ibn Ishaq ibn Ibrahim (peace be upon them)—used to provide food by working as a laborer for him. One day, she presented more food to Hazrat Ayyub (peace be upon him) than usual. Hazrat Ayyub (peace be upon him) suspected that perhaps she had obtained someone's property through betrayal. At this, he became angry and swore that he would strike her with a hundred sticks. Afterwards, when his wife's innocence was revealed by Allah, his anger subsided, but the oath remained. This is why Allah taught him a way to be released from this oath: to take a bundle of a hundred sticks in his hand and strike once, so as not to break the oath. Thus, from this incident, it is

known that even if the cause and motive for the oath cease to exist, the oath still remains, and it does not end just because the cause ends.

1. The Holy Quran 38/44 Page 526 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 14

(बाईं ओर का पाठ, फारसी/अरबी संदर्भों से शुरू): उन्होंने गुस्से में सौ छड़ियाँ मारने की कसम खाई, और फिर ईश्वरीय घोषणा द्वारा महिला की बेगुनाही ज़ाहिर हो गई। हालाँकि, कसम तब तक बनी रही जब तक कि हज़रत इज़्ज़त (सर्वशक्तिमान) ने, जिसकी शान महान है, मोक्ष का रास्ता नहीं सिखाया: "और अपने हाथ में सींकों का एक गट्ठा लो और उससे मारो और अपनी कसम न तोड़ो।" [कुरान 38:44]। हाथ में एक गट्ठा लेकर महिला को मारने से कसम नहीं टूटी। यह स्पष्ट हो गया कि कारण के समाप्त होने से कसम अमान्य नहीं होती। इब्न अल-मुन्ज़िर ने सईद इब्न अल-मुसय्यिब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि उन्हें यह खबर मिली कि अय्यूब (उन पर शांति हो) ने कसम खाई थी कि वह अपनी पत्नी को सौ बार मारेंगे क्योंकि वह उनके पास सामान्य से अधिक रोटियाँ लेकर आई थीं, जो वह मेहनत करके लाती थीं, और उन्हें डर था कि कहीं उसने कोई खयानत न की हो। फिर, जब अल्लाह ने उन पर दया की और उनकी परेशानी दूर कर दी, तो उन्हें अपनी पत्नी की उन बातों से बेगुनाही का पता चला जिनका उन्होंने उन पर आरोप लगाया था। तब अल्लाह (सर्वशक्तिमान और प्रतापी) ने कहा: "और अपने हाथ में सींकों का एक गट्ठा लो और उससे मारो और अपनी कसम न तोड़ो।" तो उन्होंने सींकों का एक गट्ठा लिया, जिसमें सौ छड़ियाँ थीं।

(दाईं ओर का मुख्य पाठ): यदि कोई एक बाइन तलाक़ (स्पष्ट विच्छेद) दे दे और उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाए, फिर उस व्यक्ति से बात करे और उसके बाद दोबारा पत्नी से निकाह कर ले, तो इन फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने इस प्रकार की सावधानियों का निर्देश क्यों दिया? और यह क्यों नहीं कह दिया कि यह क्रोध और नाराजगी की कसम थी, तो जब क्रोध और नाराजगी समाप्त हो गई और सुलह हो गई, तो कसम अपने आप समाप्त हो गई? देखिये हज़रत सैय्यदुना अय्यूब (उन पर और हमारे नबी पर शांति और आशीर्वाद हो) अल्लाह तआला के प्यारे नबी हैं कि आज़माइश और इब्तिला (परीक्षा) के दौर में आपकी पाक बीवी जिनका नाम रहमा बिन्त अफ़राइम, या मीशा बिन्त यूसुफ़ बिन याकूब बिन इसहाक बिन इब्राहीम (उन पर शांति हो) था, वह आपके लिए मेहनत और मज़दूरी करके भोजन का प्रबंध करती थीं। एक दिन उन्होंने हज़रत अय्यूब (उन पर शांति हो) की सेवा में सामान्य से अधिक भोजन पेश किया। हज़रत अय्यूब (उन पर शांति हो) को संदेह हुआ कि शायद वह किसी का माल खयानत (धोखाधड़ी) के माध्यम से प्राप्त कर लाई हैं। इस पर आपको क्रोध आया तो आपने कसम खाई कि उसे एक सौ छड़ी मारूँगा। इसके बाद अल्लाह तआला की ओर से बीवी की बेगुनाही का पता चला तो आपका गुस्सा खत्म हुआ मगर कसम बाकी थी। इसीलिए अल्लाह तआला ने

आपको इस कसम से मुक्ति की शिक्षा दी कि सौ छड़ियों का एक मुट्ठा हाथ में लेकर एक बार मार दें और कसम न तोड़ें। तो इस घटना से पता चला कि कसम का कारण और प्रेरक समाप्त हो जाने के बावजूद कसम बाकी रहती है और उसके कारण के समाप्त होने से कसम खत्म नहीं होती।

1. अल-कुरान अल-करीम 38/44 पेज 526 / 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ١٤

(بائیں کالم کا متن): سوگند خورد صد چوب زند باوخشم رفت وباعلام الہی برات خاتون ظاہر گشت فاما یمین بر جاماند تا آنکہ حضرت عزّت جلّ جلالہ راہِ خلاص ازاں تعلیم فرمود کہ وَ خُذْ بِیَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهٖ وَ لَا تَحْنَثْؕ(١) دستہ بدست گیرد زن رازن وسوگند مشکن پیداشد کہ بزوال حامل وانتفائے سبب یمین باطل نشود، اخرج ابن المنذر عن سعید بن المسیب رضی اللہ تعالٰی عنہ انہ بلغہ ان ایوب علیہ الصلوۃ والسلام حلف لیضربن امرأتہ مائۃ فی ان جاءتہ فی زیادۃ علی ماکانت تأتی بہ من الخبز الذی کانت تعمل علیہ وخشی ان تکون قارفت من الخیانۃ فلما رحمہ اللہ وکشف عنہ الضر علم براءۃ امرأتہ مما اتہمھا بہ فقال اللہ عزوجل " وَ خُذْ بِیَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِهٖ وَ لَا تَحْنَثْؕ" فاخذ ضغثاً من ثمام و ھو مائۃ عود۔

(دائیں کالم کا متن): ایک بائنہ طلاق دے دے اور اس کی عدت گزر جائے تو پھر اس فلاں سے بات کرے اور اس کے بعد دوبارہ بیوی سے نکاح کرلے، تو ان فقہاء نے اس قسم کے تکلفات کیوں فرمائے اور یہ کیوں نہ فرمادیا کہ یہ غصہ اور ناراضگی کی قسم تھی تو غصہ وناراضگی ختم ہوگئی اور مصالحت ہوگئی تو قسم خود بخود ختم ہوگئی، دیکھئے حضرت سیدنا ایوب علیہ و علی نبینا الصلوۃ والسلام اللہ تعالٰی کے پیارے نبی ہیں کہ آزمائش وابتلاء کے دور میں آپ کی پاکیزہ بیوی جن کا نام رحمہ بنت افرائیم، یا میشا بنت یوسف بن یعقوب بن اسحق بن ابراہیم علیہم الصلوۃ والسلام تھا، وہ آپ کے لئے محنت ومزدوری کرکے خوراک مہیا فرماتی تھیں، ایک دن انہوں نے حضرت ایوب علیہ الصلوۃ والسلام کی خدمت میں زیادہ کھانا پیش کیا تو حضرت ایوب علیہ السلام کو گمان ہوا کہ شاید وہ کسی کا مال خیانت کے ذریعہ حاصل کرلائی ہیں اس پر آپ کو غصہ آیا تو آپ نے قسم کھائی کہ اس کو ایک سو چھڑی ماروں گا، اس کے بعد اللہ تعالٰی کی طرف سے بیوی

کی برات معلوم ہوئی تو آپ کا غصہ ختم ہوا مگر قسم باقی تھی اسی لیے اللہ تعالیٰ نے آپ کو اس قسم سے خلاصی کی تعلیم دی کہ سو چھڑیوں کا مٹھا ہاتھ میں لے کر ایک دفعہ ماردیں اور قسم نہ توڑیں، تو اس واقعہ سے معلوم ہوا کہ قسم کا سبب اور داعی ختم ہوجانے کے باوجود قسم باقی رہتی ہے اور اس کے خاتمہ سے قسم ختم نہیں ہوتی۔

"...then he struck with it as Allah the Almighty commanded him." 1

This occurred (this incident is mentioned as an allusion in the Holy Quran). Ibn Mundhir narrated from Sa'id bin al-Musayyib (may Allah be pleased with him) that Sa'id bin al-Musayyib said: This report reached me that Prophet Ayyub (peace be upon him) swore an oath to strike his wife a hundred times because she used to provide bread through her hard work. One day, she presented extra bread to him, which made him feel concerned that perhaps she had brought this extra food by misappropriating someone else's property. Then, when a special mercy from Allah Almighty relieved the intensity of his suffering and his wife's innocence regarding the suspicion was revealed, Allah Almighty said: Take a bunch in your hand and strike her with it, and do not break your oath. So, he took a bundle of branches, which was a collection of a hundred switches, and struck his wife according to Allah's command.

Aqool: (I say) And this is the best of what we have heard on this subject, and it is to be relied upon. No attention should be paid to the exaggerations people have added, or to hearsay without a solid foundation. Allah is the Guide to the straight path.

Aqool: (I say that) this incident is the best proof in this discussion that has become clear to us, and it should be relied upon. No attention should be given to people's extra talk and baseless hearsay; Allah Almighty alone guides to the straight path. The reason for the issues mentioned in this doubt is not that [which is alleged], rather it is a restriction and an explanation of the matter itself. Because they restricted it to [being] with permission, it is specifically for the period of their guardianship; for them, there is no right of permission or prohibition except during the time of upholding the religion and guarantee. Therefore, if a sultan makes a prisoner swear an oath not to go out without the permission of their king, he remains bound by it during the duration of his sultanate, until if they dismiss him and then reinstate him, and the prisoner goes out without his permission, he will not be a violator of his oath.

1. Dur al-Manthur, on the authority of Ibn Mundhir, under the mentioned verse, Maktaba Ayatollah al-Uzma, Qom, Iran, 5/317.

"...फिर उसने उसी से मारा जैसा कि अल्लाह तआला ने उसे आदेश दिया था।" १

यह घटना हुई (पवित्र कुरान में इस घटना का संकेत दिया गया है)। इब्न मुंधिर ने सईद बिन अल-मुसय्यिब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि सईद बिन अल-मुसय्यिब कहते हैं: मुझे यह रिवायत मिली है कि हज़रत अय्यूब (उन पर शांति हो) ने अपनी पत्नी को सौ छड़ियाँ मारने की कसम खाई थी, क्योंकि पत्नी मेहनत से रोटी मुहैया कराती थी। एक दिन उसने उन्हें अतिरिक्त रोटी दी, जिससे उन्हें डर महसूस हुआ कि शायद वह यह अतिरिक्त भोजन किसी और के माल में खयानत (हेरफेर) करके लाई है। फिर, जब अल्लाह तआला की ओर से विशेष दया के माध्यम से उनके कष्ट की तीव्रता समाप्त हुई और पत्नी के बारे में जो उन्हें संदेह था उसकी बेगुनाही साबित हुई, तो अल्लाह तआला ने फरमाया: तुम अपने हाथ में एक मुट्ठा (गठ्ठा) ले लो और उससे उसे मारो और अपनी कसम मत तोड़ो। तो उन्होंने टहनियों का एक गट्ठर लिया, जो सौ छड़ियों का समूह था, और अल्लाह के आदेश के अनुसार अपनी पत्नी को मारा।

अकूल: (मैं कहता हूँ) और इस विषय में यह सबसे बेहतर बात है जो हमने सुनी है और इसी पर भरोसा किया जाना चाहिए। लोगों द्वारा जोड़ी गई बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातों और बिना किसी ठोस आधार के'कहा-सुना' पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। अल्लाह ही सीधे रास्ते का मार्गदर्शक है।

अकूल: (मैं कहता हूँ कि) यह घटना इस चर्चा में सबसे अच्छा प्रमाण है जो हमारे सामने स्पष्ट हुआ है और इसी पर भरोसा किया जाना चाहिए। लोगों की फालतू बातों और निराधार बातों पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए, और अल्लाह तआला ही सीधे रास्ते का मार्गदर्शन करता है। और इस शंका में बताए गए मुद्दों का कारण वह नहीं है, बल्कि वहाँ यह एक प्रतिबंध और मामले की व्याख्या है। क्योंकि उन्होंने इसे अनुमति के साथ प्रतिबंधित किया है, इसलिए यह उनकी विलायत (संरक्षण) की अवधि के लिए विशिष्ट है; उनके लिए धर्म को कायम रखने और ज़मानत (गारंटी) के समय के अलावा अनुमति या निषेध का कोई अधिकार नहीं है। और इसलिए, यदि कोई सुल्तान किसी कैदी से कसम खिलाए कि वह उनके राजा की अनुमति के बिना बाहर नहीं जाएगा, तो वह उसके सल्तनत के कायम रहने तक उससे बंधा रहेगा, जब तक कि यदि वे उसे पदच्युत कर दें और फिर से बहाल कर

दें, और कैदी उसकी अनुमति के बिना बाहर चला जाए, तो वह अपनी कसम का उल्लंघन करने वाला नहीं होगा।

1. दुर-ए-मंसूर, इब्न मुंधिर के हवाले से, उल्लिखित आयत के तहत, मकतबा आयतुल्लाह अल-उज़मा, कोम, ईरान, ५/३१७।

فضربت به کما امره الله تعالٰی اھـ ۱

ہوتی (قرآن پاک میں اس واقعہ کو اشارۃً بیان فرمایا گیا) ابن منذر نے سعید بن مسیب رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا کہ سعید بن مسیب فرماتے ہیں کہ مجھے یہ روایت پہنچی ہے کہ حضرت ایوب علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنی بیوی کو سو چھڑی مارنے کی قسم کھائی کہ بیوی محنت سے روٹی مہیا کرتی تھیں ایک روز اس نے زائد روٹی آپ کی خدمت میں پیش کی جس پر آپ کو خطرہ محسوس ہوا کہ ہو سکتا ہے کہ یہ زائد خوراک کسی کے مال میں خیانت کر کے لائی ہیں، تو جب اللہ تعالٰی کی طرف سے آپ پر خاص رحمت کے ذریعہ تکلیف کی شدت ختم ہوئی اور بیوی کے بارے میں جو آپ کو شبہ تھا اس کی برات معلوم ہوئی تو اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ آپ ایک مٹھا لے کر اپنے ہاتھ سے اس کو مار دیں اور قسم نہ توڑیں، تو آپ نے شاخوں کا ایک مٹھا جو سو چھڑیوں کا مجموعہ تھا، لے کر اللہ تعالٰی کے حکم کے مطابق بیوی کو مارا اھـ (ت)

اقول: وھذا احسن ما سمعناہ فی الباب وعلیہ التعویل ولا اصغاء الی ما زاد الناس من تھویل وقال وقیل من دون اصل اصیل واللہ الھادی الی سواء السبیل

اقول: (میں کہتا ہوں کہ) یہ واقعہ اس بحث میں بہترین دلیل ہے جو ہم پر واضح ہوئی اور اسی پر اعتماد ہونا چاہئے اور اس پر لوگوں کی زائد باتوں اور بے اصل قیل وقال پر توجہ نہ دی جائے، اور اللہ تعالٰی ہی سیدھے راستے کی رہنمائی فرماتا ہے اور اس شبہ میں ذکر کردہ مسائل کی وجہ نہ آنست بلکہ آنجا تقیید و نفس بیان ست زیرا کہ باذن مقید کردہ اند پس مخصوص باشد بزمانہ ولایت آنہا مرا اذن و منع راوآں نیست مگر زمان قیام دین و کفالت و لہذا اگر کہ سلطان اسیرے راحلف دہند

کہ بے اذن ملک ایشاں برون نرود منقید ماند بزمان بقائے سلطنتش تا آنکہ اگر اور معزول کنند باز نشانند و اسیر بے اذن او پیروں رود حانث نشود

۱ در منشور بحوالہ ابن منذر تحت آیہ مذکورہ مکتبہ آیتہ اللہ العظمیٰ قم ایران ۵/ ۳۱۷

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 113

[Left Column - Persian/Arabic Text] That the oath ends with the loss of ownership and does not return with its restoration. Similarly, if a husband makes his wife swear, or a master his slave, or a king one of his subjects, or swears himself, saying: "You shall not go out without my permission," this oath remains restricted to the duration of the existence of the marriage, the ownership, and the rule. So much so that if he separates from the woman and then brings her back as a wife, or sells the slave and then buys him back, or the ruler is deposed and then reinstated, and in this new marriage, ownership, or rule, the woman, slave, or subject goes out without permission, no violation of the oath (hanth) occurs. This is because the authority of permission was only as long as the marriage, ownership, and rule existed, and he did not make a new oath upon the new occurrence. Therefore, if they were without restriction, they would be repeated. For this reason, if he says to his wife: "If I marry a woman without your permission, she is divorced," then the oath is absolute and unrestricted, so much so that if he divorces his wife and then marries another without her initial permission, she becomes divorced. This is because a woman does not possess the right to grant or deny permission for another marriage, so the reason for restriction is absent. The word 'permission' is taken in its linguistic sense, not its legal sense. And linguistic permission is not limited to the duration of marriage. Yes, the day that woman dies, the oath ends because she no longer has the capacity to give permission. In Durr-e-Mukhtar, after the mentioned text, it says: "If he said to her: 'If you leave this house except with my permission, you are thrice divorced,' then he divorced her irrevocably (baina) and she left..."

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...is with him, so much so that if this ruler is deposed, and now if the prisoner leaves the country without his permission, the prisoner's oath will not be broken because that oath ended with the ruler's deposition. And the oath will not be restored with the reinstatement of the ruler. Similarly, if a husband or a master gives an oath to his slave, or a king to his subject, or he himself swears an oath that they shall not go out without my permission, then this oath will also be restricted with the continuation of marriage, continuation of ownership, and continuation of rule. To the extent that if he removed the wife from the marriage and married her again, or the owner sold the slave and bought him back, or reinstated the deposed one, then if in this second new marriage, ownership, and rule, the wife, slave, or subject goes out without permission, he will not be a violator of the oath (hanth). Because the authority for the permission and leave of

these people was until the current authority at that time, and after gaining new authority again, the oath will not be restored. Therefore, if the wife was given an oath or he himself took an oath to stop the wife from going out, in which the restriction of permission is not mentioned, then if the wife was told that "if I marry another woman without your permission, she will be divorced," this oath will be absolute and without restriction. So much so that even if he removes the first wife from the marriage, even then, upon marrying another woman without her permission, the second one will be divorced. Because the wife cannot become the owner of stopping or giving permission for marriage with another woman. Therefore, despite the mention of permission in this case, it will not be a restriction. It will end on her death.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 113

[बायाँ कॉलम - फारसी/अरबी पाठ] कि स्वामित्व के समाप्त होने के साथ शपथ समाप्त हो जाती है और उसके वापस आने पर वापस नहीं लौटती। इसी तरह, यदि कोई पति अपनी पत्नी से, या कोई स्वामी अपने दास से, या कोई राजा अपनी प्रजा में से किसी से शपथ लेता है, या स्वयं शपथ लेता है कि "तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाओगे," तो यह शपथ विवाह, स्वामित्व और शासन के अस्तित्व की अवधि तक ही सीमित रहती है। यहाँ तक कि यदि वह स्त्री को अलग कर दे और फिर उसे पत्नी के रूप में वापस ले आए, या दास को बेच दे और फिर उसे वापस खरीद ले, या शासक पदच्युत हो जाए और फिर से नियुक्त हो जाए, और इस नए विवाह, स्वामित्व या शासन में वह स्त्री, दास या प्रजा बिना अनुमति के बाहर चले जाएँ तो शपथ का उल्लंघन (हंथ) नहीं होता। ऐसा इसलिए है क्योंकि अनुमति का अधिकार केवल तब तक था जब तक विवाह, स्वामित्व और शासन अस्तित्व में था, और उसने नई घटना पर नई शपथ नहीं ली थी। इसलिए, यदि वे बिना किसी प्रतिबंध के होते, तो उन्हें दोहराया जाता। इसी कारण से, यदि वह अपनी पत्नी से कहता है: "यदि मैं तुम्हारी अनुमति के बिना किसी स्त्री से विवाह करूँ तो उसे तलाक है," तो शपथ पूर्ण और अप्रतिबंधित है, यहाँ तक कि यदि वह अपनी पत्नी को तलाक दे देता है और फिर उसकी प्रारंभिक अनुमति के बिना दूसरी से विवाह कर लेता है, तो उसे तलाक हो जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक स्त्री के पास दूसरे विवाह की अनुमति देने या रोकने का अधिकार नहीं होता है, इसलिए प्रतिबंध का कारण अनुपस्थित है। 'अनुमति' शब्द को उसके भाषाई अर्थ में लिया गया है, न कि उसके कानूनी अर्थ में। और भाषाई अनुमति विवाह की अवधि तक सीमित नहीं है। हाँ, जिस दिन उस स्त्री की मृत्यु हो जाती है, शपथ समाप्त हो जाती है क्योंकि अब उसमें अनुमति देने की क्षमता नहीं रह जाती है। दुर्रे मुख्तार में, उक्त पाठ के बाद, कहा गया है: "यदि उसने उससे कहा: 'यदि तुम मेरी अनुमति के बिना इस घर से बाहर निकली, तो तुम्हें तीन तलाक हैं,' फिर उसने उसे अंतिम रूप से तलाक दे दिया और वह बाहर चली गई..."

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...उसके साथ होती है, यहाँ तक कि यदि इस सुल्तान को पदच्युत कर दें, तो अब यदि कैदी उसकी अनुमति के बिना देश से बाहर चला जाए, तो कैदी की शपथ नहीं टूटेगी क्योंकि वह शपथ सुल्तान के पदच्युत होने पर समाप्त हो गई। और दोबारा सुल्तान के बहाल होने से शपथ बहाल नहीं होगी। इसी तरह यदि पति या स्वामी अपने दास को या बादशाह अपनी प्रजा में से किसी को शपथ दे या वह खुद शपथ खाए कि मेरी अनुमति के बिना बाहर न जाए,

तो यह शपथ भी वैवाहिक स्थिति, स्वामित्व और शासन के बने रहने के साथ सीमित होगी। यहाँ तक कि अगर पत्नी को निकाह से बाहर कर दिया और उसके बाद दोबारा निकाह किया या मालिक ने दास को बेच दिया और दोबारा खरीदा या पदच्युत को दोबारा बहाल कर दिया, तो इस दूसरे नए निकाह, स्वामित्व और शासन में पत्नी, दास, प्रजा बिना अनुमति के बाहर चले जाएँ तो शपथ का उल्लंघन करने वाला नहीं होगा। क्योंकि इन लोगों को अनुमति की जो सत्ता प्राप्त थी, वह उस समय की वर्तमान सत्ता तक थी, और बाद में दोबारा नई सत्ता प्राप्त होने पर शपथ दोबारा बहाल नहीं होगी। इसलिए यदि पत्नी को बाहर जाने से रोकने के लिए पत्नी को शपथ दी या खुद शपथ खाई जिसमें अनुमति के प्रतिबंध का उल्लेख नहीं है, इसलिए अगर पत्नी से कहा कि "मैं तुम्हारी अनुमति के बिना दूसरी औरत से निकाह करूँ तो उसे तलाक होगी," तो यह शपथ पूर्ण और बिना शर्त होगी। यहाँ तक कि अगर पहली पत्नी को निकाह से बाहर भी कर दे, तब भी उसकी अनुमति के बिना दूसरी औरत से निकाह करने पर दूसरी को तलाक हो जाएगी। क्योंकि पत्नी दूसरी औरत से निकाह को रोकने और अनुमति देने की मालिक नहीं बन सकती। इसलिए इस मामले में अनुमति का उल्लेख होने के बावजूद वह प्रतिबंध नहीं होगा। उसकी मृत्यु पर वह समाप्त हो जाएगी।

पृष्ठ 688 का 528

[بایاں کالم - فارسی/عربی عبارت] کہ یمین بزوال ملک منتہی شد و باز بہ عودش نکند، ہمچناں اگر شوہر زن یا مولیٰ غلام یا شہ یکے از رعایا را حلف دہد یا خود سوگند خورد کہ بے اذن من بیں روں نروی متقید ماند بزمان بقائے زوجیت و ملک و ملک تا آنکہ اگر زن را جدا کرد باز بزنی آورد یا غلام را فروخت باز خرید یا معزول باز منصوب شد و دریں ملک و ملک حادث زن و غلام و رعیت بے اذن بیروں روند حنث روئے ننماید کہ ولایت اذن ہمیں تابقائے نکاح و ملک و ملک بود و در حدوث تازہ یمین تازہ نکرد و لہذا اگر بے تقیید بودند کررست و لہذا اگر زن را گوید اگر بے اذن تو زنے را بنکاح می گیرم مطلقہ باشد یمین مطلقہ غیر مقیدہ باشد تا آنکہ اگر زن را از نکاح بروں کرد باز بے اذن اولیٰ بنکاح آورد مطلقہ شود زیرا کہ زن بزنے مالک اذن و منع نمی شود پس دلیل تقیید منتفی شد واذن بر اذن لغوی محمول گشت نہ اذن شرعی واذن لغوی مقتصر بر بقائے زوجیت نیست آرے آں روز کہ آں زن میرد یمین منتہی شود کہ حالا او را صلاحیت اذن نماند، در در مختار بعد عبارت مذکورہ فرمود لو قال لہا ان خرجت من ھذہ الدار الا باذنی فانت طالق ثلثاً فطلقہا بائناً فخرجت۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] کے ساتھ ہوتی ہے حتیٰ کہ اگر اس سلطان کو معزول کردیں تو اب اگر قیدی اس کی اجازت کے بغیر ملک سے باہر چلا جائے تو قیدی کی قسم نہ ٹوٹے گی کیونکہ وہ قسم سلطان کے معزول ہونے پر ختم ہو گئی، اور دوبارہ سلطان کے بحال ہونے سے قسم بحال نہ ہوگی، اسی طرح اگر خاوند کو یا آقا اپنے غلام کو یا بادشاہ اپنی رعیت میں سے کسی کو قسم دے یا وہ خود قسم کھائے کہ میری اجازت کے بغیر باہر نہ جائے، تو یہ قسم بھی بقائے زوجیت، بقائے ملک، بقائے ملک کے ساتھ مقید ہوگی، حتیٰ کہ اگر بیوی کو نکاح سے خارج کر دیا اور اس کے بعد دوبارہ نکاح کیا یا مالک نے غلام کو فروخت کر دیا اور دوبارہ خریدا یا معزول

شدہ کو دوبارہ بحال کر دیا تو اس دوسری نئی زوجیت، ملک، ملک میں، بیوی، غلام، رعیت بغیر اجازت کے باہر چلے جائیں تو حانث نہ ہوگا، کیونکہ ان لوگوں کو اذن و اجازت کی ولایت اس وقت کی موجودہ ولایت تک تھی اور بعد میں دوبارہ نئی ولایت حاصل ہونے پر دوبارہ قسم بحال نہ ہوگی، لہٰذا اگر بیوی کو باہر جانے سے روکنے کے لئے بیوی کو قسم دی یا خود قسم کھائی جس میں اجازت کی قید کا ذکر نہیں ہے، اس لئے اگر بیوی کو کہا کہ میں تیری اجازت کے بغیر دوسری عورت سے نکاح کروں تو اس کو طلاق ہوگی تو یہ قسم مطلق اور بغیر قید ہوگی، حتیٰ کہ اگر پہلی بیوی کو نکاح سے خارج بھی کردے تب بھی اس کی اجازت کے بغیر دوسری عورت سے نکاح کرنے پر دوسری کو طلاق ہو جائیگی کیونکہ بیوی دوسری عورت سے نکاح کو روکنے اور اجازت دینے کی مالک نہیں بن سکتی، اس لئے اس صورت میں اجازت کا ذکر ہونے کے باوجود وہ قید نہ ہوگی۔ وہ موت پر ختم ہو گی۔

Volume 13 Fatawa Razawiyya

[Translation of Arabic Column:] The oath is not broken without his permission because his oath was restricted to the condition of having full authority to prohibit leaving, and the authority to prohibit ceases with an irrevocable divorce (Talaq Ba'in). This is similar to a ruler who makes a person swear that he will not leave the city without his permission; then if the ruler is deposed and the swearer leaves, he does not break his oath. (Along with this is the mentioned issue of the guarantor, then he said:) And if the swearer marries the woman after she has been irrevocably divorced from him, and she goes out without his permission, she is not divorced because the oath became void upon the irrevocable separation and does not return after that. And it is mentioned regarding a prisoner of the people of war (Harbis): if they make a prisoner swear not to leave except with their king's permission, then the king is deposed and then returns to power, and the prisoner leaves without his permission, he does not break his oath. Similarly, if a man says to his slave, "If you go out without my permission, you are free," then he sells him and then buys him back, and the slave goes out without his permission, he is not set free.

[Text of Urdu Column:] And this wife's permission would be in the literal sense; the Shari'i sense of permission would not be intended. Literal permission does not depend on the continuation of the marriage, and even after the marriage ends, the permission of the first wife would be necessary. Yes, on the day she dies, the oath will end because the capacity to give permission no longer remains; so now, with the possibility of the oath being fulfilled having ended, the oath conditional on permission will also end. In Durr al-Mukhtar, after the aforementioned text, it was stated that if a husband told his wife, "If you go out without my permission, you will be given three divorces," and thereafter the husband gave her an irrevocable divorce (Talaq Ba'in), and she went out without the husband's permission, the oath would not be broken because, due to the irrevocable divorce, the husband's authority to grant permission has now ended, whereas this oath was restricted by the authority and power to prevent the wife from going out, and this power lasted only as long as the marriage remained, which ended when the marriage ended _____ just as if a ruler made someone swear that they would not leave the city without his permission, now if that person goes out of the city without his permission after the ruler has been deposed...

Footnote: There is a blank space in the manuscript. Page 529 of 688

[अरबी कॉलम का अनुवाद:] उसकी अनुमति के बिना शपथ नहीं टूटती है क्योंकि उसकी शपथ बाहर जाने से रोकने के पूर्ण अधिकार की स्थिति तक सीमित थी, और रोकने का अधिकार अपरिवर्तनीय तलाक (तलाक-ए-बाइन) के साथ समाप्त हो जाता है। यह एक शासक की तरह है जो किसी व्यक्ति को शपथ दिलाता है कि वह उसकी अनुमति के बिना शहर नहीं छोड़ेगा; यदि शासक को बाद में पदमुक्त कर दिया जाता है और शपथ लेने वाला व्यक्ति बाहर निकल जाता है, तो वह अपनी शपथ नहीं तोड़ता है। (इसके साथ ज़मानतदार का उल्लेखित मुद्दा है, फिर उन्होंने कहा:) और यदि शपथ लेने वाला उस महिला से शादी करता है जिससे वह अपरिवर्तनीय रूप से तलाक ले चुका है, और वह उसकी अनुमति के बिना बाहर जाती है, तो उसे तलाक नहीं होगा क्योंकि अपरिवर्तनीय अलगाव पर शपथ शून्य हो गई थी और उसके बाद वह वापस नहीं आती है। और युद्ध के लोगों (हर्बियों) के कैदी के बारे में उल्लेख किया गया है: यदि वे कैदी को उनके राजा की अनुमति के बिना न छोड़ने की शपथ दिलाते हैं, फिर राजा को पदच्युत कर दिया जाता है और फिर वह सत्ता में वापस आ जाता है, और कैदी उसकी अनुमति के बिना बाहर चला जाता है, तो वह अपनी शपथ नहीं तोड़ता है। इसी तरह, यदि कोई व्यक्ति अपने गुलाम से कहता है, "यदि तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर जाते हो, तो तुम स्वतंत्र हो," फिर वह उसे बेच देता है और फिर उसे वापस खरीद लेता है, और गुलाम उसकी अनुमति के बिना बाहर जाता है, तो वह स्वतंत्र नहीं होता है।

[उर्दू कॉलम का पाठ:] और यह पत्नी की अनुमति शाब्दिक अर्थ में होगी; शरीयत के अर्थ में अनुमति का अर्थ नहीं होगा। शाब्दिक अनुमति विवाह के बने रहने पर निर्भर नहीं करती है, और विवाह समाप्त होने के बाद भी पहली पत्नी की अनुमति आवश्यक होगी। हाँ, जिस दिन उसकी मृत्यु हो जाएगी, शपथ समाप्त हो जाएगी क्योंकि अब अनुमति देने की क्षमता नहीं रहेगी; इसलिए अब, शपथ पूरी होने की संभावना समाप्त होने के साथ, अनुमति पर आधारित सशर्त शपथ भी समाप्त हो जाएगी। 'दुर्रे मुख्तार' में उपरोक्त पाठ के बाद कहा गया है कि यदि पति ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर निकलीं, तो तुम्हें तीन तलाक होंगे," और बाद में पति ने उसे अपरिवर्तनीय तलाक (तलाक-ए-बाइन) दे दिया, और वह पति की अनुमति के बिना बाहर चली गई, तो शपथ नहीं टूटेगी क्योंकि अपरिवर्तनीय तलाक के कारण अब पति का अनुमति देने का अधिकार समाप्त हो गया है, जबकि यह शपथ पत्नी को बाहर जाने से रोकने के अधिकार और शक्ति द्वारा प्रतिबंधित थी, और यह शक्ति केवल विवाह के बने रहने तक थी, जो विवाह समाप्त होने पर समाप्त

हो गई _____ जैसे कि यदि किसी शासक ने किसी को शपथ दिलाई कि वह उसकी अनुमति के बिना शहर से बाहर नहीं जाएगा, अब यदि वह व्यक्ति शासक के पदच्युत होने के बाद उसकी अनुमति के बिना शहर से बाहर जाता है...

पाद टिप्पणी: पांडुलिपि में खाली स्थान है। पृष्ठ ५२९ का ६८८

جلد سیز دہم فتاوی رضویہ

[عربی کالم کا ترجمہ:] بغیر اس کی اجازت کے (قسم) نہیں ٹوٹتی کیونکہ اس کی قسم خروج سے منع کی ولایت تامہ کی حالت سے مقید تھی اور منع کرنے کی ولایت طلاق بائن سے زائل ہو جاتی ہے اور اس کی مثال اس بادشاہ کی سی ہے جس نے کسی شخص سے یہ حلف لیا ہو کہ وہ اس کی اجازت کے بغیر شہر سے باہر نہیں جائے گا، پھر بادشاہ معزول ہو گیا اور حلف اٹھانے والا باہر نکل گیا تو اس کی قسم نہیں ٹوٹے گی۔ (اور اس کے ساتھ عہ مسئلہ کفیل مذکور ہے، پھر فرمایا) اور اگر حلف اٹھانے والے نے اس عورت سے نکاح کر لیا جس سے وہ بائن ہو چکی تھی، پھر وہ اس کی اجازت کے بغیر باہر نکلی تو طلاق واقع نہ ہوگی کیونکہ قسم ابانہ (جدائی) سے باطل ہو گئی تھی، لہذا وہ اس کے بعد واپس نہیں آئے گی۔ اور اہل حرب کے قیدی کے بارے میں ذکر کیا گیا کہ جب انہوں نے کسی قیدی سے قسم لی کہ وہ ان کے بادشاہ کی اجازت کے بغیر نہیں نکلے گا، پھر بادشاہ معزول ہو گیا پھر دوبارہ بادشاہ بن گیا اور قیدی اس کی اجازت کے بغیر نکلا تو قسم نہیں ٹوٹے گی۔ اسی طرح اگر کسی شخص نے اپنے غلام سے کہا کہ اگر تو میری اجازت کے بغیر نکلا تو تو آزاد ہے، پھر اس نے اسے فروخت کر دیا پھر دوبارہ خرید لیا، اب وہ اس کی اجازت کے بغیر نکلا تو آزاد نہیں ہوگا۔

[اردو کالم کا متن:] اور یہ بیوی کی اجازت لغوی معنی میں ہوگی شرعی معنی میں اجازت مراد نہ ہوگی، اور لغوی اجازت بقائے نکاح پر موقوف نہ ہوگی اور نکاح ختم ہونے کے بعد بھی پہلی بیوی کی اجازت ضروری ہوگی، ہاں جس روز وہ فوت ہوجائے گی تو قسم ختم ہوجائے گی کیونکہ اب اجازت دینے کی صلاحیت نہ رہی تو اب قسم پوری ہونے کا احتمال ختم ہو جانے پر اجازت سے مشروط قسم بھی ختم ہو جائیگی۔ در مختار میں مذکورہ عبارت کے بعد فرمایا کہ اگر خاوند نے

بیوی کو کہا کہ اگر تو میری اجازت کے بغیر باہر نکلی تو تجھے تین طلاق ہوں گی، اس کے بعد خاوند نے اس کو طلاق بائنہ دے دی اور وہ خاوند کی اجازت کے بغیر باہر نکل گئی تو قسم نہ ٹوٹے گی کیونکہ بائنہ طلاق کی وجہ سے اب خاوند کو اجازت کا اختیار ختم ہو گیا جبکہ یہ قسم بیوی کو باہر نکلنے سے منع کرنے کی ولایت اور اختیار سے مقید تھی اور یہ اختیار نکاح کے باقی رہنے تک تھا جو نکاح ختم ہو جانے پر ختم ہو گیا _____ جیسا کہ کسی حکمران نے کسی کو قسم دی کہ تو میری اجازت کے بغیر شہر سے باہر نہ جائے گا، اب اگر وہ شخص حکمران کے معزول ہو جانے پر شہر سے باہر اس کی اجازت...

عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔ صفحہ ۵۲۹ از ۶۸۸

Fatawa Ridawiyya Volume 13 13

In 'Tabyin al-Haqa'iq' and 'Fath al-Qadir', it is stated: And this wording of 'Al-Fath' is restricted to the state of the existence of the debt and the suretyship, because permission is only valid from someone who has the authority to prevent. Similarly, the wife's leaving only with his permission is restricted by the existence of the marital bond. This is unlike if he swore that his wife would not leave the house; in that case, it is not restricted by it (the permission), since permission was not mentioned, there is no reason to restrict it to the period of authority in permission. The same applies to his oath concerning a slave, whether absolute or restricted. Based on this, if he said to his wife, "Every woman I marry without your permission is divorced," then he divorced his wife with an irrevocable (bain) divorce once or thrice, and then married again without her permission, she would be divorced. This is because it (the oath) was not restricted to the continuation of the first marriage, for it would only be restricted by it if the woman gained the authority of permission and prevention through the marriage contract. In 'Hidaya' and 'Fath', it is stated: If he said, "If I speak to so-and-so unless so-and-so arrives or so-and-so permits," and so-and-so dies, the oath lapses because the forbidden act is speaking, the prohibition of which ends with permission and arrival.

If she goes out without [permission], the oath will not be broken. (Along with this, they also mentioned the issue of the aforementioned suretyship and then stated): If the aforementioned husband who took the oath remarries the aforementioned irrevocably divorced (baina) wife, and now if the wife goes out without his permission, the divorce will not occur. This is because that oath became null upon the wife becoming irrevocably divorced and will not be restored by the remarriage. In 'Durr al-Mukhtar', concerning a prisoner of war, it is mentioned that while imprisoning him, they made him swear that he would not go out without the ruler's permission. If after that ruler is deposed and then reinstated, the prisoner goes out without that ruler's permission, he will not be in breach of the oath, i.e., the oath will not be broken. Similarly, if a master said to his slave, "If you go out without my permission, you are free," and the master then sold this slave and later bought him back, if the slave then goes out without the master's permission, he will not be free. It is stated in 'Tabyin al-Haqa'iq' and 'Fath al-Qadir'—this text is from 'Fath al-Qadir'—that the oath will be restricted to the continuation of the debt and suretyship because permission can only be conceived when the authority to prevent is present, and this authority lasts until the debt and suretyship exist. Similarly, if a husband said

to his wife, "You shall not leave without my permission," this oath will be restricted to the existence of this marriage. In contrast, if the husband says, "My wife shall not go out of the house,"

[1] Fath al-Qadir, Kitab al-Aiman, Miscellaneous Issues, Nooria Ridawiyya Sukkur 4/468.

'तबईन अल-हक़ाएक़' और 'फ़तह अल-क़दीर' में है और फ़तह के ये शब्द हैं कि यह ऋण और ज़मानत (कफ़ालत) की मौजूदगी की स्थिति तक सीमित है क्योंकि अनुमति केवल उसी की ओर से मान्य होती है जिसके पास रोकने का अधिकार हो। इसी तरह उसकी पत्नी का उसकी अनुमति के बिना बाहर न निकलना वैवाहिक बंधन की मौजूदगी तक सीमित है। इसके विपरीत यदि उसने शपथ ली कि उसकी पत्नी घर से बाहर नहीं निकलेगी, तो यह अनुमति से सीमित नहीं होगा, क्योंकि अनुमति का उल्लेख नहीं किया गया था, इसलिए अनुमति में अधिकार के समय तक इसे सीमित करने का कोई कारण नहीं है। यही स्थिति दास के बारे में उसकी शपथ की है, चाहे वह निरपेक्ष हो या प्रतिबंधित। इसी आधार पर, यदि उसने अपनी पत्नी से कहा, "हर वह स्त्री जिससे मैं तुम्हारी अनुमति के बिना विवाह करूँ उसे तलाक़ है," फिर उसने अपनी पत्नी को एक या तीन बार 'बाइन' (अटल) तलाक़ दे दी और फिर उसकी अनुमति के बिना दोबारा विवाह किया, तो उसे तलाक़ हो जाएगी। क्योंकि यह पहले विवाह के बने रहने तक सीमित नहीं था, क्योंकि यह केवल तब सीमित होता यदि स्त्री को विवाह अनुबंध के माध्यम से अनुमति और निषेध का अधिकार प्राप्त होता। 'हिदाया' और 'फ़तह' में वे फ़रमाते हैं: यदि उसने कहा, "अगर मैं फलां से बात करूँ जब तक कि फलां न आ जाए या फलां अनुमति न दे," और फलां की मृत्यु हो जाए, तो शपथ समाप्त हो जाती है क्योंकि जिससे मना किया गया था वह बातचीत थी जिसका निषेध अनुमति और आगमन के साथ समाप्त हो जाता है।

बिना [अनुमती] के निकल जाए तो शपथ नहीं टूटेगी। (इसके साथ उन्होंने उक्त ज़मानत का मसला भी बयान किया और फिर फ़रमाया): यदि उक्त शपथ लेने वाले पति ने उक्त 'बाइन' (अटल तलाक़शुदा) पत्नी से दोबारा निकाह किया तो अब यदि पत्नी उसकी अनुमति के बिना बाहर जाए तो अब तलाक़ नहीं होगी क्योंकि वह शपथ पत्नी के बाइन हो जाने पर शून्य हो गई थी और दोबारा निकाह से वह शपथ बहाल नहीं होगी। 'दुर्रे मुख्तार' में युद्ध के कैदी के संबंध में उल्लेख है कि उसे कैद करते समय उन्होंने यह शपथ दिलाई कि तू हाकिम (शासक) की अनुमति के बिना बाहर नहीं जाएगा। तो उस हाकिम के पदमुक्त होने के बाद दोबारा बहाल होने पर वह कैदी उस हाकिम की अनुमति के बिना बाहर निकला तो वह शपथ भंग करने वाला नहीं होगा यानी शपथ नहीं टूटेगी। और इसी तरह अगर मालिक ने अपने गुलाम से कहा कि अगर तू मेरी अनुमति के बिना बाहर निकले तो तू आज़ाद है, अब मालिक ने उस गुलाम को बेच दिया और फिर दोबारा खरीदा तो अब गुलाम

मालिक की अनुमति के बिना बाहर निकला तो आज़ाद नहीं होगा। 'तबईन अल-हक़ाएक़' और 'फ़तह अल-क़दीर' में है, यह इबारत 'फ़तह अल-क़दीर' की है कि शपथ ऋण और ज़मानत के बने रहने तक सीमित होगी क्योंकि अनुमति तभी समझी जा सकती है जब उसे रोकने का अधिकार प्राप्त हो और यह अधिकार ऋण और ज़मानत तक होता है। और इसी तरह पति ने पत्नी से कहा कि तू मेरी अनुमति के बिना नहीं निकलेगी तो यह शपथ इस वैवाहिक स्थिति (ज़ौजियत) के अस्तित्व तक सीमित होगी। इसके विपरीत अगर पति यूँ कहे कि मेरी पत्नी घर से बाहर नहीं निकलेगी,

[1] फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-ईमान, मुतफ़र्रिका मसाइल, नूरिया रज़विया सुक्कुर ४/४६८। पृष्ठ ६८८ में से ५३०

در تبیین الحقائق و فتح القدیر ست و ھذا لفظ الفتح یتقید بحال قیام الدین والکفالۃ لان الاذن انما یصح ممن لہ ولایۃ المنع و کذا الاتخرج امرأتہ الا باذنہ بقیام الزوجیۃ بخلاف مالو حلف لا تخرج امرأتہ من الدار فانہ لایتقید بہ، اذلم یذکر الاذن فلا موجب لتقییدہ بزمان الولایۃ في الاذن و کذا الحال في حلفہ علی العبد مطلقاً ومقیداً وعلی ھذا لو قال لامرأتہ کل امرأۃ اتزوجھا بغیر اذنک طالق فطلق امرأتہ طلاقاً بائنا او ثلثاً ثم تزوج بغیر اذنھا طلقت لانہ لم تتقید ببقاء النکاح لانھا انما تقید بہ لو کانت المرأۃ تستفید ولایۃ الاذن والمنع بعقد النکاح، در ہدایہ وفتح فرمائیند لو قال ان کلمت فلانا الا ان یقدم فلان او یأذن فلان ومات فلان سقط الیمین لان الممنوع منہ کلام ینتھی المنع منہ بالاذن والقدوم

کے بغیر نکل جائے تو قسم نہ ٹوٹے گی (اس کے ساتھ انہوں نے کفالت مذکورہ کا مسئلہ بھی بیان کیا اور پھر فرمایا) اگر مذکورہ قسم اٹھانے والے خاوند نے مذکورہ بائنہ بیوی سے دوبارہ نکاح کیا تو اب اگر بیوی اس کی اجازت کے بغیر باہر جائے تو اب طلاق نہ ہوگی کیونکہ وہ حلف بیوی بائنہ ہو جانے پر باطل ہو گیا اور دوبارہ نکاح سے وہ حلف بحال نہ ہوگا، در مختار نے اہل حرب کے قیدی کے متعلق ذکر کیا کہ اس کو قید کرتے ہوئے انہوں نے یہ قسم دی کہ تو حاکم کی اجازت کے بغیر باہر نہ جائے گا تو اس حاکم کے معزول ہونے کے بعد دوبارہ بحال ہونے پر وہ قیدی اس حاکم کی اجازت کے بغیر باہر نکلا تو حانث نہ ہوگا یعنی قسم نہ ٹوٹے گی، اور یونہی اگر مالک نے اپنے غلام کو کہا کہ اگر تو میری اجازت کے بغیر باہر نکلے تو تو آزاد ہے، اب مالک نے اس غلام کو فروخت کر دیا اور پھر دوبارہ خریدا تو اب غلام مالک کی اجازت کے بغیر باہر نکلا تو آزاد نہ ہوگا۔ تبیین الحقائق اور فتح القدیر میں ہے، یہ عبارت فتح القدیر کی ہے کہ قسم قرض اور کفالت کی بقاء سے مقید ہوگی کیونکہ اجازت تب متصور ہو سکتی جبکہ اس کو روکنے کی ولایت

حاصل ہو اور یہ ولایت قرض اور کفالت تک ہوتی ہے اور یونہی خاوند نے بیوی سے کہا کہ تو میری اجازت کے بغیر نہ نکلے گی تو یہ قسم اس زوجیت کے وجود سے مقید ہوگی، اس کے برخلاف اگر خاوند یوں کہے کہ میری بیوی گھر سے باہر نہ نکلے گی،

[1] فتح القدیر کتاب الایمان مسائل متفرقہ نوریہ رضویہ سکھر ۴ / ۴۶۸ صفحہ 530 از 688

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

(Right Column): So in this oath, because permission is not mentioned, this oath will not be restricted by the survival of the marriage bond, because the necessity of marriage was for the authority of permission. Similarly, the situation of restricted and unrestricted oaths regarding a slave is the same. Based on this rule, if someone said to his wife, 'Whichever woman I marry without your permission, she is divorced,' then he gave her a final (ba'in) or triple (mughallaza) divorce, then he married another woman without the first divorced wife's permission, then that woman will be divorced. This oath will not depend on the survival of the marriage bond because the authority to prevent or permit marriage does not exist. Therefore, for the permission mentioned in the oath, the authority of permission was not necessary. Hence, with the end of the marriage, the condition of permission ended. In Hidaya and Fath al-Qadir, it is stated: if someone said 'if I talk to so-and-so without his permission or arrival, then such and such happens,' then if that person dies, the oath will end because the prohibition of speaking to him was dependent on his permission or arrival, whereas with his death, the conception of permission and arrival ended. Because when an oath is conditional upon something, the possibility of that condition's existence is necessary for the survival of that oath according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad (may Allah have mercy on them). Since this oath is conditional upon so-and-so's permission or arrival, the oath can only be fulfilled by the existence of this condition. So when the possibility of breaking the oath by speaking without the condition's existence ends, the possibility of fulfilling the oath also ends. Therefore, this oath will become void. (Summary). In Fath al-Qadir, it is further stated: if someone objects that the ending of the possibility of the condition's existence due to so-and-so's death is unacceptable because Allah the Exalted is capable of bringing him back to life and he [is زندہ... (continued on next page)].

(Left Column - Arabic Text): And permission and arrival do not remain conceivable after death, and the survival of its conception is a condition for the survival of the timed (oath) according to Abu Hanifa and Muhammad. This oath is timed by the time of permission and arrival, because through them one is able to fulfill the oath by being able to speak without breaking it. Thus, it falls with the fall of the conception of fulfillment (of the oath). [Summary, mixed]. He said in al-Fath: If it is said, we do not accept the impossibility of conceiving fulfillment upon his death because Allah, the Exalted, is capable of restoring 'so-and-so', so it is possible that he arrives and gives permission. The answer is that the restored life is not the life upon whose permission

and arrival the oath was made, which is the life existing at the time of the oath. Because that (life) is an accident that has vanished and cannot be restored identically. Even if the spirit is restored, life is other than the spirit because it is a necessary command for the spirit in what has a spirit. End.

(Footnotes): 1. Fath al-Qadir, Kitab al-Iman, Bab al-Yamin fi al-Kalam, Nooriya Rizvia, Sukkur, 4/222-224. 2. Fath al-Qadir, Kitab al-Iman, Bab al-Yamin fi al-Kalam, Nooriya Rizvia, Sukkur, 4/224.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

(दायाँ कॉलम): तो इस शपथ में अनुमति का उल्लेख न होने के कारण यह शपथ वैवाहिक संबंध के बने रहने से सीमित नहीं होगी क्योंकि वैवाहिक संबंध की आवश्यकता अनुमति के अधिकार के लिए थी। और इसी तरह एक दास के संबंध में सीमित और असीमित शपथ की स्थिति है। इसी नियम के आधार पर, यदि किसी ने अपनी पत्नी से कहा कि 'मैं जिस महिला से तुम्हारी अनुमति के बिना विवाह करूँवह तलाकशुदा होगी', फिर उसने उसे बाइन (अंतिम) या मुग़ल्लज़ा (तिहरा) तलाक़ दे दिया, फिर किसी दूसरी महिला से पहली तलाक़शुदा पत्नी की अनुमति के बिना विवाह किया, तो उस महिला को तलाक़ हो जाएगी। और यह शपथ वैवाहिक संबंध के बने रहने पर निर्भर नहीं होगी क्योंकि विवाह से रोकने या अनुमति देने का अधिकार पत्नी के पास नहीं होता। इसलिए शपथ में उल्लिखित अनुमति के लिए अनुमति का अधिकार आवश्यक नहीं था। अतः निकाह समाप्त होने से अनुमति की शर्त समाप्त हो गई। हिदाया और फत्ह अल-क़दीर में फ़रमाते हैं: यदि किसी ने कहा 'अगर मैं अमुक से उसकी अनुमति या उसके आने के बिना बात करूँतो ऐसा हो जाए', उसके बाद वह अमुक व्यक्ति मर जाए, तो शपथ समाप्त हो जाएगी क्योंकि उससे बातचीत की मनाही उसकी अनुमति या आने पर टिकी थी, जबकि उसकी मृत्यु से अनुमति और आने की कल्पना समाप्त हो गई। क्योंकि जब शपथ किसी चीज़ पर सशर्त हो, तो उस शर्त का संभावित होना इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार उस शपथ के बने रहने के लिए ज़रूरी है। चूंकि यह शपथ अमुक की अनुमति या आने पर आधारित है, तो इस शर्त के अस्तित्व से ही शपथ पूरी हो सकेगी। अतः जब शर्त के अस्तित्व के बिना बात करने पर शपथ टूटने की संभावना समाप्त हो गई, तो शपथ के पूरा होने की संभावना भी समाप्त हो गई। इसलिए यह शपथ शून्य (बातिल) हो जाएगी। (सारांश)। फत्ह अल-क़दीर में आगे फ़रमाया गया कि यदि कोई यह आपत्ति करे कि अमुक की मृत्यु से शर्त के अस्तित्व की संभावना समाप्त होना स्वीकार्य नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला सक्षम है कि उसे दोबारा जीवित कर दे और वह जीवित [जारी है...]

(बायाँ कॉलम - अरबी पाठ): और मृत्यु के बाद अनुमति और आगमन की कल्पना शेष नहीं रहती, और इसकी कल्पना का बने रहना इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के अनुसार समय-बद्ध (शपथ) के बने रहने की शर्त है। यह शपथ अनुमति और आगमन के समय के साथ बद्ध है क्योंकि इन्हीं के द्वारा शपथ पूरी करना संभव है बिना उल्लंघन के बात करने में सक्षम होकर। इसलिए, शपथ पूर्ति की कल्पना समाप्त होने के साथ ही शपथ भी समाप्त हो जाती है। [सारांश, मिश्रित]। अल-फत्ह

में कहा गया है: यदि यह कहा जाए कि हम उनकी मृत्यु पर शपथ पूर्ति की कल्पना की समाप्ति को स्वीकार नहीं करते क्योंकि अल्लाह तआला 'अमुक व्यक्ति' को पुनर्जीवित करने में सक्षम है, तो यह संभव है कि वह आए और अनुमति दे। उत्तर यह है कि पुनर्जीवित जीवन वह जीवन नहीं है जिसकी अनुमति और आगमन पर शपथ ली गई थी, जो शपथ के समय मौजूद जीवन है। क्योंकि वह जीवन एक समाप्त हो जाने वाली घटना है जिसे ठीक उसी रूप में वापस नहीं लाया जा सकता। भले ही आत्मा वापस आ जाए, जीवन आत्मा से अलग है क्योंकि यह आत्मा के लिए एक आवश्यक गुण है जिसमें आत्मा होती है। समाप्त।

(फुटनोट्स): 1. फत्ह अल-क़दीर, किताब अल-ईमान, बाब अल-यमीन फी अल-कलाम, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 4/222-224। 2. फत्ह अल-क़दीर, किताब अल-ईमान, बाब अल-यमीन फी अल-कलाम, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 4/224।

(دایاں کالم): تو اس قسم میں اجازت کا ذکر نہ ہونے کی وجہ سے یہ قسم زوجیت کی بقاء سے مقید نہ ہوگی کیونکہ زوجیت کی ضرورت اجازت کی ولایت کے لئے تھی، اور یوں ہی غلام کے بارے میں اجازت سے مقید قسم اور غیر مقید قسم کا حال ہے، اسی قاعدہ کی بناء پر ، اگر کسی نے اپنی بیوی کو کہا کہ میں جس عورت سے تیری اجازت کے بغیر نکاح کروں تو اس عورت کو طلاق ہوگی، اس کے بعد اس نے اپنی بیوی کو بائنہ یا مغلظہ طلاق دے دی پھر کسی عورت سے پہلی مطلقہ بیوی کی اجازت کے بغیر نکاح کیا تو اس عورت کو طلاق ہو جائے گی اور یہ قسم بقائے زوجیت پر موقوف نہ ہوگی کیونکہ بیوی کو نکاح سے روکنے یا اجازت دینے کی ولایت نہیں ہوتی لہذا قسم میں مذکور اجازت کے لئے ولایت اجازت ضروری نہ تھی۔ لہذا نکاح ختم ہونے سے اجازت کی شرط ختم ہوگئی ، ہدایہ اور فتح القدیر میں فرماتے ہیں، اگر کسی نے کہا اگر فلاں سے اس کی اجازت یا اس کی آمد کے بغیر بات کروں تو یہ ہو جائے ، اس کے بعد وہ فلاں فوت ہوجائے تو قسم ختم ہوجائے گی کیونکہ اس سے کلام کی ممانعت کا اختتام اس کی اجازت یا آمد پر موقوف تھا جبکہ اس کی موت سے اجازت اور آمد کا تصور ختم ہوگیا، کیونکہ جب قسم کسی چیز سے مشروط ہو تو اس شرط کا متصور ہونا اس قسم کی بقاء کے لئے امام ابو حنیفہ اور امام محمد رحمھما اللہ تعالیٰ کے نزدیک ضروری ہے چونکہ یہ قسم اس فلاں کی اجازت یا آمد سے مشروط ہے تو اس شرط کے وجود سے قسم پوری ہو سکے گی تو جب شرط کے وجود کے بغیر کلام کرنے پر حانث ہونے کا احتمال ختم ہو گیا تو قسم پورا ہونے کا احتمال بھی ختم ہو گیا لہذا یہ قسم باطل ہو جائے گی اھ ملخصاً، فتح القدیر میں مزید فرمایا کہ اگر کوئی یہ اعتراض کرے کہ اس فلاں

کی موت سے شرط کے وجود کا احتمال ختم ہو جانا نا قابلِ تسلیم نہیں ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ قادر ہے کہ اس کو دوبارہ زندہ کر دے اور وہ زندہ [جاری ہے...]

(بایاں کالم - عربی عبارت): ولم یبق الاذن والقدوم بعد الموت متصور الوجود وبقاء تصوّره شرط بقاء الموقتة عند ابی حنیفہ ومحمد وهذه الیمین موقتة بوقت الاذن والقدوم اذبهما یتمکن من البر اذیتمکن من الکلام بلاحنث فیسقط بسقوط تصور البر ملخصاً مخلوطاً قال فی الفتح فان قیل لانسلم عدم تصور البر بموته لانه سبحانه وتعالی قادر علی اعادة فلان فیمکن ان یقدم ویأذن فالجواب ان الحیاة المعادة غیر الحیاة المحلوف علی اذنه فیها وقدومه وهی الحیاة القائمة حالة الحلف لان تلك عرض تلاشی لا یمکن اعادتها بعینها وان اعیدت الروح فان الحیاة غیر الروح لانه امر لازم للروح فیما له روح اهـ

(حواشی): 1 فتح القدیر کتاب الایمان باب الیمین فی الکلام نوریہ رضویہ سکھر ۴ / ۲۲۲-۲۲۴ 2 فتح القدیر کتاب الایمان باب الیمین فی الکلام نوریہ رضویہ سکھر ۴ / ۲۲۴

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Top Right Column - Urdu Translation of previous Arabic text]: ...gives permission or arrives, then the answer to this objection is that the life after being resurrected is distinct from the life concerning which the oath for permission or arrival was taken. And the life pertinent to the oath is the one that existed at the time of swearing, because life is an accident ('aradh) that cannot be brought back exactly as it was, even if the soul returns; for soul and life are distinct from each other since life is a necessary property of a soul-possessor's essence, not the soul itself. End (T).

[Arabic Text]: ورأيتني كتبت عليه مانصه اقول فيه ان الحياة عرض لاتبقى زمانين فالحياة التى بعد الحلف غير التى كانت عند الحلف والجواب ان مبنى الايمان على العرف واهل العرف يعدونها واحدة مستمرة والمعادة غيرها۔ (Translation: And I saw that I wrote upon it, its text being: I say therein that life is an accident that does not persist for two moments. Therefore, the life after the oath is different from the life that was at the time of the oath. The answer is that the basis of oaths is upon common usage ('urf), and the people of usage consider it as one continuous life, while the restored life is considered different from it.)

[Urdu Translation of above Arabic]: And I remember that I wrote this footnote on it, the wording of which is: I say (I state): There is a discussion in this discourse that when life is an accident, it cannot remain for two time periods. So, it would follow that the life after the oath is also different from the life at the time of the oath. Its answer is that the basis of oaths is on common usage. Thus, people of usage consider life at different times as a single ongoing life, but they consider life after death to be distinct from the first life.

[Arabic Text]: اقول: لكن لقائل ان يقول لانظر في الحلف الى تلك الحياة خصوصاً بل الى تسليم زمانه فى هذا الامر الاباذنه مثلا والشخص لايتبدل بتبدل الحياة بدليل الحشر والعقد في تلك الحيوة غير العقد على تلك الحياة والاذن وان لم يكن الامن حى فلا يستلزم ذلك عقد الحلف على تلك الحياة بعينها الا ترى ان الاذن لا يمكن ايضاً الامن عاقل ولو جُنّ فلان لا يسقط (Translation: I say: But someone might say that the oath does not look at that specific life, but rather at the surrender of one's time in this matter, for example, except with his permission. A person does not change with the change of life, as evidenced by the Resurrection. And a contract in that life is not a contract upon that specific life. Although permission can only come from a living being, this does not necessitate the oath's contract being upon that specific life itself. Do you not see that permission is also

only possible from a rational person, yet if so-and-so goes insane, the obligation does not fall?)

[Urdu Translation of above Arabic]: I say (I state): But an objection can be raised here that in an oath, that specific life is not kept in view; rather, the point in view is that if the time provides an opportunity to the oath-taker that, for instance, he can talk to so-and-so, he will not do so without his permission. Whereas, a person does not change by a change in life because after death, the same person will be present in the Resurrection. So, the meaning of taking an oath in this life is not that the oath depends on this very life. Although permission relates to a living being, it does not necessarily follow from this that the oath relates specifically to this life. See, permission can only be conceived from a rational being.

Page 532 of 688

फ़तावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[शीर्ष दायाँ कॉलम - पिछले अरबी पाठ का उर्दू अनुवाद]: ...अनुमति दे या आ जाए, तो इस आपत्ति का उत्तर यह है कि पुनर्जीवित होने का जीवन उस जीवन से भिन्न है जिसके बारे में अनुमति या आगमन की शपथ ली गई थी। और शपथ वाला जीवन वह है जो शपथ के समय था, क्योंकि जीवन एक ऐसी घटना ('आर्ज़') है जिसे ठीक उसी रूप में वापस लाना संभव नहीं है, भले ही आत्मा वापस आ जाए; क्योंकि आत्मा और जीवन एक-दूसरे से भिन्न हैं क्योंकि जीवन आत्मा वाले व्यक्ति का एक आवश्यक गुण है, न कि स्वयं आत्मा। समाप्त (त)।

[अरबी पाठ]: ورأيتني كتبت عليه مانصه اقول فيه ان الحياة عرض لاتبقى زمانين فالحياة التى بعد الحلف غير التى كانت عند الحلف والجواب ان مبنى الايمان على العرف واهل العرف يعدونها واحدة مستمرة والمعادة غيرها۔ (अनुवाद: और मैंने देखा कि मैंने उस पर लिखा जिसका पाठ है: मैं इसमें कहता हूँ कि जीवन एक क्षणिक गुण है जो दो समयों तक शेष नहीं रहता। इसलिए शपथ के बाद का जीवन उस जीवन से भिन्न है जो शपथ के समय था। उत्तर यह है कि शपथ का आधार लोक-व्यवहार (उर्फ़) पर है, और लोक-व्यवहार के लोग इसे एक निरंतर जीवन मानते हैं, जबकि पुनर्जीवित जीवन को उससे भिन्न मानते हैं।)

[उर्दू अनुवाद]: और मुझे याद है कि मैंने इस पर यह हाशिय्या (फुटनोट) लिखा जिसकी इबारत इस प्रकार है: अकुल (मैं कहता हूँ): इस कथन में यह चर्चा है कि जब जीवन एक 'आर्ज़' (क्षणिक गुण) है, तो वह दो समयों में शेष नहीं रह सकता। तो इससे यह आवश्यक होगा कि शपथ के बाद वाला जीवन भी शपथ के समय वाले जीवन से भिन्न है। तो इसका उत्तर यह है कि शपथों का आधार लोक-व्यवहार (उर्फ़) पर होता है। अतः लोक-व्यवहार के लोग विभिन्न समयों के जीवन को एक ही निरंतर जीवन मानते हैं, लेकिन मृत्यु के बाद वाले जीवन को पहले जीवन से भिन्न मानते हैं।

[अरबी पाठ]: اقول: لكن لقائل ان يقول لانظر في الحلف الى تلك الحياة خصوصاً بل الى تسليم زمانه فى هذا الامر الاباذنه مثلا والشخص لايتبدل بتبدل الحياة بدليل الحشر والعقد في تلك الحيوة غير العقد على تلك الحياة والاذن وان لم يكن الامن حى فلا يستلزم ذلك عقد الحلف على تلك الحياة بعينها الا ترى ان الاذن لا يمكن ايضاً الامن عاقل ولو جُنّ فلان لا يسقط (अनुवाद: अकुल: लेकिन कोई कह सकता है कि शपथ में उस विशेष जीवन को नहीं देखा जाता, बल्कि इस मामले में अपने समय के समर्पण को देखा जाता है, उदाहरण के लिए, उसकी

अनुमति के बिना। जीवन के बदलने से व्यक्ति नहीं बदलता, जैसा कि हश्र (पुनरुत्थान) से सिद्ध है। और उस जीवन में किया गया अनुबंध उस विशिष्ट जीवन पर अनुबंध नहीं है। यद्यपि अनुमति केवल जीवित व्यक्ति से ही हो सकती है, लेकिन इससे यह आवश्यक नहीं होता कि शपथ का अनुबंध उसी विशिष्ट जीवन पर ही हो। क्या आप नहीं देखते कि अनुमति भी केवल बुद्धिमान व्यक्ति से ही संभव है, फिर भी यदि अमुक व्यक्ति पागल हो जाए, तो दायित्व समाप्त नहीं होता?)

[उर्दू अनुवाद]: अकुल (मैं कहता हूँ): लेकिन यहाँ यह आपत्ति हो सकती है कि शपथ में विशेष रूप से इस जीवन को ध्यान में नहीं रखा जाता, बल्कि यहाँ यह बात ध्यान में होती है कि शपथ लेने वाले को यदि समय यह अवसर दे कि, उदाहरण के लिए, वह अमुक व्यक्ति से बात कर सके, तो वह उसकी अनुमति के बिना नहीं करेगा। जबकि जीवन के बदलने से व्यक्ति नहीं बदलता क्योंकि मरने के बाद हश्र में वही व्यक्ति होगा। तो इस जीवन में शपथ लेने का यह अर्थ नहीं है कि शपथ इसी जीवन पर आधारित है। यद्यपि अनुमति का संबंध जीवित से होता है, लेकिन इससे यह आवश्यक नहीं है कि शपथ का संबंध विशेष रूप से इसी जीवन से हो। देखिए, अनुमति केवल बुद्धिमान व्यक्ति से ही सोची जा सकती है।

पृष्ठ 532 का 688

[اوپر دائیں طرف والا کالم - پچھلے عربی متن کا ترجمہ]: ہو کر اجازت دے یا آجائے ، تو اس اعتراض کا جواب یہ ہے کہ دوبارہ زندہ ہونے کی حیات اس حیات کا غیر ہے جس حیات سے اجازت یا آمد کی قسم کھائی تھی اور قسم والی یہ حیات وہ ہے جو قسم کے وقت تھی، کیونکہ حیات ایک ایسا عارضہ ہے جس کو بعینہ واپس لانا ممکن نہیں اگرچہ روح واپس ہو جائے کہ روح اور حیات آپس میں ایک دوسرے کے مغایر ہیں کیونکہ حیات، روح والی چیز کی روح کا لازم ہے نہ کہ وہ روح ہے اھ (ت)

[عربی متن]: ورأيتني كتبت عليه مانصه اقول فيه ان الحياة عرض لاتبقى زمانين فالحياة التى بعد الحلف غير التى كانت عند الحلف والجواب ان مبنى الايمان على العرف واهل العرف يعدونها واحدة مستمرة والمعادة غيرها۔

[اردو ترجمہ]: اور مجھے یاد ہے کہ میں نے اس پر یہ حاشیہ لکھا جس کی عبارت یوں ہے اقول: (میں کہتا ہوں) اس کلام میں بحث ہے کہ حیات جب عرض ہے تو وہ دو زمانوں میں باقی نہیں رہ سکتی تو اس سے لازم آئیگا کہ حلف کے بعد والی حیات بھی حلف کے وقت والی حیات کا غیر ہے تو اس کا جواب یہ ہے کہ قسموں کی بنیاد عرف پر ہوتی ہے تو عرف والے لوگ مختلف اوقات کی حیات کو ایک ہی جاریہ حیات قرار دیتے ہیں لیکن موت کے بعد والی حیات کو پہلی حیات کے مغایر قرار دیتے ہیں۔

[عربی متن]: اقول: لكن لقائل ان يقول لانظر في الحلف الى تلك الحياة خصوصاً بل الى تسليم زمانه فى هذا الامر الاباذنه مثلا والشخص لايتبدل بتبدل الحياة بدليل الحشر والعقد في تلك الحيوة غير العقد

على تلك الحياة والاذن وان لم يكن الامن حى فلا يستلزم ذلك عقد الحلف على تلك الحياة بعينها الا ترى ان الاذن لا يمكن ايضاً الامن عاقل ولو جُنّ فلان لا يسقط

[اردو ترجمہ]: اقول (میں کہتا ہوں) لیکن یہاں اعتراض ہو سکتا ہے کہ قسم میں خاص اس زندگی کو پیش نظر نہیں رکھا جاتا بلکہ یہاں یہ بات پیش نظر ہوتی ہے کہ قسم کھانے والے کو زمانہ اگر یہ موقع دے کہ مثلاً وہ فلاں سے بات کر سکے تو وہ اسکی اجازت کے بغیر نہ کرے گا، جبکہ حیات کی تبدیلی سے شخص تبدیل نہیں ہوتا کیونکہ مرنے کے بعد حشر میں وہی شخص ہوتا ہوگا تو اس زندگی میں قسم کھانے کا یہ مطلب نہیں کہ اسی زندگی پر حلف کا دارمدار ہے، اجازت کا تعلق اگرچہ زندہ سے ہوتا ہے لیکن اس سے یہ لازم نہیں آتا کہ حلف کا تعلق خاص اسی زندگی سے ہو، دیکھئے اجازت صرف عقل والے سے ہی متصور ہو سکتی ہے

Fatawa Rizvia Volume Thirteenth 13

[Left Column - Arabic] ...the oath, due to the possibility that his sanity might return. This issue is explicitly stated and my strongest suspicion is that it is in Al-Khaniyah; in fact, it is in it, as he stated in the section on 'leaving': Three people made a man swear that he would not leave Bukhara except with their permission. Then one of them became insane, and the swearer left with the permission of the other two. He has broken his oath. If one of them dies and then he leaves, he does not break the oath because the oath was restricted to their collective permission, and their permission ceased with the death of one of them, so the oath no longer remains. In the first scenario, despair regarding their permission did not occur. Ends. Then I say: It occurs to my mind that if it were said that a time-bound oath, when it is based on a matter that is habitually possible, then the condition for its continuation is the habitual possibility of its fulfillment, not just a mere rational possibility. This would provide an answer to this [issue]. This is hinted at by the statement in Al-Khaniyah: 'Despair did not occur,' for it implies that if despair had occurred, the oath would have fallen away. And there is no doubt that...

[Right Column - Urdu] But if that sane person loses his intellect and madness overcomes him, even then the oath is not void because the possibility of his intellect being restored still remains. This issue regarding intellect is mentioned in the books, and my predominant belief is that this issue is in Khania, rather certainly it is in it, where they have mentioned in the chapter on 'Going Out' that three gentlemen made a person take an oath that he would not leave Bukhara without their permission. After that, one of them became insane, and he left with the permission of the remaining two; the oath will be broken. However, if one of them dies, the oath will not be broken because the oath was conditioned on the joint permission of all three. With the death of one, that condition ends, and the oath no longer remains. In the first case of insanity, despair of joint permission is not found due to the possibility of the restoration of intellect. Ends. Then I say: (I say again that) the answer to this objection that has occurred to my heart is possible in this way: when an oath is conditioned on such a condition whose occurrence is habitually possible, then for its persistence, the possibility of that condition being met habitually is necessary so that the fulfillment of the oath can be envisioned. Otherwise, mere rational possibility would not be sufficient, while the statement in Khania that "despair has not yet occurred" points towards the correctness of this answer because their statement...

[1] Fatawa Qazi Khan, Book of Oaths, Chapter on Going Out, Naval Kishore Lucknow, 2/316 Page 533 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

[बायां कॉलम - अरबी] ...शपथ, उसकी बुद्धि वापस आने की संभावना के कारण। यह मसला स्पष्ट रूप से वर्णित है और मेरा प्रबल अनुमान है कि यह 'अल-खनिया' में है; वास्तव में, यह उसी में है, जैसा कि उन्होंने 'बाहर निकलने' के अध्याय में कहा है: तीन लोगों ने एक व्यक्ति को शपथ दिलाई कि वह उनकी अनुमति के बिना बुखारा नहीं छोड़ेगा। फिर उनमें से एक पागल हो गया, और शपथ लेने वाला बाकी दो की अनुमति से चला गया। उसने अपनी शपथ तोड़ दी है। यदि उनमें से एक की मृत्यु हो जाती है और फिर वह जाता है, तो वह शपथ नहीं तोड़ता है क्योंकि शपथ उनकी सामूहिक अनुमति तक सीमित थी, और उनमें से एक की मृत्यु के साथ उनकी अनुमति समाप्त हो गई, इसलिए शपथ अब शेष नहीं रही। पहले परिदृश्य में, उनकी अनुमति के संबंध में निराशा नहीं हुई थी। समाप्त। फिर मैं कहता हूँ: मेरे मन में यह विचार आता है कि यदि यह कहा जाए कि एक समयबद्ध शपथ, जब वह ऐसी बात पर आधारित हो जो आदतन संभव हो, तो उसकी निरंतरता के लिए शर्त यह है कि उसकी पूर्ति आदतन संभव हो, न कि केवल एक तर्कसंगत संभावना हो। यह इस [मसले] का उत्तर प्रदान करेगा। अल-खनिया के इस कथन से इसका संकेत मिलता है: 'निराशा नहीं हुई,' क्योंकि इसका तात्पर्य है कि यदि निराशा हुई होती, तो शपथ समाप्त हो जाती। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि...

[दायां कॉलम - उर्दू] लेकिन यदि कोई बुद्धिमान व्यक्ति अपनी बुद्धि खो दे और उस पर पागलपन सवार हो जाए, तो इसके बावजूद शपथ रद्द नहीं होती क्योंकि बुद्धि के बहाल होने की संभावना अभी बाकी है। बुद्धि से संबंधित यह मसला किताबों में वर्णित है, जबकि मेरा प्रबल अनुमान है कि यह मसला 'खानिया' में है, बल्कि निश्चित रूप से इसमें है, जहाँ उन्होंने 'बाहर जाने' के अध्याय में यह उल्लेख किया है कि तीन सज्जनों ने एक व्यक्ति को यह शपथ दिलाई कि वह उन तीनों की अनुमति के बिना बुखारा से बाहर नहीं जाएगा। इसके बाद उन तीनों में से एक पागल हो गया और वह बाकी दो की अनुमति से बाहर चला गया, तो शपथ टूट जाएगी। लेकिन अगर उनमें से कोई एक मर जाए, तो शपथ नहीं टूटेगी क्योंकि शपथ तीनों की संयुक्त अनुमति पर सशर्त थी। एक की मृत्यु के साथ वह शर्त समाप्त हो जाएगी और शपथ बाकी नहीं रहेगी। और पागलपन वाली पहली स्थिति में बुद्धि बहाल होने की संभावना के कारण संयुक्त अनुमति से निराशा नहीं पाई जाती। समाप्त। फिर मैं कहता हूँ: (मैं फिर कहता हूँ कि) इस शंका का उत्तर जो मेरे हृदय में आया है वह इस प्रकार संभव है कि जब शपथ ऐसी शर्त पर आधारित हो जिसका होना सामान्यतः संभव हो, तो उसकी निरंतरता के लिए उस

शर्त के सामान्यतः पूरा होने की संभावना आवश्यक है ताकि शपथ का पूरा होना कल्पनीय हो सके। अन्यथा केवल तार्किक संभावना पर्याप्त नहीं होगी, जबकि 'खानिया' का यह कथन कि "अभी निराशा नहीं हुई है" इस उत्तर की सत्यता की ओर संकेत कर रहा है क्योंकि उनका यह कथन...

---

[1] फतावा क़ाज़ी खान, किताबुल ईमान, बाहर जाने का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 2/316 पृष्ठ 533 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

الیمین لاحتمال ان یعود عقلہ والمسألۃ منصوص علیھا واکبر ظنی انھا فی الخانیۃ بل ھو فیھا اذ قال فی فصل فی الخروج ثلثۃ حلفوارجلان لا یخرج من بخار ا الا باذنھم فجن احدھم وخرج الحالف باذن الآخرین حنث وان مات احدھم فخرج لا یحنث لان الیمین تقیدت باذنھم وقد فات اذنھم بموت احدھم فلا یبقی الیمین وفی الوجہ الاول لم یقع الیأس عن اذنھم اھـ

لیکن فلاں عاقل اگر عقل کھو بیٹھے اور اس پر جنون طاری ہو جائے تو اس کے باوجود قسم ساقط نہیں ہوتی کیونکہ عقل کے بحال ہونے کا احتمال ابھی باقی ہے، یہ عقل والا مسئلہ کتب میں مذکور ہے جبکہ میرا غالب گمان ہے کہ یہ مسئلہ خانیہ میں ہے بلکہ یقیناً اس میں ہے، جہاں انہوں نے فصل فی الخروج میں یہ ذکر کیا ہے کہ تین حضرات نے ایک شخص کو یہ قسم دی کہ وہ ان تینوں کی اجازت کے بغیر بخارا سے باہر نہ جائے گا اس کے بعد ان تینوں میں سے ایک مجنون ہو گیا اور باقی دو کی اجازت سے باہر چلا گیا قسم ٹوٹ جائے گی لیکن اگر ان میں سے کوئی ایک فوت ہو جائے تو قسم نہ ٹوٹے گی کیونکہ قسم تینوں کی مشترکہ اجازت سے مشروط تھی تو ایک کے فوت ہو جانے سے وہ شرط ختم ہو جائے گی اور قسم باقی نہ رہے گی، اور پہلی جنون والی صورت میں عقل بحال ہونے کے امکان کی وجہ سے مشترکہ اجازت سے مایوسی نہیں پائی جاتی اھـ

ثم اقول: یختلج ببالی ان لو قیل ان الموقتۃ اذا کانت علی امر یمکن عادۃ فشرط بقاءھا تصور البر عادۃ لا مجرد احتمال عقلی لحصل الجواب عن ھذا ویؤمی الیہ قول الخانیۃ لم یقع الیأس فانہ یفید ان لو وقع الیأس سقط الیمین ولاشك ان

ثم اقول: (میں پھر کہتا ہوں کہ) اس اشکال کا جواب جو کہ میرے دل پر وارد ہوا ہے یوں ممکن ہے کہ قسم جب ایسی شرط سے مشروط ہو جس کا وقوع عادتاً ممکن تو اس کی بقاء کے لئے اس شرط کے عادتاً پائے جانے کا امکان ضروری ہے تاکہ قسم کا پورا ہونا متصور ہوسکے ورنہ محض عقلی احتمال کافی نہیں ہوگا، جبکہ خانیہ کا قول کہ "ابھی مایوسی نہیں ہوئی" اس جواب کی صحت کی طرف اشارہ کر رہا ہے کیونکہ ان کا یہ قول

---

1 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الایمان فصل فی الخروج نولکشور لکھنو ۳۱۶/۲ Page 533 of 688

Fatawa Razawiyyah Volume Thirteen 13

[Arabic Column] What is habitually impossible is a cause for despair. It was stated in 'Al-Fath' regarding the case of one who swears to ascend to the sky or turn this stone into gold: Inability is habitually established, so its removal is not anticipated. This is the meaning of despair. Evidence for this was cited in 'Al-Hidayah' for the case when the swearer dies; they break the oath despite the possibility of being restored to life. It says in 'Al-Fath': Thus, the possibility remains that they might perform what they swore upon, but that possibility is not considered because it is contrary to habit. So, the ruling of oath-breaking was given by consensus, etc. Thus, it becomes clear that the reason is not that the restored life is different from the life upon which the oath was bound; otherwise, the citation of evidence would not be complete because the inability would then be intellectual, as the researcher established regarding restoration to life, unlike ascending to the sky or turning a stone to gold. Thus, the focus is not on habitual despair and...

[Urdu Column] It is stating that if despair occurs, the oath will be dropped, whereas despair arises from something that is habitually impossible. In 'Al-Fath', regarding the oath about ascending to the sky and turning this stone into gold, it was stated that although ascending to the sky and a stone turning into gold are intellectually possible, inability from them is habitually established. Therefore, the oath will be broken because doing so is not habitually possible. This is the meaning of despair. In 'Al-Hidayah', support is mentioned such that in this case, upon the death of the one who swore the oath, the oath will not become void because being brought back to life is possible. Clarifying this in 'Fath al-Qadir', it was stated that through this possibility, the chance of performing the sworn act is established, but despite this, the possibility is not valid because it is against habit. Therefore, upon death, a ruling for the breaking of the oath will be given by consensus, etc. So from this statement, it becomes clear that the reason for the oath not remaining valid after being restored to life after death is not that the second life is different from the first life; otherwise, the citation of evidence from 'Al-Hidayah' and 'Fath al-Qadir' would not be complete because their evidence was based on habitual inability, whereas if both lives were different, the inability would be intellectual. While the researcher of 'Fath al-Qadir' has [discussed] second life...

[Footer] 1 Fath al-Qadir, Chapter of Oaths regarding Eating and Drinking, Maktabah Nuriyah Rizwiyah Sukkur, 2/215 2 Al-Hidayah, Chapter of Oaths regarding Eating and Drinking, Maktabah Arabiyyah Karachi, 1/473 3 Fath al-Qadir, Chapter of Oaths

regarding Eating and Drinking, Maktabah Nuriyah Rizwiyah Sukkur, 2/216 Page 534 of 688

फ़तवा रज़विया खंड तेरह १३

[अरबी कॉलम] जो आदतन असंभव है, वह निराशा का कारण है। 'अल-फ़तह' में उस व्यक्ति के मसले में कहा गया है जिसने आसमान पर चढ़ने या इस पत्थर को सोने में बदलने की कसम खाई थी: अक्षमता आदतन सिद्ध है, इसलिए इसके दूर होने की कोई उम्मीद नहीं है। निराशा का यही अर्थ है। 'अल-हिदाया' में इसका प्रमाण उस स्थिति के लिए दिया गया है जब कसम खाने वाला मर जाता है, क्योंकि वह जीवन की वापसी की संभावना के बावजूद कसम तोड़ देता है। 'अल-फ़तह' में कहा गया है: इस प्रकार, संभावना बनी रहती है कि वह वह कार्य कर सकता है जिसकी उसने शपथ ली थी, लेकिन उस संभावना पर विचार नहीं किया जाता क्योंकि यह आदत के विपरीत है। इसलिए, सर्वसम्मति से कसम टूटने का फैसला दिया गया, आदि। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि इसका कारण यह नहीं है कि लौटाया गया जीवन उस जीवन से भिन्न है जिसके दौरान कसम खाई गई थी; अन्यथा, साक्ष्य का उल्लेख पूर्ण नहीं होता, क्योंकि अक्षमता तब बौद्धिक होती, जैसा कि शोधकर्ता ने जीवन की बहाली के संबंध में स्थापित किया था, आसमान पर चढ़ने या पत्थर को सोने में बदलने के विपरीत। इस प्रकार, ध्यान आदतन निराशा पर नहीं है और...

[उर्दू कॉलम] यह बता रहा है कि यदि निराशा हो जाए तो कसम समाप्त हो जाएगी, जबकि निराशा उसी चीज़ से होती है जब वह आदतन असंभव हो। और 'फ़तह' में आसमान पर चढ़ने और इस पत्थर को सोने में बदलने की कسم के बारे में फरमाया गया कि हालांकि आसमान पर चढ़ना और पत्थर का सोने में बदलना बौद्धिक रूप से संभव है, लेकिन आदतन इससे लाचारी सिद्ध है, इसलिए कसम टूट जाएगी क्योंकि ऐसा करना आदतन संभव नहीं है। निराशा का यही अर्थ है। इस पर 'हिदाया' में इस प्रकार समर्थन दिया गया है कि इस स्थिति में कसम खाने वाले की मृत्यु पर कसम अमान्य नहीं होगी क्योंकि पुनर्जीवित होना संभव है। 'फ़तह अल-क़दीर' में इसकी व्याख्या करते हुए फरमाया गया कि इस संभावना से कसम वाले कार्य को करने की गुंजाइश सिद्ध हो रही है, लेकिन इसके बावजूद यह संभावना विश्वसनीय नहीं है क्योंकि यह आदत के विरुद्ध है। इसलिए मृत्यु होने पर सर्वसम्मति से कसम टूटने का आदेश होगा आदि। तो इस बयान से स्पष्ट हो गया कि मरने के बाद पुनर्जीवित होने में कसम के बहाल न रहने का कारण यह नहीं है कि दोबारा का जीवन पहले जीवन से भिन्न है, अन्यथा 'हिदाया' और 'फ़तह अल-क़दीर' का प्रमाण पूर्ण नहीं होता क्योंकि उनका प्रमाण आदतन अक्षमता पर था, जबकि दोनों जीवन के भिन्न हो जाने पर अक्षमता बौद्धिक हो जाती है। हालांकि फ़तह अल-क़दीर के शोधकर्ता ने दोबारा जीवन...

[फुटनोट] 1 फ़तह अल-क़दीर, खाने-पीने की कसमों का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 2/215 2 हिदाया, खाने-पीने की कसमों का अध्याय, मकतबा अरबीया कराची, 1/473 3 फ़तह अल-क़दीर, खाने-पीने की कसमों का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 2/216 पृष्ठ 534 का 688

[عربی کالم]: المستحیل عادة مایوس عنه و قد قال في الفتح في مسئلة من حلف لیصعد السماء اولیقلبن هذا الحجر ذهباً ان العجز ثابت عادة فلابر في زواله۱ اهـ وهذا هو معنی الیأس وقد استشهد لها في الهدایة بما اذا مات الحالف فانہ یحنث مع احتمال اعادة الحیاة۲، قال في الفتح فیثبت معه احتمال ان یفعل المحلوف علیه ولکن لم یعتبر ذلك الاحتمال بخلاف العادة فحکم بالحنث اجماعاً ۳الخ فتبین انه لیس الوجه مغائرة الحیاة المعادة للحیاة المعقود علیها الحلف، والالم یتم الاستشهاد لکون العجز اذن عقلا کما قرره المحقق الاعادة بخلاف صعود السماء وقلب الحجر ذهبا فاذن لیس النظر الالی الیأس العادی و

[اردو کالم]: بتارہا ہے کہ اگر مایوسی ہو جائے تو قسم ساقط ہو جائیگی جبکہ مایوسی اسی چیز سے ہوتی جب وہ عادۃً محال ہو، اور فتح میں آسمان پر چڑھنے اور اس پتھر کو سونے میں بدلنے کے متعلق قسم کے بیان میں فرمایا کہ اگرچہ آسمان پر چڑھنا اور پتھر کا سونے میں بدل جانا عقلاً ممکن ہے لیکن عادۃً اس سے عجز ثابت ہے لہذا قسم ٹوٹ جائیگی کیونکہ ایسا کرنا عادۃً ممکن نہیں ہے اھ ، مایوسی کا یہی معنی ہے۔ اس پر ہدایہ میں یوں تائید ذکر کی ہے کہ اس صورت میں قسم کھانے والے کے فوت ہوجانے پر قسم باطل نہ ہوگی کیونکہ دوبارہ زندہ ہونا ممکن ہے، فتح القدیر میں اس کی وضاحت کرتے ہوئے یوں فرمایا کہ اس امکان سے حلف والے کام کو کرنے کا احتمال ثابت ہو رہا ہے مگر اس کے باوجود یہ احتمال معتبر نہیں کیونکہ یہ خلافِ عادت ہے اس لئے فوت ہو جانے پر بالا جماع قسم کے ٹوٹ جانے کا حکم ہوگا الخ تو اس بیان سے واضح ہو گیا کہ مرنے کے بعد دوبارہ زندہ ہونے میں قسم کے بحال نہ ہونے کی وجہ یہ نہیں کہ دوبارہ زندگی پہلی زندگی کے مغایر ہے ورنہ ہدایہ اور فتح القدیر کا استشہاد تام نہ ہوگا کیونکہ ان کا استشہاد عادی عجز پر

تھا جبکہ دونوں زندگیوں کے مغایر ہوجانے پر عجز عقلی ہو جاتا ہے حالانکہ محقق صاحب فتح القدیر نے دوبارہ زندگی

[حواشی]: 1 فتح القدیر باب الیمین فی الاکل والشرب مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲/ ۲۱۵ 2 ہدایہ باب الیمین فی الاکل والشرب مکتبہ عربیہ کراچی ۱/ ۴۷۳ 3 فتح القدیر باب الیمین فی الاکل والشرب مکتبہ نوریہ رضویہ ۲/ ۲۱۶ Page 534 of 688

He is the intended one. I say: It appears to me that its justification is that whoever swears an oath upon a habitually impossible thing, he has tied it to its rational possibility. Thus, the condition for the oath's formation was nothing but this. However, as for one who swore an oath upon something habitually possible and then it became habitually impossible, it is not far-fetched that the oath remains, because this [rational] possibility was not what the oath was tied to. So, let one reflect and clarify. And Allah Almighty knows best. End of what I wrote on it.

[Urdu Column Translation]: ...has kept the possibility proved; on the contrary, climbing the sky and turning stone into gold are not rational impossibilities, but here it is only habitual despair that is intended for the breaking of the oath. I say (Aaqul): Its justification seems to me to be that whoever swore an oath on a habitually impossible thing that is rationally possible, then this rational possibility will be the condition for his oath. But whoever swore on a habitually possible thing and that thing becomes habitually impossible after the oath, then in this case the oath will not remain because now only rational possibility remains whereas the oath was not based on this possibility but was based on habitual possibility which no longer exists. One should reflect and clarify the matter. And Allah Almighty knows best. My footnote ended. (T)

Fifth Doubt: An oath becomes restricted by the indication of the circumstance, even if it was not restricted in words. From this category is the restriction of speech by the purpose, until the purpose is considered as a specification even though the basis of oaths is not on purposes, yet they [purposes] do create specification (takhsis) in them. It is in Radd al-Muhtar, mentioned in the summary of al-Jami' al-Kabir, that specification can occur by custom (urf) but an addition cannot. For example, if someone swears an oath regarding 'sari' (head of an animal), then by it is meant that 'sari' which is customarily roasted in fire and eaten in the oven. And regarding an alien woman, if he said, "If she enters the house, she is divorced," then his ownership of her in marriage cannot be meant. End.

[Urdu Column Explanation]: Fifth Doubt: That the oath becomes restricted by the indication of the state (circumstance), even if it is absolute in words and there is no mention of a restriction with it. From this same category is speech being restricted by the purpose; although oaths are not based on purposes, yet purposes create specification in them. Accordingly, the respected jurists (Fuqaha) have clarified that

purpose does not create an addition in an oath but can create specification. It is in Radd al-Muhtar that it is mentioned in the summary of Jami' Kabir that specification can happen through custom but addition cannot, to the extent that if someone swore an oath regarding 'sari', then it would mean that 'sari' which is known in custom to be roasted in fire and eaten. And regarding an alien woman, he said, "If she enters the house, she is divorced," then her ownership in marriage cannot be meant. End.

Note: There is a blank space in the draft.

Page 535 of 688

यही अभीष्ट है। मैं कहता हूँ: इसका औचित्य मुझे यह प्रतीत होता है कि जिसने किसी आदतन असंभव बात पर कसम खाई, जो कि तर्कसंगत रूप से संभव हो, तो उसने इसे उसकी तर्कसंगत संभावना से बांध दिया। अतः कसम के लागू होने की शर्त यही थी। लेकिन जहाँ तक उसकी बात है जिसने किसी आदतन संभव बात पर कसम खाई और फिर वह आदतन असंभव हो गई, तो यह असंभव नहीं है कि कसम बनी रहे, क्योंकि यह [तर्कसंगत] संभावना वह नहीं थी जिस पर कसम आधारित थी। अतः विचार और स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। मेरे द्वारा लिखे गए का अंत।

[उर्दू कॉलम अनुवाद]: ...संभावना को सिद्ध रखा है; इसके विपरीत, आकाश पर चढ़ना और पत्थर का सोने में बदल जाना तर्कसंगत रूप से असंभव नहीं है, बल्कि यहाँ केवल आदतन निराशा ही है जो कसम के टूटने में अभीष्ट है। मैं कहता हूँ (अकुल): इसका औचित्य मुझे यह लगता है कि जिसने किसी आदतन असंभव चीज़ पर कसम खाई जो तर्कसंगत रूप से संभव हो, तो उसकी कसम के लिए यही तर्कसंगत संभावना शर्त होगी। लेकिन जिसने किसी आदतन संभव चीज़ पर कसम खाई और वह चीज़ कसम के बाद आदतन असंभव हो गई, तो इस स्थिति में कसम बनी नहीं रहेगी क्योंकि अब केवल तर्कसंगत संभावना बची है जबकि कसम इस संभावना पर आधारित नहीं थी बल्कि वह आदतन संभावना पर आधारित थी जो अब शेष नहीं रही। विचार करना और मामले को स्पष्ट करना चाहिए। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। मेरा हाशिये (नोट) समाप्त हुआ। (त)

पांचवां संदेह: कसम परिस्थिति के संकेत से प्रतिबंधित हो जाती है, भले ही वह शब्दों में प्रतिबंधित न हो। इसी श्रेणी से उद्देश्य द्वारा वाणी का प्रतिबंध है, जब तक कि उद्देश्य को एक विशिष्टता (तख़सीस) के रूप में नहीं माना जाता, भले ही कसमों का आधार उद्देश्यों पर नहीं होता, फिर भी वे उनमें विशिष्टता पैदा कर देते हैं। रद अल-मुहतार में है, अल-जामी अल-कबीर के सारांश में उल्लेख है कि प्रथा (उर्फ़) द्वारा विशिष्टता हो सकती है लेकिन वृद्धि नहीं। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने 'सरी' (पशु का सिर) के बारे में कसम खाई, तो उससे वही 'सरी' अभिप्रेत होगी जिसे प्रथा के अनुसार आग में भूनकर ओवन में खाया जाता है। और एक पराई महिला के संबंध में, यदि उसने कहा, "यदि वह घर में प्रवेश करती है, तो उसे तलाक है," तो निकाह में उसका स्वामित्व अभिप्रेत नहीं हो सकता। अंत।

[उर्दू कॉलम व्याख्या]: पांचवां संदेह: कि कसम हाल (परिस्थिति) के संकेत से प्रतिबंधित बन जाती है, भले ही शब्दों में वह निरपेक्ष हो और उसके साथ किसी प्रतिबंध का उल्लेख न हो। इसी अध्याय से वाणी का उद्देश्य से प्रतिबंधित होना है; हालांकि कसमों का आधार उद्देश्यों पर नहीं है, फिर भी उद्देश्य उनमें विशिष्टता पैदा कर देते हैं। तदनुसार, सम्मानित न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने यह स्पष्ट किया है कि उद्देश्य कसम में वृद्धि नहीं करता है, लेकिन विशिष्टता पैदा कर सकता है। रद अल-मुह्तार में है कि जामी कबीर के सारांश में उल्लेख है कि प्रथा (उर्फ़) से विशिष्टता हो सकती है लेकिन वृद्धि नहीं हो सकती, यहाँ तक कि यदि किसी ने 'सरी' के बारे में कसम खाई, तो उससे वही 'सरी' अभिप्रेत होगी जिसे प्रथा में आग से भूनकर खाया जाता है। और एक पराई महिला के बारे में कहा, "अगर वह घर में दाखिल हुई तो उसे तलाक है", तो उसके निकाह के स्वामित्व का अर्थ नहीं लिया जा सकता। अंत।

नोट: मसौदे में खाली जगह है।

पृष्ठ 535 of 688

ھو المقصود، اقول: ویظھر لی توجیھہ ان من حلف علی محال عادی فقد عقد علی امکانہ العقلی فلم یکن شرط الانعقاد الا ھذا اما من عقد الموقتۃ علی ممکن عادۃ ثم استحال فلا یبعد ان تبقی الیمین لان ھذا الامکان غیر المعقود علیہ فلیتأ مل ولیحرر، واللہ تعالٰی اعلم اھ ما کتبت علیہ۔

کے احتمال کو ثابت رکھا ہے، اس کے برخلاف آسمان پر چڑھنے اور پتھر کے سونے میں تبدیل ہونے میں عقلی عجز نہیں ہے بلکہ یہاں صرف عادی مایوسی ہی ہے جو قسم کے ٹوٹ جانے میں مقصود ہے، اقول (میں کہتا ہوں) اس کی توجیہ مجھے یہ معلوم ہوتی ہے کہ جس نے کسی عادی محال چیز جو کہ عقلی طور پر ممکن ہو، پر قسم کھائی تو اس کی قسم کے لئے یہی عقلی امکان شرط ہوگا، لیکن جس نے کسی عادۃً ممکن چیز پر قسم کھائی اور وہ چیز قسم کے بعد عادۃً محال ہوجائے تو اس صورت میں قسم باقی نہ رہے گی کیونکہ اب صرف عقلی امکان باقی ہے جبکہ قسم اس امکان پر مبنی نہ تھی بلکہ وہ عادی امکان پر مبنی تھی جو باقی نہ رہا، غور کرنا اور معاملہ کو صاف کرنا چاہئے۔ واللہ تعالٰی اعلم، میرا حاشیہ ختم ہوا ۔ (ت)

شبہ خامسہ: یمین بدلالت حال متقید شود اگر چہ در قال مقید نبود وازیں باب ست تقیید بغرض تا آنکہ غرض را بآنکہ بنائ ایماں برونیست تخصیص دانستہ و تصریح فرمودہ اند کہ غرض در یمین نفزاید فاما عہ خصوص را شاید در ردالمحتارست فی تلخیص الجامع الکبیر وبالعرف یخص ولا یزاد حتی خص الراس بما یکبس ولم یرد الملك في تعليق طلاق الاجنبية بالدخول اھـ ومعناہ ان اللفظ اذا کان عاماً یجوز تخصیصہ بالعرف کما لو حلف لا یأکل رأساً فانہ فی العرف اسم لما یکبس فی التنور ویباع

پانچواں شبہ : کہ قسم حال کی دلالت سے مقید بن جاتی ہے، اگرچہ لفظوں میں وہ مطلق ہو اور اس کے ساتھ قید کا ذکر نہ ہو ، اسی باب سے کلام کا غرض سے مقید ہونا ہے، اگرچہ قسموں کی بنیاد اغراض پر نہیں ہے تاہم اغراض میں تخصیص پیدا کر دیتی ہیں، چنانچہ فقہاء کرام نے یہ تصریح کی ہے کہ غرض قسم میں زیادتی پیدا نہیں کرتی لیکن تخصیص پیدا کرسکتی ہے، ردالمحتار میں ہے کہ جامع کبیر کی تلخیص میں مذکور ہے کہ عرف سے تخصیص ہوسکتی ہے لیکن زیادتی نہیں ہوسکتی حتی کہ کسی نے سری کے متعلق قسم کھائی تو اس سے وہ سری مراد ہوگی جس کو عرف میں آگ سے بھون کر کھایا جائے، اور اجنبی عورت کے متعلق کہا "اگر وہ گھر میں داخل ہوئی تو اسے طلاق ہے" تو اس عورت کی ملکیت نکاح مراد نہیں ہوسکتی اھ،

عہ: مسودہ میں بیاض ہے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

(Arabic Text excerpt): "In the markets, and that is the head of sheep, not the head of a bird, and the like. The customary purpose (al-gharad al-urfi) specifies its generality. So when it is mentioned absolutely, it refers to what is customary, unlike an external addition to the wording. For instance, if one says to a stranger woman, 'If you enter the house, you are divorced,' it is considered void. It is not correct to intend 'ownership,' i.e., 'if you enter while you are in my marriage,' even if that is the custom. Because that is not mentioned, and the indication of custom has no effect in making what is not spoken as spoken."[1]

(Persian/Urdu Text excerpt): In the same vein, a purpose can serve as a specifier but not as an augmenter. If we were to read the branches of these [oaths] which have been specified by the intentions of the oath-takers through the indication of the state (hal), a whole volume would be required. Let us choose two or three examples mentioned in the Madhhab:

(Urdu Explanation): The meaning of this passage is that if a term is general, it can be specified through custom. For example, when a person takes an oath saying, 'I will not eat head (siri),' then although 'head' is mentioned generally and absolutely in the oath, in custom it only refers to the kind of head that is roasted and sold in the market. Therefore, in custom, 'head' would not refer to the head of a bird, etc. Thus, custom has specified 'head' here. So when 'head' is mentioned absolutely, customarily only the specific type will be meant. In contrast, an addition that is not mentioned in words cannot be created due to custom. For example, if a person says to a stranger woman, 'If you enter the house, you are divorced,' and if he intends that 'divorce occurs if she enters the house while being his wife,' then 'being his wife' is something extra to the words of the oath, which cannot be intended. Although in custom, being married is necessary for divorce, custom cannot add a word not mentioned in the speech. Therefore, this oath for a stranger woman will be considered void. It is also mentioned in 'Radd al-Muhtar' that custom has the capability to be a specifier (mukhasis) but does not have the capability to create an addition. Regarding oaths being restricted by purposes through the indication of the state (hal), if I were to mention its details, a whole volume would be needed. However, I am mentioning two or three examples explicitly stated in the Madhhab:

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Oaths regarding Entry and Exit, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/377. [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Oaths regarding Entry and Exit, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/377.

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

(अरबी पाठ का अंश): "बाज़ारों में, और वह भेड़ का सिर है न कि चिड़िया का सिर और इसी तरह के अन्य। तो प्रथागत उद्देश्य (अल-गरज़ अल-उर्फी) इसकी व्यापकता को विशिष्ट करता है। इसलिए जब इसे पूर्ण रूप से कहा जाता है, तो यह प्रचलित प्रथा की ओर मुड़ जाता है, इसके विपरीत शब्दों के बाहर की वृद्धि के, जैसे कि यदि वह किसी अजनबी स्त्री से कहे, 'यदि तू घर में दाखिल हुई तो तुझे तलाक है', तो वह व्यर्थ होगा। 'स्वामित्व' का इरादा करना सही नहीं है, यानी 'यदि तू दाखिल हुई जबकि तू मेरे निकाह में हो', भले ही यही प्रथा हो। क्योंकि वह उल्लिखित नहीं है, और प्रथा के संकेत का अनकहे को कहा हुआ बनाने में कोई प्रभाव नहीं है।"[1]

(फ़ारसी/उर्दू पाठ का अंश): इसी तरह, एक उद्देश्य एक विशिष्टकर्ता (specifier) के रूप में कार्य कर सकता है लेकिन एक वर्धक (augmenter) के रूप में नहीं। यदि हम उन शाखाओं को पढ़ें जिन्हें शपथ लेने वालों के इरादों द्वारा स्थिति (हाल) के संकेत के माध्यम से निर्दिष्ट किया गया है, तो एक पूरे रजिस्टर की आवश्यकता होगी। आइए मज़हब (संप्रदाय) में उल्लिखित दो या तीन उदाहरण चुनें:

(उर्दू व्याख्या): इस इबारत का अर्थ यह है कि यदि शब्द सामान्य हो तो प्रथा (उर्फ़) के द्वारा उसकी विशिष्टता (तखसीस) की जा सकती है। जैसे जब कोई व्यक्ति यह कसम खाए कि 'मैं सिरी (सिर का मांस) नहीं खाऊंगा', तो कसम में यद्यपि सिरी सामान्य और पूर्ण रूप से उल्लिखित है, लेकिन प्रथा में वही सिरी अभिप्रेत होती है जिसे भूना जा सके और बाजार में बेचा जाए। इसलिए प्रथा में सिरी से तात्पर्य चिड़िया आदि की सिरी नहीं होगा। तो यहाँ प्रथा ने सिरी में विशिष्टता कर दी, तो जब पूर्ण सिरी का उल्लेख किया जाएगा तो प्रथा के अनुसार विशेष ही अभिप्रेत होगी। इसके विपरीत ऐसी वृद्धि जो शब्दों में उल्लिखित न हो, प्रथा के कारण वह वृद्धि उत्पन्न नहीं हो सकती। जैसे कोई व्यक्ति किसी अजनबी महिला से कहे कि 'अगर तू घर में दाखिल हुई तो तुझे तलाक है', तो यहाँ अगर वह यह मुराद ले कि 'घर में दाखिल होते समय मेरी पत्नी हो तो तलाक है', तो पत्नी होना कसम के शब्दों से अतिरिक्त चीज़ है, जिसे मुराद नहीं लिया जा सकता। हालांकि प्रथा में तलाक के लिए पत्नी होना आवश्यक है, मगर प्रथा बातचीत में अनकहे शब्द को अतिरिक्त नहीं कर सकती। इसलिए अजनबी महिला के लिए यह कसम व्यर्थ मानी जाएगी। इसी 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि प्रथा विशिष्ट (मुखासिस) बनने की क्षमता रखती है लेकिन वृद्धि पैदा करने की क्षमता नहीं रखती। वर्तमान स्थिति के संकेत से कसमों का उद्देश्यों के साथ सीमित होना, यदि मैं इसके विवरणों का उल्लेख करूं तो

उसके लिए एक रजिस्टर चाहिए, फिर भी धर्म (मज़हब) में स्पष्ट दो-तीन उदाहरणों का उल्लेख कर रहा हूँ:

---

[1] रद्द अल-मुह्तार, प्रवेश और निकास के बारे में कसमों का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/377। [2] रद्द अल-मुह्तार, प्रवेश और निकास के बारे में कसमों का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/377।

पृष्ठ 536/688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

في الاسواق وهو راس الغنم دون رأس العصفور ونحوه فالغرض العرفي يخصص عمومه فإذا أطلق ينصرف الى المتعارف بخلاف الزيادة الخارجة عن اللفظ كما لو قال لاجنبية إن دخلت الدار فأنت طالق فإنه يلغو ولا تصح إرادة الملك أي إن دخلت وأنت في نكاحي وإن كان هو المتعارف لأن ذلك غير مذكور ودلالة العرف لا تأثير لها في جعل غير الملفوظ ملفوظاً ، ۱

ہمد ران ست الغرض یصلح مخصصاً لامینیداً واگر تقییدات کہ بدلالت حال باغراض حالفین کردہ اند فروع آنہا را بر خوانیم دفتر باید بر دوسہ مثال منصوص فی المذہب اختیار کنیم :

اس عبارت کا مطلب یہ ہے کہ اگر لفظ عام ہو تو عرف کے ذریعہ اس کی تخصیص کی جاسکتی ہے جیسا کہ جب کوئی شخص یہ قسم کھائے کہ سری نہ کھاؤں گا، تو قسم میں اگرچہ سری عام اور مطلق مذکور ہے لیکن عرف میں وہی سری مراد ہوتی ہے جس کو بھونا جاسکے اور بازار میں فروخت کیا جائے اس لئے عرف میں سری سے مراد چڑیا وغیرہ کی سری مراد نہ ہوگی، تو یہاں عرف نے سری میں تخصیص کردی تو جب مطلق سری ذکر کی جائے گی تو عرفاً خاص ہی مراد ہوگی اس کے برخلاف ایسی زیادتی جو لفظوں سے مذکور نہ ہو عرف کی وجہ سے وہ زیادتی پیدا نہیں ہوسکتی جیسے کوئی شخص اجنبی عورت کو کہے کہ "اگر تو گھر میں داخل ہوئی تو تجھے طلاق ہے" تو یہاں اگر وہ یہ مراد لے کہ گھر میں داخل ہوتے وقت میری منکوحہ ہو تو طلاق ہے، تو منکوحہ ہونا قسم کے الفاظ سے زائد چیز ہے، جس کو مراد نہیں لیا جاسکتا، اگرچہ عرف میں طلاق کے لئے منکوحہ ہونا ضروری ہے مگر عرف کلام میں غیر مذکور لفظ کو زائد نہیں کرسکتا اس لئے اجنبی عورت کے لئے یہ قسم لغو قرار پائے گی، اسی ردالمحتار میں ہے کہ

عرف مخصص بننے کی صلاحیت رکھتا ہے لیکن زیادتی پیدا کرنے کی صلاحیت نہیں رکھتا۔ حال کی دلالت سے قسموں کا اغراض سے مقید ہونا، اگر میں اس کی جزئیات کو ذکر کروں تو اس کے لئے دفتر چاہئے، تاہم مذہب میں منصوص دو تین مثالیں ذکر کر رہا ہوں :

---

۱ ردالمحتار باب الیمین فی الدخول والخروج دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۷۷ ۲ ردالمحتار باب الیمین فی الدخول والخروج دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۳۷۷

Fatawa Razawiyya Volume 13 - 13

(1) The governor of the city made Zaid take an oath that he would inform him of any mischief-monger in the city. Thus, this oath to inform will be restricted to the duration of that governor's authority, even though there is no word in the oath like 'permission' etc. that indicates such a restriction. However, the general circumstance here indicates that the purpose of taking the oath in common practice is for the ruler to address the evil based on that information. This redressal can only happen through authority; therefore, this oath will necessarily be restricted to the period of authority. It is stated in Al-Hidayah: When a governor makes a person take an oath that he will inform him of every troublemaker entering the city, this is specific to the period of his authority because the objective is to repel his evil or the evil of others by punishing him, and this benefit is not served after the removal of his power. It is stated in Fath al-Qadir: This restriction in time is established by the indication of the circumstance, which is the knowledge that the purpose of this oath is to punish him in a way that repels his evil or the evil of others by punishing him, and this is not realized except during the period of his authority because that is the time of his ability for that. (T) (2) When a debtor denies a debt and the creditor has no witnesses, the creditor may swear an oath: "I will take you to the judge's court," and take an oath. If the debtor then confesses or the creditor...

---

1. Al-Hidayah, Kitab al-Iman, Miscellaneous Issues, Maktaba al-Arabiyya, Karachi, 1/286
2. Fath al-Qadir, Kitab al-Iman, Nooriya Razawiyya, Sukkur, 4/468

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं - १३

(१) शहर के गवर्नर ने ज़ैद को कसम दी कि शहर में जो भी शरारती तत्व हो, वह मुझे उसकी सूचना देगा। तो सूचना देने की यह कसम उस गवर्नर के अधिकार की अवधि के साथ सीमित होगी, भले ही शब्दों में इस प्रतिबंध को इंगित करने वाला कोई शब्द जैसे 'अनुमति' आदि मौजूद न हो। लेकिन यहाँ सामान्य परिस्थिति इंगित करती है कि आम व्यवहार में कसम दिलाने का उद्देश्य यह होता है कि शासक उस सूचना के आधार पर बुराई का निवारण करे। और यह निवारण केवल अधिकार (सत्ता) से ही हो सकता है, इसलिए अनिवार्य रूप से यह कसम अधिकार के समय तक सीमित होगी। हिदाया में है कि जब गवर्नर ने एक व्यक्ति को कसम दिलाई कि तू मुझे शहर में किसी भी उपद्रवी के प्रवेश पर सूचना देगा, तो यह कसम उस गवर्नर के अधिकार की अवधि के लिए विशिष्ट होगी क्योंकि गवर्नर का उद्देश्य उस सूचना पर शरारती को सजा देकर बुराई को समाप्त करना है। इसलिए, अधिकार समाप्त होने के बाद इस कसम का कोई लाभ नहीं है। फतह अल-कादिर में है कि कसम के समय का अधिकार से विशिष्ट होना वर्तमान परिस्थिति के प्रमाण के कारण है, और वह यह कि इस कसम को देने का उद्देश्य शरारती को सजा देकर उसकी या दूसरों की बुराई को खत्म करना है, जबकि यह उद्देश्य उस गवर्नर के अधिकार के दौरान ही प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि वह अपने अधिकार के कारण इस उद्देश्य में सक्षम होता है। (त) (२) जब ऋणी (कर्जदार) कर्ज से इनकार करता है और कर्जदाता के पास गवाह न हों, तो कर्जदाता कसम खाए कि "मैं तुझे काजी की अदालत में पेश करूँगा" और कसम ले। ऋणी ने स्वीकार कर लिया या कर्जदाता...

---

1. हिदाया, किताब अल-ईमान, मुतफ़र्रिक मसाइल, मकतबा अल-अरबिया, कराची, १/२८६
2. फतह अल-कादिर, किताब अल-ईमान, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, ४/४६८

पृष्ठ ५३७ / ६८८

(۱) والیِ شہر نے زید کو قسم دی کہ شہر میں جو بھی شرپسند ہو مجھے اس کی اطلاع دے گا، تو اطلاع دینے کی یہ قسم اس والی کی ولایت کی مدت کے ساتھ مقید ہوگی حالانکہ لفظوں میں اس قید پر دلالت کرنے والا کوئی لفظ مثلاً اجازت وغیرہ موجود نہیں مگر عام حال کی یہاں دلالت موجود ہے کہ قسم دینے کا عرف میں مقصد یہ ہوتا ہے کہ حاکم اس اطلاع پر شر کا تدارک کرے اور یہ تدارک صرف ولایت سے ہو سکتا ہے تو لازماً یہ قسم ولایت کے زمانہ سے مقید ہوگی۔ ہدایہ میں ہے کہ جب والی نے ایک شخص کو قسم دی کہ تو مجھے شہر میں کسی فسادی کے داخل ہونے پر اطلاع دے گا۔ تو یہ قسم اس والی کی ولایت کے زمانہ سے مختص ہوگی کیونکہ والی کا مقصد یہ ہے کہ وہ اس اطلاع پر شریر کو سزا دے کر شر کا خاتمہ کرے، لہٰذا ولایت کے خاتمہ کے بعد اس قسم کا کوئی فائدہ نہیں ہے، فتح القدیر میں ہے کہ قسم کا زمانہ ولایت سے مختص ہونا دلالتِ حال کی وجہ سے ہے اور وہ یہ کہ اس قسم دینے کا مقصد شریر کو سزا دے کر اس کے یا غیر کے شر کو ختم کرنا ہے جبکہ یہ مقصد اس والی کی ولایت سے حاصل ہو سکتا ہے کیونکہ ولایت کی وجہ سے وہ اس مقصد پر قادر ہوتا ہے (ت) (۲) مقروض جب قرض سے انکار کرے اور قرض خواہ کے پاس گواہ نہ ہوں تو قرض خواہ قسم اٹھائے کہ میں تجھے قاضی کے دربار میں پیش کروں گا

---

1 ہدایہ کتاب الایمان مسائل متفرقہ مکتبۃ العربیہ کراچی ۱/۲۸۶ 2 فتح القدیر کتاب الایمان نوریہ رضویہ سکھر ۴/۴۶۸

If witnesses are found, the oath is nullified because, by the context of the situation, the oath was contingent upon denial and the absence of witnesses. It is stated in Durr al-Mukhtar: "If someone swears that they will take another to the judge and make them swear an oath, and then the opponent confesses or witnesses appear, the oath is dropped because it is restricted by its meaning to the state of denial." [End quote]

Allama Shami remarked: "However, this reasoning is not apparent regarding the phrase 'or witnesses appear,' because the appearance of witnesses does not eliminate the denial. Rather, the cause is that after witnesses appear, administering an oath is not possible. Ponder upon this." [End quote]

I say: It is permissible for the claimant not to seek testimony from the witnesses and instead demand an oath from the opponent. So how can it be said it's 'not possible' as Allama Shami's statement suggests? Therefore, it is better to say that the oath is restricted to the state of denial and the absence of witnesses, for there is no oath for a confessing party nor one when clear proof (witnesses) has testified. As stated in ad-Durr.

[Urdu Translation on the right column]: ...and I will take an oath from you there. Following this oath, if the debtor or borrower confesses to the debt or the creditor finds witnesses, the creditor's oath will be nullified. This is because, based on the circumstances, that oath is specified for the condition of denial and the absence of witnesses. In Durr al-Mukhtar, it is mentioned: If a creditor swears, "I will present you in the judge's court and make you take an oath," and upon this threat, the debtor admits to the debt or witnesses are found for the creditor, the oath is nullified. This is because the oath-taker's oath is considered restricted to the debtor's denial. [End quote]

Regarding this, Allama Shami stated: "This reason and cause relate only to the debtor's denial; it does not apply to the availability of witnesses because denial can persist despite the availability of witnesses. Thus, the reason for the oath being nullified upon the availability of witnesses would be that in the presence of witnesses, it would not remain possible for the judge to administer an oath. This requires thought." [End quote]

I say: (I say) How can Allama Shami's statement that administering an oath is possible in the presence of witnesses be correct, given that the claimant has the option to make the denying debtor take an oath instead of presenting witnesses? Therefore, it is correct to call the oath 'impossible' [in that legal context].

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Oaths in Eating, Drinking, Dressing, and Speaking, Matba' Mujtabai Delhi, 1/304
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Oaths in Eating, Drinking, Dressing, and Speaking, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/106

यदि गवाह मिल जाते हैं, तो शपथ समाप्त हो जाती है क्योंकि स्थिति के संदर्भ के अनुसार, शपथ इनकार और गवाहों की अनुपस्थिति पर निर्भर थी। 'दुर्र अल-मुख्तार' में उल्लेख है: "यदि कोई शपथ लेता है कि वह दूसरे को काज़ी के पास ले जाएगा और उससे शपथ दिलवाएगा, और फिर विरोधी पक्ष स्वीकार कर लेता है या गवाह प्रकट हो जाते हैं, तो शपथ रद्द हो जाती है क्योंकि यह अपने अर्थ के अनुसार इनकार की स्थिति के साथ सीमित है।" [समाप्त]

अल्लामा शामी ने टिप्पणी की: "हालांकि, यह तर्क'या गवाह प्रकट हो जाते हैं' वाक्यांश के संबंध में स्पष्ट नहीं है, क्योंकि गवाहों के प्रकट होने से इनकार समाप्त नहीं होता है। बल्कि, कारण यह है कि गवाहों के प्रकट होने के बाद शपथ दिलवाना संभव नहीं रहता। इस पर विचार करें।" [समाप्त]

मैं कहता हूँ: वादी के लिए यह संभव है कि वह गवाहों से गवाही न मांगे और इसके बजाय विरोधी से शपथ की मांग करे। तो यह कैसे कहा जा सकता है कि यह 'संभव नहीं' है जैसा कि अल्लामा शामी का कथन संकेत देता है? इसलिए, यह कहना बेहतर है कि शपथ इनकार और गवाहों की अनुपस्थिति की स्थिति के लिए प्रतिबंधित है, क्योंकि स्वीकार करने वाले पक्ष पर कोई शपथ नहीं होती और न ही उस समय जब स्पष्ट प्रमाण (गवाह) गवाही दे चुके हों। जैसा कि 'अद-दुर्र में है।

[दाहिने कॉलम में उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: ...और मैं वहां तुमसे शपथ लूंगा। इस शपथ के बाद, यदि ऋणी या कर्जदार व्यक्ति ऋण स्वीकार कर लेता है या लेनदार को गवाह मिल जाते हैं, तो लेनदार की शपथ रद्द हो जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि परिस्थितियों के आधार पर, वह शपथ इनकार और गवाहों की अनुपस्थिति की स्थिति के लिए विशिष्ट मानी जाएगी। दुर्र अल-मुख्तार में उल्लेख है: यदि किसी लेनदार ने शपथ ली कि "मैं तुम्हें काज़ी की अदालत में पेश करूँगा और तुमसे शपथ दिलवाऊँगा," और इस धमकी पर ऋणी ने ऋण स्वीकार कर लिया या उसे गवाह मिल गए, तो शपथ रद्द हो जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि शपथ लेने वाले की यह शपथ ऋणी के इनकार के साथ सीमित मानी जाएगी। [समाप्त]

इस पर अल्लामा शामी ने फरमाया: "इस वजह और कारण का संबंध केवल ऋणी के इनकार से है; यह गवाहों की उपलब्धता पर लागू नहीं होगा क्योंकि गवाहों की उपलब्धता के बावजूद इनकार बना रह सकता है। अत; गवाहों की उपलब्धता पर शपथ के रद्द होने का कारण यह होगा कि गवाहों की

उपस्थिति में काज़ी के लिए शपथ दिलवाना संभव नहीं रहेगा। इस पर विचार की आवश्यकता है।" [समाप्त]

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) अल्लामा शामी का यह कहना कि गवाहों की उपस्थिति में शपथ दिलवाना संभव है, कैसे सही हो सकता है, जबकि वादी के पास यह विकल्प है कि वह गवाह पेश करने के बजाय इनकार करने वाले ऋणी से शपथ दिलवाए? इसलिए, शपथ को 'असंभव' कहना सही है।

---

1. दुर्र अल-मुख्तार, खाने, पीने, पहनने और बोलने में शपथ का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/304
2. रद अल-मुह्तार, खाने, पीने, पहनने और बोलने में शपथ का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 3/106

را گواہان بدست آمدند یمین ساقط شود کہ بدلالت حال متنقید بحال انکار وعدم وجدان شہود بود۔ در در مختارست حلف ان یجرہ الی باب القاضی و یحلفہ فاعترف الخصم او ظہر شہود سقط الیمین لتقییدہ من جھۃ المعنی بحال انکارہ اھ قال الشامي لکن ھذا التعلیل لا یظہر بالنسبۃ الی قولہ او ظہر شہود فانہ بظہور الشہود لم یزل الانکار بل العلۃ فیہ انہ بعد ظہور الشہود لا یمکن التحلیف تأمل اہ اقول : لہ ان لا یستشہد ھم ویطلب حلفہ فکیف لا یمکن کما یوھمہ قول العلامۃ لا یمکن التحلیف فالاولی ان یقال لتقیدہ بانکارہ وعدم وجدان الشہود اذ لا حلف علی مقر ولا مع بینۃ شہدت فی الدر

اور وہاں تجھ سے قسم لوں گا تو اس کی قسم کے بعد مدیون و مقروض شخص نے قرضے کا اعتراف کر لیا یا قرض خواہ کو گواہ مل گئے، تو قرض خواہ کی قسم ساقط ہو جائے گی، کیونکہ حال کی دلالت سے وہ قسم انکار اور گواہوں کے نہ ہونے کی حالت میں مخصوص قرار پائے گی۔ در مختار میں ہے کہ قرض خواہ نے قسم کھائی کہ میں تجھے قاضی کے دربار میں پیش کرکے تجھ سے قسم دلاؤں گا تو اس دھمکی پر مقروض نے قرض کا اقرار کر لیا یا اس کو گواہ مل گئے، تو قسم ساقط ہو جائیگی کیونکہ قسم کھانے والے کی یہ قسم مقروض کے انکار کے ساتھ مقید قرار پائے گی اھ ، اس پر علامہ شامی نے فرمایا کہ اس وجہ اور علت کا تعلق صرف مقروض کے انکار سے ہے، گواہوں کے دستیاب ہونے کی بات سے نہ ہوگا کیونکہ گواہوں کے دستیابی کے باوجود انکار باقی رہ سکتا ہے، تو گواہوں کی دستیابی پر قسم کے ساقط ہونے کی علت یہ ہو گی کہ گواہوں کی موجودگی میں قاضی کے ہاں قسم دلانا ممکن نہ رہے گا، اس میں غور چاہئے اھ اقول: (میں کہتا ہوں) علامہ شامی کا فرمانا کہ گواہوں کی موجودگی میں قسم دلانا ممکن ہے کیسے

صحیح ہو سکتا ہے جبکہ مدعی کو اختیار ہے کہ وہ گواہ پیش کرنے کی بجائے مقروض منکر کو قسم دلائے، لہذا قسم کو ناممکن کہنا درست

---

۱ در مختار باب اليمين في الاكل والشرب واللبس والكلام مطبع مجتبائی دہلی ۳۰۴/۱ ۲ ردالمحتار باب اليمين في الاكل والشرب واللبس والكلام داراحياء التراث العربي بيروت ۱۰۶/۳

(Left Column - Arabic/Urdu mixed text): From al-Bahr: The oath is like a substitute for evidence; when the original (evidence) arrives, the ruling of the substitute ends. [1] The claimant is not satisfied with the denier's oath as long as he is capable of producing witnesses, for fear that he (the denier) might swear an oath and thus his (the claimant's) property would be lost. Thus, it is restricted by custom. I say: This falling away (of the oath) is not because fulfillment is inconceivable... If you say, isn't it stated in al-Durr: "The claimant said: 'I have evidence present in the city,' and he sought the oath of his opponent; he (the opponent) shall not swear, contrary to their (the disciples') opinion. Even if (the evidence) is present in the court of judgment, he shall not swear by consensus, as stated by Ibn Malak." [2] I say: Is it not that both bringing (witnesses) and informing (the judge) are in his hands? For witnesses do not come unless they are brought, and the judge does not know he has evidence in the city unless he informs him. So the possibility exists, undoubtedly. Firstly, because the oath is absolute, its negation is not harmed by...

(Right Column - Urdu text): No, rather it was better to say that it (the oath) will be considered restricted by the denial and the unavailability of witnesses, because upon admission or upon the testimony of witnesses, there remains no need for an oath. It is quoted from al-Bahr in Durr al-Mukhtar that the oath becomes a substitute for testimony; so when the original is obtained, there is no need for the substitute (Ah). Nor does the rightful owner agree to have an oath administered in the presence of witnesses because it is possible that the debtor might take a false oath and thus his loan would be lost. Therefore, customarily, this oath will be considered restricted to both conditions (denial and lack of witnesses). I say: (I say that) this dropping of the oath in the presence of witnesses is not because fulfilling the oath is ultimately inconceivable, such that it would end upon the impossibility of fulfillment. If one were to object: Is it not present in Durr al-Mukhtar that when a claimant says to the judge, "I have witnesses, and they are present in the city," and in this case, the claimant demands an oath from his opponent, then according to Imam Azam (may Allah Almighty have mercy on him), the judge will not administer the oath to the opponent. The position of the Sahabayn (the two companions/disciples) is against this. And if the claimant's witnesses are present in the judge's assembly, then by consensus, the oath will not be taken, according to Ibn Malak (Ah). (Thus, the possibility of administering an oath being removed will cause the oath to drop). I say:

(I say) is bringing the witnesses and [informing] the judge of the presence of witnesses...

(Footnotes): 1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Da'wa, Matba' Mujtabai Delhi, 2/118 2. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Da'wa, Matba' Mujtabai Delhi, 2/119

(बायां कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रित पाठ): अल-बहर से: शपथ साक्ष्य के विकल्प के समान है; जब मूल (साक्ष्य) आ जाता है, तो विकल्प का शासन समाप्त हो जाता है। [1] दावेदार तब तक इनकार करने वाले की शपथ से संतुष्ट नहीं होता जब तक वह गवाह पेश करने में सक्षम है, इस डर से कि वह (इनकार करने वाला) शपथ ले सकता है और इस प्रकार उसकी (दावेदार की) संपत्ति खो जाएगी। इस प्रकार, यह प्रथा द्वारा प्रतिबंधित है। मैं कहता हूँ: यह (शपथ का) गिरना इसलिए नहीं है क्योंकि पूर्ति अकल्पनीय है... यदि आप कहें, क्या अल-दुर्र में यह नहीं कहा गया है: "दावेदार ने कहा: 'मेरे पास शहर में साक्ष्य मौजूद है,' और उसने अपने प्रतिद्वंद्वी की शपथ मांगी; वह (प्रतिद्वंद्वी) शपथ नहीं लेगा, उनके(शिष्यों के) मत के विपरीत। भले ही (साक्ष्य) निर्णय की अदालत में मौजूद हो, सर्वसम्मति से वह शपथ नहीं लेगा, जैसा कि इब्न मलक ने कहा है।" [2] मैं कहता हूँ: क्या यह नहीं है कि (गवाहों को) लाना और (न्यायाधीश को) सूचित करना दोनों उसके हाथों में हैं? क्योंकि गवाह तब तक नहीं आते जब तक उन्हें लाया न जाए, और न्यायाधीश को यह नहीं पता होता कि उसके पास शहर में साक्ष्य हैं जब तक कि वह उसे सूचित न करे। इसलिए संभावना निस्संदेह मौजूद है। पहले, क्योंकि शपथ निरपेक्ष है, इसके निषेध से उसे कोई नुकसान नहीं होता...

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ): नहीं, बल्कि यह कहना बेहतर था कि यह (शपथ) इनकार और गवाहों की अनुपलब्धता द्वारा प्रतिबंधित मानी जाएगी, क्योंकि स्वीकारोक्ति पर या गवाहों की गवाही पर शपथ की कोई आवश्यकता नहीं रहती। दुर्रे मुख्तार में बहर से उद्धृत किया गया है कि शपथ गवाही का विकल्प बन जाती है; इसलिए जब मूल प्राप्त हो जाता है, तो विकल्प की कोई आवश्यकता नहीं रहती (अह)। न ही अधिकार वाला व्यक्ति गवाहों की उपस्थिति में शपथ दिलाने पर सहमत होता है क्योंकि यह संभव है कि ऋणी झूठी शपथ ले ले और इस प्रकार उसका ऋण नष्ट हो जाए। इसलिए, प्रथागत रूप से, यह शपथ दोनों स्थितियों (इनकार और गवाहों की कमी) तक सीमित मानी जाएगी। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ कि) गवाहों की उपस्थिति में शपथ का यह गिरना इसलिए नहीं है क्योंकि अंततः शपथ का पूरा होना अकल्पनीय है, कि यह पूरा होने की असंभवता पर समाप्त हो जाएगा। यदि इस पर कोई यह आपत्ति करे: क्या दुर्रे मुख्तार में यह मौजूद नहीं है कि जब न्यायाधीश के पास दावेदार यह कहे कि "मेरे गवाह हैं, और वे शहर में मौजूद हैं," और इस स्थिति में दावेदार अपने प्रतिद्वंद्वी से शपथ की मांग करे, तो इमाम आज़म (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) के अनुसार न्यायाधीश प्रतिद्वंद्वी को शपथ नहीं दिलाएगा। साहेबैन (दो साथियों) का मत इसके विपरीत है। और यदि दावेदार

के गवाह न्यायाधीश की सभा में उपस्थित हों, तो सर्वसम्मति से शपथ नहीं ली जाएगी, इब्न मलक (अह) के अनुसार। (तो शपथ दिलाने की संभावना समाप्त होने से शपथ गिर जाएगी)। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) क्या गवाहों को उपस्थित करना और न्यायाधीश को गवाहों की उपस्थिति [के बारे में सूचित करना]...

(पादलेख): 1. दुर्रे मुख्तार, किताब अद-दावा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/118 2. दुर्रे मुख्तार, किताब अद-दावा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/119

(بایاں کالم): عن البحر الیمین کالخلف عن البینۃ فاذاجاء الاصل انتھی حکم الخلف اھ[1] ولایرضی الطالب بحلف المنکر مادام یقدر علی الشھود مخافۃ ان یحلف فیذھب مالہ فیتقید بھا عرفا۔ اقول: ولیس ھذا السقوط لعدم تصور البر بقاء فان قلت الیس فی الدر قال المدعی لی بینۃ حاضرۃ فی المصر و طلب یمین خصمہ لایحلف خلافا لھما ولو حاضرۃ فی مجلس الحکم لم یحلف اتفاقا ابن ملک اھ[2]۔ قلت الیس ان الاحضار والاخبار کلیھما بیدہ فان الشھود لا یحضرون مالم یحضروا ولا یعلم القاضی ان لہ بینۃ فی المصر مالم یخبر فالامکان حاصل لاشک اما اولا فلان الیمین مطلقۃ فلا یضرھا انتفاء

(دایاں کالم): نہیں بلکہ یوں کہنا بہتر تھا کہ وہ قسم انکار اور گواہوں کے دستیاب نہ ہونے سے مقید قرار پائے گی، کیونکہ اقرار کرلینے پر اور گواہوں کی شہادت پر قسم کی ضرورت نہیں رہتی۔ در مختار میں بحر سے منقول ہے کہ قسم، گواہی کا خلیفہ بنتی ہے تو جب اصل حاصل ہوجائے تو خلیفہ کی ضرورت نہیں رہتی اھ، اور نہ ہی حق والا گواہوں کی موجودگی میں قسم دلانے پر راضی ہوتا ہے کیونکہ ہو سکتا ہے کہ مقروض جھوٹی قسم اٹھادے تو اس کا قرض ضائع ہوجائے، لہذا عرفاً یہ قسم دونوں حالوں (انکار اور گواہ نہ ہونے) سے مقید قرار پائے گی۔ اقول: (میں کہتا ہوں کہ) گواہوں کی موجودگی میں قسم کا یہ سقوط اس لئے نہیں کہ بالآخر قسم کا پورا ہونا متصور نہیں ہوسکتا کہ قسم کا پورا ہونا ناممکن ہو جانے پر ختم ہوجائے۔ اس پر اگر تو یہ اعتراض کرے کہ کیادر مختار میں یہ موجود نہیں کہ جب قاضی کے ہاں مدعی یہ کہے کہ میرے گواہ ہیں لیکن وہ شہر میں موجود ہیں اور مدعی اس صورت میں اپنے مخالف سے قسم کا مطالبہ کرے، تو امام اعظم رحمہ اللہ تعالٰی کے نزدیک قاضی مخالف کو قسم نہ دلائے گا۔ صاحبین کا مسلک اس کے خلاف ہے، اور اگر مدعی کے گواہ قاضی کی مجلس میں حاضر ہوں تو بالا تفاق قسم نہ لی

جائیگی، ابن ملک اھ (تو قسم دلانے کا احتمال ختم ہو جانے سے قسم ساقط ہو جائیگی) قلت (میں کہتا ہوں) کیا گواہوں کو حاضر کرنا اور قاضی کو گواہوں کی موجودگی

(فٹ نوٹس): [1] در مختار کتاب الدعوی مطبع مجتبائی دہلی ۱۱۸/۲ [2] در مختار کتاب الدعوی مطبع مجتبائی دہلی ۱۱۹/۲

[Left Column] Considering the fulfillment (of the oath) later. Secondly, it is conceivable either regarding the witnesses as we mentioned, or regarding the confession. This is because one who confesses before the claimant is not obliged to confess before the judge; perhaps when he is brought before him, he denies it, so he (the judge) makes him take an oath. Thus, the possibility is definitely attained, so there is no waiving (of the oath) except for the customary restriction. End. [Footnote 1: This is what I wrote on it]. Then I saw Imam Abu Bakr Muhammad bin Abi al-Mufakhir bin Abd al-Rashid al-Kirmani mentioning it in 'Jawahir al-Fatawa', Book of Faith, Second Chapter, from the 'Fatawa' of Imam Jamal al-Din al-Bazdawi. I saw that he provided several benefits, including: reasoning by circumstantial evidence annexed to the issue of a ruler administering an oath to know every wrongdoer; and including the restriction by denial in the case of confession; and including the waiving of the oath upon the appearance of witnesses, in which there is disagreement; and if...

[Right Column] ...giving information about them is not within the claimant's power? Indeed, it is within his power because as long as he does not bring the witnesses, they will not be present. Similarly, as long as he does not inform the judge about the presence of witnesses, the judge will not know that he has witnesses. In any case, despite the presence of witnesses, the possibility of the judge taking an oath from the defendant remains. And why? Because the mentioned oath is absolute; if its fulfillment is not conceivable until now, it is not harmful to it. Secondly, because the fulfillment of the oath is still possible. We have mentioned the reason in the case of the presence of witnesses, and in the case of the defendant's confession because it is possible that the defendant confesses to the claimant, but then it is not necessary that he also confesses in the judge's assembly. Because it is possible that when the defendant is presented before the judge, he denies it; in this case, the judge taking an oath from him is conceivable. So it was known that in any case, the possibility of an oath still remains. Therefore, the waiving of the oath here will only be due to the customary restriction, not because the possibility of taking the oath has ended. Here ends my annotation. After this, I found Imam Abu Bakr Muhammad bin al-Mufakhir bin Abdul Rashid al-Kirmani mentioning in 'Jawahir al-Fatawa', Book of Faith, second chapter, while citing the 'Fatawa' of Imam Jamal al-Din al-Bazdawi, in which he found many...

[Footnote 1]: Jadd al-Muhtar 'ala Radd al-Muhtar

फतावी रज़विय्या | जिल्द तेरहवीं | पृष्ठ ५४०

[बायाँ कॉलम] (शपथ की) पूर्ति पर बाद में विचार करना। दूसरे, यह कल्पना करने योग्य है, या तो गवाहों के संबंध में जैसा कि हमने उल्लेख किया है, या स्वीकारोक्ति (इक़रार) के संबंध में। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो व्यक्ति दावेदार के सामने स्वीकार करता है, वह न्यायाधीश के सामने स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है; शायद जब उसे न्यायाधीश के सामने लाया जाए, तो वह इनकार कर दे, इसलिए वह (न्यायाधीश) उसे शपथ दिलाएगा। इस प्रकार, संभावना निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती है, इसलिए प्रथागत प्रतिबंध के अलावा कोई छूट (शपथ की समाप्ति) नहीं है। समाप्त। [फुटनोट 1: यह वही है जो मैंने इस पर लिखा था]। फिर मैंने इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन अबी अल-मुफाखिर बिन अब्दुल रशीद अल-किरमानी को इसे 'जवाहर अल-फतवा', आस्था की पुस्तक, दूसरे अध्याय में, इमाम जमाल अल-दीन अल-बजदवी के'फतवा' से उद्धृत करते हुए देखा। मैंने देखा कि उन्होंने कई लाभ प्रदान किए, जिनमें शामिल हैं: परिस्थितिजन्य साक्ष्य द्वारा तर्क देना जो इस मुद्दे से जुड़ा है कि एक शासक हर अपराधी को जानने के लिए शपथ दिलाता है; और स्वीकारोक्ति के मामले में इनकार द्वारा प्रतिबंध शामिल है; और गवाहों के उपस्थित होने पर शपथ की समाप्ति शामिल है, जिसमें असहमति है; और यदि...

[दायाँ कॉलम] ...उनके बारे में जानकारी देना दावेदार की शक्ति में नहीं है? वास्तव में, यह उसकी शक्ति में है क्योंकि जब तक वह गवाहों को नहीं लाता, वे उपस्थित नहीं होंगे। इसी तरह, जब तक वह न्यायाधीश को गवाहों की उपस्थिति के बारे में सूचित नहीं करता, न्यायाधीश को पता नहीं चलेगा कि उसके पास गवाह हैं। किसी भी मामले में, गवाहों की उपस्थिति के बावजूद, प्रतिवादी से शपथ लेने की न्यायाधीश की संभावना बनी रहती है। और क्यों? क्योंकि उल्लिखित शपथ पूर्ण है; यदि इसकी पूर्ति अभी तक कल्पनीय नहीं है, तो यह इसके लिए हानिकारक नहीं है। दूसरे, क्योंकि शपथ की पूर्ति अभी भी संभव है। हमने गवाहों की उपस्थिति के मामले में कारण का उल्लेख किया है, और प्रतिवादी की स्वीकारोक्ति के मामले में भी क्योंकि यह संभव है कि प्रतिवादी दावेदार के सामने स्वीकार कर ले, लेकिन फिर यह आवश्यक नहीं है कि वह न्यायाधीश की सभा में भी स्वीकार करे। क्योंकि यह संभव है कि जब प्रतिवादी को न्यायाधीश के सामने पेश किया जाए, तो वह इनकार कर दे; इस मामले में, न्यायाधीश द्वारा उससे शपथ लेना कल्पनीय है। तो यह ज्ञात हुआ कि किसी भी स्थिति में, शपथ की संभावना अभी भी बनी हुई है। इसलिए, यहाँ शपथ की समाप्ति केवल प्रथागत प्रतिबंध के कारण होगी, न कि शपथ लेने की संभावना समाप्त होने के कारण। यहाँ मेरी टिप्पणी

समाप्त होती है। इसके बाद, मैंने इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन अल-मुफाखिर बिन अब्दुल रशीद अल-किरमानी को 'जवाहर अल-फतवा', आस्था की पुस्तक, दूसरे अध्याय में इमाम जमाल अल-दीन अल-बजदवी के'फतवा' का हवाला देते हुए पाया, जिसमें उन्होंने बहुत कुछ पाया...

[फुटनोट 1]: जद्द अल-मुह्तार अला रद अल-मुह्तार

[بایاں کالم] تصور البر فیما بعد واما ثانیا فلانه متصور اما فی الشهود فلما ذکرنا واما فی الاقرار فلان من اقر عند الطالب لا یجب ان یقر عند القاضی فلعله اذا اجر الیہ انکر فیحلفه فالتصور حاصل قطعا فلا سقوط الالتقیید العرفی اھ ۱ ما کتبت علیہ۔ ثم رایت الامام ابا بکر محمد بن ابی المفاخر بن عبد الرشید الکرمانی ذکرہ فی جواھر الفتاوی کتاب الایمان الباب الثانی فتاوی الامام جمال الدین البزدوی فرأیته افاد فوائد منها. التعلیل بدلالة الحال ملحقاله بمسألة تحلیف الوالی لیعلمنه بکل داعر ومنها ان التقیید بالانکار فی صورة الاقرار ومنها ان فی سقوط الیمین بظهور الشهود خلافا و ان

[دایاں کالم] کی خبر دینا مدعی کے اختیار میں نہیں ہے؟ ضرور اس کے اختیار میں ہے کیونکہ جب تک وہ گواہوں کو حاضر نہ کرے وہ پیش نہ ہوں گے اور یوں ہی جب تک وہ قاضی کو گواہوں کی موجودگی کی خبر نہ دے قاضی کو معلوم نہ ہو سکے گا کہ اس کے پاس گواہ ہیں ، تو بہر صورت گواہوں کی موجودگی کے باوجود مدعی علیہ سے قسم لینے کا امکان قاضی کے ہاں باقی ہے ، اور گا تو اس لئے کہ مذکورہ قسم مطلق ہے تو تاحال قسم پورا ہونا متصور نہ ہو تو اس کے لئے کچھ مضر نہیں ہے ، اور ثانیاً اس لئے کہ قسم کا پورا ہونا ابھی ممکن ہے گواہوں کی موجودگی کی صورت میں تو ہم نے وجہ ذکر کر دی ، اور مدعی علیہ کے اقرار کی صورت میں اس لئے کہ ہو سکتا ہے کہ مدعی علیہ ، مدعی کے پاس تو اقرار کرتا ہو تو پھر ضروری نہیں کہ وہ قاضی کی مجلس میں بھی اقرار کرے کیونکہ ہو سکتا ہے کہ مدعی علیہ کو جب قاضی کے ہاں پیش کیا جائے تو وہ انکار کر دے تو اس صورت میں قاضی کا اس سے قسم لینا متصور ہے تو معلوم ہوا کہ بہر صورت ابھی قسم کا تصور باقی ہے لہذا یہاں قسم کا سقوط صرف عرفی قید کی وجہ سے ہو گا نہ کہ حلف کا امکان ختم ہو جانے سے قسم کا سقوط ہوگا اس پر میرا حاشیہ ختم ہوا۔

اس کے بعد میں نے امام ابوبکر محمد بن المفاخر بن عبدالرشید کرمانی کو جواہر الفتاوی کی کتاب الایمان کے دوسرے باب ۔ امام جمال الدین بزدوی کے فتاویٰ میں ذکر کرتے ہوئے پایا جس میں ان کو بہت سے

۱ جد المختار علی رد المحتار

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

The fatwa is on the dropping (of the oath). Here is the text of his (may Allah have mercy on him): A man claimed against another for a certain amount of wheat. The defendant denied it. Then the claimant swore by the divorce of his wife that he would drag him to the judge's door and make him swear an oath on it. Subsequently, the defendant admitted what was claimed. Thus, the need for the oath was dispensed with, and the claimant is considered to have fulfilled his oath. This is because the oath was based on making him swear as long as he is a denier; once he admits, the denial ceases. This is not like a case where someone says, "I will surely drink the water in this jug," and then the water is spilled; in that case, the person breaks the oath because the oath was regarding the water and he did not drink it. However, here the oath was regarding the denial. Once the denial no longer exists, the oath is also dropped. It is like someone who swore to the ruler that he would inform him of every troublemaker who enters the city, then the ruler was removed from office; his oath is dropped because he swore to inform him as long as he is (the ruler).

Observing the mentioned points of benefit, one benefit is that in the case where the governor of a city makes someone swear to inform him about every troublemaker, the reason for the oath's persistence was based on the governor's remaining in authority. The second benefit is that the claimant's oath being restricted by the denial is only in the case of the defendant's confession, not in the case of witnesses (as discussed above). The third benefit: the dropping of the oath in the presence of witnesses is a matter of difference, while the fatwa is that it will be dropped. Imam Jamaluddin's text is as follows: A person claimed against another that he owes a certain amount of wheat, and the defendant denied it. So the claimant swore by the divorce of his wife that he would present him in the judge's court and make him swear an oath. Following this threat, the defendant admitted to the claim. Now there will be no need to take him to the judge to make him swear, and the claimant who took the oath will be free from it because his oath to make him swear was contingent on the defendant's denial. When he confessed, the denial ended. And this case is not like someone swearing, "I will surely drink the water from this jug," and after the oath, the water from the jug is poured away; in that case, the oath would be broken because this oath was related to drinking the water from the jug and he could not drink it. But here, the oath was based on the denial which ended, so the oath also ended, just as a city governor gives someone an oath to [inform him about] those entering the city...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

फ़तवा (शपथ के) साक़ित (ख़त्म) होने पर है। यहाँ उनका (अल्लाह उन पर रहम करे) इबारत है: एक आदमी ने दूसरे पर गेंहू की एक निश्चित मात्रा का दावा किया। प्रतिवादी ने इनकार कर दिया। तब दावेदार ने अपनी पत्नी के तलाक़ की शपथ ली कि वह उसे न्यायाधीश (काज़ी) के दरवाज़े पर ले जाएगा और उससे इस पर शपथ दिलवाएगा। बाद में, प्रतिवादी ने दावे को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, शपथ की आवश्यकता समाप्त हो गई और दावेदार ने अपनी शपथ पूरी कर ली। ऐसा इसलिए है क्योंकि शपथ तब तक शपथ दिलवाने पर आधारित थी जब तक वह इनकार करने वाला है; एक बार जब वह स्वीकार कर लेता है, तो इनकार समाप्त हो जाता है। यह उस मामले जैसा नहीं है जहाँ कोई कहता है, "मैं निश्चित रूप से इस जग का पानी पियूँगा," और फिर पानी गिर जाता है; उस स्थिति में, व्यक्ति शपथ तोड़ता है क्योंकि शपथ पानी के संबंध में थी और उसने इसे नहीं पिया। हालाँकि, यहाँ शपथ इनकार के संबंध में थी। एक बार जब इनकार नहीं रहता है, तो शपथ भी गिर जाती है। यह उस व्यक्ति की तरह है जिसने शासक को शपथ दी थी कि वह उसे शहर में प्रवेश करने वाले हर उपद्रवी के बारे में सूचित करेगा, फिर शासक को पद से हटा दिया गया; उसकी शपथ गिर जाती है क्योंकि उसने उसे सूचित करने की शपथ ली थी जब तक वह (शासक) है।

उल्लेखित लाभों को देखते हुए, एक लाभ यह है कि शहर के गवर्नर द्वारा किसी को शहर में प्रवेश करने वाले प्रत्येक उपद्रवी के बारे में सूचित करने की शपथ देने के मुद्दे में, शपथ के बने रहने का कारण गवर्नर की सत्ता में बने रहने को बनाया गया था। दूसरा लाभ यह है कि दावेदार की शपथ का इनकार तक सीमित होना केवल प्रतिवादी के कबूलनामे के मामले में है, गवाहों के मामले में नहीं (जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है)। तीसरा लाभ: गवाहों के मामले में शपथ का गिरना मतभेद का विषय है, जबकि फ़तवा यह है कि यह गिर जाएगा। इमाम जमालुद्दीन का कथन इस प्रकार है: एक व्यक्ति ने दूसरे पर दावा किया कि उस पर हमारा इतना गेंहू बकाया है। प्रतिवादी ने इनकार कर दिया। तो दावेदार ने अपनी पत्नी के तलाक़ की शपथ ली कि मैं उसे काज़ी की अदालत में पेश करूँगा और उससे शपथ दिलवाऊँगा। इस धमकी के बाद, प्रतिवादी ने दावे को स्वीकार कर लिया। अब काज़ी के पास ले जाकर शपथ दिलवाने की ज़रूरत नहीं होगी, और शपथ लेने वाला दावेदार अपनी शपथ से मुक्त हो जाएगा क्योंकि उसकी शपथ दिलवाने की शपथ प्रतिवादी के इनकार पर आधारित थी। जब उसने स्वीकार कर लिया, तो इनकार समाप्त हो गया। यह मामला उस व्यक्ति जैसा नहीं है जो शपथ लेता है, "मैं निश्चित रूप से इस जग से पानी पियूँगा," और शपथ के बाद, जग

का पानी फेंक दिया जाता है; उस स्थिति में, शपथ टूट जाएगी क्योंकि यह शपथ जग का पानी पीने से संबंधित थी और वह उसे पी नहीं सका। लेकिन यहाँ, शपथ इनकार पर आधारित थी जो समाप्त हो गई, इसलिए शपथ भी समाप्त हो गई, जैसे कि शहर का हाकिम किसी को शपथ दे कि तू मुझे शहर में दाखिल होने वाले...

الفتوی علی السقوط و ھذا نصہ رحمہ اللہ تعالٰی رجل ادعی علی آخر کذا منا حنطۃ فأنکر المدعی علیہ فحلفہ المدعی بطلاق امرأتہ ان یجرہ الی باب القاضی ویحلفہ علی ذلک ثم ان المدعی علیہ اقربما ادعی استغنی عن الیمین ویکون بارا فی یمینہ لان الحلف علی ان یحلفہ مادام منکر افاذا اقر فات الانکار ولیس ھذا کما لو قال لاشربن الماء الذي في هذا الكوز فأريق الماء انه يحنث لان اليمين هناك علی الشراب ولم یشربہ وھھنا الیمین علی الانکار فلم تبق الیمین وصار کانہ حلف مع السلطان ان یعلمنہ بکل داعر دخل المدینۃ ثم عزل السلطان سقط یمینہ لانہ حلف علی ان یعلمہ مادام

فائدے ذکر کرتے ہوئے دیکھا، جن میں ایک فائدہ یہ کہ، والیِ شہر کا کسی کو قسم دینا کہ وہ اسے ہر فسادی کی اطلاع دے گا، والے مسئلہ میں، قسم کا والی کی ولایت باقی رہنے کی علت، دلالتِ حال کو بنایا۔ دوسرا فائدہ، مدعی کی قسم کا انکار سے مقید ہونا صرف مدعی علیہ کے اقرار کی صورت میں ہے گواہوں کی صورت میں نہیں (جیسا کہ اوپر بحث گزری)۔ تیسرا فائدہ گواہوں کی صورت میں قسم کا ساقط ہونا مختلف فیہ ہے جبکہ فتوٰی یہ ہے کہ ساقط ہوجائے گی۔ امام جمال الدین کی عبارت یوں ہے کہ ایک شخص نے دوسرے پر دعوٰی کیا کہ اس کے ذمے ہماری اتنی گندم ہے تو مدعی علیہ نے انکار کر دیا تو اس پر مدعی نے اپنی بیوی کی طلاق کی قسم کھائی کہ میں اس کو قاضی کے دربار میں پیش کرکے اس کو قسم دلاؤں گا، تو اس دھمکی کے بعد مدعی علیہ نے اس کے دعوٰی کا اقرار کر لیا تو اب قاضی کے پاس لے جاکر قسم دلانے کی ضرورت نہ ہوگی اور قسم کھانے والا مدعی اپنی قسم سے بری ہو جائے گا کیونکہ اس کی قسم دلانے کی قسم اس مدعی علیہ کے انکار پر تھی، تو جب اس نے اقرار کرلیا تو انکار ختم ہو گیا۔ اور یہ معاملہ ایسا نہیں کہ کوئی قسم کھائے کہ میں اس کوزے کے پانی کو ضرور نوش کروں گا، تو قسم کے

بعد کوزے کا پانی گرا دیا گیا ہو، تو قسم ٹوٹ جائے گی، کیونکہ یہ قسم کوزے کے پانی کو پینے سے متعلق تھی تو وہ اسے پی نہ سکا لیکن یہاں قسم انکار پر مبنی تھی جو ختم ہو گیا، تو قسم بھی ختم ہو گئی، جیسا کہ حاکمِ شہر کسی کو قسم دے کہ تو مجھے شہر میں داخل ہونے والے

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Main Content] (Arabic Column Translation): He is the ruler in the city, and likewise here, based on the evidence that if he took him to the judge, the judge would not make him swear an oath. Thus, there is no benefit in taking him to the judge. This is how 'Ain-Ha (the commentator) mentioned it. This answer aligns with the opinion of Qadi Abu al-Haytham and differs from the opinion of Qadi Imam al-Sa'idi. He mentioned this issue in his Fatawa, formulating it as follows: Instead of the defendant's confession, it appeared that witnesses were present. Qadi Imam Abu al-Haytham said the oath is nullified, while al-Sa'idi said it is not nullified, rather his divorce becomes effective. Thus, our teacher Jamal al-Din's answer matches that of Qadi Abu al-Haytham, which is the correct position upon which the fatwa is based. ^1 (End). (3) He made the debtor swear an oath: "Pay my right on such and such a day, take my hand, and do not go out without my permission..."

(Urdu Column Text): ...will report every troublemaker. After that, if that ruler is dismissed, then the oath given by him will also end, because here also the oath meant that reports must be given as long as my authority lasts. Here too, the situation is the same because if the claimant now presents the defendant before the judge, the judge will not take an oath from him. Therefore, there is no longer any benefit in taking him to the judge. Imam Jamal al-Din al-Bazdawi has mentioned it just like this. This answer of Imam Jamal al-Din al-Bazdawi is in accordance with the statement of Qadi Abu al-Haytham and contrary to the statement of Qadi Imam al-Sa'idi. This is because Imam al-Sa'idi mentioned this issue in his Fatawa and instead of the defendant's confession, he mentioned the presence of witnesses. While Qadi Imam Abu al-Haytham said the oath would be waived, Imam al-Sa'idi said the oath would not be waived, rather, upon finding witnesses present, his wife would be divorced according to the claimant's oath. Since our Shaykh Jamal al-Din al-Bazdawi's answer matches Qadi Abu al-Haytham's answer, it is correct, and the fatwa is based on it. (End). (3) Someone made his debtor swear an oath: "You will give me my loan on such and such a day and you will catch my hand..."

[Bottom Section Translation] (Note): His saying "This is how he mentioned it" means Imam Jamal al-Din al-Bazdawi mentioned it. And from here to the end of what we have quoted is the word of Imam al-Kirmani, who is the compiler of those Fatawa. His statement is mentioned like this, meaning Imam Jamal al-Din al-Bazdawi mentioned it. And from here to the end, the text we have quoted is the discourse of Imam al-Kirmani, who is the compiler of this Fatawa. 12 (T).

[Footnote Translation] 1. Jawahir al-Fatawa, Book of Faith.

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[मुख्य सामग्री] (अरबी स्तंभ अनुवाद): वह शहर का शासक है, और यहाँ भी वैसा ही है, इस प्रमाण के आधार पर कि यदि वह उसे न्यायाधीश के पास ले जाता, तो न्यायाधीश उसे शपथ नहीं दिलाता। इस प्रकार, उसे न्यायाधीश के पास ले जाने का कोई लाभ नहीं है। ऐन-हा (टीकाकार) ने इसे इसी तरह उल्लेख किया है। यह उत्तर काजी अबू अल-हैथम की राय के अनुरूप है और काजी इमाम अल-सादी की राय से भिन्न है। उन्होंने अपने फतावा में इस मुद्दे का उल्लेख किया, इसे इस प्रकार तैयार किया: प्रतिवादी के इकबालिया बयान के बजाय, यह सामने आया कि गवाह मौजूद थे। काजी इमाम अबू अल-हैथम ने कहा कि शपथ रद्द कर दी गई है, जबकि अल-सादी ने कहा कि यह रद्द नहीं हुई है, बल्कि उसका तलाक प्रभावी हो जाता है। इस प्रकार, हमारे शिक्षक जमाल अल-दीन का उत्तर काजी अबू अल-हैथम के उत्तर से मेल खाता है, जो सही स्थिति है जिस पर फतवा आधारित है। ^1 (समाप्त)। (3) उसने ऋणी को शपथ दिलाई: "फलां दिन मेरा अधिकार चुकाओ, मेरा हाथ पकड़ो, और मेरी अनुमति के बिना बाहर न जाओ..."

(उर्दू स्तंभ पाठ): ...हर उपद्रवी की रिपोर्ट करेगा। उसके बाद, यदि वह शासक बर्खास्त कर दिया जाता है, तो उसके द्वारा दी गई शपथ भी समाप्त हो जाएगी, क्योंकि यहाँ भी शपथ का अर्थ यह था कि जब तक मेरा अधिकार है तब तक रिपोर्ट देनी होगी। यहाँ भी स्थिति वैसी ही है क्योंकि यदि दावेदार अब प्रतिवादी को न्यायाधीश के सामने पेश करता है, तो न्यायाधीश उससे शपथ नहीं लेगा। इसलिए, अब उसे न्यायाधीश के पास ले जाने का कोई लाभ नहीं रह गया है। इमाम जमाल अल-दीन अल-बजदवी ने इसका उल्लेख इसी तरह किया है। इमाम जमाल अल-दीन अल-बजदवी का यह उत्तर काजी अबू अल-हैथम के बयान के अनुसार है और काजी इमाम अल-सादी के बयान के विपरीत है। इसका कारण यह है कि इमाम अल-सादी ने अपने फतावा में इस मुद्दे का उल्लेख किया है और प्रतिवादी के इकबालिया बयान के बजाय गवाहों की उपस्थिति का उल्लेख किया है। जबकि काजी इमाम अबू अल-हैथम ने कहा कि शपथ माफ कर दी जाएगी, इमाम अल-सादी ने कहा कि शपथ माफ नहीं की जाएगी, बल्कि गवाहों की उपस्थिति मिलने पर, दावेदार की शपथ के अनुसार उसकी पत्नी को तलाक हो जाएगा। चूंकि हमारे शेख जमाल अल-दीन अल-बजदवी का उत्तर काजी अबू अल-हैथम के उत्तर से मेल खाता है, इसलिए यह सही है और फतवा इसी पर आधारित है। (समाप्त)। (3) किसी ने अपने ऋणी को शपथ दिलाई: "तुम मुझे फलां दिन मेरा ऋण दोगे और तुम मेरा हाथ पकड़ोगे..."

[निचला खंड अनुवाद] (नोट): उनका यह कहना कि "इसे इसी तरह उल्लेख किया गया है" का अर्थ है कि इमाम जमाल अल-दीन अल-बजदवी ने इसका उल्लेख किया है। और यहाँ से हमने जो उद्धृत किया है उसके अंत तक इमाम अल-किरमानी के शब्द हैं, जो उन फतावा के संकलक हैं। उनका कथन इसी तरह उल्लेखित है, अर्थात इमाम जमाल अल-दीन अल-बजदवी ने इसका उल्लेख किया है। और यहाँ से अंत तक, हमने जो गद्यांश उद्धृत किया है वह इमाम किरमानी का प्रवचन है, जो इन फतवों के संकलक हैं। 12 (टी)।

[पादलेख अनुवाद] 1. जवाहर अल-फतावा, विश्वास की पुस्तक।

पृष्ठ 542 का 688

[دایاں کالم - اردو]: ہر فسادی کی اطلاع دے گا، اس کے بعد وہ حاکم معزول ہو جائے تو اس کی دی ہوئی قسم بھی ختم ہو جائیگی، کیونکہ یہاں بھی قسم کا مطلب یہ تھا کہ میری ولایت جب تک ہے اس وقت تک اطلاع دینی ہوگی، تو یہاں بھی یہی صورت ہے کیونکہ مدعی اگر مدعی علیہ کو اب قاضی کے ہاں پیش کرے تو قاضی اس سے قسم نہ لے گا اس لئے اب قاضی کے ہاں لے جانے کا فائدہ نہ رہا، اس کو امام جمال الدین بز د وی نے یونہی ذکر فرمایا ہے، یہ امام جمال الدین بزدوی کا جواب قاضی ابوہیثم کے قول کے موافق ہے اور قاضی امام صاعدی کے قول کے مخالف ہے، کیونکہ امام صاعدی نے اس مسئلہ کو اپنے فتاوٰی میں ذکر کیا اور مدعی علیہ کے اعتراف کی بجائے انہوں نے گواہوں کے موجود ہونے، کو ذکر کیا، جبکہ قاضی امام ابوہیثم نے کہا کہ قسم ساقط ہو جائے گی اور امام صاعدی نے کہا کہ قسم ساقط نہ ہوگی بلکہ گواہوں کے موجود پانے پر مدعی کے قسم کے مطابق اس کی بیوی کو طلاق ہو جائے گی، تو جب ہمارے شیخ جمال الدین بزدوی کا جواب قاضی ابوہیثم کے جواب کے موافق ہے تو یہی صحیح ہے اور اسی پر فتوی ہے، اھ (ت) (۳) کسی نے اپنے مقروض کو قسم دی کہ تو مجھے فلاں روز میرا قرض دے گا اور میرا ہاتھ پکڑے گا

[بایاں کالم - عربی]: هو الوالی فی البلد فکذلك هنا بدلیل انه لو حمله الی القاضی لا یحلفه فاذا لا فائدة فی حمله الی القاضی هکذا عه ذکر، وهذا الجواب یوافق قول القاضی ابی الهیثم ویخالف قول القاضی الامام الصاعدی فانه ذکر فی فتاواه هذا المسألة والانه وضع المسألة هکذا ذکر مکان اعتراف المدعی علیه انه ظهر له شهود وقال القاضی الامام ابو الهیثم سقط یمینه وقال الصاعدی لا یسقط بل یقع طلاقه

فاذا جواب شیخنا جمال الدین وافق جواب القاضی ابی الهیثم وهو الصحیح وعلیہ الفتوی ۱ اهـ (۳)

مدیون را سوگند داد فلاں روز حق من دہی و دستم بگیری و بے دستوری من بیرون

[نچلا حصہ - عربی و اردو]: عه: قوله هكذا ذكر ای الامام جمال الدین البزدوی ومن ههنا الی آخر مانقلنا كلام الامام الكرمانی جامع تلك الفتاوی منه۔ اس کا قول یونہی ذکر کیا ہے یعنی امام جمال الدین بزدوی نے ذکر کیا ہے اور یہاں سے آخر تک جو عبارت ہم نے نقل کی ہے وہ امام کرمانی کا کلام ہے جو اس فتاوی کے جامع ہیں ۱۲ امنہ (ت)

[حاشیہ]: 1 جواہر الفتاوی کتاب الایمان

Fatawa Razawiyya Volume 13

...nor let the debtor go out without my consent on the day he pays his debt, and he did not hold his hand and went out without permission, he would not be in breach of his oath because this is customarily restricted to the state of debt. It is in Radd al-Muhtar, in Al-Bazzaziya: He took an oath that he (the debtor) would fulfill his right on such a day, and he (the creditor) would take him by his hand, and he would not leave without his permission. So he paid him on that day, and he did not take him by his hand, and he left without his permission. He is not in breach of his oath because the objective is fulfillment (of the debt). I say: It has been mentioned previously that oaths are based on words, not on objectives, and this objective is not uttered. However, we have previously mentioned that custom (urf) can serve as a specifier, and here it is as such, for custom specifies that with the state of the existence of the debt before fulfillment. This will also be clarified soon from At-Tabyin, ending what is in Ash-Shami. I say: What appears to this weak servant is that there are three oaths here, the last of which is restricted in itself...

...and will not go out without my consent. Then the debtor paid the debt on the same day and went out without holding his hand and without permission, so his oath will not be broken because this oath was due to the debt being outstanding in custom. Thus, upon the completion of the debt, the oath will lapse. It is in Radd al-Muhtar that in Al-Bazzaziya it is stated that the creditor made the debtor swear an oath: "You will give me my right on such a day, and you will hold my hand, and you will not go out without my consent." So the debtor gave him the debt on the same day and went back out without holding his hand and without his consent. The oath will not be broken because the purpose of this oath was to collect the debt. I say: It has passed that the basis of oaths is words. Intentions (purposes) are not the basis, and the mentioned purpose of the oath is not mentioned in words. However, as we have already mentioned that custom creates specification, this is also the same because here also custom has specified this oath with the presence of the debt, that it will be until its payment. Its clarification will soon be described from Tabyin al-Haqa'iq. The statement of Allama Shami in Radd al-Muhtar ends. I say (I mean to say) what is apparent to me, the weak servant, is that in the issue stated here by Radd al-Muhtar, there are three oaths, out of which...

---

1 Radd al-Muhtar, Book of Oaths regarding Eating and Drinking, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 106/3. Page 543 of 688

फतावा रजविया जिल्द 13

...न ही देनदार को मेरे ऋण चुकाने के दिन मेरी अनुमति के बिना बाहर जाने दें, और उसने उसका हाथ नहीं पकड़ा और बिना अनुमति के बाहर चला गया, तो वह अपनी शपथ का उल्लंघन नहीं करेगा क्योंकि यह प्रथागत रूप से ऋण की स्थिति तक सीमित है। रद्द अल-मुह्तार में है, अल-बज्जाज़िया में है: उसने शपथ ली कि वह (देनदार) इस तरह के दिन अपना अधिकार पूरा करेगा, और वह (लेनदार) उसे उसके हाथ से पकड़ लेगा, और वह उसकी अनुमति के बिना नहीं जाएगा। तो उसने उसे उस दिन भुगतान कर दिया, और उसने उसे उसके हाथ से नहीं पकड़ा, और वह उसकी अनुमति के बिना चला गया। वह अपनी शपथ का उल्लंघन नहीं करता है क्योंकि उद्देश्य (ऋण की) पूर्ति है। मैं कहता हूँ: यह पहले बताया जा चुका है कि शपथ शब्दों पर आधारित होती है, उद्देश्यों पर नहीं, और यह उद्देश्य बोला नहीं गया है। हालाँकि, हमने पहले उल्लेख किया है कि प्रथा (उर्फ) एक विनिर्देशक के रूप में कार्य कर सकती है, और यहाँ ऐसा ही है, क्योंकि प्रथा इसे ऋण की पूर्ति से पहले ऋण के अस्तित्व की स्थिति के साथ निर्दिष्ट करती है। यह जल्द ही अत-तबीन से भी स्पष्ट हो जाएगा, जो अल-शमी में है वह समाप्त होता है। मैं कहता हूँ: इस कमजोर सेवक को जो प्रतीत होता है वह यह है कि यहाँ तीन शपथ हैं, जिनमें से अंतिम अपने आप में सीमित है...

...और मेरी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाएगा। फिर कर्जदार ने उसी दिन कर्ज चुका दिया और उसका हाथ पकड़े बिना और बिना इजाजत बाहर चला गया, तो उसकी कसम नहीं टूटेगी क्योंकि यह कसम प्रथा में कर्ज बकाया होने की वजह से थी। अतः कर्ज पूरा होने पर कसम समाप्त हो जाएगी। रद्द अल-मुह्तार में है कि बज्जाज़िया में है कि लेनदार ने कर्जदार को कसम दी कि "तू मुझे फलां दिन मेरा हक देगा और मेरा हाथ पकड़ेगा और मेरी मर्जी के बिना बाहर न जाएगा।" तो कर्जदार ने उसे कर्ज उसी दिन दे दिया और हाथ पकड़े बिना और उसकी मर्जी के बिना बाहर वापस चला गया तो कसम न टूटेगी क्योंकि इस कसम का मकसद कर्ज वसूल करना था। मैं कहता हूं कि यह गुजर चुका है कि कसमों की बुनियाद अल्फाज (शब्द) होते हैं। अगराज (उद्देश्य) बुनियाद नहीं होते, और मजकूर कसम का मकसद अल्फाज में मजकूर नहीं है, लेकिन जैसा कि पहले हमने जिक्र कर दिया है कि उर्फ(प्रथा) तख्सीस (विशिष्टता) पैदा कर देता है तो यह भी ऐसे ही है क्योंकि यहाँ भी उर्फ ने इस कसम को कर्ज की मौजूदगी के साथ मख्तस (विशिष्ट) कर दिया है कि उसकी अदायगी से कबल तक होगी, इसकी वजाहत अनकरीब तबीन अल-हकाइक से बयान की जाएगी, अल्लामा शामी का रद्द अल-मुह्तार में बयान खत्म हुआ। अकुल (मैं कहता हूं कि) मुझ जईफ (कमजोर) बंदे पर जो

जाहिर हो रहा है वह यह कि यहाँ रद्द अल-मुह्तार के बयान करदा मसला में तीन कसमें हैं जिनमें से...

---

1 रद्द अल-मुह्तार, बाबुल यमीन फिल अकली वश शुरबी, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 106/3. पृष्ठ 543 का 688

نہ روی باز مدیوں ہمیں روز دینش داد و دستش نگرفت وبے دستوری اوپروں رفت حانث نشود کہ ایں ہمیں عرفاً مقیدست بحال دیں در ردالمحتار ست فی البزازیة حلفہ لیوفین حقہ یوم کذا و لیاخذن بیدہ ولا ینصرف بلا اذنہ فاؤفاہ الیوم ولم یأخذ بیدہ وانصرف بلا اذنہ لا یحنث لان المقصود ھو الایفاء اھ، قلت تقدم ان الایمان مبینة علی الالفاظ لا علی الاغراض وھذا المقصود غیر ملفوظ لکن قدمنا ان العرف یصلح مخصصاً وھنا کذلك فان العرف یخصص ذلك بحال قیام الدین قبل الایفاء و یوضحہ ایضاً ما یأتی قریباً عن التبیین اھ ما فی الشامی۔ اقول: والذی یظھر للعبد الضعیف ان یہاں ثلث ایمان ہیں تو آخری متقیدہ بنفس

اور میری رضا کے بغیر باہر نہ جائے گا، پھر مقروض نے اسی دن قرض ادا کر دیا اور اس کا ہاتھ پکڑے بغیر باہر چلا گیا تو اس کی قسم نہ ٹوٹے گی کیونکہ یہ قسم عرف میں قرض ذمہ ہونے کی وجہ سے تھی، تو قرض ختم ہونے پر قسم ساقط ہو جائے گی۔ ردالمحتار میں ہے کہ بزازیہ میں ہے کہ قرض خواہ نے مقروض کو قسم دی کہ تو مجھے فلاں دن میرا حق دے گا اور میرا ہاتھ پکڑے گا اور میری مرضی کے بغیر باہر نہ جائیگا، تو مقروض نے اس کو قرض اسی روز دے دیا اور ہاتھ پکڑے اور اس کی مرضی کے بغیر باہر واپس چلا گیا تو قسم نہ ٹوٹے گی کیونکہ اس قسم کا مقصد قرض وصول کرنا تھا۔ قلت میں کہتا ہوں کہ یہ گزر چکا ہے کہ قسموں کی بنیاد الفاظ ہوتے ہیں۔ اغراض بنیاد نہیں ہوتے، اور مذکور قسم کا مقصد الفاظ میں مذکور نہیں ہے، لیکن جیسا کہ پہلے ہم نے ذکر کردیا ہے کہ عرف تخصیص پیدا کر دیتا ہے تو یہ بھی ایسے ہی ہے کیونکہ یہاں بھی عرف نے اس قسم کو قرض کی موجودگی کے ساتھ مختص کر دیا ہے کہ اس کی ادائیگی سے قبل تک ہوگی، اس کی وضاحت عنقریب تبیین الحقائق سے بیان کی جائے گی، علامہ شامی کا

ردالمحتار میں بیان ختم ہوا۔ اقول (میں کہتا ہوں کہ) مجھ ضعیف بندے پر جو ظاہر ہو رہا ہے وہ یہ کہ یہاں ردالمحتار کے بیان کردہ مسئلہ میں تین قسمیں ہیں جن میں سے

---

1 رد المحتار باب الیمین فی الاکل والشرب دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۱۰۶ Page 543 of 688

[Arabic Column] Word permission as mentioned before, the first was temporary. Fulfilling it at that time was impossible because it happened before it, so it became void due to the impossibility of fulfillment. Then I saw them attributing it to this [reason], and praise be to Allah. As for the second, it is a metaphor for fulfillment, i.e., to assist him in paying his debt, for it is definitely known that the intention is not specifically to take the limb. It is absolute, and he has fulfilled it if he has paid. Even if it were assumed to be for its time with the mentioned timing, it would have fallen away also. This is the meaning of the statement in al-Wajiz, because the intention is fulfillment, so there is no place here at all for specification by the indication of the state (haal). And Allah Almighty knows the reality of the state best. There is nothing in what was brought later from al-Tabyin except that the oath is restricted by the intention of the swearer, and for this reason, it is restricted by the attribute that prompted the oath, even if it is in the present, as we explained before.

[Urdu Column] The last one, i.e., "he shall not return without my permission," this oath is restricted by the word "permission" as mentioned before. And among them, the first type, i.e., "you shall pay my due on such a day," is restricted by time, meaning it is temporary. Since the payment of the due could not be made on the appointed day because the payment was already made before the appointed day, the oath will terminate because fulfilling it on the appointed day was no longer possible. Then, after this statement, I saw that the jurists stated this very reason for the termination of the oath, Praise be to Allah. However, the second type, i.e., "take my hand," is metaphorical for fulfilling the right, meaning so that this act helps in the payment of the right, because grabbing a specific limb, i.e., the hand, is not the intended goal. Therefore, this oath was declared absolute, and it has been fulfilled upon the payment of the right. And if this second type is declared restricted and temporary by time, i.e., on the appointed day, instead of absolute, even then it will be declared void. Whereas the statement of Wajiz that the intention here is only to fulfill the right, and there is no role for specification through the indication of the state (haal), has this very meaning. And Allah Almighty knows the reality of the situation best. And what was mentioned later with reference to Tabyin al-Haqa'iq is only that this oath will be restricted by the intention of the swearer. Therefore, it will be considered restricted by the attribute that caused the oath, even if that attribute is found in the present thing, as we explained before.

[Footnote] 1 Radd al-Muhtar, Chapter of Oaths in Eating and Drinking, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/107.

[अरबी कॉलम] 'अनुमति' शब्द जैसा कि पहले बताया गया है, और पहली (कसम) सामयिक थी। उस समय अदायगी असंभव थी क्योंकि वह उससे पहले हो चुकी थी, इसलिए वह अदायगी की कल्पना न होने के कारण समाप्त हो गई। फिर मैंने उन्हें इसी कारण से इसकी व्याख्या करते देखा, और अल्लाह की प्रशंसा हो। जहाँ तक दूसरी की बात है, तो यह अदायगी के लिए एक रूपक है, यानी ताकि वह उसे अपना ऋण चुकाने में मदद करे, क्योंकि यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि उद्देश्य विशेष रूप से अंग को पकड़ना नहीं है। यह मुतलक़ (पूर्ण) है और यदि उसने अदायगी कर दी है तो उसने इसे पूरा कर लिया है। भले ही इसे उल्लेखित समय के अनुसार उस समय के लिए मान लिया जाए, तब भी यह समाप्त हो गई होती। अल-वजीज़ के इस कथन का यही अर्थ है कि उद्देश्य अदायगी है, इसलिए यहाँ हाल (स्थिति) के संकेत द्वारा तख्सीस (विशिष्टीकरण) की कोई गुंजाइश नहीं है। और अल्लाह तआला ही स्थिति की वास्तविकता को सबसे बेहतर जानता है। 'अल-तबीयन' से बाद में जो लाया गया उसमें इसके अलावा कुछ नहीं है कि कसम खाने वाले के उद्देश्य से कसम प्रतिबंधित होती है, और इसी कारण यह उस विशेषता से प्रतिबंधित होती है जिसने कसम के लिए प्रेरित किया, भले ही वह वर्तमान में हो, जैसा कि हमने पहले स्पष्ट किया है।

[उर्दू कॉलम] आखिरी यानी "वह मेरी अनुमति के बिना वापस नहीं जाएगा", यह कसम 'अनुमति' शब्द से प्रतिबंधित है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। और उनमें से, पहली प्रकार यानी "तुम मेरा हक फलां दिन अदा करोगे", यह समय से प्रतिबंधित है, अर्थात यह सामयिक है। चूंकि नियत दिन पर हक की अदायगी नहीं हो सकी क्योंकि अदायगी नियत दिन से पहले ही हो चुकी थी, इसलिए कसम समाप्त हो जाएगी क्योंकि नियत दिन पर उसे पूरा करना संभव नहीं रहा। फिर, इस बयान के बाद मैंने देखा कि न्यायविदों (फुक़हा) ने कसम के खात्मे का यही कारण बताया है, अल्लाह की प्रशंसा हो। लेकिन दूसरी प्रकार यानी "तुम मेरा हाथ पकड़ लो", यह हक पूरा करने के लिए एक रूपक है, यानी ताकि यह बात हक की अदायगी में मददगार बने, क्योंकि विशेष अंग यानी हाथ पकड़ना उद्देश्य नहीं है। इसलिए, यह कसम मुतलक़ (पूर्ण) मानी गई, और हक की अदायगी हो जाने पर यह पूरी हो चुकी है। और यदि इस दूसरी प्रकार को मुतलक़ के बजाय समय यानी नियत दिन से प्रतिबंधित और मुअक़्क़त (सामयिक) माना जाए, तब भी यह साकित (समाप्त) मानी जाएगी। जबकि वजीज़ का यह कहना कि यहाँ उद्देश्य केवल हक को पूरा करना है, और यहाँ हाल (वर्तमान स्थिति) के संकेत से विशिष्टीकरण (तख्सीस) का कोई दखल नहीं है, का यही अर्थ है। जबकि अल्लाह तआला

ही स्थिति की वास्तविकता को बेहतर जानता है। और बाद में 'तबीयनुल हक़ाइक' के हवाले से जो उल्लेख किया गया वह केवल यही है कि यह कसम कसम खाने वाले के उद्देश्य से प्रतिबंधित होगी। इसलिए, कसम का कारण बनने वाली विशेषता से यह प्रतिबंधित मानी जाएगी, भले ही वह विशेषता उपस्थित चीज़ में पाई जाए जैसा कि हमने पहले वर्णन किया।

[पाद-टिप्पणी] 1 रद्द अल-मुह्तार, खाने और पीने में शपथ का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, ३/१०७।

पृष्ठ ५४४ / ६८८

[عربی کالم] لفظ الاذن كما تقدم والاولى كانت مؤقتة والممتنع الايفاء في ذلك الوقت لحصوله قبله فسقطت لعدم تصور البر ثم رأيتهم به عللوه، ولله الحمد، اما الثانية فمجازه عن الايفاء اى ليعينه لوفاء دينه اذ من المعلوم قطعا ان ليس المراد خصوص اخذ العضو وهى مطلقة وقد بر فيها اذا وفى وان فرضت لوقته بالتوقيت المذكور فقد سقطت ايضاً وهذا معنى قول الوجيز لان المقصود هو الايفاء فليس هنا مدخل اصلا للتخصيص بدلالة الحال والله تعالى اعلم بحقيقة الحال وليس فيما اتى به بعد عن التبيين الان اليمين تتقيد بمقصود الحالف ولهذا تتقيد بالصفة الحاملة على اليمين وان كانت في الحاضر على مابينا من قبل اهـ

[اردو کالم] آخری یعنی "میری اجازت کے بغیر واپس نہ جائے گا" یہ قسم لفظ اجازت سے مقید ہے جیسا کہ گزرا ہے، اور ان میں سے پہلے قسم یعنی "تو میرا حق فلاں روز ادا کرے گا" یہ وقت سے مقید ہے یعنی موقت ہے، جبکہ مقررہ اس دن میں حق کی ادائیگی نہیں ہو سکی کیونکہ ادائیگی مقررہ دن سے پہلے ہو چکی ہے اس لئے قسم ختم ہو جائے گی کیونکہ مقررہ دن میں پورا کرنا ممکن نہ رہا، پھر اس بیان کے بعد میں نے دیکھاتو فقہاء نے قسم کے خاتمہ کی یہی علت بیان فرمائی واللہ الحمد، لیکن دوسری قسم یعنی "تو میرا ہاتھ پکڑلے" یہ حق پورا کرنے، سے مجاز ہے، یعنی تاکہ یہ بات حق کی ادائیگی میں مددگار بنے، کیونکہ خاص عضو یعنی ہاتھ پکڑنا مقصود نہیں ہے، لہذا یہ قسم مطلق قرار پائی، اور یہ حق کی ادائیگی ہو جانے پر پوری ہو چکی ہے، اور اگر اس دوسری قسم کو مطلق کی بجائے وقت یعنی مقررہ دن سے مقید اور موقت قرار دیا جائے تو تب بھی یہ ساقط قرار پائیگی، جبکہ وجیز کے اس کہنے کا کہ یہاں مقصود صرف حق کو پورا کرنا ہے، اور یہاں حال کی دلالت سے تخصیص کا کوئی دخل نہیں ہے، کا یہی مطلب ہے جبکہ اللہ

تعالیٰ ہی حقیقت حال کا بہتر عالم ہے، اور بعد میں تبیین الحقائق کے حوالہ سے جو ذکر کیا وہ صرف یہی ہے کہ یہ قسم حالف کے مقصد سے مقید ہو گی لہذا قسم کی وجہ بننے والی صفت سے یہ مقید قرار پائے گی اگرچہ وہ صفت حاضر چیز میں پائی جائے جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا۔

[حاشیہ] 1 رد المحتار باب اليمين في الاكل والشرب دار احياء التراث العربی بیروت ۳/ ۱۰۷

صفحہ ۵۴۴ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya Volume 13

There is no dispute regarding this. The discussion lies in obtaining specification here (until the end of the discourse in Tabyin al-Haqa'iq). Here, the debate is not whether it will be restricted by purpose or not, but rather here the discussion is about specification by contextual indication (dalalat al-hal). Furthermore, the statement in Tabyin al-Haqa'iq pertains to a quality mentioned in words; for example, 'I will not speak to so-and-so's slave,' whereas you here wish to establish something unuttered. Therefore, the discourse in Tabyin al-Haqa'iq cannot serve as an explanation for this discussion. The ultimate thing that can be said is that the meaning of the oath 'he will fulfill the right on such-and-six a day' is that if he does not fulfill the right before that day, he will fulfill it on that day. So, before that, the oath will be restricted by the non-fulfillment, and this purpose is unmentioned in words, becoming known only as a restriction through contextual indication. Thus, the first oath was completed and finished. Allah Almighty knows best. Since an extensive scope for discussion regarding contextual indication arose in the aforementioned example, I present another example here: a creditor made the debtor swear an oath that 'you will not hide your face from me.' The meaning of this covenant is that 'whenever I seek you and you become aware of my seeking, you must immediately appear before me.' Therefore, if he goes into hiding without the creditor's seeking or without being informed of the seeking, it will not be a violation of the oath, even if this hiding is due to fear of the creditor. For instance, if the debtor turns his face away upon the creditor appearing, it is because this hiding is for another reason.

The discourse of Al-Tabyin regarding a spoken attribute is like 'I will not speak to the slave of so-and-so,' and here you seek to establish an unspoken one, so what is in Al-Tabyin does not clarify it. The furthest that can be said is that the meaning 'he will surely fulfill on such-and-such a day if he did not fulfill before it' is a restriction by contextual indication, which is the unintended unspoken purpose. Thus, the first [oath] would be fulfilled and lapsed. Allah Almighty knows best. Since the scope for discussion regarding contextual indication in this example became vast, let's place another example in its stead: a creditor took an oath that 'you shall not hide your face from me.' The meaning of this promise is that 'whenever I seek you and you are informed of my seeking, you appear; otherwise, the individual hiding of the debtor in the absence of that seeking by the creditor, without knowledge of the creditor's seeking, does not necessitate perjury, even if it is out of fear of the creditor, just as one hides their face for fear of him to avoid going to the bazaar. This is because this

face-hiding is for an intent not from it, and the oath was upon this, not that. This oath is restricted by contextual indication to the duration of the debt's existence, until if there were two creditors...

इसमें कोई विवाद नहीं है। चर्चा यहाँ विशेषण प्राप्त करने के बारे में है (तबीन अल-हक़ाएक़ के अंत तक)। यहाँ बहस यह नहीं है कि यह उद्देश्य द्वारा प्रतिबंधित होगा या नहीं, बल्कि यहाँ तो परिस्थितिगत संकेत (दलालात अल-हाल) द्वारा विशेषण के बारे में बहस है। इसके अलावा, तबीन अल-हक़ाएक़ का कथन शब्दों में वर्णित गुण से संबंधित है, उदाहरण के लिए, 'मैं अमुक के दास से बात नहीं करूँगा', जबकि आप यहाँ अनकहे को सिद्ध करना चाहते हैं। इसलिए, तबीन अल-हक़ाएक़ का प्रवचन इस चर्चा का स्पष्टीकरण नहीं हो सकता। अंततः जो कहा जा सकता है वह यह है कि शपथ 'वह अमुक दिन अधिकार पूरा करेगा' का अर्थ यह होगा कि यदि वह उस दिन से पहले अधिकार पूरा नहीं करता है, तो वह उस दिन पूरा करेगा। तो, उससे पहले, शपथ गैर-पूर्ति द्वारा प्रतिबंधित होगी, और यह उद्देश्य शब्दों में अनकहा है, जो केवल परिस्थितिगत संकेत के माध्यम से प्रतिबंध के रूप में ज्ञात हो रहा है। इस प्रकार, पहली शपथ पूरी हो गई और समाप्त हो गई। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। चूँकि उपर्युक्त उदाहरण में परिस्थितिगत संकेत के संबंध में चर्चा की व्यापक गुंजाइश उत्पन्न हो गई, इसलिए मैं यहाँ एक और उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ: एक लेनदार ने देनदार को शपथ दिलाई कि 'तुम मुझसे अपना मुँह नहीं छिपाओगे'। इस अनुबंध का अर्थ यह है कि 'जब भी मैं तुम्हें ढूँढूँ और तुम मेरे ढूँढने से अवगत हो जाओ, तो तुम्हें तुरंत मेरे सामने आना होगा'। इसलिए, यदि वह लेनदार द्वारा ढूँढने के बिना या ढूँढने की सूचना के बिना छिप जाता है, तो यह शपथ का उल्लंघन नहीं होगा, भले ही यह छिपना लेनदार के डर के कारण ही हो। उदाहरण के लिए, लेनदार के सामने आने पर देनदार मुँह फेर ले, क्योंकि यह छिपना किसी और विचार के कारण है।

अत-तबीन का प्रवचन एक उच्चारित विशेषता के बारे में है जैसे 'मैं अमुक के गुलाम से बात नहीं करूँगा', और यहाँ आप एक अनकही बात को सिद्ध करना चाहते हैं, इसलिए अत-तबीन में जो है वह इसे स्पष्ट नहीं करता है। सबसे अधिक जो कहा जा सकता है वह यह है कि अर्थ 'वह निश्चित रूप से अमुक दिन पूरा करेगा यदि उसने उससे पहले पूरा नहीं किया' परिस्थितिगत संकेत द्वारा एक प्रतिबंध है, जो अनकहा उद्देश्य है। इस प्रकार, पहली [शपथ] पूर्ण और समाप्त मानी जाएगी। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। चूँकि इस उदाहरण में परिस्थितिगत संकेत के संबंध में चर्चा की गुंजाइश विस्तृत हो गई, आइए इसके स्थान पर एक और उदाहरण रखें: एक लेनदार ने शपथ ली कि 'तुम मुझसे अपना मुँह नहीं छिपाओगे'। इस वादे का अर्थ यह है कि 'जब भी मैं तुम्हें ढूँढूँ और तुम

मेरे ढूँढने की सूचना पा लो, तो तुम प्रकट हो जाओ; अन्यथा, लेनदार द्वारा उस खोज की अनुपस्थिति में देनदार का व्यक्तिगत रूप से छिपना, लेनदार की खोज के ज्ञान के बिना, शपथ भंग का कारण नहीं बनता है, भले ही वह लेनदार के डर से हो, जैसे कि कोई बाज़ार जाने से बचने के लिए उसके डर से अपना चेहरा छिपाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह चेहरा छिपाना एक ऐसे इरादे के लिए है जो इससे संबंधित नहीं है, और शपथ इसी पर थी, उस पर नहीं। यह शपथ परिस्थितिगत संकेत द्वारा ऋण के अस्तित्व की अवधि तक प्रतिबंधित है, यहाँ तक कि यदि दो लेनदार हों...

पेज 545 का 688

ولا کلام فیہ انما الکلام فی حصول التخصیص ہنا (تبیین الحقائق کے آخر کلام تک) جبکہ یہاں یہ بحث نہیں کہ مقصد سے مقید ہوگی یا نہیں، بلکہ یہاں تو دلالت حال سے تخصیص میں بحث ہے اور پھر تبیین الحقائق کی بات کا تعلق لفظوں میں مذکور صفت سے ہے، مثلاً میں فلاں کے غلام سے بات نہ کروں گا جبکہ آپ تو یہاں غیر ملفوظ کو ثابت کرنا چاہتے ہیں، لہذا تبیین الحقائق کا کلام اس بحث کی وضاحت نہیں بن سکتا، انتہائی بات جو کی جاسکتی ہے وہ یہ ہے کہ قسم میں "فلاں دن حق پورا کرے گا" کا معنی یہ ہوگا کہ اگر اس دن سے قبل حق پورا نہ کرے تو اس دن ادا کرے گا، تو قبل ازیں پورا نہ کرنے سے قسم مقید ہوگی اور یہ مقصد لفظوں میں غیر مذکور ہے جو صرف دلالت حال سے قید کے طور پر معلوم ہورہا ہے، تو پہلی قسم پوری ہو کر ختم ہو گئی، واللہ تعالیٰ اعلم۔ چونکہ مذکورہ مثال میں دلالت حال کے متعلق بحث کی وسیع گنجائش پیدا ہو گئی، اس لئے ایک اور مثال یہاں پیش کرتا ہوں کہ، ایک قرض خواہ نے مقروض کو قسم دی کہ تو مجھ سے منہ نہ چھپائے گا، تو اس عہد و پیمان کا معنی یہ ہے کہ جب میں تجھے طلب کروں اور تو میری طلب پر مطلع ہو جائے تو فوراً سامنے آنا ہوگا، اس لئے اگر وہ اس کی طلب کے بغیر یا طلب پر اطلاع نہ پانے پر روپوشی کرے تو قسم کی خلاف ورزی نہ ہوگی اگرچہ یہ روپوشی اس قرض خواہ کے ڈر سے ہی ہو مثلاً قرض خواہ کے سامنے آجانے پر مقروض منہ پھیر کر رک جائے، کیونکہ یہ روپوشی دوسرے خیال

کلام التبیین فی صفۃ ملفوظۃ کلا یکلم عبد فلان وتریدون ہنا اثبات غیر الملفوظ فلا یوضحہ ما فی التبیین وغایۃ ما یقال ان المعنی لیوفین یوم کذا ان لم یوف قبلہ فہذا التقیید بدلالۃ الحال وہو المقصود الغیر الملفوظ فیکون الاولی مبرورۃ ساقطۃ واللہ تعالیٰ اعلم۔ وچوں دریں مثال در دلالت حال مجال

مقال وسیع آمد مثالی دگر جایش بنشانیم دائن حلف گرفت کہ روئے از من نپوشی و معنی ایں پیمان آنست کہ ہرگاہ ترا طلبم وتو بر طلب من مطلع شوی ظاہر گردی ورنہ فرد روپوشی مدیون در غیر آں طلب دائن بے اطلاع بر طلب دائن موجب حنث نیست گوا ز ترس دائن باش چنانکہ بخوف اور رخ پوشاں بہاز از رفتن زیرا کہ ایں روئے پوشیدن بخیال ست نہ از وسوگند بریں بود نہ براں ایں یمین بدلالت حال مقید ست بزمان بقائے دین تا آنکہ اگر دو دائن بودند

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Left Column - Persian/Arabic text translation]: And when one of the debts is paid, the oath regarding it ends. In Wajiz al-Kardari, Section 18 regarding the repayment of debt, it says: The creditor made the debtor swear, 'Do not hide your face from me,' and no time was specified. So, every time he (the creditor) demands and he (the debtor) knows of it but does not appear, he violates the oath. Even if he enters the market while hiding, he does not violate the oath (if not demanded). And if he (the creditor) demands but the debtor does not know and does not show his face, he does not violate it. If at the time of the oath there were two creditors and he pays one of them, the oath ends regarding that person. In the current issue as well, the state indicates that the purpose of the oath is to boycott the son, distance from descendants and cohabitation, and punish him by distance from his house and food. So, it is limited to the time these purposes remain. When the father himself spoke of ending the boycott and the intent for revenge passed, the oath ended, as mentioned in the legal sub-branches; just as with the dismissal of a ruler, the debtor's confession, the appearance of witnesses, and the payment of debts, when those purposes no longer remain, the oath does not remain.

[Right Column - Urdu text translation]: ...it is not due to hiding from his demand; therefore, the oath will not be broken by hiding for any other reason, because the oath is not related to any other reason. Thus, this oath, due to circumstantial evidence, will be restricted to the state of the debt remaining outstanding. So much so that if there are two creditors and both have administered this oath, then whichever one's debt is paid, the oath will end regarding him. In Wajiz al-Kardari, Section 18 on the repayment of debt, it is stated that if a creditor made the debtor swear an oath saying 'you will not hide from me' and no time was mentioned in the oath, then the meaning of this oath will be that whenever he demands from the debtor and the debtor becomes aware of this demand, at that time he should not hide. Therefore, if despite becoming aware of the creditor's demand, the debtor does not appear or face him, the oath will be broken. But if he was not demanded or was not aware of the demand, and he went out hiding in the market out of fear of the creditor, the oath would not be broken. In this case, if there were two creditors who had administered this oath, and he paid off the debt of one, then for him, the oath would be terminated. In the issue under discussion as well, the purpose of this oath is to boycott the son, to keep him away from his home and residence, and the punishment of keeping him away from his own house and dining table. Therefore,

this oath also, by circumstantial evidence, will be restricted to these purposes. And when the father himself did all these things and abandoned the punishment, then the oath will end, just as in the aforementioned issues. With the dismissal of the ruler, the debtor's confession, the appearance of witnesses, and the payment of debts, when those purposes no longer remain, the oath also ceases to exist. (T)

1. Fatawa Bazzaziya, margin of Fatawa Hindiyya, Section 18 on Repayment of Debt, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/330.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी/अरबी पाठ का अनुवाद]: और जब ऋणों में से एक का भुगतान हो जाता है, तो उसके संबंध में शपथ समाप्त हो जाती है। वजीज़ अल-करदरी के ऋण अदायगी से संबंधित खंड 18 में कहा गया है: ऋणदाता ने ऋणी को शपथ दिलाई, 'मुझसे अपना चेहरा मत छिपाओ,' और कोई समय निर्दिष्ट नहीं किया गया था। अत; जब भी वह (ऋणदाता) माँग करता है और वह (ऋणी) उसे जानता है लेकिन उपस्थित नहीं होता है, तो वह शपथ का उल्लंघन करता है। यदि वह बाजार में छिपकर प्रवेश करता है, तो वह उल्लंघन नहीं करता (यदि माँग नहीं की गई है)। और यदि वह (ऋणदाता) माँग करता है और वह (ऋणी) नहीं जानता और अपना चेहरा नहीं दिखाता है, तो वह उल्लंघन नहीं करता है। यदि शपथ के समय दो ऋणदाता थे और वह उनमें से एक को भुगतान करता है, तो उस व्यक्ति के संबंध में शपथ समाप्त हो जाती है। वर्तमान मसले में भी, परिस्थिति यह दर्शाती है कि शपथ का उद्देश्य बेटे का बहिष्कार करना, वंशजों और सहवास से दूरी और उसे अपने घर और भोजन से दूरी के माध्यम से दंडित करना है। अत; यह उन उद्देश्यों के बने रहने के समय तक सीमित है। जब पिता ने स्वयं बहिष्कार समाप्त करने की बात की और प्रतिशोध की भावना बीत गई, तो शपथ समाप्त हो गई, जैसा कि कानूनी उप-मामलों में वर्णित है; जैसे शासक की बर्खास्तगी, ऋणी की स्वीकारोक्ति, गवाहों की उपस्थिति और ऋणों की अदायगी के साथ, जब वे उद्देश्य नहीं रह जाते, तो शपथ भी नहीं रहती।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद]: ...यह उसकी माँग से छिपना नहीं है; इसलिए, किसी अन्य कारण से छिपने पर शपथ नहीं टूटेगी, क्योंकि शपथ का संबंध किसी अन्य कारण से नहीं है। अत; यह शपथ वर्तमान परिस्थितियों के साक्ष्य (दलालत-ए-हाल) के कारण ऋण शेष रहने की स्थिति तक सीमित होगी। यहाँ तक कि यदि दो ऋणदाता हों और दोनों ने यह शपथ दिलाई हो, तो उनमें से जिसका भी ऋण वह चुका देगा, उसके प्रति शपथ समाप्त हो जाएगी। वजीज़ अल-करदरी के खंड 18 में ऋण अदायगी के बारे में कहा गया है कि यदि ऋणदाता ने ऋणी को शपथ दिलाई कि 'तुम मुझसे नहीं छिपोगे' और शपथ में किसी समय का उल्लेख नहीं किया गया, तो इस शपथ का अर्थ यह होगा कि जब भी वह ऋणी से माँग करे और ऋणी को इस माँग का ज्ञान हो जाए, तो उस समय वह न छिपे। इसलिए, यदि ऋणदाता की माँग के बारे में जानने के बावजूद ऋणी उपस्थित नहीं होता या उसका सामना नहीं करता, तो शपथ टूट जाएगी। लेकिन यदि कोई माँग नहीं की गई या उसे माँग की जानकारी नहीं हुई, और वह बाजार में ऋणदाता के डर से ऐसे ही छिपकर निकला, तो शपथ नहीं

टूटेगी। इस मामले में, यदि दो ऋणदाता होते जिन्होंने यह शपथ दिलाई होती, और उसने एक का ऋण चुका दिया होता, तो उसके लिए शपथ समाप्त हो जाती। विचाराधीन मामले में भी, इस शपथ का उद्देश्य बेटे का बहिष्कार करना, उसे उसके घर और निवास से दूर रखना और उसे अपने घर और दस्तरख़्वान से दूर रखने की सजा देना है। इसलिए, यह शपथ भी परिस्थितियों के साक्ष्य के आधार पर इन उद्देश्यों तक सीमित रहेगी। और जब पिता ने स्वयं ये सभी काम कर दिए और सजा छोड़ दी, तो शपथ समाप्त हो जाएगी, जैसा कि उपर्युक्त मसलों में है। शासक की बर्खास्तगी, ऋणी की स्वीकारोक्ति, गवाहों की उपस्थिति और ऋणों की अदायगी के साथ, जब वे उद्देश्य नहीं रह जाते, तो शपथ भी समाप्त हो जाती है। (त)

1. फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिये पर, ऋण अदायगी पर 18वाँ खंड, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/330।

पृष्ठ 688 का 546

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ، ۱۳

ودین یکے اداشد یمین در حق او منتھی گشت، در وجیز کردی فصل ۱۸ فی قضاء الدین فرمود حلف الدائن المدیون کہ از من رو نپوشی ولم یوقت فکل وقت طلبہ وعلم بہ ولم یظھر لہ حنث وان دخل السوق متواریاً لایحنث وان طلبہ ولم یعلم بہ ولم یظھر الوجہ لایحنث ولوکان حین حلف بھٰذا الوجہ رب الدین اثنین فقضیٰ لاحد ھما انتھی الیمین فی حقہ ، در مسئلہ دائرہ نیز حال دال است کہ غرض یمین ہجراں پسر و تباعد از ذریت و مساکنت او و سزا دادنش بدوری از خانہ و خوان خودست پس مقید باشد بزماں بقائے ایں مقاصد چوں پدر خودش ترک مہاجرت گفت واوسر انتقام در گذشت یمین منتہی گشت چنانکہ در فروع مذکورہ چوں بعزل سلطان واقرار مدیون و ظھور گواہان وادائے دیون آں اغراض نماند سوگند نماند۔

سے ہے نہ کہ اس کی طلب سے روپوشی ہے، لہٰذا کسی اور وجہ سے روپوشی پر قسم نہ ٹوٹے گی، کیونکہ قسم کا تعلق کسی اور وجہ سے نہیں ہے، تو یہ قسم دلالتِ حال کی وجہ سے قرض باقی رہنے کے حال سے مقید ہوگی، حتیٰ کہ اگر قرض خواہ دو شخص ہوں دونوں نے یہ قسم دی ہو تو دونوں میں سے جس کا قرض ادا کر دے گا اس کے حق میں قسم ختم ہوجائے گی۔ وجیز کردری کی فصل ۱۸ قرض کی ادائیگی میں فرماتے ہیں کہ قرض خواہ نے مقروض کو قسم دی کہ تو مجھ سے روپوشی نہ کرے گا اور قسم میں کسی وقت کا ذکر نہ کیا تو اس قسم کا معنیٰ یہ ہوگا کہ جب بھی وہ اس مقروض کو طلب کرے اور مقروض کو اس طلب کا علم ہوجائے تو اس وقت روپوشی نہ کرے، لہٰذا اگر قرض خواہ کی طلب پر مقروض اطلاع پانے کے باوجود حاضر نہ ہو سامنا نہ کرے تو قسم ٹوٹ جائے گی، اور اگر بغیر طلب یا طلب پر اطلاع نہ پائی ہو اور بازار میں ویسے ہی قرض خواہ کے ڈر سے روپوشی کر کے نکلے تو قسم نہ ٹوٹے گی، اگر اس صورت

میں دو قرض خواہ ہوں جنہوں نے اس کو یہ قسم دی ہو تو ایک کا قرض ادا کردیا تو اس کے حق میں قسم ختم ہو جائیگی۔ زیر بحث مسئولہ مسئلہ میں بھی اس قسم کا مقصد بیٹے سے بائیکاٹ ، اس کا گھر اور رہائش سے دور رکھنا اور اپنے گھر اور دسترخوان سے باز رکھنے کی سزا ہے لہٰذا یہ قسم بھی دلالتِ حال کی وجہ سے ان مقاصد سے مقید ہوگی اور جب باپ نے خود یہ تمام باتیں کردیں اور سزا ترک کردی تو قسم ختم ہوجائے گی جیسا کہ مذکورہ بالا مسائل میں، حاکم کی معزولی، مقروض کے اقرار، گواہوں کی حاضری اور قرض کی ادائیگی جیسے قسم کے اغراض ہو جانے سے قسم ختم ہو جاتی ہے۔ (ت)

۱ فتاوٰی بزازیہ علٰی ھامش فتاوٰی ہندیہ الثامن عشر فی قضاء الدین نورانی کتب خانہ پشاور ۴/۳۳۰

I say: (I say) Firstly, the answer is that the negation of the purpose and the non-intention of the purpose are two different things. Whereas the matters mentioned in the doubt, concerning the actions for which the oath is taken, those actions become devoid of their specific purposes. For instance, when the city governor is dismissed, what benefit would it be to inform him about the entry of a mischievous person into the city? And the purpose of taking the denier before the judge and demanding an oath from him was so that the judge could compel him to take an oath, but an oath cannot be imposed on someone who confesses. Thus, the administration of the oath does not take place, and the request for an oath is not heard. When there are religiously upright witnesses for the claimant's claim, an oath is not taken from the denier either. Similarly, having witnesses and then leaving the matter to the tongue of the denier is to put one's right at risk, which is contrary to the purpose. So, in every way, the desired outcome is lost. After the debt is paid, what business remains with seeing the debtor's face? Now, whether he hides or not, what meaning does it hold? And a wife, during the marriage, would try to end the distress of loneliness while living separately and reconcile with her husband to become intimate. Whereas once the marriage ends, this purpose also ends because, now being a stranger, she will not talk about staying with him nor will she try to end the separation. Whereas in the case under discussion, the purpose of the oath of not leaving the house is to boycott him for the son's ingratitude and denial of favors and...

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) पहली बात तो यह है कि उद्देश्य का लुप्त होना और उद्देश्य का इरादा न करना, ये दो अलग-अलग चीजें हैं। जबकि संशय में वर्णित मामलों में, जिन कार्यों के संबंध में शपथ ली गई है, वे कार्य अपने विशिष्ट उद्देश्यों से रहित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, जब शहर का गवर्नर बर्खास्त हो जाए, तो उसे शहर में किसी उपद्रवी व्यक्ति के प्रवेश की सूचना देने से क्या लाभ होगा? और इनकार करने वाले को न्यायाधीश के समक्ष लाने और उससे शपथ की मांग करने का उद्देश्य यह था कि न्यायाधीश उसे शपथ लेने के लिए विवश कर सके, परंतु स्वीकार करने वाले पर शपथ आरोपित नहीं की जा सकती। अतः शपथ दिलाने की प्रक्रिया घटित नहीं होती और शपथ की मांग नहीं सुनी जाती। और जब वादी के दावे के लिए धार्मिक रूप से न्यायपूर्ण गवाह उपलब्ध हों, तो इनकार करने वाले से भी शपथ नहीं ली जाती। इसी प्रकार, गवाह होने के बावजूद मामले को इनकार करने वाले की जुबान पर छोड़ना अपने अधिकार को संकट में डालना है, जो उद्देश्य के विपरीत है। तो प्रत्येक प्रकार से वांछित फल समाप्त हो जाता है। और ऋण चुकाने के बाद, ऋणी का चेहरा देखने से क्या लेना-देना? अब उसका छिपना या न छिपना क्या अर्थ रखता है? और एक पत्नी, विवाह के दौरान, अलग रहने की एकाकीपन और घबराहट को समाप्त करने तथा अपने पति के साथ सुलह करके घनिष्ठ होने का प्रयास करेगी। जबकि विवाह समाप्त होने पर, यह उद्देश्य भी समाप्त हो जाता है क्योंकि अब अजनबी हो जाने पर, वह उसके पास रहने की बात नहीं करेगी और न ही अलगाव को समाप्त करने का प्रयास करेगी। जबकि विचाराधीन मामले में, घर न छोड़ने की शपथ का उद्देश्य पुत्र की कृतघ्नता और एहसानों को नकारने पर उसका बहिष्कार करना है और...

اقول اوّلاً فرق ست میان انتفائے مقصود و انعدام قصد در فروع مستشهده افعال محلوف علیها خود از ثمرات مخصوصہ تہی شدہ است چوں والی معزول شد اطلاع او بر آمدن مفسد در شہر چہ سود دہد و مقصود از بردن منکر پیش قاضی وحلف از او خواستن آں بود کہ قاضی او را بر حلف مجبور کند و بر مقر حلف نتواں نہاد پس تحلیف صورت نہ بندد و طلب حلف مسموع نشود و چوں بر دعوی مدعی گواہان عادل شرعی باشند نیز از منکر حلف نگیرند و ہمچو گواہان داشتن و باز کار بر زبان صاحب انکار گذاشتن حق خود را در خطر افگند ست کہ خلاف مقصود ست پس بہر وجہ ثمرہ مطلوبہ مفقود ست و بعد ادائے دین بروئے مدیون چہ کار ماندہ است کہ پوشیدن و نمودن ثمرہ دہد و مقصود زن حصول انس بمصالحث شوہر و منع وحشت بوحدت ست وایں بعد زوال زوجیت میسر نیست زن مرد اجنبی را نگوید کہ با من باش وجدا مشو بخلاف صورت دائرہ کہ بخانہ نگذاشتن ہمچناں مژمردوری و ہجران و سزائے ناشکری و کفران ست مگر حالف حالا زیں قصد برگشتہ است پس ایں نیست کہ آنکار ثمرہ نیارد بلکہ خود او خواہش آں ثمرہ ندارد، بالجملہ از نماندن مقصود تا قصد نماندن مقصود فرق عظیم ست ایں دوم زنہار مبطل ہمیں نتواں شد ورنہ

اقول : (میں کہتا ہوں) اوّلاً جواب یہ ہے کہ مقصود کا منتفی ہونا، اور اس کا قصد نہ کرنا یہ دو مختلف چیزیں ہیں جبکہ شبہہ میں مذکور مسائل بیان جن کاموں کے متعلق قسم ہے وہ کام اپنے مخصوص مقاصد سے خالی ہوتے ہیں کہ جب والیِ شہر معزول ہو جائے تو شہر میں مفسد شخص کے داخل ہونے کی اطلاع اس کو دینے میں کیا فائدہ ہوگا۔ اور منکر کو تو قاضی پر پیش کر کے اس سے قسم لی جاسکتی ہے تاکہ قاضی اس کو قسم پر مجبور کرے لیکن جب قرض کا اقرار کر لیا تو اب اس سے قسم نہیں لی جاسکتی اور اس سے قسم کا مطالبہ نہیں ہوسکتا۔ اور جب مدعی کے

دعوی پر شرعی عادل گواہ موجود ہوں تو منکر سے قسم نہیں لی جاتی اور اسی طرح گواہوں کی موجودگی میں اپنے حق کو منکر کی زبانی حلف کے سپرد کرنا اپنے حق کو خطرہ میں ڈالنا بھی مقصود کے خلاف ہے تو یہ تمام صورتیں قسم کے مقصد کے خلاف ہیں، اور قرض ادا کر دینے کے بعد مقروض کے چہرہ کو دیکھنے سے کیا کام ہے اب روپوشی کرنا نہ کرنا کیا معنی رکھتا ہے، اور بیوی نکاح کی موجودگی میں تو علیحدہ رہنے میں تنہائی کی وحشت کو ختم کرنے اور اپنے خاوند سے صلح کر کے مانوس ہونے کی کوشش کرے گی جبکہ نکاح ختم ہو جانے پر اس کا یہ مقصد بھی ختم ہو جاتا ہے کیونکہ اب اجنبی ہو جانے پر اس کو اپنے پاس رہنے کی بات نہ کرے گی اور نہ جدائی کو ختم کرنے کی کوشش کرے گی، جبکہ زیر بحث مسئلہ معاملہ میں گھر میں نہ چھوڑنے کی قسم کا مقصد بیٹے کی ناشکری اور کفرانِ نعمت پر اس کو بائیکاٹ اور

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Left Column - Persian/Arabic text] The same evils would necessarily follow that we mentioned in the answer to the fourth doubt. Oaths based on anger and rage would automatically vanish after the anger subsided, and no penalty or expiation would be necessary because after the disappearance of anger, there is no desire for those results; rather, one often regrets them. The definitive proof of their invalidity is the numerous, correct, and sound hadiths reaching the level of fame, in which the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When you swear an oath and then see something else better than it, do that which is better and expiate for your oath."1 When you take an oath and see that something else is better than it, then perform that better action and give expiation for your oath. Narrated by al-Bukhari and Muslim on the authority of Samurah bin Jundub, and Ahmad, Muslim, and al-Tirmidhi on the authority of Abu Hurayrah, and al-Nasa'i and Ibn Majah on the authority of Awf ibn Malik on the authority of his father, may Allah be pleased with them, and Abd al-Razzaq on the authority of Ibn Sirin in a mursal form, and Abu Bakr bin Abi Shaybah and al-Bayhaqi on the authority of the Commander of the Faithful Umar, may Allah be pleased with him, from his words, and they said...

[Right Column - Urdu text] ...is to punish by keeping away from home, but if the person who took the oath has now abandoned his purpose, then the matter of the oath will not become useless and futile because here the purpose has not died out; rather, he himself is abandoning that purpose. In short, the disappearance of the purpose and not making it a purpose are two different things, and there is a big difference between them. While the second, i.e., not making the purpose a purpose and turning away from it, cannot absolutely invalidate or nullify the oath, otherwise all those evils will necessarily follow which we mentioned in the answer to the fourth doubt, that all oaths based on anger and resentment will automatically end when the anger ends, and no penalty or expiation will be necessary for them because the purposes of the oath during anger and resentment no longer remain when the anger ends. In fact, many times there is regret over oaths taken in a state of anger. So it would follow that no expiation or penalty would be imposed on being angry, whereas many authentic hadiths have been reported regarding its invalidity, which have reached the level of fame (mashhur) in that breaking these oaths (hanth) becomes necessary even after the anger has ended. The Prophet (peace and blessings be upon him) said: "When you take an oath and see that something else—that is, the opposite—is better, then do what is better and give expiation for your oath." This has

been narrated by Bukhari and Muslim from Samurah bin Jundub, and Ahmad, Muslim, and Tirmidhi from Abu Hurairah, and Nasa'i and Ibn Majah from the father of Awf ibn Malik (may Allah be pleased with them), and Abd al-Razzaq from Ibn Sirin in a mursal (omitted companion) way, and Abu Bakr bin Shaybah and Bayhaqi from the Commander of the Faithful.

[Footnote] 1 Sahih Bukhari, Book of Faith and Vows, Qadimi Kutub Khana Karachi, 980/2

फतावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

[बायां कॉलम - फारसी/अरबी पाठ] वही बुराइयां अनिवार्य रूप से उत्पन्न होंगी जिनका उल्लेख हमने चौथे संदेह के उत्तर में किया था। क्रोध और रोष पर आधारित कसमें क्रोध शांत होने के बाद स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी और कोई दंड या प्रायश्चित आवश्यक नहीं होगा क्योंकि क्रोध समाप्त होने के बाद उन परिणामों की कोई इच्छा नहीं रहती है; बल्कि, अक्सर व्यक्ति को उन पर पछतावा होता है। उनकी अमान्यता का निर्णायक प्रमाण कई सही और ठोस हदीसें हैं जो प्रसिद्धि के स्तर तक पहुंच गई हैं, जिनमें अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा: "जब तुम कोई कसम खाओ और फिर उससे कुछ बेहतर देखो, तो वह करो जो बेहतर है और अपनी कसम का प्रायश्चित करो।"1 जब तुम कसम खाओ और देखो कि उसके अलावा कुछ और उससे बेहतर है, तो वह बेहतर कार्य करो और अपनी कसम का प्रायश्चित करो। इसे अल-बुखारी और मुस्लिम ने समुरह बिन जुंदुब के अधिकार पर, और अहमद, मुस्लिम और अल-तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा के अधिकार पर, और अल-नसाई और इब्न माजाह ने औफ इब्न मालिक के अधिकार पर उनके पिता से वर्णित किया है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, और इब्न सीरीन से मुरसल रूप में अब्द अल-रज्जाक ने, और अमीरुल मोमिनीन उमर के अधिकार पर अबू बक्र बिन अबी शीबा और अल-बैहकी ने, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, उनके शब्दों से, और उन्होंने कहा...

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] ...घर से दूर रखने की सज़ा देना है, लेकिन कसम खाने वाले ने अब अपने उद्देश्य को छोड़ दिया है, तो उस कसम वाले मामले को बेकार और व्यर्थ नहीं माना जाएगा क्योंकि यहाँ उद्देश्य समाप्त नहीं हुआ है बल्कि वह स्वयं उस उद्देश्य को छोड़ रहा है। संक्षेप में, उद्देश्य का शेष न रहना और उसे उद्देश्य न बनाना दो अलग-अलग चीजें हैं और दोनों में बड़ा अंतर है। जबकि दूसरा यानी उद्देश्य को उद्देश्य न बनाना और उससे मुंह मोड़ना कसम को पूरी तरह से अमान्य और शून्य नहीं कर सकता, अन्यथा वे सभी बुराइयां अनिवार्य रूप से उत्पन्न होंगी जिनका उल्लेख हमने चौथे संदेह के उत्तर में किया है कि क्रोध और नाराजगी पर आधारित सभी कसमें क्रोध समाप्त होने पर स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी और उन पर कोई दंड या प्रायश्चित (कफ्फारा) अनिवार्य नहीं होगा क्योंकि क्रोध और नाराजगी के दौरान कसम के जो उद्देश्य थे वे क्रोध समाप्त होने पर नहीं रहे बल्कि अक्सर क्रोध की स्थिति में कसमों पर पछतावा होता है। तो यह आवश्यक होगा कि क्रोधित होने पर कोई प्रायश्चित या दंड लागू न हो, हालांकि इसकी अमान्यता पर बड़ी संख्या में सही हदीसें आई हैं जो क्रोध समाप्त होने के बाद भी इन कसमों को तोड़ने पर हन्थ (कसम तोड़ना) अनिवार्य होने के मामले

में प्रसिद्धि के स्तर तक पहुंची हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया: "जब तुम कसम खाओ और देखो कि उस कसम के अलावा कुछ और—यानी उसके विपरीत—बेहतर है, तो उसे करो जो बेहतर है और अपनी कसम का प्रायश्चित करो।" इसे बुखारी और मुस्लिम ने समुरह बिन जुंदुब से, और अहमद, मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरा से, और नसाई और इब्न माजाह ने औफ बिन मालिक के पिता से (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) वर्णित किया है, और अब्दुल रज्ज़ाक ने इब्न सीरीन से मुरसल (अधूरी श्रृंखला) के रूप में, और अबू बक्र बिन शीबा और बैहकी ने अमीरुल मोमिनीन से...

[पाद टिप्पणी] 1 सहीह बुखारी, किताबुल ईमान वन नुज़ूर, कदीमी कुतुब खाना कराची, 980/2

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[بایاں کالم] ہمان مفاسد لازم آید کہ در جواب شبہہ چہارم یاد کردیم حلفائے مبتنی بر خشم و غضب بعد فرو شدن خشم خود بخود بر باد رود و بیچ جزایا کفارہ لازم نشود کہ بعد زوال غضب آں ثمرات را خواہش نمی ماند بلکہ بسا اوقات نادم می شود و دلیل قاطع بر بطلان آں احادیث کثیرہ عدیدہ صحیحہ سدید ہ بسر حد استقاضہ کشیدہ ست کہ فرمودہ اند صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اذا حلفت علی یمین فرأیت خیرھا خیراً منھا فات الذی ھو خیر و کفر عن یمینک ۱ چون سوگنڈے خوری باز بینی کہ غیر او ازاں بہتر ست پس آں بہتر را بجا آرو سوگندت را کفارہ گزار ، رواہ البخاری ومسلم عن سمرۃ بن جندب واحمد و مسلم والترمذی عن ابی ھریرۃ والنسائی وابن ماجۃ عن عوف ابن مالك عن ابیہ رضی اللہ تعالٰی عنھم وعبدالرزاق عن بن سیرین مرسلا وابو بکر بن شیبۃ والبیھقي عن امیر المؤمنین عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ من قولہ، وفر مودند

[دایاں کالم] گھر سے دور رکھنے کی سزا دینا ہے لیکن قسم والے نے اب اپنے مقصد کو چھوڑ دیا تو اس سے قسم والا معاملہ بے سود اور بیکار نہ ہوگا کیونکہ یہاں مقصد فوت نہیں ہوا بلکہ خود اس مقصد کو ترک کر رہا ہے، الحاصل، مقصود کا باقی نہ رہنا اور اس کو مقصود نہ بنانا دو مختلف چیزیں ہیں اور دونوں میں بڑا فرق ہے جبکہ دوسرا یعنی مقصد کو مقصود نہ بنانا اور اس سے رو گردانی کرنا قسم کو قطعاً باطل اور کالعدم نہیں کر سکتا، ورنہ اس سے وہ تمام مفاسد لازم آئیں گے جو شبہ چہارم کے جواب میں ہم نے ذکر کئے ہیں کہ غصہ اور ناراضگی پر مبنی تمام قسمیں، غصہ ختم ہو جانے پر خود بخود ختم ہو جائینگی اور ان پر کوئی جزاء یا کفارہ لازم نہ آئیگا کیونکہ غصہ اور ناراضگی کے دوران قسم کے جو مقاصد تھے وہ غصہ ختم ہو جانے پر باقی نہ رہے بلکہ بسا اوقات غصہ کی حالت میں قسموں پر ندامت ہوتی ہے تو لازم آئے گا کہ غصہ ہونے

پر کوئی کفارہ یا جزا مرتب نہ ہو حالانکہ اس کے بطلان پر کثیر تعداد میں صحیح احادیث وارد ہیں جو غصہ ختم ہونے کے بعد بھی ان قسموں پر حنث لازم آنے میں درجہ شہرت تک پہنچی ہیں حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: جب تو قسم کھائے تو دیکھ کہ اس قسم کا غیر یعنی خلاف بہتر ہو تو بہتر کو بجالاؤ اور قسم کا کفارہ دے۔ اس کو بخاری و مسلم نے سمرہ بن جندب اور احمد اور مسلم ترمذی نے ابوہریرہ اور نسائی اور ابن ماجہ نے عوف بن مالک کے والد سے روایت کیا ہے اور عبدالرزاق نے ابن سیرین سے مرسلاً اور ابو بکر بن شیبہ اور بیہقی نے موقوفاً امیر المومنین

[حاشیہ] ۱ صحیح بخاری کتاب الایمان والنذور قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۸۰/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13

[Left Column] (Prophet) peace and blessings of Allah be upon him said: "By Allah, if Allah wills, I do not swear an oath and then see something else better than it, except that I expiate my oath and do that which is better." 1 By God, if God wills, every oath that I take and then see something else better than it, I will adopt the better path and give the expiation for the oath. Narrated by Ahmad, Abdul Razzaq, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, Nasai, and Ibn Majah from Abu Musa al-Ash'ari; by Tabarani in al-Kabir, Hakim, and Bayhaqi from Abu al-Darda; by Hakim from the Mother of the Believers al-Siddiqah; and by Tabarani from Imran bin Husain (may Allah be pleased with them). Abdul Razzaq narrated from the Mother of the Believers, from the saying of Hazrat Abu Bakr (may Allah be pleased with them both). Abdul Razzaq, Ibn Abi Shaybah, Ibn Hamid, Ibn Jarir, Ibn al-Mundhir, Abu al-Sheikh, and Bayhaqi narrated from the Commander of the Faithful Umar (may Allah be pleased with him) with similar meaning. There are also narrations from others (may Allah be pleased with them) in this chapter. And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "By Allah, it is more sinful in the sight of Allah for one of you to persist in an oath concerning his family than to pay the expiation that Allah has made obligatory for him." 2 That is, if someone takes an oath regarding his family to cause them harm and distress...

[Right Column] It is narrated from Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him). And the Prophet (peace and blessings be upon him) says: By God! If Allah wills, whatever oath I take and then find something else better than it, I will adopt what is better and pay the expiation for the oath. This was narrated by Ahmad, Abdul Razzaq, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, Nasai, and Ibn Majah from Abu Musa al-Ash'ari; by Tabarani in al-Kabir, Hakim, and Bayhaqi from Abu al-Darda; by Hakim from the Mother of the Believers Aisha al-Siddiqah; and by Tabarani from Imran bin Husain (may Allah be pleased with them). Abdul Razzaq narrated from the Mother of the Believers, from the saying of Hazrat Abu Bakr (may Allah be pleased with them both). Abdul Razzaq, Ibn Abi Shaybah, Ibn Hamid, Ibn Jarir, Ibn al-Mundhir, Abu al-Sheikh, and Bayhaqi narrated from the Commander of the Faithful Umar Farooq (may Allah be pleased with him) with similar meaning. While there are also narrations from other companions (may Allah be pleased with them) in this chapter, the Prophet (peace and blessings be upon him) himself says: "If someone takes an oath regarding his family to cause them distress and harm, then by God, causing them harm and fulfilling the oath is a greater sin in the sight of Allah than paying the expiation that

Allah has prescribed for such an oath." This was narrated by Bukhari and Muslim (the two Shaykhs) from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him)...

[Footnotes] 1 Sahih Bukhari, Book of Oaths and Vows, Qadimi Kutub Khana Karachi, 980/2 2 Sahih Bukhari, Book of Oaths and Vows, Qadimi Kutub Khana Karachi, 980/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[बायाँ कॉलम] हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम, अगर अल्लाह चाहे तो मैं किसी चीज़ की क़सम नहीं खाता और फिर उससे बेहतर कुछ और पाता हूँ, मगर मैं अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करता हूँ और वह काम करता हूँ जो बेहतर है।" 1 खुदा की कसम, अगर खुदा चाहे, हर वह कसम जो मैं खाऊँ और फिर उसका विकल्प उससे बेहतर देखूँ, तो मैं बेहतर काम करूँगा और कसम का कफ़्फ़ारा दूँगा। इसे अहमद, अब्दुल रज़्ज़ाक, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्न माजा ने अबू मूसा अशअरी से; तबरानी ने 'कबीर' में, हाकिम और बैहक़ी ने अबू दरदा से; हाकिम ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा से; और तबरानी ने इमरान बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत किया है। अब्दुल रज़्ज़ाक ने उम्मुल मोमिनीन से हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) का कौल रिवायत किया है। अब्दुल रज़्ज़ाक, इब्न अबी शैबा, इब्न हमीद, इब्न ज़रीर, इब्नुल मुन्ज़िर, अबू शैख़ और बैहक़ी ने अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से इसी मफहूम के साथ रिवायत किया है। इस बाब में दीगर सहाबा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से भी रिवायतें मौजूद हैं। और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "खुदा की कसम, तुम में से किसी का अपने परिवार के बारे में कसम पर अड़े रहना अल्लाह के नज़दीक उससे बड़ा गुनाह है कि वह उस कसम का कफ़्फ़ारा अदा करे जो अल्लाह ने उस पर वाजिब किया है।" 2 यानी अगर कोई अपने परिवार के बारे में उन्हें तकलीफ और नुकसान पहुँचाने के लिए कसम खाए...

[दायाँ कॉलम] हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत है। और हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: खुदा की कसम! अगर अल्लाह तआला चाहे तो जो कसम भी मैं खाऊँ और फिर उसके बाद उसके अलावा कुछ और बेहतर पाऊँ तो मैं बेहतर को इख्तियार करूँगा और कसम का कफ़्फ़ारा (जुर्माना) अदा करूँगा। इसे अहमद, अब्दुल रज़्ज़ाक, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्न माजा ने अबू मूसा अशअरी से; तबरानी ने 'कबीर' में, हाकिम और बैहक़ी ने अबू दरदा से; हाकिम ने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका से; और तबरानी ने इमरान बिन हुसैन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत किया है। अब्दुल रज़्ज़ाक ने उम्मुल मोमिनीन से हज़रत अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) का कौल रिवायत किया है। अब्दुल रज़्ज़ाक, इब्न अबी शैबा, इब्न हमीद, इब्न ज़रीर, इब्नुल मुन्ज़िर, अबू शैख़ और बैहक़ी ने अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से इसी मफहूम के साथ रिवायत किया है। जबकि इस बाब में दीगर

सहाबा रज़वानुल्लाहु तआला अन्हुम से भी रिवायतें हैं, और खुद हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अगर कोई शख्स अपने घर वालों के बारे में उन्हें तकलीफ और नुकसान पहुँचाने के लिए कसम खाए, तो खुदा की कसम, उन्हें नुकसान पहुँचाना और कसम पूरी करना अल्लाह के नज़दीक उससे बड़ा गुनाह है कि वह उस कसम के बदले वह कफ़्फ़ारा दे जो अल्लाह तआला ने उस पर मुकर्रर फ़रमाया है।" इसे बुखारी और मुस्लिम (शैखैन) ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया है...

[पाद-टिप्पणियाँ] 1 सहीह बुखारी, किताबुल ईमान वन-नुज़ूर, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 980/2 2 सहीह बुखारी, किताबुल ईमान वन-नुज़ूर, क़दीमी कुतुब खाना कराची, 980/2

पृष्ठ 549/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اِنِّی وَ اللہِ اِنْ شَآءَ اللہُ لَا اَحْلِفُ عَلٰی یَمِیْنٍ فَاَرٰی غَیْرَھَا خَیْرًا مِّنْھَا اِلَّا کَفَّرْتُ عَنْ یَّمِیْنِیْ وَ اَتَیْتُ الَّذِیْ ھُوَ خَیْرٌ ۱۔ بخدا اگر خدا خواہد ہر سوگند کہ خورم باز غیر او بہتر از و بینم ہماں بہتر را پیش نہم و سوگند را کفارہ دہم رواہ احمد و عبدالرزاق والبخاری ومسلم و ابوداؤد والنسائی و ابن ماجۃ عن ابی موسٰی الاشعری والطبرانی فی الکبیر والحاکم والبیہقی عن ابی الدرداء والحاکم عن ام المؤمنین الصدیقۃ والطبرانی عن عمران بن حصین رضی اللہ تعالٰی عنہم و عبدالرزاق عن ام المؤمنین عن ابی بکر الصدیق رضی اللہ تعالٰی عنہما من قولہ وعبدالرزاق وابن ابی شیبۃ وابناء حمید و جریر و المنذر وابو الشیخ والبیہقی عن امیر المؤمنین عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ بمعناہ و فی الباب غیرھم رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ وفرمودند صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وَ اللہِ لَاَنْ یَّلَجَّ اَحَدُکُمْ بِیَمِیْنِہٖ فِیْ اَھْلِہٖ اَثَمُ لَہٗ عِنْدَ اللہِ مِنْ اَنْ یُعْطِیَ کَفَّارَتَہُ الَّتِیْ افْتَرَضَ اللہُ عَلَیْہِ ۲۔ یعنی اگر کسے درباره اہل خود بر ایذ او اضرار ایشاں...

حضرت عمر فاروق (رضی اللہ تعالٰی عنہم) سے روایت کیا ہے۔ اور حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں: بخدا! اگر اللہ تعالٰی چاہے تو جو قسم بھی میں کھاؤں پھر اس کے بعد اس کے غیر کو بہتر پاؤں تو بہتر کو اختیار کروں گا اور قسم کا کفارہ دوں گا۔ اس کو احمد، عبدالرزاق، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی اور ابن ماجہ نے ابو موسٰی اشعری سے اور طبرانی نے کبیر میں، حاکم اور بیہقی نے ابودرداء سے، اور حاکم نے ام المؤمنین عائشہ صدیقہ سے، اور طبرانی نے عمران بن حصین سے (رضی اللہ تعالٰی عنہم) روایت کیا ہے۔ اور عبدالرزاق نے حضرت ام المؤمنین سے انہوں نے حضرت ابو بکر رضی اللہ تعالٰی عنہما کا قول، اور عبدالرزاق، ابن ابی شیبہ، ابن حمید، ابن جریر ابن منذر، ابو شیخ، اور بیہقی نے امیر المؤمنین عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ سے

بالمعنیٰ روایت کیا ہے جبکہ اس باب میں دیگر صحابہ رضوان اللہ تعالیٰ عنہم سے بھی روایات ہیں، اور خود حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں: اگر کوئی شخص اپنے اہل کے متعلق اس کو اذیت اور ضرر پہنچانے کیلئے قسم کھائے پس بخدا اس کو ضرر دینا اور قسم کو پورا کرنا عنداللہ زیادہ گناہ ہے اس سے کہ وہ اس قسم کے بدلے کفارہ دے جو اللہ تعالیٰ نے اس پر مقرر فرمایا ہے، اس کو بخاری اور مسلم (شیخین) نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ...

۱ صحیح بخاری کتاب الایمان والنذور قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۹۸۰ ۲ صحیح بخاری کتاب الایمان والنذور قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۹۸۰

Fatawa Rizwia, Volume 13, Page 13

He swore by Allah to harm them with an intention equal to their harm, as narrated. From these narrations, it is known that an oath is a voluntary action, and no voluntary action is possible without intention and purpose. Nevertheless, when one finds something better than the oath, he should do what is better and change his opinion and intention. He should no longer intend to perform the act of the oath. If the oath were to end simply because the intention ended, then why is the expiation (kaffara) mentioned in these hadiths? On what basis would it be required?

Secondly, the answer is that the absolute and general invalidity of an oath due to the loss of its purpose is incorrect. For example, if a person swears unconditionally that he will hit someone, or drag someone before a ruler, or feed someone a certain thing, or clothe someone, or give someone good news, etc., these oaths, according to custom, are for his entire life. If he does not perform these actions until that person dies, he will certainly have broken his oath (hanith) and will have to pay expiation. If these oaths were related to divorce or emancipation (manumission), then the divorce or emancipation would take effect because, with the death of the person, all the purposes of the oath have come to an end. These matters are clear, and many issues have been derived from them in the books of the school of law. It is mentioned in Khaniyah, Kubra, Muheet, Tajnees, Khulasah, Bazzaziyah, Hindiyyah, etc., that a person, in a dispute with his brother and sister, said to them: 'If I do not make both of you enter the backside of a donkey, then such and such thing becomes mandatory upon me.' In such a situation...

Page 550 of 688

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

उसने अल्लाह की कसम खाई कि वह उन्हें नुकसान पहुँचाएगा और उसका इरादा उनके नुकसान के बराबर था, जैसा कि रिवायतों में है। इन रिवायतों से मालूम होता है कि कसम एक ऐच्छिक (इख्तियारी) कार्य है, और कोई भी ऐच्छिक कार्य इरादे और उद्देश्य के बिना संभव नहीं है। फिर भी, जब वह इसके विपरीत को बेहतर समझे, तो उसे वह बेहतर कार्य करना चाहिए और अपनी राय और इरादे को बदल देना चाहिए। वह उसका इरादा न करे। तो अगर कसम वाले कार्य का इरादा खत्म हो जाने से कसम खत्म हो जाती, तो फिर इन हदीसों में कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) का उल्लेख किस चीज़ पर है?

दूसरा जवाब यह है कि उद्देश्य के खत्म होने से भी पूर्णतः और सामान्य रूप से कसम का बातिल (अमान्य) होना गलत है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति बिना किसी शर्त के कसम खाता है कि मैं अमुक को मारूँगा, या अमुक को खींचकर हाकिम के सामने ले जाऊँगा, या अमुक चीज़ खिलाऊँगा, या कपड़े पहनाऊँगा, या अमुक को खुशखबरी दूँगा, इत्यादि। तो ये कसमें परंपरा के अनुसार पूरी उम्र के लिए होंगी। यदि उसने ये काम नहीं किए यहाँ तक कि वह अमुक व्यक्ति मर जाए, तो वह निश्चित रूप से 'हानिस' (कसम तोड़ने वाला) होगा और उसे कफ़्फ़ारा देना होगा। और यदि ये कसमें तलाक या गुलामी से मुक्ति (इताक़) से संबंधित थीं, तो तलाक या मुक्ति प्रभावी हो जाएगी क्योंकि अमुक व्यक्ति की मृत्यु से कसम के सभी उद्देश्य समाप्त हो जाते हैं। ये सभी बातें स्पष्ट हैं और मज़हब की किताबों में इन पर कई मसले आधारित किए गए हैं। खानिया, कुबरा, मुहीत, तजनीस, खुलासा, बज़ाज़िया और हिन्दिया आदि में लिखा है कि एक व्यक्ति ने अपने भाई और बहन से झगड़े में कहा कि 'अगर मैं तुम दोनों को गधे की पुश्त (पिछवाड़े) में दाखिल न करूँ तो अमुक चीज़ अनिवार्य हो जाए।' तो इस प्रकार की स्थिति में...

पृष्ठ 550 ऑफ़ 688

سوگند خورد پس بخدا کہ باضرار او برابر ارادہ باضرار شاں سے روایت کیا ہے۔ ان روایات سے معلوم ہوا کہ قسم اختیاری فعل ہے اور کوئی اختیاری فعل ارادہ اور قصد کے بغیر ممکن نہیں تو اس کے باوجود جب اس کے خلاف کو بہتر جانے تو اس بہتر کو کرے اور اپنی رائے اور ارادہ کو تبدیل کردے اور اس کا قصد نہ کرے، تو اگر قسم والے فعل کا قصد ختم ہو جانے سے قسم ختم ہو جاتی ہے تو پھر ان احادیث میں کفارہ کا ذکر کس چیز پر ہے۔

ثانیاً جواب یہ ہے، مقصود کے انتفاء سے بھی علی الاطلاق اور علی العموم قسم کا باطل ہونا غلط ہے، مثلاً کوئی شخص غیر مقید طور پر قسم کھاتا ہے کہ میں فلاں کو ماروں گا، یا فلاں کی کھینچا تانی کروں گا، یا حاکم کے سامنے کروں گا یا فلاں چیز کھلاؤں گا یا پہناؤں گا، یا جوڑا پہناؤں گا، یا فلاں کو خوشخبری دوں گا، وغیرہ ذالک، تو یہ قسمیں عرفاً پوری زندگی بھر کے لئے ہوں گی اگر یہ کام نہ کئے حتیٰ کہ وہ فلاں فوت ہو جائے تو یقیناً حانث ہوگا، اور کفارہ دینا ہوگا، اور یہ قسمیں طلاق یا عتاق سے متعلق تھیں تو طلاق یا عتاق واقع ہو جائے گی کیونکہ فلاں کے فوت ہو جانے سے قسم کے تمام مقاصد ختم ہو جاتے ہیں یہ تمام امور واضح ہیں اور مذہب کی کتب میں ان پر کثیر مسائل متفرع کئے گئے ہیں۔ خانیہ، کبریٰ، محیط، تجنیس، خلاصہ، بزازیہ اور ہندیہ وغیرہا میں ہے کہ ایک شخص نے اپنے بھائی اور بہن سے جھگڑے میں ان کو کہا اگر میں تم دونوں کو گدھے کی در میں داخل نہ کردوں تو فلاں چیز لازم آئے، تو اس قسم کی صورت میں

Fatawa Razawiyya, Volume 13

(Right Column) The noble jurists have discussed this and declared it correct that this is an oath of anger and displeasure, and the oath remains for a lifetime. If this action is not taken against those two throughout life, the oath will break upon the death of either those two or the one who swore, and expiation (kaffara) will become mandatory. These mentioned words are noted in the categories of oaths in al-Khaniyyah, and al-Khaniyyah states in the discussion of divorce that some said as long as the persons related to this oath are alive, the oath will not break, while some said he is incapable of doing so. However, if with these words he intended to create dominance and hardship, it will not break during their lifetime; rather, it will break upon the death of any of the three before the goal is achieved, and this is what is relied upon. It is mentioned in al-Kubra and others that the fatwa is based on this. And since the indication of the state (dalalat al-hal) has no involvement in this doubt, we leave the clarification of this issue for the future, God willing. (T) Sixth Doubt: The basis of this type of oath is the son being deserving of punishment due to the father's anger. Therefore, the indication of the state requires that this oath be restricted to the period during which the son remains deserving of punishment, as Allama Sakhani, from among the later scholars, expressed in one issue. It is in Radd al-Muhtar: "Warning: I saw the statement of my teacher's teacher, al-Sakhani, regarding the commentator's statement: If one swears that I will [drag] so-and-so..."

(Left Column) "The swearer (al-halif). This is the wording of al-Khaniyyah regarding oaths. Its wording regarding divorce is: Some said he does not break the oath as long as they are alive. Others said he breaks it immediately because he is clearly unable to do that, unless he intended by that to overpower and restrict them; then he does not break it as long as they are alive. If the swearer or one of the two brothers dies before he does that, he breaks the oath, and this is the relied-upon view. It is mentioned in al-Kubra and others, and the fatwa is based on it." And since the indication of the state (dalalat al-hal) has nothing to do with this doubt, we will leave the clarification of this issue for later discourse, God willing. Sixth Doubt: The basis of the oath is the son's desert of punishment; therefore, according to the indication of the state, it should be restricted to the time of that desert remaining, just as Allama Sakhani, among the later scholars, has clarified in one issue. In Radd al-Muhtar: (Warning) I saw in the handwriting of our shaykh's shaykh, al-Sakhani, regarding the statement of the commentator "If he swears to drag him...", etc.

(Footnotes) 1. Fatawa Qadi Khan, Kitab al-Aiman, chapter on oaths regarding abuse and slander, Naval Kishore, Lucknow, 5/325. 2. Fatawa Qadi Khan, Kitab al-Talaq, chapter on conditional divorce, Naval Kishore, Lucknow, 2/32/231.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

(दायां कॉलम) सम्मानित न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने इस पर चर्चा की है और इसे सही माना है कि यह क्रोध और नाराजगी की शपथ है, और यह जीवन भर के लिए होगी। यदि जीवन भर उन दोनों के विरुद्ध यह कार्यवाही नहीं की जाती, तो उन दोनों में से किसी के या शपथ लेने वाले की मृत्यु पर शपथ टूट जाएगी और कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य हो जाएगा। ये शब्द अल-खनिया की श्रेणियों में वर्णित हैं, और अल-खनिया ने तलाक की चर्चा में कहा है कि कुछ लोगों का मानना है कि जब तक इस शपथ से संबंधित व्यक्ति जीवित हैं, शपथ नहीं टूटेगी, जबकि कुछ ने कहा कि वह ऐसा करने में असमर्थ है। हाँ, यदि इन शब्दों से उसका उद्देश्य प्रभुत्व और कठिनाई पैदा करना था, तो यह उनके जीवनकाल में नहीं टूटेगी, बल्कि लक्ष्य पूरा होने से पहले तीनों में से किसी एक की मृत्यु पर टूट जाएगी, और इसी पर भरोसा किया गया है। अल-कुबरा और अन्य ग्रंथों में उल्लेख है कि फतवा इसी पर आधारित है। और चूंकि इस संदेह में स्थिति के संकेत (दलालत अल-हाल) की कोई भूमिका नहीं है, इसलिए हम इस मुद्दे के स्पष्टीकरण को भविष्य के लिए छोड़ते हैं, इंशाअल्लाह। (त) छठा संदेह: इस प्रकार की शपथ का आधार पिता के क्रोध के कारण बेटे का सजा के पात्र होना है। अतः स्थिति का संकेत यह मांग करता है कि यह शपथ उस अवधि तक सीमित हो जब तक बेटा सजा का पात्र रहे, जैसा कि बाद के विद्वानों में से अल्लामा सखानी ने एक मसले में व्यक्त किया है। रद्दुल मुहतार में है: "चेतावनी: मैंने अपने गुरु के गुरु अल-सखानी का कथन व्याख्याकार के इस कथन पर देखा कि: 'यदि कोई शपथ ले कि मैं अमुक को [घसीटूंगा]...'"

(बायां कॉलम) "शपथ लेने वाला (अल-हालिफ़)। यह शपथ के बारे में अल-खनिया के शब्द हैं। तलाक के बारे में इसके शब्द हैं: कुछ ने कहा कि जब तक वे जीवित हैं वह शपथ नहीं तोड़ता। कुछ ने कहा कि वह तुरंत शपथ तोड़ता है क्योंकि वह स्पष्ट रूप से ऐसा करने में असमर्थ है, जब तक कि उसका उद्देश्य उन पर काबू पाना और उन्हें प्रतिबंधित करना न हो; तब वह उनके जीवित रहने तक शपथ नहीं तोड़ता। यदि शपथ लेने वाला या दोनों भाइयों में से कोई एक ऐसा करने से पहले मर जाता है, तो शपथ टूट जाती है, और इसी पर भरोसा किया गया है।" और चूंकि स्थिति के संकेत (दलालत अल-हाल) का इस संदेह से कोई लेना-देना नहीं है, इसलिए हम इस मसले के स्पष्टीकरण पर आगे चर्चा करेंगे, इंशाअल्लाह। छठा संदेह: शपथ का आधार बेटे का दंड का पात्र होना है; इसलिए, स्थिति के संकेत के अनुसार, इसे उस समय तक प्रतिबंधित किया जाना चाहिए जब तक वह पात्रता बनी रहे, जैसा कि बाद के विद्वानों में अल्लामा सखानी ने एक मसले में स्पष्ट किया है। रद्दुल मुहतार में है:

(चेतावनी) मैंने हमारे शेख के शेख अल-सखानी की लिखावट में देखा, व्याख्याकार के इस कथन पर कि "यदि वह उसे घसीटने की शपथ लेता है...", आदि।

(पादलेख) 1. फ़तावा क़ाज़ी खान, किताबुल ईमान, गाली-गलौज और बदनामी की शपथ पर अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 5/325। 2. फ़तावा क़ाज़ी खान, किताबुत तलाक, सशर्त तलाक का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 2/32/231।

पृष्ठ 551 (688 में से)

(دائیں کالم) فقہائے کرام نے بحث کی ہے اور صحیح یہ قرار دیا کہ یہ غصہ اور ناراضگی کی قسم ہے اور عمر بھر کے لئے قسم ہوگی اور اگر عمر بھر ان دونوں سے یہ کارروائی نہ کرے تو ان دونوں یا قسم کھانے والے کے فوت ہو جانے پر قسم ٹوٹ جائے گی اور کفارہ لازم آئے گا۔ یہ مذکور الفاظ خانیہ کی قسموں میں مذکور ہیں، اور خانیہ نے طلاق کی بحث میں یوں فرمایا کہ بعض نے کہا ہے کہ جب تک اس قسم سے متعلق حضرات زندہ ہیں قسم نہ ٹوٹے گی، اور بعض نے کہا ہے کہ یہ ایسا کرنے سے عاجز ہے، ہاں اگر ان الفاظ سے اس نے غلبہ اور تنگی پیدا کرنے کی نیت کی ہو تو ان کی زندگی میں نہ ٹوٹے گی بلکہ مقصد کو پورا کرنے سے پہلے تینوں میں سے کسی کے فوت ہونے پر ٹوٹے گی، اور اسی پر اعتماد ہے اھ اور کبرٰی وغیرہ میں فرمایا کہ اسی پر فتوٰی ہے۔ اور جب دلالت حال کا اس شبہ میں دخل نہیں تو اس مسئلہ کی تنقیح کو ہم آئندہ پر چھوڑتے ہیں ان شاء اللہ تعالٰی۔ (ت) چھٹا شبہہ : اس قسم کی بنیاد بیٹے کا باپ کی ناراضگی کی وجہ سے قابل سزا ہونا ہے تو حال کی دلالت کا تقاضا ہے کہ یہ قسم بیٹے کے قابل سزا ہونے تک کے زمانہ سے مقید ہو گی جیسا کہ متاخرین علماء میں سے علامہ سائحانی نے ایک مسئلہ میں اس کا اظہار کیا ہے، اور ردالمحتار میں ہے تنبیہ میں نے اپنے شیخ سائحانی کا قول دیکھا کہ انہوں نے شارح کے اس قول پر کہ "کوئی قسم کھائے کہ میں فلاں کو

(بائیں کالم) الحالف ۱ ھٰذا لفظ الخانیۃ فی الایمان، ولفظہا فی الطلاق قال بعضہم لایحنث ماداموا فی الاحیاء وقال بعضہم یحنث للحال لانہ عاجز عن ذلک ظاہر االا ان ینوی بذلک القہر والتضییق علیہما فلا یحنث ماداموا فی الاحیاء فان مات الحالف اواحد الاخوین قبل ان یفعل ذلک حنث وعلیہ الاعتماد ۲ھ و قال فی الکبری و غیرہا وعلیہ الفتوی و چوں دلالت حال را بایں شبہہ کارے نماند از تنقیح

مسئلہ اش آئندہ سخن رانیم ان شاء اللہ تعالیٰ۔ شبہہ سادسہ : بنائے یمین بر استحقاق پسر مرانتقام راست پس بدلالت حال متقید شود بزمان بقائے آں استحقاق چنانکہ از علمائے متاخرین علامہ سائحانی در ایک مسئلہ استظہار کردہ ست در رد المحتار ست (تنبیہ) رأیت بخط شیخ مشائخنا السائحانی عند قول الشارح لو حلف ان یجرہ الخ

(حواشی) ۱ فتاویٰ قاضی خاں کتاب الایمان فصل فی الیمین علی الشتم والقذف نولکشور لکھنؤ ۵/۳۲۵ ۲ فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۲/۲۳۱/۳۲

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

"This indicates that if someone swears to complain about someone, and then they reconcile, and the intention to cause harm ceases, and one fears [harm] from the complaint, the oath is nullified because it is conceptually restricted to the continuation of the state of entitlement to revenge, as it appears to me. So reflect on it."

I say (in response): Among the later scholars, this aforementioned scholar did not find this issue in any book of the predecessors or successors; rather, he said it based on his own opinion. That is why he said: "as it has appeared to me." Furthermore, Allama Shami did not rely on it either, which is why after quoting this statement, he said "reflect on it" (fa-ta'ammalhu). Moreover, he did not begin with this speech; rather, before this, he used the intention of abandoning the reason for the oath as evidence, while you have heard its condition in the response to the fifth and fourth doubts. And he wanted to derive conclusions from cases involving circumstantial evidence (dalalat-ul-hal), whereas you have already clearly understood the difference between the absence of intention and the passing of the objective itself. In the end, he refers to the state of entitlement to revenge, and all these matters are becoming motives and causes for the oath, while their state in the third...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Oaths regarding Eating and Drinking, etc. Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/106

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

"यह इस बात का संकेत देता है कि यदि कोई किसी की शिकायत करने की कसम खाए, फिर उनमें सुलह हो जाए और नुकसान पहुँचाने का इरादा खत्म हो जाए, और शिकायत करने से डर लगे, तो कसम समाप्त हो जाएगी क्योंकि यह कसम वैचारिक रूप से प्रतिशोध के अधिकार की स्थिति के बने रहने से बंधी है, जैसा कि मुझे स्पष्ट हुआ है। अतः इस पर विचार करें।"

मैं कहता हूँ (इसके उत्तर में): उत्तरकालीन विद्वानों में से उक्त अल्लामा ने इस मसले को पूर्ववर्ती या उत्तरवर्ती विद्वानों की किसी भी पुस्तक में नहीं पाया, बल्कि उन्होंने यह बात अपनी राय से कही है। इसीलिए उन्होंने कहा: "जैसा कि मुझे मालूम हुआ है।" और फिर अल्लामा शामी ने भी इस पर भरोसा नहीं किया, इसीलिए उन्होंने इस कथन को उद्धृत करने के बाद कहा "इस पर विचार करें" (फ़-तअम्मल्हु)। इसके अलावा, उन्होंने इस बात से शुरुआत नहीं की, बल्कि इससे पहले उन्होंने कसम के कारण को छोड़ने के इरादे को दलील बनाया है, जबकि उसकी स्थिति आपने पाँचवें और चौथे संदेह के उत्तर में सुन ली है। और उन्होंने उन मामलों से निष्कर्ष निकालना चाहा जिनमें परिस्थितिजन्य साक्ष्य (दलालत-उल-हाल) हो, जबकि आपने इरादे के अभाव और उद्देश्य के स्वतः समाप्त हो जाने के बीच के अंतर को अच्छी तरह समझ लिया है। अंत में वे प्रतिशोध के अधिकार की स्थिति की बात कर रहे हैं, और ये सभी बातें कसम के लिए प्रेरक और कारण बन रही हैं, जबकि उनकी स्थिति तीसरे...

---

[1] रद अल-मुह्तार, खान-पान की कसमों का अध्याय, आदि। दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/106

पृष्ठ 688 में से 552

"قاضی کی عدالت میں پیش کروں گا الخ " تو انہوں نے اس پر فرمایا کہ شارح کے اس قول سے یہ فائدہ ہو رہا ہے کہ جو شخص قسم کھائے کہ میں فلاں کی شکایت کروں گا، پھر قسم کے بعد صلح ہو جائے اور فلاں کو ضرر دینے کا ارادہ ختم ہو جائے اور شکایت کرنے سے گھبرائے تو قسم ساقط ہو جائیگی کیونکہ یہ قسم معنوی طور پر انتقام کے ارادہ کی بقاء سے مقید ہے، یہ وہ ہے جو مجھے معلوم ہو سکا ہے، اھ، تو غور کرو۔

اقول: (اس کے جواب میں میں کہتا ہوں) کہ متاخرین میں سے اس علامہ مذکور نے یہ مسئلہ کسی کتاب سلف یا خلف میں نہ پایا بلکہ انہوں نے یہ بات اپنی رائے سے کہی ہے اسی لئے انہوں نے فرمایا: "جیسا کہ مجھے معلوم ہوا ہے" اور پھر علامہ شامی نے بھی اس پر اعتماد نہیں کیا اسی لئے انہوں نے اس قول کو نقل کرنے کے بعد فرمایا کہ غور کرو، نیز انہوں نے اس کلام سے ابتداء نہیں کی بلکہ اس سے قبل انہوں نے قسم کی وجہ کو ترک کرنے کے قصد کو دلیل بنایا ہے جبکہ اس کا حال پانچویں اور چوتھے شبہ کے جواب میں آپ نے سن لیا ہے۔ اور دلالتِ حال والے مسائل کی تفریعات سے استنباط کرنا چاہا، حالانکہ آپ نے قصد نہ کرنے اور مقصد کے خود فوت ہوجانے، کا فرق خوب سمجھ لیا ہے، آخر میں وہ انتقام کے استحقاق کے حوالہ سے بات کر رہے ہیں اور یہ تمام امور قسم کے لئے داعی و اسباب بن رہے ہیں، جبکہ ان کا حال تیسرے...

---

[1] رد المحتار، باب الیمین فی الاکل والشرب الخ دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۰۶/۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

[Persian text column on the left] We are drawn to this discourse; had it not been that this statement was found in a scholar's handwriting on the margin of a book, there would have been no need to highlight it. Disregarding all previous discourse, I offer a new answer that leaves no room for restricting it to the right of revenge.

[Urdu text column on the right] You have already learned the answer to the doubt. Furthermore, in the account of Hazrat Sayyiduna Ayyub (peace and blessings be upon him and our Prophet), there is a sufficient and satisfying answer regarding both the intention to abandon the reason for the oath and the termination of the right of revenge, as you have seen in the rebuttal of the fourth doubt. In short, everything we have mentioned from the answer to the third doubt until here pertains to this very matter. Had this point not been written on the margin of some book by a scholar, there would have been no need to clarify it. Nevertheless, setting aside all previous discussion, we establish in a new way that this type of oath is not related to the right of revenge and is not restricted by it. (T)

[Persian text continued on left] I say: And with Allah is the guidance. Firstly, if Zeyd takes an oath to present Amr before the judge and then reconciles with him, did Amr actually commit a crime or injustice against Zeyd, or was Zeyd himself an oppressor, as is the habit of many people who enjoy troubling others, and wanted to file a complaint on his own? In the second case, there was no right of revenge from the start, so what is the meaning of restricting the oath to the period of revenge? In the first case, what is removed by reconciliation is the intention of revenge, not the right to it, because a crime or injustice committed does not become uncommitted through reconciliation. Why then should the oath end? If the right of revenge were removed upon the return of the criminal, then forgiveness and pardoning a repentant person would not be forgiveness or pardoning, but rather restraining him from injustice, which is definitively false. Therefore, according to the Ahl al-Sunnah, the acceptance of repentance is not an inherent obligation. Even according to the Maturidi Imams, who consider punishing an obedient person intellectually impossible, it is stated in Sharh al-Maqasid: "As for the acceptance of repentance, it is not obligatory upon us, for there is no obligation upon Allah Almighty." This refutes the Mu'tazilite argument.

[Urdu text continued on right] I say: (By the grace of Allah Almighty) Firstly, Zeyd took an oath that 'I will present Amr before the judge,' and then after the oath, he reconciles with Amr. Now it is to be seen whether Amr was truly a culprit and had

wronged Zeyd, or if Zeyd simply wanted to satisfy his habit of troubling people. In the second case, the reason for the oath was never the right of revenge because Amr committed no crime; in this situation, there is no meaning in restricting the oath to the right of revenge. In the first case, where Amr had actually wronged Zeyd, then upon reconciliation, the intention to take revenge on Amr ended, but the right to take revenge did not end, because through Zeyd's reconciliation, Amr's crime did not cease, and a committed sin cannot become uncommitted. Thus, when the crime remains, the right of revenge still remains.

---

1 Sharh al-Maqasid, the fourteenth discussion on Repentance, Dar al-Ma'arif al-Nu'maniya, Pakistan, 2/422.

फतावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[बाएं कॉलम में फ़ारसी पाठ] हम इस चर्चा की ओर आकर्षित हैं; यदि यह बात किसी विद्वान के हाथ से किसी पुस्तक के हाशिये पर न लिखी मिली होती, तो इसे उजागर करने की आवश्यकता नहीं होती। पिछली सभी चर्चाओं को छोड़कर, मैं एक नया उत्तर देता हूँ जो इसे प्रतिशोध के अधिकार तक सीमित रखने की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता।

[दाएं कॉलम में उर्दू पाठ] संदेह का उत्तर आप पहले ही जान चुके हैं। इसके अलावा, हज़रत सैय्यदुना अय्यूब (उन पर और हमारे पैगंबर पर शांति और आशीर्वाद हो) के वृत्तांत में शपथ के कारण को छोड़ने के इरादे और प्रतिशोध के अधिकार की समाप्ति, दोनों बातों का पर्याप्त और संतोषजनक उत्तर मौजूद है, जैसा कि आपने चौथे संदेह के खंडन में देखा है। संक्षेप में, तीसरे संदेह के उत्तर से लेकर यहाँ तक हमने जो कुछ भी उल्लेख किया है वह इसी विषय से संबंधित है। यदि किसी विद्वान द्वारा किसी पुस्तक के हाशिये पर यह बात न लिखी गई होती, तो इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं थी। फिर भी, पिछली सभी चर्चाओं को दरकिनार करते हुए, हम एक नए तरीके से यह सिद्ध करते हैं कि इस प्रकार की शपथ का प्रतिशोध के अधिकार से कोई संबंध नहीं है और यह उससे प्रतिबंधित नहीं है। (त)

[बाएं कॉलम में फ़ारसी पाठ जारी] मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है। प्रथमत; यदि ज़ैद शपथ लेता है कि वह अम्र को न्यायाधीश के सामने पेश करेगा और फिर उससे सुलह कर लेता है, तो क्या अम्र ने वास्तव में ज़ैद के प्रति कोई अपराध या अन्याय किया था, या ज़ैद स्वयं एक अत्याचारी था, जैसा कि कई लोगों की आदत होती है जो दूसरों को परेशान करने का आनंद लेते हैं, और स्वयं ही शिकायत दर्ज करना चाहता था? दूसरी स्थिति में, शुरू से ही प्रतिशोध का कोई अधिकार नहीं था, तो शपथ को प्रतिशोध की अवधि तक सीमित करने का क्या अर्थ है? पहली स्थिति में, सुलह से जो समाप्त होता है वह प्रतिशोध का इरादा है, न कि उसका अधिकार, क्योंकि किया गया अपराध या अन्याय सुलह के माध्यम से अनकिया नहीं हो जाता। फिर शपथ क्यों समाप्त होनी चाहिए? यदि अपराधी के लौटने पर प्रतिशोध का अधिकार समाप्त हो जाता, तो पश्चाताप करने वाले व्यक्ति को क्षमा करना और माफ़ करना क्षमा या माफी नहीं होती, बल्कि उसे अन्याय से रोकना होता, जो निश्चित रूप से असत्य है। इसलिए, अहल अल-सुन्नत के अनुसार, पश्चाताप की स्वीकृति कोई अंतर्निहित दायित्व नहीं है। यहाँ तक कि मातुरीदी इमामों के अनुसार भी, जो एक आज्ञाकारी व्यक्ति को दंडित करना बौद्धिक रूप से असंभव मानते हैं, शरह अल-मकासिद में कहा गया है:

"जहाँ तक पश्चाताप की स्वीकृति का प्रश्न है, यह हम पर अनिवार्य नहीं है, क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान पर कोई दायित्व नहीं है।" यह मुताज़िला तर्क का खंडन करता है।

[दाएं कॉलम में उर्दू पाठ जारी] मैं कहता हूँ: (अल्लाह सर्वशक्तिमान की तौफीक से) प्रथमतः ज़ैद ने शपथ ली कि 'मैं अम्र को न्यायाधीश के सामने पेश करूँगा,' और फिर शपथ के बाद वह अम्र के साथ सुलह कर लेता है। अब यह देखना है कि क्या अम्र वास्तव में अपराधी था और उसने ज़ैद के साथ अन्याय किया था, या ज़ैद बिना किसी कारण के लोगों को परेशान करने की अपनी आदत पूरी करना चाहता था। दूसरी स्थिति में, शपथ का कारण कभी भी प्रतिशोध का अधिकार नहीं था क्योंकि अम्र ने कोई अपराध ही नहीं किया था; इस स्थिति में शपथ को प्रतिशोध के अधिकार तक सीमित रखने का कोई अर्थ नहीं है। और पहली स्थिति में, जहाँ अम्र ने वास्तव में ज़ैद के साथ अन्याय किया था, तो सुलह करने पर अम्र से बदला लेने का इरादा समाप्त हो गया, न कि उसका अधिकार, क्योंकि ज़ैद की सुलह से अम्र का अपराध समाप्त नहीं हुआ, और किया गया पाप अनकिया नहीं हो सकता। अतः, जब अपराध बना हुआ है, तो प्रतिशोध का अधिकार भी अभी बना हुआ है।

---

1 शरह अल-मकासिद, तौबा पर चौदहवीं चर्चा, दार अल-मारिफ अल-नुमानिया, पाकिस्तान, 2/422।

[بائیں کالم میں فارسی متن] ہمیں بریں سخن متوجہ است، اگر نبودے کہ ایں سخن بخط عاملی بر ہامش کتابی یافتند حاجت بہ افراز او نبود و بقطعی نظر از جملہ کلام سابق جوابے تازہ گویم کہ تقیید باستحقاق انتقام را مساغی نگذارد۔

[دائیں کالم میں اردو متن] شبہ کے جواب میں آپ معلوم کر چکے ہیں، اور پھر یہ کہ حضرت سید نا ایوب علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام کے قصہ میں وجہ قسم کو ترک کرنے کا قصد اور انتقام کے استحقاق کے خاتمہ، دونوں چیزوں کا کافی اور شافی جواب موجود ہے جیسا کہ آپ نے چوتھے شبہ کے رد میں دیکھ لیا ہے، غرضیکہ تیسرے شبہ کے جواب سے لے کر یہاں تک جو کچھ ہم نے ذکر کیا ہے وہ تمام اس بات سے ہی متعلق ہے، اگر کسی کتاب کے حاشیہ پر کسی عالم کی یہ بات لکھی ہوئی نہ ہوتی تو اس کو واضح کرنے کی ضرورت نہ تھی، تاہم سابقہ تمام گفتگو سے قطع نظر کرتے ہوئے ہم اس بات کا کہ اس قسم کا استحقاق انتقام سے تعلق نہیں ہے اور یہ اس سے مقید نہیں ہے، نئے انداز سے اثبات کرتے ہیں۔ (ت)

[بائیں کالم میں فارسی متن کا تسلسل] فاقول: وباللہ التوفیق اولا زید کہ سوگند می خورد کہ شکایت عمرو پیش حاکم بر و باز مصالحت میکنند آیا عمرو بواقع جرمی و ستے بحق زید کردہ بود یا زید حسب عادت بسیاری از مردماں مردم آزار خودش ظالم بود و خود شکایتش می خواست. بر تقدیر دوم استحقاق انتقام از سر نبود و تقیید یمین بزمان انتقامش چہ معنی، و بر تقدیر اول انچہ بمصالحت زائل میشود قصد انتقام نہ استحقاق او کہ بصلح جرم و ستم کردہ نا کردہ نشود پس یمین چرا منتہی گردد اگر بر جوع مجرم استحقاق انتقام بر طرف شدے با یستے کہ عفو و تجاوز از تائب نہ عفو بودے نہ تجاوز بلکہ از ظلم اور اباز داشتن و ہو باطل قطعاً و لہذا نزد اہلسنت قبول توبہ واجب اصلی

نیست تا آنکه نزد ائمہ ماترید یہ با آنکه تعذیب مطیع را محال عقلی دانند در شرح مقاصد فرماید اما قبول التوبة فلا یجب عندنا اذ لا وجوب علی الله تعالی باز دلیل معتزلہ

[دائیں کالم میں اردو متن کا تسلسل] فاقول: (پس میں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے کہتا ہوں) اولا یہ کہ زید نے جو قسم کھائی کہ میں عمرو کو حاکم کے ہاں پیش کروں گا، اور پھر قسم کے بعد عمرو سے صلح کرلیتا ہے تو اب دیکھنا ہے کہ عمرو واقعی مجرم تھا اور اس نے زید کے حق میں ظلم کیا تھا یا زید بلاوجہ اپنی مردم آزاری کی عادت پوری کرنا چاہتا تھا تو دوسری صورت میں قسم کی وجہ استحقاق انتقام ہر گز نہ ہوئی کیونکہ عمرو کا کوئی جرم ہی نہیں ہے تو اس صورت میں قسم کو استحقاق انتقام سے مقید کرنے کا کوئی مطلب نہیں، اور پہلی تقدیر پر کہ عمرو نے واقعی زید کے حق میں ظلم کیا تھا، تو پھر صلح کر لینے پر عمرو سے انتقام لینے کا قصد ختم ہوا نہ کہ اس سے انتقام کا استحقاق ختم ہوا کیونکہ زید کی صلح سے عمرو کا جرم تو ختم نہ ہوا اور کردہ گناہ نا کردہ نہ بن سکا، تو جب جرم باقی ہے تو استحقاق انتقام ابھی باقی ہے

---

1 شرح المقاصد المبحث الرابع عشر في التوبة دار المعارف النعمانية۔ پاکستان ۴۲۲/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13.

It has been stated: "Most of the premises are decorative; rather, it is sometimes claimed with certainty that if someone harms another and violates their sanctity, and then comes apologizing, it is not obligatory by the judgment of reason to accept their apology. Instead, the choice remains with that other person: if they wish, they may forgive, and if they wish, they may punish." Ali Qari says in the commentary of *Fiqh al-Akbar*: "Accepting repentance—which means the dropping of punishment for the sin of the penitent—is not obligatory upon Allah Almighty. Rather, it is a grace from Him, contrary to the view of the Mu'tazilites." Therefore, there is no reason for the oath to lapse through reconciliation.

Otherwise, the oath will not terminate. If the right to retribution were to end simply because the criminal returns, then what would be the significance of granting pardon and forgiveness upon the criminal's repentance and return? In fact, there would be no need for it. Moreover, restraining the criminal now would also become meaningless because the crime would have been automatically negated, whereas this is absolutely false. For this very reason, the same view is held by the Ahl al-Sunnah Maturidiyyah, even though they consider it a rational impossibility to punish an obedient person. In *Sharh al-Maqasid*, it is stated: "Accepting repentance is not obligatory according to us because no obligation can be imposed upon Allah Almighty." Thereafter, while mentioning the argument of the Mu'tazilites, who consider it obligatory for Allah Almighty to accept repentance, it is said that all the premises of their argument are fallacious, and their claim itself is of a similar nature. This is because it is a certain fact that if someone does evil to another and interferes with their sanctity, and then that evildoer apologizes, it is not obligatory by the judgment of reason upon the person whose rights were violated to accept the criminal's apology. Rather, that person has the authority to either forgive and overlook or to punish him. Mulla Ali Qari stated in *Sharh al-Fiqh al-Akbar* that accepting repentance, in the sense of dropping the penalty of sin from the penitent, is not rationally obligatory upon Allah Almighty; rather, accepting repentance is purely a grace of Allah Almighty. The Mu'tazilites oppose this. Thus, it is known that there is no reason for the oath to lapse along with reconciliation. (T)

Secondly, I say that the scholars have mentioned a specific case regarding complaints: a person said to his wife, "If I do not complain to your brother by attributing every evil and foulness in the world to you, then you are divorced." Here they have explicitly stated that until the types of evils...

1 *Sharh al-Maqasid*, The Fourteenth Discussion on Repentance, Dar al-Ma'arif al-Nu'maniyya, Pakistan, 2/242. 2 *Minah al-Rawd al-Azhar Sharh al-Fiqh al-Akbar*, Repentance with its conditions, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 155. Page 554 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13.

यह कहा गया है: "अधिकांश आधार-वाक्य सजावटी हैं; बल्कि कभी-कभी यह निश्चितता के साथ दावा किया जाता है कि यदि कोई किसी दूसरे के साथ बुरा व्यवहार करता है और उसकी गरिमा का उल्लंघन करता है, और फिर माफी माँगते हुए आता है, तो बुद्धि के निर्णय के अनुसार उसकी माफी स्वीकार करना अनिवार्य नहीं है। इसके बजाय, विकल्प उस दूसरे व्यक्ति के पास रहता है: यदि वह चाहे तो क्षमा कर दे, और यदि वह चाहे तो बदला ले (सजा दे)।" मुल्ला अली क़ारी 'फ़िक़्ह अल-अकबर' की व्याख्या में कहते हैं: "तौबा स्वीकार करना—जिसका अर्थ है तौबा करने वाले के पाप के लिए दंड की समाप्ति—अल्लाह सर्वशक्तिमान पर अनिवार्य नहीं है। बल्कि यह उनकी ओर से एक अनुग्रह है, जो मुअतज़िला के दृष्टिकोण के विपरीत है।" इसलिए, सुलह के माध्यम से कसम के समाप्त होने का कोई आधार नहीं है।

अन्यथा, कसम खत्म नहीं होगी। यदि अपराधी के वापस आने मात्र से प्रतिशोध का अधिकार समाप्त हो जाता, तो अपराधी की तौबा और वापसी पर क्षमादान और माफी देने का क्या अर्थ रह जाता? वास्तव में, इसकी आवश्यकता ही नहीं होती। इसके अलावा, अपराधी को अब रोकना भी अर्थहीन हो जाता क्योंकि अपराध अपने आप समाप्त हो गया होता, जबकि यह पूरी तरह से गलत है। इसी कारण से, अहल-ए-सुन्नत मातुरीदिया के पास भी यही मत है, हालांकि वे एक आज्ञाकारी व्यक्ति को दंडित करना तर्कहीन और असंभव मानते हैं। 'शर्ह अल-मक़ासिद' में कहा गया है कि "तौबा स्वीकार करना हमारे अनुसार अनिवार्य नहीं है क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान पर कोई दायित्व नहीं थोपा जा सकता।" इसके बाद, मुअतज़िला के तर्क का उल्लेख करते हुए, जो अल्लाह सर्वशक्तिमान पर तौबा स्वीकार करना अनिवार्य मानते हैं, कहा गया है कि उनके तर्क के सभी आधार-वाक्य भ्रामक हैं, और उनका दावा स्वयं उसी प्रकार का है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह एक निश्चित तथ्य है कि यदि कोई दूसरे के साथ बुराई करता है और उसकी गरिमा में हस्तक्षेप करता है, और फिर वह अपराधी माफी मांगता है, तो तर्क के अनुसार उस अधिकार वाले व्यक्ति पर अपराधी की माफी स्वीकार करना अनिवार्य नहीं है। बल्कि उस व्यक्ति को यह अधिकार होता है कि वह या तो माफ कर दे और अनदेखा कर दे या उसे सजा दे। मुल्ला अली क़ारी ने 'शर्ह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर' में कहा कि तौबा स्वीकार करना इस अर्थ में कि तौबा करने वाले से उसके पाप की सजा को समाप्त कर देना, अल्लाह सर्वशक्तिमान पर तर्कसंगत रूप से अनिवार्य नहीं है; बल्कि तौबा स्वीकार करना विशुद्ध

रूप से अल्लाह सर्वशक्तिमान का अनुग्रह है। मुअतज़िला इसका विरोध करते हैं। इस प्रकार यह ज्ञात हुआ कि सुलह के साथ कसम के गिरने का कोई कारण नहीं बनता। (त)

दूसरे, मैं कहता हूँ कि विद्वानों ने शिकायतों के संबंध में एक विशिष्ट मसला उल्लेख किया है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "यदि मैं दुनिया की हर बुराई को तुम्हारी ओर श्रेय देकर तुम्हारे भाई से शिकायत न करूँ तो तुम्हें तलाक है।" यहाँ उन्होंने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि जब तक बुराइयों के प्रकार...

1 शर्ह अल-मक़ासिद, तौबा पर चौदहवीं चर्चा, दारुल मआरिफ अल-नुमानिया, पाकिस्तान, 2/242।
2 मिनह अल-रौद अल-अज़हर शर्ह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर, तौबा और उसकी शर्तें, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, पृष्ठ 155। पृष्ठ 688 में से 554

آوردہ فرمود اکثر المقدمات مزخرف بل ربما یدعی القطع بان من اساء الی غیرہ وانتھک حرماتہ ثم جاء معتذر الایجب فی حکم العقل قبول اعتذارہ بل الخیرۃ الی ذلک الغیران شاء صفح وان شاء جازاہ ۔ علی قاری در شرح فقہ اکبر گوید قبول التوبہ وھو اسقاط عقوبۃ الذنب عن التائب غیر واجب علی اللہ تعالی بل کان ذلک منہ فضلا خلافا للمعتزلۃ ۔ پس بمصالحت سقوط یمین را وجے نیست۔

تو قسم ختم نہ ہوگی، اگر مجرم کے رجوع کر لینے سے استحقاقِ انتقام ختم ہو جاتا ہو تو پھر مجرم کی توبہ اور رجوع پر معافی دینا اور درگزر کرنا کیا معنی رکھتا ہے بلکہ اس کی ضرورت ہی نہ رہے، بلکہ اب مجرم کو باز رکھنا بھی بے معنی ہو جائے کیونکہ جرم تو خود بخود ختم ہو گیا حالانکہ یہ بات قطعاً باطل ہے، اسی بنا پر اہلسنت ماتریدیہ کے ہاں بھی یہی بات ہے حالانکہ وہ مطیع شخص کو سزا دینا محال عقلی جانتے ہیں۔ شرح مقاصد میں فرماتے ہیں کہ توبہ کو قبول کرنا ہمارے نزدیک واجب نہیں ہے کیونکہ اللہ تعالی پر کوئی وجوب عائد نہیں ہو سکتا، اس کے بعد معتزلہ حضرات جو کہ اللہ تعالی پر توبہ کو قبول کرنا واجب جانتے ہیں کی دلیل ذکر کرتے ہوئے فرمایا کہ ان کی دلیل کے مقدمات سب شعبدہ ہیں بلکہ ان کا دعوی بھی ایسا ہی ہے، کیونکہ یہ قطعی بات ہے کہ جو شخص کسی غیر سے برائی کرے اور اس کے حرمات میں دخل اندازی کرے پھر وہ برائی کرنے والا معذرت خواہی کرے تو اس حق والے غیر پر بحکم عقل واجب نہیں کہ وہ اس مجرم کی معذرت کو قبول کرے بلکہ اس غیر کو یہ اختیار ہوتا ہے کہ وہ معاف و درگزر کر دے یا اس کو سزا دے، ملا علی قاری نے شرح فقہ اکبر میں فرمایا کہ توبہ کو قبول کرنا بایں معنی کہ توبہ کرنے والے سے اس کے گناہ کی سزا کو ساقط کر دینا، یہ اللہ تعالی پر عقلاً واجب

نہیں ہے بلکہ توبہ کو قبول کرنا محض اللہ تعالی کا فضل ہے، اس میں معتزلہ مخالف ہیں تو اس سے معلوم ہوا کہ صلح سے قسم کے ساتھ ساقط ہونے کی کوئی وجہ نہیں بنتی۔ (ت)

ثانیاً علماء مشکایت رایک جزئیہ نوشتہ اندزن راگفت اگر ہر بدی و شناعت کہ در دنیا است از تو پیش برادرت نگویم بر تو طلاق اینجا تصریح فرمودہ اند کہ تا انواع بدی ہائے کہ ثانیاً کہتا ہوں کہ علماء کرام نے شکایت کے متعلق ایک مسئلہ ذکر فرمایا کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا "اگر دنیا کی ہر بدی کو تیری طرف منسوب کر کے تیرے بھائی سے شکایت نہ کروں تو تجھ پر طلاق ہے"

1 شرح المقاصد المبحث الرابع عشر فی التوبۃ دارالمعارف النعمانیہ پاکستان ۲/۲۴۲ 2 منح الروض الازہر شرح الفقہ الاکبر التوبۃ بشرائطھا مصطفی البابی مصر ص ۱۵۵ Page 554 of 688

Fatawa Razawiya - Volume 13 - Page 13

(Left Column - Persian/Arabic text content summary): The text discusses the legal rulings surrounding an oath taken by a husband to complain about his wife's character to her brother. It mentions that for the oath to be fulfilled, he must attribute to her the traits common among criminals like thieves and murderers. It also addresses the necessity of repentance after making such a false complaint to fulfill an oath.

(Right Column - Urdu text translation): Here, scholars have clarified that after taking this type of oath, a husband will not be absolved of his oath until he attributes the evils found among commoners, thieves, tricksters, and murderers to his wife and complains about them to her brother. At least three of these evils must be mentioned. The noble scholars have never stated that if the husband had intended revenge on his wife or deemed her deserving of revenge, and then they reconcile, the oath would end simply because the intention or desert of revenge has ceased. Instead, despite declaring such a complaint to be a sin, they stated that he should commit this sin to fulfill his oath, and then repent after having made the complaint. After complaining to the brother, he should tell him, 'I said these things only to fulfill my oath, otherwise my wife is free from these evils.' He should not mention this excuse to the brother before making the complaint. If he informs the brother before complaining that 'I will speak baseless things about my wife to fulfill my oath,' he will not be absolved of the oath, because by informing him beforehand, it would no longer constitute a genuine complaint about her character. It is mentioned in Khania, Khulasa, Bazzaziya, etc., that a man said to his wife, 'If I do not complain about you to your brother that your sister has all the world's ugly traits, then you are divorced.' Regarding this, the jurists stated that 'If this person, regarding his wife...'

Page 555 of 688

फ़तवा रज़विया - जिल्द 13 - पृष्ठ 13

(बायाँ कॉलम - फ़ारसी/अरबी पाठ सामग्री सारांश): पाठ एक पति द्वारा अपनी पत्नी के चरित्र के बारे में उसके भाई से शिकायत करने की कसम के कानूनी फैसलों पर चर्चा करता है। इसमें उल्लेख है कि कसम को पूरा करने के लिए, उसे उस पर चोरों और हत्यारों जैसे अपराधियों में पाए जाने वाले गुणों का आरोप लगाना चाहिए। यह कसम पूरी करने के लिए ऐसी झूठी शिकायत करने के बाद पश्चाताप की आवश्यकता को भी संबोधित करता है।

(दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ अनुवाद): यहाँ विद्वानों ने यह स्पष्ट किया है कि इस प्रकार की शपथ के बाद, पति अपनी शपथ से तब तक मुक्त नहीं होगा जब तक कि वह अपनी पत्नी पर आम लोगों, चोरों, धूर्त और खूनी व्यक्तियों में पाई जाने वाली बुराइयों का आरोप न लगाए और उनके बारे में उसके भाई से शिकायत न करे। ऐसी कम से कम तीन बुराइयों का उल्लेख करना आवश्यक है। यहाँ विद्वानों ने यह कभी नहीं कहा कि यदि पति अपनी पत्नी से बदला लेने का इरादा रखता था या उसे बदला लेने का पात्र मानता था, और फिर उनमें सुलह हो जाए, तो शपथ समाप्त हो जाएगी क्योंकि बदला लेने का इरादा या अधिकार समाप्त हो गया है। इसके बजाय, उन्होंने इस शिकायत को गुनाह करार देने के बावजूद कहा कि वह अपनी शपथ पूरी करने के लिए यह गुनाह करे और फिर शिकायत के बाद इस गुनाह से तौबा (पश्चाताप) कर ले। और भाई से शिकायत करने के बाद उसे बता दे कि 'मैंने ये बातें अपनी शपथ पूरी करने के लिए कही थीं, वरना पत्नी इन बुराइयों से मुक्त है।' शिकायत करने से पहले भाई को यह बहाना न बताए। यदि उसने शिकायत से पहले भाई को सूचित कर दिया कि 'मैं शपथ पूरी करने के लिए तुझसे अपनी पत्नी के बारे में बेबुनियाद बातें कहूँगा', तो वह शपथ से मुक्त नहीं होगा, क्योंकि शिकायत से पहले यह बता देने से यह पत्नी के चरित्र के बारे में शिकायत नहीं रह जाएगी। खानिया, खुलासा, बज़िया आदि में है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा कि 'यदि मैं तेरे भाई سے यह शिकायत न करूँ कि तेरी बहन में दुनिया की तमाम बुरी बातें हैं, तो तुझे तलाक है', तो न्यायविदों (फुकहा) ने इस पर फरमाया कि 'यदि इस व्यक्ति ने अपनी पत्नी के बारे में...'

पृष्ठ 555/688

فتاوٰی رضویہ - جلد سیزدہم - صفحہ ۱۳

(بائیں کالم کی عبارت - فارسی و عربی): در کمینگان و دزدان و مکاراں وخونریزاں می باشد از زن ببرادرش نگوید از سوگند برنیاید اواقل انہا سہ نوع بدی است و ہر گز نگفتند کہ چوں قصد انتقام یا استحقاق آوردہ و باہم آشتی کنند یمین منتہی شود با آنکہ تصریح نمودہ اند کہ بابرار این سوگند بزہ کار شود و ازیں گناہ توبہ را فر مودہ اند کہ بعد شکایت بہ برادر گوید این ہمہ از جہت سوگند پیش میگفتم ورنہ زن ازینہا مبراست اگر پیش از شکایت او را خبر دہد کہ حفظ سوگند را چیز ہائے بے اصل بخواہم گفت سودمند ہد کہ بعد ازیں سخن بربدی کہ گوید بہ بدی نسبت کردہ زن نبود، در خانیہ و خلاصہ و بزازیہ و غیر باست رجل قال لامرأتہ ان لم اقل عنك مع اخيك بكل قبيح فی الدنيا فانت طالق۔ قالوا ان قال مع اخيها عنها بما هو من اخلاق اللئام واللصوص والخادعين والقاتلين يصير بارافی يمينہ ويأثم بذلك ويبينہ هذه تقع على الكثير من ذلك واقله ثلاثة انواع من القبح، وقال الفقيه ابو الليث رحمہ اللہ تعالیٰ ينبغی للحالف ان يقول عند الاخ بعد ما قال من القبائح انما قلت ذلك

(دائیں کالم کی عبارت - اردو): یہاں علماء نے یہ تصریح کی ہے کہ اس قسم کے بعد خاوند کیلئے لوگوں، چوروں، مکاروں اور خونریزی کرنے والوں میں پائی جانے والی بدیوں کو بیوی سے منسوب کر کے اس کے بھائی سے جب تک شکایت نہ کرے وہ قسم سے بری نہ ہوگا اور کم از کم ان بدیوں میں سے تین ضروری ہوں گی، یہاں علماء کرام نے یہ ہر گز نہیں فرمایا کہ خاوند اپنی بیوی سے انتقام کا قصد کئے ہوئے تھا یا وہ بیوی کو انتقام کا مستحق قرار دئے ہوئے تھا تو اب اگر آپس میں صلح کر لیں تو قسم ختم ہو جائے گی کیونکہ قصد انتقام یا استحقاق انتقام ختم ہو گیا ہے، بلکہ انہوں نے اس شکایت کو گناہ قرار دینے کے باوجود فرمایا کہ وہ اپنی قسم کو پورا کرنے کیلئے یہ گناہ کرے اور پھر شکایت کے بعد اس گناہ سے توبہ کرلے، اور بھائی سے شکایت کرنے

کے بعد اس کو کہہ دے کہ میں نے یہ باتیں قسم کو پورا کرنے کے لئے کی ہیں ورنہ بیوی ان بدیوں سے بری ہے، اور شکایت کرنے سے قبل بھائی کو یہ عذر نہ بتائے، اگر اس نے شکایت سے قبل بھائی کو اطلاع دے دی کہ میں قسم کو پورا کرنے کے لئے تجھ سے بیوی کے متعلق بے اصل باتیں کروں گا، تو قسم سے بری نہ ہوگا، کیونکہ شکایت سے قبل یہ بات بتا دینے میں بیوی سے متعلق بدی کی شکایت نہ رہے گی، خانیہ، خلاصہ، بزازیہ وغیرہا میں ہے کہ ایک شخص نے بیوی کو کہا کہ "اگر میں تیرے بھائی کو یہ شکایت نہ کروں کہ تیری بہن میں دنیا کی تمام قبیح باتیں ہیں تو تجھے طلاق ہے" تو فقہاء کرام نے اس پر فرمایا کہ "اگر اس شخص نے بیوی کے متعلق اس کے"

[Left Column] ...on account of the oath, and she is innocent of that, then this speech would be a repentance from what he said therein and he would be fulfilling his oath. [This is] in Nawazil, Tatarkhaniya, and Hindiyya. And if he told him before that, it would not be valid because it would not be a foul speech afterwards.[2] Look here, on one side was sin and on the other side was divorce. This (divorce) is detestable and that (sin) is an object of wrath, whereas reconciliation and peace are beloved and sought by Shari'ah. If the matter were as such, it would have been obligatory for the husband and wife to unite and abandon war and quarreling so that both the detestable and the wrathful could be avoided. But they did not say so, nor did they take this easy path. Thus, it became clear and evident that reconciliation cannot remove the oath. And the Allamah himself was not satisfied here, as he says "and fearing for him from the complaint." If the oath, by the indication of the state, was bound to the persistence of the merit of punishment, and after reconciliation that merit did not remain, then the removal of the oath would be necessary. Even though do not be afraid of the trouble of complaining, the Allamah wanted to find an excuse for the falling away of the oath. It is clear that no one has profit or loss from an oath. If Zaid takes an oath that he will hit Amr, Amr being innocent does not intercede for the falling of the oath; rather, it would be obligatory on Zaid to break the oath and pay the expiation. And Allah is the Giver of success.

[Right Column] If he tells the brother about the evils found in scoundrels, thieves, deceivers, and murderers, he will be free from his oath, and by doing so, he will be a sinner. His oath concerns many evils, of which it is necessary to tell the brother at least three. And Faqih Abu Layth (may Allah Almighty have mercy on him) stated here that the person who took the oath should say to the brother after complaining about the evils: "I spoke to you to fulfill my oath, otherwise your sister (wife) is free from these evils." Thus, stating this truth after the complaint will be considered repentance on his part, and he will be free from the oath and the sin. It is mentioned in Nawazil, Tatarkhaniya, and Hindiyya that if he informed the brother of the truth before the complaint, he would not be free from the oath because after informing of the truth, it would not constitute a complaint about evils attributed to the wife. Consider that here one aspect is sin and the other painful thing is divorce. Divorce is a detestable thing and sin is an object of wrath, while reconciliation and peace are beloved and shari'ah-sought things. If the matter were as you understand, then it would be obligatory here for the husband and wife to reconcile and end the fighting and

displeasure, whereby both the detestable and the wrathful could be avoided. But the jurists did not point out this easy path to avoid them, so clearly...

[Footnotes] 1. Fatawa Qazi Khan, Chapter of Ta'liq, Naval Kishore, Lucknow, 2/226. 2. Fatawa Hindiyya, Chapter Three regarding the suspension of divorce etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/445.

[बायां कॉलम] ...शपथ के कारण, और वह उससे निर्दोष है, तो यह कथन उसमें कही गई बातों से पश्चाताप होगा और वह अपनी शपथ पूरी करने वाला होगा। यह नवाज़िल, तातारखनिया और हिंदिया में है। और यदि उसने उससे पहले ही यह कह दिया होता, तो यह मान्य नहीं होता क्योंकि उसके बाद वह बुरा वचन नहीं रहता।२ यहाँ देखें, एक तरफ़ पाप था और दूसरी तरफ़ तलाक़। यह (तलाक़) घृणित है और वह (पाप) क्रोध का पात्र है, जबकि सुलह और शांति प्रिय और शरीयत द्वारा वांछित है। यदि मामला ऐसा ही होता, तो पति-पत्नी का मिल जाना और युद्ध व झगड़े को छोड़ देना अनिवार्य होता ताकि घृणित और क्रोधित दोनों से बचा जा सके। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं कहा, और न ही वे इस आसान रास्ते पर चले। अतः यह स्पष्ट और प्रकट हो गया कि सुलह शपथ को समाप्त नहीं कर सकती। और अल्लामा स्वयं भी यहाँ संतुष्ट नहीं थे, जैसा कि वे कहते हैं "और शिकायत से उस पर डरते हुए"। यदि शपथ, स्थिति के संकेत के अनुसार, सजा की योग्यता के बने रहने से बंधी होती, और सुलह के बाद वह योग्यता न रहती, तो शपथ का समाप्त होना अनिवार्य होता। भले ही शिकायत की तकलीफ से न डरें, लेकिन अल्लामा चाहते थे कि शपथ के समाप्त होने का कोई बहाना मिल जाए। यह स्पष्ट है कि शपथ से किसी का लाभ या हानि नहीं है। यदि ज़ैद शपथ लेता है कि वह बेगुनाह अम्र को मारेगा, तो अम्र की निर्दोषता शपथ को समाप्त नहीं करती; बल्कि ज़ैद पर अनिवार्य होगा कि वह शपथ तोड़े और कफ़ारा (प्रायश्चित) अदा करे। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।

[दायां कॉलम] भाई को कमीनों, चोरों, मक्कारों और हत्यारों में पाई जाने वाली बुराइयाँ बता दीं, तो वह शपथ से मुक्त हो जाएगा और ऐसा करने पर वह पापी होगा। उसकी शपथ कई बुराइयों के बारे में है, जिनमें से कम से कम तीन बुराइयाँ भाई को बताना ज़रूरी होगा। और फ़कीह अबू लैथ (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने यहाँ फ़रमाया कि शपथ लेने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह भाई से बुराइयों की शिकायत करने के बाद कहे कि: "मैंने आपसे ये बातें अपनी शपथ पूरी करने के लिए कही हैं, अन्यथा आपकी बहन (पत्नी) इन बुराइयों से मुक्त है।" तो शिकायत के बाद इस सच्चाई को बयान करना उसकी ओर से तौबा (पश्चाताप) माना जाएगा, और वह शपथ और पाप दोनों से मुक्त हो जाएगा। नवाज़िल, तातारखनिया और हिंदिया में उल्लेख है कि यदि शिकायत से पहले भाई को सच्चाई से अवगत करा दिया, तो वह शपथ से मुक्त नहीं होगा क्योंकि सच्चाई बताने के बाद पत्नी से जुड़ी बुराइयों की शिकायत नहीं मानी जाएगी। आप विचार करें कि यहाँ एक पहलू पाप का है और दूसरी कष्टदायक चीज़ तलाक़ है। तलाक़ एक घृणित चीज़ है और पाप क्रोध का विषय है, जबकि

सुलह और शांति प्रिय और शरीयत द्वारा वांछित चीज़ें हैं। यदि मामला वही होता जो आप समझ रहे हैं, तो यहाँ पति और पत्नी के बीच सुलह कराना और लड़ाई व नाराज़गी को समाप्त करना अनिवार्य होता, जिससे घृणित और क्रोधित दोनों से बचा जा सकता था। लेकिन फ़क़ीहों ने इनसे बचने के लिए यह आसान रास्ता नहीं बताया, तो स्पष्ट रूप से...

[पादलेख] १ फ़तावा काज़ी ख़ान, बाब अत-ता'लीक़, नवल किशोर, लखनऊ, २/२२६। २ फ़तावा हिंदिया, अध्याय तीन, तलाक़ को निलंबित करने के संबंध में आदि, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, १/४४५।

पृष्ठ ५५६ का ६८८

[بایاں کالم] لاجل الیمین وھی برئیۃ عن ذلک فیکون ھذا الکلام توبۃ منہ عما قال فیھا ویکون باراً۱، در نوازل و تاتارخانیہ و ہندیہ ست و لو قال لہ قبل ذلک لایجور لانہ لایکون بعد ذلک قول قبیح۔۲ نظر کنید ایں جایک پہلو گناہ بود دگر سو طلاق وایں مبغوض ست و آں مغضوب و آشتی محبوب و شرعاً مطلوب اگر کار باو کشودے بمارا یتمو بہموں بودے واجب بودے کہ زن و شوئے بہم آمیزند و از سر جنگ و پرخاش برخیزند تا از مبغوض و مغضوب ہر دو پر ہیز ند اما نگفتند و ایں راہ آسان نہ رفتند پس روشن و عیاں شد کہ آشتی رافع یمین نتواں شد و خود علامہ را ایں جا اطمینان نفس نبود کہ می گوید واختنے علیہ من الشکایۃ اگر یمین بدلالت حال مقتید ببقائے سزاواری سزا شدے بعد صلح آں سزاواری نماندے زوال یمین واجب بودے گو از شکایت ترس آزار می مباش مگر علامہ خواست کہ سقوط یمین را عذرے پدید آرد و پیداست کہ سوگند بر وائے سود و زیاں کسے ندارد اگر زید سوگند خورد کہ زدا عمر و را خواھد گشت بے گناہ ہے عمر و شفیع سقوط حلف نگردد بلکہ بر زید فرض بود کہ سوگند شکند و کفارہ ادا کند و باللہ التوفیق۔

[دایاں کالم] بھائی کو کمینے، چوروں، مکاروں اور قاتلوں میں پائی جانے والی بدیاں بتائیں تو وہ قسم سے بری ہو جائیگا اور ایسا کرنے پر وہ گنہگار ہوگا، اس کی قسم کثیر بدیوں کے متعلق ہے جن میں سے کم از کم تین بدیاں بھائی کو بتانا ضروری ہوگا، اور فقیہ ابولیث رحمہ اللہ تعالیٰ نے یہاں فرمایا کہ قسم کھانے والے شخص کو چاہئے کہ وہ بھائی کو بدیوں کی شکایت کرنے کے بعد کہے کہ میں نے آپ سے باتیں قسم کو پورا کرنے کے لئے کی ہیں ورنہ تمہاری بہن (بیوی) ان بدیوں سے بری ہے، تو شکایت کے بعد یہ حقیقت بیان کرنا اس کی طرف سے توبہ قرار پائیگی، اور قسم اور گناہ سے بری ہو جائے گا، نوازل، تاتارخانیہ اور ہندیہ میں مذکور ہے کہ اگر شکایت

سے قبل بھائی کو حقیقت سے آگاہ کر دیا تو قسم سے بری نہ ہوگا کیونکہ حقیقت سے آگاہ کرنے کے بعد بیوی سے منسوب بدیوں کی شکایت نہ بنے گی، آپ غور کریں کہ یہاں ایک پہلو گناہ کا ہے اور دوسری تکلیف دہ چیز طلاق ہے، طلاق مبغوض چیز ہے اور گناہ مغضوب چیز ہے جبکہ صلح و آشتی محبوب اور شرعاً مطلوب چیز ہے، اگر معاملہ وہی ہوتا جو آپ سمجھ رہے ہیں تو یہاں پر خاوند اور بیوی کی آپس میں صلح کرنا اور لڑائی اور ناراضگی کو ختم کرنا واجب ہوتا جس کی بناء پر مبغوض اور مغضوب دونوں سے پرہیز ہو سکتا تھا، لیکن فقہاء نے ان سے بچنے کے لئے یہ آسان راستہ نہ بتایا، تو واضح طور پر

[حواشی] ۱ فتاویٰ قاضی خاں باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۲۲۶/۲ ۲ فتاویٰ ہندیہ الفصل الثالث فی تعلیق الطلاق الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۴۴۵/۱

It has become known that a settlement (sulh) cannot terminate an oath (qasam). Allama Saihani (may Allah have mercy on him) himself does not seem satisfied with this matter; hence, he mentioned the danger of complaining along with a settlement and the disappearance of the intention to cause harm. This is because if the oath were restricted by the persistence of entitlement to punishment due to the current state of affairs, and that entitlement to revenge ended after the settlement, then the falling away of the oath would be necessary, even if there were no danger in complaining. However, the aforementioned Allama sought to make the danger from the complaint the basis for the falling away of the oath, even though it is clear that an oath does not care about anyone's profit or loss. For example, if Zaid swore an oath that he would hit Amr, and then Amr was proven innocent, his oath would not fall away; rather, it would be incumbent upon Zaid, due to his oath, to break the oath and pay the expiation (kaffara). And with Allah is success. (T)

Seventh Doubt: Leaving the son in the house can be of two kinds: one as an agreement, which is with the father's consent, and the other as opposition, which is without the father's consent. While the motive for the intention of the oath is the second possibility, meaning the father's oath implies: do not leave him in the house without my consent. And here the incident relates to the first case, that the wife left the son in the house with the father's consent; therefore, the condition for breaking the oath was not found. (T)

I say (in response): Firstly, if Zaid tries to prevent his wife from going to Amr's house and the wife does not desist, and Zaid swears, 'If you enter Amr's house, you are divorced three times,' have you ever heard that this oath would only be broken by entering Amr's house in Zaid's displeasure? Even if Zaid himself becomes pleased and restores the relationship with his wife, would divorce not occur if the wife enters thereafter? Never; rather, this oath is for the entire life of the husband and wife, and the divorce mentioned in the oath...

पृष्ठ १३ | फतावा रिज़विया | जिल्द १३

यह ज्ञात हो गया है कि सुलह (समझौता) कसम को खत्म नहीं कर सकती। अल्लामा सैहानी (रहमतुल्लाह अलैह) स्वयं इस मामले में संतुष्ट नहीं दिखते; इसीलिए उन्होंने सुलह और नुकसान पहुँचाने के इरादे के खत्म होने के साथ-साथ, शिकायत करने के खतरे की बात की है। क्योंकि यदि कसम वर्तमान स्थिति के कारण सजा की पात्रता के बने रहने के साथ सीमित होती, और सुलह के बाद प्रतिशोध की वह पात्रता समाप्त हो जाती, तो कसम का गिर जाना (साकित होना) आवश्यक होता, भले ही शिकायत करने से कोई खतरा न होता। लेकिन उपरोक्त अल्लामा ने शिकायत के खतरे को कसम के साकित होने का आधार बनाना चाहा, जबकि यह स्पष्ट है कि कसम में किसी के लाभ या हानि की परवाह नहीं की जाती। उदाहरण के लिए, यदि ज़ैद ने कसम खाई कि वह अम्र को मारेगा, और फिर अम्र निर्दोष सिद्ध हो गया, तो उसकी कसम साकित नहीं होगी; बल्कि ज़ैद के लिए अपनी कसम के कारण यह आवश्यक होगा कि वह कसम तोड़े और कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) दे। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। (त)

सातवाँ संदेह: बेटे को घर में छोड़ना दो तरह से हो सकता है: एक सहमति के रूप में जो पिता की मर्जी से हो, और दूसरा विरोध के रूप में जो पिता की मर्जी के बिना हो। जबकि कसम के इरादे का कारण दूसरी संभावना है, यानी पिता की कसम का अर्थ यह है कि उसे मेरी मर्जी के बिना घर में न छोड़ना। और यहाँ घटना का संबंध पहली स्थिति से है कि पत्नी ने पिता की सहमति से बेटे को घर में छोड़ा है; इसलिए कसम टूटने की शर्त नहीं पाई गई। (त)

मैं कहता हूँ (उत्तर में): सर्वप्रथम, यदि ज़ैद अपनी पत्नी को अम्र के घर जाने से रोकने की कोशिश करे और पत्नी न माने, और ज़ैद कसम खाए कि 'यदि तुम अम्र के घर में दाखिल हुई तो तुम्हें तीन तलाक हैं,' तो क्या आपने कभी सुना है कि यह कसम ज़ैद की नाराजगी में अम्र के घर दाखिल होने से ही टूटेगी? यहाँ तक कि यदि ज़ैद स्वयं राजी हो जाए और पत्नी से संबंध बहाल कर ले, तो क्या उसके बाद पत्नी वहाँ दाखिल हो तो तलाक नहीं होगा? कदापि नहीं; बल्कि यह कसम पति और पत्नी के पूरे जीवन के लिए है और कसम में उल्लिखित तलाक की...

पृष्ठ ५५७ का ६८८

معلوم ہوا کہ صلح قسم کو ختم نہیں کر سکتی اور خود علامہ سائحانی رحمہ اللہ اس بات میں مطمئن نظر نہیں آتے اسی لئے انہوں نے صلح اور زوال قصد ضرر کے ساتھ، شکایت کرنے سے خطرہ کی بات کی ہے، کیونکہ اگر قسم دلالت حال کی وجہ سے استحقاق سزا کی بقاء کے ساتھ مقید ہوتی اور صلح کے بعد وہ استحقاق انتقام ختم ہو جاتا ہو تو پھر قسم کا ساقط ہو جانا لازم ہوتا اگرچہ شکایت کرنے سے خطرہ نہ بھی ہوتا مگر علامہ مذکور نے شکایت سے خطرہ کو قسم کے سقوط کے لئے بنانا چاہا، حالانکہ ظاہر ہے کہ قسم میں کسی کے نفع و نقصان کی پروا نہیں ہوتی، مثلاً زید نے قسم کھائی کہ وہ عمرو کو مارے گا، تو عمرو بے گناہ ثابت ہو جائے تو اس کی قسم ساقط نہ ہوگی بلکہ زید کو اپنی قسم کی وجہ سے لازم ہو گا کہ وہ قسم کو توڑ دے اور کفارہ دے، وباللہ التوفیق۔ (ت)

شبہہ سابعہ : بخانہ گذاشتن دوگونہ است موافقہ کہ برضائے پدر باشد و مخالفت کہ بے رضائے او و شک نیست کہ حال برارادہ قسم دوم دال ست یعنی خلاف مرضی من بخانہ نگزاری وایں جا واقع قسم اول ست پس شرط حنث متحقق نشد۔ ساتواں شبہہ : کہ بیٹے کو گھر میں چھوڑنا دو طرح ہو سکتا ہے، ایک موافقت کے طور پر کہ باپ کی مرضی سے ہو، اور دوسرا مخالفت کے طور پر کہ والد کی مرضی کے بغیر، جبکہ قسم کے ارادے کا موجب دوسرا احتمال ہے یعنی والد کی قسم کا مطلب یہ ہے کہ اس کو میری مرضی کے بغیر گھر میں نہ چھوڑنا، اور یہاں واقعہ کا تعلق پہلی صورت سے ہے کہ باپ کی رضامندی سے بیوی نے بیٹے کو گھر میں چھوڑا ہے لہٰذا قسم کے ٹوٹنے کی شرط نہ پائی گئی۔ (ت)

اقول اولاً : زید برفتن بخانه عمر و راضی نباشد زن را باز دارد او سر نہند گوید ان دخلت الدار فانت طالق ثلاثاً آیا پیچ شنیده کہ حنث دریں یمین موقوف برعدم رضائے زید ماند تا آنکہ اگر زید گا ہے خودش راضی شده زن را بدستوری دہد باز بدخول طلاق نیفتد حاشا بلکہ تاحیات زن و شوای تعلق پیچ گاہ زوال پذیر نیست تا بحصول شرط نزول جزاء نشود تا آنکہ اگر زید زن را یک طلاق دہد و بگزارد اقول (جواب میں کہتا ہوں کہ) اولاً زید اگر اپنی بیوی کو عمرو کے گھر سے روکنے کی کوشش کرے اور بیوی باز نہ آئے تو زید قسم کھائے کہ اگر تو عمرو کے گھر میں داخل ہوئی تو تجھے تین طلاقیں، تو کیا آپ نے کبھی یہ سنا ہے کہ یہ قسم زید کی ناراضگی میں عمرو کے گھر داخل ہونے سے ٹوٹے گی، حتیٰ کہ اگر زید خود راضی ہو جائے اور بیوی سے معاملہ بحال کرلے تو کیا اس کے بعد بیوی وہاں داخل ہو تو طلاق نہ ہوگی، ہرگز ایسا نہیں بلکہ یہ قسم خاوند اور بیوی کی زندگی بھر کے لئے ہے اور قسم میں مذکور طلاق کی

Fatawa Razawiyyah, Volume 13

[Persian text excerpt]: ...that she completes the waiting period ('iddah'), then if the woman steps into that house, the consequence follows. If the place [of divorce] is not found, it goes in vain as the oath is dissolved at once, as previously mentioned from Al-Sirajiyyah and Al-Hindiyyah.

The condition will not be finished until the consequence (jaza) becomes mandatory upon the fulfillment of the condition. The legal strategy for this is that the husband gives the wife one divorce and leaves her. Once the 'iddah' is completed, if the wife then enters Amr's house, the consequence, i.e., divorce, would occur at that time. However, since the wife is no longer a valid subject for divorce at that point, the divorce will be void. Now, Zaid (the husband) will have the option to remarry his wife without 'halala'. After this remarriage, the wife may enter Amr's house, whether with Zaid's consent or without it; no divorce will occur because once the condition was met, the oath ended, as has been cited from Sirajiyyah and Hindiyyah. (T)

Secondly, if oaths taken regarding undesirable matters were to be restricted by the absence of consent, then 'If you go out, you are divorced' would mean 'If you go out without my permission or my consent, you are divorced.' This is contrary to the consensus (ijma) and the explicit statements of all the books [of jurisprudence].

Secondly, this would imply that if oaths are taken regarding undesirable matters, those oaths would be restricted to the state of dissatisfaction. For instance, if a husband in anger says to his wife, 'If you go out, you are divorced,' or similarly says, 'If you go out without my permission or my consent, you are divorced,' it would necessitate that there is no difference between these two. However, this is against consensus and the clear statements of all books. (T)

Thirdly, the solution is that the circumstances indicate that this act is contrary to the will of the one taking the oath, not that the prohibition remains only as long as the dissatisfaction lasts. In such situations, where anger is within moderate limits, it does not prevent a person from considering the consequences. He himself knows that there is still room for consent and for the anger to subside. Then, in cases of severe conditional oaths, he restricts it with permission, saying, 'Do not do so without my command.' But when anger reaches its peak, the thought of future consent or time does not even cross his mind, and the ruling...

Thirdly, in this situation, the indication of the state is that this act, for example, leaving the house, is against the will of the person taking the oath. This indication is not that the prohibition from this act, i.e., not leaving the house, is only until the end of dissatisfaction. Where anger and displeasure are within moderate bounds, this anger does not make a person oblivious to the outcome, and he knows that there is room for anger and displeasure to end and for him to become pleased. On such occasions, a conditional oath regarding severe matters is restricted by permission, saying that my...

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं

[फारसी पाठ]: ...कि वह इद्दत गुज़ारे, फिर औरत उस घर में कदम रखे तो जज़ा (सज़ा) लागू होगी। और अगर तलाक की जगह न मिले, तो वह बेकार जाएगी क्योंकि कसम एक ही बार में समाप्त हो गई जैसा कि सिराजिया और हिन्दिया के हवाले से पहले गुज़र चुका है।

शर्त तब तक खत्म नहीं होगी जब तक शर्त पाए जाने पर जज़ा लाज़िम न हो जाए जिसका हिला (उपाय) यह है कि खाविन्द बीवी को एक तलाक दे कर छोड़ दे और इद्दत पूरी हो जाए तो उसके बाद बीवी उम्रू के घर दाखिल हो तो उस वक्त जज़ा यानी तलाक पड़ेगी लेकिन उस वक्त बीवी तलाक का महल (योग्य) न होने की वजह से वह तलाक लग्व (बेकार) हो जाएगी, और अब ज़ैद यानी खाविन्द को इख्तियार होगा कि वह बगैर हलाला बीवी से दोबारा निकाह कर ले तो इस दोबारा निकाह के बाद बीवी चाहे तो उम्रू के घर दाखिल हो सकेगी ज़ैद की रज़ा से या बगैर रज़ा के दाखिल हो अब तलाक न होगी क्योंकि एक दफ़ा शर्त पाए जाने पर क़सम खत्म हो चुकी है जैसा कि सिराजिया और हिन्दिया के हवाले से गुज़र चुका है। (त)

स़ानियन (दूसरा) यह कि अगर नापसंदीदा उमूर (कार्यों) पर क़सम खाना रज़ामंदी की कमी से मक़ैय्यद (सीमित) हो जाए कि 'अगर तू बाहर जाए तो तुझे तलाक है' यानी 'तू अगर मेरी इजाज़त या मेरी रज़ा के बगैर बाहर जाए तो तुझे तलाक है' तो यह इज्मा और तमाम किताबों की तसरीहात के खिलाफ है।

स़ानियन यह कि लाज़िम आएगा कि नापसंदीदा उमूर पर क़सम खाई जाए तो वह क़समें नापसंदगी से मक़ैय्यद हो जाएँ कि रज़ामंदी पाई जाए तो क़सम खत्म हो जाए मिसाल के तौर पर खाविन्द नाराज़गी में बीवी को कहे कि अगर तू बाहर जाए तो तुझे तलाक है, या इसी तरह यूँ कहे अगर तू मेरी इजाज़त या मेरी रज़ा के बगैर बाहर जाए तो तुझे तलाक है, तो लाज़िम आएगा कि इन दोनों में फ़र्क न हो हालाँकि यह इज्मा और तमाम कुतुब की तसरीहात के खिलाफ है। (त)

स़ालिसन (तीसरा) हल यह है कि दलालत-ए-हाल (परिस्थिति) इस पर है कि यह काम हालिफ़ (क़सम खाने वाले) की मर्जी के खिलाफ है न कि यह कि मना करना केवल नामर्जी रहने तक है। ऐसी जगह पर जहाँ गुस्सा औसत दर्जे का हो, इन्सान को अंजाम सोचने से नहीं रोकता, वह खुद जानता है कि रज़ा की गुंजाइश और गुस्सा खत्म होने का मौका बाकी है, तब वह ऐसी सख्त तालीक़ (शर्त) को

इजाज़त से मक़ैय्यद करता है कि मेरे हुक्म के बिना ऐसा न करना। और जब गुस्सा इन्तेहा (चरम) पर पहुँच जाए तो आइंदा की रज़ा या वक्त का ख्याल भी दिल में नहीं आता और हुक्म...

ग़ालिसन इस सूरत में दलालत-ए-हाल यह है कि यह काम मसलन घर छोड़ना, क़सम खाने वाले की मर्ज़ी के खिलाफ है और यह दलालत इस पर नहीं कि इस काम से मना यानी घर में न छोड़ना, उसका अदम-ए-रज़ा (असहमति) तक है। जहाँ पर गुस्सा और नाराज़गी हद-ए-एतदाल (मध्यम सीमा) में हो वहाँ यह गुस्सा इन्सान को अंजाम से बेखबर नहीं करता और वह जानता है कि गुस्सा और नाराज़गी खत्म होने की और राजी हो जाने की गुंजाइश बाकी है तो ऐसे मौके पर शदीद उमूर (गंभीर मामलों) से मशरूत क़सम को इजाज़त से मक़ैय्यद किया जाता है कि मेरी...

पृष्ठ 558 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم

کہ عدت گزارد، باز زن دراں خانہ پائے نہد جزاء فرود آید و محل ندیدہ رائیگاں رود کہ یمین بیکبار منحل شد کما تقدم عن السراجیۃ والہندیۃ۔

شرط ختم نہ ہوگی جب تک شرط پائے جانے پر جزا لازم نہ ہو جائے جس کا حیلہ یہ ہے کہ خاوند بیوی کو ایک طلاق دے کر چھوڑ دے اور عدت پوری ہو جائے تو اس کے بعد بیوی عمرو کے گھر داخل ہو تو اس وقت جزاء یعنی طلاق پڑے گی لیکن اس وقت بیوی طلاق کا محل نہ ہونے کی وجہ سے وہ طلاق لغو ہو جائے گی، اور اب زید یعنی خاوند کو اختیار ہو گا کہ وہ بغیر حلالہ بیوی سے دوبارہ نکاح کرلے تو اس دوبارہ نکاح کے بعد بیوی چاہے تو عمرو کے گھر داخل ہو سکے گی زید کی رضا سے یا بغیر رضا کے داخل ہو اب طلاق نہ ہوگی کیونکہ ایک دفعہ شرط پائے جانے پر قسم ختم ہو چکی ہے جیسا کہ سراجیہ اور ہندیہ کے حوالہ سے گزر چکا ہے۔ (ت)

ثانیاً اگر سوگند ہاکہ برامور نامرضیہ حلف باشد متقید بعدم رضا شود ان خرجت فانت طالق یعنی نہدان خرجت الا باذنی او برضائی فانت طالق بود ایں خلاف اجماع و تصریحات جملہ کتب ست۔

ثانیاً یہ کہ لازم آئے گا کہ ناپسندیدہ امور پر قسم کھائی جائے تو وہ قسمیں ناپسندیدگی سے مقید ہو جائیں کہ رضامندی پائی جائے تو قسم ختم ہو جائے مثلاً خاوند ناراضگی میں بیوی کو کہے کہ اگر تو باہر جائے تو تجھے طلاق ہے، یا اسی طرح یوں کہے اگر تو میری اجازت یا میری رضا کے بغیر باہر جائے تو تجھے طلاق ہے، تو لازم آئے گا کہ ان دونوں میں فرق نہ ہو حالانکہ یہ اجماع اور تمام کتب کی تصریحات کے خلاف ہے۔ (ت)

ثالثاً حل آں ست کہ دلالت حال برآں ست کہ ایں کار خلاف مرضی حالف ست نہ برآں کہ منع تا خلاف مرضی ماندن ست در ہچو مقام خشم تا بحد توسط باشد انسان را تصور عواقب باز ندارد خودش داند کہ گنجائش رضا و زوال غضب باقی ست آنگاہ امثال تعلیق شدید را مقید باذن میکند کہ بے دستوری من چناں نکنی و چوں خشم بمنتہی رسید رضا دور وقتے آئندہ را خیال ہم پیراموں خاطرش نمی گردد و حکم

ثالثاً اس صورت میں دلالت حال یہ ہے کہ یہ کام مثلاً گھر میں چھوڑنا، قسم کھانے والے کی مرضی کے خلاف ہے اور یہ دلالت اس پر نہیں کہ اس کام سے منع یعنی گھر میں نہ چھوڑنا، اس کا عدم رضا تک ہے۔ جہاں پر غصہ اور ناراضگی حد اعتدال میں ہو وہاں یہ غصہ انسان کو انجام سے بے خبر نہیں کرتا اور وہ جانتا ہے کہ غصہ اور ناراضگی ختم ہونے کی اور راضی ہو جانے کی گنجائش باقی ہے تو ایسے موقعہ پر شدید امور سے مشروط قسم کو اجازت سے مقید کیا جاتا ہے کہ میری

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13.

[Column 1 - Persian text translation] ...makes it perpetual. Therefore, setting aside the intention of specification and restriction, mostly nothing else besides generalization and perpetuity even comes to mind. That is why it was not restricted by permission etc. So, the meaning of the statement would not be that 'do not leave [it] in the house as long as it is against my wish', but rather the meaning is that 'leaving [it] in the house is against my wish, so beware, do not do it'. And on this estimation, even if in the future it becomes according to his wish, the ruling will not be lifted, because it was against the wish at that time, not a hypothetical future wish. And whenever he does it, it is absolutely against the wish of another time, so do not go against the conceptual meaning. Thus, the condition for breaking the oath (hunth) is established.

Fourthly, if we pass over this meticulous analysis, the limit is that both meanings are possible. And there is no doubt in restriction by circumstantial evidence (dalalat al-hal), but where there is doubt in restriction by circumstantial evidence, a possible matter cannot become a valid restriction because the literal application (itlaq) is certain, and 'certainty is not removed by doubt.' Therefore, if a woman says to her husband, 'You have taken a woman over me,' and the husband says, 'Every woman I have is divorced,' then this woman will also be divorced, even though apparently the man's purpose seems to be to please this wife [by implying] that 'if I have taken a woman besides you, she is divorced'. However, it is possible that the purpose was to punish the wife [by asking] 'why you criticized me regarding what is lawful for me', and a possible circumstantial evidence is not sufficient. Yes, if he intended otherwise, it would be religiously valid. It is stated in Al-Hidayah: 'And when a woman says to her husband, You married against me...'

[Column 2 - Urdu text translation] ...this work did not happen against the wish, and when anger becomes extreme, he does not bring the state of pleasure into his heart and makes the ruling in the oath perpetual. So at this point, setting aside making specification and restriction the intent, he mostly does not even conceive of anything other than generalization and perpetual ruling. That is why he does not restrict the oath with permission etc. here. So the meaning of the oath here will not be that 'do not do the act of leaving her in the house until it is against my wish,' but rather its meaning will be that 'leaving her in the house is against my wish, so do not do this act.' So on this estimation, even if she leaves with consent later, the ruling of the oath will not end because the consideration is of the absence of wish at the time of the

oath, not the consideration of a hypothetical future wish. Rather, whenever this act occurs, it will be in violation of this oath, and will not be according to the wish of another time which is against the conceptual meaning of the oath. So in this case, the breaking of the oath will be agreed upon. (T)

Fourthly, even if we disregard the aforementioned meticulous analysis, at most it can be said that there are possibilities of both absolute application (itlaq) and restriction (taqyid) here. And based on the possibility of being restricted by circumstantial evidence, the oath will not be restricted by circumstantial evidence because there is absolute application and generality in the words of the oath which is certain. So this certainty cannot be ended by mere possibility and doubt because doubt cannot remove certainty. For this reason, for example, if a wife says to her husband that 'you have another woman besides me,' and the husband replies by saying that 'whichever woman is my wife, she is divorced,' then this wife will also be divorced. So here, apparently, the purpose of the husband's oath was...

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13।

[स्तंभ 1 - फ़ारसी पाठ का अनुवाद] ...इसे शाश्वत बनाता है। इसलिए, विशिष्टता और प्रतिबंध को अभिप्रेत अर्थ बनाना तो दूर की बात है, अधिकांशतः सामान्यीकरण और शाश्वतता के अतिरिक्त कुछ भी मन में नहीं आता। इसीलिए इसे अनुमति आदि से प्रतिबंधित नहीं किया गया। अतः कथन का अर्थ यह नहीं होगा कि 'जब तक मेरी इच्छा के विरुद्ध न हो, तब तक उसे घर में न छोड़ना', बल्कि इसका अर्थ यह है कि 'उसे घर में छोड़ना मेरी इच्छा के विरुद्ध है, अतः सावधान रहें, ऐसा न करना'। और इस अनुमान पर, भले ही भविष्य में यह उसकी इच्छा के अनुकूल हो जाए, नियम निरस्त नहीं होगा, क्योंकि वह उस समय की इच्छा के विरुद्ध था, न कि भविष्य की किसी काल्पनिक इच्छा के। और जब भी वह ऐसा करेगा, वह निश्चित रूप से दूसरे समय की इच्छा के विरुद्ध होगा, अतः अवधारणा के विरुद्ध न जाएं। इस प्रकार, शपथ भंग (हुंथ) की शर्त सिद्ध हो जाती है।

चौथा, यदि हम इस सूक्ष्म विश्लेषण को छोड़ भी दें, तो अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि यहाँ दोनों अर्थों की संभावना है। और परिस्थितिजन्य साक्ष्य (दलालत-अल-हाल) द्वारा प्रतिबंध में कोई संदेह नहीं है, लेकिन जहाँ परिस्थितिजन्य साक्ष्य द्वारा प्रतिबंध में संदेह हो, वहाँ एक संभावित मामला मान्य प्रतिबंध नहीं बन सकता क्योंकि शाब्दिक प्रयोग (इतलाक़) निश्चित है, और 'निश्चितता संदेह से समाप्त नहीं होती।' इसलिए, यदि एक स्त्री अपने पति से कहती है, 'तुमने मुझ पर एक स्त्री रख ली है,' और पति कहता है, 'जो भी स्त्री मेरी पत्नी है, उसे तलाक है,' तो यह स्त्री भी तलाकशुदा हो जाएगी, यद्यपि स्पष्ट रूप से पुरुष का उद्देश्य इस पत्नी को प्रसन्न करना प्रतीत होता है [यह संकेत देकर] कि 'यदि मैंने तुम्हारे अतिरिक्त कोई स्त्री रखी है, तो उसे तलाक है'। हालाँकि, यह संभव है कि उद्देश्य पत्नी को दंडित करना हो [यह पूछकर] कि 'तुमने मेरी वैध बात पर मेरी आलोचना क्यों की', और एक संभावित परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर्याप्त नहीं है। हाँ, यदि उसने कुछ और इरादा किया था, तो वह धार्मिक रूप से मान्य होगा। अल-हिदाया में उल्लेख है: 'और जब एक स्त्री अपने पति से कहती है, तुमने मेरे विरुद्ध विवाह किया...'

[स्तंभ 2 - उर्दू पाठ का अनुवाद] ...यह कार्य इच्छा के विरुद्ध नहीं हुआ, और जब क्रोध चरम पर हो जाता है, तो वह प्रसन्नता की स्थिति को अपने हृदय में नहीं लाता और शपथ में आदेश को शाश्वत बना देता है। इसलिए इस मोड़ पर, विशिष्टता और प्रतिबंध को उद्देश्य बनाने की बात तो दूर, वह अधिकांशतः सामान्यीकरण और शाश्वत आदेश के अलावा किसी और चीज़ की कल्पना भी नहीं करता। इसीलिए वह यहाँ अनुमति आदि से शपथ को प्रतिबंधित नहीं करता है। तो यहाँ शपथ का

अर्थ यह नहीं होगा कि 'उसे घर में छोड़ने का कार्य तब तक न करें जब तक कि वह मेरी इच्छा के विरुद्ध न हो,' बल्कि इसका अर्थ यह होगा कि 'उसे घर में छोड़ना मेरी इच्छा के विरुद्ध है, इसलिए यह कार्य न करें।' तो इस अनुमान पर, यदि वह बाद में सहमति से भी छोड़ती है, तो शपथ का आदेश समाप्त नहीं होगा क्योंकि विचार शपथ के समय इच्छा की अनुपस्थिति का है, न कि भविष्य की किसी काल्पनिक इच्छा का। बल्कि, जब भी यह कार्य होगा, यह इस शपथ के उल्लंघन में होगा, और दूसरे समय की इच्छा के अनुसार नहीं होगा जो शपथ के वैचारिक अर्थ के विरुद्ध है। तो इस स्थिति में, शपथ का टूटना सर्वसम्मत होगा। (त)

चौथा, भले ही हम उपर्युक्त सूक्ष्म विश्लेषण की अवहेलना करें, तो भी अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि यहाँ पूर्ण प्रयोग (इतलाक़) और प्रतिबंध (तक़्यीद) दोनों की संभावनाएँ हैं। और परिस्थितिजन्य साक्ष्य द्वारा प्रतिबंधित होने की संभावना के आधार पर, शपथ परिस्थितिजन्य साक्ष्य द्वारा प्रतिबंधित नहीं होगी क्योंकि शपथ के शब्दों में पूर्ण प्रयोग और व्यापकता है जो निश्चित है। अतः इस निश्चितता को केवल संभावना और संदेह से समाप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि संदेह निश्चितता को दूर नहीं कर सकता। इसी कारण से, उदाहरण के लिए, यदि एक पत्नी अपने पति से कहती है कि 'मेरे अलावा तुम्हारी कोई और औरत है,' और पति जवाब में कहता है कि 'जो भी औरत मेरी पत्नी है, उसे तलाक है,' तो इस पत्नी को भी तलाक हो जाएगा। तो यहाँ, स्पष्ट रूप से, पति की शपथ का उद्देश्य...

مؤبدی کند پس تخصیص و تقیید مراد بودن در کنار غالباً جز تعمیم و تأبید تصوری هم بذهن نمی باشد ولهذا لم تقید باذن وغیرہ نمیکند پس معنی سخن آں نباشد کہ بخانہ گزاشتن تاخلاف مرضی من ست نکنی بلکہ مفہوم آں ست کہ بخانہ گزاشتن خلاف مرضی من ست زنہار نکنی و بریں تقدیر گو آئندہ مطابق مرضیش شود حکم مرتفع نشود کہ خلاف مرضی آن وقت بود نہ مرضی موہوم آئندہ وہر گاہ کند قطعاً خلاف مرضی وقت دیگر را خلاف مفہوم مباش پس شرط حنث متحقق ست۔

مرضی کے خلاف یہ کام نہ ہوا اور جب غصہ انتہائی ہو جائے تو رضا کے حال کو دل میں نہیں لاتا اور قسم میں حکم کو ابدی کر دیتا ہے، پس اس موقع پر تخصیص و تقیید کو مراد بنانا تو در کنار وہ غالب طور پر تعمیم اور ابدی حکم کے سوا کسی چیز کا تصور تک نہیں کرتا اس لئے وہ یہاں اجازت وغیرہ سے قسم کو مقید نہیں کرتا۔ پس یہاں قسم کا یہ مطلب نہیں ہوگا کہ میری مرضی کے خلاف تک اس کو گھر میں چھوڑنے کا عمل نہ کرنا بلکہ اس کا مفہوم یہ ہوگا کہ اس کو گھر میں چھوڑنا میری مرضی کے خلاف ہے لہذا یہ عمل نہ کرنا، تو اس تقدیر پر بعد میں رضامندی سے بھی چھوڑے گی تو قسم کا حکم ختم نہ ہوگا کیونکہ قسم کے وقت مرضی نہ ہونے کا اعتبار ہے نہ کہ آئندہ موہوم مرضی کا اعتبار ہے بلکہ جب بھی یہ عمل ہو گا تو وہ اس قسم کی خلاف ورزی ہی میں ہو گا دوسرے وقت کی مرضی جو قسم کے مفہوم کے خلاف ہے میں نہ ہوگا، تو اس صورت میں قسم کا ٹوٹنا متفق ہو جائے گا۔ (ت)

رابعاً اگر ازیں تدقیق گزریم غایت آنکہ ہر دو معنی محتمل باشد و در تقیید بدلالت حال شک نیست اما آنجا کہ در تقیید بدلالت حال شک نیست امر محتمل صالح تقیید نتواں شد کہ اطلاق لفظ یقینی ست

والیقین لا یزول بالشک ولہذا اگر زن شوئے را گفت تو بر من زنے گرفتہ شوئے گفت ہر زن کہ مراہست مطلقہ است ایں زن نیز طلاق شود اگرچہ بظاہر مقصود مرد ارضائے ایں زن مے نماید کہ اگر زنی جز تو گرفتہ ام او را طلاق ست فاما محتمل کہ مقصود سزائے زن بود کہ چرا در حلال بر من خوردہ گرفتی و دلالت محتملہ بسندہ نیست آرے اگر نیت غیرش کردہ ست دیانۃً صحیح باشد در ہدایہ ارشاد می رود واذا قالت المرأۃ لزوجھا تزوجت علیّ

رابعاً اگر اس تدقیق مذکورہ سے قطع نظر بھی کرلیں تو زیادہ سے زیادہ یہی کہا جا سکتا ہے کہ یہاں اطلاق اور تقیید دونوں کے احتمال ہیں اور دلالتِ حال سے مقید ہونے کے احتمال کی بنا پر قسم دلالتِ حال سے مقید نہ ہوگی کیونکہ قسم کے الفاظ میں اطلاق اور عموم ہے جو کہ یقینی ہے تو یہ یقین محض احتمال اور شک سے ختم نہیں ہو سکتا کیونکہ شک یقین کو زائل نہیں کر سکتا ، اسی لئے مثلاً اگر بیوی خاوند کو کہے کہ تو نے مجھ پر کوئی عورت دوسری بنارکھی ہے تو خاوند جواب میں یوں کہے کہ جو بھی عورت میری بیوی ہو اس کو طلاق ہے تو اس بیوی کو بھی طلاق ہو جائے گی۔ تو یہاں بظاہر خاوند کی قسم کا مقصد

Fatawa Ridawiyya Volume 13 Page 13

[Left Column - Arabic/Persian] "He said: 'Every wife of mine is thrice divorced.' Thus, the one who made him take the oath is divorced judicially. The reason for this apparent view is the generality of the speech. His purpose might be to spite her when she objected to him regarding what the Law (Shari'ah) has made lawful for him. Amidst such hesitation, [the indicator of state] is not suitable as a restrictor. If he intends someone else, he is believed religiously but not judicially, because it is the specification (takhsis) of a general term (al-'am)." [Footnote 1: Al-Hidayah, Book of Oaths, Chapter on Oaths in Buying and Selling, etc., Al-Maktabah al-Arabiyya, Karachi, 2/481]. This much was sufficient, but for the sake of clarifying the objective and increasing benefit, let us read a few more examples from this aspect where the indication of state was not considered valid in the face of a possibility: (1) This very example from Al-Hidayah. (2) That which has passed: that if one takes an absolute oath against the departure of a wife or a slave, without restricting it to their permission, it is not restricted to the period they remain in ownership. I say: because it is possible that there was a secret with the slave or the wife that would be revealed by their going out. Also, for a man of honor, the guarding and street-wandering of a wife even after separation (baynunat) is a source of disgrace; people would say, "This is the wife of so-and-so," even if the designation is with regard to what used to be. Rather, he does not wish for his former bedfellow to go to someone else's side even after separation; hence, after separation, they still keep watch over her and provide for her maintenance. Again, I found the confirmation of this meaning in a Hadith: Abdur Razzaq says in his 'Musannaf', "Ma'mar informed us from Al-Zuhri, he said: 'A man asked the Prophet (may Allah bless him and grant him peace)...'"

[Right Column - Urdu] ...is to satisfy his wife [by implying] that if there were any wife other than you, she would be divorced. However, in view of the words, there is also the possibility that he wants to punish this wife for her objection—as to why she interfered in a matter that was lawful for him. Thus, the possibility of the indication of the current state cannot serve as proof because there is generality and absolute expression in the words, which is certain. Yes, based on this possibility, if he expresses the intention for a wife other than the present one, it will be religiously valid, though it will not be legally valid (in court). It is stated in Al-Hidayah that when a wife says to her husband, "You have taken another wife over me," and the husband replies to her by saying, "Whichever wife I have is thrice divorced," then the wife who caused him to swear will also be divorced. Judicially, this will be the ruling because its

reason is clear: the words of the oath are general, while at such a juncture, the husband's purpose could also be that he wants to punish the wife for her objection—why she objected to a religiously lawful act. Thus, despite the generality of the speech and the possibility of the intent to punish, this oath cannot be restricted by the indication of state due to the possibility of intending another wife. Yes, if he intends another wife, although it will be considered valid religiously, it will not be valid legally because this is a specification within a general term, whereas the indication of state cannot perform specification. [Finis] in brief. This example is sufficient for this purpose; however...

[Footer] 1 Al-Hidayah, Book of Oaths, Chapter on Oaths in Buying and Selling, etc., Al-Maktabah al-Arabiyya, Karachi, 481/2. Page 560 of 688.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं पृष्ठ १३

[बायाँ कॉलम - अरबी/फ़ारसी] "उसने कहा: 'मेरी हर पत्नी को तीन तलाक़ है।' तो जिसने उसे शपथ दिलाई थी, वह अदालती हुक्म के अनुसार तलाक़शुदा हो गई। इस ज़ाहिरी नज़रियात का कारण कलाम (वक्तव्य) की व्यापकता है। उसका उद्देश्य उसे दुख पहुँचाना हो सकता है जब उसने उन चीज़ों में उस पर आपत्ति की जो शरीयत ने उसके लिए जायज़ की थीं। दुविधा के बीच, [स्थिति का संकेतक] सीमित करने योग्य नहीं है। यदि वह किसी अन्य का इरादा करता है, तो उसे धार्मिक रूप से सच्चा माना जाता है, अदालती तौर पर नहीं, क्योंकि यह एक सामान्य शब्द का विशेषीकरण (तख़्सीस) है।" [पादलेख १: अल-हिदाया, किताबुल ईमान, बाबूल् यमीन फ़िल् बैइ वश-शिरा अलख, अल-मकतबतुल अरबीया, कराची, २/४८१]। इतना पर्याप्त था, लेकिन मक़सद को स्पष्ट करने और लाभ बढ़ाने के लिए, आइए इस पहलू से कुछ और उदाहरण पढ़ें जहाँ संभावना के सामने स्थिति के संकेत को मान्य नहीं माना गया: (१) हिदाया का यही उदाहरण। (२) वह जो गुज़र चुका है: कि यदि कोई पत्नी या गुलाम के बाहर जाने पर बिना अनुमति के प्रतिबंध के साथ पूर्ण रूप से शपथ लेता है, तो यह स्वामित्व रहने के समय तक सीमित नहीं है। मैं कहता हूँ: क्योंकि यह संभव है कि गुलाम या पत्नी के पास कोई रहस्य हो जो उनके बाहर जाने से उजागर हो जाए। साथ ही, एक सम्मानजनक व्यक्ति के लिए, अलगाव (बैनुनत) के बाद भी पत्नी की सुरक्षा और गलियों में घूमना अपमान का कारण बनता है; लोग कहेंगे, "यह अमुक की पत्नी है," भले ही यह संबोधन पूर्व स्थिति के आधार पर हो। बल्कि, वह नहीं चाहता कि उसकी पूर्व पत्नी अलगाव के बाद भी किसी और के पास जाए; इसलिए अलगाव के बाद भी वे उसकी देखरेख करते हैं और उसके भरण-पोषण का जिम्मा उठाते हैं। फिर, मुझे हदीस में इस अर्थ की पुष्टि मिली: अब्दुर रज्जाक अपनी 'मुसन्निफ़' में कहते हैं, "हमें मा'मर ने अल-ज़ुहरी से बताया, उन्होंने कहा: 'एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूछा...'"

[दायाँ कॉलम - उर्दू] ...अपनी उस पत्नी को राज़ी करना है कि तेरे अलावा यदि कोई और पत्नी हो तो उसे तलाक़ है, लेकिन शब्दों के मद्देनज़र यह भी संभावना है कि वह उस पत्नी को आपत्ति करने पर सज़ा देना चाहता हो कि उसने मेरे लिए जायज़ मामले में क्यों हस्तक्षेप किया है। तो ज़ाहिर हाल की दलालत का एहतमाल सनद न बन सकेगा क्योंकि अल्फ़ाज़ में उमूम और इतलाक़ है जो कि यक़ीनी है। हाँ, इस एहतमाल की बिना पर मौजूदा बीवी के अलावा किसी दूसरी बीवी की नीयत का इज़हार करे तो दियानतन अगरचे मोतबर होगी लेकिन क़ज़ान मोतबर न होगी। हिदाया में फ़रमाया गया है

कि जब बीवी खाविंद से कहे, "तुमने मुझ पर दूसरी बीवी कर रखी है," तो खाविंद उसे जवाब में यूँ कहे कि "जो भी मेरी बीवी है उसे तीन तलाक़।" तो इस तरह क़सम दिलाने वाली बीवी को भी तलाक़ हो जाएगी। क़ज़ान यही हुक्म होगा क्योंकि इसकी वजह ज़ाहिर है कि क़सम के अल्फ़ाज़ का उमूम है, जबकि ऐसे मौक़े पर खाविंद की ग़र्ज़ भी यह हो सकती है कि वह बीवी को उसके ऐतराज़ पर सज़ा देना चाहता है कि उसने शरअन हलाल काम पर ऐतराज़ क्यों किया। तो कलाम के उमूम और सज़ा देने की ग़र्ज़ के एहतमाल के बावजूद किसी और बीवी की नीयत के एहतमाल की वजह से यह क़सम दलालत-ए-हाल से मुक़ैयद न बन सकेगी। हाँ, अगर दूसरी बीवी की नीयत करे तो अगरचे वह दियानतन मोतबर क़रार दी जाएगी लेकिन क़ज़ान मोतबर न होगी क्योंकि यह उमूम में तख़्सीस है जबकि दलालत-ए-हाल तख़्सीस नहीं कर सकती। [समाप्त] संक्षेप में। इस मक़सद के लिए यह मिसाल काफ़ी है, ताहम...

[पादलेख] १ अल-हिदाया, किताबुल ईमान, बाबूल् यमीन फ़िल् बैइ वश-शिरा अलख, अल-मकतबतुल अरबीया, कराची, ४८१/२। पेज ५६०/६८८।

فقال کل امرأة لی طالق ثلاثاً طلقت هذه التي حلفته فی القضاء ووجه الظاهر عموم الکلام وقد یکون غرضه ایحاشها حین اعترضت علیه فیما احله الشرع ومع التردد لا یصلح مقیدا وان نوی غیرها یصدق دیانة لا قضاء لانه تخصیص العام 1 اھ باختصار۔ ایں قدر بسندہ بود فاما توضیح مرام وزیارت وافادت را مثالے چند ازیں پہلو نیز برخوانیم کہ دلالت حال بحال احتمال معتبر نہ داشتہ اند (۱) ہمیں مثال ہدایہ (۲) آنکہ گذشت کہ اگر بر خروج زن یا بندہ مطلقاً سوگند خورد بے تقیید باذن متقید بزمان بقائے ملک نباشد، اقول: زیرا کہ یمکن کہ نزد بندہ یا زن اورا رازے بود کہ بہ بروں شدن بروں افتد و حفاظتی و کوچہ گردی زن اہل غیرت را بعد بینونت نیز موجب عار شود مردم اں گویند ایں زن فلاں ست اگرچہ اطلاق بلحاظ ماکان ست بلکہ نخواهد کہ ہمخوابہ خود بعد فراق نیز بکنار دیگرے رود پس از جدائی ہم اورا نگاہ دارند و تکفل نفقہ اش کنند باز تصدیق ایں معنی در حدیث یافتم عبدالرزاق در مصنفہ گوید انبأنا معمر عن الزهری قال سأل رجل صلی اللہ

اپنی اس بیوی کو راضی کرنا ہے کہ تیرے علاوہ کوئی اور بیوی ہو تو اس کو طلاق ہے، لیکن الفاظ کے پیش نظر یہ بھی احتمال ہے کہ وہ اس بیوی کو اعتراض کرنے پر سزا دینا چاہتا ہو کہ اس نے میرے لئے حلال معاملہ میں کیوں مداخلت کی ہے تو ظاہر حال کی دلالت کا احتمال سند نہ بن سکے گا کیونکہ الفاظ میں عموم اور اطلاق ہے جو کہ یقینی ہے، ہاں اس احتمال کی بناء پر موجودہ بیوی کے علاوہ کسی دوسری بیوی کے نیت کا اظہار کرے تو دیانۃً اگرچہ معتبر ہو گی لیکن قضاءً معتبر نہ ہو گی، ہدایہ میں فرمایا ہے کہ جب بیوی خاوند کو کہے تو نے مجھ پر دوسری بیوی کر رکھی ہے تو خاوند اس کو جواب میں یوں کہے کہ جو بھی میری بیوی ہے اس کو تین طلاقیں۔ تو اس قسم دلانے والی بیوی کو بھی طلاق ہو جائیگی، قضاءً یہی حکم ہوگا کیونکہ اس کی

وجہ ظاہر ہے کہ قسم کے الفاظ کا عموم ہے جبکہ ایسے موقعہ پر خاوند کی غرض بھی یہ ہو سکتی ہے کہ وہ بیوی کو اس کے اعتراض پر سزا دینا چاہتا ہے کہ اس نے شرعاً حلال کام پر اعتراض کیوں کیا ہے تو کلام کے عموم اور سزا دینے کی غرض کے احتمال کے باوجود کسی اور بیوی کی نیت کے احتمال کی وجہ سے یہ قسم دلالت حال سے مقید نہ بن سکے گی، ہاں اگر دوسری بیوی کی نیت کرے تو اگر چہ وہ دیانۃً معتبر قرار دی جائیگی لیکن قضاءً معتبر نہ ہوگی کیونکہ یہ عموم میں تخصیص ہے جبکہ دلالت حال تخصیص نہیں کر سکتی اھ اختصاراً۔ اس مقصد کے لئے یہ مثال کافی ہے تاہم

1 الھدایہ کتاب الایمان باب الیمین فی البیع والشراء الخ المکتبۃ العربیۃ کراچی ۴۸۱/۲ Page 560 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 13

...[Allah] Almighty peace be upon him. A man said, "What if a man finds another man with his wife and kills him?" The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Do you not hear what your leader says?" They said, "O Messenger of Allah! Do not blame him, for he is a very honorable (jealous/ghayur) man. By Allah, he never married a woman except a virgin, and he never divorced a woman so that any of us could marry her." The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "Allah refuses everything except proof (bayyinah) [1]." I say, the questioner was our master Sa'd ibn 'Ubadah (may Allah be pleased with him). Therefore, giving three divorces at once was a sin, and separating without a religious need is highly detestable in Shariah. They have fixed the punishment of 'tahlil' (halala) as a whip for increase, and have sufficed with just marriage so that they may taste each other's honey [intimacy]. The wisdom in this is that honorable people refrain from triple divorce so that three [divorces] do not become a collar of shame, and refuge is sought with Allah Almighty, unlike him who acts without my permission...

To make the clarification and benefit more substantial, I present a few more examples showing that in the case of mere probability, the indication of the state (dalalat-ul-hal) is not credible. After the example from Hidaya, the second example is as follows: as mentioned before, if a wife or slave is ready to go out, and at that moment an absolute oath is sworn to divorce the wife or free the slave, which is not conditional on permission, then this oath will be general and absolute. It will not be conditional on the existence of ownership or marriage because, although there is a possibility of this oath being restricted due to the indication of the state, this possibility will not be credible because the words are general. I say, along with this, it is also possible that the intention of the person swearing the oath is to prevent the wife or slave from going out forever because they possess a secret of his that would be revealed if they went out, causing him embarrassment. Or the intention might be to prevent the wife from going out forever even if she is separated and out of marriage, because honorable people feel a sense of honor (ghayrah) and shame even at the wandering of their divorced wife in the streets, fearing people might say she is so-and-so's wife, referring to her former status. Rather, an honorable person does not like to see a woman he has had intimacy with in the intimacy of another even after separation and divorce. Therefore, even after an irrevocable divorce (talaq mughallazah), they keep her under their supervision and [bear] all her expenses...

1. Musannaf Abdur Razzaq, Hadith Habib-ur-Rahman al-Azami, Beirut 9/334. Page 561 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 13

...अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एक व्यक्ति ने कहा, "यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ किसी पुरुष को पाए और उसे मार डाले तो क्या होगा?" नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, "क्या तुम नहीं सुन रहे जो तुम्हारा सरदार कह रहा है?" उन्होंने कहा, "हे अल्लाह के रसूल! उन्हें दोष न दें, क्योंकि वह एक बहुत ही गैरत मंद (अत्यधिक ईर्ष्यालु) व्यक्ति हैं। अल्लाह की कसम, उन्होंने कभी किसी कुंवारी के अलावा किसी महिला से शादी नहीं की, और उन्होंने कभी किसी महिला को तलाक नहीं दिया ताकि हममें से कोई उससे शादी कर सके।" नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, "अल्लाह बिना सबूत (बय्यिनह) के कुछ भी स्वीकार नहीं करता [1]।" मैं कहता हूँ, प्रश्नकर्ता हमारे आका साद बिन उबादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) थे। इसीलिए एक साथ तीन तलाक देना गुनाह था, और बिना शरई ज़रूरत के अलग होना शरीयत में नापसंदीदा है। उन्होंने 'तहलील' (हलाला) की सज़ा को चाबुक के रूप में तय किया है, और महज़ निकाह को पर्याप्त माना है ताकि वे एक-दूसरे के शहद (प्रगाढ़ता) का स्वाद ले सकें। इसकी हिकमत (बुद्धिमत्ता) यही है कि गैरत मंद लोग तीन तलाक से बचते हैं ताकि तीन तलाक शर्म का हार न बन जाए, और अल्लाह तआला की शरण ली जाती है, इसके विपरीत कि वह मेरी अनुमति के बिना...

स्पष्टीकरण और लाभ को और अधिक बढ़ाने के लिए, मैं इस पर कुछ और उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ कि केवल संभावना के मामले में स्थिति का संकेत (दलालत-उल-हाल) विश्वसनीय नहीं होता। हिदाया के उदाहरण के बाद दूसरा उदाहरण यह है: जैसा कि पहले बताया गया है कि यदि पत्नी या गुलाम बाहर जाने को तैयार हो, तो उस अवसर पर पत्नी को तलाक देने या गुलाम को आज़ाद करने की पूर्ण शपथ लेना जो अनुमति पर आधारित न हो, तो यह शपथ सामान्य और पूर्ण होगी। यह स्वामित्व या निकाह की मौजूदगी पर आधारित नहीं होगी क्योंकि, हालांकि यहाँ स्थिति के संकेत के कारण इस शपथ के सीमित होने की संभावना है, लेकिन यह संभावना विश्वसनीय नहीं होगी क्योंकि शब्दों में व्यापकता है। मैं कहता हूँ, इसके साथ यह भी संभव है कि शपथ लेने वाले का उद्देश्य हमेशा के लिए पत्नी या गुलाम को बाहर जाने से रोकना हो, क्योंकि उनके पास उसका एक ऐसा राज़ है जो उनके बाहर जाने से खुल जाएगा और उसे शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। या पत्नी को हमेशा के लिए बाहर निकलने से रोकना उद्देश्य हो, भले ही वह निकाह से बाहर और अलग भी हो जाए क्योंकि गैरत मंद लोग अपनी तलाकशुदा महिला के गली-कूचों में घूमने पर भी गैरत और शर्म महसूस करते हैं कि लोग कहेंगे कि यह फलां की पत्नी है, भले ही वे पुराने समय के संदर्भ में कह रहे हों। बल्कि गैरत मंद

व्यक्ति अपनी संसर्ग (मुबाशरत) की हुई औरत को विदाई और तलाक के बाद भी किसी दूसरे के संसर्ग में देखना पसंद नहीं करते, इसलिए तलाक-ए-मुग़ल्लज़ह के बाद भी वे उसे अपनी निगरानी में रखते हुए उसके सभी खर्च...

---

1. मुसन्नफ़ अब्दुर रज्ज़ाक, हदीस हबीबुर रहमान अल-आज़मी, बेरूत 9/334. पृष्ठ 561 का 688

تعالٰی علیہ وسلم فقال الرجل یجد مع امرأتہ رجلا فیقتلہ فقال النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الاتسمعون الٰی مأ یقول سیدکم قالوا الاتلمہ یارسول اللہ فانہ رجل غیور واللہ ماتزوج امرأۃ قط الا بکر اولا طلق امرأۃ قط فاستطاع احد منآ ان یتزوجہا فقال النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یأبی اللہ الا بالبینۃ ۱ اھ قلت والسائل ھو سیدنا سعد بن عبادۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ ولہذا سہ طلاق دفعۃً کہ گناہ بود و بتفریق از مبغوض شرعی بے حاجت شرع اکثار برو تازیانہ تحلیل مقرر فرمودہ اند و بر مجرد نکاح کفایت نمودہ تا باہم شہد ہمدرگر بچشند حکمتش ہمانست کہ غیرت منداں از تثلیث طلاق باز مانند تا بہ تیں مستعار طوق عار نشود و العیاذ باللہ تعالٰی بخلاف آنکہ بے اذن من

وضاحت اور فائدہ کو زائد بنانے کے لئے اس پر مزید چند مثالیں پیش کرتا ہوں کہ محض احتمال کی صورت میں دلالت حال معتبر نہیں ہوتا، ہدایہ کی مثال کے بعد دوسری مثال یہ ہے کہ، جو پہلے گزرا کہ بیوی یا غلام باہر جانے کو تیار ہو تو اس موقعہ پر بیوی کو طلاق یا غلام کو آزادی کی علی الاطلاق قسم کھانا جو اجازت سے مشروط نہ ہو تو یہ قسم عام اور مطلق ہوگی اور ملک یا نکاح کی موجودگی سے مشروط نہ ہوگی، کیونکہ یہاں پر اگرچہ دلالت حال کی وجہ سے اس قسم کے مقید ہونے کا احتمال ہے لیکن یہ احتمال معتبر نہ ہوگا کیونکہ الفاظ میں عموم ہے، اقول اس کے ساتھ یہ بھی ممکن ہے کہ قسم کھانے والے کا مقصد ہمیشہ کے لئے بیوی یا غلام کو باہر جانے سے روکنا ہو، کیونکہ ان کے پاس اس کا ایک ایسا راز ہے جوان کے باہر جانے سے افشاء ہو جائے گا اور خفت اٹھانا پڑے گی یا بیوی کو ہمیشہ کے لئے باہر نکلنے سے روکنا مقصود ہوا گر چہ وہ نکاح سے باہر اور جدا بھی ہو جائے کیونکہ غیرت مند لوگ اپنی مطلقہ کی عورت کی کوچہ گردی پر بھی غیرت اور عار محسوس کرتے ہیں کہ لوگ کہیں گے کہ یہ فلاں کی بیوی ہے اگرچہ

اس کی بیوی سابقہ زمانے کے لحاظ سے کہتے ہوں بلکہ غیرت مند اپنی مباشرت شدہ عورت کو فراق اور طلاق کے بعد بھی دوسرے کی مباشرت میں دیکھنا پسند نہیں کرتے، اس لئے طلاق مغلظہ کے بعد بھی وہ اس کو اپنی نگرانی میں رکھتے ہوئے اس کے تمام اخراجا

---

۱ مصنف عبدالرزاق حدیث حبیب الرحمن الاعظمی بیروت ۳۳۴/۹ Page 561 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 13

(Left Column) ...does not go out, because the authority of permission ends at the limit of ownership. (3) What has passed is that speaking without the wife's permission is not restricted to the continuation of the marriage. I say: From that perspective, the goal is not to cause grief to the wife, and many times after separation, women become saddened by another woman's marriage to their husband. They remember their own days, and seeing someone else in their place causes pain. In contrast, if she does not go out without her husband's permission, this would be restricted, as explained above. (4) If a woman sees her husband talking with a stranger and takes an oath that if he talks to that stranger again, she will hang herself with a rope. And in the house, there is a young servant who comes and goes with the husband's permission, and the husband orders him to do household chores. Also, the sons of his paternal uncle, paternal aunt, and maternal aunt, or the brothers of those men, come with the husband's consent or stay in the same house and converse with the woman. The husband is pleased with all this. Despite all this, these are not excluded by circumstantial evidence. If the woman talks to that servant or these relatives after the oath, she will be divorced. In Jawahir al-Fatawa, Chapter Four of the Fatawa of Imam Mufti al-Jinn wal-Ins Najm al-Din Umar al-Nasafi (may Allah sanctify his secret), it is written: A man saw his wife talking to a stranger and said, "If you speak to a stranger in front of you, you are divorced." Then she spoke to her husband's student who was not among her mahrams (unmarriageable kin) or spoke to a man regarding...

(Right Column) ...takes care of them. Then I found confirmation of this subject in a Hadith. In Musannaf Abd al-Razzaq, it says: Ma'mar informed us from Zuhri that he said: A person asked the Prophet (peace and blessings be upon him) and said, "If a person finds another man with his wife, should he kill him?" The Prophet (peace and blessings be upon him) said, "Do you not listen to what your Master says?" Upon this, other companions said, "O Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), do not reproach this person, for he is a very self-respecting person. By Allah, he only marries virgins, and no one else among us can marry a woman divorced by him." So the Prophet (peace and blessings be upon him) said, "Allah Almighty does not grant permission to kill except by presenting witnesses (before a judge)." I say: That questioner was Hazrat Ubadah bin Samit (may Allah be pleased with him). And because of this same protective jealousy, giving three divorces at once was declared a sin, because using a religiously detestable thing beyond religious need results in

the condition of Halala being set as a punishment. For this reason, in Halala, merely marrying another person was not deemed sufficient; instead, until they have tasted the intimacy of each other, Halala is not complete. This is so that self-respecting people may refrain from giving three divorces and from having to bear the intimacy of another person with their spouse.

फतावा रज़विया, खंड 13

(बायां कॉलम) ...बाहर न जाए, क्योंकि अनुमति का अधिकार स्वामित्व की सीमा पर समाप्त हो जाता है। (3) जो बीत चुका है वह यह है कि पत्नी की अनुमति के बिना बोलना वैवाहिक बंधन के बने रहने तक सीमित नहीं है। मैं कहता हूँ: उस दृष्टिकोण से, उद्देश्य पत्नी को दुख न पहुँचाना है, और कई बार अलगाव के बाद भी महिलाएं अपने पति के दूसरी स्त्री से विवाह करने पर दुखी होती हैं। वे अपने दिनों को याद करती हैं और अपनी जगह किसी और को बैठा देखकर उन्हें पीड़ा होती है। इसके विपरीत, यदि वह पति की अनुमति के बिना बाहर नहीं जाती है, तो यह प्रतिबंधित होगा, जैसा कि ऊपर बताया गया है। (4) यदि कोई स्त्री अपने पति को किसी पराई स्त्री से बात करते देखे और शपथ ले ले कि यदि वह फिर से उस पराई स्त्री से बात करेगा तो वह गले में रस्सी डालकर लटक जाएगी। और घर में एक जवान नौकर है जो पति की अनुमति से आता-जाता है और पति उसे घरेलू काम करने का आदेश देता है। साथ ही उसके चाचा, बुआ और मौसी के बेटे, या उन पुरुषों के भाई पति की सहमति से आते हैं या उसी घर में रहते हैं और स्त्री से बातचीत करते हैं। पति इन सब बातों से प्रसन्न है। इन सब के बावजूद, ये परिस्थितिजन्य साक्ष्यों से अपवाद नहीं बनते। यदि वह स्त्री शपथ के बाद उस नौकर या इन रिश्तेदारों से बात करती है, तो उसे तलाक हो जाएगा। जवाहर अल-फतावा के अध्याय चार में इमाम मुफ्ती अल-जिन्न वल-इन्स नजमुद्दीन उमर अल-नसफी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) के फतवे में लिखा है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को एक अजनबी से बात करते देखा और कहा, "यदि तुम अपने सामने किसी अजनबी से बात करोगी, तो तुम्हें तलाक है।" फिर उसने अपने पति के एक शिष्य से बात की जो उसके मेहरम (निकाह हराम वाले रिश्तेदार) में से नहीं था या किसी पुरुष से बात की...

(दायां कॉलम) ...की देखभाल करते हैं। फिर मुझे इस विषय की पुष्टि एक हदीस में मिली। मुसन्निफ अब्द अल-रज्जाक में कहा गया है: हमें मा'मर ने ज़ुहरी से खबर दी कि उन्होंने कहा: एक व्यक्ति ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सवाल किया और अर्ज़ की, "यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ किसी गैर मर्द को पाए तो क्या उसे कत्ल कर दे?" तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "क्या तुम अपने मालिक की बात नहीं सुनते कि वह क्या फरमा रहा है?" इस पर अन्य साथियों ने अर्ज़ की, "या रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), इस व्यक्ति को फटकार न लगाएं क्योंकि यह बहुत गैरतमंद व्यक्ति है। अल्लाह की कसम, यह केवल कुंवारी स्त्रियों से निकाह करता है, और इसके द्वारा तलाक दी गई स्त्री से हम में से कोई दूसरा निकाह नहीं कर सकता।" तो

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, "अल्लाह तआला कत्ल की इजाजत नहीं देता सिवाय (काज़ी के पास इसके खिलाफ) गवाह पेश करने के।" मैं कहता हूँ: वह सवाल करने वाले हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) थे। और इसी गैरत की वजह से एक ही बार में तीन तलाक देना गुनाह करार दिया गया है, क्योंकि शरई तौर पर नापसंद चीज़ को शरई ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल करने पर 'हलाला' की शर्त को सज़ा के तौर पर मुकर्रर किया गया है। और इसी वजह से हलाला में दूसरे व्यक्ति से केवल निकाह को काफी नहीं माना गया, बल्कि जब तक एक-दूसरे की सोहबत का स्वाद न चख लें, हलाला पूरा नहीं हो सकता। यह इसलिए है ताकि गैरतमंद लोग तीन तलाक देने से बचें और बिना वजह दूसरे व्यक्ति की सोहबत को अपनी पत्नी के साथ बर्दाश्त न करना पड़े।

(بایاں کالم) بیرون نرود کہ ولایت اذن بانتہائے ملک منتہی شود (۳) آنکہ گذشت کہ بے اذن زن زنے تلکّم مقید ببقائے زوجیت نباشد اقول: ازاں رو کہ مقصود غم نرسانیدن ست بزن و بارہا باشد کہ بعد فراق نیز زناں بتزوج شوہر بزنے دیگر غمگین شوند ایام خود یاد می آید و بجائے خود نشستن دیگری رنج می رساند بخلاف آنکہ بے اذن زن بیرون نرود ایں متقید شود چنانکہ وجہش بالا بشتیم (۴) زن را بامردے بیگانہ چانہ زن دید سوگند خورد کہ اگر باز مرد بیگانہ چانہ زنی رسن زنی از گلو فگنی وبخانہ نوچہ نوکر ست کہ باذن مرد آمد رفت دارد وزن اورا کارہائے خانگی می فرماید نیز پسر آں عم وعمہ و خالہ زن یا برادر ان مرد برضائے مرد می آیند یا خود در ہمیں خانہ می مانند و بازن ہمسخن می شوند مرد بایں ہمہ راضی ست بایں ہمہ ایں ما بدلالت حال مستثنیٰ نشوند وزن بعد سوگند اگر باں نوکر یا ایں قریباں سخن گوید طلاقہ شود در جواہر الفتاویٰ باب چہارم فتاویٰ امام مفتی الجن والانس نجم الدین عمر نسفی قدس سرہ الصفی ست رجل رای امرأتہ تتکلم اجنبیا فقالاً گر پیش تو بامرد بیگانہ سخن گوئی فانت طالق فکلمت تلمیذ زوجھا لیس من محارمھا او کلمت رجلا فی

(دایاں کالم) کی کفالت کرتے ہیں پھر اس مضمون کی تصدیق میں نے حدیث میں پائی ہے ، مصنف عبدالرزاق میں فرماتے ہیں ہمیں معمر نے زہری سے خبر دی ہے انہوں نے فرمایا کہ ایک شخص نے حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے سوال کیا اور عرض کی ایک شخص ایک بیوی کے ساتھ کسی غیر مرد کو پائے تو قتل کردے، تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کہ کیا تم اپنے آقا کی بات کو نہیں سنتے کہ وہ کیا فرمارہا ہے تو اس پر دیگر اصحاب نے عرض کی یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) اس شخص کو ملامت نہ فرمائیں کیونکہ یہ غیور شخص ہے خدا کی قسم یہ صرف باکرہ عورت سے نکاح کرتا ہے اور اس کی طلاق دی ہوئی عورت کو دوسرا کوئی

بھی ہم میں سے نکاح نہیں کر سکتا۔ تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ قتل کی اجازت نہیں دیتا ما سوائے (قاضی کے ہاں اس کے خلاف) گواہ پیش کرنے کے، اھ، قلت (میں کہتا ہوں) وہ سائل حضرت عبادہ بن صامت رضی اللہ تعالیٰ عنہ تھے، اور اسی غیرت کی وجہ سے ایک ہی دفعہ تین طلاقیں دینا گناہ قرار دیا گیا ہے کہ شرعاً مبغوض چیز کو شرعی حاجت سے زائد استعمال کرنے پر حلالہ کی شرط کو سزا کے طور پر مقرر کیا گیا ہے اور اسی وجہ سے حلالہ میں دوسرے شخص سے صرف نکاح کو کافی نہ قرار دیا گیا بلکہ جب تک ایک دوسرے کے مزے کو نہ چکھ لیں حلالہ مکمل نہیں ہوسکتا، یہ اس لئے تاکہ غیرتمند لوگ تین طلاقیں دینے سے باز رہیں اور خواہ مخواہ دوسرے شخص کے مجامعت کو اپنے گلے میں

...do not put [into trouble], God forbid. Contrary to this, if the oath was conditional upon permission, then upon the ending of the authority for permission, i.e., the ending of the marriage, the oath will be dropped. (3) Regarding what was mentioned earlier, that a husband said to his wife: "I will not make another woman my wife without your permission," then this oath will not be specific to the state of marriage with the current wife (rather, even after the marriage with this wife ends, her permission will be necessary). I say: (I say) the purpose of this type of oath is to save the wife from distress — because a wife's distress is not specific only to the state of marriage, because it often happens that even at the time of separation, women are saddened by their former husband's second marriage; remembering their own time and seeing another in their place, they feel grief.

(In short, since the wife's distress due to another woman is not specific only to the state of marriage, but she is distressed by this even after separation, therefore saving her from this distress can also happen after the state of marriage. Hence, this oath will remain valid after separation from the wife). Contrary to this, if the husband takes an oath: "You shall not go out without my permission," then this oath will be restricted to the state of marriage, as we have already explained the reason for it. (4) If he finds his wife talking informally with an outsider, and at that time takes an oath: "After this, if you talk to a stranger, the rope of marriage will come off your neck," meaning you are divorced, while there are servants in the house who come and go with the husband's permission, to whom the wife gives instructions regarding household chores.

Note: I say: And it is better [to say] "spoke to a man," because the oath is broken by their speaking, not by the speaking of someone else if she does not respond to him. I say: (I say) it is better to say here that the woman spoke to that man. Because the oath will break by the woman speaking, not by someone else speaking, provided the woman does not answer the outsider. (T)

---

1 Jawahir al-Fatawa, Book of Faith. Page 563 of 688

...न डालें, वलइयाज़ु बिल्लाह। इसके विपरीत यदि शपथ अनुमति पर निर्भर थी, तो अनुमति का अधिकार समाप्त होने पर, अर्थात निकाह समाप्त होने पर शपथ समाप्त हो जाएगी। (3) वह जो गुज़रा कि पति ने पत्नी से कहा कि तुम्हारी अनुमति के बिना दूसरी महिला को पत्नी नहीं बनाऊंगा, तो यह शपथ वर्तमान पत्नी के साथ निकाह की स्थिति तक ही सीमित नहीं होगी (बल्कि इस पत्नी से निकाह समाप्त होने के बाद भी उसकी अनुमति आवश्यक होगी)। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) इस प्रकार की शपथ का उद्देश्य पत्नी को परेशानी से बचाना है — क्योंकि पत्नी की परेशानी केवल निकाह की स्थिति तक ही सीमित नहीं है, क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि बिछड़ने के समय भी महिलाएँ पूर्व पति की दूसरी शादी से दुखी होती हैं, अपना समय याद करके अपनी जगह दूसरी को देखकर दुख पाती हैं।

(संक्षेप में, चूँकि दूसरी महिला के कारण पत्नी की परेशानी केवल निकाह की स्थिति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जुदाई के बाद भी वह इस बात पर परेशान होती है, इसलिए इस परेशानी से बचाना निकाह की स्थिति के बाद भी हो सकता है। अतः यह शपथ पत्नी से वियोग के बाद भी बनी रहेगी)। इसके विपरीत यदि पति शपथ ले कि "तुम मेरी अनुमति के बिना बाहर नहीं जाओगी", तो यह शपथ निकाह की स्थिति तक ही सीमित होगी जैसा कि हम पहले इसकी वजह बयान कर चुके हैं। (4) यदि पत्नी को किसी बाहरी व्यक्ति से बेतकल्लुफ़ बातें करते हुए पाए तो उस समय शपथ ले कि "इसके बाद अगर तुमने किसी पराए मर्द से बात की तो निकाह की रस्सी तुम्हारे गले से निकल जाएगी" अर्थात तुम्हें तलाक़ हो गई, जबकि घर में नौकर-चाकर हैं जो पति की अनुमति से घर में आते-जाते हैं जिन्हें पत्नी घर के कामों के बारे में निर्देश देती है।

नोट: अक़ूल: और बेहतर है [कहना] "एक आदमी से बात की", क्योंकि शपथ उनके बात करने से टूटेगी, न कि किसी और के बात करने से यदि वह उसे उत्तर न दे। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यहाँ बेहतर यह है कि यूँ कहा जाए, औरत ने उस मर्द से बात की। क्योंकि औरत के बात करने से शपथ टूटेगी, किसी दूसरे के बात करने से नहीं टूटेगी, बशर्ते कि औरत गैर को जवाब न दे। (त)

---

1 जवाहर-उल-फ़तावा, किताबुल ईमान। पृष्ठ 563 / 688

هذه الدار بينهما معرفة ولكن لامحرمية بينهما او كلمهما ع رجل من ذوى الارحام وليس من محارمها فانه يقع الطلاق اقول: زیرا کہ محتمل است کہ مرد باعتماد زن پیش ازیں روادار اینہا بود چوں دید کہ با اجنبی محض ہم سخن می شود در سنش تنگ تر کشید و بانام محرم سخن گفتن مطلقاً منع کرد پس اطلاق لفظ را تقییدے متقین متعین نشد، وباللہ التوفیق۔

نہ ڈالیں، والعیاذ باللہ ، اس کے برخلاف اگر قسم کو اجازت سے مشروط کیا ہو تو پھر اجازت کی ولایت ختم ہو جانے یعنی نکاح ختم ہو جانے پر قسم ساقط ہو جائیگی (۳) وہ جو گزرا کہ خاوند نے بیوی سے کہا کہ تیری اجازت کے بغیر دوسری عورت کو بیوی نہ بناؤں گا ، تو یہ قسم موجودہ بیوی سے نکاح کی حالت سے مختص نہ ہوگی (بلکہ اس بیوی سے نکاح ختم ہونے کے بعد بھی اس کی اجازت ضروری ہوگی) اقول: (میں کہتا ہوں) اس قسم کا مقصد بیوی کو پریشانی سے بچانا ہے __ کیونکہ بیوی کی پریشانی صرف نکاح کی حالت سے مختص نہیں کیونکہ بارہا ایسا ہوتا ہے کہ فرقت کے وقت بھی عورتیں سابقہ خاوند کی دوسری شادی سے غمگین ہوتی ہیں، اپنا وقت یاد کر کے اپنے بجائے دوسری کو رہتی دیکھ کر رنج پاتی ہیں، _____

(غرضیکہ چونکہ بیوی کی پریشانی دوسری عورت کی وجہ سے صرف حالتِ نکاح سے مختص نہیں بلکہ جدائی کے بعد بھی اس چیز پر وہ پریشان ہوتی ہے لہٰذا اس پریشانی سے بچانا حالتِ نکاح کے بعد بھی ہو سکتا ہے لہٰذا یہ قسم بیوی سے فراق کے بعد قائم رہے گی) اس کے برخلاف اگر خاوند قسم کھائے کہ تو میری اجازت کے بغیر باہر نہ جائے گی تو یہ قسم حالتِ نکاح سے مقید ہو گی جیسا کہ اس کی وجہ پہلے ہم بیان کر چکے ہیں۔ (۴) بیوی کو غیر شخص سے بے تکلف باتیں کرتے ہوئے پائے تو اس وقت قسم کھائے کہ اس کے بعد اگر تو نے بیگانے مرد سے بات کی نکاح

کی رسی تیرے گلے سے نکل جائے گی یعنی تجھے طلاق ہو گئی، جبکہ گھر میں نوکر چاکر ہیں جو خاوند کی اجازت سے گھر میں آتے جاتے ہیں جن کو بیوی گھر کے کاموں کے متعلق ہدایات دیتی ہے

عہ: اقول: والاولی کلمت رجلالان الحنث بکلامھما لابکلام غیرھا اذالم تجب منہ۔ | اقول: (میں کہتا ہوں) یہاں بہتر یہ ہے کہ یوں کہا جائے، عورت نے اس مرد سے بات کی۔ کیونکہ عورت کے بات کرنے سے قسم ٹوٹے گی کسی دوسرے کے کلام کرنے سے نہ ٹوٹے گی، بشرطیکہ عورت غیر کو جواب نہ دے ۲ امنہ (ت)

Similarly, if the wife's cousins (paternal or maternal) or the husband's brother come to the house with the husband's permission or live in the same house, and the wife continues to speak with all these gentlemen with her husband's consent, despite this situational indication, these people will not be exempt from the oath. Rather, if after the oath, the wife speaks with house servants or the aforementioned close relatives, divorce will occur. In the fourth chapter of 'Jawahir al-Fatawa', the fatwas of Imam Mufti of Jinn and Men, Najm al-Din Umar Nasafi (may his secret be sanctified), are mentioned, which state: A person found his wife talking to a stranger, so he swore an oath that if you talk to a stranger after this, you are divorced. Then, after this, if the wife spoke with the husband's non-mahram student, or a non-mahram acquaintance who visits the house, or a non-mahram relative of the wife spoke to her, divorce will take place.

I say: (My opinion is) This is because previously the husband, trusting his wife, used to show tolerance regarding these mentioned people. But when he saw his wife talking to a complete stranger, he tightened the rope on his wife and prohibited her from talking to any non-mahram at all. Given this possibility, this oath will not be restricted due to the situational indication, but rather, the oath will remain applicable in its general wording and will include every non-mahram. And success is from Allah Almighty alone. (T)

(Arabic Text)

Eighth Doubt: Furthermore, we passed by [it], finally no less than that agreement and disagreement are two types of imagination, and intending one type is a general specification as researched in 'Al-Fath'. Intending specification of a general term is religiously (diyanatan) acceptable, as just mentioned from 'Al-Hidaya', even if it is not acceptable legally (qada'an). Weight also cannot be given to it and it cannot be relied upon because the woman is like a judge as stated in 'Al-

(Urdu Translation)

Eighth doubt: Even if we ignore all the aforementioned possibilities, there is at least this much scope: in the husband's oath, there are two types of dissociation, agreeable and disagreeable. Intending one of these two possibilities is also a type of specification (takhsis) by which a general term can be made specific, as researched in 'Fath al-Qadir'. Intending specification in a general term is religiously (diyanatan) acceptable, as just mentioned with reference to 'Hidaya'. Although this intention of specification is not legally

(Arabic Text)

Tabyin', 'Al-Fath', and 'Al-Shami'. So if he intended this particularity, it should be that in the sight of Allah he is not a breaker of the oath. In the fatwa, attention should be paid to this restriction because the Mufti fatwas on religion as in 'Al-Tanwir' and others.

(Urdu Translation)

(qada'an) acceptable, and the wife also holds the position of a judge in such matters, she cannot consider it valid either, as stated in 'Tabyin', 'Fath', and 'Shami'. Therefore, if the husband had intended this specification in his oath, then in the sight of Allah, the oath will not be broken.

इसी तरह, अगर पत्नी के चचेरे, फुफेरे, ममेरे या मौसेरे भाई, या पति के भाई पति की अनुमति से घर आते हैं या उसी घर में रहते हैं, और पत्नी अपने पति की सहमति से इन सभी सज्जनों से बात करती रहती है, तो इस स्थितिजन्य संकेत के बावजूद, ये लोग शपथ से मुक्त नहीं होंगे। बल्कि, शपथ के बाद यदि पत्नी घर के नौकरों या उपरोक्त करीबी रिश्तेदारों से बात करती है, तो तलाक हो जाएगा। 'जवाहर अल-फ़तावा' के चौथे अध्याय में, जिन्नों और इंसानों के मुफ्ती इमाम नज्म अल-दीन उमर नसफी (अल्लाह उन पर अपनी रहमत बरसाए) के फतवे दर्ज हैं, जिनमें यह है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को किसी अजनबी से बातें करते हुए पा लिया, तो उसने शपथ ली कि यदि इसके बाद तुमने किसी अजनबी से बात की तो तुम्हें तलाक है। फिर इसके बाद, यदि पत्नी ने पति के गैर-महरम छात्र से बात की, या घर में आने-जाने वाले किसी गैर-महरम परिचित से बात की, या पत्नी के किसी गैर-महरम रिश्तेदार ने पत्नी से बात कर ली, तो तलाक प्रभावी हो जाएगा।

मैं कहता हूँ: यह इसलिए है क्योंकि इससे पहले पति अपनी पत्नी पर भरोसा करते हुए इन लोगों के मामले में उदारता बरतता था। लेकिन जब उसने अपनी पत्नी को एक बिल्कुल अजनबी व्यक्ति से बात करते हुए देखा, तो उसने अपनी पत्नी पर पाबंदी कड़ी कर दी और उसे किसी भी गैर-महरम से बात करने से मना कर दिया। इस संभावना के होते हुए, यह शपथ स्थितिजन्य संकेत के कारण सीमित नहीं होगी, बल्कि यह शपथ अपने शब्दों की व्यापकता पर टिकी रहेगी और हर गैर-महरम को इसमें शामिल करेगी। और सफलता केवल अल्लाह तआला की ओर से है। (त)

(अरबी पाठ)

आठवाँ संदेह: इसके अलावा हम [इससे] गुजर गए, अंत में इससे कम नहीं कि सहमति और असहमति कल्पना के दो प्रकार हैं, और एक प्रकार का इरादा करना एक सामान्य विनिर्देश है जैसा कि 'अल-फ़तह' में शोध किया गया है। सामान्य पद के विनिर्देश का इरादा करना धार्मिक रूप से (दयानतन) स्वीकार्य है, जैसा कि अभी 'अल-हिदाया' से उल्लेख किया गया है,

(उर्दू अनुवाद)

आठवाँ संदेह: यह कि यदि हम उपरोक्त सभी संभावनाओं को नज़रअंदाज़ कर दें, तब भी कम से कम इतनी गुंजाइश ज़रूर है कि पति की शपथ में असंबद्धता (ला-तअल्लुकी) की दो किस्में हैं: अनुकूल और प्रतिकूल। इन दोनों में से किसी एक संभावना का इरादा करना भी एक प्रकार का विनिर्देश (तखसीस) है जिससे सामान्य को विशेष बनाया जा सकता है, जैसा कि 'फ़तह अल-क़दीर'

(अरबी पाठ)

भले ही वह कानूनी रूप से (क़ज़ाअन) स्वीकार्य न हो। इस पर वजन भी नहीं दिया जा सकता और इस पर भरोसा भी नहीं किया जा सकता क्योंकि महिला एक न्यायाधीश की तरह है जैसा कि 'अल-तबीन', 'अल-फ़तह' और 'अल-शमी' में है। इसलिए यदि उसने इस विशेषता का इरादा किया, तो यह होना चाहिए कि अल्लाह की दृष्टि में वह शपथ तोड़ने वाला नहीं है। फतवे में, इस प्रतिबंध पर ध्यान दिया जाना चाहिए क्योंकि मुफ्ती धर्म पर फतवा देता है जैसा कि 'अल-तनवीर' और अन्य में है।

(उर्दू अनुवाद)

में इसकी शोध मौजूद है। और सामान्य में विनिर्देश की नीयत करना धार्मिक रूप से (दयानतन) स्वीकार्य है, जैसा कि अभी 'हिदाया' के हवाले से बताया गया है। हालाँकि विनिर्देश की यह नीयत कानूनी रूप से (क़ज़ाअन) स्वीकार्य नहीं है और पत्नी भी ऐसे मामलों में काज़ी (न्यायाधीश) का दर्जा रखती है, इसलिए वह भी इसे मान्य नहीं मान सकती जैसा कि 'तबीन', 'फ़तह' और 'शमी' में है। अतः यदि पति ने अपनी शपथ में इस विनिर्देश की नीयत की हो, तो अल्लाह के नज़दीक शपथ नहीं टूटेगी।

یوں ہی بیوی کے چچا یا پھو پھی زاد یا خالہ زاد یا خاوند کے بھائی خاوند کی اجازت سے گھر آتے ہیں یا اسی گھر میں رہتے ہیں اور بیوی اپنے خاوند کی رضا مندی سے ان تمام حضرات سے بات کرتی رہتی ہے، اس دلالت حال کے باوجود یہ لوگ اس قسم سے مستثنیٰ نہیں ہوں گے بلکہ بیوی قسم کے بعد گھر کے نوکر یا ان مذکورہ قریبیوں سے بات کرے گی تو اس کو طلاق ہو جائے گی۔ جواہر الفتاویٰ کے باب چہارم میں امام مفتی جن وانس نجم الدین عمر نسفی قدس سرہ کے فتوے ذکر کئے گئے ہیں، جن میں یہ ہے کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کسی اجنبی کے ساتھ باتیں کرتی ہوئی پالیا تو اس نے قسم کھائی کہ اگر اس کے بعد تو نے بیگانے شخص سے بات کی تو تجھے طلاق، تو اس کے بعد بیوی نے خاوند کے غیر محرم شاگرد سے بات کی یا اس گھر میں آنے جانے والے واقف کار غیر محرم سے بات کی یا بیوی کے غیر محرم رشتہ دار شخص نے بیوی سے بات کر لی تو طلاق واقع ہو جائے گی۔

اقول: (میں کہتا ہوں) یہ اس لئے کہ قبل ازیں خاوند، بیوی پر اعتماد کرتے ہوئے ان مذکور لوگوں کے بارے میں رواداری سے کام لیتا رہا، تو جب اس نے بیوی کو خالص اجنبی شخص سے باتیں کرتے ہوئے دیکھ لیا تو اس نے بیوی کی رسی کو تنگ کرتے ہوئے مطلقاً ہر غیر محرم سے بات کرنا ممنوع قرار دیا تو اس احتمال کے ہوتے ہوئے یہ قسم دلالت حال کی وجہ سے مقید نہ ہو گی بلکہ یہ قسم اپنے الفاظ کے عموم پر باقی رہے گی اور ہر غیر محرم کو شامل ہو گی، اور توفیق صرف اللہ تعالیٰ سے حاصل ہے۔ (ت)

(Arabic Text)

شبہ ثامن: ازیں ہم در گذشتیم آخر کم نہ ازاں کہ موافقہ و مخالفہ دو نوع تخیلہ ست و ارادہ یک نوع تخصیص عام ست کما حققہ فی الفتح ونیت تخصیص عام دیا نتاً مقبول ست کما مر انفا عن الھدایۃ گو قضاءً پذیر نباشد وزن نیز بر و اعتبار نتواں کرد لان المراۃ کالقاضی کما فی التبیین والفتح والشامی پس اگر نیت ایں خصوص کردہ باشد باید کہ عنداللہ حانث نشود در فتوٰی التفات بایں قید می بایست لان المفتی بالدیانۃ یفتی کما فی التنویر وغیر ہ۔

(Urdu Translation)

آٹھواں شبہہ: یہ کہ تمام مذکورہ احتمالات کو نظر انداز کر دیں تب بھی کم از کم یہ گنجائش ضرور ہے کہ خاوند کی قسم میں موافق اور مخالف لا تعلقی کی دو قسمیں ہیں اور دونوں میں سے ایک احتمال کا ارادہ کرنا بھی ایک قسم کی تخصیص ہے جس سے عام کو خاص کیا جا سکتا ہے جیسا کہ فتح القدیر میں اس کی تحقیق موجود ہے، اور عام میں تخصیص کی نیت کرنا دیانۃً مقبول ہے، جیسا کہ ابھی ہدایہ کے حوالہ سے گزرا ہے، اگر چہ یہ تخصیص کی نیت قضاءً قابل قبول نہیں اور بیوی بھی ایسے معاملات میں قاضی کا حکم رکھتی ہے اس لئے بیوی بھی اس کو معتبر قرار نہیں دے سکتی جیسا کہ تبیین، فتح اور شامی میں ہے، پس اگر خاوند نے اپنی قسم میں اس تخصیص کی نیت کر لی ہو تو عند اللہ قسم نہ ٹوٹے گی،

I say: It is fine; religiously (diyanatan) as well, this intention will not be effective. Agreement and disagreement are not two types of vacating, but rather two attributes. An intention regarding a specific attribute that is not mentioned is not considered. For instance, if someone swears regarding a man who is standing that they will not talk to him, and then it is explained that this intention was specifically for him while he was standing, this intention is futile. If they explicitly say they won't talk to this man while he is standing and intend to specify the time of his standing, it is religiously valid, but not legally (qada’an), because an attribute mentioned for a person present is considered redundant, and the act of standing is not a reason to cease speech. Similarly, if one swears not to marry a woman and intends a Hashimi, Turki, or Arabi woman, or one with a noble lineage, it is religiously valid because this is a specific type of woman. However, if one intends a Makki, Hindi, or Arabi woman based on their place of residence, it is not valid because this is merely an attribute of the woman, and an attribute cannot be validly intended without being explicitly mentioned, especially since the oath only mentioned 'woman' in general. In 'Fath al-Qadir', it is stated: If one swears not to reside in a certain person's house and later claims they meant a rented one, it is not valid; if they reside there without paying rent, the oath is broken. This is unlike swearing not to reside in a house purchased by someone, and meaning it was purchased for themselves; this is accepted because purchasing is of two types: for oneself or for another, so specifying one of them by intention is valid.

While giving a fatwa, this restriction and specification should be kept in mind, as stated in 'Tanwir' etc., that a Mufti should give a fatwa based on religious piety (diyanat). (T) I say (in response): It does not matter, because religiously this intention is also not effective. In an oath, agreement and disagreement are not two types of dissociation, but two attributes of dissociation. The intention of an unmentioned attribute from among two attributes is not considered valid. For example, if someone is standing and another person swears not to talk to him, and then later explains the oath was regarding the attribute of standing, this intention will be futile and useless. Yes, if he had mentioned 'standing' in the oath and swore with that intention, it could have been religiously valid, although legally this intention is not valid because the oath concerns a person who is present, and mentioning an attribute of someone present is not useful. Furthermore, standing is not such an attribute that can motivate an oath or be a reason for not talking. Similarly, if someone swears not to

make someone their wife, and by that, he means a Hashimi, Turki, Arabi woman or a woman from a specific lineage, then this intention will be religiously valid because it is a specification of one type of woman. But if he intends a woman in terms of residence, like an Arabi, Hindi, or Makki woman, it will not be valid because it pertains to a woman from a specific place, which is her attribute, and no attribute can be valid without being mentioned. Since the oath only mentions 'woman', in it...

मैं कहता हूँ: यह ठीक है; धार्मिक रूप से (दियानतन) भी यह नियत काम नहीं आएगी। सहमति और असहमति खाली करने के दो प्रकार नहीं हैं, बल्कि दो गुण हैं। और किसी ऐसे विशिष्ट गुण की नियत मान्य नहीं होती जिसका उल्लेख न किया गया हो। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति खड़े हुए किसी पुरुष के बारे में शपथ लेता है कि मैं इस पुरुष से बात नहीं करूँगा, और फिर उसे यह स्पष्ट किया जाए कि यह नियत उसके खड़े होने के समय के लिए थी, तो यह नियत व्यर्थ होगी। यदि वह स्पष्ट रूप से कहे कि वह इस खड़े व्यक्ति से बात नहीं करेगा और उसके खड़े होने के समय को विशिष्ट करने की नियत रखे, तो यह धार्मिक रूप से मान्य है, लेकिन कानूनी रूप से (क़ज़ान) नहीं, क्योंकि उपस्थित व्यक्ति का गुण व्यर्थ माना जाता है, और खड़े होने का गुण बातचीत बंद करने का कारण नहीं होता। इसी तरह, यदि कोई शपथ ले कि वह विवाह नहीं करेगा और उसका अर्थ हाशिमी, तुर्की, या अरबी महिला या किसी कुलीन महिला से हो, तो यह धार्मिक रूप से मान्य है क्योंकि यह महिला का एक प्रकार है। लेकिन यदि वह निवास के आधार पर मक्की, हिंदी, या अरबी महिला की नियत करता है, तो यह मान्य नहीं है क्योंकि यह महिला का एक गुण है, और बिना उल्लेख के किसी गुण की नियत मान्य नहीं हो सकती, क्योंकि शपथ केवल सामान्य रूप से 'महिला' के उल्लेख पर आधारित है। 'फ़तह अल-क़दीर' में कहा गया है: यदि कोई किसी के घर में न रहने की शपथ लेता है और कहता है कि उसका अर्थ किराए के घर से था, तो यह मान्य नहीं है; यदि वह वहां बिना किराए के रहता है, तो शपथ टूट जाती है। यह उस स्थिति के विपरीत है जब कोई किसी के द्वारा खरीदे गए घर में न रहने की शपथ लेता है, और उसका अर्थ यह होता है कि उसने इसे अपने लिए खरीदा है, क्योंकि यह स्वीकार किया जाता है क्योंकि यह खरीदने के दो प्रकारों में से एक है: अपने लिए खरीदना या दूसरे के लिए, इसलिए उनमें से एक की नियत करना मान्य है।

फ़तवा देते समय इस प्रतिबंध और विशिष्टता को ध्यान में रखना चाहिए, जैसा कि 'तन्वीर' आदि में है कि मुफ्ती को धार्मिक धर्मनिष्ठा (दियानत) के आधार पर फ़तवा देना चाहिए। (त) मैं कहता हूँ (जवाब में): कोई बात नहीं, क्योंकि धार्मिक रूप से भी यह नियत प्रभावी नहीं है। शपथ में, सहमति और असहमति अलगाव के दो प्रकार नहीं हैं, बल्कि अलगाव के दो गुण हैं। दो गुणों में से किसी अलिखित गुण की नियत मान्य नहीं मानी जाती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई खड़ा है और दूसरा व्यक्ति उससे बात न करने की शपथ लेता है, और बाद में बताता है कि शपथ खड़े होने के गुण के बारे में थी, तो यह नियत व्यर्थ और बेकार होगी। हाँ, यदि उसने शपथ में 'खड़े होने' का उल्लेख किया होता और

उस नियत के साथ शपथ ली होती, तो यह धार्मिक रूप से मान्य हो सकती थी, हालाँकि कानूनी रूप से यह नियत मान्य नहीं है क्योंकि शपथ उपस्थित व्यक्ति के बारे में है, और उपस्थित व्यक्ति के गुण का उल्लेख करना उपयोगी नहीं है। इसके अलावा, खड़ा होना ऐसा गुण नहीं है जो शपथ को प्रेरित कर सके या बात न करने का कारण बन सके। इसी तरह, यदि कोई किसी को अपनी पत्नी न बनाने की शपथ लेता है, और उससे उसका अर्थ हाशिमी, तुर्की, अरबी महिला या किसी विशिष्ट वंश की महिला है, तो यह नियत धार्मिक रूप से मान्य होगी क्योंकि यह एक प्रकार की महिला का विनिर्देश है। लेकिन यदि वह निवास के संबंध में किसी महिला की नियत करता है, जैसे कि अरबी, हिंदी या मक्की महिला, तो यह मान्य नहीं होगा क्योंकि यह एक विशिष्ट स्थान की महिला से संबंधित है, जो उसका गुण है, और कोई भी गुण बिना उल्लेख किए मान्य नहीं हो सकता। चूँकि शपथ में केवल 'महिला' का उल्लेख है, इसमें...

اقول: خیر ست دیانۃً نیز ایں نیت کار نہ دہد موافقہ و مخالفہ دو نوع تخلیہ نیست بلکہ دو وصف است و نیت وصفی خاص غیر مذکور معتبر نشود چنانکہ نسبت مر دے استادہ سوگند خورد کہ بایں مرد سخن نگویم و آزار دہد کہ بایں مرد استادہ ایں نیت لغو باشد اگر گوید بایں مرد استادہ سخن نزند و نیت تخصیص بوقت قیامش کند دیانۃً معتبر است نہ قضاء کہ وصف در حاضر لغوست وصفت قیام داعی ترک کلام نیست، ہمچناں اگر سوگند خورد کہ زن نکند و مرادزن ہاشمیہ یا ترکیہ یا عربیہ یا نسب دار دیانۃً معتبر است کہ ایں یک نوع زن ست واگر زن مکیہ یا ہندیہ یا عربیہ بالمکن نیت کرد معتبر نیست کہ ایں صفت زن ست وصفت بے ذکر بمسکن عام خیمہ آں ست در فتح القدیر فرمود حلف لایسکن دار فلان وقال عنیت باجر لایصح حتی لوسکنھا بغیر اجر حنث بخلاف مالوحلف لایسکن دارا اشتراھا فلان وعنی اشتراھا لنفسه فأنه یصدق لانه احد نوعی الشراء لانه متنوع الی ما یوجب الملك للمشتری و ما یوجبه لغیره فتصح نیة احد

جبکہ فتوٰی دیتے وقت اس قید و تخصیص کو پیش نظر رکھنا چاہئے، جیسا کہ تنویر وغیرہ میں ہے کہ مفتی کو چاہئے کہ وہ دیانت پر فتوٰی دے۔ (ت) اقول (جواب میں کہتا ہوں کہ) کوئی بات نہیں، کیونکہ دیانۃً بھی یہ نیت کار آمد نہیں ہے، قسم میں موافق اور مخالف یہ دونوں لاتعلقی کی قسمیں نہیں ہیں بلکہ یہ لا تعلق کے دو وصف ہیں جبکہ دو وصفوں میں سے کسی غیر مذکور وصف کی نیت معتبر نہیں ہوتی جیسا کہ ایک شخص کھڑا ہواس کے متعلق کوئی دوسرا یہ قسم کھائے کہ میں اس شخص سے بات نہ کروں گا، اور اب بعد میں کھڑے ہونے کے وصف کی بابت قسم کو بتائے تو یہ نیت لغو بیکار ہوگی، ہاں اگر قسم کھڑے ہونے کا ذکر کرتا اور قسم اس نیت پر کھاتا تو دیانۃً معتبر ہو سکتی تھی اگرچہ قضاءً یہ نیت معتبر نہیں ہے کیونکہ یہ قسم حاضر شخص کے متعلق

ہے جبکہ حاضر میں وصف کا ذکر کارآمد نہیں اور پھر کھڑا ہونا ایسا وصف بھی نہیں ہے جو قسم کا داعی بن سکے اور بات نہ کرنے کی وجہ بن سکے ، یوں ہی اگر کوئی قسم کھائے کہ میں بیوی نہ بناؤں گا، تو اس سے اگر وہ ہاشمی یا ترکی یا عربی یا کوئی خاص نسب والی عورت مراد لے تو یہ نیت دیانۃً معتبر ہوگی کیونکہ یہ عورت کی اقسام میں سے ایک قسم کی تخصیص ہے ، اور اگر رہائش کے لحاظ سے کسی عربی یا ہندی یا مکی عورت کے بارے میں یہ نیت کرے تو معتبر نہ ہوگی کیونکہ یہ ایک خاص جگہ والی عورت کے متعلق ہے جو اس کی صفت ہے اور کوئی صفت ذکر کئے بغیر معتبر نہیں ہو سکتی ، چونکہ قسم صرف عورت کے ذکر پر مشتمل ہے اس میں

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13.

[Right Column - Urdu Translation and Commentary] Residence (maskanat) is not mentioned, therefore without this mention, this oath also applies generally to the woman of the tent. It is in *Fath al-Qadir*: someone swore "I will not reside in so-and-so's house," and said "My intention was that I would not stay in so-and-so's house as a tenant," then this intention is not valid, such that even if he resides in that house without rent, the oath would be broken. On the contrary, if he swears "I will not reside in so-and-so's house which he bought for himself," then this intention will be accepted because this is a type of purchase. There are two types of purchasing: one which he bought for himself and one which he bought for someone else. So, in an oath, intending one of these two types is correct. Unlike residence (sukna), which does not have types, because sukna (residence) means to be in a house for settlement, whereas the qualities of this residence can be different and specifying qualities is not correct because they are not mentioned here, unlike residence which has types under it (in short, specification of types can be without mention, but specification of qualities cannot be without mention). Therefore, if someone swore "I will not marry any woman" meaning I will not make her a wife, and in this oath, he intends a woman from Kufa or Basra, it will not be correct because this is a specification of quality. But if in this oath by woman he means an Abyssinian or Arabian woman, it is correct, and even with Allah, this intention will be correct because this is a specification of types within a genus. This is because intending based on the difference of ancestors is a difference of genus, and intending the difference of cities is a difference of qualities. End of summarized excerpt. (T) Ninth doubt that leaving (chorna), sometimes comes in the meaning of keeping/ maintaining. Allah Almighty said: "And We left for him among later generations: Peace be upon Noah."

[Left Column - Arabic Text] ...the two types, unlike residence (sukna), because it does not vary. It is nothing but being in the house for the purpose of settling. It only varies in quality, and it is not valid to specify a quality because it was not mentioned, unlike genus (jins). Similarly, if someone swears not to marry a woman and intends a Kufic or Basran woman, it is not valid because it is a specification of quality. However, if he intends an Abyssinian or Arabian woman, it is valid between him and Allah Almighty, because it is a specification within the genus. It is as if the difference with respect to fathers is a difference in genus, while with respect to cities, it is a difference in quality. End of summarized excerpt. Ninth Doubt: Leaving (tark) sometimes comes

with the meaning of 'staying/leaving behind'. Allah Almighty says: "And We left for him among later generations: Peace be upon Noah."

[Footnote] 1 *Fath al-Qadir*, Chapter of Oaths regarding Eating and Drinking, Maktaba Nooriya Razviya, Sukkur, 4/409. Page 566 of 688

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद और टिप्पणी] निवास (मस्कनत) का उल्लेख नहीं है, इसलिए इस उल्लेख के बिना यह शपथ तम्बू वाली महिला पर भी सामान्य रूप से लागू होती है। फ़तह अल-क़दीर में है: किसी ने शपथ ली कि "मैं अमुक के घर में निवास नहीं करूँगा," और कहा कि "मेरा इरादा था कि मैं अमुक के घर में किराएदार के रूप में नहीं रहूँगा," तो यह इरादा सही नहीं है, यहाँ तक कि यदि वह उस घर में बिना किराए के भी रहता है, तो शपथ टूट जाएगी। इसके विपरीत, यदि वह इस तरह शपथ ले कि "मैं अमुक के उस घर में निवास नहीं करूँगा जो उसने अपने लिए खरीदा है," तो इस इरादे को स्वीकार कर लिया जाएगा क्योंकि यह खरीदने का एक प्रकार है। खरीदने के दो प्रकार हैं: एक वह जो उसने अपने लिए खरीदा और दूसरा वह जो उसने किसी और के लिए खरीदा। तो, शपथ में इन दो प्रकारों में से किसी एक का इरादा करना सही है। निवास (सुकना) के विपरीत, जिसके प्रकार नहीं होते, क्योंकि सुकना (निवास) का अर्थ घर में स्थिरता के रूप में होना है, जबकि इस निवास की विशेषताएं अलग-अलग हो सकती हैं और विशेषताओं का विनिर्देश सही नहीं है क्योंकि यहाँ उनका उल्लेख नहीं है, निवास के विपरीत जिसके अंतर्गत प्रकार होते हैं (संक्षेप में, प्रकारों का विनिर्देश उल्लेख के बिना हो सकता है, लेकिन विशेषताओं का विनिर्देश उल्लेख के बिना नहीं हो सकता)। इसीलिए यदि किसी ने शपथ ली कि "मैं किसी महिला से निकाह नहीं करूँगा" यानी पत्नी नहीं बनाऊँगा, तो इस शपथ में कूफ़ा या बसरा वाली महिला का इरादा करना सही नहीं होगा क्योंकि यह विशेषता का विनिर्देश है। लेकिन यदि इस शपथ में महिला से उसका तात्पर्य हबशी या अरबी महिला है, तो यह सही है, और अल्लाह के निकट भी यह इरादा सही होगा क्योंकि यह वंश (जिन्स) के भीतर प्रकारों का विनिर्देश है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पूर्वजों के अंतर के आधार पर इरादा करना वंश का अंतर है, और शहरों के अंतर का इरादा करना विशेषताओं का अंतर है। संक्षिप्तीकरण समाप्त। (त) नौवां संदेह कि छोड़ना (छोड़ना), कभी-कभी रखने/बनाए रखने के अर्थ में आता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और हमने उसके लिए बाद की पीढ़ियों में (यह बात) छोड़ दी: नूह पर सलाम हो।"

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...दो प्रकारों के विपरीत निवास (सुकना), क्योंकि इसमें विविधता नहीं होती। यह घर में ठहरने के उद्देश्य से होने के अलावा कुछ नहीं है। यह केवल विशेषता (सिफ़त) में भिन्न होता है, और विशेषता को निर्दिष्ट करना मान्य नहीं है क्योंकि इसका उल्लेख नहीं किया गया है, वंश (जिन्स) के विपरीत। इसी तरह, यदि कोई शपथ लेता है कि वह किसी महिला से विवाह नहीं

करेगा और उसका इरादा कूफ़ा या बसरा की महिला से है, तो यह मान्य नहीं है क्योंकि यह विशेषता का विनिर्देश है। हालाँकि, यदि वह हबशी या अरबी महिला का इरादा रखता है, तो यह उसके और अल्लाह तआला के बीच मान्य है, क्योंकि यह वंश के भीतर एक विनिर्देश है। ऐसा इसलिए है जैसे पिताओं के संबंध में अंतर वंश का अंतर है, जबकि शहरों के संबंध में यह विशेषता का अंतर है। संक्षिप्तीकरण समाप्त। नौवां संदेह: छोड़ना (तर्क) कभी-कभी 'रहने देने / पीछे छोड़ देने' के अर्थ में आता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और हमने उसके लिए बाद की पीढ़ियों में (यह बात) छोड़ दी: नूह पर सलाम हो।"

[पाद-टिप्पणी] 1 फ़तह अल-क़दीर, खाने-पीने से संबंधित शपथ का अध्याय, मकतबा नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 4/409। पेज 566 of 688

[دایاں کالم] مسکنت (رہائش) کا ذکر نہیں ہے لہذا اس ذکر کے بغیر یہ قسم خیمہ والی عورت کو بھی عام ہے۔ فتح القدیر میں ہے ، قسم کھائی کہ فلاں کے گھر سکونت نہ کروں گا ، اور کہا کہ میری مراد فلاں کے گھر کرایہ پر نہ رہوں گا، تو یہ نیت صحیح نہیں ہے حتی کہ اگر اس کے گھر میں کرایہ کے بغیر بھی رہائش پذیر ہوا تو قسم ٹوٹ جائے گی ، اس کے بر خلاف اگر یوں قسم کھائے کہ "میں فلاں کے اس گھر میں سکونت نہ کروں گا جو اس نے اپنی ذات کے لئے خریدا ہو، تو اس نیت کو مان لیا جائیگا کیونکہ خریدنے کی یہ ایک قسم ہے خریدنے کی دو قسمیں ہیں ، ایک وہ جو اپنے لئے خریدا اور ایک وہ جو اس نے کسی دوسرے کے لئے خریدا ہو، تو قسم میں ان دو قسموں میں سے ایک قسم کی نیت درست ہے اس کے برخلاف رہائش (سکنیٰ) کے اقسام نہیں ہیں، کیونکہ سکنیٰ (رہائش) کا معنی یہ ہے کہ گھر میں بطور استقرار ہونا جبکہ اس رہائش کی صفات مختلف ہو سکتی ہیں اور صفات کی تخصیص صحیح نہیں ہے کیونکہ یہاں مذکور نہیں ہیں ، بخلاف رہائش کے کہ اس کے تحت اقسام ہوتے ہیں (غرضیکہ اقسام کی تخصیص بغیر ذکر ہو سکتی ہے لیکن صفات کی تخصیص ذکر کے بغیر نہیں ہو سکتی) اسی لئے اگر کسی نے قسم کھائی کہ کسی عورت سے نکاح نہ کروں گا یعنی بیوی نہ بناؤں گا، تو اس قسم میں عورت کوفی یا بصرہ والی مراد لے تو صحیح نہ ہو گی کیونکہ یہ صفت کی تخصیص ہے اور اگر اس قسم میں عورت سے مراد حبشی یا عربی عورت مراد لے تو صحیح ہے اور عند اللہ بھی یہ نیت صحیح ہو گی کیونکہ یہ جنس میں اقسام کی تخصیص ہے یہ اس لئے کہ جد اعلیٰ کے اختلاف کے لحاظ سے نیت کرنا جنس کا اختلاف ہے اور شہروں کے اختلاف کی نیت یہ صفات کا اختلاف ہے اھ مختصرا (ت) نواں شبہ

کہ چھوڑنا، کبھی باقی رکھنے کے معنی میں آتا ہے ، اللہ تعالیٰ نے فرمایا: وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ہ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ ہ

[بایاں کالم] النوعين بخلاف السكنى لانها لاتتنوع لانها ليست الا الكينونة فى الدار على وجه القرار وانما تختلف بالصفة ولايصح تخصيص الصفة لانها لم تذكر بخلاف الجنس، وكذا لو حلف لايتزوج امرأة ونوى كوفية او بصرية لايصح لانه تخصيص الصفة ولو نوى حبشية او عربية صحت فيما بينه وبين الله تعالى لانه تخصيص فى الجنس كأن الاختلاف بالنسبة الى الاباء اختلاف بالجنس وبالنسبة الى البلاد اختلاف بالصفة اهـ مختصراً ۔ شبہ تاسعہ : ترک گاہے بمعنی ابقاء آید قال اللہ تعالی وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ہ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ ہ

[فٹ نوٹ] ۱ فتح القدير باب اليمين فى الاكل والشرب مكتبہ نوريہ رضويہ سكھر ۴۰۹/۴ Page of 688 566

'In the worlds'. i.e., We have left for him a beautiful praise among the later generations, as mentioned in Majma' al-Bihar etc. Keeping something in existence is an existential matter because permanence is existential. (T) I say: According to the researchers, 'Abqa' (keeping in existence), which is an act of the Ever-Living, the All-Sustaining (Al-Hayy, Al-Qayyum, Glorious is His Majesty), is an existential reality. This is because, according to the school of thought of the Imam of the Sunnis, Qadi Abu Bakr al-Baqillani, and the two Imams, Imam al-Haramayn and Imam al-Razi, permanence (Baqa) is the same as existence (Wujud) itself and not an additional attribute. Therefore, keeping someone in existence is 'bringing into existence' (Ijad), which is an existential act. However, based on the school of the Imams of Unveiling and Witnessing regarding the 'renewal of likes' (tajaddud al-amthal) in everything, even substances (jawahir), 'keeping' (Abqa) would be the continuous creation of likes at every moment. Therefore, just as the titles 'Bari' (The Originator) and 'Khaliq' (The Creator) cannot be applied to anyone other than Him, Glorified be He, similarly, 'Qayyum' cannot be applied to others. Rather, scholars have even declared it as disbelief (kufr). In Majma' al-Anhur, it is stated: 'If one describes Allah with what is not befitting Him, or attributes ignorance, incapacity, or deficiency to Him, or applies names exclusive to the Creator—such as Al-Quddus, Al-Qayyum, Al-Rahman, etc.—to any creature, then this is disbelief.' (Summarized)

Footnotes: 1. Al-Qur'an al-Karim 37/108 & 129 2. Majma' al-Bihar, under the word 'Tark', Naval Kishore Lucknow, 1/140 3. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Chapter of the Apostate, then these words of disbelief, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/290

'संसार में'। यानी, हमने बाद में आने वालों में उनके लिए एक अच्छी प्रशंसा छोड़ दी, जैसा कि मजमा-अल-बिहार आदि में वर्णित है। अस्तित्व में बनाए रखना एक अस्तित्वगत मामला है क्योंकि स्थायित्व (बका) अस्तित्वगत है। (त) मैं कहता हूँ: शोधकर्ताओं के अनुसार, 'अब्का' (अस्तित्व में बनाए रखना), जो जीवित, सर्व-पोषक (अल-हय्य, अल-क़य्यूम, उनकी महिमा महान है) का एक कार्य है, एक अस्तित्वगत वास्तविकता है। इसका कारण यह है कि सुन्नियों के इमाम क़ाज़ी अबू बक्र अल-बाक़िल्लानी, इमाम अल-हरमईन और इमाम अल-राज़ी के पंथ के अनुसार, स्थायित्व (बक़ा) अस्तित्व (वजूद) का ही नाम है और कोई अतिरिक्त गुण नहीं है। इसलिए, अस्तित्व में बनाए रखना 'सृजन' (ईजाद) ही होगा जो कि अस्तित्वगत है। लेकिन, अनावरण और साक्ष्य के इमामों के पंथ के अनुसार, हर चीज़ में 'समानता के नवीनीकरण' की अवधारणा के आधार पर, यहाँ तक कि प्राथमिक पदार्थों (जवाहर) में भी, 'अब्का' का अर्थ हर पल समान चीज़ों का निर्माण करना है। इसलिए, जिस प्रकार 'बारी' (उत्पत्तिदाता) और 'खालिक' (सृष्टिकर्ता) के नाम उनके(अल्लाह) अलावा किसी और पर लागू नहीं किए जा सकते, उसी प्रकार 'क़य्यूम' का नाम भी दूसरों पर लागू नहीं किया जा सकता। विद्वानों ने इस कृत्य को कुफ़्र (धर्मद्रोह) तक घोषित किया है। मजमा-अल-अन्हुर में कहा गया है: 'यदि कोई अल्लाह का वर्णन उन गुणों से करता है जो उनके योग्य नहीं हैं, या अज्ञानता, अक्षमता, या कमी का आरोप उन पर लगाता है, या सृष्टिकर्ता के लिए विशिष्ट नाम—जैसे अल-कुद्दूस, अल-क़य्यूम, अल-रहमान आदि—किसी सृष्टि पर लागू करता है, तो यह कुफ़्र है।' (संक्षेपित)

पादलेख: 1. अल-कुरान अल-करीम 37/108 और 129 2. मजमा-अल-बिहार, शब्द 'तर्क के अंतर्गत, नवल किशोर लखनऊ, 1/140 3. मजमा-अल-अन्हुर शरह मुल्ताक़ा अल-अबहुर, मुर्तद का अध्याय, फिर कुफ़्र के ये शब्द, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 1/290

فِي الْعَلَمِيْنَ ط اَی ابقینا لَه ثناء جمیلاً کما في مجمع البحار وغیره و ابقاء وجودی ست که بقاء وجودی ست۔ فِي الْعَلَمِيْنَ ط۔ بعد والوں میں ہم نے ان کی اچھی ثناء باقی رکھی، جیسا کہ مجمع البحار وغیرہ میں ہے، چھوڑنا، باقی رکھنے کے معنی میں وجودی چیز ہے کیونکہ بقاء وجودی ہے۔ (ت) اقول: ابقا که حي قیوم عزجلاله میکند عند المحققین وجودی باشد اما بناء علی مذهب امام اهل سنت القاضی ابی بکر الباقلانی والامامین امام الحرمین والرازی ان البقاء عین الوجود لا امر زائد علیه فالا بقاء هو الایجاد و اما بناء علی مذهب ائمة الکشف والشهود من تجدد الامثال في کل شئ حتی الجواهر فیکون الابقاء ایجاد الامثال کل حین ولهذا چنانکه اطلاق باری وخالق برغیر او سبحانه نیست اطلاق قیوم نیز نتواں شد بلکه علماء برو تکفیر کرده اند در مجمع الانهر فرمود اذا وصف الله بما لا یلیق به او نسبه الی الجهل او العجز او النقص او اطلق علی المخلوق من الاسماء المختصة بالخالق نحو القدوس والقیوم والرحمن وغیرہا یکفر (ملخصاً)۔ اقول: (میں جواب میں کہتا ہوں) ابقا (باقی رکھنا) حیّ و قیوم (جل جلالہ) کا فعل ہو تو محققین کے نزدیک وجودی ہے، اس لئے کہ امام اہلسنت قاضی ابوبکر باقلانی اور امام الحرمین اور امام رازی کے مذہب پر بقاء عینِ وجود کا نام ہے اور وجود سے زائد کسی صفت کا نام نہیں ہے، لہٰذا باقی رکھنا، یہ ایجاد ہوگا جو کہ وجودی ہے، لیکن ائمہ کشف و شہود کے مذہب پر، بقاء، ہر چیز کی امثال کے تجدد کا نام ہے، لہٰذا ابقا، اس معنی میں ہر چیز حتیٰ کہ جواہر کی امثال کو ہر لمحہ، ایجاد، کرنے کا نام ہے، اس لئے جس طرح باری اور خالق جیسی صفات کا اللہ تعالیٰ کے بغیر کسی اور کے لئے اطلاق جائز نہیں اسی طرح قیوم کا اطلاق بھی غیر کے لیے جائز نہیں، بلکہ اس کا غیر اللہ پر اطلاق علمائے کرام کے ہاں کفر ہے، مجمع الانہر میں فرمایا کہ جو چیز اللہ تعالیٰ کی شایانِ شان نہ ہو یا جہالت، عجز اور نقص کی نسبت اس کی طرف

کرنا، یا وہ صفات جو اللہ تعالیٰ کے لئے خاص ہیں ان کا مخلوق پر اطلاق کرنا جیسے قدوس، قیوم، رحمن وغیرہا صفات ہیں، تو یہ کفر ہے، لہٰذا یہاں بڑی

حواشی: 1 القرآن الکریم ۳۷ / ۱۰۸ و ۱۲۹ 2 مجمع البحار تحت لفظ ترك نولکشور لکھنؤ ۱/ ۱۴۰ 3 مجمع الانھر شرح ملتقی الابحر باب المرتد ثم ان الفاظ الکفر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۹۰/۱

Fatawa Razawiya Volume 13 13

[Left Column - Persian] Great caution is required here, as some people are entangled in this lack of caution, God forbid. In short, the persistence/subsistence belongs to Allah Almighty, for what pertains to humans is nothing but the abandonment of 'Izala' (removal/undoing). Therefore, if someone puts gold in a pouch and says to his wife: "If any of it remains with you until morning, you are divorced," and the wife spent nothing, or spent some and kept some, divorce would occur. This is only because 'keeping' (Ibqa) on the part of the wife is nothing but the absence of spending (Infaq). Thus, 'keeping' was nothing but this 'absence'. If it were an action, and the wife herself had done nothing with that gold, until even putting it in the pouch was done by the husband, then the oath would not have been broken. Similarly, if Zaid sold something to Amr through an invalid sale, and the judge, upon becoming aware, turned to the sale and said: "If I keep this sale of yours today, then such and such [will be the consequence]," then the sun set and the judge did not annul the sale, he becomes 'Hanith' (oath-breaker). Thus, 'keeping' was nothing but the absence of annulment. If it were an action, the judge himself did nothing regarding that sale, so he would not have been 'Hanith'. Thus it became clear that human 'Ibqa' (keeping) is nothing but the abandonment of 'Izala' (removal). If you say that 'Ibqa' can also be achieved through an action, for example, bringing Zaid into a house and binding him with a chain, this binding, which is an action, became 'keeping' him. I say: This action itself is not 'Ibqa', but rather...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] Caution is necessary; some people are involved in this lack of caution, God forbid. In short, this is God Almighty's command regarding 'keeping' (subsistence), but for a human, keeping and leaving something is the name for abandoning its 'Izala' (removal/undoing). There is nothing besides this. Therefore, if a husband puts money in a pocket or pouch and says to his wife, "If you keep any of this until morning, you are divorced," now if she hasn't spent anything, or spent some and kept some, then by this 'keeping', divorce will occur. The reason for this is simply that the wife's keeping of the money is nothing other than her not spending it. Thus, it is known that 'keeping' (not spending) is a non-action (omission). If 'Ibqa' (keeping) were an action, and the wife had not handled the money at all, but only the husband had put it in the pouch, then the oath would not be broken in this case. Similarly, if Zaid sold something to Amr through an invalid sale, and the judge, upon finding out, became angry and issued a decree: "If I keep this invalid sale of yours today, then such and such [will happen]," now until sunset the judge did not

annul the sale, he will be considered to have broken his oath. Here too, 'keeping' is just the name for not annulling. If 'Ibqa' (keeping) were an action, he would not have broken his oath because the judge did not perform any act or work regarding this sale. Thus, it is known that human 'keeping' is merely the name for abandoning any removal. If your objection is that sometimes 'Ibqa' (keeping) is achieved through an action, for example, bringing Zaid into a house and binding him with a chain—then this binding is keeping Zaid in the house, while binding is an action. (T) I say: (I say in response) the act of binding...

फतावा रज़विया खंड १३ १३

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी] यहाँ बहुत सावधानी की आवश्यकता है, क्योंकि कुछ लोग इस असावधानी में फँसे हुए हैं, ईश्वर बचाए। संक्षेप में, 'बका' (अस्तित्व) अल्लाह सर्वशक्तिमान का गुण है, क्योंकि मनुष्य के मामले में किसी चीज़ को बाकी रखना 'इज़ाला' (हटाने) को त्यागने के अलावा और कुछ नहीं है। इसलिए, यदि कोई थैली में सोना रखे और अपनी पत्नी से कहे: "यदि इसमें से कुछ भी सुबह तक तुम्हारे पास बाकी रहे, तो तुम्हें तलाक है," और पत्नी ने कुछ भी खर्च नहीं किया, या कुछ खर्च किया और कुछ बाकी रखा, तो तलाक हो जाएगा। यह केवल इसलिए है क्योंकि पत्नी की ओर से 'इबका' (बाकी रखना) केवल खर्च न करने (इनफ़ाक़ न करने) का नाम है। इस प्रकार, 'इबका' इस 'अभाव' के अलावा कुछ नहीं था। यदि यह एक कार्य होता, और पत्नी ने स्वयं उस सोने के साथ कुछ नहीं किया होता, यहाँ तक कि थैली में डालना भी पति द्वारा किया गया होता, तो शपथ नहीं टूटती। इसी प्रकार, यदि ज़ैद ने अम्र को अवैध बिक्री (बै-ए-फ़ासिद) के माध्यम से कुछ बेचा, और जज को पता चलने पर उसने उस बिक्री के बारे में कहा: "यदि मैं आज तुम्हारी इस बिक्री को बाकी रखूँ, तो ऐसा-वैसा [परिणाम होगा]," फिर सूरज डूब गया और जज ने बिक्री को रद्द नहीं किया, तो वह 'हानिस' (शपथ तोड़ने वाला) हो जाता है। इस प्रकार, 'बाकी रखना' रद्द न करने के अलावा कुछ नहीं था। यदि यह एक कार्य होता, तो जज ने स्वयं उस बिक्री के संबंध में कुछ नहीं किया था, इसलिए वह 'हानिस' नहीं होता। अतः यह स्पष्ट हो गया कि मानवीय 'इबका' (बाकी रखना) केवल 'इज़ाला' को त्यागने का नाम है। यदि आप कहें कि 'इबका' किसी कार्य के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, ज़ैद को घर में लाना और उसे ज़ंजीर से बाँधना, तो यह बाँधना, जो एक कार्य है, उसे 'बाकी रखना' बन गया। मैं कहता हूँ: यह कार्य स्वयं 'इबका' नहीं है, बल्कि...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] सावधानी की आवश्यकता है; कुछ लोग इस असावधानी में ग्रस्त हैं, ईश्वर बचाए। संक्षेप में, यह अल्लाह तआला का आदेश है 'बाकी रखने' (कायम रखने) के बारे में, लेकिन मनुष्य के लिए किसी चीज़ को बाकी रखना और छोड़ना, 'इज़ाला' (हटाने) को त्यागने का नाम है। इसके अलावा कुछ नहीं है। इसलिए यदि पति ने जेब या थैली में पैसे रखे और पत्नी से कहा, "यदि तुमने सुबह तक इसमें से कुछ बाकी रखा, तो तुम्हें तलाक होगा", अब यदि उसने उसमें से कुछ खर्च नहीं किया, या कुछ खर्च किया और कुछ बाकी रखा, तो इस बाकी रखने पर तलाक हो जाएगा। इसका कारण केवल यह है कि पत्नी द्वारा पैसे का बाकी रखना केवल और केवल यह है कि उसने पैसे खर्च नहीं किए। अतः यह ज्ञात हुआ कि बाकी रखना (खर्च न करना) एक अभाव (अकर्म)

है। यदि 'इबका' (बाकी रखना) कोई कार्य होता, और पत्नी ने उस पैसे में कोई हस्तक्षेप नहीं किया होता, बल्कि केवल पति ने वह पैसा थैली में रखा होता, तो फिर इस स्थिति में कसम नहीं टूटती। इसी प्रकार ज़ैद ने अम्र के हाथ कोई चीज़ अवैध बिक्री के तौर पर बेची, तो यह पता चलने पर जज को गुस्सा आया और उसने आदेश जारी किया कि "यदि आज मैं तुम्हारी इस अवैध बिक्री को बाकी रखूँ तो ऐसा-वैसा होगा", अब सूर्यास्त तक जज ने उस बिक्री को रद्द नहीं किया तो वह शपथ भंग करने वाला माना जाएगा। तो यहाँ भी बाकी रखना केवल रद्द न करने का नाम है। यदि 'इबका' (बाकी रखना) कोई कार्य होता, तो शपथ भंग नहीं होती क्योंकि जज ने इस बिक्री के संबंध में कोई कार्य या अमल नहीं किया। अतः ज्ञात हुआ कि मनुष्य का बाकी रखना केवल किसी 'इज़ाला' को त्यागने का नाम है। यदि आपकी यह आपत्ति हो कि कभी-कभी 'इबका' कार्य से भी प्राप्त होता है, जैसे ज़ैद को घर में लाकर ज़ंजीर से बाँध दिया, तो यह बाँधना ज़ैद को घर में बाकी रखना है, जबकि बाँधना एक कार्य है। (त) मैं कहता हूँ: (मैं जवाब में कहता हूँ कि) बाँधने का कार्य...

पृष्ठ ५६८/६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[بایاں کالم - فارسی] اینجا احتیاط عظیم باید کہ بعض مردم بایں مبتلا شدہ اند والعیاذ باللہ تعالیٰ بالجملہ اینست بقائے الٰہی عزوجلالہ فانا انچہ از بشر ست جز ترک ازالہ نیست ولہذا اگر زرے در کیسہ نہاد وزن را گفت اگر چیزے از وتا صبح باقی مانی طلاق باشی، زن پیچ خرچ نکردیا برخی بصرف آورد و برخی باقی داشت طلاقہ شود و آن نیست مگر بہ ابقاؤ از زن نیاید مگر عدم انفاق پس ابقاء نبود مگر ہمیں عدم و اگر فعلے بودے وزن خود دراں زر کارے نکردہ است تا آنکہ در کیس نہادن ہم بدست شوہر بود حنث نشدے، ہمچناں اگر زید بدست عمرو چیزے ببیع فاسد فروخت قاضی مطلع شدہ برفروخت و گفت اگر امروز ایں بیع شما را باقی مانم فکذا آفتاب فرورفت و قاضی فسخ نہ کرد حانث شود پس ابقاء نبود مگر عدم فسخ واگر فعلی بودے قاضی خود متعلق آں بیع کارے نکردہ است حانث نبودے، پس ظاہر شد کہ ابقائے بشری جز ترک ازالہ نیست اگر گوئی ابقاء بفعل بھی تواں شد مثلاً زید را بخانہ آورد و بزنجیر بست این بستن کہ فعل ست ابقاء شد۔ اقول: این فعل خود ابقاء نیست بلکہ

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] احتیاط کی ضرورت ہے، بعض لوگ اس بے احتیاطی میں مبتلا ہیں والعیاذ باللہ تعالیٰ، خلاصہ یہ کہ، اللہ تعالیٰ کے باقی کرنے کا یہ حکم ہے، لیکن کسی انسان کا باقی رکھنا اور چھوڑنا، ازالہ کے ترک کا نام ہے، اس کے بغیر کچھ نہیں، اسی لئے اگر خاوند نے جیب یا تھیلی میں رقم رکھی ہو اور بیوی کو کہا "اگر تو نے صبح تک اس میں سے کچھ باقی رکھا تو تجھے طلاق ہوگی" اب اگر اس نے اس میں سے کچھ خرچ نہ کیا یا کچھ کیا اور کچھ نہ کیا تو اس باقی رکھنے پر طلاق ہوجائے گی، تو اس کی وجہ صرف یہی ہے کہ بیوی کا رقم کو باقی رکھنا صرف اور صرف یہ ہے کہ اس نے رقم کو خرچ نہ کیا، تو معلوم ہوا کہ باقی رکھنا (خرچ نہ

کرنا) عدم ہے، اگر ابقاء کوئی فعل ہوتا، اور بیوی نے اس رقم میں تصرف نہ کیا بلکہ صرف خاوند نے وہ رقم تھیلی میں رکھی ہو، تو پھر اس صورت میں قسم نہ ٹوٹتی۔ یوں ہی زید نے عمرو کے ہاتھ کوئی چیز فاسد بیع کے طور فروخت کی تو یہ معلوم ہونے پر قاضی کے غصہ آیا حکم جاری فرمایا کہ اگر آج تمہاری اس فاسد بیع کو باقی رکھوں تو یہ ہوگا، اب سورج غروب ہونے تک قاضی نے اس بیع کو فسخ نہ کیا تو حانث ہو جائے گا، تو یہاں بھی باقی رکھنا، صرف فسخ نہ کرنے کا نام ہے، اگر ابقاء (باقی رکھنا) کوئی فعل ہوتا تو حانث نہ ہوتا کیونکہ قاضی نے اس بیع کے متعلق کوئی فعل اور عمل تو نہیں کیا، تو معلوم ہوا انسان کا باقی رکھنا صرف کسی ازالہ کو ترک کرنے کا نام ہے۔ اگر تیرا یہ اعتراض ہو کہ کبھی ابقاء (باقی رکھنا) فعل سے بھی حاصل ہوتا ہے، مثلاً زید کو گھر میں لاکر زنجیر سے باندھ دیا، تو یہ باندھنا، زید کو گھر میں باقی رکھنا ہے، جبکہ باندھنا فعل ہے۔ (ت) اقول: (میں جواب میں کہتا ہوں کہ) باندھنے کا فعل

Fatawa Rizvia Volume 13, Page 13

...It necessitates that the prevention of cessation is the abandonment of removal (Tark-e-Izala) along with an additional element. If it is said that in the ultimate abandonment, they relied on verbal prevention as previously mentioned, then if Zaid is bound and it is verbally said to him 'get out', the abandonment (Tark) should not be realized because its opposite is present and retention (Abqa) is certainly achieved, hence it would be something other than abandonment.

I say: You previously knew that original prevention is according to capability, and in times of difficulty, they suffice with mere prohibition. Thus, your removal is that, and if you suffice with 'get out', one would be an abandoner (Tark). What to say of when one actually performs the act of abandoning exit and merely getting out becomes clearly a joke and mockery; rather it is as if the word is meaningless, what use is it? Therefore, retention (Abqa) is achieved by the attainment of abandonment (Tark), and binding is an additional matter.

(Urdu Translation of the side column): Retention (Abqa) does not happen on its own, but rather necessitates retention because this act negates the abandonment of removal (Tark-e-Izala). Thus, in binding, along with abandonment of removal, an additional thing i.e., an obstacle was found, in which abandonment of removal is present. If the objection is that the end of abandonment of removal can be sufficient through strong prevention, as mentioned before, then if Zaid is bound in the house and then told to go out of the house, it should be that in this case abandonment of removal is not realized, because despite verbal abandonment, binding is the negation of that abandonment. So certainly retention (Abqa) i.e., remaining in the house, was achieved. Thus, this abandonment (Tark) was achieved through the existence of an act instead of non-existence, therefore human retention (Abqa) became existential (Wujudi). (T)

I say: (I say in response) It has been mentioned above that prevention is intended according to power/capability. Only verbal prevention is intended there where practical prevention is not possible, but when it can be practically prevented, then merely verbal prevention and saying 'get out' is the abandonment of prevention. Furthermore, preventing him from leaving by the act of binding and then saying 'go out' is clearly a mockery; rather, saying this at this time is meaningless and useless. Therefore, in this case, retention (Abqa) was achieved through abandonment (Tark) and the act of binding is something additional to it (so it is proven that human

retention is merely the name of abandonment, not the name of any existential thing). (T)

Tenth Doubt: This is that we concede that for abandonment (Tark) i.e., for leaving, not giving the order to exit is sufficient, but abandonment is also found by the order not to exit. Thus, there are two types of abandonment: one is not giving the order to exit, and the second type is giving the order not to exit, and one...

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ 13

...यह आवश्यक बनाता है कि समाप्ति की रोकथाम एक अतिरिक्त चीज़ के साथ विलोपन का परित्याग (तर्कए-इज़ाला) है। यदि यह कहा जाए कि परित्याग के अंत में, उन्होंने मौखिक रोकथाम पर भरोसा किया जैसा कि पहले बताया गया है, तो यदि ज़ैद को बांध दिया जाए और मौखिक रूप से उससे कहा जाए कि 'बाहर निकलो', तो परित्याग (तर्क) महसूस नहीं होना चाहिए क्योंकि उसका विपरीत मौजूद है और प्रतिधारण (अबक़ा) निश्चित रूप से प्राप्त होता है, इसलिए यह परित्याग के अलावा कुछ और होगा।

मैं कहता हूँ: आपको पहले ही पता था कि मूल रोकथाम क्षमता के अनुसार होती है, और कठिनाई के समय, वे केवल निषेध से संतुष्ट होते हैं। इस प्रकार, आपका निष्कासन वही है, और यदि आप 'बाहर निकलो' कहने मात्र से संतुष्ट हैं, तो व्यक्ति एक त्यागने वाला (तर्क) होगा। तब क्या कहना जब कोई वास्तव में बाहर निकलने को छोड़ने का कार्य करता है और केवल बाहर निकलना स्पष्ट रूप से एक मज़ाक और उपहास बन जाता है; बल्कि यह ऐसा है मानो शब्द अर्थहीन है, इसका क्या उपयोग है? इसलिए, परित्याग (तर्क) की प्राप्ति से प्रतिधारण (अबक़ा) प्राप्त होता है, और बांधना एक अतिरिक्त मामला है।

(दाएँ कॉलम का अनुवाद): प्रतिधारण (अबक़ा) अपने आप नहीं होता, बल्कि प्रतिधारण को आवश्यक बनाता है क्योंकि यह कार्य विलोपन के परित्याग (तर्कए-इज़ाला) को नकारता है। अतः बांधने में, विलोपन के परित्याग के साथ, एक अतिरिक्त चीज़ यानी एक बाधा पाई गई, जिसमें विलोपन का परित्याग मौजूद है। यदि यह आपत्ति है कि विलोपन के परित्याग का अंत कड़े प्रतिषेध के माध्यम से पर्याप्त हो सकता है, जैसा कि पहले बताया गया है, तो यदि ज़ैद को घर में बांध दिया जाए और फिर घर से बाहर जाने के लिए कहा जाए, तो ऐसा होना चाहिए कि इस मामले में विलोपन का परित्याग महसूस न हो, क्योंकि मौखिक परित्याग के बावजूद, बांधना उस परित्याग का निषेध है। तो निश्चित रूप से प्रतिधारण (अबक़ा) यानी घर में रहना, प्राप्त कर लिया गया। इस प्रकार, यह परित्याग (तर्क) अभाव के बजाय एक क्रिया के अस्तित्व के माध्यम से प्राप्त किया गया था, इसलिए मानवीय प्रतिधारण (अबक़ा) अस्तित्वपरक (वजूदी) हो गया। (त)

मैं कहता हूँ: (मैं जवाब में कहता हूँ) ऊपर बताया जा चुका है कि रोकना शक्ति के अनुसार अभिप्रेत है। केवल मौखिक रोकथाम वहीं अभिप्रेत है जहाँ व्यावहारिक रोकथाम संभव नहीं है, लेकिन जब इसे

व्यावहारिक रूप से रोका जा सकता है, तो केवल मौखिक रोकथाम और 'बाहर निकलो' कहना रोकथाम का परित्याग है। इसके अलावा, उसे बांधने के कार्य द्वारा जाने से रोकना और फिर 'बाहर जाओ' कहना स्पष्ट रूप से एक मज़ाक है; बल्कि, इस समय ऐसा कहना अर्थहीन और बेकार है। इसलिए, इस मामले में, प्रतिधारण (अबक़ा) परित्याग (तर्क) के माध्यम से प्राप्त किया गया था और बांधने का कार्य इसके लिए कुछ अतिरिक्त है (अतः यह सिद्ध होता है कि मानवीय प्रतिधारण केवल परित्याग का नाम है, किसी अस्तित्वपरक चीज़ का नाम नहीं)। (त)

दसवां संदेह: यह कि हम स्वीकार करते हैं कि परित्याग (तर्क) यानी छोड़ने के लिए, बाहर निकलने का आदेश न देना पर्याप्त है, लेकिन बाहर न निकलने के आदेश से भी परित्याग पाया जाता है। इस प्रकार, परित्याग के दो प्रकार हैं: एक बाहर निकलने का आदेश न देना, और दूसरा प्रकार बाहर न निकलने का आदेश देना, और एक...

مستلزم اوست کہ منع زوال ترک ازالہ است مع شئے زائد اگر گوئی در انتہائے ترک بر منع بالقول اکتفاء کردہ اند کما تقدم پس اگر زید را بست و بزبان میگوید بیروں شو باید کہ ترک متحقق نشود کہ نافیش موجود است و ابقا یقیناً حاصل پس غیر ترک باشد۔ اقول: بالادانستی کہ اصل منع بقدر قدرت ست و بمجرد نہی ہنگام تعسرش بسندہ کنند پس آنکہ اخراج تو آنست و بروں شو اکتفا کرد تارک باشد چہ جائے آنکہ ترک خروج بفعل کرداز و مجرد بروں شود کہ صراحۃً ہزل و استہزاء است بلکہ گویا لفظِ بے معنی است چہ کار آید پس ابقاء بحصول ترک حاصل ست و بستن امر زائد۔

خود بخود ابقاء نہیں بنتا بلکہ ابقاء کو مستلزم ہوتا ہے کیونکہ اس فعل سے ازالہ کا ترک منتفی ہوتا ہے تو باندھنے میں ترکِ ازالہ کے ساتھ ایک زائد چیز یعنی رکاوٹ پائی گئی، جس میں ترکِ ازالہ پایا جاتا ہے۔ اگر یہ اعتراض ہو کہ ترکِ ازالہ کا خاتمہ، قویاً منع کرنے سے کافی ہو سکتا ہے، جیسا کہ پہلے گزرا ہے، تو اب زید کو گھر میں باندھ کر پھر اس کو کہا جائے تو گھر سے باہر ہو جا، تو چاہئے کہ اس صورت میں ازالہ کا ترک متحقق نہ ہو، کیونکہ زبانی ترک کے باوجود، باندھنا اس ترک کی نفی ہے تو یقیناً ابقاء یعنی گھر میں باقی رکھنا، حاصل ہو گیا، تو یوں یہ ترک، عدم کی بجائے ایک فعل کے وجود سے حاصل ہوا، لہذا انسانی ابقاء وجودی ہو گیا۔ (ت) اقول: (میں جواب میں کہتا ہوں) اوپر گزر چکا ہے، روکنا حسب قدرت مراد ہے، صرف قولاً اور زبانی روکنا وہاں مراد ہوتا ہے، جہاں عملاً روکنا ممکن نہ ہو، لیکن جب عملاً روکا جا سکتا ہو تو وہاں محض زبانی روکنا اور یہ کہنا کہ باہر ہو جا، یہ روکنے کا ترک ہے اس پر مزید یہ کہ باندھنے کے فعل سے اس کو نکلنے سے روکنا اور پھر کہنا کہ باہر ہو جا، تو یہ صراحۃً مذاق ہے، بلکہ اس موقعہ پر یہ کہنا بے معنی اور بیکار ہے، لہذا اس صورت میں ابقاء (باقی رکھنا) ترک سے

حاصل ہوا اور باندھنے کا فعل اس سے زائد چیز ہے (تو ثابت ہوا کہ بشری ابقاء محض ترک کا نام ہے کسی وجودی چیز کا نام نہیں)۔ (ت) شبہ عاشرہ: سلمنا کہ ترک را عدم امر بخروج بس ست فاتا امر بعدم خروج نیز از وجوہ اوست پس ترک دو نوع شد و زیادت معنی در نوع خود قضیہ نوعیت ست پس حلف اگر بواقع ارادہ نوع اقویٰ کردہ باشد دسواں شبہ: یہ کہ ہمیں تسلیم ہے کہ ترک یعنی چھوڑنے کے لئے نکل جانے کا حکم نہ دینا کافی ہے لیکن نہ نکلنے کے حکم سے بھی ترک پایا جاتا ہے پس ترک کی دو قسمیں ہو گئیں، ایک نکلنے کا حکم نہ دینا، اور دوسری قسم، نہ نکلنے کا حکم دینا، اور ایک

[Right Column - Original Persian Text] It should be religiously valid, even if it is not accepted before the wife and other people.

I say: Not giving the command to exit and giving the command not to exit are not opposites, because the first is present in the second, and one type cannot be separated from another. Yes, absolute silence, speaking to a stranger, and speaking in a contradictory manner—realization occurs in all three cases, but they cannot be considered its types because speech is an existential thing; how can it be a type of non-existence? Thus, its manifestation is nothing but the absence of the command to exit. In pure silence, there is nothing new, and in speech, it is concurrent with the speech, and a thing does not become diverse through its concomitants. The definitive resolution is that in all the issues concerning 'omission' (tark) mentioned above, the scholars have given no indication of the possibility that 'contradictory speech' is intended. Thus, it is clear that there is no scope for it. This is how research should be, and Allah Almighty is the guardian of success. Praise be to Allah, the discourse has reached its end. In this descending issue, the clarification of causes, the blockage of gaps, and the prevention of errors reached their peak. In its context, numerous issues and precious benefits were made clear. Thus, considering the date, naming it 'Al-Jawhar al-Thamin fi Ilal Nazila al-Yamin' (The Precious Jewel regarding the causes of the descending oath) is appropriate. And Allah Almighty knows best.

[Left Column - Urdu Translation/Explanation] An addition of meaning (giving a command) in an oath itself creates the oath, meaning it is not contrary to being an oath. Therefore, if the one taking the oath intends the stronger meaning, i.e., the oath with the addition, so that the abandonment of this meaning results in divorce, then this intention should be religiously accepted, even if it is not accepted by the wife and others. (T)

I say: (I say in response that) not giving the command to exit and giving the command not to exit are not mutually exclusive because the first meaning is present in the second as well (whereas it is necessary for types to be distinct from one another). Thus, these two types are not separate. Yes, in the three cases of absolute silence, foreign conversation, and contradictory conversation, 'omission' (tark) is established, but these are not types of omission because omission is the name of non-existence, while conversation (speech) is an existential thing. How can an

existential thing be a type of a non-existent thing? Therefore, it is known that the manifestation of omission is only not giving the command to leave. That silence, with which there is nothing else and which in the place of speech is considered concurrent with speech, cannot become a type along with its concurrent things. This debate ends in this way: in all the passed issues regarding omission, the noble scholars did not mention the possibility of contradictory speech, nor did they state 'the command not to leave' anywhere. Thus, it is clear that this possibility has no place here. The research is proper as such, and Allah Almighty alone is the owner of success. Praise be to Allah, this discussion has reached its conclusion. In the occurrence of an oath, this is such a discussion where the explanation of causes, prevention of flaws, and removal of errors have been done on a high level, and many issues and rare benefits have been found in this discussion. Therefore, historically, its name is 'Al-Jawhar al-Thamin fi Ilal Nazila al-Yamin'.

पेज 570 का 688

फतवा रज़विया खंड 13

[दायां कॉलम - मूल फारसी पाठ] इसे धार्मिक रूप से मान्य होना चाहिए, भले ही यह पत्नी और अन्य लोगों के सामने स्वीकार्य न हो।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): बाहर निकलने का आदेश न देना और बाहर न निकलने का आदेश देना विरोधाभासी नहीं हैं, क्योंकि पहला दूसरे में मौजूद है, और एक प्रकार दूसरे से अलग नहीं हो सकता। हाँ, पूर्ण मौन, अजनबी से बात करना और विरोधाभासी बात करना—इन तीनों स्थितियों में इसका सिद्ध होना पाया जाता है, लेकिन इन्हें इसके प्रकार नहीं माना जा सकता क्योंकि बोलना एक अस्तित्वगत वस्तु है; वह अभाव का प्रकार कैसे हो सकता है? अतः, इसकी अभिव्यक्ति बाहर निकलने के आदेश के अभाव के अलावा और कुछ नहीं है। शुद्ध मौन में कुछ नया नहीं है, और भाषणों में यह भाषण के साथ जुड़ा हुआ है, और कोई वस्तु अपने साथ जुड़ी चीज़ों के माध्यम से विविध नहीं होती है। निर्णायक समाधान यह है कि ऊपर बताए गए 'त्याग' (तर्क) से संबंधित सभी मुद्दों में, विद्वानों ने इस संभावना का कोई संकेत नहीं दिया है कि 'विरोधाभासी भाषण' अभिप्रेत है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि इसके लिए कोई गुंजाइश नहीं है। शोध इसी प्रकार होना चाहिए, और अल्लाह तआला ही सफलता का संरक्षक है। अल्लाह का शुक्र है, प्रवचन अपने अंत तक पहुँच गया है। इस उतरते हुए मसले में, कारणों का स्पष्टीकरण, कमियों को रोकना और त्रुटियों का निवारण अपने चरम पर पहुँच गया। इसके संदर्भ में, कई मुद्दे और बहुमूल्य लाभ स्पष्ट किए गए। इस प्रकार, तिथि को देखते हुए, इसका नाम 'अल-जौहर अल-थमीन फी इलाल नाज़िला अल-यमीन' (शपथ के कारणों के संबंध में कीमती रत्न) रखना उचित है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[बायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] शपथ में अर्थ की वृद्धि (आदेश देना) स्वयं शपथ उत्पन्न करती है, यानी यह शपथ होने के विपरीत नहीं है। इसलिए, यदि शपथ लेने वाला मजबूत अर्थ की नीयत करता है, यानी वृद्धि के साथ शपथ, ताकि इस अर्थ के त्याग के परिणामस्वरूप तलाक हो जाए, तो इस नीयत को धार्मिक रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए, भले ही पत्नी और अन्य लोगों द्वारा इसे स्वीकार न किया जाए। (त)

अक़ूल: (मैं जवाब में कहता हूँ कि) बाहर निकलने का आदेश न देना और बाहर न निकलने का आदेश देना परस्पर अनन्य नहीं हैं क्योंकि पहला अर्थ दूसरे में भी मौजूद है (जबकि प्रकारों का एक

दूसरे से अलग होना आवश्यक है)। इस प्रकार, ये दो प्रकार अलग नहीं हैं। हाँ, पूर्ण मौन, अजनबी बातचीत और विरोधाभासी बातचीत के तीन मामलों में, 'चूक' (तर्क) स्थापित होती है, लेकिन ये चूक के प्रकार नहीं हैं क्योंकि चूक गैर-अस्तित्व का नाम है, जबकि बातचीत (भाषण) एक अस्तित्वगत वस्तु है। एक अस्तित्वगत वस्तु किसी गैर-अस्तित्वगत वस्तु का प्रकार कैसे हो सकती है? इसलिए, यह ज्ञात है कि चूक की अभिव्यक्ति केवल बाहर निकलने का आदेश न देना है। वह मौन, जिसके साथ कुछ और नहीं है और जिसे भाषण के स्थान पर भाषण के साथ समवर्ती माना जाता है, अपनी समवर्ती चीज़ों के साथ एक प्रकार नहीं बन सकता। यह बहस इस प्रकार समाप्त होती है: चूक के संबंध में सभी बीते हुए मुद्दों में, विद्वान विद्वानों ने विरोधाभासी भाषण की संभावना का उल्लेख नहीं किया, और न ही उन्होंने कहीं भी 'बाहर न निकलने का आदेश' कहा। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि इस संभावना का यहाँ कोई स्थान नहीं है। शोध ऐसा ही उचित है, और अल्लाह तआला ही सफलता का मालिक है। अल्हम्दुलिल्लाह, यह चर्चा अपने निष्कर्ष पर पहुँच गई है। शपथ की स्थिति में, यह एक ऐसी चर्चा है जहाँ कारणों की व्याख्या, खामियों की रोकथाम और त्रुटियों को दूर करने का कार्य उच्च स्तर पर किया गया है, और इस चर्चा में कई मुद्दे और दुर्लभ लाभ पाए गए हैं। इसलिए, ऐतिहासिक रूप से, इसका नाम 'अल-जौहर अल-थमीन फी इलाल नाज़िला अल-यमीन' है।

[دایاں کالم - اصل فارسی متن] باید کہ دیانتاً معتبر شود گو پیش زن و سائر ناس مقبول نباشد۔

اقول: عدم امر بخروج و امر بعدم خروج متقابل نیست کہ اول در ثانی موجود است و قسم قسم نتواں شد آرے سکوت مطلق و تکلم با جنبی و تکلم بنافی ہر سہ از وجوہ تحقق اوست فاما انواعش نتواں شد کہ تکلم وجودی ست نوعے از عدم چساں باشد پس مصداقش نیست مگر ہماں عدم امر بخروج و در سکوت محض چیزے بانو نیست و در تکلمت مقارن بکلام ست و شے بمقارنات متنوع نشود و قاطع شغب آنست کہ در جملہ مسائل ترک کہ بالا گزشت علماء ازیں احتمال کہ مراد از و تکلم بمنافی مراد باشد اصلاً خبر نداده اند پس روشن شد کہ اور امساغ نیست ھکذا ینبغی التحقیق واللہ تعالیٰ ولی التوفیق الحمد للہ سخن بمنتی رسید و دریں مسئلہ نازلہ ابانت علل و سد خلل ورد زلل بذروہ اقصی در ضمن او مسائل او کثیرہ و فوائد عزیزہ بوضوح پیوست پس بلحاظ تاریخ الجوھر الثمین فی علل نازلۃ الیمین نامش کردن مناسب ست، واللہ تعالیٰ اعلم۔

[بایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] قسم میں معنی کی زیادتی (حکم دینا) خود قسم کو پیدا کرتا ہے یعنی قسم ہونے کے منافی نہیں ہے لہذا قسم کھانے والا اگر اقوی یعنی زیادتی والی قسم کی نیت کرے کہ اس معنی کا ترک ہو تو طلاق ہوگی، تو دیانتاً یہ نیت قبول ہونی چاہئے، اگرچہ بیوی اور دوسرے لوگوں کے ہاں وہ مقبول نہ ہو۔ (ت)

اقول: (میں جواب میں کہتا ہوں کہ) نکلنے کا حکم نہ دینا اور نہ نکلنے کا حکم دینا، یہ دونوں چیزیں آپس میں منافی نہیں ہیں کیونکہ پہلا معنی دوسرے معنی میں بھی موجود ہے (حالانکہ اقسام

کا آپس میں ایک دوسرے کے مبائن ہونا ضروری ہے) لہذا یہ دو قسمیں علیحدہ علیحدہ نہ ہوئیں۔ ہاں مطلق خاموشی، اجنبی گفتگو، اور منافی گفتگو، ان تینوں صورتوں میں ترک متفق ہو جاتا ہے مگر یہ ترک کی قسمیں نہیں ہیں کیونکہ ترک عدم کا نام ہے اور گفتگو یعنی تکلم وجودی چیز ہے تو وجودی چیز عدمی چیز کی قسم کیسے بن سکتی ہے، تو معلوم ہوا کہ ترک کا مصداق صرف نکلنے کا حکم نہ دینا ہے، اور وہ سکوت جس کے ساتھ کوئی اور چیز نہ ہو اور مقام کلام میں وہ کلام سے مقارن قرار پاتا ہے اور کوئی چیز اپنے مقارن کے ساتھ قسم نہیں بنتی۔ اس قیل وقال کا خاتمہ یوں ہو جاتا ہے کہ ترک سے متعلق جتنے مسائل گزرے ہیں ان میں علماء کرام نے منافی گفتگو، کے احتمال کو ذکر نہیں کیا، اور انہوں نے کہیں بھی یہ نہیں فرمایا کہ "نہ نکلنے کا حکم" تو واضح ہوگیا کہ اس احتمال کا یہاں کوئی دخل نہیں ہے۔ تحقیق یوں مناسب ہے اور اللہ تعالیٰ ہی توفیق کا مالک ہے، الحمدللہ یہ بحث اپنی انتہا کو پہنچ چکی ہے قسم کے پڑنے میں یہ ایسی بحث ہے جس میں علتوں کی وضاحت، خلل کا سد باب اور غلطیوں کا ازالہ اعلیٰ پیمانے پر ہوا ہے اور اس بحث کے ضمن میں کثیر مسائل اور نادر فوائد بھی پائے گئے ہیں، پس تاریخی لحاظ سے اس کا نام الجوھر الثمین فی علل نازلۃ الیمین۔

It is appropriate to keep it. And Allah Almighty knows best. (T)

Note (Right Column - Urdu): The servant of the exalted Threshold (Astana-e-Aaliya) of Dar al-Ifta, the humble slave of the Holy Prophet, Faqeer Nawab Mirza Qadri Barakati Razvi—may Allah Almighty, his Mighty Lord, forgive him—submits that our Sheikh, the Reviver of the Nation (Mujaddid-e-Millat), Ala Hazrat (may his high shadow endure), had previously written and sent a brief answer to this question on the 11th of Muharram al-Sharif, which was included in the 'Book of Divorce' (Kitab al-Talaq). Due to an occurrence of fever, the detailed response was postponed for a future time. Since the inquiry related to the 'Book of Faith' (Kitab al-Iman), which was sent by the virtuous Maulana Maulvi Ghulam Gilani Sahib Shamsabadi (may he remain alive throughout time), the aforementioned Maulana sent the same question again in the Arabic language on the 17th of Muharram al-Haram in the form of a letter. Along with it, a fatwa from the Deobandis, which lacked any detail, was also included. By the grace and help of Allah Almighty, this detailed and solid fatwa regarding the 'Book of Faith' reached completion before the arrival of the second letter from the said Maulana. Even if there had been any weak argument in the Deobandi fatwa, its refutation would have been seen in this detailed fatwa. However, the Deobandi fatwa is nothing but a blind imitation of Mr. Gangohi; it contains no reference nor does it rely on any proof. Rather, it is that same awkward 'mujtahid-like' talk which was not at all worthy of attention. Yes, the merit of the investigative answer suggests that we mention it so that observers can see how the Deobandi individuals are caught in the clutches of the demon of ignorance (Deo-Jahalat), offering their independent scholarly (ijtihadi) answers without even comprehending the question. (T)

Note (Left Column - Persian): The servant of the exalted Threshold of Dar al-Ifta, Faqeer Ubaid-un-Nabi Nawab Mirza Qadri Razvi (may Allah forgive him), submits that Ala Hazrat our Sheikh, the Reviver of the Nation (may his high shadow endure), had previously on the 11th of Muharram al-Sharif written a brief answer to this question and sent it, which was recorded in 'Kitab al-Talaq'. Due to the onset of fever, the detail was referred to the future. By the success granted by the Almighty, this fatwa belongs to 'Kitab al-Iman' sent by Maulana Maulvi Qazi Ghulam Gilani Sahib Shamsabadi. On the 17th of the blessed month of Muharram, another letter arrived in the Arabic language, and along with it, the Deobandi fatwa was included. Here, by the help of Allah, the complex fatwa was completed before the arrival of this letter. If the Deobandi fatwa relied on any weak proof, its answer would have been seen here.

But due to blind following of Mr. Gangohi, they neither wrote any text nor grasped any proof; they just made a discordant 'mujtahid-like' cry which is not worthy of any attention at all. Yes, the grace of the answer recommends that we mention it so they may see how the Deobandi Muftis are in the trap of the demon of ignorance, not even understanding the question yet giving a 'mujtahid-like' answer.

(ت) اعلم تعالٰی واللہ مناسب ہے۔ رکھنا रखना उचित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

नोट (दायां कॉलम - उर्दू): दारुल इफ़्ता की ऊँची देहरी (आस्ताना-ए-आलिया) के सेवक, पवित्र नबी के तुच्छ दास फ़क़ीर नवाब मिर्ज़ा क़ादरी बरकाती रज़वी—अल्लाह तआला उनका शक्तिशाली प्रभु उनकी क्षमा करे—निवेदन करते हैं कि हमारे शेख़, राष्ट्र के पुनरुद्धारक (मुजद्दिद-ए-मिल्लत), आला हज़रत (उनका उच्च साया बना रहे) ने इससे पहले ११ मुहर्रम शरीफ़ को इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर लिखकर भेजा था, जिसे 'किताबुल तलाक़' में शामिल किया गया था। बुख़ार की स्थिति के कारण विस्तृत उत्तर को भविष्य के लिए टाल दिया गया था। चूँकि पूछताछ 'किताबुल ईमान' से संबंधित थी, जिसे गुणी मौलाना मौलवी ग़ुलाम गिलानी साहब शम्साबादी (सदैव जीवित रहें) ने भेजा था, उक्त मौलाना ने वही प्रश्न पुनः अरबी भाषा में १७ मुहर्रमुल हराम को एक पत्र के रूप में भेजा। उसके साथ देवबंदियों का एक ऐसा फ़तवा भी था जिसमें कोई विस्तार नहीं था। अल्लाह तआला की कृपा और सहायता से, 'किताबुल ईमान' से संबंधित यह विस्तृत और सुदृढ़ फ़तवा उक्त मौलाना के दूसरे पत्र के आने से पहले ही पूर्ण हो चुका था। यदि देवबंदी फ़तवे में कोई कमज़ोर दलील भी होती, तो उसका उत्तर इस विस्तृत फ़तवे में मिल जाता। लेकिन देवबंद का फ़तवा तो महज़ गंगोही साहब की अंधी नक़ल (तक़लीद) है; इसमें न कोई संदर्भ है और न ही किसी प्रमाण का सहारा है। बल्कि यह वही बेढंगी 'मुज्तहिद-जैसी' बोली है जो बिल्कुल भी ध्यान देने योग्य नहीं थी। हाँ, इस शोधपरक उत्तर की विशेषता यह सुझाव देती है कि हम इसका उल्लेख करें ताकि पाठक जान सकें कि देवबंदी सज्जन अज्ञानता के दानव (देव-जहालत) के चंगुल में किस प्रकार फँसे हुए हैं कि वे प्रश्न को समझे बिना ही अपना स्वतंत्र शोधपरक (इज्तिहिदी) उत्तर दे रहे हैं। (त)

नोट (बायां कॉलम - फ़ारसी): दारुल इफ़्ता की ऊँची देहरी के सेवक फ़क़ीर उबैद-उन-नबी नवाब मिर्ज़ा क़ादरी रज़वी (अल्लाह उन्हें क्षमा करे) निवेदन करते हैं कि हमारे शेख़ मुजद्दिद-ए-मिल्लत आला हज़रत ने ११ मुहर्रम शरीफ़ को इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर लिखकर भेजा था जिसे 'किताबुल तलाक़' में दर्ज़ किया गया था। बुख़ार के कारण विवरण भविष्य के लिए छोड़ दिया गया था। अल्लाह की तौफ़ीक़ से यह फ़तवा मौलाना मौलवी क़ाज़ी ग़ुलाम गिलानी साहब शम्साबादी की 'किताबुल ईमान' का हिस्सा है। १७ मुहर्रम को अरबी में एक और पत्र आया जिसके साथ देवबंदियों का फ़तवा भी था। अल्लाह की मदद से यह फ़तवा पत्र के आने से पहले ही पूरा हो गया था। अगर देवबंदी फ़तवे

में कोई कमज़ोर दलील भी होती तो उसका जवाब यहाँ मिल जाता। पर गंगोही साहब की अंधी नक़ल के कारण न उन्होंने कोई इबारत लिखी न दलील दी, बस एक बेसुरी मुज्तहिदाना आवाज़ निकाली जो ध्यान के काबिल नहीं। जवाब की खूबी कहती है कि इसे ज़िक्र करें ताकि लोग देखें कि देवबंदी मुफ़्ती जहालत की क़ैद में कैसे हैं कि सवाल समझे बिना मुज्तहिदाना जवाब देते हैं।

पेज ६८८ का ५७१

رکھنا مناسب ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

نوٹ (دایاں کالم): آستانہ عالیہ دار الافتاء کا خادم، نبی پاک کا ادنیٰ غلام فقیر نواب مرزا قادری برکاتی رضوی، اللہ تعالٰی اس کا رب قوی اسکی مغفرت فرمائے، عرض کرتا ہے کہ ہمارے شیخ مجدد ملت اعلیٰحضرت دام ظلہ العالی نے قبل ازیں گیارہ محرم شریف کو اس سوال کا مختصراً جواب لکھا اور ارسال کردیا جو کہ کتاب الطلاق میں شامل ہے اور بخار کے عارضے کی بناء پر اس کا مفصل جواب آئندہ پر چھوڑ دیا جبکہ استفتاء کا تعلق کتاب الایمان سے ہے جس کو مولانا بالفضل اولنا جناب مولوی غلام گیلانی صاحب شمس آبادی (زمانہ بھر زندہ رہیں) نے ارسال فرمایا، مولانا مذکور نے یہی سوال عربی زبان میں دوبارہ سترہ محرم الحرام کو بصورت خط بھیجا اور اس کے اندر دیوبندیوں کا تفصیل سے خالی فتوٰی بھی موجود تھا، اللہ تعالٰی کی توفیق اور مدد سے یہ تفصیلی مضبوط، کتاب الایمان سے متعلق فتوٰی، مولانا مذکور کے دوسرے خط سے قبل پایہ تکمیل کو پہنچ چکا تھا، دیوبند کے فتوے میں اگر کوئی کمزور دلیل ہوتی تو بھی اس مفصل فتوے میں اس کا جواب نظر آجاتا، لیکن دیوبند کا فتوٰی تو محض گنگوہی صاحب کی اندھی تقلید ہے اس میں نہ کوئی حوالہ ہے نہ کسی دلیل کا سہارا ہے بلکہ وہی بے ڈھنگی مجتہدانہ بولی ہے جو ہرگز قابل التفات نہ تھی۔ ہاں تحقیقی جواب کی خوبی سفارش کرتی ہے کہ اس کو ذکر کردیں تاکہ دیکھنے والے معلوم کرسکیں کہ دیوبندی حضرات کس طرح دیوجہالت کی قید میں ہیں کہ وہ سوال کو سمجھے بغیر ہی اپنا اجتہادی جواب دے رہے ہیں۔ (ت)

نوٹ (بایاں کالم): خادم آستانہ عالیہ دار الافتاء فقیر عبید النبی نواب مرزا قادری رضوی غفرلہ ربہ القوی عرضہ دارد کہ اعلیٰحضرت شیخنا مجدد الملۃ دام ظلہ العالی پیش ازیں بتاریخ یازدہم محرم

شریف ایں سوال را جوابے مختصر نوشتہ ارسال فرمودہ بودند کہ در کتاب الطلاق مرسوم گشت وبوجہ عروض تپ تفصیل را حوالہ بر آئندہ فرمودند کہ بتوفیقہ تعالٰی ایں فتویٰ کتاب الایمان ست از مولانا وبالفضل اولنا جناب مولوی قاضی غلام گیلانی صاحب شمس آبادی دام بالایادی بتاریخ ہفدہم ماہ مبارک محرم محترم نامہ دگر بزبان عربی آمد و در طے او فتویٰ دیوبندیاں تفصیل را لب بہ استدعا کشادند اینجا بعونہ تعالٰی فتوائے معضلہ پیش ورود ایں نامہ تکمیل یافتہ بود فتوائے دیوبند اگر چیزے بہ دلیل علیل گرایندے جوابش خود اینجا دیدے فاما بتقلید کورانہ جناب گنگوہی صاحب نہ عبارتے نگاشت نہ بدیلیلے چنگ زد ہمیں مجتہدانہ بانگ بے آہنگ زد کہ اصلاً توجہ را نشاید آرے لطف جواب سفارشی مے شود کہ اوراذکر کنیم تا بینند کہ مفتیان دیوبندی چساں در بند دیو جہالت اند کہ سوال ہم نفہمند وجواب مجتہدانہ دہند۔

(Letter from the Honorable Maulana) | (The said Maulana's letter is this)

To the presence of the one who is independent of titles, rather titles are cast aside before his threshold; the reviver of the nation, Islam, and faith; the supporter of Muslims in raising the flags of religion; the one who unsettles the principles of the disbelievers, innovators, transgressors, and misguiders. May Allah Almighty keep the shadows of his blessings spread over the heads of those seeking guidance until the Day of Judgment.

Furthermore, your excellent response, containing the required references from the Quran, Hadith, and books, has been received. The veil has been lifted. May Allah Almighty grant you a reward equal to the number of creatures in the heavens and the crawling beasts on earth. However, something contrary to this has been written by the Madrasa of Deoband. Therefore, it is necessary to provide a detailed rebuttal that removes all doubts, so that the thoughts in the heart of the erroneous person are scattered and buried in the dust, and this disagreement is ended from among us through the bringing of beauty and mutual love. May Allah Almighty's blessings be upon the best of His creation, his family, and companions until the day of calling for the losers, and the day of thirst-quenching and youth for the people of proof and those who are close (to Allah).

From the sinful slave, seeking refuge, the left-behind and guilty servant, Ghulam Gilani Shams Abadi, may Allah Almighty protect him from the hands of the enemies.

पृष्ठ १३ | फ़तावा रज़विया | खंड १३

(आदरणीय मौलाना का पत्र) | (उक्त मौलाना का पत्र इस प्रकार है)

उस महान हस्ती की सेवा में जो उपाधियों से स्वतंत्र हैं, बल्कि उपाधियाँ जिनके द्वार के सामने पड़ी रहती हैं; राष्ट्र, इस्लाम और धर्म के पुनरुद्धारक; धर्म की ध्वजा ऊँची करने में मुसलमानों के सहायक; काफिरों, विदातियों (नवाचारियों), पापियों और पथभ्रष्टों के सिद्धांतों को मिटाने वाले। अल्लाह तआला कयामत (प्रलय) के दिन तक मार्गदर्शन प्राप्त करने वालों के सिरों पर उनके आशीर्वाद की छाया बनाए रखे।

इसके पश्चात, आपका उत्कृष्ट उत्तर प्राप्त हुआ जो कुरान, हदीस और पुस्तकों के आवश्यक संदर्भों से सुसज्जित है। पर्दा उठ गया है। अल्लाह तआला आपको आकाश और पृथ्वी के जीवों की संख्या के बराबर उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। लेकिन देवबंद मदरसे की ओर से इसके विपरीत लिखा गया है। अतः यह आवश्यक है कि इसका विस्तार से खंडन किया जाए जो संदेहों को समाप्त कर दे, ताकि त्रुटिपूर्ण व्यक्ति के मन के विचार बिखर जाएं और वे मिट्टी में दफन हो जाएं, और इस मतभेद को आपसी प्रेम और सौंदर्य के माध्यम से समाप्त किया जाए। अल्लाह तआला की कृपा सृष्टि के सबसे उत्तम पुरुष, उनके परिवार और उनके साथियों पर उस दिन तक बनी रहे जब असफल लोग पुकारे जाएंगे और प्रमाण वाले और निकट लोग तृप्त और युवा होंगे।

गुनाहगार, शरण चाहने वाले, पिछड़े और अपराधी सेवक गुलाम गिलानी शम्स आबादी की ओर से, अल्लाह तआला उसे शत्रुओं के हाथों से सुरक्षित रखे।

पृष्ठ ५७२ का ६८८

(نامہ نامی جناب مولانا بنست) | (مولانا مذکور کا خط یہ ہے)

الی الجناب المستغنی عن الالقاب بل الالقاب مطروحه دون سدة الباب مجدد الملة والاسلام والدین ناصرالمسلمین باعلاء اعلام الدین مزعج اصول الکفرة والمبتدعة والفسقة والمضلین بسط الله تعالی ظلال فیوضهم علی رؤس المسترشدین الی یوم الدین۔ | القاب سے مستغنی بلکہ القاب جن کی چوکھٹ کے سامنے پھینکے پڑے ہیں، مجدد الملت والاسلام والدین، دین کے جھنڈے بلند، اور کفار، بدعتی حضرات، فساق اور گمراہ لوگوں کے اصول و قواعد کو مٹانے میں مسلمانوں کے مددگار کی خدمت میں، اللہ تعالیٰ قیامت تک ان کے فیوض کے سائے کو رہنمائی حاصل کرنے والوں کے سروں پر پھیلائے رکھے۔

اما بعد، فقد ورد الجواب المستطاب مع المطلوبات من الرسالة والکتاب وانکشف الستروالحجاب جزاکم الله تعالی خیر الجزاء بتعداد المخلوقات ما هو في جو السماء وعلی الارض من الدواب لکن کتب من مدرسة دیوبند علی خلاف ذلك فح لابد من الجواب المفصل المزیل للارتیاب لیفتت ترائب المخطی ویدسه فی التراب ویرتفع الخلاف من البین باجلاب الزین والتحاب وصلی الله تعالی علی خیر خلقه والآل والاصحاب الی یوم التناد لذوي الخیاب ویوم الریان والشباب لذوی الحجة واصحاب الاقتراب۔ | اما بعد، آپ کا جواب مستطاب مطلوبہ قرآن و احادیث و کتب کے حوالوں پر مشتمل موصول ہوا، حجاب اوپر دے اٹھ گئے، اللہ تعالیٰ آسمان اور زمین کی مخلوقات کی تعداد کے برابر آپ کو جزائے خیر عطا فرمائے لیکن مدرسہ دیوبند سے اس کا خلاف لکھا گیا، لہٰذا ضروری ہے کہ اس کا رد مفصل طور پر کیا جائے جو شکوک کو ختم کر دے تاکہ خطا کار کے دل کے خیالات پراگندہ ہو

جائیں اور اس کو مٹی میں دفن کر دے اور اس خلاف کو یہاں سے مقبول اور پسندیدہ امور کے سبب ختم کر دے۔ رسوا لوگوں کی ذلت، اور محبوب اور اصحاب حجت لوگوں کی رونق و شباب کے دن (قیامت) تک حضور الصلوٰۃ والسلام پر اللہ تعالیٰ کی رحمتیں ہوں۔

العبد المذنب للاواہ الخامل الجانی القاضی غلام گیلانی الشمس ابادی حفظہ اللہ تعالی عن ایادی الاعادی۔ | منجانب گنہگار، پناہ کا خواستگار، پسماندہ اور جنایت کا مرتکب بندہ غلام گیلانی شمس آبادی، اللہ تعالیٰ اسے دشمنوں کے ہاتھوں سے محفوظ رکھے۔

Fatawa Razawiya Volume 13 - Page 13

The question in the fatwa is exactly the same as mentioned, and they have given a strange Urdu (Hindi) answer to this Persian question, which is as follows:

The Answer: Since Zaid became satisfied with his son and kept him at home himself, divorce will not occur on his wife in this situation. However, if Zaid had turned him out and his wife had kept him, she would have been divorced. And Allah Almighty knows best.

फतावा रज़विया खंड 13 - पृष्ठ 13

फतवे में प्रश्न बिल्कुल वही है जैसा उल्लेख किया गया है, और उन्होंने इस फारसी प्रश्न का एक अजीब उर्दू (हिंदी) उत्तर दिया है, जो इस प्रकार है:

उत्तर: चूंकि ज़ैद अपने बेटे से राज़ी हो गया और उसे खुद घर में रखा, इसलिए इस स्थिति में उसकी पत्नी पर तलाक नहीं होगा। हाँ, अगर ज़ैद उसे निकाल देता और उसकी पत्नी उसे रखती, तो वह तलाकशुदा हो जाती। केवल अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم - صفحہ ۱۳

سوال فتوائے عین سوال مذکورست و سوال پارسی را بزبان ہندی جواب عجاب چناں: دیوبندی کے فتویٰ میں بعینہ اس فتوے والا سوال مذکور ہے اور اس فارسی سوال کا عجیب جواب انہوں نے اردو (ہندی) میں دیا ہے، جو یہ ہے:

الجواب: زید جبکہ اپنے پسر سے راضی ہو گیا اور خود اس کو گھر رکھا تو اس کی عورت پر اس صورت میں طلاق واقع نہ ہو گی البتہ اگر زید اس کو نکالتا اور اس کی زوجہ اس کو رکھتی تو مطلقہ ہوتی فقط واللہ تعالیٰ اعلم۔

Page: 13 | Volume Thirteen | Fatawa Ridawiyya

...of His creation, Muhammad, and his family and all his companions. And our final prayer is that all praise belongs to Allah, the Lord of the worlds. In this way, he has made lawful what Allah Almighty has forbidden; this became the Deobandism of the Deobandis. And there is no power nor might except with Allah, the Most High, the Most Great. And may the peace and blessings of Allah Almighty be upon the best of His creation, Muhammad, his family, and all his companions. And our final prayer is that all praise belongs to Allah, the Lord of the worlds. (End of treatise).

Problem 215: From Mohalla Bihari Pur, Bareilly, 29 Rajab 1338 AH. Sent by Riazuddin Ahmed. Is it a sin to swear by the Holy Quran or to pick it up for a truthful matter? The need to bother you arose because a person was told, "If you are truthful, pick up the Holy Quran." To this, he replied, "I am on the truth, but I cannot pick up the Holy Quran because picking up the Holy Quran is a sin in every situation." The other party says that picking up the Holy Quran for the truth is not a sin, however, picking up the Holy Quran for a lie is a sin. Please inform us as to which of these two statements is true?

The Answer: Swearing by or picking up the Holy Quran for a lie is a very great major sin, and there is no harm in swearing by the Great Quran for a truthful matter, and it can be picked up if necessary, but this makes the oath very solemn; it should not be done without specific necessity. And Allah Almighty knows best.

Problem 216: From British Guiana, Berbice River, East Bank. Asked by Abdul Ghafoor, 24 Safar al-Muzaffar 1334 AH. If people took an oath while holding the Word of Allah in their hands to obey their prayer leader (Imam), would that oath be considered a binding oath (Yamin) or not? Was it an honor with Allah Almighty? Or was it a sin? Was such an oath considered an oath by the Word? Is it permissible to swear by the Word of Allah or not? Since it is mentioned in the Hadith that swearing by other than Allah is polytheism (Shirk), and people swore by the Word of Allah, will it be called an oath by other than Allah or what will it be called? That's all.

The Answer: The Word of Allah is an eternal attribute of Allah Almighty. Divine attributes are the Essence itself, not separate from it. Swearing by the Word of Allah is certainly a legitimate Sharia oath because it is among those attributes of Allah Almighty for which swearing is customary. Therefore, an oath with the Quran is just like swearing by the honor, greatness, and majesty of Allah Almighty.

...उनकी सृष्टि मुहम्मद, और उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर। और हमारी अंतिम प्रार्थना यह है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है। इस प्रकार, उसने उसे हलाल (वैध) बना दिया जिसे अल्लाह तआला ने हराम (वर्जित) किया था; यह देवबंदियों की देवबंदियत बन गई। और अल्लाह के बिना कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे उच्च और महान है। और अल्लाह तआला की कृपा और शांति उनकी सृष्टि के सर्वोत्तम मुहम्मद, उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर हो। और हमारी अंतिम प्रार्थना यह है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है। (रिसाला समाप्त)।

मसला २१५: मोहल्ला बिहारी पुर, बरेली से, २९ रजब १३३८ हिजरी। प्रेषक रियाज़ुद्दीन अहमद। किसी सच्ची बात के लिए कुरान पाक की कसम खाना या उसे उठाना गुनाह है या नहीं? आपको कष्ट देने की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि एक व्यक्ति से कहा गया कि "यदि तुम सच्चे हो तो कुरान शरीफ उठाओ।" उसने इसका उत्तर दिया कि "मैं सच्चाई पर हूँ लेकिन मैं कुरान शरीफ नहीं उठा सकता क्योंकि कुरान शरीफ उठाना हर हाल में गुनाह है।" दूसरा पक्ष कहता है कि सच्ची बात पर कुरान शरीफ उठाना गुनाह नहीं है, अलबत्ता झूठी बात पर कुरान शरीफ उठाना गुनाह है। कृपया सूचित करें कि दोनों बातों में कौन सी बात सच्ची है?

उत्तर: झूठी बात पर कुरान मजीद की कसम खाना या उठाना बहुत बड़ा गुनाह-ए-कबीरा है, और सच्ची बात पर कुरान-ए-अज़ीम की कसम खाने में कोई हर्ज नहीं है और ज़रूरत हो तो उठाया भी जा सकता है, मगर यह कसम को बहुत सख्त कर देता है; बिना विशेष आवश्यकता के ऐसा नहीं करना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २१६: ब्रिटिश गयाना, बर्बिस नदी, ईस्ट बैंक से। अब्दुल गफूर द्वारा पूछा गया, २४ सफ़र अल-मुजफ्फर १३३४ हिजरी। यदि लोगों ने अपने इमाम की आज्ञाकारिता के लिए अल्लाह के कलाम (कुरान) को हाथ में लेकर शपथ ली, तो वह शपथ यमीन (वैध शपथ) हुई या नहीं? और क्या वह अल्लाह तआला के साथ सम्मान था? या गुनाह हुआ? और क्या ऐसी शपथ कलाम की शपथ मानी गई? और अल्लाह के कलाम की कसम खाना जायज़ है या नहीं? और जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि अल्लाह के अलावा किसी और की कसम खाना शिर्क है, और लोगों ने अल्लाह के कलाम के साथ शपथ ली, तो क्या उसे गैर-अल्लाह की कसम कहा जाएगा या क्या कहा जाएगा? बस।

उत्तर: कलाम अल्लाह, अल्लाह अज़्ज़वजल का एक प्राचीन गुण (सिफत-ए-कदीमा) है। ईश्वरीय गुण स्वयं अस्तित्व (ज़ात) हैं, न कि अस्तित्व से अलग। अल्लाह के कलाम की कसम निश्चित रूप से एक शरीयत सम्मत शपथ है, क्योंकि यह अल्लाह तआला के उन गुणों में से है जिनके साथ कसम खाना प्रचलित है। इसलिए कुरान के साथ शपथ वैसी ही है जैसे अल्लाह तआला की इज़्ज़त, महानता और महिमा की शपथ।

पृष्ठ ५७४/६८८

خلقہ محمد وآلہ واصحابہ اجمعین واخر دعوانا ان الحمدللہ رب العلمین۔ یوں اس نے اللہ تعالیٰ کے حرام کردہ کو حلال بنادیا ہے، دیوبندیوں کی دیوبندیت بن گئی۔ ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم، وصلی اللہ تعالیٰ علی خیر خلقہ محمد وآلہ واصحابہ اجمعین۔ وآخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین۔ (ت) (رسالہ ختم)

مسئلہ ۲۱۵: از محلہ بہاری پور، بریلی ۲۹ رجب ۱۳۳۸ھ مرسلہ ریاض الدین احمد کسی سچی بات کے لئے قرآن پاک کی قسم کھانا یا اس کا اٹھالینا گناہ ہے یا نہیں؟ آپ کو تکلیف دینے کی اس وجہ سے ضرورت ہوئی کہ ایک شخص سے کہا گیا کہ اگر تو سچا ہے تو قرآن شریف کو اٹھالے۔ اس کا اس نے جواب دیا کہ میں سچائی پر ہوں لیکن میں قرآن شریف نہیں اٹھاسکتا ہوں کیونکہ قرآن شریف اٹھانا ہر حالت میں گناہ ہے، دوسرا فریق کہتا ہے کہ سچا قرآن شریف اٹھانا گناہ نہیں ہے البتہ جھوٹا قرآن شریف اٹھانا گناہ ہے، مہربانی فرما کر مطلع فرمائیے کہ دونوں باتوں میں کون سی بات سچی ہے؟ الجواب: جھوٹی بات پر قرآن مجید کی قسم کھانا یا اٹھانا سخت عظیم گناہ کبیرہ ہے اور سچی بات پر قرآن عظیم کی قسم کھانے میں حرج نہیں اور ضرورت ہو تو اٹھا بھی سکتا ہے مگر یہ قسم کو بہت سخت کرتا ہے، بلا ضرورت خاصہ نہ چاہئے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۶: از برٹس گائنا، برارا تیرس ونچ ایسٹ بینک مسئولہ عبدالغفور ۲۴ صفر المظفر ۱۳۳۴ھ اگر لوگوں نے کلام اللہ کو ہاتھ میں لے کر حلف کیا اپنے پیش امام کی تابعداری کا، وہ حلف یمین ہوا یا کہ نہیں؟ اور یا کہ شرف ہوا اللہ تعالیٰ کے ساتھ؟ یا گناہ ہوا؟ اور یا کہ ایسا حلف قسم کلام کا ہوا؟ اور قسم کلام اللہ کا کھانا درست ہے یا کہ نہیں؟ اور جو حدیث شریف میں آیا ہے کہ غیر اللہ کی قسم کھانا شرک ہے اور لوگوں نے حلف کیا ساتھ کلام اللہ کے، تو وہ غیر اللہ کا قسم کہا

جائے گا یا کیا کہا جائیگا؟ فقط۔ الجواب: کلام اللہ، اللہ عزوجل کی صفت قدیمہ ہے۔ صفات الہیہ عین ذات ہیں نہ کہ غیر ذات۔ کلام اللہ کی قسم ضرور حلف شرعی ہے، کیونکہ یہ اللہ تعالیٰ کی ایسی صفات میں سے ہے جس کے ساتھ قسم کھانا متعارف ہے لہذا قرآن کے ساتھ حلف ایسا ہی ہے جیسا کہ اللہ تعالیٰ کی عزت، عظمت اور جلال کی قسم۔ (لانہ من صفاتہ وقد تعورف الحلف بہ فکان کالحلف بعزتہ وعظمتہ وجلالہ)

صفحہ ۵۷۴ از ۶۸۸

Page 13, Volume Thirteen, Fatawa Razawiyya

Unlike swearing by His mercy, His generosity, and His kindness, because these are not common ways of swearing. This lack of common usage is the criterion for a legal oath, as mentioned in *Durr al-Mukhtar* etc. (T)

Yes, holding the Holy Quran in hand or placing a hand on it and saying something, if it is not accompanied by the word 'oath' (halaf) or 'swearing' (qasam), it will not be a legally binding oath. For example, if someone says "I say by placing my hand on the Holy Quran that I will do this" and then does not do it, no expiation (kaffarah) will be due. Allah Almighty knows best.

Question 71: From Shamsabad, Kamilpur, sent by Ghulam Gilani, Tuesday, 18 Shaban 1334 AH.

Zaid took an oath that "I will never eat bread at my brother's house, and if I do, then such-and-such [penalty] will be mandatory." Later, at a wedding ceremony, people forced Zaid to eat bread. He said, "I imagine eating this bread because you say so," meaning "I am not eating in reality, but I will eat in my imagination because I haven't eaten, yet I will be considered as having eaten." This incident was presented to the local scholars, and they ruled that the oath was broken. They based their reasoning on the commentary of *Usul al-Shashi* in the discussion of *Muqtadi* (implied meaning). The text of *Usul al-Shashi* is: "Specification (takhsis) does not apply to an absolute individual (fard mutlaq) because specification is based on generality (umum), whereas there is no generality in *muqtadi*." The commentary on *Fusul* regarding this is: "If it is objected that eating..."

1. *Usul al-Shashi* and *Fusul al-Hawashi*, before the chapter on commands, Muhammadi Press, Peshawar, p. 200. Page 575 of 688

पृष्ठ १३, खंड १३, फतावा रज़विया

उनकी दया, उनकी उदारता और उनकी कृपा की कसम खाने के विपरीत, क्योंकि ये कसम खाने के सामान्य तरीके नहीं हैं। सामान्य उपयोग की यह कमी कानूनी शपथ के लिए मानदंड है, जैसा कि दुर-ए-मुख्तार आदि में उल्लेख किया गया है। (त)

हाँ, पवित्र कुरान को हाथ में लेकर या उस पर हाथ रखकर कुछ कहना, यदि उसके साथ 'शपथ' (हलफ़) या 'कसम' शब्द नहीं है, तो वह कानूनी रूप से बाध्यकारी शपथ नहीं होगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई कहता है "मैं पवित्र कुरान पर हाथ रखकर कहता हूं कि मैं ऐसा करूंगा" और फिर उसे नहीं करता है, तो कोई प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) देय नहीं होगा। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

मसला ७१: शमसाबाद, कामिलपुर से, गुलाम गिलानी द्वारा प्रेषित, मंगलवार, १८ शाबान १३३४ हिजरी।

ज़ैद ने कसम खाई कि "मैं अपने भाई के घर कभी रोटी नहीं खाऊँगा, और अगर मैं ऐसा करूँ तो फलां-फलां [जुर्माना] अनिवार्य होगा।" बाद में, एक शादी समारोह में, लोगों ने ज़ैद को रोटी खाने के लिए मजबूर किया। उसने कहा, "मैं तुम्हारे कहने पर इस रोटी को खाने की कल्पना करता हूँ," यानी "मैं वास्तव में नहीं खा रहा हूँ, लेकिन मैं अपनी कल्पना में खाऊँगा क्योंकि मैंने नहीं खाया है, फिर भी मुझे खाने वाला माना जाएगा।" यह घटना स्थानीय विद्वानों के सामने पेश की गई, और उन्होंने फैसला सुनाया कि कसम टूट गई। उन्होंने अपने तर्क का आधार उलूस-अल-शाशी की व्याख्या को बनाया, जो मुक़्तदी (निहित अर्थ) की चर्चा में है। उलूस-अल-शाशी का पाठ है: "विशिष्टीकरण (तख़सीस) एक पूर्ण व्यक्ति (फ़र्द मुतलक़) पर लागू नहीं होता क्योंकि विशिष्टीकरण व्यापकता (उमूम) पर आधारित होता है, जबकि मुक़्तदी में कोई व्यापकता नहीं होती है।" इस पर फ़ुसूल की व्याख्या यह है: "यदि यह आपत्ति की जाए कि खाने के..."

1. उलूस-अल-शाशी और फ़ुसूल अल-हवाशी, आदेशों के अध्याय से पहले, मोहम्मदी प्रेस, पेशावर, पृष्ठ २००। पृष्ठ ५७५/६८८

لا کالحلف برحمته وجوده وکرمه لعدم التعارف وهذا هو منآت الحلف الشرعی کما في الدرالمختار وغیرہ- عظمت اور جلال کی قسم ہے۔ اور اللہ تعالٰی کی رحمت، جود اور کرم کی قسم کی طرح نہیں جن سے قسم متعارف نہیں ہے، اور یہی متعارف ہونا نہ ہونا ہی شرعی قسم کا معیار ہے، جیسا کہ در مختار وغیرہ میں ہے۔(ت)

ہاں مصحف شریف ہاتھ میں لے کر یا اس پر ہاتھ رکھ کر کوئی بات کہنی اگر لفظ حلف و قسم کے ساتھ نہ ہو حلف شرعی نہ ہو گا مثلاً کہے کہ میں قرآن مجید پر ہاتھ رکھ کر کہتا ہوں کہ ایسا کروں گا اور پھر نہ کیا تو کفارہ نہ آئے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۷۱: از شمس آباد کمیل پور مسئولہ غلام گیلانی سہ شنبہ ۱۸ شعبان ۱۳۳۴ھ

زید حلف خورد کہ من بخانہ برادر خود ہرگز نان نخواہم خورد ورنہ کذا و کذا باشد بعدہ در تقریب شادی مرد ماں آں زید را بر خوردن نان مجبور کردند او گفت کہ من بگفتہ شما این نان را در تصور خوردم (یعنی حقیقۃً نمی خورم لیکن در تصور خود میخورم و چہ نخوردہ ام اما خوردہ گیر بایدم ایں واقعہ پیش علمائے دیار رفت مگر حکم بحنث داد واستناد او بایں عبارت حاشیہ اصول شاشی در بحث مقتضی بایں الفاظ ست عبارت اصول شاشی ولا تخصیص عن الفرد المطلق لان التخصیص یعتمد العموم ولاعموم للمقتضی ۱ و عبارت فصول ایں ست فان قیل فلیراد الطعام الموصوف بصفة کذا قلنا هذا اثبات وصف زائد علی المطلق وهو زیادة علی قدر الحاجة فلا یثبت زید نے قسم کھائی کہ میں اپنے بھائی کے گھر ہرگز کھانا نہ کھاؤں گا اگر کھاؤں تو فلاں چیز لازم آئے، اس کے بعد شادی کی تقریب میں لوگوں نے اس کو کھانے پر مجبور کیا تو اس نے کہا میں تمہارے کہنے پر کھانے کا تصور کرلیتا ہوں، یعنی حقیقۃً نہ کھاؤں گا صرف اپنے تصور میں کھاؤں گا کیونکہ میں

نے کھایا نہیں لیکن کھانے والا سمجھا جاؤں گا۔ یہ واقعہ علاقہ کے علماء کے سامنے پیش ہوا تو انہوں نے اس بات پر قسم کے ٹوٹنے کا حکم دیا، اور اسکی دلیل اصول شاشی کے حاشیہ کی اس عبارت کو بنایا ہے جو اصول شاشی میں مقتضی کی بحث میں ہے۔ اصول شاشی کی عبارت یہ ہے کہ فردِ مطلق میں تخصیص جاری نہیں ہوتی کیونکہ تخصیص کی بنیاد عموم پر ہے جبکہ مقتضی میں عموم نہیں ہوتا۔ اس پر حاشیہ فصول کی عبارت یہ ہے: اگر اعتراض کیا جائے کہ کھانے کے

۱ اصول الشاشی و فصول الحواشی قبیل فصل فی الامر المطبع المحمدی پشاور ص ۲۰۰ Page of 688 575

By way of implication, like the attribute of generalization. Regarding this, there is also discussion on his statement: "Perhaps the meaning is..." (up to where he said) "It is said it's not from the category of generality, but for obtaining the sworn-upon object, for if eating were conceivable..." etc. Fourthly, does the ruling on breaking the oath (hanth) in the question apply or not? If the radiant master would explain the meaning of this text along with evidence, consequences, and parallels in detailed Persian, it would certainly lift the veil and open the door (to understanding). That is all.

How is it if, instead of absolute food, food with a specific attribute is taken as the implied meaning? We say (our answer is) that this cannot be, because it is an addition of an extra attribute to the absolute, which is beyond the degree of necessity, and the implied cannot be established beyond the degree of necessity, just as the attribute of generalization cannot be established in the implied. While there is also discussion in this answer, because following 'perhaps the meaning is', under 'it is said', that this is not from the chapter of generality, but rather obtaining the thing about which the oath was taken (Mahloof Alaih), because if its eating were conceivable, etc., then does this text relate to the mentioned question's breaking of oath or not? If the radiant master would explain the meaning of this text in detailed Persian with evidence, agreements, and parallels, then all sorts of veils would be lifted and the explanation of this debate would occur. That is all. (T)

Al-Jawab al-Malfooz (The Spoken Answer): One day before the Commander of the Faithful Ali Murtaza (may Allah honor his face), someone said that such-and-such person committed adultery with the mother of another person in a dream. The Commander of the Faithful Ali Murtaza (may Allah honor his face) said: "Stand him in the sun and strike his shadow with a whip." Such things are very far from people who claim to have knowledge. It is evident that for the occurrence of the penalty, the fulfillment of the condition is inevitable. The condition was eating, not imagining it. Attaining 'eating' merely through imagination is fundamentally against reason. No sane child can imagine that whoever imagines...

One day in front of Hazrat Ali Murtaza (may Allah honor his face), a person said that such-and-such person has committed adultery with another person's mother in a dream. Then the Commander of the Faithful (may Allah honor his face) said, "Make this person stand in the sunlight and lash his shadow." In short, such things are far from people who claim knowledge, because it is evident that for a reward/penalty to

occur, the fulfillment of its condition is necessary, whereas in the question, the condition of eating was mentioned, so eating...

---

1 Usul al-Shashi and Fusul al-Hawashi, before the section on 'The Command', Al-Matba' al-Muhammadi, Peshawar, p. 200. Page 576 of 688

निहितार्थ (इन्तिज़ाम) के तरीके से, जैसे कि सामान्यीकरण का गुण। इसमें उनके इस कथन पर भी चर्चा है: "शायद इसका अर्थ यह है..." (जब तक कि वह कहते हैं) "कहा गया है कि यह सामान्यता के अध्याय से नहीं है, बल्कि जिस पर शपथ ली गई है (महलूफ़ अलैह) उसकी प्राप्ति के लिए है, क्योंकि यदि खाना कल्पनीय होता..." आदि। चौथा, क्या प्रश्न में शपथ टूटने (हन्थ) का हुक्म लागू होता है या नहीं? यदि उज्ज्वल स्वामी इस इबारत (पाठ) का अर्थ साक्ष्यों, परिणामों और उदाहरणों के साथ विस्तृत फारसी में लिख दें, तो निश्चित रूप से पर्दा हट जाएगा और द्वार खुल जाएगा। बस।

यदि निरपेक्ष भोजन के बजाय एक विशिष्ट गुण वाले भोजन को निहितार्थ के रूप में लिया जाए तो कैसा है? हम कहेंगे (हम उत्तर देंगे) कि ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि यह निरपेक्ष पर एक अतिरिक्त गुण का समावेश है जो आवश्यकता की मात्रा से अधिक है, और निहितार्थ आवश्यकता की मात्रा से अधिक सिद्ध नहीं हो सकता जैसा कि निहितार्थ में सामान्यीकरण का गुण सिद्ध नहीं हो सकता। जबकि इस उत्तर में भी चर्चा है, क्योंकि 'शायद इसका अर्थ है' के बाद 'कहा गया' के अंतर्गत कि यह सामान्यता के अध्याय से नहीं है बल्कि उस वस्तु की प्राप्ति है जिसके बारे में शपथ ली गई (महलूफ़ अलैह), क्योंकि यदि उसे खाने की कल्पना की जा सकती आदि, तो क्या इस इबारत का उल्लेखित प्रश्न के हन्थ (शपथ टूटने) से संबंध है या नहीं? यदि उज्ज्वल स्वामी साक्ष्यों, सहमतियों और उदाहरणों के साथ फारसी में विस्तृत रूप से इस इबारत का अर्थ बता दें, तो हर तरह का पर्दा हट जाएगा और इस बहस की स्पष्टता हो जाएगी। बस। (त)

अल-जवाब अल-मलफ़ूज़ (कथित उत्तर): एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुर्तज़ा (करम अल्लाह तआला वजहुहुल करीम) के सामने किसी ने कहा कि फलां व्यक्ति ने सपने में दूसरे व्यक्ति की माँ के साथ व्यभिचार किया है। अमीरुल मोमिनीन (करम अल्लाह तआला वजहुहुल करीम) ने फरमाया: उसे धूप में खड़ा करो और उसकी परछाईं पर कोड़े मारो। ज्ञान का दावा करने वालों से ऐसी बातें बहुत दूर हैं। यह स्पष्ट है कि दंड के होने के लिए शर्त का पूरा होना अपरिहार्य है। शर्त खाना थी, न कि उसकी कल्पना करना। केवल कल्पना के माध्यम से 'खाने' की प्राप्ति मौलिक रूप से तर्क के विरुद्ध है। कोई भी समझदार बच्चा यह कल्पना नहीं कर सकता कि जो कोई कल्पना करे..

एक दिन हज़रत अली मुर्तज़ा (करम अल्लाह तआला वजहुहुल करीम) के सामने एक व्यक्ति ने कहा कि फलां व्यक्ति ने सपने में दूसरे व्यक्ति की माँ से व्यभिचार किया है, तो हज़रत अमीरुल मोमिनीन

(करम अल्लाह तआला वजहुहुल करीम) ने फरमाया कि इस व्यक्ति को धूप में खड़ा करके उसके साये पर कोड़े मारो। संक्षेप में, ऐसी बातें ज्ञान के दावेदारों से दूर हैं, क्योंकि यह स्पष्ट है कि सज़ा या प्रतिफल के लिए शर्त का पूरा होना ज़रूरी है, जबकि सवाल में खाने की शर्त का ज़िक्र किया गया है, तो खाना...

---

१ उसूल अल-शाशी और फुसूल अल-हवाशी, 'अल-अम्र' के अध्याय से पहले, अल-मत्बा अल-मुहम्मदी, पेशावर, पृष्ठ २००। पेज ५७६ ऑफ ६८८

بطریق الاقتضاء کصفة التعمیم وفیه ایضا کلام قوله لعل المراد (الی ان قال) قیل انه لیس من باب العموم بل لحصول المحلوف علیه فانه لو تصور الاکل الخ ۱ رابعاً حکم حنث در سوال تعلق ست یانہ، اگر حضور پر نور مطلب ایں عبارت مع شواہد و توابع و نظائر در عبارت فارسی مفصل ارقام فرمایند ہر آئینہ رفع حجاب و فتح باب خواهد شد، فقط۔

قول کے بعد مطلق طعام کی بجائے خاص وصف والاطعام بطور مقتضیٰ مراد لیا جائے تو کیسا ہے،قلنا(ہم جواب دیں گے کہ) ایسا نہیں ہوسکتا کیونکہ یہ مطلق پر ایک زائد وصف کا اضافہ ہے جو قدر حاجت سے زائد ہے اور مقتضی قدر حاجت سے زائد ثابت نہیں ہوسکتا جیسا کہ مقتضی میں تعمیم کی صفت ثابت نہیں ہو سکتی، جبکہ اس جواب میں بھی کلام ہے، کیونکہ لعل المراد سے آگے، قیل کے تحت، کہ، یہ عموم کے باب سے نہیں بلکہ جس چیز کے متعلق قسم کھائی ہے(محلوف علیہ) اس کا حصول ہے، کیونکہ اگر وہ کھانے کے لئے متصور ہوا الخ، تو کیا اس عبارت کا سوالِ مذکور کے حانث ہونے سے تعلق ہے یا نہیں، اگر حضور پر نور اس عبارت کا مطلب بمع شواہد، موافق اور نظائر فارسی میں مفصل طور پر بیان فرمادیں تو ہر طرح حجاب ختم ہو جائے گا اور اس بحث کی وضاحت ہو جائے گی، فقط (ت)

الجواب الملفوظ: روزے پیش امیر المومنین علی مرتضی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم یکے گفت کہ فلاں در خواب بامادر آنکس زنا کردہ است۔امیر المومنین کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم فرمود اور ادر آفتاب قائم کردہ سایہ اش رادرہ زن، از مد عیان علم ہمچو سخن خیلی بعید است پیداست کہ این نزول جزا را از حصول شرط نا گزیر ست و شرط اکل بود نہ تصور او و بمجرد تصور تحقق اکل بدایۃً مخالف عقل است ہیچ صبی عاقل گمان نتواں برد کہ ہر کہ تصور

ایک دن حضرت علی مرتضی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم کے سامنے ایک شخص نے کہا کہ فلاں شخص نے خواب میں دوسرے شخص کی ماں سے زنا کیا ہے، تو حضرت امیر المومنین کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم نے فرمایا کہ اس شخص کو دھوپ میں کھڑا کر کے اس کے سایہ پر کوڑے مارو غرضیکہ ایسی باتیں علم کے مدعی لوگوں سے بعید ہیں، کیونکہ یہ بات ظاہر ہے کہ جزا کے پائے جانے کے لئے شرط کا پایا جانا ضروری ہوتا ہے، جبکہ سوال میں کھانے کی شرط کو ذکر کیا گیا ہے تو کھانا

---

۱ اصول الشاشی وفصول الحواشی قبیل فصل فی الامر المطبع المحمدی پشاور ص ۲۰۰ Page of 688 576

Fatawa Razawiya Volume Thirteen 13

(Right Column): ...it will be a condition, not the concept of a condition. Just by imagining eating, eating does not take place; every sensible child knows this, and such a thing is obviously against reason that if someone imagines eating, it would become real eating. If it were so, then poverty and starvation would vanish from the world, and this wisdom of disparity in sustenance, God forbid, would vanish, which Allah the Almighty described as: "If Allah were to enlarge the provision for His servants, they would surely rebel in the earth, but He sends it down in measure as He wills." And what was quoted from the marginal notes of Usul al-Shashi means that the verb 'akaltu' (I ate) requires food so that the thing related to the oath of the oath-taker can be known, because eating is a transitive verb, and no transitive verb can be found without a direct object, whereas here the direct object of eating is food. So if eating could be conceived without food, then the oath would be broken [by mere thought]. Thus, when eating cannot be conceived without food, the oath will also not be broken without food. The meaning intended by the mentioned person is wrong and void, and intending it is nothing short of madness. We ask Allah the Almighty for forgiveness and well-being. And there is no power and no strength except in Allah, the Most High, the Most Great. And Allah knows best. (T)

(Left Column): Eating means eating in reality. If it were otherwise, poverty and starvation would have vanished from the world, and the divine wisdom that lies in the variation of sustenance—which is: "If Allah were to enlarge the provision for His servants, they would surely rebel in the earth, but He sends it down in measure as He wills"—would, God forbid, fall apart. And that which is quoted from the marginal notes of Usul al-Shashi means that in (akaltu), the requirement of food is for the purpose of fulfilling the object of the oath because eating is a transitive verb, and a transitive verb does not take form without a direct object. Here, the direct object is food. So if eating could take form without food, perjury would occur without it. Since it is not so, it is not so. Here, taking it in a false sense is a degree of madness. We ask Allah for forgiveness and well-being. And there is no power and no strength except in Allah, the Most High, the Most Great. And Allah Almighty knows best.

Problem 218: From Madrasa Ismail Sahib, from place Pakasun, country Mewar, Mohalla Mominan, 16 Safar 1336 AH. A few people said inside a mosque that whoever takes money for a daughter or eats at the debtor's place, he should turn away from the Kalima Sharif and the Quran. They even wrote a document for it, but

they tore up that document and started doing the same things. What is the ruling for them? Please state the ruling, and you will be rewarded.

---

1. The Holy Quran 42/27. Page 577 of 688

(दायां कॉलम): ...शर्त होगी न कि कल्पना शर्त होगी। खाने की महज़ कल्पना कर लेने से खाना सिद्ध नहीं होता, यह बात हर बुद्धिमान बच्चा भी जानता है और ऐसा होना स्पष्ट रूप से बुद्धि के विरुद्ध है कि यदि कोई खाने की कल्पना करे तो वह वास्तविक भोजन बन जाए। यदि ऐसा ही होता तो फिर दुनिया से गरीबी और भुखमरी खत्म हो जाती, और जीविका (रिज़्क) में असमानता की यह हिकमत, अल्लाह न करे, खत्म हो जाती जिसका वर्णन अल्लाह तआला ने इस प्रकार किया है: "यदि अल्लाह अपने दासों के लिए जीविका विस्तृत कर देता तो वे धरती में विद्रोह कर देते, परन्तु वह जितनी चाहता है, उतनी ही उतारता है।" और उसूल-ए-शाशी के हाशिए से जो उद्धृत किया गया है उसका अर्थ यह है कि 'अकलतु' (मैंने खाया) की क्रिया भोजन की अपेक्षा रखती है ताकि शपथ लेने वाले की शपथ से संबंधित चीज़ ज्ञात हो सके, क्योंकि 'अकल' (खाना) एक सकर्मक क्रिया (transitive verb) है और कोई भी सकर्मक क्रिया कर्म (object) के बिना नहीं पाई जा सकती, जबकि यहाँ खाने का कर्म भोजन है। यहाँ तक कि यदि भोजन के बिना खाने की कल्पना की जा सके तो शपथ टूट जाए। तो जब भोजन के बिना खाना कल्पनीय नहीं है, तो भोजन के बिना शपथ भी नहीं टूटेगी। यहाँ उल्लेखित व्यक्ति ने जो अर्थ लिया है वह गलत और निराधार है, और ऐसा अर्थ लेना पागलपन से कम नहीं है। हम अल्लाह तआला से क्षमा और कुशलता की प्रार्थना करते हैं। और कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है सिवाय अल्लाह के, जो अत्यंत उच्च और महान है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

(बायां कॉलम): खाना वास्तविकता में खाना ही होता है। यदि ऐसा होता, तो दुनिया से गरीबी और भुखमरी समाप्त हो जाती, और ईश्वरीय बुद्धिमत्ता जो जीविका में अंतर पर आधारित है—जो कि है: "यदि अल्लाह अपने दासों के लिए जीविका विस्तृत कर देता तो वे धरती में विद्रोह कर देते, परन्तु वह जितनी चाहता है, उतनी ही उतारता है"—अल्लाह न करे, बिखर जाती। और जो उसूल-ए-शाशी के हाशिए से उद्धृत किया गया है, उसका अर्थ यह है कि (अकलतु) में भोजन की आवश्यकता शपथ की वस्तु को प्राप्त करने के उद्देश्य से है क्योंकि 'अकल' एक सकर्मक क्रिया है, और एक सकर्मक क्रिया बिना कर्म के रूप नहीं लेती। यहाँ कर्म भोजन है। इसलिए यदि भोजन के बिना खाना संभव होता, तो उसके बिना शपथ-भंग (परजुरी) हो जाता। चूँकि ऐसा नहीं है, इसलिए ऐसा नहीं है। यहाँ इसे असत्य अर्थ में लेना पागलपन की एक श्रेणी है। हम अल्लाह से क्षमा और कुशलता की प्रार्थना करते हैं। और कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है सिवाय अल्लाह के, जो अत्यंत उच्च और महान है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 218: मदरसा इस्माइल साहब की ओर से, स्थान पकासुन, मेवाड़, मोहल्ला मोमिनान, 16 सफ़र 1336 हिजरी। कुछ लोगों ने मस्जिद के भीतर कहा कि जो कोई बेटी के बदले पैसा ले या कर्जदार के घर खाना खाए, वह कलमा शरीफ और कुरान से फिर जाए। उन्होंने इसके लिए एक कागज़ भी लिखा, लेकिन उन्होंने उस कागज़ को फाड़ दिया और वही काम करने लगे। उनके लिए क्या हुक्म है? बयान फरमाएं ताकि आपको पुण्य मिले।

---

1. अल-कुरान अल-करीम 27/42 पेज 577 का 688

(دایاں کالم): شرط ہوگا نہ کہ تصور شرط ہوگا، کھانے کے محض تصور کرلینے سے کھانا متحقق نہیں ہوتا، یہ بات ہر عقلمند بچہ بھی جانتا ہے اور ایسا ہونا بداہتۃً عقل کے خلاف ہے کہ کوئی کھانے کا تصور کرے تو حقیقی کھانا ہو جائے گا۔ اگر ایسا ہی ہو تو پھر دنیا سے فقر وفاقہ ختم ہو جائے، اور رزق میں تفاوت کی یہ حکمت معاذ اللہ ختم ہو جائے جس کو اللہ تعالٰی نے یوں بیان فرمایا، اگر اللہ تعالٰی سب کے لئے رزق کشادہ کردے تو لوگ زمین میں بغاوت کردیں لیکن وہ بقدر مشیت رزق اتارتا ہے۔ اور اصول شاشی کے حاشیہ سے جو نقل کیا گیا اس کا معنی یہ ہے اکلت (میں کھاؤں) کا فعل طعام کا مقتضی ہے تاکہ اس قسم والے کی قسم سے متعلق چیز معلوم ہو سکے کیونکہ اکل (کھانا) متعدی فعل اور کوئی متعدی فعل، مفعول بہ کے بغیر نہیں پایا جاسکتا جبکہ یہاں کھانے کا مفعول بہ طعام ہے حتٰی کہ اگر کھانا بغیر طعام متصور ہو سکے تو پھر قسم ٹوٹ جائے، تو جب کھانا بغیر طعام متصور نہیں ہوسکتا تو طعام کے بغیر قسم بھی نہ ٹوٹے گی۔ یہاں پر شخص مذکور نے جو معنی مراد لیا ہے۔ وہ غلط اور باطل ہے اور اس کو مراد لینا جنون سے کم نہیں ہے، ہم اللہ تعالٰی سے معافی اور عافیت کا سوال کرتے ہیں، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

(بایاں کالم): خوردن کرد حقیقہ خورد و اگر چناں بودے فقر و فاقہ از جہاں برخاستے وحکمت الہیہ کہ باختلاف لزوم در رزق ست کہ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلٰكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَا يَشَاءُ ۱ معاذ اللہ از ہم پاشیدے و آنکہ از حاشیہ اصول شاشی منقول شد معنیش آنست کہ در (اکلت) اقتضائے طعام از جہت تحصیل محلوف علیہ ست زیرا کہ اکل فعل متعدی ست و فعل متعدی بے مفعول بہ صورت نہ بند و اینجا مفعول بہ طعام ست تا آنکہ اگر اکل بے طعام صورت بستے حنث

بے او حاصل شدے واذ لیس فلیس اینجا بر معنی باطل حمل کردن در چه مرتبہ از جنون ست نسأل اللہ العفو و العافیة ولا حول ولا قوة الا باللہ العلی العظیم، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۸: از مدرا اسمعیل صاحب از مقام پکا سن ملک میواڑ محلہ مومناں ۱۶ صفر ۱۳۳۶ھ چند شخص نے مسجد کے اندر کہا کہ جو شخص بیٹی پر روپیہ لے یا قرضدار کے یہاں کھانا کھائے تو کلمہ شریف اور قرآن سے پھرے تو اس کا کاغذ بھی لکھا مگر وہ کاغذ بھی پھاڑ ڈالا اور وہی کام کرنے لگ گئے ان کے واسطے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

---

۱ القرآن الکریم ۲۷/۴۲ صفحہ 577 از 688

The Answer: Taking money for a daughter is impermissible, and eating at the house of a debtor, if done under the pressure of the debt, is also impermissible. Those who had made an agreement that whoever does so would turn away from the Kalima Sharif and the Holy Quran, and then went back on this agreement and tore up that paper—among them, anyone who believed that doing so would indeed cause them to turn away from the Holy Quran and Kalima Tayyiba, and did it with this understanding, has become a disbeliever (Kafir) and his wife is out of his marriage contract. He must embrace Islam anew. After that, if the woman agrees, he should remarry her; otherwise, Muslims must absolutely sever ties with him. Greeting him, speaking to him, or participating in his life or death events is all prohibited. However, those who knew that doing so would not cause them to turn away from the Holy Quran or Kalima Tayyiba are sinners, and the expiation (Kaffarah) for the oath is mandatory upon them. This is based on the statement: 'He is free from Allah and His Messenger if he does such and such' (just as one might say, 'If I do this, I would be free from Allah Almighty and the Messenger of Allah'). T. And Allah Almighty knows best.

Problem 216 to 221: From Maulvi Zia-ul-Islam Sahib, Imam of the Jamia Masjid, Agra, 15th Rabi al-Awwal 1335 AH.

Upholder of the banner of Sharia and promoter of the rules of piety, may his greatness endure. After the greeting of Islam, please provide your enlightened opinion; kindly send the answer very soon as it is urgently needed: (1) A group collectively took an oath, placing their hands on the Holy Quran, that we all will not let our women attend funerals, Tazia processions, weddings, or other customs contrary to Sharia. And if anyone violates this, they will not maintain relations regarding eating, drinking, or exchange of shares etc., nor will they participate in his funeral. This oath was taken with the Holy Quran in hand. After two days, a wedding took place, and some people collectively sent their women themselves, while some others adhered to the oath. Now, what crime are those who broke this covenant guilty of according to Sharia? (2) Can those who broke their promise after taking an oath be judges (arbitrators) in any matter according to Sharia or not, and is their testimony valid or not? (3) Will those who mock and taunt the ones standing by their oath be held accountable for it or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: (1) That wedding to which those people sent their women after the oath, if it consisted of customs contrary to Sharia, then...

Page 578 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 | पेज 13

अल-जवाब (उत्तर): बेटी पर रुपया लेना नाजायज़ है और कर्ज़दार के यहाँ खाना खाना अगर कर्ज़ के दबाव से है तो वह भी नाजायज़ है। और जिन्होंने यह इक़रार किया था कि जो ऐसा करे वह कलमा शरीफ़ और क़ुरान शरीफ़ से फिर जाए, फिर उस इक़रार से फिर गए और वह कागज़ फाड़ डाला, उनमें से जिसके ख़्याल में यह हो कि वाक़ई ऐसा करने से क़ुरान मजीद और कलमा तय्यबा से फिर जाएगा और यह समझकर ऐसा किया वह काफ़िर हो गया और उसकी औरत निकाह से निकल गई, वह नए सिरे से इस्लाम लाए। इसके बाद औरत अगर राज़ी हो तो उससे दोबारा निकाह करे वरना मुसलमान उसे क़तई छोड़ दें, उससे सलाम-ओ-कलाम और उसकी मौत-ओ-हयात में शिरकत सब हराम है। और जो जानता था कि ऐसा करने से क़ुरान मजीद या कलमा तय्यबा से फिरना न होगा वह गुनहगार हुआ, उस पर क़सम का कफ़्फ़ारा वाजिब है क्योंकि उसका यह कहना कि 'अगर ऐसा करूँ तो अल्लाह और उसके रसूल से बरी (अलग) हो जाऊँ। त। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 216 से 221: मौलवी ज़िया-उल-इस्लाम साहब, इमाम जामे मस्जिद आगरा की ओर से, 15 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1335 हिजरी।

शरीयत के अलमबरदार और दीनी अहकाम के प्रचारक, ख़ुदा आपकी इज़्ज़त क़ायम रखे। सलामी सुन्नत के बाद अर्ज़ है कि बराह-ए-करम अपनी रोशन राय से जल्द नवाज़ें, इसकी सख़्त ज़रूरत है: (1) एक जमात ने मुत्तफ़िक़ होकर और क़ुरान शरीफ़ हाथों पर रखकर क़सम खाई कि हम सब आदमी अपनी मस्तूरात (औरतों) को क़ब्रों, ताजिया, शादी वग़ैरह के ख़िलाफ़-ए-शरअ रस्मों में नहीं जाने देंगे। और अगर कोई इसके ख़िलाफ़ करेगा, तो उसके साथ खाने-पीने का ताल्लुक़ और हिस्सा वग़ैरह का लेन-देन नहीं करेंगे, और न उसके जनाज़े में शरीक होंगे। यह क़सम क़ुरान शरीफ़ हाथों में लेकर खाई गई। दो दिन बाद एक शादी हुई तो कुछ लोगों ने मुत्तफ़िक़ होकर अपनी औरतों को ख़ुद भेज दिया और कुछ लोगों ने क़सम की पाबंदी की। अब जिन लोगों ने इस अहद (वादे) को तोड़ दिया, वे शरअ की रूह से किस जुर्म के मुस्तहिक़ हैं? (2) यह जो क़सम खाकर वादाख़िलाफ़ी कर गए हैं, वे किसी मामले में हक़म (पंच/न्यायाधीश) शरअ की रूह से हो सकते हैं या नहीं, और उनकी गवाही दुरुस्त है या नहीं? (3) जो लोग अपनी क़सम पर क़ायम हैं, उनकी ये हिक़ारत (निंदा) करते हैं और तानाज़नी करते हैं, क्या वे इसके जवाबदेह होंगे या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

अल-जवाब: (1) वह शादी जिसमें उन लोगों ने अपनी औरतों को क़सम के बाद भेजा, अगर वह शरअ के ख़िलाफ़ रस्मों पर मुश्तमिल (आधारित) थी, तो...

الجواب: بیٹی پر روپیہ لینا ناجائز ہے اور قرضدار کے یہاں کھانا کھانا اگر قرض کے دباؤ سے ہے تو وہ بھی ناجائز ہے، اور جنہوں نے یہ اقرار کیا تھا کہ جو ایسا کرے وہ کلمہ شریف اور قرآن شریف سے پھرے، پھر اس اقرار سے پھر گئے اور وہ کاغذ پھاڑ ڈالا ان میں سے جس کے خیال میں یہ ہو کہ واقعی ایسا کرنے سے قرآن مجید اور کلمہ طیبہ سے پھر جائے گا اور یہ سمجھ کر ایسا کیا وہ کافر ہو گیا اور اس کی عورت نکاح سے نکل گئی نئے سرے سے اسلام لائے، اسکے بعد عورت اگر راضی ہو تو اس سے دوبارہ نکاح کرے ورنہ مسلمان اسے قطعاً چھوڑ دیں اس سے سلام و کلام اس کی موت و حیات میں شرکت سب حرام، اور جو جانتا تھا کہ ایسا کرنے سے قرآن مجید یا کلمہ طیبہ سے پھرنا نہ ہو گا وہ گنہگار ہوا اس پر قسم کا کفارہ واجب ہے کہ قولہ ھو بریٔ من اللہ و رسولہ ان فعل کذا (جیسا کہ وہ یوں کہے اگر ایسا کروں تو اللہ تعالی اور رسول اللہ سے بری ہو جاؤں۔ ت واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۶ تا ۲۲۱: از مولوی ضیاء الاسلام صاحب پیش امام جامع مسجد آگرہ ۱۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۵ھ

فرازندہ رایت شریعت و مروّج احکام فطوت دام عظمتہ بعد سلام سنت الاسلام کے واضح رائے عالی ہو کہ براہ کرم جواب بہت جلد روانہ فرمائیے گا از حد ضرورت ہے : (۱) ایک جماعت نے متفق ہو کر اور قرآن شریف ہاتھوں پر رکھ کر قسم کھائی کہ ہم سب آدمی اپنی مستورات کو قبریں و تعزیہ و شادی وغیرہ کے خلاف شرع رسوم میں نہ جانے دیں گے اور اگر کوئی اس کے خلاف کرے گا اس کے ساتھ کھانے پینے کا تعلق اور حصہ وغیرہ کا لین دین نہ کریں گے، اور نہ اس کے جنازہ میں شریک ہوں گے، یہ قسم قرآن شریف ہاتھوں میں لے کر کھائی، بعد دوروز کے ایک

شادی ہوئی تو کچھ لوگوں نے متفق ہو کر اپنی عورتوں کو خود بھیج دیا اور کچھ لوگوں نے قسم کی پابندی کی، اب جن لوگوں نے اس عہد کو توڑ دیا وہ لوگ از روئے شرع کس جرم کے مستحق ہیں۔ (۲) یہ جو قسم کھا کر وعدہ خلافی کر گئے ہیں وہ کسی معاملہ میں حکم (پنیچ) از روئے شرع ہو سکتے ہیں یا نہیں، اور گواہی ان کی درست ہے یا نہیں؟ (۳) جو لوگ اپنی قسم پر قائم ہیں ان کی یہ حقارت کرتے ہیں اور طعنہ زن ہوتے ہیں اس کے وہ مواخذہ دار ہوں گے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) وہ شادی جس میں ان لوگوں نے اپنی عورتوں کو بعد قسم کے بھیجا اگر رسوم خلاف شرع پر مشتمل تھی تو

Two sins have been committed by them: one, for sending their women to such a place, and second, for breaking the oath. "And guard your oaths." (Quran 5:89) and Allah Almighty said: "O you who believe! Save yourselves and your families from a Fire." (Quran 66:6). And guard your oaths. And Allah Almighty said: Save your lives and your family from fire (Translation).

It is obligatory upon them to repent and refrain from such actions in the future, and their testimony should be heard. (2) If those people do not repent, then such persons should neither be made rulers nor should their testimony be heard. (3) They are definitely accountable, and it is a severe matter, rather a Shariah and religious matter. In this, despising those who uphold the covenant of Allah and taunting those who remain steadfast, God forbid, will cause a crack in Islam. And Allah Almighty knows best.

Problem 222: A person, out of anger, said to someone, "Eating or drinking at your house is forbidden (haram) for me," or said, "The water in your pitcher is forbidden for me." What is the ruling in Shariah regarding this?

The Answer: This is an oath. If he eats or drinks at his house, or in the second case, drinks water from his pitcher, he will have to pay the expiation (kaffara) for the oath. Furthermore, if maintaining this results in cutting off ties with a good person, then he should break the oath and pay the expiation. And Allah Almighty knows best.

Problem 223: From Post Office Ramuchakakul, District Chittagong, 9 Jamadi al-Akhira 1336 AH. If a person says, "If I speak to you or come to your house or eat this thing, it is forbidden for me," or simply says, "this is forbidden," will it become forbidden by saying so? If it becomes forbidden, what is the way to be absolved from it?

The Answer: Yes, by way of preference (istihsan), this is a form of oath, and it is an oath of declaring something lawful as forbidden. After saying this, if he speaks to him...

1 Al-Quran Al-Kareem 5/89 2 Al-Quran Al-Kareem 66/6 Page 579 of 688

फ़तावा रज़विया | खंड १३ | पृष्ठ १३

उन पर दोहरा गुनाह हुआ, एक ऐसी जगह अपनी औरतों को भेजने का और दूसरा कसम तोड़ने का। "और अपनी कसमों की हिफाजत करो।" (कुरान ५:८९) और अल्लाह तआला ने फरमाया: "ऐ ईमान वालों! अपने आप को और अपने घर वालों को आग से बचाओ।" (कुरान ६६:६)। और अपनी कसमों की हिफाजत करो। और अल्लाह तआला ने फरमाया: अपनी जानों और घर वालों को आग से बचाओ (अनुवाद)।

उन पर फर्ज़ है कि वे तौबा करें और भविष्य में ऐसी हरकतों से बाज़ रहें और उनकी गवाही सुनी जाए। (२) अगर वे लोग तौबा न करें तो ऐसे लोगों को न तो हाकिम बनाया जाए और न ही उनकी गवाही सुनी जाए। (३) वे निश्चित रूप से जवाबदेह हैं और यह एक गंभीर मामला है, बल्कि शरीअत और दीनी मामला है। इसमें अल्लाह के वादे को निभाने वालों को बुरा समझना और उन पर ताना मारना, अल्लाह की पनाह, इस्लाम में दरार आने का कारण बनेगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला २२२: एक व्यक्ति ने गुस्से में आकर किसी से कहा कि "तुम्हारे घर का खाना-पीना मुझ पर हराम है," या कहा कि "तुम्हारे मटके का पानी हराम है," तो शरीयत-ए-मुकद्दसा में इसका क्या हुक्म है?

जवाब: यह कसम है। अगर वह उसके घर खाएगा-पिएगा या दूसरी सूरत में उसके मटके का पानी पिएगा, तो कसम का कफ़्फ़ारा देना होगा। फिर अगर इससे किसी भले आदमी से रिश्ता टूटता हो, तो चाहिए कि कसम तोड़ दे और कफ़्फ़ारा अदा करे। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला २२३: डाकखाना रामूचकाकुल, जिला चटगाँव, ९ जमादी अल-आखिरा १३३६ हिजरी। कोई व्यक्ति कहे कि "अगर मैं तुमसे बोलूँ या तुम्हारे घर जाऊँ या यह चीज़ खाऊँ तो मेरे हक में हराम है" या सिर्फ यह कहना "हराम है," क्या यह कहने से हराम हो जाएगा? अगर हराम हो जाए, तो इससे बरी होने की क्या सूरत है?

जवाब: हाँ, इस्तिहसान (वरीयता) के आधार पर यह कसम की एक सूरत है और यह हलाल को हराम करार देने की कसम है। यह कहने के बाद अगर उसने बात की...

1 अल-कुरान अल-करीम ५/८९ 2 अल-कुरान अल-करीम ६/६६ पृष्ठ ५७९ का ६८८

ان پر دوہرا گناہ ہوا، ایک ایسی جگہ اپنی عورتوں کو بھیجنے کا دوسرا قسم توڑنے کا۔ وَاحْفَظُوْٓا اَیْمَانَکُمْ ط ۱، وقال اللہ تعالٰی قُوْٓا اَنْفُسَکُمْ وَاَھْلِیْکُمْ نَارًا ۲ اور اپنی قسموں کی حفاظت کرو۔ اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا ہے: اپنی جانوں اور اہل کو آگ سے بچاؤ(ت)

ان پر فرض ہے کہ توبہ کریں اور آئندہ ایسی حرکت سے باز رہیں اور گواہی سنی جائے۔ (۲) اگر وہ لوگ توبہ نہ کریں تو ایسوں کو نہ حاکم بنایا جائے نہ ان کی گواہی سنی جائے۔ (۳) ضرور مواخذہ دار ہیں اور شدید بلکہ معاملہ شرعی ودینی ہے اس میں عہد الہی کو قائم رکھنے والوں کو برا جاننا اور قائم رہنے پر طعنہ کرنا معاذ اللہ اسلام میں فرق آنے کا باعث ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۲: ایک شخص نے کسی سے غصہ میں آکر کہا کہ تیرے مکان کا کھانا پینا مجھ پر حرام ہے، یا کہا کہ تیرے مٹکے کا پانی حرام ہے تو شرع شریف میں ان کا کیا حکم ہے؟

الجواب: یہ قسم ہے اگر اس کے گھر کھائے پئے گا یا دوسری صورت میں اس کے مٹکے کا پانی پئے گا تو قسم کا کفارہ دینا آئے گا پھر اگر اس سے ترک علاقہ خیر ہو تو چاہئے کہ قسم توڑ دے اور کفارہ ادا کرے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۳: از ڈاکخانہ رامو چکا کول ضلع چٹاکانگ ۹ جمادی الآخرہ ۱۳۳۶ھ کوئی شخص کہے کہ اگر تم سے بولوں یا تمہارے مکان جاؤں یا یہ چیز کھاؤں تو میرے حق میں حرام ہے یا صرف یہ کہنا حرام ہے، کیا یہ کہنے سے حرام ہو جائے گا، اگر حرام ہو تو اس سے بری الذمہ ہونے کی کیا صورت ہے؟

الجواب: ہاں استحساناً یہ صورت حلف کی ہے اور یمین تحریم حلال ہی ہے اس کہنے کے بعد اگر اس سے بولا یا

Fatawa Rizvia Volume 13, [Page] 113

...went home, or if he ate that thing, then the oath will be broken, and expiation (kaffara) must be given.

[Table Content] [Left Column - Arabic]: This is Juristic Preference (Istihsan), as mentioned in 'Sh' [Shami] from 'An-Nahr' and 'Al-Fath' from 'Al-Muntaqa'. What is in 'Al-Khulasa', then 'Al-Bahr', then 'Ad-Durr', is analogical reasoning (Qiyas), and precedence is given to Juristic Preference (Istihsan). And Allah Almighty knows best.

[Right Column - Urdu]: This is Juristic Preference (Istihsan) as quoted in Fatawa Shami via Nahr and Fath from Muntaqa, and what is in Khulasa, then Bahr, and then Durr-e-Mukhtar is Qiyas (analogy), whereas Istihsan has precedence. And Allah Almighty knows best. (T)

[Watermark]: www.dawateislami.net, I.T. Majlis of Dawatelslami Page 580 of 688

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 13, [पृष्ठ] 113

...घर गया, या अगर उसने वह चीज़ खाई तो क़सम टूट जाएगी, कफ़्फ़ारा देना होगा।

[तालिका सामग्री] [बायाँ स्तंभ - अरबी]: हज़ा हुवल इस्तिहसान कमा फ़ी 'श' 'अनिन नहर वल फ़तहि 'अनिल मुनतक़ा व मा फ़िल ख़ुलासा फ़ल बहरू फ़द्दरु क़ियासुन वत्तक़्दीमु लिल इस्तिहसान, वल्लाहु तआला आलम। (यह विधिक वरीयता (इस्तिहसान) है जैसा कि 'श' [शामी] में 'नहर' और 'फ़तह' के माध्यम से 'मुनतक़ा' से उद्धृत है। जो 'ख़ुलासा' में, फिर 'बहर' और फिर 'दुर्र' में है वह 'क़ियास' (तर्क) है, और इस्तिहसान को वरीयता दी जाती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।)

[दायाँ स्तंभ - उर्दू]: यह इस्तिहसान है जैसा कि फ़तावा शामी में 'नहर' और 'फ़तह' के माध्यम से 'मुनतक़ा' से उद्धृत है और जो 'ख़ुलासा' में, फिर 'बहर' और फिर 'दुर्रे मुख़्तार' में है वह 'क़ियास' है जबकि इस्तिहसान को प्राथमिकता प्राप्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[वॉटरमार्क]: www.dawateislami.net, आई.टी. मज्लिस ए दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 580/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۱۳

گھر گیا، یا وہ چیز کھائی تو قسم ٹوٹ جائے گی، کفارہ دینا ہوگا،

[جدول] [بایاں کالم - عربی]: هذا هو الاستحسان كما في ش عن النهر والفتح عن المنتقى وما في الخلاصة فالبحر فالدر قياس والتقديم للاستحسان ، والله تعالٰی اعلم۔

[دایاں کالم - اردو]: یہ استحسان ہے جیسا کہ فتاوی شامی میں نہر اور فتح کے واسطہ سے منتقی سے منقول ہے اور جو خلاصہ میں پھر بحر اور پھر در مختار میں ہے وہ قیاس ہے جبکہ استحسان کو تقدم حاصل ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

[واٹر مارک]: www.dawateislami.net، آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ 580 از 688

Fatawa Razviya Volume Thirteen Page 13

Chapter of Vows (Statement on Nazr)

Problem 224: From Syed Parwarish Ali Sahib, Mutawalli Tola Sahaswan, District Badaun. 10 Rabi al-Akhir 1332 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A person's cow gave birth, and they said, "After raising this heifer, we will give it to Nanhi (a small child)." Now it is a year old, very fine and desirable. Upon seeing it, they spontaneously said, "We will make a vow (Nazr) for Allah." They forgot about giving it to Nanhi. Has a vow (Nazr) been established or not? Buyers are offering seven rupees, estimating the cow will give ten to twelve seers of milk. Should its exchange be used for sacrifice? If the vow is established, is an exchange permissible or not? If permissible, how much should it be?

The Answer: Respected Maulana Syed Sahib, may your excellence endure, peace be upon you and the mercy of Allah the Almighty and His blessings. By these words, "We will make a vow for Allah," a formal vow (Nazr) is not established; it was merely a promise. And saying "we will give to Nanhi after raising it" also did not constitute a gift (Hiba); it was also an expression of intent. However, one should never go back on a promise made to Allah Almighty; the Great Quran contains severe warnings against this. It is best to gift it to some poor person and then buy it back for one or two rupees and give it to Nanhi so that both promises are fulfilled. And Allah Almighty knows best. The word 'Nazr' as mentioned is not specific to sacrifice. Yes, if one makes a vow that they will perform a sacrifice in the name of Allah Almighty, then the sacrifice itself becomes obligatory, and an exchange is impossible. And Allah Almighty knows best.

Page 581 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह पृष्ठ १३

बाब-उल-नज़्र (नज़्र का बयान - मन्नत का बयान)

मसला २२४: सैयद परवरिश अली साहब, मुतवल्ली टोला सहसवान, जिला बदायूँ। १० रबी-उल-आख़िर १३३२ हिजरी।

उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख्स की गाय ने बछिया दी तो उन्होंने कहा कि यह बछिया पालकर 'नन्ही' को देंगे। अब वह साल भर की हो गई, बहुत अच्छी और आकर्षक है। उसे देखकर सहज रूप से कहा कि "अल्लाह की नज़्र करेंगे"। नन्ही को देना याद न रहा। क्या नज़्र (मन्नत) हो गई या नहीं? खरीदार पहले सात रुपये कीमत तय करते हैं कि यह गाय दस-बारह सेर दूध की होगी। इसका बदल क़ुरबानी कीजिये। अगर नज़्र हो गई तो बदल जायज़ है या नहीं? अगर जायज़ है तो कितना होगा?

अल-जवाब: हज़रत मौलाना सैयद साहब दामत अफ़ज़ालुकुम, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि तआला व बरकातुहू। इन शब्दों से कि "अल्लाह की नज़्र करेंगे", नज़्र नहीं हुई, सिर्फ़ एक वादा हुआ। और वह कहना कि "पालकर नन्ही को देंगे", इससे भी हिबा (दान) नहीं हुआ, यह भी सिर्फ़ एक इरादे का इज़हार था। मगर अल्लाह अज़्ज़वजल से जो वादा किया, उससे फिरना भी हरगिज़ नहीं चाहिए। क़ुरान-ए-अज़ीम में इस पर सख़्त चेतावनी (वईद) आई है। बेहतर यह है कि किसी फ़कीर को हिबा (दान) करके एक-दो रुपये में उससे ख़रीद कर नन्ही को दे दी जाए ताकि दोनों वादे पूरे हो जाएँ। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। 'नज़्र' शब्द जैसा कि ज़िक्र किया गया, क़ुरबानी के लिए ख़ास नहीं है। हाँ, अगर यह नज़्र करे कि अल्लाह अज़्ज़वजल के नाम पर क़ुरबानी करेगा, तो क़ुरबानी ही वाजिब है, उसका बदल मुमकिन नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

पृष्ठ ५८१ / ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

باب النذر (نذر کا بیان)

مسئلہ ۲۲۴: سید پرورش علی صاحب از متولی ٹولہ سہسوان ضلع بدایوں ۱۰ ربیع الآخر ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کی گائے جنی تو انہوں نے کہا کہ یہ بچھیا پال کر ننی کو دینگے، اب وہ سال بھر کی ہوئی، بہت خوب و مرغوب، دیکھ کر بے ساختہ کہا کہ اللہ کی نذر کریں گے، ننی کو دینا یاد نہ رہا، نذر ہوئی یا نہیں؟ خریدار پہلے سات روپے قیمت تجویز کرتے ہیں کہ یہ گائے دس بارہ سیر دودھ کی ہوگی، اس کا بدل قربانی کیجیو، اگر نذر ہو گئی تو بدل جائز ہے یا نہیں؟ اگر جائز ہے تو کیا کتنا ہوگا؟

الجواب: حضرت مولانا سید صاحب دامت افضالکم ، السلام علیکم ورحمۃ اللہ تعالیٰ وبرکاتہ۔ اس لفظ سے کہ "اللہ کی نذر کریں گے" نذر نہ ہوئی محض وعدہ ہوا، اور وہ کہنا کہ "پال کر ننی کو دیں گے" اس سے بھی ہبہ نہ ہوا یہ بھی ایک ارادہ کا اظہار تھا، مگر اللہ عزوجل سے جو وعدہ کیا اس سے پھرنا بھی ہرگز نہ چاہئے ، قرآن عظیم میں اس پر سخت وعید فرمائی ہے، افضل یہ ہے کہ کسی فقیر کو ہبہ کر کے دو ایک روپے میں اس سے خرید کر ننی کو دے دیجائے کہ دونوں وعدے پورے ہوجائیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔ لفظ نذر جس طرح مذکور ہوا قربانی کے لئے خاص نہیں، ہاں اگر یہ نذر کرے کہ اللہ عزوجل کے نام پر قربانی کردے گا تو قربانی ہی واجب ہے بدل نا ممکن ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiya Volume 13 13

Problem 225: Asked by Abdul Karim Hashim, Lakh Kothi, Badampur, Post Office Rang Deeth, District Manpur. Thursday, 7th Rabi-ul-Awwal 1337 AH.

Respected Maulana, the most excellent of scholars and unique of his age, may your shadow be long. After offering respects and greetings with great honor and the traditional Islamic salutation, it is submitted to your blessed presence that this humble servant had made a firm intention from the day of starting business in his Lakh Kothi factory that whatever profit occurs in the said factory, one out of sixteen parts would be given as a blessed offering (Niaz) in the name of our master and leader, the sustainer of the world, Ghaus-ul-Thaqalayn, Hazrat Muhyuddin Abdul Qadir Jilani (may Allah have mercy on his resting place and sanctify his soul). From the very first day, a separate account has been maintained in his noble and grand name. Now, a few years have passed, and a significant amount from the profits has accumulated. I trouble you with the question of which religious causes this money can be spent on. From the beginning until today, no specific intention was made as to where this profit should be used. The crux of the issue is that the local mosque is in disrepair and lying deserted, and the Muslims here are very poor, making its repair extremely difficult. In such a case, can the accumulated profit money be spent on the mosque's expenses? What is the consensus of the religious scholars in this matter? Furthermore, on what other causes can it be spent? Please honor me with a reply by return post. That is all.

The Answer: May Allah Almighty reward those who made the intention; it is a very commendable intention. It can be spent on any religious purpose. Reviving a deserted mosque is an extremely important task, and spending on it takes priority. And Allah Almighty knows best.

Problem 226: Sent by Muhammad Sajid Ali Shadhili Sylheti, District Tripura. 15th Rabi-ul-Awwal Sharif 1335 AH.

What do you say (may your grace continue) regarding someone who, out of a desire to achieve a goal—whether for the return of an absent person, for the blessing of a son, for a patient's recovery, for religious or worldly needs, or for success in important tasks—says: "May Allah Almighty grant my goal, and for the sake of Allah, I vow (Nazr) so much money, or a chandelier, or a lamp, or a carpet, or a prayer mat, or food, or a sacrifice as an offering for the sake of Allah specifically for the Mosque of Makkah the Great and Madinah the Radiant, and for the scholars, the poor, and

the needy of Makkah the Blessed and Madinah the Radiant"? Is this valid or not? If the goal is achieved, is it mandatory to send the materials for such a vow through a trustworthy person? If, instead of sending them to Makkah and Madinah, they are given to or used to feed scholars and the poor of a country other than Makkah and Madinah, is it valid or not? And will it be discharged from the responsibility of the one who made the vow...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 13

मसला 225: प्रेषक: अब्दुल करीम हाशिम, लाख कोठी, बदामपुर, डाकखाना रांग डीठ, जिला मानपुर। गुरुवार, 7 रबी-उल-अव्वल 1337 हिजरी।

अफ़ज़लुल फ़ुज़ला, ज़माने के बेमिसाल आलिम, जनाब मौलाना साहब (अल्लाह उनकी छाया बनाए रखे), आदाब और सलाम के बाद अर्ज़ है कि फ़िदवी (दास) ने अपनी लाख कोठी कारखाने में व्यवसाय की शुरुआत के दिन से यह पक्का इरादा कर लिया था कि उक्त कारखाने में जो भी लाभ होगा, उसके सोलह हिस्सों में से एक हिस्सा खास हमारे आका और मौला, दस्तगीर ग़ौस-उल-सक़लैन जनाब मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी (अल्लाह उनकी कब्र पर रहमत फरमाए और उनकी रूह को पवित्र रखे) के नाम पर बरकत के तौर पर नियाज़ किया जाएगा। शुरुआत से ही हिसाब-किताब में एक अलग खाता उनके पाक नाम से रखा गया है। अब इसे कुछ साल बीत चुके हैं और मुनाफे की रकम जमा हो गई है। पूछना यह है कि वह रकम किन-किन धार्मिक कार्यों में खर्च की जा सकती है? शुरुआत से आज तक कोई खास इरादा नहीं किया गया था कि वह मुनाफ़ा फलां नेक काम में खर्च किया जाएगा। मसले का सार यह है कि यहाँ की मस्जिद मरम्मत के बिना वीरान पड़ी है और यहाँ के मुसलमान बहुत गरीब हैं, जिससे उसकी मरम्मत होना बहुत कठिन है। ऐसी स्थिति में क्या मुनाफे की रकम मस्जिद के खर्चों में लगाई जा सकती है? इस बारे में धर्मगुरुओं (उलेमा) की क्या राय है? इसके अलावा उसे किन-किन कार्यों में खर्च किया जा सकता है? कृपया डाक द्वारा उत्तर देकर अनुग्रहित करें।

जवाब: नीयत करने वालों को अल्लाह तआला इसका नेक फल दे, यह बहुत प्रशंसनीय नीयत है और इसे किसी भी धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। वीरान मस्जिद को आबाद करना अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, इसमें खर्च करना प्राथमिकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 226: प्रेषक: मुहम्मद साजिद अली शाज़ली सिलहटी, जिला त्रिपुरा। 15 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1335 हिजरी।

आपका क्या कहना है (आपका फ़ैज़ जारी रहे) उस व्यक्ति के बारे में जो अपनी मुराद पूरी करने के शौक़ में—चाहे किसी गायब व्यक्ति की वापसी के लिए, या औलाद के लिए, या किसी मरीज़ की शिफ़ा के लिए, या धार्मिक और सांसारिक ज़रूरतों के लिए, या महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता के लिए कहता है: "अल्लाह तआला मेरा मक़सद पूरा करे, तो अल्लाह के वास्ते मैं इतनी रकम, या झाड़-

फ़ानूस, या चिराग़, या दरी, या मुसल्ला, या खाना, या क़ुर्बानी 'नज़्र लिल्लाह फ़ी सबीलिल्लाह' (अल्लाह की राह में मन्नत) मानता हूँ, विशेष रूप से मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की मस्जिदों के लिए, और मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के विद्वानों, फकीरों और गरीबों के लिए।" क्या यह सही है या नहीं? अगर मकसद पूरा हो जाए, तो क्या ऐसी मन्नत का सामान किसी भरोसेमंद व्यक्ति के ज़रिए वहाँ भेजना ज़रूरी है या नहीं? अगर मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा न भेजकर किसी और देश के विद्वानों और फकीरों को दे दिया जाए या खिला दिया जाए, तो यह सही है या नहीं? और क्या मन्नत मानने वाले की ज़िम्मेदारी पूरी हो जाएगी...

पेज 582 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

مسئلہ ۲۲۵: مسئولہ عبد الکریم ہاشم لاکھ کوٹھی مقام بدامپور ڈاک خانہ رانگ ڈیٹھ ضلع مان پور روز پنجشنبہ تاریخ ۷ ربیع الاول ۱۳۳۷ھ افضل الفضلاء عالم یگانہ روزگار جناب مولانا صاحب مدظلہ العالی، بعد ادائے آداب و تسلیمات بصد تعظیم و تکریم و ہدیہ سلام مسنون الاسلام معروض خدمت سراپا برکت ہے کہ فدوی نے اپنے کارخانہ لاکھ کوٹھی میں یوم ابتدا کاروبار سے مصمم ارادہ کرلیا تھا کہ کارخانہ مذکور میں جو کچھ نفع ہوگا اس کے سولہ حصوں میں ایک حصہ خاص جناب سیدنا و مولانا پیر دستگیر غوث الثقلین جناب محی الدین عبد القادر جیلانی صاحب رحمۃ اللہ علیہ مرقدہ و قدس اللہ سرہ کا بطور تبرک نیاز کیا تھا اور ہے اور یوم ابتدا کاروبار سے ہی کہ جمع خرچ میں بھی ایک کھتہ وہ جدا بنام نامی اسم گرامی محب صمدان جناب سید محی الدین عبد القادر صاحب جیلانی قدس اللہ سرہ کے نام پاک سے موسوم کیا گیا ہے اور اب زمانہ اس کا چند سال کا ہوتا ہے کہ روپیہ نفع کا بھی جمع ہو گیا ہے تصدیع دہ خدمت کہ وہ روپیہ کن کن مصارف دینی میں خرچ ہوسکتا ہے یوم ابتدا کاروبار سے آج تک کوئی خاص ارادہ نہیں کیا گیا ہے اور نہ تھا کہ وہ نفع روپیہ فلاں کار خیر میں خرچ کیا جائے گا، اب خلاصہ دریافت مسئلہ یہ ہے کہ یہاں کی مسجد بے مرمت اور ویران پڑی ہے اور مسلمان یہاں کے بہت غریب ہیں جس سے مرمت کا ہونا بہت دشوار ہے تو ایسی حالت میں جو روپیہ نفع کا ہے اس کو مصارف مسجد میں خرچ کیا جاسکتا ہے کہ نہیں، ایسی حالت میں علمائے دین کا کیا اتفاق ہے اور علاوہ اس کے کن کن مصارف میں وہ خرچ کیا جاسکتا ہے بواپسی ڈاک جواب سے سرفراز فرمادیں، فقط۔

الجواب: نیت کرنے والوں کو مولیٰ تعالیٰ جزائے خیر دے، بہت محمود نیت ہے اور ہر دینی مصرف میں اسے صرف کرسکتے ہیں مسجد ویران کی آبادی نہایت اہم کام ہے اس میں صرف کرنا مقدم ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۶: مرسلہ محمد ساجد علی شاذلی سلہٹی ضلع تیر پورہ ۱۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۵ھ ماقولکم دام فیضکم اس میں بشوق حصول مطلوب غائب حاضر ہونے یا اولاد واسطے فرزند کے یا مریض واسطے شفا کے و حاجات دینی و دنیوی کے واسطے یا فتح مہمات کے واسطے اللہ تعالیٰ میری مقصود حاصل کرے، پس واسطے اللہ تعالیٰ اتنا روپیہ یا قندیل یا بتی سراج کی یا شطرنجی یا مصلی یا طعام یا قربانی نذر للہ فی سبیل اللہ ماننا معین کرکے واسطے مسجد مکہ معظمہ اور مدینہ منورہ کے، اور علماء و فقراء اور مساکین کے واسطے اہل مکہ مکرمہ اور مدینہ منورہ کے درست ہے یا نہیں، اگر مقصود حاصل ہووے پس ایسی نذر کے اسباب ارسال کرنا امانت دار کی معرفت سے ضرور ہے یا نہیں، اگر مکہ مکرمہ اور مدینہ منورہ ارسال نہ کرکے غیر ملک مکہ مدینہ منورہ کے علماء فقراء کو دیوے کھلاوے درست ہے یا نہیں، اور ناذر کے ذمہ سے ساقط

...will it be so or not? If someone prevents this with such excuses, saying that it gets stolen on the way and sending it is not necessary, and some trustees commit breach of trust—is it correct to stop the consecrated (Nazr) wealth based on such possibilities and assumptions? And if someone compares Makkah al-Mukarramah and Madinah al-Munawwarah to a haunted house or a temple of Kali, what is the ruling on that? Is it disrespectful and impolite speech or not? Explain and be rewarded.

The Answer: That vow (Nazr) is undoubtedly permissible, and fulfilling the vow is obligatory. Allah Almighty said: "and fulfill their vows"[1] (Allah Almighty has commanded: fulfill your vows. - Translator). And when a specific mosque among the pure mosques of the Two Holy Sanctuaries is designated in the vow, it is more appropriate to send it there if it is easy. If it is spent in local mosques, there is no harm either, as the specification of location is not considered essential in a vow. Saying those words regarding the two noble cities is certainly insolence, insult, and words of disbelief. And he who prevents the fulfillment of a vow is a "hinderer of good" (Mannā'in lil-khayr). And anyone who calls such a vower a sinner is himself a sinner. Allah Almighty knows best.

Problem 227: From Noor Muhammad, State of Bahawalpur, Sadiqabad Station, Post Office Akhtar Pur, District Khan Pur, 3rd Rabi-ul-Akhir 1335 AH.

If a petition is made to the court of the Gracious Lord that "if I am blessed with a son, or a disease is cured, or a debt is paid, I will give this much charity in the path of Allah for the souls of the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) or Ghaus-e-Azam or any saint of Allah"—is this vow permissible or not? That is all. Peace be upon you.

The Answer: It is undoubtedly permissible and mandatory to perform it. Allah Almighty said: "and fulfill their vows"[2] (Allah Almighty has commanded: fulfill your vows. - Translator). Allah Almighty knows best.

Problem 228: Sent by Ghulam Mohiuddin, employee of Tab-e-Karimi, 19th Rabi-ul-Akhir 1335 AH.

What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say about this matter: A girl's maternal grandmother made a vow that "if a granddaughter is born to me, I will sacrifice a cow of the Forty Saints (Chahal Tan)". Accordingly, after some

time, a girl was born. Twenty days after her birth, the grandmother passed away. Now people are telling the girl's parents...

[1] Al-Quran Al-Karim 22/29 [2] Al-Quran Al-Karim 22/29

...होगा या नहीं? अगर कोई इस हीले-बहाने से मना करे और कहे कि रास्ते में चोरी हो जाता है इसलिए भेजना ज़रूरी नहीं है, और कुछ अमानतदार खयानत करते हैं—क्या ऐसी आशंकाओं और अनुमानों के आधार पर नज़र (मन्नत) का माल रोकना सही है? और अगर कोई व्यक्ति मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा की तुलना किसी भूतखाने या काली मंदिर से करे, तो उसके बारे में क्या हुक्म है? क्या यह अपमानजनक और असभ्य बात है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: वह नज़र (मन्नत) निस्संदेह जायज़ है और नज़र पूरी करना वाजिब (अनिवार्य) है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और अपनी मन्नतें पूरी करो"[1] (अल्लाह तआला ने फरमाया: अपनी मन्नतें पूरी करो। - अनु.)। और जब नज़र में हरमैन शरीफ़ैन की किसी विशेष पाक मस्जिद का ज़िक्र किया गया हो, तो वहीं भेजना अधिक उपयुक्त है अगर आसान हो। और अगर यहीं की मस्जिदों में खर्च कर दिया जाए तब भी कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि नज़र में स्थान का निर्धारण विश्वसनीय (लाज़मी) नहीं है। उन दो महान शहरों के बारे में ऐसे शब्द कहना निश्चित रूप से गुस्ताखी, अपमान और कुफ्र का शब्द है। और नज़र पूरी करने से जो व्यक्ति रोके वह "भलाई से रोकने वाला" (मन्नाअिन लिल-खैर) है। और ऐसे नज़र करने वाले को जो गुनहगार कहे, वह खुद गुनहगार है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 227: नूर मोहम्मद, रियासत बहावलपुर, स्टेशन सादिकाबाद, डाकखाना अख्तरपुर, जिला खानपुर, 3 रबी-उल-आख़िर 1335 हिजरी।

अगर खुदावंद-ए-करीम की दरगाह में यह अर्ज़ किया जाए कि "अगर मुझे बेटा अता हो, या बीमारी दूर हो, या कर्ज अदा हो जाए, तो मैं अल्लाह की राह में रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) या हज़रत पीर दस्तगीर या किसी वली-उल्लाह की रूह के लिए इतना सदका करूँगा"—क्या यह नज़र जायज़ है या नहीं? फकत वस्सलाम।

जवाब: निस्संदेह जायज़ है और उसे पूरा करना वाजिब है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और अपनी मन्नतें पूरी करो"[2] (अल्लाह तआला ने फरमाया: अपनी मन्नतें पूरी करो। - अनु.)। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 228: प्रेषक गुलाम मोहीउद्दीन, कर्मचारी तबा-ए-करीमी, 19 रबी-उल-आख़िर 1335 हिजरी।

दीन के उलमा और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक लड़की की नानी ने मन्नत मानी कि "अगर मेरे यहाँ नवासी पैदा होगी, तो मैं 'चहल तनों' (चालीस संतों) के नाम की गाय ज़बह करूँगी।" चुनाँचे, एक समय के बाद लड़की पैदा हुई। उसके पैदा होने के बीस दिन बाद नानी का इंतकाल हो गया। अब लोग लड़की के माता-पिता से कहते हैं...

[1] अल-कुरान अल-करीम 22/29 [2] अल-कुरान अल-करीम 22/29

पृष्ठ 583/688

ہوگا یا نہیں، اگر کوئی اس حیلہ بہانہ سے منع کرے اور راہ میں ڈال کے چوری ہوتا ہے ارسال نہ کرنا لازم ہے اور بعض امانتدار خیانت کرتا ہے، ایسے احتمال گمان سے روکنا مال نذر کا درست ہے یا نہیں، اگر کوئی شخص مکہ معظمہ اور مدینہ منورہ کی تشبیہ بھوت خانہ کالی گھر کے مثل کہے اس کا کیا حکم ہے؟ بد تعظیم بے ادب کلام ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: وہ نذر بلا شبہ جائز ہے اور نذر کا پورا کرنا واجب، قال اللہ تعالیٰ وَلْیُوْفُوْا نُذُوْرَھُمْ 1 (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اپنی نذروں کو پورا کروت) اور جب نذر میں تخصیص مساجد طیبہ حرمین شریفین کی کی ہے تو وہیں بھیجنا انسب ہے اگر آسان ہو اور اگر یہیں کی مساجد میں صرف کردے جب بھی حرج نہیں کہ تعیین مکان نذر میں نامعتبر ہے دونوں شہر کریم کی نسبت وہ کلمہ کہنا ضرور گستاخی و توہین و کلمہ کفر ہے اور نذر پوری کرنے سے جو شخص رد کرے وہ مَنَّاعٍ لِّلْخَیْرِ (بھلائی سے روکنے والا ت) ہے، اور ایسے ناذر کو جو خاطی کہے خود خاطی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۷: نور محمد ریاست بہاولپور اسٹیشن صادق آباد ڈاک خانہ اختر پور ضلع خان پور ۳ ربیع الآخر ۱۳۳۵ھ

اگر بدرگاہ خداوند کریم سوال کیا جائے کہ مجھ کو فرزند عطا ہو یا بیماری دفع ہو یا قرض ادا ہو تو اس قدر خیرات فی سبیل اللہ بارواحِ رسول کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یا حضرت پیر دستگیر یا ولی اللہ کردوں گا یہ نذر جائز ہے یا نہیں؟ فقط والسلام۔

الجواب: بلا شبہ جائز ہے اور اس کا کرنا واجب، قال اللہ تعالیٰ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ 2 (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اپنی نذروں کو پورا کرو۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۸: مرسلہ غلام محی الدین ملازم طبع کریمی ۱۹ ربیع الآخر ۱۳۳۵ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کی نانی نے نیاز مانی کہ اگر میرے نواسی پیدا ہو گی تو میں چہل تنوں کی گائے ذبح کروں گی، چنانچہ ایک مدت کے بعد لڑکی پیدا ہوئی، اس کے پیدا ہونے کے بیس روز بعد نانی کا انتقال ہو گیا، اب لوگ لڑکی کے والدین سے کہتے ہیں

1 القرآن الکریم ۲۹/۲۲ 2 القرآن الکریم ۲۹/۲۲

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

...that arrange this feast (Niyaz) and arrange it with these conditions: buy a cow and put a ceremonial garland (Sehra) on it. A specific group of mendicants (faqirs) is designated for this feast. Call them and put a ceremonial suit on their leader. Then, sacrifice the cow in the name of the 'Chahal Tan' (Forty Persons/Martyrs), cook it, and serve it to the mendicants along with bread. Whatever they return to you from it, take it and use it for yourself. After that, heat up many coals and spread them on the ground. On those embers, that mendicant will take a girl in his lap and roll, and stomp them with his feet; the fire will have no effect on their bodies. Therefore, what should be done according to Sharia regarding the above-mentioned description? Please explain and be rewarded.

The Answer: Chahal Tan refers to forty martyrs. If the vow (mannat) meant to sacrifice a cow for Allah Almighty and gift its reward to those martyrs, then that vow became obligatory. It is better to fulfill it from the deceased woman's estate, i.e., sacrifice the cow in the name of Allah Almighty and distribute its meat among poor Muslims. And the frivolous play mentioned in the question is void and rejected. If the person making the vow had this very playful scene in mind, which is the custom of certain 'malangs', then the vow itself is void from the start. Allah Almighty knows best.

Problem 229 to 230: From Bagh, District Amjhera, Gwalior State, residence of Munshi Ausaf Ali Sahib, Sub-Inspector, sent by Sheikh Ashraf Ali Sahib, pensioner of Kota State, 12 Jumada al-Ula 1326 AH. (1) Zaid made a vow that if Allah completes my such-and-such work, I will organize a Milad Sharif or Gyarwi Sharif etc. So, can the wealthy also eat that food or sweets? (2) Zaid made a vow that if my work is done, I will feed my friends. So, will it be obligatory for Zaid to make such a vow and fulfill it or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: (1) In the gatherings of Milad and Gyarwi Sharif, the custom and practice is to give to everyone, both the wealthy and the poor. Those who make vows for them adhere to this prevalent method, not specifically for charity to the poor. Therefore, it is permissible for everyone to take it; this is not a 'fiqhi' (legalistic) vow. Allah Almighty knows best. (2) This is not a Sharia vow; it will not be obligatory (wajib). However, fulfilling it is better. Yes, if 'friends' refers to specific certain poor people and the needy, then it would become obligatory. Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं ۱۳

...कि यह नियाज़ दिलवाओ और यह नियाज़ इन शर्तों से दिलवाओ कि एक गाय खरीदो, उसके सेहरा बांधो और फ़कीरों का गिरोह ख़ास इस नियाज़ के वास्ते मख़्सूस है, उनको बुलवाकर उनके सर-गिरोह को जोड़ा पहनाओ, फिर गाय चहिल तनों की ज़िबह की जाए, उसको पकाकर मय रोटी के फ़कीरों को दे दिया जाए, वह जो कुछ इसमें से तुमको वापस दे दें लेकर अपने सर्फ़ में लाओ, बाद इसके कोयले बहुत से दहकाकर ज़मीन पर बिछाए जाएं इन अंगारों पर वह फ़कीर लड़की को गोद में लेकर लोटेंगे और पाँव से घोंदेंगे (रौंदेंगे), आग का कुछ भी असर उनके बदन पर न होगा, लिहाज़ा नविश्ता बाला (उपरोक्त) मायनों से शरअन क्या करना चाहिए? बय्यिनू तूजरू (बयान फरमाएं सवाब पाएं)।

जवाब: चहिल तन चालीस शहीद हैं, अगर मन्नत से यह मुराद थी कि गाय मौला अज़वजल के लिए ज़िबह करके उसका सवाब उन शहीदों को पहुँचाया जाए तो वह नज़्र (मन्नत) वाजिब हो गई, औरत के तरके(विरासत) से अदा की जाए तो बेहतर है, यानी गाय मौला अज़वजल के नाम पर ज़िबह करके उसका गोश्त मसाकीन-ए-मुस्लिमीन को तक़सीम कर दिया जाए और वह लहवो-लअ़ब (खेल-कूद) कि सवाल में मज़कूर (उल्लिखित) है, बातिल व मरदूद है, अगर मन्नत मानने वाले के ज़हन में यही सूरत-ए-बाज़ीचा (खेल की सूरत) थी जो मलंगों का मामूल है तो वह मन्नत ही सिरे से बातिल है। वल्लाहु तआ़ला अअ़लम (और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है)।

मसला २२९ ता २३०: अज़ बाग़ जिला अमझेरा रियासत ग्वालियर, मकान मुंशी औसाफ़ अली साहब सब इंस्पेक्टर, मुरसला शैख़ अशरफ़ अली साहब पेंशनर रियासत कोटा, १२ जमादी उल उला १३२६ हिजरी। (१) ज़ैद ने नज़्र मानी कि अगर मेरा फ़लाँ काम अल्लाह कर देगा तो मैं मौलूद शरीफ़ या ग्यारहवीं शरीफ़ वग़ैरह करूँगा, तो क्या इस खाने या मिठाई को अग़निया (धनी लोग) भी खा सकते हैं? (२) ज़ैद ने यह नज़्र मानी कि अगर मेरा काम हो जाएगा तो मैं अपने अहबाब (मित्रों) को खाना खिलाऊँगा, तो क्या इस तरह की मन्नत मानना और उसका अदा करना ज़ैद पर वाजिब होगा या नहीं? बय्यिनू तूजरू।

जवाब: (१) मज्लिस-ए-मीलाद व ग्यारहवीं शरीफ़ में उर्फ़ व मामूल यही है कि अग़निया व फ़क़रा (अमीर और ग़रीब) सबको देते हैं, जो लोग उनकी नज़्र मानते हैं इसी तरीक़ा-ए-रायज का इल्तिज़ाम (पालन) करते हैं न कि बिल-ख़ुसूस (विशेष रूप से) फ़क़रा पर तसद्दुक़ (दान), तो इसका लेना

सबको जायज़ है, यह नज़्र-ए-फ़िक़्हिया (कानूनी मन्नत) से नहीं। वल्लाहु तआ़ला अअ़लम। (२) यह कोई नज़्र-ए-शरई नहीं, वुजूब (अनिवार्यता) न होगा, और बजा लाना बेहतर, हाँ अगर अहबाब से मुराद ख़ास मुअय्यन बाज़ फ़क़रा व मसाकीन हों तो वुजूब हो जाएगा। वल्लाहु तआ़ला अअ़लम।

पृष्ठ ५८४/६८८

کہ یہ نیاز دلواؤ اور یہ نیاز ان شرائط سے دلواؤ کہ ایک گائے خرید و اس کے سہرا باندھو اور فقیروں کا گروہ خاص اس نیاز کے واسطے مخصوص ہے ان کو بلوا کر ان کے سر گروہ کو جوڑا پہناؤ، پھر گائے چہل تنوں کی ذبح کی جائے اس کو پکا کر مع روٹی کے فقیروں کو دے دیا جائے وہ جو کچھ اس میں سے تم کو واپس دے دیں لے کر اپنے صرف میں لاؤ، بعد اس کے کوئلے بہت سے دہکا کر زمین پر بچھائے جائیں ان انگاروں پر وہ فقیر لڑکی کو گود میں لے کر لوٹیں گے اور پاؤں سے گھوندیں گے آگ کا کچھ بھی اثر ان کے بدن پر نہ ہوگا، لہٰذا نوشتہ بالا معنوں سے شرعاً کیا کرنا چاہئے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: چہل تن چالیس شہداء ہیں، اگر منت سے یہ مراد تھی کہ گائے مولٰی عزوجل کے لئے ذبح کر کے اس کا ثواب ان شہیدوں کو پہنچایا جائے تو وہ نذر واجب ہوگئی عورت کے ترکہ سے ادا کی جائے تو بہتر ہے یعنی گائے مولٰی عزوجل کے نام پر ذبح کر کے اس کا گوشت مساکین مسلمین کو تقسیم کر دیا جائے اور وہ لہو ولعب کہ سوال میں مذکور ہے باطل و مردود ہے، اگر منت ماننے والے کے ذہن میں یہی صورتِ بازیچہ تھی جو ملنگوں کا معمول ہے وہ منت ہی سرے سے باطل ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۹ تا ۲۳۰: از باغ ضلع امجھیرہ ریاست گوالیار مکان منشی اوصاف علی صاحب سب انسپکٹر مرسلہ شیخ اشرف علی صاحب پنشنر ریاست کوٹہ ۱۲ جمادی الاولٰی ۱۳۲۶ھ (۱) زید نے نذر مانی کہ اگر میرا فلاں کام اللہ کردے گا تو میں مولود شریف یا گیارھویں شریف وغیرہ کروں گا، تو کیا اس کھانے یا مٹھائی کو اغنیاء بھی کھا سکتے ہیں؟ (۲) زید نے یہ نذر مانی کہ اگر میرا

کام ہوجائے گا تو میں اپنے احباب کو کھانا کھلاؤں گا، تو کیا اس طرح کی منت ماننا اور اس کا ادا کرنا زید پر واجب ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) مجلس میلاد و گیارھویں شریف میں عرف و معمول یہی ہے کہ اغنیاء و فقراء سب کو دیتے ہیں جو لوگ ان کی نذر مانتے ہیں اسی طریقہ رائج کا التزام کرتے ہیں نہ یہ کہ بالخصوص فقراء پر تصدق، تو اس کا لینا سب کو جائز ہے، یہ نذر فقہیہ سے نہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) یہ کوئی نذر شرعی نہیں، وجوب نہ ہوگا، اور بجالانا بہتر، ہاں اگر احباب سے مراد خاص معین بعض فقراء و مساکین ہوں تو وجوب ہوجائے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiya, Volume 13, Page 13

Problem 231: From Pandul Buzurg, Post Office Raipur, District Muzaffarpur, sent by Ne'mat Ali Sahib, 12th Rabi-ul-Awwal Sharif 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if someone says, i.e., makes a vow (Mannat), that they will take an offering in lieu of a life to the mosque? Some say it this way: if a life is saved or a task is accomplished, then they will feed the worshipers as a vow for Allah. Is this permissible or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Taking sweets to mosques or feeding the worshipers is not a Sharia-compliant vow (Nazr Shari). Unless it is specifically for the poor, it can be given to anyone, rich or poor. And Allah Almighty knows best.

Problem 232: From Chauhar Kot Barkhan, Balochistan, sent by Qadir Bakhsh Sahib, 12th Rabi-ul-Awwal Sharif 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: (Question): If someone makes a vow that if my such-and-such need is fulfilled, for the sake of Allah through the blessing of the soul of such-and-such a saint, I will sacrifice such-and-such a bull or such-and-such a goat. And when the need is fulfilled, he says, "I will give several goats in charity instead of that bull." So, is it permissible to give several goats instead of the bull, or must he give the same bull for which he made the vow? (T)

The Answer: It is not permissible to change the specific animal for which the vow was made. Allah Almighty has said that it is mandatory for Muslims to fulfill their vows. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 233: From Sikanderpur, District Ballia, Paie Gali, asked by Muhammad Husain and Ata Husain, 22nd Ramadan-ul-Mubarak 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a grave of a martyr saint is unpaved (unbaked brick/earth), and Zaid intended that if his wish is fulfilled, he would build the shrine with baked bricks. Allah Almighty, through His blessing...

1. Al-Quran Al-Karim 22/29 Page 585 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

मसअला 231: पंडोल बुज़ुर्ग, डाकखाना रायपुर, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर से, प्रेषक नेमत अली साहब, 12 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि यदि कोई कहे, यानी मन्नत माने, कि जान के बदले मस्जिद में सदका ले जाएंगे, और कुछ इसे इस तरह कहते हैं कि यदि जान बच जाए या काम बन जाए तो अल्लाह के लिए नमाज़ियों को खाना खिलाएंगे, तो क्या यह जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: मस्जिदों में मिठाई ले जाना या नमाज़ियों को खिलाना, यह कोई शरीयत वाली नज़्र (मन्नत) नहीं है। जब तक विशेष रूप से फ़कीरों के लिए न कहा जाए, इसे अमीर या ग़रीब किसी को भी दिया जा सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 232: चौहर कोट बारख़ान, बलूचिस्तान से, प्रेषक क़ादिर बख़्श साहब, 12 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि: (प्रश्न): यदि कोई यह मन्नत माने कि मेरी फ़लां हाजत पूरी हो जाए तो फ़लां बुज़ुर्ग की रूह की बरकत से अल्लाह तआला के लिए फ़लां बैल या फ़लां बकरे की क़ुर्बानी दूंगा, और जब हाजत पूरी हो जाए तो वह कहे कि फ़लां बैल के बदले में कई बकरे खैरात कर दूँ तो क्या बैल के बदले कई बकरे देना जायज़ है या वही बैल देना होगा जिसकी मन्नत मानी थी? (त)

अल-जवाब: नज़्र में जो जानवर तय कर दिया जाए, उसे बदलना जायज़ नहीं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मुसलमानों पर लाज़िम है कि अपनी मन्नतें पूरी करें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसअला 233: सिकंदरपुर, ज़िला बलिया, पाई गली से, मसऊला मुहम्मद हुसैन और अता हुसैन, 22 रमज़ान-उल-मुबारक 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक शहीद बुज़ुर्ग का मज़ार कच्चा है और ज़ैद ने नीयत की कि मेरी मुराद पूरी हो जाए तो मज़ार शरीफ़ पक्की ईंटों से बनवा दूँगा, अल्लाह तआला ने बरकत...

1. अल-कुरान अल-करीम 22/29 पृष्ठ 585/688

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

مسئلہ ۲۳۱: از پنڈول بزرگ ڈاک خانہ رائے پور ضلع مظفر پور مرسلہ نعمت علی صاحب ۱۲ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کوئی کہے یعنی منت مانے کہ جان کا بدلہ صدقہ مسجد میں لے جائینگے، اور اسی کو بعض یوں کہتے ہیں کہ جان بچ جائے یا کام بن جائے تو نذر اللہ مصلی کو کھلائیں گے، تو یہ جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: مساجد میں شیرینی لے جائیں گے یا نمازیوں کو کھلائیں گے، یہ کوئی نذر شرعی نہیں، جب تک خاص فقراء کے لئے نہ کہے اسے امیر فقیر جس کو دے سکتے ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۳۲: از چوہٹر کوٹ بارکھان ملک بلوچستان مرسلہ قادر بخش صاحب ۱۲ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ: (سوال): اگر کوئی یہ نذر مانے کہ میری فلاں حاجت پوری ہو جائے تو فلاں مشائخ کی روح کی برکت سے اللہ تعالیٰ کے لئے فلاں بیل یا فلاں بکرے کو ذبح کروں گا، اور جب حاجت پوری ہو جائے تو وہ کہے کہ فلاں بیل کے بدلے میں چند بکرے خیرات کردوں تو کیا بیل کے بدلے چند بکرے دینا جائز ہے یا وہی بیل جس کی نذر مانی تھی دینا ہوگا؟ (ت)

الجواب: نذر میں جو جانور معین کیا جائے اس کو تبدیل کرنا جائز نہیں۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ مسلمانوں پر لازم ہے کہ اپنی نذریں پوری کریں۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۳۳: از سکندر پور ضلع بلیا پائی گلی مسئولہ محمد حسین و عطا حسین ۲۲ رمضان المبارک ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شہید صاحب مزار بزرگ کی

قبر شریف خام ہے اور زید نے نیت کی کہ میری مراد پوری ہو تو مزار شریف پختہ اینٹ سے بنوا دوں گا، اللہ تعالیٰ نے برکت...

۱ القرآن الکریم ۲۹/۲۲ صفحہ ۵۸۵ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya, Volume 13 Page 13

Question: Shahid Sahab of Muradpur completed it, and new bricks are not available. Instead, there is a wall inside Zaid's garden. Can he take bricks from that wall to build the shrine (Mazar) or not? Provide a ruling and be rewarded.

Answer: A vow to build a solid shrine is not a Sharia-compliant vow; its fulfillment is not mandatory according to Sharia. If the wall in the garden is his property, he can use its bricks for the shrine, provided those bricks were not part of a wall used in an impure place. And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 234: From Mangal Lakri, Gurgaon district, Dhenar Post Office, Dujana State, sent by Hafiz Ghulam Kibriya Sahab, Imam, 2nd Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say about making vows (mannat) in the name of saints/elders? Some say this veneration is for Allah alone and shouldn't be for others.

Answer: Vows for saints are essentially for the Lord Almighty (Allah) alone. Making a vow with the intention of donating the reward (Isal-e-Sawab) to the saints to seek closeness [to Allah] through their mediation (tawassul) has no legal harm in Sharia.

[Arabic Box Left]: As stated by Allama Abdul Ghani al-Nabulsi (may his secret be sanctified) in Al-Hadiqa al-Nadiyya. And Allah Almighty knows best. [Urdu Box Right]: As Allama Abdul Ghani al-Nabulsi (may his secret be sanctified) has explained in Al-Hadiqa al-Nadiyya. And Allah Almighty knows best. (T)

Mas'ala 235: 9th Safar 1312 AH. If a person vows that if a certain task is fulfilled, they will distribute five rupees worth of grain to the needy; now, if at the time of distribution, a poor person needs clothes, will providing clothes and fulfilling the need suffice for the fulfillment of the vow or not? Provide a ruling and be rewarded.

Answer: Five rupees, five rupees worth of grain, clothes, or any item reaching the needy [is sufficient]. If clothes were got stitched, the amount spent on stitching will not be counted [towards the fulfillment of the vow amount].

[Arabic Box Left]: In Al-Durr al-Mukhtar: If one vows to give ten dirhams' worth of bread in charity, but gives something else instead... [Urdu Box Right]: It is in Durr al-Mukhtar that if someone vows to give ten dirhams' worth of bread in charity, then if instead of bread...

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरहवीं पृष्ठ १३

प्रश्न: शहीद साहब मुरादपुरी ने पूरा कर दिया और नई ईंटें उपलब्ध नहीं हैं, बल्कि ज़ैद के बाग़ के अंदर एक दीवार है। क्या उस दीवार से ईंटें लेकर मज़ार शरीफ़ बनवाया जा सकता है या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य मिलेगा।

उत्तर: मज़ार पक्का बनाने की मन्नत शरीयत के अनुसार मन्नत नहीं है, इसे पूरा करना शरीयत के अनुसार अनिवार्य (वाजिब) नहीं है। वह दीवार जो उसके बाग़ में है, यदि वह उसकी मिल्कियत (मालिकाना हक) है, तो उसकी ईंटों से मज़ार बनवाया जा सकता है, बशर्ते कि वे ईंटें किसी नापाक जगह की दीवार में इस्तेमाल न हुई हों। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला २३४: मंगल लकड़ी ज़िला गुड़गांव, डाकघर धीनार, रियासत दुजाना से, प्रेषक हाफ़िज़ गुलाम किबरिया साहब, पेश इमाम, २ शव्वाल १३३९ हिजरी। धर्म गुरु (उलेमा-ए-दीन) क्या फरमाते हैं कि बुज़ुर्गों की मन्नत मानना कैसा है? कुछ कहते हैं कि यह सम्मान अल्लाह के लिए है, किसी और के लिए नहीं होना चाहिए।

उत्तर: बुज़ुर्गों की मन्नत वास्तव में अल्लाह (मौला अज़्ज़-व-जल्ल) के लिए ही होती है और बुज़ुर्गों को ईसाल-ए-सवाब (पुण्य पहुँचाना) करके उनके माध्यम से (तवस्सुल) निकटता प्राप्त करने की नियत से इसमें शरीयत में कोई हर्ज नहीं है।

[बायां अरबी बॉक्स]: जैसा कि अल्लामा अब्दुल गनी नाबुलसी (क़ुद्दिस सिर्रुहु) ने अल-हदीक़ा अन-नदिया में बयान फरमाया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। [दायां उर्दू बॉक्स]: जैसा कि अल्लामा अब्दुल गनी नाबुलसी (क़ुद्दिस सिर्रुहु) ने अल-क़ुदसी अल-हदीक़ा अन-नदिया में बयान फरमाया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसाला २३५: ९ सफ़र १३१२ हिजरी। यदि कोई व्यक्ति मन्नत माने कि मेरा अमुक काम हो जाएगा तो मैं पाँच रुपये का अनाज मोहताजों को बाँटूंगा, अब बाँटने के समय किसी गरीब को कपड़ों की ज़रूरत है, तो कपड़ा बनवा देना और उसकी ज़रूरत पूरी करना मन्नत पूरी करने के लिए काफी होगा या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पाँच रुपये या पाँच रुपये का अनाज, कपड़ा, कोई भी चीज़ मोहताज तक पहुँच जाए (तो काफी है)। यदि कपड़ा सिलवा कर दिया, तो जो सिलाई में खर्च होगा वह मन्नत की राशि में नहीं गिना जाएगा।

[बायां अरबी बॉक्स]: दुर्रे मुख़्तार में है: यदि कोई मन्नत माने कि मैं दस दिरहम की रोटी सदक़ा करूँगा, फिर उसने उसके बजाय कुछ और सदक़ा कर दिया... [दायां उर्दू बॉक्स]: दुर्रे मुख़्तार में है कि अगर कोई मन्नत माने कि मैं दस दिरहम की रोटी सदक़ा करूँगा, तो अगर उसने रोटी के बजाय...

पृष्ठ ५८६ / ६८८

شہید صاحب مراد پوری کردی اور اینٹ نئی موجود نہیں بلکہ زید کے باغ کے اندر ایک دیوار ہے اس دیوار سے اینٹ لے کر مزار شریف بنواسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: مزار پختہ بنانے کی منت شرعی منت نہیں، اس کو پورا کرنا شرعاً واجب نہیں، وہ دیوار جو اس کے باغ میں ہے اگر اس کی ملک ہے تو اس کی اینٹوں سے مزار بنواسکتا ہے جبکہ وہ کسی دیوار ناپاک جگہ استعمال میں نہ آئی ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۴: از مانگل لکڑی ضلع گڑگواں ڈاکخانہ دھینار ریاست دو جانہ مرسلہ حافظ غلام کبریا صاحب پیش امام ۲ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین بزرگوں کی منت ماننا کیسا ہے؟ بعضے کہتے ہیں یہ تعظیم اللہ کے واسطے ہے غیر کو نہ چاہئے۔

الجواب: بزرگوں کی منت حقیقتاً مولٰی عزوجل ہی کے لئے منت ہوتی ہے اور بزرگوں کو ایصالِ ثواب کر کے ان سے تقرب بغرضِ توسل، اس میں شرعاً کوئی حرج نہیں۔

[Arabic Box Left]: كما افاده العلامة عبدالغني النابلسي قدس سره القدسی فی الحديقة الندية۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ [Urdu Box Right]: جیسا کہ علامہ عبدالغنی نابلسی قدس سرہ القدسی نے اسے حدیقہ ندیہ میں بیان فرمایا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۳۵: ۹ صفر ۱۳۱۲ھ اگر کوئی شخص منت مانے کہ میرا فلاں کام ہو جائے گا تو میں پانچ روپے کا غلہ محتاجوں کو تقسیم کروں گا، اب تقسیم کے وقت کسی غریب کو کپڑے کی حاجت ہے تو کپڑا بنا دینا اور حاجت رفع کرنا ادائے نذر کے لئے کافی ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: پانچ روپے یا پانچ روپے کا غلہ، کپڑا، کوئی چیز محتاج کو پہنچ جائے۔ کپڑا اگر سلوا کردیا تو جو سلائی میں جائے گا مجرا نہ ہوگا۔

[Arabic Box Left]: فی الدرالمختار نذران یتصدق بعشرۃ دراھم من الخبز فتصدق بغیرہ

[Urdu Box Right]: در مختار میں ہے کہ اگر کوئی نذر مانے کہ میں دس درہم کی روٹی صدقہ کروں گا تو اگر اس نے روٹی کے بجائے

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

[Top Box]: Arabic: It is permissible if it equals ten [dirhams] just like donating its price. And Allah the Almighty knows best. Urdu: If something else equivalent to ten dirhams is given as charity, it is permissible. It is just like giving ten dirhams instead of bread, which is permissible. And Allah the Almighty knows best. (T)

Issue 236: 27 Shawwal 1318 AH Question: What do the scholars of religion say regarding this issue? A child [Note 1] fell ill, and his parents made a vow: "O Allah! If my child gets well, we will [Note 2] keep, in Your vow, we will feed three needy people and pray fifty rak'ahs of prayer." This wording was set by a local Maulana, and a respected figure has forbidden this vow.

Answer: That Maulana spoke incorrectly. Allah the Almighty has commanded fulfillment in the Holy Quran: "and let them fulfill their vows" (22:29), meaning it is obligatory for Muslims to fulfill their vows. He has praised those who fulfill their vows: "They fulfill their vows" (76:7). The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) did not forbid making vows but rather commanded their fulfillment. In Sahih Bukhari, it is narrated from the Mother of the Believers, Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), that he said: "Whoever vows to obey Allah, let him obey Him; and whoever vows to disobey Him, let him not disobey Him" (Bukhari). Meaning, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says that whoever vows an act of obedience to Allah, such as prayer, fasting, charity, etc., he should perform it. And whoever vows a sin, he should refrain from it. Yes, to believe that making a vow will change divine destiny, that a blessing not destined will be obtained, or an ordained calamity will be averted—this is a corrupt belief. It is from such vows that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) prohibited, as per the Hadith of the Shaykhayn (Bukhari and Muslim):

[Arabic Box]: (Do not make vows, for a vow does not change destiny in the slightest. It only serves to extract wealth from the miser.) [Urdu Box]: (Do not make vows, for a vow does not make one independent of destiny. It is nothing more than that, through the vow, wealth is spent by a miser.) (T)

Note 1: There is a blank space in the original manuscript. Note 2: There is a blank space in the original manuscript.

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Iman, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/295
2. Al-Quran al-Karim, 22/29

3. Al-Quran al-Karim, 76/7
4. Sahih al-Bukhari, Kitab al-Iman, Bab al-Nadhr fi al-Ta'ah, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/991
5. Sahih Muslim, Kitab al-Nadhr, Bab al-Nadhr fi al-Ta'ah, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/44

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

[ऊपरी बॉक्स]: अरबी: यदि यह दस [दिरहम] के बराबर है तो यह जायज़ है जैसे कि इसकी कीमत का दान करना। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू: यदि दस दिरहम के बराबर कोई और चीज़ सदक़ा कर दी गई तो जायज़ है, यह वैसा ही है जैसे रोटी के बजाय दस दिरहम दे दिए जाएँ तो जायज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 236: 27 शव्वाल 1318 हिजरी प्रश्न: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं? एक बच्चा [नोट 1] बीमार हो गया, उसके माता-पिता ने मन्नत मानी: "या अल्लाह! अगर मेरा लड़का ठीक हो जाए, तो रखेंगे [नोट 2] रखेंगे तेरी नज़्र (मन्नत) में तीन मोहताजों (ज़रूरतमंदों) को खाना खिलाएंगे और पचास रकअत नमाज़ पढ़ेंगे।" यह शब्द एक मौलवी द्वारा निर्धारित किए गए थे और एक हज़रत ने इस मन्नत से भी मना किया है।

उत्तर: उस मौलवी ने गलत कहा। अल्लाह अज़्ज़वजल ने क़ुरआन मजीद में मन्नत पूरी करने का हुक्म दिया है: "और वे अपनी मन्नतें पूरी करें" (22:29), यानी मुसलमानों पर लाज़िम है कि अपनी मन्नतें पूरी करें। अल्लाह ने मन्नत पूरी करने वालों की प्रशंसा की है: "वे मन्नत पूरी करते हैं" (76:7)। रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मन्नत मानने से मना नहीं फ़रमाया बल्कि उसे पूरा करने का हुक्म दिया। बुखारी शरीफ़ में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से वर्णित है कि: "जिसने अल्लाह की इबादत की मन्नत मानी, उसे चाहिए कि उसकी इबादत करे; और जिसने उसकी नाफरमानी की मन्नत मानी, उसे चाहिए कि उसकी नाफरमानी न करे" (बुखारी)। यानी रसूले करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं कि जो कोई अल्लाह की इबादत (जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा आदि) की मन्नत माने, तो उसे पूरा करे। और जो कोई गुनाह की मन्नत माने, तो वह उससे बाज़ रहे। हाँ, यह समझना कि मन्नत मानने से तक़दीर बदल जाएगी, जो नेमत नसीब में नहीं है वह मिल जाएगी, या जो बला मुक़द्दर में है वह टल जाएगी—यह अक़ीदा (मान्यता) भ्रष्ट है। ऐसी ही मन्नत से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना फ़रमाया है, जैसा कि बुखारी और मुस्लिम की हदीस है:

[अरबी बॉक्स]: (मन्नत न माना करो, क्योंकि मन्नत तक़दीर से कुछ भी बेनियाज़ नहीं करती। इसके सिवा और कुछ नहीं कि मन्नत के ज़रिये कंजूस से माल खर्च कराया जाता है।) [उर्दू बॉक्स]: (मन्नत न

माना करो, क्योंकि मन्नत तक़दीर से मुस्तग़नी (बेपरवाह) नहीं करती। इसके सिवा और कुछ नहीं कि मन्नत के कारण कंजूस से माल खर्च कराया जाता है।) (त)

नोट 1: मसौदे में खाली जगह है। नोट 2: मसौदे में खाली जगह है।

1. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-ईमान, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/295
2. अल-क़ुरआन अल-करीम, 22/29
3. अल-क़ुरआन अल-करीम, 76/7
4. सहीह अल-बुखारी, किताब अल-ईमान, बाब अन-नज़्र फ़ी अत-ताअह, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/991
5. सहीह मुस्लिम, किताब अन-नज़्र, बाब अन-नज़्र फ़ी अत-ताअह, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/44

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

[اوپر والا خانہ]: جاز ان ساوی العشرۃ کتصدقه بثمنه واللہ تعالٰی اعلم۔ دس درہم کے برابر کوئی اور چیز صدقہ کر دی تو جائز ہے، یہ ایسے ہی ہے جیسا کہ روٹی کے بجائے دس درہم دے دے تو جائز ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۳۶: ۲۷ شوال ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں ع۱ لڑکے کا بیمار ہوا اس کے والدین نے منت مانی کہ یا اللہ! اگر میرے لڑکے کو آرام ہو جائے تو رکھیں ع۲ رکھیں گے تیری نذر میں تین محتاج کھلائیں گے اور پچاس رکعت نماز پڑھیں گے۔ یہ کلمہ مولوی نے دامتی مقرر کیا ہے اور اس منت کو حضرت نے بھی منع کیا ہے۔

الجواب: اس مولوی نے غلط کہا اللہ عزوجل نے پورا کرنے کا قرآن مجید میں حکم دیا ہے وَلْیُوْفُوْا نُذُوْرَھُمْ ۲ یعنی مسلمانوں پر لازم کہ اپنی نذریں پوری کریں، نذریں پوری کرنے والوں کی تعریف فرمائی ہے یُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ ۳ نذر پوری کرتے ہیں۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے نذر ماننے سے منع نہیں فرمایا بلکہ اس کی وفا کا حکم دیا ہے۔ بخاری شریف میں ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے ہے من نذر ان یطیع اللہ فلیطعه ومن نذر ان یعصیه فلا یعصه ٤ یعنی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں جو کسی طاعت الٰہی مثل نماز و روزہ و صدقہ وغیرہ کی منت مانے وہ بجالائے اور جو کسی گناہ کی منت مانے وہ باز رہے۔ ہاں یہ سمجھنا کہ نذر ماننے سے تقدیر الٰہی بدل جائے گی جو نعمت نصیب میں نہیں وہ مل جائے گی جو بلا مقدر میں ہے وہ ٹل جائے گی، یہ اعتقاد فاسد ہے، ایسی ہی نذر سے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے منع فرمایا ہے حدیث شیخین:

[عربی خانہ]: (لاتنذروا، فان النذر لا یغنی من القدر شیأً وانما یستخرج بہ من البخیل ۵۔ [اردو خانہ]: نذر نہ مانا کرو، کیونکہ نذر تقدیر سے مستغنی نہیں کرتی سوائے اس کے اور کچھ نہیں کہ نذر کے سبب بخیل سے مال خرچ کرایا جاتا ہے۔) (ت)

ع۱: مسودہ میں بیاض ہے۔ ع۲: مسودہ میں بیاض ہے۔

1 در مختار کتاب الایمان مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۹۵ 2 القرآن الکریم ۲۹/۲۲ 3 القرآن الکریم ۷/۷۶ 4 صحیح البخاری کتاب الایمان باب النذر فی الطاعۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۹۱/۲ 5 صحیح مسلم کتاب النذر باب النذر فی الطاعۃ قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۴/۲

Below it, in Mirqat Sharif, it is stated:

[Arabic Column] Al-Khattabi said: The meaning of forbidding vows is only to emphasize the importance of fulfilling them and to warn against negligence after making them obligatory. If the meaning were a prohibition against making vows themselves, it would lead to dropping the obligation of fulfilling them, as it would become a sin. The intent of the Hadith "Do not make vows" is that you should not think through a vow you can obtain something Allah has not decreed for you, or avert something decreed against you. If you have done so, then fulfill it, for what you have vowed has become binding upon you. 1- Al-Tayyibi refined this, saying that the reason for the prohibition is his statement: "For a vow does not avail against destiny." He pointed out that what is forbidden is the vow made with the belief that it can independently change destiny. However, if one vows while believing that Allah the Almighty is the one who eases matters, and He is the one who grants harm and benefit, and vows are like means, then fulfilling it is an act of obedience and is not prohibited. How could it be prohibited when Allah Almighty praised the best of His servants by saying: "They fulfill [their] vows" [Quran 76:7] and "I have vowed to You what is in my womb, dedicated [to Your service]" [Quran 3:35]? I say...

[Urdu Column] Khattabi said that the meaning of prohibition from vows is to express the importance regarding vows and the intent is to warn against negligence after making the vow binding upon oneself. If this prohibition were by way of punishment, it would imply that the command to fulfill the vow is cancelled because thus the vow would be considered a sin. Therefore, undoubtedly, the reason for the Hadith is: Do not make a vow with the belief that destiny will change due to the vow; that you will obtain something through a vow which Allah Almighty has not decreed for you, and that you can turn back what is destined for you through a vow. And when you do make a vow, fulfill it to be absolved of responsibility, because the vow you have made has become binding upon you. (T) Tayyibi said the clarification of this Hadith is that the prohibition and its cause relate to the sentence "vows do not make one independent of destiny." And there is an admonition in it that making a vow with the belief that it will change destiny and make one independent of it is forbidden. But keeping the belief after making a vow that Allah Almighty alone makes matters easy and He is personally the one who benefits and harms, and a vow is merely a means, then with this belief, a vow and its fulfillment is worship. This form is not forbidden; how can it be forbidden while Allah Almighty has...

1 Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Chapter on Vows, First Section, Al-Maktabah al-Habibiyah, Quetta, 599/6.

इसके नीचे मिर्क़ात शरीफ में है:

[अरबी स्तंभ] अल-खत्ताबी ने कहा: मन्नत मांगने की मनाही का अर्थ केवल उनके आदेश पर बल देना और उन्हें अनिवार्य बनाने के बाद लापरवाही के विरुद्ध चेतावनी देना है। यदि इसका अर्थ मन्नत से ही रोकना होता, तो इससे उनके पूरा करने की अनिवार्यता समाप्त हो जाती, क्योंकि तब यह एक पाप बन जाता। हदीस "मन्नत न मांगो" का उद्देश्य यह है कि आप यह न समझें कि मन्नत के माध्यम से आप वह कुछ प्राप्त कर लेंगे जो अल्लाह ने आपके लिए निर्धारित नहीं किया है, या आप पर आने वाली किसी निर्धारित चीज़ को टाल देंगे। और यदि आपने ऐसा कर लिया है, तो इसे पूरा करें, क्योंकि जो मन्नत आपने मांगी है वह आप पर अनिवार्य हो गई है। 1- अल-तय्यीबी ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि मनाही का कारण उनका यह कथन है: "क्योंकि मन्नत तकदीर के विरुद्ध कुछ काम नहीं आती।" उन्होंने इस ओर संकेत किया कि वह मन्नत वर्जित है जो इस विश्वास के साथ मांगी जाए कि वह स्वयं तकदीर को बदल सकती है। लेकिन यदि कोई इस विश्वास के साथ मन्नत मांगता है कि अल्लाह तआला ही मामलों को आसान करने वाला है, और वही हानि और लाभ देने वाला है, और मन्नतें केवल साधनों की तरह हैं, तो इसे पूरा करना आज्ञाकारिता है और वर्जित नहीं है। यह वर्जित कैसे हो सकता है जबकि अल्लाह तआला ने अपने श्रेष्ठ दासों की प्रशंसा करते हुए कहा है: "वे (अपनी) मन्नतें पूरी करते हैं" [कुरान 76:7] और "मैंने तेरे लिए मन्नत मानी है जो मेरे पेट में है, (तेरी सेवा के लिए) समर्पित" [कुरान 3:35]। मैंने कहा...

[उर्दू स्तंभ] खत्ताबी ने कहा कि मन्नत से मनाही का अर्थ यह है कि यह मन्नत के संबंध में विशेष महत्व की अभिव्यक्ति है और मन्नत को अपने ज़िम्मे अनिवार्य करने के बाद इसमें लापरवाही बरतने पर डराना उद्देश्य है। और यदि मन्नत से यह मनाही सज़ा के रूप में होती, तो इससे यह आवश्यक होता कि मन्नत को पूरा करने का आदेश समाप्त हो जाए, क्योंकि इस प्रकार मन्नत एक पाप मानी जाती। इसलिए, निस्संदेह हदीस का कारण यह है कि इस विश्वास के साथ मन्नत न मानो कि मन्नत के कारण तकदीर बदल जाएगी; कि जिस चीज़ को अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए मुकद्दर (निर्धारित) नहीं फरमाया, तुम मन्नत के कारण उसे प्राप्त कर लोगे, और तकदीर में जो चीज़ तुम पर आने वाली है, तुम उसे मन्नत के माध्यम से वापस लौटा दोगे। और जब मन्नत मानो तो दोषमुक्त होने के लिए उसे पूरा करो, क्योंकि जो मन्नत मानी है वह तुम पर अनिवार्य हो चुकी है। (त) तय्यीबी ने कहा इस हदीस का स्पष्टीकरण यह है कि इसमें मनाही का संबंध और उसका कारण, "मन्नत तकदीर से बेपरवाह

नहीं करती" वाले वाक्य से है। और इसमें चेतावनी है कि इस विश्वास के साथ मन्नत मानना कि यह तकदीर को बदल देगी और उससे बेपरवाह कर देगी, वर्जित है। लेकिन मन्नत मानकर यह विश्वास रखना कि अल्लाह तआला ही मामलात को आसान फरमाता है और वही व्यक्तिगत रूप से लाभदायक और हानिकारक है और मन्नत मात्र एक साधन है, तो इस विश्वास के साथ मन्नत और उसे पूरा करना इबादत है, और यह स्वरूप वर्जित नहीं है, यह कैसे वर्जित हो सकता है जबकि अल्लाह तआला ने अपने...

1 मिर्क़ात अल-मफ़ातीह शरह मिश्कात अल-मसाबीह, मन्नतों का अध्याय, पहला खंड, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 599/6।

کے نیچے مرقاۃ شریف میں ہے:

[عربی کالم] قال الخطابي معنى نهيه عن النذر انما هو التأكيد لامره وتحذير التهاون به بعد ايجابه، ولوكان معناه الزجر عنه لكان في ذلك اسقاط لزوم الوفاء به اذ صار معصية، وانما وجه الحديث لاتنذورا على انكم تدركون بالنذر شيأ لم يقدره الله تعالى لكم، او تصرفون شيأ جرى القضاء به عليكم واذا فعلتم ذلك فاخرجوه عنه بالوفاء فان الذى نذر توه لازم لكم 1- قال الطيبي تحريره انه علل النهى بقوله: فان النذر لا يغنى من القدر، ونبه على ان المنهى عنه هو النذر الذى يعتقد انه يغنى من القدر بنفسه، اما اذا نذر واعتقد ان الله تعالى هو الذى يسهل الامور، وهو الضار والنافع والنذور كالوسائل، فيكون الوفاء طاعة، ولا يكون منهيا عنه، كيف وقد مدح الله تعالى جل شانه الخيرة من عباده بقوله: "يُوْفُونَ بِالنَّذْرِ" "إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا" قلت

[اردو کالم] خطابی نے فرمایا کہ نذر سے منع کا معنی یہ ہے کہ یہ نذر کے متعلق اہتمام کا اظہار ہے اور نذر کو اپنے ذمہ لازم کرنے کے بعد اس میں لاپروائی پر ڈرانا مقصود ہے، اور اگر نذر سے یہ منع برائے سزا ہوتا اس سے لازم آئے گا کہ نذر کو پورا کرنے کا حکم ختم ہو جائے کیونکہ یوں نذر گناہ قرار پائے گی، لہذا بلا شبہ حدیث کی وجہ یہ ہے کہ نذر اس اعتقاد سے نہ مانو کہ نذر کی وجہ سے تقدیر بدل جائے گی کہ جس چیز کو اللہ تعالٰی نے تمہارے لئے مقدر نہیں فرمایا نذر کی وجہ سے تم اس کو حاصل کرلو گے اور تقدیر میں جو چیز تم پر وارد ہونے والی ہے تم اس کو نذر کے ذریعہ لوٹا دو، اور جب نذر مانو تو اس سے بری الذمہ ہونے کے لئے اسے پورا کرو، کیونکہ جو نذر مانی ہے وہ تم پر لازم ہو چکی ہے۔ (ت) طیبی نے فرمایا اس حدیث کی وضاحت یہ ہے کہ اس میں نہی کا تعلق اور اس کی علت، تقدیر سے نذر مستغنی نہیں کرتی، والا

جملہ ہے۔ اور اس میں تنبیہ ہے کہ اس عقیدہ سے نذر ماننا کہ یہ تقدیر کو تبدیل کردے گی اور اس سے مستغنی کردے گی، یہ منع ہے، لیکن نذر مان کر یہ عقیدہ رکھنا اللہ تعالیٰ ہی معاملات کو آسان فرماتا ہے اور وہی ذاتی طور پر نافع اور ضار ہے اور نذر محض ایک وسیلہ ہے، تو اس عقیدہ سے نذر اور اس کو پورا کرنا عبادت ہے، اور یہ صورت ممنوع نہیں ہے یہ کیسے ممنوع ہو سکتی ہے جبکہ اللہ تعالیٰ جل شانہ نے اپنے

1 مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح باب النذور الفصل الاول المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۵۹۹/۶

Fatawa Razawiyya Volume 13

And likewise his saying "Indeed, I have vowed a fast to the Most Merciful", then what is forbidden is the belief that a vow makes one independent of destiny etc. importantly summarized. And Allah Almighty knows best. He himself said in praise of righteous servants that they fulfill their vows. And He said: The child in my womb, I dedicate to Him. And I say, likewise is the command of Allah Almighty, 'I have vowed a fast for Allah Almighty, the Most Merciful'. So it is known that the prohibition in the Hadith relates to that vow in which this belief is included that this vow will make one independent of destiny etc. and Allah Almighty knows best (T).

Problem 2373 to 2396: From Dalil Ganj, district Pilibhit, sent by Maulvi Karim Bakhsh Sahib, 15 Dhu al-Qi'dah 1318 AH. What do the scholars of religion say in these matters: (1) Someone made a vow that if my such-and-such work is done, I will offer a cow's head as a sacrifice. If that person offers meat from another part instead of the head and feeds the poor, will his obligation be fulfilled or not? (2) Someone made a specific reference to an existing goat or chicken and said I will offer this goat or chicken, then for some reason they were lost, so instead of that, will an offering of the same amount of meat from another goat, chicken, or cow etc. be valid or not? Clarify and be rewarded. (3) Someone vowed to fill the niche of the mosque with sweets or bread rolls. If he does not fill the niche of the mosque and distributes it at home, will the vow be fulfilled or not?

The Answer: (1) Specifying the head is not necessary; meat of the same value is also sufficient. And Allah Almighty knows best. (2) If this offering was not conditional upon a requirement, for example 'if my work is done, I will vow this animal', nor was there any obligatory statement like 'it is mandatory for me to make this offering for Allah', then this cannot be a Sharia-compliant vow. And if the words were such that it became mandatory by Sharia, then since the obligation was related to a specific designated animal, after its loss or death, it is not necessary to substitute it with another, nor does the demand for that vow remain upon him. If he provides another animal, it will be a voluntary act (tabarru'). It is in Radd al-Muhtar:

If the specific vowed thing itself dies or is lost | The same thing for which the vow was made, if it is destroyed or lost.

1. Mirqat al-Mafatih Sharh Mishkat al-Masabih, Chapter on Vows, First Section, Al-Maktaba al-Habibiyya Quetta 6/599. Page 589 of 688

और इसी तरह उनका कहना "वास्तव में, मैंने रहमान के लिए रोज़े की मन्नत मानी है", तो जो मना किया गया है वह यह विश्वास है कि मन्नत तक़दीर से बेपरवाह कर देती है इत्यादि, महत्वपूर्ण संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उन्होंने खुद नेक बंदों की प्रशंसा में फरमाया कि वे मन्नतें पूरी करते हैं। और फरमाया: जो बच्चा मेरे पेट में है उसे मैं वक्फ़ करती हूँ। और मैं कहता हूँ, अल्लाह तआला का फरमान वैसा ही है, 'मैंने अल्लाह तआला रहमान के लिए रोज़े की मन्नत मानी है'। तो ज्ञात हुआ कि हदीस में निषेध उस मन्नत से संबंधित है जिसमें यह विश्वास शामिल हो कि यह मन्नत तक़दीर से मुक्त कर देगी इत्यादि, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला २३७३ से २३९६: दलील गंज, ज़िला पीलीभीत से, मौलवी करीम बख्श साहब द्वारा प्रेषित, १५ ज़ुल-क़ादा १३१८ हिजरी। दीन के उलेमा इन मसलों में क्या फरमाते हैं: (१) किसी व्यक्ति ने मन्नत मानी कि मेरा फलां काम हो जाए तो मैं गाय के सिर की नियाज़ (भेंट) करूँगा। यदि वह व्यक्ति सिर के बजाय अन्य अंग का मांस नियाज़ करे और गरीबों को खिलाए तो उसका कर्तव्य पूरा होगा या नहीं? (२) किसी ने मौजूदा बकरी या मुर्गी की ओर इशारा करते हुए कहा कि मैं इस बकरी या मुर्गी की नियाज़ करूँगा, फिर किसी कारण से वे गायब हो गईं, तो उसके बजाय दूसरी बकरी, मुर्गी या गाय आदि के उतने ही मांस की नियाज़ होगी या नहीं? स्पष्ट करें, सवाब पाएँ। (३) किसी ने मस्जिद के आले (निश) को मिठाई या ब्रेड रोल से भरने की मन्नत मानी। यदि वह मस्जिद का आला नहीं भरता और घर पर बाँट देता है, तो मन्नत पूरी होगी या नहीं?

उत्तर: (१) सिर का निर्धारण कुछ ज़रूरी नहीं, उतनी कीमत का मांस भी काफी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (२) यदि यह नियाज़ किसी शर्त पर आधारित नहीं थी, उदाहरण के लिए 'अगर मेरा यह काम हो जाए तो मैं इस जानवर की मन्नत करूँगा', और न ही कोई अनिवार्य कथन था जैसे 'अल्लाह के लिए मुझ पर यह नियाज़ करना लाज़िम है', तो यह शरीयत के अनुसार मन्नत नहीं हो सकती। और यदि शब्द ऐसे थे जिनसे शरीयत के अनुसार अनिवार्य हो गया, तो चूंकि अनिवार्यता एक विशेष निर्दिष्ट जानवर से जुड़ी थी, उसके चले जाने या मरने के बाद दूसरा उसकी जगह रखना ज़रूरी नहीं है, न ही उस मन्नत की मांग उस पर रही। यदि वह दूसरा जानवर देता है तो यह अपनी ओर से परोपकार (तबर्रु) होगा। रद-उल-मुहतार में है:

यदि मन्नत मानी हुई वस्तु स्वयं नष्ट हो जाए या खो जाए | मन्नत मानी हुई चीज़ हुबहू अगर हलाक हो जाए या ज़ाया हो जाए।

1. मिरक़ात अल-मफ़ातीह शरह मिश्कात अल-मसाबीह, मन्नत का अध्याय, पहला खंड, अल-मकतबा अल-हबीबिया क्वेटा ६/५९९। पेज ५८९ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد تیرہ دہم ۱۳

وکذا قولہ "انی نذرت للرحمن صوما" فالمَنْھی عنہ ھو الاعتقاد علی ان النذر یغنی عن القدر الخ اھم مختصرا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ نیک بندوں کی مدح میں خود فرمایا کہ وہ نذروں کو پورا کرتے ہیں۔ اور فرمایا: جو بچہ میرے پیٹ میں ہے اس کو میں وقف کرتی ہوں۔ اور میں کہتا ہوں یو نہی اللہ تعالٰی کا فرمان ہے، میں نے اللہ تعالٰی رحمٰن کے لئے روزہ کی نذر مانی ہے۔ تو معلوم ہوا کہ حدیث میں نہی کا تعلق اس نذر سے ہے جس میں یہ عقیدہ شامل ہو کہ یہ نذر تقدیر سے مستغنی کردے گی الخ اھ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۳۷۳ تا ۲۳۹۶: از دلیل گنج ضلع پیلی بھیت مرسلہ مولوی کریم بخش صاحب ۱۵ ذیقعدہ ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں : (۱) کسی شخص نے نذر مانی کہ میرا فلاں کام ہوجائے تو میں گائے کے سر کی نیاز کروں گا، اگر وہ شخص بجائے سر کے اور جگہ کے گوشت کی نیاز کرے اور مساکین کو کھلائے تو اس سے واجب ادا ہوگا یا نہیں؟ (۲) کسی نے بکری یا مرغی موجودہ کی نسبت مخصوص کرکے کہا کہ میں اس بکری یا مرغی کی نیاز کروں گا، پھر کسی وجہ سے وہ مفقود ہو گئیں تو بجائے اس کے دوسری بکری مرغی یا گائے وغیرہ کی اسی قدر گوشت سے نیاز ہوگی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ (۳) کسی نے مسجد کا طاق بھرنا گگلویامانڈوں سے مانا، اگر وہ مسجد کا طاق نہ بھرے اور گھر پر تقسیم کردے تو نذر پوری ہوگی یا نہیں؟

الجواب: (۱) سر کی تعیین کچھ ضروری نہیں اس قدر قیمت کا گوشت بھی کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) اگر یہ نیاز نہ کسی شرط پر معلق تھی مثلاً میرا یہ کام ہو جائے تو اس جانور کی نذر کروں گا، نہ کوئی ایجاب تھامثلاً اللہ کے لئے مجھ پر یہ نیاز کرنی لازم ہے جب تو یہ نذر شرعی ہو

نہیں سکتی، اور اگر لفظ ایسے تھے جن سے شرعاً وجوب ہو گیا تو جبکہ ایجاب خاص جانور معین سے متعلق تھا اس کے گئے یا مرنے کے بعد دوسرا اس کی جگہ قائم کرنا کچھ ضرور نہیں، نہ اس نذر کا اس پر مطالبہ رہا، اگر دوسرا جانور کردے گا تو تبرع ہے۔ ردالمحتار میں ہے:

المنذورة بعينها لو هلكت او ضاعت | نذر مانی ہوئی چیز بعینہ اگر ہلاک ہو جائے یا ضائع ہو جائے

١ مرقاة المفاتيح شرح مشكاة المصابيح باب النذور الفصل الاول المكتبة الحبيبيه كوئٹہ ۵۹۹/۶ Page of 688 589

[Footnote 1: The vow lapses.] End of the excerpt. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

So that vow will be terminated, as an excerpt, And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

(3) Regarding the vow of filling the niches of a mosque: If the intention is charity for the poor, the vow is valid. Specifying the niche is redundant; giving to the poor anywhere fulfills the vow. If the intention is solely to fill the mosque's niche so that both the rich and the poor may take from it, as is apparent from the practices of some ignorant people, especially women, then making such a vow itself is redundant. And Allah Exalted knows best.

Problem 240: From Jais, District Rae Bareli, Mohalla Zer Masjid, House of Haji Ibrahim Sahib, sent by Wali Allah Sahib, 2nd Rabi-ul-Awwal Sharif. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it permissible to make a vow for Milad Sharif or not? Explain and be rewarded.

Answer: The gathering of Milad Sharif, conducted according to the prevalent practice in the two holy cities (Haramain Sharifain), is among the highest recommended acts, whether done through a vow or without one. However, the point of consideration is whether it becomes obligatory by making a vow, like prayer or charity, or whether it remains recommended as before and does not become obligatory, like the recitation of the Holy Quran, for which one opinion says it does not become obligatory even through a vow. As stated in al-Khaniyyah and others (as it is in Khaniyyah etc. - T). Its specific detail is not currently in view.

"Perhaps Allah will bring about thereafter a [new] situation" [Footnote 2: The Holy Quran, 65/1]. And Allah the Glorified and Exalted knows best. It is possible that Allah Exalted may create some way later. And Allah Exalted knows best. (T)

Problem 241: From Dharki, 1313 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person intended that if he gets a job, he will vow his first salary to the shrine of Piran-e-Kaliyar Sharif. That person started working on the 13th and received his salary after one month and seventeen days. Now, should he spend one month's salary or seventeen days' salary? And how should this salary be spent? That is, should he use it for the whitewashing and repair of the shrine etc., or dedicate the reward to

the pure soul of Hazrat Sabir Piya Sahib (may his secret be sanctified) through Fatiha, or can he spend it both ways? Explain and be rewarded.

---

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Adhiya, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/207 [2] Al-Quran al-Karim, 65/1

[पाद टिप्पणी 1: मन्नत गिर गई।] संक्षिप्त रूप में समाप्त हुआ। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

तो वह मन्नत ख़त्म हो जाएगी, अह मुल्तक़तन (संक्षिप्त रूप में), और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

(३) मस्जिद के ताक़ (आले) भरने की मन्नत के बारे में: अगर मक़सद ग़रीबों को दान देना है तो मन्नत सही है। उस ताक़ को मुक़र्रर करना फ़ुज़ूल है, जहाँ चाहे ग़रीबों को दे दे मन्नत पूरी हो जाएगी। और अगर इस मन्नत से मक़सद मस्जिद का ताक़ ही भरना है ताकि अमीर-ग़रीब जो चाहे ले ले, जैसा कि कुछ जाहिलों ख़ासकर औरतों के अमल से ज़ाहिर होता है, तो वह मन्नत करना ही फ़ुज़ूल है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २४०: जाएस, ज़िला रायबरेली, मोहल्ला ज़ेर मस्जिद, मकान हाजी इब्राहिम साहब, प्रेषित वली उल्लाह साहब, २ रबी-उल-अव्वल शरीफ़। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मीलाद शरीफ़ की मन्नत मानना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं सवाब पायें।

अल-जवाब: मीलाद शरीफ़ की महफ़िल, जो हरमैन शरीफ़ैन में राइज (प्रचलित) तरीक़े पर हो, आला मुस्तहब्बात में से है, चाहे मन्नत मानकर करें या बिना मन्नत के। हाँ, यह बात विचारणीय है कि मन्नत मानने से यह वाजिब हो जाएगी, जैसे नमाज़ या सदक़ा, या वाजिब नहीं होगी और पहले की तरह मुस्तहब रहेगी, जैसे क़ुरआन मजीद की तिलावत कि एक राय के अनुसार मन्नत मानने से भी वाजिब नहीं होती। जैसा कि 'ख़ानिया' वगेरह में है। (जैसा कि ख़ानिया वग़ैरह में है। - त) इसका विशेष विवरण इस समय नज़र में नहीं है।

"शायद अल्लाह इसके बाद कोई (नई) सूरत पैदा फ़रमा दे" [पाद टिप्पणी २: अल-क़ुरआन अल-करीम, ६५/१]। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला, हो सकता है अल्लाह तआला बाद में कोई सूरत पैदा फरमा दे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला २४१: धड़की से, १३१३ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने यह नियत (इरादा) की कि अगर मेरी नौकरी लग जाएगी तो पहली तनख़्वाह पिरान-ए-कलियर शरीफ़ की ज़ियारत की मन्नत करूँगा। वह व्यक्ति तेरह तारीख़ से नौकर हुआ और तनख़्वाह उसे एक

महीना सत्रह दिन के बाद मिली। अब वह एक महीने की तनख़्वाह ख़र्च करे या सत्रह दिन की? और इस तनख़्वाह का ख़र्च किस तरह करे? यानी ज़ियारत शरीफ़ की सफेदी और मरम्मत वग़ैरह में लगाए या हज़रत साबिर पिया साहब (क़ुद्दिस सिर्रहु) की पाक रूह को फ़ातिहा का सवाब बख़्शे या दोनों तरह ख़र्च कर सकता है? बयान फरमाएं सवाब पायें।

---

[1] रद अल-मुह्तार, किताब अल-अज़हिया, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, ५/२०७ [2] अल-क़ुरआन अल-करीम, ६५/१

سقط النذر[1] انتہی ملتقطاً۔ واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم۔ تو وہ نذر ختم ہو جائے گی، اھ ملتقطاً، واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم (ت)

(۳) مسجد کے طاق بھرنے کی منت سے اگر مقصود مساکین پر تصدق ہو تو نذر صحیح ہے اس طاق بھرنے کی تعیین لغو، جہاں چاہے مساکین کو دے دے نذر ادا ہوجائے گی اور اگر اس منت سے مقصود مسجد کا طاق ہی بھرنا ہے پھر غنی مسکین جو چاہے لے لے، جیسا کہ بعض جاہل خصوصاً عورتوں کے تعامل سے ظاہر ہوتا ہے تو وہ منت ہی کرنی لغو ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۰: از جائس ضلع رائے بریلی محلہ زیر مسجد مکان حاجی ابراہیم صاحب مرسلہ ولی اللہ صاحب ۲ ربیع الاول شریف کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مولود شریف کی نذر ماننا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توا جروا۔

الجواب: مجلس میلاد شریف کہ طریقہ رائج حرمین شریفین پر ہو اعلٰی مستحبات سے ہے، خواہ نذر مان کر کریں یا بلا نذر، ہاں محل نظریہ امر ہے کہ نذر ماننے سے واجب ہوجائے گی، جیسے نماز یا صدقہ۔ یا واجب نہ ہوگی بدستور مستحب رہے گی، جیسے تلاوت قرآن مجید کہ ایک قول منت ماننے سے بھی واجب نہیں ہوتی۔ کما فی الخانیۃ و غیرہا (جیسا کہ خانیہ وغیرہ میں ہے ت) اس کا جزئیہ اس وقت نظر میں نہیں۔

لَعَلَّ اللّٰہَ یُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِکَ اَمْرًا[2] واللہ سبحٰنہ و تعالٰی ہو سکتا ہے اللہ تعالٰی بعد میں کوئی صورت پیدا فرمادے۔ اعلم۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۴۱: از دھڑکی ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے یہ نیت کی کہ اگر میری نوکری ہو جائے گی تو پہلی تنخواہ زیارت پیران کلیر شریف کے نذر کروں گا، وہ شخص تیرہ تاریخ سے نوکر ہوا اور تنخواہ اس کی ایک مہینہ سترہ دن کے بعد ملی اب یہ ایک ماہ کی تنخواہ صرف کرے یا سترہ دن کی؟ اور اس تنخواہ کا صرف کس طرح پر کرے یعنی زیارت شریف کی سفیدی و تعمیر وغیرہ میں لگائے یا حضرت صابر پیا صاحب قدس سرہ کی روح پاک کو فاتحہ ثواب بخشے یا دونوں طرح صرف کرسکتا ہے؟ بینوا توا جروا

---

[1] ردالمحتار کتاب الاضحیہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۲۰۷ [2] القرآن الکریم ۱/۶۵

Answer: Merely with intention nothing becomes binding until the words of affirmation are uttered by the tongue. If the aforementioned words were spoken and correct meanings were intended—namely, that 'I will give my first salary as charity in the name of Allah Almighty and dedicate its reward to Hazrat Makhdoom Sahib (may his secret be sanctified),' or 'I will give my first salary for the sake of Allah Almighty to the poor of the holy shrine of Hazrat Makhdoom (may Allah be pleased with him)'—then this is a valid Sharia vow (nadhr). And by way of preference (istihsanan), it became obligatory; it became binding to give the first salary as charity to the poor. However, there is an option to give it to the poor of the holy shrine or to the poor and needy anywhere else. And if these correct meanings were not intended, but rather, like some extremely mindless ignorant people, without the intention of charity or other Sharia devotions, the aim was only that 'I will give the first salary to Hazrat Makhdoom himself,' then this vow will be purely void and a great sin. However, it is not permissible to have such a suspicion about a Muslim unless he explicitly informs through his own intention. Similarly, if by the vow and visiting (ziyarat), his meaning was that 'For the sake of Allah, I will have the building of the noble shrine whitewashed' or 'I will provide lighting in the courtyard of the luminous shrine,' then too this vow is non-binding and invalid, because there is no Sharia obligation from the genus of these acts. As for the situation where the vow becomes valid, what would 'first salary' mean? It is clear that in custom (urf), absolute salary, especially the 'first salary,' refers to one month's wages. Although even a part of it is salary and the lifetime obligation is also salary, by saying 'first salary,' only the first month's salary will customarily become binding.

Arabic Text	**Urdu Translation/Explanation**
For the speech of every contractor, swearer, vower, and endower is only interpreted according to what is customary as they (the jurists) have explicitly stated.	Because the speech of any party to a contract, an oath-taker, a vower, or an endower will be interpreted according to the customary meaning, as has been explicitly stated. (T)
It is in Radd al-Muhtar: In al-Khaniyah, if someone says 'If I recover from this illness of mine, I will slaughter a sheep,' and then recovers, nothing is binding on him unless he says 'Then for Allah upon me is that I	It is mentioned in al-Khaniyah that when someone said 'If I recover from this illness, I will slaughter a goat,' then on becoming healthy, slaughtering it will not be binding on him, unless he says

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
slaughter a sheep.' This is the text of the matn of al-Durr, and he reasoned it in its commentary with his words: 'Because...'	'For the sake of Allah, it is binding upon me that I slaughter a goat' (then it will be a vow and its fulfillment... [continues])

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Ta'liq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/299 & 533.

उत्तर: सिर्फ नीयत से तो कुछ लाज़िम नहीं होता जब तक ज़बान से ईजाब (वचन) के अलफ़ाज़ न कहे, और अगर ज़बान से मज़कूरह अलफ़ाज़ कहे और उनसे सही मानी मुराद लिये यानी पहली तनख्वाह अल्लाह अज़्ज़वजल के नाम पर तसद्दुक़ (दान) करूँगा और उसका सवाब हज़रत मख़दूम साहब (क़ुद्दसा सिर्रुहुल अज़ीज़) के नज़र करूँगा, या पहली तनख्वाह अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए आस्ताना-ए-पाक हज़रत मख़दूम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के फ़ुक़रा (ग़रीबों) को दूँगा, तो यह नज़र (मन्नत) शरीयत की नज़र से सही है, और इस्तेहसानन वाजिब हो गई, पहली तनख्वाह उसे फ़ुक़रा पर तसद्दुक़ करनी लाज़िम हो गई। मगर यह इख़्तियार है कि आस्ताना-ए-पाक के फ़ुक़रा को दे, और जहाँ के फ़क़ीरों मोहताजों को चाहे। और अगर ये सही मानी मुराद न थे बल्कि बाज़ सख्त बे-अक़्ल जाहिलों की तरह बे-इरादा तसद्दुक़ वग़ैरह कुरबाते शरईया सिर्फ यही मक़सूद था कि पहली तनख्वाह खुद हज़रत मख़दूम को दूँगा, तो यह नज़र बातिल (अमान्य) महज़ और गुनाह-ए-अज़ीम होगी, मगर मुसलमान पर ऐसे मानी मुराद लेने की बदगुमानी जाइज़ नहीं जब तक वह अपनी नीयत से सराहतन (साफ़-साफ़) इत्तिला न दे। इसी तरह अगर नज़र व ज़ियारत करने से उसकी यह मुराद थी कि अल्लाह के वास्ते इमारत-ए-ज़ियारत-ए-शरीफ़ की सफ़ेदी करा दूँगा या अहाता-ए-मज़ार-ए-पुर अनवार में रोशनी करूँगा, जब भी यह नज़र ग़ैर-लाज़िम व ना-मोतबर है कि इन अफ़आल (कार्यों) की जिन्स से कोई वाजिब-ए-शरई नहीं। रहा यह कि जिस हालत में नज़र सही हो जाए, पहली तनख्वाह से क्या मुराद होगी यह ज़ाहिर है कि उर्फ़(चलन) में मुतलक़ तनख्वाह ख़ुसूसन पहली तनख्वाह एक महीने की उजरत (मज़दूरी) को कहते हैं अगरचे उसका एक जुज़ (हिस्सा) भी तनख्वाह है और उम्र भर का वाजिब भी तनख्वाह है, तो पहली तनख्वाह कहने से अव्वल तनख्वाह एक माह ही उर्फ़न (चलन के मुताबिक़) लाज़िम आएगी।

अरबी पाठ

क्योंकि हर अक़्द (अनुबंध) करने वाले, क़सम खाने वाले, नज़र (मन्नत) मानने वाले और वक़्फ़ करने वाले के कलाम को सिर्फ उसी पर महमूल (लागू) किया जाता है जो मुतआरिफ़ (प्रचलित) हो जैसा कि फ़ुक़हा ने इस पर नस (स्पष्ट कथन) की है।

हिंदी अनुवाद/व्याख्या

क्योंकि किसी अक़्द वाले, क़सम वाले, नज़र वाले और वक़्फ़ करने वाले के कलाम को मुतआरिफ़ मानी पर महमूल किया जाएगा जैसा कि इस पर नस की गई है। (त)

अरबी पाठ

रद्दुल मुहतार में है: ख़ानिया में है कि अगर किसी ने कहा 'अगर मैं इस बीमारी से ठीक हो गया तो एक भेड़ ज़ब्ह करूँगा', और वह ठीक हो गया, तो उस पर कुछ लाज़िम नहीं होगा जब तक कि वह यह न कहे 'अल्लाह के लिए मुझ पर लाज़िम है कि मैं एक भेड़ ज़ब्ह करूँ।' यह 'दुर्र' के मतन की इबारत है और उसकी शरह में इसकी दलील यह दी गई है क्योंकि...

हिंदी अनुवाद/व्याख्या

ख़ानिया में मज़कूर है कि जब किसी ने कहा कि अगर मैं इस मरज़ से तन्दुरुस्त हो जाऊँ तो बकरी ज़ब्ह करूँगा, तो तन्दुरुस्त होने पर उस पर ज़ब्ह करना लाज़िम नहीं होगा मगर जब यूँ कहे कि अल्लाह तआला के लिए मुझ पर लाज़िम है कि मैं बकरी ज़ब्ह करूँगा (तो फिर नज़र होगी और पूरा करना... [जारी])

1 रद्दुल मुहतार, बाबुल तालीक़, दार इहयाउत तुराथिल अरबी, बैरुत, 2/299 और 533।

الجواب: صرف نیت سے تو کچھ لازم نہیں ہوتا جب تک زبان سے الفاظِ ایجاب نہ کہے، اور اگر زبان سے الفاظِ مذکورہ کہے اور ان سے معنی صحیح مراد لئے یعنی پہلی تنخواہ اللہ عزوجل کے نام پر تصدق کروں گا اور اس کا ثواب حضرت مخدوم صاحب قدس سرہ العزیز کے نذر کروں گا، یا پہلی تنخواہ اللہ عزوجل کے لئے فقراء آستانہ پاک حضرت مخدوم رضی اللہ تعالیٰ عنہ دوں گا، یہ نذر صحیح شرعی ہے، اور استحساناً وجوب ہو گیا، پہلی تنخواہ اسے فقراء پر تصدق کرنی لازم ہو گئی۔ مگر یہ اختیار ہے کہ فقراء آستانہ پاک کو دے، اور جہاں کے فقیروں محتاجوں کو چاہے۔ اور اگر یہ معنی صحیح مراد نہ تھے بلکہ بعض سخت بے عقل جاہلوں کی طرح بے ارادہ تصدق وغیرہ قرباتِ شرعیہ صرف یہی مقصود تھا کہ پہلی تنخواہ خود حضرت مخدوم کو دوں گا، تو یہ نذر باطل محض و گناہ عظیم ہوگی، مگر مسلمان پر ایسے معنی مراد لینے کی بدگمانی جائز نہیں جب تک وہ اپنی نیت سے صراحۃً اطلاع نہ دے۔ اسی طرح اگر نذر و زیارت کرنے سے اس کی یہ مراد تھی کہ اللہ کے واسطے عمارتِ زیارتِ شریف کی سپیدی کرادوں گا یا احاطہ مزار پر انوار میں روشنی کروں گا، جب بھی یہ نذر غیر لازم و نا معتبر ہے کہ ان افعال کی جنس سے کوئی واجبِ شرعی نہیں۔ رہا یہ کہ جس حالت میں نذر صحیح ہو جائے، پہلی تنخواہ سے کیا مراد ہو گی یہ ظاہر ہے کہ عرف میں مطلق تنخواہ خصوصاً پہلی تنخواہ ایک مہینہ کی اجرت کو کہتے ہیں اگر چہ اس کا ایک جزء بھی تنخواہ ہے اور عمر بھر کا واجب بھی تنخواہ ہے، تو پہلی تنخواہ کہنے سے اول تنخواہ ایک ماہ ہی عرفاً لازم آئے گی۔

عربی متن	اردو ترجمہ
فان کلام کل عاقد وحالف وناذر وواقف انما یحمل علی ماھوالمتعارف کما نصوا علیہ۔	کیونکہ کسی عقد والے، قسم والے، نذر والے اور وقف کرنے والے کے کلام کو متعارف معنی پر محمول کیا جائیگا جیسا کہ اس پر نص کی گئی ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: فی الخانیۃ ان برءت من مرضی ھذا ذبحت شاۃ فبرأ لا یلزمہ شیئ الا ان یقول فللہ علی ان اذبح شاۃ اھوھی عبارۃ متن الدر وعللھا فی شرحہ بقولہ لان

خانیہ میں مذکور ہے کہ جب کسی نے کہا کہ اگر میں اس مرض سے تندرست ہو جاؤں تو بکری ذبح کروں گا، تو تندرست ہونے پر اس پر ذبح کرنا لازم نہیں ہوگا مگر جب یوں کہے کہ اللہ تعالٰی کے لئے مجھ پر لازم ہے کہ میں بکری ذبح کروں گا (تو پھر نذر ہوگی اور پورا کرنا

1 ردالمحتار باب التعلیق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۹۹ و ۵۳۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, 13

(It will be mandatory) This is the text of the original work 'Al-Durr al-Mukhtar', and its commentary explains the reason for it: that fulfilling it becomes mandatory because of the vow. The second statement indicates this, whereas the first one does not. This is supported by what is mentioned in 'Al-Bazzaziyyah': if someone says, 'If my son survives, I will fast for as long as I live,' it is a promise. However, 'Al-Bazzaziyyah' also states that if someone says, 'If I regain health, I will fast for such-and-such number of days,' then fulfilling it will not be obligatory unless they say, 'Fasting is mandatory upon me for the sake of Allah.' But the preferred legal opinion (istihsan) is that the fast becomes mandatory for them. And if someone says, 'If I do such and such, I will perform Hajj,' and then they do that act, then Hajj becomes mandatory upon them. (Briefly cited - T)

In 'Al-Durr al-Mukhtar': Know that the vows made by most common people for the deceased, and what is taken in the form of coins, candles, oil, etc., to the shrines of noble saints to seek proximity to them, is by consensus (ijma') invalid and prohibited as long as they do not intend to spend those things on the poor among mankind.

It should be known that what most common people give as vows for the deceased at the graves of noble saints—such as money, candles, oil, etc., for the purpose of seeking proximity to the saints—receiving such items is by consensus invalid and prohibited, unless the common people intend to spend those items on the poor. (T)

Imam Nasih Hakim, the Gnostic of Allah, Abdul Ghani al-Nablusi (may his secret be sanctified), states in 'Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya': "And of this category is visiting graves, seeking blessings from the shrines of saints and the righteous, and making vows to them by making it conditional upon obtaining..."

And from this same category is visiting graves, and making vows for saints conditional upon healing or the return of a traveler (all of these are permissible) because...

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Iman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/70.
2. Al-Durr al-Mukhtar, before the chapter on I'tikaf, Matba' Mujtaba'i, Delhi, 1/155.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13, 13

(अनिवार्य होगा) यह 'अद-दुर अल-मुख्तार' के मूल पाठ की इबारत है और इसके भाष्य में इसकी वजह यह बताई गई है कि इसे पूरा करना प्रतिज्ञा (नज़्र) के कारण अनिवार्य हो जाता है। दूसरी इबारत इस पर इशारा करती है, जबकि पहली इबारत इस पर दलालत नहीं करती। 'अल-बज़्ज़ाज़िया' में इसकी पुष्टि है कि यदि कोई कहे, 'अगर मेरा बेटा जीवित बच गया तो मैं जीवन भर रोज़े रखूँगा,' तो यह एक वादा होगा। लेकिन 'अल-बज़्ज़ाज़िया' में यह भी है कि यदि कोई कहे, 'अगर मुझे स्वास्थ्य मिल गया तो मैं इतने रोज़े रखूँगा,' तो इसे पूरा करना तब तक वाजिब (अनिवार्य) नहीं होगा जब तक वह यह न कहे, 'अल्लाह के लिए मुझ पर रोज़ा लाज़िम है।' लेकिन इस्तिहसान (प्राथमिकता) यह है कि उस पर रोज़ा अनिवार्य हो जाएगा। और यदि कोई कहे, 'अगर मैं ऐसा करूँ तो मैं हज करूँगा,' और उसके बाद उसने वह काम किया, तो हज अनिवार्य होगा। (संक्षेप में - त)

'अद-दुर अल-मुख्तार' में है: जान लो कि अधिकांश आम लोगों द्वारा मृतकों के लिए जो मन्नतें मानी जाती हैं, और जो रुपये-पैसे, मोमबत्ती, तेल आदि बुज़ुर्गों के मक़बरों पर उनके करीब होने की नीयत से ले जाए जाते हैं, वे सर्वसम्मति (इज्मा) से बातिल (अमान्य) और हराम हैं, जब तक कि वे इन चीज़ों को गरीबों पर खर्च करने की नीयत न करें।

मालूम होना चाहिए कि अधिकतर आम लोग मृतकों के लिए जो मन्नत मानकर औलिया किराम की कब्रों पर रुपये, मोमबत्ती और तेल आदि औलिया के कुर्बत (निकटता) के लिए देते हैं, तो उन चीज़ों को लेना सर्वसम्मति से बातिल और हराम है जब तक कि आम लोग उन चीज़ों को गरीबों पर खर्च करने की नीयत न कर लें। (त)

इमाम नासेह हकीम अल्लामा आरिफ बिल्लाह अब्दुल गनी नाबलुसी (क़ुद्दसा सिर्रुहु) 'हदीक़ा नदिय्या' में फरमाते हैं: "और इसी श्रेणी से है कब्रों की ज़ियारत करना, और बुज़ुर्गों और नेक लोगों के मक़बरों से बरकत प्राप्त करना, और किसी चीज़ की प्राप्ति पर उनके लिए मन्नतें मानना..."

और इसी श्रेणी से है कब्रों की ज़ियारत करना, और शिफ़ायाबी (स्वास्थ्य लाभ) या किसी मुसाफ़िर के वापस आने की शर्त पर औलिया के लिए मन्नतें मानना (ये सब जायज़ हैं) क्योंकि...

1. रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-ईमान, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/70।
2. अद-दुर अल-मुख्तार, एतिकाफ के अध्याय से पहले, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/155।

لازم ہوگا) یہ در مختار کے متن کی عبارت ہے اور اس کی شرح میں اسکی علت یہ بیان کی ہے کہ اس لئے کہ پورا کرنا نذر کی وجہ سے لازم ہوتا ہے ، اس پر دوسری عبارت دلالت کرتی ہے ، پہلی عبارت اس پر دال نہیں ہے اھ ، اور اس کی تائید بزازیہ میں ہے کہ اگر کوئی یہ کہے کہ اگر میرا بیٹا سالم بچے تو میں تازیندگی روزہ رکھوں گا ، تو وعدہ ہوگا، لیکن اس کے ساتھ بزازیہ میں یہ بھی ہے کہ اگر کوئی کہے "اگر مجھے صحت ہوئی تو اتنے روزے رکھوں گا " تو پورا کرنا واجب نہ ہوگا ، جب تک اس میں "اللہ تعالٰی کے لئے مجھ پر روزہ لازم ہے" نہ کہے۔ لیکن استحسان یہ ہے کہ اس پر روزہ لازم ہوجائے گا، اور اگر کوئی کہے "اگر میں ایسا کروں تو میں حج کروں گا" اس کے بعد اس نے وہ کام کیا تو حج لازم ہوگا اھ اختصاراً (ت)

در مختار میں ہے: اعلم ان النذر الذی یقع للاموات من اکثر العوام وما یؤخذ من الدراھم والشمع والزیت ونحوھا الی ضرائح الاولیاء الکرام تقربا الیھم فھو بالاجماع باطل وحرام مالم یقصد واصرفھا للفقراء الانام۲۔

معلوم ہونا چاہئے کہ اکثر عوام مردوں کے لئے جو نذر مان کر اولیاء کرام کی قبروں پر دراہم ، شمع اور تیل وغیرہ اولیاء کے تقرب کے لئے دیتے ہیں تو ان چیزوں کو وصول کرنا بالاجماع باطل اور حرام ہے جب تک عوام ان چیزوں کو فقراء پر صرف کرنے کی نیت نہ کرلیں (ت)

امام ناصح حکیم علامہ عارف باللہ عبدالغنی نابلسی قدس سرہ القدسی حدیقہ ندیہ شرح طریقہ محمدیہ میں فرماتے ہیں: ومن ھذاالقبیل زیارۃ القبور والتبرك بضرائح الاولیاء والصالحین والنذرلھم بتعلیق ذلك علی حصول

اور اسی قبیل سے ہے قبروں کی زیارت کرنا، اور شفایابی یا کسی مسافر کے واپس آنے سے مشروط اولیاء کے لئے نذریں ماننا (یہ سب جائز ہیں) کیونکہ

۱ ردالمحتار کتاب الایمان دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۷۰ ۲ درمختار قبیل باب الاعتکاف مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۵۵

Fatawa Rizvia Volume 13 Page: 13

[Main Text Section]

Arabic Text: Recovery from illness or the return of an absent person [as reasons for an offering/vow] are figuratively meant as charity for the servants of the graves/ shrines, just as the jurists (Fuqaha) have stated regarding someone who gives Zakat to a poor person but calls it a 'loan': it is valid because consideration is given to the meaning, not the literal word. Similarly, giving voluntary charity (Sadaqah) to a wealthy person under the name of a 'gift' (Hibah), or giving a poor person Sadaqah under the name of Hibah (or Hibah under the name of Sadaqah), is permissible. (1) This is until the end of what was stated and excellently noted in the discussion of 'Al-Qunyah'. He also cited its permissibility from Imam Ibn Hajar al-Makki. I (the author) say: This is the implication of the statement [that it is] forbidden as long as there is no intention to spend it on the poor of humanity.

Urdu Translation/Explanation: These offerings (nadhr) are figuratively intended as charity for the attendants of the shrines there. As the honorable jurists have stated, if a person gives their Zakat to someone naming it a 'loan', it will be valid because meaning is considered, not the words. Similarly, giving voluntary charity to a wealthy person as a gift or giving a poor person Sadaqah in the name of a gift (or a gift in the name of charity) is permissible. This is according to the statement of Allama Nablusi until the end, where he mentioned the discussion of 'Al-Qunyah' and stated this excellent benefit. He also quoted this permissibility from Imam Ibn Hajar al-Makki. I say: the implication of the statement of 'Al-Mukhtar'—that it is forbidden until there is an intention to spend it on the poor—is the same. (T)

From Radd al-Muhtar:

Arabic Text: It is not hidden that he has the choice to spend it on others (i.e., besides the poor of that specific door specified in the vow, as mentioned previously). It is necessary that the vowed object be something through which a vow is valid, such as giving silver coins (dirhams) in charity and the like. However, if he vowed oil to light a lamp over the Sheikh's tomb or in the minaret, then it is void. (2) Summarized. And Allah Almighty knows best.

Urdu Translation/Explanation: Let it not be hidden that he will have the authority to spend it on other poor people (i.e., besides those poor people specified in the vow) as mentioned before. And it is necessary that the vowed thing is something through

which a vow becomes valid, such as giving charity of dirhams etc. Yes, if a vow was made to light an oil lamp over a grave or to light it on the minaret of a shrine there, then it will be void. Summarized. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 242: From the Old City, sent by Maulvi Abdul Wahid Mathrawi, 20 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. Zaid made a vow that if I get a job, I will spend one month's salary in the path of God. Now he is employed...

Footnotes: 1. Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, Discussion 48 etc., Maktaba Nooriya Rizvia Faisalabad, 3/151. 2. Radd al-Muhtar, before the Chapter of I'tikaf, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 128/2.

फ़तावा रज़विया खण्ड 13 पृष्ठ: 13

[मुख्य पाठ अनुभाग]

अरबी पाठ: बीमारी से शिफा या किसी ग़ायब व्यक्ति की वापसी [नज़्र के कारण के रूप में] को मज़ार के ख़ादिमों के लिए सदक़ा (दान) के रूप में रूपक माना जाता है, जैसा कि फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने उस व्यक्ति के बारे में कहा है जो किसी गरीब व्यक्ति को ज़कात देता है लेकिन उसे 'कर्ज़' कहता है: यह सही है क्योंकि अर्थ/मंशा पर विचार किया जाता है, शाब्दिक शब्दों पर नहीं। इसी तरह, किसी धनी व्यक्ति को 'उपहार' (हिबा) के नाम से नफ़्ली सदक़ा देना, या किसी गरीब व्यक्ति को हिबा के नाम से सदक़ा (या सदक़ा के नाम से हिबा) देना जायज़ है। (1) यह अल्लामा नाबुलुसी द्वारा 'अल-क़ुनया' की चर्चा के अंत तक बताई गई बात है। उन्होंने इमाम इब्न हजर अल-मक्की से भी इसकी अनुमति को उद्धृत किया है। मैं कहता हूँ: यही उस कथन का अर्थ है [कि यह] तब तक हराम है जब तक कि इसे दुनिया के गरीबों पर खर्च करने का इरादा न हो।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या: ये नज़्रें वहां मज़ारात के ख़ादिमों के लिए सदक़ा मजाज़ तौर पर मुराद होती हैं, जैसा कि फ़ुक़हा किराम ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स अपनी ज़कात किसी को क़र्ज़ का नाम ले कर दे तो सही होगा क्योंकि मानी का एतबार होता है लफ़्ज़ों का एतबार नहीं होता, और यूँही नफ़्ली सदक़ा किसी ग़नी को हिबा के नाम से या फ़क़ीर को सदक़ा हिबा के नाम से देना (या हिबा को सदक़ा के नाम से) देना जायज़ है। अल्लामा नाबुलुसी के बयान के आख़िर तक, जहाँ उन्होंने क़ुनया की बहस को ज़िक्र कर के यह बेहतरीन फ़ायदा बयान फ़रमाया, और उन्होंने इमाम इब्न हजर मक्की से भी इस जवाज़ को नक़ल फ़रमाया, क़ुल्त (मैं कहता हूँ कि) और मुख़्तार के क़ौल कि जब तक फ़ुक़रा पर सर्फ़ करने की नियत न करें तो हराम है का यही मुफ़ाद है। (त)

रद्द अल-मुह्तार से:

अरबी पाठ: यह छिपा नहीं है कि उसे दूसरों (अर्थात उस विशेष द्वार के गरीबों के अलावा जिसे मन्नत में निर्दिष्ट किया गया है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है) पर खर्च करने का विकल्प है। यह आवश्यक है कि मन्नत की गई वस्तु ऐसी हो जिसके द्वारा मन्नत वैध हो, जैसे दिरहम आदि दान में देना। हालाँकि, अगर उसने शेख के मकबरे के ऊपर एक चिराग जलाने के लिए या मीनार में जलाने के लिए तेल की मन्नत मांगी, तो यह शून्य (बातिल) है। (2) संक्षिप्त। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या: मख़्फ़ी न रहे कि उसको दूसरे फ़ुक़रा (यानी नज़्र में मुअय्यन कर्दा फ़ुक़रा के बग़ैर) पर ख़र्च करने का इख़्तियार होगा जैसा कि पहले गुज़रा, और ज़रूरी है कि मुन्ज़ूर वो चीज़ हो जिससे नज़्र सही हो जाए जैसा कि दराहम वग़ैरा का सदक़ा करना, हाँ अगर तेल के चराग़ क़ब्र के ऊपर जलाने की नज़्र मानी हो या वहां मज़ार के मीनार पर जलाने की नज़्र हो तो ये बातिल होगी, अह् मुख़्तसरन वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला 242: पुरानी शहर से, मौलवी अब्दुल वाहिद मथुरावी द्वारा प्रेषित, 20 ज़ुल क़ादा 1337 हिजरी। ज़ैद ने वादा किया था कि अगर मैं मुलाज़िम (कर्मचारी) हो जाऊँ तो एक महीने की तनख्वाह अल्लाह की राह में ख़र्च करूँगा, अब वह मुलाज़िम है...

फुटनोट्स: 1. अल-हद्दीक़ा अन-नदिया शरह अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया, बहस 48 आदि, मकतबा नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 3/151। 2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-एतिकाफ़ से पहले, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 128/2।

شفاء او قدوم غائب فانہ مجاز عن الصدقۃ علی الخادمین لقبورھم کما قال الفقھاء فیمن دفع الزکاۃ لفقیر وسماھا قرضا صح لان العبرۃ بالمعنی لا باللفظ، وکذلک الصدقۃ علی الغنی ھبۃ والھبۃ علی الفقیر صدقۃ ۱ الی آخر ما افاد واجاد ذکرہ فی بحث القنیۃ ونقل جوازہ ایضا عن الامام ابن حجر المکی، قلت وھو مفاد قولہ حرام ما لم یقصد واصرفھا لفقراء الانام۔

یہ نذریں وہاں مزارات کے خادموں کے لئے صدقہ مجازاً مراد ہوتی ہیں، جیسا کہ فقہاء کرام نے فرمایا کہ اگر کوئی شخص اپنی زکوۃ کسی کو قرض کا نام لے کر دے تو صحیح ہوگا کیونکہ معنی کا اعتبار ہوتا ہے لفظوں کا اعتبار نہیں ہوتا، اور یونہی نفلی صدقہ کسی غنی کو ہبہ کے نام سے یا فقیر کو صدقہ ہبہ کے نام سے دینا (یا ہبہ کو صدقہ کے نام سے) دینا جائز ہے۔ علامہ نابلسی کے بیان کے آخر تک، جہاں انہوں نے قنیہ کی بحث کو ذکر کر کے یہ بہترین فائدہ بیان فرمایا، اور انہوں نے امام ابن حجر مکی سے بھی اس جواز کو نقل فرمایا، قلت (میں کہتا ہوں کہ) اور مختار کے قول کہ جب تک فقراء پر صرف کرنے کی نیت نہ کریں تو حرام ہے کا یہی مفاد ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: لا یخفی ان لہ الصرف الی غیرھم (ای غیر فقراء الباب الذی عینہ فی النذر کما مر سابقا) ولا بدان یکون المنذور مما یصح بہ النذر کالصدقۃ بالدراھم ونحو ھما اما لو نذر زیتا لا یوقد قندیل فوق ضریح الشیخ او فی المنارۃ فباطل ۲ اھ مختصرا واللہ تعالی اعلم۔

مخفی نہ رہے کہ اس کو دوسرے فقراء (یعنی نذر میں معین کردہ فقراء کے بغیر) پر خرچ کرنے کا اختیار ہوگا جیسا کہ پہلے گزرا، اور ضروری ہے کہ منذور وہ چیز ہو جس سے نذر صحیح ہو

جائے جیسا کہ دراہم وغیرہ کا صدقہ کرنا، ہاں اگر تیل کے چراغ قبر کے اوپر جلانے کی نذر مانی ہو یا وہاں مزار کے منارہ پر جلانے کی نذر ہو تو یہ باطل ہوگی، اھ مختصرا واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۴۲: از شہر کہنہ مرسلہ مولوی عبدالواحد متھراوی ۲۰ ذی القعدہ ۱۳۳۷ھ زید نے عہد کیا تھا کہ میں ملازم ہو جاؤں تو ایک ماہ کی تنخواہ راہ خدا میں صرف کروں گا، اب وہ ملازم

---

۱ الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ الخلق الثامن والاربعون الخ مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد

۲ ۳/۱۵۱ ردالمحتار قبیل باب الاعتکاف داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۲۸/۲

...happened. If Zaid gives this month's salary to one of his extremely poor, helpless, and destitute relatives with this intention, will that vow be fulfilled from his obligation or not? In case it is not fulfilled, in what other work should he spend it? State the ruling and be rewarded.

The Answer: The vow will certainly be fulfilled provided that the relative is not from his descendants, nor are they his parents (ascendants), nor spouse, nor Sayyid etc., to whom giving Zakat is not permissible. Rather, giving to a relative carries double the reward: charity (Sadaqah) and upholding ties of kinship (Sila-e-Rahm), as proven from the Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him). (As is proven from the Holy Prophet ﷺ. - Translator). And Allah Almighty knows best.

Problem 243: Sent by Munshi Abdus Saboor Sahib, Merchant, 6 Dhu al-Hijjah 1321 AH. What do the scholars of religion say in this matter: a person, at the time of starting his livelihood, thought that whatever profit he gets, he will give the sixteenth part of it for the sake of Allah. Now he gained one rupee profit above the cost, but miscellaneous expenses, i.e., the salary of employees etc., consumed two annas from this one rupee profit, and fourteen annas remained. Now, should he take out the sixteenth part from the profit that occurred over the original cost, or after deducting the miscellaneous expenses from the monthly income?

The Answer: Obligation does not arise merely by thinking unless one makes a vow with the tongue. Yes, whatever intention is for Allah the Almighty, it should be fulfilled. The expenditure that is related to business and is included in business accounts according to the practice of merchants is deducted, and what remains is called profit. Then, whatever personal domestic expenses or other expenses besides business expenses are spent from that profit, those will not be deducted because the profit that remains is meant to be spent. So, if that servant is a business employee and his salary is counted in business expenses according to the practice of merchants, and what remains after that is considered profit, then he should give the sixteenth part of fourteen annas as charity. And if after deducting business expenses a full rupee was saved and this salary is not related to it, then he should give the sixteenth part of the whole rupee. And Allah Almighty knows best.

Problem 244 to 27: Sent by Muhammad Abdus Saboor Sahib, Merchant, son of Munshi Muhammad Zahoor Sahib, Jeweler, 20 Rabi al-Akhir Sharif. What do the

scholars of religion say in this matter: a person in the profits of his business… [text continues]

Page 594 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | पृष्ठ १३

...हो गया। अगर ज़ैद अपनी इस महीने की तनख्वाह को अपने किसी अत्यंत गरीब, बेसहारा और निर्धन रिश्तेदार को इस नीयत से दे दे, तो क्या उसके ज़िम्मे से वह मन्नत पूरी हो जाएगी या नहीं? मन्नत पूरी न होने की स्थिति में वह उसे और किस काम में खर्च करे? बयान फ़रमाएं, सवाब पायें।

उत्तर: मन्नत ज़रूर पूरी हो जाएगी बशर्ते कि वह रिश्तेदार न उसकी औलाद में हो, न उसके माता-पिता (अस्ल) में हो, न पत्नी या पति हो, और न ही सय्यद वगैरह हो जिन्हें ज़कात देना जायज़ नहीं है। बल्कि रिश्तेदार को देने में दोहरा सवाब है: सदक़ा और सिला-ए-रेहम (रिश्तेदारी निभाना), जैसा कि नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से साबित है। (जैसा कि नबी-ए-अकरम ﷺ से साबित है। - तर्जुमा) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २४३: प्रेषक मुंशी अब्दुल सबूर साहब, सौदागर, ६ ज़ुल-हिज्जा १३२१ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने रोज़गार शुरू करते समय यह विचार किया कि मुझे जो मुनाफ़ा होगा, उसमें से सोलहवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए निकालूँगा। अब उसे लागत से ऊपर एक रुपया मुनाफ़ा हुआ, लेकिन फुटकर खर्च यानी कर्मचारियों की तनख्वाह आदि में इस एक रुपये मुनाफ़े में से दो आने खर्च हो गए और बाकी चौदह आने बचे। अब वह मूल लागत से जो मुनाफ़ा हुआ है उसमें से सोलहवाँ हिस्सा निकाले या फुटकर मासिक खर्च घटाने के बाद निकाले?

उत्तर: सिर्फ़ विचार करने से वाजिब (अनिवार्य) नहीं होता जब तक ज़बान से मन्नत न करे। हाँ, जो नीयत अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के लिए हो उसे पूरा करना ही चाहिए। जो खर्च व्यापार से संबंधित हो और व्यापारियों के हिसाब में उसी पर डाला जाता है, उसे घटाकर जो बचे उसे मुनाफ़ा कहते हैं। फिर उस मुनाफ़े में से जो कुछ अपना घरेलू खर्च या व्यापार खर्च के अलावा अन्य खर्चों में व्यय हो जाए, उसे नहीं घटाया जाएगा क्योंकि जो मुनाफ़ा बचता है वह खर्च होने के लिए ही होता है। अतः यदि वह नौकर व्यापार का नौकर है और उसकी तनख्वाह व्यापारियों के दस्तूर के अनुसार व्यापार खर्च में गिनी जाती है, उसके बाद जो बचता है वह मुनाफ़ा समझा जाता है, तब तो चौदह आने का सोलहवाँ हिस्सा सदक़ा करे। और अगर व्यापार खर्च घटाने के बाद पूरा एक रुपया बचा था और यह तनख्वाह उससे संबंधित नहीं है, तो पूरे रुपये का सोलहवाँ हिस्सा दे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २४४ से २७: प्रेषक मुहम्मद अब्दुल सबूर साहब, सौदागर इब्न मुंशी मुहम्मद ज़हूर साहब जौहरी, २० रबी उल-आखिर शरीफ़। इस मसले में दीन के उलेमा क्या फ़रमाते हैं, एक व्यक्ति ने अपने व्यापार के मुनाफ़े में खुदावंद करीम का... [जारी]

पृष्ठ ५९४/६८८

ہو گیا، اگر زید اپنی اس ماہ کی تنخواہ کو اپنے کسی نہایت غریب بیکس و مفلس رشتہ دار کو اس نیت سے دے دے تو اس کے ذمہ سے وہ عہد ساقط ہو جائے گا یا نہیں، درصورت عدم ساقط ہونے کے وہ اور کس کام میں خرچ کرے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ضرور نذر ادا ہو جائیگی جبکہ وہ عزیز نہ اس کی اولاد میں ہو، نہ یہ اس کی نہ زوج و زوجہ، نہ سید وغیرہ جنہیں زکوۃ دینا جائز نہیں، بلکہ عزیز کو دینے میں دونا ثواب ہے، صدقہ اور صلہ رحم، کما ثبت عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (جیسا کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ثابت ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۳: مرسلہ منشی عبدالصبور صاحب سوداگر ۶ ذی الحجہ ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے وقت شروع کرنے روزگار کے، یہ خیال کرلیا کہ مجھ کو جو نفع ہوگا اس میں سولہواں حصہ واسطے اللہ کے نکالوں گا، اب اس کو لاگت سے زائد ایک روپیہ نفع ہوا لیکن متفرق خرچ یعنی تنخواہ ملازمان وغیرہ میں دو آنے اس نفع ایک روپے میں صرف ہوگئے باقی چودہ آنے رہے، اب وہ اصلی لاگت سے جو نفع ہوا ہے اس میں سے سولہواں حصہ نکالے یا بعد منہا کرنے خرچ متفرق کے ماہوار میں سے نکالے۔

الجواب: صرف خیال کرلینے سے وجوب تو نہیں ہوتا جب تک زبان سے نذر نہ کرے، ہاں جو نیت اللہ عزوجل کے لئے اس کا پورا کرنا ہی چاہیے، جو خرچ کہ تجارت کے متعلق ہو اور حسابِ تجار میں اسی پر ڈالا جاتا ہے وہ منہا دے کر جو بچے اسے نفع کہتے ہیں، پھر اس نفع میں جو کچھ اپنا خرچ خانگی وغیرہ دیگر مصارف علاوہ خرچ تجارت میں صرف ہو جائے وہ منہا نہ دیا جائے گا

کہ یوں تو جو نفع بچتا ہے وہ خرچ ہی ہونے کے لئے ہوتا ہے، پس وہ نوکر اگر تجارت کا نوکر ہے اور اس کی تنخواہ حسب دستورِ تجار خرچِ تجارت میں محسوب کی جاتی ہے، اس کے بعد جو بچتا ہے وہ نفع سمجھا جاتا ہے، جب تو چودہ آنے کا سولہواں حصہ تصدق کرے اور اگر خرچِ تجارت منہا دے کر کامل روپیہ بچا تھا یہ تنخواہ اس کے متعلق نہیں تو پورے روپیہ کا سولہواں حصہ دے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۴ تا ۲۷: مرسلہ محمد عبدالصبور صاحب سوداگر ابن منشی محمد ظہور صاحب جوہری ۲۰ ربیع الآخر شریف اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں علمائے دین، ایک شخص نے اپنی تجارت کے منافع میں خداوند کریم کا [جاری]

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

A sixteenth part has been designated. (1) Should Mawlid Sharif and Niyaz of Giyarwin Sharif be performed with this sixteenth part or not? (2) Should this sixteenth part be given to one's parents, paternal aunt, maternal aunt, Sayyid sahib, and Maulavi sahib or not? (3) Should one give from this sixteenth part to the Ramadan reciter and also provide Iftar for Ramadan or not? (4) Regarding the aforementioned Zakat money, should it be spent on the food and clothing of students or not, and should Zakat money be given to the Muadhin (caller to prayer) or not?

Answer: If this is neither a vow nor Zakat, but rather just a heartfelt intention or words of a vow uttered informally, saying "I will spend a sixteenth part of my business profits for the sake of Allah Almighty in good deeds," then one can use it for Mawlid Sharif, Giyarwin Sharif, Ramadan Iftar, and serving parents, Sayyids, and scholars. All these are good deeds for the sake of Allah Almighty, provided the intention is purely for Allah the Exalted. If the Ramadan reciter (sami') is needy and no wage was agreed upon, nor is a wage fixed by custom, then giving to him is also a good deed. However, if there was a condition for payment or if a wage is established by custom, then giving to him is not a good deed at all, but rather a sin.

[Arabic Table]: Right Column (Arabic): Because it is hiring for an act of obedience, and hiring for it is invalid, except for what later scholars exempted, like imamate, adhan, and teaching the Quran. And this is not among them. The detailed investigation is in Radd al-Muhtar and Shifa al-Alil. (T) Left Column (Urdu): Because this is a wage for an act of worship, and taking a wage for worship is void, except for imamate or adhan and Quranic teaching, which later scholars have exempted from this. That is another matter; this does not belong to that category. Its complete investigation is in Radd al-Muhtar and Shifa al-Alil.

And if in the mentioned case the intention was not for every good deed, but specifically to give to the poor in God's name, then all those matters would still be permissible with that money, but it is necessary that the portion for the blessed gathering be given specifically to the needy. The Giyarwin Sharif offerings and Ramadan Iftar should be distributed only to the poor. Among Sayyids and scholars, one should give only to those who are needy. One can also give to parents if they are in a state of need.

[Arabic Table]: Right Column (Arabic): For here it is not an obligatory charity (sadaqah), but rather he intended to give charity to the poor. So when... Left Column

(Urdu): Because this charity is not obligatory, and he intended to give charity to the poor. So when parents are also among the poor, giving charity to them is as a form of maintenance of kinship ties (silah).

सोलहवाँ हिस्सा निर्धारित किया गया है। (१) क्या इस सोलहवें हिस्से से महफ़िल-ए-मिलाद शरीफ़ और नियाज़-ए-ग्यारहवीं शरीफ़ करनी चाहिए या नहीं? (२) क्या इस सोलहवें हिस्से को अपने माता-पिता, बुआ, मौसी, सैयद साहब और मौलवी साहब को देना चाहिए या नहीं? (३) क्या इस सोलहवें हिस्से में से रमज़ान-उल-मुबारक के सामय (क़ुरआन सुनने वाले) को देना और रमज़ान-उल-मुबारक की इफ़्तारी करना चाहिए या नहीं? (४) ज़िक्र की गई ज़कात की रक़म को विद्यार्थियों के खाने-पीने और कपड़ों पर ख़र्च करना चाहिए या नहीं, और ज़कात की रक़म मुअज़्ज़िन को देनी चाहिए या नहीं?

उत्तर: यदि यह न तो मन्नत है और न ही ज़कात, बल्कि केवल मन में नीयत कर ली है या बिना शब्दों की मन्नत ज़बान से कह दी है कि "मैं अपने व्यापार के मुनाफ़े से सोलहवाँ हिस्सा नेक कामों में अल्लाह तआला के लिए ख़र्च किया करूँगा", तो इससे महफ़िल-ए-मिलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, रमज़ान शरीफ़ की इफ़्तारी और अपने माता-पिता, सादात (सैयदों) और विद्वानों की सेवा, सब कुछ किया जा सकता है, क्योंकि ये सभी नेक काम अल्लाह तआला ही के लिए हैं, बशर्ते नीयत विशुद्ध रूप से अल्लाह अज़-व-जल्ल के लिए हो। यदि रमज़ान-उल-मुबारक का सामय (सुनने वाला) ज़रूरतमंद हो और उसके लिए कोई मज़दूरी तय न हुई हो, और न ही रिवाज के अनुसार कोई मज़दूरी निर्धारित हो, तो उसे भी दिया जा सकता है क्योंकि अब उसे देना भी एक नेक काम है। और यदि मज़दूरी की शर्त थी या रिवाज के अनुसार उसकी मज़दूरी तय की गई है, तो उसे देना कोई नेक काम नहीं बल्कि पाप है।

[अरबी सारणी]: दायाँ स्तंभ (अरबी): क्योंकि यह इबादत पर मज़दूरी है और इबादत पर मज़दूरी लेना बातिल है, सिवाय उसके जिसे बाद के विद्वानों ने इमामत, अज़ान और क़ुरआन शिक्षण के रूप में छूट दी है। और यह उनमें से नहीं है। विस्तृत शोध रद अल-मुह्तार और शिफ़ा अल-अलिल में है। (त) बायाँ स्तंभ (उर्दू): क्योंकि यह इबादत पर मज़दूरी है और इबादत पर मज़दूरी लेना बातिल है, सिवाय इमामत या अज़ान और क़ुरआन की शिक्षा पर मज़दूरी के जिसे बाद के विद्वानों ने इससे अलग रखा है। वह और चीज़ है, यह उस श्रेणी में नहीं आता। इसकी पूर्ण जाँच रद-उल-मुह्तार और शिफ़ा-उल-अलील में है।

और यदि उपरोक्त स्थिति में नीयत हर नेक काम के लिए नहीं थी, बल्कि विशेष रूप से मिसकीनों (ग़रीबों) को खुदा के नाम पर देने की थी, तो वे सभी कार्य अभी भी उस रक़म से जायज़ होंगे, लेकिन

यह आवश्यक है कि मुबारक महफ़िल का हिस्सा विशेष रूप से मोहताजों (ज़रूरतमंदों) को दिया जाए। ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ और रमज़ान-उल-मुबारक की इफ़्तारी केवल मिसकीनों में बांटी जाए। सादात और विद्वानों में से केवल उन्हें नज़र की जाए जो ज़रूरतमंद हों। माता-पिता को भी ज़रूरतमंदी की स्थिति में दिया जा सकता है।

[अरबी सारणी]: दायाँ स्तंभ (अरबी): क्योंकि यहाँ यह सदक़ा वाजिब नहीं है, बल्कि उसने मिसकीनों पर सदक़ा करने की नीयत की है। तो जब... बायाँ स्तंभ (उर्दू): क्योंकि यह सदक़ा वाजिब नहीं है और उसने मिसकीनों पर सदक़ा करने की नीयत की है, तो जब माता-पिता भी मिसकीनों में से हों, तो सिला-रहमी (रिश्तों को जोड़ने) के रूप में उन पर सदक़ा।

पृष्ठ 688 का 595

سولہواں حصہ مقرر کیا ہے۔ (۱) اس سولہویں حصہ میں محفل میلاد شریف و نیاز گیارہویں شریف کرنا چاہئے یا نہیں؟ (۲) اس سولہویں حصہ میں اپنے والدین و پھوپھی و خالہ و سید صاحب و مولوی صاحب کو دینا چاہئے یا نہیں؟ (۳) اس سولہویں حصے میں سامع رمضان المبارک کو دینا نیز افطاری رمضان المبارک کرنا چاہئے یا نہیں؟ (۴) در بارہ زکوٰۃ مذکورہ کے روپے کو طالب علموں کی خورد ونوش و لباس میں صرف کرنا چاہئے یا نہیں، اور زکوۃ کار و پیہ مؤذن کو دینا چاہئے یا نہیں؟

الجواب: اگر نہ یہ منت ہے نہ زکوۃ ہے بلکہ یونہی دل میں نیت کرلی یا بے الفاظ نذر زبان سے کہہ لیا ہے کہ اپنے منافع تجارت سے سولہواں حصہ نیک کاموں میں اللہ تعالیٰ کے لئے صرف کیا کروں گا، جب تو اس سے محفل میلاد شریف اور گیارھویں شریف اور افطاری رمضان شریف اور اپنے والدین و سادات و علماء کی خدمت سب کچھ کرسکتا ہے کہ یہ سب نیک کام اللہ تعالیٰ ہی کے لئے ہیں جب کہ نیت خالص اللہ عزوجل کے واسطے ہو، رمضان مبارک کا سامع اگر حاجتمند ہو اور اس سے اجرت نہ ٹھہری ہو اور نہ رواج کی رو سے اجرت مقرر ہو تو اسے بھی دے سکتا ہے کہ اب اسے بھی دینا نیک کام ہے، اور اگر اجرت کی شرط ہولی یا ازروئے رواج اس کی اجرت کا قرار دیا ہے تو اسے دینا کچھ نیک کام نہیں بلکہ گناہ ہے،

[Arabic Table]: Right Column (Arabic): لانه اجارة على الطاعة والاجارة عليها باطلة الاما استثناه المتاخرون من امامة واذان وتعليم قران وليس هذا منها والتحقيق في رد المحتار وشفاء العليل۔ (ت) Left Column (Urdu): کیونکہ یہ عبادت پر اجرت ہے اور عبادت پر اجرت لینا باطل ہے مگر امامت پر یا اذان اور تعلیم قرآن پر اجرت جس کو متاخرین نے اس سے

مستثنیٰ قرار دیا ہے وہ اور چیز ہے یہ اس قبیل سے نہیں ہے، اس کی مکمل تحقیق ردالمختار اور شفاء العلیل میں ہے۔

اور اگر صورت مذکورہ میں ہر نیک کام کی نیت نہ تھی بلکہ بالخصوص مساکین کو خدا کے نام پر دینا تو وہ سب امور ابھی اس روپے سے جائز ہوں گے مگر یہ چاہئے کہ مجلس مبارک کا حصہ خاص محتاجین کو دے، گیارہویں شریف کی نیاز، رمضان المبارک کی افطاری، صرف مساکین کو بانٹے، سادات و علماء میں انہیں کی نذر کرے جو حاجتمند ہوں، ماں باپ کو بھی بحالت حاجتمندی دے سکتا ہے،

[Arabic Table]: Right Column (Arabic): لاهنا ليست صدقة واجبة وانما نوى التصدق على المساكين فاذا كان Left Column (Urdu): کیونکہ یہ صدقہ واجب نہیں ہے اور اس نے مساکین پر تصدق کی نیت کی ہے تو جب ماں باپ بھی مساکین سے ہوں تو بطور صلہ ان پر صدقہ

(Arabic): Giving to them is permissible as a form of kindness. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in authentic hadiths termed what you feed your wife as charity (sadaqah), what you feed your child as charity, and what you feed your family as charity. (1)

(Urdu): It is permissible because the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) declared maintaining family ties as charity, stating in authentic hadiths: "Whatever you feed your wife is charity, whatever you feed your child is charity, and whatever you feed your dependents is charity." (T)

And if specific words of a vow (nazr) have been spoken, for example, saying: "It is obligatory upon me for Allah's sake to give one-sixteenth of my profits in charity in the name of Allah," then it cannot be given to parents, nor to Sayyids (descendants of the Prophet) even if they are needy, nor to any wealthy person even if they are a scholar. It must only be given to the needy, even if they are one's paternal aunt, maternal aunt, sister, brother, paternal uncle, or maternal uncle. This can be done by making them the owners [of the food/items] through a sacred gathering (Majlis Sharif), Gyarween Sharif, or during Iftari.

(Arabic): For these are ways of fulfillment and gathering for the remembrance of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) or for conveying rewards (Isal-e-Sawab) to a noble saint of Allah (may Allah be pleased with him). It does not contradict the vow, nor does it negate the charitable nature of Zakat funds.

(Urdu): Because this is just a method of payment; a gathering for the blessed remembrance of the Prophet (peace and blessings be upon him), or conveying rewards to a saint of Allah (may Allah be pleased with him), is not contrary to a vow. And these methods do not prevent Zakat funds from being given as charity. (T)

Whenever this is the ruling, which was the ruling for a specific vow, Zakat and vow (nazr) funds can also be given to students, whether by providing clothes, grain, or food and making them the owners. However, feeding them at home [without transferring ownership] will not fulfill the obligation of Zakat or the vow, (Arabic): "because that is ibahah (permission) while charity (Sadaqah) requires tamlik (transfer of ownership), as they have explicitly stated." (Because it is mere permission, whereas giving charity is in the form of transferring ownership, as the jurists have ruled upon. T) If a Muezzin has a fixed salary, Zakat or a vow cannot be counted towards it,

(Arabic): "because an obligatory payment cannot be included in another obligation of a different nature." (Because one obligation cannot enter into another obligation of a different kind. T) Yes, if he calls the Adhan without a salary and is a needy recipient of Zakat, it can be given to him. Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and most perfect.

---

(1) Kanz al-Ummal, Hadith, Muassasat ar-Risala Beirut 6/415, Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktabat al-Ma'arif Riyadh 7/455.

(अरबी): उनके साथ दया का व्यवहार करना जायज़ है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सही हदीसों में कहा है कि जो कुछ तुम अपनी पत्नी को खिलाते हो वह सदक़ा है, जो तुम अपनी संतान को खिलाते हो वह सदक़ा है, और जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो वह सदक़ा है। (1)

(उर्दू): यह जायज़ है क्योंकि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने रिश्तों को निभाने (सिला-ए-रहमी) को सदक़ा घोषित करते हुए सही हदीसों में फ़रमाया है कि जो कुछ तूने अपनी पत्नी को खिलाया वह सदक़ा है और जो तूने अपनी संतान को खिलाया वह सदक़ा है और जो तूने अपने परिवार को खिलाया वह सदक़ा है। (त)

और अगर विशेष मन्नत (नज़्र) के शब्द ज़बान से अदा किए हैं, उदाहरण के लिए कहा: "मुझ पर अल्लाह तआला के लिए अनिवार्य (वाजिब) है कि अपने मुनाफ़े का सोलहवाँ हिस्सा अल्लाह तआला के नाम पर सदक़ा करूँ" तो न माता-पिता को दे सकता है और न ही सादात (सैय्यदों) को, चाहे वे मोहताज हों, और न ही किसी धनी व्यक्ति को, चाहे वह विद्वान (आलिम) हो। हाँ, केवल मोहताजों को देना अनिवार्य है, भले ही वह उसकी बुआ, मौसी, बहन, भाई, चाचा, या मामा हों। यह मजलिस शरीफ़ या ग्यारहवीं शरीफ़ करके या इफ़्तारी में मालिक बनाकर किया जा सकता है।

(अरबी): क्योंकि ये केवल अदायगी के तरीके हैं और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की याद के लिए इकट्ठा होना या अल्लाह के किसी नेक वली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को सवाब पहुँचाने (ईसाल-ए-सवाब) के लिए है। यह मन्नत के विपरीत नहीं है और न ही यह ज़कात के धन को सदक़ा करने के विपरीत है।

(उर्दू): क्योंकि यह केवल अदायगी का एक तरीका है; हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पवित्र ज़िक्र के लिए इकट्ठा होना, या किसी वली अल्लाह (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के ईसाल-ए-सवाब का होना मन्नत के विपरीत नहीं है, और ये तरीके ज़कात के धन को सदक़ा करने के विपरीत नहीं हैं। (त)

जब भी यही हुक्म है जो विशेष मन्नत का हुक्म था, ज़कात और मन्नत का धन छात्रों (तालिब-ए-इल्मों) को भी दे सकते हैं, चाहे कपड़े बनवा दें या अनाज या खाना उन्हें देकर मालिक बना दें। हाँ, घर बिठाकर खिलाने से ज़कात और मन्नत अदा नहीं होगी, (अरबी): "चूंकि यह केवल अनुमति (इबाहत) है जबकि सदक़ा करना स्वामित्व हस्तांतरण (तम्लीक) के रूप में होता है, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है।" (चूंकि यह केवल अनुमति है जबकि सदक़ा करना स्वामित्व हस्तांतरण के रूप में होता है, जैसा

कि फ़क़ीहों ने इस पर स्पष्ट किया है। त) मुअज़्ज़िन के निर्धारित वेतन में ज़कात या मन्नत को नहीं जोड़ा जा सकता, (अरबी): "क्योंकि एक वाजिब दूसरे विपरीत प्रकार के वाजिब में प्रवेश नहीं कर सकता।" (क्योंकि एक वाजिब दूसरे विपरीत प्रकार के वाजिब में प्रवेश नहीं कर सकता। त) हाँ, यदि वह बिना वेतन के अज़ान देता हो और ज़कात का पात्र (मोहताज) हो तो उसे दिया जा सकता है। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे मज़बूत है।

---

(1) कँज़ अल-उम्माल, हदीस, मुअस्ससत अर-रिसाला बेरुत 6/415, अल-मुअजम अल-औसत, हदीस, मकतबत अल-मआरिफ़ रियाद 7/455।

منهم جاز صلتهمابها وقد سمی النبي صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم فی الاحادیث الصحیحة ما اطعمت اهلك صدقة اما اطعمت ولدك صدقة وما اطعمت عیالك صدقة 1- کرنا جائز ہے کیونکہ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے صلہ رحمی کو صدقہ قرار دیتے ہوئے صحیح احادیث میں فرمایا کہ جو کچھ تو نے اپنی بیوی کو کھلایا وہ صدقہ ہے اور جو تو نے اپنی اولاد کو کھلایا وہ صدقہ ہے اور جو تو نے اپنی عیال کو کھلایا وہ صدقہ ہے۔ (ت)

اور اگر خاص منت کے لفظ زبان سے ادا کر لئے ہیں مثلاً کہا "مجھ پر اللہ تعالٰی کے لئے واجب ہے کہ اپنے منافع کا سولھواں حصہ اللہ تعالٰی کے نام پر تصدق کروں" تو نہ والدین کو دے سکتا ہے نہ سادات کو اگرچہ محتاج ہوں، نہ کسی غنی کو اگرچہ عالم ہو، ہاں صرف محتاجوں کو دینا لازم ہے اگرچہ اس کی پھوپھی، خالہ، بہن، بھائی، چچا، ماموں ہوں، اگرچہ مجلس شریف یا گیارھویں شریف کرکے یا افطاری میں مالک کردے،

فانها طریق الاداء والاجتماع لذکر النبی صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم او ایصال الثواب الی ولی اللہ الکریم رضی اللہ تعالٰی عنه لا ینافی النذر ولا ینفی التصدق مال زکوة هو۔ کیونکہ یہ صرف ادائیگی کا ایک طریقہ ہے حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے ذکر پاک کے لئے اجتماع، یا کسی ولی اللہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے ایصالِ ثواب کا ہونا نذر کے منافی نہیں ہے، اور یہ طریقے زکوٰۃ کے مال کو صدقہ کرنے کے منافی نہیں ہیں۔ (ت)

جب بھی یہی حکم ہے جو خاص منت کا حکم تھا مال زکوٰۃ و نذر طالبِ علموں کو بھی دے سکتے ہیں خواہ کپڑے بنادے خواہ اناج یا کھانا انہیں دے کر مالک کردے، ہاں گھر بٹھا کر کھلانے سے

زکوٰۃ و نذر ادا نہ ہوگی لانه اباحة والتصدق تملیك كما نصوا علیه (کیونکہ یہ اباحت ہے جبکہ صدقہ کرنا بطور تملیک ہوتا ہے جیسا کہ فقہاء نے اس پر نص کی ہے۔ ت) مؤذن کی تنخواہ ٹھہری ہے تو اس میں زکوٰۃ یا نذر کو محسوب نہیں کر سکتا لان واجبها لا یدخل فی واجب اخر لیس من جنسه (کیونکہ واجب دوسرے خلاف جنس واجب میں داخل نہیں ہو سکتا۔ت) ہاں بلا تنخواہ اذان دیتا ہو اور محتاجِ مصرفِ زکوٰۃ ہو تو دے سکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمه جل مجده اتم واحکم۔

---

1 کنز العمال حدیث موسسة الرسالة بیروت ۴۱۵/۶ ، المعجم الاوسط حدیث مکتبة المعارف الریاض ۴۵۵/۷

Volume 13, Page 13

Fatawa Razawiyya

Problem 228: From Sadar, 8 Shaban 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid made a vow (mannat) that if a certain hardship of mine is removed, I will sacrifice a goat, etc., and distribute it among the poor. If Zaid succeeded and sacrificed a goat, can Zaid also eat from this meat or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Zaid cannot eat it himself, nor can he feed his parents, etc. (ascendants), or his children, etc. (descendants), nor any Hashmi or wealthy person (Ghani). Rather, it is the specific right of the poor (Masakeen) who are eligible for Zakaat.

In Radd al-Muhtar, it is stated: "The recipient of Zakaat is also the recipient of the Vow (Nazar)." End quote. And Allah Almighty knows best. In Radd al-Muhtar, it says that the recipient of Zakaat is also the recipient of the vow, summarized. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 229: (This issue is actually issue number 60 from Fatawa Africa; it has been included here for context). Zaid says that making offerings (nazar) to anyone other than Allah (Glory be to Him) is forbidden, whether it be for the Prophets (Peace be upon them) or the Saints (May Allah be pleased with them). In the collection of sermons of the Two Holy Sanctuaries compiled by Maulvi Abdullah Sahib, on page 74, it is written: "It is also forbidden to offer sandalwood on tombs."

On page 232 of the same book: "Vows for other than God are surely polytheism (shirk), listen / Eating food offered to others is also forbidden, O Akram." Are these verses against the beliefs of Ahl-e-Sunnat or not? And in your treatise 'Barakat al-Imdadiyya' on page 31, it says: What is the remedy for the heavy stone of the leader of the group himself, Mian Ismail Dehlvi? He writes in 'Sirat-e-Mustaqim' about his spiritual guide's condition:

The holy soul of His Eminence Ghaus al-Thaqalayn and His Eminence Hazrat Khwaja Baha'uddin Naqshband became attentive to his state. / The souls of Hazrat Ghaus al-Thaqalayn and Hazrat Khwaja Baha'uddin Naqshband (may Allah have mercy on them) became attentive to Hazrat's state. (T)

In the same it is:

1. Radd al-Muhtar, Bab al-Masraf, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/58.

2. Sirat-e-Mustaqim, Chapter Four, describing the path of Prophethood, etc., Al-Maktaba al-Salafiyya, Lahore, p. 166.

जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

फ़तावा रज़विया

मसाला २२८: सदर से, ८ शाबान १३१८ हिजरी। उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने मन्नत मानी कि अगर मेरी फ़लां तकलीफ़ दूर हो जाए तो मैं बकरी वग़ैरह ज़िब्ह करके मिसकीनों (गरीबों) को तक़सीम करूँगा। अगर ज़ैद कामयाब हुआ और बकरा ज़िब्ह किया तो क्या ज़ैद भी इस गोश्त में से खा सकता है या नहीं? बयान फरमायें, सवाब पायें।

अल-जवाब: ज़ैद खुद खा सकता है न अपने माँ-बाप वग़ैरह यानी उसूल (बुज़ुर्गों) को, न ही अपने बेटा-बेटी वग़ैरह यानी फ़ुरूअ (संतानों) को, न ही किसी हाशमी या धनी (ग़नी) को खिला सकता है। बल्कि वह खास उन मिसकीनों का हक़ है जो ज़कात के मुस्तहिक हैं।

रद्दुल मुहतार में है कि ज़कात का मसरफ़ (पात्र) ही मन्नत (नज़र) का मसरफ़ भी होता है। इल्म अल्लाह तआला के पास है। रद्दुल मुहतार में है कि जो ज़कात के हक़दार हैं वही मन्नत के भी हक़दार होते हैं। मुख़्तसर। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसाला २२९: (यह मसला वास्तव में फ़तावा अफ़्रीका का मसला नंबर ६० है, मुनासिबत की वजह से यहाँ शामिल किया गया है)। ज़ैद कहता है कि अल्लाह तआला के अलावा किसी और के लिए मन्नत (नज़र) चढ़ाना हराम है, चाहे नबी अलैहिस्सलाम हों या औलिया रज़ियल्लाहु अन्हुम। मजनुआ ख़ुत्बा हरामैन शरीफ़ैन, जिसके लेखक मौलवी अब्दुल्ला साहब हैं, के पृष्ठ ७४ पर है: "मज़ारो पर संदल चढ़ाना भी हराम है।"

इसी किताब के पृष्ठ २३२ पर है: "नज़र भी ग़ैर-ख़ुदा की है यक़ीन शिर्क सुनो / ग़ैर की नज़र का खाना भी हराम ऐ अकरम।" क्या ये शेर अहल-ए-सुन्नत के ख़िलाफ़ हैं या नहीं? और हुज़ूर के रिसाले 'बरकात-ए-इमदादिया' में पृष्ठ ३१ पर है: खुद इमाम-उत-ताइफ़ा मियाँ इस्माइल देहलवी के भारी पत्थर का क्या इलाज, वह 'सिरात-ए-मुस्तक़ीम' में अपने पीर जी का हाल लिखते हैं:

रूहे मुक़द्दस जनाब गौस-उत-सक़लैन व जनाब हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद मुतवज्जा हाल हज़रत इशाँ गर्दीदा २। / हज़रत गौस-उत-सक़लैन और हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद (रहमहुल्लाहु तआला) की रूहें हज़रत के हाल पर मुतवज्जा हुईं। (त)

इसी में है:

1. रद्दुल मुहतार, बाब अल-मसरफ, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/५८।
2. सिरात-ए-मुस्तक़ीम, अध्याय चार, नबुवत के मार्ग का वर्णन आदि, अल-मकतबा अल-सलफ़िया, लाहौर, पृष्ठ १६६।

पृष्ठ ५९७ / ६८८

جلد سیزدہم ۱۳

فتاویٰ رضویہ

مسئلہ ۲۲۸: از صدر ۸ شعبان ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے منت مانی کہ اگر فلاں تکلیف میری رفع ہو جائے تو میں بکری وغیرہ ذبح کر کے مسکینوں کو تقسیم کروں گا، اگر زید کامیاب ہوا اور بکرا ذبح کیا تو آیا زید بھی اس گوشت میں سے کھا سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: زید خود کھا سکتا ہے نہ اپنے ماں باپ وغیرہ ہما اصول خواہ بیٹا بیٹی وغیرہ ہما فروع کسی ہاشمی یا غنی کو کھلا سکتا ہے بلکہ وہ خاص مساکین مصرف زکوۃ کا حق ہے۔

فی رد المحتار مصرف الزکوۃ ھو ایضاً مصرف النذر اھ واللہ تعالی اعلم۔ رد المحتار میں ہے کہ زکوۃ کا مصرف نذر کا مصرف بھی ہوتا ہے، اھ ملخصاً واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۲۹: (یہ مسئلہ دراصل فتاویٰ افریقہ کا مسئلہ نمبر ۶۰ ہے، مناسبت کے پیش نظر اسے یہاں شامل کیا گیا ہے) زید کہتا ہے غیر خدا جل و علا کیلئے نذر چڑھانا حرام ہے چاہے نبی علیہ السلام ہوں چاہے اولیاء رضی اللہ تعالی عنہم۔ مجموعہ خطب حرمین شریفین تالیف مولوی عبداللہ صاحب کے صفحہ ۷۴ پر ہے ع صندل بھی تربتوں پہ چڑھانا حرام ہے

اسی کتاب کے صفحہ ۲۳۲ پر ہے :۔ نذر بھی غیر خدا کی ہے یقین شرک سنو / غیر کی نذر کا کھانا بھی حرام اے اکرم کیا یہ اشعار اہلسنت کے خلاف ہیں یا نہیں؟ اور حضور کے رسالہ برکات الامدادیہ میں ص ۳۱ پر ہے: خود امام الطائفہ میاں اسمعیل دہلوی کے بھاری پتھر کا کیا علاج، وہ صراطِ مستقیم میں اپنے پیر جی کا حال لکھتے ہیں:

روحِ مقدس جناب غوث الثقلین و جناب حضرت خواجہ بہاء الدین نقشبند متوجہ حال حضرت ایشاں گردیدہ ۲۔ / حضرت غوث الثقلین اور حضرت خواجہ بہاء الدین نقشبند (رحمہما اللہ تعالیٰ) کی روحیں حضرت کے حال پر متوجہ ہوئیں۔ (ت)

اسی میں ہے:

1 رد المحتار باب المصرف داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۸ 2 صراطِ مستقیم باب چہارم در بیان سلوک راہ نبوت الخ المکتبۃ السلفیہ لاہور ص ۱۶۶

[Table Header - Left: Persian Text | Right: Urdu Translation] [Left Column]: A person who intends to take an oath of allegiance (bay'at) in the Dar'iyya (Qadiriyya) path, certainly he attains a great devotion in the presence of Hazrat Ghaus al-Azam (until his statement) that he counts himself among the ranks of his majesty's slaves. (Summarized) [Right Column]: A person intended to take an oath of allegiance in the Qadiriyya order. Certainly, he had a very firm belief in Hazrat Ghaus al-Saqalain (until the statement) that he considered himself among the slaves of his majesty. (Summarized) (T)

In the same [book] it is stated:

[Left Column]: Great saints like Hazrat Ghaus al-Azam and Hazrat Khwaja Buzurg, etc. [Right Column]: Great saints like Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him) and Hazrat Khwaja Buzurg, etc. (T)

The leader of the group (Imam al-Taifa) himself writes in his discourse on slaughtered animals included in the collection 'Zubdat al-Nasaih':

[Left Column]: If a person raises a goat at home so that its meat becomes good, then slaughters it, and after cooking it, recites the Fatiha of Hazrat Ghaus al-Azam (may Allah be pleased with him) and feeds it, there is no flaw. [Right Column]: If a person raised a goat at home so that its meat would become good, and after slaughtering and cooking it, he offers the Fatiha of Ghaus-e-Azam (may Allah be pleased with him) and feeds the people, then there is no harm in it. (T)

Speak from faith, does 'Ghaus al-Azam' mean the greatest helper (Faryad Ras) or something else? Knowing Allah (Mighty and Majestic) as One, the translation of 'Ghaus al-Saqalain' would be 'helper of jinns and humans' or something else. And then what kind of open polytheism (shirk) is your Imam and his entire family speaking? If you are true to your word, then have some courage and call all of them polytheists and faithless, otherwise, is the Wahhabi Sharia your private invention that it is reserved only for outsiders, and those in the family are all exempt from it?

Answer (Al-Jawab): The prohibition of offering (Nazr) for other than God is in the juristic (fiqhi) sense. The offerings made for the noble saints, whether in their physical life or spiritual life, are not 'juristic offerings'. It is a common idiom that whatever gift is presented in the presence of elders is called 'Nazr' (offering). When a

king held court, offerings (nazranas) were presented to him. Shah Rafi-ud-Din, the brother of Maulana Shah Abdul Aziz Dehlvi, writes in the treatise 'Nuzur':

1. Sirat-e-Mustaqim, Chapter Four, on the explanation of the path of Sulook (spiritual journeying), Path of Prophethood, Maktaba Salafiya, Lahore, p. 174.
2. Sirat-e-Mustaqim, Supplement, on the explanation of the second path of Sulook, Path of Sainthood (Wilayat), Maktaba Salafiya, Lahore, p. 232.
3. Zubdat al-Nasaih, Imam al-Taifa Mian Ismail.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह | १३

[तालिका शीर्षक - बायां: फ़ारसी पाठ | दायां: उर्दू अनुवाद] [बायां कॉलम]: एक व्यक्ति जो तरीक़ा-ए-दरिया (कादिरिया) में बैअत का इरादा करता है, निश्चित रूप से वह हज़रत ग़ौस-ए-आज़म की बारगाह में महान अक़ीदत प्राप्त करता है (उनके कथन तक) कि वह स्वयं को हुज़ूर के गुलामों की श्रेणी में गिनता है। (संक्षेप में) [दायां कॉलम]: एक व्यक्ति ने तरीक़ा-ए-कादिरिया में बैअत का इरादा किया। निश्चित रूप से उसे हज़रत ग़ौस-उस-सक़लैन में बहुत पक्का विश्वास था (उनके कथन तक) कि उसने स्वयं को हुज़ूर के गुलामों में शुमार किया। (संक्षेप में) (त)

इसी में है:

[बायां कॉलम]: महान औलिया जैसे हज़रत ग़ौस-ए-आज़म और हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग आदि। [दायां कॉलम]: महान औलिया जैसे ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग आदि। (त)

यही इमाम-उत-ताइफ़ा अपनी तहरीर में ज़बीहा (ज़बह किया हुआ जानवर) के बारे में मजमुआ 'ज़ुब्दत-उल-नसाह' में लिखते हैं:

[बायां कॉलम]: यदि कोई व्यक्ति घर में बकरी पालता है ताकि उसका मांस अच्छा हो जाए, फिर उसे ज़बह करके और पकाकर हज़रत ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की फ़ातिहा पढ़कर खिलाता है, तो कोई दोष नहीं है। [दायां कॉलम]: अगर किसी व्यक्ति ने कोई बकरा घर में पाला ताकि उसका मांस अच्छा हो जाए और उसे ज़बह करके पकाकर ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) की फ़ातिहा दिलाए और लोगों को खिलाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं। (त)

ईमान से कहिए, क्या 'ग़ौस-ए-आज़म' का यही अर्थ हुआ कि सबसे बड़ा फ़रियाद रस (मददगार) या कुछ और? अल्लाह (जल्ला व अला) को एक जानकर, 'ग़ौस-उस-सक़लैन' का यही अनुवाद हुआ कि जिन्न और इंसानों का मददगार या कुछ और। और फिर यह कैसा खुला शिर्क(बहुदेववाद) तुम्हारा इमाम और उसका सारा ख़ानदान बोल रहा है? अगर अपनी बात के सच्चे हो, तो ज़रा हिम्मत करके उन सबको भी मुशरिक और बे-ईमान कह दो, वरना क्या वहाबी शरीयत तुम्हारी निजी बनावट है कि केवल बाहर वालों के लिए विशेष है और घर वाले सब इससे मुक्त हैं?

उत्तर (अल-जवाब): गैर-अल्लाह के लिए मन्नत (नज़्र) की मनाही शरीयत (फ़िक़्ह) के लिहाज़ से है। औलिया-ए-कराम के लिए उनके ज़ाहिरी या बातिनी जीवन में जो मन्नत मानी जाती है, वह फ़िक़्ही नज़्र

नहीं है। यह सामान्य बोलचाल है कि बड़ों की सेवा में जो भेंट दी जाती है उसे नज़्र कहते हैं। बादशाह जब दरबार लगाता था, तो उसे नज़्रें पेश की जाती थीं। शाह रफ़ी-उद-दीन साहिब, जो मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी साहिब के भाई हैं, अपने रिसाले 'नुज़ूर' में लिखते हैं:

1. सिरात-ए-मुस्तक़ीम, चौथा अध्याय, सुलूक के तरीक़े पर, नबूवत का रास्ता, मकतबा सलफ़िया, लाहौर, पृष्ठ १७४।
2. सिरात-ए-मुस्तक़ीम, परिशिष्ट, दूसरे सुलूक के बयान में, विलायत का रास्ता, मकतबा सलफ़िया, लाहौर, पृष्ठ २३२।
3. ज़ुब्दत-उल-नसाह, इमाम-उत-ताइफ़ा मियां इस्माइल।

पृष्ठ ५९८ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

شخصی کہ در طریقہ دریہ قصد بیعت میکند البتہ او را در جناب حضرت غوث الاعظم اعتقاد عظیم بہم میرسد (الی قولہ) کہ خود را از زمرہ غلاماں آنجناب میشمارد اھ ملخصا۔ | ایک شخص نے طریقہ قادریہ میں بیعت کا ارادہ کیا یقیناً اس کو جناب حضرت غوث الثقلین میں بہت پختہ اعتقاد تھا (الی قولہ) کہ خود کو آنجناب کے غلاموں میں شمار کیا اھ ملخصاً (ت)

اسی میں ہے:

اولیائے عظام مثل حضرت غوث الاعظم وحضرت خواجہ بزرگ الخ۔ | اولیائے عظام جیسے غوثِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ اور حضرت خواجہ بزرگ الخ (ت)

یہی امام الطائفہ اپنی تقریر ذبیحہ مندرج مجموعہ زبدۃ النصائح میں لکھتے ہیں:

اگر شخصی بزے را خانہ پرور کند تا گوشت او خوب شود و اورا ذبح کردہ و پختہ فاتحہ حضرت غوث الاعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ خواندہ بخوراند خللے نیست۔ | اگر کسی شخص نے کوئی بکرا گھر میں پالا تا کہ اس کا گوشت اچھا ہو جائے اور اس کو ذبح کر کے پکا کر غوث اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کی فاتحہ دلائے اور لوگوں کو کھلائے تو اس میں کوئی حرج نہیں۔ (ت)

ایمان سے کہیو غوث الاعظم کے یہی معنی ہوئے کہ سب سے بڑے فریاد رس یا کچھ اور، خدا جل و علا کو ایک جان کر کہنا غوث الثقلین کا یہی ترجمہ ہوا کہ جن و بشر کے فریاد رس یا کچھ اور، اور پھر یہ کیسا کھلا شرک تمہارا امام اور اس کا سارا خاندان بول رہا ہے، قول کے سچے ہو تو ان سب کو بھی ذرا جی کڑا کر کے مشرک بے ایمان کہ دو ورنہ شریعتِ وہابیہ کیا آپ کی خانگی ساخت ہے کہ فقط باہر والوں کے لئے خاص ہے گھر والے سب اس سے مستثنٰی ہیں۔

الجواب: غیر خدا کیلئے نذر فقہی کی ممانعت ہے، اولیائے کرام کے لئے ان کی حیات ظاہری خواہ باطنی میں جو نذر کہی جاتی ہیں یہ نذر فقہی نہیں، عام محاورہ ہے کہ اکابر کے حضور جو ہدیہ کریں اسے نذر کہتے ہیں، بادشاہ نے دربار کیا اسے نذریں گزریں، شاہ رفیع الدین صاحب برادر مولانا شاہ عبدالعزیز صاحب محدث دہلوی رسالہ نذور میں لکھتے ہیں:

1 صراط مستقیم باب چہارم در بیان طریق سلوک راہ نبوت مکتبہ سلفیہ لاہور ص ۱۷۴ 2 صراط مستقیم تکملہ در بیان سلوک ثانی راہ ولایت مکتبہ سلفیہ لاہور ص ۲۳۲ 3 زبدۃ النصائح امام الطائفہ میاں اسمعیل

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Boxed Text] The word "Nazr" used here is not in its legal (Shari'i) sense, because in common usage, whatever is presented to elders/saints is called "Nazr" or "Niyaz". (T)

[Main Body] The great Imam Sayyidi Abdul Ghani Nablusi (may his secret be sanctified) states in "Hadiqa al-Nadiyya": "And from this category is visiting graves and seeking blessings from the shrines of saints and the righteous, and making vows (Nazr) for them conditional upon receiving healing or the return of an absent person; for this is metaphorical for giving charity to the attendants of their graves, just as the jurists (Fuqaha) have said regarding one who gives Zakat to a poor person and calls it a 'loan', it is valid because consideration is given to the meaning, not the word." (2) Meaning, from the same category is visiting graves and seeking blessings from the shrines of saints and pious people, and making a vow (Mannat) for the noble saints upon the healing of a sick person or the arrival of a traveler; for this is metaphorical for charity to the attendants of the graves, as the jurists have said that if one gives Zakat to a poor person and names it a loan, it will be correct because consideration is given to the meaning, not the word.

It is obvious that if this was a jurisprudential (Fiqhi) Nazr, it would not be valid even for living persons, although in both cases (living and deceased), this has been an ancient custom and practice among the elders, accepted and acted upon. The great Imam Sayyidi Abul Hasan Nur al-Milla wal-Din Ali bin Yusuf bin Jarir Lakhmi Shatnufi (may his secret be sanctified), whom the master of the science of biographies Shamsuddin Dhahabi called "Al-Imam al-Awhad" (the peerless Imam) in "Tabaqat al-Qurra" and the illustrious Imam Jalaluddin Suyuti called the same in "Husn al-Muhadara", narrates in his noble book "Bahjat al-Asrar" with authentic and reliable prophetic-style chains of transmission:

(1) Abu al-Afaf Musa bin Uthman al-Biqa'i informed us in Cairo in the year 663 AH, saying: My father informed us in Damascus in 614 AH, saying: The two sheikhs, Sheikh Abu Amr Uthman al-Sarifini and Sheikh Abu Muhammad Abdul Haq al-Harimi, informed us in Baghdad in 559 AH, saying: We were in the presence of Sheikh Mohiuddin Abdul Qadir (may Allah be pleased with him) at the Madrasa on Sunday, the 3rd of Safar in the year 555 AH. Abu al-Afaf Musa bin Biqa'i narrated hadith to us in 663 AH in the city of Cairo, that his noble father Arif-billah Abu al-Ma'ani Uthman informed him in 614 AH in the city of Damascus, that the two perfect saints Hazrat

Abu Amr Uthman Sarifini and Hazrat Abu Muhammad Abdul Haq Harimi informed them in 559 AH in holy Baghdad, that on Sunday, 3rd Safar 555 AH, we...

---

1. Majmu'a Rasail Tisa, Risala Nuzur Shah Rafiuddin, Matba' Ahmadi Delhi, p. 21.
2. Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh al-Tariqa al-Muhammadiyya, Al-Khalq al-Thamin wal-Arba'un etc., Maktaba Nooria Razvia Faisalabad, 2/151.

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

[शीर्ष बॉक्स] यहाँ इस्तेमाल किया गया "नज़्र" शब्द शरीयत के अर्थ में नहीं है, क्योंकि लोकभाषा (उर्फ़) में बुजुर्गों के सामने जो कुछ पेश किया जाता है, उसे नज़्र और नियाज़ कहा जाता है। (त)

[मुख्य पाठ] महान इमाम सैय्यदी अब्दुल ग़नी नाबलुसी (उनकी पवित्रता बनी रहे) "हदीक़ा नदिय्या" में फ़रमाते हैं: (अरबी उद्धरण का अर्थ): "और इसी श्रेणी में आता है कब्रों की ज़ियारत करना और औलिया और नेक लोगों के मज़ारों से बरकत हासिल करना, और किसी बीमार के ठीक होने या किसी यात्री के लौटने पर उनके लिए मन्नत (नज़्र) मानना; क्योंकि यह उनके मज़ार के खादिमों (सेवकों) को सदका (दान) देने का एक रूपक (मजाज़) है, जैसा कि फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने उस व्यक्ति के बारे में कहा है जो किसी ग़रीब को ज़कात देता है और उसे 'कर्ज' कहता है, तो वह सही हो जाता है क्योंकि अर्थ का महत्व है, शब्द का नहीं।" (2) अर्थात, इसी श्रेणी से है कब्रों की ज़ियारत और औलिया व नेक लोगों के मज़ारों से बरकत लेना और बीमार की शफ़ा (आरोग्य) या मुसाफ़िर के आने पर औलिया-ए-कराम के लिए मन्नत मानना कि वह उनके खादिमान-ए-कब्र (कब्र के सेवकों) पर सदक़ा (दान) करने से मजाज़ (रूपक) है, जैसा कि फ़ुक़हा ने फ़रमाया है कि फ़क़ीर को ज़कात दे और क़र्ज़ का नाम ले तो सही हो जाएगी कि ऐतबार (विचार) मानी (अर्थ) का है न कि लफ़्ज़ (शब्द) का।

ज़ाहिर है कि अगर यह नज़्र फ़िक़्ही (कानूनी) होती तो जीवितों के लिए भी नहीं हो सकती थी, जबकि दोनों स्थितियों (जीवित और मृत) में यह बुजुर्गों के बीच प्राचीन काल से प्रचलित और स्वीकृत प्रथा रही है। महान इमाम सैय्यदी अबुल हसन नूरुल मिल्लत वद्दीन अली बिन यूसुफ़ बिन जरीर लखमी शतनूफ़ी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे), जिन्हें रिज़ाल (जीवनी) विज्ञान के इमाम शम्सुद्दीन ज़हबी ने "तबक़ातुल कुर्रा" में और जलील इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने "हुस्नुल मुहाज़रा" में 'अल-इमाम अल-अवहद' यानी बेमिसाल इमाम कहा है, अपनी महान पुस्तक "बहजतुल असरार" शरीफ़ में सही और विश्वसनीय मुहद्दिसानी सनदों (सूत्रों) से रिवायत करते हैं:

(1) हमें अबुल अफ़ाफ़ मूसा बिन उस्मान अल-बेक़ाई ने क़ाहिरा में सन् 663 हिजरी में बताया, उन्होंने कहा: हमें मेरे पिता ने दमिश्क में सन् 614 हिजरी में बताया, उन्होंने कहा: हमें दो बुजुर्गों शेख़ अबू अम्र उस्मान अल-सरीफ़ीनी और शेख़ अबू मुहम्मद अब्दुल हक़ अल-हरीमी ने बगदाद में सन् 559 हिजरी में बताया, उन दोनों ने कहा: हम इतवार 3 सफ़र सन् 555 हिजरी को मदरसा में शेख़

मुहियुद्दीन अब्दुल क़ादिर (अल्लाह उनसे राज़ी हो) के सामने मौजूद थे। हमसे अबुल अफ़ाफ़ मूसा बिन बेक़ाई ने 663 हिजरी में शहर क़ाहिरा में हदीस बयान की कि हमें मेरे वालिद माजिद आरिफ़-बिल्लाह अबुल मआनी उस्मान ने 614 हिजरी में शहर दमिश्क में ख़बर दी कि हमें दो वली-ए-कामिल हज़रत अबू अम्र उस्मान सरीफ़ीनी और हज़रत अबू मुहम्मद अब्दुल हक़ हरीमी ने 559 हिजरी में बग़दाद-ए-मुक़द्दस में ख़बर दी कि हम 3 सफ़र रविवार 555 हिजरी में...

---

1. मजमुआ रसाईल तिसा, रिसाला नुज़ूर शाह रफ़ीउद्दीन, मतबा अहमदी दिल्ली, पृष्ठ 21।
2. अल-हदीक़ा अल-नदिय्या शरह अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिय्या, अल-खल्क अल-सामिन वल-अरबऊन आदि, मकतबा नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/151।

पृष्ठ 599 का 688

[Boxed Text] نذریکہ اینجا مستعمل میشود نہ بر معنی شرعی ست چہ عرف آنست کہ آنچہ پیش بزرگان می برند نذر و نیاز می گویند (1) یہاں نذر کا لفظ شرعی نذر کے معنی میں استعمال نہیں کیونکہ عرف میں بزرگوں کو جو کچھ پیش کیا جاتا ہے اس کو نذر و نیاز کہتے ہیں۔ (ت)

[Main Body] امام اجل سیدی عبد الغنی نابلسی قدس سرہ القدسی حدیقہ ندیہ میں فرماتے ہیں:

ومن هذا القبيل زيارة القبور والتبرك بضرائح الاولياء والصالحين والنذر لهم بتعليق ذلك على حصول شفاء او قدوم غائب فانه مجاز عن الصدقة على الخادمين بقبورهم كما قال الفقهاء فيمن دفع الزكاة لفقير وسماها قرضا صح لان العبرة بالمعنى لا باللفظ (2) یعنی اسی قبیل سے ہے زیارتِ قبور اور مزاراتِ اولیاء و صلحاء سے برکت لینا اور بیمار کی شفا یا مسافر کے آنے پر اولیائے کرام کیلئے منت ماننا کہ وہ ان کے خادمانِ قبور پر تصدق سے مجاز ہے جیسے فقہاء نے فرمایا ہے کہ فقیر کو زکوٰۃ دے اور قرض کا نام لے تو صحیح ہو جائے گی کہ اعتبار معنیٰ کا ہے نہ کہ لفظ کا۔

ظاہر ہے کہ یہ نذر فقہی ہوتی تو احیا کے لئے بھی نہ ہو سکتی حالانکہ دونوں حالتوں میں یہ عرف و عمل قدیم سے اکابرین میں معمول و مقبول ہے۔ امام اجل سیدی ابوالحسن نور الملۃ والدین علی بن یوسف بن جریر لخمی شطنوفی قدس سرہ العزیز جن کو امام فن رجال شمس الدین ذہبی نے طبقات القراء اور امام جلیل جلال الدین سیوطی نے حسن المحاضرہ میں الامام الاوحد کہا یعنی بے نظیر امام، اپنی کتاب مستطاب بہجۃ الاسرار شریف میں محدثانہ اسانید صحیحہ معتبرہ سے روایت فرماتے ہیں:

(1) اخبرنا ابوالعفاف موسی بن عثمان البقاعی بالقاہرہ سنہ ۶۶۳ھ قال اخبرنا ابی بدمشق سنہ ۶۱۴ھ قال اخبرنا الشیخان الشیخ ابو عمر و عثمان الصریفینی والشیخ ابو محمد عبد الحق الحریمی ببغداد سنہ ۵۵۹ھ قالا کنا بین یدی الشیخ محی الدین عبد القادر رضی اللہ تعالٰی عنہ بمدرسۃ یوم الاحد ثالث صفر سنہ ۵۵۵ھ ہم سے ابوالعفاف موسیٰ بن بقاعی نے ۶۶۳ھ میں شہر قاہرہ میں حدیث بیان کی کہ ہمیں میرے والد ماجد عارف باللہ ابوالمعانی عثمان نے ۶۱۴ھ میں شہر دمشق میں خبر دی کہ ہمیں دو ولی کامل حضرت ابو عمرو عثمان صریفینی و حضرت ابو محمد عبد الحق حریمی نے ۵۵۹ھ میں بغدادِ مقدس میں خبر دی کہ ہم ۳ صفر روز یک شنبہ ۵۵۵ھ میں

---

(1) مجموعہ رسائل تسعہ رسالہ نذور شاہ رفیع الدین مطبع احمدی دہلی ص ۲۱ (2) الحدیقۃ الندیۃ شرح الطریقۃ المحمدیۃ الخلق الثامن والاربعون الخ مکتبہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۱۵۱

We were present in the court of His Holiness Ghous-e-Azam (may Allah be pleased with him). He performed ablution, wore wooden sandals (kharaun), and offered two rak'ahs of prayer. After the salutation (Salam), he uttered a great cry and threw one sandal into the air. Then he uttered another cry and threw the second sandal. Both disappeared from our sight. Then he sat down, and due to his awe, no one dared to ask anything. After 23 days, a caravan arrived from Ajam and said, "Inna ma'ana lil-Shaikhi nazran" (We have an offering for the Sheikh). We sought permission from His Holiness to take this offering. He said, "Take it from them." They presented one maund of silk and bales of khazz cloth, gold, and those sandals of His Holiness which he had thrown into the air that day. We asked them, "Where did you get these sandals?" They said, "On the 3rd of Safar, Monday, we were on a journey when some bandits, led by two chiefs, attacked us. They looted our goods, killed some men, and descended into a ravine for distribution. We were at the edge of the ravine and said (to ourselves): 'Lau zakarna al-Shaikh Abd al-Qadir fi hadha al-waqt wa nazarna lahu shay'an min amwalina in salimna' (If only we remembered Sheikh Abdul Qadir at this moment and vowed an offering from our wealth to him if we are saved). We had just remembered him when we heard two great cries that echoed through the forest. We saw that fear had overcome the bandits. We thought some other robbers had attacked them. They came to us and said, 'Come and take your goods, and see what calamity has befallen us.' They took us to their two chiefs. We saw them lying dead, and by each of them lay a wooden sandal soaked in water. The bandits returned all our goods and said there must be some magnificent news behind this incident." 1

(2) He also states (may his secret be sanctified): "Haddathana Abu al-Futuh Nasrullah bin Yusuf al-Azji qala akhbarana al-Shaikh Abu al-Abbas Ahmad bin Isma'il qala akhbarana al-Shaikh Abu Muhammad Abdullah bin Husayn bin Abi al-Fadl qala kana Shaikhunā al-Shaikh Muhyiddin Abd al-Qadir Radi Allahu Ta'ala anhu yaqbalu al-nudhur wa yakulu minha" 2 (Summarized). Abu al-Futuh Nasrullah bin Yusuf al-Azji narrated this to us, saying Sheikh Abu al-Abbas Ahmad bin Isma'il informed us that Sheikh Abu Muhammad Abdullah bin Husayn bin Abi al-Fadl informed us that our Sheikh, His Holiness Ghous-e-Azam (may Allah be pleased with him), used to accept offerings and would personally partake of them. If it were a jurisprudential vow (Fiqhi Nazr), since His Holiness is among the exalted descendants of the Prophet (Sayyids), from it...

1 Bahjat al-Asrar, Chapters from his words... some of his wondrous states, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 67. 2 Bahjat al-Asrar, Mention of some of his noble characters (may Allah be pleased with him), Mustafa al-Babi, Egypt, pp. 102-103.

हम हुज़ूर सैय्यदना ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के दरबार में हाज़िर थे। हुज़ूर ने वज़ू किया, खड़ाऊँ पहनीं और दो रकअतें पढ़ीं। सलाम फेरने के बाद एक अज़ीम नारा लगाया और एक खड़ाऊँ हवा में फेंक दी, फिर दूसरा नारा लगाया और दूसरी खड़ाऊँ फेंक दी। वे दोनों हमारी नज़रों से ग़ायब हो गईं। फिर आप तशरीफ़ लाए, हैबत के सबब किसी को पूछने की हिम्मत न हुई। २३ दिन के बाद अजम से एक क़ाफ़िला दरबार में हाज़िर हुआ और कहा: "इन्ना म'अना लिश-शैख़ि नज़्रन" (हमारे पास हुज़ूर की एक नज़्र यानी भेंट है)। हमने हुज़ूर से उस नज़्र को लेने की इजाज़त मांगी। हुज़ूर ने फ़रमाया: "उनसे ले लो।" उन्होंने एक मन रेशम और ख़ज़ के थान और सोना और हुज़ूर की वे खड़ाऊँ पेश कीं जो उस दिन हवा में फेंकी गई थीं। हमने उनसे पूछा: "ये खड़ाऊँ तुम्हारे पास कहाँ से आईं?" उन्होंने कहा: "३ सफ़र पीर के रोज़ हम सफ़र में थे कि कुछ डाकू जिनके दो सरदार थे, हम पर हमलावर हुए। उन्होंने हमारा माल लूटा और कुछ आदमियों को क़त्ल किया और एक नाले में (माल) बांटने के लिए उतरे। हम नाले के किनारे थे तो हमने कहा: 'लौ ज़करनश-शैख़ अब्द अल-क़ादिर फ़ी हाज़ल वक़्त व नज़्रना लहू शैअम मिन अमोालिना इन सलिम्ना' (बेहतर होगा कि इस वक़्त हम शैख़ अब्दुल क़ादिर को याद करें और सलामती पाने पर उनके लिए अपने माल में से कुछ नज़्र मानें)। हमने हुज़ूर को याद ही किया था कि दो अज़ीम नारे सुने जिससे जंगल गूँज उठा। हमने देखा कि डाकुओं पर ख़ौफ़ छा गया है। हम समझे कि उन पर कोई और डाकू आ पड़े हैं। वे हमारे पास आए और बोले: 'आओ अपना माल ले लो और देखो हम पर क्या मुसीबत पड़ी है।' वे हमें अपने दोनों सरदारों के पास ले गए। हमने देखा कि वे मरे पड़े हैं और हर एक के पास एक खड़ाऊँ पानी से भीगी रखी है। डाकुओं ने हमारा सब माल लौटा दिया और कहा कि इस वाक़ये की कोई अज़ीम-उल-शान ख़बर है।" 1

(२) नीज़ फ़रमाते हैं (क़ुद्दिस सिर्रहु): "हद्दसना अबू अल-फ़ुतूह नसरुल्लाह बिन यूसुफ़ अल-अज़जी क़ाला अख़बरना अल-शैख़ अबू अल-अब्बास अहमद बिन इस्माईल क़ाला अख़बरना अल-शैख़ अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन हुसैन बिन अबी अल-फ़ज़्ल क़ाला काना शैख़ुना अल-शैख़ मुहयिद्दीन अब्द अल-क़ादिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यक़बलुन-नुज़ूर व याकुलु मिन्हा" 2 (मुलख़्ख़सन)। हमसे हदीस बयान की अबू अल-फ़ुतूह नसरुल्लाह बिन यूसुफ़ अज़जी ने, कहा हमें शैख़ अबू अल-अब्बास अहमद बिन इस्माईल ने ख़बर दी कि हमको शैख़ अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन हुसैन बिन अबी अल-फ़ज़्ल ने ख़बर दी कि हमारे शैख़ हुज़ूर ग़ौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) नज़्रें क़बूल फ़रमाते

और उनमें से ज़ात-ए-अक़दस भी तनावल फ़रमाते। अगर यह नज़्र फ़िक़्ही होती तो चूँकि हुज़ूर अजिल्ला-ए-सादात-ए-इज़ाम में से हैं, उससे...

---

1 बहजतुल असरार, फ़सूलुन मिन कलामिही... अजाएब अहवालिही, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. ६७ 2 बहजतुल असरार, ज़िक्रु शैइम मिन शराइफ़े अख़्लाक़िही (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. १०२-१०३

पेज 600 का 688

حضور سید نا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ کے دربار میں حاضر تھے حضور نے وضو کرکے کھڑاویں پہنیں اور دو رکعتیں پڑھیں، بعد سلام ایک عظیم نعرہ فرمایا اور ایک کھڑاؤں ہوا میں پھینکی، پھر دوسرا نعرہ مارا اور دوسری کھڑاؤں پھینکی وہ دونوں ہماری نگاہوں سے غائب ہو گئیں، پھر تشریف رکھی، ہیبت کے سبب کسی کو پوچھنے کی جرات نہ ہوئی، ۲۳ دن کے بعد عجم سے ایک قافلہ حاضر بارگاہ ہوا اور کہا ان معنا للشیخ نذرا ہمارے پاس حضور کی ایک نذر ہے فاستأذنا فقال خذوہ منھم، ہم نے حضور سے اس نذر کے لینے میں اذن طلب کیا حضور نے فرمایا لے لو، انہوں نے ایک من ریشم اور خزر کے تھان اور سونا اور حضور کی وہ کھڑاویں جو اس روز ہوا میں پھینکی تھیں پیش کیں، ہم نے ان سے کہا یہ کھڑاویں تمہارے پاس کہاں سے آئیں؟ کہا ۳ صفر روز یک شنبہ ہم سفر میں تھے کہ کچھ راہزن جن کے دوسردار تھے ہم پر آپڑے، ہمارے مال لوٹے اور کچھ آدمی قتل کئے اور ایک نالے میں تقسیم کو اترے، نالے کے کنارے ہم تھے فقلنا لو ذکرنا الشیخ عبدالقادر فی ھذا الوقت ونذرنا لہ شیئاً من اموالنا ان سلمنا، ہم نے کہا بہتر ہو کہ اس وقت ہم حضور غوث اعظم کو یاد کریں اور نجات پانے پر حضور کے لئے کچھ مال نذر مانیں، ہم نے حضور کو یاد کیا ہی تھا کہ دو عظیم نعرے سنے جن سے جنگل گونج اٹھا اور ہم نے راہزنوں کو دیکھا کہ ان پر خوف چھایا ہم سمجھے ان پر کوئی اور ڈاکو آپڑے یہ آکر ہم سے بولے، آؤ اپنا مال لے لو اور دیکھو ہم پر کیا مصیبت پڑی، ہمیں اپنے دونوں سرداروں کے پاس لے گئے ہم نے دیکھا وہ مرے پڑے ہیں اور ہر ایک کے پاس ایک کھڑاؤں پانی سے بھیگی رکھی ہے ڈاکوؤں نے ہمارے سب مال پھیر دئے اور کہا اس واقعہ کی کوئی عظیم الشان خبر ہے ۱۸-

(۲) نیز فرماتے ہیں قدس سرہ: حدثنا ابو الفتوح نصر اللہ بن یوسف الازجی قال اخبرنا الشیخ ابو العباس احمد بن اسمعیل قال اخبرنا الشیخ ابو محمد عبد اللہ بن حسین بن ابی الفضل قال کان شیخنا الشیخ محی الدین عبدالقادر رضی اللہ تعالیٰ عنہ یقبل النذور و یاکل منہا[۸]2 (ملخصا) ہم سے حدیث بیان کی ابو الفتوح نصر اللہ بن یوسف ازجی نے، کہا ہمیں شیخ ابو العباس احمد بن اسمعیل نے خبر دی کہ ہم کو شیخ ابو محمد عبد اللہ بن حسین بن ابی الفضل نے خبر دی کہ ہمارے شیخ حضور غوث اعظم رضی اللہ عنہ نذریں قبول فرماتے اور ان میں سے بذات اقدس بھی تناول فرماتے، اگر یہ نذر فقہی ہوتی تو حضور کا کہ اجلہ سادات عظام سے ہیں اس سے

---

1 بهجة الاسرار فصول من كلامه مر صعبا بشيئ من عجائب احواله مصطفى البابى مصر ص ۶۷ 2 بهجة الاسرار ذكر شيئ من شرائف اخلاقه رضى الله تعالى عنه مصطفى البابى مصر ص ۱۰۲-۱۰۳

Fatawa Razawiyya Volume 13

Eating was allowed because it was possible. (3) It is further stated: Al-Sharif Abu Abdullah bin al-Khidr al-Husayni narrated to us, saying, my father told me: I was with my master Sheikh Muhi-ud-Din Abdul Qadir (may Allah be pleased with him) and he saw a broken-hearted poor man. He asked him, "What is the matter with you?" He replied, "Today I went to the river bank and asked a boatman to take me to the other side, but he refused. My heart broke because of my poverty." Before the poor man could finish his sentence, a man entered with a bag containing thirty dinars as an offering to the Sheikh. The Sheikh said to that poor man, "Take this bag and go to the boatman, give it to him and tell him never to turn away a poor person again." Then the Sheikh took off his blessed shirt and gave it to the poor man, which was then purchased from him for twenty dinars. (4) It is further stated: Regarding Sheikh Baqa bin Battu, Sheikh Muhi-ud-Din Abdul Qadir (may Allah be pleased with him) used to praise him greatly. The sheikhs and scholars held him in high esteem, and people from every city would visit him and bring offerings. (5) It is further stated: Sheikh Mansur al-Bata'ihi (may Allah be pleased with him) was among the great sheikhs of Iraq. All the sheikhs and scholars agreed on his veneration, and people from all directions visited him and brought offerings.

1. Bahjat al-Asrar, mention of some of his noble character, may Allah be pleased with him, Mustafa al-Babi Egypt, p. 104
2. Bahjat al-Asrar, Sheikh Baqa bin Battu, Mustafa al-Babi Egypt, p. 159
3. Bahjat al-Asrar, Sheikh Mansur al-Bata'ihi, Mustafa al-Babi Egypt, p. 140

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

खाना खाना जायज़ था क्योंकि यह संभव था। (3) आगे कहा गया है: शरीफ़ अबू अब्दुल्ला बिन अल-खिज़्र अल-हुसैनी ने हमें हदीस बयान की, उन्होंने अपने पिता से सुना: मैं अपने स्वामी शेख मुही-उद-दीन अब्दुल कादिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के साथ था। उन्होंने एक टूटे हुए दिल वाले गरीब आदमी को देखा और उससे पूछा, "तुम्हें क्या हुआ है?" उसने उत्तर दिया, "आज मैं नदी (दजला) के किनारे गया और एक मल्लाह से मुझे दूसरी तरफ ले जाने के लिए कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। मेरी गरीबी के कारण मेरा दिल टूट गया।" उस गरीब आदमी की बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि एक व्यक्ति शेख के लिए नज़र (भेंट) के रूप में तीस दीनार की थैली लेकर आया। शेख ने उस गरीब आदमी से कहा, "यह थैली लो और मल्लाह के पास जाओ, उसे यह दे दो और उससे कहो कि कभी किसी गरीब को न ठुकराए।" फिर शेख ने अपनी मुबारक कमीज़ उतार कर उस गरीब को दे दी, जिसे बाद में उससे बीस दीनार में खरीद लिया गया। (4) आगे कहा गया है: शेख बक़ा बिन बत्तू के बारे में, शेख मुही-उद-दीन अब्दुल कादिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) उनकी बहुत प्रशंसा किया करते थे। शेख और विद्वान उनका बहुत सम्मान करते थे, और हर शहर से लोग उनके दर्शन के लिए आते थे और नज़र (भेंट) लाते थे। (5) आगे कहा गया है: शेख मंसूर अल-बतैही (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) इराक के बड़े शेखों में से थे। सभी शेख और विद्वान उनके सम्मान पर सहमत थे, और हर दिशा से लोग उनके दर्शन के लिए आते थे और नज़र (भेंट) लाते थे।

1. बहजतुल असरार, उनके महान चरित्र का कुछ उल्लेख, रज़ियल्लाहु अन्हु, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 104
2. बहजतुल असरार, शेख बक़ा बिन बत्तू, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 159
3. बहजतुल असरार, शेख मंसूर अल-बतैही, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 140

पृष्ठ 601/688

تناول فرمانا کیونکہ ممکن تھا۔ (۳) نیز فرماتے ہیں: حدثنا الشریف ابوعبداللہ بن الخضر الحسینی قال اخبرنا ابی قال کنت مع سیدی الشیخ محی الدین عبدالقادر رضی اللہ تعالی عنہ ورأی فقیرا مکسور القلب فقال لہ ماشأنك قال مررت الیوم بالشط وسألت ملاحاً ان یحملنی الی الجانب الآخر فابی وانکسر قلبی لفقری فلم یتم کلام الفقیر حتی دخل رجل معہ صرۃ فیھا ثلاثون دینارا نذر اللشیخ فقال الشیخ لذلك الفقیر خذ ھذہ الصرۃ واذھب بھا الی الملاح واعطھا لہ وقل لہ لاترد فقیرا ابدا وخلع الشیخ قمیصہ واعطاہ للفقیر فاشتری منہ بعشرین دینارا ۱ ہمیں شریف ابو عبداللہ محمد بن الخضر الحسینی نے حدیث بیان کی، کہا ہم سے والد فرمایا میں حضور سیدنا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ تھا حضور نے ایک فقیر شکستہ دل دیکھا، فرمایا تیرا کیا حال ہے؟ عرض کی آج میں کنارہ دجلہ پر گیا ملاح سے کہا مجھے اس پار لے جا، اس نے نہ مانا، محتاجی کے سبب میرا دل ٹوٹ گیا، فقیر کی بات ابھی پوری نہ ہوئی تھی کہ ایک صاحب ایک تھیلی میں تیس اشرفیاں حضور کی نذر لائے حضور نے فقیر سے فرمایا یہ لو اور جا کر ملاح کو دو اور اس سے کہنا کبھی کسی فقیر کو نہ پھیرے، اور حضور نے اپنا قمیصِ مبارک اتار کر اس فقیر کو عطا فرمایا وہ اس سے بیس اشرفیوں کو خرید لیا گیا۔ (۴) نیز فرماتے ہیں: الشیخ بقابن بطوکان الشیخ محی الدین عبدالقادر رضی اللہ تعالی عنہ یثنی علیہ کثیر و تجلہ المشائخ والعلماء وقصد بالزیارات والنذور من کل مصر ۲۔ حضور سیدنا غوثِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ حضرت شیخ بقابن بطو رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بہت تعریف فرمایا کرتے اور اولیاء و علماء سب ان کی تعظیم کرتے، ہر شہر سے لوگ ان کی زیارت کو آتے اور ان کی نذر لاتے۔ (۵) نیز فرماتے ہیں: الشیخ منصور البطائحی رضی اللہ تعالی عنہ من

اكابر مشائخ العراق اجمع المشائخ والعلماء على تبجيله وقصد بالزيارات والنذور من كل جهة ٣ حضرت منصور بطائحى رضى الله تعالىٰ عنہ

1 بهجة الاسرار ذكر شيئ من شرائف اخلاقه رضى الله عنه مصطفى البابى مصر ص ١٠٤ 2 بهجة الاسرار شيخ بقابن بطو مصطفى البابى مصر ص ١٥٩ 3 بهجة الاسرار شيخ منصور البطائحى مصطفى البابى مصر ص ١٤٠

Fatawa Razawiyya Volume Thirteenth 13

[They are] among the great saints of Iraq; the saints and scholars had a consensus on his greatness, and Muslims from all sides would come for his visitation (ziyarat) and bring offerings (nazr) for him.

(6) It is also stated: "There was no one among the Sheikhs of Iraq in the era of Sheikh Ali bin al-Hiti who had more openings (spiritual gifts/offerings) than him; offerings were made to him from every city." During the time of Hazrat Ali bin Hiti (may Allah be pleased with him), none of the saints of Iraq had openings like his; offerings would come for him from every city.

(7) It is also stated: "Sheikh Abu Saeed al-Qailawi was one of the prominent Sheikhs in Iraq; Sheikhs and scholars attended his gatherings, and he was the object of visitations and offerings." Hazrat Abu Saeed Qailawi (may Allah be pleased with him) is among the great saints of Iraq; Muslims would come for his visitation and offerings were made to him.

(8) It is also stated: "Abu al-Hasan Ali bin al-Hasan al-Samari informed us, saying, 'My father informed me, saying: I heard my father (may Allah have mercy on him) say: The expenses of our Sheikh, Sheikh Jakir (may Allah be pleased with him), were from the Unseen. He was effective in disposal, miraculous in action, and continuous in unveiling (kashf). Many offerings were made to him. One day I was with him, and some cows passed by with their shepherd. He pointed to one of them and said: This one is pregnant with a red calf with a white blaze on its forehead; its description is such and such, and it will be born at such a time on such a day, and it is an offering for me. The poor will slaughter it on such a day, and so-and-so and so-and-so will eat it. Then he pointed to another and said: This one is pregnant with a female; its description is such and such, it will be born at such a time, and it is an offering for me; so-and-so among the poor will slaughter it on such a day, and so-and-so and so-and-so will eat it, and a red dog will have a share in it. He (the narrator) said: By Allah, the situation unfolded exactly as the Sheikh described.'" Abu al-Hasan bin Hasan al-Samari informed us that our father informed us, he said, I heard from my father, he used to say that the expenses of our Sheikh Hazrat Jagir (may Allah be pleased with him) came from the Unseen, and his spiritual authority was effective; his works were miracles. He had continuous unveilings; Muslims in great numbers would [visit him]...

---

1. Bahjat al-Asrar, Sheikh Ali bin Hiti, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 153.

2. Bahjat al-Asrar, Sheikh Abu Saeed al-Qailawi, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 161.
3. Bahjat al-Asrar, Sheikh Jagir (may Allah be pleased with him), Mustafa al-Babi, Egypt, p. 169.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं 13

[वे] इराक के महान संतों में से हैं; संतों और विद्वानों ने उनकी महानता पर सहमति व्यक्त की थी, और हर तरफ से मुसलमान उनकी ज़ियारत (दर्शन) के लिए आते और उनके लिए नज़र (भेंट) लाते थे।

(6) यह भी बताया गया है: "शेख अली बिन अल-हीती के युग में इराक के शेखों में कोई भी ऐसा नहीं था जिनके पास उनसे अधिक आध्यात्मिक उपहार या भेंट आती हों; उन्हें हर शहर से नज़र पेश की जाती थी।" हज़रत अली बिन हीती (रज़ियल्लाहु अन्हु) के समय में, इराक के संतों में से किसी की भी भेंट उनके समान नहीं थी; हर शहर से उनके लिए नज़र आती थी।

(7) यह भी बताया गया है: "शेख अबू सईद अल-क़ैलावी इराक के प्रमुख शेखों में से एक थे; उनकी सभाओं में शेख और विद्वान शामिल होते थे, और वे ज़ियारत और नज़र के केंद्र थे।" हज़रत अबू सईद क़ैलावी (रज़ियल्लाहु अन्हु) इराक के महान संतों में से हैं; मुसलमान उनकी ज़ियारत के लिए आते थे और उन्हें नज़र दी जाती थी।

(8) यह भी बताया गया है: "अबू अल-हसन अली बिन अल-हसन अल-सामरी ने हमें बताया, 'मेरे पिता ने मुझे बताया, उन्होंने कहा: मैंने अपने पिता (अल्लाह उन पर रहम करे) को कहते सुना: हमारे शेख, शेख जाकिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का खर्च ग़ैब (परोक्ष) से आता था। वे कार्यों को पूरा करने में प्रभावी थे, उनके कार्य चमत्कारी थे, और उनका कशफ़ (रहस्योद्घाटन) निरंतर था। उन्हें बहुत सारी नज़रें दी जाती थीं। एक दिन मैं उनके पास था, और कुछ गाएँ अपने चरवाहे के साथ गुज़रीं। उन्होंने उनमें से एक की ओर इशारा किया और कहा: यह एक लाल बछड़े के साथ गर्भवती है जिसके माथे पर सफ़ेद निशान है; उसका वर्णन ऐसा और ऐसा है, और वह इस दिन इस समय पैदा होगा, और वह मेरे लिए एक नज़र है। गरीब लोग उसे इस दिन ज़िबह करेंगे, और फलां और फलां उसे खाएँगे। फिर उन्होंने दूसरी की ओर इशारा किया और कहा: यह एक बछिया के साथ गर्भवती है; उसका वर्णन ऐसा और ऐसा है, वह इस समय पैदा होगी, और वह मेरे लिए एक नज़र है; गरीबों में से फलां व्यक्ति उसे इस दिन ज़िबह करेगा, और फलां और फलां उसे खाएँगे, और इसमें एक लाल कुत्ते का भी हिस्सा होगा। उन्होंने (वर्णनकर्ता) कहा: खुदा की कसम, स्थिति बिल्कुल वैसी ही रही जैसा शेख ने वर्णन किया था।'" अबू अल-हसन बिन हसन अल-सामरी ने हमें खबर दी कि हमारे पिता ने हमें खबर दी, कहा मैंने अपने पिता से सुना, वे फरमाते थे हमारे शेख हज़रत जागीर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का खर्च

ग़ैब से चलता था और उनका तसर्रुफ़ (आध्यात्मिक अधिकार) नाफ़िज़ (प्रभावी) था, उनके काम करामात थे। अली अल-इत्तेसाल (निरंतर) उन्हें कशफ़ होता था, मुसलमान कसरत से उनकी...

---

1. बहजतुल असरार, शेख अली बिन हीती, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 153.
2. बहजतुल असरार, शेख अबू सईद अल-क़ैलावी, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 161.
3. बहजतुल असरार, शेख जागीर (रज़ियल्लाहु अन्हु), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 169.

पेज 602/688

اکابر اولیائے عراق سے ہیں، اولیاء و علماء نے ان کی تعظیم پر اجماع کیا، اور ہر طرف سے مسلمان ان کی زیارت کو آتے اور ان کی نذر لاتے۔

(۶) نیز فرماتے ہیں: لم یکن لاحد من مشایخ العراق فی عصر الشیخ علی بن الھیتی فتوح اکثر من فتوحہ کان ینذرلہ من کل بلد حضرت علی بن بیتی رضی اللہ تعالٰی عنہ کے زمانے میں اولیائے عراق سے کسی کی فتوح ان کے مثل نہ تھی ہر شہر سے ان کی نذر آتی۔

(۷) نیز فرماتے ہیں: الشیخ ابوسعید القیلوی احد اعیان المشائخ بالعراق حضر مجلسہ المشائخ والعلماء وقصد بالزیارات والنذور حضرت ابو سعید قیلوی رضی اللہ تعالٰی عنہ اکابر اولیائے عراق سے ہیں مسلمان ان کی زیارت کو آتے اور ان کی نذر کی جاتی۔

(۸) نیز فرماتے ہیں: اخبرنا ابوالحسن علی بن الحسن السامری قال اخبرنا ابی قال سمعت والدی رحمہ اللہ تعالٰی یقول کانت نفقۃ شیخنا الشیخ جاکیر رضی اللہ تعالٰی عنہ من الغیب وکان نافذ التصریف خارق الفعل متواتر الکشف ینذر لہ کثیراً وکنت عندہ یوماً فمرت بہ بقرات مع راعیھا فأشار الی احد ھن وقال ھذہ حامل بعجل احمر اغر صفتہ کذا وکذا ویولد وقت کذا یوم کذا وھو نذر لی وتذبحہ الفقراء یوم کذا ویأکلہ فلان وفلان ثم اشار الی اخری وقال ھذہ حامل بأنثی ومن وصفھا کذا وکذا تولد وقت کذا وھی نذر لی یذبحھا فلان رجل من الفقراء یوم کذا ویأکلھا فلان وفلان ولکلب احمر فیھا نصیب قال فواللہ لقد جرت الحال علی ما وصف الشیخ ۔ ہمیں خبر دی ابو الحسن بن حسن سامری نے کہ ہمیں ہمارے والد نے خبر دی، کہا میں نے اپنے والد سے سنا، فرماتے تھے ہمارے شیخ حضرت جاگیر

رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا خرچ غیب سے چلتا تھا اور ان کا تصرف نافذ تھا ان کے کام کرامات تھے علی الاتصال انہیں کشف ہوتا تھا مسلمان کثرت سے ان کی...

---

1 بھجۃ الاسرار شیخ علی بن ہیتی مصطفیٰ البابی مصر ص ۱۵۳ 2 بھجۃ الاسرار شیخ ابو سعید القیلوی مصطفیٰ البابی مصر ص ۱۶۱ 3 بھجۃ الاسرار شیخ جاگیر رضی اللہ عنہ مصطفیٰ البابی مصر ص ۱۶۹

Fatawa Razawiya Volume 13, Page 13

(The narrator says) I was present with him one day when some cows passed by with their cowherd. The Hazrat pointed to one of them and said, "This cow has a red calf in its womb which has a white mark on its forehead." He described its entire appearance and said it would be born on such a day at such a time, and it would be an offering to us. The poor will slaughter it on such a day, and so-and-so will eat it. Then he pointed to another cow and said, "She has a heifer in her womb." He described her appearance and said she would be born at such a time and would be my offering; such and such a poor person would slaughter it on such a day, and so-and-so would eat it, and even a red dog would have a share of its meat. Our father said, "By God, everything happened exactly as the Sheikh had said."

(9) It is also stated: The righteous jurist Muhammad al-Hasan bin Musa al-Khalidi informed us, saying: I heard Sheikh Imam Shahabuddin Suhrawardi (may Allah be pleased with him) say: Whenever our Sheikh, Hazrat Ziauddin Abdul Qahir Suhrawardi (may Allah be pleased with him), looked upon a disciple with favor, that disciple would flourish and reach a high rank. One day, while I was in his presence, a villager brought a calf and said, "This is an offering from us to Hazrat," and then he left. The calf came and stood before Hazrat. Hazrat said, "This calf tells me, 'I am not your offering; I am an offering for Hazrat Sheikh Ali bin Hiti. Your offering is my brother.'" Not long after, that villager brought another calf that looked similar to the first one and said, "O my master! I had intended this calf as an offering to you, and the calf I brought earlier was intended for Hazrat Sheikh Ali bin Hiti. I was mistaken." Having said this...

[1] Bahjat-ul-Asrar, Sheikh Abdul Qadir Suhrawardi, Mustafa al-Babi Egypt, pp. 234 and 235.

फतावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

(रावी कहते हैं) एक दिन मैं उनके पास हाज़िर था, कुछ गाएँ अपने चरवाहे के साथ गुज़रीं। हज़रत ने उनमें से एक की तरफ इशारा करके फ़रमाया, "इस गाय के पेट में लाल बछड़ा है जिसके माथे पर सफेदी है।" और उसका पूरा हुलिया बयान फ़रमाया, और कहा कि वह फ़लां दिन फ़लां वक़्त पैदा होगा और वह हमारी नज़र (भेंट) होगा, फ़ुक़रा (गरीब) उसे फ़लां दिन ज़बह करेंगे और फ़लां-फ़लां उसे खाएंगे। फिर दूसरी गाय की तरफ इशारा किया और फ़रमाया, "इसके पेट में बछिया है।" और उसका हुलिया बयान फ़रमाया कि वह फ़लां वक़्त पैदा होगी और वह मेरी नज़र होगी, फ़लां फ़कीर उसे फ़लां दिन ज़बह करेगा और फ़लां-फ़लां उसे खाएंगे और एक लाल कुत्ते का भी उसके गोश्त में हिस्सा है। हमारे वालिद ने फ़रमाया, "ख़ुदा की क़सम! जैसा शेख ने इरशाद फ़रमाया था, सब उसी तरह वाक़े हुआ।"

(9) यह भी फ़रमाते हैं: हमें सालेह फकीह मुहम्मद अल-हसन बिन मूसा अल-खालिदी ने ख़बर दी कि उन्होंने शेख इमाम शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (रज़ियल्लाहु अन्हु) को फ़रमाते सुना कि हमारे शेख हज़रत ज़ियाउद्दीन अब्दुल क़ाहिर सुहरवर्दी (रज़ियल्लाहु अन्हु) जब किसी मुरीद पर नज़र-ए-इनायत फ़रमाते, तो वह फलता-फूलता और बुलंद मर्तबे को पहुँचता। एक दिन मैं हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर था कि एक देहाती एक बछड़ा लाया और अर्ज़ की, "यह हमारी तरफ से हज़रत की नज़र है," और चला गया। बछड़ा आकर हज़रत के सामने खड़ा हो गया। हज़रत ने फ़रमाया, "यह बछड़ा मुझसे कहता है कि मैं आपकी नज़र नहीं हूँ, मैं हज़रत शेख अली बिन हीती की नज़र हूँ, आपकी नज़र मेरा भाई है।" अभी कुछ देर न हुई थी कि वह देहाती एक और बछड़ा लाया जो शक्ल में पहले वाले के जैसा था और अर्ज़ की, "ऐ मेरे सरदार! मैंने हुज़ूर की नज़र यह बछड़ा माना था और वह बछड़ा जो पहले लाया था, वह हज़रत शेख अली बिन हीती की नज़र माना था। मुझे धोखा (गलतफहमी) हो गया था।" यह कहकर...

[1] बहजतुल असरार, शेख अब्दुल क़ादिर सुहरवर्दी, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, पृ. 234 और 235

पेज 603 ऑफ़ 688

نذر کرتے، ایک دن میں ان کے پاس حاضر تھا کچھ گائیں اپنے گوالے کے ساتھ گزریں، حضرت نے ان میں سے ایک کی طرف اشارہ کرکے فرمایا اس گائے کے پیٹ میں سرخ بچھڑا ہے جس کے ماتھے پر سپیدی ہے۔ اور اس کا سب حلیہ بیان فرمایا، فلاں دن فلاں وقت پیدا ہوگا اور وہ ہماری نذر ہوگا فقراء اسے فلاں دن ذبح کرینگے اور فلاں فلاں اسے کھائیں گے۔ پھر دوسری گائے کی طرف اشارہ کیا اور فرمایا: اس کے پیٹ میں بچھیا ہے۔ اور اس کا حلیہ بیان فرمایا فلاں وقت پیدا ہوگی اور وہ میری نذر ہوگی، فلاں فقیر اسے فلاں دن ذبح کرے گا اور فلاں فلاں اسے کھائیں گے اور ایک سرخ کتے کا بھی اس کے گوشت میں حصہ ہے۔ ہمارے والد نے فرمایا خدا کی قسم جیسا شیخ نے ارشاد کیا تھا سب اسی طرح واقع ہوا۔ (۹) نیز فرماتے ہیں: اخبرنا الفقیہ الصالح محمد الحسن بن موسی الخالدی قال سمعت الشیخ الامام شہاب الدین السہروردی رضی اللہ تعالیٰ عنہ یقول مالاحظ علی شیخنا الشیخ ضیاء الدین عبد القاھر رضی اللہ تعالیٰ عنہ مرید ا بعین الرعایۃ الانیج وبرع و کنت عندہ مرۃ فاتاہ سوادی بعجل وقال لہ یاسیدی ھذا نذرنا لک وانصرف الرجل فجاء العجل حتی وقف بین یدی الشیخ فقال الشیخ لنا ان ھذا العجل یقول لی انی لست العجل الذی نذر لک بل نذرت للشیخ علی بن الھیتی وانما نذر لک اخی فلم یلبث ان جاء السوادی وبیدہ عجل یشبہ الاول فقال السوادی یا سیدی انی نذرت لک ھذا العجل ونذرت للشیخ علی بن الھیتی العجل الذی اتیتک بہ اولا و کانا اشتبھا واخذ الاول وانصرف۔ ہمیں خبر دی فقیہ صالح ابو محمد حسن بن موسی خالدی نے کہ میں نے شیخ امام شہاب الدین سہر وردی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو فرماتے سنا کہ ہمارے شیخ حضرت عبدالقاہر ضیاء الدین سہروردی رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب کسی مرید پر نظر عنایت فرماتے وہ پھولتا پھلتا اور بلند رتبہ کو پہنچتا، اور ایک دن میں حضور میں حاضر تھا کہ ایک دہقانی ایک بچھڑا لایا اور

عرض کی یہ ہماری طرف سے حضرت کی نذر ہے، اور چلا گیا، بچھڑا آ کر حضرت کے سامنے کھڑا ہوا حضرت نے فرمایا یہ بچھڑا مجھ سے کہتا ہے میں آپ کی نذر نہیں ہوں میں حضرت شیخ بن علی بن ہیتی کی نذر ہوں آپ کی نذر میرا بھائی ہے۔ کچھ دیر نہ ہوئی تھی کہ وہ دہقانی ایک اور بچھڑا لایا جو صورت میں اس کے مشابہ تھا اور عرض کی: اے میرے سردار! میں نے حضور کی نذر یہ بچھڑا مانا تھا اور وہ بچھڑا جو پہلے میں حاضر لایا وہ میں نے حضرت شیخ علی بن ہیتی کی نذر مانا ہے مجھے دھوکا ہو گیا تھا۔ یہ کہہ کر

۱ بھجة الاسرار شیخ عبدالقادر السھروردی مصطفی البابی مصر ص ۲۳۴ و ۲۳۵

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

First he took the calf and went back. (10) Furthermore, they state: Abu Zaid Abdur Rahman bin Salim Ahmed al-Qurashi informed us, he said, I heard Shaykh al-Arif Abul Fath bin Abi al-Ghanaim in Alexandria[1], Abu Zaid Abdur Rahman bin Salim bin Ahmed al-Qurashi informed us that I heard from Hazrat Arif Billah Abul Fath bin Abi al-Ghanaim in Alexandria that a person from the people of Bataih brought a thin bull before our Shaykh Hazrat Sayyid Ahmad Rifa'i (may Allah be pleased with him) and submitted: O my master! The sustenance for me and my children is through this bull. Now it has become weak, pray for strength and blessings for it. Hazrat said: Go to Shaykh Uthman bin Marzuq (Bata'ihi, may Allah be pleased with him) and convey my greetings to him and ask for a prayer for me from him. He took the bull and presented himself there, he saw that Hazrat Sayyidi Uthman was sitting and lions had formed a circle around him. He was afraid to come near. Hazrat said: Come forward. He went closer, before he could convey Hazrat Rifa'i's message, Sayyidi Uthman himself said: Greetings upon my brother Shaykh Ahmad, may Allah grant me and him a good end. Then he gestured to a lion to get up and tear this bull apart. The lion got up, killed the bull, and ate from it. Hazrat said: Now come back. He returned. Then he said to another lion: Get up and eat from it. He got up and ate. Then he called him back. He sent a third lion, and in this way, he kept sending lions one by one until they had eaten the whole bull. Suddenly they saw a very healthy bull coming from the direction of Batia and standing before Hazrat. Hazrat said to that man: Take this bull in exchange for your bull. He took it, but in his heart he was saying, my bull has been killed and I fear that someone might recognize this bull with me and harass me. Suddenly a person came running, kissed Hazrat's blessed hand, and submitted: O my master! I had vowed a bull for your presence, I brought it to Batia, but it escaped from my hand and I do not know where it went[2]. Hazrat said: It has reached us, here it is before you[3]. That person fell at his feet and kissed Hazrat's blessed feet and said: O my master! By God, Allah has granted Hazrat knowledge of everything and has made everything, even animals, recognize Hazrat. Hazrat said: This is...

---

1 Bahjat al-Asrar, Shaykh Abu Amr Uthman bin Marzuq al-Bata'ihi, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159 2 Bahjat al-Asrar, Shaykh Abu Amr Uthman bin Marzuq al-Bata'ihi, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159 3 Bahjat al-Asrar, Shaykh Abu Amr Uthman bin Marzuq al-Bata'ihi, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 159 Page 604 of 688

पहले बछड़े को ले लिया और वापस चला गया। (१०) वे आगे फरमाते हैं: अबू ज़ैद अब्दुर रहमान बिन सालिम अहमद अल-कुरैशी ने हमें सूचित किया, उन्होंने कहा, मैंने अलेक्जेंड्रिया में शेख अल-आरिफ अबुल फ़तह बिन अबी अल-ग़नाइम को कहते सुना[1], अबू ज़ैद अब्दुर रहमान बिन सालिम बिन अहमद अल-कुरैशी ने हमें बताया कि मैंने अलेक्जेंड्रिया में हज़रत आरिफ़ बिल्लाह अबुल फ़तह बिन अबी अल-ग़नाइम से सुना कि बत़ायह के लोगों में से एक व्यक्ति एक दुबला बैल खींचता हुआ हमारे शेख़ हज़रत सैय्यद अहमद रफ़ाई (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सेवा में लाया और अर्ज़ किया: ऐ मेरे आका! मेरा और मेरे बच्चों का गुज़ारा इसी बैल के ज़रिए होता है, अब यह कमज़ोर हो गया है, इसके लिए शक्ति और बरकत की दुआ फरमाएँ। हज़रत ने फरमाया: शेख उस्मान बिन मरज़ूक़ (ब़ताइही रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास जाओ और उन्हें मेरा सलाम कहो और उनसे मेरे लिए दुआ चाहो। वह बैल लेकर वहाँ हाज़िर हुआ, देखा कि हज़रत सैय्यदी उस्मान तशरीफ़ फरमा हैं और उनके चारों ओर शेरों ने घेरा बनाया हुआ है। वह पास आने में डरने लगा, हज़रत ने फरमाया: आगे आओ। वह करीब गया, इससे पहले कि वह हज़रत रफ़ाई का संदेश पहुँचाता, सैय्यदी उस्मान ने स्वयं फरमाया: मेरे भाई शेख अहमद पर सलाम, अल्लाह मेरा और उनका अंत भला करे। फिर एक शेर को इशारा फरमाया कि उठ इस बैल को चीर डाल। शेर उठा और बैल को मारकर उसमें से खाया। हज़रत ने फरमाया: अब वापस आ जा। वह वापस आ गया। फिर दूसरे शेर से फरमाया: उठ और इसमें से खा। वह उठा और खाया। फिर उसे वापस बुला लिया। तीसरा शेर भेजा, इसी तरह वह एक-एक शेर भेजते रहे यहाँ तक कि उन्होंने सारा बैल खा लिया। इतने में क्या देखते हैं कि बतीहा की ओर से एक बहुत मोटा-ताज़ा बैल आया और हज़रत के सामने खड़ा हो गया। हज़रत ने उस व्यक्ति से फरमाया: अपने बैल के बदले यह बैल ले लो। उसने उसे पकड़ तो लिया मगर दिल में कह रहा था मेरा बैल तो मारा गया और मुझे डर है कि कोई इस बैल को मेरे पास पहचान ले और मुझे परेशान करे। अचानक एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और हज़रत के मुबारक हाथ को चूमकर अर्ज़ किया: ऐ मेरे मौला! मैंने आपकी सेवा के लिए एक बैल की मन्नत मानी थी, मैं उसे बतीहा तक लाया था, वहाँ वह मेरे हाथ से छूट गया, पता नहीं कहाँ चला गया[2]। हज़रत ने फरमाया: वह हमें पहुँच गया, यह देखो यह तुम्हारे सामने है[3]। वह व्यक्ति क़दमों पर गिर पड़ा और हज़रत के मुबारक पैरों को चूमकर कहा: ऐ मेरे मौला! खुदा की कसम अल्लाह ने हज़रत को हर चीज़ की मा'रिफ़त (ज्ञान) प्रदान की है और हर चीज़ यहाँ तक कि जानवरों को भी हज़रत की पहचान करा दी है। हज़रत ने फरमाया: यह...

1 बहजत अल-असरार, शेख अबू अम्र उस्मान बिन मरज़ूक अल-बताइही, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 159 2 बहजत अल-असरार, शेख अबू अम्र उस्मान बिन मरज़ूक अल-बताइही, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 159 3 बहजत अल-असरार, शेख अबू अम्र उस्मान बिन मरज़ूक अल-बताइही, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 159 Page 604 of 688

پہلے پچھڑے کو لے لیا اور واپس چلا گیا۔ (۱۰) نیز فرماتے ہیں : اخبرنا ابوزید عبدالرحمن بن سالم احمد القرشی قال سمعت الشیخ العارف ابا الفتح بن ابی الغنائم بالاسکندریۃ۱، ہمیں ابوزید عبدالرحمن بن سالم بن احمد قرشی نے خبر دی کہ میں نے حضرت عارف باللہ ابوالفتح بن ابی الغنائم سے اسکندریہ میں سنا کہ اہل بطائح سے ایک شخص دبلا بیل کھینچتا ہوا ہمارے شیخ حضرت سید احمد رفاعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حضور لایا اور عرض کی: اے میرے آقا! میرا اور میرے بال بچوں کا قوت اسی بیل کے ذریعہ سے ہے اب یہ ضعیف ہو گیا اس کے لئے قوت و برکت کی دعا فرمائیے۔ حضرت نے فرمایا: شیخ عثمان بن مرزوق (بطائحی رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کے پاس جاؤ اور انہیں میرا سلام کہہ اور ان سے میرے لئے دعا چاہو۔ وہ بیل کو لے کر یہاں حاضر ہوا، دیکھا کہ حضرت سیدی عثمان تشریف فرما ہیں اور ان کے گرد شیر حلقہ باندھے ہیں، یہ پاس حاضر ہوتے ڈرا، فرمایا: آگے آ۔ قریب گیا، قبل اس کے کہ یہ حضرت رفاعی کا پیام پہنچائے سیدی عثمان نے خود فرمایا کہ میرے بھائی شیخ احمد پر سلام، اللہ میرا اور ان کا خاتمہ بالخیر فرمائے، پھر ایک شیر کو اشارہ فرمایا کہ اٹھ اس بیل کو پھاڑ۔ شیر اٹھا اور بیل کو مار کر اس میں سے کھایا، حضرت نے فرمایا: اب اٹھ آ۔ وہ اٹھ آیا، پھر دوسرے شیر سے فرمایا: اٹھ اس میں سے کھا ۔ وہ اٹھا اور کھایا۔ پھر اسے بلایا۔ تیسرا شیر بھیجا، یونہی ایک ایک شیر بھیجتے رہے یہاں تک کہ انہوں نے سارا بیل کھا لیا، اتنے میں کیا دیکھتے ہیں کہ بطیحہ کی طرف سے ایک بہت فربہ بیل آیا اور حضرت کے سامنے کھڑا ہوا، حضرت نے اس شخص سے فرمایا: اپنے بیل کے بدلے یہ بیل لے لو۔ اس نے اسے پکڑ تو لیا مگر دل میں کہتا تھا میرا بیل تو مارا گیا اور مجھے اندیشہ ہے کہ کوئی اس بیل کو میرے پاس پہچان کر مجھے ستائے، ناگاہ ایک شخص دوڑتا ہوا آیا اور حضرت کے

دست مبارک کو بوسہ دے کر عرض کی: یا سیدی نذرت لك ثورا وتیت بہ الی البطیحہ فاستلب منی ولا ادری این ذھب۲ اے میرے مولیٰ! میں نے ایک بیل حضور کی نذر کا رکھا تھا اسے بطیحہ تک لایا وہاں سے میرے ہاتھ سے چھوٹ گیا معلوم نہیں کہاں گیا، فرمایا: قد وصل الیناہا ھو تراہ۳ وہ ہمیں پہنچ گیا یہ دیکھو یہ تمہارے سامنے ہے۔ وہ شخص قدموں پر گر پڑا اور حضرت کے پائے مبارک چوم کر کہا: اے میرے مولیٰ! خدا کی قسم اللہ نے حضرت کو ہر چیز کی معرفت بخشی اور ہر چیز یہاں تک کہ جانوروں کو حضرت کی پہچان کرادی، حضرت نے فرمایا: ھذا ان

---

۱ بہجۃ الاسرار شیخ ابو عمرو عثمان بن مرزوق البطائحی مصطفی البابی مصر ص ۱۵۹ ۲ بہجۃ الاسرار شیخ ابو عمرو عثمان بن مرزوق البطائحی مصطفی البابی مصر ص ۱۵۹ ۳ بہجۃ الاسرار شیخ ابو عمرو عثمان بن مرزوق البطائحی مصطفی البابی مصر ص ۱۵۹ Page 604 of 688

Fatawa Razawiya Volume 13, Page 13

'Al-Habibu la yakhfa an habibih shay'an wa man arafallaha azza wajalla arafahu kullu shay'i.' O person! Verily, the beloved does not keep anything hidden from his beloved; to whomsoever the recognition of Allah is granted, Allah bestows the knowledge of everything upon him. Then he said to the owner of the ox: "You were complaining in your heart, saying that your ox was killed and God knows where this ox came from, lest someone recognize it with me and cause me harm." Upon hearing this, the owner of the ox began to cry. He said: "Did you not know that I know what is in your heart? Go, may Allah bless this ox for you." He took the ox and walked a few steps when the fear crossed his mind that perhaps a lion might attack him or his ox. He asked: "Are you afraid of a lion?" He replied: "Yes." The Master ordered one of the lions present before him to deliver him and his ox safely. The lion arose and accompanied him, keeping other lions etc. away from him, walking sometimes on his right, sometimes on his left, and sometimes behind him, until he reached a safe place and narrated his story to Hazrat Ahmed Rifai. He wept and said: "It is difficult for anyone like Ibn Marzuq to be born after him." And Allah placed such blessing in that ox that the person became very wealthy.[1]

(11) Imam Arif Billah Sayyidi Abdul Wahhab Sha'rani (may his secret be sanctified) states in his venerable book 'Tabaqat al-Kubra' regarding the life of Hazrat Sayyidi Abu al-Mawahib Muhammad Shadhili (may Allah be pleased with him):

"And he (may Allah be pleased with him) used to say: I saw the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and he said: 'If you have a need and want it fulfilled, then make an offering (nazr) for Nafisa al-Tahira, even if it is just a penny, for your need will be fulfilled.'" Meaning, the praised Hazrat (may Allah be pleased with him) used to say: "I saw the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). He said: 'When you have a need and want it to be fulfilled, then vow some offering for the Pure Lady Hazrat Nafisa, even if it is just one penny, your need will be fulfilled.'"

These are the offerings (nazr) for the saints, and from this, it becomes clear that including offerings to saints under the category of "that which has been dedicated to other than Allah" (ma uhilla bihi lighayr-illah) is false. Had it been so, how would the leaders of the religion accept it and eat/feed it? Rather, "ma uhilla bihi lighayr-illah" refers to that animal which was slaughtered while invoking a name other than God's during the Takbir at the time of slaughter. Now, listen to the sayings of the ancestors of the leader of the sect, Ismail Dehlvi:

(1) Janab Shah Waliullah Sahib Muhaddith Dehlvi, who is the grandfather, teacher of the grandfather, and great-grandfather-mentor of Maulvi Ismail, in 'Anfas al-Arifin'...

[1] Bahjat al-Asrar, Sheikh Abu Amr wa Uthman bin Marzuq al-Bata'ihi, Mustafa al-Babi, Egypt, p. 195. [2] Tabaqat al-Kubra, Imam Abdul Wahhab al-Sha'rani.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13, पृष्ठ 13

'अल-हबीबु ला यख़फ़ा अन हबीबिही शयन व मन अरफ़ाल्लाहा अज़्ज़ा वजल्ला अरफ़ाहू कुल्लु शयइ।' ऐ व्यक्ति! निस्संदेह, प्रेमी अपने प्रेमियों से कोई चीज़ छिपी नहीं रखता; जिसे अल्लाह की पहचान मिलती है, अल्लाह उसे हर चीज़ का ज्ञान प्रदान करता है। फिर उन्होंने बैल के मालिक से कहा: "तुम अपने दिल में मेरी शिकायत कर रहे थे और कह रहे थे कि मेरा बैल तो मारा गया और खुदा जाने यह बैल कहाँ से आया, कहीं कोई इसे मेरे पास पहचान कर मुझे कष्ट न पहुँचाए।" यह सुनकर बैल वाला रोने लगा। उन्होंने फ़रमाया: "क्या तुमने नहीं जाना कि मैं तुम्हारे दिल की बात जानता हूँ? जाओ, अल्लाह इस बैल को तुम्हारे लिए बरकत वाला करे।" वह बैल लेकर कुछ कदम चला कि उसके मन में यह डर आया कि कहीं शेर मुझ पर या मेरे बैल पर हमला न कर दे। उन्होंने पूछा: "क्या शेर का डर है?" उसने कहा: "हाँ।" हज़रत ने अपने सामने मौजूद शेरों में से एक को आदेश दिया कि उसे और उसके बैल को सुरक्षित पहुँचा दे। शेर उठा और उसके साथ हो लिया, शेरों आदि को उससे दूर रखता हुआ कभी उसके दाहिने, कभी बाएँ कभी पीछे चलता रहा यहाँ तक कि वह सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया और अपना किस्सा हज़रत अहमद रिफ़ाई को सुनाया। वह रोए और फ़रमाया: "इब्न मरज़ूक के बाद उनके जैसा पैदा होना कठिन है।" और अल्लाह ने उस बैल में ऐसी बरकत रखी कि वह व्यक्ति बहुत धनवान हो गया।[1]

(11) इमाम आरिफ़ बिल्लाह सैयदी अब्दुल वहाब शेरानी (उनका रहस्य पवित्र हो) अपनी गरिमामयी पुस्तक 'तबाक़ात-ए-कुबरा' में हज़रत सैयदी अबुल मवाहिब मुहम्मद शाज़ली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के हालात में फ़रमाते हैं:

"और वे (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहा करते थे: मैंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखा, तो उन्होंने फ़रमाया: 'जब तुम्हें कोई ज़रूरत हो और तुम उसे पूरा करना चाहो, तो नफ़ीसा अल-ताहिरा के लिए नज़र (मन्नत) मानो, चाहे वह एक पैसा ही क्यों न हो, तुम्हारी ज़रूरत पूरी हो जाएगी।'" यानी हज़रत मम्दूह (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) फ़रमाया करते कि मैंने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को देखा, हुज़ूर ने फ़रमाया जब तुम्हें कोई हाजत हो और उसका पूरा होना चाहो तो सैयदा ताहिरा हज़रत नफ़ीसा के लिए कुछ नज़र मान लिया करो चाहे एक ही पैसा हो तुम्हारी हाजत पूरी होगी।

ये हैं औलिया की नज़रें, और यहीं से ज़ाहिर हो गया कि नज़र-ए-औलिया को 'मा उहिल्ला बिही लिग़ैरिल्लाह' (जो गैर-अल्लाह के नाम पर समर्पित हो) में शामिल करना बातिल (ग़लत) है। अगर ऐसा होता तो धर्म के इमाम इसे कैसे स्वीकार करते और खाते-खिलाते? बल्कि 'मा उहिल्ला बिही लिग़ैरिल्लाह' वह जानवर है जिसे ज़बह के समय तकबीर में ग़ैर-ख़ुदा का नाम लेकर ज़बह किया गया। अब इमाम-उत-ताइफ़ा इस्माइल देहलवी साहब के बड़ों के भी कथन सुनिए:

(1) जनाब शाह वलीउल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी, जो मौलवी इस्माइल के दादा, दादा के उस्ताद और परदादा पीर हैं, 'अनफ़ास-उल-आरिफ़ीन' में...

[1] बहजत-उल-असरार, शेख अबू उमर व उस्मान बिन मरज़ूक अल-बत्ताइही, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, पृ. 195। [2] तबाक़ात-ए-कुबरा, इमाम अब्दुल वहाब अल-शेरानी।

पृष्ठ 605/688

الحبیب لا یخفی عن حبیبہ شیاً ومن عرف اللہ عزوجل عرفہ کل شیئی۔ اے شخص! بیشک محبوب اپنے محبوبوں سے کوئی چیز پوشیدہ نہیں رکھتا جسے اللہ کی معرفت ملتی ہے اللہ اسے ہر چیز کا علم عطا کرتا ہے۔ پھر بیل والے سے فرمایا: تو اپنے دل میں میرا شاکی تھا اور کہہ رہا تھا کہ میرا بیل تو مارا گیا اور خدا جانے یہ بیل کہاں ہے مبادا کوئی اسے میرے پاس پہچان کر مجھے ایذاء دے۔ یہ سن کر بیل والا رونے لگا۔ فرمایا: کیا تو نے نہ جانا کہ میں تیرے دل کی جانتا ہوں جا اللہ اس بیل کو تجھ پر مبارک کرے۔ وہ بیل کولے کر چند قدم چلا اب اسے یہ خطرہ گزرا کہ مبادا مجھے یا میرے بیل کو کوئی شیر آڑے۔ فرمایا: شیر کا خوف ہے؟ عرض کی: ہاں۔ حضرت نے جو شیر سامنے حاضر تھے ان میں سے ایک کو حکم دیا کہ اسے اور اس کے بیل کو بحفاظت پہنچا دے۔ شیر اٹھا اور ساتھ ہو لیا اس کے پاس سے شیر وغیرہ کو دور کرتا کبھی اس کے داہنے کبھی بائیں کبھی پیچھے چلتا یہاں تک کہ وہ امن کی جگہ پہنچ گیا اور اپنا قصہ حضرت احمد رفاعی سے عرض کیا، حضرت روئے اور فرمایا: ابن مرزوق کے بعد ان جیسا پیدا ہونا دشوار ہے۔ اور اللہ تعالیٰ نے اس بیل میں برکت رکھی کہ وہ شخص بڑا مالدار ہو گیا۔[1]

(۱۱) امام عارف باللہ سیدی عبدالوہاب شعرانی قدس سرہ الربانی کتاب مستطاب طبقات کبری احوال حضرت سیدی ابوالمواہب محمد شاذلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ میں فرماتے ہیں:

وکان رضی اللہ تعالی عنہ یقول رایت النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فقال اذاکان لك حاجة واردت قضاء ھافانذر لنفیسة الطاھرة ولو فلسا فان حاجتك تقضی یعنی حضرت ممدوح رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمایا کرتے میں نے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو دیکھا حضور نے فرمایا جب تمہیں

کوئی حاجت ہو اور اس کا پورا ہونا چاہو تو سیدہ طاہرہ حضرت نفیسہ کے لئے کچھ نذر مان لیا کرو اگر چہ ایک ہی پیسہ ہو تمہاری حاجت پوری ہوگی۔

یہ ہیں اولیاء کی نذریں، اور یہیں سے ظاہر ہو گیا کہ نذر اولیاء کو ما اھل بہ لغیر اللہ میں داخل کرنا باطل ہے، ایسا ہوتا تو ائمہ دین کیونکر اسے قبول فرماتے اور کھاتے کھلاتے بلکہ ما اھل بہ لغیر اللہ وہ جانور ہے جو ذبح کے وقت تکبیر میں غیر خدا کا نام لے کر ذبح کیا گیا۔ اب امام الطائفہ اسمعیل دہلوی صاحب کے باپوں کے بھی اقوال لیجئے :

(۱) جناب شاہ ولی اللہ صاحب محدث دہلوی مولوی اسمعیل کے دادا اور دادا استاد اور پردادا پیر انفاس العارفین

[1] بھجۃ الاسرار شیخ ابو عمر وعثمان بن مرزوق البطائحی مصطفی البابی مصر ص ۱۹۵ [2] طبقات کبری امام عبدالوہاب الشعرانی

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

Writing about the state of his noble father:

[Table Header omitted as per layout] [Left Column - Persian Transcription] Hazrat Eshan dar qasbah Dasna b-ziyarat-e-Makhdoom Allah Diya raftah boodand shab hangam bood daran mahal farmoodand Makhdoom ziyafat-e-ma-mi kunand wa mi goyand cheeze khordah rowid tawaqquf kardan ta ankah asar-e-mardom munqati' shud wa malal bar yaran ghalib amad angah zane bi-yamad tabaq-e-birinj wa shireeni bar sar wa guft nazr kardah boodam kih agar zauj-e-man bi-yayid haman sa'at in ta'am pukhtah nishindagan dargah Makhdoom Allah Diya sanam dareen waqt amad eifa-e-nazr kardam. 1

[Right Column - Urdu Transcription] Hazrat Eshan qasbah Dasna mein Hazrat Makhdoom Allah Diya ki ziyarat ke liye tashreef le gaye, raat ka waqt tha us waqt farmaya kih Hazrat Makhdoom ne hamari dawat ki hai aur farmaya hai kih khana kha kar jayen. Aap ne dawat ka intezar farmaya yahan tak kih raat guzar jaane ki wajah se logon ki aamad-o-raft bhi khatm ho gayi, ahbaab malool huye, achanak ek aurat meethe ta'am ka thaal liye namoodar hui us ne kaha main ne nazr mani thi kih mera khawand jis waqt ghar wapas aaye ga main isi waqt ta'am paka kar Makhdoom Allah Diya ki dargah mein qayam pazeer fuqra mein taqseem karun gi, meri khwahish thi kih Khuda kare is waqt raat gaye dargah mein koi maujood ho takih ta'am tanawul kare aur meri nazr poori ho. (T)

(2) In the same [it is written]:

[Left Column - Persian Transcription] Hazrat Eshan mi-farmoodand kih Farhad Beg ra mushkile pesh aftad nazr kardam kih bar-e-khudaya kih agar in mushkil basar ayid in qadar mablagh b-hazrat Eshan hadyah diham aan mushkil mun-dafa shud aan nazr az khatir-e-oo b-raft ba'd chand-e asp-e-oo beemar shud wa nazdeek-e-hilal raseed b-sabab-e-een amr musharraf shudam b-dast yake az khadiman guftah farestadam kih een beemari-e-asp adam-e-wafa-e-nazrast agar asp-e-khud ra mi-khwahi nazre ra kih dar falan mahal iltizam namoodah b-frest way nadim shud wa aan nazr farestad haman sa'at asp-e-oo shifa yaft. 2

[Right Column - Urdu Transcription] Hazrat Eshan ne farmaya kih Farhad Beg ko ek mushkil darpesh hai, us ne nazr mani hai kih ay Bari Ta'ala agar yeh mushkil sar ho jaye to main mablagh itne Hazrat Eshan ki khidmat mein hadyah dun ga, woh mushkil khatm ho gayi aur us ke zahn se woh nazr nikal gayi, us ke ba'd us ke chand

ghore beemar ho kar qareeb-ul-marg ho gaye, mujhe jab maloom hua to main ne us ko ek khadim ke hath paigham bheja kih agar ghoron ki khair chahte ho to furan nazr poori karo jo tum ne falan jagah falan waqt mani thi nazr poori na karne ki wajah se ghore beemar huye hain, to woh bahut nadim hua, aur nazr khidmat mein arsal kar di to ghore furan tandrust ho gaye. (T)

1. Anfas-ul-Arifeen (Urdu translation), Hazrat Makhdoom Allah Diya, Al-Ma'arif Ganj Bakhsh Road Lahore, p. 112
2. Anfas-ul-Arifeen (Urdu translation), Vow collected forcefully from a denier, Al-Ma'arif Ganj Bakhsh Road Lahore, p. 712 and 128

फ़तवा रज़विया खंड तेरह 13

अपने पूज्य पिता की स्थिति के बारे में लिखते हैं:

[तालिका का दायां भाग - उर्दू का हिंदी अनुवाद] हज़रत ईशां (श्रीमान) दासना कस्बे में हज़रत मखदूम अल्लाह दिया के दर्शन के लिए तशरीफ़ ले गए, रात का समय था, उस समय उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत मखदूम ने हमारी दावत की है और फ़रमाया है कि खाना खाकर जाएँ। आपने दावत का इंतज़ार फ़रमाया यहाँ तक कि रात बीत जाने के कारण लोगों का आना-जाना भी बंद हो गया, मित्र उदास हो गए, अचानक एक औरत मीठे भोजन का थाल लिए प्रकट हुई। उसने कहा, मैंने मन्नत मानी थी कि मेरा पति जिस समय घर वापस आएगा मैं उसी समय भोजन पकाकर मखदूम अल्लाह दिया की दरगाह में ठहरे हुए फ़कीरों में बाँटूँगी। मेरी इच्छा थी कि ईश्वर करे इस समय देर रात दरगाह में कोई मौजूद हो ताकि वह भोजन ग्रहण करे और मेरी मन्नत पूरी हो। (त)

(२) उसी में है: हज़रत ईशां ने फ़रमाया कि फ़रहाद बेग को एक समस्या का सामना करना पड़ा, उसने मन्नत मानी कि हे ईश्वर! अगर यह समस्या हल हो जाए तो मैं इतनी राशि हज़रत ईशां की सेवा में भेंट करूँगा। वह समस्या समाप्त हो गई और उसके मन से वह मन्नत निकल गई। इसके बाद उसके कुछ घोड़े बीमार होकर मरणासन्न हो गए। मुझे जब पता चला तो मैंने उसे एक सेवक के माध्यम से संदेश भेजा कि अगर घोड़ों की खैर चाहते हो तो तुरंत मन्नत पूरी करो जो तुमने अमुक स्थान पर अमुक समय मानी थी। मन्नत पूरी न करने के कारण ही घोड़े बीमार हुए हैं। तो वह बहुत शर्मिंदा हुआ, और मन्नत की राशि सेवा में भेज दी, जिससे घोड़े तुरंत स्वस्थ हो गए। (त)

1. अनफ़ास-उल-आरिफीन (उर्दू अनुवाद) हज़रत मखदूम अल्लाह दिया, अल-मआरिफ़ गंज बख्श रोड लाहौर, पृष्ठ ११२
2. अनफ़ास-उल-आरिफीन (उर्दू अनुवाद) इनकार करने वाले से ज़बरदस्ती मन्नत वसूल की गई, अल-मआरिफ़ गंज बख्श रोड लाहौर, पृष्ठ ७१२ और १२८

पृष्ठ ६०६ / ६८८

میں اپنے والد ماجد کے حال میں لکھتے ہیں:

حضرت ایشاں در قصبہ ڈاسنہ بزیارت مخدوم الہ دیار رفتہ بودند شب ہنگام بود دراں محل فرمودند مخدوم ضیافت مامی کنند و می گویند چیزے خوردہ روید توقف کردند تا آنکہ اثر مردم منقطع شد و ملال بر یاراں غالب آمد آنگاہ زنے بیامد طبق برنج و شیرینی بر سر و گفت نذر کردہ بودم کہ اگر زوج من بیاید ہماں ساعت ایں طعام پختہ نشیندگان درگاہ مخدوم الہ دیار سانم دریں وقت آمد ایفاے نذر کردم۔ 1 حضرت ایشاں قصبہ ڈاسنہ میں حضرت مخدوم الہ دیا کی زیارت کے لئے تشریف لے گئے، رات کا وقت تھا اس وقت فرمایا کہ حضرت مخدوم نے ہماری دعوت کی ہے اور فرمایا ہے کہ کھانا کھا کر جائیں۔ آپ نے دعوت کا انتظار فرمایا یہاں تک کہ رات گزر جانے کی وجہ سے لوگوں کی آمد و رفت بھی ختم ہو گئی، احباب ملول ہوئے ، اچانک ایک عورت میٹھے طعام کا تھا ل لئے نمودار ہوئی اس نے کہا میں نے نذر مانی تھی کہ میرا خاوند جس وقت گھر واپس آئے گا میں اسی وقت طعام پکا کر مخدوم الہ دیا کی درگاہ میں قیام پذیر فقراء میں تقسیم کروں گی، میری خواہش تھی کہ خدا کرے اس وقت رات گئے درگاہ میں کوئی موجود ہو تاکہ طعام تناول کرے اور میری نذر پوری ہو۔ (ت)

(۲) اسی میں ہے: حضرت ایشاں میفر مودند کہ فرہاد بیگ را مشکلی پیش افتاد نذر کردم کہ بار خدایا کہ اگر ایں مشکل بسر آید ایں قدر مبلغ بحضرت ایشاں ہدیہ دہم آں مشکل مندفع شد آں نذر از خاطر او برفت بعد چندے اسپ او بیمار شد و نزدیک ہلال رسید برسّب ایں امر مشرف شدم بدست یکے از خادمان گفتہ فرستادم کہ ایں بیماری اسپ عدم وفاے نذرست اگر اسپ خود را میخواہی نذرے را کہ در فلاں محل التزام نمودہ بفرست وے نادم شد و آں نذر فرستاد ہماں ساعت اسپ او شفا

یافت۔ 2 حضرت ایشاں نے فرمایا کہ فرہاد بیگ کو ایک مشکل درپیش ہے، اس نے نذر مانی ہے کہ اے باری تعالیٰ اگر یہ مشکل سر ہو جائے تو میں مبلغ اتنے حضرت ایشاں کی خدمت میں ہدیہ دوں گا، وہ مشکل ختم ہو گئی اور اس کے ذہن سے وہ نذر نکل گئی، اس کے بعد اس کے چند گھوڑے بیمار ہو کر قریب المرگ ہو گئے، مجھے جب معلوم ہوا تو میں نے اس کو ایک خادم کے ہاتھ پیغام بھیجا کہ اگر گھوڑوں کی خیر چاہتے ہو تو فوراً نذر پوری کرو جو تم نے فلاں جگہ فلاں وقت مانی تھی نذر پوری نہ کرنے کی وجہ سے گھوڑے بیمار ہوئے ہیں، تو وہ بہت نادم ہوا، اور نذر خدمت میں ارسال کر دی تو گھوڑے فوراً تندرست ہو گئے۔ (ت)

1 انفاس العارفین (مترجم اردو) حضرت مخدوم الہ دیہ المعارف گنج بخش روڈ لاہور ص ۱۱۲ 2 انفاس العارفین (مترجم اردو) منکر سے بزور نذر وصول کی المعارف گنج بخش روڈ لاہور ص ۷۱۲ اور ۱۲۸

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

(3) Hazrat Maulana Shah Abdul Aziz Muhaddith Dehlvi states in 'Tuhfa Ithna Ashariyah':

[Table/Box Column 1 - Persian text translation]: The entire Ummah regards Hazrat Amir and his pure progeny like spiritual guides and masters (peers and murshids) and considers metaphysical matters connected to them. Practices like Fatiha, Durood, charity, and vows in their names are prevalent and customary. Similarly, the same approach is taken with all the Saints (Awliya) of Allah: Fatiha, Durood, vows, death anniversaries (Urs), and gatherings are held.

[Table/Box Column 2 - Urdu text]: Hazrat Amir (Ali, may Allah ennoble his face) and his pure progeny are regarded by the entire Ummah like spiritual guides and masters. Metaphysical matters, Fatiha, Durood, charities, and vows are prevalent and customary in their names. Likewise, the same practice exists with all the honorable Saints, that vows, offerings, Fatiha, Durood, Urs, and gatherings are organized in their names. (T)

Great and Glorious Benefits

Muslims should observe how many grand, beautiful, and enlightening benefits are derived from these three statements of the two Shah Sahibs, praise be to Allah: (1) The awareness of the Saints (Awliya) regarding those present at their shrines. (2) Their speaking to them; for instance, when the father of Shah Waliullah, Abdul Rahim Sahib, visited the shrine of Hazrat Makhdoom Allah Diya (may his secret be sanctified), the Saint invited him from the shrine and told him to eat something before leaving. (3) The Saints' knowledge of the unseen after death; as it became known to Hazrat Makhdoom (may his secret be sanctified) that a woman had made a vow for him upon her husband's return, and that her husband would arrive today, and she would bring the vowed rice and sweets at that very moment. (4) Vows (Nazar) for the Saints. (5) Making a vow to the Saints for the removal of a calamity in times of distress. (6) The arrival of a disaster for not fulfilling a vow to them, even if it was due to forgetting. (7) The immediate removal of the disaster upon fulfilling the vow; as Farhad Baig made a vow to the father of Shah Waliullah during a difficult time but then forgot. His horse neared death. The Shah Sahib realized this trouble was due to the unfulfilled vow and sent a message saying, "If you want to save the horse, fulfill our vow." He fulfilled the vow, and the horse immediately recovered. (8) The customary Fatiha. (9) The Urs (death anniversary) of the Saints. (10) Above all,

these five heavy matters (regarded as 'wrath' by opponents): Peer-worship, (11) devotion to Mawla Ali and the pure Imams, (12) the consensus of the entire Ummah on this devotion and service, (13) victory, defeat, health, wealth, poverty, the birth of children, the fulfillment of desires, and similar metaphysical decrees being attributed to Mawla Ali and...

---

1 Tuhfa Ithna Ashariyah, Chapter Seven regarding Imamate, Sohail Academy Lahore, p. 212

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

(3) हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी 'तुहफ़ा इस्ना अशरिया' में फ़रमाते हैं:

[बॉक्स कॉलम 1 - फ़ारसी पाठ का अनुवाद]: पूरी उम्मत हज़रत अमीर और उनकी पाक संतान को पीरों और मुर्शिदों की तरह मानती है और ब्रह्मांडीय मामलों को उनसे जुड़ा हुआ समझती है। फ़ातिहा, दरूद, दान और उनके नाम पर मन्नतें प्रचलित और प्रथागत हो गई हैं। इसी तरह अल्लाह के सभी वलियों (संतों) के साथ यही मामला है: उनके नाम पर फ़ातिहा, दरूद, मन्नतें, उर्स और सभाएं आयोजित की जाती हैं।

[बॉक्स कॉलम 2 - उर्दू पाठ]: हज़रत अमीर (अली करम अल्लाह वज्हहू) और उनकी पाक औलाद को पूरी उम्मत पीरों और मुर्शिदों की तरह समझती है। ब्रह्मांडीय मामले, फ़ातिहा, दरूद, दान और मन्नतें उनके नाम से प्रचलित हैं और एक नियम बन गया है। इसी प्रकार सभी प्रतिष्ठित संतों के साथ यही व्यवहार है कि उनके नाम पर मन्नतें, प्रसाद, फ़ातिहा, दरूद, उर्स और सभाएं आयोजित की जाती हैं। (त)

महान और गौरवशाली लाभ

मुसलमान देखें कि इन दोनों शाह साहबों के इन तीनों कथनों से कितने महान, सुंदर और शिक्षाप्रद लाभ प्राप्त होते हैं, अल्हम्दुलिल्लाह: (1) संतों (औलिया) का अपने मज़ार पर उपस्थित लोगों से अवगत होना। (2) उनसे बात करना; जैसे जब शाह वलीउल्लाह के पिता अब्दुल रहीम साहब हज़रत मख़दूम अल्लाह दिया (कुद्दुस सिर्रहु) के मज़ार शरीफ़ पर उपस्थित हुए, तो हज़रत ने मज़ार शरीफ़ से उनकी दावत की और कहा कि कुछ खाकर जाना। (3) वफ़ात के बाद संतों का परोक्ष (ग़ैब) की बातों को जानना; जैसे हज़रत मख़दूम (कुद्दुस सिर्रहु) को पता चला कि एक महिला ने अपने पति के लौटने पर हमारे लिए मन्नत मानी है, और उसका पति आज आएगा और वह महिला उसी समय मन्नत के चावल और मिठाई लेकर उपस्थित होगी। (4) संतों के लिए मन्नत (नज़्र)। (5) संकट के समय उसे दूर करने के लिए संतों की मन्नत मानना। (6) मन्नत मानकर पूरी न करने पर विपत्ति का आना, भले ही वह भूल जाने के कारण हो। (7) मन्नत पूरी करते ही तुरंत विपत्ति का टल जाना; जैसे फ़रहाद बेग ने किसी कठिन समय में शाह वलीउल्लाह के पिता की मन्नत मानी थी लेकिन फिर भूल गया। घोड़ा मरने के करीब पहुँच गया। शाह साहब को पता चला कि यह मुसीबत मन्नत पूरी न करने के कारण है और उन्होंने संदेश भेजा, "यदि घोड़े को बचाना चाहते हो तो हमारी मन्नत पूरी करो।" उसने मन्नत

पूरी की और घोड़ा तुरंत ठीक हो गया। (8) प्रचलित फ़ातिहा। (9) संतों का उर्स। (10) इन सबसे बढ़कर, ये पाँच भारी मामले (जिन्हें विरोधी 'ग़ज़ब' कहते हैं): पीर-परस्ती, (11) मौला अली और पाक इमामों की भक्ति, (12) इस भक्ति और सेवा पर पूरी उम्मते मरहूमा का आम सहमति (इज्मा), (13) विजय, पराजय, स्वास्थ्य, धन, गरीबी, संतान का होना या न होना, मनोकामना की पूर्ति, और मौला अली और अन्य से जुड़े इसी तरह के ब्रह्मांडीय आदेश...

---

1 तुहफ़ा इस्ना अशरिया, अध्याय सात इमामत के बारे में, सोहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 212

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

(۳) حضرت مولانا شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی تحفہ اثنا عشریہ میں فرماتے ہیں:

[ٹیبل / باکس کالم 1]: حضرت امیر وذریۃ طاہرہ اور اتمام امت بمثال پیراں و مرشداں می پرستند و امور تکوینیہ را بایشان وابستہ می دانند و فاتحہ و درود و صدقات و نذر بنام ایشاں رائج و معمول گردیدہ چنانچہ با جمیع اولیاء اللہ ہمیں معاملہ است فاتحہ و درود ونذر وعرس و مجلس۔ 1

[ٹیبل / باکس کالم 2]: حضرت امیر (علی کرم اللہ وجہہ) اور ان کی اولاد پاک کو تمام امت پیروں اور مرشدوں کی طرح سمجھتی ہے اور تکوینی امور فاتحہ، درود، صدقات اور نذر و نیاز ان کے نام سے رائج ہیں اور معمول بنا ہوا ہے، چنانچہ تمام اولیاء کرام سے یہی معاملہ ہے کہ ان کے نام پر نذر و نیاز، فاتحہ، درود، عرس اور مجالس منعقد کی جاتی ہیں۔ (ت)

فوائد عظیمہ جلیلہ

مسلمان دیکھیں دونوں شاہ صاحبوں کی ان تینوں عبارتوں سے کتنے جلیل و جمیل و ہدایت کش فائدے حاصل ہوئے، وللہ الحمد: (۱) اولیاء کا اپنے حاضرینِ مزارات پر مطلع ہونا (۲) ان سے کلام فرمانا کہ جب حضرت مخدوم اللہ دیا قدس سرہ کے مزار شریف پر شاہ ولی اللہ صاحب کے والد عبدالرحیم صاحب حاضر ہوئے حضرت نے مزار شریف سے ان کی دعوت کی اور فرمایا کچھ کھا کر جانا (۳) اولیائے کرام کا بعد وفات پر غیبوں پر اطلاع پانا کہ حضرت مخدوم قدس سرہ کو معلوم ہوا کہ ایک عورت نے اپنے شوہر کے آنے پر ہماری نذر مانی ہے اور یہ آج اس کا شوہر آئیگا اور یہ کہ عورت اسی وقت ہماری نذر کے چاول اور شیرینی حاضر کرے گی (۴) اولیاء کی نذر (۵) مصیبت کے وقت اس کے دفع کو اولیاء کی نذر ماننی (۶) ان کی نذر مان کر پوری نہ

کرنے سے بلا آنا اگرچہ وہ پورا نہ کرنا بھول جانے سے ہو (۷) اس نذر کے پورا کرتے ہی فوراً بلا کا دفع ہونا کہ فرہاد بیگ نے کسی مشکل کے وقت شاہ ولی اللہ صاحب کے والد کی نذر مانی پھر یاد نہ رہی، گھوڑا مرنے کے قریب پہنچ گیا، شاہ صاحب کو معلوم ہوا کہ اس پر یہ مصیبت ہماری نذر پوری نہ کرنے سے ہے، اس سے فرمایا بھیجا کہ گھوڑا بچانا چاہتے ہو تو ہماری منت پوری کرو، اس نے وہ نذر پوری کی اور گھوڑا فوراً اچھا ہو گیا (۸) فاتحہ مروجہ (۹) عرس اولیاء (۱۰) ان سب سے بڑھ کر یہ پانچ بھاری غضب کہ پیر پرستی (۱۱) مولیٰ علی و ائمہ اطہار کی بندگی (۱۲) اس پر ستاری و بندگی پر تمام امتِ مرحومہ کا اجماع (۱۳) فتح، شکست، تندرستی، دولتمندی، تنگدستی، اولاد ہونا نہ ہونا، مراد ملنا نہ ملنا، اور ان کے مثل احکامِ تکوینیہ کا مولیٰ علی و

---

1 تحفہ اثنا عشریہ باب ہفتم در امامت سہیل اکیڈمی لاہور ص ۲۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 13 13

Being connected with the pure Imams and noble saints (13), and the consensus of the blessed Ummah on this connection. Those seven great things were in the words of Shah Sahab (Shah Waliullah); these heavy stones are in the words of Chhotay Shah Sahab (Shah Abdul Aziz). Now, compare these fourteen with the innovations and fallacies of Ismail Dehlvi's Taqwiyat al-Iman and Izah al-Haq, and Gangohi Sahab's Barahin-e-Qati'ah etc. Both Shah Sahabs, God forbid, appear as such big, hardened polytheists and makers of polytheists, yet it is not easy for them to be polytheists. Along with this, a (15) great benefit will be gained that Ismail Dehlvi, Gangohi, Thanvi, and all Wahhabis are all polytheist disbelievers because Ismail Dehlvi is a slave, student, disciple, and praiser of those two polytheists, considering them as Imams and saints without any 'ifs and buts'. And Gangohi, Thanvi, and all Wahhabis consider those two as polytheists based on the religion of Taqwiyat al-Iman, and regarding the third Quranic religion, they view the deviant and misguided in the same way; and whoever views such people as such is himself a polytheist, disbeliever, and irreligious, and praise be to Allah, Lord of the worlds. Does any Wahhabi—Gangohi, Thanvi, Dehlvi, Amritsari, Bengali, Bhopali, etc.—have an answer to this, or from today itself, the manifestation of "And stop them; indeed, they are to be questioned. What is [wrong] with you? Why do you not help each other? But they, that Day, are in surrender" (Quran 37:24-26) is evident without a veil? "Such is the punishment. And the punishment of the Hereafter is greater, if they only knew" (Quran 68:33). From here it becomes clear that the couplets in this collection of sermons are not in accordance with the Ahl al-Sunnah, and that passage of Barakat al-Imdad is related to seeking help (istimdad). And Allah the Almighty knows best.

[1] The Holy Quran, 37:24 to 26 [2] The Holy Quran, 68:33

पवित्र इमामों और महान औलिया से जुड़े होना (13), और इस जुड़ाव पर उम्मत-ए-मरहूमा का इज्मा (सहमति) होना। वो सात बड़ी बातें शाह साहब (शाह वलीउल्लाह) के कलाम में थीं, ये भारी पत्थर छोटे शाह साहब (शाह अब्दुल अज़ीज़) के कलाम में हैं। अब इस्माइल देहलवी की तक़्वियतुल ईमान व ईज़ाहुल हक़ और गंगोही साहब की बराहीन-ए-क़ातिआ आदि वहाबी खुराफात के साथ इन 14 को मिलाकर देखिये। दोनों शाह साहब, माअज़अल्लाह, कितने बड़े पक्के मुशरिक और मुशरिक बनाने वाले ठहरते हैं, लेकिन उनका मुशरिक होना आसान नहीं। इसके साथ ही ये (15) भारी फ़ायदा हासिल होगा कि इस्माइल देहलवी, गंगोही, थानवी और सारे के सारे वहाबी सब मुशरिक काफ़िर हैं क्योंकि इस्माइल देहलवी उन दो मुशरिकों का गुलाम, उनका शागिर्द, उनका मुरीद, उनका प्रशंसक है, उन्हें बिना किसी चू-चरा के इमाम और वली मानने वाला है। और गंगोही, थानवी और सारे के सारे वहाबी उन दो को तक़्वियतुल ईमानी धर्म के आधार पर मुशरिक और इस तीसरे क़ुरआनी धर्म पर बद-दीन गुमराह को वैसा ही मानने वाले हैं; और जो ऐसों को वैसा माने वो खुद मुशरिक काफ़िर बे-दीन है, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है। क्या किसी वहाबी गंगोही, थानवी, देहलवी, अमृतसर, बंगाली, भोपाली वग़ैरा के पास इसका कोई जवाब है, या आज ही से "और उन्हें रोक लो; बेशक उनसे सवाल किया जाना है। तुम्हें क्या हुआ, तुम एक-दूसरे की मदद क्यों नहीं करते? बल्कि आज वो गर्दन झुकाए हुए हैं" (क़ुरआन 37:24-26) का ज़हूर बे-हिजाब है? "अज़ाब ऐसा ही होता है, और बेशक आख़िरत का अज़ाब बहुत बड़ा है, काश वो जानते" (क़ुरआन 68:33)। यहाँ से साफ़ हो गया कि इस खुत्बों के मजमुए (संग्रह) के अशआर अहल-ए-सुन्नत के अनुकूल नहीं हैं, और बरकातुल इमदाद की वो इबारत इस्तिम्दाद (मदद मांगने) से संबंधित है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[1] अल-क़ुरआनुल करीम 37:24 से 26 [2] अल-क़ुरआनुल करीम 68:33

ائمہ اطہار واولیائے کرام سے وابستہ ہونا (۱۳) اس وابستہ جاننے پر امت مرحومہ کا اجماع ہونا۔ وہ سات بڑے شاہ صاحب کے کلام میں تھے یہ بھاری پتھر چھوٹے شاہ صاحب کے کلام میں ہیں۔ اب اسمعیل دہلوی کی تقویۃ الایمان وایضاح الحق اور گنگوہی صاحب کی براہین قاطعہ و غیر ہا خرافات وہابیہ سے ان ۱۴ کو ملا کر دیکھئے دونوں شاہ صاحب معاذ اللہ کتنے بڑے کٹے پکے مشرک، مشرک گر ٹھہرتے ہیں مگر ان کا مشرک ہونا آسان نہیں۔ اس کے ساتھ ہی یہ (۱۵) بھاری فائدہ حاصل ہوگا کہ اسمعیل دہلوی و گنگوہی و تھانوی اور سارے کے سارے وہابی سب مشرک کافر ہیں کہ اسمعیل دہلوی ان دو مشرکوں کا غلام، ان کا شاگرد، ان کا مرید، ان کا مداح، ان کو امام وولی چنیں وچناں جاننے والا۔ اور گنگوہی و تھانوی اور سارے کے سارے وہابی ان دو تقویۃ الایمانی دھرم پر مشرکوں اور اس تیسرے قرآنی دھرم پر بددین گمراہ کو ایسا ہی جاننے والے اور جو ایسوں کو ویسا جانے وہ خود مشرک کافر بے دین والحمد للہ رب العالمین ہے۔ کسی وہابی گنگوہی تھانوی دہلوی امرتسری بنگالی بھوپالی وغیرہ ہم کے پاس اس کا جواب یا آج ہی سے وَقِفُوهُمْ ۖ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۝ [1] (انہیں رو کو ان سے پوچھنا ہے تمہیں کیا ہوا اب ایک دوسرے کی مدد کیوں نہیں کرتے بلکہ اب وہ گردن ڈالے ہیں۔ ت) کا ظہور بے حجاب كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ [2] (عذاب ایسا ہوتا ہے اور بیشک آخرت کا عذاب بہت بڑا ہے کاش وہ جانتے۔ ت) یہاں سے ظاہر ہوگیا کہ اس مجموعہ خطب کے اشعار موافق اہلسنت نہیں، اور برکات الامداد کی وہ عبارت متعلق بہ استمداد ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

[1] القرآن الکریم ۲۴/۳۷ تا ۲۶ [2] القرآن الکریم ۳۳/۶۸

Fatawa Razawiyya | Volume 13 | 13

Chapter of Expiation (Description of Kaffarah)

Problem 250: 18 Rabi-ul-Awwal Sharif 1322 AH

Question: What do the supporters of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding this matter: Zaid repented from drinking alcohol and, in the presence of four individuals, swore an oath by holding the Holy Quran that he would not drink alcohol. Later, upon inquiry, Zaid confessed to his repentance and oath. Afterwards, an evil act was committed by Zaid again, meaning he drank alcohol once more. Now the question is, how can Zaid be absolved from this sin and what expiation (Kaffarah) should he provide? (T)

Answer: In the pure Shariah, expiation is for those sins whose vileness does not exceed the limit. Whatever ugliness exceeds the limit, it cannot be purified by expiation, and without sincere repentance, there is no command for its erasure. In the pure Shariah, expiation exists for the sin whose evil does not exceed the limit, and the person who transgresses the limit in their sin cannot be purified through expiation alone.

फ़तावा रज़विया | जिल्द 13 | 13

कफ़्फ़ारे का बयान (प्रायश्चित का अध्याय)

मसला 250: 18 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1322 हिजरी

सवाल: दीन के हिमायती और शरीअत-ए-मतीन के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने शराब पीने से तौबा की और चार व्यक्तियों के सामने पवित्र कुरान उठाकर शपथ ली कि मैं शराब नहीं पियूँगा। बाद में पूछताछ पर ज़ैद ने अपनी तौबा और शपथ को स्वीकार किया। इसके बाद ज़ैद से यह बुरा कार्य फिर से हो गया, अर्थात् उसने दोबारा शराब पी। अब प्रश्न यह है कि ज़ैद इस पाप से किस प्रकार मुक्त हो सकता है और उसे क्या कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) देना चाहिए? (त)

जवाब: पाक शरीअत में कफ़्फ़ारा उस गुनाह के लिए होता है जिसकी बुराई सीमा से बाहर न हो। जो कुछ भी बुराई की सीमा को लांघ जाता है, उसे कफ़्फ़ारे से शुद्ध नहीं किया जा सकता, और सच्ची तौबा के बिना उसके मिटाने का कोई आदेश नहीं है। शरीअत-ए-मुतह्हरा में कफ़्फ़ारा उस गुनाह का होता है कि वह बुराई में हद से बढ़कर न हो, और जो शख्स अपने गुनाह में हद से तजावुज़ (पार) कर जाए, वह कफ़्फ़ारे से पाक नहीं हो सकता।

فتاویٰ رضویہ | جلد سیزدہم | ۱۳

باب الکفارۃ (کفارے کا بیان)

مسئلہ ۲۵۰: ۱۸ ربیع الاول شریف ۱۳۲۲ھ چہ می فرمایند حامیانِ دین و مفتیانِ شرعِ متین دریں مسئلہ کہ زید از شراب خوری توبہ کرد و مواجہہ چار کس کلام اللہ شریف را برداشتہ قسم خورد کہ شراب رانوش نکنم و بار دگر تفحصاں دریافت کرد زید از توبہ و از قسم اقرار کرد بعدہ از زید فعل شنیع سر زد شد یعنی شراب بخورد و چساں زید ازیں گناہ بری خواہد شد چہ کفارہ باید داد؟

دین کے حامی اور شرع کے مفتی کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ زید نے شراب نوشی سے توبہ کی اور چار حضرات کے سامنے اس نے قرآن پاک اٹھا کر قسم کھائی کہ میں شراب نوشی نہیں کروں گا۔ لوگوں نے اس سے استفسار کیا تو اس نے اپنی توبہ اور قسم کا اقرار کیا، اس کے بعد زید سے یہ برا فعل سرزد ہوا یعنی اس نے دوبارہ شراب نوشی کی، اب سوال ہے کہ زید اس گناہ سے کس طرح بری ہو سکتا ہے اور اس کو کیا کفارہ دینا چاہئے؟ (ت)

الجواب: در شرعِ مطہر کفارہ ہر گناہے را باشد کہ در شناعت از حد نگزرد و ہرچہ قبحش از حد گزشت تطہیر بکفارہ را نپذیرد و بے توبہ صادقہ حکم بمحویتش

شرع مطہر میں کفارہ اس گناہ کا ہوتا ہے کہ وہ برائی میں حد سے بڑھ کر نہ ہو، اور جو شخص اپنے گناہ میں حد سے تجاوز کر جائے تو وہ کفارہ سے پاک نہیں ہو سکتا۔

Fatawa Rizvia Volume 13 13

And as long as he does not repent with sincerity of heart, he cannot be purified from this sin. For instance, if someone likens his wife to his mother or sister (Zihar), there is an expiation (kaffara) for it, and after the expiation, the wife becomes lawful for him again. However, if someone makes his mother or sister his wife, there is no expiation for this crime; rather, sincere repentance is obligatory upon him.

If here Zaid took the Quran and swore an oath by the name of the Quran or by the name of Allah Almighty, Glory be to Him, and also uttered it with his tongue, then two things are mandatory for him:

First, he did not remain steadfast in his oath but rather broke it; therefore, expiation is mandatory for him. This consists of freeing a slave, or providing clothing for ten poor people, and if he is not capable of these aforementioned matters, then he must fast for three consecutive days.

The second thing is that he swore an oath by picking up the Holy Quran, which is a very serious matter. By picking up the Quran and then violating it by resuming wine drinking, the matter reached the point of insulting the Holy Quran and violating the great right of the Quran. For this severe action, there is no expiation; rather, it is mandatory for him to repent immediately and make a firm intention not to commit this evil act again. Otherwise, he should expect painful punishment and the fire of Hell from Allah Almighty, refuge is sought with Allah. And if the oath was not uttered with the tongue but merely picking up the Quran was considered as an oath, then regarding this type of oath...

Page 610 of 688

फतावा रजविया खंड 13 13

और जब तक वह सच्चे दिल से तौबा (पश्चाताप) नहीं करता, तब तक वह इस पाप से पवित्र नहीं हो सकता। जैसे कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी की तुलना अपनी माँ या बहन से करता है (जिहार), तो इसके लिए कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) है, और कफ़्फ़ारा के बाद पत्नी उसके लिए फिर से हलाल हो जाती है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति अपनी माँ या बहन को अपनी पत्नी बना ले, तो इस अपराध के लिए कोई कफ़्फ़ारा नहीं है; बल्कि उस पर सच्चे दिल से तौबा करना अनिवार्य है।

यदि यहाँ ज़ैद ने कुरान उठाया और कुरान के नाम पर या अल्लाह सर्वशक्तिमान के नाम पर कसम खाई और ज़ुबान से अदा भी किया हो, तो उस पर दो चीजें अनिवार्य हैं:

पहला यह कि वह अपनी कसम पर कायम नहीं रहा बल्कि कसम तोड़ दी, इसलिए उस पर कफ़्फ़ारा अनिवार्य है। और वह है एक गुलाम आज़ाद करना या दस गरीबों को कपड़े पहनाना, और यदि कोई इन उल्लेखित मामलों पर सक्षम न हो, तो उसे लगातार तीन दिन के उपवास (रोज़े) रखने होंगे।

दूसरी बात यह है कि उसने पवित्र कुरान उठाकर कसम खाई है और यह बहुत गंभीर मामला है कि कुरान उठाकर उसने उसका उल्लंघन करते हुए फिर से शराब पी है, जिससे मामला पवित्र कुरान के अपमान और कुरान के महान अधिकार के हनन तक पहुँच गया। इस कठोर कार्यवाही पर कोई कफ़्फ़ारा नहीं है, बल्कि उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह तुरंत तौबा करे और भविष्य में इस बुरे काम को न करने का पक्का इरादा करे, अन्यथा अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर से दर्दनाक अज़ाब और नर्क की आग का इंतज़ार करे, वल-इयाज़ु बिल्लाह तआला (अल्लाह की शरण)। और यदि ज़ुबान से कसम अदा नहीं की बल्कि उसी कुरान उठाने को ही कसम मान लिया गया, तो इस प्रकार की कसम का...

पृष्ठ 610/688

اور جب تک وہ صدق دل سے توبہ نہ کرے تو اس گناہ سے پاک نہیں ہو سکتا، جیسا کہ کوئی شخص اپنی بیوی کو ماں یا بہن سے تشبیہ دے تو اس کا کفارہ ہے اور کفارہ کے بعد بیوی اس کے لئے حلال ہو جاتی ہے لیکن اگر کوئی شخص اپنی ماں یا بہن کو اپنی بیوی بنالے تو اس جرم کا کوئی کفارہ نہیں ہے بلکہ اس پر صدق دل سے توبہ لازم ہے

اگر یہاں زید نے قرآن اٹھا کر قرآن کے نام سے قسم کھائی یا اللہ تعالیٰ جل وعلا کے نام سے قسم کھائی اور زبان سے ادا بھی کی ہو تو اس پر دو چیزیں لازم ہیں، ایک یہ کہ وہ قسم پر قائم نہ رہا بلکہ قسم توڑ دی ہے اس لئے اس پر کفارہ لازم ہے اور وہ ایک غلام آزاد کرنا یا دس مسکینوں کو لباس پہنانا ہے اور اگر کوئی ان مذکورہ امور پر قادر نہ ہو تو پھر تین روزے مسلسل رکھنے ہوں گے۔

دوسری چیز کہ اس نے قرآن مجید اٹھا کر قسم کھائی ہے اور بہت سخت معاملہ ہے کہ قرآن اٹھا کر اس نے اس کی خلاف ورزی کرتے ہوئے پھر سے شراب نوشی کی ہے جس سے قرآن پاک کی توہین تک معاملہ پہنچا اور قرآن کے عظیم حق کی پامالی کی ہے تو اس سخت کار روائی پر کفارہ نہیں ہے بلکہ اس کے لئے اس پر لازم ہے کہ فوراً توبہ کرے اور اس برے فعل کو آئندہ نہ کرنے کا پختہ قصد کرے ورنہ پھر اللہ تعالیٰ کی طرف سے درد ناک عذاب اور جہنم کی آگ کا انتظار کرے، والعیاذ باللہ تعالیٰ۔ اور اگر زبان سے قسم ادا نہیں کی بلکہ اسی قرآن اٹھانے کو قسم قرار دیا تو اس قسم کا

Fatawa Rizvia, Volume 13

(Persian Text Translation): And if the questioner has taken an oath by merely holding the Holy Quran, the ruling remains the same: there is no expiation (kaffara), but he must await a painful punishment. A person will be made to drink as much as he consumed wine in the world. He will be forced to drink that same amount from the pus and yellow fluid of the private parts of adulteresses. Beware, there is no escape from it, as stated in numerous Hadiths. We seek refuge with Allah the Almighty. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

(Urdu Commentary): The ruling is the same: there is no expiation for it; instead, one should await a painful punishment for failing to repent and for not giving up wine. He should fill that same impure cup with foul pus and drink it so that he becomes accustomed to this filth, because for a consumer of alcohol, drinking the pus and thick, filthy water emanating from the private parts of adulterous women in Hell is an obligatory punishment. In the fire of Hell, when adulterous women burn, the pus that will discharge from the worst part of their bodies, their private parts—the consumer of alcohol will drink that pus according to his habit of drinking wine. He will not be able to escape this punishment, as has been described in many Hadiths. We seek refuge with Allah the Almighty. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 251: From Farrukhabad, as asked by Shamsuddin Ahmad, Saturday, 18 Shawwal 1334 AH. What expiation should be given for swearing a false oath by God? If someone swears several false oaths by God at the same time, should they give one expiation or a separate one for each oath? Only this.

The Answer: A deliberate false oath concerning a past event has no expiation; its punishment is being plunged into the boiling rivers of Hell. If an oath is taken concerning a future matter and it is not fulfilled, then there is an expiation for it: one expiation for one oath, and ten for ten. And Allah the Almighty knows best.

Page 611 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

(फ़ारसी मूल का अनुवाद): और यदि पूछने वाले ने केवल पवित्र कुरान को हाथ में लेकर शपथ ली है, तो नियम वही है: कोई कफ़ारा (प्रायश्चित) नहीं है, बल्कि उसे दर्दनाक अज़ाब (दंड) की प्रतीक्षा करनी चाहिए। व्यक्ति को उतना ही पिलाया जाएगा जितना उसने दुनिया में शराब पी थी। वही मात्रा उसे व्यभिचारिणी महिलाओं के गुप्तांगों से निकलने वाले मवाद और पीले पानी के रूप में पिलाई जाएगी। सावधान रहें, इससे कोई छुटकारा नहीं है, जैसा कि कई हदीसों में कहा गया है। अल्लाह तआला हमें सुरक्षित रखे। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू विवरण): वही हुक्म है कि इस पर कफ़ारा नहीं बल्कि दर्दनाक अज़ाब का इंतज़ार करे, तौबा न करने पर और शराब न छोड़ने पर उसको चाहिए कि इसी नापाक जाम को गंदी पीप से भर कर पिए ताकि वह इस गंदगी का आदी हो जाए, क्योंकि शराब पीने वाले के लिए ज़ानी औरतों की शर्मगाह (गुप्तांग) से निकली हुई पीप और गाढ़े गंदे पानी को जहन्नम में पीना अनिवार्य सज़ा होगी। जहन्नम की आग में जब व्यभिचारिणी औरतें जलेंगी, तो उनके बदन की सबसे बुरी जगह शर्मगाह से जो पीप निकलेगी, शराब पीने वाला अपनी शराब की आदत के मुताबिक उस पीप को पिएगा, वह इस सज़ा से बच नहीं सकेगा, जैसा कि कई हदीसों में बयान हुआ है। वल्-इयाज़ु बिल्लाह तआला, वल्लाह सुब्हानहु व तआला आलम। (त)

मसला 251: फर्रुखाबाद से, शम्सुद्दीन अहमद द्वारा पूछा गया, शनिवार, 18 शव्वाल 1334 हिजरी। झूठी कसम खुदा की खाना, क्या कफ़ारा देना चाहिए? अगर एक ही समय में कई बार झूठी कसम खुदा की खाए तो एक कफ़ारा दे या हर एक कसम का अलग-अलग? फ़क़त।

अल-जवाब: पिछली बात पर जानबूझकर ली गई झूठी कसम का कोई कफ़ारा नहीं है, इसकी सज़ा यह है कि जहन्नम के खौलते दरिया में गोते दिए जाएंगे, और भविष्य की किसी बात पर कसम खाई और वह पूरी न हो सकी तो उसका कफ़ारा है: एक कसम खाई तो एक और दस तो दस। वल्लाह तआला आलम।

पृष्ठ 611 का 688

و اگر سوگند بر زبان رانده است سائل ہمیں مصحف برداشتن را سوگند خوانده است حکمش ہمیں ست کہ کفارہ نیست و عذاب الیم را انتظار کردریم بر آرد آدمی ہر قدر کہ شراب خورده باشد ہماں قدر ازاں ریم وزرد آب فروج زانیات باں شراب خور خورانند زینہار از و مفر نیا بد چونکه در احادیث کثیرہ ارشاد فرموده اند، والعیاذ باللہ تعالی۔ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

وہی حکم ہے کہ اس پر کفارہ نہیں بلکہ عذاب الیم کا انتظار کرے، توبہ نہ کرنے پر اور شراب نہ چھوڑنے پر اس کو چاہئے کہ اسی ناپاک جام کو گندی پیپ سے بھر کر پیئے تا کہ اس گندگی کا عادی ہو جائے، کیونکہ شراب نوشی کرنے والے کے لئے زانی عورتوں کی شرمگاہ سے نکلی ہوئی پیپ او غلیظ گندے پانی کو جہنم میں پینا لازمی سزا ہوگی کہ جہنم کی آگ سے زانیہ عورتیں جل کر ان کے بدن کی بد ترین جگہ شرمگاہ سے جو پیپ نکلے گی شراب نوشی والا اپنی شراب کی عادت کے مطابق اس پیپ کو پیئے گا، اس سزا سے وہ بچ نہ سکے گا، جیسا کہ کثیر احادیث میں بیان ہوا ہے، والعیاذ باللہ تعالی، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔(ت)

مسئلہ ۲۵۱: از فرخ آباد مسئولہ شمس الدین احمد شنبہ ۱۸/ شوال ۱۳۳۴ھ جھوٹی قسم خدا کی کھانا کیا کفارہ دینا چاہئے ، اگر ایک ہی وقت میں کئی مرتبہ جھوٹی قسم خدا کی کھائے تو ایک کفارہ دے یا ہر ایک قسم کا علیحدہ علیحدہ ؟ فقط۔

الجواب: جھوٹی قسم گذشتہ بات پر دانستہ ، اس کا کوئی کفارہ نہیں، اس کی سزا یہ ہے کہ جہنم کے کھولتے دریا میں غوطے دیا جائے گا، اور آئندہ کسی بات پر قسم کھائی اور وہ نہ ہو سکی تو اس کا کفارہ ہے ایک قسم کھائی تو ایک اور دس تو دس۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Rizvia Volume 13

Book of Limits (Hudud) and Discretionary Punishments (Ta'zir) (Statement of Limits and Punishments)

Problem 252: 18 Muharram 1307 AH What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this matter: A woman states that Zaid raped her. There are no eyewitnesses to the act. Her statement is that in the house where the incident took place, no one was present except her and Zaid. Zaid denies it, saying he did not commit rape. However, to scold her, he spoke harshly to the mentioned woman. That scolding was: in the morning, when Zaid was going to fetch water, he woke her up from sleep to be alert, so that no vagrant person would take anything away. When Zaid returned after filling water, he found the woman sleeping, so he kicked her bed once, saying she was still sleeping carelessly; what if someone had stolen the belongings? Zaid also spoke harshly to her. Upon this, she made a noise and accused Zaid of rape. Is the woman's statement credible in this regard considering the aforementioned facts? And two persons, one a Muslim and the other a Hindu, state that they heard a voice coming from the house saying, "This person is outraging my honor." Please explain and be rewarded.

Page 613 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13

किताबुल हुद्दूद वत ताज़ीर (दंड और ताज़ीर का बयान)

मसअला 252: 18 मुहर्रम 1307 हिजरी दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसअले में क्या फरमाते हैं कि एक औरत का बयान है कि ज़ैद ने मेरे साथ ज़िना बिल-जब्र (बलात्कार) किया, आँखों देखा कोई गवाह नहीं है, और औरत का यह बयान है कि जिस मकान में यह घटना हुई, उसमें मेरे और ज़ैद के सिवा कोई और मौजूद नहीं था। ज़ैद इनकार करता है कि मैंने ज़िना नहीं किया, अलबत्ता फटकार लगाने के लिए उस औरत को बुरा-भला कहा था। वह फटकार यह थी कि सुबह के समय जब ज़ैद पानी भरने के लिए जाने लगा, तो उसने औरत को नींद से जगाया कि होशियार हो जाओ, कहीं ऐसा न हो कि कोई आवारा व्यक्ति कोई चीज़ उठा ले जाए। जब ज़ैद पानी भरकर लौटा, तो औरत को सोता हुआ पाया, तो उसने चारपाई पर एक लात मारी कि अभी तक बेखबर सो रही है, अगर कोई माल उठा ले जाता तो क्या होता, और ज़ैद ने सख्त सुस्त (बुरा-भला) भी कहा। इस पर उसने शोर मचाया और ज़ैद पर बलात्कार का आरोप लगाया। क्या इस बारे में उपर्युक्त घटनाओं के मद्देनज़र औरत की बात विश्वसनीय है या नहीं? और दो व्यक्ति, जिनमें से एक मुसलमान और दूसरा हिंदू है, यह बयान देते हैं कि हमने मकान से यह आवाज़ सुनी कि "यह व्यक्ति मेरी आबरू लूट रहा है।" बयान फरमाएँ और पुण्य प्राप्त करें।

पृष्ठ 613 / 688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

کتابُ الحُدُود وَالتَّعزیر (حُدود اور تعزیر کا بیان)

مسئلہ ۲۵۲: ۱۸ محرم ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کا یہ بیان ہے کہ زید نے مجھ سے زنا بالجبر کیا، گواہ معاینہ کا کوئی نہیں، اور یہ بیان اس عورت کا ہے کہ جس مکان میں واقعہ مذکور گزرا ہے اس میں سوائے میرے اور زید کے اور کوئی موجود نہ تھا، زید کا انکار ہے کہ میں نے زنا نہیں کیا البتہ تہدید کے لئے عورت مذکور کو سخت اور سست کہا تھا، اور وہ تہدید یہ تھی یعنی صبح کو جس وقت زید پانی بھرنے کو اپنے ٹھکانوں میں جانے لگا تو زید نے اس عورت کو خواب سے بیدار کیا کہ ہوشیار ہو جا ایسا نہ ہو کہ کوئی آوارہ آدمی کوئی چیز اٹھا لے جائے، جب زید پانی بھر کر لوٹ آیا تو عورت مذکور کو سوتا پایا تو اس نے ایک لات چارپائی اس عورت میں ماری کہ ابھی تک غافل سو رہی ہے کوئی مال اٹھا لے جاتا تو کیا ہوتا، اور زید نے سخت اور سست بھی کہا، اس پر اس نے شور مچایا اور زید کو متہم بالزنا بالجبر کیا، آیا اس بارے میں بلحاظ واقعات صدر قول عورت قابلِ اعتبار ہے یا نہیں؟ اور دو شخص جن میں ایک مسلمان اور دوسرا ہندو یہ بیان کرتے ہیں کہ ہم نے یہ سنا کہ مکان میں سے آواز آتی ہے کہ یہ شخص میری آبرو اتارے لیتا ہے، بینوا توجروا۔

صفحہ 613 از 688

جلد تیرھویں، فتاوی رضویہ (Volume 13, Fatawa Rizvia)

The Answer:

The statement of this woman is not at all credible; rather, it is obligatory for every Muslim to consider it a lie and slander, and to think well of the fellow Muslim. Those who believe the aforementioned woman in this matter will also be grave sinners and will be held accountable regarding the rights of that man. The rule of Sharia is that either she should prove it through four reliable, pious Muslim witnesses whose testimony regarding adultery is acceptable, stating that they personally saw with their own eyes the act of penetration (like a needle in a kohl container) between that man and woman at that specific time and in that designated place. Only then would the woman be exonerated from this accusation and the punishment for adultery (Hadd) be applied to the man. Otherwise, the woman should be given eighty lashes, and those who believe her statement and slander the man will also receive eighty lashes each. All these rulings are mentioned in the Holy Quran itself. In this country where the Sharia legal punishment (Hadd) is not implemented, it is obligatory for Muslims to regard this woman as a liar, a fabricator, and one who falsely slanders. Therefore, Muslims should make her repent, and she should publicly retract her statement in a gathering. If she does not agree, then she should be boycotted because she has committed a grave sin. The testimony of those two witnesses is of no benefit to the woman because, firstly, there is only one witness (besides the accuser), and the testimony of a disbeliever is not acceptable. Secondly, they do not say they saw anything with their own eyes. Thirdly, even regarding what they heard, they only report the voice of the woman herself, who is the claimant. The claimant's own statement is not admissible as testimony. Fourthly, phrases like "dishonoring" do not specifically mean adultery; such words are also used for physical assault or the intent to assault. In short, the testimony is purely void, and the woman's claim is entirely false. The man is completely free from the accusation, and the charge of false slander stands against the woman, making repentance from this severe sin obligatory upon her. And Allah the Almighty knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

Issue 253: 6 Dhu al-Qi'dah 1310 AH What do the scholars of religion say regarding this issue: if someone, without seeing, accuses a Muslim of committing incest with his daughter, and there is neither proof nor witness against this person, is it permissible or impermissible to defame him with such an accusation? Explain and you shall be rewarded.

The Answer:

It is strictly prohibited (Haraam) and a definitive major sin. One who makes such an accusation deserves the great punishment of Allah Almighty. Allah, the Mighty and Sublime, has commanded that such persons be given eighty lashes, their testimony should never be accepted, and they are transgressors (fasiq). While lashes cannot be applied here (due to lack of Sharia legal system), the least that should be done is that as long as the accuser does not repent in a public gathering and...

جلد تیرھویں، فتاوی رضویہ (खंड 13, फ़तावा रज़विया)

उत्तर:

इस महिला का कथन बिल्कुल भी विश्वसनीय नहीं है, बल्कि प्रत्येक मुसलमान पर यह अनिवार्य है कि वह इसे झूठ और कलंक समझे और मुसलमान के बारे में अच्छे विचार रखे। जो लोग इस मामले में उक्त महिला को सच्चा मानेंगे, वे भी घोर पापी होंगे और उस पुरुष के अधिकार के मामले में पकड़े जाएंगे। शरीयत का नियम यह है कि या तो वह चार विश्वसनीय, परहेज़गार मुस्लिम गवाहों से, जिनकी व्यभिचार (ज़िना) के बारे में गवाही स्वीकार्य हो, यह साबित करवाए कि उन्होंने उस विशिष्ट समय में उस निश्चित स्थान पर उस पुरुष को उस महिला के साथ संभोग करते हुए अपनी आँखों से ठीक वैसे ही देखा जैसे सुरमे दानी में सलाई जाती है। तभी महिला इस आरोप से बरी होगी और पुरुष पर ज़िना की सज़ा (हद) लागू होगी। अन्यथा, महिला को अस्सी कोड़े लगाए जाएंगे, और जो लोग उसके बयान को सच मानकर पुरुष पर यह कलंक लगाएंगे, वे भी अस्सी-अस्सी कोड़े खाएंगे। ये सभी आदेश स्वयं पवित्र कुरान में वर्णित हैं। इस देश में जहाँ शरीयत की सज़ा (हद) लागू नहीं है, इतना अनिवार्य है कि मुसलमान उस महिला को झूठा, महाझूठा और नाहक इफ़्तरा (झूठा कलंक) बाँधने वाली समझें। अतः मुसलमान उससे तौबा (प्रायश्चित) कराएं और वह सार्वजनिक रूप से स्वयं को झुठलाए। यदि वह न माने, तो उसे छोड़ दें क्योंकि उसने घोर पाप किया है। उन दो गवाहों की गवाही महिला के लिए कतई उपयोगी नहीं है क्योंकि, प्रथम तो केवल एक गवाह है (आरोप लगाने वाली के अलावा), और काफिर की गवाही मान्य नहीं है। दूसरे, वे अपनी आँखों देखा कुछ नहीं कहते। तीसरे, सुनने के मामले में भी वे केवल उस महिला की आवाज़ का वर्णन करते हैं, जो स्वयं शिकायतकर्ता है। शिकायतकर्ता का अपना कथन गवाही के रूप में मान्य नहीं होता। चौथे, 'आबरू उतारना' जैसे शब्द केवल व्यभिचार के लिए ही नहीं कहे जाते, मारपीट करने या मारपीट करने के इरादे पर भी ऐसा शब्द कहा जाता है। संक्षेप में, गवाही पूरी तरह व्यर्थ है और महिला का दावा सरासर गलत है। पुरुष आरोप से बिल्कुल मुक्त है, और महिला पर झूठे कलंक का आरोप सिद्ध है और उस पर इस गंभीर पाप से तौबा करना अनिवार्य है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और ठोस है।

मसला 253: 6 ज़िलक़दा 1310 हिजरी दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि यदि कोई बिना देखे किसी मुसलमान पर यह कलंक लगाए कि उसने अपनी बेटी के साथ ज़िना किया है, और

उस व्यक्ति पर न कोई सबूत है और न गवाही, तो ऐसा कलंक लगाकर बदनाम करना जायज़ है या नाजायज़? बयान फ़रमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर:

यह अत्यंत हराम और निश्चित रूप से बड़ा पाप (गुनाह-ए-कबीरा) है। ऐसा कलंक लगाने वाला अल्लाह तआला के बड़े अज़ाब (दंड) का पात्र होता है। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने आदेश दिया है कि ऐसे व्यक्तियों को अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी न सुनो और वे फ़ासिक़ (पापी) हैं। यहाँ कोड़े तो नहीं लगा सकते, इसलिए इतना करें कि जब तक वह कलंक लगाने वाला सार्वजनिक रूप से तौबा न करे और...

جلد تیرھویں، فتاوی رضویہ

الجواب: اس عورت کا قول ہرگز قابل اعتبار نہیں، بلکہ ہر مسلمان پر فرض ہے کہ اسے جھوٹ اور بہتان سمجھے اور مسلمان کے ساتھ نیک گمان کرے، جو لوگ اس بارے میں زن مذکورہ کو سچا جانیں گے وہ بھی سخت گناہگار اور اس مرد کے حق میں گرفتار ہوں گے، شریعت کا حکم یہ ہے یا تو وہ چار گواہ مسلمان ثقہ پر ہیز گار قابل شہادت زنا سے ثابت کرادے کہ وہ اس وقت خاص میں اس مکان معین میں اس مرد کا اس عورت کے ساتھ زنا کرنا اور اپنا چشم خود اس کے بدن کو اس کے بدن میں سرمہ دانی میں سلائی کی طرح دیکھنا بیان کریں جب تو عورت اس الزام سے بری ہوگی اور مرد پر زنا کی حد آئے گی، ورنہ عورت کو اسی کوڑے لگائے جائیں گے، اور جو لوگ اس کا بیان سچا مان کر مرد پر یہ تہمت کریں گے وہ بھی اسی اسی کوڑے کھائیں گے۔ یہ سب حکم خود قرآن مجید میں مذکور ہے۔ اس ملک میں کہ حد شرع جاری نہیں اتنا فرض ہے کہ مسلمان اس عورت کو جھوٹا کذاب اور ناحق افتراء باندھنے والی سمجھیں، پس مسلمان اس سے توبہ کرائیں اور وہ مجمع میں اپنے آپ کو جھٹلائے، اگر نہ مانے تو اسے چھوڑ دیں کہ وہ سخت گناہ کی مرتکب ہوئی، اور ان دو گواہوں کی گواہی عورت کو کچھ بھی مفید نہیں کہ اول فقط ایک گواہ ہے، کافر کی گواہی کچھ مقبول نہیں دوسرے وہ اپنی آنکھوں کا دیکھا کچھ نہیں کہتے، تیسرے سننے میں بھی فقط اس عورت کی آواز بیان کرتے ہیں، یہ خود مدعیہ ہے، مدعی کا قول مسموع نہیں، چوتھے آبرو اتارنا کچھ خاص زنا کرنے ہی کو نہیں کہتے مارنے پیٹنے یا مار پیٹ کا قصد کرنے پر بھی ایسا کلمہ کہا جاتا ہے، غرض گواہی محض مہمل ہے اور عورت کا قول سراسر باطل، اور مرد الزام سے بالکل بری، اور عورت پر جھوٹی تہمت کا الزام قائم اور اس پر اس سخت گناہ سے توبہ فرض ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۲۵۳: ۶ ذیقعدہ ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کوئی بے دیکھے کسی مسلمان پر تہمت لگائے کہ اس نے اپنی بیٹی کے ساتھ زنا کیا اور اس شخص پر نہ کوئی ثبوت ہے نہ گواہی تو ایسی تہمت لگا کر بدنام کرنا جائز ہے یا ناجائز؟ بینوا توجروا۔

الجواب: سخت حرام قطعی گناہ کبیرہ ہے، ایسی تہمت رکھنے والا اللہ تعالیٰ کے بڑے عذاب کا مستحق ہوتا ہے، اللہ عزوجل نے حکم فرمایا کہ ایسے شخصوں کو اسی کوڑے مار و اور ان کی گواہی کبھی نہ سنو اور وہ فاسق ہیں، یہاں کوڑے تو نہیں لگا سکتے لہذا اسی قدر کریں کہ جب تک وہ تہمت رکھنے والا مجمع میں توبہ نہ کرے اور

...unless he refrains from his impure talk, Muslims should completely stop meeting him, sitting with him, participating in his weddings, or inviting him to theirs. This is because by raising such an accusation, he is an oppressor, and the Holy Quran forbids sitting with oppressors. Proof of such an accusation can never be established by any testimony unless four male, praying, abstinent, trustworthy, and pious men—who neither commit major sins nor persist in minor ones, and who do not perform acts contrary to dignity or modesty (like eating in the market or urinating in public view)—unanimously testify to having seen with their own eyes, at the same time and place, his body inside her body specifically, just like a needle in an eyeliner pot. If even one thing is lacking from these conditions—for example, if there are fewer than four witnesses, or the fourth person is not of this high caliber, or even if they are all of high caliber and there are ten or twenty of them but only three are men and the rest are women, or some witnesses describe today's event while others describe yesterday's, or some say they saw it in this house and others in another, or all these points align and three witnesses clearly testify that they saw his penis inside her vagina just like a needle in an eyeliner pot, but the fourth only says he saw the naked penis placed against her naked vagina, for instance, up to half the glans—then in all these cases, the testimonies are rejected and the accusation is void. Even if a hundred or two hundred such testimonies are presented, it will not constitute proof. Instead, those making the accusation and testifying to adultery will themselves be punished. All these rulings are clearly mentioned in the Holy Quran, Hadith, and books of jurisprudence. And Allah Almighty knows best.

Problem 254: From Baroda, Gujarat Kalan, Mohalla Bhote Ka Jhapah, Nizam Pura, sent by Umrao Bai daughter of Ghulam Hussain, 16 Rajab 1331 AH. What do the scholars of Sharia say about this matter: A man sent his wife somewhere with a man and a woman for some necessary work. After her return, he stopped providing her with maintenance (food and clothing). A case is pending in the court of Kauri. The court asks why he is not providing maintenance. The husband says she went without my permission. The wife presented verbal witnesses that he had ordered her to go. The wife says my husband has slandered me and dishonored me. What is the punishment in Sharia for a person who dishonors his wife? What is the ruling for a deceiver, fraudster, and forger? Explain and be rewarded.

The Answer: Raising a false accusation, taking honor unlawfully, forgery, deception, and fraud are all sins, even if committed against one's own wife...

...जब तक वह अपनी इस अपवित्र बातचीत से बाज़ न आए, तब तक मुसलमान उससे मिलना-जुलना, उसके पास उठना-बैठना, उसकी शादी-ब्याह में शरीक होना और अपनी शादी-ब्याह में उसे शरीक करना बिल्कुल छोड़ दें। क्योंकि वह इस तोहमत (आरोप) को लगाने से ज़ालिम है, और कुरआन मजीद में ज़ालिम के पास बैठने से मना फ़रमाया गया है। और ऐसी तोहमत का सुबूत किसी गवाही से हरगिज़ नहीं हो सकता जब तक कि चार पुरुष, नमाज़ी, परहेज़गार, विश्वसनीय और मुत्तक़ी —जो न कोई गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) करते हों और न ही किसी गुनाह-ए-सगीरा (छोटा पाप) पर अड़े रहते हों, और न ही कोई काम मर्यादा या शालीनता के विरुद्ध (जैसे बाज़ार में खाना खाना या सार्वजनिक मार्ग पर सबके सामने पेशाब करना) करते हों—एक ही समय और एक ही स्थान पर अपनी आँखों से यह न देख लें और बयान न करें कि उन्होंने उसका शरीर उसके शरीर के अंदर ठीक वैसे ही देखा जैसे सुरमेदानी में सलाई। अगर इन बातों में से एक भी बात कम हुई, उदाहरण के लिए गवाह चार से कम हों, या चौथा व्यक्ति उस उच्च स्तर का न हो, या वे सभी उच्च स्तर के हों और संख्या में चार-पाँच नहीं बल्कि दस-बीस हों लेकिन उनमें पुरुष केवल तीन ही हों और बाक़ी औरतें हों, या कुछ गवाह आज की घटना बयान करें और कुछ कल की, या कुछ कहें कि हमने इस मकान में देखा और कुछ दूसरे में कहें, या ये सब बातें एक हों और तीन गवाह साफ़-साफ़ यह भी गवाही दे चुके हों कि हमने उसके लिंग को उसकी योनि में ठीक वैसे ही दाखिल देखा जैसे सुरमेदानी में सलाई, लेकिन चौथा सिर्फ़ इतना कहे कि मैंने उसका नंगा लिंग उसकी नंगी योनि के मुँह पर रखा देखा, उदाहरण के लिए आधा लिंग मुँडी तक अंदर देखा, तो इन सब स्थितियों में ये गवाहियाँ रद्द हैं और वह तोहमत बातिल (झूठी) है। चाहे इस तरह की सौ-दो सौ गवाहियाँ गुज़रें, मूल रूप से कोई सुबूत नहीं होगा, बल्कि तोहमत लगाने वाले और ज़िना की गवाही देने वाले खुद ही सज़ा पाएंगे। ये सभी हुक्म कुरआन मजीद, हदीस शरीफ़ और फ़िक़्ह की किताबों में साफ़-साफ़ वर्णित हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २५४: बड़ौदा गुजरात कलां, मोहल्ला भूते का झापा, निज़ाम पुरा से, प्रेषक: उमराव बाई पुत्री गुलाम हुसैन, १६ रजब १३१\ हिजरी। शरीयत के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को एक पुरुष और एक महिला के साथ किसी ज़रूरी काम के लिए कहीं भेजा। वापस आने के बाद उसने उसका भरण-पोषण (नान-ओ-नफ़क़ा) बंद कर दिया। कचहरी कवाड़ी में मुक़दमा चल रहा है। कचहरी पूछती है कि वह भरण-पोषण क्यों नहीं देता, तो पति कहता है कि वह

मेरी आज्ञा के बिना गई थी। पत्नी ने मौखिक गवाह पेश किए कि पति ने ही उसे जाने का हुक्म दिया था। पत्नी कहती है कि मेरे पति ने मुझ पर तोहमत लगाई और मेरी आबरू ली। जो व्यक्ति अपनी पत्नी की आबरू ले, शरीयत में उसकी क्या सज़ा है? फ़रेबी, दगाबाज़ और जालसाज़ के लिए क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं और पुण्य कमाएं।

अल-जवाब (उत्तर): तोहमत लगाना, नाजायज़ तौर पर आबरू लेना, जालसाजी, दगा और फ़रेब—ये सब बातें गुनाह हैं, चाहे अपनी पत्नी के साथ ही क्यों न हों...

पृष्ठ 615 / 688

صاف صاف اس اپنی ناپاک گفتگو سے باز نہ آئے اس وقت تک مسلمان اس سے ملنا جلنا، اس کے پاس اٹھنا بیٹھنا، اس کی شادی بیاہت میں شریک ہونا، اپنی شادی بیاہت میں اسے شریک کرنا یک قلم چھوڑ دیں کہ وہ اس تہمت کے اٹھانے سے ظالم ہے، اور ظالم کے پاس بیٹھنے کو قرآن مجید میں منع فرمایا، اور ایسی تہمت کا ثبوت کسی گواہی سے ہرگز نہیں ہو سکتا جب تک چار مرد نمازی پرہیزگار ثقہ متقی جو نہ کوئی گناہ کبیرہ کرتے ہوں نہ کسی گناہ صغیرہ پر اصرار رکھتے ہوں نہ کوئی بات خلاف مروّت چھچھورے پن (جیسے سربازار کھانا کھانا یا شارع عام پر سب کے سامنے پیشاب کرنا) کی کرتے ہوں ایسے اعلیٰ درجہ کے متقی مہذب بالاتفاق ایک وقت ایک مکان میں اپنی آنکھ سے دیکھنا بیان کریں کہ ہم نے اس کا بدن اس کے بدن کے اندر خاص اس طرح دیکھا جیسے سرمہ دانی میں سلائی، اگر ان امور سے ایک بات بھی کم ہو گی مثلاً گواہ چار سے کم ہوں یا چوتھا شخص اس اعلیٰ درجہ کا نہ ہو یا ہوں تو سب اعلیٰ درجہ کے اور چار پانچ نہیں بلکہ دس بیس مگر ان میں مرد تین ہی ہوں باقی عورتیں یا کچھ گواہ آج کا واقعہ بیان کریں کچھ کل کا، یا کچھ کہیں ہم نے اس مکان میں دیکھا کچھ دوسرے میں، یا یہ سب باتیں جمع ہوں اور تین گواہ صاف صاف یہ بھی گواہی دے چکے ہوں کہ ہم نے اس کا ذکر اس کی فرج داخل میں اسی طرح دیکھا جیسے سرمہ دانی میں سلائی، مگر چوتھا اتنا کہے میں نے اس کا برہنہ ذکر اس کی برہنہ فرج کے منہ پر رکھا دیکھا مثلاً نصف حشفہ تک اندر کیا ہوا دیکھا، تو ان سب صورتوں میں یہ گواہیاں مردود اور وہ تہمت باطل اگرچہ اس قسم کی سو دو سو گواہیاں گزریں اصلاً ثبوت نہ ہوگا بلکہ تہمت کرنیوالے زنا کی گواہی دینے والے خود ہی سزا پائیں گے یہ سب احکام قرآن مجید و حدیث شریف و کتب فقہ میں صاف مذکور واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۴: از بڑودہ گجرات کلاں محلہ بھوتے کا جھاپہ نظام پورہ مرسلہ امراؤ بائی بنت غلام حسین حالہ ۱۶ رجب ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے شریعت اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی عورت کو ایک آدمی اور ایک عورت کے ہمراہ کسی کام ضروری کے لئے کہیں بھیجا، بعد واپس آنے کے نان و نفقہ موقوف کر دیا کچہری کواڑی میں مقدمہ ہے کچہری کہتی ہے کہ نان و نفقہ کیوں نہیں دیتا، خاوند کہتا ہے بغیر حکم میرے کیوں گئی، عورت نے گواہ شاہد قولی پیش کئے کہ اس نے عورت کو جانے کے لئے حکم دیا عورت کہتی ہے کہ مجھے میرے خاوند نے بہتان لگایا میری آبرو لی، جو شخص اپنی عورت کی آبرو لے شریعت میں اس کی کیا سزا ہے؟ فریبی دغا باز و جعل ساز کے لئے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا الجواب: بہتان اٹھانا، ناجائز طور پر آبرو لینا، جعل دغا فریب یہ سب باتیں گناہ ہیں خواہ اپنی عورت کے ساتھ

Fatawa Razawiyya, Volume 13

...whether with anyone, and for these sins, Sharia has not prescribed any fixed penalty (Hadd), so for them, there is the punishment of Ta'zir (discretionary punishment), which is at the discretion of the Sharia authority to give an appropriate punishment. However, if they beat, they should not exceed thirty-nine lashes, and according to Imam Abu Yusuf, seventy-five, and the fatwa is based on this. It is stated in Ashbah:

The principle of Ta'zir is that every sin for which there is no prescribed fixed penalty (Hadd), Ta'zir applies to it.	**ضابطة التعزير كل معصية ليس فيها حد مقدر ففيه التعزير -**

(T)

It is also mentioned in it:

Whoever harms another by word or deed is to be punished with Ta'zir, as it is in Tatar Khaniya. (T)	**من اذى غيره بقول او فعل يعزر كذا فى التاتارخانية -**

It is in Durr al-Mukhtar:

There is no fixed estimation in Ta'zir, rather it is delegated to the opinion of the Judge. (T)	**التعزير ليس فيه تقدير بل هو مفوض الى رأى القاضى۔**

It is also in it:

The maximum for Ta'zir is thirty-nine lashes; this is the punishment of beating. (T)	**اكثره تسعة وثلثون سوطاً بالضرب -**

Then this ruling is for slanders other than the slander of adultery. And if a man clearly accuses his wife of adultery, whether he intended the slander or as is common among the reckless public to utter some words of abuse in anger, and in their meaning explicitly [accuse of] adultery... (Incomplete answer was found).

Problem 255 to 264: From Nepalganj Bazaar, Post Office Rupi Deeba, District Bahraich, asked by Molvi Habibullah Mahbub Ali Shah, Monday 21 Muharram al-Haram 1337 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say in this matter that: (1) A 'Muhsan' (chaste/married) man and a 'Muhsana' woman became notorious for adultery and both confessed to adultery in public, although at the site...

1. Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Kitab al-Hudud wa al-Ta'zir, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/285
2. Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Kitab al-Hudud wa al-Ta'zir, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/284
3. Durr al-Mukhtar, Bab al-Ta'zir, Matba' Mujtabai Delhi, 1/326
4. Durr al-Mukhtar, Bab al-Ta'zir, Matba' Mujtabai Delhi, 1/326

फ़तावा रज़विया, जिल्द 13

...चाहे किसी के साथ हो, और इन गुनाहों के लिए शरीयत ने कोई हद मुक़र्रर नहीं फ़रमाई तो उनमें सज़ा-ए-ताज़ीर है जिसका इख्तियार हाकिम-ए-शरअ को है, जो मुनासिब सज़ा दे, मगर मारे तो उनतालीस कोड़ों से ज़्यादा न मारे, और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक पचहत्तर, और इसी पर फ़तवा है। 'अश्बाह' में है:

ताज़ीर का क़ायदा यह है कि जिस गुनाह के लिए कोई हद मुक़र्रर न हो उस पर ताज़ीर है। (त)

ضابطة التعزير كل معصية ليس فيها حد مقدر ففيه التعزير -

इसी में है:

जिसने किसी दूसरे को अपने अमल या क़ौल से अज़ियत (तकलीफ़) दी तो उस पर ताज़ीर है, जैसा कि तातारी ख़ानिया में है। (त)

من اذى غيره بقول او فعل يعزر كذا فى التاتارخانية -

'दुर्रे मुख़्तार' में है:

ताज़ीर में सज़ा मुक़र्रर नहीं है बल्कि वह क़ाज़ी की राय पर मौक़ूफ़ है। (त)

التعزير ليس فيه تقدير بل هو مفوض الى رأى القاضى۔

इसी में है:

ताज़ीर ज़्यादा से ज़्यादा उनतालीस कोड़े हैं, यह सज़ा मारने की है। (त)

اكثره تسعة وثلثون سوطاً بالضرب -

फिर यह हुक्म बोहतान-ए-ज़िना (व्यभिचार का इल्ज़ाम) के सिवा और बोहतानों में है और अगर मर्द अपनी औरत को साफ़ ज़िना की तोहमत लगाए चाहे ब-क़स्द तोहमत लगाना ही मंज़ूर हो या जिस तरह बेबाक अवाम में कुछ लफ़्ज़ दश्नाम (गाली) के रायज हैं कि ग़ुस्से में ज़बान से निकालते हैं और उनके मानी में सराहतन ज़िना का..... (जवाब नाक़िस मिला)

मसला 255 ता 264: अज़ नेपाल गंज बाज़ार डाकखाना रुपी डीह ज़िला बहराइच मसूला मौलवी हबीब उल्लाह महबूब अली शाह दोशंबा 21 मुहर्रमुल हराम 1337 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-

ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि: (1) एक मोहसन मर्द और मोहसना औरत ब-इल्लत-ए-ज़िना मुश्तहर होकर दोनों ने मजला-ए-आम इक़रार-ए-ज़िना किया गो मौक़ा के..

---

1. अल-अश्बाह वल-नज़ाइर किताबुल हुदूद वत-ताज़ीर इदारतुल क़ुरान कराची 1/285
2. अल-अश्बाह वल-नज़ाइर किताबुल हुदूद वत-ताज़ीर इदारतुल क़ुरान कराची 1/284
3. दुर्रे मुख़्तार बाबुत ताज़ीर मतबअ मुज्तबाई दिल्ली 1/326
4. दुर्रे मुख़्तार बाबुत ताज़ीर मतबअ मुज्तबाई दिल्ली 1/326

पृष्ठ 616/688

ہوں خواہ کسی کے ساتھ، اور ان گناہوں کے لئے شرع نے کوئی حد مقرر نہ فرمائی تو ان میں سزائے تعزیر ہے جس کا اختیار حاکم شرع کو ہے، جو سزا مناسب دے، مگر مارے تو انتالیس کوڑوں سے زیادہ نہ مارے، اور امام ابویوسف کے نزدیک چھتر ، اور اسی پر فتوٰی ہے۔ اشباہ میں ہے:

ضابطہ تعزیر یہ ہے کہ جس گناہ کے لئے کوئی حد مقرر نہ ہو اس پر تعزیر ہے۔ (ت) **ضابطة التعزير كل معصية ليس فيها حد مقدر ففيه التعزير۔**

اسی میں ہے:

جس نے کسی دوسرے کو اپنے عمل یا قول سے اذیت دی تو اس پر تعزیر ہے، جیسا کہ تاتارخانیہ میں ہے (ت) **من اذی غیرہ بقول او فعل یعزر کذا فی التاتارخانیة -**

در مختار میں ہے:

تعزیر میں سزا مقرر نہیں ہے بلکہ وہ قاضی کی رائے پر موقوف ہے۔ (ت) **التعزير ليس فيه تقدير بل هو مفوض الى رأى القاضى۔**

اسی میں ہے:

تعزیر زیادہ سے زیادہ انتالیس کوڑے ہیں، یہ سزا مارنے کی ہے۔ (ت) **اكثره تسعة وثلثون سوطاً بالضرب -**

پھر یہ حکم بہتان زنا کے سوا اور بہتانوں میں ہے اور اگر مرد اپنی عورت کو صاف زنا کی تہمت لگائے خواہ بالقصد تہمت لگانا ہی منظور ہو یا جس طرح بیباک عوام میں کچھ لفظ دشنام کے رائج ہیں کہ غصہ میں زبان سے نکالتے ہیں اور ان کے معنی میں صراحتہ زنا کا------ (جواب ناقص ملا)

مسئلہ ۲۵۵ تا ۲۶۴ : از نیپال گنج بازار ڈاک خانہ روپی ڈیہہ ضلع بہرائچ مسئولہ مولوی حبیب اللہ محبوب علی شاہ دوشنبہ ۲۱ محرم الحرام ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ: (۱) ایک محصن مرد اور محصنہ عورت بعلتِ زنا مشتہر ہو کر دونوں نے بجلۂ عام اقرار زنا کیا گو موقعہ کے

---

1. الاشباہ والنظائر کتاب الحدود والتعزیر ادارۃ القرآن کراچی ۱ / ۲۸۵
2. الاشباہ والنظائر کتاب الحدود والتعزیر ادارۃ القرآن کراچی ۱ / ۲۸۴
3. درمختار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۳۲۶
4. درمختار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۳۲۶

Fatawa Razawiya, Volume 13

...eyewitnesses were not found, but investigations yielded proof of signs of adultery and the adulteress's messages, greetings, and promises. (2) Now, are these marriage contracts annulled or do they remain in effect? (3) And is it mandatory for the husband of the adulteress to divorce her or not? (4) If the word 'divorce' was not spoken, but a divorce deed was written and given—a copy of which is attached to this inquiry—and there has been no face-to-face meeting since the day this document was written, but one day before the Friday prayer, the husband of the adulteress admitted to an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). Therefore, did this irrevocable divorce take place or not? (5) If the divorced woman herself asked for the divorce and has also broken the waiting period (iddah), in this case, should the husband of the adulteress pay the dowry (mahr) and the expenses of the waiting period or not? (6) And although it is impossible to give the Sharia punishment to such an adulterer and adulteress here at this time, is it necessary for the local ruler of the time to seek punishment for adultery according to government law or not? (7) Has the marriage contract of the married adulterer also been annulled or not? (8) A large group has stopped socializing and sharing water/hookah with the married adulterer, but a few individuals—among whom only two are educated in Deobandi Wahhabi beliefs, and one is an educated member of the Ahl-e-Sunnat wal Jama'at who only shares the same outlook as the aforementioned Wahhabis, while the remaining are uneducated—have allowed the adulterer and adulteress to repent and have resumed socializing, sharing food and drink with them. Because of this, the larger group has also stopped socializing with all of them. Is this social boycott permissible or not? And these few individuals seem to be the instigators of this adultery. (9) The husband of the adulteress is the prayer leader (Pesh-Imam) of the central mosque and a teacher at the Islamic school; therefore, for the sake of clarification, what should be the punishment for this adulterer and adulteress according to current customs and traditions? (10) And are the aforementioned associates of the adulterer and adulteress also liable for any kind of punishment? Explain and you shall be rewarded, along with the scriptural evidence.

Copy of Divorce Deed: Married to Jawad son of Hussain Ali, native of Lucknow residing in Nepalgunj. Since Musammat Munira Ano Muslim had been in my marriage contract for nine years, now that the misconduct of the said Musammat has been proven and she herself has verbally admitted to an illicit relationship, I am divorcing her at her request and with her consent. I have written these few words as

a divorce deed so that it remains a record and can be used when needed. Servant Muhammad Jawad, by his own pen. Witnessed by Noor Muhammad, by his own pen. Dated 26 Dhu al-Hijjah 1336 AH, corresponding to August 7, 1917 AD. This document was written in the presence of Faqir Bakhsh, Badlu, Manne Lillahi, and others.

फ़तावा रज़विया, जिल्द तेरह (13)

...चश्मदीद गवाह नहीं मिले, लेकिन जांच से व्यभिचार के संकेतों और व्यभिचारिणी के संदेशों, सलाम और वादों के सबूत मिले। (२) अब ये निकाह अनुबंध (अक़्द) रद्द हो गए या कायम रहे? (३) और व्यभिचारिणी के पति के लिए उसे तलाक देना अनिवार्य है या नहीं? (४) यदि 'तलाक' शब्द नहीं कहा गया, लेकिन तलाकनामा लिखकर दे दिया गया, जिसकी प्रति इस इस्तेफ़्ता (पूछताछ) के साथ संलग्न है, और जिस दिन से यह दस्तावेज़ लिखा गया है, उस दिन से आमना-सामना नहीं हुआ है—जुमे की नमाज़ से एक दिन पहले व्यभिचारिणी के पति ने तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) स्वीकार किया था। तो क्या यह तलाक-ए-बाइन हुआ या नहीं? (५) यदि तलाकशुदा महिला ने स्वयं तलाक मांगा था और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) भी तोड़ दी है, तो इस स्थिति में क्या व्यभिचारिणी के पति को मेहर और इद्दत का खर्च देना चाहिए या नहीं? (६) और हालांकि ऐसे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को यहाँ इस समय शरीयत के अनुसार सज़ा देना असंभव है, तो क्या वर्तमान स्थानीय शासक से सरकारी कानून के अनुसार व्यभिचार की सज़ा दिलाने के लिए प्रयास करना आवश्यक है या नहीं? (७) क्या विवाहित व्यभिचारी पुरुष का निकाह भी रद्द हो गया या नहीं? (८) एक बड़े समूह ने विवाहित व्यभिचारी के साथ मेल-जोल और हुक्का-पानी बंद कर दिया है, लेकिन कुछ व्यक्तियों ने—जिनमें से केवल दो व्यक्ति देवबंदी वहाबी अक़ीदों के शिक्षित हैं, और एक व्यक्ति अहले सुन्नत व जमात का शिक्षित है जो केवल उपर्युक्त वहाबियों का हम-मशरब (समान विचारधारा वाला) है, शेष व्यक्ति अशिक्षित हैं—उन्होंने व्यभिचारी और व्यभिचारिणी से तौबा कराके उनके साथ मेल-जोल और खान-पान शुरू कर दिया है। इसी कारण बड़े समूह ने उन सभी का भी मेल-जोल और हुक्का-पानी बंद कर दिया है। क्या यह सामाजिक बहिष्कार जायज़ है या नहीं? और यही कुछ व्यक्ति इस व्यभिचार के प्रेरक प्रतीत होते हैं। (९) व्यभिचारिणी का पति जामा मस्जिद का पेश-इमाम और मदरसा इस्लामिया का शिक्षक है; इसलिए स्पष्टीकरण के लिए इस व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को वर्तमान रीति-रिवाजों के अनुसार क्या सज़ा मिलनी चाहिए? (१०) और क्या व्यभिचारी और व्यभिचारिणी के उपर्युक्त साथी भी किसी प्रकार की सज़ा के पात्र हैं या नहीं? पुस्तक (प्रमाणों) के साथ स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

तलाकनामे की नकल: मनकूहा (विवाहित) जवाद वल्द हुसैन अली, मूल निवासी लखनऊ, निवासी नेपालगंज। चूँकि मुसम्मात मुनीरा अनू मुस्लिम नौ साल से मेरे निकाह में थी, अब उक्त मुसम्मात की बदचलनी साबित होने और स्वयं ज़बानी तौर पर अवैध संबंध स्वीकार करने के कारण, मैं उसकी

मांग और इच्छा पर उसे तलाक देता हूँ। मैंने तलाकनामे के तौर पर ये कुछ शब्द लिख दिए हैं ताकि यह एक रिकॉर्ड (सनद) रहे और ज़रूरत पड़ने पर काम आए। सेवक मुहम्मद जवाद, अपनी कलम से। गवाह नूर मुहम्मद, अपनी कलम से। दिनांक २६ ज़िलहिज्ज १३३६ हिजरी, तदनुसार ७ अगस्त १९१७ ईस्वी। यह दस्तावेज़ फकीर बख्श, बदलू, मन्ने लिल्लाह और अन्य लोगों की मौजूदगी में लिखा गया।

पेज 617 / 688

عینی شاہد نہیں ملے مگر تحقیقات سے رموز زنا اور زانیہ کے پیام و سلام قول و قرار کے ثبوت بھی ملے۔ (۲) اب یہ عقود فسخ ہوئے یا قائم رہے؟ (۳) اور عورت زانیہ کے شوہر کو اسے طلاق دینا لازم ہے یا نہیں؟ (۴) اگر لفظ طلاق نہیں کہا اور طلاقنامہ لکھ کر دے دیا جس کی نقل منسلک استفتاء ہذا ہے جس روز سے یہ تحریر دی ہے اس روز سے مواجہہ نہیں ہوا ایک روز قبل نماز جمعہ میں زانیہ کے شوہر نے طلاق بائنہ کا اقرار کیا لہذا یہ طلاق بائنہ ہوئی یا نہیں؟ (۵) اگر عورت مطلقہ نے خود طلاق مانگی تھی اور عدت بھی توڑ دی ہے اس صورت میں اب زانیہ کے شوہر کو مہر و مصارف عدت ادا کرنا چاہئے یا نہیں؟ (۶) اور ایسے زانی و زانیہ کی اگر چہ شرعی سزا دینا یہاں پر اس وقت غیر ممکن ہے تو حاکم وقت مقامی سے حسب قانون حکومت سزائے زنا دلانے کا عذردار ہونا لازم ہے یا نہیں؟ (۷) مرد محسن زانی کا بھی عقد فسخ ہوا یا نہیں؟ (۸) ایک گروہ کثیر نے مرد محسن زانی کے ساتھ میل جول و حقہ پانی ترک کر دیا ہے لیکن چند اشخاص نے جن میں سے صرف دو شخص خواندہ عقائد وہابیہ دیوبندیہ اور ایک شخص خواندہ اہلسنت و جماعت جو کہ اشخاص عقائد وہابیہ مذکورہ کا صرف ہم مشرب ہے بقیہ اشخاص ناخواندہ ہیں انہوں نے زانی و زانیہ کو توبہ کراکے میل جول حقہ پانی دے کر ہم پیالہ وہم نوالہ ہو گئے ہیں بدیں باعث بڑے گروہ نے ان سب کا بھی میل جول حقہ پانی ترک کر دیا ہے یہ ترک کرنا جائز ہے یا نہیں، اور یہی چند اشخاص اس زنا کے محرک معلوم ہوتے ہیں۔ (۹) شوہر زانیہ کا پیش امام جامع مسجد و مدرس مدرسہ اسلامیہ ہے اس واسطے تبییضاً ان زانی اور زانیہ کی موافق رسم و رواج حال کی کیا سزا ہونی چاہئے؟ (۱۰) اور زانی و زانیہ کے شریک داران مذکورہ بھی کسی قسم کی سزا کے مستوجب ہیں یا نہیں؟ بینوا توجروا مع الکتاب۔

نقل طلاق نامہ: منکوحہ جواد ولد حسین علی متوطن لکھنؤ ساکن نیپال گنج ، جو کہ مسماۃ منیرہ انو مسلم میرے عقد و نکاح میں نو سال سے تھی اب مسماۃ مذکورہ کی بدچلنی ثابت ہونے سے اور زبانی خود سے تعلق بے جا کے اقرار سے میں طلاق اس کے طلب برضا و رغبت طلاق دیتا ہوں اور یہ چند کلمہ بطریق طلاق نامہ کے لکھ دئے کہ سند رہے اور وقت پر کام آئے۔ العبد محمد جواد بقلم خود۔ گواہ شد نور محمد بقلم خود۔ مورخہ ۲۶ ذی الحجہ ۱۳۳۶ھ مطابق ۷ اگست ۱۹۱۷ء بمواجہہ فقیر بخش و بدلو و منے للہ و غیر ہم کے یہ تحریر لکھی گئی۔

The Answer:

(1 & 2) Adultery cannot be proven by such street talk/rumors unless there is sufficient Shariah-compliant testimony or a sufficient confession by the adulterer or adulteress. Even if adultery is proven, it does not affect the marriage except for the type of adultery that establishes "prohibition through marriage" (hurmat-e-musaharat), such as with the husband's father or son. In that case, of course, the marriage becomes invalid (fasid).

(3) It is not mandatory for a husband to divorce an adulterous wife. It is stated in *Durr al-Mukhtar*:

Arabic	**Urdu**
La yajibu ‘ala al-zawj tatliq al-fajirah.	It is not mandatory for a husband to divorce a sinful woman. (T)

(4) Divorce occurs through the pen just as it occurs through the tongue, provided it is written without Shariah-compliant compulsion. It is stated in *Al-Ashbah*: "Writing is like speaking." (T: Written text is like a direct address). A divorce document establishes a revocable divorce (talaq-e-raj'i), but if the husband acknowledges it as an irrevocable divorce (talaq-e-ba'in), it becomes irrevocable.

(5) The dower (mahr) must be paid in any case, and it is mandatory for the woman to complete her waiting period (iddah) in the same house.

Arabic	**Urdu**
Allah Almighty said: *La tukhrijuhunna min buyutihinna wa la yakhrujna illa an ya‘tina bi fahishatin mubayyinatin*	Allah Almighty said: Do not turn your wives out of their houses, nor should they leave themselves, unless they commit an open indecency. (T)

In this situation, until the end of the iddah, the husband is obligated to provide her maintenance (nafqah).

(6) Certainly not, the punishment is only what is according to Shariah, and seeking anything against it is unlawful.

Arabic	Urdu
Allah Almighty said: *Wa man lam yahkum bima anzala Allahu fa ula'ika humu al-zalimun*	Allah Almighty said: And whoever does not judge by what Allah has revealed, then it is those who are the wrongdoers. (T)
And Allah Almighty said: *Wa qad umiru an yakfuru bihi*	Allah Almighty said: They have been commanded to reject it (evil). (T)

(7) Adultery has no effect on marriage, except that prohibition through marriage (hurmat-e-musaharat) is established, such as with...

---

1. *Durr al-Mukhtar*, Kitab al-Nikah, 1/190 and Kitab al-Hazr wa al-Ibaha, 2/254, Mujtabai, Delhi.
2. *Al-Ashbah wa al-Nazair*, Al-Fann al-Thalith, Ahkam al-Kitabah, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/596 & 597.
3. *The Holy Quran*, 65/1.
4. *The Holy Quran*, 5/45.
5. *The Holy Quran*, 4/60.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | १३

अल-जवाब (उत्तर):

(१ और २) ऐसी बाज़ारी बातों से ज़िना (व्यभिचार) का सबूत नहीं हो सकता जब तक कि पर्याप्त शरई गवाही या ज़ानी (व्यभिचारी) या ज़ानिया (व्यभिचारिणी) का पर्याप्त इक़रार न हो। और अगर ज़िना साबित भी हुआ तो इससे निकाह में कोई फ़र्क नहीं आता, मगर ऐसा ज़िना जिससे मुसाहरत (विवाह जन्य संबंध) साबित हो, जैसे पति के बाप या बेटे से, तो इस सूरत में अलबत्ता निकाह फ़ासिद (अवैध) हो जाता है।

(३) व्यभिचारिणी को तलाक़ देना पति पर अनिवार्य नहीं है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
ला यजीबु अलल ज़ौजी ततलीकुल फ़ाजिराह।	पापी स्त्री को तलाक़ देना पति पर वाजिब नहीं है। (त)

(४) तलाक़ जिस तरह ज़ुबान से होती है उसी तरह क़लम से भी होती है, बशर्ते कि बिना किसी शरई मजबूरी के लिखा गया हो। 'अशबाह' में है: "अल-किताबी कल-खिताब" (त: लिखा हुआ भी संबोधन की तरह होता है)। तलाक़नामे से तलाक़-ए-रजई साबित होती है, लेकिन अगर शौहर (पति) ने तलाक़-ए-बाइन का इक़रार किया तो वह बाइन हो गई।

(५) मेहर हर हाल में देना होगा और औरत पर फ़र्ज़ है कि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) उसी मकान में पूरी करे।

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'ला तुख्रिजुहुन्ना मिन बुयूतिहिन्ना व ला यख्रुजना इल्ला अंय यतीना बि-फ़ाहिशतिम्म मुबय्यिनह'	अल्लाह तआला ने फ़रमाया: तुम अपनी पत्नियों को उनके घरों से मत निकालो और न वे खुद निकलें, सिवाय इसके कि वे खुले तौर पर अश्लीलता करें। (त)

इस स्थिति में इद्दत ख़त्म होने तक पति पर अनिवार्य होगा कि वह उसे नफ़क़ा (भरण-पोषण) दे।

(६) हरगिज़ नहीं, सज़ा वही है जो शरीयत के अनुसार है और इसके विरुद्ध माँग करना नाजायज़ है।

अरबी	उर्दू अनुवाद
अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'व मन लम यहकुम बिमा अंज़लल्लाहु फ़-उलाइका हुमुज़-ज़ालिमून'	अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और जो अल्लाह के उतारे हुए पर फ़ैसला न करें, तो वही लोग अत्याचारी हैं। (त)
अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'व क़द उमीरू अंय यकफ़ुरू बिह'	अल्लाह तआला ने फ़रमाया: उन्हें हुक्म दिया गया है कि वे उसका (तागूत का) इनकार करें। (त)

(७) ज़िना से निकाह पर कोई असर नहीं पड़ता, मगर यह कि उससे मुसाहरत साबित हो जैसा कि...

---

1. दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह १/१९० व किताबुल हज़्र वल इबाह २/२५४, मुजतबाई, दिल्ली।
2. अल-अशबाह वन-नज़ायर, अल-फ़न्नुस-सालिस, अहकामुल किताबह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, २/५९६ और ५९७।
3. अल-क़ुरआन अल-करीम ६५/१।
4. अल-क़ुरआन अल-करीम ५/४५।
5. अल-क़ुरआन अल-करीम ४/६०।

فتاویٰ رضویہ جلد سیزد ہم ۱۳

الجواب:

(۱ و ۲) ایسی بازاری باتوں سے زنا کا ثبوت نہیں ہوسکتا جب تک کافی شہادت شرعیہ یا کافی اقرار زانی یا زانیہ نہ ہو، اور اگر زنا ثابت بھی ہوا تو اس سے نکاح میں کچھ فرق نہیں آتا مگر ایسا زنا جس سے مصاہرت ثابت ہو جیسے شوہر کے باپ یا بیٹے سے کہ اس صورت میں البتہ نکاح فاسد ہو جاتا ہے۔

(۳) زانیہ کو طلاق دینا شوہر پر لازم نہیں۔ در مختار میں ہے:

لا یجب علی الزوج تطلیق الفاجرۃ فاجرہ عورت کو طلاق دینا خاوند پر واجب نہیں ہے (ت)

(۴) طلاق جس طرح زبان سے ہوتی ہے اسی طرح قلم سے، جبکہ بلا مجبوری شرعی لکھا ہو، اشباہ میں ہے الکتاب کالخطاب (تحریر بھی خطاب کی طرح ہوتی ہے۔ت) طلاقنامہ سے طلاق رجعی ثابت ہوتی ہے، لیکن شوہر نے اگر طلاق بائن کا اقرار کیا تو بائن ہوگئی۔

(۵) مہر بہر حال دینا ہوگا اور عورت پر فرض ہے کہ عدت اسی مکان میں پوری کرے۔

قال اللہ تعالیٰ لَا تُخْرِجُوْھُنَّ مِنْۢ بُیُوْتِھِنَّ وَ لَا یَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ یَّاْتِیْنَ بِفَاحِشَۃٍ مُّبَیِّنَۃٍ

اللہ تعالیٰ نے فرمایا: تم بیویوں کو گھروں سے نہ نکالو اور نہ وہ خود نکلیں الا یہ کہ وہ کھلے بندوں فحش کاری کریں۔ (ت)

اس حالت میں تا ختم عدت شوہر پر لازم ہوگا کہ اسے نفقہ دے۔

(۶) ہرگز نہیں، سزا وہی ہے جو مطابق شرع ہے اور اس کے خلاف کی خواستگاری ناجائز۔

قال اللہ تعالیٰ وَ مَنْ لَّمْ یَحْکُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰہُ فَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الظّٰلِمُوْنَ	**اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اور جو اللہ تعالیٰ کے نازل کئے ہوئے پر حکم نہ کریں تو وہ لوگ ظالم ہیں۔ (ت)**
وقال اللہ تعالیٰ وَ قَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ یَّکْفُرُوْا بِہٖ	اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ان کو حکم دیا گیا کہ اس سے انکار کریں۔ (ت)

(۷) زنا کے نکاح پر زنا سے کوئی اثر نہیں پڑسکتا مگر یہ کہ اس سے مصاہرت ثابت ہو جیسے اپنی

---

1 در مختار کتاب النکاح ۱/۱۹۰ و کتاب الحظر والاباحت ۲/۲۵۴ مجتبائی دہلی 2 الاشباہ والنظائر الفن الثالث احکام الکتابۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۵۹۶ و ۵۹۷ 3 القرآن الکریم ۶۵/۱ 4 القرآن الکریم ۵/۴۵ 5 القرآن الکریم ۴/۶۰

Fatawa Razawiya

Volume 13 / 14

...with the wife's mother or daughter. (8) If these people associated with the male and female adulterers after their repentance, then there is no blame on them for it, and boycotting them (literally "stopping their hukkah and water") on this basis is impermissible. And if they associated with them without repentance, then they acted wrongly; in this state, there is no harm in boycotting them as a warning. For repentance, a face-to-face meeting with authorities is not necessary; yes, from the perspective of human rights (Haq-ul-Ibaad), their forgiveness is needed, but to consider any repentance done without it as unreasonable is mere falsehood. Those with Deobandi beliefs are themselves apostates, and associating with them is absolutely forbidden (haram). Basing this incident on that, and had it not been the case, then associating with them is ignorance and misguidance. Similarly, anyone who associates with Deobandis, even if they call themselves Sunni, is a severe sinner (fasiq), and it is mandatory for Muslims to break off ties with them. Allah Almighty said: "And do not lean towards those who do wrong, lest the Fire should touch you." [Quran 11:113] (T) (9) No punishment can be enforced here except for the severance of ties, and no blame lies upon the husband for his wife's adultery as long as he is not pleased with it. Allah Almighty said: "And no bearer of burdens shall bear the burden of another." [Quran 6:164] (T) (10) If they were active in the adultery or supported them after the adultery without repentance, then they also deserve punishment according to Sharia, otherwise not. And Allah Almighty knows best. Problem 265: 28 Safar 1311 AH What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say regarding this: for example, Zaid, who has a friendship with Khalid, committed the act of adultery with Khalid's wife. Khalid, despite this matter being most detestable and undesirable to him, did not seek to disgrace anyone except Zaid, and because he was his friend, he did not take him to the Judge (Qazi) for accountability and implementation of the Sharia punishment (hadd), but rather overlooked it. [Urdu Translation/Explanation]: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say on this issue that Zaid was a friend of Khalid and committed adultery with his wife? Despite this worst act, Khalid, showing tolerance towards Zaid, did not pursue his humiliation and disgrace, and because of friendship,

he did not present him before the Qazi for accountability and Sharia punishment, but rather overlooked it...

1. Al-Quran Al-Karim 11/113
2. Al-Quran Al-Karim 7/164 and 18/35 Page 619 of 688

फ़तावा रजविया

जिल्द १३ / १४

...पत्नी की माँ या बेटी से। (८) यदि इन लोगों ने व्यभिचारी और व्यभिचारिणी के पश्चाताप के बाद उनसे मेल-जोल किया है, तो उन पर कोई दोष नहीं है और इस आधार पर उनका हुक्का-पानी बंद करना नाजायज है। और यदि बिना पश्चाताप (तौबा) के मेल-जोल किया तो गलत किया; ऐसी स्थिति में चेतावनी के तौर पर उनका हुक्का-पानी बंद करने में कोई हर्ज नहीं है। तौबा के लिए अधिकारियों का आमना-सामना आवश्यक नहीं है; हाँ, मानवाधिकारों (हक-उल-इबाद) की दृष्टि से उनकी माफ़ी आवश्यक है, लेकिन इसके बिना की गई तौबा को अनुचित समझना सरासर झूठ है। देवबंदी अक़ीदे (विश्वास) वाले स्वयं धर्मत्यागी (मुरतद) हैं और उनसे मेल-जोल पूर्णतः हराम है। इस घटना को उस पर आधारित करना, और यदि यह न होता, तो उनसे मेल-जोल रखना अज्ञानता और पथभ्रष्टता है। इसी तरह, जो देवबंदियों से मेल-जोल रखता है, भले ही वह खुद को सुन्नी कहता हो, वह घोर पापी (फ़ासिक) है और मुसलमानों के लिए उससे संबंध विच्छेद करना अनिवार्य है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और उन लोगों की ओर मत झुको जिन्होंने ज़ुल्म किया, वरना तुम्हें आग छू लेगी।" [कुरान ११:११३] (त) (९) यहाँ संबंध विच्छेद के अलावा कोई सज़ा लागू नहीं की जा सकती, और पत्नी के व्यभिचार के लिए पति पर कोई दोष नहीं है जब तक कि वह उस पर राजी न हो। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ (गुनाह) नहीं उठाएगा।" [कुरान ७:१६४] (त) (१०) यदि वे व्यभिचार में शामिल थे या व्यभिचार के बाद बिना पश्चाताप के उनके समर्थक बने, तो वे भी शरीयत की सज़ा के हकदार हैं, अन्यथा नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसाला २६५: २८ सफर १३११ हिजरी धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस बारे में क्या कहते हैं कि: उदाहरण के लिए, ज़ैद, जिसकी खालिद के साथ दोस्ती है, ने उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार किया। खालिद ने इस कृत्य के बावजूद, जो उसके लिए सबसे घृणित और नापसंद था, ज़ैद के अलावा किसी की बदनामी नहीं की और चूंकि वह उसका दोस्त था, इसलिए उसे जवाबदेही और शरीयत की सज़ा (हद) लागू करने के लिए काज़ी के पास नहीं ले गया, बल्कि अनदेखा (चश्मपोशी) किया। [उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद खालिद का दोस्त था और उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार किया? इस सबसे बुरे काम के बावजूद, खालिद ने ज़ैद के प्रति उदारता दिखाते हुए उसे अपमानित और शर्मसार करने की कोशिश नहीं की, और

दोस्ती के कारण उसे जवाबदेही और शरीयत की हद के लिए काज़ी के सामने पेश नहीं किया, बल्कि चश्मपोशी की...

1. अल-कुरान अल-करीम ११/११३
2. अल-कुरान अल-करीम ७/१६४ और १८/३५ पृष्ठ ६१९ / ६८८

زوجہ کی ماں یا بیٹی سے۔ (۸) اگر ان لوگوں نے زانی وزانیہ کی توبہ کے بعد ان سے میل جول کیا ہے تو ان پر اس سے کچھ الزام نہیں اور اس بنا پر ان کا حقہ پانی بند کرنا ناجائز ہے، اور اگر بغیر توبہ کئے میل جول کر لیا تو بیجا کیا اس حالت میں بطور تنبیہ انکا حقہ پانی بند کرنے میں حرج نہیں، توبہ کے لئے اولیاء کا مواجہہ ضرور نہیں، ہاں بنظر حق العباد ان کی معافی کی ضرورت ہے مگر بغیر اس کے جتنی توبہ کی ہے وہ بھی نامعقول سمجھی جائے، یہ محض باطل ہے۔ دیوبندی عقیدے والے خود مرتد ہیں اور ان سے میل جول مطلق حرام۔ اس واقعہ پر اس کو بنا کرنا اور یہ نہ ہوتا تو ان سے میل جول رکھنا جہل و ضلالت ہے، یو نہی وہ جو دیوبندیہ سے میل جول رکھتا ہو اگرچہ اپنے آپ کو سنی کہتا ہو سخت فاسق ہے اور مسلمانوں کو اس سے قطع تعلق لازم ہے۔ قال اللہ تعالٰی وَلَا تَرْکَنُوْٓا اِلَی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّکُمُ النَّارُ ۱ اللہ تعالٰی نے فرمایا: تم ظالم لوگوں کی طرف میلان نہ کرو ورنہ تمہیں آگ چھولے۔ (ت) (۹) یہاں ترک تعلق کے سوا کوئی سزا جاری نہیں ہو سکتی اور زنائے زن سے شوہر پر کچھ الزام نہیں جبکہ وہ اس پر راضی نہ ہو۔ قال اللہ تعالٰی وَلَا تَزِرُ وَازِرَۃٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۲ اللہ تعالٰی نے فرمایا: کوئی جان دوسرے کا بوجھ (گناہ) نہ اٹھائے گی (ت) (۱۰) اگر وہ زنا میں ساعی تھے یا بعد زنا بلا توبہ انکے حامی ہوئے تو بھی مستحق سزا کے شرع ہیں ورنہ نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۶۵: ۲۸ صفر ۱۳۱۱ھ چہ می فرمایند علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اندریں معنی کہ مثلاً زید کہ باخالد دوستی دارد و بازنِ او مرتکب فعل زنا شد و خالد ازیں امر کہ مکروہ ترو ناپسندیدہ ترنزد او بود رودادار تفضیح در سوائے زید نشدہ وبدیں سبب کہ دوست او بود اورانزد قاضی برائے مواخذہ واجرائے حد شرع نہ برد بلکہ چشم

پوشی کرد علماء دین و مفتیانِ شرع متین کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں کہ زید خالد کا دوست تھا اور اس کی بیوی سے زنا کیا تو خالد اس بدترین فعل کے باوجود زید سے رواداری کرتے ہوئے اس کی ذلت ورسوائی کے درپے نہ ہوا اور دوستی کی وجہ سے قاضی کے ہاں مواخذہ اور شرعی حد کے لئے اس کو پیش نہ کیا بلکہ چشم پوشی

1۔القرآن الکریم ۱۱/ ۱۱۳ 2۔القرآن الکریم ۷/ ۱۶۴ و ۱۸/ ۳۵

Fatawa Rizvia Volume 13

...with utmost reluctance and together they sufficed that now he has expelled him from his friendship and divorced his wife, or in case this woman repented and he did not expel her from his wedlock. So what is the status of this overlooking by Khalid regarding Zaid? Is it included in kindness and benevolence or not? Give a ruling, you will be rewarded. (T)

Answer: Its being a kindness towards Zaid is evident in itself, and if despite commendable Sharia protective jealousy, he adopted patience and concealment purely with the intention of covering the faults of Muslims, then it is included in "So whoever pardons and makes reconciliation - his reward is upon Allah." [1]. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. There is no doubt about it being a kindness to Zaid, and if while having Sharia-approved jealousy, he forgave while being patient with the intention of covering the fault of a Muslim, then he is included in this saying of Allah Almighty: "Whoever forgave and tried for reform, then his reward is upon the Grace of Allah Almighty." And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 266: From Sita Kalan, Pargana Nawabganj, District Bareilly, sent by Syed Zair Hussain Contractor, 22 Shaban 1337 AH. As-salamu alaykum. What do the scholars of religion say regarding this matter: a woman became suspicious in the eyes of her husband with another man before marriage. The man says that I committed the forbidden act, and the woman says no. Therefore, those persons are Muslims. The doer (male) says under oath that I committed the heinous act, and the receiver (female) says no, rather he had such an intention but because his desire was not fulfilled, for this reason, he wrongly accuses. Now in such a situation, when both the doer and receiver are on oath by the Word of God, whose word should be relied upon? According to me, both persons are engaging in trickery and both are taking oaths. In such a case, is the doer truthful or the receiver truthful or what?

Answer: Wa alaykum as-salam. Both that man and woman will be considered truthful in their own right, and for the other...

1. Al-Quran al-Karim 42/40. Page 620 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 13

...अत्यधिक अनिच्छा के साथ और साथ मिलकर उन्होंने इतना ही पर्याप्त समझा कि अब उसे अपनी दोस्ती से बाहर कर दिया और अपनी पत्नी को तलाक दे दिया, या इस स्थिति में कि इस महिला ने तौबा (पश्चाताप) कर ली और उसने उसे अपने वैवाहिक बंधन से बाहर नहीं किया। तो खालिद द्वारा ज़ैद के प्रति इस अनदेखी की क्या स्थिति है? क्या यह एहसान और शालीनता में शामिल है या नहीं? फतवा दें, आपको पुण्य मिलेगा। (त)

उत्तर: ज़ैद के प्रति एहसान होना अपने आप में स्पष्ट है, और यदि प्रशंसनीय शरीयत वाली गैरत (आत्मसम्मान/ईर्ष्या) के बावजूद, विशुद्ध रूप से मुसलमानों के दोषों को छिपाने की नीयत से धैर्य और पर्दापोशी अपनाई गई, तो यह "तो जिसने क्षमा किया और सुधार किया, उसका प्रतिफल अल्लाह पर है" [1] में शामिल है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। ज़ैद पर एहसान होने में क्या संदेह है, और यदि शरीयत के अनुसार पसंद की जाने वाली गैरत रखते हुए मुसलमान की पर्दापोशी की नीयत से धैर्य रखते हुए क्षमा किया तो अल्लाह तआला के इस इरशाद (वचन) में शामिल है "जिसने माफ किया और सुधार की कोशिश की तो उसका बदला अल्लाह तआला के करम (कृपा) पर है।" और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला २६६: सीता कलां, परगना नवाबगंज, जिला बरेली से, सैयद ज़ैर हुसैन ठेकेदार द्वारा भेजा गया, २२ शाबान १३३७ हिजरी। अस्सलाम अलैकुम, धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला अपने पति की नज़रों में शादी से पहले किसी गैर पुरुष के साथ संदिग्ध हो गई। पुरुष कहता है कि मैंने हराम काम किया और महिला कहती है कि नहीं। अतः वे व्यक्ति मुसलमान हैं। कर्ता (पुरुष) हलफ (शपथ) के साथ कहता है कि मैंने घिनौना काम किया और प्राप्तकर्ता (महिला) कहती है कि नहीं बल्कि उसका ऐसा इरादा था क्योंकि उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई इसलिए वह गलत आरोप लगाता है। अब ऐसी स्थिति में जब कर्ता और प्राप्तकर्ता दोनों अल्लाह के कलाम (कुरान) की शपथ पर हैं, तो किस पर विश्वास किया जाए? मेरे अनुसार दोनों व्यक्ति छल कर रहे हैं और दोनों शपथ ले रहे हैं। ऐसी स्थिति में कर्ता सच्चा है या प्राप्तकर्ता सच्चा है या क्या?

उत्तर: व अलैकुम अस्सलाम, वह पुरुष और महिला दोनों अपने-अपने हक में सच्चे माने जाएंगे और दूसरे के..

1. अल-कुरान अल-करीम 42/40. पेज 620/688

بکراہت تمام، و بہمھیں اکتفا کرد کہ الآن اور از دوستی خود خارج کرد و زن خود را طلاق داد یا در صورتیکہ ایں زن توبہ کرد اور از زوجیت خود خارج نکرد پس این چشم پوشی خالد کہ نسبت زید واقع شد چہ گونہ است آیا داخل احسان ومروت است یا نے؟ بینوا توجروا۔ (ت)

الجواب: بہ نسبت زید احسان بودنش خود پیداست و اگر باوصف غیرت محمودہ شرعیہ محض بہ نیت پردہ پوشی مسلمانان صبر و ستر پیش گرفت خود داخل فَمَنْ عَفَا وَ أَصْلَحَ فَأَجْرُہٗ عَلَی اللہِ 1 ہے۔ واللہ سبحانہ و تعالیٰ اعلم۔ زید پر احسان ہونے میں کیا شک ہے اور اگر شرعی طور پر پسندیدہ غیرت رکھتے ہوئے مسلمان کی پردہ پوشی کی نیت سے صبر کرتے ہوئے درگزر کیا تو اللہ تعالی کے اس ارشاد میں داخل ہے "جس نے معاف کیا اور اصلاح کی کوشش کی تو اس کا اجر اللہ تعالی کے کرم پر ہے۔" واللہ تعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۶۶: از سیتا کلاں پرگنہ نواب گنج ضلع بریلی مرسلہ سید زائر حسین ٹھیکیدار ۲۲ شعبان ۱۳۳۷ھ السلام علیکم، کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت قبل شوہر کسی غیر مرد سے اپنے خاوند کے نزدیک مشکوک ہوئی اور مرد کہتا ہے کہ میں نے فعل حرام کیا اور عورت کہتی ہے کہ نہیں، لہذا وہ شخص مسلمان ہیں، فاعل از روئے حلف کہتا ہے کہ میں فعل شنیع کا مرتکب ہوا اور مفعول کہتا ہے کہ نہیں بلکہ اس کا ایسا ارادہ تھا چونکہ مطلب برآری نہیں ہوئی بدیں وجہ ناحق الزام لگاتا ہے ، اب ایسی صورت میں جب فاعل مفعول دونوں محلف بکلام الہی ہیں تو کس کا اعتبار کیا جائے، میرے نزدیک دونوں شخص مکر کے پھرتے ہیں اور دونوں حلف اٹھاتے ہیں ایسی صورت میں فاعل سچا یا مفعول سچا یا کیا؟

الجواب: و علیکم السلام، وہ مرد عورت دونوں اپنے اپنے حق میں سچے مانے جائیں گے اور دوسرے کے

...in their favor are liars. The woman who denies is telling the truth. Anyone who accuses her of adultery solely based on a man's word is a severe sinner and deserves eighty lashes. A man who confesses to his own adultery will be considered an adulterer. In an Islamic state, he would have been punished; now, at most, he can be excommunicated from the community. Muslims should cease social interaction with him until he publicly repents. And Allah the Almighty knows best. Problem 267: Zulfiqar Ganj City Bareilly, Questioned by Babu, Dated 15 Dhu al-Hijjah 1338 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Shari'ah say regarding Zaid in the case of adultery? Upon receiving information about the case, the community elders sent a few arbitrators to the specific disputed site for investigation. Arriving at the site and inquiring from all residents of the neighborhood, it was discovered that this matter is indeed true. For this reason, eating, drinking, sitting, and standing (socializing) with them are forbidden among us. Therefore, the statements of the accused and the sworn testimonies of witnesses are presented below for the honorable Shari'ah. What is the ruling? And what action should we take? Explain and be rewarded. (1) Statement of the wife of Zaid's son: Everyone is giving false statements about me; I have not said anything to anyone. (2) From the side of witnesses, relatives, and kin: Let it be clear that the wife of Zaid's son, after confessing to adultery, is deviating because the community elders had strictly forbidden the accused from having any relation with that father-in-law. Despite the prohibition, the accused woman, of her own accord, went along with her father-in-law in the absence of her husband. It appears she has been well-coached, which is why she is deviating. (3) Sworn testimony of Hafiz Abdur Rahman Sahib: It was learned from Zaid's wife that "my husband was grabbing the breast of Zaid's son's wife. I forbade him, saying why do you grab the breast? Do you not feel shame? He replied, 'It is my property.'" I said with regret that my son was taken by this daughter-in-law, and she also snatched my husband. She was such a daughter-in-law. When this incident was narrated before Zaid's son, he remained silent. (4) Sworn testimony of Munshi Nabi Bakhsh Sahib, observant of fasting and prayer: I heard with my own ears that Zaid's wife was saying to Zaid in her house, "Why do you grab the son's wife's breast? What do you gain? Do you have no shame?" Zaid replied, "It is our property; we have the right." Afterwards, Zaid's wife came to my house to my wife. At that time, she was asked, "What is the daily quarrel and conflict in your house?" She replied, "This wife of my son took the son, but she also snatched my husband.

Certainly, one day there will be bloodshed." (5) Statement of Muhammad Bakhsh Sahib: According to Munshi Nabi Bakhsh Sahib, which is indeed true; in fact, one day such a coincidence...

जिल्द तेरहवीं १३, फतावा रज़विया

...उनके पक्ष में झूठे हैं। वह औरत जो इंकार करती है सच कहती है। जो शख्स सिर्फ मर्द के कहने पर उस पर जिना (व्यभिचार) की तोहमत लगाए, वह सख्त गुनहगार है और अस्सी कोड़ों की सजा का हकदार होगा। वह मर्द जो खुद अपने जिना का इकरार करता है, उसे जानी (व्यभिचारी) माना जाएगा। इस्लामी हुकूमत होती तो सजा पाता, अब बस इतना हो सकता है कि उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जाए। जब तक वह खुलेआम तौबा न कर ले, मुसलमान उससे मेल-जोल छोड़ दें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला २६७: ज़ुल्फ़िकार गंज शहर बरेली, मुस्तैला बाबू, दिनांक १५ ज़िल हिज्जाह १३३८ हिजरी दीन के उलमा और शरीयत के मुफ़्तियान क्या फरमाते हैं ज़ैद के बारे में जिना के मामले में? मामला की सूचना मिलने पर बिरादरी के लोगों ने जांच के लिए चंद पंचों को मुतनाज़ा (विवादित) जगह पर भेजा। मौके पर पहुँचकर मोहल्ले के तमाम निवासियों से पूछने पर मालूम हुआ कि हकीकत में यह बात सही है। इसी वजह से हमारे यहाँ उनसे खाना-पीना और उठना-बैठना बंद है। अतः मुलजिमों के बयान और गवाहों की हल्फी गवाहियां शरीयत की खिदमत में पेश हैं। क्या हुक्म है? और हमें क्या अमल करना चाहिए? बयान करें और सवाब पाएं। (१) ज़ैद के लड़के की बीवी का बयान: मेरे बारे में सब लोग गलत कह रहे हैं, मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। (२) अज़ीज़ों और रिश्तेदारों की तरफ से गवाहों का बयान: यह स्पष्ट हो कि ज़ैद के लड़के की बीवी जिना के इकरार के बाद इसलिए मुकर रही है क्योंकि बिरादरी वालों ने मुलजिमों को ताकीद के साथ मना कर दिया था कि उस ससुर से कोई ताल्लुक न रखना। मना करने के बावजूद मुलजिमा अपनी मर्जी से ससुर के साथ, पति की गैर-मौजूदगी में चली आई। मालूम होता है कि उसे अच्छी तरह सिखा-पढ़ा दिया गया है, इसी वजह से वह मुकर रही है। (३) हाफिज अब्दुल रहमान साहब की हल्फी गवाही: ज़ैद की बीवी की ज़बानी मालूम हुआ कि "मेरा शौहर ज़ैद के लड़के की बीवी की छाती पकड़ता था। मैंने मना किया कि छाती क्यों पकड़ते हो? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? जवाब दिया कि यह मेरा माल है।" मैंने अफसोस के साथ कहा कि मेरे लड़के को तो इस बहू ने ले लिया, पर मेरा शौहर भी छीन लिया। वह ऐसी बहू थी। जब यह वाकया ज़ैद के लड़के के सामने बयान किया गया तो उसने खामोशी इख्तियार कर ली। (४) मुंशी नबी बख्श साहब, जो नमाज़ और रोज़े के पाबंद हैं, की हल्फी गवाही: मैंने अपने कानों से सुना कि ज़ैद की बीवी अपने घर में ज़ैद से गुस्से में कह रही थी कि "तुम लड़के की बीवी की छाती क्यों पकड़ते हो? तुम्हें क्या मिलता है? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती?" ज़ैद ने जवाब दिया, "हमारा माल है, हमें अख्तियार है।" इसके बाद ज़ैद की बीवी मेरे मकान पर मेरी बीवी के पास

आई, तब उससे पूछा गया कि "तुम्हारे घर में रोज़ाना क्या झगड़ा-फसाद रहता है?" उसने जवाब दिया, "मेरे लड़के की इस बीवी ने लड़के को तो ले लिया मगर मेरे शौहर को भी छीन लिया। यकीनन एक दिन खून-खराबा होगा।" (५) मोहम्मद बख्श साहब का बयान: मुंशी नबी बख्श साहब के मुताबिक, जो कि वास्तव में सही है; बल्कि एक दिन ऐसा इत्तेफाक...

حق میں جھوٹے، عورت جو انکار کرتی ہے سچ کہتی ہے اسے جو فقط بر بنائے قول مرد، زنا کی تہمت لگائے سخت گنہگار اور اسی کوڑوں کا سزاوار ہو گا۔ مرد جو اپنے زنا کا اقرار کرتا ہے اسے زانی مانا جائے گا، اسلامی سلطنت ہوتی تو سزا پاتا، اب اسی قدر ہو سکتا ہے کہ اسے برادری سے خارج کیا جائے، مسلمان اس سے میل جول چھوڑ دیں جب تک علانیہ توبہ نہ کرے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۶۷: ذو الفقار گنج شہر بریلی مسئولہ بابو مورخہ ۱۵ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین درباره زید مقدمہ زنا میں بروقت اطلاع یابی مقدمہ اہل برادری نے چند پنچوں اہل برادری کو برائے تفتیش مقدمہ خاص موقع متنازعہ پر بھیجا موقع پر پہنچ کر تمام سکنائے اہل محلہ سے دریافت کیا تو معلوم ہوا کہ در حقیقت یہ امر صحیح ہے، بدیں وجہ ہمارے یہاں سے خورد و نوش نشست و برخاست بند ہے لہذا بیان ملزمان و شہادت باظہار حلفی گواہان مندرجہ ذیل بخدمت شرع شریف پیش ہے کیا حکم ہے؟ اور ہم لوگوں کو کیا عمل کرنا چاہئے؟ بینوا توجروا۔ (۱) بیان زید کے لڑکے کی زوجہ کا میرے بارہ میں سب لوگ غلط بیان کرتے ہیں میں نے کسی سے کچھ نہ کہا، (۲) از طرف گواہان عزیز و اقرباء: واضح ہو کہ زید کے لڑکے کی زوجہ باقرارِ زنا اس وجہ سے انحراف کرتی ہے کہ اہل برادری نے ملزمان کو تاکیداً منع کر دیا تھا کہ ہرگز اس خسر سے کوئی تعلق نہ رکھنا باوجود منع کرنے کے ملزمہ ہمراہی اپنی خواہش دامن و خسر کے عدم موجودگی اپنے شوہر کے چلی آئی، معلوم ہوتا ہے کہ بخوبی سکھلا پڑھا دی گئی بدیں وجہ یہ انحراف ہے۔ (۳) شہادت باظہارِ حلفی حافظ عبد الرحمن صاحب: زید کی زوجہ کی زبانی معلوم ہوا کہ میرا شوہر زید لڑکے کی بیوی کی چھاتی پکڑتا تھامیں نے منع کیا چھاتی کیوں پکڑتا ہے تجھ کو شرم نہیں معلوم ہوتی؟ جواب دیا میرامال ہے میں

نے بافسوس کہا کہ میرا لڑکا اس بہو نے تو لیا مگر میرا شوہر بھی چھین لیا، یہ ایسی بہو تھی، جبکہ یہ واقعہ زید کے لڑکے کے سامنے بیان کیا تو اس نے خاموشی اختیار کی۔ (۴) باظہار حلفی منشی نبی بخش صاحب پابند صوم وصلوٰۃ: میں نے اپنے کانوں سے سنا کہ زید کی زوجہ اپنے گھر میں زید سے بضہ کہتی تھی کہ تم لڑکے کی زوجہ کی چھاتی کیوں پکڑتے ہو تم کو کیا حاصل ہے تم کو شرم نہیں آتی؟ زید نے جواب دیا ہمارا مال ہے ہم کو اختیار ہے۔ بعدہ زید کی زوجہ میرے مکان پر میری زوجہ کے پاس آئی تو اس وقت اس سے دریافت کیا کہ روزانہ تمہارے گھر کیا جھگڑا فساد رہتا ہے؟ جواب دیا کہ اس میرے لڑکے کی بیوی نے لڑکے کو تو لیا مگر میرے خاوند کو بھی چھین لیا ضرور ایک دن خونریزی ہو گی۔ (۵) بیان محمد بخش صاحب: بموجب منشی نبی بخش صاحب کہ فی الواقع صحیح ہے بلکہ ایک دن ایسا اتفاق

Fatawa Razawiyya Volume 13

...It happened that Zaid made his granddaughter, who was sitting near him, get up just because the place was vacant. The girl complained to her grandmother that her grandfather had made her move. Afterward, Zaid grabbed the breast of his son's wife. Zaid's wife said, "Now we know very well that your son's wife is actually your wife. Since then, double portions of sweets etc. are being enjoyed, why? The daughter-in-law enjoys double portions of sweets, right!"

(6) Statement of Sheikh Ji Sahib Tasadduq Hussain: My wife saw Zaid with her own eyes committing adultery with his son's wife on the roof of Lal Muhammad's house.

(7) Statement of Khyali Ram: I heard with my own ears that Zaid calls his son's wife towards himself, and Zaid's wife says angrily, "Am I your wife, and is she also your wife?" Zaid replies, "Yes, she is our property, we have the right."

(8) Sworn statement of Girdhari Lal: I saw with my own eyes that Zaid took his son's wife inside the house by forcefully grabbing her hand. She kept refusing, saying "Uncle, what are you doing?", but he did not listen at all.

(9) Sworn statement of Rehmat Hussain, uncle of Karim Bakhsh's daughter: From the girl's words, we learned that "In the absence of my mother-in-law, my father-in-law called me to him at twelve noon while I was cooking bread, used force, and abused me. He kept me standing near him for about an hour and bit my hand. Afterward, he kissed and embraced me." I only said this much out of modesty, but she clearly stated to other relatives that her father-in-law committed adultery with her. We are quite certain that it is indeed true. For this reason, we are deeply grieved and saddened. Witnessing relatives are present.

(10) Sworn statement of Musammat Ghafooran: She stated in front of everyone in my house that her father-in-law scolded her for two hours, made her stand before him, and then committed adultery with her.

(11) Sworn statement of Ghassan Bhopa Sahib: When we inquired and asked, "Tell the truth, what is this story that has spread?", she said that indeed her father-in-law committed adultery with her.

Now, in the above-mentioned situation, is adultery proven or not? And does this woman remain lawful for Zaid's son or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: Adultery cannot be proven until the Day of Judgment with such absurd, meaningless, and baseless witnesses, unless...

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

...हुआ यह कि जैद ने अपनी नवासी को, जो जैद के पास बैठी थी, सिर्फ जगह खाली होने की वजह से उठा दिया। लड़की ने अपनी नानी से शिकायत की कि नाना ने मुझे अपने पास से उठा दिया, उसके बाद जैद ने अपने लड़के की पत्नी (बहू) की छाती आदि पकड़ी। जैद की पत्नी ने कहा कि अब हमें अच्छी तरह मालूम हो गया है कि लड़के की बीवी तुम्हारी बीवी है, तब से तो यह दुगुनी मिठाई आदि खूब उड़ाई जाती है क्यों? बहू तो दुगुनी मिठाई आदि उड़ाती है न!

(६) शेख जी साहब तसद्दुक़ हुसैन का बयान: मेरी पत्नी ने लाल मोहम्मद के घर की छत से जैद को अपने लड़के की पत्नी के साथ अपनी आँखों से व्यभिचार करते देखा।

(७) ख्याली राम का बयान: मैंने अपने कानों से सुना कि जैद अपने लड़के की पत्नी को अपनी ओर बुलाता है और जैद की पत्नी गुस्से में होकर कहती है कि क्या मैं तुम्हारी बीवी हूँ और वह भी तुम्हारी बीवी है? जैद जवाब में कहता है कि हाँ हमारा माल है, हमें अधिकार है।

(८) गिरधारी लाल का हलफनामा (शपथ पत्र): मैंने अपनी आँखों से देखा कि जैद अपने लड़के की पत्नी को ज़बरदस्ती हाथ पकड़कर घर के अंदर ले गया, वह बार-बार मना करती रही कि "चाचा क्या करते हो", लेकिन वह बिल्कुल नहीं माना।

(९) रहमत हुसैन, करीम बख्श की बेटी के चाचा का हलफनामा: लड़की की जुबानी हमें यह मालूम हुआ कि "मेरी सास की अनुपस्थिति में मेरे ससुर ने दोपहर बारह बजे, जब मैं रोटी पका रही थी, मुझे अपने पास बुलाकर ज़बरदस्ती की और गाली आदि दी, करीब एक घंटे तक मुझे अपने पास खड़ा रखा और मेरे हाथ पर काटा, उसके बाद मुझसे चुंबन और आलिंगन किया।" मैंने शर्म के मारे बस इतना ही कहा, लेकिन अन्य रिश्तेदारों को साफ-साफ बताया कि ससुर ने मेरे साथ व्यभिचार किया। हमें पूरा यकीन हो गया है कि वास्तव में यह सच है, इस वजह से हमें बहुत दुख और रंज हुआ। रिश्तेदार गवाह मौजूद हैं।

(१०) मुसम्मात ग़फ़ूरन का हलफनामा: मेरे घर में सबके सामने बयान किया कि मेरे ससुर ने मुझे दो घंटे डांटा-फटकारा और मुझे अपने सामने खड़ा किया, उसके बाद मेरे साथ व्यभिचार किया।

(११) घस्सन भोपा साहब का हलफनामा: जब हमने पूछताछ की और कहा कि "सच बताओ यह क्या किस्सा फैला हुआ है", तो उसने कहा कि वास्तव में मेरे ससुर ने मेरे साथ व्यभिचार किया।

अब उपरोक्त स्थिति में व्यभिचार सिद्ध हुआ या नहीं? और क्या यह स्त्री जैद के लड़के के लिए हलाल रही या नहीं? उत्तर दें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: ऐसे बेतुके अर्थहीन और आधारहीन गवाहों से कयामत (प्रलय) के दिन तक व्यभिचार सिद्ध नहीं हो सकता जब तक कि...

पृष्ठ ६२२/६८८

ہوا کہ زید نے اپنی نواسی کو جو کہ زید کے پاس بیٹھی تھی اٹھا دیا صرف موقع خالی ہونے کی وجہ سے لڑکی نے اپنی نانی سے شکایت کی کہ مجھ کو نانا نے اپنے پاس سے اٹھا دیا، بعدہ زید کے لڑکے کی بیوی کی چھاتی وغیرہ پکڑی، زید کی زوجہ نے کہا کہ اب ہم کو بخوبی معلوم ہو گیا کہ لڑکے کی بی بی تمہاری بی بی ہے تب سے تو یہ دونے مٹھائی وغیرہ خوب اڑائی جاتی ہے کیوں؟ بہو تو دونے مٹھائی وغیرہ اڑاتی ہے نا!

(۶) بیان شیخ جی صاحب تصدق حسین: میری زوجہ نے لعل محمد کے گھر میں کی چھت پر سے اپنے لڑکے کی زوجہ سے بچشم خود زنا کرتے دیکھا۔

(۷) بیان خیالی رام: میں نے اپنے کانوں سے سنا کہ زید اپنے لڑکے کی زوجہ کو اپنی طرف بلاتا ہے اور زید کی زوجہ غصہ ہو کر کہتی ہے کہ میں تمہاری بی بی بنی ہوں وہ بھی تمہاری بی بی ہے؟ زید جواب میں کہتا ہے کہ ہاں ہمارا مال ہے ہم کو اختیار ہے۔

(۸) بیان حلفی گردھاری لال: میں نے بچشم دیکھا کہ زید اپنے لڑکے کی زوجہ کو زبردستی ہاتھ پکڑ کر اندر مکان کے لے گیا وہ ہر چند منع کرتی رہی کہ چچا کیا کرتے ہو، مگر ہرگز نہ مانا۔

(۹) بیان حلفی رحمت حسین چچا کریم بخش دختر کے دادا: زبانی لڑکی ہم کو یہ معلوم ہوا کہ میری خوشدامن کی عدم موجودگی میں میرے خسر نے بوقت بارہ بجے دن کے جبکہ میں روٹی پکاتی تھی مجھ کو اپنے پاس بلا کر زبردستی کی اور گالی وغیرہ دی، قریب ایک گھنٹہ مجھ کو اپنے پاس کھڑا کیا اور میرے ہاتھ میں کاٹا، بعدہ مجھ سے بوس و کنار کیا، میں نے بحجاب صرف اتنا کہا مگر دیگر رشتہ داروں سے صاف صاف کما حقہ بیان کیا کہ میرے خسر نے مجھ سے زنا کیا۔ ہم

کو کافی یقین ہو گیا کہ درحقیقت صحیح ہے بدیں وجہ ہم کو سخت رنج و ملال ہوا رشتہ دار گواہ موجود ہیں۔

(۱۰) بیان حلفی مسماۃ غفورن: میرے گھر سب کے سامنے بیان کیا کہ میرے خسر نے مجھ کو دو گھنٹہ ڈانٹ ڈپٹ کی اور مجھ کو اپنے سامنے کھڑا کیا بعدہ میرے ساتھ زنا کیا۔

(۱۱) بیان حلفی گھسن بھوپا صاحب: جبکہ ہم نے دریافت کیا اور کہا کہ سچ کہو یہ کیا قصہ پھیلا ہوا ہے تو اس نے کہا کہ واقعی میرے خسر نے میرے ساتھ زنا کیا۔

اب صورت مذکورہ بالا میں زنا ثابت ہوا یا نہیں؟ اور یہ عورت زید کے لڑکے پر حلال رہی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ایسے بیہودہ بے معنی و بے اصل گواہوں سے زنا تو قیامت تک ثابت نہیں ہو سکتا جب تک

Fatawa Razawiyya Volume 13 Page 13

Four sane, adult Muslim men, who are pious and religious, who do not commit major sins, do not persist in minor sins, and are not frivolous, must testify under a Sharia oath. They must have witnessed Zaid committing adultery with Hindah at a specific time with their own eyes, as clearly as a needle in a kohl pot; until then, adultery cannot be proven by testimony. If even one of these conditions is missing, the witnesses themselves will be legally liable for eighty (80) lashes. For instance, if three pious Muslim men testify to seeing it like a needle in a kohl pot, but the fourth testifies that he saw them both completely naked on a bed and embracing, adultery will not be proven, and the first three will be sentenced to eighty lashes each. Or if four sane, adult, pious Muslim men testify to seeing it like a needle in a kohl pot, but two say it happened yesterday and two say today, or three say in the morning and one says in the late afternoon; all their testimonies are rejected, and adultery is not proven. All of them would be subject to eighty lashes. Such a rigorous evidentiary matter cannot be proven by the testimonies of those impure and absurd witnesses, among whom names like Khiyali Ram and Girdhari Lal are present, and some women; and women's testimonies regarding adultery are absolutely rejected, even if there are nine women with three men. As for the other one or two, that hearsay testimony is not acceptable even for goods worth two cents, let alone in a case of adultery. Repentance is obligatory for all the aforementioned witnesses, and lashes are administered in an Islamic state. In short, let alone adultery, even the matter of Zaid engaging in lewd acts like kissing and embracing his daughter-in-law with corrupt intent—which would make that woman forbidden (haram) for her husband—is not proven at all by these witnesses. All speak of hearsay; some via Zaid's wife, some via his daughter-in-law. Only the testimony of one Nabi Bakhsh is that he heard Zaid replying with his own ears, 'it is my property,' and it's possible Muhammad Bakhsh said the same, as his testimony is said to be like Nabi Bakhsh's. Even if these two persons were pious and acceptable according to Sharia, the petitioner stated there is purdah (seclusion) from them both; if they heard, they heard from outside, and testimony heard from outside is rejected because one voice can resemble another voice as stated in Al-Alamgiriya, etc. Even this much is not proven at all, and that woman remains lawful for her husband. Yes, if the husband himself confirms that his father performed some acts with his wife out of bad intent, such as kissing and embracing, then indeed the woman will be considered forbidden for him, as he has accepted her becoming forbidden. It will be mandatory for him to leave the

woman immediately and he will never be able to marry her again. If the husband does not confirm it, then it is nothing. And Allah Almighty knows best.

[1] Fatawa Hindiyya, Kitab al-Shahadat, Chapter Two, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 3/452.

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं पृष्ठ १३

चार समझदार, बालिग मुसलमान पुरुष, जो परहेज़गार और धार्मिक हों, जो किसी बड़े पाप (कबीरा) के अपराधी न हों और न ही छोटे पापों (सगीरा) पर अड़े रहने वाले हों, न ही हल्के व्यवहार वाले हों, उन्हें शरीयत की शपथ के साथ गवाही देनी चाहिए। उन्होंने एक निश्चित समय पर ज़ैद को हिंदा के साथ ज़िना करते हुए अपनी आँखों से इस तरह देखा हो जैसे सुरमेदानी में सलाई; तब तक ज़िना गवाही से साबित नहीं हो सकता। इन शर्तों में से एक बात भी कम होगी तो गवाही देने वाले स्वयं शरीयत के अनुसार अस्सी (80) कोड़ों के हकदार होंगे। उदाहरण के लिए, यदि तीन परहेज़गार मुसलमानों ने वैसी ही गवाही दी कि हमने अपनी आँखों से सुरमेदानी में सलाई की तरह देखा और चौथे ने यह गवाही दी कि मैंने दोनों को पूरी तरह नग्न एक पलंग पर बैठे हुए और आपस में लिपटे हुए देखा, तो ज़िना साबित नहीं होगा और पहले तीन को अस्सी-अस्सी कोड़ों का हुक्म होगा। या चार समझदार बालिग परहेज़गार मुसलमान पुरुषों ने गवाही दी कि हमने अपनी आँखों से सुरमेदानी में सलाई की तरह देखा, लेकिन दो ने कहा कल देखा, दो ने कहा आज, या तीन ने कहा सुबह देखा और एक ने कहा तीसरे पहर; सबकी गवाहियाँ खारिज होंगी और ज़िना साबित नहीं होगा। और सब पर अस्सी-अस्सी कोड़ों का हुक्म होगा। ऐसी कड़ी गवाही का मामला उन नापाक और बेतुके गवाहों से साबित हो सकता है जिनमें ख्याली राम और गिरधारी लाल जैसे नाम भी मौजूद हैं और कुछ महिलाएँ हैं; और ज़िना के बारे में महिलाओं की गवाहियाँ पूरी तरह से अमान्य हैं, भले ही तीन पुरुषों के साथ नौ महिलाएँ गवाह हों। रही बात अन्य एक-दो की, तो वह सुनी-सुनाई गवाही दो कौड़ी के माल में भी स्वीकार्य नहीं है, ज़िना की बात तो दूर। उपर्युक्त सभी गवाहों पर तौबा (प्रायश्चित) करना अनिवार्य है, और कोड़े तो इस्लामी राज्य में होते हैं। संक्षेप में, ज़िना की बात तो अलग रही, अब इतनी बात कि ज़ैद का अपनी बहू से गलत इरादे से जैसे चूमना और गले लगाना, जिससे वह महिला अपने पति पर हराम (वर्जित) हो जाए, इन गवाहों से इसका भी कोई प्रमाण नहीं है। सब सुनी-सुनाई कह रहे हैं; कोई ज़ैद की पत्नी की जुबानी, कोई उसकी बहू की जुबानी। केवल एक नबी बख्श की गवाही इतनी है कि उसने अपने कान से ज़ैद को जवाब देते हुए सुना कि 'मेरा माल है', और संभव है कि मुहम्मद बख्श ने भी ऐसा ही कहा हो क्योंकि उसकी गवाही को नबी बख्श की तरह कहा गया है। ये दो व्यक्ति परहेज़गार और शरीयत के अनुसार स्वीकार्य हों भी, तो याचिकाकर्ता ने बताया कि उन दोनों से पर्दा है; उन्होंने सुना तो बाहर से सुना, और बाहर से सुनी हुई गवाही खारिज है क्योंकि 'एक आवाज़ दूसरी आवाज़ के समान हो सकती है' जैसा कि आलमगीरी आदि में है। इतनी बात भी

बिल्कुल साबित नहीं है और वह महिला अपने पति के लिए हलाल है। हाँ, अगर पति स्वयं पुष्टि करे कि उसके पिता ने उसकी पत्नी के साथ बुरी नीयत से कुछ काम जैसे चूमना और गले लगाना किया है, तो निश्चित रूप से महिला उसके लिए हराम मानी जाएगी क्योंकि उसने उसके हराम होने को स्वीकार कर लिया है। उस पर अनिवार्य होगा कि महिला को तुरंत छोड़ दे और फिर कभी उससे निकाह न कर सके। और अगर पति पुष्टि न करे तो कुछ नहीं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[1] फतावा हिन्दिया, किताब अल-शहादत, अध्याय दो, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 3/452.

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم صفحہ ۱۳

چار مرد عاقل بالغ مسلمان پرہیز گار دیندار جو کسی کبیرہ کا ارتکاب کرتے ہوں نہ کسی صغیرہ پر اصرار رکھتے ہوں نہ خفیف الحرکات ہوں حلف شرعی کے ساتھ شہادت دیں، انہوں نے ایک وقت معین میں زید کو ہندہ کے ساتھ زنا کرتے ہوئے اپنی آنکھ سے یوں مشاہدہ کیا جیسے سرمہ دانی میں سلائی، اس وقت تک زنا شہادت سے ثابت نہیں ہو سکتا۔ ان شرطوں میں ایک بات بھی کم ہوگی تو خود گواہی دینے والے شرعاً اسی اسی"۸۰" کوڑوں کے مستحق ہوں گے مثلاً تین مسلمان پرہیزگار دیندار نے ویسی گواہی دی کہ سرمہ دانی میں سلائی کی طرح ہم نے اپنی آنکھ سے مشاہدہ کیا اور چوتھے نے یہ گواہی دی کہ میں نے دونوں کو سراپا برہنہ ایک پلنگ پر بیٹھے ہوئے اور باہم لپٹے ہوئے دیکھا زنا ثابت نہ ہوگا اور پہلے تین کو اسی اسی کوڑوں کا حکم ہوگا یا چاروں مرد مسلمان عاقل بالغ پرہیزگار دیندار نے گواہی دی کہ ہم نے اپنی آنکھ سے سرمہ دانی میں سلائی کی طرح دیکھا مگر دو نے کہا کل دیکھا، دو نے کہا آج، یا تین نے کہا صبح دیکھا اور ایک نے کہا تیسرے پہر۔ سب کی گواہیاں مردود، اور زنا ثابت نہیں۔ اور سب پر اسی اسی کوڑوں کا حکم ہوگا۔ ایسی سخت شہادت کا معاملہ وہ ان ناپاک و بیہودہ گواہوں سے ثابت ہو سکتا ہے جن میں خیالی رام و گردھاری لال تک موجود ہیں اور کچھ عورتیں ہیں اور عورتوں کی گواہیاں زنا کے بارے میں مطلق مردود ہیں اگرچہ تین مردوں کے ساتھ نو عورتیں گواہ ہوں، باقی دو ایک میں وہ سنی سنائی گواہی دو کوڑی کے مال میں بھی مقبول نہیں نہ کہ زنا میں، جتنے گواہان مذکور ہیں سب پر توبہ فرض ہے اور کوڑے تو اسلامی سلطنت میں ہوتے، غرض زنا تو بالائے طاق رہا، اب اتنی بات کہ زید کا اپنی بہو سے بارادہ فاسد مثلاً بوس وکنار کرنا جس سے وہ عورت اپنے شوہر پر حرام ہو جائے، ان گواہوں سے اصلاً اس کا بھی کہیں ثبوت نہیں سب سنی سنائی کہتے ہیں کوئی

زوجہ زید کی زبانی کوئی اس کی بہو کی زبانی، صرف ایک نبی بخش کی گواہی اتنی ہے کہ اس نے اپنے کان سے زید کو جواب دینے میں سنا کہ میرا مال ہے اور ممکن ہے کہ محمد بخش نے بھی ایسا ہی کہا کہ اس کی گواہی کو مثل نبی بخش کہا ہے، یہ دو شخص پرہیزگار قابل قبول شرع ہوں بھی تو سائل نے بیان کیا کہ ان دونوں سے پردہ ہے انہوں نے سنا تو باہر سے سنا، اور باہر سے سنی ہوئی گواہی مردود ہے لان النغمة تشبہ النغمة کما فی العلمگیریة وغیرہ (آواز، دوسری آواز کے مشابہ ہو سکتی ہے جیسا کہ عالمگیری وغیرہ میں ہے۔ ت) اتنی بات بھی اصلاً ثابت نہیں اور وہ عورت اپنے شوہر پر حلال ہے ہاں اگر شوہر خود تصدیق کرے کہ اس کے باپ نے اس کی عورت کے ساتھ بدنیتی سے کچھ افعال م۔ مثل بوس وکنار کئے تو البتہ عورت اس پر حرام مانی جائے گی کہ اس نے اس کو حرام ہونا تسلیم کیا اس پر لازم ہوگا کہ عورت کو فوراً چھوڑ دے اور پھر کبھی اس سے نکاح نہ کر سکے گا، اور اگر شوہر تصدیق نہ کرے تو کچھ نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب الشہادت الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۴۵۲

Fatawa Razawiyya (Right Heading) Volume 13 (Left Heading) 13 (Page Number)

Issue 268: Muhammad Akhtar Hussain, student of Madrasa Manzar-e-Islam, Mohalla Saudagran, 12 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if a person commits adultery with a non-Muslim woman with her consent, and there is no fear of polytheism, what is the ruling in such a situation? And what is the ruling for a person who believes in the permissibility of this act? Explain, may you be rewarded.

The Answer: Adultery is forbidden (Haram). If someone believes in the permissibility of committing adultery with a non-Muslim dhimmi woman, it is disbelief (kufr); otherwise, it is null and void and rejected in any case. And Allah Almighty knows best.

Issue 269: City of Bareilly, Mohalla Zakheera, asked by Habibullah Sahib, barber, 5 Jumadi al-Akhir 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's wife, since her brother-in-law (sister's husband) was alone after her sister's death, used to prepare food etc. for him and provide him with all comforts. After a few days, a deep affection for the brother-in-law developed. One day Zaid saw his wife in bed with the brother-in-law and forbade him from coming to his house, but he did not stop. Then Zaid gathered the people of his neighborhood and community, made them take an oath, and tried to make him understand in a reproachful manner. His brother-in-law took an oath that "if I have committed a bad deed with her until today, then I have committed a bad deed with my mother, sister, and daughter." After a few days, at twelve or one at night, Zaid himself saw it clearly with his own eyes but due to helplessness could not say anything to him. Being compelled, Zaid again gathered the neighborhood and community and divorced her. Two or three days after this, she went to her brother-in-law's place. Since their marriage had not yet been revealed to anyone, the brothers separated her family, the woman, and her brother-in-law from the community. If someone from his family or community joins them, what does the noble Shariah say about them?

The Answer: Repentance (Tawba) is obligatory (Fard) on both the woman and her brother-in-law. Her going there during the waiting period (Iddat) was a second forbidden act (Haram). It is obligatory on her to complete the Iddat at her husband's home. If she does not agree, then the punishment given to her by the community must certainly be maintained, as this is all that remains in this country. Furthermore, if her brother-in-law does not repent, the same ruling applies to him. Some people who break this punishment would be acting against Shariah-compliant interests. The

result of their action would be that this one punishment remaining here would also be removed, and people of community-led (panchayati) nations would become free in every sin like others. This itself is a crime and support for criminals. Therefore, if they do not desist, they should also be expelled from the community.

Page 624 of 688 (Footer)

फ़तावा रज़विया (शीर्षक - दाएँ) जिल्द तेरहवीं (शीर्षक - बाएँ) १३ (पृष्ठ संख्या)

मसला २६८: मोहम्मद अख्तर हुसैन, छात्र मदरसा मंज़रे इस्लाम, मोहल्ला सौदागरान, १२ सफ़र १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी काफ़िर (गैर-मुस्लिम) महिला के साथ उसकी सहमति से व्यभिचार (ज़िना) करता है, और शिर्क(बहुदेववाद) का कोई डर न हो, तो ऐसी स्थिति में क्या हुक्म है? और जो व्यक्ति इस कार्य की अनुमति (जवाज़) का कायल हो, उसके लिए क्या हुक्म है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: व्यभिचार हराम है। और यदि कोई काफ़िर धिम्मी (मुस्लिम देश में रहने वाली गैर-मुस्लिम महिला) के साथ व्यभिचार की अनुमति का कायल हो, तो यह कुफ़्र (अविश्वास) है; अन्यथा यह हर हाल में बातिल (अमान्य) और अस्वीकार्य है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २६९: बरेली शहर, मोहल्ला ज़खीरा, प्रार्थी हबीब उल्लाह साहब हज्जाम, ५ जमादी अल-आखिर १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद की पत्नी, अपनी बहन की मृत्यु के बाद उसके बहनोई के अकेले होने के कारण, उसे रोटी आदि बनाकर देती रही और हर तरह की सुख-सुविधा प्रदान करती रही। कुछ दिनों बाद बहनोई के प्रति गहरी मुहब्बत पैदा हो गई। एक दिन ज़ैद ने अपनी पत्नी को बहनोई के साथ बिस्तर पर देख लिया और उसे अपने घर आने से मना कर दिया, लेकिन वह नहीं माना। तब ज़ैद ने अपने मोहल्ले और बिरादरी के लोगों को इकट्ठा करके शपथ दिलाई और लानती तौर पर समझाया। उसके बहनोई ने कसम खाई कि "अगर मैंने आज तक उसके साथ बुरा काम किया हो, तो मैंने अपनी माँ, बहन और बेटी के साथ बुरा काम किया हो।" कुछ दिनों बाद रात के बारह या एक बजे ज़ैद ने स्वयं अपनी आँखों से स्पष्ट रूप से देखा, लेकिन मजबूरी के कारण उससे कुछ न कह सका। विवश होकर ज़ैद ने फिर से मोहल्ले और बिरादरी के लोगों को इकट्ठा किया और उसे तलाक दे दिया। इसके दो-तीन दिन बाद वह अपने बहनोई के यहाँ चली गई। अभी तक किसी को दोनों के निकाह का पता न होने के कारण, भाइयों ने उसके परिवार, महिला और उसके बहनोई को बिरादरी से अलग कर दिया। यदि उसके परिवार या बिरादरी का कोई व्यक्ति उनके साथ शामिल होता है, तो शरीयत उनके बारे में क्या कहती है?

उत्तर: महिला और उसके बहनोई पर तौबा (पश्चाताप) करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है। और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान उसका वहाँ चले जाना दूसरा हराम काम था। उस पर अनिवार्य है कि वह अपने पति के घर में इद्दत पूरी करे। यदि वह नहीं मानती, तो बिरादरी द्वारा उसे जो सज़ा दी गई है, उसे

अवश्य बनाए रखा जाना चाहिए, क्योंकि इस देश में यही बचा है। इसके अलावा, यदि उसका बहनोई तौबा नहीं करता है, तो उस पर भी यही हुक्म लागू होता है। कुछ लोग जो इस सज़ा को तोड़ेंगे, वे शरीयत के हितों के विरुद्ध होंगे और उनके कृत्य का परिणाम यह होगा कि यहाँ हाथ में बची यह एक सज़ा भी खत्म हो जाएगी और पंचायती जातियों के लोग भी दूसरों की तरह हर पाप में स्वतंत्र हो जाएंगे। यह स्वयं एक अपराध है और अपराधियों का समर्थन है। इसलिए, यदि वे नहीं मानते, तो उन्हें भी बिरादरी से बाहर कर दिया जाना चाहिए।

पृष्ठ ६२४ का ६८८ (फुटर)

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

مسئلہ ۲۶۸: محمد اختر حسین طالب علم مدرسہ منظر الاسلام محلہ سوداگران ۱۲ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک کافرہ عورت کے ساتھ اگر کوئی شخص زنا کرے مع اس کی رضا کے ، اور خوف شرک کا بھی نہ ہو، ایسی حالت میں کیا حکم ہے اور جو شخص اس امر کے جواز کا قائل ہو اس کے واسطے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا الجواب: زنا حرام ہے اور کافرہ ذمیہ کے ساتھ زنا کے جواز کا قائل ہو تو کفر ہے ورنہ باطل و مردود بہرحال ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۶۹: شہر بریلی محلہ ذخیرہ مسئولہ حبیب اللہ صاحب حجام ۵ جمادی الاخر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی بی بی اپنے بہنوئی کے تنہا ہونے کی وجہ سے اپنی بہن کے فوت ہو جانے کے بعد اس کو روٹی وغیرہ تیار کر کے اس کو ہر طرح کا عیش آرام دیتی رہی، چند روز کے بعد بہنوئی کی دلی محبت پیدا ہو گئی۔ ایک روز زید نے اپنی بی بی کو بہنوئی سے ہم بستر دیکھ کر اپنے مکان پر آنے سے منع کیا مگر وہ باز نہ آیا تب زید نے اپنے محلہ والے اور برادری والوں کو جمع کر کے حلف اٹھوایا اور لعنتی طور پر سمجھایا، اس کے بہنوئی نے قسم کھائی کہ اگر میں نے آج تک اس کے ساتھ برا کام کیا ہو تو اپنی ماں بہن اور لڑکی کے ساتھ برا کام کیا ہو، چند روز کے بعد رات کے بارہ یا ایک بجے پر خود چشم دید خوب اچھی طور پر دیکھتا رہا مگر بسبب مجبوری کے اس سے کچھ نہ کہہ سکا، زید نے مجبور ہو کر دوبارہ محلہ والوں کو اور برادری والوں کو جمع کر کے طلاق دے دی، اس کے دو تین روز کے بعد وہ اپنے بہنوئی کے یہاں چلی گئی، ابھی تک کسی کو دونوں کا نکاح ظاہر نہ ہونے کی وجہ سے برادروں نے اس کے کنبہ والے اور عورت کو اور اس کے بہنوئی کو برادری سے علیحدہ کر دیا،

اگر اس کے کنبے والا یا اس کے برادری والا اس کے شریک ہوں تو شرع شریف ان کے بارے میں کیا کہتی ہے؟ الجواب: عورت اور اس کے بہنوئی پر توبہ فرض ہے اور عدت کے اندر اس کا چلے جانا یہ دوسرا حرام تھا اس پر فرض ہے کہ عدت اپنے شوہر کے یہاں پوری کرے اگر نہ مانے تو برادری سے جو سزا اسے دی گئی ہے ضرور قائم رکھی جائے کہ اس ملک میں یہی باقی ہے نیز اس کا بہنوئی اگر توبہ نہ کرے تو اس پر بھی یہی حکم ہے بعض لوگ کہ اس سزا کو توڑیں وہ مصلحت شرعیہ کے مخالف ہوں گے اور ان کے فعل کا نتیجہ یہ ہوگا کہ ایک یہ سزا جو یہاں ہاتھ میں رہ گئی یہ بھی اٹھ جائے اور پنچائتی قوموں کے لوگ بھی اوروں کی طرح ہر گناہ میں آزاد ہو جائیں یہ خود جرم ہے اور مجرموں کی حمایت، لہذا اگر باز نہ آئیں تو یہ بھی برادری سے خارج

جلد سیزدہم (Volume 13) | ۱۳ (13)

Fatawa Ridawiyya

...are worthy of being done. And Allah Almighty knows best.

Question 770: Shahjahanpur, Tarmeen Lane, at the house of the late Hazrat Qari Sahib Maulvi Hakim Syed Muhammad Azad Yazdani Hasrat Shahjahanpuri, 9 Muharram al-Haram 1339 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: that if someone intentionally marries and has intercourse with eternal mahrams (prohibited relatives), like a mother or sister etc., no Sharia-defined punishment (hadd) is applicable to them? This issue is mentioned in Hidaya Vol. 1 p. 496, Kanz Urdu p. 715, and Hidaya Persian Translation Vol. 2 p. 34. Is this issue correct or wrong?

The Answer: Sins are of three types: 1. Light ones that do not reach the level of a 'hadd' (fixed Sharia punishment), such as kissing and touching a non-mahram woman. A fixed 'hadd' will not be applicable to them because it would exceed the gravity of the act, and the Lord Almighty is pure from giving a criminal a punishment greater than their crime. For such sins, 'ta'zir' (discretionary punishment) is established. 2. Secondly, those most foul (akhbath) grade sins that have surpassed the level of 'hadd', such as the case mentioned in the question. No 'hadd' is established for these either, because 'hadd' is intended to purify one from that sin, and such a foul sin cannot be purified by that 'hadd'. 3. Thirdly, middle-grade ones, for which there are fixed 'hudood' (punishments). An example is urine and wine; urine is fouler than wine because not a single drop of it was ever declared lawful or pure in Sharia. For this reason, there is a 'hadd' for drinking wine but no 'hadd' for drinking urine. Similarly, there is a 'hadd' for adultery (zina) with a non-mahram woman, but not for marriage with 'mahrams' (prohibited relatives), because that is such a foul act that 'hadd' cannot handle it. And Allah Almighty knows best.

Question 771: From Marehra Mutahira, Bagh Pukhta, District Etah, questioned by Syed Ghulam Shabbir, 20 Ramadan 1335 AH. What do the scholars of religion say about this issue: Hindah, a pious widow, was walking with her younger sister for recreation one moonlit night between Maghrib and Isha in front of the door, at a distance of fifty steps east and west. Hindah's cousin Zaid was also with them. When Hindah intended to move forward towards the public road, Zaid stopped her and said, "This is the men's quarters; this place is a public road, so do not go further, go inside to the women's quarters." Saying this, Zaid grabbed Hindah's arms from

behind and turned her towards the door. Hindah refuted Zaid's statement, went a few steps towards the men's quarters, and then went back into the women's quarters of her own accord. A few days later, after several illegitimate acts had been committed by Hindah and Zaid stopped her again, at that time Hindah revealed that Zaid had also, on that day, touched my body with ill intent...

...करने के काबिल हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ७७०: शहर शाहजहाँपुर, तारमीन गली, मकान हज़रत क़ारी साहब मरहूम मौलवी हकीम सैयद मोहम्मद आज़ाद यज़दानी हसरत शाहजहाँपुरी, ९ मुहर्रम उल हराम १३३९ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि जो कोई जानबूझकर महरमात-ए-अबदी यानी माँ, बहन वग़ैरह से निकाह और सोहबत करे तो उस पर शरई हद नहीं आती। यह मसला हिदाया जिल्द १ सफ़ा ४९६, कन्स उर्दू सफ़ा ७१५, हिदाया मुतरजम फ़ारसी जिल्द २ सफ़ा ३४ में है, क्या यह मसला सही है या ग़लत?

अल-जवाब (उत्तर): गुनाह तीन किस्म के हैं: १. हल्के जो हद की सीमा तक न पहुँचें, जैसे अजनबी महिला से बोसो-किनार (चूमना-लिपटना), उन पर हद मुक़र्रर नहीं होगी क्योंकि सज़ा उनकी मात्रा से ज़्यादा हो जाएगी, और मौला अज़्वजल इस बात से पाक है कि किसी मुजरिम को उसके जुर्म की सीमा से ज़्यादा सज़ा दे। ऐसे गुनाहों पर ताज़ीर (विवेकाधीन दंड) रखी जाती है। २. दूसरे वो सबसे गंदे (अख़बस) दर्जे के गुनाह जो हद की सीमा से गुज़र चुके हैं, जैसे सवाल में ज़िक्र की गई सूरत। उन पर भी हद नहीं रखी जाती क्योंकि हद उस गुनाह से पाक कर देने के लिए होती है और ऐसा गंदा गुनाह उस हद से पाक नहीं होता। ३. तीसरे औसत दर्जे के जिन पर हदें (निश्चित दंड) हैं। इसकी मिसाल पेशाब और शराब है; पेशाब शराब से ज़्यादा गंदा है क्योंकि शरीयत में कभी उसकी एक बूंद भी हलाल या पाक नहीं ठहराई जा सकी, इसी वजह से शराब पीने पर हद है और पेशाब पीने पर हद नहीं, वैसे ही अजनबी महिला से ज़िना (व्यभिचार) पर हद है और महरमों से निकाह पर नहीं क्योंकि वो इतना गंदा काम है जिसे हद संभाल नहीं सकती, वल्लाह तआला अअ़लम।

मसला ७७१: मारहरा मुतहरा, बाग़ पुख्ता, जिला एटा, प्रार्थी सैयद ग़ुलाम शब्बीर, २० रमज़ान १३३५ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा, जो एक नेक विधवा है, चाँदनी रात में म़ग़रिब और ईशा के बीच मनोरंजन के लिए घर के दरवाज़े के सामने पूरब और पश्चिम में पचास कदम के फ़ासले पर अपनी छोटी बहन के साथ टहल रही थी और हिन्दा का चचेरा भाई ज़ैद भी साथ था। हिन्दा ने जब आगे मुख्य मार्ग (शाहराह-ए-आम) की तरफ़ बढ़ने का इरादा किया तो ज़ैद ने मना किया और कहा कि यह पुरुषों का हिस्सा है, यह जगह मुख्य मार्ग है बस आगे न जाइए, अंदर

महिलाओं के हिस्से (ज़नाना) में चलिए, यह कहकर ज़ैद ने हिन्दा को पीछे से उसके बाजू पकड़कर दरवाज़े की तरफ़ मोड़ दिया। हिन्दा ने ज़ैद की बात का खंडन किया और चंद कदम मर्दाना मकान की तरफ़ जाकर फिर खुद ही ज़नाना मकान में चली गई। चंद दिनों बाद जब हिन्दा से कई ग़ैर-शरई हरकतें हो चुकीं और ज़ैद ने फिर रोका, तो उस वक़्त हिन्दा ने आरोप लगाया कि ज़ैद ने भी उस दिन मेरे शरीर को बुरी नियत से...

पृष्ठ ६२५ / ६८८

کرنے کے قابل ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷۰: شہر شاہجہان پور تارمین گلی بر مکان حضرت قاری صاحب مرحوم مولوی حکیم سید محمد آزاد یزدانی حسرت شاہجہان پوری ۹ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ محرمات ابدی یعنی ماں بہن وغیرہ سے جو جان بوجھ کر نکاح اور صحبت کرے تو اس پر حد شرعی نہیں آتی۔ یہ مسئلہ ہدایہ جلد نمبر ۱ ص ۴۹۶، کنز اردو ص ۷۱۵، ہدایہ مترجم فارسی جلد ۲ ص ۳۴ میں ہے، آیا یہ مسئلہ صحیح ہے یا غلط؟

الجواب: گناہ تین قسم ہیں: ایک ہلکے کہ حد کی حد تک نہ پہنچے، جیسے اجنبیہ سے بوس و کنار، ان پر حد مقرر نہیں ہوگی کہ ان کی مقدار سے زیادہ ہے، اور مولیٰ عزوجل اس سے پاک ہے کہ کسی مجرم کو اس کی حد جرم سے زیادہ سزا دے۔ ایسے گناہوں پر تعزیر رکھی جاتی ہے۔
دوسرے وہ اخبث درجہ کے گناہ کہ حد کی حد سے گزرے ہوئے ہیں جیسے صورۃ مذکورہ سوال۔ ان پر بھی حد نہیں رکھی جاتی کہ حد اس گناہ سے پاک کردینے کی ہوتی ہے اور ایسا خبیث گناہ اس حد سے پاک نہیں ہوتا۔ تیسرے متوسط درجہ، ان پر حدود ہیں۔ اس کی نظیر پیشاب اور شراب، پیشاب شراب سے خبیث تر ہے کہ کبھی شریعت میں اس کی ایک بوند حلال یا طاہر نہ ٹھہر سکی، بایں وجہ شراب پینے پر حد ہے اور پیشاب پینے پر حد نہیں، یو نہی اجنبیہ سے زنا پر حد ہے اور محارم سے نکاح پر نہیں کہ وہ خبیث کام ہے جسے حد سنبھال نہیں سکتی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷۱: از مارہرہ مطہرہ باغ پختہ ضلع ایٹہ مسئولہ سید غلام شبیر ۲۰ رمضان ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ بیوہ زن پارسا مکان سے تفریحاً شب ماہ میں بین المغرب والعشاء دروازہ کے سامنے مشرق و مغرب پچاس قدم کے فاصلہ سے اپنی چھوٹی بہن کے ساتھ ٹہلتی تھی اور ہندہ کا چچازاد بھائی زید بھی ساتھ تھا ہندہ نے جبکہ آگے شارع عام کی طرف بڑھنے کا قصد کیا تو زید مانع ہوا اور کہا مردانہ مکان ہے یہ مقام شارع عام ہے بس آگے نہ جائیے اندر زنانے میں چلئے، یہ کہہ کر زید نے ہندہ کے پس پشت سے ہندہ کے بازو پکڑ کر دروازے کی طرف پھیر دیا، ہندہ نے زید کے کلام کی تردید کی اور چند قدم مردانے مکان کی طرف جا کر پھر از خود زنانے مکان میں چلی گئی، چند روز بعد جبکہ ہندہ سے کئی نامشروع حرکات سرزد ہو چکیں اور زید پھر مانع ہوا اسوقت ہندہ نے اس کا اظہار کیا کہ زید نے بھی فلاں روز میرے جسم کو بدنیتی سے

...touched her, meaning he mentioned the aforementioned incident. Zaid replied that, "By God, by Allah, my stopping her or touching her body was not with any ill intention. If in your view it was or is ill intent, then I am certainly deserving of punishment. You may either forgive me or punish me according to the Book and Sunnah. I have no excuse that my action regarding you was not against the Book and Sunnah, nor is it, nor will it be, Insha'Allah. Now Hindah has full suspicion of evil intent towards Zaid. Therefore, let an answer be given as to what Zaid's visible action and intention, and Hindah's action and rejection, are like according to the Book and Sunnah. Speak and be rewarded."

Al-Jawab (The Answer): In the mentioned situation, Hindah being sinful and shameless is apparent. As for Zaid, from the mentioned account, his primary intention seems to be to forbid Hindah from an evil act and stop her from shamelessness; for this, he is deserving of reward, not deserving of punishment and rebuke. Then, his grabbing Hindah by the arms from behind and turning her from the public street towards the house—if it was in such a way that there was thick cloth between his hands and Hindah's body, preventing the warmth of Hindah's body from reaching his hands—then there is no blame on him. If it was not so, but rather his hand reached some part of Hindah's body without a barrier, or the barrier was thin such that it did not prevent feeling the warmth, then certainly there is blame on Zaid and repentance is obligatory for him. He should have been content with verbal prohibition or turned her by placing a thick cloth. Even if she didn't obey without it, the ill intention that Hindah accuses him of is not proven. This is also one of her vile actions, that she makes a false accusation against a Muslim. It is mandatory for her relatives to manage her behavior. And Allah Almighty knows best.

Issue 272: From Marehra Mutahira, Bagh Pukhta, District Etah, questioned by Syed Ghulam Shabbar, 20 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say about this: Zaid jokes with a married woman who is his sister-in-law (brother's wife), and considers obscene joking and scuffling to be permissible. Without hesitation, at any time or place, he considers it permissible to touch and stroke her body and says that my action is in jest, that I joke like this even in front of her husband. In jest, Zaid grabs the aforementioned woman's legs and drags her from one bed to another and from the second to a third bed. The relatives of both parties also see this and do not object at all. So, is this action and the silence of the relatives permissible according to Sharia? Speak and be rewarded.

Al-Jawab (The Answer): These actions are Haraam (forbidden), and such joking is satanic joking. If the husband actually sees this and is pleased with it or does not forbid it according to his power, then he is a Dayyooth (cuckold), and Paradise is forbidden for a Dayyooth. Similarly, the relatives of both parties who do not forbid it [are also sinful].

...हाथ लगाया था यानी उपरोक्त घटना का ज़िक्र किया, ज़ैद ने जवाब दिया कि खुदा की कसम, मेरा रोकना या शरीर को हाथ लगाना किसी बुरी नीयत से नहीं था। अगर आपकी नज़र में वह बदनीयती थी या अब है, तो मैं यक़ीनन सज़ा का हक़दार हूँ। आप या तो मुझे माफ़ फरमाएं या किताब और सुन्नत के अनुसार सज़ा दें। मुझे हरगिज़ यह उज्र (बहाना) नहीं है कि मेरा मामला आपके बारे में किताब और सुन्नत के खिलाफ नहीं था और न है और न होगा, इंशाअल्लाह। अब हिंदा को ज़ैद की तरफ से बदगुमानी (बुरा संदेह) है, लिहाज़ा जवाब दिया जाए कि ज़ैद का यह ज़ाहिरी अमल और नीयत और हिंदा की यह हरकत और विरोध किताब और सुन्नत में कैसा है? बयान करें और पुण्य पाएं।

अल-जवाब: उपरोक्त स्थिति में हिंदा का गुनहगार और निर्लज्ज होना ज़ाहिर है। रहा ज़ैद, तो उसके बयान से उसका असल मक़सद हिंदा को बुरी बात से रोकना और निर्लज्जता से बचाना मालूम होता है, इस पर वह इनाम का हकदार है न कि सज़ा और फटकार का। फिर उसका पीछे से हिंदा को बाज़ू से पकड़कर आम रास्ते से घर की तरफ मोड़ देना, अगर इस तरह हो कि उसके हाथों और हिंदा के शरीर के बीच मोटा कपड़ा रुकावट था जिससे हिंदा के जिस्म की गर्मी उसके हाथों तक नहीं पहुँची, तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं। और अगर ऐसा नहीं था बल्कि हिंदा के किसी अंग को उसका हाथ बिना किसी रुकावट के लगा या रुकावट इतनी पतली थी कि गर्मी महसूस होने से न रोक सकी, तो ज़ैद पर यक़ीनन इल्ज़ाम है और उस पर तौबा फ़र्ज़ है। उसे चाहिए था कि ज़ुबानी मना करने पर सब्र करता या मोटा कपड़ा बीच में रखकर मोड़ता। अगर वह इसके बिना न मानती, फिर भी वह बदनीयती जिसका हिंदा इल्ज़ाम लगाती है, साबित नहीं है। यह भी उसके(हिंदा के) घिनौने कामों में से एक काम है कि एक मुसलमान पर तोहमत (झूठा इल्ज़ाम) लगाती है, उसके रिश्तेदारों पर उसका बंदोबस्त (सुधार) करना लाज़िम है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है)।

मसला २७२: मारहरा मुतहरा, बाग़ पुख्ता, ज़िला एटा से, प्रेषक सैयद गुलाम शब्बर, २० रमज़ान १३३९ हिजरी। उलेमा-ए-दीन क्या फरमाते हैं कि ज़ैद एक विवाहित महिला, जो उसकी भाभी है, से मज़ाक करता है और अश्लील मज़ाक और हाथापाई को भी जायज़ समझता है। बिना किसी हिचकिचाहट के मौक़ेबेमौक़े उसके शरीर को हाथ लगाना और छूना जायज़ जानता है और कहता है कि मेरा यह काम मज़ाक है, मैं उसके पति के सामने भी ऐसा ही मज़ाक करता हूँ। मज़ाक में ज़ैद उस महिला की टांगें पकड़कर एक पलंग से दूसरे और दूसरे से तीसरे पलंग पर घसीटता है और

दोनों पक्षों के रिश्तेदार भी इसे देखकर कोई आपत्ति नहीं करते। तो क्या शरीअत के अनुसार यह हरकत और रिश्तेदारों की चुप्पी जायज़ है? बयान करें और पुण्य पाएं।

अल-जवाब: ये हरकतें हराम हैं और ऐसा मज़ाक शैतानी मज़ाक है। और अगर पति वाकई इसे देखता है और इस पर राज़ी होता है या अपनी ताक़त के मुताबिक मना नहीं करता, तो वह दय्यूत (बेगैरत) है और दय्यूत पर जन्नत हराम है। इसी तरह दोनों पक्षों के रिश्तेदार जो मना नहीं करते (वे भी गुनहगार हैं)।

ہاتھ لگایا تھا یعنی مذکورہ بالا واقعہ کا اظہار کیا، زید نے جواب دیا کہ میری روک ٹوک یا جسم کو ہاتھ لگانا واللہ باللہ کسی بدنیتی سے نہ تھا اگر آپ کے نزدیک وہ بدنیتی تھی یا اب ہے تو میں ضرور مستحق ہوں آپ یا تو مجھے معاف فرمائیں یا از روئے کتاب و سنت سزا دیں مجھے ہرگز عذر نہیں کہ میرا امر آپ کے متعلق کتاب و سنت کے خلاف نہ تھا اور نہ ہے اور نہ ہوگا ان شاء اللہ تعالیٰ۔ اب ہندہ کو پورا گمان بد زید کی جانب ہے لہٰذا جواب عطا ہو کہ زید کا یہ فعل و نیت ظاہری اور ہندہ کی یہ حرکت و تردید کتاب و سنت میں کیسی ہے؟ بینوا توجروا۔

الجوا ب: صورتِ مذکورہ میں ہندہ کا گناہگار و بیحیا ہونا ظاہر ہے، رہا زید بیان مذکور سے اس کا اصل مقصود ہندہ کو بری بات سے منع کرنا اور بیحیائی سے روکنا معلوم ہوتا ہے اس پر وہ مستحق اجر ہے نہ کہ سزاوارِ سزا و زجر۔ پھر اس کا پس پشت سے ہندہ کو بازو پکڑ کے شارعِ عام سے مکان کی طرف پھیر دینا اگر اس طرح ہو کہ اس کے ہاتھوں اور ہندہ کے جسم میں موٹا کپڑا حائل تھا کہ جسمِ ہندہ کی گرمی اس کے ہاتھوں کو پہنچنے سے مانع ہوا جب تو اس پر کچھ الزام نہیں اور اگر ایسا نہ تھا بلکہ ہندہ کے کسی حصہ جسم کو اس کا ہاتھ بلا حائل پہنچا یا حائل باریک تھا کہ گرمی محسوس ہونے سے مانع نہ ہوا تو بیشک زید پر الزام ہے اور اس پر توبہ فرض، اسے چاہئے تھا کہ زبانی ممانعت پر قناعت کرتا یا موٹا کپڑا حائل رکھ کر پھیرتا یا اگر وہ بغیر اس کے نہ مانتی پھر بھی وہ بدنیتی جس کا ہندہ اتہام رکھتی ہے ثابت نہیں، یہ بھی اس کے افعالِ شنیعہ سے ایک فعل ہے کہ مسلمان پر تہمت رکھتی ہے اس کے اقارب پر اس کا بندوبست لازم ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۷۲: از مارہرہ مطہرہ باغ پختہ ضلع ایٹہ مسئولہ سید غلام شبر ۲۰ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید زن شوہر دار سے کہ اس کی بھاوج ہے مزاح کرتا ہے اور فحش

مزاح اور ہاتھاپائی کو بھی جائز رکھتا ہے بلاوسواس موقع بے موقع اس کے جسم کو ہاتھ لگانا مس کرنا روا جانتا ہے اور کہتا ہے کہ میرا یہ فعل مزاحا ہے کہ میں اس کے شوہر کے روبرو بھی ایسا ہی مزاح کرتا ہوں اور مذاق میں زید زن مذکور کی ٹانگیں پکڑ کر ایک پلنگ سے دوسرے پر اور دوسرے سے تیسرے پلنگ پر گھسیٹتا ہے اور اقربائے فریقین بھی اس کو دیکھ کر کچھ بھی تعرض نہیں کرتے تو کیا شرعاً یہ حرکت اور اقربا کا سکوت جائز ہے؟ بینوا توجروا۔

الجوا ب: یہ حرکات حرام ہیں اور ایسا مزاح ابلیسی مزاح ہے اور اگر شوہر واقعی دیکھتا اور اس پر راضی ہوتا ہے یا بقدرِ قدرت منع نہیں کرتا تو دیوث ہے اور دیوث پر جنت حرام ہے، نیز اقارب فریقین جو منع نہیں کرتے۔

Fatawa Ridawiyya Volume 13 Page 13

[They are] partners in sin and deserving of punishment. Allah Almighty said: "They used not to forbid one another from the wrong they committed. Evil indeed was that which they used to do." (Quran 5:79). And Allah knows best. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 273: From the village of Alipur, district Patna, requested by Mansab Ali Sahab, 12 Shaban 1337 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Shariah say regarding this matter: if a person, whether minor or adult, commits bestiality with a goat, cow, or buffalo, what is the ruling for that person in the Noble Shariah? And furthermore, is it permissible to eat the meat of that animal or to keep it?

The Answer: Admonish the minor, and for the adult, there is Ta’zir (discretionary punishment) which is at the discretion of the ruler. That animal should be slaughtered and destroyed; its meat and skin should be burnt, it should not be kept. It is stated in Durr-e-Mukhtar: "Legal punishment (Hadd) is not imposed for intercourse with an animal, rather it is punished by Ta'zir, and [the animal] is slaughtered then burnt, and it is disliked (Makruh) to benefit from it whether alive or dead, Mujtaba." There is no 'Hadd' (fixed penalty) for bestiality, but rather 'Ta'zir' is imposed, and the animal is slaughtered and burnt because gaining benefit from that animal, dead or alive, is disliked (Makruh), Mujtaba. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated: "This [ruling to burn/not eat] is when the animal is one whose meat is not eaten. If it is an animal whose meat is eaten, then eating it is permissible according to him (Imam Abu Hanifa), and they (Sahibayn) said it should not be burnt either. Zaylai and Nahr. And Allah Almighty knows best." This ruling pertains to the animal that is not eaten, but if it is an animal that is eaten, then eating it is permissible according to the Imam (Abu Hanifa), while the Sahibayn said it should also be burnt. Zaylai and Nahr. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 274: What do the scholars of religion and muftis of the clear Shariah say in this matter: regarding meeting such a person and...

---

1. Al-Quran al-Karim 79/5
2. Durr-e-Mukhtar, chapter on intercourse that necessitates [Hadd] and that which does not, Mujtabai Press, Delhi, 1/320.
3. Radd al-Muhtar, chapter on intercourse that necessitates [Hadd] and that which does not, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/155.

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 पृष्ठ 13

[वे] गुनाह में शरीक और अज़ाब के हक़दार हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "वे उन बुरे काम करने वालों को बुराई से मना नहीं करते थे, अलबत्ता जो वे करते थे वह बहुत बुरा है।" (कुरान 5:79)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 273: मौज़ा अलीपुर, ज़िला पटना से, सायल मनसब अली साहब, 12 शाबान 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर किसी व्यक्ति (नाबालिग या बालिग) ने बकरी, गाय या भैंस के साथ कुकर्म (पशु-मैथुन) किया, तो उस व्यक्ति के लिए शरीअत में क्या हुक्म है? और क्या उस जानवर का मांस खाना या उसे पालना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: नाबालिग को डांट-फटकार करें और बालिग पर ताज़ीर (सज़ा) है जिसका अधिकार हाकिम को है। उस जानवर को ज़िबह करके नष्ट कर दिया जाए; उसका मांस और खाल जला दी जाए, उसे पाला न जाए। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "जानवर से बदफ़ेली पर 'हद' नहीं है बल्कि उस पर 'ताज़ीर' लगाई जाए और जानवर को ज़िबह करके जला दिया जाए क्योंकि उस जानवर से जीवित या मृत अवस्था में लाभ प्राप्त करना मकरूह है, मुजतबा।" पशु से बदफ़ेली पर 'हद' नहीं है बल्कि उस पर 'ताज़ीर' लगाई जाए और जानवर को ज़िबह करके जला दिया जाए क्योंकि उस जानवर से जीवित या मृत अवस्था में लाभ प्राप्त करना मकरूह है, मुजतबा। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है: "यह हुक्म उस जानवर के बारे में है जिसे खाया नहीं जाता। अगर वह ऐसा जानवर हो जिसे खाया जाता है, तो उनके(इमाम अबू हनीफ़ा) नज़दीक उसे खाना जायज़ है, और उन दोनों (साहिबैन) ने फ़रमाया कि इसे जलाया भी न जाए। ज़ैलई और नह्र। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।" यह हुक्म उस जानवर के मुताल्लिक़ है जिसे खाया नहीं जाता, और अगर उसे खाया जाता हो तो खाना जायज़ है, इमाम साहब के नज़दीक, और साहिबैन ने फ़रमाया कि उसे जला भी दिया जाए। ज़ैलई और नह्र। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 274: उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ऐसे व्यक्ति से मिलना और...

---

1. अल-कुरान अल-करीम 79/5

2. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-वति अल-लज़ी यौजिब व अल-लज़ी ला यौजिब, मुतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/320
3. रद्दुल मुहतार, बाब अल-वति अल-लज़ी यौजिब व अल-लज़ी ला यौजिब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/155

شریک گناہ و مستحق عذاب ہیں، قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی کَانُوْا لَا یَتَنَاھَوْنَ عَنْ مُّنْکَرٍ فَعَلُوْہُ ؕ لَبِئْسَ مَا کَانُوْا یَفْعَلُوْنَ 1 واللہ تعالٰی اعلم۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا: وہ ان بد کرداروں کو برائی سے منع نہ کرتے تھے البتہ جو وہ کرتے تھے بہت برا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۷۳: از موضع علی پور ضلع پٹنہ مسئولہ منصب علی صاحب ۱۲ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ کسی شخص نابالغ یا بالغ نے بکری یا گائے یا بھینس کے ساتھ مجامعت کی اس شخص کے واسطے شرع شریف میں کیا حکم ہے؟ اور نیز اس جانور کا گوشت کھانا یا پالنا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: نابالغ کو تنبیہ کریں بالغ پر تعزیر ہے جس کا اختیار حاکم کو ہے، وہ جانور ذبح کر کے فنا کر دیا جائے گوشت کھال جلائیں، پالا نہ جائے۔ در مختار میں ہے: لایحد بوطئ بہیمۃ بل یعزر و تذبح ثم تحرق و یکرہ الانتفاع بھاحیۃ و میتۃ مجتبٰی۔2 حیوان سے بدفعلی پر حد نہیں ہے بلکہ اس پر تعزیر لگائی جائے اور جانور کو ذبح کر کے جلا دیا جائے کیونکہ اس جانور مردہ یا زندہ سے انتفاع حاصل کرنا مکروہ ہے، مجتبٰی۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: ھذا اذا کانت مما لایوکل فان کانت تؤکل جاز اکلھا عندہ و قالا لاتحرق ایضا زیلعی ونھر واللہ تعالٰی اعلم۔3 یہ حکم اس جانور کے متعلق ہے جس کو کھایا نہیں جاتا، اور اگر اس کو کھایا جاتا ہو تو کھانا جائز ہے، امام صاحب کے نزدیک اور صاحبین نے فرمایا اسکو جلا بھی دیا جائے زیلعی و نہر۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۷۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مسئلہ ہذا میں کہ ایسے شخص سے ملنا اور

1 القرآن الکریم ۷۹/۵ 2 درمختار باب الوطی الذی یوجب والذی لایوجبہ مطبع مجتبائی دہلی ۳۲۰/۱

3 ردالمحتار باب الوطی الذی یوجب والذی لایوجبہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۵۵/۳

Fatawa Rizvia | Volume 13 | Page 13

Question: What is the ruling regarding a person who, despite people's warnings, does not expel his adulterous sister or niece from his house, nor does he stop meeting her, and has even sworn an oath once that he will not meet her? Explain, and may you be rewarded.

Answer: It is obligatory upon this person to advise and admonish that woman. If he has the power to exercise any permissible severity, he should do so and should not fall short in the arrangements within his control. If this person does all these things and she still does not desist, then the burden of her sin is upon her alone; he is not responsible because Allah Almighty does not hold one person accountable for the sin of another.

Arabic: قَالَ تَعَالٰی وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۱۔

Urdu/English: Allah Almighty said: "No soul shall bear the burden (sin) of another." (T)

And if this person is displeased with her action but falls short in admonishing etc., then he will be a sinner because commanding good and forbidding evil, to the extent of one's ability, is necessary for a Muslim.

Arabic: قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من رای منکم منکرا فلیغیرہ بیدہ فان لم یستطع فبلسانہ فان لم یستطع فبقلبہ ذلک اضعف الایمان ۲۔

Urdu/English: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever among you sees an evil, let him change it with his hand; and if he is not able to do so, then with his tongue; and if he is not able to do so, then with his heart — and that is the weakest of faith." (T)

Muslims should admonish him, and if this person is pleased with these actions, then God forbid, he is a 'dayyuth' (one who lacks protective jealousy). Muslims should reason with him; if he does not desist, then stop socializing with him.

Arabic: فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۳ وَاللہ تعالیٰ اعلم۔

Urdu/English: (Allah Almighty said) "Do not sit with the wrongdoing people after the reminder." And Allah Almighty knows best. (T)

1. Al-Quran Al-Karim 6/164, 15/17, and 35/218
2. Sahih Muslim, Kitab al-Iman, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/51
3. Al-Quran Al-Karim 6/68

फतवा रज़विया | खंड 13 | पृष्ठ 13

प्रश्न: उस व्यक्ति के बारे में क्या हुक्म है जो लोगों की चेतावनी के बावजूद अपनी व्यभिचारी बहन या भांजी को अपने घर से नहीं निकालता और न ही उससे मिलना छोड़ता है, और एक बार कसम भी खा चुका है कि नहीं मिलूँगा। कृपया उत्तर दें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: इस व्यक्ति पर इतना अनिवार्य है कि वह उस महिला को समझाए-बुझाए। यदि वह किसी जायज़ सख्ती पर सक्षम है तो उसे अमल में लाए, और जो व्यवस्था उसके अधिकार में है उसमें कोताही न करे। यदि यह व्यक्ति ये सब बातें करता है और वह बाज़ नहीं आती, तो उसका पाप उसी पर है; इस पर कोई बोझ नहीं क्योंकि अल्लाह ताला एक के गुनाह में दूसरे को नहीं पकड़ता।

अरबी: قَالَ تَعَالٰی وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۱।

उर्दू/हिंदी: अल्लाह ताला ने फरमाया: "कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ (गुनाह) नहीं उठाएगा।" (त)

और यदि यह व्यक्ति उसके इस कृत्य से नाराज है लेकिन उसे समझाने आदि में कमी करता है तो वह गुनहगार होगा, क्योंकि जहाँ तक अपनी शक्ति में हो, भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना एक मुसलमान पर अनिवार्य है।

अरबी: قال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من رای منکم منکرا فلیغیرہ بیدہ فان لم یستطع فبلسانہ فان لم یستطع فبقلبہ ذلک اضعف الایمان ۲।

उर्दू/हिंदी: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "तुममें से जो कोई किसी बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके, यदि हाथ से शक्ति न हो तो ज़ुबान से, और यदि इससे भी शक्ति न हो तो फिर दिल से उसे बुरा जाने, और यह सबसे कमज़ोर ईमान है।" (त)

मुसलमान उसे समझाएं और यदि यह व्यक्ति इन हरकतों पर राज़ी है तो अल्लाह की पनाह वह 'दयूष' है। मुसलमान उसे समझाएं यदि वह बाज़ न आए तो उससे मेल-जोल छोड़ दें।

अरबी: فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۳ وَاللہ تعالیٰ اعلم۔	**उर्दू/हिंदी: (अल्लाह ताला ने फरमाया) "नसीहत याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ मत बैठो।" और अल्लाह ताला सबसे बेहतर जानता है। (त)**

1. अल-कुरान अल-करीम ६/१६४, १५/१७ और ३५/२१८
2. सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/५१
3. अल-कुरान अल-करीम ६/६८

पृष्ठ ६२८/६८८

راہ ورغبت کرنا کیسا ہے جو باوجود تنبیہ لوگوں کے اپنی بہن بھانجی زانیہ کو اپنے گھر سے نہیں نکالتا ہے اور نہ اس سے ملنا ترک کرتا ہے اور ایک بار حلف اٹھا چکا ہے کہ نہیں ملوں گا۔ بینوا توجروا۔

الجواب اس شخص پر اتنا واجب ہے کہ اس عورت کو سمجھائے فہمائش کرے، اگر کسی سختی جائز پر قدرت رکھتا ہوا سے بجا لائے، جو بند وبست اس کے ہاتھ ہو اس میں کوتاہی نہ کرے، اگر یہ شخص سب باتیں کرتا ہے اور وہ باز نہیں آتی تو اس کا وبال اسی پر ہے اس پر کچھ نہیں کہ اللہ تعالٰی ایک کے گناہ میں دوسرے کو نہیں پکڑتا۔

قال تعالٰی وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۱۔ **اللہ تعالٰی نے فرمایا: کوئی جان دوسرے کا بوجھ (گناہ) نہیں اٹھائے گی۔ (ت)**

اور اگر یہ شخص اس کی اس حرکت پر ناراض ہے مگر فہمائش وغیرہ میں کمی کرتا ہے تو گنہگار ہوگا کہ نیک بات کا حکم دینا اور بری بات سے روکنا جہاں تک اپنی قدرت میں ہو مسلمان پر ضرور ہے،

قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من رای منکم منکرا فلیغیرہ بیدہ فان لم یستطع فبلسانہ فان لم یستطع فبقلبہ ذلک اضعف الایمان ۲۔

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: جو تم میں سے کسی برائی کو دیکھے تو اس کو ہاتھ سے مٹائے اور اگر ہاتھ سے طاقت نہ ہو تو زبان سے اگر اس سے بھی طاقت نہ رکھے تو پھر دل سے برا جانے ، اور یہ کمزور ترین ایمان ہے۔(ت)

مسلمان اسے فہمائش کریں اور اگر یہ شخص ان حرکات پر راضی ہو تو معاذ اللہ دیوث ہے مسلمان اسے سمجھائیں، اگر باز نہ آئے تو اس سے میل جول چھوڑ دیں۔

فَلَا تَقْعُدُ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۳ وَاللہ تعالیٰ اعلم۔ **(اللہ تعالیٰ نے فرمایا) نصیحت یاد آنے کے بعد پھر ظالم لوگوں کے ساتھ مت بیٹھو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)**

۱ القرآن الکریم ۶/۱۶۴ و ۱۷/۱۵ و ۳۵/۲۱۸ ۲ صحیح مسلم کتاب الایمان قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۱ ۳ القرآن الکریم ۶/۶۸

Fatawa Ridawiyyah Volume 13 13

Issue 275: From Dera Ghazi Khan Block 12 sent by Maulvi Ahmad Bakhsh Sahib on 21 Dhu al-Qi'dah 1339 AH. To the Master of Scholars and the Virtuous, my trust and hope, may Allah Almighty prolong his shadow over the heads of those seeking benefit. After boundless greetings and a longing for visit that knows no bounds. Submission: In this mountainous region, some incidents occur where an adulterer and adulteress are killed in the act of adultery. In other cases, when they see a woman sitting or coming and going with a stranger, they first forbid it a few times. If she does not stop, they kill the woman, and if they can, they do not spare the stranger either. According to the noble Sharia, is the killer a sinner in both these cases or not? Please clarify and be rewarded.

Answer: Honorable Maulana, the most virtuous and glorious, may his noble deeds continue. There is much confusion regarding this matter. What this humble servant has researched from reliable books and Sharia proofs is that in the second case, killing these men and women is purely forbidden (Haram). The Sharia has not prescribed the punishment of killing for merely coming and going, or sitting together. Neither does this necessarily imply such seclusion (Khalwat). The truth is that for mere seclusion, or even for its precursors, the pure Sharia has not prescribed killing. The authority for political punishment (Siyasat) does not belong to anyone other than the Sultan (ruler), and even for the Sultan, it is not absolute. 'All this is known from the Sharia without obscurity.' (This is all clearly known from Sharia. - Translator) Consequently, this is the unjust killing of a Muslim, which is a severe major sin, and the killer is liable for Qisas (retaliation). In the first case also, the ruling is not absolute; rather, it is obligatory first to use deterrence, beating, and force. If they separate, then it is forbidden for common people to kill him. Yes, if four witnesses testify, or there are four confessions in four established Sharia sessions, then the Sultan will order stoning (Rajm) for the one who is Muhsan (married). It is mentioned in Nihayah of Imam Saghnaqi and then in Alamgiriyyah:

[Table Content] Arabic Text: Imam al-Hinduani (may Allah have mercy on him) was asked about a man who finds a man with his wife: Is it permissible for him to kill him? He replied: If he knows that he can be deterred from adultery by shouting, or by hitting with something other than a weapon, it is not permissible. But if he knows that he will not be deterred except by killing...

Urdu Translation in Table: Imam Hinduani was asked: If a person finds a stranger man committing an immoral act with his wife on the spot, would it be permissible for him to kill that stranger on the spot? He replied in the answer: If the husband is certain that this adulterer will stop by making a noise or by being beaten, then killing him will not be permissible. And if the husband is certain that he will not stop by scolding but rather by killing...

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 13

मसला 275: डेरा गाज़ी ख़ान ब्लॉक 12 से मौलवी अहमद बख्श साहब द्वारा प्रेषित, 21 ज़िल-क़ादह 1339 हिजरी। हज़रत मलिकुल उलमा वल फ़ुज़ला, मेरे भरोसेमंद और उम्मीद, अल्लाह ताला उनका साया फ़ायदा उठाने वालों के सरों पर हमेशा रखे। असीम नियाज़ और मुलाक़ात के बेपनाह शौक़ के बाद। निवेदन है कि इस पहाड़ी इलाके में कुछ ऐसी घटनाएँ होती हैं कि ज़िना करने वाले मर्द और औरत को ज़िना की हालत में क़त्ल कर दिया जाता है, और कुछ घटनाएँ ऐसी हैं कि जब उनके नज़दीक औरत किसी अजनबी के साथ बैठती या आती-जाती देखी जाती है, तो पहले उसे चंद बार मना करते हैं और उसके बाज़ न आने के बाद उस औरत को क़त्ल कर देते हैं और अगर हो सके तो उस अजनबी को भी नहीं छोड़ते। शरीयत-ए-मुताहरा के मुताबिक इन दोनों सूरतों में क़ातिल गुनहगार है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि अज्र पाएं।

जवाब: जनाब मौलाना अल-मुकर्रम ज़िल फ़ज़्ल अल-अतम वल मजद अल-अकरम दामत मकारमुह, इस सिलसिले में बहुत बेचैनी है। और इस फ़क़ीर ने मोतबर किताबों और शरई दलीलों से जो तहक़ीक़ की है वो ये है कि दूसरी सूरत में उन मर्द और औरत का क़त्ल सरासर हराम है। शरीयत ने सिर्फ आने-जाने और उठने-बैठने की सज़ा क़त्ल नहीं रखी, और न ही ये इतनी खलवत (एकांत) को लाज़िम करता है। हक़ ये है कि महज़ खलवत बल्कि इसके मुक़द्दिमात पर भी शरीयत-ए-मुताहरा ने क़त्ल नहीं रखा। और सियासत (सज़ा देने) का अख्तियार सुल्तान के अलावा किसी और को नहीं है, बल्कि सुल्तान को भी मुतलक़ तौर पर नहीं है। 'ये सब कुछ शरीयत से वाज़ेह तौर पर मालूम है।' लिहाज़ा ये एक मुसलमान का नाहक़ क़त्ल हुआ और ये सख़्त कबीरा गुनाह है और क़ातिल पर क़िसास वाजिब है। पहली सूरत में भी हुक्म मुतलक़ नहीं है, बल्कि वाजिब है कि पहले ज़ज्र-ओ-तौबीख़, मार-पीट और सख़्ती करें। अगर वो अलग हो जाएँ तो अब आम जनता के लिए उसका क़त्ल हराम है। हाँ, अगर चार गवाहियाँ गुज़रें या शरई तौर पर चार मज्लिसों में चार इक़रार हों, तो उनमें से जो मोहसिन (शादीशुदा) हो, सुल्तान उसे रज्म (पत्थर मार कर मौत) का हुक्म देगा। निहाया इमाम सग्नाक़ी और फिर आलमगीरिया में है:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: इमाम हिन्दुवानी (रहमतुल्लाहि अलैहि) से एक ऐसे आदमी के बारे में सवाल किया गया जिसने अपनी बीवी के साथ किसी मर्द को पाया: क्या उसके लिए उसे क़त्ल करना जायज़ है? उन्होंने कहा: अगर उसे पता हो कि वह चिल्लाने या बिना हथियार के मारने से ज़िना से

रुक जाएगा, तो क़त्ल जायज़ नहीं है। और अगर वह जानता हो कि वह क़त्ल के अलावा नहीं रुकेगा...

तालिका में उर्दू अनुवाद: इमाम हिन्दुवानी से सवाल किया गया कि अगर कोई शख़्स अपनी बीवी के साथ किसी गैर मर्द को बदफ़ेअ (बुरा काम) करते हुए मौके पर पाए तो क्या उसके लिए जायज़ होगा कि उस गैर मर्द को मौके पर क़त्अ कर दे? तो आपने जवाब में फरमाया: अगर शौहर को यकीन हो कि ये ज़ानी शोर मचाने या पिटाई करने से बाज़ आ जाएगा तो क़त्ल करना हलाल न होगा और अगर शौहर को यकीन हो कि डांट-डपट से बाज़ न आएगा बल्कि क़त्ल...

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

مسئلہ ۲۷۵: از ڈیرہ غازی خاں بلاک ۱۲ مرسلہ مولوی احمد بخش صاحب ۲۱ ذی القعدہ ۱۳۳۹ھ

حضرت ملک العلماء والفضلاء ثقتی و رجائی ادام اللہ تعالٰی ظلہ علی رؤوس المستفیضین، نیاز بے انداز و شوق زیارت کے بعد جن کا کوئی حد انداز نہیں۔ گزارش اس پہاڑی علاقہ میں بعض واقعات ایسے ہوتے ہیں کہ زانی و زنیہ کو زنا کی حالت میں قتل کر ڈالتے ہیں، اور بعض واقعات یہ ہیں کہ جب ان کے نزدیک عورت کسی بیگانہ کے ساتھ بیٹھتا ہوا یا آتا جاتا ہوا دیکھتے ہیں تو پہلے چند مرتبہ اسے منع کرتے ہیں اور اس کے باز نہ رہنے کے بعد اس عورت کو قتل کر دیتے ہیں اور اگر کر سکتے ہیں تو اس شخص بیگانہ کو بھی نہیں چھوڑتے، بموجب شرع شریف ان دونوں صورتوں میں قاتل گناہگار ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جناب مولانا المکرم ذی الفضل الاتم والمجد الاکرم دامت مکارمہ، اس سلسلہ میں اضطراب کثیر ہے اور وہ جو فقیر کو کتب معتمدہ دلائل شرعیہ سے تحقیق ہوا یہ ہے کہ صورت ثانیہ میں ان مرد وزن کا قتل محض حرام ہے، فقط آنے جانے اٹھنے بیٹھنے کی سزا شریعت نے بھی قتل نہ رکھی، نہ اس قدر خلوت کو مستلزم، اور حق یہ کہ مجرد خلوت بلکہ دواعی پر بھی شرع مطہر نے قتل نہ رکھا، اور سیاست کا اختیار غیر سلطان کو نہیں بلکہ سلطان کو بھی علی الاطلاق نہیں کل ذلك معلوم من الشرع بلاخفاء (یہ سب کچھ شرع سے بلاخفاء معلوم ہے۔ ت) لاجرم یہ ناحق قتل مسلم ہوا اور وہ سخت کبیرہ شدہ ہے اور قاتل پر قصاص عائد۔ صورت اولٰی میں بھی حکم مطلق نہیں بلکہ واجب کہ پہلے زجر و ضرب و قہر کریں، اگر جدا ہو جائیں تو اب عامہ کو اس کا قتل حرام ہے، ہاں شہادت اربع گزریں یا مروجہ شرعی چار مجلسوں میں چار اقرار ہوں، تو ان میں جو محصن ہو سلطان اسے رجم فرمائے گا، نہایہ امام سغناقی پھر عالمگیریہ میں ہے:

[جدول] سئل الهندواني رحمه الله تعالىٰ عن رجل وجد مع امرأته رجلا ايحل له قتله قال ان كان يعلم انه ينزجر عن الزناء بالصياح والضرب بمادون السلاح لا يحل وان علم انه لا ينزجر الا بالقتل امام

ہندوانی سے سوال کیا گیا کہ اگر کوئی شخص اپنی بیوی کے ساتھ کسی غیر مرد کو بد فعلی کرتے ہوئے موقعہ پر پائے تو اس کو جائز ہوگا کہ اس غیر مرد کو موقعہ پر قتل کردے؟ تو آپ نے جواب میں فرمایا اگر خاوند کو یقین ہو کہ یہ زانی شور مچانے یا پٹائی کرنے سے باز آجائے تو قتل کرنا حلال نہ ہوگا اور اگر خاوند کو یقین ہو کہ ڈانٹ ڈپٹ سے باز نہ آئے گا بلکہ قتل

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

[Arabic Text]: It is lawful for him to kill [him], and if the woman complied, it is lawful to kill her as well, as it is in Al-Nihayah. [Urdu Translation]: If it is necessary, then killing will be lawful, and if the wife's consent is involved in it, then killing her will also be lawful, as it is in Al-Nihayah. (T)

And if they do not comply, then in this case, even though killing the adulterer unconditionally and the woman as well if she was not coerced, it is the removal of evil only during the state of engagement [in the act] and not after finishing from it, and being a ruler is not a condition for this.

[Arabic Text]: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever among you sees an evil, let him change it with his hand..." to the end of the Hadith. [Urdu Translation]: The Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Whoever among you sees an evil, let him stop it with his hand..." to the end of the Hadith. (T)

Then in [Fatawa] Hindiyyah it is stated: [Arabic Text]: They [the jurists] said: Every Muslim has the right to establish Tazir (discretionary punishment) while the sin is being committed. After the act, that is not for anyone but the ruler. It is stated in Al-Qunyah: If one sees someone else in a lewd act warranting Tazir and punishes him without the permission of the Muhtasib (inspector), then it is permissible. If he punishes him after the act has finished, the Muhtasib may punish the punisher if he wishes. [Urdu Translation]: The jurists said: Every Muslim has the right to give Tazir to stop someone engaged in sin, but after finishing from the sin, giving Tazir to anyone is the right only of the ruler. It is stated in Qunyah: If one finds another engaged in such a sin for which Tazir can be obligatory, and punishes without the permission of the Muhtasib, it is permissible. And if the one who gives Tazir after finishing from that sin, the Muhtasib can give him Tazir if he wishes. (T)

But this matter is between him and Allah; the ruler will not accept [it] and until he provides evidence with just witnesses, he will be killed [in retaliation], or if the slain person was well-known and famous for filth, evil, and the habit of adultery and profligacy, [the ruler] will take blood money from the killer for him. It is stated in Durr al-Mukhtar: [Arabic Text]: The principle is that every person who sees a Muslim committing adultery, it is lawful for him to kill him, and he only refrains out of fear that it will not be believed that he committed adultery. [Urdu Translation]: The rule is that if a Muslim is found engaged in adultery, it is lawful for every person to kill him,

and he should refrain from killing out of fear that he will not be able to prove his adultery before the Qadhi (judge). (T)

---

1. Fatawa Hindiyyah, Section on Tazir, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/167
2. Sahih Muslim, Book of Faith, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/51
3. Fatawa Hindiyyah, Section on Tazir, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/167
4. Durr al-Mukhtar, Chapter on Tazir, Matba' Mujtabai Delhi, 1/326

फतावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

[अरबी पाठ]: उसके लिए हत्या करना वैध है, और यदि स्त्री ने सहमति दी थी, तो उसके लिए उसे भी मारना वैध है, जैसा कि अल-निहाया में है। [उर्दू अनुवाद]: यदि आवश्यक हो तो हत्या करना हलाल होगा और यदि पत्नी की इच्छा इसमें शामिल है तो उसे भी मारना हलाल होगा जैसा कि निहाया में है। (त)

और यदि वे न मानें तो इस स्थिति में यद्यपि व्यभिचारी को बिना किसी शर्त के और स्त्री को भी यदि वह विवश नहीं थी, केवल संलिप्तता की स्थिति में बुराई को दूर करना है, न कि उससे निवृत्त होने के बाद, और इसके लिए शासक होना शर्त नहीं है।

[अरबी पाठ]: अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) ने कहा: "तुम में से जो कोई बुराई देखे, वह उसे अपने हाथ से बदल दे..." हदीस के अंत तक। [उर्दू अनुवाद]: हुज़ूर अलैहिस सलातो वस्सलाम ने फरमाया: "जो तुम में से किसी बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोके।" हदीस के अंत तक। (त)

फिर हिन्दिया में है: [अरबी पाठ]: फकीहों ने कहा: हर मुसलमान को पाप के दौरान ताज़ीर (विवेकाधीन दंड) देने का अधिकार है। पाप के बाद, वह शासक के अलावा किसी के लिए नहीं है। अल-कुन्या में कहा गया है: यदि कोई किसी अन्य को ऐसे अश्लील कृत्य में पाता है जिसके लिए ताज़ीर अनिवार्य है और वह मुहतसिब की अनुमति के बिना उसे दंडित करता है, तो यह जायज़ है। यदि वह कृत्य समाप्त होने के बाद उसे दंडित करता है, तो मुहतसिब चाहे तो दंड देने वाले को दंडित कर सकता है। [उर्दू अनुवाद]: फकीहों ने फरमाया: गुनाह में मसरूफ को रोकने के लिए हर मुसलमान को ताज़ीर का हक है, लेकिन गुनाह से फारिग होने के बाद किसी पर ताज़ीर लगाना सिर्फ हाकिम का हक है। कुन्या में फरमाया: किसी गैर को ऐसे गुनाह में मसरूफ पाया जिस पर ताज़ीर वाजिब हो सकती है तो मुहतसिब की इजाज़त के बिना लगाई तो जायज़ है और इस गुनाह से फारिग होने के बाद ताज़ीर लगाने वाले को मुहतसिब चाहे तो ताज़ीर लगा सकता है। (त)

लेकिन यह मामला उसके और अल्लाह के बीच है; शासक इसे स्वीकार नहीं करेगा और जब तक वह न्यायपूर्ण गवाहों से प्रमाण नहीं देता, वह उसे [बदले में] मार डालेगा, या यदि मृतक अपनी गंदगी, बुराई और व्यभिचार और दुराचार की आदत के लिए प्रसिद्ध और विख्यात था, तो वह हत्यारे से उसका खून का मुआवज़ा (खूंबहा) लेगा। दुर्रे मुख्तार में है: [अरबी पाठ]: नियम यह है कि हर व्यक्ति

जो किसी मुसलमान को व्यभिचार करते देखता है, उसके लिए उसे मारना वैध है, और वह केवल इस डर से रुक जाता है कि वह विश्वास नहीं किया जाएगा कि उसने व्यभिचार किया है। [उर्दू अनुवाद]: कायदा यह है कि अगर किसी मुसलमान को ज़िना में मसरूफ पाए तो हर शख्स को उसे कत्ल करना हलाल है, और इस खौफ से कि कत्ल के बाद काजी के यहाँ उसका ज़िना साबित न कर सकेगा कत्ल से बाज़ रहे। (त)

---

1. फतावा हिन्दिया, ताज़ीर पर अनुभाग, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, २/१६७
2. सहीह मुस्लिम, ईमान की किताब, कदीमी कुतुब खाना कराची, १/५१
3. फतावा हिन्दिया, ताज़ीर पर अनुभाग, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, २/१६७
4. दुर्रे मुख्तार, ताज़ीर पर अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/३२६

पृष्ठ ६३०/६८८

حل لہ القتل وان طاوعتہ المرأۃ حل لہ قتلھا ایضا کذا فی النھایہ۔ ضروری ہے تو قتل کرنا حلال ہو گا اور اگر بیوی کی مرضی اس میں شامل ہے تو اس کو بھی قتل کرنا حلال ہو گا جیسا کہ نہایہ میں ہے۔ (ت)

اور اگر نہ مانیں تو اس صورت میں اگر چہ زانی کو مطلقاً اور عورت کو بھی اگر مکرمہ نہ ہو صرف عین حالت اشتغال میں نہ بعد اس سے فراغ کے قتل ازالہ منکر ہے اور اس کے لئے سلطان ہونا شرط نہیں۔

قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من رأی منکم منکرا فلیغیرہ بیدہ الحدیث۔ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: جو تم میں سے کسی برائی کو دیکھے تو اس کو اپنے ہاتھ سے روکے۔ الٰی آخر الحدیث۔ (ت)

پھر ہندیہ میں ہے: قالوا للکل مسلم اقامۃ التعزیر حال مباشرۃ المعصیۃ بعد المباشرۃ فلیس ذلک لغیر الحاکم قال فی القنیۃ رأی غیرہ علی فاحشۃ موجبۃ للتعزیر فعزرہ بغیر اذن المحتسب فالمحتسب ان یعزر المعزر ان عزرہ بعد الفراغ منھا فقہاء نے فرمایا: گناہ میں مصروف کو روکنے کے لئے ہر مسلمان کو تعزیر کا حق ہے، لیکن گناہ سے فراغت کے بعد کسی پر تعزیر لگانا صرف حاکم کا حق ہے۔ قنیہ میں فرمایا: کسی غیر کو ایسے گناہ میں مصروف پایا جس پر تعزیر واجب ہو سکتی ہے تو محتسب کی اجازت کے بغیر لگائی تو جائز ہے اور اس گناہ سے فراغت کے بعد تعزیر لگانے والے کو محتسب چاہے تو تعزیر لگا سکتا ہے۔ (ت)

مگر یہ امر فیما بینہ وبین اللہ ہے حاکم نہ مانے گا اور جب تک بینہ عادلہ سے ثبوت نہ دے اسے قتل کریگا یا اگر مقتول معروف و مشہور بخباثت و شر و ور عادت زنا و فجور ہے قاتل سے اس کا خوں بہا لے گا۔ در مختار میں ہے: الاصول ان کل شخص رأی مسلما یزنی ان یحل لہ قتلہ و انما یمتنع خوفا من ان لا یصدق انہ زنی۔ قاعدہ یہ ہے کہ اگر کسی مسلمان کو زنا میں مصروف پائے تو ہر شخص کو اسے قتل کرنا حلال ہے، اور اس خوف سے کہ قتل کے بعد قاضی کے ہاں اس کا زنا ثابت نہ کر سکے گا قتل سے باز رہے۔ (ت)

---

۱ فتاوٰی ہندیہ فصل فی التعزیر نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۱۶۷ ۲ صحیح مسلم کتاب الایمان قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۱ ۳ فتاوٰی ہندیہ فصل فی التعزیر نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۱۶۷ ۴ درمختار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۲۶

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Text]: Some have also attributed this to Jami' al-Fatawa and the Chapter of Hudud in al-Bazzaziyya. The summary is that it is permissible in terms of religious conscience (diyanatan), but not judicially (qada'an); hence, the judge will not accept him [the claimant] except with proof. It is apparent that the detail mentioned here regarding theft follows what is stated in al-Bazzaziyya and elsewhere: If the owner of the house has no proof for theft, and if the victim was not known for evil or theft, the owner of the house is killed in retaliation (qisas). If he was suspected of it, it is likewise according to analogy (qiyas). However, by juristic preference (istihsan), blood money (diyat) is mandatory from his wealth for the heirs of the deceased because the circumstantial evidence created a doubt regarding retaliation, but not regarding financial penalty. 1

[Urdu Text]: Some have also attributed this point to Jami' al-Fatawa and the chapter of Hudud in Bazzaziyya. Its essence is that this matter is permissible in terms of religious conscience (diyanatan) but not judicially (qada'an). Therefore, the judge will not accept the claim of adultery without witnesses. It appears that the detail intended here is what has been described in the chapter on theft, which in Bazzaziyya and others is as follows: (A householder kills a thief on the spot). If the householder has no witnesses for the theft and the deceased was not known for crimes or theft, the judge will execute the killer in retaliation (qisas). If the killed thief was famous for theft, analogy (qiyas) would still give the same ruling. However, juristic preference (istihsan) is that in this case, instead of execution, blood money (diyat) will be mandatory on the killer, which must be given to the heirs of the deceased. This is because the situation created a doubt regarding retaliation, hence the death penalty is avoided, but no doubt was created regarding the financial penalty, i.e., blood money. (T)

This is what has been refined according to this humble servant.

[Arabic Text]: And here I am mentioning to you what is in al-Durr al-Mukhtar and the contradiction presented against it in Radd al-Muhtar, and what I discussed in Jadd al-Mumtar, so that the matter becomes as clear as daylight. My success is only by the Almighty, the All-Forgiving. It is said in Tanwir al-Absar and al-Durr al-Mukhtar: Tazir (discretionary punishment) can be (by execution).

[Urdu Text]: And now I present to you Durr-e-Mukhtar and the contradiction presented against it in Radd al-Muhtar, and then what discussion I have presented in Jadd al-Mumtar, so that the matter may become clear like day, while my success is only from Allah the Almighty. In Tanwir-ul-Absar and Durr-e-Mukhtar, it is stated: (The form of execution as a discretionary punishment is) for example:

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tazir, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/180.

फतावा रिज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

रद अल-मुह्तार में उल्लेख है:

[अरबी पाठ]: कुछ लोगों ने इसे जामिउल फतावा और बज़्ज़ाज़िया के'किताबुल हुदूद' (दंडों के अध्याय) से भी जोड़ा है। इसका सारांश यह है कि यह मामला धार्मिक रूप से (दियानतन) वैध है, लेकिन न्यायिक रूप से (क़ज़ाअन) नहीं। इसलिए काजी बिना सबूत के दावे को स्वीकार नहीं करेगा। यह स्पष्ट है कि यहाँ चोरी के संबंध में बताए गए विवरण का ही अर्थ लिया जाएगा, जो बज़्ज़ाज़िया आदि में इस प्रकार है: यदि गृहस्वामी के पास चोरी का कोई सबूत न हो, और मृतक अपराधों और चोरी के लिए प्रसिद्ध न हो, तो गृहस्वामी को प्रतिशोध (किसास) में मार दिया जाएगा। यदि वह इसके लिए संदिग्ध था, तो कयास (तर्क) के अनुसार भी यही होगा। लेकिन इस्तिहसान (शरिया वरीयता) के अनुसार, उसके धन से मृतक के वारिसों के लिए दियत (रक्त मूल्य) देना अनिवार्य होगा क्योंकि परिस्थितियों ने किसास के संबंध में संदेह पैदा किया, लेकिन वित्तीय दंड में नहीं। 1

[उर्दू पाठ]: इस बात को कुछ लोगों ने जामिउल फतावा और बज़्ज़ाज़िया के'किताबुल हुदूद' के अध्याय की ओर भी निर्दिष्ट किया है। इसका सारांश यह है कि यह बात धार्मिक रूप से (दियानतन) जायज़ है, न्यायिक रूप से (क़ज़ाअन) नहीं। इसलिए काजी बिना गवाही के ज़िना के दावे को स्वीकार नहीं करेगा। यह स्पष्ट है कि यहाँ वही विवरण अभिप्रेत है जो चोरी के अध्याय में वर्णित है, और बज़्ज़ाज़िया आदि में वह इस प्रकार है: (गृहस्वामी ने चोर को मौके पर ही मार दिया) और गृहस्वामी के पास चोरी का कोई गवाह न हो, और मृतक अपराधों और चोरी के लिए प्रसिद्ध भी न हो, तो काजी कातिल को किसास के तौर पर मृत्युदंड देगा। यदि मृतक चोर चोरी के लिए प्रसिद्ध है, तो कयास फिर भी यही आदेश देता है, जबकि इस्तिहसान यह है कि इस स्थिति में गृहस्वामी को मृत्युदंड देने के बजाय दियत अनिवार्य होगी, जो मृतक के वारिसों को दी जाएगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि परिस्थितियों ने किसास के संबंध में संदेह पैदा कर दिया, जिसके कारण मृत्युदंड नहीं दिया जाएगा, लेकिन वित्तीय दंड यानी दियत में कोई संदेह पैदा नहीं हुआ। (त)

यह वह है जिसे इस फकीर (लेखक) के अनुसार शोधित किया गया है।

[अरबी पाठ]: और अब मैं आपको 'दुर्र-ए-मुख्तार' और उस पर 'रद अल-मुह्तार' द्वारा किए गए विरोध के बारे में बता रहा हूँ, और जो मैंने 'जद अल-मुम्तार' में चर्चा की है, ताकि मामला दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो जाए। मेरी सफलता केवल सर्वशक्तिमान और क्षमाशील अल्लाह के साथ

है। 'तनवीरुल अबसार' और 'दुर्र-ए-मुख्तार' में कहा गया है: ताज़ीर (विवेकाधीन दंड) (मृत्युदंड द्वारा) हो सकता है।

[उर्दू पाठ]: और अब मैं आपके सामने 'दुर्र-ए-मुख्तार' और उस पर 'रद अल-मुह्तार' ने जो विरोध पेश किया है, और फिर मैंने 'जद अल-मुम्तार' में जो विमर्श प्रस्तुत किया है, वह पेश करता हूँ ताकि मामला दिन के उजाले की तरह स्पष्ट हो जाए, जबकि मुझे केवल अल्लाह ताला से ही सफलता प्राप्त हुई। 'तनवीरुल अबसार' और 'दुर्र-ए-मुख्तार' में कहा गया है: (ताज़ीर के तौर पर मृत्युदंड का स्वरूप यह है) जैसे कि:

1. रद अल-मुह्तार, ताज़ीर का अध्याय, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/180।

ردا لمحتار میں ہے :

عزاہ بعضھم ایضاً الی جامع الفتاوی وحدود البزازیة ، وحاصلہ انہ یحل دیانة لا قضاء فلا یصدقہ القاضی الابینة ، ولاظاھر انہ یأتی ھنا التفصیل المذکور فی السرقة وھو ما فی البزازیة وغیرھا ان لم یکن لصاحب الدار بینة فان لم یکن المقتول معروفاً بالشر والسرقة قتل صاحب الدار قصاصاً وان کان متھما بہ فکذلك قیاساً وفی الاستحسان تجب الدیة فی مالہ لورثة المقتول لان دلالة الحال اورثت شبھة فی القصاص لافی المال 1 ۔

اس بات کو بعض نے جامع الفتاوی اور بزازیہ کے باب الحدود کی طرف بھی منسوب کیا ہے ، اور اس کا حاصل یہ ہے کہ یہ بات دیانۃً جائز ہے قضاءً نہیں ، لہذا قاضی زنا کو بغیر گواہی کے تسلیم نہ کرے گا ، اور ظاہر یہ ہے کہ یہاں وہ تفصیل مراد ہوگی جو سرقہ کے باب میں بیان ہوئی ہے اور وہ بزازیہ وغیرہ میں یوں ہے (گھر والے نے چور کو موقعہ پر قتل کردیا) تو گھر والے کے پاس چوری پر گواہ نہ ہوں اور وہ مقتول جرائم اور چوری میں مشہور بھی نہ ہو تو قاضی قاتل کو قصاص کے طور پر قتل کرے گا، اور مقتول چور اگر چوری میں مشہور ہے تو قیاس پھر بھی یہی حکم کرتا ہے جبکہ استحسان یہ ہے کہ اس صورت میں گھر والے قاتل کو قتل کی بجائے دیت لازم ہوگی جو مقتول کے ورثاء کو دینی ہوگی کیونکہ موقعہ نے قصاص کے متعلق شبہ پیدا کیا جس کی وجہ سے قتل نہ کیا جائے گا لیکن مالی سزا یعنی دیت میں شبہ پیدا نہ کیا۔(ت)

یہ ہے وہ جو فقیر کے نزدیک منقح ہوا۔

وھا انا اذکر لکم فی الدر المختار وما عارضه به فی رد المحتار و ماتکلمت علیه فی جد الممتار لیتجلی الامر جلاء النهار وما توفیقی الا بالـعزیز الغفار قال فی تنویر الابصار والدر المختار (ویکون) التعزیر (بالقتل)

اور اب میں آپ کو در مختار اور اس پر ردالمحتار نے معارضہ پیش کیا اور پھر میں نے جدالممتار میں جو اس پر کلام پیش کیا ہے ، پیش کرتا ہوں تاکہ روز روشن کی طرح معاملہ واضح ہو جائے جبکہ مجھے صرف اللہ تعالی سے توفیق حاصل ہوئی ، تنویر الابصار اور در مختار میں فرمایا: (تعزیر کے طور پر قتل کی صورت یہ ہے) مثلاً

1 ردالمحتار باب التعزیر داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۸۰/۳

Fatawa-e-Razvia, Volume Thirteen, Page 13.

Like someone who finds a man with a woman who is not lawful for him, even if he forces her, she has the right to kill him and his blood is in vain. Similarly, for a boy (in case of forced sodomy), according to Wahbaniya. (This is if he knows that the person will not desist by shouting or hitting with something other than a weapon; otherwise) if he knows he will desist by what was mentioned (then killing is not permitted). (And if the woman is consenting, he can kill both of them.) This was attributed by Az-Zailai to Al-Hindwani. Then he said (and) in Munyat-ul-Mufti: (If a man finds someone committing adultery with his wife or with a female mahram of his, and both are consenting, he may kill both of them) - end of quote. This was affirmed in Al-Durar. It is stated in Al-Bahr that the implication of this discussion is the difference between a stranger woman and others. Killing is not permissible with a stranger woman except under the aforementioned condition of not desisting as stated. In other cases, it is permissible (absolutely) - end of quote. However, this was refuted in Al-Nahr based on what is in Al-Bazzaziya and others regarding the equality between a stranger woman and others. This is also indicated by Al-Hindwani's use of the indefinite noun for 'woman', implying any woman. Yes.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३।

जैसे किसी ने किसी पुरुष को ऐसी महिला के साथ पाया जो उसके लिए जायज़ नहीं है, भले ही वह उसके साथ ज़बरदस्ती कर रहा हो, तो उस महिला को उसे मारने का अधिकार है और उसका खून बेकार है (यानी कोई सज़ा नहीं)। इसी तरह लड़के के मामले में (ज़बरदस्ती कुकर्म की स्थिति में), वहबानिया के अनुसार। (यह तब है जब वह जानता हो कि वह चिल्लाने या हथियार के बिना किसी चीज़ से मारने से बाज़ नहीं आएगा; अन्यथा) यदि वह जानता है कि वह बताई गई बातों से बाज़ आ जाएगा (तो मारना जायज़ नहीं है)। (और अगर महिला की रज़ामंदी हो, तो वह दोनों को मार सकता है।) अल-ज़ैली ने इसे अल-हिंदवानी की ओर इसी तरह मंसूब किया है। फिर उन्होंने कहा (और) मुनियत-उल-मुफ़्ती में है: (यदि कोई अपनी पत्नी के साथ किसी को ज़िना में लिप्त पाए या अपनी किसी महरम महिला के साथ, और दोनों की रज़ामंदी हो, तो वह दोनों को मार डाले) - उद्धरण समाप्त। अल-दुरर में इसकी पुष्टि की गई है। अल-बहर में कहा गया है कि इस बहस का सार यह है कि एक अजनबी महिला और अन्य (पत्नी या महरम) में अंतर है। अजनबी महिला के मामले में मारना केवल तभी जायज़ है जब वह पहले बताई गई शर्त के अनुसार बाज़ न आए। अन्य मामलों में, यह (निरपेक्ष रूप से) जायज़ है - उद्धरण समाप्त। हालाँकि, अल-नहर में अल-बज़ाज़िया और अन्य के आधार पर इसका खंडन किया गया है कि अजनबी और गैर-अजनबी सभी महिलाओं का मामला बराबर है। अल-हिंदवानी के बयान में महिला के लिए 'नकरा' (अनिश्चित संज्ञा) का उपयोग भी इसी ओर संकेत करता है कि कोई भी महिला हो। हाँ।

فتاوی رضویہ ، جلد تیرہ دہم ، صفحہ ۱۳۔

ایک شخص نے کسی مرد کو غیر محرم کے ساتھ پایا تو اگر عورت سے جبراً زنا کر رہا ہو تو اس عورت نے زانی کو موقعہ پر قتل کر دیا یا لڑکے سے جبراً بد فعلی کرتے ہوئے لڑکے نے اس کو قتل کر دیا ہو تو یہ قتل مباح ہوا اور اس کا خون معاف ہے ، وھبانیة - بشرطیکہ قتل کرنے والے کو یقین ہو کہ یہ شور مچانے یا ہتھیار سے کم کی ضرب سے باز نہ آئے گا، (ورنہ) اگر معلوم ہو کہ مذکورہ کوشش سے باز آجائیگا تو پھر (روا نہیں) یعنی باز کرنے کے لئے قتل مباح نہیں ہے اور اگر (مرد کے ساتھ عورت بھی مرضی سے مبتلائے زنا ہو تو موقعہ دیکھنے والا دونوں کو قتل کر دے) اس کو زیلعی نے ہندوانی کی طرف ایسے ہی منسوب کیا ہے، پھر کہا (اور) منیۃ المفتی میں ہے (اگر اس کی بیوی کے ساتھ کوئی زنا میں مصروف ہے یا اس کی محرمہ عورت کے ساتھ مصروف زنا ہے اور دونوں کی مرضی شامل ہے تو دونوں کو قتل کر دے) اھ، اور اس بات کو درر میں ثابت رکھا ہے، اور بحر میں فرمایا کہ اس بحث کا مفاد یہ ہے کہ اجنبی عورت اور اپنی بیوی یا محرمہ عورت میں فرق ہے کہ اجنبی عورت کے ساتھ مصروف زنا پائے تو مذکورہ شرط کہ شور یا ہتھیار کے بغیر باز نہ کے بغیر قتل حلال نہ ہوگا، اور اجنبی عورت کے غیر یعنی بیوی یا محرمہ عورت کی صورت میں قتل حلال ہے (مطلقاً) اھ، اور اس کو نہر میں بزازیہ وغیرہ کے بیان پر کہ تمام عورتوں یعنی اجنبی اور غیر اجنبی کا معاملہ مساوی ہے، رد کیا ہے۔ اور اس پر ہندوانی کے بیان میں عورت کو نکرہ ذکر کرنا بھی دلالت کرتا ہے کہ کوئی عورت ہو،

Fatawa Razawiyya, Volume 13

[Arabic Section]: What is in 'al-Munya' is absolute, so it should be interpreted as restricted so that their words agree. This is why in 'al-Wahbaniyyah', the mentioned condition was stated absolutely, and that is the truth without the condition of being 'ihsan' (married status), because it is not part of the 'hadd' (prescribed punishment), but rather part of enjoining good (amr bi al-ma'ruf). In 'al-Mujtaba', the principle is that whoever sees a Muslim committing adultery, it is lawful for him to kill him; however, he refrains out of fear that he will not be believed about the adultery. I have written in 'Jadd al-Mukhtar' regarding the statement "and in others it is lawful": I say, the purpose is the removal of evil, and whenever it can be achieved without killing, that alternative is determined. Administration/political punishment (siyasa) is not for anyone other than the Imam. Killing a wife or a mahram (unmarriageable relative) instead of a stranger woman would only be personal revenge, whereas removing evil is for the sake of Allah Almighty. There is no difference between a stranger woman and others; they are all handmaidens of Allah Almighty equally. Regarding this is the hadith of Sa'd bin 'Ubadah (may Allah be pleased with him), and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade him from killing. So, the truth in my view is the equality among women and the restriction due to the lack of deterrence without absolute killing.

[Urdu Section]: Although there is an absolute statement in Munyat al-Mufti, this absolute should be taken as restricted so that everyone's statement is considered consistent. For this reason, Wahbaniyya has absolutely affirmed the mentioned condition, and this is the truth. In this killing, being married is not a condition because this situational killing is not a hadd (legal punishment), but a form of enjoining good (Amr bi al-Ma'ruf). In Mujtaba, it is stated that the rule is: whoever finds a Muslim engaged in adultery, it is lawful for him to kill him, but he should not kill out of fear of being unable to prove the adultery later. I have written in Jadd al-Mukhtar regarding this phrase in Tanwir and Dur: "His statement that it is lawful in the case of a non-stranger woman": I say (I say): the goal is to remove evil, so as long as removal is possible without killing, a non-killing method will be determined. Whereas administrative/political killing is not permissible for anyone other than the Imam of the time. Killing in the case of a wife or a mahram woman is for one's own benefit/honor, whereas the removal of evil is for the sake of Allah's pleasure. In this matter, one's own wife and a stranger woman are equal; all women are equal in being handmaidens of Allah. Regarding equality in this ruling is the hadith of Sa'd bin

'Ubadah (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) forbade him from killing. Thus, in my opinion, the matter of a stranger and a non-stranger woman is equal. Therefore, the condition of not ceasing without killing is general for the permissibility of killing.

---

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Ta'zir, Mujtabai Press, Delhi, 1/326

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 13

[अरबी खंड]: 'मुनिया' में जो कुछ है वह निरपेक्ष (मुतलक़) है, इसलिए उसे प्रतिबंधित (मुक़य्यद) माना जाना चाहिए ताकि उनके कथनों में सामंजस्य बना रहे। इसी कारण 'वहबानिया' में उल्लेखित शर्त को निरपेक्ष रूप से स्वीकार किया गया है, और यही सत्य है, जिसमें विवाहित होने की शर्त नहीं है क्योंकि यह 'हद्द' (विधिक दंड) नहीं है बल्कि 'अम्र बिल मारूफ़' (नेकी का आदेश) का हिस्सा है। 'मुजतबा' में सिद्धांत यह है कि जो कोई किसी मुसलमान को व्यभिचार करते हुए देखे, उसके लिए उसे मारना जायज़ है; हालाँकि, वह इस डर से रुक जाता है कि व्यभिचार के बारे में उसकी बात पर विश्वास नहीं किया जाएगा। मैंने 'जद अल-मुख्तार' में इस कथन पर लिखा है "और दूसरों में यह जायज़ है": मैं कहता हूँ, उद्देश्य बुराई को मिटाना है, और जब भी यह हत्या के बिना हासिल किया जा सके तो वह विकल्प ही निर्धारित होता है। प्रशासन (सियासत) इमाम के अलावा किसी और के लिए नहीं है। एक अजनबी महिला के बजाय पत्नी या महरम (निकट संबंधी) को मारना केवल व्यक्तिगत प्रतिशोध होगा, जबकि बुराई को मिटाना अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए है। एक अजनबी महिला और अन्यों के बीच कोई अंतर नहीं है; वे सभी समान रूप से अल्लाह की दासियाँ हैं। इसके बारे में साद बिन उबादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस है, और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें हत्या करने से मना किया था। अत; मेरे विचार में सच्चाई महिलाओं के बीच समानता और हत्या के बिना सुधार न होने की स्थिति में हत्या के प्रतिबंध में है।

[उर्दू खंड]: हालाँकि मुनियत अल-मुफ़्ती में यह बात सामान्य रूप से कही गई है, लेकिन इसे विशिष्ट स्थिति के रूप में लिया जाना चाहिए ताकि विद्वानों के कथनों में समानता बनी रहे। इसी कारण वहबानिया ने उल्लेखित शर्त को पूर्ण रूप से स्वीकार किया है, और यही सही है। इस प्रकार की हत्या के लिए विवाहित होना शर्त नहीं है क्योंकि यह हत्या 'हद्द' नहीं है, बल्कि 'अम्र बिल मारूफ़' की एक सूरत है। मुजतबा में है कि नियम यह है कि जो व्यक्ति किसी मुसलमान को व्यभिचार में लिप्त पाए, उसे मारना जायज़ है, लेकिन बाद में व्यभिचार साबित न कर पाने के डर से वह हत्या न करे। मैंने 'तन्वीर' और 'दुर' के इस वाक्यांश पर 'जद अल-मुख्तार' में यह लिखा है: उनका कथन कि गैर-अजनबी स्त्री के मामले में यह जायज़ है: मैं कहता हूँ कि उद्देश्य तो बुराई को खत्म करना है, तो जब तक हत्या के बिना बुराई को रोकना संभव हो, हत्या न करने का विकल्प ही चुना जाएगा। जबकि प्रशासन के अधिकार के तहत हत्या करना इमाम के अलावा किसी और के लिए जायज़ नहीं है। पत्नी या महरम महिला के मामले में हत्या करना तो अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए है, जबकि बुराई को

रोकना अल्लाह की रज़ा के लिए होता है। इस मामले में अपनी पत्नी और अजनबी महिला बराबर हैं; सभी महिलाएँ अल्लाह की बंदियाँ होने के नाते समान हैं। इस हुक्म में समानता के बारे में हज़रत साद बिन उबादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें हत्या करने से मना फरमाया। अतः मेरे विचार में अजनबी और गैर-अजनबी महिला का मामला समान है। इसलिए, हत्या की अनुमति के लिए यह शर्त कि बुराई बिना हत्या के नहीं रुकती, सामान्य रूप से लागू होती है।

---

1. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, बाब-उत-ताज़ीर, मत्तबा मुजतबाई देहली, 1/326

ما في المنية مطلق فيحمل على المقيد ليتفق كلامهم، ولذا جزم في الوهبانية بالشرط المذكور مطلقا وهو الحق بلا شرط احصان لانه ليس من الحد بل من الامر بالمعروف وفی المجتبی الاصل ان کل شخص رأی مسلما یزنی انه یحل له قتله وانما یمتنع خوفا من ان لا یصدق انه زنی وکتیت علیه في جد المختار قوله وفي غيرها يحل اقول: المقصود ازالة المنكر ومهما حصل بغير القتل تعين ذلك الغير وليست السياسة لغير الامام والقتل في الزوجة والمحرم دون الاجنبية لا يكون الا انتصاراً لنفسه وازالة المنكر الله عزوجل ولافرق فيه بين الاجنبية وغيرها فالكل اماء الله تعالى على السواء وفيه حديث سعد بن عبادة رضي الله تعالى عنه ونهى النبي صلى الله تعالى عليه وسلم اياه عن القتل فالحق عندي التسوية بين النساء و التقييد لعدم الانزجار بغير القتل مطلقا۔

اگرچہ منیۃ المفتی میں اطلاق ہے، تو اس مطلق کو مقید پر محمول کیا جائے گا تاکہ سب کا کلام متفق قرار پائے، اسی لئے وہبانیہ نے مذکورہ شرط کا مطلقاً جزم کیا ہے اور یہی حق ہے اس قتل میں کسی کا شادی شدہ ہونا شرط نہیں کیونکہ یہ موقعہ کا قتل حد نہیں بلکہ امر بالمعروف کی صورت ہے، اور مجتبیٰ میں ہے کہ قاعدہ یہ ہے کہ جو شخص کسی مسلمان کو زنا میں مصروف پائے تو اس کو قتل کرنا حلال ہے لیکن بعد میں زنا ثابت نہ کر سکنے کے خوف سے قتل نہ کرے۔ میں نے تنویر اور در کی اس عبارت پر جدالمختار میں یہ لکھا ہے قولہ کہ غیر اجنبی عورت میں حلال ہے اقول: (میں کہتا ہوں) مقصود تو برائی کا ازالہ کرنا ہے تو جب تک قتل کے بغیر ازالہ ممکن ہو تو یہ غیر قتل کی صورت متعین قرار پائے گی، جبکہ سیاسۃً قتل کرنا امام وقت کے غیر کے لئے جائز نہیں ہے، اور بیوی اور محرمہ کے معاملہ میں قتل کرنا تو اپنے مفاد کے لئے ہے جبکہ برائی کا ازالہ اللہ تعالیٰ کی رضا کے لئے ہوتا ہے اس معاملہ میں اپنی اور اجنبی عورت

برابر ہیں، تمام عورتیں اللہ تعالیٰ کی باندیاں ہونے میں برابر ہیں، اس حکم میں مساوات کے بارے میں سعد بن عبادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث ہے کہ ان کو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے قتل سے منع فرمایا: تو میرے نزدیک اجنبی اور غیر اجنبی عورت کا معاملہ مساوی ہے لہٰذا قتل کے جواز کے لئے قتل کے بغیر باز نہ آنے والی شرط عام ہے

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۳۲۶/۱

As the meticulous commentator followed the scholar Amr bin Nujaim (may Allah have mercy on them) and deemed it applicable to all. The statement: "Al-Hindwani's mention of 'woman' in an indefinite form points to this." I say (the author): Rather, it is the text of his answer, for he was only asked about someone finding a man with his wife, as cited in Al-Hindiyya from Al-Nihaya. Thus, the ruling in his answer included female close relatives (Mahrams) due to equality and non-mahram women due to priority. Therefore, the indefinite form used by those who transmitted from Al-Hindwani carries no special meaning. My footnote ends here. (T) And it is said in Radd al-Muhtar: regarding the statement "he found him with his wife," the apparent meaning of this phrase is being in seclusion with the wife, even if he did not witness the act of adultery, as the upcoming citation from 'Muniya al-Mufti' will indicate. You will come to know this, so reflect. Regarding the statement "she may kill him": meaning if the woman cannot escape from him through screaming or hitting without a weapon, she may kill him. Otherwise, if escape is possible, she is not considered compelled (since the permission to kill is only for a compelled woman). So here too, the condition mentioned later is valid, as is apparent. Then I saw it in the chapter on 'Reprehensibility' (Karahiyat) in the commentary of 'Al-Wahbaniyya,' whose text is:

---

1 Jadd al-Mumtar 'ala Radd al-Muhtar Page 634 of 688

जैसा कि सूक्ष्मदर्शी व्याख्याकार ने विद्वान अम्र बिन नुजैम (अल्लाह उन पर दया करे) का अनुसरण करते हुए इसे सभी में लागू माना है। कथन: "हिंदवानी का 'स्त्री' को अनिश्चित रूप (नकिराह) में उल्लेख करना इस ओर संकेत करता है।" मैं (लेखक) कहता हूँ: बल्कि यह उनके उत्तर का मूल पाठ है, क्योंकि उनसे प्रश्न यह पूछा गया था कि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ किसी को व्यभिचार में लिप्त पाए, जैसा कि हिंदिया में निहाया से उद्धृत है। अतः उनके उत्तर का आदेश महरम स्त्रियों को पत्नी की समानता के कारण और अजनबी स्त्रियों को प्राथमिकता के कारण सभी को शामिल करता है, इसलिए हिंदवानी से उद्धृत करने वालों के अनिश्चित रूप का कोई विशेष अर्थ नहीं है। मेरा हाशिये यहाँ समाप्त हुआ। (त) और रद्द अल-मुह्तार में फ़रमाया: कथन "अपनी पत्नी के साथ किसी को पाया" का प्रत्यक्ष अर्थ यह है कि पत्नी के साथ एकांत में हो, भले ही उसने व्यभिचार करते हुए न देखा हो, जैसा कि आगे 'मुनिया अल-मुफ्ती' का उद्धरण इस पर संकेत करेगा। आपको यह ज्ञात हो जाएगा, अतः विचार करें। कथन "वह उसे मार सकती है": अर्थात यदि स्त्री उससे चिल्लाकर या बिना हथियार के किसी प्रहार से छुटकारा न पा सके तो वह उसे मार दे। अन्यथा, यदि छुटकारा पाना संभव हो, तो वह स्त्री विवश नहीं मानी जाएगी (जबकि मारने की अनुमति केवल विवश स्त्री के लिए है)। तो यहाँ भी आगे आने वाली शर्त मान्य है, जैसा कि स्पष्ट है। फिर मैंने इसे 'वहबनिया' की व्याख्या के'नापसंदगी' (कराहियत) के अध्याय में देखा, जिसका पाठ है:

---

1 जद्द अल-मुम्तार अली रद्द अल-मुह्तार पृष्ठ 634 of 688

جیسا کہ اس کو شارح نے علامہ مدقق عمرو بن نجیم کی پیروی میں سب میں جاری مانا ہے رحمہم اللہ تعالٰی۔ قولہ اس پر ہندوانی کا عورت کو نکرہ ذکر کرنا دلالت کرتا ہے اقول: (میں کہتا ہوں) بلکہ انہوں نے اپنے جواب میں اس کو نافذ کیا ہے کیونکہ ان سے سوال یہ ہوا تھا کہ کوئی شخص اپنی بیوی کے ساتھ کسی کو مصروفِ زنا پائے، جیسا کہ ہندیہ میں نہایہ سے منقول ہے تو ان کے جواب کا حکم محرمہ عورت کو بیوی کی مساوات سے اور اجنبی عورت کو اولویت کی وجہ سے سب کو شامل ہوا تو ہندوانی کے جواب کو نقل کرنے والوں کی تنکیر کا کوئی معنی نہیں ہے۔ میرا حاشیہ ختم ہوا۔ (ت) وقال فی ردالمحتار (اور ردالمحتار میں فرمایا) قولہ "اپنی بیوی کے ساتھ کسی کو پایا" اس عبارت کا ظاہر یہ ہے کہ بیوی کے ساتھ خلوت میں ہو اگرچہ بد فعلی میں مصروف نہ دیکھے، جیسا کہ آئندہ منیۃ المفتی کی عبارت اس پر دلالت کر رہی ہے آپ کو معلوم ہو جائیگا تو غور کرو، قولہ فلھا قتلہ یعنی اگر عورت اس سے شور مچانے یا ہتھیار کے بغیر کسی ضرب سے چھٹکارا نہ پائے تو قتل کرے، ورنہ اگر چھٹکارا ممکن ہو تو پھر عورت مجبور نہ ہوگی (جبکہ قتل کا جواب صرف مجبور عورت کے لئے ہے) تو یہاں بھی آئندہ ذکر ہونیوالی شرط معتبر ہے، جیسا کہ ظاہر ہے پھر میں نے اسکو وہبانیہ کی شرح کی کراہت کے باب میں دیکھا، جس کی عبارت

۱- جدالممتار علی ردالمختار صفحہ 634 of 688

(Left Column - Arabic Context) The youth, for if he is killed, his blood is shed in vain if he could not be prevented except by killing. Understand. His statement (if he knows) is a condition for killing which is included in his statement 'like one who finds a man...'. His statement (and its derivation etc.) is a reconciliation between the two statements where knowledge was stipulated in the first—that he cannot be deterred without killing—and it was not stipulated in the second. Thus, reconciliation is achieved by applying the first to a stranger (non-mahram) woman and the second to others. This is based on the premise that what is meant by 'with a woman' in the first is committing adultery with her. Discussion on this follows.

His statement (absolutely) the author added to the phrase of *Munyah* following his teacher, the author of *al-Bahr*. His statement (as in *al-Bazzaziyyah* and others) i.e., like *al-Khaniyyah*. In it, if he sees a man committing adultery with his wife or another woman, and he is a married man (*muhsan*), and he shouted at him but he did not flee or desist from adultery, it is lawful for him to kill him and there is no retaliation (*qisas*) against him. His statement (so it is applied to the restricted) i.e.,

(Right Column - Urdu Text) This is: If a person forced a woman into adultery, it is permissible for the woman to kill him. Similarly, if a boy is forced into sodomy, it is permissible for the boy to kill him. In this case, the blood will be pardoned, provided there was no way to stop him without killing. So ponder; the phrase "if he knows" is a mention of the condition for that killing which is mentioned within his statement "as if one finds a man". The phrase "and its derivation" is a reconciliation between both mentioned statements, whereas in the first statement, the condition is the certainty of not desisting without killing, and in the second statement, this condition is not mentioned. So they applied the first statement to the incident of a stranger woman. This is the case when in the first statement, being "with a woman" means being engaged in adultery, and an objection is raised against this.

His statement "absolutely"—the author added this to the statement of *Munyat al-Mufti* following his teacher, the author of *al-Bahr*. His statement "as in *al-Bazzaziyyah* etc." means as it is in *Khaniyyah*, that if someone finds another person engaged in adultery with his wife or another woman, and that adulterer is married (*muhsan*), and he raised a hue and cry, yet despite that, he did not leave the adultery and flee, then it is permissible for the observer to kill him, and there will be no retaliation (*qisas*) on him. His statement "So it is applied to..."

(बायां कॉलम - अरबी संदर्भ) लड़के के बारे में, यदि उसे मार दिया जाता है, तो उसका खून व्यर्थ है यदि उसे मारने के अलावा रोका नहीं जा सकता था। समझें। उनका कथन (यदि वह जानता है) हत्या के लिए एक शर्त है जो उनके इस कथन 'जैसे कोई व्यक्ति पाता है...' में शामिल है। उनका कथन (और इसका निष्कर्ष आदि) दो कथनों के बीच सामंजस्य है जहाँ पहले में ज्ञान को शर्त के रूप में रखा गया था—कि उसे हत्या के बिना रोका नहीं जा सकता—और दूसरे में यह शर्त नहीं थी। इस प्रकार, पहले को एक अजनबी (गैर-महरम) महिला पर और दूसरे को अन्य पर लागू करके सामंजस्य बिठाया गया है। यह इस आधार पर है कि पहले में 'एक महिला के साथ' का अर्थ उसके साथ व्यभिचार करना है। इस पर चर्चा आगे आएगी।

उनका कथन (पूर्ण रूप से) लेखक ने मुन्याह के वाक्यांश में अपने शिक्षक, अल-बह्र के लेखक का अनुसरण करते हुए जोड़ा। उनका कथन (जैसा कि अल-बज्जाज़िया और अन्य में है) यानी, अल-खनिया की तरह। उसमें, यदि वह किसी व्यक्ति को अपनी पत्नी या किसी अन्य महिला के साथ व्यभिचार करते हुए देखता है, और वह एक विवाहित पुरुष (मुह्सन) है, और वह उस पर चिल्लाया लेकिन वह नहीं भागा और न ही व्यभिचार से रुका, तो उसके लिए उसे मारना वैध है और उस पर कोई प्रतिशोध (क़िसास) नहीं होगा। उनका कथन (तो इसे प्रतिबंधित पर लागू किया जाता है) यानी,

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ) यह है: यदि किसी व्यक्ति ने एक महिला को व्यभिचार के लिए मजबूर किया, तो महिला के लिए उसे मारना जायज़ है। इसी तरह, यदि किसी लड़के को कुकर्म के लिए मजबूर किया जाता है, तो लड़के के लिए उसे मारना जायज़ है। इस मामले में, खून माफ होगा, बशर्ते कि हत्या के बिना उसे रोकने का कोई रास्ता न हो। तो विचार करें; वाक्यांश "यदि वह जानता है" उस हत्या की शर्त का उल्लेख है जो उसके इस कथन "जैसे कोई किसी पुरुष को पाता है" के भीतर उल्लिखित है। वाक्यांश "और इसका निष्कर्ष" उल्लिखित दोनों कथनों के बीच एक सामंजस्य है, जबकि पहले कथन में हत्या के बिना न रुकने के विश्वास की शर्त है, और दूसरे कथन में यह शर्त उल्लिखित नहीं है। इसलिए उन्होंने पहले कथन को एक अजनबी महिला की घटना पर लागू किया। यह तब होता है जब पहले कथन में, "स्त्री के साथ" होने का मतलब व्यभिचार में व्यस्त होना हो, और इस पर आपत्ति आ रही है।

उनका कथन "पूर्ण रूप से"—लेखक ने मुन्यात अल-मुफ़्ती के कथन में अपने शिक्षक, अल-बह्र के लेखक का अनुसरण करते हुए इसे अतिरिक्त रूप से जोड़ा। उनका कथन "जैसा कि बज्जाज़िया आदि में है" का अर्थ है जैसा कि खनिया में है, कि यदि कोई किसी को अपनी पत्नी या किसी अन्य महिला के साथ व्यभिचार में व्यस्त पाता है, और वह व्यभिचारी विवाहित (मुह्सन) है, और उसने शोर मचाया, फिर भी इसके बावजूद उसने व्यभिचार नहीं छोड़ा और नहीं भागा, तो देखने वाले के लिए जायज़ है कि उसे मार डाले, और उस पर कोई प्रतिशोध (क़िसास) नहीं होगा। उनका कथन "तो इसे लागू किया जाता है..."

(بایاں کالم) الغلام فان قتله فدمه هدر اذا لم یستطع منعه الا بالقتل اھ فافهم، قوله (ان کان یعلم) شرط للقتل الذی تضمنه قوله کمن وجد رجلا قوله (ومفاده الخ) توفیق بین العبارتین حیث اشترط فی الاولی العلم بانه لاینزجر بغیر القتل ولم یشترط في الثانیة فوفق بحمل الاولی علی الاجنبیة والثانیة علی غیرها وهذا بناء علی ان المراد بقوله في الاول مع امرأة ای یزنی بها ومایأتی الکلام علیه، قوله (مطلقاً) زاد المصنف علی عبارة المنیة متابعة لشیخه صاحب البحر قوله بما فی البزازیة وغیرها) ای کاخانیة ففیها لو رأی رجلا یزني بامرأته او امرأة آخر وهو محصن فصاح به فلم یهرب ولم یمتنع عن الزنا حل له قتله ولا قصاص علیه اھ قوله (فیحمل علی المقید) ای

(دایاں کالم) یہ ہے: اگر کسی شخص نے عورت کو زنا پر مجبور کیا تو عورت کے لئے اس کو قتل کرنا جائز ہے، اور یوں ہی لڑکے کو بد فعلی پر مجبور کرنے پر لڑکے کا اس کو قتل کرنا جائز ہے اس صورت میں خون معاف ہو گا بشرطیکہ قتل کے بغیر روکنے کا کوئی چارہ نہ ہو اھ ، تو غور کرو، قولہ (ان کان یعلم) یہ عبارت اس قتل کے لئے شرط کا بیان جو اس کے قول "جیسے کوئی کسی مرد کو پائے" کے ضمن میں مذکور ہے، قولہ (ومفادہ) یہ عبارت دونوں مذکور عبارتوں میں موافقت ہے جبکہ پہلی عبارت میں قتل کے بغیر باز نہ آنے کے یقین کی شرط ہے اور دوسری عبارت میں یہ شرط مذکور نہیں ہے تو انہوں نے پہلی عبارت کو اجنبی عورت کے واقعہ پر محمول کیا، تو یہ اس صورت میں ہے جب پہلی عبارت میں ، عورت کے ساتھ ہونے کا مطلب زنا میں مصروف ہونا ہو، اور اس پر اعتراض آرہا ہے، قولہ (مطلقاً) یہ منیۃ المفتی کی عبارت پر مصنف نے اپنے شیخ صاحب بحر کی اتباع میں زائد ذکر کیا، قولہ (بما فی البزازیۃ وغیر ہا) یعنی جیسے خانیہ میں ہے کہ اس میں ہے کہ کوئی کسی کو اپنی بیوی یا دوسری عورت سے زنا میں

مصروف پائے اور وہ زانی شادی شدہ ہو تو اس نے اس پر شور مچایا اس کے باوجود وہ زنا کو چھوڑ کر نہ بھاگا تو دیکھنے والے کو جائز ہے کہ اسے قتل کردے اور اس پر قصاص نہ ہو گا، قولہ (فیحمل علی

Fatawa Rizvia, Volume 13, Page 13

[Right Column - Urdu Translation of Arabic] The restricted (meaning the statement in Munya about killing both should be interpreted as) when it is known that they will not desist by shouting or some hitting (then he may kill both). I have found another reason for agreement between the two texts, which is that the mentioned condition will apply where he finds someone with a woman [before the act]; killing will not be permissible before they are engaged in adultery. Then, when he is certain that they will desist due to shouting or some other strike, killing will not be lawful, whether the woman is a stranger, or the wife of the observer, or a mahram. But when he finds him engaged in adultery, then killing is absolutely permissible. That is why in Munya, the condition of being engaged in adultery was mentioned, and in the case of killing both, this condition was not mentioned. It follows from this that in the previously mentioned text of Khaniya, where he shouted, this condition will not apply, while the forthcoming text of al-Mujtaba also points towards this. Then I saw in the chapter of crimes in Hawi Zahidi that its text also supports this, where they said that a man saw someone engaged in adultery with his wife, or in a state of kissing and cuddling or embracing, while the wife's consent was also involved; so he killed the man or both, there will be no indemnity (fine/retaliation) upon him, and he will not be deprived of the wife's inheritance, provided that he can later prove this crime through testimony or confession and...

[Left Column - Original Arabic Text] The statement in al-Munya about killing both of them is interpreted as being when it is known that they will not be deterred by shouting or hitting. I say: Another way of reconciliation has appeared to me, which is that the mentioned condition only applies when he finds a man with a woman who is not lawful for him before he commits adultery with her. In this case, it is not permissible to kill him if it is known that he will be deterred by something other than killing, whether she is a stranger to the finder, his wife, or a prohibited relative. However, if he finds him committing adultery with her, then he may kill him unconditionally. Therefore, it was restricted in al-Munya with the phrase 'while he is committing adultery' and the statement about killing both of them was left unconditional. Accordingly, the statement from al-Khaniya which we mentioned earlier, 'so he shouted at him', is without restriction. This is also supported by the following passage from al-Mujtaba. Then I saw in the 'Book of Crimes' of al-Hawi al-Zahidi what also supports it, where it says: A man saw a man committing adultery with his wife, or kissing her, or embracing her, and she was compliant. So he killed

him or both of them; there is no liability on him, and he is not deprived of her inheritance if he proves it by evidence or confession. Even if...

फतावा रिज़विया, जिल्द 13, पृष्ठ 13

[दायां कॉलम - अरबी का उर्दू अनुवाद] प्रतिबंधित (अर्थात मुन्या का दोनों को मार डालने का कथन इस पर आधारित होगा) कि जब यह मालूम हो कि शोर या किसी प्रहार से वे नहीं रुकेंगे (तो दोनों को मार दे)। मुझे यहाँ दोनों इबारतों में सामंजस्य का एक और कारण दिखाई दिया है, वह यह कि उक्त शर्त वहाँ होगी जहाँ वह महिला के साथ किसी को पाए [कार्य से पहले]; व्यभिचार में व्यस्त होने से पहले हत्या हलाल नहीं होगी। फिर जब उसे विश्वास हो कि वे शोर या किसी अन्य प्रहार से रुक जाएंगे, तो हत्या हलाल नहीं होगी, चाहे वह महिला अजनबी हो या देखने वाले की पत्नी हो या महरम हो। लेकिन जब वह उसे व्यभिचार में व्यस्त पाता है, तो हत्या पूर्णतः जायज़ है। इसीलिए मुन्या में व्यभिचार में व्यस्त होने की शर्त का उल्लेख किया गया है, और दोनों की हत्या वाली स्थिति में इस शर्त का उल्लेख नहीं किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि खनिया की पहले बताई गई इबारत में उसने जो शोर मचाया, वह शर्त नहीं होगी, जबकि मुज्तबा की आने वाली इबारत भी इसी ओर संकेत कर रही है। फिर मैंने हावी ज़ाहिदी के'अपराधों के अध्याय' में देखा कि उसकी इबारत भी इसका समर्थन कर रही है, जहाँ उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति ने किसी को अपनी पत्नी के साथ व्यभिचार में व्यस्त, या चुंबन-आलिंगन की स्थिति में देखा, जबकि पत्नी की सहमति भी शामिल थी; तो उसने पुरुष को या दोनों को मार डाला, तो उस पर कोई जुर्माना (ज़मानत) नहीं होगा, और वह पत्नी की विरासत से भी वंचित नहीं होगा, बशर्ते कि वह बाद में इस अपराध को गवाही या इकरार से साबित कर सके और...

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] अल-मुन्या का दोनों की हत्या के बारे में कथन उस स्थिति पर लागू होता है जब यह ज्ञात हो कि वे चिल्लाने या मारने से नहीं रुकेंगे। मैं कहता हूँ: मुझे समाधान का एक और तरीका सूझा है, वह यह कि उल्लेखित शर्त केवल तभी लागू होती है जब वह किसी पुरुष को ऐसी महिला के साथ पाता है जो उसके लिए हलाल नहीं है, इससे पहले कि वह उसके साथ व्यभिचार करे। इस मामले में, उसकी हत्या करना जायज़ नहीं है यदि यह ज्ञात हो कि वह हत्या के अलावा किसी और चीज़ से रुक जाएगा, चाहे वह महिला खोजने वाले के लिए अजनबी हो, उसकी पत्नी हो या कोई महरम (प्रतिबंधित संबंधी) हो। हालाँकि, यदि वह उसे उसके साथ व्यभिचार करते हुए पाता है, तो वह उसे बिना किसी शर्त के मार सकता है। इसीलिए अल-मुन्या में इसे 'जबकि वह व्यभिचार कर रहा हो' वाक्यांश के साथ सीमित किया गया है और दोनों की हत्या के बारे में कथन को बिना शर्त छोड़ दिया गया है। तदनुसार, अल-खनिया का वह कथन जो हमने पहले उल्लेख किया था, 'उसने

उस पर चिल्लाया', बिना किसी प्रतिबंध के है। इसकी पुष्टि अल-मुज्तबा के अगले अंश से भी होती है। फिर मैंने अल-हावी अल-ज़ाहिदी के'अपराधों की किताब' में वह देखा जो इसकी पुष्टि करता है, जहाँ कहा गया है: एक आदमी ने अपनी पत्नी के साथ व्यभिचार करते हुए, या उसे चूमते हुए, या गले लगाते हुए एक आदमी को देखा, और वह महिला भी सहमत थी। तो उसने उसे या दोनों को मार डाला; उस पर कोई मुआवज़ा (जुर्माना) नहीं होगा, और उसे उसकी विरासत से वंचित नहीं किया जाएगा यदि वह इसे सबूत या स्वीकारोक्ति द्वारा प्रमाणित कर दे। भले ही...

पृष्ठ 636/688

المقید (یعنی منیہ کے قول دونوں کو قتل کرنے کو اس پر محمول کیا جائے کہ جب معلوم ہو کہ شور یا کسی ضرب سے وہ باز نہ آئے گا (تو دونوں کو قتل کر دے) مجھے یہاں دونوں عبارتوں میں موافقت کی ایک اور وجہ ظاہر ہوئی ہے، وہ یہ کہ مذکورہ شرط وہاں ہو گی جہاں وہ عورت کے ساتھ کسی کو پائے تو زنا میں مصروف ہونے سے قبل قتل حلال نہ ہو گا، پھر جب اسے یقین ہو کہ شور یا کسی اور ضرب سے باز آجائے گا تو قتل حلال نہ ہوگا، خواہ وہ عورت اجنبیہ ہو یا دیکھنے والے کی بیوی یا محرمہ ہو، لیکن جب وہ اس کو زنا میں مصروف پائے تو مطلقاً قتل جائز ہے اس لئے منیہ میں زنا میں مصروف ہونے کی قید کو ذکر کیا، اور دونوں کی قتل والی صورت میں اس قید کو ذکر نہیں کیا، اس پر لازم آتا ہے کہ خانیہ کی سابقہ مذکورہ عبارت تو اس نے اس پر شور مچایا، یہ قید نہ ہوگی، جبکہ اس پر مجتبٰی کی آنے والی عبارت بھی دلالت کر رہی ہے، پھر میں نے حاوی زاہدی کے جنایات کے باب میں دیکھا کہ اس کی عبارت بھی اس کی تائید کر رہی ہے، جہاں انہوں نے فرمایا کہ ایک شخص نے کسی کو اپنی بیوی سے زنا میں مصروف یا بوس وکنار یا معانقہ کی حالت میں دیکھا جبکہ بیوی کی مرضی بھی شامل تھی تو اس نے مرد یا دونوں کو قتل کردیا تو اس پر کوئی ضمان نہ ہوگا، اور بیوی کی میراث سے بھی محروم نہ ہوگا بشرطیکہ بعد میں وہ اس جرم کو گواہی یا اقرار سے ثابت کرسکے اور

یحمل قول المنیة قتلهما جمیعاً علی ما اذا علم عدم الانزجار بصیاح او ضرب قلت وقد ظهر لی فی التوفیق وجه اخر و هو ان الشرط المذکور انما هو فیما اذا وجد رجلاً مع امرأة لا تحل له قبل ان یزنی بها فهذا لا یحل قتله اذا علم انه ینزجر بغیر القتل سواء کانت اجنبیة عن الواجد او زوجة له او محرماً منه اما اذا وجده یزنی بها فله قتله مطلقاً ولذا قید فی المنیة بقوله وهو یزنی واطلق قوله قتلهما جمیعاً

وعليه فقول الخانية الذى قدمناه انفاً فصاح به غير قيد، ويؤيد عليه ايضا عبارة المجتبى الاتية، ثم رأيت فى جنايات الحاوى الزاهدى ما يؤيده ايضاً حيث قال رجل رأى رجلا مع امرأته يزنى بها او يقبلها او يضمها الى نفسه وهى مطاوعة فقتله او قتلهما لا ضمان عليه ولا يحرم من ميراثها ان اثبته بالبيئة او بالاقرار، ولو

(Arabic Text): If a man sees another man with his wife or one of his female relatives (mahram) in a deserted wilderness, and does not see him committing adultery or the acts leading to it, some scholars said it is lawful to kill both of them. Others said it is not lawful unless he sees the act itself, i.e., adultery and its precursors. Similar is mentioned in Khazanat al-Fatawa. And in Al-Bazzaziyya, in the chapter on theft, it says: if he sees a man with his wife or neighbor in his house committing an immoral act, and fears that if he tries to catch him, he will be overpowered, then he is permitted to kill him. And if the wife was consenting, he can kill both. This clearly shows that the difference lies in whether adultery is witnessed or not, ponder upon it. The phrase '(mutlaqan)' means without distinction between a non-mahram (ajnabiyya) woman and others. The phrase '(wa huwa al-haqq)' implies that the opposing view is false, though his words do not explicitly necessitate its falsehood; rather, what he quoted after it from Al-Mujtaba confirms its correctness. You have known from our discourse how their statements align. However, being an act of 'enjoining good' rather than a 'legal punishment' (hadd) does not necessitate the condition of knowing that the person will not desist, ponder upon it. The phrase '(without the condition of ihsan)' is a rebuttal to what is in Al-Khaniyya, which states 'while he is married (muhsan)', as we have previously mentioned. Al-Tartusi asserted this firmly, and it was stated in Al-Nahr that...

(Urdu Text Translation): If he saw someone with his wife or a mahram woman in a deserted wilderness but did not find them engaged in adultery or its precursors, some sheikhs said it is permissible for him to kill both. Some said killing is not permissible until he finds them engaged in the act of adultery. It is also mentioned similarly in Khazanat al-Fatawa. In Bazzaziyya, under the chapter of theft, it states that if he sees someone or a neighbor committing an immoral act with his wife in his own home, and fears that if he catches him, the adulterer will overpower him, then in this case, he has the justification to kill him. If the wife is also found consenting and participating in the crime, then he has the justification to kill both. From this, it is explicitly known that the difference is in whether they are found engaged in the act or not; ponder on this. The word '(mutlaqan)' means without the difference of an ajnabiyya (stranger) or non-ajnabiyya woman. The phrase '(huwa al-haqq)' means that its counter-point is false. It is not apparent from his speech that its counter-point is false, rather the words of Mujtaba he cited after it show its correctness. It has become known to you from our presentation how their speech is consistent. But

merely being an 'Amr bil Ma'roof' (enjoining good) and not 'Hadd' (prescribed punishment) does not require the condition of knowing whether they will refrain or not; ponder on this. The phrase '(without the condition of ihsan)' is a rebuttal to the saying in Al-Khaniyya that 'he be married,' as we mentioned earlier. Tartusi has firmly decided on this. It is said in Al-Nahr that...

(अरबी पाठ का अनुवाद): यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी या अपनी किसी महरम महिला के साथ किसी निर्जन स्थान पर किसी पुरुष को देखता है, और उसे व्यभिचार या उससे जुड़ी क्रियाओं में लिप्त नहीं पाता, तो कुछ विद्वानों ने कहा कि उन दोनों को मारना वैध है। दूसरों ने कहा कि यह तब तक वैध नहीं है जब तक कि वह वास्तविक कृत्य, यानी व्यभिचार और उसके पूर्वगामी कृत्यों को न देख ले। 'खज़ानतुल फ़तावा' में भी ऐसा ही उल्लेख है। और 'अल-बज़्ज़िया' में चोरी के अध्याय में है: यदि वह अपने घर में अपनी पत्नी या पड़ोसी के साथ किसी पुरुष को अनैतिक कार्य करते हुए देखता है, और उसे डर है कि अगर वह उसे पकड़ने की कोशिश करेगा तो वह उस पर हावी हो जाएगा, तो उसे उसे मारने की अनुमति है। और यदि पत्नी की सहमति थी, तो वह दोनों को मार सकता है। यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि अंतर व्यभिचार को देखने या न देखने में है, इस पर विचार करें। '(मुतलकन)' वाक्यांश का अर्थ है बिना किसी अजनबी (अजनबिया) महिला और अन्य के बीच अंतर के। '(वा हुवा अल-हक़)' वाक्यांश का तात्पर्य है कि इसके विपरीत दृष्टिकोण गलत है, हालांकि उनके शब्दों से इसकी गलतता स्पष्ट रूप से आवश्यक नहीं है; बल्कि इसके बाद 'अल-मुजतबा' से उन्होंने जो उद्धृत किया है, वह इसकी सत्यता की पुष्टि करता है। आपने हमारे प्रवचन से जान लिया होगा कि उनके बयान कैसे मेल खाते हैं। हालाँकि, 'नेकी का हुक्म देना' (अम्र बिल मारूफ) होना न कि 'कानूनी सजा' (हद्द), इस शर्त की आवश्यकता नहीं रखता कि यह पता हो कि वह व्यक्ति बाज नहीं आएगा, इस पर विचार करें। '(एहसान की शर्त के बिना)' वाक्यांश 'अल-खनिया' में जो कहा गया है उसका खंडन है कि 'वह विवाहित (मुहसिन) हो', जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है। अल-तरतूसी ने इस पर दृढ़ता से जोर दिया, और 'अल-नहर' में कहा गया है कि...

(उर्दू पाठ का अनुवाद): अगर उसने अपनी बीवी या अपनी महरमा औरत के साथ बयाबान खाली जगह में किसी को देखा लेकिन ज़िना या दवाही (ज़िना की तरफ ले जाने वाले काम) में मसरूफ़ न पाया तो बाज़ मशाईख़ ने फ़रमाया उसको दोनों का कत्ल करना हलाल है, और बाज़ ने फ़रमाया जब तक बदफ़ेली में मसरूफ़ न पाए कत्ल करना हलाल नहीं है, और इसी तरह ख़ज़ानतुल फ़तावा में भी मज़कूर है। और बज़्ज़िया के सरक़ा (चोरी) के बाब में है कि, अगर वो अपने घर में अपनी बीवी से किसी शख़्स या पड़ोसी को बदफ़ेली करते हुए देख ले और पकड़ने पर ख़तरा महसूस करे कि ज़ानी ग़ालिब रहेगा तो इस सूरत में उसको क़त्ल करने का जवाज़ है और बीवी को भी जुर्म में राजी व शरीक पाया तो दोनों को क़त्ल करने का जवाज़ है, तो इस से सराहतन मालूम हुआ कि फ़र्क़

बदफ़ेली में मसरूफ़ पाने और न पाने का है, ग़ौर करो। क़ौलुहु (मुतलक़न) यानी अजनबिया और ग़ैर अजनबिया के फ़र्क़ के बग़ैर। क़ौलुहु (हुवल हक़) यानी इसका मफ़हूम ये है कि इसका मुक़ाबिल बातिल है इसके कलाम से ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि इसका मुक़ाबिल बातिल है बल्कि इसके बाद उसने मुजतबा का जो कलाम नक़ल किया है उससे उसकी सेहत मालूम हो रही है, हमारी तक़रीर से उनके कलाम का मुत्तफ़िक़ होना आप को मालूम हो गया, लेकिन महज़ अम्र बिल मारूफ़ होना और हद्द न होना, बाज़ न आने के इल्म की शर्त को नहीं चाहता, ग़ौर करो। क़ौलुहु (बिला शर्त ए एहसान) ये ख़ानिया के क़ौल कि 'वो शादी शुदा हो' का रद है, जैसा कि हमने पहले ज़िक्र किया है। तरतूसी ने इसी पर जज़्म किया है। नहर में फ़रमाया कि उसको...

(عربی کالم کا ترجمہ): اگر ایک شخص نے اپنی بیوی یا اپنی کسی محرم عورت کے ساتھ کسی خالی بیابان میں کسی دوسرے شخص کو دیکھا اور اس سے زنا یا اس کے مقدمات کو نہیں دیکھا، تو بعض مشائخ نے کہا کہ ان دونوں کا قتل حلال ہے۔ اور بعض نے کہا کہ حلال نہیں جب تک کہ وہ اس سے عمل یعنی زنا یا اس کے مقدمات کو نہ دیکھ لے، اور اسی طرح خزانہ الفتاوی میں ہے اھ اور بزا زیہ کی کتاب السرقۃ میں ہے کہ اگر وہ اپنے گھر میں اپنی بیوی کے ساتھ کسی شخص یا اپنے پڑوسی کو بدکاری کرتے ہوئے دیکھے اور اسے اندیشہ ہو کہ اگر وہ اسے پکڑے گا تو وہ اس پر غالب آ جائے گا، تو اسے قتل کرنے کی گنجائش ہے۔ اور اگر عورت اس کی فرمانبردار (راضی) تھی تو دونوں کو قتل کرے۔ پس یہ اس بات میں صریح ہے کہ فرق زنا کو دیکھنے اور نہ دیکھنے کے اعتبار سے ہے، غور کرو۔ قولہ (مطلقاً) یعنی اجنبیہ اور غیرہ کے درمیان فرق کے بغیر۔ قولہ (وھو الحق) اس کا مفہوم یہ ہے کہ اس کا مقابل باطل ہے، اور اس کے کلام سے ایسی چیز ظاہر نہیں ہوئی جو اس کے باطل ہونے کا تقاضا کرے، بلکہ اس نے اس کے بعد جو مجتبیٰ سے نقل کیا ہے وہ اس کی صحت کا فائدہ دیتا ہے۔ اور آپ نے جان لیا جو ہم نے مقرر کیا کہ ان کا کلام باہم متفق ہے، اور رہا اس کا امر بالمعروف سے ہونا نہ کہ حد سے، تو یہ باز نہ آنے کے علم کی شرط کا تقاضا نہیں کرتا، غور کرو۔ قولہ (بغیر شرطِ احصان کے) یہ خانیہ میں موجود اس قول کا رد ہے کہ "وہ شادی شدہ ہو" جیسا کہ ہم اسے پہلے پیش کر چکے ہیں، اور اسی پر طرطوسی نے جزم کیا ہے، النہر میں کہا گیا ہے کہ...

(اردو کالم کا متن): اگر اس نے اپنی بیوی یا اپنی محرمہ عورت کے ساتھ بیابان خالی جگہ میں کسی کو دیکھا لیکن زنا یا دواعی میں مصروف نہ پایا تو بعض مشائخ نے فرمایا اسکو دونوں کا قتل

کرنا حلال ہے، اور بعض نے فرمایا جب تک بدفعلی میں مصروف نہ پائے قتل کرنا حلال نہیں ہے، اور اسی طرح خزانہ الفتاوی میں بھی مذکور ہے اھ، اور بزازیہ کے سرقہ کے باب میں ہے کہ، اگر وہ اپنے گھر میں اپنی بیوی سے کسی شخص یا پڑوسی کو بد فعلی کرتے ہوئے دیکھ لے اور پکڑنے پر خطرہ محسوس کرے کہ زانی غالب رہے گا تو اس صورت میں اس کو قتل کرنے کا جواز ہے اور بیوی کو بھی جرم میں راضی و شریک پایا تو دونوں کو قتل کرنے کا جواز ہے، تو اس سے صراحتہ معلوم ہوا کہ فرق بد فعلی میں مصروف پانے اور نہ پانے کا ہے، غور کرو۔ قولہ (مطلقا) یعنی اجنبیہ اور غیر اجنبیہ کے فرق کے بغیر۔ قولہ (ھو الحق) یعنی اس کا مفہوم یہ ہے کہ اس کا مقابل باطل ہے اس کے کلام سے یہ ظاہر نہیں ہوا کہ اس کا مقابل باطل ہے بلکہ اس کے بعد اس نے مجتبی کا جو کلام نقل کیا ہے اس سے اس کی صحت معلوم ہو رہی ہے، ہماری تقریر سے ان کے کلام کا متفق ہونا آپ کو معلوم ہوگیا، لیکن محض امر بالمعروف ہونا اور حد نہ ہونا، باز نہ آنے کے علم کی شرط کو نہیں چاہتا، غور کرو۔ قولہ (بلا شرط احصان) یہ خانیہ کے قول کہ "وہ شادی شدہ ہو" کارد ہے، جیسا کہ ہم نے پہلے ذکر کیا ہے۔ طرطوسی نے اسی پر جزم کیا ہے۔ نہر میں فرمایا کہ اس کو

Fatawa Rizwia, Volume 13, [Page] 13

Ibn Wahban refuted it, stating that this is not a prescribed punishment (Hadd) but rather part of commanding the good and forbidding the evil. This is a commendable point, for this evil is such that killing has been determined as a way to remove it; therefore, there is no meaning in stipulating the condition of 'Ihsan' (being married) for this killing. This is why Bazzazi left it absolute. I say: What further indicates this is that legal punishments (Hadd) are not carried out except by the Imam (the sovereign); no one else has authority over it. The discourse of 'Radd al-Muhtar' concludes here. I wrote upon it in 'Jadd al-Muhtar': his saying "as indicated by what follows from Munyat al-Mufti," just as the upcoming discourse of Munyat al-Mufti indicates it. For when they left the ruling of killing general—with the condition of not desisting—while they restricted being with a woman to adultery, then being with a woman would be restricted by 'non-adultery' so that the two statements do not contradict each other. I say: The remoteness of this indication is not hidden from you. If one considers external matters and seeks to reconcile this discourse with another that is not related to it, then the indication of this discourse in this matter is non-existent, especially when such reconciliation and agreement become unclear and undetermined. For this reason, the commentator (Al-Sharih), may Allah have mercy on him, to eliminate this contradiction, interpreted the absolute...

[Footnote: Radd al-Muhtar, Chapter of Discretionary Punishment (Ta'zir), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/80-179]

Page 638 of 688

फतावा रज़विया, खंड 13, [पृष्ठ] 13

इब्न वहबान ने इसका खंडन करते हुए कहा है कि यह 'हद' (नियत दंड) नहीं है बल्कि 'अमर बिल मारूफ और नही अनिल मुनकर' (भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना) है। यह एक अच्छी बात है क्योंकि यह ऐसी बुराई है जिसके निवारण के लिए हत्या एक रास्ता निश्चित किया गया है, इसलिए इस हत्या के लिए शादीशुदा (मुहसिन) होने की शर्त निरर्थक है। यही कारण है कि बज़ाज़ी ने इसे बिना किसी शर्त के(मुतलक) रखा है। मैं कहता हूँ: इसका प्रमाण यह भी है कि 'हद' को केवल इमाम ही लागू कर सकता है, किसी अन्य को इसका अधिकार नहीं है। 'रद-उल-मुहतार' का कथन यहाँ समाप्त हुआ। मैंने इस पर 'जद्द-उल-मुहतार' में लिखा है: उनका यह कहना "जैसा कि 'मुनियतुल मुफ्ती' से आने वाली बात संकेत करती है," जैसा कि 'मुनियतुल मुफ्ती' का आगामी कथन इस पर प्रकाश डालता है। क्योंकि जब उन्होंने हत्या के आदेश को रुकने की शर्त से स्वतंत्र रखा, जबकि महिला के साथ होने को व्यभिचार (ज़िना) के साथ सीमित किया, तो महिला के साथ होना 'गैर-व्यभिचार' के साथ सीमित होगा ताकि दोनों बातें परस्पर विरोधी न हों। मैं कहता हूँ: इस दलील की जटिलता आपसे छिपी नहीं है। और यदि बाहरी बातों को ध्यान में रखते हुए इस कथन और किसी अन्य असंबंधित कथन के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया जाए, तो इस कथन का प्रमाण इस मामले में बिल्कुल नहीं रहता, विशेष रूप से जब ऐसा सामंजस्य और अनुकूलता अस्पष्ट और अनिश्चित हो जाए। इसी कारण से व्याख्याकार (शारेह) ने इस विरोधाभास को समाप्त करने के लिए इसे 'मुतलक' (निरपेक्ष) माना है...

[पाद टिप्पणी: रद-उल-मुहतार, ताज़ीर का अध्याय, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 3/80-179]

पृष्ठ 638 का 688

ابن وہبان نے رد کر دیا ہے کہ یہ حد نہیں بلکہ امر بالمعروف اور نہی عن المنکر ہے، یہ اچھی بات ہے کیونکہ یہ ایسی برائی ہے کہ اس کے ازالہ کے لئے قتل ایک طریقہ ہے لہٰذا اس قتل کے لئے شادی شدہ ہونے کی شرط بے معنی ہے اس لئے بزازی نے اس کو مطلق رکھا ھ قلت (میں کہتا ہوں کہ) اس پر دلالت یہ بھی ہے کہ حد کو صرف امام ہی نافذ کر سکتا ہے کسی دوسرے کو اس کی ولایت نہیں ہے۔ ردالمحتار کا کلام ختم ہوا۔ میں نے اس پر جدالمحتار میں لکھا ہے قولہ کما یدل علیہ ما یأتی عن منیۃ المفتی جس طرح کہ اس پر منیۃ المفتی کا آئندہ کلام دلالت کر رہا ہے، کیونکہ جب انہوں نے قتل کے حکم کو باز نہ آنے کے علم کی شرط سے عام رکھا جبکہ عورت کے ساتھ ہونے کو زنا سے مقید کیا تو عورت کے ساتھ معیت عدم زنا سے مقید ہوگی تاکہ دونوں باتیں متعارض نہ ہوں، اقول : (میں کہتا ہوں) اس دلالت کا بعید ہونا آپ پر مخفی نہیں ہے ، اور اس سے خارج امور اور اس کلام اور دوسرے کلام کے درمیان جمع کی صورت واضح ہو جانے کو پیش نظر رکھا جائے تو اس کلام کی دلالت اس معاملہ میں بالکل نہیں ہے خصوصاً جبکہ یہ جمع و موافقت غیر واضح اور غیر معین ہو جائے اس سبب سے کہ شارح علیہ الرحمہ نے اس تعارض کو ختم کرنے کے لئے مطلق

[حاشیہ: ردالمحتار باب التعزیر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۸۰-۱۷۹]

Fatawa Razawiyya, Volume 13

(Left Column Text - Arabic) ...on the restricted [meaning]. Then, its basis is what previously occurred to his mind—may Allah have mercy on him—regarding the reconciliation that will follow, and the discussion on it will reach you. The matter is not as he thought; rather, the origin of the issue lies with the Imam, the Indian Jurist (Al-Hindwani). He was asked about a man who found another man with his wife: "Is it permissible for him to kill him?" He said: "If he knows that he can be deterred from adultery by shouting or by striking with something other than a weapon, it is not permissible. But if he knows that he cannot be deterred except by killing, then killing him is permissible. And if the woman consented, it is also permissible to kill her." This is from Al-Hindiyah from Al-Nihayah, and from it, it was taken into Munyat al-Mufti and expressed as you see. We will clarify that killing is not permissible for [mere] precursors such as touching, kissing, and embracing. So how about just being in privacy (khalwah)? I do not know of any predecessor for him in this, may Allah the Almighty have mercy on him. How can it be permissible to dare to kill a Muslim based on a remote inference and an isolated opinion of a scholar in this time, without a predecessor or proof? Rather, it is contrary to the adorned principles of Sharia and the texts of the noble Imams, until...

(Right Column Text - Urdu) ...has stated the reason for taking it as restricted for the sake of benefit. Then, in his view, the basis for this reconciliation is the reconciliation and adjustment that he mentioned later, although it is subject to objection. Therefore, the matter is not as he thought. Instead, the original issue was presented by Imam Hindwani. When asked about a person who found a man committing an indecent act with his wife, "Is it permissible to kill that man?" he replied that if the husband is certain that the adulterer will stop the adultery by shouting or beating, then killing will not be permissible. But if he is certain that he will not stop without being killed, then killing will be permissible. And if the wife is also willing with that man, it is permissible to kill her too. This is quoted in Al-Hindiyyah from Al-Nihayah, and it was copied from Al-Nihayah into Munyat al-Mufti, but the way he expressed it is before you. We will soon prove that in such a situation, killing is not permissible due to mere precursors of adultery, such as touching, kissing, or embracing, let alone for just being in privacy (khalwat). I have not found any scholar's statement before him on this matter. So, how can one dare to kill a Muslim based on a solitary statement of a scholar of this time, when the reason for this statement is also

remote, and no one has said this before, nor is there any evidence for it? Rather, it is against the principles of Sharia and the texts of the great and noble Imams, even...

फतवा रज़विया, जिल्द 13

(बायां कॉलम - अरबी) ...प्रतिबंधित [अर्थ] पर। फिर, इसका आधार वह है जो उनके मन में आया - अल्लाह उन पर रहम करे - आने वाले सामंजस्य के बारे में जिस पर बाद में चर्चा की जाएगी। मामला वैसा नहीं है जैसा उन्होंने सोचा था; बल्कि, इस मुद्दे की जड़ इमाम, भारतीय न्यायविद (अल-हिंदवानी) के पास है। उनसे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी के साथ एक अन्य व्यक्ति को पाया: "क्या उसके लिए उसे मारना जायज़ है?" उन्होंने कहा: "यदि वह जानता है कि उसे चिल्लाकर या हथियार के बिना किसी चीज़ से मारकर व्यभिचार से रोका जा सकता है, तो यह जायज़ नहीं है। लेकिन अगर वह जानता है कि उसे मारने के अलावा नहीं रोका जा सकता, तो उसकी हत्या जायज़ है। और अगर महिला की सहमति थी, तो उसे मारना भी जायज़ है।" यह अल-निहाया से अल-हिंदिया में है, और उसी से इसे मुन्यात अल-मुफ्ती में लिया गया और उसी रूप में व्यक्त किया गया जैसा आप देखते हैं। हम स्पष्ट करेंगे कि छूने, चूमने और गले लगाने जैसे [महज] पूर्ववर्तियों के लिए हत्या जायज़ नहीं है। तो फिर केवल एकांत (खलवत) में रहने के लिए कैसे? मैं उनके लिए इसमें किसी पूर्वज को नहीं जानता, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर रहम करे। इस समय में एक विद्वान के एकाकी मत और दूरगामी अनुमान के आधार पर किसी मुसलमान को मारने का साहस कैसे किया जा सकता है, बिना किसी पूर्वज या प्रमाण के? बल्कि, यह शरीयत के अलंकृत सिद्धांतों और प्रतिष्ठित इमामों के ग्रंथों के विपरीत है, यहाँ तक कि...

(दायां कॉलम - उर्दू) ...ने लाभ के लिए इसे प्रतिबंधित मानने का कारण बताया है। फिर, उनके विचार में, इस सामंजस्य का आधार वह मेल-मिलाप और समायोजन है जिसका उन्होंने बाद में उल्लेख किया है, हालांकि यह आपत्ति के अधीन है। इसलिए, मामला वैसा नहीं है जैसा उन्होंने सोचा था। इसके बजाय, मूल मुद्दा इमाम हिंदवानी द्वारा प्रस्तुत किया गया था। जब उनसे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी के साथ एक आदमी को अभद्र कार्य करते हुए पाया, "क्या उस आदमी को मारना जायज़ है?" तो उन्होंने उत्तर दिया कि यदि पति को यकीन है कि व्यभिचारी चिल्लाने या पीटने से व्यभिचार बंद कर देगा, तो हत्या जायज़ नहीं होगी। लेकिन अगर उसे यकीन है कि वह मारे बिना नहीं रुकेगा, तो मारना जायज़ होगा। और अगर पत्नी भी उस आदमी के साथ सहमत है, तो उसे भी मारना जायज़ है। यह अल-निहाया से अल-हिंदिया में उद्धृत है, और इसे अल-निहाया से मुन्यात अल-मुफ्ती में कॉपी किया गया था, लेकिन जिस तरह से उन्होंने इसे व्यक्त किया वह आपके सामने है। हम जल्द ही साबित करेंगे कि ऐसी स्थिति में, व्यभिचार के केवल पूर्ववर्तियों

जैसे छूने, चूमने या गले लगाने के कारण हत्या जायज़ नहीं है, अकेले रहने (खलवत) की तो बात ही छोड़िए। मुझे इस मामले में उनसे पहले किसी का कोई कथन नहीं मिला। तो, इस समय के एक विद्वान के एकाकी कथन के आधार पर किसी मुसलमान को मारने का साहस कैसे किया जा सकता है, जब इस कथन का कारण भी दूरगामी है, और किसी ने पहले ऐसा नहीं कहा है, और न ही इसके लिए कोई सबूत है? बल्कि, यह शरीयत के सिद्धांतों और महान और प्रतिष्ठित इमामों के ग्रंथों के खिलाफ है, यहाँ तक कि...

(بائیں کالم کی عبارت) علی المقید ثم انما مبناہ علی ماسبق الی خاطرہ رحمہ اللہ من التوفیق الاتی لہ وسیأتیك الکلام علیہ ولیس الامر کما ظن بل اصل المسئلۃ للامام الفقیہ الھند وانی سئل عن رجل وجد مع امرأتہ رجلا ایحل لہ قتلہ قال ان کان یعلم انہ ینزجر عن الزنا بالصیاح والضرب بما دون السلاح لا یحل وان علم انہ لا ینزجر الا بالقتل حل لہ القتل وان طاوعتہ المرأۃ حل لہ قتلھا ایضا اھ۔ ھندیۃ عن النھایۃ وعنہ اخذ في منیۃ المفتی فعبر عنہ بما تری وسنحقق انہ لا یحل القتل في الدواعي کالمس والتقبیل والعناق فکیف بمجرد الخلوۃ ولا اعلم لہ رحمہ اللہ تعالی سلفا فیہ وکیف یحل الاجتراء علی قتل مسلم باستظھار بعید تفرد بہ عالم في ھذا الزمان من دون سلف ولا برھان بل علی خلاف اصول الشرع المزدان وقضیۃ نصوص ائمۃ الشان حتی نفس

(دائیں کالم کی عبارت) کو مقید پر محمول کرنے کی وجہ کو بطور افادہ بیان کردیا ہے پھر ان کے خیال میں اس تطبیق کا مبنی وہ توفیق و تطبیق ہے جو انہوں نے آئندہ ذکر فرمائی ہے، حالانکہ اس پر اعتراض آرہا ہے، لہذا معاملہ وہ نہیں ہے جو انہوں نے خیال فرمایا، بلکہ اصل مسئلہ امام ہندوانی کا پیش کردہ ہے، جب ان سے ایسے شخص کے متعلق سوال ہوا جس نے اپنی بیوی کے ساتھ کسی مرد کو بد فعلی کرتے پایا کہ کیا اسے اس مرد کو قتل کرنا حلال ہے؟ تو جواب میں انہوں نے فرمایا کہ اگر خاوند کو یقین ہو کہ زانی شور مچانے یا پٹائی کرنے پر زنا سے باز آجائے گا تو قتل کرنا حلال نہ ہو گا اور اگر یقین ہو کہ قتل کے بغیر باز نہ آئے گا تو قتل کرنا حلال ہو گا، اور اگر بیوی اس مرد کے ساتھ راضی ہو تو اس کو بھی قتل کرنا حلال ہے اھ، یہ ہندیہ میں نہایہ سے منقول ہے، اور نہایہ سے ہی منیۃ المفتی میں نقل کیا لیکن جس طرح انہوں نے تعبیر کی وہ آپ کے سامنے ہے، اور ہم عنقریب ثابت کریں گے کہ ایسی صورت میں محض زنا کی دواعی مثلاً

چھونے، بوسہ لینے یا معانقہ کرنے کی وجہ سے قتل کرنا حلال نہیں ہے چہ جائیکہ محض خلوت نشینی کی وجہ سے قتل حلال ہو، اور مجھے ان سے پہلے اس بارے میں کسی کا قول معلوم نہیں ہوا، تو اس زمانے کے ایک عالم کے متفرد قول کی بناء پر کسی مسلمان کے قتل پر کیسے جرات کی جاسکتی ہے جبکہ اس قول کی وجہ بھی بعید ہو اور پہلے بھی کسی نے یہ بات نہ کی ہو اور نہ ہی اس پر کوئی دلیل ہو بلکہ اصولِ شرع اور عظیم الشان ائمہ کرام کی نصوص کے خلاف ہو حتی کہ خود

Fatawa Rizvia, Volume 13

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...against their own position, as you will soon come to know. His statement "if he cannot prevent it except by killing": When one does not have the power to prevent it without killing, I say: (I say) this is itself a textual proof in this matter that if it is possible to stop it by some other way, then killing is prohibited. And saying that otherwise she would not be considered compelled (mukrahah) would be futile, because not being compelled means remaining compliant, and the result of compliance and consent is that she herself will be a partner in this sin. Whereas, a woman's act of killing a man [to prevent sin] while she is a perpetrator or involved in sin does not stop another from that evil, because for stopping evil, one is commanded with two things: one is to refrain from evil oneself, and the second is to prevent another from that evil. If one of these two things is lost, it is not necessary for the other to fall away. Committing one sin does not make the commission of another sin permissible. Instead, here the woman's killing of this man is both preventing the sin and refraining herself, so this killing will be permissible to a greater degree. Thus it became clear that the description of the case as coercion/compulsion is mere coincidence. His statement "y'ati al-kalam 'alayhi" (the discussion on it will come): an objection will be mentioned on this. I say: (I say) an objection to your objection will be mentioned. His statement "fa-lahu qatluhu mutlaqan" (so he may kill him unconditionally): then killing him...

[Left Column - Arabic Original Text] This elevated place, as you will know with the help of the Helper. His statement "if he cannot prevent it except by killing": I say, this is also a textual proof for the prohibition of killing if prevention is possible through other means, contrary to what you have narrated. Your statement "otherwise she would not be compelled" has no effect, because the ultimate compliance is being a perpetrator of the evil itself. This killing is a part of removing evil. A perpetrator of evil is not forbidden from preventing another from it, because he is commanded with two things: refraining (himself) and preventing (others). If one of them is missed, the other does not fall away from him. Committing one sin does not make another sin permissible for him. Rather, this killing in the right of the woman is both preventing and refraining at once, thus it is more worthy of being permissible. It appeared that the depiction of compulsion was issued by agreement. His statement "and the discussion on it will come": I say, the discussion on it will come. His statement "so he may kill him unconditionally": I say, the intention is only to remove the evil; if it is achieved by a lesser means, then that is determined, as stated by the Imam.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 13

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...उनके अपने रुख के खिलाफ हो, जैसा कि आपको जल्द ही पता चल जाएगा। उनका कथन "यदि वह हत्या के बिना इसे रोकने में असमर्थ हो": जब हत्या के बिना रोकने की शक्ति न हो, मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यदि किसी अन्य तरीके से रोकना संभव हो तो हत्या वर्जित है। और यह कहना कि अन्यथा वह मजबूर (मुकरह) नहीं मानी जाएगी, व्यर्थ होगा, क्योंकि मजबूर न होने का अर्थ सहमत रहना है, और सहमति तथा रजामंदी का परिणाम यह है कि वह स्वयं इस पाप में शामिल होगी। जबकि एक महिला का पुरुष को मारना [पाप रोकने के लिए], जबकि वह स्वयं बुराई की अपराधी या उसमें लिप्त हो, दूसरे को उस बुराई से नहीं रोकता, क्योंकि बुराई रोकने के लिए दो चीजों का आदेश दिया गया है: एक यह कि स्वयं बुराई से दूर रहे और दूसरा यह कि दूसरे को उस बुराई से रोके। और इन दोनों चीजों में से एक के न रहने पर दूसरे का समाप्त होना आवश्यक नहीं है। एक पाप करने से दूसरे पाप का करना जायज़ नहीं हो जाता। बल्कि यहाँ महिला का उस पुरुष को मारना पाप से रोकना और स्वयं को बचाना दोनों चीजें हैं, तो यह हत्या अधिक प्राथमिकता (बदरजा-ए-औला) के साथ जायज़ होगी। तो स्पष्ट हुआ कि मजबूरी (ज्र व इकराह) की स्थिति का वर्णन केवल संयोग है। उनका कथन "याती अल-कलाम अलैहि" (इस पर चर्चा आगे आएगी): इस पर आपत्ति का उल्लेख होगा। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) आपकी आपत्ति पर आपत्ति का उल्लेख होगा। उनका कथन "फ़लहू कत्लुहू मुतलकन" (तो वह उसे बिना शर्त मार सकता है): तो उसे मारना...

[बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ] यह उच्च स्थान है, जैसा कि आप सहायक की सहायता से जान लेंगे। उनका कथन "यदि वह हत्या के बिना इसे रोकने में असमर्थ हो": मैं कहता हूँ: यह इस बात में भी एक स्पष्ट प्रमाण (नस्स) है कि यदि किसी अन्य साधन से रोकना संभव हो तो हत्या वर्जित है, इसके विपरीत जो आपने वर्णन किया है। आपका यह कहना कि "अन्यथा वह मजबूर (मुकरह) नहीं मानी जाएगी" का कोई प्रभाव नहीं है, क्योंकि पूर्ण आज्ञाकारिता का अर्थ स्वयं बुराई करने वाला होना है। यह हत्या बुराई को मिटाने का हिस्सा है। एक बुराई करने वाले को दूसरे को बुराई से रोकने से मना नहीं किया जाता, क्योंकि उसे दो चीजों का आदेश है: (स्वयं) बचना और (दोनों को) रोकना। यदि उनमें से एक छूट जाए, तो दूसरा उससे समाप्त नहीं होता। एक पाप करना दूसरे पाप को जायज़ नहीं बनाता। बल्कि, महिला के अधिकार में यह हत्या एक साथ रोकना और बचना है, इसलिए यह अनुमति के अधिक योग्य है। यह स्पष्ट हुआ कि मजबूरी (इकराह) का चित्रण सहमति से जारी हुआ

था। उनका कथन "और इस पर चर्चा आगे आएगी": मैं कहता हूँ: इस पर चर्चा आगे आएगी। उनका कथन "तो वह उसे बिना शर्त मार सकता है": मैं कहता हूँ कि उद्देश्य केवल बुराई को मिटाना है; यदि यह कमतर साधन से प्राप्त हो जाए, तो वही निर्धारित होता है, जैसा कि इमाम ने बताया है।

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] ان کے اپنے موقف کے خلاف ہو، جیسا کہ آپ کو عنقریب معلوم ہو جائے گا، قولہ اذالم یستطع منعہ الابالقتل، جب قتل کے بغیر منع کرنے کی طاقت نہ رکھتا ہو اقول: (میں کہتا ہوں) یہ خود اس بات میں نص ہے کہ اگر کسی اور طریقہ سے روکنا ممکن ہو تو قتل ممنوع ہے، اور یہ کہنا کہ ورنہ مکرھہ (مجبور) نہ قرار پائی گئی، بے فائدہ ہوگا، کیونکہ نہ ہونے کا مطلب موافق رہنا اور موافقت اور رضامندی کا نتیجہ یہ ہے کہ اس گناہ میں خود شریک ہوگی، جبکہ عورت کا مرد کو یہ قتل کرنا گناہ اور برائی کا مرتکب اور اس میں مبتلا ہو اس کے منع کرنے سے دوسرا اس برائی سے نہیں رکتا، کیونکہ برائی سے روکنے کے لئے دو چیزوں کا مامور بنا ہوتا ہے ایک یہ کہ خود برائی سے باز رہے اور دوسرا یہ کہ اس برائی سے دوسرے کو منع کرے، اور ان دونوں چیزوں میں سے ایک کے فوت ہو جانے پر دوسرے کا ساقط ہونا لازم نہیں ہے اور ایک گناہ کے ارتکاب سے دوسرے گناہ کا ارتکاب مباح نہیں بنتا، بلکہ یہاں عورت کا اس مرد کو قتل کرنا گناہ سے روکنا اور خود کو باز رکھنا دونوں چیزیں ہیں، تو یہ قتل بدرجہ اولیٰ مباح ہوگا، تو ظاہر ہوا کہ جبر واکراہ کی صورت کا بیان محض اتفاق ہے، قولہ یاتی الکلام علیہ اس پر اعتراض ذکر ہوگا، اقول: (میں کہتا ہوں) آپ کے اعتراض پر اعتراض ذکر ہوگا، قولہ فلہ قتلہ مطلقاً تو اس کو قتل کرنا

[بایاں کالم - عربی اصل عبارت] هذا الرفيع المكان كما ستعرف بعون المستعان، قوله اذالم يستطع منعه الابالقتل اقول: هذا ايضا نص فى امتناع القتل اذا امكن المنع بغيره خلافا لما اثرتم وقولكم والالم تكن مكرهة لااثر له لان غاية المطاوعة ان تكون مرتكبة لعين المنكر وهذا القتل من ازالة المنكر ومرتكب منكر لاينهى عن نهيه غيره منه لانه مأمور بشيئين الامتناع والمنع، فان فوت احدهما لايسقط

عنه الآخر وارتكاب احد معصية لاتبيح له معصية اخرى بل هذا القتل فى حق المرأة نهى وانتهاء معافكانت اولى باباحه وظهران التصوير بالاكراه صدر وفاقا، قوله ويأتى الكلام عليه اقول: ويأتى الكلام عليه قوله فله قتله مطلقا اقول وانما القصد ازالة المنكر فاذا حصل بالادنى تعين كما افاده الامام

Fatawa Ridawiyya Volume 13 13

[Left Column Text] Al-Faqih Abu Ja'far [stated this], and the reliable ones have relied upon it. It was previously mentioned from the commentary of Al-Wahbaniyya, and the annotator will transmit it from Ibn Wahban and will follow it himself. His saying: "The upcoming text of Al-Mujtaba points to it," i.e., in the commentary where he stated unconditionally regarding adultery that he has the right to kill and did not restrict it with anything. I say: Therein is what the commentator mentioned, that the absolute is carried upon the restricted. How can the absolute statement of Al-Mujtaba be used to refute the restriction of the reliable texts? Carrying the absolute upon the restricted is a clear path, contrary to negating the restriction. His saying in Al-Hawi al-Zahidi: "What supports it as well." I say: Nay, it contradicts it, for he allowed killing unconditionally for the precursors [to adultery], while you restrict it to adultery. His saying: "Or kisses her, etc." I say: Allah Almighty has not legislated killing for the precursors [of adultery], and political execution is not permitted for anyone other than the Imam; rather, the precursors are only minor sins.

[Right Column Text] It will be permissible unconditionally. I say: (I say) the purpose is to eliminate evil. So, when this elimination is possible by a lesser means without killing, then that lesser method will be determined for it, as the jurist Imam Abu Ja'far stated this benefit, and those who rely upon it have done so. It has already been quoted from Sharh al-Wahbaniyya, and the annotator will also soon quote it from Ibn Wahban and will adopt it himself. His saying: "The upcoming text of Al-Mujtaba points to it," meaning the upcoming text of Mujtaba will appear as a commentary where he will state killing in relation to adultery unconditionally and will not restrict killing with any condition. I say: (I say) there is an objection to this, that the commentator stated that the absolute will be carried upon the restricted. How did the absolute statement of Al-Mujtaba occur despite the restriction stated by the reliable books, whereas the clear way is that the absolute is carried upon the restricted, while making the restriction redundant is contrary to that. His saying in Al-Hawi al-Zahidi: "What supports it as well." The statement of Hawi Zahidi also supports this. I say: (I say) rather, it is against it because he kept the permission to kill absolute even in the precursors to adultery, whereas you restrict it to adultery itself. His saying: "Or kisses her, etc.," or he is kissing the woman. I say: (I say) Allah Almighty has not legislated killing in the precursors of adultery, nor has He permitted political killing for anyone other than the Imam; rather, precursors are only minor sins.

[बायां कॉलम टेक्स्ट] फकीह अबू जाफ़र [ने यह कहा], और विश्वसनीय लोगों ने इस पर भरोसा किया है। यह अल-वहबानिया की टिप्पणी से पहले उल्लेख किया गया था, और टिप्पणीकार इसे इब्न वहबान से उद्धृत करेंगे और स्वयं इसका पालन करेंगे। उनका कहना है: "अल-मुज्तबा का आगामी पाठ इसकी ओर इशारा करता है," यानी, टिप्पणी में जहां उन्होंने व्यभिचार के संबंध में बिना शर्त कहा कि उसे मारने का अधिकार है और इसे किसी भी चीज से प्रतिबंधित नहीं किया। मैं कहता हूँ: इसमें वह है जो टिप्पणीकार ने उल्लेख किया है, कि पूर्ण (निरपेक्ष) को प्रतिबंधित पर लागू किया जाता है। विश्वसनीय ग्रंथों के प्रतिबंध को खारिज करने के लिए अल-मुज्तबा के पूर्ण कथन का उपयोग कैसे किया जा सकता है? पूर्ण को प्रतिबंधित पर लागू करना एक स्पष्ट मार्ग है, इसके विपरीत प्रतिबंध को नकारना। अल-हावी अल-ज़ाहिदी में उनका कहना: "जो इसका समर्थन भी करता है।" मैं कहता हूँ: बल्कि, यह इसके विपरीत है, क्योंकि उन्होंने [व्यभिचार के] पूर्ववर्ती कार्यों के लिए बिना शर्त हत्या की अनुमति दी, जबकि आप इसे व्यभिचार तक ही सीमित रखते हैं। उनका कहना: "या उसका चुंबन लेता है, आदि।" मैं कहता हूँ: अल्लाह सर्वशक्तिमान ने व्यभिचार के पूर्ववर्ती कार्यों के लिए हत्या का विधान नहीं किया है, और इमाम के अलावा किसी और के लिए राजनीतिक हत्या की अनुमति नहीं है; बल्कि, पूर्ववर्ती कार्य केवल छोटे पाप हैं।

[दायां कॉलम टेक्स्ट] यह बिना शर्त जायज होगा। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) उद्देश्य बुराई को खत्म करना है। तो, जब यह खात्मा हत्या के बिना किसी मामूली तरीके से संभव हो, तो वह मामूली तरीका ही उसके लिए निर्धारित माना जाएगा, जैसा कि फकीह इमाम अबू जाफ़र ने यह लाभ बयान फरमाया और इसी पर भरोसा करने वालों ने भरोसा किया है। और शर्ह वहबानिया से उद्धृत किया जा चुका है और टिप्पणीकार भी इसे जल्द ही इब्न वहबान से उद्धृत करेंगे और वे स्वयं इसे अपनाएंगे। उनका कहना: "अल-मुज्तबा का आगामी पाठ इसकी ओर इशारा करता है," यानी मुज्तबा का आगामी पाठ एक टिप्पणी के रूप में आएगा जहाँ वे व्यभिचार के संबंध में हत्या को बिना शर्त बयान करेंगे और हत्या को किसी शर्त के साथ प्रतिबंधित नहीं करेंगे। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इस पर आपत्ति है कि टिप्पणीकार ने इस प्रकार बयान किया कि पूर्ण को प्रतिबंधित पर लागू किया जाएगा। और विश्वसनीय पुस्तकों द्वारा बताए गए प्रतिबंध के बावजूद मुज्तबा का पूर्ण कथन कैसे आ गया, जबकि स्पष्ट तरीका यह है कि पूर्ण को प्रतिबंधित पर लागू किया जाता है, जबकि प्रतिबंध को निरर्थक बनाना इसके विपरीत है। अल-हावी अल-ज़ाहिदी में उनका कहना: "जो इसका समर्थन भी

करता है।" हावी ज़ाहिदी का बयान भी इसका समर्थन करता है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) बल्कि वह तो इसके खिलाफ है क्योंकि उन्होंने व्यभिचार के पूर्ववर्ती कार्यों में भी हत्या को बिना शर्त जायज रखा है जबकि आप इसे व्यभिचार से ही विशिष्ट करते हो। उनका कहना: "या उसका चुंबन लेता है, आदि," या वह औरत का चुंबन ले रहा हो। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) अल्लाह ताला ने व्यभिचार के पूर्ववर्ती कार्यों में हत्या को जायज नहीं ठहराया है, और न ही इमाम के अलावा किसी और को राजनीतिक हत्या की अनुमति दी है; बल्कि पूर्ववर्ती कार्य तो सिर्फ छोटे पाप हैं।

पेज 641/688

[بایاں کالم] الفقیه ابوجعفر واعتمده المعتمدون وتقدم عن شرح الوهبانیة وسینقله المحشی عن ابن وہبان و سیمشی علیه بنفسه قوله ویدل علیه عبارة المجتبی الاتیة، ای شرحا حیث اطلق فی الزنا ان لہ القتل ولم یقید بشیئ اقول وفیه ماذکر الشارح ان المطلق یحمل علی المقید وکیف یرد اطلاق المجتبی علی تقیید المعتمدات وحمل المطلق علی المقید جادة واضحة بخلاف الغاء القید، قوله فی الحاوی الزاهدی مایؤیده ایضا اقول: بل یخالفه فانه جعل لہ القتل مطلقاً فی الدواعی وانتم تخصونه بالزنا، قوله او یقبلها الخ اقول: لم یشرع الله تعالی فی الدواعی القتل ولیست السیاسة لغیر الامام بل لیست الدواعی الاصغائر

[دایاں کالم] مطلقا جائز ہوگا، اقول: (میں کہتا ہوں) مقصد تو برائی کا ازالہ ہے، تو جب یہ ازالہ قتل کے بغیر کسی ادنی طریقہ پر ممکن ہو تو وہ ادنی طریقہ اس کے لئے متعین قرار پائے گا جیسا کہ امام فقیہ ابوجعفر نے یہ فائدہ بیان فرمایا اور اسی پر اعتماد کرنے والوں نے اعتماد کیا ہے، اور شرح وہبانیہ سے منقول ہوچکا ہے اور محشی بھی اس کو عنقریب ابن وہبان سے نقل کریں گے اور وہ خود اس کو اپنائیں گے، قوله یدل علیه عبارة المجتبی یعنی مجتبی کی آئندہ عبارت بطور شرح آئیگی جہاں وہ زنا کے متعلق قتل کو مطلق بیان کریں گے اور قتل کو کسی شرط سے مقید نہ کریں گے اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں اعتراض ہے کہ شارح نے یوں بیان فرمایا کہ مطلق کو مقید پر محمول کیا جائے گا، اور معتمد علیہ کتب کی بیان کردہ قید کے باوجود مجتبی کا اطلاق کیسے وارد ہو گیا حالانکہ واضح طریقہ ہے کہ مطلق کو مقید پر محمول کیا جاتا ہے جبکہ قید کو لغو بنانا اس کے خلاف ہے، قوله فی الحاوی الزاهدی مایؤیده ایضا حاوی زاہدی کا بیان بھی اس کی تائید کرتا ہے اقول: (میں کہتا ہوں) بلکہ وہ تو اس کے خلاف ہے کیونکہ انہوں نے دواعی زنا میں بھی قتل کو مطلق جائز رکھا ہے جبکہ تم اس کو زنا سے ہی مخصوص کرتے ہو، قوله او یقبلها الخ یا وہ

عورت کا بوسہ لے رہا ہو اقول: (میں کہتا ہوں) اللہ تعالیٰ نے زنا کے دواعی میں قتل کو مشروع نہیں فرمایا، اور نہ ہی امام کے غیر کو سیاسی قتل روا رکھا ہے بلکہ دواعی تو صرف صغیرہ

Fatawa Razawiyya - Volume 13 - Page 13

And execution is not a matter of state policy (Siyasa) for the Imam either, except in the case of a crime that is great and heinous, as mentioned just before the chapter on intercourse that necessitates a punishment (Hadd). For example, the sodomite, the thief, and the strangler—if they repeat such actions, it becomes lawful to execute them as a matter of policy (Siyasatan). Thus, even in these great crimes, mere occurrence was not sufficient; rather, the lawfulness of execution was restricted to their repetition.

It will be mentioned later that the commentator gave a general permission for execution in all major sins (Kaba'ir). However, the annotator (Mahashi) restricted it to those whose harm is transitive (affects others), which is the clear truth, God willing. Execution for every person who commits a major sin, let alone a minor one (Saghira), has not been narrated from the predecessors (Salaf). If execution were permitted for minor sins and this authority was given to the general public, the rift would widen and killing would become widespread among Muslims—we seek refuge in God. On what day do you not see people's ignorance regarding some minor sins? Would then every person you see be killed? This is not a judgment from God in any way.

Therefore, there is no doubt that what is in "Al-Hawi" is rejected, and God is the giver of success. How could it be otherwise, when it is from Al-Zahidi the Mu'tazili, who is known for gathering both the worthless and the precious, and whose narration is not trusted nor relied upon in terms of transmission or understanding, as clarified by the experts of understanding. His saying: "So this is explicit..."

Page 642 of 688

फ़तावा रज़विया - भाग 13 - पृष्ठ 13

और इमाम के लिए भी सज़ा-ए-मौत (सियासत के तौर पर) जायज़ नहीं है, सिवाय इसके कि कोई बहुत बड़ा और घृणित अपराध हो, जैसा कि 'हद' (दंड) अनिवार्य करने वाले संभोग के अध्याय से थोड़ा पहले गुज़रा है। कि समलैंगिक, चोर और गला घोंटने वाला, जब ये लोग बार-बार ऐसी हरकतें करें, तो उन्हें सियासतन कत्ल करना हलाल है। तो इन महान अपराधों में भी केवल उनके होने पर नहीं, बल्कि उनके दोहराव पर कत्ल को हलाल कहा गया।

और जल्द ही आएगा कि व्याख्याकार (शारह) ने सभी बड़े गुनाहों (कबीरा) के लिए कत्ल की अनुमति दी, तो स्वयं हाशिये के लेखक (महशी) ने इसे ऐसे गुनाह तक सीमित कर दिया जिसका नुकसान दूसरों तक पहुँचता हो। और यही स्पष्ट सत्य है, इंशा अल्लाह। जबकि पूर्वजों (सलफ़) से हर बड़े गुनाह करने वाले के कत्ल के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया है, तो छोटे गुनाहों (सग़ीरा) का क्या कहना। और अगर छोटे गुनाहों के लिए भी कत्ल को जायज़ मान लिया जाए और जनता को यह अधिकार दे दिया जाए, तो अराजकता फैल जाएगी और मुसलमानों में कत्लेआम शुरू हो जाएगा, अल्लाह की पनाह। बताइए, लोगों की अज्ञानता के कारण कौन सा दिन छोटे गुनाहों से खाली है? तो क्या हर छोटे गुनाह करने वाले को कत्ल किया जाएगा? जबकि यह अल्लाह का हुक्म कहीं भी नहीं है।

तो निःसंदेह 'हावी' (किताब) का बयान खारिज करने योग्य है, और अल्लाह ही सही मार्गदर्शन देने वाला है। यह कैसे सही हो सकता है जबकि यह ज़ाहिदी मोतज़ली का कथन है, जो हर तरह की (अच्छी-बुरी) बातों को इकट्ठा करने के लिए प्रसिद्ध है और उसकी बातें विश्वसनीयता और समझ के लिहाज़ से भरोसेमंद नहीं हैं, जैसा कि विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया है। उनका कथन: "तो यह स्पष्ट है..."

पृष्ठ 642 का 688

ولیس القتل سیاسة للامام ایضا الا فی جنایة عظمت وفحشت کما مر قبیل باب وطئ یوجب الحدان اللوطی والسارق والخناق اذا تکرر منھم ذلك حل قتلھم سیاسة اھ فلم یکتف فی تلك العظائم ایضا بمجرد صدورھا بل قید حل القتل بتکررھا وسیأتی ان الشارح اطلق اباحة القتل فی جمیع الکبائر فقیدہ المحشی بما کان منھا متعدی الضرر وھو الحق الواضح ان شاء اللہ تعالیٰ ولم ینقل عن السلف قتل کل من اتی کبیرة فضلا عن الصغیرة و لو اسیع القتل فی الصغائر وجعل ذلك الی العامة لاتسع الخرق وفشا القتل فی المسلمین والعیاذ باللہ تعالیٰ فای یوم لا تری جھلا من الناس علی شئ من الصغائر فقتل کل من تراہ وھذا لیس من حکم اللہ فی شئ فلا شك ان ما فی الحاوی مردود واللہ الموفق کیف وھو من الزاھدی المعتزلی المعروف بجمع کل غث وسمین الغیر الموثوق بنقلہ ایضا الغیر المعتمد علیہ فی روایة ولادرایة کما صرح بہ ارباب الدرایة ، قولہ فھذا صریح

گناہوں میں سے ہے حالانکہ امام کو صرف کسی بڑی جنایت اور فحش گناہ میں سیاستاً قتل کرنا جائز ہوتا ہے جیسا کہ ایسی وطی جس سے حد لازم ہوتی ہے، کے باب سے تھوڑا پہلے گزرا ہے کہ لوطی، چور اور پھندا ڈالنے والا، یہ لوگ جب بار بار کارروائیاں کریں تو ان کو سیاستاً قتل کرنا حلال ہے اھ تو ان عظیم کارروائیاں پر بھی محض ان کے صدور پر نہیں بلکہ ان کے تکرار پر قتل کو حلال کہا، اور عنقریب آئے گا کہ شارح نے تمام کبیرہ گناہوں کے متعلق سیاستاً قتل کو مباح کہا تو خود محشی نے اس کو ایسے گناہ سے مقید کیا جس کا ضرر متعدی ہو۔ اور یہی واضح حق ہے ان شاء اللہ تعالیٰ، جبکہ اسلاف سے ہر کبیرہ گناہ کے مرتکب کے متعلق قتل منقول نہیں ہے چہ جائیکہ کسی صغیرہ گناہ پر قتل منقول ہو، اور اگر صغائر کے متعلق بھی قتل کو جائز قرار دے دیا جائے اور عوام کو یہ اختیار دیا جائے تو پھر امن تہ و بالا ہو جائے اور مسلمانوں میں قتل عام

شروع ہو جائے، والعیاذ باللہ تعالیٰ۔ بتایئے لوگوں کی جہالت سے صغائر سے کوئی دن خالی ہے تو کیا ہر ایک مرتکب صغیرہ قتل کیا جائے حالانکہ یہ کہیں بھی اللہ تعالیٰ کا حکم نہیں ہے تو بیشک حاوی زاہدی کا بیان مردود ہے، اور اللہ تعالیٰ ہی توفیق حق عطا فرماتا ہے، یہ کیسے صحیح ہو جبکہ یہ زاہدی معتزلی جو کہ ثقہ اور غیر ثقہ ہر قسم کی روایات کو نقل کرنے میں بھی مشہور ہے اور روایت اور درایت کے لحاظ سے غیر معتمد علیہ باتوں کو نقل کردیتا ہے جیسا کہ ارباب درایت نے اس کی تصریح فرمائی ہے، قولہ فھذا صریح

Fatawa Ridawiyya, Volume 13

I say: (I say) What explicit mention is there in it? Rather, it contains the explicit mention of a restriction, that he does not desist by any means of intimidation, just as the explanation of the previous restriction supports it, that a rebellious person does not desist through efforts to restrain him. His statement "it benefits validity," I say: We have already stated what is in it. His statement "you have known from what we established," through our stated discourse, it has become known to you. I say: (I say) The weakness in it has become known to you.

His statement "so it does not necessitate the condition of knowledge," so it did not demand the condition of knowledge. I say: (I say) Rather, it demands the condition of knowledge, because the Lawgiver's intent is defense against oppressive actions, not the destruction of Muslim lives. So when defense is possible without killing, then it is necessary to refrain from killing. His statement "where killing is determined as the way," where the method of removing evil is determined to be killing.

I say: (I say) This also serves as a text (explicit evidence) for the aforementioned restriction being a condition, and the annotator (Muḥashshī), may Allah have mercy on him, returned to the correct view on his own when he cited this phrase from the commentary: "By analogy, this applies to one who openly seizes property, the bandit, the collector of oppressive taxes, and every oppressor who seizes a thing of lesser value by oppression, and those oppressors who commit major sins and their officials and informers; the killing of all such people is permissible and their killer is deserving of reward."

Page 643 of 688

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इसमें कौन सी स्पष्टता है? बल्कि इसमें तो इस प्रतिबंध की स्पष्टता है कि वह किसी भी तरह के डराने से बाज़ न आए, जैसा कि पिछले प्रतिबंध का विवरण इसका समर्थन कर रहा है कि एक विद्रोही व्यक्ति रोकने के प्रयासों से बाज़ नहीं आता। उनका कथन "यह वैधता का लाभ देता है," मैं कहता हूँ: हमने पहले ही बता दिया है कि इसमें क्या है। उनका कथन "आपने जान लिया जो हमने स्थापित किया," हमारे बताए गए प्रवचन के माध्यम से आपको ज्ञात हो गया। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इसमें जो कमज़ोरी है वह आपको ज्ञात हो चुकी है।

उनका कथन "तो यह ज्ञान की शर्त की आवश्यकता नहीं रखता," तो वह ज्ञान की शर्त की मांग नहीं करता। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) बल्कि यह ज्ञान की शर्त की मांग करता है, क्योंकि शरीयत देने वाले (शारय) का उद्देश्य दमनकारी कार्रवाइयों से बचाव है, न कि मुसलमानों की जान लेना। तो जब हत्या के बिना बचाव संभव हो, तो हत्या से बचना आवश्यक है। उनका कथन "जहाँ हत्या का तरीका निर्धारित हो," जहाँ बुराई को दूर करने का तरीका हत्या निर्धारित हो।

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह भी उक्त प्रतिबंध के शर्त होने का प्रमाण (नस) है और टीकाकार (मुहश्शी), अल्लाह उन पर दया करे, स्वयं ही सही विचार की ओर लौट आए हैं जब उन्होंने शरह (टीका) के इस वाक्यांश का उल्लेख किया: "उसी अनुमान पर है जो खुलेआम चीज़ छीन ले, डाकू दमनकारी कर वसूलने वाला और हर वह ज़ालिम जो कम मूल्य की चीज़ ज़ुल्म से छीन ले, और वे ज़ालिम जो बड़े पाप (कबीरा गुनाह) के दोषी हों और उनके अधिकारी और चुगलखोर; ऐसे सभी लोगों की हत्या जायज़ है और उनका कातिल सवाब का हक़दार है।"

पृष्ठ 643 का 688

فتاوی رضویہ، جلد سیزدہم

اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں کون سی صراحت ہے بلکہ اس میں تو قید کی صراحت ہے کہ کسی طرح خوف دلانے سے باز نہ آئے، جیسا کہ سابقہ قید کا بیان اس کی تائید کر رہا ہے کہ سرکش آدمی باز رکھنے کی کوشش سے باز نہیں آتا، قولہ یفید صحۃ اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں اعتراض ہے جس کو ہم نے پہلے بیان کر دیا ہے، قولہ قد علمت مما قررنا ہ ہماری بیان کردہ تقریر سے آپ کو معلوم ہوگیا، اقول: (میں کہتا ہوں) اس میں جو کمزوری ہے وہ آپ کو معلوم ہوچکی ہے

قولہ فلایقتضی اشتراط العلم تو وہ علم کی شرط کا مقتضی نہ ہوا، اقول: (میں کہتا ہوں) بلکہ یہ علم کی شرط کا تقاضا کرتی ہے، کیونکہ شارع کی مراد ظالمانہ کارروائیوں سے دفاع ہے نہ کہ مسلمانوں کی جانوں کو ہلاک کرنا، تو جب قتل کے بغیر دفاع ممکن ہو تو قتل سے باز رہنا ضروری ہے، قولہ حیث تعین القتل طریقاً جہاں ازالہ برائی کا طریقہ قتل متعین ہے

اقول: (میں کہتا ہوں) یہ بھی مذکور قید کی شرط ہونے میں نص ہے اور محشی خود بخود درستی کی طرف لوٹ آئے ہیں، جب انہوں نے شرح کی اس عبارت (اسی قیاس پر ہے جو اعلانیہ چیز کو چھین لے، ڈاکو، ظالمانہ ٹیکس وصول کرنیوالا اور ہر ظالم جو کمتر قیمت والی چیز کو ظلم سے چھین لے اور جو ظالم مرتکب کبیرہ کے ہوں اور انکے اہلکار اور چغلخور ایسے تمام لوگوں کا قتل مباح ہے اور انکا قاتل ثواب کا مستحق

صفحہ 643 منجانب 688

Fatawa Rizwia Volume 13, 13

[Table Header Content] [Arabic Text]: "And 'as-Sama'ah' (the informers), the killing of all of them is permissible and their killer is rewarded... [End of text]. His words 'and the helpers and informers' is an explanatory conjunction or a conjunction of the specific over the general. Thus, it includes everyone who is among the people of corruption, such as sorcery, highway robbers, thieves, sodomites, stranglers, and their like, whose harm is widespread and who do not desist except by being killed. He has submitted to the restriction, and this is the right and correct path. Adultery is not more heinous in harm than those mentioned deeds. Therefore, what the Imams have stated is what should be relied upon and depended on. This is what I have written upon it, so look at it contemplatively and reflectively. Praise be to Allah first and last, and Allah Almighty knows best." [Urdu Text]: "...it will be, etc.) He stated that 'al-Aunah' and 'as-Sama'ah' (the agents and officials) is mentioned as an explanatory conjunction or a specific-after-general conjunction. Therefore, this statement includes all mischief-makers, for example, sorcerers, dacoits, thieves, sodomites, and those who kill by strangulation, etc., whose harm to society is general and who do not desist without being killed. In this statement, they have firmly stood by the mentioned restriction, and this is correct and true. Adultery does not cause more obscene harm than these mentioned acts. Thus, the clarification provided by the noble Imams is reliable and acceptable. This is my footnote; observe it with thought and deliberation. All praise is for Allah, first and last. Allah Almighty knows best. (T)"

Problem 276: 18 Muharram al-Haram 1311 AH What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this issue: A person says regarding a scholar or someone else the word 'rejected' (mardood), that he is a fool, knows nothing, and is an owl (idiot). What ruling will the noble Sharia give regarding this person? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: To refer to any Muslim with such words without a legal Sharia reason is to cause undue pain to a Muslim, and causing undue pain to a Muslim is Sharia-wise forbidden. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Hadith Table] Arabic: "He who hurts a Muslim has hurt me, and he who hurts me has hurt Allah." Urdu: "Whoever caused pain to a Muslim without a Sharia reason has

caused me pain, and whoever caused me pain has caused Allah [pain]." - Narrated by Al-Tabarani in[2]

1. Jadd al-Mumtar 'ala Radd al-Muhtar.
2. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith 3632, Maktabat al-Ma'arif, Riyadh, 4/373.

फ़तावा रज़विया जिल्द १३, १३

[तालिका सामग्री] [अरबी पाठ]: "और 'अस-समाह' (मुखबिरों), उन सभी की हत्या जायज़ है और उनके हत्यारे को पुरस्कृत किया जाता है... [पाठ का अंत]। उनके शब्द 'और सहायक और मुखबिर' एक व्याख्यात्मक संयोजन या सामान्य पर विशिष्ट का संयोजन है। इस प्रकार, इसमें वे सभी लोग शामिल हैं जो भ्रष्टाचार के लोगों में से हैं, जैसे जादू टोना, राजमार्ग लुटेरे, चोर, समलैंगिक, गला घोंटने वाले, और उनके जैसे, जिनका नुकसान व्यापक है और जो मारे जाने के बिना नहीं रुकते हैं। उन्होंने प्रतिबंध को स्वीकार कर लिया है, और यही सही और सटीक मार्ग है। व्यभिचार उन उल्लेखित कार्यों की तुलना में नुकसान में अधिक घृणित नहीं है। इसलिए, इमामों ने जो कहा है वही विश्वसनीय और निर्भर करने योग्य है। यह वह है जो मैंने इस पर लिखा है, इसलिए इसे चिंतन और मनन के साथ देखें। प्रशंसा अल्लाह के लिए है पहले और अंत में, और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।" [उर्दू पाठ]: "...होगा, इत्यादि)। उन्होंने फरमाया कि 'अल-औनह' और 'अस-साआह' (कारिंदों और अधिकारियों) का उल्लेख व्याख्यात्मक संयोजन या सामान्य पर विशिष्ट के संयोजन के रूप में है। इसलिए, यह कथन सभी फसाद फैलाने वालों को शामिल करता है, उदाहरण के लिए, जादूगर, डकैत, चोर, समलैंगिक और गला घोंटकर मारने वाले, इत्यादि, जिनका समाज को नुकसान आम है और जो मारे जाने के बिना बाज नहीं आते। इस कथन में उन्होंने उल्लेखित प्रतिबंध पर दृढ़ता दिखाई है, और यही सही और सच है। व्यभिचार इन उल्लेखित कार्यों से अधिक अश्लील नुकसान नहीं पहुँचाता। अत; प्रतिष्ठित इमामों द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण विश्वसनीय और स्वीकार्य है। यह मेरा हाशिए (नोट) है; इसे सोच और विचार के साथ देखें। अल्लाह के लिए ही आदि और अंत में प्रशंसा है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)"

मसला २७६: १८ मुहर्रम-उल-हराम १३११ हिजरी धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि जो व्यक्ति किसी आलिम (विद्वान) के संबंध में या किसी अन्य के संबंध में 'मरदूद' (तिरस्कृत) शब्द कहे, कि वह बेवकूफ है, कुछ नहीं जानता और उल्लू है, तो शरीयत उस व्यक्ति के बारे में क्या हुक्म देगी? स्पष्ट करें, पुण्य मिलेगा।

उत्तर: बिना किसी शरई कारण के किसी मुसलमान को ऐसे शब्दों से याद करना उसे अनुचित दुख पहुँचाना है, और किसी मुसलमान को अनुचित दुख पहुँचाना शरीयत में हराम है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

[हदीस तालिका] अरबी: "जिसने किसी मुसलमान को कष्ट दिया उसने मुझे कष्ट दिया, और जिसने मुझे कष्ट दिया उसने अल्लाह को कष्ट दिया।" उर्दू: "जिसने बिना किसी शरई कारण के किसी मुसलमान को दुख दिया उसने मुझे दुख दिया और जिसने मुझे दुख दिया उसने अल्लाह [को दुख दिया]।" - इसे तबरानी ने रिवायत किया है[2]

1. जद अल-मुम्तार अला रद अल-मुह्तार।
2. अल-मुअजम अल-औसत हदीस ३६३२ मकतबत अल-मारिफ रियाद ४/३७३।

पृष्ठ ६४४ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

[جدول کا مواد] [عربی متن]: "والسمعاة يباح قتل الكل ويثاب قاتلهم اهـ نصه قوله والا عونة والسمعاة عطف تفسير او عطف خاص على عام فيشمل كل من كان من اهل الفساد كالسحر وقاطع الطريق واللص واللوطي والخناق ونحوهم ممن عم ضرره ولاينزجر بغير القتل اهـ فقد اذعن بالتقييد وهو الحق السديد وليس الزنا بأفحش من هاتيك الافاعيل فما صرح به الائمة فعليه الاعتماد والتعويل، هذا ما كتبت عليه فانظره متأملا متدبرا والحمد لله اولا وآخرا والله تعالى اعلم۔" [اردو متن]: "ہوگا، اھ) پر فرمایا کہ الا عونۃ، والسعاۃ، اہل کار اور عہدیدار، کا ذکر عطف تفسیری ہے یا عام پر خاص کا عطف ہے لہذا یہ قول تمام اہل فساد مثلاً جادو گر، ڈاکو، چور، لوطی اور گلا دبا کر ہلاک کرنے والا وغیرہ سب کو شامل ہے جن کا ضرر معاشرہ میں عام ہو اور وہ قتل کے بغیر باز نہ آئیں اھ، تو اس بیان میں انہوں نے مذکور قید پر جزم کیا ہے اور یہی درست اور حق ہے جبکہ زنا ان مذکور امور سے زیادہ فاحش ضرر نہیں ہے، تو ائمہ کرام نے جو تصریح فرمائی ہے وہی قابل اعتماد و تسلیم ہے۔ یہ میرا حاشیہ ہے اس کو غور اور تدبر سے ملاحظہ کرو، اللہ تعالٰی کے لئے ہی اول و آخر حمد ہے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)"

مسئلہ ۲۷۶: ۱۸ محرم الحرام ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ جو شخص کسی عالم کی نسبت یا کسی دوسرے کی لفظ مردود کہے کہ وہ بیوقوف ہے کچھ نہیں جانتا اور الو ہے، تو اس شخص کی نسبت شرع شریف کیا حکم دے گی؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بلاوجہ شرعی کسی مسلمان کو ایسے الفاظ سے یاد کرنا مسلمان کو ناحق ایذا دینا ہے اور مسلمان کی ناحق ایذا شرعاً حرام ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[حدیث کا جدول] من اذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ | جس نے بلاوجہ شرعی کسی مسلمان کو ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ رواہ الطبرانی فی[2]

1 جدالمستار علی ردالمحتار 2 المعجم الاوسط حدیث ۳۶۳۲ مکتبۃ المعارف الریاض ۳۷۳/۴

Al-Awsat from Anas (Allah be pleased with him) with a good chain of narration.

...hurt the Almighty (Tabarani narrated this in al-Awsat with a good chain of narration from Hazrat Anas, Allah be pleased with him. T)

Furthermore, the status of the scholars of the firm religion is very high and exalted. One who acts insolently towards them is called a hypocrite in the Hadith.

Three people whose rights none but a hypocrite treats lightly: an elderly person in Islam, a scholar, and a just leader. (Narrated by Tabarani in al-Kabir from Abu Umamah, and by Abu al-Shaykh in 'at-Tawbih' from Jabir bin Abdullah, may Allah be pleased with them, from the Prophet, peace and blessings be upon him.)

Meaning the Master of the Universe (peace and blessings be upon him) says: There are three persons whose right none but a hypocrite would belittle: first, one who has grown old in Islam; second, a scholar; and third, a just Muslim ruler. (Tabarani narrated it in 'al-Kabir' from Hazrat Abu Umamah and Abu al-Shaykh narrated it in the chapter of 'at-Tawbih' on the authority of Hazrat Jabir (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings be upon him). T)

Such a person is legally deserving of punishment. And Allah the Glorified and Exalted knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

Issue 777: 18 Muharram al-Haram 1311 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the use of the term 'Momin' specific to the Nurbaaf community, or does it apply to the general Ummah of Muhammad (peace and blessings be upon him)? Secondly, if someone calls the aforementioned community 'Momin' by way of taunt, what is the ruling regarding them? Clarify and you shall be rewarded.

The Answer: Praise be to Allah, every Muslim is a 'Momin' (believer). Perhaps calling this community 'Momin' in the custom of some regions of India is because these people are often soft-hearted and mild-tempered, from whom other Muslims suffer little harm. It is stated in a Hadith: "A believer is one whose neighbor is safe from his mischief."[2]

[1] Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 7819, narrated by Abu Umamah, Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 8/238. [2] Sahih al-Bukhari, Chapter: Sin of one whose neighbor is not safe from his mischief, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 2/889.

अल-औसत में अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से एक अच्छी सनद (श्रृंखला) के साथ रिवायत है।

...अल्लाह तआला को कष्ट पहुँचाया (इसे तबरानी ने अल-औसत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से एक अच्छी सनद के साथ रिवायत किया है। त)

फिर मज़बूत दीन के उलेमा (विद्वानों) की शान तो बहुत ऊँची और आला है। उनके प्रति गुस्ताखी करने वाले को हदीस में मुनाफ़िक़ (पाखंडी) कहा गया है।

तीन व्यक्ति हैं जिनके अधिकारों को एक मुनाफ़िक़ के अलावा कोई और हल्का नहीं समझता: इस्लाम में वृद्ध व्यक्ति, विद्वान, और न्यायप्रिय शासक। (तबरानी ने अल-कबीर में अबू उमामा से, और अबू अल-शेख ने तौबीह में जाबिर बिन अब्दुल्ला से, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया है।)

अर्थात सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं: तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनका हक़ कोई मुनाफ़िक़ ही हल्का समझेगा: एक इस्लाम में बुढ़ापे वाला, दूसरा आलिम (विद्वान), तीसरा न्यायप्रिय मुस्लिम बादशाह। (इसे तबरानी ने कबीर में हज़रत अबू उमामा से और अबू अल-शेख ने तौबीह के अध्याय में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से हुज़ूर अलैहिस्सलातु वसल्लम से रिवायत किया है। त)

ऐसा व्यक्ति शरीयत के अनुसार सज़ा का पात्र है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और उसका इल्म सबसे मुकम्मल और पुख्ता है।

मसला ७७७: १८ मुहर्रम अल-हराम १३११ हिजरी क्या फरमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि 'मोमिन' कहना नूरबाफ़ कौम के साथ विशिष्टता रखता है या आम उम्मते मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए है? दूसरा यह कि अगर कोई व्यक्ति ताने के तौर पर उक्त कौम को 'मोमिन' कहे तो उसके बारे में क्या हुक्म है? बयान करें, सवाब पाएँ।

जवाब: अल्हम्दुलिल्लाह, हर मुसलमान मोमिन है। भारत के कुछ क्षेत्रों की प्रथा में इस कौम को मोमिन कहना शायद इस आधार पर हो कि ये लोग अक्सर नेक दिल और नरम स्वभाव के होते हैं, जिनसे अन्य मुसलमानों को कम कष्ट पहुँचता है। हदीस में फरमाया गया है: "मोमिन वह है जिसका पड़ोसी उसकी बुराइयों से सुरक्षित रहे।"[2]

[1] अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस ७८१९, अबू उमामा से, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत, ८/२३८। [2] सहीह अल-बुखारी, अध्याय: जिसका पड़ोसी उसकी बुराइयों से सुरक्षित न हो उसका गुनाह, कदीमी कुतुब खाना, कराची, २/८८९।

पृष्ठ ६४५ / ६८८

الاوسط عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند حسن۔

عزوجل کو ایذا دی (اس کو طبرانی نے اوسط میں سند حسن کے ساتھ حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت)

پھر علمائے دین متین کی شان تو نہایت ارفع و اعلٰی ہے ان کی جناب میں گستاخی کرنے والے کو حدیث میں منافق فرمایا۔

ثلاثة لایستخف بحقهم الامنافق ذوالشیبة في الاسلام وذوالعلم وامام مقسط - رواه الطبرانی فی الکبیر عن ابی امامة وابو الشیخ فی التوبیخ عن جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہم عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

یعنی سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: تین شخص ہیں جن کا حق ہلکا نہ جانے گا مگر منافق، ایک اسلام میں بڑھاپے والا دوسرا عالم تیسرا بادشاہ اسلام عادل۔ (اس کو طبرانی نے کبیر میں حضرت ابوامامہ سے اور ابوالشیخ نے توبیخ کے باب میں حضرت جابر رضی اللہ تعالٰی عنہ کے حوالہ سے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے روایت فرمایا ہے۔ ت)

ایسا شخص شرعاً لائق تعزیر ہے۔ واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۷۷۷: ۱۸ محرم الحرام ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلے میں کہ مومن کہنا تخصیص رکھتا ہے قوم نورباف سے یا عام امت محمدی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے؟ دوسرے یہ کہ اگر کوئی شخص براہِ طعنہ قوم مذکور کی نسبت مومن کہے تو اس کی نسبت کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: الحمد للہ ہر مسلمان مومن ہے اور بعض بلاد ہند کے عرف میں اس قوم کو مومن کہنا شاید اس بناء پر ہو کہ یہ لوگ اکثر سلیم القلب حلیم الطبع ہوتے ہیں جن سے اور مسلمانوں کو آزار کم پہنچتا ہے، اور حدیث میں فرمایا کہ المؤمن من امن جارہ بوائقہ ۲ مومن وہ ہے جس کے ہمسائے اس کی ایذاؤں سے امان میں ہوں۔

---

۱ المعجم الکبیر حدیث ۷۸۱۹ عن ابی امامۃ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲۳۸/۸ ۲ صحیح البخاری باب اثم من یأمن جارہ بوائقہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۸۹/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 13, Page 13.

Then saying this word by way of taunt and humiliation is one thing, but to know another Muslim as vile or lowly because of his lineage or profession is a worse thing. To use such a word for the purpose of taunting should be avoided by such a person. One should fear Allah and guard one's tongue.

[Boxed Text] Arabic: O Allah! Guide me and the Muslims, indeed You are the Most Merciful of the merciful. Amen. And Allah Almighty knows best. Urdu: O Allah! Grant guidance to me and all Muslims, undoubtedly You are the greatest of those who show mercy. Amen. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 278: From Vadnagar Dayeh Mehsana Gujarat, carriage door adjacent to the house of Banjara Chandmar Sool, enquired by Maulvi Hakim Abdul Rahim Sahab Ahmedabadi, 22 Ramadan 1339 AH. Question: What do the scholars of religion say in this matter regarding how it is to cause loss to a Muslim's property and to strive in violating his honor? The Answer: Answer: If it is without a Shariah-compliant reason, then it is absolutely Haraam (forbidden). And if it is for a Shariah-compliant reason, then there is no harm. And Allah Almighty knows best.

Problem 279: From City Sadar Bazar Bareilly, enquired by the Imam of Jamia Masjid, 18 Muharram 1339 AH. Question: A person used to refuse to pray and made many excuses. Although he was explained a lot in a brotherly manner, he did not desist from his actions. People went to catch him. At that time, he was ready to fight the Muslims with a stick. Therefore, two Muslims caught his hands, and one person lashed him. Therefore, he now prays. At the time of being caught, he had a wristwatch on his hand which broke. He is demanding it from the Muslims. Should his watch be given or not? Clarify and be rewarded. The Answer: Answer: Understanding is needed, admonition is needed, it is not the time for beating, and the price of his watch should be paid. And Allah Almighty knows best.

Problem 280: From Bareilly, Muhalla Bihari Pur, enquired by Ashfaq Hussain student, 3 Dhu al-Qi'dah 1332 AH. Question: What do the scholars of religion say in this matter: Zaid, Amr, and Bakr were sitting at a place. By chance, a girl passed by that way. Zaid said to Amr, "This girl is your sister." Amr replied to Zaid, "Yes, this girl is my sister, but O Zaid! This girl is your..."

फतावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13।

फिर इस शब्द को ताने और अपमान के तौर पर कहना एक बात है, लेकिन किसी मुसलमान को उसके वंश या पेशे के कारण नीच या तुच्छ जानना दूसरे पर एहसान जताना है। ऐसे महान शब्द को ताने के स्थान पर उपयोग करने से बचना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को अल्लाह से डरना चाहिए और अपनी ज़ुबान की हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

[बक्से में पाठ] अरबी: ऐ अल्लाह! मुझे और मुसलमानों को हिदायत दे, बेशक तू रहम करने वालों में सबसे बड़ा रहम करने वाला है। आमीन। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू: ऐ अल्लाह! मुझे और तमाम मुसलमानों को हिदायत अता फ़रमा, बेशक तू रहम करने वालों से बड़ा रहम फ़रमाने वाला है। आमीन। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 278: वडनगर दयेह मेहसाणा गुजरात से, गाड़ी के दरवाज़े के पास बंजारा चांदमार सूल का घर, मौलवी हकीम अब्दुल रहीम साहब अहमदाबादी द्वारा पूछा गया, 22 रमज़ान 1339 हिजरी। सवाल: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि किसी मुसलमान के माल का नुकसान करना और उसकी गरिमा को ठेस पहुँचाने की कोशिश करना कैसा है? अल-जवाब: जवाब: अगर बिना किसी शरीयत की वजह के है तो वह बिल्कुल हराम है। और अगर शरीयत की वजह से है तो कोई हर्ज नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 279: शहर सदर बाज़ार बरेली से, जामा मस्जिद के पेश इमाम द्वारा पूछा गया, 18 मुहर्रम 1339 हिजरी। सवाल: एक व्यक्ति नमाज़ पढ़ने से इंकार करता था और बहुत बहाने बनाता था। हालाँकि उसे भाईचारे के तौर पर बहुत समझाया गया, लेकिन वह अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आया। लोग उसे पकड़ने गए। उस वक्त वह मुसलमानों का मुकाबला करने के लिए लाठी लेकर तैयार हो गया। लिहाज़ा, दो मुसलमानों ने उसके हाथ पकड़ लिए और एक व्यक्ति ने उसे कोड़े लगाए। अब वह नमाज़ पढ़ता है। पकड़े जाने के समय उसके हाथ में घड़ी बँधी हुई थी जो टूट गई। वह मुसलमानों से उसका मुआवज़ा माँग रहा है। क्या उसकी घड़ी (की कीमत) दी जाए या नहीं? बयान फ़रमाएँ और पुण्य कमाएँ। अल-जवाब: जवाब: समझाना चाहिए, चेतावनी देनी चाहिए, मारपीट का वक्त नहीं है, और उसकी घड़ी की कीमत दी जानी चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 280: बरेली, मोहल्ला बिहारी पुर से, अशफ़ाक़ हुसैन छात्र द्वारा पूछा गया, 3 ज़िलक़ाद 1332 हिजरी। सवाल: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद, उम्र और बक्र एक जगह बैठे थे,

इत्तेफ़ाक़ से एक लड़की उस रास्ते से गुज़री, ज़ैद ने उम्र से कहा, "यह लड़की तुम्हारी बहन है।" उम्र ने ज़ैद को जवाब दिया, "हाँ, यह लड़की बहन है लेकिन ऐ ज़ैद! यह लड़की तुम्हारी..."

पृष्ठ 646 का 688

پھر یہ لفظ بطور طعن انہیں کہنا دوسری شناعت ہے ایک تو مسلمان کو اس کی نسبت یا پیشہ کے سبب حقیر جاننا دوسرے ایسے عظیم جلیل لفظ کو محل طعن میں استعمال کرنا، ایسے شخص کو چاہئے اللہ تعالٰی سے ڈرے اور اپنی زبان کی نگہداشت کرے۔

[کھانے میں عبارت] عربی: اللھم اھدني والمسلمین انك انت ارحم الراحمین۔ آمین۔ واللہ تعالٰی اعلم۔
اردو: اے اللہ! مجھے اور تمام مسلمانوں کو ہدایت عطا فرما بیشک تو رحم کرنے والوں سے بڑا رحم فرمانے والا ہے۔ آمین۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۷۸: از اوڈ نگر دایہ مہسانہ گجرات گاڑی کے دروازہ متصل مکان بنجارہ چاند مار سول مسئولہ مولوی حکیم عبدالرحیم صاحب احمد آبادی ۲۲ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کسی مسلمان کے مال کا نقصان کرنا اور اس کی ہتک حرمت میں کوشش کرنا کیسا ہے؟ الجواب: اگر بلاوجہ شرعی ہے حرام قطعی ہے اور وجہ شرعی سے ہے تو کوئی حرج نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۷۹: از شہر صدر بازار بریلی مسئولہ پیش امام جامع مسجد ۱۸ محرم ۱۳۳۹ھ ایک شخص نماز پڑھنے سے انکار وحیلہ بہت سے کرتا تھا ہر چند اس کو برادرانہ طور بہت کچھ سمجھایا لیکن وہ اپنی حرکتوں سے باز نہیں آیا اور لوگ اس کو پکڑنے کے واسطے گئے اس وقت وہ مسلمانوں کو لاٹھی لے کر مقابلہ کرنے کو آمادہ ہوا، لہٰذا دو مسلمانوں نے اس کے ہاتھ پکڑ لئے، ایک شخص نے اس کو درے لگائے، لہٰذا وہ نماز پڑھتا ہے، پکڑنے کے وقت اس کے ہاتھ میں گھڑی بندی تھی وہ ٹوٹ گئی وہ مسلمانوں سے طلب کرتا ہے، اس کی گھڑی دی جائے یا نہیں؟

بینوا توجروا۔ الجواب: تفہیم چاہئے، تنبیہ چاہئے، مار پیٹ کا وقت نہیں، اور اس کی گھڑی کی قیمت دی جائے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۰: از بریلی محلہ بہاری پور مسئولہ اشفاق حسین طالب علم ۳ ذیقعدہ ۱۳۳۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید و عمرو و بکر ایک مقام پر بیٹھے تھے، اتفاقاً ایک لڑکی اس راہ سے گزری، زید نے عمرو سے کہا یہ لڑکی تمہاری بہن ہے، عمرو نے زید کو جواب دیا کہ ہاں یہ لڑکی بہن ہے لیکن اے زید! یہ لڑکی تیری---

[Person said] "she is a sister," to which Zaid replied to Amr, "She is not my sister, but yours." Amr said to Zaid, "Since we are all children of Hazrat Adam (peace be upon him), we are all brothers and sisters." Bakr then said to Amr, "In that case, dogs and pigs are also children of Hazrat Adam (peace be upon him), so dogs and pigs are your brothers and sisters." Amr replied, "No, Muslims consider these animals detestable." At this, Bakr became very angry and started saying repeatedly, "No, pigs and dogs are from the offspring of Hazrat Adam (peace be upon him)," and he repeated these words until a fight broke out among them and the matter escalated. The question is, what is the ruling for these three individuals? It is requested as a matter of obligation.

The Answer: There is no blame on Amr for denying that she is his sister; in fact, if she was a non-Muslim, it was good that he denied it. There is no blame on Zaid for calling her Amr's sister if the girl was a Muslim, for all Muslims are brothers to each other. Yes, if she was not a Muslim, then it was wrong to declare her the sister of a Muslim, and merely being the offspring of Adam (peace be upon him) is not enough, as the lineage of disbelievers is severed from Hazrat Sayyiduna Adam (peace and blessings be upon him) himself.

Allah Almighty says: "Indeed, the believers are brothers" (1), and Allah Almighty says: "Indeed, he is not of your family; indeed, he is [one whose] work was other than righteous" (2).

Allah Almighty has stated that indeed all believers are brothers and sisters, and Allah Almighty said: "O beloved Nuh (peace be upon him), he is not of your family, he is of unrighteous conduct." (T)

As for Bakr, he said something extremely severe, heinous, and evil. His statement casts a blemish on the Prophet of Allah, Adam (peace and blessings be upon him). It is obligatory for him to repent; in fact, he should recite the Kalima and renew his Islam. However, if that girl was a disbeliever and by 'dogs and pigs' he meant disbelievers—meaning there are disbelievers among their offspring who are like dogs and pigs, or even worse than them, so how can they be our brothers—then no blame remains on him. And Allah Almighty knows best.

Problem 281: From Dhamon, Post Office Dhamon, District Sialkot, Punjab, Monday, 2 Safar al-Muzaffar 1337 AH. If Zaid, due to some conspiracy, says to his real brother

Bakr in a gathering after loudly reciting the Kalima Tayyibah, "You are not my brother," in such a case, is any expiation (kaffarah) mandatory for Zaid according to Sharia? If so, what and for whom?

1. Al-Quran al-Karim 10/49
2. Al-Quran al-Karim 46/11

[व्यक्ति ने कहा] "वह बहन है," इस पर ज़ैद ने अम्र से कहा कि "वह मेरी बहन नहीं है बल्कि तुम्हारी बहन है," अम्र ने ज़ैद से कहा कि "जब हम सब लोग हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद में हैं तो हम सब भाई-बहन हैं," बक्र ने अम्र से कहा कि "इस तरह तो कुत्ते और सूअर भी हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद हैं, तो कुत्ते और सूअर भी तुम्हारे भाई-बहन हुए," अम्र ने कहा कि "नहीं, इन जानवरों को अहले इस्लाम (मुसलमान) बुरा समझते हैं," इस पर बक्र बहुत ग़ुस्से हुआ और कहने लगा कि "नहीं, सूअर और कुत्ते हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद में हैं," और बार-बार यही शब्द कहे यहाँ तक कि आपस में झगड़ा होने लगा और मामला तूल पकड़ गया। अर्ज़ यह है कि इन तीनों व्यक्तियों के लिए क्या हुक्म है? वाजिब तौर पर अर्ज़ किया है।

अल-जवाब: अम्र ने जो उसकी बहन होने से इनकार किया उस पर कोई दोष नहीं है, बल्कि अगर वह ग़ैर-मुस्लिम थी तो बहुत अच्छा किया कि इनकार कर दिया। ज़ैद ने जो उसे अम्र की बहन कहा उस पर भी कोई दोष नहीं है अगर वह लड़की मुसलमान थी, क्योंकि मुसलमान सब आपस में भाई हैं। हाँ, अगर वह मुसलमान नहीं थी तो बुरा किया कि उसे मुसलमान की बहन ठहराया, और केवल आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद होना काफी नहीं है क्योंकि काफिरों का वंश स्वयं हज़रत सैयदना आदम (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) से कटा हुआ है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक मोमिन भाई-भाई हैं" (1), और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक वह आपके परिवार से नहीं है; बेशक उसके अमल नेक नहीं हैं" (2)।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि बेशक तमाम मोमिन भाई-बहन हैं, और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "ऐ प्यारे नूह (अ़लैहिस्सलाम), वह आपके घर वालों में से नहीं है, वह नेक अमल वाला नहीं है।" (त)

रहा बक्र, उसने बहुत ही सख़्त, घिनौनी और बुरी बात कही। उसके इस कथन से अल्लाह के नबी आदम (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) पर एक ऐब (दोष) लगता है। उस पर तौबा करना फ़र्ज़ है, बल्कि उसे कलिमा पढ़कर अपने इस्लाम का नवीनीकरण (तजदीद-ए-इस्लाम) करना चाहिए। हाँ, अगर वह लड़की काफ़िरा थी और उसने 'कुत्ते और सूअर' से मुराद काफ़िर लिए थे—यानी उनकी औलाद में काफ़िर भी हैं जो कुत्तों और सूअरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी बदतर हैं, वे हमारे भाई कैसे हो सकते हैं—तो उस पर कोई दोष नहीं रहेगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 281: धौमों, डाकखाना धौमों, ज़िला सियालकोट, पंजाब, सोमवार, 2 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1337 हिजरी। अगर ज़ैद किसी साज़िश की वजह से एक महफ़िल में बुलंद आवाज़ में कलिमा तैयबा पढ़कर अपने सगे भाई बक्र से कहे कि "तुम मेरे भाई नहीं हो", तो ऐसी स्थिति में क्या ज़ैद पर शरीअत के अनुसार कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य है? अगर है तो क्या और किसके लिए?

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 10/49
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 46/11

पृष्ठ 647 का 688

بہن ہے، اس پر زید نے عمرو سے کہا کہ میری بہن نہیں ہے بلکہ تیری بہن ہے، عمرو نے زید سے کہا کہ جب ہم تم سب لوگ حضرت آدم علیہ السلام کی اولاد میں ہیں تو ہم تم سب بھائی بہن ہیں بکر نے عمرو سے کہا کہ اس طرح تو کتے سور بھی حضرت آدم علیہ السلام کی اولاد ہیں تو کتے اور سور بھی تمہارے بھائی بہن ہوئے، عمرو نے کہا کہ نہیں ان جانوروں کو اہل اسلام کے لوگ برا سمجھتے ہیں، اس پر بکر بہت غصہ ہوا اور کہنے لگا کہ نہیں سور اور کتے حضرت آدم علیہ السلام کی اولاد میں ہیں، اور مکرر سہ کرر یہی الفاظ کہے یہاں تک کہ آپس میں جھگڑا ہونے لگا اور معاملہ طول ہو گیا۔ عرض یہ ہے کہ ان تینوں شخصوں کے واسطے کیا حکم ہے؟ واجبا عرض کیا ہے۔

الجواب: عمرو نے جو اس کے بہن ہونے سے انکار کیا اس پر کچھ الزام نہیں بلکہ وہ اگر غیر مسلمان تھی تو بہت اچھا کہ انکار کر دیا زید نے کہ اسے عمرو کی بہن کہا اس پر الزام نہیں اگر وہ لڑکی مسلمان تھی کہ مسلمان سب آپس میں بھائی ہیں ہاں اگر وہ مسلمان نہ تھی تو برا کیا کہ اسے مسلمان کی بہن ٹھہرایا، اور فقط اولاد آدم علیہ السلام ہونا کافی نہیں کہ کافروں کا نسب خود حضرت سید نا آدم علیہ الصلوۃ والسلام سے منقطع ہے،

قال اللہ تعالٰی انَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَۃٌ ۱، وقال تعالٰی اِنَّہٗ لَیْسَ مِنْ اَھْلِكَ اِنَّہٗ عَمَلٌ غَیْرُ صَالِحٍ ۲۔

اللہ تعالٰی نے فرمایا بیشک تمام مومن بھائی بہن ہیں، اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: اے پیارے نوح (علیہ السلام) یہ آپ کی اہل میں نہیں وہ تو اپنے عمل والا نہیں ہے۔ (ت)

رہا بکر، اس نے سخت شدید شنیع بری بات کہی، اس کے قول سے نبی اللہ آدم علیہ الصلوۃ والسلام پر ایک عیب لگتا ہے اس پر توبہ فرض ہے بلکہ کلمہ پڑھے تجدید اسلام کرے۔ ہاں اگر وہ لڑکی کافرہ تھی اور اس نے کتے سور سے مراد کا فر لئے یعنی ان کی اولاد میں تو کافر بھی ہیں جو کتوں سوروں کے مثل ہیں بلکہ ان سے بھی بدتر ہیں وہ ہمارے بھائی کیسے ہو سکتے ہیں، تو اس پر الزام نہ رہے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۱: از دھاموں ڈاکخانہ دھاموں ضلع سیالکوٹ پنجاب روز دوشنبہ ۲ صفر المظفر ۱۳۳۷ھ اگر زید اپنی حقیقی بھائی بکر کو کسی سازش سے ایک مجلس میں بآواز کلمہ طیبہ پڑھ کر کہے کہ تم میرے بھائی نہیں ہو، ایسی صورت میں زید پر بموجب شرع شریف کچھ کفارہ لازم ہے اگر ہے تو کیا و کس

۱ القرآن الکریم ۱۰/۴۹ ۲ القرآن الکریم ۴۶/۱۱

Fatawa Razawiya Volume 13

What is its status? Please state the ruling and be rewarded.

The Answer: If his brother has treated him in a manner contrary to brotherhood, something that a brother does not do to another, then there is no blame on him for saying this because by this negation, the negation of reality is not intended but rather the negation of its fruit. However, if he said this without a valid Sharia reason, he has committed three major sins: explicit lying, cutting off ties of kinship, and harming a Muslim. It is obligatory for him to repent and seek forgiveness from his brother. And Allah knows best.

Problems 282 to 284: Received from Mustafa Raza Khan Sahib on Thursday, 29 Safar al-Muzaffar 1332 AH.

(1) Some people have a habit, for example, when someone says that a theft occurred at so-and-so's house, they respond by saying "It's good that the theft happened." Sometimes the apparent meaning of the words is intended, and sometimes the intention is that, for example, keeping the wealth was harmful or they were arrogant about it, so it's good that the theft happened so the arrogance would go away or the harm would be removed. In both scenarios, how is it to call a prohibited thing "good"?

(2) A statement contrary to the Kalima (creed) escaped someone's mouth. Later, he explicitly denied it and admitted its vileness, or he left it and affirmed the opposing rightful word. Has this constituted repentance, or is it necessary for him to say the word "Tawba" (repentance)?

(3) Among our relatives, a woman, angry with her husband, said, "I don't know what love you have for so-and-so's house (mentioning the name)." The husband replied, "God knows." To this, the woman said, "Nothing is even known by God," and after that, she said another sentence which was perhaps, "All your excuses are useless; these are just your negligences." How is this sentence? What is the ruling on it? Please state and be rewarded.

The Answer: (1) This does not mean that theft is a good thing such that one considers it permissible or good, which, God forbid, would lead to disbelief (kufr). Rather, the loss of wealth for the victim is considered good. This intention is sometimes due to envy, and envy is haram. In this case, it is absolutely a sin. Sometimes it is out of enmity, as a person likes to see their enemy suffer a loss. The ruling on this will

depend on the nature of that enmity. If the enmity is blameworthy, then this (being happy about the loss) is also vile and blameworthy. But if the enmity is commendable, like enmity towards the enemies of Allah, then there is no harm in it, as in the prayer: "Our Lord, destroy their wealth and harden their hearts" [Quran 10:88]. When it is permissible to wish for their loss through prayer, then being happy after it occurs...

1 Al-Quran al-Karim 10/88 Page 648 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

इसका क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: अगर उसके भाई ने उसके साथ भाईचारे के खिलाफ़ कोई ऐसा सुलूक किया है जो एक भाई दूसरे भाई के साथ नहीं करता, तो ऐसा कहने में उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं क्योंकि इस इनकार से हकीकत का इनकार मुराद नहीं बल्कि उसके फल का इनकार है। और अगर बिना किसी शरीय वजह के ऐसा कहा तो वो तीन बड़े गुनाहों का मुर्तकिब हुआ: साफ़ झूठ बोलना, रिश्तेदारों से ताल्लुक तोड़ना और मुसलमान को तकलीफ पहुँचाना। उस पर तौबा फ़र्ज़ है और भाई से माफ़ी माँगना लाज़िम है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २८२ से २८४: मारिफ़त मुस्तफ़ा रज़ा खाँ साहब, बरोज़ जुमेरात २९ सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र १३३२ हिजरी।

(१) कुछ लोगों की आदत होती है कि मसलन किसी ने कहा कि फ़लाँ के घर चोरी हुई, तो उन्होंने कहा कि अच्छा हुआ चोरी हुई। फिर कभी तो जो ज़ाहिरी लफ़्ज़ हैं वही मुराद होते हैं और कभी यह मुराद होता है कि चूंकि मसलन माल का रहना नुकसानदेह था या उन्हें उस पर ग़ुरूर था, लिहाज़ा अच्छा हुआ चोरी हो गई कि ग़ुरूर जाता रहा या नुकसान दूर हो गया। दोनों सूरतों में इस ममनूअ (वर्जित) चीज़ को अच्छा कहना कैसा है?

(२) एक शख्स के मुँह से कलमे (ईमान) के खिलाफ़ कोई बात निकली, बाद में उसने साफ़ तौर पर उससे इनकार किया और उसकी बुराई को तस्लीम किया या उसे छोड़कर उसके मुक़ाबले में हक़ बात का इकरार किया, तो क्या यह तौबा हो गई या 'तौबा' लफ़्ज़ कहना ज़रूरी है?

(३) हमारे रिश्तेदारों में से एक औरत ने अपने शौहर से नाराज़ होकर कहा, "न मालूम तुम्हें फ़लाँ के मकान से (नाम लेकर) क्या इश्क़ है।" शौहर ने कहा "ख़ुदा जाने"। इस पर औरत ने कहा "कुछ भी ख़ुदा जाने नहीं है", और उसके बाद एक और जुमला कहा जो शायद यह था कि "सब तुम्हारे हीले-हवाले बेकार हैं, ये तुम्हारी बे-परवाहियाँ हैं।" यह जुमला कैसा है? इसका क्या हुक्म है? बयान फरमाएँ और सवाब पाएँ।

जवाब: (१) इससे यह मुराद नहीं होता कि चोरी अच्छी बात है जिससे हराम चीज़ को अच्छा समझकर मआज़अल्लाह कुफ़्र की नौबत आ जाए, बल्कि उस शख्स के माल के नुकसान को अच्छा समझा

जाता है। और यही मुराद होती है कि कभी ये हसद की वजह से होता है और हसद हराम है, इस सूरत में तो ये कतई गुनाह है। कभी ये दुश्मनी की वजह से होता है कि दुश्मन का नुकसान दुश्मन को पसंद आता है, इसका हुक्म उस दुश्मनी के ताबे रहेगा। अगर दुश्मनी बुरी है तो ये भी बुरा है और अगर दुश्मनी अच्छी है जैसे अल्लाह के दुश्मनों से दुश्मनी, तो इसमें कोई हर्ज नहीं जैसे (दुआ में आया है): "ऐ हमारे रब! इनके माल बरबाद कर दे और इनके दिल सख्त कर दे।" जब दुआ के ज़रिए उनका नुकसान चाहना जायज़ है तो उसके वाके(घटित) होने के बाद उस पर खुश होना...

१ अल-कुरान अल-करीम १०/८८ पेज ६४८ ऑफ़ ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

قدر؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر اس کے بھائی نے اس کے ساتھ کوئی معاملہ خلاف اخوت کیا جو بھائی بھائی سے نہیں کرتا تو اس پر اس کہنے میں الزام نہیں کہ اس نفی سے نفی حقیقت مراد نہیں ہوتی بلکہ نفی ثمرہ، اور ایسا نہیں بلکہ بلا وجہ شرعی یوں کہا تو تین کبیروں کا مرتکب ہوا، کذب صریح، و قطع رحم و ایذائے مسلم، اس پر توبہ فرض ہے اور بھائی سے معافی مانگنی لازم۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۲ تا ۲۸٤: معرفت مصطفیٰ رضا خاں صاحب بروز پنجشنبہ ۲۹ صفر المظفر ۱۳۳۲ھ

(۱) بعض لوگوں کا قاعدہ ہے کہ مثلاً کسی نے کہا کہ فلاں کے گھر چوری ہوئی انہوں نے کہا کہ اچھا ہوا چوری ہوئی، پھر بعض دفعہ تو جو ظاہر کلام ہے ظاہر مراد ہوتا ہے اور بعض دفعہ یہ مراد ہوتا ہے کہ چونکہ مثلاً مال رہنا مضر تھا یا اس کا انہیں غرور تھا لہذا اچھا ہوا چوری ہو گئی کہ غرور جاتا رہا یا مضر دور ہو گیا دونوں تقدیروں پر یہ ممنوع چیز کو اچھا کہنا کیسا ہے؟

(۲) ایک شخص سے کوئی خلاف کلمہ نکلا بعد کو اس نے صراحۃً انکار کیا اور اس کا قبح تسلیم کر لیا یا اس کو چھوڑ کر اس کے مخالف حق کلمہ کا اقرار کیا آیا یہ توبہ ہو گئی یا ضرور ہے کہ لفظ توبہ کہے۔

(۳) ہمارے اعزہ میں سے ایک عورت نے اپنے شوہر سے ناراض ہو کر کہا نہ معلوم تمہیں فلاں کے مکان سے (نام لے کر) کیا عشق ہے، شوہر نے کہا خدا جانے، اس پر عورت نے کہا کچھ بھی خدا جانے نہیں ہے، اور اس کے بعد ایک اور جملہ کہا جو شاید یہ تھا کہ سب تمہارے حیلہ حوالے بیکار یہ ان بے پر وائیاں ہیں، یہ جملہ کیسا ہے؟ اس کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: (۱) اس سے یہ مقصود نہیں ہوتا کہ سرقہ اچھی بات ہے جس سے حرام قطعی کا استحقاق بلکہ استحسان ہو کر معاذ اللہ نوبت بہ کفر پہنچے بلکہ اس مسروق منہ کے نقصان مال کا استحسان سمجھا جاتا ہے اور یہی مقصود ہوتا ہے کہ کبھی براہ حسد ہوتا ہے اور حسد حرام ہے، اس صورت میں تو مطلقاً گناہ ہے، کبھی براہ عداوت ہوتا ہے کہ دشمن کا نقصان دشمن کو پسند آتا ہے اس کا حکم اس عداوت کا تابع رہے گا اگر عداوت مذمومہ ہے یہ بھی قبیح ومذموم ہے اور اگر عداوت محمودہ ہے جیسے اعداء اللہ سے دشمنی تو اس میں حرج نہیں جیسے "رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ" (اے ہمارے رب! ان کے مال برباد کر دے اور ان کے دل سخت کر دے۔ ت) جب دعا سے اس کا نقصان چاہنا روا ہے تو بعد وقوع اس پر خوش ہونا

۱ القرآن الکریم ۱۰/۸۸ Page 648 of 688

Fatawa Ridawiyya Volume 13

...what remained? Sometimes it is the case mentioned in the question. If it is with a correct intention, then it is not prohibited, as this is not being happy at someone's loss but rather at their gain. And Allah Almighty knows best.

(2) The word 'repentance' (Tawbah) is neither mandatory nor sufficient. What is required is remorse for the improper statement made, and hatred and dissociation from it. Secrets should be repented for in secret and public acts in public. (T) And Allah Almighty knows best.

(3) The speaker certainly does not intend to deny, God forbid, the knowledge of the Almighty, nor can a listener's mind ever go in that direction from their words. Rather, the husband had said 'God knows', meaning something is hidden that I don't know or don't want to tell. She said 'even God doesn't know anything', it has no connection to that horrific ruling. Furthermore, there is another subtlety: even if we wrongly assume a denial of knowledge was intended, God forbid, there is not even a scent of absolute denial. Rather, it pertains to that specific matter—meaning that no hidden cause for it is known to Allah. And the negation of something from Divine Knowledge means negating its existence, for if it had occurred, it would surely be in [His] knowledge.

فَكَانَ مِن بَاب قَوْلِه وَجَعَلُوْا لِلهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُوْنَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ[1]	**So this would be from the category of Allah Almighty's saying that they have made partners for Allah; say, name them or do you give Him news of that which He does not know on the face of the earth? (T)**

Yes, it is 'irsal-e-lisan' (loose speech) from which caution is required, and being foul-mouthed with the husband is enough to be included in 'Takfir al-Ashir'[2] (women showing ingratitude to husbands). Repentance is necessary. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and most wise.

Mas'ala 285: From Qaul Anwar ul-Haq, Tehsil Chunian, District Lahore, Wednesday, 2 Rabi' al-Awwal Sharif 1337 AH (Letter). (Qaul Anwar ul-Haq) Writing this petition again, O my leader, my master, and my spiritual guide, I submit that you are among us like a Messenger and a Prophet; please listen to the request of us humble ones and send a reply.

Al-Jawab (The Answer):

Warning: O Maulana! This word is very severe. La ilaha illallah, this poor, lowly, sinful, worthless servant...

[1] Al-Quran al-Karim 13/33 [2] Sahih al-Bukhari, Book of Menses 1/44 and Book of Zakat 1/197, Qadimi Kutub Khana, Karachi.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 13

...क्या बचा है? कभी वह स्थिति होती है जो प्रश्न में वर्णित है। यदि वह सही नीयत से है, तो वह वर्जित नहीं है, क्योंकि यह किसी के नुकसान पर खुश होना नहीं बल्कि लाभ पर खुश होना है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(2) 'तौबा' (प्रायश्चित) शब्द न तो अनिवार्य है और न ही पर्याप्त। जो अनुचित बात कही गई थी, उस पर पछतावा और उससे घृणा व अलगाव प्रकट करना आवश्यक है। गुप्त पापों के लिए गुप्त रूप से और सार्वजनिक के लिए सार्वजनिक रूप से प्रायश्चित करना चाहिए। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(3) कहने वाले का उद्देश्य कतई यह नहीं है कि—अल्लाह न करे—अल्लाह के ज्ञान का इनकार किया जाए, और न ही सुनने वाले का दिमाग उसकी बात से कभी इस ओर जा सकता है। बल्कि, पति ने कहा था 'अल्लाह जाने' जिसका अर्थ था कि कोई चीज़ छिपी हुई है जो मुझे नहीं पता या मैं बताना नहीं चाहता। उसने कहा 'अल्लाह भी कुछ नहीं जानता', इसका उस भयानक हुक्म से कोई संबंध नहीं है। इसके अलावा, यहाँ एक और सूक्ष्म बिंदु है: अगर हम गलत तरीके से यह मान भी लें कि ज्ञान के इनकार का इरादा था, तो अल्लाह न करे, पूर्ण इनकार की गंध भी नहीं है। बल्कि, यह उस विशेष मामले से संबंधित है—अर्थात् उसका कोई गुप्त कारण अल्लाह को नहीं पता। और ईश्वरीय ज्ञान से किसी चीज़ का इनकार करने का अर्थ उसके अस्तित्व का इनकार करना है, क्योंकि यदि वह घटित हुई होती, तो वह निश्चित रूप से [उनके] ज्ञान में होती।

فَكَانَ مِن بَاب قَوْلِه وَجَعَلُوْا لِلهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُوْنَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ[1]	**तो यह अल्लाह तआला के उस इरशाद के बाब (श्रेणी) से होगा कि उन्होंने अल्लाह तआला के शरीक बनाए; कह दीजिए उनके नाम बताइए या तुम वह खबर उसे देते हो जिसे उसने ज़मीन की सतह पर नहीं जाना। (त)**

हाँ, यह 'इरसाल-ए-लिसान' (जुबान की बेअदबी) है जिससे सावधानी की आवश्यकता है, और खुद पति के साथ बदजुबानी भी 'तक्फ़ुरनल-अशीर'[2] (औरतें शौहर की नाशुक्री करती हैं) में शामिल करने के लिए पर्याप्त है। तौबा करनी चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सबसे हकीम (बुद्धिमत्तापूर्ण) है।

मसाला 285: क़ौल अनवारुल हक़, तहसील चूनियाँ, जिला लाहौर, बुधवार, 2 रबीउल अव्वल शरीफ 1337 हिजरी (पत्र)। (क़ौल अनवारुल हक़) में अर्जी लिखकर दोबारा या सैयदना व मौलाना व मुर्शिदना अर्ज़ करता हूँ कि आप हम लोगों में रसूल और नबी की तरह हैं; आप खाकसारों (विनीत लोगों) की अर्ज़ सुनकर जवाब रवाना फरमाएँ।

अल-जवाब (उत्तर):

तम्बीह (चेतावनी): मौलाना! यह शब्द बहुत सख्त है। लाइलाहा इल्लल्लाह, यह फ़क़ीर ज़लील सियाहकार नाबकार...

[1] अल-कुरान अल-करीम 13/33 [2] सहीह अल-बुखारी, किताबुल हैज़ 1/44 और किताबुज़ ज़कात 1/197, कदीमी कुतुब खाना कराची।

पृष्ठ 649/688

کیا بچا ہے، کبھی وہ صورت ہوتی ہے جو سوال میں مذکور ہے وہ اگر بہ نیت صحیحہ ہے تو غیر محظور کہ یہ اس کے نقصان پر خوش ہونا نہیں بلکہ نفع پر۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) لفظ توبہ نہ ضرور نہ کافی جو قول بیجا صادر ہوا تھا اس پر ندامت اور اس سے نفرت و اظہارِ برات درکار ہے، السر بالسر والعلانیۃ بالعلانیۃ (پوشیدہ سے پوشیدہ اور علانیہ سے علانیہ۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ (۳) قائلہ کا ہرگز یہ مقصود نہیں کہ باری عزوجل سے معاذاللہ نفیِ علم کرے نہ زنہار اسکے کلام سے سامع کا ذہن اسطرف جاسکتا ہے، بلکہ شوہر نے کہا تھا خدا جانے یعنی کوئی چیز مخفی ہے جو مجھے معلوم نہیں یا جسے میں بتانا نہیں چاہتا اس نے کہا کچھ بھی خدا جانے نہیں اسے اس ہولناک حکم سے کوئی تعلق نہیں نیز یہاں ایک اور دقیقہ ہے بفرض غلط نفی علم ہی مراد لیں تو معاذاللہ نفی مطلق کی ہرگز بو بھی نہیں بلکہ اس امرِ خاص سے یعنی اس کا کوئی سبب خفی اللہ نہیں جانتا اور علم الہی سے کسی شے کی نفی اس کے علم سے نفی ہے کہ واقع ہوتا تو ضرور علم میں ہوتا،

فَكَانَ مِن بَاب قَوْلِه وَجَعَلُوْا لِهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُوْنَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ[1] **تو یہ اللہ تعالٰی کے اس ارشاد کے باب سے ہوگا کہ انہوں نے اللہ تعالٰی کے شریک بنائے فرمادیجئے ان کے نام بتایئے یا تم وہ خبر اس کو دیتے ہو جس کو اس نے روئے زمین پر نہ جانا۔ (ت)**

ہاں ارسالِ لسان ہے جس سے احتیاط درکار، اور خود شوہر کے ساتھ بدزبانی بھی تکفرن العشیر ۲ (عورتیں خاوند کی ناشکری کرتی ہیں۔ ت) میں داخل کرنے کو بس ہے توبہ چاہئے واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔ مسئلہ ۲۸۵: قول انوار الحق تحصیل چونیاں ضلع لاہور بروز چہار شنبہ ۲ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ (مکتوب) (قول انوار الحق) میں عریضہ لکھ کر دوبارہ یا سید نا ومولنا

ومرشد نا عرض کرتا ہوں کہ آپ ہم لوگوں میں مثل رسول ونبی کے ہیں آپ خاکساروں کی عرض سن کر جواب روانہ فرمائیں۔ الجواب:

تنبیہ: مولانا! یہ لفظ بہت سخت ہے لا الہ الا اللہ یہ فقیر ذلیل سیاہ کار نابکار

[1] القرآن الکریم ۱۳/۳۳ [2] صحیح البخاری کتاب الحیض ۱/۴۴ و کتاب الزکوٰۃ ۱/۱۹۷ قدیمی کتب خانہ کراچی

Fatawa Razawiyya Volume 13

What thing is it? Yes, for the elders, this phrase has appeared in the Hadith: 'The elder among his people is like the Prophet among his Ummah.' [1] A Sheikh among his people is like a Prophet in his Ummah, but there is a great difference between 'like' (misl) and 'resembling' (manind). 'Misl' (similar/equal), God forbid, implies equality, whereas 'manind' (resembling) only implies a certain similarity. Therefore, Sayyiduna Imam-e-A'zam (may Allah be pleased with him) said: 'Imani ka-imani Jibra'il' (My faith is like the faith of Jibril - Trans.) and not 'misl imani Jibra'il' (like the faith of Jibril - Trans.). Finis.

Problem 286: Submitted by Sayyid Hamidur Rahman Sahib Sabri Faruqi, Gola Ghat, Mohalla Kachehri Haat, Assam, 15 Rabi' al-Thani 1337 AH. What do the scholars of the sacred religion say about this matter: a person spoke to his spiritual guide's son (murshid-zada) with contempt and disrespect. That murshid-zada is a Sayyid Hassani by lineage, a Maulvi educated in an Arabic Madrasa of India, and belongs to the exalted Qadriyya order. In reality, the murshid-zada had no fault or shortcoming, yet this person spoke to him with disrespect and contempt in front of many people. Now, according to the Sharia of the firm religion, what is the ruling for this person? Will there be any defect in his faith and marriage or not? Finis.

Answer: It is haram (forbidden) to speak harshly to or abuse any Muslim without reason, let alone a Sayyid, or a scholar, or one's own murshid-zada. It is in the Sahih Hadith that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

He who harms a Muslim has indeed harmed me, and he who harms me has indeed harmed Allah. [2]	He who harms a Muslim has indeed harmed me, and he who harms me has indeed harmed Allah (the Almighty and Majestic).

Another Hadith states:

There are three whose rights no one belittles except an open hypocrite: the one who has grown old in Islam...	No one will belittle the rights of three persons except a clear hypocrite: one is he who grew old in Islam, the second...

[1] Kanz al-Ummal, Hadith 22632 & 22633, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 9/262. [2] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktabah al-Ma'arif, Riyadh, 3/73.

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

क्या चीज़ है? हाँ, बुजुर्गों के लिए हदीस में यह शब्द आया है: 'अश-शेख फ़ी कौमिही क-नबी फ़ी उम्मतिही' [१] (एक बुजुर्ग अपनी कौम में वैसे ही है जैसे नबी अपनी उम्मत में)। शेख अपनी कौम में नबी के समान है अपनी उम्मत में, लेकिन 'मिसल' (समान) और 'मानिंद' (जैसा) में बहुत अंतर है। 'मिसल' अल्लाह की पनाह, बराबरी का भ्रम पैदा करता है और 'मानिंद' सिर्फ एक समानता चाहता है। इसलिए सय्यदना इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फरमाया 'ईमानी क-ईमानी जिब्रील' (मेरा ईमान जिब्रील के ईमान जैसा है - त.) न कि 'मिसल-ए-ईमान-ए-जिब्रील' (जिब्रील के ईमान के समान - त.)। केवल।

मसला २८६: प्रेषक: सय्यद हमीदुर रहमान साहब साबरी फारूकी, गोला घाट, मोहल्ला कचहरी हाट, असम, १५ रबी-उल-सानी १३३७ हिजरी। दीन-ए-मुकद्दस के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति ने अपने मुर्शिद ज़ादा (गुरुपुत्र) से हिक़ारत और बदतमीजी से कुछ बातें कहीं। वह मुर्शिद ज़ादा कौम के सय्यद हसनी हैं और हिंदुस्तान के अरबी मदरसे के शिक्षित मौलवी हैं और अहल-ए-तरीकत में कादिरिया आलिया से हैं। हकीकत में उस मुर्शिद ज़ादा का कोई कसूर या गलती नहीं थी, फिर भी उस व्यक्ति ने बहुत से लोगों के सामने उस मुर्शिद ज़ादा से बदतमीजी और हिक़ारत से बातें कीं। अब शरीअत-ए-दीन-ए-मतीन के अनुसार इस व्यक्ति के लिए क्या हुक्म है? क्या उसके ईमान और निकाह में कोई खराबी आएगी या नहीं? केवल।

उत्तर (अल-जवाब): बिना किसी वजह के किसी मुसलमान को बुरा-भला कहना हराम है, फिर चाहे वह सय्यद हो, आलिम हो या अपना मुर्शिद ज़ादा। सही हदीस में है, नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

जिसने किसी मुसलमान को कष्ट दिया, उसने मुझे कष्ट दिया; और जिसने मुझे कष्ट दिया, उसने अल्लाह को कष्ट दिया। [२]	जिसने किसी मुसलमान को कष्ट दिया, उसने मुझे कष्ट दिया; जिसने मुझे कष्ट दिया, उसने अल्लाह अज्जवजल को कष्ट दिया।

दूसरी हदीस में है:

तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनके हक को केवल एक स्पष्ट मुनाफिक (पाखंडी) ही हल्का समझेगा: एक वह जो इस्लाम में बूढ़ा हुआ...

तीन व्यक्तियों के हक को हल्का नहीं समझेगा मगर खुला मुनाफिक: एक वह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, दूसरा...

[१] कंजुल उम्माल, हदीस २२६३२ और २२६३३, मुअस्ससतुर रिसाला, बेरूत, ९/२६२। [२] अल-मुअजमुल औसत, हदीस, मकतबतुल माआरिफ, रियाद, ३/७३।

पृष्ठ ६५० / ६८८

کیا چیز ہے ہاں اکابر کے لئے یہ لفظ حدیث میں آیا ہے کہ الشیخ فی قومہ کالنبی فی امتہ ۱ شیخ اپنی قوم میں مانند نبی کے ہیں اپنی امت میں مگر مثل اور مانند میں بہت فرق ہے مثل معاذ اللہ مساوات کا ایہام کرتا ہے اور مانند صرف ایک مشابہت چاہتا ہے، اس لئے سیدنا امام اعظم رضی اللہ عنہ نے ایمانی کایمان جبریل (میرا ایمان جبرائیل کے ایمان کی مانند ہے۔ت) فرمایا نہ کہ مثل ایمان جبریل (مثل ایمان جبریل۔ت) فقط

مسئلہ ۲۸۶: مسئولہ سید حمید الرحمن صاحب صابری فاروقی گولہ گھاٹ محلہ کچہری ہاٹ آسام ۱۵ ربیع الثانی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مقدس اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنے مرشد زادہ کو حقارت و بے ادبی سے کچھ باتیں کہیں وہ مرشد زادہ قوم کا سید حسنی ہے اور ہندوستان کے مدرسہ عربی کا تعلیم یافتہ مولوی ہے اور اہل طریقہ میں قادریہ عالیہ ہے، حقیقت میں اس مرشد زادہ کا کچھ بھی خطا و قصور نہیں تھا بجز اس شخص نے بہت لوگوں کے سامنے اس مرشد زادہ کو بے ادبی اور حقارت سے باتیں کہیں۔ اب از روئے شرع دین متین اس شخص کو کیا حکم دیتے ہیں اب ایمان و نکاح میں کچھ خلل اس کا ہوگا یا نہیں؟ فقط۔

الجواب: بلاوجہ کسی مسلمان کو سخت و سست کہنا حرام ہے نہ کہ سید نہ کہ عالم نہ کہ اپنا مرشد زادہ۔ صحیح حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من آذی مسلما فقد آذانی ومن آذانی فقد آذی اللہ - ۲ جس نے کسی مسلمان کو ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی، جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ عزوجل کو ایذا دی۔

دوسری حدیث میں ہے:

ثلثة لا یستخف بحقھم الا منافق بین النفاق۔ ذو الشیبة فی الاسلام

تین شخصوں کے حق کو ہلکا نہ کرے گا مگر کھلا منافق ایک وہ جسے اسلام میں بڑھاپا آیا دوسرا

۱ کنز العمال حدیث ۲۲۶۳۲ و ۲۲۶۳۳ مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۹ / ۲۶۲ ۲ المعجم الاوسط حدیث مکتبۃ المعارف الریاض ۳ / ۷۳

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

[Boxed Header] And the person of knowledge and the just leader - 1 The third (category) is a scholar, the king of Islam, just.

[Body Text] If the situation is indeed as mentioned in the query, then that person has certainly committed a major sin (Kabira), but it cannot be said that there is a defect in his Islam or marriage as long as no specific word or deed detrimental to them has occurred. And Allah Almighty knows best.

Issue 277: From Bisharat Ganj, district Bareilly, posed by Haji Ghani Raza Khan Sahib, 4 Rajab 1339 AH. Zaid is a person married to Bakr's daughter. Now, after several children have been born, Zaid has also contracted a marriage with his wife's sister (i.e., his real sister-in-law) and maintains marital relations with both, and both have children. Zaid is from the butcher community. In such a situation, can he be called an adulterer or not? Should meat be bought from his hand or not? Should one participate in his death (rites) or not? Explain and be rewarded.

The Answer: He is certainly an evildoer (haram-kar). Meat should not be bought from him; rather, one should not even exchange greetings or talk with him. His near relatives will take care of his death rites; others have no need to participate without necessity. And Allah Almighty knows best.

Issue 288: Sent by Muhammad Taqi, location Bhakkar, near the railway station, via Haji Bakhsh Sahib, 29 Rabi-ul-Awwal 1335 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid called Bakr an 'accursed devil' (Iblis Mardud) and a 'disbeliever' (Kafir) multiple times on different occasions. Zaid is elderly, Bakr is young. Bakr was reciting the Friday sermon (Khutbah) on Friday. During the sermon, an error occurred in a blessed verse. Zaid shouted and pointed it out. Bakr corrected his mistake, but Zaid continued shouting and repeating his recitation several times in that same hour. Then, after finishing the prayer, Zaid stopped everyone and began saying, "This accursed devil always recites incorrectly and has slaughtered me." Bakr gave no answer except silence. And if Zaid is present, let Bakr ask Zaid to lead the prayer, but Zaid should not lead. Then Bakr, after leading two Friday prayers, answered that the person from whom no mistake occurs should lead Friday. The followers said, "You must lead, as it seems to cause opposition and it is also proven." Anyway, other imams were appointed. A few days later, the Imam passed away. After that, Zaid himself started leading the prayer. In this situation, will Zaid's leadership

(Imamat) be correct or not? And according to Sharia, who among the two will be considered a Kafir and Iblis?

[Footnote] 1 Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 8197, Al-Maktabah al-Faisaliyah, Beirut, 8/238; Kanz al-Ummal with reference to Abi al-Shaikh in at-Tawbeeq, Hadith 43812, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 16/32. Page 651 of 688

[शीर्ष बॉक्स] और ज्ञानवान व्यक्ति और न्यायप्रिय नेता - १ तीसरा (श्रेणी) विद्वान है, इस्लाम का राजा, न्यायप्रिय।

[मुख्य पाठ] यदि स्थिति वास्तव में वैसी ही है जैसा कि प्रश्न में उल्लेख किया गया है, तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से एक बड़ा पाप (कबीरा) का अपराधी हुआ है, लेकिन उसके इस्लाम या निकाह (विवाह) में तब तक कोई कमी नहीं कही जा सकती जब तक कि उनमें कोई विशेष शब्द या कार्य बाधक न हुआ हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २७७: बशारत गंज, जिला बरेली से, हाजी गनी रज़ा खान साहब द्वारा पूछा गया, ४ रजब १३३९ हिजरी। ज़ैद एक व्यक्ति है जिसका निकाह बक्र की लड़की के साथ हुआ है। अब, कई बच्चे पैदा होने के बाद, ज़ैद ने अपनी पत्नी की बहन (अर्थात् अपनी सगी साली) के साथ भी निकाह कर लिया है और दोनों के साथ पत्नी जैसा व्यवहार करता है, और दोनों से बच्चे भी हैं। ज़ैद कसाई जाति से है। क्या ऐसी स्थिति में उसे व्यभिचारी (ज़ानी) कहा जा सकता है या नहीं? क्या उसके हाथ का मांस खरीदना चाहिए या नहीं? क्या उसकी मृत्यु (जनाज़े) में शामिल होना चाहिए या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: वह निश्चित रूप से हरामकार (पापी) है। उससे मांस नहीं खरीदना चाहिए, बल्कि उससे सलाम-दुआ या बातचीत भी नहीं करनी चाहिए। उसकी मृत्यु पर उसके करीबी रिश्तेदार ही निपट लेंगे, दूसरों को बिना आवश्यकता के शामिल होने की कोई ज़रूरत नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २८८: मुहम्मद तकी द्वारा भेजा गया, स्थान भक्कर, रेलवे स्टेशन के पास, हाजी बख्श साहब के माध्यम से, २९ रबी-उल-अव्वल १३३५ हिजरी। विद्वान इस मसले के बारे में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने बक्र को विभिन्न समयों पर कई बार 'धिक्कृत शैतान' (इबलीस मरदूद) और 'काफिर' कहा। ज़ैद बुजुर्ग है, बक्र युवा है। बक्र शुक्रवार के दिन जुमे का खुत्बा पढ़ रहा था, खुत्बे के दौरान किसी आयत में गलती हो गई। ज़ैद ने चिल्लाकर बताया। बक्र ने अपनी गलती सुधार ली, लेकिन ज़ैद उसी समय चिल्ला-चिल्लाकर कई बार अपनी क़िरात (पाठ) दोहराता रहा। फिर नमाज़ से फारिग (मुक्त) होने के बाद ज़ैद ने सब लोगों को रोका और कहने लगा, "यह धिक्कृत शैतान हमेशा गलत पढ़ता है और इसने मुझे ज़िबह कर दिया (मार डाला) है।" बक्र ने सिवाय खामोशी के कोई जवाब नहीं दिया।

और अगर ज़ैद मौजूद हो, तो बक्र ज़ैद को नमाज़ पढ़ाने के लिए कहे, लेकिन ज़ैद न पढ़ाए। फिर बक्र ने दो जुमे पढ़ाकर जवाब दिया कि वह व्यक्ति जुमा पढ़ाए जिससे कोई गलती न हो। मुकतदियों (नमाज़ियों) ने कहा कि तुम ज़रूर पढ़ाओ क्योंकि इससे विरोध का कारण मालूम होता है और यह साबित भी हो गया। बहरहाल, दूसरे इमाम नियुक्त किए गए। कुछ दिनों बाद इमाम साहब का इंतकाल हो गया। उसके बाद ज़ैद खुद ही नमाज़ पढ़ाने लगा। इस स्थिति में ज़ैद की इमामत सही होगी या नहीं? और उन दोनों में शरीयत के अनुसार काफिर और इबलीस कौन होगा?

[पाद टिप्पणी] १ अल-मुअजम अल-कबीर हदीस ८१९७ अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरूत २३८/८, कंज़ुल उम्माल अल-तौबीक़ में अबी अल-शेख के हवाले से हदीस ४३८१२ मुअस्ससा अल-रिसाला बेरूत ३२/१६। पृष्ठ ६५१ का ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

[خانہ] وذو العلم وامام مقسط۔ ۱ عالم تیسرا بادشاہ اسلام عادل۔

صورت واقعہ اگر یونہی ہے جیسے سوال میں مذکور ہوئی تو وہ شخص ضرور مرتکبِ کبیرہ ہوا ، مگر اسلام و نکاح میں خلل نہیں کہہ سکتے جب تک کوئی خاص قول و فعل ان میں مخل صادر نہ ہوا ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۷۷ : از بشارت گنج ضلع بریلی مسئولہ حاجی غنی رضا خاں صاحب ۴ رجب ۱۳۳۹ھ زید ایک شخص ہے جس کا نکاح بکر کی لڑکی کے ساتھ ہوا ہے، اب چند بچے پیدا ہونے کے بعد زید نے اپنی بیوی کی ہمشیرہ کے ساتھ یعنی حقیقی سالی کے ساتھ بھی عقد کر لیا ہے اور دونوں سے مراسم بیوی کی ادا کرتا ہے اور دونوں کی اولاد بھی ہے، اور زید قوم قصاب سے ہے، آیا ایسی حالت میں اس کو زانی کہہ سکتے ہیں یا نہیں؟ اور اس کے ہاتھ کا گوشت خریدنا چاہئے یا نہیں؟ اور اس کی موت میں شریک ہونا چاہئے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: وہ ضرور حرامکار ہے، اس سے گوشت خریدنا بلکہ سلام کلام کرنا ہی نہ چاہئے، موت اس کے عزیز و قریب کرلیں گے اوروں کو بلا ضرورت شرکت کی حاجت نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۸ : مرسلہ محمد تقی مقام بکھر متصل اسٹیشن ریلوے بتوسط حاجی بخش صاحب ۲۹ ربیع الاول ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے کرام اس مسئلہ میں کہ زید نے بکر کو اوقات مختلفہ میں ابلیس مردود کافر متعدد بار کہا، زید معمر ہے بکر نو عمر، بکر یوم جمعہ کو خطبہ جمعہ پڑھ رہا تھا، اثناءِ خطبہ میں کسی آیہ کریمہ میں غلطی ہوئی زید نے چلا کر بتایا، بکر نے اپنی غلطی کی اصلاح کر لی مگر زید نے اسی ساعت میں چلا چلا کر چند بار اپنی قرات کرتا ہی رہا، پھر بعد

فراغ نماز زید نے سب لوگوں کو ٹھہرایا اور کہنے لگا یہ مردود ابلیس ہمیشہ غلط پڑھتا ہے اور مجھے ذبح کر دیا ہے ، بکر نے سوائے سکوت کوئی جواب نہیں دیا ، اور اگر زید موجود ہے تو بکر نماز پڑھانے کے لئے زید کو کھلائے مگر زید نہ پڑھائے، پھر بکر نے دو جمعہ پڑھا کر جواب دیا کہ وہ شخص جمعہ پڑھائے جس سے کوئی غلطی نہ ہو۔ مقتدیوں نے کہا تم ضرور پڑھاؤ تو مخالفت کا باعث معلوم ہوتا ہے اور ثابت بھی ہوگیا، بہر حال دوسرے امام مقرر کئے گئے چند دنوں بعد امام صاحب نے انتقال فرمایا اس کے بعد زید خود ہی نماز پڑھانے لگا، اس حالت میں زید کی امامت صحیح ہوگی یا نہیں؟ اور ان دونوں میں شرعاً کافر و ابلیس کون ہوگا؟

[حاشیہ] 1 المعجم الکبیر حدیث ۸۱۹۷ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲۳۸/۸، کنزالعمال بحوالہ ابی الشیخ فی التوبیخ حدیث ۴۳۸۱۲ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۳۲/۱۶ Page 651 of 688

فتاوىٰ رضويہ (Fatawa Razawiya) - Volume 13, Page 13

The Answer It is strictly forbidden (Haram) to call Muslims 'accursed' (mardood) or 'Satan' (Iblees) without a valid Sharia reason. Allah Almighty says:

Arabic	Urdu Translation
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝[1]	"And those who harm believing men and believing women for [something] other than what they have earned [i.e., deserved] have certainly born upon themselves a slander and manifest sin." (T)

The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic	Urdu Translation
من اذى مسلما فقد اذانى ومن اذانى فقد اذى الله ۝[2]	"Whoever harms a Muslim unjustly has harmed me, and whoever harms me has harmed Allah."

And calling a Muslim an 'infidel' (kafir) is so severe that it is stated in many authentic Hadiths: "Indeed, it [the label of disbelief] will settle upon one of them."[3] This calamity will surely fall upon one of the two; if the one who was called a disbeliever is actually a disbeliever, then fine, otherwise this statement will return to the one who said it. Therefore, the fatwa of Imam A'mash and the Imams of Balkh and many other eminent jurists is that whoever calls a Muslim a disbeliever becomes a disbeliever himself. "And the correct view contains details which we have mentioned in our Fatwas." During the Friday sermon (Khutbah), it was also forbidden for Zaid to repeatedly recite out loud even after Bakr's correction.

Arabic	Urdu Translation
قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝[4]	Allah Almighty said: "So when the Qur'an is recited, then listen to it and pay attention that you may receive mercy." (T)

If Zaid has uttered these words without a valid Sharia reason, it is mandatory (Fard) for him to repent and seek forgiveness from Bakr. Otherwise, he is an open sinner (fasiq mu'allin). To make him an Imam is a sin, and praying behind him is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi). And Allah knows best.

---

[1] Al-Quran al-Karim 33/58 [2] Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktaba al-Ma'arif al-Riyadh, 4/73 [3] Sahih al-Bukhari, Book of Manners, Chapter on calling one's brother a

disbelievers without interpretation, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/901 [4] Al-Quran al-Karim 7/204

फ़तावा रज़विया (Fatawa Razawiya) - जिल्द 13, पेज 13

अल-जवाब (उत्तर) बिना किसी शरीयत के वैध कारण के मुसलमानों को 'मर्दुद' (धिक्कारित) या 'इब्लीस' (शैतान) कहना सख्त हराम है। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿1﴾	"और जो लोग मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को बिना किसी कारण के कष्ट देते हैं, तो बेशक उन्होंने एक बड़े आरोप और स्पष्ट पाप का बोझ उठाया है।" (त)

नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
من اذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ ﴿2﴾	"जिसने किसी मुसलमान को नाहक़ (बिना वजह) दुःख पहुँचाया, उसने मुझे दुःख पहुँचाया और जिसने मुझे दुःख पहुँचाया उसने अल्लाह को दुःख पहुँचाया।"

और मुसलमानों को काफ़िर कहना तो इतना सख्त है कि कई सहीह हदीसों में फ़रमाया गया: "तो यकीनन वह (कुफ़्र) उन दोनों में से एक पर लौट आयेगा"।[3] यह बला (मुसीबत) उन दोनों में से एक पर ज़रूर पड़ेगी; जिसे काफ़िर कहा गया अगर वह वास्तव में काफ़िर है तो ठीक, वर्ना यह कहना कहने वाले पर ही पलट आएगा। इसलिए इमाम आमश और बलख़ के अन्य इमामों और कई महान फकीहों का फतवा यही है कि जो मुसलमान को काफ़िर कहे वह खुद काफ़िर हो जाता है। "और सही यह है कि इसमें विस्तार है जिसका उल्लेख हमने अपने फ़तवों में किया है।" ख़ुतबे (प्रवचन) के दौरान बक्र द्वारा सही करने के बाद भी ज़ैद का बार-बार अपनी क़िरात जारी रखना भी हराम था।

अरबी	उर्दू अनुवाद
قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿4﴾	अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।" (त)

अगर ज़ैद ने बिना किसी शरीयत के वैध कारण के इन शब्दों का इस्तेमाल किया है, तो उस पर फ़र्ज़ है कि वह तौबा (पश्चाताप) करे और बक्र से माफ़ी माँगे, वर्ना वह एक खुले तौर पर पापी (फ़ासिक़

मुअलिन) है। उसे इमाम बनाना गुनाह है और उसके पीछे नमाज़ पढ़ना 'मकरूह-ए-तहरीमी' (कड़ाई से नापसंद) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 33/58 [2] अल-मुअजम अल-औसत, हदीस, मकतबा अल-माआरिफ अल-रियाद, 4/73 [3] सहीह अल-बुख़ारी, किताब अल-अदब, बाब: किसी भाई को बिना तावील के काफ़िर कहना, आदि, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 2/901 [4] अल-क़ुरआन अल-करीम 7/204

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

الجواب مسلمانوں کو بلاوجہ شرعی مردود، ابلیس کہنا سخت حرام ہے۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے:

عربی	اردو ترجمہ
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿1﴾	وہ لوگ جو مومن مردوں اور عورتوں کو بلاوجہ اذیت دیتے ہیں تو بیشک انہوں نے بہتان اور واضح گناہ کا ارتکاب کیا۔ (ت)

نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی	اردو ترجمہ
من اذی مسلما فقد اذانی ومن اذانی فقد اذی اللہ ﴿2﴾	جس نے کسی مسلمان کو ناحق ایذا دی اس نے مجھے ایذا دی اور جس نے مجھے ایذا دی اس نے اللہ کو ایذا دی۔

اور مسلمانوں کو کافر کہنا تو ایسا سخت ہے کہ احادیث کثیرہ صحیحہ میں فرمایا "فقد باء بہ احدھما"[3] یہ بلا دونوں میں سے ایک پر ضرور پڑے گی جسے کافر کہا اگر وہ واقع میں کافر ہے تو خیر ورنہ یہ کہنا اسی کہنے والے پر پلٹ آئے گا، ولہذا امام اعمش و ائمہ بلخ وغیرہ ہم کثیر فقہائے کرام کا فتوٰی یہی ہے کہ جو مسلمان کو کافر کہے خود کافر ہو جاتا ہے والصحیح فیہ تفصیل اوردنا ھا فی فتاوٰینا (اور صحیح یہ ہے کہ اس میں تفصیل ہے جس کو ہم نے اپنے فتاوی میں ذکر کیا ہے) عین حالت خطبہ میں تصحیح بکر کے بعد بھی جو زید بار بار اپنی قرات کرتا رہا یہ بھی حرام تھا،

عربی	اردو ترجمہ
قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوا لَہُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّکُمْ تُرْحَمُونَ [4]	اللہ تعالیٰ نے فرمایا: جب قرآن پڑھا جائے تو اسے کان لگا کر سنو اور چپ رہو تاکہ تم پر رحم کیا جائے۔ (ت)

زید اگر بلاوجہ شرعی ان الفاظ کا مرتکب ہوا ہے تو اس پر فرض ہے کہ توبہ کرے اور بکر سے معافی چاہے ورنہ وہ فاسق معلن ہے اسے امام بنانا گناہ اور اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

[1] القرآن الکریم ۵۸/۳۳ [2] المعجم الاوسط حدیث مکتبۃ المعارف الریاض ۷۳/۴ [3] صحیح البخاری کتاب الادب باب من اکفر اخاہ بغیر تأویل الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۰۱/۲ [4] القرآن الکریم ۷/۲۰۴

Fatawa Razawiya Volume 13 Problem 289 to 290: From Postkat Faqirhat Madrasa Islamia Kalapul Chittagong, sent by Wahidullah Sahib, 26 Rabi al-Awwal 1336 AH. What is your opinion, may Allah Almighty have mercy on you, regarding this issue: An ignorant man said to a teacher of Arabic sciences—meaning the fundamentals and objectives—"You are nothing but a human like us." The teacher of Arabic replied, "If that is the case, then what am I doing in Madrasa Alia for example?" The ignorant man replied to him, "O herder of cows and pigs! You are herding them there." Furthermore, his belief is that Allah Almighty forgives any polytheist He wills and admits them into Paradise, and He forgives whom He wills. When the scholar mentioned some verses of the Quran and authentic Hadiths to him, the ignorant person said, "This is nothing." In the situation presented, are repentance and renewal of marriage mandatory for him or not? (2) If someone says and believes that a person who abandons prayer (Salah) is a disbeliever (Kafir), does this speaker fall outside the school of thought of Imam Abu Hanifa, may Allah Almighty have mercy on him, or not? Explain and be rewarded.

The Answer: As for the way he addressed the scholar, it is due to his ignorance and extreme disrespect. Because of this, he and others like him deserve severe punishment (Ta'zir) appropriate to his condition, to deter him and his likes. In a Hadith from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), it is stated: "None belittles their right except a hypocrite." The words with which he addressed the scholar reflect his ignorance and extreme disrespect. Due to this, he and other such people deserve severe punishment appropriate to their crime. In the Noble Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Insulting three types of people is the act of an open hypocrite...

Page 653 of 688

फ़तावा रज़विया खंड 13 मसला 289 से 290: पोस्टकाट फ़कीरहाट मदरसा इस्लामिया कालापुल चटगाँव से, वाहिदउल्लाह साहब द्वारा प्रेषित, 26 रबी उल अव्वल 1336 हिजरी। उलेमा-ए-किराम (अल्लाह तआला आप पर रहम करे) का इस मसले में क्या इर्शाद है: एक जाहिल शख्स अरबी उलूम (ज्ञान) के उस्ताद—यानी बुनियादी और उद्देश्यपूर्ण—से कहता है कि "तू हमारे जैसा बशर (इंसान) है"। अरबी के शिक्षक ने जवाब में कहा, "अगर यही मामला है तो फिर मैं मदरसा आलिया में क्या कर रहा हूँ?" जाहिल ने उसे जवाब में कहा, "ऐ गाय और सुअर के चरवाहे! तू वहाँ उन्हें चराता है।" इसके अलावा उसका अक़ीदा है कि अल्लाह तआला जिस मुश्रिक (बहुदेववादी) को चाहे बख्श दे और उसे जन्नत में दाखिल फरमा दे। इस पर जब उस आलिम ने उसे कुछ क़ुरआनी आयात और सही अहादीस सुनाईं, तो जाहिल ने कहा, "यह कोई चीज़ नहीं है।" तो क्या बयान की गई सूरत में उस पर तौबा और तज्दीद-ए-निकाह (निकाह का नवीनीकरण) ज़रूरी है या नहीं? (2) जो शख्स यह अक़ीदा रखे और बयान करे कि नमाज़ का तारिक (त्यागने वाला) काफ़िर है, तो क्या ऐसा कहने वाला इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मज़हब से बाहर है या नहीं? बयान करें और अज्र पाएँ। (त)

अल-जवाब (उत्तर): जहाँ तक उस जाहिल द्वारा आलिम को संबोधित करने की बात है, तो यह उसकी जहालत और घोर बदतमीज़ी है। इसकी वजह से वह और उसके जैसे अन्य लोग अपने अपराध के अनुसार कड़ी सज़ा (ताज़ीर) के हकदार हैं। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इर्शाद है: "उनके हक़ को केवल मुनाफ़िक़ ही कमतर समझता है।" उसने आलिम को जिन शब्दों से संबोधित किया है, वे उसकी जहालत और अत्यंत अशिष्टता हैं। इस कारण वह और उसके जैसे अन्य लोग अपने अपराध के अनुसार कड़ी सज़ा के पात्र हैं। हदीस शरीफ में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इर्शाद है: तीन हज़रात का अपमान करना स्पष्ट रूप से मुनाफ़िक़ का काम है...

पृष्ठ 653/688

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳ مسئلہ ۲۸۹ تا ۲۹۰: از پوسٹ کاٹ فقیر ہاٹ مدرسہ اسلامیہ کالاپل چاٹگام مرسلہ وحید اللہ صاحب ۲۶ ربیع الاول ۱۳۳۶ مأقولکم رحمکم اللہ تعالی فی ھذہ المسألۃ ان رجلا اخا الجھل قال لمعلم العلوم العربیۃ اعنی المبادی والمقاصد ما انت الابشر مثلنا فقال لہ اذکان الامر کذلک فما اصنع فی المدرسۃ العالیۃ مثلا فاجاب لہ یا راعی البقر والخنزیر ترعیھما فیھا وایضا اعتقدان اللہ یغفر ویدخل الجنۃ من یشرک بہ لمن یشاء یغفر لمن یشاء فذکر العالم شیئاً من آیۃ القرآن والاحادیث الصحیحۃ فقال ھذا لیس بشیئ ففی الصورۃ المسئولۃ ھل یجب التوبۃ وتجدید النکاح علیہ ام لا۔ علمائے کرام (اللہ تعالیٰ آپ پر رحم کرے) آپ کا کیا ارشاد ہے کہ اس مسئلہ میں کہ ایک جاہل شخص، عربی علوم کی مبادی ومقاصد کے استاذ کو کہتا ہے کہ تو ہمارے جیسا بشر ہے، تو عربی کے معلم نے جواب میں کہا اگر یہی معاملہ ہے تو پھر میں مدرسہ عالیہ میں کیا کر رہا ہوں تو جاہل نے اسے جواب میں کہا، اے گائے اور خنزیر کے چرواہے! تو وہاں ان کو چراتا ہے اور نیز اس کا عقیدہ ہے اللہ تعالیٰ جس مشرک کو چاہے بخش دیتا ہے اور اس کو جنت میں داخل فرماتا ہے، تو اس پر اس عالم نے اس کو کچھ قرآنی آیات اور صحیح احادیث سنائیں، تو جاہل نے کہا یہ کوئی چیز نہیں ہے، تو کیا مسئولہ صورت میں توبہ اور تجدیدِ نکاح ضروری ہے یا نہیں؟ (۲) من قال واعتقد تارك الصلوۃ کافر فالقائل ھل ھو خارج عن مذھب ابی حنیفۃ رحمہ اللہ تعالی ام لا۔ بینوا توجروا۔ (۲) جو شخص یہ عقیدہ رکھے اور بیان کرے کہ نماز کا تارک کافر ہے، تو یہ کہنے والا، کیا وہ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مذہب سے خارج ہے یا نہیں؟ بیان کرواجر پاؤ۔(ت)

الجواب: اما ما خاطب بہ العالم فھو من جھلہ وسوء ادبہ یستحق بہ التعزیر الشدید اللائق بحالہ الزاجر لہ ولا مثالہ ففی الحدیث عنہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا یستخف بحقھم الامنافق۔ اس نے عالم کو جن الفاظ سے خطاب کیا ہے وہ اس کی جہالت اور انتہائی بے ادبی ہے اس کی وجہ سے وہ اور ایسے

دیگر لوگ اپنے جرم کے مناسب شدید تعزیر کے مستحق ہیں۔ حدیث شریف میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام کا ارشاد ہے تین حضرات کی توہین کھلے منافق

Fatawa-e-Razawiyya Volume 13

[...continued from the previous page] no one else can do. One is a scholar, the second is one who reached old age in Islam, and the third is a just Muslim king. However, his statement that "Allah Almighty forgives whichever polytheist (mushrik) He wills" is contrary to the Great Quran. Because Allah Almighty has said: "Indeed, Allah does not forgive that partners be associated with Him, but He forgives what is less than that for whom He wills." And his statement regarding the verses of the Great Quran and the Hadiths that "this is nothing," is purely such a manifest disbelief (Kufr) upon which the rulings of apostates apply. Therefore, it is necessary for him to renew his Islam (Tajdid-e-Islam). After becoming a Muslim, he should remarry his wife with her consent. If she does not agree to the marriage, then the wife has the choice to complete her waiting period ('Iddah) and marry someone else according to her own will. And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best.

(2) The application of disbelief (Kufr) upon the one who neglects prayer is mentioned in authentic Hadiths, and this is the school of thought of the majority of the Companions and the Successors (Tabi'in). While this issue is not merely jurisprudential (Fiqhi) but relates to the science of theology ('Ilm al-Kalam), a difference of opinion has existed among the People of the Sunnah (Ahl al-Sunnah) since ancient times. Therefore, if someone adopts one of the two views, he will not be excluded from the Hanafi school of thought. And Allah Ta'ala knows best. (T)

[Footnotes] 1. Kanz al-Ummal, with reference to al-Shaykh in al-Tawbikh, Hadith 43812, Mu'assasah al-Risalah Beirut 12/32; al-Mu'jam al-Kabir, Hadith... Al-Maktabah al-Faysaliyyah Beirut 8/238. 2. The Holy Quran, Surah An-Nisa (4), Verses 48 and 116.

Page 654 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

[...पिछली पृष्ठ से जारी] के बिना दूसरा नहीं कर सकता, एक आलिम, दूसरा वह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, और तीसरा मुसलमान न्यायप्रिय बादशाह। हालांकि, उसका यह कहना कि "अल्लाह तआला जिस मुशरिक (बहुदेववादी) को चाहे बख़्श देता है", यह महान कुरान के विरुद्ध है। क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला शिर्क करने वाले को नहीं बख़्शता, इसके अलावा जिसे चाहे बख़्श देता है। और उसका कुरान व हदीस की आयतों के बारे में यह कहना कि "यह कोई चीज़ नहीं है", यह तो खालिस ऐसा कुफ़्र (अधर्म) है जिस पर मुर्तद (धर्मत्यागी) वाले हुक्म लागू होते हैं। अतः उस पर तज्दीद-ए-इस्लाम (ईमान का नवीनीकरण) अनिवार्य है और मुसलमान होकर पत्नी की सहमति से दोबारा उससे निकाह करे। अगर वह निकाह पर राज़ी न हो तो पत्नी को अधिकार है कि वह इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी करके अपनी मर्जी के अनुसार किसी और से निकाह करे। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

(२) नमाज़ छोड़ने वाले पर सहीह हदीसों में कुफ़्र का प्रयोग आया है, और सहाबा और ताबिईन के बहुमत का यही मत है। जबकि यह मसला केवल फ़िक़्ही (न्यायशास्त्र संबंधी) नहीं बल्कि इल्म-ए-ऽलाम (धर्मशास्त्र) से संबंधित है, इसमें अहले सुन्नत का प्राचीन काल से मतभेद चला आ रहा है। अतः यदि कोई इन दो मतों में से किसी एक को अपनाता है, तो वह हनफ़ी मत से बाहर नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[पादलेख] १. कंज़ अल-उम्माल, अल-शेख के हवाले से अल-तौबीख़ में हदीस ४३८१२, मुअस्ससतु अल-रिसाला बेरुत १२/३२; अल-मुअजम अल-कबीर हदीस... अल-मकतबतु अल-फ़ैसलिया बेरुत ८/२३८। २. अल-कुरान अल-करीम ४/४८ और ११६।

पृष्ठ ६५४/६८८

کے بغیر دوسرا نہیں کر سکتا ایک عالم، دوسرا وہ جسے اسلام میں بڑھاپا آیا، اور تیسرا مسلمان عادل بادشاہ، تاہم اس کا یہ کہنا کہ، اللہ تعالٰی جس مشرک کو چاہے بخش دیتا ہے، تو یہ قرآن عظیم کے مخالف ہے، کیونکہ اللہ تعالٰی نے فرمایا ہے کہ اللہ تعالٰی شریک بنانے والے کو نہیں بخشا، اس کے علاوہ جس کو چاہے بخشتا ہے۔ اور اس کا قرآن و حدیث کے متعلق یہ کہنا کہ، یہ کوئی چیز نہیں ہے، یہ تو خالص ایسا کفر ہے جس پر مرتدوں والے احکام جاری ہوتے ہیں، لہذا اس پر تجدید اسلام ضروری ہے اور مسلمان ہو کر عورت کی رضامندی سے دوبارہ اس سے نکاح کرے، اگر اس سے نکاح پر راضی نہ ہو تو بیوی کو اختیار ہے کہ وہ عدت پوری کر کے کسی اور سے اپنی مرضی کے مطابق نکاح کرے۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

(۲) نماز کے تارک پر احادیث صحیحہ میں کفر کا اطلاق آیا ہے، اور جمہور صحابہ و تابعین کا یہی مسلک ہے جبکہ یہ مسئلہ فقہی نہیں بلکہ علم کلام سے متعلق ہے، اس میں اہلسنت کا قدیم سے اختلاف چلا آ رہا ہے لہذا اگر کوئی دو قولوں میں سے ایک قول کو اختیار کرے تو وہ حنفیت سے خارج نہ ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

[حواشی] ۱۔ کنز العمال بحوالہ الشیخ فی التوبیخ حدیث ۴۳۸۱۲ موسسۃ الرسالہ بیروت ۳۲/۱۲ ، المعجم الکبیر حدیث المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت ۲۳۸/۸ ۲۔ القرآن الکریم ۴/ ۴۸ و ۱۱۶

صفحہ ۶۵۴ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya Volume 13, Page 13

Question 291 to 292: From Bangalore Bazaar, sent by Qazi Abdul Ghaffar Sahib, dated 11 Jumada al-Ula 1326 AH. What do the scholars of religion say regarding these matters: (1) A person recites the full Durood Sharif: "O Allah, send blessings and peace upon Muhammad and our Master, our Guide, our Mentor, and our Served-one (at this point, he takes his Pir's name)." He does not use 'Sayyiduna' (our Master) or 'Haadina' (our Guide) for the pure name of the Prophet (peace be upon him), but attaches titles of great honor to his Pir's name. Is it permissible to recite such a Durood or not? And if a Pir allows this, how is it? (2) Are 'Bashir' (Bringer of good tidings) and 'Nadhir' (Warner) titles exclusive to the Master of the Worlds (peace be upon him), or can they be said for someone else too? If a person makes his disciples say this and allows it for himself, what is the Sharia ruling for such a Pir and Mentor?

The Answer: (1) This is improper and a type of injustice; one should avoid it. Etiquette dictates that the names of juniors should be taken alongside the names of seniors. If they are his own elders, then adding more honorary words to their names is not necessary, let alone the opposite (God forbid). In Arabic culture, Kunya (patronymic) is for honor. Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad were students of Imam Azam (may Allah be pleased with them), but Imam Abu Yusuf was also a teacher to Imam Muhammad. In all books like Jami' al-Saghir, etc., narrated by Imam Muhammad from Imam Abu Yusuf from Imam Azam, he did not refer to Imam Abu Yusuf by his Kunya but by his name: "Muhammad from Yaqub from Abu Hanifa (may Allah be pleased with them)." Scholars have noted this point. It is mandatory for that person to avoid this practice, and it is obligatory for the Pir to guide him. If the intention is that the Pir's greatness exceeds that of the Holy Prophet (peace be upon him), then this is clear disbelief (Kufr), and we seek refuge in Allah Almighty. And Allah Almighty knows best. (2) All the noble qualities of the Holy Prophet (peace be upon him) are his special characteristics in the sense that no one is equal to or a partner with him in any quality. Imam Abu Muhammad al-Busiri (may his secret be sanctified) says: "He is free from any partner in his virtues, for the essence of beauty in him is indivisible." (1) (You are pure from any partner in your virtues, so the matter of your beauty is not divided).

---

(1) Qasidah Burdah, Chapter Three, Taj Company Lahore, p. 10.

फ़तावा रज़विया खंड 13, पृष्ठ 13

प्रश्न 291 से 292: बैंगलोर बाज़ार से, काज़ी अब्दुल गफ़्फ़ार साहिब द्वारा प्रेषित, दिनांक 11 जमाद-उल-ऊला 1326 हिजरी। धर्म के विद्वान इन मामलों में क्या कहते हैं: (1) एक व्यक्ति पूरा दुरूद शरीफ पढ़ता है: "ऐ अल्लाह, मुहम्मद पर और हमारे स्वामी, हमारे मार्गदर्शक, हमारे गुरु और हमारे सेवा-पात्र (यहाँ वह अपने पीर का नाम लेता है) पर आशीर्वाद और शांति भेज।" वह पैगंबर (उन पर शांति हो) के पवित्र नाम के लिए 'सैयदुना' (हमारे स्वामी) या 'हादीना' (हमारे मार्गदर्शक) का उपयोग नहीं करता है, लेकिन अपने पीर के नाम के साथ बड़े सम्मान की उपाधियाँ लगाता है। क्या ऐसा दुरूद पढ़ना जायज़ है या नहीं? और यदि कोई पीर इसे अनुमति देता है, तो यह कैसा है? (2) क्या 'बशीर' (खुशखबरी देने वाला) और 'नज़ीर' (चेतावनी देने वाला) उपाधियाँ केवल जगत के स्वामी (उन पर शांति हो) के लिए विशिष्ट हैं, या किसी और के लिए भी कही जा सकती हैं? यदि कोई व्यक्ति अपने मुरीदों से यह कहलवाता है और इसे अपने लिए स्वीकार करता है, तो ऐसे पीर और मुर्शिद के लिए शरीयत का क्या हुक्म है?

उत्तर: (1) यह अनुचित है और एक प्रकार का अन्याय है; इससे बचना चाहिए। शिष्टाचार यह कहता है कि बड़ों के नाम के साथ उनके छोटों का नाम लिया जाना चाहिए। यदि वे स्वयं के बड़े हैं, तो उनके नामों में अधिक सम्मानजनक शब्द जोड़ना आवश्यक नहीं है, इसके विपरीत (ईश्वर न करे) की तो बात ही क्या। अरबी संस्कृति में, कुनियत (उपनाम) सम्मान के लिए है। इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद इमाम आज़म (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के छात्र थे, लेकिन इमाम अबू यूसुफ इमाम मुहम्मद के शिक्षक भी थे। जामी-अस-सगीर आदि जैसी सभी पुस्तकों में, इमाम मुहम्मद ने इमाम अबू यूसुफ से इमाम आज़म के माध्यम से रिवायत की, और उन्होंने इमाम अबू यूसुफ को उनकी कुनियत से नहीं बल्कि नाम से याद किया: "मुहम्मद याकूब से और वह अबू हनीफ़ा से (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो)।" विद्वानों ने इस बिंदु को नोट किया है। उस व्यक्ति के लिए इस प्रथा से बचना अनिवार्य है, और पीर पर वाजिब है कि वह उसे मार्गदर्शन दे। यदि इसका अर्थ यह है कि पीर की महानता पवित्र पैगंबर (उन पर शांति हो) से अधिक है, तो यह स्पष्ट कुफ्र (ईश-निंदा) है, और हम सर्वशक्तिमान अल्लाह की शरण मांगते हैं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। (2) पवित्र पैगंबर (उन पर शांति हो) के सभी महान गुण इस अर्थ में उनकी विशेष विशेषताएं हैं कि किसी भी गुण में कोई भी उनके समान या भागीदार नहीं है। इमाम अबू मुहम्मद अल-बूसिरी (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे) कहते हैं: "वह अपने गुणों में किसी भी साथी से मुक्त है, क्योंकि उनमें

सुंदरता का सार अविभाज्य है।" (1) (आप अपने गुणों में किसी भी साथी से पवित्र हैं, इसलिए आपकी सुंदरता का तत्व विभाजित नहीं है)।

---

(1) कसीदा बुर्दा, अध्याय तीन, ताज कंपनी लाहौर, पृष्ठ 10।

مسئلہ ۲۹۱ تا ۲۹۲: از بنگلور بازار مرسلہ قاضی عبد الغفار صاحب مورخہ ۱۱ جمادی الاولٰی ۱۳۲۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ : (۱) ایک شخص درود شریف پورا پڑھتا ہے اللھم صل وسلم علی محمد وسیدنا وھادینا و مرشدنا و مخدومنا (نام اپنے پیر کا لیتا ہے) حضور صلی تعالٰی علیہ وسلم کے نام پاک پر نہ سیدنا و ھادینا ہے اور اپنے پیر کے نام پر القابِ تعظیمی لگاتا ہے، پس ایسا درود پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟ اور کوئی پیر اس کو روا رکھے تو کیسا ہے؟ (۲) بشیر و نذیر القاب مخصوصہ سید العالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ہیں یا اور کسی کو بھی کہہ سکتے ہیں؟ اگر کوئی شخص اپنے مریدوں سے کہلوائے اور اپنی نسبت روا رکھے تو اس پیر و مرشد کا شرعاً کیا حکم ہے؟

الجواب: (۱) یہ بیجا ہے اور ایک نوع ظلم ہے اسے اس سے احتراز چاہئے، ادب تو یہ ہے کہ اکابر کے نام کے ساتھ ان کے اصاغر کا نام لیا جائے، اگر وہ اپنے اکابر ہوں تو ان کے نام کے ساتھ ان کے نام میں زیادہ الفاظ تعظیمی ضروری نہیں، نہ کہ معاذ اللہ عکس۔ عرب میں کنیت تعظیم ہے۔ امام ابو یوسف امام محمد کے استاد مگر امام اعظم کے شاگرد ہیں رضی اللہ تعالٰی عنہم، امام محمد نے جامع صغیر وغیرہ جتنی کتابیں بروایت امام ابی یوسف حضرت امام اعظم سے روایت کیں ان میں امام ابویوسف کو کنیت سے یاد نہ کیا بلکہ نام سے محمد عن یعقوب عن ابی حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہم، اس کا نکتہ علماء نے یہی لکھا ہے اس شخص پر اس سے احتراز لازم ہے اور پیر پر واجب ہے کہ اسے ہدایت کرے، اور اگر یہ مطلب ہو کہ پیر کی عظمت حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے زائد ہے تو یہ صریح کفر ہے، والعیاذ باللہ تعالٰی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی تمام صفات کریمہ بایں معنی خصائص حضور ہیں کہ

کوئی صفت میں حضور کا مماثل و شریک نہیں، امام ابو محمد بوصیری قدس سرہ فرماتے ہیں:

منزہ عن شریك في محاسنه فجوهر الحسن فيه غير منقسم (۱) (آپ اپنے محاسن میں کسی شریک سے پاک ہیں، تو آپ کے حسن کا مادہ منقسم نہیں ہے)

---

(۱) قصیدہ بردہ الفصل الثالث تاج کمپنی لاہور ص ۱۰

However, the Prophet (peace be upon him) has cast the reflection of some of his noble attributes upon his seekers, his servants, and his slaves, such as 'Alim' (Knowing), 'Halim' (Forbearing), and 'Karim' (Generous). When the manifestation of these attributes is realized in someone, there is no harm in applying these titles to them. 'Bashir' (Giver of glad tidings) and 'Nadhir' (Warner) are also among these attributes.

Allah Almighty said: "(They were sent as) bearers of glad tidings and warners."[1] And Allah Almighty said: "And there was no nation but that there had passed within it a warner."[2] And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Give glad tidings and do not create aversion."[3] And Allah Almighty knows best.

Issue 293: From Ajmer Sharif, Ganj Factory Area No. 30, Lohar Khana, sent by Jamal Muhammad, 12 Jumada al-Akhir 1338 AH. Is it permissible or forbidden to call anyone a 'Satan' (Shaytan)?

The Answer: A misguided irreligious person can be called a Satan, and also someone who creates mischief among people, causes conflict by carrying tales from one to another. One who tempts and leads someone into sin is their Satan. And calling a righteous believer a Satan is the work of Satan. And Allah Almighty knows best.

Note: Volume 13 has ended; its final topic is the 'Book of Prescribed Punishments and Discretionary Punishments' (Kitab al-Hudud wa'l-Ta'zir). The first topic of the upcoming Volume 14 will be the 'Book of Expeditions' (Kitab al-Siyar).

[1] Al-Qur'an al-Karim 2/213, 5/65, 6/48 [2] Al-Qur'an al-Karim 35/24 [3] Sahih al-Bukhari, Book of Knowledge, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/16

लेकिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने कुछ महान गुणों का प्रतिबिंब अपने चाहने वालों, अपने सेवकों और अपने दासों पर भी डाला है, जैसे 'आलिम' (जानने वाला), 'हलीम' (धैर्यवान), 'करीम' (दयालु)। जब इन गुणों का प्रकाश किसी में सिद्ध हो जाए, तो उन्हें इन नामों से पुकारने में कोई हर्ज नहीं है। 'बशीर' (शुभ समाचार देने वाला) और 'नज़ीर' (डराने वाला) भी इन्हीं गुणों में से हैं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "(वे भेजे गए थे) शुभ समाचार देने वाले और डराने वाले के रूप में।"[1] और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और ऐसी कोई उम्मत (समुदाय) नहीं थी जिसमें कोई डराने वाला न गुज़रा हो।"[2] और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "शुभ समाचार दो और नफ़रत पैदा न करो।"[3] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 293: अजमेर शरीफ़ कारखाना गंज क्षेत्र संख्या 30 लोहार खाना से प्रेषक जमाल मुहम्मद 12 जमादी अल-आखिर 1338 हिजरी। क्या हर किसी को शैतान कहना हलाल है या हराम?

उत्तर: गुमराह अधर्मी को शैतान कहा जा सकता है और उसे भी जो लोगों में फ़ितना (अशांति) पैदा करे, इधर की उधर लगाकर फ़साद (कलह) करवाए। जो किसी को गुनाह की तरफ़ उकसाए, वह उसका शैतान है। और एक नेक मोमिन (आस्थावान) को शैतान कहना शैतान का काम है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

नोट: खंड तेरह (13) समाप्त हुआ, इसका अंतिम विषय 'किताब अल-हुदूद वल-ताज़ीर' (दंड विधान की पुस्तक) है, जबकि आने वाले खंड चौदह (14) का पहला विषय 'किताब अल-सियार' (युद्ध और सैन्य अभियान की पुस्तक) होगा।

[1] अल-क़ुरान अल-करीम 2/213, 5/65, 6/48 [2] अल-क़ुरान अल-करीम 35/24 [3] सहीह अल-बुखारी, किताब अल-इल्म, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/16

مگر حضور نے اپنی بعض صفات کریمہ کا اپنے مستفیضوں، اپنے خادموں اور اپنے غلاموں پر بھی پرتو ڈال دیا جیسے علیم، حلیم، کریم کہ ان صفات کی تجلی جس میں متحقق ہو اس پر ان کے اطلاق میں حرج نہیں بشیر و نذیر بھی انہیں صفات میں ہیں،

قَالَ تَعَالٰی مُبَشِّرِینَ وَمُنْذِرِیْنَ [1]- وقال تعالٰی: اللہ تعالٰی نے فرمایا: بشارت دینے والے اور ڈر سنانے والے۔ وَاِنْ مِنْ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیْھَا نَذِیْرٌ [2] وقال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بشّروا ولا تنفروا۔[3] واللہ تعالٰی اعلم۔: اور فرمایا: ہر امت میں ڈر سنانے والا گزرا۔ اور حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا: بشارت دو نفرت پیدا نہ کرو۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۹۳: از اجمیر شریف کارخانہ گنج علاقہ نمبر ۳۰ لوہار خانہ مرسلہ جمال محمد ۱۲ جمادی الآخر ۱۳۳۸ھ ہر کسی کو شیطان کہیں، یہ حلال یا حرام؟

الجواب: گمراہ بد دین کو شیطان کہا جاسکتا ہے اور اسے بھی جو لوگوں میں فتنہ پردازی کرے، ادھر کی ادھر لگا کر فساد ڈلوائے، جو کسی کو گناہ کی ترغیب دے کر لے جائے وہ اس کا شیطان ہے، اور مومن صالح کو شیطان کہنا شیطان کا کام ہے۔ وھو تعالٰی اعلم۔

نوٹ: جلد سیزدہم ختم ہوئی، اس کا آخری عنوان کتاب الحدود والتعزیر ہے، جبکہ آنے والی جلد چہار دہم کا پہلا عنوان کتاب السیر ہوگا۔

[1] القرآن الکریم ۲/ ۲۱۳ و ۵/ ۶۵ و ۶/ ۴۸ [2] القرآن الکریم ۳۵/ ۲۴ [3] صحیح البخاری کتاب العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۶

Fatawa Razawiyya - Volume 13

Sources and References

No.	Book Title	Author	Hijri Year of Death
1	Al-Ajza fil Hadith	Abdur Rahman bin Umar bin Muhammad al-Baghdadi known as an-Nahas	416
2	Al-Ajnas fil Furu'	Abul Abbas Ahmad bin Muhammad an-Natafi al-Hanafi	446
3	Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar	Abdullah bin Mahmud (bin Mawdud) al-Hanafi	683
4	Al-Adab al-Mufrad lil Bukhari	Muhammad bin Ismail al-Bukhari	256
5	Irshad al-Sari Sharh al-Bukhari	Shihabuddin Ahmad bin Muhammad al-Qastalani	923
6	Irshad al-Aql al-Salim	Abu Saud Muhammad bin Muhammad al-Imadi	951
7	Al-Arkan al-Arba'	Maulana Abdul Ali Bahrul Uloom	1225
8	Al-Ashbah wan Nazair	Sheikh Zainuddin bin Ibrahim ibn Nujaym	970
9	Ash'at al-Lam'at Sharh al-Mishkat	Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi	1052
10	Usul al-Bazdawi	Ali bin Muhammad al-Bazdawi	482
11	Al-Islah wal Idah lil Wiqayah fil Furu'	Ahmad bin Sulaiman bin Kamal Pasha	940
12	Akam al-Marjan fi Ahkam al-Jann	Qazi Badruddin Muhammad bin Abdullah al-Shibli	769
13	Anfa' al-Wasail ila Tahrir al-Masail	Qazi Burhanuddin Ibrahim bin Ali al-Tarsusi al-Hanafi	758
14	Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah	Hasan bin Ammar al-Shurunbulali	1069
15	Al-Anwar li-Amal al-Abrar	Imam Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i	799

फतावा रजविया - खंड १३

स्रोत और संदर्भ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	मृत्यु वर्ष हिजरी
१	अल-अज्ज़ा फ़िल हदीस	अब्दुर रहमान बिन उमर बिन मुहम्मद अल-बगदादी अल-मअरुफ बिन-नहास	४१६
२	अल-अजनास फ़िल फुरु	अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अन-नातिफी अल-हनफी	४४६
३	अल-इख्तियार शरह अल-मुख्तार	अब्दुल्ला बिन महमूद (बिन मवदूद) अल-हनफी	६८३
४	अल-अदब अल-मुफ़रद लिल बुखारी	मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी	२५६
५	इरशाद अल-सारी शरह अल-बुखारी	शिहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी	९२३
६	इरशाद अल-अक्ल अल-सलीम	अबू सऊद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-इमादी	९५१
७	अल-अरकान अल-अरबा	मौलाना अब्दुल अली बहरुल उलूम	१२२५
८	अल-अशबाह वन-नज़ैर	शेख ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहिम इब्न नुजैम	९७०
९	अशअत अल-लम्आत शरह अल-मिश्कात	शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी	१०५२
१०	उसूल अल-बज़दवी	अली बिन मुहम्मद अल-बज़दवी	४८२
११	अल-इस्लाह वल ईदाह लिल वक़ायाह फ़िल फुरु	अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा	९४०
१२	आकाम अल-मरजान फ़ी अहकाम अल-जान	काज़ी बदरुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-शिबली	७६९

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	मृत्यु वर्ष हिजरी
१३	अनफ-उल-वसायल इला तहरीर अल-मसायल	काज़ी बुरहानुद्दीन इब्राहिम बिन अली अल-तरसूसी अल-हनफी	७५८
१४	इमदाद अल-फत्ताह शरह नूर अल-ईदाह	हसन बिन अम्मार अल-शुरुनबुलाली	१०६९
१५	अल-अनवार लि-अमल अल-अबरार	इमाम यूसुफ अल-अरदबीली अल-शाफई	७९९

पृष्ठ ६५७ का ६८८

مآخذ ومراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف	سن وفات ہجری
۱	الاجزاء فی الحدیث	عبدالرحمن بن عمر بن محمد البغدادی المعروف بالنحاس	۴۱۶
۲	الاجناس فی الفروع	ابوالعباس احمد بن محمد الناطفی الحنفی	۴۴۶
۳	الاختیار شرح المختار	عبداللہ بن محمود (بن مودود) الحنفی	۶۸۳
۴	الادب المفرد للبخاری	محمد بن اسمعیل البخاری	۲۵۶
۵	ارشاد الساری شرح البخاری	شہاب الدین احمد بن محمد القسطلانی	۹۲۳
۶	ارشاد العقل السلیم	ابوسعود محمد بن محمد العمادی	۹۵۱
۷	الارکان الاربع	مولانا عبد العلی بحر العلوم	۱۲۲۵
۸	الاشباہ والنظائر	شیخ زین الدین بن ابراہیم بابن نجیم	۹۷۰
۹	اشعۃ اللمعات شرح المشکوۃ	شیخ عبد الحق المحدث الدہلوی	۱۰۵۲
۱۰	اصول البزدوی	علی بن محمد البزدوی	۴۸۲
۱۱	الاصلاح والایضاح للوقایۃ فی الفروع	احمد بن سلیمان بن کمال پاشا	۹۴۰
۱۲	آکام المرجان فی احکام الجان	قاضی بدرالدین محمد بن عبد اللہ الشبلی	۷۶۹

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف	سن وفات ہجری
۱۳	انفع الوسائل الی تحریر المسائل	قاضی برہان الدین ابراہیم بن علی الطرسوسی الحنفی	۷۵۸
۱۴	امداد الفتاح شرح نور الایضاح	حسن بن عمار الشرنبلالی	۱۰۶۹
۱۵	الانوار لعمل الابرار	امام یوسف الاردبیلی الشافعی	۷۹۹

Fatawa Rizvia Volume 13

1. Amali fil Hadith — Abdul Malik bin Muhammad bin Muhammad Bashran — 432
2. Al-Ijaz fil Hadith — Ahmad bin Muhammad, known as Ibn al-Sunni — 364
3. Alqab al-Ruwat — Ahmad bin Abdur Rahman al-Shirazi — 407
4. Al-Asl (Mabsut) — Abu Abdullah Muhammad bin Hasan al-Shaybani — 189
5. Akhbar Madinah — Muhammad bin Hasan al-Madani Ibn Zabalah — 200
6. Al-Umm — Muhammad bin Idris al-Shafi'i — 202
7. Akhbar Madinah — Zubayr ibn Bakkar al-Zubayri — 256
8. Amthal al-Nabi ﷺ — Al-Hasan bin Abdur Rahman al-Ramahurmuzi — 360
9. Arba'un lil-Hakim — Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Nishapuri — 405
10. Ihya' Ulum al-Din — Imam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali — 505
11. Arba'un Nawawi — Muhyi al-Din Yahya bin Sharaf al-Nawawi al-Shafi'i — 676
12. Al-Adhkar al-Muntakhabah min Kalam Sayyid al-Abrar — Abu Zakariyya Yahya Sharaf al-Nawawi — 676
13. Usd al-Ghabah fi Ma'rifat al-Sahabah — Ali bin Muhammad Ibn Athir al-Shaybani — 630
14. Al-Alfiyah al-Iraqi fi Usul al-Hadith — Imam Zayn al-Din Abdur Rahim bin al-Husayn al-Iraqi — 806
15. Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah — Shihab al-Din Ahmad bin Ali bin Hajar al-Asqalani — 852
16. Unmudhaj al-Ulum — Allama Jalal al-Din Muhammad bin As'ad al-Dawani — 903
17. Al-Itqan — Jalal al-Din Abdur Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti — 911
18. I'lam bi-Qawati' al-Islam — Ahmad bin Hajar al-Haytami al-Makki — 974
19. Al-Asrar al-Marfu'ah fil Akhbar al-Mawdu'ah — Nur al-Din Ali bin Sultan Muhammad al-Qari (Mulla Ali al-Qari) — 1014
20. Al-Intibah fi Salasil Awliya — Shah Waliullah bin Abdur Rahim — 1179
21. Ithaf al-Sadah al-Muttaqin — Sayyid Muhammad bin Muhammad Murtada al-Zabidi — 1205
22. Injah al-Hajah Hashiyah Sunan Ibn Majah — Abdul Ghani al-Dihlawi al-Madani — 1273
23. I'anat al-Talibin — Sayyid Muhammad Shata al-Dimyati
24. Al-Isharat Ibn Sina — Abu Ali Hasan bin Abdullah, famous as Ibn Sina — 428

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं

1. अमाली फ़िल हदीस — अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बशरन — 432
2. अल-ईजाज़ फ़िल हदीस — अहमद बिन मुहम्मद, मारूफ़ ब-इब्न अस-सुन्नी — 364
3. अलक़ाब अल-रुवात — अहमद बिन अब्दुर रहमान अल-शीराज़ी — 407
4. अल-अस्ल (मबसूत) — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी — 189
5. अख़बार मदीना — मुहम्मद बिन हसन अल-मदनी इब्न ज़बाला — 200
6. अल-उम्म — मुहम्मद बिन इदरीस अल-शाफ़ई — 202
7. अख़बार मदीना — ज़ुबैर इब्न बक्कार अल-ज़ुबैरी — 256
8. अमसाल अन-नबी ﷺ — अल-हसन बिन अब्दुर रहमान अल-रामहुर्मुज़ी — 360
9. अरबाउन लिल-हाकिम — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-निशापुरी — 405
10. इहया उलूम अद-दीन — इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली — 505
11. अरबाउन नववी — मुहयी अद-दीन यहया बिन शराफ़ अल-नववी अल-शाफ़ई — 676
12. अल-अज़कार अल-मुंतख़बा मिन कलाम सैय्यद अल-अबरार — अबू ज़करिया यहया शराफ़ अल-नववी — 676
13. उस्द अल-ग़ाबा फ़ी मारिफ़त अस-सहाबा — अली बिन मुहम्मद इब्न असीर अल-शैबानी — 630
14. अल-अल्फ़िया अल-इराक़ी फ़ी उसूल अल-हदीस — इमाम ज़ैन अद-दीन अब्दुर रहीम बिन अल-हुसैन अल-इराक़ी — 806
15. अल-इसाबा फ़ी तमयीज़ अस-सहाबा — शिहाब अद-दीन अहमद बिन अली बिन हजर अल-अस्क़लानी — 852
16. उनमूज़ज अल-उलूम — अल्लामा जलाल अद-दीन मुहम्मद बिन असद अद-दवानी — 903
17. अल-इतकान — जलाल अद-दीन अब्दुर रहमान बिन कमाल अद-दीन अस-सुयूती — 911
18. एलाम ब-क़वातए अल-इस्लाम — अहमद बिन हजर अल-हैतमी अल-मक्की — 974
19. अल-असरार अल-मरफ़ूआ फ़िल अख़बार अल-मौज़ूआ — नूर अद-दीन अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी (मुल्ला अली अल-क़ारी) — 1014
20. अल-इन्तिबाह फ़ी सलासिल औलिया — शाह वलीउल्लाह बिन अब्दुर रहीम — 1179
21. इत्हाफ़ अस-सादा अल-मुत्तक़ीन — सैय्यद मुहम्मद बिन मुहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़ुबैदी — 1205

22. इन्जाह अल-हाजा हाशिया सुनन इब्न माजा — अब्दुल ग़नी अद-देहलवी अल-मदनी — 1273

23. एआनत अत-तालिबीन — सैय्यद मुहम्मद शटा अद-दम्याती

24. अल-इशारात इब्न सीना — अबू अली हसन बिन अब्दुल्लाह, अल-मशहूर ब-इब्न सीना — 428

۱۶۔ امالی فی الحدیث ـــ عبدالملک بن محمد بن محمد بشران ـــ ۴۳۲ ۱۷۔ الایجاز فی الحدیث ـــ احمد بن محمد المعروف بابن السنی ـــ ۳۶۴ ۱۸۔ القاب الروات ـــ احمد بن عبدالرحمن الشیرازی ـــ ۴۰۷ ۱۹۔ الاصل (مبسوط) ـــ ابوعبداللہ محمد بن حسن الشیبانی ـــ ۱۸۹ ۲۰۔ اخبار مدینہ ـــ محمد بن حسن المدنی ابن زبالہ ـــ ۲۰۰ ۲۱۔ الام ـــ محمد بن ادریس الشافعی ـــ ۲۰۲ ۲۲۔ اخبار مدینہ ـــ زبیر ابن بکار الزبیری ـــ ۲۵۶ ۲۳۔ امثال النبی صلی اللہ علیہ وسلم ـــ الحسن بن عبدالرحمن الرامہر مزی ـــ ۳۶۰ ۲۴۔ اربعین للحاکم ـــ ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ نیشاپوری ـــ ۴۰۵ ۲۵۔ احیاء العلوم ـــ امام محمد بن محمد الغزالی ـــ ۵۰۵ ۲۶۔ اربعین نووی ـــ محی الدین یحیی بن شرف النووی الشافعی ـــ ۶۷۶ ۲۷۔ الاذکار المنتخبہ من کلام سید الابرار ـــ ابوزکریا یحیی شرف النووی ـــ ۶۷۶ ۲۸۔ اسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ ـــ علی بن محمد ابن اثیر الشیبانی ـــ ۶۳۰ ۲۹۔ الفیۃ العراقی فی اصول الحدیث ـــ امام زین الدین عبدالرحیم بن الحسین العراقی ـــ ۸۰۶ ۳۰۔ الاصابۃ فی تمییز الصحابہ ـــ شہاب الدین احمد بن علی بن حجر عسقلانی ـــ ۸۵۲ ۳۱۔ انموذج العلوم ـــ علامہ جلال الدین محمد بن اسعد الدوانی ـــ ۹۰۳ ۳۲۔ الاتقان جلال الدین ـــ عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی ـــ ۹۱۱ ۳۳۔ اعلام بقواطع الاسلام ـــ احمد بن حجر الہیتمی المکی ـــ ۹۷۴ ۳۴۔ الاسرار المرفوعۃ فی الاخبار الموضوعہ ـــ نور الدین علی بن سلطان محمد القاری (ملا علی القاری) ـــ ۱۰۱۴ ۳۵۔ الانتباہ فی سلاسل اولیاء ـــ شاہ ولی اللہ بن عبدالرحیم ـــ ۱۱۷۹ ۳۶۔ اتحاف السادۃ المتقین ـــ سید محمد بن محمد مرتضیٰ الزبیدی ـــ ۱۲۰۵ ۳۷۔ انجاح الحاجۃ حاشیۃ سنن ابن ماجہ ـــ عبدالغنی الدہلوی المدنی ـــ ۱۲۷۳ ۳۸۔ اعانۃ الطالبین ـــ سید محمد شطأ الدمیاطی ۳۹۔ الاشارات ابن سینا ـــ ابو علی حسن بن عبد اللہ الشہیر بابن سینا ـــ ۴۲۸

Fatawa Ridawiyya Volume 13 Page: 13

1. Al-Isharat Ibn Sina - Abu Ali Hasan bin Abdullah famously known as Ibn Sina - 428

B (Section Ba) 40. Bada'i al-Sana'i - Ala al-Din Abi Bakr bin Mas'ud al-Kasani - 587 41. Al-Hidayah (Bidayat al-Mubtadi) - Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 42. Al-Bahr al-Ra'iq - Shaykh Zayn al-Din bin Ibrahim commonly known as Ibn Nujaym - 970 43. Al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman - Ibrahim bin Musa al-Tarabulsi - 922 44. Bustan al-Arifin - Faqih Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi - 372 45. Al-Basit fi al-Furu' - Hujjat al-Islam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali - 505 46. Al-Binayah Sharh al-Hidayah - Imam Badr al-Din Abu Muhammad al-Ayni - 855 47. Bahjat al-Asrar - Yusuf bin Jarir al-Lakhmi al-Shattanawfi - 713 48. Bablugh al-Maram - Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani - 852 49. Bustan al-Muhaddithin - Shah Abdul Aziz bin Shah Waliullah - 1239 50. Barahin-e-Qati'ah - Rashid Ahmad Gangohi - 1905 CE

T (Section Ta) 51. Taj al-Arus - Sayyid Muhammad Murtada al-Zabidi - 1205 52. Tarikh Ibn Asakir - Ali bin al-Hasan al-Dimashqi famously known as Ibn Asakir - 717 53. Tarikh al-Bukhari - Muhammad bin Isma'il al-Bukhari - 256 54. Al-Tajnis wa al-Mazid - Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 55. Tahrir al-Usul - Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid bin al-Humam - 861 56. Tuhfat al-Fuqaha - Imam Ala al-Din Muhammad bin Ahmad al-Samarqandi - 520 57. Tahqiq al-Husami - Abdul Aziz bin Ahmad al-Bukhari - 730 58. Al-Tarjih wa al-Tashih 'ala al-Quduri - Allama Qasim bin Qutlubugha al-Hanafi - 879 59. Al-Ta'rifat li Sayyid Sharif - Sayyid Sharif Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 60. Al-Tamhid lima fi al-Muwatta min al-Ma'ani wa al-Asanid - Yusuf bin Abdullah ibn Abd al-Barr al-Andalusi - 463

फतावा रज़विया खंड 13 पृष्ठ: 13

1. अल-इशारात इब्न सीना - अबू अली हसन बिन अब्दुल्ला अल-शहीर बाब इब्न सीना - 428

ब (अनुभाग ब) 40. बदाए अल-सनाए - अलाउद्दीन अबी बक्र बिन मसूद अल-कासानी - 587 41. अल-हिदाया (बिदायात अल-मुबतदी) - अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 42. अल-बह्र अल-रईक - शैख ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम बाब इब्न नुजैम - 970 43. अल-बुरहान शरह मवाहिब अल-रहमान - इब्राहीम बिन मूसा अल-तराबुलसी - 922 44. बुस्तान अल-आरिफ़ीन - फकीह अबुल लैथ नस्र बिन मुहम्मद अल-समरक़ंदी - 372 45. अल-बसीत फ़िल फ़ुरूह - हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली - 505 46. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया - इमाम बद्रुद्दीन अबू मुहम्मद अल-ऐनी - 855 47. बहजत अल-असरार - यूसुफ़ बिन जरीर अल-लखमी अल-शत्तनूफ़ी - 713 48. बबलुग़ अल-मराम - अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी - 852 49. बुस्तान अल-मुहद्दीसीन - शाह अब्दुल अज़ीज़ बिन शाह वलीउल्लाह - 1239 50. बराहीन-ए-क़ातिआ - रशीद अहमद गंगोही - 1905 ई.

त (अनुभाग त) 51. ताज अल-अरूस - सय्यद मुहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़ुबैदी - 1205 52. तारीख़ इब्न असाकिर - अली बिन अल-हसन अल-दमिश्क़ी अल-शहीर बाब इब्न असाकिर - 717 53. तारीख़ अल-बुखारी - मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुखारी - 256 54. अत-तजनीस वल मज़ीद - बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 55. तहरीर अल-उसूल - कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद बिन अल-हुमाम - 861 56. तोहफ़तुल फ़ुक़हा - इमाम अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-समरक़ंदी - 520 57. तहक़ीक़ अल-हुसामी - अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुखारी - 730 58. अत-तरजीह वत-तसहीह अलल क़ुदूरी - अल्लामा क़ासिम बिन क़ुत्लूबुग़ा अल-हनफ़ी - 879 59. अत-तारीफ़ात लिसैय्यद शरीफ़ - सय्यद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - 816 60. अत-तमहीद लिमा फ़िल मुवत्ता मिनल मानी वल असानीद - यूसुफ़ बिन अब्दुल्ला इब्न अब्दुल बर्र अल-अंदालुसी - 463

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم صفحہ: ۱۳

۳۹۔ الاشارات ابن سینا - ابوعلی حسن بن عبداللہ الشہیر بابن سینا - ۴۲۸

ب ۴۰۔ بدائع الصنائع - علاء الدین ابی بکر بن مسعود الکاسانی - ۵۸۷ ۴۱۔ الہدایۃ (بدایۃ المبتدی) - علی بن ابی بکر المرغینانی - ۵۹۳ ۴۲۔ البحر الرائق - شیخ زین الدین بن ابراہیم بابن نجیم - ۹۷۰ ۴۳۔ البرہان شرح مواہب الرحمٰن - ابراہیم بن موسیٰ الطرابلسی - ۹۲۲ ۴۴۔ بستان العارفین - فقیہ ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی - ۳۷۲ ۴۵۔ البسیط فی الفروع - حجۃ الاسلام محمد بن محمد الغزالی - ۵۰۵ ۴۶۔ البنایۃ شرح الہدایۃ - امام بدر الدین ابو محمد العینی - ۸۵۵ ۴۷۔ بہجۃ الاسرار - یوسف بن جریر اللخمی الشطنوفی - ۷۱۳ ۴۸۔ ببلوغ المرام - احمد بن علی ابن حجر عسقلانی - ۸۵۲ ۴۹۔ بستان المحدثین - شاہ عبدالعزیز بن شاہ ولی اللہ - ۱۲۳۹ ۵۰۔ براہین قاطعہ - رشید احمد گنگوہی - ۱۹۰۵ء

ت ۵۱۔ تاج العروس - سید محمد مرتضیٰ الزبیدی - ۱۲۰۵ ۵۲۔ تاریخ ابن عساکر - علی بن الحسن الدمشقی بابن عساکر - ۷۱۷ ۵۳۔ تاریخ البخاری - محمد بن اسمعیل البخاری - ۲۵۶ ۵۴۔ التجنیس والمزید - برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی - ۵۹۳ ۵۵۔ تحریر الاصول - کمال الدین محمد بن عبدالواحد بن الہمام - ۸۶۱ ۵۶۔ تحفۃ الفقہاء - امام علاء الدین محمد بن احمد السمرقندی - ۵۲۰ ۵۷۔ تحقیق الحسامی - عبدالعزیز بن احمد البخاری - ۷۳۰ ۵۸۔ الترجیح والتصحیح علی القدوری - علامہ قاسم بن قطلوبغا الحنفی - ۸۷۹ ۵۹۔ التعریفات لسید شریف - سید شریف علی بن محمد الجرجانی - ۸۱۶ ۶۰۔ التمہید لما فی الموطأ من المعانی والاسانید - یوسف بن عبداللہ ابن عبدالبر الاندلسی - ۴۶۳

Fatawa Ridawiyya Volume Thirteen 13

61- Tanbih al-Anam fi Adab al-Siyam 62- Tafsir al-Jalalayn - Allama Jalaluddin al-Mahalli & Jalaluddin al-Suyuti - 862-911 63- Tahdhib al-Tahdhib - Abu'l-Fadl Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani - 852 64- Tanzih al-Shari'ah al-Marfu'ah 'an al-Akhbar al-Shani'ah al-Mawdu'ah - Abu'l-Hasan Ali bin Muhammad bin 'Iraq al-Kinani - 933 65- Tafsir Ibn Abi Hatim - Abd al-Rahman bin Muhammad al-Razi (Hafiz) - 327 66- Tahdhib al-Athar - Abu Ja'far Muhammad bin Muhammad bin Jarir - 1310 67- Taqrib al-Qarib - Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 911 68- Al-Taqrir wa'l-Tahbir - Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj al-Halabi - 879 69- Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir - Abd al-Rauf bin Taj al-Arifin bin Ali al-Munawi - 1031 70- Tabyin al-Haqa'iq - Fakhr al-Din 'Uthman bin Ali al-Zayla'i - 743 71- Taqrib al-Tahdhib - Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani - 852 72- Tanwir al-Miqyas - Abu Tahir Muhammad bin Ya'qub al-Fayruzabadi - 817 73- Tanwir al-Absar - Shams al-Din Muhammad bin Abd Allah bin Ahmad al-Tumurtashi - 1004 74- Ta'zim al-Salat - Muhammad bin Nasr al-Marwazi - 294 75- Tarikh Baghdad - Abu Bakr Ahmad bin Ali al-Khatib al-Baghdadi - 463 76- Al-Tawshih fi Sharh al-Hidayah - 'Umar bin Ishaq al-Siraj al-Hindi - 773 77- Tarikh al-Tabari - Muhammad bin Jarir al-Tabari - 310 78- Tanbih al-Ghafilin - Nasr bin Muhammad bin Ibrahim Samarqandi - 373 79- Tarikh Ibn Najjar - Muhammad bin Mahmud bin Hasan Baghdadi Ibn Najjar - 643 80- Al-Targhib wa'l-Tarhib - Zaki al-Din Abd al-Azim bin Abd al-Qawi al-Mundhiri - 656 81- Al-Tawdih Sharh al-Tanqih fi Usul al-Fiqh - Ubayd Allah bin Mas'ud bin Taj al-Shari'ah - 747 82- Tazkirat al-Huffaz - Shams al-Din Abu Abd Allah Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi - 748 83- Tazhib Tahdhib al-Kamal - Shams al-Din Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi - 748 84- Al-Talwih Sharh Tawdih - Sa'd al-Din Mas'ud bin 'Umar bin Abd Allah Taftazani - 792 85- Tadrib al-Rawi - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti - 911

Page 660 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

६१- तन्बीह अल-अनाम फ़ी आदाब अस-सियाम ६२- तफ़सीर अल-जलालैन - अल्लामा जलालुद्दीन अल-महल्ली और जलालुद्दीन अस-सुयुती - ८६२-९११ ६३- तहज़ीब अत-तहज़ीब - अबुल फ़ज़ल अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी - ८५२ ६४- तन्ज़ीह अश-शरिया अल-मरफ़ुआ अन अल-अख़बार अश-शनिया अल-मौदुआ - अबुल हसन अली बिन मुहम्मद बिन इराक़ अल-किनानी - ९३३ ६५- तफ़सीर इब्न अबी हातिम - अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद अर-राज़ी (हाफ़िज़) - ३२७ ६६- तहज़ीब अल-आसार - अबू जाफ़र मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन जरीर - १३१० ६७- तक़रीब अल-क़रीब - अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अन-नवावी - ९११ ६८- अत-तक़रीर वत-तहबीर - मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हाज अल-हलबी - ८७९ ६९- अत-तयसीर शरह अल-जामी अस-सगीर - अब्दुर रऊफ़ बिन ताज अल-आरिफीन बिन अली अल-मुनावी - १०३१ ७०- तबीन अल-हक़ाएक़ - फ़खरुद्दीन उस्मान बिन अली अज़-ज़ैलई - ७४३ ७१- तक़रीब अत-तहज़ीब - शहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी - ८५२ ७२- तनवीर अल-मिक़यास - अबू ताहिर मुहम्मद बिन यक़ूब अल-फ़ैरूज़ाबादी - ८१७ ७३- तनवीर अल-अमसार - शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अहमद अत-तुमुरताशी - १००४ ७४- ताज़ीम अस-सलात - मुहम्मद बिन नस्र अल-मरवज़ी - २९४ ७५- तारीख बग़दाद - अबू बक्र अहमद बिन अली अल-ख़तीब अल-बग़दादी - ४६३ ७६- अत-तौशीह फ़ी शरह अल-हिदाया - उमर बिन इसहाक़ अस-सिराज अल-हिन्दी - ७७३ ७७- तारीख अत-तबरी - मुहम्मद बिन जरीर अत-तबरी - ३१० ७८- तन्बीह अल-गाफिलीन - नस्र बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम समरकंदी - ३७३ ७९- तारीख इब्न नज्जार - मुहम्मद बिन महमूद बिन हसन बग़दादी इब्न नज्जार - ६४३ ८०- अत-तरगीब वत-तरहीब - ज़कीउद्दीन अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल क़वी अल-मुन्ज़िरी - ६५६ ८१- अत-तौज़ीह शरह अत-तन्क़ीह फ़ी उसूल अल-फ़िक़्ह - उबैदुल्लाह बिन मसूद बिन ताज अश-शरिया - ७४७ ८२- तज़किरात अल-हुफ़्फ़ाज़ - शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अज़-ज़हबी - ७४८ ८३- तज़हीब तहज़ीब अल-कमाल - शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद अज़-ज़हबी - ७४८ ८४- अत-तलवीह शरह तौज़ीह - सअदुद्दीन मसूद बिन उमर बिन अब्दुल्लाह तफ़्ताज़ानी - ७९२ ८५- तद्रीब अर-रावी - जलालुद्दीन अब्दुर रहमान बिन अबी बक्र अस-सुयुती - ९११

पृष्ठ ६६० / ६८८

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

۶۱- تنبیہ الانام فی آداب الصیام ۶۲- تفسیر الجلالین - علامہ جلال الدین المحلی و جلال الدین السیوطی - ۸۶۲-۹۱۱ ۶۳- تہذیب التہذیب - ابوالفضل احمد بن علی ابن حجر العسقلانی - ۸۵۲ ۶۴- تنزیہ الشریعة المرفوعه عن اخبار الشنیعة الموضوعة - ابوالحسن علی بن محمد بن عراق الکنانی - ۹۳۳ ۶۵- تفسیر ابن ابی حاتم - عبدالرحمن بن محمد الرازی (حافظ) - ۳۲۷ ۶۶- تہذیب الآثار - ابوجعفر محمد بن محمد بن جریر - ۱۳۱۰ ۶۷- تقریب القریب - ابوزکریا یحیی بن شرف النووی - ۹۱۱ ۶۸- التقریر والتحبیر - محمد بن محمد ابن امیر الحاج الحلبی - ۸۷۹ ۶۹- التیسیر شرح الجامع الصغیر - عبدالرؤف بن تاج العارفین بن علی المناوی - ۱۰۳۱ ۷۰- تبیین الحقائق - فخر الدین عثمان بن علی الزیلعی - ۷۴۳ ۷۱- تقریب التہذیب - شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی - ۸۵۲ ۷۲- تنویر المقیاس - ابوطاہر محمد بن یعقوب الفیروز آبادی - ۸۱۷ ۷۳- تنویر الابصار - شمس الدین محمد بن عبداللہ بن احمد التمرتاشی - ۱۰۰۴ ۷۴- تعظیم الصلواة - محمد بن نصر المروزی - ۲۹۴ ۷۵- تاریخ بغداد - ابوبکر احمد بن علی الخطیب البغدادی - ۴۶۳ ۷۶- التوشیح فی شرح الہدایة - عمر بن اسحق السراج الہندی - ۷۷۳ ۷۷- تاریخ الطبری - محمد بن جریر الطبری - ۳۱۰ ۷۸- تنبیہ الغافلین - نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی - ۳۷۳ ۷۹- تاریخ ابن نجار - محمد بن محمود بن حسن بغدادی ابن نجار - ۶۴۳ ۸۰- الترغیب والترہیب - زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی المنذری - ۶۵۶ ۸۱- التوضیح شرح التنقیح فی اصول الفقہ - عبیداللہ بن مسعود بن تاج الشریعة - ۷۴۷ ۸۲- تذکرة الحفاظ - شمس الدین ابو عبداللہ محمد بن احمد الذہبی - ۷۴۸ ۸۳- تذہیب تہذیب الکمال - شمس الدین محمد بن احمد الذہبی - ۷۴۸ ۸۴- التلویح شرح توضیح - سعد الدین مسعود بن عمر بن عبداللہ تفتازانی - ۷۹۲ ۸۵- تدریب الراوی - جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی - ۹۱۱

Fatawa Razawiyya Volume Thirteenth

1. Al-Ta'qubat 'ala al-Mawdu'at — Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti — 911
2. Tarikh al-Khamis — Sheikh Husain bin Muhammad bin al-Hasan Diyar Bakri — 966
3. Tazkirat uli al-Albab Antaki — Daud bin Umar Antaki — 1008
4. Al-Tabyan fi bayan ma fi Laylat al-Nisf min Sha'ban — Ali bin Sultan Muhammad al-Qari — 1014
5. Tafsirat Ahmadiyya — Ahmad bin Abu Sa'id, known as Mulla Jiwan — 1130
6. Al-Tafsir al-Mazhari — Qazi Thanaullah Panipati — 1225
7. Tuhfa-e-Ithna Ashariyya — Shah Abd al-Aziz Dehlawi — 1239
8. Tanbih Dhawi al-Afham — Muhammad Amin ibn Abidin — 1252
9. Al-Tahrir al-Mukhtar (Taqrirat al-Rafi'i) — Abd al-Qadir al-Rafi'i al-Faruqi — 1323
10. Tazkirat al-Mawdu'at lil-Fitni — Muhammad bin Tahir al-Fitni — 986
11. Tajnis al-Multaqat
12. Tuhfat al-Mu'minin fi al-Tibb — Muhammad Momin bin Muhammad Zaman al-Husayni
13. Tuhfat al-Salat (Persian) — Husain bin Ali al-Kashifi al-Wa'iz — 910

Tha (Letter)

1. Al-Thamanun fi al-Hadith — Abu Bakr Muhammad bin al-Husain al-Ajurri — 360
2. Thabat Abu Muhammad bin Amir al-Makki al-Misri

Jeem (Letter)

1. Jami' al-Tirmidhi — Abu 'Isa Muhammad bin 'Isa al-Tirmidhi — 279
2. Jami' al-Rumuz — Shams al-Din Muhammad al-Khurasani — 962
3. Al-Jami' al-Sahih lil-Bukhari — Imam Muhammad bin Isma'il al-Bukhari — 256
4. Al-Jami' al-Saghir fi al-Fiqh — Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani — 189
5. Al-Jami' al-Sahih li-Muslim — Muslim bin Hajjaj al-Qushayri — 261
6. Jami' al-Fiqh (Jawami' al-Fiqh) — Abu Nasr Ahmad bin Muhammad al-Atabi — 586

फतवा रज़विया तेरहवाँ खंड

1. अत-तअकुबात अल-मौदूआत — जलालुद्दीन अब्दुर रहमान बिन अबी बक्र अस-सुयूती — ९११
2. तारीख अल-खमिस — शेख हुसैन बिन मुहम्मद बिन अल-हसन दियार बकरी — ९६६
3. तज़किरत उली अल-अल्बाब अंताकी — दाऊद बिन उमर अंताकी — १००८
4. अत-तिब्यान फि बयान मा फी लैलात अल-निस्फ मिन शाबान — अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-कारी — १०१४
5. तफसीरात अहमदिया — अहमद बिन अबू सईद, जिन्हें मुल्ला जिवन के नाम से जाना जाता है — ११३०
6. अत-तफसीर अल-मज़हरी — काज़ी सनाउल्लाह पानीपती — १२२५
7. तोहफा इस्ना अशरिया — शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी — १२३९
8. तन्बीह ज़वी अल-अफहाम — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन — १२५२
9. अत-तहरीर अल-मुख्तार (तक़रीरात अर-रफई) — अब्दुल क़ादिर अर-रफई अल-फ़ारूक़ी — १३२३
10. तज़किरत अल-मौदूआत लिल-फितनी — मुहम्मद बिन ताहिर अल-फितनी — ९८६
11. तजनीस अल-मुल्तक़त
12. तोहफ़त अल-मुअमिनीन फ़ि अल-तिब्ब — मुहम्मद मोमिन बिन मुहम्मद ज़मान अल-हुसैनी
13. तोहफ़त अस-सलात (फ़ारसी) — हुसैन बिन अली अल-काशफ़ी अल-वाइज़ — ९१०

थ (अक्षर)

1. अस-समानून फि अल-हदीस — अबू बक्र मुहम्मद बिन अल-हुसैन अल-अजुरी — ३६०
2. सबत अबू मुहम्मद बिन आमिर अल-मक्की अल-मिसरी

ज (अक्षर)

1. जामे अत-तिरमिज़ी — अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अत-तिरमिज़ी — २७९
2. जामे अर-रुमूज़ — शम्सुद्दीन मुहम्मद अल-ख़ुरासानी — ९६२
3. अल-जामे अस-सहीह लिल-बुखारी — इमाम मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी — २५६

4. अल-जामे अस-सगीर फि अल-फिक्ह — इमाम मुहम्मद बिन हसन अश-शैबानी — १८९

5. अल-जामे अस-सहीह लि-मुस्लिम — मुस्लिम बिन हज्जाज अल-कुशायरी — २६१

6. जामे अल-फिक्ह (जवामे अल-फिक्ह) — अबू नस्र अहमद बिन मुहम्मद अल-अताबी — ५८६

पृष्ठ ६६१ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

۸۶۔ التعقبات علی الموضوعات — جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی — ۹۱۱ ۸۷۔ تاریخ الخمیس — شیخ حسین بن محمد بن الحسن دیار بکری — ۹۶۶ ۸۸۔ تذکرۃ اولی الالباب انطاکی — داؤد بن عمر انطاکی — ۱۰۰۸ ۸۹۔ التبیان فی بیان ما فی لیلۃ النصف من شعبان — علی بن سلطان محمد القاری — ۱۰۱۴ ۹۰۔ تفسیرات احمدیہ — احمد بن ابوسعید المعروف ملا جیون — ۱۱۳۰ ۹۱۔ التفسیر المظہری — قاضی ثناء اللہ پانی پتی — ۱۲۲۵ ۹۲۔ تحفہ اثناء عشریہ — الشاہ عبدالعزیز دہلوی — ۱۲۳۹ ۹۳۔ تنبیہ ذوی الافہام — محمد امین ابن عابدین — ۱۲۵۲ ۹۴۔ التحریر المختار (تقریرات الرافعی) — عبدالقادر الرافعی الفاروقی — ۱۳۲۳ ۹۵۔ تذکرۃ الموضوعات للفتنی — محمد بن طاہر الفتنی — ۹۸۶ ۹۶۔ تجنیس الملتقط ۹۷۔ تحفۃ المؤمنین فی الطب — محمد مومن بن محمد زمان الحسینی ۹۸۔ تحفۃ الصلوٰۃ (فارسی) — حسین بن علی الکاشفی الواعظ — ۹۱۰

ث

۹۹۔ الثمانون فی الحدیث — ابوبکر محمد بن الحسین الآجری — ۳۶۰ ۱۰۰۔ ثبت ابو محمد بن امیر المکی المصری

ج

۱۰۱۔ جامع الترمذی — ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی — ۲۷۹ ۱۰۲۔ جامع الرموز — شمس الدین محمد الخراسانی — ۹۶۲ ۱۰۳۔ الجامع الصحیح للبخاری — امام محمد بن اسمعیل البخاری — ۲۵۶ ۱۰۴۔ الجامع الصغیر فی الفقہ — امام محمد بن حسن الشیبانی — ۱۸۹ ۱۰۵۔ الجامع

الصحيح لمسلم — مسلم بن حجاج القشيرى — ٢٦١ ١٠٦. جامع الفقه (جوامع الفقه) — ابو نصر احمد بن محمد العتابى — ٥٨٦

Volume 13 Fatawa Rizvia

107 - Jami' al-Fusalain - Sheikh Badr al-Din Mahmud ibn Isra'il ibn Qadi - 823 108 - Al-Jami' al-Kabir fi Furu' al-Hanafiyya - Abi al-Hasan Ubaidullah ibn Husain al-Karkhi - 340 109 - Jawahir al-Akhlati - Burhan al-Din Ibrahim ibn Abi Bakr al-Akhlati - * 110 - Al-Jawahir al-Zakiyya - Ahmad ibn Turki ibn Ahmad al-Maliki - 989 111 - Jawahir al-Fatawa - Rukn al-Din Abu Bakr ibn Muhammad ibn Abi al-Mafakhir - 565 112 - Al-Jawharat al-Nayyira - Abu Bakr ibn Ali ibn Muhammad al-Haddad al-Yamani - 800 113 - Al-Jarh wa al-Ta'dil fi Rijal al-Hadith - Yahya ibn Ma'in al-Baghdadi - 233 114 - Al-Jami' al-Saghir fi al-Hadith - Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman ibn Abi Bakr al-Suyuti - 911 115 - Jami' al-Bayan fi Tafsir al-Qur'an (Tafsir al-Tabari) - Muhammad ibn Jarir al-Tabari - 310 116 - Juz' Hadithi Hassan ibn Arafa - Abu Ali Hassan ibn Arafa Baghdad - 256 117 - Al-Jami' li-Akhlaq al-Rawi wa al-Sami' - Abu Bakr Ahmad ibn Ali Khatib al-Baghdadi - 463 118 - Jami' Ahkam al-Sighar fi al-Furu' - Muhammad ibn Mahmud al-Ustruhsani - 636 119 - Jami' al-Adwiya wa al-Aghdhiya - Diya al-Din Abdullah ibn Ahmad al-Maliki - 646 120 - Jawahir al-Iqdain fi Fadl al-Sharafain - Nur al-Din Ali ibn Ahmad al-Samhudi al-Misri - 911 121 - Jawahir Khamsa - Muhammad Ghawth ibn Abdullah Gwaliori - 970 122 - Jam' al-Jawami' fi al-Hadith - Abu Bakr Jalal al-Din Abd al-Rahman ibn Kamal al-Din Suyuti - 911 123 - Jawhar Munazzam fi Ziyarat Qabr al-Nabi al-Akram (PBUH) - Shihab al-Din Ahmad ibn Muhammad ibn Hajar al-Makki - 944 124 - Jadhib al-Qulub ila Diyar al-Mahbub - Abd al-Haq ibn Sayf al-Din Muhaddith Dehlawi - 1052 125 - Al-Jami' al-Kabir fi al-Fatawa - Imam Nasir al-Din Muhammad ibn Yusuf al-Samarqandi - 556

H 126 - Hashiya 'ala al-Durar - Muhammad ibn Mustafa Abu Sa'id al-Khadimi - 1176 127 - Hashiya Ibn Shalabi 'ala al-Tabyin - Ahmad ibn Muhammad al-Shalabi - 1021 128 - Hashiya 'ala al-Durar - Abd al-Halim ibn Muhammad al-Rumi - 1013 129 - Hashiya 'ala al-Durar li-Mulla Khusraw - Qadi Muhammad ibn Faramuz Mulla Khusraw - 885

Page 662 of 688

जिल्द तेरहवीं १३ फतावा रिज़विया

१०७ - जामि अल-फ़ुसुलैन - शेख बद्रुद्दीन महमूद बिन इस्राईल बिन काज़ी - ८२३ १०८ - अल-जामि अल-कबीर फ़ी फुरूअल-हनफ़िया - अबी अल-हसन उबैदुल्ला बिन हुसैन अल-करखी - ३४० १०९ - जवाहर अल-अख़्लाती - बुरहानुद्दीन इब्राहिम बिन अबू बक्र अल-अख़्लाती - * ११० - अल-जवाहर अज़-ज़किया - अहमद बिन तुर्की बिन अहमद अल-मालिकी - ९८९ १११ - जवाहर अल-फ़तावा - रुकनुद्दीन अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन अबी अल-मफ़ाख़िर - ५६५ ११२ - अल-जौहरा अन-नय्यिरा - अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी - ८०० ११३ - अल-जर्ह वत-तादील फ़ी रिजाल अल-हदीस - यहया बिन मईन अल-बग़दादी - २३३ ११४ - अल-जामि अस-सगीर फ़ी अल-हदीस - अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अस-सुयूती - ९११ ११५ - जामि अल-बयान फ़ी तफ़्सीर अल-क़ुरआन (तफ़्सीर तबरी) - मुहम्मद बिन जरीर अत-तबरी - ३१० ११६ - जुज़ हदीसी हसन बिन अरफ़ा - अबू अली हसन बिन अरफ़ा बग़दाद - २५६ ११७ - अल-जामि लि-अख़्लाक़ अर-रावी वस-सामी - अबू बक्र अहमद बिन अली ख़तीब अल-बग़दादी - ४६३ ११८ - जामि अहकाम अस-सिगार फ़ी अल-फुरू - मुहम्मद बिन महमूद अल-उस्तुहशनी - ६३६ ११९ - जामि अल-अद्विया वल-अग्ज़िया - ज़ियाउद्दीन अब्दुल्ला बिन अहमद अल-मालिकी - ६४६ १२० - जवाहर अल-इक़्दैन फ़ी फ़ज़्ल अश-शरफ़ैन - नूरुद्दीन अली बिन अहमद अस-सम्हूदी अल-मिस्री - ९११ १२१ - जवाहर खम्सा - मुहम्मद ग़ौस बिन अब्दुल्ला ग्वालियर - ९७० १२२ - जम अल-जवामि फ़ी अल-हदीस - अबू बक्र जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमालुद्दीन सुयूती - ९११ १२३ - जौहर मुनज़्ज़म फ़ी ज़ियारत क़ब्र अन-नबी अल-अकरम (स.अ.व.) - शहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - ९४४ १२४ - जज़्ब अल-क़ुलूब इला दियार अल-महबूब - अब्दुल हक़ बिन सैफ़ुद्दीन मुहद्दिस देहलवी - १०५२ १२५ - अल-जामि अल-कबीर फ़ी अल-फ़तावा - इमाम नासिरुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ अस-समरकंदी - ५५६

खण्ड ह (ح) १२६ - हाशिया अला अद-दुरर - मुहम्मद बिन मुस्तफ़ा अबू सईद अल-खादिमी - ११७६ १२७ - हाशिया इब्न शलबी अला अत-तब्यीन - अहमद बिन मुहम्मद अश्-शलबी - १०२१ १२८ - हाशिया अला अद-दुरर - अब्दुल हलीम बिन मुहम्मद अर-रूमी - १०१३ १२९ - हाशिया अला अद-दुरर लि-मुल्ला ख़ुसरौ - क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला ख़ुसरौ - ८८५

पृष्ठ ६६२/६८८

جلد تیرہ دہم ۱۳ فتاوی رضویہ

۱۰۷ - جامع الفصولین - شیخ بدر الدین محمود بن اسرائیل بابن قاضی - ۸۲۳ ۱۰۸ - الجامع الکبیر في فروع الحنفیة - ابی الحسن عبید الله بن حسین الکرخي - ۳۴۰ ۱۰۹ - جواهر الاخلاطی - برهان الدین ابراهیم بن ابوبکر الاخلاطی - * ۱۱۰ - الجواهر الزکیة - احمد بن ترکی بن احمد المالکی - ۹۸۹ ۱۱۱ - جواهر الفتاوی - رکن الدین ابو بکر بن محمد بن ابی المفاخر - ۵۶۵ ۱۱۲ - الجوهرة النیرة - ابوبکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی - ۸۰۰ ۱۱۳ - الجرح والتعدیل في رجال الحدیث - یحیی بن معین البغدادی - ۲۳۳ ۱۱۴ - الجامع الصغیر في الحدیث - علامه جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی - ۹۱۱ ۱۱۵ - جامع البیان في تفسیر القرآن (تفسیر طبری) - محمد بن جریر الطبري - ۳۱۰ ۱۱۶ - جزء حدیثي حسن بن عرفه - ابوعلی حسن بن عرفه بغداز - ۲۵۶ ۱۱۷ - الجامع الاخلاق الراوي والسامع - ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی - ۴۶۳ ۱۱۸ - جامع احکام الصغار فی الفروع - محمد بن محمود الاستروشنی - ۶۳۶ ۱۱۹ - جامع الادویة والاغذیه - ضیاء الدین عبدالله بن احمد المالقی - ۶۴۶ ۱۲۰ - جواهر العقدین في فضل الشرفین - نور الدین علی بن احمد السمهودی والمصری - ۹۱۱ ۱۲۱ - جواهر خمسه - محمد غوث بن عبدالله گوالیاری - ۹۷۰ ۱۲۲ - جمع الجوامع في الحدیث - ابوبکر جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین سیوطی - ۹۱۱ ۱۲۳ - جوہر منظم فی زیارت قبر النبی الکرم صلی الله علیہ وسلم - شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی - ۹۴۴ ۱۲۴ - جذب القلوب الی دیار المحبوب - عبدالحق بن سیف الدین محدث دہلوی - ۱۰۵۲ ۱۲۵ - الجامع الکبیر في الفتاوی - امام ناصر الدین محمد بن یوسف السمرقندی - ۵۵۶

ح ۱۲۶ - حاشية على الدرر - محمد بن مصطفى ابوسعيد الخادمى - ۱۱۷۶ ۱۲۷ - حاشية ابن شلبي على التبيين - احمد بن محمد الشلبى - ۱۰۲۱ ۱۲۸ - حاشية على الدرر - عبدالحليم بن محمد الرومى - ۱۰۱۳ ۱۲۹ - حاشية على الدرر لملا خسرو - قاضى محمد بن فراموز ملا خسرو - ۸۸۵

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiyya

130- Hashiyah ala al-Muqaddimat al-Ashmawiyyah - Allama Safati 945 131- Al-Hashiyah li-Sa'di Afandi ala al-Inayah - Sa'dullah bin Isa al-Afandi 1133 132- Al-Hadiqat al-Nadiyyah Sharh Tariqat al-Muhammadiyyah - Abdul Ghani al-Nabulsi 600 133- Al-Hawi al-Qudsi - Qazi Jamal al-Din Ahmad bin Muhammad Nuh al-Qabisi al-Hanafi 372 134- Hasr al-Masail fi al-Furu' - Imam Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi al-Hanafi 430 135- Hilyat al-Awliya fi al-Hadith - Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Isbahani 879 136- Hilyat al-Muhalla Sharh Munyat al-Musalli - Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj 590 137- Hirz al-Amani wa Wajh al-Tahani - Abu Muhammad Qasim bin Firruh al-Shatibi al-Maliki 682 138- Hayat al-Hayawan al-Kubra li-l-Damiri - Zakariya bin Muhammad bin Mahmud al-Qazwini 833 139- Al-Hisn al-Hasin min Kalam Sayyid al-Mursalin (SAW) - Shams al-Din Muhammad bin Muhammad ibn al-Jazari 885 140- Hashiyat al-Talwih Mulla Khusraw - Muhammad bin Framuz Mulla Khusraw 668 141- Hashiyat al-Talwih Husayn Chalapi - Hasan bin Muhammad Shah al-Fanari Chalapi 1012 142- Hirz Thamin Sharh Hisn Hasin - Nur al-Din Ali bin Sultan Muhammad al-Qari 1179 143- Hujjat Allah al-Balighah - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi 1179 144- Hashiyah Maktubat Shah Waliullah - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi 1257 145- Hasr al-Sharid fi Asanid al-Shaykh - Muhammad Abid al-Sindi 146- Hashiyat al-Kamashri ala al-Anwar 147- Hashiyat Kifayat al-Talib al-Rabbani 148- Hashiyat al-Hafni ala al-Jami' al-Saghir - Allama al-Hafni 149- Al-Hawi li-l-Fatawa - Jalal al-Din Abdul Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti 911 150- Husn al-Maqsid fi 'Amal al-Mawlid - Jalal al-Din Abdul Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti 911

Kh 151- Khizanat al-Riwayat - Qazi Chakan al-Hanafi 152- Khizanat al-Fatawa - Tahir bin Ahmad Abdul Rashid al-Bukhari 542

Page 663 of 688

जिल्द तेरहवीं १३ फ़तावा रज़विया

१३०- हाशिया अला अल-मुक़द्दिमा अल-अश्माविया - अल्लामा सफ़ाती ९४५ १३१- अल-हाशिया लिसअदी आफ़ंदी अलल इनाया - सअदुल्लाह बिन ईसा अल-आफ़ंदी ११३३ १३२- अल-हदीक़त अन-नदिया शरह तरीक़त अल-मुहमदिया - अब्दुल ग़नी अल-नाबुलसी ६०० १३३- अल-हावी अल-क़ुदसी - क़ाज़ी जमालुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद नूह अल-क़ाबिसी अल-हनफ़ी ३७२ १३४- हस्र अल-मसाईल फ़िल फ़ुरूअ - इमाम अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अस-समरकंदी अल-हनफ़ी ४३० १३५- हिलयतुल औलिया फ़िल हदीस - अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-अस्बहानी ८७१ १३६- हिलयतुल मुहल्ला शरह मुन्यतुल मुसल्ली - मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हाज ५९० १३७- हिर्ज़ुल अमानी व वजहुत तहानी - अबू मुहम्मद क़ासिम बिन फ़ीरुह अल-शातबी अल-मालिकी ६८४ १३८- हयातुल हयवान अल-कुबरा लिद-दमीर - ज़करिया बिन मुहम्मद बिन महमूद अल-क़ज़वीनी ८३३ १३९- अल-हिसन अल-हसीन मिन कलाम सय्यिद अल-मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) - शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अल-जज़री ८८७ १४०- हाशिया अत-तलवीह मुल्ला खुसरो - मुहम्मद बिन फ़ामुज़ मुल्ला खुसरो ९६८ १४१- हाशिया अत-तलवीह हुसैन चलपी - हसन बिन मुहम्मद शाह अल-फ़नारी चलपी १०१४ १४२- हिर्ज़े समीन शरह हिसने हसीन - नूरुद्दीन अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी ११७१ १४३- हुज्जतुललाह अल-बालिगा - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अद-देहलवी ११७१ १४४- हाशिया मकतूबात शाह वलीउल्लाह - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अद-देहलवी १२७१ १४५- हस्र अल-शारिद फ़ी असानीद अल-शैख़ - मुहम्मद आबिद अल-सिंदी १४६- हाशिया अल-कमशरी अलल अनवार १४७- हाशिया किफ़ायतुल तालिब अल-रब्बानी १४८- हाशिया अल-हफ़नी अलल जामे अल-सग़ीर - अल्लामा अल-हफ़नी १४९- अल-हावी लिल फ़तावा - जलालुद्दीन अब्दुल रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती ९११ १५०- हुस्नुल मक्सद फ़ी अमल अल-मौलिद - जलालुद्दीन अब्दुल रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती ९११

ख़ १५१- ख़ज़ानतुल रिवायात - क़ाज़ी चकन अल-हनफ़ी १५२- ख़ज़ानतुल फ़तावा - ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुख़ारी ७४२

पेज ६६३ ऑफ़ ६८८

۱۳۰- حاشیہ علی المقدمة العشماوية علامہ سفطی ۹۴۵ ۱۳۱- الحاشية لسعدی آفندی علی العناية سعد الله بن عیسیٰ الآفندی ۱۱۳۳ ۱۳۲- الحديقة الندية شرح طريقة محمدية عبدالغنی النابلسی ۶۰۰ ۱۳۳- الحاوی القدسی قاضی جمال الدین احمد بن محمد نوح القابسی الحنفی ۳۷۲ ۱۳۴- حصر المسائل فی الفروع امام ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی الحنفی ۴۳۰ ۱۳۵- حلية الاولياء فی الحديث ابو نعيم احمد بن عبدالله الاصبہانی ۸۷۹ ۱۳۶- حلية المحلی شرح منية المصلی محمد بن محمد ابن امیر الحاج ۵۹۰ ۱۳۷- حرز الامانی و وجة التہانی ابو محمد قاسم بن فیرہ الشاطبی المالکی ۶۸۲ ۱۳۸- حیوٰۃ الحیوان الکبریٰ للدمیری زکریا بن محمد بن محمود القزوینی ۸۳۳ ۱۳۹- الحصن الحصين من كلام سيد المرسلين صلی الله علیہ وسلم شمس الدین محمد بن محمد ابن الجزری ۸۸۵ ۱۴۰- حاشية التلويح ملا خسرو محمد بن فراموز ملا خسرو ۶۶۸ ۱۴۱- حاشية التلويح حسين چلپی حسن بن محمد شاہ الفناری چلپی ۱۰۱۲ ۱۴۲- حرز ثمين شرح حصن حصين نور الدين علی بن سلطان محمد القاری ۱۱۷۹ ۱۴۳- حجة الله البالغہ شاہ ولی الله بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی ۱۱۷۹ ۱۴۴- حاشية مكتوبات شاہ ولی الله شاہ ولی الله بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی ۱۲۵۷ ۱۴۵- حصر الشارد فی اسانید الشیخ محمد عابد السندی ۱۴۶- حاشية الكمشری علی الانوار ۱۴۷- حاشية كفاية الطالب الربانی ۱۴۸- حاشية الحفنی علی الجامع الصغير علامہ الحفنی ۱۴۹- الحاوی للفتاوٰی جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی ۹۱۱ ۱۵۰- حسن المقصد فی عمل المولد جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی ۹۱۱

خ ۱۵۱- خزانة الروايات قاضی چکن الحنفی ۱۵۲- خزانة الفتاوٰی طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری ۵۴۲

Fatawa Rizvia | Volume Thirteen

153- Khizanat al-Muftin | Husayn ibn Muhammad al-Samani al-Samiqani | After 740 154- Khulasat al-Dala'il | Husam al-Din Ali ibn Ahmad al-Makki al-Razi | 598 155- Khulasat al-Fatawa | Tahir ibn Ahmad Abd al-Rashid al-Bukhari | 542 156- Khairat al-Hisan | Shihab al-Din Ahmad ibn Hajar al-Makki | 973 157- Al-Khasais al-Kubra | Jalal al-Din Abd al-Rahman ibn Kamal al-Din al-Suyuti | 911 158- Khulasat al-Wafa | Ali ibn Ahmad al-Samhudi | 911 159- Khaza'in al-Asrar fi Sharh Tanwir al-Absar | Ala al-Din Muhammad ibn Ali al-Haskafi | 1088

D (Dal) 160- Al-Diraya Sharh al-Hidaya | Shihab al-Din Ahmad ibn Ali ibn Hajar al-Asqalani | 852 161- Al-Durar (Durar al-Hukkam) | Qadi Muhammad ibn Faramuz Mulla Khusraw | 885 162- Al-Durr al-Mukhtar fi Sharh Tanwir al-Absar | Ala al-Din al-Haskafi | 1088 163- Al-Durr al-Nathir Allamah | Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti | 911 164- Al-Durr al-Manthur fi al-Tafsir bi-al-Ma'thur | Allamah Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti | 911

Dh (Zal) 165- Dhakhirat al-Uqba | Yusuf ibn Junayd al-Halabi (Chelebi) | 905 166- Dhakhirat al-Fatawa | Burhan al-Din Mahmud ibn Ahmad | 616 167- Dhamm al-Ghibah | Abdullah ibn Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi | 281

R (Re) 168- Al-Rahmaniyya 169- Radd al-Muhtar | Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami | 1252 170- Rahmat al-Ummah fi Ikhtilaf al-Aimmah | Abu Abdullah Muhammad ibn Abd al-Rahman al-Dimashqi | 781 171- Ragha'ib al-Quran Abu Marwan | Abd al-Malik ibn Habib al-Sulami (al-Qurtubi) | 239

Page 664 of 688

153- ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन | हुसैन बिन मुहम्मद अल-समानी अल-समीक़ानी | 740 के बाद 154- ख़ुलासतुल दलाईल | हुसामुद्दीन अली बिन अहमद अल-मक्की अल-राज़ी | 598 155- ख़ुलासतुल फ़तावा | ताहिर बिन अहमद अब्द रशीद अल-बुख़ारी | 542 156- ख़ैरातुल हिसान | शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की | 973 157- अल-ख़साइसुल कुबरा | जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयुती | 911 158- ख़ुलासतुल वफ़ा | अली बिन अहमद अल-समूदी | 911 159- ख़ज़ाइनुल असरार फ़ी शरह तनवीरुल अबसार | अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अली अल-हसकाफ़ी | 1088

द (दाल) 160- अल-दिराया शरह अल-हिदाया | शहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-असक़लानी | 852 161- अद-दुरर (दुररुल हुक्काम) | क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला ख़ुसरो | 885 162- अद-दुर्रुल मुख़्तार फ़ी शरह तनवीरुल अबसार | अलाउद्दीन अल-हसकाफ़ी | 1088 163- अद-दुर्रुल नशीर अल्लामा | जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान अल-सुयुती | 911 164- अद-दुर्रुल मनसूर फ़ी अत-तफ़्सीर बिल मसूर | अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान अल-सुयुती | 911

ज़ (ज़ाल) 165- ज़ख़ीरतुल उक़बा | यूसुफ़ बिन जुनैद अल-हलबी (चलपी) | 905 166- ज़ख़ीरतुल फ़तावा | बुरहानुद्दीन महमूद बिन अहमद | 616 167- ज़म्मुल ग़ीबा | अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अद्दुनिया अल-क़ुरशी | 281

र (रे) 168- अर-रहमानिया 169- रद्दुल मुहतार | मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शमी | 1252 170- रहमतुल उम्मा फ़ी इख़्तिलाफ़िल अइम्मा | अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अद-दिमश्की | 781 171- रगाइबुल क़ुरआन अबू मरवान | अब्दुल मलिक बिन हबीब अल-सुलमी (अल-कुर्तुबी) | 239

١٥٣- خزانة المفتين | حسين بن محمد السماني السميقاني | ٧٤٠ كے بعد ١٥٤- خلاصة الدلائل | حسام الدين علي بن احمد المكي الرازي | ٥٩٨ ١٥٥- خلاصة الفتاوى | طاهر بن احمد عبد الرشيد البخاري | ٥٤٢ ١٥٦- خيرات الحسان | شهاب الدين احمد بن حجر المكي | ٩٧٣ ١٥٧- الخصائص الكبرى | جلال الدين عبد الرحمن بن كمال الدين السيوطي | ٩١١ ١٥٨- خلاصة الوفا | علي بن احمد السمهودي | ٩١١ ١٥٩- خزائن الاسرار فى شرح تنوير الابصار | علاء الدين محمد بن علي الحصكفي | ١٠٨٨

د ١٦٠- الدراية شرح الهداية | شهاب الدين احمد بن علي ابن حجر العسقلانى | ٨٥٢ ١٦١- الدرر (درر الحكام) | قاضي محمد بن فراموز ملا خسرو | ٨٨٥ ١٦٢- الدرالمختار فى شرح تنوير الابصار | علاء الدين الحصكفي | ١٠٨٨ ١٦٣- الدر النثير علامه | جلال الدين عبد الرحمن السيوطي | ٩١١ ١٦٤- الدر المنثور فى التفسير بالماثور | علامه جلال الدين عبد الرحمن السيوطي | ٩١١

ذ ١٦٥- ذخيرة العقبي | يوسف بن جنيد الحلبى (چلپى) | ٩٠٥ ١٦٦- ذخيرة الفتاوى | برهان الدين محمود بن احمد | ٦١٦ ١٦٧- ذم الغيبة | عبد الله بن محمد ابن ابى الدنيا القرشى | ٢٨١

ر ١٦٨- الرحمانية ١٦٩- رد المحتار | محمد امين ابن عابدين الشامي | ١٢٥٢ ١٧٠- رحمة الامة في اختلاف الائمة | ابو عبد الله محمد بن عبد الرحمن الدمشقي | ٧٨١ ١٧١- رغائب القرآن ابو مروان | عبد الملك بن حبيب السلمي (القرطبى) | ٢٣٩

Fatawa Ridawiyya Volume Thirteen 13

172- Raf' al-Ghisha' fi Waqt al-Asr wal-Isha Shaykh Zayn al-Din b. Ibn Nujaym 970 173- Radd ala al-Jahmiyyah Uthman b. Sa'id al-Darimi 280 174- Risalah Nuzur Mawlawi Isma'il Dehlawi 1831, 1236 175- Risalah Qushayriyyah Abd al-Karim b. Hawazin al-Qushayri 465 176- Ramz al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq Badr al-Din Abu Muhammad Mahmud b. Ahmad al-Ayni 855 177- Raf' al-Ishtibah an Subul al-Miyah Qasim b. Qutlubugha al-Misri 879 178- Risalah Tulu' Thurayya Jalal al-Din Abd al-Rahman b. Kamal al-Din al-Suyuti 911 179- Risalah It'haf al-Ghurfah Jalal al-Din Abd al-Rahman b. Kamal al-Din al-Suyuti 911 180- Rasa'il Ibn Nujaym Zayn al-Din b. Ibrahim b. Nujaym 970 181- Risalah Ibtida' Ali b. Sultan Muhammad al-Qari 1014 182- Risalah al-Qawl al-Baligh fi Hukm al-Tabligh Ahmad b. Sayyid Muhammad Makki al-Hamawi 1098 183- Risalah Insaf Shah Waliullah Dehlawi 1179 184- Rasa'il Ibn Abidin Muhammad Amin Afandi Ibn Abidin 1252 185- Risalah Milad Mubarak (al-Kawkab al-Anwar ala Aqd al-Jawhar) Ja'far Isma'il al-Barzanji 1317 186- al-Riyad al-Nadirah fi Fada'il al-Asharah Abu Ja'far Ahmad b. Ahmad the famous al-Muhibb al-Tabari al-Makki 694 187- Risalah Bid'at Mian Isma'il b. Shah Abd al-Ghani Dehlawi 1831 AD 1246 188- Risalah Du'a'iyyah Mawlawi Khurram Ali 189- Risalah Ghayat al-Maqal Abu al-Hasanat Muhammad Abd al-Hayy 1343

Z (ز)

190- Zad al-Fuqaha' Shaykh al-Islam Muhammad b. Ahmad al-Isbijabi d. late 6th century 861 191- Zad al-Faqir Kamal al-Din Muhammad b. Abd al-Wahid known as Ibn al-Humam 1016 192- Zawahir al-Jawahir Muhammad b. Muhammad al-Timurtashi approx 189 193- Ziyadat Imam Muhammad b. Hasan al-Shaybani 1250 194- Zuhr al-Nasrin fi Hadith al-Mu'ammarin Muhammad b. Ali al-Shawkani

Page 665 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरह १३

1. रफ़-उल-ग़िशा फ़ी वक़्त-उल-अस्र वल-इशा शेख़ ज़ैन-उद-दीन बा-इब्न नुजैम ९७०
2. रद्द अलल-जहमिया उस्मान बिन सईद अद्दारिमी २८०
3. रिसाला नुज़ूर मौलवी इस्माइल देहलवी १८३१, १२३९
4. रिसाला क़ुशैरिया अब्दुल करीम बिन हवाज़िन अल-क़ुशैरी ४६५
5. रम्ज़-उल-हक़ाएक़ शरह कंज़-उद-दक़ाएक़ बद्र-उद-दीन अबू मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी ८५५
6. रफ़-उल-इश्तिबाह अन सुबुल-उल-मियाह क़ासिम बिन क़ुत्लूबुग़ा अल-मिस्री ८७९
7. रिसाला तुलू-ए-सुरैया जलाल-उद-दीन अब्दुर्रहमान बिन कमाल-उद-दीन अस-सुयूती ९११
8. रिसाला इत्हाफ़-उल-ग़ुरफ़ह जलाल-उद-दीन अब्दुर्रहमान बिन कमाल-उद-दीन अस-सुयूती ९११
9. रसाएल इब्न नुजैम ज़ैन-उद-दीन बिन इब्राहीम इब्न नुजैम ९७·
10. रिसाला इब्तिदा अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी १०१४
11. रिसाला अल-क़ौल-उल-बलीग़ फ़ी हुक्म-उत-तबलीग़ अहमद बिन सय्यद मुहम्मद मक्की अल-हमवी १०९८
12. रिसाला इंसाफ़ शाह वलीउल्लाह देहलवी ११७९
13. रसाएल इब्न आबिदीन मुहम्मद अमीन आफ़ंदी इब्न आबिदीन १२५२
14. रिसाला मीलाद मुबारक (अल-कौकबुल अनवार अला अक़्दुल जौहर) जाफ़र इस्माइल अल-बरज़ंजी १३१७
15. अर-रियाज़ुन नज़रा फ़ी फ़ज़ाइल-इल-अशरा अबू जाफ़र अहमद बिन अहमद मशहूर बा-मुहिब अल-तबरी अल-मक्की ६९४
16. रिसाला बिदअत मियां इस्माइल बिन शाह अब्दुल ग़नी देहलवी १८३१ ई. १२४६
17. रिसाला दुआइया मौलवी ख़ुर्रम अली
18. रिसाला ग़ायत-उल-मक़ाल अबुल हसनात मुहम्मद अब्दुल हई १३४३

ज़ (ز)

1. ज़ाद-उल-फ़ुक़्हा शेख़-उल-इस्लाम मुहम्मद बिन अहमद अल-असबीजाबी मृत्यु छठी शताब्दी के अंत में ८६१
2. ज़ाद-उल-फ़क़ीर कमाल-उद-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद मशहूर बा-इब्न-उल-हुमाम १०१६
3. ज़वाहिर-उल-जवाहिर मुहम्मद बिन मुहम्मद अत-तिमुरताशी लगभग १८९
4. ज़ियादात इमाम मुहम्मद बिन हसन अश-शैबानी १२५०
5. ज़ुहर-उन-नसरीन फ़ी हदीस-इल-मुअम्मरीन मुहम्मद बिन अली अल-शौकानी

पृष्ठ ६६५/६८८

فتاوی رضویہ جلد سیز د ہم ۱۳

۱۷۲۔ رفع الغشاء فی وقت العصر والعشاء شیخ زین الدین بابن نجیم ۹۷۰ ۱۷۳۔ رد علی الجهمیة عثمان بن سعید الدارمی ۲۸۰ ۱۷۴۔ رسالہ نذور مولوی اسماعیل دہلوی ۱۸۳۱، ۱۲۳۶ ۱۷۵۔ رسالہ قشیریہ عبدالکریم بن ہوازن القشیری ۴۶۵ ۱۷۶۔ رمز الحقائق شرح کنز الدقائق بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد العینی ۸۵۵ ۱۷۷۔ رفع الاشتباہ عن سبل المیاہ قاسم بن قطلوبغا المصری ۸۷۹ ۱۷۸۔ رسالہ طلوع ثریا جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی ۹۱۱ ۱۷۹۔ رسالہ اتحاف الغرفہ جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی ۹۱۱ ۱۸۰۔ رسائل ابن نجیم زین الدین بن ابراہیم ابن نجیم ۹۷۰ ۱۸۱۔ رسالہ ابتداء علی بن سلطان محمد القاری ۱۰۱۴ ۱۸۲۔ رسالہ القول البلیغ فی حکم التبلیغ احمد بن سید محمد مکی الحموی ۱۰۹۸ ۱۸۳۔ رسالہ انصاف شاہ ولی اللہ دہلوی ۱۱۷۹ ۱۸۴۔ رسائل ابن عابدین محمد امین آفندی ابن عابدین ۱۲۵۲ ۱۸۵۔ رسالہ میلاد مبارک (الکوکب الانوار علی عقد الجوہر) جعفر اسماعیل البرزنجی ۱۳۱۷ ۱۸۶۔ الریاض النضرۃ فی فضائل العشرہ ابو جعفر احمد بن احمد الشہیر بالمحب الطبری المکی ۶۹۴ ۱۸۷۔ رسالہ بدعت میاں اسماعیل بن شاہ عبدالغنی دہلوی ۱۸۳۱ء ۱۲۴۶ ۱۸۸۔ رسالہ دعائیہ مولوی خرم علی ۱۸۹۔ رسالہ غایۃ المقال ابوالحسنات محمد عبدالحئی ۱۳۴۳

ز

۱۹۰۔ زاد الفقہاء شیخ الاسلام محمد بن احمد الاسبیجابی المتوفی اواخر القرن السادس ۸۶۱ ۱۹۱۔ زاد الفقیر کمال الدین محمد بن عبدالواحد المعروف بابن الہمام ۱۰۱۶ ۱۹۲۔ زواہر الجواہر محمد بن محمد التمرتاشی تقریباً ۱۸۹ ۱۹۳۔ زیادات امام محمد بن حسن الشیبانی ۱۲۵۰ ۱۹۴۔ زہر النسرین فی حدیث المعمرین محمد بن علی الشوکانی

Volume Thirteen Fatawa Razawiya

195_ Zahr al-Ruba 'ala al-Mujtaba - Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti - 911 196_ Zahr al-Rawd fi Mas'alat al-Hawd - Muhammad bin Abdullah ibn Shihna - 921 197_ Al-Zawajir 'an al-Kaba'ir - Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad ibn Hajar al-Makki - 974 198_ Zubdat al-Athar fi Akhbar Qutb al-Akhyar - Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi - 1252 199_ Zubdat al-Asrar fi Manaqib Ghawth al-Abrar - Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi - 1252

S (Seen)

200_ Al-Siraj al-Wahaj - Abu Bakr bin Ali bin Muhammad al-Haddad al-Yamani - 800 201_ Al-Sunan li-Ibn Majah - Abu Abdullah Muhammad bin Yazid ibn Majah - 273 202_ Al-Sunan li-Ibn Mansur - Sa'id bin Mansur al-Khurasani - 273 203_ Al-Sunan li-Abi Dawud - Abu Dawud Sulayman bin Ash'ath - 275 204_ Al-Sunan li-l-Nasa'i - Abu Abd al-Rahman Ahmad bin Shu'ayb al-Nasa'i - 303 205_ Al-Sunan li-l-Bayhaqi - Abu Bakr Ahmad bin Husayn bin Ali al-Bayhaqi - 458 206_ Al-Sunan li-l-Daraqutni - Ali Umar al-Daraqutni - 385 207_ Al-Sunan li-l-Darimi - Abdullah bin Abd al-Rahman al-Darimi - 255 208_ Sirat Ibn Hisham - Abu Muhammad Abd al-Malik bin Hisham - 213 209_ Sirat 'Uyun al-Athar - Muhammad bin Abdullah ibn Sayyid al-Nas - 737 210_ Siraji fi al-Mirath - Siraj al-Din Sajawandi (7th Century Hijri) - 211_ Siyar A'lam al-Nubala' - Shams al-Din Muhammad Ahmad al-Dhahabi - 738 212_ Al-Si'ayah fi Kashf ma fi Sharh al-Wiqayah - Muhammad bin Abd al-Hayy Lakhnawi - 1304 213_ Sirat Umar bin Muhammad Mulla - Umar bin Muhammad Mulla - 214_ Sirat Ibn Ishaq - Muhammad bin Ishaq bin Yasar - 151 215_ Siraj al-Qari - 216_ Al-Sa'diyyah - 217_ Al-Sa'y al-Mashkur fi Radd al-Madhab al-Mathur - Muhammad bin Abd al-Hayy Lakhnawi Hindi - 1304

जिल्द तेरहवीं फ़तावा रज़विया

195_ ज़हर-उल-रुबा अलल मुजतबा - जलालुद्दीन अब्दुर रहमान अल-सुयुती - 911 196_ ज़हर-उल-रौद फ़ी मसअलत-उल-हौद - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला इब्न शिहना - 921 197_ अज़-ज़वाज़िर अन-अल-कबायिर - शिहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - 974 198_ ज़ुबदतुल आसार फ़ी अख़बार क़ुतुबुल अख़यार - शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1252 199_ ज़ुबदतुल असरार फ़ी मनाक़िब गौस-उल-अबरार - शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1252

स (S)

200_ अस-सिराज-उल-वहाज - अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी - 800 201_ अस-सुनन लिल इब्न माजा - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन यज़ीद इब्न माजा - 273 202_ अस-सुनन लिल इब्न मंसूर - सईद बिन मंसूर अल-ख़ुरासानी - 273 203_ अस-सुनन लि अबी दाऊद - अबू दाऊद सुलेमान बिन अशअ़स - 275 204_ अस-सुनन लिन निसाई - अबू अब्दुर रहमान अहमद बिन शुऐब अन-निसाई - 303 205_ अस-सुनन लिल बैहक़ी - अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी - 458 206_ अस-सुनन लिद दारक़ुतनी - अली उमर अद-दारक़ुतनी - 385 207_ अस-सुनन लिद दारमी - अब्दुल्ला बिन अब्दुर रहमान अद-दारमी - 255 208_ सीरत इब्न हिशाम - अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम - 213 209_ सीरत उयून-उल-असर - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला इब्न सैयिद-उन-नास - 737 210_ सिराजी फ़िल मीरास - सिराजुद्दीन सजावंदी सातवीं सदी हिजरी - 211_ सियर अलाम-उन-नुबला - शम्सुद्दीन मुहम्मद अहमद अज़-ज़हबी - 738 212_ अस-सियाआ फ़ी कश्फ़ मा फ़ी शरह-उल-विक़ाया - मुहम्मद बिन अब्दुल हयी लखनवी - 1304 213_ सीरत उमर बिन मुहम्मद मुल्ला - उमर बिन मुहम्मद मुल्ला - 214_ सीरत इब्न इस्हाक़ - मुहम्मद बिन इस्हाक़ बिन यसार - 151 215_ सिराज-उल-क़ारी - 216_ अस-साादिया - 217_ अस-सई उल-मशकूर फ़ी रद-इल-मज़हब अल-मसूर - मुहम्मद बिन अब्दुल हयी लखनवी हिंदी - 1304

पृष्ठ 666 का 688

جلد سیزدہم فتاوی رضویہ

۱۹۵۔ زہرالربی علی المجتبی - جلال الدین عبدالرحمن السیوطی - ۹۱۱ ۱۹۶۔ زہر الروض فی مسئلۃ الحوض - محمد بن عبداللہ ابن شحنہ - ۹۲۱ ۱۹۷۔ الزواجر عن الکبائر - شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی - ۹۷۴ ۱۹۸۔ زبدۃ الآثار فی اخبار قطب الاخیار - شیخ عبدالحق محدث دہلوی - ۱۲۵۲ ۱۹۹۔ زبدۃ الاسرار فی مناقب غوث الابرار - شیخ عبدالحق محدث دہلوی - ۱۲۵۲

س

۲۰۰۔ السراج الوہاج - ابو بکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی - ۸۰۰ ۲۰۱۔ السنن لابن ماجۃ - ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجۃ - ۲۷۳ ۲۰۲۔ السنن لابن منصور - سعید بن منصور الخراسانی - ۲۷۳ ۲۰۳۔ السنن لابی داؤد - ابو داؤد سلیمان بن اشعث - ۲۷۵ ۲۰۴۔ السنن للنسائی - ابو عبدالرحمن احمد بن شعیب النسائی - ۳۰۳ ۲۰۵۔ السنن للبیہقی - ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیہقی - ۴۵۸ ۲۰۶۔ السنن للدار قطنی - علی عمر الدار قطنی - ۳۸۵ ۲۰۷۔ السنن للدارمی - عبداللہ بن عبدالرحمن الدارمی - ۲۵۵ ۲۰۸۔ سیرت ابن ہشام - ابو محمد عبدالملک بن ہشام - ۲۱۳ ۲۰۹۔ سیرت عیون الاثر - محمد بن عبداللہ ابن سید الناس - ۷۳۷ ۲۱۰۔ سراجی فی المیراث - سراج الدین سجاوندی ساتویں صدی ہجری - ۲۱۱۔ سیر اعلام النبلاء - شمس الدین محمد احمد الذہبی - ۷۳۸ ۲۱۲۔ السعایہ فی کشف مافی شرح الوقایہ - محمد بن عبدالحہ لکھنوی - ۱۳۰۴ ۲۱۳۔ سیرت عمر بن محمد ملا - عمر بن محمد ملا - ۲۱۴۔ سیرت ابن اسحاق - محمد بن اسحاق بن یسار - ۱۵۱ ۲۱۵۔ سراج القاری - ۲۱۶۔ السعدیہ - ۲۱۷۔ السعی المشکور فی ردالمذہب الماثور - محمد بن عبدالحہ لکھنوی ہندی - ۱۳۰۴

Fatawa Ridawiyya Volume 13 | 13

Letter: Shin (ش)

218- Al-Shafi | Shams al-A'immah Abdullah bin Mahmud al-Kardari | 973 219- Sharh al-Arba'in li'l-Nawawi | Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki | 1106 220- Sharh al-Arba'in li'l-Nawawi | Ibrahim ibn Atiyyah al-Maliki | 978 221- Sharh al-Arba'in li'l-Nawawi | Allamah Ahmad bin al-Hijazi | 1099 222- Sharh al-Ashbah wa'l-Naza'ir | Ibrahim bin Husayn bin Ahmad bin Muhammad ibn al-Biri | 592 223- Sharh al-Jami' al-Saghir | Imam Qazi Khan Husayn bin Mansur | 1062 224- Sharh al-Durar | Shaykh Isma'il bin Abd al-Ghani al-Nabulsi | 1052 225- Sharh Safar al-Sa'adah | Shaykh Abd al-Haqq al-Muhaddith al-Dehlawi | 516 226- Sharh al-Sunnah | Husayn bin Mansur al-Baghawi | 931 227- Sharh Shir'at al-Islam | Ya'qub bin Sayyidi Ali Zadah | 480 228- Sharh Mukhtasar al-Tahawi li'l-Isbijabi | Abu Nasr Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Isbijabi | 676 229- Sharh al-Gharibayn | [No Author Listed] | 321 230- Sharh al-Muslim li'l-Nawawi | Shaykh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi | 921 231- Sharh Ma'ani al-Athar | Abu Ja'far Ahmad bin Muhammad al-Tahawi | 1252 232- Sharh al-Manzumah li-ibn Wahban | Abd al-Barr bin Muhammad ibn Shuhnah | 911 233- Sharh al-Manzumah fi Rasm al-Mufti | Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami | 1122 234- Sharh al-Sudur bi-Sharh Hal al-Mawta wa'l-Qubur | Allamah Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti | 1122 235- Sharh Mawahib al-Ladunniyyah | Allamah Muhammad bin Abd al-Baqi al-Zurqani | 676 236- Sharh Muwatta Imam Malik | Allamah Muhammad bin Abd al-Baqi al-Zurqani | 932 237- Sharh al-Muhadhdhab li'l-Nawawi | Shaykh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi | 747 238- Sharh al-Niqayah | Mawlana Abd al-Ali al-Birjandi | 890 239- Sharh al-Wiqayah | Sadr al-Shari'ah Ubaydullah bin Mas'ud | - 240- Sharh al-Hidayah | Muhammad bin Muhammad bin Muhammad ibn Shuhnah | -

Page 667 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | १३

अक्षर: श (ش)

२१८- अल-शाफ़ी | शम्स अल-अइम्मा अब्दुल्लाह बिन महमूद अल-करदरी | ९७३ २१९- शरह अल-अरबईन लिल-नवावी | शिहाब अल-दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की | ११०६ २२०- शरह अल-अरबईन लिल-नवावी | इब्राहीम इब्न अतिया अल-मालिकी | ९७८ २२१- शरह अल-अरबईन लिल-नवावी | अल्लामा अहमद बिन अल-हिजाज़ी | १०९९ २२२- शरह अल-अशबाह वल-नज़ाइर | इब्राहीम बिन हुसैन बिन अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-बीरी | ५९२ २२३- शरह अल-जामि' अल-सग़ीर | इमाम क़ाज़ी खान हुसैन बिन मंसूर | १०६२ २२४- शरह अल-दुरर | शैख़ इस्माईल बिन अब्दुल ग़नी अल-नाबुलसी | १०५२ २२५- शरह सफ़र अल-सआदा | शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी | ५१६ २२६- शरह अल-सुन्ना | हुसैन बिन मंसूर अल-बग़वी | ९३१ २२७- शरह शिरअत अल-इस्लाम | याकूब बिन सैय्यदी अली ज़ादा | ४८० २२८- शरह मुख्तसर अल-तहावी लिल-इसबीजाबी | अबू नस्र अहमद बिन मंसूर अल-हनफ़ी अल-इसबीजाबी | ६७६ २२९- शरह अल-ग़रीबैन | [कोई लेखक नहीं] | ३२१ २३०- शरह अल-मुस्लिम लिल-नवावी | शैख़ अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अल-नवावी | ९२१ २३१- शरह मानी अल-आसार | अबू जाफ़र अहमद बिन मुहम्मद अल-तहावी | १२५२ २३२- शरह अल-मंज़ूमा लाब्न वहबान | अब्दुल बर बिन मुहम्मद इब्न शुहना | ९११ २३३- शरह अल-मंज़ूमा फ़ी रस्म अल-मुफ़्ती | मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी | ११२२ २३४- शरह अल-सुदूर बि-शरह हाल अल-मौता वल-कुबूर | अल्लामा जलाल अल-दीन अब्दुल रहमान अल-सुयूती | ११२२ २३५- शरह मवाहिब अल-लदुनिया | अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अल-ज़ुरक़ानी | ६७६ २३६- शरह मुवत्ता इमाम मालिक | अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अल-ज़ुरक़ानी | ९३२ २३७- शरह अल-मुहज़्ज़ब लिल-नवावी | शैख़ अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अल-नवावी | ७४७ २३८- शरह अल-निक़ाया | मौलाना अब्दुल अली अल-बिरजंदी | ८९० २३९- शरह अल-विक़ाया | सद्र अल-शरीया उबैदुल्लाह बिन मसऊद | - २४०- शरह अल-हिदाया | मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न शुहना | -

पृष्ठ ६६७ का ६८८

ش

۲۱۸- الشافی | شمس الائمہ عبداللہ بن محمود الکردری | ۹۷۳ ۲۱۹- شرح الاربعین للنووی | شہاب الدین احمد بن حجر المکی | ۱۱۰۶ ۲۲۰- شرح الاربعین للنووی | ابراہیم ابن عطیہ المالکی | ۹۷۸ ۲۲۱- شرح الاربعین للنووی | علامہ احمد بن الحجازی | ۱۰۹۹ ۲۲۲- شرح الاشباہ والنظائر | ابراہیم بن حسین بن احمد بن محمد ابن البیری | ۵۹۲ ۲۲۳- شرح الجامع الصغیر | امام قاضی خان حسین بن منصور | ۱۰۶۲ ۲۲۴- شرح الدرر | شیخ اسمعیل بن عبدالغنی النابلسی | ۱۰۵۲ ۲۲۵- شرح سفر السعادۃ | شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی | ۵۱۶ ۲۲۶- شرح السنۃ | حسین بن منصور البغوی | ۹۳۱ ۲۲۷- شرح شرعۃ الاسلام | یعقوب بن سیدی علی زادہ | ۴۸۰ ۲۲۸- شرح مختصر الطحاوی للاسبیجابی | ابونصر احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی | ۶۷۶ ۲۲۹- شرح الغریبین | --- | ۳۲۱ ۲۳۰- شرح المسلم للنووی | شیخ ابوزکریا یحیٰی بن شرف النووی | ۹۲۱ ۲۳۱- شرح معانی الآثار | ابو جعفر احمد بن محمد الطحاوی | ۱۲۵۲ ۲۳۲- شرح المنظومۃ لابن وہبان | عبدالبر بن محمد ابن شحنۃ | ۹۱۱ ۲۳۳- شرح المنظومۃ فی رسم المفتی | محمد امین ابن عابدین الشامی | ۱۱۲۲ ۲۳۴- شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور | علامہ جلال الدین عبدالرحمن السیوطی | ۱۱۲۲ ۲۳۵- شرح مواہب اللدنیۃ | علاقۃ محمد بن عبدالباقی الزرقانی | ۶۷۶ ۲۳۶- شرح مؤطا امام مالك | علاقۃ محمد بن عبدالباقی الزرقانی | ۹۳۲ ۲۳۷- شرح المہذب للنووی | شیخ ابوزکریا یحیٰی بن شرف النووی | ۷۴۷ ۲۳۸- شرح النقایہ | مولانا عبدالعلی البر جندی | ۸۹۰ ۲۳۹- شرح الوقایۃ | صدر الشریعہ عبیداللہ بن مسعود | --- ۲۴۰- شرح الہدایہ | محمد بن محمد بن محمد ابن شحنۃ | ---

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen

440 - Sharh al-Hidaya - Muhammad ibn Muhammad ibn Muhammad ibn Shihna - 890 441 - Shir'at al-Islam - Imam al-Islam Muhammad ibn Abi Bakr - 573 442 - Shu'ab al-Iman - Abu Bakr Ahmad ibn Husayn ibn 'Ali al-Bayhaqi - 458 443 - Sharh al-Jami' al-Saghir - Ahmad ibn Mansur al-Hanafi al-Isbijabi - 480 444 - Sharh al-Jami' al-Saghir - 'Umar ibn 'Abd al-'Aziz al-Hanafi - 536 445 - Al-Shifa fi Ta'rif Huquq al-Mustafa (PBUH) - Abu al-Fadl 'Iyad ibn Musa al-Qadi - 524 446 - Sharh Shafiya Ibn Hajib - Razi al-Din Muhammad ibn al-Hasan al-Astarabadi - 686 447 - Sharh Kafiya Ibn Hajib - Razi al-Din Muhammad ibn al-Hasan al-Astarabadi - 686 448 - Sharh Tawali' al-Anwar - Mahmud bin Abdul Rahman al-Isfahani - 739 449 - Shifa al-Siqam fi Ziyarat Khayr al-Anam - Taqi al-Din 'Ali bin 'Abd al-Kafi al-Subki - 756 450 - Sharh Aqa'id al-Nasafi - Sa'd al-Din Mas'ud bin 'Umar Taftazani - 792 451 - Sharh al-Maqasid Sa'd al-Din - Mas'ud bin 'Umar Taftazani - 792 452 - Sharh al-Mawaqif - Sayyid Sharif 'Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 453 - Sharh al-Siraji - Sayyid Sharif 'Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 454 - Sharh Chagmini - Musa Pasha bin Muhammad al-Rumi - 841 455 - Sharh Hashiya al-Kanz Mulla Miskin - Mu'in al-Din al-Harawi Mulla Miskin - 952 456 - Sharh Fiqh al-Akbar - 'Ali bin Sultan Muhammad al-Qari - 1012 457 - Sharh 'Ayn al-'Ilm - 'Ali bin Sultan Muhammad al-Qari - 1012 458 - Sharh Qasida Atyab al-Naghm - Shah Waliullah bin Shah 'Abd al-Rahim al-Dihlawi - 1179 459 - Sharh Qasida Hamziyya - Shah Waliullah bin Shah 'Abd al-Rahim al-Dihlawi - 1179 460 - Sharh Ruba'iyat - Shah Waliullah bin Shah 'Abd al-Rahim al-Dihlawi - 1179 461 - Sharh Fawatih al-Rahamut - Shah Waliullah bin Shah 'Abd al-Rahim al-Dihlawi - 1179 462 - Shifa al-'Alil - Shah Waliullah bin Shah 'Abd al-Rahim al-Dihlawi - 1179 463 - Sharh al-Nuqaya li Abi al-Makarim - Abu al-Makarim bin 'Abdullah bin Muhammad after - 907 464 - Sharaf al-Mustafa - Hafiz 'Abd al-Malik bin Muhammad Nishapuri - 406 465 - Sharh Muqaddimah 'Ashmawiyya - Ahmad bin Turki al-Maliki

Page 668 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं

440 - शरह अल-हिदाया - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न शिहना - 890 441 - शिरअत अल-इस्लाम - इमाम अल-इस्लाम मुहम्मद बिन अबी बक्र - 573 442 - शुअ़ब अल-ईमान - अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी - 458 443 - शरह अल-जामि अल-सग़ीर - अहमद बिन मंसूर अल-हनफ़ी अल-इसबीजाबी - 480 444 - शरह अल-जामि अल-सग़ीर - उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अल-हनफ़ी - 536 445 - अल-शिफ़ा फ़ी तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) - अबुल फ़ज़ल अयाज़ बिन मूसा अल-क़ाज़ी - 524 446 - शरह शाफ़िया इब्न हाजिब - रज़ी अल-दीन मुहम्मद बिन अल-हसन अल-अस्तराबादी - 686 447 - शरह काफ़िया इब्न हाजिब - रज़ी अल-दीन मुहम्मद बिन अल-हसन अल-अस्तराबादी - 686 448 - शरह तवालि अल-अनवार - महमूद बिन अब्दुल रहमान अल-इसफ़हानी - 739 449 - शिफ़ा अल-सिक़ाम फ़ी ज़ियारत ख़ैर अल-अनाम - तक़ी अल-दीन अली बिन अब्दुल काफ़ी अल-सुबकी - 756 450 - शरह अक़ाइद अल-नसफ़ी - साद अल-दीन मसूद बिन उमर तफ़्ताज़ानी - 792 451 - शरह अल-मक़ासिद साद अल-दीन - मसूद बिन उमर तफ़्ताज़ानी - 792 452 - शरह अल-मवाक़िफ़ - सैयद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - 816 453 - शरह अल-सिराजी - सैयद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - 816 454 - शरह चग़मीनी - मूसा पाशा बिन मुहम्मद अल-रूमी - 841 455 - शरह हाशिया अल-कन्ज़ मुल्ला मिस्कीन - मुईन अल-दीन अल-हरवी मुल्ला मिस्कीन - 952 456 - शरह फ़िक़ह अकबर - अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी - 1012 457 - शरह ऐन अल-इल्म - अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी - 1012 458 - शरह क़सीदा अतयब अल-नग़म - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 459 - शरह क़सीदा हमज़िया - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 460 - शरह रुबाइयात - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 461 - शरह फ़वातिह अल-रहमूत - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 462 - शिफ़ा अल-अलील - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 463 - शरह अल-नुक़ाया ली अबी अल-मकारिम - अबुल मकारिम बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद - 907 464 - शरफ़ अल-मुस्तफ़ा - हाफ़िज़ अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद नीशापुरी - 406 465 - शरह मुक़द्दमा अश्माविया - अहमद बिन तुर्की अल-मालिकी

पृष्ठ 668/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم

۴۴۰ - شرح الہدایۃ - محمد بن محمد بن محمد ابن شحنہ - ۸۹۰ ۴۴۱ - شرعة الاسلام - امام الاسلام محمد بن ابی بکر - ۵۷۳ ۴۴۲ - شعب الایمان - ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیہقی - ۴۵۸ ۴۴۳ - شرح الجامع الصغیر - احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی - ۴۸۰ ۴۴۴ - شرح الجامع الصغیر - عمر بن عبدالعزیز الحنفی - ۵۳۶ ۴۴۵ - الشفاء فی تعریف حقوق المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم - ابوالفضل عیاض بن موسی قاضی - ۵۲۴ ۴۴۶ - شرح شافیہ ابن حاجب - رضی الدین محمد بن الحسن الاستر آبادی - ۶۸۶ ۴۴۷ - شرح کافیہ ابن حاجب - رضی الدین محمد بن الحسن الاستر آبادی - ۶۸۶ ۴۴۸ - شرح طوالع الانوار - محمود بن عبدالرحمن الاصفہانی - ۷۳۹ ۴۴۹ - شفاء السقام فی زیارۃ خیر الانام - تقی الدین علی بن عبد الکافی السبکی - ۷۵۶ ۴۵۰ - شرح عقائد النسفی - سعد الدین مسعود بن عمر تفتازانی - ۷۹۲ ۴۵۱ - شرح المقاصد سعد الدین - مسعود بن عمر تفتازانی - ۷۹۲ ۴۵۲ - شرح المواقف - سید شریف علی بن محمد الجرجانی - ۸۱۶ ۴۵۳ - شرح السراجی - سید شریف علی بن محمد الجرجانی - ۸۱۶ ۴۵۴ - شرح چغمینی - موسیٰ پاشا بن محمد الرومی - ۸۴۱ ۴۵۵ - شرح حاشیۃ الکنز ملا مسکین - معین الدین الہروی ملا مسکین - ۹۵۲ ۴۵۶ - شرح فقہ اکبر - علی بن سلطان محمد القاری - ۱۰۱۲ ۴۵۷ - شرح عین العلم - علی بن سلطان محمد القاری - ۱۰۱۲ ۴۵۸ - شرح قصیدہ اطیب النغم - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۴۵۹ - شرح قصیدہ ہمزیہ - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۴۶۰ - شرح رباعیات - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۴۶۱ - شرح فواتح الرحموت - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۴۶۲ - شفاء العلیل - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۴۶۳ -

شرح النقاية لابی المکارم - ابوالمکارم بن عبدالله بن محمد بعد از - ۹۰۷ ۴۶۴ - شرف المصطفیٰ - حافظ عبد الملک بن محمد نیشاپوری - ۴۰۶ ۴۶۵ - شرح مقدمہ عشماویہ - احمد بن ترکی المالکی

Fatawa Rizvia Volume 13 | 13

266 Sharh Jami' al-Usul lil-Mudhayf - Mubarak bin Muhammad al-Ma'ruf bi Ibn al-Athir al-Jazari - 686 267 Sharh al-Multaqa lil-Bahnasi - Muhammad bin Muhammad al-Ma'ruf bi Ibn al-Bahansi - 987 268 Sharh Durar al-Bihar - Abdul Wahhab ibn Ahmad al-Shahir bi Ibn Wahban - 768

Letter: S (ص) 269 Sihah al-Jawhari - Isma'il bin Hammad al-Jawhari - 393 270 Sahih Ibn Hibban (Kitab al-Taqasim wal-Anwa') - Muhammad bin Hibban - 352 271 Sahih Ibn Khuzaymah - Muhammad bin Ishaq ibn Khuzaymah - 311 272 al-Surah - Abu al-Fadl Muhammad bin Umar bin Khalid al-Qurashi (Approx.) - 690 273 Saghir Sharh Munyah - Ibrahim al-Halabi - 956 274 Sirat-e-Mustaqim - Sayyid Ahmad Shaheed Barelvi - 1246 275 al-Sawa'iq al-Muhriqah - Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki - 973

Letter: T (ط) 276 al-Tahtawi 'ala al-Durr - Sayyid Ahmad al-Tahtawi - 1302 277 al-Tahtawi 'ala al-Maraqi - Sayyid Ahmad al-Tahtawi - 1302 278 Tabaqat al-Muqri'in - Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi - 748 279 Tabaqat al-Qurra' - Muhammad bin Muhammad al-Jazari - 833 280 al-Tariqah al-Muhammadiyyah - Muhammad bin Bir 'Ali al-Ma'ruf bi Birkivi - 981 281 Talabat al-Talabah - Najm al-Din 'Umar bin Muhammad al-Nasafi - 537

Letter: A (ع) 282 'Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari - Allama Badr al-Din Abi Muhammad Mahmud bin Ahmad al-'Ayni - 855 283 al-'Inayah Sharh al-Hidayah - Akmal al-Din Muhammad bin Muhammad al-Babirti - 786 284 'Inayat al-Qadi Hashiyah 'ala Tafsir al-Baydawi - Shihab al-Din al-Khafaji - 1069

Page 669 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं | १३

२६६ शरह जामि' अल-उसूल लिल-मुज़यफ़ - मुबारक बिन मुहम्मद अल-मअरुफ़ बि इब्न अल-असीर अल-जज़री - ६८६ २६७ शरह अल-मुल्तक़ा लिल-बहनसी - मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-मअरुफ़ बि इब्न अल-बहनसी - ९८७ २६८ शरह दुरर अल-बिहार - अब्दुल वहाब इब्न अहमद अल-शहीर बि इब्न वहबान - ७६८

अक्षर: स (ص) २६९ सिहाह अल-जौहरी - इस्माईल बिन हम्माद अल-जौहरी - ३९३ २७० सहीह इब्न हिब्बान (किताब अल-तकासीम वल-अनवा) - मुहम्मद बिन हिब्बान - ३५२ २७१ सहीह इब्न ख़ुज़ैमा - मुहम्मद बिन इसहाक इब्न ख़ुज़ैमा - ३११ २७२ अल-सुराह - अबू अल-फ़ज़ल मुहम्मद बिन उमर बिन खालिद अल-क़ुरशी (तक़रीबन) - ६९० २७३ स़ग़ीरी शरह मुनिया - इब्राहिम अल-हलबी - ९५६ २७४ सिराते मुस्तकीम - सैय्यद अहमद शहीद बरेलवी - १२४६ २७५ अल-सवाइक़ अल-मुहरिक़ा - शिहाब अल-दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की - ९७३

अक्षर: त (ط) २७६ अल-तहत़ावी अला अल-दुर - सैय्यद अहमद अल-तहत़ावी - १३०२ २७७ अल-तहत़ावी अला अल-मराक़ी - सैय्यद अहमद अल-तहत़ावी - १३०२ २७८ तबक़ात अल-मुकरीइन - मुहम्मद बिन अहमद अल-ज़हबी - ७४८ २७९ तबक़ात अल-कुर्रा - मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-जज़री - ८३३ २८० अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया - मुहम्मद बिन बीर अली अल-मअरुफ़ बि बिरकीवी - ९८१ २८१ तलबत अल-तलबा - नज्म अल-दीन उमर बिन मुहम्मद अल-नसफ़ी - ५३७

अक्षर: अ (ع) २८२ उम्दत अल-क़ारी शरह सहीह अल-बुखारी - अल्लामा बद्र अल-दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी - ८५५ २८३ अल-इनाया शरह अल-हिदाया - अकमल अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बाबिर्ती - ७८६ २८४ इनायत अल-क़ाज़ी हाशिया अला तफ़सीर अल-बैज़ावी - शिहाब अल-दीन अल-ख़फ़ाजी - १०६९

पेज ६६९ / ६८८

۲۶۶_ شرح جامع الاصول للمضیف مبارک بن محمد المعروف بابن الاثیر الجزری ۶۸۶ ۲۶۷_ شرح الملتقٰی للبہنسی محمد بن محمد المعروف بابن البہنسی ۹۸۷ ۲۶۸_ شرح درر البحار عبدالوہاب ابن احمد الشہیر بابن وہبان ۷۶۸

ص ۲۶۹_ صحاح الجوہری اسمعیل بن حماد الجوہری ۳۹۳ ۲۷۰_ صحیح ابن حبان (کتاب التقاسیم والانواع) محمد بن حبان ۳۵۲ ۲۷۱_ صحیح ابن خزیمہ محمد بن اسحاق ابن خزیمہ ۳۱۱ ۲۷۲_ الصراح ابو فضل محمد بن عمر بن خالد القرشی تقریباً ۶۹۰ ۲۷۳_ صغیری شرح منیہ ابراہیم الحلبی ۹۵۶ ۲۷۴_ صراط مستقیم سید احمد شہید بریلوی ۱۲۴۶ ۲۷۵_ الصواعق المحرقہ شہاب الدین احمد بن حجر المکی ۹۷۳

ط ۲۷۶_ الطحطاوی علی الدر سید احمد الطحطاوی ۱۳۰۲ ۲۷۷_ الطحطاوی علی المراقی سید احمد الطحطاوی ۱۳۰۲ ۲۷۸_ طبقات المقرئین محمد بن احمد الذہبی ۷۴۸ ۲۷۹_ طبقات القراء محمد بن محمد الجزری ۸۳۳ ۲۸۰_ الطریقۃ المحمدیۃ محمد بن بیر علی المعروف ببرکلی ۹۸۱ ۲۸۱_ طلبۃ الطلبہ نجم الدین عمر بن محمد النسفی ۵۳۷

ع ۲۸۲_ عمدۃ القاری شرح صحیح البخاری علامہ بدر الدین ابی محمد محمود بن احمد العینی ۸۵۵ ۲۸۳_ العنایۃ شرح الہدایۃ اکمل الدین محمد بن محمد البابرتی ۷۸۶ ۲۸۴_ عنایۃ القاضی حاشیہ علی تفسیر البیضاوی شہاب الدین الخفاجی ۱۰۶۹

Fatawa-e-Razawiyya Volume Thirteen, Page 13

1. Uyoon al-Masail — Abul Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi — 378
2. Uqud al-Durriyah — Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami — 1252
3. Iddat Kamal ad-Din — Muhammad bin Ahmad known as Tashkupri-zade — 1030
4. Amal al-Yawm wa al-Laylah — Abu Bakr Ahmad bin Muhammad ibn al-Sunni — 364
5. Awarif al-Ma'arif — Shihab al-Din Suhrawardi — 632
6. Aqd al-Farid — Abu Abdullah Muhammad bin Abdul Qawi al-Maqdisi — 699
7. Ayn al-Ilm — Muhammad bin Uthman bin Umar al-Hanafi al-Balkhi — 830
8. Aqd al-Jid — Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi — 1179
9. Uqud al-Durriyah fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiyah — Muhammad Amin Afandi ibn Abidin — 1252
10. Umdat al-Ri'ayah fi Hall Sharh al-Wiqayah — Muhammad bin Abdul Hayy al-Lucknowi — 1304

(Ghayn) 295 غ. Ghayat al-Bayan Shaykh Qawam al-Din — Amir Katib ibn Amir al-Itqani — 758 296. Ghurar al-Ahkam — Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw — 885 297. Gharib al-Hadith — Abul Hasan Ali bin Mughirah al-Baghdadi known as Athram — 230 298. Ghamz Uyun al-Basa'ir — Ahmad bin Muhammad al-Hamawi al-Hanafi — 1098 299. Ghaniyah Dhu al-Ahkam — Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali — 1069 300. Ghaniyah al-Mustamli — Muhammad Ibrahim bin Muhammad al-Halabi — 952 301. Ghayth al-Naf' fi al-Qira'at al-Sab' — Yahya bin Sharaf al-Nawawi — 676

(Fa) 302 ف. Fath al-Bari Sharh al-Bukhari — Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani — 852 303. Fath al-Qadir — Kamal al-Din Muhammad bin Abdul Wahid bin al-Humam — 861 304. Fatawa al-Nasafi — Imam Najm al-Din al-Nasafi — 537 305. Fatawa Bazzaziyah — Muhammad bin Muhammad bin Shihab ibn Bazzaz — 827

Page 670 of 688

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द तेरहवीं, पृष्ठ १३

1. उयून अल-मसाईल — अबुल लैथ नसर बिन मुहम्मद अल-समरकंदी — ३७८
2. उक़ूद अद-दुर्रियाह — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी — १२५२
3. इद्दत कमाल अद-दीन — मुहम्मद बिन अहमद अश-शहीर बित-ताशकुबरी — १०३०
4. अमल अल-यौम वल-लैला — अबू बक्र अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-सुन्नी — ३६४
5. अवारिफ अल-मआरिफ — शिहाब अल-दीन सुहरावर्दी — ६३२
6. अक़्द अल-फ़रीद — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल क़वी अल-मक़दिसी — ६९९
7. ऐन अल-इल्म — मुहम्मद बिन उस्मान बिन उमर अल-हनफी अल-बल्ख़ी — ८३०
8. अक़्द अल-जीद — शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी — ११७९
9. उक़ूद अद-दुर्रिया फ़ी तनक़ीह अल-फ़तावा अल-हामिदिया — मुहम्मद अमीन अफ़ंदी इब्न आबिदीन — १२५२
10. उम्दत अर-रियाया फ़ी हल शरह अल-विकाया — मुहम्मद बिन अब्दुल हयी अल-लखनवी — १३०४

(ग़ैन) ع २९५. ग़ायत अल-बयान शेख़ क़वाम अल-दीन — अमीर कातिब इब्न अमीर अल-इत़क़ानी — ७५८ २९६. ग़ुरर अल-अहकाम — क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरौ — ८८५ २९७. ग़रीब अल-हदीस — अबुल हसन अली बिन मुग़ीरा अल-बग़दादी अल-मारूफ़ बिल-असरम — २३० २९८. ग़मज़ उयून अल-बसायर — अहमद बिन मुहम्मद अल-हमवी अल-हनफी — १०९८ २९९. ग़निया ज़ुल-अहकाम — हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली — १०६९ ३००. ग़निया अल-मुस्तमली — मुहम्मद इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-हलबी — ९५२ ३०१. ग़ैथ अन-नफ़' फ़ी अल-क़िराअत अस-सबा — यह्या बिन शरफ़ अन-नवावी — ६७६

(फ़ा) ف ३०२. फ़तह अल-बारी शरह अल-बुख़ारी — शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी — ८५२ ३०३. फ़तह अल-क़दीर — कमाल अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद बिन अल-हुमाम — ८६१ ३०४. फ़तावा अन-नसाफी — इमाम नज्म अल-दीन अन-नसाफी — ५३७ ३०५. फ़तावा बज़ाज़िया — मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़ाज़ — ८२७

पृष्ठ ६७० / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم، صفحہ ۱۳

۲۸۵۔ عیون المسائل — ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی — ۳۷۸ ۲۸۶۔ عقودالدریّہ — محمد امین ابن عابدین الشامی — ۱۲۵۲ ۲۸۷۔ عدّۃ کمال الدین — محمد بن احمد اشہیر بطاشکبری — ۱۰۳۰ ۲۸۸۔ عمل الیوم واللیلۃ — ابوبکر احمد بن محمد ابن السنی — ۳۶۴ ۲۸۹۔ عوارف المعارف — شہاب الدین سہروردی — ۶۳۲ ۲۹۰۔ عقدالفرید — ابو عبداللہ محمد بن عبد القوی المقدسی — ۶۹۹ ۲۹۱۔ عین العلم — محمد بن عثمان بن عمر الحنفی البلخی — ۸۳۰ ۲۹۲۔ عقد الجید — شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی — ۱۱۷۹ ۲۹۳۔ عقودالدریہ فی تنقیح الفتاوی الحامدیہ — محمد امین آفندی ابن عابدین — ۱۲۵۲ ۲۹۴۔ عمدۃ الرعایۃ في حل شرح الوقایہ — محمد بن عبد الحی اللکھنوی — ۱۳۰۴

(غ) ۲۹۵۔ غایۃ البیان شیخ قوام الدین — امیر کاتب ابن امیر الاتقانی — ۷۵۸ ۲۹۶۔ غررالاحکام — قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو — ۸۸۵ ۲۹۷۔ غریب الحدیث — ابوالحسن علی بن مغیرہ البغدادی المعروف باثرم — ۲۳۰ ۲۹۸۔ غمز عیون البصائر — احمد بن محمد الحموی الحنفی — ۱۰۹۸ ۲۹۹۔ غنیۃ ذوالاحکام — حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی — ۱۰۶۹ ۳۰۰۔ غنیۃ المستملی — محمد ابراہیم بن محمد الحلبی — ۹۵۲ ۳۰۱۔ غیث النفع فی القراء السبع — یحییٰ بن شرف النووی — ۶۷۶

(ف) ۳۰۲۔ فتح الباری شرح البخاری — شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی — ۸۵۲ ۳۰۳۔ فتح القدیر — کمال الدین محمد بن عبد الواحد بابن الہمام — ۸۶۱ ۳۰۴۔ فتاوی النصفی — امام نجم الدین النسفی — ۵۳۷ ۳۰۵۔ فتاوی بزازیہ — محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز — ۸۲۷

Volume Thirteenth Fatawa Ridawiyya

1. Fatawa Hujja
2. Fatawa Khayriyya — Allama Khayr al-Din bin Ahmad bin Ali al-Ramli 1081
3. Fatawa Sirajiyya — Siraj al-Din Ali bin Uthman al-Ushi 575
4. Fatawa 'Ata bin Hamza — 'Ata bin Hamza al-Sughdi
5. Fatawa Ghiyathiyya — Da'ud bin Yusuf al-Khatib al-Hanafi
6. Fatawa Qadi Khan — Hasan bin Mansur Qadi Khan 592
7. Fatawa Hindiyya — Jam'iyyat 'Ulama Aurangzeb Alamgir
8. Fatawa Zahiriyya — Zahir al-Din Abu Bakr Muhammad bin Ahmad 619
9. Fatawa Walwalajiyya — Abd al-Rashid bin Abi Hanifa al-Walwalaji 540
10. Fatawa al-Kubra — Imam Sadr al-Shahid Husam al-Din Umar bin Abd al-Aziz 536
11. Fiqh al-Akbar — Al-Imam al-A'zam Abi Hanifa Nu'man bin Thabit al-Kufi 150
12. Fath al-Mu'in — Sayyid Muhammad Abi al-Sa'ud al-Hanafi
13. Fath al-Mu'in Sharh Qurrat al-'Ayn — Zayn al-Din bin Ali bin Ahmad al-Shafi'i 928
14. Al-Futuhat al-Makkiyya — Muhi al-Din Muhammad bin Ali ibn Arabi 638
15. Fawatih al-Rahmut — Abd al-Ali Muhammad bin Nizam al-Din al-Kindi 1225
16. Al-Fawa'id — Tammam bin Muhammad bin Abdullah al-Bajali 414
17. Fawa'id al-Mukhtassa — Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami 1252
18. Fayd al-Qadir — Sharh al-Jami' al-Saghir Abd al-Ra'uf al-Munawi 1031
19. Fawa'id Samawiyya — Isma'il bin Abdullah al-Mulaqqab bi-Samawiyya 267
20. Fada'il al-Qur'an li-Ibn Durays — Abu Abdullah Muhammad bin Ayyub ibn Durays al-Bajali 294
21. Fawa'id al-Khal'i — Abu al-Hasan Ali bin al-Husayn al-Mawsili 492
22. Fusul al-'Imadi — Muhammad bin Mahmud Ustrushani 636
23. Fatawa Tatar Khaniyya — 'Alam bin al-'Ala al-Ansari al-Dihlawi 786
24. Fath al-Mughith — Imam Muhammad bin Abd al-Rahman al-Sakhawi 903
25. Fatawa Zaynabiyya — Zayn al-Din bin Ibrahim ibn Nujaym 970

जिल्द तेरहवीं फ़तावा रज़विया

1. फ़तावा हुज्जह
2. फ़तावा खैरिया — अल्लामा खैर अल-दीन बिन अहमद बिन अली अल-रमली 1081
3. फ़तावा सिराजिया — सिराज अल-दीन अली बिन उस्मान अल-ऊशी 575
4. फ़तावा अता बिन हमज़ा — अता बिन हमज़ा अल-सुगदी
5. फ़तावा गियासिया — दाऊद बिन यूसुफ़ अल-खतीब अल-हनफ़ी
6. फ़तावा काज़ी ख़ाँ — हसन बिन मंसूर काज़ी ख़ाँ 592
7. फ़तावा हिंदिया — जमीयत उलमा औरंगज़ेब आलमगीर
8. फ़तावा ज़हीरिया — ज़हीर अल-दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद 619
9. फ़तावा वलवालजिया — अब्दुल रशीद बिन अबी हनीफ़ा अल-वलवालजी 540
10. फ़तावा अल-कुबरा — इमाम सद्र अल-शहीद हुसाम अल-दीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ 536
11. फ़िक़्ह अल-अकबर — अल-इमाम अल-आज़म अबी हनीफ़ा नुमान बिन साबित अल-कूफ़ी 150
12. फ़त्ह अल-मुईन — सय्यद मुहम्मद अबी अल-सऊद अल-हनफ़ी
13. फ़त्ह अल-मुईन शर्ह क़ुर्रत अल-ऐन — ज़ैन अल-दीन बिन अली बिन अहमद अल-शाफ़ई 928
14. अल-फ़ुतुहात अल-मक्किया — मुही अल-दीन मुहम्मद बिन अली इब्न अरबी 638
15. फ़वातिह अल-रहमूत — अब्दुल अली मुहम्मद बिन निज़ाम अल-दीन अल-किंदी 1225
16. अल-फ़वाइद — तमाम बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-बजली 414
17. फ़वाइद अल-मुख़्तस्सा — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी 1252
18. फ़ैज़ अल-क़दीर — शर्ह अल-जामि अल-सगीर अब्दुल रऊफ़ अल-मुनावी 1031
19. फ़वाइद समाविया — इस्माईल बिन अब्दुल्ला अल-मुलाक़्क़ब बि-समाविया 267
20. फ़ज़ाइल अल-क़ुरआन ली-इब्न दुरैस — अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अय्यूब इब्न दुरैस अल-बजली 294
21. फ़वाइद अल-ख़लई — अबुल हसन अली बिन अल-हुसैन अल-मौसिली 492
22. फ़ुसूल अल-इमादी — मुहम्मद बिन महमूद उस्तुशानी 636
23. फ़तावा तातार खानिया — आलम बिन अल-अला अल-अंसारी अल-देहलवी 786
24. फ़त्ह अल-मुगीस — इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल-सखावी 903

25. फ़तावा ज़ैनबिया — ज़ैन अल-दीन बिन इब्राहिम इब्न नुजैम 970

جلد سیز دہم فتاوٰی رضویہ

306۔ فتاوٰی حجتہ 307۔ فتاوٰی خیریہ۔ علامہ خیر الدین بن احمد بن علی الرملی 1081 308۔ فتاوٰی سراجیہ۔ سراج الدین علی بن عثمان الاوشی 575 309۔ فتاوٰی عطاء بن حمزہ۔ عطاء بن حمزہ السغدی 310۔ فتاوٰی غیاثیہ۔ داؤد بن یوسف الخطیب الحنفی 311۔ فتاوٰی قاضی خاں۔ حسن بن منصور قاضی خاں 592 312۔ فتاوٰی ہندیہ۔ جمعیت علماء اورنگ زیب عالمگیر 313۔ فتاوٰی ظہیریہ۔ ظہیر الدین ابو بکر محمد بن احمد 619 314۔ فتاوٰی ولوا لجیۃ۔ عبدالرشید بن ابی حنیفہ الولو الجی 540 315۔ فتاوٰی الکبری۔ امام صدر الشہید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز 536 316۔ فقہ الاکبر۔ الامام الاعظم ابی حنیفہ نعمان بن ثابت الکوفی 150 317۔ فتح المعین۔ سید محمد ابی السعود الحنفی 318۔ فتح المعین شرح قرۃ العین۔ زین الدین بن علی بن احمد الشافعی 928 319۔ الفتوحات المکیۃ۔ محی الدین محمد بن علی ابن عربی 638 320۔ فواتح الرحموت۔ عبدالعلی محمد بن نظام الدین الکندی 1225 321۔ الفوائد۔ تمام بن محمد بن عبداللہ البجلی 414 322۔ فوائد المختصہ۔ محمد امین ابن عابدین الشامی 1252 323۔ فیض القدیر۔ شرح الجامع الصغیر عبدالرؤف المناوی 1031 324۔ فوائد سمویۃ۔ اسمعیل بن عبداللہ الملقب بسمویہ 267 325۔ فضائل القرآن لابن ضریس۔ ابو عبداللہ محمد بن ایوب ابن ضریس البجلی 294 326۔ فوائد الخلعی۔ ابوالحسن علی بن الحسین الموصلی 492 327۔ فصول العمادی۔ محمد بن محمود استروشنی 636 328۔ فتاوٰی تاتار خانیہ۔ عالم بن العلاء الانصاری الدہلوی 786 329۔ فتح المغیث۔ امام محمد بن عبدالرحمن السخاوی 903 330۔ فتاوٰی زینبیہ۔ زین الدین بن ابراہیم ابن نجیم 970

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiya

1. Fath al-Mu'in Sharh Arba'in | Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad ibn Hajar al-Makki | 974
2. Fath al-Ilah Sharh al-Mishkat | Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad ibn Hajar al-Makki | 974
3. Fatawa al-Faqih ibn Hajar Makki | Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad ibn Hajar al-Makki | 974
4. Fatawa Anqarawiyyah | Muhammad bin Husayn al-Anqarawi | 1098
5. Fatawa As'adiyyah | Sayyid As'ad ibn Abi Bakr al-Madani al-Husayni | 1116
6. Fawa'id Majmu'ah | Shawkani Muhammad bin Ali bin Mahmud al-Shawkani | 1250
7. Fatawa Jamal bin Umar al-Makki | Jamal bin Umar al-Makki | 1284
8. Fadl Libas al-Ama'im | Abu Abdullah Muhammad bin Waddah |
9. Fatawa Qa'idiyyah | Abu Abdullah Muhammad bin Ali al-Qadiri | 1004
10. Fatawa Ghazzi | Muhammad bin Abdullah al-Tamartashi |
11. Fatawa Shams al-Din al-Ramli |
12. Fath al-Malik al-Majid |
13. Fath al-Aziz (Tafsir Azizi) | Abdul Aziz bin Wali Allah al-Dehlawi | 1239

Qaf (Letter Q) 344. Al-Qamus al-Muhit | Muhammad bin Yaqub al-Fayruzabadi | 817 345. Qurrat al-Ayn | Allama Zayn al-Din bin Ali al-Malibari | 928 346. Al-Qunyah | Najm al-Din Mukhtar bin Muhammad al-Zahidi | 658 347. Al-Quran al-Karim | 348. Qut al-Qulub fi Mu'amalat al-Mahbub | Abu Talib Muhammad bin Ali al-Makki | 386 349. Al-Qawl al-Musaddad | Shihab al-Din Ahmad bin Ali al-Qastallani | 852 350. Qurrat al-Aynayn fi Tafdil al-Shaykhayn | Shah Wali Allah bin Shah Abdul Rahim al-Dehlawi | 1179 351. Al-Qawl al-Jamil | Shah Wali Allah bin Shah Abdul Rahim al-Dehlawi | 1179 352. Qamar al-Aqmar Hashiyah Nur al-Anwar | Muhammad bin Abdul Haqq Lakhnawi Ansari | 1302 353. Al-Qawl al-Sawab fi Fadl Umar bin al-Khattab | Ibrahim bin Abdullah al-Yamani | 1302

जिल्द तेरहवीं 13 फ़तावा रज़विया

1. फ़तह अल-मुईन शरह अरबन | शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की | 974
2. फ़तह अल-इलाह शरह अल-मिश्कात | शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की | 974
3. फ़तावा अल-फ़कीह इब्न हजर मक्की | शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की | 974
4. फ़तावा अनकरविया | मुहम्मद बिन हुसैन अल-अनकरवी | 1098
5. फ़तावा असदिया | सैय्यद असद इब्न अबी बक्र अल-मदनी अल-हुसैनी | 1116
6. फ़वाइद मजमुआ | शौकानी मुहम्मद बिन अली बिन महमूद अल-शौकानी | 1250
7. फ़तावा जमाल बिन उमर अल-मक्की | जमाल बिन उमर अल-मक्की | 1284
8. फ़ज़्ल लिबास अल-अमइम | अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन वद्दाह |
9. फ़तावा काइदिया | अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली अल-कादिरी | 1004
10. फ़तावा ग़ज़्ज़ी | मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-तमरताशी |
11. फ़तावा शम्स अल-दीन अल-रमली |
12. फ़तह अल-मलिक अल-मजीद |
13. फ़तह अल-अज़ीज़ (तफ़सीर अज़ीज़ी) | अब्दुल अज़ीज़ बिन वली अल्लाह अल-देहलवी | 1239

क़ (अक्षर क़ाफ़) 344. अल-कामूस अल-मुहीत | मुहम्मद बिन याकूब अल-फ़ैरूज़ाबादी | 817 345. कुर्रत अल-ऐन | अल्लामा ज़ैन अल-दीन बिन अली अल-मलीबारी | 928 346. अल-कुनिया | नज्म अल-दीन मुख्तार बिन मुहम्मद अल-ज़ाहीदी | 658 347. अल-कुरान अल-करीम | 348. कूत अल-कुलूब फ़ी मुआमलात अल-महबूब | अबू तालिब मुहम्मद बिन अली अल-मक्की | 386 349. अल-कौल अल-मुसद्दद | शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली अल-क़स्तलानी | 852 350. कुर्रत अल-ऐनैन फ़ी तफ़ज़ील अल-शैखैन | शाह वली अल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहलवी | 1179 351. अल-कौल अल-जमील | शाह वली अल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहलवी | 1179 352. क़मर अल-अक्मार हाशिया नूर अल-अनवार | मुहम्मद बिन अब्दुल हक़ लखनवी

अंसारी | 1302 353. अल-कौल अल-सवाब फ़ी फ़ज़्ल उमर बिन अल-खत्ताब | इब्राहिम बिन अब्दुल्लाह अल-यमनी | 1302

पृष्ठ 672 / 688

جلد سیز دہم ۱۳ فتاوٰی رضویہ

۳۳۱۔ فتح المعین شرح اربعین | شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی | ۹۷۴ ۳۳۲۔ فتح الالہ شرح المشکاۃ | شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی | ۹۷۴ ۳۳۳۔ فتاوٰی الفقیہ ابن حجر مکی | شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی | ۹۷۴ ۳۳۴۔ فتاوٰی انقرویہ | محمد بن حسین الانقروی | ۱۰۹۸ ۳۳۵۔ فتاوٰی اسعدیہ | سید اسعد ابن ابی بکر المدنی الحسینی | ۱۱۱۶ ۳۳۶۔ فوائد مجموعہ | شوکانی محمد بن علی بن محمود الشوکانی | ۱۲۵۰ ۳۳۷۔ فتاوٰی جمال بن عمر المکی | جمال بن عمر المکی | ۱۲۸۴ ۳۳۸۔ فضل لباس العمائم | ابو عبد اللہ محمد بن وضاح | ۳۳۹۔ فتاوٰی قاعدیہ | ابو عبد اللہ محمد بن علی القادری | ۱۰۰۴ ۳۴۰۔ فتاوٰی غزّی | محمد بن عبد اللہ التمر تاشی | ۳۴۱۔ فتاوٰی شمس الدین الرملی | ۳۴۲۔ فتح الملک المجید | ۳۴۳۔ فتح العزیز (تفسیر عزیزی) | عبد العزیز بن ولی اللہ الدہلوی | ۱۲۳۹

ق ۳۴۴۔ القاموس المحیط | محمد بن یعقوب الفیروز آبادی | ۸۱۷ ۳۴۵۔ قرۃ العین | علامہ زین الدین بن علی المللیباری | ۹۲۸ ۳۴۶۔ القنیۃ | نجم الدین مختار بن محمد الزاہدی | ۶۵۸ ۳۴۷۔ القرآن الکریم | ۳۴۸۔ قوت القلوب فی معاملۃ المحبوب | ابوطالب محمد بن علی المکی | ۳۸۶ ۳۴۹۔ القول المسدد | شہاب الدین احمد بن علی القسطلانی | ۸۵۲ ۳۵۰۔ قرۃ العینین فی تفضیل الشیخین | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی | ۱۱۷۹ ۳۵۱۔ القول الجمیل | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی | ۱۱۷۹ ۳۵۲۔ قمر الاقمار حاشیہ نور الانوار | محمد بن عبد الحق لکھنوی انصاری | ۱۳۰۲ ۳۵۳۔ القول الصواب فی فضل عمر بن الخطاب | ابراہیم بن عبداللہ الیمنی | ۱۳۰۲

صفحہ ۶۷۲ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya Volume 13 | 13

Kaf (ک)

1. Al-Kafi fi al-Furu - Hakim al-Shahid Muhammad ibn Muhammad - 332
2. Al-Kamil li-Ibn 'Adi - Abu Ahmad 'Abdullah ibn 'Adi - 365
3. Al-Kibrit al-Ahmar - Sayyid 'Abd al-Wahhab al-Sha'rani - 973
4. Kitab al-Athar - Imam Muhammad ibn al-Hasan al-Shaybani - 189
5. Kitab al-Athar - Imam Abu Yusuf Ya'qub ibn Ibrahim al-Ansari - 182
6. Kitab al-Ilmam fi Adab Dukhul al-Hammam - Abu al-Mahasin Muhammad ibn 'Ali
7. Kitab al-Siwak - Abu Nu'aym Ahmad ibn 'Abdullah - 430
8. Kitab al-Hadiyya li-Ibn 'Imad - 'Abd al-Rahman ibn Muhammad 'Imad al-Din ibn Muhammad al-'Imadi - 1050
9. Kitab al-Tuhur li-Abi 'Ubayd
10. Kitab al-'Ilal 'ala Abwab al-Fiqh - Abu Muhammad 'Abd al-Rahman ibn Abi Hatim Muhammad al-Razi - 327
11. Kitab al-Asl - Imam Muhammad ibn al-Hasan al-Shaybani - 189
12. Kitab al-Waswasa - Abu Bakr ibn Abi Dawud
13. Kashf al-Asrar - 'Ala al-Din 'Abd al-'Aziz ibn Ahmad al-Bukhari - 730
14. Kashf al-Ramz 'Allamah al-Qudsi
15. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar - Amin al-Din 'Abd al-Wahhab ibn Wahban al-Dimashqi - 768
16. Kanz al-'Ummal - 'Ala al-Din 'Ali al-Muttaqi ibn Husam al-Din - 975
17. Al-Kifaya - Jalal al-Din ibn Shams al-Din al-Khwarizmi - approx. 800
18. Kaff al-Ru'a' - Shihab al-Din Ahmad ibn Hajar al-Haytami - 973
19. Kanz al-Daqa'iq - 'Abdullah ibn Ahmad ibn Mahmud - 710
20. Al-Kuna li al-Hakim - Abu 'Abdullah al-Hakim - 405
21. Al-Kawakib al-Darari - Shams al-Din Muhammad ibn Yusuf al-Shafi'i al-Kirmani - 786
22. Kitab al-Jarh wa al-Ta'dil - Muhammad ibn Hibban al-Tamimi - 352
23. Kitab al-Maghazi - Yahya ibn Sa'id al-Qattan - 198

Page 673 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द १३ | १३

काफ़ (ک)

1. अल-काफ़ी फ़ी अल-फ़ुरु - हाकिम अल-शहीद मुहम्मद इब्न मुहम्मद - 332
2. अल-कामिल लि-इब्न अदी - अबू अहमद अब्दुल्लाह इब्न अदी - 365
3. अल-किबरीत अल-अहमर - सय्यद अब्दुल वहाब अल-शअरानी - 973
4. किताब अल-आसार - इमाम मुहम्मद इब्न अल-हसन अल-शयबानी - 189
5. किताब अल-आसार - इमाम अबू यूसुफ़ याकूब इब्न इब्राहिम अल-अंसारी - 182
6. किताब अल-इल्माम फ़ी आदाब दुखुल अल-हम्माम - अबुल महासिन मुहम्मद इब्न अली
7. किताब अल-सिवाक - अबू नुऐम अहमद इब्न अब्दुल्लाह - 430
8. किताब अल-हदिया लि-इब्न इमाद - अब्दुर रहमान इब्न मुहम्मद इमाद अल-दीन इब्न मुहम्मद अल-इमादी - 1050
9. किताब अल-तुहुर लि-अबी उबैद
10. किताब अल-इलाल अला अबवाब अल-फ़िक़्ह - अबू मुहम्मद अब्दुर रहमान इब्न अबी हातिम मुहम्मद अल-राज़ी - 327
11. किताब अल-अस्ल - इमाम मुहम्मद इब्न अल-हसन अल-शयबानी - 189
12. किताब अल-वसवसा - अबू बक्र इब्न अबी दाऊद
13. कशफ़ अल-असरार - अलाउद्दीन अब्दुल अज़ीज़ इब्न अहमद अल-बुखारी - 730
14. कशफ़ अल-रमज़ अल्लामा अल-कुदसी
15. कशफ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार - अमीन अल-दीन अब्दुल वहाब इब्न वहबान अल-दमशकी - 768
16. कंज़ अल-उम्माल - अलाउद्दीन अली अल-मुत्तकी इब्न हुसाम अल-दीन - 975
17. अल-किफ़ाया - जलाल अल-दीन इब्न शम्स अल-दीन अल-ख्वारिज़मी - लगभग 800
18. कफ़ अल-रुआ - शिहाब अल-दीन अहमद इब्न हजर अल-हैतमी - 973
19. कंज़ अद-दक़ाइक़ - अब्दुल्लाह इब्न अहमद इब्न महमूद - 710
20. अल-कुना लिल हाकिम - अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम - 405
21. अल-कवाकिब अद-दरारी - शम्स अल-दीन मुहम्मद इब्न यूसुफ़ अल-शाफ़ई अल-किरमानी - 786

22. किताब अल-जरह वल तादील - मुहम्मद इब्न हिब्बान अल-तमीमी - 352
23. किताब अल-मग़ाज़ी - यह्या बिन सईद अल-क़त्तान - 198

पृष्ठ 673/688

ک

۳۵۴۔ الکافی فی الفروع | حاکم شہید محمد بن محمد | ۳۳۲ ۳۵۵۔ الکامل لابن عدی | ابو احمد عبد اللہ بن عدی | ۳۶۵ ۳۵۶۔ الکبریت الاحمر | سید عبدالوہاب الشعرانی | ۹۷۳ ۳۵۷۔ کتاب الآثار | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۳۵۸۔ کتاب الآثار | امام ابو یوسف یعقوب بن ابراہیم الانصاری | ۱۸۲ ۳۵۹۔ کتاب الالمام فی آداب دخول الحمام | ابو المحاسن محمد بن علی | ۳۶۰۔ کتاب السواک | ابو نعیم احمد بن عبداللہ | ۴۳۰ ۳۶۱۔ کتاب الھدیہ لابن عماد | عبدالرحمن بن محمد عماد الدین بن محمد العمادی | ۱۰۵۰ ۳۶۲۔ کتاب الطھور لابی عبید | ۳۶۳۔ کتاب العلل علی ابواب الفقہ | ابو محمد عبدالرحمن ابن ابی حاتم محمد الرازی | ۳۲۷ ۳۶۴۔ کتاب الاصل | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۳۶۵۔ کتاب الوسوسہ | ابو بکر بن ابی داؤد | ۳۶۶۔ کشف الاسرار | علاء الدین عبدالعزیز بن احمد البخاری | ۷۳۰ ۳۶۷۔ کشف الرمز علامہ القدسی | ۳۶۸۔ کشف الاستار عن زوائد البزار | امین الدین عبدالوہاب بن وہبان الدمشقی | ۷۶۸ ۳۶۹۔ کنزالعمال | علاء الدین علی المتقی بن حسام الدین | ۹۷۵ ۳۷۰۔ الکفایہ | جلال الدین بن شمس الدین الخوارزمی | تقریباً ۸۰۰ ۳۷۱۔ کف الرعاع | شہاب الدین احمد بن حجر الہیتمی | ۹۷۳ ۳۷۲۔ کنزالدقائق | عبداللہ بن احمد بن محمود | ۷۱۰ ۳۷۳۔ الکنی للحاکم | ابو عبد اللہ الحاکم | ۴۰۵ ۳۷۴۔ الکواکب الدراری | شمس الدین محمد بن یوسف الشافعی الکرمانی | ۷۸۶ ۳۷۵۔ کتاب الجرح والتعدیل | محمد بن حبان التمیمی | ۳۵۲ ۳۷۶۔ کتاب المغازی | یحییٰ بن سعید القطان | ۱۹۸

Fatawa Razawiyya Volume Thirteen 13

1. Kitab al-Samt | Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi | 281
2. Kitab al-Zuhd | Abdullah bin Mubarak | 180
3. Al-Kashshaf 'an Haqa'iq al-Tanzil | Jar Allah Mahmud bin Umar al-Zamakhshari | 538
4. Kitab al-Hujjah | Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) Abu Abdullah Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189
5. Kitab al-Mashyakha | Imam Muhammad Abu Abdullah Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189
6. Kitab al-Marasil | Sulayman bin Ash'ath al-Sijistani | 275
7. Kitab al-Ba'th wa al-Nushur | Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya | 281
8. Kitab al-Ikhwan | Abu Bakr Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya | 281
9. Kitab al-Du'afa al-Kabir | Abu Ja'far Muhammad bin Umar al-Uqayli al-Makki | 322
10. Kitab al-Zuhd al-Kabir lil-Bayhaqi | Ahmad bin Hasan al-Bayhaqi | 458
11. Kitab al-Ruwat 'an Malik bin Anas | Abu Bakr Ahmad bin Ali Khatib Baghdadi | 463
12. Kitab al-Hujjah 'ala Tarik al-Hujjah | Nasr bin Ibrahim al-Maqdisi | 490
13. Kimiya-e Sa'adat | Imam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali | 505
14. Kifayat al-Talib al-Rabbani Sharh li-Risala ibn Abi Zayd al-Qayrawani | Abu al-Hasan Ali bin Nasir al-Din al-Shadhili | 939
15. Kashf al-Zunun | Mustafa bin Abdullah Haji Khalifa | 1067
16. Kashf al-Ghummah | Sheikh Abd al-Wahhab bin Ahmad al-Sha'rani | 973
17. Kitab al-Siffin | Yahya bin Sulayman al-Ju'fi (Teacher of Imam Bukhari)
18. Kitab al-Masahif Ibn al-Anbari
19. Kamalayn Hashiya Jalalayn | Sheikh Salamullah bin Muhammad Sheikh al-Islam Muhaddith Rampuri | 1233
20. Kitab al-Maghazi | Muhammad bin Umar bin Waqid al-Waqidi | 207

L 397. Lama'at al-Tanqih | Allama Sheikh Abdul Haqq al-Muhaddith al-Dihlawi | 1052
398. Luqat al-Marjan fi Akhbar al-Jann | Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Muhammad al-Suyuti | 911

Page 674 of 688

फतावा रज़विया खंड तेरह 13

1. किताब अल-सम्त | अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया अल-कुरशी | 281
2. किताब अल-ज़ुहद | अब्दुल्ला बिन मुबारक | 180
3. अल-कश्शाफ़ अन हक़ाएक़ अत-तन्ज़ील | जार अल्लाह महमूद बिन उमर अल-ज़मख़्शरी | 538
4. किताब अल-हुज्जा | इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | 189
5. किताब अल-मश्याखा | इमाम मुहम्मद अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | 189
6. किताब अल-मरासील | सुलेमान बिन अशअत अल-सिजिस्तानी | 275
7. किताब अल-बअस वल नुशूर | अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया | 281
8. किताब अल-इख़्वान | अबू बक्र अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया | 281
9. किताब अद-दुआफ़ा अल-कबीर | अबू जाफ़र मुहम्मद बिन उमर अल-उक़ैली अल-मक्की | 322
10. किताब अज़-ज़ुहद अल-कबीर लिल-बैहक़ी | अहमद बिन हसन अल-बैहक़ी | 458
11. किताब अर-रुवात अन मालिक बिन अनस | अबू बक्र अहमद बिन अली ख़तीब बग़दादी | 463
12. किताब अल-हुज्जा अला तारिक अल-हुज्जा | नस्र बिन इब्राहिम अल-मक़्दिसी | 490
13. कीमिया-ए सआदत | इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली | 505
14. किफ़ायत अल-तालिब अल-रब्बानी शरह लि-रिसाला इब्न अबी ज़ैद अल-क़ैरवानी | अबुल हसन अली बिन नासिरुद्दीन अल-शाज़ली | 939
15. कश्फ़ अज़-ज़ुनून | मुस्तफ़ा बिन अब्दुल्ला हाजी ख़लीफ़ा | 1067
16. कश्फ़ अल-ग़ुम्मा | शेख अब्दुल वहाब बिन अहमद अल-शा'रानी | 973
17. किताब अल-सिफ़्फ़ीन | यहया बिन सुलेमान अल-जुफ़ी (इमाम बुखारी के उस्ताद)
18. किताब अल-मसाहिफ़ इब्न अल-अंबारी
19. कमालैन हाशिया जलालैन | शेख सलामुल्लाह बिन मुहम्मद शेखुल इस्लाम मुहद्दिस रामपुरी | 1233
20. किताब अल-मग़ाज़ी | मुहम्मद बिन उमर बिन वाक़िद अल-वाक़िदी | 207

ल 397. लमआत अत-तनक़ीह | अल्लामा शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी | 1052 398. लुक़त अल-मरजान फ़ी अख़बार अल-जान | अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद अल-सुयूती | 911

पृष्ठ 674 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

۳۷۷۔ کتاب الصمت | عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی | ۲۸۱ ۳۷۸۔ کتاب الزہد | عبداللہ بن مبارک | ۱۸۰ ۳۷۹۔ الکشاف عن حقائق التنزیل | جار اللہ محمود بن عمر الزمخشری | ۵۳۸ ۳۸۰۔ کتاب الحجہ | امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی ابو عبداللہ محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۳۸۱۔ کتاب المشیخۃ | امام محمد ابو عبداللہ محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۳۸۲۔ کتاب المراسیل | سلیمان بن اشعث السجستانی | ۲۷۵ ۳۸۳۔ کتاب البعث والنشور | عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا | ۲۸۱ ۳۸۴۔ کتاب الاخوان | ابوبکر عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا | ۲۸۱ ۳۸۵۔ کتاب الضعفاء الکبیر | ابو جعفر محمد بن عمر العقیلی المکی | ۳۲۲ ۳۸۶۔ کتاب الزہد الکبیر للبیہقی | احمد بن حسن البیہقی | ۴۵۸ ۳۸۷۔ کتاب الرواۃ عن مالک بن انس | ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی | ۴۶۳ ۳۸۸۔ کتاب الحجہ علی تارک الحجہ | نصر بن ابراہیم المقدسی | ۴۹۰ ۳۸۹۔ کیمیائے سعادت | امام محمد بن محمد الغزالی | ۵۰۵ ۳۹۰۔ کفایۃ الطالب الربانی شرح لرسالہ ابن ابی زید القیروانی | ابوالحسن علی بن ناصرالدین الشاذلی | ۹۳۹ ۳۹۱۔ کشف الظنون | مصطفٰی بن عبداللہ حاجی خلیفہ | ۱۰۶۷ ۳۹۲۔ کشف الغمہ | شیخ عبدالوہاب بن احمد الشعرانی | ۹۷۳ ۳۹۳۔ کتاب الصفین | یحیٰی بن سلیمان الجعفی (استاد امام بخاری) ۳۹۴۔ کتاب المصاحف ابن الانباری ۳۹۵۔ کمالین حاشیہ جلالین | شیخ سلام اللہ بن محمد شیخ الاسلام محدث رامپوری | ۱۲۳۳ ۳۹۶۔ کتاب المغازی | محمد بن عمر بن واقد الواقدی | ۲۰۷

ل ۳۹۷۔ لمعات التنقیح | علامہ شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی | ۱۰۵۲ ۳۹۸۔ لقط المرجان فی اخبار الجان | علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن محمد السیوطی | ۹۱۱

Fatawa Rizvia Volume 13

399— Lisan al-Arab: Jamal al-Din Muhammad bin Mukarram ibn Manzur al-Masri — 711 400— Al-La'ali al-Masnu'ah fi al-Ahadith al-Mawdu'ah: Abu Bakr Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti — 911 401— Lawaqih al-Anwar al-Qudsiyyah Sayyid al-Muntakhab min al-Futuhat al-Makkiyyah: Abd al-Wahhab bin Ahmad al-Sha'rani — 973

M (Letter Mim) 402— Mashariq al-Anwar: Al-Shaykh Abd al-Latif bin Abd al-Aziz ibn al-Malak — 801 403— Mabsut Khwaharzadah: Bakr Khwaharzadah Muhammad bin Hasan al-Bukhari al-Hanafi — 483 404— Mabsut al-Sarakhsi: Shams al-A'immah Muhammad bin Ahmad al-Sarakhsi — 483 405— Majra al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur: Nur al-Din Ali al-Baqani — 995 406— Majma' Bihar al-Anwar: Muhammad Tahir al-Siddiqi — 981 407— Majmu' al-Nawazil: Ahmad bin Musa bin Isa — 550 408— Majma' al-Anhur fi Sharh Multaqa al-Abhur: Abd al-Rahman bin Muhammad bin Sulayman, known as Damad Effendi Shaykhizadah — 1078 409— Al-Muhit al-Burhani: Imam Burhan al-Din Mahmud bin Taj al-Din — 616 410— Al-Muhit al-Radawi: Radi al-Din Muhammad bin Muhammad al-Sarakhsi — 671 411— Mukhtarat al-Nawazil: Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani — 593 412— Mukhtar al-Sihah: Muhammad bin Abi Bakr Abd al-Qadir al-Razi — 660 413— Al-Mukhtarah fi al-Hadith: Diya' al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid — 643 414— Al-Mukhtasar: Allamah Jalal al-Din al-Suyuti — 911 415— Madkhal al-Shar' al-Sharif: Ibn al-Hajj Abi Abdullah Muhammad bin Muhammad al-Abdari — 737 416— Maraqi al-Falah bi-Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah: Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali — 1069 417— Mirqat Sharh Mishkat: Ali bin Sultan Mulla Ali Qari — 1014 418— Mirqat al-Su'ud: Allamah Jalal al-Din al-Suyuti — 911 419— Mustakhlas al-Haqa'iq: Ibrahim bin Muhammad al-Hanafi 420— Al-Mustadrak lil-Hakim: Abu Abdullah al-Hakim — 405 421— Al-Mustasfa Sharh al-Fiqh al-Nafi': Hafiz al-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi — 710

फतवा रिज़विया खंड 13

३९९— लिसान अल-अरब: जमाल अल-दीन मुहम्मद बिन मुकर्रम इब्न मंज़ूर अल-मिसरी — ७११ ४००— अल-लाअली अल-मस्नुआ फ़ि अल-अहादीथ अल-मवदुआ: अबू बक्र अब्द अल-रहमान बिन कमाल अल-दीन अल-सुयूती — ९११ ४०१— लवाकिह अल-अनवार अल-कुद्सिया सय्यद अल-मुंतखब मिन अल-फुतुहात अल-मक्किया: अब्द अल-वहाब बिन अहमद अल-शारानी — ९७३

म (अक्षर मीम) ४०२— मशारिक अल-अनवार: अल-शेख अब्द अल-लतीफ बिन अब्द अल-अज़ीज़ इब्न अल-मलक — ८०१ ४०३— मबसुत ख्वाहरज़ादा: बक्र ख्वाहरज़ादा मुहम्मद बिन हसन अल-बुखारी अल-हनफी — ४८३ ४०४— मबसुत अल-सरखसी: शम्स अल-आइम्मा मुहम्मद बिन अहमद अल-सरखसी — ४८३ ४०५— मजरा अल-अनहुर शरह मुल्तका अल-अभर: नूर अल-दीन अली अल-बकानी — ९९५ ४०६— मजमा बिहार अल-अनवार: मुहम्मद ताहिर अल-सिद्दीकी — ९८१ ४०७ — मजमु अल-नवाज़िल: अहमद बिन मूसा बिन ईसा — ५५० ४०८— मजमा अल-अनहुर फी शरह मुल्तका अल-अभर: अब्द अल-रहमान बिन मुहम्मद बिन सुलेमान, जिन्हें दामाद अफंदी शेख़ीज़ादा के नाम से जाना जाता है — १०७८ ४०९— अल-मुहीत अल-बुरहानी: इमाम बुरहान अल-दीन महमूद बिन ताज अल-दीन — ६१६ ४१०— अल-मुहीत अल-रदवी: रदी अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-सरखसी — ६७१ ४११— मुख्तारात अल-नवाज़िल: बुरहान अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी — ५९३ ४१२— मुख्तार अल-सिहाह: मुहम्मद बिन अबी बक्र अब्द अल-कादिर अल-राज़ी — ६६० ४१३— अल-मुख्तारा फी अल-हदीथ: ज़िया अल-दीन मुहम्मद बिन अब्द अल-वाहिद — ६४३ ४१४— अल-मुख्तसर: अल्लामा जलाल अल-दीन अल-सुयूती — ९११ ४१५— मदखल अल-शर अल-शरीफ: इब्न अल-हज अबी अब्दुल्ला मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-अब्दरी — ७३७ ४१६— मराकी अल-फलाह बि-इमदाद अल-फत्ताह शरह नूर अल-इदाह: हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलली — १०६९ ४१७— मिरक़ात शरह मिश्कात: अली बिन सुल्तान मुल्ला अली कारी — १०१४ ४१८— मिरक़ात अल-सुऊद: अल्लामा जलाल अल-दीन अल-सुयूती — ९११ ४१९— मुस्तखलस अल-हकाइक: इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हनफी ४२०— अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम: अबू अब्दुल्ला अल-हाकिम — ४०५ ४२१— अल-मुस्तसफ़ा शरह अल-फिक्ह अल-नाफ़े हाफिज़ अल-दीन अब्दुल्ला बिन अहमद अल-नसफी — ७१०

पृष्ठ 675 / 688

۳۹۹۔ لسان العرب: جمال الدین محمد بن مکرم ابن منظور المصری - ۷۱۱ ۴۰۰۔ اللآلی المصنوعۃ فی الاحادیث الموضوعہ: ابوبکر عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی - ۹۱۱ ۴۰۱۔ لواقح الانوار القدسیہ سید المنتخب من الفتوحات المکیہ: عبدالوھاب بن احمد الشعرانی - ۹۷۳

م ۴۰۲۔ مشارق الانوار: الشیخ عبداللطیف بن عبدالعزیز ابن الملک - ۸۰۱ ۴۰۳۔ مبسوط خواہرزادہ: بکر خواہرزادہ محمد بن حسن البخاری الحنفی - ۴۸۳ ۴۰۴۔ مبسوط السرخسی: شمس الائمہ محمد بن احمد السرخسی - ۴۸۳ ۴۰۵۔ مجری الانہر شرح ملتقی الابحر: نور الدین علی الباقانی - ۹۹۵ ۴۰۶۔ مجمع بحار الانوار: محمد طاہر الصدیقی - ۹۸۱ ۴۰۷۔ مجموع النوازل: احمد بن موسی بن عیسی - ۵۵۰ ۴۰۸۔ مجمع الانہر فی شرح ملتقی الابحر: عبدالرحمن بن محمد بن سلیمان المعروف بداماد آفندی شیخی زادہ - ۱۰۷۸ ۴۰۹۔ المحیط البرہانی: امام برہان الدین محمود بن تاج الدین - ۶۱۶ ۴۱۰۔ المحیط الرضوی: رضی الدین محمد بن محمد السرخسی - ۶۷۱ ۴۱۱۔ مختارات النوازل: برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی - ۵۹۳ ۴۱۲۔ مختار الصحاح: محمد بن ابی بکر عبدالقادر الرازی - ۶۶۰ ۴۱۳۔ المختارہ فی الحدیث: ضیاء الدین محمد بن عبد الواحد - ۶۴۳ ۴۱۴۔ المختصر: علامہ جلال الدین السیوطی - ۹۱۱ ۴۱۵۔ مدخل الشرع الشریف: ابن الحاج ابی عبد اللہ محمد بن محمد العبدری - ۷۳۷ ۴۱۶۔ مراقی الفلاح بامداد الفتاح شرح نور الایضاح: حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی - ۱۰۶۹ ۴۱۷۔ مرقات شرح مشکوۃ: علی بن سلطان ملا علی قاری - ۱۰۱۴ ۴۱۸۔ مرقات الصعود: علامہ جلال الدین السیوطی - ۹۱۱ ۴۱۹۔ مستخلص الحقائق: ابراھیم بن محمد الحنفی ۴۲۰۔ المستدرک للحاکم: ابوعبداللہ الحاکم - ۴۰۵ ۴۲۱۔ المستصفی شرح الفقہ النافع: حافظ الدین عبداللہ بن احمد النسفی - ۷۱۰

Fatawa Razawiyya, Volume 13

1. Musallam al-Thubut - Muhibb Allah al-Bihari - 1119
2. Musnad Abi Dawud - Sulayman bin Dawud al-Tayalisi - 204
3. Musnad Abi Ya'la - Ahmad bin 'Ali al-Mawsili - 307
4. Musnad Ishaq ibn Rahwayh - Hafiz Ishaq ibn Rahwayh - 238
5. Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal - Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal - 221
6. Musnad al-Kabir fi al-Hadith - Abu Bakr Ahmad bin 'Amr bin 'Abd al-Khaliq al-Bazzar - 292
7. Musnad al-Kabir fi al-Hadith - Abu Muhammad 'Abd bin Muhammad Humayd al-Kashi - 294
8. Musnad al-Firdaws - Shahrdar bin Sheruyah al-Daylami - 558
9. Misbah al-Munir - Ahmad bin Muhammad bin 'Ali - 770
10. Al-Musalla - Hafiz al-Din 'Abd Allah bin Ahmad al-Nasafi - 710
11. Musannaf Ibn Abi Shaybah - Abu Bakr 'Abd Allah bin Muhammad bin Abi Shaybah - 235
12. Musannaf 'Abd al-Razzaq - Abu Bakr 'Abd al-Razzaq bin Hammam al-San'ani - 211
13. Misbah al-Duja - Imam Hasan bin Muhammad al-Saghani al-Hindi - 650
14. Ma'rifat al-Sahaba - Abu Nu'aym Ahmad bin 'Abd Allah al-Isbahani - 430
15. Al-Mu'jam al-Awsat - Sulayman bin Ahmad al-Tabarani - 360
16. Al-Mu'jam al-Saghir - Sulayman bin Ahmad al-Tabarani - 360
17. Al-Mu'jam al-Kabir - Sulayman bin Ahmad al-Tabarani - 360
18. Mi'raj al-Diraya Qawam al-Din - Muhammad bin Muhammad al-Bukhari - 729
19. Mishkat al-Masabih - Shaykh Wali al-Din al-Iraqi - 722
20. Al-Mughni fi al-Usul - Shaykh 'Umar bin Muhammad al-Khabbazi al-Hanafi - 291
21. Al-Maghrib - Abu al-Fath Nasir bin 'Abd al-Sayyid al-Mutarrizi - 610
22. Mukhtasar al-Quduri - Abu al-Husayn Ahmad bin Muhammad al-Quduri al-Hanafi - 428
23. Mafatih al-Jinan - Ya'qub bin Sayyid 'Ali - 931
24. Al-Mufradat lil-Imam Raghib - Husayn bin Muhammad bin Mufaddal al-Isfahani - 502
25. Al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah fi al-Fiqh al-Maliki - Abu al-'Abbas 'Abd al-Bari al-Ashmawi al-Maliki

फ़तावा रज़विया, खंड 13

1. मुसल्लम अल-थुबुत - मुहिब अल्लाह अल-बिहारी - 1119
2. मुसनद अबी दाऊद - सुलेमान बिन दाऊद अल-तयालिसी - 204
3. मुसनद अबी याला - अहमद बिन अली अल-मूसली - 307
4. मुसनद इसहाक इब्न राहवैह - हाफ़िज़ इसहाक इब्न राहवैह - 238
5. मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हनबल - इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हनबल - 221
6. मुसनद अल-कबीर फ़ी अल-हदीस - अबू बक्र अहमद बिन अम्र बिन अब्दुल खालिक अल-बज़ार - 292
7. मुसनद अल-कबीर फ़ी अल-हदीस - अबू मुहम्मद अब्द बिन मुहम्मद हमीद अल-कशी - 294
8. मुसनद अल-फिरदौस - शहरदार बिन शेरुयह अल-दैलामी - 558
9. मिस्बाह अल-मुनीर - अहमद बिन मुहम्मद बिन अली - 770
10. अल-मुसल्ला - हाफ़िज़ अल-दीन अब्दुल्ला बिन अहमद अल-नसफी - 710
11. मुसन्नफ़ इब्न अबी शयबा - अबू बक्र अब्दुल्ला बिन मुहम्मद बिन अबी शयबा - 235
12. मुसन्नफ़ अब्दुर रज्ज़ाक - अबू बक्र अब्दुर रज्ज़ाक बिन हम्माम अल-सनआनी - 211
13. मिस्बाह अल-दुजा - इमाम हसन बिन मुहम्मद अल-सघानी अल-हिन्दी - 650
14. मारिफ़त अल-सहाबा - अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्ला अल-इस्फहानी - 430
15. अल-मुअजम अल-औसत - सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी - 360
16. अल-मुअजम अल-सगीर - सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी - 360
17. अल-मुअजम अल-कबीर - सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी - 360
18. मेराज अल-दिराया कवाम अल-दीन - मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बुखारी - 729
19. मिश्कात अल-मसाबीह - शेख वली अल-दीन अल-इराकी - 722
20. अल-मुगनी फ़ी अल-उसूल - शेख उमर बिन मुहम्मद अल-खब्बाज़ी अल-हनफ़ी - 291
21. अल-मग़रिब - अबुल फ़तह नासिर बिन अब्दुल सैयद अल-मुतर्रिज़ी - 610
22. मुख्तसर अल-कुदुरी - अबुल हुसैन अहमद बिन मुहम्मद अल-कुदुरी अल-हनफ़ी - 428
23. मफ़ातीह अल-जिनान - याकूब बिन सैयद अली - 931
24. अल-मुफ़रदात लिल-इमाम रागीब - हुसैन बिन मुहम्मद बिन मुफ़द्दल अल-इस्फहानी - 502

25. अल-मुक़द्दिमा अल-अश्माविया फ़ी अल-फ़िक्ह अल-मालकिया - अबुल अब्बास अब्दुल बारी अल-अश्मावी अल-मालकी

۴۲۲۔ مسلم الثبوت - محب اللہ البہاری - ۱۱۱۹ ۴۲۳۔ مسند ابی داؤد - سلیمان بن داؤد الطیالسی - ۲۰۴ ۴۲۴۔ مسند ابی یعلیٰ - احمد بن علی الموصلی - ۳۰۷ ۴۲۵۔ مسند اسحٰق ابن راہویہ - حافظ اسحٰق ابن راہویہ - ۲۳۸ ۴۲۶۔ مسند الامام احمد بن حنبل - امام احمد بن محمد بن حنبل - ۲۲۱ ۴۲۷۔ مسند الکبیر فی الحدیث - ابوبکر احمد بن عمرو بن عبدالخالق البزار - ۲۹۲ ۴۲۸۔ مسند الکبیر فی الحدیث - ابو محمد عبد بن محمد حمید الکشی - ۲۹۴ ۴۲۹۔ مسند الفردوس - شہر دار بن شیرویہ الدیلمی - ۵۵۸ ۴۳۰۔ مصباح المنیر - احمد بن محمد بن علی - ۷۷۰ ۴۳۱۔ المصلیٰ - حافظ الدین عبداللہ بن احمد النسفی - ۷۱۰ ۴۳۲۔ مصنف ابن ابی شیبہ - ابوبکر عبداللہ بن محمد احمد النسفی - ۲۳۵ ۴۳۳۔ مصنف عبدالرزاق - ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام الصنعانی - ۲۱۱ ۴۳۴۔ مصباح الدجیٰ - امام حسن بن محمد الصغانی الہندی - ۶۵۰ ۴۳۵۔ معرفۃ الصحابۃ - ابونعیم احمد بن عبداللہ الاصبہانی - ۴۳۰ ۴۳۶۔ المعجم الاوسط - سلیمان بن احمد الطبرانی - ۳۶۰ ۴۳۷۔ المعجم الصغیر - سلیمان بن احمد الطبرانی - ۳۶۰ ۴۳۸۔ المعجم الکبیر - سلیمان بن احمد الطبرانی - ۳۶۰ ۴۳۹۔ معراج الدرایہ قوام الدین - محمد بن محمد البخاری - ۷۲۹ ۴۴۰۔ مشکوٰۃ المصابیح - شیخ ولی الدین العراقی - ۷۲۲ ۴۴۱۔ المغنی فی الاصول - شیخ عمر بن محمد الخبازی الحنفی - ۲۹۱ ۴۴۲۔ المغرب - ابوالفتح ناصر بن عبدالسید المطرز ی - ۶۱۰ ۴۴۳۔ مختصر القدوری - ابوالحسین احمد بن محمد القدوری الحنفی - ۴۲۸ ۴۴۴۔ مفاتیح الجنان - یعقوب بن سید علی - ۹۳۱ ۴۴۵۔ المفردات للامام راغب - حسین بن محمد بن مفضل الاصفہانی - ۵۰۲ ۴۴۶۔ المقدمۃ العشماویۃ فی الفقہ المالکیۃ - ابوالعباس عبدالباری العشماوی المالکی

Fatawa Razawiyya Volume 13 Page 556

1. Al-Multaqat (fi Fatawa Nasiri) - Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Husayni - 807
2. Majma' al-Zawa'id - Nur al-Din 'Ali bin Abi Bakr al-Haythami - 827
3. Manaqib al-Kurdari - Muhammad bin Muhammad bin Shihab ibn Bazzaz - 307
4. Al-Muntaqa (fi al-Hadith) - 'Abd Allah bin 'Ali ibn Jarud - 332
5. Al-Muntaqa fi Furu' al-Hanifiyya - Al-Hakim al-Shahir Muhammad bin Muhammad bin Ahmad - 1252
6. Minhat al-Khaliq Hashiyah Bahr al-Ra'iq - Muhammad Amin ibn 'Abidin al-Shami - 1004
7. Minah al-Ghaffar - Muhammad bin 'Abd Allah al-Timirtashi - 956
8. Multaqa al-Abhur - Imam Ibrahim bin Muhammad al-Halabi - 676
9. Minhaj al-Nawawi (Sharh Sahih Muslim) - Shaykh Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 694
10. Majma' al-Bahrayn - Muzaffar al-Din Ahmad bin 'Ali bin Tha'lab al-Hanafi - 456
11. Al-Mubtaghi - Shaykh 'Isa bin Muhammad ibn Aynaaj al-Hanafi - 510
12. Al-Mabsut - 'Abd al-'Aziz bin Ahmad al-Halwani - 262
13. Musnad fi al-Hadith - Al-Hafiz Abu al-Fath Nasr bin Ibrahim al-Harawi - 705
14. Al-Musnad al-Kabir - Ya'qub bin Shaybah al-Sudusi - 179
15. Munyat al-Musalli - Sadid al-Din Muhammad bin Muhammad al-Kashghari - 807
16. Muwatta Imam Malik - Imam Malik bin Anas al-Madani - 164
17. Mawarid al-Zam'an - Nur al-Din 'Ali bin Abi Bakr al-Haythami - 742
18. Mushkilat - Ahmad bin Muzaffar al-Razi - 476
19. Muhadhdhab - Abi Ishaq ibn Muhammad al-Shafi'i - 973
20. Mizan al-Shari'ah al-Kubra - 'Abd al-Wahhab al-Sha'rani - 748
21. Mizan al-I'tidal - Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi - 410
22. Al-Mustakhraj 'ala al-Sahih al-Bukhari - Ahmad bin Musa ibn Marduyah - 327
23. Makarim al-Akhlaq - Muhammad bin Ja'far al-Khara'iti - 150
24. Musnad al-Imam al-A'zam - Abu Hanifa Nu'man bin Thabit - 189
25. Muwatta al-Imam Muhammad - Abu 'Abd Allah Muhammad bin al-Hasan al-Shaybani

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 पृष्ठ 556

1. अल-मुल्तक़त (फी फ़तावा नासिरी) - नासिर अल-दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल-हुसैनी - 807
2. मजमअ अल-ज़वाइद - नूर अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हैथमी - 827
3. मनाक़िब अल-कुरदारी - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़्ज़ाज़ - 307
4. अल-मुंतक़ा (फी अल-हदीस) - अब्दुल्ला बिन अली इब्न जारूद - 332
5. अल-मुंतक़ा फी फ़ुरू' अल-हनीफ़िया - अल-हाकिम अल-शहीर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद - 1252
6. मिन्हात अल-ख़ालिक़ हाशिया बहर अल-राइक़ - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शमी - 1004
7. मिनह अल-ग़फ़्फ़ार - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-तिमिरताशी - 956
8. मुल्तक़ा अल-अब्हुर - इमाम इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी - 676
9. मिन्हाज अल-नवावी (शराह सहीह मुस्लिम) - शेख़ अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अल-नवावी - 694
10. मजमअ अल-बहरैन - मुज़फ्फर अल-दीन अहमद बिन अली बिन थलब अल-हनफी - 456
11. अल-मुब्तग़ी - शेख़ ईसा बिन मुहम्मद इब्न ऐनाज अल-हनफी - 510
12. अल-मब़सूत - अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-हलवानी - 262
13. मसनद फी अल-हदीस - अल-हाफ़िज़ अबुल फ़तह नस्र बिन इब्राहिम अल-हरवी - 705
14. अल-मसनद अल-कबीर - याकूब बिन शैबा अल-सुदूसी - 179
15. मुनियत अल-मुसल्ली - सदीद अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-काशग़री - 807
16. मुअत्ता इमाम मालिक - इमाम मालिक बिन अनस अल-मदनी - 164
17. मवारिद अल-ज़मआन - नूर अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हैथमी - 742
18. मुश्किलात - अहमद बिन मुज़फ़्फ़र अल-राज़ी - 476
19. मुहज़्ज़ब - अबी इसहाक़ इब्न मुहम्मद अल-शाफ़ई - 973
20. मीज़ान अल-शरीआ अल-कुब्रा - अब्दुल वहाब अल-शर्रानी - 748
21. मीज़ान अल-इअतिदाल - मुहम्मद बिन अहमद अल-ज़हबी - 410
22. अल-मुस्तख़रज अला अल-सहीह अल-बुखारी - अहमद बिन मूसा इब्न मरदूया - 327
23. मकारिम अल-अखलाक - मुहम्मद बिन जाफर अल-ख़रायती - 150

24. मसनद अल-इमाम अल-आज़म - अबू हनीफ़ा नुमान बिन साबित - 189

25. मुअत्ता अल-इमाम मुहम्मद - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अल-हसन अल-शैबानी

۴۴۷۔ الملتقط (فی فتاوی ناصری) ناصر الدین محمد بن یوسف الحسینی ۸۰۷ ۴۴۸۔ مجمع الزوائد نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی ۸۲۷ ۴۴۹۔ مناقب الکردری محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز ۳۰۷ ۴۵۰۔ المنتقی (فی الحدیث) عبد اللہ بن علی ابن جارود ۳۳۲ ۴۵۱۔ المنتقی فی فروع الحنیفہ الحاکم الشہیر محمد بن محمد بن احمد ۱۲۵۲ ۴۵۲۔ منحۃ الخالق حاشیہ بحر الرائق محمد امین ابن عابدین الشامی ۱۰۰۴ ۴۵۳۔ منح الغفار محمد بن عبد اللہ التمرتاشی ۹۵۶ ۴۵۴۔ ملتقی الابحر امام ابراہیم بن محمد الحلبی ۶۷۶ ۴۵۵۔ منہاج النووی (شرح صحیح مسلم) شیخ ابوز کر یا یحیی بن شرف النووی ۶۹۴ ۴۵۶۔ مجمع البحرین مظفر الدین احمد بن علی بن ثعلب الحنفی ۴۵۶ ۴۵۷۔ المبتغی شیخ عیسی بن محمد ابن ایناج الحنفی ۵۱۰ ۴۵۸۔ المبسوط عبد العزیز بن احمد الحلوانی ۲۶۲ ۴۵۹۔ مسند فی الحدیث الحافظ ابوالفتح نصر بن ابراہیم الہروی ۷۰۵ ۴۶۰۔ المسند الکبیر یعقوب بن شیبہ السدوسی ۱۷۹ ۴۶۱۔ منیہ المصلی سدید الدین محمد بن محمد الکاشغری ۸۰۷ ۴۶۲۔ موطا امام مالک امام مالک بن انس المدنی ۱۶۴ ۴۶۳۔ موارد الظمآن نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی ۷۴۲ ۴۶۴۔ مشکلات احمد بن مظفر الرازی ۴۷۶ ۴۶۵۔ مہذب ابی اسحاق ابن محمد الشافعی ۹۷۳ ۴۶۶۔ میزان الشریعۃ الکبری عبد الوہاب الشعرانی ۷۴۸ ۴۶۷۔ میزان الاعتدال محمد بن احمد الذہبی ۴۱۰ ۴۶۸۔ المستخرج علی الصحیح البخاری احمد بن موسی ابن مردویہ ۳۲۷ ۴۶۹۔ مکارم اخلاق محمد بن جعفر الخرائطی ۱۵۰ ۴۷۰۔ مسند الامام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت ۱۸۹ ۴۷۱۔ مؤطا الامام محمد ابو عبد اللہ محمد بن الحسن الشیبانی

Fatawa Razawiyya Volume 13

472- Al-Musnad fil-Hadith | Hasan bin Sufyan al-Nasawi | 303 473- Ma'alim al-Sunan li-Abi Sulayman al-Khattabi | Ahmad bin Muhammad bin Ibrahim al-Khattabi | 388 474- Maqamat Hariri | Qasim bin Ali al-Hariri | 516 475- Ma'alim al-Tanzil Tafsir al-Baghawi | Abu Muhammad al-Husayn bin Mas'ud al-Baghawi | 516 476- Al-Milal wal-Nihal | Abu al-Fath Muhammad bin Abdul Karim al-Shahrastani | 528 477- Mawdu'at Ibn al-Jawzi | Abu al-Faraj Abdul Rahman bin Ali bin al-Jawzi | 597 478- Muqaddimah Ibn al-Salah fi Ulum al-Hadith | Abu Amr Uthman bin Abdul Rahman Ibn al-Salah | 632 479- Mukhtasar Sunan Abi Dawud lil-Hafiz al-Mundhiri | Abdul Azim bin Abdul Qawi al-Mundhiri | 656 480- Madarik al-Tanzil Tafsir al-Nasafi | Abu al-Barakat Abdullah bin Ahmad al-Nasafi | 710 481- Al-Mawaqif al-Sultaniyah fi 'Ilm al-Kalam | Adud al-Din Abdul Rahman bin Rukn al-Din Ahmad | 756 482- Muqaddimah Jazariyah | Muhammad bin Muhammad al-Jazari | 833 483- Maqasid Hasanah | Shams al-Din Muhammad bin Abdul Rahman al-Sakhawi | 902 484- Al-Mawahib al-Ladunniyyah | Ahmad bin Muhammad al-Qastallani | 923 485- Al-Minah al-Fikriyah Sharh Muqaddimah Jazariyah | Ali bin Sultan Muhammad al-Qari | 1012 486- Al-Maslak al-Mutaqassit fil-Mansak al-Mutawassit | Ali bin Sultan Muhammad al-Qari | 1012 487- Ma Thabata bis-Sunnah | Shaykh Abdul Haq bin Sayf al-Din al-Dihlawi | 1052 488- Al-Maybudhi | Qadi Mir Husayn bin Mu'in al-Din | 1096 489- Musawwa Musaffa Sharh Muwatta Imam Malik | Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi | 1179 490- Maktubat Shah Waliullah | Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi | 1179 491- Maktubat | Mirza Mazhar Jan-e-Janan | 1195 492- Malfuzat | Mirza Mazhar Jan-e-Janan | 1195 493- Ma'mulat | Mirza Mazhar Jan-e-Janan | 1195 494- Makhzan al-Adwiyah fit-Tibb | Muhammad Husayn bin Muhammad al-Hadi Bahadur Khan | 495- Majmu'ah Fatawa | Abu al-Hasanat Muhammad Abdul Hayy | 1233 496- Mi'yar al-Haq | Sayyid Nazir Husayn al-Dihlawi | 1243

Page 678 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

472- अल-मुसनद फ़िल-हदीस | हसन बिन सुफ़ियान अल-नसवी | 303 473- मा'आलिम अल-सुनन लि-अबी सुलैमान अल-खत्ताबी | अहमद बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अल-खत्ताबी | 388 474- मकामत हरीरी | क़ासिम बिन अली अल-हरीरी | 516 475- मा'आलिम अल-तन्ज़ील तफ़सीर अल-बग़वी | अबू मुहम्मद अल-हुसैन बिन मसूद अल-बग़वी | 516 476- अल-मिलल वल-निहल | अबुल फ़तह मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल-शहरिस्तानी | 528 477- मौज़ूआत इब्न अल-जौज़ी | अबुल फ़राज अब्दुल रहमान बिन अली बिन अल-जौज़ी | 597 478- मुक़द्दिमा इब्न अल-सलाह फ़ी उलूम अल-हदीस | अबू अम्र उस्मान बिन अब्दुल रहमान इब्न अल-सलाह | 632 479- मुख़्तसर सुनन अबी दाऊद लिल-हाफ़िज़ अल-मुन्ज़िरी | अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल क़वी अल-मुन्ज़िरी | 656 480- मदारिक अल-तन्ज़ील तफ़सीर अल-नसफ़ी | अबुल बरकात अब्दुल्ला बिन अहमद अल-नसफ़ी | 710 481- अल-मवाक़िफ़ अल-सुल्तानिया फ़ी इल्म अल-कलाम | अज़ुद अल-दीन अब्दुल रहमान बिन रुकन अल-दीन अहमद | 756 482- मुक़द्दिमा जज़रिया | मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-जज़री | 833 483- मक़ासिद हसना | शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल-सखावी | 902 484- अल-मवाहिब अल-लदुन्निया | अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी | 923 485- अल-मिन्ह अल-फ़िक्रिया शरह मुक़द्दिमा जज़रिया | अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी | 1012 486- अल-मस्लक अल-मुतक़स्सित फ़िल-मन्साक अल-मुतवस्सित | अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी | 1012 487- मा सबता बिस-सुन्नाह | शेख़ अब्दुल हक़ बिन सैफ़ अल-दीन अल-देहल्वी | 1052 488- अल-मैबुज़ी | क़ाज़ी मीर हुसैन बिन मुईन अल-दीन | 1096 489- मुसव्वा मुसफ़्फ़ा शरह मुवत्ता इमाम मालिक | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी | 1179 490- मकतूबात शाह वलीउल्लाह | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी | 1179 491- मकतूबात | मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानाँ | 1195 492- मलफ़ूज़ात | मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानाँ | 1195 493- मामूलात | मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानाँ | 1195 494- मखज़न अल-अद्विया फ़ित-तिब्ब | मुहम्मद हुसैन बिन मुहम्मद अल-हादी बहादुर खां | 495- मजमूआ फ़तावा | अबुल हसनात मुहम्मद अब्दुल हई | 1233 496- मियार अल-हक़ | सय्यद नज़ीर हुसैन अल-देहल्वी | 1243

فتاوی رضویہ جلد سیزدہم

472۔ المسند فی الحدیث | حسن بن سفیان النسوی | 303 473۔ معالم السنن لابی سلیمان الخطابی | احمد بن محمد بن ابراہیم الخطابی | 388 474۔ مقامات حریری | قاسم بن علی الحریری | 516 475۔ معالم التنزیل تفسیر البغوی | ابو محمد الحسین بن مسعود البغوی | 516 476۔ الملل والنحل | ابوالفتح محمد بن عبدالکریم الشہرستانی | 528 477۔ موضوعات ابن جوزی | ابوالفرج عبدالرحمن بن علی بن الجوزی | 597 478۔ مقدمہ ابن الصلاح فی علوم الحدیث | ابو عمرو عثمان بن عبدالرحمن ابن الصلاح | 632 479۔ مختصر سنن ابی داؤد للحافظ المنذری | عبدالعظیم بن عبدالقوی المنذری | 656 480۔ مدارک التنزیل تفسیر النسفی | ابوالبرکات عبداللہ بن احمد النسفی | 710 481۔ المواقف السلطانیہ فی علم الکلام | عضد الدین عبدالرحمن بن رکن الدین احمد | 756 482۔ مقدمہ جزریہ | محمد بن محمد الجزری | 833 483۔ مقاصد حسنہ | شمس الدین محمد بن عبدالرحمن السخاوی | 902 484۔ المواہب اللدنیہ | احمد بن محمد القسطلانی | 923 485۔ المنح الفکریہ شرح مقدمہ جزریہ | علی بن سلطان محمد القاری | 1012 486۔ المسلك المتقسط في المنسك المتوسط | علی بن سلطان محمد القاری | 1012 487۔ ماثبت بالسنۃ | شیخ عبدالحق بن سیف الدین الدہلوی | 1052 488۔ المیبذی | قاضی میر حسین بن معین الدین | 1096 489۔ مسوی مصفی شرح موطا امام مالک | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی | 1179 490۔ مکتوبات شاہ ولی اللہ | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی | 1179 491۔ مکتوبات | مرزا مظہر جان جاناں | 1195 492۔ ملفوظات | مرزا مظہر جان جاناں | 1195 493۔ معمولات | مرزا مظہر جان جاناں | 1195 494۔ مخزن ادویہ فی الطب | محمد حسین بن

محمد الہادی بہادر خاں | 495۔ مجموعہ فتاویٰ | ابوالحسنات محمد عبدالحی | 1233 496۔ معیار الحق | سید نذیر حسین الدہلوی | 1243

صفحہ 678 از 688

Fatawa Rizvia Volume 13

497- Mazahir-e-Haq — Maulvi Nazeer-ul-Haq Meeruthi — 1034 498- Maktubat-e-Imam-e-Rabbani — Sheikh Ahmad Sarhindi 499- Manassa fi Tahqiq Mas'alat al-Musafahah 500- Miftah al-Salah 501- Mujtaba Sharh Quduri 502- Mashaykhah Ibn Shadhan 503- Ma'rifat al-Sahabah li Abi Nu'aym — Ahmad bin Abdullah Isbahani — 430 504- Mafatih al-Ghayb (Tafsir Kabir) — Imam Fakhr al-Din Razi — 606

N (Noon) 505- Al-Nuqayah Mukhtasar al-Wiqayah — Abdullah bin Mas'ud — 735 506- Nasb al-Rayah — Abu Muhammad Abdullah bin Yusuf al-Hanafi al-Zayla'i — 762 507- Nur al-Idah — Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali — 1069 508- Al-Nihayah — Husam al-Din Husayn bin Ali al-Sighnaqi — 711 509- Al-Nihayah li Ibn al-Athir — Majd al-Din Mubarak bin Muhammad al-Jazari ibn al-Athir — 606 510- Al-Nahr al-Fa'iq — Umar bin Nujaym al-Misri — 1005 511- Nawadir fil Fiqh — Hisham bin Ubaydullah al-Mazini al-Hanafi — 201 512- Nur al-Ayn — Muhammad bin Ahmad known as Nishayji Zadah — 1031 513- Al-Nawazil fil Furu' — Abu al-Layth Nasr bin Muhammad bin Ibrahim al-Samarqandi — 376 514- Nawadir al-Usul fi Ma'rifat Akhbar al-Rasul — Abu Abdullah Muhammad bin Ali al-Hakim al-Tirmidhi — 255

W (Waw) 515- Al-Wafi fil Furu' — Abdullah bin Ahmad al-Nasafi — 710 516- Al-Wajiz fil Furu' — Abu Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali — 505 517- Al-Wiqayah — Mahmud bin Sadr al-Shariah — 673

Page 679 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द १३

४९७- मज़ाहिर-ए-हक़ — मौलवी नज़ीर-उल-हक़ मेरठी — १०३४ ४९८- मक्तूबात-ए-इमाम-ए-रब्बानी — शेख अहमद सरहिंदी ४९९- मनसा फ़ी तहक़ीक़ मसला-ए-मुसाफ़हा ५००- मिफ़्ताह अस-सलाह ५०१- मुज्तबा शरह क़ुदूरी ५०२- मशयखा इब्न शादान ५०३- मारिफत अस-सहाबा ली अबी नुइम — अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्बहानी — ४३० ५०४- मफ़ातीह अल-ग़ैब (तफ़सीर कबीर) — इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी — ६०६

न (नून) ५०५- अन-नुक़ाया मुख़्तसर अल-विकाया — अब्दुल्लाह बिन मसूद — ७३५ ५०६- नसब अर-राया — अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ अल-हनफ़ी अज़-ज़ैलई — ७६२ ५०७- नूर अल-ईज़ाह — हसन बिन अम्मार बिन अली अश-शुरुनबुलाली — १०६९ ५०८- अन-निहाया — हुसामुद्दीन हुसैन बिन अली अस-सिग़नाकी — ७११ ५०९- अन-निहाया ली इब्न अल-असीर — मजद-उद-दीन मुबारक बिन मुहम्मद अल-जज़री इब्न अल-असीर — ६०६ ५१०- अन-नहर अल-फ़ाइक़ — उमर बिन नुजैम अल-मिसरी — १००५ ५११- नवादिर फ़िल फ़िक़्ह — हिशाम बिन उबैदुल्लाह अल-माज़िनी अल-हनफ़ी — २०१ ५१२- नूर अल-ऐन — मुहम्मद बिन अहमद अल-मारूफ़ बनिशायजी ज़ादा — १०३१ ५१३- अन-नवाज़िल फ़िल फ़ुरू — अबू अल-लैस नस्र बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अस-समरकंदी — ३७६ ५१४- नवादिर अल-उसूल फ़ी मारिफत अख़बार अर-रसूल — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली अल-हकीम अत-तिरमिज़ी — २५५

व (वाव) ५१५- अल-वाफ़ी फ़िल फ़ुरू — अब्दुल्लाह बिन अहमद अन-नसफ़ी — ७१० ५१६- अल-वजीज़ फ़िल फ़ुरू — अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली — ५०५ ५१७- अल-विकाया — महमूद बिन सद्र अश-शरिया — ६७३

पृष्ठ ६७९ का ६८८

فتاوىٰ رضويہ جلد سيزدہم

۴۹۷۔ مظاہر حق مولوی نذير الحق ميرٹھی ۱۰۳۴ ۴۹۸۔ مكتوبات امام ربانی شيخ احمد سرہندی ۴۹۹۔ منحصہ فی تحقيق مسئلہ المصافحہ ۵۰۰۔ مفتاح الصلوة ۵۰۱۔ مجتبىٰ شرح قدوری ۵۰۲۔ مشيخہ ابن شاذان ۵۰۳۔ معرفة الصحابہ لابی نعيم احمد بن عبدالله اصبہانی ۴۳۰ ۵۰۴۔ مفاتيح الغيب (تفسير كبير) امام فخرالدين رازی ۶۰۶

ن ۵۰۵۔ النقاية مختصر الوقاية عبدالله بن مسعود ۷۳۵ ۵۰۶۔ نصب الراية ابو محمد عبدالله بن يوسف الحنفی الزيلعي ۷۶۲ ۵۰۷۔ نور الايضاح حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی ۱۰۶۹ ۵۰۸۔ النہاية حسام الدين حسين بن علی السغناقی ۷۱۱ ۵۰۹۔ النہاية لابن اثير مجد الدين مبارک بن محمد الجزری ابن اثير ۶۰۶ ۵۱۰۔ النہر الفائق عمر بن نجيم المصری ۱۰۰۵ ۵۱۱۔ نوادر في الفقه ہشام بن عبيد الله المازنی الحنفی ۲۰۱ ۵۱۲۔ نور العين محمد بن احمد المعروف بنشايجی زاده ۱۰۳۱ ۵۱۳۔ النوازل فی الفروع ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہيم السمر قندی ۳۷۶ ۵۱۴۔ نوادر الاصول فی معرفة اخبار الرسول ابو عبد الله محمد بن علی الحكيم الترمذی ۲۵۵

و ۵۱۵۔ الوافی فی الفروع عبدالله بن احمد النسفی ۷۱۰ ۵۱۶۔ الوجيز في الفروع ابو حامد محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ ۵۱۷۔ الوقاية محمود بن صدر الشريعة ۶۷۳

Volume Thirteen 13 Fatawa Razawiya

518- Al-Waseet fi al-Furoo' Abi Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali 505

H 519- Al-Hidayah fi Sharh al-Bidayah Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani 593

Y 520- Al-Yawaqit wal-Jawahir Sayyid Abdul Wahhab al-Sha'rani 973 521- Yanabi' fi Ma'rifat al-Usul Abi Abdullah Muhammad bin Ramadan al-Rumi 769

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

Page 680 of 688

जिल्द तेरहवीं १३ फ़तावा रज़विया

५१८- अल-वसीत फ़ी अल-फ़ुरू अबी हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली ५०५

ह ५१९- अल-हिदाया फ़ी शरह अल-बिदाया बुरहान अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी ५९३

य ५२०- अल-यवाक़ीत वल-जवाहर सैय्यद अब्दुल वहाब अल-शा'रानी ९७३ ५२१- यनाबी फ़ी मा'रिफत अल-उसूल अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन रमज़ान अल-रूमी ७६९

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

पेज ६८० का ६८८

جلد سیزدہم ۱۳ فتاوٰی رضویہ

۵۱۸- الوسیط فی الفروع ابی حامد محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵

ھ ۵۱۹- الھدایۃ في شرح البدایۃ برھان الدین علی بن ابی بکر المرغیناني ۵۹۳

ی ۵۲۰- الیواقیت والجواھر سید عبدالوھاب الشعرانی ۹۷۳ ۵۲۱- ینابیع في معرفۃ الاصول ابی عبداللہ محمد بن رمضان الرومی ۷۶۹

آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی www.dawateislami.net

صفحہ ۶۸۰ از ۶۸۸

Supplement Sources and References

S.No.	Book Title	Author	Year of Death (Hijri)
1	Anwar al-Tanzil fi Asrar al-Ta'wil (Tafsir al-Baydawi)	Nasir al-Din Abu Sa'id 'Abd Allah bin 'Umar al-Baydawi	685/692/691
	(Hadiyat al-'Arifin)		463/1
2	Al-Isti'ab fi Ma'rifat al-Ashab	Abu 'Umar Yusuf bin 'Abd Allah al-Numari al-Qurtubi	462
3	Awdah Ramz 'ala Sharh Nazm al-Kanz	'Ali bin Muhammad ibn Ghanim al-Maqdisi	1004
4	Al-Istidhkar	Yusuf bin 'Abd Allah ibn 'Abd al-Barr al-Andalusi	463
5	Al-Afrad	'Ali bin 'Umar al-Daraqutni	385
6	Al-Idah fi Sharh al-Tajrid	Imam Abu al-Fadl 'Abd al-Rahman bin Ahmad al-Kirmani	543
7	Asbab al-Nuzul	Abu al-Hasan 'Ali bin Ahmad al-Wahidi	468
8	Idah al-Haqq al-Sarih fi Ahkam al-Bayt wa al-Darih	Shah Muhammad Isma'il bin Shah 'Abd al-Ghani Dihlawi	1246
9	Anfas al-'Arifin	Shah Wali Allah bin Shah 'Abd al-Rahim	1176
10	Insan al-'Ayn	Shah Wali Allah bin Shah 'Abd al-Rahim	1176
11	Insan al-'Uyun fi Sirat al-Amin al-Ma'mun	'Ali bin Burhan al-Din Halabi	1044
12	Irshad al-Talibin	Qadi Muhammad Thana' Allah Panipati	1225
13	Al-I'lam bi-A'lam Balad Allah al-Haram	Qutb al-Din Muhammad bin Ahmad al-Hanafi	989

परिशिष्ट स्रोत और संदर्भ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	मृत्यु वर्ष (हिजरी)
१	अनवार अल-तन्ज़ील फी असरार अल-तावील (तफ़सीर अल-बैदावी)	नासिर अल-दीन अबू सईद अब्दुल्ला बिन उमर अल-बैदावी	६८५/६९२/६९१
	(हदियात अल-आरिफ़ीन)		४६३/१
२	अल-इस्तिआब फी मारिफत अल-असहाब	अबू उमर युसूफ बिन अब्दुल्ला अल-नुमरी अल-क़ुर्तुबी	४६२
३	औज़ह रम्ज़ अला शरह नज़्म अल-कंज़	अली बिन मुहम्मद इब्न ग़ानिम अल-मक़दिसी	१००४
४	अल-इस्तिज़कार	युसूफ बिन अब्दुल्ला इब्न अब्दुल बर्र अल-अंदलुसी	४६३
५	अल-अफ़राद	अली बिन उमर अल-दारक़ुतनी	३८५
६	अल-ईदाह फी शरह अल-तजरीद	इमाम अबुल फ़ज़ल अब्दुर्रहमान बिन अहमद अल-किरमानी	५४३
७	अस्बाब अल-नुज़ूल	अबुल हसन अली बिन अहमद अल-वाहिदी	४६८
८	ईदाह अल-हक़ अल-सरीह फी अहकाम अल-बैत वल-दरीह	शाह मुहम्मद इस्माईल बिन शाह अब्दुल ग़नी देहलवी	१२४६
९	अनफ़ास अल-आरिफ़ीन	शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुर्रहीम	११७६
१०	इंसान अल-ऐन	शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुर्रहीम	११७६
११		अली बिन बुरहान अल-दीन हलाबी	१०४४

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	मृत्यु वर्ष (हिजरी)
	इंसान अल-उयून फी सीरत अल-अमीन अल-मामून		
१२	इर्शाद अल-तालिबीन	क़ाज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती	१२२५
१३	अल-इलाम बि-आलाम बलद अल्लाह अल-हराम	क़ुतुब अल-दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-हनाफ़ी	९८९

पृष्ठ ६८१ / ६८८

ضمیمہ مآخذ ومراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف	سن وفات ہجری
۱	انوار التنزیل في اسرار التأویل (تفسیر البیضاوي) (هدیة العارفین)	ناصر الدین ابو سعید عبد الله بن عمر البیضاوي	۶۸۵/۶۹۲/۶۹۱ ۴۶۳/۱
۲	الاستیعاب في معرفة الاصحاب	ابو عمر یوسف بن عبد الله النمری القرطبی	۴۶۲
۳	اوضح رمز علی شرح نظم الکنز	علی بن محمد ابن غانم المقدسی	۱۰۰۴
۴	الاستذکار	یوسف بن عبد الله ابن عبدالبر الاندلسی	۴۶۳
۵	الافراد	علی بن عمر الدار قطنی	۳۸۵
۶	الایضاح في شرح التجرید	امام ابو الفضل عبد الرحمن بن احمد الکرمانی	۵۴۳
۷	اسباب النزول	ابوالحسن علی بن احمد الواحدی	۴۶۸
۸	ایضاح الحق الصریح فی احکام البیت والضریح	شاہ محمد اسماعیل بن شاہ عبد الغنی دہلوی	۱۲۴۶

نمبر شمار	نام کتاب	مصنف	سن وفات ہجری
۹	انفاس العارفين	شاه ولی الله بن شاه عبد الرحيم	۱۱۷۶
۱۰	انسان العين	شاه ولی الله بن شاه عبد الرحيم	۱۱۷۶
۱۱	انسان العيون في سيرة الامين المأمون	علی بن برہان الدين حلبی	۱۰۴۴
۱۲	ارشاد الطالبين	قاضی محمد ثناء الله پانی پتی	۱۲۲۵
۱۳	الاعلام بأعلام بلد الله الحرام	قطب الدين محمد بن احمد الحنفی	۹۸۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 13, Page 13

1. Irshad al-Sari ila Manasik al-Mulla Ali al-Qari - Husayn bin Muhammad Sa'id Abdul Ghani al-Makki al-Hanafi - 310
2. Al-Adab al-Hamidah wa al-Akhlaq - Muhammad bin Jarir al-Tabari - 555
3. Al-Arba'in al-Ta'iyyah - Abu al-Fath Muhammad bin Muhammad al-Ta'i al-Hamadani - 911
4. Anis al-Gharib - Jalal al-Din Abdullah bin Abi Bakr al-Suyuti - 478
5. Al-Irshad fi al-Kalam - Imam Abu al-Ma'ali Abdul Malik ibn Abdullah al-Juwayni, known as Imam al-Haramayn - 974
6. Afdal al-Qurra bi Qira'ati Umm al-Qurra - Ahmad bin Muhammad ibn Hajar al-Makki - 584
7. Al-I'tibar fi Bayan al-Nasikh wa al-Mansukh min al-Akhbar - Muhammad bin Musa al-Hazimi al-Shafi'i - 652

Section 'Ta' 21. Talkhis al-Jami' al-Kabir - Kamal al-Din Muhammad bin Abbad al-Hanafi - 739 22. Tuhfat al-Haris fi Sharh al-Talkhis - Ali bin Balban al-Farisi al-Misri al-Hanafi - 1226 23. Taqwiyat al-Iman - Shah Muhammad Ismail bin Shah Abdul Ghani Dehlavi - 535 24. Ta'lim al-Muta'allim - Imam Burhan al-Din al-Zarnuji - 1225 25. Al-Targhib wa al-Tarhib - Abu al-Qasim Ismail bin Muhammad al-Asbahani - 911 26. Tazkirat al-Mawta wa al-Qubur - Qazi Muhammad Thanaullah Panipati - 534 27. Al-Tathbit 'inda al-Tabyit - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti - 1252 28. Talkhis al-Adilla li-Qawa'id al-Tawhid - Abu Ishaq Ibrahim bin Ismail al-Saffar al-Bukhari 29. Tafhim al-Masa'il - 354 30. Tanbih al-Ghafil wa al-Asnan - Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami

Section 'Tha' 31. Thaqafiyyat - Abu Abdullah Qasim bin al-Fadl al-Thaqafi al-Asfahani - 489 32. Thawab al-A'mal li-Ibn Hibban - Muhammad bin Hibban - 352

Section 'Jeem' 33. Al-Jami' li-Ahkam al-Qur'an (Tafsir Qurtubi) - Abu Abdullah Muhammad ibn Ahmad al-Qurtubi - 171

Page 682 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 13, पृष्ठ 13

1. इरशाद अल-सारी इला मनासिक अल-मुल्ला अली अल-कारी - हुसैन बिन मुहम्मद सईद अब्दुल गनी अल-मक्की अल-हनाफी - 310
2. अल-आदाब अल-हमिदा वल-अखलाक - मुहम्मद बिन जरीर अल-तबरी - 555
3. अल-अरबईन ताय्याह - अबुल फतह मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ताइ अल-हम्मदानी - 911
4. अनीस अल-गरीब - जलालुद्दीन अब्दुल्ला बिन अबी बकर अल-सुयुती - 478
5. अल-इरशाद फिल-कलाम - इमाम अबुल माली अब्दुल मलिक इब्न अब्दुल्ला अल-जुवैनी, जिन्हें इमाम अल-हरमैन के नाम से जाना जाता है - 974
6. अफजल अल-कुर्रा बि किराअत उम्म अल-कुर्रा - अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर मक्की - 584
7. अल-इअतिबार फी बयान अल-नासिह वल-मन्सूख मिन अल-अखबार - मुहम्मद बिन मूसा अल-हाज़िमी अल-शाफई - 652

अनुभाग 'त' 21. तलखीस अल-जामी अल-कबीर - कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्बाद अल-हनाफी - 739 22. तोहफतुल हरीस फी शरह अल-तलखीस - अली बिन बलवान अल-फारसी अल-मिस्री अल-हनाफी - 1226 23. तक़वियतुल ईमान - शाह मुहम्मद इस्माइल बिन शाह अब्दुल गनी देहलवी - 535 24. तालीम अल-मुताल्लिम - इमाम बुरहानुद्दीन अल-ज़रनूजी - 1225 25. अल-तरगीब वल-तरहीब - अबुल कासिम इस्माइल बिन मुहम्मद अल-असबहानी - 911 26. तज़किरतुल मौता वल-कुबूर - काजी मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती - 534 27. अल-तस्बीत इंदल-तबीयत - जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयुती - 1252 28. तलखीस अल-अदिल्ला लि-कवाइद अल-तौहीद - अबू इसहाक इब्राहिम बिन इस्माइल अल-सफ़्फ़ार अल-बुखारी 29. तफहीमुल मसाइल - 354 30. तनबीह अल-गाफिल वल-अस्नान - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी

अनुभाग 'थ' 31. सक़फ़िय्यात - अबू अब्दुल्ला कासिम बिन अल-फज़ल अल-सक़फ़ी अल-असफ़हानी - 489 32. सवाबुल आमाल ली-इब्न हिब्बान - मुहम्मद बिन हिब्बान - 352

अनुभाग 'ज' 33. अल-जामी ली-अहकाम अल-कुरआन (तफसीर कुरतुबी) - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद इब्न अहमद अल-कुरतुबी - 171

पृष्ठ 682/688

فتاوٰی رضویہ، جلد سیزدہم، ۱۳

۱۴۔ ارشادالساری الی مناسک الملاعلی القاری - حسین بن محمد سعید عبدالغنی المکی الحنفی - ۳۱۰ ۱۵۔ الآداب الحمیدہ والاخلاق - محمد بن جریر الطبری - ۵۵۵ ۱۶۔ الاربعین طائیہ - ابوالفتح محمد بن محمد الطائی الحمدانی - ۹۱۱ ۱۷۔ انیس الغریب - جلال الدین عبداللہ بن ابی بکر السیوطی - ۴۷۸ ۱۸۔ الارشادفی الکلام - امام ابوالحالی عبدالملک ابن عبداللہ الجوینی الشہیر بامام الحرمین - ۹۷۴ ۱۹۔ افضل القراء بقراء اُم القراء - احمد بن محمد ابن حجر مکی - ۵۸۴ ۲۰۔ الاعتبار فی بیان الناسخ والمنسوخ من الاخبار - محمد بن موسیٰ الحازمی الشافعی - ۶۵۲

ت ۲۱۔ تلخیص الجامع الکبیر - کمال الدین محمد بن عباد الحنفی - ۷۳۹ ۲۲۔ تحفۃ الحریص فی شرح التلخیص - علی بن بلبان الفارسی المصری الحنفی - ۱۲۲۶ ۲۳۔ تقویۃ الایمان - شاہ محمد اسمعیل بن شاہ عبد الغنی دہلوی - ۵۳۵ ۲۴۔ تعلیم المتعلم - امام برہان الدین الزرنوجی - ۱۲۲۵ ۲۵۔ الترغیب والترہیب - ابوالقاسم اسمعیل بن محمد الاصبہانی - ۹۱۱ ۲۶۔ تذکرۃ الموتیٰ والقبور - قاضی محمد ثناء اللہ پانی پتی - ۵۳۴ ۲۷۔ التثبیت عند التبییت - جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی - ۱۲۵۲ ۲۸۔ تلخیص الادلۃ لقواعد التوحید - ابواسحق ابراہیم بن اسمعیل الصفار البخاری ۲۹۔ تفہیم المسائل - ۳۵۴ ۳۰۔ تنبیہ الغافل والاسنان - محمدامین ابن عابدین الشامی

ث ۳۱۔ ثقفیات - ابوعبداللہ قاسم بن الفضل الثقفی الاصفہانی - ۴۸۹ ۳۲۔ ثواب الاعمال لابن حبان - محمد بن حبان - ۳۵۲

ج ۳۳۔ الجامع لاحکام القرآن (تفسیر قرطبی) - ابوعبداللہ محمد ابن احمد القرطبی - ۱۷۱

Fatawa Razvia Volume 13

1. Al-Jami' li-Ahkam al-Qur'an (Tafsir al-Qurtubi) | Abu Abdullah Muhammad ibn Ahmad al-Qurtubi | 671
2. Jami' al-Mudmarat wal-Mushkilat (Sharh al-Quduri) | Yusuf ibn Umar al-Sufi | 832
3. Jadd al-Mumtar 'ala Radd al-Muhtar | Imam Ahmad Raza ibn Naqi Ali Khan | 1340

H (ح) 36. Al-Husami | Muhammad ibn Muhammad ibn Umar Husam al-Din al-Hanafi | 642 37. Hashiya Durar al-Nabulsi | Isma'il ibn Abdul Ghani al-Nabulsi | 1062 38. Husn al-Tawassul fi Ziyarat Afzal al-Rusul | Abdul Qadir al-Fakihi | 982 39. Hawashi 'ala Ma'alim al-Tanzil | Imam Ahmad Raza Khan ibn Naqi Ali Khan | 1340 40. Husam al-Haramayn 'ala Manhar al-Kufr wal-Mayn | Imam Ahmad Raza Khan ibn Naqi Ali Khan | 1340

Kh (خ) 41. Khulasat Khulasat al-Wafa | Nur al-Din 'Ali ibn Ahmad al-Samhudi | 911

D (د) 42. Dala'il al-Nubuwwah | Abu Bakr ibn Ahmad ibn Husayn al-Bayhaqi | 458 43. Durr-e-Thamin fi Mubashshirat al-Nabi (Peace be upon him) | Shah Waliullah ibn Shah Abdul Rahim | 1176 44. Dur al-Munazzam fi Mawlid al-Nabi al-Mu'azzam (Peace be upon him) | Abu al-Qasim Muhammad ibn Uthman al-Lu'lu'i al-Dimashqi | 867 45. Kitab al-Da'wat | Ahmad ibn Husayn al-Bayhaqi | 458 46. Al-Durrat al-Mughbiyyah fi Ziyarat al-Mustafawiyyah | Nur al-Din 'Ali ibn Sultan Muhammad al-Qari | 1012 47. Al-Durrat al-Thaminah fi Akhbar al-Madinah | Hafiz Muhib al-Din Muhammad ibn Mahmud ibn Najjar | 633 48. Al-Durar al-Saniyyah fi al-Radd 'ala al-Wahhabiyyah | Mufti Ahmad ibn al-Sayyid Zayni Dahlan | 1304

Dh (ذ) 49. Dhikr al-Mawt | Abdullah ibn Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Baghdadi | 281

फ़तावा रज़विया जिल्द तेरहवीं १३

३३- अल-जामे ले-अहकाम अल-क़ुरान (तफ़सीर क़ुर्तुबी) | अबू अब्दुल्ला मोहम्मद बिन अहमद अल-क़ुर्तुबी | ६७१ ३४- जामे अल-मुदमरात वल-मुश्किलात (शरह क़ुदूरी) | युसूफ बिन उमर अल-सूफ़ी | ८३२ ३५- जद अल-मुम्तार अली रद अल-मुहतार | इमाम अहमद रज़ा बिन नक़ी अली खां | १३४०

ح (ह) ३६- अल-हुसामी | मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन उमर हुसाम अल-दीन अल-हनफ़ी | ६४२ ३७- हाशिया दुरार-ए-नाबुलसी | इस्माइल बिन अब्दुल ग़नी नाबुलसी | १०६२ ३८- हुस्न अल-तवस्सुल फ़ी ज़ियारत अफ़ज़ल अल-रुसुल | अब्दुल क़ादिर अल-फ़ाकीही | ९८२ ३९- हवाशी अली मआलिम अल-तन्ज़ील | इमाम अहमद रज़ा खां बिन नक़ी अली खां | १३४० ४०- हुसाम अल-हरमैन अली मन्हर अल-कुफ़्र वल-मैन | इमाम अहमद रज़ा खां बिन नक़ी अली खां | १३४०

خ (ख़) ४१- खुलासा खुलासा अल-वफ़ा | नूर अल-दीन अली बिन अहमद अल-समूदी | ९११

د (द) ४२- दलाइल अल-नुबुव्वत | अबू बक्र बिन अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी | ४५८ ४३- दुर-ए-समीन फ़ी मुबश्शिरात अल-नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम | ११७६ ४४- दुर-ए-मुनज़्ज़म फ़ी मौलिद अल-नबी अल-मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम | अबू अल-क़ासिम मोहम्मद बिन उस्मान अल-लुलुई अल-दमश्की | ८६७ ४५- किताब अल-दअवात | अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी | ४५८ ४६- अल-दुर्रत अल-मुग़ाबिय्या फ़ी ज़ियारत अल-मुस्तफ़विय्या | नूर अल-दीन अली बिन सुल्तान मोहम्मद अल-क़ारी | १०१२ ४७- अल-दुर्रत अल-समीना फ़ी अख़बार अल-मदीना | हाफ़िज़ मोहिब अल-दीन मोहम्मद बिन महमूद बिन नज्जार | ६३३ ४८- अल-दुरर अल-सनिय्या फ़ी अल-रद अल-वहाबिया | मुफ़्ती अहमद बिन अल-सैय्यद ज़ैनी दहलान | १३०४

ذ (ज़) ४९- ज़िक्र अल-मौत | अब्दुल्ला बिन मोहम्मद बिन अबी अल-दुनिया अल-बग़दादी | २८१

पेज ६८३/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

۳۳۔ الجامع لاحکام القرآن (تفسیر قرطبی) | ابو عبد اللہ محمد بن احمد القرطبی | ۶۷۱ ۳۴۔ جامع المضمرات والمشکلات (شرح قدوری) | یوسف بن عمر الصوفی | ۸۳۲ ۳۵۔ جد الممتار علی ردالمحتار | امام احمد رضا بن نقی علی خاں | ۱۳۴۰

ح ۳۶۔ الحسامی | محمد بن محمد بن عمر حسام الدین الحنفی | ۶۴۲ ۳۷۔ حاشیہ درغرر نابلسی | اسمٰعیل بن عبد الغنی نابلسی | ۱۰۶۲ ۳۸۔ حسن التوسل فی زیارۃ افضل الرسل | عبد القادر الفاکہی | ۹۸۲ ۳۹۔ حواشی علی معالم التنزیل | امام احمد رضا خاں بن نقی علی خاں | ۱۳۴۰ ۴۰۔ حسام الحرمین علی منحر الکفر والمین | امام احمد رضا خاں بن نقی علی خاں | ۱۳۴۰

خ ۴۱۔ خلاصۃ خلاصۃ الوفاء | نور الدین علی بن احمد السمہودی | ۹۱۱

د ۴۲۔ دلائل النبوۃ | ابوبکر بن احمد بن حسین البیہقی | ۴۵۸ ۴۳۔ درثمین فی مبشرات النبی صلی اللہ علیہ وسلم | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم | ۱۱۷۶ ۴۴۔ در منظم فی مولد النبی المعظم صلی اللہ علیہ وسلم | ابوالقاسم محمد بن عثمان اللؤلؤی الدمشقی | ۸۶۷ ۴۵۔ کتاب الدعوات | احمد بن حسین البیہقی | ۴۵۸ ۴۶۔ الدرۃ المغبیۃ فی زیارۃ المصطفویۃ | نور الدین علی بن سلطان محمد القاری | ۱۰۱۲ ۴۷۔ الدرۃ الثمینیہ فی اخبار المدنیۃ | حافظ محب الدین محمد بن محمود بن نجار | ۶۳۳ ۴۸۔ الدرر السنیۃ فی الرد علی الوہابیۃ | مفتی احمد بن السید زینی دحلان | ۱۳۰۴

ذ ۴۹۔ ذکر الموت | عبد اللہ بن محمد بن ابی الدنیا البغدادی | ۲۸۱

Fatawa Razawiyya Volume 13 / Page 13

Ra 50- Raf'ul Intiqaz wa Daf'ul I'tiraz etc. - Muhammad Amin ibn Abidin, known as Ibn Abidin - 1252

Seen 51- Salafiyyat min Ajza' al-Hadith - Hafiz Abu Tahir Ahmad ibn Muhammad al-Salafi - 586 52- Al-Siraj al-Munir fi Sharh Jami' al-Saghir - Ali ibn Muhammad ibn Ibrahim al-Ma'arri al-Azizi - 1070 53- Sunan al-Huda - Abdul Ghani ibn Ahmad ibn Shah Abdul Quddus Gangohi - 54- Sunan fil Hadith - Hafiz Abu Ali Saeed ibn Uthman ibn al-Sakan al-Baghdadi - 353

Sheen 55- Sharh Risala Fadaiyyah - Allama Ibrahim ibn Muhammad al-Bajuri - 1276 56- Sharh al-Sughra - Allama Muhammad Yusuf al-Sanusi - 895 57- Al-Shamil fi Furu' al-Hanafiyyah - Abu al-Qasim Ismail ibn Husayn al-Bayhaqi al-Hanafi - 402 58- Sharh Sahih Bukhari Al-Kawakib al-Darari - Muhammad ibn Yusuf al-Kirmani - 796 59- Shifa' al-Alil Sharh al-Qawl al-Jamil - Maulvi Khurram Ali Bilouri, probably - 171 60- Sharh Sahih Bukhari - Nasir al-Din Ali ibn Muhammad ibn Munir - 61- Sharh Zarnij Sultani - Abdul Ali ibn Muhammad ibn Husayn - 933 62- Shifa' al-Alil wa Ball al-Ghalil - Ibn Abidin Muhammad Amin Afandi - 1252

Saad 63- Al-Sihah al-Mathurah 'an al-Nabi (Sallallahu Alaihi Wa'ala Alihi Wasallam) - 64- Sughra Sharh Munyah al-Musalli - Sheikh Ibrahim ibn Muhammad al-Halabi - 952 65- Sirat-e-Mustaqim - Shah Muhammad Ismail ibn Abdul Ghani Dehlavi - 1246

Page 684 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13 / सफ़ा 13

र 50- रफ़'उल इंतिक़ाज़ व दफ़'उल ए'तिराज़ इ़ख़ - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अश-शहीर बाब इब्न आबिदीन - 1252

स 51- सलफ़ियात मिन अज्ज़ा अल-हदीस - हाफ़िज़ अबू ताहिर अहमद बिन मुहम्मद अल-सलफ़ी - 586 52- अल-सिराज अल-मुनीर फ़ी शरह जामे अल-सग़ीर - अली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अल-मअरी अल-अज़ीज़ी - 1070 53- सुनन अल-हुदा - अब्दुल ग़नी बिन अहमद बिन शाह अब्दुल कुद्दूस गंगोही - 54- सुनन फ़िल हदीस - हाफ़िज़ अबू अली सईद बिन उस्मान इब्न अल-सकन अल-बग़दादी - 353

श 55- शरह रिसाला फ़ज़ाईय्या - अल्लामा इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-बाजौरी - 1276 56- शरह अल-सुग़रा - अल्लामा मुहम्मद यूसुफ़ अल-सनूसी - 895 57- अल-शामिल फ़ी फ़ुरूँ अल-हनफ़िया - अबू अल-क़ासिम इस्माइल बिन हुसैन अल-बैहक़ी अल-हनफ़ी - 402 58- शरह सहीह बुखारी अल-कवाकिब अल-दरारी - मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल-किरमानी - 796 59- शिफ़ा अल-अलील शरह अल-क़ौल अल-जमील - मौलवी ख़ुर्रम अली बिलौरी ग़ालिबन - 171 60- शरह सहीह बुखारी - नासिर अल-दीन अली बिन मुहम्मद इब्न मुनीर - 61- शरह ज़रनीज सुल्तानी - अब्दुल अली बिन मुहम्मद बिन हुसैन - 933 62- शिफ़ा अल-अलील व बल्ल अल-ग़लील - इब्न आबिदीन मुहम्मद अमीन अफ़ंदी - 1252

स 63- अल-सिहाह अल-मासूरा अन-नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) - 64- सुग़रा शरह मुनियतुल मुसल्ली - शेख इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-हलबी - 952 65- सिराते मुस्तक़ीम - शाह मुहम्मद इस्माइल बिन अब्दुल ग़नी देहलवी - 1246

पेज 684/688

فتاوٰی رضویہ جلد سیز دہم ۱۳

ر ۵۰- رفع الانتقاض ودفع الاعتراض الخ محمد امین ابن عابدین الشہیر بابن عابدین ۱۲۵۲

س ۵۱- سلفیات من اجزاء الحدیث حافظ ابو الطاہر احمد بن محمد السلفی ۵۸۶ ۵۲- السراج المنیر فی شرح جامع الصغیر علی بن محمد بن ابراہیم المعری العزیزی ۱۰۷۰ ۵۳- سنن الہدی عبدالغنی بن احمد بن شاہ عبدالقدوس گنگوہی

۵۴- سنن فی الحدیث حافظ ابو علی سعید بن عثمان ابن السکن البغدادی ۳۵۳

ش ۵۵- شرح رسالہ فضائیہ علامہ ابراہیم بن محمد الباجوری ۱۲۷۶ ۵۶- شرح الصغری علامہ محمد یوسف السنوسی ۸۹۵ ۵۷- الشامل فی فروع الحنفیہ ابوالقاسم اسمعیل بن حسین البیہقی الحنفی ۴۰۲ ۵۸- شرح صحیح بخاری الکواکب الدراری محمد بن یوسف الکرمانی ۷۹۶ ۵۹- شفاء العلیل شرح القول الجمیل مولوی خرم علی بلوری غالباً ۱۷۱ ۶۰- شرح صحیح بخاری ناصر الدین علی بن محمد ابن منیر ۶۱- شرح زرنیج سلطانی عبدالعلی بن محمد بن حسین ۹۳۳ ۶۲- شفاء العلیل وبل الغلیل ابن عابدین محمد امین آفندی ۱۲۵۲

ص ۶۳- الصحاح الماثورہ عن النبی صلی اللہ علیہ تعالٰی علیہ وسلم ۶۴- صغری شرح منیۃ المصلی شیخ ابراہیم بن محمد الحلبی ۹۵۲ ۶۵- صراط مستقیم شاہ محمد اسمعیل بن عبدالغنی دہلوی ۱۲۴۶

Fatawa Rizvia 13 Volume Thirteen

65- Sirat-e-Mustaqim --- Shah Muhammad Ismail bin Abdul Ghani Dehlvi --- 1246

ط (T) 66- Al-Tabaqat al-Kubra --- Muhammad bin Sa'd al-Zuhri --- 230

غ (Gh) 67- Ghara'ib al-Qur'an wa Ragha'ib al-Furqan (Tafsir Nishapuri) --- Nizamuddin Hasan bin Muhammad Nishapuri --- 728 68- Gharib al-Hadith --- Qasim bin Salam al-Baghdadi --- 224 69- Gharib al-Hadith --- Ibrahim bin Ishaq al-Harbi --- 285 70- Ghayat al-Awtar (Translation of Durr-e-Mukhtar) --- Maulvi Khurram Ali Belhouri (likely) --- 1271

ف (F) 71- Al-Futuhat al-Ilahiyya (Tafsir Jamal) --- Sulaiman bin Umar al-Shafi'i, well-known as al-Jamal --- 1204 72- Al-Faraj ba'd al-Shidda --- Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Baghdadi --- 281 73- Fatih Sharh Quduri --- --- 74- Fawaid-e-Hakim wa Khalas --- --- 75- Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir --- Abd al-Ra'uf al-Munawi --- 1031 76- Fuyud al-Haramayn --- Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim --- 1162 77- Fatawa Shah Rafiuddin --- Shah Rafiuddin --- 1233 78- Al-Fath al-Mubin Sharh Arba'in Nawawi --- Ahmad bin Muhammad ibn Hajar Makki --- 974 79- Fasl al-Khitab fi Radd Dalalat Ibn Abdul Wahhab --- --- 80- Futuh al-Ghayb --- Sayyid Sheikh Abdul Qadir Gilani --- 561 81- Fatawa Azizi --- Abdul Aziz bin Waliullah Dehlvi --- 1004

ق (Q) 82- Qurrat al-Uyun al-Akhbar --- Muhammad Amin ibn Abidin, well-known as Ibn Abidin --- 1252

Page 685 of 688

फ़तावा रज़विया १३ जिल्द तेरहवीं

६५- सिराते मुस्तकीम --- शाह मुहम्मद इस्माईल बिन अब्दुल ग़नी देहलवी --- १२४६

ط (त) ६६- अत-तबक़ातुल कुबरा --- मुहम्मद बिन साद अज़-ज़ुहरी --- २३०

غ (ग़) ६७- ग़राइबुल क़ुरआन व रग़ाइबुल फ़ुरक़ान (तफ़सीर नीशापूरी) --- निज़ामुद्दीन हसन बिन मुहम्मद नीशापूरी --- ७२८ ६८- ग़रीबुल हदीस --- क़ासिम बिन सलाम अल-बग़दादी --- २२४ ६९- ग़रीबुल हदीस --- इब्राहीम बिन इसहाक़ अल-हरबी --- २८५ ७०- ग़ायतुल औतार (तर्जुमा दुर्रे मुख्तार) --- मौलवी ख़ुर्रम अली बिलहौरी (संभवत:) --- १२७१

ف (फ़) ७१- अल-फ़ुतूहातुल इलाहिया (तफ़सीर जमल) --- सुलेमान बिन उमर अल-शाफ़ई, जो अल-जमल के नाम से प्रसिद्ध हैं --- १२०४ ७२- अल-फ़रज बादश शिद्दा --- अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया अल-बग़दादी --- २८१ ७३- फ़ातिह शरह क़ुदूरी --- --- ७४- फ़वाइद-ए-हाकिम व ख़लास --- --- ७५- फ़ैज़ुल क़दीर शरह अल-जामी अल-सग़ीर --- अब्दुल रऊफ़ अल-मुनवी --- १०३१ ७६- फ़ुयूज़ुल हरमैन --- शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम --- ११६२ ७७- फ़तावा शाह रफ़ीउद्दीन --- शाह रफ़ीउद्दीन --- १२३३ ७८- अल-फ़तह अल-मुबीन शरह अरबईन नववी --- अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर मक्की --- ९७४ ७९- फ़स्ल अल-ख़िताब फ़ी रद दलालात इब्न अब्दुल वहाब --- --- ८०- फ़ुतूह अल-ग़ैब --- सय्यद शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी --- ५६१ ८१- फ़तावा अज़ीज़ी --- अब्दुल अज़ीज़ बिन वलीउल्लाह देहलवी --- १००४

ق (क़) ८२- कुर्रतु उयूनिल अख़बार --- मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन, जो इब्न आबिदीन के नाम से प्रसिद्ध हैं --- १२५२

पृष्ठ ६८५ / ६८८

فتاوی رضویہ ۱۳ جلد سیزدہم

۶۵- صراط مستقیم --- شاہ محمد اسمعیل بن عبد الغنی دہلوی --- ۱۲۴۶

ط ۶۶- الطبقات الکبری --- محمد بن سعد الزہری --- ۲۳۰

غ ۶۷- غرائب القرآن و رغائب الفرقان (تفسیر نیشاپوری) --- نظام الدین حسن بن محمد نیشاپوری --- ۷۲۸ ۶۸- غریب الحدیث --- قاسم بن سلام البغدادی --- ۲۲۴ ۶۹- غریب الحدیث --- ابراھیم بن اسحٰق الحربي --- ۲۸۵ ۷۰- غایۃ الاوطار ترجمہ در مختار --- مولوی خرم علی بلہوری غالباً --- ۱۲۷۱

ف ۷۱- الفتوحات الالھیۃ (تفسیر جمل) --- سلیمان بن عمر الشافعی الشہیر بالجمل --- ۱۲۰۴ ۷۲- الفرج بعد الشدۃ --- عبد اللہ بن محمد ابن ابی الدنیا البغدادی --- ۲۸۱ ۷۳- فاتح شرح قدوری --- --- ۷۴- فوائد حاکم و خلاص --- --- ۷۵- فیض القدیر شرح الجامع الصغیر --- عبد الرؤف المناوی --- ۱۰۳۱ ۷۶- فیوض الحرمین --- شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم --- ۱۱۶۲ ۷۷- فتاوی شاہ رفیع الدین --- شاہ رفیع الدین --- ۱۲۳۳ ۷۸- الفتح المبین شرح اربعین نووی --- احمد بن محمد ابن حجر مکی --- ۹۷۴ ۷۹- فصل الخطاب فی رد ضلالات ابن عبدالوہاب --- --- ۸۰- فتوح الغیب --- سید شیخ عبد القادر گیلانی --- ۵۶۱ ۸۱- فتاوی عزیزی --- عبد العزیز بن ولی اللہ دہلوی --- ۱۰۰۴

ق ۸۲- قرۃ عیون الاخبار --- محمد امین ابن عابدین الشہیر بابن عابدین --- ۱۲۵۲

صفحہ ۶۸۵ از ۶۸۸

Fatawa Rizvia Volume 13

Section K (ک) 83. Kashf al-Ghita ma-lazm al-mawta 'ala al-ahya — Muhammad Sheikh al-Islam bin Muhammad Fakhr al-Din — 285 84. Kitab Ittiba' al-Amwat — Ibrahim bin Ishaq al-Harbi — 360 85. Kitab al-Da'wat — Sulayman bin Ahmad al-Tabarani — 399 86. Kitab al-Thawab fi al-Hadith — Abu al-Sheikh Abdullah bin Muhammad bin Ja'far — 1133 87. Kashf al-Nur 'an Ashab al-Qubur — Abd al-Ghani Nabulsi — 241 88. Kitab al-Zuhd — Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal — 281 89. Kitab al-Qubur — Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya — 281 90. Kitab al-Rawdah — Abu al-Hasan bin Bara' 91. Kitab al-Zuhd — Hafiz Hannad bin al-Sari al-Tamimi al-Darimi — 423 92. Kitab Dhikr al-Mawt 93. Kitab Ad'iyat al-Hajj wa al-'Umrah — Qutb al-Din al-Dihlawi — 1289 94. Kunuz al-Haqa'iq fi Hadith Khayr al-Khala'iq — Abd al-Ra'uf bin Taj al-Din bin Ali al-Munawi — 1031 95. Kitab al-Khruj — Qazi Imam Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim Hanafi — 182 96. Kaff al-Ra'a' 'an al-Muharramat al-Lahw wa al-Sama' — Abu al-Abbas Ahmad bin Muhammad ibn Hajar Makki — 974

Section L (ل) 97. Lubab al-Manasik — Sheikh Rahmatullah bin Qazi Abdullah al-Sindi — 978

Section M (م) 98. Minah al-Rawd al-Azhar fi Sharh al-Fiqh al-Akbar — Ali bin Sultan Muhammad al-Qari — 1012 Majmu'ah Khani (Persian) 99. Maqamat-e-Mazhar wa Zamima Maqamat-e-Mazhar — Mirza Mazhar Jan-e-Janan — 1195 100. Mashariq al-Anwar al-Qudsiyyah fi Bayan al-'Uhud al-Muhammadiyyah — Abd al-Wahhab bin Ahmad al-Sha'rani — 974

Page 686 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 13

अनुभाग क (ک) 83. कश्फ़ अल-ग़िता मा-लाज़म अल-मौता अलल-अह्या — मुहम्मद शैख़ अल-इस्लाम बिन मुहम्मद फ़ख़्र अल-दीन — 285 84. किताब इत्तिबा' अल-अमवात — इब्राहिम बिन इसहाक अल-हरबी — 360 85. किताब अद-दा'वात — सुलेमान बिन अहमद अत-तबरानी — 399 86. किताब अस-सवाब फ़िल-हदीस — अबू अल-शैख़ अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन जाफ़र — 1133 87. कश्फ़ अन-नूर अन अस्हाब अल-कुबूर — अब्दुल ग़नी नाबुलसी — 241 88. किताब अज़-ज़ुहद — इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल — 281 89. किताब अल-कुबूर — अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी अद-दुनिया — 281 90. किताब अर-रौज़ा — अबू अल-हसन बिन बरा' 91. किताब अज़-ज़ुहद — हाफ़िज़ हन्नाद बिन अस-सरी अत-तमीमी अद-दारमी — 423 92. किताब ज़िक्र अल-मौत 93. किताब अदियात अल-हज्ज वल-'उमरा — कुतुब अल-दीन अद-दहलवी — 1289 94. कुनूज़ अल-हकाइक फ़ी हदीस खैर अल-खलाइक — अब्द अल-रऊफ़ बिन ताज अल-दीन बिन अली अल-मुनावी — 1031 95. किताब अल-खुरुज — काज़ी इमाम अबू यूसुफ़ याकूब बिन इब्राहिम हनफ़ी — 182 96. कफ़ अर-रआ' अन अल-मुहर्रमात अल-लह्व वस-समा — अबू अल-अब्बास अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर मक्की — 974

अनुभाग ल (ل) 97. लुबाब अल-मनासिक — शैख़ रहमतुल्लाह बिन काज़ी अब्दुल्लाह अस-सिंधी — 978

अनुभाग म (م) 98. मिनह अर-रौद अल-अज़हर फ़ी शरह अल-फ़िक़्ह अल-अकबर — अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-कारी — 1012 मजमूआ खानी (फ़ारसी) 99. मक़ामात-ए-मज़हर व ज़मीमा मक़ामात-ए-मज़हर — मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानाँ — 1195 100. मशारिक अल-अनवार अल-कुद्सिया फ़ी बयान अल-'उहूद अल-मुहम्मदिया — अब्दुल वहाब बिन अहमद अल-शा'रानी — 974

पृष्ठ 686 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد سیزدہم ۱۳

ک ۸۳۔ کشف الغطاء مالزم الموتٰی علی الاحیاء ـــ محمد شیخ الاسلام بن محمد فخر الدین ـــ ۲۸۵

۸۴۔ کتاب اتباع الاموات ـــ ابراہیم بن اسحاق الحربي ـــ ۳۶۰ ۸۵۔ کتاب الدعوات ـــ سلیمان بن احمد الطبرانی ـــ ۳۹۹ ۸۶۔ کتاب الثواب فی الحدیث ـــ ابوالشیخ عبداللہ بن محمد بن جعفر ـــ ۱۱۳۳ ۸۷۔ کشف النور عن اصحاب القبور ـــ عبدالغنی نابلسی ـــ ۲۴۱ ۸۸۔ کتاب الزہد ـــ امام احمد بن محمد بن حنبل ـــ ۲۸۱ ۸۹۔ کتاب القبور ـــ عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا ـــ ۲۸۱ ۹۰۔ کتاب الروضہ ـــ ابوالحسن بن براء ۹۱۔ کتاب الزہد ـــ حافظ ہناد بن السری التمیمی الدارمی ـــ ۴۲۳ ۹۲۔ کتاب ذکر الموت ۹۳۔ کتاب ادعیۃ الحج والعمرہ ـــ قطب الدین الدہلوی ـــ ۱۲۸۹ ۹۴۔ کنوز الحقائق فی حدیث خیر الخلائق ـــ عبدالروؤف بن تاج الدین بن علی المناوی ـــ ۱۰۳۱ ۹۵۔ کتاب الخروج ـــ قاضی امام ابویوسف یعقوب بن ابراہیم حنفی ـــ ۱۸۲ ۹۶۔ کف الرعاع عن المحرمات اللھو والسماع ـــ ابوالعباس احمد بن محمد ابن حجر مکی ـــ ۹۷۴

ل ۹۷۔ لباب المناسک ـــ شیخ رحمۃ اللہ بن قاضی عبداللہ السندی ـــ ۹۷۸

م ۹۸۔ منح الروض الازہر فی شرح الفقہ الاکبر ـــ علی بن سلطان محمد القاری ـــ ۱۰۱۲ مجموعہ خانی (فارسی) ۹۹۔ مقاماتِ مظہر و ضمیمہ مقاماتِ مظہر ـــ مرزا مظہر جانِ جاناں ـــ ۱۱۹۵ ۱۰۰۔ مشارق الانوار القدسیہ فی بیان العہود المحمدیہ ـــ عبدالوہاب بن احمد الشعرانی ـــ ۹۷۴

Fatawa Rizvia Volume Thirteen 13

101- Musnad al-Kabir fi al-Hadith - Abu Muhammad Ubaid bin Hamid al-Kashi - 449 102- Al-Muntaqa fi Ahadith al-Ahkam 'an Khair al-Anam - Ahmad bin Abdul Halim Ibn Taymiyyah - 728 103- Manzumah al-Nasafi fi al-Khilaf - Najm al-Din Umar bin Muhammad al-Nasafi - 537 104- Mi'raj al-Dirayah fi Sharh Hidayah - Imam Qawam al-Din bin Muhammad al-Kaki - 739 105- Al-Musnad al-Sahih fi al-Hadith - Abu Awanah Yaqub bin Ishaq al-Isfara'ini - 316 106- Musnad al-Shamiyyin 107- Madarij al-Nubuwwah - Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlvi - 1052 108- Majma' al-Barakat - Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlvi - 1052 109- Manahil al-Safa fi Takhrij Ahadith al-Shifa - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti - 911 110- Mukhtasar Tarikh Ibn 'Asakir - Imam Muhammad bin Mukram, known as Ibn Manzur - 711 111- Mi'ah Masa'il - Muhammad Ishaq Muhaddith Dehlvi - 1262 112- Masa'il Arba'in - Muhammad Ishaq Muhaddith Dehlvi - 1262 113- Ma La Budda Minhu - Qazi Muhammad Thana'ullah Panipati - 1225 114- Mishkat al-Masabih - Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Khatib - 740 115- Matan-e-Yad or Muntaqa fi Sharh al-Multaqa - Ala al-Din al-Haskafi - 1088 116- Mozeh al-Quran Tarjumah al-Quran - Shah Abdul Qadir bin Shah Waliullah Dehlvi - 1230 117- Masnawi Sharif Farsi Manzum - Mulla Jalal al-Din Muhammad bin Muhammad al-Rumi al-Balkhi al-Qunawi - 722 118- Mustalahat al-Hadith - Ali bin al-Sayyid Muhammad bin Ali al-Jurjani Sayyid Sharif - 816 119- Al-Maqasid fi 'Ilm al-Kalam - Allama Sa'd al-Din Mas'ud bin Umar al-Taftazani - 791 120- Mughni al-Mustafti 'an Su'al al-Mufti - Allama Hamid Afandi 121- Mazahir-e-Haq Tarjumah Mishkat al-Masabih - Qutb al-Din Dehlvi - 1289 122- Minnat al-Jalil - Ibn Abidin Muhammad Amin Afandi - 1252 123- Miftah al-Ghaib fi Sharh Futuh al-Ghaib - Abdul Haq bin Saif al-Din Muhaddith Dehlvi - 1052 N 124- Nafi' fi al-Furu' - Imam Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Samarqandi - 402 124- Nafi' fi al-Furu' - Imam Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Samarqandi - 402

Page 687 of 688

101- मसनद अल-कबीर फ़ी अल-हदीस - अबू मुहम्मद उबैद बिन हामिद अल-काशी - 449 102- अल-मुंतक़ा फ़ी अहादीस अल-अहकाम अन खैर अल-अनाम - अहमद बिन अब्दुल हलीम इब्न तैमियाह - 728 103- मंज़ूमत अल-नसफी फ़ी अल-खिलाफ़ - नज्म अल-दीन उमर बिन मुहम्मद अल-नसफी - 537 104- मेराज अल-दिरायाह फ़ी शरह हिदायाह - इमाम क़वाम अल-दीन बिन मुहम्मद अल-काकी - 739 105- अल-मसनद अल-सहीह फ़ी अल-हदीस - अबू अवाना याकूब बिन इस्हाक़ अल-असफ़राइनी - 316 106- मसनद अल-शामियीन 107- मदारिज अल-नुबुव्वह - शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1052 108- मजमा अल-बरकात - शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1052 109- मनाहिल अल-सफ़ा फ़ी तख़रीज अहादीस अल-शिफ़ा - जलाल अल-दीन अब्द अल-रहमान बिन अबी बक्र अल-सुयुती - 911 110- मुख़्तसर तारीख़ इब्न असाकिर - इमाम मुहम्मद बिन मुकरम, जिन्हें इब्न मंज़ूर के नाम से जाना जाता है - 711 111- मिआ मसाइल - मुहम्मद इस्हाक़ मुहद्दिस देहलवी - 1262 112- मसाइल अरबईन - मुहम्मद इस्हाक़ मुहद्दिस देहलवी - 1262 113- मा ला बुद्दा मिन्हु - क़ाज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती - 1225 114- मिश्कात अल-मसाबीह - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-ख़तीब - 740 115- मतन-ए-याद या मुंतक़ा फ़ी शरह अल-मुल्तक़ा - अला अल-दीन अल-हस्कफ़ी - 1088 116- मौज़ेह अल-कुरान तर्जुमा अल-कुरान - शाह अब्दुल क़ादिर बिन शाह वलीउल्लाह देहलवी - 1230 117- मसनवी शरीफ़ फ़ारसी मंज़ूम - मुल्ला जलाल अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-रूमी अल-बल्ख़ी अल-क़ुनवी - 722 118- मुस्तलाहात अल-हदीस - अली बिन अल-सैयिद मुहम्मद बिन अली अल-जुरजानी सैयद शरीफ़ - 816 119- अल-मक़ासिद फ़ी इल्म अल-कलाम - अल्लामा साद अल-दीन मसूद बिन उमर अल-तफ़्ताज़ानी - 791 120- मुग़नी अल-मुस्तफ़्ती अन सुआल अल-मुफ़्ती - अल्लामा हामिद अफ़ंदी 121- मज़ाहिर-ए-हक़ तर्जुमा मिश्कात अल-मसाबीह - क़ुतुब अल-दीन देहलवी - 1289 122- मिन्नत अल-जलील - इब्न आबिदीन मुहम्मद अमीन अफ़ंदी - 1252 123- मिफ़्ताह अल-ग़ैब फ़ी शरह फ़ुतुह अल-ग़ैब - अब्दुल हक़ बिन सैफ़ अल-दीन मुहद्दिस देहलवी - 1052 न 124- नाफ़े फ़ी अल-फ़ुरूह - इमाम नासिर अल-दीन मुहम्मद बिन युसुफ़ अल-समरक़ंदी - 402 124- नाफ़े फ़ी अल-फ़ुरूह - इमाम नासिर अल-दीन मुहम्मद बिन युसुफ़ अल-समरक़ंदी - 402

۱۰۱- مسند الکبیر فی الحدیث - ابو محمد عبید بن حمید الکشی - ۴۴۹ ۱۰۲- المنتقی فی احادیث الاحکام عن خیر الانام - احمد بن عبد الحلیم ابن تیمیه - ۷۲۸ ۱۰۳- منظومة النسفی فی الخلاف - نجم الدین عمر بن محمد النسفی - ۵۳۷ ۱۰۴- معراج الدرایة فی شرح هدایة - امام قوام الدین بن محمد الکاکی - ۷۳۹ ۱۰۵- المسند الصحیح فی الحدیث - ابو عوانه یعقوب بن اسحق الاسفرائنی - ۳۱۶ ۱۰۶- مسند الشامیین ۱۰۷- مدارج النبوة - شیخ عبد الحق محدث دہلوی - ۱۰۵۲ ۱۰۸- مجمع البرکات - شیخ عبد الحق محدث دہلوی - ۱۰۵۲ ۱۰۹- مناهل الصفافی تخریج احادیث الشفاء - جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی - ۹۱۱ ۱۱۰- مختصر تاریخ ابن عساکر - امام محمد بن مکرم المعروف بابن منظور - ۷۱۱ ۱۱۱- مائة مسائل - محمد اسحاق محدث دہلوی - ۱۲۶۲ ۱۱۲- مسائل اربعین - محمد اسحاق محدث دہلوی - ۱۲۶۲ ۱۱۳- مالا بد منه - قاضی محمد ثناء الله پانی پتی - ۱۲۲۵ ۱۱۴- مشکوة المصابیح - ابو عبد الله محمد بن عبد الله الخطیب - ۷۴۰ ۱۱۵- متنق یاد ر منتقی فی شرح الملتقی - علاء الدین الحصکفی - ۱۰۸۸ ۱۱۶- موضح القرآن ترجمة القرآن - شاه عبد القادر بن شاه ولی الله دہلوی - ۱۲۳۰ ۱۱۷- مثنوی شریف فارسی منظوم - ملا جلال الدین محمد بن محمد الرومی البلخی القونوی - ۷۲۲ ۱۱۸- مصطلحات الحدیث - علی بن السید محمد بن علی الجرجانی سید شریف - ۸۱۶ ۱۱۹- المقاصد فی علم الکلام - علامہ سعد الدین مسعود بن عمر التفتازانی - ۷۹۱ ۱۲۰- مغنی المستفتی عن سوال المفتی - علامہ حامد آفندی ۱۲۱- مظاہر حق ترجمہ مشکوة المصابیح - قطب الدین دہلوی - ۱۲۸۹ ۱۲۲- منة الجلیل - ابن عابدین محمد امین آفندی - ۱۲۵۲ ۱۲۳- مفتاح الغیب فی شرح فتوح الغیب - عبد الحق بن سیف الدین محدث دہلوی - ۱۰۵۲ ن

125- Nayl al-Awtar Sharh Muntaqa al-Akhbar - Muhammad bin Ali al-Shawkani - 1250 126- Nasihat al-Muslimin - Khurram Ali Belhouri - 1217 127- Nafahat al-Uns min Hadarat al-Quds - Abdur Rahman bin Ahmad al-Jami - 898 128- Nasim al-Riyad fi Sharh Shifa Qadi 'Iyad - Qadi 'Iyad Ahmad bin Muhammad al-Khafaji - 1069 129- Al-Nashr fi Qira'at al-'Ashr - Shams al-Din Muhammad bin Muhammad ibn al-Jazari - 833 130- Nuzhat al-Nazar fi Tawdih Nukhbat al-Fikar - Ahmad bin Ali Hajar al-Qastalani - 852 131- Naf' al-Mufti wal-Sa'il - Molvi Abdul Hayy Madrasi - 1306 132- Nawadir al-Usul - Abu Abdullah Muhammad bin Ali Hakim al-Tirmidhi - 255 133- Nisab al-Ihtisab fil-Fatawa - Umar bin Muhammad bin Awf al-Shami 134- Nur al-Sham'ah fi Zafar al-Jum'ah - Ali bin Ghanim al-Maqdisi 135- Nazm al-Fara'id wa Jam' al-Fawa'id fil-Usul - Abdul Rahim bin Ali al-Rumi, known as Shaykh Zadeh - 944 136- Nafi' Sharh Quduri 137- Nam-e-Haq - Sharaf al-Din Bukhari 138- Nata'ij al-Afkar fi Kashf al-Rumuz wal-Asrar - Shams al-Din Ahmad bin Qurd, known as Qadi Zadeh - 988

Waw (و)

139- Wafayat al-A'yan - Shams al-Din Ahmad bin Muhammad ibn Khallikan - 681 140- Waqi'at al-Muftiyyin - 325 141- Wafa' al-Wafa - Nur al-Din Ali bin Ahmad al-Samhudi - 911

Ha (ھ)

142- Hawami' - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dehlawi - 1179 143- Hama'at - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dehlawi - 1179

जिल्द तेरह १३ (खंड तेरह 13) फ़तावा रज़विया

१२५- नैल अल-अवतार शरह मुंतका अल-अख़बार - मुहम्मद बिन अली अल-शौकानी - १२५० १२६- नसीहत अल-मुस्लिमीन - खुर्रम अली बेलहुरी - १२१७ १२७- नफहात अल-उन्स मिन हज़रात अल-क़ुद्स - अब्दुर रहमान बिन अहमद अल-जामी - ८९८ १२८- नसीम अल-रियाज़ फी शरह शिफ़ा क़ाज़ी इयाज़ - क़ाज़ी इयाज़ अहमद बिन मुहम्मद अल-खफ़ाजी - १०६९ १२९- अल-नश्र फी किरा'अत अल-अश्र - शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अल-जज़री - ८३३ १३०- नुज़हत अल-नज़र फी तौदीह नुख़बत अल-फ़िकर - अहमद बिन अली हजर अल-क़स्तलानी - ८५२ १३१- नफ़' अल-मुफ्ती वल-सा'इल - मौलवी अब्दुल हई मद्रासी - १३०६ १३२- नवादिर अल-उसूल - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली हकीम अल-तिर्मिज़ी - २५५ १३३- निसाब अल-इहतिसाब फ़िल-फ़तावा - उमर बिन मुहम्मद बिन औफ़ अल-शामी १३४- नूर अल-शम'अ फी ज़फर अल-जुम'अ - अली बिन ग़ानिम अल-मक़दिसी १३५- नज़्म अल-फ़राइद व जम' अल-फ़वाइद फ़िल-उसूल - अब्दुल रहीम बिन अली अल-रूमी, जिन्हें शैख़ ज़ादा के नाम से जाना जाता है - ९४४ १३६- नाफ़े शरह कुदूरी १३७- नाम-ए-हक़ - शरफ अल-दीन बुखारी १३८- नताइज अल-अफ़कार फी कश्फ़ अल-रुमूज़ वल-असरार - शम्स अल-दीन अहमद बिन कुर्द, जिन्हें काजी ज़ादा के नाम से जाना जाता है - ९८८

वाव (و)

१३९- वफ़यात अल-अयान - शम्स अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न खल्लिकान - ६८१ १४०- वाक़िआत अल-मुफ़्तीयीन - ३२५ १४१- वफ़ा अल-वफ़ा - नूर अल-दीन अली बिन अहमद अल-सम्हुदी - ९११

ह (ه)

१४२- हवामी' - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहलवी - ११७९ १४३- हम'आत - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहलवी - ११७९

पृष्ठ ६८८ का ६८८

جلد سیزدہم ۱۳ فتاویٰ رضویہ

۱۲۵۔ نیل الاوطار شرح منتقی الاخبار محمد بن علی الشوکانی ۱۲۵۰ ۱۲۶۔ نصیحۃ المسلمین خرم علی بلہوری ۱۲۱۷ ۱۲۷۔ نفحات الانس من حضرات القدس عبدالرحمن بن احمد الجامی ۸۹۸ ۱۲۸۔ نسیم الریاض في شرح شفاء قاضی عیاض قاضی عیاض احمد بن محمد الخفاجی ۱۰۶۹ ۱۲۹۔ النشر فی قراءۃ العشر شمس الدین محمد بن محمد ابن الجزری ۸۳۳ ۱۳۰۔ نزبۃ النظر فی توضیح نخبۃ الفکر احمد بن علی حجر القسطلانی ۸۵۲ ۱۳۱۔ نفع المفتی والسائل مولوی عبدالحی مدراسی ۱۳۰۶ ۱۳۲۔ نوادر الاصول ابو عبداللہ محمد بن علی حکیم الترمذی ۲۵۵ ۱۳۳۔ نصاب الاحتساب في الفتاوی عمر بن محمد بن عوف الشامی ۱۳۴۔ نور الشمعہ فی ظفر الجمعہ علی بن غانم المقدسی ۱۳۵۔ نظم الفرائد و جمع الفوائد فی الاصول عبدالرحیم بن علی الرومی المعروف بشیخ زادہ ۹۴۴ ۱۳۶۔ نافع شرح قدوری ۱۳۷۔ نام حق شرف الدین بخاری ۱۳۸۔ نتائج الافکار فی کشف الرموز والاسرار شمس الدین احمد بن قور دالمعروف بقاضی زادہ ۹۸۸

و

۱۳۹۔ وفیات الاعیان شمس الدین احمد بن محمد ابن خلکان ۶۸۱ ۱۴۰۔ واقعات المفتیین ۳۲۵ ۱۴۱۔ وفاء الوفا نورالدین علی بن احمد السمہودی ۹۱۱

ھ

۱۴۲۔ ہوامع شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی ۱۱۷۹ ۱۴۳۔ ہمعات شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی ۱۱۷۹